हिन्दी प्रचार पुस्तकमाला, पुष्प 163

# भारतीय हिन्दी कोश

(शब्द-संख्या 75,000)

[ पारिभाषिक शब्द 1000 ]



प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

मद्रास

1956

प्रथम संस्करण :
अगस्त, 1956
3

दाम 12—8—0


O. No 1200
हिन्दी प्रचार प्रेस, त्यागरायनगर, मद्रास-17

# प्रकाशकीय वक्तव्य

सभा ने दक्षिण भारत के चारों क्षेत्रीय भाषाओं में चार हिन्दी कोश पहले से ही प्रकाशित कर रखे हैं, जो सभा की 'राष्ट्रभाषा' परीक्षा तक के विद्यार्थियों के काम आते हैं। अब तक हमारे पास उच्च परीक्षाओं के लिए ऐसा कोई कोश नहीं था जिसमें आधुनिक हिन्दी और उर्दू के गद्य-पद्य के सभी आवश्यक शब्दों का संग्रह हो। दक्षिण भारत के हिन्दीप्रेमी प्रचारक और विद्यार्थीगण बहुत समय से इस कमी का अनुभव कर रहे थे। यह 'भारतीय हिन्दी कोश' उन्हींकी आवश्यकताओं का ख़याल करके तैयार किया गया है।

इस कोश में साधारणतः हिन्दी में प्रयुक्त होनेवाले सभी प्रकार के शब्द दिये गये हैं। अप्रचलित संस्कृत और अरबी-फ़ारसी शब्दों की भरमार नहीं है। कुछ शब्द इसमें ऐसे भी मिलेंगे जिनका व्यवहार भारत की सब भाषाओं में होता है तथा जिनका मूल स्थान दक्षिण प्रदेश ही है। इस प्रकार के शब्दों के साथ कोष्ठक में उन-उन भाषाओं के नाम भी दे दिये गये हैं।

कुछ ऐसे शब्दों का भी चयन किया गया है, जिनका समावेश सभा के दूसरे कोशों में तो हो चुका है, परंतु उनके दूसरे अर्थ और मुहावरे उनमें नहीं आ सके हैं। कोश के अंत में परिशिष्ट रूप से एक संक्षिप्त पारिभाषिक शब्द-सूची दी गयी है, जिसमें संविधान के तथा भारत सरकार द्वारा तैयार किये गये अन्य आवश्यक शब्दों का संग्रह है।

अर्थ लिखने में इस बात का बराबर ध्यान रखा गया है कि पर्यायवाची शब्दों का कम से कम प्रयोग किया जाय। आसान ढंग से शब्दों का भावार्थ समझाने की ही पूरी-पूरी कोशिश की गयी है। मुहावरे भी अधिकतर वे ही दिये गये हैं जो प्रचलित और अनूठे हैं। भरती की चीज़ें कम चुनी गयी हैं। उनका अर्थ भी लाक्षणिक या व्यंजनात्मक ही

ग्रहण किया गया है, अभिधेयात्मक नहीं। कुछ आवश्यक नये शब्द और नये मुहावरे सभा के साहित्य-विभाग के कार्यकर्ताओं ने भी अपनी जानकारी से जोड़े हैं, जिनका दर्शन आधार-ग्रन्थों में नहीं हुआ।

शब्दों के जोड़ने और घटाने की आवश्यकता होने पर भी शब्द-चयन में प्रामाणिकता से काम लिया गया है। जो कुछ साधन-सामग्री हमारे सामने उपस्थित थी, उसका पूरा-पूरा उपयोग हमने विवेक के साथ किया है।

इस प्रकार प्रयत्न तो यह किया गया है कि यह 'भारतीय हिन्दी कोश' सच्चे अर्थों में अपने नाम को सार्थक सिद्ध करे। पर यह दावा नहीं किया जा सकता है कि यह सब तरह से पूर्ण है। अपूर्णता का इसमें रहना सहज है। इसलिए सहृदय जनों से यह प्रार्थना है कि उन्हें जो कमियाँ इसमें दीख पड़ें, उनकी सूचना सभा के 'साहित्य-विभाग' को अवश्य दें, जिससे कि आगे के संस्करण में उनसे लाभ उठाया जा सके।

आशा है, यह 'भारतीय हिन्दी कोश' दक्षिण के हिन्दीप्रेमियों और विद्यार्थियों के लिए परम उपयोगी सिद्ध होगा।

---

# प्रकाशकीय वक्तव्य

## संकेत-सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| [अंग्रे०] | अंग्रेज़ी | [देश] | देशज |
| [अ] | अरबी | न्या० | न्याय |
| अ० | अकर्मक क्रिया | पु० | संज्ञा पुल्लिंग |
| अव्य० | अव्यय | [फ़ा] | फ़ारसी |
| [उ] | उर्दू | [म] | मराठी |
| उदा० | उदाहरण | [मल] | मलयालम |
| उप० | उपसर्ग | मु० | मुहावरा |
| [क] | कन्नड़ | व्या० | व्याकरण |
| क्रि० | क्रिया-विशेषण | [सं] | संस्कृत |
| [त] | तमिल | स० | सकर्मक क्रिया |
| [तु] | तुर्की | सा० | साहित्य |
| [ते] | तेलुगु | स्त्री० | संज्ञा स्त्रीलिंग |
| दे० | देखिये | [हिं] | हिन्दी |

# भारतीय हिन्दी कोष



## अ

**अंक** - पु० [सं] चिह्न, निशान ; लिखावट, अक्षर, लेख ; संख्या ; भाग्य ; धब्बा, दाग़ ; शरीर ; गोद ; नाटक का खंड ; दफ़ा ; पाप ; दुख । **मु०** — भरना, लगाना या देना - गले लगाना, आलिंगन करना । — में आना - गले लगना ।

**अंकन** - पु० [सं] चिह्न या निशान करना ; लिखना ; शंख, चक्र, गदा, पद्म और त्रिशूल आदि के निशान बाँह पर छपवाना ; गिनती करना ।

**अंकपाली** - स्त्री० [सं] धाय, दाई ।

**अंकमालिका** - स्त्री० [सं] छोटा हार ; भेंट ; आलिंगन ।

**अँकरा** - पु० [देश] गेहूँ के पौधो के बीच उगनेवाली एक घास ।

**अँकवार** - स्त्री० [हिं] कोख ; गोद ; छाती । **मु०**— देना - गले लगाना । — भरना - गले मिलना ; गोद में बच्चा रहना ।

**अँकाई** - स्त्री० [हिं] अंदाज़ा, तख़मीना ; फ़सल में ज़मींदार और किसान के हिस्सों का ठहराव ।

**अँकाव** - पु० [हिं] अंदाज़ करने का काम ।

**अंकित** - वि० [सं] लिखा हुआ, चित्रित ; वर्णित ; निशान किया हुआ ।

**अंकुश** - पु० [सं] छोटा दो-मुँहा भाला जिससे हाथी चलाया जाता है ; दबाव, रोक । **मु०** — न मानना या न होना - स्वच्छंद रहना, किसी का दबाव न मानना, न डरना । — रखना - नियंत्रण रखना ।

**अँकुसी** - स्त्री० [हिं] टेढ़ी छड़ ; टेढ़ी या झुकी कील, हुक ।

**अँकोर** - पु० [हिं] कलेवा जो खेत पर किसानों को भेजा जाता है ; दुहते समय पशु को खिलाया जानेवाला दाना ; भेंट ; रिश्वत ; गोद ।

**अँकोरना** - स० [हिं] कुरेदना, खोदना ।

**अँखिया** - स्त्री० [हिं] आँख ; नक़्क़ाशी करने की क़लम ।

**अंग** - पु० [सं] शरीर ; हाथ, पैर आदि ; भाग ; सहायक ; एक प्राचीन देश । **मु०** — छूना - क़सम खाना । — टूटना - ज्वर आदि के पहले शरीर में दर्द होना । — लगना - छाती से लिपटना ; भोजन से शरीर बलवान होना । — करना - स्वीकार करना । जैसे—'जाको मनमोहन अंग करै ।' सूर । फूले — न समाना - अत्यंत प्रसन्न होना ।

**अंगज** - 1. वि० [सं] जो शरीर से पैदा हुआ हो । 2. पु० बेटा ; पसीना ; केश ; जूँ ; काम, क्रोध आदि विकार ; साहित्य में कायिक अनुभाव ; मदन देव ।

**अंगड़-खंगड़** - पु० [हिं] बचा-खुचा ; गिरा-पड़ा ; टूटा-फूटा ; अनावश्यक ।

**अँगड़ाई** - स्त्री० [हिं] आलस्य से अंगों को तानना । **मु०** — तोड़ना या लेना - आलस्य में बैठे रहना ।

**अँगड़ाना** - अ० [हिं] सुस्ती से अंग ऐंठना, देह तोड़ना ।

**अंगण** - पु० [हिं] आंगन, सेहन ।

**अंगद** - पु० [सं] बाँह पर पहनने का एक भूषण, बाजूबंद।

**अंगदान** - पु० [सं] लड़ाई से पीछे हटना; पीठ दिखाना;

**अंगना** - स्त्री० [हिं] रूपवती स्त्री; आंगन।

**अंगन्यास** - पु० [सं] मंत्रो को पढ़ते हुए एक एक अंग को छूना।

**अंगभंगी** - स्त्री० [सं] स्त्रियो की श्रृंगार चेष्टा, बाँकी अदा, नाज़ व नखरे; हाव-भाव।

**अंगभूत** - वि० [सं] अंग से पैदा हुआ; भीतरी।

**अंगमर्द** - पु० [सं] हड़फूटन, हड्डियो में दर्द होना; हाथ-पैर दबानेवाला नौकर।

**अँगरखा** - पु० पुरानी चाल का लम्बा कोट जिसे घुंडी और तनी लगाकर बाधा जाता है।

**अँगराग** - पु० [सं] महावर; उबटन, सुगंधित लेप; वस्त्र-आभूषण।

**अँगरी** - स्त्री० [हि] लोहे का जालीदार कवच, बख्तर, उगलियों की रक्षा के लिए पहनी जानेवाली अंगूठी।

**अँगवना** - स० [हिं] सहना, स्वीकार करना; ओढ़ना; सिर पर लेना।

**अंगविक्षेप** - पु० [स] अंगो का मटकाना; नृत्य में कलाबाज़ी; अंगो के जरिये हाव-भाव दिखाना।

**अंग-विद्या** - स्त्री० [सं] सामुद्रिक शास्त्र। शरीर के चिन्हो द्वारा मनुष्य के शुभाशुभ फल या भविष्य जानने की विद्या।

**अंगसिहरी** - स्त्री० [हिं] बुखार के पहले की कँपकँपी; जूड़ी, कँपकँपी।

**अंगहार** - पु० [सं] अंगविक्षेप, नाचना, मटकना।

**अंगहारी** - पु० [सं] नाच-घर।

**अंगा** - पु० [अव] अंगरखा, कुरता, चपकन।

**अंगाकड़ी** - स्त्री० [हिं] अंगारों पर सेकी हुई मोटी रोटी, लिट्टी, बाटी।

**अंगांगीभाव** - पु० [स] पूर्ण का अंश के साथ संबंध, गौण और मुख्य का संबंध; संकर अलंकार का एक भेद।

**अंगार** - पु० [हि] जलता या दहकता हुआ कोयला। **मु०** — उगलना - कड़ी-कड़ी बाते कहना। अंगारो पर पैर रखना - जान-बूझकर ख़तरे में पड़ना; जान-बूझकर बुरा काम करना। — बरसना - कड़ी गर्मी पड़ना; दैवी आपत्ति का आना।

**अंगारक** - पु० [सं] आग का जलता हुआ टुकड़ा, अंगार; मंगलग्रह; भृंगराज।

**अंगारवल्ली** - स्त्री० [हि] गुंजा की लता, घुंघुची की बेल।

**अंगारा** - पु० [हिं] दे० 'अंगार'।

**अंगिया** - स्त्री० [हि] चोली, स्त्रियो की कुर्ती।

**अंगी** - पु० [सं] देहधारी, नाटक का प्रधान रस या मुख्य नायक; अवयवी; चौदह विद्याएँ; अँगिया।

**अंगीकृत** - वि० [सं] स्वीकार किया हुआ, मंज़ूर।

**अंगुल** - पु० [सं] एक इंच की नाप।

**अंगुली** - स्त्री [सं] उँगली; हाथी की सूंड़ का अगला भाग; एक नदी का नाम। **मु०** — काटना - चकित होना; पछताना।

**अंगुलीयक** - पु० [सं] छल्ला, अंगूठी।

**अंगुल्यानिर्देश** - पु० [सं] बदनामी; कलंक; अंगुली से संकेत।

**अंगुश्त** - पु० [फ़ा] उँगली।

**अंगुश्तनुमा** - वि० [फ़ा] जिसकी ओर लोगो की उँगलियाँ उठें, बुरे काम में मशहूर।

**अंगुश्तनुमाई** - स्त्री० [फ़ा] बदनामी; दोषारोप।

**अंगुश्तरी** - स्त्री० [फ़ा] अंगूठी, मुद्रिका।

**अंगुश्ताना** - पु० [फ़ा] दर्जी की उँगली पर की पीतल की टोपी।

**अंगुसी** - स्त्री० [हि] हल का फाल; सोनारों कीं बंकनाल या टेढ़ी नली जिससे दीपक की लौ को फूँककर टाँके जोड़ते हैं।

**अंगूठा** - पु० [हि] हाथ या पैर की मोटी उँगली। **मु०** — चूमना - खुशामद करना। — दिखाना - अपमान के साथ इनकार करना।

**अंगूर** - पु० [फ़ा] हरी किसमिस, द्राक्षा; आतिशबाजी; घाव भरते समय की लाली; **मु०** — खट्टे होना - किसी चीज़ को न पाने पर उपेक्षा से निंदा करना। — भरना या पड़ना - घाव भरना।

**अंगूरी** - स्त्री० [फ़ा] अंगूर की शराब; अंगूर जैसा रंग।

**अंगेज़** - वि० [फ़ा] उत्तेजित करनेवाला; उत्पन्न करनेवाला। जैसे 'हैरत अंगेज़ - आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।'

**अंगेजना**, **अंगेरना** - स० [हिं] सहना, स्वीकार करना।

**अंगोछना** - अ० [हि] गीले कपड़े से देह पोछना।

**अंगोछा** - पु० [हिं] देह पोछने का कपड़ा, तौलिया।

**अंगोजना** - स० [देश] सहन करना, सहना; भार उठाना।

**अंघिया** - स्त्री० [अव] आटा व मैदा छानने की चलनी।

**अंघ्रि** - पु० [सं] पैर, चरण, एँड़ी।

**अंचरा**, **अंचल** - पु० [हि] साड़ी का सिरा, पल्ला; सीमा के पास का प्रदेश; किनारा, तट। **मु०** — पकड़ना - सहारा लेना। — बांधना - संकल्प करना।

**अँचवन** - पु० [हिं] आचमन।

**अँचवना** - अ० [हि] आचमन करना; भोजन करने के बाद हाथ मुँह धोना।

**अंज** - पु० [हिं] कमल।

**अंजन** - पु० [स] काजल, सुरमा।

**अंजन-केश** - पु० [सं] दीपक, चिराग़।

**अंजन-शलाका** - स्त्री० [सं] सुरमा लगाने की सलाई, सुरमचू।

**अंजना** - स्त्री० [सं] हनुमानजी की माता का नाम।

**अंजर-पंजर** - पु० [हिं] शरीर की हड्डियो का ढाँचा, पसली। **मु०** — ढीला होना - देह का शिथिल हो जाना।

**अंजलि**, **अंजली** स्त्री० [सं] दोनों हथेलियो का प्याले की तरह मिलाया हुआ रूप। **मु०** — **देना** - पितरों को तर्पण करना; अर्घ्य देना। **यौ०** — श्रद्धांजलि, तिलांजलि।

**अंजलिबद्ध** - वि० [सं] हाथ जोड़े हुए, प्रणाम करते हुए।

**अंजवाना** - स० [हि] अंजन लगवाना।

**अंजाम** - पु० [अ] समाप्ति, पूर्ति; फल। **मु०** — देना - पूरा करना। — निकालना - फल निकालना। **बे-अंजाम** - निष्फल। **बा-अंजाम** - सफल।

**अंजित** - वि० [स] अंजन लगाये हुए।

**अंजुम** - पु० [अ] नज़्म का बहुवचन; सितारे, तारे।

**अंजुमन** - स्त्री० [फ़ा] सभा।

**अंजोर** - पु० [देश] उजाला, प्रकाश।

**अंजोरना** - स० [हिं] बटोरना, छीनना, लेना।

**अंझा** - पु० [हि] नाग़ा, छुट्टी; ग़ैर-हाज़िरी।

**अंटना** - अ० [हिं] समा जाना, पर्याप्त या काफ़ी होना; खपना; काम चलना; भर जाना।

**अंटा** - पु० [हिं] बड़ी गोली; सूत या रेशम का बड़ा पिंडा; बड़ी कौड़ी; अटारी, अट्टालिका।

**अंटागफ़ील** } वि० [हिं] नशे में चूर।
**अंटागुड़गुड़**

**अंटाचित** - वि० [हिं] ज़मीन पर सीधा या पीठ किये हुए गिरना। **मु०** — होना - सन्न होना; बेकाम होना, बरबाद होना; नशे में बेसुध होना।

**अँटिया** - स्त्री० [हिं] लच्छी, गँठिया।

**अंटी** - स्त्री० [हिं] उँगलियो के बीच का स्थान; कमर के ऊपर धोती की लपेट; शरारत। **मु०** — करना - धोखा देकर कोई चीज़ उड़ा लेना। — मारना- जुआ खेलते समय कौड़ी को उँगलियो के बीच छिपा लेना; दम तोड़ना; डंडी मारना।

**अंटौतल** - पु० [हिं] कोल्हू के बैल की आँखो पर का ढक्कन।

**अंड** - पु० [सं] अंडा; अंडकोष; ब्रह्मांड; कस्तूरी; विश्व; वीर्य; बीज; एरंड।

**अंडकटाह** - पु० [सं] संसार; ब्रह्मांड।

**अंडकोष** - पु० [स] अंड, वृषण; ब्रह्मांड; सीमा; अंडा आदि का ऊपरी छिलका।

**अंडज** - पु० [सं] अंडे से पैदा हुआ जीव।

**अंडा** - पु० [हिं] वह गोल सफ़ेद पिंड जिससे पक्षियो और सर्प आदि के बच्चे निकलते हैं। **मु०** — सेना - पक्षियो का अपने अंडो पर गर्मी पहुँचाने के लिए बैठना; घर में बेकार बैठा रहना।

**अंडी** - स्त्री० [हिं] एरंड के फल का बीज; एक प्रकार का आसामी रेशमी वस्त्र।

**अंडुवा बैल** - पु० [देश] साँड़, सुस्त आदमी; बिना बधियाया बैल, जिस बैल के अंडकोष निकाला हो।

**अंडैल** - वि० [हिं] अंडेवाली, जिसके पेट में अंडा हो।

**अंत** - पु० [सं] अवसान; परिणाम; मृत्यु।

**अंतक** - पु० [सं] अंत या नाश करनेवाला, मौत, काल; रुद्र।

**अंतक्रिया** - वि० [सं] अंत करने की क्रिया; मृत्यु के बाद का क्रिया कर्म, दाहादि संस्कार।

**अंतग** - पु० [सं] पूरा जानकार, निपुण, पारगामी।

**अंतड़ी** - स्त्री० [हिं] आँत। **मु०** — जलना - बड़ी भूख लगना। अंतड़ियो में बल पड़ना - पेट में दर्द होना; ऐंठना। जैसे 'हँसते-हँसते अंतड़ियों में बल पड़ गये।'

**अंततः** - क्रि० [सं] अंत में, अख़ीर में।

**अंतपाल** - पु० [सं] दरबान; राज्य की सीमा का पहरेदार।

**अंतरंग** - 1. पु० [सं] हृदय; 2. वि० अत्यंत समीप का, आत्मीय।

**अंतर** - 1. पु० [सं] दो वस्तुओ के बीच का भेद या दूरी; आड़; अंतःकरण; हृदय; 2. क्रि० दूरी; अलग; फ़र्क।

**अंतरजामी** - पु० [हिं] अंतर्यामी, ईश्वर, मनकी बात जाननेवाला।

**अंतरदिशा** - स्त्री० [सं] दो दिशाओं के बीच की दिशा; कोण।

**अंतरपट** } पु० [सं] परदा; गीली मिट्टी की
**अंतर्पट** } पट्टी; अंदर (धोती या साड़ी के) पहनने का वस्त्र।

**अंतरा** - पु० [हिं] किसी गीत का दूसरा पद या चरण।

**अंतरात्मा** - पु० [सं] आत्मा; अंतःकरण।

**अंतराना** - † स० [हिं] अलग करना; किसी के अंतर्गत करना।

**अंतराय** - पु० [सं] विघ्न, बाधा।

**अंतराल** - पु० [सं] घेरा; मंडल; बीच।

**अंतरिक्ष** - पु० [सं] शून्य; आकाश; ग्रहो या नक्षत्रो के बीच का स्थान।

**अंतरित** - वि० [सं] अंदर रखा, छिपा या छिपाया हुआ।

**अंतरिम** - वि० [सं] दो अलग कालो या समयो के बीच का, मध्यवर्ती। जैसे 'अंतरिम सरकार।'

**अंतरिया** - पु० [हिं] एक दिन का अंतर देकर आनेवाला ज्वर।

**अंतरीप** - पु० [सं] पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो सागर में दूर तक चला गया हो।

**अंतरीय** - वि० [सं] भीतर का।

**अंतरौटा** - पु० [हिं] साड़ी के नीचे पहनने का महीन कपड़ा, साया; अस्तर।

**अंतर्गत** - वि० [सं] किसी के भीतर मिला हुआ, सम्मिलित; मन का रहस्य।

**अंतर्दाह** - पु० [सं] हृदय का जलना; भीतरी जलन; ईर्ष्या; घोर मानसिक कष्ट।

**अंतर्दृष्टि** - स्त्री० [सं] भीतरी ज्ञान।

**अंतर्द्वार** - पु० [सं] खिड़की; गुप्तद्वार, चोर दरवाज़ा।

**अंतर्धान** - 1 पु० [सं] अदृश्य, लापता, तिरोधान। 2. वि० लुप्त, छिपा हुआ।

**अंतर्बोध** - पु० [सं] आत्म-ज्ञान।

**अंतर्भाव** - पु० [सं] सम्मिलित होने का भाव, समावेश; आंतरिक इच्छा।

**अंतर्भावना** - स्त्री० [स] ध्यान, चिंता, सोच - विचार।

**अंतर्भावित** - वि० [सं] जो किसीके अंतर्गत हो।

**अंतर्भूत** - वि० [सं] अंतर्गत, शामिल।

**अंतर्मनस** - वि० [सं] उदास, घबड़ाया हुआ, उन्मन।

**अंतर्मुख** - वि० [सं] भीतर की ओर देखने वाला।

**अंतर्यामी** - वि० [सं] ईश्वर।

**अंतर्राष्ट्रीय** - वि० [सं] दो या अधिक राष्ट्रो से संबंध रखनेवाला।

**अंतर्लापिका** - स्त्री० [सं] वह पहेली जिसका जवाब उसीमें छिपा रहता है। जैसे 'चार महीने बहुत चलै और आठ महीने थोरी। अमीर खुसरो यो कहै तू बूझ पहेली मोरी।' इसमें 'मोरी' ही जवाब है।

**अंतर्लीन** - वि० [सं] अपने आप में मग्न।

**अंतर्वत्नी** - स्त्री० [सं] गर्भिणी, हामिला।

**अंतर्वाष्प** - पु० [सं] भीतरी दुःख जिसमें आँसू न निकले।

**अंतर्वेद** - पु० [सं] गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश; दो नदियो के बीच का देश; ब्रह्मावर्त।

**अंतर्वेदना** - स्त्री० [सं] मानसिक पीड़ा, व्यथा।

**अंतर्वेशिक** - पु० [सं] अंतःपुर का रक्षक।

**अंतर्हित** - वि० [सं] गुप्त, अदृश्य, ग़ायब।

**अंतस** - पु० [सं] हृदय, अंतःकरण, मन।

**अंतस्तल** - पु० [सं] हृदय।

**अंतस्ताप** - पु० [सं] मानसिक दुःख।

**अंतस्थ** - 1. वि० [सं] अंदर या बीच का; अंत का, 2. पु० य, र, ल, व— ये चारो वर्ण।

**अंतस्सलिला** - स्त्री० [सं] जिस नदी के जल का बहाव बाहर दिखाई न दे; सरस्वती नदी; फलगू नदी।

**अंतावरी** - स्त्री० [हि] अंतड़ी, आँतो का समूह।

**अंतिक** - वि० [स] निकट, पास, समीप ।

**अंतिका** - स्त्री० [स] बड़ी बहन ; चूल्हा ।

**अंतिम** - वि० [सं] आख़िरी, सबसे बढ़कर । — यात्रा - स्त्री० आख़िरी सफ़र ; मौत, महाप्रस्थान ।

**अंतेउर** }
**अंतेवर** } पु० [हिं] अंतःपुर, ज़नानखाना ।

**अंतेवासी** - पु० [स] शिष्य, गुरु के पास रहनेवाला ।

**अंतःकरण** - पु० [सं] भला-बुरा पहचाननेवाली बुद्धि ।

**अंतःपटी** - स्त्री० [सं] नाटक का परदा ।

**अंतःपुरिक** - पु० [सं] कंचुकी, अंतःपुर का रक्षक ।

**अंतःशरीर** - पु० [सं] लिंग देह, जीव का सूक्ष्म शरीर ।

**अंतःसत्वा** - स्त्री० [सं] गर्भवती ।

**अंत्य** - वि० [सं] अंत का, अंतिम ।

**अंत्यकर्म** - पु० [सं] दाह कर्म, श्राद्ध, मृतक कर्म ।

**अंत्यज** - पु० [सं] शूद्र ; चांडाल ।

**अंत्याक्षरी** - स्त्री० [सं] किसी के कहे हुए श्लोक या पद्य के आख़िरी अक्षर से शुरू होनेवाला दूसरा श्लोक या पद्य पढ़ने का क्रम ।

**अंत्यानुप्रास** - पु० [सं] तुकबंदी, तुकांत, पद्य में चरणों के अंतिम अक्षरों का साम्य ।

**अंत्येष्टि** - पु० [सं] दाह कर्म ; श्राद्ध, मृतक कर्म ।

**अंत्र** - पु० [सं] अँतड़ी, आँत ।

**अंथऊ** - पु० [हिं] जैनियों का सायंकालीन भोजन ।

**अंदर** - क्रि० [फ़ा] भीतर ।

**अंदरसा** - पु० [देश] एक मिठाई, चावल व शक्कर से बनी घी में सेकी हुई मिठाई।

**अंदरी** - वि० [हिं] भीतरी, आतरिक ।

**अंदरूनी** - वि० [हि] भीतरी, भीतर का ।

**अंदाज़** }
**अंदाज़ा** } पु० [फ़ा] अनुमान, अटकल, तख़मीना ; ढंग । मु०— उड़ाना- दूसरे की चाल-ढाल पकड़ना, पूरी पूरी नक़ल करना ।

**अंदाज़न्** - क्रि० [फ़ा] अंदाज़ से, लगभग, क़रीब ।

**अंदाज़-पट्टी** - स्त्री० [फ़ा] खेत में लगी फ़सल की क़ीमत कूतना ।

**अंदाना** - स० [देश] बचना ।

**अंदु** - पु० [सं] स्त्रियों के पैर का एक गहना, पाजेब ; हाथी या भैंस के पाँव में बाँधने की सांकल या रस्सी ।

**अँदुआ** - पु० [हि] भैंसे या हाथी के पैर में डालने का लकड़ी का काँटेदार यत्र ।

**अंदेश** - वि० [फ़ा] चिंता करनेवाला, ध्यान रखनेवाला । जैसे 'आकबत-अंदेश, दूर-अंदेश ।'

**अंदेशा** - पु० [फ़ा] चिंता ; आशंका, खटका, डर ।

**अंदोर** - पु० [हिं] कोलाहल, शोरगुल ; हलचल ।

**अंदोह** - पु० [फ़ा] शोक, दुःख, रंज ; खटका, संदेह, असमंजस ।

**अंध** - 1 वि० [सं] नेत्रहीन, अंधा ; अज्ञानी, मूर्ख ; मस्त, उन्मत्त ; 2. पु० वह व्यक्ति जिसके नेत्र नहीं हों, अँधा ; उल्लू ; चमगीदड़ ; अंधकार ।

**अंधक** - पु० [सं] अंधा, कश्यप और दिति का पुत्र, एक दैत्य ।

**अंधकार** - पु० [सं] अंधेरा ; अज्ञान, मोह ।

**अंधकूप** - पु० [सं] अंधा कुआँ, बिन पानी का कुआँ ; एक नरक ; अंधेरा ।

**अंधड़** - पु० [हिं] धूल मिली हुई ज़ोरदार हवा, आँधी, तूफ़ान।

**अंधतमस** - पु० [सं] गहरा अंधेरा, गाढ़ांधकार ; एक नरक का नाम।

**अंधतामिस्त्र** - पु० [सं] घोर अंधकारयुक्त एक नरक ; सांख्य में इच्छा विपर्यय के पाँच प्रकारो में एक।

**अंधधुंध** - 1. पु० [हिं] गड़बड़ी ; अन्याय ; अंधेरा ; 2. वि० अत्यधिक।

**अंधपरंपरा** - स्त्री० [सं] लकीर की फ़कीरी, बिना सोचे विचारे अनुकरण करना, भेड़ियाधसान।

**अंधविश्वास** - पु० [सं] बिना सोचे-समझे किसी बात को मानना, विवेकशून्य धारणा।

**अंधस** - पु० [सं] भात, पकाया हुआ चावल।

**अंधा** - 1. पु० [सं] वह जिसे आँखो से कुछ भी दिखायी न देता हो ; 2. वि० नेत्रविहीन, अंधकार से भरा। मु० — बनाना - आँख में धूल झोकना, धोखा देना। — होना - विवेकशून्य होना। अंधे की लकड़ी या लाठी - सहारा, इकलौता बेटा।

**अंधाधुंध** - 1. क्रि० [हिं] बिना सोचे-समझे, बहुत तेज़ी या जल्दी से ; 2. स्त्री० अन्याय ; अविचार।

**अंधियार** } **अंधियारा** } पु० [हिं] अंधकार, अंधेरा।

**अंधेर** - पु० [हिं] अन्याय, अत्याचार ; गड़बड़ी, बुरी व्यवस्था। मु० — करना - किसी के प्रति अन्याय करना।

**अंधेरखाता** - पु० [हिं] बदइंतज़ाम, बुरी व्यवस्था ; अविचार।

**अंधेरना** † - स० [हिं] अंधकारमय करना।

**अंधेरा** - पु० [हिं] अंधकार, धुँधलापन ; उदासी, दुख। मु० — छाना - शोक करना, मातम छाना। अंधेरे घर का उजाला - एकमात्र आधार, कुलदीपक। मुँह अँधेरे - बड़े सवेरे।

**अंधौटी** - स्त्री० [हिं] बैल या घोड़ों की आँख पर की पट्टी।

**अंब** - स्त्री० [सं] माता ; दुर्गा ; आम का पेड़ या फल।

**अंबक** - पु० [सं] पिता ; आँख ; ताँबा।

**अंबर** - पु० [सं] वस्त्र, रंगीन किनारदारी साड़ी ; आकाश ; कपास ; [फ़ा] अभ्रक ; बादल।

**अंबरबेलि** - स्त्री० [हिं] जड़ और पत्र रहित एक फैलनेवाली पीली लता, आकाशबेल।

**अंबराई** - स्त्री० [हिं] आम का बग़ीचा।

**अंबराडंबर** - पु० [हिं] सूर्यास्त के समय की लाली।

**अंबरीष** - पु० [सं] भाड़, एक तरह का बड़ा चूल्हा ; विष्णु ; शिव ; एक राजा।

**अंबा** - स्त्री० [सं] माता ; दुर्गा ; काशिराज की बेटी ; पाढ़ा।

**अंबिका** - स्त्री० [सं] माता ; पार्वती ; काशिराज की कन्या।

**अंबु** - पु० [सं] पानी, जल।

**अंबुज** - पु० [सं] कमल।

**अंबुद** - पु० [सं] बादल ; मोथा घास।

**अंबुप** - पु० [सं] समुद्र ; वरुण।

**अंबुभृत** } **अंबुधि** } - पु० [स] बादल ; मोथा घास ; समुद्र।

**अंबुरुह** - पु० [सं] कमल।

**अंबुवाह** - पु० [सं] बादल।

**अंभ** - पु० [सं] पानी ; देवता ; पितर ; असुर।

**अंभोज** - पु० [सं] कमल ; सारस पक्षी ; चंद्रमा ; कपूर ; शंख।

**अंभोधर** - पु० [सं] बादल।

**अंभोरुह** - पु० [सं] कमल ।
**अंश** - पु० [सं] भाग ; कंधा ।
**अंशक** - पु० [सं] भागीदार ; पट्टीदार ; विभाजक ।
**अंशतः** - क्रि० [सं] किसी अंश में ।
**अंशपत्र** - पु० [सं] पट्टीदारों के हिस्सो का लिखित प्रमाण-पत्र ।
**अंशु** - पु० [सं] किरण ; प्रभा ; धागा ; सूक्ष्म भाग ।
**अंशुक** - पु० [सं] पतला कपड़ा ; रेशमी कपड़ा , ओढ़नी ।
**अंशुनाभि** - स्त्री० [सं] वह केन्द्र बिंदु जिस पर प्रकाश की किरणें समानांतर दूरी से तिरछी और इकट्ठी होकर मिलती हैं ।
**अंशुमान** - पु० [सं] सूर्य ।
**अंशुमाली** - पु० [सं] सूर्य ; दीपक ; अग्नि ; चंद्र ।
**अंस** - पु० [हिं] भाग ; कंधा ।
**अंसकूट** - पु० [सं] सांड़ या गाय के कंधे का ऊपर उठा हुआ भाग, कूबड़ा ।
**अँसुआ** - पु० [हिं] आँसू । —ना - अ० आँसू भर आना ।
**अंहति** - पु० [स] दान ; त्याग ; रोग, पीड़ा ।
**अँहड़ा** - पु० [देश] तोलने का बाट ।
**अउ** † - अव्य [अव] और ।
**अउठा** - पु० [देश] जुलाहे की नापने की दो हाथ की लकड़ी ।
**अएरना** - स० [देश] स्वीकार करना ; धारण करना ।
**अकड़** - स्त्री० [हिं] ऐंठ, तनाव, मरोड़ ; अहंकार, शेखी ; हठ । **मु०** — दिखाना - ऐंठ या घमंड दिखाना । — रखना - हठ करना, घमंड रखना । — जाना - लड़ना । — में आना - घमंड में आना ।
**अकड़ना** - अ० [हिं] सूखकर सिकुड़ना ; कड़ा होना ; शरीर को तनाना ; घमंड करना ; ढिठाई करना ; हठ करना ; ठिठुरना ; चिढ़ना ।
**अकड़बाज़**, **अकड़ैत** - वि० [हिं] अभिमानी, घमंडी ।
**अकत** † - क्रि० [अव] बिलकुल, सरासर ।
**अकथ** - वि० [सं] न कहने लायक़, जिसका वर्णन न हो सकता हो ।
**अकथनीय** - वि० [सं] अवर्णनीय ; जो कहा न जा सके ।
**अकथित** - वि० [सं] न कहा हुआ ।
**अक़द** - पु० [फ़ा] प्रतिज्ञा, वचन ।
**अक़दबंदी** - स्त्री० [हिं] प्रतिज्ञा-पत्र, इक़रारनामा ।
**अक़दस** - वि० [अ] पवित्र, श्रेष्ठ ।
**अकधक** - स्त्री० [देश] आशंका, खटका ; सोच-विचार, पसोपेश, असमंजस ।
**अकनना** - स० [देश] सुनना । जैसे 'तुरंग नचावहिं कुँवरवर अकनि मृदंग निसाना ।' — तुलसी ।
**अकना** - अ० [देश] ऊबना, घबराना ।
**अकबक** - 1. स्त्री० [अनु] निरर्थक बात ; खटका ; 2. वि० चकित ; भौंचक्का ।
**अकबकाना** - अ० [हिं] चकित होना ; घबराना ।
**अकबर** - वि० [फ़ा] बहुत बड़ा, महान ।
**अकबरी** - 1. स्त्री० [सं] वेणी या चोटी रहित ; 2. [अ] एक प्रकार की फलाहारी मिठाई ; लकड़ी पर की नक़्क़ाशी । 3. वि० [फ़ा] अकबर की ; अकबर की बनायी हुई ; अकबर के समय की ।

**अकरखना** - स० [अव] खींचना ; आकर्षित करना ; तानना ; चढ़ाना ।
**अकरण** - 1. पु० [सं] न करने योग्य काम ; अनुचित या कठिन कार्य ; इन्द्रियरहित, ईश्वर ; 2. वि० न करने लायक़, अनुचित ; बुरा ; कठिन ।
**अकरा** - 1. वि० [देश] महँगा, अमूल्य ; खरा, अच्छा ; 2. पु० एक तरह का मोटा अन्न ।
**अकरास** † - स्त्री० [देश] सुस्ती ; अंगड़ाई ; देह टूटना ; असुविधा ।
**अकरी** - स्त्री० [हि] बांस का चोंगा जिसे हल में लगाकर बीज बोये जाते हैं ।
**अकरुण** - वि० [सं] निर्दय, निष्ठुर ।
**अकर्म** - पु० [सं] न करने योग्य कार्य ; कर्म का अभाव ।
**अकर्मक** - वि० [सं] कर्मरहित ; (व्या०) कर्मरहित क्रिया ।
**अकर्मण्य** - वि० [सं] आलसी, निकम्मा ।
**अकलंक** - वि० [सं] दोषरहित, पापरहित ।
**अकल** - 1. वि० [सं] अवयवरहित ; जिसके टुकड़े न हो, पूरा ; बेचैन ; 2. पु० परमात्मा ; सिक्ख संप्रदाय में ईश्वर का एक नाम ।
**अक़ल** - स्त्री० [फ़ा] अक़्ल, बुद्धि ।
**अकलखुरा** - वि० [हि] मतलबी ; मनहूस ; ईर्ष्यालु ; जो मिलनसार न हो ।
**अकल्पित** - वि० [सं] सच्चा, जिसकी कल्पना या अनुमान न किया गया हो ।
**अकवन** - पु० [हि] आक, मदार, अर्क ।
**अकवार** - पु० [देश] काँख, गोद ।
**अकस** - पु० [अ] वैर ; डाह ।
**अकसना** - अ० [हिं] मन में दुर्भाव या वैर रखना, द्वेष करना ।

**अकसर** - 1. क्रि० [अ] प्रायः, अधिकतर ; 2. [हिं] अकेले ।
**अकसीर** - 1. स्त्री० [अ] सब तरह के रोगों को दूर करनेवाली प्रभावशाली औषधि ; 2. पु० वह रस या भस्म जो धातु को सोना या भस्म बना दे, रसायन, कीमियाँ ।
**अकह** - वि० [हि] अकथ, जो कही न जा सके । जैसे, 'कीन्हीं सिवराजवीर अकह कहानी ।'—भूषण ।
**अकांड** - वि० [सं] शाखारहित, अखंड ।
—**तांडव** - पु० बेमतलब की उछल-कूद या दौड़-धूप ; व्यर्थ बकवाद ।
**अकाज** - पु० [हि] बुरा काम ; विघ्न, हर्ज़ ।
**अकाजी** - वि० [हि] बाधा डालनेवाला ।
**अकाट्य** - वि० [सं] जिसका खंडन न हो सके ; मज़बूत ।
**अकाथ** † - क्रि० [देश] वृथा, व्यर्थ ।
**अकाम** } **अकामी** } - 1. वि० [सं] कामना या इच्छारहित ; जितेंद्रिय ; 2. क्रि० बिना काम के, व्यर्थ ।
**अकाय** - वि० [सं] देहरहित, निराकार, अजन्मा, ईश्वर ।
**अकारज** - 1. पु० [हि] कार्य की हानि, क्षति, हर्ज़ ; 2. वि० बिना कारण, हेतुरहित ; 3. क्रि० बिना कारण के, व्यर्थ, यों ही ।
**अकारथ** - वि० [हिं] व्यर्थ, निष्फल ।
**अक़ारिब** - वि० [अ] रिश्तेदार, नातेदार ; क़रीब का बहु० ।
**अकार्य** - पु० [सं] न करने योग्य काम ।
**अकाल** - पु० [सं] बुरा समय ; मौसिम से पहले या बाद का समय ; दुर्भिक्ष, महँगी । —**कुसुम** - पु० बेमौसिम के फूल ; असमय की चीज़ ।
**अकालिक** - वि० [स] असामयिक, बेमौके का ।

**अकाली** - पु० [हिं] नानक-पंथी साधु जो एक चक्र के साथ काली पगड़ी बांधते हैं; सिक्खो का एक पंथ।

**अकास** - पु० [हिं] आसमान; शून्य। —दिया - आकाश-दीप। —बेल - अमरबेल।

**अकासी** - 1. वि० [हिं] आकाशसंबंधी; 2. स्त्री० चील; ताड़ी।

**अकिंचन** - वि० [सं] कंगाल, ग़रीब; तुच्छ; साधारण, मामूली।

**अकिंचनता** - स्त्री० [सं] ग़रीबी; दीनता।

**अकिंचित्** - वि० [सं] जिसकी कोई गिनती न हो, नगण्य, मामूली।

**अक़िल** - स्त्री० [अ] अक़्ल, बुद्धि।

**अक़िलदाढ़** - पु० [हिं] पूरी उमर आने पर निकलनेवाले दाँत या डाढ़।

**अकिल्बिष** - वि० [सं] पाप-शून्य, निर्मल।

**अक़ीक़** - पु० [अ] लाल पत्थर जिसपर मोहर खोदी जाती है।

**अक़ीक़ा** - पु० [अ] नवजात बच्चे का मुंडन जो मुसलमानों में जन्म के छठे दिन होता है।

**अक़ीम** - वि० [अ] बाँझ, निःसंतान।

**अकीर्ति** - स्त्री० [सं] अपकीर्ति, बदनामी।

**अक़ील** - पु० [अ] अक़्लमंद, बुद्धिमान।

**अकुंचित** - वि० [सं] जो टेढ़ा न हो।

**अकुंठित** - वि० [स] पैना, तेज़।

**अकुताही** - स्त्री० [देश] ऊब, घबराहट; बिना तंगी की दशा।

**अकुल** - पु० [सं] कुलहीन; वह जिसके कुल में कोई न हों।

**अकुलाना** - अ० [हिं] घबराना, बेचैन होना; उतावला होना; ऊबना।

**अकुलीन** - वि० [सं] जो कुलीन न हो, नीच कुल का।

**अकुशल** - वि० [सं] जो कार्य करने में कुशल या चतुर न हो; अमंगल।

**अकूत** - वि० [हिं] जो कूता न जा सके, अपरिमित।

**अकृत** - वि० [सं] बिना किया हुआ, प्राकृतिक; निकम्मा।

**अकृत्य** - पु० [सं] न करने योग्य काम।

**अकृत्रिम** - वि० [सं] जो बनावटी न हो, प्राकृतिक।

**अकेला** - 1. वि० [हिं] एकाकी; बेजोड़, अद्वितीय, 2. पु० एकांत, निर्जन स्थान। —दुकेला - एक या दो, इक्का-दुक्का। लो० अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता - बड़ा काम किसी एक व्यक्ति से नही हो सकता।

**अकोट** † - वि० [देश] करोड़ो, बहुत अधिक।

**अकोर** - पु० [देश] तोहफ़ा, भेंट; घूस; अँकवार, गोद।

**अकोरना** - स० [देश] भूनना, कढ़ाई में डालकर तलना।

**अकोसना** - स० [देश] गाली देना, कोसना, भला-बुरा कहना।

**अकौआ** / **अकौवा** - पु० [हिं] आक, मदार; गले के अंदर की घंटी।

**अक्खड़** - वि० [हिं] अपनी ही बात पर अड़ा रहनेवाला; जल्दी लड़ पड़नेवाला; उजड्ड, निडर; स्पष्टवक्ता।

**अक्खड़पन** - पु० [हि] उद्दंडता, अशिष्टता; उग्रता।

**अक्खा** - पु० [हिं] बैलो पर अनाज लादने का दोहरा थैला, गोन।

**अक़्द** - पु० [अ] संबंध जोड़ना; शादी; बेचना; इक़रार। —नामा - पु० [अ + फ़ा] विवाह का इक़रार-नामा; —बंदी - स्त्री० क़रार करना, निश्चय करना।

**अक्रम** - 1 वि० [सं] जिसमें कोई सिलसिला न हो, क्रमरहित ; 2. पु० व्यतिक्रम।

**अक्रिय** - वि० [सं] जड़, निश्चेष्ट।

**अक्रूर** - 1. वि० [सं] जो क्रूर न हो, दयालु ; 2. पु० श्रीकृष्ण के चाचा।

**अक़्ल** - स्त्री० [अ] बुद्धि, समझ, ज्ञान। मु० — चरने जाना - बुद्धि का जाता रहना। — का दुश्मन या अंधा - मूर्ख, बेवकूफ़। — का पुतला - बहुत ही बुद्धिमान। — के घोड़े दौड़ाना - अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करना, युक्तियाँ सोचना। — के पीछे लट्ठ लिये फिरना - सदा बुद्धि के विरुद्ध कार्य करना। — चकराना या चक्कर में आना - चकित होना, कुछ समझ न पड़ना। — लड़ाना या जमाना - खूब सोच-विचार करना। — पर पत्थर पड़ना - बुद्धि का नाश होना। — पर परदा पड़ना - बुद्धि का लोप होना, समझ का काम न करना। — मारी जाना - विवेकशून्य होना। — सठिया जाना - बुद्धि नष्ट होना।

**अक़्लमंद** - वि० [फ़ा] बुद्धिमान, चतुर।

**अक़्लमंदी** - स्त्री० [फ़ा] समझदारी।

**अक्लांत** - वि० [सं] जो थका न हो ; ताज़ा।

**अक्लेद** - वि० [स] जो गीला न हो।

**अक्स** - पु० [अ] प्रतिबिंब, छाया ; तसवीर।

**अक्सर** - क्रि० [अ] प्रायः, बहुधा।

**अक्सरियत** - स्त्री० [अ] बहुमत ; बहुसंख्यक समाज।

**अक्सी** - वि० [अ] छायासंबंधी।

**अक्सीर** - वि० [अ] अचूक।

**अक्ष** - पु० [सं] जुआ खेलने का पासा ; दो वस्तुओं के बीच की रेखा, धुरी ; भूगोल में वे कल्पित रेखाएँ जो सारी पृथ्वी पर समान अंतर पर पड़ी हुई मानी जाती है ; रुद्राक्ष ; इंद्रिय ; तराजू की डंडी ; गाड़ी का जुआ ; सर्प ; गरुड़ ; रथ। —क्रीड़ा - पासे का खेल।

**अक्षत** - 1. वि० [सं] जिसे चोट न लगी हो ; अखंड, पूरा ; 2. पु० पूजा के काम में आनेवाले बिना टूटे कच्चे चावल, धान का खील, जौ।

**अक्षतयोनि** - वि० [सं] कुमारी कन्या।

**अक्षम** - वि० [स] असमर्थ, अशक्त ; जिसमें किसी कार्य के लिए योग्यता न हो ; असहिष्णु।

**अक्षमाला** - स्त्री० [सं] रुद्राक्ष की माला ; वसिष्ठ की पत्नी अरुंधती।

**अक्षम्य** - वि० [सं] जो क्षमा के योग्य न हो।

**अक्षय** - वि० [सं] जिसका कभी नाश न हो, अमर। —तृतीया - स्त्री० बैसाख शुक्ल तृतीया, सतयुग के आरम्भ का दिन। —नवमी - स्त्री० कार्तिक शुक्ल नवमी, त्रेतायुग का आरम्भ। —वट - पु० वह बरगद का पेड़ जिसका कभी नाश नही माना जाता। ऐसा एक वृक्ष प्रयाग में और दूसरा गया में है।

**अक्षर** - 1. पु० [सं] वर्णमाला का कोई स्वर या व्यंजन, हरूफ़ ; आत्मा ; ब्रह्म ; मोक्ष ; 2. वि० नाशरहित।

**अक्षरशः** - क्रि० [सं] एक एक अक्षर, ज्यो का त्यो, बिलकुल, सब।

**अक्षरेखा** - स्त्री० [सं] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के केंद्र से दोनो पृष्ठो पर सीधी गिरती हो।

**अक्षरौटी**, **अखरौटी** - स्त्री० [हिं] वर्णमाला ; लिखावट; वह कविता जिसके पद क्रमशः वर्णमाला के अक्षरो से शुरू होते है।

**अक्षांश** - पु० [सं] विषुवृत्त से उत्तर दक्षिण किसी भी जगह का अंतर।

**अक्षि** - स्त्री० [सं] आँख। —तारा - स्त्री० आँख की पुतली। —गोलक - पु० आँख का ढेढ़र।

**अक्षुण्ण** - वि० [सं] बिना टूटा हुआ, समूचा, ज्यों का त्यों।

**अक्षोनी** † - स्त्री० [सं] अक्षौहिणी।

**अक्षोभ** - 1. पु० [सं] शान्ति; धीरता; स्थिरता; 2. वि० गंभीर, शान्त।

**अक्षौहिणी** - स्त्री० [सं] चतुरंग सेना जिसमें 1,09,350 पैदल, 65,610 घोड़े, 21,870 रथ और 21,870 हाथी हों।

**अखंड** - 1. वि० [सं] जिसके खंड या टुकड़े न हों, समग्र; 2. पु० ब्रह्म।

**अखंडनीय** - वि० [सं] जिसके खंड या टुकड़े न किये जा सकें; जिसका खंडन न किया जा सके, युक्तियुक्त।

**अखंडल** - 1. वि० [सं] अटूट, अखंड; संपूर्ण, पूरा; 2. पु० इंद्र।

**अखंडित** - वि० [सं] जो टूटा-फूटा न हो, पूर्ण; जिसका खंडन न हुआ हो।

**अख़गर** - पु० [फ़ा] आग की चिनगारी।

**अखज** - पु० [हिं] न खाने लायक़, ख़राब।

**अखजना** - स० [हि] वमन करना।

**अखड़ैत** - पु० [हिं] अखाड़े का मंजा हुआ, पहलवान।

**अखनी** - स्त्री० [फ़ा] मास-रस, शोरबा।

**अख़बार** - पु० [अ] समाचार-पत्र। —नवीस - संपादक।

**अखरना** - अ० [हिं] अनुचित या कष्टदायक जान पड़ना, खलना, बुरा लगना।

**अखरा** - 1. पु० [हिं] भूसी मिला हुआ जौ का आटा; अक्षर; 2. वि० झूठा, बनावटी, कृत्रिम, जो खरा न हो।

**अखरावट** - स्त्री० [हिं] वर्णमाला।

**अखरोट**- - पु० [हि] बादाम और काजू की किस्म का एक मेवा। यह भूटान व अफ़गानिस्तान के पहाड़ों पर होता है।

**अखर्व** - वि० [सं] जो छोटा न हो, बहुत बड़ा।

**अखाड़ा** - पु० [हिं] कुश्ती लड़ने या व्यायाम करने का स्थान; साधुओं की मंडली या निवासस्थान।

**अखात** - पु० [सं] ज़मीन के अंदर गया हुआ समुद्र का कुछ भाग, उपसागर, खाड़ी।

**अखाद्य** - वि० [सं] जो खाने योग्य न हो।

**अखिल** - 1. वि० [सं] जो टूटा न हो; अखंड, सारा; 2. पु० विश्व, संसार। यौ० अखिलेश - ईश्वर।

**अखीन** - वि० [हिं] जो क्षीण न हो।

**अख़ीर** - पु० [अ] अंत, छोर।

**अखूट** - वि० [हिं] जो कम न हो, अक्षय, बहुत; अखंड, जिसका छोर न हो।

**अखेट** - पु० [हि] शिकार करना, शिकार खेलना।

**अखै** † - वि० [अव] जिसका क्षय न हो, अविनाशी।

**अखोर** - 1. वि० [देश] सज्जन; सुंदर; निर्दोष; 2. [फ़ा] निकम्मा, बुरा, तुच्छ; 3. पु० कूड़ा-करकट; निकम्मी चीज़; ख़राब घास।

**अखोह** - पु० [हिं] ऊबड़-खाबड़ भूमि।

**अखौट** / **अखौटा** - पु० [देश] चक्की के ऊपर की खूटी जिसके सहारे पाट घूमता है।

**अख्यात** - वि० [सं] जो मशहूर न हो।

**अख्यायिका** - स्त्री० [सं] कहानी, क़िस्सा।

**अग** - 1. वि० [सं] न चलनेवाला ; 2. पु० पेड़ ; पर्वत ; सूर्य ; साँप ।

**अगज** - 1. वि० [सं] पर्वत से उत्पन्न ; 2. पु० हाथी ; शिलाजीत ।

**अगटना** - अ० [हिं] जमा होना, इकट्ठा होना ।

**अगड़** - पु० [हिं] अकड़, ऐंठ, दर्प । —धत्ता - वि० लंबा-तगड़ा ; ऊँचा ; श्रेष्ठ ; बड़ा ।

**अगणित** - वि० [सं] जिनकी गिनती न हो सके, अनगिनत ।

**अगण्य** - वि० [सं] न गिनने योग्य, तुच्छ ।

**अगति** - स्त्री० [सं] दुर्दशा, ख़राबी ; मृत्यु के बाद की बुरी दशा ; गति का न होना ।

**अगतिक** - वि० [सं] जिसका कहीं ठिकाना न हो, निराश्रय ; मरने पर जिसकी अंत्येष्टि-क्रिया आदि न हुई हो ।

**अगती** - वि० [स] पापी, दुराचारी ।

**अगद** - पु० [सं] निरोग ; दवा ।

**अगम** - वि० [सं] जहाँ कोई जा न सके, दुर्लभ ; अपार ; जो जल्दी समझ में न आवे ।

**अगमन** † - क्रि० [हिं] आगे, पहले, आगे से, पहले से । जैसे, 'तब अगमन है गोरा मिला ।'—जायसी ।

**अगर** - 1. पु० [हिं] एक सुगंधित लकड़ीवाला वृक्ष ; ऊद ; 2. अव्य० [फ़ा] यदि, जो । **मु०**— मगर करना - आगा-पीछा करना ।

**अगरचे** - अव्य० [फ़ा] यद्यपि, गोकि ।

**अगरना** - अ० [देश] आगे होना, आगे बढ़ना । जैसे, 'प्यारी अगरी चली हरि धाये ।'—गिरिधरदास ।

**अगरी** - स्त्री० [देश] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोढ़ा लगाकर डाला रहता है, सिटकनी; बुरी बात, अनुचित बात ।

**अगरु** - पु० [सं] अगरु नाम की सुगंधित लकड़ी, ऊद, चंदन ।

**अगरो** † - वि० [ब्र] आगे का, अगला ; बड़ा ; कुशल, चतुर ; अधिक ।

**अगला** - वि० [हिं] आगे या सामने का ; पहले का ; पुराना ; आगामी, आनेवाला ।

**अगवना** - अ० [हि] स्वागत के लिए आगे बढ़ना ; उद्यत होना ; सँभालना ; सहना ।

**अगवाई** - 1. स्त्री० [हिं] स्वागत, अभ्यर्थना ; 2. पु० अगुआ ।

**अगवाड़ा** - पु० [हि] घर के आगे का भाग ।

**अगवान** - पु० [हिं] स्वागत करनेवाला । जैसे, 'सहित बरात राव सनमाना । आयसु माँगि फिरे अगवाना ।'—तुलसी ।

**अगवानी** - स्त्री० [हिं] अतिथि से आदर-सहित मिलना, अभ्यर्थना, स्वागत करना ।

**अगस्त्य** - पु० [सं] एक प्रसिद्ध ऋषि ; एक प्रसिद्ध नक्षत्र , एक पेड़ जिसमें लाल या सफ़ेद अर्धचंद्राकार फूल होते है ।

**अगहन** - पु० [हि] हेमंत ऋतु का पहला महीना, मार्गशीर्ष ।

**अगहनिया** } **अगहनी** } वि० [हिं] अगहन में होनेवाला (धान) ।

**अगाऊ** - वि० [हिं] किसी काम के लिए पहले दिया गया धन, अग्रिम, पेशगी ।

**अगाड़** - पु० [हिं] हुक्के की नली ।

**अगाड़ी** - क्रि० [हिं] भविष्य में ; सामने, आगे ; पहले ।

**अगाध** - वि० [सं] बहुत गहरा ।

**अगारी** - क्रि० [हिं] आगे ।

**अगाह** - 1. वि० [हिं] अथाह, बहुत गहरा ; गंभीर ; बहुत ; 2. वि० [फ़ा] विदित, प्रकट ।

**अगिन** - स्त्री० [हिं] अग्नि, आग ; गौरैया के आकार की एक छोटी चिड़िया ; अगिया घास जिसमें नीबू की-सी महक होती है ।

**अगियाना** - अ० [हिं] आग सुलगाना ; शरीर में जलन होना ।

**अगियार** } **अगियारी** } स्त्री० [हिं] आग में सुगंधित द्रव्य डालकर की जानेवाली पूजा, हवन ; पारसियों का मंदिर ।

**अगुआ** } **अगुवा** } पु० [हिं] नेता, मुखिया, प्रधान, पथप्रदर्शक ।

**अगुआना** - 1. अ० [हि] अगुआ बनना, आगे चलना ; बढ़ना ; 2. स० अगुआ बनाना ।

**अगुण** - 1. वि० [सं] सत्व-रज-तम आदि गुणरहित ; मूर्ख ; 2. पु० अवगुण, दोष ।

**अगुरु** - 1. वि० [सं] जो भारी न हो ; जिसने गुरु से उपदेश न लिया हो ; लघु या ह्रस्व वर्ण ; 2. पु० अगरु ।

**अगूढ** - वि० [सं] स्पष्ट ; आसान ।

**अगेह** - वि० [सं] बेठिकाना ; बेघर-बार ।

**अगोचर** - वि० [सं] इंद्रियों के द्वारा जिसका अनुभव न हो ; इंद्रियातीत ।

**अगोट** - पु० [हिं] ओट, आड़ ; आश्रय, आधार ।

**अगोटना** - स० [हिं] रोकना ; पहरे में रखना; छिपाना ; चारों ओर से घेरना ; अंगीकार करना ; पसंद करना ।

**अगोरना** - स० [देश] राह -देखना ; रखवाली करना ; रोकना ।

**अगोरिया** - पु० [देश] रखवाली करनेवाला, पहरेदार ।

**अगौहैं** † - क्रि० [हिं] आगे की ओर ।

**अग्नि** - स्त्री० [सं] आग, पंच भूतों में से एक ; ताप ; प्रकाश ; औषधि विशेष ।

**अग्निकर्म** - पु० [सं] हवन ; शवदाह ।

**अग्निकोण** - पु० [सं] पूर्व और दक्षिण का कोना ।

**अग्निगर्भ** - पु० [सं] सूर्यकांत मणि, आतिशी शीशा ।

**अग्निजिह्व** - पु० [सं] देवता ।

**अग्निजिह्वा** - स्त्री० [सं] आग की लपट ।

**अग्निदाह** - पु० [स] जलाना ; शवदाह ।

**अग्निदीपक** - वि० [सं] पाचन शक्ति बढ़ानेवाला ।

**अग्निपरीक्षा** - स्त्री० [सं] आग या जलता लोहा आदि हाथ में लेकर अपनी निर्दोषिता की परीक्षा देना ; बहुत कठिन परीक्षा या जाँच ।

**अग्निमांद्य** - पु० [सं] भूख न लगने की बीमारी, मंदाग्नि ।

**अग्निष्टोम** - पु० [सं] एक यज्ञ ।

**अग्न्यस्त्र** - पु० [स] तोप, बंदूक ।

**अग्य** † - 1. पु० [हि] कुछ नहीं जाननेवाला ; 2. वि० मूर्ख ।

**अग्यारी** - स्त्री० [हि] धूपदान ; अग्निकुंड ।

**अग्र** - 1. पु० [सं] आगे का सिरा ; शिखर ; 2. क्रि० आगे, सामने ।

**अग्रगामी** - पु० [सं] नेता, अगुआ ।

**अग्रज** - 1. पु० [सं] बड़ा भाई ; नेता ; ब्राह्मण ; 2. वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।

**अग्रजन्मा** - पु० [सं] बड़ा भाई ; ब्राह्मण ; ब्रह्मा ।

**अग्रणी** - 1. वि० [सं] आगे का ; 2. पु० मुखिया ।

**अग्रदूत** - पु० [सं] हरकारा ।

**अग्रभाग** - पु० [सं] सिरा, नोक, छोर ।

**अग्रवर्त्ती** - वि० [स] अगुआ ।

**अग्रसोची** - पु० [सं] दूरदर्शी, आगे का विचार करनेवाला ।

**अग्रसर** - 1. वि० [सं] आगे बढ़ा हुआ ; 2. पु० नेता, मुखिया ।

**अग्रहायण** - पु० [सं] अगहन, मार्गशीर्ष ।

**अग्रहार** - पु० [स] ब्राह्मण को राजा की ओर से दान दी हुई भूमि ।

**अग्राह्य** - वि० [स] न लेने योग्य ; न मानने लायक़ ।

**अग्रिम** - वि० [सं] अगाऊ, पेशगी ; श्रेष्ठ, उत्तम ; आगामी ।

**अघ** - पु० [सं] पाप ; दुख; व्यसन; दोष ।

**अघट** - वि० [सं] जो कार्य में परिणत न हो सके ; कठिन ; बेमेल ; जो कम न हो, अक्षय ।

**अघटित** - वि० [सं] असंभव, अभूतपूर्व ; अवश्य होनेवाला, अनिवार्य । जैसे, 'काल करम गति अघटित जानी ।' —तुलसी ।

**अघवाना** - स० [हिं] भरपेट खिलाना, संतुष्ट करना ।

**अघात** - 1. पु० [हिं] चोट ; प्रहार ; 2. वि० खूब, अधिक ।

**अघाना** - 1. अ० [हिं] तृप्त होना, संतुष्ट होना ; किसी काम से जी उकताना, थकना ; 2. स० संतुष्ट या तृप्त करना ।

**अघारि** - पु० [सं] पापनाशक ; श्री कृष्ण ।

**अघोर** - 1. वि० [सं] जो भीषण न हो ; बड़ा भयंकर ; 2. पु० एक सम्प्रदाय जिसके लोग मद्य-मांस का सेवन करते हैं और घृणा को जीतना अपना उद्देश्य मानते है ; अघोरपंथी ।

**अघोरी** - 1. पु० [सं] अघोर पंथ का अनुयायी ; 2. वि० घृणित, घिनौना । जैसे, 'एते पै नहिं तजत अघोरी कपटी कंस कुचाली ।'—सूर ।

**अघोष** - 1 वि० [सं] नीरव, निःशब्द ; 2. पु० वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण तथा श, ष और स ।

**अचंभा** - पु० [हिं] आश्चर्य, अचरज, विस्मय ।

**अचक** - 1. क्रि० [देश] अचानक ; 2. पु० विस्मय ; 3. वि० भरपूर, पूर्ण, बहुत ।

**अचकन** - पु० [हिं] लम्बा अंगा ।

**अचक्का** - पु० [हि] अनजान, अपरिचित ।

**अचगरी** - स्त्री० [हि] शरारत, पाजीपन । जैसे, 'माखन दधि मेरो सब खायो बहुत अचगरी कीन्हीं ।'—सूरदास ।

**अचना** † - स० [हिं] आचमन करना ; पीना ।

**अचपली** - स्त्री० [हि] अठखेली, किलोल, क्रीड़ा ।

**अचभौन** † - पु० [अव] आश्चर्य ।

**अचर** - 1. वि० [सं] जड़, स्थावर ; 2. पु० पर्वत ।

**अचरज** - पु० [हिं] आश्चर्य, तअज्जुब ।

**अचल** - 1. वि० [सं] जो न चले, स्थिर ; 2. पु० पर्वत ।

**अचला** - 1. वि० [सं] जो न चले ; 2. स्त्री० भूमि ; 3. पु० संन्यासियो का बिना आस्तीन का लम्बा ढीला कुरता ।

**अचवन** † - पु० [हिं] आचमन, पीना ।

**अचवना** † - स० [हि] आचमन करना, भोजन के बाद हाथ-मुँह धोना ; पीना ; छोड़ना, खो बैठना ।

**अचवाई** † - वि० [हिं] धोया हुआ ; स्वच्छ ।

**अचाक** † - क्रि० [हिं] अचानक, एकाएक ।

**अचानक** - क्रि० [हिं] सहसा, अकस्मात्, दैवयोग से ।

**अचार** - पु० [फ़ा] मसालों के साथ तेल में रखा हुआ आम आदि फल; चिरौंजी का पेड़ और फल ; व्यवहार ।
**अचाह** - स्त्री० [हिं] अरुचि, अनिच्छा ।
**अचिंतनीय** - वि० [सं] जो सोचा न जा सके ; अज्ञेय ।
**अचिंतित** - वि० [सं] बिना सोचा-विचारा; आकस्मिक ; जिसपर ध्यान न दिया गया हो ।
**अचिंत्य** - वि० [सं] कल्पनातीत; जिसका अनुमान न किया जा सके; आशातीत ।
**अचित्** - पु० [सं] जड़, चेतनाहीन, प्रकृति ।
**अचिर** - 1. क्रि० [सं] जल्दी ; तुरत, उसी समय ; 2. वि० थोड़े समय तक रहनेवाला ।
**अचीता** - वि० [हि] जिसके लिए पहले सोचा न गया हो ; आकस्मिक ; बहुत निश्चित, बेफ़िक्र ।
**अचूक** - वि० [हि] जो न चूके, अवश्य फलदायी ; भ्रमरहित ।
**अचेत** - वि० [सं] चेतनारहित, बेहोश ; व्याकुल ; मूर्ख ; जड़ ।
**अचेतन** - वि० [सं] जिसमें सुख दुखादि का अनुभव करने की शक्ति न हो, ज्ञान या संज्ञारहित ; मूर्छित ।
**अचैतन्य** - वि० [सं] ज्ञानहीन ; अनात्मा ; जड़ ।
**अचैन** - 1. पु० [हि] व्याकुलता ; 2. वि० अशांत ।
**अचोखा** - वि० [हिं] जो खरा या पक्का न हो ।
**अच्छ** † - 1. पु० [हि] आँख ; स्फटिक ; रावण-पुत्र ; 2. वि० स्वच्छ, निर्मल ; अच्छा ।
**अच्छत** † - 1. पु० [हिं] बिना टूटे चावल, अक्षत ; 2. वि० अखंडित ।
**अच्छय** - दे० 'अखै' ।
**अच्छर** - पु० [हि] अक्षर ; ब्रह्म, ईश्वर ।
**अच्छा** - 1. वि० [हि] बढ़िया, श्रेष्ठ ; स्वस्थ, तंदुरुस्त ; 2. पु० श्रेष्ठ पुरुष ; गुरुजन ; 3. क्रि० अच्छी तरह, खूब । मु० — **आना** - मौके पर आना । — **दिन** - सुख-सम्पत्ति का समय ।
**अच्छाई** - स्त्री० [हि] अच्छापन ।
**अच्छि** † - स्त्री० [हि] आँख ।
**अच्छोत** † - वि० [हि] अधिक, बहुत ।
**अच्छोहिनी** - स्त्री० [हि] अक्षौहिणी सेना ।
**अच्युत** - 1. वि० [सं] जो अपने स्थान से न गिरे ; 2. पु० विष्णु ; कृष्ण ।
**अछक** † - वि० [हिं] जो छका न हो, अतृप्त ; भूखा ।
**अछकना** - 1. अ० [हिं] तृप्ति न होना ; 2. क्रि० असंतुष्ट ।
**अछत** † - क्रि० [हिं] रहते हुए, उपस्थिति में ; सामने ; सिवाय ।
**अछन** † - 1. पु० [ब्र] दीर्घकाल, चिरकाल ; 2. क्रि० धीरे धीरे ।
**अछना** † - अ० [अव] उपस्थित रहना, मौजूद रहना ।
**अछय** † - वि० [हि] नाशरहित, अखंड ।
**अछरा** † - 1. स्त्री० [अव] अप्सरा ; देवांगना ; 2. पु० अक्षर, वर्ण ।
**अछरौटी** - स्त्री० [हि] वर्णमाला ।
**अछवाना** † - स० [अव] साफ़ करना, सँवारना ।
**अछवानी** - स्त्री० [हिं] कुछ मसालों को पीसकर घी में पकाया हुआ चूर्ण जो प्रसूता स्त्रियों को खिलाते हैं ।
**अछाम** † - वि० [अव] मोटा, हृष्ट-पुष्ट, बलवान ।
**अछूत** - वि० [हिं] जिसे अपवित्र मानकर लोग न छुएँ ; नया, ताज़ा ।

**अछूता** - वि० [हिं] जो छुआ न गया हो; नया, ताज़ा।
**अछेद** † - वि० [हि] जिसे छेद न सके, अभेद्य।
**अछेद्य** - वि० [सं] जो तोड़ा न जा सके; अविनाशी।
**अछेव** † - वि० [ब्र] दोषरहित, बेदाग़।
**अछेह** † - वि० [ब्र] निरंतर, लगातार; बहुत अधिक।
**अछोप** † - वि० [हिं] आच्छादनरहित, नंगा; तुच्छ।
**अछोभ** † - वि० [हि] क्षोभरहित; निर्भीक; शांत; स्थिर।
**अछोर** † - वि० [सं] अनंत, असीम; बहुत अधिक।
**अछोह** - पु० [हिं] शान्ति, स्थिरता; निर्दयता।
**अज** - 1. वि० [सं] जिसका जन्म न हो, स्वयंभू; 2. पु० ईश्वर; ब्रह्म; कामदेव; सूर्यवंश का एक राजा; बकरा; माया; 3. क्रि० अब, आज।
**अजगर** - पु० [सं] एक प्रकार का बहुत मोटा और बड़ा साँप।
**अजगरी** - स्त्री० [हि] अजगर के समान बिना परिश्रम की जीविका; बिना परिश्रम की वृत्ति।
**अजगव** † - पु० [सं] शिवजी का धनुष, पिनाक।
**अजगुत** † - पु० [हि] जो युक्तियुक्त न हो, असाधारण बात, अद्भुत या विलक्षण बात।
**अजगूता** - पु० [हिं] अचंभे की बात।
**अज़ग़ैब** † - वि० [फ़ा] अलक्षित स्थान; अपरिचित जगह।
**अज़ग़ैबी** - वि० [फ़ा] छिपा हुआ, गुप्त; अचानक होनेवाला।
**अजन** - वि० [सं] जन्म-बंधन से मुक्त; अनादि; निर्जन, सुनसान।
**अजनबी** - वि० [फ़ा] अपरिचित, अज्ञात; नया आया हुआ, परदेशी।
**अजन्मा** - 1 वि० [स] जन्मरहित, अनादि; नित्य; 2. पु० ब्रह्म।
**अजपा** - 1. वि० [सं] जो जपा न जा सके; जिसका उच्चारण न किया जाय; 2. पु० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का 'हंस' मंत्र; गड़रिया; साधना या उपासना की एक दशा। जैसे, 'जाप मरै अजपा मरै अनहद भी मरि जाय।'—कबीर।
**अजब** - वि० [अ] विलक्षण, अद्भुत, विचित्र।
**अज़मत** - स्त्री० [अ] प्रताप; महत्व; चमत्कार।
**अज़माना** - स० [अ] तजर्बा करना; परीक्षा करना।
**अजय** - 1. पु० [सं] पराजय, हार; 2. वि० जो जीता न जा सके।
**अजया** † - स्त्री० [सं] विजया, भाँग; बकरी।
**अजर** - 1. वि० [सं] जो बूढ़ा न हो; सदा ज्यो का त्यो रहनेवाला, 2. पु० देवता।
**अजरायल** - वि० [हिं] बलवान, स्थायी, टिकाऊ, जो जीर्ण न हो।
**अजल** - स्त्री० [अ] मृत्यु।
**अज़ल** - पु० [अ] अनादि काल।
**अजवायन** - पु० [हिं] मसाले का एक प्रकार; एक औषधि, यवानी।
**अजस** † - पु० [हि] अपयश, अपकीर्ति, बदनामी।
**अजस्र** - 1. क्रि० [सं] सदा, हमेशा, निरंतर, बार-बार; 2. वि० बहुत अधिक, अपरिमित।

**अज़हद** - क्रि० [फ़ा] हद से ज़्यादा, अत्यधिक।
**अजहुं** † - क्रि० [हि] अभी तक, आज भी।
**अजा** - स्त्री० [सं] बकरी; दुर्गा।
**अजाचक** † - पु० [हिं] न माँगनेवाला।
**अजात** - वि० [स] जो जन्मा न हो, जिसकी कोई जाति न हो; जाति से निकाला हुआ।
**अजातशत्रु** - 1. वि० [स] जिसका कोई शत्रु न हो; 2. पु० युधिष्ठिर; शिव; मगध का एक राजा।
**अजान** - 1. वि० [हिं] अनजान, नासमझ; अपरिचित।
**अज़ान** - पु० [अ] मसजिद में नमाज़ की पुकार; बाँग।
**अजामिल** - पु० [सं] एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय नारायण का नाम लेकर स्वर्ग गया था।
**अज़ाब** - पु० [अ] दुःख, संकट; पाप।
**अजाय** † - वि० [फ़ा] बेजा, अनुचित।
**अजायब** - पु० [अ] (अजब का बहुवचन) विचित्र पदार्थ।
**अजायबख़ाना** / **अजायबघर** } पु० [अ] अद्भुत वस्तुओ का सग्रहालय, म्यूज़ियम्।
**अजार** - पु० [देश] बीमारी।
**अजिऔरा** † - पु० [देश] आजी या दादी के पिता का घर।
**अजित** - 1. वि० [सं] जो जीता न गया हो; 2. पु० विष्णु; शिव; बुद्ध।
**अजितेंद्रिय** - वि० [सं] जिसने इंद्रियो को न जीता हो, इंद्रिय-लोलुप, विषयासक्त।
**अजिन** - पु० [स] मृगछाला, चर्म।
**अजिर** † - पु० [स] आँगन, सहन; वायु, हवा; शरीर; इंद्रियो का विषय; मेढ़क।
**अजी** - अव्य० [हि] सम्बोधन शब्द, जी। जैसे, 'अजी जाने दो।'
**अज़ीज़** - 1. वि० [अ] प्रिय, प्यारा; 2. पु० संबंधी; दोस्त।
**अज़ीज़दारी** - स्त्री० [अ] रिश्तेदारी।
**अजीत** - वि० [हि] जो जीता न जा सके।
**अजीब** - वि० [अ] विचित्र, अनोखा।
**अज़ीम** - 1. पु० [अ] वृद्ध और पूज्य; 2. वि० बहुत बड़ा, विशाल, महान।
**अजीर्ण** - पु० [स] अपच, बदहजमी।
**अजुगत** - पु० [हि] अनुचित बात।
**अजुर** † - वि० [देश] जो न जुड़े; अलभ्य।
**अजू** † - अव्य० [ब्र] अजी।
**अजूबा** - वि० [अ] अद्भुत, अजीब।
**अजूटा** † - 1. वि० [हिं] न मिला हुआ; 2. पु० मज़दूरी।
**अजूह** † - पु० [हि] युद्ध; समूह।
**अजेय** - वि० [स] जिसे कोई जीत न सके, अजीत।
**अजोग** - वि० [हिं] बेजोड़; अनुपयुक्त; कुयोग।
**अजोरना** † - स० [देश] बटोरना; हरण करना।
**अजौं** † - क्रि० [ब्र] अब तक, अब भी।
**अज्ञ** - पु० [स] अज्ञानी, मूर्ख; जड़।
**अज्ञता** - स्त्री० [स] मूर्खता; जड़ता; नादानी।
**अज्ञात** - 1. वि० [सं] अनजान, अपरिचित; 2. क्रि० बिना जाने।
**अज्ञातवास** - पु० [स] छिपकर रहना।
**अज्ञातयौवना** - स्त्री० [सं] अपने यौवन के आगमन को न जाननेवाली नायिका, मुग्धा नायिका।
**अज्ञेय** - वि० [सं] जो जाना न जा सके।
**अज्यौं** † - क्रि० [अव] आज भी।
**अझर** † - वि० [हिं] जो न झरे, जो न गिरे, जो न बरसे।
**—ंबर** - पु० [हिं] ढेर, समूह; अटाला।

**अट** - स्त्री० [हि] शर्त ; प्रतिबंध, रोक ।
**अटक** - स्त्री० [हि] रोक, रुकावट ; अड़चन ; संकोच ; उलझन ।
**अटकना** - अ० [हि] रुकना ; उलझना, फँसना ; झगड़ा करना ।
**अटकनी** † - स्त्री० [देश] किवाड़ की आड़ ; सिटकिनी, अटकानेवाली चीज़ ।
**अटकल** - स्त्री० [हिं] अनुमान, कल्पना, अंदाज़। **मु०** — लगाना - अंदाज़ करना ।
**अटकल पच्चू** - 1. पु० [हि] मोटा अंदाज़, स्थूलानुमान, कल्पना ; 2. वि० ऊटपटाग ।
**अटका** - 1. पु० [देश] जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात और धन ; 2. स्त्री० अटक, रुकावट ।
**अटकाना** - स० [हि] रोकना, फँसाना; विलंब करना ।
**अटकाव** - पु० [हि] रोक, रुकावट ।
**अटखेल** - पु० [हि] उलझानेवाला खेल, तमाशा ।
**अटखेली** - स्त्री० [हि] खिलवाड़ ; चंचलता ; ढिठाई ।
**अटन** - पु० [सं] घूमना, फिरना ।
**अटना** - अ० [हि] घूमना, फिरना ; काफ़ी होना ; आड़ करना, रोकना । जैसे, 'धूल में अटना' - धूल में सन जाना ।
**अटपट** - वि० [हि] बेठिकाने का, बेसिर-पैर का ; जटिल ; निराला ; टेढ़ा ।
**अटपटाना** - अ० [हि] लड़खड़ाना; चूकना ; हिचकना ; अकुलाना ।
**अटपटी** - 1. स्त्री० [हि] नटखटी, शरारत ; 2. वि० बेढंगी ; टेढ़ी ।
**अटब्बर** - पु० [हि] आडंबर, दर्प ।
**अटम्बर** - पु० [हि] कपड़े का ढेर ।
**अटरसटर** - क्रि० [हि] अंडबंड, अंटसंट ।
**अटल** - वि० [स] जो न टले, स्थिर ।
**अटवी** - स्त्री० [स] जंगल, कानन।
**अटा** † - 1. स्त्री० [हिं] घर के ऊपर की अटारी, छत ; 2. पु० ढेर, राशि, समूह ।
**अटाउ** - पु० [हिं] बुराई, शरारत ।
**अटाटूट** - वि० [हिं] बिलकुल, बेशुमार ।
**अटारी** - स्त्री० [हि] घर के ऊपर की छत या कोठरी, कोठा ।
**अटूट** - वि० [हिं] न टूटनेवाला, मज़बूत ; अजेय ; अखंड ; लगातार ।
**अटेरन** - पु० [हि] लकड़ी का एक यंत्र जिसपर सूत लपेटा जाता है ।
**अटेरना** - स० [हि] अटेरन से सूत की आँटी बनाना ; बेहद शराब पीना ।
**अटोक** † - वि० [हि] बिना रोक-टोक ।
**अटोल** - पु०[देश] असभ्य, अनाड़ी, जंगली ।
**अट्टसट्ट** - वि० [हि] ऊटपटाँग, व्यर्थ का ।
**अट्टहास** - पु० [स] खूब ज़ोर की हँसी, ठट्ठा मारकर हँसना, ठहाका ।
**अट्टालिका** - स्त्री० [स] बड़ा और ऊँचा मकान ; अटारी, कोठा ।
**अट्टी** - स्त्री० अटेरन पर लपेटी हुई ऊन या सूत की लच्छी, सूत या ऊन की गुंडी ।
**अठंग** † - पु० [हि] योग के आठ अंग, अष्टांग योग ।
**अठकौशल** - पु० [हि] गोष्ठी, पंचायत ; सलाह, मंत्रणा ।
**अठखेली** - स्त्री० [हि] विनोद, क्रीड़ा ; चपलता, चुलबुलापन ; मस्तानी चाल ।
**अठपाव** † - पु० [हिं] उपद्रव, ऊधम, शरारत ।
**अठलाना** - अ० [हि] ऐंठ दिखलाना, इतराना; नखरा करना; मस्ती दिखाना; जान-बूझकर छेड़छाड़ करना ; उपहास करना ।

**अठवना** † - अ० [हि] जमना, ठनना।
**अठवाँसा** - 1. वि० [हि] आठवें महीने में जो पैदा हुआ हो; 2. पु० सीमंत संस्कार; आषाढ़ से माघ तक समय-समय पर जोता जानेवाला ईख का खेत।
**अठवारा** - पु० [हि] सप्ताह, हफ़्ता।
**अठाई** † - वि० [हि] ऊधमी, नटखट, शरारती।
**अठाना** † - स० [हि] सताना, छेड़ना।
**अठारहभार** - पु० [हि] संपूर्ण वनस्पति-जगत। जैसे, 'ज्यो माषी मधु काढ़िले सोधि अठारह भार।'—रज्जब।
**अठिलाना** - अ० [हि] दे० 'अठलाना'।
**अठेल** - वि० [हि] बलवान्; जो ठेला न जा सके।
**अठोठ** - पु० [हि] ठाठ, आडंबर; पाखंड; खोज।
**अठोठना** - स० [हि] खोजना, ढूँढ़ना।
**अड़ंग** - पु० [देश] मंडी; हाट; बाज़ार; रुकावट।
**अड़ंगा** - पु० [हि] टांग अड़ाना, रुकावट।
**अड़** - पु० [हिं] हठ, ज़िद; झगड़ा, विरोध, चेष्टा।
**अड़गड़ा** - पु० [हि] बैलगाड़ियो के ठहरने का स्थान; बैलो या घोड़ों की बिक्री का स्थान।
**अड़गोड़ा** - पु० [हिं] बदमाश जानवरो के गले में बाँधी जानेवाली लकड़ी।
**अड़तल** - पु० [हि] ओट; बहाना, हीला-हवाला।
**अड़तला** † - पु० [देश] बचानेवाला, रक्षक; आश्रय।
**अड़दार** - वि० [हि] अड़ियल, रुकनेवाला; मस्त।
**अड़ना** - अ० [हिं] रुकना, ठहरना; हठ करना, अटकना।
**अड़बंग** - पु० [हि] टेढ़ा-मेढ़ा; विचित्र; ऊँचा-नीचा; कठिन।
**अड़ाना** - 1. स० [हिं] टिकाना, रोकना, ठहराना; किसी चीज़ को गिरने से रोकना; भरना; गिराना, ढरकाना; 2. पु० थूनी; गिरती हुई दीवाल या छत को गिरने से रोकनेवाली लकड़ी।
**अड़ानी** - 1. स्त्री० [देश] छाता, बड़ा पंखा; 2. पु० अड़गा; कुश्ती का एक दाँव।
**अड़ार** - पु० [हिं] राशि; लकड़ी की दुकान।
**अडिग** - वि० [हि] न डिगनेवाला, निश्चल।
**अड़ियल** - वि० [हिं] चलते चलते रुक जानेवाला; सुस्त; हठी। जैसे, 'अड़ियल टट्टू' - रुक-रुककर काम करनेवाला।
**अड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] ज़िद; रोक; मौका; 2. वि० हठी।
**अडोठ** † - वि० [देश] जो दिखाई न दे, छिपा हुआ, गुप्त।
**अड़ूसा** - पु० [हिं] कफ़ नाशक एक पौधा, वासा।
**अड़ेआना** † - अ० [देश] बाधक होना, मार्ग रोकना।
**अड़ेयाना** - स० [हि] आश्रय देना, रक्षा करना।
**अड़ोल** - वि० [हि] जो हिले नहीं, स्थिर।
**अड़ोस-पड़ोस** - पु० [हि] आस-पास, क़रीब।
**अड्डा** - पु० [हिं] ठहरने का स्थान; इकट्ठा होने की जगह; प्रधान या केंद्र-स्थान; करघा। **मु०** — जमाना - हमेशा रहना। अड्डे पर आना - अपने स्थान पर पहुँचना। अड्डे पर बोलना - किसी ख़ास जगह पर ही काम करना।
**अढ़तिया** - पु० [हिं] आढ़त करनेवाला, दलाल।

**अढ़न** - पु० [देश] आज्ञा, मर्यादा।
**अढ़वना** - स० [देश] आज्ञा देना, काम में लगाना।
**अढ़ाई** - वि० [हि] दो और आधा। **मु०** — चावल की खिचड़ी अलग पकाना - सबसे अलग रहना।
**अढ़िया** - स्त्री० [देश] काठ, पत्थर या लोहे का बर्तन।
**अढ़ुकना** - अ० [देश] ठोकर खाना।
**अढ़ैया** - पु० [हि] आज्ञा देनेवाला; ढाई सेर का बाट।
**अणाद** † - पु० [देश] आनंद, सुख।
**अणि** - स्त्री० [सं] पहिये की धुरी की कील; नोक; बाढ़; सीमा।
**अणिमा** - स्त्री० [सं] अष्टसिद्धियों में पहली सिद्धि।
**अणीय** - वि० [सं] अति सूक्ष्म, बारीक।
**अणु** - 1. पु० [सं] छोटा टुकड़ा या कण; रजकण; 2. वि० अति सूक्ष्म, जो दिखाई न दे।
**अणुबम** - पु० [हि] अणु की शक्ति से बनाया हुआ एक प्रकार का भयकर बम।
**अणुवीक्षण** - पु० [सं] सूक्ष्म-दर्शक यंत्र, खुर्दबीन; दोष निकालना।
**अतंक** † - पु० [हि] कष्ट।
**अतंद्रिक** - वि० [सं] आलस्यरहित, चुस्त।
**अतः** - क्रि० [स] इस वजह से, इसलिए।
**अतएव** - क्रि० [स] इसलिए, इस कारण।
**अतनु** - 1. वि० [सं] शरीररहित; मोटा; 2. पु० कामदेव।
**अतर** - पु० [अ] फूलों की सुगंधि का सार, इत्र। —दान - पु० [फ़ा] इत्र रखने का पात्र।
**अतर्कित** - वि० [सं] आकस्मिक; अविचारित; एकाएक।
**अतर्क्य** - वि० [सं] जिसपर तर्क-वितर्क न हो सके।
**अतल** - 1. पु० [सं] सप्त पातालों में दूसरा पाताल; 2. वि० गहरा; बेपेन्दे का।
**अतलस** - स्त्री० [अ] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
**अतवान** † - वि० [देश] बहुत, अधिक।
**अतसी** - स्त्री० [सं] अलसी, तीसी।
**अताई** - वि० [अ] दक्ष, कुशल; धूर्त, चालाक; अशिक्षित।
**अति** - 1. वि० [स] बहुत, अधिक; 2. स्त्री० अधिकता; सीमा का उल्लंघन।
**अति-कर** - पु० [सं] साधारण कर के अतिरिक्त कर।
**अतिकाल** - पु० [सं] विलंब, देर; कुसमय।
**अतिक्रम** - पु० [स] नियम या मर्यादा का उल्लंघन, विपरीत व्यवहार।
**अतिक्रमण** - पु० [स] सीमा से बाहर जाना, उल्लंघन, पार करना।
**अतिक्रान्त** - वि० [सं] सीमा के बाहर गया हुआ; बीता हुआ।
**अतिगंध** - पु० [स] चंपा का पेड़ व फूल।
**अतिगत** - वि० [स] बहुत अधिक।
**अतिगति** - स्त्री० [स] उत्तम गति, मोक्ष।
**अतिथि** - पु० [स] घर में आया हुआ अज्ञात व्यक्ति; मेहमान; एक स्थान पर एक ही रात ठहरनेवाला संन्यासी; यज्ञ में सोमलता लानेवाला। —यज्ञ - अतिथि का आदर-सत्कार।
**अतिदेश** - पु० [सं] एक स्थान के धर्म व नियम का दूसरे स्थान पर आरोपण; और विषयों में भी काम आनेवाला नियम।
**अतिरंजन** - पु० [सं] कोई बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अत्युक्ति; अत्यंत प्रसन्नता।

**अतिरथी** - पु० [सं] जो अकेले बहुतो से लड़े, युद्ध-कुशल ।
**अतिरिक्त** - 1. वि० [स] आवश्यकता से अधिक ; बाक़ी, अलग ; 2. क्रि० सिवाय, अलावा ।
**अतिरेक** - पु० [सं] अधिकता, बहुतायत ।
**अतिवाद** - पु० [स] सच्ची बात ; कड़वी बात ; डींग, शेख़ी ।
**अतिवृष्टि** - स्त्री० [स] अत्यधिक वर्षा ।
**अतिव्याप्ति** - स्त्री० [सं] किसी वस्तु या विषय के बारे में कहे हुए गुण या लक्षण का अन्य वस्तु या विषयो में भी पाया जाना ।
**अतिशय** - वि० [सं] बहुत, ज़्यादा ।
**अतिशयोक्ति** - स्त्री० [सं] बढ़ा-चढ़ाकर कहना ; एक अलंकार ।
**अतिसार** - पु० [सं] एक बीमारी जिसमें खाया हुआ पदार्थ पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है, संग्रहणी रोग ।
**अतिसै** † - वि० [हि] अतिशय ।
**अतींद्रिय** - वि० [सं] जिसका अनुभव इंद्रियो द्वारा न हो, अगोचर, अव्यक्त ।
**अतीत** - 1. वि० [सं] बीता हुआ ; मृत ; 2. क्रि० परे, बाहर ।
**अतीव** - वि० [सं] बहुत, अत्यंत ।
**अतुराई** † - स्त्री० [हि] आतुरता; चंचलता; जल्दी ।
**अतुराना** † - अ० [हि] आतुर होना ; जल्दी मचाना ; घबराना ।
**अतुल** - वि० [स] असीम, अत्यधिक ; अनुपम, बेजोड़ ।
**अतुलनीय** - वि० [स] जिसकी तुलना न की जा सके ; बहुत ज़्यादा ; अनुपम ।
**अतुलित** - वि० [स] जिसकी तुलना न की गयी हो ; अपार ; असंख्य, बेजोड़ ।
**अतुल्य** - वि० [सं] असमान ; अनुपम ।
**अतूथ** † - वि० [ब्र] अपूर्व ; विचित्र ; निराला । जैसे, 'देखो सखि अद्भुत रूप अतूथ ।'—सूर ।
**अतूल** † - वि० [हिं] अतुल ; अतुल्य ।
**अतोर** † - वि० [हि] जो न टूटे, दृढ़ ।
**अतोल** - वि० [स] बिना अंदाज़ किया हुआ ; अनुपम ; अनंत ।
**अत्त** † - स्त्री० [देश] अति, अधिकता ।
**अत्तार** - पु० [अ] इत्र या सुगंधित तेल बेचनेवाला ; यूनानी दवा बनाने या बेचनेवाला ।
**अत्यंत** - वि० [स] बहुत अधिक, बेहद ।
**अत्यंताभाव** - पु० [सं] किसी वस्तु का बिलकुल न होना ; चार प्रकार के अभावो में से एक ; तीनो कालो में असंभव ।
**अत्यय** - पु० [सं] मृत्यु, नाश ; सीमा के बाहर जाना ; दंड , कष्ट ; दोष ; कम होना ; क्षीणता को प्राप्त होना ।
**अत्याचार** - पु० [सं] अन्याय ; ज़ुल्म; पाप ।
**अत्याचारी** - वि० [स] अन्यायी ; ज़ालिम ।
**अत्युक्त** - वि० [स] बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा हुआ ।
**अत्युक्ति** - स्त्री० [स] बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करने की शैली ; एक काव्यालंकार ।
**अथई** - वि० [हि] अस्त होना, डूबना, लय होना ।
**अथक** - वि० [हि] जो न थके, घोर, अक्लांत ।
**अथना** † - अ० [हि] अस्त होना, डूबना ; नष्ट होना ; मरना ।
**अथमना** † - पु० [हि] पश्चिम दिशा ।
**अथरा** - पु० [हि] मिट्टी का चौड़ा मुँहवाला बरतन, नाँद ।
**अथर्वण** - पु० [स] अथर्व वेद ; शिव, महादेव , एक ऋषि ।

**अथल** - पु० [देश] लगान लेकर दूसरे को जोतने बोने के लिए दी गई भूमि ; बुरा स्थान ।

**अथवना** † - अ० [हिं] अस्त होना, डूबना ।

**अथाई** - 1. स्त्री० [ब्र] बैठने की जगह ; घर के सामने का चबूतरा । जैसे, 'गोप बड़े बैठ अथाइन केशव कोटि सतर अवगाही ।'—केशव । पंचायत करने का स्थान ; मंडली, सभा ; 2. वि० अस्थाई ।

**अथान** - 1. पु० [हिं] स्थान ; बुरी जगह ; 2. अ० अस्त होना ।

**अथाना** - 1. अ० [देश] अस्त होना, डूबना ; 2. स० थाह लेना ; ढूँढना ; 3. पु० अचार की खटाई ।

**अथावत** † - वि० [हिं] डूबा हुआ ।

**अथाह** - 1. वि० [हिं] जिसकी थाह न हो, बहुत गहरा ; बहुत अधिक ; अपरिमित ; गंभीर, गूढ़ ;. 2. पु० गहराई, जलाशय । **मु०** — में पड़ना - संकट में पड़ना ।

**अथिर** † - वि० [हिं] जो स्थिर न हो, चंचल ।

**अथै** - वि० [हिं] डूबा हुआ ।

**अथोर** † - वि० [हिं] थोड़ा नहीं, अधिक ।

**अदंक** - पु० [ब्र] डर, भय, आतंक । जैसे, 'नैनन ओट होत पल एकौ में मन भरति अदंक ।'—सूर ।

**अदंग** - वि० [हिं] निर्दोष; अछूता, शुद्ध ।

**अदंड** - 1. वि० [सं] जो दंड के योग्य न हो ; जिसपर कर या महसूल न लगे ; स्वेच्छाचारी, उद्दंड ; 2. पु० बिना मालगुज़ारी की मुआफ़ी भूमि ।

**अदंडनीय** - वि० [स] जो दंड देने योग्य न हो ।

**अदंड्य** - वि० [सं] जिसे दंड न दिया जा सके ; सज़ा से बरी ।

**अदंत** - वि० [सं] जिसके दाँत न हो ; बहुत थोड़ी अवस्था का, दुधमुँहा ।

**अदंभ** - 1. वि० [सं] आडंबरविहीन ; सच्चा ; निष्कपट ; प्राकृतिक ; शुद्ध ; 2. पु० शिवजी ।

**अदग** - वि० [हिं] बेदाग़, शुद्ध; निरपराध ; अछूता ।

**अदत्त** - 1. वि० [स] न दिया हुआ ; 2. पु० वह वस्तु जिसके मिलने पर भी पानेवाला ले या रख न सकता हो ।

**अदत्ता** - स्त्री० [सं] अविवाहिता कन्या, कुमारी ।

**अदद** - स्त्री० [अ] संख्या, गिनती ; संख्या का चिह्न या संकेत ।

**अदन** - 1. पु० [अ] अरब के किनारे का एक बंदरगाह । बाग़े अदन - स्वर्ग का उपवन । 2. [सं] भोजन, आहार ।

**अदना** - वि० [अ] छोटा या साधारण, तुच्छ, मामूली ।

**अदब** - पु० [अ] बड़ो के प्रति आदर, शिष्टाचार ; क़ायदा ; साहित्य ।

**अदबदाकर** - क्रि० [हिं] टेक बाँधकर ; ज़रूर, अवश्य ।

**अदभ्र** - वि० [सं] बहुत, अधिक, अपार ।

**अदम्य** - वि० [स] जो किसी प्रकार दबाया न जा सके, बहुत प्रबल या उग्र ।

**अदय** - वि० [सं] दयारहित, निर्दय, निठुर ।

**अदरक** - पु० [हिं] एक प्रकार का पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ मसाले और दवा के काम में आती है । वह सूखने पर सोंठ कहलाती है ।

**अदरना** - अ० [हिं] उठ जाना, व्यवहार से परे हो जाना, अप्रचलित हो जाना ।

**अदराना** - 1. अ० [हि] बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना ; इतराना , 2. स० आदर देकर शेखी पर चढ़ाना, घमंडी बनाना ।

**अदर्शन** - पु० [सं] जो न दिखता हो; लोप, विनाश ।

**अदर्शनीय** - वि० [सं] जो देखने के योग्य न हो, बुरा, कुरूप, भद्दा ।

**अदल** - 1. पु० [अ] न्याय, इंसाफ़; 2. वि० [सं] सेनारहित ; पत्रविहीन । —बदल - क्रि० उलटफेर, हेरफेर, परिवर्तन, बदलना ।

**अदली** † - पु० [अ] न्यायी । जैसे, 'सिवराज अदली के राज में यों राजनीति है ।'—भूषण ।

**अदवान** - स्त्री० [देश] खाट या चारपाई की बुनावट को कड़ा रखने के लिए पैताने पर छेदो मे पड़ी हुई रस्सी, ओनचन ।

**अदहन** - पु० [सं] दाल-चावल पकाने के लिए आग पर चढ़ाकर गरम किया हुआ पानी ; न जलाना ।

**अदाँत** - वि० [स] जिसके दाँत न हों; (पशु) जिसके दाँत न आये हो ; विषयासक्त , उद्दंड, अक्खड़ ।

**अदा** - 1. स्त्री० [अ] स्त्रियो का हाव-भाव, नाज़-नखरा ; 2. वि० चुकाया हुआ, चुकता, बेबाक ; जिसका पालन हुआ हो । **मु०** — करना - पालना; पूरा करना ; चुकता करना । — दिखाना - हाव-भाव दिखाना, नखरा करना ।

**अदाई** † - वि० [अ] चालबाज़, चालाक । जैसे, 'सो तजि कहत और की औरै तुम अलि बड़े अदाई ।'—सूर ।

**अदाग़** † - वि० [हि] बेदाग़, साफ़ ; निर्दोष । जैसे, 'त्याग को भूखन शाति पद तुलसी अमल अदाग़ ।' —तुलसी ।

**अदाता** - पु० [सं] कृपण, कंजूस ।

**अदान** † - वि० [हि] अनजान, नादान, नासमझ ।

**अदानी** † - वि० [सं] जो दानी न हो ; कंजूस, कृपण ।

**अदायगी** - स्त्री० [अ] चुकता किया जाना ।

**अदायाँ** † - वि० [हि] प्रतिकूल ; बुरा ।

**अदाया** - स्त्री० [हिं] दयाहीनता, कठोरता, निष्ठुरता । जैसे, 'भय अविवेक अशौच अदाया ।'—तुलसी ।

**अदालत** - स्त्री० [अ] न्यायालय ; न्यायाधीश । — ख़फ़ीफ़ा - वह अदालत जहाँ साधारण मुक़द्दमे जाते हैं । — दीवानी - संपत्ति के अधिकारो के संबंध में निर्णय करनेवाली अदालत ।

**अदालती** - वि० [अ] अदालत संबंधी ; मुक़द्दमा लड़नेवाला ; मुक़द्दमेबाज़ ।

**अदाँव** - पु० [हि] बुरा दाँव ; असमंजस, कठिनाई ।

**अदावत** - स्त्री० [अ] दुश्मनी, विरोध ।

**अदावती** - वि० [अ] विरोधी ; विरोध से पैदा होनेवाला ।

**अदाह** - स्त्री० [अ] हाव, भाव, नख़रा ।

**अदिति** - स्त्री० [सं] दक्ष की कन्या, देवताओ की माता, कश्यप की पत्नी ; स्वर्ग ; अंतरिक्ष ; माता ; प्रकृति , पृथ्वी ।

**अदिन** - पु० [सं] बुरा दिन, संकट का दिन ।

**अदीठ** † - वि० [हिं] बिना देखा हुआ, अप्रत्यक्ष, अनदेखा, गुप्त, छिपा हुआ ।

**अदीन** - वि० [सं] दीनतारहित : उग्र, प्रचंड ; निडर ; उदार ।
**अदीह** † - वि० [हि] छोटा, सूक्ष्म ।
**अदुंद** - वि० [हि] दुविधारहित ; शांत ; निश्चित ; अद्वितीय ।
**अदूजा** † - वि० [हिं] अद्वितीय, बेजोड़ ।
**अदूर** - क्रि० [सं] पास, समीप ।
**अदूरदर्शी** - वि० [सं] जो दूर तक न सोचे , स्थूल बुद्धि ।
**अदूरदर्शिता** - स्त्री० [सं] नासमझी ।
**अदूषण** - वि० [सं] दोषरहित, शुद्ध ।
**अदूषित** - वि० [सं] जो दोषयुक्त न हो, स्वच्छ ।
**अदृश्य** - वि० [सं] जो दिखायी न दे, अगोचर, लुप्त ।
**अदृष्ट** - 1. वि० [सं] न देखा हुआ, लुप्त, अंतर्द्धान ; 2. पु० भाग्य ।
**अदृष्टपूर्व** - वि० [सं] जो पहले न देखा गया हो ; अद्भुत ।
**अदृष्टवाद** - पु० [सं] परलोक आदि परोक्ष बातो को बतानेवाला सिद्धात ।
**अदेख** † - वि० [हिं] जो देखा न गया हो, जो न देखा जाय ; न देखनेवाला ; गुप्त, अदृष्ट ।
**अदेखी** - वि० [हि] जो न देख सके ; डाही ; द्वेषी ।
**अदेय** - वि० [स] न देने योग्य ।
**अदेव** - पु० [सं] असुर, राक्षस ।
**अदेस** † - पु० [हि] आदेश, आज्ञा; प्रणाम । जैसे, 'औ महेस कहँ करौ अदेसू' —जायसी ।
**अदेह** - 1. वि० [स] बिना देह का, शरीर-रहित ; 2. पु० कामदेव ।
**अदोख** † - वि० [हि] निर्दोष, निष्कलंक ; निर्विकार ।
**अदोखिल** † - वि० [हि] निर्दोष ।
**अदोष** - वि० [सं] निर्दोष ; निष्कलंक ; निर्विकार ।
**अद्धा** - पु० [हि] किसी वस्तु का आधा मान ; पूरी बोतल की आधी नापवाली बोतल ।
**अद्धी** - स्त्री० [हि] दमड़ी का आधा , एक बारीक और चिकना कपड़ा ।
**अद्‌भुत** - 1. वि० [सं] आश्चर्यजनक, विलक्षण, विचित्र, अनोखा ; 2. पु० काव्य में एक रस ।
**अद्य** - क्रि० [सं] इस समय, अब ; आज ।
**अद्यतन** - वि० [सं] आज का, वर्तमान ।
**अद्यापि** - क्रि० [सं] इस समय तक, आज तक ।
**अद्यावधि** - क्रि० [सं] अब तक, आज तक ; आज से लेकर ।
**अद्रि** - पु० [सं] पहाड़ ।
**अद्रिकीला** - स्त्री० [सं] पृथिवी, धरती ।
**अद्रिजा** - स्त्री० [सं] पार्वती ; नदी ।
**अद्रिसार** - पु० [स] लोहा ।
**अद्वयवादी** - पु० [सं] बुद्ध ; जैन तीर्थंकर ।
**अद्वितीय** - वि० [सं] अनुपम, बेजोड़ ; अद्भुत ; प्रधान, मुख्य ।
**अद्वैत** - वि० [सं] द्वितीयरहित, अकेला, एक ; अनुपम, बेजोड़ ।
**अद्वैतवाद** - पु० [सं] वेदात का वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी की सत्ता वास्तविक नहीं मानी जाती ।
**अधः** - अव्य० [स] नीचे, तले ।
**अधःपतन** - पु० [स] नीचे की ओर गिरना, पतित होना, अवनति ; दुर्दशा, दुर्गति; ध्वंस, विनाश ।
**अध** - वि० [हि] 'आधा' का संक्षिप्त रूप जो दूसरे शब्दो के पहले लगता है । जैसे, 'अधखिला, अधमरा ।'
**अधकचरा** - वि० [हिं] कच्चा ; अधूरा ; जो पूरा दक्ष न हो ।

**अधकछार** - पु० [हिं] पहाड़ की तराई की वह ज़मीन जो बहुत उपजाऊ होती है।

**अधकपारी** - स्त्री० [हिं] आधे सिर का दर्द, आधासीसी।

**अधखिला** - वि० [हिं] आधा खिला हुआ, अर्धविकसित।

**अधखुला** - वि० [हिं] जो आधा खुला हो।

**अधघट** † - वि० [हिं] जिससे ठीक अर्थ न निकले, अटपटा, आधा घड़ा। जैसे, 'कहै कबीर अधघट बोलै।' — कबीर।

**अधड़** } † वि० [हिं] बेसिर-पैर,
**अधड़ा** } ऊटपटाँग, असंबद्ध।

**अधन** † - वि० [सं] निर्धन, ग़रीब।

**अधनिया** - वि० [हिं] आध आने का या दो पैसेवाला।

**अधन्नी** - स्त्री० [हिं] दो पैसे का सिक्का; आधा आना।

**अधफर** † - पु० [हिं] बीच का भाग; अंतरिक्ष; मध्य आकाश, अधर।

**अधबर** † - पु० [देश] आधा मार्ग, बीच।

**अधबुध** - वि० [हिं] अर्ध-शिक्षित, कम या थोड़ा ज्ञान रखनेवाला।

**अधबैसू** † - वि० [हिं] जिसकी आधी या उससे कुछ अधिक अवस्था बीत चुकी हो, अधेड़, प्रौढ़।

**अधम** - वि० [सं] नीच, निकृष्ट, बुरा; दुराचारी।

**अधमई** † - स्त्री० [हिं] नीचता, तुच्छता।

**अधमऋण** - पु० [सं] कर्ज़दार, ऋणी; बुरा ऋण।

**अधमरा** - वि० [हिं] आधा मरा हुआ, मृतप्राय।

**अधमा** - वि० स्त्री० [सं] अधम स्वभाव या दुराचरणवाली, दुष्ट प्रकृति की।

**अधमुआ** - वि० [हिं] अधमरा।

**अधर** - 1. पु० [सं] नीचे का ओठ, ओंठ; अंतरिक्ष; पाताल; 2. वि० तुच्छ; जो पकड़ में न आवे।

**अधरज** † - पु० [सं] ओठों की ललाई या सुर्ख़ी; ओठों पर की पान या मिस्सी की रेखा।

**अधरपान** - पु० [सं] चुंबन, ओठों का चुंबन।

**अधरमधु** - पु० [सं] अधरामृत।

**अधराधर** - पु० [सं] दोनों ओंठ।

**अधरीकृत** - वि० [सं] तिरस्कृत, निंदित।

**अधर्म** - पु० [सं] कुकर्म, दुराचार।

**अधर्मी** - वि० [सं] दुराचारी, पापी, दोषी।

**अधवन** - वि० [हिं] आधा, समभाग।

**अधवा** - स्त्री० [सं] विधवा।

**अधस्तल** - पु० [सं] नीचे की कोठरी; नीचे की तह; तहख़ाना।

**अधार** † - पु० [हिं] सहारा।

**अधारा** - 1. पु० [हिं] आधार, अवलम्ब; 2. वि० बिना धार का।

**अधारी** - स्त्री० [हिं] डंडे में लगा हुआ काठ का पीढ़ा जिसे साधु लोग सहारे के लिए अपने पास रखते हैं; सामान रखने का झोला या थैला।

**अधार्मिक** - वि० [सं] धर्महीन, पापी; धर्मविरुद्ध।

**अधि** - उ० [सं] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके अर्थ होते हैं—ऊपर, ऊँचा; जैसे, 'अधिराज, अधिकरण', प्रधान, मुख्य; जैसे, 'अधिपति'; अधिक, ज़्यादा; जैसे, 'अधिवास'; संबंध में; जैसे, 'आध्यात्मिक'।

**अधिक** - 1 वि० [सं] बहुत, ज़्यादा, विशेष; अतिरिक्त, बचा हुआ, फालतू; 2. पु० एक अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक बतलाते हैं।

**अधिकतर** - 1. वि० [सं] दूसरे की अपेक्षा अधिक, अति अधिक ; 2. क्रि० प्रायः, अकसर।

**अधिकतम** - वि० [सं] बहुतो की अपेक्षा अधिक, अत्यंत अधिक।

**अधिकता** - स्त्री० [सं] विशेषता, बढ़ती, ज़्यादती।

**अधिकमास** - पु० [सं] शुक्ल प्रतिपदा से अमावास्या तक ऐसा काल जिसमें संक्रान्ति न पड़े। यह हर तीसरे वर्ष आता है और चांद्र वर्ष तथा सौर वर्ष को बराबर करने के लिए चाद्र वर्ष में जोड़ लिया जाता है।

**अधिकर** - पु० [सं] साधारण कर के अतिरिक्त वह विशेष कर जो कुछ विशेष अवस्थाओ में लगाया जाता है।

**अधिकरण** - पु० [सं] आधार, सहारा ; व्याकरण में कर्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार जो सातवाँ कारक है; प्रकरण, शीर्षक ; दर्शन शास्त्र में आधार विषय, अधिष्ठान ; न्यायालय, अदालत।

**अधिकरणशुल्क** - पु० [सं] वह शुल्क जो किसी अधिकरण अर्थात् न्यायालय में कोई प्रार्थना-पत्र उपस्थित करते समय अंक-पत्रक या स्टांप के रूप में देना पड़ता है, कोर्ट-फ़ीस।

**अधिकरण्य** - पु० [सं] वह आज्ञा-पत्र जिसमें किसी को कोई कार्य करने की आज्ञा और अधिकार दिया गया हो, वारंट।

**अधिकर्मी** - पु० [सं] कुछ लोगो को अपने अधीन रख उनके कामो की देखभाल करनेवाला अधिकारी (ओवरसियर)।

**अधिकांश** - 1. पु० [सं] अधिक भाग ; 2. वि० बहुत ; 3. क्रि० विशेषकर, ज़्यादातर ; प्रायः, अकसर।

**अधिकाई** † - स्त्री० [हिं] अधिकता, बढ़ती; महिमा, बड़प्पन।

**अधिकाधिक** - वि० [सं] ज़्यादा से ज़्यादा।

**अधिकाना** † - 1. अ० [हि] अधिक होना, बढ़ना। जैसे, 'देखत सूर आगि अधिकानी, नभ लौ पहुँची झार।'—सूर। 2. स० बढ़ाना, उभाड़ना, अधिक करना। जैसे, 'बैन न समाने अधिकाने आँसू ऐते अरी।'

**अधिकार** - पु० [स] प्रभुत्व, आधिपत्य ; वह योग्यता या सामर्थ्य जिसके कारण किसी में कोई कार्य कर सकने का बल आता हो ; स्वत्व, हक़, अख़्तियार ; योग्यता, ज्ञान ; प्रकरण ; कब्ज़ा।

**अधिकारी** - पु० [स०] प्रभु, स्वामी ; किसी विशेष विषय के अच्छे जानकार ; अफ़सर ; नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त हो।

**अधिकृत** - वि० [सं] जिसपर अधिकार कर लिया गया हो ; जो किसीके अधिकार में हो ; जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो ; जिसे कोई काम करने का अधिकार हो।

**अधिकौहाँ** † - वि० [हिं] बराबर बढ़ते रहनेवाला।

**अधिक्रमण** - पु० [सं] अपनी शक्ति या अधिकार से किसीको हटा या दबाकर उसका स्थान स्वयं ले लेना।

**अधिक्रांत** - वि० [सं] जिस पर अधिक्रमण हुआ हो।

**अधिक्षेत्र** - पु० [स] किसीके अधिकार या कार्य का क्षेत्र।

**अधिगत** - वि० [सं] प्राप्त, पाया हुआ ; जाना हुआ, ज्ञात ; स्वर्गीय, मुक्त।

**अधिगम** - पु० [सं] पहुँच, गति ; दूसरे से प्राप्त हुआ ज्ञान ; पूरी सुनवाई के बाद न्यायालय द्वारा प्राप्त निष्कर्ष ।

**अधिगमन** - पु० [सं०] किसी वाक्य की वह व्याख्या जो उसकी पद-योजना के आधार पर हो ।

**अधित्यका** - स्त्री० [सं] पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि ।

**अधिदेव** - पु० [सं] इष्टदेव, कुलदेव ।

**अधिदैवत** - 1 पु० [सं] वह मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्यादि देवताओं के नाम कीर्तन द्वारा ब्रह्म विभूति की शिक्षा मिले। 2. वि० देवता सम्बन्धी ।

**अधिनायक** - पु० [सं] सरदार, मुखिया ।

**अधिनियम** - पु० [स] वह नियम जो किसी विशेष निश्चय के अनुसार बना हो ।

**अधिप** - पु० [स] स्वामी, मालिक ; प्रधान अधिकारी ; न्यायालय आदि का प्रधान विचारक ।

**अधिपति** - पु० [सं] अधिप ।

**अधिभार** - पु० [सं] कर या शुल्क आदि का विशेष अतिरिक्त अंश।

**अधिभौतिक** - वि० [स] सासारिक, दुनियावी।

**अधिमान** - पु० [सं] किसीको औरों से अच्छा समझकर ग्रहण करना, तरजीह।

**अधिमास** - पु० [सं] अधिक मास ।

**अधिया** - पु० [हिं] आधा हिस्सा ; गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी ; खेती की एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है। मु० —पर उठाना - आधे साझे पर देना ।

**अधियाना** - 1. स० [हिं] दो बराबर हिस्सों में बाँटना 2. अ० आधा होना ।

**अधियार** - पु० [हिं] ज़ायदाद का आधा हिस्सा ; आधे हिस्से का मालिक ; वह ज़मींदार या आसामी जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो ।

**अधियारी** - स्त्री० [हि] किसी ज़ायदाद में आधी हिस्सेदारी ।

**अधियुक्त** - वि० [सं] वेतन या पारिश्रमिक लेकर काम करनेवाला ।

**अधियोक्ता** - पु० [सं] वह जो वेतन देकर काम कराता है ।

**अधिरक्षी** - पु० [सं] आरक्षी या पुलिस विभाग का वह कर्मचारी जिसके अधीन कुछ सिपाही रहते है ।

**अधिरथ** - पु० [स] रथ हाँकनेवाला, सारथी ; गाड़ीवान ; बड़ा रथ ।

**अधिराज** - पु० [स] महाराज ।

**अधिराज्य** - पु० [सं] साम्राज्य ।

**अधिरोप** - पु० [स] किसी पर अपराध का आरोपण ।

**अधिरोपित** - वि० [सं] जिसपर अपराध का आरोपण हुआ हो ।

**अधिरोहण** - पु० [सं] चढ़ना, सवार होना, ऊपर बैठना ।

**अधिवास** - पु० [सं] रहने का स्थान, विदेश में नागरिक अधिकार-प्राप्ति तक बसना ; सुगंध ।

**अधिवासी** - पु० [सं] निवासी ; विदेशवासी ।

**अधिवेशन** - पु० [सं] सभा सम्मेलन आदि की बैठक ।

**अधिष्ठाता** - पु० [सं] अध्यक्ष ; मुखिया ; वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो ; ईश्वर ।

**अधिष्ठान** - पु० [सं] वासस्थान ; नगर, शहर ; पड़ाव ; आधार, सहारा ; वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो - जैसे रज्जु में सर्प या शुक्ति में रजत का ;

शासन, राजसत्ता; संस्था; संस्था के कार्यकर्ता, अधिकारी लोग।
**अधिष्ठित** - वि० [सं] ठहरा हुआ, स्थापित; नियुक्त।
**अधीक्षक** - पु० [सं] किसी कार्यालय या विभाग का प्रधान अधिकारी।
**अधीक्षण** - पु० [सं] सब कामो की देखभाल।
**अधीत** - वि० [सं] पढ़ा हुआ।
**अधीन** - 1. [वि०] किसीके अधिकार या वश में रहनेवाला, मातहत; आश्रित; वशीभूत। 2. पु० सेवक, दास।
**अधीनता** - स्त्री० [सं] परवशता, परतंत्रता; मातहती।
**अधीर** - वि० [सं] धैर्यरहित; उतावला, घबड़ाया हुआ, बेचैन, व्याकुल; आतुर।
**अधीश** - पु० [सं] मालिक, स्वामी, राजा।
**अधीश्वर** - पु० [सं] 'अधीश'।
**अधुना** - क्रि० [सं] आजकल, संप्रति, इन दिनो।
**अधूरा** - वि० [हिं] जो पूरा न हो।
**अधेड़** - वि० [हिं] आधी उम्र का, ढलती जवानी का, बुढ़ापा और जवानी के बीच की अवस्था।
**अधेला** - पु० [हिं] आधा पैसा।
**अधोगति** - स्त्री० [सं] पतन; अवनति; दुर्दशा।
**अधोगमन** - पु० [सं] नीचे जाना; अवनति; पतन।
**अधोमुख** - 1. वि० [सं] नीचे मुँह किये हुए; उलटा 2. क्रि० औंधा, मुँह के बल।
**अध्यक्ष** - पु० [सं] मालिक; अफ़सर; मुखिया; संस्था सभा आदि का प्रधान।
**अध्ययन** - पु० [सं] पठन-पाठन, पढ़ाई।
**अध्यर्थ** - पु० [सं] वह वस्तु जिसपर अधिकार जताया जाय।
**अध्यवसाय** - पु० [सं] लगातार उद्योग, दृढता-पूर्वक किसी काम में लगा रहना।
**अध्यवसायी** - पु० [सं] लगातार परिश्रम करनेवाला, परिश्रमी, उद्यमी।
**अध्यात्म** - पु० [स] आत्मा और ब्रह्म का विवेचन, आत्मज्ञान।
**अध्यात्मवाद** - पु० [स] आत्मवाद, ब्रह्मवाद।
**अध्यापक** - पु० [सं] अध्यापन करानेवाला, पढ़ानेवाला, शिक्षक, गुरु, उस्ताद।
**अध्यापन** - पु० [सं] पढ़ाने का कार्य।
**अध्याय** - पु० [स] ग्रंथ का खंड या विभाग, प्रकरण, परिच्छेद।
**अध्यारोप** - पु० [स] भ्रमात्मक ज्ञान; मिथ्या आग्रह; आक्षेप, लांछन।
**अध्यारोहण** - पु० [सं] आरोहण, ऊपर चढ़ना।
**अध्यास** - पु० [सं] अध्यारोप, भ्रम, मिथ्या-ज्ञान, एक वस्तु में दूसरे की कल्पना।
**अध्यासन** - पु० [सं] बैठना; आरोपण, अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दो में स्पष्ट करना।
**अध्याहार** - पु० [सं] वाक्य पूरा करने के लिये उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना।
**अध्यूढा** - स्त्री० [सं] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले, ज्येष्ठा पत्नी।
**अध्येता** - पु० [सं] शिष्य; छात्र, विद्यार्थी।
**अध्येय** - पु० [स] पढ़ने के योग्य, ध्येय-रहित, लक्ष्यहीन।
**अध्येषणा** - स्त्री० [सं] माँगना; सादर प्रार्थना; प्रश्न।
**अध्रुव** - वि० [स] चचल, डॉवाडोल, अनिश्चित।
**अध्व** - पु० [स] मार्ग, पंथ, रास्ता।

**अध्वग** - पु० [सं] पथिक, मुसाफ़िर, यात्री ; ऊँट; सूर्य ।
**अध्वर** - पु० [स] यज्ञ, याग ; सावधान, सचेत ।
**अध्वर्यु** - पु० [सं] यज्ञ में यजुर्वेद के मंत्रो को पढ़नेवाला ऋत्विज ।
**अनंग** - 1. वि० [सं] अंगरहित, बिना शरीर का, विदेह ; 2. पु० कामदेव ; आकाश ; मन ।
**अनंगना** † - अ० [सं] शरीर की सुधि छोड़ना, सुधबुध भुलाना। जैसे, 'जाको निरखि अनंग अनंगत ताहिं अनंग बढ़ावै ।'—सूर ।
**अनंगारि** - पु० [स] शिव ।
**अनंगी** - 1. वि० [स] अंगरहित, बिना देह का ; 2. पु० परमेश्वर ; कामदेव ।
**अनंत** - 1. वि० [सं०] जिसका अंत न हो, असीम ; बहुत अधिक ; अविनाशी ; 2. पु० विष्णु ; शेषनाग ; आकाश ; लक्ष्मण ; बाँह पर पहनने का एक गहना ।
**अनंतर** - क्रि० [सं] पीछे, उपरात, बाद ; निरतर, लगातार ।
**अनंदना** † - अ० [हि] आनंदित होना, प्रसन्न होना ।
**अन** † - 1. अव्य० [सं] बिना, बग़ैर ; 2. वि० अन्य, दूसरा ; 3. पु० अन्न, अनाज ।
**अनअहिवात** † - पु० [अव] वैधव्य ।
**अनक** † - पु० [हिं] नगाड़ा, मृदग ; गरजता हुआ बादल ।
**अनकना** † - क्रि० [हिं] सुनना, छिपकर चुपचाप सुनना ।
**अनक़रीब** - क्रि० [अ] लगभग, प्रायः ।
**अनकहा** - वि० [हिं] बिना कहा हुआ, अकथित, अनुक्त ।
**अनख** - 1. पु० [हि] झुंझलाहट ; रोष ; ग्लानि ; दुःख ; खिन्नता ; झंझट ; डिठौना ; ईर्ष्या ; द्वेष ; 2. वि० बिना नख का ।
**अनखना** † - अ० [हिं] रिसाना, गुस्सा होना ; अप्रसन्न होना ।
**अनखा** - पु० [देश] काजल की बिंदी जो नज़र लगने से बचाने के लिए गाल या ठुड्डी पर लगायी जाती है ।
**अनखाना** - स० [हिं] अप्रसन्न या नाराज करना ।
**अनखाये** - क्रि० [हिं] बिना खाये ।
**अनखी** † - वि० [हि] जो जल्दी नाराज़ हो ।
**अनखौहा** † - वि० [हिं] क्रोध से भरा, कुपित ; चिड़चिड़ा ; क्रोध दिलानेवाला ; अनुचित ; खोटा ; बुरा ।
**अनगढ़** - वि० [हिं] बिना गढ़ा हुआ, जिसे किसीने बनाया न हो, स्वयंभू ; बेडौल, भद्दा, बेढंगा ; उजड्ड ।
**अनगन** † - वि० [हिं] अनगिनत, अगणित, बहुत ।
**अनगनिया** - वि० [हि] अगणित, बेशुमार, बहुत । जैसे, 'बराबरी बेसन बहु भाँतिन व्यंजन अति अनगनिया ।'—सूर ।
**अनगवना** † } - अ० [देश] रुक-रुककर चलना ; विलम्ब करना ; आगे न बढ़ना ।
**अनगाना** † }
**अनगिन** - वि० [हिं] असंख्य, बेशुमार, बहुत ।
**अनगिनत** - वि० [हिं] जो गिना न जा सके, बहुत अधिक ।
**अनगिना** - वि० [हि] न गिना हुआ, अपार, अगणित ।
**अनगैरी** † - वि० [हिं] ग़ैर, अपरिचित, पराया ।

**अनघ** - 1. पु० [सं] पुण्य ; 2. स्त्री० सुंदर ; 3. क्रि० निर्मल ; पापरहित ।
**अनघेरो** † - वि० [हिं] अनिमंत्रित, बिना बुलाया हुआ ।
**अनघरो** † - वि० [हिं] अन्यायी ।
**अनचाहत** - पु० [हिं] जो प्रेम न करे, न चाहनेवाला, निर्मोही ।
**अनचाहा** - वि० [हिं] जिसकी इच्छा न की गयी हो ।
**अनचीन्हा** - वि० [हिं] बिना पहिचाना हुआ, अपरिचित ।
**अनछीला** - वि० [हिं] जो छीला हुआ न हो ।
**अनजान** - वि० [हि] जो जाना-पहचाना न हो ।
**अनजोखा** - वि० [हिं] बिना तौला हुआ ।
**अनट** - पु० [अ०] अनीति ; अन्याय ; उपद्रव ; अत्याचार ।
**अनडीठ** † - वि० [हिं] बिना देखा ।
**अनडुह** - पु० [स] बैल ।
**अनड्वान्** - पु० [सं] सूर्य ; साँड ।
**अनत** - 1. वि० [हि] न झुका हुआ, सीधा, 2. क्रि० और कहीं, पराये स्थान में ।
**अनति** - 1. वि० [स] कम, थोड़ा ; 2. स्त्री० नम्रता का अभाव ; अहकार ।
**अनदेखा** - वि० [हि] न देखा हुआ ।
**अनद्यतन** - वि० [स] जो वर्तमान का न हो ; व्याकरण में भूतकाल का एक भेद ; पुरातन ।
**अनधिकार** - वि० [सं] अधिकाररहित ; अयोग्य ; यौ०—चर्चा-सीमा के बाहर की बातचीत ।
**अनधिगत** - वि० [सं] बेजाना-बूझा हुआ, अज्ञात ।
**अनधिगम्य** - वि० [सं] पहुँच के बाहर ।
**अनन्नास** - पु० [पोर्तु] एक पौधा जिसका फल खटमीठा होता है और उस फल के अग्रभाग में भी पत्ते होते हैं ।
**अनन्य** - वि० [स] जिसका एक को छोड़कर किसी अन्य या दूसरे से संबंध न हो, एकनिष्ठ ।
**अनन्यपूर्वा** - स्त्री० [सं] कुमारी, अविवाहिता ।
**अनन्वय** - पु० [सं] साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय के रूप से कही जाय ।
**अनन्वित** - वि० [सं] असंबद्ध ; अयोग्य ।
**अनपच** - पु० [हिं] अजीर्ण, बदहज़मी ।
**अनपढ़** - वि० [हिं] वह जो पढ़ा-लिखा न हो, अशिक्षित ।
**अनपत्य** - वि० [सं] जिसके कोई बच्चे न हो, निःसंतान ।
**अनपराधी** - वि० [सं] बेकसूर
**अनपायी** - वि० [स] अचल, दृढ़, जिसका नाश न हो ।
**अनबन** - स्त्री [हिं] विरोध, बिगाड़ ।
**अनबिधा** / **अनबेधा** - वि० [हि] बिना छेद किया हुआ ।
**अनबोल** - वि० [हिं] न बोलनेवाला ; गूँगा ।
**अनभला** † - 1. पु० [हिं] बुराई ; हानि ; 2. वि० बुरा ; निंदित ।
**अनभाया** - वि० [हिं] जो न भावे, अप्रिय, नापसद ।
**अनभिज्ञ** - वि० [सं] न जाननेवाला ।
**अनभिज्ञता** - स्त्री० [सं] अनजानपन , मूर्खता ।
**अनभिप्रेत** - वि० [स] तात्पर्य से भिन्न, और का और; अनिष्ट, इच्छा के प्रतिकूल ।

**अनभिमत** - वि० [सं] राय के खिलाफ़ ।
**अनभिव्यक्त** - वि० [सं] जो व्यक्त न हो, अस्पष्ट ।
**अनमन** } वि० [हिं] उदास, खिन्न ।
**अनमना** }
**अनमारग** † - पु० [हिं] बुरी राह ।
**अनमिल** † - वि० [हिं] बेमेल, बेजोड़ ।
**अनमीलना** † - क्रि० [हिं] आँख खोलना ।
**अनमेल** - वि० [हिं] असबद्ध ।
**अनय** - पु० [सं] अमंगल ; विपद ; अन्याय ।
**अनर्गल** - वि० [सं] जिसमें कोई रुकावट न हो, बेरोक-टोक ; लगातार ; व्यर्थ, अंड-बंड ।
**अनर्घ** - वि० [सं] क़ीमती ; सस्ता ।
**अनर्घ्य** - वि० [सं] अपूज्य ; बहुमूल्य, अमूल्य ।
**अनर्ह** - वि० [सं] अयोग्य ।
**अनल्प** - वि० [सं] जो अल्प या थोड़ा न हो, बहुत ।
**अनलस** - वि० [सं] निरालस्य, फुर्तीला, चुस्त ।
**अनवगाह** - वि० [सं] बहुत गहरा ।
**अनवग्रह** - पु० [सं] प्रतिबंधशून्य, स्वच्छंद, जो पकड़ में न आ सके, जिसे कोई रोक न सके ।
**अनवच्छिन्न** - वि० [सं] अटूट ; जुड़ा हुआ ।
**अनवद्य** - वि० [सं] निर्दोष ।
**अनवद्यांग** - वि० [सं] जिसके अंग निर्दोष हों, खूबसूरत, सुडौल ।
**अनवधान** - पु० [सं] असावधानी, गफ़लत, लापरवाही ।
**अनवधानता** - स्त्री० [सं] असावधानी ।
**अनवधि** - 1. वि० [सं] असीम, बेहद, बहुत ज़्यादा ; 2. क्रि० निरंतर, हमेशा ।
**अनवर** - वि० [अ०] बहुत चमकीला, शोभायमान ।
**अनवरत** - क्रि० [सं] सदा, निरंतर, हमेशा ।
**अनवलंबित** - वि० [सं] आश्रयहीन, बेसहारा ।
**अनवसर** - पु० [सं] फ़ुरसत का अभाव ; बुरा अवसर, बेमौक़ा ।
**अनवस्थ** - वि० [सं] अस्थिर, चंचल ; अव्यवस्थित ।
**अनवस्था** - स्त्री० [सं] अव्यवस्था ; अनियमितता ; न्याय में अनिर्णीत कथन की परंपरा ।
**अनवस्थित** - वि० [सं] अस्थिर, चंचल ; बेठिकाना ।
**अनवस्थिति** - स्त्री० [सं] चंचलता ; आधारहीनता ; योग शास्त्र के अनुसार समाधि पाने पर भी चित्त की अस्थिरता ।
**अनवहित** - वि० [सं] बेख़बर, बेपरवाह ।
**अनवाँसना** - स० [हिं] नये बरतन को पहली बार काम में लाना ।
**अनवाँसा** - पु० [हिं] कटी हुई फसल का एक बड़ा मुट्ठा ; एक अनवाँसी भूमि में उत्पन्न अनाज ।
**अनवाँसी** - स्त्री० [हिं] एक बिस्वे का 1/400 भाग (एक बीवे के बीसवें हिस्से को बिस्वा कहते है) ।
**अनवाप्त** - वि० [सं] न पाया हुआ ।
**अनवाप्ति** - स्त्री० [सं] अप्राप्ति ।
**अनशन** - पु० [सं] उपवास, अन्नत्याग ।
**अनसखरी** - स्त्री० [हिं] पक्की रसोई, घी या दूध में पका हुआ भोजन ।
**अनसुनी** - वि० स्त्री० [हिं] न सुनी हुई ; **मु०** — करना - जानबूझकर सुनी हुई बात को न सुनी हुई की तरह टालना ; आनाकानी करना ।
**अनस्तित्व** - वि० पु० [सं] अस्तित्व का अभाव, न होने का भाव ।

**अनहद-नाद** - पु० [हिं] सूक्ष्म शब्द जो साधारण कानों से सुना न जा सके; शब्द जो योगसाधन में योगी सुनते है। साधारणतया शब्द पदार्थों के आघात से उत्पन्न होता है जिसे आहत-ध्वनि या नाद कहते हैं। इसके विपरीत बिना आघात के जो शब्द उत्पन्न हो वह अनाहत या अनहद-नाद है। इसका ज्ञान योगियो को होता है। इसे अंतर्ध्वनि भी कह सकते हैं।

**अनहित** - [सं] पु० अहित, अपकार, बुराई; शत्रु।

**अनहितू** - वि० [सं] अहित-चिंतक, शत्रु।

**अनहोता** - वि० [हिं] ग़रीब; अनहोना, अलौकिक, अचंभे का।

**अनहोनी** - 1. वि० [हिं] न होनेवाली, असंभव; 2. स्त्री० असंभव बात; अलौकिक घटना।

**अनाई-पठाई** - स्त्री० [देश] विवाह हो जाने पर बहू के तीन बार ससुराल से मैके आने जाने के बाद फिर आने जाने को अनाई-पठाई कहते हैं।

**अनाकानी** - स्त्री० [हिं] 'आनाकानी'।

**अनागत** - 1. वि० [स] न आया हुआ; आगे आनेवाला; अज्ञात; अनादि; अपूर्व, अद्भुत; 2. पु० संगीत में ताल का एक भेद; 3. क्रि० अचानक, एकाएक; —विधाता - पु० आनेवाली आपत्ति के लक्षण जानकर उससे बचने या उसे पार करने का पहले से उपाय करनेवाला मनुष्य, दूरंदेशी आदमी।

**अनागम** - पु० [सं] आगमन का अभाव, न आना।

**अनाचार** - पु० [स] दुराचार, बुरा व्यवहार; कुरीति, बुरी चाल।

**अनाचारिता** - स्त्री० [सं] दुष्टता; कुरीति।

**अनाचारी** - वि० [सं] आचारहीन, भ्रष्ट, बुरे आचरणवाला।

**अनाज** - पु० [हिं] धान्य, दाना, नाज।

**अनाड़ी** - वि० [हिं] नासमझ, गँवार; जो निपुण न हो।

**अनातप** - 1. पु० [स] छाया; 2. वि० जहाँ धूप न हो; ठंढा, शीतल।

**अनात्म** - 1. वि० [स] आत्मारहित; 2. पु० आत्मा का विरोधी पदार्थ, भौतिक पदार्थ, पंचभूत।

**अनाथ** - वि० [स] जिसका कोई नाथ या रक्षक न हो; बिना माँ-बाप का; असहाय, दीन, दुखी।

**अनाथालय** - पु० [सं] अनाथों की रक्षा का स्थान, यतीमख़ाना।

**अनादर** - पु० [स] आदर का अभाव, अपमान, बेइज़्ज़ती।

**अनादरणीय** - वि० [स] आदर के अयोग्य; निंदा के लायक़, बुरा।

**अनादि** - वि० [सं] जिसके आदि या आरंभ का कोई स्थान अथवा काल न हो। शास्त्रकारो ने ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन वस्तुओ को अनादि माना है।

**अनादृत** - वि० पु० [सं] अपमानित।

**अनाना** † - क्रि० [अव] मंगाना।

**अनाप-शनाप** - वि० [हिं] ऊटपटाँग; निरर्थक बकवाद।

**अनापा** † - वि० [हिं] असीम।

**अनाप्त** - वि० [स] जो प्राप्त न हुआ हो; जो अपना आप्त या भलाई चाहनेवाला न हो; जो सत्य न हो।

**अनामय** - 1. वि० [सं] आमय या रोग-रहित, चंगा, स्वस्थ; निर्दोष; 2. पु० तंदुरुस्ती; कुशल-क्षेम।

**अनामा** - 1. वि० स्त्री० [हिं] बिना नाम की; 2. स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली, अनामिका।

**अनामिका** - स्त्री० [सं] सबसे छोटी उँगली के बगल की उँगली।

**अनामिष** - वि० [सं] जिसमें आमिष या मांस न हो।

**अनायास** - क्रि० [सं] बिना आयास, बिना परिश्रम; अचानक, यकायक।

**अनार** - पु० [फ़ा] एक पेड़ और उसके फल का नाम, दाड़िम। यह फल खट्टा और मीठा दो प्रकार का होता है। फल के ऊपर के कड़े छिलके को तोड़ने पर रस से भरे लाल या सफ़ेद दाने निकलते है जो खाये जाते हैं। दाँतों की उपमा कवि लोग अनार के दाने से देते आये हैं।

**अनार्द्र** - वि० [सं] जो भीगा या गीला न हो।

**अनार्य** - पु० [सं] वह जो आर्य या श्रेष्ठ न हो; म्लेच्छ।

**अनावरण** - पु० [सं] खोलने की क्रिया, आवरण को हटाने का काम, उद्घाटन।

**अनाविल** - वि० [सं] साफ़, निर्मल।

**अनावृत** - वि० [सं] खुला, जो ढँका न हो।

**अनाश्रमी** - वि० [सं] आश्रमभ्रष्ट; पतित।

**अनाश्रय** - वि० [सं] बेसहारा, जिसका कोई आश्रय या आधार न हो।

**अनाश्रित** - वि० [सं] आश्रयरहित, बेसहारा।

**अनासर** } **अनासिर** } - पु० [अ० अन्सर का बहु०] मूल तत्त्व।

**अनाहत** - 1. वि० [सं] जिसपर आघात न हुआ हो; 2. पु० वह शब्द जिसे योग साधन में योगी सुनते है, 'अनहद-नाद'; हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक; नया वस्त्र; दोबारा किसी चीज़ का अमानत में दिया जाना।

**अनाहार** - पु० [सं] उपवास, लंघन।

**अनाहूत** - वि० [सं] बिना बुलाया हुआ।

**अनिकेत** - वि० [सं] बेघर का; संन्यासी; खानाबदोश।

**अनिच्छा** - स्त्री० [सं] इच्छा का अभाव, अरुचि।

**अनिच्छित** - वि० [सं] जिसकी इच्छा न हो, अनचाहा।

**अनिच्छुक** - वि० [सं] इच्छा न रखनेवाला।

**अनिंदित** - वि० [सं] बदनामी से बचा हुआ; निर्दोष।

**अनिंद्य** - वि० [सं] जो निंदा के योग्य न हो; उत्तम; प्रशंसनीय।

**अनित्य** - वि० [सं] जो नित्य या हमेशा न रहे, अस्थायी, नाशवान्; असत्य।

**अनित्यता** - स्त्री० [सं] अनित्य होने का भाव, अस्थिरता, क्षणभंगुरता।

**अनित्यत्व** - पु० [सं] 'अनित्यता'।

**अनिमंत्रित** - वि० [सं] बिना बुलाया हुआ।

**अनिमिष** - 1. वि० [सं] निमेषरहित, एकटक देखनेवाला; 2. क्रि० बिना पलक गिराये, एकटक।

**अनिमेष** - 1. वि० [सं] स्थिर दृष्टि; 2. क्रि० बिना पलक गिराये।

**अनियंत्रित** - वि० [सं] जिसपर कोई नियंत्रण या प्रतिबंध न हो, बिना रोक-टोक का, मनमाना।

**अनियत** - वि० [सं] जो नियत या निश्चित न हो; अस्थिर; असीम; असाधारण।

**अनियमित** - वि० [सं] नियमरहित; अव्यवस्थित; अनियत।

**अनियारा** - वि० [हिं] पैना, धारदार, तीक्ष्ण ।
**अनिरुद्ध** - 1. वि० [सं] अबाध, बेरोक; 2. पु० प्रद्युम्न का पुत्र तथा ऊषा का पति ।
**अनिर्वचनीय** - वि० [सं] जिसका वर्णन न हो सके, अवर्णनीय ।
**अनिर्वृत्ति** - वि० [सं] बुरी स्थिति का, दुखित ।
**अनिल** - पु० [सं] वायु, हवा ।
**अनिलाशी** - 1. वि० [सं] हवा खाकर रहनेवाला; 2. पु० सांप
**अनिवर्त्ती** - वि० [स] पीछे न लौटनेवाला; तैयार; तत्पर; पीठ न दिखानेवाला ।
**अनिवार्य** - वि० [सं] अटल; अवश्य; जिसके बिना काम न चल सके ।
**अनिश** - क्रि० [सं] निरंतर, लगातार ।
**अनिश्चित** - वि० [सं] जिसका निश्चय न हुआ हो ।
**अनिष्ट** - 1. वि० [सं] जो इष्ट न हो, अनचाहा; 2. पु० अहित, बुराई; हानि ।
**अनिष्पत्ति** - स्त्री० [सं] असिद्धि; अधूरापन ।
**अनिष्पन्न** - वि० [स] असिद्ध; अधूरा
**अनी** - स्त्री० [हि] नोक, सिरा; नाव या जहाज़ का अगला सिरा; जूते की नोक; समूह; सेना; ग्लानि; खेद ।
**अनीक** - 1. पु० [सं] सेना, फ़ौज; युद्ध, लड़ाई; 2. वि० जो नेक या अच्छा न हो, बुरा ।
**अनीकिनी** - स्त्री० [सं] सेना, फ़ौज; अक्षौहिणी का दसवाँ भाग; कमलिनी ।
**अनीति** - स्त्री० [सं] नीति का विरोध, अन्याय; शरारत; अत्याचार ।
**अनीश** - 1. वि० [सं] बिना मालिक का, अनाथ, जिसके ऊपर कोई अधिकारी न हो; 2. पु० ईश्वर से भिन्न वस्तु ।
**अनीश्वर-वाद** - पु० [सं] ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास ।
**अनीश्वरवादी** - वि० [सं] ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक ।
**अनीस** † - पु० [हिं] असहाय, अनाथ; सेनापति; दोस्त; सहानुभूति रखनेवाला ।
**अनीह** - वि० [सं] इच्छारहित; बेपरवाह ।
**अनीहा** - स्त्री० [स] किसी चीज़ की इच्छा न होने का भाव, अनिच्छा, निष्कामता; बेपरवाही ।
**अनु** - 1. उप० [स] पीछे; सदृश; साथ; प्रत्येक; इन अर्थों में बारंबार इसका उपयोग होता है। जैसे, अनुकरण, अनुरूप, अनुकंपा, अनुदिन, अनुशीलन आदि । 2. पु० राजा ययाति एक पुत्र ।
**अनुकंपा** - स्त्री० [सं] दया, कृपा; सहानुभूति, हमदर्दी ।
**अनुकरण** - पु० [सं] देखादेखी कार्य, नक़ल ।
**अनुकरणीय** - वि० [स] अनुकरण करने योग्य, नक़ल करने लायक ।
**अनुकूल** - 1. वि० [स] मुआफ़िक; हितकर; प्रसन्न; 2. क्रि० ओर, तरफ़ ।
**अनुक्त** - वि० [सं] अकथित, बिना कहा हुआ ।
**अनुक्रम** - पु० [सं] क्रम, सिलसिला ।
**अनुक्रमणिका** - स्त्री० [स] सूची, तालिका ।
**अनुग** - 1. वि० [स] पीछे चलनेवाला, अनुयायी; 2. पु० सेवक, नौकर ।
**अनुगमन** - पु० [सं] पीछे चलना, अनुसरण ।
**अनुगामी** - वि० [सं] पीछे चलनेवाला, अनुयायी ।
**अनुगृहीत** - वि० [स] जिसपर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत ।

**अनुग्रह** - पु० [सं] कृपा, दया ; अनिष्ट-निवारण ।

**अनुग्राहक** - वि० [सं] अनुग्रह करनेवाला, उपकारी ।

**अनुघात** - पु० [सं] नाश ।

**अनुचर** - पु० [सं] पीछे चलनेवाला, नौकर; सहचर, साथी ।

**अनुचित** - वि० [सं] जो उचित न हो, अयोग्य ।

**अनुच्छेद** - पु० [सं] लेख का वह अंश जिसमें कोई एक बात पूरी हो जाय और जो इसी प्रकार लेख के किसी दूसरे अंश से अलग किया गया हो, पैरा ।

**अनुज** 1. वि० [सं] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो ; 2. पु० छोटा भाई ।

**अनुजीवी** - 1. वि० [सं] किसीके सहारे पर जीनेवाला, आश्रित ; 2. पु० सेवक, नौकर ।

**अनुज्ञा** - स्त्री० [सं] आज्ञा, हुक्म; अनुमति, इजाज़त ।

**अनुतप्त** - वि० [सं] तपा हुआ, गर्म ; दुखी, रंजीदा ।

**अनुताप** पु० [सं] दुःख, रंज ; पछतावा, अफ़सोस ।

**अनुत्तर** - वि० [सं] बिना उत्तर का, लाजवाब ; श्रेष्ठ, उत्तम ।

**अनुदात्त** - वि० [सं] छोटा, तुच्छ ; वैदिक स्वरो के तीन भेदो में से एक ।

**अनुदिन** - क्रि० [सं] प्रतिदिन, रोज़ ।

**अनुनय** - पु० [सं] विनय, प्रार्थना, मनाना ।

**अनुनाद** - पु० [सं] प्रतिध्वनि, गूँज ।

**अनुनासिक** - वि० [सं] जो अक्षर मुँह और नाक से बोला जाय, जैसे, 'ङ, ञ' आदि ।

**अनुपद** - क्रि० [सं] पीछे-पीछे ; अनंतर, बाद ही ।

**अनुपपत्ति** - स्त्री० [सं] उपपत्ति या संगति का अभाव, असंगति ; असमर्थता ।

**अनुपपन्न** - वि० [सं] जो साबित न हुआ हो ।

**अनुपम** - वि० [सं] उपमारहित ; बेजोड़ ।

**अनुपयुक्त** - वि० [सं] अयोग्य, जो ठीक न हो ।

**अनुपयोग** - पु० [सं] उपयोग या व्यवहार का अभाव, काम में न लाना ।

**अनुपयोगिता** - स्त्री० [सं] उपयोगिता या प्रयोजन का अभाव, निरर्थकता ।

**अनुपयोगी** - वि० [सं] बेकाम, व्यर्थ का ।

**अनुपस्थित** - वि० [सं] जो उपस्थित या हाज़िर न हो, ग़ैरहाज़िर ।

**अनुपस्थिति** - स्त्री० [सं] ग़ैरहाज़िरी ।

**अनुपात** - पु० [सं] गणित में त्रैराशिक क्रिया ; समताभाव, बराबर संबंध ।

**अनुपान** - पु० [सं] औषध के साथ खाने योग्य वस्तु, पथ्य ।

**अनुपूर्व** - वि० [सं] यथाक्रम, सिलसिलेवार ।

**अनुप्राशन** - पु० [सं] खाना, भक्षण ।

**अनुप्रास** - पु० [सं] वह शब्दालकार जिसमें किसी पद का एक ही अक्षर बार-बार आता है, वर्णावृत्ति, वर्णमैत्री ।

**अनुबंध** - पु० [सं] बधन, लगाव ; आगा-पीछा ; आरंभ ; दर्शन-शास्त्र में विषय, प्रयोजन, अधिकारी और संबंध इन चारो का समूह ।

**अनुभव** - पु० [सं] स्वप्रयत्न से प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान, स्मृतिभिन्न ज्ञान, तजरबा ।

**अनुभवना** † - स० [सं] अनुभव करना । जैसे, 'मोहि सम यहि अनुभएउ न दूजे ।'—तुलसी ।

**अनुभवी** - वि० [सं] अनुभव रखनेवाला, तजरबेकार, जानकार ।

**अनुभाव** - पु० [सं] प्रभाव, महिमा; काव्य में रस के चार अंगो में से एक; चित्त के भावो को प्रकट करनेवाली चेष्टाएँ, ये चार प्रकार की होती हैं—कायिक, सात्विक, मानसिक और आहार्य। ये अनुभाव कहलाते है।

**अनुभूत** - वि० [सं] जिसका अनुभव हुआ हो, तजरबा किया हुआ।

**अनुभूति** - स्त्री० [सं] अनुभव से प्राप्त ज्ञान, परिज्ञान।

**अनुमति** - स्त्री० [सं] आज्ञा; सम्मति, इजाज़त।

**अनुमरण** - पु० [सं] सती होना।

**अनुमान** - पु० [सं] अंदाज़ा, अटकल।

**अनुमित** - वि० [सं] अंदाज़ किया हुआ, अनुमान-प्रमाण से निश्चित किया हुआ।

**अनुमिति** - स्त्री० [सं] एक ज्ञान के साधन से प्राप्त दूसरा ज्ञान; अनुमान-प्रमाण से होनेवाला ज्ञान।

**अनुमेय** - वि० [सं] अनुमान करने योग्य।

**अनुमोदन** - पु० [सं] समर्थन, ताईद।

**अनुयायी** - वि० [सं] पीछे चलनेवाला; अनुकरण करनेवाला; सेवक।

**अनुरंजन** - पु० [सं] प्रीति; दिलबहलाव।

**अनुरक्त** - वि० [सं] आसक्त; लीन; प्रेमी।

**अनुराग** - पु० [सं] प्रीति, प्रेम।

**अनुरागना** - स० [हि] प्रीति करना, आसक्त होना।

**अनुरागी** - वि० [सं] अनुराग रखनेवाला, प्रेमी।

**अनुराधना** † - स० [हि] विनय करना।

**अनुराधा** - स्त्री० [सं] एक नक्षत्र जो सात तारोंवाला और सर्पाकार होता है।

**अनुरूप** - वि० [सं] तुल्य रूप का, समान; योग्य, अनुकूल।

**अनुरोध** - पु० [सं] विनयपूर्वक किसी बात के लिए हठ, आग्रह; प्रेरणा; रुकावट, बाधा।

**अनुलेपन** - पु० [सं] सुगंधित द्रव्यों या औषधादि का मर्दन, उबटन करना; लीपना, पोतना।

**अनुलोम** - पु० [सं] ऊँचे से नीचे की ओर आने का श्रेणी-क्रम; —विवाह-उच्च वर्ण के पुरुष का नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।

**अनुवत्सर** - क्रि० [सं] प्रति वर्ष, सालाना; पाँच वर्षों के युग का चौथा वर्ष।

**अनुवर्तन** - पु० [सं] अनुसरण; अनुकरण; किसी नियम का बार-बार कई जगह लागू होना।

**अनुवा** † - पु० [अव] कुएँ की जगत का वह भाग जहाँ खड़े होकर पानी खींचते है।

**अनुवाक** - पु० [सं] अध्याय या प्रकरण का एक भाग; वेद के अध्याय का एक अंश।

**अनुवाद** - पु० [सं] भाषांतर, तर्जुमा; दोहराना; स्मरण अथवा समर्थन के लिए बार-बार कथन; अनुज्ञा, अनुमति।

**अनुवादक** - पु० [सं] अनुवाद करनेवाला।

**अनुवादी** - वि० [सं] संगीत में स्वर का एक भेद जिसके लगाने से राग अशुद्ध हो जाता है।

**अनुवृत्ति** - स्त्री० [सं] अर्थपूर्ति के लिए पूर्व वाक्यांश का ग्रहण; जीविका का गौण अथवा पूरक साधन।

**अनुशासन** - पु० [सं] आज्ञा; उपदेश; व्याख्यान; महाभारत का एक पर्व।

**अनुशीलन** - पु० [सं] चिंतन; मनन; आलोचन।

**अनुषंग** - पु० [सं] करुणा; संबंध।

**अनुष्टुप्** - [सं] एक वर्ण-छंद जिसमें आठ अक्षरों के चार चरण होते हैं जिनमें प्रत्येक चरण का पाँचवाँ अक्षर लघु और छठा गुरु होता है तथा दूसरे और चौथे चरण में सातवाँ लघु होता है।

**अनुष्ठान** - पु० [सं] नियमपूर्वक कोई काम करना।

**अनुसंधान** - पु० [सं] खोज, जाँच-पड़ताल; प्रयत्न, कोशिश।

**अनुसंधानना** - स० [हिं] खोजना; सोचना, विचारना।

**अनुसरण** - पु० [सं] पीछे चलना; अनुकरण; अनुकूल आचरण।

**अनुसरना** † - स० [हि] पीछे चलना; अनुकरण करना।

**अनुसार** - वि० [सं] अनुकूल, मुआफ़िक।

**अनुसारना** - स० [हि] अनुसरण करना; आचरण करना।

**अनुसारी** † - वि० [हि] अनुसरण करनेवाला।

**अनुस्यूत** - वि० [सं] सिया हुआ; पिरोया हुआ, गूँथा हुआ; सिलसिलेवार।

**अनुस्वार** - पु० [सं] स्वर के पीछे उच्चरित होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण जिसका चिह्न ( ं ) है, अक्षर के ऊपर की बिंदी।

**अनुहरना** † - स० [हि] अनुकरण करना; आदर्श पर चलना; समानता करना।

**अनुहरिया** † - 1. वि० [हि] समान; 2. स्त्री० आकृति।

**अनुहार** - 1. वि० [सं] तुल्य, समान; 2. स्त्री० रूप, भेद; मुखानी, आकृति।

**अनुहारि** - वि० [ब्र] समान, तुल्य; योग्य; अनुसार, अनुकूल।

**अनूठा** - वि० [हिं] अपूर्व, अद्भुत, विचित्र; सुंदर, बढ़िया।

**अनूठापन** - पु० [हिं] विलक्षणता।

**अनूढ़ा** - स्त्री० [सं] प्राप्तयौवना और अविवाहिता।

**अनूदित** - वि० [सं] कहा हुआ; अनुवादित, भाषांतरित, तर्जुमा किया हुआ।

**अनून** - वि० [सं] जो ऊन या कम न हो, पूर्ण, अखंड; बहुत।

**अनूप** - वि० [सं] जिसकी उपमा न हो, बेजोड़; सुंदर, अच्छा।

**अनूरु** - 1. वि० [सं] जिसके जाँघ न हो; 2. पु० सूर्य का सारथी अरुण।

**अनूह** - वि० [सं] जिसपर विचार न हो सके, अतर्कनीय।

**अनृण** - वि० [सं] जिसपर कर्ज़ न हो।

**अनृत** - पु० [सं] झूठ; विपरीत।

**अनेक** - वि० [सं] एक से अधिक, बहुत, असंख्य।

**अनेकार्थ** - वि० [सं] जिसके बहुत-से अर्थ हों।

**अनेग** † - वि० [हि] अधिक, बहुत।

**अनेरा** - 1. वि० [हि] झूठा; अन्यायी; 2. क्रि० व्यर्थ।

**अनेह** † - पु० [हि] विरक्ति; स्नेह-रहितता।

**अनेहा** - पु० [हि] समय, वक्त।

**अनै** † पु० [अव] अमंगल; दुर्भाग्य।

**अनैक्य** - पु० [सं] ऐक्य या एकता का अभाव, मतभेद, फूट।

**अनैश्वर्य** - पु० [सं] ऐश्वर्य का अभाव; अनीश्वरता।

**अनैस** † - 1. पु० [हि] बुराई, अहित; 2. वि० बुरा।

**अनैसना** † - अ० [हिं] बुरा मानना, रूठना।

**अनैसे** † - क्रि० [अव] बुरे भाव से, बुरी तरह से।

**अनैहा** † - पु० [ब्र] उत्पात, उपद्रव।

**अनोखा** - वि० [हि] अनूठा, विलक्षण; नया; सुंदर; —पन - पु० अनूठापन, विलक्षणता; नयापन; सुंदरता।

**अनौचित्य** - पु० [सं] उचित बात का अभाव, अनुपयुक्तता।

**अन्दाख़्ता** - वि० [फ़ा०] फेंका हुआ; छितराया हुआ; छोड़ा हुआ।

**अन्दाम** - पु० [अ०] बदन, जिस्म।

**अन्देश** - वि० [फा] ध्यान रखनेवाला। जैसे, दूरंदेश।

**अन्दोह** - पु० [फा] दुःख, रंज, ग़म। —गी - वि० दुःखी, रंज में पड़ा हुआ। —नाक - 'अन्दोहगी'।

**अन्न** - पु० [सं] खाद्य पदार्थ; अनाज, धान्य; पकाया हुआ अन्न, भात; —कूट - पु० अन्न का पहाड़ वा ढेर; एक उत्सव जिसमें नाना प्रकार के भोजनों की ढेरी लगाकर भगवान को भोग लगाते हैं।

**अन्नजल** - पु० [स] दाना-पानी, खानपान; आबदाना, जीविका; सयोग, इत्तिफ़ाक़।

**अन्नद** - पु० [स] अन्न देनेवाला, पोषक; मालिक।

**अन्नदाता** - पु० [सं] अन्नदान करनेवाला, पोषक।

**अन्नपूर्णा** - स्त्री० [सं] देवी; शिव की पत्नी जो सबको अन्न देनेवाली कहलाती है।

**अन्नप्राशन** - पु० [सं] बच्चों को पहले पहल अन्न चटाने का संस्कार, चटावन।

**अन्नसत्र** - पु० [स] वह स्थान जहाँ मुफ़्त भोजन दिया जाता है।

**अन्ना** - स्त्री० [हि] सुनार की छोटी अँगीठी; दाई, दूध पिलानेवाली स्त्री; [तु] माता, माँ।

**अन्नाद** - 1. वि० [सं] अन्न खानेवाला, अन्नाहारी; 2. पु० विष्णु के सहस्र नामों में से एक, ईश्वर।

**अन्य** - वि० [स] दूसरा, और कोई।

**अन्यत्र** - वि० [स] और जगह, दूसरी जगह।

**अन्यथा** - 1. वि० [सं] विपरीत, उलटा; झूठ; 2. अव्य० नहीं तो।

**अन्यपुष्ट** - पु० [सं] वह जिसका पोषण अन्य से हुआ हो, कोयल, काकपाली।

**अन्यपूर्वा** - स्त्री० [स] वह कन्या जो एक की वाग्दत्ता होकर या उसे ब्याही जाकर फिर दूसरे को ब्याही जाय।

**अन्यमनस्क** - वि० [सं] उदास, चिंतित, अनमना।

**अन्याय** - पु० [सं] न्याय के विरुद्ध आचरण, अनीति; अंधेर; ज़ुल्म।

**अन्यायी** - वि० [सं] अनुचित काम करनेवाला, दुराचारी, ज़ालिम।

**अन्यून** - वि० [सं] जो कम न हो, काफ़ी, बहुत।

**अन्योक्ति** - स्त्री० [सं] वह कथन जिसका अर्थ कथित वस्तु को छोड़ अन्य किसी पर घटाया जाय।

**अन्योन्य** - सर्व० [स] परस्पर, आपस में।

**अन्योन्याश्रय** - पु० परस्पर का सहारा।

**अन्वय** - पु० [सं] परस्पर संबंध; मेल; पद्य या कविता के शब्दों को वाक्य-रचना के अनुसार बैठाना; वंश, ख़ानदान।

**अन्वयी** - वि० [सं] संबद्ध; एक ही वंश का।

**अन्वर्थ** - वि० [सं] अर्थयुक्त, सार्थक।

**अन्वित** - वि० [स] शामिल, मिला हुआ।

**अन्वीक्षण** - पु० [सं] ग़ौर; खोज, अनुसंधान।

**अन्वीक्षा** - स्त्री० [सं] खोज, तलाश।

**अन्वेषक** - वि० [सं] खोजनेवाला ।
**अन्वेषण** - पु० [सं] अनुसंधान, खोज ।
**अन्वेषित** - वि० [स] खोजा हुआ ।
**अन्वेषी** } **अन्वेष्टा** } वि० [सं] खोजनेवाला ।
**अन्सब** - वि० [अ] बहुत वाजिब या उचित ।
**अन्सर** - पु० [अ] (उन्सर का बहु० अनासिर) मूल-तत्त्व ।
**अपंग** - वि० [स] अंगहीन, लँगड़ा; असमर्थ ।
**अप** - 1. उप० [सं] उलटा; बुरा; अधिक; निषेध; विकृति; विशेषता; 2. पु० जल; 3. सर्व० आप (यौगिक शब्दों में) ।
**अपकर्ता** - पु० [सं] हानि पहुँचानेवाला ।
**अपकर्म** - पु० [सं] पाप, बुरा काम ।
**अपकर्ष** - पु० [स] गिराना; कमी; पतन, अवनति ।
**अपकार** - पु० [सं] हानि, अहित, नुक़सान ।
**अपकारी** - वि० [सं] हानिकारक; अपकार करनेवाला; विरोधी ।
**अपकीर्ति** - स्त्री० [सं] अपयश, बदनामी ।
**अपकृत** - वि० [सं] अपकार किया हुआ ।
**अपकृति** - स्त्री० [सं] अपकार, हानि; अपमान, निंदा ।
**अपकृष्ट** - वि० [सं] गिरा हुआ, ख़राब; 'उत्कृष्ट' का उलटा ।
**अपकृष्टता** - स्त्री० [सं] नीचता, ख़राबी ।
**अपक्रम** - पु० [स] उलट-पलट ।
**अपक्व** - वि० [स] कच्चा; अनभ्यस्त, असिद्ध । जैसे, अपक्वबुद्धि ।
**अपक्वता** - स्त्री० [सं] कच्चापन; अनभ्यस्तता
**अपक्षपात** - पु० [स] न्याय; खरापन ।
**अपक्षपाती** - वि० [स] पक्षपातरहित, न्यायी ।
**अपक्षिप्त** - वि० [सं] फेका हुआ ।
**अपक्षेपण** - पु० फेकना, पदार्थ-विज्ञान के अनुसार प्रकाशादि का टकराकर पलटना ।
**अपगत** - वि० [सं] भागा हुआ; पलटा हुआ; मृत, नष्ट ।
**अपगम** - पु० [स] वियोग; दूर होना, भागना ।
**अपगा** - स्त्री० [स] नदी ।
**अपघन** - 1. पु० [हिं] शरीर; 2. वि० मेघरहित, बिना बादल का ।
**अपघात** - पु० [स] हिंसा, हत्या; धोखा, विश्वासघात ।
**अपघातक** } **अपघाती** } वि० [स] विनाश करनेवाला; धोखा देनेवाला, विश्वासघाती ।
**अपच** - पु० [सं] अजीर्ण, बदहज़मी ।
**अपचय** - पु० [स] हानि; खर्च, 'सचय' का उलटा; नाश; पूजा, सम्मान ।
**अपचरित** - पु० [स] बुरा काम ।
**अपचार** - पु० [स] बुरा बर्ताव; बुराई; निंदा; भूल; कुपथ्य ।
**अपचारी** - पु० [सं] दुराचारी, दुष्ट ।
**अपचाल** - पु० [हिं] कुचाल; खोटाई; बेईमानी ।
**अपचित** - वि० [स] पूजित, सम्मानित ।
**अपची** - स्त्री० [स] एक प्रकार का गंडमाला रोग ।
**अपच्छी** - 1. पु० [हिं] विपक्षी, विरोधी; 2. वि० पंखरहित ।
**अपछरा** - स्त्री० [हिं] अप्सरा ।
**अपछाया** - स्त्री० [सं] प्रेत; उपदेवता ।
**अपजय** - स्त्री० [स] हार, पराजय ।
**अपजस** - पु० [हि] अपयश, अपकीर्ति ।
**अपटन** - पु० [हि] उबटन ।
**अपटी** - स्त्री० [स] परदा, कनात; आवरण ।

**अपटीक्षेप** - पु० [सं] परदा हटाकर नाटक में पात्रों का सहसा प्रवेश।

**अपटु** - वि० [स] जो पटु न हो, कार्य में असमर्थ; आलसी; रोगी।

**अपटुता** - स्त्री० [स] अकुशलता, अनाड़ीपन।

**अपठ** - वि० [स] अपढ़, जो पढ़ा न हो; मूर्ख।

**अपठमान** - वि० [सं] जो न पढ़ा जाय।

**अपठित** - वि० [स] बिना पढ़ा हुआ।

**अपडर** - पु० [सं] शंका; भय।

**अपडरना** - अ० [हिं] शंकित होना; डरना।

**अपड़ाना** - अ० [हिं] खींचा-तानी करना।

**अपड़ाव** - पु० [हिं] झगड़ा, तकरार।

**अपढ़** - वि० [हिं] अनपढ़; मूर्ख।

**अपण्य** - वि० [स] न बेचने लायक।

**अपत** - वि० [हि] बिना पत्तों का; नम्र; निर्लज्ज; पापी।

**अपतई** - स्त्री [हिं] निर्लज्जता; चंचलता; ढिठाई।

**अपति (का)** - वि० स्त्री० [सं] बिना पति की, विधवा।

**अपतियारा** - वि० [हिं] कपटी, जिसका कोई पतियार या भरोसा न हो।

**अपत्य** - पु० [सं] संतान, औलाद।

**अपत्य-शत्रु** - पु० [सं] संतान ही जिसका शत्रु हो। जैसे, 'केंकड़ा'; जो सतान का शत्रु हो। जैसे, 'साँप'।

**अपथ** - पु० [सं] वह पथ या मार्ग जो चलने योग्य न हो या ग़लत हो, विकट मार्ग, कुपथ।

**अपथ्य** - 1. वि० [स] जो पथ्य अर्थात् शरीर के लिए हितकारी न हो; 2. पु० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।

**अपद** - पु० [स] बिना पैर के रेंगनेवाले जंतु। जैसे, 'सर्पादि।'

**अपदांतर** - 1. वि० [स] संयुक्त, मिला-जुला; समीप; बराबर; 2. क्रि० जल्द।

**अपदेवता** - पु० [सं] दुष्टदेव, राक्षस।

**अपदेश** - पु० [सं] बहाना: उद्देश्य, भेष बदलना।

**अपद्रव्य** - पु० [स] बुरी चीज; बुरा धन।

**अपद्वार** - पु० [सं] चोर-दरवाज़ा, बगली खिड़की।

**अपध्यान** - पु० [सं] बुरा विचार, हीन वस्तु का चिंतन।

**अपध्वंस** - पु० [सं] नाश; हार; निरादर।

**अपध्वस्त** - पु० [स] नष्ट किया हुआ; हारा हुआ; अपमानित।

**अपन** - सर्व० [हिं] 'अपना'।

**अपनपौ** - पु० [हिं] अपनापन; सुध, ज्ञान; अहंकार; मान।

**अपनयन** - पु० [स] दूर करना, हटाना।

**अपना** - सर्व० [हिं] निज का। मु० - —सा मुँह लेकर रह जाना - असफल होने पर लज्जित होना। अपनी हाँकना - डींग मारना। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू - अपनी बड़ाई आप करना। अपनी-अपनी पड़ी है - अपनी फिक्र लगी है।

**अपनाना** - स० [हिं] अपना बना लेना; अपने पक्ष में करना।

**अपनाम** - पु० [सं] बदनामी।

**अपनीत** - वि० [सं] दूर किया हुआ, निकाला हुआ।

**अपने-आप** - सर्व० [सं] स्वयं, खुद।

**अपभय** - पु० [सं] अकारण भय; निर्भयता।

**अपभ्रंश** - पु० [सं] पतन; विकार; शब्दों का बिगड़ा हुआ रूप।

**अपमान** - [सं] अनादर, बेइज़्ज़ती।

**अपमानना** - स० [हिं] निरादर या निंदा करना।

**अपमानित** - वि० [सं] अपमान किया हुआ, निंदित।
**अपमानी** - वि० [सं] अपमान करनेवाला।
**अपमार्ग** - पु० [सं] बुरा रास्ता।
**अपमार्जन** - पु० [सं] शुद्ध, सफ़ाई; संशोधन।
**अपमुख** - वि० [सं] टेढ़ा मुँहवाला।
**अपमृत्यु** - स्त्री० [सं] अकाल मृत्यु।
**अपयश** - पु० [स] अपकीर्ति, बदनामी; कलंक, लांछन।
**अपयान** - पु० [सं] भागना।
**अपयोग** - पु० [सं] बुरा योग; खराब समय; असगुन।
**अपरंच** - अव्य० [सं] और भी, फिर भी।
**अपरंपार** - वि० [सं] जिसका पारावार न हो, अनंत।
**अपर** - वि० [सं] दूसरा; पिछला, पूर्व का।
**अपरता** - स्त्री० [सं] परायापन।
**अपरती** - स्त्री० [हिं] बेईमानी; स्वार्थ।
**अपरत्र** - क्रि० [सं] दूसरे समय में, और कभी, और कहीं।
**अपरत्व** - पु० [सं] पिछलापन, अर्वाचीनता; परायापन।
**अपरदक्षिण** - पु० [सं] दक्षिण और पश्चिम का कोना, नैऋत्य।
**अपरदिशा** - स्त्री० [स] पश्चिम।
**अपरना** - स्त्री० [हिं] अपर्णा, पार्वती।
**अपरपक्ष** - पु० [सं] प्रतिवादी, मुद्दालेह; कृष्ण पक्ष, महालय पक्ष।
**अपरबल** - वि० [स] प्रचंड बलशाली।
**अपरलोक** - पु० [स] परलोक, स्वर्ग।
**अपरवश** - वि० [सं] दूसरे के वश में, पराधीन।
**अपरस** - 1. वि० [हिं] न छूने योग्य; 2. पु० खुजलाहट की एक बीमारी जो हथेली और तलवे में होती है।
**अपरांत** - पु० [सं] पश्चिम देश।
**अपरा** - 1. स्त्री० [सं] लौकिक या पदार्थ विद्या; पश्चिम; 2. वि० दूसरी।
**अपराजित** - 1. वि० [स] जो हारा न हो; 2. पु० विष्णु; शिव।
**अपराजिता** - स्त्री० [स] विष्णुक्रांता नामक लता; कोयल; दुर्गा; अयोध्या का एक नाम; एक छंद का नाम।
**अपराध** - पु० [सं] दोष, भूल, गुनाह, कुसूर।
**अपराधी** - वि० पु० [सं] दोषी, मुलज़िम।
**अपरामृष्ट** - वि० [स] अछूता, अव्यवहृत।
**अपरावर्ती** - वि० [स] जो पीछे न हटे, जो काम पूरा किये बिना न लौटे।
**अपराह्न** - पु० [सं] दिन का तीसरा पहर।
**अपरिकलित** - वि० [सं] अज्ञात, बेदेखा-सुना।
**अपरिक्लिन्न** - वि० [सं] सूखा।
**अपरिगत** - वि० [स] अज्ञात, अपरिचित।
**अपरिगृहीत** - वि० [सं] अस्वीकृत, त्यक्त।
**अपरिग्रह** - पु० [स] अस्वीकार, दान न लेना; निर्वाह खर्च से अधिक धन का त्याग।
**अपरिचय** - पु० [सं] जान-पहचान न होना।
**अपरिचित** - वि० [सं] अज्ञात, अनजान, अजनबी।
**अपरिच्छद** - वि० [सं] खुला हुआ, नगा; ग़रीब।
**अपरिच्छन्न** - वि० [सं] नंगा; सर्वव्यापक।
**अपरिच्छिन्न** - वि० [स] अभेद्य; मिला हुआ; असीम।
**अपरिणत** - वि० [सं] कच्चा; ज्यों का त्यों।
**अपरिणामी** - वि० [सं] विकारशून्य; निष्फल।
**अपरिणीत** - वि० [सं] अविवाहित, क्वारा।
**अपरिपक्व** - वि० [स] जो पका हुआ न हो, अधकच्चा।

**अपरिमाण** - वि० [सं] बेअंदाज़; ज़्यादा।
**अपरिमित** - वि० [सं] बेहद, असीम।
**अपरिमेय** - वि० [सं] बेअंदाज़, अनगिनत।
**अपरिवृत** - वि० [सं] जो ढका या घिरा हुआ न हो।
**अपरिशेष** - वि० [सं] अनंत, नित्य।
**अपरिष्कार** - पु० [सं] मैलापन; भद्दापन।
**अपरिष्कृत** - वि० [सं] मैला-कुचैला; बेडौल।
**अपरिसर** - वि० [सं] तंग।
**अपरिहार** - वि० [सं] दूर करने के उपाय की कमी।
**अपरिहार्य** - वि० [सं] जो न छोड़ा जा सके।
**अपरीक्षित** - वि० [सं] जिसकी जाँच न हुई हो।
**अपरुद्ध** - वि० [सं] क्षुब्ध।
**अपरूप** - वि० [सं] बदशकल, कुरूप; अपूर्व।
**अपरोक्ष** - वि० [सं] प्रत्यक्ष।
**अपर्णा** - स्त्री० [सं] पार्वती।
**अपर्याप्त** - वि० [सं] नाकाफ़ी।
**अपलक** - क्रि० [सं] एकटक।
**अपलक्षण** - पु० [सं] दोष, ऐब।
**अपलज्ज** - वि० [सं] बेहया; निर्लज्ज।
**अपलाप** - पु० [सं] बकवाद; बात बनाना।
**अपलोक** - पु० [सं] बदनामी, मिथ्या दोष।
**अपवर्ग** - पु० [सं] मोक्ष; दान; त्याग।
**अपवर्जन** - पु० [सं] छोड़ना, दान।
**अपवर्जित** - वि० [सं] छोड़ा हुआ।
**अपवर्तन** - पु० [सं] सक्षेप करना; लेन-देन; अंक काटना।
**अपवाद** - पु० [सं] बुराई, निंदा, अपकीर्ति; वह विधान जो किसी व्यापक सामान्य नियम के विरुद्ध हो।
**अपवारण** - पु० [सं] रोक; अंतर्द्धान।
**अपवारित** - वि० [सं] हटाया हुआ; छिपा हुआ; ढका हुआ।
**अपवाहक** - 1. वि० [सं] ले जानेवाला; 2. पु० भारी चीज़ उठानेवाला यंत्र।
**अपवाहन** - पु० [सं] एक जगह से दूसरी जगह ले जाना।
**अपवाहित** - वि० [सं] एक जगह से दूसरी जगह हटाया हुआ।
**अपवित्र** - वि० [सं] अशुद्ध, नापाक, मैला।
**अपवित्रता** - स्त्री० [सं] अशुद्धि, मैलापन, नापाकी।
**अपविद्ध** - 1. वि० [सं] छोड़ा हुआ; छेद किया हुआ; 2. पु० माता-पिता द्वारा त्यागा और किसी अन्य द्वारा पालित पुत्र (स्मृति०)।
**अपव्यय** - पु० [सं] फ़िज़ूल ख़र्च।
**अपव्ययी** - वि० [सं] व्यर्थ या फ़िज़ूल ख़र्च करनेवाला।
**अपशब्द** - पु० [सं] अशुद्ध या बुरा शब्द; असंबद्ध प्रलाप।
**अपसद** - वि० [सं] नीच।
**अपसना** } † अ० [हिं] चल देना;
**अपसवना** } खिसकना, भागना।
**अपसर्जन** - पु० [सं] त्याग, छोड़ देना।
**अपसव्य** - वि० [सं] दाहिना; उलटा, विपरीत।
**अपसारित** - वि० [सं] हटाया हुआ।
**अपसोस** - पु० [अ] अफ़सोस।
**अपसौन** - पु० [हिं] असगुन, किसी शुभ कार्य को आरंभ करते समय दिखाई देनेवाले बुरे लक्षण।
**अपस्नान** - पु० [सं] किसीके मरने के कारण किया जानेवाला स्नान।
**अपस्मार** - पु० [सं] मिरगी रोग जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्छित हो गिर पड़ता है।
**अपस्वर** - पु० [सं] बेसुरा या कर्कश स्वर।
**अपह** - प्र० [सं] नाश करनेवाला। जैसे, 'क्लेशापह' - दुख का नाश करनेवाला।

**अपहत** - वि० [सं] नष्ट किया हुआ; मारा हुआ।

**अपहरण** - पु० [सं] छीनना; लूट; चोरी; छिपाव।

**अपहरना** - स० [हिं] लूटना; चुराना; छिपाना।

**अपहर्ता** - पु० [सं] छीननेवाला; चोर; छिपानेवाला।

**अपहा** - वि० [सं] हिंसक, हत्यारा, वधिक।

**अपहार** - पु० [सं] छीनना, भगा ले जाना।

**अपहारी** - पु० [स] 'अपहर्ता'।

**अपहार्य** - वि० [सं] छीनने या चोरी करने योग्य।

**अपहास** - पु० [सं] उपहास; अकारण हँसी।

**अपहृत** - वि० [स] चुराया हुआ; छीना हुआ, लूटा हुआ।

**अपहेला** - पु० [हिं] तिरस्कार, फटकार।

**अपह्नव** - पु० [स] छिपाव, बहाना, टालमटूल।

**अपह्नुति** - स्त्री० [सं] 'अपह्नव'; एक अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध कर उपमान का स्थापन किया जाता है।

**अपांग** - 1. पु० [सं] कटाक्ष, आँख की कोर; 2. वि० अंगहीन।

**अपांशुला** - स्त्री० [स] पतिव्रता।

**अपा** - स्त्री० [हिं] घमंड, गर्व; आत्मभाव; आत्मज्ञान; आत्मगौरव; होश-हवास।

**अपाप** - 1. जो पाप न हो, पुण्य; 2. वि० पापरहित।

**अपामार्ग** - पु० [सं] चिचड़ा, दवा के काम में आनेवाला डेढ़ दो हाथ ऊँचा एक पौधा, लटज़ीरा; चिचड़ी, एक कीड़ा जो चौपायो के शरीर में चिपटकर उनका खून पीता है।

**अपाय** - 1. [सं] अलगाव; पीछे हटना; खतरा; हानि; 2. वि० लंगड़ा, अपाहिज।

**अपार** - वि० [स] जिसका पार या सीमा न हो, सीमारहित; असंख्य।

**अपारग** - वि० [स] जो पारगामी या पूर्ण न हो; असमर्थ।

**अपार्थ** - 1. वि० [सं] अर्थहीन; प्रभाव-शून्य; 2. पु० कविता में वाक्यार्थ स्पष्ट न होने का दोष।

**अपार्थिव** - वि० [सं] जो पार्थिव या मिट्टी का बना न हो; जो लौकिक न हो।

**अपावन** - वि० [सं] अपवित्र, अशुद्ध।

**अपावर्तन** - पु० [स] वापसी; पीछे हटना।

**अपाहिज** - [स] किसी अंग से हीन, लूला-लंगड़ा; असमर्थ; आलसी।

**अपाक** - वि० [स] अजीर्णता; अपक्व।

**अपाकरण** - पु० [स] हटाना, अलग करना; चुकता करना।

**अपाटव** - पु० [सं] अकुशलता, अनाड़ीपन, मूर्खता; सुस्ती।

**अपात्र** - वि० [सं] अयोग्य; मूर्ख।

**अपादान** - पु० [सं] विभाग; हटाना; व्याकरण में पाँचवाँ कारक।

**अपान** - पु० [सं] पाँच प्राण-वायुओं में से एक; जो हवा गुदा मार्ग से निकले;

**अपिंडी** - वि० [सं] अशरीरी, देहरहित।

**अपिच** - अव्य० [स] और भी।

**अपितु** - अव्य० [स] किंतु, बल्कि।

**अपिधान** - पु० [स] ढक्कन, आच्छादन।

**अपीन** - वि० [स] दुबला, कृश, हल्का।

**अपील** - स्त्री० [अं] निवेदन, प्रार्थना; पुनर्विचार के लिए प्रार्थना।

**अपुत्र** - वि० [स] पुत्रहीन, निस्संतान।

**अपुनपो**, **अपुनपौ** - वि० [देश] अपनापन; आत्मभाव।

**अपुनीत** - वि० [स] अपवित्र, अशुद्ध; दोषयुक्त।

**अपूठना** - स० [हिं] नष्ट करना ; उलटना ।

**अपूठा** - वि० [हिं] अनजान ; कच्चा ; अस्फुट, अविकसित । जैसे, 'निकट रहत पुनि दूरि बतावत हौ रस नाहिं अपूठे'—सूर ।

**अपूत** - 1. वि० [सं] अपवित्र, अशुद्ध ; पुत्रहीन ; 2. पु० कपूत ।

**अपूप** - पु० [सं] पुवा, पकान्न, यज्ञ में आहुति देने के लिए बनाया हुआ हविष्यान्न ।

**अपूर** - वि० [हिं] पूरा, भरपूर ।

**अपूरना** † - स० [हिं] पूरा करना, भरना ; हवा भरकर बजाना ।

**अपूरा** † - वि० [हिं] भरा हुआ, व्याप्त, फैला हुआ ।

**अपूर्ण** - वि० [सं] जो पूर्ण न हो, अधूरा ।

**अपूर्णता** - स्त्री० [सं] कमी, अधूरापन ।

**अपूर्व** - वि० [सं] जो पहले न रहा हो, नया ; अनोखा ; अलौकिक ।

**अपूर्वता** - [सं] अनोखापन ; विलक्षणता ।

**अपेक्षणीय** - वि० [सं] अपेक्षा करने योग्य ।

**अपेक्षा** - स्त्री० [सं] इच्छा, आकांक्षा ; ज़रूरत ; तुलना ।

**अपेक्षाकृत** - अव्य० [सं] मुक़ाबले में ।

**अपेक्षित** - वि० [सं] इच्छित ; ज़रूरी ; तुलना किया हुआ ।

**अपेय** - वि० [सं] न पीने योग्य ।

**अपेल** - वि० [हिं] जो पेला या हटाया न जा सके ; अटल ; दृढ़ ।

**अपैठ** - वि० [हिं] जहाँ पैठ या पहुँच न हो सके, दुर्गम, अगम ।

**अपोच** - वि० [हिं] जो पोच या ओछा न हो, श्रेष्ठ ।

**अपोहन** - पु० [सं] तर्क के द्वारा बुद्धि को तेज़ करना ।

**अप्रकट** - वि० [सं] जो प्रकट न हो, छिपा हुआ ।

**अप्रकाम** - वि० [सं] अल्प ।

**अप्रकाश** - पु० [सं] प्रकाश का अभाव, अंधकार ।

**अप्रकाशित** - वि० [सं] जिसमें प्रकाश या उजाला न हो, अंधकारमय, छिपा हुआ ; बिना छपा ।

**अप्रकाश्य** - वि० [सं] जो प्रकाश या प्रकट करने योग्य न हो ।

**अप्रकृत** - वि० [सं] अस्वाभाविक, बनावटी; दिखाऊ ; झूठा ; अप्रासंगिक ।

**अप्रख्यात** - वि० [सं] जो प्रसिद्ध न हो ।

**अप्रगल्भ** - वि० [सं] कच्चा ; निरुत्साहित ; जो बकवादी न हो ; शांत ।

**अप्रचलित** - वि० [सं] जो प्रचलित या चलन में न हो, जिसका व्यवहार न होता हो ।

**अप्रतिभ** - वि० [सं] प्रतिभाशून्य ; उदास, सुस्त ; मतिहीन ; लजीला ।

**अप्रतिम** - वि० [सं] अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़ ।

**अप्रतिष्ठा** - स्त्री० [सं] अनादर, अपमान, अपकीर्ति ।

**अप्रतिष्ठित** - वि० [सं] जो प्रतिष्ठित न हो ; तिरस्कृत ।

**अप्रतिहत** - वि० [सं] जो प्रतिहत या रोका न जा सके, बेरोक-टोक ; विजयी ।

**अप्रत्यक्ष** - वि० [सं] जो प्रत्यक्ष न हो, परोक्ष, छिपा हुआ ।

**अप्रत्यय** - पु० [सं] अविश्वास, शंका ।

**अप्रत्याशित** - वि० [सं] जिसकी आशा न की गयी हो ।

**अप्रधान** - वि० [सं] जो प्रधान या मुख्य न हो, गौण, साधारण ।

**अप्रमेय** - वि० [सं] जो नापा न जा सके, अपरिमित, अपार ।

**अप्रयुक्त** - वि० [सं] जिसका प्रयोग न हुआ हो, अव्यवहृत।

**अप्रशंसनीय** - वि० [सं] जो प्रशंसा योग्य न हो, निंदा के योग्य।

**अप्रशस्त** - वि० [सं] जो प्रशस्त या उदार न हो, नीच, कुत्सित।

**अप्रसन्न** - वि० [सं] जो प्रसन्न न हो, असंतुष्ट, नाराज़।

**अप्रसन्नता** - स्त्री० [सं] असंतोष, नाराज़गी।

**अप्रस्तुत** - वि० [सं] जो मौजूद न हो, अनुपस्थित; जिसकी चर्चा न आयी हो, अप्रासंगिक; गौण।

**अप्राकृत** - वि० [सं] जो प्राकृत या स्वाभाविक न हो, अस्वाभाविक; असाधारण।

**अप्राप्त** - वि० [सं] जो प्राप्त न हुआ हो, अलब्ध।

**अप्राप्य** - वि० [सं] जो प्राप्त न हो सके, अलभ्य।

**अप्रामाणिक** - वि० [सं] जो प्रमाण से सिद्ध न हो, ऊटपटांग।

**अप्रासंगिक** - वि० [सं] प्रसंगविरुद्ध, जिसकी कोई चर्चा न हो।

**अप्रिय** - वि० [सं] अरुचिकर, जो अच्छा न लगता हो।

**अप्रीति** - वि० [सं] अरुचि; वैर।

**अप्सरा** - स्त्री० [सं] परी, स्वर्ग की वेश्या।

**अफ़ई** - पु० [अ] काला नाग, विषधर सर्प।

**अफ़गन** - वि० [फ़ा] गिरानेवाला। जैसे, 'शेर अफ़गन' - शेर को गिरानेवाला।

**अफ़ग़ान** - पु० [फ़ा] अफ़ग़ानिस्तान का रहनेवाला, काबुली।

**अफ़गार** - वि० [फ़ा] घायल, जख़्मी।

**अफ़ज़ल** - वि० [अ] सर्वश्रेष्ठ।

**अफ़ज़ा** - वि० [फ़ा] बढ़ानेवाला।

**अफ़ज़ाइश** - स्त्री० [फ़ा०] वृद्धि, बढ़ोतरी।

**अफ़ज़ूँ** - वि० [फ़ा] बढ़ा हुआ। जैसे, 'रोजा अफ़ज़ू' - नित्य बढ़नेवाला।

**अफ़ज़ूनी** - स्त्री० [फ़ा] वृद्धि।

**अफ़ताली** - पु० [फ़ा] यात्रा में ठहरने आदि का प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

**अफ़नाना** - अ० [फ़ा] उबलना।

**अफ़यून** - स्त्री० [अ] अफ़ीम।

**अफ़रना** - अ० [हिं] पेट-भर खाकर ऊबना।

**अफ़रा** - पु० [हिं] अजीर्ण; पेट फूलना।

**अफ़राज़** - वि० [फ़ा] शोभा बढ़ानेवाला।

**अफ़राज़ी** - स्त्री० [फ़ा] बढ़ाने की क्रिया।

**अफराना** - स० [फ़ा] भोजन से तृप्त करना।

**अफ़रीदी** - पु० [फ़ा] पेशावर के उत्तर में रहनेवाली पठानों की एक जाति।

**अफ़रोख़्ता** - वि० [फ़ा] भड़का हुआ; जलता हुआ।

**अफल** - वि० [सं] फलहीन, निष्फल, व्यर्थ।

**अफ़लातून** - 1. पु० [अ] यूनानी दार्शनिक प्लेटो का अरबी नाम; 2. वि० बहुत अधिक अभिमान करनेवाला।

**अफवाह** - स्त्री० [अ] उड़ती ख़बर, किंवदंती।

**अफ़शाँ** - पु० [फ़ा] पानी की बूँदें।

**अफ़शा** - वि० [फ़ा] प्रकट, ज़ाहिर।

**अफ़शानी** - स्त्री० [फ़ा] छिड़कने की क्रिया या भाव; —काग़ज़ - जिसपर सोने का वरक़ छिड़का हो ऐसा काग़ज़।

**अफ़सर** - पु० [फ़ा] हाकिम, अधिकारी; सरदार।

**अफ़सरी** - स्त्री० [हिं] हुकूमत, शासन, अधिकार।

**अफ़साना** - पु० [फ़ा] कहानी, कथा।

**अफ़सुरदा** - वि० [फ़ा] मुरझाया हुआ, उदास; ठिठुरा हुआ।

**अफ़सूँ** - पु० [फ़ा] जादू, मंत्र, इंद्रजाल।
**अफ़सोस** - पु० [फ़ा] दुःख, रंज, पछतावा।
**अफ़ीफ़** - वि० [अ] सदाचारी।
**अफ़ीम** - स्त्री० [अ] पोस्त के ढेंढे का गोंद जो मादक, विषैला और कड़ुआ होता है।
**अफ़ीमची** - पु० [अ] अफ़ीम का नशा करनेवाला व्यक्ति।
**अफ़ू** - पु० [अ] क्षमा करना; (आधुनिक मराठी में) अफ़ीम।
**अफ़ूनत** - स्त्री० [अ] बदबू, दुर्गंध।
**अफेन** - वि० [सं] फेन या झागरहित।
**अब** - क्रि० [हिं] इस समय, इस क्षण। —की - इस बार; —जाकर - इतनी देर पीछे; —तब करना - आज कल का वादा करना; —तब लगना या होना - मरने का समय निकट आना।
**अबख़रा** - पु० [अ] पानी की भाप।
**अबतर** - वि० [अ] बुरा, ख़राब; दुर्दशा को प्राप्त।
**अबतरी** - स्त्री० [अ] दुर्दशा; ख़राबी।
**अबद** - स्त्री० [अ] अनंतता।
**अबदन्** - क्रि० [अ] सदा, हमेशा।
**अबदी** - वि० [अ] हमेशा रहनेवाला, अमर; अनादि।
**अबद्ध** - वि० [सं] जो बंधा न हो, मुक्त; स्वच्छंद।
**अबधू** - वि० [हिं] अज्ञानी, अबोध, मूर्ख।
**अबधूत** - पु० [सं] पापरहित; साधु; योगी; संन्यासी।
**अबर** - 1. वि० [हिं] कमज़ोर, बलहीन; 2. पु० [फ़ा] 'अब्र', बादल, मेघ।
**अबरक** - पु० [हिं] अभ्रक, भोड़ल, भोड़र, एक सफ़ेद धातु।
**अबरन** - वि० [हिं] जिसका वर्णन न हो सके, अवर्णनीय, अकथनीय; बिना रूपरंग का, वर्णहीन।
**अबरश** - पु० [फ़ा] सफ़ेद और लाल रंग का घोड़ा।
**अबरा** - पु० [फ़ा] अस्तर का उलटा, दुहरे वस्त्र का ऊपर का पल्ला।
**अबराज़** - स० [अ] प्रकट करना, रहस्य खोलना।
**अबरी** - स्त्री० [फ़ा] एक प्रकार का धारीदार चिकना और रंगीन काग़ज़; पच्चीकारी के काम में आनेवाला पीला पत्थर।
**अबरू** - स्त्री० [फ़ा] भौंह।
**अबल** - वि० [सं] निर्बल; कमज़ोर।
**अबलक** - 1. वि० [अ] दोरंगा, चितकबरा; 2. पु० सफ़ेद पैरवाला चितकबरा घोड़ा।
**अबलख़** - पु० [हिं] एक प्रकार का पक्षी।
**अबला** - स्त्री० [सं] स्त्री, औरत, नारी।
**अबवाब** - पु० [अ - अबाब का बहु०] अध्याय; मालगुज़ारी पर लगनेवाला विशेष सरकारी कर।
**अबस** - 1. वि० [अ] नाहक, व्यर्थ; 2. वि० जो अपने वश में न हो, बेबस।
**अबाँह** - वि० [हिं] जिसकी बाँह न हो, निहत्था।
**अबा** - स्त्री० [अ] अंगे से नीचे एक ढीला ढाला पहनावा।
**अबाक्** - क्रि० [हिं] बिना बोले, हक्का-बक्का।
**अबाती** - वि० [हिं] वायुरहित; भीतर ही भीतर सुलगनेवाला।
**अबाद** - वि० [हिं] निर्विवाद, जिसके संबंध में वाद न हो।
**अबादान** - वि० [अ - आबाद] बसा हुआ; भरा-पूरा।
**अबादानी** - स्त्री० [फ़ा] आबादानी, पूर्णता; बस्ती, शुभकामना; मनोरंजकता।
**अबादी** - वि० [देश] जो वायुकारक न हो।

**अबाध** - वि० [सं] बाधारहित, निर्विघ्न; अपार, बेहद।

**अबाधित** - वि० [सं] बाधारहित, बेरोक, स्वतंत्र।

**अबाध्य** - वि० [सं] जो रोका न जा सके, अनिवार्य।

**अबान** - वि० [हिं] बिना हथियार के।

**अबाबील** - स्त्री० [फ़ा] काले रंग की चिड़िया; कृष्ण, कन्हैया।

**अबार** - स्त्री० [हिं] देर, विलंब।

**अबाल** - 1. वि० [सं] जो बालक न हो, जवान; पूर्ण, पूरा; 2. पु० वह रस्सी जो चरखे की पंखुड़ियों को बांधकर तानी जाती है और जिसपर से होकर माला चलती है।

**अबास** - पु० [हिं] रहने का स्थान, मकान, आवास।

**अबीर** - पु० [अ] अभ्रक का चूर्ण मिली रंगीन बुकनी जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं।

**अबीरी** - वि० [अ] अबीर के रंग का, कुछ कुछ स्याही लिये लाल रंग का।

**अबुध** - वि० [सं] अबोध, नासमझ, मूर्ख।

**अबुहाना** - अ० [देश] बकना।

**अबू** - पु० [अ] पिता, बाप।

**अबूझ** - वि० [हिं] नासमझ, नादान।

**अबूत** - वि० [देश] निकम्मा, व्यर्थ का; निःसंतान।

**अबे** - अव्य० [हिं] अरे, ऐ; अपमान-जनक संबोधन; मु०—तबे कहना-निरादर सूचक वाक्य बोलना।

**अबेध** - वि० [हिं] बिना बिंधा, बिना छिदा।

**अबेर** - स्त्री० [हिं] विलंब; देरी।

**अबेला** - स्त्री - [हिं] असमय।

**अबेश** - वि० [फ़ा-बेश] बहुत, अधिक।

**अबैन** - वि० [हिं] चुप, मौन।

**अबोध** - 1. पु० [स] अज्ञान, मूर्खता; 2. वि० अनजान, नादान, मूर्ख।

**अबोल** - 1. वि० [हिं] बिना बोले हुए, चुप, जिसके विषय में बोल न सके, अनिर्वचनीय; 2. बुरा बोल।

**अबोला** - पु० [हिं] रंज से न बोलना, रूठने के कारण मौन।

**अब्ज** - पु० [स] जल से उत्पन्न वस्तु, कमल; शंख; बेत; चन्द्रमा; धन्वंतरि; कपूर; एक संख्या, सौ करोड़।

**अब्जा** - स्त्री० [स] लक्ष्मी।

**अब्जिनी** - स्त्री० [सं] कमलवन या पद्म-समूह या पद्मलता।

**अब्द** - पु० [सं] वर्ष; मेघ; कपूर; आकाश; पु० [अ] दास, गुलाम।

**अब्दाल** - पु० [अ - बदील का बहु०] धार्मिक व्यक्ति; एक प्रकार के मुसल-मान वली या महात्मा; मुहम्मदशाह के उत्तराधिकारी।

**अब्धि** - पु० [सं] समुद्र; सरोवर; ताल; सात की संख्या।

**अब्धिज** - पु० [सं] समुद्र से पैदा हुई वस्तु, शंख; चद्रमा; अश्विनीकुमार; लक्ष्मी; मोती आदि।

**अब्बा** - पु० [फ़ा] बाबा; पिता।

**अब्बास** - पु० [अ] एक निर्गंध कुसुम का पौधा; शेर; सिंह; मुहम्मदशाह के चाचा का नाम।

**अब्बासी** - स्त्री० [अ] मिश्र देश की एक प्रकार की कपास; एक प्रकार का लाल रंग।

**अब्र** - पु० [फ़ा] बादल, मेघ।

**अब्रह्मण्य** - पु० [सं] वह कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो; हिंसादि कर्म; जो ब्राह्मण-निष्ठ न हो।

**अब्रे-मुरदा** - पु० [फ़ा] मुरदा; बादल· स्पंज।
**अब्रू** - स्त्री० [फ़ा] भौंह।
**अब्लक़ा** - स्त्री० [अ] मैना की तरह की एक चिड़िया।
**अभंग** - 1. वि० [सं] अखंड, पूर्ण; न मिटनेवाली; लगातार ; 2. पु० मराठी भाषा का एक प्रसिद्ध छंद जिसमें तुकाराम आदि संतो की वाणी है।
**अभंगपद** - पु० [सं] श्लेष और यमक अलंकार का एक भेद जिसमें अक्षरों को इधर-उधर न करना पड़े, तोड़े बिना ही दूसरा अर्थ निकले।
**अभंगी** † - वि० [सं] जिसका कोई कुछ न ले सके।
**अभंगुर** - वि० [सं] न टूटनेवाला, मजबूत ; न मिटनेवाला, अविनाशी।
**अभंजन** - वि० [सं] न टूटनेवाला, अटूट, अखंड।
**अभक्त** - वि० [स] जो बाँटा न गया हो, समूचा ; जिसमें ईश्वर के प्रति भक्ति या श्रद्धा न हो।
**अभक्ष** - वि० [हिं] जो खाने योग्य न हो।
**अभक्ष्य** - वि० [सं] जो खाने के योग्य न हो, जिसके खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो।
**अभगत** - वि० [हिं] भक्तिहीन, जो भक्त न हो।
**अभग्न** - वि० [सं] जो भग्न या खंडित न हुआ हो, समूचा।
**अभद्र** - वि० [सं] जो भद्र या शुभ न हो, अशुभ ; कमीना, अशिष्ट, बेहूदा।
**अभद्रता** - स्त्री० [सं] अशुभ ; अशिष्टता, बेहूदगी।
**अभय** - वि० [सं] निर्भय, निडर।
**अभयपद** - पु० [सं] निर्भयपद ; मोक्ष, मुक्ति।
**अभया** - स्त्री० [सं] दुर्गा, भगवती ; हर्रे या हरीतकी।
**अभर** † - वि० [हिं] न ढोने योग्य, दुर्वह।
**अभरन** - 1. पु० [हिं] आभरण ; 2. वि० अपमानित ; दुर्दशाग्रस्त।
**अभरम** † - 1. वि० [हिं] भ्रम न करनेवाला, निःशंक ; 2. क्रि० निःसंदेह, निश्चय।
**अभव्य** - वि० [सं] न होने योग्य ; विलक्षण ; असुंदर ; अशुभ।
**अभाउ** - 1. वि० [अव] जो न भावे, जो अच्छा न लगे, अशोभन ; अरुचिकर ; 2. पु० सत्तारहितता।
**अभाग** - पु० [हिं] दुर्भाग्य, मंदभाग्य।
**अभागा** - वि० [हिं] भाग्यहीन, बदक़िस्मत।
**अभागी** - 1. वि० [हिं] जो जायदाद के भाग या हिस्से का अधिकारी न हो ; 2. स्त्री० भाग्यहीना।
**अभाव** - पु० [सं] भाव का न होना ; बुरा भाव।
**अभावना** - वि० [हिं] जो अच्छा न लगे, अप्रिय।
**अभावनीय** - वि० [हिं] जिसका पहले से विचार न हो, अकल्पित, अचिंतनीय ; अरुचिकर।
**अभावित** - वि० [सं] अकल्पित।
**अभि** - उप० [सं] सामने ; इच्छा ; समीप ; बारंबार ; दूर ; ऊपर।
**अभिक्रमण** - पु० [सं] धावा, चढ़ाई।
**अभिख्या** - स्त्री० [सं] नाम, कीर्ति ; शोभा।
**अभिगमन** - पु० [सं] पास जाना ; सहवास, संभोग ; देवताओ के स्थान को झाड़ू देकर लीप-पोतकर साफ़ करना।
**अभिगामी** - वि० [सं] अभिगमन करनेवाला।
**अभिग्रह** - पु० [सं] स्वीकार, ग्रहण ; झगड़ा, कलह , चोरी ; चढ़ाई, धावा ; दोषारोपण।

**अभिघात** - पु० [सं] चोट, मार।
**अभिघार** - पु० [सं] घी; घी से छौंकना या बघारना; घी की आहुति।
**अभिचर** - पु० [सं] दास; नौकर।
**अभिचार** - पु० [सं] मंत्र और यंत्र द्वारा हिंसा कर्म; तंत्र के प्रयोग।
**अभिचारी** - वि० [सं] अभिचार कर्म करनेवाला।
**अभिजन** - पु० [सं] कुल, वंश; जन्मभूमि; घर में सबसे बड़ा।
**अभिजात** - वि० [सं] अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलीन; पंडित; योग्य; मान्य; सुंदर।
**अभिजित** - 1. वि० [स] विजयी; 2. पु० एक नक्षत्र जिसमें तीन तारे होते हैं।
**अभिज्ञ** - वि० [सं] जानकार, निपुण।
**अभिज्ञा** - स्त्री० [सं] स्मृति, याद; बौद्ध शास्त्रानुसार ध्यान के बाद प्राप्त होनेवाला अलौकिक ज्ञानबल।
**अभिज्ञान** - पु० [सं] स्मृति; लक्षण; पहचान, निशानी।
**अभिधा** - स्त्री० [सं] शब्द की तीन शक्तियो में से एक जो वाच्यार्थ को प्रकट करती है।
**अभिधान** - पु० [स] नाम; कथन; शब्दकोश।
**अभिधायक** - वि० [सं] सूचक; परिचायक; कहनेवाला; निर्वाचक।
**अभिधेय** - पु० [सं] नाम; नाम लेने योग्य; प्रतिपाद्य।
**अभिनंदन** - पु० [सं] आनंद; संतोष; प्रशंसा; उत्तेजना; विनीत प्रार्थना।
**अभिनंदित** - वि० [सं] वंदित, प्रशंसित।
**अभिनय** - पु० [सं] नाटक का खेल; स्वांग, नक़ल।
**अभिनव** - वि० [सं] नया, नवीन, ताज़ा।
**अभिनिविष्ट** - वि० [सं] मनोयोगी; लिप्त, बैठा हुआ; धँसा हुआ, गड़ा हुआ।
**अभिनिवेश** - पु० [सं] प्रवेश; गति; मनोयोग; दृढ़ संकल्प।
**अभिनीत** - वि० [सं] अभिनय किया हुआ; सुसज्जित; न्यायपूर्वक लिया हुआ।
**अभिनेता** - पु० [सं] अभिनय करनेवाला व्यक्ति, नाटक का पात्र।
**अभिनेय** - वि० [सं] अभिनय करने योग्य।
**अभिन्न** - वि० [सं] जो भिन्न न हो, सटा हुआ, मिला हुआ।
**अभिन्नता** - स्त्री० [स] भिन्नता का अभाव; लगाव, संबंध; मेल।
**अभिपन्न** - वि० [सं] आपत्तिग्रस्त; मुजरिम, अपराधी; पापी।
**अभिप्राय** - पु० [सं] आशय, मतलब।
**अभिप्रेत** - वि० [स] इष्ट, अभिलषित।
**अभिभावक** - वि० [सं] संरक्षक; पराजित करनेवाला।
**अभिभाषण** - पु० [सं] भाषण, व्याख्यान; वकील की बहस।
**अभिभूत** - वि० [सं] पराजित; पीड़ित; वशीभूत; विचलित।
**अभिमंत्रण** - पु० [सं] मंत्र द्वारा संस्कार; आवाहन।
**अभिमत** - 1. वि० [सं] मनोनीत, वांछित; सम्मत; 2. पु० मत, राय; विचार; मनचाही बात।
**अभिमान** - पु० [सं] अहंकार, गर्व, घमंड।
**अभिमानी** - वि० [सं] अहंकारी, घमंडी।
**अभिमुख** - क्रि० [स] सामने।
**अभियान** - पु० [सं] चढ़ाई, हमला।
**अभियुक्त** - वि० [सं] प्रतिवादी, मुलज़िम।
**अभियोक्ता** - वि० [सं] वादी, मुद्दई, फ़रियादी।

**अभियोग** - पु० [सं] नालिश, मुक़द्दमा; आक्रमण; उद्योग; लगन।
**अभियोगी** - वि० [सं] अभियोग चलानेवाला, फ़रियादी।
**अभिरत** - वि० [सं] लीन, अनुरक्त; सहित।
**अभिरना** † - स० [ब्र] लड़ना; सहारा लेना।
**अभिराम** - वि० [सं] मनोहर, सुंदर।
**अभिरुचि** - स्त्री० [सं] चाह; पसन्द; प्रवृत्ति।
**अभिलषित** - वि० [सं] इष्ट, चाहा हुआ।
**अभिलाषा** - स्त्री० [सं] इच्छा।
**अभिलाषी** - वि० [सं] इच्छा करनेवाला।
**अभिवंदन** - पु० [सं] प्रणाम; स्तुति।
**अभिवंद्य** - वि० [सं] वंदना के योग्य।
**अभिवचन** - पु० [सं] प्रतिज्ञा, वादा।
**अभिवांछित** - वि० [सं] इच्छित।
**अभिवादक** - वि० [सं] वंदना करनेवाला।
**अभिवादन** - पु० [सं] वंदना, स्तुति।
**अभिव्यंजक** - वि० [सं] भाव प्रकट करनेवाला, प्रकाशक, बोधक।
**अभिव्यंजन** - पु० [सं] प्रकट करना, सूचित करना।
**अभिव्यक्त** - वि० [सं] प्रकट, प्रकाशित।
**अभिव्यक्ति** - स्त्री० [सं] स्पष्टीकरण; प्रकाशन।
**अभिशप्त** - वि० [सं] जिसे शाप दिया गया हो।
**अभिशाप** - पु० [सं] शाप, बद्दुआ; मिथ्या दोषारोपण।
**अभिषंग** - पु० [सं] पराजय; निंदा; आलिंगन; शपथ; दुख।
**अभिषिक्त** - वि० [सं] जिसका अभिषेक हुआ हो, राजपद पर निर्वाचित।
**अभिषेक** - पु० [सं] छिड़काव; विधिपूर्वक राजतिलक करना, राजतिलक।
**अभिष्टुत** - वि० [सं] स्तुति किया हुआ।
**अभिष्यंद** - स्त्री० [सं] बहाव, स्राव; आँख आना।
**अभिसंधान** - पु० [सं] धोखा; लक्ष्य।
**अभिसंधि** - स्त्री० [सं] धोखा; षड्यंत्र; साज़िश।
**अभिसर** - पु० [सं] साथी; सहायक; अनुचर।
**अभिसरण** - पु० [सं] आगे जाना; प्रिय से मिलने जाना।
**अभिसार** - पु० [सं] प्रिय-मिलन के लिए संकेत-स्थान पर जाना; सहारा, सहाय।
**अभिसारिका** - स्त्री० [सं] संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिए जानेवाली नायिका।
**अभिसारिणी** - स्त्री० [सं] अभिसारिका।
**अभिसारी** - वि० [सं] साधक; सहायक; संकेत-स्थान पर प्रिया से मिलने जानेवाला।
**अभिहार** - पु० [सं] लूटमार; जादू करना; डकैती। जैसे, 'करि अभिहार कै सभा को ज्ञान लूट्यौ है।'—रत्नाकर।
**अभिहारी** - वि० [सं] हरण करनेवाला।
**अभिहित** - वि० [सं] कहा हुआ।
**अभी** - क्रि० [हिं] इसी समय।
**अभीक्ष्ण** - क्रि० [सं] बारंबार, निरंतर।
**अभीप्सित** - वि० [सं] अभीष्ट, चाहा हुआ।
**अभीर** - 1. पु० [सं] अहीर, ग्वाला; 2. वि० निडर, भीड़रहित।
**अभीष्ट** - वि० [सं] चाहा हुआ, वांछित; मनोनीत, अभिप्रेत।
**अभुआना** - अ० [हिं] हाथ-पैर पटकना और ज़ोर-ज़ोर से सिर हिलाना; भूत-प्रेत आदि से आविष्ट होना। जैसे, 'एक होय तेहि उत्तर दीजै सूर उठी अभुआनी।'—भ्रमर गीत।

**अभुक्त** - वि० [सं] बिना खाया हुआ ; भोग में न आया हुआ ; अछूता ।
**अभूत** - वि० [सं] जो हुआ न हो ; वर्तमान ; अपूर्व ।
**अभूतपूर्व** - वि० [सं] जो पहले न हुआ हो, अनोखा ।
**अभेद** - पु० [सं] अभिन्नता ; एकरूपता ।
**अभेद्य** - वि० [सं] जिसका भेदन न हो सके ; अखंडनीय ।
**अभेरना** - स० [हिं] भिड़ाना, सटाना ।
**अभेरा** - पु० [हिं] मुठभेड़, रगड़ ; टक्कर ।
**अभोगी** - वि० [सं] विरक्त ।
**अभोग्य** - वि० [सं] जो भोग करने योग्य न हो ।
**अभौतिक** - वि० [सं] जो पंचभूत का बना न हो ; अगोचर ।
**अभ्यंग** - पु० [स] लेपन, शरीर में तेल लगाना, तेलमर्दन ।
**अभ्यंतर** - पु० [सं] मध्य, बीच ; हृदय ; 2. क्रि० भीतर ।
**अभ्यर्थना** - स्त्री० [सं] प्रार्थना, विनय ; अगवानी, स्वागत ।
**अभ्यस्त** - वि० [सं] अभ्यास किया हुआ ; दक्ष, निपुण ।
**अभ्यागत** - वि० [स] सामने आया हुआ ; अतिथि, मेहमान ।
**अभ्यासी** - वि० [सं] अभ्यास करनेवाला ।
**अभ्युत्थान** - पु० [सं] उठना ; उन्नति, आरंभ ; उदय ; उत्पत्ति ।
**अभ्युदय** - पु० [सं] उत्पत्ति ; वृद्धि ; उदय ।
**अभ्युपगम** - पु० [सं] अंगीकार ; प्राप्ति ।
**अभ्र** - पु० [सं] बादल ; आकाश ; अभ्रक ; धातु ; सोना ।
**अभ्रक** - पु० [सं] अबरक, भोडर ।
**अभ्रांत** - वि० [सं] भ्रमरहित, निश्चित ।
**अमंगल** - वि० [सं] अशुभ ।
**अमंद** - वि० [सं] जो मंद या धीमा न हो, तेज़, उद्योगी ; चलता-पुरजा ।
**अमचूर** - पु० [देश] सुखाये हुए कच्चे आम का चूर्ण ।
**अमज़द** - वि० [अ] गुरुजन ।
**अमड़ा** - पु० [हिं] आम की तरह का छोटा खट्टा फल ।
**अमत्त** - वि० [सं] मदरहित ; शांत ।
**अमन** पु० [अ] शांति ; रक्षा ।
**अमनस्क** - वि० [सं] उदासीन, उदास ।
**अमनैक** - पु० [देश] सरदार, अधिकारी ।
**अमर** - 1. वि० [सं] जो न मरे ; 2. पु० देवता ।
**अमरख** - पु० [हिं] क्रोध, रंज ।
**अमरपख** - पु० [हि] पितृपक्ष ।
**अमरपद** - पु० [सं] मुक्ति, मोक्ष ।
**अमरपुर** - पु० [सं] देवताओ का नगर, अमरावती ।
**अमरबेल** - स्त्री० [सं] एक पीली लता, आकाश-बेलि ।
**अमरलोक** - पु० [सं] इन्द्रपुरी ।
**अमरस** - पु० [हिं] आम का सुखाया हुआ रस ।
**अमराई** - स्त्री० [हिं] आम का बाग़ ।
**अमरालय** - पु० [सं] स्वर्ग ।
**अमरी** - स्त्री० [सं] देवकन्या ; एक पेड़ ; आसन ।
**अमरूद** - पु० [फा०] एक प्रसिद्ध फल, बिही, अमरूत, अमृतफल ।
**अमर्त्य** - पु० [सं] देवता ।
**अमर्ष** - पु० [सं] क्रोध ; असहिष्णुता ।
**अमर्षी** - वि० [सं] असहनशील ; क्रोधी ।
**अमल** - 1. वि० [सं] निर्मल, निर्दोष, 2. पु० अभ्रक ।

**अमल** - पु० [अ] व्यवहार, नशा; व्यसन; प्रभाव।
**अमलदारी** - स्त्री० [अ] अधिकार, शासन; दख़ल।
**अमलपट्टा** - पु० [हिं] अधिकार-पत्र।
**अमला** - स्त्री० [स] लक्ष्मी।
**अमला** - पु० [अ] कर्मचारी।
**अमला-फैला** - पु० [अ] कचहरी के कर्मचारी।
**अमली** - 1. वि० [अ] व्यावहारिक; अकर्मण्य; नशेबाज़।
**अमलोनी** - स्त्री० [हिं] नोनियाँ घास।
**अमहर** - स्त्री० [देश] कच्चे आम की सुखाई हुई फांक।
**अमांस** - वि० [हिं] दुर्बल, मांसहीन।
**अमा** - स्त्री० [सं] अमावास्या; घर; मर्त्यलोक।
**अमातना** - स० [हिं] आमंत्रण देना।
**अमात्य** - पु० [सं] मंत्री, वज़ीर।
**अमान** - वि० [स] निरभिमान; बेअंदाज़।
**अमान** पु० [अ] शांति; रक्षा; शरण।
**अमानत** - स्त्री० [अ] धरोहर।
**अमानतदार** - पु० [अ] धरोहर रखनेवाला।
**अमानतन** - क्रि० [अ] अमानत के रूप में।
**अमानतनामा** - पु० [अ] धरोहर-पत्र।
**अमाना** - अ० [हिं] समाना; अँटना; गर्व करना।
**अमानी** - 1. वि० [सं] निरहंकारी; 2. स्त्री० [अ] वह भूमि जिसका ज़मीन्दार सरकार हो; फ़सल के विचार से रियायत किये हुए लगान की वसूली।
**अमानुष** - 1. वि० [सं] मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर का, मानवीय स्वभाव के विरुद्ध, पैशाचिक, 2. पु० मनुष्य से भिन्न प्राणी; देवता; राक्षस।
**अमानुषिक**, **अमानुषी** } वि० [सं] अमानुष।
**अमामा** - पु० [अ] पगड़ी।
**अमाया** - वि० [सं] मायारहित, निर्लिप्त, निश्छल।
**अमाल** - पु० [अ] शासक।
**अमालनामा** - पु० [अ] अच्छे बुरे कार्यों को दर्ज़ करनेवाली बही।
**अमावट** - स्त्री० [हिं] आम का सुखाया हुआ रस।
**अमावस** - स्त्री० [हि] अमावास्या।
**अमाह** - पु० [हिं] आँख की पुतली से निकला हुआ लाल मांस।
**अमिट** - वि० [हिं] जो न मिटे, स्थायी; जिसका होना निश्चित हो, अटल।
**अमित** - वि० [स] असीम, बेहद; अधिक।
**अमिताभ** - पु० [सं] बुद्धदेव।
**अमिय** † - पु० [हिं] अमृत।
**अमियमूरि** † - स्त्री० [हि] संजीवनी बूटी।
**अमिल** - वि० [हि] न मिलने योग्य, अप्राप्य; बेमेल, बेजोड़; ऊबड़-खाबड़।
**अमिली** - स्त्री० [हिं] मेल या अनुकूलता न होना, विरोध, मनमुटाव, वैमनस्य।
**अमिश्रित** - वि० [सं] बेमिलावट का, ख़ालिस।
**अमिष** - 1. पु० [सं] छल या बहाने का अभाव; 2. वि० निश्चल।
**अमी** † - पु० [हिं] अमृत।
**अमीकर** - पु० [हि] चंद्रमा।
**अमीन** - पु० [अ] एक अदालती कर्मचारी।
**अमीनी** - स्त्री० [अ] अमीन का काम।
**अमीर** - पु० [अ] सरदार; धनिक; उदार।
**अमीर-उल-उमरा** - पु० [अ] अमीरों का सरदार।
**अमीर-उल-बहर** - पु० [अ] जलसेना का सेनापति।

**अमीरज़ादा** - पु० [अ] राजकुमार, शाहज़ादा।
**अमीराना** - वि० [अ] अमीरो का-सा।
**अमीरी** - स्त्री० [अ] दौलतमंदी ; उदारता।
**अमुक** - वि० [सं] फलाँ, निर्दिष्ट, वह जिसका नाम न लिया गया हो।
**अमुग्ध** - वि० [सं] जो मोहित न हो; जितेन्द्रिय ; चतुर।
**अमुत्र** - अव्य० [सं] परलोक ; जन्मातर।
**अमूद** - पु० [अ] सीधी खड़ी लकीर।
**अमूम** - वि० [अ] साधारण, आम।
**अमूमन** - क्रि० [अ] साधारणतः, आम तौर पर।
**अमूर** - पु० [अ] बहुत ; काम, घटना; विषय ; समस्या ; विधि ; आज्ञा।
**अमूर्त्त** - 1. वि० [सं] निराकार; 2. पु० परमेश्वर ; जीव ; काल ; आकाश ; मन ; वायु ; दिशा ; आत्मा।
**अमूर्त्ति** - वि० [सं] मूर्त्तिरहित, निराकार।
**अमूलक** - वि० [सं] जिसकी कोई जड़ न हो ; असत्य।
**अमूल्य** - वि० [सं] जिसका मूल्य निर्धारित न हो सके, अनमोल, बहुमूल्य ; जिसका कुछ भी मूल्य न हो ; तुच्छ।
**अमृत** - पु० [सं] वह वस्तु जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है, सुधा, पीयूष ; जल ; घी ; अन्न ; मुक्ति ; दूध ; औषध; विष ; बछनाग ; पारा ; धन ; सोना ; मीठी वस्तु।
**अमृतकर** - पु० [सं] चन्द्रमा।
**अमृतगति** - स्त्री० [सं] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, एक जगण फिर एक नगण तथा अंत में गुरु होता है।
**अमृतगर्भ** - पु० [सं] ईश्वर, ब्रह्म।
**अमृततरंगिणी** - स्त्री० [सं] चांदनी।
**अमृतत्व** - पु० [सं] मरण का अभाव, मोक्ष ; मुक्ति।
**अमृतदान** - पु० [हि] भोजन की चीज़ें रखने का एक ढकनदार बर्तन, कटोरदान।
**अमृतधारा** - स्त्री० [सं] एक वर्णवृत्त जिसके चार चरणों में से प्रथम में बीस, दूसरे में बारह, तीसरे में सोलह और चौथे में आठ अक्षर होते हैं।
**अमृतफल** - पु० [सं] नाशपाती ; परवल।
**अमृतफला** - स्त्री० [सं] दाख, मुनक्का, अंगूर ; आँवला।
**अमृतबान** - पु० [सं] रोग़न किया हुआ एक प्रकार का मिट्टी का बरतन।
**अमृतमहल** - स्त्री० [हि] मैसूर राज्य की एक ख़ास नस्ल की गाय।
**अमृतयोग** - पु० [सं] फलित ज्योतिष में एक फलदायक योग।
**अमृतवल्ली** - स्त्री० [सं] गुरुच की बेल।
**अमृतसार** - पु० [स] अंगूर ; घी ; मक्खन।
**अमृतांधस्** - पु० [सं] देवता।
**अमृता** - स्त्री० [सं] हड़ ; आँवला ; तुलसी ; पिप्पली ; मदिरा।
**अमेजना** † - स० [उ] मिलावट करना।
**अमेठना** - स० [देश] मरोड़ना।
**अमेध्य** - वि० [सं] जिस पशु या वस्तु का यज्ञ में उपयोग नही किया जाता हो।
**अमेय** - वि० [सं] असीम, बेहद ; जो जाना न जा सके, अज्ञेय।
**अमेव** † - वि० [देश] बेहद।
**अमोघ** - वि० [सं] अचूक ; व्यर्थ न होने-वाला।
**अमोघा** - स्त्री० [सं] हड़ ; पाढ़र का फूल और पेड़।
**अमोनिया** - पु० [अंग्रे] नौसादर।
**अमोरी** - स्त्री० [देश] छोटा आम, अंबिया।

**अमोल, अमोलक** - वि० [हिं] अमूल्य, क़ीमती ।

**अमोला** - पु० [हिं] आम का नया निकला हुआ पौधा ।

**अमोही** - वि० [सं] मोहरहित, विरक्त ; निष्ठुर ।

**अमौआ** - पु० [हि] आम के रस के रंग का-सा वस्त्र ।

**अम्द** - पु० [अ] विचार ; इरादा ।

**अम्दन** - क्रि० [अ] जानबूझकर, इरादे से ।

**अम्बार** - पु० [फ़ा] ढेर, राशि ।

**अम्बोह** - पु० [फ़ा] भीड़ ।

**अम्मामा** - पु० [अ] एक प्रकार का बड़ा साफ़ा ।

**अम्मारा** - वि० [फ़ा] उग्र, कठोर ; स्वेच्छाचारी ।

**अम्मारी** - स्त्री० [देश] हाथी का हौदा ।

**अम्मू** - पु० [अ] पिता का भाई, चाचा ।

**अम्र** - पु० [अ] बात; काम ; आज्ञा ; घटना ।

**अम्ल** - 1. वि० [सं] खट्टा , 2. पु० तेज़ाब ।

**अम्लजन** - पु० [हि] आक्सिजन ।

**अम्लपित्त** - पु० [सं] एक रोग जिसमें किया हुआ भोजन पित्त के कारण खट्टा हो जाता है ।

**अम्लसार** - पु० [सं] काँजी, खटाई ; हिंताल ; अमलबेत ; आमलासार गंधक ।

**अम्लान** - वि० [सं] बिना मुरझाया हुआ ; निर्मल, स्वच्छ ; जो उदास न हो ।

**अम्लिका** - स्त्री० [स] इमली ।

**अम्लोद्गार** - स्त्री० [सं] खट्टी डकार ।

**अम्हौरी** - स्त्री० [हिं] बहुत छोटी-छोटी फुंसियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण लोगों के शरीर में निकल आती हैं, अँधौरी ।

**अय** - 1. पु० [सं] लोहा ; आग ; 2. अव्य० संबोधन का शब्द, हे ।

**अयज़न** - वि० [अ] ऐज़न ; उपर्युक्त, वही, डिट्टो ।

**अयत्न** - 1. पु० [सं] यत्न का अभाव, उद्योगशून्यता ; 2. वि० यत्नशून्य ।

**अयथा** - 1. [सं] झूठ ; अयोग्य ; 2. पु० अनुचित काम ।

**अयन** - पु० [सं] गति, चाल ; सूर्य और चंद्रमा की दक्षिण से उत्तर तथा उत्तर से दक्षिण ओर की गति जिसे उत्तरायन और दक्षिणायन कहते हैं ; राशिचक्र की गति ; सेना की गति ; मार्ग, राह ; घर, स्थान ; काल, समय ; गाय या भैंस के थन के ऊपर का भाग जिसमें दूध रहता है ।

**अयश** - पु० [सं] अपकीर्ति ; निंदा ।

**अयस** - पु० [सं] लोहा ।

**अयस्कांत** - पु० [सं] चुंबक ।

**अयस्कार** - पु० [सं] लोहार ।

**अयाँ** - वि० [अ] प्रगट, ज़ाहिर ; स्पष्ट ।

**अयाचक** - वि० [सं] न माँगनेवाला ; संतुष्ट ।

**अयाचित** - वि० [सं] बिना माँगे हुए ।

**अयाची** - वि० [सं] न माँगनेवाला ; धनी ।

**अयाच्य** - वि० [सं] भरा-पूरा, जिसे माँगने की ज़रूरत न हो ; संतुष्ट ।

**अयान** - 1. पु० [सं] स्वभाव ; स्थिरता ; 2. वि० बिना सवारी का, पैदल ।

**अयानत** - स्त्री [अ] मदद ।

**अयाल** - पु० [फ़ा] घोड़े और सिंह की गर्दन के बाल, केसर ।

**अयाल** - पु० [अ] बाल-बच्चे आदि ।

**अयालदार** - पु० [अ] बाल-बच्चेवाला आदमी ।

**अयालदारी** - स्त्री० [अ] घर-गृहस्थी ।

**अयि** - अव्य० [सं] संबोधन, हे, अरे।
**अयुक्त** - वि० [सं] जो युक्त या उचित न हो, अनुचित।
**अयुक्ति** - स्त्री० [सं] युक्ति या व्यवस्था का अभाव, अव्यवस्था, गड़बड़ी।
**अयुग** } **अयुग्म** } वि० [सं] जो युग या सम न हो, विषम, अकेला।
**अयुत** - पु० [सं] दस हज़ार की संख्या।
**अये** - अव्य० [सं] क्रोध भय आदि व्यक्त करने के लिए उपयुक्त संबोधन शब्द।
**अयोग** - 1. पु० [स] अच्छे योग या समय का अभाव, कुसमय; कठिनाई; असंभव; 2. वि० बुरा; अनुचित।
**अयोगिक** - वि० [सं] अमिश्रित; रूढि।
**अयोग्य** - वि० [सं] जो योग्य न हो, नाक़ाबिल; निकम्मा; अनुचित।
**अयोधन** - पु० [सं] निहाई; हथौड़ा।
**अयोध्या** - पु० [सं] वाल्मीकीय रामायण के अनुसार इस प्रसिद्ध शहर को वैवस्वत मनु ने सरयू के किनारे बसाया था। रामचंद्र जी का जन्म यहीं हुआ था और यह हिन्दुओं की सप्तपुरियों में से एक है।
**अयोनि** - वि० [सं] जिसका जन्म न हो, नित्य।
**अयोनिज** - 1. वि० [सं] जो योनि से उत्पन्न न हो, स्वयंभू; 2. पु० विष्णु; ब्रह्मा।
**अय्याम** - पु० [अ] दिन, काल; स्त्रियों का रज-काल। मुहा०—से होना - रजस्वला होना।
**अय्यूब** - पु० [अ] एक बहुत ही सहनशील पैगंबर।
**अरंग** - पु० [हिं] सुगंध, महक।
**अरंभना** † - 1. अ० [हिं] बोलना; आरंभ होना; 2. स० आरंभ करना, शुरू करना।
**अर** - पु० [सं] पहिये के बीच से परिधि तक की आड़ी लकड़ी, आरी, कोना; हठ, ज़िद्द।
**अरई** - स्त्री० [हिं] बैल हाँकने की कीलदार छड़ी।
**अरक** - पु० [सं] किसी पदार्थ को उबालकर भाफ से निकाला हुआ रस, आसव; पसीना। मुहा०—होना - पसीने में भीग जाना।
**अरक़गीर** - पु० [अ] एक प्रकार की टोपी; घोड़े की जीन के नीचे रखा जानेवाला नमदे का बना हुआ टुकड़ा।
**अरकटी** - पु० [अ] पतवार पर रहकर नाव को घुमानेवाला माँझी।
**अरकना** - अ० [देश] टकराना; फटना; गिरना।
**अरकाटी** - पु० [हिं] कुली भरती कराकर बाहर भेजनेवाला व्यक्ति।
**अरकान** - पु० [अ] प्रधान राज कर्मचारी, मंत्रिवर्ग।
**अरक्षित** - वि० [सं] जिसकी रक्षा न की गयी हो।
**अरगजा** - पु० [फ़ा] एक सुगंधित उबटन जो केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाकर बनाया जाता है।
**अरगजी** - 1. पु० [फ़ा] एक रंग जो अरगजा का-सा होता है; 2. वि० अरगजा के रंग का; अरगजा की-सी सुगंधि का।
**अरगट** † - वि० [देश] अलग, पृथक्, भिन्न।
**अरगनी** - स्त्री० [हिं] बाँस, लकड़ी वा रस्सी जो घर में कपड़े आदि रखने के लिए बाँधी या लटकाई जाय।
**अरगल** - पु० [हिं] किवाड़ बंद करने की लकड़ी, ब्योंड़ा।
**अरगवान** - पु० [फ़ा] एक पौधा जिसके फूल और फल बैगनी रंग के होते हैं।

**अरगवानी** - 1. पु० [फ़ा] लाल रंग; बैगनी रंग; 2. वि० लाल; बैगनी।

**अरगाना** † - 1. अ० [देश] अलग होना; मौन होना; 2. स० अलग करना, छाँटना।

**अरघ** - † पु० [हिं] सोलह उपचारों में से एक; वह जल जिसे फूल आदि के साथ देवताओं के सामने चढ़ाते हैं; किसी महापुरुष के आगमन पर हाथ धोने के लिए दिया जानेवाला जल; सामान्यत: आदर-सम्मान के साथ अर्पण किया हुआ जल।

**अरघट्ट** - पु० [सं] कुएँ से पानी निकालने का रहट नाम का यंत्र, अरहट।

**अरघा** - पु० [हिं] वह पात्र जिसमें अर्घ रखकर दिया जाय।

**अरघान** - स्त्री० [हिं] गंध, मॅहक।

**अरचन** - पु० [हिं] पूजा।

**अरचना** - स० [हिं] पूजा करना।

**अरचल** † - स्त्री० [हिं] अड़चन, रुकावट।

**अरचा** - स्त्री० [हिं] अर्चा, पूजा।

**अरचि** - स्त्री० [हिं] आभा, प्रकाश।

**अरचित** - वि० [हिं] अर्चित, पूजा किया हुआ, सम्मानित; अनिर्मित।

**अरज** - 1. स्त्री० [अ] अर्ज़, बिनती, निवेदन। 2. पु० ज़मीन; चौड़ाई।

**अरजल** - 1. पु० [अ] वह घोड़ा जिसके तीन पाँव एक रंग के हो और चौथा दूसरे रंग का। ऐसा घोड़ा ऐबी और नुक़सान करनेवाला माना जाता है। 2. वि० नीच जाति का पुरुष; वर्ण-संकर।

**अरज़ी** - स्त्री० [अ] अर्ज़ी, आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र।

**अरझना** - अ० [हिं] उलझना।

**अरणा** - स्त्री० [हिं] जंगली भैंसा।

**अरणि** }
**अरणी** } स्त्री० [सं] एक वृक्ष; एक काठ का बना हुआ यंत्र जो यज्ञों में आग निकालने के काम में आता है, अग्निमंथ; सूर्य।

**अरणिसुत** - पु० [सं] शुकदेव।

**अरण्य** - पु० [सं] वन, जंगल; —गान - सामवेद में एक गान जो जंगल में गाया जाता था; —रोदन - ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे, व्यर्थ का कार्य।

**अरत** - वि० [सं] विरक्त, अनासक्त।

**अरति** - स्त्री० [सं] विराग, चित्त का न लगना।

**अरथाना** † - स० [हिं] समझाना, विवरण करना; व्याख्या करना।

**अरथी** - स्त्री० [हिं] लकड़ी की बनी सीढ़ी के आकार की वस्तु जिसपर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं, टिखटी; पैदल।

**अरदन** - पु० [सं] बेदाँत का, दंतविहीन।

**अरदना** † - स० [हिं] रौंदना, कुचलना; वध करना, नाश करना।

**अरदली** - पु० [हिं] वह चपरासी या नौकर जो किसी अफ़सर के साथ रहता है।

**अरदावा** - पु० [हिं] दला हुआ या कुचला हुआ अन्न; भरता, चोखा।

**अरदास** - स्त्री० [फ़ा०] भेंट, नज़र; शुभ कार्य वा यात्रा के प्रारंभ में देवता के लिए भेंट; शुभ कार्य के प्रारंभ में नानक-पंथियों द्वारा की जानेवाली ईश्वर-प्रार्थना।

**अरना** - पु० [हिं] जंगली भैंसा।

**अरपना** - स० [हिं] अर्पण करना।

**अरब** - पु० [हिं] सौ करोड़; घोड़ा; इन्द्र।

**अरबर** - 1. वि० [हिं] ऊटपटांग; कठिन; 2. पु० घबराहट।

**अरबराना** - अ० [हिं] घबराना, व्याकुल होना ; लड़खड़ाना ।
**अरबरी** - स्त्री० [हिं] घबराहट ।
**अरबी** - वि० [फ़ा] अरब देश का ; अरब देश में उत्पन्न या अरबी नस्ल का घोड़ा ; अरबी ऊँट ; अरबी बाजा ।
**अरबीला** † - वि० [देश] ऊटपटांग ; भोला-भाला ।
**अरमान** - पु० [तु] इच्छा, लालसा, चाह । मुु० —निकालना - इच्छा पूरी करना ; —रह जाना - इच्छा का पूरा न होना ।
**अरर** - 1. अव्य० [हिं] अत्यंत व्यग्र या अचंभे की दशा में मुँह से निकलनेवाला शब्द ; 2. पु० किवाड़ ; ढक्कन ।
**अररना** - स० [देश] दलना, पीसना ।
**अरराना** - अ० [देश] ज़ोर से शब्द करके गिरना ; सहसा गिरना ; टूटने का शब्द करना ।
**अरवन** - पु० [हिं] फ़सल जो कच्ची काटी जाय । इसके अन्न से प्रायः देवताओं की पूजा आदि होती है ।
**अरवा** - पु० [हिं] कच्चे धान से निकाला हुआ चावल ; आला ।
**अरवाती** † - स्त्री० [देश] छाजन का वह किनारा जहाँ से बरसात का पानी नीचे गिरता है, ओलती, ओरौनी ।
**अरविंद** - पु० [सं] कमल ; सारस ।
**अरविंदाक्ष** - पु० [सं] विष्णु ।
**अरवी** - स्त्री० [हिं] एक कंद जिसकी भाजी बनती है और उसके पत्ते का लोग साग बनाकर खाते हैं, घुइयाँ ।
**अरस** - 1. वि० [सं] नीरस, फीका ; अनाड़ी, गँवार ; 2. पु० छत ; महल ।
**अरसना** † - अ० [हिं] ढीला पड़ना, मंद होना ।
**अरस परस** - पु० [हिं] छुआ-छुई का खेल, आँखमिचौनी ।
**अरसा** - पु० [अ] समय ; देर ।
**अरसाना** † - अ० [हिं] अलसाना, निद्रावश होना ।
**अरसिक** - वि० [सं] जो रसिक न हो, रूखा ; कविता के मर्म को न समझनेवाला ।
**अरसी** † - स्त्री० [हिं] अलसी, अतसी ।
**अरसीला** - वि० [हिं] आलस-भरा ।
**अरसौंहाँ** † - वि० [हिं] आलसी ।
**अरस्तू** - पु० [यू०] यूनान का एक प्रसिद्ध विद्वान और दार्शनिक अरिस्टॉटल ।
**अरहंत** - पु० [हिं] जैनियों का तीर्थंकर ; बुद्ध ।
**अरहट** - पु० [हिं] कुएँ से पानी निकालने का काष्ठयंत्र, रहँट, रहट ।
**अरहन** - पु० [हिं] वह आटा वा बेसन जो साग आदि पकाते समय उसमें मिला दिया जाता है ।
**अरहना** - स्त्री० [हिं] पूजा ।
**अरहर** - स्त्री० [हिं] एक अनाज जिसकी दाल बनती है, तुअर ।
**अराअरी** † - स्त्री० [देश] होड़, स्पर्धा ।
**अराक़** - पु० [अ] ईराक ; ईराक का घोड़ा ।
**अराज** - 1. वि० [हिं] बिना राजा का ; क्षत्रियरहित ; 2. पु० अव्यवस्था, हलचल ।
**अराजक** - वि० [सं] राज्य का विरोधी ।
**अराजकता** - स्त्री० [हिं] शासन का अभाव, अशांति, हलचल ।
**अराति** - पु० [सं] शत्रु ; काम क्रोध आदि विकार ; छः संख्या ।
**अराधन** - पु० [हिं] आराधन, पूजा ; प्रसन्न करना ।
**अराधना** - स० [हिं] आराधना करना, पूजा करना ।

**अराबची** - पु० [फ़ा] गाड़ीवान ।
**अराबा** - पु० [अ] रथ ; बैलगाड़ी ; गाड़ी जिसपर तोप लादी जाय ; जहाज़ पर तोपों का एक बार एक ओर दागना ।
**अराम** - पु० [हिं] आराम ; बाग़ ।
**अरायज़** - स्त्री० [अ] अर्ज़ियाँ ।
**अरारा** - पु० [देश] नदी का ऊँचा किनारा, दरदरा ; अरराने का शब्द ।
**अरारूट** } **अरारोट** } पु० [हिं] एक कंद जो अमरीका से आया है और जिसका आटा सफ़ेद मैदे को तरह होता है, अरारूट का आटा ।
**अराल** - 1. वि० [सं] टेढ़ा, कुटिल ; 2. पु० राल ; मतवाला हाथी ।
**अरिंदम** - वि० [सं] शत्रु का नाशक, विजयी ।
**अरि** - पु० [सं] शत्रु, वैरी ।
**अरित्र** - पु० [सं] डाँड़ जिससे नाव खेते हैं ; पानी की थाह लेने की डोरी ; लंगर ।
**अरियाना** † - स० [हिं] तिरस्कार करना ।
**अरिवन** - पु० [देश] रस्सी का फंदा जिसमें फँसाकर घड़ा कुए में डालते है, फँसरी ।
**अरिष्ट** - 1. पु० [सं] उपद्रव ; दुख ; अमंगल ; मरणकारक योग ; लहसुन ; नीम; कौआ; रीठा; सूतिकागृह; शराब; मट्ठा ; 2. वि० दृढ ; शुभ ; अशुभ ।
**अरी** - अव्य० [हिं] स्त्रियो का संबोधन ।
**अरीज़** - वि० [अ] अधिक चौड़ा ।
**अरीज़ा** - 1. वि० [अ] अर्ज़ किया हुआ, निवेदित ; 2. पु० निवेदन-पत्र ।
**अरुंधती** - स्त्री० [सं] वसिष्ठ मुनि की पत्नी ; दक्ष की कन्या ; एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि-मंडल में वसिष्ठ तारे के पास रहता है ।
**अरु** - अव्य० [ब्र] और ।
**अरुई** - स्त्री० [देश] अरवी, घुइयाँ ।
**अरुचि** - स्त्री० [सं] रुचि का अभाव ; अनिच्छा ; घृणा, नफ़रत ।
**अरुचिकर** - वि० [सं] जिससे अरुचि हो जाय, जो भला न लगे ।
**अरुज** - वि० [सं] नीरोग, रोगरहित ।
**अरुझना** † - अ० [देश] उलझना, फँसना ; अटकना, ठहरना ; लड़ना ।
**अरुझाना** † - 1. स० [देश] उलझाना, फँसाना ; 2. अ० लिपटना, उलझना ।
**अरुण** - 1. वि० [सं] थोड़ा लाल, रक्त ; 2. पु० सूर्य का सारथी ; संध्या समय की लालिमा ; एक प्रकार का कुष्ठ-रोग ; गहरा लाल रंग ; सिंदूर ; सूर्य ।
**अरुणचूड़** - पु० [सं] कुक्कुट, मुर्ग़ा ।
**अरुणप्रिया** - स्त्री० [सं] अप्सरा ; सूर्य की स्त्री, छाया और संज्ञा ।
**अरुणलोचन** - पु० [सं] लाल नेत्र ; कबूतर ; कोकिल ।
**अरुणशिखा** - पु० [सं] मुर्ग़ा ।
**अरुणा** - स्त्री० [सं] मजीठ, एक लता जिससे लाल रंग निकलता है ; लाल रंग की गाय ; उषा ।
**अरुणाई** - स्त्री० [सं] लालिमा ।
**अरुणिमा** - स्त्री० [सं] लालिमा ।
**अरुणोदधि** - पु० [सं] मिश्र और अरब के बीच का लाल सागर ।
**अरुणोदय** - पु० [सं] प्रातःकाल, उषःकाल, तड़का, भोर ।
**अरुनाना** - 1. अ० [हिं] लाल होना ; 2. स० लाल करना ।
**अरुनारा** - वि० [हिं] लाल रंग का ।
**अरुहा** - पु० [सं] भूधात्री, भुइ-आँवला ।
**अरूप** - वि० [सं] रूपरहित, निराकार ।

**अरे** - अव्य० [सं] एक संबोधनार्थक तथा आश्चर्यसूचक अव्यय।
**अरेब** - पु० [देश] पाप, अपराध।
**अरोक** - वि० [हिं] न रुकनेवाला, अबाध्य।
**अरोग** - वि० [सं] रोगरहित, नीरोग।
**अरोगना** - अ० [देश] खाना। जैसे, 'ताके फल अरोगे रघुपति'—सूर।
**अरोगी** - वि० [सं] जो रोगी न हो, चंगा।
**अरोच** - पु० [हिं] अरुचि; अनिच्छा।
**अरोचक** - वि० [सं] जो रुचे नहीं, अरुचिकर।
**अरोहना** - अ० [हिं] चढ़ना, सवार होना।
**अर्क** - पु० [सं] सूर्य; इंद्र; पंडित; आक, अकौआ; आसव; पसीना।
**अर्क़** - पु० [अ] किसी चीज़ का निचोड़ा हुआ रस।
**अर्क़गीर** - पु० [अ] घोड़े की ज़ीन के नीचे का कपड़ा।
**अर्कज** - पु० [सं] सूर्य के पुत्र; यम; शनि; अश्विनीकुमार; सुग्रीव; कर्ण।
**अर्कजा** - स्त्री० [सं] सूर्य की कन्या; यमुना; तापती।
**अर्कपर्ण** - पु० [सं] मदार का पत्ता।
**अर्कबंधु** - पु० [सं] गौतम बुद्ध; पद्म।
**अर्कोपल** - पु० [सं] सूर्य्य-कांत-मणि, आतिशी शीशा।
**अर्गल** - पु० [सं] किवाड़ बंद करने की लकड़ी, ब्योड़ा; तरंग; बादल।
**अर्गला** - स्त्री० [सं] ब्योड़ा, सिटकिनी; जंजीर; रुकावट; बाधक।
**अर्घ** - पु० [सं] षोडशोपचारों में से एक; देवताओं को तृप्त करने के लिए दूध, दही आदि को मिलाकर दिया जानेवाला अर्पण; मूल्य।
**अर्घपात्र** - पु० [सं] अर्घ देन का बरतन।
**अर्घा** - पु० [हिं] अर्घपात्र।
**अर्घ्य** - वि० [सं] बहुमूल्य; भेंट देने योग्य।
**अर्चक** - वि० [सं] पूजा करनेवाला, पूजक।
**अर्चन** - पु० [स] पूजन; सत्कार।
**अर्चनीय** - वि० [सं] पूजा करने योग्य; आदरणीय।
**अर्चा** - स्त्री० [सं] पूजा; प्रतिमा।
**अर्चि** - स्त्री० [सं] अग्नि की ज्वाला; प्रकाश; शोभा; किरण।
**अर्चित** - 1. वि० [सं] पूजित, आदृत; 2. पु० विष्णु।
**अर्चिष्मान्** - 1. वि० [सं] दीप्तिमान; 2. पु० सूर्य; अग्नि।
**अर्ज़** - पु० [फ़ा] सम्मान, प्रतिष्ठा; ओहदा; मूल्य; चौड़ाई।
**अर्ज़** - स्त्री० [अ] बिनती, प्रार्थना।
**अर्ज़-इरसाल** - पु० [अ] वह पत्र जिसके द्वारा रुपया ख़ज़ाने में दाख़िल किया जाता है, चलान।
**अर्ज़दाश्त** - स्त्री० [फ़ा] प्रार्थना-पत्र।
**अर्जन** - पु० [सं] पैदा करना, कमाना; संग्रह करना।
**अर्जनीय** - वि० [सं] संग्रह करने योग्य।
**अर्ज़मंद** - वि० [फ़ा] अच्छे पद पर प्रतिष्ठित।
**अर्ज़ाँ** - वि० [फ़ा] सस्ता।
**अर्जित** - वि० [स] कमाया हुआ, संगृहीत।
**अर्ज़ी** - स्त्री० [अ] प्रार्थना-पत्र।
**अर्ज़ीदावा** - स्त्री० [फ़ा] दावा करने का निवेदन-पत्र।
**अर्ज़ीनवीस** - पु० [फ़ा] प्रार्थना-पत्र का लेखक।
**अर्जुन** - 1. पु० [सं] एक वृक्ष; सफ़ेद कनैल; मोर; पाँच पांडवों में से मँझला; 2. वि० सफ़ेद; स्वच्छ।
**अर्जुनी** - स्त्री० [सं] एक नदी जो हिमालय से निकलकर गंगा में मिलती है; सफ़ेद रंग की गाय।

**अर्ण** - पु० [सं] वर्ण, अक्षर ; जल ।

**अर्णव** - पु० [सं] समुद्र ; सूर्य ; इंद्र ; अंतरिक्ष ; चार की संख्या ।

**अर्ति** - स्त्री० [सं] पीड़ा ; धनुष के दोनों छोर ।

**अर्थ** - पु० [सं] शब्द का अभिप्राय ; प्रयोजन, मतलब ; काम, इष्ट ; इंद्रियों के विषय ; धन, संपत्ति ।

**अर्थकर** - वि० पु० [स] जिससे धन का उपार्जन किया जाय, लाभकारी ।

**अर्थकृच्छ्र** - पु० [स] धन की कमी, दरिद्रता ।

**अर्थगौरव** - पु० [सं] किसी शब्द या वाक्य में अर्थ की गंभीरता ।

**अर्थदंड** - पु० [सं] अपराध के दंड में लिया गया धन, जुर्माना ।

**अर्थना** - 1. स० [सं] माँगना ; 2. स्त्री० याचना ।

**अर्थपति** - पु० [सं] कुबेर ; राजा ।

**अर्थपिशाच** - वि० [सं] धन-लोलुप ।

**अर्थमंत्री** - पु० [सं] धन संबंधी मामलो की देखभाल करनेवाला प्रधान अधिकारी ।

**अर्थवेद** - पु० [सं] शिल्पशास्त्र ।

**अर्थशास्त्र** - पु० [सं] वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विधान हो ।

**अर्थसचिव** - पु० [सं] अर्थमंत्री ।

**अर्थांतरन्यास** - पु० [स] एक काव्यालंकार जिसमें सामान्य से विशेष का वा विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य के द्वारा समर्थन किया जाता है ।

**अर्थात्** - अव्य० [सं] यानी ।

**अर्थाना** † - स० [हिं] अर्थ लगाना, ब्योरे के साथ समझाकर कहना ।

**अर्थापत्ति** - स्त्री० [सं] एक प्रमाण जिसमें एक बात के कहने से दूसरी बात की सिद्धि स्वतः हो जाय ।

**अर्थालंकार** - पु० [सं] वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय ।

**अर्थी** - 1. वि० [सं] इच्छा रखनेवाला ; 2. पु० गर्ज़ी, याचक ; वादी, मुद्दई ; सेवक ; धनी ; 3. स्त्री० मुरदा उठाने की टिखटी ।

**अर्दन** - पु० [सं] पीड़न, हिंसा ; माँगना ।

**अर्दना** † - स० [हिं] कष्ट पहुँचाना ।

**अर्दित** - वि० [सं] पीड़ित ; याचित ।

**अर्द्ध** - वि० [सं] आधा ।

**अर्द्धचंद्र** - पु० [सं] आधा चाँद ; सानुनासिक का एक चिह्न, चंद्रबिंदु 'ँ' ; गरदनिया ।

**अर्द्धजल** - पु० [सं] श्मशान में शव को स्नान कराके आधा जल में और आधा बाहर रख देने की क्रिया ।

**अर्द्धनारीश्वर** - पु० [सं] शिव और पार्वती का मिला हुआ एक रूप ; रसांजन जिसे आँख में लगाने से ज्वर उतर जाता है ।

**अर्द्धमागधी** - स्त्री० [सं] प्राकृत का एक भेद, पटना और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा ।

**अर्द्धमात्रा** - स्त्री० [सं] आधी मात्रा ; छंद का एक भेद ।

**अर्द्धरात्र** - पु० [सं] आधी रात ।

**अर्द्धवृत्त** - पु० [सं] वृत्त का आधा भाग ।

**अर्द्धसमवृत्त** - पु० [सं] वह वृत्त जिसका पहिला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो । जैसे, दोहा और सोरठा ।

**अर्द्धहार** - पु० [सं] बारह लड़ का हार ।

**अर्द्धांग** - पु० [सं] आधा अंग ; लकवा नाम का एक रोग जिसमें आधा अंग चेष्टाहीन और बेकाम हो जाता है, फालिज, पक्षाघात ।

**अर्द्धांगिनी** - स्त्री० [सं] स्त्री, पत्नी ।

**अर्द्धांगी** - 1. पु० [सं] शिव ; 2. वि० आधे अंग का रोगी ।

**अर्द्धाली** - स्त्री० [सं] चौपाई के दो चरण ।

**अर्द्धिक** - पु० [सं] आधासीसी, एक रोग जिसके होने पर आधे सिर मे दर्द रहता है ; वैश्य स्त्री और ब्राह्मण पिता से उत्पन्न संतान ।

**अर्द्धीकरण** - पु० [सं] आधा करना ।

**अर्द्धोदय** - पु० [सं] जब माघ अमावस्या रविवार को पड़े और उसी दिन श्रवण नक्षत्र और व्यतिपात योग भी हो तो यह पर्व आता है । इस पर्व में स्नान करने से सूर्यग्रहण में स्नान करने का फल होता है ।

**अर्पण** - पु० [सं] दान ; नज़र, भेंट ; स्थापन, रखना ।

**अर्पित** - वि० [सं] भेंट किया हुआ ।

**अर्ब** - वि० [सं] दस करोड़ ।

**अर्ब-खर्ब** - वि० [सं] असंख्य ।

**अर्ब-दर्ब** - पु० [हिं] धन-दौलत ।

**अर्बुद** - पु० [सं] दस करोड़ ; आरावली पहाड़ ; बादल ; एक रोग जिसमें गाँठ पड़ जाती है ।

**अर्भ** - पु० [सं] बालक ; शिष्य ; साग-पात ; शिशिर ऋतु ।

**अर्भक** - 1. पु० [सं] बच्चा ; 2. वि० छोटा, अल्प ; मूर्ख ; दुबला-पतला ।

**अर्म** - पु० [सं] आँख का एक रोग, टेंटर, ढेंढर ; पुराना नगर या गाँव ।

**अर्य** - 1. पु० [सं] स्वामी, ईश्वर ; वैश्य ; 2. वि० श्रेष्ठ, उत्तम

**अर्यमा** - पु० [सं] सूर्य ; पितृगण ; मदार ।

**अर्या**
**अर्याणी** } स्त्री० [स] वैश्य जाति में उत्पन्न स्त्री ।

**अर्राना** - स० [सं] एकबारगी गिर पड़ना ।

**अर्वाचीन** - वि० [सं] आधुनिक ; नवीन ।

**अर्श** - 1. पु० [सं] बवासीर, एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं ।

**अर्शोहर**
**अर्शोघ्न** } पु० [सं] सूरन, ज़मीकंद ।

**अर्ह** - 1. वि० [सं] पूज्य, योग्य ; 2. पु० ईश्वर ; इंद्र ।

**अर्हत** - पु० [सं] जैनियो के पूज्य देव, जिनदेव ; बुद्ध ।

**अर्हित** - वि० [सं] पूजित ।

**अलं** - अव्य० [सं] पर्याप्त, काफ़ी, बस ।

**अलंकरिष्णु** - पु० [सं] अलंकार या सजावट की इच्छा रखनेवाला ।

**अलंकर्ता** - पु० [सं] आभूषण बनाने या सजानेवाला ।

**अलंकार** - पु० [सं] आभूषण, गहना, जेवर ; काव्य या साहित्य में वर्णन की प्रभावशाली और रोचक शैली ।

**अलंकृत** - वि० [सं] सजाया हुआ ।

**अलंग** - पु० [हिं] ओर, तरफ़, दिशा ।

**अलंघनीय** - वि० [सं] जिसे पार न कर सकें ।

**अलंघ्य** - वि० [सं] अलंघनीय, जिसे टाल न सके, जिसे मानना ही पड़े ।

**अलंबुष** - पु० [सं] वमन, कै ।

**अलंबुषा** - स्त्री० [सं] छुई-मुई, लजालू पौधा, लज्जावंती ।

**अल** - पु० [सं] बिच्छू का डंक ; हरताल, विष ।

**अलक** - पु० [सं] मस्तक पर इधर उधर लटकते हुए घुंघराले बाल, लट, छल्लेदार बाल ।

**अलक़त** - वि० [अ] काटा या रद्द किया हुआ, समाप्त ।

**अलकतरा** - पु० [अ] कोयले को भभके पर चढ़ाकर जब गैस निकाल लेते हैं तब दो प्रकार के पदार्थ रह जाते हैं। एक पानी की तरह पतला और दूसरा गाढ़ा। यही गाढ़ा काला पदार्थ अलकतरा है। - डामर, कोलटार ।

**अलकनंदा** - स्त्री० [सं] हिमालय की एक नदी ।

**अलका** - स्त्री० [सं] कुबेर की नगरी ; आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की ।

**अलकापति** - पु० [सं] कुबेर, अलकापुरी का राजा ।

**अलक़ाब** - पु० [अ] उपाधियाँ ।

**अलकाब व आदाब** - पु० [अ] उपाधियाँ और शिष्टाचार ।

**अलकावली** - स्त्री० [सं] केशसमूह, बालों की लटें ।

**अलक्त** } **अलक्तक** } पु० [सं] लाख ; लाख का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं, महावर ।

**अलक्षण** - पु० [सं] बुरा लक्षण, अशुभ चिह्न ।

**अलक्षित** - वि० [सं] अप्रकट, अदृश्य ; बिना चिह्न का ।

**अलक्ष्य** - वि० [सं] अदृश्य, ग़ायब, जो दिखायी न पड़े ; जिसका लक्षण न कहा जा सके ।

**अलख** - वि० [हिं] जो दिखायी न पड़े, अदृश्य ; इंद्रियातीत । **मु०**—जगाना - पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना ; परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना ।

**अलखधारी** - पु० [हिं] अलख पुकारनेवाला ।

**अलखनामी** - पु० [हि] एक प्रकार के साधु जो गोरखनाथ के अनुयायी होते हैं और भिक्षा के लिए 'अलख अलख' पुकारते हैं ।

**अलखित** - वि० [हिं] गुप्त, अदृश्य, जो न देखा गया हो ।

**अलग** - वि० [हिं] पृथक्, भिन्न, अलहदा ।

**अलगगीर** - पु० [अ] घोड़े की पीठ पर ज़ीन रखने के पहले रखा जानेवाला कंबल या नमदा ।

**अलगनी** - स्त्री० [हिं] कपड़े टाँगने या फैलाने की रस्सी ।

**अलग़रज़** - क्रि० [अ] मतलब यह कि ।

**अलगरज़ी** - 1. वि० [अ] बेपरवाह ; स्वार्थी ; 2. स्त्री० लापरवाही ।

**अलगाना** - स० [हिं] अलग करना ; दूर करना, हटाना ।

**अलगाव** - पु० [हिं] भिन्नता, जुदापन ।

**अलग़ोज़ा** - पु० [अ] एक प्रकार की बाँसुरी, फ़्लूट ।

**अलज्ज** - वि० [सं] निर्लज्ज, बेहया ।

**अलता** - पु० [हिं] अलक्तक, महावर ।

**अलप** - वि० [हिं] अल्प, थोड़ा ; नीच ।

**अलफ़** - पु० [अ] घोड़े का पिछली टाँगों के बल खड़ा होना ।

**अलफ़ा** - पु० [अ] बिना बाँह का लंबा कुरता जिसे मुसलमान फ़क़ीर पहनते हैं ।

**अलफ़ाज़** - पु० [अ] शब्द ।

**अलबत्ता** - अव्य० [अ] निस्संदेह, बेशक ।

**अलबम** - पु० [अं] तसवीरें रखने की किताब ।

**अलबेला** - वि० [हिं] बाँका ; बना-ठना ; अनोखा, सुंदर ; अल्हड़, बेपरवाह, मनमौजी ।

**अलबेलापन** - पु० [हिं] बाँकापन ; सुंदरता ; बेपरवाही ।

**अलभ्य** - वि० [सं] न मिलनेवाला या जो कठिनता से मिल सके, दुर्लभ ; अमूल्य।
**अलम्** - अव्य० [सं] यथेष्ट, पूर्ण, बस, काफ़ी।
**अलम** - पु० [अ] रंज ; दुख ; झंडा ।
**अलमस्त** - वि० [फ़ा] मतवाला ; बेफ़िक्र ।
**अलमास** - पु० [फ़ा] हीरा ।
**अललख़सूस** - वि० [अ] विशेष रूप में।
**अललटप्पू** - वि० [देश] अटकलपच्चू, अनिश्चित, बेठिकाने का, अंडबंड, मनमाना ।
**अललहिसाब** - क्रि० [हिं] बिना हिसाब किये हुए।
**अललाना** - अ० [देश] जोर से चिल्लाना, गला फाड़कर बोलना।
**अलवाँती** - वि० [देश] जिसे बच्चा हुआ हो, ज़च्चा, प्रसूता स्त्री।
**अलवान** - पु० [अ] पश्मीने की चादर, ऊनी चादर।
**अलविदा** - पुं० [अ] रमज़ान का आख़िरी शुक्रवार ; अच्छा ; बिदा का सलाम।
**अलस** - 1. वि० [सं] आलसी, सुस्त ; 2. पु० पानी या कीचड़ में हमेशा काम करते रहनेवालों के पैरों की उँगलियों के बीच के चमड़े के सड़ने से उत्पन्न होनेवाली खाज।
**अलसान** } **अलसानी** } स्त्री० [हिं] आलस्य।
**अलसाना** - अ० [हिं] आलस्य में पड़ना, शरीर में शिथिलता का अनुभव करना।
**अलसी** - स्त्री० [हिं] एक पौधा और उसका बीज जिससे तेल निकलता है। उसके फूल नीले होते हैं। तेल प्रायः जलाने और रंगसाज़ी तथा लिथो के छापे की स्याही बनाने के काम में आता है, तीसी।
**अलसेट** † - स्त्री० [हिं] ढिलाई ; टालमटूल; बाधा, अड़चन।
**अलसोटिया** † - वि० [हिं] ढिलाई करनेवाला; अड़चन डालनेवाला ; टालमटूल करनेवाला।
**अलसौंहाँ** † - वि० [हि] शिथिल, उनींदा।
**अलस्सुबह** - वि० [अ] बहुत तड़के।
**अलहक़** - 1. क्रि० [अ] वास्तव में, दर-असल, हकीकत में; 2. अव्य० हाँ।
**अलहदा** - वि० [अ] अलग, जुदा।
**अलहम्द** - स्त्री० [अ] क़ुरान का वह पहला पद जो ईश्वर की प्रार्थना में उच्चरित किया जाता है।
**अलात** - पु० [सं] अंगार ; दोनों ओर जलनेवाली लकड़ी, लुआठी।
**अलातचक्र** - पु० [सं] जलती हुई लकड़ी को जल्दी जल्दी घुमाने से बना हुआ चक्र या मंडल; बनेठी; एक प्रकार का नाच।
**अलान** - पु० [हिं] हाथी बाँधने का खूँटा ; लता चढ़ाने के लिए गाड़ी हुई लकड़ी ; बंधन, बेड़ी।
**अलानिया** - क्रि० [उ] खुल्लमखुल्ला।
**अलाप** - पु० [हिं] आलाप।
**अलापना** - अ० [हिं] बोलना; तान लगाना, गाना।
**अलापी** - वि० [हिं] बोलनेवाला; तान लगानेवाला।
**अलाम** - वि० [अ] जिसकी बात का कोई ठिकाना न हो, मिथ्यावादी।
**अलामत** - स्त्री० [अ] लक्षण, निशान, चिह्न।
**अलार** - पु० [सं] किवाड़ ; अवाँ, भट्ठी, आग का ढेर।
**अलाल** - वि० [हिं] आलसी; अकर्मण्य, निकम्मा।

**अलालत** - स्त्री० [अ] बीमारी।

**अलाव** - पु० [हिं] आग का ढेर जिसके चारो ओर बैठकर गाँव के लोग जाड़े में तापते हैं, कौड़ा।

**अलावा** - क्रि० [अ] सिवाय, अतिरिक्त।

**अलिंग** - वि० [सं] लिंगरहित; जिसका ठीक-ठीक लक्षण निश्चित न किया जा सके। वेदांत में ईश्वर को अलिंग कहा गया है। व्याकरण में हम, तुम, मैं, वह, यह, मित्र आदि शब्द अलिंग है।

**अलिंजर** - पु० [हिं] पानी रखने के लिए मिट्टी का बरतन, झझर, घड़ा।

**अलिंद** - पु० [सं] मकान के आगे का छज्जा या चबूतरा; भौंरा।

**अलि** - 1. पु० [सं] भौंरा; कोयल; कौआ; बिच्छू; 2. स्त्री० सखी।

**अलिक** - पु० [स] ललाट, माथा।

**अली** - 1. स्त्री० [हिं] सखी; पंक्ति, कतार; 2. पु० भौंरा।

**अलीक** - 1. वि० [सं] झूठा; बेसिर-पैर का; अप्रतिष्ठित, मर्यादारहित; 2. पु० अप्रतिष्ठा।

**अलीजा** - वि० [अ] बहुतसा, अधिक।

**अलीन** - पु० [हिं] द्वार के चौखट की खड़ी लंबी बाज़ू; दालान वा बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवार से सटा होने के कारण आधे घेरे का होता है; 2. वि० अनुचित, अयोग्य, बेजा।

**अलील** - वि० [अ०] बीमार।

**अलीह** - वि० [हिं] मिथ्या, असत्य।

**अलुक्** - पु० [सं] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता।

**अलुटना** † - अ० [हिं] लोटना, लड़खड़ाना, गिरना पड़ना।

**अलूप** † - वि० [हिं] लुप्त, ग़ायब।

**अलूला** - पु० [देश] भभूका; बुलबुला; लपट; उद्‌गार।

**अलेख** - वि० [सं] दुर्बोध, अज्ञेय; बेहिसाब, बहुत अधिक; अदृश्य।

**अलेखा** † - वि० [हिं] बेहिसाब; व्यर्थ, निष्फल।

**अलेखी** - वि० [हिं] गड़बड़ मचानेवाला; अन्यायी।

**अलोक** - वि० [सं] जो देखने में न आये, अदृश्य; निर्जन, एकांत; पुण्यरहित; 2. पु० परलोक; कलंक; निंदा।

**अलोकना** † - स० [हिं] देखना, ताकना।

**अलोना** - वि० [हिं] बिना नमक का; फीका, स्वादरहित, बेमज़ा; वह व्रत जिसमें नमक न खाया जाय।

**अलोल** - वि० [सं] जो चंचल न हो, स्थिर, टिका हुआ।

**अलोलिक** - पु० [हिं] अचंचलता, स्थिरता, धीरता।

**अलौकिक** - वि० [सं] जो साधारणतया न दिखायी दे; लोकोत्तर; असाधारण; अद्‌भुत; अमानुषी।

**अल् अमान्** - अव्य० [अ] ईश्वर हमारी रक्षा करे।

**अल्क़ाब** - पु० [अ] उपाधियाँ।

**अल्क़िस्सा** - क्रि० [अ] तात्पर्य यह कि, संक्षेप में यह कि।

**अल्टिमेटम** - पु० [अंग्रे] अंतिम सूचना।

**अल्तमिश** - पु० [तु] सेना का अफ़सर।

**अल्ताफ़** - पु० [अ] कृपा।

**अल्प** - वि० [सं] थोड़ा, कुछ; छोटा।

**अल्पजीवी** - वि० [सं] थोड़ा जीनेवाला, जिसकी आयु थोड़ी हो।

**अल्पज्ञ** - वि० [सं] थोड़ा ज्ञान रखनेवाला; छोटी बुद्धि का; नासमझ।

**अल्पज्ञता** - स्त्री० [सं] थोड़ी जानकारी ; नासमझी ।

**अल्पता** - स्त्री० [सं] कमी, न्यूनता, छोटाई ।

**अल्पत्व** - पु० [सं] कमी, न्यूनता, छोटापन ।

**अल्पप्राण** - पु० [सं] वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राणवायु का अल्प व्यवहार हो, व्यंजनो के प्रत्येक वर्ग का पहिला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल, व ये अल्पप्राण हैं ।

**अल्पवयस्क** - वि० [सं] छोटी अवस्था का, कम उम्र का, कमसिन ।

**अल्पशः** - क्रि० [सं] थोड़ा-थोड़ा करके ; धीरे-धीरे, क्रमशः ।

**अल्पायु** - 1. वि० [सं] थोड़ी आयुवाला, जो छोटी अवस्था में मरे ; 2. पु० बकरा ।

**अलम-गलम** - पु० [देश] अनाप-शनाप, व्यर्थ की बकवाद, प्रलाप ।

**अलाई** - स्त्री० [देश] चौपाइयो के गले की एक बीमारी ।

**अल्लाना** - अ० [हिं] जोर से चिल्लाना ।

**अल्लामा** - 1. वि० [अ] बहुत विद्वान और बुद्धिमान ; 2. स्त्री० कर्कशा, लड़ाका ।

**अल्लाह** - पु० [अ] ईश्वर ।

**अल्लाहताला** - पु० [अ] सर्वश्रेष्ठ ईश्वर ।

**अल्लाहो अकबर** - अव्य [अ] ईश्वर बड़ा है ।

**अलहजा** † - पु० [अ] इधर-उधर की बात, गप्प ।

**अल्हड़** - वि० [हिं] मनमौजी, बेपरवाह ; बिना अनुभव का ; अकुशल ; गँवार ।

**अल्हड़पन** - पु० [हिं] मनमौजीपन, निर्द्वन्द्वता ; लड़कपन, भोलापन ; उजड्डपन ।

**अलहम्दुलिल्लाह** - अव्य० [अ] ईश्वर को धन्यवाद है ।

**अवंतिका** } **अवंती** } स्त्री० [सं] मालवा का एक नगर जिसे आजकल उज्जैन कहते है । यह सप्तपुरियों में से एक है ।

**अव** - 1. उप० [स] नीचे लिखे अर्थो में यह आता है—निश्चय ; अनादर ; कमी ; गहराई ; व्याप्ति ; 2 अव्य० और ।

**अवकथन** - पु० [सं] उपासना, स्तुति ।

**अवकर्षण** - पु० [सं] बलपूर्वक किसी वस्तु को अन्यत्र ले जाना ।

**अवकलन** - पु० [सं] देखना ; जानना ; ग्रहण ।

**अवकलना** - अ० [हिं] ज्ञान होना, विचार में आना ।

**अवकलित** - वि० [सं] देखा हुआ , जाना हुआ ; मिलाया हुआ ।

**अवकाश** - पु० [सं] ख़ाली जगह ; आकाश ; दूरी, अंतर, फ़ासला ; अवसर, मौक़ा ; फ़ुर्सत, ख़ाली समय, छुट्टी ।

**अवकीर्ण** - वि० [स] फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ ; नाश किया हुआ ; चूर-चूर किया हुआ ।

**अवकुंचन** - पु० [सं] बटोरना, समेटना ।

**अवकुंठित** - वि० [सं] भयभीत ।

**अवकृष्ट** - 1. वि० [सं] निकाला हुआ ; नीच जाति का ; 2. पु० घर में झाड़ू लगानेवाला, दास ।

**अवक्तव्य** - वि० [सं] न कहने योग्य ; निषिद्ध; झूठ ।

**अवक्रंदन** - पु० [सं] चिल्लाना, रोना ।

**अवक्रय** - पु० [सं] बदला ; मोल , भाड़ा , कर ।

**अवक्रांति** - स्त्री० [सं] नीचे की ओर जाना ।

**अवक्रोश** - पु० [सं] कर्कश स्वर, कड़ी बोली, कोसना, निंदा ।

**अवक्लिन्न** - वि० [स] ओदा, तर, गीला ।

**अवक्षिप्त** - वि० [सं] गिरा हुआ।
**अवखात** - पु० [सं] गहरा गड्ढा।
**अवगणन** - पु० [सं] निंदा, अपमान; पराभव, हार; गिनती।
**अवगत** - वि० [सं] विदित, जाना हुआ, ज्ञात; गिरा हुआ।
**अवगति** - स्त्री० [सं] बुद्धि; धारणा; बुरी गति।
**अवगमन** - पु० [सं] जानना, समझना।
**अवगाढ़** - वि० [सं] निबिड़, घना; गाढ़ा; प्रविष्ट; निमग्न।
**अवगारना** † - स० [हिं] समझाना, जताना।
**अवगाह** † - 1. वि० [सं] अथाह, बहुत गहरा; गंभीर; अनहोनी; कठिन, 2. पु० गहरा स्थान; संकट का स्थान, कठिनाई; जल में डुबकी मारना या लीन होना।
**अवगाहन** - पु० [सं] पानी में डुबकी लगाकर स्नान; मंथन, खोज, छानबीन; लीन होकर विचार करना।
**अवगाहना** - 1. अ० [हिं] पानी में घुसकर स्नान करना; डूबना, मग्न होना; 2. स० छानबीन करना; मथना, चलाना, हिलाना; सोचना, समझना; ग्रहण करना।
**अवगीत** - पु० [सं] अतिनिंदित।
**अवगुंठन** - पु० [सं] ढँकना; पर्दा, घूँघट।
**अवगुंठनवती** - वि० स्त्री० [सं] घूँघटवाली।
**अवगुंठिका** - स्त्री० [सं] पर्दा, यवनिका; घूँघट।
**अवगुंठित** - वि० [सं] घूँघट काढ़े हुए।
**अवगुंफन** - पु० [सं] गूँथन, ग्रंथन।
**अवगुंफित** - वि० [सं] गुँथा हुआ।
**अवगुण** - पु० [सं] दोष, ऐब, बुराई।
**अवग्रह** - पु० [सं] रुकावट, बाधा; अनावृष्टि, वर्षा का अभाव; अनुग्रह का उलटा; अपमान, अनादर; शाप; बांध; हाथियों का झुंड; हाथी का माथा; स्वभाव; व्याकरण में संधि-विच्छेद।
**अवघट** - वि० [हिं] विकट, कठिन, दुर्गम।
**अवघात** - पु० [सं] चोट, प्रहार, मार।
**अवचट** - पु० [सं] कठिनाई; अनजान।
**अवचय** - पु० [सं] फूल या फल तोड़कर बटोरना, चुनकर इकट्ठा करना।
**अवचूर्णित** - वि० [सं] पिसा हुआ।
**अवच्छद** - पु० [सं] ढँकना, सरपोश।
**अवच्छिन्न** - वि० [सं] अलग किया हुआ, पृथक्; विशेषणयुक्त।
**अवच्छेद** - पु० [सं] अलगाव, हद, सीमा; निश्चय; छानबीन; परिच्छेद, विभाग।
**अवच्छेदक** - वि० [सं] छेदक, अलग करनेवाला; हद बाँधनेवाला; निश्चय करानेवाला।
**अवच्छेपणी** † - स्त्री० [हि] लगाम।
**अवछंग** - पु० [देश] उछंग, गोदी।
**अवज्ञा** - स्त्री० [सं] अपमान; आज्ञा न मानना, अवहेला; पराजय।
**अवज्ञात** - वि० [सं] अपमानित।
**अवज्ञेय** - वि० [सं] अपमान के योग्य।
**अवट** } **अवटि** } पु० [देश] गड्ढा, कुंड; हाथियों को फँसाने के लिए बना हुआ गड्ढा जिसे घास आदि से ढँक देते हैं।
**अवटना** - 1. स० [हिं] मथना; औटाना; 2. अ० घूमना, फिरना।
**अवडेर** - पु० [देश] फेर, बखेड़ा।
**अवडेरना** - स० [देश] त्याग करना; झंझट में फँसाना।
**अवडेरा** - वि० [देश] बेढब; चक्करदार।
**अवढर** - वि० [सं] नीच पर भी पात्रापात्र को बिना विचारे दया करनेवाला; शिव।

**अवतंस** - पु० [सं] भूषण, अलंकार, मुकुट, किरीट ; माला ; बाली, कर्णभूषण, कान का अलंकार ; श्रेष्ठ व्यक्ति ; दूल्हा ।

**अवतरण** - पु० [सं] उतरना ; शरीर धारण करना ; नक़ल ; घाट की सीढ़ी ; घाट ।

**अवतरणिका** - स्त्री० [स] ग्रंथ की प्रस्तावना, भूमिका ; रीति, परिपाटी ।

**अवतरना** - अ० [हिं] प्रकट होना, जन्म लेना ।

**अवतार** - पु० [सं] नीचे आना ; जन्म ; भगवान् का देह धारण करना।

**अवतारण** - पु० [सं] उतारना ; नक़ल करना ; उद्धृत करना ; उद्धरण, कोटेशन ।

**अवतारना** - स० [हिं] उत्पन्न करना ; रचना ; उतारना ; जन्म देना ।

**अवतारी** - वि० [हिं] अवतार ग्रहण करने-वाला ; देवांशधारी ; अलौकिक ।

**अवतीर्ण** - वि० [सं] उतरा हुआ ; उत्पन्न ।

**अवतोका** - स्त्री० [सं] वह गाय जिसका गर्भ गिर गया हो ।

**अवदंस** - पु० [सं] शराब पीते समय खायी जानेवाली चाट ।

**अवदात** - वि० [सं] उज्ज्वल ; स्वच्छ ; सफ़ेद ।

**अवदान** - पु० [सं] शुद्ध आचरण , अच्छा काम ; खंडन ; उल्लंघन ; पराक्रम ; साफ़ करना ; खस, उशीर ।

**अवदान्य** - वि० [सं] पराक्रमी ; सीमा का अतिक्रमण करनेवाला ; कंजूस ।

**अवदारण** - पु० [सं] तोड़ना, फोड़ना ; मिट्टी खोदने का औज़ार ।

**अवदोह** - पु० [सं] दूध ; दूध दुहना, दोहन ।

**अवद्य** - वि० [सं] अधम, निकृष्ट, गया-बीता ; त्याज्य, छोड़ देने योग्य ।

**अवध** - पु० [सं] कोशल, एक प्राचीन राज्य जिसकी प्रधान नगरी अयोध्या थी, अयोध्या नगरी ; हद, सीमा , वि० अवध्य, न मारने योग्य ।

**अवधान** - पु० [सं] मनोयोग, चित्त का लगाव ; समाधि ; सावधानी, चौकसी ; गर्भ, पेट ।

**अवधारण** - पु० [सं] निश्चय, विचारपूर्वक स्थिर करना ।

**अवधारना** † - स० [हिं] धारण करना, ग्रहण करना ।

**अवधारित** - वि० [सं] निश्चित ।

**अवधि** - 1. स्त्री० [सं] सीमा, हद ; निश्चित समय, मियाद ; अंत समय ; 2. अव्य० तक, पर्यंत ।

**अवधिमान** - पु० [सं] समुद्र ।

**अवधी** - वि० स्त्री० [हिं] अवध संबंधी, अवध का ; अवध प्रांत की भाषा ।

**अवधूत** - पु० [सं] संन्यासी, योगी ; साधुओं का एक भेद ; 2. वि० कंपित ; नाश किया हुआ।

**अवधेय** - वि० [सं] ध्यान देने योग्य, विचार करने योग्य, जानने योग्य , 2. पु० नाम ।

**अवन** - पु० [देश] प्रसन्न करना; अघाना, तृप्त करना ; रक्षण, बचाव ।

**अवनत** - वि० [सं] झुका हुआ ; गिरा हुआ, पतित ।

**अवनति** - स्त्री० [स] कमी, घटती, हानि ; अधोगति, हीनदशा ; झुकाव ; नम्रता ।

**अवना** † - अ० [देश] आना ।

**अवनि** - स्त्री० [स] पृथ्वी, ज़मीन ।

**अवनिप** - पु० [सं] अवनि का पालन करनेवाला, राजा ।

**अवनेजन** † - पु० [स] धोना ; श्राद्ध में पिंडदान की वेदी पर बिछाये हुए कुशो

पर जल सींचने का संस्कार ; भोजन के बाद का आचमन ।

**अवपात** - पु० [सं] पतन, गड्ढा ; हाथियों के फँसाने के लिए बना हुआ गड्ढा ।

**अवबोध** - पु० [सं] जागना, जाग्रति ; ज्ञान, बोध ।

**अवबोधक** - 1. पु० [सं] रात में पहरा देनेवाला ; चारण ; सूर्य ; 2. वि० चेतानेवाला, जगानेवाला ।

**अवबोधन** - पु० [सं] चेतावनी ।

**अवभास** - पु० [सं] प्रकाश ; मिथ्याज्ञान, माया ।

**अवभृथ** - पु० [सं] वह स्नान जो यज्ञ के अंत में किया जाता है ।

**अवम** - 1. वि० [सं] अधम, नीच ; 2. पु० मलमास, अधिमास ।

**अवमर्द** - पु० [सं] संकट ; ग्रहण का एक भेद जिसमें अधिक काल तक पूर्ण ग्रास ग्रहण रहे ।

**अवमर्दन** - पु० [स] पीड़ा देना, दुःख देना, दलन ।

**अवमर्षण** - पु० [सं] लोप ।

**अवमान** - पु० [स] अपमान, अनादर ।

**अवयव** - पु० [सं] अंश ; शरीर का अंग ; न्यायशास्त्रानुसार वाक्य का एक-एक अंश या भेद ।

**अवयवी** - 1. वि० [सं] जिसके बहुत से अवयव हो ; समूचा ; 2. पु० शरीर ।

**अवर** - 1. वि० [सं] अन्य, दूसरा, और ; अधम, नीच ; 2. पु० हाथी की जाघ का पिछला भाग ।

**अवरज** - पु० [सं] छोटा भाई, नीच कुलोत्पन्न, नीच ।

**अवरत** - वि० [सं] जो रत न हो, विरत ; अलग, पृथक् ।

**अवरति** - स्त्री० [सं] विराम ; निवृत्ति, छुटकारा ।

**अवराधक** - पु० [सं] आराधना करने-वाला, उपासक ।

**अवराधन** - पु० [सं] आराधन, उपासना, पूजा ।

**अवराधना** † - स० [हि] उपासना करना, पूजना ।

**अवराधी** † - वि० [सं] उपासक, पूजक ।

**अवरुद्ध** - वि० [सं] रुका हुआ ; गुप्त, छिपा ।

**अवरूढ** - वि० [सं] ऊपर से नीचे आया हुआ, आरूढ़ का उलटा ।

**अवरेखना** - स० [हिं] लिखना ; चित्रित करना ; देखना ; अनुमान करना, कल्पना करना ; मानना , जानना ।

**अवरेब** - पु० [हिं] वक्र गति, तिरछी चाल ; कपड़े की तिरछी काट ; पेच, उलझन ; कठिनाई ; झगड़ा ; वक्रोक्ति, काकूक्ति ।

**अवरोध** - पु० [सं] रुकावट ; घेर लेना ; बंद करना ; अनुरोध; दबाव ; अंतःपुर ।

**अवरोधक** - वि० [सं] रोकनेवाला ।

**अवरोधन** - पु० [स] रोक ; अंतःपुर ।

**अवरोधी** - वि० [सं] रोकनेवाला, विरोध करनेवाला ।

**अवरोपण** - पु० [सं] उखाड़ना, उत्पाटन, जड़ से निकालना ।

**अवरोह** - पु० [सं] उतार ; अवनति, अधःपतन, आरोह का उलटा ।

**अवरोहक** - वि० [सं] उतरनेवाला ; गिरनेवाला ।

**अवरोहण** - पु० [सं] नीचे की ओर जाना, पतन ।

**अवरोहना** - 1. अ० [हिं] उतरना ; चढ़ना ; 2. स० खींचना, चित्रित करना ; रोकना ।

**अवरोहित** - वि० [सं] उतरा हुआ, गिरा हुआ।

**अवरोही** - पु० [सं] उतरता हुआ।

**अवर्ण** - वि० [स] बिना रंग का; बुरे रंग का; वर्ण-धर्म-शून्य।

**अवर्ण्य** - वि० [सं] जो वर्णन के योग्य न हो, अवर्णनीय।

**अवर्त** - पु० [हि] भँवर; नाँद; घुमाव, चक्कर।

**अवलंब** } पु० [सं] आश्रय, आधार,
**अवलंबन** } सहारा।

**अवलंबित** - वि० [सं] आश्रित; निर्भर।

**अवलंबी** - वि० [सं] सहारा लेनेवाला; सहारा देनेवाला, पालनेवाला।

**अवलग्न** - 1 वि० [सं] लगा हुआ, संबंध रखनेवाला; 2. पु० शरीर का मध्य भाग, कमर।

**अवलिप्त** - वि० [सं] पोता हुआ; तल्लीन, आसक्त; घमंडी।

**अवली** - स्त्री० [हि] पंक्ति; समूह, झुंड; भेड़ का रोआँ, ऊन।

**अवलीक** - वि० [हि] अपराधशून्य, शुद्ध, निष्कलंक।

**अवलुंचन** - पु० [सं] उखाड़ना, नोचना; काटना; हटाना; खोलना।

**अवलुंचित** - वि० [सं] कटा हुआ; उखाड़ा हुआ, नोचा हुआ; मुक्त।

**अवलुंठन** - पु० [सं] लोटना।

**अवलेखना** - स० [हिं] खोदना; खुरचना; चिह्न बनाना, लकीर खींचना।

**अवलेप** - पु० [सं] उबटन, लेप; घमंड।

**अवलेपन** - पु० [सं] लगाना; पोतना, लेप, उबटन; घमंड।

**अवलेह** - पु० [सं] चाटने योग्य औषधि।

**अवलेह्य** - वि० [सं] चाटने योग्य।

**अवलोकन** - पु० [स] देखना; जाँच, निरीक्षण।

**अवलोकना** † - स० [हि] देखना; जाँचना; अनुसंधान करना।

**अवलोकनि** † - स्त्री० [हि] आँख, दृष्टि, चितवन।

**अवलोकित** - वि० [सं] जाँचा हुआ; देखा हुआ।

**अवलोचना** † - स० [हिं] दूर करना।

**अवश** - वि० [सं] विवश, परवश, लाचार।

**अवशिष्ट** - वि० [सं] बचा हुआ, शेष।

**अवशेष** - 1. वि० [सं] अवशिष्ट, शेष; समाप्त, 2. पु० बची हुई वस्तु; समाप्ति।

**अवश्यंभावी** - वि० [सं] अवश्य होनेवाला, अटल, ध्रुव।

**अवश्य** - 1. क्रि० [सं] निःसंदेह, ज़रूर; 2. वि० जो वश में न आ सके; जो वश में न हो।

**अवश्यमेव** - क्रि० [स] अवश्य ही, निःसंदेह, ज़रूर।

**अवसथ** - पु० [स] गाँव, घर; छात्रावास, विद्यार्थियों के रहने का स्थान।

**अवसन्न** - वि० [सं] दुखी, उदास; सुस्त, आलसी।

**अवसर** - पु० [सं] समय; फ़ुरसत; मौक़ा, इत्तिफ़ाक।

**अवसरवाद** - पु० [स] ऐसा मानने का एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार आत्मा और शरीर के बीच मे ईश्वर सहकारी रहकर कार्य करता है।

**अवसाद** - पु० [सं] नाश; विषाद; थकावट; कमजोरी।

**अवसान** - पु० [सं] विराम; अंत; सीमा; सायंकाल; मरण।

**अवसि** - क्रि० [हिं] अवश्य।

**अवसित** - वि० [सं] समाप्त ; बढ़ा हुआ ; निश्चित ; परिपक्व , संबंध ।

**अवसेख** - वि० [हि] अवशेष ।

**अवसेचन** - पु० [सं] सींचना, पानी देना , पसीजना ; वह कर्म जिससे रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाता है ; रक्त निकालना ।

**अवसेर** † - स्त्री० [हि] देर, विलंब ; चिंता , हैरानी, बेचैनी ।

**अवसेरना** - स० [हिं] तंग करना, दुख देना ।

**अवस्कंद** - पु० [सं] शिविर, डेरा ; जनवासा ।

**अवस्था** - स्त्री० [सं] दशा , समय ; उम्र ; स्थिति ; वेदांत के अनुसार मनुष्य की चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय ; स्मृति के अनुसार आदमी के जीवन की आठ अवस्थाएँ—बाल्य, पौगंड, कौमार, कैशोर, यौवन, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान् ।

**अवस्थाता** - पु० [सं] अधिष्ठाता ।

**अवस्थान** - पु० [सं] स्थिति ; स्थान, जगह ।

**अवस्थापन** - पु० [सं] स्थापन करना ।

**अवस्थित** - वि० [ सं ] उपस्थित, मौजूद ।

**अवस्थिति** - स्त्री० [सं] मौजूदगी, उपस्थिति ।

**अवह** - पु० [सं] वह वायु जो आकाश के तीसरे स्कंध पर है, ईथर ।

**अवहित** - वि० [सं] सावधान, एकाग्रचित्त ।

**अवहित्था** - स्त्री० [सं] लज्जा, भय और गौरव के कारण उत्पन्न होनेवाले हर्ष आदि संचारी भावों को चतुराई से छिपाने की चेष्टा ।

**अवहेलन** - पु० [सं] अपमान ; लापरवाही ।

**अवहेलना** - 1. स्त्री० [सं] अपमान, तिरस्कार ; बेपरवाही ; 2. स० तिरस्कार करना ।

**अवहेला** - स्त्री० [सं] अपमान, अनादर ।

**अवहेलित** - वि० [सं] अपमानित, तिरस्कृत ।

**अवाँ** / **अवा** } पु० [देश] कुम्हार की भट्ठी ।

**अवांतर** - 1. वि० [सं] अंतर्गत, बीच का ; 2. पु० मध्य, बीच ।

**अवाई** - स्त्री० [देश] आगमन, आना ; गहरी जुताई ।

**अवाक्** - वि० [सं] चुप, मौन, स्तब्ध ; चकित ।

**अवाक्पुष्पी** - स्त्री० [सं] वह पौधा जिसके फूलों का मुँह नीचे की ओर हो ; सौंफ़ ।

**अवागी** † - वि० [सं] मौन, चुप ।

**अवाङ्मुख** - वि० [सं] नीचे मुँह किये हुए ; लज्जित, शरमिंदा ।

**अवाची** - स्त्री० [सं] दक्षिण दिशा ।

**अवाचीन** - वि० [सं] मुँह लटकाये हुए ; लज्जित ।

**अवाच्य** - 1. वि० [सं] जो कहने योग्य न हो ; जिससे बात करना उचित न हो, नीच, निंदित ; 2. पु० बुरी बात, गाली ।

**अवाज़** - स्त्री० [फ़ा] ध्वनि, शब्द ।

**अवात** - वि० [सं] जहाँ वात या वायु न लगे, निर्वात ।

**अवाम** - पु० [अ] आम लोग, जनता ।

**अवाम-उन्नास** - पु० [अ] आम लोग ।

**अवाय** - वि [हिं] अनिवार्य, उच्छृंखल, उद्धत ।

**अवार** - पु० [सं] नदी के इस पार का किनारा, 'पार' का उल्टा ।

**अवारजा** - पु० [फ़ा] जमा-खर्च की बही ; याददाश्त की बही ; संक्षिप्त लेखा ।

**अवारना** - 1. स० [हिं] रोकना, मना करना ; 2. स्त्री० किनारा ।

**अवास** - पु० [हिं] निवास-स्थान, घर ।

**अवि** - 1. पु० [सं] सूर्य ; अकौआ ; मेष, भेंड़ा ; बकरा ; पर्वत ; 2. स्त्री० लज्जा ; रजस्वला ।

**अविकल** - वि० [सं] जो विकल न हो, ज्यों का त्यों ; पूर्ण ; शांत ।

**अविकल्प** - वि० [सं] जो विकल्प से न हो, निश्चित ।

**अविकारी** - वि० [स] जिसमें विकार न हो, निर्विकार ।

**अविकृत** - वि० [सं] बिना बिगड़ा हुआ, जो विकृत या बिगड़ा हुआ न हो ।

**अविगत** - वि० [सं] जो जाना न जाय, अज्ञात ; अनिर्वचनीय ; नित्य ।

**अविचल** - वि० [सं] जो विचलित न हो, अचल, स्थिर, अटल ।

**अविचार** - पु० [सं] विचार का अभाव ; अन्याय, अत्याचार ; अविवेक ।

**अविचारी** - वि० [सं] विचारहीन, बेसमझ ; अत्याचारी, अन्यायी ।

**अविच्छिन्न** - वि० [स] जो विच्छिन्न या टूटा न हो, अटूट, लगातार ।

**अविच्छेद** - वि० [सं] विच्छेदरहित, अटूट, लगातार ।

**अविजन** - पु० [स] अभिजन, वंश ।

**अविज्ञ** - वि० [सं] अनभिज्ञ ; बेसमझ ।

**अविज्ञात** - वि० [स] अज्ञात ; बेसमझा ।

**अवितत** - वि० [सं] जो वितत या विस्तृत न हो, संकीर्ण ।

**अवितथ** - वि० [सं] असत्य, झूठ, मिथ्या ।

**अवितर्कित** - वि० [सं] निश्चित ।

**अविद** - वि० [सं] अनजान, मूर्ख ।

**अविदग्ध** - वि० [सं] जो जलकर या अनुभव से पक्का न हुआ हो, कच्चा ।

**अविदित** - वि० [सं] जो विदित न हो, अज्ञात ; अप्रकट ; अप्रसिद्ध ।

**अविद्यमान** - वि० [स] जो हाज़िर न हो , जो न हो, असत् ; असत्य, झूठा ।

**अविद्या** - स्त्री० [सं] विद्या या सही ज्ञान का अभाव, मिथ्याज्ञान, अज्ञान ; मोह ; माया ; प्रकृति ।

**अविनय** - पु० [सं] नम्रता का अभाव, ढिठाई, उद्दंडता ।

**अविनाशी** - 1. वि० [स] जिसका नाश न हो, अक्षय, नित्य, शाश्वत ; 2. पु० ईश्वर, ब्रह्म ।

**अविनीत** - वि० [सं] जो विनीत या नम्र न हो, उद्दंड ; दुष्ट ; ढीठ ।

**अविनीता** - वि० [सं] बुरी चाल-चलनवाली स्त्री ।

**अविबुध** - 1. वि० [स] अज्ञानी, बुद्धिहीन ; 2. पु० असुर, दैत्य ।

**अविभक्त** - वि० [सं] जो बाँटा न गया हो, अभिन्न, एक, मिला हुआ, साझीदार ।

**अविभाज्य** - वि० [स] विभक्त न करने योग्य ।

**अविमुक्त** - 1. वि० [सं] जो विमुक्त न हो, बद्ध ; 2. पु० कनपटी ।

**अविरत** - 1. क्रि० [सं] निरंतर, लगातार, सतत, हमेशा , 2. वि० अनिवृत्त, लगा हुआ ; 3. पु० विराम का अभाव ।

**अविरति** - स्त्री० [सं] वैराग्य का न होना, विषयासक्ति ; अशांति ।

**अविरथा** - क्रि० [देश] वृथा, व्यर्थ ।

**अविरल** - वि० [सं] मिला हुआ ; घना, गाढ़ा ।

**अविराम** - वि० [सं] बिना विश्राम के, निरंतर; बेरोक।
**अविरुद्ध** - वि० [सं] जो विरुद्ध न हो, अनुकूल, मुआफ़िक़।
**अविरोध** - पु० [सं] समानता; अनुकूलता, विरोध का अभाव; मेल, संगति।
**अविलंबित** - क्रि० [सं] बिना विलंब के, शीघ्र।
**अविवाहित** - वि० [सं] जिसका विवाह न हुआ हो, कुँआरा।
**अविवाहिता** - स्त्री० [सं] कुमारी।
**अविवेक** - पु० [सं] विवेक का अभाव, अविचार; नासमझी, नादानी; अन्याय।
**अविवेकी** - वि० [सं] अज्ञानी, अविचारी; मूर्ख; अन्यायी।
**अविशेष** - वि० [सं] जिसमें कोई विशेषता न हो, सामान्य।
**अविश्रांत** - वि० [सं] बिना विश्रांति का, बिना रुका हुआ, बिना थका हुआ।
**अविश्वास** - पु० [सं] विश्वास का अभाव।
**अविश्वासी** - वि० [सं] जो किसीपर विश्वास न करे; जिसपर विश्वास न किया जाय।
**अविहड़** † - वि० [हिं] अखंड; अनश्वर; बीहड़। जैसे, 'दादू अविहड़ आप है।'—दादू। 'अविहड़ अखंडित पीव है, ताको निर्भय दास।'—कबीर।
**अविहित** - वि० [सं] जो विहित न हो, अनुचित; नीच, निकृष्ट।
**अवीचि** - पु० [सं] एक नरक; जिसमें लहर न हो।
**अवीरा** - वि० स्त्री० [सं] पति और पुत्र-रहित स्त्री।
**अवेक्षण** - पु० [सं] देखना; जाँच-पड़ताल।
**अवेज** † - पु० [अ] बदला, प्रतीकार।
**अवैतनिक** - वि० [सं] बिना वेतन का।
**अवैदिक** - वि० [सं] वेदविरुद्ध।
**अवैध** - वि० [सं] अनियमित, बेक़ायदा।
**अव्यक्त** - 1. वि० [सं] जो व्यक्त या स्पष्ट न हो, अज्ञात; अनिर्वचनीय; 2. पु० विष्णु; कामदेव; शिव; प्रकृति।
**अव्यग्र** - वि० [सं] धीर।
**अव्यय** - वि० [सं] अविकारी; अक्षय, नित्य; व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप हमेशा एक-सा रहे।
**अव्ययीभाव** - पु० [सं] वह समास जिसमें अव्यय का योग किसी शब्द के साथ हो।
**अव्यर्थ** - वि० [सं] जो व्यर्थ न हो, सफल; सार्थक; अचूक, अमोघ।
**अव्यवस्था** - स्त्री० [सं] व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी।
**अव्यवस्थित** - वि० [सं] व्यवस्थारहित; जिसकी कोई स्थिति न हो; जिसका कोई निश्चित रूप या क्रम न हो; चंचल; शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था।
**अव्यवहार्य** - वि० [सं] जो व्यवहार के योग्य न हो; कठिन।
**अव्यवहित** - वि० [सं] व्यवधानरहित, पास।
**अव्याकृत** - वि० [सं] जिसकी व्याख्या या टीका न की गयी हो; जो प्रकट न हुआ हो।
**अव्यापन्न** - वि० [सं] जीवित, जो मरा न हो।
**अव्यापार** - 1. वि० [सं] बेकाम; 2. पु० बुरा काम।
**अव्याप्ति** - स्त्री० [सं] व्याप्ति का अभाव; न्याय शास्त्रानुसार लक्षण का लक्ष्य पर न घटने का एक दोष। जैसे, 'सींग-वाले पशुओं के खुर फटे होते हैं।' यह लक्षण गाय आदि में है। लेकिन नील गाय के सींग होने पर भी खुर फटे नहीं होते। इसलिए ऊपर के लक्षण की व्याप्ति इसमें नहीं। यह दोष है।

**अव्यावृत** - वि० [सं] निरंतर, लगातार ; अटूट ; ज्यों का त्यों ।
**अव्याहत** - वि० [सं] बेरोक ; सत्य ।
**अव्युत्पन्न** - वि० [सं] अनभिज्ञ ; व्याकरण शास्त्र के अनुसार ऐसा शब्द जिसकी सिद्धि न हो सके ; अनाड़ी ।
**अव्वल** - 1. वि० [अ] पहला ; प्रधान, श्रेष्ठ ; 2. पु० आदि, प्रारंभ, शुरू ।
**अशंक** - वि० [सं] निडर, निर्भय ; बिना शक ।
**अशआर** - पु० [अ - शेर का बहु०] शेर, कविता ।
**अशकुन** - पु० [सं] बुरा शकुन ।
**अशक्त** - वि० [सं] जिसमें शक्ति न हो, निर्बल, कमज़ोर ; असमर्थ, नाक़ाबिल ।
**अशक्य** - वि० [सं] जो शक्य न हो, न होने योग्य ।
**अशख़ास** - पु० [अ - शख़्स का बहु०] शख़्स, मनुष्य ।
**अशजार** - पु० [अ - शजर का बहु०] शजर, वृक्ष, पेड़ ।
**अशन** - पु० [सं] भोजन, आहार, अन्न ; भोजन करना, खाना ।
**अशनि** - पु० [सं] वज्र ।
**अशर** - पु० [अ] दसवाँ भाग ; भूमि की आय का दसवाँ भाग जो मुसलिम राजा कर के रूप में लेते थे।
**अशरण** - वि० [सं] जिसे कहीं शरण या आश्रय न हो, अनाथ, बेपनाह ।
**अशरफ़** - वि० [फ़ा] शरीफ़, भद्र ।
**अशरफ़ी** स्त्री० [फ़ा] मोहर, सोने का एक सिक्का जो सोलह रुपये से पचीस रुपये तक का होता था ; पीले रंग का फूल, गुल अशरफ़ी ।
**अशराफ़** - वि० [अ - शरीफ़ का बहु०] शरीफ़, भद्र, भलामानुस ।
**अशांत** - वि० [सं] जो शांत न हो, चंचल, अस्थिर, डाँवाँडोल ।
**अशांति** - स्त्री० [सं] असंतोष ; अस्थिरता, चंचलता ; खलबली ।
**अशालीन** - वि० [सं] जो शालीन या नम्र न हो, धृष्ट ।
**अशिक्षित** - वि० [सं] अनपढ़, उजड्ड, अनाड़ी ।
**अशित** - वि० [सं] भोजन किया हुआ, खाया हुआ ; श्याम ।
**अशिर** - पु० [सं] हीरा ; अग्नि ; सूर्य ; राक्षस ।
**अशिष्ट** - वि० [सं] उजड्ड, असभ्य, बेहूदा ।
**अशुद्ध** - वि० [सं] जो शुद्ध न हो, अपवित्र, नापाक ; बेठीक, ग़लत ।
**अशुद्धि** - स्त्री० [सं] अपवित्रता, गंदगी ; ग़लती ।
**अशुभ** - 1. पु० [सं] अमंगल ; पाप, अपराध ; 2. वि० बुरा ।
**अशेष** - वि० [सं] पूरा, समूचा ; समाप्त ; अनंत, अपार ।
**अशोक** - 1. वि० [सं] शोकरहित, बिना दुख का ; 2. पु० एक पेड़ ; पारा ; भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध सम्राट ।
**अशोक-वाटिका** - स्त्री० [सं] वह बग़ीचा जिसमें अशोक के पेड़ लगे हों ; शोक को दूर करनेवाला रम्य उद्यान ; रावण का प्रसिद्ध बग़ीचा ।
**अशोक-षष्ठी** - स्त्री० [सं] चैत्र शुक्ला षष्ठी ; इसी दिन काम्य-तंत्र के अनुसार पुत्र-प्राप्ति के लिए देवी-पूजा की जाती है ।

**अशौच** - पु० [सं] अपवित्रता, अशुद्धता ; सूतक, वृद्धि, संतानोत्पत्ति तथा मृत्यु का अशौच ; रजस्वला स्थिति के तीन दिन।
**अश्क** - पु० [फ़ा] आँसू।
**अश़ग़ाल** - पु० [अ] काम-धंधा ; व्यापार।
**अश्म** - पु० [सं] पत्थर ; पहाड़, पर्वत ; मेघ, बादल।
**अश्मक** - पु० [सं] ट्रावंकोर का प्राचीन नाम।
**अश्मकुट्ट** - पु० [सं] एक प्रकार के वानप्रस्थी जो ऊखली नही रखते थे, केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे।
**अश्मगर्भ** - पु० [सं] पन्ना, मरकत।
**अश्मज** - पु० [सं] गेरू, लाल रंग की मिट्टी; शिलाजीत, वीर्यवर्द्धक दवा।
**अश्मरी** - स्त्री० [सं] पथरी, मूत्रेंद्रिय में पत्थर की तरह के किसी पदार्थ के अड़ जाने से उत्पन्न होनेवाला एक रोग।
**अश्मसार** - पु० [सं] लोहा।
**अश्रद्धा** - स्त्री० [सं] श्रद्धा का अभाव।
**अश्रांत** - 1. वि० [सं] जो थका-माँदा न हो ; 2. क्रि० लगातार।
**अश्राव्य** - वि० [सं] सुनने के अयोग्य।
**अश्रु** - पु० [सं] आँसू; हर्ष, शोक आदि के कारण आँखो में आनेवाला जल।
**अश्रुत** - वि० [सं] बिना सुना हुआ, अज्ञात ; अप्रसिद्ध।
**अश्रुपात** - पु० [सं] आँसू गिरना, रोना।
**अश्रुमुख** - वि० [सं] रोता हुआ, रोनी सूरत का।
**अश्लिष्ट** - वि० [सं] असंगत ; असंबद्ध ; श्लेषरहित।
**अश्लील** - वि० [सं] भद्दा, लज्जाजनक ; फूहड़।
**अश्लीलता** - स्त्री० [सं] भद्दापन, गंदापन।
**अश्व** - पु० [सं] घोड़ा।
**अश्वकर्ण** - पु० [सं] एक प्रकार का शाल-वृक्ष।
**अश्वगंधा** - स्त्री० [सं] असगंध, एक दवा जो बलकारक होती है।
**अश्वतर** - पु० [सं] नागराज ; खच्चर।
**अश्वत्थ** - पु० [सं] पीपल।
**अश्वत्थामा** - पु० [सं] द्रोणाचार्य के पुत्र।
**अश्वपति** - पु० [सं] घुड़सवार ; रिसालदार।
**अश्वपाल** - पु० [सं] घोड़े की देखभाल करनेवाला नौकर, साईस।
**अश्वमेध** - पु० [सं] एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिए छोड़ देते थे, और जब घोड़ा संपूर्ण भूमंडल में घूमकर लौटता था तब उसको मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था। दिग्विजयी राजा यह यज्ञ करते थे। इसके समाप्त होने पर वे चक्रवर्ती सम्राट कहलाते थे।
**अश्वशाला** - स्त्री० [सं] घुड़साल, अस्तबल, तबेला।
**अश्वारोहण** - पु० [सं] घोड़े की सवारी, घोड़े पर चढ़ना।
**अश्वारोही** - पु० [सं] घुड़सवार।
**अश्विनी** - स्त्री० [सं] घोड़ी ; सत्ताईस नक्षत्रो मे से पहिला नक्षत्र। तीन नक्षत्रो के मिलने से इसका रूप घोड़ी के मुख के समान लगता है।
**अश्विनीकुमार**, **अश्विनीसुत** } पु० [सं] सूर्य के पुत्र और देवताओं के वैद्य।
**अषाढ़** - पु० [हिं] आषाढ़ का महीना।
**अष्ट** - वि० [सं] आठ।
**अष्टक** - पु० [सं] आठ वस्तुओं का संग्रह ; वह स्तोत्र जिसमें आठ श्लोक हो ; वह ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हो।

**अष्टकमल** - पु० [सं] हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक भिन्न-भिन्न स्थानो में आठ कमल माने जाते हैं —मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनाहत, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र और सुरतिकमल।

**अष्टकुल** - पु० [सं] पौराणिक मत के अनुसार सर्प की आठ जातियाँ —शेष, वासुकि, तक्षक, कुलिक, कंबल, कर्कोटिक, धार्तराष्ट्र और बलाहक।

**अष्टकृष्ण** - पु० [सं] वल्लभाचार्य जी के सिद्धान्त के अनुसार कृष्ण के आठ रूप —श्रीनाथ, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, गोकुलनाथ, द्वारकानाथ, मदनमोहन, गोकुलचंद्र और नवनीतप्रिय।

**अष्टकोण** - 1. वि० [सं] आठ कोनोंवाला; 2. पु० वह क्षेत्र जिसमें आठ कोण हो।

**अष्टदल** - 1. पु० [सं] आठ पंखुड़ियो का कमल; 2. वि० आठ दल का।

**अष्टधाती** - वि० [हि] आठ धातुओ से बना हुआ।

**अष्टधातु** - स्त्री० [सं] आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, राँगा, सीसा, पारा और जस्ता।

**अष्टपदी** - स्त्री० [सं] आठ पद का गीत।

**अष्टप्रकृति** - स्त्री० [सं] राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी।

**अष्टभुजा** - स्त्री० [सं] दुर्गा।

**अष्टम** - वि० [सं] आठवाँ।

**अष्टमी** - स्त्री० [स] आठवी तिथि।

**अष्टांग** - 1. पु० [सं] आठ अंग—घुटने, पैर, हाथ, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का विधान है; आयुर्वेद के आठ अंग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण; योग के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। 2. वि० आठ अवयवोवाला।

**अष्टाक्षर** - 1. पु० [सं] आठ अक्षरों का मंत्र; 2. वि० आठ अक्षर का, आठ अक्षरवाला।

**अष्टाध्यायी** - स्त्री० [सं] पाणिनीय व्याकरण सूत्र जो आठ अध्यायो में हैं।

**अष्टापद** - पु० [सं] सोना; मकड़ी; कृमि; धतूरा, ऐसे कीड़े जिनके आठ पैर हो।

**असंख्य** - वि० [सं] जिसकी संख्या का ठीक पता न चले, अनगिनत, बेशुमार।

**असंख्यात** - वि० [सं] असंख्य, बेशुमार।

**असंग** - वि० [सं] बिना साथ का, अकेला, बिना संग या संबंध का, निर्लिप्त; अलग, पृथक्।

**असंगत** - वि० [सं] जो संगत न हो, बेठीक, अनुचित।

**असंगति** - स्त्री० [सं] बेसिलसिलापन; अनुपयुक्तता।

**असंतुष्ट** - वि० [सं] जो संतुष्ट न हो; अतृप्त; अप्रसन्न।

**असंतुष्टि** - स्त्री० [सं] अतृप्ति; अप्रसन्नता।

**असंतोष** - पु० [सं] संतोष का अभाव; अतृप्ति।

**असंतोषी** - वि० [सं] जिसे संतोष न हो; जो तृप्त न हो।

**असंप्रज्ञात समाधि** - स्त्री० [सं] समाधि की वह अवस्था जिसमें योगी ज्ञाता और ज्ञेय की भावना से शून्य हो जाता है।

**असंबद्ध** - वि० [सं] बेमेल, अंड-बंड।

**असंबाधा** - स्त्री० [सं] एक वर्णवृत्त, इसके प्रत्येक चरण में म, त, न, स ये चार गण और दो गुरु होते हैं।

**असंभव** - वि० [सं] जो हो न सके, नामुमकिन।

**असंभार** - वि० [सं] जो सँभालने योग्य न हो ; अपार ; बहुत बड़ा ।

**असंभावना** - स्त्री० [सं] अनहोनापन।

**असंभावित** - वि० [सं] जो संभावित या प्रतिष्ठित न हो ; जिसकी संभावना या कल्पना न की गयी हो।

**असंभाव्य** - वि० [सं] अनहोना।

**असंभाष्य** - वि० [सं] न कहे जाने योग्य ; जिससे बातचीत करना उचित न हो।

**असंयत** - वि० [सं] जिसमें संयम अथवा अपने ऊपर नियंत्रण न हो, जिसका आचरण मनमाना हो।

**असंशय** - पु० [सं] निःसंदेह, बेशक।

**असंसक्ति** - स्त्री० [सं] निर्लिप्तता ; विरक्ति।

**असंस्कृत** - वि० [सं] बिना सुधारा हुआ, अशिष्ट।

**अस** † - वि० [देश] ऐसा, इस प्रकार का ; समान।

**असकताना** - अ० [देश] आलसी होना।

**असगंध** - पु० [हिं] अश्वगंधा।

**असगुन** - पु० [हिं] अपशकुन, बुरा शकुन।

**असती** - स्त्री० [सं] सती का उलटा, कुलटा।

**असत्** - वि० [सं] जो नहीं है ; मिथ्या, झूठ ; बुरा, ख़राब ; खोटा।

**असत्य** - वि० [सं] झूठ, सच का उलटा।

**असद** - पु० [अ] शेर, सिंह।

**असब** - पु० [अ] शरीर का अगला भाग।

**असबर्ग** - पु० [फ़ा] खुरासान की रेशम रँगनेवाली घास।

**असबाब** - पु० [अ] सामाम ; कारण।

**असबाबे ख़ानादारी** - पु० [अ] गृहस्थी का सामान।

**असमई** - स्त्री० [हिं] असभ्यता।

**असभ्य** - वि० [सं] अशिष्ट, गँवार, नाशाइस्ता।

**असमंजस** - पु० [सं] दुविधा, पसोपेश, आगापीछा ; अड़चन।

**असमंत** - पु० [हिं] चूल्हा।

**असम** - 1. वि० [सं] जो सम न हो ; ऊँचा ; विषम ; 2. पु० [अ] पाप ; अपराध ; 3. पु० [हिं] आसाम।

**असमत** - पु० [अ] सतीत्व, पवित्रता।

**असमतफ़रोशी** - स्त्री० [अ] सतीत्व बेचना, व्यभिचार।

**असमय** - 1. पु० [सं] बुरा समय ; 2. क्रि० बेमौक़ा।

**असमर्थ** - वि० [सं] सामर्थ्यहीन, अशक्त ; अयोग्य।

**असमशर** - पु० [सं] कामदेव।

**असम्मत** - वि० [सं] जो राजी न हो ; जो पसंद न हो।

**असमान** - 1. वि० [सं] जो समान न हो, विषम ; 2. पु० आसमान, आकाश।

**असमाप्त** - वि० [सं] अपूर्ण, अधूरा।

**असमाहित** - वि० [स] जो समाहित या स्थिरचित्त न हो, चंचल।

**असमीक्ष्यकारी** - पु० [सं] बिना विचारे कार्य करनेवाला व्यक्ति।

**असयाना** † - वि० [देश] सीधा-सादा, भोला-भाला ; अनाड़ी, मूर्ख।

**असर** - पु० [अ] प्रभाव, दबाव ; दिन का चौथा पहर।

**असरार** † - क्रि० [देश] निरंतर, बराबर। जैसे, 'नैनन नीर बहैं असरार।'— सूर।

**असरार** - पु० [अ] गुप्त बात, रहस्य।

**असल** - 1. वि० [अ] सच्चा, खरा; उच्च, श्रेष्ठ; शुद्ध, खालिस, बिना मिलावट का; 2. पु० जड़, मूल; बुनियाद; मूलधन।
**असलह** - पु० [अ] शस्त्र।
**असलहख़ाना** - पु० [अ] शस्त्रागार।
**असला** - क्रि० [अ] ज़रा भी, हरगिज़।
**असलियत** - स्त्री० [अ] तथ्य, वास्तविकता; जड़, बुनियाद; मूल तत्त्व, सार।
**असली** - वि० [अ] सच्चा, खरा; मूल; शुद्ध।
**असलेऊ** - वि० [देश] असहनीय।
**असवार** † - पु० [हिं] सवार।
**असवारी** † - स्त्री० [हिं] सवारी।
**असह** - वि० [हिं] न सहने योग्य, असह्य।
**असहन** - 1. वि० [सं] जो सहन न करे; 2. पु० वैरी।
**असहनशील** - वि० [सं] जो सहन न करे, असहिष्णु; चिड़चिड़ा, तुनकमिज़ाज।
**असहनीय** - वि० [सं] न सहने योग्य।
**असहयोग** - पु० [सं] साथ न देना, किसी काम में हाथ बँटाने से इनकार करना; गांधी जी का चलाया एक आन्दोलन।
**असहाय** - वि० [सं] जिसे किसी तरह की मदद न हो, निःसहाय; अनाथ; लाचार।
**असहिष्णु** - वि० [सं] असहनशील; चिड़चिड़ा।
**असह्य** - वि० [सं] असहनीय।
**असाँच** - वि० [हिं] झूठ, असत्य।
**असा** - पु० [अ] सोटा, डंडा; चाँदी व सोने से मढ़ा हुआ सोटा।
**असाढ़** - पु० [हिं] आषाढ़ का महीना, वर्ष का चौथा महीना।
**असाढ़ा** - पु० [देश] महीन रेशम का तागा; देशी शक्कर।
**असाढ़ी** - 1. वि० [हिं] आषाढ़ का; 2. स्त्री० वह फ़सल जो आषाढ़ में बोई जाती है, ख़रीफ़।
**असाधारण** - वि० [सं] जो साधारण न हो, असामान्य, ग़ैरमामूली; विशेष।
**असाधु** - वि० [सं] जो साधु या भला न हो, बुरा, असज्जन।
**असाध्य** - वि० [सं] जिसको न साध सके, जो किया न जा सके; जिसकी चिकित्सा सफल न हो सके।
**असामयिक** - वि० [सं] जो ठीक या नियत समय पर न हो, बेवक़्त का।
**असामान्य** - वि० [सं] असाधारण, ग़ैर-मामूली।
**असामी** - पु० [अ] व्यक्ति; काश्तकार; वह जिससे लेन-देन किया जाता हो; मुद्दालेह, देनदार; अपराधी; दोस्त; वह जिससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो।
**असार** - 1. वि० [सं] साररहित; तुच्छ; शून्य; 2. पु० अगरू, चंदन।
**असालत** - स्त्री० [अ] कुलीनता; असलियत, सचाई।
**असालतन** - क्रि० [अ] स्वयं, खुद।
**असावधान** - वि० [सं] जो सावधान या सतर्क न हो, लापरवाह।
**असावधानता** / **असावधानी** - स्त्री० [सं] लापरवाही।
**असावरी** - स्त्री० [हिं] छत्तीस रागिनियों में से एक प्रधान रागिनी।
**असासा** - पु० [अ] माल, असबाब।
**असि** - स्त्री० [सं] तलवार, खड्ग।
**असित** - वि० [सं] जो सित या सफ़ेद न हो, काला; दुष्ट, बुरा।
**असिता** - स्त्री० [सं] जमुना नदी।

**असिद्ध** - वि० [सं] जो सिद्ध न हो ; कच्चा ; अधूरा ; जो साबित न हो, अप्रमाणित ; निष्फल, व्यर्थ ।
**असिद्धि** - स्त्री० [स] अप्राप्ति ; असफलता ; अपूर्णता ।
**असिव** - वि० [हिं] अशुभ ।
**असिपुच्छ** - पु० [सं] मगर ।
**असिस्टेंट** - वि० [अंग्रे] सहायक ।
**असी** - स्त्री० [हिं] एक नदी जो काशी में गंगा में मिलती है ।
**असीम** - वि० [सं] सीमारहित, बेहद ; अपार, अगाध ।
**असीर** - वि० [फ़ा] क़ैदी ।
**असीरी** - स्त्री० [फ़ा] क़ैद होना ।
**असील** - वि० [अ] खरा, सुशील ।
**असीस** - स्त्री० [हिं] आशीर्वाद ।
**असीसना** - स० [हिं] आशीर्वाद देना, दुआ देना ।
**असु** - 1. पु० [हिं] प्राण ; चित्त ; 2. क्रि० शीघ्र ।
**असुग** - 1. पु० [हिं] शीघ्रगामी, तेज चलनेवाला ; 2. पु० वायु ; तीर ।
**असुर** - पु० [सं] राक्षस ; रात्रि ; नीच पुरुष ; सूर्य ; बादल ; राहु ।
**असुरगुरु** - पु० [सं] शुक्राचार्य ।
**असुराई** † - स्त्री० [हि] शरारत ; नीचता ।
**असुरारि** - पु० [सं] देवता, विष्णु ।
**असुविधा** - स्त्री० [सं] कठिनाई, अड़चन ।
**असूझ** - वि० [देश] अंधेरा, अंधकारमय ; अपार, बहुत अधिक ।
**असूत** † - वि० [हिं] विरुद्ध ; असंबद्ध ।
**असूया** - स्त्री० [सं] ईर्ष्या, जलन ।
**असूर्यंपश्या** - वि० स्त्री० [सं] जिसको सूर्य भी न देखे ; सदैव परदे में रहनेवाली ।
**असूल** - पु० [अ] सिद्धान्त ।
**असूलना** - स० [हिं] वसूल करना ।
**असृक्** - पु० [सं] रक्त, रुधिर, ख़ून ।
**असृग्धरा** - स्त्री० [सं] चर्म, खाल ।
**असेसर** - पु० [अंग्रे] फौजदारी के मुकद्दमे में जज को राय देने के लिए चुना गया व्यक्ति ; कर निश्चित करनेवाला ।
**असैला** - वि० [हिं] रीति और नीति के विरुद्ध कर्म करनेवाला, कुमार्गी ; रीति - विरुद्ध, अनुचित ।
**असोच** - वि० [हिं] अपवित्र ; निश्चिंत ।
**असोज** † - पु० [सं] आश्विन मास, क्वार ।
**असोस** - वि० [हिं] न सूखनेवाला ।
**असोसियेशन** - पु० [अंग्रे] संघ ; समिति ।
**असौंध** - पु० [हिं] दुर्गंधि, बदबू ।
**अस्कर** - पु० [अ] सेना, फ़ौज ।
**अस्तंगत** - वि० [सं] विनष्ट ; डूबा हुआ ; अवनत ।
**अस्त** - 1. वि० [सं] छिपा हुआ, जो न दिखाई पड़े ; नष्ट ; 2. पु० लोप ।
**अस्तबल** - पु० [हिं] घुड़साल ।
**अस्तमन** - पु० [सं] अस्त होना ।
**अस्तमित** - वि० [सं] डूबा हुआ ; नष्ट ।
**अस्तर** - पु० [फ़ा] नीचे की तह या पल्ला ; अँतरौटा, अंतरपट ।
**अस्तरकारी** - स्त्री० [फ़ा] पलस्तर ; चूने की लिपाई ।
**अस्तव्यस्त** - वि० [सं] उलटा-पुलटा, तितर-बितर ; आकुल ।
**अस्ताचल** - पु० [सं] सूर्यास्त का स्थान ।
**अस्तीन** - स्त्री० [फ़ा] बाँह ।
**अस्तित्व** - पु० [सं] विद्यमानता, उपस्थिति ।
**अस्तु** - अव्य० [सं] जो हो ; खैर, भला ।
**अस्तुति** - 1. स्त्री० [सं] निंदा ; 2. पु० स्तवन ; [देश] स्तुति ।
**अस्तेय** - पु० [सं] चोरी न करना, चोरी न करने का व्रत ।
**अस्तोक** - वि० [सं] बहुत ।

**अस्त्र** - पु० [सं] फेंककर चलाया जानेवाला हथियार।

**अस्त्रकार** - पु० [सं] हथियार बनानेवाला कारीगर।

**अस्त्रचिकित्सक** - पु० [सं] हथियार से चिकित्सा करनेवाला, चीरफाड़ करनेवाला, जर्राह, सर्जन।

**अस्त्रचिकित्सा** - स्त्री० [सं] चीरफाड़ का इलाज, सर्जरी, नश्तर।

**अस्त्रवेद** - पु० [सं] धनुर्वेद।

**अस्त्रशाला** - स्त्री० [सं] अस्त्र रखने का स्थान।

**अस्त्रागार** - पु० [सं] अस्त्रशाला, मेगज़ीन।

**अस्थायी** - वि० [सं] जो स्थायी न हो।

**अस्थि** - स्त्री० [सं] हड्डी।

**अस्थिकुंड** - पु० [सं] एक नरक का नाम जिसमें हड्डियाँ भरी रहती हैं।

**अस्थिति** - स्त्री० [सं] चंचलता, डाँवाँडोलपन।

**अस्थिर** - वि० [सं] जो स्थिर न हो, डाँवाँडोल; जिसका कुछ ठीक न हो।

**अस्थिसंचय** - पु० [सं] शवदहन संस्कार के बाद जलने से बची हुई हड्डियाँ इकट्ठी करने की एक क्रिया।

**अस्थिसार** - पु० [सं] मज्जा।

**अस्थूल** - वि० [सं] जो स्थूल न हो, सूक्ष्म।

**अस्थैर्य** - पु० [सं] अधीरता, चंचलता।

**अस्नान** - पु० [हिं] स्नान।

**अस्नाय** - पु० [अ] बीच का समय।

**अस्पताल** - पु० [हिं] दवाखाना, चिकित्सालय।

**अस्पृश्य** - वि० [सं] जो छूने योग्य न हो।

**अस्पृह** - वि० [सं] जिसमें लालच न हो।

**अस्फुट** - वि० [सं] जो स्पष्ट न हो; गूढ़, जटिल।

**अस्र** - पु० [सं] कोना; रक्त; जल; आँसू; केसर।

**अस्रप** - 1. वि० [सं] रक्त पीनेवाला; 2. पु० राक्षस; जोंक; मूल नक्षत्र।

**अस्व** - वि० [सं] निर्धन, ग़रीब, कंगाल।

**अस्वस्थ** - वि० [सं] रोगी; अनमना।

**अस्वाभाविक** - वि० [सं] प्रकृतिविरुद्ध, कृत्रिम, बनावटी।

**अस्वीकार** - पु० [सं] इनकार, नामंजूरी।

**अस्वीकृत** - वि० [सं] नामंजूर किया हुआ।

**अहं** - 1. सर्व० [सं] मैं; 2. पु० अहंकार।

**अहंकार** - पु० [सं] अभिमान, गर्व; "मैं हूँ" या "मैं करता हूँ" इस प्रकार की भावना।

**अहंकारी** - वि० [सं] घमंडी।

**अहंता** - स्त्री० [सं] अहंकार, मद।

**अहंमन्यता** - स्त्री० [सं] अहंकार, 'मैं ही श्रेष्ठ' ऐसी भावना।

**अहंवाद** - पु० [स] डींग मारना।

**अह** - 1. पु० [सं] दिन; सूर्य; विष्णु; 2. अव्य० दुःख और आश्चर्य के भाव का सूचक एक संबोधन।

**अहक** † - स्त्री० [हिं] इच्छा, लालसा।

**अहकना** - अ० [हिं] इच्छा करना।

**अहकाम** - पु० [अ] आज्ञाएँ।

**अहटाना** - अ० [देश] आहट लगना, पता चलना; दुखना, दर्द करना।

**अहतमाल** - पु० [अ] ख़तरा, भय।

**अहतिमाम** - पु० [अ] प्रबंध।

**अहतियात** - स्त्री० [अ] सावधानी।

**अहद** - पु० [अ] प्रतिज्ञा, वादा; संकल्प, इरादा; समय, काल।

**अहददार** - पु० [फ़ा] ठेकेदार।

**अहदनामा** - पु० [फ़ा] प्रतिज्ञापत्र, एकरारनामा; संधिपत्र, सुलहनामा।

**अहदपैमान** - पु० [अ] करार; शासन; शासन काल; इकाई; अदद।

**अहदशिकन** - पु० [अ] प्रतिज्ञा तोड़नेवाला ।

**अहदशिकनी** - स्त्री० [अ] प्रतिज्ञा भंग करना ।

**अहदियत** - स्त्री० [अ] एक होना ।

**अहदी** - वि० [अ] बड़ा आलसी, जो कुछ काम न करे, निठल्ला ।

**अहना** - अ० [देश] होना ।

**अहनिसि** - अव्य० [हिं] दिन-रात ।

**अहबाब** - पु० [अ] मित्रगण, हबीब का बहु०

**अहमक़** - वि० [अ] बेवकूफ़, मूर्ख ।

**अहमहमिका** - स्त्री० [सं] पहिले हम तब दूसरा ; चढ़ा-ऊपरी ।

**अहमिति** - स्त्री० [हि] अहंकार ।

**अहमियत** - वि० [अ] ख़ासियत, महत्व ।

**अहर** - पु० [देश] पोखरा ।

**अहरन** † - स्त्री० [हिं] निहाई, वह लोहा जिसपर धातु को रखकर लोहार हथौड़े से पीटता है ।

**अहरा** - पु० [देश] जलाने के कंडों का ढेर ; प्याऊ ; मुसाफ़िरो के ठहरने की जगह ।

**अहरी** - स्त्री० [देश] हौज़, प्याऊ ।

**अहर्निश** - अव्य० [सं] दिन-रात ।

**अहल** - 1. वि० [अ] सुशील ; 2. पु० व्यक्ति ; स्वामी ; योग्य ; परिवार के लोग ।

**अहलकार** - पु० [अ] कर्मचारी, कारिंदा ।

**अहलना** † - अ० [देश] हिलना ।

**अहलमद** - पु० [फ़ा] अदालत का एक कर्मचारी ; किसी मद या विभाग का मुख्य कर्मचारी ।

**अहलिया** - स्त्री० [उ] पत्नी ।

**अहलेक़लाम** - पु० [उ] साहित्यसेवी ।

**अहलेख़ाना** - 1. पु० [उ] घर के लोग, बाल-बच्चे ; 2. स्त्री० गृहस्वामिनी ।

**अहलेज़बान** - पु० [उ] भाषा का पडित ।

**अहल्या** - 1. स्त्री० [सं] गौतम ऋषि की स्त्री ; 2. वि० धरती जो जोती न जा सके ।

**अहवाल** - पु० [अ] समाचार ।

**अहसन** - वि० [अ] बहुत नेक ।

**अहसान** - पु० [अ] नेकी, उपकार ; कृपा, अनुग्रह ; कृतज्ञता ।

**अहस्कर** - पु० [सं] सूर्य ।

**अहाता** - पु० [अ] घेरा, बाड़ा ।

**अहारना** - स० [हि] खाना ; चिपकाना ; लकड़ी को छीलकर सुडौल बनाना ; कपड़े में माड़ी देना ।

**अहाली** - पु० [अ] साथी लोग ।

**अहाली-मवाली** - पु० [अ] साथ रहनेवाले नौकर-चाकर आदि ।

**अहिंसा** - स्त्री० [सं] किसीको किसी प्रकार दुःख न देना, हिंसा का अभाव ।

**अहिंस्र** - वि० [सं] जो हिंसा न करे ।

**अहि** - पु० [सं] साँप , राहु ; वृत्रासुर ; सीसा ; सूर्य ; वंचक ; खल ।

**अहिक्षेत्र** - पु० [सं] कंपिल से चंबल तक का देश ।

**अहिछार** - पु० [सं] साँप का विष ।

**अहित** - 1. वि० [सं] शत्रु, हानि करनेवाला ; 2. पु० हानि, बुराई, अकल्याण ।

**अहिनाह** - पु० [सं] शेषनाग ।

**अहिफेन** - पु० [सं] अफ़ीम ।

**अहिबेल** - स्त्री० [सं] नागबेल, पान ।

**अहिला** - पु० [हि] पानी की बाढ़; दंगा ।

**अहिवात** - पु० [हिं] सोहाग, सौभाग्य ।

**अहिवाती** - स्त्री० [हि] सोहागिन ।

**अहीर** - पु० [हिं] ग्वाला, गोपालक ।

**अहुटना** † - अ० [देश] हटना, दूर होना ।

**अहुटाना** † - स० [देश] हटाना, दूर करना ।

**अहुठ** † - वि० [ब्र] साढ़े तीन ; जैसे, 'अहुठ पैर बसुधा सब कीन्हीं'—सूर ।

**अहूठन** - पु० [देश] लकड़ी का वह मोटा टुकड़ा जो ज़मीन मे गड़ा रहता है और जिसपर किसान लोग गँड़ासे से चारा काटते हैं ।

**अहेतु** - वि० [स] बिना कारण, व्यर्थ, फ़ज़ूल ।

**अहेतुक** - वि० [स] व्यर्थ ।

**अहेर** - पु० [देश] शिकार ।

**अहेरिया** - वि० [देश] शिकारी ।

**अहेरी** - पु० [देश] शिकारी ।

**अहो** - अव्य० [सं] करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष और आश्चर्य के भाव सूचित करनेवाला संबोधन ।

**अहोरात्र** - पु० [स] दिन-रात ।

**अहोरा-बहोरा** - 1. पु० [देश] विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल जाकर उसी दिन पिता के घर लौट आती है; 2. क्रि० बार बार, पुनः पुनः ।

## आ

**आँक** - पु० [हिं] अंक; अदद; चिह्न; अंश; गोद; पहिये की धुरी का ढाँचा ।

**आँकड़ा** - पु० [हि] अंक; अदद; चौपायो की एक बीमारी; पेच ।

**आँकन** - पु० [हि] ज्वार की बाल की खुखड़ी जिसमें से दाना निकाल लिया गया हो; निशान ।

**आँकना** - स० [हिं] कूतना, मूल्य लगाना; निशान लगाना ।

**आँकल** - पु० [हि] दागा हुआ साँड़ ।

**आँख** - 1. स्त्री० [हि] नेत्र, नयन; मु० —आना - आँखें लाल होना और उनमें दर्द तथा सूजन होना; —उलट जाना - पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरने के समय); —ऊपर न उठाना - लज्जा या भय से दृष्टि नीची रहना; —कडुआना - अधिक घूरकर देखने या जागने से आँखों में पीड़ा होना; —का अंधा गाँठ का पूरा - अविवेकी धनी; —का काँटा होना - बाधक होना; पीडा देना; —का काजल चुराना - बहुत चतुराई और सफ़ाई के साथ चोरी करना; —का तारा - बहुत प्यारा; —का पानी ढल जाना - लाज शरम का जाता रहना; —की किरकिरी - खटकनेवाली वस्तु या व्यक्ति; —खुलना - नींद टूटना; चेतना का आना; —खोलना - सावधान करना; सावधान होना; स्वस्थ होना, —गड़ना - दृष्टि जमना; बड़ी चाह होना; —गड़ाना - नज़र रखना; —चुराना - कतराना; —दिखाना - गुस्से भरी दृष्टि से देखना; —पथराना - पुतली की गति मारी जाना; —में बसना - दिल में समाना; —बिछाना - प्रेम से स्वागत करना; —में बैठना - पसंद आना; —भर आना - आँखो में आँसू आना; —लगना - नींद आना; प्रेम होना; —लगाना - प्रीति लगाना; —लड़ना - नज़रबाज़ी होना; प्रेम होना; —सेकना - दर्शन के सुख का आनंद लेना; आँखे चार होना - देखा-देखी होना; आँखे डबडबाना - आँखो में आँसू भर आना; आँखो के आगे अंधेरा छाना - सारा संसार सूना दिखना, घोर निराशा का होना; आँखों पर परदा पड़ना - भ्रम होना; आँखों में खून उतरना - क्रोध से आँखे लाल होना; आँखो में चरबी छा जाना - घमंड या लापरवाही से सामने की चीज़ तक न दिखायी पड़ना; आँखो में टेसू फूलना - चारो तरफ़ एक-सा दिखायी पड़ना; नशा होना; आँखो में रात काटना - चिंता या व्यग्रता के कारण रात-भर जागना; 2. पु० गन्ने की गाँठ पर की ठोंठी; सुई का छेद ।

**आँख-मिचौनी** - स्त्री० [हि] लड़को का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँख मूँद लेता है, इस बीच में अन्य सब लड़के छिप जाते है जिन्हें वह छूने के लिए ढूँढ़ता फिरता है। जिस लड़के को वह छू लेता है वह चोर बन जाता है। अगर किसीको वह छू नही सकता तो वही चोर बना रहता है। आँख-मिचौली।

**आँगन** - पु० [हि] घर के भीतर का वह खुला स्थान जिसके चारो ओर कोठरियाँ या बरामदे हो; चौक, सहन।

**आँच** - स्त्री० [हिं] गरमी; आग; लौ, ज्वाला; प्रताप; हानि; **मु०** —आना - हानि होना।

**आँचल** - पु० [हिं] वस्त्र के दोनो छोरो का एक भाग या कोना; स्त्रियो की साड़ी का वह छोर जो सामने छाती पर रहता है, पल्ला; सीमा के पास का प्रदेश; **मु०**—डालना - मुसलमानो में शादी के वक़्त की एक रस्म; —देना - बच्चे को दूध पिलाना; —मे बाँधना - हर समय याद रखना; — लेना - पाँव छूना, पॉव पड़ना।

**आँजना** - स० [हि] अंजन लगाना।

**आँट** - स्त्री० [देश] हथेली में अगूठा और तर्जनी के बीच का स्थान; दुश्मनी; दॉव।

**आँटना** - अ० [देश] समाना, पूरा पड़ना।

**आँटी** - स्त्री० [देश] सूत का लच्छा।

**आँठी** - स्त्री० [देश] दही, मलायी आदि का लच्छा; गॉठ; गुठली।

**आँड़ू** - वि० [हिं] वह बैल जो बधिया न हो।

**आँत** - स्त्री० [हिं] अंतड़ी; **मु०** ऑतों में बल पड़ना - पेट में दर्द होना।

**आंतरिक** - वि० [सं] भीतरी, अंदर का।

**आंदोलन** - पु० [सं] बार-बार हिलना-डुलना; हलचल।

**आंदोलित** - वि० [सं] प्रकंपित; संचालित

**आँधी** - स्त्री० [हि] तूफ़ान; तेज़ हवा; **मु०**—के आम - बिना मिहनत की मिली या सस्ती चीज़; थोड़े दिन रहनेवाली चीज़।

**आँय-बाँय** - पु० [देश] अंड-बंड, व्यर्थ, बकवास।

**आँव** - पु० [हि] चिकना और सफ़ेद लसदार मल।

**आँवल** - पु० [हि] वह झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते है।

**आँवला** - पु० [हिं] आमलक, एक गोल कसैला फल।

**आँवाँ** - पु० [हिं] मिट्टी के बर्तन पकाने का गड्ढा।

**आंशिक** - वि० [सं] कुछ, थोड़ा, रंचक; पूरी वस्तु के एक हिस्से का।

**आँसू** - पु० [हिं] अश्रु, ऑखो से निकलने-वाला पानी, **मु०** —पोछना - तसल्ली देना; —पीकर रह जाना - भीतर ही भीतर कुढ़कर रह जाना; —पुँछना - आश्वासन मिलना।

**आइंदा** - 1 वि० [फ़ा] आनेवाला, भविष्य; 2 क्रि० फिर कभी, भविष्य में।

**आई** - 1 स्त्री० [हिं] मौत; जैसे, 'भरा कटोरा दूध का, ठंढ़ा करके पी। तेरी आई मै मरूँ, किसी तरह तू जी॥' 2 अ० आ गयी; [मरा] माँ।

**आईन** - पु० [फ़ा] नियम, विधान, क़ानून।

**आईना** - पु० [फ़ा] दर्पण, शीशा; **मु०**—होना - साफ़ होना।

**आईनी** - वि० [फ़ा] क़ानूनी।

**आकंठ** - वि० [सं] कंठपर्यन्त।

**आक** - पु० [हि] मदार, अकवन, अर्क।
**आक़बत** - स्त्री० [अ] परलोक; मौत के बाद की दशा।
**आक़बत-अंदेश** - वि० [फ़ा] दूरंदेश, दीर्घदर्शी।
**आक़बत-अंदेशी** - स्त्री० [फ़ा] परिणाम-दर्शिता।
**आकर** - पु० [सं] खान, उद्गमस्थान; ख़ज़ाना।
**आकरकरहा** - पु० [अ] एक जड़ी जिसे मुँह में रखने से जीभ में चुनचुनाहट होती है और पानी निकलता है, अकरकरा।
**आकर्ण** - वि० [सं] कान तक फैला हुआ।
**आकर्षक** - वि० [सं] अपनी ओर खीचनेवाला, मोहक।
**आकर्षण** - पु० [स] खिचाव, मोहक शक्ति।
**आकलन** - पु० [सं] लेना; गिनती करना; संग्रह, संपादन।
**आकली** - स्त्री० [हि] बेचैनी, व्याकुलता।
**आकल्प** - पु० [सं] कल्पपर्यंत; सिंगार।
**आकस्मिक** - वि० [सं] सहसा होनेवाला, जो अचानक हो।
**आकांक्षा** - स्त्री० [सं] इच्छा, अभिलाषा।
**आकांक्षित** - वि० [सं] इच्छित, अभिलषित।
**आक़ा** - पु० [अ] मालिक, स्वामी।
**आकार** - पु० [सं] स्वरूप, निशान; डील-डौल।
**आकारीठ** - पु० [डि] संग्राम, युद्ध।
**आकाश** - पु० [सं] वह खुली जगह जहाँ हवा के अलावा और कुछ भी न हो, गगन, आसमान; शून्य; **मु०** —से बातें करना - बहुत ऊँचा होना।
**आकाश-कुसुम** - पु० [स] अनहोनी या असंभव बात; आसमान का फूल; तारे।
**आकाशगंगा** - स्त्री [सं] आकाश में उत्तर से दक्षिण की तरफ़ फैले हुए बहुत-से नक्षत्रो का समूह जो नदी के जैसे दीखता है, स्वर्गगा।
**आकाशदीप** - पु० [सं] कार्तिक मास में हिंदू लोग 21 हाथ ऊँचे बाँस के सहारे कंडील में दीपक जलाते हैं जिसे आकाशदीप कहते है।
**आकाशवाणी** - स्त्री० [सं] दैवी वाणी, आकाश से सुनायी देनेवाली वाणी; रेडियो।
**आकाशीवृत्ति** - स्त्री० [सं] अनिश्चित जीविका, जिसके निर्वाह का कोई ज़रिया न हो।
**आक़िब** - वि० [अ] पीछे आनेवाला; सहायक।
**आक़िल** - वि० [अ] अक़्लमंद, होशियार।
**आक़िलाना** - क्रि० [अ] बुद्धिमत्तापूर्ण।
**आकीर्ण** - वि० [सं] व्याप्त, भरा हुआ।
**आकुंचन** - पु० [सं] सिकुड़ना, सिमटना, संकुचित होना; न्यायशास्त्र में पाँच प्रकार के कर्मों मे से एक।
**आकुंठित** - वि० [सं] शर्माया हुआ; जड़; स्तब्ध।
**आकुल** - वि० [सं] व्यग्र, घबराया हुआ; कातर, उद्विग्न।
**आकूत** - पु० [सं] अभिप्राय, मतलब; प्रेरणा; अनुभूति।
**आकूति** - पु० [सं] आशय, मतलब; उत्साह; सदाचार, आतरीति; स्वायंभुवमनु की तीन कन्याओं में से एक।
**आकृति** - स्त्री० [स] बनावट; मूर्ति; मुँह का भाव; जाति; एक वर्णवृत्त।
**आकृष्ट** - वि० [स] खीचा या खिंचा हुआ, आकर्षित।
**आक्रंदन** - पु० [सं] रोना-चिल्लाना।
**आक्रमण** - पु० [सं] हमला; चढ़ाई।
**आक्रोश** - पु० [स] क्रोध; शाप; गाली।

**आक्लांत** - वि० [सं] सना या पोता हुआ ; यौ० रुधिराक्लांत ।

**आक्लिन्न** - वि० [सं] भीगा, आर्द्र ; कोमल ।

**आक्षेप** - पु० [सं] गिराना ; दोष लगाना ; एक वातरोग जिसमें कँपकँपी आने लगती है ; व्यंग्य ।

**आखंडल** - पु० [स] इंद्र ।

**आखत** - पु० [हिं] अक्षत ।

**आख़्ता** - वि० [फ़ा] जिसके अंडकोश चीरकर निकाल दिये गये हों ।

**आखन** - क्रि० [हि] हर घड़ी, प्रतिक्षण ।

**आखना** † - स० [हिं] कहना, जैसे, 'बार बार का आखिये, मेरे मन की सोय ।' —कबीर। चाहना, जैसे, 'तुहि सेवा बिछुरन नहिं आखो ।' —जायसी। देखना, जैसे, 'विषै सुख त्यागी आत्म सुख लक्ष आखिये ।' —निश्चल। आटा आदि को छानना ।

**आख़िर** - वि० [फ़ा] पीछे का, अंतिम ।

**आख़िरकार** - क्रि० [फ़ा] अंत में ।

**आख़िरी** - वि० [फ़ा] पिछला, अतिम ।

**आखु** - पु० [स] चूहा ; चोर ; सूअर ; भूसा ।

**आखुपाषाण** - पु० [सं] चुंबक पत्थर ।

**आख़ून** - पु० [फ़ा] शिक्षक, उस्ताद ।

**आखेट** - पु० [सं] शिकार ।

**आखेटक** - पु० [सं] शिकार ; शिकारी ।

**आख़ोर** - 1. पु० [फ़ा] निकम्मी वस्तु ; कूड़ा-करकट ; 2. वि० बेकाम ; रद्दी ; मैला-कुचैला ।

**आख़्ता** - वि० [फ़ा] जिसके अंडकोष चीरकर निकाल दिये गये हों, बधिया ।

**आख्या** - स्त्री० [सं] नाम, कीर्ति ; व्याख्या ।

**आख्यात** - वि० [स] प्रसिद्ध, मशहूर ; कहा हुआ ।

**आख्यान** - पु० [सं] वर्णन , कथा ; उपन्यास का एक भेद ।

**आख्यानक** - पु० [सं] वृत्तांत ; कहानी ; पूर्ववृत्तात ।

**आख्यायिका** - स्त्री० [सं] कथा, काल्पनिक कहानी ।

**आगंतुक** - वि० [सं] पाहुना, अचानक आया हुआ, अतिथि ।

**आग** - स्त्री० [हिं] अग्नि ; प्रेम ; डाह ; **मु०** —का पुतला - क्रोधी, चिड़चिड़ा; —के मोल - बहुत महँगा; —पानी का वैर-जन्म की शत्रुता ; —बबूला होना - गुस्से से लाल होना ; —लगे पर कुआँ खोदना - कोई कठिन कार्य आ पड़ने पर उसके करने के सीधे उपाय को छोड़ बड़ी लंबी-चौड़ी युक्ति में लगना ; पानी में आग लगाना - अनहोनी बाते कहना ; असंभव कार्य करना ।

**आगत** - 1. वि० [सं] आया हुआ ; 2. पु० मेहमान ।

**आगत-स्वागत** - पु० [सं] सत्कार, आव-भगत ।

**आगम** - पु० [सं] आगमन ; आनेवाला काल ; वेद ; तंत्रशास्त्र ।

**आगमन** - पु० [सं] आमद, आना ; प्राप्ति ; लाभ ।

**आगम-सोची** - वि० [हिं] आगे की बात सोचनेवाला, दूरदर्शी ।

**आगर** - पु० [हिं] समूह ; निधि ; कोष ; घर ; खान ।

**आगा** - पु० [हिं] अगला भाग ; भविष्य ; छाती ; मुख ; ललाट ।

**आग़ा** - पु० [तु] बड़ा भाई ; महाशय ; स्वामी ; सरदार ; काबुली ।

**आगा-पीछा** - पु० [हिं] सोच-विचार, दुविधा , परिणाम ।

**आगामी** - पु० [सं] भावी, आनेवाला, होनहार।

**आगार** - पु० [सं] घर; स्थान, ख़ज़ाना।

**आगाह** - वि० [फ़ा] परिचित, वाकिफ़।

**आगाही** - स्त्री० [फ़ा] जानकारी, सूचना।

**आगिल** † - वि० [हि] आगे का, भविष्य का।

**आगी** - स्त्री० [हिं] आग।

**आगे** - क्रि० [हि] पीछे का उल्टा; समक्ष, जीते जी; इसके बाद; पूर्व, पहले; अतिरिक्त; अधिक।

**आगौन** † - पु० [हि] आगमन।

**आग्नीध्र** - पु० [सं] यज्ञ मंडप; अग्निहोत्री, यज्ञ के सोलह ऋत्विजो में एक ऋत्विज।

**आग्नेय** - 1 वि० [सं] पूर्व और दक्खिन के बीच की दिशा; 2. वि० आग से संबंध रखनेवाला, आग का।

**आग्रयण** - पु० [स] सावाँ, चावल और जौ से वर्षा, हेमत और वसंत ऋतुओ में किया जानेवाला यज्ञ या अग्निहोत्र।

**आग्रह** - पु० [सं] अनुरोध, हठ, ज़ोर।

**आग्रहायण** - पु० [सं] मार्गशीर्ष मास, मृगशिरा नक्षत्र।

**आग्रहायणी** - स्त्री० [सं] अगहन की पूर्णिमा।

**आग्रही** - वि० [सं] हठी, ज़िद्दी।

**आघ** † - पु० [ब्र] मूल्य, क़ीमत।

**आघात** - पु० [सं] धक्का, मार, चोट।

**आघी** - स्त्री० [देश] व्याज के रूप में अन्न मिलने की शर्त पर होनेवाला लेनदेन।

**आघ्राण** - पु० [सं] सूँघना।

**आघ्रात** - वि० [सं] सूँघा हुआ।

**आच** † - पु० [डि] हाथ।

**आचमन** - पु० [सं] अंतःशुद्धि के लिए दाहिने हाथ में जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना; जल पीना।

**आचमनी** - स्त्री० [सं] आचमन करने की कलछी के आकार की छोटी चम्मच।

**आचरण** - पु० [सं] चाल-चलन; बर्ताव, व्यवहार।

**आचार** - 1 पु० [सं] व्यवहार, रहन-सहन; चरित्र; चलन; शील; 2 पु० [फ़ा] तेल या मसाले में रखा फल, अचार।

**आचारी** - वि० [सं] आचारवान, चरित्रवान।

**आचार्य** - पु० [सं] गुरु; पुरोहित; अध्यापक।

**आच्छन्न** - वि० [सं] ढँका हुआ, आवृत; छिपा हुआ; व्याप्त।

**आच्छादन** - पु० [सं] कपड़ा; ढकना; आवरण।

**आछत** - क्रि० [देश] अछत; सामने; होते हुए, रहते हुए, जैसे, 'आछत सीताराम उमिरि अपनी भरि जीबो'—गिरिधर।

**आछना** † - अ० [अव] होना।

**आछे** † - वि० [देश] अच्छे भले; जैसे, 'आछे दिन पाछे गये, किया न गुरु से हेत।'—तुलसी।

**आज** - 1. क्रि० [हि] इस दिन; 2. पु० [अ] हाथीदाँत।

**आजकल** - क्रि० [हिं] इन दिनो, इस समय।

**आजगव** - पु० [स] शिव धनुष, पिनाक।

**आजन्म** - क्रि० [सं] जीवन-भर।

**आज़म** - वि० [अ] बहुत बड़ा, महान।

**आज़माइश** - स्त्री० [फ़ा] परीक्षा, परख।

**आज़माना** - स० [अ] परखना, परीक्षा करना।

**आज़मूदा** - वि० [फ़ा] जाँचा हुआ, परीक्षित।

**आज़मूदाकार** - वि० [फ़ा] अनुभवी, तजुर्बाकार; चतुर।

**आजा** - पु० [हिं] दादा, पितामह ।

**आज़ाद** - वि० [फ़ा] स्वतत्र

**आज़ादाना** - वि० [फ़ा] स्वच्छंद, स्वतंत्र ।

**आज़ादी** - स्त्री० [फ़ा] स्वतंत्रता, स्वाधीनता ; छुटकारा ।

**आजानु** - वि० [सं] घुटने तक लंबा ।

**आजानुबाहु** - वि० [सं] जिसके हाथ घुटनो तक पहुँचे, दीर्घबाहु ; वीर ।

**आज़ार** - पु० [फ़ा] बीमारी ; दुख ।

**आजि** - स्त्री० [सं] युद्ध ; दौड़ का मैदान ; सीमा ; सड़क ; क्षण ।

**आजिज़** - वि० [अ] परेशान ; तंग ; दीन, विनीत ।

**आजिज़ी** - स्त्री० [अ] दीनता, नम्रता ।

**आज़िम** - वि० [अ] विचार करनेवाला ।

**आज़िर** - वि० [अ] उज्र करनेवाला, क्षमा माँगनेवाला ।

**आजी** - स्त्री० [हिं] दादी, पितामही ।

**आजीवन** - क्रि० [सं] जीवन-भर ।

**आजीविका** - स्त्री० [सं] जीविका, रोज़ी ।

**आज़ुर्दा** - वि० [फ़ा] चिंतित ; सताया हुआ ।

**आज्ञा** - स्त्री० [सं] हुक्म, आदेश ।

**आज्य** - पु० [सं] घी ।

**आटा** - पु० [हिं] चून ; किसी अन्न का चूर्ण ; मु० —गीला होना - आफ़त में फँसना ; नुक़सान होना ; आटे दाल का भाव मालूम होना - दुनियाँ का कड़ुआ अनुभव होना ।

**आडंबर** - पु० [सं] गंभीर शब्द ; तड़क-भड़क ; ढोंग ।

**आड़** - स्त्री० [हिं] ओट ; परदा ; आश्रय ।

**आडण** - स्त्री० [डिं] ढाल ।

**आड़ना** - स० [हिं] रोकना ; बाँधना ; गिरवी रखना ।

**आड़ा** - 1. वि० [हिं] आँखो के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर व बाईं ओर से दाहिनी ओर को गया हुआ ; [illegible] पु० जुलाहों का लकड़ी का वह [illegible] जिस पर सूत फैलाया जाता है ; नाव [illegible] जहाज़ में लगे हुए बग़ली तख्ते ; [illegible] आड़े आना - रुकावट डालना ; [illegible] हाथों लेना - किसीको ताना देकर शर्मिन्दा करना ।

**आड़ू** - पु० [हिं] एक प्रकार का खटमिट्ठे स्वादवाला फल ।

**आढ़** - 1. पु० [हिं] चार सेर की एक तौल ; 2. स्त्री० परदा ; सहारा ; अंतर ; शिरोभूषण ।

**आढ़त** - स्त्री० [देश] किसी दूसरे व्यापारी का माल रखकर कुछ कमीशन लेकर बिकवा देने का व्यवसाय या उसकी जगह ।

**आढ़तिया** - पु० [देश] आढ़त का व्यापार करनेवाला ।

**आढ्य** - वि० [सं] पूर्ण ; युक्त ।

**आतंक** - पु० [सं] रोब, दबदबा ; भय ।

**आततायी** - पु० [सं] आग लगानेवाला ; विष देनेवाला ; अत्याचारी ।

**आतप** - पु० [सं] धूप ; ताप ; गरमी ।

**आतपत्र** - पु० [सं] छाता, छतरी ।

**आतशक** - स्त्री० [फ़ा] गर्मी की बीमारी, उपदंश ।

**आतशज़नी** - स्त्री० [फ़ा] आग लगाने का काम ।

**आतशी** - वि० [फ़ा] आग से संबंध रखनेवाला ।

**आतिथ्य** - पु० [सं] अतिथि का सत्कार, पहुनाई ।

**आतिफ़त** - स्त्री० [अ] दया, मेहरबानी ।

**आतिश** - स्त्री० [फ़ा] आग ; प्रकाश ; गुस्सा ; मु० — का परकाला - बहुत चलता हुआ और तेज़ आदमी ; यौ०

—अंगेज़ - वि० आग लगानेवाला ; —ख़ाना - पु० पारसियों का अग्निमंदिर ; —दान - पु० आग रखने की अंगीठी ; —परस्त - पु० अग्निपूजक ; —परस्ती - स्त्री० अग्निपूजा ; —बाज़ - पु० आतिश-बाज़ी बनानेवाला ; —बाज़ी - स्त्री० आग से खेलना ; बारूद के बने खिलौने जिनसे रंग-बिरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं ; —बार - पु० आग बरसानेवाला ।

**आतिशीशीशा** - पु० [फ़ा] सूरज की किरणों के पड़ने पर आग उत्पन्न करनेवाला शीशा ।

**आतुर** - वि० [सं] व्याकुल, उद्विग्न, बेचैन ।

**आतुरता** - स्त्री० [सं] घबड़ाहट, बेचैनी ; जल्दी ।

**आतोद्य** - वि० [सं] वीणा, मृदंग, ताल, वंशी इन चार वाद्यों का समूह ।

**आत्मघात** - पु० [सं] अपने हाथों अपनी हत्या कर लेना, ख़ुदकुशी ।

**आत्मज्ञान** - पु० [सं] ब्रह्म या आत्मा का साक्षात्कार, स्वानुभव ।

**आत्मप्रतीति** - स्त्री० [सं] आत्मविश्वास, अपने पर भरोसा ।

**आत्मज** - पु० [स] पुत्र ; कामदेव ; रक्त ।

**आत्मप्रशंसा** - स्त्री० [सं] अपनी तारीफ़ अपने आप करना ।

**आत्मयोनि** - पु० [सं] ब्रह्मा ; विष्णु ; शिव ; कामदेव ।

**आत्मविस्मृति** - स्त्री० [सं] अपने को भूल जाना, आत्म-विस्मरण ।

**आत्म-समर्पण** - पु० [सं] अपने आपको किसीके हाथ में सौंपना ; किसीके वश में हो जाना ।

**आत्मसात्** - वि० [सं] अपने में लीन ।

**आत्महत्या** - स्त्री० [सं] ख़ुदकुशी, आत्मघात ।

**आत्मा** - स्त्री० [सं] जीव ; व्यष्टि जीव , बुद्धि ; मन , सार तत्त्व ; विचार शक्ति ।

**आत्मानुभव** - पु० [सं] तजरुबा ।

**आत्मापहार** - पु० [सं] अपने को छिपाना ।

**आत्माभिमान** - पु० [सं] स्वाभिमान ।

**आत्मीय** - 1. वि० [सं] स्वजन, अपना ; 2. पु० रिश्तेदार ।

**आत्मोत्सर्ग** - पु० [सं] दूसरे की भलाई के लिए अपने को आफ़त में डालना ; आत्म-बलिदान ।

**आदत** - स्त्री० [अ] अभ्यास ; स्वभाव ।

**आदम** - पु० [अ] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मानव-जाति का आदि पुरुष ; आदि मानव ।

**आदमख़ोर** - पु० [फ़ा] नर भक्षक ।

**आदमचश्म** - पु० [फ़ा] नटखट घोड़ा ।

**आदमज़ाद** - पु० [फ़ा] मनुष्य की संतान ।

**आदमी** - पु० [अ] आदम की संतान, मनुष्य ।

**आदमीयत** - स्त्री० [अ] मानवता, इन-सानियत ।

**आदर** - पु० [सं] सम्मान, सत्कार ।

**आदरणीय** - वि० [सं] आदर करने लायक़, सम्माननीय ।

**आदर्श** - पु० [सं] दर्पण, आईना ; जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय, नमूना ; टीका, व्याख्या ।

**आदाद** - स्त्री० [फ़ा] संख्याएँ । अदद का बहु०

**आदान-प्रदान** - पु० [सं] लेन-देन ।

**आदाब** - पु० [अ] नियम ; लिहाज़ ; प्रणाम; मु० —अर्ज़ करना - नम्रतापूर्वक अभिनंदन करना ; —बजा लाना - नियमानुसार प्रणाम करना ।

**आदाय** - 1. पु० [सं] लेना, पाना ; 2. [क. ते. त. म.] फ़ायदा, मुनाफ़ा ।

**आदि** - 1. वि० [सं] पहला, प्रथम ; मूल, उत्पत्तिस्थान ; 2. पु० आरंभ ; 3. अव्य० वगैरह ।
**आदिकवि** - पु० [सं] वाल्मीकि मुनि ।
**आदित्य** - पु० [सं] सूर्य ।
**आदिम** - वि० [सं] प्राचीन, पहले का ।
**आदिल** - वि० [अ] न्यायी, न्यायाधीश ।
**आदिष्ट** - वि० [सं] जिसको आदेश दिया गया हो, आज्ञाप्राप्त, कथित ।
**आदी** - वि० [अ] अभ्यस्त ।
**आदीपन** - पु० [सं] आग लगाना ; उत्तेजित करना । [हिं] अभ्यस्तता ।
**आदृत** - वि० [सं] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो ।
**आदेय** - वि० [सं] लेने के योग्य ।
**आदेश** - पु० [सं] आज्ञा, हुक्म ; उपदेश ; (व्या) अक्षर परिवर्तन ।
**आद्यंत** - क्रि० [सं] आदि से अंत तक ।
**आद्य** - वि० [सं] प्रधान ; पहला ।
**आद्या** - स्त्री० [सं] दुर्गा ; प्रधान शक्ति ; प्रतिपदा ।
**आद्योपांत** - क्रि० [सं] शुरू से आख़िर तक ।
**आधा** - वि० [हिं] किसी वस्तु के दो बराबर भागों में से एक, अर्ध ; **मु०** —तीतर आधा बटेर - बेमेल, क्रमविहीन ; —होना - दुबला होना ; आधी बात न पूछना - आदर न करना ।
**आधाझारा** - पु० [हिं] अपामार्ग, चिर्चड़ा ।
**आधान** - पु० [सं] रखना ; स्थापन ; धारण करना, गर्भ ।
**आधानवती** - वि० [सं] गर्भवती ।
**आधार** - पु० [स] सहारा, आश्रय ।
**आधासीसी** - स्त्री० [हिं] आधे सिर का दर्द, अधकपाली ।
**आधि** - स्त्री० [सं] मानसिक व्यथा ; बंधक, रेहन ; आधार ।
**आधिकरणिक** - पु० [सं] न्यायाधीश ; सरकारी पदाधिकारी ।
**आधिक्य** - पु० [सं] अधिकता, ज़्यादती ।
**आधिदैविक** - वि० [सं] देवता और भूत आदि के द्वारा होनेवाला दुख ।
**आधिपत्य** - पु० [सं] प्रभुत्व, अधिकार ।
**आधिभौतिक** - वि० [सं] जीवों या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त सुख-दुख ।
**आधिवेदनिक** - वि० [सं] द्वितीय विवाह के पूर्व प्रथम स्त्री को उसके संतोष के लिए दिया हुआ धन ।
**आधुनिक** - वि० [सं] वर्तमान समय का, आजकल का ।
**आधूत** - वि० [सं] हिलाया हुआ ; चालित ; क्षुब्ध किया हुआ ।
**आधेय** - 1. पु० [सं] किसी सहारे पर ठहरी हुई चीज़ ; 2. वि० ठहराने योग्य ।
**आध्यात्मिक** - वि० [सं] आत्मासंबंधी ; ब्रह्म और जीवसंबंधी ।
**आनंद** - पु० [सं] हर्ष, ख़ुशी, उल्लास ।
**आनंदबधाई** - स्त्री० [हिं] मंगलोत्सव ।
**आनंदित** - वि० [सं] मुदित, हर्षित, सुखी ।
**आन** - 1. स्त्री० [हिं] मर्यादा ; शपथ ; ढोंग ; शान ; क्षण ; ऐंठ ; अदब ; 2. वि० दूसरा, अन्य ; **मु०** —की आन में - शीघ्र ही; —तोड़ना - प्रतिज्ञा भंग करना ; —रखना - मान रखना ।
**आनक** - पु० [सं] भेरी, दुंदुभी ; मृदंग; नगाड़ा ; गरजता बादल ।
**आनत** - वि० [सं] अत्यन्त नम्र, विनीत ।
**आनद्ध** - 1. वि० [सं] मढ़ा हुआ ; 2. पु० ढोल, मृदंग आदि बाजे जो चमड़े से मढ़े रहते हैं ।
**आनन** - पु० [सं] मुख, चेहरा ।
**आनन-फ़ानन** - क्रि० [अ०] तुरंत, बहुत जल्द ।

**आनना** - स० [अव] लाना ।

**आनबान** - स्त्री० [हिं] सजधज, शान-शौकत; हाव-भाव ।

**आनयन** † - पु० [स] लाना ।

**आना** - 1. पु० [हिं] रुपये का सोलहवाँ हिस्सा; 2. अ० आगमन करना; पहुँचना ।

**आनाकानी** - स्त्री० [हिं] हीला-हवाला, टाल-मटूल, आगा-पीछा; ध्यान न देना ।

**आनि** - 1. स्त्री० [देश] शपथ; आन, मर्यादा; 2. अव्य० लाकर, ले आकर ।

**आनिला** -पु० [सं] जहाज़ के लंगर की कुंडी ।

**आनी-जानी** - वि० [हिं] क्षणभंगुर, अस्थिर ।

**आनुपूर्वी** - पु० [सं] क्रमानुसार ।

**आनुमानिक** - वि० [स] अनुमानसंबंधी; काल्पनिक ।

**आनुवंशिक** - वि० [सं] वंश-परंपरागत ।

**आनुषंगिक** - वि० [सं] प्रासंगिक, साथ-साथ होनेवाला ।

**आन्तरिक** - वि० [सं] अंतःकरणसंबंधी, मानसिक ।

**आन्वीक्षिकी** - स्त्री० [सं] आत्मविद्या; तर्क-विद्या, न्याय ।

**आप** - सर्व० [हिं] स्वयं, ख़ुद; **मु०** — आप करना - ख़ुशामद करना; — बीती - जो घटना अपने ऊपर बीत चुकी हो; अपनी कष्ट-कहानी; — आपकी पड़ना - अपनी-अपनी फ़िक्र में मग्न रहना; यौ० —काज - अपना काम । आदरार्थ में अन्य पुरुष में 'आप' का प्रयोग होता है; जैसे, 'गाधी जी महान् थे । आपके प्रयत्न से देश स्वतंत्र हुआ ।'

**आपगा** - स्त्री० [सं] नदी ।

**आपण** - पु० [सं] हाट-बाज़ार; दूकान ।

**आपत्ति** - स्त्री० [सं] संकट, दुख; मुसीबत का समय; दोषारोपण; एतराज ।

**आपद्धर्म** - पु० [सं] संकटकालीन कर्तव्य या धर्म, केवल आपत्काल के लिए ही जिसका विधान हो वह धर्म ।

**आपन्न** - वि० [सं] दुखी, संकट में फँसा हुआ ।

**आपस** - स्त्री० [हि] संबंध, नाता, भाई-चारा ।

**आपसी** - वि० [हि] निजी, पारस्परिक, अपने ।

**आपा** - 1. पु० [हि] अपना अस्तित्व; अहंकार; होश-हवास; **मु०** —खोना - अहंकार त्यागना; आपे में आना - होश हवास में होना; आपे से बाहर होना - वश में न रहना, बेक़ाबू होना; 2. स्त्री० [उ] बड़ी बहन; 3. पु० [मरा] बड़ा भाई ।

**आपात** - पु० [सं] गिराव, पतन; आरंभ; अंत ।

**आपाततः** -क्रि० [सं] अकस्मात; आख़िरकार ।

**आपाधापी** - स्त्री० [हिं] अपनी अपनी चिंता; खींचतान ।

**आपान** - पु० [सं] शराबियो की गोष्ठी; शराब पीने का स्थान ।

**आपानक** - पु० [सं] चषक, प्याला ।

**आपुन** † - सर्व० [हि] अपना; आप ।

**आपूरना** † - अ० [हिं] भरना ।

**आपूरित** - वि० [सं] भरा हुआ; संतुष्ट ।

**आप्त** - 1. वि० [सं] प्राप्त; चतुर; 2. पु० ऋषि; शब्दप्रमाण; यौ० — काम - जिसकी सब इच्छाएँ पूरी हो गयी हों ।

**आप्तवाक्य** - पु० [स] आर्षवाक्य, विश्वास करने योग्य कथन ।

**आप्ति** - स्त्री० [सं] प्राप्ति, लाभ ।

**आप्यायन** - पु० [स] तृप्ति, संतोष; जीवन; रूपान्तर ।

**आप्यायित** - वि० [सं] तृप्त, संतुष्ट; आनंदित; दूसरे रूप में बदला हुआ ।

**आप्लव** - पु० [सं] स्नान; डूबा हुआ, जलमग्न।
**आप्लावन** - पु० [सं] डुबाना, बोरना।
**आप्लुत** - 1. वि० [सं] शराबोर; 2. पु० स्नात।
**आफ़त** - स्त्री०[फ़ा] मुसीबत, संकट, दुख; दुख के दिन; **मु०** — का परकाला - किसी काम को फुर्ती से करनेवाला, परिश्रमी; ज़मीन आसमान एक करनेवाला; ऊधमी।
**आफ़ताब** - पु० [फ़ा] सूरज; पानी रखने का टोटीदार लोटा।
**आफ़ताबी** - स्त्री० [फ़ा] सूरजमुखी; एक प्रकार की आतिशबाजी।
**आफ़रीं** / **आफ़रीन** } अव्य० [फ़ा] शाबास, वाह-वाह।
**आफ़रीदगार** - पु० [फ़ा] ईश्वर।
**आफ़रीदा** - वि० [फ़ा] उत्पन्न।
**आफ़ाक़** - पु० [अ] आसमान के किनारे; संसार, दुनियाँ।
**आफ़ियत** - स्त्री० [अ] सुख-चैन, कुशल; यौ० खैर आफ़ियत - कुशल-मंगल।
**आफू** - स्त्री० [अ] अफ़ीम।
**आब** - 1. पु० [फ़ा] पानी, जल; 2. स्त्री० कांति; तलवार का पानी; प्रतिष्ठा; **मु०** —उतरना - पानी या कांति का फीका पड़ना; —चढ़ाना - कलई करना; उत्साह देना; मुलम्मा करना।
**आबकार** - पु० [फ़ा] कलाल, शराब बनाने या बेचनेवाला।
**आबकारी** - स्त्री० [फ़ा] शराबख़ाना; मादक वस्तु संबंधी सरकारी विभाग।
**आबख़ाना** - पु० [फ़ा] पाख़ाना।
**आबख़ोरा** - पु० [फ़ा] पानी पीने का बरतन, प्याला, गिलास।
**आबगीना** - पु० [फ़ा] दर्पण; हीरा; शीशे का गिलास; स्फटिक।
**आबजोश** - पु० [फ़ा] माँस का शोरबा; रस; गरम पानी में उबाला हुआ मुनक्का।
**आबताब** - स्त्री० [फ़ा] चमक-दमक; तड़क-भड़क।
**आबदस्त** - पु० [फ़ा] हाथ-पैर धोना; पाख़ाने के बाद पानी से गुदा साफ़ करना।
**आबदान** - पु० [फ़ा] पानी का बरतन; तालाब।
**आबदाना** - पु० [फ़ा] अन्न-जल, दाना-पानी; रोज़ी; रहने का सयोग।
**आबदार** - वि० [फा] कांतिमान, चमकीला।
**आबदारी** - स्त्री० [फ़ा] चमक दमक; शोभा।
**आबदीदा** - वि० [फ़ा] जिसकी आँखो में आँसू भरे हो, अश्रुपूर्ण।
**आबद्ध** - वि० [सं] बँधा हुआ; क़ैद; सीमित।
**आबनूस** - पु० [फ़ा] एक जंगली पेड़ जिसके भीतर की लकड़ी बहुत काली और चमकीली होती है; **मु०** —का कुंदा - बहुत काला आदमी।
**आबपाशी** - स्त्री० [फ़ा] सिंचाई।
**आबरवाँ** - 1. पु० [फ़ा] बहता हुआ पानी; 2. स्त्री० बढ़िया मलमल।
**आबरू** - स्त्री० [फ़ा] इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, मान; **मु०** — खाक में मिलना - गौरव नष्ट कर देना; — पर पानी फिरना - अपमान होना; — में बट्टा लगना या फ़र्क आना - कलंक लगना; —उतारना - बेइज़्ज़ती करना, अपमान करना।
**आबला** - पु० [फ़ा] फफोला; छाला।
**आबशार** - पु० [फ़ा] झरना, सोता।

**आबशिनास** - पु० [फ़ा] जहाज़ का वह कर्मचारी जो गहराई जाँचकर रास्ता बतलाता है।
**आबहवा** - स्त्री० [फ़ा] जल-वायु।
**आबाद** - वि० [फ़ा] बसा हुआ; सुखी; उपजाऊ।
**आबादकार** - पु० [फ़ा] पड़ती ज़मीन को आबाद करनेवाला काश्तकार।
**आबादानी** - स्त्री० [फ़ा] बसा हुआ और सुखसंपन्न स्थान; सभ्यता, संस्कृति।
**आबादी** - स्त्री० [फ़ा] बस्ती; जनसंख्या; खेती की भूमि; गाँव।
**आबिद** - पु० [अ०] भक्त, पुजारी।
**आबी** - 1. वि० [फ़ा] जल-संबंधी; 2. स्त्री० एक प्रकार की रोटी।
**आबे-अंगूरी** - पु० [फ़ा] अंगूर की बनी शराब।
**आबे-इशरत** - पु० [फ़ा] शराब।
**आबे-कौसर** - पु० [फ़ा] बहिश्त या स्वर्ग की कौसर नदी का जल जो सर्वोत्तम और स्वादिष्ट माना जाता है।
**आबे-हयात** - पु० [फ़ा] अमृत।
**आबे-हराम** - पु० [फ़ा] शराब।
**आभरण** - पु० [सं] गहना।
**आभा** - स्त्री० [सं] कांति, चमक; छाया।
**आभार** - पु० [सं] बोझ; एहसान; एक प्रकार का वर्णवृत्त।
**आभारी** - पु० [सं] एहसानमंद, कृतज्ञ।
**आभास** - पु० [सं] प्रतिबिंब, छाया, झलक; निशान; संकेत जो ठीक या असल न हो; भ्रामक हेतु; हेत्वाभास।
**आभिचारक** - पु० [सं] हिंसक।
**आभिजात्य** - पु० [सं] कुलीनता; सदृश; पांडित्य।
**आभीर** - पु० [सं] ग्वाला; ग्यारह मात्राओं का एक छंद।
**आभूषण** - पु० [सं] ज़ेवर, अलंकार।
**आभ्यंतर** - वि० [सं] अंदर का, आन्तरिक।
**आमंत्रण** - पु० [सं] बुलावा, न्योता।
**आमंत्रित** - वि० [सं] बुलाया हुआ, निमंत्रित।
**आम** - 1. पु० [हिं] भारत का एक प्रसिद्ध फल, रसाल; मु० —के आम गुठली के दाम - दोहरा लाभ उठाना; 2. वि० [अ] साधारण; यौ० —फ़हम - जिसको साधारण लोग समझ सके, सर्व-साधारण; —बात - प्रसिद्ध बात; —खास - राजा या बादशाह के बैठने का महलों के भीतर का हिस्सा।
**आमड़ा** - पु० [हिं] एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़ी बेर के बराबर होते है। फलों का अचार पड़ता है।
**आमद** - स्त्री० [फ़ा] आय, आमदनी; यौ० आमद-ओ-रफ़्त - आवागमन, आयात-निर्यात; आमद - ओ-खर्च - आय-व्यय।
**आमदनी** - स्त्री० [फ़ा] आय, प्राप्ति; आयात।
**आमना-सामना** - पु० [हिं] मुक़ाबला, भेंट; सामने।
**आमने-सामने** - क्रि० [हिं] एक दूसरे के सामने।
**आमय** - पु० [सं] बीमारी; पीड़ा।
**आमरण** - क्रि० [सं] मृत्यु तक, ज़िंदगी-भर।
**आमर्दन** - पु० [सं] ज़ोर से मलना; पीसना; रगड़ना।
**आमर्ष** - पु० [सं] गुस्सा; असहनशीलता।
**आमलक** - पु० [सं] आँवला।
**आमवात** - पु० [सं] एक बीमारी जिसमें शरीर सूजकर पीला हो जाता है, पित्त से उत्पन्न चर्मरोग।

**आमशूल** - पु० [सं] आँव के कारण पेट में मरोड़ होना।
**आमातिसार** - पु० [सं] ऑव के कारण अधिक दस्त होने की बीमारी।
**आमादगी** - स्त्री० [फ़ा] तैयारी, तत्परता।
**आमादा** - वि० [फ़ा] तैयार, तत्पर, कटिबद्ध।
**आमाल** - पु० [अ०] करनी, कर्म।
**आमाशय** - पु० [सं] अन्नकोष।
**आमास** - पु० [फ़ा] शरीर का कोई अंग सूजना, बरम।
**आमिल** - पु० [अ] अमल या पालन करनेवाला; हाकिम; कारीगर, जादू-टोना करनेवाला।
**आमिष** - पु० [सं] मास, लालच।
**आमिषाशी** - वि० [सं] मास खानेवाला।
**आमीन** - अव्य० [अ] ईश्वर करे, ऐसा ही हो, तथास्तु; ईश्वर हमारी रक्षा करे।
**आमुख** - पु० [सं] भूमिका, दीबाचा, प्रस्तावना, उपोद्घात।
**आमुष्मिक** - वि० [सं] पारलौकिक।
**आमूल** - वि० [सं] मूल से, मूलपर्यंत, पहिले से।
**आमेज़** - वि० [फ़ा] मिला हुआ, मिश्रित।
**आमेज़ना** - स० [फ़ा] मिलाना; सानना।
**आमेज़िश** - स्त्री० [फ़ा] मिलावट, मेल।
**आमोख़्ता** - पु० [फ़ा] पढ़ा हुआ पाठ; मु० — करना या पढ़ना - पढ़े हुए पाठ को फिर से दुहराना।
**आमोद** - पु० [सं] प्रसन्नता, खुशी, आनंद; यौ० —प्रमोद - पु० हँसी-ख़ुशी, भोग-विलास, दिलबहलाव।
**आमोदित** - वि० [सं] खुश, प्रसन्न।
**आमोदी** - वि० [सं] खुश रहनेवाला, मुख को सुगंधित करनेवाला।
**आम्नाय** - पु० [सं] अभ्यास; परंपरा; वेद, निगम; उपदेश; प्राचीन परिपाटी।
**आम्र** - पु० [सं] आम का पेड़ या फल।
**आय** - 1. स्त्री० [सं] लाभ, प्राप्ति, आमदनी, धनागम; 2. पू० क्रि० आकर।
**आयत** - 1. वि० [सं] विस्तृत, विशाल; 2. स्त्री० [अ०] इंजील या क़ुरान का वाक्य; निशान।
**आयतन** - पु० [सं] घर, मंदिर।
**आयति** - स्त्री० [सं] उत्तरकाल, भविष्य-काल।
**आयत्त** - वि० [सं] आधीन, वशीभूत, वश में आया हुआ।
**आयद** - वि० [अ] आरोपित; घटित; प्रयुक्त होने योग्य।
**आय-व्यय** - पु० [सं] आमदनी और ख़र्च।
**आयस** - पु० [सं] लोहा, लोहे का कवच।
**आयसु** - स्त्री० [हिं] आज्ञा।
**आया** - 1. स्त्री० [पुर्त] धाय; 2. अव्य० [फ़ा] क्या; कि।
**आयात** - पु० [सं] विदेश से आया या मँगाया हुआ माल; आगत; यौ०— निर्यात - आमद-रफ़्त।
**आयाम** - पु० [सं] लंबाई; विस्तार; नियमन।
**आयास** - पु० [सं] मेहनत; श्राति; क्लेश; यत्न।
**आयु** - स्त्री० [सं] उम्र, अवस्था; जीवन-काल।
**आयुध** - पु० [सं] हथियार, अस्त्र-शस्त्र।
**आयुर्वेद** - पु० [सं] चिकित्सा-शास्त्र; वैद्य-विद्या।
**आयुष्मान्** - वि० [सं] दीर्घजीवी, दीर्घायु।
**आयुष्य** - पु० [सं] उम्र, अवस्था।
**आयोजन** - पु० [सं] किसी काम में लगना, नियुक्ति; किसी काम के लिए पहिले से

किया जानेवाला प्रयत्न; इंतज़ाम; उद्योग ; सामग्री ।

**आयोजना** - स्त्री० [स] तैयारी, ठीक-ठाक, स्कीम ।

**आरंभ** - पु० [सं] उपक्रम ; आदि, शुरू ; उत्पत्ति ।

**आर** - 1. पु० [सं] निकृष्ट लोहा ; पहिये का आरा ; अंकुश ; 2. स्त्री० [देश] कील, अनी ; 3. पु० [देश] ज़िद, हठ ; 4. स्त्री० [अ] घृणा ; शरम ; बदनामी ।

**आरक्त** - वि० [सं] लालिमा लिये हुए, कुछ लाल, रक्त वर्ण का ।

**आरज़ा** - पु० [अ] बीमारी ।

**आरज़ी** - वि० [अ] यों ही ; आकस्मिक ।

**आरज़ू** - स्त्री० [फ़ा] इच्छा ; बिनती, विनय ; मु० — बर आना - इच्छा पूरी होना ।

**आरण्य** - वि० [सं] जंगली ।

**आरण्यक** - 1. पु० [सं] वेदो की एक शाखा ; 2. वि० वन का, जगली ।

**आरति** - स्त्री० [सं] विरक्ति ; दुख ।

**आरती** - स्त्री० [हि] देवमूर्ति के सामने चारो ओर दीपक घुमाना, दीप-दर्शन ; नीरांजन ; आरती का पात्र ; मु०— लेना या उतारना - पूजा या स्वागत करना ।

**आरपार** - 1. पु० [सं] यह किनारा और वह किनारा ; इधर-उधर ; 2. वि० एक किनारे या छोर से दूसरे किनारे या छोर तक ।

**आरब्ध** - वि० [सं] आरंभ किया हुआ ।

**आरभटी** - स्त्री० [सं] क्रोध आदि उग्र भावो की चेष्टा ; नाटक में एक वृत्तिविशेष जिसमें रौद्र, भयानक और बीभत्स रस दिखाये जाते हैं ।

**आरव** - पु० [सं] आवाज़, शब्द, आहट ।

**आरस** † - पु० [हि] आलस्य ।

**आरसी** - 1. स्त्री० [हिं] आईना, शीशा ; शीशा जड़ा हुआ एक आभूषण ; 2. वि० आलसी, काहिल ।

**आरा** - 1. पु० [स] लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी चीरी जाती है ; लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिये की गड़ारी और पुट्ठी के बीच में जड़ी रहती है ; मु०— सिर पर चलाना - क्रूरता का बरताव करना। 2. पु० [फ़ा] सजानेवाला, शोभा बढ़ानेवाला ; जैसे, 'जहान-आरा' ।

**आराइश** - स्त्री० [फ़ा] सजावट ।

**आराई** - स्त्री० [फ़ा] सजाने की क्रिया ।

**आराकश** - पु० [फ़ा] लकड़ी चीरनेवाला, बढ़ई ।

**आराज़ी** - स्त्री० [अ०] ज़मीन, भूमि ; खेत ।

**आराति** - पु० [सं] दुश्मन, शत्रु ।

**आराधक** - 1. पु० [सं] उपासक ; 2. वि० पूजा करनेवाला ।

**आराध्य** - वि० [सं] पूज्य, उपास्य, सेव्य, अराधना के योग्य ।

**आराम** - 1. पु० [सं] बाग़, उपवन ; जैसे, 'परम रम्य आराम यह, जो रामहि सुख देत ।' —रामायण, 2. [फ़ा] चैन, विश्राम, दम लेना ; शाति ; यौ०— कुर्सी - स्त्री० एक लंबी कुर्सी जिस पर लेटकर आराम किया जाता है ; —गाह - पु० सोने की जगह ; —तलब - पु० सुस्त ।

**आरास्तगी** - स्त्री० [फ़ा] सजावट ।

**आरास्ता** - वि० [फ़ा] सजा हुआ, अलंकृत ।

**आरि** † - स्त्री० [हि] हठ, ज़िद ; मर्यादा ; सीमा ।

**आरिज़** - 1. पु० [अ०] गाल ; 2. वि० होनेवाला ; रोकनेवाला ।

**आरिन्दा** - वि० [फ़ा] भारवाहक ; मज़दूर ।

**आरिफ़** - 1. वि० [अ] पहचाननेवाला ; सब्र करनेवाला ; 2. पु० महात्मा ।

**आरियत** - स्त्री० [अ] कोई चीज़ कुछ समय के लिए मँगनी माँगना ।

**आरियतन्** - क्रि० [अ] मँगनी के तौर पर, माँगकर ।

**आरी** - 1. स्त्री० [हिं] लकड़ी चीरने का एक औज़ार ; जूता सीने का सूजा ; बैलो को हाँकने की लकड़ी की नोक पर लगायी जानेवाली लोहे की एक पतली नुकीली कील ; 2. वि० हठी, ज़िद्दी ।

**आरूढ़** - वि० [सं] सवार, चढ़ा हुआ ; तत्पर, तैयार ।

**आरोप** }
**आरोपण** } पु० [सं] मढ़ना, लगाना ।

**आरोह** - पु० [सं] चढ़ाव ; आक्रमण ; जीवात्मा की ऊर्ध्वगति ; आविर्भाव ; विकास ; स्वरो का चढ़ाव ।

**आरोहण** - पु० [स] चढ़ना, सवार होना ; सीढ़ी ; अंकुर का निकलना ।

**आरोही** - 1. वि० [स] चढ़ने या ऊपर जानेवाला ; सवार ; 2. पु० षड्ज से निषाद तक क्रमशः या उत्तरोत्तर चढ़नेवाला स्वरसाधन ।

**आर्जव** - पु० [सं] सीधापन, ऋजुता ; सरलता, सुगमता ; विनय ।

**आर्त्त** - वि० [सं] पीड़ित, दुखी ; अस्वस्थ ।

**आर्त्तनाद** - पु० [सं] कराहना, चीत्कार, पीड़ा के समय निकली हुई दुखसूचक ध्वनि ।

**आर्त्तव** - 1. वि० [सं] मौसिमी, ऋतु-संबंधी ; 2. पु० स्त्री का रज, स्त्रियो का ऋतुकाल ।

**आर्त्तस्वर** - पु० [सं] दुखसूचक ध्वनि, कराह, चीत्कार, आर्त्तनाद ।

**आर्त्ति** - स्त्री० [सं] पीड़ा, दर्द ।

**आर्थिक** - वि० [सं] धनसंबंधी, माली ।

**आर्थी** - 1. वि० [सं] प्रार्थना करनेवाला, प्रार्थी ; 2. स्त्री० अर्थ से संबंध रखनेवाला ; उपमाभेद तथा अन्य कतिपय अलंकारों के भेद ।

**आर्द्र** - वि० [स] गीला, भीगा हुआ, सजल ।

**आर्द्रक** - पु० [सं] अदरक ।

**आर्द्रता** - स्त्री० [स] गीलापन ।

**आर्द्रा** - स्त्री० [सं] सत्ताईस नक्षत्रों में से छठवाँ नक्षत्र ; आषाढ का आरंभ काल ; एक वर्णवृत्त ।

**आर्य, आर्य्य** - 1. वि० [सं] श्रेष्ठ ; 2. पु० श्रेष्ठ पुरुष ।

**आर्यपुत्र** - पु० [सं] पति को पुकारने या संबोधन करने का आदरसूचक शब्द, स्वामी ।

**आर्यसमाज** - पु० [सं] स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा संस्थापित वह धार्मिक समाज जिसमें मूर्तिपूजा और पौराणिक रीतियाँ मना की गयी हैं ।

**आर्या** - स्त्री० [सं] पार्वती ; सास ; दादी ; पितामही ; जैन साध्वी ; एक प्रकार का अर्द्धमात्रिक छंद ।

**आर्यावर्त** - पु० [सं] उत्तर हिन्दुस्तान, विंध्य और हिमालय के बीच की भूमि, पुण्य-भूमि ।

**आर्ष** - वि० [सं] ऋषिसंबंधी ; वैदिक, ऋषि-प्रणीत, ऋषि कृत ।

**आर्ष-प्रयोग** - पु० [सं] शब्दों का वह प्रयोग जो व्याकरण के नियम के विरुद्ध हो पर प्राचीन ऋषिप्रणीत ग्रंथो में प्रयुक्त हो ; छंद में कवियो द्वारा किया हुआ व्याकरण विरुद्ध प्रयोग ।

**आलंकारिक** - वि० [सं] अलंकारसंबंधी ; अलंकार जाननेवाला , अलंकारयुक्त ।

**आलंग** - पु० [सं] घोड़ियो की मस्ती ।

**आलंब** - पु० [सं] आश्रय, सहारा; गति।
**आलंबन** - पु० [सं] सहारा, आश्रय; वह वस्तु जिसके आधार पर रस की उत्पत्ति होती है; साधन; किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान (बौद्धमत)।
**आल** - 1. पु० [सं] हरताल, पीतवर्ण; झंझट; गीलापन; आँसू; 2. स्त्री० [अ] बेटी की संतति; वंश, कुल, ख़ानदान; यौ० —औलाद - बाल-बच्चे; —पीन - स्त्री० एक घुंडीदार सुई जिसमें काग़ज़ आदि के टुकड़े नत्थी किये जाते हैं; —वाल - पु० थाला, पौधों के नीचे पानी भरने के लिए बनाया जानेवाला गड्ढा; गमला।
**आलथी-पालथी** - स्त्री० [हि] बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एड़ी बाईं जाँघ पर और बाईं एड़ी दाहिनी जाँघ पर रखते हैं।
**आलम** - पु० [अ] दुनियाँ; दशा; जन-समूह; यौ० —गीर - पु० जगद्विजयी; —ए-ख़्वाब - पु० सोने की हालत; —ए-ग़ैब - परलोक; —ए-फ़ानी - पु० यह लोक जो नाशवान है; —ए-बाला - पु० स्वर्ग; —ए-बेदारी - पु० जागने की हालत; —सिफ़ली - पु० संसार।
**आलमनक** - पु० [पोर्तु] पंचांग, जंत्री।
**आलय** - पु० [सं] घर; स्थान।
**आलस** - 1. वि० [सं] आलसी, सुस्त; 2. पु० आलस्य, सुस्ती।
**आलसी** - वि० [सं] सुस्त, अकर्मण्य।
**आलस्य** - पु० [सं] कार्य करने में अनुत्साह, ढिलाई, शिथिलता, सुस्ती, तंद्रा।
**आला** - 1. पु० [अ] औज़ार; श्रेष्ठ; ताख़, ताक़; 2. वि० सबसे बढ़िया, उत्तम; ताज़ा; हरा, गीला; सरस; नम; यौ० —हज़रत - परम श्रेष्ठ।
**आलाइश** - स्त्री० [फ़ा] विजातीय द्रव्य, शरीरवर्ती मल या दूषित पदार्थ; कूड़ा-करकट।
**आलात** - 1. पु० [सं] जलती लकड़ी; 2. [अ] औज़ार; यौ० —ख़ाना - जहाज़ में रस्से वग़ैरह रखने की कोठरी।
**आलात-चक्र** - पु० [सं] वह प्रकाश-मण्डल या घेरा जो जलती हुई लकड़ी के चारो ओर घुमाने से बनता है।
**आलान** - पु० [सं] हाथी के बाँधने का खंभा या रस्सा; बेड़ी; झंझट।
**आलाप** - पु० [सं] बातचीत; तान, सात स्वरों का साधन।
**आलापना** - स० [सं] गाना, सुर खींचना, तान लगाना।
**आलापिनी** - स्त्री० [सं] बांसुरी।
**आलाबु** - स्त्री० [स] लौकी, तुंबी, कद्दू।
**आलिंगन** - पु० [सं] गले या हृदय से लगाना, परिरंभण।
**आलिंगित** - वि० [सं] गले से लगाया हुआ, लिपटाया हुआ।
**आलि** - स्त्री० [सं] सहेली, सखी; भ्रमरी; बिच्छू; पंक्ति; रेखा; सहचारिणी।
**आलिखित** - वि० [सं] लिखा हुआ; चित्रित; अंकित।
**आलिम** - वि० [अ] इल्मवाला, पण्डित।
**आलिमाना** - वि० [अ] विद्वानों का-सा।
**आली** - 1. स्त्री० [सं] सखी; पंक्ति; रेखा; भ्रमरी; 2. [वि०] भीगी हुई, गीली; बड़ा; ऊँचा; उत्तम; यौ० —जनाब - वि० ऊँचे पद पर रहनेवाला; —जाह - ऊँचे दर्जे का; —शान - वि० शानदार।

**आलुफ़्ता** - पु० [फ़ा] स्वतंत्र प्रकृति का व्यक्ति; बाहरी, पराया, ग़ैर।

**आलू** - पु० [हि] एक प्रकार का गोल कंद जो तरकारी के काम में आता है।

**आलूदगी** - स्त्री० [फ़ा] गदगी।

**आलूदा** - वि० [फा] लत-पथ।

**आलूबुख़ारा** - पु० [फ़ा] एक खटमिट्ठा फल।

**आलेख** - पु० [सं] लिखावट, लिखाई; लिपि; इमला।

**आलेख्य** - 1. पु० [सं] लिपि; तस्वीर; 2. वि० लिखने लायक़।

**आलेप** - पु० [सं] पलस्तर; मलहम, लेप; लेप करने की वस्तु।

**आलेपन** - पु० [सं] लेप करने का काम, मलहम लगाना।

**आलोक** - पु० [सं] प्रकाश; चाँदनी; दीप्ति, दर्शन।

**आलोकन** - पु० [स] दर्शन, देखना।

**आलोचक** - पु० [स] गुण-दोष का निरीक्षण करनेवाला, आलोचना करनेवाला।

**आलोचना** - स्त्री० [सं] गुण-दोष का विचार करना।

**आलोचनीय** - वि० [स] आलोचना के योग्य, विवेचनीय।

**आलोचित** - वि० [स] गुण-दोष का विचार किया हुआ, विवेचित, अनुशीलित, निरीक्षित।

**आलोड़न** - पु० [स] मथना; विचारना, ख़ूब सोचना-विचारना; हिलोरना, ऊहापोह करना। [क] रूढि, सीखी हुई या परंपरा से चली आयी हुई किसी बात को चालू रखने के अर्थ में 'आलोड़न' शब्द का प्रयोग होता है।

**आलोड़ित** - वि० [सं] मथा हुआ; सुविचारित।

**आल्हा** - पु० [देश] इकतीस मात्राओं का एक छंद; महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था; एक ग्रंथ; **मु०** —गाना - किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अपने हाल को विस्तार से सुनाना।

**आवटना** † - 1. पु० [हिं] हलचल, उथल-पुथल; जैसे, 'जा घट जान बिनान है, तिस घट आवटना घना। बिन खाँड़े संग्राम है, नित उठि मन सो जूझना।' —कबीर; 2. स० खौलाना, औटाना; जैसे, 'तिहि उसीर की रावटी, खरी आवटी जाति।' —बिहारी।

**आवभगत** - स्त्री० [हिं] आदर-सत्कार, ख़ातिर-तवाज़ा।

**आव-भाव** - पु० [देश] आदर-सत्कार, मान-सम्मान।

**आवरण** - पु० [सं] परदा; ढाल; दीवाल आदि का घेरा; आच्छादन; चलाये हुए अस्त्र को निष्फल बनानेवाला शस्त्र; अज्ञान; यौ० —पत्र - पु० पुस्तक के ऊपर रक्षा के लिए लगाया जानेवाला काग़ज़।

**आवर्जन** - पु० [सं] फेंकना; मना करना, रोकना।

**आवर्जित** - वि० [सं] छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

**आवर्त्त** - पु० [स] पानी का भँवर; चक्र; फेर; न बरसनेवाला बादल; सोच-विचार।

**आवर्त्तन** - पु० [सं] चक्कर देना; फिराव, घुमाव।

**आवर्त्तित** - वि० [स] मथित, घुमावदार, भँवरयुक्त।

**आवर्दा** - वि० [फ़ा] लाया हुआ; कृपापात्र।

**आवलि**
**आवली** } - स्त्री० [सं] कतार, पंक्ति ।

**आवश्यक** - वि० [स] ज़रूरी ; अनिवार्य, सापेक्ष्य ।

**आवश्यकता** - स्त्री० [सं] ज़रूरत, अपेक्षा ; प्रयोजन ।

**आवसथ** - पु० [सं] गृह, भवन ; व्रत ; एक यज्ञ, जिसके करनेवाले अवस्थी कहलाते हैं ।

**आवह** - पु० [स] वायु के सात तहों के अतर्गत प्रथम वायु ।

**आवाँ** - पु० [हिं] कुम्हारों के मिट्टी के बर्तन आदि पकाने का गड्ढा, भट्ठी ।

**आवागमन** - पु० [स] आना-जाना, आमद-रफ्त ; बार-बार जन्म लेना और मरना ।

**आवाज़** - स्त्री० [फ़ा] बोली ; ध्वनि ; शोर ; मु०— उठाना - विरोध में बोलना ; —देना - पुकारना, —कसना - विरोध में उठ खड़ा होना, —बैठना - कफ़ के कारण आवाज़ साफ़ नहीं निकलना ; —भारी होना - कंठ का स्वर विकृत होना ।

**आवाज़ा** - पु० [फ़ा] ताना, व्यंग ; बोली-ठोली, नामवरी, जनश्रुति, अफ़वाह ।

**आवाजाही** † - स्त्री० [हि] आना-जाना ।

**आवारगी** - स्त्री० [फ़ा] आवारापन, शोहदापन, घुमक्कड़ी ; लुच्चापन, उठल्लू ।

**आवारजा** - पु० [फ़ा] जमा-ख़र्च की किताब ।

**आवारा**
**आवारागर्द** } - पु० [फ़ा] निकम्मा ; बदमाश ; व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला, उठल्लू ।

**आवारागर्दी** - स्त्री० [फ़ा] बदमाशी, लुच्चापन ।

**आवास** - पु० [सं] रहने की जगह, मकान ।

**आवाहन** - पु० [सं] बुलाना, निमन्त्रित करना ; मंत्र द्वारा देवता को बुलाने का कार्य ।

**आविद्ध** - वि० [स] छिदा हुआ ; फेका हुआ ।

**आविर्भाव** - पु० [सं] प्रकट होना ; प्रकाश, उत्पत्ति ; आवेश ।

**आविर्भूत** - वि० [स] प्रकाशित ; उत्पन्न ; प्रकटित, उद्भूत ।

**आविल** - वि० [सं] मैला, कलुषयुक्त ।

**आविष्कार** - पु० [सं] कोई ऐसी नयी वस्तु बनाना या नयी बात ढूंढ़ निकालना जो पहले किसीको मालूम न रही हो, किसी बात का पहले-पहल पता लगाना ।

**आविष्ट** - वि० [सं] आवेशयुक्त, लीन, किसीकी धुन में लगना ।

**आवुद** - वि० [फ़ा] कृत्रिम, बनावटी ।

**आवुर्दा** - वि० [फ़ा] लाया हुआ, कृपा-पात्र ।

**आवृत** - वि० [स] छिपा हुआ, ढँका हुआ, घिरा हुआ, आच्छादित ।

**आवृत्ति** - स्त्री० [सं] दुहराना, एक ही काम का बार बार होना या करना ; किसी पुस्तक का नवीन या पुनः प्रकाशन ।

**आवेग** - पु० [सं] जोश, ज़ोर ; विकलता, घबराहट, चित्त की प्रबल वृत्ति ।

**आवेज़** - वि० [फ़ा] लटकता हुआ ।

**आवेज़ा** - पु० [फा] कानों का लटकन, ज़ेवर ।

**आवेदक** - वि० [स] प्रार्थना करनेवाला, निवेदन करनेवाला, प्रार्थी ।

**आवेदनपत्र** - पु० [सं] अर्ज़ी, दरख़्वास्त ।

**आवेश** - पु० [सं] व्याप्ति ; संचार ; प्रवेश ; वेग ; आतुरता ; जोश ; चित्त की प्रेरणा ।

**आवेष्टन** - पु० [सं] लपेटने या ढकने की वस्तु ।

**आवेष्टित** - वि० [सं] ढका या छिपाया हुआ ।

**आशंका** - स्त्री० [सं] शक, संदेह, डर, भय ; अनिष्ट की संभावना ।

**आशंकित** - वि० [सं] डरा हुआ, संदेहात्मक ।

**आशंसा** - स्त्री० [सं] आशा, इच्छा ।

**आश** - स्त्री० [फ़ा] माँस, भोजन ।

**आशना** - 1. उभ० [फा] मित्र ; प्रेमी या प्रेमिका ; 2. वि० परिचित ।

**आशनाई** - स्त्री० [फ़ा] दोस्ती, मित्रता, जान-पहचान, अनुचित संबध ।

**आशय** - पु० [सं] मतलब ; स्थान ; वासना, इच्छा ; गड्ढा ।

**आशा** - स्त्री० [सं] अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा और संकल्प ; भरोसा ; दिशा ; **मु०** —पूजना - आशा पूर्ण होना ; —बँधना - उम्मीद होना, —बँधाना - ढाढ़स देना ; —टूटना - आशा न रहना ।

**आशिक़** - पु० [अ०] प्रेमी, आसक्त ; यौ० —मिजाज - वि० प्रेम करनेवाला ;

**आशिक़ाना** - वि० [फा] आशिक़ों का-सा, प्रेमपूर्ण ।

**आशिक़ी** - स्त्री० [अ] प्रेम, आसक्ति ।

**आशियाँ** } **आशियाना** } पु० [फ़ा] चिड़ियों का घोसला ।

**आशिष्** - स्त्री० [सं] आशीर्वाद, दुआ ।

**आशी** - वि० [सं] खानेवाला, भक्षक ; साँप का विषैला दाँत ।

**आशीविष** - पु० [स] साँप ।

**आशु** - 1. क्रि० [स] जल्दी, तुरंत, 2. पु० वर्षाकालीन धान्य ।

**आशुकवि** - पु० [सं] तत्क्षण कविता रचनेवाला कवि ।

**आशुग** - 1. वि० [स] जल्दी चलनेवाला, 2. पु० वायु, तीर, मन ।

**आशुतोष** - 1. वि० [सं] जल्दी ख़ुश होनेवाला ; 2. पु० महादेव ।

**आशुफ़्तगी** - स्त्री० [फ़ा] बेचैनी ; घबराहट ; दुर्दशा ।

**आशुफ़्ता** - वि० [फ़ा] दुर्दशाग्रस्त ; घबराया हुआ ।

**आशोब** - पु० [फ़ा] घबराहट ; सूजन ; आँख की पीड़ा ।

**आश्चर्य** - पु० [सं] अचंभा, ताज्जुब, विस्मय ।

**आश्रम** - पु० [स] ऋषि मुनियो का निवास-स्थान, तपोवन, हिंदू धर्म के अनुसार जीवन की चार अवस्थाएँ ।

**आश्रय** - पु० [सं] आधार ; सहारा ; शरण, पनाह ; घर, रक्षा का स्थान ।

**आश्रित** - वि० [सं] आश्रय या शरण में रहनेवाला ।

**आश्लिष्ट** - वि० [सं] हृदय से लगा हुआ, आलिंगित ; लगाया या चिपटा हुआ ।

**आश्लेष** - पु० [स] आलिंगन ; मिलन, जुड़ना, लगाव ।

**आश्लेषण** - पु० [स] मिलावट ; आलिंगन ।

**आश्वास** - पु० [स] दिलासा, धीरज, सात्वना ; किसी कथा का भाग ।

**आश्वासन** - पु० [स] तसल्ली, सात्वना, ढाँढ़स ।

**आश्वासित** - वि० [स] जिसको दिलासा दिया गया हो ।

**आश्विन** - पु० [सं] क्वार, आश्वयुज मास ।

**आषाढ़ी** - स्त्री० [स] आषाढ़ मास की पूर्णिमा ।

**आषाढ़ी-योग** - पु० [स] आषाढ़ी पूर्णिमा को की जानेवाली एक क्रिया जिसमें कुछ अनाज तोलकर हवा में बढ़ जाने की आशा से रख देते है । उस विधान के अनुसार यदि अनाज बढ़ गया तो

लोग वर्षा के साथ सुकाल होने का अनुमान करते है।

**आसंग** - 1. पु० [सं] संग, संबंध; आसक्ति; 2. क्रि० निरंतर, लगातार।

**आसंदी** - स्त्री० [सं] कुर्सी; मचिया; मोढ़ा; खटोला।

**आस** - 1. स्त्री० [हि] आशा, उम्मीद, मु० —होना - आशा होना; गर्भ रहना, 2. पु० धनुष।

**आसक्त** - वि० [सं] अनुरक्त; मोहित, मग्न; प्रेमी; लुब्ध।

**आसक्ति** - स्त्री० [सं] चाह, इश्क़; अनुरक्ति; संगम, मिलन; न्यायशास्त्र में पदो का अत्यंत सन्निधान।

**आसते** - क्रि० [फा] होते हुए, धीरे-धीरे।

**आसत्ति** - स्त्री० [स] किसी भाव को साफ़ समझाने के लिए उपयुक्त शब्दो का परस्पर सामीप्य।

**आसन** - पु० [सं] बैठने की विधि; बैठने की वह वस्तु जिसपर बैठा जाय, बिछौना, पीठ, चौकी, निवास आदि; कुश या ऊन की बनी हुई पीठ जिस पर बैठकर पूजा की जाती है; योगियों के बैठने की 84 भिन्न-भिन्न मुद्राएँ या रीतियाँ; **मु०**—उखड़ना - अपनी जगह (ख़ासकर घोड़े की पीठ पर) से हिल जाना; —उठना - जाना; —करना - बैठना; —जमाना - स्थिर होना; —देना - आदर से किसी पर बिठाना; —लगाना - बिछौना बिछाना।

**आसनी** - स्त्री० [सं] पूजा करते समय बैठने का कुश या ऊन का छोटा आसन।

**आसन्न** - वि० [स] नज़दीक आया हुआ, प्राप्त; पास बैठा हुआ; शेष।

**आसन्नकाल** - पु० [सं] अतिम काल; अवसान।

**आसपास** - क्रि० [हि] चारो ओर; निकट; इधर-उधर।

**आसमान** - पु० [सं] आकाश; **मु०**—के तारे तोड़ना - मुश्किल काम करना; —ज़मीन के कुलाबे मिलाना - खूब लंबी-चौड़ी हाँकना; —टूट पड़ना - विपदा आना; —सिर पर उठाना - ऊधम मचाना; —से बाते करना - बहुत ऊँचा होना; —ज़मीन एक करना - भारी उद्योग करना; —पर थूकना - मूर्खता का काम करना; —में थिगुली लगाना - विकट कार्य करना।

**आसमुद्र** - क्रि० [स] सागर तक।

**आसरा** - पु० [हिं] सहारा; भरोसा; **मु०**—टूटना - निराश होना।

**आसव** - पु० [सं] शराब; सत्व, अर्क।

**आसवी** - वि० [सं] मद्यप, शराबी।

**आसाइश** - स्त्री० [फ़ा] आराम, सुख, चैन।

**आसान** - वि० [फ़ा] सरल, सुलभ; सीधा।

**आसार** - 1 पु० [अ] 'असर' का बहु०; निशान, लक्षण; इमारत की नीव; दीवार की चौड़ाई; 2. स्त्री० मूसलधार वृष्टि। [हिं] मेघमाला।

**आसावरी** - स्त्री० [स] श्रीराग की एक रागिनी।

**आसिख** - स्त्री० [हिं] आशीर्वाद।

**आसिधार** - पु० [सं] युवक और युवती का एक स्थान पर अविकृत चित्त से साधना करने का कठिन व्रत।

**आसिन** - पु० [हिं] क्वॉर का महीना।

**आसिम** - वि० [अ] सदाचारी, सुशील, सद्गुणी।

**आसिया** - स्त्री० [फ़ा] चक्की।

**आसी** - वि० [अ] गुनहगार, अपराधी।

**आसीन** - वि० [सं] बैठा हुआ; उपस्थित, स्थित।

**आसीमा** - वि० [फ़ा] चकित ।

**आसीस** - स्त्री० [हि] आशीर्वाद ।

**आसुरी** - वि० [स] राक्षसी, असुरसंबंधी ; यौ० —चिकित्सा - शस्त्रचिकित्सा; —**माया** - राक्षसो की चाल ।

**आसूदगी** - स्त्री० [फ़ा] तृप्ति, सुख और शांति ।

**आसूदा** - वि० [फा] सुखी और सपन्न, यौ० —हाल - खाने-पीने से सुखी ।

**आसेब** - पु० [फ़ा] भूत-प्रेत की बाधा ; विपत्ति, हानि ।

**आस्तर** - पु० [स] हाथी की झूल, उत्तम आसन, शय्या ।

**आस्तरण** - पु० [सं] शय्या, बिस्तर ।

**आस्ता** - पु० [फ़ा] चौखट, देहलीज ।

**आस्तान** - पु० [फ़ा] ड्योढ़ी ; फ़क़ीरो के रहने का स्थान ।

**आस्तिक** - वि० [स] वेद, ईश्वर, परलोक आदि पर विश्वास करनेवाला ; ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला ।

**आस्तीन** - स्त्री० [फ़ा] पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढाँकता है। **मु०**—का साप - दोस्त बनकर दुश्मनी करना ; —चढ़ाना - लड़ने को तैयार होना ; —में सॉप पालना - घर में ही शत्रु को पालना ।

**आस्था** - स्त्री० [स] श्रद्धा, पूज्य बुद्धि ; सभा, बैठक ; आलंबन ; अपेक्षा ; आदर ।

**आस्थान** - पु० [स] दरबार, सभा, बैठक, स्थान ।

**आस्पद** - 1. वि० [स] योग्य, उपयुक्त, युक्त ; जैसे, 'लज्जास्पद' ; 2. पु० [सं] स्थान ; पद ; प्रतिष्ठा ; कुल, जाति ।

**आस्य** - पु० [सं] मुँह, चेहरा ।

**आस्यपत्र** - पु० [सं] कमल ।

**आस्वाद** - पु० [सं] स्वाद, ज़ायका, मज़ा, चस्का, रसानुभव ।

**आस्वादन** - पु० [स] स्वाद लेना, चखना, रसानुभव करना ।

**आस्वादित** - वि० [स] चखा हुआ ।

**आह** - 1. अव्य० [हि] पीड़ा या दुखसूचक शब्द ; 2. स्त्री० दुखसूचक शब्द, कराहना, ठंडी साँस ; उसास ; **मु०**—करना - हाय करना, ठंडी साँस लेना ; —खींचना या भरना - उसास लेना ; —पड़ना - शाप पड़ना ।

**आहट** - स्त्री० [हि] पाँव की आवाज़, खटका ; पता, टोह ; **मु०** —लेना - पता या टोह लेना, ढूढ़ना ; —मिलना - किसीके आने का शब्द सुनायी पड़ना और उसके आने का अनुमान करना ।

**आहत** - वि० [सं] घायल, ज़ख्मी ।

**आहन** - पु० [फ़ा] लोहा ; यौ० —गर - पु० लोहार ।

**आहनी** - वि० [फ़ा] लोहे का ।

**आहरण** - पु० [स] छीनना, हर लेना; लेना।

**आहव** - पु० [स] लड़ाई ; जग ।

**आहार** - पु० [स] भोजन, खाने की वस्तु ।

**आहारी** - वि० [स] खानेवाला

**आहिस्तगी** - स्त्री० [फ़ा] धीरे-धीरे चलने का भाव ।

**आहिस्ता** - वि० [फ़ा] धीरे-धीरे ।

**आहुति** - स्त्री० [स] होम ; हवन में डालने की सामग्री ।

**आहू** - पु० [फ़ा] हिरन ।

**आहूत** - वि० [सं] बुलाया हुआ, निमंत्रित ।

**आहृत** - वि० [स] लाया हुआ ।

**आह्निक** - 1. वि० [सं] रोज़ाना, दैनिक ; 2. पु० एक दिन का काम ।

**आह्लाद** - पु० [स] खुशी, आनंद ।

**आह्लादित** - वि० [सं] खुश, प्रसन्न ।

**आह्वान** - पु० [सं] पुकार, बुलाना; आवाहन, निमंत्रण।

## इ

**इंगला** - स्त्री० [सं] शरीर के वामभाग में स्थित इडा नामक एक नाड़ी।

**इंगित** - 1. पु० [सं] इशारा; चेष्टा, 2. वि० हिलता हुआ, चलित।

**इंगुदी** - स्त्री० [सं] हिंगोट का पेड़, ज्योतिष्मती वृक्ष।

**इँगुरौटी** - स्त्री० [हिं] सिंदूर की डिबिया, सिंधोरा।

**इंच** - स्त्री० [अं] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा।

**इंजन** - पु० [अं] भाप व बिजली से चलनेवाला यंत्र।

**इंजीनियर** - पु० [अं] यंत्रविद्या जाननेवाला; वास्तुकला और शिल्प में दक्ष।

**इंजील** - स्त्री० [यू] ईसाइयों का पवित्र ग्रंथ।

**इंत(ति)क़ाम** पु० [अ] प्रतिशोध, बदला।

**इंत(ति)क़ाल** - पु० [अ] मौत।

**इंत(ति)ख़ाब** - पु० [अ] निर्वाचन, पटवारी के खाते की नक़ल, अच्छे अंश का चुनाव।

**इत(ति)ज़ाम** - पु० [अ] बंदोबस्त, व्यवस्था।

**इंत(ति)ज़ार** - पु० [अ] राह देखना, प्रतीक्षा।

**इं(ति)तहा** - पु० [अ] अंत, हद।

**इंदारा** - पु० [देश] कुआँ।

**इंदिरा** - स्त्री० [सं] लक्ष्मी; शोभा, कांति; कुँआर की कृष्णा एकादशी।

**इंदीवर** - पु० [सं] नील कमल, नीलोत्पल; कमल।

**इंदु** - पु० [सं] चंद्रमा; कपूर, एक की संख्या।

**इंदुकर** - पु० [सं] चाँदनी, चंद्रकिरण।

**इंदुकला** - स्त्री० [सं] चाँदनी; चंद्रमा की कला।

**इंदुजा** - स्त्री० [सं] नर्मदा नदी।

**इंदुमनि, इंदुमणि** - पु० [सं] चंद्रकांत मणि।

**इंदुमती** - स्त्री० [सं] पूर्णिमा; राजा अज की पत्नी।

**इंदुर** - इंदूर, - पु० [सं] चूहा।

**इंद्र** - 1. वि० [सं] ऐश्वर्यवान्; श्रेष्ठ, प्रतापी; 2. पु० एक वेदोक्त देवता जिसका स्थान अंतरिक्ष है और जो पानी बरसाता है; पौराणिक देवता जो अन्य सब देवताओं का राजा माना जाता है। इसलिए उसका दूसरा नाम सुरेश भी है।

**इंद्रगोप** - पु० [सं] एक लाल रंग का बीरबहूटी नामक बरसाती कीड़ा।

**इंद्रजव** - पु० [हिं] कुड़ा, कोरैय्या के बीज; कुड़ा नामक औषधि।

**इंद्रजाल** - पु० [सं] जादूगरी, तिलस्म; नटविद्या, धोखा, मंत्र-तंत्र द्वारा अजीब बातें दिखाना।

**इंद्रजीत** - पु० [सं] रावण का पुत्र, मेघनाद।

**इंद्रधनुष** - पु० [सं] सात रंगों से बना हुआ एक अर्द्धवृत्त जो वर्षाकाल में सूर्य के विरुद्ध दिशा की ओर आकाश में छाये हुए बादलों में दिखायी देता है।

**इंद्रनील** - पु० [सं] नीलम, नीलमणि।

**इंद्रप्रस्थ** - पु० [सं] आधुनिक दिल्ली का पौराणिक नाम।

**इंद्राणी** - स्त्री० [सं] इंद्र की पत्नी, शची; बड़ी इलायची।

**इंद्रिय** - स्त्री० [सं] वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है; शरीर के वे अंग जिनसे यह शक्ति बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है; वे अंग जिनसे विभिन्न प्रकार के बाहरी कार्य किये जाते हैं; यौ० —निग्रह - पु० इच्छा को रोकना, इंद्रियों को अपने वश में करना।

**इंधन** - पु० [सं] जलाने की लकड़ी।
**इंसाफ़** - पु० [अ] न्याय, फ़ैसला, निर्णय।
**इआदत** - स्त्री० [अ] दोहराना, रोगी को देखने जाना।
**इआनत** - स्त्री० [अ] मदद, सहायता।
**इकट्ठा** - } वि० [हिं] एकत्र, जमा।
**इकठौर** - }
**इकत(ति)दार** - पु० [अ] अधिकार, सामर्थ्य; प्रभाव।
**इक़त(ति)बास** - पु० [फ़ा] जलाना; साहित्यिक चोरी।
**इक़दाम** - पु० [अ] अपराध करने का संकल्प।
**इकतारा** - पु० [हिं] सितार के ढंग का एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार लगा रहता है; एकतारा।
**इकबारगी** - क्रि० [फ़ा] सहसा, एकाएक।
**इक़बाल** - पु० [अ] प्रताप, एक शुभ योग, भाग्य, यौ० —मंद - वि० भाग्यशाली।
**इकराम** - पु० [अ] इनाम; इज़्ज़त, आदर, यौ० इनाम-व-इकराम - पारितोषिक और पुरस्कार।
**इक़रार** - पु० [अ] वादा, स्वीकृति।
**इक़रारनामा** - पु० [अ] प्रतिज्ञापत्र।
**इक़रारी** - वि० [अ] इक़रार संबंधी; इक़रार करनेवाला; अपना अपराध माननेवाला।
**इकलौता** - पु० [हिं] एक मात्र पुत्र, लाड़ला बेटा।
**इक्का** - 1. वि० [हिं०] अकेला, अनुपम, उत्तम, 2. पु० कान की बाली जिसमें एक मोती पड़ा रहता है; दो पहियेदार घोड़ागाड़ी; ताश का एक पत्ता; यौ० —दुक्का - वि० अकेला-दुकेला।
**इक़्तफ़ा** - पु० [अ] काफ़ी समझना।
**इक्षु** - पु० [सं] ईख, गन्ना।
**इक्षुरस** - पु० [सं] राब, गन्ने का रस।
**इक्ष्वाकु** - पु० [सं] वैवस्वत मनु के पुत्र और सूर्यवंश के प्रथम राजा।
**इख़्तताम** - पु० [अ] खातमा।
**इख़राज** - पु० [अ] बाहर निकलना; निकास।
**इ(अ)ख़राज़ात** - पु० [अ] खर्च का बहु०; खर्च।
**इख़्लाक़** - पु० [अ] 'अख़्लाक़', खुल्क़ का बहु०, आचार, आदत, ढंग; मुरव्वत, शील, नीति।
**इख़लास** - पु० [अ] दोस्ती, सच्चा प्रेम, भक्ति, यौ० —मंद - वि० मिलनसार।
**इख़्तराअ** - पु० [अ] ईज़ाद, आविष्कार।
**इख़्तलात** - पु० [अ] मेल-जोल, प्रेम।
**इख़्तलाफ़** - पु० [अ] अनबन, विरोध।
**इख़्तसार** - पु० [अ] संक्षेप; खुलासा।
**इख़्तियार** - पु० [अ] अधिकार, मु०—करना - स्वीकार कर लेना।
**इख़्तियारी** - वि० [अ] जो अपने अधिकार में हो; ऐच्छिक।
**इग़माज़** - पु० [अ] उपेक्षा, अवहेलना, ध्यान न देना।
**इग़वा** - पु० [अ] बहकाना, भुलावा।
**इच्छा** - स्त्री० [सं] लालसा, अभिलाषा, चाह, रुचि।
**इच्छाभोजन** - पु० [सं] अभीष्ट भोजन, रुचिकर भोजन।
**इच्छित** - वि० [सं] चाहा हुआ, ईप्सित।
**इच्छुक** - वि० [सं] चाहनेवाला, इच्छा रखनेवाला।
**इज़्तनाब** - पु० [अ] संयम, परहेज़ करना।
**इज़्तमाअ** - पु० [अ] भीड़, जमघट।
**इज़्तराब** - पु० [अ] बेचैनी, घबराहट।
**इज़्तहाद** 1. - पु० [अ] 'जहद' का बहु०; प्रयत्न, मेहनत, 2. कोई नयी बात निकालना।

**इज़द(दि)हाम** - पु० [फ़ा] बड़ी भीड़, विशाल जनसमूह, आलम ।

**इज़दिवाज़** - पु० [अ] शादी ।

**इजमाअ** - पु० [अ] जमा होना; एकमत होना ।

**इज़माल** - पु० [अ] ज़ायदाद पर सम्मिलित अधिकार ।

**इज़माली** - वि० [अ] सम्मिलित, साझे का ।

**इजरा** - स्त्री० [अ] जारी करना ।

**इज़राईल** - पु० [अ] मौत का दूत, प्राण लेनेवाले फ़रिश्ते का नाम ।

**इजराय** - पु० [अ] जारी करना, व्यवहार, प्रयोग ।

**इजलाल** - पु० [अ] बड़प्पन, प्रतिष्ठा; बुज़ुर्गी ।

**इजलास** - पु० [अ] कचहरी, न्यायालय; बैठक ।

**इज़हार** - पु० [अ] ज़ाहिर करना, प्रकट करना; अदालत के सामने का बयान; गवाही, साक्षी ।

**इजाज़त** - स्त्री० [अ] आज्ञा, स्वीकृति, सम्मति ।

**इजाफ़त** - स्त्री० [अ] संबंध जोड़ना; अपना काम ईश्वर पर छोड़ना, बाद का बढ़ाया हुआ हिस्सा ।

**इज़ाफ़ा** - पु० [अ] तरक़्क़ी; बढ़ोतरा, वृद्धि ।

**इजाबत** - स्त्री० [अ] स्वीकृति, मलत्याग ।

**इजार** - स्त्री० [फ़ा] पायजामा, सूथन ।

**इजारबंद** - पु० [फ़ा] पायजामे का नाड़ा ।
मु० —का ढीला - ऐयाश, कामी ।

**इजारदार** - वि० [अ] ठेकेदार; अधिकारी ।

**इजारा** - पु० [अ] ठेका, अधिकार; स्वत्व ।

**इज़ाला** - पु० [अ] नष्ट करना ।

**इज्ज़** - 1. पु० [अ] नम्रता; 2. स्त्री० प्रतिष्ठा ।

**इज्ज़त** - स्त्री० [अ] आदर, मान, प्रतिष्ठा, मु० —उतारना - मर्यादा नष्ट करना, अपमान करना; —देना - आदर करना, —रखना - मर्यादा की रक्षा करना ।

**इठलाना** - स० [हि] इतराना, गर्व करना, अहकारसूचक चेष्टा करना, ऐंठ दिखाना ।

**इठलाहट** - स्त्री० [हिं] ठसक ।

**इडा** - स्त्री० [हि] पृथ्वी; गाय; सरस्वती, हठ योग की साधना के लिए मानी गयी बाईं ओर की एक नाड़ी ।

**इत-उत** - क्रि० [हि] इधर-उधर ।

**इतमाम** - पु० [अ] इंतज़ाम, बंदोबस्त, प्रबंध ।

**इतमीनान** - पु० [अ] विश्वास; संतोष; भरोसा ।

**इतर** - वि० [सं] दूसरा; साधारण; नीच, पामर ।

**इतराजी** - स्त्री० [अ] विरोध, बिगाड़, नाराज़ी ।

**इतराना** - स० [हिं] इठलाना, घमंड करना ।

**इतराफ़** - स्त्री० [अ] 'तरफ़' का बहु०; ओर; दिशाएँ ।

**इतलाफ़** - पु० [अ] छोड़ना; तलाक देना ।

**इतस्ततः** - क्रि० [सं] इधर-उधर ।

**इताअत** - स्त्री० [अ] ताबेदारी करना, हुक्म मानना ।

**इताब** - पु० [अ] अप्रसन्नता ।

**इति** - 1. अव्य० [सं] अंत या समाप्ति सूचक शब्द; 2. स्त्री० समाप्ति, पूर्ति ।

**इतिकर्त्तव्यता** - स्त्री० [सं] किसी काम के करने की विधि, परिपाटी ।

**इतिवृत्त** - पु० [सं] पुरानी कथा; कहानी ।

**इतिहास** - पु० [स] बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओ तथा उनसे संबन्धित व्यक्तियों का क्रमबद्ध वर्णन, तवारीख़।
**इत्त(त्ति)फ़ाक़** - पु० [अ] संयोग।
**इत्त(त्ति)फ़ाक़न** }
**इत्त(त्ति)फ़ाक़िया** } क्रि० [अ] संयोग से।
**इत्त(त्ति)हाद** - पु० [अ] एकता ; मित्रता।
**इत्त(त्ति)हाम** - पु० [अ] दोष लगाना, बदनाम करना।
**इत्त(त्ति)ला** - स्त्री० [अ] ख़बर, सूचना।
**इत्यादि** - अव्य० [स] इसी तरह, और दूसरे, वग़ैरह, आदि।
**इत्र** - पु० [अ] अत्तर, पुष्पसार, एसेंस।
**इदबार** - पु० [अ] दुर्भाग्य।
**इदराक** - स्त्री० [अ] अक़्ल, बुद्धि।
**इद्दत** - स्त्री० [अ] गिनती ; विधवाओ और परित्यक्ता स्त्रियो के लिए वह निश्चित समय जिसके पहले वे दूसरा विवाह नही कर सकतीं।
**इधर** - क्रि० [हिं] इस तरफ़, इस ओर ; मु० —उधर - आसपास ; —उधर करना - टालमटोल करना ; —उधर की बात - उड़ती ख़बर ; सुनी सुनायी बात।
**इनकार** - पु० [अ] अस्वीकार।
**इनसान** - पु० [अ] मानव।
**इनसानियत** - स्त्री० [अ] मानवता।
**इनाम** - पु० [अ] पुरस्कार।
**इनायत** - स्त्री० [अ] कृपा।
**इनारा** - पु० [देश] कुँआ।
**इने-गिने** - वि० [हि] कुछ ; चुने हुए।
**इन्क़ज़ा** - पु० [अ] व्यतीत होना, बीतना।
**इन्क़लाब** - पु० [अ] क्राति।
**इन्कशाफ़** - पु० [अ] रहस्योद्घाटन।
**इन्कसार** - पु० [अ] नम्रता।
**इन्कार** - पु० [अ] अस्वीकार।
**इन्तक़ाम** - पु० [अ] प्रतिशोध, बदला।
**इन्तक़ाल** - पु० [अ] स्थान-परिवर्तन ; मृत्यु।
**इन्तख़ाब** - पु० [अ] चुनाव, निर्वाचन।
**इन्तज़ाम** - पु० [अ] प्रबन्ध।
**इन्तज़ार** - पु० [अ] प्रतीक्षा।
**इन्तशार** - पु० [अ] परेशानी।
**इन्तहा** }
**इन्तिहा** } स्त्री० [अ] चरम सीमा ; अन्त।
**इन्शा** - स्त्री० [अ] लेखन क्रिया या शैली।
**इन्साफ़** - पु० [अ] न्याय।
**इफ़रात** - स्त्री० [अ] अधिकता, बाहुल्य।
**इफ़लास** - पु० [अ] ग़रीबी, निर्धनता।
**इफ़लाह** - पु० [अ] भलाई, उपकार।
**इफ़्तराक़** - पु० [अ] अलग होना।
**इबरत** - स्त्री० [अ] शिक्षा, नसीहत।
**इबरानी** - 1. वि० [अ] यहूदी ; 2. स्त्री० फिलस्तीन देश की प्राचीन भाषा।
**इबादत** - स्त्री० [अ] उपासना, पूजा; स्तुति।
**इबारत** - स्त्री० [अ] लेख ; शैली।
**इब्तदा** - स्त्री० [अ] प्रारम्भ।
**इब्न** - पु० [अ] पुत्र।
**इभ** - पु० [सं] हाथी।
**इभ-कुंभ** - पु० [सं] गंडस्थल, हाथी का मस्तक।
**इमकान** }
**इम्कान** } पु० [अ] शक्ति ; संभावना।
**इमदाद** - स्त्री० [अ - 'मदद' का बहु०] मदद।
**इमरती** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की जलेबी-जैसी मिठाई जो पिसी हुई उर्द की दाल से बनती है, जागिरी, जहाँगीरी, अमरती।
**इमला** - पु० [अ] लेखन-अभ्यास।
**इमली** - स्त्री० [सं] एक बड़ा पेड़ जिसकी पत्तियाँ छोटी और फलै लंबे तथा खट्टे होते हैं।

**इमाम** - पु० [अ] मुसलमानो में धर्म-शास्त्र का ज्ञाता और विद्वान; पथ-प्रदर्शक।

**इमाम-जामिन** - पु० [अ] संरक्षक।

**इमामदस्ता** - पु० [अ] लोहे या पीतल का खल और बट्टा।

**इमामबाग़** - पु० [अ] मुहर्रम मनाने की जगह।

**इमामबाड़ा** - पु० [उ] वह स्थान जहाँ मुसलमान ताजिये दफ़नाते और मुहर्रम का उत्सव मनाते है।

**इमारत** - स्त्री० [अ] मकान, विशाल भवन।

**इम्तहान** - पु० [अ] परीक्षा।

**इम्तियाज़** - पु० [अ] तमीज़ करना, पहचानना।

**इम्दाद** - स्त्री० [अ] सहायता; सहायता के रूप में दिया हुआ धन।

**इयत्ता** - स्त्री० [सं] सीमा; सभा-संचालन के लिए सदस्यो की निश्चित संख्या; [क] वर्ग, दर्जा, क्लास।

**इरफ़ान** - पु० [अ] बुद्धि; ज्ञान; विज्ञान।

**इरशाद** } **इर्शाद** } पु० [अ] रास्ता बतलाना; हिदायत करना, आज्ञा; **मु०** इर्शाद हो - आज्ञा दीजिये।

**इरादतन** - क्रि० [अ] जान-बूझकर।

**इरादा** - पु० [अ] विचार; संकल्प।

**इर्द-गिर्द** - क्रि० [फ़ा] चारो ओर, आस-पास।

**इलज़ाम** - पु० [अ] दोष; अभियोग; दोषारोपण।

**इलहान** - पु० [अ - 'लहन' का बहु०] संगीत; स्वर।

**इलहाम** - पु० [अ] आकाशवाणी।

**इलहियात** - स्त्री० [अ] अध्यात्म, ईश्वर सम्बंधी बातें।

**इला** - स्त्री० [सं] पृथ्वी; सरस्वती; पार्वती; बुद्धिमती स्त्री।

**इलाक़ा** - पु० [अ] रियासत; अधिकार-क्षेत्र।

**इलाज** - पु० [अ] उपाय; चिकित्सा; दवा।

**इलाम** - पु० [अ] इत्तलानामा; आज्ञा; सूचना-पत्र।

**इलायची** - स्त्री० [हिं] एला, एक चार पाच फुट ऊँचा पौधा जिसके फल के बीज सुगंधित होते हैं और जो पान के साथ या ऐसे ही खाये जाते हैं तथा मसाले में भी पड़ते हैं।

**इलाह** - पु० [अ] ईश्वर।

**इलाही** - पु० [अ] परमात्मा।

**इल्तजा** } **इल्तिजा** } - स्त्री० [अ] प्रार्थना, निवेदन।

**इल्तमास** - पु० [अ] प्रार्थना।

**इल्म** - पु० [अ] ज्ञान, विद्या।

**इल्मदाँ** - वि० [अ] विद्वान, पंडित।

**इल्मेअख़लाक** - पु० [अ] नीतिशास्त्र।

**इल्मेअदब** - पु० [अ] साहित्य।

**इल्मेइलाही** - पु० [अ] ब्रह्मविद्या।

**इल्मेउरूज़** - पु० [अ] छंदशास्त्र।

**इल्मेक़याफ़ा** - पु० [अ] सामुद्रिकशास्त्र।

**इल्मेकीमिया** - पु० [अ] रसायनशास्त्र।

**इल्मेग़ैब** - पु० [अ] अध्यात्म; विद्या।

**इल्मेजमादात** - पु० [अ] खनिजविद्या।

**इल्मेतबई** - पु० [अ] पदार्थविज्ञान।

**इल्मेतवारीख** - पु० [अ] इतिहास विद्या।

**इल्मेदीन** - पु० [अ] धर्मशास्त्र।

**इल्मेनबातात** - पु० [अ] वनस्पतिविद्या।

**इल्मेनुजूम** - पु० [अ] ज्योतिषशास्त्र।

**इल्मेफ़िक़ा** - पु० [अ] मुसलमानी धर्म-शास्त्र।

**इल्मेबहस** - पु० [अ] तर्कशास्त्र।

**इल्मेमन्तक** - पु० [अ] न्यायशास्त्र ।

**इल्मेमादनियात** - पु० [अ] खनिजविद्या ।

**इल्मेमुसीकी** पु० [अ] संगीतशास्त्र ।

**इल्मेहिंदसा** - पु० [अ] गणितशास्त्र ।

**इल्मेहैयत** - पु० [अ] खगोलविद्या ।

**इल्लत** - स्त्री० [अ] कारण ; अभियोग ; बुरी आदत ; दोष ।

**इल्लती** - वि० [अ] बुरी लतवाला ।

**इल्ला** - 1. अव्य० [अ] लेकिन ; नहीं तो ; सिवा ; 2. पु० छोटी कड़ी मासग्रंथि ; मांसवृद्धि, मस्सा ।

**इल्ली** - स्त्री० [देश] अंडे से निकलते ही चींटी या उसके समान कीड़ों का रूप ; एक खेल ; **मु०** —बिल्ली भूलना - होश-हवास ठीक न रहना ।

**इव** - अव्य० [सं] उपमावाचक शब्द, समान, तरह ।

**इशरत** - स्त्री० [अ] सुखभोग, आनंद-मंगल ।

**इशा** - स्त्री० [अ] रात ; यौ०—की नमाज़ - रात के पहले पहर की नमाज़ ।

**इशारत** - स्त्री० [अ] संकेत करना ।

**इशारा** - पु० [अ] संकेत ; संक्षिप्त कथन ; गुप्त प्रेरणा ।

**इश्क़** - पु० [अ] प्रेम ।

**इश्तबाह** - पु० [अ] संदेह ।

**इश्तहा** - स्त्री० [अ] इच्छा, भूख ।

**इश्तहार** / **इश्तिहार** } पु० [अ] विज्ञापन, सूचना ।

**इश्तिआल** / **इश्तिआलक** } स्त्री० [अ] बढ़ावा, उत्तेजना; भड़कना, उग्र रूप धारण करना ।

**इषीका** - स्त्री० [सं] बाण ।

**इषु** - पु० [स] बाण ।

**इष्ट** - वि० [सं] अभिलषित ; पूजित ।

**इष्टदेव** - पु० [सं] उपास्य देव ।

**इष्टापूर्ति** - पु० [सं] लोकोपकारार्थ यज्ञ, कुँआ, तालाब आदि की रचना ।

**इष्टि** - स्त्री० [सं] इच्छा ; यज्ञ ।

**इसपंद** / **इसबंद** } पु० [फ़ा] काला दाना जो भूत झाड़ने के काम में जलाया जाता है ।

**इसपात** - पु० [हिं] फ़ौलाद, कड़ा लोहा ।

**इसबगोल** - 1. पु० [अ] एक दवा ; 2. [क.ते.त.] इसबगोल ।

**इसरत** - पु० [अ] कष्ट ।

**इसराज** - पु० [अ] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा ।

**इसराफ़** - पु० [अ] फ़िज़ूलखर्ची, धन का अपव्यय ।

**इसरार** - पु० [अ०] हक़ ; ज़िद ।

**इसलाह** - स्त्री० [अ] संशोधन ; डाढ़ी के बाल ।

**इस्त(स्ति)क़बाल**-पु० [अ] स्वागत ; भविष्य काल ।

**इस्त(स्ति)ग़ासा** - पु० [अ] फ़र्याद, फ़ौजदारी नालिश, न्याय की प्रार्थना ।

**इस्त(स्ति)दुआ** पु० [अ] विनती, निवेदन ।

**इस्त(स्ति)मरारी** - वि० [अ] स्थायी ।

**इस्तिंजा** - पु० [अ] पेशाब कर चुकने पर मिट्टी के ढेले से शुद्धि ।

**इस्तिरी** - स्त्री० [दे] धोबी या दर्जी का वह औज़ार जिससे कपड़ों की तह बैठायी जाती है ।

**इस्तिलाह** - पु० [अ] शब्द का माना हुआ पारिभाषिक अर्थ ; पारिभाषिक शब्दावली ।

**इस्तिलाहीमानी** - स्त्री० [अ] पारिभाषिक अर्थ ।

**इस्तीफ़ा** - पु० [अ] त्याग-पत्र ।

**इस्तेमाल** - पु० [अ] उपयोग, प्रयोग ।

**इस्तेमाली** - वि० [अ] पुराना, काम में लाया हुआ।

**इस्म** - पु० [अ] नाम; संज्ञा; **मु०**—व मुसम्मा - यथा नाम तथा गुण।

**इस्लाम** - पु० [अ] मुसलमानो का मत।

**इह** - क्रि० [सं] इस जगह, यहाँ; इस लोक में; यौ०—लोक - पु० दुनियाँ; यह जीवन;—लीला - स्त्री० इस लोक की लीला, ज़िन्दगी।

**इहाँ** - क्रि० [देश] यहाँ।

## ई

**ईंगुर** - पु० [देश] पारा मिला हुआ सिंदूर जैसा लाल वर्ण का पदार्थ या पत्थर।

**ईंचना** - स० [हिं] खींचना।

**ईंट** } **ईंटा** } - स्त्री० [हि] साँचे में ढाला हुआ चौकोर मिट्टी का सूखा लोंदा; **मु०** —से ईंट बजना - किसी नगर या घर का ध्वंस होना; —पत्थर - कुछ नहीं।

**ईंडरी** } **ईंडुरी** } स्त्री० [देश] कपड़े की वलयाकार गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर पर रखते हैं।

**ईंधन** - पु० [सं] जलाने की लकड़ी या कंडा, जलावन।

**ईक्षण** - पु० [सं] विचार; दर्शन; जाँच।

**ईख** - स्त्री० [हि] ऊख, गन्ना।

**ईखना** † - स० हि] देखना।

**ईज़द** - पु० [फ़ा] ईश्वर।

**ईज़ा** - स्त्री० [अ] तकलीफ़, कष्ट।

**ईज़ाद** - स्त्री० [अ] आविष्कार, नवनिर्माण।

**ईठ** † - पु० [हिं] मित्र, सखा; प्रिय, इष्ट।

**ईठना** - स० [हि] इच्छा करना, चाहना।

**ईठि** - स्त्री० [हि] दोस्ती; चेष्टा, यत्न।

**ईड़ा** - स्त्री० [सं] स्तुति, प्रशंसा; ईड़ा नामक एक नाड़ी।

**ईढ़** † - स्त्री० [हिं] ज़िद, हठ।

**ईति** - स्त्री० [स] खेती को नुक़सान पहुँचानेवाले उपद्रव; अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना; दूसरे राजा की चढ़ाई, तक़लीफ़; बाधा।

**ईद** - स्त्री० [अ] मुसलमानो का त्यौहार; **मु०** —का चाँद होना - कम भेट होना; यौ० —उल जुहा - बकरीद।

**ईदगाह** - स्त्री० [अ] ईद के दिन नमाज़ पढ़ने का स्थान।

**ईदृश** - क्रि० [सं] ऐसा।

**ईप्सा** - स्त्री० [सं] इच्छा, अभिलाषा।

**ईप्सित** - वि० [सं] अभिलषित, इच्छित, चाहा हुआ।

**ईमान** - पु० [अ] धर्म, विश्वास, सत्य; चित्त की सद्वृत्ति; **मु०** —का सौदा - खरा व्यवहार; —ठिकाने न रहना - डिगना; —में फ़र्क़ आना या बिगड़ना - धर्म से गिरना; नीयत ख़राब होना।

**ईमानदार** - वि० [अ] विश्वासपात्र।

**ईमानदारी** - स्त्री० [अ] ईमानदार होने का भाव।

**ईरान** - पु० [फ़ा] फ़ारस देश।

**ईर्षा** } **ईर्ष्या** } स्त्री० [सं] दूसरो का उत्कर्ष न सहन करने की वृत्ति, डाह।

**ईर्षालु** } **ईर्ष्यालु** } वि० [सं] ईर्ष्या करनेवाला।

**ईश** - पु० [सं] भगवान, राजा; शिव; 11 की संख्या।

**ईशता** - स्त्री० [सं] स्वामित्व, प्रभुता।

**ईशान** - पु० [सं] पूर्व और उत्तर का कोना।

**ईश्वर** - पु० [सं] भगवान।

**ईषत्** - वि० [सं] थोड़ा, किंचित, कुछ।

**ईषण** - स्त्री० [हि] प्रबल इच्छा।

**ईसबगोल** - पु० [देश] एक हकीमी दवा।

**ईसवी** - वि० [अ] ईसा सम्बन्धी।

**ईसा** - पु० [अ] महात्मा क्राइस्ट जिनका चलाया हुआ धर्म ईसाई धर्म कहलाता है।

**ईसार** - पु० [अ] ग्रहण करना ; बड़प्पन ; त्याग और तपस्या।

**ईहा** - स्त्री० [सं] चेष्टा, उद्योग ; इच्छा ; लोभ।

**ईहामृग** - पु० [सं] रूपक का भेद जिसमें चार अंक होते हैं ; भेड़िया।

**ईहावृक** - पु० [सं] लकड़बग्घा।

**ईहित** - पु० [सं] इच्छित।

## उ

**उँगनी** स्त्री० [हिं] गाड़ी की धुरी में तेल वग़ैरह लगाकर औंगना।

**उँगलियाना** - स० [हि] तंग करना, परेशान करना, उकसाना।

**उँगली** - स्त्री० [हि] अंगुली ; **मु०**—उठना - निंदा होना, बदनामी होना ; —उठाना - निंदा करना, नुक्ताचीनी करना, वक्र दृष्टि से देखना , —करना - परेशान करना, सताना , —रखना - किसीकी कृति में दोष दिखाना ; — लगाना - सहायता देना ; —पकड़ते पहुँचा पकड़ना - थोड़ा सा सहारा पाकर अधिक की प्राप्ति के लिए उत्साहित होना ; उँगलियो पर नचाना - जैसा चाहना वैसा कराना ; उँगलियो पर नाचना - दूसरे के इशारे पर चलना।

**उंछवृत्ति** - स्त्री० [सं] खेत कट जाने पर बचे हुए दाने चुनकर निर्वाह करना ; सीला बीनना।

**उँडेलना** - स० [हिं] तरल पदार्थ को दूसरे बर्तन में डालना, ढालना।

**उऋण** - वि० [सं] ऋण से मुक्त।

**उकटना** - स० [हि] बार-बार कहना।

**उकटा** - वि० [हिं] ताना मारनेवाला, अहसान जतानेवाला।

**उकटा-पुरान** - पु० [हिं] बीती बातों को दुहराना।

**उकठना** - अ० [हि] पेड़ का सूख जाना।

**उकठा** - वि० [हि] सूखा हुआ।

**उकडूँ** - पु० [हि] घुटने के बल बैठने की रीति।

**उकतना** - स० [हि] नोचना।

**उकताना** - अ० [हिं] ऊब जाना।

**उक़बा** - पु० [अ] सृष्टि का अंतिम काल।

**उकलना** - अ० [हिं] खुलना ; उधड़ना।

**उक़ला** - पु० [अ] बुद्धिमान लोग।

**उकलाना** - अ० [हि] कै करना।

**उकसना** - अ० [हि] उभरना, निकलना, उगना।

**उकसनि** † - स्त्री [अव] उभार।

**उकसाना** - स० [हि] उत्तेजित करना, भड़काना।

**उक़ाब** - पु० [अ] गिद्ध पक्षी ; गरुड़।

**उकौना** - पु० [देश] गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

**उक्त** - वि० [सं] कहा हुआ।

**उक्ति** - स्त्री० [सं] वचन।

**उक्दा** - पु० [अ] गूढ़ विषय ; गिरह।

**उक़्दाकुशा** - वि० [अ] कठिन समस्याओं की मीमांसा करनेवाला ; ईश्वर का एक विशेषण।

**उखटना** - 1. स० [हिं] कुतरना, खोटना ; 2. [अ] लड़खड़ाना ; पेड़ पौधे का सूखकर कड़ा हो जाना।

**उखडना** - अ० [हि] किसी गड़ी या जमी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग होना, टूटना ; **मु०** पैर उखड़ना - मुकाबले के लिए सामने न ठहर सकना ; उखड़ी उखड़ी बाते करना - वैराग्य की बाते करना ; अंड-बंड बकना।

**उखाड़ना** - स० [हिं] किसी जमी या गड़ी हुई चीज़ को वहाँ से हटाना, नष्ट करना ; **मु०** गड़े मुर्दे उखाड़ना - पुरानी बातों को फिर से छेड़ना ; पैर उखाड़ देना - स्थान से विचलित कर देना, भगा देना ।

**उखाड़ू** - वि० [हि] चुग़लखोर ; उखाड़नेवाला ।

**उखारी** - स्त्री० [हि] ईख का खेत ।

**उखेरना** } **उखेलना** } स०[हिं] चित्र लिखना; लिखना।

**उगटना** - अ० [हिं] ताना मारना ।

**उगना** - अ० [हिं] उदय होना ; अंकुरित होना; उपजना ।

**उगलना** - स० [हि] कै या वमन करना ।

**उगलाना** - स० [हिं] बाहर निकालना ; वमन कराना ; प्रकट करना ।

**उगाल** - पु० [हिं] थूक, वमन ।

**उगालदान** - पु० [हि] थूकने का बर्तन ।

**उगाहना** - स० [हि] वसूल करना ।

**उगाही** - स्त्री० [हिं] वसूली, रुपया-पैसा वसूल करने का काम ।

**उग्र** - वि० [सं] तीव्र ।

**उग्रता** - स्त्री० [सं] प्रचडता ।

**उघटना** - अ० [हिं] ताल देना ; ताना देना ; बीती बात कहना ; उलाहना देना ।

**उघड़ना** } **उघरना** } अ० [हिं] खुलना ; भंडा फूटना; **मु०** उघड़कर नाचना - लाज छोड़कर मनमानी करना ।

**उघरारा** - वि० [हिं] नंगा, खुला हुआ ।

**उघाड़ना** - स० [हि] खोलना, भंडा फोड़ना।

**उचकन** - पु० [हिं] ईंट-पत्थर आदि का वह छोटा टुकड़ा जिसे रखकर कोई चीज़ ऊँची या बराबर करते हैं ।

**उचकना** - अ० [हिं] पंजों पर खड़ा होना ; उछलना ।

**उचक्का** - पु० [हिं] चोर, ठग ।

**उचटना** - अ० [हिं] उखड़ना ; बिचकना ; छूटना ; उदास होना ।

**उचाट** - पु० [हि] मन न लगना ।

**उचाड़ना** - स० [हि] लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना ; नोचना, उखाड़ना ।

**उचापत** - स्त्री० [हि] उधार ।

**उचारना** † - स. [हि] बोलना, उच्चारण करना ।

**उचित** - वि० [सं] मुनासिब, ठीक, [ते] मुफ्त [क] योग्य ; मुफ़्त ।

**उचेलना** - स० [हिं] छिलका आदि निकालना ।

**उच्च** - वि० [सं] ऊँचा, श्रेष्ठ ।

**उच्चाटन** - पु० [सं] विरक्ति, उदासीनता ; मंत्र-तंत्र द्वारा किया जानेवाला एक अभिचार ।

**उच्चारण** - पु० [स] वर्णों या शब्दों को बोलने का ढंग, कथन ।

**उच्छन्न** - वि० [सं] दबा हुआ, लुप्त ।

**उच्छव** - पु० [हिं] उत्सव ।

**उच्छिन्न** - वि० [सं] कटा हुआ, नष्ट ।

**उच्छिष्ट** - वि० [सं] जूठा ।

**उच्छृंखल** - वि० [सं] निरंकुश, स्वेच्छाचारी ।

**उच्छेद** } **उच्छेदन** } पु० [सं] नाश ।

**उच्छ्वास** - पु० [सं] ऊपर को खीची हुई साँस, श्वास ।

**उछंग** - पु० [हि] गोद ।

**उछाल** - स्त्री० [हिं] छलांग, चौकड़ी ; जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है वहाँ तक की वह ऊँचाई ।

**उछाव** } **उछाह** } - पु० [हिं] उमंग, हर्ष, उत्साह ।

**उज़क** - पु० [तु] शाही ज़माने की बड़ी मुहर ।

**उजड्ड** - वि० [हिं] जंगली, गँवार, मूर्ख ।

**उज़बक** - 1. पु० [तु] तातारियों की एक जाति ; 2. वि० मूर्ख, गँवार, उजड्ड ।

**उजरत** - स्त्री० [अ] बदला ; मजूरी ।

**उजलत** - स्त्री० [अ] जल्दी ।

**उजला** - वि० [हिं] सफ़ेद ; स्वच्छ, निर्मल ।

**उजागर** - वि० [हिं] प्रकाशित ; प्रसिद्ध ।

**उजाड़** - पु० [हिं] निर्जन स्थान ; वीरान ।

**उजाड़ना** - स० [हिं] ध्वस्त करना ; उधेड़ना ; नष्ट करना ।

**उजाला** - पु० [हि] प्रकाश ।

**उज़्म** - पु० [अ] बड़प्पन, बुज़ुर्गी ।

**उज़्मा** - पु० [अ - 'अज़ीम' का बहु०] बुज़ुर्ग या बड़े लोग ।

**उज्र** - पु० [अ] बाधा, विरोध ।

**उज्रदार** - वि० [अ] उज्र करनेवाला ।

**उज्ज्वल** - वि० [सं] प्रकाशवान ; श्वेत ; निर्मल ।

**उझकना** - अ० [हिं] झाँकना ; चौकना ; सिर उठाना ।

**उट** - पु० [सं] तृण, तिनका ।

**उटज** - पु० [सं] कुटिया, झोपड़ी ।

**उठना** - अ० [हि] खड़ी स्थिति में होना ; ऊँचाई तक ऊपर बढ़ना या चढ़ना ; **मु०** उठ जाना - मर जाना, संसार से चले जाना ; उठते बैठते - प्रत्येक अवस्था में , उठती जवानी - युवावस्था ; उठा बैठी - हैरानी ।

**उठल्लू** - वि० [हिं] आवारा ; बेठिकाने का ।

**उठाईगीर** - वि० [हिं] उचक्का, आँख बचाकर चीज़ उठाकर ले भागनेवाला ।

**उठान** - स्त्री० [हिं] उठने की क्रिया ; उत्थान ; आरंभ , व्यय, खपत ।

**उठाव** - पु० [हि] वृद्धि ।

**उठौना** - पु० [हिं] मनौती की रक़म ।

**उठौनी** - स्त्री० [हि] मृत्यु के तीसरे दिन श्मशान पर जाकर मृतक व्यक्ति की हड्डी आदि समेटने की क्रिया ; उठाने की मज़दूरी या पुरस्कार ; प्रसूता की दायी ।

**उठौवा** - वि० [हिं] जिसका कोई स्थान निश्चित न हो ; यौ० —चूल्हा - वह चूल्हा जिसे जब जहाँ चाहें उठाकर रख लिया जा सके ।

**उड़ंत** - पु० [हिं] कुश्ती का एक दाँव या पेच जिसमें खिलाड़ी एक दूसरे की पकड़ से बचने के लिए इधर से उधर होते हैं ।

**उड़द** - पु० [हिं] एक काला दाना जिसके आटे से पापड़ आदि बनते हैं ।

**उड़नखटोला** - पु० [हिं] विमान ।

**उड़नछू** - वि० [हिं] ग़ायब, चंपत ।

**उड़नफ़ाख़्ता** - वि० [उ] सीधा सादा ; मूर्ख ।

**उड़ना** - अ० [हिं] पक्षियों का आकाश में एक जगह से दूसरी जगह जाना, हवा में या आकाश में ऊपर उठना ; **मु०** उड़ चलना - तेज़ दौड़ना, सरपट भागना ; उड़ने लगना - चकमा देने लगना ; उड़ती ख़बर - बाज़ारू ख़बर, गप्प, किंवदंती ।

**उड़ाऊ** - वि० [हिं] उड़नेवाला ; ख़र्चीला ।

**उड़ाका** }
**उड़ाकू** } वि० [हिं] हवाई जहाज़ चलानेवाला, उड़नेवाला ।

**उड़ान** - स्त्री० [हिं] छलाग ; कुदान ; कवि-कल्पना ।

**उड़ाना** - स० [हि] किसी उड़नेवाली वस्तु या प्राणी को उड़ने में प्रवृत्त करना या चलाना ; भगाना ; भगा ले जाना ; नष्ट करना ; खर्च करना ; भोगना ; भुलावा देना, चकमा देना ; हजम करना ; खूब खाना ।

**उडु** - स्त्री० [सं] तारा, नक्षत्र ; पक्षी ; केवट ।

**उडु (राज) पति** - पु० [सं] चन्द्रमा।
**उड़ेरना**, **उड़ेलना** } स० [हिं] ढालना ; गिराना , खाली करना।
**उड्डयन** - पु० [सं] उड़ना।
**उढ़कना** - अ० [हिं] ठोकर खाना ; सहारा लेना ; रुकना ; फिरना।
**उढकाना** - स० [हि] सहारा देकर खड़ा करना , फेरना ; भिड़ाना।
**उढ़रना** - अ० [हि] विवाहिता स्त्री का परपुरुष के साथ निकल जाना।
**उढ़री** - स्त्री० [हि] उपपत्नी, रखेली।
**उढाना** - स० [हि] ओढ़ाना।
**उढ़ारना** - स० [हिं] दूसरे की स्त्री को लेकर भाग जाना।
**उढ़ावनी** - स्त्री० [हिं] चादर।
**उतंग** - वि० [हिं] ऊँचा ; श्रेष्ठ।
**उतंत** - वि० [हिं] जवान, सयाना।
**उत** - क्रि० [हि] वहीं ; उधर।
**उतना** - वि० [हिं] उस मात्रा का ; उस क़दर।
**उतपात** - पु० [हिं] उपद्रव, अशांति ; आफ़त।
**उतरंग** - पु० [हिं] दरवाजों में चौखट के ऊपरी बाजू या साह पर बिठायी जानेवाली लकड़ी या पत्थर की पटरी।
**उतरन** - स्त्री० [हि] पहने हुए पुराने कपड़े, उतारे हुए वस्त्र।
**उतरना** - अ० [हि] ऊँचे स्थान से नीचे आना, ढलना, अवनति पर होना ; देह की किसी हड्डी या उसके जोड़ का अपने स्थान से हट जाना ; कम होना ; फीका होना ; **मु०** गले उतरना - कठिनाई से स्वीकृत होना या करना ; चेहरा उतरना - उदास होना ; चित्त से उतरना - भूल जाना ; पाग उतरना - बेइज़्ज़त होना।
**उतराई** - स्त्री० [हिं] ऊपर से नीचे आने की क्रिया ; नदी के पार उतारने का महसूल ; ढालू ज़मीन।
**उतराना** - अ० [हि] पानी के ऊपर आना या तैरना , उबलना, उफ़ान आना ; उद्धार पाना ; छा जाना।
**उतरायल** - वि० [हिं] किसीके द्वारा पहनकर उतारा हुआ कपड़ा
**उतराव** - पु० [हिं] उतार, ढाल।
**उतलाना** - अ० [देश] जल्दी करना।
**उतान** - वि० [हिं] पीठ को ज़मीन से लगाये हुए, चित।
**उतायल** - 1. क्रि० [हिं] जल्दी ; 2. वि० जल्दबाज़।
**उतार** . पु० [हिं] उतरने की क्रिया ; क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति ; उतरने योग्य स्थान, घाट ; घटाव, कमी ; निकृष्ट ; उतारा ; न्योछावर ; परिहार।
**उतारन** - पु० [हिं] उतारा हुआ कपड़ा ; निछावर ; निकृष्ट वस्तु।
**उतारना** - स० [हिं] ऊँचे स्थान से नीचे स्थान मे लाना ; प्रतिरूप बनाना , चित्र खीचना , लिखावट की नकल करना ; पार ले जाना, नदी-नाले के पार पहुँचाना ; न्योछावर करना, परिहार करना।
**उतारा** - पु० [हिं] पड़ाव ; नदी पार करना , देव या प्रेत-बाधा दूर करने के लिए रोगी पर वारकर रखी जानेवाली वस्तु।
**उतारू** - वि० [हिं] उद्यत, तत्पर।
**उताल** - क्रि० [हिं] जल्दी, शीघ्र।
**उतावल** -क्रि० [हिं] जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से।
**उतावला** - वि० [हिं] जल्दबाज़ ; व्यग्र, घबराया हुआ।
**उतावली** - स्त्री० [हिं] जल्दबाज़ी ; व्यग्रता, चंचलता।
**उतै** † - क्रि० [हिं] वहाँ ; उधर।

**उत्कंठ** - वि० [सं] जिसे प्रबल इच्छा हो, उत्कंठित।

**उत्कंठा** - स्त्री० [सं] तीव्र इच्छा, तीव्र अभिलाषा; रस में एक संचारी भाव का नाम।

**उत्कंठित** - वि० [सं] चाव से भरा हुआ, उत्कंठायुक्त।

**उत्कट** - वि० [सं] तीव्र, उग्र, विकट।

**उत्कर्ण** - वि० [सं] सुनने के लिए कान खड़े किये हुए।

**उत्कर्ष** - पु० [स] श्रेष्ठता, उत्तमता; समृद्धि; अधिकता; प्रशंसा।

**उत्कीर्ण** - वि० [स] लिखा हुआ; खुदा हुआ; छिदा हुआ।

**उत्कूल** - वि० [सं] किनारे पर पहुँचनेवाला; तट के ऊपर होकर बहनेवाला।

**उत्कृति** - स्त्री० [सं] 26 वर्णों के वृत्तों के नाम; छब्बीस की संख्या।

**उत्कृष्ट** - वि० [सं] उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा।

**उत्कृष्टता** - स्त्री० [सं] श्रेष्ठता, बड़प्पन।

**उत्कोच** - पु० [सं] घूँस, रिश्वत।

**उत्क्रम** - पु० [स] चढ़ना, क्रमोन्नति, बाहर जाना, क्रमभंग।

**उत्क्रमण** - पु० [सं] चढ़ना; बढ़ जाना; प्रस्थान; मृत्यु।

**उत्क्रांत** - वि० [सं] ऊपर की ओर चढ़नेवाला; उत्पन्न।

**उत्क्रांति** - स्त्री० [सं] क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति।

**उत्खनन** - पु० [सं] खोदने की क्रिया, खोदाई।

**उत्खात** - 1. वि० [सं] खोदा हुआ, उखाड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ; 2. पु० छेद, बिल; गढ़ा; ऊबड़खाबड़ ज़मीन।

**उत्खाता** - वि० [सं] खोदनेवाला।

**उत्तप्त** - वि० [सं] बहुत गरम; दुखी, पीड़ित, संतप्त।

**उत्तम** - वि० [सं] श्रेष्ठ, अच्छा; सबसे भला।

**उत्तमतया** - क्रि० [सं] अच्छी तरह से, भली भाँति।

**उत्तमता** - स्त्री०[सं] श्रेष्ठता, खूबी, भलाई।

**उत्तमपुरुष** - पु० [सं] बोलनेवाले पुरुष को सूचित करनेवाला सर्वनाम 'मैं' (व्या)।

**उत्तमश्लोक** - वि०[सं] यशस्वी, कीर्तिशाली।

**उत्तमांग** - पु० [सं] सिर।

**उत्तमोत्तम** - वि० [सं] अच्छे से अच्छा।

**उत्तरंग** - 1. पु० [सं] चौखट के ऊपर लगा तख्ता; 2. वि० तरंगित; क्षुब्ध; उछलता हुआ।

**उत्तर** - 1. पु० [सं] दक्षिण के सामने की दिशा; जवाब; बहाना, मिस; प्रतिकार, बदला; 2. वि० पिछला, बाद का; ऊपर का; श्रेष्ठ; गौण।

**उत्तरक्रिया** - स्त्री० [सं] अंत्येष्टि क्रिया।

**उत्तरदाता** - पु० [सं] उत्तर या जवाब देनेवाला व्यक्ति; जिम्मेदार।

**उत्तरदायित्व** - पु० [सं] जवाबदेही, जिम्मेदारी।

**उत्तरदायी** - पु० [स] वह जिससे किसी कार्य के बनने बिगड़ने पर पूछ-ताछ की जाय, जवाबदेह, जिम्मेवार।

**उत्तरपक्ष** - पु० [सं] शास्त्रार्थ में वह सिद्धात जिससे पूर्वपक्ष अर्थात् पहले किये हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन अथवा समाधान हो।

**उत्तरपद** - पु० [सं] किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द।

**उत्तरमीमांसा** - स्त्री० [सं] वेदांत दर्शन।

**उत्तराखंड** - पु० [सं] भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरी भाग।

**उत्तराधिकार** - पु० [सं] किसीके मरने पर उसके धनादि का स्वत्व, विरासत ।
**उत्तराधिकारी** - पु० [सं] किसी के मरने पर उसकी संपत्ति का मालिक होनेवाला व्यक्ति, वारिस ।
**उत्तराभास** - पु० [सं] झूठा जवाब, अंडबंड जवाब ।
**उत्तरायण** - पु० [सं] सूर्य की मकर-रेखा से उत्तर कर्क की ओर गति ; वह छः महीने का समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है ।
**उत्तरार्द्ध** - पु० [सं] पीछे का आधा भाग ।
**उत्तरीय** - पु० [स] उपरना, दुपट्टा, चद्दर, ओढ़ना ।
**उत्तरोत्तर** - क्रि० [सं] एक के पीछे एक ; क्रमशः ; लगातार, बराबर ।
**उत्तलित** - वि० [स] ऊपर को फेंका या उछाला हुआ ।
**उत्तान** - वि० [सं] पीठ को ज़मीन पर लगाये हुए, चित, सीध ।
**उत्ताप** - पु० [सं] कष्ट, वेदना ; दुख, शोक ; क्षोभ ; गर्मी ।
**उत्तीर्ण** - पु० [सं] सफल, पास , पार गया हुआ, पारंगत , मुक्त ।
**उत्तुंग** - वि० [सं] बहुत ऊँचा ।
**उत्तू** - पु० 1. [फ़ा] बेल-बूटे के निशान डालने का यंत्र ; 2. वि० बदहवास ; **मु०**— करना - बहुत मारना ।
**उत्तेजक** - वि० [सं] उकसाने या उभाड़नेवाला, प्रेरक ; वेग को तीव्र करनेवाला ।
**उत्तेजन** - पु० [सं]
**उत्तेजना** - स्त्री० [स] प्रेरणा ।
**उत्तोलन** - पु० [स] ऊँचा करना, तानना ; तौलना ।
**उत्थान** - पु० [सं] उठने का कार्य, उठान ; आरंभ ; उन्नति, समृद्धि, बढती ।
**उत्थापक** - वि० [स] उठानेवाला ; उभारनेवाला ।
**उत्थापन** - पु० [स] ऊपर उठाना, तानना ; हिलाना, डुलाना , जगाना ।
**उत्पत्ति** - स्त्री० [सं] उद्‌गम, पैदाइश, जन्म ; सृष्टि ; आरभ, शुरू ।
**उत्पन्न** - वि० [सं] जन्मा हुआ, पैदा हुआ
**उत्पल** - 1. पु० [स] नील कमल , 2. वि० क्षीण ।
**उत्पाटन** - पु० [स] उखाड़ना ।
**उत्पात** - पु० [स] कष्ट पहुँचानेवाली आकस्मिक घटना ; उपद्रव, आफ़त ; अशाति, हलचल, ऊधम, शरारत ।
**उत्पाती** - पु० [सं] उत्पात मचानेवाला, उपद्रवी, नटखट, शरारती ।
**उत्पादक** - वि० [स] उत्पन्न करनेवाला ।
**उत्पादन** - पु० [सं] उत्पन्न करना, पैदा करना ।
**उत्पीड़क** - पु० [स] कष्ट पहुँचानेवाला ।
**उत्पीडन** - पु० [स] तकलीफ़ देना, सताना ।
**उत्प्रेक्षा** - स्त्री० [सं] उद्भावना, आरोप ; एक अर्थालंकार ।
**उत्फुल्ल** - वि० [सं] विकसित, खिला हुआ ; उतान, चित सोया हुआ ।
**उत्संग** - 1. पु० [सं] गोद, क्रोड़, अंक ; बीच, मध्य का भाग ; ऊपर का भाग ; 2. वि० निर्लिप्त, विरक्त ।
**उत्स** - पु० [सं] झरना, सोता ; जलमय स्थान ।
**उत्सन्न** - वि० [स] नष्ट, उजड़ा हुआ ।
**उत्सर्ग** - पु० [सं] त्याग, छोड़ना ; दान, न्योछावर ; समाप्ति ।
**उत्सर्पण** - पु० [सं] ऊपर चढ़ना, चढ़ाव ; उल्लंघन, लाघना ।

**उत्सर्पिणी** - स्त्री० [सं] काल की वह गति या अवस्था जिसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि की क्रमशः वृद्धि होती है।
**उत्सव** - पु० [सं] मंगल कार्य, धूमधाम; पर्व; आनंद, विहार।
**उत्साह** - पु० [सं] उमंग, उछाह, जोश; हिम्मत।
**उत्साही** - वि० [सं] उत्साहयुक्त, हौसलेवाला।
**उत्सुक** - वि० [सं] अत्यंत इच्छुक, उत्कंठित।
**उत्सुकता** - स्त्री० [सं] इच्छा, आकुलता, किसी कार्य में विलंब न सहकर उसमें तत्पर होना।
**उत्सृष्ट** - वि० [सं] त्यक्त, छोड़ा हुआ।
**उत्सेध** - 1. पु० [सं] ऊँचाई, उन्नति, वृद्धि; 2. वि० ऊँचा; श्रेष्ठ, उत्तम।
**उथपना** † - स० [हिं] उठाना; उखाड़ना; उजाड़ना।
**उथलना** - 1. अ० [हिं] डगमगाना, चलायमान होना; उलटना, उलट-पुलट होना; पानी का उथला या कम होना; 2. स० इधर-उधर करना; नीचे-ऊपर करना।
**उथल-पुथल** - 1. स्त्री० [हिं] उलट-पुलट, विपर्यय, क्रमभंग; 2. वि० उलट-पुलट, अंडबंड।
**उथला** - वि० [हिं] कम गहरा, छिछला।
**उदंत** - पु० [सं] ख़बर, वार्ता; सजन; व्यापार और यज्ञ आदि से जीविका चलानेवाला, जिसके दूध के दांत न गये हों।
**उदक** - पु० [सं] जल, पानी।
**उदकक्रिया** - स्त्री० [सं] तिलांजलि।
**उदकना** - अ० [देश] कूदना।
**उदगरना** - अ० [हिं] निकलना; प्रकाशित या प्रकट होना; उखाड़ना।
**उदगार** - पु० [हिं] दिल की गहराई से निकली बात।
**उदगारना** - स० [हिं] बाहर निकालना, बाहर फेंकना; उभाड़ना।
**उदगा** - वि० [हिं] ऊँचा, उन्नत; प्रचंड, उग्र, उद्धत।
**उदग्र** - वि० [सं] उच्च, ऊँचा; विशाल, बड़ा; उद्दंड; विकट, तीव्र, तेज़।
**उदधि** - पु० [सं] समुद्र; घड़ा; मेघ।
**उदधिसुत** - पु० [सं] समुद्र से उत्पन्न पदार्थ; चंद्रमा; अमृत, शंख; कमल
**उदधिसुता** - स्त्री० [सं] लक्ष्मी।
**उदपान** - पु० [सं] कुएं के पास का गड्ढा, गड्ढा, तालाब, तालाब के पास की भूमि, कमंडल।
**उदबस** - वि० [हिं] उजाड़, सूना; एक स्थान पर न रहनेवाला, खानाबदोश।
**उदबासना** - स० [हिं] तंग करके स्थान से हटा देना, भगा देना; उजाड़ना।
**उदमदना** - अ० [हिं] पागल होना, उन्मत्त होना।
**उदय** - पु० [सं] निकलना, प्रकट होना; वृद्धि, उन्नति; उद्गम, निकलने का स्थान।
**उदयगिरि** - पु० [सं] उदयाचल।
**उदरंभर** - वि० [सं] केवल अपना पेट भरनेवाला, पेटू।
**उदर** - पु० [सं] पेट; किसी वस्तु के बीच का भाग, मध्य; भीतर का भाग।
**उदसना** - अ० [हिं] उजड़ना; तितर-बितर होना।
**उदात्त** - 1. वि० [सं] ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ; दयावान, कृपालु; दाता, उदार; श्रेष्ठ; स्पष्ट, विशद; समर्थ, योग्य; 2. पु० वैदिक स्वर के उच्चारण

का एक भेद जिसमें तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है, उदात्त स्वर।

**उदान** - पु० [सं] कंठवर्ती एक प्राणवायु जिससे डकार और छींक आती है।

**उदार** - वि० [स] दाता, दानशील; बड़ा, ऊँचे दिल का; सरल, सीधा।

**उदारचरित** - वि० [सं] जिसका चरित्र उदार हो; शीलवान्।

**उदारचेता** - वि० [सं] उदार चित्तवाला।

**उदारता** - स्त्री० [सं] दानशीलता, फ़ैयाज़ी; उच्च-विचार।

**उदाराशय** - वि० [सं] जिसके विचार और उद्देश्य उच्च हो, महापुरुष।

**उदावर्त** - पु० [सं] गुदा का एक रोग जिसमें कांच (गुदा के भीतर का भाग) निकल आने से मल-मूत्र रुक जाता है, गुदग्रह, काच।

**उदास** - वि० [सं] दुखी, रंजीदा; तटस्थ, निरपेक्ष; विरक्त।

**उदासिल** - वि० [हिं] उदासीन।

**उदासी** - 1. पु० [सं] विरक्त पुरुष, त्यागी, संन्यासी; नानकशाही साधुओं का एक भेद; 2. स्त्री० खिन्नता; दुख।

**उदासीन** - वि० [सं] विरक्त, झगड़े-बखेड़े से अलग, निष्पक्ष, तटस्थ; रूखा, उपेक्षायुक्त।

**उदासीनता** - स्त्री० [स] निरपेक्षता; उदासी, खिन्नता; विरक्ति, त्याग।

**उदाहरण** - पु० [सं] दृष्टांत, मिसाल, न्याय में तर्क के पाँच अवयवों में से तीसरा जिसमें साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है।

**उदित** - वि० [स] जो उदय हुआ हो, निकला हुआ; प्रकट, ज़ाहिर; प्रसन्न; कहा हुआ।

**उदीची** - स्त्री० [सं] उत्तर दिशा।

**उदीच्य** - 1. वि० [सं] उत्तर का रहनेवाला; उत्तर दिशा का; 2. पु० वैताली छंद का एक भेद।

**उदीयमान** - वि० [सं] जिसका उदय हो रहा हो; उठता या उमड़ता हुआ।

**उदुंबर** - पु० [सं] गूलर; देहरी, ड्योढ़ी; नपुंसक; एक प्रकार का कोढ़।

**उदूल** - पु० [अ] मार्गच्युत होना; विमुख होना; न मानना।

**उदूल-हुक्मी** - स्त्री० [फ़ा] आज्ञा न मानना, आज्ञा का उल्लंघन करना।

**उदेग** † - पु० [हिं] उद्वेग।

**उदोत** † - 1. पु० [हि] प्रकाश; 2. वि० प्रकाशित, दीप्त; शुभ, उत्तम।

**उदोती** - वि० [हि] प्रकाश करनेवाला।

**उद्** - उप० [सं] शब्दो के पहले लगकर ऊपर, उत्कर्ष, प्राबल्य, प्राधान्य, अभाव, प्रकट, दोष आदि विशेष अर्थ पैदा करनेवाला उपसर्ग; 'जैसे—उद्गमन, उद्बोधन' उद्वेग, उद्देश्य, उत्पथ, उच्चारण, उन्मार्ग आदि।

**उद्गत** - वि० [सं] निकला हुआ, उत्पन्न; प्रकट, ज़ाहिर; फैला हुआ, व्याप्त।

**उद्गम** - पु० [सं] उदय, आविर्भाव; उत्पत्तिस्थान; निकास, वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।

**उद्गमन** - पु० [सं] उदय, प्रगट होना।

**उद्गाता** - पु० [सं] यज्ञ में सामवेद के मंत्रो का गान करनेवाला, प्रधान ऋत्विज।

**उद्गार** - पु० [सं] उबाल, उफ़ान; वमन, कै; थूक; कफ; डकार; बाढ़; आधिक्य; घोर शब्द; किसीके विरुद्ध बहुत दिनो से मन में रखी हुई बात एकबारगी कहना।

**उद्‌गारी** - वि० [सं] उगलनेवाला; प्रकट करनेवाला।

**उद्‌गीति** - स्त्री० [सं] आर्या छंद का एक भेद।

**उद्‌गीथ** - पु० [सं] सामगान; प्रणव।

**उद्‌ग्रीव** - वि० [सं] उठी हुई गर्दनवाला; उत्सुक।

**उद्‌घाटन** - पु० [सं] खोलना, उघाड़ना; प्रकट या प्रकाशित करना।

**उद्‌घात** - पु० [सं] ठोकर; धक्का, आघात; आरंभ।

**उद्‌घातक** - वि० [सं] ठोकर लगानेवाला; आरम्भ करनेवाला।

**उद्‌घोष** - पु० [सं] घोषणा, मुनादी करना, ऊँची आवाज़ में कहना।

**उद्दंड** - वि० [सं] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भी भय न हो, अक्खड़, उद्धत।

**उद्दाम** - वि० [सं] बंधनरहित, निरंकुश; स्वतंत्र, महान; गंभीर।

**उद्दिष्ट** - वि० [सं] दिखाया हुआ, इंगित किया हुआ; लक्ष्य, अभिप्रेत।

**उद्दीपक** - वि० [सं] उत्तेजित करनेवाला, उभाड़नेवाला।

**उद्दीपन** - पु० [सं] उभाड़ना, बढ़ाना, जगाना; उद्दीपन या उत्तेजित करनेवाले पदार्थ; रसों को उद्दीप्त या उत्तेजित करनेवाले विभाव।

**उद्दीप्त** - वि० [सं] जिसका उद्दीपन हुआ हो, उभाड़ा बढ़ाया या जगाया हुआ, उत्तेजित।

**उद्देश** - पु० [सं] हेतु, कारण; अभिलाषा, चाह, मंशा; न्याय के पंच अवयवों में प्रथम।

**उद्देश्य** - 1. वि० [सं] लक्ष्य, इष्ट; 2. पु० जिसके संबंध में कुछ कहा जाय, विशेष्य, 'विधेय' का उलटा; मतलब, मंशा, अभिप्रेत अर्थ।

**उद्द्योत** † - 1. पु० [सं] प्रकाश; 2. वि० चमकीला; उदित, उत्पन्न।

**उद्धत** - 1. वि० [सं] उग्र, प्रचंड; अक्खड़, प्रगल्भ; 2. पु० चार मात्राओं का एक छंद।

**उद्धतपन** - पु० [सं] उजड्डपन; उग्रता।

**उद्धरण** - पु० [सं] किसी लेख का कुछ अंश; पठित विषय की बार-बार आवृत्ति; ऊपर उठना; मुक्त होने की क्रिया; उन्मूलन।

**उद्धरण - चिह्न** - पु० [सं] अवतरणचिह्न।

**उद्धव** - पु० [सं] यज्ञ की अग्नि; उत्सव; कृष्ण का एक सखा।

**उद्धार** - पु० [सं] मुक्ति, छुटकारा, निस्तार; सुधार; उन्नति; दुरुस्ती; कर्ज़ से छुटकारा।

**उद्धारना** - 1. स० [हिं] उद्धार करना, उबारना; 2. अ० बचना, छूटना।

**उद्‌धृत** - वि० [सं] अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ कुछ वाक्यांश; उगला हुआ; ऊपर उठाया हुआ।

**उद्‌ध्वस्त** - वि० [सं] टूटा-फूटा, ध्वस्त।

**उद्‌बुद्ध** - वि० [सं] विकसित, फूला हुआ; प्रबुद्ध; चैतन्य; जागा हुआ; जिसे ज्ञान हो गया हो।

**उद्‌बोध** - पु० [सं] थोड़ा ज्ञान।

**उद्‌बोधक** - वि० [सं] बोध करानेवाला, चेतानेवाला, प्रकाशित, प्रकट या सूचित करानेवाला; जगानेवाला; उत्तेजित करानेवाला।

**उद्‌बोधन** - पु० [सं] चेताना; जगाना; उत्तेजित करना।

**उद्भट** - वि० [सं] प्रबल, प्रचंड, श्रेष्ठ; उच्चाशय।

**उद्भव** - पु० [सं] उत्पत्ति, जन्म; वृद्धि, बढ़ती।

**उद्भावना** - स्त्री० [सं] कल्पना, मन की उपज , उत्पत्ति ।

**उद्भास** - पु० [सं] प्रकाश, दीप्ति, आभा; प्रतीति ।

**उद्भासित** - वि० [सं] उत्तेजित, उद्दीप्त ; प्रकाशित, विदित ।

**उद्भिज** } पु० [स] भूमि को फोड़कर
**उद्भिद** } निकलनेवाले वृक्ष, लता, गुल्म आदि वनस्पति ।

**उद्भूत** - वि० [सं] उत्पन्न ; यौ० —रूप - दृग्गोचर होने योग्य प्रत्यक्षरूप ।

**उद्भूति** - स्त्री० [सं] उत्पत्ति; उन्नति; विभूति ।

**उद्भेद** - पु० [सं] फोड़कर निकलना; प्रकाशन ; उद्घाटन ।

**उद्भेदन** - पु० [सं] तोड़ना, फोड़ना ; फोड़कर निकलना ।

**उद्भ्रम** - पु० [सं] ऊपर की ओर भ्रमण करना; बुद्धि का विनाश, विभ्रम; उद्वेग ; व्याकुलता ।

**उद्भ्रांत** - वि० [स] घूमता हुआ, चक्कर मारता हुआ, भूला-भटका हुआ ; चकित, भौचक्का; उन्मत्त, पागल; विकल, विह्वल ।

**उद्यत** - वि० [सं] तैयार, प्रस्तुत, मुस्तैद ; उठाया हुआ, ताना हुआ ।

**उद्यम** - पु० [सं] प्रयास, मेहनत ; काम-धंधा, रोज़गार ।

**उद्यमी** - वि० [सं] उद्यम करनेवाला, उद्योगी, प्रयत्नशील ।

**उद्यान** - पु० [स] बग़ीचा, बाग़ ।

**उद्यापन** - पु० [स] धर्म कर्म और व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य ।

**उद्युक्त** - वि० [सं] उद्योग में रत, तत्पर ।

**उद्योग** - पु० [सं] प्रयत्न, कोशिश, मेहनत ; उद्यम ; काम-धंधा ।

**उद्योगी** - वि० [स] उद्योग करनेवाला, मेहनती ।

**उद्योत** - पु० [सं] प्रकाश, उजाला ; चमक, झलक, आभा ।

**उद्रेक** - पु० [स] वृद्धि, बढ़ती, अधिकता, ज़्यादती ।

**उद्वर्तन** - पु० [सं] शरीर पर तेल चंदन या उबटन आदि मलना ; उबटन ।

**उद्विग्न** - वि० [स] उद्वेगयुक्त, आकुल, घबराया हुआ, व्यग्र ।

**उद्विग्नता** - स्त्री० [स] आकुलता, घबराहट, व्यग्रता ।

**उद्वेग** - पु० [सं] चित्त की आकुलता, घबराहट ; मनोवेग, आवेश, जोश ।

**उद्वेल** - पु० [सं] किसी चीज़ में भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना ; छलकना, छलछलाना ।

**उद्वेलित** - वि० [स] सीमा के बाहर फैलता हुआ ; छलकता या छलछलाता हुआ ।

**उधड़ना** - अ० [हिं] खुलना, उखड़ना, सिला जमा या लगा न रहना ; उजड़ना ।

**उधम** - पु० [हिं] ऊधम, उपद्रव, शरारत ।

**उधर** - क्रि० [हिं] उस ओर, उस तरफ़, दूसरी तरफ़ ।

**उधरना** - अ० [हिं] युक्त होना ; उधड़ना ।

**उधराना** - स० [हिं] हवा के कारण छितराना, तितर-बितर होना ; ऊधम मचाना ।

**उधार** - पु० [हिं] कर्ज़, ऋण । **मु०** —खाये बैठना - किसी बड़े आश्रय पर दिन काटते रहना ; हर समय तैयार रहना ; मंगनी ।

**उधारक** }
**उधारन** } वि० [हिं] उद्धार करनेवाला।

**उधारना** - स० [हि] उद्धार करना, मुक्त करना।

**उधारी** - वि० [हि] उद्धार करनेवाला।

**उधेड** - स्त्री० [हि] उधेड़ने की क्रिया या भाव।

**उधेड़ना** - स० [हि] मिली हुई पर्त को अलग-अलग करना , उचाड़ना ; टाँका खोलना, . सिलाई खोलना ; छितराना, बिखराना।

**उधेड़बुन** - स्त्री० [हि] सोच-विचार ; ऊहापोह।

**उन** - सर्व० [हि] उस का बहु०।

**उनका** - 1. पु० [अ० उन्क़ा] एक कल्पित पक्षी जिसे आज तक किसीने नहीं देखा है ; 2. वि० अप्राप्य, दुष्प्राप्य।

**उनचन** - स्त्री० [देश] चारपाई के पायताने की खाली जगह की रस्सी जो बुनावट को कड़ी रखने के लिए खींचा जाता है।

**उनचास** - वि० [हि] चालीस और नौ।

**उनत** - वि० [हिं] झुका हुआ।

**उनतीस** - वि० [हि] एक कम तीस, बीस और नौ।

**उनमत्त** - वि० [हि] मद से भरा हुआ।

**उनमद** - वि० [हि] उन्मत्त।

**उनमना** - वि० [हि] अनमना।

**उनमाथना** - स० [हि] मथना, विलोड़न करना।

**उनमाथी** † - वि० [हिं] मथनेवाला, विलोड़न करनेवाला।

**उनमाद** - पु० [हि] मद ; पागलपन।

**उनमान** † - 1. पु० [हिं] परिमाण ; नाप, तौल , थाह ; शक्ति ; 2. वि० तुल्य, समान।

**उनमानना** - स० [हि] अनुमान करना, ख़याल करना।

**उनमुना** † - वि० [हि] मौन, चुपचाप।

**उनमूलन** - पु० [सं] उखाड़ने का काम।

**उनमूलना** - स० [हिं] उखाड़ना।

**उनमेख** - पु० [हि] आँख का खुलना ; फूल का खिलना ; प्रकाश।

**उनमेखना** - अ० [हि] आँख का खुलना, उन्मीलित होना ; विकसित होना।

**उनमेद** - पु० [देश] प्रथम वर्षा से उत्पन्न विषैला फेन, माँजा।

**उनवर** - वि० [स] कम, न्यून।

**उनसठ** - वि० [हि] पचास और नौ।

**उनहत्तर** - वि० [हि] साठ और नौ।

**उनहानि** † - स्त्री० [हिं] समता, बराबरी।

**उनहार** † - वि० [हि] सदृश, समान।

**उनहारि** † - स्त्री० [हिं] समानता, सादृश्य, एकरूपता।

**उनाना** † - 1. स० [हि] झुकाना ; लगाना, प्रवृत्त करना ; 2. अ० आज्ञा मानना ; खेत को जोतकर बोने योग्य तैयार करना।

**उनारना** - स० [हिं] उठाना ; बढ़ाना।

**उनींदा** - वि० [हिं] बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ, नीद से भरा हुआ, ऊँघता हुआ।

**उन्नइस** - वि० [हिं] उन्नीस।

**उन्नत** - वि० [सं] ऊँचा, ऊपर उठा हुआ ; बढ़ा हुआ, समृद्ध ; श्रेष्ठ।

**उन्नति** - स्त्री० [सं] वृद्धि, तरक़्क़ी , ऊँचाई, चढ़ाव।

**उन्नतोदर** - पु० [सं] चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल ; ऊपर को उठा हुआ।

**उन्नयन** - वि० [सं] जिसकी आँखे ऊपर को उठी हो , उठना, उठाना ; उन्नति की ओर ले जाना ; निकालना ; परिणाम, निष्कर्ष।

**उन्नाब** - पु० [अ] एक प्रकार का बेर जो हकीमी नुसखो में पड़ता है ।

**उन्नाबी** - वि० [अ] उन्नाब के रंग का, कालापन लिये हुए लाल ।

**उन्नायक** - वि० [स] ऊँचा करनेवाला, उन्नत करनेवाला ; बढ़ानेवाला ।

**उन्नासी** - वि० [हिं] सत्तर और नौ, एक कम अस्सी ।

**उन्निद्र** - वि० [सं] निद्रारहित, जिसे नींद न आयी हो ; विकसित, खिला हुआ ।

**उन्नीस** - वि० [हि] एक कम बीस, दस और नौ । मु०—विस्वे - अधिकतर, अधिकांश, प्रायः ; —होना - मात्रा में कुछ कम होना, थोड़ा घटना ; —बीस होना—एक वस्तु का दूसरी से कुछ अच्छा या बड़ा होना ।

**उन्मत्त** - वि० [सं] मतवाला, मदांध ; जो आपे में न हो, बेसुध ; पागल ।

**उन्मत्तता** - स्त्री० [सं] मतवालापन, पागलपन ।

**उन्मद** - पु० [सं] उन्मत्त, प्रमत्त ; पागल ।

**उन्मन** - वि० [सं] जिसमें उद्वेग या व्याकुलता हो ; अन्यमनस्क ।

**उन्मना** - वि० [सं] चिंतित ; चंचल ; अनमना ।

**उन्मनी** - स्त्री० [सं] हठयोग में नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना ।

**उन्माद** - पु० [सं] पागलपन, विक्षिप्तता ।

**उन्मादक** - वि० [सं] पागल करनेवाला ; नशीला ।

**उन्मादन** - पु० [सं] उन्माद ।

**उन्मादी** - वि० [सं] उन्मत्त, पागल ।

**उन्मार्ग** - पु० [सं] कुमार्ग, बुरा रास्ता ; बुरा ढंग ।

**उन्मिषित** - वि० [स] प्रफुल्ल ।

**उन्मीलक** - वि० [सं] खिलनेवाला ।

**उन्मीलन** - पु० [सं] खुलना; विकसित होना, खिलना ।

**उन्मीलना** - स० [हिं] खोलना ।

**उन्मीलित** - वि० [सं] खुला हुआ, खिला हुआ ।

**उन्मुक्त** - वि० [स] छूटा हुआ ; खुला हुआ ; उदार ।

**उन्मुख** - वि० [सं] ऊपर मुँह किये हुए, उत्सुक ; उद्यत, तैयार ।

**उन्मूलक** - वि० [सं] समूल नष्ट करनेवाला, बर्बाद करनेवाला ।

**उन्मूलन** - पु० [स] जड़ से उखाड़ना, समूल नष्ट करना ।

**उन्मूलनीय** - वि० [सं] उखाड़ने योग्य ।

**उन्मूलित** - वि० [सं] समूल उखाड़ा हुआ ।

**उन्मेष** - पु० [स] आँख का खुलना ; खिलना ; थोड़ा प्रकाश ।

**उन्मोचन** - पु० [सं] त्याग करना ।

**उन्वान** - पु० [अ] सिरनामा , भूमिका ; तर्ज ।

**उन्स** - पु० [अ] मुहब्बत, प्रेम ।

**उन्सर** - पु० [अ] मूल-तत्त्व ।

**उन्सरी** - वि० [अ] मूल-तत्त्वसंबन्धी ।

**उन्सियत** - पु० [अ] प्रेम ।

**उन्हानि** - स्त्री० [हिं] बराबरी ।

**उन्हारि** - स्त्री० [हि] रूप, शक्ल ।

**उपंग** पु० [हि] जलतरंग ।

**उप** - उप० [सं] समीपता, सामर्थ्य, गौणता या न्यूनता तथा व्याप्तिसूचक एक उपसर्ग । जैसे—उपकूल, उपकार, उपमंत्री, उपकीर्ण ।

**उपकंठ** - वि० [सं] समीप, पास ।

**उपकरण** - पु० [सं] सामग्री ; राजाओ के लिए छत्र चँवर आदि राज-चिह्न ।

**उपकर्ता** - पु० [सं] उपकार करनेवाला ।

**उपकार** - पु० [सं] भलाई, नेकी ; लाभ, फ़ायदा ।

**उपकारक** - वि० [सं] उपकार करनेवाला, भलाई करनेवाला।

**उपकारिका** - 1. वि० [सं] उपकार करनेवाली। 2. स्त्री० राजभवन ; तंबू।

**उपकारिता** - स्त्री० [सं] भलाई।

**उपकारी** - वि० [सं] उपकार करनेवाला।

**उपकार्य** - वि० [सं] उपकार किये जाने योग्य।

**उपकार्या** - 1. स्त्री० [सं] राजभवन ; तंबू ; मुसाफ़िरखाना ; समाधिस्थान ; 2. वि० उपकार करने योग्य स्त्री।

**उपकूल** - पु० [सं] किनारा, किनारे पर।

**उपकृत** - वि० [सं] जिसका उपकार किया गया हो ; कृतज्ञ।

**उपकृति** - स्त्री० [सं] उपकार, भलाई।

**उपक्रम** - पु० [सं] कार्यारंभ की पहली अवस्था, अनुष्ठान ; उठान ; तैयारी ; भूमिका।

**उपक्रमणिका** - स्त्री० [सं] पुस्तक की विषय-सूची।

**उपक्रांत** - वि० [सं] प्रस्तुत, आरंभ किया हुआ।

**उपक्रिया** - स्त्री० [सं] उपकार।

**उपक्रोश** - पु० [स] निंदा ; भर्त्सना।

**उपक्षेप** - पु० [सं] अभिनय के आरंभ में नाटक के वृत्तांत का संक्षेप में सारांश-कथन ; आक्षेप।

**उपखान** † - पु० [हिं] उपाख्यान, छोटी कहानी।

**उपगत** - वि० [सं] प्राप्त ; स्वीकृत ; ज्ञात, जाना हुआ।

**उपगति** - स्त्री० [सं] प्राप्ति ; स्वीकृति।

**उपगमन** - पु० [स] ज्ञान।

**उपगीति** - स्त्री० [स] आर्या छंद का एक भेद।

**उपग्रह** - पु० [सं] गिरफ़्तारी, क़ैद ; क़ैदी ; बड़े ग्रह की परिक्रमा करनेवाला छोटा ग्रह ; राहु और केतु।

**उपघात** - पु० [स] नाश करने की क्रिया ; इंद्रियो का अपने-अपने काम में असमर्थ होना ; अशक्ति ; रोग, व्याधि।

**उपचय** - पु० [सं] वृद्धि, बढ़ती ; संचय, जमा करना।

**उपचर्या** - स्त्री० [सं] सेवा-शुश्रूषा ; चिकित्सा, इलाज।

**उपचार** - पु० [सं] प्रयोग ; चिकित्सा ; सेवा ; धर्मानुष्ठान ; पूजन के अंग या विधान (षोडशोपचार—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध-पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा, वंदना) ; ख़ुशामद।

**उपचारक** - वि० [सं] उपचार या सेवा करनेवाला ; विधान करनेवाला ; चिकित्सा करनेवाला।

**उपचारछल** - पु० [सं] वादी के अभिप्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।

**उपचारना** - स० [हिं] व्यवहार में लाना ; विधान करना।

**उपचारी** - वि० [स] उपचार करनेवाला।

**उपचित्र** - पु० [सं] एक वर्णार्द्धसमवृत्त।

**उपचित्रा** - स्त्री० [सं] सोलह मात्राओं का एक छंद।

**उपज** - स्त्री० [हिं] पैदावार, उत्पत्ति, उद्भव ; नयी उक्ति ; सूझ ; मन-गढ़ंत बात।

**उपजना** - अ० [हिं] उत्पन्न होना, उगना।

**उपजाऊ** - वि० [हिं] जिसमें अच्छी उपज हो, उर्वर।

**उपजाति** - स्त्री० [सं] किसी जाति के अन्तर्गत एक छोटी शाखा ; एक वर्णवृत्त।

**उपजाना** - स० [हिं] उत्पन्न करना, पैदा करना।

**उपजीवन** - पु० [सं] जीविका, रोज़ी।

**उपजीवी** - वि० [सं] दूसरे के सहारे पर गुज़र करनेवाला।

**उपटन** - पु० [हिं] दबाने या मारने आदि से पड़े हुए चिह्न या निशान; उबटन, बटना।

**उपटना** - अ० [हिं] निशान पड़ना; उखड़ना।

**उपटाना** - स० [हि] उबटन लगवाना; उखड़वाना।

**उपटारना** - स० [हिं] उच्चाटन करना; हटाना; उठाना।

**उपड़ना** - अ० [देश] उखड़ना; दाग़ या निशान पड़ना, उपटना।

**उपत्यका** - स्त्री० [सं] पर्वत के पास की भूमि, घाटी, तराई।

**उपदंश** - पु० [सं] गरमी, आतशक।

**उपदिशा** - स्त्री० [सं] दो दिशाओं के बीच की दिशा, अंतर दिशा।

**उपदिष्ट** - वि० [सं] जिसे उपदेश दिया गया हो।

**उपदेश** - पु० [सं] शिक्षा, सीख, नसीहत; दीक्षा, गुरुमंत्र।

**उपदेशक** - पु० [सं] उपदेश करनेवाला, शिक्षा देनेवाला।

**उपदेष्टा** - पु० [स] उपदेशक, शिक्षक।

**उपदेस** - पु० [हि] उपदेश।

**उपदेसना** - स० [हिं] उपदेश करना।

**उपद्रव** - 1. पु० [सं] उत्पात, हलचल, विप्लव; ऊधम; दंगा-फ़साद; किसी प्रधान रोग के बीच होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ; 2. [त] तंग करना, कष्ट देना; 3. [ते] तंग करना, ऊधम मचाना; 4. [क] गड़बड़; 5. [म] तंग करना।

**उपद्रवी** - वि० [सं] उपद्रव या ऊधम मचानेवाला; नटखट।

**उपधरना** † - स० [अव] सहारा देना; अपनाना।

**उपधा** - स्त्री० [सं] छल, कपट, दग़ा, फ़रेब; ईमानदारी की परीक्षा।

**उपधातु** - स्त्री० [सं] अप्रधान धातु जो या तो लोहे, तांबे आदि धातुओं के योग से बनती है या खानों से निकलती है; जैसे, सिलाजीत, सोनामाखी, तूतिया आदि।

**उपधान** - पु० [स] ऊपर रखना या ठहराना; सहारे की चीज़; तकिया; विशेषता।

**उपधानी** - स्त्री० [स] तकिया; पैर रखने की छोटी चौकी।

**उपनना** † - अ० [अव] पैदा होना; जैसे, 'तन तन बिरहन उपनै सोई'—जायसी।

**उपनय** - पु० [सं] समीप ले जाना; बालक को गुरु के पास ले जाना; न्यायशास्त्र के अनुसार वाक्य के पांच अवयवों में से चौथा।

**उपनयन** - पु० [सं] यज्ञोपवीत संस्कार।

**उपना** † - अ० [अव] उत्पन्न होना।

**उपनागरिका** - स्त्री० [स] अलंकार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद जिसमें कर्ण-मधुर शब्द होते हैं।

**उपनाना** † - स० [अव] पैदा करना।

**उपनाम** - पु० [सं] दूसरा नाम, प्रचलित नाम; पदवी; तख़ल्लुस।

**उपनायक** - पु० [सं] नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी।

**उपनाह** - पु० [सं] गठरी; वीणा या सितार की खूँटी; मरहम; बिलनी।

**उपनिधि** - स्त्री० [सं] धरोहर, अमानत।

**उपनियम** - पु० [सं] गौण नियम।

**उपनिविष्ट** - वि० [सं] दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

**उपनिवेश** - पु० [सं] दूसरी जगह से आये हुए लोगों की बस्ती, कॉलनी, विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्र के लोग आकर बस गये हों।

**उपनिष्क्रमण** - पु० [सं] बाहर निकलना; राजमार्ग।

**उपनीत** वि० - [सं] जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो; पास लाया हुआ; पास बैठा हुआ।

**उपनेता** - पु० [सं] पास ले जानेवाला; उपनयन करानेवाला गुरु; नेता का सहकारी।

**उपन्यास** - 1. पु० [सं] वाक्य का उपक्रम; कल्पित आख्यायिका, लम्बी कथा, नावेल; 2. [क. ते. त.] व्याख्यान; 3. [म] निबन्ध।

**उपपति** - पु० [सं] वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्यार करे, यार।

**उपपत्ति** - स्त्री० [सं] उपयुक्तता; सिद्धि; समाधि; साधन।

**उपपन्न** - वि० [सं] सिद्ध किया हुआ; संभव; प्राप्त; युक्त, योग्य; निरोग किया हुआ; युक्तियुक्त।

**उपपादन** - पु० [हिं] सिद्ध करना, साबित करना।

**उपबर्हण** - पु० [सं] तकिया; दबाना।

**उपबृंहण** - पु० [सं] बढ़ाना, सशक्त करना।

**उपभुक्त** - वि० [सं] जूठा, उच्छिष्ट; काम में लाया हुआ।

**उपभोक्ता** - वि० [सं] उपभोग करनेवाला।

**उपभोग** - पु० [सं] किसी वस्तु के व्यवहार का सुख; मज़ा; काम में लाना, बरतना; सुख की सामग्री।

**उपमंत्री** - 1 पु० [स] वह मंत्री जो प्रधान मंत्री का सहायक हो; 2. वि० आमंत्रण या अनुरोध करनेवाला।

**उपमर्द** }
**उपमर्दन** } - पु० [सं] दबाना या रौंदना; खंडन; नाश; निंदा; उपेक्षा और तिरस्कार करना।

**उपमा** - स्त्री० [सं] तुलना, समता, मिलान; एक अर्थालंकार।

**उपमाता** - स्त्री० [सं] दूध पिलानेवाली दाई।

**उपमान** - पु० [स] वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय; न्याय के चार प्रमाणों में से एक; किसी प्रसिद्ध पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन।

**उपमिति** - स्त्री० [सं] उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान।

**उपमेय** - वि० [सं] जिसकी उपमा दी जाय, वर्ण्य, वर्णनीय।

**उपमेयोपमा** - स्त्री० [सं] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय हो।

**उपयुक्त** - वि० [सं] योग्य, उचित, वाजिब, मुनासिब।

**उपयुक्तता** - स्त्री० [सं] यथार्थता, औचित्य।

**उपयोग** - पु० [सं] इस्तेमाल; फ़ायदा, लाभ; प्रयोजन।

**उपयोगिता** - स्त्री० [सं] काम में आने की योग्यता।

**उपयोगी** - वि० [सं] काम में आनेवाला; लाभकारी; अनुकूल, मुवाफ़िक।

**उपरक्त** - वि० [सं] विषयासक्त; पीड़ित।

**उपरक्ष** - पु० [सं] अंगरक्षक, बाडीगार्ड।

**उपरत** - वि० [स] विरक्त, उदासीन; मरा हुआ।

**उपरति** - पु० [सं] विरति, त्याग; उदासीनता; मृत्यु।

**उपरत्न** - पु० [स] घटिया रत्न।

**उपरना** - 1. पु० [हि] दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय, 2. अ० उखड़ना।

**उपरस** - पु० [सं] वैद्यशास्त्र में पारे के-से गुणवाले गंधक जैसे पदार्थ।

**उपरांत** - क्रि० [सं] अनन्तर, बाद।

**उपराग** - पु० [सं] रंग; किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास; विषय में अनुरक्ति; वासना; चंद्र या सूर्य ग्रहण।

**उपरा-चढ़ी** - स्त्री० [हि] चढ़ा-ऊपरी, प्रतिद्वंद्विता, स्पर्द्धा।

**उपराज** - पु० [सं] राजप्रतिनिधि, वाइसराय, गवर्नर-जनरल।

**उपराजना**† - स० [हिं] उत्पन्न करना, पैदा करना; बनाना; कमाना।

**उपराना**† - अ० [हिं] ऊपर आना, प्रकट होना, उतराना।

**उपराला**† - पु० [देश] सहायता; बचाव।

**उपरावटा** - वि० [हिं] जो गर्व से सिर ऊँचा किये हुए हो।

**उपराहना** - अ० [देश] प्रशंसा करना।

**उपराहीं** † - 1. अव्य० [देश] ऊपर; 2. वि० बढ़कर।

**उपरि** - क्रि० [सं] ऊपर; उपरात; चढ़ा-ऊपरी।

**उपरी-उपरा** - पु० [देश] प्रतिद्वंद्विता; चढ़ा-ऊपरी।

**उपरुद्ध** - वि० [स] घेरा हुआ; रोका हुआ, क़ैद किया हुआ; परेशान किया हुआ।

**उपरैना**† - पु० [देश] उपरना।

**उपरैनी** - स्त्री० [देश] ओढ़नी।

**उपरोक्त** - वि० [स] ऊपर कहा हुआ, पहले कहा हुआ।

**उपरोध** - पु० [सं] घेरना; परेशान करना; बाँधना; रुकावट; ढकना; रक्षा; कलह।

**उपरोधक** - 1 वि० [सं] रोकने या बाधा डालनेवाला; 2. पु० भीतर की कोठरी।

**उपरौटा** - पु० [देश] ऊपर का पल्ला।

**उपरौना**† - पु० [देश] उपरना।

**उपर्युक्त** - वि० [सं] ऊपर कहा हुआ।

**उपलंभ** - पु० [सं] लाभ; ज्ञान; अनुभव।

**उपल** - पु० [सं] पत्थर; ओला; रत्न; मेघ, बादल।

**उपलक्षक** - वि० [सं] अनुमान करनेवाला, ताड़नेवाला।

**उपलक्षण** - पु० [सं] बोध करानेवाला, चिह्न, संकेत।

**उपलक्ष्य** - पु० [सं] वह लक्ष्य जो गौण हो; संकेत, चिह्न; दृष्टि, उद्देश्य; यौ०— उपलक्ष्य में - दृष्टि से; निमित्त से; विचार से; बदले में।

**उपलब्ध** - वि० [सं] पाया हुआ, प्राप्त; जाना हुआ।

**उपलब्धि** - स्त्री० [सं] प्राप्ति; बुद्धि, ज्ञान।

**उपलभ्य** - वि० [सं] मिलने योग्य; सम्मान्य।

**उपला** - पु० [हिं] गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा, कंडा, गोहरा।

**उपली** - स्त्री० [हिं] उपला।

**उपलेप** - पु० [सं] लेप लगाना; लीपना; वह वस्तु जिससे लेप किया जाता है।

**उपल्ला** - पु० [देश] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त या तह, भितल्ला का उलटा।

**उपवक्ता** - पु० [सं] प्रेरणा देनेवाला; यज्ञ का एक ऋत्विक।

**उपवट** - पु० [सं] चिरौजी का पेड़।

**उपवन** - पु० [सं] बाग़, फुलवारी।

**उपवना** † - अ० [हिं] ग़ायब होना; उदय होना; जैसे, 'देखत चुरै कपूर ज्यों, उपै जाय जनि लाल।'

**उपवसथ** - पु० [सं] गाँव, बस्ती; यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का विधान है।

**उपवास** - पु० [सं] वह व्रत जिसमें भोजन छोड़ दिया जाता है ; भोजन का छूटना, फ़ाक़ा ।

**उपवासी** - वि० [सं] उपवास करनेवाला ।

**उपविष** - पु० [स] हलका विष, कम तेज़ ज़हर, अफ़ीम या धतूरा आदि ।

**उपविष्ट** - वि० [स] बैठा हुआ ।

**उपवीत** - पु० [सं] जनेऊ, यज्ञसूत्र ; उपनयन ।

**उपवेद** - पु० [सं] वे विद्याएँ जो वेद से निकली हुई कही जाती हैं ; जैसे, 'धनुर्वेद', 'आयुर्वेद' आदि ।

**उपवेशन** - पु० [सं] बैठना, जमना ।

**उपशम** - पु० [सं] इन्द्रियनिग्रह, निवृत्ति, शांति ; उपाय ; विश्रांति ।

**उपशमन** - पु० [सं] शांत करना, निवारण ।

**उपशल्य** - पु० [सं] भाला ; गाँव या नगर का सिवाना ; डाँड़ा ; पहाड़ के पास की ज़मीन ।

**उपशाल** - स्त्री० [सं] मकान के पास उठने-बैठने के लिए बना हुआ दालान ।

**उपशोषण** - पु० [सं] सूखना ; सुखाना ।

**उपश्रुत** - वि० [स] सुना हुआ ; स्वीकृत ; प्रतिज्ञात ।

**उपश्रुति** - स्त्री० [स] सुनना ; सुनाई देने की सीमा ; भविष्य सूचक देववाणी ; भविष्य-कथन ।

**उपसंपदा** - स्त्री० [सं] बौद्ध भिक्षु की दीक्षा ।

**उपसंपादक** - पु० [सं] सहायक संपादक, सब-एडीटर ।

**उपसंवाद** - पु० [स] समझौता, एकमत होना ।

**उपसंहार** - पु० [स] हरण, परिहार ; समाप्ति, ख़ातमा, निराकरण ; किसी पुस्तक के अंत का अध्याय, सारांश ।

**उपसंहित** - वि० [सं] संबद्ध ।

**उपसत्ति** - स्त्री० [सं] सेवा-टहल ; पूजा ; दान ।

**उपसद** - 1. वि० [सं] पास जानेवाला ; 2. पु० पास जाना ; दान ।

**उपसदन** - पु० [सं] शिष्यत्व स्वीकार करना ; पड़ौस ।

**उपसना** - अ० [हिं] सड़ना, दुर्गंधित होना ; खुलना, जैसे, उबका (फंदा) उपस गया ।

**उपसमिति** - स्त्री [सं] कार्य विशेष के लिए बनी छोटी समिति, सब-कमिटी ।

**उपसर्ग** - पु० [सं] वह अव्यय जो धातु या धातु से बनी संज्ञा के पहले लगकर अर्थ बदल देता है ; जैसे, 'प्र, परा, अप, सम' आदि ; भौतिक या दैवी उपद्रव ; प्रेतबाधा ; अपशकुन ।

**उपसर्जन** - पु० [सं] उड़ेलना ; त्याग ।

**उपसागर** - पु० [सं] छोटा समुद्र, समुद्र का एक भाग, चौड़े मुँह की खाड़ी ।

**उपसादन** - पु० [सं] सम्मान करना ; ऊपर रखना ।

**उपसाना** - स० [देश] बासी करना, सड़ाना ।

**उपसीर** - पु० [सं] हल ।

**उपसेचन** - पु० [सं] सींचना या भिगोना, पानी छिड़कना ।

**उपस्थान** - पु० [स] पास आना ; खड़े होकर स्तुति करना ; पूजा का स्थान ; सभा, समाज ।

**उपस्थित** - वि० [स] मौजूद, हाज़िर ।

**उपस्थिति** - स्त्री० [सं] विद्यमानता, मौजूदगी, हाज़िरी ।

**उपहत** - वि० [सं] चोट खाया हुआ ; नष्ट, बरबाद किया हुआ ; बिगाड़ा हुआ ; दूषित ।

**उपहार** - पु० [सं] भेट, नज़र, नज़राना ।

**उपहास** - पु० [सं] हँसी, दिल्लगी ; निंदा, बुराई ।

**उपहासास्पद** - वि० [सं] हँसी उड़ाने लायक़; निंदनीय, बुरा।
**उपहासी** - स्त्री० [हिं] हँसी-ठट्ठा; निंदा।
**उपहास्य** - वि० [सं] उपहास के योग्य, हँसी के योग्य।
**उपही†** - पु० [देश] अपरिचित, बाहरी या विदेशी आदमी, अजनबी।
**उपांग** - पु० [सं] अंग का एक भाग, अवयव; तिलक, टीका; वह वस्तु जिससे किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति हो।
**उपांत** - पु० [सं] अंत के समीप का भाग; आस-पास का हिस्सा, छोटा किनारा।
**उपांत्य** - वि० [सं] अंतवाले के समीपवाला, आख़िरी से पहला।
**उपाकर्म** - पु० [सं] विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन करना, श्रावणी के समय यज्ञोपवीत संस्कार।
**उपाख्यान** - पु० [सं] पुराना वृत्तांत; किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा।
**उपादान** - पु० [सं] प्राप्ति; ग्रहण, स्वीकार; ज्ञान, बोध; विषयों से इंद्रियों की निवृत्ति; वह कारण जो स्वयं कार्यरूप में परिणत हो जाय; किसी वस्तु के तैयार होने की सामग्री, समवायि कारण।
**उपादेय** - वि० [सं] ग्रहण करने योग्य, उत्तम, श्रेष्ठ।
**उपाधि** - स्त्री० [सं] और वस्तु को और बतलाने का छल-कपट; वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखायी दे; उपद्रव; उत्पात; कर्तव्य का विचार; धर्मचिंता; ख़िताब।
**उपाधिधारी** - पु० [सं] वह जिसे कोई ख़िताब मिला हो।
**उपाध्याय** - पु० [सं] वेद-वेदांग पढ़ानेवाला; अध्यापक, शिक्षक, गुरु।
**उपानह** - पु० [सं] जूता, पनही।
**उपाना†** - [सं] [हिं] उत्पन्न करना।
**उपाय** - पु० [सं] साधन; युक्ति, तदबीर; पास पहुँचना, निकट आना।
**उपायन** - पु० [सं] भेंट, उपहार, सौग़ात।
**उपार्जन** - पु० [सं] कमाना; पैदा करना; प्राप्त करना।
**उपार्जित** - वि० [सं] कमाया हुआ; प्राप्त किया हुआ; संगृहीत।
**उपालंभ** - पु० [सं] उलाहना, शिकायत; निंदा।
**उपालंभन** - पु० [सं] उलाहना देना, निंदा करना।
**उपाव** - पु० [हिं] उपाय।
**उपास†** - पु० [हिं] उपवास।
**उपासक** - पु० [सं] पूजा या आराधना करनेवाला, भक्त।
**उपासना** - स्त्री० [सं] आराधना, पूजा।
**उपासनीय** - वि० [सं] पूजा करने योग्य, आराधनीय।
**उपासी†** - वि० [हिं] उपासक, सेवक।
**उपास्य** - वि० [सं] पूजा के योग्य, आराध्य।
**उपेंद्र** - पु० [सं] इंद्र के छोटे भाई; वामन या विष्णु।
**उपेंद्रवज्रा** - स्त्री० [सं] ग्यारह वर्णों का एक वृत्त।
**उपेक्षणीय**, **उपेक्ष्य** } वि० [सं] उपेक्षा के योग्य।
**उपैना†** - वि० [ब्र] खुला हुआ, नंगा।
**उपोद्घात** - पु० [सं] प्रस्तावना, भूमिका; सामान्य कथन से भिन्न विशेष वस्तु के विषय में कथन।
**उपोषण** - पु० [सं] उपवास, निराहार व्रत।
**उपोसथ** - पु० [हिं] निराहार व्रत, (जैन, बौद्धों का।)
**उफ़** - अव्य० [अ] आह, ओह, अफ़सोस।

**उफड़ना** - अ० [देश] उफनना ।

**उफ़ताद** - स्त्री० [अ] घटना ; संयोग ; आरंभ ; पीड़ा ।

**उफ़तादा** - वि० [अ] गिरा हुआ ; परती ज़मीन ।

**उफनना** - अ० [हिं] उबल उठना, जोश खाना ; उमड़ना ।

**उफनाना** - अ० [हि] उबलना ; उमड़ना ।

**उफान** - स्त्री० [हिं] उबाल ; जोश ।

**उफाल** - स्त्री० [देश] लंबा डग ।

**उफ़ुक़** - पु० [अ] आसमान का किनारा, क्षितिज ।

**उफ़ताँ व ख़ेज़ाँ** - क्रि० [फ़ा] बहुत कठिनता से उठते-बैठते हुए, गिरते-पड़ते ।

**उफ़्तादा** - वि० [अ] उफ़तादा, परती ज़मीन ।

**उबकना** - अ० [देश] कै करना ।

**उबका** - पु० [देश] डोरी का वह फंदा जिसमें गगरी या लोटे का गला फँसाकर कुएँ से पानी निकालते हैं, अरिवन ।

**उबकाई** - स्त्री० [देश] मतली, जी मिचलाना ।

**उबट** † - पु० [हिं] विकट मार्ग ।

**उबटन** - पु० [हि] शरीर पर मलने के लिए सरसो, तिल, चिरौंजी आदि का लेप, अभ्यंग ।

**उबटना** - अ० [हिं] उबटन लगाना, उबटन मलना ।

**उबना** † - अ० [देश] ऊबना; ऊपर उठना ।

**उबरना** - अ० [हि] छूटना ; शेष रहना, बाक़ी रहना ।

**उबलना** - अ० [हिं] उफनना ; उमड़ना, वेग से निकलना ।

**उबहन** † - स्त्री० [देश] कुएँ से पानी निकालने की डोरी या रस्सी ।

**उबहना** † - 1. स० [हिं] हथियार खींचना, शस्त्र उठाना ; पानी फेकना, उलीचना ; ऊपर की ओर उठना, उभरना ; जोतना; 2. अ० उभरना, 3. वि० बिना जूते का ।

**उबहनी** † - स्त्री० [देश] (पानी भरने की) रस्सी ।

**उबाना** - 1. स० [देश] परेशान करना ; 2. पु० कपड़ा बुनते समय राछ के बाहर रह जानेवाला सूत ; 3. वि. नंगे पाँव ।

**उबार** - पु० [हिं] छुटकारा, उद्धार ; ओहार, परदा ।

**उबारना** - स० [हिं] छुड़ाना, मुक्त करना ।

**उबाल** - पु० [हिं] उफान ; जोश, उद्वेग, क्षोभ ।

**उबालना** - स० [हि] खौलाना ।

**उबासी** - स्त्री० [हिं] जंभाई ।

**उबाहना** - स० [हिं] अस्त्र खींचना ; जल फेंकना ; खेत को जोतना ।

**उबिठना** } **उबीठना** } 1. स० [हिं] अरुचि पैदा करना, उबाना; 2 अ० ऊबना ; घबराना ।

**उबीधना** † - अ० [हिं] फँसना, उलझना ; धँसना, चुभना, गड़ना ।

**उबीधा** - वि० [हिं] धँसा हुआ, गड़ा हुआ ; फँसा हुआ ; कँटीला ; गड़नेवाला ।

**उबेना** † - वि० [देश] नंगे पैर, बिना जूते का ।

**उबेरना** - स० [हि] उबारना ।

**उबूर** - पु० [अ] किसी रास्ते से होकर जाना ; नदी या समुद्र आदि को पार करना ।

**उभड़ना** - अ० [देश] उकसना ; फूलना ; ऊपर निकलना, उठना ; उत्पन्न होना, पैदा होना ; खुलना ; प्रकाशित होना ; बढ़ना ; जवानी पर आना ।

**उभना** † - अ० [देश] उठना ; उभड़ना ।

**उभय** - वि० [सं] दोनो ।

**उभयतः** - क्रि० [सं] दोनो ओर से ।

**उभरना** - अ० [हिं] उभड़ना ।

**उभरौंहा** - वि० [हि] उभार पर आया हुआ, उभड़ा हुआ ।

**उभाड़** - पु० [हि] उठान, ऊँचाई ; ओज , वृद्धि ।

**उभाड़ना** - स० [हिं] उकसाना, उत्तेजित करना; बहकाना ।

**उभार** - पु० [हिं] उभाड़ ।

**उभिटना** † - अ० [देश] ठिठकना, हिचकना ।

**उमंग** - स्त्री० [सं] मन का उभाड़, मौज़, सुखदायक मनोवेग ; लहर ; उल्लास ।

**उमक** - पु० [अ] गहराई, गंभीरता ।

**उमकना** † - अ० [देश] उमड़ना, भरकर ऊपर उठना ; उल्लास में होना, हुलसना ।

**उमग** - स्त्री० [हिं] उमंग ।

**उमगना** - अ० [हि] उमकना ।

**उमचना** - अ० [हि] किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिए कूदना, हुमच(क)ना ; सजग होना ।

**उमड** - स्त्री० [हिं] बाढ़, बढ़ाव, भराव , घिराव ; धावा ।

**उमड़ना** - अ० [हिं] उठकर फैलना, छाना, घेरना ; यौ०—उमड़ना-घुमड़ना - घूम-घूमकर फैलना या छाना (बादल) ।

**उमदा** - वि० [अ] अच्छा, उत्तम, बढ़िया ।

**उमदाना** - अ० [हिं] मस्त होना; उमंग या आवेश में आना ।

**उमर** - 1. स्त्री० [उ] अवस्था, उम्र ; 2. पु० मुसलमानो के एक खलीफ़ा का नाम ।

**उमरा** - पु० [अ] अमीर का बहु० ।

**उमराव** - पु० [अ] प्रतिष्ठित लोग, सरदार ।

**उमस** - स्त्री० [हिं] हवा न चलने पर होनेवाली गरमी ।

**उमा** - स्त्री० [सं] पार्वती ; दुर्गा , हलदी ; अलसी ; कीर्ति , कांति ।

**उमाकना** † - अ० [हिं] खोदकर फेंक देना, नष्ट करना ।

**उमाकीना** - वि० [हिं] उखाड़नेवाली ।

**उमाचना** - स० [हिं] उभाड़ना, ऊपर उठाना ; निकालना ।

**उमाद** † - पु० [हिं] उन्माद ।

**उमापति** - पु० [सं] शिव ।

**उमाह** - पु० [देश] उत्साह, उमंग, जोश, चित्त का उद्गार ।

**उमाहना** - स० [देश] उमड़ाना, उमगाना ।

**उमाहल** † - वि० [देश] उमंग से भरा हुआ, उत्साहित ।

**उमूमन** - क्रि० [अ] साधारणतः, आम तौर पर ।

**उमेठन** - स्त्री० [हि] ऐठन, मरोड़, पेंच ।

**उमेठना** - स० [हिं] ऐठना, मरोड़ना ।

**उमेठवाँ** - वि० [हिं] ऐठदार, घुमावदार ।

**उमेलना** † - स० [हिं] खोलना, प्रकट करना ; वर्णन करना ।

**उम्दगी** - स्त्री० [फ़ा] अच्छाई, खूबी ।

**उम्दा** - वि० [अ] अच्छा, भला ।

**उम्म** - स्त्री० [अ] माता, माँ ; मूल ।

**उम्मत** - स्त्री० [अ] किसी मत के अनुयायियो की मंडली ; फ़िरका, जमाअत ; अनुयायी ।

**उम्मीद**, **उम्मेद** - स्त्री० [फ़ा] आशा, भरोसा, आसरा ।

**उम्मेदवार** - पु० [फ़ा] आशा या आसरा रखनेवाला ; नौकरी की आशा से किसी दफ़्तर में बिना तनख्वाह काम करनेवाला आदमी ; किसी पद पर चुने जाने के लिए खड़ा होनेवाला आदमी ।

**उम्मेदवारी** - स्त्री० [फ़ा] आशा, आसरा; काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना तनख्वाह काम करना।

**उम्र** - स्त्री० [अ] अवस्था, आयु; यौ०—तबई - मनुष्य का स्वाभाविक जीवनकाल जो 120 वर्ष का माना जाता है।

**उरंग** }
**उरंगम** } - पु० [सं] साँप।

**उर** - पु० [सं] वक्षस्थल, छाती, हृदय, मन, चित्त; **मु०** —आनना या लाना - आलिंगन करना; मन में लाना।

**उरई** - स्त्री० [देश] उशीर, खस।

**उरकना** † अ० [देश] रुकना, ठहरना।

**उरग** - पु० [सं] साँप।

**उरगलता** - स्त्री० [सं] नागवल्ली, पान।

**उरगना** † - स० [हिं] स्वीकार करना; सहना।

**उरगाय** 1. - स्त्री० [सं] विष्णु; सूर्य; स्तुति, प्रशंसा, 2. वि० प्रशसित, विस्तृत।

**उरगारि** - पु० [सं] गरुड़।

**उरगिनी** † - स्त्री० [हिं] सर्पिणी।

**उरज** }
**उरजात** } - पु० [हिं] उरोज, स्तन।

**उरझना** - अ० [देश] उलझना।

**उरझेर** - पु० [देश] हवा का झोंका।

**उरण** - पु० [सं] भेड़ा, मेढ़ा; यूरेनस नामक ग्रह।

**उरद** - पु० [हिं] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है, माष।

**उरदावेगनी** - स्त्री० [सं] राजमहलों में सशस्त्र होकर पहरा देनेवाली स्त्री।

**उरधारना** - स० [हिं] बिखराना; उधेड़ना; जैसे, 'उरधारि लटैं छूटी आनन पर भीजीं फुलेनन सों आली हरिसंग केलि।' **—सूर**।

**उरबसी** - 1. स्त्री० [हिं] उर्वशी; 2. वि० दिल में बसी हुई।

**उरमना** † - अ० [हिं] लटकना।

**उरमाना** † - स० [हिं] लटकाना।

**उरमाल** † - पु० [हिं] रूमाल।

**उरमी** - स्त्री० [देश] लहर; दुख, पीड़ा।

**उरला** - वि० [देश] पिछला, पीछे का; उत्तर; विरला, निराला।

**उरस** - 1. वि० [हिं] फीका, नीरस; 2. पु० छाती, वक्षस्थल; हृदय, चित्त।

**उरसना** - अ० [देश] ऊपर-नीचे करना; उथल-पुथल करना।

**उरसिज** - पु० [सं] स्तन।

**उरस्त्राण** - पु० [सं] छाती ढँकने का कवच।

**उरहना** - पु० [देश] उलाहना, शिकायत।

**उरा** - स्त्री० [हिं] पृथ्वी।

**उरारा** - वि० [हिं] विस्तृत, विशाल।

**उराव** - पु० [हिं] चाव, चाह, उमंग, उत्साह, हौसला।

**उरिण, उरिन** - वि० [हिं] उऋण, ऋणमुक्त।

**उरियाँ** - वि० [अ] नंगा, नग्न।

**उरियानी** - स्त्री० [फ़ा] नंगापन, नग्नता।

**उरु** - 1. वि० [सं] लंबा-चौड़ा; बड़ा; 2. पु० जंघा, जाघ।

**उरुगाय** - 1. पु० [सं] विष्णु; सूर्य; 2. वि० प्रकाशित।

**उरुजना** - अ० [देश] उलझना।

**उरुवा** - पु० [देश] उल्लू की जाति की एक चिड़िया, रुरुआ।

**उरूज** - पु० [अ] बढ़ती, वृद्धि; यौ०—ओ ज़वाल - उत्थान-पतन।

**उरूस** - 1. पु० [अ] दूल्हा। 2. स्त्री. दुलहिन

**उरूसी** - स्त्री० [अ] निकाह की पद्धति से होनेवाला विवाह।

**उरे** - क्रि० [हिं] परे, आगे; दूर।

**उरेखना** - स० [हिं] चित्र अंकित करना।
**उरेह** - पु० [देश] चित्रकारी।
**उरेहना** - स० [देश] खींचना, लिखना, रचना।
**उरोज** - पु० [सं] स्तन, कुच।
**उर्जित** - वि० [सं] वर्धित; शक्तिशाली; प्रख्यात; परित्यक्त।
**उर्ण** - पु० [सं] ऊन, ऊनी कपड़ा; यौ०—नाभ - पु० मकड़ी।
**उर्द** - पु० [हिं] उरद।
**उर्दी** - स्त्री० [फ़ा] फ़ारसी वर्ष का दूसरा महीना।
**उर्दू** - स्त्री० [तु] फ़ारसी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी जिसमें अधिकांश शब्द अरबी-फ़ारसी के होते हैं; लश्कर; बाज़ार।
**उर्दू-ए-मुअल्ला** - स्त्री० [तु] लश्करी, छावनी; कचहरी या राजदरबार की भाषा; परिष्कृत उर्दू, टकसाली उर्दू।
**उर्दूबाज़ार** - पु० [उ] लश्कर या छावनी का बाज़ार; वह बाज़ार जहाँ सब चीजें मिलें।
**उर्फ़** - पु० [अ] चालू नाम, पुकारने का नाम, बनाम।
**उर्फ़ी** - वि० [अ] प्रसिद्ध, मशहूर।
**उर्मि** - स्त्री० [सं] ऊर्मि, लहर, तरंग।
**उर्मिला** - स्त्री० [सं] लक्ष्मण की पत्नी।
**उर्वर** - वि. [स] उपजाऊ।
**उर्वरा** - स्त्री० [सं] उपजाऊपन; ज़रखेज़ ज़मीन।
**उर्वारु** / **उर्वारुक** } - पु० [सं] ककड़ी।
**उर्वी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी।
**उर्वीजा** - स्त्री० [सं] पृथ्वी से उत्पन्न; सीता।
**उर्वीधर** - पु० [सं] शेषनाग; पर्वत।
**उर्स** - पु० [अ] मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन किया जानेवाला कृत्य; [विवाह आदि अवसरों पर होनेवाला भोजन,] मुसलमान साधुओं की मृत्युतिथि।
**उलंग** † - वि० [हिं] नंगा।
**उलका** - स्त्री० [सं] प्रकाश, तेज; लुक, लुआठा; एक प्रकार का चमकीला पिंड जो कभी-कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर जाता या पृथ्वी पर गिरता हुआ दिखायी देता है। 'तारा टूटना'।
**उलचना** - स० [हि] उलीचना।
**उलछना** - स० [हि] हाथ से छितराना, बिखराना; उलीचना।
**उलझन** - स्त्री० [हिं] अटकाव; गिरह, गाँठ; बाधा; पेच, चक्कर, व्यग्रता, चिंता, तरद्दुद।
**उलझना** - अ० [हि] फंसना, अटकना, लपेट में पड़ना; लिपटना; काम में लिप्त या लीन होना, तकरार करना, लड़ाई-झगड़ा करना; कठिनाई में पड़ना; रुकना, बल खाना, टेढ़ा होना।
**उलझाना** - स० [हिं] फँसाना, अटकाना; लिप्त रखना; लगाये रखना, टेढ़ा करना।
**उलझाव** - पु० [हिं] अटकाव; झगड़ा-बखेड़ा; चक्कर, फेर।
**उलटना** - अ० [हि] पलटना, पीछे मुड़ना; उमड़ना; अस्त-व्यस्त होना; विरुद्ध होना, क्रुद्ध होना; बरबाद होना, बेहोश होना; गिरना; इतराना।
**उलट-पुलट** - स्त्री० [हि] अदल-बदल, अव्यवस्था; गड़बड़ी।
**उलट-फेर** - पु० [हिं] अदल-बदल, हेर-फेर; जीवन की भली-बुरी दशा।
**उलटा** - वि० [हिं] विपरीत; औंधा; मु०—उलटी साँस चलना - साँस का जल्दी-जल्दी बाहर निकलना; उलटी साँस

लेना - जल्दी-जल्दी साँस खीचना; उलटे मुँह गिरना - दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना ; उलटा फिरना या लौटना - तुरंत लौट पड़ना ; उलटा हाथ - बायाँ हाथ ; उलटी गंगा बहना - अनहोनी बात होना ; उलटे छुरे से मूँड़ना - उल्लू बनाकर काम निकालना।

**उलटाना** - स० [हि] पलटाना, लौटाना, पीछे फेरना ; अन्यथा करना या कहना , फेरना, दूसरे पक्ष में कहना।

**उलटा-पलटा** - 1. वि० [हि] इधर का उधर, अंडबंड, बेतरतीब ; 2. स्त्री० फेरफार, अदल-बदल।

**उलटाव** - पु० [हि] पलटाव, फेर ; घुमाव, चक्कर।

**उलटी** - स्त्री० [हिं] वमन, कै ; कलैया, कलाबाजी।

**उलटी सरसों** - स्त्री० [हि] वह सरसों जिसकी कलियों का मुँह नीचे की ओर होता है और जो जादू-टोने के काम में आती है, टेरो।

**उलटे** - क्रि० [हि] बेठिकाने , विपरीत।

**उलथना** † 1. अ० [हिं] ऊपर-नीचे होना, उलटना ; 2. स० ऊपर-नीचे करना, उलटना-पुलटना।

**उलथा** - पु० [हिं] नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना ; कलाबाजी, कलैया ; उलटा, उड़ी ; करवट बदलना।

**उलफ़त** - स्त्री० [अ] प्रेम।

**उलमा** - पु० [अ] आलिम का बहु०, विद्वान लोग।

**उलरना** - अ० [देश] उछलना , नीचे-ऊपर होना ; झपटना।

**उललना** † - अ० [देश] ढरकना, ढलना, इधर-उधर होना।

**उलवी** - वि० [अ] स्वर्ग या आकाश से संबंध रखनेवाला।

**उलसना** † - अ० [हिं] शोभित होना, सोहना।

**उलहना** - 1. अ० [हि] उभड़ना, निकलना; फूलना ; 2. पु० उलाहना।

**उलांघना** - अ० [हिं] लांघना, डाकना, फादना ; अवज्ञा करना, न मानना ; पहले-पहल घोड़े पर चढ़ना।

**उलार** - वि० [देश] जो पीछे की ओर झुका हो, जिसके पीछे की ओर बोझ अधिक हो (गाड़ी)।

**उलारना** - स० [देश] उछालना, नीचे-ऊपर फेंकना।

**उलाहना** - पु० [हिं] उपालंभ , शिकायत।

**उलीचना** - स० [हिं] हाथ या बरतन से पानी उछालकर फेंकना।

**उलूक** - पु० [सं] उल्लू , इन्द्र ; दुर्योधन का एक दूत ; कणाद मुनि का एक नाम।

**उलूखल** - पु० [सं] ओखली ; खल, खरल; गुग्गुल।

**उलूम** - पु० [अ] इल्म का बहु०।

**उलेड़ना** - स० [देश] ढरकाना, उड़ेलना; ढालना।

**उलेल** - 1. स्त्री० [देश] उमंग, जोश ; उछल-कूद ; बाढ़ ; 2. वि० बेपरवाह, अल्हड़।

**उल्का** - स्त्री० [सं] प्रकाश, तेज ; मशाल ; दीया, चिराग़ ; उलका।

**उल्कापात** - पु० [सं] तारा टूटना ; उत्पात ; विघ्न।

**उल्कामुख** - पु० [सं] गीदड़ ; अगिया-बैताल , महादेव का एक नाम।

**उल्था** - पु० [उ] भाषांतर, अनुवाद, तरजुमा।

**उल्लंघन** - पु० [सं] लांघना, डाकना ; अतिक्रमण करना ; न मानना ।

**उल्लसन** - पु० [सं] ख़ुशी मनाना ; रोमांच ।

**उल्लसित** - वि० [स] प्रसन्न, ख़ुश ।

**उल्लाप्य** - पु० [सं] सात प्रकार के गीतों में से एक ; उपरूपक का एक भेद ।

**उल्लाल** - पु० [सं] एक मात्रिक अर्द्धसम छंद ।

**उल्लाला** - पु० [सं] एक मात्रिक छंद ।

**उल्लास** - पु० [सं] प्रकाश, चमक ; हर्ष, आनंद ; ग्रंथ का एक भाग , पर्व ।

**उल्लासक** - वि० [सं] आनंद करनेवाला ।

**उल्लासन** - पु० [सं] प्रकट करना, प्रकाशित करना ; हर्षित होना ।

**उल्लासना** - स० [हि] प्रकट करना ; प्रसन्न करना ।

**उल्लासी** - वि० [सं] आनंदी, सुखी ।

**उल्लिखित** - वि० [सं] लिखा हुआ, लिखित ; खोदा हुआ, उत्कीर्ण ; छीला हुआ, खरादा हुआ ; ऊपर लिखा हुआ , खींचा हुआ ; चित्रित ।

**उल्लू** - पु० [हिं] दिन में न देख सकनेवाला एक पक्षी ; बेवक़ूफ़, मूर्ख , **मु०**— बोलना - उजाड़ होना ।

**उल्लेख** - पु० [सं] वर्णन, चर्चा, ज़िक्र ; चित्र ; एक काव्यालंकार ।

**उल्लेखन** - पु० [सं] लिखना ; चित्र खींचना ;

**उल्लेखनीय** - वि० [सं] लिखने के योग्य, वर्णन के योग्य ।

**उल्व** - पु० [सं] झिल्ली जिसमें बच्चा बंधा हुआ पैदा होता है, आँवल, आँवरी ; गर्भाशय ।

**उल्वण** - 1. वि० [स] उत्कट, प्रबल ; 2. पु० आँवल ।

**उवना †** - अ० [देश] उगना ।

**उशबा** - पु० [अ] एक पेड़ जिसकी जड़ रक्तशोधक होती है ।

**उशीर** - पु० [सं] खस, गांडर की जड़ ।

**उश्तुर** - पु० [फ़ा] ऊँट ।

**उश्शाक़** - पु० [अ] आशिक़ का बहु० ।

**उषा** - स्त्री० [सं] अरुणोदय की लालिमा, प्रभात, ब्रह्मवेला ; बाणासुर की कन्या ।

**उषाकाल** - पु० [सं] भोर, प्रभात ।

**उषापति** - पु० [स] अनिरुद्ध ; सूर्य ।

**उष्ट्र** - पु० [सं] ऊँट ।

**उष्ण** - 1. वि० [सं] तप्त, गरम ; फ़ुरतीला, तेज । 2. पु० ग्रीष्मऋतु ; प्याज , एक नरक का नाम ।

**उष्णक** - 1. पु० [सं] ग्रीष्मकाल , ज्वर, बुख़ार ; सूर्य ; 2. वि० गरम, तप्त , ज्वरयुक्त ; तेज, फ़ुरतीला ।

**उष्ण-कटिबंध** - पु० [स] पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच पड़ता है ।

**उष्णता** - स्त्री० [स] गरमी, ताप ।

**उष्णत्व** - पु० [सं] गरमी ।

**उष्णीष** - पु० [सं] पगड़ी, साफा , मुकुट, ताज ।

**उष्म** - 1. पु० [सं] गरमी, ताप ; धूप ; ग्रीष्मऋतु ; 2. वि० गरम ।

**उष्मज** - पु० [सं] पसीने और मैल आदि से पैदा होनेवाले छोटे कीड़े (खटमल, जूँ, चीलर आदि) ।

**उष्मा** - स्त्री० [सं] धूप ; गुस्सा, क्रोध ।

**उसकन** - पु० [हिं] घास-पात या पयाल का वह पोटा जिससे बरतन माँजते हैं, उबसन, जूना ।

**उसकना** - अ० [हिं] उकसना ।

**उसकाना** - स० [हिं] उकसाना ।

**उसजूब** - पु० [अ] तरीक़ा, ढंग ।

**उसनना** - स० [हिं] उबालना ; पकाना ।

**उसनाना** - स० [हि] उबलवाना ; पकवाना ।
**उसनीस** - पु० [हिं] उष्णीष, पगड़ी ।
**उसमा** - पु० [अ] उबटन ।
**उसरना** - अ० [हि] हटना, टलना, दूर होना; बीतना, गुज़रना; भूलना, बिसरना, बनकर खड़ा होना ।
**उसलना** - अ० [हि] उसरना ।
**उससना** - स० [हिं] खिसकना, टलना, स्थानान्तरित होना ; साँस लेना ।
**उसाँस** -पु० [हि] उसास ।
**उसारना** - स० [हि] उखाड़ना, हटाना, टालना ; बनाकर खड़ा करना ।
**उसारा** - पु० [देश] ओसारा ।
**उसालना** - स० [हि] उखाड़ना टालना ; भगाना ।
**उसास** - स्त्री० [हि] लंबी साँस ; श्वास ; दुख या चितासूचक श्वास ।
**उसासी** - स्त्री० [हिं] दम लेने की फुरसत ; अवकाश ; छुट्टी ।
**उसिनना** - स० [हि] उसनना ।
**उसीर** - पु० [हि] उशीर; खस ।
**उसीसा** - पु० [हि] सिरहाना ; तकिया ।
**उसूल** - पु० [अ] सिद्धात ।
**उस्तख़्वाँ** - पु० [फ़ा] हड्डी, अस्थि ।
**उस्तरा** - पु० [फा] उस्तुरा ।
**उस्तवा** - पु० [अ] समतल होने का भाव, हमवारी ।
**उस्तवार** - वि० [फ़ा] पक्का, दृढ़, समतल ; सरल ।
**उस्तवारी** - स्त्री० [फ़ा] दृढ़ता, सरलता ; समतल होने का भाव ।
**उस्ताद** - 1. पु० [फ़ा] गुरु, शिक्षक, अध्यापक ; 2. वि० चालाक, धूर्त ; निपुण, प्रवीण ।
**उस्तादजी** - पु० [अ] वेश्याओ को संगीत की शिक्षा देनेवाला ।
**उस्तादी** - स्त्री० [फ़ा] शिक्षक की वृत्ति, गुरुआई ; चतुराई, निपुणता ; विज्ञता ; चालाकी, धूर्तता ।
**उस्तानी** - स्त्री० [फ़ा] गुरुआनी, गुरुपत्नी ; वह स्त्री जो शिक्षा दे ; चालाक स्त्री ।
**उस्तुरलाब** - स्त्री० [फ़ा] नक्षत्रयंत्र ; ठगिन ; उस्ताद का स्त्रीलिंग ।
**उस्तुरा** - पु० [फ़ा] बाल मूँड़ने का औज़ार, छुरा, अस्तुरा ।
**उहाँ** † - क्रि० [देश] वहाँ ।
**उहार** - पु० [देश] ओहार, परदा ।
**उहै** † - सर्व० [देश] वही ।

## ऊ

**ऊँगा** - पु० [देश] चिचड़ा ; दवा के काम में आनेवाला एक पौधा, अपामार्ग ।
**ऊँघ** - स्त्री० [हिं] झपकी, अर्द्धनिद्रा , गाड़ी के पहिये के आगे धुरे के सिरे पर लगायी जानेवाली गेंडुरी ।
**ऊँघन** - स्त्री० [हिं] ऊँघ, झपकी ।
**ऊँघना** - अ० [हिं] झपकी लेना, नीद में झूमना ।
**ऊँच** - वि० [हिं] ऊँचा, श्रेष्ठ, बड़ा ; यौ० —नीच - छोटा-बड़ा ; कुलीन और अकुलीन ।
**ऊँचा** - वि० [हिं] जो दूर तक ऊपर की ओर गया हो, उठा हुआ, उन्नत, बुलंद ; श्रेष्ठ, महान् ; **मु०**—नीचा - ऊबड़-खाबड़, भला-बुरा, हानि-लाभ ; —नीचा या ऊँची-नीची सुनाना - खरी-खोटी सुनाना, भला-बुरा कहना , —सुनना - कम सुनना ।
**ऊँचाई** - स्त्री० [हिं] ऊपर की ओर का विस्तार, उठान; उच्चता ; गौरव ; बड़ाई ।
**ऊँचे** - क्रि० [हिं] ऊँचे पर, ऊपर की ओर; ज़ोर से (शब्द करना); **मु०** ऊँचे-नीचे पैर पड़ना - बुरे काम में फँसना ।

**ऊँछ** - पु० [देश] एक रोग।
**ऊँछना** - अ० [हिं] कंघी करना।
**ऊँट** - पु० [हि] रेगिस्तान में पाया जानेवाला एक ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ लादने के काम में आता है; **मु०**—किस करवट बैठता है - नतीजा क्या होता है, —की चोरी निहुरे-निहुरे— न छिपनेवाली बात को छिपाने की कोशिश; —के गले में बिल्ली - बेमेल बात, असंगत बात,—के मुँह में ज़ीरा - अधिक खानेवाले को थोड़ी-सी चीज़ देना; —निगल जायँ, दुम से हिचकियाँ - बड़ी-बड़ी बाते कर देना और छोटे-से काम में अटक जाना।
**ऊँटकटारा** - पु० [हि] एक कँटीली झाड़ी जो ज़मीन पर फैलती है।
**ऊँटवान** - पु० [हि] ऊँट चलानेवाला।
**ऊँड़ा** - 1. पु० [देश] वह बरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ देते हैं; चहबच्चा, तहख़ाना; 2. वि० गहरा, गंभीर।
**ऊँदर** - पु० [हिं] चूहा।
**ऊँधा** - पु० [देश] चौपायों के पानी पीने का घाट; ढलुआ किनारा।
**ऊँहूँ** - अव्य० [अनु] नही, कभी नही, हरगिज़ नहीं।
**ऊअना** † - अ० [हि] उगना, उदय होना।
**ऊआबाई** - वि० [देश] अंडबंड, निरर्थक, व्यर्थ, जैसे, 'जनम गँवायो ऊआबाई।' —**सूर**।
**ऊक** - 1. पु० [हि] उल्का, टूटता हुआ तारा; दाह, जलन, ताप, 2. स्त्री० भूल-चूक, ग़लती।
**ऊकना** - 1. अ० [देश] चूकना, खाली जाना, लक्ष्य पर न पहुँचना; भूल करना; 2. स० भूल जाना; छोड देना, उपेक्षा करना।
**ऊख** - 1. पु० [हिं] ईख, गन्ना; गरमी, उमस; 2. वि० तपा हुआ; गरमी से व्याकुल।
**ऊखड़** - पु० [हि] पहाड़ के नीचे की रूखी भूमि।
**ऊखल** - पु० [हि] ओखली।
**ऊगना** † - अ० [हि] उगना, उत्पन्न होना, पैदा होना।
**ऊजर** - वि० [देश] उजाड़; उज्ज्वल।
**ऊजरा** - वि० [देश] उजला।
**ऊटक-नाटक** - पु० [हि] व्यर्थ का काम, इधर-उधर का काम।
**ऊटना** - अ० [हिं] उत्साहित होना; तर्क-वितर्क करना, सोच-विचार करना।
**ऊटपटांग** - वि० [देश] व्यर्थ, वाहियात; अटपट, टेढ़ा-मेढ़ा।
**ऊड़ा** - पु० [देश] कमी, टोटा, घाटा; अकाल; नाश, लोप।
**ऊड़ी** - स्त्री० [देश] गोता; एक चरखी जिस-पर सूत की लच्छी फँसाकर धागे को नरकुल के पोगे पर उतारते हैं।
**ऊढ** - वि० [स] विवाहित।
**ऊढना** - अ० [हिं] तर्क करना, अनुमान लगाना; सोच-विचार करना।
**ऊढ़ा** - स्त्री० [स] विवाहिता स्त्री।
**ऊत** - विं० [देश] निःसन्तान, निपूता, उजड्ड, बेवकूफ़।
**ऊतला** - वि० [देश] चंचल; वेगवान; जैसे, 'पवनहुँ ते अति ऊतला, दोस्त कबीरा कीन।'—कबीर।
**ऊद** - 1. पु० [अ] अगर का पेड़ या लकड़ी; 2. [सं] ऊदबिलाव।
**ऊदबत्ती** - स्त्री० [हिं] अगर की बत्ती जिसे सुगंध के लिए जलाते है।
**ऊदबिलाव** - पु० [हि] जल और स्थल में रहनेवाला नेवले के आकार का, पर उससे कुछ बड़ा जंतु।

**ऊद-सोज़** - पु० [अ + फा] वह पात्र जिसमें रखकर सुगंधि के लिए ऊद या अगर जलाते हैं।
**ऊदा** - 1 वि० [फ़ा] ललाई लिये हुए काला या बैंगनी रंग; 2. पु० ऊदे रग का घड़ा।
**ऊदी** - वि० [अ] ऊद या अगर-संबंधी, अगर का।
**ऊधम** - पु० [हिं] उपद्रव, उत्पात; हुल्लड़।
**ऊधमी** - वि० [हिं] ऊधम करनेवाला, उपद्रवी, उत्पाती।
**ऊन** - 1 पु० [हिं] भेड़ बकरी आदि का रोयाँ जिससे कंबल और पहनने के गरम कपड़े बनते हैं; 2. वि० [सं] थोड़ा; तुच्छ।
**ऊनता** - स्त्री० [सं] कमी, न्यूनता।
**ऊना** - 1. वि० [सं] कम, थोड़ा; तुच्छ, हीन; 2. पु० खेद, दुख, रंज।
**ऊनी** - 1 वि० [हि] ऊन का बना हुआ वस्त्र; कम, न्यून; 2. स्त्री० उदासी।
**ऊपर** - क्रि० [हि] ऊँचे स्थान में, ऊचाई पर, आकाश की ओर, आधार पर, ऊँची श्रेणी में; अधिक, ज़्यादा; तट पर; अतिरिक्त; **मु०** —ऊपर - बिना किसी और को जताये, चुपके से; —तले - ऊपर-नीचे, एक के पीछे एक, क्रमशः; —लेना - जिम्मेदारी लेना।
**ऊपरी** - वि० [हिं] ऊपर का, बाहरी; दिखौआ, नुमाइशी।
**ऊब** - स्त्री० [हिं] उद्वेग, घबराहट, उत्साह, उमंग।
**ऊबड़-खाबड़** - वि० [हिं] ऊँचा-नीचा, जो समतल न हो।
**ऊबना** - अ० [हि] उकताना, घबराना, अकुलाना।
**ऊमक** † - स्त्री० [हि] झोक; उठान; वेग।
**ऊरध** - वि० [हिं] ऊर्ध्व।
**ऊरु** - पु० [सं] जानु, जांघ।
**ऊरुस्तंभ** - पु० [स] एक वात रोग जिसमें पैर जकड़ जाते है।
**ऊर्जस्वल** - वि० [सं] शक्तियुक्त।
**ऊर्जस्वित** - वि० [सं] ऊपर की ओर चढ़ा हुआ; बहुत बढ़ा हुआ।
**ऊर्जस्वी** - वि० [सं] बलवान्, शक्तिशाली; तेजस्वी, प्रतापी।
**ऊर्ण** - पु० [सं] भेड़ या बकरी के बाल, ऊन।
**ऊर्णनाभ** - पु० [सं] मकड़ी।
**ऊद्‌र्ध्व** † - 1. क्रि० [सं] ऊपर; 2. वि० ऊँचा, खड़ा।
**ऊद्‌र्ध्वग** - क्रि० [सं] ऊपर जानेवाला।
**ऊद्‌र्ध्वगति** - स्त्री० [सं] मुक्ति।
**ऊद्‌र्ध्वगामी** - वि० [सं] ऊपर की ओर जानेवाला; मुक्त, निर्वाणप्राप्त।
**ऊद्‌र्ध्वचरण** - पु० [सं] शीर्षासन, शीर्षासन किये हुए तपस्या करनेवाला साधु।
**ऊद्‌र्ध्वद्वार** - पु० [सं] ब्रह्मरन्ध्र।
**ऊद्‌र्ध्वपुंड्र** - पु० [सं] खड़ा तिलक, वैष्णवी तिलक।
**ऊद्‌र्ध्वबाहु** - पु० [सं] एक बाहु ऊपर उठाकर तप करनेवाले तपस्वी।
**ऊद्‌र्ध्वरेता** - वि० [सं] जो ब्रह्मचारी अपने वीर्य को गिरने न दे; ब्रह्मचारी।
**ऊद्‌र्ध्वलोक** - पु० [सं] आकाश; बैकुंठ, स्वर्ग।
**ऊद्‌र्ध्वश्वास** - पु० [सं] ऊपर को बढ़ती हुई साँस; श्वास की कमी या तंगी।
**ऊर्मि** - स्त्री० [स] लहर, तरंग; पीड़ा, दुःख; छः की संख्या, शिकन।
**ऊर्मिमाली** - पु० [सं] समुद्र।
**ऊर्मिल** - वि० [सं] तरंगित।

**ऊलजलूल** - वि० [देश] असंबद्ध, अंडबंड ; अनाड़ी, नासमझ ; अशिष्ट, बेअदब ।

**ऊलना** - अ० [देश] उछलना, कूदना ।

**ऊषा** - स्त्री० [सं] उषा ।

**ऊषाकाल** - पु० [सं] सवेरा ।

**ऊष्म** - पु० [सं] गरमी, धूप ।

**ऊष्मा** - स्त्री० [सं] ग्रीष्मकाल ; तपन, गरमी ; भाप ।

**ऊसर** - पु० [हिं] बंजर भूमि ।

**ऊह** - 1. अव्य० [सं] क्लेश या दुखसूचक शब्द, ओह ; विस्मयसूचक शब्द ; 2. पु० अनुमान, विचार ; तर्क, दलील ; किंवदती, अफ़वाह ।

**ऊहा-पोह** - पु० [सं] तर्क-वितर्क, सोच-विचार ।

## ऋ

**ऋक्** - स्त्री० [सं] ऋचा, वेदमंत्र ।

**ऋक्थ** - पु० [सं] धन ; सुवर्ण ; किसी संबंधी की संपत्ति का वह हिस्सा जो धर्मशास्त्र के अनुसार मिले, दायभाग ।

**ऋक्ष** - पु० [सं] भालू ; तारा, नक्षत्र ; मेष-वृष आदि राशियाँ ।

**ऋक्षपति** - पु० [सं] चंद्रमा ; जाबवान ।

**ऋग्वेद** - पु० [सं] चारो वेदो में सबसे पहला ।

**ऋचा** - स्त्री० [सं] वेदमंत्र ; स्तोत्र ।

**ऋच्छ** - पु० [हिं] भालू, रीछ ।

**ऋजु** - वि० [सं] जो टेढ़ा न हो, सीधा ; सरल, सुगम, सहज ; सरल चित्त का, सज्जन ; अनुकूल, प्रसन्न ।

**ऋजुता** - स्त्री० [सं] सीधापन, सरलता, सुगमता ; सज्जनता ।

**ऋण** - पु० [सं] कर्ज़, उधार ; मु०—उतरना - कर्ज़ अदा होना ; —चढ़ाना - जिम्मे रुपया निकालना ; —पटाना - उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना ।

**ऋणी** - वि० [सं] कर्जदार, देनदार, उपकार माननेवाला, अनुगृहीत ।

**ऋत** - 1. पु० [सं] सत्य, जल ; मोक्ष ; 2. वि० दीप्त, पूजित ।

**ऋति** - स्त्री० [सं] निंदा ; स्पर्धा ; गति, मंगल ।

**ऋतु** - स्त्री० [सं] प्राकृतिक दशाओ के अनुसार वर्ष के दो-दो मासवाले छः विभाग (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर) ; रजोदर्शन के बाद का वह समय जब स्त्री गर्भ धारण करने योग्य होती है ।

**ऋतुकांत** - पु० [सं] वसतऋतु ।

**ऋतुचर्या** - स्त्री० [सं] ऋतुओ के अनुकूल आहार-व्यवहार की व्यवस्था ।

**ऋतुमती** - स्त्री० [सं] रजस्वला, पुष्पवती, मासिक धर्मयुक्त ।

**ऋतुराज** - पु० [सं] वसंतऋतु ।

**ऋतुस्नान** - पु० [सं] रजोदर्शन के बाद से चौथे दिन का स्नान ।

**ऋत्विज** - पु० [सं] यज्ञ करनेवाला, यज्ञ में वरण किया हुआ, ये सोलह होते हैं जिनमें चार मुख्य हैं—होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा ।

**ऋद्ध** - वि० [सं] सपन्न, समृद्ध ।

**ऋद्धि** - स्त्री० [सं] एक औषधि या लता जिसका कंद दवा के काम में आता है, समृद्धि, बढ़ती आर्या छंद का एक भेद ।

**ऋद्धि-सिद्धि** - स्त्री० [सं] सफलता और समृद्धि ।

**ऋनिया** - पु० [हिं] ऋणी, कर्ज़दार ।

**ऋषभ** - पु० [सं] बैल, श्रेष्ठतावाचक शब्द जो शब्द के अंत में जुड़ता है ; संगीत के सात स्वरो में से दूसरा, एक जड़ी जो हिमालय पर होती है ।

**ऋषभदेव** - पु० [सं] नाभिराज का पुत्र, विष्णु का एक अवतार ; जैनो का आदि तीर्थंकर ।

**ऋषभध्वज** - पु० [सं] शिव ।

**ऋषि** - पु० [सं] वेद-मंत्रो को प्रकाश में लानेवाला ; मंत्र-द्रष्टा ।

**ऋषिऋण** - पु० [सं] ऋषियो के प्रति कर्तव्य ।

## ए

**एँच-पेंच** - पु० [फ़ा] उलझन, घुमाव ; टेढ़ी चाल, घात ।

**एँजिन** - पु० [अं] रेल आदि का इंजन ।

**एँड़ा-बेंड़ा** - वि० [हिं] उलटा-सीधा, अंडबंड ।

**एँड़ी** - स्त्री० [हि] एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो अंडी के पत्ते खाता है ; इस कीड़े का रेशम ; अंडी, मूँगा ।

**एँडुआ** - पु० [देश] बोझ उठाने के लिए गद्दी की तरह सिर पर रखा जानेवाला मँडरा, गेंडुरी ।

**एकंग** / **एकंगा** - वि० [हिं] अकेला ; एक ओर का, एकतरफ़ा ।

**एकंत** - वि० [हिं] एकांत ।

**एक** - वि० [सं] इकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या ; अद्वितीय ; कोई, अनिश्चित ; एक ही प्रकार का, समान, तुल्य ; मु० —आँख न भाना - तनिक भी अच्छा न लगना ; — और एक ग्यारह होना - कई आदमियो के मिलने से शक्ति बढ़ना ; — से इक्कीस होना - बढ़ना, उन्नति करना ।

**एकचक्र** - 1. पु० [सं] सूर्य का रथ ; सूर्य ; 2. वि० चक्रवर्ती ।

**एकछत्र** - 1. वि० [सं] जिसमें कहीं और किसीका राज्य या अधिकार न हो ; 2. पु० वह राज्यप्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है ।

**एकजद्दी** - वि० [फ़ा] सपिंड या सगोत्र ।

**एकटक** / **एकटकी** - वि० [हिं] स्तब्ध दृष्टि; टकटकी ।

**एकड़** - पु० [अं] भूमि की एक माप जो $1\frac{3}{5}$ बीघे के बराबर होती है ।

**एकडाल** - पु० [हिं] वह कटार या छुरा जिसका फल और बेंट एक ही लोहे का हो ।

**एकतंत्र** - पु० [स] वह राज्यपालन-क्रम जिसमें राजा के सिवाय दूसरे किसीको कोई अधिकार नहीं होता ।

**एकतः** - क्रि० [सं] एक ओर से ।

**एकत** † - क्रि० [हिं] एक जगह ; इकट्ठा ।

**एकतरफ़ा** - वि० [फ़ा] एक पक्ष का, एक-रुखा, एक पार्श्व का ।

**एकता** - 1. स्त्री० [सं] ऐक्य, मेल ; समानता, बराबरी ; 2. वि० [फ़ा] अद्वितीय, बेजोड़, अनुपम ।

**एकतान** - वि० [सं] तन्मय, लीन, एकाग्र-चित्त ; मिलकर ।

**एकतारा** - पु० [हि] एक तार का सितार या बाजा ।

**एकतारी** - स्त्री० [हिं] गले में पहनने का एक तार का जालीदार आभूषण ।

**एकताला** - पु० [हिं] बारह मात्राओ का एक ताल ।

**एकतालीस** - 1. वि० [हिं] गिनती में चालीस और एक ; 2. पु० 41 की संख्या का बोध करानेवाला अंक ।

**एकतीस** - 1. वि० [हिं] गिनती में तीस और एक ; 2. पु० 31 की संख्या का बोधक अंक ।

**एकत्र** - क्रि० [सं] इकट्ठा ; एक जगह ।

**एकदंत** - पु० [सं] गणेश ।

**एकदा** - क्रि० [सं] एक बार ।

**एकदेशीय** - वि० [सं] एक देश का ; जो सर्वत्र न घटे ।

**एकनयन** - 1. वि० [सं] काना, एकाक्ष; 2. पु० कौआ; कुबेर।
**एकनिष्ठ** - वि० [सं] एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला।
**एकन्नी** - वि० [सं] एक आने मूल्यवाला एक सिक्का।
**एकपक्षीय** - वि० [सं] एक ओर का, एकतरफ़ा।
**एकपत्नीव्रत** - पु० [सं] एक ही पत्नी रखने का नियम।
**एकबारगी** - क्रि० [फ़ा] एक समय में, एक ही दफ़े में; अचानक, अकस्मात; बिलकुल, सारा।
**एकबाल** - पु० [अ] इकबाल; भाग्य; प्रताप; स्वीकार।
**एकभुक्त** - वि० [सं] रात-दिन में केवल एक ही बार भोजन करनेवाला व्यक्ति।
**एकमत** - वि० [सं] एक या समान मत रखनेवाला, एक राय का।
**एकमात्रिक** - वि० [सं] एक मात्रा का।
**एकमुखी** - वि० [सं] एक मुँहवाला; एक तरफ़ का।
**एकरंग** - वि० [सं] समान, तुल्य; कपट-शून्य; जो चारों ओर एक-सा हो।
**एकरदन** - पु० [सं] गणेश।
**एकरस** - वि० [सं] एक ढंग का; समान।
**एक़रार** - पु० [अ] स्वीकार, मंजूरी; वादा, प्रतिज्ञा।
**एक़रारनामा** - पु० [अ] प्रतिज्ञा-पत्र।
**एकरूप** - वि० [सं] समान आकृति का, एक ही रंग-ढंग का; ज्यों का त्यों, कोरा।
**एकरूपता** - स्त्री० [सं] समानता, एकता; सायुज्य मुक्ति।
**एकल** } † - वि० [हिं] अकेला; अनुपम,
**एकला** } बेजोड़।
**एकलौता** - वि० [हि] अपने माँ-बाप का एक ही लड़का।
**एकवचन** - पु० [सं] वह वचन जिससे एक का बोध होता हो (व्या०)।
**एकवाँझ** - स्त्री० [हि] वह स्त्री जिसे एक बच्चे के पीछे और दूसरा बच्चा न हुआ हो, काकबंध्या।
**एकवाक्यता** - स्त्री० [सं] ऐकमत्य, एकमत।
**एकसठ** - 1. वि० [हिं] साठ और एक; 2. पु० 61 की संख्या का बोधक अंक।
**एकसर** - 1. वि० [हिं] अकेला, एक पल्ले का, 2. [फ़ा] बिलकुल, तमाम।
**एकसाँ** - वि० [फ़ा] बराबर, समान।
**एकहत्तर** - 1. वि० [हि] सत्तर और एक; 2. पु० 71 की संख्या का बोधक अंक।
**एकहत्था** - वि० [हि] वह काम या व्यवसाय जो एक ही के हाथ में हो।
**एकहरा** - वि० [हि] एक परत का; यौ० —बदन - दुबला-पतला शरीर।
**एकांकी** - पु० [सं] रूपक (नाटक) के दस भेदों में से एक; वह नाटक जो एक ही अंक में समाप्त होता है।
**एकांग** } - वि० [सं] एकतरफ़ा; ज़िद्दी,
**एकांगी** } हठी।
**एकांत** - वि० [सं] अत्यंत; अकेला; निर्जन, सूना।
**एकांतता** - स्त्री० [सं] निर्जनता, सूनापन।
**एकांतरा** - वि० [हिं] एक दिन छोड़ तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।
**एकांतवास** - पु० [सं] निर्जन स्थान में अकेले रहना।
**एकांतिक** - वि० [सं] एकदेशीय, एक ही स्थान पर घटित।
**एका** - 1. पु० [सं] मेल; 2. स्त्री० दुर्गा।
**एकाई** - स्त्री० [हिं] एक का मान; अंक-गणना में प्रथमांक; इकाई।

**एकाएक, एकाएकी** - क्रि० [हिं] अचानक, सहसा।

**एकाकार** - पु० [सं] मिलकर एक हो जाने का भाव, समान भाव।

**एकाकी** - वि० [सं] अकेला।

**एकाग्र** - वि० [स] अचंचल; एक ओर स्थिर, अनन्यचित्त।

**एकातपत्र** - वि० [सं] चक्रवर्ती, सार्वभौम।

**एकात्मता** - स्त्री० [सं] एकता, अभेद।

**एकादश** - वि० [सं] ग्यारह।

**एकादशाह** - पु० [सं] ग्यारहवाँ दिन; मृत्यु के बाद ग्यारहवें दिन का क्रिया-कर्म।

**एकादशी** - स्त्री० [सं] कृष्ण और शुक्लपक्ष की ग्यारहवीं तिथि जिस दिन वैष्णव लोग उपवास करते है।

**एकाधिकार** - पु० [सं] किसी वस्तु या कार्य आदि पर किसी एक व्यक्ति या दल आदि का एकमात्र अधिकार।

**एकाधिपत्य** - पु० [सं] पूर्ण प्रभुत्व।

**एकावली** - स्त्री० [सं] एक लड़ का हार; एक अर्थालंकार।

**एकाश्रय** - वि० [स] जो एक ही के आश्रय में हो।

**एकीकरण** - पु० [सं] एक से अधिक वस्तुओं को मिलाकर एक करना।

**एकीकृत** - वि० [सं] एक किया हुआ, मिश्रित।

**एकीभूत** - वि० [स] मिला हुआ, मिलकर एक बना हुआ।

**एक्का** - 1. पु० [हिं] एक घोड़े की गाड़ी; ताश का एक पत्ता; 2. वि० अकेला; **मु०** —दुक्का - अकेला-दुकेला।

**एक्कावान** - पु० [हिं] एक्का हाँकनेवाला।

**एख़नी** - स्त्री० [फ़ा] मांस का रस, शोरबा।

**एगानगी** - स्त्री० [फ़ा] मेल, मित्रता; एकता।

**एड़** - स्त्री० [हिं] एड़ी; **मु०** —लगाना - घोड़े को दौड़ाना।

**एड़ी** - स्त्री० [हिं] टखने के नीचे पैर के पीछे का गद्दीदार भाग; **मु०** — घिसाना या रगड़ना - दुख सहकर यत्न करना;— चोटी एक करना - खूब दौड़-धूप करना।

**एण** - पु० [सं] काला मृग।

**एतक़ाद** - पु० [अ] विश्वास, भरोसा।

**एतकाफ़** - पु० [अ] दुनियाँ से नाता तोड़-कर मसजिद में एकांतवास करना।

**एतदाद** - पु० [अ] गणना।

**एतदाल** - पु० [अ] समता; मध्यम मार्ग; परहेज़।

**एतद्** - सर्व० [सं] यह; यौ० एतद्देशीय; इस देश का।

**एतनाई** - स्त्री० [अ] सहानुभूति दिखलाना; यौ० बेएतनाई - लापरवाही।

**एतबार** - पु० [अ] भरोसा; **मु०** — उठना - विश्वास खो जाना।

**एतमाद** - पु० [अ] भरोसा, विश्वास।

**एतराज़** - पु० [अ] उज्र, आपत्ति।

**एतराफ़** - पु० [अ] इक़रार करना, मानना।

**एता** - वि० [देश] इतना।

**एतादृश** - वि० [सं] ऐसा।

**एरंड** - पु० [सं] रेंड, रेंडी।

**एराफ़** - पु० [अ] जहाज़ का पेंदा।

**एराब** - पु० [अ] ज़ेर, ज़बर, पेश की मात्राओं के चिन्ह।

**एलची** - पु० [तु] राजदूत।

**एला** - स्त्री० [सं] इलायची।

**एवं** - 1. वि० [सं] इसी प्रकार; 2. अव्य० इसी प्रकार; और।

**एव** - अव्य० [सं] ही, भी।

**एवज़** - पु० [फ़ा] बदले में; प्रतिफल, प्रतिकार; यौ० — मुआवज़ा - अदला-बदली।

**एवज़ी** - वि० [फ़ा] स्थानापन्न, बदले में काम करनेवाला।

**एषणा** - स्त्री० [सं] इच्छा, अभिलाषा।
**एषणिका** - स्त्री० [सं] सोना तौलने का काँटा।
**एह** † - सर्व० [अव] यह।
**एहतमाम** - पु० [अ] कोशिश; प्रबंध; निरीक्षण।
**एहतमाल** - पु० [अ] बरदाश्त करना; आशंका, भय; बोझ उठाना।
**एहतराज़** - पु० [अ] दूर रहना; बचना।
**एहतराम** - पु० [अ] आदर।
**एहतशाम** - पु० [अ] शान-शौकत, वैभव; प्रतिष्ठा।
**एहतसाब** - पु० [अ] हिसाब-किताब।
**एहतियाज़** - पु० [अ] आवश्यक होना।
**एहतियात** - स्त्री० [अ] पाप से बचना; परहेज़; सावधानी।
**एहतियातन** - वि० [अ] सतर्कता से, सावधानी से।
**एहमाल** - पु० [अ] उपेक्षा करना।
**एहमाली** - वि० [फ़ा] ध्यान न देनेवाला; निकम्मा।
**एहसान** - पु० [फ़ा] अहसान; यौ० —फ़रामोश - कृतघ्न; —फ़रामोशी - कृतघ्नता; —मंद - उपकार माननेवाला।
**एहसास** - पु० [फ़ा] हाथ से छूना; मालूम करना।
**एहि**† - सर्व० [हिं] इसको।
**एहो** - अव्य० [देश] संबोधन शब्द।

## ऐ

**ऐ** - अव्य - [हिं] सम्बोधन का चिह्न, जो छोटों तथा नीच लोगों के प्रति प्रयुक्त किया जाता है।
**ऐं** - 1. अव्य [हिं] अच्छी तरह न सुनी या समझी बात को फिर से कहलाने के लिए या आश्चर्य ज़ाहिर करने के लिए प्रयुक्त होनेवाला अव्यय।
**ऐंचना** - स० [हिं] खींचना; अपने ऊपर कर्ज़ उतार लेना; ओढ़ना।
**ऐंचाताना** - वि० [हिं] जिसकी आँख की पुतली दूसरी ओर खिच जाती हो। (ऐंचाताना बड़ा बदमाश होता है, ऐसा लोग कहते हैं। जैसे, 'सौ में सूर, हज़ार में काना। सवा लाख में ऐंचाताना।')
**ऐंचातानी** - स्त्री० [हिं] खींचातानी; आग्रह।
**ऐंछना** - स० [हिं] साफ़ करना; कँघी करना।
**ऐंठ** - पु० [हिं] गर्व; अकड़।
**ऐंठन** - स्त्री० [हिं] मरोड़; अकड़।
**ऐंठना** - स० [हिं] मरोड़ना; दबाव डालकर कुछ वसूल करना; धोखा देकर लेना।
**ऐंठा** - पु० [हिं] रस्सी बटने का यंत्र।
**ऐंठू** - वि० [हिं] अकड़बाज़, अभिमानी।
**ऐंड़** † - 1. पु० [हिं] गर्व; पानी का भँवर 2. वि० निकम्मा; नष्ट।
**ऐंड़ना** - अ० [हिं] अंगड़ाई लेना; इतराना; बल खाना।
**ऐंड़बैंड़** - वि० [अनु] तिरछा।
**ऐंड़ा** - 1. वि० [हिं] टेढ़ा; 2. पु० बाट; सेंध।
**ऐंड़ाना** - अ० [हिं] अंगड़ाई लेना; बदन तोड़ना।
**ऐंढा** - पु० [देश] एक तरह का गँडासा।
**ऐंद्रजालिक** - 1. वि० [सं] इंद्रजाल करनेवाला; 2. पु० कलाबाज़, जादूगर।
**ऐंद्रियक** - वि० [सं] इंद्रियग्राह्य, इंद्रियों से जाना जानेवाला।
**ऐकमत्य** - पु० [सं] समान विचार, एकमत।
**ऐकांतिक** - वि० [सं] एकांतवासी, एकतर्फ़ा।
**ऐकागारिक** - 1. वि० [सं] एक ही घर में रहनेवाला; 2. पु० चोर।

**ऐक्य** - पु० [सं] एकता, मेल ।
**ऐच्छिक** - वि० [सं] इच्छा से लिया हुआ, वैकल्पिक, जिसे करना या न करना अपनी इच्छा पर हो ।
**ऐज़न** - पु० [अ] वही ; उक्त ।
**ऐजाज़** - पु० [अ] आदर, प्रतिष्ठा ।
**ऐण** - पु० [सं] मृगचर्म ।
**ऐतिह्य** - पु० [सं] परम्परा-प्रसिद्ध प्रमाण ।
**ऐदाद** - स्त्री० [अ] अदद का बहु० ।
**ऐन** - 1. स्त्री० [अ] आँख ; 2. वि० ठीक, उपयुक्त ; बिलकुल ।
**ऐनक** - स्त्री० [अ] चश्मा ।
**ऐपन** - पु० [हिं] हल्दी के साथ पिसा हुआ चावल जिससे मंगलकार्य में थापा लगाते हैं या चौक पूरते है ।
**ऐब** - पु० [अ] दोष ।
**ऐबक** - पु० [फ़ा] प्यारा ; दास ; दूत ।
**ऐबगो** - वि० [फा] दूसरो की निंदा करनेवाला ।
**ऐबगोई** - स्त्री० [फ़ा] दूसरो की निंदा करना ।
**ऐबजो** - वि० [फ़ा] दूसरो के दोष ढूँढ़नेवाला ।
**ऐबजोई** - स्त्री० [फ़ा] दूसरो के दोष ढूँढ़ना ।
**ऐबपोश** - पु० [फ़ा] किसीके दोष को छिपानेवाला ।
**ऐबी** - वि० [फ़ा] जिसमें दोष हो ।
**ऐमाल** - पु० [अ] अमल का बहु०, कार्यसमूह, कृत्य ।
**ऐमालनामा** - पु० [अ] भले-बुरे कामो की बही ।
**ऐयाम** - पु० [अ] दिन ; समय ; मौसिम ।
**ऐयार** - पु० [अ] चालाक ; धूर्त ; धोखेबाज़ ।
**ऐयारी** - स्त्री० [अ] धूर्तता ; चालाकी ।
**ऐयाश** - वि० [अ] बहुत ऐश करनेवाला, विषयी, लंपट, कामुक ।
**ऐयाशी** - स्त्री० [अ] कामुकता, विषयासक्ति ।
**ऐरा-ग़ैरा** - वि० [अ] अजनबी आदमी ।
**ऐराफ़** - पु० [अ] स्वर्ग और नरक के बीच की दीवार ।
**ऐरावत** - पु० [सं] इन्द्र का हाथी ।
**ऐलान** - पु० [अ] राजाज्ञा ; घोषणा ।
**ऐलानिया** - क्रि० [अ] खुल्लमखुल्ला ।
**ऐलाम** - पु० [अ] घोषणा ।
**ऐवान** - पु० [अ] राजमहल ।
**ऐश** - पु० [अ] आराम, भोग-विलास ।
**ऐशोइशरत** - पु० [अ] भोग-विलास ।
**ऐश्वर्य** - पु० [सं] विभूति ; प्रभुत्व ; सिद्धि ; धन, वैभव ।
**ऐश्वर्यवान** / **ऐश्वर्यशाली** } वि० [सं] वैभवशाली ।
**ऐसा** - वि० [हिं] इस प्रकार का; इस ढंग का ।
**ऐसे** - क्रि० [हिं] इस तरह से ।
**ऐहिक** - वि० [सं] दुनियावी, सांसारिक ।

## ओ

**ओंकार** - 1. पु० [सं] 'ओ' शब्द ; सोहन चिड़िया ; सोहन पक्षी का पर जिससे फ़ौजी टोपी की कलगी बनती है ।
**ओंगना** -. स. [देश] औंगना, गाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देना ।
**ओंगा** - पु० [देश] अपामार्ग, लटजीरा, चिचड़ा ।
**ओंठ** - पु० [हिं] लब ; होठ ; मु० —चबाना - क्रोध या दुख से ओठ को दांतो से दबाना ;—पपड़ाना - खुश्की के कारण ओठ पर का चमड़ा सूखकर तह बँध जाना ; —फड़कना - गुस्से से ओठ कांपना ।
**ओक** - पु० [सं] घर ; ठिकाना ; अंजली ;

मु० —लगाकर पानी पीना - अंजली को मुँह से लगाये रहकर धार से गिरता हुआ पानी पीना।

**ओकाई** - स्त्री० [हि] वमन, वमन करने की इच्छा।

**ओखल** † - पु० [देश] परती ज़मीन; ओखली।

**ओखली** - स्त्री० [हिं] धान या किसी और धान्य की भूसी अलग करने के लिए जिसमें डालकर मूसल से कूटते हैं; मु० —में सिर देना - इच्छापूर्वक झंझट में फँसना।

**ओग** † - पु० [व्रज] महसूल; गोद, दीवार या बर्तन पर पानी की बही धार का निशान करना।

**ओगारना** - स० [हिं] कुआँ साफ़ करना, कुएँ का उदेव करना।

**ओघ** † - पु० [सं] समूह।

**ओछा** - वि० [हि] तुच्छ; जो गंभीर न हो; छिछला; हलका।

**ओज** - पु० [सं] तेज, प्रकाश; कविता में वह गुण जिसमे श्रोता के चित्त में आवेश पैदा हो।

**ओजस्वी** - वि० [सं] शक्तिशाली; तेजोवान्।

**ओझल** - पु० [हिं] ओट, आड़।

**ओझा** - पु० [हिं] भूत-प्रेत झाड़नेवाला, भूत वैद्य; गुजराती, मैथिली और सरयूपारीण ब्राह्मणो की एक शाखा।

**ओट** - स्त्री० [हिं] व्यवधान, आड़; मु० —में - बहाने से; आँखो से ओट होना - दृष्टि से छिप जाना।

**ओटन** - पु० [हिं] रूई से बिनौले को अलग करनेवाले यंत्र के वे दो डंडे जो घूमते हैं।

**ओटना** - स० [हि] रूई से बिनौले अलग करने की क्रिया।

**ओटनी** - स्त्री० [हिं] कपास ओटने की चरखी, बेलनी।

**ओड़न** † - पु० [हिं] ढाल।

**ओढ़ना** - स० [हि] रज़ाई, चद्दर, दुपट्टा आदि ऐसे कपड़े से शरीर को ढँकना; **मु०** ओढे या बिछावे - क्या करें? किस काम में लावे?; —उतारना - अपमानित करना।

**ओढ़नी** - स्त्री० [हि] स्त्रियो के ओढ़ने का वस्त्र; मु० —बदलना - बहन का संबंध स्थापित करना, बहनापा जोड़ना।

**ओढ़र** † - पु० [हि] बहाना।

**ओढ़ाना** - स० [हि] कपड़े से शरीर को ढँकना।

**ओत** - स्त्री० (सं. अ.) आराम; आलस्य; लाभ।

**ओतप्रोत** - वि० [सं] गुँथा हुआ; ताना-बाना, बहुत मिला-जुला।

**ओद** - पु० [हिं] नमी, तरी, गीलापन।

**ओदन** - पु० [सं] भात।

**ओदरना** - अ० [हिं] फटना, नष्ट होना; खुदना।

**ओदा** - वि० [हिं] गीला।

**ओदारना** - स० [हि] फाड़ना; खोदना; छिन्न-भिन्न करना।

**ओधना** - अ० [देश] उलझना, बँधना; काम में लगना।

**ओप** - स्त्री० [सं] चमक, दीप्ति, कान्ति; जिला, पालिश।

**ओपची** - पु० [हि] योद्धा, कवचधारी; रक्षक।

**ओपना** - स० [हि] चमकाना, साफ़ करना, जिलाकारी करना।

**ओपनी** - स्त्री० [देश] ईंट या पत्थर का टुकड़ा जिससे रगड़कर तलवार आदि पर चमक लाते हैं, मोहरा, बट्टी।

**ओफ़** - अव्य० [अनु] ओह, पीड़ा या खेद-सूचक शब्द ।

**ओबरी**† - स्त्री० [देश] तंग कोठरी ।

**ओम्** - पु० [सं] ओंकार, प्रणव ।

**ओर** - 1. स्त्री० [हिं] तरफ़ ; किनारा ।

**ओरमना** - अ० [देश] लटकना ; सूजना, फूलना ।

**ओरमा** - पु० [देश] इकहरी सिलाई ।

**ओरा** - पु० [देश] ओला, पत्थर ।

**ओल** - 1. पु० [सं] सूरन, ज़िमीकंद ; 2. वि० गीला ; 3. स्त्री० गोद ; आड़ ; शरण, पनाह ; बहाना ।

**ओलती** - स्त्री० [देश] छप्पर का वह भाग जहाँ से पानी गिरता है, ओरी ।

**ओलना** - स० [हि] बटोरना ; परदा करना ; रोकना ।

**ओला** - पु० [हिं] पानी के जमे हुए टुकड़े जो वर्षा के साथ गिरते हैं ; बिनौला ; मिश्री का ठंढा लड्डू ; परदा, ओट ; भेद ।

**ओलिक** - पु० [देश] पर्दा, आड़ ।

**ओलियाना** - स० [हिं] गोद में भरना ; अंचल में लेना ; ठूँसना ; घुसाना ।

**ओषधि** - स्त्री० [स] वनस्पति ; जड़ी-बूटी, दवा, तृण-घास ।

**ओषधीश** - पु० [सं] चंद्रमा ।

**ओष्ठ** - पु० [सं] होठ, ओठ, लब, अधर ।

**ओष्ठी** - स्त्री [सं] कुंदरू ; कुंदरू की बेल ।

**ओष्ठ्य** - वि० [सं] ओठसबधी, ओंठ से उच्चारित ।

**ओस** - स्त्री० [हिं] हवा में मिली हुई भाप जो रात की सर्दी से जमकर बूँदें बनकर गिरती है, शबनम ; **मु०**—के मोती - जल्दी मिटनेवाला वैभव ;...पर —पड़ना - कुम्हलाना, उमंग बुझ जाना ; लज्जित होना ।

**ओसर** - स्त्री० [देश] जवान गाय या भैंस ।

**ओसरा (री)** - पु० [देश] बारी, पाली ; दाँव ; क्रम ।

**ओसाना** - स० [हिं] दाँये हुए अनाज को हवा में उड़ाकर साफ़ करना ; **मु०** अपनी ओसाना - ज़्यादा बातें करना ।

**ओसार** - पु० [देश] विस्तार, फैलाव ।

**ओसारा** - पु० [देश] बरामदा, दालान ।

**ओसीसा** - पु० [देश] सिरहाना, तकिया ।

**ओह** - अव्य० [हिं] दुख या विस्मयसूचक शब्द ।

**ओहदा** - पु० [अ] पद, स्थान ।

**ओहदेदार** - पु० [अ] किसी अच्छे पद पर काम करनेवाला ।

**ओहर** - 1. क्रि० [देश] उधर ; 2. पु० ओट, ओझल ।

**ओहरी** - स्त्री० [देश] थकावट ।

**ओहा** - पु० [देश] गाय का थन ।

**ओहार** - पु० [देश] पालकी या गाड़ी के ऊपर का कपड़ा, परदा ।

**ओही** - सर्व० [देश] वही ।

**ओहो** - अव्य० [सं] आश्चर्य या आनन्द-सूचक शब्द ।

## औ

**औंगना** - स० [देश] गाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देना ।

**औंगा** - वि० [देश] गूँगा, मूक ।

**औंगी** - स्त्री० [देश] चुप्पी, गूँगापन ।

**औंघना** - अ० [हिं] ऊँघना, अलसाना ।

**औंघाई** - स्त्री० [हिं] हलकी नींद, झपकी ।

**औंजना** - अ० [हिं] अकुलाना, ऊबना, व्याकुल होना ।

**औंदना** † - अ० [हि] व्याकुल होना ; उन्मत्त होना ; घबराना ।

**औंधना** - 1. अ० [हिं] उलट जाना ; 2. स० उलटा कर देना ।

**औंधा** - वि० [हिं] उलटा, नीचा; **मु०** औंधी खोपड़ी का - मूर्ख; औंधे मुँह गिरना - मुँह के बल गिरना, बेतरह चूकना या धोखा खाना।

**औ** - अव्य० [हिं] और।

**औक़ात** - स्त्री० [अ] हैसियत; समय, मु०, — बसर करना - जीविका चलाना।

**औक्षक** - पु० [सं] बैलों का समूह।

**औखा** - पु० [देश] गाय का चमड़ा या चरसा।

**औगत** † - स्त्री० [हिं] दुर्दशा, अवगति।

**औगी** - स्त्री० [हिं] बैल हाँकने की छड़ी, चाबुक; जानवरों को फँसाने का घास-फूस से ढका गड्ढा।

**औगुन** † - पु० [हिं] अवगुण।

**औघट** - वि० [देश] दुर्गम; कठिन।

**औघड़** - 1. पु० [हिं] अघोरी; मनमौजी; अपशकुन; 2. वि० अंडबंड।

**औघर** - वि० [हिं] विचित्र।

**औचक** - वि० [हिं] अचानक, सहसा, एकाएक।

**औचट** - 1. स्त्री० [देश] संकट, कठिनाई; 2. क्रि० सहसा, अचानक।

**औचित्य** - पु० [सं] उपयुक्तता।

**औज** - पु० [अ] शीर्षबिंदु; सबसे ऊँचा पद।

**औज** - पु० [हिं] तेज, बल, प्रताप।

**औज़ार** - पु० [अ] लोहार, बढ़ई आदि कारीगरों के उपकरण।

**औझड़** - क्रि० [हिं] लगातार।

**औटन** - स्त्री० [हिं] उबाल; तंबाकू काटने की छुरी।

**औटना** - स० [हिं] दूध जैसी पतली चीज़ को आग पर रखकर गरम और गाढ़ा करना; खौलाना; व्यर्थ घूमना।

**औटनी** - स्त्री० [हिं] औटने की कलछी या चम्मच।

**औढर** - वि० [हिं] जल्दी ढुलने या कृपा करनेवाला; मनमौजी।

**औत्सुक्य** - पु० [सं] उत्सुकता।

**औथरा** - वि० [हिं] उथला, छिछला।

**औदकना** - अ० [देश] चौंकना।

**औदनिक** - पु० [सं] रसोइया।

**औदरिक** - वि० [सं] उदर संबन्धी, पेटू।

**औदसा** - स्त्री० [देश] दुर्दशा।

**औदान** - पु० [हिं] घलुआ।

**औदार्य** - पु० [सं] उदारता।

**औदुंबर** - 1. वि० [सं] गूलर; तांबे का बना हुआ; 2. पु० एक मुनि।

**औद्योगिक** - वि० [सं] उद्योगसम्बन्धी, व्यावसायिक।

**औद्योगीकरण** - पु० [सं] देश के उद्योग-धन्धों को बढ़ाने और कल-कारख़ाने आदि खोलने का काम।

**औध** - स्त्री० [हिं] अयोध्या; अवधि, सीमा।

**औना-पौना** - वि० [हिं] थोड़ा-बहुत, अधूरा; **मु०** औने-पौने करना - जो दाम मिले उसीपर बेच डालना।

**औपचारिक** - वि० [सं] जो केवल कहने सुनने के लिए हो, अवास्तविक, उपचारसंबंधी।

**औपनिवेशिक** - 1. वि० [सं] उपनिवेशसंबंधी, उपनिवेश का निवासी।

**औपन्यासिक** - 1. वि० [स] उपन्याससंबंधी; अनोखा; 2. पु० उपन्यास का लेखक।

**औपपत्तिक** - वि [सं] तर्क या उक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।

**औपम्य** - पु० [सं] समता।

**औपयिक** - वि० [सं] न्याययुक्त।

**औपशमिक** - वि० [सं] उपशम करनेवाला।

**औपसर्गिक** - वि० [सं] उपसर्गसंबंधी।

**औबाश** - पु० [अ] कमीना, बदमाश।

**औबाशी** - स्त्री० [अ] कमीनापन, आवारगी।

**औरंग** - पु० [फ़ा] दीपक, राज्यसिंहासन; बुद्धि; कपट।

**औरंगज़ेब** - पु० [फ़ा] राज्यसिंहासन की शोभा बढ़ानेवाला; पाँचवाँ मुग़ल सम्राट।

**और** - 1. अव्य० [हिं] संयोजक शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है; 2. वि० दूसरा, अन्य; अधिक, ज़्यादा; **मु०**—का और-कुछ का कुछ; —तो और-दूसरो की बात जाने दो, दूसरों की बात ही क्या?

**औरत** - स्त्री० [अ] स्त्री; पत्नी; महिला।

**औरस** - पु० [सं] विवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

**औरसना** - अ० [देश] रुष्ट होना; विरस होना।

**औरेब** - पु० [तु] तिरछी चाल; कपड़े की तिरछी काट; पेंच, उलझन।

**औलना** - अ० [हि] उबलना; गरम होना।

**औला** - वि० [अ] सबसे बढ़कर, श्रेष्ठ।

**औलाद** - स्त्री० [अ] संतान; नस्ल।

**औलिया** - पु० [अ] संत, महात्मा; पहुँचा हुआ फ़कीर; सिद्ध।

**औषध** - पु० [स] दवा।

**औषधालय** - पु० [सं] दवाख़ाना, डिस्पेन्सरी।

**औसत** - स्त्री० [अ] बराबर का परता; सामान्य।

**औसतन** - क्रि० [अ] परते के अनुसार।

**औसना** - अ० [हि] गरमी पड़ना; सड़ना।

**औसान** - पु० [अ] शांति; समझ; होश-हवास; **मु०**—ख़ता होना - होश-हवास ठिकाने न रह जाना।

**औसाना** - स० [हि] फल को भूसा आदि में रखकर पकाना।

**औसाफ़** - पु० [अ] वस्फ़ का बहु०; ख़ासियत, गुण; हिम्मत।

## क

**कं** - पु० [सं] जल; मस्तक; सुख; अग्नि; काम।

**कंक** - पु० [सं] अज्ञातवासी युधिष्ठिर का नाम; यम; क्षत्रिय; बगुला।

**कंकड़** - पु० [हिं] ज़मीन के अंदर से निकलनेवाले वह पथरीले टुकड़े जो पत्थर नहीं होते हैं बल्कि चिकनी मिट्टी और चूने के सम्मिश्रण से स्वतः बनते हैं।

**कंकड़ीला** - वि० [हि] कंकड़ मिला हुआ।

**कंकण** - पु० [सं] कड़ा, चूड़ा, कंगन; विवाह और यज्ञ आदि शुभ कार्यों के समय हाथ में बाँधा जानेवाला धागा।

**कंकपत्र** - पु० [सं] उड़नेवाला बाण।

**कंकाल** - पु० [सं] ठठरी, हड्डी का ढाँचा, अस्थि-पंजर।

**कंकालिनी** - स्त्री० [सं] दुर्गा; कंकालों की माला पहननेवाली; कर्कशा।

**कंकोल** - पु० [सं] शीतलचीनी; इसे तमिल में 'वालमिळगु', मलयाळम में 'वालमुळगु', कन्नड़ में 'बाल मेणसु' व तेलुगु में 'चलव मिरियालु' कहते हैं।

**कंखवारी**, **कंखौरी** - स्त्री० [हि] काँख में होनेवाला फोड़ा।

**कंगन, कंगना** - पु० [हिं] कंकण; कंकण बाँधते समय का गीत।

**कंगनी** - स्त्री० [हिं] छोटा कंगन; लाख की चूड़ी; एक अन्न।

**कंगला** - वि० [हि] ग़रीब।

**कंगारू** - पु० [अं] आस्ट्रेलिया देश का एक प्राणी (पशु) जिसकी पिछली टांगें लम्बी और आगे की बहुत छोटी होती हैं।

**कंगाल** - वि० [हिं] ग़रीब।

**कंगाली** - स्त्री० [हिं] ग़रीबी।
**कंगूरा** - पु० [फ़ा] चोटी, शिखर।
**कंगूरिया** - स्त्री० [हिं] सबसे छोटी उंगली।
**कंगूरेदार** - वि० [फ़ा] कंगूरेवाला।
**कंघा** - पु० [हिं] वह दंदानेदार उपकरण जिससे बाल संवारते हैं; जुलाहों का एक औज़ार।
**कंघी** - स्त्री० [हिं] छोटा कंघा; जुलाहों का औज़ार: यौ०—चोटी - बनाव-सिगार।
**कंघेरा** - पु० [हिं] कंघी बनानेवाला।
**कंचन** - पु० [सं] सोना।
**कंचनी** - स्त्री० [सं] वेश्या।
**कंचु, कंचुक** - पु० [सं] चोली; कवच।
**कंचुकी** - 1. स्त्री० [सं] चोली; 2. पु० अंतःपुर का रक्षक, द्वारपालक; साँप।
**कंचुरी** † - स्त्री० [हिं] केंचुल।
**कंचेरा** - पु० [हिं] काँच का काम करनेवाला।
**कंज** - पु० [सं] कमल; ब्रह्मा; केश।
**कंजई** - वि० [हिं] ख़ाकी।
**कंजड़** - पु० [हिं] एक घुमक्कड़ जाति।
**कंजियाना** - अ० [हिं] मुरझाना।
**कंजूस** - वि० [हिं] सूम, कृपण।
**कंट, कंटक** - पु० [सं] काँटा; सुई की नोक; विघ्न; रोमांच।
**कंटकाशन** - पु० [सं] ऊँट।
**कंटकित** - वि० [स] काँटेदार; रोमाचित।
**कंटाइन** - स्त्री० [हिं] चुड़ैल।
**कंटिया** - स्त्री० [हिं] काँटी; सिर का एक गहना।
**कंटीला** - वि० [हिं] काँटों से भरा हुआ।
**कंटोप** - पु० [हिं] एक तरह की टोपी जो कान तक आये।
**कंठ** - पु० [सं] गला; **मु०**—बैठना - आवाज़ न निकलना;—करना - याद करना।
**कंठगत** - वि० [सं] गले में आया हुआ; गले में अटका हुआ; **मु०** प्राण—होना - प्राण निकलने पर होना।
**कंठमाला** - स्त्री० [सं] गले में लगातार छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलनेवाली एक बीमारी।
**कंठस्थ** - वि० [सं] याद; ज़ुबानी।
**कंठा** - पु० [सं] गले का एक गहना।
**कंठाग्र** - वि० [सं] याद, कंठस्थ।
**कंठी** - स्त्री० [सं] तुलसीमाल; **मु०**—उठाना या छूना - क़सम खाना;—देना; चेला बनाना।
**कंठीरव** - पु० [सं] सिंह, शेर; कबूतर।
**कंठोष्ठ्य** - वि० [सं] जिनका उच्चारण कंठ और ओठ के सहारे होता हो।
**कंठ्य** - वि० [सं] कंठ से उत्पन्न।
**कंडरा** - स्त्री० [सं] रक्त की मोटी नाड़ी।
**कंडा** - पु० [हिं] ईंधन के लिए सूखा गोबर; **मु०** —होना - सूखना, दुर्बल हो जाना।
**कंडारी** - पु० [सं] जहाज़ का माँझी।
**कंडाल** - पु० [हिं] तुरही, हवा फूँकने से बजनेवाला एक बाजा; पानी रखने का लोहे या पीतल का बड़ा बरतन।
**कंडिका** - स्त्री० [सं] वेद की ऋचाओं का समूह; कांड।
**कंडील** - स्त्री० [अ] मिट्टी, अबरक या काग़ज़ का बना हुआ दीपाधार जिसमें दीपक रखकर ऊपर बाँस में लटका देते हैं।
**कंडु** - स्त्री० [सं] खुजली, खाज।
**कंडुक** - पु० [सं] भिलावाँ; तमाल।
**कंडेरा** - पु० [देश] धुनियाँ; लाठी-डंडा तथा तीर-कमान आदि बनानेवाली एक जाति।

**कंडौरा** - पु० [देश] वह स्थान जहाँ कंडे पाथे या रखे जाते हैं।

**कंत** - पु० [सं] पति ; ईश्वर।

**कंथा** - स्त्री० [सं] गुदड़ी, कथरी।

**कंद** - 1 पु० [सं] सूरन, शकरकंद आदि जैसी बिना रेशे की गूदेदार जड़ ; 2 [फ़ा] मिस्री।

**कंदन** - पु० [सं] नाश, ध्वंस।

**कंदरा** - स्त्री० [सं] गुफा।

**कंदर्प** - पु० [सं] कामदेव।

**कंदला** - पु० [स] चांदी की गुल्ली या लंबी छड़ जिससे तराशकर तार बनाते हैं।

**कंदा** - पु० [सं] एक प्रकार का कंद।

**कंदील** - स्त्री० [अ] कंडील, कागज़ की बनायी हुई लालटेन जो लटकायी जाती है।

**कंदुक** - पु० [सं] गेंद।

**कंदूरी** - 1. स्त्री० [हिं] कुंदरू नामक एक तरकारी ; 2. [फ़ा] वह खाना जिससे मुसलमान फ़ातिमा बीबी या पीर के नाम फ़ातिहा करते हैं।

**कंदैला** - वि० [हिं] गँदला, मैला।

**कंदोरा** - पु० [हिं] करधनी।

**कंध** - पु० [हिं] डाल ; कंधा।

**कंधनी** - स्त्री० [हिं] मेखला, किंकिणी।

**कंधर** - पु० [सं] गरदन ; बादल ; मोथा।

**कंधा** - पु० [हि] गले और बाहुमूल के बीच का देह-भाग, बाहुमूल ; **मु०**—देना - मुर्दे के साथ मरघट तक जाना ; सहारा देना ; —बदलना - बोझ एक कंधे पर से दूसरे पर लेना ; कंधे से कंधा छिलना - बहुत भीड़ होना ; कंधे से कंधा भिड़ाना - साथ मिलकर काम करना, सहयोग देना।

**कंधावर** - स्त्री० [हिं] जुए का वह भाग जो बैल के कंधे पर रहता है।

**कंधेला** - पु० [हिं] स्त्रियो की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर रहता है, आँचल।

**कंप** - पु० [सं] कांपना।

**कँपकँपी** - स्त्री० [हिं] कपन।

**कंपना** - अ० [हिं] कांपना, डरना।

**कंपा** - पु० [हिं] चिड़िया फँसाने की तीलियाँ ; **मु०**—लगाना या डालना - दाँव पर चढ़ाना।

**कंपाना** - स० [हिं] हिलाना ; भय दिखाना।

**कंपायमान** - वि० [सं] कांपता हुआ।

**कंपास** - स्त्री० [अं] कुतुबनुमा ; दिशा-दर्शक यंत्र ; **मु०**—लगाना - पैमाइश करना ; घात में रहना।

**कंपित** - वि० [सं] कांपता हुआ ; अस्थिर, चंचल।

**कंपू** - पु० [देश] छावनी, डेरा ; **मु०**—का बिगड़ा हुआ - बदमाश, गुंडा ; बाग़ी।

**कंबख़्त** - वि० [फ़ा] अभागा।

**कंबल** - पु० [सं] मोटा ऊनी वस्त्र जो ओढ़ने बिछाने के काम आता है।

**कंबु, कंबुक** - पु० [सं] शंख, शंख की चूड़ी ; हाथी।

**कँवरी** - स्त्री० [देश] पचास पान की एक गड्डी।

**कंवल** - पु० [हिं] कमल ; —गट्टा - कमल का बीज।

**कंस** - पु० [सं] काँसा ; प्याला ; सुराही ; श्री कृष्ण का मामा।

**कंसताल** - पु० [हिं] झाँझ।

**कंसारि** - पु० [सं] श्रीकृष्ण।

**कअब** - पु० [अ] किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने पर आनेवाला गुणन-फल ; घन ; जुआ खेलने का पाँसा।

**क़अर** - पु० [अ] गहराई ; खाड़ी ; गंभीरता।

**कई** - वि० [हिं] अनेक।

**ककड़ी** - स्त्री० [हिं] ज़मीन पर फैलनेवाली एक बेल का फल, खीरा ; **मु०**—के चोर को कटारी की मार - छोटे अपराध का बड़ा दण्ड ।

**ककना** - पु० [हिं] कंकण ।

**ककनी** - स्त्री० [हिं] कंकण ।

**ककराली** - पु० [हिं] काँख का फोड़ा ।

**ककरी** - स्त्री० [हिं] ककड़ी ।

**ककहरा** - पु० [हिं] 'क' से 'ह' तक की वर्णमाला ।

**ककुद** - पु० [सं] बैल के कंधे का कूबड़ ; राजचिन्ह ।

**ककुभ** - पु० [सं] अर्जुन वृक्ष ; दिशा ।

**ककेड़ा** - पु० [देश] चचींड़ा ।

**ककोरना** - स० [हिं] खुरचना ।

**कक्कड़** - पु० [हिं] सूखी या सेकी हुई सुरती ।

**कक्कड़बाज़** - पु० [हिं] बहुत तमाखू पीनेवाला ।

**कक्का** - पु० [हिं] काका ।

**कक्ष** - पु० [सं] काँख ; कमरा ; दर्जा ; लॉग ; कछार ; जंगल ; सूखी घास ।

**कक्षा** - स्त्री० [सं] श्रेणी ; परिधि ; ग्रहों के भ्रमण करने का मार्ग ।

**कखरी** - स्त्री० [देश] बग़ल ।

**कखौरी** - स्त्री० [हिं] काँख का फोड़ा ।

**कगर, कगार** - पु० [हिं] किनारा ; ऊँचा टीला ; नदी का करारा ।

**कच** - पु० [सं] बाल ; फोड़ा ; झुंड ; मेघ ; बृहस्पति का पुत्र ।

**कचक** † - स्त्री० [देश] कुचल जाने की चोट ।

**कचकच** - स्त्री० [अनु] बकवाद, झगड़ा ।

**कचकचाना** - अ० [हिं] खूब दाँत धँसाना ; दाँत पीसना ।

**कचकड़** - पु० [देश] कछुए का खोपड़ा ।

**कचकना** † - अ० [देश] दबना ; ठेस लगना ; ठोकर लगना ।

**कचकोल** - स्त्री० [फ़ा] दरियायी नारियल का खप्पर ; कपाल ; कजकोल ।

**कचड़ा** - पु० [हिं] कूड़ा-करकट ; समुद्र की सेवार ; कच्चा ख़रबूजा ; कचरा ।

**कचदिल** - वि० [हिं] कच्चे दिल का, जो सहनशील न हो ।

**कचनार** - पु० [हिं] एक प्रकार का फूलदार पेड़ ।

**कचपच** - पु० [अनु] थोड़ी जगह में बहुत-सी वस्तुओं या लोगों का भर जाना ; गिचपिच ।

**कचपची** - स्त्री० [देश] कृत्तिका नक्षत्र ; चमकीली बिन्दी ।

**कचरना** - स० [हिं] रौंदना, पाँव से दबाना ।

**कचर-पचर** - पु० [हिं] गिचपिच ।

**कचरा** - पु० [हिं] कचड़ा ।

**कचरी** - स्त्री० [हिं] एक लता जिसका फल तरकारी के काम आता है ; सूखी कचरी की तरकारी ।

**कचला** - पु० [हिं] गीली मिट्टी, कीचड़ ।

**कचलोन** - पु० [हिं] काला नमक ।

**कचवाट** - स्त्री० [हिं] खिन्नता ; नफ़रत ।

**कचहरी** - स्त्री० [हिं] दरबार, न्यायालय ; **मु०**—चढ़ना - अदालत तक मामला ले जाना ; —लगना - बहुत से लोगों का इकट्ठा होकर शोरगुल मचाना ।

**कचाई** - स्त्री० [हिं] कच्चापन ।

**कचाना** - अ० [हिं] पीछे हटना ; हिम्मत हारना ।

**कचारना** - स० [हिं] कपड़ा धोना ।

**कचालू** - पु० [हिं] एक तरह की अरुई, बंडा ; नमक मिर्च आदि मिले उबले आलू के टुकड़े ; **मु०**—करना या बनाना - खूब पीटना ।

**कचिया** - स्त्री० [हिं] दाँती, हँसिया।

**कचियाना** - अ० [हिं] सहारा छोड़ना; डर जाना; लज्जित होना।

**कचुल्ला** - पु० [हिं] चौड़ी पेंदीवाली कटोरी।

**कचूमर** - पु० [हिं] कुचलकर बनाया हुआ अचार; किसी वस्तु की कुचली हुई पिट्ठी; **मु०**—निकालना - खूब कूटना या पीटना।

**कचूर** - पु० [सं] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ का उपयोग दवा में किया जाता है।

**कचोना** - स० [हि] चुभाना, धँसाना।

**कचोरा** - पु० [हिं] कटोरा, प्याला।

**कचोरी** - स्त्री० [हिं] छोटी कटोरी।

**कचौड़ी** / **कचौरी** - स्त्री० [हि] एक तरह की पूरी जिसके भीतर उड़द आदि की पीठी भरी जाती है।

**कच्चा** - वि० [हि] जो पका न हो; **मु०** —खा जाना - मार डालना; कच्ची ज़बान खोलना - अपमानसूचक शब्दों का प्रयोग करना, गाली देना; —पड़ना - झूठा ठहरना; ग़लत साबित होना; संकुचित होना।

**कच्चा घड़ा** - पु० [हि] घड़ा जो आग में पका न हो; **मु०** कच्चे घड़े से पानी भरना - अत्यंत कठिन काम करना।

**कच्चा चिट्ठा** - पु० [हिं] ठीक-ठीक ब्यौरा; **मु०**—खोलना - गुप्त भेद खोलना, भंडाफोड़ करना।

**कच्चा माल** - पु० [हिं] मिल या फ़ैक्टरी में ले जाकर जिससे पक्का माल बनाया जाये वह चीज़।

**कच्चा हाथ** - पु० [हि] अनभ्यस्त हाथ।

**कच्चा हाल** - पु० [हिं] सच्ची कथा।

**कच्ची रसोई** - स्त्री० [हि] दाल-भात'।

**कच्ची गोटी** - स्त्री० [हिं] चौसर खेलने की गोटी; **मु०**—खेलना - अनाड़ीपन करना।

**कच्ची गोली** - स्त्री० [हिं] मिट्टी की वह गोली जो पकाई न गयी हो; **मु०**—खेलना - अनाड़ीपन करना।

**कच्ची रोकड़** - स्त्री० [हिं] वह बही जिसमें प्रतिदिन का हिसाब दर्ज रहता है।

**कच्ची सड़क** - स्त्री० [हि] वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न डाला गया हो।

**कच्चू** - स्त्री० [हिं] अरुई, घुइयाँ।

**कच्छ** - पु० [स] जलप्राय देश; नदी तट की ज़मीन, कछार; धोती की लाँग; गुजरात के समीप का एक देश।

**कच्छप** - पु० [सं] कछुआ; विष्णु का एक अवतार; कुबेर की एक निधि।

**कच्छपी** - स्त्री० [सं] कछुवी; सरस्वती की वीणा।

**कच्छी** - वि० [हिं] कच्छ देश का; घोड़े की एक जाति।

**कछना** - पु० / **कछनी** - स्त्री० [हि] घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती।

**कछरा** - पु० [हि] चौड़े मुँह का बरतन।

**कछान** - पु० [हिं] घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।

**कछार** - पु० [हिं] समुद्र या नदी के तट की नीची भूमि।

**कछु, कछुक, कछू** - वि० [अव] कुछ, थोड़ा।

**कछुआ** - पु० [हिं] एक जलजंतु जिसकी पीठ ढाल की-सी कड़ी खोपड़ीवाली होती है।

**कछोटा** - पु० [हि] कछनी; छोटी धोती।

**कज** - पु० [फ़ा] टेढ़ापन; दोष, ऐब।

**कजक** - पु० [फ़ा] हाथी हाँकने का अंकुश।

**कजकोल** - स्त्री० [फ़ा] भिक्षापात्र; सूक्तियों की संग्रह-पुस्तक।

**कज-खुल्क़** - वि० [फ़ा] ख़राब मिज़ाज का।
**कज-निहाद** - वि० [फ़ा] दुष्ट स्वभाववाला।
**कज-फ़हम** - वि० [फ़ा] हर बात का उलटा अर्थ लगानेवाला।
**कज-बहस** - पु० [फ़ा] कठहुज्जती; व्यर्थ की बहस।
**कज-बी** - वि० [फ़ा] हर बात को टेढ़ी नज़र से देखनेवाला; शक्की।
**कज-रफ़्तार** - वि० [फ़ा] टेढ़ा-मेढ़ा चलने-वाला।
**कज-रफ़्तारी** - स्त्री० [फ़ा] टेढ़ी-मेढ़ी चाल।
**कजरा** - पु० [हिं] काजल, काली आँखों वाला बैल।
**कजराई** - स्त्री० [हिं] कालापन।
**कजरारा** - वि० [हिं] काजल के समान काला; अंजनयुक्त नेत्र।
**कजरी** - स्त्री० [हिं] काली गाय; एक बरसाती गीत।
**कज़ल-बाश** - पु० [फ़ा] योद्धा।
**कजलाना** - अ० [हिं] काला पड़ना; आग का बुझना।
**कजली** - स्त्री० [हिं] कालिख; काली आँखवाली गाय; एक त्योहार; एक गीत जो सावन में गाया जाता है।
**कजलौटा** - पु० [हिं] काजल रखने की डिब्बी।
**क़ज़ा** - स्त्री० [अ०] मौत; मु०—करना - मर जाना।
**क़ज़ा-ए-इलाही** - स्त्री० [फ़ा] स्वाभाविक मृत्यु।
**क़ज़ा-ए-नागहानी** - स्त्री० [फ़ा] आकस्मिक मृत्यु।
**क़ज़ा-ए-हाजत** - स्त्री० [फ़ा] मल-मूत्र का त्याग।
**क़ज़ाकार** - क्रि० [फ़ा] संयोग से; अचानक।
**क़ज़ात** - स्त्री० [अ] काज़ी का पद या कार्य; झगड़ा।
**क़ज़ारा** - वि० [फ़ा] अचानक; संयोग से।
**क़ज़ा व क़द्र** - स्त्री० [फ़ा] भाग्य, क़िस्मत।
**कजावा** - पु० [फ़ा] ऊँट की काठी।
**क़ज़िया** - पु० [अ] विवादास्पद विषय; झगड़ा; मु०—पाक होना - विवाद का अंत होना।
**कज़ी** - स्त्री० [फ़ा] टेढ़ापन।
**क़ज़ीब** - पु० [अ] पेड़ की डाल; तलवार।
**कज्जल** - पु० [सं] काजल।
**क़ज्ज़ाक़** - पु० [तु] डाकू; लुटेरा; रूस के पास का एक प्रान्त।
**क़ज़्ज़ाक़ी** - स्त्री० [फ़ा] लुटेरापन; लूटमार; धोखेबाज़ी।
**कट** - पु० [सं] हाथी का गंडस्थल; खस; लाश; श्मशान।
**कटक** - पु० [स] सेना; राज-शिबिर; कंकण।
**कटकटाना** - अ० [हिं] दाँत पीसना।
**कटकुटी** - स्त्री० [देश] पर्णशाला।
**कटकोल** - पु० [हिं] पीकदान।
**कटखना** - वि० [हिं] काट खानेवाला।
**कटघरा** - पु० [हिं] काठ का घेरा, बड़ा पिंजड़ा।
**कटज़ीरा** - पु० [देश] काला ज़ीरा।
**कटड़ा** - पु० [देश] भैंस का पँड़वा।
**कटती** - स्त्री० [हिं] बिक्री; काट लेना।
**कटनी** - स्त्री० [हिं] फ़सल की कटाई का काम; काटने का औज़ार; मु०—काटना - इधर से उधर भागना।
**कटर** - स्त्री० [देश] एक प्रकार की घास; छोटी नाव।
**कटरा** - पु० [देश] छोटा बाज़ार; भैंस का पँड़वा।
**कटहरा** - पु० [हिं] कटघरा।

**कटहल** - पु० [हिं] एक बड़ा फल जिसका कोया खाया जाता है, फनस, कंटक-फल ।

**कटहा** - वि० [हिं] काट खानेवाला ।

**कटाई** - स्त्री० [हिं] फ़सल काटने का काम ।

**कटाकटी** - स्त्री० [हिं] मारकाट ।

**कटाक्ष** - पु० [सं] तिरछी चितवन ; व्यंग्य ; आक्षेप ।

**कटान** - स्त्री० [हि] काट-छाट ।

**कटार** - पु० [हि] एक हथियार ।

**कटारी** - स्त्री० [हि] छोटा कटार ।

**कटाल** - पु० [देश] ज्वार ।

**कटाव** - पु० [हिं] काट-छांट, कतर-ब्योत ; काटकर बनाये हुए बेल-बूटे ।

**कटास** - पु० [हिं] बन-बिलाव ।

**कटाह** - पु० [सं] कड़ाह ; कछुए की पीठ ; भैंस का बच्चा ।

**कटि** - स्त्री० [सं] कमर ।

**कटिजेब** - स्त्री० [हिं] करधनी ।

**कटिबंध** - पु० [सं] कमरबंद ; पृथ्वी के पाँच कल्पित भागों में से कोई एक ।

**कटिबद्ध** - वि० [सं] प्रस्तुत, तैयार ।

**कटियाना** - अ० [हिं] रोएँ का खड़ा होना ।

**कटिवस्त्र** - पु० [सं] धोती ।

**कटिसूत्र** - पु० [सं] मेखला ; सूत की करधनी ।

**कटीला** - वि० [हिं] काट करनेवाला ; तेज़, तीक्ष्ण, नुकीला ।

**कटु** / **कटुक** - वि० [सं] कड़ुआ, अप्रिय, जो अच्छा न लगे ।

**कटुकीट** - पु० [सं] मच्छर ।

**कटुता** - स्त्री [सं] कड़ुआपन ।

**कटूक्ति** - स्त्री० [सं] अप्रिय बात ।

**कटेरी** - स्त्री० [देश] भटकटैया, एक कंटीला पौधा ।

**कटैया** - पु० [हिं] काटनेवाला ।

**कटोरदान** - पु० [हिं] भोजन रखने का ढक्कनदार बर्तन या डिब्बा ।

**कटोरा** - पु० [हिं] प्याला ; **मु०**—चलाना - मंत्रबल से कटोरा चलाकर चोरी का पता लगाना ।

**कटोरी** - स्त्री० [हिं] छोटा कटोरा ।

**कटौती** - स्त्री० [हिं] काट लेना ; कोई रक़म देते समय उसमें से कुछ धन निकाल लेना ।

**कट्टर** - वि० [उ] अंधविश्वासी, हठी ; दुराग्रही ।

**कट्ठा** - पु० [देश] ज़मीन की एक नाप, पाँच हाथ चार अंगुल, बिसवा ।

**कठपुतली** - स्त्री० [हिं] काठ की मूर्तियाँ जो नचायी जाती हैं; **मु०**—का नाच - दूसरो के इशारे पर काम होना ; —होना - दूसरे के कहे अनुसार चलना ।

**कठबाप** - पु० [हिं] सौतेला बाप ।

**कठमलिया** - पु० [देश] बनावटी साधु ।

**कठमस्त** - पु० [हि] मोटा-ताज़ा ; लंपट ।

**कठमस्ती** - स्त्री० [हिं] मस्ती ।

**कठला** - पु० [हि] बच्चों के पहनने की माला ।

**कठहास्य** - पु० [हिं] सूखी हँसी ।

**कठिन** - वि० [सं] कड़ा, मुश्किल ।

**कठिनता** - स्त्री० [सं] सख्ती, मुश्किल ; निर्दयता ; कठिनाई ।

**कठिनाई** - स्त्री० [हिं] मुश्किल ।

**कठैला** - पु० [हिं] काठ का पात्र ।

**कठोर** - वि० [सं] कड़ा, कठिन ; निर्दय, निष्ठुर ।

**कठौता** - पु० [हिं] लकड़ी की चौड़ी किनारीवाली थाली ।

**कठौती** - स्त्री० [हिं] लकड़ी की छोटी थाली।

**कड़क** - स्त्री० [हि] घोर शब्द, कड़कने की क्रिया या भाव।

**कड़खा** - पु० [हिं] वीर-गीत जो युद्ध के समय गाया जाता है।

**कड़खैत** - पु० [हि] भाट, चारण।

**कड़वा** - वि० [हि] कडुआ।

**कड़ा** - 1. पु० [हिं] हाथ या पाँव में पहनने का गहना; 2. वि० कठोर; चुस्त; सख़्त।

**कड़ाई** - स्त्री० [हिं] सख़्ती।

**कड़ाका** - पु० [हि] कड़ी चीज़ के टूटने की आवाज़; **मु०** कड़ाके का - प्रचंड।

**कड़ाबीन** - स्त्री० [हिं] चौड़े मुँहवाली बंदूक।

**कड़ाह** - पु० [हि] लोहे का चौड़े मुँहवाला बरतन जिसमें पूरी बनाते है।

**कड़ाही** - स्त्री० [हिं] छोटा कड़ाह।

**कड़ी** - स्त्री० [हिं] ज़ंजीर की लड़ी; गीत का एक पद।

**कड़ीदार** - वि० [हिं] छल्लेदार।

**कडुआ** - वि० [हिं] कटु, **मु०** —होना - बुरा बनना; —घूट - कठिन काम; कडुए कसैले दिन - कष्ट के दिन।

**कडुआ तेल** - पु० [हिं] सरसो का तेल।

**कडुआना** - अ० [हि] कडुआ लगना; बिगड़ना।

**कडुआहट** - स्त्री० [हि] कडुआपन।

**कढ़ना** - अ० [हिं] निकलना; बाहर आना।

**कढ़ाई** - स्त्री० [हिं] कड़ाही; काढ़ने का काम या मज़दूरी।

**कढ़ाना**, **कढ़वाना** - स० [हिं] निकलवाना; कढ़ाई कराना।

**कढ़ाव** - पु० [हिं] बूटे-कशीदे का काम।

**कढ़ी** - स्त्री० [हि] एक प्रकार का पतला व्यंजन, **मु०** बासी कढ़ी में उबाल आना - बुढ़ापे में जवानी का जोश आना।

**कणिक** - पु० [सं] कण, गेहूँ का आटा।

**कणिका** - स्त्री० [सं] टुकड़ा, तिनका।

**कणिश** - पु० [सं] जौ, गेहूँ आदि की बाल।

**कत** - अव्य० [ब्र] क्यो, किसलिए।

**क़त** - पु० [अ] क़लम की नोक काटकर टेढ़ी करना।

**क़तअन** - अव्य० [अ] हरगिज़।

**क़तई** - वि० [अ] अतिम; बिलकुल।

**कतईगज़** - पु० [अ] दरजियो का गज़।

**क़तज़न** - पु० [अ] हड्डी या लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर क़लम का क़त काटते है।

**कतना** - अ० [हि] काता जाना।

**कतनी** - स्त्री० [हि] सूत कातने की टेकुटी, तकली।

**क़तब** - पु० [अ] लेख।

**कतरन** - स्त्री० [हि] छोटे कटे टुकड़े।

**कतरना** - स० [हि] कैंची से काटना।

**कतरनी** - स्त्री० [हि] कैंची।

**कतरब्योंत** - स्त्री० [हि] काट-छाँट; उलट-फेर; उधेड़-बुन; जोड़-तोड़।

**कतराई** - स्त्री० [हि] कतरने का काम या मज़दूरी।

**कतराना** - अ० [हिं] बचकर चला जाना।

**कतरी** - स्त्री० [हिं] कोल्हू का पाट जिसपर बैठकर आदमी बैलो को हाँकता है।

**क़तल** - पु० [फ़ा] क़त्ल।

**क़तला** - पु० [फ़ा] टुकड़ा, फाँक।

**कतवार** - पु० [हिं] कूड़ा-करकट; यौ०—ख़ाना - कूड़ा फेंकने की जगह।

**क़ता** - 1. वि० [अ] काटा या छाँटा हुआ; 2. स्त्री० विभाग; बनावट; ढंग; आकार।

**कताई** - स्त्री० [हिं] कातने का काम या कातने की मज़दूरी।

**क़ता-कलाम** - पु० [फ़ा] बात काटना।

**क़ता-नज़र** - क्रि० [फ़ा] अलावा।

**कतान** - पु० [फ़ा] अलसी नामक पौधा; एक प्रकार का बढ़िया रेशम।

**कताना** - स० [हिं] दूसरों से कतवाना।

**क़तार** - स्त्री० [हिं] पंक्ति, श्रेणी; समूह।

**कतारा** - पु० [देश] लाल रंग का मोटा गन्ना; [फ़ा] कटारी।

**कति** - वि० [सं] कितने।

**कतिपय** - वि० [स] कई एक; कुछ थोड़े से।

**कतीरा** - पु० [देश] गुलू नामक वृक्ष का गोद जो बहुत ठंडा होता है।

**क़तील** - वि० [अ] क़त्ल किया हुआ।

**कतौनी** - स्त्री० [हिं] कताई; ढिलाई से काम करना।

**क़त्ता** - पु० [देश] बाँस चीरने का एक औज़ार; छुरी।

**कत्ती** - स्त्री० [हिं] चाकू, छुरी; कटारी; सोनारों की कतरनी।

**कत्थ** - पु० [हिं] लोहे की स्याही जिसे रंगरेज़ रंगाई के काम में इस्तेमाल करते हैं।

**कत्थई** - वि० [हि] खैर के रग का।

**कत्थक** - पु० [हिं] नाचने गानेवाली एक जाति।

**कत्था** - पु० [हिं] पान में खाया जानेवाला एक पदार्थ, खैर।

**क़त्ल** - पु० [अ] हत्या, वध।

**क़त्लगाह** - स्त्री० [फ़ा] फाँसीघर।

**क़त्ले आम** - पु० [अ] सर्वसंहार।

**कथंचित्** - क्रि० [स] शायद, कदाचित, किसी प्रकार।

**कथक** - पु० [सं] कथा कहनेवाला, पुराण-पाठक।

**कथकड़** - पु० [हिं] कथा कहनेवाला।

**कथकलि** - पु० [मल] केरल का एक प्रसिद्ध नृत्य।

**कथन** - पु० [सं] कहना, उक्ति, बयान।

**कथनी** - स्त्री० [हिं] बात, कहना।

**कथनीय** - वि० [सं] वर्णनीय, कहने योग्य।

**कथरी** - पु० [हिं] गुदड़ी।

**कथा** - स्त्री० [सं] कहानी; धार्मिक आख्यान; चर्चा; हाल; मु०—बैठना - कथा का प्रारंभ होना; —उठना - कथा का समाप्त होना।

**कथानक** - पु० [सं] मुख्य कहानी, छोटी कथा।

**कथामुख** - पु० [सं] कथा की प्रस्तावना।

**कथावस्तु** - स्त्री० [सं] कहानी व उपन्यास का ढाँचा।

**कथावार्ता** - स्त्री० [सं] पुराणादि कथाओं के अनेक प्रकार के प्रसंग।

**कथित** - वि० [सं] कहा हुआ।

**कथीर**, **कथील** - पु० [हिं] रांगा।

**कथोपकथन** - पु० [सं] बातचीत, संभाषण; वादविवाद।

**कथ्य** - वि० [सं] कहने योग्य।

**कदंब, कदंबक** - पु० [हि] एक प्रसिद्ध पेड़; क़दम; समूह; राशि; [त] बहुत तरह के फूलों की माला।

**कद** - 1. स्त्री० [अ] परिश्रम; आग्रह; दुश्मनी; 2. पु० [फ़ा] मकान।

**क़द** - पु० [अ] ऊँचाई; डील; मु०—ए आदम - आदमी के बराबर ऊँचा; यौ०—व क़ामत - डील-डौल; पस्ता क़द - नाटा।

**क़द-आवर** - वि० [फ़ा] लँबा।

**कदख़ुदा** - पु० [फ़ा] घर का मालिक।

**कदख़ुदाई** - स्त्री० [फ़ा] शादी।

**कदन** - पु० [सं] मरण; विनाश; युद्ध; पाप।

**कदन्न** - पु० [स] ख़राब अनाज।
**कदम** - पु० [हिं] कदंब।
**क़दम** - पु० [अ] पैर, पाँव ; यौ० —बाज़ वि० वह घोड़ा जो क़दम की चाल चले ; —बोस वि० बड़ों के पैर चूमनेवाला ; —बोसी - स्त्री० बड़ो की सेवा में हाज़िर होना ; —रसूल - पु० मुहम्मद साहब के पद-चिह्न ; —शरीफ़ - पु० शुभचरण ; मु०—उठाना - तेज़ चलना, कोई काम करने के लिए आगे बढ़ना ; —चूमना या छूना - प्रणाम करना ; शपथ खाना ; —बढ़ाना - तेज़ चलना ; उन्नति करना ; —रखना - प्रवेश करना, दाख़िल होना ; प्रारंभ करना ; —पर क़दम रखना - ठीक पीछे चलना ; अनुकरण या नक़ल करना।
**क़दमचा** - पु० [अ] पाखाने आदि में बना हुआ पैर रखने का स्थान।
**कदर** - पु० [सं] आरा ; अंकुश ; पाँव के तलवे में काँटा या कंकड़ी के लगने से पड़ जानेवाली गांठ जो कड़ी होती है और बढ़ती है, इसे गोखरू भी कहते हैं ; सफ़ेद खैर।
**क़दर** - स्त्री० [अ] मान, प्रतिष्ठा ; मात्रा, मिक़दार।
**कदरई** - स्त्री० [हि] कायरता, डरपोकपन।
**क़दरदाँ** - वि० [उ] गुणग्राही ; क़दर या आदर करनेवाला।
**क़दरदानी** - स्त्री० [उ] गुणग्राहकता।
**कदराई** - स्त्री० [हिं] कायरता।
**कदराना** - अ० [हिं] डरना, हिचकना।
**क़दरे** - वि० [अ] किसी क़दर ; थोड़ा-सा, अल्प।
**क़दरे क़लील** - वि० [अ] थोड़ा-सा।
**कदर्थ** - वि० [सं] निकम्मा ; कुत्सित, बुरा।
**कदर्थना** - स्त्री० [सं] दुर्गति, दुर्दशा।
**कदर्थित** - वि० [सं] दुर्गतिप्राप्त।
**कदर्य** - वि० [सं] कंजूस ; तुच्छ।
**कदर्यता** - स्त्री० [सं] कंजूसी ; तुच्छता।
**कदली** - स्त्री० [सं] केला ; झण्डा।
**क़दह** - पु० [अ] प्याला ; भिक्षा-पात्र ; जिरह ; खंडन ; यौ० रद व क़दह - तर्क-वितर्क ; कहासुनी।
**कदा** - 1. पु० [फ़ा] मकान ; 2. अव्य० [सं] कभी, कब ; यौ० यदा कदा - कभी-कभी ; जब तब।
**कदाचित्** - क्रि० [सं] कभी ; शायद ; किसी समय।
**कदापि** - क्रि० [सं] कभी, हर्गिज़।
**क़दामत** - स्त्री० [अ] प्राचीनता।
**क़दीम** - } वि० [अ] पुराना, प्राचीन।
**क़दीमी** - }
**क़दीर** - वि० [अ] बलवान।
**कदू** - पु० [फ़ा] लौकी नामक तरकारी।
**कदूरत** - स्त्री० [अ] मैलापन ; मनमुटाव।
**कद्दावर** - वि० [अ] क़द-आवर, लंबा।
**कद्दू** - पु० [फ़ा] लौकी।
**कद्दू-कश** - पु० [फ़ा] कद्दू के महीन सूत की तरह टुकड़े करने का यंत्र।
**क़द्दू-दाना** - पु० [फ़ा] मल के साथ पेट से गिरनेवाला सफ़ेद कीड़ा।
**क़द्र** - स्त्री० [अ] बड़ाई ; दरजा ; मरतबा।
**क़द्रदानी** - स्त्री० [अ] गुण की पहचान।
**कन** - 1. पु० [हिं] अन्न का एक दाना ; कण, जूठन ; 2. वि० [फ़ा] खोदनेवाला।
**कनई** - स्त्री० [हिं] कोपल ; गीली मिट्टी।
**कनउँड** - स्त्री० [देश] दासी; उपकृत; लज्जित।
**कनक** - पु० [सं] सोना ; धतूरा ; पलाश, ढाक ; गेहूँ का आटा।
**कनककली** - स्त्री० [सं] कर्णफूल।
**कनकक्षार** - पु० [सं] सुहागा।

**कनकचंपा** - स्त्री० [सं] कर्णिकार; कनियारी; एक पेड़ जिसके फूल पीले होते हैं।

**कनकटा** - वि० [हिं] जिसका कान कटा हो; कान काट लेनेवाला।

**कनकना** - वि० [हिं] थोड़े से आघात से टूटनेवाला; चिड़चिड़ा; नाज़ुक।

**कनकनाना** - अ० [हिं] सूरन, अरवी आदि तरकारी के स्पर्श से अंगों में एक प्रकार की वेदना या चुनचुनाहट प्रतीत होना।

**कनकनाहट** - स्त्री० [हिं] चुनचुनाहट।

**कनकफल** - पु० [सं] धतूरा; जमालगोटा।

**कनका** - पु० [हिं] अन्न का कण।

**कनकाचल** - पु० [सं] सोने का पर्वत, सुमेरु पर्वत।

**कनकी** - स्त्री० [हिं] छोटा कण।

**कनकूत** - पु० [हिं] अटकल से खेत की उपज का अनुमान करना।

**कनकौवा** - पु० [देश] पतंग, काग़ज़ की बड़ी गुड्डी।

**कनखजूरा** - पु० [हिं] एक ज़हरीला छोटा कीड़ा जिसके बहुत-से पैर होते हैं, गोजर।

**कनखा** - पु० [सं] कोपल; शाखा।

**कनखियाना** - स० [हिं] कनखी से देखना; आँख से इशारा करना।

**कनखी** / **कनखैया** - स्त्री० [हिं] तिरछी नज़र; दूसरों की नज़र बचाकर देखना **मु०**—मारना - आँख के इशारे से रोकना।

**कनगुरिया** - स्त्री० [हिं] सबसे छोटी उँगली, कनिष्ठिका।

**कनछेदन** - पु० [हिं] कान छेदने का संस्कार।

**कनटोप** - पु० [हिं] कान तक आनेवाली टोपी।

**कनतूतुर** - पु० [देश] एक विषैला और बड़ी जाति का मेंढ़क।

**कनपटी** - स्त्री० [हिं] कान व आँख के बीच का स्थान।

**कनपेड़ा** - पु० [हिं] कान के पास गिल्टी निकलने का रोग।

**कनफटा** - 1. पु० [हिं] गोरखनाथ के सम्प्रदाय के साधु; 2. वि० जिसका कान फटा हो।

**कनफुँकवा** / **कनफुँका** - वि० [हिं] दीक्षा देनेवाला गुरु; जिसने दीक्षा ली हो।

**कनफुसका** - पु० [हिं] कान में धीरे-धीरे कहनेवाला, चुग़लख़ोर।

**कनफुसकी** - स्त्री० [हिं] कानाफूसी।

**कनबुज** - पु० [हिं] कनपेड़ा।

**कनमनाना** - अ० [हिं] सोये हुए आदमी का किसी आवाज़ आदि से हिलना-डुलना; किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना।

**कनरस** - पु० [हिं] गाना-बजाना सुनने का आनंद।

**कनरसिया** - पु० [हिं] गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

**कनवाँसा** - पु० [हिं] नवासे का बेटा।

**कनसार** - पु० [हिं] ताम्रपत्र पर लेख खोदनेवाला।

**कनसुई** - स्त्री० [हिं] आहट; टोह; **मु०** कनसुइयाँ लेना - छिप-छिपकर किसीकी बात सुनना।

**कनस्तर** - पु० [अंग्रे] टीन का पीपा।

**कनहा** - पु० [हिं] फ़सल कूतनेवाला कर्मचारी; अन्न का कनकूत करनेवाला।

**कनहार** - पु० [हिं] मल्लाह, केवट।

**कना** - पु० [हिं] कन, कण; सरकंडा।

**क़नाअत** - स्त्री० [अ] संतोष।

**कनाई** - स्त्री० [हिं] कोना; बचाना; किनारा; पतली शाखा, टहनी; **मु०** —काटना - किनाराकशी करना, छोड़ना, बचना।

**कनागत** - पु० [हिं] पितृपक्ष जिसमें श्राद्ध होते हैं, अपर पक्ष।

**क़नात** - स्त्री० [अ] खेमे या खुले स्थान के चारो ओर खड़ी की जानेवाली कपड़े की दीवार।
**कनासी** - स्त्री० [हिं] रेती।
**कनिक** - स्त्री० [हिं] कणिक, गेहूँ का आटा।
**कनिका** - स्त्री० [हि] किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा, कण।
**कनिगर** - पु० [हि] अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करनेवाला, आनवाला।
**कनियाँ** - स्त्री० [हिं] गोद, उछग।
**कनियाना** - अ० [हिं] आँख बचाकर निकल जाना, कतराना।
**कनिष्ठ** - वि० [सं] उम्र में सबसे छोटा।
**कनिष्ठा** - वि० [सं] सबसे छोटी उंगली, कनगुरिया।
**कनी** - स्त्री० [हिं] छोटा टुकड़ा; हीरे का छोटा टुकड़ा; बूँद; बालिका, कन्या; **मु०** —खाना या चाटना - आत्मघात करना।
**कनीज़** - स्त्री० [फ़ा०] दासी।
**कनीनिका** - स्त्री० [सं] आँख की पुतली, तारा; छिगुनी।
**कनीर** - पु० [हिं] कनेर का वृक्ष या फूल।
**कनूका** - पु० [हिं] अनाज का दाना।
**कने** - क्रि० [ब्र] पास, निकट; ओर; अधिकार में।
**कनेखी** - स्त्री० [हिं] टेढ़ी चितवन।
**कनेठा** - वि० [हिं] काना, ऐंचाताना।
**कनेठी** - स्त्री० [हिं] कान उमेठना, गोशमाली।
**कनेर** - पु० [हि] फूलवाला एक पेड़ जिसके फल विषैले होते है, कनीर, करवीर।
**कनेरिया** - वि० [हिं] कनेर के फूल के रंग का।
**कनैया** - पु० [ब्र] कर्णवेधन, कनछेदन; डाल, शाख, टहनी।
**कनोई** - पु० [देश] कान का मैला; खूँट।
**कनोखा** - वि० [हि] कटाक्षयुक्त।
**कनौजिया** - 1. वि० [हिं] कान्यकुब्ज का; 2. पु० कन्नौज का निवासी।
**कनौठा** - पु० [हि] किनारा; पट्टेदार; भाईबंधु।
**कनौड़ा** - 1. वि० [देश] काना, अपंग; लज्जित; 2. पु० मोल लिया हुआ दास।
**कनौती** - स्त्री० [हिं] पशुओ के खड़े कान; बाली; **मु०** कनौतियाँ खड़ी करना - चौकन्ना होना; घोड़े का कान खड़ा करना।
**कन्द** - पु० [सं] गाठदार या गूदेदार जड़· सूरन; लहसुन; कर्पूर; बादल; एक रोग।
**क़न्द** - पु० [फ़ा] चीनी।
**क़न्दन** - पु० [फ़ा०] खोदना; बेल-बूटे बनाना।
**कन्दल** - पु० [सं] नया अंखुआ; कपाल; वादविवाद; एक तरह का केला।
**क़न्दा** - वि० [फ़ा०] खोदा हुआ।
**क़न्दाकार** - वि० [फ़ा] खोदकर बेलबूटे बनानेवाला।
**कन्दील** - स्त्री० [अ] एक प्रकार की लालटेन।
**कन्ना** - पु० [हिं] पतंग में बंधा एक डोरा; पौधों का एक रोग; चावल की धूल।
**कन्नी**- स्त्री० [हिं] किनारा; हाशिया; पतंग का किनारा; **मु०** —खाना - पतंग का झुका रहना; —कटाना - कतराना; लुक-छिपकर भाग जाना।
**कन्या** - स्त्री० [सं] क्वारी लड़की; बारह राशियों में छठी; दुर्गा।
**कन्याकुमारी** - स्त्री० [सं] एक अंतरीप जो भारत की दक्षिणी स्थल-सीमा है।
**कन्यादान** - पु० [सं] विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

**कन्याधन** - पु० [सं] स्त्री-धन।
**कन्याशुल्क** - पु० [सं] कन्याधन; वह रक़म जो वर की ओर से कन्या के पिता को दी जाय।
**कन्हाई** - पु० [हिं] श्रीकृष्ण।
**कन्हावर** - पु० [हिं] कंधे पर डालने का दुपट्टा।
**कन्हैया** - पु० [हिं] श्रीकृष्ण।
**कपट** - पु० [सं] छल, धोखा; दुराव।
**कपटना** - स० [हिं] काटकर अलग करना, काटना, छाँटना।
**कपटी** - वि० [हि] धोखेबाज़, छली, धूर्त।
**कपड़कोट** - पु० [हिं] डेरा, खेमा, तम्बू, **मु०** —करना - चारो ओर कपड़ा लपेटना।
**कपड़छन, कपड़छान** - पु० [हि] कपड़े से छानना।
**कपड़द्वार** - पु० [हिं] वस्त्रो का भंडार; वस्त्रागार।
**कपड़धूलि** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा।
**कपड़मिट्टी** - स्त्री० [हि] रस भस्मादि बनाने में संपुट पर गीली मिट्टी के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया, कपड़ौटी।
**कपड़ा** - पु० [हिं] वस्त्र; **मु०** कपड़ो से होना - रजस्वला होना।
**कपर्द**, **कपर्दक** } पु० [सं] शिव की जटा; कौड़ी।
**कपर्दिका** - स्त्री० [सं] कौड़ी।
**कपर्दिनी** - स्त्री० [स] दुर्गा।
**कपर्दी** - पु० [सं] शिव; ग्यारह रुद्रो में से एक।
**कपाट** - पु० [सं] किवाड़।
**कपाल** - पु० [सं] ललाट; भाग्य; खोपड़ी; खप्पर, भिक्षा-पात्र। **मु०** —खुलना - भाग्योदय होना।
**कपाल-अस्त्र** - पु० [सं] ढाल, सिर को बचाने का टोप।
**कपालक्रिया** - स्त्री० [सं] शव को जलाते समय खोपड़ी फोड़ना।
**कपालमाली** - पु० [सं] कपालो की माला पहननेवाला, शिव।
**कपालिक** - पु० [सं] कापालिक, शैव मत के तान्त्रिको में एक सम्प्रदाय के साधु जो कपाल की माला पहनते हैं।
**कपालिका** - स्त्री० [स] खोपड़ी; घड़े के नीचे वा ऊपर का भाग; काली, दुर्गा; दांतो का एक रोग।
**कपालिनी** - स्त्री० [सं] दुर्गा।
**कपाली** - पु० [स] शिव; एक साधु; भैरव।
**कपास** - स्त्री० [हिं] रूई का पौधा।
**कपिंजल** - 1. पु० [सं] चातक; पपीहा; तीतर; गौरा पक्षी; 2. वि० पीले रंग का।
**कपि** - पु० [सं] बंदर; हाथी; सूर्य।
**कपिकंदुक** - पु० [देश] खोपड़ी।
**कपित्थ** - पु० [स] कैथे का पेड़ या फल।
**कपिध्वज** - पु० [सं] जिसके ध्वज पर कपि का चित्र हो; अर्जुन।
**कपिल** - 1. वि० [सं] भूरा; मटमैला; भोला-भाला; 2. पु० अग्नि; कुत्ता; चूहा; सांख्य शास्त्र के रचयिता एक मुनि।
**कपिला** - स्त्री० [सं] सीधी गाय; सफ़ेद रंग की गाय।
**कपिश** - वि० [सं] भूरा; मटमैला।
**कपूत** - पु० [हिं] बुरा लड़का।
**कपूर** - पु० [हिं] कर्पूर; **मु०** —खाना विष खाना।
**कपोत** - पु० [सं] कबूतर।

**कपोतवृत्ति** - स्त्री० [सं] रोज़ कमाना खाना ।
**कपोतव्रत** - पु० [सं] चुपचाप अत्याचार सहना ।
**कपोतसार** - पु० [सं] सुरमा धातु ।
**कपोतारि** - पु० [सं] बाज़ पक्षी ।
**कपोती** - स्त्री० [हि] कबूतरी, कुमारी-मूलिका ।
**कपोल** - पु० [सं] गाल । यौ० —कल्पना - स्त्री० मनगढ़ंत, झूठ, गप्प ।
**कपोल-कल्पित** - वि० [सं] मनगढ़ंत, बनावटी ।
**कपोलगेंदुआ** - पु० [हि] गाल के नीचे रखने का तकिया, गलतकिया ।
**कफ** - पु० [सं] श्लेष्म, बलग़म ।
**कफ़** - पु० [फ़ा] फेन ; हथेली ; कमीज़ की बाँह का कलाई पर का छोर जिसमें बटन लगते हैं ; **मु०** कफ़े अफ़सोस मलना - हाथ मलकर पछताना ।
**कफ़गीर** - पु० [फ़ा] कलछी ।
**कफ़चा** - पु० [फ़ा] साँप का फन , कलछी ।
**कफ़न** - पु० [फ़ा] मुर्दे को ढँकने का कपड़ा ; **मु०**—सर से बांधना - प्राण त्यागने को तैयार होना ;—फाड़कर बोलना - बहुत ज़ोर से चिल्लाकर बोलना ; —को कौड़ी न होना - बहुत दरिद्र होना ।
**कफ़न-खसोट** - वि० [हि] कंजूस ; लोभी ; दूसरे के माल को ज़बरदस्ती हड़प जानेवाला ।
**कफ़नाना** - स० [हि] मुर्दे पर कफ़न लपेटना ।
**कफ़नी** - स्त्री० [हिं] मुर्दे के गले का कपड़ा ; साधुओं की मेखला ।
**कफ़स** - पु० [अ] पिंजड़ा ; क़ैदख़ाना ; शरीर ; तंग जगह ।
**कफ़ालत** - स्त्री० [अ] जमानत ।
**कफ़ील** - पु० [अ] जमानत करनेवाला ; जामिन ।
**कफ़ेपाई** - स्त्री० [फ़ा] जूता ।
**कफोणि** - स्त्री० [सं] कोहनी ।
**कफ़्फ़ारा** - पु० [फ़ा] पापों का प्रायश्चित्त ।
**कफ़्श** - स्त्री० [फ़ा] जूता ।
**कफ़्शख़ाना** - पु० [फ़ा] ग़रीबख़ाना ।
**कबंध** - पु० [सं] बिना सिर का धड़ ।
**कब** - क्रि० [हि] किस समय ।
**कबक** - पु० [फ़ा] कब्क, चकोर पक्षी ।
**कबड्डी** - स्त्री० [हि] दो दल बनाकर खेला जानेवाला एक प्राचीन खेल ।
**क़बर** - स्त्री० [अ] क़ब्र ।
**कबरा** - 1. वि० [हि] अनेक रंगोवाला, चितकबरा ; 2. पु० एक प्रकार की झाड़ी ; कौर ।
**क़बरिस्तान** - पु० [अ] मुसलमान और ईसाइयो के मुर्दे गाड़ने की जगह ।
**कबरी** - 1. स्त्री० [सं] चोटी ; वेणी ; 2. वि० अनेक रंगोवाली ।
**क़बल** - वि० [अ] पहले का, पूर्व ।
**क़बा** - पु० [अ] एक लम्बा ढीला पहनावा ।
**कबाड़** - पु० [हिं] काम में न आनेवाली वस्तु , व्यर्थ का काम ।
**कबाड़ा** - पु० [हि] झंझट, बखेड़ा ।
**कबाड़िया** / **कबाड़ी** } पु० [हि] टूटी-फूटी चीज़ें बेचनेवाला ; झगड़ालू ।
**कबाब** - पु० [फ़ा] सीखचो पर भूना हुआ मांस ; **मु०** —करना - दुख देना, सताना ; —होना - भुनना, क्रोध करना ।
**कबाबचीनी** - स्त्री० [फ़ा] काली मिर्च की तरह की लता और उसका फल ।
**कबाबी** - पु० [फ़ा] कबाब बेचनेवाला, मासाहारी ।
**क़बाय** - पु० [अ] एक प्रकार का ढीला पहनावा ।
**क़बायल** - पु० [अ] क़बीला का बहु० ; परिवार के लोग, बाल-बच्चे ।

**कबार** - पु० [हिं] व्यापार ; धंधा।
**क़बाला** - पु० [अ] बयनामा, वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा ज़ायदाद दूसरे के अधिकार में चली जावे।
**क़बालानवीस** - पु० [अ] क़बाला लिखनेवाला मुहर्रिर।
**क़बाहत** - स्त्री० [अ] दिक़्क़त, झंझट; ख़राबी।
**कबीर** - 1. वि० [अ] श्रेष्ठ, महान्; 2. पु० [हिं] एक निर्गुण संत कवि। .
**कबीरा** - पु० [अ] बहुत बड़ा पाप।
**क़बील** - पु० [अ] जाति; समुदाय।
**क़बीला** - 1. पु० [अ] गिरोह; एक ख़ानदान के सब लोग ; 2. स्त्री० पत्नी।
**क़बीह** - वि० [अ] बुरा।
**क़बुलवाना** - स० [अ] स्वीकार करवाना।
**कबूतर** - पु० [हिं] एक पक्षी, कपोत।
**कबूतर-ख़ाना** - पु० [फ़ा] कबूतर के रहने की जगह।
**कबूतर-बाज़** - वि० [फ़ा] कबूतर का शौक़ीन।
**कबूतरी** - स्त्री० [हिं] कबूतर की मादा, कपोती।
**कबूद** }
**कबूदी** } वि० [फ़ा] नीला ; आसमान।
**क़बूल** - क्रि० [अ] मंज़ूर, स्वीकार।
**क़बूलना** - स० [हि] मंज़ूर करना।
**क़बूल-सूरत** - वि० [अ] ख़ूबसूरत।
**क़बूलियत** - स्त्री० [अ] पट्टे की स्वीकृति में लिखा गया दस्तावेज़।
**क़बूली** - स्त्री० [अ] मंज़ूरी का भाव ; चने की दाल और चावल की खिचड़ी।
**कब्क** - पु० [फ़ा] कबक, चकोर पक्षी।
**कब्क-रफ़्तार** - वि० [फ़ा] चकोर की तरह सुंदर चालवाला।
**क़ब्ज़** - पु० [अ] मलरोध ; अधिकार ; **मु०** रूह क़ब्ज़ होना - होश गुम होना।
**क़ब्ज़ा** - पु० [अ] मूठ ; किवाड़ या चौखट में जड़ा जानेवाला लोहे या पीतल का टुकड़ा जो दो चीज़ों को जोड़ता है, 'हिंज'; अधिकार ; **मु०** क़ब्ज़े पर हाथ रखना - तलवार चलाने को तैयार होना।
**क़ब्ज़ियत** - स्त्री० [अ] मलरोध।
**क़ब्र** - स्त्री० [अ] वह गड्ढा या उसके ऊपर बनाया हुआ चबूतरा जहाँ मुसलमान और ईसाई आदि मुर्दे गाड़ते हैं : **मु०**—के मुर्दे उखाड़ना - पुराने झगड़े फिर उखाड़ना;—खोदकर लाना - बहुत ढूँढ़कर कठिनता से कोई चीज़ ले आना;—में पैर लटकना - मरने के क़रीब होना।
**क़ब्रिस्तान** - पु० [अ] क़बरिस्तान, श्मशान।
**कभी** - क्रि० [हिं] किसी समय, किसी अवसर पर।
**कमंगर** - पु० [फ़ा] कमान या धनुष बनानेवाला।
**कमंचा** - पु० [फ़ा] बढ़ई की कमान की तरह का एक औज़ार।
**कमंडल** - पु० [सं] संन्यासियों का पानी पीने का पात्र।
**कमंडली** - पु० [सं] कमंडल रखनेवाला साधु ; पाखंडी।
**कमंडलु** - पु० [सं] कमंडल।
**कमंद** - 1. स्त्री० [फ़ा] फंदा ; फंदेदार रस्सी ; 2. पु० [सं] बिना सिर का धड़।
**कमंध** - पु० [हिं] कबंध ; लड़ाई, झगड़ा।
**कम** - वि० [फ़ा] थोड़ा ; **मु०**— से कम - अधिक नहीं तो उतना तो अवश्य ;— व कास्त - वि० किसीमें कुछ कम और किसीमें कुछ ज़्यादा।
**कम-अक़्ल** - वि० [फ़ा] मूर्ख।
**कम-अस्ल** - 1. वि० [फ़ा] कमज़ात ; 2. पु० दोग़ला ; जारज।

**कमउम्र** - वि० [फ़ा] कमसिन, छोटी आयुवाला।
**कमकस** - वि० [हि] सुस्त ; कामचोर।
**कमक़ीमत** - वि० [फ़ा] सस्ता।
**कमख़र्च** - वि० [हि] मितव्ययी।
**कमख़ाब** - स्त्री० [फ़ा] एक मोटा रेशमी कपड़ा।
**कमखोरा** - पु० [हिं] चौपायो के मुँह का एक रोग जिसमें वे खाना नही खा सकते।
**क़मचा** } **क़मची** } - स्त्री० [तु] टहनी, पतली लचीली छड़ी ; बांस की पतली तीली।
**कम-ज़र्फ़** - वि० [फ़ा] ओछा ; कमीना।
**कम-ज़ात** - वि० [फ़ा] नीच, कमीना।
**कमज़ोर** - वि० [फ़ा] दुर्बल।
**कमठ** - पु० [स] कछुआ ; साधुओं का तुंबा ; सलई का पेड़।
**कमठा** - पु० [हिं] धनुष।
**कमतर** - वि० [फ़ा] अल्पतर।
**कमतरीन** - पु० [फ़ा] बहुत ही तुच्छ सेवक।
**कमती** - 1. स्त्री० [हिं] कमी ; 2. वि० कम।
**कम-नसीब** - वि० [फ़ा] अभागा।
**कमनीय** - वि० [सं] सुंदर।
**कमनैत** - पु० [हिं] तीरंदाज़, कमान चलाने में होशियार।
**कमन्द** - स्त्री० [फ़ा] फंदेदार रस्सी, फंदा।
**कम-फ़हम** - वि० [फ़ा] कम-अक़्ल।
**कमबख़्त** - वि० [फ़ा] अभागा।
**कमबख़्ती** - स्त्री० [फ़ा] अभाग्य, दुर्भाग्य।
**कमर** - स्त्री० [हि] शरीर के बीच का भाग, कटि; मु०—लगना - बिस्तर पर पड़े रहने से पीठ में घाव हो जाना ; — ठोकना - उत्साह दिलाना ; —बाँधना या कमर कसना - तैयार होना ; —टूटना - निराश होना ; — सीधी करना - लेटकर आराम करना।
**क़मर** - पु० [फ़ा] चंद्रमा।
**कमरकस** - पु० [हि] पलास का गोद।
**कमरख** - स्त्री० [हिं] एक पेड़ जिसके फाँकवाले लम्बे-लम्बे खट्टे फल होते है।
**कमरबन्द** - पु० [फ़ा] पटुका, इजारबन्द।
**कमरबन्दी** - स्त्री० [फ़ा] लड़ाई की तैयारी।
**कमरबल्ला** - पु० [फ़ा] खपरैल की छाजन में लगी लकड़ी जो कोरो के नीचे लगायी जाती है।
**कमरबस्ता** - वि० [फ़ा] तैयार, प्रस्तुत, कटिबद्ध।
**कमरा** - पु० [अंग्रे] कोठरी।
**कमरिया** } **कामरिया** } 1. पु० [हिं] छोटे डील का एक प्रकार का हाथी ; 2. स्त्री० कम्बल, कमरी।
**कमरी** - स्त्री० [फ़ा] एक प्रकार की कुरती ; कंबल ; घोड़े का एक रोग ; चरखी की लकड़ी।
**क़मरी** - वि० [अ] चंद्रमा संबंधी।
**कमल** - पु० [सं] पानी में होनेवाले एक पौधे का फूल, पंकज ; इस फूल का-सा एक मांसपिंड जो पेट में दायी ओर होता है ; एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ती हैं, पीलिया ; मु० — खिलना - दिल ख़ुश होना।
**कमल-गट्टा** - पु० [हिं] कमल का बीज।
**कमलज** - पु० [सं] ब्रह्मा, कमलासन।
**कमलनाभ** - पु० [सं] विष्णु।
**कमलनाल** - स्त्री० [सं] कमल की डंडी जिसपर फूल रहता है, मृणाल।
**कमलबंधु** - पु० [सं] सूर्य।
**कमला** - 1. स्त्री० [सं] लक्ष्मी ; 2. पु० सड़े फल आदि में पड़नेवाला कीड़ा।
**कमलाकर** - पु० [सं] समुद्र ; सरोवर।

**कमली** - स्त्री० [हि] छोटा कम्बल।
**कम-सख़ुन** - वि० [फ़ा] कम बोलनेवाला।
**कम-समझ** - वि० [हि] मूर्ख।
**कमसिन** - वि० [फ़ा] कम उम्र का।
**कमसिनी** - स्त्री० [फ़ा] लड़कपन।
**कमाई** - स्त्री० [फ़ा] कमाया हुआ धन; व्यवसाय।
**कमाऊ** - वि० [हि] कमानेवाला।
**कमाच** - पु० [हिं] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
**कमाची** - स्त्री ० [हिं] कमची, कमान की तरह झुकाई हुई तीली।
**कमान** - स्त्री० [फ़ा] धनुष; मेहराब; मु० —चढ़ना - त्योरी चढ़ना, गुस्सा आना, दौर-दौरा होना; —पर जाना - लड़ाई पर जाना।
**कमानचा** - पु० [फ़ा] छोटा धनुष, सारंगी बजाने की कमानी; धुनकी।
**कमानदार** - वि० [फ़ा] धनुर्धर; मेहराबदार।
**कमाना** - स० [हिं] काम धंधा करके पैसा इकट्ठा करना या पैदा करना, किसी वस्तु को अधिक दृढ़ करना; जैसे, 'चमड़ा कमाना, खेत कमाना'; मु० कमाया साँप - वह साँप जिसके ज़हरीले दांत उखाड़ लिये गये हो।
**कमानी** - स्त्री० [फ़ा] लोहे की पतली तीली या तार जो ऐसा बैठायी गयी हो कि दबाव पड़ने पर दब जाय और हटने पर फिर ज्यों की त्यों हो जाय।
**कमानीदार** - वि० [फ़ा] जिसमें कमानी लगी हो।
**कमाल** - पु० [अ] कुशलता, दक्षता; अनोखा या अद्भुत कार्य।
**कमालियत** - स्त्री० [अ] पूर्णता।
**कमासुत** - वि० [हि] कमानेवाला, उद्यमी।
**कमी** - स्त्री० [फ़ा] न्यूनता, अल्पता, हानि; यौ० —बेशी - घटती-बढ़ती।
**कमीज़** - स्त्री० [हिं] एक तरह का कुर्ता जिसमें कली और चौबगला नही होते, बल्कि कफ़ होते है।
**कमीन** - स्त्री० [अ] शिकार की ताक में छिपकर बैठना; छिपकर बैठने की जगह।
**कमीनगाह** - स्त्री० [फ़ा] शिकार के लिए छिपकर बैठने का स्थान।
**कमीना** - वि० [फ़ा] नीच, क्षुद्र।
**कमीनापन** - पु० [फ़ा] नीचता; अल्पता।
**कमेरा** - पु० [हिं] मज़दूर; नौकर; खूब काम करनेवाला।
**कमेला** - पु० [हि] पशु-बलिस्थान, कसाई-ख़ाना।
**कमोदिन** - स्त्री० [हि] कुमुदिनी।
**कमोरी** - स्त्री० [हिं] मटकी।
**कम्बख़्त** - वि० [फ़ा] अभागा।
**कम्यूनिज़्म** - पु० [अंग्रे] वह सिद्धान्त जिसमें सम्पत्ति पर का अधिकार व्यक्ति का न होकर समष्टि या समाज का बताया गया हो; साम्यवाद।
**कम्यूनिस्ट** - पु० (अंग्रे) कम्यूनिज़्म के सिद्धान्त को माननेवाला, साम्यवादी।
**कम्र** - वि० [स] सुंदर; इच्छुक।
**क़याफ़ा** - पु० [अ] शक्ल-सूरत; चेहरा।
**क़याफ़ा-शिनासी** - स्त्री० [अ] चेहरा देखकर मन के भाव समझ लेना।
**क़याम** - पु० [अ] ठहराव, टिकान, निश्चय; आराम करने की जगह।
**क़यामत** - स्त्री० [अ] प्रलय; खलबली; यहूदी, ईसाई और इसलामी विश्वास के अनुसार सृष्टि का वह अन्तिम दिन जब सब मुरदे क़ब्र में से उठेंगे और ईश्वर के सामने उनका न्याय-विचार होगा; मु० —का - हद दर्जे का, अत्यंत प्रभावशाली।

**क़यास** - पु० [अ] अनुमान; सोच-विचार।
**क़यासी** - वि० [अ] कल्पित।
**क़यूम** - वि० [अ] स्थायी; ईश्वर का एक विशेषण।
**करंक** - पु० [सं] मस्तक; कमंडलु; नारियल की खोपड़ी; ठठरी।
**करंज** - पु० [हिं] कंजा, एक छोटा जंगली पेड़-विशेष।
**करंजा** - पु० [हिं] कंजे का पेड़।
**करंड** - पु० [सं] मधुकोश, शहद का छत्ता; तलवार; कारंडव नाम का हंस; बाँस की बनी पिटारी।
**करंडी** - स्त्री० [स] कच्चे रेशम की बनी चादर; [त, मल०] चम्मच।
**करंब** - पु० [सं] मिश्रण, मिलावट।
**कर** - पु० [सं] हाथ, हाथी की सूँड़; किरण; ओला; मालगुज़ारी; [फ़ा] शक्ति; **यौ०** —व फ़र - शान-शौकत।
**करक** - पु० [स] कमंडल; दाड़िम; कचनार; पलास; मौलसिरी।
**करकच** - पु० (देश) समुद्री नमक।
**करकना** - अ० (अनु) कर-कर शब्द के साथ टूटना या छिदना।
**करकट** - पु० [हि] कूड़ा, घास-फूस।
**करकर** - पु० (देश) समुद्री नमक।
**करकरा** - वि० (अनु) खुरखुरा।
**करकराहट** - स्त्री० [हिं] कड़ापन; आँख में किरकिरी पड़ने की पीड़ा।
**करका** - पु० [हि] ओला।
**करखना** - अ० [अव] खींचना; आवेश में आना।
**करखा** - पु० (देश) उत्तेजना; कालिख, कड़खा छंद।
**करखाना** - अ० (देश) जोश में आना।
**करगत** - वि० [सं] हाथ में आया हुआ।
**करगता** - स्त्री० [सं] करधनी।
**करगस** - पु० [फ़ा] तीर; गिद्ध, उकाब।
**करगह** - पु० [फ़ा] कपड़ा बुनने का यंत्र, करघा।
**करगी** - स्त्री० (देश) बाढ़; चीनी के कारखाने में शक्कर बटोरने की खुरचनी।
**करघा** - पु० [हि] खड्डा; करगह।
**करचंग** - पु० (देश) डफ़।
**करछी** - स्त्री० (देश) कलछी।
**करछुल** - पु० [हि] बड़ा चम्मच।
**करज** - पु० [स] नाखून; उँगली।
**क़रज़, क़रज़ा** - पु० [अ] ऋण।
**करट** - पु० [सं] कौआ; नास्तिक; हाथी की कनपटी।
**करटी** - पु० [सं] हाथी।
**करड़करड़** - पु० [अनु] टूटने की आवाज़।
**करण** - पु० [सं] कार्य; कार्य का साधन; इन्द्रिय; हथियार; हेतु; औज़ार।
**करणी** - स्त्री० [सं] खुर्पी, रॉपी।
**करणीय** - वि० [सं] करने योग्य।
**करतब** - पु० [हिं] कला, हुनर, करामात, गुण।
**करतल** - पु० [सं] हथेली।
**करतरी** - स्त्री० [सं] छुरी; कैंची।
**करतार** - पु० [हिं] ईश्वर।
**करताल** - पु० [सं] हथेलियों का शब्द; एक बाजा।
**करतारी** - 1. स्त्री० [सं] करताली, थपोड़ी; 2. वि० ईश्वरीय।
**करतूत** - स्त्री० [हिं] काम; कला; गुण; हुनर।
**करद** - वि० [सं] कर-महसूल देनेवाला।
**करदा** - 1. वि० [फ़ा] किया हुआ; 2. पु० [हिं] अन्न आदि में मिला हुआ कूड़ा-करकट; कटौती।
**करधनी** - स्त्री० [हिं] कमर का एक गहना।

**करधर** - पु० [हिं] बादल; चंद्र; सूर्य।
**करनफ़ल** - पु० [अ] लौंग; लवंग।
**करनफूल** - पु० [हिं] कान का वह गहना जो फूल के आकार का होता है।
**क़रनबीक** - पु० [अ] अर्क़ खीचने का छोटा भबका।
**करना** - 1. पु० [हि] बिजौरे की तरह का एक नीबू; सुदर्शन पौधा; करनी, करतूत; 2. स० किसी काम को चलाना; निपटाना; भुगताना; भाड़े पर तय करना, जैसे, 'इक्का करना, गाड़ी करना।'
**करनाई** - स्त्री० [हिं] तुरही।
**करनाल** - पु० [हिं] नरसिंहा (बाजा); एक प्रकार का बड़ा ढोल; एक प्रकार की तोप।
**करनी** - स्त्री० [हिं] काम, करतूत।
**करपल्लव** - पु० [सं] उंगली।
**करपल्लवी** - स्त्री० [सं] उंगलियो के संकेत से विचार प्रकट करने की विद्या।
**करपालिका** - स्त्री० [सं] खांडा, तलवार; गुप्ती।
**करपीड़न** - पु० [सं] शादी, विवाह।
**करपृष्ठ** - पु० [सं] हथेली के पीछे का भाग।
**करफूल** - पु० [हिं] दोना।
**करबला** - पु० [अ] वह स्थान जहाँ मुहर्रम में ताज़िये दफ़नाये जाते हैं; अरब में वह स्थान जहाँ हुसेन मारे गये थे।
**करबाल** - पु० [हिं] तलवार।
**करबालिका** - स्त्री० [हि] छुरी।
**करबूस** - पु० [उ] हथियार लटकाने के लिए घोड़े की ज़ीन या चारजामे में टंकी हुई रस्सी।
**करभ** - पु० [सं] हाथी या ऊँट का बच्चा।
**करभीर** - पु० [सं] सिंह।
**करभूषण** - पु० [सं] कंकण, कड़ा।
**करभोरु** - 1. स्त्री० [सं] सूँड़ के समान जंघा; 2. वि० सुंदर जांघवाली।
**करम** - पु० [हिं] कर्म, भाग्य; [अ] कृपा।
**करमकल्ला** - पु० [हिं] पातगोभी।
**करमट्ठा** - वि० [देश] कंजूस।
**करमठ** - वि० [हि] धर्मनिष्ठ, कर्मकाडी।
**करमर्दक** - पु० [सं] करौंदा।
**करमाली** - पु० [सं] सूर्य।
**करमुखा** } **करमुँहा** } वि० [हिं] काले मुँहवाला, कलंकी।
**कररना, करराना** - अ० [अनु] कर्कश शब्द करना, चरमराकर टूटना।
**कररुह** - पु० [सं] नाखून।
**करल** † - पु० [हिं] कड़ाही।
**करला** - पु० [हिं] कोमल पत्ता, कल्ला।
**करवट** - स्त्री० [हिं] हाथ या बगल के बल लेटने की स्थिति; मु० —बदलना या लेना - एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व में घूमकर लेटना; और का और हो जाना; —न लेना - किसी कर्तव्य का ध्यान न रखना; करवटें बदलना - बेचैन पड़े रहना, तड़पना।
**करवत** - पु० [हिं] आरा, करौता।
**करवर** - पु० [हिं] विपत्ति, आफ़त; तलवार।
**करवरना** - अ० [हिं] कलरव करना, चहकना।
**करवार** - पु० [हि] तलवार; नाखून।
**करवीर** - पु० [सं] कनेर का पेड़; तलवार; श्मशान।
**करवील** - पु० [हि] करेला।
**करश्मा** - पु० [फ़ा] अद्भुत कार्य; नाज़-नखरा; मंत्र, ताबीज़, भौहो का संकेत।
**करष** - पु० [हिं] मनमुटाव, खिंचाव, अकस।
**करषना** - स० [हिं] खींचना, सुखाना।
**करसी** - स्त्री० [हि] उपले या कंडे का टुकड़ा; कंडे की आग।

**करह** † - पु० [सं] फूल की कली ; ऊँट ।
**करहा** - पु० [अ] घाव ; [हिं] सफ़ेद सिरिस का वृक्ष ।
**करहाट, -क** - पु० [सं] कमल की जड़, भसींड़ ; कमल का छत्ता ।
**कराँकुल** - पु० [हिं] क्रौंच पक्षी ।
**करौंत** - पु० [हि] लकड़ी चीरनेवाला आरा ।
**कराई** - स्त्री० [हि] उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी ; कालापन ।
**क़राबत** - स्त्री० [अ] सामीप्य ; रिश्तेदारी ।
**क़राबतदार** - पु० [फ़ा] रिश्तेदार ।
**क़राबती** - वि० [अ] जिसके साथ निकट संबंध हो ।
**क़राबा** - पु० [अ] शीशे का बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते है ।
**क़राबीन** - स्त्री० [तु] बंदूक ।
**करामत** - स्त्री० [अ] बड़प्पन ; अद्‌भुत कार्य ।
**करामात** - स्त्री० [अ] चमत्कार ।
**क़रायन** - पु० [अ] क़रीना का बहु० ; परिस्थितियाँ ।
**क़रार** - पु० [अ] स्थिरता ; प्रतिज्ञा, वादा ।
**क़रार-दाद** - पु० [अ] लेन-देन के बारे में होनेवाला निश्चय ।
**क़रार-वाक़ई** - वि० [अ] निश्चित रूप में ।
**करारा** - 1. पु० [हिं] ऊँचा किनारा ; 2. वि० उग्र, कड़ा, खूब भुना हुआ ।
**क़रारी** - वि० [अ] निश्चित किया हुआ ।
**कराल** - वि० [सं] कठोर ; भयानक ।
**क़रावल** - पु० [तु] घुड़सवार, पहरेदार ।
**करावली** - स्त्री० [सं] किरण-समूह ।
**कराह** - पु० [हिं] पीड़ा का शब्द ।
**कराहना** - अ० [हि] पीड़ा का शब्द निकालना ; आह भरना ।
**कराहियत** - स्त्री० [अ] अप्रसन्नता ; नापसंदगी ; घृणा ।
**करिंद** - पु० [हि] इन्द्र का हाथी ; बड़ा हाथी ।
**करि** - पु० [सं] हाथी ।
**करिखई**, **करिखा** - स्त्री० [हि] कालिख, कालिमा ।
**करिया** - 1. वि० [हिं] काला ; 2. पु० पतवार ; माँझी, केवट ।
**क़रिया** - पु० [अ०] गाँव ।
**करियाई** - - स्त्री० [हि] कालिख ।
**करियारी** - स्त्री० [हि०] लगाम ।
**करिल** - 1. पु० [हिं] बाँस की नयी कोपल ; 2. वि० काला ।
**करिवदन** - पु० [सं] गणेश ।
**क़रिश्मा** - पु० [फ़ा] करामात ।
**करिष्णु** - वि० [सं] करने की इच्छा रखनेवाला ।
**करिहाँव** - स्त्री० [ब्र] कमर ।
**करी** - 1. पु० [सं] हाथी ; 2. स्त्री० [हिं] छत की कड़ी ; कली ।
**क़रीन** - वि० [अ] पास, निकट ।
**क़रीना** - पु० [अ] ढग, सलीका ।
**क़रीब** - वि० [फ़ा] पास ; लगभग ।
**करीम** - 1. वि० [अ] दयालु ; 2. पु० ईश्वर ।
**करील** - पु० [सं] एक कँटीला पेड़ ।
**करीश** - पु० [सं] गजराज ।
**करीष** - पु० [स] जंगल में मिलनेवाला सूखा गोबर, कंडा, करसी, अरणा ।
**करीह** - वि० [अ] जिसे देखकर घृणा हो ।
**करीहमंजर** - [अ] भद्दा, कुरूप ।
**करुअई**, **करुआई** - स्त्री० [हिं] कटुता, कड़ुआपन ।
**करुआ** - 1. वि० [हिं] कटु, कड़ुआ ; 2. पु० टोटीदार लोटा ।
**करुआना**, **करुवाना** - अ० [हिं] कड़ुआ लगना; जलन होना ; दुखना, कड़ुआ होना ।

**करुखी** - 1. वि० [हिं] कलुषपूर्ण ; 2. स्त्री० कनखी ; आँख का इशारा ; तिरछी नज़र ।

**करुण** - वि० [सं] दयालु ।

**करुणा** - स्त्री० [सं] दया, रहम ।

**करुणाकर**, **करुणानिधान**, **करुणानिधि**, **करुणामय** } 1. पु० [सं] दयालु ; 2. वि० जिसमें दया हो ।

**करुणार्द्र** - वि० [सं] करुणा से भरा हुआ ; दयालु ।

**करुर** - वि० [हिं] कड़ुआ ।

**करुवार** - पु० [हि] नौका खेने का एक प्रकार का डाँड़ ।

**करूला** - पु० [हिं] हाथ का कड़ा ।

**करेजा** - पु० [हिं] कलेजा ।

**करेजी** - स्त्री० [हि] पशुओ के कलेजे का मांस, कलेजी ।

**करेणु** - पु० [सं] हाथी ; कर्णिकार वृक्ष ।

**करेणुका** - स्त्री० [स] हथिनी ।

**करेपाक** - पु० [देश] मीठा नीम ।

**करेब** - पु० [हिं] एक बारीक रेशमी वस्त्र ।

**करेमू** - पु० [हिं] नारी या नाली नाम की सागवाली घास ।

**करेर** † - वि० [हिं] कठोर ।

**करेला** - पु० [हिं] एक तरह की तरकारी जो बेल में फलती और कड़ुवी होती है ; **मु०** एक करेला आपे कड़ुआ दूजा चढ़ा नीम पर - स्वभाव का बुरा और सगति भी बुरी ।

**करेली** - स्त्री० [हि] जंगली करेला ।

**करैत** - पु० [हिं] एक काला ज़हरीला सांप ।

**करैल** - स्त्री० [हि] एक प्रकार की काली मिट्टी जो तालाबो के किनारे मिलती है ।

**करोट** - पु० [सं] करवट ।

**करोटि, करोटी** - स्त्री० [सं] करवट ; खोपड़ी ।

**करोड़** - वि० [हिं] सौ लाख ; **मु०**— की एक - बड़े अनुभव की बात ।

**करोड़ी** - पु० [हिं] रोकड़िया ; तहसीलदार ।

**करोदना** - स० [हि] खुरचना ।

**करौंछा** - वि० [हि] कुछ काला ; खुरचा हुआ ।

**करौंदा** - पु० [हि] एक कंटीली झाड़ी जिसमें हलका हरा और गहरे गुलाबी रंग का खटमिट्ठा फल होता है जो चटनी तथा अचार के काम आता है ।

**करौंदिया** - वि० [हिं] करौंदे के रंगवाला ।

**करौत** - 1. पु० [हिं] आरा, करांत ; 2. स्त्री० रखेली स्त्री ।

**करौला** † - पु० [तु] शिकारी ; हँकवा करने-वाला ।

**करौली** - स्त्री० [तु] एक प्रकार का छुरा ; शिकार का पीछा करना ।

**कर्क, कर्कट, कर्कटक** - पु० [सं] केकड़ा ; अग्नि ; दर्पण ; एक राशि ।

**कर्कटी** - स्त्री० [सं] केकड़ी ; कछुई ; साँप ; सेमल का फल ।

**कर्कश** - 1. वि० [सं] कठोर ; तीव्र, प्रचंड ; 2. पु० ऊख ; खड्ग ।

**कर्कशा** - स्त्री० [स] झगड़ालू ।

**कर्कोट** - पु० [स] बेल का पेड़ ; खेखसा, ककोड़ा ।

**कर्चूर** - पु० [स] सोना, कचूर ।

**कर्ज़** - पु० [फ़ा] गैंडा ।

**क़र्ज़**, **क़र्ज़ा** } पु० [अ] ऋण ; **मु०** —खाना - उपकृत होना ।

**क़र्ज़दार** - पु० [फ़ा] ऋणी ।

**क़र्ज़ख़्वाह** - वि० [अ] क़र्ज का इच्छुक ।

**कर्ण** - पु० [सं] कान ; पतवार ; कुंती का पुत्र ; समकोण त्रिभुज में सबसे बड़ी रेखा ; **मु०** —का पहर - प्रभात काल ; दान का समय ।

**कर्णकटु** - वि० [सं] सुनने में अप्रिय ।

**कर्णकुहर** - पु० [सं] कान का छेद ।

**कर्णगूथ** - पु० [सं] कान का मैल; कान का खूँट ।

**कर्णधार** - पु० [सं] माझी, पतवार थामनेवाला, मल्लाह, नाविक ।

**कर्णनाद** - पु० [सं] कान में सुनाई पड़ती हुई गूंज ।

**कर्णपाली** - स्त्री० [सं] कान की बाली; मुरकी; कान की लौ ।

**कर्णभूषण** - पु० [सं] कान में पहनने का गहना ।

**कर्णमल** - पु० [सं] कान का मैल, खूँट ।

**कर्णमूल** - पु० [सं] कान की एक बीमारी, कनपेड़ा ।

**कर्णवेष्टन** - पु० [सं] कुंडल ।

**कर्णाकर्णी** - स्त्री० [सं] सुनी सुनाई बात; ख्याति, अफ़वाह ।

**कर्णाटी** - स्त्री० [सं] एक रागिनी; कर्णाटक की स्त्री; शब्दालंकार में एक वृत्ति जिसमें केवल 'क' वर्ग के ही वर्ण आते हैं ।

**कर्णिका** - स्त्री० [सं] करनफूल; हथेली के बीच की उंगली; सूंड़ की नोक; कमल का छत्ता; सेवती; सफ़ेद गुलाब; गिलटी; लेखनी ।

**कर्णिकार** - पु० [सं] कनियारी या कनकचंपा का पेड़ ।

**कर्णी** - पु० [सं] बाण, तीर ।

**कर्णीजप** - पु० [सं] चुग़लख़ोर; दुर्जन; ठग ।

**कर्णीरथ** - पु० [सं] क्रीडार्थ छोटा रथ; परदेदार रथ; एक्का ।

**कर्तन** - पु० [सं] काटना; कतरना, कातना ।

**कर्तनी** - स्त्री० [सं] कतरनी, कैंची ।

**कर्तब** }
**करतब** } - पु० [हि] कर्तव्य, काम, उपाय; चालाकी ।

**कर्तरी** - स्त्री० [सं] कतरनी; सुनारो की काती; कटारी; ताल देने का एक बाजा ।

**कर्तव्य** - 1. वि० [सं] करने लायक़; 2. पु० धर्म, फ़र्ज़; **मु०** कर्तव्याकर्तव्य - करने और न करने योग्य काम ।

**कर्तव्यमूढ़** - वि० [सं] जिसे अपना कर्तव्य न सूझे ।

**कर्तार** - पु० [सं] ईश्वर, बनानेवाला ।

**कर्तृत्व** - पु० [सं] कर्ता का भाव या धर्म; **यौ०** —शक्ति - कार्य करने की शक्ति ।

**कर्द, कर्दम** - पु० [सं] कीचड़, कीच; पाप ।

**क़र्ना** - स्त्री० [देश] बड़ी तुरही या भोंपू ।

**कर्नेता** - पु० [अ] घोड़ो का एक भेद ।

**कर्पट** - पु० [स] पुराना वस्त्र, गूदड़ ।

**कर्पटी** - पु० [स] भिखमंगा, चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला ।

**कर्पर** - पु० [सं] खोपड़ी, कपाल; खप्पर; एक तरह का अस्त्र ।

**कर्पास** - पु० [स] कपास ।

**कर्पूर** - पु० [सं] कपूर ।

**कर्बुर** - 1. पु० [सं] सोना; धतूरा; पाप; पानी; राक्षस; 2. वि० रंग-बिरंगा ।

**कर्म** - पु० [सं] काम, भाग्य; करतूत; करनी ।

**कर्मकांड** - पु० [सं] धर्म-संबंधी कार्य, मीमांसा शास्त्र जिसमे यज्ञादि कर्मों का विधान हो ।

**कर्मकार** - पु० [स] सेवक; सुवर्णकार; लुहार ।

**कर्मक्षेत्र** - पु० [सं] कार्य करने का स्थान; भारतवर्ष ।

**कर्मठ** - वि० [स] काम में चतुर; कर्मनिष्ठ ।

**कर्मण्य** - वि० [सं] उद्योगी, कार्यदक्ष ।

**कर्मधारय** - पु० [सं] एक समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समानाधिकरण हो ।

**कर्मनिष्ठ** - वि० [सं] यज्ञ, अग्निहोत्र आदि कर्तव्य करनेवाला ; क्रियावान ।

**कर्मभूमि** - पु० [सं] आर्यावर्त ।

**कर्मभोग** - पु० [स] प्रारब्ध का फल ।

**कर्ममास** - पु० [सं] श्रावण मास ।

**कर्मयुग** - पु० [सं] कलियुग ।

**कर्मयोग** - पु० [सं] सफलता और विफलता की चिंता न करके कर्तव्य बुद्धि से काम करना ; निर्लिप्त होकर काम करना; चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र-विहित कर्म ।

**कर्मरेखा** - स्त्री० [सं] भाग्य-रेखा, तक़दीर ।

**कर्मवाद** - पु० [सं] मीमांसा ; कर्मयोग ।

**कर्मविपाक** - पु० [सं] पूर्व जन्म के शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल।

**कर्मशील** - पु० [स] कर्मनिष्ठ ।

**कर्मशूर** - वि० [सं] उद्योगी, साहसी ।

**कर्मसंन्यास** - पु० [सं] कर्म के फल का त्याग।

**कर्मसचिव** - पु० [सं] मंत्री से अन्य छोटा मुसाहिब ।

**कर्मसाक्षी** - पु० [सं] सूर्य, चंद्र आदि देवता जो प्राणियों के कर्मों को देखते रहते हैं ।

**कर्मस्थान** - पु० [सं] जन्म-कुंडली का दसवाँ स्थान ; काम करने की जगह ।

**कर्महीन** - वि० [सं] अभागा ।

**कर्मार** पु० [सं] बाँस ; लुहार ; कारीगर ।

**कर्मिष्ठ** - वि० [स] कर्म करनेवाला ।

**कर्मी** - वि० [सं] काम करनेवाला ।

**कर्मीर** - पु० [सं] नारंगी रंग ।

**कर्मेन्द्रिय** - स्त्री० [स] काम करनेवाली इंद्रियाँ—हाथ, पैर, वाणी, गुदा आदि ।

**कर्र** - पु० [अ] शत्रुओं को पीछे हटाना ; शान ; **यौ०** —व फ़र्र - [अ] शान-शौकत ।

**कर्रा** - 1. वि० [हिं] कड़ा ; 2. पु० जुलाहों का सूत फैलाकर तानने का काम ।

**कर्राना** - अ० [हिं] कड़ा होना ।

**कर्रार** - 1. वि० [अ] विजयी; 2. पु० मुहम्मद साहब की एक उपाधि ।

**कर्ष** - पु० [सं] सोलह माशे की तौल ; खिंचाव ; खेती ।

**कर्षक** - पु० [सं] खींचनेवाला ; किसान ; खेतिहर ।

**कर्षण** - पु० [सं] खींचना ; जोतना ।

**कर्षना** - स० [सं] खींचना ।

**कर्षफल** - पु० [सं] बहेड़ा ।

**कर्षा** - स्त्री० [सं] उत्साह ; ईर्ष्या ; विरोध ; क्रोध ।

**कर्षिणी** - स्त्री० [सं] लगाम ।

**कर्षित** - वि० [सं] खींचा हुआ ।

**कर्ष्य** - वि० [सं] खींचने योग्य ।

**कलंक** - पु० [सं] दाग़, कालिख ; लांछन, बदनामी ; दोष ; **मु०**— चढ़ाना - दोष लगाना, बदनाम करना ।

**कलंकित** - वि० [सं] दूषित, लांछित।

**कलंकी** - वि० [सं] दोषी ।

**कलंगी** - पु० [तु] कलगी ।

**कलंदर** - पु० [अ] मदारी; विरक्त मुसलमान साधु ।

**कलंब** - पु० [सं] बाण ; शाक का डंठल ।

**कलंबिका** - स्त्री० [सं] गले के पीछे की नाड़ी।

**कल** - 1. पु० [सं] अव्यक्त मधुर ध्वनि ; 2. स्त्री० आरोग्य, आराम ; पुर्जा, यंत्र ; 3. वि० सुंदर; मधुर ; 4. क्रि० आनेवाला या बीता हुआ दिन ; **मु०**— से - चैन से, धीरे-धीरे ; —ऐंठना - किसीके चित्त को दूसरी ओर घुमा देना ; —का - थोड़े दिनों का ; —पड़ना - शांति होना, आराम होना ; —पाना - शांति मिलना ।

**कलई** - स्त्री० [अ] सफ़ेदी ; चूना ; मुलम्मा ; रांगा ; रहस्य , **मु०**— खुलना -

वास्तविक रूप प्रकट होना, रहस्य मालूम होना।

**कलईगर** - पु० [फ़ा] कलई करनेवाला।

**कलईदार** - वि० [फ़ा] जिसपर कलई की गयी हो।

**कलकंठ** - पु० [सं] कोयल, हंस।

**क़लक़** - पु० [अ] बेचैनी; रंज, दुख।

**कलकना** - अ० [हिं] चिल्लाना, शोर मचाना, चीत्कार करना।

**कलकल** - 1. पु० [सं] झरने आदि का शब्द; 2. स्त्री० झगड़ा; वादविवाद।

**कलकान, कलकानि** - स्त्री० [हि] दिक़्क़त; हैरानी; कलह; चिंता।

**कलगी** - स्त्री० [तु] शुतुरमुर्ग आदि के पंख जिन्हें पगड़ी पर लगाते है; चिड़ियो की चोटी; इमारत का शिखर।

**कलछा, कलछी** - पु० [हिं] बड़ी डाँड़ी का चम्मच।

**कलजिब्भा** - वि० [हिं] काली जीभवाला जिसकी अशुभ बातें प्रायः ठीक घटती हैं।

**कलत्र** - पु० [सं] स्त्री, पत्नी; दुर्ग।

**कलदार** - 1. वि० [हिं] जिसमें कल या पेंच लगा हो; 2. पु० सरकारी रुपया।

**कलधौत** - पु० [सं] सोना; चाँदी; मनोहर ध्वनि।

**कलप, कलफ़** - पु० [हिं] माँड़ी जो कपड़ो पर लगाई जाती है; चेहरे पर का काला धब्बा, खिजाव; दुख।

**कलपना** - अ० [हिं] विलाप करना, बिलखना; कुढ़ना।

**कलपाना** - स० [हिं] रुलाना।

**कलबल** - पु० [हि] दाँव-पेच; उपाय।

**कलबूत** - पु० [फ़ा] ढाँचा, साँचा।

**कलभ** - स्त्री० [सं] हाथी या ऊँट का बच्चा।

**क़लम** - स्त्री० [अ] लेखनी, किसी पेड़ या पौधे की टहनी जो कही अन्यत्र बैठाने या दूसरे पेड़ में पैवंद लगाने के लिए काटी जाये; मु०—करना - काँटना-छाँटना;—घिसना - कुछ लिखते रहना; —तोड़ना - अच्छे ढंग पर लिखना, —बनाना - कनपटी पर बालो में कत देना, दाढ़ी मुंड़वाना; —कसाई - पु० लिख-पढ़कर हानि करनेवाला,—अदाज़ - वि० जो लिखने में छूट गया हो; —कार - पु० क़लम से नक्क़ाशी आदि करना, —कारी - स्त्री० बेल-बूटे बनाने का काम; —तराश - पु० क़लम बनाने का चाकू; —दान - पु० क़लम, दवात आदि रखने का छोटा सदूक; —बंद - वि० लिखा हुआ;—रौ - स्त्री० [फ़ा] राज्य, सल्तनत।

**कलमख** - पु० [हि] कल्मष, मैल।

**कलमना** - स० [सं] काटना।

**कलमलाना** - अ० [अनु] कुलबुलाना, कसमसाना।

**कलमा** - पु० [अ] मुसलमान धर्म का मूल मंत्र 'ला इलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद उर्रसूलिल्लाह'; मु०— पढ़ना - मुसलमान होना।

**क़लमी** - वि० [अ] लिखा हुआ; जो क़लम लगाने से उत्पन्न हुआ हो।

**कलमुँहा** - वि० [हि] लाछित, कलंकित; अभागा।

**कलरव** - पु० [सं] मधुर शब्द; कोकिल।

**कलवरिया** - स्त्री० [हिं] कलवार की दूकान।

**कलवार** - पु० [हिं] शराब बेचनेवाली जाति, कलाल।

**कलश** - पु० [सं] गगरा, घड़ा, कलस; मंदिरो और मकानो आदि के ऊपर का कंगूरा।

**कलशी** - स्त्री० [सं] गगरी, छोटा घड़ा।
**कलसा** - पु० [हिं] गगरा, घड़ा; मंदिर का शिखर।
**कलहंस** - पु० [सं] हंस।
**कलह** - पु० [सं] झगड़ा, विवाद; **यौ०** — कारी - झगड़ालू, —प्रिय - 1. पु० नारद; 2. वि० झगड़ालू, लड़ाईपसंद।
**कलहारी** - वि० [सं] लड़ाकी, कर्कशा।
**कलाँ** - वि० [फ़ा] बड़ा, दीर्घाकार।
**कला** - स्त्री० [सं] अंश; कांति; **यौ०** — कौशल - हुनर; दस्तकारी, किसी कला में निपुणता; प्रतिभा; तेज; करतब।
**कलाई** - स्त्री० [हिं] हाथ का वह भाग जहाँ स्त्रियाँ चूड़ी पहनती हैं, मणिबंध।
**क़लाकंद** - पु० [फ़ा] खोये की एक मिठाई, बरफ़ी।
**कलाकर** - पु० [सं] चन्द्रमा।
**कलाकार** - पु० [सं] कला को जाननेवाला; होशियार, प्रतिभावान।
**कलाकारी** - स्त्री० [हिं] चालाकी; चित्र आदि बनाने की विद्या।
**कलाकुल** - पु० [सं] विष, हलाहल।
**कलाग़** - पु० [फ़ा] कौवा।
**कलाजंग** - पु० [उ] कुश्ती का एक पेंच।
**कलाद** - पु० [सं] सुनार।
**कलादा** - पु० [हिं] हाथी की गर्दन पर महावत के बैठने का स्थान।
**कलाधर** - पु० [सं] चंद्रमा; शिव; कलाकार।
**कलाना** - अ० [हिं] भूनना, अकोरना।
**कलानिधि** - पु० [सं] चंद्रमा।
**कलाप** - पु० [सं] समूह, ढेर; मोर की पूँछ; तरकश; भूषण।
**कलापक** - पु० [सं] समूह; हाथी के गले का रस्सा; चार श्लोकों का समूह।
**कलापिनी** - स्त्री० [सं] रात्रि; मोरनी।
**कलापी** - 1. पु० [सं] मयूर; कोकिल; 2. वि० झुण्ड में रहनेवाला।
**कलाबत्तू** - पु० [तु] सोने-चाँदी के तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटे जाते हैं।
**कलाबा** - पु० [फ़ा] हाथी के गले क़ी रस्सी; कलावा।
**कलाबाज़** - वि० [फ़ा] नटक्रिया करनेवाला।
**कलाबाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] सिर नीचे करके उलट जाना; ढेकली; चालाकी।
**कलाभृत्** - पु० [सं] चंद्रमा।
**कलाम** - पु० [अ] वाक्य; बातचीत; वादा; उज्र।
**कलामत** - पु० [अ] गवैया।
**कलामुख** - पु० [सं] चंद्रमा।
**कलाय** - पु० [सं] मटर।
**कलार** } **कलाल** } पु० [हिं] कलवार।
**कलावंत** - पु० [सं] गवैया; नट।
**कलावा** - पु० [फ़ा] तकले पर लिपटा हुआ सूत का लच्छा; हाथी की गरदन; हाथी के गले की रस्सी, कलाबा।
**कलिंग** - पु० 1. [सं] कुलंग पक्षी; आज का उड़ीसा राज्य; वटवृक्ष; तरबूज; एक राग; 2. वि० चतुर; धूर्त।
**कलिंगड़ा** - पु० [हिं] एक राग; कलिंग देश का निवासी।
**कलिंद** - पु० [सं] बहेड़ा; सूर्य; तरबूज; वह पर्वत जहाँ से जमुना नदी निकलती है।
**कलिंदजा** - स्त्री० [स] यमुना।
**कलि** - पु० [सं] कलह; पाप; संग्राम।
**कलिक** - पु० [सं] क्रौंच पक्षी।
**कलिका** - स्त्री० [सं] कली, मुकुल; एक छंद।

**कलिकान** - वि० [हि] हैरान, परेशान ।
**कलिकाल** - पु० [स] कलियुग ।
**कलित** - वि० [सं] युक्त ; विदित ; खिला हुआ ; सुंदर ।
**कलिमल** - पु० [सं] पाप ।
**क़लिया** - पु० [अ] पकाया हुआ रसदार माँस ।
**कलियान** -.पु० [फ़ा] एक प्रकार का हुक्का ।
**कलियुग** - पु० [स] यह चालू युग, वह युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता हो ; चार युगो में से चौथा जिसकी अवधि 4 लाख 32 हज़ार मानव वर्ष मानी जाती है ।
**कलियुगी** - वि० [सं] कलियुग संबंधी ; बुरी आदतवाला ।
**कलिल** - पु० [सं] राशि ; कीचड़, दलदल ।
**क़लींदा** - पु० [फ़ा] तरबूज़ ।
**कली** - स्त्री० [हि] मुँहबँधा फूल ; चिड़िया का पहले निकलनेवाला छोटा पर ; पत्थर आदि का फुका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है ; **मु०** —खिलना - प्रसन्न होना ; —करना - दीवारो पर पोता फेरना ; —फूटना - चिड़िया के पहले परो का निकलना ।
**क़लीच** - पु० [फ़ा] तलवार ।
**कलीद** - स्त्री० [फ़ा] कुंजी ।
**कलीम** - वि० [अ] कहनेवाला ।
**कलीरा** - पु० [देश] कौड़ियो और छुहारो की माला जो विवाह में दी जाती है ।
**क़लील** - वि० [अ] थोड़ा ।
**कलीसिया** - पु० [यू] ईसाई या यहूदियों की धर्म-मंडली तथा उनका उपासना-मंदिर ।
**कलुष** - पु० [सं] पाप ।
**कलुषाई** - स्त्री० [हि] चित्त की मलिनता ; दोष ; अपवित्रता ।
**कलुषित** - वि० [स] दूषित ।
**कलुषी** - वि० [स] दोषी, मलिन ; गंदा ; दूषित ।
**कलूटा** - वि० [हि] काला, कुरूप ; **यौ०** काला-कलूटा - बदसूरत ।
**कलेऊ, कलेवा** - पु० [देश] नाश्ता, जल-पान , प्रातःकाल का अल्पाहार ।
**कलेजा** - पु० [हि] छाती ; यकृत् ; दिल ; हिम्मत ; अति प्रिय वस्तु या व्यक्ति ; **मु०**—मुँह को आना - व्याकुल होना ; कलेजे पर साँप लोटना - किसी बात की याद से एकाएक शोक छा जाना ; —काढ़ना - मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाना ; मन को हर लेना ; —काढ़के देना - अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तु दे देना ; —खाना - बहुत तंग करना, सताना ; —टूक टूक होना - शोक से हृदय विदीर्ण हो जाना ; —ठंडा होना - शान्ति मिलना ; —तर होना - सफल होना ; —थामना - दुख सहने के लिए हृदय को कठोर बनाना ; —थामकर बैठ जाना - मन मसोसकर रह जाना , —निकालकर रख देना - सब-कुछ समर्पण कर देना ; —पत्थर का होना - कठोर हृदय होना ; —बैठ जाना - उत्साह नष्ट होना ; कलेजे पर पत्थर रखना - सहनशील होना ।
**कलेजी** - स्त्री० [हिं] कलेजे का माँस ।
**कलेवर** - पु० [सं] शरीर ; चोला ; आकार **मु०** —बदलना - रूप बदलना ।
**कलेवा** - पु० [देश] सवेरे का जलपान ; ब्याह की एक रस्म ; पाथेय, रास्ते के लिए दी हुई खाने की चीज़ें ।
**कलोर** - 1. स्त्री० [हिं] वह जवान गाय जो ब्याई न हो ; 2. पु० बछड़ा ।
**कलोल** - पु० [सं] आमोद-प्रमोद ; क्रीड़ा ।

**कलौंजी** - स्त्री० [हिं] एक पौधा जिसका फल मसाले के काम में आता है ; मसाला भरकर घी-तेल में तली हुई भाजी ।

**कल्क** - पु० [सं] चूर्ण, बुकनी ; पीठी ; दंभ ; शठता ; मैल ; विष्ठा ; पाप ; अवलेह ; बहेड़ा ।

**कल्की** - पु० [सं] विष्णु का दसवाँ अवतार ।

**कल्प** - पु० [सं] विधि ; काल का विभाग ; वेद का एक अंग , चिकित्सा ।

**कल्पक** - 1. वि० [सं] रचनेवाला , काटनेवाला ; 2. पु० नाई ; कचूर ।

**कल्पतरु** } पु० [सं] इच्छाओं को पूर्ण
**कल्पद्रुम** } करनेवाला देववृक्ष ।

**कल्पना** - स्त्री० [सं] कोई नयी बात सोचना, वह मानसिक शक्ति जो इन्द्रियो के सम्मुख उपस्थित अमूर्त विषयो को मूर्त रूप देती है ; अनुमान ।

**कल्पलता** - स्त्री० [सं] कल्पवृक्ष ।

**कल्पवास** - पु० [सं] माघ के महीने में गंगा तट पर संयम के साथ धर्मकार्य में लगे रहना ।

**कल्पवृक्ष** - पु० [सं] कल्पतरु, कल्पद्रुम, कल्पलता ।

**कल्पसूत्र** - पु० [सं] वह ग्रंथ जिसमें वैदिक यज्ञ आदि गृहस्थ कर्मों का विधान हो ।

**कल्पांत** - पु० [सं] प्रलय ।

**कल्पित** - पु० [सं] फ़र्ज़ी, नकली ; बनावटी, मनमाना ।

**कल्ब** - पु० [अ] हृदय, दिल ; सेना का मध्यभाग ; किसी वस्तु का मध्यभाग ; बुद्धि ; प्रज्ञा ; खोटी चाँदी या खोटा सोना ।

**कल्बसाज़** - पु० [फ़ा] खोटे या जाली सिक्के बनानेवाला ।

**कल्बसाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] नकली या जाली सिक्के बनाने का काम ।

**कल्बी** - वि० [अ] हृदयसंबंधी, हार्दिक ; नकली, झूठा ।

**कल्मष** - पु० [सं] पाप ; मवाद ; मैल ।

**कल्माष** - 1. वि० [सं] काला , रंग-बिरंगा ; चितकबरा ; 2. पु० चितकबरा रंग ; धब्बा ; एक बढ़िया चावल ।

**कल्य** - पु० [सं] सवेरा ; मधु ; शराब ; अगला या पिछला दिन ।

**कल्यपाल** - पु० [सं] कलवार, शराब बेचनेवाला ।

**कल्या** - स्त्री० [सं] शुभ वाणी ।

**कल्याण** - 1. पु० [सं] मंगल ; शुभ ; भलाई ; एक राग ; 2. वि० मंगलकारी, सौभाग्यशाली ।

**कल्योना** - पु० [सं] कलेवा ।

**कल्ल** - वि० [देश] बहरा ।

**कल्लर** - पु० [देश] देह ; नोनी मिट्टी, ऊसर भूमि ।

**कल्लाच** - पु० [तु] दरिद्र ; गुंडा ।

**कल्ला** - पु० [हिं] अंकुर ; लैंप का बर्नर ; [फ़ा] जबड़ा ।

**कल्लातोड़** - वि० [हिं] मुँहतोड़, लाजवाब ।

**कल्लादराज़** - वि० [फ़ा] मुँहज़ोर, बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला ।

**कल्लाना** - अ० [हिं] जलन के साथ दर्द होना ।

**कल्लाश** - पु० [तु] निर्धन, ग़रीब ।

**कल्लोल** - पु० [सं] लहर ; आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा ।

**कल्लोलिनी** - स्त्री० [सं] लहराती हुई नदी ।

**कल्हार** - पु० [हिं] पुष्प-विशेष ।

**कल्हारना** - 1. स० [हिं] कड़ाह में तलना ; 2. अ० कराहना ।

**कवक** - पु० [देश] ग्रास ; कुकुरमुत्ता ।

**कवच** - पु० [सं] ज़िरह-बख़्तर ; छिलका ; तांत्रिक रक्षा-मंत्र ; ताबीज़ ।

**कवन** - 1. पु० [सं] पानी ; 2. सर्व० कौ ।

**कवयित्री** - स्त्री० [सं] स्त्री कवि ।
**कवर** - पु० [हिं] ग्रास, कौर, कवल; चोटी, जूड़ा ।
**कवरना** - स० [हिं] सेकना, भूनना ।
**कवरी** - स्त्री० [सं] चोटी, बनतुलसी ।
**कवल** - पु० [सं] कौर; एक मछली; एक तौल; पीलिया रोग ।
**कवलिका** - स्त्री० [सं] फोड़े पर बाँधी जानेवाली कपड़े की पट्टी ।
**कवलित** - वि० [सं] खाया हुआ ।
**क़वानीन** - पु० [अ] क़ानून का बहु० ।
**क़वाम** - पु० [अ] पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस, चाशनी ।
**क़वायद** - पु० [अ] क़ायदा का बहु०, नियम; व्याकरण; युद्ध-कला का अभ्यास, परेड ।
**कवि** - पु० [सं] कविता करनेवाला, शायर; वाल्मीकि; शुक्राचार्य; पंडित; सूर्य, उल्लू ।
**कविका** - स्त्री० [सं] लगाम; केवड़ा ।
**कविज्येष्ठ** - पु० [सं] वाल्मीकि ।
**कविता** - स्त्री० [सं] कवि की रचना, शायरी ।
**कवित्त** - पु० [हि] इकतीस अक्षरो का एक वृत्त ।
**कवित्व** - पु० [सं] काव्य-रचना ।
**कविराज** - पु० [सं] श्रेष्ठ कवि; वैद्यो की उपाधि ।
**कविलास** - पु० [हि] कैलास; स्वर्ग ।
**कवी** - वि० [अ] बलवान ।
**कवीश्वर** - पु० [सं] बड़ा कवि ।
**कवेला** - पु० [हिं] कौए का बच्चा ।
**कवोष्ण** - पु० [सं] कुनकुना ।
**कव्य** - पु० [सं] पितरो को दिया जानेवाला अन्न ।
**कव्वाल** - वि० [अ] क़व्वाली गानेवाला ।
**क़व्वाली** - स्त्री० [अ] सूफ़ियो का भगवत् प्रेम सम्बन्धी गीत ।
**कश** - 1. पु० [सं] चाबुक; [फ़ा] खिंचाव; हुक्के सिगरेट या चिलम का दम; 2. वि० [फ़ा] आकर्षक, खीचनेवाला, जैसे, 'दिलकश'; यौ० —मकश - खीचातानी; सोच-विचार; धक्कमधक्का; —ए हयात - स्त्री० जीवन-संग्राम ।
**कशक** - स्त्री० [फ़ा] रेखा ।
**क़शक़ा** - पु० [फ़ा] तिलक, टीका ।
**कशनीज़** - पु० [फ़ा] धनिया ।
**कशा** - स्त्री० [सं] कोड़ा, चाबुक, रस्सी ।
**कशाकश** - स्त्री० [फ़ा] कश-मकश ।
**कशाघात** - पु० [सं] कोड़े की मार ।
**कशिपु** - पु० [स] तकिया; बिछौना ।
**कशिश** - स्त्री० [फ़ा] खिंचाव, आकर्षण, प्रवृत्ति ।
**कशीद** - स्त्री० [फ़ा] अर्क खींचना ।
**कशीदगी** - स्त्री० [फ़ा] वैमनस्य; खिंचाव ।
**कशीदा** - पु० [हिं] सूई का काम ।
**कशेरुका** - स्त्री० [स] रीढ की हड्डी ।
**कश्ती** - स्त्री० [फ़ा] नाव, नौका; तश्तरी; शतरंज की गोटी ।
**कश्नीज़** - पु० [फ़ा] धनिया ।
**कश्फ़** - पु० [फ़ा] खोलना ।
**कश्फ़ी** - वि० [फ़ा] खुला हुआ ।
**कश्मल** - 1. पु० [सं] पाप; मोह; मूर्छा; 2. वि० पापी; मलिन ।
**कश्मीरज** - पु० [सं] केसर ।
**कश्य** - 1. वि० [सं] जहाँ चाबुक मारा जाय; 2. पु० घोड़े की पीठ; कछुआ ।
**कश्यप** - पु० [सं] कछुआ; एक वैदिक ऋषि ।
**कष**, **कषण** } पु० [सं] सान; कसौटी, परीक्षा ।

**कषाय** - 1. वि० [सं] कसैला; गेरुए रंग का; 2. पु० काम-क्रोधादि विकार; काढ़ा; दवा के लिए जड़ी-बूटी आदि का उबाला हुआ रस।

**कष्ट** - पु० [सं] दुख, पीड़ा, क्लेश।

**कष्ट-कल्पना** - स्त्री० [सं] कष्टसाध्य युक्ति।

**कष्टसाध्य** - वि० [स] जो मुश्किल से प्राप्त हो; जिसका करना कठिन हो।

**कस** - पु० [हिं] परीक्षा; तलवार की लचक।

**क़स** - पु० [फ़ा] व्यक्ति, मनुष्य; साथी; सहायक; यौ० —व नाक़स - छोटे-बड़े, सभी; बेक़स - जिसका कोई सहायक न हो, बेचारा।

**कसक** - स्त्री० [हिं] पीड़ा; वैर; सहानुभूति। हौसला; मु० —निकालना - पुराने वैर का बदला लेना।

**कसकना** - अ० [हिं] दर्द करना।

**कसकुट** - पु० [हिं] एक धातु जो तांबे और जस्ते के सम मेल से बनती है।

**कसगर** - पु० [हिं] एक मुसलिम जाति जो बरतन बनाती है।

**कसना** - स० [हिं] बंधन को खींचना।

**कसनी** - स्त्री० [हि] रस्सी; गिलाफ़, अंगिया; कसौटी; परीक्षा।

**क़सब** - पु० [अ] बढ़िया मलमल; पेशा; वेश्यावृत्ति।

**कसबल** - पु० [अ] ताक़त, साहस।

**क़सबा** - पु० [अ] छोटा शहर।

**कसबिन** } **कसबी** } स्त्री० [अ] वेश्या; कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; यौ० —ख़ाना - वेश्यालय।

**क़सम** - स्त्री० [अ] शपथ; मु० —खाकर कहना - सत्य कहना; — खाने को - नाममात्र को।

**कसमसाना** - अ० [हि] रगड़ खाते डोलना; उकताकर हिलना-डोलना; घबराना।

**कसमसाहट** - स्त्री० [हिं] कुलबुलाहट, बेचैनी।

**कसर** - स्त्री० [हिं] कमी; वैर, बदला; मु०—निकालना - बदला लेना; —करना - कम करना, छोड़ देना; —खाना - नुक़सान उठाना; —देना - नुक़सान पहुँचाना; —पड़ना - घाटा होना; —रखना - अधूरा छोड़ना।

**कसरत** - स्त्री० [अ] अधिकता; व्यायाम।

**कसरती** - वि० [हिं] कसरत करनेवाला।

**कसरहट्टा** - पु० [हिं] कसेरो का बाज़ार जहाँ बरतन बनते-बिकते हैं।

**कसल** - पु० [अ] बीमारी; थकावट।

**कसलमन्द** - वि० [फ़ा] बीमार; थका हुआ।

**कसहँड़ा** - पु० [हिं] काँसे का बड़ा बरतन।

**क़साई** - पु० [अ] घातक; बेरहम; निष्ठुर; मु०—के खूँटे बँधना - बेरहम के पाले पड़ना।

**कसाना** - 1. अ० [हि] कसैला हो जाना; 2. स० कसैला बनाना।

**कसाफ़त** - स्त्री० [अ] मोटाई; भद्दापन; गंदगी।

**क़साबा** - पु० [अ] कुर्गी, काबुली और तुर्की स्त्रियो के सिर पर बाँधने का रूमाल।

**क़सामत** - स्त्री० [फ़ा] क़सम खिलाने का काम।

**कसार** - पु० [हिं] चीनी मिला भुना आटा, पंजीरी।

**कसाला** - पु० [हिं] कष्ट, कठिन परिश्रम।

**कसावट** - स्त्री० [हि] खिचाव; तनाव।

**कसी** - स्त्री० [हि] हल का फावड़ा; एक भूमाप।

**क़सीटना** - स० [हिं] कसना ; रोकना ।

**क़सीदा** - पु० [अ] निंदा-स्तुतिवाली एक तरह की कविता ।

**कसीफ़** - वि० [अ] मोटा ; गंदा ।

**क़सीर** - वि० [अ] बहुत अधिक ; **यौ०** — उल-औलाद - जिसके बहुत-से बाल-बच्चे हो ।

**कसीस** - 1. पु० [अ] खानो में मिलनेवाला लोहे का विकार; 2. स्त्री० निर्दयता ; कोशिश ।

**कसूंभी** - वि० [हिं] कुसुम के रंग का।

**क़सूर** - पु० [अ] अपराध ; **यौ०** — मंद, वार - अपराधी ।

**कसे** - वि० [फ़ा] कोई ; **यौ०** — बाशद - चाहे कोई हो ।

**कसेरा** - पु० [हिं] काँसा आदि के बरतन बनाने और बेचनेवाला ।

**कसेरू** - पु० [हिं] एक प्रकार के मोथे की जड़ जो फल के रूप में खायी जाती है ।

**कसैला** - वि० [हिं] कषाय के स्वादवाला ; षड्रसो में एक, जैसे सुपारी, हड़ आदि में होता हैं ।

**कसैली** - स्त्री० [हिं] सुपारी ; कसैली वस्तु ।

**कसोरा** - पु० [हिं] कटोरा ; मिट्टी का प्याला ।

**कसौटी** - स्त्री० [हिं] एक काला पत्थर जिस-पर रगड़कर सोने की उत्तमता की जाँच की जाती है ; **मु०**—पर कसना - परखना, खूब जाँच-पड़ताल करना ।

**कस्तरी** - स्त्री० [फ़ा] दूध औटाने का मिट्टी का बरतन ।

**कस्तूर** / **कस्तूरिका** / **कस्तूरी** - स्त्री० [सं] मृग की नाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य ।

**कस्तूरीमृग** - पु० [सं] बहुत ठंडे पहाड़ो पर रहनेवाला हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है ।

**क़स्द** - पु० [अ] इरादा ; विचार ।

**क़स्दन** - क्रि० [अ] जान-बूझकर ।

**क़स्ब** - पु० [अ] पैदा करना ; हुनर ; पेशा ; वेश्यावृत्ति ।

**क़स्बा** - पु० [अ] बड़ा गाँव ।

**क़स्बात** - पु० [अ] क़स्बा का बहु० ।

**क़स्बाती** - वि० [अ] क़स्बे या छोटे शहर के लोग ।

**क़स्बी** - 1. स्त्री० [अ] वेश्या, रंडी ; 2. वि० क़स्ब करनेवाली ।

**क़स्मिया** - क्रि० [फ़ा] क़सम खाकर ।

**क़स्र** - पु० [अ] अंश, भाग ; भिन्न गणित ।

**क़स्साब** - पु० [अ] क़साई ।

**कस्साबा** - पु० [उ] औरतो के सिर पर बाधने का रूमाल ।

**क़स्साबी** - स्त्री० [अ] क़साई का काम ।

**क़स्साम** - वि० [अ] क़सम खानेवाला ; बाँटनेवाला ।

**कहँ** - 1. प्रत्य० [अव] के लिए ; 2. क्रि० कहाँ ; **यौ०** —लगि - कहाँ तक, कब तक ।

**कह** - 1. स्त्री० [फ़ा] सूखी घास ; 2. वि० [हि] क्या ।

**कहकशाँ** - स्त्री० [फ़ा] आकाशगंगा ।

**क़हक़हा** - पु० [फ़ा] ठहाका ; ज़ोर की हँसी ; **मु०** —उड़ाना, लगाना या मारना - हँसी उड़ाना, ठट्ठा करना ।

**क़हक़हा-दीवार** - पु० [फ़ा] चीन की एक प्रसिद्ध दीवार ।

**कहगिल** - स्त्री० [फ़ा] मिट्टी का गारा जो दीवारो में लगाया जाता है ।

**क़हत** - पु० [अ] अकाल ; किसी वस्तु का अत्यधिक अभाव ।

**क़हतज़दा** - पु० [फा] अकाल का मारा, भूखो मरनेवाला।

**क़हतसाली** - स्त्री० [अ] दुर्भिक्ष, अकाल।

**कहतरी** - स्त्री० [उ] मिट्टी का बरतन जिसमें दही रखा जाता है।

**कहना** - 1. स० [हिं] बोलना; बनाना; 2. पु० आज्ञा; अनुरोध; कथन; **मु०** — सुनना - समझाना, बातचीत करना, बहस करना; कहने को - नाम मात्र को; कहने में आना - धोखे में आना; कह बैठना - सख्त जवाब देना।

**कहनी** - स्त्री० [अ] कथन।

**क़हबा** - स्त्री० [अ] वेश्या।

**क़हर** - पु० [अ] विपत्ति; **मु०** —का - अत्यंत भीषण।

**क़हरन** - क्रि० [अ] बलपूर्वक, ज़बर्दस्ती से।

**कहरना** - अ० [हिं] कराहना।

**कहरवा** - पु० [हिं] पाँच मात्राओं का एक ताल; उस ताल पर गाया जानेवाला दादरा।

**क़हरी** - वि० [अ] आफ़त ढानेवाला।

**कहरुबा** - पु० [फ़ा] एक गोंद।

**कहल** - पु० [देश] उमस, गरमी; कष्ट; [अ] सुरमा।

**कहलना** - अ० [हिं] कसमसाना; अकुलाना; दहलना।

**क़हवा** - पु० [अ] एक पौधे का बीज जिसे भूनकर उसके चूर्ण को उबाले हुए पानी में डालकर थोड़ी देर बाद उसे छान लेते हैं और उसे दूध और शक्कर के साथ मिलाकर पीते हैं, कॉफ़ी।

**कहवैया** - वि० [हिं] कहनेवाला।

**कहाँ** - वि० [हिं] किस जगह; **मु०**— का - बड़ा भारी, असाधारण; —का कहाँ - बहुत दूर; —की बात - यह बात ठीक नहीं।

**कहानी** - स्त्री० [हिं] कथा; गढ़ी या झूठी बात; **यौ०** रामकहानी - लंबा-चौड़ा वृत्तांत।

**कहार** - पु० [हि] एक हिंदू जाति जो प्रायः पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।

**कहारा** - पु० [देश] टोकरा।

**कहाल** - पु० [देश] एक बाजा।

**कहालत** - स्त्री० [फ़ा] सुस्ती।

**कहावत** - स्त्री० [हि] मसल, लोकोक्ति; मृतक कर्म की सूचना का संदेश-पत्र।

**कहा-सुना** - पु० [हिं] भूल-चूक।

**कहा-सुनी** - स्त्री० [हिं] झगड़ा, वाद-विवाद; तकरार।

**कहीं** - अव्य० [हिं] अनिश्चित स्थान में; **मु०** कभी नहीं, जैसे, 'कहीं ओस से प्यास बुझती है?'; आशंका, जैसे, 'कहीं वह न आवे तो'; —और - दूसरी जगह; —का न रहना - किसी काम के योग्य न रहना; — का न छोड़ना - नष्ट-भ्रष्ट कर देना।

**कहुँ, कहूँ** - क्रि० [अव] कहीं।

**काँइयाँ** - पु० [अनु] चालाक; धूर्त।

**काँई** - अव्य० [अ] क्यों।

**काँकर** - पु० [हि] कंकड़।

**कांक्षा** - स्त्री० [सं] इच्छा।

**कांक्षी** - पु० [सं] चाहनेवाला।

**काँख** - स्त्री० [हिं] बग़ल; बाहुमूल के नीचे का हिस्सा।

**काँखना** - अ० [अनु] किसी पीड़ा से ऊँह आँह आदि शब्द करना।

**काँखासोती** - स्त्री० [देश] दाहिनी बग़ल से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा पहनने की विधि।

**काँगड़ी** - स्त्री० [हिं] एक छोटी अँगीठी जिसे कश्मीरी लोग गले में लटकाये रखते हैं।

**काँच** - 1. स्त्री० [हि] धोती का छोर जो जांघो के बीच से ले जाकर पीछे खोसा जाता है; 2. पु० एक पारदर्शक वस्तु जो बालू, रेह आदि के मिश्रण से बनती है, शीशा; **मु०** — निकलना - मेहनत आदि से दुर्दशा होना।

**काँचन** - पु० [सं] सोना; कचनार; धतूरा।

**काँचनी** - स्त्री० [सं] हल्दी; गोरोचन।

**काँचली** - स्त्री० [हि] साँप की केंचुल; चोली।

**काँचा** - वि० [हिं] कच्चा; दुर्बल; अस्थिर।

**काँची** - स्त्री० [सं] करधनी; मेखला; दक्षिण भारत का प्रसिद्ध नगर जो सप्त पुरियो में से एक है, काजीवरम।

**काँछना** - स० [हि] काछना; पहनना।

**काँछा** - स्त्री० [हि] अभिलाषा।

**काँजी** - स्त्री० [हिं] माँड़; मट्ठा; दही, राई आदि से बननेवाला खट्टा पदार्थ।

**काँजी-हाउस** - स्त्री० [हि] वह मकान जहाँ नुक़सान पहुँचानेवाले जानवर बंद किये जाते हैं।

**काँट**, **काँटा** - पु० [हिं] कंटक; **मु०** — निकालना - बाधा दूर करना; — **बोना** - बुराई करना; — होना - दुबला-पतला होना; काँटो में घसीटना - अत्यधिक प्रशंसा करके लज्जित करना; काँटो की सेज - अत्यंत कष्ट; काँटे की तौल - ठीक-ठीक तौल।

**काँटी** - स्त्री० [हि] कील; छोटा काँटा; बेड़ी।

**काँठा** - पु० [हिं] गला; किनारा; बग़ल; तोते आदि के गले की रेखा।

**कांड** - पु० [सं] पोर; तना; विभाग; बाण-समूह; शाखा; परिच्छेद; घटना।

**काँड़ना** - स० [हिं] कुचलना; कूटना।

**काँड़ी** - स्त्री० [हि] धान आदि कूटने का गड्ढा, ऊखली, बाँस या लकड़ी का पतला सीधा लट्ठा; **मु०** —कफ़न - मुर्दे की अस्थि का सामान।

**कांत** - 1. पु० [सं] पति; चन्द्रमा; एक प्रकार का बढ़िया लोहा; वसंत ऋतु; कुंकुम; कार्त्तिकेय; अयस्कांत; इस्पात, फ़ौलाद; 2. वि० प्रिय; सुंदर।

**कांतलौह** - पु० [सं] चुंबक; इस्पात।

**कांतसार** - पु० [स] फ़ौलाद।

**कांता** - स्त्री० [सं] पत्नी; सुन्दरी स्त्री।

**कांतार** - पु० [सं] घोर जंगल; बाँस।

**कांतासक्ति** - स्त्री० [सं] पत्नीभाव से ईश्वर की भक्ति; पत्नी से विशेष लगाव।

**कांति** - स्त्री० [सं] प्रकाश, शोभा।

**कांतिमान** - वि० [सं] कातिवाला।

**काँथरि** - स्त्री० [हिं] गुदड़ी।

**काँदा** - पु० [हिं] प्याज।

**काँदो, काँदव** - पु० [हि] कीचड़।

**काँध**, **काँधा** - पु० [हि] कंधा।

**काँधना** - 1. अ० [हिं] रोना; चिल्लाना; 2. स० उठाना; धारण करना।

**कांधी** - स्त्री० [हिं] कंधा; **मु०** — देना - टालमटूल करना।

**कांप** - स्त्री० [हिं] बाँस आदि की पतली लचीली तीली; हाथी का दांत; कान का एक गहना; कलई का चूना।

**कांपना** - अ० [हि] हिलना, थर्राना, डरना।

**कांय-कांय**, **कांव-कांव** - पु० [अनु] कौए का शब्द।

**कांवर**, **कांवरि** - स्त्री० [हिं] बहंगी।

**कांवरिया** - पु० [हि] काँवर लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

**कांवरु** - पु० [हिं] कामरूप देश ।

**कांस** - पु० [हिं] एक लंबी घास ।

**कांसा** - पु० [हिं] ताबे और जस्ते के मिश्रण से बनी एक धातु जिसमें जस्ते का भाग अधिक होता है, कसकुट ।

**कांस्य** - 1. पु० [स] कांसा; 2. वि० कांसे का ।

**कांस्यकार** - पु० [सं] कसेरा ।

**का** - 1. सर्व० [हिं] क्या; 2. प्र० सम्बन्धकारक षष्ठी विभक्ति ।

**काई** - स्त्री० [हिं] जल में होनेवाली महीन घास; मु० — लगना - मैला हो जाना; — छुड़ाना - मैल दूर करना; —सा फट जाना - छँट जाना ।

**काऊ, काहू** - 1. क्रि० [हि] कभी; 2. सर्व० कोई, कुछ ।

**काक** - पु० [सं] कौआ; [फ़ा] एक प्रकार की रोटी ।

**क़ाक़** - वि० [फ़ा] सूखा; दुर्बल ।

**काकगोलक** - पु० [सं] कौए की आँख की पुतली जो एक ही दोनो आँखो में घूमती हुई कही जाती है ।

**काकचिचा** } **काकचिंची** } स्त्री० [सं] घुंघुची, गुंजा ।

**काकचेष्टा** - स्त्री० [स] कौए की तरह चौकन्ना रहना ।

**काकड़ासींगी** - स्त्री० [हिं] काकड़ा नामक पेड़ में लगी हुई एक प्रकार की लाही जो दवा के काम आती है, कर्काटक शृंगी ।

**काकतालीय** - क्रि० [सं] संयोगवश, इत्तिफ़ाकिया ।

**काकदंत** - पु० [सं] असंभव बात, अद्भुत घटना ।

**काकपक्ष (काकपच्छ)** - पु० [सं] बालो के पट्टे जो पुराने ज़माने में कानो के ऊपर दोनों ओर रखे जाते थे; घुंघुराले बाल, ज़ुल्फ़ें ।

**काकपद** - पु० [सं] छूटे हुए शब्द का स्थानसूचक चिह्न ।

**काकपाली** - स्त्री० [सं] कोयल ।

**काकपुच्छ** - पु० [सं] कोयल ।

**कांकफल** - पु० [सं] नीम का फल ।

**काकबलि** - स्त्री० [स] श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओ को दिया जाता है ।

**काकभीरु** - पु० [सं] उल्लू ।

**काकभुशुंडि** - पु० [सं] एक शापग्रस्त कौआ जो रामभक्त था ।

**काकमाची** - स्त्री० [सं] मकोय ।

**काकरेज़ा** - पु० [फ़ा] काकरेज़ी रंग; गहरे नीले या ऊदा-काले रंग का कपड़ा; गहरा नीला या काला ।

**काकरेज़ी** - वि० [फ़ा] लाल या काले रंग का ।

**काकलि** } **काकली** } स्त्री० [सं] मधुर ध्वनि ।

**काकवंध्या** - स्त्री० [सं] वह स्त्री जिसके एक के बाद संतान न हो ।

**काका** 1. पु० [हिं] चाचा; 2. स्त्री० घुंघुची; मकोय ।

**काकाक्षिगोलक न्याय** - पु० [सं] एक शब्द को उलट-फेर कर दो भिन्न अर्थो में लगाना ।

**काकातुआ** - पु० [हि] सफ़ेद रंग का एक तोता जिसके सिर पर चोटी होती है ।

**काकिणी** } **काकिनी** } स्त्री० [सं] घुंघुची, गुंजा; पण का चतुर्थ भाग; माशे का चौथा भाग; कौड़ी ।

**काकी** - स्त्री० [सं] कौए की मादा; [हि] चाची ।

**काकु** - पु० [सं] व्यंग्य, वक्रोक्ति अलंकार का एक भेद ।

**काकुत्स्थ** - पु० [सं] श्रीरामचंद्र; ककुत्स्थ वंश का राजा ।

**काकुद** - पु० [सं] तालु ।

**काकुल** - स्त्री० [फ़ा] जुल्फ़, लट ।

**काकोदर** - पु० [सं] साँप ।

**काकोल** - पु० [हि] काला कौआ ; सर्प ; सुअर ; एक विष , नरक ; कुम्हार ।

**काग** - पु० [हि] कौआ ।

**काग़ज़** - पु० [अ] रूई, सन, कपड़े आदि को सड़ाकर बनाया हुआ लिखने का पत्र ; **मु०** — काला करना - व्यर्थ लिखना ;— की नाव - क्षणभंगुर वस्तु ; काग़ज़ी घोड़े दौड़ाना - ख़ूब लिखा-पढ़ी करना ; काग़ज़ी फूल - सारहीन कृत्रिम पदार्थ ।

**कागद** - पु० [सं] काग़ज़ ।

**कागर** - पु० [देश] केंचुली ; पंख ।

**कागरी** - वि० [हि] तुच्छ ।

**कागाबासी** - स्त्री० [हिं] वह भांग जो सुबह कौए के बोलते समय पीसकर पी जाती है ।

**कागारोल** - पु० [हिं] हुल्लड़, शोर-गुल ।

**कागौर** - पु० [हिं] काकबलि ।

**काच** - पु० [सं] काला नमक ; शीशा ; मोम ।

**काचरी** - स्त्री० [हि] केंचुली ।

**काचलवण** - पु० [सं] काला नमक, सोंचर नोन ।

**काचा** - वि० [हिं] कच्चा ; कायर, डरपोक ।

**काची** - स्त्री० [हिं] दूध रखने की हाँड़ी , सिघाड़े कुम्हड़ा आदि का हलुआ ।

**काछ** - पु० [हि] धोती की लाग ।

**काछना** - स० [हिं] पहनना ; लांग मारना ।

**काछनी** - स्त्री०
**काछा** - पु० } [हि] घुटनो तक पहनी हुई धोती ।

**काछी** - पु० [हिं] तरकारी बोने और बेचनेवाली जाति ।

**काछे** - क्रि० [व्र] निकट, पास ।

**काज** - पु० [हिं] काम ; प्रयोजन ; बटन का छेद ।

**काजर**
**काजल** } - पु० [हिं] अंजन, आँखो में लगाने की स्याही जो दीपक से निकाली जाती है ; **मु०** — की कोठरी - कलंक का स्थान ।

**क़ाज़ा** - स्त्री० [फ़ा] शिकार की ताक में शिकारी के छिपकर बैठने का गड्ढा ।

**क़ाज़िब** - पु० [अ] झूठ बोलनेवाला ।

**काजी** - प्रत्य० [हि] काम करनेवाला, जैसे, 'काम-काजी' ।

**क़ाज़ी** - पु० [अ] मुसलमानो के धर्म के अनुसार न्याय करनेवाला अधिकारी ।

**काजू** - पु० [पोर्तु] काजू बादाम ; एक पेड़ जिसके फल लाल और पीले रंग के होते हैं ; फलो के अग्रभाग में गुठली होती है, जिसे भूनकर गरी को खाते है तथा छिलके से तेल निकालते हैं ।

**काट** - स्त्री० [हिं] काटने का काम ; काटने का ढंग ; **यौ०** —छाँट - घटाव-बढ़ाव ; मार-काट - लड़ाई ।

**काटना** - स० [हिं] शस्त्र आदि से किसी चीज़ के दो खण्ड करना ; किसी वस्तु में से कोई अंश निकालना ; लेखनी से रेखा खींचकर लिखावट रद्द करना , समय बिताना ; **मु०** काटो तो ख़ून नही - बिलकुल सन्न या स्तब्ध हो जाना ; काटने दौड़ना - बहुत बुरा लगना ; काटा-कूटी - किसी लिखे हुए विषय में बहुत अधिक काटकर संशोधन करना ; काट खाना - दांतो से घायल करना ।

**काटर** - वि० [देश] कठिन ; कट्टर ; काटनेवाला ।

**काटू** - पु० [हि] काटनेवाला ; डरावना ।

**काठ** - पु० [हि] लकड़ी ; **मु०**—का उल्लू - भारी मूर्ख ;—होना - चेतनाशून्य होना ; —की हाँड़ी - धोखे की चीज़ ; — मारना —निश्चेष्ट होना ; — में पाँव

देना - काठ की बेड़ी पहनना, फँस जाना, अपने आपको फँसाना ।

**काठी** - स्त्री० [हि] घोड़े की जीन ; ऊँट की पीठ पर रखा जानेवाला काठ का आसन ; काठ का बना म्यान ।

**काढ़ना** - स० [हिं] निकालना, अलग करना ; लकड़ी, कपड़े आदि पर बेल-बूटे बनाना ; आवरण हटाकर दिखाना ।

**काढ़ा** - पु० [हिं] क्वाथ, जड़ी-बूटियों को पानी में उबालकर बनाया हुआ अर्क ।

**कातना** - स० [हि] सूत निकालना ।

**कातर** } वि० [सं] व्याकुल, अधीर ; दुखित ।
**कादर** }

**कातरोक्ति** - स्त्री० [सं] डरपोक का वचन ; दुखभरा वचन ।

**काता** - पु० [हि] कता हुआ सूत ; बाँस काटने व छीलने की छुरी ।

**कातिक** - पु० [हिं] कार्तिक का महीना ।

**क़ातिब** - पु० [अ] मुंशी, लेखक, मुहर्रिर ।

**क़ातिल** - वि० [अ] हत्यारा ।

**काती** - स्त्री० [हि] कैंची, कतरनी ; छुरी ।

**कात्यायनी** - स्त्री० [सं] दुर्गा ।

**काथ** - पु० [हिं] कत्था ; गुदड़ी ।

**काथरी** - स्त्री० [हिं] गुदड़ी ।

**कादंब** - 1. पु० [सं] बतख ; ईख ; बाण ; हंस ; 2. वि० कदंब वृक्ष संबन्धी ।

**कादंबरी** - स्त्री० [सं] कोयल ; सरस्वती ; शराब ; मैना, महाकवि बाणभट्ट का लिखा हुआ संस्कृत उपन्यास ।

**कादंबिनी** - स्त्री० [सं] मेघमाला, बादलों का समूह ।

**क़ादिर** - वि० [अ] बलवान ।

**क़ादिर-मुतलक** - पु० [अ] परमेश्वर का नाम, सर्वशक्तिमान ।

**कान** - पु० [हिं] वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है ; मु० —करना - ध्यान देना ; — खड़े करना - सचेत होना ; — गरम करना या उमेठना या ऐंठना - चेतावनी देना ; —पर जूँ न रेंगना - तनिक भी परवाह न होना ; —बहना - कान से मवाद बहना ; —फुँकवाना - गुरु-मंत्र लेना ; — फूँकना - दीक्षा देना ; —फोड़ना - भड़काना, उकसाना - — भरना - किसीके बारे में किसीकी धारणा बिगाड़ देना ; — में तेल डालना - कुछ ध्यान न देना ; — लगाना - चुपके से सलाह देना ।

**कान** - स्त्री० [फ़ा] खान जिसमें धातुएँ निकलती हैं ।

**कान-कन** - पु० [फ़ा] खनक , खोदनेवाला ;

**कानड़ा** - वि० [हि] काना ।

**कानन** - पु० [सं] जंगल ; घर ; बाग़ ।

**काना** - 1. वि० [हि] एक आँखवाला ; 2. पु० , वह फल जिसका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो ।

**कानाकानी** } स्त्री० [हि] कान से लगकर चुपके चुपके बातचीत ।
**कानाफूसी** }

**कानि** - स्त्री० [देश] प्रतिष्ठा ; लोक-लज्जा ।

**कानी** - वि० [हिं] एक आँखवाली (स्त्री) ; फूटी हुई (आँख) मु० — कौड़ी - फूटी कौड़ी ; — उँगली - सबसे छोटी उँगली ; [फ़ा] खनिजसंबन्धी ।

**कानीन** - वि० [सं] अविवाहित कन्या से उत्पन्न ।

**क़ानून** - पु० [अ] राजनियम, विधि ।

**क़ानून-गो** - पु० [फ़ा] माल विभाग का एक कर्मचारी जो पटवारियों के काग़ज़ों की जाँच करता है ।

**क़ानून-दाँ** - वि० [फ़ा] क़ानून जाननेवाला ।

**क़ानून-दानी** - स्त्री० [फ़ा] क़ानून का ज्ञान।

**क़ानूनन** - क्रि० [अ] क़ानून या विधि के अनुसार।

**क़ानूनी** - वि० [अ] अदालती, हुज्जती; क़ानून संबंधी।

**कान्यकुब्ज** - पु० [स] ब्राह्मणो की एक जाति, कनौज का निवासी।

**कान्ह** - † पु० [हिं] श्रीकृष्ण।

**कान्हड़ा** - पु० [देश] एक प्रसिद्ध राग।

**कापट्य** - पु० [सं] कपट का भाव।

**कापर** - पु० [हि] कपड़ा।

**कापाल** - पु० [सं] कापालिक, एक प्रकार का कोढ़; प्राचीन समय का एक अस्त्र; एक प्रकार की संधि जिसमें दोनो पक्ष एक दूसरे का समान स्वत्व स्वीकार करते हैं।

**कापालिक** - पु० [सं] वाममार्गी शैव साधु जो मनुष्य के कपाल को रखते और उसीमें खाते पीते हैं तथा मद्य-माँस खाते हैं।

**कापाली** - पु० [सं] शिव; एक, प्रकार का वर्णसंकर; चालाक स्त्री।

**कापी** - स्त्री० [अंग्रे] प्रतिरूप, नकल।

**कापुरुष** - पु० [सं] कायर।

**कापोत** - पु० [स] कबूतरो का समूह।

**काफ़** - पु० [अ] एक कल्पित पहाड़ जिसपर परियाँ रहती है; काले सागर के पास का बड़ा पहाड़ जिसे काकेशस कहते हैं।

**काफ़िया** - पु० [अ] तुक, अंत्यानुप्रास।

**काफ़िर** - पु० [अ] ईश्वर को न मनानेवाला; ग़ैरमुसलमान; दुष्ट।

**काफ़िराना** - वि० [फ़ा] काफ़िरो का-सा।

**काफ़िरे नेमत** - पु० [अ] कृतघ्न।

**काफ़िला** - पु० [अ] यात्रियों की टोली।

**काफ़ी** - वि० [अ] पर्याप्त, बस; पूरा।

**काफ़ूर** - पु० [अ] कपूर; मु०—होना - ग़ायब होना।

**काफ़ूरी** - 1. वि० [अ] काफ़ूर का; 2. पु० एक हल्का रंग।

**काफ़ूरी शमा** - स्त्री० [अ] कपूर की बत्ती।

**काब** - स्त्री० [अ] बड़ी थाली, थाल।

**काबक** - पु० [फ़ा] कबूतर का दरबा, एक संदूक़ जिसमे कबूतरो के रहने के लिए खाने बने रहते है।

**काबतैन** - पु० [अ] एक जुए का खेल, मक्का और जेरूसलम के दोनो पवित्र मदिर।

**काबर** - वि० [हि] चितकबरा।

**काबलीयत** - स्त्री० [अ] योग्यता।

**काबा** - पु० [अ] अरब के मक्के शहर का एक स्थान जो मुसलमानो का पुण्यस्थल है।

**काबिज़** - वि० [अ] अधिकार रखनेवाला; मल-रोधक; कब्ज़ करनेवाला।

**क़ाबिल** - 1. वि० [अ] योग्य; 2. पु० विद्वान।

**काबिलियत** - स्त्री० [अ] योग्यता।

**काबिस** - पु० [हि] पकाने के लिए मिट्टी के कच्चे बरतन रंगने का एक रंग।

**काबीन** - पु० [फ़ा] वह धन जो पति विवाह के समय पत्नी को देना मंजूर करता है।

**काबुक** - पु० [फ़ा] काबक; कबूतरो का दरबा।

**काबुली** - वि० [हिं] काबुल देश का।

**क़ाबू** - पु० [तु] वश; इख्तियार; अधिकार।

**काबूची** - पु० [तु] द्वारपाल; तुच्छ आदमी।

**काबूस** - पु० [अ] डरावना सपना।

**काम** - पु० [सं] मन्मथ, कामदेव; इच्छा, अभिलाषा; मैथुनेच्छा, वासना; चतुर्विध पुरुषार्थों में से एक; कार्य; व्यापार; [फ़ा] उद्देश्य, मतलब; मु० — आना - उपयोगी होना; लड़ाई में मारा जाना; —करना - प्रभाव या असर डालना, फल उत्पन्न करना; —का - उपयोगी,

व्यवहार का ; —चलना - निर्वाह होना ; —चलाना - निर्वाह करना ; —तमाम करना - काम पूरा करना ; मार डालना ; —निकलना - मतलब पूरा होना ; —निकालना - मतलब पूरा करना, कार्य सिद्ध करना ; —में लाना - प्रयोग या व्यवहार में लाना, वरतना ; —पड़ना - आवश्यकता होना ; —बनना - प्रयोजन निकलना ; —बनाना - मतलब निकालना ; —से काम रखना - अपने ही काम पर ध्यान देना , —लगना - ज़रूरत होना ; नौकरी मिल जाना ; —होना - प्रयोजन सिद्ध होना ; **यौ०** —काज - कारबार, काम-धंधा ; —चलाऊ - जिससे किसी प्रकार का कुछ काम निकल सके, बहुत अंश में काम देने वाला, व्यावहारिक ; —चोर - आलसी ।

**कामकला** - स्त्री [सं] मैथुन ; कामशास्त्र का प्रयोगात्मक रूप, रति ।

**कामगार** - 1. पु० [हि] मज़दूर, कारिंदा ; 2. वि० [फ़ा] सफल ; भाग्यवान ।

**कामचार** - पु० [सं] इच्छानुसार भ्रमण ।

**कामचारी** - वि० [सं] स्वेच्छाचारी ।

**कामज** - पु० [सं] वासना से उत्पन्न ।

**कामजित** - पु० [सं] शिव ।

**कामज्वर** - पु० [सं] वह ज्वर जो अखंड ब्रह्मचारियो को तीव्र कामेच्छा के कारण हो जाता है ।

**क़ामत** - स्त्री० [अ] क़द, आकार ; **यौ०** क़द व क़ामत - आकार-प्रकार ।

**कामतरु** - पु० [स] कल्पवृक्ष ।

**कामता** † - पु० [हि] चित्रकूट ।

**कामद** - वि० [सं] मनोरथ पूर्ण करनेवाला ।

**कामद-मणि** - स्त्री० [स] चिंतामणि ।

**कामदहन** - पु० [सं] कामदेव को जलाने-वाले शिव ; फाल्गुन पूर्णिमा को मनाया जानेवाला कामदहन जो उत्तर में होलिका के नाम से प्रसिद्ध है ।

**कामदा** - स्त्री० [सं] कामधेनु ; दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त ।

**कामदानी** - स्त्री० [हिं] ज़रदोजी का काम ।

**कामदार** - 1. पु० [हिं] व्यवस्थापक ; 2. वि० बेलबूटेवाला ।

**कामदुहा** - स्त्री० [सं] कामधेनु ।

**कामदूती** - स्त्री० [सं] परवल की बेल ।

**कामदेव** - पु० [स] रतिपति, मन्मथ ।

**कामधाम** - पु० [हि] काम-काज ।

**कामधेनु** - स्त्री [सं] इच्छाओ की पूर्ति करनेवाली पुराणो में वर्णित एक गाय, कामदा ।

**कामना** - स्त्री० [सं] इच्छा, मनोरथ ।

**कामपाल** - पु० [सं] श्रीकृष्ण ; शिव ; बलराम ।

**कामबाण** - पु० [सं] कामदेव के पाँच बाण—मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण अथवा लाल कमल, अशोक, आम, चमेली और नील कमल ।

**कामयाब** - वि० [फ़ा] सफल ।

**कामयाबी** - स्त्री० [फ़ा] सफलता ।

**कामरान** - 1. वि० [फ़ा] सफल-मनोरथ ; प्रसन्न ; 2. पु० एक देश ।

**कामरानी** - 1. स्त्री० [फ़ा] सफलता ; प्रसन्नता ; 2. वि० कामरान देश का ।

**कामरिपु** - पु० [सं] शिव ।

**कामरिया, कामरी** - स्त्री० [हिं] हलका कंबल, कमली ।

**कामरुचि** - स्त्री० [सं] विश्वामित्र का दिया हुआ राम का एक अस्त्र जिससे वे और अस्त्रों को व्यर्थ करते थे ।

**कामरूप** - पु० [सं] आसाम का एक ज़िला ; इच्छा के अनुसार धारण किया जानेवाला रूप ।

**कामरूपी** - वि० [सं] बहुरूपिया ; स्वेच्छाचारी ; सुंदर ।

**कामला** - पु० [सं] कमल या पीलिया रोग ।

**कामवल्लभ** - पु० [स] आम ।

**कामवल्लभा** - स्त्री० [सं] चाँदनी ।

**कामशर** - पु० [सं] कामबाण ; आम्रमंजरी ।

**कामशास्त्र** - पु० [सं] वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री-पुरुषो के परस्पर समागम आदि के व्यवहारो का वर्णन हो ।

**कामसखा** - पु० [सं] वसंत ; मधुमास।

**कामांध** - वि० [सं] विचारहीन, विषयवासना से अंधा ;

**कामा** - 1. स्त्री० [सं] कामिनी ; 2. पु० [अग्रे] लघुविराम ।

**कामातुर** - वि० [सं] काम के वेग से पीड़ित ।

**कामायुध** - पु० [सं] काम का बाण ; आम ।

**कामारण्य** - पु० [स] सुंदर बाग़ ।

**कामारि** - पु० [सं] शिव ।

**कामिनी** - स्त्री० [स]. सुंदरी स्त्री ; युवती ; मदिरा ; दारु हल्दी ; एक वृक्षविशेष ।

**कामिल** - वि० [अ] पूरा ; योग्य ।

**कामी** - वि० [सं] विषयी ।

**कामुक** - 1. पु० [सं] चक्रवाक पक्षी ; कबूतर ; 2. वि० विषयी ।

**कामूस** - पु० [अ] समुद्र ।

**कामोद्दीपक** - वि० [सं] कामेच्छा को प्रदीप्त करनेवाला ।

**कामोद्दीपन** - पु०[सं] सहवास की उत्तेजना ।

**काम्य** - वि० [सं] जिसकी इच्छा की जाय, जिससे कामना की सिद्धि हो ।

**काय, काया** - स्त्री० [सं] शरीर ।

**कायक** - वि० [सं] शरीर संबंधी, दैहिक ।

**क़ायज़ा**- पु० [अ] घोड़े की लगाम की डोरी जिसे दुम तक बाँधते हैं।

**क़ायथ** - पु० [हिं] कायस्थ ।

**क़ायदा** - पु० [अ] विधि, नियम ; चाल ; रीति ; क्रम , व्यवस्था ; दस्तूर ।

**क़ायदा-दाँ** - वि० [फ़ा] नियम जाननेवाला।

**कायनात** - स्त्री० [अ] सृष्टि ; पूँजी ; मूल्य ।

**क़ायम** - वि० [अ] स्थिर ।

**क़ायम-मिज़ाज** - वि० [अ] शांत स्वभाववाला ।

**क़ायम-मुक़ाम** - वि० [अ] स्थानापन्न, एवज़ी ।

**क़ायमा** - पु० [अ] पूरा कोण ।

**कायर** - वि० [हिं] डरपोक, भीरु ।

**कायरता** - स्त्री० [हिं] डरपोक का भाव।

**क़ायल** - वि० [अ] तर्कसिद्ध बात को माननेवाला, क़बूल करनेवाला ; मु०—करना - निरुत्तर कर देना, मनवा लेना ।

**कायस्थ** - 1. पु० [सं] एक जातिविशेष ; परमात्मा ; 2. वि०शरीर में रहनेवाला।

**काया** - स्त्री० [सं] शरीर ; यौ० —पलट - भारी हेर-फेर ; रूपांतर ; मु० —पलट जाना - रूपान्तर हो जाना, और से और हो जाना ।

**कायाकल्प** - पु० [सं] औषधि द्वारा बूढ़ो को जवान बनाने की क्रिया ।

**कायिक** - वि० [सं] शरीरसँबन्धी ।

**कारड, कारंडव** - पु० [सं] हंस या बतख़ की जाति का एक पक्षी।

**कार** - 1. पु० [फ़ा] काम, कार्य ; 2. प्रत्य० करनेवाला, जैसे, 'काश्तकार, सलाहकार'; यौ० अलंकार, अहंकार आदि ।

**कार-आज़मूदा** - वि० [फ़ा] अनुभवी ।

**कार-आमद** - वि० [फ़ा] उपयोगी ।

**कारक** - 1. वि० [सं] करनेवाला, जैसे, 'हानिकारक ;' 2. पु० व्याकरण में

संज्ञा या सर्वनाम की वह दशा जिसके द्वारा वाक्य में क्रिया के साथ उसका संबन्ध प्रकट होता है।

**कार-करदा** - वि० [फ़ा] अनुभवी।

**कारकुन** - पु० [फ़ा] कारिंदा; इंतज़ाम करनेवाला।

**कारख़ाना** - पु० [फ़ा] वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए थोक माल तैयार होता है; **मु०** — जमा रहना - भीड़-भाड़ रहना; व्यवहार जारी रहना।

**कारख़ास** - पु० [फ़ा] विशेष काम।

**कारख़ैर** - पु० [फ़ा] शुभ काम।

**कारगर** - वि० [फ़ा] प्रभावशाली; असर करनेवाला; सफल।

**कारगाह**- स्त्री० [फ़ा] कपड़े बुनने का स्थान।

**कारगुज़ार** - वि० [फ़ा] अपने कर्तव्य का अच्छी तरह पालन करनेवाला।

**कारगुज़ारी** - स्त्री० [फ़ा] होशियारी; कर्तव्य-पालन; कर्मण्यता।

**कारचोब** - पु० [फ़ा] लकड़ी की वह चौखट जिसपर कपड़ा आदि रखकर ज़रदोज़ी या क़सीदे का काम किया जाता है; ज़रदोज़।

**कारचोबी** - 1. स्त्री० [फ़ा] गुलकारी, ज़रदोजी; 2. वि० जरदोज़ी का।

**कारज** - पु० [हिं] काम, कार्य।

**कारज़ार** - पु० [फ़ा] युद्ध।

**कारण** - पु० [सं] सबब, वजह, हेतु; साधन।

**कारणशरीर** - पु० [स] सुषुप्ति अवस्था का शरीर।

**कारणिक** - वि० [सं] पारखी, विचारक; अर्ज़ीनवीस।

**कारणीभूत** - वि० [सं] मूलकारण।

**कारतूस** - पु० [पोर्तु] बारूद-भरी एक नली जिसे बंदूक में भरकर चलाते हैं।

**कारद** - स्त्री० [फ़ा] चाकू, छुरी।

**कारदाँ** - वि० [फ़ा] कुशल।

**कारनामा** - पु० [फ़ा] कार्यों का ब्यौरा।

**कारनिस** - स्त्री० [अं] दीवार की कंगनी।

**कारनी** - † पु० [अव] प्रेरक; बुद्धि को पलटनेवाला; भेदक।

**कार-परदाज़** - पु० [फ़ा] प्रबंधक, कारिन्दा।

**कार-परदाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] प्रबंधक का काम, कारिन्दागिरी।

**कार-फ़रमाई** - स्त्री० [फ़ा] आज्ञानुसार काम करना।

**कार-बरारी** - स्त्री० [फ़ा] काम का पूरा होना।

**कारबंद** - वि० [फ़ा] काम करनेवाला।

**कारबार** } **कारोबार** } पु० [फ़ा] व्यापार; काम-काज।

**कारबारी** - वि० [फ़ा] काम-धंधा करनेवाला।

**कारवाँ** - पु० [फ़ा] काफ़िला; यात्रियों का दल।

**काररवाई** - स्त्री० [उ] कार्य; उपाय; चाल।

**कारवी** - स्त्री० [सं] अजमोदा; मयूर-शिखा; सौंफ़; काला जीरा; हींग की पत्ती।

**कारवेल्ल** - पु० [सं] करेला।

**कारसाज़** - वि० [फ़ा] काम बनानेवाला।

**कारसाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] गुप्त कार्रवाई।

**कारस्तानी** - स्त्री० चालबाज़ी।

**कारा** - 1. स्त्री० [सं] क़ैद; पीड़ा, क्लेश; 2. वि० काला।

**कारागार** } **कारागृह** } **कारावास** } पु० [सं] क़ैदख़ाना, जेल।

**कारिंदा** - पु० [फ़ा] गुमाश्ता।

**कारिका** - स्त्री० [सं] सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या; नटी, नर्तकी; व्यापार।

**कारिख** - † स्त्री० [हिं] स्याही ; कलंक ; कालिख ।

**कारी** - वि० [सं] करनेवाला, जैसे, 'गुणकारी, हितकारी ;' [फ़ा] प्रभावशाली ; घातक ।

**क़ारी** - पु० [अ] क़ुरान पढ़नेवाला ।

**कारीगर** - 1. पु० [फ़ा] शिल्पकार ; 2. वि० निपुण ; हुनरमंद ।

**कारीगरी** - स्त्री० [फ़ा] निर्माण-कला ; शिल्प-कला ।

**कारु** - पु० [स] कारीगर ; चितेरा ।

**कारुणिक** - वि० [स] दयालु ; कृपालु ।

**कारुण्य** - पु० [सं] कृपा ।

**क़ारूँ** - पु० [अ] हज़रत मूसा का एक चचेरा भाई जो बड़ा धनी और कंजूस था ; **मु०** — का ख़ज़ाना - बड़ा भारी धन-कोश ।

**क़ारूरा** - पु० [अ] हकीम के यहाँ पेशाब ले जाने की शीशी ; पेशाब ; **मु०** — मिलना - बहुत ज़्यादा मेल-जोल होना ।

**कारोबार** - पु० [हिं] कारबार ।

**कार्पण्य** - पु० [सं] कृपणता, कंजूसी ।

**कार्मुक** - पु० [सं] धनुष ; परिधि का एक भाग ; इन्द्रधनुष ।

**कार्यक्रम** - पु० [स] होनेवाले या किये जानेवाले कार्यों का क्रम ।

**कार्यान्वित करना** - स० [हिं] किसी विचार या प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत करना ।

**कार्यान्वित होना** - अ० [हिं] विचार या प्रस्ताव का प्रत्यक्ष कार्य के रूप में परिणत होना ।

**कार्यालय** - पु० [सं] दफ़्तर, ऑफ़िस ।

**काल** - पु० [सं] समय ; मौत ; शिव का एक नाम ।

**कालकूट** - पु० [सं] भयंकर विष ।

**कालकोठरी** - स्त्री० [हिं] जेलख़ाने की अंधेरी और तंग कोठरी ।

**कालक्षेप** - पु० [सं] दिन काटना ; निर्वाह ।

**कालचक्र** - पु० [सं] समय का हेर-फेर ; ज़माने की गर्दिश ।

**कालदंड** - पु० [सं] यमराज का दंड ।

**कालनिशा** - स्त्री० [सं] दिवाली की रात ; मृत्यु-निशा , अंधेरी भयंकर रात ।

**कालपुरुष** - पु० [सं] ईश्वर का विराट रूप ।

**कालप्रभात** - पु० [सं] शरत् काल ।

**कालबंजर** - पु० [हि] वह भूमि जो बहुत दिनों से बोयी न गयी हो ।

**कालबुद** } पु० [फा] शरीर ; जूता सीने का
**कालबूत** } काठ का सांचा ।

**कालबेलिया** - पु० [हि] साँप का विष उतारनेवाला ।

**कालरा** - पु० [अंग्रे] हैजा, विसूचिका ।

**कालरात्रि** - स्त्री० [सं] अंधेरी रात ।

**कालसूत्र** - पु० [सं] एक नरक ।

**कालज्ञ** - पु० [सं] ज्योतिषी, काल की गति या परिवर्तन जाननेवाला ।

**काला** - वि० [हि] रंग-विशेष ; स्याह ; **मु०** — मुँह करना - बदनाम होना ।

**काला-कलूटा** - वि० [हिं] बहुत काला ।

**कालातीत** - वि० [स] जिसका समय बीत गया हो ।

**काला नमक** - पु० [हि] सज्जी के योग से बना एक प्रकार का पाचक लवण ।

**काला नाग** - पु० [हि] काला विषैला साँप ; कुटिल व्यक्ति ।

**कालान्तर** - पु० [सं] अन्य समय ; अंत में ।

**कालापानी** - पु० [हिं] देश-निकाले का दंड ।

**काला बाज़ार** - पु० [हिं] चोर-बाज़ारी जिसमें ग्राहक से निर्धारित मूल्य से बहुत अधिक दाम वसूल किया जाता है ।

**कालिंदी** - स्त्री० [सं] यमुना नदी ।

**कालि** } **कालिह** } क्रि० [अव] कल।
**कालिक** - वि० [सं] समय-संबंधी; जिसका कोई समय नियत हो।
**कालिका** - स्त्री० [सं] दुर्गा; काली देवी; मेघ; मदिरा; कालिमा।
**कालिख** - स्त्री० [हि] स्याही, कालिमा; मु० मुँह मे कालिख लगाना - बदनामी के कारण मुँह दिखाने लायक़ न रहना।
**कालिब** - पु० [अ] कलबूत, टोपी दुरुस्त करने का लकड़ी का ढांचा; शरीर।
**कालिमा** - स्त्री० [स] कालापन, कल्क।
**काली** - स्त्री० [स] चंडी, कालिका, पार्वती।
**काली घटा** - स्त्री० [सं] घने काले बादलों का समूह।
**काली जीरी** - स्त्री० [हिं] एक औषधि; बन जीरा।
**क़ालीन** - स्त्री० [अ] ग़लीचा; दरी।
**कालीन** - वि० [स] काल-संबंधी, जैसे, 'समकालीन, भूतकालीन।'
**कालीमिर्च** - स्त्री० [हि] गोल मिर्च।
**काली शीतला** - स्त्री० [हि] एक प्रकार की चेचक जिसमें काले दाने निकलते है।
**काल्पनिक** - 1. वि० [स] कल्पित, मनगढंत; 2. पु० कल्पना करनेवाला; मिथ्या, कृत्रिम।
**कावा** - पु० [फ़ा] घोड़े के एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया; मु० —काटना - चक्कर मारना, किसी विशेष स्थिति से बचने के लिए चक्कर लगाना।
**काविश** - स्त्री० [फ़ा] तलाश; शत्रुता।
**काव्य** - पु० [सं] वह मनोहर वाक्य या वाक्यरचना जिसके द्वारा हृदय रस का अनुभव करे।
**काव्यलिंग** - पु० [सं] एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय।
**काश** - 1. अव्य० [फ़ा] ईश्वर करे ऐसा हो जाय; 2. पु० [स] एक घास; खाँसी; काँस; एक प्रकार का चूहा।
**क़ाश** - स्त्री० [तु] फल आदि का कटा हुआ लंबा टुकड़ा, फाँक।
**काशाना** - पु० [फ़ा] कुटी, मकान।
**काशिफ़** - वि० [अ] स्पष्ट करनेवाला।
**काशी** - 1. स्त्री० [सं] वाराणसी; शिवपुरी; 2. वि० कासरोगी, तेजोमय।
**काशीकरवट** - पु० [हि] काशी का एक तीर्थ-स्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे से अपने को चिराया करते थे; मु० —लेना - मर जाना, प्राण-त्याग करना; कठिन दुःख सहना।
**काशीफल** - पु० [सं] कूष्मांड; कुम्हड़ा।
**काश्त** - स्त्री० [फ़ा] खेती।
**काश्तकार** - पु० [फ़ा] किसान, लगान अदा कर ज़मीन पर खेती करनेवाला खेतिहर।
**काश्तकारी** - स्त्री० [फ़ा] खेतीबारी; काश्तकार का हक़।
**काश्मीरा** - पु० [स] एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।
**काषाय** - वि० [सं] गेरुआ।
**काष्ठ** - पु० [सं] लकड़ी, काठ, ईंधन।
**काष्ठा** - स्त्री० [सं] सीमा, अवधि; ऊँची चोटी।
**काष्ठी** - स्त्री० [सं] फिटकरी।
**कास** - पु० [सं] खाँसी; सहिजन का पेड़।
**कासनी** - स्त्री० [फ़ा] नीले रंग के फूलोवाला पौधा जो दवाई के काम आता है।
**कासा** - पु० [फ़ा] प्याला, कटोरा; फ़कीरो का भीख माँगने का बरतन।
**कासार** - पु० [सं] छोटा तालाब; पंजीरी।

**क़ासिद** - पु॰ [अ] इरादा करनेवाला; पत्र ले जानेवाला, हरकारा; दूत।

**क़ासिर** - वि॰ [अ] जिसमें कोई कसर या कमी हो।

**काह** - स्त्री॰ [फ़ा] सूखी हुई घास, तिनका।

**क़ाहिर** - 1. वि॰ [अ] क़हर ढानेवाला, बड़ा अत्याचारी; 2. पु॰ विजेता।

**काहिल** - वि॰ [अ] सुस्त, आलसी।

**काहिली** - स्त्री॰ [अ] सुस्ती।

**काहिश** - स्त्री॰ [फ़ा] ह्रास; कमी।

**काही** - 1. सर्व॰ [हि] किसे, किसको, किससे; 2. वि॰ [फ़ा] घास के रंग का; कालापन लिये हुए हरा; [देश] परिश्रमी, लगनवाला।

**काहू** - 1. पु॰ [अ] गोभी की तरह का एक पौधा; 2. सर्व॰ [ब्र] किसी।

**काहे** - क्रि॰ [अ] क्यो, किसलिए।

**किंकर्तव्यविमूढ** - वि॰ [सं] घबराया हुआ, भौचक्का।

**किंकिणी** - स्त्री॰ [स] क्षुद्रघंटिका; करधनी।

**किंगरी** - स्त्री॰ [हिं] छोटी सारंगी।

**किंचन** - पु॰ [सं] थोड़ी वस्तु।

**किंचित** - वि॰ [सं] कुछ; थोड़ा।

**किंचिन्मात्र** - वि॰ [स] बहुत थोड़ा।

**किंजल्क** - पु॰ [सं] कमल का केसर।

**किंतु** - अव्य॰ [सं] लेकिन, परंतु; बल्कि।

**किंपुरुष** - पु॰ [सं] किन्नर, दोग़ला, वर्णसंकर।

**किंवदंती** - स्त्री॰ [सं] अफ़वाह, ख़बर, जनश्रुति।

**किंवा** - अव्य॰ [सं] अथवा।

**किंशुक** - पु॰ [सं] पलाश, ढाक।

**कि** - 1. सर्व॰ [हि] क्या, किस प्रकार; 2. अव्य॰ इतने में; या, अथवा।

**किचकिच** - स्त्री॰ [अनु] व्यर्थ की बकवाद।

**किचकिचाना** - अ॰ [अनु] क्रोध से दाँत पीसना।

**किचकिची** - स्त्री॰ [अनु] किचकिचाहट, दाँत पीसने की अवस्था।

**किचड़ाना** - अ॰ [हिं] आँख में कीचड़ आना।

**किचरपिचर** - वि॰ [हिं] गिचपिच।

**किज़्ब** - पु॰ [अ] झूठ।

**किटकिट** - पु॰ [अनु] कहासुनी, झगड़ा।

**किटकिटाना** - अ॰ [हि] क्रोध से दाँत पीसना।

**किट्ट** - पु॰ [सं] कीट, धातु का मैल; तेल आदि के नीचे का मैल।

**कित** - क्रि॰ [अव] कहाँ, किधर, किस ओर।

**कितक** - वि॰ [अव] कितना; किस क़दर।

**कितना** - वि॰ [हि] किस परिमाण का, मात्रा, संख्या।

**कितव** - पु॰ [सं] जुआरी; छली; धूर्त; पागल; दुष्ट।

**क़िता** - 1. पु॰ [अ] ज़मीन का टुकड़ा; सिलाई के लिए कपड़े की काट; खड; एक उर्दू पद्य; 2. स्त्री॰ शैली, ढंग।

**किताब** - स्त्री॰ [अ] पुस्तक; **यौ॰** — ए इलाही - क़ुरान।

**किताबत** - स्त्री॰ [अ] लिखाई, नकल करने का काम; **यौ॰** खतो किताबत - पत्र-व्यवहार।

**किताबी** - 1 वि॰ [अ] पुस्तक-संबंधी; 2. पु॰ यहूदी और ईसाई लोग; **मु॰** — कीड़ा - वह जो हमेशा पुस्तक पढ़ता रहता हो।

**क़िताल** - स्त्री॰ [अ] मारकाट, हत्या।

**कितेक** - वि॰ [अव] कितना, असख्य, बहुत।

**कितै** † - अव्य॰ [अव] कहाँ।

**किदारा, केदार** - स्त्री॰ [हिं] गरमी में आधी रात को गायी जानेवाली एक रागिनी।

**किधर** - क्रि॰ [हिं] किस ओर, कहाँ।

**किधौं** - अव्य० [हिं] अथवा, या ; या तो ; न जाने ।

**किन** - 1. सर्व० [हिं] 'किस' का बहु० ; 2. अव्य० क्यों न ; 3. पु० चिह्न, गोखरू ।

**किनका** - पु० [हिं] अन्न का टूटा हुआ टुकड़ा, छोटा दाना, चावलों का कण ।

**किनवानी** † - स्त्री० [देश] छोटी-छोटी बूँदों की झड़ी, फुहार ।

**किनहा** - वि० [हिं] जिसमें कीड़े पड़े हों, कन्ना ।

**किनायतन** - क्रि० [अ] इशारे से ।

**किनाया** - पु० [अ] इशारा ।

**किनार** - 1. स्त्री० [फ़ा] बग़ल ; चूमना और गले लगाना ; 2. पु० किनारा ; यौ० कोर-किनार - छोर ; दर किनार - अलग रहे ; छोड़ दो ।

**किनारा** - पु० [फ़ा] तीर, तट ; हाशिया ; गोट ; छोर ; मु० —लगना - किसी कार्य का पूरा होना ; पार लगना ; —खीचना - दूर होना, हटना ; —करना - छोड़ देना ।

**किनाराकशी** - स्त्री० [फ़ा] अलग रहना ।

**किनारी** - स्त्री० [फ़ा] सुनहला या रुपहला गोटा जो कपड़े की किनारी में लगाया जाता है ।

**किन्नर** - पु० [सं] संगीत, नृत्य आदि में कुशल देवता ; गाने बजाने का पेशा करनेवाला ।

**किन्नरी** - स्त्री० [सं] किन्नर की स्त्री, अप्सरा ।

**किफ़ायत** - स्त्री० [अ] कम ख़र्च, थोड़े में काम चलाना ।

**किफ़ायती** - वि० [अ] सँभलकर ख़र्च करनेवाला ।

**क़िबला** - पु० [अ] पश्चिम दिशा ; मक्का ; तारा ; पिता ; पूज्य व्यक्ति ।

**क़िबला-आलम** - पु० [अ] ध्रुवतारा ; बादशाहों व बड़ों के लिए संबोधन ।

**क़िबलागाह** - पु० [फ़ा] बड़ों के लिए या पिता के लिए संबोधन ।

**क़िबलानुमा** - पु० [फ़ा] एक दिशासूचक यंत्र जिसकी सुई सदा पश्चिम की ओर रहती है ।

**किब्रिया** - स्त्री० [अ] बड़प्पन, महत्ता ।

**क़िमार** - पु० [अ] जुआ ।

**क़िमारख़ाना** - पु० [फ़ा] जुआघर ।

**क़िमारबाज़** - वि० [फ़ा] जुआरी ।

**क़िमारबाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] जुए का खेल ।

**क़िमाश** - पु० [तु] ढंग, तर्ज ; ताश ।

**किमि** † - क्रि० [अव] कैसे, किस तरह ।

**क़िम्मत** - स्त्री० [अ] कौशल ; बहादुरी ; क़ीमत ।

**कियत्** - वि० [सं] कितना ।

**किरकिरा** - 1. वि० [देश] कँकरीला ; 2. पु० लोहारों का एक औजार ; मु० — होना - रंग में भंग पड़ना, आनंद में विघ्न होना ।

**किरकिराहट** - स्त्री० [देश] आँख में धूल पड़ने से होनेवाला दर्द ; कंकड़ीलापन ।

**किरकिरी** - स्त्री० [देश] आँख में पड़नेवाला धूलिकण, मु० आँख की किरकिरी - बहुत सतानेवाली बात ।

**किरच** - स्त्री० [हिं] नोक के बल सीधी भोंकी जानेवाली तलवार ; काँच आदि का छोटा नुकीला टुकड़ा ।

**किरण** - स्त्री० [सं] रश्मि, अंशु ; मु० — फूटना - सूर्योदय होना ।

**किरदार** - स्त्री० [फ़ा] काम ; ढंग, शैली ।

**किरपा** - स्त्री० [हिं] कृपा ।

**किरपान** - पु० [हिं] कृपाण ।

**किरमिच** - पु० [हिं] एक प्रकार का महीन टाट-सा मोटा विलायती कपड़ा जिसके जूते थैली आदि बनते हैं ।

**किरमिज़** - पु० [अ] एक प्रकार का लाल रंग, मटमैलापन लिये करौंदिया रंग का घोड़ा ।

**किरराना** - अ० [हिं] क्रोध से दाँत पीसना ; किरकिर शब्द करना ।

**किरात** - पु० [स] आदिवासी, भील ; बौना ; शिव ; चिरायता ।

**क़िरात** - स्त्री० [अ] लगभग चार जौ के बराबर एक वज़न ; पढ़ना ।

**किरान** - पु० [अ] ग्रह के सक्रमण का अवसर ; शुभ सयोग ; यौ० साहिबे क़िरान - भाग्यवान ।

**किरानी** - पु० [हिं] वह जिसके माता-पिता में से एक यूरोपियन और दूसरा भारतीय हो ; यूरेशियन ; क्लर्क ।

**किराया** - पु० [अ] भाडा ; यौ० किरायेदार - भाड़ा देकर मकान या दूकान का उपयोग करनेवाला ।

**किरावल** - पु० [तु] लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिए आगे जानेवाली सेना, सफ़रमैना ।

**किरासन** - पु० [अंग्रे] मिट्टी का तेल ।

**किरिच** - स्त्री० [हिं] नुकीली छड़ी ।

**किरिया** - स्त्री० [हि] शपथ, क़सम ; मृत व्यक्ति के हेतु किया जानेवाला श्राद्धादि कर्म, मृतक-कर्म ।

**किरीट** - पु० [स] मुकुट ।

**किर्तनिया** - पु० [हि] भगवान का कीर्तन कर उपासना करनेवाला व्यक्ति ।

**किर्दगार** - पु० [फ़ा] विधाता ।

**किल** - अव्य० [सं] निश्चय, सचमुच ।

**किलक** - 1. पु० [अव] हर्षध्वनि, किलकार ;. 2. स्त्री० [फ़ा] पोली लकड़ी ; कलम बनाने की नरकुल ।

**किलनी** - स्त्री० [हिं] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक छोटा कीड़ा ।

**किला** - पु० [अ] गढ़, दुर्ग, कोट ।

**क़िलेदार** - पु० [फ़ा] गढ़पति, दुर्गपति ।

**क़िलाबंदी** - स्त्री० [फ़ा] लड़ाई के लिए क़िला या मोर्चा बनाने का काम ।

**क़िल्लत** - स्त्री० [अ] दिक़्क़त, कठिनाई, मुश्किल, कमी ।

**किल्ला** - पु० [हिं] बड़ी कील, खूँटा ।

**किल्ली** - स्त्री० [हि] कील, खूँटी ; सिटकिनी, किसी कल या पेच की मुठिया, अरगल ; मु०—घुमाना - दाँव या युक्ति लगाना ; —हाथ मे होना - किसीपर अधिकार होना ।

**किवाड़** - पु० [हिं] कपाट, पट, दरवाज़ा ।

**किवाम** - पु० [अ] शहद के समान अवलेह ।

**किशमिश** } **किसमिस** } स्त्री० [फ़ा] सूखा छोटा बेदाना अगूर ।

**किशलय** - पु० [सं] नया पत्ता, कल्ला ।

**किशोर** - 1. पु० [स] ग्यारह से पद्रह तक की अवस्थावाला लड़का ; पुत्र ; 2. वि० ग्यारह से पंद्रह वर्ष तक की अवस्था का ।

**किश्त** - स्त्री० [अ] खेत ; शह, शतरंज में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना , यौ० —ज़ार - हरा-भरा खेत ।

**किश्तज़ार** - पु० [फ़ा] खेत ।

**किश्तवार** - पु० [फ़ा] पटवारियो का एक काग़ज जिसमें खेतो के नंबर दर्ज रहते है ।

**किश्ती** - स्त्री० [फा] नाव, नौका , एक प्रकार की थाली ।

**किश्तीनुमा** - वि० [फ़ा] नाव के आकार का ।

**किश्तीबान** - पु० [फ़ा] मल्लाह, केवट ।

**क़िश्र** - पु० [अ] छाल, छिलका ; भूसी ।

**किश्वर** - पु० [फ़ा] देश ; यौ० —सतानी - देश जीतना ।

**किस** - सर्व० [हिं] कौन ; क्या ; **मु**० — खेत की मूली - निष्प्रयोजक वस्तु ; — मुँह से - किस बल पर ।

**किसी** - सर्व० [हिं] 'कोई' का विकृत रूप ; **मु**० —का होकर रहना - किसीका गुलाम बनकर रहना; —की बात चलना - किसीके बारे में कुछ कहना ; —के बल पर कूदना - किसीका सहारा पाकर बढ़-बढ़कर बातें करना ।

**किसलय** - पु० [सं] कोपल, कोमल पत्ता ।

**किसान** - पु० [हि] खेतिहर, काश्तकार ।

**क़िसास** - पु० [अ] हत्या के बदले हत्या करना ।

**क़िस्त** - स्त्री० [अ] अंश ; थोड़ा थोड़ा करके ऋण चुकाने का ढंग ; किसी ऋण का वह भाग जो किसी निश्चित समय पर चुकाया जाता है ।

**क़िस्तबंदी** - स्त्री० [फ़ा] थोड़ा-थोड़ा करके कर्ज़ अदा करने का ढंग।

**क़िस्तवार** - वि० [फ़ा] किस्त के ढंग से ।

**किस्वत** - स्त्री० [अ] पहनने के कपड़े ; नाई का झोला ।

**क़िस्म** - स्त्री० [अ] भेद, तरह प्रकार, ढंग, तर्ज ।

**क़िस्मत** - स्त्री० [अ] भाग्य, नसीब ; **मु**० —का धनी - भाग्यवान ; — चमकना या जागना - भाग्य प्रबल होना ; — फूटना - भाग्य बहुत मंद हो जाना ; — आज़माना - भाग्य की परीक्षा करना , **यौ**० —आज़माई - भाग्य की परीक्षा ; — वर - भाग्यशाली ।

**क़िस्सा** - पु० [अ] कहानी, हाल, वृत्तांत ; **यौ**०—कोताह - वि० [फ़ा] तात्पर्य यह कि ; **मु**०—करना - थोड़े में मतलब की बात कहना ।

**क़िस्साख़्वाँ** - पु० [फ़ा] क़िस्सा सुनानेवाला ।

**क़िस्साख़्वानी** - स्त्री० [फ़ा] क़िस्सा सुनाने का काम ।

**कीक** - पु० [सं] चीत्कार, चीख ।

**कीकट** - 1. वि० [सं] धनहीन ; कृपण ; 2. पु० घोड़ा ; मगध देश का प्राचीन नाम ।

**कीकना** - अ० [हि] चीखना ।

**कीकर** - पु० [हि] बबूल ।

**कीका** - पु० [हि] घोड़ा ।

**कीकी** - स्त्री० [हिं] आँख की पुतली ।

**कीच, कीचड़** - 1. स्त्री० [हिं] पानी मिली हुई मिट्टी, पंक ; 2. पु० आँख का मैल ।

**कीचक** - पु० [सं] हवा से बजता हुआ बांस, पोला बांस ; राजा विराट का साला ।

**कीट** - पु० [सं] कीड़ा-मकोड़ा ; जमा हुआ मैल , **यौ**० —जा - लाख ।

**कीड़ा** - पु० [हि] लघुजंतु, कृमि, छोटा कीड़ा ; **मु**० —पड़ना - बेचैनी होना ।

**कीड़ी** - स्त्री० [हि] छोटा कीड़ा ; चींटी ।

**कीदउँ, किधौं** - अव्य० [हिं] शायद, या तो ।

**कीनख़्वाब** - पु० [अ] एक तरह का मोटा रेशमी कपड़ा ।

**कीना** - पु० [फ़ा] द्वेष ; **यौ**० —वर - मन में कीना रखनेवाला ।

**कीनाश** - 1. पु० [सं] यमराज ; किसान ; एक तरह का बंदर ; 2. वि० अधम ; अल्प ।

**कीप, कीफ़** - स्त्री० [फ़ा] बोतल आदि में तेल आदि डालने की चोंगी, टीप ।

**क़ीमत** - स्त्री० [अ] मूल्य ; महत्व ।

**क़ीमती** - वि० [अ] बहुमूल्य ; **यौ**० बेशक़ीमती - बहुत मूल्यवान ।

**क़ीमा** - पु० [अ] छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त ।

**कीमिया** - स्त्री० [अ] रसायन-विद्या ; **यौ**० —गर - वि० [फ़ा] रसायन बनानेवाला ।

**कीर** - पु० [सं] बहेलिया ; तोता ; मास ; सर्प ।
**क़ीरात** - पु० [अ] चार जौ की तौल, क़िरात ।
**कीरी** - स्त्री० [हिं] कीड़ी ।
**कीर्ण** - वि० [स] फैला हुआ ; ढका हुआ ; चोट पहुँचाया हुआ ।
**कीर्तन** - पु० [सं] गुणकथन ; हरि-भजन ।
**कीर्ति** - स्त्री० [सं] पुण्य ; ख्याति ; बड़ाई ।
**कीर्ति-स्तंभ** - पु० [स] किसीकी कीर्ति के स्मरण के लिए बनाया जानेवाला स्तंभ ; वह कार्य या वस्तु जिससे किसीकी कीर्ति स्थायी हो ।
**कील** - स्त्री० [सं] काँटा ; नाक की लौंग ; मेख ; कुहनी ; आग की लौ ; मुहाँसे की मांसकील ; गर्भ में अटकनेवाला मूढ़ गर्भ ।
**कीलक** - पु० [सं] खूंटी ; तंत्र के अनुसार एक देवता ; यंत्र का मध्य भाग ।
**कीलन** - पु० [सं] बंधन ; मंत्र के प्रभाव को नष्ट करने का काम ।
**कीलना** - स० [हिं] वशीभूत करना ; कील ठोकना ; लकड़ी ठोककर तोप आदि का मुँह बंद करना ; किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना ।
**कीला** - पु० [हिं] बड़ी कील ; मूढ़ गर्भ ।
**कीलाल** - 1. पु० [स] अमृत ; जल ; रक्त ; मधु , पशु ; 2. वि० बंधन हटानेवाला ।
**कीलित** - वि० [स] कीला हुआ, जड़ा हुआ; यंत्र से स्तभित ।
**कीली** - स्त्री० [हिं] चक्र घूमने की कील, धुरी ; कुश्ती का एक दाँव ।
**कीश** - पु० [सं] बंदर ; सूर्य , चिड़िया ।
**कीसा** - पु० [फ़ा] जेब ; थैली ।
**कुँअर** - पु० [हिं] लड़का ; राजकुमार ।
**कुँआरा** - पु० [हिं] बिनब्याहा, अविवाहित ।
**कुँई** - स्त्री० [देश] कुमुदिनी ।
**कुकुम** - पु० [सं] केसर ; रोली ।
**कुंचन** - पु० [सं] सिकुड़ना ; सिमटना ।
**कुंचिका** - स्त्री० [सं] बांस की टहनी ; चाबी , घुँघुची ।
**कुंचित** - वि० [सं] टेढ़ा ; घुंघराले (बाल) ।
**कुंज** - पु० [सं] लताच्छादित स्थान ; [फ़ा] किनारा ; कोना ।
**कुंजक** † - पु० [सं] कंचुकी, अंतःपुर का सेवक ।
**कुंजकुटीर** - स्त्री० [स] लतागृह ।
**कुंजगली** - स्त्री० [स] लतावृत मार्ग ; तंग गली ।
**कुंजड़ा** - पु० [हि] तरकारी बेचनेवाली एक मुसलमान जाति ।
**कुंजद** - पु० [फ़ा] तिल ; तिलहन ।
**कुंजर** - पु० [सं] बाल , हाथी ।
**कुंजी** - स्त्री० [हिं] पुस्तक की टीका ; चाबी , **मु**०—हाथ में होना - किसीके वश में होना ।
**कुंठ** - वि० [सं] भोथरा , मूर्ख ।
**कुंठित** - वि० [सं] मद, खोटा ।
**कुंड** - पु० [स] छोटा तालाब ।
**कुंडल** - पु० [सं] कान की बाली ; घेरा ।
**कुंडलिका** - स्त्री० [सं] कुंडलिया छद ; मंडलाकार रेखा ।
**कुंडलिनी** - स्त्री० [स] जलेबी ; इमरती , हठयोग के अनुसार एक वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गयी है ।
**कुंडली** - 1. स्त्री० [सं] जन्मपत्री ; सांप के बैठने की मुद्रा ; 2. पु० साँप ; मोर ।
**कुंडा** - पु० [हिं] बड़ा मटका, मिट्टी का एक चौड़े मुँह का बहुत बड़ा व गहरा बरतन ।
**कुंडी** - स्त्री० [हि] छोटी पथरौटी ; ज़ंज़ीर की कड़ी ; किवाड़ में लगी हुई सांकल ।

**कुंत** - पु० [सं] भाला ; बरछी ; जूँ।
**कुंतल** - पु० [सं] केश ; प्याला ; जौ ; हल ; बहुरूपिया ; सूत्रधार।
**कुंद** - 1. पु० [सं] जूही की तरह का पौधा ; कमल ; 2. वि० [फ़ा] भोथरा ; कुंठित, मंद ; यौ०—ज़ेहन - कुंठित बुद्धिवाला, मंद बुद्धि ।
**कुंदन** - 1. पु० [सं] शुद्ध सुवर्ण ; 2. वि० निर्मल ; सुंदर ; स्वस्थ ।
**कुंदरू** - पु० [हिं] बिंबाफल ।
**कुंदलता** - स्त्री० [सं] छब्बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।
**कुंदा** - पु० [फ़ा] बंदूक़ का चौड़ा पिछला भाग ; बेंट ; लकड़ी का मोटा टुकड़ा।
**कुंदी** - स्त्री० [हिं] कपड़ों की सिकुड़न आदि दूर करने के लिए मोगरी से पीटने की क्रिया ; ठोंक-पीट ।
**कुंदेरना** - स० [हिं] खुरचना ; खरादना ।
**कुंदेरा** - पु० [हिं] खरादनेवाला ।
**कुंभ** - पु० [सं] घड़ा ; एक राशि ; एक पर्व ; हाथी का मस्तक ; प्रति बारहवें वर्ष पड़नेवाला एक पर्व ।
**कुंभक** - पु० [सं] प्राणायाम का एक अंग जिसमें सांस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोक रखते हैं ।
**कुंभकार** - पु० [सं] कुम्हार ; साँप ; उल्लू ।
**कुंभज, कुंभयोनि** - पु० [सं] अगस्त्य मुनि ; द्रोण ।
**कुंभिनी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ।
**कुंभिल** - पु० [सं] चोर ; साला ; अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न बालक ।
**कुंभी** - 1. पु० [सं] हाथी ; मगर ; जल का एक पौधा ; एक ज़हरीला कीड़ा 2. स्त्री० एक नरक ; छोटा घड़ा ; चौकी ; गुग्गुल।
**कुंभीक** - पु० [सं] नपुंसक ।
**कुंभीनस** - पु० [सं] क्रूर साँप ; रावण ।
**कुंभीपाक** - पु० [सं] एक नरक ।
**कुंभीर** - पु० [सं] घड़ियाल ; मगर ।
**कुँवर** - पु० [हिं] लड़का ; राजपुत्र ।
**कुँवरि, कुँवरी** - स्त्री० [सं] कुमारी, कन्या ।
**कु** - 1. स्त्री० [सं] पृथ्वी ; 2. अव्य० एक उपसर्ग जो नीच कुत्सित आदि भाव प्रकट करता है ।
**कुअंक** - पु० [सं] दुर्भाग्य ।
**कुआँ** - पु० [हिं] कूप ।
**कुआँरा** - वि० [हिं] अनब्याहा ।
**कुइँ** - स्त्री० [देश] छोटा कुआँ ; कुमुदिनी ।
**कुकटी** - स्त्री० [देश] सलाईनुमा प्राकृतिक रूई ।
**कुकड़ना** - अ० [हिं] सिकुड़ जाना, सिमट जाना ।
**कुकड़ी** - स्त्री० [हिं] कच्चे सूत का लच्छा ; मुर्गी ; भुट्टा ।
**कुकनू** - पु० [यू] एक गानेवाला कल्पित पक्षी ।
**कुकरी** - स्त्री० [हिं] बनमुर्गी।
**कुकरौंधा** - पु० [हिं] तीव्र गंधवाला पालक जैसा एक पौधा ।
**कुकर्म** - पु० [सं] बुरा काम, पाप कार्य।
**कुकुर** - पु० [सं] कुत्ता ; यादवों की एक शाखा ; एक प्रकार का साँप ; मुर्गा ।
**कुकुरखांसी** - पु० [हिं] कफ़विहीन सूखी खांसी ।
**कुकुरदंत** - पु० [हिं] आगे निकला हुआ टेढ़ा दांत ।
**कुकुरमुत्ता** - पु० [हिं] छत्रक, एक बरसाती पौधा, खुमी, गगनधूलि का पौधा ।
**कुकुही** - स्त्री० [हिं] बनमुर्गी ।
**कुकूल** - पु० [देश] भूसी की आग ; कवच ।
**कुक्कुट** - पु० [सं] मुर्गा ।
**कुक्कुर** - पु० [सं] कुत्ता ; यदुवंशियों की एक शाखा ; एक मुनि ।

**कुक्षिंभर** - पु० [सं] अपना ही पेट भरनेवाला, पेटू।

**कुक्षि** - स्त्री० [सं] पेट, कोख, गुफा।

**कुखेत** - पु० [हिं] बुरा स्थान, कुठाँव।

**कुख्यात** - वि० [सं] निंदित, बदनाम।

**कुख्याति** - स्त्री० [स] निंदा।

**कुगति** - स्त्री० [सं] दुर्गति।

**कुगहनि** - स्त्री० [हिं] अनुचित आग्रह, हठ।

**कुघात** - पु० [हिं] छल, कपट; कुअवसर, बेमौक़ा।

**कुच** - 1. पु० [सं] स्तन; छाती; 2. वि० कृपण; सकुचित।

**कुचक्र** - पु० [सं] षड्यंत्र।

**कुचर** - पु० [सं] आवारा; नीच कर्म करनेवाला; निंदक।

**कुचलना** - स० [हिं] मसलना, पैरों से रौंदना, मु० सिर कुचलना - बुरी तरह से पराजित करना।

**कुचला** - पु० [हिं] एक पेड़ व उसका विषैला बीज जो दवाई के काम में आता है।

**कुचाल** - स्त्री० [हिं] खराब चाल-चलन; दुष्टता, बदमाशी।

**कुचाह** - स्त्री० [हिं] अशुभ बात, बुरी ख़बर।

**कुचिया** - स्त्री० [हिं] छोटी टिकिया।

**कुची** - स्त्री० [हिं] तूलिका, चित्र या तसवीर बनाने की रोएँदार क़लम।

**कुचील, कुचीला** - वि० [हि] मैला कुचैला; मैले वस्त्रवाला।

**कुचेष्ट** - वि० [सं] बुरी चेष्टावाला।

**कुचेष्टा** - स्त्री० [सं] हानि पहुँचाने का यत्न; बुरी चाल; चेहरे का बुरा भाव।

**कुचैन** - 1. स्त्री० [हिं] बेचैनी, व्याकुलता; 2. वि० बेचैन, व्याकुल।

**कुचैला** - वि० [हि] जिसका कपड़ा मैला हो, मैला, गदा।

**कुछ** - 1. वि० [हि] थोड़ा-सा, तनिक; मु० — एक - थोड़े से; — ऐसा - विलक्षण और अस्पष्ट; — कुछ - थोड़ा; — न कुछ - थोड़ा बहुत; कम या ज़्यादा; 2. सर्व० कोई वस्तु; मु० — कह देना - कड़ी बात कहना, बिगड़ना; — कर देना - जादू-टोना या मंत्र आदि का प्रयोग कर देना; — का कुछ - और का और, उलटा; — हो - चाहे जो हो; — खा लेना - विष खा लेना; 3. पु० बड़ी या अच्छी बात; काम की वस्तु; गण्यमान्य मनुष्य; मु० — हो जाना - किसी योग्य हो जाना, गण्यमान्य हो जाना।

**कुज** - 1. पु० [सं] मंगल ग्रह; वृक्ष; 2. वि० लाल।

**कुजन** - पु० [सं] दुष्ट, बुरा आदमी।

**कुजा** - 1. स्त्री० [सं] जानकी; कात्यायिनी; 2. क्रि [फ़ा] कहाँ।

**कुजाति** - 1. स्त्री० [सं] बुरी जाति, नीच जाति; 2. पु० नीच व्यक्ति, पतित या अधम पुरुष।

**कुजोग** † - पु० [हिं] कुसंग, बुरा मेल; बुरा अवसर।

**कुजोगी** † - वि० [हिं] असंयमी; कुयोगी।

**कुटंत** † - स्त्री० [सं] कुटाई, मार।

**कुट** - पु० [सं] घर; कोट, गढ़; कलश; कूटा हुआ टुकड़ा, छोटा टुकड़ा, जैसे, 'तिलकुट'।

**कुटका** - पु० [हि] छोटा टुकड़ा।

**कुटज** - पु० [स] कुरैया, सुंदर फूलोंवाला जंगली पेड़ जिसके बीज इंद्रजौ कहलाते हैं; अगस्त्य मुनि।

**कुटनई** - स्त्री० [हिं] कुटनी का काम, दूती-कर्म।

**कुटनहारी** - स्त्री० [हिं] धान कूटनेवाली।

**कुटना** - 1. पु० [हिं] चुग़लख़ोर; पाखंड-वृत्ति; स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला दूत; वह हथियार जिससे कुटाई की जाय; 2. अ० कूटा जाना।

**कुटनाना** - स० [हिं] किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्ग पर ले जाना।

**कुटनी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाली स्त्री, दूती; झगड़ा करानेवाली स्त्री।

**कुटाई** - स्त्री० [हिं] कूटने का काम या मज़दूरी।

**कुटास** - स्त्री० [हिं] मार-पीट; मार खाने की इच्छा; पिटाई।

**कुटिया** - स्त्री० [हि] झोपड़ी।

**कुटिल** - 1. वि० [सं] टेढ़ा; खोटा; कपटी; छल्लेदार; घुंघराला; शठ, खल; 2. पु० चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त; तगर।

**कुटिलता** - स्त्री० [सं] टेढ़ापन; छल, कपट।

**कुटिला** - स्त्री० [सं] दुष्टा स्त्री; सरस्वती नदी; मिथिला और बंगाल की एक प्राचीन लिपि।

**कुटिलाई** - स्त्री० [हि] खोटापन; कुटिलता।

**कुटी** - स्त्री० [सं] झोपड़ी; मुरा नामक गंध-द्रव्य; श्वेत कुटज; यौ० पर्णकुटी - घास-फूस से बनाया हुआ छोटा घर।

**कुटीचर** - पु० [सं] चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला जो शिखा-सूत्र का त्याग नहीं करता; कपटी।

**कुटीर** - पु० [सं] झोंपड़ी।

**कुटुंब** - पु० [सं] परिवार।

**कुटेक** - स्त्री० [हिं] अनुचित हठ।

**कुटेव** - स्त्री० [हिं] बुरी आदत।

**कुट्टिम** - पु० [हिं] फ़र्श; रत्न की खान; अनार; झोपड़ी।

**कुट्टी** - स्त्री० [हिं] गंडासे से काटा हुआ चारा; मैत्री-भंग; पर-कटा कबूतर; क़लमदान आदि बनाने के लिए कूटा और सड़ाया हुआ काग़ज़।

**कुठला** - पु० [हिं] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

**कुठांव** - पु० [हिं] बुरी जगह; मु० — मारना - ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट हो, मर्मस्थल में मारना।

**कुठाट** - पु० [हिं] बुरा साज; ख़राब काम करने की तैयारी।

**कुठार** - 1. पु० [सं] कुल्हाड़ी, फरसा; 2. वि० नाश करनेवाला।

**कुठाराघात** - पु० [सं] कुल्हाड़ी का आघात; गहरी चोट।

**कुठाली** - स्त्री० [हि] सोना-चाँदी गलाने की मिट्टी की घरिया (प्याली)।

**कुड़कना** - अ० [हि] घूरना, गुर्राना।

**कुड़कुड़ाना** - अ० [हि] मन ही मन चिढ़ना, कुड़बुड़ाना।

**कुड्मल** - पु० [सं] फूल की कली।

**कुड़व** - पु० [सं] बीस तोले का माप।

**कुडौल** - वि० [हिं] भद्दा; कुरूप।

**कुढंगा** - वि० [हिं] भद्दा, बेढंगा; बेशऊर, उजड्ड।

**कुढ़न** - स्त्री० [हिं] चिढ़, अव्यक्त क्रोध।

**कुढ़ना** - अ० [हिं] चिढ़ना, मन ही मन जलना, डाह करना।

**कुतका** - पु० [तु] मोटा डंडा, सोटा; गतका; ठेंगा; अँगूठा; मु० — दिखाना - किसी चीज़ को देने से साफ़ इनकार करना।

**कुतना** - अ० [हिं] कूता जाना।

**कुतबा** - पु० [अ] लेख।
**कुतरना** - स० [हिं] दाँत से काटकर छोटा टुकड़ा करना; बीच ही से कुछ अंश उड़ा लेना।
**कुतर्क** - पु० [सं] बुरा तर्क, वितंडावाद; बकवाद।
**कुताही** - स्त्री० [फ़ा] कमी, कसर।
**कुतुब** - पु० [अ] ध्रुवतारा; बहुत-सी पुस्तकें।
**कुतुबख़ाना** - पु० [फ़ा] पुस्तकालय।
**कुतुबनुमा** - पु० [अ] दिशादर्शक यंत्र।
**कुतुबफ़रोश** - पु० [फ़ा] किताब बेचनेवाला।
**कुतूहल** - पु० [सं] आश्चर्य; क्रीड़ा; कौतुक।
**कुत्ता** - पु० [हिं] एक पशु, श्वान; मु० — काटना - पागल होना, बेवक़ूफ़ बनना; कुत्ते की मौत मरना - बुरी तरह से मरना, अपमानित होकर मरना; कुत्ते की दुम - अपनी बुरी चाल कभी न छोड़नेवाला।
**कुत्सा** - स्त्री० [सं] निंदा, बुराई।
**कुत्सित** - वि० [सं] निंदित।
**कुथ** - पु० [हिं] कथरी, हाथी की झूल।
**कुदकना** - अ० [हिं] कूदना, फाँदना।
**कुदरत** - स्त्री० [अ] प्रकृति, ईश्वरी शक्ति; ईश्वरी रचना।
**कुदरती** - वि० [अ] प्राकृतिक; ईश्वरीय।
**कुदर्शन** - वि० [सं] कुरूप, बदसूरत।
**कुदलाना** - † अ० [हिं] कूदते हुए चलना; उछलना।
**कुदाँव** - पु० [हिं] कुघात; धोखा; मर्मस्थान।
**कुदाई** † - वि० [हिं] छली, धोखेबाज़; बुरे ढंग से दाँवपेच करनेवाला।
**कुदान** - 1. स्त्री० [हिं] कूदने की क्रिया या भाव; एक बार कूदकर पार करने की दूरी, छलांग; 2. पु० [सं] बुरा दान; कुपात्र या अयोग्य को दिया जानेवाला दान।
**कुदाल, कुदाली** - स्त्री० [हिं] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औज़ार।
**कुदास** - पु० [हिं] जहाज़ की पतवार का खंभा; [सं] दुष्ट या बुरा सेवक।
**कुदिन** - पु० [सं] आपत्ति का समय; ख़राब दिन।
**कुदृष्टि** - स्त्री० [सं] बुरी दृष्टि, पापदृष्टि, बुरी निगाह।
**कुद्रव** - पु० [स] कोदो; तलवार चलाने के बत्तीस प्रकारों में से एक।
**कुधातु** - स्त्री० [स] बुरी धातु, लोहा।
**कुधारा** - स्त्री० [स] कुरीति।
**कुन** - प्रत्य० [फ़ा] करनेवाला; यौ० कारकुन - कारिंदा, काम करनेवाला।
**कुनकुना** - वि० [हिं] थोड़ा गरम।
**कुनबा** - पु० [हिं] परिवार।
**कुनवा** - पु० [हिं] बरतन आदि खरादनेवाला, खरादी।
**कुनह** - स्त्री० [फ़ा] द्वेष; पुराना वैर; सूक्ष्मता; तथ्य।
**कुनाई** - स्त्री० [हिं] लकड़ी का बुरादा।
**कुनाम** - पु० [सं] बदनामी।
**कुनित** - वि० [त्र] बजता हुआ, क्वणित।
**कुनीति** - स्त्री० [सं] अन्याय; अनुचित रीति।
**कुपंथ**, **कुपथ** - पु० [सं] बुरा मार्ग, कुचाल; कुत्सित सिद्धान्त या संप्रदाय; निषिद्धाचरण।
**कुपथ्य** - पु० [सं] स्वास्थ्य के लिए हानिकारक आहार-विहार, बदपरहेज़ी।
**कुपना** - अ० [हिं] नाराज़ होना।
**कुपाठ** - पु० [सं] बुरी सलाह; बुरा पाठ।
**कुपात्र** - वि० [सं] अनधिकारी, अयोग्य।
**कुपार** - पु० [हिं] समुद्र, सागर।
**कुपित** - वि० [सं] क्रुद्ध, नाराज़।

**कुप्पा** - पु० [हिं] चमड़े का बना हुआ घड़ा-नुमा बरतन ; मु० — होना - फूल जाना, हृष्ट-पुष्ट या प्रसन्न होना ; ग़ुस्सा होना, रूठना ।

**कुफल** - पु० [सं] बुरा नतीजा ।

**कुफ़्र** - पु० [अ] मुसलमानी मत से भिन्न मत ; ईश्वर को न मानना ।

**कुफ़्ल** - पु० [अ] ताला ।

**कुबंड** - 1. पु० [हिं] धनुष ; 2. वि० विकृतांग, खोड़ा ।

**कुबड़ा** - पु० [हिं] टेढ़ी पीठ वाला ।

**कुबत** - स्त्री० [हि] बुरी बात या चाल; निंदा ।

**कुबरी** - स्त्री० [हिं] कुबड़ी ; कंस की दासी ; मंथरा ; टेढ़ी पीठ वाली छड़ी जिसकी मूठ या सिरा झुका हो ।

**कुबानि** - स्त्री० [हिं] बुरी आदत, बुरी टेव ; बुरी वाणी ; गाली ।

**कुबुद्धि** - 1. वि० [स] दुर्बुद्धि, मूर्ख ; 2. स्त्री० मूर्खता, कुमंत्रणा, बुरी सलाह ।

**कुबेला** - स्त्री० [सं] बुरा समय ; अनुपयुक्त काल ।

**कुबोल** - पु० [हिं] बुरे बोल ।

**कुब्ज** - वि० [सं] कुबड़ा, टेढ़ा, वक्र ।

**कुमक** - स्त्री० [तु] सहायता ; पक्षपात ।

**कुमकुम** - पु० [हिं] केसर ; गुलाल भरने का लाख का पोला लट्टू ।

**कुमति** - स्त्री० [सं] दुर्बुद्धि ।

**कुमार** - पु० [सं] कार्तिकेय ; पाँच वर्ष का लड़का ; युवराज , तोता ; खरा सोना ।

**कुमारतंत्र** - पु० [स] बच्चो के रोगों का निदान और उनकी चिकित्सा ; आयुर्वेद का बालवैद्यक भाग ।

**कुमारभृत्य** - पु० [स] गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या ; गर्भिणी और नवप्रसूत बच्चो की चिकित्सा ।

**कुमारी** - स्त्री० [सं] बारह वर्ष तक की कन्या ; घी-कुँआर ; बड़ी इलायची ; सीता ; पार्वती ; दुर्गा ; अविवाहिता बालिका या स्त्री ।

**कुमार्ग** - पु० [सं] बुरा मार्ग ; अधर्म ।

**कुमुखे** - वि० [सं] बुरे मुखवाला ; कटु-भाषी ।

**कुमुद** - पु० [स] लाल कमल ; विष्णु ; चाँदी ; कपूर ।

**कुमुदिनी** - स्त्री० [सं] कमलिनी ; कुई, कोई ।

**कुम्मैत** - पु० [तु] कालापन लिये लाल रंग का घोड़ा ।

**कुम्हड़ा** - पु० [हि] भूरे कद्दू की जाति का फल, कूष्माण्ड, पेठा ; **कहावत**—कुम्हड़े की बतिया - कुम्हड़े के कच्चे व छोटे फल के जैसे बिलकुल कमज़ोर, अशक्त, बेजान ।

**कुम्हड़ौरी** - स्त्री० [हि] कुम्हड़ा मिली पीठी की बरी ।

**कुम्हलाना** / **कुम्हिलाना** - अ० [हिं] मुरझाना, सूखने पर होना ; प्रभाहीन होना ।

**कुम्हार** - पु० [हि] मिट्टी के बरतन बनाने-वाला, कुम्भकार ।

**कुम्ही** - स्त्री० [हिं] पानी पर फैलनेवाला पौधा, जल-कुम्भी ।

**कुयश** - पु० [सं] बदनामी, अपयश ।

**कुयोग** - पु० [सं] बुरा योग या काल ; दुखद ग्रह ।

**कुयोगी** - पु० [सं] विषयानुरक्त ।

**कुरंग** - पु० [सं] हिरन ; बुरा लक्षण ।

**कुरंगिनी** - स्त्री० [स] हरिणी, मृगी ।

**कुरंड** - पु० [हिं] एक खनिज पदार्थ जिसके चूर्ण को लाख आदि में मिलाकर सान का पत्थर बनाते है ।

**कुरच** - पु० [हि] पानी के किनारे रहनेवाली टिटिहरी नामक चिड़िया ।

**कुरता** - पु० [तु०] पहनने का एक ढीला सिला वस्त्र।

**क़ुरबान** - वि० [अ] निछावर या बलिदान दिया हुआ ; **मु०** — जाना - निछावर होना, बलि जाना।

**क़ुरबानी** - स्त्री० [अ] बलिदान।

**कुररी** - स्त्री० [सं] टिटिहरी ; आर्या छंद का एक भेद।

**कुरलना** - अ० [हि] कलरव करना।

**कुरला** - स्त्री० [देश] क्रीड़ा ; कुल्ला।

**कुरव** - पु० [सं] बुरा शब्द ; गीदड़ ; एक वृक्ष।

**कुरवना** - स० [देश] ढेर करना, एक ही बार बहुत-सा गिराना।

**कुरवारना** - स० [देश] खोदना; खरोचना।

**कुरा** - पु० [अ] पुराने ज़ख़्म में पड़ने वाली गांठ।

**क़ुरान** - पु० [अ] मुसलमानो का धर्मग्रंथ ; **यौ०** — मजीद या शरीफ़ - क़ुरान का आदरसूचक नाम ; **मु०** — उठाना - क़ुरान पर क़सम खाना ; — का जामा पहनना - धर्मनिष्ठ बनना।

**कुराह** - स्त्री० [हिं] कुमार्ग; खोटा आचरण।

**कुरिया** - स्त्री० [हि] फूस की झोपड़ी ; बहुत छोटा गाँव ; ढेर।

**कुरियाल** - स्त्री० [हिं] चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना ; **मु०** — में आना - आनंद या मौज में आना।

**कुरी** - स्त्री० [देश] मिट्टी का छोटा *टीला* ; वंश ; समूह ; टुकड़ा ; एक अन्न।

**कुरीति** - स्त्री० [सं] बुरी रीति, कुप्रथा।

**कुरुआ** - पु० [हिं] अन्न का एक माप ; पेड़ की जड़ के चारो तरफ़ ऊँची किनारी-वाला थाला।

**कुरुई** - स्त्री० [हि] बास और मूंज की बनी एक छोटी डलिया।

**कुरुख** - वि० [हिं] अप्रसन्न चेहरेवाला ; नाराज़।

**कुरुविंद** - पु० [सं] मोथा ; काचलवण ; उड़द ; दर्पण।

**कुरेदना** - स० [हिं] खुरचना, खोदना।

**कुरेदनी** स्त्री० [हिं] नोकदार छड़-जैसी चीज़ जिससे कोई चीज़ कुरेदी जाय ; **यौ०** कान-कुरेदनी - वह छोटी लोहे की चीज़ जिससे कान का मैल निकालते हैं।

**कुरेर** - स्त्री० [देश] कल्लोल; क्रीड़ा।

**कुरैया** - स्त्री० [हि] इंद्रजौ का जंगली पेड़ जिसके फूल सुदर होते हैं।

**कुर्क़** - वि० [अ] ज़ब्त किया हुआ।

**कुर्क़-अमीन** - पु० [अ] कुर्की करनेवाला सरकारी कर्मचारी।

**कुर्क़नामा** - पु० [अ] ज़ब्ती का परवाना।

**कुर्मी** - पु० [हिं] खेती करनेवाली एक जाति।

**कुलंग** - पु० [फ़ा] मुर्ग़ा ; छलांग ; चौकड़ी।

**कुलंजन** - पु० [सं] अदरक का-सा एक पौधा जिसकी जड़ गरम, दीपक और स्वर-शोधक होती है, पान की जड़।

**कुल** - 1. पु० [सं] वंश ; जाति ; समूह ; घर ; कौलधर्म ; **यौ०** — कानि - वंश की मर्यादा ; —घाती - कुलनाशक ; —धर्म - कुलाचार, वंशपरंपरा से चला आया कर्तव्य कर्म ; —पति - घर का मालिक ; दस हज़ार छात्रों को अन्नदान के साथ पढ़ानेवाला ऋषि ; किसी विश्वविद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी, वैसचान्सलर ; —वधू - कुलवती, सच्चरित्रा स्त्री ; —वन्त, वान - कुलीन, अच्छे कुल में पैदा हुआ ; 2. वि० [अ] सब ; **यौ०** — जमा - सब मिलाकर ; —मुख़्तार - पूर्ण अधिकारी।

**कुलकना** - अ० [हिं] प्रसन्न या ख़ुश होना।

**कुलकुल** - पु० [अनु] सुराही या बोतल से पानी उँड़ेलते समय निकलनेवाली आवाज़।

**कुलकुला** - पु० [अनु] कुल्ला; गंडूष।

**कुलकुलाना** - अ० [अनु] कुलकुल शब्द करना; **मु०** आँतें कुलकुलाना - भूख लगना।

**कुलक्षण** - 1. वि० [सं] बुरे लक्षणवाला; बदचलन; 2. पु० बुरा लक्षण, बदचलनी।

**कुलचा** - पु० [फ़ा] बचत; कुचा, चुराछिपाकर बचाया हुआ धन; खमीरी रोटी; खेमे की चोब या खूंटे के ऊपर का लट्टू।

**कुलज्ञ** - पु० [सं] कुलाचार्य; भाट।

**कुलटा** - वि० [सं] छिनाल, व्यभिचारिणी।

**कुलथी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का मोटा अनाज जो अकसर घोड़ो को खिलाया जाता है।

**कुलना** - अ० [हिं] दर्द होना, टीस मारना।

**कुलफ़** - पु० [अ] ताला।

**कुलफ़त** - स्त्री० [अ] चिंता; कष्ट।

**कुलफ़ा** - पु० [अ] एक साग।

**कुलफ़ी** - स्त्री० [हि] चोंगे में जमायी हुई दूध-मलाई आदि; उपर्युक्त चोंगा।

**कुलबुलाना** - अ० [अनु] कलमलाना, व्याकुल होना, डोलना।

**कुलबुलाहट** - स्त्री० [अनु] चंचलता।

**कुलह, कुलहा** - स्त्री० [फ़ा] टोपी; शिकारी चिड़ियो की आँख पर का ढक्कन।

**कुलांगना** - स्त्री० [सं] कुलीन स्त्री।

**कुलांगार** - पु० [सं] कुलनाशक; सत्यानाशी।

**कुलांच, कुलांट** - स्त्री० [फ़ा] छलांग, चौकड़ी, उछाल; **मु०** —भरना या मारना - छलांग मारना, उछल-कूद करना।

**कुलाचार** - पु० [स] कुलरीति, वंशपरंपरागत आचार।

**कुलाबा** - पु० [अ] चौखट के साथ किवाड़ में जड़ा हुआ लोहे का काँटा; मछली फंसाने का काँटा; मोरी।

**कुलाल** - पु० [सं] कुम्हार; जंगली मुर्ग़ा; उल्लू।

**कुलाह** - 1. पु० [सं] काले पाँववाला भूरे रंग का घोड़ा; 2. स्त्री० [फ़ा] ऊँची नोकवाली अफ़गानी टोपी।

**कुलिया** - स्त्री० [देश] छोटी तंग गली।

**कुलिश** - पु० [स] हीरा; वज्र; कुठार।

**कुली** - पु० [तु] मज़दूर, बोझ ढोनेवाला; **यौ०** — कबारी - छोटी जाति के आदमी।

**कुलीन** - वि० [सं] अच्छे वंश या घराने का, ख़ानदानी।

**कुलुक** - पु० [हिं] जीभ पर जमा हुआ मैल।

**कुलूख** - पु० [फ़ा] मिट्टी का ढेला।

**कुलेल** - स्त्री० [हिं] क्रीड़ा, कल्लोल।

**कुल्माष** - पु० [सं] कुलथी; खिचड़ी।

**कुल्ला** - पु० [अ] साफ़ करने के लिए मुँह में भरा हुआ पानी।

**कुल्लियात** - पु० [अ] किसी ग्रंथकार की समस्त कृतियों का संग्रह।

**कुल्हड़** - पु० [हि] पुरवा, चुकड़।

**कुल्हरा, कुल्हाड़ा** - पु० [हि] लकड़ी काटने या चीरने का एक औज़ार, कुठार।

**कुवलय** - पु० [सं] नील कमल; भूमंडल।

**कुवाच्य** - 1. वि० [स] न कहने योग्य, अश्लील; 2. पु० गाली।

**कुवादी** - वि० [सं] अशुभभाषी, मुँहफट।

**कुविंद** - पु० [सं] जुलाहा।

**कुवृत्ति** - स्त्री० [सं] नीच वासना; अधम कर्म, बुरा काम।

**कुवेणी** - स्त्री० [सं] मछली रखने की टोकरी; ठीक तरह से न गुथी हुई वेणी।
**कुव्वत** - स्त्री० [अ] शक्ति, ताक़त।
**कुश** - पु० [सं] कांस की तरह की घास; लव के बड़े भाई; जुए में बैल जोतने की रस्सी।
**कुशल** - 1. वि० [सं] चतुर, प्रवीण; प्रसन्न; 2. पु० क्षेम।
**कुशलई** } स्त्री० [अव] कुशलता; कुशल-
**कुसलाई** } क्षेम।
**कुशलता** - स्त्री० [सं] चतुराई; प्रवीणता; राजी-ख़ुशी।
**कुशाग्र** - वि० [सं] तीव्र; नुकीला, पैना।
**कुशादगी** - स्त्री० [फ़ा] विस्तार, फैलाव।
**कुशादा** - वि० [फ़ा] विस्तृत, फैला हुआ।
**कुशासन** - पु० [स] बुरा राज्य या प्रबंध।
**कुशिक** - पु० [सं] विश्वामित्र; हल का फाल; एक प्राचीन आर्य वंश।
**कुशीद** - पु० [स] सूद, व्याज।
**कुशीलव** - पु० [सं] कवि; चारण; नाटक खेलनेवाला; गवैया।
**कुशूल** - स्त्री० [सं] धान्य रखने का पात्र, कुठला; भूसी की आग, कड़ाही।
**कुशेशय** - पु० [सं] साधारण कमल।
**कुशोदक** - पु० [सं] तर्पण।
**कुश्ता** - 1. पु० [फ़ा] धातु का भस्म; 2. वि० मारा गया।
**कुश्ती** - स्त्री० [फ़ा] मल्लयुद्ध; **मु०** — मारना - कुश्ती में किसीको पछाड़ना; — खाना - कुश्ती में हार जाना।
**कुषीद** - 1. पु० [स] वृत्ति; जीविका; व्याज पर रुपया देना; 2. वि० जड़, चेष्टारहित; निर्दय।
**कुष्ठ** - पु० [सं] कोढ़; कुट नामक औषधि।
**कुष्ठी** - पु० [सं] कोढ़ी।
**कुसंग** - पु० [सं] बुरो का साथ।
**कुसंगति** - स्त्री० [स] बुरे लोगो के साथ उठना-बैठना।
**कुसंस्कार** - पु० [सं] बुरी वासना, बुरा संस्कार।
**कुसगुन** - पु० [हि] बुरा लक्षण, अपशकुन।
**कुसमय** - पु० [सं] संकट-काल, बुरा समय, दुख के दिन।
**कुसल** - पु० [हि] कुशल।
**कुसलात** - स्त्री० [हि] कुशल-समाचार।
**कुसाइत** - स्त्री० [हिं] बुरी साइत, बुरा मुहूर्त, कुसमय।
**कुसियार** - पु० [देश] अधिक रसवाली ऊख।
**कुसीद** - पु० [सं] व्याज पर दिया हुआ धन; सूद, ब्याज।
**कुसुंभ** - पु० [सं] कुसुम, केसर, कुंकुम।
**कुसुम** - पु० [सं] फूल; रजोदर्शन; आँख का एक रोग।
**कुसुमबाण** - पु० [सं] कामदेव।
**कुसुमाकर** - पु० [सं] वसंत ऋतु; बाग़।
**कुसुमित** - वि० [सं] फूला हुआ, पुष्पित।
**कुसूत** - पु० [हिं] बुरा सूत; कुप्रबंध, बुरी व्यवस्था।
**कुसूफ़** - पु० [अ] सूर्यग्रहण; दुर्दशा।
**क़ुसूर** - पु० [अ] अपराध, दोष; **यौ०** — मंद, क़ुसूरवार - दोषी, अपराधी।
**कुह** - पु० [सं] कुबेर।
**कुहक** - पु० [स] माया, धोखा; मक्कार; मुर्ग़े की कूक; मेंढक।
**कुहकना** - अ० [हिं] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना।
**कुहकुहाना** - अ० [अनु] कोयल का कूकना।
**कुहन** - 1. वि० [सं] ईर्ष्यालु; दंभी; 2. पु० मिट्टी का बर्तन; थूहा; सांप।

**कुहना** - 1. स० [हिं] बुरी तरह से मारना, खूब पीटना; 2. अ० पेड़ आदि का अपने आप सूखकर अन्दर अन्दर सड़ना; 3. पु० [अ] गाना; 4. वि० [फा] पुराना।

**कुहनी** - स्त्री० [हिं] भुजा और बाहु का जोड़; हुक्के की निगाली में लगायी जानेवाली पीतल की वह नली जो कुहनी की तरह झुकी होती है।

**कुहबर** - पु० [हिं] विवाह के बाद दूल्हा-दुलहिन के बैठने का सजा हुआ कमरा।

**कुहर** - 1. पु० [सं] छेद; गढा; गले का छिद्र; कंठस्वर; कान का छेद; कुहरा; 2. स्त्री० एक शिकारी पक्षी; गुफा।

**कुहरा** - पु० [हिं] वायु में मिले हुए जल-कण, नीहार।

**कुहराम** - पु० [हिं] विलाप; कई आदमियों का एक साथ रोना-पीटना; खलबली।

**कुहसार** - पु० [फ़ा] पहाड़ी स्थान।

**कुहाड़ा** - पु० [हिं] बड़ी कुल्हाड़ी।

**कुहाना** - † अ० [हिं] रूठना, नाराज़ या कुपित होना।

**कुहासा** - पु० [हिं] कुहरा।

**कुही** - 1. स्त्री० [हि] एक शिकारी चिड़िया, कुहर; 2. पु० घोड़े की एक जाति; 3. वि० क्रोधी।

**कुहु, कुहू** - स्त्री० [सं] अमावस्या; कोयल का मधुर स्वर।

**कुहुक** - पु० [अनु] कोकिल का कूजन; पक्षियो का कूजन; कूक, मधुर स्वर।

**कुहुकना** - अ० [अनु] पक्षियो का मधुर स्वर में बोलना।

**कूँख** - स्त्री० [हिं] कोख, गर्भ; उदर; काँखने का शब्द।

**कूँग** - पु० [हिं] बरतन खरादने का एक औज़ार।

**कूँच** - स्त्री० [हिं] ताने का सूत साफ़ करने की कूँची; लोहारों की सँड़सी; पैर की मोटी नस।

**कूँचना** - स० [हिं] कुचलना।

**कूँचा** - पु० [हि] झाड़ू, बुहारी, बढ़नी।

**कूँची** - स्त्री० [हिं] छोटा कूँचा; तूलिका; मु० —देना - खेत को एक कोने से दूसरे कोने तक जोतना।

**कूँज** - पु० [हिं] क्रौंच पक्षी।

**कूँड़** - स्त्री० [हिं] लोहे की टोपी; पानी निकालने का एक गहरा बरतन; तबले का बायाँ बनाने का एक गहरा बरतन; जोतने से बनी हुई लकीर।

**कूँड़ा** - पु० [हिं] मिट्टी का चौड़ा और गहरा बरतन, गमला।

**कूँड़ी** - स्त्री० [हिं] पत्थर की प्याली, पथरी; छोटी नाँद।

**कूँथना** - अ० [हिं] दुख या श्रम से मुँह से अस्पष्ट शब्द निकालना, काँखना; कबूतरो का गुटुरगूं करना।

**कूँदना** - स० [हिं] खरादना।

**कूक** - स्त्री० [हिं] सुरीली ध्वनि; घड़ी या बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया।

**कूकना** - अ० [हि] कोयल या मोर का बोलना।

**कूकर, कूकुर** - पु० [हिं] कुत्ता, श्वान; यौ० — कौर - कुत्ते को दिया गया जूठा भोजन; टुकड़ा; तुच्छ वस्तु; —निंदिया - कुत्ते की-सी नींद, झपकी, क्षणिक नींद; श्वान-निद्रा।

**कूकस** - पु० [देश] भूसी।

**कूका** - पु० [हिं] सिक्खों का एक पंथ।

**कूच** - पु० [फ़ा] प्रस्थान, प्रयाण ; **मु०** —कर जाना - मर जाना ; —बोलना - प्रस्थान करना ; प्रस्थान का हुक्म देना ; देवता कूच कर जाना - होश-हवास चला जाना।

**कूचा** - पु० [फ़ा] छोटा रास्ता ; झाडू ; **यौ०** —गर्दी - बेमतलब इधर-उधर घूमना ; आवारागर्दी ; —बंद - वह गली जिसमें एक ही तरफ़ रास्ता हो।

**कूज** - स्त्री० [हिं] मधुर ध्वनि।

**कूजन** - पु० [सं] पक्षियो का मधुर स्वर से बोलना।

**कूजना** - अ० [हिं] मधुर स्वर निकालना।

**कूजा** - पु० [फ़ा] मिट्टी का पुरवा, कुल्हड़, अर्धगोलाकार मिश्री या मिश्री की डली ; (त.क.ते.म.) पेंचदार लोटा, मिट्टी की झाड़ी या झज्झर।

**कूट** - 1. पु० [सं] पहाड़ की ऊँची चोटी ; धोखा ; गुप्त भेद ; हथौड़ा ; 2. वि० झूठा ; **यौ०** —कर्म - छल, धोखा ; —नीति - दाँवपेच की चाल, छलनीति ; —युद्ध - धोखे या छल की लड़ाई ; —लेख - जाली या झूठा दस्तावेज़ ; —साक्षि - झूठा गवाह।

**कूटस्थ** - 1. वि० [स] सर्वोपरि स्थितिवाला ; अचल, अटल, अविनाशी ; छिपा हुआ ; 2. पु० आत्मा ; परमात्मा ; जीव।

**कूटार्थ** - पु० [सं] गूढ़ार्थ, व्यङ्यार्थ।

**कूटू** - पु० [देश] व्रत में फलाहार के समय काम में लाया जानेवाला एक अन्न-विशेष।

**कूड़ा** - पु० [हिं] कतवार, कचरा ; निकम्मी चीज़ ; **यौ०** —खाना - कूड़ा फेंकने की जगह, कतवारखाना ; — करकट - गंदी रद्दी चीज़ें।

**कूढ़** - वि० [हिं] मूर्ख, मूढ़ ; **यौ०** —मग़्ज़ - मंदबुद्धि, कुदज़ेहन।

**कूत** - स्त्री० [हिं] वस्तु का संख्या का मूल्य का या परिमाण का अनुमान ; परख ; कनकूत।

**कूतना** - स० [हिं] अनुमान या अंदाज़ा करना ; परखना।

**कूदना** - अ० [हिं] उछलना, फांदना, लांघ जाना ; **मु०** किसीके बल पर कूदना - किसीका सहारा पाकर शेखी मारना।

**कूप** - पु० [सं] कुआँ ; **यौ०** — मंडूक - कुएँ में रहनेवाला मेंढक ; अपना स्थान छोड़कर बाहर न जानेवाला ; अल्पज्ञ।

**कूब, कूबड़** - 1. पु० [हिं] पीठ का टेढ़ापन ; किसी चीज़ का टेढ़ापन ; 2. वि० सुन्दर; प्रिय; कूबड़वाला।

**कूर** - वि० [हिं] निर्दय ; मूर्ख ; कठोर ; निकम्मा।

**कूरा** - पु० [सं] ढेर, राशि ; भाग।

**कूर्च** - पु० [सं] भौहों के मध्य का भाग ; मयूरपुच्छ ; कूँची।

**कूर्चिका** - स्त्री० [सं] कूँची ; कली।

**कूर्म** - पु० [सं] कछुआ ; पृथ्वी।

**कूल** - पु० [सं] किनारा ; सेना के पीछे का भाग ; बड़ा नाला।

**कूलद्रुम** - पु० [सं] नदी आदि के किनारे का पेड़।

**कूवत** - पु० [अ] शक्ति, बल ; कुव्वत।

**कूवर** - पु० [सं] रथ में जुआ बांधने का स्थान ; रथ में रथी के बैठने का स्थान।

**कूष्मांड** - पु० [सं] कुम्हड़ा, पेठा।

**कृच्छ्र** - 1. पु० [सं] कष्ट, दुख ; मूत्र-कृच्छ्र रोग ; 2. वि० कष्टसाध्य।

**कृत** - 1. पु० चार युगो में से प्रथम ; चार की संख्या ; एक प्रकार का पाँसा ; 2. वि० किया हुआ, संपादित; **यौ०** —कार्य-

सफलमनोरथ ; सिद्धप्रयोजन ; —कृत्य - जिसका काम पूरा हो चुका हो, कृतार्थ ; —कृतांत - अंत करनेवाला, यम ; धर्मराज ; दो की संख्या ; शनिवार ; कृतार्थ - कृतकृत्य, सफलमनोरथ, संतुष्ट।

**कृतघ्न** - वि० [सं] किये हुए उपकार को न माननेवाला, नमकहराम ।

**कृतज्ञ** - वि० [सं] किये हुए उपकार को माननेवाला, एहसानमंद ।

**कृतयुग** - पु० [सं] चार युगों में से प्रथम युग, सतयुग ।

**कृति** - स्त्री० [सं] करतूत ; काम ; रचना : प्रयत्न ; बीस की संख्या ; कटारी।

**कृती** - वि० [सं] कुशल, निपुण ; साधु, पुण्यात्मा ; प्रयत्नशील।

**कृत्य** - पु० [सं] कर्तव्य कर्म ; वेदविहित आवश्यक कार्य ।

**कृत्या** - स्त्री० [सं] तांत्रिक क्रिया ; अभिचार; दुष्टा या कर्कशा स्त्री ।

**कृत्रिम** - वि० [सं] नकली ।

**कृदंत** - पु० [सं] धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बना हुआ शब्द ; जैसे, 'भुक्त'।

**कृपण** - पु० [सं] कंजूस ; क्षुद्र ।

**कृपया** - क्रि० [स] कृपापूर्वक, मेहरबानी करके ।

**कृपा** - स्त्री० [सं] दया, अनुग्रह ।

**कृपाण** - पु० [सं] तलवार ; कटार ।

**कृपाणिका** - स्त्री० [स] कटारी ।

**कृपाणी** - स्त्री० [सं] स्वर्णपत्र काटने की कैची ; छोटी तलवार ।

**कृपापात्र** - वि० [सं] कृपा का अधिकारी ।

**कृपालु** - वि० [सं] कृपा करनेवाला ।

**कृमि** - पु० [सं] छोटा कीड़ा ।

**कृमिज** - 1. वि० [सं] कीड़ों से उत्पन्न ; 2. पु० रेशम ; अगर ; किरमिज़ी ।

**कृमिरोग** - पु० [सं] आमाशय और पक्काशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग ।

**कृमिल** - वि० [सं] कीड़ों से युक्त ।

**कृश** - वि० [सं] दुबला ; छोटा ।

**कृशता** - स्त्री० [सं] क्षीणता, दुर्बलता ।

**कृशांगी** - वि० [सं] दुबली-पतली (स्त्री) ।

**कृशानु** - पु० [सं] अग्नि ।

**कृषक** - पु० [सं] किसान, खेतिहर ।

**कृषि** - स्त्री० [सं] खेतीबारी, ज़राअत ।

**कृषीवल** - पु० [सं] किसान, कृषक।

**कृष्ण** - 1. वि० [सं] श्याम, काला ; 2. पु० यदुवंशी वासुदेव जो विष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं ।

**कृष्णपक्ष** - पु० [सं] अंधेरा पाख ; महीने के वे पंद्रह दिन जो पूर्णिमा के बाद अमावस तक होते हैं और जिनमें चांदनी घटती ही जाती है ।

**कृष्णमंडल** - पु० [सं] आँख की पुतली के आसपास का गोलाकार काला भाग ।

**कृष्णा** - स्त्री० [सं] द्रौपदी , आंध्र देश की एक नदी ; दुर्गा , श्यामा तुलसी ।

**कृष्णाजिन** - पु० [स] काले मृग का चर्म ।

**कृष्णार्पण** - पु० [स] फल की इच्छा छोड़कर कर्म करना ; दान ।

**केंकें** - स्त्री० [अनु] चिड़ियों की कष्टसूचक आवाज़; झगड़ा या असंतोषसूचक शब्द ।

**केंचली, केंचुरी, केंचुल, केंचुली** - स्त्री० [हिं] सर्प के शरीर का झिल्लीदार चमड़ा जो प्रति मास गिर जाता है ; **मु०** केंचुल बदलना - साँप का केंचुल छोड़ना ; कायाकल्प करना ; रंग-ढंग बदलना ।

**केंचुआ** - पु० [हि] एक बरसाती कीड़ा, गेंसा ; अलसिया ; मल के साथ निकलनेवाला एक सफ़ेद कीड़ा ।

**केंद्र** - पु० [सं] मध्यबिंदु ; प्रधान स्थान ।

**केंद्री** - वि० [सं] केंद्र में स्थित ।

**केंद्रीभूत** - पु० [सं] एकत्रित, सकीर्ण ।

**केडर** - पु० [हिं] बाँह का एक भूषण, केयूर, बाजूबंद ।

**केकड़ा** - पु० [हिं] आठ टांगो और दो पंजों वाला एक जल-जंतु ; कर्क ।

**केका** - स्त्री० [सं] मोर की बोली ।

**केकि, केकी** - पु० [सं] मोर, मयूर ।

**केड़ा** - पु० [देश] कोपल, अंकुर ; नवयुवक ।

**केत** - पु० [सं] घर ; ध्वजा ; केतकी ; जगह ।

**केतक** - 1. पु० [सं] केवड़ा ; 2. वि० [हिं] कितने ; बहुत ।

**केतकी** - स्त्री० [सं] केवड़े का फूल या पौधा ।

**केतन** - पु० [सं] ध्वजा ; चिन्ह ; घर ; स्थान ; निमंत्रण ; यौ० मकरकेतन या मीनकेतन - कामदेव, मन्मथ ।

**केतिक** - वि० [हिं] कितने ।

**केतु** - पु० [सं] एक ग्रह ; ध्वजा, निशान ; धूमकेतु ; प्रकाश ; ज्ञान ।

**केते** }
**केतो** } - वि० [हिं] कितने ।

**केदार** - पु० [सं] धान बोने या रोपने का खेत ; वृक्ष के नीचे का थाला ; शिव ; एक रागविशेष ।

**केना** - पु० [देश] छोटा-मोटा सौदा ; अनाज से खरीदी शाक-भाजी आदि वस्तुएँ ।

**केयूर** - पु० [सं] भुजबंद, बाँह में पहनने का विजायठ ।

**केरा** - 1. प्रत्य० [ब्र] का ; जैसे, 'पानी केरा बुलबुला' ; 2. पु० केला ।

**केराना** - पु० [देश] मसाला, मेवा आदि ; किराना ।

**केराव** † - पु० [हिं] मटर के सदृश एक अन्न ।

**केरी** - 1. स्त्री० [हिं] अंबिया, छोटा कच्चा आम ; 2. प्रत्य० [ब्र] की ।

**केला, केरा** - पु० [हि] एक प्रसिद्ध वृक्ष तथा उसका फल, कदली ।

**केलि, केली** - स्त्री० [सं] क्रीड़ा, खेल ; रति, हँसी-दिल्लगी ।

**केलिकला** - स्त्री० [सं] रति ; सरस्वती की वीणा ।

**केलिगृह** - पु० [सं] विहारस्थान, रंगशाला ।

**केवट** - पु० [हि] मल्लाह, मछुआ, धीवर ।

**केवड़ा** - पु० [हिं] केतकी, एक कंटीला पौधा जिसके पत्ते लंबे और आरे के समान दोनो तरफ़ कांटो युक्त होते हैं और जिसका फूल पीला या सफ़ेद तथा लंबा होता है । यह पौधा अकसर नदी के किनारो पर होता है ; इसके फूल से बढ़िया इत्र निकाला जाता है ।

**केवल** - 1. वि० [स] एकमात्र, अकेला ; शुद्ध ; श्रेष्ठ ; 2. अव्य० सिर्फ़, मात्र ।

**केवली** - पु० [सं] केवल ज्ञानी, मुक्ति का अधिकारी, योगी ।

**केवांच** - स्त्री० [हिं] सेम की-सी एक फली जिसकी तरकारी बनती है ; कौंच ।

**केश** - पु० [सं] किरण ; वरुण ; विष्णु ; सिर के बाल ; सिंह या घोड़े की गरदन पर के बाल ।

**केशकलाप** - पु० [सं] चोटी, जूड़ा ।

**केशपाश** - पु० [सं] बालो की लट ।

**केशर** - पु० [हि] केसर ; अयाल ।

**केशव** - 1. पु० [सं] विष्णु ; 2. वि० सुंदर केशोवाला ।

**केशविन्यास** - पु० [सं] बालों का संवारना ।

**केशांत** - पु० [सं] मुंडन ; गोदान कर्म ।

**केशाकेशि** - स्त्री० [सं] दो आदमियो का एक दूसरे के बाल पकड़कर खींचना और झगड़ना ।

**केशी** - 1. पु० [सं] सिंह ; घोड़ा ; कृष्ण ; 2. स्त्री० चोटी ; दुर्गा ।

**केस** - पु० [अंग्रे] मामला ; मुकद्दमा ; बक्स; ख़ाना ; [हिं] केश, बाल ।

**केसर** - पु० [सं] एक सुगंधित वस्तु ; जाफ़रान ; फूल के मध्य के रेशे ; मौलसिरी ; पुन्नाग, नागकेसर ; सिंह और घोड़े की गर्दन के बाल ; अयाल ; सोना ।

**केसरी** - 1. पु० [सं] सिंह ; घोड़ा ; नागकेसर ; 2. वि० सिंह जैसा पराक्रमी ।

**केहा** - पु० [देश] मोर ; तीतर जैसा एक पक्षी ।

**केहरि, केहरी** † - पु० [हिं] सिंह ; घोड़ा ।

**केहि** † - सर्व० [अव] किसे, किसको ।

**केहुँ** † - क्रि० [अव] किसी प्रकार, किसी भाँति ।

**कैंकर्य** - पु० [सं] सेवा-टहल।

**कैंचा** - 1. वि० [हिं] ऐंचाताना ; 2. पु० बड़ी कैंची ; [देश] पैसा ।

**कैंची** - स्त्री० [तु] कतरनी ।

**कैंड़ा** - पु० [हिं] माप ; ढाँचा ; पैमाना ; चतुराई ।

**कै** - 1. वि० [हिं] कितने ; 2. अव्य० या, अथवा ।

**क़ै** - स्त्री० [अ] उलटी, वमन ।

**कैत** - 1. पु० [हिं] कैथा ; 2. स्त्री० तरफ़, ओर ।

**कैतव** - 1. पु० [सं] धोखा ; जुआ ; वैडूर्य मणि; 2. वि० धोखेबाज़ ; धूर्त ; जुआरी।

**क़ैतून** - स्त्री० [अ] एक प्रकार का फीता जो जरी और रेशम के धागे से बुना जाता है और कपड़ों में किनारे-किनारे लगाया जाता है ।

**कैथ, कैथा** - पु० [हि] खटमिट्ठे फलोवाला बेल की जाति का कंटीला पेड़, कपित्थ ।

**कैथी** - स्त्री० [हिं] शीर्परेखारहित नागरी लिपि का एक भेद ; मुड़िया लिपि ।

**क़ैद** - स्त्री० [अ] बंधन ; कारावास ; मु० — करना - जेल में बंद करना ; — काटना - क़ैद में दिन बिताना ; —ख़ाना - कारागार, जेल ; —तनहाई - कालकोठरी की सज़ा ; —महज़ - सादी क़ैद ;— सख़्त - कड़ी क़ैद ।

**कैदार** - 1. वि० [सं] उपजा हुआ ; 2. पु० धान ; खेतों का समूह ।

**क़ैदी** - पु० [अ] बंदी ।

**कैधों** † - अव्य [हिं] या, वा, अथवा ।

**कैफ़** - पु० [अ] नशा ; आनन्द ।

**कैफ़ियत** - स्त्री० [अ] समाचार, हाल; वर्णन; मु० — तलब करना - नियमानुसार विवरण या कारण पूछना ।

**कैफ़ी** - वि० [अ] मतवाला, मदभरा ।

**कैर** - पु० [सं] करील ।

**कैरव** - पु० [सं] कुमुद; श्वेत कमल ; कुँई ; शत्रु ; जुआरी ।

**कैरवी** - स्त्री० [सं] चाँदनी ; चाँदनी रात ; चंद्रमा ।

**कैरा** - 1. पु० [हिं] भूरा रंग ; भूरे रंग का बैल ; 2. वि० भूरा, कंजा ।

**कैलासवास** - पु० [सं] मृत्यु ।

**कैवर्त** - पु० [सं] केवट, मल्लाह ।

**कैवल्य** - पु० [सं] मोक्ष, निर्वाण ; शुद्धता ; एक उपनिषद ।

**कैशिक** - 1. स्त्री० [सं] बालों की लट ; 2. वि० बड़े केशोंवाला ; केशसंबंधी ; 3. पु० प्रणय ; श्रृंगार रस ।

**कैशिकी** - स्त्री० [स] नाटक की एक वृत्ति जिसमें नृत्य, गीत, श्रृंगार तथा भोगविलास आदि का अधिक वर्णन होता है।

**क़ैसर** - पु० [अ] सम्राट, बादशाह ; सम्राटों की उपाधि ।

**कैसा** - वि० [हिं] किस प्रकार का, किस रूप या गुण का ।

**कैसे** - क्रि० [हिं] किस प्रकार से; क्यो; किसलिए।

**कोंचना** - स० [हि] चुभाना, गोदना, गड़ाना।

**कोंचा** - पु० [हि] बहेलियो की चिड़िया फँसाने की लासा लगी हुई छड़ ।

**कोंछ** - पु० [हि] आँचल का एक भाग ।

**कोंछना** - स० [हिं] आँचल के छोरो को चुनकर कमर में पीछे की ओर खोसना।

**कोंढ़ा** - पु० [देश] किसी वस्तु को अटकाने के लिए धातु का बनाया हुआ छल्ला या कड़ा ; लोहे का कुंदा ।

**कोंथ** - पु० [देश] चाक पर से उतारा हुआ कच्चा घड़ा ।

**कोंप** - स्त्री० [हि] कोपल ।

**कोंपर** - पु० [हिं] डाल का पका आम ।

**कोंपल** - स्त्री० [हिं] नयी और मुलायम पत्ती, अंकुर, किशलय ।

**कोंहड़ा** - पु० [देश] कूष्मांड ।

**को** - 1. [हिं] सर्व० कौन; 2. प्रत्य० कर्म और संप्रदान कारक ।

**कोआ** - पु० [हिं] रेशम के कीड़े का घर; आँख का कोना ; टसर नामक रेशम का कीड़ा; महुए का पका फल; पके कटहल का गूदेदार बीज-कोष ।

**कोइरी** - पु० [हिं] साग तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति, काछी; कहीं-कही कपड़ा बुननेवाली जाति ; चमार जाति की एक शाखा ।

**कोइली** - स्त्री० [हिं] आम की गुठली; कच्चे आम पर पड़ा हुआ काला दाग़।

**कोई** - 1. सर्व० [हिं] अज्ञात मनुष्य या वस्तु; 2. क्रि० लगभग, क़रीब **मु०** — न कोई - एक नही तो दूसरा, बहुतो में से चाहे जो एक ।

**कोउक** - सर्व० [हिं] कोई एक; कतिपय, कुछ ।

**कोक** - [सं] चकवा, चक्रवाक; मेंढ़क; कोक-शास्त्र के रचयिता; भेड़िया; छिपकली ।

**कोकई** - वि० [तु] गुलाबी की झलकवाला नीला रंग ।

**कोकनद** - पु० [सं] लाल कमल या कुमुद, सोना ।

**कोका** - पु० [तु०] धाय की संतान; दूध-भाई या दूध-बहन, एक ही दाई या माँ का दूध पीनेवाले बच्चे ।

**कोकिल** - स्त्री० [सं] कोयल, नीलम की एक छाया ।

**कोकी** - स्त्री० [स] चक्रवाकी, चकई ।

**कोख** - स्त्री० [हि] उदर; पेट की दोनो बगलो का स्थान, गर्भाशय; **मु०** — उजड़ जाना - संतान मर जाना, गर्भ गिर जाना, — बंद होना - वंध्या होना; **यौ०** — जली - जिसकी सतान जीवित न रहे ।

**कोच** - पु० [अंग्रे] एक चौपहिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी; गद्देदार पलंग, बेंच या कुरसी; **यौ०** — वान - घोड़ा-गाड़ी हांकनेवाला ।

**कोचक** - वि० [फ़ा०] छोटा ।

**कोचा** - पु० [हिं] तलवार या कटार आदि का हलका घाव ; लगती हुई बात या ताना।

**कोजागर** - पु० [स] आश्विन मास की पूर्णिमा ; शरद पूनो ।

**कोट** - 1. पु० [स] दुर्ग, क़िला ; समूह; 2. [अंग्रे] एक पहनावा ।

**कोटर** - पु० [सं] पेड़ का खोखला भाग ; दुर्ग के आसपास रक्षा के लिए लगाया गया कृत्रिम वन ।

**कोटवी** - स्त्री० [सं] वस्त्ररहिता स्त्री ।

**कोटि** - 1. स्त्री० [सं] धनुष का सिरा ; अस्त्र की नोक या धार ; श्रेणी ; वादविवाद का पूर्वपक्ष ; समूह ; करोड़ की संख्या ; 2. वि० सौ लाख, करोड़ ।

**कोटिक** - वि० [सं] करोड़; अगणित ।

**कोटिशः** - क्रि० [सं] करोड़ों बार, अनेक प्रकार से ।

**कोटीश, कोटीश्वर** - वि० [स] करोड़पति, बहुत अधिक धनवान ।

**कोठरी** - स्त्री० [हिं] छोटा कमरा ।

**कोठा** - पु० [हिं] बड़ी कोठरी , मकान की छत के ऊपर का कमरा ; अटारी ; पेट या पक्वाशय ; **मु०** —चल जाना - चित्त-भ्रम होना, पागल होना , —बिगड़ना - बदहज़मी होना ; अपच से दस्त आना , —साफ़ होना - साफ़ दस्त होना ; अंतः-करण साफ़ होना ।

**कोठार** - पु० [हिं] भंडार ।

**कोठारी** - पु० [हिं] भंडार का अधिकारी, भंडारी ।

**कोठी** - स्त्री० [हिं] बड़ा तथा पक्का मकान ; लेन-देन की बड़ी दुकान ; बखार ।

**कोठीवाल, कोठीवाला** - पु० [हिं] बड़ा व्यापारी, साहूकार ।

**कोड़ना** - स० [हिं] खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलटना, गोड़ना ; खोदना ।

**कोड़ा** - पु० [हिं] चाबुक ; चेतावनी ।

**कोड़ी** - स्त्री० [हिं] बीस का समूह ।

**कोढ़** - पु० [हिं] रक्त और त्वचासंबंधी एक भयंकर संक्रामक रोग ; **मु०**—चूना - कोढ़ से अंगो का गलकर गिरना ; —में खाज - दुःख पर दुःख ।

**कोण** - पु० [स] दो दिशाओ के बीच की दिशा, विदिशा, कोना ; सोलह रत्ती वज़न की तौल ।

**कोत** - स्त्री० [अ] शक्ति ; दिशा ।

**कोतल** - पु० [फ़ा] सजाया हुआ घोड़ा जिसपर कोई सवार न हो ।

**कोतवाल** - पु० [हिं] नगर-संरक्षक पुलिस अफ़सर ।

**कोतवाली** - स्त्री० [हिं] कोतवाल का कार्यालय या उसका काम ।

**कोता, कोताह** - वि० [फ़ा] छोटा, कम, अल्प ; तंग ; **यौ०** क़िस्सा कोताह - संक्षेप में ; साराश यह कि ।

**कोताही** - स्त्री० [फ़ा] त्रुटि, कमी ।

**कोथला** - पु० [हिं] बड़ा थैला ; पेट ।

**कोथली** - स्त्री० [हिं] कमर में बांधने की रुपये पैसे की लंबी थैली ; थैली ; बसनी ।

**कोदंड** - पु० [सं] धनुष ; भौंह ।

**कोद, कोध** † - स्त्री० [हि] दिशा ; कोना ।

**कोदव, कोदो** - पु० [हिं] एक प्रकार का मोटा अनाज ; ख़राब अन्न ; **मु०** कोदो देकर पढ़ना - अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना ; कोदो दलना - किसीको जलाने या कुढ़ाने के लिए उसे दिखलाकर कोई काम करना ।

**कोन, कोना** - पु० [हि] नुकीला सिरा ; अंतराल ; एकांत और छिपा हुआ स्थान ; **मु०** कोना झांकना - भय या लज्जा से जी चुराना ।

**कोप** - पु० [सं] क्रोध, रिस, ग़ुस्सा ।

**कोपना** - अ० [हिं] क्रोध करना, नाराज़ होना ।

**कोपभवन** - पु० [सं] रूठकर बैठने का स्थान ।

**कोपीन** - पु० [सं] लंगोटी ; काछा ।

**कोफ़्त** - स्त्री० [फ़ा] कष्ट, दुख ।

**कोफ़्ता** - पु० [फ़ा] कूटा हुआ मांस, क़ीमा ; कूटे हुए मास का बना हुआ कबाब।

**कोब** - पु० [फ़ा] मारना, पीटना।

**कोबर** - पु० [हिं] डाल का पका आम; टपका।

**कोबा** - पु० [फ़ा] काठ की मोगरी जिससे कोई चीज़ कूटते या पीटते हैं; **यौ०** —कारी - मोगरी से कूटने की क्रिया।

**कोबी** - स्त्री० [देश] गोभी।

**कोमल** - वि० [सं] नाज़ुक; सुंदर; मृदुल; मनोहर, स्वर का एक भेद।

**कोय** † - सर्व० [अव] कोई।

**कोयल** - स्त्री० [हिं] मीठी बोली बोलनेवाली एक काली चिड़िया।

**कोयला** - पु० [हिं] बुझा हुआ अंगारा।

**कोया** - पु० [हिं] आँख का डोला या कोना, रेशम के कीड़े का घर; पके कटहल का बीज-कोश।

**कोरंगी** - स्त्री० [देश] छोटी इलायची।

**कोर** - 1. पु० [हिं] शरीर की वह सधि जिसपर अंग मोड़ा जा सके; 2. स्त्री० कली; किनारा, सिरा; कोना; कपड़े आदि का छोर या किनार; द्वेष; पंक्ति; हथियार की धार; 3. वि० [फा] अंधा; **यौ०** — कसर - त्रुटि; **मु०** —दबना - किसी प्रकार के दबाव या वश में होना; — नमक - कृतघ्न, नमक-हराम; —बातिन - मूर्ख, बेवक़ूफ़।

**क़ोर** - स्त्री० [अ] हथियार, अस्त्र।

**कोरक** - पु० [सं] कली; मृणाल।

**क़ोरची** - पु० [अ] अस्त्रागार का अधिकारी।

**कोरना** - स० [हिं] पत्थर या काठ पर खुदाई करना।

**कोरनी** - स्त्री० [हिं] पत्थर पर खुदाई का काम, संगतराशी।

**कोरनिश** - स्त्री० [तु] झुककर सलाम या बंदगी करना।

**क़ोरमा** - पु० [तु] भुना हुआ मसालेदार मास।

**कोरा** - वि० [हिं] जो बरता न गया हो, नया, अछूता; जो धुला नही हो; **मु०** —जवाब - साफ़ इनकार, स्पष्ट शब्दो में अस्वीकार; —घड़ा - जिसपर कुछ भी प्रभाव न पड़ता हो।

**कोरिया** - पु० [हिं] एक निम्न जाति।

**कोरी** - पु० [हिं] हिंदू जुलाहा।

**कोल** - पु० [स] सूअर, एक जंगली जाति, गोद; बेर का वृक्ष, एक तोले की तौल; कोठे की उन दो दीवारो के बीच का अन्तर जिनपर शहतीर रखे जाते हैं।

**कोलना** - स० [हिं] लकड़ी या पत्थर को बीच से काटकर पोला करना।

**कोलाहल** - पु० [स] शोरगुल, कुहराम।

**कोलिया** - स्त्री० [हिं] संकरी गली; वह खेत जो कम चौड़ा हो मगर बहुत लंबा हो।

**कोलियाना** - 1. अ० [हिं] तंग रास्ते से गुज़रना; 2. पु० कोरियो के रहने का स्थान।

**कोली** - 1. स्त्री० [हिं] गोद; संकरी गली; 2. पु० कोरी।

**कोल्हाड़** - पु० [हिं] ईख पेरने और गुड़ बनाने का स्थान।

**कोल्हू** - पु० [हिं] तेल या रस निकालने की चरखी; **मु०** —का बैल - अति कठिन श्रम करनेवाला; नासमझ, अंधा; —में डालकर पेरना - बहुत कष्ट देना।

**कोविद** - वि० [सं] पंडित, विद्वान।

**कोविदार** - पु० [सं] कचनार का वृक्ष या फूल।

**कोश** } **कोष** } - पु० [स] म्यान; शब्दसंग्रह; अंडा; सोना-चाँदी; डिब्बा; कली; गुठली; ख़ज़ाना; रेशम का कोया; वेदात में बताये हुए जीवात्मा के पाँच आवरण।

**कोशकार** - पु० [सं] म्यान बनानेवाला; शब्द-संग्रहकर्ता; रेशम का कीड़ा।

**कोशपाल** - पु० [सं] ख़ज़ाने का रक्षक।

**कोशल** - पु० [सं] अयोध्या ; एक प्राचीन राज्य जिसकी राजधानी अयोध्या थी ।

**कोशागार** - पु० [सं] ख़ज़ाना ; तोशाख़ाना।

**कोशिश** - स्त्री० [फ़ा] प्रयत्न, उपाय ।

**कोशी, कोषी** - स्त्री० [स] कली ; अनाज का नुकीला भाग ।

**कोषाध्यक्ष** - पु० [सं] ख़ज़ानची ; भंडारी ।

**कोष्ठ** - पु० [सं] उदर का मध्यभाग ; कोठा; गोदाम ; चहारदीवारी, शहरपनाह ।

**कोष्ठक** - पु० [स] खाना , कोठा ; खानों या घरोंवाला चक्र ; लिखने में एक प्रकार के चिन्हों का जोड़ा जिसके अंदर कुछ शब्द, वाक्य या अंक लिखे जाते हैं ; जैसे, '[ ] ( )' आदि ।

**कोष्ठबद्ध** - पु० [सं] पेट में मल का रुकना, क़ब्ज़ियत ।

**कोस** - पु० [हिं] दो मील की दूरी ; [फ़ा] बड़ा नगाड़ा ।

**कोसना** - स० [हिं] गाली देना ; शाप देना, अनिष्ट चिंतन करके कहना ; **मु०** पानी पी-पीकर कोसना - बहुत अधिक शाप देना ।

**कोसा** - पु० [हिं] एक प्रकार का रेशम ।

**कोसाकाटी** - स्त्री० [हिं] शाप के रूप में गाली देना, बददुआ ।

**कोहँड़ा** - पु० [हि] कुम्हड़ा ।

**कोहँड़ौरी** - स्त्री० [हि] पीठी और कुम्हड़े की बरी ।

**कोह** - पु० [हि] क्रोध ; [फ़ा] पहाड़, पर्वत ।

**कोह-आतिश** - पु० [फ़ा] ज्वालामुखी पर्वत ।

**कोहकन** - पु० [फ़ा] पहाड़ खोदनेवाला ; फ़रहाद का उपनाम जिसने शीरीं के प्रेम में बेसतून नामक पहाड़ को खोदकर एक नहर बनायी थी ।

**कोहन**, **कोहना** } वि० [फा] पुराना ।

**कोहनी** - स्त्री० [हिं] बाँह के नीचे की गाँठ ।

**कोहनूर** - पु० [फ़ा] प्रकाश का पर्वत ; एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा हीरा ।

**कोहबर** - पु० [हिं] विवाह के समय कुल-देवता की पूजा करने के लिए निश्चित स्थान ।

**कोहराम** - पु० [उ] कुहराम, रोना-पीटना ; हलचल ।

**कोहान** - पु० [फ़ा] ऊँट की पीठ पर का कूबड़ ।

**कोहाना** † - अ० [हि] रूठना, मान करना ; क्रोध करना ।

**कोहिस्तान** - पु० [फ़ा] पहाड़ी प्रदेश ; पर्वतमाला ; ईरान-ईराक़ ।

**कोही** - 1. वि० [हिं] क्रोधी ; [फ़ा] पहाड़ी ; 2. स्त्री० बाज की मादा ।

**कौंचा** - पु० [हिं] ऊख का ऊपरी भाग जो नीरस होता है ; अगौली ।

**कौंतेय** - पु० [सं] युधिष्ठिर आदि कुंती के पुत्र ।

**कौंध, कौंधा** - स्त्री० [हि] प्रकाश, दीप्ति ; बिजली की चमक ।

**कौंधना** - अ० [हिं] बिजली का चमकना ।

**कौआ, कौवा** - पु० [हि] काक पक्षी ।

**कौआना** † - अ० [देश] चकबकाना, भौचक्का होना ; सहसा स्वप्न में कुछ बड़बड़ाना ।

**कौटिल्य** - पु० [सं] कुटिलता ; चाणक्य का एक नाम ।

**कौटुंबिक** - वि० [सं] कुटुंब का, परिवार-संबंधी ।

**कौड़ा** - पु० [हिं] बड़ी कौड़ी ; जाड़े में तपने के लिए जलायी हुई आग, अलाव ।

**कौड़ियाला** - 1. वि० [हि] कौड़ी के रंग का ; 2. पु० एक विषैला साँप ; कजूस धनी ; एक पक्षी ।

**कौड़ियाही** - स्त्री० [हिं] कुछ कौड़ियो की मज़दूरी।

**कौड़िल्ला** - पु० [हि] मछली खानेवाला एक जल-पक्षी ।

**कौड़ी** - स्त्री० [हिं] समुद्र का एक कीड़ा तथा उसका अस्थिकोश ; **मु०**— का नहीं - निकम्मा, निकृष्ट , —कौड़ी चुकाना - पाई-पाई चुकाना, सब ऋण चुकाकर बेबाक़ करना ; —कौड़ी जोड़ना - बहुत थोड़ा-थोड़ा करके कष्ट से धन इकट्ठा करना ; —के तीन - बहुत सस्ता, जिसे कोई न पूछे ; —को न पूछना - बहुत निकम्मा समझना ; —को मुहताज - बहुत ग़रीब ।

**कौणप** - 1. पु० [सं] मुर्दा खानेवाला ; राक्षस ; 2. वि० पापी ; अधर्मी ।

**कौतुक** - पु० [सं] आश्चर्य , खेल-तमाशा , **यौ०** —विधि - विवाह में कंकण बांधने की विधि ।

**कौतुकिया** - वि० [हि] खेल तमाशा करनेवाला ; विवाह-संबंध तय करनेवाले पुरोहित आदि ।

**कौतूहल** - पु० [हि] आश्चर्य ; कुतूहल ।

**कौदन** - 1. पु० [अ] दुर्बल घोड़ा ; 2. वि० मंदबुद्धि ; मूर्ख ।

**कौन** - 1. सर्व० [हि] एक प्रश्नवाचक सर्वनाम ; 2. वि० किस प्रकार का ; 3. पु० [अ] सत्य, अस्तित्व ; प्रकृति ; विश्व ।

**कौपीन** - पु० [सं] लंगोटी ; कफ़नी ; काछा ।

**क़ौम** - स्त्री० [अ] जाति ; वंश ; नस्ल ; राष्ट्र ; **यौ०** —परस्त - राष्ट्रवादी ।

**कौमार** - पु० [सं] कुमारावस्था, किसीकी 5 से 16 वर्ष तक की अवस्था ; **यौ०** —भृत्य - बच्चों का पालन-पोषण , आयुर्वेद का बाल-वैद्यक भाग ; —व्रत - आजन्म अविवाहित रहने का व्रत ।

**कौमारी** - स्त्री० [सं] सात मातृकाओ में से एक ; पार्वती ।

**क़ौमियत** - स्त्री० [अ] जातीयता ; राष्ट्रीयता।

**क़ौमी** - वि० [अ] जातीय ; राष्ट्रीय ।

**कौमुदी** - स्त्री० [सं] चाँदनी ; कुमुदिनी ; दीपोत्सव की तिथि ; कार्तिकी पूर्णिमा को होनेवाला उत्सव ।

**कौमोदकी, कौमोदी** - स्त्री० [सं] विष्णु की गदा ।

**कौर** - पु० [हि] ग्रास, निवाला ; **मु०** मुँह का कौर छीनना - देखते-देखते किसीका हक दबा बैठना, रोज़ी छुड़ाना ; मुँह का कौर होना - आसान या सरल होना ; काल का कौर होना - मर जाना ।

**कौरना** - स० [हिं] सेकना ; थोड़ा भूनना ।

**कौरव** - 1. पु० [स] कुरु वंशज, दुर्योधन आदि ; 2. वि० कुरुवंशियो से संबंध रखनेवाला ।

**कौरा** - पु० [हि] चौखट के पीछे की दीवार ; कुत्ते को दिया जानेवाला खाना ; **मु०** कौरे लगना - किसीकी बातचीत सुनने के लिए दरवाजे के पास छिपकर खड़ा रहना ; घात में बैठना ।

**कौरी** - स्त्री० [देश] गोद ; किवाड़ के पीछे की दीवार ; कौड़ी ।

**कौल** - 1. वि० [स] कुलीन, खानदानी ; 2. पु० वाममार्ग का अनुयायी; शाक्त ।

**क़ौल** - पु० [फ़ा] प्रतिज्ञा, वादा ; कथन ; यौ० —क़रार - परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा ; —व फ़ेल - कर्म व वचन ; मु०—का पक्का - वादा पूरा करनेवाला, बात का धनी ; —देना - वचन देना ।

**कौल्दुमा** - पु० [हि] कबूतर की एक जाति।

**कौलिक** - 1. वि० [सं] कुलपरंपरानुयायी ; 2. पु० शाक्त ; जुलाहा ; पाखंडी ।

**कौलीन** - वि० [सं] श्रेष्ठ, उत्तम ; शिष्ट ।

**कौ लौं** - अव्य० [ब्र] कब तक ।

**क़ौवाल** - पु० [अ] क़ौवाली गानेवाला ।

**क़ौवाली** - स्त्री० [अ] सूफ़ियों का भगवत्प्रेम-संबंधी गीत ; उसी ध्वनि की गज़ल ।

**कौशल** - पु० [सं] कुशलता ; मंगल ।

**कौशिक** - पु० [सं] इन्द्र ; शिव ; विश्वामित्र ; नेवला ; उल्लू ; कोशाध्यक्ष ; रेशमी वस्त्र ; श्रृंगार रस ; गुग्गुलु ।

**कौशिकी** - स्त्री० [सं] चंडिका ; एक रागिनी ; एक नदी ; दृश्य-काव्य की चार वृत्तियों में से एक ।

**कौशेय** - 1. वि० [सं] रेशमी ; 2. पु० रेशमी वस्त्र ।

**कौषीतकी** - स्त्री० [सं] ऋग्वेद की एक शाखा ; एक उपनिषद् ।

**क़ौस** - स्त्री० [अ] धनुष ।

**कौसर** - पु० [अ] स्वर्ग की एक कल्पित नहर ; बड़ा दानी ।

**कौस्तुभ** - पु० [स] विष्णु के वक्षःस्थल पर का एक पुराणोक्त मणि ।

**क्या** - सर्व० [हिं] प्रश्नवाचक सर्वनाम ; मु० —कहना है, —ख़ूब ; —बात है - प्रशंसासूचक वाक्य, धन्य, वाह-वाह, बहुत अच्छा है ; — कुछ - सब या बहुत कुछ ; —चीज़ या बात - नाचीज़ या तुच्छ ; — जाता है - क्या हानि होती है ?

**क्यारी** - स्त्री० [हि] खेतो के छोटे-छोटे खाने, कियारी ।

**क्यों** - अव्य० [हि] कैसे, किस प्रकार ।

**क्रंदन** - पु० [सं] रोना, विलाप ।

**क्रकच** - पु० [सं] आरा ; करील वृक्ष , एक नरक ।

**क्रतु** - पु० [सं] निश्चय ; संकल्प ; विवेक ; यज्ञ ।

**क्रतुध्वंसी** - पु० [सं] दक्ष-यज्ञ को नाश करनेवाला शिव ।

**क्रम** - पु० [सं] पैर रखने या डग भरने की क्रिया ; शैली ; सिलसिला ; यौ० —बद्ध - सिलसिलेवार ; —भंग - विधिहीनता ; एक प्रकार का दोष ; क्रमागत - परंपरा से आया हुआ ; क्रमानुसार - श्रेणी के अनुसार ; क्रम से, तरतीब से ; क्रमान्वित - एक के बाद एक के क्रम से ।

**क्रमशः** - क्रि० [सं] धीरे धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके ।

**क्रमांक** - पु० [सं] क्रम-संख्या ।

**क्रमागत** - वि० [सं] पीढ़ियो से या क्रम से चला आता हुआ ।

**क्रमिक** - वि० [सं] क्रमागत ।

**क्रमुक** - पु० [सं] सुपारी का पेड़, सुपारी ; नागरमोथा ।

**क्रमेल, क्रमेलक** - पु० [सं] ऊँट ।

**क्रय** - पु० [सं] मोल लेना, ख़रीदना ।

**क्रय-विक्रय** - पु० [सं] ख़रीदने और बेचने का काम ।

**क्रयी** - पु० [सं] मोल लेनेवाला ।

**क्रयणीय** - वि० [सं] ख़रीदने योग्य ।

**क्रय्य** - वि० [सं] जो बिक्री के लिए हो ।

**क्रव्य** - पु० [सं] कच्चा मांस ।

**क्रव्याद** - 1. वि० [सं] मांसभक्षी ; 2. पु० मांस खानेवाले जंतु ; राक्षस ।

**क्रांत** - वि० [सं] दबा या ढका हुआ; ग्रस्त; जिसपर आक्रमण हुआ हो; आगे बढ़ा हुआ, यौ०—दर्शी - अतींद्रिय विषयों को जाननेवाला।

**क्रांति** - स्त्री० [सं] भारी उलट-फेर; गति; क़दम रखना।

**क्रांतिकारी** - वि० [सं] क्रांति या परिवर्तन करनेवाला।

**क्रांतिमंडल** - पु० [सं] राशिचक्र, सूर्य का कल्पित पथ।

**क्रिमि** - पु० [सं] छोटा कीड़ा, कृमि।

**क्रिमिजा** - स्त्री० [सं] लाख।

**क्रियमाण** - वि० [सं] जो किया जा रहा हो।

**क्रिया** - स्त्री० [सं] वह शब्द जिससे किसी कार्य का होना या करना बताया जाय; कर्म; उपाय; यौ० —कर्म - अंत्येष्टि क्रिया; —फल - कर्म का परिणाम; —लोप - शास्त्र में बताये नित्य-नैमित्तिक कर्मों के करने में होनेवाली कमी; —शील - कर्मनिष्ठ; —शक्ति - ईश्वर की सृष्टिकारिणी शक्ति; —निष्ठ - नित्य कर्म को छोड़े बिना करनेवाला; —वान् - कर्म में नियुक्त।

**क्रियात्मक** - वि० [सं] कार्यरूप में होनेवाला।

**क्रियान्वित** - वि० [सं] क्रियायुक्त।

**क्रियाविशेषण** - पु० [सं] व्याकरण में वह शब्द जो किसी क्रिया की विशेषता को बताता हो।

**क्रीड़ा** - स्त्री० [सं] खेल, कल्लोल।

**क्रीत** - वि० [सं] ख़रीदा हुआ।

**क्रीतक** - पु० [सं] ख़रीदा हुआ पुत्र।

**क्रुद्ध** - वि० [सं] क्रोध से भरा, क्रोधित।

**क्रूर** - वि० [सं] निर्दय, दुष्ट; कर्कश, कठोर।

**क्रूरकर्मा** - वि० [स] क्रूर कर्म करनेवाला।

**क्रूरता** - स्त्री० [स] निष्ठुरता; कठोरता।

**क्रूरदंती** - स्त्री० [सं] दुर्गा।

**क्रेता** - वि० [स] ख़रीदनेवाला।

**क्रेय** - वि० [स] ख़रीदने योग्य।

**क्रोड़** - पु० [सं] वक्षस्थल; शूकर; गोद।

**क्रोड़पत्र** - पु० [स] किसी पुस्तक या समाचार-पत्र का पूर्ति-पत्र; परिशिष्ट।

**क्रोध** - पु० [सं] कोप, रोष, ग़ुस्सा।

**क्रोधांध** - वि० [सं] क्रोध से जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

**क्रोधातुर** - वि० [सं] अति क्रोधी।

**क्रोधी** - वि० [सं] क्रोध करनेवाला, ग़ुस्सावर।

**क्रोश** - पु० [सं] कोस, दो मील; रोना-चिल्लाना।

**क्रौंच** - पु० [सं] करांकुल पक्षी; सात महाद्वीपों में एक।

**क्रौर्य** - पु० [सं] क्रूरता।

**क्लम** - पु० [सं] थकावट।

**क्लांत** - वि० [सं] थका हुआ; श्रांत; क्षीणकाय, हतोत्साह; मुरझाया हुआ।

**क्लांति** - स्त्री० [सं] परिश्रम, थकावट।

**क्लिन्न** - वि० [सं] गीला; क्लेदयुक्त; मैला।

**क्लिश्यमान** - वि० [सं] पीड़ित।

**क्लिष्ट** - वि० [सं] कठिन; पूर्वापरविरुद्ध वाक्य।

**क्लीब** - पु० [सं] सत्व रजस और तमोगुणों के परिमाण में समानता; नपुंसक; कायर, डरपोक।

**क्लेद** - पु० [सं] आर्द्रता, गीलापन; पसीना।

**क्लेश** - पु० [सं] दुःख, वेदना; झगड़ा; भय।

**क्लैब्य** - पु० [सं] नामर्दी; कायरता।

**क्लोम** - पु० [स] दाहिनी ओर का फेफड़ा।

**क्वण** - पु० [सं] घुंघुरू या वीणा का शब्द।

**क्वणित** - वि० [सं] शब्द करता हुआ।
**क्वथित** - पु० [सं] पका हुआ काढ़ा।
**क्वाँरा** - वि० [हिं] अविवाहित।
**क्वाथ** - पु० [सं] औषधियों को पानी में उबालकर निकाला हुआ गाढ़ा रस।
**क्वार** - पु० [हिं] आश्वयुज का महीना।
**क्वारा** - वि० [हि] अविवाहित।
**क्षंतव्य** - वि० [सं] क्षमा करने योग्य।
**क्षण** - पु० [सं] समय का सबसे छोटा भाग; यौ० —मात्र - थोड़ी देरी, लहमा।
**क्षणद** - पु० [सं] जल; ज्योतिषी; रतौंधी।
**क्षणदा** - स्त्री० [सं] रात, निशा।
**क्षणदाकर** - पु० [सं] चंद्रमा।
**क्षणभंगुर** - वि० [सं] शीघ्र ही नष्ट होनेवाला; अनित्य।
**क्षणिक** - वि० [सं] क्षणभंगुर।
**क्षणिका** - स्त्री० [सं] बिजली।
**क्षत** - 1. वि० [सं] जिसे क्षति पहुँची हो; 2. पु० घाव या फोड़ा।
**क्षतयोनि** - स्त्री० [सं] वह स्त्री जिसका कौमार्य नष्ट हुआ हो।
**क्षतविक्षत** - वि० [सं] घायल, चोट खाया हुआ।
**क्षति** - स्त्री० [सं] हानि, नाश; यौ० —पूर्ति - घाटे का पूरा हो जाना, नुक़सान का मुआवज़ा।
**क्षत्र** - पु० [सं] छत्र; बल; राष्ट्र; क्षत्रिय; यौ० क्षत्रांतक - परशुराम।
**क्षपणक** - पु० [सं] दिगबर साधु; बौद्ध भिक्षु।
**क्षपा** - स्त्री० [सं] रात, निशा।
**क्षम** - 1. वि० [सं] सशक्त; योग्य; समर्थ; 2. पु० औचित्य; उपयुक्तता।
**क्षमता** - स्त्री० [सं] शक्ति, सामर्थ्य; योग्यता।
**क्षमा** - स्त्री० [सं] माफ़ी।
**क्षम्य** - वि० [सं] क्षमा करने योग्य।
**क्षय** - पु० [सं] नाश; एक बीमारी।
**क्षर** - 1. वि० [सं] नाशवान; 2. पु० जल; मेघ; शरीर।
**क्षरण** - पु० [सं] झरना; चूना; नाश होना; छूटना।
**क्षांत** - वि० [सं] क्षमाशील, सहनशील।
**क्षांति** - स्त्री० [सं] सहिष्णुता, क्षमा।
**क्षाम** - 1. वि० [सं] क्षीण, दुबला-पतला; 2. पु० [त. ते. क. म.] अकाल।
**क्षार** - पु० [स] खार; नमक; कांच; गुड़।
**क्षारपत्र** - पु० [स] बथुए का शाक।
**क्षारोद** - पु० [सं] लवण समुद्र।
**क्षालन** - पु० [सं] धोना, साफ़ करना।
**क्षिति** - स्त्री० [सं] पृथ्वी।
**क्षितिज** - पु० [सं] वह जगह जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दीखते हैं, आसमान का किनारा।
**क्षितिधर** - पु० [सं] पहाड़।
**क्षितिरुह** - पु० [सं] पेड़।
**क्षीण** - वि० [सं] दुबला-पतला; यौ० —काय - दुबला-पतला शरीरवाला।
**क्षीर** - पु० [सं] दूध।
**क्षीरज** - पु० [स] चन्द्रमा; कमल।
**क्षीरिणी** - स्त्री० [सं] खिरनी फल।
**क्षुण्ण** - पु० [सं] खंडित; दलित।
**क्षुत्** - स्त्री० [सं] भूख।
**क्षुद्र** - वि० [सं] अधम; तुच्छ; कृपण; दरिद्र; यौ० —घंटिका - घुंघुरू लगी करधनी।
**क्षुधा** - स्त्री० [सं] भूख।
**क्षुब्ध** - वि० [स] व्याकुल।
**क्षुल्लक** - 1. वि० [सं] नीच; तुच्छ; 2. पु० कौड़ी।
**क्षेत्र** - पु० [स] खेत; स्थान।
**क्षेत्रज** - वि० [स] खेत की उत्पत्ति।
**क्षेप** - पु० [सं] फेकना; ठोकर; त्याग।

**क्षेपक** - वि० [सं] ऊपर से मिलाया हुआ ; फेंकनेवाला ।
**क्षेम** - पु० [सं] सुरक्षा ; कुशल ।
**क्षोणि** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ।
**क्षोभ** - पु० [सं] व्याकुलता, विचलित होने का भाव ; घबराहट ।
**क्षौणि** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ।
**क्षौम** - पु० [सं] सन का बना हुआ कपड़ा ; अंड़ी ।
**क्षौर** - पु० [सं] हजामत, बाल बनवाना ।
**क्ष्मा** - स्त्री० [स] पृथ्वी ।

## ख

**खं** - पु० [सं] शून्य ; आकाश ; छिद्र ; निकलने का मार्ग ; इंद्रिय ; स्वर्ग ; सुख ; ब्रह्मा ; मोक्ष ।
**खंख, खंखी** - वि० [हि] छूछा, ऊजड़।
**खंग** - पु० [देश] तल्वार ; गैंडा ।
**खंगना** - अ० [देश] कम होना ; घट जाना ।
**खंगर** - 1. पु० [देश] अधिक पकने के कारण एक दूसरे से सटी हुई कई ईटो का चक ; 2. वि० रूखा-सूखा ।
**खंगहा** - 1. पु० [देश] गैंडा ; बाज़ ; 2. वि० दँतैल, निकले हुए दाँतवाला ।
**खंगारना**, **खंगालना** } स० [देश] पानी से यों ही साफ़ करना ; ख़ाली करना ।
**खंगी** - स्त्री० [देश] कमी, घटी ।
**खंगैल** - वि० [देश] बड़े दाँतवाला ।
**खंचना** - अ० [हिं] चिह्नित होना, निशान पड़ना ।
**खंचिया** - स्त्री० [हि] झाबा, टोकरी ।
**खंज** - 1. पु० [सं] पैर जकड़ जानेवाला रोग ; खंजन ; 2. वि० लँगड़ा ।
**खंजन** - पु० [सं] एक पक्षी ।
**खंजर** - पु० [अ] कटार ।
**खंजरी** - स्त्री० [हिं] बहुत छोटी डफ़ली।
**खंड** - 1. पु० [सं] भाग, देश ; वर्ष ; नौ की संख्या ; 2. वि० छोटा ।
**खंडन** - पु० [सं] नाश, तोड़ना ; किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करना ।
**खंडनी** - स्त्री० [सं] मालगुज़ारी की क़िस्त, कर ।
**खंडनीय** - वि० [सं] खंडन करने योग्य ।
**खंडप्रलय** - पु० [स] एक चतुर्युग के बाद आनेवाला प्रलय ।
**खंडर**, **खंडहर** } पु० [हि] टूटे-फूटे मकान या क़िला आदि के अवशिष्ट भाग ।
**खंडरना** - स० [हि] खंडित करना ।
**खंडरा** - पु० [हिं] बेसन का एक चौकोर बरा।
**खंडित** - वि० [सं] टूटा हुआ।
**खंडी** - स्त्री० [हिं] गल्ले का एक परिमाण ; कर, टैक्स ।
**खंडौरा** - पु० [हिं] मिश्री का लड्डू ।
**खंता** - पु० [स] फावड़ा ; वह गड्ढा जिसमें से कुम्हार मिट्टी निकाल लाते हैं ।
**खंदक** - स्त्री० [अ] शहर या क़िले के चारो ओर की खाई ; बड़ा गड्ढा ।
**खंदा** - पु० [हिं] खोदनेवाला ।
**खंदी** - स्त्री० [फ़ा] कुलटा ।
**खंधवाना** - स० [हिं] ख़ाली कराना ।
**खंधार** - पु० [हिं] छावनी ; डेरा, तंबू ।
**खंधियाना** - स० [हि] बाहर निकालना, ख़ाली करना ।
**खंभ, खंभा** - पु० [हिं] स्तंभ ; सहारा ; प्रधान ।
**खंभार** - पु० [हिं] अंदेशा ; घबराहट ; डर ; शोक ।
**खंसना** - अ० [देश] खसकना, गिरना ।
**ख** - पु० [सं] आकाश ; स्वर्ग ; गड्ढा, छेद ; गले की प्राणवायुवाली नली ; कुआँ ; घाव ; सुख ; बिंदु ; ब्रह्मा ; शून्य ; अभ्रक ; नगर ।

**खई** † - स्त्री० [हिं] क्षय ; लड़ाई ; झगड़ा ।
**खखा** - पु० [अ] ज़ोर की हँसी, अट्टहास ; अनुभवी पुरुष ।
**खखार** - पु० [अनु] गाढ़ा लसदार कफ़ ।
**खखारना** - स० [अनु] थूक बाहर निकालना ।
**खग** - पु० [सं] पक्षी ; गंधर्व ; बाण ; ग्रह ।
**खगना** - अ० [हिं] चुभना, धँसना, लग जाना ।
**खगोल** - पु० [सं] आकाशमंडल ; खगोल-विद्या ।
**खग्रास** - पु० [स] सूर्य और चंद्र के समस्त मंडल को ढँकनेवाला ग्रहण, पूर्ण ग्रहण ।
**खचना** - अ० [हिं] जड़ा जाना, अंकित होना, रम या अड़ जाना, फँसना ।
**खचरा** - वि० [हिं] दोगला, वर्णसंकर ; दुष्ट ।
**खचाखच** - क्रि० [अनु] बहुत भरा हुआ, ठसाठस ।
**खचाना** - स० [हिं] खींचना ; शीघ्र लिखना ; मु० अपनी खचाना - अपने ही पर ज़ोर देना ।
**खचित** - वि० - [सं] चिह्नित ; जड़ा हुआ ।
**खच्चर** - पु० [देश] गधे और घोड़े के मेल से पैदा हुआ एक जानवर ।
**ख़ज़ानची** - पु० [फ़ा] कोषाध्यक्ष ।
**ख़ज़ाना** - पु० [अ] कोश, भंडार ; राजस्व ; धनागार ।
**खजुरहट** - स्त्री० [हिं] खजूर का बग़ीचा ।
**खजुली** - स्त्री० [हिं] खाज, एक मिठाई ।
**खजूर** - पु० [हिं] ताड़ की जाति का एक पेड़ और उसका फल ; छुहारा ।
**खजूरा**, **खजोहरा** } पु० [हिं] गोजर, एक विषैला कीड़ा जिसके छूने से खुजली पैदा होती है ।
**खट** - 1. पु० [अनु] अंधकूप ; घूंसा ; हल ; छाजन के काम में आनेवाला एक तृण ; 2. स्त्री० दो कड़ी चीज़ों के टकराने या टूटने का शब्द, ठोकने-पीटने की आवाज़ ; खाट से संबंधित संक्षिप्त रूप, जैसे 'खटकीड़ा - खटमल ; खटपाटी - खाट की पाटी' आदि ; मु०—से - चट से, तुरंत, शीघ्र ।
**खटक** - स्त्री० [हिं] खटका, चिंता ।
**खटकना** - अ० [हिं] खलना ; आपस में झगड़ा होना ।
**खटका** - पु० [हिं] डर, आशंका, चिंता, पेच या कमान, सिटकनी ।
**खटखट** - स्त्री० [अनु] झंझट ; लड़ाई-झगड़ा ; खटपट ।
**खटखटा** - पु० [हिं] पक्षियों को भगाने के लिए पेड़ों में बांधा हुआ बांस ।
**खटखटाना** - स० [अनु] खड़खड़ाना ; टोकना, याद दिलाना ।
**खटना** - स० [हिं] धन कमाना, काम-धंधे में रात-दिन लगे रहना ।
**खटपट** - स्त्री० [अनु] अनबन ; लड़ाई ।
**खटपूरा** - पु० [हिं] ढेले तोड़ने की मोगरी ।
**खटबुना**, **खटबिनवा** } - पु० [हिं] चारपाई आदि बुननेवाला ।
**खटमल** - पु० [हिं] खाट या कुर्सियों में होनेवाला एक छोटा ख़ूनचूस कीड़ा ।
**खटमिट्ठा** - वि० [हिं] कुछ खट्टा और कुछ मीठा ।
**खटरस** - वि० [हिं] खट्टा, मीठा, कटु आदि छः रसों से युक्त ।
**खटराग** - पु० [हि] झंझट, बखेड़ा ; व्यर्थ की वस्तुएँ ।
**खटला** - पु० [देश] भार्या, पत्नी ; खाट ; शय्या ; परिवार ।
**खटाई** - स्त्री० [हिं] खट्टापन ; मु०—में डालना - गहनों को साफ़ करने के लिए इमली आदि खट्टे पदार्थों के रस में

डालना ; किसी काम को तय किये बिना बहुत दिन तक योंही रख छोड़ना ; —में पड़ना - द्विविधा में डाल रखना।

**खटाका** - पु० [हिं] 'खट' की आवाज़।

**खटाखट** - 1. अव्य [हि] खटखट की आवाज करते हुए ; तुरन्त ; 2. पु० खटखट की आवाज़।

**खटाना** - 1. अ० [हि] खटास पैदा होना ; खट्टा हो जाना ; परख में खरा उतरना ; 2. स० खूब कसकर काम लेना।

**खटाव** - पु० [हि] निर्वाह, गुज़र ; वह खूंटा जिसे गाड़कर नाव बांधते है।

**खटिया** - स्त्री० [हिं] छोटी चारपाई।

**खटीक** - पु० [हि] कसाई, शाकादि बोने तथा बेचनेवाली एक जाति।

**खटोला** - पु० [हि] छोटी चारपाई ; यौ० उडनखटोला - विमान।

**खट्टा** - वि० [हिं] अम्ल, तुर्श ; मु० जी खट्टा होना - अप्रसन्न होना, दिल फिर जाना ; — खाना - अप्रसन्न होना।

**खटवांग** - पु० [सं] शिव का एक अस्त्र ; प्रायश्चित्त के समय भिक्षा माँगने का पात्र ; तान्त्रिकों की एक मुद्रा।

**खड़** - पु० [हि] पयाल ; धान की पेड़ी।

**खड़खड़िया** - स्त्री० [हिं] पालकी ; पीनस।

**खड़ग** - पु० [हिं] तलवार।

**खड़गी** - वि० [हिं] तलवारधारी ; 2. पु० गैडा।

**खड़बडाना** - अ० [अनु] घबराना ; विचलित होना ; क्रमहीन होना ; बेतरतीब होना।

**खड़बीहड़** - वि० [हिं] ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़।

**खड़मंडल** - पु० [हिं] गड़बड़, घोटाला।

**खड़सान** - पु० [हिं] अस्त्र तेज़ करने का पत्थर, ख़रसान।

**खड़ा** - वि० [हिं] ऊपर को सीधा उठा हुआ ; स्थिर ; कच्चा ; मु० —खेत - वह खेत जिसमें फसल मौजूद हो ; —जवाब - कोरा उत्तर ; इनकार ; —होना - सहायता देना ; विरोध करना ; विरोध रोकना ; —करना - ढाँचा तैयार करना ; खड़े-खड़े - जल्दी में, तुरंत।

**खड़ाऊँ** - स्त्री० [हि] पादुका।

**खड़ाका** - पु० [अनु] खड़खड़ का शब्द।

**खड़िया** - स्त्री० [हिं] बोर्ड पर लिखने की खड़ी, चाकपीस ; मु० —में कोइला - बेमेल बात।

**खड़ी** - स्त्री० [हिं] खड़िया मिट्टी।

**खड़ी पाई** - स्त्री० [हिं] नागरी अक्षरों में पूर्ण विरामवाले चिन्ह की छोटी सीधी रेखा।

**खड़ी बोली** - स्त्री० [हि] दिल्ली, मेरठ के प्रदेश की वह बोली जो आधुनिक हिन्दी का रूप है।

**खड़ी मसकली** - स्त्री० [हि] सिकलीगरो का एक औज़ार जिससे खुरच-खुरचकर बरतन को जिला करते है।

**खड्ड** - पु० [स] गड्ढा।

**खत** - पु० [हिं] घाव ; ज़ख्म।

**ख़त** - पु० [अ] लिखावट ; चिट्ठी ; यौ०—ए शिकस्ता - फ़ारसी की घसीट और खराब लिखावट ; —ओ किताबत - पत्र-व्यवहार।

**खतकोट** - स्त्री० [हिं] घाव के ऊपर की सूखती हुई पपड़ी।

**ख़तना** - पु० [अ] मुसलमानो की एक रस्म जिससे लिंग के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है, सुन्नत।

**ख़तम** - वि० [अ] पूर्ण ; मु०—करना - मार डालना ; —होना - मर जाना।

**ख़तर**
**ख़तरा** } पु० [अ] डर ; आशंका।

**ख़तरनाक** - वि० [अ] भयानक।

**ख़ता** - स्त्री० [अ] क़सूर, ग़लती।

**ख़तावार** - वि० [फ़ा] दोषी, अपराधी।

**खति** - स्त्री० [हिं] क्षति, हानि, नुक़सान।

**खतियाना** - स० [हिं] रोज़ के जमाख़र्च को अलग-अलग मद में दर्ज करना ; खाते में चढ़ाना।

**खतियानी** - स्त्री० [हिं] खतियाने का काम; खाता ; हिसाब रखने की बही, पटवारियों का रजिस्टर।

**ख़तीब** - पु० [अ] मुसलमान धर्मोपदेशक।

**खत्ता** - पु० [हिं] गड्ढा ; अन्न रखने का बड़ा गहरा स्थान।

**खत्री** - पु० [हिं] एक जाति।

**ख़त्म** - वि० [अ] ख़तम, समाप्त।

**ख़दंग** - पु० [फ़ा] तीर।

**खदखदाना**
**खदबदाना** } अ० [अनु] खौलने के समय का शब्द, उबलने का शब्द।

**खदान** - स्त्री० [हिं] खान।

**खदिर** - पु० [सं] खैर का पेड़ ; कत्था ; चन्द्रमा ; इन्द्र।

**ख़दीव** - पु० [फ़ा] मिस्र के बादशाहों की उपाधि ; ख़ुदावन्द ; मालिक।

**खदेड़ना** - स० [हिं] पीछा करके भगाना ; दूर करना।

**खद्दर** - पु० [हिं] हाथ का बुना व कता कपड़ा, खादी।

**खद्योत** - पु० [सं] जुगनू।

**खन** - पु० [हिं] क्षण ; [अ] तुरंत, तत्काल ; खंड।

**खनक** - पु० [सं] खोदनेवाला ; चूहा ; खान।

**खनखजूरा** - पु० [हिं] कनखजूरा।

**खनखनाना** - अ० [अनु] रुपये आदि का बजना।

**ख़न्दा** - 1. पु० [फ़ा] हँसी ; 2. वि० हँसता हुआ ; यौ० —पेशानी - हँसमुख।

**ख़न्दी** - स्त्री० [फ़ा] कुलटा।

**ख़न्नास** - पु० [अ] भूत-प्रेत, शैतान।

**खनिज** - वि० [स] खान से खोदकर निकाला हुआ।

**खपची** - स्त्री० [हिं] बाँस की पतली तीली ; कबाब भूनने की सीखची ; कपची।

**खपड़ा** - पु० [हिं] छप्पर छाने का खपरैल ; खप्पर ; कछुए की पीठ का कड़ा ढक्कन ; टूटे हुए घड़े का भाग, ठीकरा।

**खपड़ी** - स्त्री० [देश] मिट्टी की हाँडी जो अनाज भूनने के काम में आती है।

**खपत**
**खपती** } स्त्री० [हिं] माल की कटती या बिक्री ; ख़र्च ; निबाह।

**खपना** - अ० [हिं] काम में आना ; ख़र्च होना ; बिकना।

**खपरैल** - स्त्री० [हिं] छप्पर छाने का खपड़ा।

**खपाना** - स० [हिं] किसी प्रकार व्यय करना ; मु० सिर खपाना - हैरान होना ; माथापच्ची करना।

**खपुर** - पु० [हिं] सुपारी या उसका पेड़; स्वर्ग।

**खपुष्प** - पु० [सं] आकाश-कुसुम।

**खप्पर** - पु० [हिं] भिक्षा-पात्र ; खोपड़ी।

**ख़फ़क़ान** - पु० [अ] दिल का धड़कना ; वहम।

**ख़फ़गी** - स्त्री० [फ़ा] नाराज़गी।

**ख़फ़ा** - वि० [अ] नाराज़।

**ख़फ़ीफ़** - वि० [अ] कम ; नीच ; लज्जित ; हलका ; साधारण।

**ख़फ़ीफ़ा, ख़फ़ीफ़ा अदालत** - स्त्री० [अ] छोटी रकमों के दावों को सुननेवाली अदालत, 'स्माल कास कोर्ट।'

**ख़बर** - स्त्री० [अ] समाचार ; मु० —लेना - सज़ा देना ; —उड़ाना - अफवाह फैलाना ; — करना - सूचना देना ।

**ख़बरगीर** - वि० [फ़ा] जासूस ; संरक्षक ।

**ख़बरदार** - वि० [फ़ा] होशियार ; सचेत ।

**ख़बर-रसाँ** - पु० [फ़ा] हरकारा ।

**ख़बीस** - पु० [अ] भूत-प्रेत , दुष्ट ; दानव ।

**ख़ब्त** - पु० [अ] पागलपन, सनक ।

**ख़ब्ती** - वि० [अ] सनकी ; पागल ।

**खभरना** - स० [हिं] मिलाना ; उथल-पुथल करना ; हलचल मचाना ।

**खभार, खभारू** - पु० [हिं] चिन्ता ; दुख ; परेशानी ; घबराहट ।

**ख़म** - 1. पु० [फ़ा] टेढ़ापन ; 2. वि० झुका, टेढ़ा ; मु० —ठोकना - लड़ने के लिए ताल ठोकना ।

**ख़मदार** - वि० [फ़ा] टेढ़ा ।

**खमा** - स्त्री० [हिं] क्षमा ।

**ख़मीदा** - वि० [फ़ा] टेढ़ा ।

**ख़मीर** - पु० [अ] गूंधे हुए या पिसे हुए आटे आदि को देर तक रखने से पैदा होनेवाली खटास ; मु० —बिगाड़ना - स्वभाव या व्यवहार में फ़रक पड़ना ।

**ख़मीरा** - पु० [अ] औषधो का गाढ़ा शरबत ; पीने का सुगंधित तंबाकू ।

**खय** - † पु० [हिं] क्षय ।

**ख़यानत** - स्त्री० [अ] धरोहर वापस न देना, ग़बन ; बेईमानी ।

**ख़याल** - पु० [अ] ध्यान ; मनोवृत्ति ; मु० —रखना - ध्यान रखना ; —से उतरना - भूल जाना ।

**ख़याली** - वि० [अ] कल्पित ; मु० — पुलाव पकाना - मन के लड्डू खाना ।

**ख़य्यात** - पु० [अ] दर्जी ।

**ख़य्याम** - पु० [अ] ख़ेमे बनानेवाला ।

**खर** - पु० [सं] गधा ; खच्चर ; एक राक्षस का नाम ।

**खरक** - पु० [हिं] बाड़ा, गोठ ; पशुओं के चरने का स्थान ; चरागाह ।

**खरका** - पु० [हिं] दाँत कुरेदने का तिनका या चाँदी की पतली लंबी तीली ।

**ख़रख़शा** - पु० [फ़ा] झगड़ा, बखेड़ा ; डर ।

**ख़रगाह** - स्त्री० [फ़ा] ख़ेमा ।

**ख़रगोश** - पु० [फ़ा] खरहा, शशक ।

**ख़रचना** - स० [फ़ा] ख़र्च करना ।

**खरतुआ** - पु० [देश] बथुए की तरह की एक घास जो कि गेहूँ के खेत में स्वतः ही पैदा होती है ; मु० गेहूँ के संग खरतुए को भी पानी लगना - बड़ो के साथ छोटो को भी कुछ मिल जाना ।

**खरतूम** - पु० [अ] हाथी की सूंड़ ।

**खरदा** - पु० [हिं] अंगूर की लता में लगनेवाला एक रोग जिससे लता का बढ़ना बंद हो जाता है और उसपर लाल रंग की बुकनी बैठ जाती है ।

**ख़रदिमाग़** - पु० [फ़ा] मूर्ख ।

**ख़रनफ़्स** - पु० [फ़ा] दुराचारी ; कामुक ।

**ख़रबूजा** - पु० [फ़ा] ककड़ी की जाति का एक गोल फल ।

**खरभर** - पु० [हिं] हलचल ; गड़बड़ ।

**ख़रमस्ती** - स्त्री० [फ़ा] दुष्टता ; शरारत ।

**ख़रमोहरा** - पु० [फ़ा] कौड़ी, कपर्दिका ।

**खरल** - पु० [हिं] दवा कूटने की पत्थर की गहरी कूंडी जो नाव या कटोरी के आकार की होती है ।

**खरवा** - पु० [देश] पैर में पानी और मैल से पककर होनेवाला गढ़ा ।

**ख़रसंग** - पु० [फ़ा] भारी पत्थर ; प्रतिद्वन्द्वी ।

**खरसान** - स्त्री० [हिं] वह सान जो बहुत तेज़ होती है और जिसपर तलवार उतारी जाती है ।

**खरहरा** - वि० [हिं] झाड़ू; घोड़े की पीठ मलने की दाँतवाली पटरी।

**खरहा** - पु० [हिं] ख़रगोश।

**खरा** - वि० [हि] तेज़; विशुद्ध; **मु०**—खोटा - भला-बुरा।

**ख़राज** - पु० [अ] राजकर।

**ख़राद** - पु० [फा] धातु, लकड़ी आदि की चीज़ की सतह को चिकना करने का एक औज़ार; **मु०** — पर चढ़ना - दुरुस्त होना।

**ख़रादना** - स० [हिं] काट-छाँटकर सुडौल बनाना।

**खरापन** - पु० [हि] सचाई।

**ख़राब** - वि० [अ] बुरा; पतित।

**ख़राबा** - पु० [अ] बरबादी; नष्ट हुई फ़सल।

**ख़राबी** - स्त्री० [अ] बुराई, दोष।

**ख़राश** - स्त्री० [फ़ा] खरोंच, छिलने का निशान।

**ख़रास** स्त्री० [फ़ा] आटा पीसने की चक्की।

**खरिक** - पु० [हिं] गोठ, चरागाह।

**खरिया** - स्त्री० [हिं] पतली रस्सी की जाली; खड़िया।

**ख़रिहान** - पु० [हिं] खलिहान।

**ख़री** - स्त्री० [देश] ईख की एक जाति।

**ख़रीता** - पु० [अ] थैली; बड़ा लिफ़ाफ़ा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ।

**ख़रीद** - स्त्री० [फ़ा] क्रय; **यौ०**—फ़रोख़्त - क्रय-विक्रय; —दार - ग्राहक, मोल लेनेवाला।

**ख़रीदना** - स० [फ़ा] मोल लेना।

**ख़रीफ़** - स्त्री० [अ] वह फ़सल जो आषाढ़ में बोयी जाय और अगहन तक काटी जाय।

**खरोंच** - स्त्री० [हिं] छिलना, नख आदि के लगने से होनेवाला निशान; अरुई के पत्तों को पीठी या बेसन में लपेटकर तेल में तलकर बनाये जानेवाला एक खाद्य पदार्थ, पत्तौर।

**खरोंचना** - स० [हिं] छीलना; खुरचना।

**ख़रोश** - पु० [फ़ा] कोलाहल, **यौ०** जोश व ख़रोश - बेहद उत्साह और आवेश।

**खरोष्ठी** - स्त्री० [सं] फ़ारसी की तरह की भारतवर्ष की प्राचीन लिपि जो गांधारी कहलाती है और दाएँ से बाएँ की तरफ़ लिखी जाती है।

**ख़र्च** - पु० [फ़ा] व्यय, खपत; किसी काम में लगायी जानेवाली रक़म। **यौ०** फ़िज़ूल-ख़र्च - बहुत ख़र्च करनेवाला; व्यर्थ का ख़र्च।

**ख़र्चीला** - वि० [फ़ा] ख़ूब ख़र्च करनेवाला या अपव्ययी।

**ख़रींच** - वि० [फ़ा] ख़र्चीला, अपव्ययी।

**खर्राटा** - पु० [हिं] एक तरह का शब्द जो सोते समय कुछ लोगों की नाक से निकलता है। **मु०**—भरना या लेना - बेसुध होकर सोना।

**खर्व** - 1. वि० [सं] वह जिसका अंग टूटा हो; जो अपूर्ण हो; छोटा; बौना; 2. पु० सौ अरब की संख्या; **खंडन**।

**खल** - वि० [सं] दुष्ट, क्रूर।

**ख़लक** - पु० [अ] संसार; संसार के प्राणी।

**ख़लकत** - स्त्री० [अ] भीड़, सृष्टि।

**ख़लजान** - पु० [अ] चिन्ता; बेचैनी।

**खलडी** - स्त्री० [हि] चमड़ा, खाल, छाल।

**खलता** - स्त्री० [सं] दुष्टता; नीचता।

**खलना** - अ० [हिं] बुरा लगना।

**खलफ़** - 1. पु० [अ] बेटा; उत्तराधिकारी; 2. वि० आज्ञाकारी; सुशील।

**खलबलाना** - अ० [हि] खौलना; व्याकुल या विचलित होना; खलबल शब्द करना।

**खलबली** - स्त्री० [हि] हलचल ; घबराहट ।
**खलल** - पु० [अ] रुकावट, बाधा ।
**ख़लल-अन्दाज़** - वि० [अ] बाधक ।
**ख़लल-दिमाग़** - पु० [अ] पागलपन, सनक ।
**ख़लवत** - स्त्री० [अ] एकान्त , खिलअत ।
**ख़लवतख़ाना** - पु० [फ़ा] एकान्तस्थान ; अंत:पुर, स्त्रियों का निवासस्थान ।
**ख़ला** - पु० [अ] ख़ाली स्थान ; आकाश ; पाख़ाना ; पतवार ।
**खलाई** - स्त्री० [हि] खलता, दुष्टता ।
**खलाना** - स० [हि] ख़ाली करना, रीता करना ; गड्ढा करना ; नीचे धँसाना ।
**खलार** - 1. पु० [हिं] नीची भूमि , 2. वि० नीचा ; गहरा ।
**खलारि** - पु० [सं] विष्णु ; सज्जन ।
**ख़लास** - 1. पु० [अ] छुटकारा ; 2. वि० छूटा हुआ, मुक्त ; समाप्त ; गिरा हुआ ।
**ख़लासी** - 1. पु० [अ] जहाज़ पर काम करनेवाला मज़दूर ; तोप चलानेवाला ; 2. स्त्री० छुटकारा, मुक्ति ; छुट्टी ।
**खलित** - वि० [सं] गिरा हुआ ; चचल ।
**खलियान** - पु० [हि] खेतों के पास का वह स्थान जहाँ फ़सल काटकर रखी जाती है और अनाज की बालों को माँड़कर भूसा अलग करने के लिए अनाज बरसाया जाता है, खलिहान ।
**ख़लिश** - स्त्री० [फ़ा] वह पीड़ा या कसक जो घाव के भरने के बाद पीब आदि दूषित अंशों के रह जाने से होती है ।
**खली** - स्त्री० [हिं] तेल निकाल लेने पर बची हुई तिलहन आदि की सीठी ।
**ख़लीक** - वि० [अ] सुशील ।
**ख़लीज** - स्त्री० [अ] तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ समुद्र का हिस्सा, खाड़ी ।
**ख़लीता** - पु० [फ़ा] थैली ; जेब ।
**खलीन** - पु० [सं] लग़ाम ।
**ख़लीफ़ा** - पु० [अ] मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी जो समस्त मुसलमानों के सर्वप्रधान नेता माने जाते हैं ; वारिस ; अध्यक्ष ; बूढ़ा व्यक्ति ; खुर्राट ; नाई ; दरजी ।
**ख़लील** - पु० [अ] सच्चा मित्र ।
**ख़लेरा** - वि० [अ] ख़ाला के संबंधवाला ।
**ख़ल्क़** - स्त्री० [अ] सृष्टि, ख़लक ।
**ख़ल्त** - पु० [अ] मिलना-जुलना ; मिश्रण ।
**खल्वाट** - पु० [सं] गंजा ।
**खवा** - पु० [हिं] कंधा ।
**ख़वास** - पु० [अ] राजा-रईसों का ख़ास ख़िदमतगार ।
**ख़वासी** - स्त्री० [उ] हाथी के हौदे में या गाड़ी में पीछे ख़ास नौकर-चाकरों के बैठने का स्थान ।
**खवैया** - पु० [हिं] खानेवाला ।
**ख़शख़ाश** - स्त्री० [फ़ा] पोस्ते का दाना ; ख़सख़स ।
**ख़श्म** - पु० [फ़ा] ग़ुस्सा ; यौ० —नाक, —गीन - ग़ुस्से से भरा हुआ ।
**ख़श्मगीं** - वि० [फ़ा] ग़ुस्से से भरा हुआ ।
**ख़स** - स्त्री० [फ़ा] गाँडर, घास की सुगंधित जड़ जिससे पंखा या टट्टी बनायी जाती है और जिससे इत्र भी निकाला जाता है ।
**खसकना** - अ० [हि] धीरे से हट जाना ; सरकना, स्थानांतरित होना ।
**खसकाना** - स० [हिं] धीरे से हटाना ।
**ख़सख़स** - स्त्री० [हि] पोस्ते का दाना ।
**ख़सख़सा** - वि० [अनु] भुरभुरा ; बहुत छोटा ।
**ख़सख़ाना** - पु० [फ़ा] ख़स की टट्टियों से घिरा हुआ ठंडा स्थान ।
**खसना** - अ० [हि] हटना ; गिरना ।
**ख़सम** - पु० [अ] दुश्मन, लड़नेवाला ; स्वामी ; पति, शौहर ।

**ख़सरा** - पु० [अ] पटवारी की वही जिसमें गाँव के खेतो के नंबर, रक़बा, काश्तकार आदि के विवरण लिखे रहते हैं; मोती-झारा में निकलनेवाले दाने।

**ख़सलत** - स्त्री० [अ] आदत, स्वभाव; गुण।

**खसाना** - स० [हिं] नीचे गिरा देना; फेकना; ढकेलना।

**ख़सारा** - पु० [अ] घाटा; हानि।

**ख़सासत** - स्त्री० [फ़ा] दुष्टता; कृपणता; ख़सीस का भाव।

**खसिया** - वि० [हिं] जिसके अंडकोश निकाल दिये गये हों, बधिया।

**ख़सी** - पु० [अ०] बकरी का नर बच्चा; वह पशु जिसके अंडकोश निकाल दिये गये हो; हिजड़ा; ख़स्सी।

**ख़सीस** - वि० [फ़ा] दुष्ट; अयोग्य; कृपण।

**ख़सूफ़** - पु० [अ] चंद्रग्रहण; ज़मीन में धँसना; ख़ुसूफ़।

**खसोट** - स्त्री० [हिं] उखाड़ने या नोचने की क्रिया।

**खसोटना** - स० [हिं] नोचना या उखाड़ना।

**ख़स्तगी** - स्त्री० [फ़ा] ख़स्तापन।

**ख़स्ता** - वि० [फ़ा] टूटा हुआ; दबाने से जल्दी टूट जानेवाला, चुरमुरा; दुखी; **यौ०**—हाल - दुर्दशाग्रस्त।

**ख़स्सी** - पु० [अ] बकरा; ख़सी; **मु०** —चढ़ाना - बकरे की बलि चढ़ाना।

**खाँ** - पु० [फ़ा] ख़ान, सरदार।

**खाँखर** - वि० [देश] जिसमें बहुत सूराख हो।

**खाँगी** - स्त्री० [देश] घाटा; त्रुटि।

**खाँचना** - स० [हि] अंकित करना; खीचना; जल्दी लिखना।

**खाँचा** - पु० [हिं] अरहर के डंठल का बना टोकरा; झाबा; बड़ा पिंजड़ा।

**खाँड** - स्त्री० [हि] गीला गुड़ जिससे शक्कर बनती है, राब।

**खाँडा** - पु० [हिं] खड्ग।

**खाँभ** - पु० [हिं] खम्भा; लिफ़ाफ़ा।

**खाँसना** - अ० [हिं] कफ़ निकालने का शब्द।

**खाँसी** - स्त्री० [हिं] खाँसने की बीमारी, कास रोग।

**खाई** - स्त्री० [हि] ख़ंदक।

**खाऊ** - वि० [हिं] बहुत खानेवाला, पेटू।

**ख़ाक** - स्त्री० [फ़ा] धूल; तुच्छ; राख; **मु०**—छानना - व्यर्थ ढूँढ़ना, बहुत ढूँढ़ना, मारा-मारा फिरना;—में मिलना - बिगड़ना; बरबाद होना, मरना; क्या ख़ाक - कुछ नहीं।

**ख़ाकसार** - वि० [फ़ा] अति दीन, तुच्छ।

**ख़ाका** - पु० [फ़ा] ढाँचा; चिट्ठा; स्थूल योजना; नक्शा; **मु०** —उड़ाना नकल उतारना; उपहास करना।

**ख़ाकी** - वि० [फ़ा] भूरा; मिट्टी के रंग का; बिना सींचा हुआ (खेत)।

**खागना** - अ० [देश] गड़ना; चुभना।

**ख़ागीना** - पु० [फ़ा] अंडे की बनी रोटी या तरकारी।

**खाज** - स्त्री० [हिं] खुजली, एक रोग जिसमें खुजली बहुत चलती है, **मु०** कोढ़ में खाज - दुख मे दुख बढ़ानेवाली बात।

**खाजा** - पु० [हिं] एक मिठाई; खाद्य पदार्थ।

**खाट** - पु० [हिं] चारपाई; **मु०** —पर पड़ना - बीमार होना; —से लगना - बहुत बीमार होना; —से उतारा जाना - मरणासन्न होना।

**खाड़** - पु० [हिं] गड्ढा, गर्त।

**खाड़ी** - स्त्री० [हि] समुद्र का वह भाग जिसके तीन ओर स्थल हो, ख़लीज।

**खात** - 1. पु० [सं] तालाब; गड्ढा; कुआँ; खाई; 2. वि० खोदा हुआ।

**ख़ातमा** - पु० [अ] समाप्ति, मृत्यु।

**खाता** - पु० [हिं] हिसाब की बही; **मु०** —खोलना - नया व्यवहार करना; —पड़ना - लेन-देन आरंभ होना, खाते बाक़ी - वह रक़म जो खाते में बाक़ी रहे।
**ख़ातिम** - स्त्री० [अ] अंगूठी।
**ख़ातिर** - 1. स्त्री० [अ] आदर, सम्मान, इच्छा; प्रवृत्ति, 2. अव्य० लिए, हेतु, कारण; **यौ०** —ख़्वाह - जैसा चाहिए वैसा; —जमा - तसल्ली, —तवाजा - आवभगत, आदर-सत्कार।
**ख़ातिरन** - अव्य [अ] ख़ातिर या लिहाज़ से।
**ख़ातून** - स्त्री० [तु] भले घर की स्त्री।
**खाद** - स्त्री० [हिं] वह चीज़ जो खेत की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए डाली जाती है।
**खादक** - 1. पु० [स] ऋण लेनेवाला; 2. वि० भक्षक।
**खादनीय** - वि० [सं] भक्षणीय, खाने योग्य।
**खादर** - पु० [हिं] वह नीची भूमि जिसमें वर्षा का पानी बहुत दिनों तक स्थिर रहता है, कछार, चरागाह।
**ख़ादिम** - पु० [अ] सेवक।
**ख़ादिमा** - स्त्री० [अ] दासी, मज़दूरनी।
**खादी** - स्त्री० [हि] हाथ-कता और हाथ-बुना कपड़ा, खद्दर।
**खाद्य** - वि० [स] खाने लायक़।
**खान** - 1. पु० [हि] भोजन, 2. स्त्री० आकर, खदान; **यौ०** —पान - खाना-पीना; खाने-पीने का संबंध, व्यवहार।
**ख़ान** - पु० [फ़ा] पठान सरदारों की उपाधि।
**ख़ान-ए-ख़ुदा** - पु० [फ़ा] मसजिद।
**ख़ानक़ाह** - स्त्री० [अ] मठ।
**ख़ानख़ाना** - पु० [फ़ा] सरदारों का सरदार।
**ख़ानगी** - वि० [फ़ा] निजी, घरेलू।
**ख़ानज़ादा** - पु० [फ़ा] अमीर का पुत्र।
**ख़ानदान** - पु० [फ़ा] वंश; घराना।
**ख़ानदानी** - वि० [फ़ा] ऊँचे वंश का; पुश्तैनी।
**ख़ानम** - स्त्री० [फ़ा] ख़ान की स्त्री; भले घर की बहू या बेटी।
**ख़ानमाँ** - पु० [फ़ा] घर-गृहस्थी का सामान।
**ख़ानसामाँ** - पु० [फ़ा] शाही महल का भंडारी या पाकशाला का प्रबंधक।
**खाना** - 1. पु० [हि] भोजन; 2. अ० भोजन करना, नष्ट करना; हड़पना, **मु०** जिसका खाना उससे गुर्राना - उपकार न मानना, —कमाना - काम-धंधा करना; —न पचना - चैन न पड़ना, जी न मानना; खा जाना - प्राण ले लेना; खाने दौड़ना - चिड़-चिड़ाना।
**ख़ाना** - पु० [फ़ा] घर, मकान; दुनियाँ, दराज; कोष्ठक; घर मकान आदि का कोई हिस्सा, जैसे, 'ग़ुसलख़ाना, ज़नानख़ाना' आदि; किसी कार्य के लिए निश्चित जगह, जैसे, 'दवाख़ाना, डाकख़ाना, कारख़ाना' आदि।
**ख़ाना-ख़राब** - वि० [फ़ा] जिसका घर उजड़ गया हो; लफंगा।
**ख़ानाजंगी** - स्त्री० [फ़ा] आपसी लड़ाई,
**ख़ाना-ज़ात** } पु० [फ़ा] जो दूसरे के घर में
**ख़ाना-ज़ाद** } पैदा हुआ हो; गुलामों की संतान।
**ख़ाना-तलाशी** - स्त्री० [फ़ा] किसी गुम या चोरी की चीज़ के लिए घर में छान-बीन करना।
**ख़ाना-दारी** - स्त्री० [फ़ा] गृहस्थी का इंतज़ाम।
**ख़ाना-नशीन** - वि० [फ़ा] चुपचाप घर में बैठा रहनेवाला।
**ख़ाना-पुरी** - स्त्री० [फ़ा] नक़शा भरना।

**ख़ानाबदोश** - वि० [फ़ा] अपने सामान के साथ इधर-उधर घूमनेवाला; वह जिसका घर-बार न हो।
**खाना-शुमारी** - स्त्री० [फ़ा] घरों की गिनती।
**ख़ाब** - पु० [फ़ा] स्वप्न, ख़्वाब।
**खाबड़-खूबड़** - वि० [हिं] ऊँचा-नीचा।
**ख़ाम** - 1. वि० [फ़ा] कच्चा; ख़राब; अनुभवहीन; 2. पु० लिफ़ाफ़ा; संधि।
**ख़ाम-ख़याली** - स्त्री० [फ़ा] व्यर्थ के विचार; बुद्धिविरुद्ध विचार।
**ख़ामी** - स्त्री० [फ़ा] कच्चाई, ख़राबी; कमी।
**ख़ामोश** - वि० [फ़ा] चुप, मौन।
**ख़ामोशी** - स्त्री० [फ़ा] चुप्पी; **मु**० अल ख़ामोशी नीम रज़ा - मौन स्वीकृति का लक्षण है।
**ख़ाया** - पु० [फ़ा] मुर्गी का अंडा; अंडकोश।
**ख़ाया-बरदार** - वि० [फ़ा] बहुत अधिक चापलूसी या तुच्छ सेवाएँ करनेवाला।
**खार** - पु० [हि] सज्जी, रेह, लोना।
**ख़ार** - पु० [फ़ा] काँटा; डाह: **मु**० —खाना - मन में द्वेष रखना; — निकालना - बदला लेना, जलन मिटाना।
**ख़ारा** - पु० [फ़ा] कड़ा पत्थर।
**खारा** - वि० [हि] कड़ुआ; अरुचिकर।
**खारिक** - पु० [हिं] छोहारी; खजूर।
**ख़ारिज** - वि० [अ] निकाला हुआ; अलग।
**ख़ारिश** - स्त्री० [फ़ा] खुजली।
**खारी** - वि० [हिं] क्षारयुक्त।
**खाल** - स्त्री० [हि] चमड़ा; **मु**०— उधेड़ना - बहुत मारना, अपनी खाल में मस्त होना - अपनी स्थिति में खुश रहना।
**ख़ाल** - पु० [अ] तिल; मुख आदि शरीर के स्थलों पर गोल काला चिन्ह।
**ख़ालसा** - पु० [अ] राजा की ख़ास ज़मीन; सिक्ख-संप्रदाय; **मु**० —करना - ज़ब्त करना; राजकीय अधिकार में लेना।
**ख़ाला** - स्त्री० [अ] मौसी; **मु**० — का घर - सहज काम; अपना घर।
**खाला** - वि० [हि] नीच; निम्न कोटि का।
**ख़ालिक़** - पु० [अ] ईश्वर; सिरजनहार।
**ख़ालिस** - वि० [अ] विशुद्ध, बिना मिलावट का।
**ख़ाली** - वि० [अ] शून्य; रीता, रिक्त; **मु**० — हाथ होना - हाथ में रुपया पैसा न होना; — पेट - बिना कुछ खाये; वार ख़ाली जाना - मौक़ा चूक जाना; लक्ष्य पर न पहुँचना; बात ख़ाली जाना - वचन निष्फल होना।
**ख़ालू** - पु० [अ] मौसा।
**ख़ाविंद** - पु० [फ़ा] पति, स्वामी।
**ख़ास** - वि० [अ] विशेष, मुख्य; निज का; **यौ**० —व आम - बड़े और छोटे, सब लोग।
**ख़ास क़लम** - पु० [अ] प्राइवेट सेक्रेटरी; निजी मुंशी।
**ख़ासदान** - पु० [फ़ा] पानदान।
**ख़ासनवीस** - पु० [फ़ा] प्राइवेट सेक्रेटरी।
**ख़ासबरदार** - पु० [अ, फ़ा] राजा की सवारी के आगे चलनेवाला सिपाही।
**ख़ासमहल** - 1. पु० [अ] वह महल जिसमें केवल विवाहिता स्त्रियाँ रहती हों; 2. स्त्री० विवाहिता स्त्री या रानी।
**ख़ासमहाल** - पु० [अ] वह ज़मींदारी जिसका प्रबंध सरकार खुद करती हो।
**ख़ासा** - 1. पु० [अ] बड़े आदमियों का भोजन; बढ़िया मलमल; 2. वि० अच्छा।
**ख़ासियत** - स्त्री० [अ] विशेषता; गुण।
**खिंचना** - अ० [हिं] आकर्षित होना; **मु**० हाथ खिंचना - देना बंद होना; तबीयत खिंचना - प्रेम होना; प्रेम न रहना।

**खिचड़ी** - स्त्री० [हिं] चावल-दाल मिलाकर पकाया हुआ अन्न ; **मु०** —पकाना - गुप्त रीति से सलाह करना ; षडयंत्र रचना ; —होना - सब मिल-जुल जाना ; ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना - सबकी राय के विरुद्ध या सबसे अलग होकर कोई काम करना।

**खिजलाना** - 1. अ० [हिं] चिढ़ना, झुँझलाना ; 2. स० चिढ़ाना।

**ख़िज़ाँ** - स्त्री० [फ़ा] पतझड़ ; पतन के दिन।

**ख़िज़ाब** - पु० [अ] सफ़ेद बालों को काला करने की दवा, केश-कल्प।

**ख़िजालत** - स्त्री० [अ] शरमिन्दगी।

**ख़िज्र** - पु० [अ] मार्गदर्शक।

**खिझना** - अ० [हिं] चिढ़ना।

**खिझाना** - स० [हिं] चिढ़ाना।

**खिड़की** - स्त्री० [हिं] झरोखा।

**ख़िताब** - पु० [अ] पदवी, उपाधि।

**ख़ित्ता** - पु० [अ] ज़मीन का टुकड़ा ; प्रदेश।

**ख़िदमत** - स्त्री० [अ] सेवा-टहल।

**ख़िदमतगार** - पु० [फ़ा] सेवक, टहलुआ।

**ख़िदमतगुज़ार** - वि० [फ़ा] स्वामिभक्त।

**खिन्न** - वि० [सं] उदास, चिंतित।

**ख़िरद** - स्त्री० [फ़ा] बुद्धि।

**ख़िरदमंद** - वि० [फ़ा] बुद्धिमान।

**खियाना** - 1. अ० [हिं] खपना ; घिसना ; 2. स० खिलाना।

**ख़ियाल** - पु० [हिं] विचार ; हँसी-खेल।

**खिरनी** - स्त्री० [हिं] पीले रंग का एक मीठा फल।

**ख़िरमन** - पु० [फ़ा] काटी हुई फ़सल का ढेर।

**ख़िराज** - पु० [अ] राजकर ; मालगुज़ारी।

**ख़िराम** - स्त्री० [फ़ा] मस्तानी चाल।

**ख़िरामा** - वि० [फ़ा] मस्तानी चाल से चलनेवाला।

**ख़िर्स** - पु० [फ़ा] भालू।

**ख़िलअत** - स्त्री० [अ] वह पोशाक जो राजा की ओर से सम्मानार्थ मिलती है।

**ख़िलक़त** - स्त्री० [अ] सृष्टि ; रचना, प्रकृति ; ख़लक़त।

**खिलना** - अ० [हिं] विकसित होना।

**ख़िलवत** - स्त्री० [अ] एकान्त।

**खिलवाड़** - स्त्री० [अ] खेलवाड़।

**खिलवाना** - स० [हिं] भोजन करवाना ; प्रफुल्लित कराना ; किसीको (खाना या खेल) खिलाने के लिए प्रेरित करना।

**खिलाई** - स्त्री० [हिं] खाने या खिलाने का काम।

**खिलाऊ** - वि० [हिं] खिलानेवाला; अपव्ययी।

**खिलाना** - स० [हिं] भोजन कराना ; फुलाना ; किसीको खेल में लगाना।

**ख़िलाफ़** - वि० [अ] विरुद्ध।

**ख़िलाफ़गोई** - स्त्री० [फ़ा] झूठ बोलना।

**ख़िलाफ़त** - स्त्री० [अ] ख़लीफ़ा का पद।

**ख़िलाल** - स्त्री० [अ] खेल में हार।

**खिलौना** - पु० [हिं] बच्चो के खेलने की चीज़।

**ख़िल्क़त** - स्त्री० [अ] ख़िलक़त।

**ख़िल्क़ी** - वि० [अ] पैदाइशी ; प्राकृतिक।

**ख़िल्त** - पु० [अ] प्रकृति।

**खिल्ली** - स्त्री० [हिं] हँसी, दिल्लगी।

**ख़िश्त** - स्त्री० [अ] ईंट।

**ख़िश्तक** - स्त्री० [फ़ा] पायजामा।

**ख़िश्तनी** - वि० [अ] ईंटो का बना हुआ।

**खिसकना** - अ० [हिं] सरकना, धीरे-धीरे एक स्थान से हटकर दूसरे स्थान पर जाना।

**खिसकाना** - स० [हिं] सरकाना।

**ख़िसारा** - पु० [अ] घाटा ; हानि।

**खिसियानपन** - पु० [हिं] खिसियाने का भाव।
**खिसियाना** - 1. अ० [हिं] नाराज़ होना; लज्जित होना; 2. स० गुस्सा दिलाना।
**खिसी** - स्त्री० [हिं] लज्जा, शरम; धृष्टता।
**खिसौहाँ** - वि० [हिं] खिसियाया हुआ; लज्जित; संकुचित।
**ख़िस्सत** - स्त्री० [अ] कंजूसी।
**खींचतान** - स्त्री० [हिं] परस्पर लेने की चेष्टा।
**खींचना** - स० [हिं] घसीटना; मु० हाथ खींचना - बंद करना।
**खीज** - स्त्री० [हिं] झुंझलाहट।
**खीझना** - अ० [हिं] खीजने का भाव।
**खीप** - पु० [देश] एक घना पेड़; लज्जालु।
**ख़ीमा** - पु० [अ] ख़ेमा।
**खीर** - स्त्री० [हिं] दूध में पकाया चावल; मु०—चटाना - बालक को अन्नप्राशन कराना।
**खीरमोहन** - पु० [हिं] छेने की बनी एक मिठाई।
**खीरा** - पु० [हिं] ककड़ी की जाति का एक फल।
**ख़ीरा** - वि० [फ़ा] अँधेरा; दुष्ट।
**खील** - स्त्री० [हिं] भूना हुआ धान, लावा।
**खीली** - स्त्री० [हिं] पान का बीड़ा; कीली।
**खीस** - 1. वि० [हिं] नष्ट, बरबाद; 2. स्त्री० क्रोध; अप्रसन्नता; लज्जा; हानि; ओंठ से बाहर निकले दाँत; मु० खीसें काढना - डराना; डरना; हँसना;—निकालना - ओंठ से बाहर दाँत निकालना।
**खीसा** - पु० [देश] थैली, जेब।
**ख़ुआर** - 1. वि० [फ़ा] ख़्वार 2. स्त्री० ख़ुवारी; बरबादी।
**खुखड़ी** - स्त्री० [देश] नेपाली छुरी, कुकड़ी; तकुए पर लपेटा हुआ सूत।
**ख़ुगीर** - पु० [फ़ा] वह मोटा ऊनी कपड़ा जिसके ऊपर रखकर घोड़े पर ज़ीन कसते हैं, नमदा; मु०—की भर्ती - व्यर्थ का संग्रह।
**खुचुर-खुचुर** - स्त्री० [अनु] ऐबजोई; व्यर्थ का झूठा दोष दिखाने का काम; छिद्रान्वेषण।
**खुजलाना** - स० [हिं] खुजली की क्रिया।
**खुजली** - स्त्री० [हिं] खुजलाहट, एक त्वचारोग।
**खुजाना** - अ० [हिं] खुजलाना।
**खुटक** - स्त्री० [हिं] खटका; चिन्ता; शंका।
**खुटचाल** - स्त्री० [हिं] दुष्ट चाल, पाजीपन; उपद्रव।
**खुटना** - अ० [हिं] खुलना; टूटना।
**खुटपन** - पु० [हिं] दोष, ऐब।
**खुटाई** - स्त्री० [हिं] दोष, ऐब।
**खुट्टी** - स्त्री० [हिं] तिल और गुड़ या खाँड को कढ़ाई में मिलाकर उससे तैयार की गई एक मिठाई, रेवड़ी; मित्रता भंग (बालकों की)।
**खुड्डी** - स्त्री० [हिं] पाख़ाने का पायदान; क़दमचा।
**ख़ुतबा** - पु० [फ़ा] तारीफ़; सामयिक राजसत्ता की प्रशंसामय घोषणा।
**ख़ुतूत** - पु० [अ] ख़त का बहु०।
**ख़ुद** - अव्य० [फ़ा] आप, स्वयं; यौ० — ब-ख़ुद - अपने आप।
**ख़ुदकशी** - स्त्री० [फ़ा] ख़ुदकुशी।
**ख़ुदकाम** - पु० [फ़ा] स्वार्थी।
**ख़ुदकाश्त** - वि० [फ़ा] मालिक द्वारा स्वयं जोती जानेवाली ज़मीन।
**ख़ुदकुशी** - स्त्री० [फ़ा] आत्महत्या।
**ख़ुदग़रज़** - वि० [फ़ा] स्वार्थी।

**ख़ुदना** - अ० [हिं] खोदा जाना।
**ख़ुदनुमा** - वि० [फ़ा] अभिमानी।
**ख़ुदपरस्त** - वि० [फ़ा] मतलबी।
**ख़ुदपसंद** - वि० [फ़ा] अपने को बहुत अच्छा माननेवाला।
**ख़ुदबीं** - वि० [फ़ा] घमंडी; अहंमन्य।
**ख़ुदमुख़्तार** - वि० [फ़ा] आज़ाद, स्वतंत्र।
**ख़ुदरा** - 1. पु० [हि] फुटकर चीज़; **मु०** एक रुपये का खुदरा - एक रुपये के आने-पैसे, भाज, चिल्लर; 2. वि० खाया हुआ; **यौ०** —फ़रोश - बिसाती।
**ख़ुदराय** - वि० [फ़ा] स्वेच्छाचारी।
**ख़ुदवाई** - स्त्री० [हिं] खुदवाने का भाव; खुदवाने की मजूरी।
**ख़ुदवाना** - स० [हिं] खोदने का काम कराना।
**ख़ुदसर** - वि० [फ़ा] स्वतंत्र।
**ख़ुदसिताई** - स्त्री० [फ़ा] अपनी प्रशंसा आप करना।
**ख़ुदा** - पु० [फ़ा] ईश्वर; **यौ०** — ताला - ईश्वर; —परस्त - आस्तिक; —वंद - स्वामी, बड़ों का संबोधन; —हाफ़िज़ - ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।
**ख़ुदाई** - स्त्री० [फ़ा] संसार; सृष्टि; खोदने का काम या उसकी मजूरी; दैविक।
**ख़ुदाईरात** - स्त्री० [फ़ा] एक उत्सव जिसमें मुसलमान स्त्रियाँ रात-भर जागकर ख़ुदा की याद करती हैं।
**ख़ुदी** - स्त्री० [फ़ा] आपा।
**ख़ुद्दी** - स्त्री० [फ़ा] चावल-दाल के छोटे टुकड़े।
**ख़ुनक** - वि० [फ़ा] बहुत ठंड़ा।
**ख़ुनकी** - स्त्री० [फ़ा] शीतलता।
**खुनखुना** - पु० [अनु] घुनघुना; झुनझुना।
**खुनखुनाना** - अ० [हिं] काँपना।
**खुनस** - स्त्री० [हिं] ग़ुस्सा, रोष; द्वेष।
**खुनसी**
**खुनसीला** } - वि० [हिं] क्रोधी, द्वेषी।
**ख़ुफ़िया** - वि० [अ] गुप्त।
**ख़ुफ़ियानवीस** - वि० [फ़ा] गुप्त समाचार लिखकर भेजनेवाला।
**खुभराना** - अ० [देश] इतराये फिरना, उपद्रव मचाने के लिए घूमना।
**खुभाना** - स० [देश] चुभाना, गड़ाना।
**खुभिया, खुभी** - स्त्री० [हिं] कान की लौंग; हाथी के दाँत पर चढाया जानेवाला पीतल, चाँदी आदि का बना पोला।
**ख़ुम** - पु० [फ़ा] घड़ा, शराब का मटका।
**ख़ुमकदा** - पु० [अ, फ़ा] मधुशाला।
**ख़ुमख़ाना** - पु० [अ, फ़ा] मधुशाला।
**ख़ुमरा** - पु० [अ] फ़क़ीर।
**ख़ुमार** - पु० [फ़ा] नशे का अंतिम प्रभाव, **यौ०** — **आलूदा** - खुमार से भरा हुआ।
**ख़ुमारी** - स्त्री० [फ़ा] ख़ुमार।
**ख़ुम्र** - स्त्री० [अ] शराब।
**खुरंड** - स्त्री० [हि] सूखे घाव की पपड़ी।
**खुर** - पु० [हि] सींगवाले जानवरों की फटी टाप।
**खुरखुरा** - वि० [अनु] जो चिकना न हो।
**खुरचन** - स्त्री० [हिं] जो चीज़ खुरचकर निकाली जाए; दूध पकाने के बरतन में से खुरचकर निकाला हुआ दूध का अंश, कढ़ाई से खुरचकर निकाला हुआ गुड़।
**खुरचना** - स० [हि] कुरेदकर अलग करना।
**ख़ुरजी** - स्त्री० [फ़ा] घोड़े-बैल आदि पर सामान रखने का झोला।
**खुरदरा** - वि० [हिं] जिसकी सतह मुलायम न हो।
**ख़ुरदा** - पु० [फ़ा] छोटी-मोटी चीज़; रेज़गी; **यौ०** —**फ़रोश** - छोटी-मोटी चीज़े बेचनेवाला।

**खुरपा** - पु० [हिं] घास छीलने का औज़ार ।
**खुरपी** - स्त्री० [हिं] छोटा खुरपा ।
**खुरमा** - पु० [फ़ा] छुहारा ; एक मिठाई ।
**ख़ुरशैद** - पु० [फ़ा] सूर्य ।
**ख़ुराक** - स्त्री० [फ़ा] भोजन, आहार ; औषध की एक मात्रा ।
**ख़ुराकी** - 1. स्त्री० [फ़ा] नगद दाम जो ख़ुराक के लिए दिया जाय ; 2. वि० ख़ूब खानेवाला ।
**ख़ुराफ़ात** - स्त्री० [अ] बेहूदा या रद्दी बात ; झगड़ा, कलह ।
**ख़ुर्द** - वि० [फ़ा] छोटा, लघु ।
**ख़ुर्दबीन** स्त्री० [फ़ा] सूक्ष्मदर्शक यंत्र जिससे छोटी से छोटी चीज़ अच्छी तरह देखी जा सके ।
**ख़ुर्द-बुर्द** - पु० [फ़ा] अपव्यय, धन का नाश ।
**ख़ुर्दा** - वि० दे० ख़ुरदा ।
**ख़ुर्रम** - वि० [फ़ा] ताज़ा सींचा हुआ ; बहुत ख़ुश ।
**ख़ुर्रमी** - स्त्री० [फ़ा] प्रसन्नता, ख़ुशी ।
**ख़ुर्राट** - वि० [हि] बूढ़ा; अनुभवी , चालाक ।
**ख़ुर्सन्द** - वि० [फ़ा] ख़ुश ।
**खुलना** - अ० [हिं] छिपाने या रोकनेवाली चीज़ का हटना ; चलना ; आवरण हट जाना ; **मु०** खुलकर खेलना - लज्जा या कलंक का भय छोड़कर कोई काम सबके सामने करना ; खुलता रंग - हलका सुहावना रंग ; खुलकर - निस्संकोच , खुले मैदान - सबके सामने ।
**ख़ुलासा** - 1. वि० [अ] स्पष्ट ; 2. पु० सारांश ।
**ख़ुल्क़** - पु० [अ] सुशीलता ।
**ख़ुल्द** - पु० [अ] बहिश्त, स्वर्ग ।
**खुल्लमखुल्ला** - वि० [फ़ा] खुले . आम, ज़ाहिरा तौर पर ।
**ख़ुश** - वि० [फ़ा] प्रसन्न ।
**ख़ुशक़िस्मत** - वि० [फ़ा] भाग्यशाली ।

**ख़ुशकी** - स्त्री० [फ़ा] दे० ख़ुश्की ।
**ख़ुशख़त** - 1. वि० [फ़ा] जिसकी लिखावट अच्छी हो ; 2. पु० सुंदर लिखावट ।
**ख़ुशख़बरी** - स्त्री० [फ़ा] शुभ समाचार ।
**ख़ुशखुल्क़** - वि० [फ़ा] अच्छे स्वभाव वाला ।
**ख़ुशदामन** - स्त्री० [फ़ा] सास ।
**ख़ुशनवीस** - वि० [फ़ा] सुंदर-अक्षर लिखनेवाला ।
**ख़ुशनसीब** - वि० [फ़ा] भाग्यवान ।
**ख़ुशनसीबी** - स्त्री० [फ़ा] सौभाग्य ।
**ख़ुशनुमा** - वि० [फ़ा] ख़ूबसूरत ।
**ख़ुशनूद** - वि० [फ़ा] संतुष्ट ।
**ख़ुशबयान** - वि० [फ़ा] सुवक्ता ।
**ख़ुशबू** - स्त्री० [फ़ा] सुगंध ।
**ख़ुशमिज़ाज़** - वि० [फ़ा] प्रसन्न चित्तवाला ।
**ख़ुशवक़्त** - वि० [फ़ा] सुखी ।
**ख़ुशहाल** - वि० [फ़ा] सुखी ; संपन्न ।
**ख़ुशहाली** - स्त्री० [फ़ा] अच्छी हालत ।
**ख़ुशामद** - स्त्री० [फ़ा] चापलूसी ।
**ख़ुशामदी** - वि० [फ़ा] चापलूसी करनेवाला ; **यौ०**—टट्टू - भारी ख़ुशामदी ।
**ख़ुशी** - स्त्री० [फ़ा] प्रसन्नता, आनंद ।
**ख़ुश्क़** - वि० [फ़ा] सूखा ; शुष्क ।
**ख़ुश्कसाली** - स्त्री० [फ़ा] जिस साल वर्षा न हो ।
**ख़ुश्का** - पु० [फ़ा] सादा पका हुआ भात ।
**ख़ुश्की** - स्त्री० [फ़ा] सूखापन ।
**ख़ुसर** - पु० [फ़ा] ससुर ।
**ख़ुसरवाना** - वि० [फ़ा] शाही, बादशाहों का ।
**ख़ुसरू** - वि० [फ़ा] बादशाह ।
**खुसुर-खुसर** } पु० [अनु] धीरे-धीरे बाते करना ।
**खुसुर-फुसर** }
**ख़ुसूसन** - क्रि० [अ] ख़ास तौर पर ।
**ख़ुसूसियत** - स्त्री० [अ] विशेषता ।

**खुद्दी** - स्त्री० [हिं] वर्षा से बचने के लिए कंबल, कपड़ा, अथवा टाट की लपेट जो सिर पर रख ली जाती है, घोघी।

**ख़ूँ** - पु० [फ़ा] रक्त, **यौ०** —ख़्वार - ख़ून पीनेवाला; —रेज़ - ख़ून बहानेवाला।

**खूँट** - पु० [हि] छोर।

**खूँटना** - 1. अ० रुकना; टूटना; बंद या समाप्त होना; स० 2. पूछताछ करना; तोड़ना।

**खूँटा** - पु० [हिं] पशुओं को बाँधने की बड़ी मेख।

**खूँटी** - स्त्री० [हि] छोटी मेख जो दीवारों में ठोंकी जाती है और लकड़ी की बनी होती है; बाल की जड़ जो हजामत के बाद रह जाती है; **मु०**—निकालना या लेना - ऐसी हजामत करना कि बाल की जड़ तक निकल आवे।

**खूटना** - 1. अ० [हिं] रुकना; अंत होना; 2. स० छेड़ना; रोक-टोक करना।

**ख़ून** - पु० [फ़ा] रक्त; **मु०** — खौलना - ख़ून उबलना, ग़ुस्सा चढ़ना; — का प्यासा - वध करने का इच्छुक; — सिर पर चढ़ना - किसीको मार डालने पर उद्यत होना, — ठंडा होना - भयभीत होना; — सफेद हो जाना - निर्दयी बनना; —सुखाना - कष्ट देना; आँखों में ख़ून उतरना - अत्यत क्रोध से आँखे लाल होना, — का जोश - वंश या कुल का अति प्रेम; **यौ०** — आलूदा - ख़ून में भीगा हुआ; — ख़राबी - रक्तपात, मारकाट।

**ख़ूनी** - वि० [फ़ा] घातक।

**ख़ूब** - वि० 1. [फ़ा] अच्छा, भला; सुंदर; उत्तम; 2. क्रि० अच्छी तरह से।

**ख़ूबसूरत** - वि० [फ़ा] सुन्दर।

**ख़ूबसूरती** - स्त्री० [फ़ा] सुन्दरता।

**ख़ूबानी** - स्त्री० [फा] बादाम की जाति का ज़रदालू नामक फल।

**ख़ूबी** - स्त्री० [फ़ा] विशेषता, अच्छाई।

**खूरन** - स्त्री० [हि] हाथी के नाखुन का रोग।

**ख़ूराक** - स्त्री० [फ़ा] भोजन; एक मात्रा।

**ख़ूसट** - 1. पु० [फ़ा] उल्लू; 2. वि० जिसे आमोद-प्रमोद अच्छा न लगता हो, **मनहूस**।

**खेचर** - पु० [सं] आकाश में विचरनेवाले सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि; विमान; देवता; पक्षी, बादल; भूत-प्रेत; विद्याधर; राक्षस; पारा; कसीस।

**खेचरान्न** - पु० [सं] बलि-अन्न।

**खेचरीमुद्रा** - स्त्री० [स] जीभ को उलटकर तालु से लगाते हुए दृष्टि को भौंहो के बीच जमाने की क्रिया।

**खेट** - पु० [सं] खेड़ा; शिकार; कफ; घोड़ा; ढाल; लाठी; चमड़ा; तिनका।

**खेटक** - पु० [सं] छोटा गाँव, शिकार, तारा।

**खेटकी** - पु० [हि] शिकारी; खेटिक; भड्डरी, भडेरिया।

**खेड़ा** - पु० [हिं] छोटा गाँव, पुरा; उजड़े गाँव का अवशेष, **मु०** खेड़े की दूब - बलहीन।

**खेडापति** - पु० [हिं] गाँव का पुरोहित; गाँव का मुखिया।

**खेडी** - स्त्री० [देश] देशी लोहा, फौलाद की एक क़िस्म; वह मांसखण्ड जो बच्चों की नाल के दूसरे सिरे पर रहता है।

**खेत** - पु० [हिं] जोतने-बोने लायक़ ज़मीन; समरभूमि; **मु०** — आना, रहना - लड़ाई में मारा जाना; — रखना - विजयी होना; खेत की रखवाली करना।

**खेतिहर** - पु० [हिं] किसान।

**खेती** - स्त्री० [हिं] किसानी, काश्तकारी; **मु०** — मारी जाना - फ़सल नष्ट होना।

**खेतीबारी** - स्त्री० [हिं] किसानी।

**खेद** - पु० [सं] दुख, रंज।

**खेदना** - स० [हिं] मारकर भगाना, खदेड़ना।

**खेदा** - पु० [हिं] शिकार; किसी जंगली पशु को मारने या पकड़ने के लिए घेरकर एक निश्चित स्थान पर लाने का काम।

**खेना** - स० [हिं] नाव चलाना; बिताना, गुज़ारना।

**खेप** - स्त्री० [हिं] एक बार का लदा हुआ बोझ; गाड़ी, नाव आदि की एक बार की यात्रा; **मु०** — हारना - माल में घाटा उठाना।

**खेपडी** - स्त्री० [हिं] नौका खेने का डांड।

**खेपना** - स० [हिं] बिताना, गुज़ारना।

**खेमा** - पु० [अ] तम्बू, डेरा; **यौ०** — ग़ाह - वह जगह जहाँ बहुत-से खेमे लगे हों; —दोज़ - खेमा बनानेवाला।

**खेरवा** - पु० [हिं] समुद्र में जहाज़ आदि चलानेवाला।

**खेरी** - स्त्री० [हिं] बंगाल और उत्तर पूर्वी बिहार में पैदा होनेवाला गेहूँ की क़िस्म का एक अनाज।

**खेल** - पु० [हिं] मन बहलाव का काम; **मु०** — खेलना - तंग करना; चाल चलना; — बिगाड़ना - काम बिगाड़ना; — **समझना** - साधारण या तुच्छ समझना।

**खेलना** - अ० [हिं] मनबहलाव का काम करना; **मु०** — खाना - आनन्द के दिन बिताना।

**खेलनी** - स्त्री० [सं] बिसात; गोट, मोहरा।

**खेलवाड़** - पु० [हिं] दिल्लगी।

**खेलाड़ी** - वि० [हिं] विनोदी; खेलनेवाला।

**खेलाना** - स० [हिं] खेल में लगाना; **मु०** खेल खेलाना - बहुत हैरान करना।

**खेलुआ** - पु० [हिं] चमड़ा रंगनेवालों का काठ का एक औज़ार।

**खेवक** - पु० [हिं] केवट; मल्लाह।

**खेवट** - पु० [हिं] पटवारी का काग़ज़; मल्लाह, केवट।

**खेवटिया** - पु० [हिं] मल्लात, केवट

**खेवनहार** - पु० [हिं] मल्लाह।

**खेवा** - पु० [हिं] पार उतारने के लिए मल्लाह को जो पैसा दिया जाए; पार उतारने का काम; नाव का एक बार आना-जाना।

**खेवाई** - स्त्री० [हिं] नाव खेने की मज़ूरी; नाव खेने का काम।

**खेस** - पु० [हिं] मोटे सूत की बुनी चादर।

**खेसारी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का कदन्न।

**खेह** - स्त्री० [हिं] धूल, राख; **मु०**— खाना - धूल फाँकना; नष्ट हो जाना।

**खैर** - पु० - [हिं] बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी लकड़ी उबालकर कत्था बनाते है, खदिर; कत्था।

**ख़ैर** - स्त्री० [फ़ा] कुशल, क्षेम; **यौ०** — आफ़ियत - कुशलक्षेम; — अन्देश, शुभचिंतक ;—ख्वाह - भलाई चाहनेवाला;—बाद - कुशल हो (विदाई के समय कहा जानेवाला शब्द)।

**खैरा** - वि० [देश] कत्थई; कत्थई रंग का कबूतर, घोड़ा, बगुला; बैल।

**ख़ैरात** - स्त्री० [अ] दान-पुण्य।

**ख़ैराती** - वि० [अ] ख़ैरात-सम्बन्धी।

**ख़ैरियत** - स्त्री० [फ़ा] कुशल-क्षेम

**ख़ैल** - पु० [अ] समूह, दल।

**खोंइचा** - पु० [हिं] स्त्रियों के कपड़े का अंचल ; **मु०** — भरना - शकुन के लिए अंचल भरना ।

**खोंखला** - वि० [हिं] जिसके भीतर कुछ नही हो, पोला ; सारहीन ।

**खों खों** - पु० [अनु] खाँसने की आवाज़ ; बंदरो के घुड़कने की आवाज़ ।

**खोंच** - स्त्री० [हिं] किसी नुकीली चीज़ से नुच जाना ।

**खोंचना** - स० [हि] चुभाना ।

**खोंचा** - पु० [हिं] पक्षियो को फँसाने का बाँस जिसमें लासा (गोंद) लगा हो ।

**खोंचिया** - पु० [हिं] · खोंची लेनेवाला, भिखारी ।

**खोंची** - स्त्री० [हि] वह अन्न, तरकारी आदि जो दूकानदारो द्वारा भीख में दी जाय ।

**खोंटना** - स० [हिं] ऊपरी भाग नोच लेना ।

**खोंड़ा** - वि० [हि] विकलांग ; खंडित ; जिसका दांत टूट गया हो ; ।

**खोंता, खोंतल** - पु० [देश] घोसला, नीड़ ।

**खोंप** - स्त्री० [हि] दूर-दूर पर टाके की सिलाई ।

**खोंपना** - स० [हि] भोकना ; धँसाना ।

**खोंपा** - पु० [हिं] हल का वह भाग जिसमें फाल लगा रहता है ; छाजन का कोना ।

**खोंसना** - स० [हिं] अटकाना ।

**खोआ** - पु० [हिं] औटाये हुए दूध की पिंडी, खोया, खोवा, मावा ।

**खोई** - स्त्री० [हि] रस निकाले हुए गन्ने के डंठल ; छोई ; खुही ; लाई ; कम्बल की घोघी ।

**खोखला** - वि० [हिं] पोला, सारहीन ।

**खोखा** - पु० [हिं] चुकायी हुई हुंडी ; बालक [बंग] ।

**ख़ोगीर** - पु० [फ़ा] ज़ीन कसने का मोटा कपड़ा ; **मु०** — की भरती - व्यर्थ की चीज़ें ।

**खोज** - स्त्री० [हि] अनुसन्धान ; तलाश, चिन्ह ; **मु०** — मारना - चिन्ह मिटा देना ताकि पता न लगे ,— लगाना - पता लगाना ;—मिटाना - नष्ट करना ।

**खोजना** - स० [हि] तलाश करना, पता लगाना ।

**ख़ोजा** - पु० [फ़ा] हिजड़ा ; सेवक ; सरदार ; भारतवर्ष में प्रचलित एक नवीन मुसलिम सम्प्रदाय ।

**खोजी** - पु० [हि] खोज करनेवाला, अन्वेषक ।

**खोट** - स्त्री० [हिं] दोष, ऐब, बुराई ।

**खोटा** - वि० [हिं] बुरा ; **मु०** खरी-खोटी सुनाना - बुरा-भला कहना, फटकारना ।

**ख़ोद** पु० [फ़ा] युद्ध में पहिनने का टोप, शिरस्त्राण ; जाँच-पड़ताल ।

**खोदना** - स० [हिं] हथियार से ज़मीन आदि में गड्ढा करना ; **मु०** खोद-खोदकर पूछना - अच्छी तरह तर्क करके पूछना ।

**खोदनी** - स्त्री० [हिं] खोदने का औज़ार ।

**खोदाई** - स्त्री० [हि] खोदने का काम या उसकी मजूरी ।

**खोना** - स० [हि] गँवाना ; **मु०** खो जाना - घबराना ।

**ख़ोन्चा** - पु० [फ़ा] फेरीवाले का थाल जिसमें रखकर वह मिठाई बेचता है ।

**खोपड़ा** - पु० [हिं] सिर, कपाल , गाड़ी में वह मोटी लकडी जो दोनो पहियो के बीच होती है ।

**खोपड़ी** - स्त्री० [हि] सिर, कपाल ; **मु०** अंधी या औंधी खोपड़ी - नासमझ ;— खुजलाना - मार खाने की इच्छा होना ;

— खा जाना या चट कर जाना - तंग करना ; — गंजी होना - मार से सिर के बालो का झड़ जाना ; — ख़ाली होना - बाते करते-करते मस्तिष्क में शिथिलता आ जाना ।

**खोपरा** - पु० [हिं] गरी ; खप्पर ।

**खोपा** - पु० [हिं] जूड़ा, वेणी ; छप्पर का कोना ।

**खोभरा** - पु० [हिं] लकड़ी की खूँटी ।

**खोभार** - पु० [हिं] तंग दरवाज़ेवाला झोपड़ा ; तंग अंधेरी कोठरी ; कूड़ा फेकने का अड्डा ।

**खोम** - पु० [अ] बुर्ज़ ; समूह, झुंड ।

**खोय** - स्त्री० [फ़ा] आदत ।

**खोया** - पु० [हिं] खोआ, गाढ़ा दूध ।

**खोर** - स्त्री० [हिं] तंग गली, कूचा; प्रकोप; नाँद जिसमें चौपायो को चारा देते हैं ।

**ख़ोर** - वि० [फ़ा] खानेवाला ; जैसे, 'आदमख़ोर, सूदख़ोर' ।

**खोरना** - अ० [हिं] नहाना, स्नान करना ।

**खोरा** - वि० [हिं] जिसके अंग भग्न हो ।

**खोरि** - स्त्री० [हिं] तंग गली ; ऐब ; दोष ; बुराई ।

**खोरिया** - स्त्री० [हिं] छोटी कटोरी ; स्त्रियो के माथे पर लगाने के चमकीले बुँदे ।

**खोल** - पु० [सं] ऊपर से चढ़ा हुआ कपड़ा या चमड़ा आदि ; गिलाफ़ ।

**खोलना** - स० [हिं] छिपाने या रोकनेवाली वस्तु को हटाना ।

**खोली** - स्त्री० [हिं] थैली ; [मरा० ; क० ; बंगा०] कमरा ।

**खोवा** - पु० [हिं] खोआ ; गाढ़ा दूध ।

**ख़ोशा** - पु० [फ़ा] अनाज की बाल; छोटे-छोटे फलो का गुच्छा ।

**खोह** - स्त्री० [हिं] गुफा ।

**खोही** - स्त्री० [हिं] पत्तों की छतरी ; वर्षा से बचने के लिए कम्बल या बोरे आदि की बनायी हुई घोघी, खुही ।

**ख़ौफ़** - पु० [अ] डर, भय ; **यौ०**—ज़दा - डरा हुआ ; —नाक - भयानक ।

**खौर** - स्त्री० [हिं] माथे पर चन्दन की चंद्राकार तीन रेखाएँ, त्रिपुण्ड्र ; त्रिपुण्ड्र की तरह का एक आभूषण जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं ; मछलीमारो का जाल ।

**खौरा** - पु० [हिं] एक बुरी खुजली ।

**खौलना** - अ० [हिं] तरल पदार्थो का उबलना ; अत्यंत गरम होना ; **मु०** दिमाग़ खौलना - आवेश आना ।

**खौहा** - वि० [हिं] अधिक खानेवाला, पेटू ; दूसरे की कमाई खानेवाला ।

**ख्यात** - वि० [सं] मशहूर, प्रसिद्ध, यशस्वी ।

**ख्याति** - स्त्री० [स] प्रसिद्धि ।

**ख़्याल** - पु० [अ] ध्यान ।

**ख़्याली** - वि० [अ] फ़र्ज़ी ; कल्पित ।

**ख्रिष्टान** - पु० [हिं] ईसाई ।

**ख्रिष्टीय** - वि० [हिं] ईसा संबंधी, ईसाई ।

**ख्रीष्ट** - पु० [हिं] ईसा ।

**ख़्वाँ** - वि० [फ़ा] पढ़नेवाला ।

**ख़्वाँ-दा** - वि० [फ़ा] पढ़ा हुआ ।

**ख़्वाजा** - पु० [फ़ा] घर का मालिक, सरदार ।

**ख़्वाजा-सरा** - पु० [फ़ा] खोजा ।

**ख़्वान** - पु० [फ़ा] थाल, परात ।

**ख़्वानचा** - पु० [फ़ा] बड़ी थाली ।

**ख़्वान-पोश** - पु० [फ़ा] ख़्वान पर की मिठाई आदि को ढँकने का कपड़ा ।

**ख़्वानी** - स्त्री० [फ़ा] पढ़ने की क्रिया ।

**ख़्वाब** - पु० [फ़ा] सोना ; सपना ।

**ख़्वाब-आलूदा** - वि० [फ़ा] जिसमें नीद भरी हो ।

**ख़्वाबगाह** - स्त्री० [फ़ा] सोने का स्थान।
**ख़्वाबीदा** - वि० [फ़ा] सोया हुआ।
**ख़्वार** - वि० [फ़ा] ख़राब; दुर्दशाग्रस्त।
**ख़्वारी** - स्त्री० [फ़ा] दुर्दशा; ख़राबी।
**ख़्वास्त** - स्त्री० [फ़ा] इच्छा।
**ख़्वास्तगार** - वि० [फ़ा] इच्छुक, चाहनेवाला।
**ख़्वाह** - 1. वि० [फ़ा] चाहनेवाला, 2. स्त्री० चाह।
**ख़्वाहमख़्वाह** - क्रि० [फ़ा] चाहे इच्छा हो या न हो, ज़बरदस्ती।
**ख़्वाहाँ** - वि० [फ़ा] चाहनेवाला।
**ख़्वाहिश** - स्त्री० [फ़ा] इच्छा, अभिलाषा।
**ख़्वाहिशमंद** - वि० [फ़ा] अभिलाषी।

## ग

**गंगबरार** - पु० [हिं] गंगा या किसी नदी की बाढ़ का पानी हट जाने के बाद निकली हुई ज़मीन।
**गंग-शिकस्त** - पु० [हिं] वह ज़मीन जिसे गंगा या कोई अन्य नदी काटकर अपनी धारा के साथ ले गयी हो।
**गंगा** - स्त्री० [सं] भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है; मु०— उठाना - शपथ खाना;— नहाना - कृतार्थ होना।
**गंगा-जमुनी** - वि० [हिं] मिला-जुला।
**गंगाजली** - स्त्री० [हिं] गंगाजल रखने का पात्र; मु०— उठाना - शपथ खाना।
**गंगाद्वार** - पु० [सं] हरिद्वार।
**गंगापुत्र** - पु० [सं] गंगा-तटवासी दान लेनेवाला ब्राह्मण; भीष्म।
**गंगाल** - पु० [हिं] पानी रखने का बड़ा बरतन।
**गंगासागर** - पु० [हिं] टोटीदार झारी; एक तीर्थ।
**गंज** - पु० [हिं] ख़ज़ाना; ख़ान; ढेर; बाजार; सिर के बालो के झड़ जाने का रोग।
**गंजन** - पु० [हिं] तिरस्कार, अनादर।
**गंजना** - स० [हिं] निरादर करना; अवज्ञा करना; तोड़ना।
**गंजा** - 1. वि० [हिं] जिसके सिर के बाल झड़ गये हो, 2. स्त्री० मदिरालय; झोपड़ी।
**गंजिका** - स्त्री० [सं] मदिरालय।
**गंजिया** - स्त्री० [हिं] रुपया रखने की जालीदार थैली; घास रखने की जाली।
**गंजी** - स्त्री० [हिं] बनियायन; ढेर, समूह।
**गंजीना** - पु० [फ़ा] ख़ज़ाना।
**गंजीफ़ा** - पु० [फ़ा] एक खेल।
**गंजूर** - पु० [हिं] ख़ज़ाना।
**गंजेरी** - वि० [हिं] गाँजा पीनेवाला।
**गंठकटा** - पु० [हिं] उचक्का; जेब कतरनेवाला, पाकेटमार।
**गंठजोड़ा** } पु० [हिं] विवाह की एक रीति
**गंठबंधन** } जिसमें वर-वधू के कपड़ों में एक गांठ बाँधी जाती है।
**गंड** - पु० [सं] गाल, कपोल, कनपटी; एक प्रकार का फोड़ा।
**गँडमाला** - स्त्री० [सं] एक रोग जिसमें गले में गांठे हो जाती हैं।
**गँडा** - पु० [हिं] मंत्र पढ़ा हुआ धागा, यौ०—तावीज - मंत्र-तंत्र, झाड़-फूंक।
**गँडासा** - पु० [हिं] घास काटने का हथियार।
**गंडासी** - स्त्री० [हिं] चौपायो के लिए चारा काटा जानेवाला एक औजार।
**गंडूष** - पु० [सं] हथेली; चुल्लू।
**गँडेरी** - स्त्री० [हिं] ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।
**गंद** - 1. स्त्री० [फ़ा] मलिनता; 2. [हिं] गंध; गंदगी।
**गंदगी** - स्त्री० [हिं] मैलापन।
**गंदना** - पु० [हिं] प्याज-लहसुन की जाति का एक मसाला; एक विशेष घास।

**गँदला** - वि० [हिं] मैला ; गंदा ।

**गंदा** - वि० [फ़ा] मलिन ; अशुद्ध ; घृणित ।

**गंदुम** - पु० [फ़ा] गेहूँ ।

**गंदुमी** - वि० [फ़ा] गेहूँ के रंग का ।

**गंध** - स्त्री० [सं] बास, महक ।

**गंधक** - स्त्री० [सं] एक खनिज पदार्थ ।

**गंधगर्भ** - पु० [सं] बेल वृक्ष ।

**गंधद्रव्य** - पु० [सं] चन्दन, फूल आदि ।

**गंधपत्र** - पु० [सं] सफ़ेद तुलसी ; नारंगी ; मरुवा ।

**गंधर्व** - पु० [सं] देवताओं की एक जाति ; यौ०—विवाह - परस्पर की इच्छा से होनेवाला विवाह ;—विद्या - संगीतकला।

**गंधवह** - पु० [सं] कस्तूरी मृग ।

**गंधसार** - पु० [सं] चन्दन ।

**गंधाना** - स० [हिं] बुरी गंध देना ; बदबू फैलाना ।

**गंधाबिरोजा** - पु० [हिं] चीड़ नामक वृक्ष का गोंद जिसे फोड़े आदि पर लगाते हैं ।

**गंधिकारिणी** - स्त्री० [सं] लाजवंती ।

**गंधी** - पु० [हि] अत्तार ।

**गंभीर** - वि० [सं] गहरा ; घना ; भारी ।

**गँवई** - स्त्री० [हिं] छोटा गाँव ।

**गँवरमसला** - पु० [हिं] गँवारों की कहावत ।

**गँवाना** - स० [हिं] बिताना ; खोना ।

**गँवार** - पु० [हिं] गाँव का रहनेवाला, देहाती ; मूर्ख ; अनाड़ी ।

**गँवारी** - स्त्री० [हि] गँवारपन , गँवार स्त्री ; भद्दापन ।

**गँवारू** - वि० [हिं] भद्दा ; बेढ़ंगा ।

**गँसना** - स० [हिं] अच्छी तरह कसना ; ठसाठस कसकर कपड़ा बुनना ; जकड़ना, कसना ।

**गँसीला** - वि० [हिं] चुभनेवाला ; द्वेष रखनेवाला , नोकदार ।

**गऊ** - स्त्री० [हि] गाय ।

**गकरिया** - स्त्री० [हिं] लिट्टी, बाटी ; मधुकरी ।

**गगरा** - पु० [हिं] कलसा ।

**गगरी** - स्त्री० [हिं] कलसी ।

**गच** - स्त्री० [देश] चूने और सुरखी आदि के मेल से बना मसाला जिससे ज़मीन पक्की की जाती है ; पक्का फ़र्श ; पक्की छत ।

**गचकारी** - स्त्री० [हि] गच पीटने का काम ।

**गचना** - स० [हिं] बहुत अधिक या ठूँसकर भरना ।

**गज** - पु० [सं] हाथी ।

**गज़** - पु० [फ़ा] कपड़े नापने की तीन फ़ीट लम्बी छड़ ।

**गजगामिनी** - वि० [सं] हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली ।

**गजगाह** - पु० [हि] हाथी की झूल ।

**ग़ज़ब** - पु० [अ] ग़ुस्सा ; विपत्ति ; **मु०**—का - विलक्षण ; **यौ०** —नाक - बहुत ग़ुस्से में भरा हुआ ।

**ग़ज़बी** - वि० [अ] क्रोधी ।

**गजयूथ** - पु० [सं] हाथियों का झुंड ।

**गजर** - पु० [हिं] प्रति पहर पर घंटा बजने का शब्द ।

**गजरा** - पु० [हि] माला ; गाजर के पत्ते ।

**गजरी** - स्त्री० [हि] कलाई पर पहनने का एक गहना ।

**ग़ज़ल** - स्त्री० [अ] उर्दू में एक प्रकार की कविता ।

**गजा** - पु० [अ] खजूर का फल, ख़ुर्मा ।

**गजानन** - पु० [सं] गणेश ।

**गजाना** - स० [हिं] पचाना ; सड़ाना ।

**गजारोह** - पु० [स] महावत ।
**गज़ाल** - पु० [अ] हिरन का बच्चा ।
**गज़ी** - स्त्री० [फा] मोटा, सस्ता हाथ का बुना कपड़ा ।
**गजी** - स्त्री० [हिं] हाथी का सवार; हथिनी।
**गजेंद्र** - पु० [स] ऐरावत हाथी ।
**गज्झा** - पु० [हि] पानी, दूध आदि के छोटे-छोटे बुलबुलो का समूह ।
**गझिन** - वि० [हिं] घना ; गाढ़ा।
**गट** - पु० [हिं] तरल पदार्थ को निगुलते समय होनेवाली ध्वनि ।
**गटई** - स्त्री० [हिं] गला, गर्दन ।
**गटगट** - क्रि० [अनु] लगातार ।
**गटपट** - स्त्री० [अनु] बहुत अधिक मेल, घनिष्ठता; सहवास, संभोग; कानाफूसी ।
**गट्ट** - पु० [अनु] किसी पदार्थ के निगलते समय गले का शब्द ।
**गट्टा** - पु० [हि] कलाई ; **मु०**— पकड़ना - किसी चीज के लिए ज़बर्दस्ती करना ।
**गट्ठर** - पु० [हिं] बड़ी गठरी ; बोझा ।
**गट्ठा** - पु० [हिं] बड़ा गट्ठर ।
**गठन** - स्त्री० [हि] बनावट ; संगठन ।
**गठना** - अ० [हिं] जुड़ना, दो पदार्थो का मिलकर एक होना ; अनुकूल होना; **मु०** गठा बदन - हृष्टपुष्ट ।
**गठबंधन** - पु० [हिं] विवाह के अवसर पर वर-वधू के कपड़ों के छोरो को बाँधना ।
**गठरी** - स्त्री० [हिं] बड़ी पोटली ; जमा की हुई दौलत ।
**गठवाना** - स० [हिं] सिलवाना; जोड़ मिलवाना ।
**गठाव** - पु० [हिं] गठन ; मिलावट ।
**गठित** - वि० [हिं] ग्रथित, गठा हुआ, बना हुआ ।
**गठिया** - स्त्री० [हि] पोटली ; वातरोग, बाई की बीमारी ।
**गठीला** - वि० [हिं] चुस्त, मज़बूत ।
**गठुआ** - पु० [हिं] भूसे की गांठ ।
**गठोत** - स्त्री० [हि] मेल-मिलाप, मित्रता ।
**गडंत** - पु० [हि] टोटके के लिए गाड़ी गयी वस्तु ।
**गड** - पु० [हि] आड़, ओट ; घेरा ।
**गड़गड़ा** - पु० [अनु] एक हुक्का ।
**गड़गड़ाना** - 1. अ० [हि] गरजना, 2. स० हुक्का पीना ।
**गड़गड़ाहट** - स्त्री० [हिं] बादल गरजने आदि की आवाज़ ; हुक्के की आवाज़ ।
**गड़गड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा नगाड़ा ।
**गड़गूदड़** - पु० [हिं] फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा ।
**गड़दार** - पु० [हिं] वह नौकर जो मस्त हाथी के पीछे भाला लिये चलता है ।
**गड़ना** - अ० [हि] चुभना, **मु०** गड़े मुर्दे उखाड़ना - पुरानी बात उभाड़ना ; आँख में गड़ना - अति प्रिय अथवा अप्रिय लगना ; गड़ जाना - झेंप जाना ; दिल में गड़ना - डरना ।
**गड़प** - स्त्री० [अनु] पानी या कीचड़ में किसी चीज़ के सहसा धँसने का शब्द ।
**गड़पना** - स० [हिं] निगलना ; पचा लेना ।
**गड़बड़** - 1. वि० [हिं] अस्त-व्यस्त; 2. स्त्री० क्रमभंग ; ख़राबी , **मु०**—झाला - गोलमाल, अव्यवस्था ; —घोटाला - गड़बड़ी ; गड़बड़ाध्याय उपद्रव, झगड़ा, आपत्ति, हलचल ।
**गडबड़िया** - वि० [हि] गड़बड़ करनेवाला ।
**गड़बड़ी** स्त्री० [हिं] अव्यवस्था, गोलमाल ।
**गड़रिया** - पु० [हिं] भेड़े पालनेवाला ।

**गड़हा** - पु० [हिं] गड्ढा ।
**गड़ा** - पु० [हिं] ढेर ।
**गड़ाना** - स० [हिं] चुभाना ।
**गड़ाप** - पु० [अनु] पानी आदि में डूबने का शब्द ।
**गड़ारी** - स्त्री० [हिं] गोल लकीर; घेरा; गोल चरखी ।
**गडुआ** - पु० [हिं] टोंटीदार लोटा, झारी ।
**गड़ोना** - स० [हिं] चुभाना; धँसाना ।
**गड्डालिका** - स्त्री० [सं] अंधानुकरण, भेड़िया-धसान ।
**गड्डी** - स्त्री० [हिं] ढेरी ।
**गड्ढा** - पु० [हिं] गड़हा; मु०—खोदना - हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना ।
**गढंत** - 1. वि० [हिं] बनावटी; 2. स्त्री० बनावटी बात ।
**गढ़** - पु० [हिं] दुर्ग ।
**गढन** - स्त्री० [हिं] बनावट ।
**गढना** - स० [हिं] रचना, बनाना; मु० गढ़-गढ़कर बातें करना - नमक-मिर्च लगाकर कहना ।
**गढ़ा** - पु० [हिं] गड्ढा ।
**गढाई** - स्त्री० [हिं] गढ़ने का काम; गढ़ने की मजूरी ।
**गढ़ाना** - स० [हिं] बनवाना ।
**गढिया** - पु० [हिं] गढ़नेवाला; छोटा गढ़ा ।
**गढी** - स्त्री० [हिं] छोटा क़िला ।
**गढ़ेला** - पु० [हिं] गढ़ा, गड्ढा ।
**गढ़ैया** - वि० [हिं] गढ़नेवाला ।
**गण** - पु० [सं] झुण्ड, समूह ।
**गणक** - पु० [सं] ज्योतिषी ।
**गणन** पु० } **गणना** स्त्री० } [सं] गिनती, गिनना ।
**गणराज्य** - पु० [सं] वह राज्य जो चुने हुए मुखियों के द्वारा चलाया जाता है, प्रजातंत्र राज्य का एक रूप ।
**गणिका** - स्त्री० [सं] वेश्या, रंडी ।
**गणित** - पु० [सं] हिसाब; अंकशास्त्र ।
**गत** - वि० [सं] बीता हुआ, पिछला ।
**गतका** - पु० [हिं] लकड़ी का एक डंडा ।
**गतांक** - 1. पु० [सं] पिछला अंक; संख्या; 2. वि० गया-बीता ।
**गति** - स्त्री० [सं] चाल; गमन; पहुँच ।
**गत्ता** - पु० [देश] कार्डबोर्ड, दफ़्ती ।
**गत्तालखाता** - पु० [हिं] गयी-बीती रक़म का लेखा-जोखा; मु० — में जाना - हज़म होना ।
**गथना** - स० [हिं] एक में एक जोड़ना, बात बनाना ।
**गद** - पु० [सं] विष; रोग ।
**गदका** - पु० [हिं] मोटा डंडा, गतका ।
**गद्गद** - वि० [सं] प्रफुल्लित ।
**गदना** - स० [हिं] कहना, बोलना ।
**गदबदा** - वि० [हिं] मुलायम, कोमल ।
**गदम** - पु० [हिं] नाव बनाते समय उसे उठाये रखने के लिए लगायी जानेवाली लकड़ी ।
**ग़दर** - पु० [अ] बग़ावत, विद्रोह ।
**गदराना** - अ० [हिं] पकने पर होना; जवानी में अंगों का भरना ।
**गदला** - वि० [हिं] मैला, मिट्टी या कीचड़ मिला हुआ (पानी) ।
**गदहपचीसी** - स्त्री० [सं] सोलह से पचीस वर्ष की अवस्था; जिसको अभी पूरा अनुभव न हो ।
**गदहा** - पु० [हिं] गधा; चिकित्सक ।
**गदा** - 1. स्त्री० [सं] एक प्राचीन हथियार जो भीम हनुमान आदि का मुख्य अस्त्र माना जाता है; 2. पु० [फ़ा] भिखारी, रंक ।
**गदाई** - वि० [फ़ा] नीच; रद्दी ।
**ग़दीर** - वि० [अ] धोखेबाज ।

**गदेला** - पु० [हि] तोशक ; बालक ।

**गद्दा** - पु० [हिं] भारी तोशक ।

**ग़द्दार** - पु० [अ] भारी विद्रोही ।

**गद्दी** - स्त्री० [हिं] छोटा गद्दा; राज-सिंहासन ; मु०—पर बैठना - सिंहासन पर बैठना या उत्तराधिकारी होना ।

**गद्दीनशीन** - वि० [हिं] सिंहासनारूढ़ ।

**गद्य** - पु० [सं] जिस रचना में शब्दों का क्रम व्याकरण के अनुसार रहे, वार्तिक ।

**गधा** - 1. पु० [हि] गदहा; 2. वि० नासमझ, मूर्ख ; अहमक ।

**गन** - पु० [हि] गण ।

**गनगौर** - स्त्री० [हिं] चैत्र शुक्ल तृतीया, जब कि स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती है ।

**गनाना** - स० [हिं] अदा करना ; ले लेना ।

**गनियारी** - स्त्री० [हि] छोटी अरनी; शमी की तरह का एक पौधा ।

**गनी** - स्त्री० [हिं] गिनती ।

**ग़नी** - पु० [अ] बड़ा धनवान ; बेपरवाह ।

**ग़नीम** - पु० [अ] शत्रु ; डाकू ।

**ग़नीमत** - स्त्री० [अ] संतोष की बात ; लूट का माल ।

**गन्ना** - पु० [हिं] ईख, गँडेरी ।

**गप** - स्त्री० [फ़ा] व्यर्थ की बातचीत ; मु०—उड़ाना - झूठी बाते कहना ; —मारना - झूठी विनोदपूर्ण बातें कहना ; —हाँकना - काल्पनिक बातें करना ;—कर जाना - हड़प लेना ।

**गपकना** - स० [हिं] चटपट निगल जाना ; अपहरण करना ।

**गपड़चौथ** - पु० [हिं] व्यर्थ की गोष्ठी ।

**गपशप** पु० [हिं] झूठी-सच्ची बात ; मनो-विनोद की बात ।

**गपोड़ा** - पु० [हिं] मिथ्या बात ।

**गप्प** - स्त्री० [हि] गप ।

**गप्पा** - पु० [हिं] गप ; बड़ा कौर ।

**गप्पी** - वि० [हि] गप मारनेवाला ।

**ग़फ़** - वि० [फ़ा] घना ; ठसा , गाढ़ा ।

**ग़फ़लत** - स्त्री० [अ] असावधानी, बेसुधी ; भूल-चूक ।

**ग़फ़ीर** - पु० [अ] छिपानेवाला ।

**ग़फ़ूर** - वि० [अ] क्षमा करनेवाला ।

**ग़फ़्फ़ार** - वि० [अ] बड़ा दयालु ।

**ग़फ़्स** - वि० [अ] मोटा, ग़फ ।

**ग़बन** - पु० [अ] ख़यानत, दूसरे के सौपे हुए माल को हड़प जाना।

**गबरू** - वि० [देश] भोला-भाला ; दूल्हा, पति ।

**गभीर** - वि० [हिं] गम्भीर ।

**गभुआर** - वि० [हि] पैदाइशी (बाल) ; जिस (बालक) का अभी तक मुंडन न हुआ हो ।

**ग़म** - पु० [अ] रंज, शोक ।

**गमक** - पु० [सं] सूचक, बोधक ।

**ग़मख़ोर** - वि० [अ] सहनशील ।

**ग़मग़लत** - पु० [अ] दुखी मन को बहलाने का काम ; खेल-तमाशा ।

**ग़मगीं, ग़मगीन** - वि० [अ] दुखी, रंजीदा ।

**गमछा** - पु० [हिं] छोटी धोती, तौलिया ।

**ग़मज़दा** - वि० [अ] दुखी ।

**गमन** - पु० [सं] जाना ; चलना ।

**गमला** - पु० [हिं] फूलों के पौधे लगाने का बाल्टी-जैसा मिट्टी का बर्तन ; कमोड ।

**गमाना** - स० [हि] खो देना, गँवाना ।

**ग़मी** - स्त्री० [अ] शोक की अवस्था या काल ; मृत्यु, मौत ।

**गम्भीर** - पु० [सं] गहरा ; अथाह ।

**गम्मत** - स्त्री० [हिं] विनोद, हँसी ।

**ग़म्माज़** - पु० [अ] चुग़लख़ोर

**ग़म्माज़ी** - स्त्री० [अ] चुग़ली ।

**गम्य** - वि० [सं] जाने योग्य ।

**गयल** - स्त्री० [हिं] मार्ग, गली, गैल ।
**ग़यास** - स्त्री० [अ] सहायता ।
**ग़य्यूर** - वि० [अ] ईर्ष्या करनेवाला
**गर** - 1. प्रत्य० [फ़ा] बनानेवाला ; 2. पु० रोग, बीमारी ; विष ; 3. क्रि० अगर ।
**ग़रक़** - वि० [अ] डूबा हुआ, निमग्न, ग़र्क ; नष्ट ।
**ग़रक़ाब** - 1. वि० [अ] डूबा हुआ ; 2. पु० गहरा पानी ; पानी का भँवर ।
**ग़रक़ी** - स्त्री० [अ] बाढ़ ; वह ज़मीन जो पानी में डूब गयी हो ।
**ग़रगाब** - वि० [अ] पानी में डूबा हुआ ।
**गरचे** - अव्य० [फ़ा] यद्यपि ।
**गरज** - स्त्री० [हि] तुमुल शब्द, गर्जन ।
**ग़रज़** - स्त्री० [अ] मतलब ; इच्छा ; ज़रूरत ; यौ०—मंद - जिसे आवश्यकता हो ।
**ग़रज़ी** - वि० [अ] स्वार्थी ।
**गरट्ट** - पु० [हिं] समूह, झुंड ।
**गरद** - स्त्री० [फ़ा] धूल, गर्द, मिट्टी ।
**गरदन** - स्त्री० [फ़ा] ग्रीवा ; मु० — उठाना - विरोध करना ; — पर - जिम्मे, ऊपर ।
**गरदनियाँ** - स्त्री० [हिं] किसीको गर्दन पकड़कर कहीं से निकालने की क्रिया, अर्धचंद्र ।
**गरदनी** - स्त्री० [अ] घोड़े को ओढ़ाने का कपड़ा ; कुश्ती का एक पेंच ।
**गरदान** - स्त्री० [फ़ा] लौटना ।
**गरदिश** - स्त्री० [फ़ा] घुमाव ; विपत्ति ।
**गरदी** - स्त्री० [फ़ा] घूमना-फिरना ; क्रांति ।
**गरदुआ** - पु० [हिं] पशुओं को होनेवाला एक तरह का ज्वर ।
**गरदूँ** - पु० [फ़ा] आकाश ।
**गरना** - अ० [हि] गलना, पिघलना ।
**गरनाल** - पु० [हिं] अति चौड़े मुँहवाली तोप ।
**ग़रब** - पु० [अ] पश्चिम ; सूरज का डूबना ।
**गरब** - पु० [हिं] घमंड, गर्व ; हाथी का मद ।
**गरबा** - पु० [हिं] एक गुजराती नृत्य ।
**गरभ** - पु० [हिं] गर्भ ; गर्व ।
**गरभाना** - अ० [हिं] गर्भिणी होना ।
**गरम** - वि० [फ़ा] जलता हुआ, तप्त ; मु० — कपड़ा - जाड़े का ऊनी कपड़ा ; मिज़ाज गरम होना - क्रोध आना ; पागल होना ।
**गरमाना** - अ० [अ] ग़ुस्सा होना; तप्त होना ।
**गरमाबा** - पु० [फ़ा] गरम पानी से स्नान ।
**गरमाहट** - स्त्री० [हिं] उष्णता ।
**गरमी** - स्त्री० [फ़ा] ताप ; मु०—निकलना - गर्भ दूर होना ; आवेश कम होना ; — चढ़ना - क्रोध आना ; पागल होना ।
**गररा** - 1. वि० [देश] गर्रा ; लाख के रंग का ; 2. पु० लाखी रंग ; लाखी रंग का घोड़ा ।
**गरराना** - अ० [अनु] घोर ध्वनि करना ।
**गरल** - पु० [सं] विष, ज़हर ।
**गरहन** - पु० [हिं] ग्रहण ।
**गराँ** - वि० [फ़ा] भारी ; महँगा ; कठिन ; यौ०—सर - अभिमानी ; —जान - जो जल्दी न करे ।
**गराँव** - पु० [हिं] चौपायों के गले में बाँधी जानेवाली दोहरी रस्सी ।
**गरा** - पु० [हि] गला ।
**गराड़ी** - स्त्री० [हिं] चरखी, काठ या लोहे का गोला जिसके मध्यवर्ती गड्ढे में रस्सी डालकर लोग कुएँ से पानी खींचते हैं ।
**गराना** - स० [हिं] गलाना ।
**गरानी** - स्त्री० [फ़ा] महँगी ।
**गरामी** - वि० [फ़ा] सम्मानित, पूज्य ; बुजुर्ग ।
**ग़रायब** - वि० [अ] विलक्षण ; ग़रीब का बहु० ।

**ग़रारा** - 1. पु० [फ़ा] कुल्ला ; 2. वि० प्रचण्ड ; बलवान ।
**गरास** - पु० [हिं] ग्रास ।
**गरासना** - स० [हिं] ग्रसना
**गरिमा** - स्त्री० [सं] गुरुता, बोझ ; महिमा ; अहंकार ।
**गरियाना** - अ० [हिं] गाली देना ।
**गरिष्ठ** - वि० [सं] बहुत भारी ; जो जल्दी न पचे, देर से पचनेवाला ।
**गरी** - स्त्री० [हिं] नारियल के फल के भीतर का मुलायम गूदा, गिरी ।
**ग़रीक़** - वि० [अ] डूबा हुआ, मग्न, ग़र्क़ ।
**ग़रीज़** - 1. स्त्री० [अ] प्रकृति ; 2. वि० सहनशीलता ।
**ग़रीज़ी** - वि० [अ] प्राकृतिक ।
**ग़रीब** - वि० [अ] दरिद्र ।
**ग़रीब-उल वतन** - वि० [अ] जो घर-बार छोड़कर विदेश में पड़ा हो ।
**ग़रीबख़ाना** - पु० [अ] रहने का मकान ।
**ग़रीबनवाज़** - वि० [अ] दीन-पालक ।
**ग़रीबपरवर** - वि० [अ] दीनों का पालक ।
**ग़रीबाना** - वि० [अ] ग़रीबों-सा ।
**ग़रीबी** - स्त्री० [अ] दरिद्रता ; नम्रता ।
**गरु, गरुआ** - वि० [हिं] भारी ; वज़नी ।
**गरुड़** - पु० [सं] पक्षिराज ; यौ०—गामी - विष्णु ; —ध्वज - भगवान ; —व्यूह - लड़ाई के मैदान में सेना के जमाव या स्थापन का एक क्रम ।
**गरुब** - पु० [अ] गुरूब, अस्त होना ।
**गरुवाई** - स्त्री० [हिं] गुरुता, गुरुआई ।
**ग़रूर** - पु० [अ] घमंड, अहंकार ।
**गरेड़िया** - पु० [हिं] गड़रिया ।
**गरेबान** - पु० [फ़ा] पोशाक के गले का भाग ।
**ग़रेव** - पु० [फ़ा] कोलाहल ।
**ग़रोह** - पु० [फ़ा] झुंड, समूह ।
**ग़र्क़** - वि० [अ] डूबा हुआ, मग्न ।
**गर्जन** - पु० [सं] भीषण ध्वनि ।
**गर्त्त** - पु० [सं] गड्ढा, गढा ।
**गर्द** - स्त्री० [फ़ा] धूल ; यौ०—ख़ोर - जो धूल आदि से जल्दी ख़राब न हो ; मु० — को न पहुँचना या पाना - समता न कर सकना ।
**गर्दन** - स्त्री० [अ] गरदन, ग्रीवा ।
**गर्दभ** - पु० [सं] गधा ; सफेद कुई ; गंध ।
**गर्दिश** - स्त्री० [फ़ा] घुमाव ; विपत्ति ; मु० —में आना - विपत्ति में पड़ना ।
**गर्धी** - वि० [सं] चाहनेवाला, लोभी ।
**ग़र्ब** - पु० [अ] पश्चिम, सूरज का डूबना ।
**गर्भ** - पु० [सं] पेट के भीतर का बच्चा, हमल , यौ०—केसर - फूलों के वे पतले रेशे जो गर्भनाल के भीतर होते है ; मु० —गिरना - बच्चे का समय से पूर्व ही पेट से निकल आना ।
**गर्भित** - वि० [सं] भरा हुआ, पूर्ण ।
**गर्म** - वि० [फ़ा] गरम ।
**गर्मी** - स्त्री० [फ़ा] गरमी ।
**ग़र्रा** - पु० [अ] घमंड ।
**गर्व** - पु० [सं] घमंड, अहंकार ।
**गर्वी, गर्वीला** - वि० [हि] घमंडी ।
**गर्हणीय** - वि० [सं] निंदनीय ।
**गर्हा** - स्त्री० [सं] तिरस्कार ; निंदा ।
**गर्हित** - वि० [सं] जिसकी निंदा की जाय, निंदित ।
**गर्लेश** - पु० [सं] वह संपत्ति जिसका मालिक या वारिस न हो ।
**गल** - पु० [सं] गला, कंठ ; यौ०—कँवल - गाय या बैल के गले के नीचे लटकनेवाला मास-भाग, सास्ना ।
**गलका** - पु० [हिं] हाथ की उँगली में होनेवाला फोड़ा ।

**गलगल** - पु० [हिं] एक प्रकार का खट्टा नींबू ; एक चिड़िया ; चूना और अलसी के तेल से बना हुआ एक मसाला ।
**गलगला** - वि० [हिं] भीगा हुआ, तर ।
**गलझंप** - पु० [हिं] हाथी के गले की लोहे की झूल ।
**गलतंस** - स्त्री० [हिं] निस्सतान पुरुष या उसका धन ।
**ग़लत** - वि० [अ] अशुद्ध ; झूठा ; यौ०—नामा - अशुद्धि-पत्र : —फ़हमी - ग़ैर-समझ, भ्रम में पड़कर कुछ दूसरा ही समझना ।
**ग़लता** - पु० [फ़ा] मोटा रेशमी कपड़ा ।
**ग़लती** - स्त्री० [अ] भ्रम ; भूल ।
**गलथन** - पु० [हिं] वह थन जो बकरियों के गले में होता है ।
**गलथैली** - स्त्री० [हिं] बंदरों के गालों के नीचे की थैली जिसमें वे खाने के पदार्थ भर लेते हैं, गलौआ ।
**गलन** - पु० [सं] गिरना, पतन ।
**गलना** - अ० [हि] पिघलना या पिघलकर कोमल होना ; ठिठुरना ।
**गलबल** - पु० [अनु] कोलाहल ।
**गलशुंडी** - स्त्री० [हिं] जीभ-जैसा मांस का एक छोटा टुकड़ा जो जीभ और गले के बीच में रहता है ।
**गलसुई** - स्त्री० [हि] गलतकिया ।
**गलही** - स्त्री० [हि] नाव का अगला हिस्सा जहाँ दोनो पार्श्व मिलते है ।
**गला** - पु० [हि] गरदन, कंठ ; मु० —काटना - सिर काटना, जान से मार डालना ; बहुत हानि पहुँचाना ; —घुटना - दम रुकना ; गले तक आना - कुछ स्मरण आना ; बहुत गहरा होना ; —फाड़ना - ज़ोर से चिल्लाना ; गले के नीचे उतरना - मन में बैठना, जी में जंचना ; गले पड़ना - इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना ।
**गलाना** - स० [हि] पिघलाना ; ख़र्च करना ।
**गलित** - वि० [सं] गिरा हुआ ; पुराना, जीर्ण-शीर्ण ।
**गलियाना** - स० [हिं] गाली देना ।
**गलियारा** - पु० [हिं] छोटी गली ।
**गली** - स्त्री० [हिं] घरों की क़तारों के बीच से जानेवाली राह, कूचा, रास्ता ; मु० गली-गली मारे फिरना - इधर-उधर व्यर्थ घूमना ।
**गलीचा** - पु० [फ़ा] क़ालीन, सूत या ऊन के मोटे धागे से बना हुआ बिछौना ।
**ग़लीज** - वि० [अ] मैला, गदला, अशुद्ध ; यौ० — ख़ाना - कूड़ाघर ।
**गलीत** - वि० [हिं] मैला-कुचैला ।
**गलू** - पु० [हिं] एक तरह का क़ीमती पत्थर ।
**गलेफ़** - पु० [हिं] दोहरा ओढ़ने का कपड़ा ; दोहर ।
**गलेबाज़** - वि० [हिं] अच्छा गानेवाला ।
**गलौआ** - पु० [हिं] गाल, बंदरों के गले की थैली ।
**गल्प** - स्त्री० [सं०] छोटी कहानी ; गप्प, मिथ्या प्रलाप ; डींग मारना ।
**गल्भ** - वि० [सं] ढीठ ; घमंडी ; वाचाल ।
**गल्ला** - पु० [हि] कोलाहल ; झुंड, दल ।
**ग़ल्ला** - पु० [फ़ा] अन्न, फ़सल ।
**ग़ल्लाफरोश** - वि० [फ़ा] अन्न-विक्रेता ।
**गल्लेवान** - पु० [फ़ा] गड़रिया ।
**गवन** - पु० [हिं] प्रस्थान ; गौना ।
**गवनचार** - पु० [हिं] वर के घर में वधू के आने की रस्म ।
**गवय** - पु० [हिं] नीलगाय का नर ।
**गवहिं** - क्रि० [हिं] मतलब से, चुपके से, मौक़े से ।

**गवाँना** - स० [हि] खोना।

**गवाक्ष** - पु० [स] छोटी खिड़की, झरोखा।

**गवार** - 1. वि० [फ़ा] पचनेवाला; रुचनेवाला 2. पु० एक शाक।

**गवारा** - वि० [फ़ा] अनुकूल, पसद, सह्य।

**गवास** - 1. पु० [हिं] गोभक्षक; कसाई; 2. स्त्री० गाने की इच्छा।

**गवाह** - पु० [फ़ा] साक्षी।

**गवाही** - स्त्री० [फ़ा] साक्ष्य; प्रमाण, सबूत।

**गवेजा** - स्त्री० [हिं] गप्प, बातचीत।

**गवेषणा** - स्त्री० [सं] खोज, तलाश, अन्वेषण।

**गवैया** - पु० [हिं] गायक।

**गव्य** - 1. वि० [सं] गाय से उत्पन्न (दूध, दही, घी आदि); 2. पु० गायों का झुंड; पंचगव्य; गोरोचन।

**गव्या, गव्यूति** - स्त्री० [सं] दो कोस की दूरी; चरागाह।

**गश** - पु० [फ़ा] मूर्च्छा, बेहोशी; मु०— खाना (आना) - बेहोश होना।

**गश्त** - पु० [फ़ा] टहलना, घूमना; दौरा, भ्रमण; पहरे के लिए किसी स्थान के चारो ओर या गली-कूचों में घूमना।

**गश्ती** - वि० [फा] घूमनेवाला, फिरनेवाला।

**गसना** - स० [हि] जकड़ना, बाधना।

**गसीला** - वि० [हि] जकड़ा हुआ, बंधा हुआ, गठा हुआ।

**गस्सा** - पु० [हिं] ग्रास, कौर।

**गह** - स्त्री० [हि] पकड़, मूठ, हत्था; मु० —बैठना - मूठ पर भरपूर हाथ जमाना।

**गहक** - अ० [हि] लालसापूर्ण होना।

**गहगहा** - 1. अ० [हि] पौधों का लहलहाना; खुशी से भर उठना; 2. वि० प्रफुल्ल; 3. क्रि० धूम-धाम से, उत्साह के साथ।

**गहडोरना** - स० [हि] पानी को मथ या हिलाकर गंदला करना।

**गहन** - वि० [सं] गंभीर, अथाह; दुर्गम; दुर्भेद्य, घना; कठिन, जटिल।

**गहना** - 1. पु० [हिं] आभूषण, आभरण; 2. स० पकड़ना, लेना।

**गहनि** - स्त्री० [हिं] टेक, अड़, ज़िद, पकड़।

**गहबर** † - वि० [हिं] दुर्गम; उद्विग्न; मनोवेग से आकुल, गह्वर।

**गहर** † - स्त्री० [हिं] देर, विलंब।

**गहरा** - वि० [हि] गहन, अथाह, गंभीर; ज़्यादा, घोर, प्रचंड; मु० — पेट या आदमी - ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले; --- हाथ मारना - हथियार से भरपूर वार करना; ख़ूब धन चुराना; गहरी घुटना या गहरी छनना - ख़ूब आमोद-प्रमोद करना।

**गहराई** - स्त्री० [हिं] गहरापन, गहरेपन की माप।

**गहराना** - अ० [हिं] अधिक तीव्र बनना; गहरा होना।

**गहरेबाजी** - स्त्री० [हिं] एक्के के घोड़े को ख़ूब तेज़ दौड़ाना।

**गहलौत** - पु० [देश] राजपूताने के क्षत्रियो का एक वंश।

**गहवा** - पु० [हि] चिमटा, संड़सी।

**गहवारा** - पु० [फ़ा] पालना, हिंडोला; वह जगह जहाँ कोई चीज़ पाली-पोसी व बड़ी की जाय।

**गहाई** - स्त्री० [हिं] गहन, पकड़।

**गहासना** - स० [हि] निगल लेना।

**गहिरा, गहिरी** - वि० [हि] गंभीर, अथाह।

**गहिला** - वि० [हिं] गर्व, घमंड।

**गहीर** - वि० [हिं] गंभीर, गहरा।

**गहीला** - वि० [हिं] गर्वयुक्त, घमंडी; पागल

**गहेजुआ** - पु० [देश] छछूँदर।

**गहेलरा** - वि० [देश] पागल, मूर्ख; गंवार।

**गहेला** - वि० [हिं] हठी, घमंडी; पागल।

**गह्वर** - 1. पु० [सं] बिल, विषम स्थल ; गुफा, कंदरा ; लता-गृह, झाड़ी ; जंगल, वन ; 2. वि० दुर्गम, विषम ; गुप्त ।

**गांगेय** - पु० [सं] भीष्म; कार्तिकेय ; सोना ; हिलसा मछली ।

**गांजा** - पु० [हिं] भांग की जाति की एक मादक वस्तु और पौधा जिसकी कली का चरस बनता है ।

**गाँठ** - स्त्री० [हिं] गिरह, गठरी ; अंग का जोड़ ; **मु०**— खुलना - उलझन मिटना, किसी भारी समस्या का समाधान होना ; मन व हृदय की गाँठ खोलना - जी खोलकर कोई बात कहना ; — पकड़ना व करना - भेद मानना ; — काटना - जेब कतरना ; ठग लेना ; अधिक दाम ले लेना ; — करना - संग्रह करना ; — का - पास का ; — का पूरा - धनी, मालदार ; — जोड़ना - ब्याह करना ; — में बाँधना - अच्छी तरह याद रखना ।

**गाँठकट** - पु० [हि] ठग ।

**गाँठगोभी** - स्त्री० [हिं] गोभी की एक जाति ; करमकल्ला ।

**गाँठना** - स० [हिं] काम निकालना ; अपने पक्ष में करना ।

**गाँडर** - स्त्री० [हिं] तराई के स्थान पर होनेवाली मूँज की तरह की एक घास, गंडदूर्वा ।

**गांडीव** - पु० [सं] अर्जुन का धनुष ।

**गांभीर्य** - पु० [सं] गंभीरता, गहराई ; चित्त की स्थिरता ।

**गाँव** - पु० [हिं] ग्राम, छोटी बस्ती ।

**गाँस** - स्त्री० [हिं] रुकावट; भेद की बात ; वैर ; गांठ, फंदा ।

**गाँसना** - स० [हिं] परस्पर मिलाकर कसना, गूंथना ; **मु०** बात को गाँसकर रखना - मन में बैठाकर रखना, हृदय में जमाना ।

**गाइ** - † स्त्री० [हिं] गाय ।

**गागर** - स्त्री० [हिं] गगरी, घड़ा, कलसा ।

**गाच** - पु० [अ] बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिसपर रेशमी बेल-बूटे रहते हैं, फुलवर ।

**गाछ** - पु० [हि] छोटा पेड़-पौधा ; वृक्ष ।

**गाछी** - स्त्री० [हिं] गोनी, बाग़ ।

**गाज** - स्त्री० [हिं] गर्जन, बिजली गिरने का शब्द ; वज्र ; **मु०** —पड़ना - आपत्ति आना, ध्वंस या नष्ट होना ।

**गाजना** - अ० [हिं] गरजना, चिल्लाना ; प्रसन्न होना ।

**गाजर** - स्त्री० [हिं] एक मीठा कन्द ; **मु०** —मूली समझना - तुच्छ समझना ; साधारण जानना ।

**ग़ाज़ा** - पु० [फ़ा] गालों पर मलने का एक सुगंधित पाउडर ।

**ग़ाज़ी** - पु० [अ] धर्म-विजयी मुसलमान ।

**ग़ाज़ीमर्द** - पु० [अ] वीर पुरुष ; घोड़ा ।

**गाड़** - पु० [हि] गड्ढा ; कुएँ का ढाल ; खेत की मेंड ।

**गाड़ना** - स० [हिं] ज़मीन के भीतर दफ़नाना, तोपना ; गुप्त रखना, छिपाना ।

**गाड़र** - स्त्री० [हिं] भेंड़ ।

**गाड़ी** - स्त्री० [हिं] शकट ।

**गाढ** - वि० [सं] अधिक दृढ़, घना ; अथाह; कठिन ; **मु०** गाढ़े में पड़ना - संकट में पड़ना ; गाढ़े की कमाई - कठिन परिश्रम से कमाया हुआ धन ; गाढ़ा समय - संकट के दिन, विपत्ति ।

**गात** - पु० [हिं] शरीर, अंग, गात्र ; **मु०**— उमगना - छाती उठना, कुच निकलना ; — से होना - गर्भवती होना ।

**गाती** - स्त्री० [हिं] चादर आदि ओढ़ने का एक ख़ास ढंग ।

**गात्र** - पु० [सं] देह, अंग।

**गाथ** - पु० [सं] स्तोत्र ; गान।

**गाथक** - पु० [सं] गायक ; स्तोत्र-गान करनेवाला।

**गाथा** - स्त्री० [सं] स्तुति ; श्लोक ; गीत ; कथा ; **मु०**— गाना - कथा या प्रशंसा करना।

**गाद** - स्त्री० [हिं] तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज़ ; गोद ; तलछट।

**गादा** - पु० [हिं] अधपका अन्न, महुए का फूल।

**गादी** - स्त्री० [हिं] गद्दी ; एक पकवान ; हथेली।

**गाध** - 1. पु० [सं] स्थान, जल के नीचे का स्थल, थाह ; लिप्सा ; 2. वि० जिसकी थाह पा सकें, उथला।

**गान** - पु० [स] गाना ; स्तवन ; शब्द ; गमन।

**गाना** - पु० [हिं] अलाप के साथ ध्वनि निकालना ; वर्णन करना, सविस्तार कहना ; **मु०** अपनी ही गाना - अपनी ही बात कहते जाना।

**ग़ाफ़िल** - वि० [अ०] बेसुध, असावधान।

**गाभ** - पु० [हिं] पशुओ का गर्भ ; बरतन का साँचा जिसपर गोबर की तह न चढ़ाई गयी हो।

**गाभा** - पु० [हिं] नया कल्ला, कोपल ; केले आदि के डंठल का भीतरी भाग ; पेड़ आदि का हीर या सार-भाग।

**गाभिन** } - वि०, स्त्री० [हिं] गर्भिणी
**गाभिनी** } (चौपायो के लिए)।

**गाम** - पु० [हि] गाँव, ग्राम।

**ग़ाम** - पु० [फ़ा] कदम।

**गाय** - स्त्री० [हिं] गौ ; बहुत सीधा-सादा मनुष्य ; **मु०** — की तरह काँपना - बहुत डरना ; — का बछिया तले और बछिया का गाय तले करना - इधर-उधर करना।

**गायक** - पु० [सं] गवैया।

**गायगोठ** - स्त्री० [हिं] गोशाला।

**ग़ायत** - स्त्री० [अ] अन्त, सीमा ; मतलब।

**गायत्री** - स्त्री० [सं] एक वैदिक मन्त्र ; सावित्री ; दुर्गा ; गंगा।

**ग़ायब** - वि० [अ] लुप्त, छिपा हुआ ; **मु०** —करना - चुरा लेना।

**ग़ायबाना** - वि० [अ] पीठ पीछे, गुप्त रीति से।

**गार** - 1. स्त्री० [हि] गाली, अभिशाप ; 2. प्रत्य० [फ़ा] करनेवाला, जैसे, 'मददगार'; साधन, जैसे, 'यादगार'।

**ग़ार** - पु० [अ] गहरा गड्ढा, गुफा, बिल।

**ग़ारत** - वि० [फ़ा] बरबाद, नष्ट ; तबाह।

**गारद** - स्त्री० [अंग्रे] रक्षार्थ सिपाहियो का झुण्ड ; पहरा, चौकी।

**गारना** - स० [हिं] निचोड़ना, पानी के साथ घिसना ; **मु०** तन या शरीर गारना - शरीर को कष्ट देना।

**गारा** - पु० [हिं] बालू चूने या सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटे सटायी जाये।

**गारी** - स्त्री० [हि] गाली।

**गारुड़** - पु० [स] सर्प-विनाशक मन्त्र, सेना की एक व्यूह-रचना ; सुवर्ण, सोना।

**गारुडिक, गारुड़ी** - पु० [सं] मन्त्र से सर्प-विष उतारनेवाला।

**गारो** - पु० [हिं] गर्व, घमंड; बड़प्पन।

**गार्हस्थ्य** - पु० [सं] गृहस्थाश्रम ; गृहस्थ के कर्तव्य ; पंचयज्ञ ; गृहकार्य।

**गाल** - पु० [हिं] गंड, कपोल ; मुँहजोरी ; मद्य ; **मु०** —फुलाना - अभिमान प्रकट करना ; — बजाना - डींग मारना, बढ़-बढ़कर बातें करना ; काल के गाल में जाना - मृत्यु के मुख में पड़ना, मरना।

**गालगूल** - पु० [हिं] व्यर्थ बात, गपशप, अनाप-शनाप ।

**गालन** - पु० [सं] निचोड़ना ; गलाना ।

**गाला** - पु० [हि] चुनी हुई रूई का गोला जो चरखे में कातने के लिए बनाया जाता है ; **मु०** रूई का गाला - बहुत उज्ज्वल ; हलका ।

**ग़ालिब** - वि० [अ] जीतनेवाला, विजयी ; श्रेष्ठ ।

**ग़ालिबन** - अव्य० [अ] सम्भवतः ।

**गाली** - स्त्री० [हिं] निन्दा या कलंकसूचक वाक्य, दुर्वचन ; **मु०** —खाना - दुर्वचन सुनना ; **यौ०** —गलौज - परस्पर गाली देना, तू-तू मैं-मैं ; —गुफ़्ता - गाली-गलौज ।

**गालीचा** - पु० [फ़ा] क़ालीन ।

**गालू** - वि० [हिं] गाल बजानेवाला ; बकवादी, गप्पी ।

**गाव** - पु० [हिं] गौ ; सांड, बैल ; वृषराशि **यौ०** —कुशी - गोहत्या ।

**गावतकिया** - पु० [फ़ा] मसनद ।

**गावदी** - वि० [फ़ा] कुण्ठित बुद्धिवाला, मूर्ख ; मंद ।

**गावदुम** - वि० [फ़ा] चढ़ाव-उतारवाला, ढालू ।

**गावन** - स्त्री० [हिं] गाने का ढंग ।

**गावल** - पु० [हि] दलाल ।

**गासिया** - पु० [हिं] ज़ीनपोश ।

**गाह** - पु० [हि] ग्राहक ; पकड़ ; मगर ।

**गाह** - स्त्री० [फ़ा] स्थान , जगह, जैसे, 'चरागाह, क़त्लगाह'; काल, बारी ; **यौ०**—बगाह - कभी-कभी, समय-समय पर ।

**गाहक** - पु० [हिं] ख़रीदनेवाला ; अवगाहन करनेवाला ; **मु०** जान या प्राण का गाहक - प्राण या जान लेनेवाला ।

**गाहन** - पु० [सं] गोता लगाना, विलोड़ना ।

**गाहना** - स० [हिं] थाह लेना ; अवगाहन करना ; ग्रहण करना ; अनाज माँड़ते वक्त दाना झाड़ने के लिए डाँठ को डंडे से उठाना ।

**गाहा** - स्त्री० [प्रा] कथा, वर्णन ; आर्या-छन्द ।

**गाहि-गाहि** - क्रि० [हिं] ढूँढ-ढूँढकर, खोज-खोजकर ।

**गाही** - स्त्री० [हिं] फल आदि गिनने में पाँच-पाँच का मान , **मु०**—के गाही - बहुत अधिक ।

**गाहे-गाहे** - क्रि० [फ़ा] कभी-कभी ।

**गिंज़ना** - अ० [हिं] किसी चीज़ का उलट-पुलट हो जाने से ख़राब हो जाना ।

**गिंजाई** - स्त्री० [हि] एक बरसाती कीड़ा ।

**गिजगिजा** - वि० [हिं] गीला ; पिलपिला ।

**गिजपिच** - वि० [हिं] अस्पष्ट ; ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में भला न लगे ; छूने में जो मांसल लगता हो ।

**ग़िज़ा** - स्त्री० [अ] भोजन, ख़ुराक ।

**गिटकिरी** - स्त्री० [अनु] तान लेने में विशेष रूप से स्वर का काँपना ।

**गिटकौरी** - स्त्री० [हिं] कंकड़ी, पत्थर का गोल छोटा टुकड़ा ।

**गिटपिट** - स्त्री० [अनु] निरर्थक शब्द ।

**गिट्टक, गीट्टा** - पु० [हिं] चिलम के छेद पर रखने की कंकड़ी ।

**गिट्टी** - स्त्री० [हिं] गेरू या पत्थर आदि के छोटे-छोटे टुकड़े जो सड़क, छत आदि पर बिछाकर कूटे जाते हैं ।

**गिड़गिड़ाना** - अ० [अनु] विनीत प्रार्थना करना ; चिरौरी करना ।

**गिड्डा** - वि० [हिं] नाटा, ठिंगना ।

**गिद्ध** - पु० [हि] एक मांसाहारी पक्षी ।

**गिद्धराज** - पु० [हि] जटायु ।
**गिनगिनाना** - 1. अ० [हि] देह का कांपना ; रोमांच होना ; 2. झकझोरना ।
**गिनती** - स्त्री० [हिं] गणना, शुमार ; मु०—में आना - आदर-मान पाना ; —के - बहुत थोड़े, — पर जाना - हाज़िरी देने या लिखाने जाना ।
**गिनना** - स० [हिं] गणना करना, शुमार करना ; मु० गिन-गिनकर लगाना - ख़ूब पीटना ; गिन-गिनकर दिन काटना - बहुत कष्ट से समय बिताना ; दिन गिनना - आशा में समय बिताना ।
**गिनी** - स्त्री० [अंग्रे] एक विलायती घास ; सोने का अंग्रेज़ी सिक्का ।
**गिरगिट** - पु० [हि] छिपकली की जाति का जन्तु जो प्रायः एक बालिश्त लम्बा होता है और सूरज की किरणो के प्रभाव से अपना रंग बदलता रहता है ; मु०— की तरह रंग बदलना - कभी कुछ कहना और कभी कुछ करना ।
**गिरजा** - पु० [हिं] ईसाइयो का उपासना-गृह ; एक पक्षी ।
**गिरदावर** - पु० [फ़ा] घूम-घूमकर काम की जाँच करनेवाला ।
**गिरधर, गिरधारी** - पु० [हि] गिरिधर, कृष्ण ।
**गिरनार** - पु० [हि] एक पर्वत ; जैनियो का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान ।
**गिरफ़्त** - स्त्री० [फ़ा] पकड़ ।
**गिरफ़्ता** - वि० [फ़ा] पकड़ा हुआ ।
**गिरफ़्तार** - वि० [फ़ा] क़ैद किया गया ।
**गिरमिट** - पु० [हिं] लकड़ी छेदने का बड़ा बरमा ; इक़रारनामा ।
**गिरमिटिया** - पु० [हिं] किसी उपनिवेश में गया हुआ शर्तबंद हिंदुस्तानी मज़दूर ।
**गिरवर** - पु० [हिं] बड़ा पहाड़ ।
**गिरवान** - पु० [हि] देवता ; गरदन ।
**गिरवी** - स्त्री० [फ़ा] बंधक, रेहन ।
**गिरवीदार** - पु० [फ़ा] बंधक रखनेवाला ।
**गिरवीनामा** - पु० [फ़ा] रेहननामा ।
**गिरस्ती** - स्त्री० [हि] गृहस्थी ।
**गिरह** - स्त्री० [फ़ा] गाँठ ; जेब, खीसा ; गुत्थी, उलझन; सवा दो इंच की एक माप ; यौ० —कट - जेब काटनेवाला ।
**गिरही** - पु० [अव] गृहस्थ ।
**गिराँ** - वि० [फ़ा] महँगा ।
**गिरा** - स्त्री० [सं] वाणी ; जिह्वा, जीभ ; सरस्वती ।
**गिराना** - स० [हिं] नीचे डाल देना ; पतन करना ।
**गिरानी** - स्त्री० [हि] महँगी ; अकाल; कमी ।
**गिरामी** - वि० [फ़ा] पूज्य , यौ० नामी-गिरामी - प्रसिद्ध और पूज्य ।
**गिरावट** - स्त्री० [हि] गिरने का भाव, पतन, अधःपतन ।
**गिरास** - पु० [हिं] ग्रास, कौर ।
**गिराह** - पु० [हिं] ग्राह, मगर ।
**गिरि** - पु० [सं] पर्वत ; दस संप्रदायो के अतर्गत एक प्रकार के संन्यासी।
**गिरिजा** - स्त्री० [सं] पार्वती ; गंगा ।
**गिरिधर, गिरिधारी** - पु० [स] श्रीकृष्ण ।
**गिरी** - स्त्री० [हि] फल के अंदर का गूदा।
**गिरो** - पु० [फ़ा] गिरवी, रेहन ।
**गिर्द** - अव्य० [फ़ा] आस-पास ; पास ।
**गिल** - स्त्री० [फ़ा] मिट्टी ।
**गिलकार** - वि० [फ़ा] पलस्तर करनेवाला ।
**गिलकारी** - स्त्री० [फ़ा] पलस्तर का काम ।
**गिलगिली** - पु० [देश] घोड़े की एक जाति ; काँख में गुदगुदाने पर आनेवाली हँसी ।
**गिलट** - स्त्री० [हिं] मुलम्मा, सोने का पानी चढ़ाने का काम ; चाँदी के रंग की घटिया धातु ।

**गिलटी** - स्त्री० [हिं] शरीर के संधि-स्थान की गाँठ ।

**गिलना** - स० [हिं] बिना कुचले निगल जाना।

**गिलबिलाना** - अ० [अनु] अस्पष्ट बोलना ।

**गिलम** - स्त्री० [उ] नरम और चिकना ऊनी क़ालीन ।

**गिलहरा** पु० [हिं] बास की चपटी तीलियो का बना पनडब्बा ; एक कपड़ा ।

**गिलहरी** - स्त्री० [हिं] एक छोटा जानवर जो पेड़ो पर दौड़ता-फिरता है ; चिखुरी ।

**गिला** - पु० [फ़ा] उलाहना, शिकायत ।

**गिलाफ़** - पु० [फ़ा] खोल ; बड़ी रज़ाई, लिहाफ़ ; म्यान ।

**गिलावा** }
**गिलावा** } - पु० [हिं] गारा ; गीली मिट्टी ।

**गिलास** - पु० [अंग्रे] पानी पीने का गोल लंबा पात्र ।

**गिली** - 1. वि० [फ़ा] मिट्टी का ; 2. स्त्री० गुल्ली ; गिलहरी ।

**गिलीम** - पु० [फ़ा] कम्बल ।

**गिलोय** - स्त्री० [फ़ा] गुरुच नामक एक औषधि-लता जो कभी नहीं सूखती ; गुडूची, अमृता ; **मु**०—और नीम चढ़ी - गिलोय कडुवी होती है, नीम के पेड़ पर वाली तो और भी अधिक कडुवी होती है।

**गिलौरी** - स्त्री० [देश] पान का बीड़ा ; **यौ**०—दान - पानदान ।

**गिल्टी** - स्त्री० [दे०] देह मे संधि-स्थान पर होनेवाली गोल गांठ ; सूजने का रोग ।

**गीं** - प्रत्य० [फ़ा] शब्दो के अंत मे लगनेवाला प्रत्यय, जैसे, 'शर्मगी' ।

**गींजना** - स० [हिं] किसी कोमल वस्त्र या पदार्थ को हाथ से ऐसा मसलना जिससे वह ख़राब हो जाय ।

**गीत** - पु० [सं] वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाय ; **मु**० अपना ही गीत गाना - आत्मप्रशंसा करना ; दूसरे की न सुनना।

**गीता** - स्त्री० [सं] भगवद्गीता ; उपदेश ।

**गीतिका** - स्त्री० [स] 26 मात्राओ का एक छंद ।

**गीती** - स्त्री० [फ़ा] संसार ।

**गीदड़** - पु० [हिं] सियार ; **मु**०—भबकी - दिखाऊ साहस ।

**गीदी** - वि० [फ़ा] कायर, डरपोक ।

**गीध** - पु० [हिं] गिद्ध, गृध्र ।

**गीधना** - अ० [हि] आदी होना ; एक बार लाभ उठाकर सदा उसीका इच्छुक रहना ।

**गीन** - प्रत्य० [फ़ा] शब्दो के अन्त में लगनेवाला प्रत्यय ; जैसे, 'ग़मगीन' ।

**गीर** - 1. स्त्री० [स] वाक्य ; वाणी, सरस्वती ; 2. वि० [फ़ा] पकड़ने, लेने या रखनेवाला ; जैसे, 'आलमगीर' ।

**गीर्वाण** - पु० [स] देवता ।

**गीला** - वि० [हिं] भीगा हुआ ।

**गीव** - स्त्री० [देश] गरदन ।

**गुंग** - पु० [फ़ा] गूँगापन ।

**गुंगी** - स्त्री० [हिं] दोमुहाँ साँप ।

**गुंगुआना** - अ० [हि] गूँगे की तरह बोलना ।

**गुंचा** - पु० [अ] कली, झुरमुट ।

**गुंजन** - स्त्री० [सं] भौरो की मधुर ध्वनि ।

**गुंजना** - अ० [हिं] भौरे का गुंजार करना ; गुनगुनाना ।

**गुंजा** - पु० [सं] घुँघुची ; मदिरालय ।

**गुंजाइश** - स्त्री० [फ़ा] समाई ; सुभीता ।

**गुंजान** - वि० [फ़ा] सघन ।

**गुंजायमान** - वि० [स] गूँजता हुआ ।

**गुंजार** - पु० [सं] भौरो की गूँज ।

**गुंठन** - पु० [सं] ढकना ; छिपाना ; लेपन ।

**गुंठा** - पु० [हि] एक प्रकार का नाटे क़द का घोड़ा ; छोटे क़द का मनुष्य ।

**गुंडा** - वि० [हिं] बदमाश; बदचलन, कुमार्गी।

**गुँफ** - पु० [स] उलझन, फँसाव।

**गुँफन** - पु० [सं] गूँथना; फँसाव; गुत्थम-गुत्था।

**गुंफित** - वि० [सं] गूँथा हुआ; सजाया हुआ।

**गुंबज** - पु० [उ] देवालयों या इमारतो की गोल छत; गुंबद।

**गुंबा** - पु० [हिं] चोट से उत्पन्न कड़ी गोल सूजन।

**गुंभी** - स्त्री० [हिं] अंकुर; गाभ।

**गुइयाँ** - स्त्री० [हिं] सखी, सहेली।

**गुग्गुल** - पु० [सं] एक कंटीला पेड़; उस पेड़ का गोंद जो सुगंधित होता है।

**गुच्ची** - स्त्री० [हिं] गोली या गुल्ली-डंडा खेलने का एक छोटा गड्ढा।

**गुच्छा** - पु० [हिं] एक डंठल में लगे कई पत्तो या फलो का समूह।

**गुच्छी** - स्त्री० [हिं] करंज; रीठा; काश्मीर की ओर होनेवाला एक फूल।

**गुज़र** - पु० [फ़ा] निकास; निर्वाह; **यौ०** —बसर - निर्वाह, गुज़ारा।

**गुज़रना** - अ० [उ] बीतना।

**गुज़री** - स्त्री० [उ] वह बाज़ार जो तीसरे पहर लगे।

**गुज़श्ता** - वि० [फ़ा] बीता हुआ।

**गुज़ार** - वि० [फ़ा] देनेवाला।

**गुज़ारना** - स० [उ] काटना, बिताना।

**गुज़ारा** - पु० [फ़ा] निर्वाह।

**गुज़ारिश** - स्त्री० [फ़ा] निवेदन, प्रार्थना।

**गुज़ीं** - वि० [फ़ा] पसद किया हुआ।

**गुझरौट** - पु० [देश] कपड़े की शिकन।

**गुझिया** - स्त्री० [देश] एक मीठा पकवान।

**गुझौट** - पु० [देश] गुझरौट।

**गुटकना** - अ० [हिं] कबूतर का मस्त होकर गुटरगूँ करना; निगलना।

**गुटका** - पु० [हिं] छोटे आकार की पुस्तक।

**गुटकाना** - स० [हिं] तबला बजाना।

**गुटरगूँ** - स्त्री० [अनु] कबूतर की बोली।

**गुटिका** - स्त्री० [सं] गोली।

**गुट्ट** - पु० [हिं] झुंड, दल।

**गुट्ठल** - वि० [हिं] वह फल जिसमें बड़ी गुठली हो, जड़, मूर्ख।

**गुठली** - स्त्री० [हिं] बीज।

**गुड़** - पु० [सं] ईख का जमाया हुआ रस, भेली; **मु०**—खाना और गुलगुलो से घिनाना - बड़ी बुराई करना और छोटी से बचना।

**गुड़गुड़** - पु० [अनु] हुक्का पीने या आँतो में वायु के संचार से होनेवाला शब्द।

**गुड़गुड़ाना** - अ० [अनु] गुड़गुड़ शब्द होना।

**गुड़गुड़ी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का हुक्का।

**गुड़ाना** - स० [हिं] खुदवाना।

**गुड़िया** - स्त्री० [हिं] कपड़े की पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं; **मु०** गुड़ियो का खेल - सरल काम।

**गुड्डा** पु० [हिं] कपड़े का बना हुआ पुतला; **मु०**—बाँधना - निन्दा करना।

**गुड्डी** - स्त्री० [हिं] पतंग।

**गुढा** - पु० [हिं] गुप्त स्थान, छिपने की जगह।

**गुण** - पु० [स] विशेषता, सिफ़त; हुनर; असर; प्रकृति के तीन भाव (सत्त्व, रज और तम); रस्सी, धागा; प्रत्यंचा; नाव की रस्सी।

**गुणक** - पु० [सं] वह अंक जिससे गुणा करे।

**गुणन** - पु० [सं] गुणा करना।

**गुणाकर** - पु० [सं] गुणो की खान।

**गुणाढ्य** - वि० [सं] सद्गुणशाली।

**गुणानुवाद** - पु० [सं] गुणगान, गुणकथन।

**गुत** - वि० [हिं] उदासीन ; मौन ।

**गुत्थमगुत्था** - पु० [हिं] लड़ाई ।

**गुत्थी** - स्त्री० [हिं] उलझन ।

**गुथना** - अ० [हि] फँसना ; भिड़ना ।

**गुथवाना** - स० [हिं] गूँथने का काम करवाना ; भिड़ाना ।

**गुदगुदा** - बि० [हि] भरा हुआ ; नरम, गुलगुला ।

**गुदगुदाना** - 1. स० [हि] काँख के नीचे उँगली लगाकर हँसाना ; 2. अ० उत्कंठा उत्पन्न होना ।

**गुदगुदी** - स्त्री० [हिं] उत्कंठा, शौक़ ; आह्लाद ।

**गुदड़िया** - पु० [हि] गुदड़ी ओढ़नेवाला फ़कीर ।

**गुदड़ी** - स्त्री० [हि] कंथा ; कथरी, फटे-पुराने कपड़ों से बनाया हुआ एक बिछौना ; **यौ०**—बाज़ार - शाम को लगनेवाला बाज़ार जहाँ टूटी-फूटी चीज़ें बिकती हों ; **मु०** —के लाल - तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु ।

**गुदरैन** - स्त्री० [हि] अनुवाचन, पढ़े हुए पाठ को शुद्धतापूर्वक सुनाना ।

**गुदांकुर** - पु० [स] मलद्वार ।

**गुदा** - स्त्री० [सं] मलद्वार ।

**गुदाज़** - वि० [फ़ा] मोटा ।

**गुदाना** - स० [हि] गोदने की क्रिया करना ।

**गुदाम** - पु० [हि] गोदाम ।

**गुदारना** - स० [हि] सुनाना ; पढ़ना ।

**गुदारा** - पु० [देश] नाव से नदी को पार करने की क्रिया, उतारा ; जैसे, 'भये भिनुसार गुदारा लागा'—'तुलसी' ।

**गुन** - पु० [हिं] गुण ।

**गुनगुना** - वि० [देश] कुनकुना, थोड़ा गरम पानी ।

**गुनगुनाना** - अ० [अनु] धीरे-धीरे गाना ।

**गुनचगी** - स्त्री० [फ़ा] खिलने की क्रिया ।

**गुनचा** - पु० [फ़ा] कली ; **यौ०**—दहन - गुलाब के समान चेहरा ।

**गुनना** - स० [हि] विचार करना, सोचना ।

**गुनह** - पु० [हिं] गुनाह ।

**गुनहगार** - वि० [फ़ा] गुनाहगार ।

**गुना** - पु० [हिं] एक प्रत्यय जो केवल संख्यावाचक शब्दों के अंत में आता है ; जैसे, 'दुगुना, तिगुना' आदि ।

**गुनाह** - पु० [फा] अपराध ; **मु०**—बेलज़्ज़त - ऐसा दुष्कर्म जिसमें कोई मज़ा न हो ।

**गुनाहगार** - वि० [फ़ा] अपराधी ।

**गुनी** - पु० [हिं] गुणवान ।

**गुन्ना** - पु० [अ] अनुस्वार ।

**गुपचुप** - क्रि० [हिं] चुपचाप ।

**गुपुत** - वि० [हि] गुप्त ।

**गुप्त** - वि० [सं] छिपा हुआ ; रक्षित ; गूढ़ ।

**गुप्तचर** - पु० [सं] जासूस ।

**गुप्ता** - स्त्री० [सं] प्रेम को छिपाने का उद्योग करनेवाली नायिका ; रखेली ।

**गुप्ती** - स्त्री० [हिं] छड़ी के अंदर गुप्त रूप से रखी किरच या पतली तलवार ।

**गुफा** - स्त्री० [हि] कंदरा, गुहा ।

**गुफ़्त** - वि० [फ़ा] कहा हुआ ।

**गुफ़्तगू** - स्त्री० [फ़ा] बातचीत ।

**गुबरैला** - पु० [हि] गोबर में रहनेवाला छोटा कीड़ा ।

**गुबार** - पु० [अ] गर्द ; दुख ; द्वेष ।

**गुब्बारा** - पु० [देश] भाप या गैस से उड़नेवाला पिटारा ।

**गुम** - वि० [फ़ा] छिपा हुआ ; अप्रसिद्ध ; **यौ०** —नाम - जिसका नाम कोई न जानता हो ; —सुम - चुप ; निश्चेष्ट, स्तब्ध ; —राह - जो ग़लत रास्ते पर चलता हो ; —शुदा - खोया हुआ ।

**गुमकना** - अ० [हिं] भीतर ही भीतर गूँजना ; बाहर प्रकट न होना ।
**गुमटी** - स्त्री० [हिं] मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरो आदि की ऊपर उठी छत ।
**गुमान** - पु० [फ़ा] गर्व ; अनुमान ।
**गुमानी** - वि० [फ़ा] अभिमानी, घमंडी ।
**गुमाश्ता** - पु० [फ़ा] बड़े व्यापारी की ओर से ख़रीदने-बेचनेवाला नौकर ।
**गुम्बद** - पु० [फ़ा] गुंबज, गोल ऊँची छत ।
**गुर** - पु० [हिं] मूल मंत्र , भेद , युक्ति ।
**गुरगा** - पु० [फ़ा] चेला ; जासूस ; **मु०** गुरगे छूटना - जासूस दौड़ाना ।
**गुरगाबी** - पु० [फ़ा] मुंडा जूता ।
**गुरदा** - पु० [फा] कलेजे के पास का एक अंग , साहस ।
**गुरबत** - स्त्री० [अ] विदेश का निवास ।
**गुरबा** - स्त्री० [फ़ा] बिल्ली ।
**ग़ुरबा** - पु० [अ] ग़रीब का बहु० ।
**गुरबी** - वि०, पु० [हि] अभिमानी, घमंडी ।
**गुराब** - पु० [हि] तोप लादने की गाड़ी ।
**गुराव** - पु० [हि] चारा काटना , गंड़ासा ।
**गुरिया** - स्त्री० [हिं] माला का दाना, मनका ।
**गुरु** - 1. वि० [सं] भारी ; बड़ा ; दुष्पाच्य , पूज्य ; कठिन ; दीर्घ या दो मात्रावाला (वर्ण) ; 2. पु० पिता ; पूज्य पुरुष ; शिक्षक ।
**गुरुकुल** - पु० [सं] वह विद्यालय जहाँ गुरु-शिष्य साथ रहते हो ।
**गुरुजन** - पु० [सं] बड़े लोग ; जैसे, 'माता पिता, गुरु' आदि ।
**गुरुता** - स्त्री० [सं] भारीपन ; महत्त्व ; गुरु का पद ।
**गुरुत्वाकर्षण** - पु० [सं] भार के कारण वस्तु का पृथ्वी के केंद्र की ओर खीचा जाना ।
**गुरुमुखी** - स्त्री० [देश] गुरु नानक की चलायी हुई एक लिपि जो नागरी वर्णमाला के आधार पर बनी है ।
**गुरेश** - पु० [देश] गुलेला ।
**गुर्गरी** - स्त्री० [देश] जूड़ी, कंपकंपी से चढ़नेवाला बुख़ार ।
**गुर्ज** - पु० [फ़ा] गदा ।
**गुर्जर** - पु० [सं] गूर्जर, गुजरात और राजपूताने में रहनेवाली एक वीर जाति ।
**गुर्राना** - अ० [अनु] भारी आवाज़ करना ।
**गुर्विणी, गुर्वी** - स्त्री० [सं] गर्भवती स्त्री ; गुरु-पत्नी ; श्रेष्ठ स्त्री ।
**गुल** - पु० [फ़ा] फूल ; **मु०** —करना - बुझा देना ; —खिलना - विचित्र घटना घटना ।
**ग़ुल** - पु० [अ] शोर ।
**गुलकंद** - पु० [फ़ा] गुलाब की पँखुड़ियो से बनी एक मीठी औषधि ।
**गुलकारी** - स्त्री० [फ़ा] बेल-बूटे का काम ।
**गुलखैरा** - पु० [फ़ा] नीले फूलोवाला एक पौधा ।
**गुलगपाड़ा** - पु० [हिं] शोर ।
**गुलगश्त** - पु० [फ़ा] बाग़ में सैर करना ।
**गुलगीर** - पु० [फ़ा] चिराग़ की बत्ती काटने की कैंची ।
**गुलगुला** - 1. वि० [हि] नरम, मुलायम ; 2. पु० एक पकवान ।
**गुल-गूँ** - वि० [फा] गुलाबी ।
**गुलगोथना** - पु० [देश] नाटा और मोटा व्यक्ति ।
**गुलचना** - स० [अनु] गालो पर आघात करना ।
**गुलचा** - पु० [हिं] धीरे से प्रेमपूर्वक गालों पर हाथ का आघात ।
**गुलची** - वि० [फ़ा] माली ।

**गुलछर्रा** - पु० [हि] अधिक भोग-विलास ; मु० गुलछर्रे उड़ाना - खूब ऐश-आराम करना ।

**गुलज़ार** - 1. पु० [फ़ा] बाग ; 2. वि० हरा-भरा ।

**गुलदस्ता** - पु० [फ़ा] फूलो का गुच्छा ।

**गुलदान** - पु० [फ़ा] गुलदस्ता रखने का पात्र ।

**गुलदुम** - पु० [फ़ा] बुलबुल ।

**गुलनार** - पु० [फ़ा] अनार का फूल ।

**गुलफ़ाम** - पु० [फ़ा] बहुत सुंदर रंग ।

**गुलबकावली** - स्त्री० [देश] हलदी के समान एक पौधा जिसमें सुगंधित फूल होते हैं।

**गुलबदन** - 1. पु० [फ़ा] एक रेशमी कीड़ा ; 2. वि० परम सुंदर ।

**गुलबर्ग** - पुं० [फ़ा] गुलाब की पत्ती ।

**गुलमेख** - स्त्री० [फ़ा] वह कीला जिसका सिरा गोल होता है ।

**गुलरू** - वि० [फ़ा] जिसका चेहरा गुलाब की तरह लाल हो ।

**गुलरेज़** - पु० [फ़ा] फुलझड़ी, आतिश-बाज़ी ।

**गुललाला** - पुं० [फ़ा] एक लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है ।

**गुलशकरी** - स्त्री० [फ़ा] गुलकन्द ।

**गुलशन** - पु० [फ़ा] बाग़, वाटिका ।

**गुलशब्बो** - स्त्री० [फ़ा] रजनीगंधा ।

**गुलाब** - पु० [फा] एक कंटील पौधा या झाड़ ; उस पौधे का मीठी सुगंधवाला सुंदर फूल।

**गुलाबपाश** - पु० [फ़ा] गुलाब-जल छिड़कने का पात्र ।

**गुलाबी** - वि० [फ़ा] गुलाब के रंग का ; गुलाबसंबंधी ; थोड़ा या हलका, जैसे, 'गुलाबी नशा'।

**ग़ुलाम** - पु० [अ] ख़रीदा हुआ नौकर, दास ।

**ग़ुलाम-गरदिश** - पु० [फ़ा] ख़ेमे के पास नौकरो के रहने का स्थान ।

**ग़ुलाम-माल** - पु० [फ़ा] कंबल ; बढ़िया और सस्ती चीज़ ।

**ग़ुलामी** - स्त्री० [अ] दासता, गुलाम होने का भाव ; नौकरी , पराधीनता ।

**गुलाल** - पु० [फ़ा] कुमकुम, एक तरह का लाल चूर्ण जो होली के समय एक दूसरे पर छिड़कते है ।

**गुलिस्ताँ** - पु० [फ़ा] बाग़ ।

**गुलू** - पु० [फ़ा] गला ; स्वर ।

**गुलूबंद** - पु० [फ़ा] सिर पर या गले मे लपेटने की एक लंबी पट्टी; गले का एक भूषण ।

**गुलेचश्म** - पु० [फ़ा] आँख की पुतली ।

**गुलेल** - स्त्री० [अ] वह धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ या पत्थर फेंके जाते हैं ।

**गुलेला** - पु० [फा] मिट्टी की गोली जो गुलेल से फेंकी या चलायी जाती है ; गुलेल ।

**गुल्फ** - पु० [सं] एड़ी के ऊपर की गाँठ, टखना, घुट्टी।

**गुल्म** - पु० [स] ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले ; जैसे, 'ईख, बाँस' आदि ; पेट का एक रोग ; सेना की वह टुकड़ी जिसमें 9 हाथी, 9 रथ, 27 घोड़े, और 45 पैदल होते थे ।

**गुल्मी** - स्त्री० [सं] तंबू ; पेड़ो का झुरमुट ; आंवले और छोटी इलायची का पेड ।

**गुल्ला** - पु० [फ़ा] मिट्टी की गोली ; शोर ।

**गुल्लाला** - पु० [फ़ा] गुललाला ।

**गुल्ली** - स्त्री० [हिं] किसी फल की गुठली ; काठ का चार-छः अंगुल लंबा टुकड़ा

जिसके दोनो छोर जौ की तरह नुकीले होते है और बीच का भाग मोटा और गोल होता है। इसे डंडे से मार-मारकर लड़के खेलते है।

**गुवा, गुवाक** - पु० [सं] सुपारी।

**गुवाल** - पु० [हिं] ग्वाल।

**गुविंद** - पु० [हिं] गोविंद।

**गुसाँई** - पु० [हिं] गोसाँई, गोस्वामी ; एक प्रकार के साधु ; प्रभु।

**ग़ुसा** - पु० [हिं] ग़ुस्सा।

**गुसैयाँ** - पु० [हिं] ईश्वर ; गोसाँई।

**गुस्ताख़** - वि० [फ़ा] ढीठ, धृष्ट, अशिष्ट।

**गुस्ताख़ी** - स्त्री० [फ़ा] ढिठाई, धृष्टता, अशिष्टता।

**ग़ुस्ल** - पु० [अ] स्नान।

**ग़ुस्ले सेहत** - पु० [अ] आरोग्य-स्नान।

**ग़ुस्सा** - पु० [अ] क्रोध ; **मु०** —नाक पर रहना - जल्दी ग़ुस्सा आना ; —पी जाना - क्रोध को रोक लेना।

**ग़ुस्सावर** - वि० [अ] क्रोधी।

**ग़ुस्सैल** - वि० [देश] जिसे जल्दी ग़ुस्सा आता हो, ग़ुस्सावर।

**गुह** - पु० [सं] कार्तिकेय ; घोड़ा ; विष्णु ; निषाद ; गुफा ; हृदय।

**गुहर** - पु० [हि] गुप्त, छिपा, ढका ; [फ़ा] मोती।

**गुहा** - स्त्री० [सं] गुफा।

**गुहार** - स्त्री० [हि] दोहाई, रक्षा के लिए पुकार।

**गुह्य** - वि० [सं] छिपा हुआ, गूढ़ ; गोपनीय, छिपाने योग्य।

**गूँ** - पु० [फ़ा] रंग।

**गूँगा** - वि० [फ़ा] वह आदमी जो बोल न सके, **मु०** गूँगे का गुड़ - आत्मविषयक अनुभव या वह बात जिसको वाणीद्वारा व्यक्त न किया जा सके।

**गूँगी** - स्त्री० [हिं] न बोल सकनेवाली स्त्री ; दोमुँहा साँप।

**गूँच** - स्त्री० [हि] घुँघची।

**गूँज** - स्त्री० [हिं] प्रतिध्वनि ; गुंजार, भौंरों के गूँजने का शब्द।

**गूँजना** - अ० [हिं] भौंरों का मधुर ध्वनि करना, गुंजारना ; प्रतिध्वनि से व्याप्त होना या भरना।

**गूँड़ा** - पु० [देश] नाव का आड़ा काठ।

**गूँथना** - स० [हि] सीना-पिरोना, गूँधना।

**गूँदना** - स० [हिं] सानना, माँड़ना।

**गूँधना** - स० [हि] पानी में सानकर हाथों से मलना, माँडना ; बालो का सुलझाना।

**गूजर** - पु० [हिं] ग्वाला, अहीरो की एक जाति, गूर्जर।

**गूढ़** - वि० [सं] छिपा हुआ ; कठिन ; गंभीर।

**गूढ़गेह** पु० [हिं] तहख़ाना, मकान के नीचे का कमरा ; गृह ; यज्ञशाला।

**गूथना** - स० [हि] तागे को सुई के सहारे पिरोना।

**गूदड़** - पु० [हिं] चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।

**गूदा** - पु० [हि] फल का सार-भाग जो छिलके के नीचे होता है ; मग़ज़, खोपड़ी का सार-भाग ; मींगी गरी।

**गून** - 1. स्त्री० [हिं] नाव खीचने की रस्सी ; 2. पु० [फा] वर्ण।

**गूना** - पु० [फ़ा] रंग।

**गूमड़ा** - पु० [देश] फोड़ा, सूजन ; गिल्टी।

**गूलर** - पु० [हि] एक बड़ा पेड़ जिसमें गोल फल लगते हैं, उदम्बर, ऊमर ; **मु०** —का कीड़ा होना - एक जगह पड़ा रहना ; —का फूल - जो कभी देखने में न आवे।

**गूह** - पु० [हिं] मल, विष्ठा ; मैला।

**गूहड़िया** - पु० [देश] कूड़ा; गोबर।

**गूहाछीछी** - स्त्री० [हिं] गंदी कहासुनी; कलंक।

**गृध्र** - पु० [सं] गिद्ध पक्षी, गीध।

**गृह** - पु० [सं] घर; कुटुम्ब, वंश।

**गृहस्थ** - पु० [सं] बाल-बच्चोंवाला आदमी; किसान।

**गृहस्थी** - स्त्री० [सं] गृहस्थाश्रम; घर का काम-काज; परिवार; घर का सामान; खेतीबारी।

**गृहिणी** - स्त्री० [सं] घर की मालिकिन; पत्नी।

**गृही** - पु० [सं] गृहस्थ, कुटुम्बी।

**गृहीत** - वि० [सं] पकड़ा हुआ; स्वीकृत।

**गृहोपकरण** - पु० [सं] बरतन आदि घर का सामान।

**गृह्य** - वि० [सं] गृहसंबंधी, घर में किया जानेवाला कर्म; पालतू; आश्रित; ग्रहण करने योग्य।

**गेंडुरी, गेंडुली** - स्त्री० [देश] रस्सी का बना मेंडरा जिसपर घड़ा रखते हैं; फेटा; कुण्डली, इंडुरी।

**गेंद** - पु० [हिं] रबड़, कपड़े या चमड़े आदि का बना वह गोला जिससे लड़के खेलते हैं।

**गेंदा** - पु० [हिं] पीले रंग का एक फूल; एक गहना; एक आतिशबाजी।

**गेगला** - 1. पु० [हिं] गेहूँ आदि के साथ पैदा होनेवाला मसूर की जाति का एक पौधा; 2. वि० मूर्ख।

**गेटिस** - पु० [अंग्रे] मोजा बांधने का फीता।

**गेय** - वि० [सं] गाने योग्य, जो गाया जा सके।

**गेरना** - स० [हिं] गिराना, नीचे डालना; उँड़ेलना।

**गेरुआ** - वि० [हिं] मटमैला, भगवा।

**गेरू** - पु० [सं] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी, गैरिक।

**गेह** - पु० [सं] घर, मकान।

**गेहनी, गेहिनी** - †स्त्री० [हिं] घर की स्त्री, गृहिणी।

**गेहुँअन** - पु० [हिं] गेहुएँ रंग का अति विषैला साँप।

**गेहूँ** - पु० [हिं] एक अनाज, गोधूम।

**गेहेशूर** - वि० [सं] जो घर में ही बहादुरी दिखानेवाला हो, कायर।

**गैंड़ा** - पु० [हिं] भैंसे के आकार का एक पशु जिसकी नाक पर पैना सींग होता है।

**गैंती (गैती)** - स्त्री० [हिं] कुदाल।

**गैन** † - पु० [हिं] गैल, मार्ग; गगन।

**गैना** - पु० [देश] नाटा बैल; राह।

**ग़ैब** - पु० [अ] परोक्ष, परोक्ष-विषय।

**ग़ैबत** - स्त्री० [अ] पीठ पीछे की निंदा।

**ग़ैबानी** - स्त्री० [अ] निर्लज्ज स्त्री; भारी बला।

**ग़ैबी** - वि० [अ] ईश्वरीय; अजनबी; अज्ञात।

**गैयर**† - पु० [हिं] हाथी।

**गैया** - स्त्री० [हिं] गाय, धेनु।

**ग़ैर** - 1. वि० [अ] दूसरा; अजनबी; 2. स्त्री० अत्याचार; अंधेर; यौ०—आबाद - जो जोता बोया न हो ऐसा खेत; —मनकूला - स्थावर; —मनकूहा - अविवाहित; —मामूल, मामूली - असाधारण; —मुनासिब - अनुचित; —मुमकिन - असंभव; —वाजिब - अयोग्य, अनुचित; —हाज़िर - अनुपस्थित।

**ग़ैरत** - स्त्री० [अ] लज्जा, शरम।

**ग़ैरतमन्द** - वि० [फ़ा] लज्जाशील।

**गैरिक** - पु० [हिं] एक प्रकार की कड़ी लाल मिट्टी, गेरू।

**गैरेय** - पु० [सं] शिलाजीत।

**गैल** - स्त्री० [हिं] मार्ग, रास्ता ; गली।
**गैलन** - पु० [अंग्रे] तरल पदार्थों का तीन सेर के लगभग का एक मान।
**गैहान** - पु० [फ़ा] संसार।
**गोंठ** - स्त्री० [देश] कमर पर धोती की लपेट और गाँठ।
**गोंड़** - पु० [हिं] मध्यप्रदेश की एक जंगली जाति ; उभरी हुई नाभि।
**गोंद** - 1. पु० [हिं] पेड़ के तने से निकला हुआ पसेव या लसदार पदार्थ ; 2. स्त्री० एक वृक्ष-विशेष।
**गो** - 1. स्त्री० [सं] गाय ; किरण ; इन्द्रिय ; वाणी ; भूमि ; दृष्टि ; 2. अव्य० यद्यपि ; 3. प्रत्य० कहनेवाला।
**गोआल** † - पु० [हिं] गोपाल, अहीर, ग्वाल।
**गोइंठा** - पु० [हिं] उपला, सुखाया हुआ गोबर, कंडा।
**गोइन्दा** - पु० [फ़ा] जासूस, गुप्तचर।
**गोइयाँ** - पु० [देश] साथी।
**गोई** - 1. वि० [हिं] गुप्त, छिपायी हुई ; [फा] कथन 2. स्त्री० सखी, गोइयाँ।
**गोऊ** - वि० [हिं] चुरानेवाला, छुपानेवाला।
**गोए** - क्रि० [हिं] छिपे हुए।
**गोकर्ण** - 1. पु० [सं] कर्नाटक में हिंदुओं का एक शैव क्षेत्र ; 2. वि० गौ के-से लंबे कानवाला।
**गोका** - स्त्री० [स] छोटी गाय ; नीलगाय।
**गोकुल** - पु० [सं] गौओं का समूह, गोशाला ; व्रज, एक प्राचीन ग्राम।
**गोक्ष** - पु० [सं] जोंक।
**गोखरू** - पु० [हिं] एक प्रकार का पौधा जिसका कँटीला फल दवा के काम आता है ; तलवे या हथेली में पड़ा हुआ घट्ठा।
**गोखा** - पु० [हिं] झरोखा, गवाक्ष ; ताक।
**गोचना** - 1. स० [हिं] धरना, पकड़ना ; 2. पु० चना मिला हुआ गेहूँ।
**गोचर** - पु० [स] चरागाह, चरी ; वह विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके।
**गोची** - स्त्री० [हिं] एक तरह की मछली।
**गोज़** - पु० [फ़ा] अपान वायु।
**गोजई** - स्त्री० [हिं] जौ मिला हुआ गेहूँ।
**गोजर** - पु० [हिं] बूढ़ा बैल ; कनखजूरा नामक कीड़ा।
**गोझा** - पु० [फ़ा] गुझिया नामक पकवान ; एक प्रकार की कँटीली घास ; जेब।
**गोट** - स्त्री० [हिं] वह पट्टी या फीता जिसे कपड़े के किनारे पर लगाते हैं, संजाफ़ ; मंडली, गोष्ठी।
**गोटा** - पु० [हिं] चौपड़ का मोहरा; सुनहले, रेशमी या रुपहले तारों का पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है ; छोटे टुकड़ों में कटी इलायची ; सुपारी।
**गोटियाचाल** - स्त्री० [हिं] दाँव-घातभरी चाल ; चालबाजी।
**गोटी** - स्त्री० [हिं] पत्थर, कांच या मिट्टी का छोटा गोल टुकड़ा जिससे बच्चे खेलते हैं ; चौपड़ खेलने का मोहरा ; **मु०** —जमना या बैठना - युक्ति सफल होना ; आमदनी की सूरत होना।
**गोठ** - स्त्री० [हिं] गोशाला ; गोष्ठी ; सैर ; मुहल्ला।
**गोठा** - पु० [हिं] सलाह।
**गोड** - पु० [सं] मांसल नाभि ; [हिं] पाँव, पैर।
**गोड़ना** - स० [हिं] मिट्टी खोदकर उसे उलट-पुलट देना जिससे वह पोली और भुरभुरी हो जाय।

**गोड़ा** - पु० [हिं] पलंग आदि का पाया; घुटना; थाला।

**गोड़ापाई** - स्त्री० [देश] बार-बार आना-जाना।

**गोड़िया** - 1. स्त्री० [हिं] छोटा पैर; 2. वि० युक्ति भिड़ानेवाला।

**गोड़ी** - स्त्री० [देश] प्राप्ति, लाभ; बकरे आदि के पैर की नली।

**गोण** - पु० [हिं] बोरा, थैला।

**गोणी** - स्त्री० [सं] टाट का दुहरा बोरा, दो सूप की माप; चीथड़ा।

**गोत** - पु० [हि] गोत्र, कुल, वंश; समूह।

**ग़ोत** - पु० [अ] ग़श, बेहोशी, मूर्च्छा।

**ग़ोता** - पु० [अ] डुबकी; **यौ०** —ख़ोर - डुबकी लगानेवाला; **मु०**—खाना - धोखे में आना; चूक जाना; —देना - धोखा देना; —लगाना या मारना - बीच में ग़ायब हो जाना।

**गोतिया**, **गोती** - वि० [हिं] एक गोत्र का।

**गोत्र** - पु० [स] कुल, वंश; जत्था, समूह।

**गोद** - स्त्री० [हिं] एक या दोनो हाथो का घेरा बनाने से छाती के पास बननेवाला स्थान जिसमें अकसर बच्चो को लेते हैं; अंक, उत्संग, क्रोड़, पहलू; **मु०**—का - छोटा बच्चा; —लेना - दत्तक बनाना; —पसारना - प्रार्थना करना; —भरी रहना - संतानवती बनी रहना; —भरना - संतान होना; सौभाग्यवती स्त्री के अंचल को नारियल आदि पदार्थों से भरना।

**गोदनहारी** - स्त्री० [हिं] कंजर या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है।

**गोदना** - 1. स० [हिं] काला चिन्ह पाछ देना; 2. पु० काला स्थायी चिन्ह जो शरीर पर गोदाया जाता है।

**गोदान** - पु० [सं] संकल्प करके गाय दान करना।

**गोदाम** - पु० [हिं] माल-असबाब रखने का बड़ा घर।

**गोदी** - स्त्री० [हिं] गोद, अँकवार।

**गोदोहन** - पु० [सं] गाय दुहना, गाय से दूध निकालना।

**गोधन** - पु० [सं] गायों का समूह; दिवाली के दूसरे दिन मनाया जानेवाला त्यौहार जिसमें गोवर्धन पर्वत की पूजा होती है।

**गोधूम** - पु० [सं] गेहूँ; नारंगी।

**गोधूलि, गोधूली** - स्त्री० [स] शाम का समय।

**गोनी** - स्त्री० [हिं] बोरा, टाट का थैला।

**गोप** - पु० [सं] ग्वाला; गोशाला का अध्यक्ष; भूपति, राजा।

**गोपन** - पु० [सं] छिपाना; छिपाव; रक्षा।

**गोपना** - स० [हिं] छिपाना।

**गोपनीय** - वि० [सं] छिपाने लायक़।

**गोपाल** - पु० [सं] ग्वाला।

**गोपिका, गोपी** - स्त्री० [सं] ग्वालिन।

**गोपुर** - पु० [सं] नगर या क़िले का द्वार; स्वर्ग।

**गोप्ता** - पु० [सं] रक्षक, पालक।

**गोप्य** - वि० [सं] रक्षणीय, छिपाने योग्य।

**गोफन** - पु० [हि] छींके जैसा एक जाल जिससे ढेले आदि फेंकते हैं।

**गोबर** - पु० [हिं] गाय का मल; **यौ०**—गणेश - मूर्ख।

**गोबरैला** - पु० [देश] गुबरैला।

**गोबी**, **गोभी** - स्त्री० [हि] एक प्रकार का शाक जिसकी तीन किस्में होती हैं—फूल गोभी, गाँठ गोभी और पात गोभी।

**गोभ** - 1. स्त्री० [हिं] लहर; 2. पु० पौधो का एक रोग।

**गोमय** - पु० [सं] गोबर।

**गोमुख** - पु० [सं] गाय का मुँह; मु०—नाहर या व्याघ्र - बाहर से सीधा, अंदर से क्रूर।

**गोमुखी** - स्त्री० [सं] जपमाली, एक प्रकार की ऊन आदि की बनी थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं।

**गोय** - क्रि० [देश] छिपाकर।

**गोया** - अव्य० [फ़ा] यानै; मानो।

**ग़ोर** - स्त्री० [फ़ा] क़ब्र।

**गोरखधंधा** - पु० [हिं] उलझन; गूढ़ बात।

**गोरखा** - पु० [हिं] नैपाल का निवासी, गुरखा।

**गोरज** - पु० [सं] गायों के खुरो से उड़ी हुई धूलि।

**गोरटा** - वि० [हि] गोरे रंगवाला।

**गोरस** - पु० [सं] दूध, दही, घी आदि; इन्द्रियो का सुख।

**गोरसी** - स्त्री [हिं] दूध आदि गरम करने की अंगीठी।

**गोरा** - वि० [हिं] गोरे रंग का।

**गोराई** - स्त्री० [हिं] सुन्दरता; गोरापन।

**गोरिल्ला** - स्त्री० [अंग्रे] बड़े आकार का एक वनमानुष; गुप्त युद्ध की एक शैली।

**गोरी** - स्त्री० [हिं] रूपवती स्त्री।

**ग़ोरी** - पु० [अ] ग़ोर देश का निवासी; तश्तरी।

**गोरू** - पु० [हिं] सींगवाला चौपाया।

**गोरोचन** - पु०
**गोरोचना** - स्त्री० } [सं] पीले रंग का एक सुगंधित द्रव्य जो गाय के हृदय के पास पित्तकोश में से निकलता है।

**गोर्खा** - पु० [हिं] गोरखा।

**गोलंदाज़** - पु० [फ़ा] तोप में गोला डालनेवाला।

**गोलंबर** - पु० [हिं] गुंबद, गोलाई, कलबूत।

**गोल** - वि० [सं] वृत्ताकार; मु० —गोल - अस्पष्ट; —बात - टालने की दृष्टि से कही गयी घुमावदार बात।

**ग़ोल** - स्त्री० [अ] समूह।

**गोलक** - स्त्री० [सं] संदूक़।

**गोलगप्पा** - पु० [हि] एक महीन तली हुई करारी फुलकी जिसे खटाई में डुबोकर खाते हैं।

**गोलचोरा** - पु० [सं] ग्रहो और नक्षत्रो का बुरा योग; गड़बड़।

**गोलमाल** - पु० [हि] गड़बड़।

**गोलमिर्च** - स्त्री० [हि] काली मिर्च।

**गोला** - पु० [हि] लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपो से दुश्मन पर फेकते हैं।

**गोलार्ध** - पु० [सं] पृथ्वी का अर्ध भाग।

**गोली** - स्त्री० [हि] छोटा गोल पिंड; बटी मु०—मारना - उपेक्षापूर्वक छोड़ देना।

**गोलोक** - पु० [स] विष्णु का निवास-स्थान; मु० —वासी होना - मर जाना।

**गोश** - पु० [फ़ा] कान।

**गोशगुज़ार**
**गोशज़द** } वि० [फ़ा] सुना हुआ।

**गोशमाली** - स्त्री० [फ़ा] कान उमेठना; कड़ी चेतावनी।

**गोशवारा** - पु० [फ़ा] वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का हिसाब हो।

**गोशा** - पु० [फ़ा] कोना; एकात स्थान।

**गोशानशीन** - वि० [फ़ा] परदेवाली स्त्री।

**गोश्त** - पु० [फ़ा] मांस।

**गोश्तख़्वार** - पु० [फ़ा] मांस खानेवाला।

**गोशाला** - [सं] गोष्ट; गायो के रहने का स्थान।

**गोष्ठी** - स्त्री० [स] मंडली, सभा।

**गोसाईं** - पु० [हि] मालिक; विरक्त साधु।

**गोस्वामी** - पु० [सं] गोसाईं।

**गोह** - स्त्री० [हिं] छिपकली की जाति का एक जंतु जो नेवले से बड़ा होता है।

**गोहन** - पु० [हिं] संग रहनेवाला, साथी ।
**गोहरा** - पु० [हिं] सुखाया हुआ गोबर, गोइंठा, कंडा, उपला ।
**गोहार** - स्त्री० [हिं] पुकार; दुहाई ।
**गोही** - स्त्री० [हिं] छिपाव ; दुराव ।
**गोहुवन** - पु० [हिं] गेहुँए रंग का अति विषधर साँप, गेहुँअन ।
**गौं** - स्त्री० [हिं] मौक़ा ; **मु०** —का यार - मतलबी, स्वार्थी ; —निकालना - काम निकालना, स्वार्थ-साधन करना ।
**गौ** - स्त्री० [सं] गाय ।
**गौख** - स्त्री० [हिं] छोटी खिड़की ।
**गौखा** - पु० [हिं] गौख ; गाय का चमड़ा ।
**ग़ौग़ा** - पु० [फ़ा] शोर-ग़ुल ; अफ़वाह, जनश्रुति ; झूठी ख़बर ।
**ग़ौग़ाई** - वि० [फ़ा] कोलाहल करनेवाला ।
**गौचरी** - स्त्री [हिं] गाय चराने का कर या महसूल ।
**गौड़** - पु० [सं] बंगाल का पुराना नाम ; ब्राह्मण और कायस्थों की जाति ।
**गौण** - पु० [सं] अप्रधान, साधारण ; सहायक ।
**ग़ौज़** - स्त्री० [अ] गप्प ।
**गौनहाई** - स्त्री० [हिं] दुलहिन, वह स्त्री जिसका गौना हाल में ही हुआ हो ।
**गौना** - पु० [हिं] द्विरागमन ; **मु०** —लाना - ससुराल जाकर बधू को अपने साथ ले आना ।
**गौर** - 1. वि० [सं] गोरा ; 2. पु० लाल रंग ।
**ग़ौर** - पु० [अ] सोच-विचार ; **यौ०**—तलब - वि० विचारणीय ।
**गौरव** - पु० [सं] बड़प्पन ।
**गौरा** - स्त्री० [हि] पार्वती ; गोरे रंग की स्त्री ।
**गौरिया** - स्त्री० [हि] काले रंग का एक जल-पक्षी ; मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का ।
**गौरी** - स्त्री० [सं] पार्वती ।
**गौरीशंकर** - पु० [सं] हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी ; पार्वती-परमेश्वर ।
**ग़ौवास** - पु० [अ] ग़ोताख़ोर ; पनडुब्बा ।
**ग़ौस** - पु० [अ] फ़रियाद ।
**गौहर** - [फ़ा] मोती ।
**गौहरसंज** - पु० [फ़ा] जौहरी ।
**गौहरी** - पु० [फ़ा] जौहरी ।
**ग्यारह** - वि० [हिं] दस और एक ।
**ग्रंथ** - पु० [सं] किताब ।
**ग्रंथकर्त्ता** - पु० [सं] किताब रचनेवाला ।
**ग्रंथसाहब** - पु० [हिं] सिक्खों की धर्म-पुस्तक ।
**ग्रंथकीट** - वि० [सं] पुस्तकों में डूबा रहनेवाला ।
**ग्रंथालय** - पु० [सं] पुस्तकालय ।
**ग्रंथि** - स्त्री० [सं] गाँठ ; **यौ०** —**बंधन** - पु० विवाह ।
**ग्रसन** - पु० [सं] भक्षण, निगलना ; पकड़ ; ग्रहण ।
**ग्रस्त** - वि० [सं] पकड़ा हुआ ; पीड़ित ।
**ग्रस्तोदय** - पु० [सं] चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण लगे हुए ही उदय होना ।
**ग्रह** - पु० [सं] तारे ; **यौ०** —दशा - बुरी हालत ; **मु०** —का फेर - बुरे दिन ।
**ग्रहण** - 1. पु० [सं] सूर्य और चंद्रमा का पृथ्वी की छाया पड़ने से कभी थोड़ा या कभी पूरा छिप जाना ; 2. स० —करना - स्वीकार करना ।
**ग्रहणी** - स्त्री० [सं] अतिसार रोग ।
**ग्रहीता** - वि० [सं] ग्रहणकर्ता ; ग्राहक ।
**ग्राम** - पु० [सं] गाँव ; समूह ; **यौ०** —मुख - पु० बाज़ार, हाट ।
**ग्रामणी** - पु० [सं] गाँव का स्वामी, मुखिया ।
**ग्रामीण** - वि० [सं] देहाती, ग्रामवासी ।

**ग्राम्य** - वि० [सं] ग्रामीण ; गाँव से संबंध रखनेवाला।

**ग्राम्या** - स्त्री० [सं] गाँव में रहनेवाली स्त्री ; नील का पौधा, तुलसी।

**ग्राव**, **ग्रावा** - पु० [सं] पत्थर ; पर्वत, बादल।

**ग्रास** - पु० [सं] कौर।

**ग्राह** - पु० [स] मगर।

**ग्राहक** - पु० [सं] खरीदार; ग्रहण करनेवाला।

**ग्राह्य** - वि० [सं] लेने लायक़।

**ग्रीखम** - स्त्री० [हिं] ग्रीष्म।

**ग्रीवा** - स्त्री० [सं] गरदन।

**ग्रीष्म** - स्त्री० [सं] गरमी का मौसम।

**ग्रैवेय** - पु० [सं] कंठाभरण, कंठा।

**ग्लान** - वि० [सं] रोग के कारण दुर्बल; खिन्न; उद्विग्न; लज्जित।

**ग्लानि** - स्त्री० [सं] खिन्नता।

**ग्वार** - स्त्री० [हिं] एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजो की दाल बनती है तथा हरे पौधे बैलो को खिलाने के काम में आते हैं।

**ग्वारपाठा** - पु० [हि] घीकुँवार नामक पौधा जो औषधि के काम में आता है, घृतकुमारी।

**ग्वारफली** - स्त्री० [हिं] सेम की जाति की एक प्रकार की तरकारी, ग्वार।

**ग्वाल**, **ग्वाला** - पु० [हिं] अहीर, गोपालक।

**ग्वालिन** - स्त्री० [हिं] ग्वाले की स्त्री।

**ग्वैठना** - स० [हि] गोठना, मरोड़ना, ऐठना।

**ग्वैंड़ा** - पु० [देश] गाँव के चारो ओर की भूमि।

## घ

**घँघरा** - पु० [हिं] बड़ा लहंगा।

**घँघरी** - स्त्री० [हिं] छोटा लहंगा।

**घंट** - पु० [हिं] घड़ा, मृतक की क्रिया में पीपल में बाँधा जानेवाला जलपात्र।

**घंटा** - पु० [हिं] धातु का एक बाजा; समय बतानेवाला घड़ियाल; दिन-रात का चौबीसवाँ भाग; यौ०— घर - पु० ऊँची मीनार जिसपर चारो ओर से बड़ी घड़ी लगी हो और जिसका घंटा दूर तक सुनायी देता हो।

**घंटी** - स्त्री० [हिं] पीतल या फूल की छोटी लुटिया, छोटा घंटा।

**घई** - स्त्री० [देश] गंभीर भँवर; चूल्हे में रोटी सेकने का स्थान।

**घचाघच** - क्रि० [देश] खचाखच, ठसाठस; पूर्ण रूप से।

**घट** - पु० [सं] घड़ा; शरीर।

**घटक** - पु० [स] मध्यस्थ, विवाह तय करानेवाला।

**घटका** - पु० [हिं] कंठावरोध, गले में कफ रुकने की अवस्था; मरने के पहले रुक-रुककर घरघराहट के साथ साँस के निकलने की दशा।

**घटती** - स्त्री० [हिं] कमी; कसर।

**घटना** - 1. अ० [हिं] उपस्थित होना; कम होना; ठीक उतरना; 2. स्त्री० अचानक होनेवाली बात, वाक़या।

**घटबढ़** - स्त्री० [हि] कमी-बेशी, न्यूनाधिकता।

**घटवार**, **घटवाह** - पु० [हिं] घाट का महसूल (खेवा) लेनेवाला मल्लाह या ठेकेदार।

**घटस्थापन** - पु० [सं] किसी मंगल कार्य या पूजनादि से पूर्व जलपूर्ण घड़ा पूजन के स्थान पर रखना; नवरात्रि का प्रथम दिवस।

**घटा** - स्त्री० [स] बादलो का घना समूह, मेघमाला।

**घटाई** - स्त्री० [हिं] हीनता ; बेइज़्ज़ती ।
**घटाटोप** - पु० [सं] बादलों की उमड़ी हुई राशि ।
**घटाना** - स० [हिं] कम करना ; बाक़ी निकालना ।
**घटाव** - पु० [हिं] कमी ; अवनति ।
**घटिक** - पु० [सं] घंटा पूरा होने पर घंटा बजानेवाला, घड़ियाली ।
**घटिका** - स्त्री० [सं] छोटा घड़ा या नाँद ; चौबीस मिनट का समय, घड़ी ।
**घटित** - वि० [सं] रचा हुआ ; जो हुआ हो ।
**घटिया** - वि० [हिं] ख़राब ; सस्ता ।
**घटी** - स्त्री० [हिं] कमी ; घाटा ।
**घट्टा** - पु० [हिं] रगड़ खाने से चमड़े का मोटा हो जाना ।
**घड़घड़** - पु० [अनु] बादल गरजने या गाड़ी चलने आदि का शब्द ।
**घड़घड़ाना** - अ० [अनु] घड़घड़ शब्द करना ।
**घड़ना** - स० [हिं] गढ़ना ।
**घड़ा** - पु० [हिं] गगरी ; मु० घड़ों पानी पड़ना - अत्यंत लज्जित होना ।
**घड़िया** - स्त्री० [हिं] सोना-चाँदी गलाने की मिट्टी की छोटी प्याली, घरिया ।
**घड़ियाल** - पु० [हिं] वह घंटा जो पूजा के वक़्त या समय बताने के लिए बजाया जाता है ; मगर ।
**घड़ी** - स्त्री० [हिं] काल का मान ; समय बतानेवाला एक यंत्र ; मु०—घड़ी - बार-बार ; थोड़ी-थोड़ी देर पर ; — गिनना - मरने के निकट होना ; यौ० —साज - घड़ी की मरम्मत करनेवाला ।
**घड़ौंची** - स्त्री० [हिं] पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई ।
**घतिया** - पु० [हिं] घात करने या धोखा देनेवाला ।
**घतियाना** - स० [हिं] अपनी घात या दाँव में लाना ।
**घन** - पु० [सं] बादल ; बड़ा हथौड़ा ।
**घनघनाना** - अ० [अनु] घन-घन शब्द होना ।
**घनघोर** - पु० [सं] भीषण ध्वनि ; बादल की गरज ।
**घनचक्कर** - पु० [हिं] चंचल मतिवाला व्यक्ति ; मूर्ख ; आवारागर्द ; मु०— में आना - संकट में पड़ना ।
**घनत्व** - पु० [सं] घनापन ; ठोसपन ।
**घननाद** - पु० [सं] बादल की गरज, मेघनाद ।
**घनफल** - पु० [सं] किसी संख्या को उसी संख्या से दो दफ़ा गुणा करने से प्राप्त फल ; लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का गुणनफल ।
**घनसार** - पु० [सं] कपूर ।
**घना** - वि० [हिं] सघन ; पास-पास स्थित ।
**घनिष्ठ** - वि० [सं] गाढ़ा ; बहुत ज़्यादा ।
**घनेरे** - वि० [हिं] बहुत, अनेक ।
**घन्नई**, **घन्नाई** - स्त्री० [देश] छोटी नदियाँ पार करने के लिए घड़ों को लकड़ियों में बांधकर बनाया हुआ बेड़ा, घटनौका ।
**घपची** - स्त्री० [देश] दोनों हाथों की मज़बूत पकड़ ।
**घपला** - पु० [अनु] गड़बड़ ।
**घबड़ाना**, **घबराना** - अ० [हिं] व्याकुल होना ।
**घमंड** - पु० [हिं] अभिमान, ग़रूर ।
**घमंडी** - वि० [हिं] अभिमानी, मग़रूर ।
**घमका** - पु० [अनु] आघात की ध्वनि ; सूरज की तेज़ी से उत्पन्न गरमी ।

**घमर** - पु० [अनु] नगाड़े आदि का भारी शब्द ; गंभीर ध्वनि ।

**घमस** - स्त्री० [हिं] उमस, बहुत गर्मी ।

**घमसान** }
**घमासान** } पु० [हिं] भयंकर लड़ाई ।

**घमाना** - अ० [हिं] धूप में बैठना ।

**घमोई** - स्त्री० [देश] बाँस का एक रोग जिससे उसकी जड़ में नये कल्ले नहीं निकलते ।

**घमोय** - स्त्री० [देश] कँटीले पत्तों का गोभी जैसा एक पौधा, भड़भाँड़ ; सत्यानाशी ।

**घर** - पु० [हिं] मकान ; मु०—करना - बसना ; —फूँक तमाशा देखना - घर की संपत्ति नष्ट करके मनोरंजन करना ; — फोड़ना - घर में झगड़ा लगाना ; आँखो में घर करना - इतना पसंद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे ; घर का - निज का ; न घर का न घाट का - जिसका कोई स्थान न हो ; घर के घर रहना - न हानि न लाभ, बराबर रहना ; —बसाना - शादी कर लेना ; —बैठे - बिना परिश्रम किये ।

**घरघराना** - अ० [अनु] घर्र-घर्र शब्द होना ।

**घरजमाई** - पु० [हिं] वह दामाद जिसे सास-ससुर ने अपने घर रख लिया हो ।

**घरजाया** - पु० [देश] वह गुलाम जिसने मालिक के घर में ही जन्म लिया हो ।

**घरनी** - स्त्री० [हिं] गृहिणी, स्त्री ।

**घरफोरी** - स्त्री० [देश] घर फोड़नेवाली, परिवार में कलह फैलानेवाली ।

**घरबार** - पु० [हिं] ठौर-ठिकाना ; गृहस्थी ।

**घरबारी** - 1. वि० [हिं] बाल-बच्चोवाला ; 2. पु० गृहस्थ ; 3. स्त्री० गृहस्थी का काम ।

**घरवाला** - पु० [हिं] पति, स्वामी ; घर का मालिक ।

**घरवाली** - स्त्री० [हिं] पत्नी, गृहिणी ; घर की मालकिन ।

**घराऊ** - वि० [हिं] घरसंबंधी ; आपस का ।

**घराती** - पु० [हिं] विवाह में कन्या की ओर के लोग ।

**घराना** - पु० [हिं] खानदान, वंश ।

**घरी** - स्त्री० [हिं] घड़ी ; परत ; लपेट ।

**घरीक** - वि० [हिं] एक घड़ी-भर, थोड़ी देर ।

**घरू** - वि० [हिं] घर का ।

**घरेलू** - वि० [हिं] पालतू ; घर का ; घर का बना हुआ ।

**घरौंदा** }
**घरौंधा** } - पु० [हिं] बच्चो के खेल का घर ।

**घर्घर** - वि० [अनु] गाड़ी आदि के चलने पर होनेवाला शब्द, घरघराहट ।

**घर्म** - पु० [सं] धूप ।

**घर्मबिंदु** - पु० [सं] पसीना ।

**घलना** - अ० [हिं] छूटकर गिर पड़ना ; फेंका जाना ।

**घलुआ** - पु० [हिं] वह वस्तु जो ख़रीदार को उचित तौल के बाद ऊपर से दी जाती है ।

**घसना** - अ० [हिं] घिसना ।

**घसियारा** - पु० [देश] घास छीलने या बेचनेवाला ।

**घसियारिन** - स्त्री० [देश] घास बेचने या छीलनेवाली ।

**घसीट** - स्त्री० [हिं] घसीटने का भाव ; जल्दी का लिखा हुआ ।

**घसीटना** - स० [हिं] ऐसा खीचना कि खिंची हुई चीज़ ज़मीन से रगड़ खावे ।

**घसीला** - वि० [देश] अधिक घासवाला ।

**घहनाना** - अ० [अनु] घण्टे आदि की ध्वनि निकलना ।

**घहरना** - अ० [अनु] गरजने का शब्द करना ।

**घहरारा** - पु० [अनु] घोर शब्द, गंभीर ध्वनि।

**घँघरा** - पु० [हि] लहँगा, घंघरा।

**घाई** - स्त्री० [देश] अटी; कोना; चोट, धोखा; **मु०** घाइयाँ बताना - झाँसा देना; टालमटूल करना।

**घाघ** - पु० [हिं] एक अनुभवी व्यक्ति का नाम जिसकी कहावतें प्रसिद्ध हैं; बहुत चालाक व्यक्ति; उल्लू की जाति का एक पक्षी जो चील के बराबर होता है।

**घाट** - पु० [हिं] तंग पहाडी रास्ता; पहाड़; नदी, झील आदि का वह तट जहाँ पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों; **मु०** —घाट का पानी पीना - देश-देशांतरो में जाकर अनुभव पाना; इधर-उधर मरा फिरना; —घरना - राह रोकना; —लगना - किनारे पहुँचना; आश्रय पाना।

**घाटा** - पु० [हि] नुक़सान; **मु०**—उठाना - नुक़सान सहना।

**घाटारोह** - पु० [हिं] घाट रोकना, घाट से जाने न देना।

**घाटि** - वि० [हिं] कम, घटकर।

**घाटिया** - पु० [हिं] घाट पर बैठकर स्नानार्थियों से दान लेनेवाला।

**घाटी** - स्त्री० [हिं] पहाड़ो के बीच की नीची ज़मीन या तंग रास्ता, दर्रा।

**घात** - पु० [सं] चोट; दाँव; चालबाज़ी; **मु०**—पर चढ़ना - दाँव पर चढ़ना, वश में आना; — में घूमना - फँसाने की फ़िक्र में रहना; — में लगाना - मौक़ा ढूँढ़ना।

**घातक** - पु० [सं] हत्यारा, मारनेवाला।

**घातिनी** - स्त्री० [सं] हत्यारिन, हत्यारी।

**घाती** - पु० [सं] मारनेवाला।

**घान** - पु० [हिं] एक बार कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाने की मात्रा; एक बार में पकाई जाने की मात्रा।

**घाना** - स० [देश] मारना।

**घानी** - स्त्री० [हिं] घान, तेल का कोल्हू; **मु०** —करना - पेरना।

**घाम** - पु० [हिं] धूप; **मु०** घर घाम में छाना - आफ़त में डालना; घर में घाम आना - मुसीबत होना।

**घामड़** - वि० [देश] मूर्ख; आलसी।

**घाय** - पु० [हिं] घाव।

**घायल** - वि० [हिं] जख़्मी।

**घाल** - पु० [देश] घलुआ; **मु०**— न गिनना - तुच्छ समझना।

**घालक** - पु० [हिं] मारनेवाला।

**घालन** - पु० [हिं] हनन, हत्या, कत्ल।

**घालना** - स० [हि] फेंकना; डालना; नाश करना; मार डालना।

**घालमेल** - पु० [हिं] मिश्रण।

**घाव** - पु० [हिं] ज़ख़्म; — पर नमक छिड़कना - दुख पर और दुख देना।

**घावरिया** - पु० [हिं] घावों की दवा करनेवाला, जर्राह।

**घास** - स्त्री० [सं] तृण; चारा; **मु०**— काटना - तुच्छ काम करना।

**घासलेट** - पु० [हिं] मिट्टी का तेल; वनस्पति घी।

**घासलेटी** - वि० [हिं] अश्लील; हलके दर्जे का।

**घाह** - पु० [देश] उँगलियों के बीच की संधि।

**घिग्घी** - स्त्री० [अनु] हिचकी; सुबकी, रोने से साँस लेने में पड़नेवाली रुकावट; **मु०**—बाँधना - डर के मारे साफ़ आवाज़ न आना।

**घिघियाना** - अ० [अनु] गिड़गिड़ाना।

**घिचपिच** - वि० [हिं] गिचपिच ; सटा हुआ।

**घिन** - स्त्री० [हि] नफ़रत, घृणा, अरुचि, जी बिगड़ना।

**घिनाना** - अ० [हिं] नफरत करना, घृणा करना।

**घिनावना, घिनौना** - वि० [हिं] घृणा के लायक़।

**घिय** - पु० [हिं] घी।

**घिया** - पु० [देश] कद्दू, लौकी।

**घियाकश** - पु० [हिं] वह औजार जिसपर कद्दू आदि रखकर बारीक घिसे जाते हैं, कद्दूकश।

**घियातोरई** - स्त्री० [देश] तुरई की एक जाति, नेनुआँ।

**घिरना** - अ० [हिं] आवृत होना, घेरे में आना।

**घिरनी** - स्त्री० [हि] चरखी।

**घिराई** - स्त्री० [हि] घेरने की क्रिया या भाव; पशुओं को चराने का काम या उसकी मजूरी।

**घिराव** - पु० [हि] घेरा।

**घिसघिस** - स्त्री० [हि] अनुचित विलंब।

**घिसना** - अ० [हि] रगड़ना या रगड़ खाना।

**घिसवाना** - स० [हि] रगड़वाना।

**घिसाई** - स्त्री० [हि] घिसने का काम या उसकी मज़दूरी; घिसने का भाव।

**घिसिरपिसिर** - स्त्री० [अनु] घिसघिस।

**घिस्सा** - पु० [हिं] रगड़ा; ठोकर।

**घी** - पु० [हिं] घृत; मु०—के दीये जलाना - उत्सव मनाना; पाँचो उँगलियाँ घी में होना - खूब लाभ होना।

**घुइयाँ** - स्त्री० [देश] अरूई, एक तरह का कंद।

**घुंगची, घुँघची** - स्त्री० [देश] गुंजा; रत्ती।

**घुँघनी, घुँघरी** - स्त्री० [देश] भिगोकर तला हुआ चना, मटर आदि।

**घुँघराले** - वि० [देश] छल्लेदार, टेढ़े और बल खाये हुए (बाल)।

**घुँघरू** - पु० [देश] मंजीर; किसी धातु की गोल पोली गुरिया जिसमें बजने के लिए कंकड़ भर देते है; मु०—बाँधना - नाचने की तैयारी करना।

**घुंडी** - स्त्री० [हिं] कपड़े का गोल बटन, कोई गोल गांठ; मु० मन की घुंडी खोलना - मन को निष्कपट करना।

**घुग्घू** - पु० [हि] उल्लू पक्षी।

**घुघुआना** - अ० [हि] उल्लू का बोलना, बिल्ली का गुर्राना; उल्लू की तरह बोलना।

**घुटकना** - स० [देश] घूँट घूँट करके पी जाना।

**घुटना** - 1. पु० [हि] टाँग और जाँघ के बीच का जोड़ा, जानु; 2. अ० साँस का अदर ही रुकना; मु० घुट-घुटकर मरना - अंदर की भारी व्यथा से पीड़ित होना।

**घुटन्ना** - पु० [हि] घुटनों तक का पायजामा, जांघिया।

**घुटवाना** - स० [हिं] घोटने का काम कराना; बाल मुँड़ाना।

**घुटाई** - स्त्री० [हिं] घोटने की क्रिया।

**घुटी, घुटिका** - स्त्री० [हिं] छोटे बच्चो को पाचन के लिए पिलायी जानेवाली दवा।

**घुटी** - स्त्री० [देश] घुट्टी।

**घुट्टी** - स्त्री० [देश] वह दवा जो तुरंत पैदा हुए छोटे बच्चो को पिलायी जाती है; मु०— में पड़ना - स्वभाव के अंदर होना, जैसे, 'झूठ बोलना तो इनकी घुट्टी में पड़ा है।'

**घुटरुन, घुटरुवन** - क्रि० [व्र] घुटनों के बल।

**घुड़कना** - स० [हिं] डाँटना।
**घुड़की** - स्त्री० [हिं] फटकार; धमकी; **मु०** बंदर-घुड़की - झूठ-मूठ डर दिखाना।
**घुड़दौड़** - स्त्री० [हिं] घोड़ों के दौड़ने की बाज़ी।
**घुट्टरू** - पु० [हिं] घुटना।
**घुड़साल** - स्त्री० [हिं] अस्तबल।
**घुड़नाल** - स्त्री० [हिं] घोड़े पर लादने की तोप।
**घुणाक्षरन्याय** } **घुनाक्षरन्याय** } - पु० [सं] आकस्मिक रीति से काम हो जाना।
**घुन** - पु० [हिं] लकड़ी को खानेवाला एक छोटा कीड़ा; **मु०** —लगना - अंदर ही अंदर क्षीण होना।
**घुनना** - अ० [हिं] घुन लग जाना; खोखला हो जाना।
**घुन्ना** - वि० [देश] चुप्पा, मन ही मन बुरा माननेवाला।
**घुप** - वि० [देश] गहरा अँधेरा।
**घुमक्कड़** - वि० [हिं] बहुत घूमनेवाला।
**घुमड़** - स्त्री० [हिं] बरसनेवाले बादलों की घोर घटा।
**घुमड़ना** - सं० [हिं] बादलों का घूम-घूमकर इकट्ठा होना।
**घुमड़ी, घुमरी** - स्त्री० [हिं] सिर घूमने का रोग।
**घुमाना** - स० [हिं] चारों ओर फिराना।
**घुमाव** - पु० [हिं] फेर; चक्कर; **मु०**—फिराव की बात - हेर-फेर की बात।
**घुरघुरा** - पु० [देश] झींगुर; एक रोग।
**घुरना** - अ० [देश] घुलना; क्षीण होना; शब्द करना; बजना।
**घुर्मित** - वि० [सं] घूमता हुआ।
**घुलना** - अ० [हिं] हिल-मिल जाना; **मु०** घुल-घुलकर बातें करना - अभिन्न हृदय होकर बातें करना; घुल-घुलकर मरना - बहुत कष्ट भोगकर मरना।
**घुवा** - पु० [देश] सेमर या आक के अंदर की रूई की तरह की वस्तु।
**घुसना** - अ० [हि] प्रवेश करना।
**घुस-पैठ** - स्त्री० [हि] पहुँच, प्रवेश; गति।
**घुसाना** - स० [हि] भीतर बलपूर्वक या दूसरे की इच्छा के विरुद्ध प्रवेश कराना; बल-पूर्वक रास्ता बनाकर अंदर ले जाना।
**घुसेड़ना** - स० [हि] पैठाना; धँसाना।
**घूँघट** - पु० [हिं] मुँह का परदा।
**घूँघरवारे** } **घूँघरवाले** } - वि० [देश] छल्लेदार; घुँघराले।
**घूँट** - पु० [देश] किसी पेय की वह मात्रा जो एक बार में गले के नीचे उतरे।
**घूँटी** - स्त्री० [देश] एक औषध जो बच्चों को पिलायी जाती है, घुट्टी; **यौ०** जनम-घूँटी - जन्म के दूसरे दिन बच्चो का पेट साफ़ करने के लिए दी जानेवाली दवा।
**घूँस** - स्त्री० [हिं] रिश्वत।
**घूँसा** - पु० [देश] मुक्का; **मु०** घूँसों का क्या उधार - मारपीट का बदला तुरन्त।
**घूआ** - पु० [देश] घुवा।
**घूक** - पु० [स] उल्लू।
**घूघ** - स्त्री० [देश] लोहे की टोपी।
**घूना** † - वि० [देश] चतुर, अनुभवी।
**घूम** - स्त्री० [हिं] फेर; घुमाव।
**घूमना** - अ० [हिं] चक्कर खाना; **मु०** **घूम** पड़ना - सहसा क्रुद्ध हो जाना।
**घूर** - पु० [देश] कूड़े का ढेर।
**घूरना** - स० [हिं] एकटक देखना।
**घूरा** - पु० [हि] वह जगह जहाँ कूड़ा फेंका जाय।
**घूस** - 1. पु० [हि] बड़ा चूहा; 2. स्त्री० रिश्वत।
**घृणा** - स्त्री० [सं] घिन, नफ़रत।

**घृणित** - वि० [सं] जिसे देख या सुनकर घृणा उत्पन्न हो।

**घृत** - पु० [सं] घी।

**घृतकुमारी** - स्त्री० [सं] घीकुँआरी, एक औषधि।

**घेंघा** } **घेघा** } - पु० [देश] गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है; गले में सूजन का रोग।

**घेंटा** - पु० [हिं] सुअर का बच्चा।

**घेर** - पु० [हिं] परिधि; **यौ०**—घार - स्त्री० घेरने की क्रिया।

**घेरना** - स० [हिं] छेंकना, रोकना।

**घेरा** - पु० [हिं] परिधि, घिराव; हाता।

**घेवर** - पु० [हिं] मैदे से बनी एक मिठाई।

**घैर** - पु० [देश] बदनामी, अपयश; चुग़ली।

**घोंघा** - पु० [देश] पानी का कीड़ा; मूर्ख; **यौ०**—बसंत - बड़ा मूर्ख।

**घोंचा** - पु० [देश] गुच्छा।

**घोंसुआ** - पु० [देश] घोसला।

**घोंटना** - स० [देश] गले को इस तरह ज़ोर से दबाना कि साँस रुक जाय; घूँट-घूँट कर पीना; घोटना, रगड़ना; खूब पढ़ना।

**घोंटा** - स्त्री० [सं] बेर; सुपारी का पेड़।

**घोंसला** - पु० [हिं] नीड़, पक्षियों का घर।

**घोखना** - स० [हिं] रटना।

**घोट, घोटक** - पु० [स] घोड़ा।

**घोटना** - 1. स० [हि] पीसना; रट-रटकर पढ़ना; 2. पु० लोढ़ा।

**घोटा** - पु० [हि] घोटने की वस्तु।

**घोटाला** - पु० [देश] घपला; गड़बड़।

**घोड़दौड़** - स्त्री० [हि] घुड़दौड़।

**घोड़सार** } **घोड़शाल** } - स्त्री० [हि] अस्तबल।

**घोड़ा** - पु० [हिं] अश्व; बंदूक का वह स्थान जिसे दबाने से वह दगती है; **मु०** —बेचकर सोना - निश्चित होकर देर तक गहरी नींद सोना; —कसना - घोड़े पर सवारी के लिए ज़ीन या चारजामा कसना।

**घोड़ानस** - स्त्री० [हिं] वह बड़ी मोटी नस जो एड़ी के पीछे से ऊपर को जाती है।

**घोड़िया** - स्त्री० [हिं] घोड़ी; खूँटी।

**घोर** - 1. वि० [स] भयंकर; घना; कठिन; बुरा; 2. स्त्री० गर्जन।

**घोरना** - अ० [हिं] भारी शब्द करना; गरजना मिलना।

**घोलना** - स० [हि] मिलाना; **मु०** घोलकर पी जाना - निगल जाना; अति निपुण हो जाना।

**घोष** - पु० [सं] अहीर; अहीरों की बस्ती; नाद; गरजने का शब्द।

**घोषणा** - स्त्री० [स] राजाज्ञा; मुनादी, ऐलान, ऊँचे स्वर से कही गयी सूचना।

**घोषवती** - स्त्री० [सं] वीणा।

**घोसी** - पु० [हि] मुसलमान ग्वाला।

**घौद** - पु० [देश] फलों का गुच्छा, जैसे, 'केले का घौद'।

**घौर, घौरा** - पु० [देश] घौद।

**घ्राण** - स्त्री० [सं] नाक; सूंघने की शक्ति; गंध, सुगंध।

## च

**चंक्रमण** - पु० [सं] टहलना, बार-बार घूमना।

**चंग** - स्त्री० [फ़ा] डफ़ के आकार का एक छोटा बाजा; बड़ी गुड्डी; **मु०**—पर चढ़ाना - अपने अनुकूल बनाना; मिजाज बढ़ा देना।

**चंगना** - स० [हिं] तंग करना; कसना; खींचना।

**चंगा** - वि० [हिं] निरोग; सुन्दर; शुद्ध।

**चंगुल** - पु० [फ़ा] पंजा ; मु०—में फँसना - क़ाबू में आना ।

**चंगेर(री)** - स्त्री० [हिं] फूल रखने की डलिया; बाँस की तीलियों से बनी डगरी।

**चंच** - पु० [हि] चोंच, चंचु ।

**चंचरी** - स्त्री० [स] भ्रमरी, भँवरी ; होली का एक गीत ।

**चंचरीक** - पु० [सं] भौंरा, भ्रमर ।

**चंचल** - वि० [सं] अस्थिर, चलायमान ; अधीर ; चुलबुला ।

**चंचला** - स्त्री० [सं] लक्ष्मी ; बिजली ।

**चंचु** - 1. पु० [सं] एक शाक ; मृग ; 2. स्त्री० चिड़ियों की चोंच 3. वि० चतुर।

**चंट** - वि० [हिं] चालाक, सयाना ; धूर्त ।

**चंड** - वि० [सं] तीक्ष्ण ; उग्र ; कठोर ।

**चंडा** - स्त्री० [सं] कर्कशा स्त्री ; सौंफ ।

**चंडांशु** - पु० [स] सूर्य ।

**चंडाई** - स्त्री० [हिं] शीघ्रता, उतावली; ज़बर्दस्ती ।

**चंडाल** - पु० [सं] नीच कर्म करनेवाला ; श्वपच ; प्रचलित अर्थ में एक नीच जाति ।

**चंडावल** - पु० [हिं] सेना के पीछे का भाग ; बहादुर सिपाही ; संतरी ।

**चंडिका** - स्त्री० [सं] दुर्गा ; लड़ाकी स्त्री ।

**चंडू** - पु० [हिं] अफ़ीम का किवाम जिसका धुआँ नशे के लिए एक नली के द्वारा पीते हैं ; यौ०—ख़ाना - चँडू पीने की जगह ; —बाज़ - चंडू पीने की आदत-वाला ; मु० चंडूख़ाने की गप - पागलो का प्रलाप ।

**चंडूल** - पु० [देश] ख़ाकी रंग का एक पक्षी ; बेवकूफ़ ; बदशकल व्यक्ति ।

**चंद** - 1. पु० [हि] चंद्र ; हिन्दी के एक प्राचीन कवि का नाम ; 2. वि० [फ़ा] थोड़े-से ; कई एक ।

**चंदराना** - स. [हिं] झुठलाना ; बहकाना ; बहलाना; जान-बूझकर अनजान बनना ।

**चंदला** - वि० [हि] गंजा, खल्वाट ।

**चँदवा** - पु० [हि] वितान, चंदोवा ; एक प्रकार का छोटा मंडप ; मोर के पंख पर अर्ध-चन्द्राकार चिन्ह ।

**चंदा** - पु० [हिं] चंद्रमा ; किसी सार्वजनिक कार्य के लिए कई आदमियो से लिया जानेवाला धन ; पत्रिका का सालाना या मासिक मूल्य ।

**चंद्रक** - पु० [सं] चंद्रमा ; मोर-पंख का अर्धचंद्राकार चिन्ह ।

**चंद्रचूड़, चंद्रमौलि** - पु० [स] महादेव ।

**चंद्ररेखा** - स्त्री० [स] दूज का चाँद।

**चंद्रबिन्दु** - पु० [स] अर्द्धानुस्वार की बिंदी।

**चंद्रबधूटी** - स्त्री० [सं] वीरबहूटी नामक लाल रंग का बरसाती कीड़ा।

**चंद्रशेखर** - पु० [स] महादेव ।

**चंद्रहास** - पु० [सं] तलवार ।

**चंद्रा** - स्त्री० [हिं] मरने के समय टकटकी बंध जाने की दशा ।

**चंद्रातप** - पु० [सं] चाँदनी ; वितान ।

**चंपई** - वि० [हि] चंपा के रंग के समान ।

**चंपक** - पु० [सं] चंपा ।

**चंपत** - वि० [देश] ग़ायब ।

**चंपना** - अ० [हिं] दबना ।

**चंपा** - स्त्री० [सं] एक अतिसुगंधित फूल ; अंग देश की राजधानी ।

**चंपू** - पु० [सं] गद्य-पद्यमय काव्य ।

**चँवर** - पु० [हि] चँवरी गाय की पूँछ के बालों का बना पंखा ।

**चक** - पु० [हि] चकवा पक्षी ।

**चकचाना** - अ० [अनु] चौंधियाना ।

**चकचौंधना** - अ० [हि] प्रकाश के मारे आँखों का खुला न रहना, आँख तिल-मिला जाना ।

**चकती** - स्त्री० [हिं] पट्टी।
**चकत्ता** - पु० [हि] गोल दाग़।
**चकना** - अ० [हि] चकित होना; चौकन्ना होना।
**चकनाचूर** - वि० [हि] चूर-चूर।
**चकपकाना** - अ० [हि] भौंचक्का होना।
**चकफेरी** - स्त्री० [हिं] परिक्रमा; भँवरी।
**चकबंदी** - स्त्री० [हिं] भूमि को कई भागों में विभक्त करना।
**चकबस्त** - पु० [फ़ा] ज़मीन की हदबंदी, किश्तवार।
**चकमक़** - पु० [फ़ा] एक पत्थर जिसको घिसने पर आग निकलती है।
**चकमा** - पु० [हि] भुलावा, धोखा।
**चकर** - पु० [हिं] चक्र, चकवा पक्षी।
**चकराना** - अ० [हिं] सिर घूमना; चकित होना।
**चकरानी** - स्त्री० [हि] दासी।
**चकरी** - स्त्री० [हि] चकई; खिलौना; एक आतिशबाजी; छोटी चक्की।
**चकला** - पु० [हिं] रोटी बेलने का गोल पाटा; इलाक़ा।
**चकलेदार** - पु० [हिं] मालगुज़ारी वसूल करनेवाला।
**चकल्लस** - स्त्री० [हिं] मित्रो का आपस में हास-परिहास; झगड़ा-टंटा।
**चकवा** - पु० [हिं] चक्रवाक पक्षी।
**चकवाना** - अ० [देश] चकपकाना।
**चकवी** - स्त्री० [हिं] चक्रवाकी।
**चका** - पु० [हि] पहिया; चाक; चकवा।
**चकाचक** - 1. स्त्री० [अनु] तलवार आदि के चलने की ध्वनि; 2. वि० लथपथ; डूबा हुआ; 3. क्रि० भरपूर, अघाकर।
**चकाचौंध** - स्त्री० [हि] कड़ी रोशनी के आगे आँख का झपक जाना; हैरानी।
**चकाना** - अ० [हिं] चकराना, आश्चर्य में आना।
**चकित** - वि० [स] विस्मित, हक्का-बक्का, हैरान, शंकित, भीत।
**चकुला** - पु० [देश] चिड़िया का बच्चा।
**चकेरा** - वि० [हि] बड़ी आँखवाला।
**चकोटना** - स० [देश] चुटकी से माँस नोचना, चिकोटी काटना।
**चकोतरा** - पु० [हि] बड़ा नींबू, जबीरी नीबू।
**चकोर** - पु० [सं] एक पक्षी जो चंद्रमा की ओर टकटकी लगाकर देखता है।
**चकोरी** - स्त्री० [सं] मादा चकोर।
**चकौंड़** - पु० [देश] एक बरसाती पौधा जिसकी पत्ती छाल आदि का रस दाद रोग का नाशक है, चकवंड।
**चक्कर** - पु० [हि] चाक, परिक्रमण; घेरा; मु०—कटना - परिक्रमा करना; —लगाना - फेरा लगाना; किसीके चक्कर में आना - धोखे में पड़ना।
**चक्का** - पु० [हि] पहिया।
**चक्की** - स्त्री० [हि] आटा पीसने का यंत्र, जाँता; मु०—पीसना - कड़ा परिश्रम करना; जेल की सज़ा भोगना।
**चक्कू** - पु० [हि] चाकू, छुरी।
**चक्रतीर्थ** - पु० [सं] दक्षिण में ऋष्यमूक पर्वतो के बीच तुंगभद्रा नदी के घुमाव पर एक तीर्थ; नैमिषारण्य का कुंड।
**चक्रपाणि** - पु० [सं] विष्णु।
**चक्रमुद्रा** - स्त्री० [सं] चक्र आदि विष्णु के आयुधो के चिन्ह जो वैष्णव अपने बाहु आदि अंगो पर छपवाते है।
**चक्रवर्त्ती** - 1. वि० [सं] सार्वभौम; 2. पु० समुद्र तक की भूमि का राजा।
**चक्रवाल** - पु० [सं] प्रकाश और अंधकार का विभाग करनेवाला एक पुराणवर्णित पहाड़ जो पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है।

**चक्रवृद्धि** - स्त्री० [सं] व्याज पर व्याज, सूद-दर-सूद ; माल ढोने का गाड़ी-भाड़ा ।

**चक्रव्यूह** - पु० [सं] सेना का चक्र के आकार में घेरा ।

**चक्षु** - पु० [सं] आँख ।

**चख** - पु० [स] आँख ।

**चख़** - स्त्री० [फ़ा] लड़ाई, झगड़ा ; कलह, यौ० —चख़ - कहा-सुनी ।

**चखना** - स० [हिं] स्वाद लेना ।

**चखाचखी** - स्त्री० [हि] लाग-डाँट ; विरोध ।

**चखैया** - पु० [हिं] चखने या स्वाद लेने-वाला ।

**चग़ताई** - पु० [तु] मंगोल जाति से उत्पन्न मुगल वंश ।

**चगलना** - स० [हि] चबाना ; चलाना ; दाँतो से पीस-पीसकर खाना ।

**चचा** - पु० [देश] काका ; मु०— बनाना - खूब दंड देना, बदला लेना ।

**चचिया** - वि० [देश] चचा के बराबर संबंधवाला (साससुर) ।

**चचींडा** - पु० [हिं] चिचंडा ; तोरई की-सी एक तरकारी ।

**चची** - स्त्री० [देश] चाची, चाचा की स्त्री ।

**चचेरा** - वि० [देश] चाचा की तरफ़ से संबंधित ।

**चचोड़ना** - स० [देश] दाँत से दबाकर चूसना ।

**चट** - अ० [हिं] जल्दी ; यौ० —पट - शीघ्र ; मु० —से - झट ; —कर जाना - सब खा जाना ।

**चटक** - 1. पु० [सं] गौरवा पक्षी ; चिड़ा ; 2. स्त्री० चमक-दमक ; कांति ; यौ० —मटक - नाज-नखरा, ठसक ।

**चटकदार** - वि० [हि] चमकीला ।

**चटकना** - अ० [हि] कड़कना ; उँगली फूटना ; कलियो का खिलना ।

**चटकनी** - स्त्री० [देश] सिटकिनी ; किवाड़ों को बंद करने की छड़ ।

**चटकाना** - स० [हि] तोड़ना ; उँगलियाँ फोड़ना ; मु० जूतियाँ चटकाना - इधर-उधर मारा फिरना ।

**चटकारी** - स्त्री० [हि] कलियों के चटकने का शब्द ; चुटकी ।

**चटकीला** - वि० [हिं] चमकीला ।

**चटखना** - स० [हि] चटकना ।

**चटचटिया** - वि० [हि] चंचल ; उतावला ।

**चटनी** - स्त्री० [हि] एक चटपटी चीज़ जो इमली, मिर्च, धनिया की पत्ती आदि पीसकर बनाते हैं ; मु० —करना - मार डालना ; ख़तम कर देना ।

**चटपट** - वि० [अनु] जल्दी ।

**चटपटाना** - अ० [अनु] जल्दी करना ।

**चटपटी** - 1. स्त्री० [अनु] उतावली ; शीघ्रता ; 2. वि० मिर्च-मसालेदार, उत्तेजक ।

**चटवाना** - स० [हिं] चाटने का काम करवाना ।

**चटशाला**, **चटसार**, **चटसाल** - स्त्री० [हिं] छोटी पाठशाला, मकतब ।

**चटाई** - स्त्री० [देश] घास-फूस या का बना बिछावन ।

**चटाक** - वि० [अनु] चटाका ।

**चटाका** - पु० [अनु] लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के टूटने या उंगली के चटकने का शब्द ।

**चटाचट** - क्रि० [अनु] शीघ्रता से ।

**चटाना** - स० [हि] चटवाना ; थोड़ा-थोड़ा खिलाना ; रिश्वत देना ; तलवार आदि पर सान चढ़ाना ।

**चटियल** - वि० [देश] जिसमें पेड़-पौधे न हों अथवा नष्ट हो गये हो ; चट्टानवाला ।

**चटी** - स्त्री० [देश] चट्टी ; चटशाला ।

**चटोर** } - वि० [हिं] स्वाद-लोलुप, हमेशा
**चटोरा** } कोई न कोई चीज़ खाते रहने की आदतवाला।

**चट्टान** - स्त्री० [देश] शिलाखंड।

**चट्टाबट्टा** - पु० [देश] खिलौने; बाजीगर की थैली से निकलनेवाली चीजें; मु० एक ही थैले के चट्टेबट्टे - एक ही विचार के लोग।

**चट्टी** - स्त्री० [देश] मंज़िल, ठिकाना; पड़ाव; ऐड़ी पर खुला जूता, स्लिपर।

**चट्टू** - वि० [हिं] चटोरा।

**चड़चड़** - पु० [अनु] सूखी लकड़ी के टूटने का शब्द।

**चड्डी** - स्त्री [देश] एक तरह का लंगोट।

**चड्ढी** - स्त्री० [देश] एक खेल जिसमें जीते हुए लड़के हारे हुए लड़के की पीठ पर क्रम से चढ़कर एक निश्चित स्थान तक जाते है; मु० —गांठना - अधिकार जमाना।

**चढ़ना** - अ० [हिं] नीचे से ऊपर जाना, ऊपर उठना; मढा जाना; उन्नति करना।

**चढ़ाई** - स्त्री० [हिं] ऊँचाई की ओर ले जानेवाली ज़मीन; आक्रमण।

**चढ़ा-उतरी** - स्त्री० [हिं] बार-बार चढ़ने-उतरने का काम।

**चढ़ा-ऊपरी** } - स्त्री० [हिं] होड़।
**चढ़ा-चढ़ी** }

**चढ़ाना** - स० [हिं] ऊँचाई पर पहुँचाना; पूजा का पदार्थ देवता के आगे भेट करना।

**चढाव** - पु० [हिं] चढ़ने का भाव; धार या बहाव की उलटी दिशा।

**चढावा** - पु० [हिं] वह गहना जो विवाह के दिन दुलहिन को दिया जाता है; वह चीज़ जो देवता पर चढ़ायी जाती है; मु० —देना - उत्साहित करना।

**चणक** - पु० [सं] चना।

**चतुरंग** - पु० [सं] शतरंज का खेल; २, चतुरंगिणी सेना।

**चतुरंगिणी** } - स्त्री० [सं] वह सेना जिसमें
**चतुरंगिनी** } हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल हो।

**चतुर** - वि० [सं] टेढ़ी चाल चलनेवाला; होशियार; तेज़, फ़ुर्तीला; चालाक।

**चतुरता** - स्त्री० [हिं] होशियारी।

**चतुरमास** - पु० [हिं] चातुर्मास, चार मास तक संयम से विधिपूर्वक पालन किया जानेवाला एक धार्मिक व्रत।

**चतुराई** - स्त्री० [हिं] होशियारी।

**चतुर्थ** - वि० [सं] चौथा।

**चत्वर** - पु० [सं] वेदी; चबूतरा।

**चद्दर** - स्त्री० [उ] चादर, ओढ़ने का वस्त्र।

**चनखना** - अ० [देश] चिढ़ना, क्रोधित होना।

**चना** - पु० [हिं] एक अनाज जो रबी की फसल में बोया जाता है, चणक; मु० नाको चने चबवाना - बहुत तंग करना; लोहे का चना - कठिन काम; लोहे का चना चबाना - अत्यंत कठिन काम करना।

**चनार** - पु० [फ़ा] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जो काश्मीर जैसे ठंडे स्थानों में पाया जाता है, चिनार; एक पेड़ जिसकी उपमा मेंहँदी लगे हाथो से दी जाती है।

**चन्द** - वि० [फ़ा] थोड़े-से, कुछ; यौ० —रोज़ा - थोड़े दिन का।

**चन्दा** - पु० [फ़ा] चन्द्रमा; सामूहिक रूप से वसूल किया हुआ धन; पत्रिका का सालाना या मासिक मूल्य।

**चपकन** - स्त्री० [देश] एक तरह का अँगरखा।

**चपटना** - अ० [देश] चिपकना।

**चपटा** - वि० [हिं] जो उभरा हुआ न हो, धँसा हुआ।

**चपड़ा** - पु० [देश] साफ़ की हुई लाख।

**चपत** - पु० [हिं] तमाचा; धक्का; हानि।

**चपनी** - स्त्री० [देश] नारियल का बना कमंडल; घुटने की हड्डी।

**चपरगट्टू** - वि० [देश] अभागा।

**चपरना** - अ० [अनु] चुपड़ना; परस्पर मिलना।

**चपरास** - स्त्री० [हिं] अरदली आदि के पहनने का पीतल का वह बिल्ला जिसपर मालिक या कार्यालय का नाम अंकित रहता है।

**चपरासी** - पु० [हिं] चपरास पहनकर चलनेवाला नौकर, अरदली।

**चपल** - वि० [सं] चंचल।

**चपलता** - स्त्री० [सं] चंचलता; शीघ्रता; ढिठाई।

**चपला** - स्त्री० [सं] बिजली; लक्ष्मी; व्यभिचारिणी स्त्री।

**चपलाना** - 1. अ० [हिं] चंचल होना; हिलना; चलना; 2. स० चलाना; हिलाना।

**चपाती** - स्त्री० [हिं] पतली रोटी, फुलका।

**चपाना** - स० [हिं] दबाना; लज्जित करना।

**चपेट** - स्त्री० [हि] धक्का; संकट।

**चपेटना** - स० [हिं] धक्का देना; दबाना।

**चप्पल** - पु० [हिं] एक प्रकार का जूता, चट्टी।

**चप्पा** - पु० [देश] चौथाई हिस्सा; चार अंगुल या चार बालिश्त; थोड़ी जगह।

**चबवाना** - स० [हिं] चबाने का काम कराना।

**चबाना** - स० [हि] दाँतो से कुचलना।

**चबूतरा** - पु० [हिं] चौतरा; बैठक।

**चबेना** - पु० [हिं] भुना हुआ अनाज, भूँजा।

**चभड़-चभड़** - स्त्री० [अनु] कुत्ते-बिल्ली के पानी पीने का शब्द।

**चभोरना** - स० [देश] तर करना; गोता देना।

**चमक** - स्त्री० [हिं] प्रकाश।

**चमक-दमक** - स्त्री० [हिं] तड़क-भड़क।

**चमकना** - अ० [हिं] प्रकाशित होना।

**चमकारी** - स्त्री० [हिं] चमक।

**चमकी** - स्त्री० [देश] निर्लज्ज स्त्री।

**चमगीदड़** - पु० [हि] रात में उड़नेवाली एक चिड़िया।

**चमचम** - स्त्री० [देश] एक बंगाली मिठाई जो फटे दूध से बनायी जाती है; **मु०**—करना - खूब चमकना।

**चमचमाना** - अ० [देश] चमकना, दमकना।

**चमचा** - पु० [हिं] छोटी कलछी।

**चमड़ा** - पु० [हिं] चर्म; **मु०**—**उधेड़ना** - खूब पीटना।

**चमत्कार** - पु० [सं] आश्चर्य; विचित्रता।

**चमन** - पु० [फ़ा] फुलवारी।

**चमरख** - स्त्री० [हिं] चरखे के तकुए के पास लगी हुई चमड़े की गोल टुकड़ी।

**चमरशिखा** - स्त्री० [सं] घोड़े की कलँगी।

**चमला** - पु० [देश] भीख माँगने का टोकरा या पात्र।

**चमाचम** - वि० [देश] चमक के साथ।

**चमार** - पु० [हि] चमड़े का काम करनेवाली जाति।

**चमारिन** } **चमारी** } - स्त्री० [हिं] चमार की स्त्री।

**चमू** - स्त्री० [सं] सेना।

**चमोटा** - पु० [हि] चमड़े का टुकड़ा जिसपर उस्तरे की धार तेज़ की जाती है।

**चमेली** - स्त्री० [हिं] एक फूल।

**चमोटी** - स्त्री० [हि] चाबुक; चमोटा।

**चम्मच** - पु० [हिं] चमचा।

**चय** - पु० [सं] समूह; ढेर, राशि।

**चयन** - पु० [स] संचय, संग्रह; चैन।

**चर** - पु० [सं] विदेशी राज्यो में वहाँ की भीतरी दशा का प्रकट या गुप्त रूप से पता लगाने के लिए नियुक्त राजदूत; भेदिया।

**चरकटा** - पु० [देश] चारा काटकर लानेवाला आदमी ; तुच्छ पुरुष ; छोकरा ।
**चरका** - पु० [फ़ा] हलका घाव, हानि ; धोखा ।
**चरकी** - पु० [हिं] श्वेत कुष्ठरोगी ।
**चरख** - पु० [फ़ा] चाक ; खराद ।
**चरखा** - पु० [हिं] हाथ से सूत कातने का यंत्र ।
**चरखी** - स्त्री० [हिं] छोटा चरखा; सूत लपेटने की फिरकी ; चाक ; गराडी ; चक्कर खाती हुई छूटनेवाली एक आतिशबाजी ।
**चरग** - पु० [फ़ा] बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया ।
**चरचराना** - अ० [अनु] चरचर शब्द के साथ टूटना, फटना या जलना ।
**चरचा** - स्त्री० [हिं] चर्चा ।
**चरचित** - वि० [हिं] पोता गया ; लेप लगाया हुआ ; जिसकी चर्चा हो ।
**चरना** - स० [हिं] खेतो में पशुओं का घास खाना ; विचरना ।
**चरनि** - स्त्री० [हिं] चाल ।
**चरनी** - स्त्री० [हिं] चरागाह ; चरने की क्रिया ।
**चरपरा** - वि० [अनु] तेज़ स्वादवाला ।
**चरपरी** - स्त्री० [अनु] नमक-मिर्च आदि के कारण स्वादवाली झोलदार चीज़ ।
**चरफराना** - अ० [अनु] तड़पना ।
**चरबा** - पु० [फ़ा] नकल, खाका, प्रतिमूर्ति ।
**चरबी** - स्त्री० [फ़ा] मेद ; मु० —चढ़ना - बहुत मोटा होना ; — छाना - मदाध होना ।
**चरम** - वि० [सं] अंतिम ; अति उत्कृष्ट ।
**चरवाना** - स० [हिं] चराने का काम करना ।
**चरवाहा** - पु० [हिं] पशुओं को चरानेवाला ; ग्वाला, गड़रिया ।
**चरवाही** - स्त्री० [हिं] पशु चराने का काम या उसकी मजूरी ।
**चरस** - पु० [देश] चमड़े का एक बड़ा थैला जिससे खेती के लिए पानी निकाला जाता है, मोट ; एक मादक द्रव्य जो गाँजे के फूल से निकाला जाता है ।
**चरसा** - पु० [देश] चरस, मोट ; चमड़े का बना बड़ा थैला ।
**चरसी** - पु० [देश] चरस पीनेवाला ; चरस द्वारा खेत सीचनेवाला ।
**चराई** - स्त्री० [देश] चरने-चराने की क्रिया या उसकी मजूरी ।
**चरागाह** - स्त्री० [फ़ा] पशुओ के चरने का स्थान ।
**चराचर** - पु० [सं] जड़ और चेतन ।
**चरान** - पु० [देश] चरागाह ।
**चराना** - स० [देश] पशुओ को चरागाह में ले जाना ; किसीको धोखा देना ।
**चरावर** - स्त्री० [देश] व्यर्थ की बात, बकवास ।
**चरावा** - पु० [देश] चरवाहा, चरानेवाला ; एक प्रकार का पक्षी ।
**चरिन्द, चरिन्दा** - पु० [फ़ा] पशु ।
**चरित** - पु० [सं] आचरण, रहन-सहन ।
**चरितनायक** - पु० [सं] नायक, प्रधान पात्र ।
**चरित्तर** - पु० [हिं] धूर्त की चाल ; नखरेबाज़ी ।
**चरितार्थ** - वि० [स] कृतार्थ, सफलमनोरथ ।
**चरित्र** - पु० [सं] चरित ; करतूत ।
**चरित्रवान** - वि० [सं] सदाचारी ।
**चरी** - स्त्री० [देश] चारे के लिए सुरक्षित खेत ; हरी घास ; दूती ; स्त्री जासूस ।
**चर्ख़** - पु० [फ़ा] आकाश ; चाक ; चरखा ; तोप-गाड़ी ।
**चर्खा** - पु० [हिं] चरखा ।
**चर्खी** - स्त्री० [हिं] चरखी ।
**चर्चन** - पु० [सं] लेपन ; चर्चा ; आवृति ।
**चर्चा** स्त्री० [सं] ज़िक्र ।

**चर्चित** - वि० [सं] लगाया हुआ ; चर्चा किया हुआ ।
**चर्पट** - पु० [सं] चपत ; थप्पड़ ।
**चर्परा** - वि० [सं] चरपरा ।
**चर्बी** - स्त्री० [फ़ा] चरबी ।
**चर्म** - पु० [सं] चमड़ा ।
**चर्य्य** - वि० [सं] करने योग्य, आचरणीय ।
**चर्य्या** - स्त्री० [सं] आचरण ; चालचलन, वृत्ति ; सेवा ; गमन ।
**चर्राना** - अ० [अनु] चर चर शब्द करना ; तेल न लगाने के कारण शरीर में तनाव होना ; किसी बात की तीव्र इच्छा होना ; जैसे, 'शौक चर्राना ।'
**चर्स** - पु० [देश] चरस ।
**चलचलाव** - पु० [हिं] प्रस्थान ।
**चलता** - वि० [हिं] गतिवान ; **मु०**— करना = हटाना ।
**चलती** - स्त्री० [हिं] मान-मर्यादा ; ज़ोर, असर ।
**चलन** - 1. पु० [स] गति ; 2. [हि] रस्म ।
**चलनसार** - वि० [हिं] जिसका व्यवहार प्रचलित हो ।
**चलना** - अ० [हिं] गति में आना ; **मु०** चल निकलना - उन्नति करना ।
**चलाचल** - 1. स्त्री० [हिं] चलने की हड़बड़ी ; 2. वि० चल और अचल ; चंचल ।
**चलान** - स्त्री० [हिं] किसी अपराधी को न्यायालय में भेजते समय पुलिस द्वारा अपराधी पर लगाये गये अभियोगो का ख़लीता, चालान ।
**चलाना** - स० [हिं] किसीको प्रेरित करना; गति देना ; प्रचलित करना ; **मु०** अपनी ही चलाना - अपनी ही बात करना ; किसीकी चलाना - किसीके बारे में कुछ कहना ; आँख चलाना - आँखे इधर-उधर करना ; काम चलाना - निर्वाह करना ।
**चलाव** - पु० [हिं] यात्रा ।
**चलावणि** - स्त्री० [हिं] किसी देश का चल अर्थ ।
**चलावा** - पु० [हिं] रीति, रस्म ; आचरण ; गौना ।
**चवा** - स्त्री० [देश] एक साथ सब दिशाओं से बहनेवाली वायु ।
**चवाई** - पु० [देश] बदनामी फैलानेवाला ।
**चश्म** - स्त्री० [फ़ा] आँख ।
**चश्मक** - स्त्री० [फ़ा] ऐनक, चश्मा ।
**चश्मदीद** - वि० [फ़ा] जो आँखों से देखा हुआ हो ; जिसने आँखो देखा हो ।
**चश्मनुमाई** - स्त्री० [फ़ा] डराना, धमकाना ।
**चश्मपोशी** - स्त्री० [फ़ा] दोषों की ओर ध्यान न देना ।
**चश्मा** - पु० [फ़ा] ऐनक ।
**चषक** - पु० [सं] शराब पीने का प्याला ।
**चषचोल** - पु० [हिं] आँख की पलक ।
**चसक** - स्त्री० [देश] कसक ।
**चसकना** - अ० [देश] हलकी पीड़ा होना ; टीसना ।
**चसका** } **चस्का** } - पु० [हिं] शौक़ ; चाट ; लत ।
**चस्पाँ** - वि० [फ़ा] चिपका हुआ ।
**चस्पीदगी** - स्त्री० [फ़ा] चिपकाने की क्रिया या मजूरी ।
**चस्पीदा** - वि० [फ़ा] चिपका हुआ ।
**चह** - स्त्री० [फ़ा] चाह का संक्षिप्त रूप ; कुआँ, गड्ढा ; [हिं] नदी में बल्ले गाड़कर तथा तख्ते बिछाकर बनाया हुआ पुल ।
**चहक** - स्त्री० [अनु] चिड़ियों का चह-चह शब्द ।
**चहकना** } **चहचहाना** } - अ० [अनु] पक्षियों का आनन्दित होकर मधुर शब्द करना ।

**चहबच्चा** - पु० [हिं] गंदे पानी का गड्ढा ; रुपये-पैसे गाड़कर रखने के लिए बनाया गुप्त तहखाना ।

**चहर** - स्त्री० [अनु] आनन्द की धूम ; रौनक ।

**चहल** - स्त्री० [हिं] कीचड़ ; आनन्दोत्सव ।

**चहलक़दमी** - स्त्री० [हिं] धीरे-धीरे घूमना-फिरना ।

**चहलपहल** - स्त्री० [अनु] किसी स्थान पर बहुत-से लोगो के आने-जाने की धूम ; रौनक ।

**चहला** - पु० [हिं] कीचड ; मु० —चहले की भैंस - भद्दे डील-डौल का मोटा आदमी ।

**चहलुम** - 1. वि० [उ] चालीसवाँ ; 2. पु० मुसलमानो में मृत्यु के चालीसवें दिन का फ़ातिहा और भोज ; मुहर्रम के चालीसवें दिन होनेवाला फ़ातिहा ।

**चहार** - वि० [फ़ा] चार ।

**चहारदाँग** - स्त्री० [फ़ा] चारों दिशाएँ ।

**चहारदीवारी** - स्त्री० [फ़ा] प्राचीर, कोट ।

**चहारुम** - वि० [फ़ा] चौथाई ।

**चहेता** - पु० [हिं] प्यारा (स्त्री० चहेती) ।

**चाँई** - 1. वि० [देश] धूर्त, उचक्का ; 2. पु० ठग ; 3. स्त्री० सिर का एक रोग जिससे फुंसियाँ होती और बाल गिरते हैं ।

**चाँक** - पु० [देश] खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाने की थापी ।

**चाँकना** - स० [देश] चाँक लगाना ।

**चाँगला** - वि० [हिं] चतुर ; स्वस्थ ; अच्छा ।

**चाँटा** - पु० [देश] तमाचा ।

**चाँचु** - पु० [हिं] चोंच ।

**चाँडाल** - पु० [सं] अछूत, चण्डाल ।

**चाँद** - पु० [हिं] चंद्रमा ; खोपड़ी ; मु० —पर थूकना - किसी महात्मा पर कलंक लगाना ;—का टुकड़ा - अत्यन्त सुन्दर ; ईद का चाँद - मुश्किल से दिखायी पड़नेवाली वस्तु ; यौ० —मारी - बंदूक का निशाना लगाने का अभ्यास ।

**चाँदना** पु० [हिं] चाँदनी ।

**चाँदनी** - स्त्री० [हिं] चंद्रमा का प्रकाश ।

**चाँदी** - स्त्री० [हिं] रजत ; आर्थिक लाभ ; मु० —का जूता - रिश्वत ; —काटना - खूब पैसा पैदा करना ।

**चाँद्रमास** - पु० [सं] वह मास जो चंद्रमा की गति के अनुसार हो ।

**चाँद्रायण** - पु० [सं] महीने-भर में पूरा होनेवाला एक कठिन व्रत ।

**चाँप** - 1. पु० [देश] चाप ; 2. स्त्री० दबाव ।

**चाँपना** - स० [देश] दबाना ।

**चाँयचाँय** - स्त्री० [अनु] बकबक ; चिड़ियों का चहचहाना ।

**चा** - स्त्री० [हिं] चाय ।

**चाउ** - पु० [हिं] चाव ।

**चाउर** - पु० [हिं] चावल ।

**चाक** - 1. पु० [हिं] कुम्हार का चक्र जिसपर वह बर्तन बनाता है ; पहिया ; [फ़ा] दरार ; 2. वि० कटा या फटा ; मु० —करना - चीरना ।

**चाक़** - 1. पु० [तु] छोटी छुरी ; कलम-तराश ; 2. वि० चुस्त ; स्वस्थ ; यौ० —चौबंद - हृष्ट-पुष्ट ; चुस्त ; चालाक ।

**चाकचक** - वि० [हिं] चारो ओर से सुरक्षित ।

**चाकचक्य** - स्त्री० [हिं] चमक-दमक ; शोभा ।

**चाकना** - स० [हिं] हद खींचना ; पहचान के लिए चिन्ह डालना ।

**चाकर** - पु० [फ़ा] नौकर ।

**चाकरनी**, **चाकरानी** - स्त्री० [फ़ा] नौकरानी ।

**चाकरी** - स्त्री० [फ़ा] नौकरी ; सेवा ।

**चाकू** - पु० [फ़ा] छुरी ।

**चाचरी** - स्त्री [हिं] योग की एक मुद्रा ; होली में गाने का एक गीत ; उपद्रव ; हल्ला-गुल्ला ।
**चाचा** - पु० [हिं] काका ।
**चाची** - स्त्री० [हि] काकी ।
**चाट** - स्त्री० [हिं] चटपटी चीज़ें खाने की तीव्र इच्छा ; लत ; आदत ; चरपरे स्वादवाली वस्तु ।
**चाटना** - स० [हिं] जीभ लगाकर खाना ; मु० दिमाग चाटना - व्यर्थ की बातें कर दिक करना ।
**चाटु** - पु० [सं] खुशामद, चापलूसी ।
**चाटुकार** - पु० [सं] खुशामदी ।
**चाटुकारी** - स्त्री० [स] खुशामद ।
**चाड़ी** - स्त्री० [देश] चुगली, पीछे-पीछे निंदा ।
**चातक** - पु० [सं] पपीहा जो स्वाती नक्षत्र के पानी से अपनी प्यास बुझाता है ।
**चातुरी** - स्त्री० [सं] व्यवहार-कुशलता ; चालाकी ।
**चादर** - स्त्री० [फ़ा] बिछाने-ओढ़ने का कपड़ा; धातु का (पत्र) पत्तर मु०—से बाहर पैर फैलाना - शक्ति से ज़्यादा खर्च करना ।
**चादरा** - पु० [फ़ा] बड़ी चादर ।
**चाप** - 1. पु० [सं] धनुष ; इंद्रधनुष ; 2. स्त्री० पाँवों की आहट ; दबाव, धक्का ।
**चापड़** - वि० [हिं] दबाव पड़ने से चपटा ; बरबाद ।
**चापना** - स० [हिं] दबाना ।
**चापलता** - स्त्री० [हिं] चपलता ।
**चापलूस** - वि० [फ़ा] खुशामद ।
**चापलूसी** - स्त्री [फ़ा] खुशामदी ।
**चापल्य** - पु० [सं] चपलता ; अधीरता ।
**चाबना** - स० [हिं] चबाना ।
**चाबी** - स्त्री० [हिं] कुंजी ।
**चाबुक** - पु० [फ़ा] कोड़ा ।
**चाबुकदस्त** - वि० [फ़ा] चतुर ; फुर्तीला ।
**चाभना** - स० [हिं] खाना ।
**चाभी** - स्त्री० [हिं] चाबी ।
**चाम** - पु० [हिं] चमड़ा ; मु०—के दाम चलाना - अपनी ज़बरदस्ती से अन्याय करना ।
**चामर** - पु० [सं] चँवर ; मु०—पाटना - दो दाँतों से होंठ काटना ।
**चामरिक** - पु० [स] चँवर डुलानेवाला ।
**चाय** - स्त्री० [ची] एक पौधा जिसकी पत्तियों को उबालकर उसमें चीनी और दूध मिलाकर गरम पेय बनाते हैं ।
**चायक** - पु० [हिं] चाहनेवाला ।
**चार** - 1. वि० [हिं] तीन से एक ज़्यादा ; 2. पु० आचार, रीति; जैसे, 'द्वार-चार'; गुप्तचर ; [फ़ा] चारा का लघु रूप ; यौ०—नाचार-लाचार होकर; मु० —आँखें करना - मिलना ; —के कंधे पर चढ़ना या जाना - मर जाना ; —दिन की चाँदनी - थोड़े दिन का सुख; —पाँच करना - वादविवाद करना ; चारों फूटना - निपट (भीतर-बाहर से) अंधा होना ।
**चारकाने** - पु० [हिं] चौसर या पाँसे का एक दाँव ।
**चारख़ाना** - पु० [फ़ा] रंगीन धारीदार कपड़ा ।
**चारजामा** - पु० [फ़ा] ज़ीन ।
**चारण** - पु० [हि] भाट, वंदीजन ; राजपूताने की एक जाति ; चराने का काम ।
**चारदीवारी** - स्त्री० [फ़ा] अहाते के चारों ओर की दीवार, चहारदीवारी ।
**चारपाई** - स्त्री० [हिं] खटिया ; मु०—पर पड़ना - बीमार होना ;—पकड़ लेना - बहुत बीमार होना ।
**चारा** - पु० [हिं] घास-भूसा; मछली या चिड़ियाँ फँसाने का पदार्थ ; [फ़ा] उपाय ।

**चाराजोई** - स्त्री० [फ़ा] नालिश।
**चारी** - पु० [सं] पैदल सिपाही; संचारी भाव।
**चारु** - वि० [सं०] सुन्दर।
**चारुता** स्त्री० [सं] मनोहरता, सुहावनापन।
**चारेक्षण** - पु० [स] राजमंत्री; राजनीतिज्ञ।
**चर्वाक** - पु० [स] एक अनात्मवादी तार्किक।
**चाल** - स्त्री० [हि] गति; चलने का ढंग; आचरण; उपाय; वह मकान जिसमें बहुत-से किरायेदार रहते है, किराये का बड़ा मकान; **मु०**—चलना - धोखा देने की युक्ति करना; —उड़ाना - नकल करना; —ठीक करना - चालचलन सुधारना; —पकड़ना - प्रबल होना; —में आना - धोखे में आना।
**चालक** - पु० [सं] चलानेवाला, संचालक।
**चालचलन** - पु० [हि] आचरण।
**चालढाल** - स्त्री० [हिं] आचरण, तौर-तरीक़ा।
**चालना** - स० [हिं] एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना; प्रसंग छेड़ना; परिचालित करना; छानना।
**चालनी** - स्त्री० [हिं] छलनी।
**चालबाज़** - वि० [हिं] धूर्त, चालाक।
**चालबाज़ी** - स्त्री० [हि] धूर्तता, चालाकी।
**चाला** - पु० [हिं] नयी वधू का पहले-पहल मायके से ससुराल जाना; यात्रा का मुहूर्त।
**चालाक** - वि० [फ़ा] चतुर।
**चालाकी** - स्त्री० [फ़ा] चतुरता, चालबाज़ी।
**चालान** - पु० [हि] भेजे हुए माल की फेहरिश्त, बीजक; चलान; अभियुक्त को मैजिस्ट्रेट के पास विचार के लिए भेजना।
**चालानदार** - पु० [हिं] जिसके पास चालान का काग़ज़ हो।
**चालानबही** - स्त्री० [हि] वह बही जिसमें माल का ब्यौरा हो।
**चालीसा** - पु० [हि] चालीस वर्ष का समय; चालीस पद्यों का काव्य।
**चालू** - वि० [हि] प्रचलित; संचालन।
**चाव** - पु० [हि] अभिलाषा, लालसा; प्रेम; उत्कंठा।
**चावड़ी** - स्त्री० [देश] पथिको के उतरने का स्थान, पड़ाव, चट्टी।
**चाशनी** - स्त्री० [फ़ा] चीनी, मिस्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर लसीला बनाया गया पदार्थ।
**चास** - पु० [देश] खेती; जुताई।
**चासा** - पु० [देश] हलवाहा, किसान।
**चाह** - 1. स्त्री० [हि] इच्छा; प्रेम; पूछ; 2. पु० [फ़ा] कुआँ, चह।
**चाहक** - पु० [हि] चाहने या प्रेम करनेवाला।
**चाहना** - स० [हि] इच्छा करना; प्यार करना।
**चाहाचाही** - स्त्री० [हिं]. परस्पर प्रीति या मैत्री।
**चाहिए** - अव्य० [हि] उचित है; अपेक्षित है; दरकार है।
**चाही** - वि० [हि] प्यारी; पसंद की हुई; [फ़ा] कुएँ से संबंधित; कुएँ से सींची जानेवाली (ज़मीन)।
**चाहे** - अव्य० [हिं] इच्छा हो; जैसा जी में आवे।
**चिंउटी** - स्त्री० [हि] चीटी; **मु०**—की चाल - बहुत सुस्त चाल; —के पर निकलना - ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो जावे।
**चिंघाड़ना** - अ० [हिं] हाथी का चिल्लाना।
**चिंचिनी** - स्त्री० [स] इमली।
**चिंजा** † - पु० [देश] लड़का, पुत्र।

**चिंतक** - वि० [सं] सोचनेवाला, चिंतन करनेवाला।

**चिंतन** - पु० [सं] बार-बार स्मरण करना; विचार; विवेचन; आराधन।

**चिंतनीय** - वि० [सं] विचार करने योग्य; चिंता के योग्य।

**चिंता** - स्त्री० [सं] ध्यान, सोच, फ़िक्र; परवाह।

**चिंताकुल** - वि० [सं] उद्विग्न; फ़िक्र के कारण दुखी।

**चिंतातुर** - वि० [सं] फ़िक्र के कारण व्याकुल या दुखी।

**चिंतित** - वि० [सं] चिंतायुक्त, फ़िक्रमंद।

**चिंत्य** - वि० [स] मनन करने योग्य।

**चिंदी** - स्त्री० [हिं] छोटा कपड़ा; फटा टुकड़ा; धज्जी।

**चिउँटा** - पु० [हिं] चींटा।

**चिउँटी** - स्त्री० [हिं] चींटी।

**चिउड़ा**
**चिउरा** } - पु० [हिं] हरे या उबाले हुए धान को भून और कूटकर चपटा किया हुआ पदार्थ, चिड़वा।

**चिक** - स्त्री० [तु] बाँस की तीलियों का बना हुआ झीना परदा जो दरवाज़ों और खिड़कियों पर डाला जाता है।

**चिकन** - पु० [तु] वह सूती कपड़ा जिसपर बेल-बूटे का काम किया गया हो।

**चिकना** - वि० [हिं] जिसकी सतह खुरदरी न हो और जिसपर रखी कोई चीज़ फ़िसल जाती हो; घी, तेल आदि की स्निग्धता; **मु०**—घड़ा - कहने-सुनने का जिसपर कोई असर न हो, बेहया।

**चिकनाई** - स्त्री० [हिं] स्निग्धता; वह स्थिति जिसमें खुरदरापन मिट गया हो।

**चिकनाना** - 1. स० [हिं] खुरदरापन मिटाने की क्रिया; तेल आदि लगाना; 2. अ० चरबी बढ़ना; मोटा होना; चिकनी चुपड़ी बातें करना।

**चिकनावट**
**चिकनाहट** } - स्त्री० [हिं] चिकनाई।

**चिकनिया** - वि० [हिं] शौक़ीन; बना-ठना।

**चिकनी** - वि० [हिं] जो चिकना हो; **यौ०** —मिट्टी - काली मिट्टी जिससे बाल धोते हैं; **मु०**—चुपड़ी बातें - किसीको ठगने के लिए की जानेवाली बातें, चापलूसी की बातें; —सुपारी या डली - उबाली हुई सुपारी।

**चिकित्सक** - पु० [सं] इलाज करनेवाला।

**चिकित्सा** - स्त्री० [स] इलाज, औषधोपचार।

**चिकित्सालय** - पु० [सं] अस्पताल, शफ़ाख़ाना, क्लिनिक, नर्सिंग होम।

**चिकित्सित** - वि० [सं] जिसकी चिकित्सा या इलाज किया गया हो।

**चिकिन** - वि० [सं] चिपटी नाकवाला।

**चिकिल** - पु० [सं] कीचड़।

**चिकीर्षा** - स्त्री० [सं] करने की इच्छा।

**चिकुर** - पु० [सं] सिर के बाल; पर्वत; छछूंदर; गिलहरी।

**चिकुरी** - स्त्री० [देश] चिकोरी, चुटकी।

**चिक्क** - 1. वि० [हिं] चिपटी नाकवाला; 2. पु० छछूंदर।

**चिक्कट** - 1. पु० [हि] जमा हुआ गर्द; तेल आदि का मैल; चीकट; 2. वि० गंदा, मैला।

**चिक्कण** - वि० [सं] चिकना।

**चिखना** - 1. पु० [हिं] शराब पीते समय खायी जानेवाली चटपटी चीज़, चाट; 2. अ० चखना।

**चिखुरन** † - स्त्री० [हिं] जोतन या निरान से निकली हुई घास।

**चिखुरना** † - स० [हिं] जोतने के बाद निराकर घास निकालना।
**चिखुरा** - पु० [देश] नर गिलहरी।
**चिखुरी** - स्त्री० [देश] मादा गिलहरी।
**चिचड़ा** - पु० [देश] दवा के काम में आनेवाला डेढ़-दो हाथ ऊँचा एक पौधा, अपामार्ग; किलनी।
**चिचड़ी** - स्त्री० [देश] एक कीड़ा जो चौपायो के शरीर में चिपटकर उनका खून पीता है, किलनी।
**चिचान** - पु० [हि] बाज।
**चिचिंडा** - पु० [हिं] एक बेल और उसमें लगनेवाली लबी-लंबी तरकारी।
**चिचियाना** - अ० [अनु] चिल्लाना।
**चिचोड़ना** - स० [देश] दाँत से खीचकर या दबाकर रस या सार चूसना।
**चिट** - स्त्री० [अंग्रे] काग़ज़ का छोटा टुकड़ा; छोटा पत्र, पुरजा।
**चिटकना** - अ० [अनु] सूखकर फटना, चिढ़ना; खीझना।
**चिटकाना** - स० [अनु] किसी सूखी हुई चीज़ को तोड़ना या चटकाना।
**चिटनवीस** - पु० [हिं] लेखक, मुहर्रिर, लिपिक।
**चिट्टा** - 1. वि० [हिं] सफ़ेद, गोरा; 2. पु० हानि पहुँचाने के इरादे से चकमा देना या बढ़ावा देना, जैसे, 'चिट्टा देना' या 'चिट्टा लड़ाना'।
**चिट्ठा** पु० [हि] हिसाब की बही; ख़र्च की सूची; मु०—बाँधना - लेखा तैयार करना; कच्चा चिट्ठा - पूरा और ठीक गुप्त हाल।
**चिट्ठी** - स्त्री० [हिं] पत्र, ख़त; यौ० —पत्री - ख़त-किताबत; —रसाँ - डाकिया।
**चिड़चिड़ा** - वि० [हिं] शीघ्र चिढ़नेवाला, तुनकमिज़ाज़।
**चिड़वा** - पु० [हिं] चिउड़ा।
**चिड़ा** - पु० [हि] गौरा पक्षी, गौरैया का नर।
**चिड़िया** - स्त्री० [हिं] पक्षी; मु० — का दूध - अप्राप्य वस्तु; सोने की चिड़िया - ख़ूब धन देनेवाला; — फँसाना - किसी धनवान को अपने वश में कर लेना; किसी स्त्री को बहकाकर अपने अनुकूल बना लेना।
**चिड़ियाखाना**, **चिड़ियाघर** - पु० [हिं] वह घर जहाँ देखने के लिए पशु-पक्षी रखे गये हो।
**चिड़िहार**, **चिड़ीमार** - पु० [हिं] चिड़िया पकड़नेवाला, बहेलिया।
**चिढ़** - स्त्री० [हि] क्रोध लिये घृणा का भाव, नफ़रत; मु०—निकालना - चिढ़ाना।
**चिढ़ाना** - स० [हिं] नाराज़ करना; मु० मुँह चिढ़ाना - दिल्लगी करना।
**चित** - वि० [हि] पीठ के बल पड़ा हुआ; मु०—करना - कुश्ती में पछाड़ना; चारो खाने चित - हाथ-पैर पैलाये बिलकुल पीठ के बल पड़ा हुआ।
**चितकबरा** - वि० [हि] सफेद रंग पर काले, लाल या पीले दाग़वाला, रंगबिरंगा।
**चितचोर** - पु० [हिं] प्यारा।
**चितरना** - स० [हिं] चित्रित करना, चित्र बनाना।
**चितला** - वि० [हिं] चितकबरा।
**चितवन** - स्त्री० [हि] अवलोकन; दृष्टि, कटाक्ष, नज़र, मु०—चढ़ाना - त्योरी चढ़ाना, नाराज़ होकर देखना।
**चितवना** - स० [हिं] देखना, निगाह करना, दृष्टि डालना।
**चितवाना** - स० [हि] तकाना, दिखाना।
**चिता** - स्त्री० [हिं] चुनकर रखी हुई लकड़ियो का ढेर जिसपर मुर्दा जलाया जाता है; मु०—में बैठना - सती होना।

**चिताना** - स० [हिं] सावधान करना, सचेत करना।

**चितावनी** - स्त्री० [हिं] चिताने की क्रिया; मुं०—देना - याद दिलाना।

**चितेरा** - पु० [हिं] चित्रकार।

**चित्त** - पु० [सं] अंतःकरण; जी, मन; मु०—उचटना - जी न लगना; —बँटना - मन एकाग्र न रहना; —करना - दृढ़ निश्चय पर होना; —चुराना - मन को मोहित करना;—पर चढ़ना - बार-बार याद आना; —में पैठना, जमना या घुसना - मन में अंकित होना; —से उतरना - भूलना।

**चित्ता** - पु० [हिं] एक तरह का बाघ, चीता।

**चित्ती** - स्त्री० [सं] छोटा दाग़, धब्बा; एक तरह की कौड़ी।

**चित्तोद्वेग** - पु० [सं] व्याकुलता, घबराहट।

**चित्र** - पु० [सं] चन्दन आदि का तिलक; तस्वीर; यौ०—उतारना - चित्र बनाना।

**चित्रना** - स० [हिं] चित्रित करना; यौ०—विचित्र - रंग-बिरंग।

**चित्रसारी** - स्त्री० [हिं] सजा हुआ विलास-भवन, रंगमहल।

**चित्रिणी** - स्त्री० [सं] पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

**चिथड़ा** - पु० [हिं] फटा-पुराना कपड़ा।

**चिद्** - पु० [सं] चैतन्य, आत्मा।

**चिदात्मा** - पु० [सं] चैतन्य स्वरूप, परब्रह्म।

**चिदानंद** - पु० [सं] चैतन्य और आनन्दमय ब्रह्म।

**चिनगारी, चिनगी** - स्त्री० [हिं] आग का छोटा कण, अग्निकण, स्फुलिंग; मु० आँखों से चिनगारी छूटना - क्रोध से आँखें लाल होना।

**चिनचिनाना** - अ० [हिं] चिल्लाना, चीखना; आह भरना।

**चिनिया** - वि० [हिं] चीनी के रंग का, सफ़ेद; बहुत मीठा; यौ०—केला - बंगाल में होनेवाला एक तरह का मीठा केला;—बादाम - मूंगफली।

**चिन्मय** - वि० [सं] ज्ञानमय, ज्ञानरूप।

**चिन्ह** - पु० [सं] निशान; यादगार; पहिचान।

**चिपकाना** - स० [हिं] किसी लसीली वस्तु से दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना; चिपटाना।

**चिपचिपा** - वि० [अनु] लसदार; गंदा; जो चिपकता जान पड़े।

**चिपटना** - अ० [हिं] सटना; लिपटना, आलिंगन करना।

**चिप्पी** - स्त्री० [हिं] छोटा पैवंद; उपली; अनाज तौलने का एक बटखरा।

**चिबुक** - पु० [सं] ओंठों के नीचे का गोलाकार उभरा भाग, ठोढ़ी।

**चिमटना** - अ० [हिं] चिपटना।

**चिमटा** - पु० [हिं] आग या गरम बरतन पकड़ने का औज़ार।

**चिमटी, चिमोटी** - स्त्री० [हिं] छोटा चिमटा।

**चियाँ** - पु० [हि] इमली का बीज।

**चिरंजीव, चिरंजीवी** - वि० [सं] बहुत दिनों तक जीनेवाला, चिरजीवी।

**चिरंतन** - वि० [सं] पुराना।

**चिर** - वि० [सं] बहुत दिनों तक रहनेवाला; बहुत दिनों का।

**चिरकना** - अ० [अनु] थोड़ा-थोड़ा मल निकालना।

**चिरकाल** - पु० [सं] दीर्घ काल, बहुत समय।

**चिरकीं, चिरकीन** - वि० [फ़ा] मैला, गंदा।

**चिरकुट** - पु० [हिं] चिथड़ा, गूदड़।

**चिरजीवी** - वि० [सं] बहुत दिनों तक जीनेवाला।

**चिरना** - अ० [हि] फटना ; लकीर के रूप में घाव होना ।

**चिरमिटी** - स्त्री० [देश] गुंजा, घुंघुची ।

**चिरस्थायी** - वि० [सं] बहुत दिनो तक रहनेवाला ।

**चिरस्मरणीय** - वि० [सं] बहुत दिनो तक याद रखने योग्य ।

**चिस** - अव्य० [फ़ा] क्यो, किसलिए ।

**चिराग़** - पु० [फ़ा] दीआ, दीपक ।

**चिराग़दान** - पु० [फ़ा] दीपक का आधार, दीवट ।

**चिराग़ी** - स्त्री० [फ़ा] मज़ार पर चिराग़ जलाने के समय मुल्ला को मिलनेवाला धन ।

**चिराग़ेसहरी** - पु० [फ़ा] सवेरे का दीपक जिसके बुझने में अधिक देर न हो ।

**चिरायता** - पु० [सं] एक कड़ुवा पौधा जिसका काढ़ा दवा के रूप में पिया जाता है ।

**चिरायु** - वि० [सं] बड़ी उम्रवाला, दीर्घायु ।

**चिरैयता** - पु० [हि] चिरायता ।

**चिरौंजी** - स्त्री० [हि] एक मेवा ।

**चिरौरी** - स्त्री० [हि] विनती, प्रार्थना ; ख़ुशामद ।

**चिर्क** - स्त्री० [फ़ा] मल, गन्दगी ; पीब, मवाद ।

**चिर्म** - पु० [फ़ा] चमड़ा ।

**चिलक** - स्त्री० [हिं] काति, द्युति ; टीस ।

**चिलगोज़ा** - पु० [फ़ा] चीड़ या सनोवर का फल ।

**चिलचिल** - स्त्री० [हिं] अभ्रक, अबरक, एक खनिज पदार्थ ।

**चिलचिलाना** - अ० [अनु] चमकना, शोरगुल मचाना ।

**चिलड़ा** - पु० [देश] चीला, घी लगाकर सेंकी गयी एक प्रकार की रोटी ।

**चिलता** - पु० [फ़ा] कवच, लोहे का अंगरखा ।

**चिलम** - स्त्री० [फ़ा] मिट्टी या धातु का कटोरी-जैसा पात्र जिसपर रखकर तम्बाकू या गाँजा पीते हैं ; यौ० —पोश ; चिलम को ढँकने का पदार्थ ; —बरदार - हुक्का देनेवाला नौकर ।

**चिलमची** - स्त्री० [फ़ा] हाथ-मुँह धोने या थूकने का बरतन ।

**चिलमन** - स्त्री० [फ़ा] बाँस की तीलियो का बना परदा, चिक ।

**चिल्लड़** - पु० [हि] गंदे कपड़े में होनेवाला जूँ के आकार का कीड़ा ।

**चिल्लपों** - स्त्री० [हिं] शोर-गुल ; चिल्लाना ; पुकार ।

**चिल्ला** - पु० [फ़ा] चालीस दिन का समय ; चालीस दिन का व्रत ; [हि] पगड़ी का कलाबत्तू के काम का छोर ; धनुष की डोरी ; चीला ; मु० चिल्ले का जाड़ा - कड़ी सर्दी ।

**चिल्लाना** - अ० [हिं] ज़ोर से बोलना, चीखना, शोर करना ।

**चिल्लाहट** - स्त्री० [हिं] चिल्लाने की क्रिया ।

**चिल्ली** - स्त्री० [हिं] झींगुर ; भृकुटी ; बथुआ ।

**चिहाना** - अ० [हिं] तंग होना ; विराग उत्पन्न होना ; चौंकना ।

**चिंहुक** - स्त्री० [हि] खटका, डर ।

**चिहुँकना** - अ० [हिं] चौंकना ।

**चिहुँटना** - स० [हि] चुटकी लेना ।

**चिहुर** - पु० [ब्र] सिर के बाल, चिकुर ।

**चिह्न** - पु० [सं] निशान ; पताका ; धब्बा ।

**चीं** - स्त्री० [अनु] चिड़ियों की बोली ; [फ़ा] चेहरे पर पड़नेवाली शिकन ; मु० —बोलना - हार मान जाना ; यौ० —चपड़ - विरोध-प्रदर्शन ।

**चीकट** - 1. पु० [हिं] तेल का मैल; मटियार; लसार मिट्टी; 2. वि० जिस-पर चिकनाहट के साथ मैल जमा हो; बहुत ही मैला।

**चीख़** - स्त्री० [फ़ा] चिल्लाहट।

**चीखना** - स० [हिं] चखना, स्वाद लेना।

**चीख़ना** - अ० [अ] चिल्लाना।

**चीखुर** - पु० [हिं] गिलहरी।

**चीज़** - स्त्री० [फ़ा] वस्तु; पदार्थ; द्रव्य।

**चीत** - पु० [हिं] चित्रा नक्षत्र; चित्त; मन; दिल।

**चीतना** - स० [हिं] सोचना।

**चीता** - पु० [हि] एक प्रकार का बाघ।

**चीत्कार** - पु० [सं] चिल्लाहट; शोरगुल।

**चीथड़ा** - पु० [हिं] फटे-पुराने कपड़े का रद्दी टुकड़ा।

**चीथना** - स० [हिं] टुकड़े-टुकड़े करना।

**चीदा** - वि० [फ़ा] चुना हुआ, बढ़िया।

**चीन** - पु० [हि] पताका; सीसा धातु; सूत; रेशमी कपड़ा; हिरन; एक देश।

**चीनांशुक** - पु० [सं] चीन देश का रेशमी कपड़ा।

**चीना-बादाम** - पु० [हि] मूँगफली।

**चीनी** - 1. स्त्री० [हिं] शकर; 2. वि० चीन देश का।

**चीन्हना** - अ० [हिं] पहचानना।

**चीन्हा** - पु० [हि] पहिचान; निशानी।

**चीपड़** - पु० [हिं] आँख का मैल या कीच।

**चीमड़** } **चीमर** } - वि० [हिं] बड़ी मुश्किल से फटने या टूटनेवाला।

**चीयाँ** - पु० [हि] चियाँ।

**चीर** - वि० [सं] वस्त्र; यौ०—चर्म - बाघम्बर।

**चीरना** - स० [हिं] फाड़ना, विदीर्ण करना।

**चीरफाड़** - स० [हिं] चीरने-फाड़ने का काम, शल्य-क्रिया।

**चीरा** - पु० [हिं] चीरकर बनाया हुआ घाव; एक कपड़ा; पगड़ी।

**चीरी** - स्त्री० [हि] चिड़िया; झींगुर; एक प्रकार की छोटी मछली।

**चील** - स्त्री० [हिं] एक पक्षी; यौ०—झपट्टा - किसी चीज़ को झपट लेने का काम।

**चीलड़** } **चीलर** } - पु० [हिं] चिल्लड़, जूँ की तरह का एक सफ़ेद छोटा कीड़ा।

**चीला** - पु० [देश] एक तरह का पकवान।

**चील्हि** - स्त्री० [देश] बालकल्याणार्थ स्त्रियों का एक तंत्रोपचार।

**चीवर** - पु० [सं] संन्यासी या बौद्ध भिक्षुओं का कपड़ा।

**चुंगल** - पु० [हि] चंगुल।

**चुंगी** - स्त्री० [हि] बाहर से आनेवाले और स्वस्थान से निकलनेवाले माल पर लगनेवाला कर।

**चुंडा** - पु० [सं] कूप, कुआँ।

**चुंडित** - वि० [सं] चुटियावाला।

**चुंदी** - स्त्री० [हि] सिर पर बालों की शिखा, चुटिया; कुटनी।

**चुँधलाना** - अ० [हिं] चकाचौंध होना।

**चुंबक** - पु० [सं] चुंबन करनेवाला; कामी; धूर्त; लोहे को अपनी ओर आकर्षित करनेवाली शक्ति।

**चुंबन** - पु० [सं] चुम्मा, बोसा।

**चुंबित** - वि० [स] चूमा हुआ।

**चुअना** - अ० [हिं] चूना, टपकना।

**चुआन** - स्त्री० [हिं] पानी चूने का स्थान; सोता; नहर; गड्ढा।

**चुआना** - स० [हिं] टपकाना।

**चुकंदर** - पु० [फ़ा] गाजर की जाति की एक तरकारी।

**चुकता** - वि० [हिं] बेबाक़, अदा , निःशेष ।

**चुकना** - अ० [हिं] समाप्त होना, ख़तम होना।

**चुकाना** - स० [हि] अदा करना ।

**चुकिया** - स्त्री० [देश] छोटा बरतन; कुल्हिया ।

**चुकौता** - पु० [हिं] कर्ज़ की सफ़ाई, बेबाक़ी ; मु० —लिखना - पाने की रसीद देना ; भरपाई ।

**चुक्कड़** - पु० [हिं] मिट्टी का छोटा बरतन ; पुरवा ।

**चुग़द** - पु० [फ़ा] उल्लू , मूर्ख ।

**चुगना** - स० [हिं] चिड़ियों का चोंच से चुनकर खाना ।

**चुग़ल** - पु० [फ़ा] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला ; यौ० — ख़ोर - चुग़ली करनेवाला ।

**चुग़ली** - स्त्री० [फ़ा] पीठ पीछे शिकायत ।

**चुगाना** - स० [हिं] चिड़ियो को दाना खिलाना ।

**चुचकारना** - स० [अनु] चुमकारना, दुलारना ।

**चुचकारी** - स्त्री० [अनु] चुचकारने की क्रिया।

**चुचाना**
**चुचुआना** } - अ० [हिं] चूना ; रिसना ।

**चुचुक** - पु० [सं] स्तन का अग्रभाग ।

**चुटकी** - स्त्री० [अनु] किसी चीज़ को पकड़ने या उठाने के लिए अंगूठे और तर्जनी या बीच की उंगली को परस्पर सटाकर बनायी गयी स्थिति ; मु० —लेना - हँसी उड़ाना ; —में उड़ाना - कुछ न समझना ; —भरना - चुभती बात कहना ।

**चुटकुला** - पु० [हिं] मज़ेदार बात, चमत्कारपूर्ण उक्ति ।

**चुटिया** - स्त्री० [हि] सिर पर बाल की लट, शिखा : मु० —हाथ में होना - वश में होना ।

**चुटियाना** - स० [हिं] चोटी पकड़कर ज़बरदस्ती ले जाना ; चोट पहुँचाना ; घाव करना ।

**चुटीला** - वि० [हिं] चोट खाया हुआ ; चोट करनेवाला ।

**चुटैल** - वि० [हिं] जिसे चोट लगी हो; चोट करनेवाला ।

**चुड़ैल** - स्त्री० [हि] डायन ; भूतनी ।

**चुनचुनाना** - अ० [देश] जीभ या चमड़े पर जलन और खुजली-सी होना ।

**चुनचुनी** - वि० [देश] खुजलाहट पैदा करनेवाला, चिड़चिड़ा ।

**चुनट**
**चुनन** } - स्त्री० [हिं] सिकुड़न, शिकन, सिलवट ।

**चुनना** - स० [हिं] बीनना ; छांटना ; तोड़ना (फूल) ; पसन्द करना ; इकट्ठा करना; निर्वाचित करना ; मु० चुना हुआ - उत्तम ; दीवार में चुनना - ज़िन्दा ही दीवार में गड़वा देना ।

**चुनरी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियो का ओढ़ने का लाल रंग का बुन्दकीदार कपड़ा, चुन्नी ।

**चुनाँ** - अव्य० [फ़ा] ऐसा ; यौ० —चे - इस प्रकार ; अतः ; निदान ; जैसा कि ; उदाहरणस्वरूप ; इसलिए ।

**चुनाई** - स्त्री० [हिं] चुनने की क्रिया या उसकी मज़दूरी ।

**चुनाव** - पु० [हिं] बहुतो में से कुछ को किसी कार्य के लिए चुनना।

**चुनिन्दा** - वि० [उ] चुना हुआ ; बढ़िया ।

**चुनीं** - अव्य० [फ़ा] इस प्रकार का ।

**चुनौटी** - स्त्री० [हिं] चूना रखने की छोटी-सी डिबिया ।

**चुनौती** - स्त्री० [हिं] उत्तेजना ; बढ़ावा ; ललकार ; मु० —देना - किसी काम को करने के लिए ललकारना ।

**चुप** - 1. वि० [हिं] मौन, ख़ामोश ; 2. स्त्री० चुप्पी, मौन ; मु०—करना - बोलने न देना ; —लगाना - मौन रहना ; — होना - कुछ न बोलना ।

**चुपका** - पु० [हिं] मौन, ख़ामोशी ; चुप्पी ।

**चुपकी** - स्त्री० [हिं] ख़ामोशी ।

**चुपड़ना** - स० [हिं] तेल मलना ; रोटी में घी लगाना ; चापलूसी करना; मु० चिकनी-चुपड़ी कहना - चापलूसी करना ।

**चुपडी** - स्त्री० [हिं] तेल, घी आदि द्वारा चुपडी हुई चीज़ (रोटी आदि) ।

**चुपाना** - 1. अ० [हिं] चुप रहना, मौन रहना ; 2. स० किसीको रोते से चुप करना ।

**चुप्पा** - वि० [हिं] जो बहुत कम बोले ।

**चुप्पी** - स्त्री० [हिं] ख़ामोशी, चुपकी ।

**चुभकना** - अ० [अनु] पानी में चुक-चुक करके नहाना ; गोता लगाना ; बार बार डूबना-उतराना ।

**चुभकाना** - स० [अनु] पानी में डुबाना ।

**चुभकी** - स्त्री० [अनु] डुबकी ; गोता ।

**चुभना** - अ० [हिं] गड़ना, धँसना ; मन में खटकना या सालना ।

**चुभुर-चुभुर** - पु० [अनु] बच्चों के दूध पीने का शब्द ।

**चुभाना** } **चुभोना** } - स० [हिं] धँसाना, गड़ाना ।

**चुमकार** - स्त्री० [हिं] पुचकार ; चुमकारने की आवाज़ ।

**चुमकारना** - स० [हिं] पुचकारना ।

**चुमाना** - स० [हिं] चूमने के लिए किसीके सामने मुँह करना ।

**चुम्मा** - पु० [हिं] चुंबन ।

**चुर** - पु० [हिं] बाघ आदि के रहने का स्थान, माद ; चार-पाँच आदमियों के बैठने का स्थान ।

**चुरकना** - अ० [अनु] चहकना ; चीं-चीं करना ; चटकना ; टूटना ।

**चुरकुट** - वि० [हिं] टुकड़े टुकड़े ; चकनाचूर ।

**चुरना** - अ० [हिं] पानी में पकना, सीझना ; आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत करना ।

**चुरमुर** - पु० [अनु] खरी या करकरी वस्तु के टूटने का शब्द ।

**चुरमुरा** - वि० [अनु] चुरमुर शब्द करके सहज ही टूटनेवाला ।

**चुरमुराना** - स० [अनु] चुरमुर शब्द के साथ तोड़ना ।

**चुराई** - स्त्री० [हिं] चुरने या पकाने की क्रिया ; चूर करने की क्रिया ; पीटने या पीटे जाने का भाव ।

**चुराना** - स० [हिं] चोरी करना ; छिपाना, बचाना; देने में कसर रखना, जैसे, 'गाय का दूध चुराना'; मु० आँख चुराना - सामने मुँह न करना ; चित्त चुराना - मोहित करना ।

**चुरी**† - स्त्री० [ब्र] चूरी, चूड़ी; चूर्ण ; दाल (कच्ची) दलते समय होनेवाले छोटे-छोटे टुकड़े ; छोटा कुआँ ।

**चुरुट** - पु० [अंग्रे] सिगार ।

**चुरू** - पु० [देश] चुल्लू ।

**चुलचुलाना** - अ० [हिं] खुजलाहट होना ।

**चुलचुली** - स्त्री० [हिं] खुजलाहट ।

**चुलबुल** - स्त्री० [हिं] चुलबुलापन, चंचलता ।

**चुलबुला** - वि० [हिं] चंचल ; नटखट ।

**चुलबुलाना** - अ० [अनु] चंचलता दिखाना, स्थिर न रह सकना ।

**चुलहाई** - वि० [हिं] कामातुर, लम्पट ।

**चुल्लू** - पु० [हिं] हथेली का गड्ढा ; मु०— भर पानी में डूब जाना - मुँह न दिखाना ; चुल्लू में उल्लू होना -

किसी थोड़ी वस्तु से ही मदमस्त हो जाना; — साधना - किसी काम का धीरे-धीरे अभ्यास करना।

**चुवना** - अ० [हि] टपकना; चूना।

**चुवाना** - स० [हि] चुआना।

**चुसकी** - स्त्री० [हिं] प्याला; चूसने की क्रिया; हुक्के का कश, घूँट।

**चुसना** - अ० [हि] चूसा जाना, सारहीन होना।

**चुसनी** - स्त्री० [हि] बच्चों का खिलौना; बच्चों को दूध पिलाने की शीशी।

**चुसाना** - स० [हि] चूसने का काम कराना।

**चुसौअल** } **चुसौवल** } - स्त्री० [हिं] खूब ज़्यादा चूसने का काम।

**चुस्त** - वि० [फा] तेज़; फ़ुरतीला, तंग; दृढ़; ठीक; कसा हुआ; सकुचित।

**चुस्ती** - स्त्री० [फ़ा] फ़ुरती; दृढ़ता।

**चुहचुहाना** - 1. वि० [हिं] चटकीला; मज़ेदार; 2. अ० [अनु] चिड़ियों का बोलना; चटकीला लगना।

**चुहल** - स्त्री० [हि] विनोद, मज़ाक, यौ०— बाज़ - विनोदी; —बाज़ी - मसखरापन।

**चुहिया** - स्त्री० [हिं] मादा चूहा; मु० खोदा पहाड़, निकली चुहिया - बड़ी मेहनत का तुच्छ फल।

**चुहुटना** - स० [हिं] चिमटना।

**चूँ** - 1. पु० [अनु] छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द; मु० —करना - कुछ कहना; चूँ न करना - विरोध में कुछ न कहना; 2. अव्य० इसलिए; यौ० —कि - क्योंकि।

**चूँदरी** - स्त्री० [हिं] चुनरी।

**चू** - अव्य० [फ़ा] तुल्य, समान।

**चूक** स्त्री० [हिं] भूल, ग़लती।

**चूकना** - अ० [हिं] भूल करना।

**चूची** - स्त्री० [हिं] स्तन का अग्रभाग।

**चूचुक** - पु० [सं] स्तन का अग्रभाग।

**चूज़ा** - पु० [फ़ा] मुरग़ी का बच्चा।

**चूड़ी** - स्त्री० [हि] हाथ का गहना, चूरी; मु० चूड़ियाँ पहनना - औरत बनना, कायर होना; चूड़ियाँ तोड़ना - विधवा होना, यौ०— दार - 1. वि० जिसमें चूड़ियाँ हो; जिसमें पास-पास कई लकीरें हों; 2. पु० तंग और लंबा पाजामा जिसे पहनने से चूड़ी के आकार की सिलवटे पड़ें।

**चूत** - 1. पु० [सं] आम का पेड़; गुदा, 2. स्त्री० भग, योनि।

**चूतड़** - पु० [हि] पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग, नितंब; श्रोणिस्थल; मु०— दिखाना - अपमानित होकर लौट पड़ना, — पीटना - खूब आनन्द मनाना; शोक मनाना; — सिकोड़ना - सुस्ती से चलना।

**चूतिया** - वि० [हिं] नासमझ, मूर्ख।

**चूनर, चूनरी** - स्त्री० [हिं] चुनरी।

**चूना** - 1. पु० [हि] एक तीक्ष्ण और सफ़ेद क्षार भस्म जो पत्थर, ककड़, शंख, सीपी आदि पदार्थों को फूँककर बनाया जाता है, 2. अ० गर्भपात होना; टपकना; मु० —लगाना - धोखा देना, अपमानित करना।

**चूनादानी** - स्त्री० [हिं] चुनौटी, चूना रखने का पात्र।

**चूमना** - स० [हिं] चुम्मा लेना, बोसा लेना।

**चूमा** - पु० [हिं] चुंबन; यौ० —चाटी - चूमने और चाटने का काम; चुंबन और आलिंगन।

**चूर** - 1. पु० [हिं] छोटे-छोटे कण या टुकड़े; चूर्ण; 2. वि० डूबा हुआ, निमग्न; बेसुध।

**चूरन** - पु० [हिं] चूर्ण।

**चूरमा** - पु० [हिं] रोटी, पूरी आदि के चूर्ण में शक्कर और घी मिलाकर बनाया गया एक खाद्य पदार्थ।

**चूरी** - स्त्री० [हिं] चूड़ी।

**चूल** - पु० [स] शिखा, बाल; किसी लकड़ी का पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में ठोंका जाए; **मु०** चूलें ढीली होना - अधिक परिश्रम के कारण खूब थक जाना।

**चूलिका** - स्त्री० [सं] नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना देना; गिरि-शृंग।

**चूल्हा** - पु० [स] अंगीठी; **मु०**—जलाना - भोजन बनाना; चूल्हे में जाना - नष्ट-भ्रष्ट होना; — न्योतना - घर के सब लोगों को निमंत्रण देना; चूल्हे में जाय - नष्ट हो जाय।

**चूषण** - पु० [सं] चूसने की क्रिया।

**चूहा** - पु० [हि] मूषिक; **यौ०**—दान या दानी - चूहे पकड़ने का पिंजड़ा।

**चें** - स्त्री० [अनु] चिड़ियों की बोली; **यौ०** —चे - बक-बक; —नें - चिल्लाहट; बकवास।

**चे** - अव्य० [फ़ा] क्या, **यौ०**—गूना - किस प्रकार।

**चेचक** - स्त्री० [फा] एक संक्रामक रोग, शीतला; **यौ०**— रू - जिसके चेहरे पर चेचक के दाग हों।

**चेटक** - पु० [सं] नौकर; दूत; चसका; शीघ्रता; राणा प्रताप का घोड़ा; [हिं] जादू या इंद्रजाल विद्या; मजा।

**चेटी** - स्त्री० [स] दासी।

**चेत** - पु० [स] होश; याद; ज्ञान; सावधानी।

**चेतन** - 1. पु० [सं] आत्मा, जीव; परमेश्वर; मन; 2. वि० प्राणयुक्त।

**चेतना** - 1. स्त्री० [सं] चेत; बुद्धि; जीवन; जीवनी शक्ति; 2. अ० होश में आना; सावधान होना; बुद्धि से काम लेना।

**चेतावनी** - स्त्री० [हिं] सतर्क होने की सूचना।

**चेला** - पु० [हिं] शिष्य; शागिर्द; **मु०**— मूँड़ना - शिष्य बनाना।

**चेष्टा** - स्त्री० [सं] उद्योग; आंतरिक विचारों का द्योतक कायिक व्यापार; प्रयत्न; श्रम; कामना।

**चेहरा** - पु० [फ़ा] मुखड़ा; **मु०**—उतरना - उदास होना; — तमतमाना - क्रोध के मारे मुँह लाल हो जाना; — बिगाड़ना - खूब पीटना; — लगाना - मुँह छिपाना; चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना - भयभीत होना।

**चेहल** - वि० [फ़ा] चालीस।

**चेहलुम** - पु० [फ़ा] वह रस्म जो मुहर्रम के चालीसवें दिन होता है।

**चैत** - पु० [हिं] चैत्र मास, फाल्गुन के बाद का महीना।

**चैती** - स्त्री० [हिं] वह फसल जो चैत में काटी जाय, रब्बी।

**चैत्य** - पु० [सं] मकान; मंदिर; विहार; यज्ञशाला; ग्रामदेवता का चबूतरा।

**चैन** - पु० [हिं] आराम; सुख; **मु०**— उड़ाना - आनन्द करना;—की बंशी बजना - बड़े आनन्द से दिन बिताना; —पड़ना - शांति मिलना; —से कटना या गुज़रना - आराम से ज़िंदगी बसर होना।

**चैल** - पु० [सं] कपड़ा, वस्त्र।

**चोंगा** - पु० [देश] बाँस की खोखली नली।

**चोंच** - स्त्री० [हिं] पक्षियों के मुँह का अगला भाग ; मु० दो-दो चोंचें होना - कहा-सुनी हो जाना ; — बंद करना - चुप रहना ।

**चोंड़ा** - पु० [हिं] खेत के आसपास सिंचाई के लिए खोदा गया छोटा कच्चा कुआँ ; सिर ; स्त्रियों के सिर के बाल ।

**चोंथ** - पु० [अनु] एक बार के गिरे गोबर का ढेर ।

**चोंथना** - स० [अनु] किसी वस्तु में से उसका कुछ भाग बुरी तरह नोचना ।

**चोंधर** - वि० [हि] छोटी आँखोंवाला ; मूर्ख ।

**चोआ** - पु० [हिं] एक सुगंधित द्रव्य ।

**चोकर** - पु० [हि] आटे का वह अंश जो छानने के बाद छलनी में बच जाता है ।

**चोख** - 1. स्त्री० [हिं] तेज़ी , फ़ुरती, तीखापन ; 2. वि० तीखी धारवाला, तेज़ ; खरा, सच्चा ।

**चोखा** - 1. वि० [हि] शुद्ध ; जिसकी धार तेज़ हो ; 2. पु० भरता या भुरता ।

**चोग़ा** - पु० [तु] पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला-ढाला पहनावा; लबादा ।

**चोचला** - पु० [अनु] हाव-भाव, नाज़-नखरा ।

**चोचलेबाज़ी** - स्त्री० [अनु] झूठे दिखावे की बातें ।

**चोज़** - पु० [देश] हँसी-ठट्ठा ; व्यंगपूर्ण उपहास ; चमत्कारपूर्ण उक्ति ।

**चोट** - स्त्री० [हिं] आघात, मार ; मु०—खाली जाना - निशाना चूक जाना ; —करना - प्रहार करना ; —खाना - जख्मी होना ; आघात सहना ; —पर चोट - आघात के ऊपर आघात ।

**चोटी** - स्त्री० [हिं] वेणी, सिर के बाल ; मु०—दबाना - काबू में करना ; —से एड़ी तक करना - कठिन परिश्रम करना ; —हाथ में होना - काबू में होना ।

**चोट्टा** - पु० [हि] चोर ।

**चोदना** - 1. स्त्री० [सं] विधिवाक्य ; प्रेरणा (मीमांसा) ; 2. स० [हिं] संभोग करना ।

**चोदास** - स्त्री० [हिं] कामेच्छा ।

**चोप** - पु० [हिं] गहरी चाह ; उमंग ; चाव ।

**चोब** - स्त्री० [फ़ा] शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा ; डंडा ; नगाड़ा ।

**चोबदार** - पु० [फ़ा] द्वारपाल ।

**चोर** - पु० [सं] चोरी करनेवाला, तस्कर ; मु० मन में चोर बैठना - संदेह होना ; मन का चोर - प्रेमी ; हृदय की अप्रकट भावना ; —पड़ना - चोरी हो जाना ।

**चोलना** - पु० [हिं] साधुओं का एक लम्बा ढीला-ढाला कुरता ; देह ।

**चोला** - पु० [हिं] शरीर ; एक लम्बा ढीला-ढाला कुरता ; चोलना ; मु० —छोड़ना - प्राण-त्याग करना ; —बदलना - एक शरीर त्यागकर दूसरा ग्रहण करना ।

**चोली** - स्त्री० [सं] अंगिया ; यौ० —मार्ग - वाममार्ग का एक भेद ; मु० —दामन का साथ - स्थायी व घनिष्ठ सम्बन्ध ।

**चोष्य** - वि० [सं] चूसने योग्य ।

**चौंकना** - अ० [हि] झिझकना, भय या आशंका से काँपना ; चौकन्ना होना ।

**चौंधियाना** - अ० [हिं] ज़्यादा चमक के कारण आँखों का बंद हो जाना, चकाचौंध होना ।

**चौक** - पु० [हिं] चबूतरा; चौमुहानी, चौराहा; शहर का मुख्य बाज़ार; मंगल-साज; मु०—पूरना - रंगोली भरना।

**चौकड़ी** - स्त्री० [हिं] हरिन की दौड़; छलाँग; मु०—भूलना - भौचक्का रह जाना।

**चौकन्ना** - वि० [हिं] सजग; सावधान।

**चौकस** - वि० [हिं] सावधान; ठीक, दुरुस्त; निश्चित (गु.)।

**चौकसी** - स्त्री० [हिं] सावधानी; रखवाली।

**चौका** - पु० [हिं] पत्थर का चौकोर टुकड़ा; रसोईघर; मु०—लगाना - लीप-पोतकर रसोई की तैयारी करना।

**चौकी** - स्त्री० [हिं] छोटा तख़्त; पहरा; वह स्थान जहाँ पुलिस या सिपाही निगरानी के लिए रखे जायँ; **यौ०—दार** - पहरा देनेवाला; मु०— देना - पहरा देना।

**चौखट** - स्त्री० [हिं] देहली; मु०—लाँघना - अंदर या बाहर जाना।

**चौखटा** - पु० [हिं] आइने या तसवीर आदि का फ्रेम।

**चौखा** - पु० [हिं] वह स्थान जहाँ चार गाँवो की सीमाएँ मिलती हैं; घोड़े या हिरन आदि का छलाँग मारकर भागना।

**चौखूँट** - पु० [हिं] चारो दिशा।

**चौखूँटा** - वि० [हिं] चौकोर।

**चौगान** - पु० [फ़ा] पोलो की तरह का एक भारतीय खेल।

**चौगिर्द** - क्रि० [हिं] चारो ओर।

**चौगुना** - वि० [हिं] चार बार उतना ही, चतुर्गुण।

**चौगोशा** - वि० [फ़ा] चौखूँटी, चौकोर।

**चौगोशिया** - स्त्री० [फ़ा] चार कोनेवाला।

**चौघड़** - पु० [हिं] आहार (भोजन) चबाने का चौड़ा चिपटा दाँत; गढ़।

**चौघोड़ी** - स्त्री० [हिं] चार घोड़ों की गाड़ी।

**चौचंद**‡ - पु० [हिं] बदनामी की चरचा, निन्दा।

**चौड़** - 1. पु० [हिं] मुंडन; 2. वि० चौपट, सत्यानाशी।

**चौड़ा** - वि० [हिं] लंबा का उलटा।

**चौड़ाई** - स्त्री० [हिं] चौड़ापन।

**चौड़ाना** - स० [हिं] चौड़ा करना।

**चौतनी** - स्त्री० [अव] बच्चो की टोपी; चोली।

**चौतही** - वि० [हिं] चार तहवाली।

**चौथ** - स्त्री० [हिं] चतुर्थी; चतुर्थांश; कर। मु०—का चाँद - कलंक लगने का डर।

**चौथापन** - पु० [हिं] बुढ़ापा।

**चौथिया** - पु० [हिं] हर चौथे दिन आनेवाला ज्वर।

**चौथी** - स्त्री० [हिं] विवाह के बाद कंगन खोलने की रस्म।

**चौदंती** - स्त्री० [हिं] वीरता; अल्हड़पन।

**चौदस** - स्त्री० [हिं] चतुर्दशी।

**चौदांत** - पु० [हिं] दो हाथियो की लड़ाई।

**चौधरी** - पु० [हिं] प्रधान, मुखिया।

**चौपट** - वि० [हिं] सर्वनाश; अरक्षित।

**चौपड़** - स्त्री० [हिं] चौसर नामक एक खेल।

**चौपहल** }
**चौपहला** } - वि० [हिं] जिसके चार पार्श्व हो, चार बाजुओंवाला।

**चौपाई** - स्त्री० [हिं] सोलह मात्राओं का एक छंद।

**चौपाया** - पु० [हिं] पशु, जानवर।

**चौपैया** - 1. स्त्री० [हिं] चार पहियोंवाली एक बड़ी गाड़ी; 2. पु० चारपाई, खाट।

**चौपाल** - पु० [हिं] खुली बैठक।

**चौफला** - पु० [हिं] वह चाकू जिसमें चार धारें हों।

**चौबच्चा** - पु० [हिं] छोटा गढ़ा ; पल्वल ।
**चौबारा** - पु० [हिं] कोठे के ऊपर की खुली कोठरी ; खुली बैठक ।
**चौमंज़िला** - वि० [हि] चार खंडोवाला (मकान) ।
**चौमासा** - पु० [हिं] बरसात के चार महीने ।
**चौमुख** - क्रि० [हिं] चारो ओर ।
**चौमुहानी** - स्त्री० [हि] चौराहा ।
**चौरंग** - पु० [हिं] तलवार चलाने का एक ढंग ।
**चौर** - पु० [हिं] चोर ; एक गंधद्रव्य ।
**चौरस** - वि० [हि] समतल ।
**चौरस्ता** - पु० [हिं] चौराहा ।
**चौरा** - पु० [हि] चबूतरा, वेदी ; परस्पर की बातचीत ; सलाह ।
**चौराई** - स्त्री० [हिं] एक साग, चौलाई ।
**चौरासी** - वि० [हिं] अस्सी और चार की संख्या , मु०—में पड़ना - जन्म-मरण के चक्करो में पड़कर कष्ट भोगना।
**चौराहा** - पु० [हिं] चौमुहानी, वह स्थान जहाँ से चार रास्ते चारो दिशाओ को जाते हो ।
**चौरी** - स्त्री० [हिं] छोटा चबूतरा ।
**चौरीठा** } **चौरेठा** } - पु० [हिं] पानी डालकर पीसा गया चावल ।
**चौलाई** - स्त्री० [हिं] पत्तियोंवाला एक साग ; चौराई ।
**चौसर** - पु० [हिं] पासो से खेला जानेवाला एक खेल, चौपड़ ।
**चौहट्ट** } **चौहट्टा** } - पु० [हिं] वह स्थान जिसके चारो ओर दुकानें हों ।
**चौहद्दी** - स्त्री० [हिं] चारो ओर की सीमा ।
**चौहान** - पु० [हि] क्षत्रियो की एक शाखा ।
**च्युत** - वि० [स] गिरा हुआ ।
**च्युति** - स्त्री० [सं] पतन ।

## छ

**छंग** - पु० [हिं] गोद, अंक ।
**छंगा** } **छंगु** } - पु० [हिं] छः अंगुलियोवाला ।
**छँटना** - अ० [हि] कटकर अलग होना ; चुना जाना ; मु० छँटा हुआ - धूर्त ।
**छँटवाना** - स० [हि] चुनवाना ; कटवाना ।
**छँटाई** - स्त्री० [हिं] छाँटने का काम ।
**छँटैल** - वि० [हि] धूर्त ; छाँटकर अलग किया हुआ ।
**छँड़ना** - स० [हिं] छोड़ना, त्यागना; छाँटना, अन्न को ओखली में डालकर कूटना ।
**छंद** - पु० [हि] पद्य; पद्य-रचना के नियम ; धोखा ; इच्छा ; अभिप्राय ; कलाई पर पहनने का एक गहना ।
**छः** - वि० [हि] पाँच और एक ।
**छक** - स्त्री० [हिं] लालसा ; तृप्ति ; नशा ।
**छकड़ा** - पु० [हिं] बैलगाड़ी ; मु०—लादना - गाड़ी में भरकर सामान लादना ।
**छकना** - अ० [हिं] तृप्त होना ।
**छकाना** - स० [हिं] खूब खिलाना-पिलाना ; चक्कर में डालना ; हैरान करना ; धोखा देना ।
**छक्का** - पु० [हिं] छः का समूह ; ताश का एक पत्ता ; होश ; जुआ ; मु०—पंजा - चालबाजी ;—छूटना - हैरान हो जाना ; हिम्मत हारना ।
**छगड़ा** - पु० [हिं] बकरा, छाग ।
**छगन** - पु० [हिं] छोटे बच्चे के लिए प्यार का शब्द ; नन्हा व प्यारा बच्चा ।
**छछिया** - स्त्री० [हिं] छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र ; छाछ ।
**छछूँदर** - पु० [हिं] चूहे का-सा एक जन्तु ; एक आतिशबाजी ।
**छजना** - अ० [हिं] शोभा देना ; ठीक जान पड़ना ।

**छज्जा** - पु० [हिं] छत का वह हिस्सा जो दीवार के बाहर निकला रहता है, बारजा।
**छटकना** - अ० [हिं] छूट जाना; दूर-दूर रहना, अलग-अलग फिरना।
**छटकाना** - स० [हिं] निकाल देना, बलपूर्वक अलग कर देना; दुतकार देना।
**छटपटाना** - अ० [हिं] तड़फड़ाना; अधीर या बेचैन होना; व्याकुल होना।
**छटपटी** - स्त्री० [हिं] बेचैनी, व्यग्रता; गहरी उत्कंठा।
**छटाँक** - स्त्री० [हिं] सेर का सोलहवाँ हिस्सा; मु०— भर - बहुत थोड़ा।
**छटा** - स्त्री० [सं] शोभा, सौंदर्य; बिजली; छवि; झलक।
**छटैल** - वि० [हिं] छँटैल, चालाक।
**छठा** - वि० [हिं] पाँच के बाद का क्रम; मु० छठे-छमासे - कभी कभी।
**छठी** - स्त्री० [हिं] जन्म के छठे दिन का स्नान और पूजन; एक देवी; मु०— का दूध याद आना - कठिन मेहनत में पड़ना; —में नहीं पड़ना - स्वभाव के प्रतिकूल।
**छड़** - स्त्री० [हिं] लोहे आदि धातु का लंबा व पतला टुकड़ा।
**छड़ना** - स० [हिं] छाँटना, चावल साफ़ करना, बकला छुड़ाना।
**छड़ा** - 1. पु० [हिं] स्त्रियो के पैर में पहनने का एक गहना; 2. वि० अकेला, एकाकी; अविवाहित युवक।
**छड़िया** - पु० [हिं] दरबान, पहरेदार।
**छड़ी** - स्त्री० [हिं] पतली लकड़ी; यौ० —बड़दार - बड़े आदमियो के साथ चाँदी-सोने की छड़ी लेकर चलनेवाला नौकर।
**छत** - स्त्री० [हिं] पाटन; ऊपर का खुला हुआ कोठा।
**छतना** - पु० [हिं] पत्तों का बना हुआ छाता; मधुमक्खियों का छत्ता।
**छतनार** - वि० [हिं] छाते की तरह फैला हुआ।
**छतरी** - स्त्री० [हिं] छाता।
**छतिया** - स्त्री० [हिं] छाती।
**छतीसा** - वि० [हि] चतुर, धूर्त।
**छत्तर** - पु० [हिं] छत्र।
**छत्ता** - पु० [हिं] छतरी; मधुमक्खी का चक्र; कमल का बीजकोष।
**छत्तीसी** - वि० [हि] छल-छंद में पटु स्त्री; छिनाल।
**छत्र** - पु० [स] छाता; राजाओं का छाता; यौ० —च्छाया - आश्रय; —पति, धर - राजा; —भंग - राज्य का नाश; अराजकता; मु० किसीकी छत्रच्छाया में होना - किसीकी शरण में होना।
**छत्रक** - पु० [सं] कुकुरमुत्ता।
**छत्रा** - स्त्री० [सं] धनियाँ; कुकुरमुत्ता।
**छद्म** - पु० [सं] छिपाव; कपट, यौ०— वेश - बदला हुआ वेश; —वेशी - जो वेश बदले हुए हो।
**छद्मी** - वि० [स] छली।
**छनक** - पु० [अनु] छन-छन करने का शब्द; झनझनाहट; झंकार।
**छनछनाना** - अ० [अनु] गरम कड़ाही या लोहे पर पानी पड़ने से छन-छन शब्द होना।
**छनना** - 1. पु० [हिं] छानने का साधन; छानने की क्रिया; 2. अ० मादक पदार्थ का सेवन किया जाना।
**छन्दी** - वि० [सं] कपटी; धूर्त; ठग।
**छन्न** - वि० [हिं] ग़ायब; मु०—होना - उड़ जाना।
**छन्ना** - पु० [हि] छानने का साधन, छनना।

**छप** - पु० [अनु] पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।

**छपछपाना** - स० [अनु] पानी पर हाथ-पाँव मारना ।

**छपरबंद** - वि० [हिं] जो बस गया हो, आबाद; छप्पर छानेवाला ।

**छपाका** - पु० [अनु] पानी में किसीके गिरने की आवाज़; ज़ोर से उछाले हुए पानी का छींटा ।

**छपाई** - स्त्री० [हि] छापने का काम या मजूरी ।

**छपाना** - स० [हिं] छापने का काम कराना ।

**छप्पर** - पु० [हिं] छाजन, यौ०—बंद - छपरबंद; मु०—फाड़कर देना - बिना मेहनतके अकस्मात घर बैठे धन मिलना ।

**छबड़ा** - पु० [हिं] टोकरा, खाँचा ।

**छबीला** - वि० [हि] शोभायुक्त, सुंदर ।

**छब्बीस** - वि० [हिं] बीस और छः ।

**छमछमाना** - अ० [अनु] छम-छम शब्द करना ।

**छमण्ड** - पु० [सं] निराधार, अनाथ बालक ।

**छमिच्छा** † - स्त्री० [हिं] इशारा, संकेत; समस्या ।

**छय** - पु० [हिं] क्षय, नाश ।

**छयना** - अ० [हिं] क्षय को प्राप्त होना, छीजना ।

**छर** - 1. पु० [देश] छल; 2. स्त्री० [हि] छड़; 3. वि० नाशवान ।

**छरकना** - अ० [अनु] छलकना; बिखरना ।

**छरछर** - पु० [अनु] कणो या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द; पतली व लचीली छड़ी के लगने का शब्द; सरसर ।

**छरछराना** - 1. अ० [अनु] नमक आदि के लगने से शरीर के छिले हुए भाग या घाव में पीड़ा होना; 2. स्त्री० छरछराहट ।

**छरहरा** - वि० [हि] जो मोटा या बेडौल न हो ।

**छरी** - स्त्री० [हिं] छड़ी; छली ।

**छर्दन** - पु० [सं] वमन, उलटी; नीम का पेड़ ।

**छर्रा** - पु० [हिं] छोटे कंकड़; लोहे या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो बंदूक में बारूद के साथ भरे जाते हैं ।

**छल** - पु० [सं] कपट; असली रूप का छिपाव; बहाना; धोखा; यौ०—छंद्र - चालबाजी;— छिद्र - कपट, धोखेबाज़ी ।

**छलकना** - अ० [हि] उमड़ना; मर्यादा से बाहर होना ।

**छलछलाना** - अ० [हि] उमड़ना; आर्द्र होना, (आँखो में) जल भर आना ।

**छलनी** - स्त्री० [हिं] आटा छानने की चलनी; मु० कलेजा छलनी होना - जी दुखानेवाली बात सुनते-सुनते घबरा जाना ।

**छलहाई** † - वि० [देश] छली, कपटी ।

**छलाँग** - स्त्री० [हिं] चौकड़ी ।

**छलाई** † - स्त्री० [हिं] छल का भाव ।

**छलावा** - पु० [हि] दिखायी देकर अदृश्य होनेवाली छाया; जादू ।

**छलिया** - वि० [हिं] धोखेबाज़ ।

**छल्ला** - पु० [हिं] अंगूठी; कड़ा ।

**छवना** - पु० [अव] सूअर या मृग आदि का बच्चा, छौना ।

**छवाई** - स्त्री० [हिं] छाने का काम या मजूरी ।

**छवाना** - स० [हिं] छाने का काम दूसरों से कराना ।

**छवि** - स्त्री० [सं] शोभा, सौन्दर्य; कान्ति ।

**छहरना** - अ० [हिं] छितराना; फैलाना; शोभा देना ।

**छहियाँ** - स्त्री० [व्र] छाया ।

**छाँट** - स्त्री० [हिं] छाँटने या कतरने की क्रिया ।

**छाँटना** - अ० [हि] काटकर अलग करना ; साफ़ करना ; चुनना , मु० पक्की छाँटना - शुद्ध भाषा बोलना ।

**छाँड़ना** - अ० [हिं] छोड़ना ।

**छाँदना** - अ० [हि] पैरों को रस्सी से जकड़ना, बाँधना ; कसना ।

**छाँद** - स्त्री० [हिं] बाँधने की छोटी रस्सी ।

**छाँदस** - वि० [सं] वेदपाठी छंदसंबंधी ।

**छाँह** - स्त्री० [हिं] छाया , मु०—न छूने देना - पास न आने देना ; —बचाना - दूर दूर रहना ।

**छाक** - स्त्री० [हिं] तृप्ति, इच्छापूर्ति ; नशा ।

**छाकना** † - अ० [हिं] तृप्त होना, अघाना ।

**छाग** / **छागल** - पु० [हिं] बकरा, छगड़ा ।

**छाछ** - स्त्री० [हिं] मट्ठा ।

**छाज** - पु० [हि] सूप, अनाज फटकने का सींक या बाँस की तीलियों का बना बर्तन ; छप्पर ; शोभा ।

**छाजन** - स्त्री० [हिं] आच्छादन ; कपड़ा ।

**छाजना** - अ० [हिं] अच्छा लगना ।

**छाजा** - पु० [व्र] छज्जा ।

**छाता** - पु० [हि] छतरी ; छत्ता ।

**छाती** - स्त्री० [हिं] पेट के ऊपर का हिस्सा, वक्षस्थल ; मु०—पर मूँग या कोदों दलना - जी दुखानेवाली बातें कहना या करना ; —पर साँप लोटना - दुःख से कलेजा दहल जाना ।

**छात्र** - पु० [स] शिष्य, चेला ; यौ०—वृत्ति - विद्याभ्यास के लिए दिया हुआ धन ।

**छात्रालय** - पु० [सं] बोर्डिंग हाउस, छात्रावास ।

**छादक** - पु० [स] छानेवाला ; कपड़ा-लत्ता देनेवाला ।

**छादन** - पु० [सं] छाने या ढँकने का कार्य ; आवरण, आच्छादन ; छिपाना ।

**छान** - स्त्री० [व्र] छप्पर, घास-फूस की छाजन ; छाँद ; यौ० —बीन - खोज, जाँच-पड़ताल ।

**छानना** - स० [हिं] किसी वस्तु को चलनी या कपड़े आदि के बारीक़ छेदों से बाहर करना ; परखना ; ढूँढ़ना ; नशा पीना ; मु० ख़ूब छानी है - ख़ूब पी है ।

**छाना** - 1. स० [हि] मकान पर छप्पर आदि डालना ; 2. अ० ऊपर फैलना ।

**छाप** - स्त्री० [हिं] ठप्पे का निशान, मुहर का चिन्ह ; असर ।

**छापना** - स० [हिं] छाप डालना, मुद्रित करना ।

**छापा** - पु० [हिं] साँचा ; मुहर ; छाप ; दुश्मन पर यकायक किया जानेवाला हमला ; यौ०—ख़ाना - मुद्रणालय, प्रेस ; —मार - गुरिल्ला सैनिक ।

**छायल** - पु० [हिं] ज़नाना पहनावा ।

**छाया** - स्त्री० [स] छाँह, प्रकाश का अवरोध करनेवाली वस्तु की परछाईं ; प्रतिबिम्ब ; कांति ; यौ० —चित्र - फ़ोटो ; —तरु - घनी शाखाओंवाला वृक्ष ; —पथ - आकाशगंगा ; —लोक - स्वप्नलोक ; अदृश्य जगत ; —वाद - एक काव्यगत शैली ।

**छार** - पु० [हि] नमक ; राख; धूल ; क्षार ।

**छाल** - स्त्री० [सं] पेड़ के ऊपर का आवरण ।

**छालटी** - स्त्री० [हिं] पाट या सन का बना हुआ कपड़ा ।

**छालना** - अ० [हि] छानना, धोना ।

**छाला** - पु० [हि] फफोला ।

**छावना** - स० [ब्र] छाना।

**छावनी** - स्त्री० [हिं] सेना के ठहरने की जगह; पड़ाव, डेरा।

**छावर** } **छावरा** } - पु० [हिं] झुंड में तैरनेवाली नन्ही मछलियाँ; छौना।

**छावा** - पु० [हि] बच्चा; पुत्र; जवान हाथी।

**छिंटुआ** - पु० [हिं] बीज को हाथ में लेकर खेत में बिखेरते हुए बोने का एक ढँग, छींटा।

**छिंड़ाना** - स० [हिं] छीनना, ज़बरदस्ती लेना।

**छि, छिः** - अव्य० [हिं] घृणासूचक शब्द।

**छिकुनि** - स्त्री० [देश] छड़ी, कमची।

**छिछला** } **छिछिला** } - वि० [हिं] उथला।

**छिछारेपन** } **छिछोरापन** } - पु० [हिं] ओछापन।

**छिछुनि** - स्त्री० [ब्र] सबसे छोटी अंगुली, कनिष्ठिका।

**छिछोरा** - वि० [हिं] ओछा।

**छिटकना** - अ० [हिं] चारों ओर फैलना; छितराना।

**छिटकाना** - स० [हिं] चारों ओर फैलाना।

**छिटफुट** - वि० [हि] बिखरा हुआ, इधर-उधर पड़ा हुआ।

**छिड़कना** - अ० [हिं] पानी के महीन छीटे डालना।

**छिड़काव** - पु० [हिं] छींटों से तर करने का काम।

**छिड़ना** - अ० [हिं] शुरू होना।

**छितनी** - स्त्री० [देश] छोटी टोकरी।

**छितराना** - स० [हिं] फैलाना; बिखेरना।

**छिति** - स्त्री० [हिं] क्षिति, पृथ्वी।

**छिदना** - अ० [हिं] छेद होना, भिदना; छेदा जाना; घावों से भर जाना।

**छिदवाना** } **छिदाना** } - स० [हि] छेदने का काम कराना।

**छिद्र** - पु० [सं] छेद, सूराख; दोष; जगह।

**छिद्रान्वेषण** - पु० [स] दोष ढूँढ़ना।

**छिद्रान्वेषी** - वि० [सं] दूसरे का दोष ढूँढ़नेवाला।

**छिन** - पु० [हिं] क्षण।

**छिनकना** - स० [हिं] नाक का मल ज़ोर से साँस द्वारा निकालना।

**छिनना** - अ० [हिं] हरण होना; सिल आदि का कुटना या छेनी से करना।

**छिनार** } **छिनाल** } - वि० [हिं] कुलटा।

**छिन्न** - वि० [सं] कटा हुआ; खंडित; यौ०—भिन्न - तितर-बितर; नष्ट-भ्रष्ट; टूटा हुआ।

**छिप** - पु० [देश] बंसी, मछली पकड़ने का काँटा।

**छिपकली** } **छिपकिली** } - स्त्री० [हिं] दीवारों पर रेगनेवाला एक कीड़ा।

**छिपना** - अ० [हि] दिखायी न पड़ना; आड़ में जाना; अस्त होना; यौ० छिपा रुस्तम - वह आदमी जिसमें बहुत-से गुण भरे हों, पर लोग जिसे न जानते हो।

**छिपाछिपी** - स्त्री० [हिं] गुपचुप।

**छिपाना** - स० [हिं] प्रकट न करना, दूसरो की दृष्टि से बचाना।

**छिपाव** - पु० [हिं] गोपन; दुराव।

**छिमा** - स्त्री० [हि] क्षमा।

**छिया** - स्त्री० [अ] घृणित वस्तु; मल, मैला।

**छिरकना** - स० [हिं] छिड़कना।

**छिलका** - पु० [हिं] अनाज या फल आदि का ऊपरी हिस्सा, ऊपरी परत।

**छिलना** - अ० [हिं] रगड़ खाकर छिलके का हट जाना।

**छिलौरी** - स्त्री० [हिं] छोटा छाला।

**छींक** - स्त्री० [हिं] नाक से निकनेवाली हवा का झोका।

**छींकना** - अ० [हिं] छींक की क्रिया; **मु०** छीकते नाक कटना - थोड़ी-थोड़ी बात पर दण्ड मिलना।

**छींट** - स्त्री० [हिं] जलक.ण; रंग-बिरंगी छापवाला कपड़ा।

**छींटा** - पु० [हिं] जलकण; व्यंग्यपूर्ण उक्ति; **मु०**—कसना - कटूक्ति कहना।

**छी** - अव्य० [हि] घृणासूचक शब्द; **मु०** —छी करना - घिनाना, अरुचि प्रकट करना।

**छीका** - पु० [हिं] दूध या दही आदि टाँग-कर रखने की रस्सी की जाली, सीका, सिकहर; **मु०**—टूटना - अनायास ऐसी घटना होना जिससे किसीको कुछ लाभ हो।

**छीछड़ा** - पु० [हिं] मास का बेकार का हिस्सा; मल की थैली।

**छीछालेदर** - स्त्री० [हि] दुर्गति।

**छीज** - स्त्री० [हिं] घाटा; कमी।

**छीजना** - अ० [अव] कम होना; क्षीण होना।

**छीनना** - स० [हिं] ज़बरदस्ती ले लेना।

**छीनाखसोटी** } **छीनाझपटी** } - स्त्री० [हिं] ज़बरदस्ती लेने की क्रिया।

**छीप** - पु० [हिं] छाप, दाग; लम्बी छड़ी जिसमें मछली फंसाने की बंसी बांधी जाती है।

**छीपा** - पु० [हिं] थाली; बाँस आदि का पतला और लम्बा डंडा।

**छीपी** - पु० [हिं] छोटी थाली; कपड़े पर बेलबूटे छापनेवाला।

**छीमी** - स्त्री० [हिं] मटर आदि की फली।

**छीर** - 1. पु० [हिं] क्षीर, दूध; 2. स्त्री० वह किनारा जहाँ पर लम्बाई समाप्त होती हो।

**छीलना** - स० [हिं] छिलका उतारना; घास कुरेदना।

**छीलर** - पु० [हिं] पानी भरा हुआ छोटा गड्ढा, तलैया।

**छुआछूत** - स्त्री० [हिं] अस्पृश्यता।

**छुईमुई** - स्त्री० [हि] लज्जावंती लता, एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से ही सिमट जाती हैं।

**छुच्छी** - स्त्री० [हिं] पतली व पोली नली; नाक की कील; लौंग।

**छुछकारना** - स० [अनु] कुत्ते को शिकार के पीछे लगाना या पास बुलाना; झिड़कना; डाँटना; फटकारना।

**छुछुंदर** - पु० [हिं] छछूँदर।

**छुछुआना** - अ० [अनु] छछुंदर की तरह छू-छू करते फिरना; व्यर्थ इधर-उधर भटकते रहना।

**छुट** - अव्य० [हिं] छोड़कर, सिवाय।

**छुटकाना**† - स० [हि] छोड़ना, अलग करना।

**छुटकारा** - पु० [हिं] छूटने का भाव; मुक्ति, रिहाई।

**छुटपन** - पु० [हिं] बचपन।

**छुटौती** - स्त्री० [हिं] वह सूद या लगान जो महाजन छोड़ दे।

**छुट्टा** - वि० [हिं] जो बंधा न हो; फुटकर; एकाकी; खुदरा; थोक का उलटा।

**छुट्टी** - स्त्री० [हिं] छुटकारा; अवकाश, तातील, **मु०**—पाना - झंझट से बच जाना; —मनाना - अवकाश का दिन आनंद से बिताना।

**छुड़ाना** - स० [हिं] बंधन या उलझन से निकालना; मिटाना।

**छुत** † - स्त्री० [ब्र] क्षुधा, भूख।

**छुप** - 1. पु० [सं] स्पर्श; झाड़ी; वायु; 2. वि० चंचल।

**छुभित** † - वि० [हि] क्षुब्ध, व्याकुल; घबराया हुआ।

**छुरा** - पु० [हि] बड़ा चाकू; नाई का हथियार जिससे वह बाल मूँड़ता है, उस्तरा।

**छुरी** - स्त्री० [हिं] छोटा छुरा या चाकू; मु०—चलना - लड़ाई होना; —देना - मारना; —पैनी या तेज़ करना - हानि पहुँचाने की तैयारी करना।

**छुलाना** - स० [हिं] स्पर्श कराना।

**छुवाव** - पु० [हि] लगाव, संबंध; उपमा।

**छुहारा** - पु० [हि] खजूर की क़िस्म का एक खुश्क मेवा।

**छुही** - स्त्री० [हिं] पोतने की सफ़ेद मिट्टी, खड़िया।

**छूँछा** - वि० [हि] खाली, रीता; मु०—हाथ - खाली हाथ, जिसके पास हथियार या पैसा न हो।

**छू** - पु० [अनु] मंत्र की फूँक, मु० —मंतर होना - ग़ायब होना, जाता रहना।

**छूचक** † - पु० [हि] अशौच, सूतक।

**छूछा** - वि० [हि] छूँछा।

**छूट** - स्त्री० [हिं] छुटकारा; अवकाश; माफ़ी।

**छूटना** - अ० [हिं] छुटकारा होना; अलग होना; निकलना; मु० शरीर छूटना - मर जाना; बंदूक छूटना - गोली चलना; नाड़ी छूटना - नाड़ी का चलना बंद हो जाना; पेट छूटना - दस्त जारी होना।

**छूत** - स्त्री० [हि] छूने का भाव; संसर्ग; मु० —उतारना - अशुचिदोष दूर करना।

**छूना** - स० [हिं] स्पर्श करना; मु० आकाश छूना - बहुत ऊँचे तक जाना।

**छेंकना** - स० [हि] घेरना; रोकना।

**छेटा** † - स्त्री० [ब्र] बाधा, रुकावट।

**छेड़** - स्त्री० [हि] तंग करने की क्रिया; यौ० —खानी - बदमाशी; —छाड़ - हँसी-ठठोली, नोक-झोक।

**छेड़ना** - स० [हिं] छूना या कोंचना; तंग करना; हँसी-दिल्लगी के द्वारा चिढ़ाना; कोई काम शुरू करना; बाजे से स्वर निकालने की क्रिया।

**छेद** - पु० [सं] सूराख, छिद्र, बिल, खोखला; छेदन; दोष; मु० पत्तल में छेद करना - जो भलाई करे उसीको हानि पहुँचाना।

**छेदना** - स० [हिं] छेद करना, बेधना।

**छेना** - पु० [हिं] फटे हुए दूध का खोया, पनीर।

**छेनी** - स्त्री० [हिं] एक छोटा औजार, टाँकी।

**छेमकरी** - स्त्री० [हिं] सफ़ेद चील।

**छेरना** - अ० [हिं] अपच के कारण बार-बार टट्टी जाना; छेड़ना।

**छेरा** - पु० [हि] बकरा।

**छेरी** - स्त्री० [हिं] बकरी।

**छेव** - पु० [देश] वार, चोट; घाव; छेद; यौ० छल-छेव - कपट व्यवहार।

**छेवना** - 1. स० [देश] काटना; 2. स्त्री० ताड़ी।

**छेह** † - पु० [देश] छेव; खंडन; नाश; राख; नृत्य का एक भेद; अंत।

**छैना** † - अ० [देश] छीजना, कम होना।

**छैल** - पु० [हि] बना ठना रहनेवाला, बाँका, रंगीला; यौ०—चिकनिया या छबीला - बनाव-सिंगार का शौक़ीन।

**छैला** - पु० [हिं] बाँका, रंगीला पुरुष।

**छोई** - स्त्री० [हिं] ईख की सूखी पत्ती या डंठल ; निस्सार वस्तु ।
**छोकड़ा** - पु० [हिं] लड़का ; अनुभवशून्य या अपरिपक्व बुद्धिवाला युवक ।
**छोकड़ी** - स्त्री० [हिं] लड़की, कन्या ; बेटी ।
**छोटभैया** - पु० [हिं] अपनी ही बिरादरी का कम हैसियतवाला आदमी ।
**छोटा** - वि० [हिं] आकार, योग्यता, उम्र और पद-प्रतिष्ठा आदि में कम ; तुच्छ ; यौ०—बड़ा - अमीर-ग़रीब ; बच्चा-बूढ़ा; —मोटा - साधारण ।
**छोटाई** - स्त्री० [हिं] छोटापन, लघुता ।
**छोड़ना** - स० [हिं] पकड़ से अलग करना ; चला जाना ।
**छोनी** - स्त्री० [ब्र] पृथ्वी, भूमि, क्षोणी ।
**छोप** - पु० [हिं] मोटा लेप ।
**छोपना** - स० [हिं] मोटा लेप लगाना ।
**छोपा** - पु० [हिं] पाल के चारों कोनों पर बँधी हुई रस्सियाँ ।
**छोभना** - अ० [हिं] चित्त का विचलित होना ; जी में खलबली होना ; क्षुब्ध होना ।
**छोभित** - वि० [हिं] क्षोभित ; चंचल ।
**छोम** † - वि० [ब्र] चिकना, कोमल ।
**छोर** - स्त्री० [हिं] किनार, नोक, सिरा, विस्तार की सीमा ।
**छोरा** - पु० [हिं] छोकरा, लड़का ; एक नाव को दूसरी नाव के साथ बाँधकर ले जाने का कार्य ; यौ० —छोरी - छीना-झपटी ; झगड़ा ।
**छोरी** - स्त्री० [हिं] लड़की, छोकरी ।
**छोलदारी** - स्त्री० [हिं] छोटा तंबू या डेरा ।
**छोलना** - 1. स० [हिं] छीलना, सतह का ऊपरी हिस्सा काटना ; 2. पु० लोहे का ज़ंग छुड़ाने या खुरचने का एक औज़ार ।

**छोला** - पु० [हिं] हरा चना ; वह पुरुष जो ईख को काटता और छीलता है ।
**छोह** - पु० [हिं] स्नेह ; ममता ; दया ।
**छोहना** - अ० [हिं] विचलित होना ; क्षुब्ध होना ; दया या प्रेम करना ।
**छोहरा** † - पु० [ब्र] लड़का ।
**छोहरी** † - स्त्री० [ब्र] लड़की ।
**छोहाना** † - स० [हिं] प्रेम दिखाना ।
**छोही** - वि० [हिं] स्नेही, प्रेमी ।
**छौंक** - स्त्री० [अनु] बघार ।
**छौंकना** - स० [अनु] बघार देना ।
**छौना** - पु० [हिं] पशु का बच्चा, शावक ।
**छौरा** - पु० [हिं] ज्वार या बाजरे का डंठल जो चारे के काम आता है ; छोरा ।
**छौलिया** - वि० [हिं] प्रसन्न ; रसिक ।
**जंग** - पु० [फ़ा] लड़ाई, युद्ध ; यौ०—आवर - लड़नेवाला, योद्धा ; —जू - लड़ाका ।
**ज़ंग** - पु० [फ़ा] लोहे पर लगनेवाला लाल मुरचा या दाग़ ; यौ० —आलूदा - मुरचा लगा हुआ ।
**जंगम** - वि० [सं] चलने-फिरनेवाला ; दाक्षिणात्य लिंगायत-शैवसंप्रदाय के गुरु ।
**जंगरा** - पु० [देश] दाना निकाल लेने के बाद बचे हुए उर्द या मूंग आदि के डंठल ।
**जंगल** - पु० [हिं] वन ; उजाड़ ; मु०—में मंगल - सुनसान स्थान में चहल-पहल ; —जाना - पाख़ाना जाना ।
**जंगला** - पु० [हिं] खिड़की या दरवाज़े आदि में लगी लोहे की छड़ों की पंक्ति, कटहरा ।
**जंगली** - 1. वि० [हिं] जंगल में पैदा होनेवाला ; जो पालतू न हो ; असभ्य ; 2. पु० जंगल में रहनेवाला ।
**ज़ंगार** - पु० [फ़ा] तूतिया ; एक रंग ।
**ज़ंगारी** - वि० [फ़ा] नीले रंग का, नीला ।

**जंगाली** - पु० [फ़ा] चमकीले व नीले रंग का रेशमी कपड़ा।

**जंगी** - 1. पु० [फ़ा] हब्शी; 2. वि० युद्धसंबंधी; विशाल; **यौ०**—लाट - प्रधान सेनापति।

**जंगुल** - पु० [स] ज़हर, विष।

**जंगै** - स्त्री० [हि] बड़ी-बड़ी घुँघरू लगी कमरपट्टी।

**जंघा** - स्त्री० [सं] जाँघ, पिंडली, ऊरु; **यौ०** —मथानी - पुंश्चली, कुलटा।

**जँचना** - अ० [हिं] जाँच में पूरा उतरना; पसंद आना।

**जंजर** } **जंजल** } - वि० [हिं] पुराना और कमज़ोर।

**जंजाल** - पु० [हिं] झंझट; प्रपंच; बखेड़ा; **मु०**—में पड़ना या फँसना - कठिनाई में पड़ना; संकट में पड़ना।

**जंजाली** - वि० [हि] झगड़ालू, फ़सादी।

**ज़ंजीर** - स्त्री० [फ़ा] किवाड़ की कुंडी; कड़ियों की लड़ी; सिकड़ी; बेड़ी; **मु०** पैरों में ज़ंजीर पड़ना - बंधन या मज़बूरी में पड़ना।

**जंतर** - पु० [हिं] यंत्र, कल; तावीज; **यौ०** —मंतर - यंत्र-मंत्र, जादू-टोना।

**जंतरी** - 1. स्त्री० [हिं] सोनार का तार बढ़ाने का एक यंत्र; 2. पु० जादू-टोना करनेवाला; पंचांग, जंत्री; **मु०** —में खीचना - सीधा करना, दुरुस्त करना।

**जंतु** - पु० [सं] जानवर, प्राणी; **यौ०** —कंबु - शंख का कीड़ा, शंख; —मती - पृथ्वी।

**जंतुका** - स्त्री० [सं] लाख।

**जंतुघ्न** - 1. वि० [सं] कृमिनाशक; 2. पु० वायबिडंग; हींग; बिजौरा नींबू।

**जंत्र** - पु० [हिं] जंतर।

**जंत्री** - 1. पु० [हि] वीणा आदि वाद्य बजानेवाला, 2. वि० यंत्रित करनेवाला; 3. स्त्री० वह पुस्तक जिसमें तिथि व मुहूर्त आदि का वार्षिक विवरण रहता है।

**जंबीर** } **जंबीरी** } - पु० [सं] एक जाति का नींबू जो बहुत खट्टा होता है।

**जंबु** } **जंबू** } पु० [सं] जामुन का पेड़ और फल; **यौ०**—द्वीप - धरती के सात महाद्वीपों में एक जिसके नौ खंडो में भारतवर्ष है।

**जंबूक** - पु० [सं] गीदड़।

**ज़ंबूर** - पु० [फ़ा] शहद की मक्खी; एक पुराने ज़माने की छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी।

**जंभाई** - स्त्री० [हिं] नींद या आलस्य के कारण मुँह खुलने की क्रिया, उबासी।

**जई** - स्त्री० [हि] जौ की जाति का एक अनाज; **मु०**—डालना - अंकुर निकालने के लिए किसी अन्न को भिगोना।

**ज़ईफ़** - वि० [फ़ा] बूढ़ा; दुर्बल।

**ज़ईफ़ी** - स्त्री० [फ़ा] बुढ़ापा।

**जकंद** - स्त्री० [फ़ा] छलाँग, चौकड़ी।

**जकंदना** - अ० [उ] कूदना, उछलना; टूट पड़ना।

**जक** - 1. पु० [हि] यक्ष; कंजूस आदमी; 2. स्त्री० हठ; धुन; रट; **मु०**— बाँधना - रट लगना।

**ज़क** - स्त्री० [फ़ा] हार; हानि, घाटा।

**जकड़** - स्त्री० [हि] कसकर बाँधने की क्रिया या भाव; **मु०**—बंद करना - अच्छी तरह अपने वश में करना; खूब कसकर बाँध लेना।

**जकड़ना** - स० [हिं] कसकर बाँधना।

**ज़क़न** - पु० [फ़ा] ठोड़ी।

**ज़क़र** - पु० [अ] नर; फौलाद; लिंग

**जकना** - अ० [हिं] अचंभे में आना, भौचक्का होना ।

**ज़क़ात** - स्त्री० [अ] दान : ख़ैरात ; कर ।

**ज़क़ावत** - स्त्री० [अ] अक्लमंदी ।

**जकित** - वि० [हिं] चकित, विस्मित, अचरज में पड़ा हुआ ।

**जकी** - वि० [अ] बुद्धिमान ।

**जकुट** - पु० [सं] मलयाचल ; कुत्ता ; बैंगन का फूल ; जोड़ा ।

**ज़ख़म** - पु० [फ़ा] ज़ख्म, घाव ; मानसिक दुख या आघात ।

**जख़ीरा** - पु० [अ] ढेर ; वह जगह जहाँ तरह-तरह के पौधे और बीज बिकते हों ।

**ज़ख़्म** - पु० [फ़ा] ज़ख़म ; **मु०** —खाना - घायल होना ; —हरा करना - भूली हुई बात की याद दिला देना ।

**ज़ख़्मी** - वि० [फ़ा] घायल ।

**जग** - पु० [सं] संसार ; **मु०** —हँसायी करना - बदनामी का काम करना ।

**जगत** - 1. पु० [सं] संसार ; 2. स्त्री० [हिं] कुएँ का चबूतरा ।

**जगतसेठ** - पु० [हिं] बड़ा महाजन जिसकी साख सारे संसार में मानी जाय ।

**जगती** - स्त्री० [सं] संसार ; एक वैदिक छंद ; **यौ०** —तल - विश्व ।

**जगदंबा** - स्त्री० [सं] दुर्गा ।

**जगद** - पु० [सं] पालक ; रक्षक ।

**ज़ग़न** - स्त्री० [फ़ा] चौकड़ी ।

**जगना** - अ० [हिं] नींद से उठना ; सचेत होना ।

**जगन्नाथ** - पु० [सं] ईश्वर, विष्णु ; विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में स्थापित है ।

**जगमग** - वि० [अनु] प्रकाशित, चमकीला, चमकदार ।

**जगमगाहट** - स्त्री० [अनु] चमक-दमक, झलझलाहट ।

**जगह** - स्त्री० [फ़ा] स्थान ; पद, ओहदा ; गुंजाइश ; मौक़ा ; **मु०** —जगह - सब स्थानों पर ; कहीं-कहीं ; —छोड़ना - किसी स्थान को छोड़ना ; नौकरी से अलग होना ; ख़ाली छोड़ना ।

**जगहर** - स्त्री० [हिं] जगने की अवस्था ; जागरण ।

**जगाना** - स० [हिं] नींद से उठाना ; सचेत करना ; उभारना ।

**जगी** - स्त्री० [देश] मोर की जाति का एक पक्षी जो शिमला के आसपास पहाड़ों पर मिलता है ।

**जगीला** † - वि० [हिं] उनींदा ; नींद पूरी होने से पहले जगने के कारण अलसाया हुआ ।

**जघन** - पु० [सं] कटि के नीचे सामने का भाग, पेड़ू ; नितंब ।

**जघन्य** - वि० [सं] त्याज्य ; अत्यन्त बुरा ; नीच ।

**ज़च्चा** - स्त्री० [फ़ा] प्रसूता स्त्री ।

**जज** - पु० [अंग्रे] न्यायाधीश ।

**जजमान**, **जजिमान** - पु० [हिं] यजमान, यज्ञ करनेवाला ।

**ज़जर-व-मद** - पु० [अ] समुद्र का ज्वार-भाटा ।

**जज़ा** - स्त्री० [अ] बदला ।

**जज़ाकअल्लाह** - अव्य० [अ] ईश्वर तुम्हे इसका शुभ फल दे ; शाबाश ; बहुत अच्छा ।

**जज़िया** - पु० [अ] एक तरह का कर जो मुसलमानी राज्य में ग़ैर-मुसलमानो पर लगाया जाता था ।

**जज़ीरा** - पु० [अ] टापू, द्वीप ; **यौ०**—नुमा - प्रायद्वीप ।

**जज़्ब** - 1. पु० [अ] आकर्षण ; 2. अ० खिंचना ।

**जज़्बा** - पु० [अ] जोश ; प्रबल इच्छा ।
**जटना** - स० [हिं] धोखा देकर कुछ ले लेना, ठगना ।
**जट** - पु० [देश] झाड़ी के आकार का एक प्रकार का गोदना ; झुण्ड, समूह ।
**जटा** - स्त्री [सं] सिर के उलझे हुए बाल ; झकरा ; शाखा ; वेदपाठ का एक भेद ; शिव की जटा, यौ० —जूट - जटा का समूह ।
**जटाना** - स० [हिं] ठगा जाना ।
**जटायु** - पु० [सं] गीधों का एक राजा जो सीता की रक्षा करते समय रावण के हाथ से मारा गया था ।
**जटाल** - पु० [सं] वटवृक्ष, बरगद ; कचूर ; गुग्गुल ।
**जटाव** - स्त्री० [देश] काली मिट्टी जिससे कुम्हार घड़े आदि बनाते हैं ; कुम्हरौटी ।
**जटि** - स्त्री० [सं] पाकर का पेड़ ; जटा ; समूह ।
**जटित** - वि० [स] जड़ा हुआ ।
**जटिल** - 1. वि० [स] दुर्बोध ; जटाधारी ; 2. पु० सिंह ; ब्रह्मचारी ; शिव ।
**जठर** - पु० [सं] पेट ।
**जठराग्नि** - स्त्री० [सं] आहार को पचानेवाली पेट की अग्नि ।
**जड़** - स्त्री० [सं] अचेतन ; मंदबुद्धि ; पेड़-पौधो का मूल ; मु०—खोदना - सत्यानाश करना ; —पकड़ना - मज़बूत होना ।
**जड़ता** - स्त्री० [सं] मूर्खता ; अचेतनता ।
**जड़ना** - स० [हिं] पच्ची करना ; ठोकना ; प्रहार करना ; चुग़ली खाना, कान भरना ।
**जड़वाना** - स० [हिं] जड़ने का काम कराना ।
**जड़ाऊ** - वि० [हिं] पच्चीकारी किया हुआ ; जाड़े के कपड़े ।
**जड़ाना** - स० [हिं] जड़वाना ; जाड़ा सहना ।
**जड़ावट** - स्त्री० [हिं] जड़ने का काम ।
**जड़ावर** - पु० [हिं] जाड़े के कपड़े ।
**जड़ित** - वि० [हिं] जिसमें नग जड़े हो ।
**जड़िमा** - स्त्री० [सं] जड़ता ।
**जड़िया** - पु० [हि] नग जड़नेवाला, सोनार ।
**जड़ी** - स्त्री० [स] वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लायी जाती है ।
**जड़ीभूत** - वि० [सं] स्तंभित, चकित ।
**जत** - 1. वि० [अव] जितना, जिस मात्रा का ; 2. पु० वाद्य के बारह प्रबंधो में से एक ।
**जतन** - पु० [हिं] यत्न ।
**जतनी** - पु० [हिं] चतुर ; चालाक ; यत्न करनेवाला ।
**जताना** - स० [हिं] बताना ; चेतावनी देना ।
**जती** - पु० [हि] यति, संन्यासी ।
**जतु** - पु० [स] लाख ; शिलाजीत ।
**जतुका** - स्त्री० [सं] चमगीदड़ ।
**जत्था** - पु० [हिं] झुंड, दल ।
**जद** - 1. पु० [अ] दादा या नाना ; सौभाग्य ; संपन्नता ; 2. अव्य० [हिं] यदि, जब ।
**ज़द** - स्त्री० [फ़ा] मार ; चोट ।
**ज़दन** - पु० [फ़ा] मारना ।
**जदपि** - अव्य० [हिं] यद्यपि ।
**जदल** - पु० [अ] लड़ाई ।
**ज़दा** - वि० [फ़ा] जिसपर आघात पड़ा हो ; जिसपर किसी बात का प्रभाव पड़ा हो ।
**जदीद** - वि० [अ] नया ; नवीन ।
**ज़दो-कोब** - स्त्री० [फ़ा] मार-पीट ।
**ज़ह्द** - स्त्री० [अ] कोशिश ; प्रयत्न ; यौ०—व ज़हद - प्रयत्न और दौड़-धूप ।

**ज़द्दा** - स्त्री० [अ] नानी ; दादी ।
**ज़द्दी** - वि० [अ] बाप-दादा का, पैतृक ।
**जन** - पु० [सं] मनुष्य, लोगों का समूह ; जाति ; सेवक ; यौ०—तंत्र - प्रजातंत्र ; —पद - राज्य ; —प्रवाद - लोकापवाद ; —रव - कोलाहल, शोरगुल ; किंवदंती ; बदनामी ।
**ज़न** - स्त्री० [फ़ा] स्त्री ।
**ज़नख़** - पु० [फ़ा] ठोड़ी ; यौ० —दाँ - ठोड़ी पर का गड्ढा ।
**ज़नख़ा** - पु० [फ़ा] वह पुरुष जिसके हाव-भाव औरतों के-से हों ; हिजड़ा ।
**जनता** - स्त्री० [सं] आम लोग ; जनसमूह ।
**जनन** - पु० [सं] उत्पत्ति ; जन्म ; वंश ।
**जनना** - स० [हिं] संतान को जन्म देना ; प्रसव करना ।
**जननी** - स्त्री० [सं] माता ।
**जनम** - पु० [हिं] जन्म ; जीवन , यौ०—घूँटी - वह औषधियुक्त पेय जो बच्चे को जन्म के समय से दो तीन वर्ष तक पिलायी जाती है ; मु० जनमघूँटी में पड़ना - जन्म से ही आदत पड़ना ।
**ज़नाख़ी** - स्त्री० [फ़ा] परमप्रिय सखी ।
**ज़नाज़ा** - पु० [अ] लाश ; अरथी ।
**ज़नानख़ाना** - पु० [फ़ा] स्त्रियों के रहने का स्थान ।
**ज़नाना** - वि० [फ़ा] स्त्रियों की तरह का ; स्त्री-संबंधी ।
**ज़नानी** - वि० [फ़ा] स्त्रियों की ।
**जनाब** - पु० [अ] महाशय ; यौ० जनाबे मन - मेरे मान्य और महोदय ; जनाबे आली - श्रीमान ।
**जनवाना** - स० [हिं] प्रसव कराना ; समाचार दिलवाना ; जानना ।
**जनवास, जनवासा** - पु० [हिं] बारातियों के ठहरने की जगह ।
**जनार्दन** - पु० [सं] विष्णु, कृष्ण ।
**जनाव** - पु० [हिं] सूचना, इत्तला ।
**जनावर** - वि० [हिं] पशु, जानवर ; मूर्ख ।
**जनि** - 1. स्त्री० [सं] उत्पत्ति ; जन्म ; नारी ; माता ; पुत्रवधू ; 2. अव्य० मत ; नहीं ।
**जनिका** - स्त्री० [सं] लोकोक्ति ; पहेली ।
**जनियाँ** - स्त्री० [फ़ा] प्रियतमा, प्रेयसी ।
**जनु** - क्रि० [हिं] मानो, गोया ।
**जनीन** - पु० [अ] गर्भस्थ बच्चा ।
**जनून** - पु० [अ] पागलपन, उन्माद ।
**जनूनी** - पु० [अ] पागल ।
**जनूब** - पु० [अ] दक्षिण दिशा ।
**जनूबी** - वि० [अ] दक्षिण का ।
**जनेऊ** - पु० [हि] यज्ञोपवीत ।
**जनेता** - पु० [सं] पिता ।
**जनेरा** - पु० [देश] ज्वार नामक अनाज ।
**जनेश** - पु० [सं] नृप, राजा ।
**ज़न्द** - पु० [फ़ा] जरथुश्त का बनाया हुआ पारसियों का धर्मग्रंथ ।
**ज़न्न** - पु० [अ] विचार ।
**जन्नत** - पु० [अ] स्वर्ग ।
**जन्नती** - वि० [फ़ा] स्वर्गसंबंधी ।
**जन्म** - पु० [सं] पैदाइश ; यौ० —कुंडली, पत्री - ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की स्थिति ; —भूमि - मातृभूमि ; मु० —बिगड़ना - धर्म-भ्रष्ट होना ।
**जन्मांतर** - पु० [सं] दूसरा जन्म ।
**जन्य** - पु० 1. [सं] साधारण मनुष्य ; अफ़वाह ; युद्ध ; पुत्र ; जन्म ; 2. वि० जायमान ; उत्पन्न ।
**जन्या** - स्त्री० [सं] माता की संगिनी ; वधू की सखी ; सुख ; प्रीति ।
**जप** - पु० [सं] किसी मन्त्र या वाक्य को बार-बार दुहराना ; यौ० —तप - सन्ध्या-पूजा, पूजा-पाठ ।
**जपजी** - पु० [हिं] सिक्खों का धर्मग्रंथ ।
**जपनी** - स्त्री० [हिं] माला ; गोमुखी ।

**जपा** - 1. स्त्री० [सं] जवा, अड़हुल; 2. पु० जपनेवाला।

**ज़फ़र** - पु० [अ] जीत।

**जफ़ा** - स्त्री० [फ़ा] सख़्ती, कड़ाई; ज़ुल्म; यौ० —कश - सहिष्णु, सहनशील; —शुआर - अत्याचार करनेवाला।

**ज़फ़ीरी** - स्त्री० [अ] सीटी की आवाज़।

**जब** - क्रि० [हिं] जिस समय; मु० —तब - जब कभी, कभी कभी जिस जिस समय; —देखो तब - सदा, सर्वदा।

**जबड़ा** - पु० [हिं] मुँह की हड्डियाँ जिसमें डाढ़ें रहती हैं, कल्ला।

**ज़बर** - वि० [अ] बलवान; यौ० —जद - पुखराज नामक रत्न; —न - बलपूर्वक, हठात्; —दस्त - बलवान; —दस्ती - अत्याचार; अन्याय।

**जबरा** - वि० [हिं] बलवान, बली।

**जबल** - पु० [अ] पहाड़।

**ज़बह** - पु० [अ] गला काटने की क्रिया।

**जबहा** - पु० [हि] जीवट, साहस।

**ज़बाँ** } - स्त्री० [फ़ा] जीभ; बोली, भाषा;
**ज़बान** } यौ० —जद - प्रचलित; —दराज़ - बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला; —बंदी - वक्तव्य; लिखा जाना; ख़ामोशी; मु० —खींचना - कठोर दंड देना; —में लगाम न होना - सोच समझकर न बोलना; बेज़बान - बहुत सीधा; मूक; —देना या हारना - वादा करना; —खुलना - बोलने में समर्थ होना; —पकड़ना - बोलने न देना; —चलाना - बढ़-बढ़कर बातें करना; —पर आना - मुँह से निकलना; —बंद होना - बोल न सकना; दो ज़बान होना - बातों में फ़र्क आना, एक बात पर दृढ़ न रहना; बरज़बान - कंठस्थ।

**ज़बानी** - वि० [फ़ा] मौखिक; कण्ठस्थ।

**ज़बीं** } - स्त्री० [अ] माथा; यौ० चीं-ब-
**ज़बीन** } ज़बीं - माथे पर पड़ा हुआ शिकन।

**ज़बीहा** - पु० [अ] नियमानुसार ज़बह किया गया पशु जिसका माँस खाने लायक़ हो।

**ज़बून** - वि० [फ़ा] बुरा।

**ज़बूर** - स्त्री० [अ] हज़रत दाऊद का लिखा धर्मग्रन्थ।

**ज़ब्त** - पु० [अ] जिसे सरकार ने छीन लिया हो; यौ०—करना - अधिकार में कर लेना।

**ज़ब्ती** - स्त्री० [अ] ज़ब्त होने की क्रिया या भाव।

**जब्बार** - वि० [फ़ा] ज़बरदस्ती करनेवाला।

**जब्र** - पु० [अ] ज़बरदस्ती।

**जब्रन** - वि० [अ] ज़बरदस्ती से, बलात्।

**जमघट** - पु० [हिं] मनुष्यो की भीड़, ठट्ठ।

**जमज** - पु० [हि] एक साथ पैदा हुए बच्चो का जोड़ा, जुड़वाँ।

**ज़मज़म** - पु० [अ] काबे के पास का एक कुआँ जिसे मुसलमान बहुत पवित्र मानते हैं।

**ज़मज़मा** - पु० [अ] संगीत।

**ज़मज़मी** - स्त्री० [अ] वह पात्र जिसमें मुसलमान ज़मज़म का जल भरकर लाते हैं।

**जमदुतिया** - स्त्री० [हिं] भैया-दूज।

**जमधर** - पु० [हिं] कटारी जैसा एक हथियार।

**जमन** - पु० [सं] भोजन, आहार।

**जमना** - अ० [हिं] गाढ़ा होना; बैठना; टिकना; मु० रंग जमना - प्रभाव दृढ़ होना; दूकान जमना - प्रतिष्ठा क़ायम होना।

**जमरूद** - पु० [हिं] एक फल।
**जमवट** - स्त्री० [हिं] लकड़ी का पहियानुमा गोल चक्कर जिसके ऊपर कुएँ की पक्की दीवार खड़ी होती है।
**जमा** - 1. वि० [अ] संग्रह किया हुआ; अमानत के तौर पर रखा हुआ; 2. स्त्री० पूँजी; मालगुजारी; गणित; **यौ०**—ख़र्च - पु० आय-व्यय;—जथा - धन-संपत्ति; नगदी; माल;—बंदी - पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें लगान की रक़में दर्ज रहती हैं;—कार - अनुचित रूप से दूसरों का धन दबाकर रखनेवाला; **मु०** —मारना - माल हज़म करना।
**जमाई** - पु० [हिं] दामाद, जामाता।
**जमात** - स्त्री० [अ] मनुष्यों का समूह; कक्षा; श्रेणी।
**जमाद** - स्त्री० [अ] मरहम।
**जमादार** - पु० [फा] पहरेदारों या सिपाहियों का प्रधान।
**जमादारी** - स्त्री० [फ़ा] जमादार का काम या पद।
**ज़मानत** - स्त्री० [अ] ज़ामिनी; **यौ०**—दार - जो ज़मानत करे; —न - ज़मानत के तौर पर; —नामा - वह पत्र जिसपर ज़मानत का उल्लेख हो।
**जमाना** - स० [हिं] द्रव पदार्थ को गाढ़ा करना; बैठाना; सजाकर रखना; **मु०** हाथ जमाना - पीटना; रंग जमाना - प्रभाव डालना।
**ज़माना** - पु० [अ] समय; संसार; बहुत अधिक समय; अरसा; **यौ०** —साज - जो ज़माने को देखकर चलता हो; **मु०**—देखना - तजुर्बा हासिल करना।
**ज़माल** - पु० [अ] बहुत सुंदर रूप, सौंदर्य।
**जमालगोटा** - पु० [हिं] एक पौधे का रेचक बीज, जयपाल।
**जमाली** - वि० [अ] रूपवान।
**जमाव** - पु० [हिं] जमने का भाव।
**जमावड़ा** - पु० [हिं] भीड़।
**ज़मींदार** - पु० [फ़ा] ज़मीन का मालिक।
**ज़मींदारी** - स्त्री० [फ़ा] ज़मींदार का प्रभुत्व या हक़।
**ज़मींदोज़** - वि० [फ़ा] जो गिराकर ज़मीन के बराबर कर दिया गया हो; जो ज़मीन के अंदर हो।
**ज़मीअ** - वि० [अ] कुल, सब।
**जमींकंद** - पु० [फ़ा] सूरन।
**ज़मीन** - स्त्री० [फ़ा] भूमि; **मु०** —आसमान एक करना - बड़े-बड़े उपाय करना; —आसमान के कुलाबे मिलाना - बड़ी-बड़ी बातें सोचना; —देखना - पटका जाना; —खिसकना - आश्चर्य या भय लगना; —आसमान का फ़र्क़ - बहुत अन्तर; —पर आना - गिर जाना।
**ज़मीमा** - पु० [अ] परिशिष्ट; क्रोड़पत्र; पुरौनी।
**ज़मीर** - स्त्री० [अ] मन; विवेक; व्याकरण में सर्वनाम।
**ज़मील** - वि० [अ] बहुत सुंदर।
**ज़मुर्रद** - पु० [फ़ा] पन्ना नामक रत्न।
**जमुहाना** - अ० [हिं] जंभाई लेना।
**जमैयत** - स्त्री० [अ] समुदाय; सभा; दरजा, मन की शांति; सेना; **यौ०** —उल-उलेमा - विद्वानों की सभा।
**जम्बील** - स्त्री० [फ़ा] फ़क़ीरों की थैली।
**ज़म्बूर** - पु० [अ] बर्र या भिड़ नामक जंतु; कील आदि उखाड़ने की चिमटी या संड़सी।

**ज़म्बूरक** - स्त्री० [तु] एक प्रकार की बड़ी बंदूक़ ।
**ज़म्बूरा** - पु० [फ़ा] तीर का फल ; एक छोटी तोप ; एक तरह का बाजा ।
**ज़म्बूरी** - पु० [फ़ा] जालीदार कपड़ा ।
**जम्हाई** - स्त्री० [हि] जँभाई, उबासी ।
**जम्हाना** - अ० [हिं] जम्हाई लेना ।
**जयंत** - 1. वि० [सं] बहुरूपिया, विजयी ; 2. पुं० रुद्र; इन्द्र का पुत्र ; कार्तिकेय ।
**जयंतिका** - स्त्री० [सं] हलदी ।
**जयंती** - 1. वि० [सं] विजय करनेवाली, विजयिनी ; 2. स्त्री० वर्षगाँठ का उत्सव ; झंडा ।
**जय** - स्त्री० [सं] जीत ; विपक्षी की हार ; निग्रह ; महाभारत ; **यौ०** — गोपाल - अभिवादन की एक पद्धति ; —जीव - जय हो और जियो ; —पत्र - विजय-सूचक पत्र ; —स्तंभ - विजय के स्मारक का स्तंभ ; —माल, माला ; वह माला जो विजयी को पहनायी जाए ; वह माला जो स्वयंवर में कन्या अपने वर के गले में डालती है ; **मु०** —मनाना - विजय या कल्याण की कामना करना ।
**जया** - स्त्री० [सं] दुर्गा, पार्वती ; हरी दूब ; ध्वजा, हड़ ; जपा पुष्प ; भाँग ।
**जयी** - 1. वि० [सं] विजयी ; 2. स्त्री० [हिं] जई ; एक अन्नविशेष, ओट्स (Oat) ।
**जर** - 1. पु० [सं] नाश ; बुढ़ापा ; 2. वि० क्षीण ; बूढ़ा ।
**ज़र** - पु० [फ़ा] सोना ; धन-दौलत ; **यौ०** —अस्ल - मूलधन ; —कश - कलाबत्तू का तार खींचनेवाला ; कलाबत्तू का काम किया हुआ ; —कोब - सोने-चाँदी का पत्तर बनानेवाला, वरक़-साज़ ; —ख़रीद - धन देकर ख़रीदा हुआ ; —ख़ेज़ - उपजाऊ ; —गर - सुनार, —दार - धनवान, अमीर, —दोज़ - कलाबत्तू का काम जिसपर हो ; कलाबत्तू का काम करनेवाला ; —दोज़ी - कपड़ों पर सलमे-सितारे का काम ; —निगार - जिसपर सोने का पानी चढ़ा हो या सोने का काम किया हो ; —परस्त - धन का उपासक, धनलोलुप ।
**जरगा** - पु० [तु] भीड़ ; एक तरह की घास ; एक जाति के पठानों का दल या उनकी सार्वजनिक सभा ।
**जरठ** - वि० [सं] कठिन ; वृद्ध ; पुराना ।
**ज़रथुश्त** - पु० [फ़ा] प्राचीन पारसी धर्म के प्रवर्तक ।
**ज़रद** - वि० [फ़ा] पीला ।
**ज़रदा** - पु० [फ़ा] एक व्यंजन ; पान में डालने का सुगंधित तबाख़ू, सुरती ; पीले रंग का घोड़ा ।
**ज़रदालू** - पु० [फ़ा] खूबानी ; बादाम ।
**ज़रदी** - स्त्री० [फा] पीलापन ; अंडे के अंदर का पीला अंश ।
**ज़रदुश्त** - पु० [फ़ा] जरथुश्त ।
**जरन** } - स्त्री० [अव] जलन, ईर्ष्या,
**जरनि** } जलने से होनेवाली पीड़ा ।
**जरना** - अ० [हि] जलना ; जड़ना ।
**ज़रब** - स्त्री० [अ] आघात ; चोट ; **मु०** —देना - गुणा करना (गणित) ।
**ज़रबीला** - वि० [फ़ा] भड़कीला ।
**ज़रर** - पु० [अ] चोट ।
**जरा** - स्त्री० [स] बुढ़ापा ।
**ज़रा** - 1. वि० [अ] थोड़ा ; 2. अव्य० थोड़ी देर के लिए ।
**ज़राअत** - स्त्री० [अ] खेतीबारी ।

**जराना** - स० [हिं] जलाना; ईर्ष्या पैदा करना।

**ज़राफ़त** - स्त्री० [अ] परिहास; अक़्लमंदी।

**ज़राब** - स्त्री० [अ] पैरो में पहनने का मोज़ा, जुर्राब।

**जरायम** - पु० [अ] अनेक प्रकार के अपराध; **यौ०** —पेशा - जो लोग चोरी या डाके आदि से ही अपनी जीविका चलाते हैं।

**जरायु** - पु० [सं] वह झिल्ली जिसमें बच्चा बंधा हुआ उत्पन्न होता है, आंवल; गर्भाशय; योनि।

**जरायुज** - पु० [सं] पिंडज।

**ज़रिया** - पु० [अ] द्वारा; कारण; लगाव।

**जरी** - वि० [अ] बहादुर, वीर।

**ज़री** - स्त्री० [फ़ा] सोने के तारों से बना काम, सुनहला धागा; **यौ०** —बाफ़ - ज़री के कपड़े आदि बुननेवाला; —बाफ़ी - ज़री के कपड़े बुनने का काम।

**जरीदा** - 1. वि० [फ़ा] अकेला; 2. पु० सरकारी गज़ट।

**ज़रीफ़** - वि० [अ] मज़ाक करनेवाला।

**ज़रीब** - स्त्री० [अ] ज़मीन नापने की जंज़ीर; **यौ०**—कश - वह जो ज़मीन नापता-जोखता हो; —कशी - ज़मीन नापने की क्रिया; पैमाइश।

**ज़रीबी** - 1. पु० [अ] ज़रीबकश; 2. स्त्री० ज़मीन नापने की मजूरी; 3. वि० ज़रीबसंबंधी।

**ज़रीया** - पु० [अ] ज़रिया; मार्ग।

**ज़रूथ** - 1. पु० [सं] मांस; 2. वि० कटुभाषी।

**ज़रूर** - वि० [अ] अवश्य; आवश्यक; बेशक।

**ज़रूरत** - स्त्री० [अ] आवश्यकता; हाजत।

**ज़रूरियात** - स्त्री० [अ] ज़रूरी का बहु०, आवश्यकताएँ; **मु०** —से फ़ारिग़ होना - शौचादि से निवृत्त होना।

**ज़रूरी** - वि० [अ] प्रयोजनीय; आवश्यक।

**ज़रे-अमानत** - पु० [फ़ा] धरोहर में रखा हुआ धन।

**ज़रे-अस्ल** - पु० [फ़ा] मूलधन जिसपर सूद चलता हो।

**ज़रे-जाफ़री** - पु० [फ़ा] बिलकुल शुद्ध सोना।

**ज़रे-ज़ामिनी** - पु० [फ़ा] ज़मानत में रखा हुआ धन।

**ज़रे-तावान** - पु० [फ़ा] हानि के बदले में दिया जानेवाला धन।

**ज़रे-नक्द** - पु० [फ़ा] नक़द रुपया।

**ज़रे-पेशगी** - पु० [फ़ा] बयाना।

**ज़रे-मुताल्बा** } **ज़रे-याफ़्तनी** } - पु० [फ़ा] बाकी रुपया।

**ज़रे-सफ़ेद** - पु० [फ़ा] चाँदी।

**ज़रे-सुर्ख़** - पु० [फ़ा] सोना।

**जर्क-बर्क़** - वि० [अ] तड़क-भड़कवाला; चमकीला; भड़कीला।

**जर्जर** - वि० [सं] बहुत पुराना होने के कारण बेकाम बना हुआ; खंडित; वृद्ध; पीड़ित।

**जर्जरित** - वि० [सं] जो जीर्ण हो गया हो; अभिभूत।

**ज़र्द** - वि० [फ़ा] पीला; **यौ०** —रू - जिसका रंग पीला पड़ गया हो; लज्जित।

**ज़र्दा** - स्त्री० [फ़ा] मीठे चावल; सुगंधित सुरती, ज़रदा; पीले रंग का घोड़ा; पीली आँखोवाला कबूतर।

**ज़र्दी** - स्त्री० [फ़ा] पीलापन, ज़रदी।

**ज़र्फ़** - पु० [अ] बरतन; पात्र; समाई; उर्दू व्याकरण में काल और स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

**ज़र्फ़े-जमाँ** - पु० [अ] उर्दू व्याकरण में कालवाचक क्रियाविशेषण।

**ज़र्फ़े-मकान** - पु० [अ] उर्दू व्याकरण में स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

**ज़र्ब** - स्त्री० [अ] ज़रब; **यौ०**—उल-मसला या उल-मिसाल - कहावत।

**जर्र** - पु० [अ] खींचना।

**ज़र्र** - पु० [अ] नुक़सान।

**ज़र्रा** - पु० [अ] अणु; रेत का कण; **यौ०** —ज़र्रा - तिल-तिल; कण-कण।

**ज़र्राब** - पु० [अ] वह जो ज़रब लगाता हो; सिक्के ढालनेवाला अधिकारी।

**जर्रार** - वि० [अ] वीर; बहादुर; विशाल।

**जर्राह** - पु० [अ] चीर-फाड़ करनेवाला हकीम।

**जर्राही** - 1. वि० [अ] चीर-फाड़संबंधी; 2. स्त्री० चीर-फाड़।

**ज़र्री** - वि० [फ़ा] सुनहला।

**जलंग** - पु० [सं] महाकाल।

**जलंगम** - पु० [सं] चांडाल।

**जल** - पु० [स] पानी; खस; पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र; **यौ०** —कंटक - सिंघाड़ा; —कंद - केला; —क्रीड़ा - जलविहार; —खरी - रस्सी की बनी थैली जिसमें आम आदि रखकर कहीं ले जाते हैं; —चर - पानी में रहनेवाले जीव; —ज - कमल; —तरंग - एक तरह का बाजा जिसमें धातु की छोटी-बड़ी बहुत-सी कटोरियो को एक क्रम से रखकर और उनमें पानी भरकर एक मुंगरी से बजाने पर ऊँचे-नीचे स्वर निकलते हैं; —द - बादल; मोथा; कपूर; —धि - समुद्र; दस शंख की सख्या; —निधि - समुद्र; चार की संख्या, —पान - नाश्ता, कलेवा; —प्रपा - पौसरा, प्याऊ; —प्रपात - पहाड़ पर से गिरनेवाला प्रवाह; —यान - जहाज़; नाव; —वर्त - भँवर; **मु०**—थल एक होना - घोर वृष्टि होना; चारो ओर पानी ही पानी दिखायी देना।

**ज़लज़ला** - पु० [अ] भूकंप।

**जलन** - स्त्री० [हिं] दाह; **मु०**—निकालना - बदला लेना।

**जलना** - अ० [हिं] धधकना; भस्म होना; झुलसना; सूखना; ईर्ष्या-द्वेष आदि से कुढ़ना; संतप्त होना; **मु०**—जले पर नमक छिड़कना - दुःख पर दुःख देना; जलती आग में घी डालना - झगड़ा बढ़ाना; जल भुनना - कोध से अधीर होना; **यौं०** जलजला - क्रोधी; चिड़चिड़ा।

**जलपना** - 1. अ० [हिं] लंबी-चौड़ी बाते करना; 2. स्त्री० डींग, व्यर्थ की बात।

**जलवा** - पु० [अ] शोभा।

**जलसा** - पु० [अ] बैठक, सभा; नाच-रंग, गाने-बजाने की महफ़िल; नमाज़ में सिजदा करके पहली बार बैठना।

**जलसूत** - पु० [सं] नहरुआ रोग, एक रोग जिसमें शरीर के निचले भाग में फुंसियाँ-सी हो जाती हैं व उनमें से धागे की तरह की पतली-पतली सफ़ेद मवाद निकलती है।

**जलांजलि** - स्त्री० [सं] अंजुली में जल भरकर पितरो को देना; तर्पण।

**जलाका** - स्त्री० [स] जोक; लू; पेट की ज्वाला।

**जलातन** - वि० [हिं] क्रोधी ; डाही, ईर्ष्यालु, असूया करनेवाला ।

**जलाना** - स० [हिं] प्रज्वलित करना ; आग को तेज़ करना, किसी चीज़ को आग में रखकर अंगारे या लपट पैदा करना ; **मु०** जला-जलाकर मारना - बहुत तंग करना ।

**जलापा** - पु० [हिं] ईर्ष्या से होनेवाली जलन ।

**जलार्णव** - पु० [सं] वर्षाकाल, बरसात ।

**जलाल** - पु० [अ] तेज, प्रकाश ; प्रभाव ; आतंक ।

**जलालिया** - वि० [अ] तेजवाला ; भीषण ।

**जलाव** - पु० [हिं] खमीर का उठना ; खमीर ।

**जलावतन** - वि० [अ] देश से निकाला हुआ, निर्वासित ।

**जलावतनी** - स्त्री० [अ] देशनिकाला, निर्वासन ।

**जलावन** - पु० [हिं] लकड़ी या कंडे जो जलाने के काम में आते हैं, इंधन ।

**जलावर्त** - पु० [सं] पानी का भँवर ; नाला ।

**जलाशय** - पु० [सं] तालाब, नदी, नाला, समुद्र आदि ; खस ; सिंघाड़ा ।

**जली** - 1. वि० [अ] प्रकट ; 2. स्त्री० सुंदर व मोटी स्पष्ट लिपि ।

**ज़लील** - वि० [अ] बड़ा ; बुज़ुर्ग ; अपमानित ; शर्मिंदा ।

**जलीस** - वि० [अ] पास बैठनेवाला ।

**जलूस** - पु० [अ] उत्सव ; जुलूस ।

**जलेबी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की कुंडलाकार मिठाई ।

**जलोदर** - पु० [सं] पेट फूलने का एक रोग, जलंधर ।

**जलौका** - स्त्री० [सं] जोक ।

**जल्द** - क्रि० [अ] शीघ्र, तेज़ी से ; **यौ०** —बाज़ - किसी काम में जल्दी करनेवाला ।

**जल्दी** - स्त्री० [अ] शीघ्रता, फुरती ।

**जल्प** - पु० [सं] कहना ; बकवाद ; न्यायशास्त्र के अनुसार सोलह पदार्थों में से एक पदार्थ ।

**जल्पक** - वि० [सं] बकवादी, बातूनी ।

**जल्पना** - अ० [हिं] बकवाद करना ।

**जल्लाद** - पु० [अ] घातक, वधिक ।

**जल्वत** - स्त्री० [अ] अपने आपको सबके सामने प्रकट करना ।

**जल्वा** - पु० [अ] शोभा, जलवा ; **यौ०**—गाह - वह स्थान जहाँ बैठकर कोई अपना सौन्दर्य दिखलावे ; संसार ।

**जल्सा** - पु० [अ] आनंद या उत्सव का समारोह ; सभा ; समिति ; अधिवेशन ।

**जव** - पु० [सं] वेग, यव नामक गेहूँ की जाति का एक अनाज ।

**जवनिका** - स्त्री० [सं] नाटक का परदा ; कनात ; पाल ।

**जवस** - पु० [सं] चरागाह ।

**जवाँ** - पु० [फ़ा] जवान ; **यौ०**—बख़्त - भाग्यवान ; —मर्द - शूर-वीर, बहादुर ; —मर्दी - बहादुरी ।

**जवाई** - स्त्री० [हिं] जाने का भाव, गमन ।

**जवाखार** - पु० [हिं] यवक्षार, यव के पौधे को जलाकर निकाला जानेवाला नमक ।

**जवादि** - पु० [सं] एक सुगंधित वस्तु ।

**जवान** - 1. वि० [फ़ा] तरुण ; बहादुर ; 2. पु० मनुष्य ; सिपाही ।

**जवानी** - स्त्री० [फ़ा] यौवन ; तरुणायी ; **मु०** —उतरना या ढलना - बुढ़ापा आना ; — में माँझा ढीला - भरी जवानी में कमज़ोरी ।

**जवाब** - पु० [फ़ा] पत्र का या प्रश्न का उत्तर; बदला; नौकरी से छूटने की सूचना; इनकार; यौ० — तलब - जवाब माँगने लायक़; — तलबी - जवाब माँगा जाना; —दावा - प्रतिवादी का उत्तर; — देह - उत्तरदायी, जिम्मेदार; — देही - जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व; सवाल-जवाब - बहस; मु०—तलब करना - किसी बात का कारण पूछना।

**जवाबी** - वि० [फ़ा] जिसका जवाब देना हो।

**जवार** - पु० [अ] पास-पड़ोस का स्थान।

**जवाल** - पु० [हि] झंझट, जंजाल।

**ज़वाल** - पु० [अ] अवनति; आफ़त।

**जवास** / **जवासा** - पु० [हि] एक कँटीला पौधा जो बरसात में सूखता है और शरत् में बढ़ता है।

**जवाहर** / **जवाहिर** - पु० [अ] रत्न, मणि।

**जवाहरात** / **जवाहिरात** - पु० [अ] रत्नसमूह।

**जशन, जश्न** - पु० [फ़ा] आनंद; उत्सव, जलसा।

**जस्ता** - पु० [हिं] खाकी रंग की एक धातु।

**जसामत** - स्त्री० [अ] मोटा होना।

**जसारत** - स्त्री० [फ़ा] दृढ़ता; साहस।

**जसीम** - वि० [अ] मोटा-ताज़ा।

**जहँ** - क्रि० [हिं] जहाँ।

**जहँड़ना** - अ० [देश] घाटा उठाना; धोखे में आना।

**ज़ह** - पु० [फ़ा] बच्चा जनना।

**जहतिया** - पु० [हिं] जकात या लगान वसूल करनेवाला।

**जहत्स्वार्था** - स्त्री० [सं] लक्षणा का एक भेद जिसमें पद या वाक्य वाच्यार्थ को त्यागकर उससे संबद्ध दूसरा अर्थ प्रकट करता है।

**जहद** - स्त्री० [अ] प्रयत्न; यौ० ज़द्द व जहद - प्रयत्न और परिश्रम।

**जहदना** - अ० [हि] कीचड़ होना; थक जाना।

**जहन्नुम** - पु० [अ] नरक, दोज़ख़; मु०— में जाना - नष्ट होना, बरबाद होना; —रसीद होना - नष्ट होना; —में जाय - चूल्हे में जाय, हमसे कोई मतलब नहीं।

**जहन्नुमी** - वि० [अ] नारकी, दोज़ख़ी।

**ज़हब** - पु० [अ] सोना।

**ज़हमत** - स्त्री० [अ] मुसीबत, कष्ट।

**ज़हर** - पु० [फ़ा] विष; घातक; अप्रिय बात; यौ० —आलूदा - जिसमें ज़हर मिला हुआ हो; —कातिल - प्राणघातक विष; —बाद - भयंकर और ज़हरीला फोड़ा; —मोहरा - एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है; मु० —उगलना - मर्मभेदी या कड़वी बात कहना; —का घूँट पीना - क्रोध को मन-ही-मन दबा रखना; —का बुझाया हुआ - बहुत उपद्रवी या दुष्ट।

**ज़हरा** - पु० [फ़ा] पित्ताशय।

**ज़हरीला** - वि० [फ़ा] जिसमें ज़हर हो।

**जहल** - पु० [अ] अज्ञान, नादानी।

**जहली** - वि० [अ] झगड़ालू; झक्की।

**जहाँ** - 1. क्रि० [हिं] जिस स्थान पर, जिस जगह; मु०—का तहाँ - उसी जगह पर; —तहाँ - इधर उधर; सब जगह; 2. पु० [फ़ा] संसार; यौ० —दीदा - बड़ा अनुभवी; — पनाह - जो सारे संसार को शरण दे, बादशाह।

**ज़हाक** - वि० [अ] बहुत हँसनेवाला।
**जहाज़** - पु० [अ] समुद्र में चल सकनेवाला बड़ा जलयान, ; मु० —का कौआ - वह आदमी जिसका एक ही ठिकाना हो।
**जहाज़ी** - 1. पु० [अ] नाविक; 2. वि० जहाज़संबंधी; यौ०—डाकू - जलदस्यु, समुद्री डाकू।
**जहाद** - पु० [अ] वह युद्ध जो मुसलमान काफ़िरों से करते हैं; मु० —का झंडा ऊँचा करना - मज़हब के नाम पर लड़ाई छेड़ना।
**जहादी** - वि० [अ] काफ़िरो से लड़नेवाला।
**जहान** - पु० [फ़ा] संसार; यौ०—आरा - सृष्टि की शोभा, शृंगार।
**जहानक** - पु० [सं] प्रलय।
**जहाब** - पु० [अ] प्रस्थान।
**जहालत** - स्त्री० [अ] अज्ञान; मूर्खता; जाहिलपन।
**जहिया** - क्रि० [देश] जिस दिन; जब; जहाँ।
**ज़हीन** - वि० [अ] तीक्ष्णबुद्धि; मेधावी।
**ज़हीर** - पु० [अ] सहायक।
**जहूदी** - पु० [अ] यहूदी।
**ज़हूर** - पु० [अ] प्रकाश।
**ज़हूरा** - पु० [अ] प्रताप।
**ज़हे** - अव्य० [फ़ा] वाह, धन्य; यौ० —क़िस्मत - धन्यभाग।
**जहेज़** - पु० [अ] दहेज़; अंत्येष्टि का सामान।
**जाँकन** - वि० [फ़ा] प्राणघातक।
**जाँकाह** - वि० [फ़ा] प्राणो पर संकट लानेवाला; भीषण।
**जाँगड़ा** - पु० [हिं] भाट, बंदी।
**जाँगर** - पु० [हिं] शरीर का बल; पौरुष; दाने निकाले हुए मटर या उरद आदि के डंठल।
**जाँगल** - 1. पु० [हिं] तीतर; मांस; ऊसर देश; 2. वि० जंगल का, जंगली।
**जांगलि, जांगलिक** - पु० [सं] सँपेरा; मदारी।
**जांगुल** - पु० [सं] विष; तोरई।
**जाँघ** - स्त्री० [हिं] कमर और घुटने के बीच का भाग; ऊरु।
**जाँघिया** - पु० [हि] घुटनों तक का पायजामा; मलखंभ की एक कसरत।
**जाँच** - स्त्री० [हिं] परीक्षा, परख; यौ०—पड़ताल - छानबीन; तहक़ीक़ात।
**जाँचना** - स० [हिं] परीक्षा करना।
**जाँता** - पु० [देश] आटा पीसने की चक्की।
**जाँनिवाज़** - वि० [फ़ा] दयालु।
**जाँफ़िज़ा** - पु० [फ़ा] अमृत।
**जाँफ़िशानी** - स्त्री० [फ़ा] किसी काम के लिए जान तक लड़ा देना।
**जाँ-ब-लब** - वि० [फ़ा] जिसके प्राण होठो तक आ गये हों।
**जांबव** - पु० [सं] जामुन का फल; सोना।
**जाँबाज़** - वि० [फ़ा] जान पर खेलनेवाला।
**जा** - 1. स्त्री० [सं] माता; देवरानी; 2. वि० उत्पन्न; 3. सर्व० [हिं] जिस; 4. स्त्री० [फ़ा] जगह; यौ० —ब-जा - जगह-जगह; —बे-जा - मौके-बेमौके।
**जाइ** - वि० [हिं] वृथा; बेकार।
**जाई** - स्त्री० [हिं] कन्या; चमेली।
**ज़ाईदा** - वि० [फ़ा] जन्मा हुआ, जात।
**जाकड़** - पु० [देश] नापसंद होने पर वापस करने की शर्त पर लाया हुआ माल।
**ज़ाकिर** - वि० [अ] ज़िक्र करनेवाला।
**ज़ाग** - पु० [फ़ा] कौवा।
**जाग** - स्त्री० [हिं] जागरण; जगह।

**जागता** - वि० [हिं] अपनी महिमा या प्रभाव तुरन्त और प्रत्यक्ष दिखानेवाला।
**जागतिक** - वि० [सं] जगत या संसार से संबन्ध रखनेवाला।
**जागना** - अ० [हिं] सोकर उठना; फलदायक होना; सचेत होना।
**जागरण** - पु० [सं] जागना; पर्व के उपलक्ष में रात-भर जागना।
**जागरूक** - वि० [सं] सतर्क; पहरेदार।
**जागीर** - स्त्री० [फ़ा] सरकार से मिली हुई ज़मीन या ताल्लुका; यौ० —दार - जागीर का मालिक, सरदार, सामंत।
**जाग्रत** - वि० [सं] जो जागता हो; सब बातों की समानावस्था।
**जाचक** - पु० [हिं] याचक; भिखमंगा।
**जाचना** - स० [हिं] याचना, माँगना; भीख माँगना।
**जाजम** - स्त्री० [तु] फ़र्श पर बिछाने की रंगीन और बूटेदार चादर, जाजिम।
**जा-ज़रूर** - पु० [फ़ा] पाख़ाना।
**जाज़िब** - वि० [फ़ा] सोखनेवाला; यौ० क़ूवते जाज़िबा - आकर्षण शक्ति।
**जाजिम** - स्त्री० [तु] जाजम।
**जाज्वल्य** - वि० [सं] प्रकाशयुक्त; तेजवान; यौ० —मान - प्रज्वलित; तेजोमंडित।
**जाड़ा** - पु० [हिं] सरदी का मौसिम; ठंड।
**जाड्य** - पु० [सं] जड़ता; कठोरता; मूर्खता।
**ज़ात** - स्त्री० [अ] देह; जाति; यौ० ज़ाते शरीफ़ - दुष्ट, पाजी।
**जात** - 1. वि० [सं] जन्मा हुआ, उत्पन्न; प्रकट; संगृहीत; 2. पु० जन्म; पुत्र; वर्ग; प्राणी; 3. स्त्री० जाति; यौ० —कर्म या क्रिया - पुत्रजन्म के अवसर पर किया जानेवाला संस्कार; —काम - मन्मथ; आसक्त; —मात्र - तुरंत का जन्मा हुआ, सद्योजात; —रूप - सुंदर; सोना; धतूरा; —विभ्रम - घबराया हुआ; —वेद - अग्नि; सूर्य; चित्रक, परमेश्वर; —वेश्म - सौरी, सूतिकागृह; —पाँत - जाति-वर्ण; बिरादरी।
**जातक** - पु० [सं] फलित ज्योतिष का एक भेद; बुद्ध के पूर्वजन्म की कथा; नवजात शिशु।
**जाता** - स्त्री० [सं] कन्या।
**जाति** - स्त्री० [सं] देशभेद या वंश-परम्परा के विचार से किया हुआ मानवसमाज का विभाग; हिन्दुओं की सामाजिक वर्णव्यवस्था का विभाग; कोटि; वर्ग; वर्ण।
**जाती** - स्त्री० [सं] जुही; छोटा आँवला; मालती।
**ज़ाती** - वि० [अ] व्यक्तिगत, अपना।
**जातीय** - वि० [सं] जाति-संबन्धी।
**जातीयता** - स्त्री० [सं] जातीय भावना; राष्ट्रीयता।
**जातु** - अ० [सं] कदाचित; कभी।
**जात्य** - वि० [सं] कुलीन; सुंदर; श्रेष्ठ; समकोण।
**ज़ाद** - प्रत्य [अ] जन्मा हुआ; यौ० आदमज़ाद - आदम से उत्पन्न आदमी; —बूम - जन्मभूमि; —राह - रास्ते का ख़र्च; राहख़र्च।
**ज़ादा** - वि० [फ़ा] जन्मा हुआ।
**जादू** - पु० [फ़ा] इंद्रजाल, तिलस्म; जंतर-मंतर; वशीकरण; मोहनी; बाजीगरी; यौ०—गर - जादू करनेवाला, —गरी - जादू का खेल; —नज़र - जिसकी आँखों में जादू हो; मु०—वह जो सिर पर चढ़कर बोले - उपाय वही अच्छा है जो सफल हो और विरोधी को भी मानना पड़े।

**जान** - 1. स्त्री० [हिं] ज्ञान ; जानने का भाव, समझ ; —कार - चतुर ; जाननेवाला ; —कारी - ज्ञान ; परिचय ; 2. स्त्री० [फ़ा] प्राण ; **यौ०** —आफ़रीन - सृष्टि करनेवाला ; जीवन देनेवाला ; —दार - जिसमें जान हो, सजीव ; सबल ; तेज़ ; —बख़्शी - पूर्ण रूप से क्षमा कर देना ; प्राणदंड से मुक्त कर देना ; **मु०**—पर खेलना - प्राणों को ख़तरे में डालकर साहस का काम करना ; —हलका न करना - बहुत तंग करना ; —आना - शोभा बढ़ना ; —बचाना - पीछा छुड़ाना ।

**जानना** - स० [हिं] मालूम करना, पहचानना; **मु०** जान पड़ना - मालूम होना ; जानकर अनजान होना - किसी बात को जानते हुए भी न जानने का ढोंग करना ; जान-बूझकर - जानते-समझते हुए ; जाने-अनजाने - जानकर या बिना जाने ।

**जानपद** - पु० [सं] जनपदसंबंधी वस्तु ; लोक, मनुष्य ; देश ; कर ; ग्रामवासी ।

**जानपना** - पु० [हिं] बुद्धिमत्ता, चतुराई ।

**जा-नमाज़** - स्त्री० [फ़ा] नमाज़ पढ़ने की दरी ।

**जानवर** - पु० [फ़ा] पशु ।

**जा-नशीन** - वि० [फ़ा] उत्तराधिकारी ।

**जाना** - अ० [हिं] गमन करना ; दूर होना ; विदा होना ; नष्ट होना ; गुज़रना ; **मु०** जा धमकना - यकायक पहुँच जाना ।

**जानाँ** - पु० स्त्री० [फ़ा] माशूक़, प्रिय ।

**जानिब** - स्त्री० [अ] ओर, तरफ़ ; **यौ०**—दार - पक्षपाती ; — दारी - पक्षपात ।

**जानिबैन** - पु० [फ़ा] जानिब का बहु० ; दोनो ओर ।

**ज़ानिया** - स्त्री० [अ] व्यभिचारिणी ।

**जानी** - 1. वि० [फ़ा] जानकार, जान से संबंध रखनेवाला ; 2. स्त्री० प्राणप्यारी ; 3. पु० प्राणप्यारा ; **यौ०** —दुश्मन - प्राणघातक शत्रु ।

**जानु** - पु० [सं] घुटना ।

**ज़ानू** - पु० [फ़ा] घुटना ; **मु०** दो-ज़ानू होना - घुटनों के बल बैठना ।

**जाने-मन** - पु० [फ़ा] मेरे प्राण (संबोधन)।

**जानो** - अव्य० [हिं] मानो ; जैसे ।

**जाप** - पु० [सं] किसी मंत्र या स्तोत्र आदि का बार-बार मन में उच्चारण, जप , जप-माला ।

**जापा** - पु० [हिं] सौरी ; प्रसूतिका-गृह ।

**ज़ाफ़र** - पु० [अ] बड़ी नदी ।

**ज़ाफ़रान** - पु० [अ] केसर ।

**ज़ाफ़री** - स्त्री० [अ] चीरे हुए बाँसों की बनी टट्टी या परदा एक प्रकार गेंदा ।

**ज़ाबित** - वि० [अ] ज़ब्त करनेवाला ; सहनशील ; नियामक ; रक्षक ।

**ज़ाबिता** - पु० [अ] नियम ; व्यवहार ; विधि, पद्धति ; फ़ेहरिस्त ।

**जाबिर** - वि० [फ़ा] अत्याचारी, जब्र करनेवाला ।

**ज़ाब्तगी** - स्त्री० [अ] नियमानुकूल होने का भाव ।

**ज़ाब्ता** - पु० [अ] क़ानून ; **यौ०**—दीवानी - आर्थिक क़ानून ; —फ़ौजदारी - दंडसंबंधी क़ानून ।

**जाम** - 1. पु० [हिं] याम; प्रहर ; जामुन ; 2. [फ़ा] प्याला ; शराब का प्याला ; **मु०**—चलना - शराब का दौर चलना, प्याले पर प्याला पीते जाना ।

**जामगी** - स्त्री० [फ़ा] तोप में आग देने का फलीता ; बंदूक़ का तोड़ा ।

**ज़ामदानी** - स्त्री० [फ़ा] फूलदार कपड़ा; चमड़े का संदूक़; कपड़ा रखने का संदूक़।

**जामन** - पु० [हिं] थोड़ा दही या मट्ठा जो दही जमाने के लिए दूध में डाला जाता है।

**जामल** - पु० [सं] एक प्रकार का तंत्र।

**जामा** - 1. वि० [अ] कुल, सब; 2. पु० [फ़ा] कपड़ा, पहनावा; मु० जामे से बाहर होना - बहुत नाराज़ होना; जामे में फूला न समाना - बहुत ख़ुश होना, इतराना।

**जामाता** - पु० [सं] दामाद, कन्या का पति।

**जामित्र** - पु० [सं] कुंडली में लग्न से सातवाँ स्थान; यौ० —वेध - एक अशुभ योग।

**जामिद** - वि० [फ़ा] जमा हुआ।

**ज़ामिन** - पु० [फ़ा] वह जो किसीकी ज़मानत करे; जिम्मा लेनेवाला।

**ज़ामिनी** - स्त्री० [फ़ा] ज़मानत; ज़ामिन होने का भाव।

**जामुन** - पु० [हिं] एक खटमिट्ठा फल और उसका पेड़, जंबूफल।

**जामुनी** - वि० [हिं] जामुन के रंग का, काला।

**जाय** - 1. स्त्री० [फ़ा] जगह; मौक़ा; 2. वि० व्यर्थ, बेकार।

**जायक** - पु० [सं] पीला चंदन।

**ज़ायक़ा** - पु० [अ] स्वाद; रसग्रहण की शक्ति, रसेन्द्रिय।

**ज़ायचा** - पु० [फ़ा] जन्मकुंडली; रमल में बनायी जानेवाली कुंडली।

**जायज़** - वि० [अ] उचित; मुनासिब; मानने योग्य।

**जायज़ा** - पु० [अ] जाँच-पड़ताल; परख।

**ज़ायद** - वि० [अ] ज़्यादा; अतिरिक्त।

**जायदाद** - स्त्री० [फ़ा] संपत्ति; माल-असबाब; जगह-ज़मीन; यौ० —मनकूला - चर संपत्ति, —ग़ैरमनकूला - स्थावर संपत्ति; —जौजियत - स्त्री-धन; —मकफ़ूला - वह संपत्ति जो रेहन हो; —मुतनाज़िया - जिस संपत्ति के बारे में कोई झगड़ा हो; —शौहरी - पति से मिली हुई संपत्ति।

**जाय-नमाज़** - स्त्री० [फ़ा] नमाज़ पढ़ने की दरी।

**जायपत्री** - स्त्री० [सं] जायफल के ऊपर के छिलके और अंदर के कड़े छिलके के बीच का रेशा जो सुगंधित होता है और औषधियो के काम में लाया जाता है।

**जायफल** - पु० [सं] एक सुगंधित फल जिसका व्यवहार औषध और मसाले आदि में होता है।

**ज़ायर** - पु० [अ] यात्री।

**ज़ायल** - वि० [अ] विराट।

**जाया** - स्त्री० [सं] पत्नी, जोरू; यौ० —जीव - पत्नी की कमाई खानेवाला।

**ज़ाया** - वि० [अ] नष्ट, बरबाद; खोया।

**जार** - पु० [सं] उपपति, यार; यौ०—कर्म - व्यभिचार।

**ज़ार** - 1. पु० [फ़ा] स्थान; 2. वि० बहुत अधिक।

**जारक** - वि० [सं] क्षय करनेवाला; पाचन बढ़ानेवाला।

**जारज** - पु० [सं] जार या उपपति से पैदा हुई संतति।

**जारण** - पु० [सं] गलाना, पचाना; जीर्ण करना; पारे का एक संस्कार।

**जारी** - वि० [अ] बहता हुआ; चलता हुआ; बना हुआ।

**ज़ारी** - स्त्री० [फ़ा] रोना-धोना।

**जारूब** } - पु० [फ़ा] झाड़ू ; —कश - झाड़ू
**जारोब** } देनेवाला, भंगी ।

**जालंधरी विद्या** - स्त्री० [सं] इन्द्रजाल ।

**जाल** - पु० [सं] फंदा ; रेल-लाइनों या नहरों आदि का विस्तार ; ठगने की युक्ति ; समूह ; तार की जालियों का बना शिरस्त्राण ; एक नेत्ररोग ; [अ] धोखा ; **यौ०** —साज़ - झूठी कार्रवाई करनेवाला ; —साज़ी - नकली दस्तख़त या दस्तावेज बनाना ; **मु०** —फैलाना - किसीको फँसाने की युक्ति करना ।

**जाला** - पु० [सं] मकड़ी का बुना हुआ जाल, घास व भूसा आदि बांधने का जाल ।

**जालाक्ष** - पु० [सं] झरोखा ।

**जालिक** - पु० [सं] मछुआ ; बहेलिया ; मकड़ा ; मदारी ।

**जालिका** - स्त्री० [सं] जाल ; स्त्रियों का मुखावरण ; जोंक ; विधवा ; मकड़ी ; लोहा ; केला ; समूह ; जाल ।

**ज़ालिम** - वि० [अ] ज़ुल्म करनेवाला, अत्याचारी ; क्रूर ।

**जालिया** - वि० [हिं] जाल करनेवाला, जालसाज़ ।

**जाली** - 1. स्त्री० [हिं] कसीदे का एक काम ; 2. वि० [अ] नकली, झूठा (दस्तावेज) ।

**जाल्म** - 1. वि० [सं] निष्ठुर ; विचारहीन ; 2. पु० नीच आदमी ; बुरा पाठ कहनेवाला ।

**जावक** - पु० [हि] महावर, अलक्तक ।

**जावित्री** - स्त्री० [हि] जायफल का छिलका ।

**जाविदाँ** - क्रि० [फ़ा] हमेशा ।

**जाविदानी** - स्त्री० [फ़ा] स्थायित्व ।

**ज़ाविया** - पु० [अ] कोना ।

**जावेद** - वि० [फ़ा] स्थायी ।

**जासु** - सर्व० [अव] जिसको ; जिसका ।

**जासूस** - पु० [अ] भेदिया, गुप्तचर ।

**जाह** - पु० [अ] ऊँचा पद ; प्रतिष्ठा, गौरव ।

**जाहक** - पु० [सं] जोंक ; खाट ।

**जाहलीयत** - स्त्री० [अ] जहालत ।

**ज़ाहिद** - पु० [अ] सब बुराइयों से बचकर ईश्वर की उपासना करनेवाला ।

**ज़ाहिदाना** - वि० [फ़ा] ज़ाहिदों का सा ।

**ज़ाहिर** - वि० [अ] प्रकट ; जाना हुआ ; **यौ०** —दार - दिखौआ ; बनावटी ।

**ज़ाहिरा** - क्रि० [अ] ऊपर से देखने में ।

**ज़ाहिरी** - वि० [अ] ऊपर से जान पड़नेवाला ।

**जाहिल** - वि० [अ] मूर्ख ; अपढ़ ; गँवार ।

**जाही** - स्त्री० [सं] चमेली की जाति का फूल ; एक आतिशबाज़ी ।

**जाह्नवी** - स्त्री० [सं] जह्नु से उत्पन्न, गंगा नदी ।

**जिंद** - पु० [अ] भूत-प्रेत ।

**ज़िंदगानी** - स्त्री० [फ़ा] जीवन ; आयु ; सजीवता ।

**ज़िंदगी** - स्त्री० [फ़ा] आयु ; जीवन ; **मु०**—बसर करना - जीवन बिताना ; —में मौत का मज़ा चखना - बहुत कष्ट भोगना ।

**ज़िंदा** - वि० [फ़ा] जीवित, सजीव ; प्रफुल्ल, हरा-भरा ; **यौ०** —दिल - ख़ुशमिजाज, उत्साही ; —बाद - जीता रहे ।

**जिंस** - स्त्री० [फ़ा] प्रकार, क़िस्म ; चीज़ ; **यौ०** —ख़ाना - भंडारघर ; —वार - पटवारियों का काग़ज़ जिसमें खेतों में बोई हुई फ़सलों का विवरण लिखते हैं ।

**जिउ** - पु० [अव] जीव ।

**ज़िक्र** - पु० [फ़] चर्चा, प्रसंग ; स्मरण ।

**जिगमिषा** - स्त्री० [सं] जाने की इच्छा ।

**जिगर** - पु० [फ़ा] कलेजा : हिम्मत ; सार-भाग ; हृदय और फुप्फुस ; **यौ०** —बंद - बेटा ; **मु०** —के टुकड़े होना - भारी सदमा या दुःख होना ;—थामकर बैठ जाना - असह्य आघात या पीड़ा से व्याकुल होना ।

**जिगरी** - वि० [फ़ा] दिली, अभिन्नहृदय ।

**जिगीषा** - स्त्री० [स] जय की इच्छा , प्रकर्ष ; उद्यम ।

**ज़िच** } **ज़िच्च** } - स्त्री० [फ़ा] बेबसी ; शतरंज में खेल की वह हालत जब किसी पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न रह जाए ; गतिरोध ।

**जिज़िया** - पु० [अ] जज़िया ।

**जिजीविषा** - स्त्री० [स] जीने की इच्छा ।

**जिज्ञासा** - स्त्री० [सं] जानने की इच्छा ; ज्ञान की चाह ।

**जिज्ञासु** } **जिज्ञासू** } - वि० [सं] जानने का इच्छुक ; ज्ञानार्थी ; मुमुक्षु ।

**जिठानी** - स्त्री० [हिं] जेठानी, पति के बड़े भाई की पत्नी ।

**जित** - 1. वि० [सं] पराजित ; 2. पु० विजय , **यौ०** —क्रोध, कोप, या मन्यु - क्रोधरहित ; —शत्रु - विजयी ; —संग - मोह-माया पर विजय प्राप्त करनेवाला ; 3. क्रि० [ब्र] जिधर, जिस ओर ।

**जितक** - वि० [हिं] जितना ।

**जितना** - 1. वि० [हिं] जिस परिमाण का ; 2. क्रि० जिस परिमाण में ।

**जितवार** † } **जितवैया** } - वि० [हिं] जीतनेवाला ।

**जितात्मा** - वि० [सं] जितेंद्रिय ; जिसने अपनी इंद्रियों को जीत लिया हो ।

**जितारि** - वि० [सं] अंतवर्ती शत्रुओं को जीतनेवाला ।

**जिते** - वि० [ब्र] जितने ।

**जितेन्द्रिय** - वि० [सं] जितात्मा ।

**जितै** - क्रि० [ब्र] जिधर, जिस ओर ।

**जितो** - 1. वि० [ब्र] जितना ; 2. क्रि० जिस मात्रा में ।

**ज़िद** } **ज़िद्द** } - स्त्री० [अ] हठ ; **मु०** —पर आना - हठ पकड़ना ।

**जिद्दत** - स्त्री० [अ] नयापन, ताज़गी ।

**ज़िदा-बदी** - स्त्री० [उ] होड़ ।

**जिदाल** - पु० [अ] युद्ध ।

**ज़िद्दी** - वि० [अ] ज़िद करनेवाला, हठी ।

**जिधर** - क्रि० [हिं] जिस ओर ; जहाँ ; **यौ०** —तिधर - जहाँ-तहाँ ।

**जिन्न** - पु० [अ] भूत-प्रेत ।

**जिन** - 1. [स] विष्णु ; सूर्य ; बुद्ध ; जैन तीर्थंकर ; 2 वि० जयशील ; रागद्वेषादि को जीतनेवाला ।

**जिनि** - अव्य० [ब्र] मत ; नहीं ।

**जिन्नात** - पु० [अ] जिन का बहु० ।

**ज़िनहार** - क्रि० [फ़ा] हरगिज़, कदापि ।

**ज़िना** - पु० [अ] व्यभिचार ; परस्त्रीगमन या परपुरुषगमन ; **यौ०** —कार - व्यभिचारी ।

**ज़िन्दगानी** - स्त्री० [फ़ा] ज़िंदगानी ।

**ज़िन्दगी** - स्त्री० [फ़ा] ज़िंदगी ।

**जिन्दाँ** - पु० [फ़ा] कैदखाना ।

**ज़िन्दा** - वि० [फ़ा] ज़िंदा ।

**जिन्नी** - पु० [अ] भूत-प्रेतों को वश में करनेवाला ।

**जिन्स** - स्त्री० [फ़ा] जिस , क़िस्म ; चीज़ ।

**जिमाना** - स० [हि] भोजन कराना ।

**जिफ़ाफ़** - पु० [फ़ा] ज़ुफ़ाफ ; सुहागरात ।

**ज़िबस** - क्रि० [फ़ा] पूर्ण रूप से ; **मु०** —कि - इसलिए कि ।

**ज़िबह** - पु० [अ] ज़बह ।

**जिबाल** - पु० [फ़ा] पहाड़ ।

**जिब्राईल** - पु० [फ़ा] एक फ़रिश्ते या देव-दूत का नाम ।

**ज़िमन** - पु० [अ] भीतरी भाग; खंड; दफ़ा, धारा ।

**जिमि** - अव्य० [ब्र] जिस प्रकार ।

**जिमित** - पु० [सं] भोजन ।

**ज़िम्मा** - पु० [अ] दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा, जवाबदेही; देखरेख; मु० किसीके ज़िम्मे करना - किसीपर भार सौंपना ।

**ज़िम्मी** - पु० [अ] इस्लामी राज्य का ग़ैर-मुसलिम प्रजाजन ।

**जिम्मेदार**, **जिम्मेवार** } वि० [अ] उत्तरदाता ।

**जिय** - पु० [हिं] जीभ; जीव, जिउ ।

**जियरा** - पु० [हिं] जीवन; जीव, जी ।

**ज़ियाँ** - पु० [फ़ा] हानि ।

**ज़िया** - स्त्री० [अ] सूर्य का प्रकाश, प्रभा, रत्न की कांति ।

**जियादा** - वि० [अ] अधिक ।

**ज़ियान** - पु० [फ़ा] हानि, नुक़सान, टोटा ।

**जियाना** - स० [हिं] जिलाना ।

**जियाफ़त** - स्त्री० [अ] बड़ी दावत; आतिथ्य ।

**ज़ियारत** - स्त्री० [अ] दर्शन; तीर्थ-दर्शन; तीर्थयात्रा ।

**ज़ियारती** - वि० [अ] ज़ियारत के लिए जानेवाले ।

**जियारी** - स्त्री० [हिं] जीवन; जीवट; जीविका ।

**जिरगा** - पु० [फ़ा] मंडली; जमात; झुंड ।

**जिरण** - पु० [सं] जीरा, एक मसाला ।

**जिरह** - स्त्री० [अ] हुज्जत; सत्यता की जाँच के लिए पूछताछ; चीरा, घाव ।

**ज़िरह** - स्त्री० [फ़ा] कवच, बख्तर; यौ०—पोश - कवचधारी ।

**ज़िराअत** - स्त्री० [अ] खेती, किसानी; यौ० —पेशा - खेतिहर ।

**जिर्म** - पु० [अ] शरीर; निर्जीव पिंड ।

**जिला** - स्त्री० [अ] चमक-दमक, पालिश; रगड़-मांजकर चमकाने का काम; यौ० —कार - चमकाकर साफ़ करने-वाला, सिकलीगर ।

**ज़िला** - पु० [अ] पहलू; देश का विभाग; प्रदेश; डिप्टी कमिश्नर या कलेक्टर के अधीन प्रांत या सूबे का भाग; व्यंग्योक्ति; यौ०—अदालत - कचहरी; —जज - ज़िले का प्रधान न्यायाधिकारी; —बोर्ड - ज़िले के प्रतिनिधियों का मंडल; —दार - लगान वसूल करनेवाला ज़मींदार का कारिंदा; —नहर - महकमे का एक कर्मचारी ।

**जिलाट** - पु० [सं] प्राचीन काल का एक बाजा ।

**जिलाना** - स० [हिं] जीवन देना; मरने से बचाना; पालना-पोसना ।

**जिल्द** - स्त्री० [अ] चमड़ा; किताब के ऊपर का पुट्ठा जो बचाव के लिए लगाया जाता है; पुस्तक की एक प्रति; एक खंड; यौ० —बन्द या साज़ - जिल्द बाँधनेवाला ।

**जिल्दी** - वि० [अ] जिल्द का; त्वचा या खाल का रोग आदि ।

**ज़िल्ल** - पु० [अ] छाया; गरमी की अधिकता; रात का अंधकार ।

**ज़िल्लत** - स्त्री० [अ] बेइज़्ज़ती; दुर्दशा; हीनता; मु० —देना - अपमानित करना ।

**जिल्ली** - पु० [देश] घर की छाजन के काम में आनेवाला एक प्रकार का बांस जो आसाम में होता है ।

**जिवाजिव** - पु० [सं] चकोर पक्षी ।

**जिष्णु** - 1. वि० [सं] जीतनेवाला ; 2. पु० विष्णु ; सूर्य , इन्द्र ; अर्जुन ।

**जिस** - सर्व० [हिं] 'जो' का विभक्ति लगने से बननेवाला रूप ; जैसे, 'जिसने, जिसको ।'

**जिस्म** - पु० [अ] शरीर ; ठोस चीज़ ।

**जिस्मानी** - वि० [अ] शारीरिक ।

**जिस्मी** - वि० [अ] व्यक्तिगत ; शारीरिक ।

**जिहत** - स्त्री० [अ] कारण ।

**ज़िहन** - पु० [अ] समझ ; बुद्धि ; मु०—नशीन होना - समझ में आना ।

**जिहाद** - पु० [अ] जहाद; यौ०—अकबर - इंद्रियों का निग्रह, नफ़्सकुशी (सूफ़ी) ।

**जिहालत** - स्त्री० [अ] जहालत ।

**जिहासा** - स्त्री० [सं] त्यागने या छोड़ने की इच्छा ।

**जिहासु** - वि० [सं] त्याग करने का इच्छुक ।

**जिहीर्षा** - स्त्री० [सं] हरण करने की इच्छा ।

**जिहीर्षु** - वि० [सं] हरण करने की इच्छा रखनेवाला ।

**जिह्म** - वि० [सं] टेढ़ा ; कपटी ; दुष्ट , मंद ; यौ० —गति - साँप ; धीमा या टेढ़ा चलनेवाला ।

**जिह्वल** - वि० [सं] चटोरा ।

**जिह्वा** - स्त्री० [सं] जीभ ; यौ० —मूलीय - वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा के मूल से हो ; —लोलुप - चटोरा ; —लेहन - जीभी ।

**जी** - पु० [हिं] मन ; हिम्मत; इच्छा ; जीव ; मु० किसीपर जी आना - किसीसे प्रेम होना ; —का बुखार निकालना - हृदय का उद्वेग बाहर करना ।

**ज़ी** - प्रत्य० [अ] वाला ; रखनेवाला ।

**ज़ीक़** - स्त्री० [फ़ा] तंगी ; मानसिक कष्ट ।

**जीजा** - पु० [हिं] बड़ा बहनोई ।

**जीजी** - स्त्री० [हिं] बड़ी बहन ।

**जीत** - स्त्री० [हिं] जय, विजय ; लाभ ; बाजी के खेल या युद्ध व मुक़द्दमे आदि में मिलनेवाली सफलता ।

**जीतना** - स० [हिं] शत्रु या विपक्षी को हराना ; मन या इंद्रिय आदि को वश में लाना ।

**जीता** - वि० [हिं] जीता हुआ , ज़िंदा ; यौ०—जागता - भला, चंगा, सशक्त , जीते-मरते-किसीतरह बड़ी कठिनाई से , जीते जी - जीवित रहते हुए,—मर जाना - जीवन्मृत हो जाना, किसी भारी आघात से मन का मर जाना ; जीते मरते - किसी तरह, बड़ी कठिनाई से ।

**ज़ीन** - पु० [फ़ा] घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी ; चारजामा, काठी ; यौ० —पोश - ज़ीन के ऊपर ढकने का कपड़ा, काठी का ढंकना ; —सवारी - घोड़े की पीठ पर ज़ीन रखकर की जानेवाली सवारी ; —साज़ - ज़ीन बनानेवाला ।

**ज़ीनत** - स्त्री० [फ़ा] शोभा, सजावट ।

**ज़ीनहार** - क्रि० [फ़ा] हरगिज़ ।

**ज़ीना** - पु० [फ़ा] सीढ़ी ।

**जीना** - अ० [हिं] जीवित रहना ; मु० जीती मक्खी निगलना - जान-बूझकर कोई अन्याय करना या सहन कर लेना ।

**जीभ** - स्त्री० [हिं] ज़बान, जिह्वा ; मु० —हिलाना - बोलना ।

**जीभी** - स्त्री० [हिं] जीभ साफ़ करने की कमाची या कमानी ।

**जीमट** - पु० [हिं] पेड़ की शाखा और टहनी आदि के भीतर का गूदा ।

**जीमना** - स० [हिं] भोजन करना, खाना ।

**जीमूत** - पु० [सं] पर्वत ; मेघ ; नागरमोथा ; इन्द्र , सूर्य ।

**जीय** - पु० [हिं] जीव; मन; यौ० —दान प्राणदान ; प्राणरक्षा ।

**जीर** - पु० [सं] जीरा ; केसर ; तलवार ; अणु ।

**ज़ीरक** - वि० [फा] समझदार ।

**जीरा** - पु० [हिं] एक मसाला जो बघार में डाला जाता है. मु० ऊँट के मुँह में जीरा - कुछ नहीं के बराबर ; बहुत कम ।

**जीर्ण** - वि० [सं] बहुत बुड्ढा पुराना ।

**जीर्णोद्धार** - पु० [सं] पुनःसंस्कार, मरम्मत ।

**जीवंजीव** - पु० [सं] चकोर पक्षी ; एक वृक्ष का नाम ।

**जीवंत** - 1. पु० [सं] प्राण ; ओषधि ; 2. वि० जीता-जागता ।

**जीवंतिका** }
**जीवंती** } - स्त्री० [स] अमरबेल ; गुड़ूची , पीली हड़ ; शमी ।

**जीव** - पु० [स] आत्मा ; प्राण ; जीवधारी, प्राणी ; यौ० —धन - पशु आदि के रूप में जंगम संपत्ति ; प्यारा ।

**जीवट** - स्त्री० [हिं] साहस, हिम्मत ।

**जीवन** - पु० [सं] पानी ; जीवित रहने की अवस्था ; ज़िंदगी ; यौ० —चरित्र - ज़िंदगी का हाल ; वह पुस्तक जिसमें जीवन का वृत्तांत लिखा हो ; —योनि - सजीव सृष्टि ; जीव जंतु ; —लोक - भूलोक, मर्त्यलोक ; मु० —भरना - ज़िंदगी बिताना ।

**जीवनी** - स्त्री० [सं] जीवन-चरित्र ।

**जीवन्मुक्त** - वि० [सं] जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सासारिक मायाबंधन से मुक्त ।

**जीवन्मृत** - वि० [सं] जीवितावस्था में ही मृतकतुल्य ; निरर्थक और कष्टमय (जीवन) ।

**जीवाजून** - पु० [हि] प्राणिमात्र, पशु-पक्षी या कीट-पतंग आदि ।

**जीवात्मा** - पु० [सं] जीव, आत्मा, प्रत्यगात्मा ।

**जीविका** - स्त्री० [सं] भरण-पोषण का साधन ; मु०—लगना - रोज़ी का ठिकाना होना ।

**जीवी** - वि० [सं] जीनेवाला ।

**जीस्त** - स्त्री० [फ़ा] ज़िंदगी ।

**जीह** - स्त्री० [हि] जीभ, ज़बान ।

**जुआँ** - पु० [हि] जूँ, ढील, अत्यधिक गंदगी के कारण सिर में पड़नेवाला छोटा कीड़ा ।

**जुआ** - पु० [हिं] रुपये-पैसे की बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल, द्यूत ; यौ० —चोर - धोखेबाज़ ; ठग ; वंचक ; —री - जुआ खेलनेवाला ।

**जुआरा** - पु० [हिं] एक जोड़ी बैल द्वारा एक दिन में जोती जा सकनेवाली धरती ।

**जुई** - स्त्री० [हिं] छोटा जुआँ ; मटर या सेव आदि की फलियों में लगकर उन्हे नष्ट करनेवाला छोटा कीड़ा ।

**जुकाम** - पु० [अ] सरदी ; मु० मेंढकी को जुकाम - वह काम जिसकी संभावना न हो, छोटे आदमी का बड़ा काम करना ।

**जुग** - पु० [हिं] युग, जोड़ा ; दल ; ग्रह ।

**जुगत** - स्त्री० [हिं] युक्ति ; उपाय ; ढंग ।

**जुगनू** - पु० [हिं] खद्योत ; मु०— की चमक - क्षणस्थायी ; बेकार ।

**जुग़रात** - पु० [अ] दही ।

**जुग़राफ़िया** - पु० [अ] भूगोल ।

**जुगल** - वि० [हिं] युगल, जोड़ा ।

**जुगवना** - स० [हिं] संचित रखना , सुरक्षित रखना ।

**जुगालना** - अ० [हिं] पागुर करना ।

**जुगाली** - स्त्री० [हिं] पागुर, रोमंथ।
**जुगुप्सक** - वि० [स] दूसरों की निंदा करनेवाला।
**जुगुप्सा** - स्त्री० [सं] निंदा ; घृणा।
**जुगुप्सित** - वि० [सं] निंदित, घृणित।
**जुज़** - 1. पु० [फ़ा] छपाई का एक फ़ारम ; 2. अव्य० सिवा, अलावा ; **यौ०** —दान - बस्ता, किताब वग़ैरह बाँधने का कपड़ा।
**जुज़ियात** - स्त्री० [अ] विवरण की बातें ; अंग, हिस्से, टुकड़े।
**जुज़वी** - वि० [अ] तुच्छ ; सामान्य।
**जुज़ाम** - पु० [अ] कोढ़ रोग।
**जुज़ामी** - पु० [अ] कोढ़ी।
**जुज़ो** - पु० [फ़ा] जुज़।
**जुझवाना** - स० [हिं] लड़ने के लिए प्रोत्साहित करना ; लड़ाकर मरवा डालना।
**जुझाऊ** - वि० [हि] युद्ध का ; युद्ध के लिए उत्साहित करनेवाला।
**जुझार** - वि० [हिं] वीर, सूरमा।
**जुट** - स्त्री० [हिं] युग्म, दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ ; थोक ; गुट, मंडली।
**जुटली** - वि० [हिं] जूड़ेवाला।
**जुटना** - अ० [हिं] संश्लिष्ट होना, जुड़ना ; जमा होना।
**जुटाना** - स० [हिं] जोड़ना ; बटोरना।
**जुठारना** - स० [हिं] जूठा करना।
**जुठिहारा** - पु० [हिं] जूठा खानेवाला।
**जुड़ना** - अ० [हिं] संबद्ध होना ; संयुक्त होना।
**जुड़वाँ** - 1. वि० [हिं] जुड़े हुए ; 2. पु० एक ही साथ पैदा हुए दो या अधिक बच्चे।
**जुतियाना** - स० [हिं] जूते से पीटना।
**जुतिऔअल** - स्त्री० [हिं] परस्पर जूते की मार।
**जुतना** - अ० [हि] नथना ; बैल व घोड़े आदि का गाड़ी या हल आदि में लगना।
**जुदा** - वि० [फ़ा] अलग।
**जुदाई** - स्त्री० [फ़ा] वियोग।
**जुदागाना** - क्रि० [अ] अलग-अलग।
**जुदायगी** - स्त्री० [अ] जुदाई।
**जुनूं**
**जुनून** } - पु० [फा] पागलपन, सनक।
**जुन्नार** - पु० [अ] जनेऊ।
**जुन्हरी** - स्त्री० [हिं] ज्वार नामक अन्न।
**जुन्हाई**
**जुन्हैया** } - स्त्री० [हि] चंद्रिका ; चंद्रमा।
**जुफ़ाफ़** - पु० [अ] जिफ़ाफ़, सुहागरात।
**जुफ़्त** - पु० [फ़ा] जोड़ा।
**जुफ़्ता** - स्त्री० [अ] शिकन।
**जुफ़्ती** - स्त्री० [अ] पशु-पक्षियों का संभोग।
**ज़ुबान** - स्त्री० [अ] ज़बान।
**ज़ुबानी** - स्त्री० [अ] ज़बानी।
**जुब्बा** - पु० [अ] एक लंबा और ढीला-ढाला पहनावा।
**ज़ुमरा** - पु० [अ] सेना ; भीड़।
**जुमलगी** - स्त्री० [फ़ा] कुल या सबका भाव।
**जुमला** - 1. पु० [अ] पूरा वाक्य ; सारी जमा ; 2. वि० कुल, तमाम, सब।
**जुमा** - पु० [अ] शुक्रवार ; **यौ०** —मसजिद - बड़ी मसजिद जहाँ शुक्रवार को नमाज़ पढ़ी जाए ; **मु०** —जुमा आठ रोज़ - थोड़े ही दिन।
**जुमेरात** - स्त्री० [अ] बृहस्पतिवार।
**जुम्बिश** - स्त्री० [फ़ा] हिलना-डुलना ; काँपना।
**जुरअत** - स्त्री० [अ] साहस ; बहादुरी।
**जुरझुरी** - स्त्री० [देश] ज्वरांश; हरारत ; ज्वर आदि की कंपकंपी।
**ज़ुरफ़ा** - पु० [अ] ज़रीफ का बहु०।

**जुरमाना** - पु० [फ़ा] अर्थदण्ड ।

**जुराफ़ा** - पु० [अ] एक जानवर ।

**जुरूफ़** - पु० [अ] 'जर्फ़' का बहु०; बरतन-भाँड़े ।

**जुरूर** - वि० [अ] ज़रूर ।

**जुरूरी** - वि० [अ] ज़रूरी ।

**जुर्म** - पु० [अ] अपराध ; **यौ०** —ख़फ़ीफ़ - छोटा या साधारण अपराध ; —शदीद - भारी अपराध ।

**जुर्माना** - पु० [फ़ा] अर्थ-दंड ।

**जुर्रत** - स्त्री० [अ] जुरअत ।

**जुर्रा** - पु० [फ़ा] नर बाज़ पक्षी ।

**जुर्राब** - स्त्री० [तु] पायताबा, पैरों में पहनने का मोज़ा ।

**जुल** - पु० [हिं] झाँसा ; चकमा ।

**जुलना** - अ० [हिं] मिलना ; भेंट करना ।

**जुलाब** - पु० [अ] दस्त की दवा, विरेचन ।

**जुलाल** - वि० [अ] स्वच्छ ।

**जुलाहा** - पु० [हिं] कपड़ा बुननेवाला, तंतुवाय ; एक जाति ।

**जुलूस** - पु० [अ] उत्सव, समारोह ।

**ज़ुल्कर-नैन** - पु० [अ] सिकंदर की एक उपाधि ।

**ज़ुल्फ़** - स्त्री० [फ़ा] सिर के लंबे बाल, पट्टा, काकुल ।

**ज़ुल्फ़िक़ार** - स्त्री० [अ] हज़रत अली की तलवार का नाम ।

**ज़ुल्म** - पु० [अ] अत्याचार ; अन्याय ; **यौ०** —पेशा - ज़ालिम ; —रसीदा - अत्याचारपीड़ित, जिसपर ज़ुल्म हुआ हो ; **मु०** —ढाना या तोड़ना - अत्याचार करना ।

**जुल्मत** - स्त्री० [अ] अंधकार ।

**ज़ुल्मी** - वि० [अ] ज़ालिम, अत्याचारी ।

**जुवराज** - पु० [हिं] युवराज ।

**जुवा** - पु० [हिं] युवा ; जुआ ।

**जुष्ट** - वि० [सं] सेवित ; जूठा ; प्रिय ।

**जुस्तजू** - स्त्री० [फ़ा] खोज, तलाश ।

**जुस्सा** - पु० [अ] शरीर ।

**जुहद** - पु० [अ] संसार के सब सुखों का परित्याग ।

**जुहल** - पु० [अ] शनीचर ग्रह ।

**जुहा** - पु० [अ] जलपान का समय ।

**जुहाना** - स० [हिं] इकट्ठा करना ।

**जुहार** - स्त्री० [हिं] अभिवादन, सलाम ।

**जुहारना** - स० [हिं] अभिवादन करना ।

**जुही** }
**जूही** } - स्त्री० [हिं] एक फूल, रजनीगंधा ।

**जुहू** - पु० [सं] पलाश की लकड़ी का बना हुआ एक अर्धचंद्राकार यज्ञपात्र ; पूर्व दिशा ।

**जुहूर** - पु० [अ] ज़हूर ।

**जुह्र** - पु० [अ] दिन ढलने का समय, तीसरा पहर ।

**जूँ** - स्त्री० [हिं] स्वेदज कीड़ा, जुआँ ; **मु०** कानों पर जूँ न रेंगना - स्थिति पर ध्यान न जाना, होश न होना ।

**जू** - 1. स्त्री० [फ़ा] नदी ; नहर ; 2. प्रत्य० [अ] रखनेवाला ; 3. अव्य० [हिं] एक आदरसूचक शब्द जो व्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगता है, जी ; 4. स्त्री० [सं] वातावरण; राक्षसी; सरस्वती; वायु; तीव्रगमन ; वेग ।

**जूआ** - पु० [हिं] वह लकड़ी जो हल या गाड़ी में जुते बैलों के कंधों पर डाली जाती है ; **मु०** जूए में गला डालना - बंधन में लाना ।

**जूए** - स्त्री० [फ़ा] नदी ; नहर ; जलाशय ।

**जूजू** - पु० [देश] हौआ, बच्चों को डराने के लिए कल्पित जीव ।

**जूझ** - स्त्री० [हिं] लड़ाई, झगड़ा ।

**जूझना** - अ० [हिं] लड़ना ; लड़ते हुए मर जाना ।

**जूट** - पु० [सं] जूड़ा ; जटा ; [अंग्रे] पटसन।
**जूठन** - स्त्री० [हिं] उच्छिष्ट, खाकर छोड़ा हुआ भोजन।
**जूठा** - 1. पु० [हिं] जूठन ; 2. वि० जो उच्छिष्ट हो।
**जूड़ा** - पु० [सं] स्त्रियों के सिर के बालों की गुंथी हुई चोटी।
**जूडी** - स्त्री० [हिं] शीत-ज्वर।
**जूता** - पु० [हिं] जोड़ा, पनही, पादत्राण।
**जूती** - स्त्री० [हिं] ज़नाना जूता ; जूता।
**जूथ** - पु० [हिं] यूथ, झुंड।
**जूद** - [फ़ा] जल्दी ; यौ० —फ़हम - किसी बात को जल्दी समझनेवाला ; —रंज - जल्द रंजीदा या दुखी होनेवाला।
**जून** - 1. पु० [हिं] समय, काल ; तृण, घास ; अंग्रेज़ी साल का एक महीना ; 2. वि० जीर्ण, पुराना।
**जूफ़** - अव्य० [फ़ा] लानत, थुड़ी।
**जूप** - पु० [हिं] जुआ, द्यूत ; विवाह में वर वधू द्वारा जुआ खेलने की एक रीति।
**जूफ़नून** - वि० [अ] बहुत-से फ़न या विद्याएँ जाननेवाला।
**जूमानी** - वि० [अ] दो अर्थ रखनेवाला।
**जूर** - पु० [अ] झूठापन ; अभिमान।
**जूष** - पु० [सं] झोल, रसा ; दाल का पानी ; जूस ; रोगी को दिया जानेवाला पथ्य ; सम संख्या, जैसे, '2, 4, 6'।
**जूस** - पु० [हिं] जूष।
**जूह** - पु० [हिं] यूथ, झुंड।
**जूहर** - पु० [हिं] जौहर।
**जूही** - स्त्री० [हिं] एक सुगंधित व सुकुमार लघु पुष्प, जुही ; एक आतिशबाज़ी ; मटर आदि में लगनेवाला कीड़ा।
**जृंभ** - पु० [सं] जम्हाई ; फैलाव ; खिलना।
**जृंभिका** - स्त्री० [सं] जम्हाई ; आलस्य।
**जेंवना** - स० [हिं] भोजन करना।
**जेंवनार** - स्त्री० [हि] भोज, दावत।
**जेठ** - 1. पु० [हिं] एक मास का नाम ; पति का बड़ा भाई ; 2. वि० बड़ा।
**जेठा** - वि० [हिं] बड़ा ; सबसे उत्तम।
**जेठाई** - स्त्री० [हि] बड़े होने का भाव, जेठापन।
**जेठानी** - स्त्री० [हिं] पति के बड़े भाई की पत्नी।
**जेठीमधु** - स्त्री० [गु] घुँघची की जड़, मुलेठी।
**जेठौत, जेठौता** - पु० [हिं] जेठ का लड़का।
**जेता** - 1. वि० [अव] जितना ; [सं] विजयी ; 2. पु० विष्णु।
**जेतिक** - अव्य० [अव] जितना।
**जेते** - वि० [व्र] जितने।
**जेतो** - अव्य० [व्र] जितना।
**जेब** - स्त्री० [अ] खीसा, पाकिट ; यौ०—कट - गिरहकट, पाकिटमार ; —ख़र्च - भोजनादि के अलावा ऊपरी ख़र्च, निजी ख़र्च ; निजी ख़र्च के लिए मिलनेवाली रक़म।
**ज़ेब** - वि० [फ़ा] शोभा, सुंदरता ; यौ० —दार - सुंदर।
**जेबी** - 1. स्त्री० [अ] जेब, 2. वि० जो जेब में रखा जा सके ; बहुत छोटा।
**जेय** - वि० [स] जीतने योग्य।
**ज़ेर** - 1. अव्य० [फ़ा] नीचे ; 2. वि० कमज़ोर ; निम्न कोटि का ; 3. पु० फ़ारसी अक्षरों में एकार की मात्रासूचक चिन्ह ; —जामा - पायजामा, इज़ार ; —तजवीज़ - विचाराधीन ; —दस्त - मातहत ; परास्त ; —पाई - एक हलका जूता ; —बन्द - घोड़े के पेट पर बाँधा जानेवाला तस्मा ; —बार - ऋण या ख़र्च आदि के भार से दबा हुआ ; —बारी - कर्ज़ या ख़र्च के भार से दबा होना ; बहुत अधिक अर्थहानि ;

मश्क - एक काग़ज़ ; —लब - बहुत धीरे से कुछ कहना ; —साया - किसीकी छाया के नीचे ।

**जेरिया** - स्त्री० [हिं] चरवाहे का डंडा ; खेती का एक औज़ार ।

**जेल** - पु० [अ] क़ैदख़ाना, बंदीगृह ।

**जेली** - स्त्री० [हिं] भूसा इकट्ठा करने का एक औज़ार ।

**जेवना** - स० [हिं] जेंवना ।

**जेवनार** - स्त्री० [हिं] जेंवनार ।

**ज़ेवर** - पु० [फ़ा] गहना ।

**जेवरी** - स्त्री० [हिं] रस्सी ।

**जेष्ठ** - 1. पु० [सं] ज्येष्ठ या जेठ का महीना ; पति का बड़ा भाई, जेठ ; 2. वि० बड़ा ।

**ज़ेह** - स्त्री० [फ़ा] धनुष की डोरी ।

**ज़ेहन** - पु० [अ] ज़िहन ।

**जेहल** - 1. स्त्री० [फ़ा] हठ, ज़िद ; 2. पु० [हिं] जेल ।

**जेहली** - वि० [फ़ा] हठी, ज़िद्दी ।

**जेहि** - सर्व० [हिं] जिसको ।

**जै** - 1. स्त्री० [हिं] जय ; 2. वि० जितने, जिस संख्या में ; **यौ०** —माल, माला - जयमाला ।

**जैत** - 1. पु० [हिं] जैतून का वृक्ष ; 2. स्त्री० विजय, जीत ; **यौ०** —वार - विजयी, विजेता ।

**जैत्र** - 1. वि० [सं] विजयी ; श्रेष्ठ ; 2. पु० पारा ; औषधि ; श्रेष्ठता ।

**जैतून** - पु० [अ] एक सदाबहार पेड़ जिसके फल व बीजों का तेल खाने और दवा के काम में आते हैं ।

**जैन** - पु० [सं] भारत का एक धर्मसप्रदाय जो अहिंसा को परमधर्म मानता है ।

**जैनी** - वि० [सं] जैन-मत को माननेवाला ।

**जैयद** - वि० [अ] बलवान ; विशाल ; अच्छा ।

**ज़ैल** - 1. पु० [अ] दामन ; नीचे का भाग; पंक्ति ; इलाक़ा ; 2. अव्य० नीचे ; **यौ०** —दार - वह सरकारी ओहदेदार जिसके अधिकार में कई गाँवों का प्रबंध हो ।

**जैव** - 1. वि० [सं] जीवसंबंधी ; बृहस्पति-संबंधी ; 2. पु० पुष्य नक्षत्र ।

**जैसवार** - पु० [हिं] कुरमियों और कलवारों की जाति का एक भेद ।

**जैसा** - वि० [हिं] जिस प्रकार का ; जितना ; सदृश ; **मु०** जैसे का तैसा - ज्यों का त्यों ।

**जैसे** - अव्य० [हिं] जिस प्रकार से ; **मु०** —जैसे - ज्यों-ज्यों ; —तैसे - किसी प्रकार ।

**जों** - अव्य० [हिं] ज्यों ; **यौ०**—जों - ज्यों-ज्यों ।

**जोंक** - स्त्री० [हिं] पानी में तैरनेवाला एक कीड़ा जो प्राणियों की देह में चिपककर रक्त पीता है, जलौका, जलसर्पिणी ।

**जो** - 1. सर्व० [हिं] एक संबंधवाचक सर्वनाम ; 2. अव्य० यदि ; अगर ।

**जोअना** - स० [हिं] देखना ; प्रतीक्षा करना, जोहना ; ढूँढ़ना ।

**जोई** - स्त्री० [फ़ा] ढूँढ़ने की क्रिया ; तुष्टि या रक्षा ; संगोपन ।

**जोखना** - स० [हिं] तौलना ; सोचना ।

**जोखा** - पु० [हिं] हिसाब, लेखा ।

**जोखिम** - स्त्री० [हिं] भारी अनिष्ट या विपत्ति की संभावना, खतरा ; **मु०**— उठाना या लेना - ऐसा काम करना जिसमें भारी अनिष्ट की आशंका हो ।

**जोग** - 1. पु० [हिं] योग ; संयोग ; जोड़ने का कार्य, जोड़ ; 2. वि० योग्य ।

**जोगड़ा** - पु० [हिं] नकली योगी, पाखंडी ।

**जोगन** - स्त्री० [हिं] योगिनी ।

**जोगवना** - स० [हिं] सुरक्षित रखना ; बटोरना ; आदर करना ; पूरा करना ।

**जोगिन, जोगिनी** - स्त्री० [हिं] योगिनी, संन्यासिनी ; पिशाचिनी ; एक रणदेवी ।

**जोगिया** - वि० [हिं] योग या योगी का ; गेरुवा, भगवा ।

**जोगी** - पु० [हिं] योगी ; भिक्षाजीवी गृहस्थ-साधुओं का एक संप्रदाय ।

**जोगीड़ा** - पु० [हिं] एक तरह का चलता गाना ।

**जोट** - 1. पु० [हिं] जोड़ा ; साथी ; झुंड ; 2. वि० बराबरी का ।

**जोटा** - पु० [हिं] जोड़ा ; गोनी ।

**जोटिंग** - पु० [सं] महादेव ; महाव्रती ; तपस्वी ।

**जोटी** - स्त्री० [हिं] जोड़ी ; जोड़ का साथी ।

**जोड़** - पु० [हिं] मीजान, टोटल ; बराबर ; मु० —बाँधना - कुश्ती के लिए बराबरी के दो पहलवानों को चुनना ।

**जोड़ती** - स्त्री० [हिं] जोड़, टोटल ।

**जोड़न** - स्त्री० [हिं] जामन ।

**जोड़ना** - स० [हिं] दो चीज़ों को मज़बूती से एक करना ; मिलाकर सीना ; संग्रह करना ; टोटल करना ।

**जोड़वाँ** - वि० [हिं] जुड़वाँ ।

**जोड़ा** - पु० [हिं] दो समान पदार्थ ; दोनों पाँवों के जूते ; यौ० —जामा - पूरी पोशाक ।

**जोड़ी** - स्त्री० [हिं] दो समान पदार्थ ; दो घोड़ों की गाड़ी , यौ०—दार - जो किसीके साथ हो ; —वाल - जो संगीत-मंडली में मंजीरा बजाता हो ।

**जोत** - स्त्री० [हिं] ज्योति ; काश्त ; बैल को हल या गाड़ी से जोड़नेवाली रस्सी या तस्मा ।

**जोतना** - स० [हिं] बैल या घोड़े को गाड़ी या हल में लगाना ; खेत में कुछ बोने से पहले हल चलाना ।

**जोता** - पु० [हिं] हलवाहा ; जुआठे में बंधी हुई रस्सी ।

**जोताई** - स्त्री० [हिं] जोतने का भाव, जोतने की मजूरी ।

**जोति** - स्त्री० [हिं] ज्योति ; देवता के सामने जलाया जानेवाला दीपक ; जोतने योग्य ज़मीन ।

**जोतिस** - पु० [हिं] ज्योतिष ।

**जोती** - स्त्री० [हिं] ज्योति ; चक्की की कीली और हत्थे में बंधी रहनेवाली रस्सी ; लगाम ।

**जोधा** - पु० [हिं] योद्धा ।

**जोन, जोनि** - स्त्री० [हिं] योनि ।

**जोन्ह, जोन्हाई** - स्त्री० [हिं] चाँदनी ।

**जोन्हरी** - स्त्री० [हिं] छोटे दाने की ज्वार ।

**ज़ोफ़** - पु० [अ] कमज़ोरी ; बुढ़ापा ; यौ० ज़ोफ़े दिमाग़ - मानसिक दुर्बलता ; ज़ोफ़े बसारत - आँखों से कम दिखायी पड़ना ; जोफ़े मेदा - हाज़मे की कमज़ोरी ।

**जोबन** - पु० [हिं] यौवन, जवानी ; जवानी का सौन्दर्य ; स्तन, छाती ।

**ज़ोम** - पु० [अ] उमंग, उत्साह ; घमंड ; धारणा ।

**जोय** - 1. स्त्री० [हिं] पत्नी ; 2. सर्व० जो ।

**जोयना** - स० [हिं] जलाना ; जोहना ।

**जोयसी** - पु० [हिं] ज्योतिषी ।

**जोयाँ** - वि० [फ़ा] ढूँढ़नेवाला ।

**ज़ोर** - पु० [फ़ा] बल ; वेग , वश ; सहारा ; मेहनत ; यौ० —आज़माई - बल की परीक्षा ; —दार - जिसमें ज़्यादा ज़ोर हो ; — शोर - बहुत अधिक तीव्रता या तेज़ी ; मु०—लगाना - बल का प्रयोग करना ; —मारना - बहुत प्रयत्न करना ।

**ज़ोरावर** - वि० [फ़ा] बलवान ।

**जोरी** - स्त्री० [फ़ा] ज़बरदस्ती, धींगा-धींगी ; [हिं] जोड़ी ।
**जोरू** - स्त्री० [हिं] पत्नी ।
**जोलाहा** - पु० [हिं] जुलाहा ।
**जोली** - स्त्री० [हिं] जोड़ ; जोड़ी ।
**जोवना** - स० [हिं] जोअना ।
**जोश** - पु० [फ़ा] उफ़ान ; उबाल ; मनोवेग ; **मु०** —खाना - उबलना ; खून का जोश - अपने वंश के लिए प्रेम का वेग ।
**जोशन** - पु० [फ़ा] बाँह पर पहनने का एक गहना ।
**जोशाँदा** - पु० [फ़ा] क्वाथ, काढ़ा ।
**जोशीला** - वि० [उ] जोश से भरा हुआ ।
**जोष** - 1. पु० [स] प्रेम ; सुख ; सेवा ; 2. स्त्री० नारी ।
**जोषण** - पु० [सं] प्रीति ; सेवा ।
**जोषा** - स्त्री० [सं] नारी ।
**जोषी** - पु० [हिं] ब्राह्मणों की एक जाति ; ज्योतिषी ।
**जोह** - स्त्री० [हिं] खोज, तलाश ।
**जोहन** - स्त्री० [हिं] देखने की क्रिया ।
**जोहना** - स० [हिं] जोअना ; **मु०** बाट जोहना - किसीकी प्रतीक्षा में राह देखना ।
**जोहार** - स्त्री० [हिं] अभिवादन, वंदन ।
**जौं** - अव्य० [हिं] यदि, जो ; ज्यों ।
**जौंकना** - स० [अनु] डाँटना, डपटना ।
**जौंरे** - क्रि० [फ़ा] निकट ; साथ ; आसपास ।
**जौ** - 1. पु० [हिं] गेहूँ की तरह का एक अनाज, जव ; **यौ०** —केराई - मटर मिला हुआ जौ ; 2. अव्य० यदि, अगर ।
**जौज़** - पु० [अ] आकाश ; आकाश की वायु; अखरोट ; नारियल ; जायफल ।
**ज़ौज** - पु० [अ] जोड़ा ; पति ।
**ज़ौजा** - पु० [फ़ा] पत्नी ।
**ज़ौजियत** - स्त्री० [अ] विवाहित अवस्था ।
**जौतुक** - पु० [हिं] दहेज ।
**ज़ौदत** - स्त्री० [फ़ा] भलाई ; उत्तमता ; बुद्धि की कुशाग्रता ।
**जौधिक** - पु० [सं] तलवार या खड्ग के चलाने का एक ढंग ।
**जौन** - सर्व० [हिं] जो ।
**जौनाल** - स्त्री० [हिं] रबी का खेत ।
**जौंपै** - अव्य० [हिं] अगर, यदि ।
**जौफ़** - पु० [अ] पेट ; खाली जगह ।
**जौर** - पु० [अ] ज़ुल्म ।
**जौलाँ** - पु० [फ़ा] पाँव में पहनने की बेड़ियाँ ।
**जौलान** - पु० [फ़ा] तेज़ी से इधर-उधर घूमना ; **यौ०** —गाह - फ़ौज के खेलने का मैदान ।
**जौलानी** - स्त्री० [फ़ा] तेज़ी, फुरती ।
**जौहर** - पु० [अ] रत्न ; सारांश ; तत्त्व ; विशेषता ; [हिं] राजपूत स्त्रियों की जलती चिता में कूद मरने की पुरानी प्रथा ।
**जौहरी** - पु० [अ] पारखी, रत्न या गुण की परख करनेवाला ।
**ज्ञ** - पु० [सं] ज्ञान ; ब्रह्मा ; बुध ग्रह ; निर्विकार पुरुष (सांख्य) ; मंगल ग्रह ।
**ज्ञप्ति** - स्त्री० [सं] जानकारी ; बुद्धि ; तुष्टि ; स्तुति ।
**ज्ञा** - स्त्री० [सं] जानकारी ।
**ज्ञात** - वि० [स] जाना हुआ ; मालूम ।
**ज्ञातव्य** - वि० [स] जिसे जानना उचित हो, ज्ञेय, बोधगम्य ।
**ज्ञाता** - वि० [सं] जाननेवाला, जानकार ।
**ज्ञान** - पु० [सं] जानकारी ; बोध ; **यौ०**—यज्ञ - ब्रह्मज्ञान, आत्मा और परमात्मा का अभेद ज्ञान ; —योग - शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति ; —वान - ज्ञानी ; —वृद्ध - ज्ञान में बड़ा ; **मु०**—छाँटना - अपनी विद्या प्रकट करने के लिए लंबी-चौड़ी बातें करना ।

**ज्ञानी** - वि० [सं] जानकार ; आत्मज्ञानी ।
**ज्ञानेंद्रिय** - स्त्री० [सं] जीवों को विषयों का बोध करानेवाली इन्द्रिय ।
**ज्ञापक** - वि० [सं] जतानेवाला, सूचक ; व्यंजक ।
**ज्ञेय** - वि० [सं] जानने योग्य ।
**ज्या** - स्त्री० [सं] धनुष की डोरी, पृथ्वी ; **यौ०** —मिति - रेखागणित ।
**ज़्यादती** - स्त्री० [फ़ा] अधिकता; अत्याचार।
**ज़्यादा** - वि० [अ] अधिक, बहुत ।
**ज़्यान** - पु० [फ़ा] ज़ियान ।
**ज़्याफ़त** - स्त्री० [अ] ज़ियाफ़त, भोज ।
**ज्येष्ठ** - वि० [सं] जेष्ठ ; वृद्ध ।
**ज्येष्ठता** - स्त्री० [सं] बड़ाई ; श्रेष्ठता ।
**ज्येष्ठा** - स्त्री० [सं] बड़ी बहिन ; 27 नक्षत्रों में से 18 वाँ नक्षत्र ; छिपकली ; मध्यमा उंगली ; गंगा ।
**ज्यों** - अव्य० [हिं] जिस प्रकार, जैसे ।
**ज्योति** - स्त्री० [सं] प्रकाश ; उजाला ।
**ज्योतिरिंग, ज्योतिरिंगण** - पु० [सं] जुगनू ।
**ज्योतिष** - पु० [सं] अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों व नक्षत्रों आदि का निश्चय करानेवाली विद्या, शुभाशुभ फल बतानेवाला शास्त्र ।
**ज्योतिषी** - पु० [सं] ज्योतिषशास्त्र का जाननेवाला मनुष्य ।
**ज्योत्स्ना** - स्त्री० [सं] चाँदनी ।
**ज्योनार** - स्त्री० [हिं] जेवनार ।
**ज्वर** - पु० [सं] बुखार ।
**ज्वार** - स्त्री० [हिं] एक अनाज ; चंद्रमा के आकर्षण के कारण समुद्र के जल का ऊपर उठना ; **यौ०** —भाटा - समुद्र के जल का चढ़ाव और घटाव ।
**ज्वाला** - स्त्री० [सं] अग्निशिखा, लपट ; ताप ; दाह ; **यौ०** —मुखी - वह पहाड़ जो आग उगलता हो ।

## झ

**झंकार** - स्त्री० [स] झनझन शब्द, झाँझ या पायल की आवाज़ ; वीणा या सितार आदि की ध्वनि, झनकार ।
**झंकारना** - स० [हिं] झनझन की आवाज़ करना ।
**झंखना** - अ० [हिं] दुखी होना ; दुखड़ा रोना ; कुढ़ना ।
**झंखाड़** - पु० [हिं] काँटेदार झाड़ी या पौधा ।
**झंगा** - पु० [हिं] छोटे बच्चों के पहनने का ढीला कुरता ; अंगरखा ।
**झँगुलिया, झँगुली, झँगूली** - स्त्री० [हिं] झँगा ।
**झंझट** - स्त्री० [हिं] व्यर्थ का झगड़ा, टंटा, बखेड़ा ; परेशानी ।
**झँझरा** - 1. पु० [हिं] जालीदार ढक्कना ; 2. वि० जिसमें बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों ।
**झंझा** - स्त्री० [स] वर्षा के साथ तेज़ आँधी ; प्रचंड वायु ।
**झंझानिल** - पु० [सं] झंझा ।
**झंझार** - पु० [हिं] आग की लपट, ज्वाला ।
**झंझावात** - पु० [सं] झंझानिल ।
**झंझी** - स्त्री० [हि] फूटी कौड़ी ।
**झंझोड़ना** - स० [हिं] वेग से हिलाना, झकझोरना ।
**झंड** - पु० [हि] छोटे बालकों के मुंडन से पहले के केश ।
**झंडा** - पु० [हिं] पताका, निशान ; **मु०** झंडे तले की दोस्ती - बहुत ही साधारण या राह चलते की जान-पहचान ; झंडे पर चढ़ाना - बदनाम करना ।
**झंडी** - स्त्री० [हिं] छोटा झंडा ; **मु०** —दिखाना - संकेत करना ।

**झंडूला** - वि० [हिं] जिस बालक का मुंडन न हुआ हो।
**झंप** - पु० [सं] छलांग, कुदान; घोड़े के गले का एक गहना।
**झंपान** - पु० [हिं] पहाड़ की चढ़ाई में काम आनेवाली खुली डोली।
**झँवराना** - अ० [हिं] कुछ काला पड़ जाना; मुरझाना।
**झइँ, झई** - स्त्री० [हिं] परछायीं।
**झउआ, झउवा** - पु० [हिं] मिट्टी ढोने का उथला टोकरा, झाबा; झाऊ का पेड़।
**झक** - 1. स्त्री० [हिं] सनक, धुन; 2. वि० चमकीला।
**झकझक** - स्त्री० [हिं] हुज्जत, तकरार।
**झकझोर, झकझोरा** - पु० [हिं] झोंका, धक्का, झटका।
**झकझोरना** - स० [हिं] पकड़कर खूब हिलाना।
**झकाझक** - वि० [हिं] खूब साफ़ और चमकता हुआ।
**झकोर** - पु० [हिं] हवा का तेज़ झोंका; झटका।
**झकोरना** - अ० [हिं] हवा का झोंकामारना।
**झकोरा, झकोल** - पु० [हिं] झकोर।
**झक्क** - वि० [हिं] झकाझक।
**झक्कड़** - पु० [हिं] तेज़ आँधी, तूफ़ान।
**झक्की** - वि० [हिं] व्यर्थ की बकवाद करनेवाला, बहुत बक-बक करनेवाला।
**झख** - स्त्री० [हिं] झंखने का भाव; मछली; मु०— मारना - व्यर्थ समय नष्ट करना।
**झखी** - 1. स्त्री० [हिं] झख; मछली; 2. वि० झंखनेवाला।
**झगड़ना** - अ० [हिं] झगड़ा करना।
**झगड़ा** - पु० [हिं] लड़ाई, टंटा, बखेड़ा।
**झगड़ालू** - वि० [हिं] झगड़ा करनेवाला।
**झगड़ी** - वि० [हिं] झगड़ा करनेवाली।
**झगला, झगा** - पु० [हिं] झँगा।
**झगुलिया, झगुली** - स्त्री० [हिं] झँगा।
**झज्झर** - पु० [हिं] चौड़े मुँह का पानी रखने का एक बरतन।
**झझक** - स्त्री० [हिं] झिझक, हिचक; आशंका; संकोच; मु०— निकालना - भय या संकोच दूर करना।
**झझकना** - अ० [हिं] अचानक डरकर या संकोचवश ठिठकना।
**झझकाना** - स० [हिं] अचानक किसी आशंका से काम को रोक देना।
**झझकार** - स्त्री० [हिं] झझकारने की क्रिया या भाव।
**झझकारना** - स० [हिं] डाँटना, दुरदुराना; तुच्छ समझना।
**झट** - अव्य० [हिं] तुरंत; यौ० — पट - तुरंत ही; मु० —से - जल्दी से।
**झटकना** - स० [हिं] झटका देना; दबाव डालकर या चालाकी से किसीकी चीज़ ले लेना; ऐंठना।
**झटका** - पु० [हिं] झटकने की क्रिया; झोंका; हलका धक्का; पशु-वध का वह प्रकार जिसमें पशु हथियार के एक ही आघात से काट डाला जाता है; मु० झटके का मांस - उक्त प्रकार से मारे हुए पशु का मांस; झटके का माल - ज़बरदस्ती छीना या चुराया हुआ माल।
**झटिति** - अव्य० [सं] शीघ्र, झटपट, तुरंत।
**झड़न** - स्त्री० [हिं] झड़ने की क्रिया; खुरचन; ऊपरी आमदनी।
**झड़ना** - अ० [हिं] पेड़ से पत्तों का गिर जाना; टूटकर गिरना।

**झड़प** - स्त्री० [हिं] मुठभेड़, लड़ाई; वाग्युद्ध, आवेश।

**झड़पना** - अ० [हिं] आक्रमण करना, हमला करना; विवाद करना।

**झड़पाझड़पी** - स्त्री० [हिं] हाथापाई, गुत्थमगुत्था।

**झड़बेरी** - स्त्री० [हिं] जंगली बेर; **मु०**—का काँटा - व्यर्थ झगड़ा करनेवाला मनुष्य।

**झड़वाना** - स० [हिं] झाड़ने का काम दूसरे से कराना।

**झड़ाका** - 1. पु० [हिं] झड़प; 2. अव्य० फ़ौरन, तत्काल।

**झड़ाझड़** - अव्य० [अनु] लगातार, झड़ी के रूप में।

**झड़ी** - स्त्री० [अनु] लगातार झड़ने की क्रिया; बराबर पानी बरसना।

**झन** - स्त्री० [अनु] धातु के टुकड़े के बजने की ध्वनि।

**झनक, झनकार** - स्त्री० [अनु] झंकार; झनझनाहट; पैरों को झटके के साथ उठाते हुए चलना।

**झनझन** - स्त्री० [अनु] झंकार।

**झनझनाना** - अ० [अनु] झनझन शब्द होना।

**झनाझन** - स्त्री० [अनु] झंकार।

**झनाहट** - स्त्री० [अनु] झनकार का शब्द, झनझनाहट।

**झप** - क्रि० [हिं] जल्दी से, तुरंत।

**झपक** - स्त्री० [हिं] हलकी नींद।

**झपकना** - अ० [हिं] ऊँघना।

**झपकी** - स्त्री० [हिं] झपक।

**झपट** - स्त्री० [हिं] झपटने की क्रिया।

**झपटना** - 1. अ० [हिं] वेग से किसीकी ओर चलना; पकड़ने या आक्रमण करने के लिए वेग से बढ़ना, टूट पड़ना; धावा करना; 2. स० बहुत तेज़ी से बढ़कर कोई चीज़ पकड़ या छीन ले जाना।

**झपना** - अ० [हिं] पलकों का गिरना या बंद होना, झुकना; लज्जित होना।

**झपाटा** - पु० [हिं] चपेट; आक्रमण, झपट।

**झपेट** - स्त्री० [हिं] झपट।

**झपेटना** - स० [हिं] आक्रमण करके दबा लेना, दबोचना।

**झप्पान** - पु० [हिं] झंपान नाम की एक प्रकार की पहाड़ी सवारी जिसे चार आदमी उठाकर ले चलते हैं।

**झप्पानी** - पु० [हिं] झप्पान उठानेवाला कहार या मज़दूर।

**झबरा, झबरीला, झबरैला** - वि० [हिं] जिसके बहुत लंबे-लंबे बिखरे हुए बाल हों, घने और रूखे बालोंवाला।

**झबा** - पु० [हिं] गुच्छा; फुँदना।

**झबार, झबारि** - स्त्री० [हिं] जंजाल, झंझट।

**झब्बा** - पु० [हिं] गुच्छा, झबा।

**झमक** - स्त्री० [अनु] झमझम शब्द।

**झमकना** - अ० [अनु] गहनों को झनझनाते हुए नाचना; अकड़ दिखलाना।

**झमझम** - स्त्री० [अनु] घुंघरुओं का झमझम शब्द, छमछम; पानी बरसने का शब्द।

**झमझमाना** - अ० [अनु] झमझम की आवाज़ होना; चमकना।

**झमना** - अ० [हिं] झुकना; दबना।

**झमाका** - पु० [अनु] झमझम शब्द; ठसक, नखरा।

**झमाझम** - क्रि० [अनु] चमक-दमक के साथ; झमझम करते हुए।

**झमाना** - स० [हिं] छाना, घेरना; झँवाना।

**झमेला** - पु० [हिं] बखेड़ा, झंझट।
**झमेलिया** - पु० [हिं] झमेला या झगड़ा करनेवाला।
**झर** - पु० [हिं] पानी गिरने का स्थान, निर्झर; यौ०—झर-झर - पानी बहने या बरसने आदि का शब्द।
**झरकना** - 1. अ० [हिं] झलकना; झुलसना; 2. स० झिड़कना; डपटकर बोलना।
**झरझराना** - स० [हिं] किसी बरतन में से किसी चीज़ को झाड़कर गिरा देना।
**झरन** - स्त्री० [हिं] झड़न।
**झरना** - 1. पु० [हिं] सोता; निर्झर; अनाज छानने की बड़ी छलनी; 2. अ० झड़ना।
**झरप** - स्त्री० [हिं] झोका; वेग; चिक; सहारा; झड़प।
**झरपना** - अ० [हिं] झोका देना; झड़पना।
**झरी** - स्त्री० [हिं] झड़ी; पानी का झरना।
**झरीफ** - स्त्री० [हिं] चिक, परदा।
**झरोखा** - पु० [हिं] गवाक्ष; मोखा; झंझरीदार छोटी खिड़की।
**झल** - पु० [हिं] ज्वाला; क्रोध; उत्कट कामना; काम-वासना; समूह।
**झलक** - स्त्री० [हिं] चमक; दमक; आभास।
**झलकना** - अ० [हिं] चमकना; दिखायी देना; आभास होना।
**झलकनि** - स्त्री० [हिं] झलक।
**झलका** - पु० [हिं] छाला।
**झलकाना** - स० [हिं] चमकाना।
**झलझल** - 1. वि० [हिं] साफ; पारदर्शी; 2. स्त्री० चमक-दमक।
**झलना** - स० [हिं] हवा करना (पंखे से)।
**झलमल** - पु० [हिं] अंधेरे के बीच थोड़ा-थोड़ा उजाला; चमक-दमक।
**झलमलाना** - अ० [हिं] रह-रहकर चमकना, चमचमाना।
**झलराना** - अ० [हिं] बढ़ना; फैलना।
**झला** - 1. स्त्री० [स] कन्या; धूप; कांति, 2. पु० हलकी वर्षा; झालर; पंखा।
**झल्लाना** - अ० [हिं] बहुत बिगड़ जाना; झुंझला उठना।
**झष** - पु० [स] मछली; मगर; मीन राशि: ताप; वन।
**झहराना** - 1. अ० [हिं] शिथिल होकर गिर पड़ना; झल्लाना; तिरस्कृत होना; 2. स० झकझोरना, लथेड़ना।
**झाँई** - स्त्री० [हिं] परछाई; यौ०— माई-बच्चों का एक खेल; मु० —बताना - छल करना, धोखा देना।
**झाँक** - स्त्री० [हिं] झाँकने की क्रिया।
**झाँकना** - स० [हिं] आड़ या झरोखे से मुँह निकालकर बाहर देखना।
**झाँकी** - स्त्री० [हिं] दर्शन, अवलोकन; दृश्य।
**झाँखना** - स० [हिं] झाँकना।
**झाँझ** - स्त्री० [हिं] झाल नामक बाजा।
**झाँझन** - स्त्री० [हिं] झनझन बजनेवाला कड़ा।
**झाँझर** - 1. स्त्री० [हिं] झाँझन; 2. वि० जर्जर; छिद्रोंवाला।
**झाँझिया** - पु० [हिं] झाँझ बजानेवाला।
**झाँप** - स्त्री० [हिं] आवरण; परदा; चिक।
**झाँपना** - स० [हिं] ढाँकना।
**झाँवर** - 1. स्त्री० [हिं] डाबर ज़मीन; 2. वि० मुरझाया हुआ; स्याह।
**झाँवाँ** - पु० [हिं] जली हुई ईंट।
**झाँसना** - स० [हिं] ठगना।
**झाँसा** - पु० [हिं] धोखा; यौ० —पट्टी - धोखा।
**झाँसिया** - पु० [हिं] धोखा देनेवाला।
**झाँसू** - वि० [हिं] झाँसा देनेवाला।
**झा** - पु० [हिं] मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि।

**झाई, झाऊ** - पु० [हिं] नदी के रेतीले किनारे पर उगनेवाला एक झाड़ ।

**झाग** - पु० [हि] फेन ।

**झाड़** - पु० [हि] छोटा पेड़ या बड़ा पौधा; रोशनी का सामान जो छत से लटकाया जाता है ; मंत्र से झाड़ने की क्रिया ; यौ० —झंखाड़ - काँटेदार झाड़ियों का समूह ; —खंड - झाड़-झंखारवाला प्रदेश ; —फूँक - मंत्रादि पढ़कर झाड़ना-फूँकना ; —बुहार - सफ़ाई ।

**झाड़न** - स्त्री० [हिं] झाड़ने पर निकली हुई चीज़ ; वह कपड़ा जिससे कोई वस्तु झाड़ी या साफ़ की जाती है ।

**झाड़ना** - स० [हि] साफ़ करने के लिए झटकना ; मंत्र से रोगादि दूर करने की क्रिया ।

**झाड़ा** - पु० [हि] मल, मैला ;

**झाड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटे पेड़ों का समूह ।

**झाड़ू** - स्त्री० [हिं] सफ़ाई का सामान, बुहारी, बढ़नी ; यौ० —बरदार - झाड़ू देनेवाला, भंगी, मेहतर ; मु० —देना - कूड़ा-करकट साफ़ करना ; — फिरना - सफाई हो जाना ; कुछ न बचा रहना ; —मारना - अपमान करना ।

**झापड़** - पु० [हि] थप्पड़ ।

**झाबर** - पु० [हि] दलदल , खाँचा ।

**झाबा** - पु० [हिं] टोकरा ; गुच्छा ।

**झामक** - पु० [सं] झाँवाँ ।

**झामर** - 1. पु० [सं] औज़ार तेज़ करने की सान, सिल्ली ; [हि] पाँवों में पहनने का एक गहना 2. वि० झाँवर ।

**झायँ-झायँ** - स्त्री० [अनु] झनकार ।

**झाँवँ-झाँवँ** - स्त्री० [अनु] बकवाद ।

**झार** - 1. स्त्री० [हिं] ज्वाला ; जलन ; 2. पु० झाड़ ।

**झारी** - स्त्री० [हिं] टोंटीदार लोटा ; झाड़ी ।

**झाल** - 1. पु० [हिं] झाँझ ; लगातार कई दिनों की झड़ी ; 2. स्त्री० चरपराहट ।

**झालर** - स्त्री० [हिं] लटकनेवाला हाशिया ; किनारी. ।

**झाला** - पु० [हि] राजपूतों का एक भेद ।

**झिंगुली** - स्त्री० [हि] झगा ।

**झिझक** - स्त्री० [हि] सकोच, झझक ।

**झिझकना** - अ० [हिं] संकोच करना, झझकना ।

**झिड़क** - स्त्री० [हिं] डाँट, फटकार ।

**झिड़कना** - स० [हिं] तिरस्कार करना, बिगड़कर कुछ कहना ।

**झिड़की** - स्त्री० [हि] झिड़क ।

**झिनवा** - 1. पु० [हिं] एक बारीक़ धान , 2. वि० झीना ।

**झिपाना** - स० [हि] लजवाना, शर्मिंदा करना।

**झिरझिरा** - वि० [हिं] झीना ।

**झिलना** - अ० [हिं] झेला जाना ।

**झिलम** - स्त्री० [हि] लोहे की टोपी ।

**झिलमिल** - स्त्री० [हिं] रह-रहकर चमकती या काँपती हुई रोशनी ।

**झिलमिलाना** - अ० [हिं] रह-रहकर चमकना ।

**झिलमिली** - स्त्री० [हि] खिड़की आदि पर का जालीदार परदा ।

**झिल्ली** - स्त्री० [हिं] झींगुर ; किसी चीज़ की पतली तह ; आँख का जाला ।

**झींक** - स्त्री० } - [हि] उतना अनाज जो
**झींका** - पु० } एक बार पीसने के लिए चक्की में डाला जाए ।

**झींखना** - अ० [हिं] दुखड़ा रोना ।

**झींगा** - पु० [हिं] एक मछली ।

**झींगुर** - पु० [हिं] एक कीड़ा जो तेज़ आवाज़ में झंकारता रहता है ।

**झींसी** - स्त्री० [देश] फुहार, छोटी-छोटी बूँदों की वर्षा ।

**झीना** - वि० [हि] बहुत महीन, पतला ।

**झील** - स्त्री० [हि] मीलों तक फैला हुआ सरोवर ।

**झुँझलाना** - अ० [हि] खिझलाना, चिड़चिड़ाना ।

**झुंड** - पु० [हि] समूह ।

**झुकना** - अ० [हि] नीचे लटक आना; नम्र होना; मु० झुक-झुक पड़ना - नशा या निद्रा के कारण गिर-गिर पड़ना ।

**झुकाना** - स० [हि] नीचा करना, नवाना ।

**झुकाव** - पु० [हिं] ढाल, उतार; प्रवृत्ति ।

**झुटपुटा** - पु० [हिं] कुछ अंधेरा और कुछ उजाले का समय ।

**झुटुंग** - वि० [हि] झोंटेवाला; जटाधारी ।

**झुठलाना** - स० [हिं] झूठा बनाना ।

**झुनझुन** - पु० [अनु] नूपुर आदि का शब्द ।

**झुनझुना** - पु० [हिं] बच्चों का एक खिलौना जो हिलाने से झुन-झुन बजता है ।

**झुनझुनाना** - अ० [अनु] झुनझुन की ध्वनि होना ।

**झुनझुनियाँ** - स्त्री० [हि] झुनझुन शब्द करनेवाला गहना; बेड़ी; सनई का पौधा ।

**झुनझुनी** - स्त्री० [अनु] हाथ या पैर में रक्त का संचार रुकने से होनेवाली एक तरह की सनसनाहट ।

**झुपझुपी** } - स्त्री० [हि] कान का एक
**झुबझुबी** } गहना ।

**झुपरी** - स्त्री० [हिं] झोपड़ी ।

**झुमका** - पु० [हि] कान का एक गहना ।

**झुमरी** - स्त्री० [हिं] मुँगरी, पिटना ।

**झुरझुरी** - स्त्री० [हि] जूड़ी बुखार के पहले आनेवाली कँपकँपी ।

**झुरना** - अ० [हिं] सूखना; बहुत अधिक दुखी होना ।

**झुरमुट** - पु० [हिं] झाड़ या पत्तों से छिपा हुआ स्थान; पेड़-पौधों का समूह; मु०—मारना - चादर आदि से अपने को इस तरह छिपाना कि जल्दी कोई पहचान न सके ।

**झुर्री** - स्त्री० [हि] सिकुड़न, शिकन ।

**झुलनी** - स्त्री० [हिं] नथ आदि में लटकनेवाला मोतियों का गुच्छा ।

**झुलसना** - अ० [हिं] अधजला होना; मुरझाना, धूप आदि से पौधों का सूखना ।

**झुलाना** - स० [हि] झूले पर हिलाना-डुलाना; अनिश्चित अवस्था में रखना ।

**झुलावना** - स० [हिं] झूले को हिलाना; लटकाकर हिलाना; अटकाये रखना ।

**झूठ** - स्त्री० [हि] असत्य; यौ० —मूठ - यों ही; मु०—सच कहना या लगाना - झूठी शिकायत करना ।

**झूठा** - 1. पु० [हिं] असत्य; 2. वि० असत्य बोलनेवाला ।

**झूमक** - पु० [हिं] झूमर; झूमर के साथ होनेवाला नृत्य; गुच्छा ।

**झूमका** - पु० [हि] झुमका ।

**झूमना** - अ० [हिं] झोंके खाना; ख़ुशी या मस्ती में हिलना; लहराना ।

**झूमर** - पु० [हिं] एक गीत; एक प्रकार का गहना ।

**झूरै** - 1. क्रि० [हिं] व्यर्थ ही, बेकार; 2. अ० [व्र] दग्ध होना ।

**झूल** - स्त्री० [हि] हाथी-घोड़ों की पीठ पर सजावट के लिए डाला जानेवाला कपड़ा; मु० गधे पर झूल पड़ना - अयोग्य आदमी के ऊपर बढ़िया वस्त्र होना ।

**झूलन** - पु० [हि] देवताओं को झूले पर झुलाने का उत्सव ।

**झूलना** - 1. अ० [हि] लटककर आगे-पीछे होना; पेंग लेना; किसी आश्रय में लटके रहना; 2. पु० हिंडोला; एक छंद; 3. वि० झूलनेवाला ।

**झूला** - पु० [हिं] झूलने का साधन, हिंडोला ; झटका ।
**झेपना, झेंपना** - अ० [हिं] शरमाना, लजाना ।
**झेर** - स्त्री० [हिं] विलंब , झंझट ।
**झेरा** - पु० [हिं] झंझट ; झगड़ा ।
**झेलना** - स० [हि] उठाना ; सहन करना ।
**झोंक** - स्त्री० [हिं] वेग ; झोंका , बोझ; धुन , चोट ।
**झोंकना** - स० [हिं] वेग से फेंकना ; आग में डालना ; **मु०** भाड़ झोंकना - तुच्छ व्यवसाय करना ।
**झोंका** - पु० [हिं] वेग से आनेवाली हवा का झटका ; **मु०**—खाना - झुकना ।
**झोंटा** - पु० [हि] बड़े-बड़े रूखे बालों का समूह , **मु०** —पकड़कर मारना या घसीटना - स्त्रियों पर अत्याचार करना ।
**झोंटी** - स्त्री० [हिं] झोंटा ।
**झोंपड़ा** - पु० [हिं] कुटी, पर्णशाला ।
**झोंपड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा झोपड़ा ।
**झोंपा** - पु० [हिं] गुच्छा , झोंटा ।
**झोटिंग** - पु० [हिं] झोटेवाला, जटाधारी ।
**झोड़** - पु० [सं] सुपारी का वृक्ष ।
**झोपड़ा** - पु० [हिं] झोंपड़ा ।
**झोल** - पु० [हिं] तरकारी आदि का गाढ़ा रस, शोरबा ; ढीलापन ; थैली (गर्भ-संबंधी) ।
**झोला** - पु० [हिं] थैली ; ढीला पहनावा ।
**झोली** - स्त्री० [हिं] थैली ।
**झौंसना** - अ० [हिं] झुलसना ।
**झौर** - पु० [हिं] झंझट ।

## ट

**टंक** - पु० [सं] चार माशे की तौल; पत्थर काटने या गढ़ने का औज़ार; टाँकी ; छेनी ; सिक्का ; **यौ०**—शाला - टकसाल, सिक्के ढालने का स्थान ।
**टंकक** - पु० [सं] चाँदी का सिक्का ।
**टंकण, टंकन** - पु० [सं] सोहागा , टाँकी देना ; मुद्रालेखन, टाइपराइटिंग ।
**टँकना** - अ० [हि] टाँका जाना ; सिलाई के द्वारा जुड़ना ; खुरदरा किया जाना ; दर्ज किया जाना ।
**टंका** - पु० [सं] चाँदी की एक तौल ; ताँबे का एक सिक्का, टका ।
**टंकाना** - स० [हिं] सिक्कों की जाँच करना।
**टंकार** - स्त्री० [हिं] टनटन शब्द ; धनुष की डोरी से निकला हुआ शब्द ।
**टंकारना** - स० [हिं] धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना ।
**टंकिका** - स्त्री० [सं] पत्थर काटने का औज़ार, छेनी , टाँकी ।
**टंकी** - स्त्री० [हि] छोटा-सा कुंड ; पानी भरने का बड़ा बरतन ; टब ।
**टंकोर** - पु० [हि] टंकार ।
**टंकोरना** - स० [हिं] टंकारना ; ठोकर लगाना ।
**टंग** - पु० [सं] टाँग ; कुल्हाड़ी ; कुदाल ; सुहागा ।
**टंगड़ी** - स्त्री० [हिं] जाँघ से नीचे का भाग, टाँग ।
**टँगना** - अ० [हिं] लटकना या ठहरा रहना ।
**टंच** - वि० [हिं] कृपण ; निष्ठुर ।
**टंट-घंट** - पु० [हिं] पूजा-पाठ का भारी आडंबर , मिथ्या आडंबर ; ढोंग ।
**टंटा** - पु० [अनु] बखेड़ा ; दंगा-फ़साद ; खटराग , **मु०** —खड़ा करना - बखेड़ा खड़ा करना ।
**टंडल** - पु० [अ] मजूरों का जमादार या मेट ।
**टँड़िया** - स्त्री० [हिं] बाँह का गहना ; टाँड़ ; बहूँटा ।

**टंडैल** - पु० [हिं] टंडल।

**टक** - स्त्री० [हिं] गड़ी हुई नज़र, स्थिर दृष्टि; मु०— बाँधना - स्थिरदृष्टि होना; — लगाना - प्रतीक्षा में रहना।

**टकटकी** - स्त्री० [हिं] गड़ी हुई नज़र; निर्निमेष दृष्टि; मु०— बँधना - नज़र गड़ना।

**टकटोलना** - स० [हिं] हाथ से छूकर पता लगाना, टटोलना।

**टकराना** - अ० [हि] दो वस्तुओं का परस्पर ज़ोर से भिड़ना; ठोकर लगना; इधर से उधर मारा-मारा फिरना; मु० माथा टकराना - घोर प्रयत्न करना।

**टकसाल** - स्त्री० [हि] वह स्थान जहाँ सिक्के बनाये जाते हैं; मु०— का खोटा - नीच; — चढ़ना - परीक्षा होना; कला-कौशल में दक्ष माना जाना, बुराई में पक्का होना; निर्लज्ज होना।

**टकसाली** - वि० [हि] टकसाल का, खरा, चोखा; प्रामाणिक; मु०—बात - ठीक या पक्की बात।

**टका** - पु० [हिं] रुपया; अधन्ना, दो पैसे का ताबे का सिक्का; मु० —सा जवाब देना - साफ़ इनकार करना; —सा मुँह लेकर रह जाना - लज्जित होना या खिसिया जाना।

**टकानी** - स्त्री० [हि] बैलगाड़ी का जूआ।

**टकासी** - स्त्री० [हि] आधा आना प्रति रुपया मासिक ब्याज की दर।

**टकुआ** - पु० [देश]' सूत कातने का सूआ या तकली।

**टकुली** - स्त्री० [देश] तकली; टाँकी।

**टकेत, टकैत** - वि० [हि] टकेवाला, धनवान।

**टकोर** - स्त्री० [हिं] हलकी चोट; ठेस; टंकोर; डंके की चोट या शब्द।

**टकोरना** - स० [हिं] ठोकर लगाना; बजाना; सेकना।

**टकौरी** - स्त्री० [हिं] सोना आदि तौलने की छोटी तराज़ू।

**टक्कर** - स्त्री० [हि] टकराने का शब्द; ठोकर; मु०—का - जोड़ का, बराबरी का, तुल्य; —लेना - मुक़ाबला करना; चोट सहना; पहाड़ से टक्कर लेना - बहुत भारी शत्रु से भिड़ना।

**टखना** - पु० [हि] एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ; गुल्फ।

**टगर** - पु० [स] सोहागा; विलास; क्रीड़ा; टीला; तगर का पेड़।

**टघरना** - अ० [हिं] पिघलना, द्रव होना; ढुलकना।

**टघराना** - स० [हिं] पिघलाना; ढुलकाना।

**टचनी** - स्त्री० [हिं] एक औज़ार जिससे कसेरे बरतनो पर नक्काशी करते है।

**टटका** - वि० [हि] ताज़ा, तत्काल का, हाल का।

**टटपूँजिया** - पु० [हि] दरिद्र; थोड़े-से साधन के बल पर किसी बड़े काम में लगनेवाला; थोड़ी पूंजी रखकर कारोबार चलानेवाला।

**टटिया** - स्त्री० [हिं] बाँस आदि की टट्टी।

**टटियाना** - अ० [हिं] सूख जाना, सूखकर अकड़ जाना।

**टटुआ** - पु० [हि] टट्टू।

**टटुई** - स्त्री० [हि] मादा टट्टू।

**टटोल** - स्त्री० [हिं] टटोलने का भाव, उँगलियो से छूकर मालूम करने की क्रिया; गूढ़ स्पर्श।

**टटोलना** - स० [हिं] उँगलियो से छूकर पता लगाना ; बातचीत द्वारा किसीके विचारो को जानना , आजमाना ; **मु०** मन टटोलना - हृदय के भाव का पता लगाना ।

**टट्टर** - पु० [सं] बाँस की फट्टियो आदि को जोड़कर बनाया हुआ परदा ।

**टट्टरी** - स्त्री० [हिं] भेरी का शब्द ।

**टट्टी** - स्त्री० [हिं] बाँस की फट्टियो आदि से बनाया हुआ परदा, टटिया ; पाख़ाना ; **मु०** —की आड़ से शिकार खेलना - छिपकर बुरा काम करना ; —में छेद करना - खुले आम कुकर्म करना ; निर्लज्ज होना ; धोखे की टट्टी - धोखा खाने की चीज़ ।

**टट्टू** - पु० [हिं] छोटे क़द का घोड़ा, टाँगन ; **मु०** भाड़े का टट्टू - रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला ।

**टड़िया** - स्त्री० [हिं] टँड़िया, टाँड़ ।

**टन** - स्त्री० [अनु] घंटा बजने का शब्द , टनकार ; झनकार ; **यौ०** —टन - घंटा बजने का शब्द ; **मु०** — हो जाना - चटपट मर जाना ।

**टनकना** - अ० [अनु] टनटन बजना ; सिर में दर्द होना ; रह-रहकर पीड़ा होना ।

**टनमन** - पु० [हिं] तंत्र-मंत्र, जादू-टोना ।

**टनमना** - वि० [हिं] जिसकी तबीयत हरी हो, स्वस्थ ; अनमना का उलटा ।

**टनाका** - 1. पु० [अनु] घंटा बजने का शब्द ; 2. वि० [हिं] बहुत तेज़ (धूप) ।

**टनाटन** - स्त्री० [अनु] लगातार घंटा बजने का शब्द ।

**टप** - स्त्री० [अनु] बूँद-बूँद टपकने का शब्द ; टब ; **मु०** — से - चट से ; बड़ी जल्दी ।

**टपकना** - अ० [अनु] टप-टप गिरना ; पके फल का आपसे आप गिरना , **मु०** टपक पड़ना - अकस्मात आकर उपस्थित होना ; सहसा किसी वस्तु का ऊपर से गिरना ।

**टपका** - पु० [अनु] बूँद-बूँद गिरने का भाव , [हिं] पककर अपने आप गिरा हुआ फल ; रह-रहकर उठनेवाला दर्द ।

**टपना** - अ० [हिं] बिना खाये-पिये पड़ा रहना ।

**टपरा** - पु० [हिं] छप्पर ; झोंपड़ा ; छोटे-छोटे खेतो का विभाग ।

**टपाटप** - क्रि० [अनु] लगातार टप-टप शब्द के साथ, झट-झट, जल्दी-जल्दी ।

**टपाना** - स० [हिं] बिना दाना-पानी के रखना ; व्यर्थ हैरान करना, फंदाना ।

**टप्पा** - पु० [हिं] दो स्थानो का अंतर ; कहारो के मार्ग में टिकान ।

**टब** - पु० [अंग्रे] नाँद के आकार का एक बड़ा खुला बर्तन ।

**टब्बर** - पु० [हिं] कुटुंब, परिवार ।

**टमकी** - स्त्री० [हिं] डुग्गी ।

**टमटम** - स्त्री० [हिं] टैडम् (अंग्रे) ; घोड़ा-गाड़ी ।

**टमाटर** - पु० [हिं] टमैटो, विलायती बैगन ।

**टर** - स्त्री० [अनु] कर्कश शब्द ; मेंढ़क की बोली ; घमंड से भरी बात ; **मु०**— टर करना - ढिठाई से बोलते जाना ।

**टरकना** - अ० [हिं] चला जाना ; खिसक जाना ।

**टरकाना** - स० [हिं] खिसकाना ; हटाना ; बहाना करके लौटा देना ; **मु०** टरका देना - टाल देना ।

**टरटराना** - अ० [अनु] बक-बक करना ; ढिठाई से बोलना ।

**टरना** - अ० [हि] टलना।

**टर्राना** - अ० [अनु] मेंढक का बोलना, ऐंठकर बातें करना; गर्व के साथ कटु वचन कहना।

**टर्रू** - पु० [हि] टर्रानेवाला आदमी; मेंढक; भौंरा।

**टलना** - अ० [हि] हटना; खिसकना; **मु०** अपनी बात से टलना - प्रतिज्ञा पूरी न करना।

**टलमल** - वि० [हिं] हिलता हुआ।

**टलहा** - वि० [देश] खोटा, खराब, दूषित।

**टल्ला** - पु० [अनु] धक्का, आघात, ठोकर।

**टस** - स्त्री० [हि] किसी भारी चीज़ के खिसकने का शब्द; **मु०**— से मस न होना - कुछ भी न खिसकना; कहने-सुनने का कुछ भी प्रभाव न होना।

**टसक** - स्त्री० [हिं] कसक; टीस; पीड़ा; रह-रहकर उठनेवाली पीड़ा।

**टसकना** - अ० [हिं] टरकना; रह-रहकर दर्द करना; प्रभावित होना।

**टसकाना** - स० [हि] टरकाना।

**टसना** - अ० [हि] कपड़े आदि का फटना, मसक जाना।

**टसर** - पु० [हिं] एक प्रकार का कड़ा और मोटा रेशम जो उत्तरपूर्व बिहार, बंगाल और आसाम में होता है।

**टहनी** - स्त्री० [हि] पेड़ की बहुत पतली डाली।

**टहल** - स्त्री० [हि] सेवा, चाकरी।

**टहलना** - अ० [हिं] धीरे-धीरे चलना; घूमना; **मु०** टहल जाना - धीरे से खिसक जाना।

**टहलनी** - स्त्री० [हिं] दासी।

**टहलाना** - स० [हिं] धीरे-धीरे चलाना; हटा देना; दूर करना।

**टहलुआ** - पु० [हिं] नौकर।

**टहलुई** - स्त्री० [हि] दासी।

**टहलुवा, टहलू** - पु० [हिं] टहलुआ।

**टहुआटारी**† - स्त्री० [देश] चुगलखोरी, इधर की उधर लगाना।

**टहूका** - पु० [हिं] पहेली; चुटकुला।

**टहोका** - पु० [हिं] झटका।

**टाँक** - स्त्री० [हिं] चार माशे की तौल, जाँच; कूत; लिखावट; कलम की नोक।

**टाँकना** - स० [हि] कील-काँटे ठोंककर जोड़ना या मिलाना; सीना; सिल या चक्की आदि को खोदना; **मु०** मन में टाँक रखना - याद रखना।

**टाँका** - पु० [हिं] कपड़े या घाव आदि की सिलाई; जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा; **मु०**—चलाना - सुई चलाना।

**टाँकी** - स्त्री० [हिं] पत्थर गढ़ने का औज़ार, छेनी; गरमी या सूज़ाक का घाव; छोटा हौज।

**टाँग** - स्त्री० [हि] टँगड़ी, जाँघ से लेकर एड़ी तक का अंग; **मु०** —अड़ाना - अनधिकार चेष्टा करना; भाषा की टाँग तोड़ना - अशुद्ध वाक्य बोलना।

**टाँगन** - पु० [देश] पहाड़ी टट्टू।

**टाँगना** - स० [हिं] लटकाना।

**टाँगा** - पु० [हिं] कुल्हाड़ी, एक प्रकार की घोड़ागाड़ी, ताँगा; **यौ०**—नोचन - खींचातानी।

**टाँगी** - स्त्री० [हिं] कुल्हाड़ी।

**टाँच** - स्त्री० [हिं] दूसरे का काम बिगाड़ने-वाली बात; सिलाई; पैवंद।

**टाँचना** - 1. स० [हिं] टाँकना या सीना; काटना; 2. अ० गुलछर्रे उड़ाते फिरना।

**टाँची** - स्त्री० [हिं] रुपया रखने की लँबी थैली जिसे कमर में बाँधकर रखते हैं।

**टॉट, टॉटर** - पु० [हिं] खोपड़ी, कपाल ।

**टॉड़** - स्त्री० [देश] परछत्ती; मचान; स्त्रियों का एक गहना, टॅड़िया ।

**टॉड़ा** - पु० [हिं] व्यापारियों के माल से लदे बैलों या पशुओं का झुंड, **मु०**—लदना - बिक्री का माल लदना; कूच की तैयारी; मरने की तैयारी ।

**टॉय-टॉय** - स्त्री० [अनु] कर्कश शब्द; **मु०**—फिस - बकवाद बहुत किन्तु फल कुछ भी नहीं ।

**टॉस** - स्त्री० [हिं] नसों के तनाव के कारण होनेवाली पीड़ा ।

**टॉसना** - स० [हिं] जोड़ना, टॉकना; रांगे से बरतन का छेद बंद करना; घी या तेल आदि गरम करना ।

**टाट** - पु० [हिं] जूट का मोटा खुरदरा कपड़ा जो बिछौने या परदा डालने आदि के काम आता है; **मु०**—में पाट का बखिया - भद्दी चीज़ पर बढ़िया सजावट; एक ही टाट के - एक ही बिरादरी के; —उलटना - दिवाला निकलना; —बाहर करना - बिरादरी से बहिष्कृत करना ।

**टाटर** - पु० [हिं] टट्टी; खोपड़ी ।

**टाटिका, टाटी** - स्त्री० [हिं] टट्टी, छोटा टट्टर ।

**टाड़** - स्त्री० [हिं] टॉड़, बहूँटा, एक गहना ।

**टान** - स्त्री० [हिं] खिंचाव; तनाव ।

**टानना** - स० [हिं] खींचना; तानना ।

**टाप** - स्त्री० [हिं] घोड़े के पॉव का सबसे नीचे का भाग; घोड़े के पॉव के ज़मीन पर पड़ने की आवाज़ ।

**टापना** - अ० [हिं] घोड़ों का पैर पटकना; किसी वस्तु के लिए इधर-उधर हैरान फिरना; बिना खाये-पिये पड़ा रहना; निराश होना ।

**टापर** - पु० [देश] चद्दर; छोटी-मोटी सवारी ।

**टापू** - पु० [हिं] द्वीप ।

**टाबर** - पु० [राज] बालक; लड़का ।

**टाबू** - पु० [देश] झाबा ।

**टार** - पु० [सं] घोड़ा; लौंडा; कुटना, दलाल ।

**टाल** - स्त्री० [हिं] ऊँचा ढेर; लकड़ी की दूकान; टरकाने की क्रिया; **यौ०**—मटोल या मटूल - बहानेबाज़ी ।

**टालना** - स० [हिं] खिसकाना; दूर करना; मुलतवी करना; **मु०** किसीपर टालना - कोई काम स्वयं न करके किसीपर छोड़ देना ।

**टाली** - स्त्री० [देश] गाय या बैल आदि के गले में बॉधने की घंटी; जवान गाय या बछिया; अठन्नी ।

**टाहली** - पु० [हिं] टहलू, ख़िदमतगार ।

**टिंडी** - स्त्री० [देश] हल को पकड़कर दबानेवाली मुठिया; खूँटा ।

**टिक**† - पु० [देश] टिक्कर; लिट्टी; पूआ ।

**टिकटिक** - स्त्री० [अनु] घड़ी के बोलने का शब्द; घोड़े को हाँकते समय मुँह से किया जानेवाला शब्द ।

**टिकई** - स्त्री० [देश] टीकेवाली गाय ।

**टिकट** - पु० [अंग्रे] कहीं आने-जाने का मुद्रित अधिकार-पत्र जो महसूल चुका देने पर प्राप्त होता है ।

**टिकटिकी** - स्त्री० [अनु] फाँसी देने की ऊँची तिपाई, टिकठी ।

**टिकठी** - स्त्री० [हिं] टिकटिकी ।

**टिकड़ा** - पु० [हिं] मोटी रोटी; बाटी; **मु०**— लगाना - आग पर बाटी सेंकना ।

**टिकड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा टिकड़ा ।

**टिकना** - अ० [हिं] कुछ काल के लिए ठहरना ; स्थित रहना ; विशेष अवधि तक काम देना ।

**टिकरी** - स्त्री० [हिं] एक पकवान ; टिकिया ; सिर पर पहनने का एक गहना ।

**टिकली** - स्त्री० [हिं] छोटी टिकिया ; सितारा ; बिंदी ।

**टिकस** - पु० [हिं] महसूल ; कर ; टिकट ।

**टिकाऊ** - वि० [हिं] टिकनेवाला, मज़बूत ।

**टिकान** - स्त्री० [हिं] पड़ाव ; चट्टी : ठहरने का भाव या स्थान ।

**टिकाना** - स० [हि] रहने के लिए जगह देना ; ठहराना ।

**टिकाव** - पु० [हिं] टिकान ।

**टिकिया** - स्त्री० [हिं] गोल और चपटा टुकड़ा ; माथे पर लगी बिंदी ।

**टिकुली** - स्त्री० [हिं] टिकली ।

**टिकोरा, टिकोला** - पु० [हिं] आम का छोटा और कच्चा फल, आम की बतिया ।

**टिक्कड़** - पु० [हिं] बाटी, बड़ी रोटी ।

**टिचन** - वि० [अंग्रे] तैयार ; मुस्तैद ।

**टिटकारना** - स० [अनु] टिकटिक शब्द के साथ पशु को हाँकना ; बढ़ावा देना ; **मु**० टिटकारी पर लगाना - इशारे पर या बोली पहचानकर काम करना ।

**टिटिह, टिटिहा** - पु० [हिं] टिटिहरी चिड़िया का नर ।

**टिटिहरी** - स्त्री० [हिं] पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया जो टींटी की आवाज़ करती रहती है और रात में अपनी टाँगें ऊपर की ओर करके सोती है, कुररी ।

**टिटिहारोर(ह)** - पु० [हिं] चिल्लाहट ; क्रंदन ।

**टिट्टिभ** - पु० [सं] टिटिहरी, कुररी ।

**टिड्डी** - स्त्री० [हिं] दल बाँधकर उड़नेवाला एक कीड़ा जो खेत में लगी फ़सल को बर्बाद कर देता है ; **मु**०—दल - बहुत बड़ा झुंड ।

**टिपका** - पु० [अनु] बूँद, कतरा, बिंदु ।

**टिपटिप** - स्त्री० [अनु] बूँद-बूँद गिरने का शब्द, टपकने का शब्द ।

**टिपनी** - स्त्री० [सं] टीका, किसी वाक्य या प्रसंग का विवरण ।

**टिपारा** - पु० [हि] मुकुट के आकार की एक टोपी ।

**टिप्पणी** - स्त्री० [सं] संक्षिप्त टीका ।

**टिप्पन** - पु० [सं] टीका, व्याख्या ; जन्म-कुंडली ।

**टिप्पस** - स्त्री० [देश] युक्ति ।

**टिमटिमाना** - अ० [हिं] मंद-मंद जलना और प्रकाश देना ।

**टिलीलिली** - स्त्री० [अनु] बीच की उँगली हिलाकर चिढ़ाने का शब्द ।

**टिल्ला** - पु० [हिं] धक्का ; चोट ; ठोकर ।

**टिल्लेनवीसी** - स्त्री० [हिं] निकृष्ट सेवा ; व्यर्थ का काम ; बहाना ।

**टिहुकना** - अ० [देश] ठिठकना ; चौकना ।

**टिहुनी** - स्त्री० [देश] घुटना ; कोहनी ।

**टिहूक** - स्त्री० [देश] चौक ।

**टींड़ी** - स्त्री० [अव] टिड्डी ।

**टीकन** - पु० [हिं] थूनी, वह स्तंभ या खूँटा जिसपर कोई वस्तु टिकी हो ।

**टीकना** - स० [हिं] टीका लगाना, तिलक देना ।

**टीका** - 1. पु० [हिं] तिलक, विवाह स्थिर होने की एक रीति, युवराज होने की क्रिया ; संक्रामक रोग से बचने के लिए शरीर में सुई द्वारा औषधि पहुँचाना ; 2. स्त्री० छाप ; व्याख्या ; **यौ**०—कार - व्याख्या करनेवाला ।

**टीन** - पु० [अंग्रे] लोहे की पतली चद्दर ।

**टीप** - स्त्री० [हिं] दबाव, हलका प्रहार; गच की पिटाई; घोर शब्द, गाने में ऊँचा स्वर।

**टीपटाप** - स्त्री० [हिं] सजावट, दिखावट, तड़कभड़क।

**टीपना** - स० [हि] लिख लेना, दर्ज कर लेना।

**टीमटाम** - स्त्री० [हि] सजावट; तड़क-भड़क।

**टीला** - पु० [हि] दूह, बालू या मिट्टी का ऊँचा ढेर; छोटी पहाड़ी या चट्टान।

**टीस** - स्त्री० [हिं] चुभती हुई पीड़ा, कसक।

**टीसना** - अ० [हिं] रह-रहकर पीड़ा होना।

**टुंच** - वि० [हिं] क्षुद्र, तुच्छ।

**टुंटा** - वि० [हिं] हाथविहीन, लूला।

**टुंड** - पु० [हिं] छिन्न वृक्ष, ठूँठ; कटा हुआ हाथ।

**टुंडा** - वि० [हिं] ठूँठा; लूला; एक सींगवाला (बैल)।

**टुंडी** - स्त्री० [हिं] नाभि; भुजा; लूली।

**टुइयाँ** - 1. स्त्री० [देश] छोटी जाति का सूआ, सुग्गी; 2. वि० नाटा।

**टुक** - वि० [हि] थोड़ा।

**टुकड़ा** - पु० [हिं] खंड; मु०—तोड़ना - दूसरे के दिये हुए भोजन पर निर्वाह करना।

**टुकड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा टुकड़ा; मंडली; सेना का एक भाग।

**टुकनी** - स्त्री० [हि] टोकनी।

**टुच्चा** - वि० [हिं] ओछा, नीच, क्षुद्र प्रकृति का।

**टुटपूँजिया** - वि० [हिं] टटपूँजिया।

**टुटरूँटूँ** - 1. स्त्री० [अनु] पंडुक पक्षी की बोली; 2. वि० अकेला, दुबला-पतला।

**टुन्ना** - पु० [हिं] पौधे का वह डंठल जिसमें फल लगे रहते हैं।

**टूँड** - पु० [हि] जौ या गेहूँ आदि की बाल में ऊपर की ओर निकला हुआ नुकीला भाग।

**टूँड़ी** - स्त्री० [हिं] गाजर या मूली आदि की नोक, लंबी नोक।

**टूक** - पु० [हि] टुकड़ा, खंड।

**टूटना** - अ० [हिं] टुकड़े-टुकड़े होना, मु० बदन या अंग टूटना - सुस्ती या थकान के कारण अंगड़ाई आना।

**टूटा** - वि० [हि] खंडित; मु० टूटी-फूटी बोली में - अशुद्ध या अस्पष्ट भाषा में।

**टूठना** - अ० [हि] संतुष्ट होना, प्रसन्न होना।

**टूठनि** - स्त्री० [हिं] संतोष, प्रसन्नता।

**टें** - स्त्री० [अनु] तोते की बोली; मु० — टें करना - व्यर्थ की बकवाद करना।

**टेंट** - स्त्री० [हिं] धोती की ऐंठन जो कमर को कसे रहती है; मु०—में कुछ होना - पास में पैसा होना।

**टेंटर** - पु० [हिं] चोट के कारण बदन पर का उभरा हुआ माँस, ढेंढर।

**टेंटी** - 1. स्त्री० [हि] करील का फल; 2. वि० झगड़ालू; चिड़चिड़ा।

**टेंटुआ, टेंटुवा** - पु० [देश] गला, अंगूठा।

**टेक** - स्त्री० [हि] प्रतिज्ञा; सहारा; आदत; गीत का स्थायी पद।

**टेकड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटी पहाड़ी, टीला।

**टेकन** - पु० [हिं] अड़काव, रोक।

**टेकना** - स० [हिं] सहारा लेना; थाम लेना; मु० माथा टेकना - प्रणाम करना।

**टेकला** - स्त्री० [हिं] धुन; रटन।

**टेकान** - पु० [हिं] टेक; टीकन।

**टेढा** - वि० [हिं] जो सीधा न हो; मु० —पड़ना - गुस्सा होना; टेढ़ी खीर - मुश्किल काम।

**टेढ़ाई** - स्त्री० [हिं] टेढ़ापन।

**टेना** - स० [हिं] हथियार की धार को तीक्ष्ण करने के लिए पत्थर पर रगड़ना; मूँछ के बालों को ऐंठना।

**टेनी** - स्त्री० [देश] छोटी उंगली; मु०—मारना - तराजू की डाडी को उंगली से छूकर कम तौलना।

**टेर** - स्त्री० [हिं] गाने में ऊँचा स्वर; पुकार।

**टेरना** - स० [हिं] ऊँचे स्वर से गाना; पुकारना।

**टेरा** - पु० [देश] वृक्ष का तना; शाखा।

**टेव** - स्त्री० [हिं] आदत; स्वभाव।

**टेवा** - पु० [हिं] जन्मकुंडली, लग्नपत्रिका।

**टेवैया** † - पु० [हिं] टेनेवाला।

**टेसू** - पु० [हिं] पलाश का फूल, ढाक का फूल; लड़कों का एक उत्सव जो विजयादशमी से लेकर शारदी पूर्णिमा तक मनाया जाता है।

**टोंचना** - स० [हिं] चुभाना, गड़ाना, धँसाना।

**टोंट** - स्त्री० [हिं] चोंच।

**टोंटा** - पु० [हिं] चोंच के आकार की कोई वस्तु; पानी ढालने के लिए बरतन में लगी नली।

**टोंटी** - स्त्री० [हिं] टोंटा।

**टोई** † - स्त्री० [देश] बाँस या गन्ने आदि की एक गाठ से दूसरी गाठ तक का भाग, पोर।

**टोकना** - 1. स० [हिं] रोकना या पूछ-ताछ करना; बीच में बोल उठना; प्रश्न आदि करके किसी काम में बाधा डालना; 2. पु० टोकरा; हंडा।

**टोकनी** - स्त्री० [हिं] टोकरी, डलिया; छोटा हंडा; बटलोई, देगची।

**टोकरा** - पु० [देश] झाबा, खाँचा।

**टोकरी** - स्त्री० [हिं] छोटा टोकरा।

**टोकारा** - पु० [हिं] इशारे के लिए मुँह से निकाला हुआ शब्द।

**टोटका** - पु० [हिं] टोना, यंत्र-मंत्र।

**टोटकेहाई** - स्त्री० [हिं] टोटका करनेवाली।

**टोटा** - पु० [हिं] कारतूस; घाटा, हानि; कमी; मु० —देना या भरना - नुक़सान पूरा करना।

**टोनहाई** - स्त्री० [हिं] टोना या जादू करनेवाली।

**टोनहाया** - पु० [हिं] जादूगर।

**टोना** - 1. पु० [हिं] यंत्र-मंत्र; जादू; टोटका; 2. स० टटोलना; छूना।

**टोप, टोपा** - पु० [हिं] बड़ी टोपी।

**टोपी** - स्त्री० [हिं] सिर का पहनावा; ढकन; बंदूक़ का पड़ाका; मु० —उछालना - निरादर करना; —बदलना - भाई-भाई का संबंध स्थापित होना।

**टोल** - 1. स्त्री० [हिं] मंडली, समूह; टोला; 2. पु० [अंग्रे] चुंगी, यात्रियों पर लगनेवाला कर।

**टोला** - पु० [हिं] मुहल्ला, बस्ती का एक भाग; गुल्ली पर डंडे की चोट।

**टोली** - स्त्री० [हिं] छोटा मुहल्ला; मंडली।

**टोह** - स्त्री० [हिं] टटोल, खोज; मु०—मिलना - पता लगना; —में रहना - ढूँढ़ते रहना; —रखना - ख़बर रखना।

**टोहना** - स० [हिं] ढूँढ़ना, खोजना, हाथ लगाकर टटोलना।

**टोहाटाई** - स्त्री० [हिं] छान-बीन।

**टोहिया, टोही** - वि० [हिं] टोह लगानेवाला।

## ठ

**ठंठ** - वि० [हिं] जिसकी डाल या पत्तियाँ सूखकर या कटकर गिर गयी हो, ठूँठा।

**ठंठार** - वि० [हिं] ख़ाली, रीता, छूँछा।

**ठंठी** - स्त्री० [हि] पीटने के बाद बाल में लगा हुआ अन्न; वह गाय या भैंस जो बच्चा या दूध न दे।

**ठंड, ठंडक** - स्त्री० [हि] सरदी, जाड़ा; गरमी का अभाव।

**ठंडा** - वि० [हिं] सर्द, शीतल, बुझा हुआ; श्रीहीन।

**ठंडाई** - स्त्री० [हि] वह दवा या मसाला जिससे शरीर की गर्मी शांत होती हो।

**ठंढ** - स्त्री० [हि] ठंड।

**ठंढई** - स्त्री० [हि] ठंढाई।

**ठंढक** - स्त्री० [हिं] ठंडक।

**ठंढा** - वि० [हिं] ठंडा; मु० ठंढे-ठंढे - खूब सवेरे; ठंढी आग - बरफ़; ठंढी साँस - दुख से भरी साँस, शोकोच्छ्वास; —होना - मर जाना, बाज़ार ठंढा होना - बाज़ार में लेनदेन खूब न होना।

**ठंढाई** - स्त्री० [हिं] ठंडाई।

**ठउर†** - पु० [हिं] जगह, ठौर।

**ठक** - 1. स्त्री० [अनु] एक वस्तु पर दूसरी वस्तु को ज़ोर से मारने का शब्द; 2. वि० स्तब्ध; भौचक्का; यौ० —ठक - झगड़ा; बखेड़ा; झंझट; —ठकाना - ठोकना-पीटना; खटखटाना; —ठकिया - हुज्जती, बखेड़िया।

**ठकुरसुहाती** - स्त्री० [हिं] ऐसी बात जो दूसरे को खुश करने के लिए कही जाए, खुशामद, लल्लो-चप्पो।

**ठकुराइन** - स्त्री० [हिं] ठाकुर की स्त्री; मालकिन।

**ठकुराई** - स्त्री० [हिं] आधिपत्य, सरदारी; बड़प्पन।

**ठकुरानी** - स्त्री० [हिं] ठाकुर की स्त्री; रानी।

**ठकोरी** - स्त्री० [हि] सहारा लेने की लकड़ी।

**ठक्कुर** - पु० [सं] देवता; ठाकुर; पूज्य प्रतिमा।

**ठग** - पु० [हि] धोखा देकर माल छीननेवाला, धूर्त; लुटेरा; यौ० —नी - ठग की स्त्री; ठगनेवाली स्त्री; —पना - चालाकी; ठगने का भाव या काम; —मूरी - पथिकों को लूटने के लिए ठगों द्वारा प्रयुक्त नशीली जड़ी-बूटी; ठगों का बेहोशी लानेवाला लड्डू जिसे खिलाकर वे यात्री का सब-कुछ छीन लेते हैं; —विद्या - धोखेबाज़ी।

**ठगई †** - स्त्री० [हि] ठगने की क्रिया, धोखेबाज़ी।

**ठगना** - स० [हि] धोखा देकर माल ले लेना; मु०—ठगा-सा - धोखा खाया हुआ-सा; भौंचक्का; ठग लेना - ज़्यादा दाम लेना; बेईमानी करना।

**ठगाठगी** - स्त्री० [हि] धोखेबाज़ी, वंचकता।

**ठगि†** - स्त्री० [हि] ठगी।

**ठगिन, ठगिनी** - स्त्री० [हि] ठग की स्त्री, ठगनी।

**ठगिया** - पु० [हि] ठग।

**ठगी** - स्त्री० [हिं] भौचक्की; ठग का काम, धूर्तता; ठगने का भाव।

**ठगोरी** - स्त्री० [ब्र] ठगों की माया; सम्मोहन-विद्या, जादू।

**ठट** - पु० [हि] समूह; भीड़, मु०—के ठट - बहुत-से।

**ठटकीला** - वि० [हि] सजीला; तड़क-भड़कवाला।

**ठटना** - 1. अ० [हि] ठहरना; खड़ा रहना, अड़ना; 2. स० तैयार करना; छेड़ना।

**ठटनि** - स्त्री० [ब्र] बनाव, रचना; सजावट।

**ठट्ठ** - पु० [अव] बनाव, रचना, सजावट।

**ठट्ट** - पु० [हिं] पंक्ति; ठट।

**ठट्ठा** - पु० [हिं] दिल्लगी; मु०—उड़ाना - उपहास करना।

**ठठई** - स्त्री० [हिं] हँसी; मसखरापन।

**ठठकना** † - अ० [हिं] यकायक ठहर जाना, ठिठकना।

**ठठरी** - स्त्री० [हि] हड्डियों का ढाँचा; अरथी; मु०—रह जाना - बहुत दुबला-पतला हो जाना।

**ठठाना** - स० [हिं] पीटना, ज़ोर से हँसना।

**ठठेर, ठठेरा** - पु० [हिं] बरतन बनानेवाला, कसेरा; ज्वार या बाजरे का डंठल; मु० ठठेरे की बदलाई - जैसे का तैसा व्यवहार।

**ठठेरी** - स्त्री० [हि] ठठेरे की स्त्री; ठठेरे का काम।

**ठठोल** - पु० [हि] परिहास; विनोद।

**ठठोली** - स्त्री० [हि] हँसी-मज़ाक।

**ठन** - स्त्री० [अनु] धातुखंड के बजने की आवाज़।

**ठनक** - स्त्री० [अनु] मृदंग आदि की ध्वनि; टीस।

**ठनकना** - अ० [अनु] ठनठन शब्द करना; रह-रहकर पीड़ा होना; मु० माथा ठनकना - गहरा खटका पैदा होना।

**ठनकाना** - स० [हिं] बजाना; मु० रुपया ठनका लेना - रुपया बजाकर लेना; रुपया वसूल कर लेना।

**ठनकार** - पु० [अनु] धातुखंड के बजने का शब्द।

**ठनगन** - पु० [हि] नेग पाने के लिए हठ करना; हठ, ज़िद।

**ठनठन** - स्त्री० [अनु] धातुखंड के बजने का शब्द; यौ०—गोपाल - छूँछी या निस्सार वस्तु; अकिंचन आदमी।

**ठनठनाना** - स० [अनु] ठनठन की आवाज़ पैदा करना।

**ठनना** - अ० [हिं] दृढ़ संकल्प के साथ कार्य का आरंभ होना; निश्चित होना।

**ठनाका** - पु० [अनु] ठनठन शब्द।

**ठनाठन** - अव्य० [अनु] ठनठन शब्द के साथ।

**ठपका** - पु० [हि] टक्कर, ठोकर; आघात।

**ठप्पा** - पु० [हि] वह साँचा जिससे कपड़ों पर बेल-बूटे छापते हैं; छापा; मुहर, सील।

**ठमक** - स्त्री० [हि] इतराते हुए चलने का भाव; नज़ाकत भरी चाल।

**ठमकना** - अ० [हिं] आश्चर्य या भय के कारण चलते-चलते रुक जाना, सहम जाना; इतराते हुए चलना।

**ठयना** - स० [हिं] ठानना; दृढ़ निश्चय के साथ आरंभ करना; ठहरना।

**ठरना** - अ० [हिं] सरदी से गलना, ठिठुरना।

**ठर्रा** - पु० [हिं] मोटा सूत; महुए की निकृष्ट देशी शराब।

**ठवन, ठवनि** - स्त्री० [हिं] अंग-संचालन का ढंग; स्थिति; मुद्रा।

**ठस** - वि० [हि] आलसी; कंजूस; जिसमें उँगली धँस न सके, ठोस; जिसकी बुनावट घनी हो, गफ़; जिसकी आवाज़ ठीक न हो (रुपया)।

**ठसक** - स्त्री० [हि] अभिमानपूर्ण हाव-भाव; नखरा; ऐंठ।

**ठसका** - पु० [हि] सूखी खाँसी; ठोकर; धक्का।

**ठसाठस** - अव्य० [हि] खूब कसकर (भरा हुआ); खचाखच।

**ठस्सा** - पु० [हिं] नक्काशी बनाने का छोटा औज़ार; ठसक; शान।

**ठहर** - पु० [हिं] जगह, स्थान; चौका।

**ठहरना** - अ० [हिं] रुकना; अस्थायी रूप से रहना; प्रतीक्षा करना।

**ठहराई** - स्त्री० [हिं] ठहरने की क्रिया; ठहरने की मजूरी; अधिकार।

**ठहराना** - स० [हिं] चलने से रोकना, विश्राम कराना; पक्का करना; स्थिर करना।

**ठहराव** - पु० [हि] निश्चय, समझौता; ठहरने का स्थान; स्वर या तान का विराम।

**ठहरौनी** - स्त्री० [हि] विवाह में लेने-देने का क़रार।

**ठहाका** - पु० [हि] ज़ोर की हँसी।

**ठाँई, ठाँउँ** - 1. पु० [हिं] ठौर, जगह; 2. अव्य० निकट, पास।

**ठाँयँ** - 1. पु० [हि] ठाँऊँ; 2. स्त्री० बंदूक़ छूटने की आवाज़।

**ठाँव** - पु० [हिं] ठिकाना, जगह; अवसर, मौक़ा।

**ठाँसना** - स० [हि] ज़ोर से घुसाना; ठूँसना।

**ठाकुर** - पु० [हि] देवता; पूज्य व्यक्ति, नायक, सरदार; ज़मीन्दार; मालिक; क्षत्रियो के नाम के पहले और नाइयो के नाम के पीछे लगनेवाली उपाधि; **यौ०**—द्वारा या बाड़ी - देवालय।

**ठाकुरी** - स्त्री० [हिं] ठकुराई, स्वामित्व।

**ठाट** - पु० [हिं] बाँस का ढाँचा जो आड़ करने या छाने के काम में आता है; पंजर; आडंबर, तड़क-भड़क; शान-शौक़त; **यौ०**—बंदी - शानशौक़त का काम; ढाँचा बनाने का काम, —बाट - सजावट; आडंबर; —से कटना - आराम से रहना; —बदलना - रंगढंग बदलना।

**ठाटना** - स० [हिं] सजाना; आयोजन करना; संवारना।

**ठाटर** - पु० [हिं] टट्टर; ठठरी; बाँस की बनी कबूतरो की छतरी।

**ठान** - स्त्री० [हिं] अनुष्ठान; काम की शुरूआत।

**ठानना** - स० [हिं] कोई काम करने का दृढ़ निश्चय करना; छेड़ना; मन में निश्चित करना।

**ठार** - पु० [सं] पाला, अधिक सरदी।

**ठाला** - 1. पु० [हिं] बेकारी; आय की कमी; 2. वि० बेकार, निठल्ला, **यौ०** बैठे-ठाले - कुछ काम-धंधा न करते हुए।

**ठाहर** - पु० [हि] जगह; ठहरने का स्थान, ठिकाना।

**ठाली** - 1. वि० [हिं] ख़ाली; निठल्ला; 2. स्त्री० धीरज।

**ठिंगना** - वि० [हिं] नाटा, छोटे क़द का, कम ऊँचा।

**ठिकाना** - पु० [हि] जगह; जीविका का सहारा, पता; **मु०**—करना - डेरा करना; ब्याह ठीक करना; नौकरी ढूँढ़ना; ठिकाने लगाना - मार डालना; ख़तम करना, —लगना - जीविका का प्रबंध होना, ठिकाने आना - सही स्थान या हालत पर पहुँचना।

**ठिठकना** - अ० [हिं] ठठकना।

**ठिठरना, ठिठुरना** - अ० [हिं] जाड़े से अकड़ना; सर्द होना, ठरना।

**ठिनकना** - अ० [हिं] बच्चो का बनावटी तौर से रोना।

**ठिरना** - अ० [हिं] ठरना।

**ठिलना** - अ० [हि] ठेला जाना, बलपूर्वक ढकेला जाना; धँसना।

**ठिलिया** - स्त्री० [हि] छोटा घड़ा, गगरी।

**ठिलुआ** - वि० [हिं] निठल्ला, निकम्मा।

**ठीक** - वि० [हि] यथार्थ, सच; मुनासिब, **यौ०**— ठाक - निश्चित प्रबंध।

**ठीकड़ा** - पु० [हिं] मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा; खपरैल आदि का टुकड़ा; भिक्षापात्र।

**ठीकना** - स० [हिं] योगफल या जोड़ निकालना ; कूतना ।

**ठीकरा** - पु० [हिं] ठीकड़ा: मु० —फोड़ना - दोष लगाना. —समझना - तुच्छ समझना ।

**ठीकरी** - स्त्री० [हिं] मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा ; तुच्छ वस्तु ; चिलम पर रखने का मिट्टी का तवा ।

**ठीका** - पु० [हिं] नियत समय या दर पर कोई काम करने या कराने का इकरार, कांट्रैक्ट. कर आदि वसूल करने का ज़िम्मा, ठेका : यौ० ठीकेदार - ठीका लेनेवाला, कंट्रैक्टर ।

**ठीठी** - स्त्री० [अनु] हँसी का शब्द. बेहूदा हँसी ।

**ठीहा** - पु० [हिं] ज़मीन पर गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा ; ऊँची जगह ; वेदी ; गद्दी ।

**ठुकना** - अ० [हिं] ठोका जाना : पिटना, मार खाना ।

**ठुकराना** - स० [हिं] ठोकर मारना, तुच्छ समझकर पैर से हटा देना ; तिरस्कार करना ।

**ठुकवाना** - स० [हिं] पिटवाना ; गड़वाना ।

**ठुड्डी, ठुड्ढी** - स्त्री० [हिं] चिबुक, ठोढ़ी ; वह भुना हुआ दाना जो खिला न हो ।

**ठुनकना** - अ० [हिं] धीरे-धीरे मचलकर रोना ।

**ठुनकाना** - स० [हिं] उँगली से आघात करना ; हलके हाथ से ठोकना ।

**ठुमक** - वि० [हिं] उमंग या ठसक-भरी (चाल) ; यौ० —ठुमक - उछल-कूद के साथ (चलना) ।

**ठुमरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह का गीत ।

**ठुरियाना** - अ० [हिं] सिकुड़ जाना ।

**ठुरी, ठुर्री** - स्त्री० [हिं] वह दाना जो भूनने पर न खिले ।

**ठुसना** - अ० [हिं] कसकर भरा जाना ; कठिनता से घुसना ।

**ठूँठ** - पु० [हिं] पत्ररहित सूखा पेड़ ।

**ठूँठा** - वि० [हिं] सूखा (पेड़) ; हाथरहित ।

**ठूँठिया** - वि० [हिं] लूला ; लँगड़ा ; नपुंसक ।

**ठूँठी** - स्त्री० [हिं] ज्वार या अरहर आदि के जड़ के पास का डंठल जो खेत कटने पर पड़ा रह जाता है, खूँटी ।

**ठूँसना, ठूसना** - स० [हिं] कसकर भरना, दबा-दबाकर भरना; बहुत अधिक खाना ।

**ठेंगना** - वि० [हिं] ठिंगना, नाटा ।

**ठेंगा** - पु० [हिं] अंगूठा ; डंडा, लट्ठ ; मु० —दिखाना - बुरी तरह से इनकार करना ; चिढ़ाना ; —बजना - मार-पीट होना ।

**ठेंगुर** - पु० [हिं] पशु के गले में बाँधी जानेवाली लकड़ी, डिंगर ।

**ठेंठी** - स्त्री० [देश] कान का मैल ; ठेपी ।

**ठेपी** - स्त्री० [देश] बोतल आदि का मुँह बंद करने की लकड़ी, काग, डाट ।

**ठेक** - स्त्री० [हिं] सहारा ; टेक ; पच्चड़ ; अनाज रखने की बखार ।

**ठेकना** - स० [हिं] सहारा लेना ; ठहरना, रहना ; टेकना ।

**ठेका** - पु० [हिं] सहारे की वस्तु ; बैठक ; अड्डा ; तबले की बोली ; ठीका ; मु० — भरना - घोड़े का उछल-कूद करना ।

**ठेकाई** - स्त्री० [देश] वस्त्रों पर काले हाशिये की छपाई ।

**ठेकी** - स्त्री० [हिं] ठेक ।

**ठेगना** - स० [हिं] टेकना, सहारा लेना ।

**ठेगनी, ठेघनी** - स्त्री० [हिं] टेकने की लकड़ी, सहारा ।

**ठेघ, ठेघा** - पु० [हिं] टेक, सहारे के लिए लगाया जानेवाला स्तंभ।

**ठेठ** - 1. वि० [देश] निपट, निरा, बिल्कुल शुद्ध, निर्मल; 2. स्त्री० वह बोली जिसमें साहित्यिक भाषा का मेल न हो।

**ठेप** - स्त्री० [देश] सोने-चाँदी का इतना बड़ा टुकड़ा जो अंटी में आ सके।

**ठेपी** - स्त्री० [देश] ठेपी।

**ठेलना** - स० [हि] धक्का देकर आगे बढ़ाना; ढकेलना।

**ठेलमठेल** - अव्य० [हिं] कशमकश के साथ।

**ठेला** - पु० [हिं] टक्कर; एक गाड़ी जिसे आदमी ठेलकर चलाते हैं; धक्कम-धक्का; यौ० —ठेल - रेल-पेल, भीड़।

**ठेस** - स्त्री० [देश] ठोकर; चोट।

**ठेसना** - अ० [देश] ठोकर खाना।

**ठेहरी** - स्त्री० [देश] वह लकड़ी जिसपर किवाड़ की चूल घूमती है।

**ठेही** - स्त्री० [देश] रसविहीन या मारी हुई ईख।

**ठेहुना** - पु० [देश] घुटना।

**ठैन, ठैयाँ** - स्त्री० [व्र] जगह; बैठने का स्थान।

**ठोंक** - स्त्री० [अनु] चोट, आघात।

**ठोंकना** - स० [अनु] चोट करना, मारना; प्रहार द्वारा भीतर घुसाना; मु० —बजाना - जाँचना।

**ठोंगना** - स० [हिं] चोंच मारना; उँगली से ठोकर मारना।

**ठोंठा** - पु० [देश] ज्वार या बाजरे आदि को हानि पहुँचानेवाला कीड़ा।

**ठो** - अव्य० [हि] एक शब्द जो पूर्वी हिन्दी में संख्या-वाचक शब्दों के आगे लगाया जाता है; जैसे, 'एकठो, दोठो'।

**ठोकचर** - पु० [देश] आम की गुठली का कड़ा छिलका।

**ठोकर** - स्त्री० [हिं] ठेस; पैर से किया गया आघात; धक्का; मु० —लगना - भूल के कारण दुःख या हानि पहुँचना।

**ठोकरी** - स्त्री० [देश] वह गाय जिसे बच्चा दिये बहुत दिन हो गये हो।

**ठोका** - पु० [देश] चूड़ियो के साथ पहना जानेवाला स्त्रियो का एक गहना।

**ठोट** - वि० [देश] मूर्ख, गावदी।

**ठोड़ी** - स्त्री० [हिं] ठुड्डी, चिबुक, दाढ़ी।

**ठोप** - पु० [अनु] बूँद; ललाट की बिन्दी।

**ठोस** - 1. वि० [हिं] जो भीतर से पोला न हो, ठस; 2. पु० कुढ़न, डाह, ईर्ष्या।

**ठोसा** - पु० [देश] अंगूठा; ठेगा।

**ठोहना** - स० [हिं] खोजना, ठिकाना ढूँढना।

**ठौर** - पु० [हि] ठिकाना; जगह; मौक़ा; यौ० —कुठौर - बुरी जगह।

## ड

**डंक** - पु० [हि] बिच्छू या मधुमक्खी आदि कीड़ो के पीछे का ज़हरीला काँटा जिसे वे क्रोध में या अपने बचाव के लिए जीवो के शरीर में चुभो देते हैं।

**डंकना** - अ० [हि] भारी शब्द करना; गरजना।

**डंका** - पु० [हिं] बड़ा ढोल; निशान; मु० डंके की चोट कहना - खुल्लमखुल्ला कहना, सबको सुनाकर कहना।

**डंकिनी** - स्त्री० [हिं] डाकिनी, चुड़ैल।

**डंकी** - स्त्री० [देश] कुश्ती का एक पेच; मलखंभ की एक कसरत।

**डंकीला** - वि० [हिं] डंकवाला।

**डंकौरी** - स्त्री० [हि] भिड़, बर्र, ततैया।

**डंग** - पु० [देश] अधपका छुहारा।

**डंगर** - पु० [देश] चौपाया।

**डंठल** - पु० [हिं] छोटे पौधो की शाखा।

**डंठी** - स्त्री० [हि] डंठल।

**डंड** - पु० [हिं] सोंटा ; बाँह ; एक कसरत ; यौ० —पेल - कसरती पहलवान ; —वारा या वारी - कम ऊँची दीवार जो घेरने के लिए उठायी जाती है , चहारदीवारी ; मु० —पेलना - खूब कसरत करना , —पड़ना - नुकसान होना ।

**डंडा** - पु० [हि] सोंटा, लाठी ; चहारदीवारी ; मु०—बजाते फिरना - मारा-मारा फिरना ; — खींचना - चहारदीवारी उठाना : डंडे रसीद करना - मारना ।

**डँड़िया** - 1. स्त्री० [हि] धारीदार साड़ी , 2. पु० महसूल वसूल करनेवाला ।

**डँड़ियाना** - स० [हि] किसी कपड़े के दो या अधिक पाटों को जोड़ने के लिए सीना ।

**डंडी** - स्त्री० [हिं] लंबी व पतली लकड़ी ; नाल ; तराजू की लकड़ी जिसके दोनों ओर पलड़े बँधे रहते हैं; डंठल ; मु० —मारना - सौदा देने में चालाकी से कम तौलना, टेनी मारना ।

**डँड़ीर** - स्त्री० [हि] सीधी लकीर ।

**डँड़ोरना** - स० [हिं] उलट-पलटकर खोजना ।

**डंडौत** - पु० [हि] दंडवत ।

**डंबर** - पु० [सं] एक प्रकार का चँदोवा ; आयोजन, विस्तार ; राशि ; सादृश्य ; गर्व ; भारी शब्द ।

**डँवरुआ** - पु० [हिं] एक तरह का वात रोग, गठिया ।

**डँवाँडोल** - वि० [हिं] चंचल , बेचैन ।

**डंस** - पु० [हि] एक बड़ा मच्छर जो पशुओं का रक्त पीता है, डाँस ।

**डँसना** - स० [हि] डसना ।

**डकराना** - अ० [अनु] बैल या भैंसे आदि का ज़ोर से बोलना ।

**डकवाहा** - पु० [हिं] डाकिया, डाक पहुँचानेवाला, पोस्टमैन ।

**डकार** - स्त्री० [अनु] पेट की वायु को मुँह से निकलने की क्रिया ; मु० — न लेना - चुपचाप हज़म कर जाना ।

**डकारना** - अ० [हिं] डकार लेना ; किसीका माल हज़म कर जाना ।

**डकैत** - पु० [हिं] लुटेरा, डाकू ।

**डकैती** - स्त्री० [हिं] डकैत का काम, लूट-मार, छापा ।

**डग** - पु० [हिं] क़दम, पग ।

**डगडगाना** - अ० [हिं] इधर से उधर हिलना ; विचलित होना ।

**डगडौर** - वि० [हिं] डँवाँडोल ।

**डगना** † - अ० [हिं] हिलना, खसकना ।

**डगमगाना** - अ० [हिं] डगडगाना ।

**डगर** - स्त्री० [हिं] रास्ता ।

**डगरा** - पु० [हि] रास्ता, मार्ग ।

**डटना** - अ० [हिं] जमकर खड़ा होना ; किसी काम में लगना, प्रवृत्त होना ; मु० डटकर खाना - खूब पेट-भर खाना ।

**डटाई** - स्त्री० [हिं] डटाने का काम ।

**डटाना** - स० [हिं] सटाना, भिड़ाना ; खड़ा करना ।

**डट्टा** - पु० [हि] हुक्के का नैचा ; काग ।

**डढ़ारा** - वि० [हिं] डाढ़वाला, दाँतवाला ; डाढ़ीवाला ।

**डढ़ियल** - वि० [हिं] लंबी डाढ़ीवाला ।

**डपट** - स्त्री० [हिं] घुड़की ; घोड़े की तेज़ चाल ।

**डपटना** - स० [हिं] डाँटना ।

**डपोरशंख** - पु० [हिं] डींग मारनेवाला, जो कहे बहुत और कर कुछ न सके ; मूर्ख ।

**डफ़** - पु० [अ] चमड़े से मढ़ा बाजा ।

**डफला** - पु० [हिं] डफ़ ।

**डफली** - स्त्री० [हिं] छोटा डफ ; खजरी ; मु० अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग - जितने लोग उतनी रायें ।

**डफालची, डफाली** - पु० [हि] डफला बजानेवाला ।
**डफोरना** † - अ० [अनु] चिल्लाना; ललकारना ।
**डब** - पु० [हिं] जेब, थैला; मु०— पकड़ना - दबाव डालना ।
**डबकना** - अ० [हिं] दर्द करना; आँखो का आँसू से भर जाना ।
**डबडबाना** - अ० [हिं] आँसुओं से आँखे भर आना ।
**डबरा** - पु० [देश] छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा हो ।
**डबला** - पु० [देश] मिट्टी का पुरवा, कुल्हड़ ।
**डबोना** - स० [हि] डुबाना ।
**डब्बा** - पु० [त] ढक्कनदार बरतन; रेल गाड़ी का कोठरीनुमा हिस्सा जो अलग किया जा सके ।
**डब्बू** - पु० [हिं] बड़ा करछुल ।
**डभकना** † - [हिं] आँसू में आँसू भर आना; पानी में डूबना ।
**डभका** - पु० [देश] कुएँ से ताजा निकाला हुआ पानी; आधा भुना हुआ चना या मटर ।
**डभकौरी** - स्त्री० [हिं] उरद की पीठी की बरी ।
**डमर** - पु० [सं] दंगा; भय से पलायन; हलचल; दंगा ।
**डमरु** - पु० [स] एक बाजा ।
**डमरुआ** - पु० [हिं] डॅवरुआ ।
**डमरुमध्य** - पु० [सं] धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भू-खंडो को मिलाता हो ।
**डयन** - पु० [सं] उड़ान; पंख; पालकी ।
**डर** - पु० [हिं] भय, ख़ौफ़, अंदेशा ।
**डरना, डरपना** - अ० [हिं] भयभीत होना ।
**डरपाना** - स० [हि] डराना ।
**डरपोक** - वि० [हिं] कायर ।
**डरवाना** - स० [हिं] डराना ।
**डरावना** - वि० [हि] जिसको देखकर डर लगे, भयानक ।
**डल** - पु० [हि] टुकडा, खंड; झील ।
**डलना** - अ० [हि] डाला जाना; पड़ना ।
**डलिया** - स्त्री० [हि] छोटा टोकरा, दौरी ।
**डली** - स्त्री० [हिं] छोटा टुकड़ा; सुपारी ।
**डसना** - स० [हिं] विषधर जीवो का काटना; डंक मारना, डॅसना ।
**डहकना** - 1. स० [हिं] छल करना, ठगना; 2. अ० जलना; बिलखना; धोखा खाना; फैलना ।
**डहकाना** - स० [हि] खोना; ठगना; जलाना ।
**डहडहा** - वि० [हिं] हरा-भरा; प्रफुल्ल, प्रसन्न ।
**डहडहाना** - अ० [हिं] खिलना; प्रसन्न होना ।
**डहन** - 1. पु० [हिं] डैना, पंख; 2. स्त्री० जलन ।
**डहना** - अ० [हि] जलना ।
**डाँक** - स्त्री० [हि] तांबे या चाँदी का पतला पत्तर ।
**डाँकना** - 1. स० [हिं] फाँदना, लॉघना; 2. अ० वमन करना ।
**डाँगर** - 1. पु० [देश] चौपाया, ढोर; 2. वि० मूर्ख ।
**डाँट** - स्त्री० [हि] शासन; डपट; मु० — में रखना - वश में रखना ।
**डाँटना** - स० [हिं] घुड़कना, डपटना ।
**डाँठ** - पु० [हिं] डंठल ।
**डाँड़** - 1. पु० [हिं] डंडा; गदका; दो खेतों के बीच की सीमा; मेड़; जुरमाना; खोयी या नष्ट हो गयी वस्तु का बदला, हरजाना; 2. स्त्री० पतवार ।

**डाँड़ना** - स० [हिं] जुरमाना करना ; हर-जाना लेना ।
**डाँडर** - पु० [हिं] बाजरे की खूँटी ।
**डाँड़ा** - पु० [हिं] मेंड़ ; सीमा ; छड़ ; डंडा ; गतका ; नाव खेने का डाँड़ ; **यौ०** —मेंड़ा - दो सीमाओं के बीच की मेंड़ ; लगाव ; अनबन ।
**डाँड़ी** - स्त्री० [हिं] टहनी ; लंबी व पतली लकड़ी ; डंडी ।
**डाँवरा** - पु० [देश] लड़का ।
**डाँवरी** - स्त्री० [देश] लड़की ।
**डाँवरू** - पु० [देश] बाघ का बच्चा ।
**डाँवाडोल** - वि० [हिं] डँवाडोल ।
**डाँस** - पु० [हिं] बड़ा मच्छर, डंस ; दंश ।
**डाइन** - स्त्री० [हिं] चुड़ैल ; जादू करनेवाली स्त्री ; कुरूपा और डरावनी स्त्री ।
**डाक** - स्त्री० [हिं] सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमें हर ठिकाने पर बराबर मनुष्यों और घोड़ों के बदले जाने की व्यवस्था हो ; राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने-जाने की व्यवस्था ; चिट्ठी-पत्री ; नीलाम की बोली; **यौ०**—खाना - पोस्ट आफ़िस; —गाड़ी - वह रेलगाड़ी जिसमें डाक भेजने का इंतज़ाम हो और जो खूब तेज़ चलती हो ; —बँगला - सरकार की ओर से बना हुआ परदेसी मुसाफ़िरों और राज्य-कर्मचारियों के ठहरने का मकान ; —मुंशी - डाकघर का अधिकारी ।
**डाकना** - 1. अ० [हिं] कै करना ; 2. स० लाँघना, फाँदना ।
**डाका** - पु० [हिं] लूट-मार, डकैती ; **यौ०** —ज़नी - डाका मारने का काम ; बटमारी ।
**डाकिन, डाकिनी** - स्त्री० [सं] डाइन, चुड़ैल ।
**डाकिया** - पु० [हिं] डकवाहा ।
**डाकी** - 1. स्त्री० [हिं] वमन, कै ; 2. पु० पेटू ; 3. वि० प्रचंड ; पेटू ।
**डाकू** - पु० [हिं] लुटेरा, बटमार ।
**डाकोर** - पु० [हिं] ठाकुर, विष्णुभगवान (गुजरात) ।
**डाक्टर** - पु० [अंग्रे] आचार्य, विद्वान ; वैद्य, चिकित्सक, हकीम ।
**डाट** - स्त्री० [हिं] काग या बोतल आदि का मुँह बंद करने की वस्तु, ठेंपी ।
**डाटना** - स० [हिं] कसकर दबाना ; भिड़ाकर ठेलना ; मुँह बंद करना ; ठाट से पहनना या ओढ़ना ; खूब पेट-भर खाना ।
**डाढ** - स्त्री० [हिं] चबाने के चौड़े दाँत, दाढ़ ; पेड़ों की जटा ।
**डाढ़ना** † - स० [हिं] जलाना ।
**डाढ़ा** - स्त्री० [हिं] दावानल ; आग ; जलन ।
**डाढ़ी** - स्त्री० [हिं] ठुड्डी ; दाढ़ी ; **मु०** **पेट में डाढ़ी होना** - छोटी उम्र में ही बड़ों की-सी बातें करना ।
**डाब, डाभ** - स्त्री० [देश] कच्चा नारियल ; डाभ नामक घास, कुश, दर्भ ।
**डाबर** - 1. पु० [देश] नीची ज़मीन, गड़ही ; 2. वि० मटमैला ।
**डामर** - पु० [सं] एक तरह का तंत्र ; हलचल ; आडंबर ; चमत्कार ; [देश] राल ।
**डायन** - स्त्री० [हिं] डाइन ।
**डायरी** - स्त्री० [अंग्रे] दैनंदिनी, रोज़-नामचा ।
**डार** - स्त्री० [हिं] डाल, शाखा ; फानूस की खूँटी ; क़तार ; फूल की डलिया ।
**डाल** - स्त्री० [हिं] शाखा ।
**डालना** - स० [हिं] नीचे गिराना ; फेंकना ; प्रविष्ट कराना ; रखना ।

**डाली** - स्त्री० [हिं] छोटी शाखा ; डलिया ; सम्मानार्थ भेजे गये फल-फूल या मेवे आदि ।

**डासन** - पु० [हिं] बिछावन, बिछौना ।

**डासना** - 1. स० [हिं] बिछाना, फैलाना ; 2. अ० डसना, काटना ।

**डासनी** - स्त्री० [हिं] चारपाई ; बिछावन ।

**डाह** - स्त्री० [हिं] द्वेष, ईर्ष्या, जलन ।

**डाहना** - स० [हिं] जलाना ; सताना ।

**डिंगर** - पु० [हिं] रोक न माननेवाले चौपायों के गले में बांधी जानेवाली लकड़ी, ठेंगुर ; धूर्त ; नीच व्यक्ति ।

**डिंगल** - 1. वि० [हिं] नीच, दूषित ; 2. स्त्री० राजपूताने के चारणों की काव्य-भाषा ।

**डिंडिम** - पु० [सं] प्राचीन काल का एक बाजा ; डुगडुगी ।

**डिंभ** - पु० [सं] गर्भस्थित छोटा बच्चा ; मूर्ख या जड़ मनुष्य , अभिमान, घमंड ।

**डिंभक** - पु० [सं] छोटा बच्चा ।

**डिकामाली** - स्त्री० [देश] एक पेड़ जिसकी गोंद दवा के काम में आती है ।

**डिगना** - अ० [हिं] हटना ।

**डिगाना** - स० [हिं] हटाना ।

**डिग्गी** - स्त्री० [देश] तालाब ; तबले के साथ बाये हाथ से बजायी जानेवाली डुग्गी ।

**डिठियारा** - वि० [हिं] देखनेवाला ; आँख-वाला ।

**डिठौना** - पु० [हिं] काजल का टीका ।

**डिबिया** - स्त्री० [हिं] छोटा डब्बा ।

**डिब्बा** - पु० [हिं] डब्बा ।

**डिमगना** - स० [देश] मोहित करना ; छलना ।

**डिला** - पु० [देश] गीली भूमि में उत्पन्न होनेवाली मोथा नामक घास ।

**डींग** - स्त्री० [हिं] लंबी-चौड़ी बात, शेखी ; मु० —मारना, हाँकना - लंबी-चौड़ी बाते करना ।

**डीठ, डीठि** - स्त्री० [हि] दृष्टि, नज़र ।

**डील** - पु० [देश] शरीर की ऊँचाई, क़द ; यौ० —डौल - देह की लंबाई-चौड़ाई ; शरीर का ढाँचा ।

**डीह** - पु० [देश] गाँव ; आबादी ; उजड़े हुए गाँव या घर का टीला; ग्राम देवता।

**डुक** - पु० [हि] घूँसा, मुक्का ।

**डुकियाना** - स० [हिं] घूँसे लगाना ।

**डुगडुगाना** - स० [अनु] ढोल या डुग्गी आदि बजाना ।

**डुगडुगिया, डुगडुगी, डुग्गी** - स्त्री० [अनु] चमड़ा मढ़ा हुआ एक बाजा ।

**डुबकी** - स्त्री० [हिं] पानी में डूबने की क्रिया, डुब्बी, गोता ; मु० —मारना - ग़ायब हो जाना ।

**डुबाना** - स० [हि] पानी या तरल पदार्थ में ऊपरी सतह से नीचे पहुँचाना ; बोरना ; कलंकित करना ; बरबाद करना ।

**डुबाव** - पु० [हिं] डूबने-भर की गहराई ।

**डुब्बी** - स्त्री० [हिं] गोता ।

**डुमई** - स्त्री० [देश] कछार में होनेवाला एक प्रकार का चावल ।

**डुलाना** - स० [हिं] हिलाना ; चलाना ; हटाना ।

**डूँगर** - पु० [देश] टीला ; छोटी पहाड़ी ।

**डूँगरी** - स्त्री० [देश] छोटी पहाड़ी ।

**डूबना** - अ० [हिं] पानी या अन्य तरल पदार्थ की ऊपरी सतह के नीचे जाना ; गोता खाना ; कलंकित होना ; बिगड़ना; बरबाद होना ; मारा जाना ; मु० डूबते को तिनके का सहारा - अवलंबहीन को थोड़ा सहारा ।

**डेढ़** - वि० [हिं] एक और आधा ; **मु०**—चावल की खिचड़ी पकाना - अपनी राय सबसे अलग रखना ।

**डेढ़ा** - 1. पु० [हिं] एक पहाड़ा ; 2. वि० डेढ़ ।

**डेढ़ी** - स्त्री० [हिं] फसल कटने के बाद लिये हुए अनाज का ड्योढ़ा लौटाने की शर्त पर किसानों को बोआई के समय अनाज उधार देने की रीति ।

**डेरा** - पु० [हिं] थोड़े समय का निवास ; पड़ाव ; घर, मकान ।

**डेला** - पु० [हिं] आँख की सफ़ेदी ; ढेला ।

**डेवढ़, डेवढ़ा** - 1. वि० [हिं] डेढ़ गुना, डेढ़ा ; 2. पु० क्रम, सिलसिला ।

**डेवढ़ी** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी।

**डेहरी** - स्त्री० [हिं] दहलीज ; अन्न रखने का कच्ची मिट्टी का बड़ा बरतन ।

**डेहल** - पु० [सं] देहली, दहलीज़ ।

**डैना** - पु० [हिं] पंख ।

**डोंगर** - पु० [देश] पहाड़ी ।

**डोंगा** - पु० [देश] बिना पाल की नाव ।

**डोंगी** - स्त्री० [देश] छोटी नाव ।

**डोंड़ा** - पु० [हिं] बीजकोष, फली ।

**डोंड़ी** - स्त्री० [हिं] पोस्ते का फल ; डोगी ; डौड़ी ।

**डोकरा** - पु० [देश] बूढ़ा आदमी ; बाप ।

**डोकरी** - स्त्री० [देश] बुड्ढी स्त्री ।

**डोका** - पु० [हिं] काठ का छोटा बरतन या तेल आदि रखने का कटोरा ; एक तरह का बड़ा घोंघा ।

**डोकी** - स्त्री० [हिं] छोटा डोका ।

**डोम** - पु० [हिं] एक अछूत जाति ।

**डोमनी, डोमिन** - स्त्री० [हिं] डोम जाति की स्त्री ।

**डोर** - स्त्री० [हिं] धागा ; रस्सी ; **मु०**— पर लगाना - रास्ते पर लाना ।

**डोरा** - पु० [हिं] सूत, धागा ; **मु०**—डालना - प्रेम में फँसाना ।

**डोरिया** - पु० [हिं] धारीदार कपड़ा ।

**डोरियाना** - स० [हिं] पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना ।

**डोरी** - स्त्री० [हिं] रस्सी ; **मु०**—खींचना - याद करके अपने पास बुलाना ।

**डोल** - पु० [हिं] पानी खींचने की लोहे की बाल्टी ; हिंडोला, झूला ।

**डोलची** - स्त्री० [हिं] छोटा डोल ।

**डोलना** - अ० [हिं] हिलना ।

**डोला** - पु० [हिं] पालकी ।

**डोलाना** - स० [हिं] हिलाना ।

**डोली** - स्त्री० [हिं] पालकी ।

**डौंड़ी** - स्त्री० [हिं] ढिंढोरा ; डुगडुगी ; **मु०** —देना - डुगडुगी बजाकर सबको सूचित करना ।

**डौआ** - पु० [देश] काठ का चमचा ।

**डौल** - पु० [हिं] ढाँचा ; प्रकार ; उपाय ; **यौ०** —डाल - उपाय ; **मु०** —पर लाना - अपने मतलब पर लाना ; अनुकूल बनाना जिससे उद्देश्य की पूर्ति हो ।

**ड्योढ़ा** - वि० [हि] डेढ़ा ; डेढ़ गुना ।

**ड्योढ़ी** - स्त्री० [हिं] द्वार के पास की भूमि, पौरी ; फाटक ; **यौ०**—वान - दरबान ।

## ढ

**ढंग** - पु० [हिं] तरीक़ा ; तर्ज़ ; पाखंड ; स्थिति ; बनावट ; तदबीर ; **यौ०** रंग-ढंग - लक्षण ; **मु०** —पर चढ़ना - अभिप्राय साधन के अनुकूल होना ; —का - कार्यकुशल ; कामलायक़ ।

**ढंगी** - वि० [हिं] चालाक ; कुशल ।

**ढँढोर** - पु० [हिं] ज्वाला, आग की लपट ।

**ढँढोरची** - पु० [उ] मुनादी करनेवाला ।

**ढँढ़ोरना** - स० [हिं] टटोलकर ढूँढ़ना।
**ढँढोरा** - पु० [हिं] डुगडुगी, मुनादी करने का ढोल।
**ढँढोरिया** - पु० [हिं] डुगडुगी पीटनेवाला; ढँढ़ोरची।
**ढँपना** - अ० [हिं] ढँक जाना।
**ढकना** - 1. पु० [हिं] ढक्कन, ढाँकने या बंद करने की चीज़; 2. अ० छिपना, 3. स० छिपाना, ढाँकना।
**ढकनी** - स्त्री० [हिं] ढक्कन।
**ढका** - पु० [स] तीन सेर का बाट, बड़ा ढोल; [अनु] धक्का, टक्कर।
**ढकेलना** - स० [हिं] ठेलकर गिराना।
**ढकोसना** - स० [हिं] अधिक मात्रा में पीना; जल्दी-जल्दी पीना।
**ढकोसला** - पु० [हिं] पाखंड, आडंबर।
**ढक्कन** - पु० [हिं] ढाँकने की वस्तु।
**ढब** - पु० [हिं] ढंग; बनावट; आदत; युक्ति।
**ढमढम** - पु० [अनु] ढोल या नगारे का शब्द।
**ढयना** - अ० [हिं] दीवार या मकान आदि का गिरना, ढहना।
**ढरकना** † - अ० [हिं] ढलना, गिरकर बह जाना।
**ढरनि** - स्त्री० [हिं] पतन; चित्त की प्रवृत्ति; झुकाव; दयाशीलता।
**ढरहरना** - अ० [हिं] खसकना; ढलना; झुकना।
**ढरहरा** - वि० [हिं] ढालू।
**ढरहरी** † - स्त्री० [देश] पकौड़ी।
**ढरारा** - वि० [हिं] ढलनेवाला, लुढ़कनेवाला; ढालू।
**ढर्रा** - पु० [हिं] तरीक़ा; मार्ग; आदत।
**ढलकना** - अ० [हिं] ढलना; नीचे गिर पड़ना।
**ढलकाना** - स० [हिं] नीचे गिराना।
**ढलना** - अ० [हिं] ढरकना; लुढ़कना; साँचे में ढाला जाना; उँड़ेला जाना; बीतना; मु० जवानी ढलना - युवावस्था का बीत जाना; दिन ढलना - सूर्यास्त होना; साँचे में ढला हुआ - खूब सुंदर और सुडौल।
**ढलवाँ** - वि० [हिं] ढाला हुआ (बरतन); ढालू।
**ढलवाना** - स० [हिं] ढालने का काम कराना।
**ढलाई** - स्त्री० [हिं] ढालने का काम या मजूरी।
**ढलैत** - पु० [हिं] ढाल बाँधनेवाला सिपाही।
**ढवरी** † - स्त्री० [देश] लगन, धुन।
**ढहना** - अ० [हिं] ध्वस्त होना, ढयना।
**ढहराना** † - स० [हिं] लुढ़काना।
**ढहरी** † - स्त्री० [हिं] डेहरी।
**ढहवाना** - स० [हिं] गिरवाना।
**ढाँकना** - स० [हिं] ढकना।
**ढाँचा** - पु० [हिं] साँचा; रूपरेखा।
**ढाँपना** - स० [हिं] ढाँकना।
**ढाँस** - स्त्री० [अनु] सूखी खाँसी खाँसने की आवाज़; ठसक।
**ढाँसना** - अ० [अनु] सूखी खाँसी खाँसना।
**ढाई** - वि० [हिं] दो और आधा, अढाई; मु० —दिन की बादशाहत - कुछ ही दिनों की मौज; दूल्हा बनना।
**ढाक** - पु० [हिं] पलाश का पेड़; बड़ा ढोल; मु०—के तीन पात - सदा एक-सा निर्धन।
**ढाकापाटन** - पु० [हिं] फूलदार महीन कपड़ा।
**ढाटा** - पु० [हिं] दाढ़ी बाधने के कपड़े की पट्टी।
**ढाड़** - स्त्री० [हिं] चिग्घाड़; चीख; दहाड़; मु० —मारना - चिल्लाकर रोना।

**ढाढ़ना** † - स० [हिं] डाढ़ना ।

**ढाढ़स** - पु० [हिं] तसल्ली ; धीरज ; मु०— देना या बँधाना - दुःखी चित्त को मीठे वचनों से शांत करना ।

**ढाढ़ी** - पु० [देश] एक प्रकार के मुसलमान गवैये जो जन्मोत्सव के समय बधाई के गीत गाते हैं ।

**ढाना** - स० [हिं] दीवार या मकान-आदि को गिराना ।

**ढापना** - स० [हिं] ढाँपना ।

**ढाबर** † - वि० [देश] मटमैला, गँदला ।

**ढाबा** - पु० [हिं] ओलती ; रोटी की दूकान ; जाल ।

**ढार** - पु० [हिं] उतार ; ढाँचा ; मार्ग ।

**ढारना** - स० [हिं] गिराकर बहाना ; ढालना ।

**ढारस** - पु० [हिं] ढाढ़स ।

**ढाल** - 1. स्त्री० [सं] हथियार का वार रोकने का साधन जो गैंडे के चमड़े से बनाया जाता है ; 2. पु० उतार ; प्रकार ।

**ढालना** - स० [हिं] उँडेलना ; शराब पीना ; ठेलना ; हिलाना ; साँचे में डालकर बरतन या सिक्के आदि बनाना ; मु० बोतल ढालना - शराब पीना ।

**ढालवाँ** - वि० [हिं] ढालदार ; जो बराबर नीचा होता गया हो ।

**ढालिया** - पु० [हिं] बरतन ढालनेवाला ।

**ढालुआँ, ढालू** - वि० [हिं] ढालवाँ ।

**ढास** - पु० [देश] ठग, लुटेरा ।

**ढासना** - पु० [हिं] सहारा, टेक ; तकिया ।

**ढाहना** - स० [हिं] गिराना, ढाना ।

**ढिंढोरा** - पु० [हिं] डुगडुगिया ; मुनादी ; मु० —पीटना या बजाना - ढोल बजाकर सूचना देना ।

**ढिग** - 1. अव्य० [हिं] पास, नज़दीक ; 2. स्त्री० तट, किनारा ।

**ढिठाई** - स्त्री० [हिं] गुस्ताख़ी ; धृष्टता ; दुस्साहस ।

**ढिबरी** - स्त्री० [हिं] मिट्टी का तेल जलाने की डिबिया ।

**ढिमका** - सर्व० [हिं] अमुक, फलाँ ।

**ढिलाई** - स्त्री० [हिं] सुस्ती ; शिथिलता ; ढीलापन ।

**ढींगर** † - पु० [देश] बड़े डील-डौल का आदमी ; जार, उपपति ।

**ढीठ** - वि० [हिं] धृष्ट ; शोख, निडर ।

**ढीमा** - पु० [हिं] मिट्टी का ढोका ; ईट या पत्थर आदि का टुकड़ा ।

**ढील** - स्त्री० [हिं] शिथिलता ; सुस्ती ; व्यर्थ की देर ; छुट्टी ; मु०— देना - स्वच्छंद होने देना ।

**ढीलना** - स० [हिं] ढीला करना ।

**ढीला** - वि० [हिं] शिथिल ; सुस्त ; शांत ; मु० —पड़ना - सुस्त हो जाना ; लापरवाही करना ।

**ढीह** - पु० [हिं] ऊँचा टीला ; ढूह ।

**ढुंढ** † - पु० [हिं] उचक्का, ठग ।

**ढुंढपाणि** † - पु० [हिं] दंडपाणि, भैरव ।

**ढुकना** - अ० [हिं] प्रवेश करना ; कहीं छिपकर किसी बात का पता लेना ; टूट पड़ना ।

**ढुका** - पु० [हिं] कुछ देखने-सुनने या किसीको पकड़ने आदि के लिए आड़ में छिपने का काम ।

**ढुरकना** - अ० [हिं] लुढ़कना ; गिरना ; झुकना ।

**ढुरना** - अ० [हिं] गिरकर बहना ; हिलना ; लुढ़कना ।

**ढुलकना** - अ० [हिं] ढुरकना ।

**ढुलकाना** - स० [हिं] नीचे गिराना ।

**ढुलना** - अ० [हिं] गिरकर बहना ; कृपालु होना ।

**ढुलवाई, ढुलाई** - स्त्री० [हिं] ढोने का काम या उसकी मजूरी ; ढुलाने का काम या उसकी मजूरी ।
**ढूँका** - पु० [हिं] ढुका ।
**ढूँढ़** - स्त्री० [हिं] खोज, तलाश ।
**ढूँढ़ना** - स० [हिं] खोजना ।
**ढूह, ढूहा** - पु० [हि] टीला ; ढेर ।
**ढेंक** - स्त्री० [हिं] एक चिड़िया जो जलाशय के किनारे रहती है ।
**ढेंकली** - स्त्री० [हिं] सिंचाई का एक यंत्र ; अनाज कूटने का यंत्र, ढेंकी ।
**ढेंका** - पु० [हिं] कोल्हू का बाँस ; बड़ी ढेंकी ।
**ढेंकी** - स्त्री० [हिं] अनाज कूटने का लकड़ी का बना एक यंत्र ; [सं] नृत्य का एक प्रकार ।
**ढेंकुली** - स्त्री० [हि] ढेकली ।
**ढेंढ** † - पु० [देश] कौवा ; एक नीच जाति; कपास आदि का ढोड़ा , मूर्ख, जड़ ।
**ढेंढर** - पु० [हि] टेंटर ।
**ढेंढी** - स्त्री० [हि] कपास या पोस्ते का ढोड़ा।
**ढेबरी** - स्त्री० [हि] ढिबरी ।
**ढेर** - पु० [हिं] राशि, अंबार; **मु०**—करना - मारकर गिरा देना ।
**ढेरी** - स्त्री० [हिं] ढेर, समूह ।
**ढेलवाँस** - स्त्री० [हिं] रस्सी का एक फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं, गोफन ।
**ढेला** - पु० [हिं] ईंट, मिट्टी या पत्थर आदि का टुकड़ा ; **यौ०** —चौथ - भाद्र शुक्ल चतुर्थी जब कि चंद्रमा को देखने पर उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में लोग एक दूसरे के घर पर ढेला फेंकते हैं।
**ढैया** - पु० [हिं] ढाई सेर का बाट ; ढाई का पहाड़ा ; शनैश्चर का एक राशि पर स्थिर रहने का ढाई वर्ष का काल ।
**ढोंकना** - स० [अनु] पीना ; पी जाना ।
**ढोंग** - पु० [हिं] पाखंड, आडंबर ; छल ।
**ढोंगी** - वि० [हिं] पाखंडी, ढकोसलेबाज़ ।
**ढोंढ़** - पु० [हि] कपास या पोस्ते आदि का ढोड़ा ।
**ढोंढी** - स्त्री० [हिं] नाभि ।
**ढोटा** - पु० [देश] लड़का ।
**ढोटी** - स्त्री० [देश] लड़की ।
**ढोना** - स० [हिं] बोझ लादकर ले जाना ।
**ढोर** - पु० [हि] जानवर, मवेशी ।
**ढोरना** † - स० [हिं] ढरकाना ।
**ढोरी** - स्त्री० [हिं] ढरकाने की क्रिया या भाव ; रट ; लगन ।
**ढोल** - स्त्री० [हिं] चमड़े से मढा हुआ एक बाजा ; **मु०**—पीटना या बजाना - किसी बात को प्रकट कर देना ।
**ढोलक** - स्त्री० [हिं] एक तरह का ढोल ।
**ढोलकिया** - पु० [हिं] ढोलक बजानेवाला ।
**ढोलकी** - स्त्री० [हि] छोटा ढोलक ।
**ढोलना** - 1. पु० [हिं] गले में पहनने का ढोलक के आकार का छोटा जंतर; पालना ; 2. स० ढरकाना ; ढुलाना ।
**ढोलनी** - स्त्री० [हिं] छोटा पालना ।
**ढोला** - पु० [हिं] एक कीड़ा; हद का निशान; एक तरह का गीत ।
**ढोलिनी** - स्त्री० [हिं] ढोल बजानेवाली स्त्री।
**ढोलिया** - पु० [हिं] ढोल बजानेवाला ।
**ढोली** - स्त्री० [हि] दो सौ पानों की गड्डी ; हँसी, ठट्ठा ।
**ढोव** - पु० [हिं] भेंट, नज़राना।
**ढोवना** - स० [हिं] ढोना।
**ढौरी** - स्त्री० [हिं] धुन, लगन ।

# त

**तंग** - 1. पु० [फ़ा] घोड़ो की ज़ीन कसने का तस्मा ; 2. वि० आजिज़, दुःखी ; परेशान ; संकरा, संकीर्ण; **यौ०** —दस्त-

कंजूस ; ग़रीब ; — दस्ती - ग़रीबी ; —दिल - कंजूस ; —हाल - ग़रीब, विपद्‌ग्रस्त ; **मु०** —आना - घबरा जाना ; ऊब जाना ; —करना - सताना ; हाथ तंग होना - पास में पैसा न होना।

**तंगी** - स्त्री० [फ़ा] संकोच ; तकलीफ़ ; ग़रीबी ; कमी ; संकीर्णता ; चुस्ती।

**तंज़ेब** - स्त्री० [फ़ा] महीन और बढ़िया मलमल।

**तंडुल** - पु० [सं] चावल ; एक सरसों की तौल।

**तंत** - पु० [हि] तंतु ; तत्त्व ; तंत्र ; तंत्री।

**तंतरी** - पु० [हिं] तंत्री।

**तंतु** - पु० [सं] सूत ; रेशम ; ग्राह ; संतान ; परमेश्वर ; मकड़ी का जाला ; **यौ०** —वाय - जुलाहा ; ताँत ; मकड़ी।

**तंत्र** - पु० [स] ताँत ; सूत ; झाड़ने-फूँकने की क्रिया ; व्यवहार ; शासन-प्रबंध ; गुप्त विधि ; अधीनता।

**तंत्री** - 1. स्त्री० [सं] वीणा व सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार ; देह की नस ; रस्सी ; नाड़ी ; 2. पु० वीणा व सितार आदि बजानेवाला ; तंत्रशास्त्र का अनुसरण करनेवाला।

**तंदुरुस्त** - वि० [फ़ा] स्वस्थ।

**तंदुरुस्ती** - स्त्री० [फ़ा] स्वास्थ्य।

**तंदूर** - पु० [फ़ा] मोटी रोटियाँ पकाने का एक विशेष प्रकार का मिट्टी का चूल्हा।

**तंदेही** - स्त्री० [फ़ा] मेहनत ; ताकीद।

**तंद्रा** - स्त्री० [सं] ऊँघ ; क्लांति ; हल्की बेहोशी।

**तंद्रालु** - वि० [सं] जिसे तंद्रा आती हो।

**तंद्रि, तंद्री**- 1. स्त्री० [सं] तंद्रा ; 2. वि० क्लान्त।

**तंबाकू** - पु० [हिं] एक नशीली पत्ती, सुरती।

**तँबिया** - पु० [हिं] ताँबे का बरतन ; तसला

**तंबीह** - स्त्री० [अ] सूचना ; नसीहत ; सज़ा ; चेतावनी।

**तंबू** - पु० [हिं] कपड़े या टाट आदि को खंभों पर तानकर बनाया गया घर, खेमा, डेरा।

**तंबूर** - पु० [अ] एक प्रकार का बाजा, तंबूरा।

**तंबूरची** - पु० [उ] तंबूर बजानेवाला।

**तंबूरा** - पु० [हिं] एक प्रकार का बाजा।

**तंबोल** - पु० [हिं] तांबूल, पान।

**तंबोलिन** - स्त्री० [हिं] पान बेचनेवाली।

**तंबोली** - पु० [हिं] पान बेचनेवाला, बरई।

**तअज्जुब** - पु० [फ़ा] आश्चर्य।

**तअद्दी** - स्त्री० [अ] ज़बरदस्ती।

**तअन** - पु० [अ] ताना, व्यंग।

**तअफ़्फुन** - पु० [अ] दुर्गंध।

**तअब** - पु० [अ] परिश्रम ; कष्ट ; थकावट।

**तअम्मुक़** - पु० [अ] गंभीरता, गहराई।

**तअय्युन** - पु० [अ] नियुक्ति।

**तअर्रुज़** - पु० [अ] उज्र, विरोध ; रोकटोक।

**तअल्लुक़** - पु० [अ] सम्बन्ध, लगाव।

**तअल्लुक़ा** - पु० [अ] बड़ा इलाक़ा ; ताल्लुका।

**तअश्शुक़** - पु० [अ] इश्क़ या प्रेम करना।

**तअस्सुब** - पु० [अ] पक्षपात ; धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन।

**तआम** - पु० [अ] भोजन ; खाद्यपदार्थ।

**तआरुफ़** - पु० [अ] जान पहचान ; परिचय।

**तआला** - वि० [अ] सर्वश्रेष्ठ।

**तइनात** - वि० [अ] तैनात।

**तई** - 1. प्रत्य० [हिं] से, प्रति; को; 2. अव्य० के लिए, के वास्ते।

**तउ** - अव्य० [हिं] तब; त्यों।

**तऊ** - अव्य० [हिं] तो भी, तथापि।

**तक** - 1. अव्य० [हिं] पर्यंत, किसी काम या काल की सीमा बतानेवाला शब्द; 2. स्त्री० टक, निर्निमेष दृष्टि।

**तक़दीर** - स्त्री० [अ] भाग्य।

**तक़द्दुम** - पु० [अ] प्रधानता।

**तकन** - स्त्री० [हिं] ताकने की क्रिया या भाव।

**तकना** - स० [हिं] देखना, निहारना।

**तक़फ़ीर** - स्त्री० [अ] किसीको काफ़िर कहना या ठहराना; पापों का प्रायश्चित्त।

**तकबीर** - स्त्री० [अ] किसीको बड़ा मानने या कहने का भाव।

**तकब्बुर** - पु० [अ] अभिमान।

**तकमा** - पु० [हिं] तमगा; रस्सी की खिसकनेवाली गाँठ।

**तकमील** - स्त्री० [अ] पूर्णता।

**तकरार** - स्त्री० [अ] किसी बात को बार-बार कहना; हुज्जत; झगड़ा, विवाद।

**तकरारी** - वि० [हिं] झगड़ालू।

**तक़रीज़** - स्त्री० [अ] आलोचना; जीवित व्यक्ति की वह प्रशंसा जो ग्रंथ के अंत में की जाती है।

**तक़रीब** - स्त्री० [अ] क़रीब या पास होना; नज़दीकी; कोई शुभ अवसर जब बहुत-से लोग जमा हों।

**तक़रीबन** - क्रि० [अ] क़रीब-क़रीब, प्रायः।

**तक़रीम** - स्त्री० [अ] प्रतिष्ठा।

**तक़रीर** - स्त्री० [अ] बातचीत; व्याख्यान।

**तक़रीरन** - क्रि० [अ] मौखिक; ज़बानी।

**तक़रीरी** - वि० [अ] विवादग्रस्त; ज़बानी।

**तक़र्रुब** - पु० [अ] निकटता।

**तक़र्रुरी** - स्त्री० [अ] नियुक्ति।

**तकला** - पु० [हिं] टेकुआ, चर्खे में लगी लोहे की सलाई।

**तकली** - स्त्री० [हिं] छोटा तकला।

**तक़लीद** - स्त्री० [अ] नक़ल; अन्धानुकरण।

**तक़लीदी** - वि० [अ] नक़ल किया हुआ; जाली।

**तकलीफ़** - स्त्री० [अ] कष्ट, दुःख, क्लेश।

**तक़लीब** - स्त्री० [अ] उलटना-पलटना; अक्षरों में परिवर्तन करना।

**तकल्लुफ़** - पु० [अ] केवल दिखावे के लिए कष्ट उठाकर कोई काम करना, शिष्टाचार।

**तक़वियत** - स्त्री० [अ] ताक़त पहुँचाना; समर्थन; तसल्ली।

**तक़सीम** - स्त्री० [अ] बँटाई; गणित में भाग देने की क्रिया; यौ० —नामा - वह पत्र जिसपर बँटवारे का विवरण और शर्तें लिखी हों।

**तक़सीमी** - वि० [अ] जिसका बँटवारा हो सके या होने को हो।

**तक़सीर** - स्त्री० [अ] कमी; भूल; गुनाह।

**तक़ाज़ा** - पु० [अ] ऐसी चीज़ माँगना जिसे पाने का अधिकार हो, तगादा।

**तक़ाज़ाई** - पु० [अ] तक़ाज़ा करनेवाला।

**तकान** - पु० [उ] थकान, थकावट।

**तकाना** - स० [हिं] दिखाना, देखने में प्रवृत्त करना।

**तक़ावी** - स्त्री० [अ] वह क़र्ज़ जो किसानों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनाने के लिए दिया जाए।

**तकिया** - पु० [फ़ा] सिर के नीचे रखने की चीज़; वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फ़क़ीर रहता हो; यौ० —कलाम - वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों के मुँह से प्रायः निकला करता हो।

**तक़ी** - वि० [अ] धर्मनिष्ठ ।
**तकुआ** - पु० [हिं] तकला ।
**तक्र** - पु० [सं] मट्ठा, छाछ ।
**तक्षक** - पु० [सं] नागों का प्रसिद्ध राजा ; विश्वकर्मा ; सूत्रधार ; बढ़ई ।
**तख़फ़ीफ़** - स्त्री० [अ] कमी ।
**तख़मीनन** - क्रि० [अ] अंदाज़ से; लगभग ।
**तख़मीना** - पु० [अ] अंदाज़, अनुमान ।
**तख़मीर** - स्त्री० [अ] सड़ाने या ख़मीर उठाने की क्रिया ।
**तख़रीज़** - स्त्री० [अ] अलग करना ।
**तख़लिया** - पु० [अ] निर्जन स्थान ।
**तख़लीस** - स्त्री० [अ] छुटकारा ।
**तख़ल्लुस** - पु० [अ] कवियों का उपनाम ।
**तख़सीस** - स्त्री० [अ] ख़ास बात, विशेषता ।
**तख़ारुज़** - पु० [अ] जायदाद का वारिसों में बँटवारा ।
**तख़्त** - स्त्री० [फ़ा] सिंहासन ; बड़ी चौकी ; **यौ०** —गाह - राजधानी ; —ताऊस - मोर के आकार का सिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था ; —नशीन - सिंहासन पर बैठा हुआ ; —पोश - चौकी पर बिछाने की चादर ; चौकी ; —बंदी - तख़्तों की बनी हुई दीवार ।
**तख़्ता** - पु० [फ़ा] लकड़ी की पट्टी, पल्ला ।
**तख़्ती** - स्त्री० [फ़ा] छोटा तख़्ता, पटिया ।
**तख़ैयुल** - पु० [अ] विचार करना ।
**तगड़ा** - वि० [हिं] मोटा-ताज़ा ; मज़बूत ।
**तगण** - पु० [सं] तीन वर्णों का एक मात्रिक वर्ण ।
**तग़मा** - पु० [अ] तमग़ा, पदक ; मोहर ; राजाज्ञा ।
**तग़य्युर** - पु० [अ] बहुत बड़ा परिवर्तन ।
**तगाई** - स्त्री० [हिं] तागने का काम या मजूरी ।
**तगाड़ा** - पु० [हिं] वह तसला या बर्तन जिसमें गारा उठाया जाता है ।
**तगादा** - पु० [उ] तक़ाज़ा ।
**तग़ाफ़ुल** - पु० [अ] ग़फ़लत ; उपेक्षा ।
**तग़ार** - पु० [अ] वह स्थान जहाँ गारा बनाया जाय ।
**तचना** - अ० [हिं] तपना ।
**तचा** - स्त्री० [हिं] चमड़ा, खाल, त्वचा ।
**तच्छिन**† - क्रि० [हिं] उसी समय, तत्क्षण ।
**तज** - पु० [हिं] तमाल और दालचीनी की जाति का मझोले क़द का एक सदाबहार पेड़ ।
**तज़किरा** - पु० [अ] चर्चा, ज़िक्र ।
**तज़दीद** - स्त्री० [अ] फिर से नया करना ।
**तजन** - पु० [सं] त्याग ; कोड़ा या चाबुक ।
**तजना** - स० [हिं] त्यागना, छोड़ना ।
**तजनीस** - स्त्री० [अ] समानता ; एक शब्दालंकार ।
**तज़बज़ुब** - पु० [अ] असमंजस, सोच-विचार ।
**तजम्मुल** - पु० [अ] शृंगार, सजावट ; शान-शौक़त ।
**तजरबा, तजरुबा** - पु० [अ] अनुभव ; **यौ०** तजरबेकार - अनुभवी ।
**तजल्ली** - स्त्री० [अ] प्रकाश, रोशनी ; दिव्य ज्योति का दर्शन ; झाँकी ।
**तजवीज़** - स्त्री० [अ] राय ; फ़ैसला ; बंदोबस्त ; **यौ०**—सानी - मुक़द्दमे का फिर से विचार ।
**तजस्सुस** - पु० [अ] तलाश ।
**तज़हीज़** - स्त्री० [अ] विवाह में दहेज की व्यवस्था ।
**तजारत** - स्त्री० [अ] व्यापार, रोज़गार ।
**तजावुज़** - पु० [अ] सीमा का उल्लंघन ।

**तजाहुल** - पु० [अ] जान-बूझकर अनजान बनना।

**तजि** - क्रि० [हिं] त्यागकर, छोड़कर।

**तज़ीअ** - स्त्री० [अ] नष्ट करना।

**तजुरबा** - पु० [अ] अनुभव; **यौ०** तजुरबेकार - अनुभवी।

**तज्जनित, तज्जन्य** - वि० [सं] उससे उत्पन्न।

**तज्जार** - पु० [अ] ताजिर का बहु०।

**तंटक** - पु० [हिं] कर्णफूल, कान का एक गहना।

**तट** - 1. पु० [सं] किनारा; पहाड़ की ढाल; क्षितिज; क्षेत्र; 2. क्रि० समीप, नज़दीक, **यौ०** —स्थ - निकटस्थ; निष्पक्ष; उदासीन।

**तटनी** - स्त्री० [सं] नदी।

**तटाक** - पु० [स] तालाब।

**तटिनी** - स्त्री० [सं] नदी।

**तटी** - स्त्री० [सं] किनारा; नदी; समाधि।

**तड़** - पु० [हिं] समाज में हो जानेवाला विभाग; पक्ष; [अनु] किसी चीज़ के गिरने से होनेवाला शब्द।

**तड़क** - स्त्री० [अनु] तड़कने की क्रिया या भाव; अचार या चटनी-जैसे चटपटे पदार्थ।

**तड़कना** - अ० [अनु] तड़ शब्द के साथ टूटना-फूटना।

**तड़का** - पु० [हिं] सवेरा; बघार।

**तड़कीला** - वि० [हिं] चमकीला; भड़कीला।

**तड़तड़ाना** - 1. अ० [अनु] तड़तड़ शब्द होना; 2. स० तड़तड़ शब्द करना।

**तड़प** - स्त्री० [हिं] व्याकुलता।

**तड़पना** - अ० [हिं] छटपटाना, व्याकुल होना।

**तड़फड़ाना** - 1. अ० [हिं] तड़पना; 2. स० तड़पाना।

**तड़ाक** - क्रि० [अनु] तड़ शब्द के साथ; जल्दी से।

**तड़ाका** - 1. पु० [अनु] तड़ शब्द; 2. क्रि० चटपट, जल्दी से।

**तड़ाग** - पु० [सं] तालाब; हिरन फँसाने का फंदा।

**तड़ातड़** - अव्य० [अनु] तड़तड़ शब्द के साथ; जल्दी-जल्दी; **मु०** —जवाब देना - निस्संकोच होकर या बेधड़क जवाब देना।

**तड़ित** - स्त्री० [सं] बिजली।

**तड़ी** - स्त्री० [हिं] चपत, थप्पड़।

**तत्** - पु० [सं] ब्रह्म या परमात्मा का एक नाम।

**तत** - 1. पु० [सं] वायु; विस्तार; पिता; 2. वि० तपा हुआ; **यौ०** —सार - तपाने का स्थान।

**ततबीक़** - स्त्री० [अ] दो चीज़ों की तुलना करना।

**तताई** - स्त्री० [हिं] गरमी, गरम होने की क्रिया या भाव।

**ततारना** - स० [हिं] गरम जल से धोना; धार देकर धोना।

**तति** - स्त्री० [सं] श्रेणी; ताँता; समूह; विस्तार।

**ततुवाऊ** † - पु० [हिं] तंतुवाय।

**ततैया** - 1. स्त्री० [हिं] बर्र, भिड़; 2. वि० तेज़, चालाक।

**तत्काल** - क्रि० [सं] तुरंत।

**तत्कालीन** - वि० [सं] उसी समय का।

**तत्क्षण** - क्रि० [सं] फ़ौरन; उसी क्षण।

**तत्त** - पु० [हिं] तत्त्व।

**तत्ता** - वि० [सं] गरम; **मु०**—तवा - लड़ाका।

**तत्पर** - वि० [सं] तैयार, मुस्तैद।

**तत्परता** - स्त्री० [सं] मुस्तैदी।

**तत्पुरुष** - पु० [सं] एक प्रकार का समास।
**तत्र** - क्रि० [सं] वहाँ, उस जगह।
**तत्रभवान** - पु० [सं] पूज्य, माननीय।
**तत्रापि** - अव्य० [सं] तथापि, तो भी।
**तत्त्व** - पु० [सं] यथार्थता; सार; स्वरूप; ब्रह्म; नृत्य; त्रिगुण; कारण; **यौ०**—ज्ञ - ब्रह्मज्ञानी; दार्शनिक; —ज्ञान - ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान।
**तत्त्वावधान** - पु० [सं] देख-रेख; जाँच-पड़ताल।
**तत्सम** - पु० [सं] किसी भाषा का (विशेषतः संस्कृत का) वह शब्द जो भाषा में ज्यों का त्यों प्रयुक्त होता है।
**तथा** - अव्य० [सं] और; ऐसे ही।
**तथापि** - अव्य० [सं] तो भी।
**तथास्तु** - [सं] ऐसा ही हो, एवमस्तु।
**तथैव** - अव्य० [सं] उसी प्रकार।
**तथ्य** - पु० [सं] यथार्थता, सत्य।
**तदनंतर** - क्रि० [सं] उसके बाद।
**तदनुसार** - क्रि० [सं] उसके मुताबिक़।
**तदपि** - अव्य० [सं] तो भी, तथापि।
**तदबीर** - स्त्री० [अ] उपाय।
**तदरीज** - स्त्री० [अ] क्रम-क्रम से घटने-बढ़ने का भाव।
**तदरीस** - स्त्री० [अ] पढ़ाना; शिक्षा देना।
**तदा** - क्रि० [सं] उस समय, तब।
**तदाकार** - वि० [सं] उसी आकार का; तन्मय।
**तदाबीर** - स्त्री० [अ] तदबीर का बहु०।
**तदारुक** - पु० [अ] दुर्घटना की जाँच; दुर्घटना को रोकने का प्रबंध; सज़ा।
**तदुपरांत** - क्रि० [सं] उसके पीछे, उसके बाद।
**तद्गत** - वि० [सं] उससे संबंध रखनेवाला; उसमें समाया हुआ।
**तद्धित** - पु० [सं] एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं; इस प्रकार का प्रत्यय लगाकर बनाया हुआ शब्द।
**तद्भव** - पु० [सं] किसी भाषा के (विशेषतः संस्कृत के) शब्द का बदला हुआ रूप, अपभ्रंश।
**तद्रूप** - वि० [सं] उसी रूप का, उसी प्रकार का।
**तन** - 1. पु० [सं] शरीर; 2. क्रि० तरफ़, ओर; बदन।
**तनक** - वि० [हिं] तनिक।
**तनक़ीह** - स्त्री० [अ] जाँच; विवादग्रस्त विषयों का निश्चय।
**तनख़ाह, तनख़्वाह** - स्त्री० [फ़ा] मासिक वेतन; तलब।
**तनज़** - पु० [अ] ताना; व्यंग्य।
**तनज़न** - क्रि० [अ] ताने के तौर पर, व्यंग्य-पूर्वक।
**तनज़ीम** - स्त्री० [अ] संघटन।
**तनज़ेब** - स्त्री० [फ़ा] महीन व चिकनी मलमल।
**तनज़्ज़ुल** - पु० } - [अ] ह्रास, कमी, पद
**तनज़्ज़ुली** - स्त्री० } से गिरना।
**तनतना** - पु० [हिं] दबदबा; ग़ुस्सा।
**तनतनाना** - स० [हिं] शान दिखाना; ग़ुस्सा करना।
**तनदेह** - वि० [फ़ा] ख़ूब जी लगाकर काम करनेवाला।
**तनदेही** - स्त्री० [फ़ा] मेहनत; चेतावनी।
**तनना** - अ० [हिं] खिंचा रहना; रुष्ट होना। **यौ०** तनातनी - आपस का मन-मुटाव।
**तनपरवर** - वि० [फ़ा] स्वार्थी।
**तनपोषक** - वि० [हिं] स्वार्थी।
**तनफ़्फ़ुर** - पु० [अ] नफ़रत।
**तनमय** - वि० [हिं] लीन, तन्मय।

**तनय** - पु० [सं] पुत्र, बेटा।
**तनया** - स्त्री० [सं] पुत्री, बेटी।
**तनसीख़** - स्त्री० [अ] रद्द करना।
**तनसीफ़** - स्त्री० [अ] आधा-आधा करना।
**तनसुख** - पु० [हिं] पुरानी चाल का बढ़िया फूलदार कपड़ा।
**तनहा** - वि० [फ़ा] अकेला।
**तनहाई** - स्त्री० [फ़ा] अकेलापन।
**तना** - पु० [फ़ा] पेड़ का धड़।
**तनाज़ा** - पु० [अ] झगड़ा-बखेड़ा, शत्रुता।
**तनाब** - स्त्री० [अ] खेमा बाँधने की रस्सी।
**तनाव** - पु० [हिं] तनने का भाव या क्रिया, खिंचाव; रस्सी।
**तनावर** - वि० [फ़ा] मोटा-ताज़ा।
**तनावुल** - पु० [अ] लेना; भोजन करना।
**तनासुख़** - पु० [अ] विनाश।
**तनासुब** - पु० [अ] मुनासिबत, उपयुक्तता।
**तनासुल** - पु० [अ] संतान उत्पन्न करना।
**तनिक** - 1. वि० [हिं] थोड़ा; 2. क्रि० ज़रा।
**तनु** - 1. वि० [सं] दुबला-पतला; थोड़ा; कोमल; सुंदर; 2. स्त्री० शरीर, देह; यौ०—ज - पुत्र; —जा - पुत्री;—धारी - देहधारी; —राग - उबटन, अंगराग; —रुह - रोआँ, रोम; —वात - एक नरक; वह स्थान जहाँ कम हवा हो।
**तनूमंद** - वि० [फ़ा] मोटा-ताज़ा; संपन्न।
**तनूर** - पु० [अ] तंदूर।
**तनूरुह** - पु० [सं] रोआँ, पंख; लड़का।
**तन्दुरुस्त** - वि० [फ़ा] नीरोग, स्वस्थ।
**तन्दुरुस्ती** - स्त्री० [फ़ा] आरोग्य, स्वास्थ्य।
**तन्दूरी** - वि० [फ़ा] तन्दूर में पकी हुई (रोटी)।
**तन्देही** - स्त्री० [फ़ा] तनदेही।
**तन्नाज़** - वि० [अ] इशारे से बातें करनेवाला।
**तन्नाना** - अ० [हिं] अकड़ना; क्रुद्ध होना।
**तन्मय** - वि० [सं] लीन।
**तन्मयता** - स्त्री० [सं] लीनता।
**तन्मात्र** - पु० } - [सं] पंचभूतों का आदि
**तन्मात्रा** - स्त्री० } और सूक्ष्म रूप।
**तन्वी** - 1. वि० [सं] पतले और कोमल अंगोवाली; 2. कृशांगी; कोमलांगी।
**तप** - पु० [सं] तपस्या; ताप; गरमी; [फ़ा] ज्वर, बुख़ार।
**तपन** - पु० [सं] ताप; जलन; गर्मी; सूर्य।
**तपना** - अ० [हिं] ताप सहना; कष्ट झेलना।
**तपश्चर्या** - स्त्री० [सं] तप, तपस्या।
**तपसाली, तपसी** - पु० [हिं] तपस्वी।
**तपस्या** - स्त्री० [सं] तप; साधना।
**तपस्विता** - स्त्री० [सं] तपस्वी होने की अवस्था या भाव।
**तपस्विनी** - स्त्री० [सं] तप करनेवाली; जटामासी।
**तपस्वी** - 1. वि० [सं] तप करनेवाला; दीन, बेचारा; 2. पु० संन्यासी; दरिद्र मनुष्य।
**तपाक** - पु० [फ़ा] आवेश; जोश; वेग; तेज़ी; प्रेम।
**तपाना** - स० [हिं] गरम करना; दुःख देना।
**तपाव** - पु० [हिं] गरम करने की क्रिया।
**तपित** - वि० [सं] तपा हुआ।
**तपिश** - स्त्री० [फ़ा] गरमी; तपन।
**तपी** - पु० [सं] तप करनेवाला, तपस्वी।
**तपेदिक़** - पु० [फ़ा] राजयक्ष्मा, क्षयरोग पुराना ज्वर।
**तपोधन, तपोनिधि, तपोनिष्ठ** - पु० [सं] तपस्वी।
**तपोबल** - पु० [सं] तप द्वारा प्राप्त शक्ति

**तपोभंग** - पु० [सं] तपश्चर्या का भंग।

**तपोभूमि** - स्त्री० [सं] तप करने का स्थान।

**तपोराशि** - पु० [सं] बहुत बड़ा तपस्वी।

**तपोवन** - पु० [सं] तपस्या करने के योग्य वन।

**तपौनी** - स्त्री० [हिं] मुसाफ़िरों को लूटने पर ठगों का देवी को प्रसाद चढ़ाने का रिवाज़।

**तप्त** - वि० [सं] गरम; दुखित; तपाया या तपा हुआ; क्रुद्ध।

**तफ़ज़ील** - स्त्री० [अ] श्रेष्ठ मानना या ठहराना; तुलना।

**तफ़ज़्ज़ुल** - पु० [अ] श्रेष्ठता; बड़प्पन।

**तफ़्तगी** - स्त्री० [फ़ा] गरमी; उत्साह।

**तफ़्ता** - वि० [फ़ा] बहुत गरम या जलता हुआ।

**तफ़्तीश** - स्त्री० [अ] जाँच-पड़ताल।

**तफ़रक़ा** - पु० [अ] फ़र्क़; फ़ासला; वियोग।

**तफ़रीक़** - स्त्री० [अ] बँटवारा, अलगाव।

**तफ़रीह** - स्त्री० [अ] खुशी; सैर।

**तफ़वीज़** - स्त्री० [अ] सौंपना।

**तफ़सीर** - स्त्री० [अ] वर्णन; क़ुरान की टीका।

**तफ़सील** - स्त्री० [अ] विस्तृत वर्णन; टीका; कैफ़ियत; ब्योरा; **यौ०**— वार - विस्तारपूर्वक, ब्योरेवार।

**तफ़ाख़ुर** - पु० [अ] शेखी मारना; फ़ख़्र करना।

**तफ़ावत** - पु० [अ] फ़ासला, अन्तर।

**तफ़ासीर** - स्त्री० [अ] तफ़सीर का बहु०।

**तफ़ूलियत** - स्त्री० [अ] लड़कपन।

**तबंचा** - पु० [फ़ा] छोटी बंदूक़, पिस्तौल।

**तब** - अव्य० [हिं] उस समय; बाद में; इस कारण से।

**तबअ** - स्त्री० [अ] प्रकृति; तबीयत; मोहर लगाने या छापने की क्रिया; **यौ०**— आज़मायी - बुद्धि-बल की परीक्षा।

**तबई** - वि० [अ] प्राकृतिक; असली।

**तबक़** - पु० [अ] लोक; तल; परत, तह; चाँदी सोने को पीटकर पतला बनाया हुआ वरक़; चौड़ी और छिछली थाली; घोड़े की एक बीमारी।

**तबक़ा** - पु० [अ] विभाग; तह; लोक; आदमियो का गरोह; रुतबा; भूमि-खंड; तख़्ता; मंज़िल; **मु०**—उलट जाना - तबाह हो जाना।

**तबदील** - 1. वि० [अ] बदला हुआ; 2. स्त्री० बदलाव; स्थान या पद-परिवर्तन।

**तबदीली** - स्त्री० [अ] बदली।

**तबर, तबरा** - पु० [फ़ा] कुल्हाड़ी के आकार का एक अस्त्र; **यौ०**—ज़न - तबर से लड़नेवाला; सैनिक; लकड़हारा।

**तबर्रा** - पु० [फ़ा] घृणा; घृणासूचक वे वाक्य जो शीया लोग मुहम्मद साहब के कुछ मित्रों के बारे में कहते हैं।

**तबर्रुक** - पु० [अ] किसीसे बरकत या बरकतवाली कोई चीज़ लेना; प्रसाद।

**तबल** - पु० [अ] बड़ा ढोल; नगाड़ा।

**तबलची** - पु० [अ] तबला बजानेवाला, तबलिया।

**तबला** - पु० [अ] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा; **मु०**—खनकना - नाच-रंग या गाना-बजाना होना।

**तबलिया** - पु० [हिं] तबला बजानेवाला, तबलची।

**तबलीग़** - स्त्री० [अ] धर्म-प्रचार।

**तबस्सुम** - पु० [अ] मंदहास, मुस्कुराहट; कलियो का विकसित होना, खिलना।

**तबस्सुर** - पु० [अ] ध्यानपूर्वक देखना।

**तबाक़** - पु० [अ] एक प्रकार की बड़ी थाली।

**तबादला** - पु० [अ] बदला जाना; किसी कर्मचारी का स्थान या पद-परिवर्तन।

**तबार** - पु० [फ़ा] जाति; परिवार।

**तबाशीर** - स्त्री० [फ़ा] बंशलोचन नामक औषधि।

**तबाह** - वि० [फ़ा] जो बिलकुल ख़राब हो गया हो, नष्ट, बरबाद।

**तबाही** - स्त्री० [फ़ा] नाश, बरबादी।

**तबीअत** - स्त्री० [अ] तबीयत, जी, मन, दिल; समझ; यौ०—दार - समझदार; भावुक; रसिक।

**तबीब** - पु० [अ] वैद्य, हकीम।

**तबीयत** - स्त्री० [अ] तबीअत; मु०—आना - प्रेम होना; आसक्त होना;—पर ज़ोर डालना - ख़ास तौर पर ध्यान देना; — फिरना - जी हटना;—बहलाना - चिन्तामुक्त होना; उदासी दूर होना; —फड़क उठना - बहुत प्रसन्न होना; —हरी होना - स्वस्थ होना; प्रसन्न होना।

**तबेला** - पु० [अ] अस्तबल, घुड़साल।

**तभी** - अव्य० [हिं] उसी समय; इसीलिए।

**तमंचा** - पु० [फ़ा] छोटी बंदूक़, पिस्तौल, तबंचा।

**तम** - पु० [सं] अंधकार; पैर का अगला भाग; तमोगुण; राहु; तमाल वृक्ष; इच्छा; लालच; यौ० —चर - निशाचर; उल्लू।

**तमअ** - स्त्री० [अ] लोभ; इच्छा; चाह।

**तमक** - पु० [अ] जोश; उद्वेग; झुंझलाहट; [सं] श्वासरोग, दमा।

**तमकना** - अ० [हिं] क्रोध या आवेश दिखलाना।

**तमग़ा** - पु० [तु] पदक; मोहर; राजाज्ञा।

**तमचुर** - पु० [हिं] मुरग़ा, कुक्कुट।

**तमतमाना** - [अ] क्रोध या लज्जा से चेहरा लाल हो जाना।

**तमद्दुन** - पु० [अ] नगर-निवास; नागरिकता; सभ्यता; संस्कृति।

**तमन्ना** - स्त्री० [अ] कामना; इच्छा; ख़्वाहिश।

**तमर** - पु० [अ] सूखा खजूर; [सं] टीन; रांगा।

**तमर्रुद** - पु० [अ] उद्दंडता; विरोध; नियमों की अवज्ञा।

**तमलेट** - पु० [उ] टीन का बर्तन जिसपर चीनी मिट्टी की पालिश की गयी हो।

**तमस** - पु० [सं] अंधकार; अज्ञान का अंधकार; पाप; नगर; कुआँ; एक नदी का नाम।

**तमसा** - स्त्री० [सं] टौंस नाम की नदी।

**तमसील** - स्त्री० [अ] मिसाल, उदाहरण।

**तमसीलन** - क्रि० [अ] मिसाल के तौर पर।

**तमस्ख़ुर** - पु० [अ] मसख़रापन; हँसी-ठट्ठा।

**तमस्सुक** पु० [अ] दस्तावेज़; वह प्रमाण-पत्र जो ऋण लेनेवाला महाजन को लिख देता है।

**तमहीद** - स्त्री० [अ] बिछौना; भूमिका।

**तमाँचा** - पु० [फ़ा] थप्पड़।

**तमा** - 1. पु० [सं] राहु; 2. स्त्री० रात; [अ] लालच, लोभ।

**तमाई** - स्त्री० [हिं] फ़सल के पहले कुदाली से खोदने का काम।

**तमाकू, तमाखू** - पु० [हिं] तंबाकू।

**तमाचा** - पु० [तु] तमाँचा।

**तमादी** - स्त्री० [अ] किसी बात की मुद्दत या मीयाद गुज़र जाना।

**तमानियत** - स्त्री० [अ] तसल्ली, संतोष।

**तमाम** - वि० [अ] पूरा, पूर्ण; समाप्त।

**तमामी** - स्त्री० [फ़ा] समाप्ति, नाश ; एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

**तमारि** - 1. पु० [हिं] सूर्य ; 2. स्त्री० घुमटा, सिर का चक्कर ।

**तमाल** - पु० [सं] एक प्रकार का पेड़ जो जमुना किनारे होता है ।

**तमाशबीन** - पु० [अ] तमाशा देखनेवाला ; वेश्यागामी ; ऐयाश ।

**तमाशबीनी** - स्त्री० [अ] ऐय्याशी ।

**तमाशा** - पु० [अ] मनोरंजक दृश्य ; अद्भुत बात ; यौ०—गाह - वह जगह जहाँ कोई तमाशा होता हो ; रंगस्थल ; —ई - तमाशा देखनेवाला ।

**तमिस्र** - पु० [सं] अंधकार ; गुस्सा; मोह ; अज्ञान ; एक नरक का नाम ।

**तमिस्रा** - स्त्री० [सं] अंधेरी रात, निबिड़ अंधकार ।

**तमीज़** - स्त्री० [अ] भला-बुरा पहचानने की शक्ति, विवेक ; अदब, क़ायदा ।

**तमोगुण** - पु० [सं] प्रकृति का एक गुण जो अज्ञान, क्रोध, आलस्य आदि का कारण होता है ।

**तमोर** - पु० [ब्र] तांबूल, पान ।

**तमोरी** - पु० [हिं] तंबोली ।

**तमोल**† - पु० [सं] पान का बीड़ा ।

**तमोलिन** - स्त्री० [हिं] पान बेचनेवाली, तंबोलिन ।

**तमोली** - पु० [हिं] पान बेचनेवाला ; तमोरी ।

**तम्बीह** - स्त्री० [अ] नसीहत, शिक्षा ; ताकीद ।

**तम्बोल** - पु० [फ़ा] पान ।

**तय** - वि० [अ] पूरा किया हुआ, समाप्त ; निश्चित ; मु०—पाना - निश्चित होना ।

**तयना**† - अ० [हिं] तपना ; दुखी होना ।

**तयार**† - पु० [हिं] तैयार ।

**तयारी**† - स्त्री० [हिं] तैयारी ।

**तयूर** - पु० [अ] पक्षी-समूह ।

**तरंग** - स्त्री० [सं] लहर ; उमंग ; उछाह ; उछाल ; ग्रंथ का खण्ड ; स्वरों का आरोह-अवरोह ।

**तरंगवती, तरंगिणी** - स्त्री० [सं] नदी ।

**तरंगित** - वि० [सं] लहराता हुआ ; मस्त ; कंपायमान ।

**तरंगी** - वि० [सं] लहरी ; जैसा मन में आवे वैसा करनेवाला ; अस्थिर ।

**तरंती** - स्त्री० [सं] नौका ।

**तर** - वि० [फ़ा] भीगा हुआ ; गीला ; ठंडा; मालदार ; यौ०— बतर - भीगा हुआ, सराबोर ।

**तरक** - पु० [सं] तर्क ; ऊहापोह ; बहस ; सोच-विचार ; चतुराई का वचन ।

**तरकना** - अ० [सं] तर्क करना ; अनुमान करना ; उछलना-कूदना ।

**तरकश, तरकस** - पु० [फ़ा] तीर रखने का चोंगा ; तूणीर ।

**तरकसी** - स्त्री० [फ़ा] छोटा तरकश ।

**तरका** - पु० [अ] वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले ।

**तरकारी** - स्त्री० [फ़ा] शाक-भाजी ।

**तरकी** - स्त्री० [दे] कान का गहना, कर्णफूल ।

**तरकीब** - स्त्री० [अ] उपाय ; मिलावट ; रचना ।

**तरक़्क़ी** - स्त्री० [अ] उन्नति, बढ़ती, पद-वृद्धि ।

**तरखा** - पु० [हिं] पानी का तेज़ बहाव ।

**तरखान** - पु० [हिं] बढ़ई ।

**तरग़ीब** - स्त्री० [अ] उत्तेजना ; भड़काना ; अनुकूल करना ।

**तरछाना** - अ० [हिं] तिरछी नज़र से देखना ; आँख से इशारा करना ।

**तरज** - स्त्री० [अ] तरह, शैली, तर्ज़ ।
**तरजना** - स० [हिं] ताड़न करना ; डाँटना ।
**तरजनी** - स्त्री० [स] अंगूठे के पास की उँगली ; भय, डर ।
**तरजीह** - स्त्री० [अ] किसी वस्तु को और वस्तुओं से अच्छा समझना ; प्रधानता देना ।
**तरजुमा** - पु० [अ] अनुवाद, उल्था ।
**तरजुमान** - पु० [अ] अनुवादक ; सुवक्ता ।
**तरणि** - 1. पु० [सं] सूर्य ; मदार ; तांबा ; 2. स्त्री० छोटी नाव ; 3. वि० तेज़, उत्साही ; **यौ०**—कुमार - सूर्य का पुत्र, यम ; शनि ; कर्ण ; —जा - सूर्य की कन्या, यमुना ।
**तरणी** - स्त्री० [स] नाव ।
**तरतराना** - [अनु] तड़तड़ाना ; घाव आदि पर लहू का छलक आना ; गिरना ; घी आदि से बिलकुल तर होना ।
**तरतीब** - स्त्री० [अ] यथास्थान रखा या लगाया जाना ।
**तरदीद** - स्त्री० [अ] मंसूखी; काटने या रद्द करने की क्रिया ।
**तरद्दुद** - स्त्री० [अ] सोच, फ़िक्र, अंदेशा ।
**तरन** - पु० [हिं] पार करना ; बेड़ा ; **यौ०**—तारन - उद्धार करनेवाला ।
**तरना** - अ० [हिं] पार करना ; पार होना ; मुक्त होना , तैरना ।
**तरनी** - स्त्री० [हिं] तरणी ।
**तरपन** - पु० [हिं] तर्पण ।
**तरफ़** - स्त्री० [अ] ओर ; पक्ष ; **यौ०**—दार - पक्षपाती, हिमायती ; —दारी - पक्षपात ।
**तरफ़ैन** - पु० [फ़ा] दोनों तरफ़ के लोग ; दोनों पक्ष ।
**तरब** - पु० [अ] प्रसन्नता ; [हिं] सारंगी के तार ।
**तरबियत** - स्त्री० [अ] शिक्षा-दीक्षा ; पालन-पोषण ।
**तरबुज़, तरबूज़** - पु० [अ] एक फल ।
**तरमीम** - स्त्री० [अ] संशोधन ; सुधार ।
**तरल** - 1. वि० [सं] द्रव ; हिलता-डोलता ; चमकीला ; लम्पट ; चपटा ; अस्थिर ; पोला ; 2. पु० हार के बीच की मणि, हीरा ; लोहा ; धतूर ; सतह ।
**तरवन** - पु० [हिं] कान का गहना, कर्णफूल, तरकी ।
**तरवर, तरुवर** - पु० [हिं] बड़ा पेड़ ।
**तरवार, तरवारि** - पु० [हि] तलवार ।
**तरस** - पु० [फ़ा] भय, डर ; दया, रहम ; **मु०**—खाना - दया करना ।
**तरसना** - अ० [हिं] अभाव का दुःख सहना ; किसी वस्तु को पाने के लिए बेचैन होना ।
**तरसाँ** - वि० [फ़ा] डरा हुआ ।
**तरसाना** - स० [हि] अभाव का दुःख देना।
**तरह** - स्त्री० [अ] प्रकार ; ढब, उपाय ; हाल ; **यौ०**—दार - सुंदर बनावट का ; शौक़ीन ; **मु०** —देना - ख्याल न करना ; उपेक्षा करना ; क्षमा करना ।
**तरहटी** - स्त्री० [हिं] नीची भूमि ; पहाड़ की तराई ; तलहटी ।
**तराई** - स्त्री० [हि] पहाड़ के नीचे की भूमि ; नदी के आसपास की भूमि ।
**तराजू** - पु० [फ़ा] तौलने की तुला ।
**तराना** - पु० [फ़ा] एक प्रकार का चलता गाना ।
**तराप** † - स्त्री० [हिं] तोप की आवाज़ ।
**तराबोर** - वि० [हिं] खूब डूबा हुआ ; सराबोर, तरबतर ।
**तरारा** - पु० [हिं] उछाल, छलाँग ।
**तरावट** - स्त्री० [हिं] शीतलता ; गीलापन ; स्निग्ध भोजन ।

**तराश** - स्त्री० [फ़ा] काट ; बनावट ; **यौ०**—ख़राश - काट-छाँट, ढंग।

**तराशना** - स० [फ़ा] काटना ; कतरना।

**तरासना** - स० [हिं] डराना ; धमकाना, डाँटना।

**तरिंदा** - पु० [हिं] वह पीपा जो समुद्र में चट्टान आदि की सूचना देने के लिए लंगर द्वारा तैराया जाता है, तरेंदा।

**तरिको** - पु० [हिं] कान का एक गहना, तरकी।

**तरी** - स्त्री० [सं] नाव ; कान का गहना ; [फ़ा] गीलापन ; नीची भूमि ; कछार।

**तरीक़** - पु० [अ] रास्ता ; आचरण।

**तरीक़त** - पु० [अ] तरीक़ा ; हृदय की शुद्धता।

**तरीक़ा** - पु० [अ] नीति ; चाल ; उपाय ; ढंग।

**तरु** - पु० [सं] पेड़ ; **यौ०**—कोटर - वृक्ष का खोखला भाग, —पतिका - लता।

**तरुण** - वि० [सं] जवान।

**तरुणाई** - स्त्री० [हिं] जवानी।

**तरुणी** - वि० [सं] युवती।

**तरुनाना** - अ० [हिं] जवानी में प्रवेश करना।

**तरुनापा** - पु० [हिं] जवानी।

**तरे** - क्रि० [हिं] नीचे, तले।

**तरेटी** - स्त्री० [हि] तराई।

**तरेरना** - स० [हिं] आँख के इशारे से डाँट बताना।

**तरोई** - स्त्री० [हिं] तुरई।

**तरौंटा** - पु० [हि] पानी पर बहनेवाला बांस आदि का बड़ा बेड़ा, चक्की का निचला भाग।

**तरौना** - पु० [हिं] कर्णफूल, कान का गहना ; वह मोढ़ा जिसपर मिठाई का खोंचा रखा जाता है।

**तर्क** - पु० [सं] दलील ; विवेचन ; इच्छा ; **यौ०**—वितर्क - वादविवाद ; विवेचना ; [अ] त्याग ; **यौ०** —ए मवालात - असहयोग।

**तर्कश** - पु० [फ़ा] तरकश।

**तर्कसी** - स्त्री० [फ़ा] छोटा तरकश।

**तर्काभास** - पु० [सं] कुतर्क।

**तर्की** - पु० [सं] तर्क करनेवाला ; मीमांसक।

**तर्क्य** - वि० [सं] जिसपर कुछ सोच-विचार करना आवश्यक हो।

**तर्ज़** - स्त्री० [अ] तरह ; शैली ; बनावट।

**तर्जन** - पु० [सं] डाँट-डपट ; क्रोध।

**तर्जना** - अ० [सं] धमकाना।

**तर्जनी** - स्त्री० [सं] अंगूठे के पास की उँगली।

**तर्जुमा** - पु० [अ] अनुवाद।

**तर्पण** - पु० [सं] पितरों को तृप्त करने की क्रिया ; यज्ञ का ईंधन ; आँखों में तेल भरना।

**तर्रा** - पु० [फ़ा] साग-भाजी ; [हिं] छप्पर में लगी लम्बी लकड़ी।

**तर्रार** - वि० [अ] बहुत बोलनेवाला ; तेज़ ; **मु०** तेज़ व तर्रार - चपल और मुखर।

**तर्रारा** - पु० [अ] तेज़ी ; **मु०** तर्रारे भरना - बहुत तेज़ी से चलना या भागना।

**तर्राह** - पु० [अ] इमारत बनानेवाला।

**तर्राही** - स्त्री० [अ] भवन-निर्माण की विद्या, स्थापत्य कला।

**तर्ष** - पु० [सं] अभिलाषा ; तृष्णा ; असंतोष।

**तर्षण** - पु० [सं] प्यास ; इच्छा।

**तर्षित** - वि० [सं] प्यासा ; इच्छुक।

**तल** - पु० [सं] नीचे का भाग ; पेंदा ; सतह ; छत ; हथेली ; तह ; गड्ढा ; **यौ०**—कर - तालाब आदि का महसूल ; —घर - तहख़ाना ; —छट - पानी आदि के नीचे बैठनेवाला मैल।

**तलहटी** - स्त्री० [हिं] पहाड़ के नीचे की भूमि।

**तलक** - 1. अव्य [हिं] तक ; 2. पु० [सं] तालाब ; मिट्टी का बर्तन ।

**तलक़ीन** - स्त्री० [अ] समझाना-बुझाना ; शिक्षा, तालीम ।

**तलना** - स० [हिं] घी या तेल में भूनना ।

**तलपट** - वि० [देश] बरबाद, चौपट ।

**तलफ़** - वि० [अ] बरबाद, नष्ट ; तबाह ।

**तलफना** - अ० [हिं] छटपटाना ; बेचैन होना ।

**तलफ़ी** - स्त्री० [फ़ा] विनाश ; बरबादी ।

**तलफ़्फ़ुज़** - पु० [अ] उच्चारण ।

**तलब** - स्त्री० [अ] खोज ; पाने की चाह ; माँग ; बुलाहट ; तनख़्वाह, वेतन ; यौ० —गार या दार - चाहनेवाला ; —नामा - सम्मन, वह पत्र जिसके द्वारा किसीको बुलाया जाए ; मु०— करना - बुलाना ; पूछना ।

**तलबाना** - पु० [अ] वह ख़र्च जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में दाख़िल किया जाता है ; समय पर मालगुज़ारी न जमा करने पर लगने-वाला आर्थिक दण्ड ।

**तलबी** - स्त्री० [अ] बुलाहट ; माँग ।

**तलबेली** - स्त्री० [हिं] छटपटी, बेचैनी ; तीव्र लालसा ।

**तलमलाना** - अ० [देश] तड़फड़ाना ; बेचैन होना ; चौंधियाना ।

**तलमलाहट** - स्त्री० [देश] व्याकुलता ।

**तलवा** - पु० [हिं] पाद-तल, पैर के नीचे का भाग ; मु०—खुजलाना - यात्रा का शकुन होना ; तलवे चाटना - बहुत ख़ुशामद करना; तलवे छलनी होना - चलते-चलते पैर घिस जाना ; बहुत दौड़-धूप की नौबत आना ; तलवे की लहर सिर पर चढ़ना - बहुत क्रोध आना ; तलवे सहलाना - ख़ुशामद करना ; तलवे में आग लगना - बहुत अधिक क्रोध आना ।

**तलवार** - स्त्री० [हिं] खड्ग ; मु०—का हाथ - तलवार चलाने का ढंग ; तलवार का वार ; — के घाट उतरना - मार डालना ; —खींच लेना - लड़ने को उद्यत होना ; —का पानी - तलवार की धार की तेज़ी या चमक ।

**तला** - पु० [हिं] नीचे की सतह, पेंदा; जूते के नीचे का चमड़ा ।

**तलाई** - स्त्री० [हिं] छोटा ताल ।

**तलाक़** - पु० [अ] विवाह संबंध का विच्छेद ।

**तलातल** - पु० [सं] सात पातालों में एक ।

**तलाफ़ी** - स्त्री० [अ] अनुचित कृत्य का परिहार ; क्षतिपूर्ति, हानि का बदला ।

**तलाव** - पु० [हिं] तालाब, पोखरा ।

**तलाश** - स्त्री० [फ़ा] खोज ; आवश्यकता ।

**तलाशना** - स० [फ़ा] ढूँढ़ना, खोजना ।

**तलाशी** - स्त्री० [फ़ा] गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु की खोज, ढूँढ़ ; मु०— लेना - जिसपर चोरी का संदेह हो उसके घर-बार आदि की खोज करना ।

**तले** - अव्य० [हिं] नीचे ; मु०—की दुनियाँ ऊपर होना - महान् परिवर्तन होना ।

**तलेटी** - स्त्री० [हिं] पेंदी ; तलहटी ।

**तलैया** - स्त्री० [हिं] छोटा ताल ।

**तलोदर** - वि० [सं] तोदवाला ।

**तलोदरी** - स्त्री० [सं] पत्नी, भार्या ।

**तलौंछ** - स्त्री० [हिं] तलछट ।

**तलौवन** - पु० [अ] रंग बदलना ; मतपरिवर्तन ।

**तल्ख़** - वि० [फ़ा] कड़ुआ ; अप्रिय ; यौ० —मिज़ाज - जिसका स्वभाव उग्र और कटु हो ।

**तल्ख़ा** - पु० [फ़ा] पित्त ; सत्त ।

**तल्ख़ी** - स्त्री० [फ़ा] कड़ुआपन ; स्वभाव की उग्रता ।
**तल्प** - पु० [सं] पलंग, शय्या ; अटारी ।
**तल्ला** - पु० [हिं] मंजिल ; जूते का तला ।
**तल्ली** - स्त्री० [सं] तला ; नौका ; तरुणी ।
**तल्लीन** - वि० [सं] मग्न ; लगा हुआ ।
**तवंगर** - वि० [फ़ा] धनवान, संपन्न ।
**तव** - सर्व० [सं] तुम्हारा ।
**तवक़्क़ा** - स्त्री० [अ] आशा ।
**तवक़्क़ुफ़** - पु० [अ] विलंब ।
**तवक्कुल** - पु० [अ] ईश्वर पर भरोसा रखना ।
**तवज्जह** - स्त्री० [अ] ध्यान ; रुख ; कृपा-दृष्टि ।
**तवना** - पु० [हिं] तपना ; दुख से पीड़ित होना ; क्रोध से जलना ।
**तवल्लुद** - वि० [अ] उत्पन्न ।
**तवा** - पु० [हिं] रोटी सेंकने का लोहे का छिछला बरतन ; मु० तवे-सा मुँह - काला मुँह ; सिर से तवा बांधना - सिर पर चोट सहने को तैयार होना ।
**तवाख़ीर** - पु० [अ] बंसलोचन ।
**तवाज़ा** - स्त्री० [अ] आवभगत ।
**तवानगर** - वि० [फ़ा] धनवान, संपन्न ।
**तवाना** - वि० [फ़ा] बलवान ।
**तवायफ़** - स्त्री० [अ] 'तायफ़ा' का बहु० ; रंडी, वेश्या ।
**तवारा** - पु० [हिं] जलन, दाह ।
**तवारीख़** - स्त्री० [अ] इतिहास ।
**तवारीख़ी** - वि० [अ] ऐतिहासिक ।
**तवालत** - स्त्री० [अ] लंबाई ; विस्तार ; झमेला ।
**तवीब** - पु० [अ] वैद्य, हकीम ।
**तवील** - स्त्री० [अ] लंबा ; यौ० तूल-तवील - लंबा-चौड़ा ।
**तशख़ीस** - स्त्री० [अ] ठहराव ; निश्चय ; रोग की पहचान ।
**तशदीद** - स्त्री० [अ] कठोर बनाना ; फ़ारसी लिपि में द्वित्व सूचित करनेवाला एक चिन्ह ।
**तशद्दुद** - पु० [अ] कड़ाई ; आक्रमण करना ; सख़्ती ; ज़्यादती ।
**तशफ़्फ़ी** - स्त्री० [अ] तसल्ली, ढारस ।
**तशबीह** - स्त्री० [अ] उपमा ।
**तशरीफ़** - स्त्री० [अ] बुज़ुर्गी ; इज़्ज़त ; मु० —लाना - पधारना ; —रखना - विराजना, बैठना ; —ले जाना - जाना ।
**तशरीह** - स्त्री० [अ] व्याख्या ; शरीरशास्त्र ।
**तश्त** - पु० [फ़ा] एक प्रकार का बड़ा थाल ।
**तश्तरी** - स्त्री० [फ़ा] रिकाबी ; प्लेट ।
**तष्टा** - पु० [सं] बढ़ई ; विश्वकर्मा ।
**तस** - 1. वि० 2. क्रि० [हिं] तैसा, वैसा ।
**तसकीं, तसकीन** - स्त्री० [अ] ढारस ; दिलासा ।
**तसदीक़** - स्त्री० [अ] सही बतलाना ; गवाही ।
**तसद्दुक़** - पु० [अ] न्योछावर करना ; दान ; भक्ति ; क़ुरबानी ।
**तसनीफ़** - स्त्री० [अ] ग्रंथ की रचना ।
**तसन्ना** - पु० [अ] नक़ली चीज़ तैयार करना ; बनावट ; बनाव-सिंगार ; कारीगरी ।
**तसफ़िया** - पु० [अ] तस्फ़िया, परिष्कार ; समझौता ; फ़ैसला ।
**तसबीह** - स्त्री० [अ] जपमाला ।
**तसमा** - पु० [फ़ा] चमड़े का चौड़ा फीता ; मु०— खींचना - गला घोंटना ; — लगा न रखना - साफ़ दो टुकड़े करना ।
**तसर** - पु० [सं] एक प्रकार का घटिया रेशम, टसर ; जुलाहों की ढरकी ।
**तसरीह** - स्त्री० [अ] व्याख्या ।
**तसर्रुफ़** - पु० [अ] ख़र्च ।

**तसला** - पु० [हिं] एक प्रकार का बरतन।
**तसली** - स्त्री० [हिं] छोटा तसला।
**तसलीम** - स्त्री० [अ] सलाम; मंजूरी; स्वीकृति; हामी।
**तसल्ली** - स्त्री० [अ] ढारस; धीरज।
**तसवीर** - स्त्री० [अ] चित्र।
**तसव्वुफ़** - पु० [अ] तसौवफ़।
**तसव्वर, तसव्वुर** - पु० [अ] ध्यान, तसौवर।
**तसू** - पु० [हिं] इमारती काम के लिए प्रायः डेढ़ इंच की एक नाप।
**तसौवफ़** - पु० [अ] सब प्रकार की कामनाओं से रहित होना और सब वस्तुओं में ईश्वर का अस्तित्व समझना।
**तसौवर** - पु० [अ] ध्यान।
**तस्कर** - पु० [सं] चोर; एक शाक; कान; यौ०— वृत्ति - चोरी; पैकटमारी।
**तस्ख़ीर** - स्त्री० [अ] जीतकर अपने अधिकार में रखना; टोना-टोटका।
**तस्मिया** - पु० [अ] नाम रखना।
**तस्मीत** - पु० [अ] मोती पिरोना; सुंदर वस्तुओं का संग्रह।
**तहँ** - क्रि० [हिं] वहाँ, तहाँ।
**तह** - स्त्री० [फ़ा] परत; तल; यौ०—ख़ाना- वह कोठरी जो ज़मीन के नीचे बनी हो, तल-गृह; — दर्ज़ - बिलकुल नया; —पेच - छोटी टोपी जो पगड़ी के नीचे रहती है; —पोशी - वह काछरा जिसे स्त्रियाँ साड़ी के नीचे पहनती हैं; —बाज़ारी - दूकानों से वसूल किया जानेवाला ज़मीन का किराया; —मत, बंद, मद - लुंगी; —नशीन - तलछट; —नियत - मुबारकबाद, बधाई; मु० —करना - मोड़कर समेटना।
**तहक़ीक़, तहक़ीक़ात** - स्त्री० [अ] जाँच-पड़ताल; असलियत मालूम करना; किसी मामले के विषय में होनेवाली जाँच-पड़ताल।
**तहक़ीर** - स्त्री० [अ] अपमान।
**तहकुम** - पु० [अ] अधिकार; राज्य।
**तहज़ीब** - स्त्री० [अ] सभ्यता; संस्कृति; भलमनसाहत; शिष्टाचार; यौ०— याफ़्ता - सभ्य; शिष्ट।
**तहज़ीर** - स्त्री० [अ] धमकी; तम्बीह।
**तहज्जी** - स्त्री० [अ] निदा करना; हिज्जे; यौ० हरफ़े तहज्जी - वर्णमाला के अक्षर।
**तहज्जुद** - पु० [अ] एक प्रकार की नमाज़ जो आधी रात के बाद पढ़ी जाती है।
**तहत** - पु० [अ] अधिकार; यौ०— उस्सरा - पाताल लोक।
**तहत्तुक** - पु० [अ] अपमान।
**तहमीद** - स्त्री० [अ] ईश्वर की बार-बार प्रशंसा करना।
**तहम्मुल** - पु० [अ] सहनशीलता।
**तहरी** - पु० [हिं] एक प्रकार की खिचड़ी; बिना माँस का पुलाव।
**तहरीक** - स्त्री० [अ] आन्दोलन; प्रस्ताव।
**तहरीफ़** - स्त्री० [अ] हिसाब आदि की जालसाज़ी; बदल; भूल।
**तहरीर** - स्त्री० [अ] लेख; लिखने की उजरत, लिखाई।
**तहरीरी** - वि० [फ़ा] लिखा हुआ, लिपि-बद्ध।
**तहर्रुक** - पु० [अ] हिलना-डुलना; गति।
**तहलका** - पु० [अ] मौत; बरबादी; खल-बली, हलचल; धूम।
**तहलील** - स्त्री० [अ] गलना; पचना।
**तहवील** - स्त्री० [अ] हवाले करना; अमानत; ख़ज़ाना; रोकड़, जमा; यौ० —दार - ख़ज़ानची।
**तहस-नहस** - वि० [हिं] नष्ट-भ्रष्ट।

**तहसीन** - स्त्री० [अ] प्रशंसा, तारीफ़।
**तहसील** - स्त्री० [अ] वसूली ; वह आमदनी जो लगान से इकट्ठी हो ; तहसीलदार का दफ़्तर या कचहरी ; **यौ०**—दार - लगान वसूल करनेवाला; —दारी - तहसीलदार का पद ; तहसीलदार की कचहरी।
**तहसीलना** - स० [हिं] मालगुज़ारी या चंदा आदि वसूल करना।
**तहाँ** - क्रि० [हिं] वहाँ, उस स्थान पर।
**तहाना** - स० [हिं] लपेटना ; तह करना।
**तहारत** - स्त्री० [अ] पवित्रता ; नमाज़ के पहले हाथ-मुँह धोकर पवित्र होने की क्रिया।
**तहाश** - पु० [अ] परवाह ; डर, भय।
**तहियाँ** † - क्रि० [हिं] तब, उस समय।
**तहियाना** - स० [हिं] तह लगाकर लपेटना।
**तहीं** - क्रि० [हिं] वहीं, उसी जगह।
**तही** - वि० [फ़ा] ख़ाली ; **यौ०**— दस्त - ख़ाली हाथ, ग़रीब ;—मग्ज़ - जिसका मग्ज़ या दिमाग़ ख़ाली हो, मूर्ख।
**तहे-दिल** - पु० [फ़ा] हृदय का भीतरी भाग, अन्तःकरण।
**तहैया** - पु० [अ] तैयारी।
**तहैयुर** - पु० [अ] आश्चर्य।
**तहो-बाला** - वि० [फ़ा] उलटा-पलटा ; बरबाद।
**तहौवर** - पु० [अ] शीघ्रता ; गुस्सा।
**ताँई** - अव्य० [हिं] तक।
**तांगा** - पु० [हिं] टांगा।
**तांडव** - पु० [सं] पुरुषों का नाच ; शिव का नाच ; एक तृण।
**तांत** - स्त्री० [स] चमड़े या अंतड़ी का सूत ; धनुष की डोरी ; तंत्री; जुलाहों की राछ।
**तांता** - पु० [हिं] क़तार ; **मु०** —बँधना - क़तार में खड़ा होना ; एक के बाद एक आते रहना।
**तांती** - 1. स्त्री० [हिं] पंक्ति, सिलसिला ; तांत ; 2. पु० जुलाहा।
**तांत्रिक** - 1. वि० [सं] तंत्रसंबंधी ; 2. पु० तंत्र-मंत्र आदि करनेवाला।
**तांबा** - पु० [हिं] लाल रंग की एक धातु।
**तांबूल** - पु० [स] पान।
**ताँबरी** - स्त्री० [हिं] ज्वर ; मूर्च्छा ; झाँई।
**तांसना** - स० [हिं] धमकाना ; डराना ; डांटना।
**ता** - 1. अव्य० [फ़ा] तक ; 2. प्रत्य० [सं] एक भाववाचक प्रत्यय ; 3. सर्व० उस।
**ताअत** - स्त्री० [अ] इबादत, ईश्वराराधन; सेवा।
**ताई** - स्त्री० [हिं] जेठी चाची, पिता के बड़े भाई की पत्नी ; हलका ज्वर।
**ताईत** - पु० [फ़ा] तावीज़, यंत्र।
**ताईद** - 1. स्त्री० [अ] समर्थन, पुष्टि ; 2. पु० वकील का मुहर्रिर।
**ताऊ** - पु० [हिं] पिता का बड़ा भाई ; **मु०** बछिया के ताऊ - बैल ; महामूर्ख ; जड़।
**ताऊन** - पु० [अ] एक रोग, प्लेग।
**ताऊस** - पु० [अ] मयूर ; **यौ०** तख़्त ताऊस - शाहजहाँ का प्रसिद्ध मयूर के आकार का सिंहासन।
**ताऊसी** - वि० [हिं] मोर का-सा ; गहरा बैंगनी।
**ताक़** - 1. पु० [अ] आला, दीवार में बना हुआ ख़ाली स्थान जिसमें कुछ रखा जा सकता हो ; 2. वह संख्या जो दो से विभाजित न हो सके, जैसे, एक, तीन आदि ; अद्वितीय ; **मु०**— में धरना, —में रखना - काम में न लाना; —चरना - देवस्थान पर मनौती चढ़ाना।
**ताक** - स्त्री० [हिं] अचल दृष्टि ; घात ; खोज ; टोह ; **यौ०**—झाँक - छिपकर

देखने का काम ; निगरानी ; देख-भाल ; मु०— में रहना - मौक़ा देखते रहना ; —लगाना - मौक़ा देखना, घात में रहना ।

**ताक़त** - स्त्री० [अ] शक्ति ; यौ० —वर - बलवान ; शक्तिशाली ।

**ताकना** - स० [हिं] देखना ; नज़र रखना ; चाहना ; निश्चय करना ; ताड़ लेना ।

**ताक़ा** - पु० [अ] कपड़े का थान ।

**ताकि** - अव्य० [फ़ा] इसलिए कि ; जिससे ।

**ताक़ी** - वि० [अ] कंजी आँखोंवाला ।

**ताकीद** - स्त्री० [अ] ख़ूब चेताकर कही हुई बात ; ज़ोर के साथ दी गयी आज्ञा या किया गया अनुरोध ।

**ताकीदन** - क्रि० [अ] ताकीद के साथ, आग्रहपूर्वक ।

**ताकीदी** - वि० [अ] ताकीद का, ज़रूरी ।

**ताखा** - पु० [हिं] आला, ताक़ ।

**ताख़ीर** - स्त्री० [अ] विलंब ।

**ताख़्त** - पु० [फ़ा] फ़ौज की चढ़ाई ।

**ताग** - 1. पु० [हिं] तागा; 2. स्त्री० तागने की क्रिया ; यौ०—पाट - विवाह के समय वधू को पहनाया जानेवाला धागा ।

**तागड़ी** - स्त्री० [हिं] करधनी ।

**तागना** - स० [हिं] रजाई आदि में दूर-दूर पर सिलाई करना ।

**तागा** - पु० [हिं] सूत, धागा ।

**ताज** - पु० [अ] राजमुकुट ; कलगी ; चोटी ; आगरे का ताजमहल ; चाबुक ; छज्जा ; यौ०—दार - ताज के ढंग का ; बादशाह; —वर - बादशाह ; —पोशी - राजमुकुट धारण करने का उत्सव, राज्याभिषेक ।

**ताजक** - पु० [फ़ा] एक ईरानी जाति ।

**ताज़गी** - स्त्री० [फ़ा] प्रफुल्लता ; स्वस्थता ।

**ताजन** - पु० [फ़ा] कोड़ा, चाबुक ।

**ताज़ा** - वि० [फ़ा] हरा-भरा ; जो तुरंत तोड़ा गया हो (फल आदि) ; तुरंत का बना हुआ ; जो थका-माँदा न हो ; यौ० तरोताज़ा - थकावट दूर करके स्वस्थ बना हुआ ; मु० हुक्का ताज़ा करना - हुक्के का पानी बदलना ।

**ताज़ियत** - स्त्री० [अ] मातमपुरसी करना, शोक-सान्त्वना देना ; रोना-पीटना ; यौ०—नामा - मातमपुरसी का ख़त ।

**ताज़िया** - पु० [अ] बाँस का बना मकबरा जिसके सामने शीया मुसलमान मातम करते हैं और तब उसे दफ़नाते हैं ; यौ०—दारी - ताज़िये बनाने का काम ; मुहर्रम में मातम करना ।

**ताज़ियाना** - पु० [फ़ा] चाबुक, कोड़ा ; कोड़े लगाने की सज़ा ।

**ताजिर** - पु० [अ] व्यापारी ।

**ताज़ी** - 1. पु० [फ़ा] अरब देश का घोड़ा; अरब देश का कुत्ता ; 2. स्त्री० अरबी भाषा ; यौ०—ख़ाना - कुत्तों का स्थान ।

**ताज़ीक** - पु० [फ़ा] संकर जाति का घोड़ा ; दोगला ।

**ताज़ीम** - स्त्री० [अ] बड़ों का आदर करने के लिए झुककर सलाम आदि करना ।

**ताज़ीर** - स्त्री० [अ] सज़ा, दंड ।

**ताज्जुब** - पु० [अ] तअज्जुब, आश्चर्य ।

**ताटंक** - पु० [सं] कान का एक आभूषण ; एक छंद ।

**ताटस्थ्य** - पु० [सं] सामीप्य ; तटस्थता, उदासीनता ।

**ताड़** - पु० [सं] एक लंबा पेड़ ; ताड़न ; आघात ; शब्द ; पर्वत ; तृणादि का पूला ।

**ताड़न** - पु० [सं] मार ; डाँट-डपट ; दंड ; अनुशासन ।

**ताड़ना** - 1. स्त्री० [हिं] डाँट-डपट ; मारना-पीटना ; 2. स० भाँप लेना ।

**ताड़नीय** - वि० [सं] दंडनीय ।

**ताड़ी** - स्त्री० [हिं] ताड़ का रस जिससे शराब बनती है ।

**तात** - 1. पु० [सं] बाप ; पूज्य व्यक्ति ; प्यार का संबोधन ; 2. वि० तप्त, गरम ।

**ताता** - वि० [हिं] तप्त, गरम ।

**तताथेई** - स्त्री० [अनु] नाच का बोल ।

**ताति** - 1. पु० [सं] पुत्र ; 2. स्त्री० वंश-परंपरा ।

**तातील** - स्त्री० [अ] छुट्टी ; मु०—मनाना - आमोद-प्रमोद करना ।

**ताते** - सर्व० [हिं] उससे ।

**तात्कालिक** - वि० [सं] तुरंत का, उसी या उस समय का ।

**तात्पर्य** - पु० [सं] अभिप्राय ; आशय ; मंशा ।

**तात्त्विक** - वि० [सं] यथार्थ ; तत्त्वसंबंधी ; वास्तविक ।

**तादात्म्य** - पु० [सं] एक वस्तु का दूसरी में मिलकर एकरूप हो जाना, अभिन्नता ।

**तादाद** - स्त्री० [अ] संख्या ।

**तादृश** - वि० [सं] उसके समान, वैसा ।

**तादीब** - स्त्री० [अ] दोष आदि दूर करके सुधारना ; भाषा और साहित्य की शिक्षा ।

**तान** - 1. पु० [सं] सूत्र ; विस्तार ; ज्ञान का विषय ; 2. स्त्री० संगीत में स्वर का विस्तार ; तानने की क्रिया या भाव ; यौ०—तरंग - तान की लहर ।

**तानना** - स० [हिं] खींचना ; फैलाना ; खड़ा करना ; समेटी हुई चीज़ को व्यवहारयोग्य स्थिति में लाना ; मु० लम्बी तानकर सोना - हाथ-पैर फैलाये निश्चित होकर सोना ।

**तानपूरा** - पु० [हिं] सितार के आकार का एक बाजा ।

**ताना** - 1. पु० [हिं] कपड़े की बुनावट में लंबाई का सूत ; यौ० —बाना - कपड़े की बुनावट में लंबाई और चौड़ाई के सूत ; मु० —बाना करना - व्यर्थ इधर से उधर आना-जाना ; [अ] व्यंग्य ; आक्षेप ; 2. स० तपाना ; ढांकना ।

**तानारीरी** - स्त्री० [अनु] साधारण गाना ; राग, अलाप ; नौसिखिये का गाना ।

**तानाशाह** - पु० [फ़ा] अब्दुल हसन बादशाह का दूसरा नाम जो बड़ा मनमौजी था ; स्वेच्छाचारी शासक, डिक्टेटर ।

**तानाशाही** - स्त्री० [फ़ा] अधिकारों का मनमाना उपयोग ; वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारे अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हों ।

**तानूर** - पु० [सं] पानी का भँवर ।

**ताप** - पु० [सं] गर्मी ; ज्वर ; तीन ताप (दैहिक, दैविक, भौतिक जिन्हें आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक भी कहते हैं) ; यौ०—क्रम - शरीर या वायुमंडल की उष्णता का उतार-चढ़ाव ; —मान - थरमामीटर द्वारा मापी गयी ताप की मात्रा ; —व्यंजन - साधु के वेश में घूमनेवाला गुप्तचर ; —त्रय - आधिभौतिक आदि तीन दुःख ।

**तापना** - 1. अ० [हिं] आग की आँच से अपने को गरम करना ; 2. स० नष्ट करना ; उड़ाना ।

**तापस** - पु० [सं] तपस्वी ; बगला ; तेजपात ; दौना ।

**तापसी** - स्त्री० [सं] तपस्या करनेवाली स्त्री ; तपस्वी की स्त्री ।

**तापिच्छ** - पु० [स] तमाल का पेड़ ; माक्षिक धातु ।
**ताफ़्ता** - पु० [फ़ा] धूप-छाँह ; रेशमी कपड़ा ।
**ताब** - स्त्री० [फ़ा] शक्ति ; हिम्मत ; धैर्य ; मजाल ; यौ० —ख़ाना - हम्माम ; रोटी पकाने का तंदूर ; —दान - खिड़की ।
**ताबड़तोड़** - अव्य० [हिं] लगातार ।
**ताबा** - वि० [अ] वशीभूत ; मातहत ; आज्ञानुवर्ती ।
**ताबान** - वि० [फ़ा] प्रकाशमान ; चमकीला ।
**ताबिस्तान** - पु० [फ़ा] गरमी का मौसिम ।
**ताबीर** - स्त्री० [अ] स्वप्न आदि का शुभाशुभ फल ।
**ताबूत** - पु० [अ] वह संदूक़ जिसमें शव को रखकर दफ़नाया जाता है ।
**ताबेदार** - वि० [अ] आज्ञाकारी ; नौकर ।
**ताबेदारी** - स्त्री० [अ] नौकरी ; सेवा-टहल ।
**ताम** - 1. पु० [स] भीषण वस्तु ; दोष ; चिंता ; उद्वेग ; ग्लानि ; इच्छा ; क्लांति ; 2. वि० भयानक ; व्याकुल ।
**तामअ** - वि० [अ] लालची ।
**तामजान, तामदान** - पु० [हिं] एक प्रकार की पालकी ।
**तामरस** - पु० [हिं] कमल ; सुवर्ण ; तांबा ; धतूरा ।
**तामस** - 1. वि० [सं] तमोगुणयुक्त ; ज्ञानहीन ; अंधेरा ; 2. पु० आततायी ; उल्लू ; सर्प ; क्रोध ; अंधकार ।
**तामसी** - 1. वि० [सं] तमोगुणवाली ; 2. स्त्री० अंधेरी रात ; महाकाली ।
**तामीर** - स्त्री० [अ] मकान बनाने का काम ।
**तामील** - स्त्री० [अ] पालन (आज्ञा का) ।
**ताम्मुल** - पु० [अ] सोच-विचार ; आगा-पीछा ; दुविधा ; संदेह ।
**ताम्र** - पु० [सं] तांबा ; एक प्रकार का कोढ़ ; यौ०—चूड़ - मुर्ग़ा ; —द्वीप - सिंहल ; —पट्ट, पत्र - दानपत्र आदि खुदवाने का तांबे का पत्तर; —शासन - ताम्रपत्र पर खुदा हुआ लेख ।
**ताय** † - पु० [हिं] ताप, गरमी ; जलन ; धूप ।
**तायफ़** - पु० [अ] चारों ओर घूमना, परिक्रमा ; चौकीदारी ।
**तायफ़ा** - पु० [अ] वेश्या ; वेश्याओं की मंडली ; यात्री-दल ।
**तायब** - 1. वि० [अ] तौबा करनेवाला ; 2. स्त्री० सहायता ; समर्थन ।
**तायर** - पु० [अ] पक्षी ।
**ताया** - पु० [हिं] ताऊ ।
**तार** - पु० [सं] धातु-तंतु ; टेलिग्राफ़ ; यौ०—कमानी - धनुष के आकार का नगीने काटने का एक औज़ार जिसमें लोहे का तार लगा रहता है ; —कश - धातु का तार खींचनेवाला , —कशी - तार खींचने का काम ; —घर - वह स्थान जहाँ से तार भेजा जाए, टेलिग्राफ़ आफ़िस ; —तम्य - गुण व परिमाण आदि का परस्पर मिलान ; —तार - टुकड़ा-टुकड़ा ; —बर्क़ी - बिजली का वह तार जिसके द्वारा समाचार भेजे जाते हैं ।
**तारक** - पु० [सं] नक्षत्र ; आँख ; आँख की पुतली ; एक राक्षस ; राम का षडक्षर मंत्र ; उद्धार करनेवाला ; वह जो पार उतारे, नाविक ; भिलावाँ ।
**तारका** - स्त्री० [सं] नक्षत्र ; आँख की पुतली ।
**तारख** † - पु० [हिं] गरुड़ ।
**तारखी** † - पु० [हिं] घोड़ा ।
**तारण** - पु० [सं] पार उतारने की क्रिया ; उद्धार ; उद्धार करनेवाला ।
**तारणी** - स्त्री० [सं] नौका ; कश्यप की पत्नी ।

**तारना** - स० [हिं] पार करना; उद्धार करना।

**तारपीन** - पु० [हिं] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल।

**तारा** - पु० [सं] नक्षत्र; भाग्य; आँख की पुतली: **मु०** तारे गिनना - चिंता या प्रतीक्षा में बेचैनी से रात काटना; तारे तोड़ना - असंभव काम करना।

**ताराज** - पु० [फ़ा] लूटमार; बरबादी।

**तारिक** - पु० [सं] मल्लाह; नाव का किराया।

**तारिका** - स्त्री० [स] तारा; ताड़ी।

**तारी** - वि० [सं] उद्धारक।

**तारीक** - वि० [फ़ा] अंधकारपूर्ण; काला।

**तारीकी** - स्त्री० [फ़ा] अंधकार; स्याही।

**तारीख़** - स्त्री० [अ] नियत तिथि; इतिहास।

**तारीफ़** - स्त्री० [अ] प्रशंसा; परिभाषा; वर्णन; विशेषता।

**तारुण्य** - पु० [सं] जवानी, यौवन।

**तार्किक** - पु० [स] तर्कवेत्ता, नैयायिक।

**तार्क्ष्य** - पु० [सं] गरुड़; सुवर्ण; रथ; पक्षी।

**ताल** - पु० [सं] ताली; झील; ताड़ का पेड़; तालाब; हथेली; मंजीरा; **यौ०**—पत्र - ताड़ का पत्ता; कान का एक गहना; —मेल - ताल सुर का मिलान; मेलजोल; —रस - ताड़ी, ताड़ के पेड़ का रस; —वन - ताड़ के पेड़ों का जंगल; **मु०** —बेताल - मौके-बेमौके; —ठोंकना - कुश्ती के लिए ललकारना।

**तालव्य** - वि० [सं] तालुसंबंधी; तालु से उच्चारण किया जानेवाला।

**ताला** - पु० [हिं] द्वार या संदूक़ आदि को बंद रखने का लोहे या पीतल आदि का यंत्र; कुलफ़।

**तालाब** - पु० [हिं] पोखरा, सरोवर।

**तालिका** - स्त्री० [सं] सूची; पूँजी; मजीठ।

**तालिब** - वि० [अ] चाहनेवाला।

**तालिबे-इल्म** - पु० [अ] विद्यार्थी; शिष्य।

**ताली** - स्त्री० [सं] कुंजी, चाभी; थपेड़ी, करतल-ध्वनि; तलैया; **मु०**—पीटना या बजाना - हँसी उड़ाना; ख़ुशी प्रकट करना; **कहा०** एक हाथ से ताली नहीं बजती - वैर या प्रीति एक ओर से नहीं होती।

**तालीक़ा** - पु० [अ] माल-असबाब की कुर्की; परिशिष्ट।

**तालीफ़** - स्त्री० [अ] ग्रंथ की रचना या संकलन; खींचना।

**तालीम** - स्त्री० [अ] शिक्षा; **यौ०**—याफ़्ता - शिक्षित।

**तालील** - स्त्री० [अ] दलील पेश करना, कारण बताना।

**तालु** - पु० [सं] मुँह के अन्दर का ऊपरी भाग जिसके नीचे जीभ रहती है; **मु०**—में दाँत जमना - बुरे दिन आना; —से जीभ न लगना - बकते रहना, चुप न रहना।

**तालेवर** - वि० [अ] धनी।

**ताल्लुक़** - पु० [अ] तअल्लुक़।

**ताव** - पु० [हिं] वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिए पहुँचायी जाए; ताप, आँच; आँच द्वारा पहुँचायी हुई गरमी का मान; अहंकारयुक्त आवेश; बिना कटा-फटा टुकड़ा; **मु०**—आना - जितना चाहिए उतना गरम हो जाना; जोश में आ जाना; मूँछों पर ताव देना - बल व पराक्रम के घमंड में मूँछें ऐंठना।

**तावना**† - स० [हिं] तपाना, गरम करना; दुख पहुँचाना।

**तावरा** - पु० } [हि] जलन ; धूप ; गरमी
**तावरी** - स्त्री० } के कारण आया हुआ चक्कर ।

**तावा** - पु० [देश] तवा ।

**तावान** - पु० [फ़ा] दंड ।

**तावीज़** - पु० [अ] यंत्र-मंत्र का कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाये ।

**तावील** - स्त्री० [अ] व्याख्या ; बहाना ।

**ताश** - पु० [अ] एक खेल और उसका सामान , एक प्रकार का कपड़ा ।

**ताशा** - पु० [अ] चमड़ा मढ़ा एक बाजा ।

**तासीर** - स्त्री० [अ] असर ; भाव ।

**तासों** - सर्व० [हि] उससे ।

**तास्सुफ़** - पु० [अ] अफ़सोस ।

**तास्सुब** - पु० [अ] तअस्सुब ।

**तास्सुर** - पु० [अ] तासीर ।

**ताहम** - अव्य० [फा] तो भी ; इतना होने पर भी ।

**ताहरी** - स्त्री० [अ] तहरी ।

**ताहि** - सर्व० [हिं] उसको, उसे ।

**ताहिर** - वि० [अ] शुद्ध ; पवित्र ।

**ताहिरी** - स्त्री० [अ] एक प्रकार की खिचड़ी, तहरी ।

**तिकड़म** - पु० [हि] चतुराई ; युक्ति ।

**तिकोना** - वि० [हि] जिसमें तीन कोने हों ।

**तिक्का** - पु० [फ़ा] मांस का टुकड़ा ; मु०—बोटी उड़ाना - टुकड़े-टुकड़े करना ।

**तिक्की** - स्त्री० [हिं] ताश की तीन संख्यावाली पत्ती, तिड़ी ।

**तिक्ख** - वि० [हिं] तीखा ; तेज़ ; चालाक ।

**तिक्त** - वि० [स] तीता ; सुगंधयुक्त ।

**तिक्तक** - पु० [सं] परवल ; चिरायता ; तिक्तरस ।

**तिखाई** - स्त्री० [हिं] तीखापन ; तेज़ी ।

**तिगुना** - वि० [हिं] तीन गुना ।

**तिग्म** - 1. वि० [स] तीक्ष्ण, तेज़ ; 2. पु० वज्र , ताप ।

**तिजरा, तिजारी** - पु० [हि] एक दिन नागा देकर आनेवाला ज्वर, एकांतरा, इकतरा ।

**तिजारत** - स्त्री० [अ] व्यापार ।

**तिजारती** - वि० [अ] व्यापारसंबंधी ।

**तिजोरी** - स्त्री० [हि] कपड़े या गहने आदि रखने की लोहे की अलमारी ।

**तिड़ी** - स्त्री० [हि] तीन बूटियोंवाला ताश का पत्ता, तिक्की ।

**तित** - क्रि० [हिं] तहाँ, वहाँ , उधर ।

**तितर-बितर** - वि० [हिं] बिखरा हुआ ।

**तितली** - स्त्री० [हि] रंगीन पंखवाला एक पतिंगा ; एक घास ; तड़क-भड़क से रहनेवाली युवती ।

**तितलौआ** - पु० [हिं] कड़ुआ कद्दू ।

**तितिक्ष** - वि० [सं] क्षमाशील, सहनशील ।

**तितिक्षा** - स्त्री० [सं] सहिष्णुता ; क्षमा ; शांति ।

**तितिक्षु** - वि० [सं] क्षमाशील ; सहिष्णु ; शांत ।

**तितिम्मा** - पु० [अ] पुस्तक का परिशिष्ट ।

**तितीर्षा** - स्त्री० [सं] तैरने की इच्छा ; तर जाने की चाह ।

**तितीर्षु** - वि० [सं] तैरने या तर जाने की इच्छा करनेवाला ।

**तिते** † - वि० [हि] उतने ।

**तितेक** † - वि० [हिं] उतना ।

**तितै** † - क्रि० [हिं] वहाँ ही ; वहाँ; उधर ।

**तित्तिर** - पु० [स] तीतर पक्षी ।

**तिथि** - स्त्री० [स] तारीख़ ; मिति ; पंद्रह की संख्या ; श्राद्धदिवस ; **यौ०**—क्षय - तिथि की हानि ; —पत्र - पंचांग ; —वृद्धि - दो सूर्योदयों तक चलनेवाली तिथि ।

**तिन** - 1. सर्व० [हिं] 'तिस' का बहु०; 2. पु० तिनका।
**तिनकना** - अ० [हिं] चिड़चिड़ाना; चिढ़ना; रूठना।
**तिनका** - पु० [हिं] सूखी घास का टुकड़ा; **यौ०**—तोड़ - नाता तोड़; **मु०**—तोड़ना - बलैया लेना; —दाँतों में पकड़ना - दया की भिक्षा माँगना।
**तिपाई** - स्त्री० [हिं] तीन पायोंवाला आसन।
**तिपाड़** - पु० [हिं] जो तीन पाट जोड़कर बना हो; जिसमें तीन पल्ले हों।
**तिफ़्ल** - पु० [अ] बच्चा।
**तिबाबत** - स्त्री० [अ] चिकित्सा।
**तिबारा** - क्रि० [हिं] तीसरी बार।
**तिब्ब** - स्त्री० [अ] यूनानी चिकित्साशास्त्र।
**तिमंजिला** - वि० [हिं] तीन खंडों का (मकान)।
**तिमिंगिल** - पु० [सं] एक बड़ी मछली, ह्वेल।
**तिमि** - पु० [सं] समुद्र; मत्स्य।
**तिमिर** - पु० [सं] अंधकार; आँख का एक रोग; लोहे का मोर्चा।
**तिमिरमय** - 1. पु० [सं] ग्रहण; राहु; 2. वि० अंधेरे से व्याप्त।
**तिमिष** - पु० [सं] ककड़ी; फूट।
**तिमुहानी** - स्त्री० [हि] वह स्थान जहाँ तीन ओर से तीन नदियाँ या राहें आ मिली हों।
**तिय** † - स्त्री० [हिं] स्त्री; पत्नी।
**तियला** - पु० [हिं] स्त्रियों का एक पहनावा।
**तिरछा** - वि० [हिं] टेढ़ा; वक्र; कुटिल।
**तिरना** - अ० [हिं] तैरना; उतराना।
**तिरनी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियों के घाघरे या धोती का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है।
**तिरप** - स्त्री० [हिं] नाच का एक ताल।
**तिरयाक** - पु० [अ] ज़हरमोहरा जिससे साँप के विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है; रामबाण औषधि।
**तिरपाल** - पु० [हिं] राल चढ़ाया हुआ टाट।
**तिरमिरा** - पु० [हिं] चकाचौंध; आँख का एक रोग।
**तिरमिराना** - अ० [हिं] चौंधियाना।
**तिरस्कार** - पु० [सं] अनादर।
**तिरस्कृत** - वि० [सं] अनादृत।
**तिराना** - स० [हिं] पानी पर तैरना या तैराना, पार करना।
**तिरिया** - स्त्री० [हि] औरत; **यौ०**—चरित्र - स्त्री की पुरुष को ठगने या मूर्ख बनाने की चालाकी।
**तिरेंदा** - पु० [हिं] समुद्र में तैरता हुआ पीपा; बंसी की डोरी में लगी हुई छोटी लकड़ी।
**तिरोधान, तिरोभाव** - पु० [सं] अंतर्धान, लोप।
**तिरोहित** - वि० [सं] अंतर्हित, छिपा हुआ; ढँका हुआ।
**तिरौंछ** † - वि० [हिं] तिरछा।
**तिर्यक** - 1. वि० [सं] तिरछा, वक्र; 2. पु० पशु-पक्षी।
**तिलंगा** - पु० [हिं] अंग्रेज़ी फ़ौज का देशी सिपाही।
**तिलंगाना** - पु० [हिं] तैलंग देश।
**तिलंगी** - 1. वि० [हिं] तिलंगाने का निवासी या उसकी भाषा या जाति; 2. स्त्री० गुड्डी, पतंग।
**तिल** - पु० [सं] काले या सफ़ेद रंग का एक छोटा अनाज जिससे तेल निकले; छोटा काला दाग जो शरीर पर होता है; छोटा टुकड़ा या कण; **यौ०**—कट - तिल का चूर्ण; —कुट - कूटे हुए तिल जो चाशनी में पागे गये हों;—चटा - एक झींगुर; —तंडुलक - मिलन; आलिंगन; —दानी - सूई आदि रखने की दर्जियों की छोटी थैली; —पट्टी,

पपड़ी - खाड़ या गुड़ की चाशनी में तिल की बनी रोटी ; खाड़ या गुड़ में पगे हुए तिलों का कतरा , मु०—का ताड़ करना - छोटी सी बात को बड़ा रूप देना ;—धरने की जगह न होना - ठसाठस भरा होना ;—भर - थोड़ा-सा भी।

**तिलक** - पु० [सं] चंदन आदि का टीका ; मु०—भेजना - वर के घर तिलक चढ़ाने को सामग्री भेजना।

**तिलकना** - अ० [हि] गीली मिट्टी या ज़मीन का सूखकर फटना।

**तिलमिलाना** - अ० [हिं] चकाचौंध आना ; बेचैन होना।

**तिलवा** - पु० [हि] तिल का लड्डू।

**तिलस्म** - पु० [अ] जादू, इंद्रजाल ; करामात।

**तिलस्मात** - पु० [अ] 'तिलस्म' का बहु०।

**तिलस्मी** - वि० [अ] तिलस्मसंबंधी।

**तिलहन** - पु० [हि] फ़सल के रूप में बोये जानेवाले तिल के पौधे।

**तिलांजलि** - स्त्री० [सं] मृतक-संस्कार का एक अंग , मु० —देना - बिलकुल छोड़ देना।

**तिला** - पु० [फ़ा] नपुंसकता नष्ट करनेवाला एक तेल ; [अ] सोना, स्वर्ण।

**तिलान्न** - पु० [सं] तिल की खिचड़ी।

**तिलाई** - वि० [अ] सोने का।

**तिलाक़** - पु० [अ] तलाक़।

**तिलाकारी** - स्त्री० [अ] सोने का मुलम्मा चढ़ाने का काम।

**तिलावत** - स्त्री० [अ] कुरान का पाठ।

**तिलिस्म** - पु० [अ] तिलस्म।

**तिलोक** - पु० [हिं] त्रिलोक , यौ०—पति - विष्णु।

**तिलोचन** - पु० [हिं] त्रिलोचन, शिव।

**तिलोदक** - पु० [सं] तिलांजलि।

**तिलौंचना** - स० [हि] तेल लगाकर चिक्कना करना।

**तिलौंछा** - वि० [हि] तेल के स्वादवाला ; चिकना।

**तिलौरी** - स्त्री० [हि] तिल मिलाकर बनायी हुई उड़द या मूँग की बरी , एक प्रकार की मैना।

**तिल्ला** - पु० [फ़ा] सोना ; कलाबत्तू का काम।

**तिल्ली** - स्त्री० [हिं] प्लीहा, पिलही , तिल।

**तिवारी** - पु० [हि] त्रिपाठी।

**तिवास** - पु० [हिं] तीन दिन।

**तिश्नगी** - स्त्री० [फ़ा] प्यास।

**तिश्ना** - 1. पु० [अ] ताना , 2. स्त्री० [हि] तृष्णा।

**तिष्य** - 1. पु० [सं] एक नक्षत्र , पौष मास ; कलियुग , 2. वि० शुभ।

**तिष्ठना** † - अ० [हि] ठहरना।

**तिस** - सर्व० [हि] विभक्ति लगने के पूर्व 'ता' का यह रूप हो जाता है ; यौ०— पर - उसके बाद , यद्यपि।

**तिसना** | - स्त्री० [हिं] तृष्णा।

**तिसरैत** - पु० [हि] मध्यस्थ ; तीसरे हिस्से का मालिक।

**तिसाना** † - अ० [हि] प्यासा होना।

**तिहरा** - वि० [हि] तेहरा, तिगुना।

**तिहराना** - स० [हिं] तीसरी बार करना।

**तिहरी** - स्त्री० [हि] तीन लड़ों की माला ; दही जमाने का मिट्टी का बर्तन।

**तिहाई** - 1. पु० [हि] तीसरा हिस्सा , 2. स्त्री० खेत की उपज ; मु० —मारी जाना - फसल का न उपजना।

**तिहारा, तिहारो** - सर्व० [हिं] तुम्हारा।

**तिहाल** स्त्री० [अ] तिल्ली, प्लीहा।

**तिहाव** - पु० [हि] कोप ; बिगाड़।

**तिहिं, तिहि** - सर्व० [हिं] तेहि, उसे।

**तिहुँ, तिहूँ** - वि० [हिं] तीनों।
**तिहैया** - पु० [हिं] तीसरा भाग ; तबले की थाप।
**ती** † - स्त्री० [हिं] पत्नी ; स्त्री।
**तीक्ष्ण** - 1. वि० [सं] तेज़ धारवाला ; तीव्र ; प्रखर ; तीखा ; उत्कट गंधवाला ; कठोर ; 2. पु० विष ; लोहा ; युद्ध ; **यौ०** **—कंटक** - धतूरे, बबूल या करील का पेड़ ; **—कंद** - लहसुन ; प्याज ; **—गंध** - सहजन का पेड़ ; लाल तुलसी ; **—दंष्ट्र** - बाघ ; **—दृष्टि** - सूक्ष्मदर्शी ; **—पुष्प** - लौंग।
**तीख** - वि० [हिं] तीखा।
**तीखन** † - वि० [हिं] तीक्ष्ण।
**तीखा** - वि० [हिं] तेज़।
**तीज** - स्त्री० [हिं] प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि ; भादों सुदी तीन; विवाहिता स्त्रियों का हरतालिका व्रत।
**तीजा** - 1. वि० [हिं] तीसरा ; 2. पु० मुसलमानों में मृत्यु के बाद का तीसरा दिन।
**तीतर** - पु० [हिं] एक लड़ाकू पक्षी।
**तीता** - वि० [हिं] चरपरा ; तिक्त।
**तीन** - वि० [हिं] दो और एक का जोड़ ; **मु०** **—तेरह करना** - तितर-बितर करना ; **न तीन में, न तेरह में** - जो किसी गिनती में न हो ; **—पाँच करना** - टालमटोल करना।
**तीनत** - स्त्री० [अ] प्रकृति ; आदत।
**तीनि** † - वि० [हिं] तीन।
**तीमारदार** - वि० [फ़ा] रोगी की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला।
**तीरंदाज़** - पु० [फ़ा] तीर चलानेवाला, धनुर्धर।
**तीरंदाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] तीर चलाने की विद्या।
**तीर** - पु० [सं] नदी का किनारा, तट ; बाण ; **यौ०** **—गर** - तीर चलानेवाला ; **—वर्ती** - तट पर रहनेवाला ; पड़ोसी ; **—स्थ** - नदी के तट पर पहुँचाया हुआ ; मरणासन्न व्यक्ति।
**तीरगी** - स्त्री० [फ़ा] अंधकार।
**तीरथ** - पु० [हिं] तीर्थ।
**तीरा** - वि० [फ़ा] अंधकारपूर्ण ; **यौ०** **—दिल** - कलुषित हृदयवाला ; **—बख़्त** - अभाग्य।
**तीर्थंकर** - पु० [सं] जिन ; विष्णु ; शास्त्रकार।
**तीर्थ** - पु० [सं] पुण्यक्षेत्र ; शास्त्र ; यज्ञ ; घाट ; ब्राह्मण ; आगम ; अग्नि ; **यौ०** **—कर** - तीर्थंकर ; **—काक** - लोलुप तीर्थोपजीवी ; **—यात्रा** - तीर्थाटन ; **—सेवी** - तीर्थ में रहनेवाला ; बक, बगुला ; **—राज** - प्रयाग।
**तीर्थाटन** - पु० [सं] तीर्थ करने के लिए की जानेवाली यात्रा।
**तीली** - स्त्री० [हिं] सींक ; खपची ; रेशम लपेटने का एक औज़ार।
**तीव्र** - वि० [सं] तेज़ ; अत्यंत ; असह्य ; भयंकर ; **यौ०** **—गति** - पवन ; जिसकी चाल तेज़ हो।
**तीस** - वि० [हिं] बीस और दस ; **यौ०** **—मार ख़ाँ** - बाँका वीर ; **तीसों दिन** - सदा-सर्वदा।
**तीसर** - वि० [हिं] तीसरा।
**तीसरा** - वि० [हिं] क्रम में दो के बाद ; **यौ०** **—पहर** - अपराह्न।
**तीसी** - स्त्री० [हिं] अतसी, अलसी ; तेलहन।
**तुंग** - 1. वि० [सं] ऊँचा ; प्रधान ; उग्र ; 2. पु० एक पेड़ ; नारियल ; पर्वत ; गैंडा।
**तुंड** - पु० [सं] चोंच ; थूथन ; मुँह ; सूँड़।

**तुडिल** - वि० [सं] तोंदवाला ; बकवादी ।
**तुंडी** - 1. वि० [स] सूँड़वाला; 2. पु० मुँह, चोच ; बिंबाफल ।
**तुंद** - 1. पु० [सं] पेट ; तोद ; 2. वि० [फ़ा] तेज़ ; उग्र।
**तुंदि** - पु० } [सं] नाभि ।
**तुंदिका** - स्त्री० }
**तुंदी** - स्त्री० }
**तुंदिल** - वि० [स] बड़ा पेटवाला ।
**तुंदैला** - वि० [हि] तोंदवाला ।
**तुंब** - पु० [सं] लौकी ; तुंबा ; ऑवला ।
**तुंबर** - स्त्री० [सं] तानपूरा ; तुंबरु ।
**तुंबा** - 1. स्त्री० [सं] कड़ुआ कद्दू ; दुधार गाय , 2. पु० [हि] कड़ुवे कद्दू का पात्र ।
**तुंबी** - स्त्री० [सं] छोटा कड़ुआ कद्दू या उसका बना पात्र ।
**तुअर** - स्त्री० [हिं] अरहर ।
**तुक** - स्त्री० [हि] चरणों के अंतिम अक्षरो का मेल, अंत्यानुप्रास ; यौ०—बंदी - साधारण पद्यरचना ; मु०—जोड़ना - भद्दी कविता करना ।
**तुकमा** - पु० [फ़ा] घुंडी फँसाने का फंदा ।
**तुकांत** - स्त्री० [सं] चरणो के अंतिम अक्षरो का मेल ।
**तुकारना** - स० [हि] तू तू करके संबोधन करना ।
**तुक्कड़** - पु० [हि] साधारण कविता करनेवाला ।
**तुक्का** - पु० [फ़ा] शल्यरहित बाण, बिना फल का बाण ।
**तुख** - पु० [हिं] भूसी, छिलका ।
**तुख़्म** - पु० [फ़ा] बीज ।
**तुख़्मा** - पु० [अ] अपच, बदहज़मी ; संग्रहणी ।
**तुग़यानी** - स्त्री० [अ] नदी की बाढ़, पूर ।
**तुग़रल** - पु० [तु] बहरी नामक शिकारी पक्षी ।
**तुग़रा** - पु० [तु] एक प्रकार की लेख-प्रणाली जिसके अक्षर पेचीदे होते हैं ।
**तुग़लक़** - पु० [अ] सरदार ।
**तुचा** - स्त्री० [हि] त्वचा, चमड़ी ।
**तुच्छ** - वि० [सं] नीच ; नगण्य ; अल्प ; निस्सार , मंद ; हीन ।
**तुच्छातितुच्छ** - वि० [सं] एकदम गया-गुज़रा ।
**तुज़ुक** - पु० [तु] शोभा ; क़ानून ; किसी बादशाह का लिखा आत्मचरित ।
**तुझ** - सर्व० [हि] कर्ता और संबधकारक के अतिरिक्त अन्य कारको में प्रयुक्त होनेवाला 'तू' का रूप ।
**तुठना** - अ० [हि] तुष्ट होना, प्रसन्न होना ।
**तुड़ाई** - स्त्री० [हि] तोड़ने या तुड़ाने की क्रिया या भाव, तोड़ने की मज़दूरी ।
**तुतरा**† - वि० [हिं] तोतला ।
**तुतलाना** - अ० [हि] शब्दो का अस्पष्ट उच्चारण करना, रुक-रुककर टूटे-फूटे शब्द बोलना ।
**तुतली** - वि०, स्त्री० [हिं] तोतली ।
**तुत्थ** - पु० [सं] तूतिया ; नीलाथोथा ; पत्थर; अग्नि ।
**तुत्था** - स्त्री० [सं] नील का पौधा ; छोटी इलायची ।
**तुनक** - वि० [फा] दुर्बल ; थोड़ा ; नाज़ुक ; यौ०— मिजाज - बात-बात पर बिगड़नेवाला ; —हवास - जिसके मन पर किसी बात का जल्दी प्रभाव पड़े ।
**तुनतुनी** - स्त्री० [अनु] वह बाजा जिसमें से तुनतुन शब्द निकलता है ; सारंगी ।
**तुन्द** - वि० [फ़ा] तेज़ , यौ०—खू - जिसका स्वभाव उग्र हो ;—बाद - आँधी ।
**तुन्दी** - स्त्री० [हिं] तेज़ी ।
**तुपक** - स्त्री० [तु] छोटी तोप ; बंदूक ; यौ० —ची - तोप चलानेवाला ।

**तुफ़ंग** - स्त्री० [फ़ा] बंदूक़ ।
**तुफ़ंगची** - पु० [फ़ा] बन्दूक चलानेवाला ।
**तुफ़** - अव्य० [फ़ा] लानत है, धिक्कार है ।
**तुफ़ूलियत** - स्त्री० [अ] तिल्फ़ी ।
**तुफ़ैल** - पु० [अ] साधन ; द्वारा ; मु०— किसीके तुफ़ैल से - किसीके द्वारा ।
**तुभना** - अ० [हिं] स्तब्ध रहना; थक जाना ।
**तुम** - सर्व० [हिं] 'तू' शब्द का बहुवचन।
**तुमड़ी** - स्त्री० [हिं] एक गोल कद्दू ।
**तुम-तराक** - स्त्री० [फ़ा] तड़क-भड़क; बनावट ।
**तुमन** - पु० [फ़ा] भाईचारा; सेना ; मु०—बाँधना - सेना एकत्र करना ।
**तुमल, तुमुर, तुमुल** - पु० [सं] सेना का कोलाहल ; गहरी मुठभेड़ ; लड़ाई की हलचल ।
**तुम्हारा** - सर्व० [हिं] 'तुम' का संबंध-कारक रूप ।
**तुरंग** - 1. वि० [सं] जल्दी चलनेवाला; 2. पु० घोड़ा ; मन ; सात की संख्या ।
**तुरंगम** - पु० [सं] घोड़ा ; एक वृत्त ।
**तुरंज** - पु० [फ़ा] चकोतरा नींबू ।
**तुरंजबीन** - पु० [फ़ा] एक प्रकार की चीनी; नीबू का शरबत ।
**तुरंत** - क्रि० [हिं] फ़ौरन, तुरत ।
**तुरंता** - पु० [हिं] गाँजा ।
**तुर** - अव्य० [सं] शीघ्र, जल्द ।
**तुरई** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की तरकारी ।
**तुरकाना** - वि० [फ़ा] तुर्क जैसा ।
**तुरकानी, तुरकिन** - स्त्री० [फ़ा] तुर्क औरतों का ढीलाढाला पहनावा ; तुर्क जाति की औरत ।
**तुरग** - 1. वि० [सं] तेज़ चलनेवाला ; 2. पु० घोड़ा ।
**तुरत** - क्रि० [सं] शीघ्र, चटपट; तत्काल ।
**तुरतुरा** † - वि० [हिं] तेज़ ; जल्दबाज़ ; बहुत जल्दी-जल्दी बोलनेवाला ।
**तुरपन** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की सिलाई, बखिया का उलटा ।
**तुरपना** - स० [हिं] तुरपन की सिलाई करना ।
**तुरफ़ा** - वि० [अ] अनोखा ।
**तुरबत** - स्त्री० [अ] क़ब्र, समाधि ।
**तुरय** †.- पु० [हिं] घोड़ा ।
**तुरही** - स्त्री० [हि] फूँककर बजाया जाने-वाला एक प्रकार का बाजा ।
**तुरा** - स्त्री० [हिं] त्वरा ।
**तुराई** † - 1. स्त्री० [हिं] रूई भरा हुआ बिछावन, गद्दा ; 2. क्रि० जल्दी ।
**तुराट** † - पु० [हिं] घोड़ा ।
**तुराना** † - अ० [हिं] जल्दी करना, घबराना ।
**तुराब** - पु० [अ] ज़मीन ।
**तुरावती** - वि०, स्त्री० [हिं] वेगवाली ।
**तुरीय** - वि० [सं] चौथा ; श्रेष्ठ ; शक्ति-शाली ; विशेष—1. वाणी के चार भेद—परा, पश्यंती मध्यमा और बैखरी (तुरीया) ; 2. चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय ।
**तुरुप** - पु० [हिं] ताश के खेल में प्रधान माना हुआ रंग ।
**तुरुपना** - स० [हिं] तुरपना ।
**तुरैया** - स्त्री० [हिं] तुरई ।
**तुर्क** - पु० [फ़ा] तुर्किस्तान; तुर्किस्तान का निवासी ; **यौ०**— मान - एक जाति का नाम ; तुर्कों के समान वीर ।
**तुर्की** - स्त्री० [तु] तुर्कीस्तान की भाषा ; तुर्क देश का, तुर्क देशसंबंधी ।
**तुर्रा** - पु० [अ] काकपक्ष ; जुल्फ़ ; कलगी ; जटाधारी ; मु०— यह कि - उसपर भी - इतना और ।

**तुर्श** - वि० [फा] खट्टा ; कठोर, **यौ०**—रू - उग्र स्वभाववाला ;—रूई - कठोर या अनुचित बातें कहना ।

**तुर्शी** - स्त्री० [फ़ा] खट्टापन ; व्यवहार आदि की कठोरता ।

**तुलना** - 1. स्त्री० [सं] मिलान ; समता ; 2. अ० तौला जाना ; उद्यत होना ।

**तुलनात्मक** - वि० [सं] जिसमें किसीसे तुलना की जाय ।

**तुलनी** - स्त्री० [हिं] तराजू की डंडी के काँटे के दोनो ओर का हिस्सा ।

**तुलबा** - पु० [अ] 'तालिब' का बहु० ; विद्यार्थी लोग ।

**तुलबुली** - स्त्री० [फ़ा] जल्दबाज़ी ।

**तुलवाई** - स्त्री० [हि] तौलने की क्रिया या उसकी मजूरी ।

**तुलसी** - स्त्री० [सं] एक पौधा जिसे हिन्दू बहुत पवित्र मानते हैं ; **यौ०**—दल - तुलसी की पत्ती ;—दाना - एक गहना ;—विवाह - तुलसी के पौधे के साथ विष्णु मूर्ति का विवाह ।

**तुला** - स्त्री० [सं] तराजू ; समानता, नाप ; भाण्ड ; एक दिव्य परीक्षा ; **यौ०**—दान - मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य का दान।

**तुलाई** - स्त्री० [हि] तौलने की क्रिया; गाड़ी के धुरे में तेल देने की क्रिया ।

**तुलिका** - स्त्री० [सं] एक तरह का खंजन पक्षी ।

**तुलित** - वि० [सं] समान, सदृश ।

**तुली** - स्त्री० [सं] जुलाहों की कूची, तूलिका ।

**तुलूअ** - पु० [अ] सूर्य या किसी नक्षत्र का उदय होना ।

**तुल्य** - वि० [सं] समान, सदृश ; अभिन्न ; **यौ०**—काल - सम-सामयिक; —जातीय - एक ही जाति का ;—तर्क - तथ्य की कोटि का तर्क ;—दर्शन - समदृष्टि, समदर्शी ;—पान - सजातीयों का एकत्र मद्यपान ।

**तुवर** - 1. वि० [स] कसैला, दाढ़ी-मूँछ-विहीन ; 2. पु० कसैला रस ; अरहर ।

**तुष** - पु० [सं] भूसी ; अंडे के ऊपर का छिलका ; **यौ०**—सार - अग्नि;—धान्य - छिलकेवाला अन्न ; तुषानल - भूसी की आग ; एक तरह का प्राणदंड ।

**तुषार** - पु० [स] हिम, बरफ़ ; चीनिया कपूर ; **यौ०**—कर - चंद्रमा ; कपूर ।

**तुष्ट** - 1. वि० [सं] तृप्त ; 2. पु० विष्णु ।

**तुष्टि** - स्त्री० [सं] संतोष, तृप्ति ।

**तुसी** - स्त्री० [हिं] भूसी ।

**तुहमत** - स्त्री० [फ़ा] तोहमत ; बुरी राय ; झूठी बदनामी ।

**तुहार** - सर्व० [हि] तुम्हारा ।

**तुहिं** - सर्व० [हि] तुझको ।

**तुहिन** - पु० [सं] पाला, बरफ ; चंद्रिका ; कपूर ; **यौ०**—कण - ओस, बरफ़ का गाला ।

**तूँबा** - पु० [हि] कडुआ गोल कद्दू और उसका बना कमंडल जो साधुओं के हाथ में रहता है, तुंबा ।

**तूँबी** - स्त्री० [हिं] छोटा तूँबा, रक्त या वायु खींचने का एक औज़ार, **मु०**—लगाना - सूजे हुए स्थान पर रक्त या हवा खींचने के लिए तूँबी लगाना ।

**तू** - सर्व० [हि] 'तुम' का एकवचन रूप, **मु०** —तू, मैं-मैं करना - कहा-सुनी करना ।

**तूग** - पु० [तु] सेना का झंडा ।

**तूटना** - अ० [हिं] टूटना ।

**तूण** - पु० [सं] तरकश ; बाण रखने का चोगा ।

**तूणी** - स्त्री० } [सं] तूण, निषंग, तरकश।
**तूणीर** - पु० }

**तूत** - पु० [फ़ा] मीठे फलोंवाला एक पेड़ या उसका फल, शहतूत।

**तूतिया** - पु० [अ] नीला तुत्था।

**तूती** - स्त्री० [फ़ा] छोटी जाति का तोता; मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा; **मु०** **किसीकी तूती बोलना** - किसीका खूब प्रभाव जमना; **नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़** - बड़ों के सामने छोटों की बात की अनसुनी।

**तूदा** - पु० [फ़ा] ढेर; खेत की मेंड़; **यौ०** **—बन्दी** - खेत आदि की हदबंदी।

**तूना** - अ० [हिं] टपकना; गिरना; गर्भ-पात होना।

**तूनीर** - पु० [हिं] तूणीर।

**तूफ़ान** - पु० [अ] आँधी; ज़ोर की बाढ़; भारी आपत्ति; दंगा, फ़साद; **मु०** **—उठाना या खड़ा करना** - बखेड़ा मचाना; **—जोड़ना** - झूठा कलंक लगाना।

**तूफ़ानी** - वि० [फ़ा] उपद्रवी; उग्र, प्रचंड।

**तूबर** - पु० [सं] शृंगहीन वृषभ; श्मश्रुहीन पुरुष; नपुंसक; कषाय रस।

**तूबा** - पु० [अ] स्वर्ग का एक वृक्ष।

**तूमड़ी, तूमरी** - स्त्री० [हिं] तूंबी।

**तूम-तड़ाक** - स्त्री० [फ़ा] शान-शौकत; आन-बान।

**तूमना** - स० [हिं] उधेड़ना; ऐब निकालना; भद्दी गालियाँ देना; पीटना।

**तूमा** - पु० [हिं] तूंबा; **यौ०** **—पलटी, फेरी** - इसकी चीज़ उसको देना; इधर की चीज़ उधर करना।

**तूमार** - पु० [अ] बात का व्यर्थ विस्तार; **मु०** **—बाँधना** - बात का बतंगड़ करना।

**तूर** - 1. पु० [अ] रूई; शाम देश का एक पहाड़; नगाड़ा; तुरही; सेना; 2. वि० शीघ्रता करनेवाला; 3. स्त्री० अरहर।

**तूरा** - 1. पु० [हिं] तुरही; 2. स्त्री० [सं] वेग।

**तूरान** - पु० [फ़ा] फ़ारस के उत्तर-पूर्व का देश।

**तूरी** - स्त्री० [सं] धतूरा।

**तूर्ण** - 1. वि० [सं] तेज़; 2. अव्य० शीघ्र, तेज़ी से।

**तूर्य** - पु० [सं] तुरही; मृदंग।

**तूल** - 1. पु० [सं] रूई; आकाश; 2. वि० तुल्य, समान; [अ] लंबाई - **मु०** **—खींचना** - बहुत बढ़ जाना; **यौ०** **—कलाम** - लम्बी-चौड़ी बातें।

**तूलमतूल** - अव्य० [हिं] आमने-सामने, समक्ष।

**तूला** - 1. पु० [अ] लम्बाई; 2. स्त्री० [हिं] कपास; दीपक की बत्ती।

**तूलानी** - वि० [अ] लंबा।

**तूलिका** - स्त्री० [सं] कूँची; लेखनी; रूई-भरा गद्दा; नील; साँचा; बरमा।

**तूली** - स्त्री० [सं] कूँची।

**तूष्णी** - 1. वि० [सं] मौन, ख़ामोश; 2. स्त्री० चुप्पी, ख़ामोशी।

**तूस** - पु० [अ] बढ़िया ऊनी कपड़ा, पशमीना; भूसी।

**तूसना†** - 1. स० [हिं] प्रसन्न करना; 2. अ० संतुष्ट होना।

**तूसा** - पु० [हिं] चोकर, भूसी।

**तूसी** - वि० [हिं] स्लेट के रंग का (कपड़ा)।

**तृजग** - वि० [हिं] पशु-पक्षी।

**तृण** - पु० [सं] घास; **मु०** (किसीसे) **—तोड़ना** - संबंध-विच्छेद करना, नाता तोड़ना; **—गहना या पकड़ना** - शरण में जाना, दैन्य प्रकट करना; **—तोड़ना**

बलैया लेना, अपने को न्योछावर करना ; यौ० —वत - घास के समान ; तुच्छ ।

**तृतीय** - वि० [सं] तीसरा ; यौ०—प्रकृति - नपुंसक ।

**तृन** - पु० [हि] तृण

**तृप्त** - वि० [स] अघाया हुआ ; खुश ।

**तृप्ति** - स्त्री० [सं] संतोष ; खुशी ।

**तृषा** - स्त्री० [सं] प्यास ; तीव्र इच्छा ; लोभ ; यौ०—वंत - प्यासा ।

**तृषालु** - वि० [सं] प्यासा ।

**तृषाहा** - स्त्री० [सं] सौंफ ।

**तृषित** - वि० [सं] तृषावंत ।

**तृष्णा** - स्त्री० [सं] प्यास, लालच; भोगेच्छा ; यौ०—क्षय - संतोष ; शांति ; विरक्ति ।

**तृष्णालु** - वि० [स] प्यासा ; लालची ।

**तें**† - प्रत्य० [हिं] से, द्वारा ।

**तेंदुआ** - पु० [हिं] चीते की जाति का एक हिंसक जन्तु ।

**ते** - सर्व० [हि] वे, वे लोग ।

**तेइ** - सर्व० [हिं] वे ही ।

**तेखना**† - अ० [हिं] बिगड़ना, नाराज़ होना ।

**तेग़** - स्त्री० [फ़ा] बड़ी तलवार ।

**तेग़ा** - पु० [फ़ा] एक प्रकार की छोटी चौड़ी तलवार; कुश्ती का एक पेच ।

**तेज** - पु० [सं] चमक , गर्मी; उत्साह , तीखापन ; यौ० —धारी, वंत - तेजस्वी, प्रतापी ; ताक़तवाला ।

**तेज़** - वि० [फा] पैनी धारवाला; जल्दी चलनेवाला; झालदार; महँगा; तीव्र बुद्धिवाला ; यौ०—दस्त - फ़ुरतीला ;—मिज़ाज़ - क्रोधी ;—रफ़्तार - शीघ्रगामी ।

**तेजपत्ता, तेजपात** - पु० [हि] एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ मसाले की तरह दाल-तरकारी आदि में डाली जाती हैं ।

**तेजस** - पु० [सं] तीक्ष्णता ; दिव्य ज्योति ; पराक्रम; वीर्य ; प्रभाव ; प्रताप ; मक्खन ; सोना ; अग्नि ; सार ; ओज ; नेत्र की स्वच्छता ।

**तेजसी**† - वि० [हि] तेजस्वी ।

**तेजस्विता** - स्त्री० [सं] तेजस्वी होने का भाव ।

**तेजस्वी** - वि० [सं] तेजयुक्त ; प्रतापी ।

**तेज़ाब** - पु० [फ़ा] एक अम्ल क्षार ।

**तेजारत** - स्त्री० [हिं] तिज़ारत ।

**तेजारती** - वि० [हिं] तिज़ारती ।

**तेज़ी** - स्त्री० [फ़ा] तेज़ होने का भाव ।

**तेजोबल** - पु० [सं] दवा के काम में आनेवाला एक कंटीला जंगली पेड़ ।

**तेजोमंडल** - पु० [सं] सूर्य-चंद्र आदि के इर्द-गिर्द प्रकाश का घेरा ।

**तेजोमय** - वि० [सं] तेज से पूर्ण ।

**तेजोरूप** - पु० [सं] जो अग्नि या तेज के रूप का हो ; ब्रह्म ।

**तेरही, तेरहीं** - स्त्री० [हिं] किसीके मरने के दिन के बाद की तेरहवी तिथि ; श्राद्ध-संस्कार ।

**तेरा, तेरो** - सर्व० [हिं] मध्यम पुरुष एक-वचन की षष्ठी का सूचक ।

**तेल** - पु० [सं] बीजों से निकलनेवाला चिकना द्रवपदार्थ जो खाने, जलाने या शरीर में लगाने के काम आता है ।

**तेलहन** - पु० [हिं] वे बीज जिनसे तेल निकाला जाता है ।

**तेलहा** - वि० [हिं] तेल से संबन्धित; तेल का बना ।

**तेला** - पु० [हिं] तीन दिन का उपवास ।

**तेलिन** - स्त्री० [हि] तेली जाति की स्त्री; एक कीड़ा ।

**तेलिया** - वि० [हिं] जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो ; तेल का-सा रंगवाला ; यौ० —पखान - एक तरह

का काला व चिकना पत्थर ; —पानी - बहुत खारा पानी ; —मसान - कंजूस आदमी।

**तेली** - पु० [हिं] तेल पेरनेवाली एक जाति ; मु०—का बैल - हर समय काम में लगा रहनेवाला व्यक्ति।

**तेलुगु** - स्त्री० आन्ध्र देश की भाषा।

**तेलौंची** - स्त्री० [हिं] तेल रखने की प्याली, मलिया।

**तेवर** - पु० [हिं] क्रोध-भरी तिरछी दृष्टि; भौंह ; मु०— चढ़ना - क्रोध के मारे भौंहें तन जाना।

**तेवरी** - स्त्री० [हिं] त्योरी।

**तेवहार** - पु० [हिं] त्योहार।

**तेवाना** † - अ० [देश] सोच में पड़ना, चिंता करना।

**तेशा** - पु० [फ़ा] वसूला नामक औज़ार।

**तेह** - पु० [हिं] ग़ुस्सा ; अहंकार ; तेज़ी।

**तेहरा** - वि० [हिं] तीन परत किया हुआ ; जिसकी एक साथ तीन प्रतियाँ हों।

**तेहा** - पु० [हिं] क्रोध।

**तेहि** - सर्व० [हिं] उसको, उसे।

**तेही** - वि० [हिं] क्रोधी ; अभिमानी।

**तैं** - 1. क्रि० [हिं] से ; 2. सर्व० तू।

**तै** - 1. वि० [हिं] तय ; 2. अव्य० उतने।

**तैजस** - 1. वि० [सं] तेज से उत्पन्न ; तेज-संबंधी ; साहसी ; 2. पु० वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस में परिणत करती है।

**तैना** - स० [हिं] तपाना ; जलाना।

**तैनात** - वि० [अ] नियुक्त, मुकर्रर।

**तैनाती** - स्त्री० [अ] नियुक्ति, मुकर्ररी।

**तैयार** - वि० [अ] दुरुस्त ; मोटा-ताज़ा ; कटिबद्ध ; प्रस्तुत।

**तैय्यारा** - पु० [अ] गुब्बारा ; हवाई जहाज़।

**तैयारी** - स्त्री० [अ] दुरुस्ती ; धूमधाम ; तत्परता ; अभ्यास से प्राप्त कुशलता।

**तैर** - पु० [अ] पक्षी।

**तैरना** - अ० [हिं] उतराना, पानी के ऊपर-ऊपर फिरना।

**तैराई** - स्त्री० [हिं] तैरने की क्रिया ; तैरने - तैराने की मजूरी।

**तैराक** - 1. पु० [हिं] तैरनेवाला 2. वि० तैरने में कुशल।

**तैर्थिक** - 1. वि० [सं] पवित्र ; तीर्थसंबंधी ; 2. पु० संन्यासी ; शास्त्रकार ; नया धार्मिक मत चलानेवाला।

**तैलंग** - पु० [हिं] आंध्र प्रांत का एक नाम।

**तैल** - पु० [हिं] तिल को पेरकर निकाला हुआ द्रव ; तेल ; यौ०—किट्ट - तेल के नीचे बैठा हुआ मैल ; खली ; —द्रोणी - काठ का बना एक बड़ा पात्र ; —यंत्र - कोल्हू।

**तैलाभ्यंग** - पु० [सं] शरीर में तेल मलने की क्रिया ; तेल की मालिश।

**तैलिनी** - स्त्री० [सं] बत्ती।

**तैश** - पु० [अ] आवेश ; क्रोध।

**तैसा** - वि० [हिं] उस प्रकार का, वैसा।

**तोंद** - स्त्री० [हिं] बढ़ा हुआ पेट ; मु०—पचकना - मुटाई दूर होना ; शेखी निकल जाना।

**तोंदल** - वि० [हिं] तोंदवाला।

**तोंदी** - स्त्री० [हिं] नाभि।

**तोंदीला** - वि० [हिं] तोंदल।

**तो** - अव्य० [हिं] तब ; उस स्थिति में।

**तोइ** - पु० [हिं] तोय, पानी।

**तोई** - स्त्री० [हिं] मग़ज़ी ; गोट ; हाशिया।

**तोक** - पु० [सं] शिशु, संतान।

**तोको** - सर्व० [हिं] तुझको।

**तोख** - पु० [हिं] तोष, संतोष।

**तोखना** - स० [हिं] प्रसन्न करना।

**तोटका** - पु० [हिं] टोटका।

**तोड़** - पु० [हिं] तोड़ने की क्रिया ; झोंक ; कुश्ती में एक दाँव के जवाब में दूसरा दाँव; **यौ०**—जोड़ - दाँव-पेच ; कोशिश।

**तोड़ना** - स० [हिं] टुकड़े करना; बेकाम करना ; संबंध को न निभाना , बात पर क़ायम न रहना; दूर करना; **मु०** क़लम तोड़ना - रचना-कौशल की पराकाष्ठा कर देना।

**तोड़ा** - पु० [हिं] रुपया रखने की थैली ; कलाई में पहनने का एक गहना , नाच का एक हिस्सा ; **मु०** — लादना - बहुत धन देना।

**तोतई** - वि० [हिं] तोते के रंग का।

**तोतर, तोतरा** - वि० [हिं] तोतला।

**तोतराना, तोतलाना** - अ० [हिं] तुतलाना।

**तोतला** - वि० [हिं] जो तुतलाकर बोलता हो।

**तोता** - पु० [हिं] एक पक्षी ; बंदूक़ का घोड़ा ; **यौ०**—चश्म - तोते की तरह आँखें फेरनेवाला, बेवफ़ा ;—चश्मी - बेवफ़ाई ; बेमुरौवती ; **मु०**—पालना - किसी बीमारी या बुराई को बढ़ने देना ; तोते की तरह आँखें फिरना - पुराने संबंध को भुला देना ; तोते की तरह रटना - बिना अर्थ समझे कंठस्थ करना ; एक ही बात को बार-बार कहना।

**तोती** - स्त्री० [हिं] तोते की मादा।

**तोप** - स्त्री० [तु] गाड़ी पर चलनेवाली बड़ी बंदूक़ ; **यौ०**—ख़ाना - युद्ध के लिए सुसज्जित तोपों का समूह ; —ची - तोप चलानेवाला ; गोलंदाज़।

**तोपना** - स० [हिं] ढाँकना, छिपाना।

**तोफ़गी** - स्त्री० [फ़ा] ख़ूबी ; अच्छापन।

**तोफ़ा** - 1. वि० [हिं] बढ़िया ; 2. पु० तोहफ़ा।

**तोबड़ा** - पु० [हिं] घोड़े को दाना खिलाने की थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े के मुँह में बाँध देते हैं ; **मु०**—चढ़ाना - मुँह बंद करना ; बोलने न देना।

**तोबा** - स्त्री० [फ़ा] तौबा, किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा ; अफ़सोस, पश्चात्ताप ; **मु०** — तिल्ला करना या मचाना - रोते-चिल्लाते या हीनता दिखाते हुए तोबा करना ; —तोड़ना - प्रतिज्ञा भंग करना।

**तोम** - पु० [सं] समूह, राशि।

**तोमड़ी, तोमरी** - स्त्री० [हिं] तूँबड़ी।

**तोमर** - पु० [सं] भाला ; बारह मात्राओं का एक छंद।

**तोय** - पु० [सं] जल, पानी ; **यौ०**—द - मेघ ; घी ; —निधि - समुद्र ; चार की संख्या ; —मल - समुद्र का फेन।

**तोर** - 1. पु० [हिं] अरहर ; 2. सर्व० तेरा।

**तोरई** - स्त्री० [हिं] तुरई।

**तोरण** - पु० [सं] बंदनवार ; शिव ; गला।

**तोरन** - पु० [हि] तोरण।

**तोरना** - स० [हिं] तोड़ना ; दूर करना।

**तोरा** - 1. सर्व० [हिं] तेरा ; 2. पु० तुर्रा ; कलग़ी ; [तु] वह बड़ा थाल जिसमें तरह-तरह के गोश्तो की थालियाँ रखकर विवाह के अवसर पर भेंट देते हैं ; अभिमान ; घमंड।

**तोरावान** - वि० [हिं] वेगवान, तेज़।

**तोरी** - स्त्री० [हिं] तुरई ; काले रंग की सरसो।

**तोल** - पु० [सं] तौल ; अस्सी रत्तियो के बराबर की एक तौल।

**तोलक** - पु० [सं] बारह माशे की एक तौल, तोला।

**तोलना** - स० [हिं] तौलना ; पहिये की धुरी में तेल देना ; उठाना ।
**तोलवाना** - स० [हिं] तौलवाना ।
**तोला** - पु० [हिं] बारह माशे की एक तौल।
**तोलिया** - पु० [हिं] तौलिया, शरीर पोंछने का अँगोछा ।
**तोश** - 1. पु० [तु] छाती ; शारीरिक बल ; 2. [सं] हिंसा ; हिंसक ।
**तोशक** - स्त्री० [फ़ा] हलका गद्दा ।
**तोशदान** - पु० [हिं] पाथेय या कारतूस रखने की थैली ।
**तोशा** - पु० [फ़ा] कलेवा ; पाथेय ।
**तोशाख़ाना** - पु० [तु] वह बड़ा कमरा जहाँ अमीरों के गहने-कपड़े रखे रहते हैं ।
**तोष** - पु० [सं] तृप्ति, संतोष ; आनंद ।
**तोषणा** - 1. अ० [हिं] तृप्त होना ; 2. स० तृप्त करना ।
**तोहफ़गी** - स्त्री० [अ] अच्छापन ।
**तोहफ़ा** - 1. पु० [अ] सौग़ात, उपहार ; 2. वि० अच्छा ; उत्तम ।
**तोहमत** - स्त्री० [अ] झूठा कलंक ; लांछन ।
**तोहमती** - वि० [अ] कलंक लगानेवाला ।
**तोहरा, तोहार** - सर्व० [हिं] तुम्हारा; तुम्हें ।
**तोहि** - सर्व० [हिं] तुझको, तुझे ।
**तौंस** - स्त्री० [हिं] वह प्यास जो धूप खा जाने से लगे ; ताप ; उमस ।
**तौंसना** - अ० [हिं] गरमी से झुलस जाना ।
**तौंसा** - पु० [हिं] कड़ी गरमी ।
**तौंसियत** - स्त्री० [अव] कड़ी गरमी ।
**तौ** - 1. पु० [फ़ा] परत, तह ; 2. अव्य० तो ।
**तौअम** - पु० [अ] एक ही गर्भ से एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बच्चे, जुड़वाँ, यमज ; मिथुन राशि ।
**तौक़** - पु० [अ] हँसुली की तरह का एक गहना ; अपराधी या पागल के गले में डाली जानेवाली पटरी ; हँसुली ; पट्टा, चपरास ।
**तौकी** - स्त्री० [हिं] गले का एक गहना ।
**तौक़ीर** - स्त्री० [अ] आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा ।
**तौज़ीह** - स्त्री० [अ] हिसाब का चिट्ठा ; ख़र्रा ।
**तौफ़ीक़** - स्त्री० [अ] ईश्वर की कृपा ; श्रद्धा ; भक्ति ।
**तौफ़ीर** - स्त्री० [अ] मुनाफ़ा, लाभ ।
**तौबा** - स्त्री० [हिं] तोबा ।
**तौर** - पु० [सं] एक याग ; [अ] चाल-ढाल ; तरह, भाँति ; यौ०—तरीक़ा - रंग-ढंग ; चाल-ढाल ; मु० —बेतौर होना - अवस्था बिगड़ना ।
**तौरेत** - पु० [इब्रा] यहूदियों का प्रधान धर्मग्रंथ ।
**तौल** - 1. पु० [हिं] तराजू ; वज़न ; तुला-राशि ; 2. स्त्री० तोलने की क्रिया ; माप ; वज़न ; परिमाण ।
**तौलना** - स० [हिं] वज़न करना, जोखना ; साधना ; गाड़ी की धुरी में तेल देना ।
**तौलवाई** - स्त्री० [हिं] तौलाई ।
**तौला** - पु० [हिं] दूध नापने का मिट्टी का बरतन ; मटका ; ग़ल्ला तोलनेवाला ; महुए की शराब ।
**तौलाई** - स्त्री० [हिं] तौलने की क्रिया या भाव ; तौलने की मजूरी ।
**तौलाना** - स० [हिं] दूसरे से तौलने का काम कराना ।
**तौलिया** - स्त्री० [हिं] अँगोछा ।
**तौलौं** - अव्य० [हिं] तब तक ।
**तौसन** पु० [फ़ा] घोड़ा ।
**तौसना** - 1. अ० [हिं] गरमी से बहुत व्याकुल होना ; 2. स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना ।

**तौसीअ** - स्त्री० [अ] विस्तृत होने या करने का भाव ।

**तौसीफ़** - स्त्री० [अ] व्याख्या करना ।

**तौहीद** - स्त्री० [अ] एकेश्वरवाद ।

**तौहीन, तौहीनी** - स्त्री० [अ] अपमान ।

**त्यक्त** - वि० [सं] छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।

**त्यक्ता** - 1. वि० [सं] छोड़नेवाला ; 2. स्त्री० पति द्वारा त्यागी गयी स्त्री ।

**त्याग** - पु० [सं] उत्सर्ग ; छोड़ने का भाव ; ममत्व का उच्छेद , कुर्बानी ; यौ०—पत्र - इस्तीफा , —शील - उदार ।

**त्यागना** - स० [हिं] छोड़ना ।

**त्यागी** - वि० [सं०] जिसने त्याग किया हो ; विरक्त ।

**त्याज्य** - वि० [सं] छोड़ने योग्य ।

**त्यूँ** - क्रि० [हिं] त्यो ।

**त्यूरस** - पु० [हिं] त्योरस ।

**त्यों** - क्रि० [हिं] उस प्रकार ; तत्क्षण ।

**त्योरी** - स्त्री० [हिं] निगाह ; दृष्टि ; माथे का बल ; मु०— चढ़ना या बदलना - क्रोध से भौहें तन जाना ।

**त्योरस** - पु० [हिं] पिछला तीसरा वर्ष ; आगामी तीसरा वर्ष ।

**त्योहार** - पु० [हि] पर्व का दिन ; धार्मिक या जातीय उत्सव का दिन ।

**त्योहारी** - स्त्री० [हिं] त्योहार की खुशी में नौकर आदि को दी जानेवाली वस्तु ।

**त्यौं** - क्रि० [हिं] त्यो ।

**त्यौराना** - अ० [हिं] सिर घूमना ; सिर में चक्कर आना ।

**त्यौरी** - स्त्री० [हिं] त्योरी ।

**त्यौहार** - पु० [हिं] त्योहार ।

**त्यौहारी** - स्त्री० [हिं] त्योहारी ।

**त्रपा** - 1. स्त्री० [सं] लज्जा ; कुलटा स्त्री ; 2. वि० लज्जित ।

**त्रपुटी** - स्त्री० [सं] छोटी इलायची ।

**त्रय** - वि० [सं] तीन ; तीसरा ।

**त्रयी** - स्त्री० [स] तीन वस्तुओं का समूह ; समझ ; सधवा ।

**त्रयोदश** - वि० [सं] तेरह ; तेरहवाँ ।

**त्रयोदशी** - स्त्री० [स] तेरहवीं तिथि, तेरस

**त्रस** - पु० [सं] जगम जीव, हृदय ; जगल ; यौ०—रेणु - धूल का वह कण जो छेद में से आती हुई धूप में दिखायी देता है ।

**त्रसन** - पु० [सं] भय ; चिन्ता ; व्याकुलता ।

**त्रसना** - अ० [हिं] डरना ।

**त्रसाना** - स० [हिं] डरवाना, धमकाना ।

**त्रसित** - वि० [हि] भयभीत ; सताया हुआ ।

**त्रस्त** - वि० [सं] डरा हुआ ; चकित ; काँपता हुआ ।

**त्राटक** - पु० [सं] हठयोग में किसी बिन्दु पर दृष्टि जमाने की क्रिया ।

**त्राण** - पु० [सं] भय के हेतु का निवारण, रक्षा ; कवच ; आश्रय ।

**त्रात** - वि० [सं] रक्षित, बचाया हुआ ।

**त्राता** - पु० [सं] रक्षा करनेवाला, रक्षक ।

**त्रास** - 1. पु० [सं] डर ; मणि का एक दोष ; 2. वि० भयंकर ; यौ०—दायी - भयदायक ।

**त्राहि** - अव्य० [सं] बचाओ, रक्षा करो ; मु० —त्राहि करना - बेबस होकर बचाने के लिए किसीको पुकारना ।

**त्रिंशत्कोटि** - वि० [सं] तीस करोड़ ।

**त्रि** - वि० [सं] तीन ; तीन से संबधित यौगिक शब्दो के प्रारंभ में जोड़ा जानेवाला शब्द , यौ० —कटु, कटुक - तीन कडुवे पदार्थों का समाहार (सोठ, पीपर, मिर्च) ; —कर्मा, कर्मी, दान, याग, अध्ययन इन तीनो कर्मों को करनेवाला ब्राह्मण ; —

कांड - अमर-कोश ; निरुक्त ; —काल - तीनों काल (भूत, वर्तमान, भविष्य) ; —कालज्ञ - तीनों कालों की बातें जाननेवाला, ऋषि ; —कुटी - भौहों के मध्य के कुछ ऊपर का स्थान ; — कुल - तीनों कुल (पितृकुल, मातृकुल, श्वशुरकुल) ; — कूट - तीन चोटियोंवाला पर्वत ; वह पर्वत जिसपर लंका बसी हुई मानी जाती है ; योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला जो दोनों भौहों के बीच ऊपर की तरफ़ माना जाता है ; —कूटा - तंत्र के अनुसार एक भैरवी ; —कोण - तीन कोणों का क्षेत्र, त्रिभुज ; —कोणमिति - गणितशास्त्र का एक अंग जिसमें कोण, बाहु, वर्गविस्तार आदि के सिद्धान्तों का विवेचन होता है ; (ट्रिग्नोमेट्री) ; —गण - धर्म, अर्थ और काम ; —गुण - प्रकृति के सत्व, रज और तम गुण ; —गुणा - माया ; दुर्गा ; —गुणी - बेल का पेड़ ; तीन गुणोंवाला ; —जग - तिर्यक, पशु तथा कीड़े-मकोड़े ; तीनो लोक (स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल) ; —जट, जटी - महादेव ; —ज्या - व्यास की आधी रेखा ; —णीता - पत्नी ; —तय - धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का समूह ; —ताप - तापत्रय ; —दंड - संन्यास-आश्रम का चिन्ह ; वाणी, मन और शरीर इन तीनों का संयम ; —दंडी - त्रिदंड धारण करनेवाला संन्यासी ; —दल - बेल का वृक्ष ; —दलिका - चर्मकषा नामक लता ; —दश - देवता ; —दिव - स्वर्ग ; आकाश ; सुख ; —देव - ब्रह्मा, विष्णु और महेश ; —दोष - वात, पित्त और कफ़ इन तीनों से उत्पन्न रोग ; सन्निपात ; —धातु - सोना, चाँदी और ताँबा ; —धारा - गंगा ; —नयन - महादेव ; —पथ - कर्म, ज्ञान और उपासना इन तीनों मार्गों का समूह ; —पथगा, पथगामिनी - गंगा ; —पदा - गायत्री-छन्द ; —पर्ण - पलाश का पेड़ ; —पाटी - तीनों वेदों का ज्ञाता ; त्रिवेदी ; तिवारी ; —पाण - तीन बार भिगोया हुआ सूत ; वल्कल ; —पिण्ड - पिता, पितामह और प्रपितामह को दिये गये पिंड ; —पिटक - बुद्ध भगवान के उपदेशों का संग्रह ; —पुंड, पुंड्र - आड़ी या अर्धचंद्राकार टीका ; —पुटी - तीन वस्तुओं का समूह (जैसे, ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान) ; —पुर - तीनों लोक ; बाणासुर ; —पुरारि - शिव ; —फला - आँवला, हड़ और बहेड़े का समूह ; —भंग, भंगी - तीन जगह से टेढ़ा ; —भुज - तीन भुजाओं का क्षेत्र ; त्रिकोण ; —भुवन - तीनों लोक (स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल) —भूम - तिमंजिला मकान ; —मूर्ति - ब्रह्मा, विष्णु और शिव ; —युग - तीन पीढ़ियाँ ; तीनों युग (सत्य, द्वापर और त्रेता) ; —रेख - शंख ; —लवण - सेंधा साँभर और सोंचर नमक ; —लोक - त्रिभुवन ; —वर्ग - धर्म, अर्थ और काम ; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ; त्रिफला ; —वली - पेट की तीन रेखाएँ ; —विध - तीन तरह का ; —वृत्त - तिगुना ; —वेणी - गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में है ; —वेणु - रथ ; —वेद - ऋक, साम और यजु ; —वेदी - तीनों वेदों का ज्ञाता ; —शंकु - एक सूर्यवंशी राजा ; —शिख - त्रिशूल ; किरीट ; रावण का एक पुत्र ; —शूल - महादेवजी का अस्त्र ; —शोक - तीन

प्रकार के तापो से पीड़ित जीव; —स्थली - काशी, गया और प्रयाग।

**त्रिक** - पु० [सं] तीन का समाहार; कटि-प्रदेश।

**त्रिय (या)** - स्त्री० [हि] स्त्री।

**त्रुटि** - स्त्री० [सं] नुक़सान, हानि; कमी, अभाव; काल का एक सूक्ष्म भाग; भूल-चूक।

**त्रुटित** - वि० [सं] टूटा हुआ, खंडित।

**त्रेता** - पु० [सं] चार युगो में से दूसरा युग जिसमें राम पैदा हुए थे।

**त्रैकालिक** - वि० [सं] तीनों कालों में होनेवाला।

**त्रैगुण्य** - पु० [सं] सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का धर्म।

**त्रैमासिक** - वि० [सं] तिमाही, हर तीसरे महीने होने या निकलनेवाला।

**त्रैराशिक** - पु० [सं] तीन ज्ञात राशियो के सहारे चौथी अज्ञात राशि निकालने की रीति।

**त्रोटक** - पु० [सं] एक श्रृंगारप्रधान नाटक; एक विषैला कीड़ा; एक छंद।

**त्रोण** - पु० [सं] तरकश।

**त्र्यंबक** - पु० [सं] महादेव।

**त्वक्** - पु० [सं] छिलका; चर्म।

**त्वचा** - स्त्री० [सं] चमड़ा।

**त्वरा** - स्त्री० [सं] जल्दी।

**त्वरित** - 1. वि० [सं] तेज़; 2. क्रि० शीघ्रता से।

**त्वष्टा** - पु० [सं] विश्वकर्मा; शिव; बढ़ई।

## थ

**थंडिल** - पु० [हिं] यज्ञवेदी।

**थंब** - पु० [हिं] खंभा।

**थंबी** - स्त्री० [हिं] चाँड़, थूनी।

**थंभ** - पु० [हि] खंभा।

**थंभित** - वि० [हिं] रुका हुआ; अचल; भय या आश्चर्य से स्तंभित।

**थकना** - अ० [हिं] शिथिल होना; ऊब जाना; बुढ़ापे से अशक्त होना; यौ० थका-माँदा - श्रम से शिथिल।

**थकरी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियो की बाल झाड़ने की कूँची।

**थकान** - स्त्री० [हिं] शिथिलता; थकावट।

**थकाना** - स० [हि] शिथिल करना; थकावट पैदा करना।

**थकाव** - पु०
**थकावट** - स्त्री० } [हिं] शिथिलता।

**थकित** - वि० [हिं] थका हुआ; मुग्ध।

**थगित** - वि० [हिं] रुका हुआ।

**थति** † - स्त्री० [हिं] थाती; पूंजी।

**थत्ती** - स्त्री० [हिं] राशि, ढेर।

**थन** - पु० [हिं] चौपायो का स्तन; यौ०—टुट्टू - वह स्त्री जिसके स्तन में दूध आना बंद हो गया हो।

**थनी** - स्त्री० [हिं] बकरियों के गले से लटकनेवाली थैलियाँ जो थन के आकार की होती हैं।

**थनेला** - पु० [हिं] स्तन पर होनेवाला फोड़ा; गुबरैले की जाति का एक कीड़ा।

**थनैत** - पु० [हिं] गाँव का मुखिया; वह आदमी जो ज़मींदार की ओर से लगान वसूल करे।

**थपकना** - स० [हि] हथेली से धीरे-धीरे ठोंकना; थपकी देना।

**थपकी** - स्त्री० [हिं] धीरे-धीरे ठोंकने की क्रिया; ज़मीन को पीटकर चौरस करने की मुँगरी।

**थपथपी** - स्त्री० [हिं] थपकी।

**थपड़ी** - स्त्री० [हिं] ताली; करतल-ध्वनि।

**थपन** † - पु० [हिं] स्थापन, ठहराने या जमाने का काम।

**थपना** † - 1. स० [हिं] स्थापित करना; बैठाना; प्रतिष्ठित करना; 2. अ० स्थापित होना, जमना; प्रतिष्ठित होना; 3. पु० पत्थर या लकड़ी आदि का औज़ार जिससे किसी वस्तु को पीटा जाए, थापी।

**थपुआ** - पु० [हिं] वह खपड़ा जो चौड़ा और चिपटा हो।

**थपेड़ा** - पु० [हिं] थप्पड़; चपत; घात-प्रतिघात।

**थप्पड़** - पु० [हिं] तमाचा, झापड़।

**थम** - पु० [हिं] खंभा, स्तंभ।

**थमकारी** - त्रि० [हिं] स्तंभन करनेवाला; रोकनेवाला।

**थमना** - 1. अ० [हिं] रुकना; बंद हो जाना; 2. स० धीरज धरना; प्रतीक्षा करना।

**थर** - 1. स्त्री० [हिं] तह, परत; 2. पु० स्थल।

**थरकना** - अ० [हिं] थर्राना, डर से काँपना।

**थरथर** - स्त्री० [हिं] डर से काँपने की मुद्रा।

**थरथराना** - अ० [हिं] भय के मारे काँपना।

**थरथराहट, थरथरी** - स्त्री० [हिं] कँपकँपी, डर से होनेवाली कँपकँपी।

**थर्राना** - अ० [हिं] डर के मारे काँपना; दहलना।

**थल** - पु० [हिं] स्थल, जगह; जलरहित भूमि; यौ० —चर - धरती पर रहनेवाले जीव; —रुह - पृथ्वी पर उगनेवाले वृक्ष आदि।

**थलकना** - अ० [हिं] मोटाई और ढीलेपन के कारण चलते समय हिलना।

**थलथल** - वि० [हिं] मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।

**थलिया** - स्त्री० [हिं] छोटी थाली।

**थली** - स्त्री० [हिं] स्थान, जगह; परती ज़मीन; रेतीली ज़मीन; बैठक।

**थवई** - पु० [हिं] राजगीर, मकान बनानेवाला कारीगर।

**थवना** - स० [हिं] कच्ची मिट्टी का एक गोला।

**थहरना** - अ० [हिं] हिलना; काँपना।

**थहाना** - स० [हिं] थाह लेना; अवगाहन करना।

**थाँग** - पु० [हिं] भेद, रहस्य का पता; खोज; चोरों का अड्डा।

**थाँवला** - पु० [हिं] आलबाल, पौधों के इर्दगिर्द का गड्ढा जिसमें सींचने के लिए पानी डाला जाता है।

**थाई** - 1. वि० [हिं] स्थिर रहनेवाला, स्थायी; 2. स्त्री० जगह; बैठक।

**थाक** - पु० [हिं] ढेर; थोक; सीमा।

**थात** - वि० [हिं] स्थित, ठहरा हुआ।

**थाति** - स्त्री० [हिं] स्थिरता; थाती।

**थाती** - स्त्री० [हिं] धरोहर; संचित धन; पूँजी।

**थान** - पु० [हिं] जगह; देवता का स्थान; पशुओं के बाँधे जाने की जगह; कुछ निश्चित लंबाई का कपड़ा।

**थानक** - पु० [हिं] स्थान; नगर; थाँवला।

**थाना** - पु० [हिं] पुलिस की चौकी; केन्द्र; निवासस्थान; यौ० थानेदार - पुलिस का अफ़सर, दारोग़ा; थानेदारी - दारोग़ा का पद या काम।

**थानैत** - पु० [हिं] चौकी या अड्डे का मालिक; अधिपति या देवता।

**थाप** - स्त्री० [हिं] थपकी; आदर; मर्यादा; धाक; विश्वास।

**थापना** - 1. स० [हिं] स्थापित करना; 2. स्त्री० स्थापना।

**थापा** - पु० [हिं] पंजे की छाप ; साँचा ; नेपालियों की एक जाति , ढेर ।
**थापिया, थापी** - स्त्री० [हिं] चिपटी मुँगरी ।
**थामना** - स० [हिं] रोकना ; पकड़ना ; सँभालना ; उत्तरदायित्व स्वीकार करना ।
**थाल** - पु० [हिं] बड़ी थाली ।
**थाला** - पु० [हिं] वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है, आलबाल, थाँवला ; फोड़े की सूजन ।
**थाली** - स्त्री० [हिं] बड़ी तश्तरी, खाने के काम में आनेवाला पीतल या चाँदी आदि का बरतन ; मु०—का बैंगन - कभी इधर कभी उधर लुढ़कनेवाला ।
**थावर** - वि० [हिं] अचल ; स्थावर ।
**थाह** - स्त्री [हिं] गहराई का अंत ; गहराई की सीमा ; सीमा ; किसी वस्तु की इयत्ता का अनुमान ; मु०— मिलना - पानी में पैर को ज़मीन मिलना ; मन की थाह लेना - गुप्त विचारों का पता लगाना ।
**थाहना** - स० [हिं] गहराई का पता लगाना ।
**थिगली** - स्त्री० [हिं] पैवंद ; मु०—लगाना - युक्ति लगाना ।
**थित** - वि० [हिं] स्थित, ठहरा हुआ ; रखा हुआ ।
**थिति** - स्त्री० [हिं] स्थिति ; स्थायित्व ; रक्षा ; दशा ।
**थिर** - वि० [हिं] स्थिर, अचल ; टिकाऊ ।
**थिरक** - पु० [हिं] नाच में चरणों की चंचल गति ।
**थिरकना** - अ० [हिं] चंचल गति से नाचना ; आगे-पीछे डोलना ; गिरना तथा हिलना ।
**थिरता** - स्त्री० [हिं] स्थिरता, स्थायित्व ।
**थिरना** - अ० [हिं] आलोड़ित जल का स्थिर होना ; मिट्टी आदि का जल के नीचे बैठना ; ठहरना ।
**थिराना** - स० [हिं] डोलना बंद करना ।
**थुकहाई** - वि० [हिं] (ऐसी स्त्री) जिसे सभी धिक्कारें ।
**थुकाना** - स० [हिं] थूकने में प्रवृत्त करना ; किसी वस्तु को उगलवाना ; निन्दा कराना ।
**थुका-फ़ज़ीहत** - स्त्री० [हिं] धिक्कार ; निंदा ; तिरस्कार ।
**थुड़ी** - स्त्री० [हिं] धिक्कार ; लानत ; मु०— करना - धिक्कारना ; थू-थू करना ।
**थुन्नी** - स्त्री० [हिं] थूनी, खंभा ।
**थुपथुपी** - स्त्री० [हिं] थपकी ; झोका ।
**थुरना** - स० [हिं] घूरना ; मारना-पीटना ।
**थुरहथा** - वि० [हिं] जिसके हाथ छोटे हों ; कमख़र्च ।
**थुलमा** - पु० [हिं] ऊन से जमाया हुआ एक पहाड़ी कंबल ।
**थुली** - स्त्री० [हिं] दलिया ; रवा ।
**थू** - 1. पु० [हिं] थूकने का शब्द ; 2. अव्य० घृणा और धिक्कारसूचक शब्द, छिः ; मु० —थू करना - घृणा और तिरस्कार सूचित करना ।
**थूक** - 1. पु० [हिं] लार ; खखार ; मु०— चटाना - नीचा दिखाना ।
**थूकना** - अ० [हिं] थूक उगलना ; धिक्कारना ; निंदा करना ; मु० थूककर चाटना - प्रतिज्ञा करके पूरा न करना ; एक बार देकर फिर ले लेना ; थूक देना - घृणापूर्वक छोड़ देना ।
**थूथन** - पु० } [हिं] लंबा निकला हुआ
**थूथनी** - स्त्री० } मुँह ; मु० —फुलाना - नाराज़गी या उपेक्षा से नाक-भौंह चढ़ाना ।
**थून, थूनी** - स्त्री० [हिं] खंभा ; बोझ को रोकने के लिए लगाया जानेवाला छोटा खंभा ।

**थूरना** - स० [हिं] कूटना; चूर करना; ठूँस-ठूँसकर खाना।

**थूल** - वि० [हिं] स्थूल; मोटा; भद्दा।

**थूली** - स्त्री० [हिं] दलिया, थुली।

**थूवा** - पु० [हिं] टीला, ढूह।

**थूहड़, थूहर** - पु० [हिं] नागफनी, सेहुँड़।

**थूही** - स्त्री० [हिं] मिट्टी का टीला; गड़ारी की लकड़ी रखने का मिट्टी का खंभा।

**थेंथर** - वि० [हिं] सुस्त; हैरान।

**थेई थेई** - स्त्री० [अनु] नृत्य का तालसूचक शब्द।

**थेगली** - स्त्री० [हिं] थिगली, पैवंद।

**थैला** - पु० [हि] कपड़े या टाट आदि का बना हुआ बड़ा बटुआ; रुपयो का थैला; जंघा से घुटने तक का पैजामे का भाग।

**थैली** - स्त्री० [हिं] छोटा थैला; **यौ०**—दार - वह आदमी जो ख़ज़ाने में रुपया उठाता है, रोकड़िया; —बरदारी - थैली ढोने का पेशा या मजूरी; **मु०**—खोलना - थैली के सब रुपये दे देना; ख़ूब ख़र्च करना।

**थोक** - पु० [हिं] ढेर; एकत्र किया हुआ माल; माल की बड़ी राशि; **यौ०**—दार, फ़रोश - इकट्ठा माल बेचनेवाला; थोक माल बेचनेवाला व्यापारी; **मु०** —करना - जमा करना।

**थोड़ा** - 1. वि० [हिं] कम; ज़रा; 2. क्रि० तनिक; **मु०** —बहुत - कुछ-कुछ; थोड़े ही - नहीं।

**थोथ** - स्त्री० [हिं] खोखलापन; तोंद।

**थोथरा** - वि० [हिं] खोखला; निकम्मा।

**थोथा** - 1. वि० [हिं] खोखला; भद्दा; निस्सार; निकम्मा; 2. पु० बर्तन ढालने का मिट्टी का साँचा।

**थोपड़ी, थोपी** - स्त्री० [हिं] चपत; थापी।

**थोपना** - स० [हिं] किसी गीली चीज़ को ऊपर डालना या जमा देना; मोटा लेप चढ़ाना; मत्थे मढ़ना; आरोपित करना; आक्रमण आदि से रक्षा करना।

**थोबड़ा** - पु० [हिं] थूथन।

## द

**दंग** - वि० [फ़ा] विस्मित, चकित; हक्का-बक्का; **मु०**— रह जाना - चकित हो जाना।

**दंगई** - 1. वि० 2. पु० [हिं] दंगा करनेवाला, झगड़ालू।

**दंगल** - पु० [फ़ा] पहलवानों की कुश्ती; अखाड़ा; समूह; **मु०**—उतरना - कुश्ती के लिए अखाड़े में आना।

**दंगवारा** - पु० [हिं] किसानों की हल-बैल आदि के द्वारा पारस्परिक सहायता।

**दंगा** - पु० [हिं] उपद्रव; विप्लव; झगड़ा।

**दंगाई, दंगैत** - 1. वि० 2. पु० [हिं] उपद्रवी, दंगई।

**दंड** - पु० [सं] डंडा; ब्रह्मचारियों या संन्यासियों का बाँस या पलाश आदि का डंडा; राजा के हाथ में रहनेवाला खड्ग; एक कसरत; व्यूह का एक भेद; भूमि की एक माप; काल का एक सूक्ष्म विभाग (घड़ी); शासन की चार नीतियों में से एक; कमल आदि की नाल; **यौ०**— कर्म - सज़ा देने का काम; सज़ा; —ग्रहण - संन्यासग्रहण; —धर - डंडा धारण करनेवाला; यम; राजा; संन्यासी; —नायक - सेनापति; न्यायाधीश; —नीति - अपराधियों को दंड देकर वश में रखने की नीति; —प्रणाम; साष्टांग प्रणाम; —मुद्रा - एक तांत्रिक मुद्रा; —यात्रा - दिग्विजय के लिए प्रयाण; —वत - साष्टांग प्रणाम; —विधान - जुल्म और सज़ा का क़ानून।

**दंडना** - स० [हिं] दंड देना, सज़ा देना।

**दंडनीय** - वि० [सं] दंड देने योग्य।

**दंडा** - पु० [हिं] डंडा ; यौ० —दंडी - लाठियों की मार-पीट।

**दंडाधिप** - पु० [सं] स्थान-विशेष का प्रधान शासक।

**दंडायमान** - वि० [स] डंडे की तरह सीधा खड़ा।

**दंडालय** - पु० [सं] अदालत।

**दंडित** - वि० [सं] जिसे दंड दिया गया हो।

**दंडी** - पु० [सं] दंड धारण करनेवाला व्यक्ति ; यमराज ; राजा ; द्वारपाल ; संन्यासी जो दंड-कमंडल धारण करे।

**दंड्य** - वि० [सं] दंड पाने योग्य।

**दंत** - पु० [सं] दाँत ; पठार ; बत्तीस की संख्या ; बाण की नोक ; यौ०—कथा - किंवदंती, जनश्रुति ; —काष्ठ - दातौन - —च्छद - ओष्ठ, ओठ , —जात - दाँत निकलने का समय ; —धावन - दाँत माँजना ; दातौन ; —पाली - मसूड़ा ; —बीज - अनार ; —मूल - दाँत की जड़ ; दाँत का एक रोग ; —वीणा - दाँत कटकटाना ; एक प्रकार का बाजा ; — शंकु - दाँत उखाड़ने का एक औज़ार , —दंतादंति - झगड़ते समय एक दूसरे को दाँत से काटना।

**दंतार** } - 1. वि० [हिं] बड़े दाँतोंवाला ,
**दंताल** } 2. पु० हाथी।

**दंताली** - स्त्री० [हि] लगाम।

**दंतिका** - स्त्री० [स] जमालगोटा।

**दंतिया** - स्त्री० [हिं] छोटे-छोटे दाँत।

**दंतुर** - 1. वि० [स] जिसके दाँत आगे निकले हों ; 2. पु० हाथी ; सूअर।

**दंतुल** - वि० [सं] दाँतोंवाला।

**दंतुला** - वि० [हिं] जिसके दाँत आगे निकले हों, दंतुर।

**दंतोष्ठ्य** - वि० [सं] जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से हो ; जैसे, 'व'।

**दंत्य** - वि० [सं] जिसका उच्चारण दाँत से हो , जैसे, 'त' ; दाँतो का।

**दंदारू** - पु० [हि] छाला , फफोला।

**दंदी** - वि० [हि] झगड़ालू।

**दंपति, दंपती** - पु० [स] पति-पत्नी।

**दंभ** - पु० [सं] पाखंड।

**दंभन** - पु० [स] ढोंग करना · पाखंड करना।

**दंभी** - वि० [सं] पाखंडी।

**दंभोलि** - पु० [सं] वज्र ; हीरा।

**दँवरी** - स्त्री० [हिं] पकी फसल को बैलों से रौंदवाने की क्रिया।

**दंश, दंशन** - पु० [सं] दाँत से काटा हुआ घाव ; दाँत ; चुभनेवाली बात ; डंक ; दोष ; द्वेष ; कवच।

**दंशित** - वि० [सं] जो डँसा गया हो, सन्नद्ध।

**दंशी** - पु० [सं] वैरी ; चुभनेवाली बात कहनेवाला।

**दंशूक** - वि० [सं] जिसका डँसने या डंक मारने का स्वभाव हो।

**दंष्ट्र** - पु० [सं] दाँत।

**दंष्ट्रा** - स्त्री० [सं] मोटे दाँत, दाढ़।

**द** - 1. वि० [सं] देनेवाला (समासान्त) ; 2. पु० दाँत ; पर्वत ; कलत्र।

**दई** - पु० [हिं] भाग्य ; विधाता ; यौ०— मारा - अभागा।

**दकन** - पु० [हिं] दक्षिण ; दक्षिणी भारत।

**दक़ियानूस** - 1. पु० [अ] फारस और अरब का एक पुराना बादशाह जो बड़ा अत्याचारी था ; 2. वि० पुराना ; बहुत बूढ़ा।

**दक़ियानूसी** - वि० [अ] बहुत पुराना ; पुराने ख़याल का।

**दक़ीक़** - वि० [अ] बारीक़, महीन ; नाज़ुक ; कठिन, मुश्किल ।

**दक़ीक़ा** - पु० [अ] सूक्ष्मता ; कठिनता ; मु०—बाक़ी न रखना - कोई कसर न छोड़ना ; सब-कुछ कर गुज़रना ।

**दक्खिन** - 1. पु० [हिं] दक्षिण दिशा ; 2. वि० दाहिना ।

**दक्खिनी** - 1. वि० [हिं] दक्खिन का ; 2. पु० दक्षिण देश का निवासी ; 3. स्त्री० दक्षिण देश की भाषा ।

**दक्ष** - 1. वि० [सं] कुशल, होशियार, दाहिना ; अनुकूल : पटु ; 2. पु० एक प्रजापति ।

**दक्षता** - स्त्री० [सं] चतुरता ।

**दक्षिण** - 1. वि० [सं] दाहिना ; अनुकूल ; 2. पु० दक्षिण दिशा ; यौ० — मार्ग - एक तंत्रोक्त आचार ; पितृयान ; दक्षिणायन - छः महीने का वह समय जब सूर्य दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है ; दक्षिणावर्त - वह शंख जिसमें हवा निकलने का मार्ग दाहिनी ओर हो ; दक्षिण दिशा में स्थित ।

**दक्षिणा** - स्त्री० [सं] शुभ कर्म के बाद ब्राह्मणों को दिया जानेवाला द्रव्य ; यज्ञ ; दक्षिण दिशा ; यौ० —पथ - विंध्य पर्वत के दक्षिण का भाग।

**दक्षिणी** - वि० [हिं] दक्खिनी ।

**दख़मा** - पु० [हिं] पारसियों का श्मशान जहाँ वे मुर्दे को पक्षियों के भक्षणार्थ रख आते हैं ।

**दख़ल** - पु० [अ] अधिकार ; क़ब्ज़ा ; हस्तक्षेप ; पहुँच ; अधिकार ; यौ०—नामा - वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को अमुक ज़मीन का दख़ल दिया गया ; —दिहानी - क़ानूनी ढंग से किसी वस्तु पर किसीको अधिकार दिला देने की क्रिया ; मु० —देना - बीच में बोलना ; हस्तक्षेप करना ।

**दख़ील** - वि० [अ] जिसका दख़ल या क़ब्ज़ा हो, अधिकार रखनेवाला ; यौ०—कार - वह असामी जिसने किसी ज़मींदार के खेत पर बारह साल तक कब्ज़ा रखा हो ; —कारी - दख़ीलकार का पद या हक़ ।

**दख़ूल** - पु० [अ] दाख़िल होना ; अंदर आना ।

**दगड़** - पु० [हिं] लड़ाई का डंका ।

**दग़दग़ा** - पु० [अ] डर ; संदेह ।

**दगदगा** - वि० [अनु] चमकदार ।

**दगदगाना** - अ० [अनु] चमकना ।

**दगदगाहट** - स्त्री० [अनु] चमकदमक ।

**दगधना** - 1. अ० [हिं] जलना ; दग्ध होना ; 2. स० जलाना ।

**दगना** - अ० [हिं] (बंदूक़, तोप आदि का) छूटना या चलना ; जलना, झुलस जाना ।

**दगरा** - पु० [हिं] देर, विलंब ।

**दग़ल** - पु० [अ] छल, कपट ; बहाना ।

**दगला** - [हिं] मोटे वस्त्र का बना हुआ या रूईदार अंगरखा, भारी लबादा ।

**दगवाना** - स० [हिं] दूसरे से दागने का काम कराना ।

**दगहा** - वि० [हिं] दागवाला ; जिसने प्रेत-क्रिया की हो ।

**दग़ा** - स्त्री० [अ] छल-कपट ; धोखा ; यौ०—दार, बाज़ - धोखेबाज़, छलिया ; कपटी ; —बाज़ी - छल-कपट ।

**दग़ैल** - वि० [हिं] दागदार ; दग़ाबाज़ ; कपटी ।

**दग्ध** - वि० [सं] जला हुआ, भस्मीकृत ; दुःखित ; धूर्त ; तुच्छ ।

**दग्धाक्षर** - पु० [सं] झ, फ, ह, र, भ, ष आदि अक्षर जिनका छंद के आरंभ में प्रयोग करना निषिद्ध है।

**दचक** - स्त्री० [देश] चोट ; धक्का ; ठोकर ; दबाव ।

**दचकना** - 1. अ० [देश] ठोकर खाना ; दब जाना ; 2. स० ठोकर लगाना ; दबाना ।

**दचका** - पु० [देश] सवारी के नीचे-ऊपर होने से लगनेवाला धक्का ; ठोकर ।

**दचना** - अ० [देश] गिरना ; पड़ना ।

**दच्छ** - पु० [हिं] दक्ष ।

**दज्जाल** - पु० [अ] झूठा ; अत्याचारी; दग़ाबाज़ ; काना आदमी ।

**दढ़ियल** - वि० [हिं] दाढ़ीवाला ।

**दतअन, दतवन, दतुवन** - स्त्री० [हिं] दाँत साफ़ करने का नीम आदि की टहनी का छोटा टुकड़ा, दातौन ।

**दतिया** - स्त्री० [हिं] छोटा दाँत; एक पहाड़ी तीतर ।

**दत्त** - 1. वि० [स] दिया हुआ ; दान किया हुआ ; सुरक्षित ; 2. पु० दत्तक पुत्र ; दान ; यौ०—चित्त - एकाग्र ।

**दत्तक** - पु० [सं] शास्त्रविधि से बनाया हुआ पुत्र, गोद लिया हुआ पुत्र ।

**ददा** - 1. स्त्री० [तु] दाई ; 2. पु० दादा ।

**ददिया-ससुर** - पु० [हिं] ससुर का बाप ।

**ददिया-सास** - स्त्री० [हिं] सास की सास, ददिया ससुर की स्त्री ।

**ददिहाल** - पु० [हिं] दादा का घर ।

**ददोड़ा, ददोरा** - पु० [हिं] मच्छर आदि के काटने से जो चमड़ा फूल जाता है, चकत्ता ।

**दद्रु** - पु० [सं] दाद रोग ।

**दधि** - पु० [सं] दही ; वस्त्र ; यौ०—**काँदो** - जन्माष्टमी के समय का एक उत्सव ; —कूर्चिका - छेना ; —चार - मथानी ; —सार - मक्खन ; —सुत - मक्खन ; कमल ; मोती ; चंद्रमा ; —सुता - सीप ।

**दधीच, दधीचि** - पु० [सं] एक ऋषि जिनकी हड्डियों से इन्द्र का वज्र नामक अस्त्र बनाया गया था ।

**दनदनाना** - अ० [अनु] दनदन शब्द करना; आनंद करना, खुशी मनाना ।

**दनादन** - क्रि० [हिं] दनदन शब्द के साथ ; जल्दी जल्दी ।

**दनु** - स्त्री० [सं] दक्ष की कन्या और दानवों की माता, यौ० —ज - असुर, राक्षस ।

**दनुजारि** - पु० [सं] असुरों के शत्रु, देवता ।

**दनुजेंद्र, दनुजेश** - पु० [सं] दानवों का राजा, रावण ; हिरण्यकशिपु ।

**दन्दाँ** - पु० [फ़ा] दाँत ; यौ० —शिकन - दाँत तोड़नेवाला ।

**दन्दाना** - पु० [फ़ा] दाँत ।

**दन्न** - पु० [अनु] वह शब्द जो किसी भारी चीज़ के गिरने से होता है ।

**दपट** - स्त्री० [हिं] डाँटने की क्रिया, डपट, घुड़की ।

**दपटना** - स० [हिं] डाँटना, घुड़कना ।

**दपु** - पु० [हि] दर्प, घमंड ।

**दफ़** - स्त्री० [फ़ा] डफ नाम का बाजा ।

**दफ़अतन** - क्रि० [अ] अचानक ।

**दफ़तर** - पु० [फ़ा] दफ़्तर, कार्यालय ।

**दफ़ती** - स्त्री० [अ] कागज का मोटा गत्ता, कुट ।

**दफ़न** - पु० [अ] किसी चीज़ या मुरदे को ज़मीन में गाड़ने की क्रिया ।

**दफ़नाना** - स० [अ] ज़मीन में गाड़ना ।

**दफ़ा** - 1. स्त्री० [अ] बार, क़ानूनी धारा ; 2. पु० दूर करना ; यौ०—दार - वह

कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों; मु०—लगना - अभियुक्त ठहराया जाना; —करना - विवाद आदि मिटाना।

**दफ़ान** - पु० [अ] दूर होना।

**दफ़ायन** - पु० [अ] 'दफ़ीना' का बहु०।

**दफ़ाली** - पु० [फ़ा] डफ़ला बजानेवाला।

**दफ़ीना** - पु० [अ] गड़ा हुआ धन।

**दफ़ैया** - पु० [अ] दफ़ा या दूर करने की क्रिया; दूर करने की युक्ति या वस्तु।

**दफ़्तर** - पु० [फ़ा] दफतर, आफ़िस; रजिस्टर; बड़ा चिट्ठा।

**दफ़्तरी** - पु० [फ़ा] कार्यालय का नौकर; किताबों की जिल्द बाँधनेवाला, जिल्द-साज़; यौ०—ख़ाना - दफ़्तरी के काम करने का स्थान।

**दफ़्ती** - स्त्री० [फ़ा] दफ़्ती।

**दबंग** - वि० [हिं] दबाववाला; प्रभाव-शाली; रोबीला।

**दबक** - स्त्री० [हिं] सिमटना; धातु को पीटकर लंबा करने की क्रिया; सिकुड़न।

**दबकना** - 1. अ० [हिं] डर के मारे छिपना; 2. स० डपटना।

**दबकाना** - स० [हिं] छिपाना; डाँटना।

**दबका** - पु० [हिं] कामदानी का सुनहला-रुपहला तार; धातु को पीटकर लंबा किया हुआ तार।

**दबकी** - स्त्री० [हिं] किसानों का एक बरतन जिसमें पानी रखकर वे खेत में ले जाते हैं; दबकने की क्रिया।

**दबदबा** - पु० [अ] रोब-दाब; आतंक।

**दबना** - अ० [हिं] भार के नीचे आना; डरना; पीछे हटना; झुकना; मु० दबे पाँव - चुपचाप; दबी ज़बान से - अस्पष्ट रूप से।

**दबाना** - स० [हिं] ऊपर से बोझ रखना; पीछे हटाना; छिपाना; रोक देना।

**दबाव** - पु० [हिं] दबाने की क्रिया; चाँप; दाब; मु०—डालना - प्रभावित करना; ज़ोर डालना।

**दबिला** - पु० [हिं] लकड़ी का बना एक औज़ार जिससे हलवाई चीनी आदि फेंटते हैं।

**दबिस्ताँ** - पु० [फ़ा] पाठशाला।

**दबीज़** - वि० [फ़ा] गाढ़ा; जिसका दल मोटा हो; मज़बूत।

**दबीर** - पु० [फ़ा] लेखक, क्लर्क।

**दबूर** - स्त्री० [अ] पश्चिम की हवा।

**दबैल** - वि० [हिं] दबाव में पड़ा हुआ; दब्बू।

**दबोचना** - स० [हिं] धर दबाना; झपटकर दबाना।

**दबोरना** - स० [हिं] सामने ठहरने न देना; दबाना।

**दम** - पु० [सं] दमन; सज़ा; इंद्रियों को वश में रखना; कीचड़; विष्णु: एक प्राचीन महर्षि; [फ़ा] साँस; क्षण; ज़िन्दगी; ज़ोर; पानी का घूँट; कश; यौ०—क़दम - जीवन और अस्तित्व; —कला - गुलाबजल छिड़कने की पिचकारी, अंगीठी: —ख़म - दृढ़ता; —चूल्हा - लोहे की अंगीठी; —झाँसा - मिथ्या आश्वासन; —दिलासा - कोरी आशा, टालने के लिए या संतोष के लिए कही गयी कोरी बातें; - दमा - मोरचा; —दार - मज़बूत; —पुख़्त - जो बरतन का मुँह बंद करके आग पर पकाया गया हो; —ब-खुद - सन्न; —ब-दम - घड़ी-घड़ी; — बाज़ - फुसलानेवाला; —बाज़ी - बहानेबाज़ी; —साज़ - दिली दोस्त; मु०—अटकना - श्वास बंद होना,

—खींचना - चुप्पी साधना : —घुटना - हवा की कमी से श्वास नहीं ले सकना ; —टूटना - साँस रुक जाना ।

**दमक** - 1. स्त्री० [हिं] चमक ; 2. पु० [सं] दमन करनेवाला ।

**दमकना** - अ० [हिं] चमकना ।

**दमड़ी** - स्त्री० [हिं] पैसे का आठवाँ हिस्सा ।

**दमन** - पु० [स] बलपूर्वक दबाने की क्रिया ; आत्मनियत्रण ; इंद्रियो की वृत्तियो का निरोध ; दंड ।

**दमनीय** - वि० [स] दबाने योग्य ; जो दबाया जा सके ।

**दमा** - पु० [फ़ा] खाँसी की बीमारी, श्वास-रोग ।

**दमाद** - पु० [हिं] जामाता, पुत्री का पति ।

**दमादम** - अव्य० [अनु] लगातार ; दमदम शब्द के साथ ।

**दमानक** - स्त्री० [देश] तोपो की बाढ़ ।

**दमामा** - पु० [फ़ा] नगाड़ा, डंका ।

**दमारि** - पु० [हिं] जंगल की आग ।

**दमित** - वि० [सं] विजित, पराभूत ।

**दमी** -1. स्त्री० [फ़ा] एक प्रकार का हुक्का ; 2. वि० [हिं] दम लगानेवाला ; दमे के रोग से ग्रस्त ; 3. [सं] जितेन्द्रिय ।

**दमे-नक़द** - क्रि० [फ़ा] अकेले ।

**दमैया** - वि० [हिं] दमन करनेवाला ।

**दया** - स्त्री० [सं] कृपा ; करुणा ; रहम ; यौ० —दृष्टि - करुणा-भरी दृष्टि ; —निधान - दया का ख़ज़ाना ; —निधि - बहुत दयालु पुरुष, ईश्वर ; —मय - दयालु ; ईश्वर ; —वती - दया करनेवाली ; —वान्, शील - दयालु ।

**दयानत** - स्त्री० [अ] ईमान ; यौ०—दार - ईमानदार ; सच्चा ;—दारी - ईमानदारी ।

**दयाना** - अ० [हिं] दयालु होना ।

**दयालु** - वि० [सं] दया करनेवाला ।

**दयालुता** - स्त्री० [स] दया करने की प्रवृत्ति ।

**दयित** - 1. वि० [सं] प्यारा, प्रिय ; 2. पु० पति ।

**दयिता** - स्त्री० [स] प्रियतमा ; पत्नी ।

**दर** - 1. पु० [सं] भय ; कंदरा ; [फ़ा] दरवाज़ा ; दहलीज ; 2. अव्य [फ़ा] में, अन्दर ; 3. स्त्री० [हिं] भाव, निर्ख़ ; यौ० —अन्दाज़ - दो आदमियो में लड़ाई होना ; —अन्दाज़ी - दो आदमियों में लड़ाई कराना ; —किनार - दूर ; अलग ; —ख़्शाँ - चमकता हुआ ; —ख़्वास्त - निवेदन ; प्रार्थना ; प्रार्थनापत्र ; —गुज़र - अलग ; मुआफ़ ; क्षमाप्राप्त ; —ग़ोर - क़ब्र में ; —दर - दरवाज़े-दरवाजे, प्रति गृह ; —परदा - परदे में ; छिपकर, गुप्त रूप से, चुपके-चुपके ;—पेश - आगे, सामने ; —बन्द - क़िला ; दरवाज़ा ; पुल ; —बान - द्वारपाल ; —बानी - दरबान का काम ; —बाब - बारे में ; —माँदा - थका हुआ ; जिसके पास कोई साधन न हो ; हक़ीक़त - वास्तव में, सचमुच ; —हम - तितर-बितर ; मु० —गुज़र करना - छोड़ देना ।

**दरक** - 1. वि० 2. पु० [स] डरपोक, कायर ; 3. स्त्री० दरार ।

**दरकना** - अ० [हिं] खिंचाव या दबाव से फटना ; मसकना ।

**दरकार** - 1. वि० [फ़ा] आवश्यक, अपेक्षित ; 2. स्त्री० आवश्यकता ।

**दरगाह** - स्त्री० [फ़ा] चौखट ; दरबार ; मक़बरा ; कचहरी ।

**दरख़्त** - पु० [फ़ा] पेड़, वृक्ष ।

**दरज** - स्त्री० [हिं] दरार ; चीर ।

**दरद** - पु० [हिं] दर्द, पीड़ा ; करुणा ।

**दरदरा** - वि० [हिं] पीसा गया मोटा आटा ।

**दरदराना** - स० [हिं] मोटा पीसना या दलना।
**दरपन** - पु० [हिं] दर्पण, आइना।
**दरपना** - अ० [हिं] ताव में आना; घमंड करना।
**दरब** - पु० [हिं] द्रव्य; किनारीदार मोटी चादर।
**दरबहिश्त** - स्त्री० [फ़ा] एक मिठाई।
**दरबा** - पु० [हिं] कबूतरों के रहने का ख़ानेदार संदूक़।
**दरबार** - पु० [हिं] राजसभा; **यौ०** दरबारे आम - वह राजसभा जहाँ सब लोग शामिल हो सकते हैं; दरबारे ख़ास - वह राजसभा जहाँ कुछ चुने हुए लोग ही जा सकते हैं; —दारी - किसीके यहाँ बार-बार जाकर बैठना और ख़ुशामद करना; दरबारी - दरबार में बैठनेवाला आदमी।
**दरमान** - पु० [फ़ा] इलाज; औषधि।
**दरमाहा** - पु० [फ़ा] मासिक वेतन।
**दरमियान, दरम्यान** - अव्य० [फ़ा] बीच, मध्य।
**दरमियानी** - वि० [अ] बीच का।
**दररना** - स० [हिं] रगड़ना; दलना; नष्ट करना।
**दरवाज़ा** - पु० [फ़ा] द्वार, किवाड़।
**दरवेज़ा** - पु० [फा] भिक्षावृत्ति।
**दरवेश** - पु० [फ़ा] फ़क़ीर; भिखारी।
**दरवेशाना** - वि० [फ़ा] फ़क़ीरों का-सा।
**दरवेशी** - स्त्री० [फ़ा] फ़क़ीरी।
**दरस** - पु० [हिं] दर्शन, साक्षात्कार; रूप।
**दरसन** - पु० [हिं] दर्शन।
**दरसना** - अ० [हिं] दिखायी पड़ना।
**दरसनीय** - वि० [हि] दर्शनीय।
**दरसाना** - 1. स० [हिं] दिखलाना; समझाना; 2. अ० दिखायी पड़ना।
**दराँती** - स्त्री० [हिं] हँसिया।
**दराज़** - 1. वि० [फ़ा] लंबा; विस्तृत; 2. स्त्री० मेज़ आदि का सन्दूक़नुमा ख़ाना।
**दरार** - स्त्री० [हिं] सूखी धरती या दीवार आदि के फटने से बनी हुई लंबी व गहरी लकीर।
**दरारना** - 1. अ० [हिं] फटना; 2. स० विदीर्ण करना।
**दरारा** - पु० [हिं] धक्का; रगड़।
**दरिन्दा** - पु० [फ़ा] फाड़ खानेवाला जानवर, हिंस्र पशु।
**दरिद्र** - वि० [सं] ग़रीब; **यौ०**—नारायण - कंगाल।
**दरिद्रता** - स्त्री० [सं] ग़रीबी।
**दरिया** - पु० [फ़ा] नदी; समुद्र; **यौ०**—दिल - उदारचेता; —दिली - उदारता; —बरामद, बरार - वह ज़मीन जो नदी की धारा हट जाने से निकल आती है; —बुर्द - वह ज़मीन जो नदी की धारा से कट गयी हो।
**दरियाई** - 1. स्त्री० [फ़ा] एक तरह का रेशमी कपड़ा; 2. वि० नदी या समुद्र-संबंधी; नदी या समुद्र में रहनेवाला; **यौ०** —घोड़ा - एक जानवर; —नारियल - एक बड़ा नारियल।
**दरियाफ़्त** - 1. स्त्री० [फ़ा] पता लगाना; जाँच-पड़ताल; 2. वि० ज्ञात।
**दरी** - स्त्री० [सं] गुफा; [हिं] शतरंजी; मोटे सूतों का बिछावन; **यौ०** —खाना - बारहदरी; अनेक द्वारोंवाला घर।
**दरीचा** - पु० [फ़ा] खिड़की; छोटा दरवाज़ा।
**दरीबा** - पु० [हिं] पान का बाज़ार।
**दरेंती** - स्त्री० [हिं] अनाज दलने की चक्की।
**दरेग़** - पु० [अ] रंज; पश्चात्ताप; करुणा; कोताही।

**दरेज़** - स्त्री० [फ़ा] छपी मलमल या छींट ।
**दरेरना** - स० [हि] पीसना ; दररना ; तीव्र आघात करना ।
**दरेरा** - [हिं] रगड़ ; धक्का ; चोट ।
**दरेस** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की छींट ।
**दरेसी** - स्त्री० [हिं] काट-छाँटकर दुरुस्त करने या सजाने की क्रिया ; मरम्मत ।
**दरोग़** - पु० [अ] झूठ ; **यौ०**—हलफ़ी - सच बोलने की क़सम खाकर भी झूठ बोलना ; झूठी गवाही देना ।
**दरो-बस्त** - वि० [फ़ा] कुल, पूरा ।
**दर्क** - पु० [अ] ज्ञान ; समझ ; दख़ल ।
**दर्कार** - क्रि० [फ़ा] दरकार ।
**दर्ज** - वि० [फ़ा] काग़ज़ पर लिखा हुआ, अंकित ।
**दर्ज़** - स्त्री० [फ़ा] दरार, शिगाफ़ ।
**दर्जा** - 1. पु० [अ] श्रेणी, पद ; ओहदा ; 2. वि० गुना ; **यौ०** —वार - सिलसिलेवार ।
**दर्ज़िन** - स्त्री० [फ़ा] दर्ज़ी की स्त्री ।
**दर्ज़ी** - पु० [फ़ा] कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष ।
**दर्द** - पु० [फा] पीड़ा ; तकलीफ ; दया ; शोक ; करुणा ; **यौ०**—अंगेज़ - मन को व्यथित करनेवाला, —नाक - करुणा-जनक ; —मन्द - पीड़ित ; सहानुभूति रखनेवाला ; दयालु, —मन्दी - दूसरे की विपत्ति में सहानुभूति दिखाना ; दर्देशरीक - हमदर्द ; दर्देज़ह - प्रसव की पीड़ा, दर्देसर - सिर की पीड़ा, कठिनाई या दिक़्क़त का काम ; दर्देसरी - कठिनता ; झंझट ।
**दर्दी** - वि० [फा] पीड़ित ; जो दूसरे का दुःख-दर्द समझे ।
**दर्दुर** - पु० [सं] मेंढक ; एक बाजा ; मेघ, ग्रामसमूह ; प्रांत ।
**दद्रु** - पु० [सं] दाद, दद्रु ।
**दर्प** - पु० [सं] घमंड, अहंकार ; कस्तूरी ; उच्छृंखलता ।
**दर्पक** - पु० [स] दर्प करनेवाला ; कामदेव ।
**दर्पण** - पु० [सं] आइना ; नेत्र ।
**दर्भ** - पु० [सं] कुश ; दाभ ; **यौ०**—चीर - दर्भ का बना हुआ कपड़ा,—पत्र - काश, काँस ; — पुष्प - एक साँप ; दर्भांकुर - दाभ का नुकीला हिस्सा ; दर्भासन - कुश का बना हुआ आसन ।
**दर्मियान** - पु० [अ] दरमियान ।
**दर्मियानी** - वि० [अ] दरमियानी ।
**दर्रा** - पु० [फ़ा] तंग पहाड़ी रास्ता ; घाटी ; दरार ; [हिं] मोटा आटा ; कंकरीली मिट्टी ।
**दर्व** - पु० [सं] आततायी ; हिंसक, करछुल; साँप का फन ; क्षति ; चोट ।
**दर्वी** - स्त्री० [सं] कलछी ; चमचा ; साँप का फन ।
**दर्श** - पु० [सं] अमावास्या तिथि ; अवलोकन ; दृश्य ; चाक्षुष प्रमाण ।
**दर्शक** - पु० [सं] देखनेवाला ; द्रष्टा ; द्वारपाल ; कुशल व्यक्ति ।
**दर्शन** - पु० [स] तत्त्वज्ञान करानेवाला शास्त्र, फिलासफ़ी ; जानने का भाव ; साक्षात्कार ; नेत्रदृष्टि ; बुद्धि, शास्त्र ; परीक्षण ; उपस्थिति ; **यौ०** —गृह - सभाभवन ; —गोचर, पथ - दृष्टिपथ ; क्षितिज ।
**दर्शनीय** - वि० [स] देखने लायक़ ; सुंदर ।
**दर्शाना** - 1. स०, 2. अ० [हिं] दरसाना ।
**दर्शित** - वि० [स] दिखाया हुआ; प्रकाशित; प्रमाणित ।
**दर्शी** - वि० [स] देखनेवाला ; विवेचन करनेवाला ।
**दल** - पु० [स] झुंड ; सेना ; कटा हुआ टुकड़ा ; अंश ; पत्ता ; फूल की पंखुड़ी ;

किसी निश्चित विचार के साथ काम करनेवाले व्यक्तियों का समूह, गिरोह; **यौ०**—दार - मोटे दलवाला ; —पति - सेनापति ; मुखिया ; —बल - लाव-लश्कर, सेना ; जत्था ; दलादली - दलों की होड़ ।

**दलकना** - 1. अ० [हिं] फट जाना ; काँपना ; डगमगाना ; 2. स० कँपा देना; **मु०** दलक उठना - क्षुब्ध हो जाना ।

**दलदल** - स्त्री० [अ] कीचड़ ; **मु०**—में फँसना - दिक़्क़त में पड़ना ।

**दलदला** - वि० [हि] दलदलवाला ।

**दलन** - पु० [स] नाश ; उच्छेद ; विदारण ।

**दलना** - स० [हिं] चूर्ण करना ; कुचलना ; नष्ट करना ; तोड़ना ।

**दलनी** - स्त्री० [सं] ढेला ।

**दलमलना** - स० [हि] मसल डालना ; रौंद डालना ।

**दलवाना** - स० [हिं] दलने का काम करवाना ; नष्ट कराना ।

**दलहन** - पु० [हिं] वह अन्न जिसकी दाल बनायी जाती है ।

**दलहरा** - पु० [हिं] दाल बेचनेवाला ।

**दलान** - पु० [हि] दालान ।

**दलायल** - स्त्री० [अ] 'दलील' का बहु० ।

**दलाल** - पु० [अ] वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे, मध्यस्थ ; कुटना ।

**दलिद्दर** - पु० [हिं] दरिद्र ।

**दलाली** - स्त्री० [फ़ा] दलाल का काम या मजूरी ; पारसियों की एक जाति ।

**दलित** - वि० [सं] कुचला हुआ, पदाक्रान्त ।

**दलिया** - पु० [हिं] दलकर टुकड़े किये हुए गेहूँ आदि अन्न ।

**दलील** - स्त्री० [अ] तर्क, युक्ति ; बहस ।

**दलेल** - पु० [हिं] सिपाहियों से दंड के तौर पर करायी जानेवाली कड़ी क़वायद ।

**दल्क** - स्त्री० [अ] फ़क़ीरों की गुदड़ी ; **यौ०** —पोश - गुदड़ी पहननेवाला फ़कीर ।

**दल्लाल** - पु० [अ] दलाल ।

**दल्लाला** - स्त्री० [अ] दलाल स्त्री ; कुटनी ।

**दव** - पु० [सं] जंगल ; जंगल की आग ; आग ; ज्वर ।

**दवन** - पु० [हिं] नाश ; दमन ; दौना ।

**दवना** - 1. पु० [हिं] दौना ; 2. स० जलाना ।

**दवा, दवाई** - स्त्री० [अ] औषध ; **यौ०** —ख़ाना - औषधालय ; —दारू - चिकित्सा, इलाज ।

**दवागि, दवागिन, दवाग्नि** - स्त्री० [हिं] जंगल में लगनेवाली आग, दावाग्नि ।

**दवात** - स्त्री० [अ] वह बरतन जिसमें स्याही रखी जाये, मसिपात्र ।

**दवानल** - पु० [सं] दवाग्नि ।

**दवाम** - 1. पु० [अ] हमेशगी ; 2. क्रि० हमेशा ; नित्य ।

**दवामी** - वि० [अ] स्थायी ; **यौ०** —बंदोबस्त - ज़मीन का वह बंदोबस्त जिसमें सरकारी मालगुज़ारी एक ही बार सदा के लिए मुक़र्रर हो जाये ।

**दवायर** - पु० [अ] 'दायरा' का बहु० ।

**दश** - 1. वि० [सं] नौ और एक ; 2. पु० दस की संख्या; **यौ०**—कर्म - गर्भाधान से लेकर विवाह तक के दस कर्म ; —कोषी - संगीत में एक ताल ; —गात्र - शरीर के मुख्य दस अंग ; मृत्यु के दसवें दिन पूरा होनेवाला एक कृत्य ; —द्वार - मनुष्य के शरीर के दस छिद्र ; —धर्म - मनु द्वारा वर्णित सत्य आदि दस धर्म ; —नामी - शंकराचार्य के दस शिष्यों द्वारा चलाया

हुआ एक संप्रदाय; —रथ - श्रीरामचंद्रजी के पिता।

**दशन** - पु० [सं] दाँत; दाँत से काटने की क्रिया; कवच; शृंग; यौ० —च्छद - होठ; — बीज - अनार।

**दशम** - वि० [सं] दसवाँ; यौ० दशमांश - दसवाँ हिस्सा।

**दशमलव** - पु० [हिं] गणित में भिन्न का एक भेद।

**दशमी** - स्त्री० [सं] दसवीं तिथि; बुढ़ापा; मरणावस्था।

**दशहरा** - पु० [सं] ज्येष्ठ महीने की शुक्ला दशमी, गंगादशहरा; विजयादशमी।

**दशांग** - पु० [सं] दस सुगंधित द्रव्यों के मेल से बना हुआ एक धूप।

**दशांगुल** - 1. पु० [सं] खरबूजा; 2. वि० जो माप में दस अंगुल का हो।

**दशा** - स्त्री० [सं] हालत; स्थिति; जीवन की कालकृत बाल्यादि अवस्था; दिये की बत्ती; चित्तवृत्ति; यौ० दशातर - जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ।

**दशार्ण** - पु० [सं] मध्य भारत के एक विभाग का प्राचीन नाम।

**दशार्ह** - पु० [सं] वृष्णि वंश के एक राजा; वृष्णियों का देश; विष्णु; बुद्ध।

**दशावरा** - स्त्री० [सं] दस सदस्यों की शासन-सभा।

**दशाश्वमेध** - पु० [सं] वह स्थान जहाँ किसीने दस अश्वमेध यज्ञ किये हों; काशी में गंगा का एक घाट।

**दश्त** - पु० [फ़ा] जंगल; यौ० —नवर्दी जंगलों में मारा-मारा फिरना।

**दस** - 1. वि०, 2. पु० [हिं] दश।

**दसख़त** - पु० [फ़ा] दस्तख़त।

**दसना** - 1. अ० [हिं] बिछाया जाना; 2. स० बिस्तर आदि फैलाना।

**दसवाँ** - वि० [हि] गिनती में जिसका स्थान दस पर हो।

**दसी** - स्त्री० [हि] कपड़े के छोर का सूत; कपड़े का छोर या अंचल; चमड़ा; छीलने का औज़ार।

**दसोतरा** - 1. वि० [हिं] दस अधिक; 2. पु० सौ में दस।

**दस्तंदाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] हस्तक्षेप; छेड़-छाड़।

**दस्त** - 1. वि० [स] क्षीण; फेंका या उछाला हुआ; बर्ख़ास्त; 2. पु० पतला पायख़ाना; हाथ; मौक़ा; यौ०—आमेज़ - पालतू; —कार - हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी; शिल्पी; —कारी - हाथ की कारीगरी; शिल्प; —ख़त - हस्ताक्षर; —ख़ती - हाथ का लिखा हुआ; हस्ताक्षर किया हुआ; —गरदाँ - हाथों हाथ उधार लिया हुआ; फेरीवाले से ख़रीदा हुआ; —गाह - ताक़त; माल-असबाव; —गीर - विपत्ति के समय हाथ पकड़नेवाला, सहायक; —दराज़ - ज़रा-सी बात पर मार बैठनेवाला; उचक्का; —निगर - ग़रीब, याचक; —पनाह - चिमटा; —पाक - रूमाल, अँगोछा; —ब-दस्त - हाथों-हाथ; —बन्ध - हाथ का एक जड़ाऊ गहना; —बरदार - जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले; —बरदारी - त्याग; त्यागपत्र; काम से हाथ खींच लेने की क्रिया; —बुर्द - अनुचित रूप से प्राप्त (धन); —बस्ता - हाथ बाँधे हुए; हाथ जोड़कर; —बोसी - (अभिवादन के तौर पर किसी-का) हाथ चूमने की क्रिया; —याब - हाथ में आया हुआ; —रस - पहुँच; सामर्थ्य; हाथ से की जानेवाली क्रिया।

**दस्तक** - स्त्री० [फ़ा] ताली ; दरवाज़ा खटखटाने की क्रिया ; माल आदि के आने-जाने की लिखित आज्ञा या स्वीकृति ; महसूल ।

**दस्तरख़ान, दस्तरख़्वान** - पु० [फ़ा] वह चादर जिसपर खाना रखा जाता है।

**दस्ता** - पु० [फ़ा] वह जो हाथ में आवे या रहे ; मूठ ; गुच्छा ; सिपाहियों का छोटा दल ; 24 तावों की गड्डी (काग़ज़)।

**दस्ताना** - पु० [फ़ा] हाथ का मोजा ।

**दस्तार** - स्त्री० [फ़ा] पगड़ी ; **यौ०** —बन्द - जो पगड़ी बनाता हो ; चीराबन्द ।

**दस्तावर** - वि० [फ़ा] जिसे खाने से दस्त हो, रेचक ।

**दस्तावेज़** - स्त्री० [फ़ा] वह काग़ज़ जिसमें व्यवहार की बात लिखी हो और जिसपर व्यवहार करनेवालों के दस्तख़त हों ।

**दस्तावेज़ी** - वि० [फ़ा] दस्तावेज़ का ।

**दस्ती** - 1. वि० [फ़ा] हाथ का ; 2. स्त्री० हाथ में लेकर चलने की बत्ती, मशाल ; छोटी मूठ ; छोटा क़लमदान ।

**दस्तूर** - स्त्री० [फ़ा] रीति ; रस्म ; रिवाज़ ; चाल ; नियम ; क़ायदा ; **यौ०** —उल-अमल - अकसर काम में आनेवाले नियम या परिपाटी ; शासन-प्रणाली ।

**दस्तूरी** - स्त्री० [फ़ा] वह रक़म जो नौकर मालिक का सौदा लेते वक्त दूकानदारों से हक़ के तौर पर पाते हैं ।

**दस्यु** - पु० [सं] चोर ; लुटेरा ; खल ।

**दह** - 1. पु० [हिं] नदी का वह भाग जहाँ पानी बहुत गहरा हो ; कुंड ; हौज ; 2. वि० [फ़ा] दस ।

**दहक** - स्त्री० [हिं] लपट ; ज्वाला ।

**दहकना** - अ० [हिं] जलना ; धधकना ; तप्त होना ।

**दहक़ान** - पु० [फ़ा] गँवार, देहाती; किसान।

**दहकाना** - स० [हिं] जलाना ; भड़काना ; उत्तेजित करना ।

**दहक़ानियत** - स्त्री० [फ़ा] गँवारपन ।

**दहक़ानी** - 1. वि० [फ़ा] गँवारू ; 2. पु० देहाती।

**दहड़-दहड़** - अव्य० [अनु] धधक-धधककर।

**दहन** - 1. पु० [सं] दाह ; अग्नि ; कृत्तिका नक्षत्र ; दुष्ट व्यक्ति ; भिलावाँ; तीन की संख्या ; [फा] मुख ; 2. वि० जलानेवाला ; **यौ०** —शील - जलानेवाला ; —सारथि - वायु ।

**दहना** - 1. अ० [हिं] जलना ; कुढ़ना ; 2. स० जलाना ; क्रोध दिखाना ; 3. वि० दाहिना ।

**दहनी** - स्त्री० [हिं] जलने की क्रिया ।

**दहपट** - वि० [हिं] चौपट ; ढहाकर धूल में मिलाया हुआ ; पदाक्रान्त ।

**दहपटना** - स० [हिं] नष्ट करना ।

**दहर** - 1. पु० [सं] चूहा ; भ्राता ; शिशु ; [फ़ा] ज़माना ; युग ; 2. वि० थोड़ा ; अति सूक्ष्म ।

**दहरना** † - 1. अ० [हिं] दहलना ; 2. स० दहलाना ।

**दहरिया** - पु० [अ] नास्तिक ।

**दहल** - स्त्री० [हिं] थरथराहट ।

**दहलना** - अ० [हिं] काँप उठना ।

**दहला** - पु० [हिं] दस चिह्नोंवाला ताश का पत्ता ; थाला ; आलबाल ।

**दहलाना** - स० [हिं] डराकर कँपा देना ।

**दहलीज़** - स्त्री० [फ़ा] देहली ; **मु०**—का कुत्ता - मुफ़्तख़ोर ; —न झाँकना - बहुत अधिक पर्दे में रहना ।

**दहशत** - स्त्री० [फ़ा] डर ; आतंक ; **यौ०**—अगेज़ - भयानक ; —ज़दा - डरा हुआ ; —नाक - डरावना ।

**दहा** - पु० [फ़ा] मुहर्रम का महीना ; ताज़िया ।

**दहाई** - स्त्री० [हिं] दस का मान या भाव ; अंकों की गिनती में दूसरा स्थान ।

**दहाड़** - स्त्री० [हिं] शेर या बाघ का गर्जन ; चिल्लाहट ; मु०— मारना - रोते समय ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना ।

**दहाड़ना** - अ० [हिं] गरजना ; चिल्ला-चिल्लाकर रोना ।

**दहान** - पु० [फा] मुँह ; छेद, सूराख़ ।

**दहाना** - पु० [फ़ा] मुँह ; द्वार, मुहाना ; मोरी ।

**दहिंगल** - पु० [देश] एक चिड़िया जो रह-रहकर पूँछ ऊपर उठाती रहती है ।

**दहिऔरी** - स्त्री० [हिं] दही डालकर बनाया हुआ पकवान ।

**दहिना** - वि० [हिं] बायाँ का उलटा, दाहिना ; दक्षिण ।

**दहिने** - क्रि० [हिं] दाहिनी ओर को ।

**दही** - पु० [हिं] जमाया हुआ दूध ।

**दहु**† - अव्य० [हिं] अथवा, या ; कदाचित् ।

**दहुम** - वि० [फ़ा] दसवाँ ।

**दहेंगर** - पु० } [हिं] दही रखने का मिट्टी
**दहेंड़ी** - स्त्री० } का पात्र ।

**दहेज़** - पु० [हिं] विवाह के समय कन्यापक्ष की ओर से वरपक्ष को दिया जानेवाला धन ।

**दाँ** - 1. पु० [हिं] दफ़ा, बार ; 2. वि० [फ़ा] जाननेवाला ।

**दाँकना** - अ० [हिं] दहाड़ना, गरजना ।

**दाँग** - 1. स्त्री० [फ़ा] छः रत्ती की तौल ; दिशा ; 2. पु० टीला ।

**दांड** - वि० [सं] दंड से संबंध रखनेवाला ।

**दाँड़ना** - स० [हिं] दंड देना ।

**दाँड़ी** - स्त्री० [हिं] डाँडी ।

**दाँत** - 1. पु० [हिं] दंत ; दशन ; 2. वि० दाँतसंबंधी ; बाह्येन्द्रियों का दमन करनेवाला ; जिसका दमन हुआ हो ; शांत ; धीर ; संयमी ; उदार ; यौ० दाँता-किटकिट - झगड़ा, गाली-गलौज़ ; मु० —काटी रोटी - गहरी मित्रता ; —काढ़ना - गिड़-गिड़ाना ; —खट्टे करना - परास्त करना ; नाक में दम करना , —दिखाना - घुड़कना ; अपना बड़प्पन दिखलाना ; —पीसना - बहुत अधिक क्रोधित होना ; —लगाना - किसी वस्तु को हड़प जाने की ताक में रहना ; दाँतों उँगली काटना या दाँतों तले उँगली दबाना - आश्चर्य में पड़ जाना ; —में जीभ-सा होना - प्रतिक्षण शत्रुओं के बीच में रहना ; —से उठाना - बड़ी कंजूसी से धन आदि इकट्ठा करना ।

**दाँतना** - अ० [हिं] पशुओं का जवान होना ; हथियार का कुंठित होना ।

**दाँता** - 1. वि० [हिं] दाँत के आकार का ; 2. पु० कँगूरा ।

**दाँती** - स्त्री० [हिं] हँसिया ; नाव बाँधने का खूँटा ; दर्रा ।

**दांपत्य** - वि० [सं] पति-पत्नी का संबंध ।

**दांभिक** - वि० [सं] पाखंडी ; घमंडी ।

**दाइया** - 1. स्त्री० [अ] दावा करनेवाली स्त्री ; 2. पु० दावा ; अभियोग ।

**दाई** - 1. वि० [अ] दुआ माँगनेवाला ; प्रार्थी ; 2. स्त्री० [हिं] दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली , प्रसव-क्रिया करानेवाली धाय ; दासी ; मु०—से पेट छिपाना - पालनेवाले से कोई बात छिपाना ।

**दाऊ** - पु० [हिं] बड़ा भाई ; कृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता बलराम ।

**दाक्षायणी** - स्त्री० [सं] दक्ष की कन्या ; दुर्गा ; अश्विनी, रेवती आदि नक्षत्र ।

**दाक्षिणात्य** - 1. वि० [सं] दक्षिण देश का; 2. पु० दक्षिण देश का निवासी।

**दाक्षिण्य** - पु० [सं] अनुकूलता; उदारता; सरलता।

**दाक्षी** - स्त्री० [सं] पाणिनि की माता का नाम।

**दाख** - स्त्री० [हिं] द्राक्षा, अंगूर; मुनक्का; किशमिश।

**दाख़िल** - वि० [अ] प्रविष्ट; घुसा हुआ; **यौ०** —ख़ारिज - किसी सरकारी काग़ज़ पर से पुराने हक़दार का नाम कटाकर नये हक़दार का नाम लिखाने की क़ानूनी कार्रवाई; —दफ़्तर - दफ़्तर में विना किसी निर्णय के अलग रख दिया हुआ (काग़ज़)।

**दाख़िला** - पु० [अ] प्रवेश; जमा करने का कार्य; अदायगी।

**दाख़िली** - वि० [अ] भीतरी; संबद्ध।

**दाग** - पु० [हिं] दग्ध करने की क्रिया; दाहकर्म।

**दाग़** - पु० [फ़ा] धब्बा; निशान; कलंक; **यौ०**—दार - जिसपर दाग़ या धब्बा लगा हो।

**दागना** - स० [हिं] अंकित करना; जलाना; संतप्त करना; बंदूक़ आदि छोड़ना; धब्बा लगाना।

**दाग़ी** - वि० [फ़ा] जिसपर दाग़ हो; कलंकित; जिसको सज़ा मिल चुकी हो।

**दाघ** - पु० [सं] गरमी; जलन।

**दाज** - पु० [अ] अंधकार; अँधेरी रात।

**दाजन** - स्त्री० [हिं] जलन; पीड़ा।

**दाजना** - 1. अ० [हिं] जलना; ईर्ष्या करना; 2. स० जलाना।

**दाझन** - स्त्री० [हिं] दाजन।

**दाझना** - 1. अ०, 2. स० [हिं] दाजना।

**दाड़िम** - पु० [सं] अनार।

**दाढ़** - स्त्री० [हिं] मोटे व चौड़े दाँत; **मु०** दाढ़ें मारना - ख़ूब चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

**दाढ़ना** - 1. अ० [हिं] जलना; 2. स० संतप्त करना।

**दाढ़ी** - स्त्री० [हिं] ठुड्डी पर के बाल, डाढ़ी; ठुड्डी; **यौ०** —ज़ार · स्त्रियों के द्वारा पुरुषों को दी जानेवाली एक गाली; जिसकी दाढ़ी जल गयी हो।

**दात**† - पु० [हिं] दान; दाता।

**दातव्य** - वि० [सं] देने योग्य।

**दाता** - पु० [सं] दानशील; देनेवाला।

**दातार** - पु० [हिं] दाता, देनेवाला।

**दाती** - स्त्री० [हिं] देनेवाली।

**दातुन, दातून, दातौन** - स्त्री० [हिं] दतुवन।

**दात्री** - स्त्री० [सं] देनेवाली; हँसिया।

**दातृत्व** - पु० [सं] दानशीलता।

**दाद** - स्त्री० [हिं] एक चर्मरोग, दद्रु; [फ़ा] इंसाफ़; प्रशंसा; **यौ०** —ख़्वाह - अन्याय का प्रतिकार चाहनेवाला; —दहिश - उदारता से देना; —फ़रियाद - न्याय के लिए प्रार्थना; —रस - अन्याय का प्रतिकार करनेवाला; —सितद - लेन-देन; **मु०**— देना - तारीफ़ करना।

**दादनी** - स्त्री० [फ़ा] वह धन जो किसानों को पेशगी में दिया जाता है; ऋण; कर्ज़; **यौ०**—दार - दादनी लेनेवाला।

**दादरा** - पु० [हिं] एक प्रकार का चलता गाना; एक ताल।

**दादस** - स्त्री० [हिं] सास की सास।

**दादा** - पु० [हिं] बाप के बाप, पितामह; बड़ा भाई।

**दादि**† - स्त्री० [हिं] न्याय, इंसाफ़, दाद।

**दादी** - 1. स्त्री० [हिं] पिता की माता, पितामही ; 2. वि० फ़रियाद करनेवाला।
**दादुर** - पु० [सं] मेंढ़क।
**दादू** - पु० [हिं] एक संबोधन ; दादा के लिए प्यार का शब्द ; एक प्राचीन संत।
**दाध** - स्त्री० [हिं] जलन, दाह।
**दाधना** - स० [हिं] जलाना।
**दान** - पु० [सं] धर्मदृष्टि से देने की क्रिया ; शिक्षण ; कुछ देकर शत्रु को वश में करने की नीति , उदारता ; हाथी के गंड-स्थल से निकलनेवाला मदजल ; शुद्धि ; **यौ०** —धर्म - दानरूप धर्म ; —पत्र - वह लेख या पत्र जिसमें किसी वस्तु के दान रूप में दिये जाने का उल्लेख हो ; —पात्र - दान देने योग्य व्यक्ति ; —वीर - बहुत दानी व्यक्ति ; वीर-रस का एक भेद , —शील, शूर - जिसका स्वभाव दान देने का हो।
**दानव** - पु० [सं] असुर, राक्षस ; **यौ०**—गुरु - शुक्राचार्य।
**दानवी** - स्त्री० [सं] राक्षसी।
**दानवेंद्र** - पु० [सं] राजा बलि।
**दाना** - पु० [हिं] अनाज का एक कण ; चबेना ; मनका ; **यौ०** —पानी - अन्न-जल, खाना-पीना ; —बंदी - खेत में खड़ी फसल की कूत ; **मु०** —पानी उठना - जीविका न रहना ; मर जाना ; दाने-दाने को तरसना - भूखों मरने की नौबत आना ; दाने-दाने को मुहताज़ - अति निर्धन ; [फ़ा] जाननेवाला ; अक़्लमन्द।
**दानाई** - स्त्री० [फ़ा] अक़्लमन्दी, बुद्धिमत्ता।
**दानिश** - स्त्री० [फ़ा] समझ ; अक़्ल ; **यौ०**—मन्द - बुद्धिमान।
**दानिस्त** - स्त्री० [फ़ा] जानकारी, ज्ञान।
**दानिस्ता** - क्रि० [फ़ा] जान-बूझकर।
**दानी** - 1. वि० [सं] जो दान करे ; दान-शील ; उदार ; 2. पु० दान करनेवाला व्यक्ति ; कर उगाहनेवाला ; 3. स्त्री० [फ़ा] रखनेवाली (आधार)।
**दानीय** - वि० [सं] दान करने योग्य।
**दानेदार** - वि० [फ़ा] जिसमें दाने हों ; रवादार।
**दाप** - पु० [हिं] घमंड ; शक्ति ; उत्साह ; प्रताप ; क्रोध ; जलन।
**दापक** - पु० [हिं] दबानेवाला।
**दापना** - स० [हिं] दबाना।
**दाफ़ा** - वि० [फ़ा] दूर करनेवाला ; नाशक।
**दाब** - 1. स्त्री० [हिं] चाँप ; दबाव ; अधिकार ; रोब ; शासन ; नियंत्रण ; **मु०** —मानना - वश में रहना ; 2. पु० [फ़ा] रंग-ढंग ; तौर-तरीक़ा ; शान-शौक़त; दब-दबा।
**दाबा** - पु० [हिं] कलम लगाने के लिए वृक्ष की टहनी को मिट्टी में गाड़ने की क्रिया।
**दाभ** - पु० [हिं] दर्भ।
**दाम** - पु० [हिं] मूल्य ; दमड़ी का तृतीयांश ; समूह ; माला ; शत्रु पर विजय पाने के चार उपायों में से एक ; **मु०** —खड़ा करना - क़ीमत वसूल करना ; [सं] रस्सी ; माला ; रेखा , फंदा।
**दामन** - पु० [फ़ा] पल्ला ; अंगोछे का छोर ; अंचल ; पहाड़ों की तराई ; **यौ०** —गीर - पल्ले पड़नेवाला ; दावेदार ; **मु०** —गीर होना - किसीका पल्ला पकड़कर इंसाफ़ चाहना।
**दामनी** - स्त्री० [सं] रस्सी ; [फ़ा] घोड़ों की पीठ पर डाला जानेवाला कपड़ा।
**दामाद** - पु० [हिं] जामाता।
**दामासाह** - पु० [हिं] वह दिवालिया जिसकी जायदाद हिस्सों के मुताबिक़ महाजनों में बँट जाये।

**दामासाही** - स्त्री॰ [हिं] दिवालिये की जायदाद में से महाजनों को मिलनेवाली रक़म का निर्णय।

**दामिनी** - स्त्री॰ [सं] बिजली; स्त्रियों का सिर पर पहनने का एक गहना।

**दामी** - 1. स्त्री॰ [हिं] कर; मालगुज़ारी; 2. वि॰ क़ीमती।

**दामोदर** - पु॰ [सं] श्रीकृष्ण; विष्णु।

**दाय** - पु॰ [हिं] दान; खंडन; विभाग; स्थान; वारिसों में बाँटा जानेवाला पैतृक धन या मिल्कियत; यौ॰ — भाग - उत्तराधिकारियों में पैतृक धन का विभाजन।

**दायजा** - पु॰ [हिं] विवाह में वर को दिया जानेवाला धन, दहेज़।

**दायन** - पु॰ [अ] ऋण देनेवाला।

**दायम** - क्रि॰ [अ] सदा, हमेशा।

**दायमी** - वि॰ [अ] स्थायी; सार्वकालिक।

**दायर** - वि॰ [अ] चलता-फिरता हुआ; जारी; मु॰ —करना - (मुक़द्दमा) अदालत में पेश करना।

**दायरा** - पु॰ [अ] गोल घेरा; कक्ष; सीमा; कार्य या अधिकार का क्षेत्र।

**दायाँ** - वि॰ [हिं] दाहिना।

**दाया** - स्त्री॰ [फ़ा] दाई, धाय; यौ॰ —गरी - दाई का पेशा; [हिं] दया।

**दायाद** - पु॰ [स] दाय का अधिकारी; सपिण्ड कुटुंबी; पुत्र।

**दायादा, दायादी** - स्त्री॰ [सं] कन्या; दाय की अधिकारिणी।

**दायित्व** - पु॰ [सं] जिम्मेदारी।

**दायिनी** - वि॰ [सं] देनेवाली।

**दायी** - वि॰ [सं] देनेवाला; पहुँचानेवाला; उत्तरदायी।

**दायें** - क्रि॰ [हिं] दाहिनी ओर; मु॰— होना - अनुकूल या प्रसन्न होना।

**दार** - 1. पु॰ [सं] विदारण; छिद्र; 2. स्त्री॰ स्त्री, पत्नी; यौ॰—कर्म, क्रिया - विवाह; [फ़ा] सूली; फाँसी; 3. वि॰ रखनेवाला।

**दारक** - 1. पु॰ [सं] बालक; पुत्र; ग्राम-शूकर; 2. वि॰ चीरनेवाला।

**दारचीनी** - स्त्री॰ [फ़ा] एक प्रकार का तज जो मसाले के काम में आता है।

**दारना** - स॰ [हिं] फाड़ना; नष्ट करना।

**दारमदार** - पु॰ [फ़ा] आश्रय, ठहराव; कार्य का भार।

**दारा** - 1. स्त्री॰ [सं] पत्नी; स्त्री; 2. पु॰ [फ़ा] मालिक।

**दाराई** - स्त्री॰ [फ़ा] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**दारि** - स्त्री॰ [हिं] दाल।

**दारिका** - स्त्री॰ [स] बालिका; बेटी।

**दारिद** - पु॰ [हिं] दरिद्रता।

**दारिद्र्य** - पु॰ [स] दरिद्रता, ग़रीबी।

**दारी** - स्त्री॰ [सं] दरार; बेवाई।

**दारु** - 1. पु॰ [स] काठ; बढ़ई; शिल्पी; उदार व्यक्ति; देवदारु; 2. वि॰ दानशील।

**दारुका** - 1. स्त्री॰ [सं] काठ की पुतली; 2. वि॰ काठ की बनी हुई।

**दारुण** - वि॰ [सं] कठोर; भयंकर; कठिन; तीव्र।

**दारू** - स्त्री॰ [फ़ा] शराब; बारूद; दवा।

**दारो** - पु॰ [हिं] अनार का दाना या बीज।

**दारोग़ा** - पु॰ [फ़ा] देख-माल या प्रबंध करनेवाला व्यक्ति; थाने का प्रधान अधिकारी।

**दार्ढ्य** - पु॰ [सं] दृढ़ता।

**दार्शनिक** - वि॰ [सं] दर्शनशास्त्र का जानकार; तत्त्ववेत्ता; दर्शनशास्त्रसंबंधी।

**दार्ष्टान्त, दार्ष्टान्तिक** - वि॰ [स] दृष्टान्तयुक्त, दृष्टान्तसंबंधी।

**दाल** - स्त्री० [हिं] दली हुई अरहर या मूँग आदि ; **यौ०**—मोठ - तली हुई दाल; **मु०** —गलना - मतलब निकलना ; —में कुछ काला होना - कोई दोष छिपा होना ; —रोटी चलना - निर्वाह होना ।

**दालचीनी** - स्त्री० [फ़ा] दारचीनी ।

**दालान** - पु० [फ़ा] बरामदा, ओसारा ।

**दावँ** - पु० [हिं] बार ; बारी ; मौक़ा ; **मु०** —पर चढ़ाना - मतलब के मुवाफ़िक करना ;—खेलना - चालबाज़ी करना ।

**दावँना** - स० [हिं] कटी फ़सल को बैलों से रौंदवाना, दाँना ।

**दावँनी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियों का एक गहना ।

**दावँरी** - स्त्री० [हि] रस्सी ।

**दाव** - पु० [सं] जगल ; दावाग्नि, वन में लगनेवाली आग ; पीड़ा ।

**दावत** - स्त्री० [अ] ज्योनार, भोज ; बुलावा ; निमंत्रण ।

**दावन** - पु० [हिं] नाश ; हँसिया ।

**दावना** - स० [हिं] दमन करना ; मिटा देना।

**दावनी** - 1. स्त्री० [हिं०] स्त्रियो का एक शिरोभूषण ; 2. वि० नष्ट करनेवाली ।

**दावर** - पु० [फ़ा] हाकिम ; अधिकारी ; न्यायकर्त्ता ।

**दावरी** - स्त्री० [फ़ा] न्यायशीलता ।

**दावा** - 1. स्त्री० [हिं] वन में लगनेवाली आग ; 2. पु० [अ] अपना हक़ ज़ाहिर करने का भाव ; हक़ के लिए चलाया हुआ मुक़द्दमा ; **यौ०** —गीर, दार - दावा करनेवाला ; **मु०**—ख़ारिज होना - मुक़द्दमा हारना ।

**दावाग्नि** - स्त्री० [सं] जंगल में लगनेवाली आग ।

**दावात** - स्त्री० [अ] स्याही रखने का पात्र, दवात ।

**दावानल** - पु० [सं] दावाग्नि ।

**दावेदार** - पु० [अ] दावादार ।

**दाश** - पु० [सं] केवट ; नौकर ; **यौ०**—नंदिनी - व्यास की माता सत्यवती ।

**दाशरथि** - पु० [सं] श्रीरामचंद्र आदि राजा दशरथ के पुत्र ।

**दाशेर** - पु० [सं] केवट की संतति ।

**दाशेरक** - पु० [स] मरुभूमि ; मारवाड़ ; मारवाड़ का निवासी ।

**दाश्त** - स्त्री० [फ़ा] लालन-पालन ।

**दास** - पु० [सं] नौकर ; सेवक ; शूद्रों की एक उपाधि ; दस्यु ; आत्मज्ञानी ; शूद्र ; **यौ०** दासानुदास - अत्यंत विनम्र सेवक ।

**दासता** - स्त्री० [स] गुलामी ; परतंत्रता ।

**दासा** - पु० [हिं] दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता ; दीवार की कुरसी के ऊपर बैठाया हुआ पत्थर ; हँसिया ।

**दासी** - स्त्री० [सं] सेविका, नौकरानी ; वेदी।

**दास्तान** - स्त्री० [फ़ा] कथा ; वर्णन ।

**दास्य** - पु० [सं] दासपन ; सेवा ; भक्ति के नौ भेदो में से एक ।

**दाह** - पु० [सं] जलन; मुर्दा जलाने का काम; संताप ; **यौ०** —कर्म, क्रिया - मुर्दा जलाने का काम ; —स्थल - श्मशान ।

**दाहक** - 1. वि० [सं] जलानेवाला ; 2. पु० अग्नि ; लाल चीता ।

**दाहिना** - वि० [हिं] बायाँ का उलटा ; दक्षिण ; अनुकूल ।

**दाहिने** - क्रि० [हिं] दाहिने हाथ की ओर ; **मु०**—होना - अनुकूल होना ।

**दाह्य** - वि० [सं] जलाने योग्य ।

**दिउला, दिउली** - स्त्री० [हिं] सूखे हुए चेचक के दानो की पपड़ी ; छोटा दीया।

**दिक** - स्त्री० [सं] दिशा ; तरफ़ ।

**दिक़** - 1. वि० [अ] हैरान ; बीमार ; 2. पु० तपेदिक ; **यौ०**—दारी - कठिनता ; तकलीफ़ ।

**दिक्कत** - स्त्री० [अ] परेशानी, तंगी।

**दिखना** - अ० [हिं] दिखायी देना।

**दिखरावनी** - स्त्री० [हिं] नववधू आदि का मुँह देखने का नेग।

**दिखलाना** - स० [हिं] दूसरे को देखने में लगाना ; प्रदर्शित करना ; प्रगट करना।

**दिखाई** - स्त्री० [हिं] दिखाने या देखने की क्रिया या भाव ; दिखाने की उजरत ; देखने के बदले दिया जानेवाला धन।

**दिखाऊ** - वि० [हिं] सारहीन या नाकाम ; जो केवल देखने-भर को हो।

**दिखाव** - पु० [हिं] देखने की क्रिया ; दृश्य।

**दिखावट** - स्त्री० [हिं] ऊपरी तड़क-भड़क ; बाह्याडंबर।

**दिखावटी** - वि० [हिं] दिखाऊ।

**दिखावा** - पु० [हिं] ऊपरी तड़क-भड़क।

**दिखौआ, दिखौवा** - वि० [हिं] दिखावटी।

**दिगंत** - पु० [सं] क्षितिज ; दसों दिशाएँ।

**दिगंतर** - पु० [स] दो दिशाओं के बीच की जगह।

**दिगंबर** - 1. पु० [सं] महादेव ; जैनियों का एक संप्रदाय ; अँधेरा ; 2. वि० नंगा।

**दिगर** - वि० [फ़ा] दूसरा, अन्य, दीगर।

**दिग्गज** - 1. पु० [सं] पुराणों में वर्णित आठों दिशाओं को धारण करनेवाले हाथी ; 2. वि० बहुत बड़ा।

**दिग्दर्शन** - पु० [सं] उदाहरण या नमूना दिखाने का काम ; जानकारी ; दिशा या रास्ता दिखाने का काम।

**दिग्दाह** - पु० [सं] एक दैवी घटना जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशाएँ लाल और जलती हुई दिखायी पड़ती हैं तथा अशुभ-सूचक मानी जाती हैं।

**दिग्ध** - वि० [सं] विषाक्त ; लिप्त ; गंदा किया हुआ।

**दिग्भ्रम** - पु० [सं] दिशा भूल जाना ; दिशासंबंधी भ्रम।

**दिग्वसना** - वि० [सं] दिशाएँ ही जिसके वस्त्ररूप हों।

**दिग्विजय** - स्त्री० [सं] किसी राजा का भूमंडल के समस्त राजाओं को घूम-घूमकर युद्ध में परास्त करना ; किसी विद्वान या मत-प्रचारक का देश-देशान्तर में जाकर अपनी धाक जमाना।

**दिङ्मूढ़** - वि० [सं] जिसे दिग्भ्रम हुआ हो।

**दिठवन** - स्त्री० [हिं] दृष्टि ; देवोत्थान एकादशी।

**दिठादिठी** - स्त्री० [हिं] देखादेखी ; साक्षात्कार।

**दिठौना** - पु० [हिं] कुदृष्टि से बचाने के लिए बच्चों के गाल या मस्तक पर लगाया जानेवाला काजल का चिह्न।

**दित्सा** - स्त्री० [सं] दान करने की इच्छा।

**दिदृक्षा** - स्त्री० [सं] देखने की इच्छा।

**दिन** - पु० [सं] सूर्योदय से सूर्योदय तक का चौबीस घंटे का समय ; सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय ; काल ; तिथि ; तारीख़ ; यौ० —कर, कर्ता - सूर्य ; आक ; —केशर - अंधकार ; —क्षय, पात - तिथिक्षय ; सायंकाल ; —चर्या - दिन-भर का कार्य ; —दिन - प्रतिदिन, कालक्रम से ; —मणि, मयूख - सूर्य ; —मान - सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय का मान ; —मुख - प्रातःकाल ; —रात - सदैव, सर्वदा ; —शेष - संध्या ; मु०—कटना - किसी तरह समय बीतना ; —काटना - किसी तरह निर्वाह करना ; —को तारे दिखायी देना - दुख की प्रबलता के कारण होश ठिकाने न रहना ; —को दिन रात को रात न समझना - काम करने की धुन में अपने स्वास्थ्य का भी ख़्याल न करना ; —को रात कहना - उलटी बात कहना ; —गिनना - प्रतीक्षा

करना ; —दहाड़े - खुले तौर पर ; —दूना रात चौगुना - शीघ्रता से बहुत अधिक उन्नति ; —फिरना - भले दिन आना, सुख के दिन आना।

**दिनांध** - 1. वि० [सं] वह जिसे दिन में न दिखायी दे ; 2. पु० उल्लू पक्षी।

**दिनाती** - स्त्री० [हिं] मज़दूरों का एक दिन का काम या उसकी मजूरी।

**दिनेश** - पु० [सं] सूर्य।

**दिनौंधी** - स्त्री० [हिं] एक रोग।

**दिपना** - अ० [हिं] देदीप्यमान होना ; चमकना।

**दिब** - पु० [हिं] दिव्य परीक्षा ; अपने कथन की सत्यता या निर्दोषता प्रमाणित करने के लिए दी जानेवाली कठिन परीक्षा।

**दिमाग़** - पु० [अ] मस्तिष्क ; बुद्धि ; अभिमान ; यौ०—चट - बकवादी ; खोपड़ी चाट जानेवाला ; अभिमानी, —रोशन - सुँघनी ; मु०—आसमान पर होना - अत्यधिक अभिमान करना ; —खाना, चाटना - बहुत बकवाद करना ; —ख़ाली करना - किसीको समझाते-समझाते थक जाना ; —में खलल होना - मस्तिष्क में कोई विकार होना।

**दिमाग़ी** - वि० [अ] दिमाग़सबन्धी।

**दिया** - पु० [हिं] दीया ; दीप ; यौ०—बत्ती - दिया जलाने का कार्य ; —सलाई - मैचबक्स।

**दियानत** - स्त्री० [अ] दयानत।

**दियारा** - पु० [हिं] नदी के हट जाने से प्राप्त ज़मीन।

**दिरम, दिरहम** - पु० [फ़ा] मिश्र में प्रचलित चाँदी का एक सिक्का ; एक तौल।

**दिरमान** - स्त्री० [फ़ा] चिकित्सा।

**दिरमानी** - 1. पु० [फ़ा] चिकित्सक ; वैद्य ; 2. स्त्री० चिकित्साशास्त्र।

**दिल** - पु० [फ़ा] कलेजा ; हृदय ; मन, जी ; यौ०—आज़ार - दिल को तकलीफ़ पहुँचानेवाला ; —आरा - माशूक ; प्रियतम ; —आराई - दिल को लुभाने की क्रिया ; —आराम - माशूक ; —आवेज़ - जी लुभानेवाला ; —कश - मन को लुभानेवाला ; —कुशा - मनोहर ; —ख़राश - दिल को कष्ट पहुँचानेवाला ; —ख्वाह - दिल के मुताबिक ; —गीर - उदास ; —चला - साहसी ; —चस्प - जिसमें जी लगे ; चित्ताकर्षक ; —चस्पी - दिल का लगना ; मनोरंजन ; —चोर - भीरु, कायर ; कामचोर ; —ज़दा - दुखी, खिन्न ; —जमई - इतमीनान, तसल्ली ; —जला - जिसके दिल को बहुत कष्ट पहुँचा हो ; —जान - सखियों का आपसी प्रेम-संबोधन ; —जोई - किसीको संतुष्ट करना ; —दादा - प्रेमी, आशिक़ ; —दार - दाता ; प्रेमी ; रसिक ; —दिही - ढारस ; सांत्वना ; —पसन्द - सुंदर, —नशीन - जो दिल मे जम जाए ; —मज़ीर - मनोहर ; —फ़रेब - मोहक, —बर - प्यारा ; —बस्ता - प्रेमी, जिसका दिल किसी तरफ़ बँधा हो ; —बस्तगी - मनोरंजन ; —रुबा - वह जिससे प्रेम किया जाए, प्यारा ; एक वाद्य ; —रुबाई - दिलरुबा होने का भाव ; मोहकता ; प्रेम ; —शाद - जिसका दिल खुश हो ; —शिकनी - किसीका दिल तोड़ना ; किसीको दुखी या निराश करना ; —शिकस्ता - जिसका दिल टूट गया हो ; दुखी, खिन्न ; —सोज़ - सहानुभूति रखनेवाला ; करुण ; मु० —अटकना - किसीसे प्रेम करना ; —कड़ा करना - मन में दृढ़ता लाना ; —का खोटा - कपटी ; —का गुबार

निकालना - मन का मलाल दूर करना ; —की दिल में रहना - मनोरथ का पूर्ण न होना ; —खट्टा होना - मन फिर जाना ; —जमना - मन लगना ; —तोड़ना - हिम्मत तोड़ना; —दुखाना- मानसिक कष्ट पहुँचाना ; —फटना - व्याकुल होना ; —बढ़ना - उत्साहित होना ; —भर आना - करुणा आदि से मन विचलित होना ; —से उतरना - स्नेह या श्रद्धा का पात्र न रह जाना।

**दिला** - पु० [फ़ा] दिल का संबोधन ; ऐ दिल ।

**दिलाना** - स० [हिं] देने का काम दूसरे से कराना ।

**दिलारा** - वि० [फ़ा] प्रिय, माशूक ।

**दिलाराम** - पु० [फ़ा] प्यारा, दिलरुबा ।

**दिलावर** - वि० [फ़ा] शूर ; बहादुर ; उत्साही ; साहसी ।

**दिलावरी** - स्त्री० [हि] बहादुरी ।

**दिलावेज़** - वि० [फ़ा] मनोहर, सुंदर ।

**दिलासा** - पु० [हि] ढारस ।

**दिली** - वि० [फ़ा] दिलसबंधी ; हार्दिक ; अत्यंत घनिष्ठ ।

**दिलेर** - वि० [फ़ा] बहादुर ; साहसी ।

**दिलेराना** - वि० [फ़ा] वीरों का-सा ।

**दिलेरी** - स्त्री० [फ़ा] बहादुरी ; वीरता ; साहस ।

**दिल्लगी** - स्त्री० [फ़ा] हँसने-हँसाने की बात, मज़ाक ; यौ० —बाज़ - मसख़रा ; हँसी-दिल्लगी करनेवाला ; —बाज़ी - दिल्लगी करने का भाव ।

**दिल्ला** - पु० [हिं] किवाड़ों में शोभा के लिए जड़ा जानेवला लकड़ी का चौकोर और लम्बा टुकड़ा ।

**दिवंगत** - वि० [सं] स्वर्गवासी ।

**दिव** - पु० [सं] स्वर्ग ; आकाश ; दिन ; वन ।

**दिवस** - पु० [स] दिन, वार ; रोज़ ।

**दिवांध** - 1. पु० [सं] उल्लू ; 2. वि० जिसे दिन में दिखायी न दे ।

**दिवा** - पु० [सं] दिन ; वर्णवृत्त ; यौ०—कर - सूर्य ; मदार ; कौआ ; —कीर्ति - चांडाल ; नाई ; उल्लू ; —चर - चाण्डाल; एक पक्षी ; —भीत - चोर ; उल्लू ; —स्वप्न - हवाई क़िला बनाना ; कल्पना-विलास ।

**दिवाना** - 1. पु० [हिं] दीवाना ; 2. स० दिलाना ।

**दिवाल** - स्त्री० [हिं] दीवार ।

**दिवाला** - पु० [हिं] वह हालत जब ऋण चुकाने के लिए कुछ न रह जाए ; पास में कुछ नहीं रहने की स्थिति ; मु०—निकलना - ऋण चुकाने में असमर्थ होना ।

**दिवालिया** - वि० [हिं] जिसने दिवाला निकाला हो ; जिसका दिवाला निकल गया हो ।

**दिवाली** - स्त्री० [देश] दीवाली ।

**दिव्य** - वि० [स] स्वर्गीय ; देवोचित ; चमकीला ; भव्य ; यौ०—दृष्टि - अलौकिक दृष्टि ; —स्त्री, दिव्यांगना - देववधू, अप्सरा ।

**दिशा** - स्त्री० [सं] ओर, तरफ़ ; दस की संख्या ; यौ० —भ्रम - दिशाओं के संबध में भ्रम ; —शूल - वह समय जब किसी विशेष दिशा में जाना वर्जित हो मु० —जाना - टट्टी जाना ।

**दिष्ट** - 1. पु० [सं] भाग्य ; आदेश उद्देश्य ; काल ; 2. वि० उपदिष्ट वर्णित ; निश्चित ।

**दिसंतर** - 1. पु० [हिं] देशांतर ; विदेश 2. अव्य० बहुत देर तक ।

**दिसावर** - पु० [हिं] परदेश, विदेश ।

**दिसावरी** - वि० [हिं] बाहर का, विदेश से आया हुआ।

**दिहंदा** - वि० [फ़ा] दाता, देनेवाला।

**दिहरा** - पु० [हिं] देवस्थान, देवालय।

**दीअट** - स्त्री० [हिं] चिरागदान।

**दीआ** - पु० [हिं] दीपक, चिराग।

**दीक्षक** - पु० [सं] दीक्षा देनेवाला गुरु; मंत्रोपदेष्टा।

**दीक्षांत** - पु० [सं] प्रथम यज्ञ में दोषों के मार्जन के लिए किया जानेवाला पूरक यज्ञ; दीक्षा का अंत; **यौ०**—भाषण - विश्वविद्यालयों में शिक्षा की समाप्ति पर स्नातकों के समक्ष दिया जानेवाला भाषण।

**दीक्षा** - स्त्री० [सं] नियमपूर्वक मंत्रोपदेश।

**दीक्षित** - 1. वि० [सं] जिसने दीक्षा ली हो; 2. पु० ब्राह्मणों का एक भेद।

**दीखना** - अ० [हिं] दिखायी देना, दृष्टिगत होना।

**दीघी** - स्त्री० [हिं] बावली, तालाब।

**दीच्छा** - स्त्री० [हिं] दीक्षा।

**दीठ** - स्त्री० [हिं] दृष्टि; **यौ०**—बंद - जादू; —बंदी - नज़रबंदी; जादू।

**दीदा** - पु० [फ़ा] दृष्टि; नज़र।

**दीदार** - पु० [फ़ा] दर्शन; साक्षात्कार; भेंट।

**दीदी** - स्त्री० [हिं] बहन को पुकारने का शब्द।

**दीधिति** - स्त्री० [सं] किरण; उँगली।

**दीन** - 1. वि० [सं] ग़रीब; दुखित; उदास; **यौ०**—दयाल, दयालु - दीनों पर दया करनेवाला; 2. पु० ईश्वर; **यौ०** —बंधु - दीन-दुखियों का सहायक; ईश्वर; —वत्सल - परमेश्वर; दीनों का रक्षक; ईश्वर; [अ] धर्म; मज़हब; पंथ; **यौ०**—ए-इलाही - अकबर का चलाया हुआ एक धर्म; —दार - धर्मनिष्ठ; —दारी - धर्माचरण; —दुनिया - इहलोक तथा परलोक; —पनाह - धर्म का रक्षक।

**दीनता** - स्त्री० [स] ग़रीबी; नम्रता; लाचारी।

**दीनार** - पु० [फ़ा] स्वर्णाभूषण; स्वर्णमुद्रा।

**दीनी** - वि० [अ] धार्मिक।

**दीप** - पु० [स] दिया, चिराग़; शिरोमणि; **यौ०**—कली - दीपक की लौ; —किट्ट - काजल; —दान - देवता के सामने दीप जलाना; —माला - जगमगाते हुए दीपको की श्रेणी; —शिखा - दीपक की लौ; दीपक का धुआँ।

**दीपक** - 1. पु० [सं] चिराग़, दीप; एक मात्रिक छंद; कुंकुम; मोर की शिखा; 2. वि० आलोकित करनेवाला; अग्निवर्धक; उत्तेजक।

**दीपत** - स्त्री० [हिं] कांति; शोभा; यश।

**दीपावली** - स्त्री० [सं] दीपो की पंक्ति; दीवाली।

**दीपोत्सव** - पु० [सं] दीवाली।

**दीप्त** - 1. वि० [सं] चमकता हुआ; उत्तेजक; 2. पु० सुवर्ण; सिंह; हींग; नीबू।

**दीप्ति** - स्त्री० [सं] प्रकाश; चमक; छवि; ज्ञान की अभिव्यक्ति; लाख; **यौ०**—मान - कांतिमान।

**दीप्या** - स्त्री० [सं] पिंड खजूर (फल)।

**दीबाचा** - स्त्री० [अ] भूमिका, प्रस्तावना।

**दीमक** - स्त्री० [हिं] चींटी की तरह छोटा सफ़ेद कीड़ा।

**दीया** - पु० [हिं] दीपक, चिराग़, दीआ; **मु०** —जलने का समय - संध्या समय; —ठंडा करना - दीपक को बुझा देना; —दिखाना - किसीके सामने प्रकाश

करना; — लेकर ढूँढ़ना - बड़े परिश्रम से खोजना ।

**दीरघ** - वि० [हिं] दीर्घ ; लंबा ।

**दीर्घ** - 1. वि० [सं] देश और काल दोनों की दृष्टि से बड़ा ; ऊँचा ; गहरा ; विस्तृत ; लंबा; गुरु (मात्रा छंद) ; यौ०— कंटक - बबूल का पेड़ ; —कंद - मूली ; —कणा - सफ़ेद जीरा ; —काष्ट - शहतीर ; —केश - भालू ; —ग्रीव - ऊँट ; सारस ; नील क्रौंचपक्षी ; —जिह्व - सर्प ; —जीवी - चिरजीवी ; —दर्शी, दृष्टि - भालू ; गीध ; दूरदर्शी ; —नाद - शंख ; मुर्ग़ा ; कुत्ता ; —निद्रा - मृत्यु ; —निश्वास - शोक या दुख के कारण ली जानेवाली लंबी साँस ; —पल्लव - सन का पौधा ; —सूत्र, सूत्री - प्रत्येक कार्य को देरी से करनेवाला ; —स्वर - दो मात्राओंवाला स्वर ; दीर्घाकार - बड़े आकार का ; दीर्घायु - चिरंजीवी ; कौआ ; सेमर का पेड़ ; मार्कण्डेय ऋषि ; दीर्घायुध - भाला ; सूअर ; साही ; 2. पु० ऊँट ; पाँचवीं, छठीं, सातवीं और नौवीं राशियाँ ।

**दीर्घिका** - स्त्री० [सं] वापी ; जलाशय ; एक प्रकार की बड़ी नाव ।

**दीवट** - स्त्री० [हिं] चिराग़दान, दीअट ।

**दीवान** - पु० [फ़ा] राजा के बैठने की जगह ; मंत्री ; गज़लों का संग्रह ; यौ०— आम - वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो ; —ख़ाना - जहाँ बड़े आदमी बैठते हों, बैठक ; —ख़ास - वह जगह जहाँ ख़ास दरबार होता है ।

**दीवानगी** - स्त्री० [फ़ा] पागलपन ।

**दीवाना** - वि० [फ़ा] पागल, सनकी ।

**दीवानी** - स्त्री० [फ़ा] पगली ; वह न्यायालय जहाँ माल-संबंधी झगड़े तय होते हैं ।

**दीवार** - स्त्री० [फ़ा] भीत ; भित्ति ; यौ०— क़हक़हा - सिकंदर की बनायी कल्पित दीवार ; चीन की प्रसिद्ध दीवार ; —गीर - दीया रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है ; —गीरी - वह परदा जो दीवार के आगे हमेशा के लिए लटकता रहता है ।

**दीवाल** - स्त्री० [हिं] दीवार ।

**दीवाला** - पु० [हिं] दिवाला ।

**दीवाली** - स्त्री० [हिं] दीपावली, हिन्दुओं का एक त्योहार जिसमें दीपों से घरों को सजाया जाता है और लक्ष्मी की पूजा की जाती है ।

**दीसना** - अ० [हिं] दिखायी देना ।

**दीह** - 1. पु० [फ़ा] गाँव ; 2. वि० [हिं] दीर्घ, लंबा ।

**दुशाला** - पु० [हिं] बेल-बूटेवाली पश्मीने की चादर ।

**दुंदुभि, दुंदुभी** - स्त्री० [सं] नगाड़ा ।

**दुंबाल** - पु० [हिं] दुम, पूँछ ।

**दुःख** - पु० [सं] 'सुख' का उलटा, क्लेश, कष्ट, तकलीफ़ ।

**दुःखांत** - वि० [सं] जिसके अंत में दुःख हो ।

**दुःखी** - वि० [सं] जो कष्ट में हो ।

**दुःसंग** - पु० [सं] बुरा साथ ।

**दुःसह** - वि० [सं] जिसका सहन करना कठिन हो ।

**दुःसाहस** - पु० [सं] व्यर्थ या अनुचित साहस ।

**दुःसाध्य** - वि० [सं] दुष्कर ; जो कठिनाई से सिद्ध किया जा सके ।

**दुःस्वभाव** - पु० [सं] खोटे स्वभाव का ।

**दु** - वि० [सं] दो का एक रूप ; यौ०— अन्नी - दो आने का सिक्का ; —आब - दो

नदियो की बीच का भूखंड ; —कूलिनी - नदी ; —खंडा - दो खंडोंवाला (मकान); —घड़िया - दो घड़ी के हिसाब से निकाला हुआ ; —चित - अस्थिर चित्तवाला ; —तरफ़ा - दोनो ओर का ; दुरंगा; —नाली - दो नलोंवाली (बंदूक) ; —पट्टा - ओढ़नी की चादर ; उत्तरीय ; —पहरिया - दोपहर, मध्याह्न ; —विधा - सशय, संकल्प-विकल्प ; —मंज़िला - जिसमें दो मंज़िलें हों ;—मुँहा - दो मुखों से युक्त ।

**दुई** - स्त्री० [हिं] दो की भावना ; द्वैत; ग़ैर ।

**दुआ** - स्त्री० [अ] प्रार्थना ; आशीर्वाद ; **यौ०**—ख़ैर - मगल-कामना ; —गो - शुभचिंतक ; **मु०** —मनाना मंगल-कामना करना ।

**दुआल** - स्त्री० [फ़ा] चमड़ा ; चमड़े का फीता ; रिकाब का फीता ।

**दुआली** - स्त्री० [फ़ा] खराद या मशीन की चक्की घुमाने का फीता ।

**दुकड़ा** - पु० [हिं] एक पैसे का चौथा हिस्सा ; जोड़ा ।

**दुकान** - स्त्री० [फ़ा] सौदा बिकने का स्थान; हट्ट ; **यौ०** —दार - दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला, दुकानवाला; —दारी - बिक्री का काम, माल बेचने का काम ; **मु०** —लगाना - दुकान का सामान सजाकर रखना ; चीज़ों को इधर-उधर फैलाकर रखना ।

**दुकाल** - पु० [हिं] अकाल ।

**दुकूल** - पु० [स] क्षौम वस्त्र, रेशमी वस्त्र ।

**दुकेला** - वि० [हिं] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो ।

**दुकेले** - क्रि० [हिं] किसीके साथ ।

**दुका** - पु० [हिं] जो एक साथ दो हो ; **यौ०** इका-दुका - अकेला-दुकेला ; —तिका - दो या तीन की संख्या में ।

**दुकी** - स्त्री० [हिं] ताश की वह पत्ती जिसपर दो बूटियाँ बनी हो ।

**दुख** - पु० [स] दुःख, कष्ट, तकलीफ़; **यौ०**—कर - कष्ट पहुँचानेवाला; —त्रय - आधिभौतिक आदि तीन प्रकार के दुख ; —द - क्लेशकर ; —दग्ध - भीषण कष्ट में पड़ा हुआ ; —दायक, दायी - दुख देनेवाला ; —प्रद - दुखद ;—साध्य - कठिनाई से पूरा करने योग्य ; —मय - दुखों से भरा हुआ ; **मु०**—उठाना - तकलीफ़ सहना ; —बँटाना - विपत्ति में साथ देना ; —मानना - खिन्न होना ।

**दुखड़ा** - पु० [हिं] दुख की कथा ; दुख; **मु०** —रोना - अपने कष्ट का हाल-सुनाना ।

**दुखदुंद** † - पु० [हिं] दुख का उपद्रव ।

**दुखना** - अ० [हिं] दर्द करना, पीड़ा होना ।

**दुख़ान** - पु० [अ] धुआँ ।

**दुखाना** - स० [हिं] पीड़ा पहुँचाना ।

**दुख़ानी** - वि० [अ] धुएँ या आग के ज़ोर से चलनेवाला ।

**दुखारी, दुखियारी** - वि० [हिं] खिन्न ।

**दुखी** - वि० [हिं] जिसे मानसिक व्यथा हो ; खिन्न ।

**दुख़्तर** - स्त्री० [फ़ा] लड़को, बेटी ; **यौ०** दुख़्तरेरज़ - अंगूर की शराब ।

**दुगदुगी** - स्त्री० [अनु] धुकधुकी, हृदय की धड़कन ।

**दुग्ध** - 1. पु० [सं] दूध ; 2. वि० दुहा हुआ ; भरा हुआ ।

**दुघरी** - स्त्री० [हिं] दो घड़ी का मुहूर्त्त ।

**दुचंद** - वि० [हिं] दूना ।

**दुचित** - वि० [हिं] जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो ।

**दुजानू** - क्रि० [हिं] दोनों घुटनों के बल ।

**दुज़्द** - पु० [फ़ा] चोर।
**दुज़्दी** - स्त्री० [फ़ा] चोरी।
**दुटूक** - वि० [ ] दो टुकड़ों में; मु०—बात कहना - थोड़े में साफ़ बात कहना।
**दुत** - अव्य० [हिं] घृणा या तिरस्कारसूचक एक शब्द; यौ०—कार - फटकार; धिक्कार।
**दुतकारना** - स० [हिं] फटकारना; धिक्कारना।
**दुतर्फ़ा** - वि० [हिं] दोनों ओर का।
**दुतिया** - स्त्री० [हिं] दूज, द्वितीया (तिथि)।
**दुधारी, दुधारू** - 1. वि०, 2. स्त्री० [हिं] दूध देनेवाली; दो धारवाली (तलवार)।
**दुधिया** - 1. वि० [हिं] दूध मिला हुआ; 2. स्त्री० एक घास।
**दुधैल** - वि० [हिं] दूध देनेवाली; सफ़ेद रंग का।
**दुनियाँ, दुनिया** - स्त्री० [अ] संसार; संसार का प्रपंच; लोक; यौ०—दार - गृहस्थ; व्यवहारकुशल; —साज़ - स्वार्थसाधक; चापलूस; —साज़ी - अपना मतलब निकालने का ढंग; चापलूसी; मु०—की हवा लगना - सांसारिक बातों की जानकारी होना; —भर का - बहुत अधिक; —के पर्दे पर - संसार में; —से उठ जाना - मर जाना।
**दुनियाई, दुनियावी** - वि० [हिं] सांसारिक; दुनिया का, संसारसबंधी।
**दुनी** - स्त्री० [हिं] दुनिया, संसार।
**दुफ़सली** - वि० [हिं] दोनों फसलों में उत्पन्न होनेवाला; संदिग्ध।
**दुबकना** - अ० [हिं] दबकना।
**दुबरा** - वि० [हिं] दुर्बल, क्षीण शरीर-वाला।
**दुबराना** - अ० [हिं] दुबला होना।
**दुबला** - वि० [हिं] पतला, कृश।
**दुबाइन** - स्त्री० [हिं] दूबे की स्त्री।
**दुबारा** - क्रि० [हिं] दोबारा।
**दुबिधा** - स्त्री० [हिं] असमंजस, संकल्प-विकल्प।
**दुबे** - पु० [हिं] द्विवेदी ब्राह्मण, दूबे।
**दुभाखी, दुभाषिया, दुभाषी** - पु० [हिं] दो भाषाओं का जानकार।
**दुम** - स्त्री० [फ़ा] पूँछ; पिछलग्गू; डिग्री या उपाधि, पदवी; यौ०—दार - पूँछ-वाला; जिसके पीछे पूँछ की-सी कोई वस्तु हो; मु०—दबाकर भागना - मारे डर के भाग जाना; —में घुसना - लुप्त हो जाना।
**दुमन** - वि० [हिं] अप्रसन्न, खिन्न; अनमना।
**दुमाता** - स्त्री० [सं] बुरी माता; सौतेली माँ।
**दुम्बल** - पु० [फ़ा] बड़ा फोड़ा।
**दुम्बा** - पु० [फ़ा] मेंढ़ा।
**दुम्बाला** - पु० [फ़ा] पूँछ; पतवार।
**दुरंगा, दुरंगी** - वि० [हिं] दो रंगों का; दो प्रकार का।
**दुरंत** - वि० [सं] जिसका परिणाम बुरा हो; कठिन; दुस्तर; प्रबल।
**दुर** - 1. अव्य० [सं] किसीको हटाने के लिए प्रयुक्त तिरस्कार-सूचक शब्द; 2. पु० [अ] मोती, दुर्र।
**दुरतिक्रम** - वि० [सं] जिसका अतिक्रमण न हो सके, प्रबल।
**दुरदाम** - वि० [हिं] कठिन।
**दुरदुराना** - स० [अनु] तिरस्कारपूर्वक दूर करना।
**दुरधिगम** - वि० [सं] दुष्प्राप्य; दुर्बोध।
**दुरना** - अ० [हिं] आड़ में होना; न दिखलायी पड़ना; आँखों से ओझल होना।

**दुरभिसंधि** - स्त्री० [सं] बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।
**दुरमुस** - पु० [हिं] कंकड़ या मिट्टी आदि को पीटकर समतल करनेवाला मुँगरा।
**दुरवस्था** - स्त्री० [सं] बुरी दशा; कष्टपूर्ण हालत; दरिद्रता।
**दुरागमन** - पु० [हिं] द्विरागमन; गौना; विवाह के बाद वधू का पति के घर आने का रस्म।
**दुराग्रह** - पु० [सं] हठ; ज़िद।
**दुराग्रही** - वि० [सं] हठी; ज़िद्दी।
**दुराचरण, दुराचार** - पु० [सं] बुरी चाल-चलन।
**दुराज** - पु० [हि] बुरा शासन।
**दुराजी** - वि० [हिं] दो राजाओं से संबंधित।
**दुरात्मा** - वि० [सं] दुष्टात्मा, खोटा।
**दुरादुरी** - स्त्री० [हिं] छिपाव।
**दुराधर्ष** - वि० [सं] जो वश में न आ सके, प्रचंड।
**दुराना** - 1. अ० [हिं] दूर होना; भागना; छिपना; 2. स० हटाना; छोड़ना; छिपाना।
**दुराराध्य** - वि० [सं] जिसे संतुष्ट करना कठिन हो।
**दुरालाप** - पु० [सं] बुरी बातचीत; गाली।
**दुराव** - पु० [हिं] छिपाव; अलगाव।
**दुराशय** - पु० [सं] ख़राब विचारोंवाला व्यक्ति; दुष्टात्मा।
**दुराशा** - स्त्री० [सं] व्यर्थ की आशा।
**दुरित** - 1. पु० [सं] पाप; संकट; 2. वि० कठिन; पापी।
**दुरुखा** - वि० [हिं] जिसके दोनों ओर मुँह हों; जिसके दोनो रुख एक-से हों।
**दुरुत्तर**- 1. पु० [सं] बुरा जवाब; 2. वि० जिसको पार पाना कठिन हो।
**दुरुपयोग** - पु० [सं] बुरा उपयोग।
**दुरुश्त** - वि० [फ़ा] बड़ा कठोर, खुरदरा।
**दुरुस्त** - वि० [फ़ा] ठीक; उचित; दोषहीन।
**दुरुस्ती** - स्त्री० [फ़ा] सुधार।
**दुरूद** - स्त्री० [फ़ा] मोहम्मद साहब की स्तुति; दुआ।
**दुरूह** - वि० [सं] जिसको जानना कठिन हो, गूढ़।
**दुरेफ** - पु० [हिं] द्विरेफ, भ्रमर।
**दुरेशाहवार** - पु० [फ़ा] बादशाहों के लायक़ बड़ा मोती।
**दुर्गंध** - स्त्री० [सं] बुरी गंध, कुवास, सुगंध का उलटा।
**दुर्ग** - वि० [सं] जिसमें पहुँचना कठिन हो, गढ़, क़िला, कोट।
**दुर्गत** - 1. वि० [सं] जिसकी बुरी हालत हो; दरिद्र; 2. स्त्री० दुर्गति।
**दुर्गति** - स्त्री० [सं] बुरा हाल; दरिद्रता।
**दुर्गम** - 1. वि० [स] जहाँ जाना कठिन हो; जिसे जानना कठिन हो; 2. पु० परमेश्वर।
**दुर्गा** - स्त्री० [सं] देवी, आदि शक्ति।
**दुर्गुण** - पु० [सं] बुराई, दोष, ऐब।
**दुर्घट** - वि० [सं] मुश्किल।
**दुर्घटना** - स्त्री० [सं] बुरा संयोग; अशुभ कार्य; वारदात।
**दुर्जन** - पु० [सं] खल; दुष्ट व्यक्ति।
**दुर्जय** - वि० [स] जिसे जीतना बहुत कठिन हो।
**दुर्ज्ञेय** - वि० [सं] दुर्बोध, जो जल्दी समझ में न आ सके।
**दुर्दम, दुर्दमनीय** वि० [सं] प्रबल, जो जल्दी दबाया या जीता न जा सके।
**दुर्दर्श** - वि० [सं] जिसे देखना कठिन हो; चकाचौंध पैदा करनेवाला।

**दुर्दर्शन** - वि० [सं] जो देखने में भद्दा हो, बदसूरत।
**दुर्दशा** - स्त्री० [सं] बुरी हालत, दुर्गति।
**दुर्दांत** - वि० [सं] दुर्दमनीय।
**दुर्दिन** - पु० [सं] बुरा दिन; विपत्काल; मेघाच्छन्न दिन।
**दुर्दैव** - पु० [स] दुर्भाग्य।
**दुर्द्धर्ष** - वि० [सं] कठिन; प्रचंड।
**दुर्नय** - पु० [सं] बुरी नीति; अविनय; अन्याय।
**दुर्निवार, दुर्निवार्य** - वि० [सं] कठिनाई से निवारण करने योग्य।
**दुर्नीति** - स्त्री० [सं] नीतिविरुद्ध आचरण।
**दुर्बल** - वि० [सं] कमज़ोर; दुबला-पतला।
**दुर्बलता** - स्त्री० [सं] कमज़ोरी।
**दुर्बोध, दुर्बोध्य** - वि० [सं] जो जल्दी समझ में न आये, दुर्ज्ञेय।
**दुर्भग** - वि० [सं] हतभाग्य, अभागा।
**दुर्भर** - वि० [सं] जिसे उठाना कठिन हो; भारी; न सहने लायक़।
**दुर्भाग्य** - पु० [स] खोटी क़िस्मत।
**दुर्भावना** - स्त्री० [सं] बुरी भावना; अंदेशा।
**दुर्भिक्ष** - पु० [सं] अकाल।
**दुर्मति** - 1. वि० [स] दुष्ट; मूर्ख; 2. पु० एक संवत्सर का नाम।
**दुर्मना** - वि० [सं] बुरे चित्त का; उदास; उद्विग्न।
**दुर्मरण** - पु० [सं] बुरे प्रकार से होनेवाली मृत्यु, दुखद मृत्यु।
**दुर्योग** - पु० [सं] दुर्भाग्यसूचक ग्रहयोग।
**दुर्रा** - पु० [फ़ा] चाबुक, कोड़ा।
**दुर्रानी** - पु० [फ़ा] कानों में मोती पहननेवाला पठानों का एक संप्रदाय।
**दुर्लंघ्य** - वि० [सं] कठिनाई से पार करने योग्य।
**दुर्लक्ष्य** - 1. पु० [सं] बुरा ध्येय; 2. वि० जो कठिनाई से देखा जा सके।
**दुर्लभ** - वि० [सं] दुष्प्राप्य, जिसे पाना सहज न हो।
**दुर्वचन** - पु० [सं] कटु वचन; गाली।
**दुर्वह** - वि० [सं] असह्य; कठिनाई से ढोने योग्य।
**दुर्वार** - वि० [सं] जो जल्दी रोका न जा सके।
**दुर्वृत्त** - वि० [सं] दुराचारी।
**दुर्व्यवहार** - पु० [सं] बुरा बर्ताव।
**दुर्व्यसन** - पु० [सं] बुरी लत।
**दुलकी** - स्त्री० [हिं] घोड़े की एक चाल।
**दुलखना** - स० [हिं] बार-बार दोहराना।
**दुलड़ी** - स्त्री० [हिं] दो लड़ों की माला।
**दुलत्ती** - स्त्री० [हिं] घोड़े आदि जानवरों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना; मु०— झाड़ना - दोनों लातों से मारना।
**दुलदुल** - पु० [अ] मुहर्रम के समय घोड़े की नक़ल निकालना।
**दुलराना** - 1. स० [हिं] लाड़ करना; 2. अ० दुलारे बच्चों की-सी चेष्टा करना।
**दुलहन, दुलहिन** - स्त्री० [हिं] नई बहू; नवोढ़ा स्त्री।
**दुलहा** - पु० [हिं] वर, पति, दूल्हा।
**दुलहाई** - स्त्री० [हिं] विवाह का गीत।
**दुलाई** - स्त्री० [हिं] रूई भरा हुआ ओढ़ना, हलकी रज़ाई।
**दुलार** - पु० [हिं] लाड़-प्यार।
**दुलारा** - वि० [हिं] लाड़ला (बेटा)।
**दुलीचा** - पु० [हिं] क़ालीन, गलीचा।
**दुवन** - पु० [हिं] दुर्जन; राक्षस, दैत्य।
**दुशवार** - वि० [फ़ा] कठिन, मुश्किल; दुःसह।
**दुशवारी** - स्त्री० [फ़ा] कठिनता, दिक़्क़त।

**दुशाला** - पु० [फ़ा] पश्मीने की चादरों का जोड़ा ; यौ०—पोश - जो दुशाला ओढ़े हो ; अमीर ।
**दुश्चरित्र** - 1. वि० [सं] बदचलन ; बुरे आचरण करनेवाला ; 2. पु० बुरा चाल-चलन ।
**दुश्मन** - पु० [फ़ा] शत्रु, वैरी ।
**दुश्मनी** - स्त्री० [फ़ा] शत्रुता ।
**दुष्कर** - वि० [सं] मुश्किल ; जिसको करना कठिन हो ।
**दुष्कर्म** - पु० [सं] बुरा काम ; पाप ।
**दुष्कर्मी** - वि० [स] बुरा काम करनेवाला, पापी ।
**दुष्काल** - पु० [सं] अकाल ।
**दुष्कीर्ति** - स्त्री० [स] अपयश, बदनामी ।
**दुष्कृत** - पु० [सं] नीच कर्म ; पाप ।
**दुष्ट** - वि० [सं] दुराचारी, खल ; निकम्मा ; व्याकरण तथा तर्कशास्त्र में अशुद्ध (प्रयोग) ।
**दुष्टता** - स्त्री० [सं] बुराई ।
**दुष्टा** - वि० [सं] खोटे स्वभाव की स्त्री ; असती स्त्री, वेश्या ।
**दुष्पच** - वि० [सं] देरी से पचने या पकने-वाला ।
**दुष्पार** - वि० [सं] जिसे पार करना कठिन हो ।
**दुष्प्रवृत्ति** - स्त्री० [सं] बुरी प्रवृत्ति ।
**दुष्प्राप्य** - वि० [सं] जो सहज में न मिल सके ।
**दुसह** - वि० [हिं] असह्य, कठिन, दुःसह ।
**दुसही** - वि० [हि] जो कठिनता से सह सके ; ईर्ष्यालु ।
**दुसूती** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें दो सूतों का ताना-बाना होता है ।
**दुस्तर** - वि० [सं] कठिनाई से पार करने योग्य ।
**दुस्त्यज** - वि० [सं] जिसका त्यागना कठिन हो ।
**दुस्सह** - वि० [हि] जिसे सहना कठिन हो, असह्य ।
**दुहत्था** - वि० [हिं] दोनो हाथों से किया हुआ ; जिसमें दो मूठें हों ।
**दुहना** - स० [हिं] थन से दूध निकालना ; निचोड़ना ; धन हर लेना ; मु० दुह लेना - निस्सार कर देना ।
**दुहनी** - स्त्री० [हिं] दूध दुहने का बरतन, दोहनी ।
**दुहरा** - वि० [हिं] दोहरा ।
**दुहराना** - स० [हिं] दोहारना ।
**दुहाई** - स्त्री० [हिं] घोषणा ; रक्षा के लिए पुकार ; दुहने की क्रिया ; शपथ ; मु०—फिरना - राजा के सिंहासनारूढ़ होने पर उसके नाम की घोषणा होना ; किसीके प्रताप का डंका पिटना ; —देना - रक्षा के लिए पुकारना ।
**दुहागिन** - स्त्री० [हिं] विधवा, सुहागिन का उलटा ।
**दुहाजू** - वि० [हिं] पहली स्त्री के मर जाने पर दूसरा विवाह करनेवाला ।
**दुहिता** - स्त्री० [सं] बेटी ।
**दुहिन**† - पु० [हि] ब्रह्मा ।
**दुहेल** - पु० [हि] क्लेश ; संकट ।
**दुहेला** - 1. वि० [हिं] कठिन ; 2. पु० कठिन कार्य ।
**दुहोत्रा** - पु० [हिं] बेटी का बेटा ; नाती ।
**दूकान** - स्त्री० [हिं] दुकान ।
**दूज** - स्त्री० [हिं] द्वितीया, दूसरी तिथि ; मु०—का चाँद होना - कम दिखायी पड़ना ; बहुत दिनों पर दिखायी पड़ना ।
**दूजा** - वि० [हिं] दूसरा ।
**दूत** - पु० [सं] संदेश ले जाने व ले आनेवाला मनुष्य ; हरकारा ; दूत का

काम ; राजदूत ; **यौ०** —कर्म - ख़बर पहुँचाने का काम ; दूतावास - राजदूत के रहने का स्थान और उसका कार्यालय ।

**दूती** - स्त्री० [सं] कुटनी ; प्रेमी और प्रेमिका के संदेश को एक-दूसरे के पास पहुँचाने-वाली स्त्री ।

**दूद** - पु० [फ़ा] धुआँ ; **यौ०** —कश - चिमनी, धुआँ निकलने का मार्ग ; दूदेदिल - दीर्घ श्वास ।

**दूदमान** - पु० [फ़ा] खानदान ; परिवार ; वंश ।

**दूध** - पु० [हिं] दुग्ध, पय ; **यौ०** —पूत - धन और संतति; —मुँहा - नन्हा (बच्चा); **मु०** —उतरना - स्तनों में दूध आना ; —का दूध पानी का पानी - ठीक-ठीक न्याय ; —की मक्खी की तरह निकाल फेंकना - अत्यंत तुच्छ वस्तु की तरह एकदम अलग कर देना; दूधों नहाओ पूतों फलो - धन-जन से खूब समृद्ध हो ।

**दूधिया** - 1. स्त्री० [हिं] एक सफ़ेद पत्थर ; खड़िया मिट्टी ; दुधिया ; 2. वि० दूध मिला हुआ ; दूध के ।

**दून** - 1. स्त्री० [हिं] दूने का भाव ; 2. वि० क्लांत ; पीड़ित ; क्षुब्ध ; दुगुना ; **मु०**—की लेना या हाँकना - बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना ।

**दूना** - वि० [हिं] दुगुना ।

**दूब** - स्त्री० [हिं] एक घास, दूर्वा ।

**दूबर, दूबरा** - वि० [हिं] दुर्बल ; दीन-हीन ; अशक्त ।

**दूबे** - पु० [हिं] दुबे ।

**दूभर** - वि० [हिं] मुश्किल ; असह्य ; दुष्कर ।

**दूर** - 1. अव्य०· [सं, फ़ा] देश या काल आदि की दृष्टि से अधिक अंतर पर ; 2. वि० जो दूर हो ; **यौ०**—गामी - दूर तक जानेवाला ; —दर्शक - पंडित ; दूर तक सोचनेवाला ; दूरबीन ; —दर्शिता - दूर की बात सोचने का गुण ; —दर्शी - दूर की बात सोचनेवाला ; परिणामदर्शी ;—वर्ती - दूरी पर रहनेवाला; —अन्देश - बहुत दूर की बात सोचनेवाला ; —दराज़ - बहुत दूर ; —दस्त - दुर्गम ; बहुत दूर का ; पहुँच के बाहर का ; —बीन - एक यंत्र जिससे दूर की चीज़ पास दिखायी देती है ।

**दूरी** - स्त्री० [हिं] फ़ासला, अन्तर ।

**दूर्वा** - स्त्री० [सं] दूब, एक लंबी घास ।

**दूलह, दूल्हा** - पु० [हिं] दुलहा, वर ।

**दूषण** - पु० [सं] दोष, ऐब; खंडन ; प्रतिवाद ; दोषारोपण ; विरोध ।

**दूषित** - वि० [सं] दोषयुक्त ; कलंकित ।

**दूसर, दूसरा** - वि० [हिं] द्वितीय ; भिन्न, दिगर ।

**दूहना** - स० [हिं] दुहना ।

**दृक, दृग** - पु० [सं] आँख ; दृष्टि ; दो की संख्या ; देखना ।

**दृगंचल** - पु० [सं] पलक ।

**दृढ़** - वि० [सं] मज़बूत ; धीर ; कड़े दिल का ; अशिथिल ; बलिष्ठ ।

**दृढ़ता** - स्त्री० [सं] मज़बूती ।

**दृढ़ाना** - 1. स० [हिं] दृढ़ करना ; पक्का करना ; 2. अ० कड़ा होना ; स्थिर होना ।

**दृति** - स्त्री० [सं] मशक ; मछली ; गलकंबल ; मेघ ।

**दृप्त** - वि० [सं] गर्वित ; उन्मत्त ; हर्षयुक्त ।

**दृश्य** - 1. पु० [सं] जो देखने में आ सके ; नज़ारा ; तमाशा ; जो अभिनय द्वारा दिखाया जाय ; 2. वि० देखने योग्य ;

मनोरम ; यौ० — मान - जो दिखायी पड़े ; देखा गया ।

**दृष्ट** - 1. पु० [सं] अनुभूति ; दर्शन ; डाकुओं आदि का भय ; 2. वि० देखा या जाना हुआ ; यौ० —कूट - पहेली ।

**दृष्टांत** - पु० [सं] उदाहरण, मिसाल ; शास्त्र ।

**देखन** - स्त्री० [हिं] देखने की क्रिया या भाव ; देखने का ढंग ।

**देखना** - स० [हिं] अवलोकन करना ; मु० —सुनना - पता लगाना ; देखने में - साधारण व्यवहार में ; देखते-देखते - तुरंत ही ।

**देखभाल, देखरेख** - स्त्री० [हिं] निगरानी ; निरीक्षण ; संरक्षण ।

**दृष्टि** - स्त्री० [सं] देखने की क्रिया ; देखने की शक्ति ; नज़र ; आँख ; प्रकाश ; ज्ञान ; मत ; उद्देश्य ; सोचने-विचारने का पहलू ; यौ० —कोण - देखने, सोचने और विचारने का पहलू ; —क्षेप - नज़र डालना ; —गत - जो देखने में आया हो ; —गोचर - दिखायी पड़नेवाला ; —दोष - देखने में त्रुटि होना ; —विक्षेप - कटाक्ष ; —विभ्रम - प्रेम-भरी चितवन ; —विष - एक प्रकार का साँप ; मु० (किसीपर) दृष्टि रखना - निगरानी करना ; देखभाल करना ।

**देखाऊ** - वि० [हिं] झूठी तड़क-भड़कवाला ; नकली ; बनावटी ; दिखाऊ ।

**देखादेखी** - 1. स्त्री० [हिं] भेंट ; साक्षात्कार ; अनुकरण ; 2. अव्य० करते देखकर ; अनुकरण के रूप में ।

**देखाव** - पु० [हिं] दिखलाने का भाव या दृश्य ; तड़क-भड़क ; दिखाव ।

**देग** - पु० [फ़ा] खाना पकाने का बड़ा बरतन जिसका मुँह और पेट चौड़ा हो ।

**देगचा** - पु० [फ़ा] छोटा देग ।

**देदीप्यमान** - वि० [सं] अत्यंत प्रकाशयुक्त, दमकता हुआ ।

**देन** - 1. स्त्री० [हिं] देने की क्रिया या भाव, दान ; दी हुई चीज़ ; 2. पु० कर्ज़ ; यौ० —दार - कर्ज़दार ; आभारी ; लेनदेन - सूद पर रुपया लेने-देने का व्यवहार ।

**देना** - 1. स० [हिं] प्रदान करना ; सौंपना ; मिलाना ; खींचना ; लगाना ; रखना ; रसीद करना ; जनना ; 2. पु० कर्ज़ ।

**देय** - वि० [सं] देने योग्य ।

**देर** - स्त्री० [फ़ा] विलंब ; समय ।

**देरपा** - वि० [फ़ा] मज़बूत, दृढ़ ।

**देरी** - स्त्री० [हिं] देर ।

**देरीना** - वि० [फ़ा] पुराना ; वृद्ध ।

**देव** - पु० [सं] देवता ; सुर, अमर ; परमात्मा ; मेघ ; राजा ; भव्य शरीरवाला व्यक्ति ; यौ० —ऋण - एक प्रकार का ऋण जिसमें देवताओं के निमित्त यज्ञ आदि करना विहित है ; —कन्या - अत्यंत रूपवती तरुणी ; —काष्ठ - देवदारु ; —कुंड - प्राकृतिक जलाशय ; —कुल्या आकाशगंगा ; —कुसुम - लवंग ; —गणिका - अप्सरा ; —गर्जन - मेघ का गर्जन ; —गृह - देवालय ; —तर्पण - देवताओं को जल देने की क्रिया ; —त्रयी - ब्रह्मा, विष्णु और शिव ; —दासी - देवमंदिर की नर्तकी ; वेश्या ; —दीप - देवता के निमित्त जलाया जानेवाला दीप ; नेत्र ; —दुंदुभि - देवताओं का नगाड़ा ; इंद्र ; —दूत - पैग़ंबर ; फ़रिश्ता ; —धन - देवता के नाम पर निकाला हुआ धन ; —नागरी - एक प्रसिद्ध लिपि जिसमें

संस्कृत, हिन्दी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं; —पथ - छायापथ; आकाश; —पशु - देवता के नाम पर स्वच्छंद छोड़ा गया पशु; —पुत्री - देवता की पुत्री; इलायची; —प्रश्न - भविष्यसंबंधी प्रश्न; —भाषा - संस्कृत; —भूति - आकाशगंगा; देवताओं का ऐश्वर्य; —भोज्य - अमृत; —मान - देवतासंबंधी कालगणना; —माया - जीवों को बंधन में रखनेवाली परमेश्वर की अविद्यारूपिणी माया; —मास - गर्भ का आठवाँ महीना; —यज्ञ - गृहस्थो के पाँच नैत्यक यज्ञों में किया जानेवाला एक हवन; —यान - मृत्यु के बाद जीवात्मा को ब्रह्मलोक की ओर ले जानेवाला मार्ग; —युग - सत्ययुग; —वाणी - संस्कृत भाषा; आकाशवाणी; —सभ्य - जुआ खेलने या खेलानेवाला; —स्थान - मंदिर; स्वर्ग; —हवि - बलिपशु; [फ़ा] राक्षस; भीमकाय मनुष्य; **यौ०** —ज़ाद - देव से उत्पन्न हुआ; बहुत मोटा-ताज़ा और बलवान; —लाख़ - असुरों के रहने का स्थान।

**देवढ़ी** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी; चौखट।

**देवता** - पु० [हिं] देव; देवप्रतिमा; ज्ञानेंद्रिय।

**देवर** - पु० [सं] पति का छोटा भाई।

**देवरानी** - स्त्री० [हिं] देवर की स्त्री।

**देवरी** - स्त्री० [हिं] छोटी-मोटी देवी।

**देवर्षि** - पु० [सं] देवताओं में ऋषि।

**देवल, देवलक** - पु० [हिं] देवालय, मंदिर; धार्मिक व्यक्ति।

**देवस्व** - पु० [सं] वह जायदाद जो किसी देवता की पूजा आदि के लिए अलग रख दी जाय।

**देवा** - 1. वि० [हिं] देनेवाला; 2. स्त्री० सन।

**देवान** - पु० [फ़ा] दरबार, राजसभा।

**देवानांप्रिय** - पु० [सं] देवताओं को प्रिय; मूर्ख।

**देवालय** - पु० [सं] मंदिर।

**देवी** - स्त्री० [सं] देवता की स्त्री; दिव्य गुणवाली स्त्री; आदि शक्ति; राज-महिषी।

**देवोत्तर** - पु० [सं] देवता को अर्पित किया हुआ धन।

**देवोत्थान** - पु० [सं] विष्णु का जागरणपर्व जो कार्तिक शुक्ला एकादशी को मनाया जाता है।

**देश** - पु० [सं] मुल्क; क्षेत्र, स्थान; विभाग; एक राग; शरीर का भाग; **यौ०** —धर्म - देशविशेष में प्रचलित आचार-विचार; —निकाला - निर्वासन का दंड; — भाषा - किसी देश या प्रांत में बोली जानेवाली भाषा; —स्थ - देश में स्थित; महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद; —ज - देश में उत्पन्न; शब्द के तीन विभागों में से एक; देशांतर - विदेश, परदेश; देशाचार - किसी देशविशेष में प्रचलित आचार-विचार; देशाटन - देश-देश की यात्रा।

**देशना** - स्त्री० [सं] शिक्षा; उपदेश।

**देशक** - पु० [सं] शासक; शिक्षक; मार्गदर्शक।

**देशिक** - पु० [सं] पथिक, बटोही; उपदेशक; गुरु।

**देशी, देशीय** - वि० [सं] स्वदेश का।

**देश्य** - वि० [सं] स्थानीय; देश में उत्पन्न।

**देस** - पु० [हिं] देश।

**देसावर** - पु० [हिं] देशांतर।

**देसावरी** - वि० [हिं] दूसरे देश से आया हुआ (माल)।

**देसी** - वि० [हि] देशी।

**देहंभर** - वि० [सं] अपने ही शरीर का पोषण करनेवाला ; पेटू ।

**देह** - 1. पु० [फ़ा] गाँव ; 2. वि० देनेवाला ; यौ०—क़ान - किसान ; —क़ानी - गँवारू ; —बंदी - गाँवों की हल्काबंदी ; 3. स्त्री० [हि] शरीर ; जीवन ; लेपन ; यौ०—कर्ता - पंच महाभूत ; सूर्य ; ईश्वर ; पिता ; —कोष - पंख ; चर्म ; —त्याग - मृत्यु ; —द्वीप - आँख ; —धारी - शरीरी ; प्राणी ; —पात - देहांत, मृत्यु ; —लक्षण - शरीर पर का काला दाग, तिल ; —वंत - प्राणी ; तुलसी ; —संचारिणी - पुत्री, कन्या ; मु०—छूटना - मृत्यु होना ; —छोड़ना - मरना ; —धरना - शरीर धारण करना।

**देहर** - पु० [हिं] नदी के पास की नीची भूमि ; देहली।

**देहरा** - पु० [हिं] देवालय ; नरदेह ।

**देहरी** - स्त्री० [हि] देहली।

**देहला** - स्त्री० [सं] मदिरा, शराब ।

**देहली** - स्त्री० [सं] दरवाज़े की चौखट में नीचे की लकड़ी।

**देहलीज़** - पु० [हिं] दहलीज़ ।

**देहान्त** - पु० [सं] मृत्यु ।

**देहांतर** - पु० [स] दूसरा शरीर ; मौत ।

**देहात** - पु० [फ़ा] गाँव ।

**देहाती** - वि० [फ़ा] गाँव का ; गँवार ।

**देहातीत** - वि० [सं] जो देह से स्वतंत्र हो ; जिसे शरीर की ममता न हो ।

**देही** - 1. स्त्री० [हिं] शरीर ; 2. पु० देहधारी जीव ; शरीरी।

**दैत्य** - पु० [सं] कश्यप के क्रूरकर्मा पुत्र ; दिति की संतान ; भीमकाय और अत्यंत बलशाली मनुष्य ; यौ०—देव - वरुण ; वायु।

**दैत्या** - स्त्री० [स] दैत्य जाति की स्त्री ; मदिरा ।

**दैनंदिन** - 1. अव्य० [सं] दिनों दिन ; 2. वि० प्रतिदिन होनेवाला ; नित्य का।

**दैनंदिनी** - स्त्री० [हि] रोज़नामचा, डायरी।

**दैन** - पु० [अ] कर्ज़ ; यौ० —दार - कर्ज़दार, ऋणी ।

**दैजूर** - 1. स्त्री० [अ] अँधेरी रात ; 2. वि० घोर अंधकार ।

**दैनिक** - वि० [सं] रोज़-रोज़ का ।

**दैन्य** - पु० [सं] दीनता ।

**दैया** - 1. पु० [हिं] दैव ; 2. स्त्री० दाई ; 3. अव्य० एक आश्चर्य या शोकसूचक शब्द ।

**दैव** - पु० [हिं] भाग्य ; होनहार ; ईश्वर ; यौ०—गति - ईश्वरीय घटना ; भाग्य-चक्र ; होनहार ; —योग - संयोग।

**दैवत** - पु० [हिं] देवता ।

**दैवात्** - क्रि० [सं] संयोग से ।

**दैविक** - वि० [स] देवतासंबंधी ।

**दैहिक** - वि० [सं] देहसंबन्धी ।

**दो** - वि० [हिं] एक और एक ; यौ०—अमला - जो दो आदमियों के अधिकार में हो ; —अमली - द्वैधशासन ; अराजकता , अव्यवस्था ; —आतशा - जो दो बार भभके में खींचा गया हो (शराब) ; —आब, आबा - जो प्रांत दो नदियों के बीच में हो ; —आशियाना - दो कमरेवाला खेमा या तम्बू ; —ग़ला - जारज ; जो माता के प्रेमी से पैदा हुआ हो ; भिन्न जातियों के माता-पिता से उत्पन्न ; —गाना - एक साथ मिली हुई दो चीज़ें ; सखी ; —चोबा - वह खेमा जिसमें दो चोबें लगती हों ; —जबीं - दोनली बंदूक ;—ज़रबा - दो-आतशा ;—ज़ानू - घुटनों के बल (बैठना) ; —जीवा - गर्भवती

स्त्री; —तरफ़ा - दोनों तरफ़ का, दुतरफ़ा; —तल्ला - दोमंज़िला (मकान); —नाली - दो नालवाली (बंदूक़); —पहर, पहरी - मध्याह्न काल; —पाया - दो पैरोंवाला; —पारा - दो टुकड़े किया हुआ; —फ़सला, फ़सली - रबी और खरीफ़ दोनों फ़सलों से संबंध रखनेवाला; जो दोनों ओर लग सके; दोनों ओर काम देने योग्य; —बाज़ू - वह कबूतर जिसके दोनों पैर सफ़ेद हों; —बारा - दूसरी बार; —मंज़िला, महला - दोतल्ला; —मुँहा - दो मुँहवाला; कपटी; —रंगा - दो रंग का; दोनों पक्षों में आनेवाला; —रंगी - दोमुँहे होने का भाव; छल-कपट; —रुखा - जिस (कपड़े) के दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों; —शाखा - दो डालोंवाला शमादान; —साला - जो दो वर्ष पुराना हो; —सूती - ताने और बाने दोनों में दुहरे सूतवाला कपड़ा; —हत्थड़ - दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़; —हत्था - जिसमें दोनों हाथों का उपयोग हो; मु०—आँखों देखना - समान दृष्टि से न देखना; —नावों पर चढ़ना या पैर रखना - दो पक्षों का अवलंबन लेना; —सिर होना - मरने को तैयार होना।

**दोई** - वि० [हिं] दो।

**दोउ, दोऊ** - वि० [हिं] दोनों।

**दोखना** - स० [हिं] दोषारोपण करना, ऐब लगाना।

**दोगा** - पु० [हिं] एक तरफ़ का छपा हुआ लिहाफ़; पानी में घोला हुआ चूना।

**दोग्धा** - पु० [सं] ग्वाला; दुहनेवाला; बछड़ा; चारण।

**दोग्ध्री** - स्त्री० [सं] दूध देनेवाली गाय; दूध पिलानेवाली धाई।

**दोच** - स्त्री० [हिं] असमंजस; कष्ट; दबाव।

**दोचन** - स्त्री० [हिं] दुबिधा; दबाव; कष्ट।

**दोचना** - स० [हिं] दबाव डालना।

**दोज़** - वि० [फ़ा] सीनेवाला; मिला हुआ; सटा हुआ; जैसे, 'ज़मींदोज़'।

**दोज़ख़** - पु० [फ़ा] नरक।

**दोज़ख़ी** - वि० [फ़ा] नारकी; दोज़ख़ संबन्धी; बहुत बड़ा अपराधी।

**दोन** - पु० [हिं] दो पहाड़ों के बीच का भूभाग; दो नदियों का संगम; दो वस्तुओं का मेल।

**दोना** - पु० [हिं] पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का पात्र।

**दोनी** - स्त्री० [हिं] छोटा दोना।

**दोकल** - पु० [हिं] दोष; अपराध; लांछन।

**दोय** - वि० [हिं] दो, दोनों।

**दोयम** - वि० [फ़ा] दूसरे नंबर का; दूसरे दर्जे का।

**दोर** - 1. पु० [सं] रज्जु, डोर; 2. स्त्री० [हिं] दूसरी बार जोती हुई ज़मीन।

**दोरसा** - 1. वि० [हिं] दो प्रकार के रसवाला; 2. पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू।

**दोराहा** - पु० [हिं] वह स्थान जहाँ से दो राहें जाती हों।

**दोल** - पु० [हिं] झूला; डोल।

**दोला** - स्त्री० [सं] हिंडोला; नील का पौधा; बड़ी डोली; —यंत्र - औषधियों का अर्क उतारने का यंत्र।

**दोलाब** - पु० [फ़ा] पानी खींचने की चरखी।

**दोलायमान** - वि० [सं] झूलता हुआ।

**दोलोत्सव** - पु० [सं] ठाकुरजी की मूर्त्ति को हिंडोले पर झुलाने का उत्सव जो सावन के महीने में मनाया जाता है।
**दोश** - पु० [फ़ा] कन्धा; **यौ०**—माल - कंधे पर रखने का रूमाल या अंगोछा।
**दोशीज़गी** - स्त्री० [फ़ा] कुमारी होने का भाव।
**दोशीज़ा** - स्त्री० [फ़ा] कुमारी; लड़की।
**दोष** - पु० [सं] ख़राबी, अवगुण, ऐब।
**दोषन** - पु० [हिं] दोष; दूषण।
**दोषना** - स० [हिं] दोष लगाना।
**दोषा** - स्त्री० [स] रात्रि; भुजा।
**दोषी** - पु० [सं] अपराधी।
**दोस** - पु० [हिं] दोष; मित्र।
**दोस्त** - पु० [फ़ा] मित्र; **यौ०**—दार - मित्रता या सहानुभूति रखनेवाला; —दारी - दोस्ती, मित्रता।
**दोस्ताना** - 1. पु० [फ़ा] मित्रता; 2. वि० मित्रता का।
**दोस्ती** - स्त्री० [फ़ा] मित्रता, स्नेह।
**दोहद** - स्त्री० [सं] गर्भवती स्त्री की इच्छा; गर्भ का चिन्ह; गर्भ।
**दोहर** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की चादर।
**दोहरा** - 1. वि० [हिं] दो परत का; दुगुना; 2. पु० दोहा।
**दोहराना** - स० [हिं] दुबारा करना या कहना।
**दोहा** - पु० [हिं] एक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरण में तेरह और द्वितीय और चतुर्थ चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं।
**दोहाई** - स्त्री० [हिं] दुहाई।
**दोहाग** - पु० [हिं] दुर्भाग्य।
**दोहित** - पु० [हिं] बेटी का बेटा, नाती, दौहित्र।
**दौं** - 1. अव्य० [हिं] वा, अथवा; 2. स्त्री० दौ, जंगल की आग; आग; संताप; जलन।
**दौंचना** - स० [हि] दबाव डालना।
**दौड़** - स्त्री० [हि] दौड़ने की क्रिया या भाव; **यौ०**—धूप - परिश्रम; परेशानी; बार-बार इधर-उधर आना-जाना।
**दौड़ना** - अ० [हि] वेग से चलना; हैरान होना; फैलना; जाना।
**दौड़ादौड़ी** - स्त्री० [हिं] दौड़-धूप; जल्दबाज़ी।
**दौत्य** - पु० [सं] दूत का कार्य; दूतसंबंधी; संदेश।
**दौना** - 1. पु० [हिं] एक पौधा; दोना; 2. स० दमन करना।
**दौर** - पु० [अ] चक्कर; **मु०**— चलना - शराब के प्याले का बारी-बारी से सबके सामने लाया जाना।
**दौरा** - [अ] अफ़सर का इलाके में जाँच-पड़ताल के लिए घूमना; सामयिक आगमन; **मु०** —सुपर्द करना - अभियुक्त या मुक़द्दमे को फ़ैसले के लिए सेशन्स जज के पास भेजना।
**दौरात्म्य** - पु० [सं] दुष्टता।
**दौरान** - पु० [फ़ा] दौरा; चक्कर; भाग्य; उम्र; सिलसिला; दिनों का फेर।
**दौलत** - स्त्री० [अ] धन; **यौ०** —ख़ाना - निवासस्थान; —मन्द - धनी।
**दौवारिक** - पु० [सं] द्वारपाल, पहरेदार।
**दौहित्र** - पु० [सं] दोहित, नाती।
**दौहृद** - पु० [सं] दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा।
**द्यु** - पु० [सं] दिन; स्वर्ग; आकाश; अग्नि।
**द्युति** - स्त्री० [सं] चमक; शोभा।
**द्यूत** - पु० [सं] जुआ; **यौ०** —पूर्णिमा - आश्विन की पूर्णिमा, कोजागर;

—प्रतिपदा - कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा जिस दिन लोग जुआ खेलते हैं।
**द्योत** - पु० [सं] प्रकाश ; धूप ।
**द्योतक** - पु०[ स] सूचक ; प्रकाशक ।
**द्रढिमा** - स्त्री० [स] दृढ़ता ।
**द्रव** - 1. वि० [स] पानी की तरह पतला ; तरल ; 2. पु० तरल पदार्थ ; रस ।
**द्रवत्व** - पु० [स] तरल होने का भाव ।
**द्रवना** - अ० [हिं] बहना ; पिघलना ।
**द्रवीभूत** - वि० [सं] पिघला हुआ ; दयार्द्र ।
**द्रव्य** - पु० [स] वस्तु, चीज़ ; सामग्री ; धन ।
**द्रष्टा** - पु० [सं] देखनेवाला, दर्शक ; प्रकाशक ।
**द्राक्षा** - स्त्री० [सं] अंगूर ; मुनक्का ।
**द्रावक** - वि० [स] पिघलानेवाला ।
**द्राविड़** - वि० [स] द्रविड़ देशवासी ; मु०—प्राणायाम - किसी सीधी तरह होनेवाली बात को घुमाव-फिराव के साथ करना ।
**द्राविड़ी** - 1. स्त्री० [सं] छोटी इलायची ; द्रविड़ जाति की स्त्री ; 2. वि० द्रविड़-संबंधी ।
**द्रु** - पु० [सं] क्षेत्र ; शाखा ; लकड़ी ; काष्ठनिर्मित यंत्र ।
**द्रुत** - वि० [सं] तेज़ ; अस्पष्ट ; द्रवीभूत ; बिखरा हुआ ; यौ०—गति, गामी - तीव्र गति से चलनेवाला ।
**द्रुतविलंबित** - पु० [सं] एक वर्णिक छंद ।
**द्रुम** - पु० [सं] वृक्ष ; पारिजात ; कुबेर ।
**द्रोण** - पु० [सं] लकड़ी का बरतन ; एक पुराना माप ; पत्तों का दोना ; महाभारत के एक विप्र योद्धा ।
**द्रोणि, द्रोणी** - स्त्री० [सं] डोंगी ; टब ; पर्वतों के बीच की भूमि ।
**द्रोह** - पु० [सं] द्वेष ; दूसरे का अनिष्ट चाहना ; अपराध ; हिंसा ।
**द्रोही** - वि० [स] बुराई चाहनेवाला ।
**द्वंद** - पु० [सं] जोड़ा ; द्वंद्व ; कलह ।
**द्वंदर** - वि० [हिं] झगड़ालू ।
**द्वन्द्व** - पु० [सं] द्वंद, झगड़ा; युगल, मिथुन; संदेह ; दुर्ग ; रहस्य ; यौ०—युद्ध - दो आदमियों के बीच की लड़ाई ; कुश्ती ; हाथापाई ।
**द्वय** - वि० [स] दो ।
**द्वादशांगुल** - पु० [सं] बालिश्त ; बारह अंगुल की माप ।
**द्वादशी** - स्त्री० [सं] बारहवीं तिथि ।
**द्वापर** - पु० [सं] तीसरा युग, चतुर्युगों में से एक ।
**द्वार** - पु० [सं] दरवाज़ा ; इंद्रियों द्वारा विषय ग्रहण करने का मार्ग ; साधन ।
**द्वारपाल, द्वारपालक** - पु० [सं] ड्योढ़ीदार ; द्वार पर नियुक्त पहरेदार ।
**द्वारा** - 1. पु० अव्य० [सं] ज़रिये ; से ; 2. पु० द्वार ।
**द्विकर्मक** - वि० [सं] जिसके दो कर्म हों ।
**द्विगु** - पु० [सं] वह कर्मधारय-समास जिसका पहला पद संख्यावाचक हो ।
**द्विगुण** - वि० [सं] दुगुना, दूना ।
**द्विज** - पु० [स] जो दो बार उत्पन्न हुआ हो ; ब्राह्मण ; पक्षी ; दांत ; यौ०—राज - ब्राह्मण ; चंद्रमा ।
**द्वितीय** - 1. वि० [सं] दूसरा ; 2. पु० मित्र ; उत्तरार्ध ।
**द्वितीया** - स्त्री० [सं] दूसरी तिथि, दूज ।
**द्वितीयाश्रम** - पु० [सं] गार्हस्थ्य आश्रम ।
**द्विदल** - 1. वि० [सं] जिसमें दो दल हों ; 2. पु० दाल ।
**द्विधा** - क्रि० [सं] दो तरह से ; दो टुकड़ों में ।
**द्विप** - पु० [सं] हाथी ।
**द्विपथ** - पु० [सं] दोराहा ।

**द्विरागम, द्विरागमन** - पु० [सं] विवाह के बाद वधू का पति के घर आना, गौना।
**द्विरुक्ति** - स्त्री० [स] दो बार का कथन।
**द्विरूढा** - स्त्री० [सं] वह स्त्री जिसने पुनर्विवाह किया हो।
**द्विरेफ** - पु० [सं] भौंरा।
**द्विविध** - 1. वि० [सं] दो प्रकार का; 2. क्रि० दो प्रकार से।
**द्विष** - पु० [सं] द्वेष रखनेवाला, शत्रु।
**द्वीप** - पु० [सं] वह स्थल जिसके चारों ओर पानी हो; व्याघ्रचर्म।
**द्वेष** - पु० [सं] डाह; वैर।
**द्वेषी, द्वेष्टा** - वि० [सं] विरोधी; वैरी।
**द्वैत** - पु० [सं] दो होने का भाव; युगल; भेद-दृष्टि; अज्ञान; **यौ०** —वाद - वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा को दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है।
**द्वैपायन** - पु० [सं] व्यासजी का नाम।
**द्व्यणुक** - पु० [सं] दो अणुओं के योग से बना हुआ द्रव्य।

## ध

**धंगर** - पु० [देश] चरवाहा, ग्वाला।
**धंध** - पु० [हिं] बखेड़ा; झंझट।
**धंधक, धंधरक** - पु० [हिं] आडंबर; बखेड़ा।
**धंधकधोरी, धंधरकधोरी** - पु० [हिं] दुनिया के जंजाल में लगा रहनेवाला।
**धँधला** - स्त्री० [हिं] छल-छंद, कपट; आडंबर।
**धँधलाना** - स० [हिं] छल-छंद करना।
**धंधा** - पु० [हिं] काम-काज, जीविका का उद्योग।
**धंधोर** - स्त्री० [हिं] होली; आग की लपट।
**धँस** - पु० [हिं] डुबकी, गोता।
**धँसना** - अ० [हिं] गड़ना; दबना; प्रवेश करना; उतरना।
**धँसान** - स्त्री० [हिं] धँसने की क्रिया या ढंग; गति; दलदल; ढाल; उतार।
**धँसाना** - स० [हिं] चुभाना; प्रविष्ट कराना; बैठाना।
**धकधक** - स्त्री० [अनु] दिल धड़कने का शब्द; **मु०** जी धकधक करना - भय या उद्वेग से दिल का धड़कना।
**धकधकाना** - अ० [अनु] भय आदि के कारण कलेजे का धड़कना।
**धकधकाहट, धकधकी** - स्त्री० [अनु] धड़कन; खटका; आशंका।
**धकपकाना** - अ० [अनु] दहशत खाना, डरना।
**धकाधकी** - स्त्री० [हिं] धक्कमधक्का।
**धकाना** - स० [हिं] जलाना।
**धकारा** - पु० [अनु] धकधकी; आशंका।
**धकियाना, धकेलना** - स० [हिं] धक्का देना, ढकेलना।
**धकैत** - वि० [हि] धक्का देनेवाला।
**धक्कमधक्का** - पु० [हिं] बहुत अधिक धक्का; बड़ी भीड़, रेल-पेल।
**धक्का** - पु० [हिं] टक्कर; रेला; **यौ०** —मुक्की - मुठभेड़; मार-पीट।
**धक्काड़** - वि० [हिं] जिसकी धाक खूब जमी हो।
**धगड़** - पु० [हिं] जार, उपपति; **यौ०** —बाज़ - कुलटा।
**धगड़ा** - पु० [हि] जार, उपपति।
**धगड़ी** - स्त्री० [हिं] कुलटा।
**धगधगाना** - अ० [अनु] धकधकाना।
**धगरि** - स्त्री० [हिं] धाँगर जाति की स्त्री जो नवजात शिशु की नाल काटती है।
**धगवरी** - वि० [हिं] पति की दुलारी।

**धचका** - पु० [हिं] धक्का ; झोंका ।

**धज** - स्त्री० [हिं] सजावट ; तड़क-भड़क ; शक्ल-सूरत (प्रायः 'सज' के साथ ही प्रयुक्त होता है) ।

**धजा** - स्त्री० [हिं] ध्वजा ; पताका ; झंडा ।

**धजीला** - वि० [हिं] सजीला ; सुंदर ढंग का ('सजीला' के साथ प्रयुक्त होता है) ।

**धज्जी** - स्त्री० [हिं] कपड़े की कटी हुई लंबी व पतली पट्टी ; मु० धज्जियाँ उड़ाना - टुकड़े-टुकड़े करना ; निंदा-उपहास करना ।

**धट** - पु० [सं] तराजू ; तुलाराशि ; तुला-परीक्षा ।

**धटिका** - स्त्री० [सं] पाँच सेर का एक परिमाण ; कौपीन ; चीवर ।

**धड़ंग** - वि० [हिं] नंगा (प्रायः 'नंग' के साथ ही प्रयुक्त होता है) ।

**धड़** - 1. पु० [हिं] शरीर के मध्य का स्थूल भाग ; पेड़ का तना ; 2. स्त्री० [अनु] वह शब्द जो किसी वस्तु के गिरने से होता है ।

**धड़क, धड़कन** - स्त्री० [हिं] हृदय का स्पंदन ; भय ; रुकावट ।

**धड़कना** - अ० [हिं] छाती का धक-धक करना ।

**धड़का, धड़क्का** - पु० [हिं] दिल की धड़कन ; खटका ।

**धड़धड़** - 1. स्त्री० [अनु] किसी भारी वस्तु के एकबारगी गिरने या फेंके जाने आदि का भीषण शब्द ; 2. क्रि० धड़-धड़ शब्द के साथ ; बेधड़क, बिना रुकावट के ।

**धड़धड़ाना** - अ० [अनु] धड़-धड़ शब्द करना ।

**धड़ल्ला** - पु० [अनु] धड़ाका ; वेग से गिरने आदि की आवाज़ ; मु० धड़ल्ले के साथ - बेधड़क, बिना रुके ।

**धड़ा** - पु० [हिं] बाट, बटखरा ; चार या पाँच सेर की एक तौल ; तराजू ; यौ० —बंदी - दलबंदी ।

**धड़ाका** - पु० [अनु] 'धड़धड़' शब्द ; धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द ; मु० धड़ाके से - झट से ।

**धड़ाधड़** - क्रि० [अनु] बार-बार ; धड़ाके के साथ ; जल्दी जल्दी ; बिना रुके ।

**धड़ाम** - पु० [हिं] ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द ; ज़ोर से ज़मीन या पानी आदि पर कूदने का शब्द ।

**धड़ी** - स्त्री० [हिं] चार या पाँच सेर की तौल ; मु०—करना - वज़न करना ; धड़ियों - ढेर के ढेर ; —करके लूटना - कुछ भी न छोड़ना, तिनका-तिनका लूट लेना ।

**धत्** - अव्य० [सं] दुतकारने का शब्द ; दूर हो, हट जा ; हाथी को पीछे हटाने का शब्द ।

**धत** - स्त्री० [हिं] लत ; बुरी बान, ख़राब आदत ।

**धतकारना** - स० [हिं] दुतकारना ।

**धता** - वि० [हिं] चलता हुआ ; मु०—बताना - चलता करना ; हटाना ; धोखा देकर टालना ।

**धतिया** - वि० [हिं] बुरी लतवाला ।

**धतींगड़** - पु० [देश] मोटा-ताज़ा आदमी, मुस्टंड ।

**धतूर** - पु० [हिं] धतूरा ; एक बाजा, तुरही ।

**धतूरा** - पु० [हिं] एक पौधा जिसका बीज नशीला होता है ; मु० —फिरना - पागल बना घूमना ।

**धतूरिया** - पु० [हिं] राहगीरों को धतूरा खिलाकर बेहोश करने और लूटनेवाले ठगों का दल ।

**धत्तूर** - पु० [सं] धतूरा ।

**धधक** - स्त्री० [हिं] आग की लपट; आग की भड़क।

**धधकना** - अ० [हिं] आग का भड़क उठना, आग की लपटें उठना।

**धधकाना** - स० [हिं] आग से लपटें उठाना।

**धनंजय** - 1. वि० [स] धन को जीतनेवाला; 2. पु० अर्जुन; अग्नि; शरीरवर्ती पाँच वायुओं में से एक।

**धन** - पु० [सं] दौलत; गणित में जोड़ का चिह्न; पूँजी; गोधन; लूट का माल; पुरस्कार; शब्द; प्रिय व्यक्ति; यौ०—कुबेर - अत्यंत धनी मनुष्य; —द - धन देनेवाला; कुबेर; —धान्य - धन और अन्न आदि; —वान - जिसके पास धन हो; धनी; —पाल - धन का रक्षक; कुबेर; —मद - धन का घमंड।

**धनकर** - पु० [हिं] वह खेत जिसमें धान बोया जाता है।

**धनकुट्टी** - स्त्री० [हिं] धान कूटने का काम; एक छोटा कीड़ा; मु०—करना - मारते-मारते कचूमर निकालना।

**धनतेरस** - स्त्री० [हिं] कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी।

**धनसार** - पु० [हिं] अनाज भरने की कोठरी।

**धनहर** - 1. पु० [हिं] चोर; 2. वि० धन हरनेवाला।

**धना** - स्त्री० [अ] युवती; वधू।

**धनाढ्य** - वि० [सं] मालदार।

**धनार्थी** - वि० [सं] धन चाहनेवाला; धन माँगनेवाला।

**धनि** - 1. [हिं] युवती; वधू; 2. वि० धन्य।

**धनिक** - 1. पु० [सं] धनी पुरुष; वणिक; 2. वि० [हिं] धनी; धर्मात्मा।

**धनिया** - पु० [हिं] एक पौधा जिसकी पत्ती सुगंधित होती है और चटनी आदि में डाली जाती है; उक्त पौधे का बीज जो मसाले के काम में आता है।

**धनी** - वि० [स] धनवान; अमीर; कुशल; सिद्धहस्त; मु० बात का धनी - बात का सच्चा; दृढ़प्रतिज्ञ; वचन का पालन करनेवाला; कलम का धनी - सिद्धहस्त लेखक।

**धनु** - पु० [सं] कमान; धनुष; बारह राशियो में से नौवी राशि।

**धनुआ, धनुक** - पु० [हिं] कमान; ताँत की कमान जिससे धुनिये रूई धुनते हैं।

**धनुर्द्धर, धनुर्द्धारी** - वि० [सं] कमनैत, तीरंदाज़।

**धनुर्यज्ञ** - पु० [सं] किसी मांगलिक कार्य के लिए ईश्वर प्रदत्त धनुष की पूजा।

**धनुर्विद्या** - स्त्री० [सं] धनुष चलाने की विद्या।

**धनुर्वेद** - पु० [सं] वह शास्त्र जिसमें धनुर्विद्या का निरूपण हो।

**धनुष, धनुस** - पु० [सं] धनु, तीर-कमान।

**धनुहाई** - स्त्री० [हिं] कमान की लड़ाई।

**धनुही** - स्त्री० [हिं] लड़को के खेलने की कमान, छोटा धनुष।

**धनेश, धनेश्वर** - पु० [सं] कुबेर; ख़ज़ाची; विष्णु।

**धनैषी** - वि० [सं] धन चाहनेवाला।

**धन्नासेठ** - पु० [हिं] बहुत धनी आदमी।

**धन्य** - वि० [सं] कृतार्थ; बड़ाई के योग्य।

**धन्यवाद** - पु० [सं] शाबाशी; शुक्रिया।

**धन्या** - 1. स्त्री० [सं] उपमाता; छोटा आँवला; धनिया; 2. वि० प्रशंसनीया; पुण्यवती; भाग्यशालिनी।

**धन्वंतर** - पु० [सं] चार हाथ का एक मान।

**धन्वंतरि** - पु० [सं] देवताओं के वैद्य ।

**धप** - 1. स्त्री० [अनु] किसी भारी चीज़ के गिरने का शब्द ; 2. पु० धौल ; तमाचा ।

**धपना** - अ० [हिं] ज़ोर से चलना ; झपटना ।

**धप्पा** - पु० [हिं] थप्पड़ ; हानि ; **यौ०** धौलधप्पा - उपद्रव, मार-पीट ; **मु०**— मारना - उड़ा लेना ।

**धबधब** - स्त्री० [अनु] किसी भारी और मुलायम चीज़ के गिरने का शब्द ।

**धबला** - पु० [हिं] ढीला पायजामा ; स्त्रियों का लहँगा, घाँघरा ।

**धब्बा** - पु० [हिं] दाग़ ; **मु०** —लगना - कलंक लगना ।

**धम** - स्त्री० [अनु] भारी चीज़ के गिरने का शब्द ।

**धमक** - 1. स्त्री० [हिं] भारी वस्तु के गिरने का शब्द ; आघात ; 2. पु० [सं] (धौंकनेवाला) लोहार ।

**धमकना** - अ० [अनु] धम शब्द के साथ गिरना ; रह-रहकर दर्द करना ; **मु०** आ धमकना - अचानक आ जाना ।

**धमकाना** - स० [हिं] डराना ; डाँटना ।

**धमकी** - स्त्री० [हिं] घुड़की ; डाँट-डपट ; **मु०**—में आना - डरकर काम करना ।

**धमधमाना** - स० [हिं] धमधम शब्द करना ; शीघ्रता से खूब पीट देना ।

**धमधूसर** - वि० [हिं] भद्दा व मोटा (आदमी)।

**धमन** - 1. पु० [हिं] हवा फूँकने का काम ; धौंकनी चलानेवाला ; 2. वि० फूँक डालनेवाला ; निष्ठुर ।

**धमनि, धमनी** - स्त्री० [सं] रक्त-नाल ; नाड़ी ; गरदन ; हल्दी ; फुंकनी ।

**धमनिका** - स्त्री० [सं] तुरही ।

**धमाका** - पु० [अनु] 'धम' की आवाज़ ; बंदूक़ छूटने का शब्द ; आघात ; भारी वस्तु के गिरने का गंभीर शब्द ।

**धमाचौकड़ी** - स्त्री० [हिं] उछल-कूद, कूद-फाँद ; उपद्रव ; ऊधम ।

**धमाधम** - अव्य० [अनु] लगातार धमाके के साथ ।

**धमार** - 1. स्त्री० [हिं] उछल-कूद, धमाचौकड़ी ; 2. पु० होली में गाने का एक गीत ।

**धमारिया** - 1. वि० [हिं] उछल-कूद करनेवाला ; 2. पु० होली में धमार गानेवाला ।

**धमारी** - 1. वि० [हिं] उत्पाती ; 2. स्त्री० होली की क्रीड़ा ।

**धमाल** - स्त्री० [हिं] धमार ।

**धर** - 1. वि० [सं] सँभालनेवाला ; धारण करनेवाला ; 2. स्त्री० [हिं] धरने या पकड़ने की क्रिया ; **यौ०** —पकड़ - गिरफ़्तारी ; ज़बर्दस्ती ।

**धरकना** - अ० [हिं] धड़कना ।

**धरणि, धरणी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ; सेमर का पेड़ ; शहतीर ; नाड़ी ; **यौ०** —सुता - जानकी ; —धर - पृथ्वी को धारण करनेवाला ; कच्छप ; पर्वत ; शेषनाग ।

**धरता** - पु० [हिं] किसीका रुपया रखनेवाला, देनदार, कर्ज़दार ।

**धरती** - स्त्री० [हिं] पृथ्वी ; ज़मीन ; **मु०**—का फूल - कुकुरमुत्ता ; नया उभरा हुआ धनी ; मेढ़क ।

**धरन** - स्त्री० [हिं] धरने की क्रिया या भाव; कड़ी, शहतीर ; हठ ; गर्भाशय या उसका आधार ।

**धरना** - 1. स० [हिं] पकड़ना ; रखना ; धारण करना ; देखरेख में रखना ; सहायक बनाना ; रखेली की भाँति रख लेना ; गिरवी या बंधक रखना ; **मु०** धर दबाना या दबोचना - पकड़कर वश में कर लेना ; 2. पु० कोई बात या प्रार्थना पूरी कराने के लिए किसीके पास या द्वार

पर अड़कर बैठना और जब तक वह बात पूरी न हो जाए तब तक अन्न न ग्रहण करना, सत्याग्रह, पिकेटिंग।

**धरनी** - स्त्री॰ [हि] धरणी।

**धरनैत** - पु॰ [हिं] धरना देनेवाला।

**धरवाना** - स॰ [हिं] पकड़ाना; थमाना; रखवाना।

**धरषना**† - स॰ [हिं] दबाना; डराना; चूर्ण करना; फाड़ना।

**धरसना** - अ॰ [हिं] दब जाना; डरना।

**धरहर** - स्त्री॰ [हिं] रक्षा; धीरज; मध्यस्थ करना।

**धरहरा** - पु॰ [हिं] खंभे की तरह ऊपर बहुत दूर तक गया हुआ मकान का भाग जिसपर चढ़ने के लिए भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों, धौरहर, मीनार।

**धरहरिया** - पु॰ [हिं] बीच-बचाव करा देनेवाला, रक्षक।

**धरा** - स्त्री॰ [सं] पृथ्वी; गर्भाशय; मज्जा; नाड़ी; घड़ा; चार सेर की एक तौल; **यौ॰** —धर - शेषनाग; पर्वत; विष्णु; —शायी - ज़मीन पर गिरा या लेटा हुआ; —सुर - ब्राह्मण; —धीश - राजा।

**धराऊ** - वि॰ [हिं] जो सुरक्षित रखा रहे और विशेष अवसरों पर काम में लाया जाय।

**धराका** - पु॰ [अनु] धड़ाका।

**धरातल** - पु॰ [सं] पृथ्वी; लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल, क्षेत्रफल।

**धराना** - स॰ [हिं] पकड़ाना; थमाना; निश्चित कराना।

**धराहर** - पु॰ [हिं] धरहरा।

**धरित्री** - स्त्री॰ [सं] पृथ्वी।

**धरी** - स्त्री॰ [हिं] रखेली स्त्री; चार सेर की एक तौल।

**धरेली** - स्त्री॰ [हिं] रखेली स्त्री।

**धरोहर** - स्त्री॰ [हिं] अमानत, थाती।

**धरौवा** - 1. पु॰ [हि] बिना विधिपूर्वक विवाह किये ही किसी स्त्री को रख लेने का रिवाज़; 2. वि॰ धराऊ।

**धर्त्ता** - पु॰ [स] धारण करनेवाला; कोई काम अपने ऊपर लेनेवाला।

**धर्म** - पु॰ [सं] किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे; प्रकृति; स्वभाव; पुण्य कार्य; मत; संप्रदाय, मज़हब; नीति; क़ायदा; क़ानून; **यौ॰** —कथक - विधान या नियम की व्याख्या करनेवाला; —कील - राज्य-शासन; —कोष - विधानकोष, धर्म-रूपी कोष; —क्षेत्र - पुण्यक्षेत्र; भारतवर्ष; —घट - सुगंधित जल से भरा हुआ घड़ा; —घड़ी - बड़ी घड़ी जिसे सब लोग देख सकें; —चक्र - बुद्ध भगवान की वह शिक्षा जो सारनाथ से शुरू हुई थी; —चर्या - धर्म का पालन या आचरण; —चिन्तन, चिन्ता - धार्मिक विषयो का मनन; —दान - सात्विक दान; निष्काम दान; —द्रोही - दैत्य; धर्मविरुद्ध आचरण करनेवाला; —धक्का - धर्म के लिए उठाया जानेवाला कष्ट; —ध्वज, ध्वजी - पाखंडी; —निष्ठ - धार्मिक; —पत्नी - वह स्त्री जिसके साथ धर्म-शास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो, विवाहिता पत्नी; —पत्र - गूलर; —परायण - धर्म में निष्ठा रखनेवाला; —पीड़ा - धर्म या न्याय का उल्लंघन; —बुद्धि - धर्म की ओर प्रवृत्त बुद्धि; —भीरु - जो अधर्म करने से डरे; —भ्रष्ट - धर्म से गिरा हुआ, पतित; —मूल - धर्म का प्रामाणिक आधार; —युद्ध - वह युद्ध जिसमें नियम का भंग न हो; —रत - धर्मपरायण; —वाद -

धार्मिक नियम पर वाद-विवाद ; —विद्या - धर्म का ज्ञान करानेवाली विद्या ; —वीर - वीररस का एक भेद ; — वृद्ध - जो धर्माचरण द्वारा श्रेष्ठ हो ; —शाला - सराय ; —शास्त्र - वह शास्त्र जिसमें आचार और व्यवहार की व्यवस्था हो ; —शील - जो धर्म के अनुसार आचरण करे ; —संगीति - धर्मसंबन्धी वाद-विवाद ; —संघ - किसी धर्म के अनुयायियों का संघ ; —संहिता - वह ग्रंथ जिसमें धार्मिक विषयों का प्रतिपादन हो ; —सभा - न्यायालय, कचहरी ; धर्मात्मा - धर्माचरण करने-वाला ; धर्माधिकारी - धर्म-अधर्म की व्यवस्था देनेवाला ; धर्मान्तर - अन्य धर्म ; धर्मान्ध - धर्म के नाम पर लड़ने-वाला ; धर्मार्थ - परोपकार के लिए ; धर्मावतार - धर्मात्मा ; धर्मासन - वह आसन जिसपर बैठकर न्यायाधीश न्याय करता है ; धर्मिणी - पत्नी ; धर्म करने-वाली ; धर्मी - पुण्यात्मा ; धार्मिक मनुष्य ; धर्मिष्ठ - अत्यंत धार्मिक ; अत्यंत पुण्यात्मा ; धर्म्य - जो धर्म के अनुकूल हो ; न्याय्य ।

**धर्ष** - पु० [सं] ढिठाई ; घमंड ; असहिष्णुता; हिंसा ; पराभव ; सतीत्व-हरण ; नपुंसक ।

**धर्षण** - पु० [सं] अपमान ; धृष्टता ; रति ; हिंसा ।

**धर्षी** - वि० [सं] घमंडी ; असहिष्णु ; दबानेवाला ; धृष्ट ।

**धव** - पु० [सं] एक जंगली पेड़ जिसकी जड़, पत्ती व फूल दवा के काम आते हैं ; पति ; स्वामी ; धूर्त मनुष्य ; कंपन ।

**धवनी** - स्त्री० [हिं] लोहारों की धौंकनी ।

**धवरी** - 1. स्त्री० [हिं] धौरी ; सफ़ेद रंग की गाय ; 2. वि० सफ़ेद या उजले रंग की ।

**धवल** - वि० [स] सफ़ेद ; स्वच्छ ; सुंदर ।

**धवला** - स्त्री० [स] सफ़ेद गाय ; गौर वर्ण की स्त्री ।

**धस** - पु० [हिं] डुबकी, ग़ोता ।

**धसक** - स्त्री० [हिं] सूखी खाँसी में गले से निकलनेवाला शब्द ; सूखी खाँसी ; डाह, ईर्ष्या ।

**धसकन** - स्त्री० [हिं] दहलने या डरने का भाव ; ईर्ष्या ; जलन ।

**धसकना** - 1. अ० [हिं] दब जाना ; 2. स० डाह करना ।

**धसका** - पु० [हिं] चौपायों का एक रोग ।

**धसना, धसमसाना** - अ० [हिं] नष्ट होना ; प्रवेश करना ; नीचे की ओर खिसकना ; धँसना ; धरती में समाना ।

**धाँगड़, धाँगर** - पु० [हिं] एक जंगली जाति ; एक जाति जो कुएँ व तालाब आदि खोदने का काम करती है, धंगर ।

**धाँधल** - स्त्री० [हिं] ऊधम ; धूर्तता ; जल्दबाज़ी ।

**धाँधली** - 1. वि० [हिं] उपद्रवी ; धोखे-बाज़ ; 2. स्त्री० मनमाना व्यवहार ; ऊधम ; अत्याचार ; धोखा ।

**धाँस** - स्त्री० [हिं] सूखे तंबाकू या लाल मिर्च आदि की तेज़ गंध जिससे खाँसी आने लगती है ।

**धाँसना** - अ० [हिं] पशुओं का खाँसना ।

**धाँसी** - स्त्री० [हिं] कुत्ते आदि की खाँसी ।

**धाक** - 1. स्त्री० [हिं] रोब ; दबदबा; आतंक; मु० —जमना, बंधना - रोब जमना ; प्रभुत्व स्थापित होना ; 2. पु० बैल ; हौज ; पात्र ; आहार ; खंभा ; ब्रह्म ; ढाक ।

**धागा** - पु० [हिं] डोरा, बटा हुआ सूत ।

**धाटी** - स्त्री० [स] आक्रमण, हमला ।

**धाड़** - स्त्री० [हिं] चिल्लाकर रोने का शब्द ; विलाप ; डाकुओं का छापा या धावा ।

**धाड़ना** - अ० [हिं] दहाड़ना ; चिल्लाकर रोना ।

**धाड़स** - पु० [हिं] ढाढ़स, तसल्ली ।

**धाता** - पु० [सं] ब्रह्मा ; आत्मा ; ब्रह्मा का एक पुत्र ; व्यवस्था करनेवाला ; रक्षक ।

**धातु** - स्त्री० [सं] सोना या चाँदी-जैसे खनिज पदार्थ; शरीर को धारण करनेवाला द्रव्य (रस, रक्त, मांस आदि) ; वीर्य ; शब्द का मूल, क्रियावाचक प्रकृति ; परमात्मा ; यौ०—क्षय - खाँसी या प्रमेह की बीमारी ; —गर्भ - बुद्ध आदि महापुरुषों की अस्थि रखने का डिब्बा ; —पुष्टि - धातुओं का पोषण ; —मल - केश या नख आदि ; सीसा ; —माक्षिक - सोनामक्खी ; —मारिणी - सुहागा ; —मारी - गंधक ; —राग - धातुओं से निकला हुआ रंग ; —वाद - कीमियागरी ; —साम्य - वात, पित्त व कफ की सम अवस्था ।

**धात्री** - स्त्री० [सं] माता ; धाई ; पृथ्वी ; यौ०—कर्म - धाई का काम ; —पुत्र - धाई का बेटा ; नट ; —फल - आँवला ; —विद्या - लड़का जनने और उसे पालने आदि की विद्या ।

**धात्वर्थ** - पु० [सं] धातु से निकलनेवाला अर्थ ।

**धान** - पु० [हिं] एक प्रसिद्ध अन्न जिसका चावल प्रधान खाद्यों में गिना जाता है, शालि ; [सं] आधार ; पोषण ।

**धाना** - 1. स्त्री० [सं] भुना हुआ जौ या चावल ; सत्तू ; धनिया ; अनाज ; अंकुर; 2. अ० दौड़ना ।

**धानी** - स्त्री० [हिं] हल्का हरा रंग, जो धान की पत्ती के रंग के समान होता है ; एक रागिनी ; भुना हुआ जौ ; आधार ; अधिष्ठान ; धनिया ।

**धान्य** - पु० [हिं] अन्न ; धान ; चार तिल का एक प्राचीन परिमाण ।

**धाप** - 1. पु० [हिं] एक मील ; 2. स्त्री० तृप्ति ; संतोष ।

**धापना** - 1. अ० [हिं] दौड़ना ; तृप्त होना ; अघाना ; 2. स० तृप्त करना ; संतुष्ट करना ।

**धाबा** पु० - [हिं] मकान की हमवार छत ; बासा ; होटल ।

**धाम** - पु० [सं] पुण्यक्षेत्र ; स्थान ; घर ; तेज ; प्रभाव ; सेना ; अवस्था ; शरीर ।

**धामक-धूमक** - स्त्री० [अनु] धूम-धाम ; ठाट-बाट ।

**धाय** - स्त्री० [अनु] बंदूक छूटने की आवाज़।

**धाय** - स्त्री० [हिं] बच्चे को दूध पिलाने और उसकी देखभाल करनेवाली स्त्री, धात्री ।

**धार** - 1. पु० [हिं] ज़ोर से पानी बरसना ; इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल ; 2. स्त्री० प्रवाह ; किनारा ; तलवार आदि का तेज़ किनारा ; बाढ़ ।

**धारण** - पु० [सं] थामना ; लेना; पहनना ; खाना या पीना ; सुरक्षित रखना; स्मरण रखना ।

**धारणा** - स्त्री० [सं] दृढ़ निश्चय ; निश्चित बुद्धि ; धारण करने की क्रिया या शक्ति ।

**धारा** - स्त्री० [सं] द्रव पदार्थ के गिरने या बहने का सिलसिला ; प्रवाह ; तलवार आदि का तेज़ किनारा; अतिवृष्टि; वाणी ; रथ का पहिया ; अफ़वाह ; यौ०—गृह - स्नानागार ; —धर - मेघ ; तलवार; —प्रवाह - अविच्छिन्न रूप में बहने या चलनेवाला ; —वर्ष - अविरल वर्षा; अतिवृष्टि ; —वाही - बेरोक-टोक बढ़नेवाला ; [हिं] दफ़ा ; यौ० —सभा - व्यवस्थापिका सभा ।

**धाराल** - वि० [सं] जिसमें धार हो, धारदार ।

**धारिणी** - 1. स्त्री० [सं] धरणी, पृथ्वी; सेमर का पेड़; 2. वि० धारण करनेवाली।

**धारी** - 1. वि० [सं] धारण करनेवाला; 2. पु० कर्ज़दार; 3. स्त्री० रेखा; कपडे पर की लकीर ।

**धारोष्ण** - वि० [सं] तुरंत का दुहा हुआ; ताज़ा और गरम (दूध) ।

**धार्मिक** - वि० [सं] धर्मशील; पुण्यात्मा; धर्मसंबंधी ।

**धार्मिकता** - स्त्री० [सं] धर्मशीलता; धार्मिक होने का भाव ।

**धार्य** - वि० [सं] धारण करने योग्य; स्मरण रखने योग्य; 2. पु० पोशाक; वस्त्र ।

**धार्ष्ट्य** - पु० [सं] धृष्टता ।

**धावक** - 1. वि० [सं] दौड़कर कोई काम करनेवाला; पत्र ले जानेवाला; 2. पु० धोबी; हरकारा ।

**धावन** - पु० [सं] धोकर साफ़ करने का काम; दूत; हरकारा ।

**धावरी** - स्त्री० [हिं] धवरी ।

**धावा** - पु० [हिं] आक्रमण; **मु०**—बोलना - आक्रमण कर देना; —मारना - जल्दी-जल्दी चलना ।

**धिंग, धिंगाई** - स्त्री० [हिं] उपद्रव; शरारत; बेशर्मी; कुटिलता; **यौ०** धिंगाधिंगी - शरारत, दुष्टता ।

**धिआ, धिया** - स्त्री० [हिं] बेटी ।

**धिक** - अव्य० [सं] लानत; धिक्कार ।

**धिकना** - अ० [हिं] गरम होना; तपकर लाल होना ।

**धिक्कार** - पु० [हिं] लानत; फटकार ।

**धिक्कारना** - स० [हिं] बहुत बुरा-भला कहना; फटकारना ।

**धिराना** - 1. स० [हिं] डराना; 2. अ० धीमा होना; घटना; स्थिर होना ।

**धिषणा** - स्त्री० [हिं] बुद्धि; प्रज्ञा; स्तुति; वाणी; पृथ्वी; कटोरी ।

**धींग, धींगरा** - पु० [हिं] मोटा-ताज़ा आदमी; बदमाश ।

**धींगा** - वि० [हिं] दुष्ट, पाजी; **यौ०** — धींगी, मुश्ती - शरारत; हाथापाई ।

**धी** - स्त्री० [हिं] धिआ, बेटी, लड़की; [सं] बुद्धि; प्रज्ञा; समझ; कल्पना; भक्ति; यज्ञ; न्यायमार्ग में प्रवृत्ति; **यौ०** —गुण - शुश्रूषा व श्रवण आदि बुद्धि के आठ गुण; —मंत्री - सलाहकार; —मान - अक्लमंद, बुद्धिमान ।

**धीजना** - स० [हिं] विश्वास करना; स्वीकार करना ।

**धीमा** - वि० [हिं] वेगरहित; मंद; दबा हुआ; कुछ शांत या उतरा हुआ ।

**धीया** - स्त्री० [हिं] लड़की, बेटी, धी ।

**धीर** - 1. वि० [सं] धैर्यशाली; दृढ़; बलवान; गंभीर; उत्साही; विनीत; सुंदर; 2. पु० समुद्र; केसर; कुंकुम; पंडित; चिदात्मा; चित्त की दृढ़ता; संतोष; **यौ०**—चेता - स्थिर चित्तवाला; —प्रशांत - वह नायक जो धीर और वीर होने के साथ ही क्रीड़ाप्रिय और चिन्ता-रहित हो ।

**धीरज** - पु० [हिं] धैर्य ।

**धीरता** - स्त्री० [सं] चित्त की स्थिरता; धैर्य; सब्र ।

**धीरा** - स्त्री० [सं] ताने द्वारा अपना क्रोध दिखानेवाली नायिका; काकोली; एक वनौषधि ।

**धीरे** - क्रि० [हिं] आहिस्ते; मंद-मंद; चुपके से ।

**धीरोदात्त** - पु० [सं] वह नायक जो निरभिमानी, दयालु, क्षमाशील, बलवान, धीर, दृढ़ और योद्धा हो; वीररस-प्रधान नाटक का मुख्य नायक।

**धीरोद्धत** - पु० [सं] वह नायक जो प्रचंड और चंचल होने के साथ ही दूसरे का गर्व न सह सकने और अपने ही गुणों का बखान करनेवाला हो।

**धीवर** - पु० [सं] मछुआ; मल्लाह; लोहा।

**धीवरी** - स्त्री० [सं] मल्लाहिन; मछुई; मछली रखने की टोकरी।

**धुँआरा** - वि० [हिं] धूमिल।

**धुँगार** - स्त्री० [हिं] बघार, छौंक।

**धुँगारना** - स० [हिं] बघारना, छौंकना।

**धुंज** - वि० [हिं] धुंधला; मंद ज्योतिवाला।

**धुंध** - स्त्री० [हिं] वह अंधेरा जो धूल उड़ने के कारण हो गया हो; आँखो के आगे अंधकार छा जाने या कम दिखायी पड़ने का रोग।

**धुंधकार** - पु० [हिं] अंधकार; गर्जन।

**धुंधला** - वि० [हिं] धुएँ के रंग का; अस्पष्ट।

**धुंधलाना** - अ० [हिं] धुंधला पड़ना।

**धुंधली** - स्त्री० [हिं] अंधेरा; नज़र की कमज़ोरी।

**धु** - स्त्री० [सं] कंपन।

**धुआँ** - पु० [हिं] धूम; धजी; यौ०—कश - भाप के ज़ोर से चलनेवाली इंजिन; स्टीमर; — दान - छत में का वह छेद जिसमें से धुआँ निकलता है, चिमनी; —धार - धुएँ से भरा; बड़े ज़ोर का; प्रचंड; घोर (जैसे, 'धुआँधार वर्षा'); मु०—निकालना या काढ़ना - लंबी-चौड़ी बात करना; —सा मुँह होना - चेहरे का रंग उतर जाना, अत्यंत लज्जित होना; —होना - एकदम काला हो जाना; धुएँ का धौरहर - क्षणभंगुर वस्तु।

**धुआँना** - अ० [हिं] धुआँ होना; धुएँ से भर जाना; स्वाद और गंध में विगड़ जाना।

**धुआँयँध** - वि० [हिं] जिसमें धुएँ की गंध हो।

**धुअँरा** - पु० [हिं] चिमनी।

**धुआँसा** - 1. पु० [हिं] धुएँ की जमी हुई कालिख; 2. वि० धुएँ से बसा हुआ।

**धुकड़-पुकड़** - पु० [अनु] धकधकी; भय आदि से मन का विचलित होना।

**धुकड़ी** - स्त्री० [देश] छोटी थैली; बटुआ।

**धुकधुकी** - स्त्री० [अनु] पेट और छाती के बीच का भाग जो कुछ गहरा होता है; कलेजे की धड़कन; डर।

**धुकना** - अ० [हिं] झुकना; गिर पड़ना; टूट पड़ना।

**धुकाना** - स० [हि] झुकाना; गिराना; पटकना।

**धुकार** - स्त्री० [हिं] नगाड़े की आवाज़; गड़गड़ाहट।

**धुड़ंगी** - वि० [हिं] धूलिधूसर और नंगा (व्यक्ति)।

**धुत** - 1. वि० [सं] हिलाया हुआ; कंपित; त्यक्त; 2. अव्य० [हिं] दुत; धत; यौ० —कार - दुतकार।

**धुतकारना** - स० [हिं] दुतकारना।

**धुताई** - स्त्री० [हि] धूर्तता।

**धुधुकार** - स्त्री० [अनु] धू-धू की आवाज़; घोर शब्द।

**धुन** - स्त्री० [हिं] लगन; मन की तरंग; कंपन; फ़िक्र; गाने का विशेष ढंग; राग; मु०—का पक्का - आरंभ किये हुए कार्य को पूरा करके ही छोड़नेवाला।

**धुनकना** - स० [हिं] धुनना; पीटना।

**धुनकी** - स्त्री० [हिं] धनुष के आकार का रूई धुनने का औज़ार ; फटका ।

**धुनना** - स० [हिं] धुनकी से रूई साफ़ करना ; बिना रुके कहना ; खूब मारना-पीटना ; मु० सिर धुनना - सिर पीटना ।

**धुनवाना** - स० [हिं] धुनने का काम दूसरे से कराना ।

**धुना, धुनियाँ** - पु० [हिं] वह जो रूई धुनने का काम करता हो ।

**धुनी** - 1. वि० [हिं] जिसे किसी बात की धुन हो ; 2. स्त्री० ध्वनि ।

**धुपना** - अ० [हिं] धुलना ।

**धुपेली** - स्त्री० [हिं] पसीने से होनेवाली फुंसी, घमौरी ।

**धुरंधर** - 1. वि० [सं] भार उठानेवाला ; श्रेष्ठ ; अग्रगण्य ; प्रधान ; 2. पु० गाड़ी में जोते जानेवाले बैल आदि ; नेता ।

**धुर** - पु० [सं] गाड़ी का जुआ ; बोझ ; धुरे के छोर पर लगनेवाली कील ; किल्ला ; मूल ; यौ० —कट - वह लगान जो जेठ मास में वसूला जाता है ;—किल्ली - वह कील जो पहिये को निकलने न देने के लिए धुरी के सिरे पर लगा दी जाती है ।

**धुरना** - स० [हिं] पीटना ; बजाना ।

**धुरा** - पु० [हिं] गाड़ी के पहिये में घुसा रहनेवाला लोहे का डंडा, अक्ष ; भार ; बोझ ।

**धुरी** - स्त्री० [हिं] छोटा धुरा ।

**धुरीण** - वि० [हिं] बोझ सँभालनेवाला ; प्रधान ; धुरंधर ।

**धुरेंडी** - स्त्री० [हि] धूली-वंदन ; होलिका-दहन के बाद होनेवाले वसंतोत्सव का एक पर्व ।

**धुरेहना** - स० [हिं] लगाना ; पोतना ; धूल से ढँकना ।

**धुर्य** - 1. पु० [सं] बैल ; 2. वि० धुरंधर ; श्रेष्ठ ।

**धुर्रा** - पु० [हिं] किसी वस्तु का चूर्ण ; कण ; धूल , मु० धुर्रे उड़ाना - नष्ट-भ्रष्ट कर डालना ; पीट-पीटकर बेहाल कर देना ।

**धुलना** - अ० [हिं] धोया जाना ; पानी पड़ने से बह जाना ।

**धुलवाना, धुलाना** - स० [हिं] धोने का काम दूसरे से कराना ।

**धुलाई** - स्त्री० [हिं] धोने का काम ; धोने का भाव ; धोने की मज़दूरी ।

**धुलेंडी** - स्त्री० [हिं] धुरेंडी ।

**धुवन** - 1. पु० [स] आग ; 2. वि० कँपानेवाला ।

**धुवाँ** - पु० [हिं] धुआँ ।

**धुवाँरा** - पु० [हिं] धुआँरा ।

**धुवाँस** - स्त्री० [हिं] उड़द का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनायी जाती है ।

**धुवाना** - स० [हिं] धुलाना ।

**धुस्स** - पु० [हिं] गिरे हुए मकान की मिट्टी आदि का ढेर ; टीला ; नदी आदि के किनारे का बाँध ।

**धुस्सा** - पु० [हिं] मोटे ऊन की लोई जो ओढ़ने के काम में आती है ।

**धूँध** - स्त्री० [हिं] धुंध ।

**धू** - 1. वि० [सं] स्थिर, अचल ; 2. पु० ध्रुव ।

**धूकना** - अ० [हिं] वेग से आगे बढ़ना ।

**धूजना** - अ० [हिं] काँपना ; हिलना ।

**धूत** - वि० [हिं] धूर्त, दगाबाज़ ।

**धूतना** - स० [हिं] धोखा देना ; ठगना ।

**धूति** - स्त्री० [स] हिलने का भाव ; कंपन ; हवा करने की क्रिया ।

**धूधू** - पु० [अनु] आग की लपटे उठने का शब्द ।

**धूनना** - स० [हिं] रूई साफ़ करना ; धुनना ; धूनी देना ।

**धूना** - पु० [हिं] गुग्गुल की जाति का एक बड़ा पेड़ जिसका गोंद धूप की तरह जलाया जाता है।

**धूनी** - स्त्री० [हिं] धूप; साधुओं के तापने की आग; **मु०** —जगाना, रमाना - तप करना; विरक्त होना।

**धूप** - 1. पु० [सं] गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया गया धुआँ, सुगंधित धूम; गंधद्रव्य; **यौ०**—दान - धूप रखने का बरतन; अगियारी; —दानी - धूप रखने का छोटा बरतन; —बत्ती - मसाला लगी हुई सींक जिसे जलाने पर सुगंधित धुआँ उठता है, अगरबत्ती; 2. स्त्री० सूर्य का प्रकाश और ताप, घाम; **यौ०** —घड़ी - एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है; —छाँह - एक रंगीन कपड़ा जिसमें कभी एक रंग दीख पड़ता है तो कभी दूसरा रंग।

**धूपन** - पु० [हिं] धूप देने की क्रिया।

**धूम** - 1. पु० [सं] धुआँ; कुहरा; धूमकेतु; उल्कापात; बादल; अपच के कारण आनेवाली डकार; **यौ०** —केतन - अग्नि; —केतु - अग्नि; पुच्छल तारा; अशुभ ग्रह; —ग्रह - राहु; —पथ - धुआँ निकलने का झरोखा; पितृयान; —पान - तमाकू या गाँजा आदि पीना; —पोत - बड़ा स्टीमर, जहाज़; —यान - रेलगाड़ी; —योनि - बादल; —लता - कुंचित धूमराशि; —सार - मकान का धुआँ; 2. स्त्री० [हिं] हल्ला-गुल्ला; प्रसिद्धि; चर्चा; ठाट; **यौ०**—धड़क्का, धाम - ठाट-बाट; चहल-पहल; समारोह।

**धूमल, धूमिल** - वि० [हिं] धुएँ के रंग का।

**धूमसी** - स्त्री० [सं] उड़द का बड़ा; उड़द का पिसान।

**धूमाक्ष** - वि० [सं] जिसकी आँखे धुएँ के रंग की हो।

**धूमिका** - स्त्री० [सं] कुहरा।

**धूमित** - 1. वि० [स] जिसमें धुआँ लगा हो; 2. पु० साढ़े बारह अक्षरो का एक मंत्र।

**धूमोद्गार** - पु० [सं] अपच के कारण आनेवाली डकार।

**धूम्र** - 1. पु० [सं] ललाई लिये हुए काला रंग; धुआँ; लोबान; पाप; दुष्टता; 2. वि० ललाई लिये हुए काला; धुँधला।

**धूर** - स्त्री० [हिं] धूल; **यौ०** —धानी - धूल का ढेर।

**धूस** - पु० [हिं] धूल; चूर्ण।

**धूर्जटि** - पु० [सं] शिव, महादेव।

**धूर्त** - वि० [सं] कपटी; जुआरी; **यौ०**—चरित - धूर्तों का चरित; एक प्रकार का नाटक जिसमें शठ नायक के चरित्र का वर्णन रहता है; —रचना - दुष्टता।

**धूर्तता** - स्त्री० [सं] चालबाज़ी।

**धूर्वर** - पु० [सं] बोझ-ढोनेवाला; धुरंधर।

**धूल, धूलि** - स्त्री० [हिं] मिट्टी या रेत आदि का महीन चूर्ण; अति तुच्छ वस्तु; **मु०** —उड़ाना - बदनामी करना; —में मिलाना - बरबाद करना; —चाटना - बहुत दीनता प्रकट करना; —फाँकना —जीविका के अभाव में इधर-उधर घूमते फिरना।

**धूसर, धूसरा** - 1. वि० [सं] धूल के रंग का, मटमैला; धूल में सना हुआ; 2. पु० भूरा रंग; गधा; ऊँट; कबूतर।

**धूसरित** - वि० [सं] धूल से भरा हुआ; मटमैला।

**धूहा** - पु० [हिं] चिड़ियाँ आदि को डराने के लिए बनाया गया पुतला; ढेर; टीला।

**धृक** - अव्य० [सं] धिक्।

**धृत** - 1. वि० [सं] धरा हुआ, पकड़ा हुआ; धारण किया हुआ; निश्चित; गिरा हुआ; तौला हुआ; 2. पु० स्थिति; ग्रहण; धारण; **यौ०** —दंड - दंड देनेवाला; दंडित; —लक्ष्य - अपना लक्ष्य प्राप्त करने में लगा हुआ; —वर्मा - जिसने कवच धारण किया हो।

**धृतात्मा** - वि० [सं] दृढ़ चित्तवाला; धीर।

**धृति** - स्त्री० [सं] धैर्य; स्थिर रहने की क्रिया या भाव; धारण; ग्रहण; तुष्टि; प्रीति; मन की धारणा; चंद्रमा की एक कला।

**धृषित** - वि० [सं] वीर; बहादुर।

**धृष्ट** - वि० [सं] निर्लज्ज; ढीठ, गुस्ताख़; साहसी; निर्दय।

**धृष्टता** - स्त्री० [सं] ढिठाई; निर्लज्जता; उद्दंडता।

**धृष्टा** - स्त्री० [सं] असती स्त्री।

**धेनु** - स्त्री० [सं] दूध देनेवाली गाय; पृथ्वी; भेंट।

**धेय** - 1. वि० [सं] धारण करने योग्य; पीने योग्य; 2. पु० ग्रहण; पान; पोषण।

**धेलचा, धेला** - पु० [हिं] अधेला।

**धेली** - स्त्री० [हिं] अठन्नी।

**धैर्य** - पु० [सं] धीरता, चित्त की स्थिरता; जो संकट में भी न विचलित हो।

**धोंकना** - अ० [हिं] काँपना।

**धोंडाल** - वि० [हिं] ढेलों से भरी (ज़मीन)।

**धोंधा** - पु० [हिं] बेडौल शरीर; मिट्टी का लोंदा।

**धोई** - स्त्री० [हिं] छिलका हटायी हुई मूँग या उड़द की दाल।

**धोकड़ा** - 1. वि० [देश] मोटा-ताज़ा, मुस्टंड; 2. पु० बड़ी थैली।

**धोखा** - पु० [अ] छल; भ्रम; भुलावा; **यौ०** —धड़ी - धोखेबाज़ी; धोखेबाज़ - कपटी; धोखेबाज़ी - कपट; **मु०** —खाना - ठगा जाना; भ्रम में पड़ना; धोखे की टट्टी - भ्रम में डालनेवाली चीज़।

**धोतर** - पु० [हिं] एक तरह का मोटा कपड़ा।

**धोती** - स्त्री० [हिं] कमर से पैर तक पहनने का अधोवस्त्र; **मु०**—ढीली होना - डर जाना।

**धोना** - स० [हिं] पानी से साफ़ करना; अलग करना।

**धोबिघट्टा** - पु० [हिं] धोबियों का कपड़ा धोने का घाट, धोबी-ख़ाना।

**धोबिन** - स्त्री० [हिं] कपड़ा धोनेवाली स्त्री, धोबी की स्त्री।

**धोबी** - पु० [हिं] कपड़ा धोनेवाला, रजक; **यौ०**—घास - बड़ी दूब; —पछाड़, पाट - कुश्ती का एक पेंच; **मु०** —का कुत्ता - व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला।

**धोरण** - पु० [सं] सवारी; तीव्र गमन; घोड़े की एक चाल।

**धोरणी** - स्त्री० [सं] अविच्छिन्न क्रम; परंपरा।

**धोरी** - पु० [हिं] भार उठानेवाला; मुखिया; बैल।

**धोरे** - क्रि० [हिं] पास, निकट; किनारे।

**धोवन** - पु० [हिं] वह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी गयी हो।

**धोसा** - पु० [हिं] गुड़ आदि का सूखा हुआ लोंदा, भेली।

**धौं** - अव्य० [हिं] संशय, विकल्प, आदेश आदि में प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

**धौंक** - स्त्री० [हिं] आग पर पहुँचाया हुआ हवा का आघात (भाथी आदि के द्वारा)।

**धौंकना** - स० [हिं] भाथी चलाकर आग को दहकाना; भार डालना।

**धौंकनी** - स्त्री० [हिं] भाथी ; आग फूँकने की नली ; फेफड़ा ।

**धौंकिया** - पु० [हिं] भाथी चलानेवाला ।

**धौंकी** - स्त्री० [हिं] धौंकनी ।

**धौंज** - स्त्री० [हिं] दौड़धूप ; घबराहट ।

**धौंजना** - स० [हिं] रौंदना, पाँव से कुचलना ।

**धौंस** - स्त्री० [हिं] डाँट-डपट ; धाक ; रोक ; **यौ०**—पट्टी - भुलावा, झाँसा-पट्टी ।

**धौंसना** - स० [हिं] धमकाना ; घुड़कना ; दबाना ; पीटना ; डाँटना-डपटना ।

**धौंसा** - पु० [हिं] बड़ा नगाड़ा, डंका ; सामर्थ्य ।

**धौत** - 1. वि० [सं] धोया हुआ ; धवल ; 2. पु० चांदी ; प्रक्षालन ; **यौ०**—खंडी - मिश्री ; —शिला - स्फटिक ।

**धौति, धौती** - स्त्री० [सं] हठयोग की एक क्रिया ; इस क्रिया में काम आनेवाली कपड़े की पट्टी ।

**धौरहर** - पु० [हिं] ऊँची अटारी; धरहरा ।

**धौरा** - 1. वि० [हिं] सफ़ेद ; 2. पु० सफ़ेद बैल ; एक पक्षी ।

**धौरी** - स्त्री० [हिं] सफ़ेद रंग की गाय ; धौरा पक्षी की मादा ।

**धौरे** - क्रि० [हिं] धीरे ।

**धौरेय** - 1. वि० [सं] बोझ ढोनेयोग्य ; 2. पु० गाड़ी खींचनेवाला बैल ; घोड़ा; प्रधान नायक ।

**धौल** - 1. स्त्री० [अनु] चपत, थप्पड़ ; **यौ०**— धक्कड़ - दंगा ; मारपीट ; —धक्का - आघात ; —धप्पड़, धप्पा - धक्कम-धक्का ; ऊधम ; मारपीट ; उपद्रव ।

**धौला** - 1. वि० [हिं] सफ़ेद ; 2. पु० धव वृक्ष ; सफ़ेद बैल ।

**धौलाई** - स्त्री० [हिं] सफ़ेदी ; उजलापन ।

**ध्यात** - वि० [सं] ध्यान किया हुआ, सोचा हुआ ।

**ध्याता** - पु० [सं] ध्यान करनेवाला ।

**ध्यान** - पु० [सं] चित्त, मन ; किसीके स्वरूप का चिन्तन ; विषय-विशेष में चित्त की एकाग्रता ; बुद्धि ; स्मृति ; किसी एक विषय पर मन को स्थिर करने की क्रिया ; ध्येय-विशेष के साथ चित्त की एकरूपता , **यौ०** —गम्य - केवल ध्यान से प्राप्त होनेवाला ; —निष्ठ, मग्न - ध्यान में लगा हुआ ; **मु०**— आना - स्मरण होना ; —छूटना - चित्त की एकाग्रता नष्ट होना ; —देना - चित्त को किसी ओर प्रवृत्त करना ; —पर चढ़ना - स्मरण होना; —बँधना - किसी ओर चित्त का लगा रहना ; —में न लाना - चिन्ता न करना, न विचारना ; —से उतरना - भूलना ।

**ध्याना** - स० [हिं] ध्यान करना ; स्मरण करना ।

**ध्यानी** - वि० [सं] समाधिस्थ ; ध्यान करनेवाला ।

**ध्येय** - 1. वि० [सं] ध्यान करने योग्य ; 2. पु० उद्देश्य ; लक्ष्य ।

**ध्रुपद** - पु० [सं] एक प्रकार का गीत, ध्रुव-पद ।

**ध्रुव** - 1. वि० [सं] स्थिर, अचल ; नित्य; निश्चित ; दृढ़ ; 2. पु० ध्रुवतारा ; राजा उत्तानपाद का पुत्र ; पृथ्वी का अक्षदेश ।

**ध्रुवा** - स्त्री० [सं] एक यज्ञपात्र ; साध्वी स्त्री ; **यौ०** —दर्शक - सप्तऋषि-मंडल ; कुतुबनुमा ।

**ध्वंस** - पु० [सं] नाश ; मकान या इमारत का ढहना ; अभाव का एक भेद ।

**ध्वंसक, ध्वंसी** - वि० [सं] नाश करनेवाला।
**ध्वंसावशेष** - पु० [सं] खंडहर।
**ध्वज** - पु० [सं] चिह्न, निशान; झंडा।
**ध्वजा** - स्त्री० [सं] पताका, झंडा; यौ०—रोपण - झंडा गाड़ना या लगाना।
**ध्वजिनी** - स्त्री० [सं] सेना का एक विभाग।
**ध्वन** - पु० [सं] शब्द; गुंजार।
**ध्वनि** - स्त्री० [सं] आवाज़; व्यंग्यार्थ; गूढ़ार्थ; गीत का लय; यौ०— काव्य - व्यंग्यप्रधान काव्य।
**ध्वनित** - वि० [सं] शब्दित; व्यंजित; वादित।
**ध्वन्यात्मक** - वि० [सं] ध्वनिमय; जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।
**ध्वन्यार्थ** - पु० [सं] वह अर्थ जो केवल व्यंजना से निकले।
**ध्वस्त** - वि० [सं] नष्ट-भ्रष्ट; गिरा हुआ; गलित।
**ध्वांत** - पु० [सं] अंधकार; यौ०—चर - राक्षस; —वित्त - जुगनू।
**ध्वान** - पु० [सं] शब्द; नाद; गुंजन।

## न

**नंग** - 1. पु० [हिं] नंगापन; यौ० —धड़ंग, धड़ंगा - बिलकुल नंगा; [फ़ा] शरम लज्जा; प्रतिष्ठा; [सं] जार; उपपति; 2. वि० नंगा; बेहया।
**नंगा** - 1. वि० [हिं] वस्त्रहीन; निर्लज्ज; बेहया; जिसपर आवरण न हो; 2. पु० शिव, महादेव; यौ० —झोली - कपड़ों की तलाशी; —बुच्चा, बूचा - बहुत दरिद्र, फटेहाल; —लुच्चा - नीच और दुष्ट, बदमाश।
**नंगियाना** - स० [हिं] नंगा करना; सब कुछ छीन लेना।
**नंद** - 1. पु० [सं] आनंद, हर्ष; मेढ़क; नौ की संख्या; परमेश्वर; यौ० —नंदन - श्रीकृष्ण; 2. स्त्री० [हिं] ननद।
**नंदन** - 1. पु० [सं] इन्द्र का बाग़; बेटा; 2. वि० आनंद देनेवाला; यौ०—विपिन, वन - इंद्र की वाटिका।
**नंदन्त** - 1. वि० [सं] प्रसन्न करनेवाला; 2. पु० पुत्र; मित्र; राजा।
**नंदन्ती** - स्त्री० [सं] पुत्री।
**नंदित** - वि० [सं] आनंदयुक्त; प्रसन्न; बजता हुआ।
**नंदिनी** - स्त्री० [सं] कन्या; पुराणों में वर्णित एक प्रसिद्ध गाय जिसकी राजा दिलीप ने सेवा की थी; आनंद देनेवाली पुत्री।
**नंदी** - पु० [सं] शिव का द्वारपाल, बैल; शिव के नाम पर दागकर छोड़ा हुआ बैल; नाटक में नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति; पुत्र।
**नंदोई, नंदोसी** - पु० [हिं] पति की बहन का पति।
**नंबर** - वि० [अंग्रे] संख्या; गिनती; अंक; छत्तीस इंच की एक माप, गज; यौ० —वार - क्रमानुसार।
**नंबरदार** - पु० [हिं] गाँव का वह अधिकारी जो मालगुज़ारी वसूल करने में सहायता दे।
**नंबरी** - वि० [हिं] नंबरवाला; मशहूर; कुख्यात; जिसपर नंबर लगा हो।
**न** - अव्य० [सं] नहीं; निषेध या वितर्क आदि का सूचक शब्द, मत।
**नअत** - स्त्री० [अ] प्रशंसा, स्तुति।
**नअश** - स्त्री० [अ] मृतक की रथी, ताबूत; लाश।
**नइहर** - पु० [हिं] मायका, स्त्रियों का पितृगृह, नैहर।
**नउआ** - पु० [हिं] नाई।

**नक** - स्त्री० [हिं] नाक का संक्षिप्त रूप; **यौ०**— कटा - जिसका बहुत अपमान हुआ हो; निर्लज्ज; —घिसनी - बहुत अधिक दीनता प्रगट करना; —चढ़ा - चिड़चिड़ा; —तोड़ा - नखरा करना, —बानी - नाक में दम, हैरानी; —बेसर - छोटी नथ; बेसर; —फूल - नाक में पहनने का एक गहना; —सीर - नाक से खून निकलने का रोग; नाक के अंदर की नसें।

**नकटा** - 1. वि० [हिं] वह जिसकी नाक कटी हो; 2. पु० एक प्रकार का गीत।

**नकड़ा** - पु० [हिं] बैलो का एक रोग; नाक का एक रोग।

**नक़द** - पु० [फ़ा] नक़्द।

**नक़दी** - स्त्री० [फ़ा] नक़्दी।

**नकना** - स० [हिं] लाँघना; छोड़ना; नाक में दम करना।

**नक़ब** - स्त्री० [अ] चोरी करने के लिए दीवार में किया गया छेद, सेंध; **यौ०**— ज़न - वह जो सेंध लगाता हो; —ज़नी - सेंध लगाने की क्रिया।

**नकबत** - स्त्री० [अ] दुर्दशा; विपत्ति।

**नकरा** - पु० [अ] परिचय का अभाव।

**नक़ल** - स्त्री० [अ] अनुकरण; स्वांग; हास्यरस की छोटी कहानी; रवानगी; **यौ०**—ची, नवीस - नक़ल करनेवाला; अदालत का मुहर्रिर जिसका काम नक़ल करना ही होता है; —नवीसी - नक़ल-नवीस का काम या पद।

**नक़ली** - 1. वि० [अ] बनावटी; झूठा; जाली; 2. पु० कहानियाँ सुनानेवाला।

**नकहत** - स्त्री० [अ] महक; खुशबू।

**नक़ाब** - स्त्री० [अ] वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिए सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है; घूँघट; **यौ०** —पोश - जिसने मुँह पर नक़ाब डाली हो।

**नक़ायस** - पु० [अ] 'नक़ीस' का बहु०; नुक़्स; बुराइयाँ।

**नकार** - पु० [सं] न या नहीं का बोधक शब्द; इनकार; 'न' अक्षर।

**नकारना** - स० [हिं] इनकार करना।

**नकारात्मक** - वि० [सं] जिससे इनकार का भाव ज़ाहिर हो।

**नकाशी** - स्त्री० [फ़ा] नक़्क़ाशी।

**नकास** - वि० [फ़ा] नक़्क़ाश।

**नक़ाहत** - स्त्री० [अ] निर्बलता (विशेषतः बीमारी के समय होनेवाली)।

**नकिंचन** - वि० [सं] अकिंचन, दरिद्र।

**नकियाना** - 1. अ० [हिं] नाक से बोलना; नाकों दम होना; 2. स० बहुत तंग करना।

**नक़ी** - वि० [अ] विशुद्ध; बहुत बढ़िया।

**नक़ीज़** - 1. वि० [अ] तोड़ने या गिरानेवाला; उलटा; 2. स्त्री० शत्रुता।

**नक़ीब** - पु० [अ] चारण; भाट।

**नकीर** - स्त्री० [अ] वह फ़रिश्ता जो क़ब्र में मुरदे से पूछता है कि तुम किसके उपासक हो।

**नक़ीस** - पु० [अ] बुराई, दोष, नुक़्स।

**नक़ीह** - वि० [अ] दुर्बल, दुबला।

**नकुल** - पु० [सं] नेवला; पंच-पांडवों में से चौथा।

**नकुली** - स्त्री० [सं] नेवले की मादा; केसर।

**नकेल** - स्त्री० [हिं] ऊँट की नाक में बंधी हुई रस्सी; **मु०**—हाथ में होना - किसीका पूर्णतया वश में होना।

**नक्का** - पु० [हिं] सुई का छेद; ताश का एक्का; कौड़ी।

**नक़्क़ाद** - वि० [अ] खरा-खोटा परखनेवाला, पारखी।

**नक़्क़ारख़ाना** - पु० [फ़ा] नौबतख़ाना ; मु० नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ - बड़े-बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की अनसुनी बात ।

**नक़्क़ारची** - पु० [फ़ा] नगाड़ा बजानेवाला ।

**नक़्क़ारा** - पु० [फ़ा] नगाड़ा ; नौबत ; मु०—बजाते फिरना - चारों ओर कहते फिरना ।

**नक़्क़ाल** - पु० [अ] वह जो नक़ल करता हो ; बहुरूपिया ; भाँड़ ।

**नक़्क़ाली** - स्त्री० [अ] मँड़ैती ; भाँड़पन ; नक़ल करने का काम या विद्या ।

**नक़्क़ाश** - पु० [अ] वह जो नक़्क़ाशी करता हो ।

**नक़्क़ाशी** - स्त्री० [अ] धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे बनाने का काम या इल्म ; वे बेल-बूटे जो धातु पर बनाये गये हों ; यौ०—दार - जिसपर खोदकर नक़्क़ाशी की गयी हो ।

**नक्कू** - वि० [हिं] बड़ी नाकवाला ; अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला ; सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला ; बदनाम ।

**नक़्ज़** - पु० [अ] तोड़ना ।

**नक्त** - पु० [सं] बिलकुल संध्या का समय ; रात ; यौ०—चर - राक्षस ; चोर ; उल्लू ; गुग्गुल ।

**नक़्द** - 1. पु० [अ] नक़द ; सिक्कों के रूप में रक़म ; 2. वि० प्रस्तुत (धन) ।

**नक़्दी** - स्त्री० [अ] रुपया-पैसा ; रोकड़ ; यौ०—चिट्ठा - रोकड़बही ।

**नक्र** - पु० [सं] मगर, घड़ियाल ; एक व्रत ; नासिका ।

**नक़्श** - 1. वि० [अ] अंकित ; लिखा हुआ ; 2. तसवीर ; खोदकर या क़लम से बनाये हुए बेल-बूटे या फूल-पत्ती आदि के काम ; तावीज़ ; जादू ; असर ; पदचिह्न ; यौ०— बंद - नक़्शा या चित्र बनानेवाला ; —बंदी - नक़्शा या चित्र बनाने का काम ; —मार - ताश के पत्तों से खेला जानेवाला एक जूआ ।

**नक़्शा** - पु० [अ] तसवीर ; पृथ्वी का मान ; आकृति ; मकान या सड़क आदि का चित्र ; यौ० —नवीस - नक़्शा बनानेवाला ; —नवीसी - नक़्शा बनाने का काम ;—ए-आब - पानी पर बनाया हुआ चिह्न जो तुरंत मिट जाता है ; अस्थायी वस्तु ।

**नक़्शी** - वि० [अ] जिसपर नक़्शे या बेल-बूटे बने हों, नक़्क़ाशीदार ।

**नक्षत्र** - पु० [सं] तारा ; चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले सत्ताईस तारों का समूह ; सत्ताईस मोतियों का हार ।

**नख** - पु० [सं] हाथ-पैर का नाख़ून ; एक गंधद्रव्य ; बीस की संख्या ; खंड, टुकड़ा ; यौ०— क्षत - नखों के गड़ने से पड़नेवाला चिन्ह ; —खादी - दाँतों से अपनी उँगलियों के नख कुतरनेवाला ; —चारी - पंजे के बल चलनेवाला ; —बिन्दु - मेहँदी आदि लगाकर नाख़ूनों पर बनाया गया चिह्न ; —रौट - नाख़ून चुभाने से शरीर पर होनेवाला निशान ; —शिख - नख से लेकर शिखा तक के सभी अंग ; सब अंगों का वर्णन ।

**नख़** - स्त्री० [फ़ा] पतंग की डोर ; रेशमी तागा ।

**नख़चीर** - पु० [फ़ा] वे जंगली जानवर जिनका शिकार किया जाता है ; यौ०— गाह - शिकारगाह, आखेटस्थल ।

**नखत, नखतर** - पु० [हिं] नक्षत्र ।

**नखतराज** - पु० [हिं] चंद्रमा ।

**नख़रा** - पु० [फ़ा] वह चुलबुलापन या

चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय को रिझाने के लिए हो, चोचला; हाव-भाव; चंचलता; दिखावटी इनकार; बनना; यौ०—नख़रेबाज़ - जो बहुत नख़रा करे।

**नखानखी** - स्त्री० [सं] वह लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक दूसरे पर नखों से आघात करते हैं।

**नख़वत** - स्त्री० [अ] घमंड, अभिमान।

**नख़ास** - पु० [अ] ग़ुलामों या जानवरों के बिकने का स्थान।

**नखियाना, नखोरना** - स० [हिं] नाख़ून से खरोंचना।

**नखी** - पु० [सं] शेर या चीता आदि शिकारी जानवर।

**नख़ुस्त** - पु० [फ़ा] आरंभ; प्रधान।

**नख़ुद** - पु० [फ़ा] चना नामक अनाज।

**नख़्ल** - पु० [अ] खजूर या छुहारे का वृक्ष; वृक्ष; यौ०— बंद - माली; मोम के वृक्ष और फूल-पत्ते बनानेवाला; नख़्लिस्तान - वह उपजाऊ और सजल हरा-भरा स्थान जो मरुस्थल में हो; नख़्ले-ताबूत - ताबूत की सजावट; नख़्ले-तूर - तूर पर्वत का वह वृक्ष जिसपर हज़रत मूसा को ईश्वरीय प्रकाश दिखायी पड़ा था; नख़्ले-मरियम - खजूर का वह सूखा हुआ वृक्ष जो मरियम के स्पर्श से उस समय हरा हो गया था जब वह प्रसव-वेदना से विकल होकर जंगल में उसके नीचे जा बैठी थी; नख़्ले-मातम - नख़्ले-ताबूत; नख़्ले-मोम - मोम का बना हुआ पेड़ और उसके फूल-फल आदि।

**नग** - 1. पु० [हिं] अंगूठी आदि में जड़ा जानेवाला बहुमूल्य पत्थर; नगीना; काँच का टुकड़ा; संख्या; [सं] पर्वत; वृक्ष; सूर्य; सर्प; सात की संख्या; 2. वि० न चलने-फिरनेवाला, अचल; यौ० —जा - पार्वती; पाषाण का भेदन करनेवाली एक लता; —पति - हिमालय; चन्द्रमा; शिव; सुमेरु; —भिद - पत्थर तोड़ने का एक प्राचीन अस्त्र; कुठार; इंद्र; कौआ।

**नगण** - पु० [सं] छन्दशास्त्र में तीन लघु अक्षरोंवाला एक गण।

**नगण्य** - वि० [सं] तुच्छ; निकृष्ट; जो गणना में न आ सके।

**नगद** - पु० [हिं] नक़द।

**नगदी** - स्त्री० [हिं] नक़दी।

**नगन** - वि० [हिं] नंगा; निरावरण।

**नगनी** - 1. स्त्री० [हिं] कन्या, बालिका; 2. वि० वस्त्रहीन।

**नग़मा** - पु० [अ] राग; गीत; सुरीली और बढ़िया आवाज़।

**नग़मात** - स्त्री० [अ] 'नग़्म' का बहु०।

**नगर** - पु० [सं] शहर; यौ०—काक - तुच्छ व्यक्ति; —कीर्तन - नगर की गलियों में घूमकर किया जानेवाला भजन; —पाल - नगर की रक्षा करनेवाला अधिकारी; —पालिका - म्युनिसिपालिटी; —वासी - नागरिक, शहर में रहनेवाला।

**नगराई** - स्त्री० [हिं] नागरिकता; चतुराई।

**नगराध्यक्ष** - पु० [सं] नगर का स्वामी या रक्षक।

**नगरी** - 1. स्त्री० [हिं] शहर; 2. पु० नागरिक; शहराती।

**नगाड़ा** - पु० [हिं] निशान; धौंसा; डुगडुगी के आकार का बड़ा बाजा।

**नगाधिप** - पु० [सं] हिमालय पर्वत।

**नगारा** - पु० [हिं] नगाड़ा।

**नगीं** - पु० [फ़ा] नगीना।

**नगी** - स्त्री० [हिं] रत्न ; पहाड़ी स्त्री ; पार्वती ।
**नगीच** - क्रि० [हिं] नज़दीक ।
**नगीना** - 1. पु० [फ़ा] रत्न ; मणि ; 2. वि० चिपका हुआ ; यौ०—साज़, गर - नगीना बनाने या जड़ने का काम करनेवाला ।
**नगेन्द्र** - पु० [स] हिमालय ; सुमेरु ।
**नग़्ज़** - वि० [अ] श्रेष्ठ ; बढ़िया ।
**नग़्ज़क** - पु० [अ] बढ़िया चीज़ ; आम्र ।
**नग्न** - वि० [सं] नंगा ; निरावरण ; जो आबाद न हो ।
**नग़्म** - पु० [अ] गीत ; राग ।
**नग़्मा-सरा** - [अ] गानेवाला ।
**नग़्मा-सराई** - स्त्री० [अ] गाना आलापने का भाव ।
**नग्रोध** - पु० [हिं] बट का पेड़ ।
**नघना** - स० [हि] लांघना, पार करना ।
**नचना** - अ० [हिं] नाचना, नृत्य करना ।
**नचनि** - स्त्री० [हिं] नाच ।
**नचनिया, नचवैया** - पु० [हिं] नाचनेवाला ।
**नचाना** - स० [हिं] नाचने का काम दूसरे से कराना ; परेशान करना ; नृत्य कराना ; मु० नाच नचाना - ख़ूब हैरान करना ।
**नज़अ** - पु० [अ] मरने के समय साँस तोड़ना ।
**नज़दीक** - क्रि० [फ़ा] निकट, पास ।
**नज़दीकी** - 1. वि० [फ़ा] नज़दीक या पास का, समीपस्थ ; 2. स्त्री० समीपता, निकटता ; 3. पु० निकट का संबंधी, रिश्तेदार ।
**नजफ़** - पु० [अ] ऊँचा टीला ; अरब के एक नगर का नाम ।
**नज़म** - पु० [अ] नज़्म ।
**नज़र** - स्त्री० [अ] दृष्टि ; कृपा ; निगरानी ; टोना ; ध्यान ; भेंट ; चढ़ावा ; यौ०—अन्दाज़ - जिसपर नज़र न पड़ी हो, नज़र से चूका या गिरा हुआ ;—गाह - रंग-शाला ; —बंद - जो किसी ऐसी जगह पर कड़ी निगरानी में रखा जाए जहाँ से वह कहीं आ जा न सके ; इंद्रजाल का एक खेल ; —बंदी - नज़रबंद रखने की हालत; जादूगरी ; —बाग़ - महलों के सामने या चारों ओर का बाग़ ; —बाज़ - तेज़ नज़र रखनेवाला, चालाक; नज़र लड़ानेवाला ; —सानी - जाँचने के विचार से किसी देखी हुई चीज़ को फिर से देखना ; —हाया - नज़र लगानेवाला ; मु०— आना - दिखायी देना ; —करना - देखना ; भेंट देना , —पर चढ़ना - कोपभाजन होना ; —लगना - बुरी दृष्टि का असर होना ; —लगाना - टोना करना ।
**नज़राना** - 1. पु० [अ] भेंट, उपहार ; 2. स० नज़र लगाना; 3. अ० नज़र लगाना ।
**नज़री** - स्त्री० [अ] अरबों के अनुसार शास्त्रों के दो भेदों में पहला भेद ।
**नज़ला** - पु० [अ] जुकाम ; सरदी ; एक रोग ; यौ०—बंद - सरदी की दवा ।
**नजस** - पु० [अ] अपवित्रता ।
**नज़ाकत** - स्त्री० [फ़ा] कोमलता, नाज़ुक होने का भाव ।
**नजात** - स्त्री० [अ] मुक्ति ; रिहाई ।
**नज़ाद** - पु० [फ़ा] मूल ; वंश ; परिवार ।
**नजाबत** - स्त्री० [अ] कुलीनता ; सज्जनता ।
**नज़ार** - वि० [फ़ा] दुबला-पतला ; ग़रीब ।
**नज़ारत** - स्त्री० [अ] देखभाल, निगरानी ; नाज़िर का पद या कार्यालय ।
**नज़ारा** - पु० [अ] दृश्य, नज़र ; प्रिय को लालसा या प्रेम-भरी दृष्टि से देखने का भाव ।

**नजासत** - स्त्री० [अ] गन्दगी, मैलापन ; अपवित्रता।

**नजिकाना** - अ० [हि] निकट पहुँचना।

**नजिस** - वि० [अ] मैला, अपवित्र।

**नजीक** - अ० [हि] समीप, पास, नज़दीक।

**नजीब** - पु० [अ] कुलीन।

**नज़ीर** - स्त्री० [अ] उदाहरण, दृष्टान्त, मिसाल।

**नजूम** - पु० [अ] तारे; ज्योतिष विद्या।

**नजूमी** - पु० [अ] ज्योतिषी।

**नजूल** - पु० [अ] उतरना ; आकर उपस्थित होना ; नज़ला नामक रोग ; वह रोग जो पानी उतरने के कारण हो।

**नज्जार** - पु० [अ] लकड़ी के सामान बनानेवाला, बढ़ई, तरखान।

**नज़्द** - पु० [अ] ऊँची ज़मीन, बाँगर ; अरब का एक प्रसिद्ध नगर।

**नज़्म** - 1. पु० [अ] तारा, सितारा ; यौ० —उल-हिन्द - भारत का सितारा ; 2. स्त्री० मोतियों आदि को तागे मे पिरोने की क्रिया ; प्रबंध ; कविता।

**नट** - पु० [सं] नाटक खेलनेवाला ; अभिनेता ; एक संकर जाति ; एक राग ; अशोकवृक्ष ; यौ० —चर्या - अभिनय; —नारायण - एक राग ; —पत्रिका - बैंगन ; —भूषण - हरताल ; —राज - शिव ; कुशल नट ; —वर - कृष्ण।

**नटखट** - वि० [हिं] ऊधमी, उपद्रवी ; पाजी।

**नटखटी** - स्त्री० [हिं] बदमाशी ; शरारत।

**नटन** - पु० [सं] नाचने की क्रिया , अभिनय।

**नटना** - 1. अ० [हिं] नाचना ; नष्ट होना ; 2. स० इनकार करना ; नष्ट करना।

**नटनी** - स्त्री० [हिं] नट की स्त्री ; नट जाति की स्त्री।

**नटी** - स्त्री० [सं] अभिनेत्री ; नट की स्त्री ; नट जाति की स्त्री ; वेश्या।

**नटैया** - स्त्री० [हिं] गला, गर्दन।

**नत** - 1. वि० [सं] झुका हुआ ; टेढ़ा ; कुटिल ; 2. पु० मध्यंदिन रेखा से किसी ग्रह की दूरी ; यौ०— नासिक - चिपटी नाकवाला ; —पाल - शरणागत का पालन करनेवाला ; —भ्रू - तिरछी भौंहोवाला ; —मस्तक - जिसका सिर झुका हुआ हो।

**नतरु** - अव्य० [हि] नहीं तो, अन्यथा।

**नति** - स्त्री० [सं] झुकाव ; नमस्कार ; विनय ; टेढ़ापन।

**नतिनी** - स्त्री० [हिं] बेटी की बेटी, नातिन।

**नतीजा** - पु० [फ़ा] परिणाम, फल।

**नतु** - अव्य० [हि] नहीं तो, अन्यथा।

**नतैनी** - स्त्री० [हिं] नाता ; संबंध ; रिश्ता।

**नत्थी** - स्त्री० [हिं] कई कागज़ों को एक में मिलाकर डोरे या आलपीन से बाँधने की क्रिया, मिसिल।

**नथ** - स्त्री० [हिं] नाक में पहनने का गहना।

**नथना** - 1. पु० [हिं] नाक का अगला भाग ; नाक का छेद ; मु० —फुलाना - क्रोध करना ; 2. अ० एक सूत्र में बंधना ; छिदना ; नाथा जाना।

**नथनी** - स्त्री० [हि] छोटी नथ ; बुलाक ; बैल या भैंस की नाक में पहनायी जानेवाली रस्सी, नाथ ; तलवार की मूठ पर का छल्ला।

**नथिया** - स्त्री० [हिं] नथ।

**नथुना** - पु० [हिं] नथना।

**नद** - पु० [सं] बड़ी नदी।

**नदना** - अ० [हिं] पशुओं का शब्द करना ; बजना।

**नदर** - वि० [देश] जो नदी के पास हो; निर्भय।

**नदामत** - स्त्री० [अ] शरमिन्दगी; हल्कापन।

**नदारद** - वि० [फ़ा] जो मौजूद न हो; गायब।

**नदी** - स्त्री० [सं] किसी पर्वत या झील से निकलनेवाली जलधारा, दरिया; यौ० —मुख - मुहाना; मु० —नाव संयोग - संयोग से थोड़ी देर के लिए होनेवाली खुशी या मिलाप।

**नदीदा** - पु० [फ़ा] बिन देखा हुआ; जिसने कभी कुछ देखा न हो; लोभी; लोलुप।

**नदीम** - पु० [अ] साथी; सहचर।

**नद्दाफ़** - पु० [अ] रूई धुननेवाला।

**नद्दाफ़ी** - स्त्री० [अ] रूई धुनने का काम।

**नद्ध** - वि० [सं] नथा हुआ; बंधा हुआ।

**नधना** - अ० [हिं] बैल या घोड़े आदि का गाड़ी या हल में जुड़ना, जुतना; आरंभ होना; किसी काम में लगना या जुटना।

**ननद** - स्त्री० [हिं] पति की बहन।

**ननका** - पु० [देश] नन्हा।

**ननकारना** - अ० [हिं] अस्वीकार करना; इनकार करना।

**ननदोई** - पु० [हिं] ननद का पति, पति का बहनोई।

**ननसार** - स्त्री० [हिं] नाना का घर, ननिहाल।

**ननियाससुर** - पु० [हिं] स्त्री या पति का नाना।

**ननियासास** - स्त्री० [हिं] स्त्री या पति की नानी।

**ननिहाल** - पु० [हिं] नाना का घर, ननसार।

**नन्ना** - 1. पु० [हिं] नाना; 2. वि० नन्हा।

**नन्हा** - वि० [हिं] छोटा।

**नन्हाई** - स्त्री० [हिं] छोटापन; बदनामी।

**नपाई** - स्त्री० [हिं] नापने का काम या मजूरी।

**नपाक** - वि० [हिं] अपवित्र, नापाक।

**नपुंसक** - पु० [सं] नामर्द; हिजड़ा।

**नपुंसकता** - स्त्री० } - [सं] हिजड़ापन;
**नपुंसकत्व** - पु० } नामर्दी।

**नपुआ** - 1. वि० [हिं] जो नापकर बेचा जाए; 2. पु० नापने का पात्र; मापदंड।

**नप्ता** - स्त्री० [सं] लड़की या लड़के की संतान, नाती या पोता।

**नफ़क़ा** - पु० [अ] खाने-पीने का खर्च।

**नफ़र** - पु० [अ] मज़दूर; नौकर; व्यक्ति।

**नफ़रत** - स्त्री० [अ] घृणा, घिन; यौ० —आमेज़ - जिसे देखकर नफ़रत पैदा हो।

**नफ़रीं** - स्त्री० [फ़ा] शाप; लानत; धिक्कार।

**नफ़ल** - पु० [अ] वह ईश्वर-प्रार्थना जो विशेष फल की कामना से की जाए।

**नफ़स** - पु० [अ] साँस; पल; क्षण; नफ़्स; यौ०—परवर - मनोहर।

**नफ़ा** - पु० [अ] लाभ।

**नफ़ाज़** - पु० [अ] जारी होना।

**नफ़ासत** - स्त्री० [अ] नफ़ीस का भाव; उम्दापन; उत्तमता; सुंदरता।

**नफ़ी** - स्त्री० [अ] अभाव; निकलने का भाव; इनकार।

**नफ़ीर** - 1. वि० [अ] नफ़रत करनेवाला; 2. स्त्री० रोना-चिल्लाना; फ़रियाद; पुकार।

**नफ़ीरी** - स्त्री० [अ] तुरही नामक बाजा।

**नफ़ीस** - वि० [अ] उम्दा; बढ़िया; साफ़; सुंदर।

**नफ़्फ़ार** - वि० [अ] नफ़रत करनेवाला।

**नफ़्स** - पु० [अ] आत्मा ; अस्तित्व ; सत्ता ; वास्तविक तत्त्व ; भोगेच्छा ; स्वार्थ , लिंग; **यौ०**—उल-अमर - वास्तव में;—कुश - अपनी इन्द्रियों का दमन करनेवाला ; —परवर, परस्त - इन्द्रियलोलुप ; नफ़्से-अम्मारा - इन्द्रियों के भोग या दुष्कर्मों की ओर होनेवाली प्रवृत्ति; नफ़्से-नफ़ीस - सुंदर और शुभ व्यक्तित्व ; नफ़्से-नबाती - पेड़-पौधों में रहनेवाली आत्मा; विश्वसनीय व्यक्ति; नफ़्से-बहीमी - नफ़्से-अम्मारा ; नफ़्से-मतलब - वास्तविक उद्देश्य ; नफ़्से-वापसी - अंतिम साँस ।

**नफ़्सा-नफ़्सी** - स्त्री० [अ] अपनी अपनी चिंता ।

**नफ़्सानियत** - स्त्री० [अ] स्वार्थपरता ; घमंड ।

**नफ़्सानी, नफ़्सी** - वि० [अ] नफ़्ससंबंधी ; निजी ।

**नबवी** - वि० [अ] नबीसंबंधी ।

**नबर्द** - स्त्री० [फा] युद्ध ; **यौ०**—आज़मा - युद्धक्षेत्र का अनुभवी ; वीर ; योद्धा ;—गाह - लड़ाई का मैदान ।

**नबनी** - वि० [अ] नबीसंबंधी ।

**नबात** - स्त्री० [अ] साग-भाजी ; तरकारी ; मिसरी ।

**नबातात** - स्त्री० [अ] 'नबात' का बहु० ।

**नबाती** - वि० [अ] बनस्पतिसंबंधी ।

**नबी** - पु० [अ] ईश्वर का दूत ; पैग़ंबर रसूल ।

**नबूवत** - स्त्री० [अ] नबी या पैग़ंबर होने का भाव ; पैग़ंबरी ।

**नब्ज़** - स्त्री० [अ] नाड़ी ; **मु०**— छूटना - नाड़ी की गति रुक जाना ।

**नब्बाज़** - पु० [अ] नाड़ी देखनेवाला, हकीम, वैद्य

**नब्बाज़ी** - स्त्री० [अ] नाड़ी-ज्ञान, नाड़ी देखकर रोग की पहचान ।

**नब्बाश** - पु० [अ] वह जो गड़े हुए मुरदों को उखाड़कर उनका कफ़न आदि चुराता है ।

**नब्बे** - वि० [हि] सौ से दस कम ।

**नभ** - पु० [सं] आकाश ; सावन का महीना ; मेघ ; जल ; आश्रय ; पास ; **यौ०**— चारी - आकाश में विचरनेवाला ; पक्षी ; देवता ; गंधर्व ; बादल ; वायु ; —यान - हवाई जहाज़ ; —स्तल - वायुमंडल ।

**नभोमंडल** - पु० [सं] मंडलाकार आकाश ।

**नमः** - 1. अव्य० [सं] प्रणाम आदि के अवसर पर प्रयुक्त एक शब्द : 2. पु० नमन ; त्याग ; भेंट ।

**नम** - वि० [फ़ा] भीगा हुआ, गीला ।

**नमक** - पु० [फ़ा] लवण, नोन ; क्षार पदार्थ ; सलोनापन ; **यौ०** — ख़्वार - नमक खानेवाला, पालित होनेवाला ; —चशी - अन्नप्राशन ; चखकर देखना कि नमक है या नहीं ; मुसलमानों में मँगनी के बाद होनेवाली एक रस्म ; —दान - नमक रखने का पात्र ; —परवरदा - किसीका नमक खाकर पला हुआ ; — सार - वह स्थान जहाँ नमक बनता हो ;— हराम - उपकारी की बुराई करनेवाला, कृतघ्न ; — हलाल - स्वामिभक्त ; **मु०**—अदा करना - अपने पालक या स्वामी का उपकार करना ; —मिर्च मिलाना या लगाना - किसी बात को रोचक बनाने के लिए और भी बढ़ा-चढ़ाकर कहना ; कटे या जले पर नमक छिड़कना - दुःखी को और भी दुःख देना ;— फूटकर निकलना - नमकहरामी की सज़ा मिलना ।

**नमकीन** - वि० [फ़ा] जिसमें नमक पड़ा हो ; सुंदर ; सलोना ।

**नमदा** - पु० [फ़ा] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा ।

**नमन** - पु० [सं] नमस्कार ; झुकाव ।

**नमना** - अ० [हिं] झुकना ; प्रणाम करना ।

**नमनाक** - वि० [फ़ा] गीला, तर ।

**नमश, नमश्क** - स्त्री० [फ़ा] नमिश, दूध का जमा हुआ फेन ।

**नमस्** - अव्य० [सं] प्रणाम ।

**नमस्कार** - पु० [सं] प्रणाम ।

**नमस्कार्य** - वि० [सं] वंदनीय ; जिसे नमस्कार किया जाय ।

**नमस्ते** - पु० [सं] एक शब्द जिसका अर्थ है 'आपको नमस्कार है' ।

**नमाज़** - स्त्री० [फ़ा] मुसल्मानों की ईश्वर - प्रार्थना ; **यौ०**— गाह - मसजिद में नमाज़ पढ़ने की जगह ; —बंद - कुश्ती का एक पेंच ।

**नमाज़ी** - पु० [फ़ा] नमाज़ पढ़नेवाला ; वह कपड़ा जिसपर बैठकर नमाज़ पढ़ी जाती है ।

**नमाना** - स० [हिं] झुकाना ; काबू में करना ।

**नमित** - वि० [सं] झुका हुआ ; झुकाया हुआ ।

**नमिश** - स्त्री० [फ़ा] विशेष प्रकार से जमाया हुआ दूध का फेन ।

**नमी** - स्त्री० [फ़ा] गीलापन ; आर्द्रता ।

**नमू** - पु० [अ] वनस्पति ; वृद्धि ; बाढ़ ।

**नमूद** - स्त्री० [फ़ा] निकलने या उदित होने की क्रिया ; स्पष्ट या प्रकट होने का भाव ; उभार ; तलवार की बाढ़ ; शान-शौकत ; शेखी ; घमंड ।

**नमूदार** - वि० [फ़ा] प्रकट ; उदित ।

**नमूना** - पु० [फ़ा] बानगी ; ढाँचा ; खाका ।

**नम्र** - वि० [सं] विनीत, झुका हुआ ; वक्र ।

**नम्रता** - स्त्री० [सं] नम्र होने का भाव ।

**नय** - 1. पु० [सं] नीति ; नम्रता ; व्यवहार ; नैतिकता ; योजना ; सिद्धान्त ; विधि ; 2. वि० नेतृत्व करनेवाला ; **यौ०**—चक्षु - दूरदर्शी ; —नागर - नीतिनिपुण ; —वादी - राजनीति का ज्ञाता ; —शास्त्र - राजनीति-शास्त्र ; —शील - विनयी ; नीतिज्ञ ।

**नयन** - पु० [सं] आँख ; दृष्टि ; नेतृत्व करना ; शासन करना ; **यौ०**—च्छद, पट - आँख की पलक ; —जल - आँसू ; —पुट - दृष्टि-कोटर ; —विषय - दृश्य वस्तु ; क्षितिज ; दृष्टिपथ ।

**नयना** - 1. स्त्री० [सं] आँख ; आँख की पुतली ; 2. अ० [हिं] झुकना ; नमस्कार करना ।

**नया** - वि० [हिं] नवीन, नूतन ; ताज़ा ; कम उम्र का ; पहलेवाले का स्थानापन्न ।

**नयाम** - पु० [फ़ा] म्यान ।

**नरंग** - पु० [सं] नारंगी का पेड़ ; मुँहासा ; पुरुषेन्द्रिय ।

**नर** - पु० [सं] पुरुष, मर्द ; विष्णु ; घोड़ा ; शतरंज का मोहरा ; सेवक ; **यौ०**—कपाल - मनुष्य की खोपड़ी ; —कीलक - धर्म-गुरु की हत्या करनेवाला ; —केसरी - सिंह-जैसा पराक्रमी मनुष्य ; —गण - नक्षत्र समूहविशेष ; उस गण में जन्म लेनेवाला व्यक्ति ; —गाव - साँड ; बैल ; —दारा - नपुंसक ; —देव - राजा ; ब्राह्मण ; —नारी - अर्जुन की स्त्री द्रौपदी ; पुरुष और स्त्री ; —पशु - पशुतुल्य मनुष्य ; —पिशाच - बहुत बड़ा नीच व क्रूर मनुष्य ; —पुंगव - श्रेष्ठ

मनुष्य ;—पुर - मर्त्यलोक ;—मानिका, मानिनी - दाढ़ी-मूँछवाली स्त्री; —माला - खोपड़ियों की माला ; —मेध - मनुष्यों की बलि ;—यंत्र - धूपघड़ी ,—लोक - मर्त्यलोक ;—व्याघ्र - श्रेष्ठ पुरुष ।

**नरई** - स्त्री० [देश] गेहूँ की बाल का डंठल ।

**नरक** - पु० [सं] जहन्नुम , धर्मशास्त्रानुसार मृत्यु के बाद कुकृत्यों का फल भोगने के लिए नियत जगह ; यौ०—चतुर्दशी - दीवाली के ठीक पहले पड़नेवाली चतुर्दशी ; —स्था - वैतरणी नदी ।

**नरकट** - पु० [हिं] बेंत की जाति का एक पौधा ।

**नरग़ा** - पु० [फ़ा] आदमियों का वह घेरा जो पशुओं के शिकार के लिए बनाया जाता है ; भीड़ ; जन-समूह ; कठिनाई ; विपत्ति ।

**नरगिस** - स्त्री० [फ़ा] एक फूल जिससे आँखों की उपमा दी जाती है ।

**नरगिसी** - 1. वि० [फ़ा] नरगिससंबंधी ; 2. पु० एक प्रकार का कपड़ा ; तला हुआ अंडा ।

**नरदवाँ** - पु० [फ़ा] नल ; पनाला ।

**नरदारा** - पु० [फ़ा] ज़नाना ; ज़नखा ; जो पुरुष होकर भी औरत की तरह काम करे ; डरपोक, कायर ।

**नरम** - वि० [हिं] मुलायम ; कोमल ; आसान ; सस्ता ; धीमा ; बिनम्र ।

**नरमट** - स्त्री० [हिं] मुलायम मिट्टीवाली ज़मीन ।

**नरमा** - स्त्री० [हिं] सेमर की रूई ; एक प्रकार का मुलायम कपड़ा ।

**नरमाई** - स्त्री० [हिं] नरमी ।

**नरमाना** - 1. अ० [हिं] नरम पड़ना ; नम्र होना ; 2. स० नरम या मुलायम करना ।

**नरसिंघा** - पु० [हिं] टेढ़े आकार का तुरही की तरह का एक बाजा ।

**नरसों** - अव्य० [हिं] आनेवाले परसों के बाद या बीते हुए परसो के पहले का दिन, चौथा दिन ।

**नराच** - पु० [सं] एक वर्णवृत्त ; [हिं] तीर, बाण, शर ।

**नराज़ना** - 1. स० [हिं] नाराज़ करना ; क्रुद्ध करना ; 2. अ० नाराज़ होना ; अप्रसन्न होना ।

**नराधिप** - पु० [सं] राजा, नरपति ।

**नरिया** - पु० [हिं] मिट्टी का खपड़ा ।

**नरियाना** - अ० [हिं] चिल्लाना ।

**नरी** - स्त्री० [फ़ा] बकरी का रँगा हुआ चमड़ा ; सुनारों की बाँस की बनी फुँकनी; [सं] स्त्री, नारी ।

**नरीना** - वि० [फ़ा] नर या पुरुषसंबंधी ।

**नरुवा** - पु० [हिं] अनाजवाले पौधों का डंठल ।

**नरेंद्र** - पु० [सं] राजा ।

**नरेली** - स्त्री० [हिं] छोटे नारियल की खोपड़ी या उसका बना हुक्का ।

**नरेश** - [सं] } पु० राजा ।
**नरेस** - [हिं] }

**नरोत्तम** - पु० [सं] श्रेष्ठ मनुष्य ; विष्णु ।

**नर्क** - पु० [स] नरक ।

**नर्गिस** - स्त्री० [फा] नरगिस ।

**नर्त** - 1. वि० [सं] नाचनेवाला ; 2. पु० नाच, नर्त्तन ।

**नर्तित** - वि० [सं] नचाया हुआ ; नाचता हुआ ।

**नर्त्तक** - पु० [सं] नाचनेवाला ; अभिनेता ; चारण ; हाथी ; भाट ; मोर ।

**नर्त्तकी** - स्त्री० [सं] नाचनेवाली ; अभिनेत्री ।

**नर्त्तन** - पु० [हिं] नाच, नृत्य; **यौ०**—शाला, गृह - नाचघर, नाच का स्थान।

**नर्द** - 1. वि० [सं] गरजनेवाला; 2. स्त्री० [फ़ा] चौसर या शतरंज आदि की गोटी, मोहरा; एक खेल; **यौ०**—बान - सीढ़ी, ज़ीना।

**नर्दन** - पु० [सं] गर्जन; ऊँचे स्वर में गुण-गान करना।

**नर्दा** - पु० [देश] मैला पानी बहने की नाली।

**नर्म** - 1. पु० [सं] हँसी-ठट्ठा; उपहास; हँसी-मज़ाक करनेवाला सखा; **यौ०**— गर्भ - विनोदयुक्त; गुप्त प्रेमी; — द, सचिव, सुहृद - हँसानेवाला, विदूषक; 2. वि० [फ़ा] मुलायम; कोमल; आसान; लचीला; सस्ता; धीमा; विनम्र; मंदा; **यौ०** —गर्म - भला-बुरा; ऊँच-नीच; — दिल - कोमल हृदयवाला; उदार और दयालु।

**नर्मी** - स्त्री० [फ़ा] नर्म होने का भाव।

**नर्स** - स्त्री० [अंग्रे] धात्री; रोगियों की परिचर्या करनेवाली।

**नल** - पु० [हिं] पानी आदि को ले जाने के लिए धातु आदि की बनी हुई नली, पाइप।

**नलकिनी** - स्त्री० [सं] पैर; जंघा।

**नलवा** - पु० [हिं] गाय - बैलों को घी आदि पिलाने का बाँस का चोंगा।

**नला** - पु० [हिं] मूत्रनली; हाथ या पैर की लंबी हड्डी।

**नलाई** - स्त्री० [हिं] नलाने की क्रिया या मज़दूरी।

**नलाना** - स० [हिं] बोये गये खेत में से घास आदि दूर करना, निराना।

**नलिका** - स्त्री० [सं] नली; जुलाहों का कपड़ा बुनने का एक औज़ार।

**नलिन** - पु० [सं] कमल; जल; सारस; नीला कुमुद।

**नलिनी** - स्त्री० [सं] कमलिनी, कमल; नदी; नारियल; देवगंगा; **यौ०** —रुह - मृणाल; ब्रह्मा; —श - सूर्य।

**नली** - स्त्री० [हिं] छोटा या पतला नल; नल के आकार की पतली हड्डी; शिरा।

**नलुआ** - पु० [हिं] पशुओं का एक रोग; छोटा नल; बाँस की पोर।

**नव** - 1. वि० [सं] नूतन, नवीन, नया; नौ, आठ और एक; 2. पु० काक; स्तुति; **यौ०**—कुमारी - नवरात्र में जिनकी पूजा की जाय ऐसी नौ कुमारियाँ; —खंड - भूमि के नौ विभाग; —ग्रह - सूर्य-चंद्र आदि नौ ग्रह; —जात - तुरंत का पैदा हुआ; नया; —प्रसूता - वह स्त्री जिसे हाल ही में बच्चा पैदा हुआ हो; —प्राशन - नये अन्न को पहले पहल खाना; अन्न-प्राशन; —द्वार - आँख, कान आदि शरीर के नौ द्वार; —दल - नया पत्ता; —रंग - सुंदर; नये ढंग का, नवेला; —रंगी - नित्य नये आनंद करनेवाला; हँसमुख; —रात्र - नौ दिनों का एक व्रत; —वधू - नयी दुलहिन; —शक्ति - नयी शक्ति; नौ शक्तियाँ; —युवक, युवा - नौजवान, तरुण; —यौवना - तरुणी; —रत्न - मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा लहसुनिया, पद्मराग और नीलम; विक्रमादित्य की सभा के नौ पंडित (धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराह-मिहिर और वररुचि); —रस - काव्य के नौ रस (श्रृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर,

भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत); —शिक्षित - नौसिखुआ; आधुनिक ढंग की शिक्षा जिसे मिली हो।

**नवधा** - अव्य० [सं] नौ प्रकार से; नौ मार्गों से; नौ टुकड़ों या खंडों में; यौ० —भक्ति - नौ प्रकार से की जानेवाली भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन)।

**नवना** - अ० [हिं] झुकना; नम्र होना।

**नवम** - वि० [सं] नौवाँ।

**नवमी** - स्त्री० [सं] पक्ष की नवीं तिथि।

**नवल** - वि० [सं] नूतन, नया; सुंदर; युवा; शुद्ध।

**नवला** - स्त्री० [सं] तरुणी।

**नवाँ** - वि० [हिं] नवम।

**नवांग** - पु० [सं] सोंठ, पिप्पिली आदि नौ पदार्थ।

**नवा** - स्त्री० [फा] संगीत; धन-संपत्ति।

**नवाई** - 1. स्त्री० [हिं] विनीत होने का भाव; 2. वि० नया।

**नवागत** - वि० [सं] जो अभी आया हो; नया-नया या हाल का आया हुआ; —सैन्य - रंगरूटों की सेना।

**नवाज़** - वि० [फ़ा] दया करनेवाला; संतुष्ट करनेवाला।

**नवाजना** - स० [हिं] कृपा दिखलाना; रहम करना।

**नवाज़िश** - स्त्री० [फ़ा] अनुग्रह, मेहरबानी।

**नवाना** - स० [हिं] झुकाना।

**नवान्न** - पु० [सं] घर में आया हुआ नया अन्न; एक त्यौहार जिस दिन नया अन्न खाना शुरू करते हैं।

**नवाब** - 1. पु० [अ] एक उपाधि; 2. वि० बहुत शान-शौकत के साथ अमीरों की तरह रहनेवाला; यौ० —ज़ादा - नवाब का बेटा; जो बहुत शौकीन हो।

**नवाबी** - स्त्री० [फ़ा] नवाब का पद या काम; राजत्वकाल; हुकूमत; अमीरी।

**नवाला** - पु० [फ़ा] ग्रास, कौर।

**नवासा** - पु० [फ़ा] बेटी का बेटा, दौहित्र।

**नवासी** - 1. स्त्री० [फ़ा] दौहित्री; 2. वि० [हिं] नौ और अस्सी।

**नवाह** - 1. पु० [सं] रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त किया जाता है; नया दिन; नौ दिन; 2. स्त्री० [अ] आस-पास के प्रदेश।

**नविश्त** - स्त्री० [फ़ा] दस्तावेज़; तमस्सुक।

**नविश्ता** - 1. पु० [फ़ा] दस्तावेज़; भाग्य, तक़दीर; 2. वि० लिखा हुआ।

**नवी** - स्त्री० [देश] वह रस्सी जिससे गाय के पैर में बछड़े का गला बांधकर दूध दुहते हैं, नोई।

**नवीन** - वि० [सं] ताज़ा; नया, नूतन; अपूर्व; मौलिक।

**नवीस** - वि० [फ़ा] लिखनेवाला; लेखक; क़ातिब।

**नवीसिन्दा** - वि० [फ़ा] लिखनेवाला; लेखक।

**नवीसी** - स्त्री० [फ़ा] लिखने का काम या पारिश्रमिक।

**नवेद** - 1. स्त्री० [फ़ा] शुभ समाचार; 2. पु० निमंत्रण-पत्र; [हिं] नैवेद्य।

**नवेला** - वि० [हिं] नवीन, नया; तरुण।

**नवेली** - स्त्री० [हिं] तरुणी।

**नवोढ़ा** - स्त्री० [सं] नवविवाहिता वधू; युवती।

**नवोदक** - पु० [सं] पहली वर्षा का पानी।

**नव्य** - वि० [सं] नया, नूतन; ताज़ा; स्तुति करने के योग्य।

**नशन** - पु० [सं] नष्ट होना; नाश।

**नशना** - अ० [हिं] नष्ट होना; बिगड़ जाना।

**नशर** - वि० [अ] बिखरा हुआ; दुर्दशा-ग्रस्त।

**नशा** - पु० [अ] मादकता; मादक द्रव्य; मद; गर्व; यौ०—ख़ोर - वह जो नशे का सेवन करता हो; नशेबाज़ - नशाख़ोर; मु०—उतरना - नशा दूर होना; गर्व नष्ट होना; — हिरन होना - किसी अनहोनी घटना के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।

**नशात** - पु० [अ] उत्पत्ति; प्राणी; जीव।

**नशिस्त** - वि० [फ़ा] निशस्त, बैठक।

**नशीं, नशीन** - वि० [फ़ा] बैठनेवाला; बैठा हुआ।

**नशीनी** - स्त्री० [फ़ा] बैठने की क्रिया या भाव।

**नशीला** - वि० [अ] नशा पैदा करनेवाला, मादक; जिसपर नशे का प्रभाव हो।

**नशूर** - पु० [फ़ा] नुशूर।

**नशेड़ी** - वि० [हिं] नशेबाज़।

**नशेब** - पु० [फ़ा] नीची भूमि; निचाई।

**नशेमन** - पु० [फ़ा] विश्राम करने का एकांत स्थल; पक्षियों का घोंसला; भवन; यौ०—गाह - विश्रामस्थल।

**नश्तर** - पु० [फ़ा] एक प्रकार का बहुत तेज़ छोटा चाकू जो फोड़े आदि चीरने के काम में आता है; मु० —चलाना - आपरेशन करना; चीर-फाड़ करना।

**नश्र** - पु० [अ] प्रचार; प्रसार; चिंता; सुगंधि; जीवन।

**नश्वर** - वि० [सं] नष्ट होनेवाला; क्षणभंगुर; हानिकारक।

**नश्वा** - पु० [फ़ा] सुगन्धि; सचेत होना।

**नष्ट** - 1. वि० [सं] जिसका अस्तित्व मिट चुका हो; बरबाद; ख़राब; नीच; 2. पु० नाश, क्षय (समास में पूर्व-पद के रूप मे प्रयुक्त होनेवाला); [त] घाटा, नुक़सान; यौ० —चंद्र - भाद्रपद के शुक्लपक्ष की चौथ का चाँद जिसका दर्शन निषिद्ध है; —चित्त - उन्मत्त, पागल; —चेतन - मूर्छित, बेहोश; —दृष्टि - अंधा; —प्रभ - कांतिहीन; —बीज - फलरहित (शस्य); —भ्रष्ट - बरबाद; चौपट; —संज्ञ - मूर्छित, बेहोश; —स्मृति - जिसकी स्मरणशक्ति क्षीण हो गयी हो।

**नष्टा** - स्त्री० [सं] वेश्या; व्यभिचारिणी।

**नष्टात्मा** - वि० [सं] दुष्ट, खल।

**नस** - स्त्री० [हिं] रक्तवाहिनी नली; रग; यौ० —कटा - नपुंसक; हिजड़ा; —तरंग - शहनाई के ढंग का एक बाजा; —फाड़ - हाथियों के पाँव फूलने का एक रोग; मु० नसें फड़क उठना - अधिक प्रसन्नता होना; नसें ढीली होना - हौसला पस्त होना; —नसें चढ़ना - अपने स्थान से हटने के कारण नसों का तन जाना।

**नसना** - अ० [हिं] नष्ट होना; ख़राब होना।

**नसब** - पु० [अ] वंश, कुल, ख़ान्दान; यौ०—नामा - वंशावली।

**नसबी** - वि० [अ] वंशसंबंधी।

**नसर** - पु० [फ़ा] गद्य, नस्र।

**नसरानी** - पु० [अ] ईसाई।

**नसवार** - स्त्री० [हिं] सुँघनी; नास।

**नसल** - स्त्री० [अ] संतान; वंश, नस्ल।

**नसहा** - वि० [हिं] जिसकी नसें अधिक हों; जिसकी नसें उभरी हुई हों।

**नसारा** - पु० [अ] ईसाई।

**नसी** - स्त्री० [हि] हल के फाल की नोक।

**नसीब** - पु० [अ] भाग्य; हिस्सा; यौ०—जला - अभागा; भाग्यहीन; —वर - भाग्यवान; मु०—चमकना, जागना, सीधा होना - भाग्य का उदय होना;—पलटना - अच्छे से बुरे या बुरे से अच्छे दिन आना; —होना - मिलना, प्राप्त होना।

**नसीम** - स्त्री० [अ] शीतल, मंद और सुगंधित हवा।

**नसीर** - पु० [अ] सहायक; ईश्वर का एक नाम।

**नसीहत** - स्त्री० [अ] उपदेश; शिक्षा; अच्छी राय; यौ०—आमेज़ - जिसमें नसीहत भी शामिल हो; —गो - उपदेश देनेवाला।

**नसूर** - पु० [अ] नासूर।

**नसूह** - 1. पु० [अ] पक्की तौबा; 2. वि० साफ़, शुद्ध।

**नसेनी** - स्त्री० [हिं] सीढ़ी; ज़ीना।

**नस्क़** - पु० [अ] प्रणाली, दस्तूर, व्यवस्था।

**नस्ख़** - पु० [अ] नक़ल।

**नस्त** - पु० [सं] नाक; सुँघनी।

**नस्तक** - पु० [सं] पशुओ की नाक मे किया हुआ छेद जिसमें रस्सी डाली जाती है।

**नस्ता** - स्त्री० [सं] पशुओ की नाक का छेद।

**नस्तित** - पु० [सं] वह पशु जिसकी नाक में छेद करके रस्सी डाली जाय।

**नस्ब** - पु० [अ] स्थापित करना; खड़ा करना (ख़ेमा आदि)।

**नस्य** - पु० [सं] नास, सुँघनी; बैलो के नथुने में पहनायी जानेवाली रस्सी।

**नस्र** - स्त्री० [अ] सहायता; गद्यलेख।

**नस्ल** - स्त्री० [अ] संतान; वंश; नसल; यौ० —दार - उत्तम वंश का।

**नस्ली** - वि० [अ] वंशसंबंधी।

**नस्सार** - पु० [अ] वह जो अच्छा गद्य लिखता हो, गद्य-लेखक।

**नहँ, नह** - पु० [हि] नख, नाख़ून; यौ० —छू - विवाह की एक रस्म जिसमें वर के नाख़ून काटे जाते हैं।

**नहज** - पु० [अ] सीधा रास्ता; तौर-तरीक़ा।

**नहन, नहनी** - स्त्री० [हिं] मोट खींचने की मोटी रस्सी।

**नहना**† - स० [हिं] जोतना, काम में तत्पर करना।

**नहर** - स्त्री० [फ़ा] कृत्रिम जल-मार्ग जो खेतो की सिंचाई आदि के काम के लिए निकाला जाता है।

**नहरनी** - स्त्री० [हिं] नाख़ून काटने का औज़ार।

**नहरुआ, नहरू,** - पु० [हि] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर से एक गज़ लंबा सूत के आकार का सफ़ेद कीड़ा निकलता है।

**नहरी** - 1. वि० [फ़ा] नहरसंबंधी; 2. स्त्री० वह भूमि जो नहर के जल से सींची जाती हो।

**नहल** - स्त्री० [अ] शहद की मक्खी।

**नहला** - पु० [हिं] ताश का वह पत्ता जिसमें नौ चिन्ह हों; एक औज़ार जो नक़्क़ाशी बनाने के काम में आता है।

**नहलाई** - स्त्री० [हिं] नहलाने की क्रिया या भाव; वह धन जो नहलाने के बदले में दिया जाय।

**नहलाना** - स० [हिं] दूसरों को स्नान कराना।

**नहस** - वि० [अ] अशुभ, मनहूस; यौ० तहस-नहस - नष्ट-भ्रष्ट, बरबाद।

**नहाँ** - पु० [हिं] पहिये का वह छेद जिसमें धुरी डालते हैं।

**नहान** - पु० [हिं] नहाने की क्रिया; स्नान का पर्व।

**नहाना** - अ० [हिं] स्नान करना।

**नहाफ़त** - स्त्री० [अ] दुर्बलता।

**नहार** - 1. वि० [अ] जिसने सवेरे से कुछ खाया न हो, बासी मुँह का; 2. पु० दिन; **मु०**—तोड़ना - जलपान करना; —मुँह - बिना जलपान किये हुए; —रहना - उपवास करना।

**नहारी** - स्त्री० [फ़ा] कलेवा, नाश्ता, जलपान; एक प्रकार की शोरबेदार तरकारी।

**नहिं, नहीं** - अव्य० [हिं] निषेधसूचक अस्वीकृति या अभावसूचक शब्द; **मु०** —तो - ऐसा न होने की हालत में; अन्यथा; स्पष्टतः नकार जताना; —ही सही - यदि ऐसा न हो तो भी कोई चिन्ता नहीं।

**नहीफ़** - वि० [अ] दुबला-पतला।

**नहीब** - पु० [अ] भय; लूट-पाट।

**नहुफ़्ता** - वि० [फ़ा] छिपा हुआ।

**नहूसत** - स्त्री० [अ] मनहूस होने का भाव, मनहूसी; उदासीनता; अशुभ लक्षण।

**नहो** - स्त्री० [अ] रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा; व्याकरण।

**नाँउँ** - पु० [हिं] नाम; **यौ०** —गाँउँ - नाम और गाँव (पता)।

**नाँगा** - 1. वि० [हिं] नंगा; 2. पु० नागा साधु।

**नाँघना** - स० [हिं] लाँघना।

**नाँठना** - अ० [हिं] नष्ट होना; बिगड़ जाना।

**नाँद** - स्त्री० [हिं] हौज़; एक चौड़ा गहरा बरतन जिसमें पशुओं को चारा-पानी दिया जाता है, टब।

**नांदी** - स्त्री० [स] अभ्युदय, समृद्धि; वह मंगलात्मक पद्य जिसका नाटक आरंभ करने के पहले पाठ किया जाता है; **यौ०**—कर - नांदी का पाठ करनेवाला; —घोष - भेरी आदि का शब्द; —नाद - हर्षातिरेक से चिल्लाना; —मुख - जन्म आदि विशेष अवसरों पर किया जानेवाला एक वैदिक कर्म।

**ना** - प्रत्य० [हिं, फ़ा] एक निषेधसूचक शब्द, नहीं; **यौ०**— आगाह - जिसे जानकारी न हो; —आज़मूदा - अनुभवहीन, अनाड़ी; —उम्मेद - निराश; —क़द्र, क़द्रा - नालायक़; —क़ाबिल - अयोग्य; —कारा - निकम्मा; —किस - नीच, बुरा; निकम्मा; —ख़ुश - अप्रसन्न; —गहाँ - सहसा, अकस्मात; —जायज़ - अनुचित; —दान - नासमझ, अबोध; मूर्ख; —पसंद - जो पसंद न हो; अप्रिय; —पाक - अपवित्र; मैला; गंदा; —बालिग़ - अवयस्क; जिसने होश न सँभाला हो; —मंजूर - अस्वीकृत; —मर्द - नपुंसक; डरपोक; कायर; —माक़ूल - अनुपयुक्त; अनुचित; अयोग्य; —मुआफ़िक़ - प्रतिकूल; खिलाफ़, विरुद्ध; —मुनासिब - अनुचित, अयुक्त; —मुमकिन - असंभव; —मुराद - जिसकी कामना पूर्ण न हुई हो; —मौज़ूँ - बेमेल; —याब - जो मिलता न हो, अप्राप्य; बहुत बढ़िया; —रवा - अनुचित; —रसाई - पहुँच का न होना; —लायक़ - अयोग्य; नीच, अधम; —वाजिब - अनुचित; —शाद - अप्रसन्न; रंजीदा; चिंतित; —समझ - जिसे समझ न हो, बुद्धिहीन,

मूर्ख; —साज़ - अस्वस्थ; —हक - अकारण; व्यर्थ; बेमतलब; —हमवार - ऊँचा-नीचा; विषम; ऊबड़-खाबड़।

**नाइक** - पु० [हिं] नायक।

**नाइब** - पु० [हिं] नायब।

**नाइन** - स्त्री० [हिं] नाई की स्त्री।

**नाईं** - 1. स्त्री० [हिं] समान दशा; 2. वि० समान।

**नाई** - पु० [हिं] हज्जाम, नाऊ, नपित।

**नाउत** - पु० [देश] मंत्र-तंत्र से भूत-प्रेत झाड़नेवाला, झाड़-फूँक करनेवाला ओझा।

**नाऊ** - पु० [हिं] नाई।

**नाक** - 1. स्त्री० [हिं] सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय; प्रधान वस्तु; शोभा की वस्तु; प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, मान; 2. पु० [सं] स्वर्ग; आकाश; मगर-जैसा एक जलजंतु; मु० —कटना - इज़्ज़त जाना; —की सीध में - ठीक सामने; नाकों चने चबाना - खूब तंग होना; —चढ़ना - घृणा प्रगट करना; —छेदना - हैरान करना; —पकड़ते दम निकलना - अति शक्तिहीन होना; —पर मक्खी न बैठने देना - बहुत सतर्क रहना; —पर सुपारी तोड़ना - बहुत परेशान करना; —भौं चढ़ाना, भौं सिकोड़ना - क्रोध प्रगट करना, अरुचि प्रकट करना; —रख लेना - इज़्ज़त बचाना; —रगड़ना - दीनता प्रगट करना; 3. प्रत्य० [फ़ा] पूर्ण, भरा हुआ (जैसे, ख़तरनाक, दर्दनाक आदि)।

**नाकना** - स० [हिं] लाँघना; पार करना; अतिक्रमण करना; मात कर देना।

**नाका** - पु० [हिं] किसी नगर आदि में पैठने का प्रमुख स्थान; प्रवेशद्वार; जुलाहों का ताने का तागा बाँधने का एक औज़ार; सुई का छेद; पुलिस की चौकी; यौ०; —बंदी - नाके पर सिपाहियो की तैनाती; अवरोध; नाकेदार - नाके पर तैनात सिपाही।

**नाक़ा** - स्त्री० [अ] मादा ऊँट, सांडनी।

**नाक़िस** - वि० [अ] जिसमें त्रुटि हो; अधूरा।

**नाकीह** - पु० [अ] निकाह करनेवाला।

**नाक़ूस** - पु० [अ] फूँककर बजाया जानेवाला शंख।

**नाकेश** - पु० [सं] इंद्र।

**नाक्षत्र** - 1. वि० [सं] नक्षत्रसबंधी; 2. पु० चांद्र मास; यौ०—दिन - चंद्रमा के एक नक्षत्र पर से दूसरे नक्षत्र पर जाने का काल।

**नाख** - स्त्री० [हिं] एक तरह की नासपाती।

**नाखना** - स० [हिं] नाश करना; बिगाड़ना।

**नाख़ुदा** - 1. पु० [फ़ा] जहाज़ का कप्तान; 2. वि० ख़ुदा को न माननेवाला।

**नाख़ुन, नाख़ून** - पु० [फ़ा] उंगलियों के ऊपरी भाग का कठिन आवरण, नख; यौ०—तराश - नाख़ून काटने का औज़ार, नहरनी; मु० —लेना - नाख़ून तराशना; घोड़े का ठोकर खाना।

**नाख़ुना** - पु० [फ़ा] एक नेत्ररोग जिसमें आँखों में सफ़ेद झिल्ली छा जाती है; रूई और रेशम के योग से बना एक प्रकार का कपड़ा; सितार बजाने का मिजराब।

**नाग** - पु० [सं] सर्प; पुराणों में वर्णित मनुष्य के आकार के पातालवासी सर्प; पर्वत; हाथी; बादल; नागकेशर; एक प्रकार का शरीरवर्ती पवन; रांगा; सीसा; आसाम के आदिवासियों की एक जाति; क्रूर व्यक्ति; यौ० —कुमारिका - गुडुच, मजीठ; —केशर - महँकदार फूलों का

एक सदाबहार पेड़, नागचंपा, वज्रकाष्ठ ; —गति - अश्विनी, भरणी या कृत्तिका नक्षत्र पर रहने के समय की किसी ग्रह की गति ; —गर्भ - सिंदूर ; —चूड़ - शिव ; —ज - सिन्दूर ; रागा ; —झाग - अफ़ीम ; —दंत, दंतिका - हाथी दाँत ; दीवार की खूँटी ; —दला - बहुत मज़बूत लकड़ीवाला एक पेड़ ; —दौन - छोटा पहाड़ी पेड़ ; —नग - गजमुक्ता ;—पंचमी - श्रावणशुक्ला पंचमी ; —फल - परवल ; —पूत - कचनार की जाति की एक लता ; —फणी, फनी - थूहर की जाति का एक पौधा ; —फेन - अफ़ीम ; —बंधक - हाथी फँसानेवाला ;—बेल - पान की बेल ; —मरोड़ - कुश्ती का एक पेंच ; —रक्त - सिन्दूर ; हाथी या साँप का रक्त ; —लोक - पाताल ; —वीथी - चंद्रमा का वह मार्ग जिसमें अश्विनी आदि नक्षत्र बीच में पड़ते हैं।

**नागर** - 1. वि० [सं] नगरसंबंधी ; नगर में रहनेवाला ; चतुर ; बुरा ; 2. पु० नगरवासी ; सभ्य पुरुष ; सोंठ ; नारंगी ; कष्ट ; उपाधि ; नागरी लिपि के अक्षर ; एक प्रकार का गृहयुद्ध ; [त] सर्प के आकार का जूडे में पहनने का एक आभूषण ।

**नागरमोथा** - पु० [हिं] मसाले या दवा के काम में आनेवाली एक प्रकार की सुगंधित जड़ी ।

**नागरिक** - 1. वि० [सं] नगरसंबंधी ; नगर का ; नगर में रहनेवाला ; चतुर ; सभ्य ; 2. पु० नगरनिवासी ।

**नागरिकता** - स्त्री० [हिं] किसी देश के निवासी के कर्तव्य और अधिकार ।

**नागरी** - स्त्री० [सं] नगर की रहनेवाली स्त्री ; चतुर स्त्री ; भारतवर्ष की प्रसिद्ध लिपि जिसमें संस्कृत, मराठी, हिन्दी आदि देशभाषाएँ लिखी जाती हैं ।

**नागल** - पु० [हिं] हल ; बैलों को जुए में जोड़ने की रस्सी ।

**नागहाँ** - क्रि० [फ़ा] अचानक ; यकायक ।

**नागा** - पु० [हि] नंगे साधुओं का एक संप्रदाय ; आसाम की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जाति , एक पहाड़ ।

**नाग़ा** - पु० [अ] नियमानुसार लगातार होनेवाले काम में कभी बाधा या रुकावट पड़ जाना ; अंतर ; बीच ।

**नागाशन** - पु० [सं] गरुड़ ; मयूर ; सिंह ।

**नागाह** - क्रि० [फ़ा] सहसा, अचानक ।

**नागिन, नागिनी** - स्त्री० [हिं] नाग की स्त्री ; क्रूर स्वभाववाली स्त्री ; पीठ या गर्दन पर की लंबी रोमावली ; सर्पिणी ।

**नागी** - पु० [सं] शिव, महादेव ।

**नागुज़ीर** - वि० [फ़ा] अनिवार्य ।

**नागुला** - पु० [हिं] नेवला ; नाकुली औषधि ।

**नागोद, नागोदर** - पु० [सं] लोहे का बख़्तर ; सीनाबंद ।

**नागोदरिका** - स्त्री० [सं] एक प्रकार का दस्ताना जिसे युद्ध के समय हाथ की रक्षा के लिए पहना जाता है ।

**नाच** - पु० [हिं] नृत्य ; ताल और लय पर आधारित अंगविक्षेप ; खेल-कूद ; काम-धंधा ; **यौ०** —कूद - नाच तमाशा ; उछल-कूद ; —घर, महल - नृत्यशाला ; —रंग - आमोद-प्रमोद ; **मु०** —दिखाना - किसीके सामने उछल-कूद मचाना ; —नचाना - परेशान करना ।

**नाचना** - अ० [हिं] नृत्य करना ; उछलना-कूदना, इधर से उधर फिरना, स्थिर न रहना ; बिगड़ना ; **मु०** सिर पर नाचना - पास आना ।

**नाचाक़** - वि० [फ़ा] अस्वस्थ ; बीमार ; दुबला-पतला ; जिसमें कुछ मज़ा न हो ।

**नाचाक़ी** - स्त्री० [फ़ा] बीमारी ; अनबन ।

**नाज** - पु० [हिं] अनाज ; खाद्य-द्रव्य; अन्न ।

**नाज़** - पु० [फ़ा] नखरा ; चोचला ; घमंड ; गर्व ; हाव-भाव ; **यौ०** —नखरा - हावभाव ; अंग-चेष्टा ; —व नियाज़ - नाज़-नख़रा ; —बालिश - छोटा मुलायम तकिया ।

**नाज़नी** - स्त्री० [फ़ा] कोमलांगी ; सुंदरी ।

**नाज़रीन** - पु० [अ] नाज़िरीन ।

**नाजाँ** - वि० [फ़ा] नाज़ या अभिमान करनेवाला ; अभिमानी ; गर्वीला ।

**नाज़िम** - पु० [अ] वह जो लड़ी बनाता या पिरोता हो ; इन्तज़ाम करनेवाला ; नज़्म या पद्य बनानेवाला, कवि ; एक हाकिम ।

**नाज़िर** - पु० [अ] नज़र करने या देनेवाला ; निरीक्षक ; अदालत या कार्यालय में लेखकों का प्रधान ; महलसरा ।

**नाज़िरीन** - पु० [अ] देखनेवाले लोग ; पाठक ।

**नाज़िल** - वि० [फ़ा] उतरने या नीचे आनेवाला ; गिरनेवाला ।

**नाज़िला** - पु० [अ] आपत्ति, संकट ।

**नाज़िश** - स्त्री० [फ़ा] नाज़ करने का भाव ; घमंड ।

**नाज़ुक** - वि० [फ़ा] कोमल ; सुकुमार ; पतला ; महीन ; सूक्ष्म ; गंभीर ; संकटपूर्ण ; **यौ०** —ख़याल - अच्छे विचारोंवाला ; —बदन - सुकुमार ; —मिज़ाज़ - किसी बात से जल्दी प्रभावित होनेवाला ; चिड़चिड़ा ; तुनकमिज़ाज़ ; घमंडी ।

**नाज़ुकी** - स्त्री० [फ़ा] नाज़ुक होने का भाव ; नज़ाकत ; कोमलता ; उत्तमता ; ख़ूबी ; घमंड ।

**नाज़ेब** - वि० [फ़ा] जो देखने में ठीक न जान पड़े, भद्दा ; बेमेल ।

**नाज़ेबा** - वि० [फ़ा] अनुचित, नामुनासिब ।

**नाज़ो** - स्त्री० [फ़ा] नाज़ करनेवाली स्त्री ; लाड़ली ; प्यारी स्त्री ।

**नाटक** - पु० [सं] दृश्य काव्य ; रूपक ; अभिनय ; अभिनेता ; **यौ०**—शाला - रंगमंच, नाटकघर ।

**नाटकावतार** - पु० [सं] एक नाटक में दूसरा नाटक ।

**नाटकी** - पु० [हिं] नाटक के द्वारा जीविका चलानेवाला ।

**नाटकीय** - वि० [सं] नाटकसंबंधी ।

**नाटकीया** - पु० [हिं] अभिनेता ; बहुरूपिया ।

**नाटना** - स० [हिं] अस्वीकार करना ; इनकार करना ।

**नाटा** - वि० [हिं] छोटे क़द का ।

**नाटिका** - स्त्री० [सं] चार अंकों का छोटा नाटक ।

**नाट्य** - पु० [सं] अभिनय ; नटों का काम ; नृत्य ; अभिनेता की वेष-भूषा ; [त] नृत्यकला ; **यौ०** —कार - नाटक लिखनेवाला ; —प्रिय - महादेव ; —मंदिर, शाला - नाटक-घर ; —शास्त्र - नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या ।

**नाट्योक्ति** - स्त्री० [सं] नाटकीय वाक्यविन्यास ।

**नाट्यालंकार** - पु० [सं] वह अलंकार जिससे नाटक का सौंदर्य बढ़ जाता है।

**नाठ** † - पु० [हिं] नाश ; अभाव , बिना वारिस की जायदाद ।

**नाठना** † - 1. स० [हिं] नष्ट करना ; 2. अ० नष्ट होना ; भागना ।

**नाठा** - पु० [हिं] वह जिसका कोई वारिस न हो ।

**नाड़** - स्त्री० [हिं] गर्दन ।

**नाड़ा** - पु० [हिं] सूत की मोटी डोरी जिससे लहँगा बाँधा जाता है, इज़ारबंद ; नीवी ।

**नाड़िका** - स्त्री० [सं] घड़ी का एक काल ; नाड़ी।

**नाड़िया** - पु० [हिं] नाड़ी पकड़नेवाला वैद्य।

**नाड़ी** - स्त्री० [सं] नली ; शरीर की रक्त-वाहिनी शिराएँ ; शरीर की ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वासवाहिनी नलियाँ ; फोड़े का छेद ; किसी तृण या पौधे का पोला डंठल ; घड़ी ; फूँककर बजाया जानेवाला वाद्य ; हाथ या पैर की नब्ज ; यौ०—कूट, चक्र - नाभि प्रदेश में स्थित मुर्गी के अंडे के आकार का चक्रविशेष जिससे सभी नाड़ियाँ निकली हैं ; —जंघ - कौआ ;—तरंग - ज्योतिषी, लंपट ; —नक्षत्र - जन्म-नक्षत्र;—परीक्षा - नब्ज़ देखने की क्रिया ; —मंडल - आकाशीय विषुवत् रेखा ; —यंत्र - शरीर में चुभी हुई वस्तु को निकालने का एक यंत्र ; —संस्थान - नाड़ियों का जाल।

**नाणक** - पु० [सं] धातु का सिक्का।

**नात** - पु० [हिं] संबंधी ; रिश्तेदार ; संबंध ; नाता।

**नातवाँ** - वि० [फ़ा] कमज़ोर, दुर्बल।

**नाता** - पु० [हिं] रिश्ता ; संबंध ; यौ० नातेदार - संबंधी ; रिश्तेदार ; सगा।

**नातिक़** - 1. पु० [अ] वह जो बोलता हो, बोलनेवाला ; अक्लमन्द ; 2. वि० स्थायी।

**नातिक़ा** - पु० [अ] बोली ; बोलने की शक्ति, वाक्शक्ति।

**नातिन** - स्त्री० [हिं] बेटी की बेटी।

**नाती** - पु० [हिं] बेटी का बेटा।

**नाते** - क्रि० [हिं] संबंध से ; हेतु ; वास्ते।

**नाथ** - पु० [सं] स्वामी ; पति ; गोरखपंथी साधुओं की उपाधि ; [हिं] पशु की नाक में डाली जानेवाली रस्सी।

**नाथना** - [हिं] नाक छेदना ; नत्थी करना ; एक सूत्र में बद्ध करना।

**नाद** - पु० [सं] अव्यक्त शब्द ; ध्वनि ; आवाज़ ; गर्जन ; स्तुति ; यौ०— मुद्रा - एक तान्त्रिक मुद्रा जिसमें दाहिनी मुट्ठी बंधी रहती है।

**नादना** - 1. स० [हिं] बजाना ; 2. अ० बजना ; लहलहाना।

**नादारी** - स्त्री० [फ़ा] ग़रीबी।

**नादिम** - वि० [अ] शरमिन्दा, लज्जित।

**नादिया** - पु० [हिं] नंदी बैल।

**नादिर** - वि० [अ] अनोखा ; दुष्प्राप्य ; बहुत बढ़िया ; एक बादशाह (फ़ारस का) ; यौ० —गरदी, शाही - नादिर-शाह का-सा अत्याचार और बद-इन्तज़ाम।

**नादिरा** - वि० [अ] नादिर।

**नादिरी** - स्त्री० [फ़ा] एक प्रकार की कुरती ; नादिरशाही।

**नादी** - वि० [सं] नाद करनेवाला ; बजनेवाला ; गरजनेवाला।

**नाधन** - स्त्री० [हिं] चरखे के तकले में लगी हुई गोल टिकिया।

**नाधना** - स० [हिं] जोतना ; जोड़ना ; लगाना ; आरंभ करना ; गूँथना ; पिरोना।

**नाधा** - पु० [हिं] रस्सी या चमड़े की पट्टी जिससे हरिस बाँधी जाती है।

**नान** - स्त्री० [फ़ा] रोटी ; तंदूर में पकायी जानेवाली मोटी खमीरी रोटी ; यौ०— ख़ताई - एक प्रकार की सोंधी खस्ता रोटी।

**नानकार** - पु० [फ़ा] वह धन या भूमि जो किसीको निर्वाह के लिए दिया जाए।

**नानकीन** - पु० [हिं] मटमैले रंग का एक सूती कपड़ा।

**नाना** - 1. वि० [सं] अनेक प्रकार के; विविध; बहुत; यौ० नानार्थ - अनेक अर्थोंवाला; 2. पु० [हि] माता के पिता, मातामह; [अ] पुदीना ।

**नानाबाई** - पु० [फ़ा] रोटी पकाने या बेचनेवाला ।

**नानिहाल** - पु० [हि] नानी का घर, ननिहाल ।

**नानी** - स्त्री० [हि] नाना की स्त्री, माता की माता; मु०— मरना - संकट में पड़ना ।

**नान्ह, नान्हा, नान्हरिया** - वि० [हि] छोटा; नन्हा; क्षुद्र; नीच; महीन; बारीक़ ।

**नाप** - स्त्री० [हि] माप; परिमाण; लंबाई, चौड़ाई और गहराई आदि का मानदंड; यौ० —जोख, तौल - नापने और तौलने की क्रिया ।

**नापना** - स० [हिं] मापना; मानदंड के अनुसार किसी वस्तु के परिमाण आदि का निर्द्धारण करना ।

**नापित** - पु० [सं] नाई, हज्जाम ।

**नाफ़** - स्त्री० [फ़ा] नाभि; बीच का भाग।

**नाफ़ा** - पु० [फ़ा] कस्तूरी की थैली जो मृग की नाभि से निकलती है ।

**नाफ़िअ** - वि० [अ] लाभदायक ।

**नाफ़िज़** - वि० [अ] जारी होनेवाला ।

**नाफ़िर** - वि० [अ] नफ़रत करनेवाला ।

**नाब** - वि० [फ़ा] निर्मल; लबालब ।

**नाबदान** - पु० [फ़ा] पनाला, गंदी नाली; मु०—में मुँह मारना - घृणित कार्य करना ।

**नाबूद** - वि० [फ़ा] बरबाद; नश्वर ।

**नाभ** - स्त्री० [हिं] ढोंढ़ी, नाभि ।

**नाभि** - स्त्री० [सं] पेट के बीचोबीच भौंरी की तरह का गड्ढा, ढोंढ़ी, तुंद-कूपी; पहिये का मध्य भाग; यौ० —कंटक, गोलक - उभरी हुई ढोंढ़ी; —च्छेदन - नाल काटने की क्रिया;— पाक - एक रोग जिसमें बच्चों की नाभि पक जाती है; —मूल - नाभि के बीच का भाग; —संबंध - एक ही उदर से या एक ही गोत्र में उत्पन्न होने का नाता ।

**नाम** - पु० [सं] व्यक्ति या समूह का बोधक शब्द; यश; आख्या; अभिधान; संज्ञा; यौ०—दार - प्रसिद्ध, नामी; —धराई - निंदा; —धाम - पता, ठिकाना; —धारी - नामवाला; —मात्र - अत्यल्प; —निर्देश - नाम का उल्लेख; —लेवा - नाम लेनेवाला; उत्तराधिकारी; —शेष - जिसका केवल नाम रह गया हो, मृत; —सत्य - गुण न होते हुए भी गुणद्योतक नाम का कथन; [त] ऊर्ध्व-पुंड्र विशेषकर वैष्णवों का; [फ़ा] प्रसिद्धि; धाक; इज़्ज़त; नस्ल : कुल; लांछन; यादगार; यौ० — आवर - प्रसिद्ध : —ए-ऐमाल - वह पत्र जिसपर किसीके अच्छे-बुरे सब कार्यों का उल्लेख हो; —ज़दगी - किसी काम के लिए चुनने या निश्चित करने की क्रिया; —निशान - चिन्ह; अवशेष;— वर - मशहूर; —वरी - शोहरत, कीर्ति; प्रसिद्धि : मु०— उठ जाना - अस्तित्व तक न रह जाना; —करना - प्रसिद्धि पाना; —का - नाममात्र के लिए; —डुबाना - कलंक लगाना; —धरना - दोषी ठहराना, बदनामी करना; —न लेना - स्मरण तक न करना; दूर भागना; —निकलना - किसी बात के लिए नाम प्रसिद्ध होना; —निकलवाना - अपकीर्ति फैलवाना; —बिकना - प्रसिद्धि के कारण लोक में अधिक सम्मान होना; —मिटना - अस्तित्व का एक

चिन्ह भी न रहना ; —लिखाना - भर्ती होना या करना ; —लेना - कृतज्ञता के भाव से स्मरण करना ; चर्चा चलाना ; —होना - ख्याति या यश फैलना ; नामोनिशान बाकी न रहना - एकदम बरबाद हो जाना; नामांकित - जिसपर नाम लिखा या खुदा हो ; प्रसिद्ध ; मशहूर ; नामांतर - एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम, पर्याय ।

**नामक** - वि० [सं] नामवाला ।

**नामा** - 1. पु० [फ़ा] पत्र ; ग्रन्थ ; **यौ०**—निगार - समाचार लिखनेवाला ; संवाद-दाता ,—वर - पत्रवाहक ; 2. वि० [सं] नामवाला, नामधारी ।

**नामावली** - स्त्री० [सं] नामों की पंक्ति ; नामों की सूची ; वह कपड़ा जिसपर चारों ओर भगवान का नाम छपा हुआ हो ।

**नामी** - वि० [सं] नामवाला ; प्रसिद्ध ; **यौ०** —गरामी, गिरानी - विख्यात, नामवर ।

**नामूस** - स्त्री० [फ़ा] प्रतिष्ठा ; लज्जा ; ग़ैरत ।

**नामूसी** - स्त्री० [फ़ा] बेइज्ज़ती ; बदनामी ।

**नामे-ख़ुदा** - [फ़ा] ईश्वर करे ; नज़र न लगे ( जैसे, 'वह चाँद-सा मुँह नामे-ख़ुदा और ही कुछ है ') ।

**नाम्ना** - क्रि० [सं] नामवाला, नामधारी ।

**नायँ** - 1. पु० [हिं] नाम ; 2. अव्य० नहीं ।

**नाय** - 1. पु० [स] नय, नीति ; उपाय, युक्ति ; नेता, अगुआ ; [त, मल] कुत्ता ; 2. स्त्री० [फ़ा] नरकट ; बाँसुरी ।

**नायक** - पु० [सं] नेता ; मुखिया ; स्वामी ; श्रेष्ठ पुरुष ; संगीत कला में निपुण पुरुष ।

**नायब** - पु० [अ] किसीकी ओर से काम करनेवाला ; मुनीम ; सहायक, सहकारी ।

**नायबी** - स्त्री० [अ] नायक का काम या पद ।

**नायाब** - वि० [फ़ा] बहुत बढ़िया ; अप्राप्य ।

**नायिका** - स्त्री० [स] रूप-गुणसंपन्न स्त्री ; नायक की पत्नी ; एक तरह की कस्तूरी ।

**नारंग** - पु० [सं] नारंगी का पेड़ या फल ; यमज ; प्राणी ; गाजर ।

**नारंगी** - 1. स्त्री० [फ़ा] एक मीठा रसीला फल ; नारंगी-सा रंग ; 2. वि० नारंगी रंग का ।

**नारंज** - पु० [फ़ा] नारंगी, संतरा ; कमला-नीबू ।

**नार** - 1. स्त्री० [हिं] गला, गरदन ; जुलाहों का एक औज़ार, ढरकी ; नाल ; नाला ; मोटा रस्सा ; नारी , [अ] आग ; 2. पु० [सं] नरसमूह ; पानी ; सोंठ , [त] पतला धागा विशेषकर केले के पेड़ के छिलके का ; मु० —नीची करना - लज्जा या संकोच आदि से सिर नीचा कर लेना ।

**नारक** - 1. वि० [स] नरकसंबंधी ; 2. पु० नरक में पड़ा हुआ जीव ।

**नारकी** - वि० [सं] पापी ; नरक जानेवाला ; नरक-भोगी ।

**नारजील** - पु० [फ़ा] नारियल ।

**नारना** - स० [हिं] थाह लगाना ; भाँपना, ताड़ना ।

**नारा** - 1. स्त्री० [सं] जल ; 2. पु० [हिं] किसी माँग या शिकायत की ओर ध्यान दिलाने के लिए की जानेवाली सामूहिक आवाज़ ; रक्षासूत्र ; इजारबंद ; नवजात शिशु की नाल ; पेट की अंतड़ी ; नाला ।

**नाराच** - पु० [स] लोहे का वह बाण जिसमें पाँच पंख रहते हैं ; चौबीस मात्राओं का एक छंद , [त० नाराश] निकृष्ट चीज़, मल ।

**नाराची** - स्त्री० [सं] सुनारों का काँटा छोटा नाराच ।

**नाराज़** - वि० [अ] नाख़ुश ; ख़फ़ा ।

**नाराज़गी, नाराज़ी** - [अ] क्रोध ; अप्रसन्नता ; ख़फ़गी ।

**नारि** - स्त्री० [हिं] नारी।

**नारिकेल** - पु० }
**नारिकेली** - स्त्री० } [सं] नारियल; नारियल के पानी के ख़मीर से बननेवाला एक मद्य।

**नारियल** - पु० [हिं] एक फल; नारियल का हुक्का।

**नारी** - 1. स्त्री० [सं] औरत; [हिं] हरिस में जुआ बाँधने की रस्सी, नाधा; नाड़ी; **यौ०**—तरंगक - स्त्रियों को फँसानेवाला पुरुष; —दूषण - सुरापान या दुर्जन-संसर्ग आदि स्त्रियों के दुर्गुण; —रत्न - अति गुणवती स्त्री; 2. वि० [अ] आगसंबंधी; दोज़ख की आग में जलने वाला; नारकी।

**नारू** - पु० [हिं] एक रोग जिसमें फुंसियों में से सूत सा लम्बा कीड़ा निकलता है, नहरुआ।

**नार्यतिक्त** - पु० [सं] चिरायता।

**नाल** - 1. स्त्री० [सं] कमल या कुमुद आदि फूलों की डंडी; पौधे का पोलापन; कांड; नली; बंदूक़ की नली; बच्चे की नाभि से लगी एक नाड़ी जो पैदा होने पर काट दी जाती है; 2. पु० हरताल; मूठ; नाला; कसरत करने के लिए बना हुआ भारी गोल पत्थर; जुए का अड्डा; **यौ०**— कटाई - बच्चों के नाल काटने की क्रिया; **मु०** कहीं पर नाल गड़ा होना - किसी स्थान के प्रति जन्म-भूमि की तरह प्रेम होना; [अ] अर्द्ध-चंद्राकार वह लोहा जो घोड़े की टाप या जूते की एँड़ी में लगाया जाता है; वह रुपया जिसे जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है; जुए का अड्डा; **यौ०**— बंद - नाल जड़नेवाला आदमी; —बंदी - नाल जड़ने का काम।

**नालकी** - स्त्री० [हिं] वह पालकी जिसपर दूल्हा बैठता है।

**नालाँ** - वि० [फ़ा] रोनेवाला; रोकर फ़रियाद करनेवाला।

**नाला** - पु० [हिं] जल-मार्ग; नहर; परनाला; रंगीन गंडेदार सूत; नारा; [फ़ा] रोकर की गयी प्रार्थना; शोर-गुल; **मु०** —खींचना - आह भरना; लम्बी साँस लेना।

**नालि** - स्त्री० [सं] कमल आदि की डंडी; एक प्रकार का शाक; नाड़ी; घटिका; पानी बहने का नाला।

**नालिक** - पु० [सं] कमल; भैंसा; एक तरह की बाँसुरी।

**नालिका** - स्त्री० [सं] छोटी नाल या डंठल; नाली; शिरा, नाड़ी; चमड़े का चाबुक; जुलाहे की सूत लपेटने की नली।

**नालिश** - स्त्री० [फ़ा] फ़रियाद; अभियोग।

**नाली** - स्त्री० [हिं] गंदा पानी निकलने का मार्ग, मोरी; रक्तवाहिनी शिरा।

**नालैन** - पु० [अ] जूतों का जोड़ा।

**नालौर** - वि० [हिं] कोई बात कहकर फिर उससे बदल जानेवाला; अपनी बात से मुकर जानेवाला।

**नाव** - स्त्री० [हिं] नौका; किश्ती; डोंगी; **यौ०** —घाट - नदी या झील आदि के किनारे पर नावों के ठहरने का घाट।

**नावक** - पु० [फ़ा] एक प्रकार का छोटा बाण; मधुमक्खी का डंक; नाविक।

**नावना** - स० [हिं] झुकाना, नवाना; फेंकना; गिराना; घुसाना।

**नावर, नावरी** - स्त्री० [हिं] नाव, नौका; नाव की एक क्रीड़ा।

**नावाँ** - पु० [हिं] वह रक़म जो किसीके नाम लिखी हो।

**नाविक** - पु० [सं] नाव खेनेवाला; माँझी, केवट, मल्लाह; नाव पर यात्रा करनेवाला।

**नाश** - 1. पु० [स] बरबादी ; ध्वंस, संहार ; त्याग ; लोप ; पलायन ; 2. स्त्री० [अ] ताबूत ; लाश ; सप्तर्षि ।

**नाशक, नाशकारी** - वि० [सं] नाश करनेवाला ; वध करनेवाला ; दूर करनेवाला।

**नाशना** - स० [हिं] नासना ।

**नाशपाति** - स्त्री० [सं] एक फल।

**नाशवान** - वि० [स] नश्वर, अनित्य ।

**नाशित** - वि० [स] जिसका नाश किया गया हो ।

**नाशिता** - पु० [अ] सुबह से भूखा रहने का भाव ; जलपान ।

**नाशी** - वि० [सं] नाश करनेवाला, नाशक; नष्ट होनेवाला, नश्वर ।

**नाश्ता** - पु० [फ़ा] जलपान, कलेवा ।

**नास** - 1. स्त्री० [हिं] नस्य, सुँघनी ; **यौ०** —दान - सुँघनी रखने की डिबिया ; 2. पु० नाश ।

**नासना** - स० [हिं] बरबाद करना ; मार डालना ; नष्ट करना, मिटा देना ।

**नासपाल** - पु० [फा] कच्चे अनार का छिलका ; एक तरह की आतिशबाज़ी ।

**नासह** - वि० [अ] नसीहत या उपदेश देनेवाला ।

**नासा** - स्त्री० [सं] नाक ; नथना ; द्वार के ऊपर लगी हुई लकड़ी ; हाथी की सूँड ; **यौ०**—छिद्र - नाक का छेद ; —ज्वर- नाक में फोड़ा निकलने से होनेवाला ज्वर ; —पुट - नथना ; —भेद - नाक का वह छेद जिसमें नथ पहनी जाती है ; —वंश - नाक की हड्डी ; —शोष - नाक का कफ सूखने का एक रोग ; —स्राव - सर्दी के कारण नाक से पानी बहना ।

**नासिका** - स्त्री० [सं] नाक ; हाथी की सूँड ; **यौ०** —चूर्ण - नस्य ; सुँघनी ।

**नासिख** - पु० [अ] लेखक ; नष्ट या रद्द करनेवाला ।

**नासिया** - पु० [फा] माथा ।

**नासिर** - वि० [अ] गद्य-लेखक ; सहायक ; विजेता ।

**नासीर** - 1. वि० [सं] आगे जानेवाला ; 2. पु० सेना का अग्रभाग ।

**नासूर** - पु० [अ] पुराना घाव या उसका छेद जिसमें से सदा मवाद बहता रहता है, कैन्सर ।

**नास्तिक** - पु० [सं] ईश्वर या परलोक आदि पर विश्वास न करनेवाला, आस्तिक का उलटा ।

**नास्तिक्य** - पु० [सं] नास्तिकता ।

**नाहू** - पु० [हिं] नाथ, स्वामी ; पति ; [सं] बंधन ; पाश ; पहिए की नाभि ।

**नाहट** - वि० [हिं] नटखट ।

**नाहर** - पु० [हिं] सिंह ; शेर ; **यौ०**— साँस - घोड़ों का दम फूलने का रोग ।

**नाहरू** - पु० [हिं] नहरुआ रोग ।

**नाहीं** - अव्य० [हिं] नहीं ।

**निंदक** - पु० [सं] निंदा या शिकायत करनेवाला ।

**निंदन** - पु० [सं] निंदा करने का काम ।

**निंदना** - स० [सं] निंदा करना ; बदनाम करना ।

**निंदनीय** - वि० [सं] निंदा करने लायक़ ; गर्हणीय ।

**निंदरिया, निंदिया** - स्त्री० [हिं] नींद ।

**निंदा** - स्त्री० [सं] शिकायत ; बदनामी ; **यौ०** —स्तुति - निंदा के बहाने स्तुति, व्याज-स्तुति ।

**निन्दाई** - स्त्री० [सं] निराई का काम ।

**निंदित** - वि० [सं] दूषित, बुरा ; जिसकी निन्दा की गयी हो ।

**निंद्य** - वि० [सं] निंदा के लायक़ ।

**निंब** - पु० [सं] नीम का पेड़।

**निंबू, निंबूक** - पु० [स] कागज़ी नींबू।

**निंबार्क** - पु० [सं] एक वैष्णव-सम्प्रदाय; निंबादित्य।

**निः** - अव्य० [स] एक उपसर्ग जो समूह, घनता, आदेश, कौशल, अपमान आदि की विशेषता बताता है; **यौ०**—शंक - निर्भय, निडर; —शब्द - खामोश; शब्दरहित; —श्रेणी - लकड़ी की सीढ़ी; नसेनी; —श्रेयस - मोक्ष; मंगल; भक्ति; विज्ञान; —संदेह - बेशक; —सार - जिसमें कुछ सार न हो।

**निअर** - 1. अव्य० [हिं] समीप; पास; 2. वि० समान।

**निअराना** - 1. अ० [हिं] निकट या पास आना; 2. स० पास पहुँचाना।

**निआमत** - स्त्री० [अ] नियामत।

**निकंदन** - पु० [सं] नाश; संहार।

**निकट** - 1. अव्य० [स] पास; नज़दीक; 2. वि० समीपवर्ती; **यौ०**—वर्ती; समीप रहनेवाला; —स्थ - पास का, नज़दीकी।

**निकति, निकती** - स्त्री० [हिं] छोटा तराज़ू, काँटा।

**निकम्मा** - वि० [हि] जो एकदम बेकार हो; व्यर्थ का; जिससे कुछ भी काम न सधे।

**निकर** - पु० [सं] समूह, राशि; निधि; सार।

**निकर्षण** - पु० [सं] खेल-कूद का मैदान; घर के प्रवेशद्वार के पास का आँगन; पड़ोस; परती ज़मीन।

**निकलंक** - वि० [हिं] निर्दोष; लांछनरहित।

**निकल** - स्त्री० [अंग्रे] चाँदी-जैसी एक सफ़ेद धातु।

**निकलना** - अ० [हि] प्रगट होना; बहना; अलग होना; उत्पन्न होना; पार होना; उत्तीर्ण होना; स्थिर किया जाना; दूर होना; व्यक्त होना; सिद्ध होना; चलना; हल होना; **मु०** निकल जाना - चला जाना।

**निकलवाना** - स० [हिं] निकालने के लिए प्रेरित करना।

**निकष** - पु० [सं] कसौटी; सान जिसपर चढ़ाकर हथियार तेज़ करते हैं।

**निकषण** - पु० [स] कसौटी; सान पर चढ़ाने की क्रिया।

**निकाई** - स्त्री० [हिं] भलाई; बढ़ियापन; सुंदरता।

**निकाज** - वि० [हिं] निकम्मा; बेकार।

**निकाम** - 1. वि० [सं] पर्याप्त; अभीष्ट; इच्छुक; [हिं] बेकाम; खराब; 2. अव्य० अत्यंत; बहुत खूब।

**निकाय** - पु० [सं] समुदाय; सजातीय प्राणियों का समूह; वासस्थान; शरीर; लक्ष्य।

**निकाल** - पु० [हिं] कुश्ती का एक पेंच; पेंच का काट।

**निकाला** - पु० [हिं] निकालने की क्रिया; बहिष्कार; निर्वासन।

**निकाश** - पु० [स] क्षितिज; सामीप्य; सादृश्य; दृश्य।

**निकाष** - पु० [सं] खुरचना; रगड़ना।

**निकास** - पु० [हिं] निकलने या निकालने की क्रिया या भाव; द्वार; सामने की खुली जगह; उद्गम; निर्वाह का उपाय; वंश का मूल स्रोत; रक्षा की युक्ति; मैदान; मूलस्थान; बचाव का रास्ता; आय का रास्ता; आमदनी; **यौ०**—पत्र - जमा-खर्च और बचत के हिसाब की बही।

**निकासी** - स्त्री० [हिं] निकलने की क्रिया या भाव ; प्रस्थान ; आय ; वह रक़म जो मालगुज़ारी आदि बेबाक़ करने के बाद ज़मींदार के पास बचे ; माल की रवानगी या लदाई ; चुंगी ; खपत ।

**निकाह** - पु० [अ] मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह ; यौ०—नामा - वह पत्र जिसपर निकाह का और वधू को दिये जानेवाले धन का ज़िक्र हो ।

**निकाही** - वि० [अ] जिसके साथ निकाह हुआ हो (स्त्री) ; स्वेच्छा से विवाह करनेवाली ।

**निकियाना** - स० [हिं] नोचकर धज्जियाँ अलग करना ; बाल या पंख को नोचकर अलग करना ।

**निकुंच** - पु० [सं] ताली, कुंजी ।

**निकुंज** - पु० [सं] लता-गृह ।

**निकृत** - वि० [सं] बहिष्कृत ; तिरस्कृत ; पतित ; नीच ; वंचित ।

**निकृष्ट** - 1. वि० [सं] बुरा ; नीच ; तुच्छ ; 2. पु० सामीप्य ।

**निकेत, निकेतन** - पु० [सं] घर, मकान ।

**निको** - वि० [फ़ा] अच्छा, उत्तम ; नेक ।

**निकोई** - स्त्री० [फ़ा] नेकी ; उत्तमता ; सद्व्यवहार ।

**निकोसना** - स० [हिं] दाँत निकालना ; दाँत पीसना ।

**निकोहिश** - स्त्री० [फ़ा] लानत ; धमकी ।

**निकौनी** - स्त्री० [हिं] निराई ।

**निक्वण** - पु० [सं] वीणा-ध्वनि ।

**निक्षण** - पु० [सं] चुंबन ।

**निक्षिप्त** - वि० [सं] फेंका हुआ ; छोड़ा हुआ ; धरोहर रखा हुआ ।

**निक्षेप** - पु० [सं] फेंकने की क्रिया या भाव ; त्याग ; धरोहर ।

**निक्षेपण** - पु० [सं] फेंकना ; छोड़ना ; त्यागना ।

**निक्षेपी** - वि० [सं] फेंकनेवाला; छोड़नेवाला ; धरोहर रखनेवाला ।

**निक्षेप्ता** - पु० [सं] फेंकनेवाला ; धरोहर रखनेवाला ।

**निखंड** - वि० [हिं] मध्य ; ठीक ; संपूर्ण ।

**निखट्टर** - वि० [हिं] कठोर हृदयवाला ; निर्दय ।

**निखट्टू** - वि० [हिं] जमकर कोई काम-धंधा न करनेवाला ; निकम्मा ; आलसी ।

**निखरना** - अ० [हिं] निर्मल होना ; साफ़ हो जाना ; रौनक़ बढ़ना ।

**निखरी** - स्त्री० [हिं] पक्की रसोई, घृतपक्व, 'सखरी' का उलटा ।

**निखर्व** - वि० [सं] दस हज़ार करोड़ ; ठिंगना ।

**निखात** - वि० [सं] खोदा हुआ ; जमाया हुआ ।

**निखाद** - पु० [हिं] निषाद ।

**निखार** - पु० [हिं] स्वच्छता ; सजावट, शृंगार ।

**निखारना** - स० [हिं] साफ़ करना ; सजाना ; पवित्र करना ।

**निखारा** - पु० [हिं] शक्कर बनाने का कड़ाह ।

**निख़ालिस** - वि० [फ़ा] जिसमें मिलावट न हो, ख़ालिस, विशुद्ध ।

**निखिल** - वि० [स] सारा, संपूर्ण ।

**निखूटना** - अ० [हिं] घट जाना ; समाप्त हो जाना ।

**निखेधना** - स० [हिं] निषेध करना ।

**निखोट** - 1. वि० [हिं] निर्दोष ; साफ़ ; 2. अव्य० निश्शंक होकर ; खुल्लम-खुल्ला ।

**निखोड़ना** - स० [हिं] नाख़ून से नोचना ।

**निगड़** - स्त्री० [सं] हाथी के पैर बाँधने की ज़ंजीर ; शृंखला ।
**निगद** - पु० [सं] कथन ; ऊँचे स्वर से किया हुआ जप ।
**निगदित** - वि० [सं] कहा हुआ, कथित ।
**निगन्दा** - पु० [फ़ा] बढ़िया सिलाई ।
**निगम** - पु० [सं] वेद ; मार्ग, पथ ; हाट ; बाज़ार ; मेला ; व्यापार ; निश्चय ; कायस्थों का एक भेद ।
**निगमन** - पु० [सं] हेतु, उदाहरण और उपनय के उपरांत सिद्ध की गयी प्रतिज्ञा का पुनः कथन (न्याय) ; वेद के शब्दो का उद्धरण ; अंदर जाना ।
**निगर** - 1. पु० [स] भक्षण , भोजन ; होम का धुआँ ; 2. वि० [हिं] समस्त ।
**निगराँ** - वि० [फ़ा] निगरानी या देख-रेख करनेवाला ; प्रतीक्षा करनेवाला ।
**निगरा** - वि० [हिं] फल आदि का निख़ालिस रस जिसमें जल न मिलाया गया हो ।
**निगरानी** - स्त्री० [फ़ा] देख-रेख ; निरीक्षण ।
**निगलना** - स० [हिं] लील जाना ; घोट जाना; खा जाना; धन वगैरह हड़प जाना ।
**निगह** - स्त्री० [फ़ा] निगाह ; यौ०— वान - निगाह या देख-रेख रखनेवाला ; रक्षक ; —बानी - रक्षा, हिफ़ाज़त ।
**निगार** - 1. वि० [फ़ा] क़लम आदि से लिखने या बेल-बूटे बनानेवाला ; 2. पु० चित्र ; यौ०—ख़ाना - चित्रशाला ; [सं] निगलना ; भक्षण ।
**निगारिश** - स्त्री० [फ़ा] लिखने की क्रिया ; लेख ; बेल-बूटे बनाने की क्रिया ।
**निगारीं** - वि० [फ़ा] जिसने अपने हाथो व पैरों में मेंहदी लगायी हो ; प्यारा ।
**निगाली** - स्त्री० [हिं] हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं ।
**निगाह** - स्त्री० [फ़ा] दृष्टि ; मेहरबानी ; समझ ; अवलोकन ; ध्यान ; निरीक्षण ; मु०— रखना - देख-रेख रखना ; रखवाली करना ।
**निगुरा** - वि० [हिं] जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो, अदीक्षित ; गुरुहीन ।
**निगूढ़** - वि० [सं] अत्यंत गुप्त ; रहस्यपूर्ण ।
**निगूढ़ार्थ** - 1. वि० [स] जिसका असली अर्थ छिपा हो ; 2. पु० गुप्त अर्थ ; रहस्यार्थ ।
**निगृहीत** - वि० [सं] पकड़ा हुआ ; वश में लाया हुआ ; दबाया हुआ ; विवाद में पराजित ; जिसे दंड दिया गया हो ।
**निगोड़ा** - वि० [हिं] अभागा ; दुष्ट ; कमीना ; निकम्मा ।
**निग्रह** - पु० [सं] रोक ; दमन ; बंधन ; दंड ।
**निग्रही** - वि० [सं] रोकनेवाला ; दमन करनेवाला ।
**निघंटु** - पु० [सं] शब्दसंग्रह ; वैदिककोश ।
**निघटना** - 1. अ० [हिं] घटना ; बीतना ; 2. स० मिटाना ।
**निघरघट** - वि० [हिं] निर्लज्ज ; बिना घर-बार का ।
**निघात** - पु० [सं] आघात ; प्रहार ; अनुदात्त स्वर ।
**निचय** - पु० [सं] समूह ; संचय ; [हिं] निश्चय ।
**निचल** - वि० [हिं] निश्चल ।
**निचला** - वि० [हि] नीचेवाला ; अचल ।
**निचाई** - स्त्री० [हिं] नीचापन ; नीचे की ओर का विस्तार ।
**निचान** - स्त्री० [हिं] ढालुआँपन ; नीचापन ।
**निचिंत** - वि० [हिं] चितारहित, बेफ़िक्र ।
**निचित** - वि० [स] संचित ; पूरित ; तैयार ; व्याप्त ; ढेर लगाया हुआ ।
**निचुड़ना** - अ० [हिं] दबकर पानी या रस का निकलना ; सारहीन होना ।
**निचोड़** - पु० [हि] सार ; सारांश ।

**निचोड़ना, निचोना** - स० [हिं] दबाकर पानी या रस निकालना।
**निचोर** - पु० [हिं] निचोड़।
**निचोरना** - स० [हिं] निचोड़ना।
**निचोल** - पु० [स] स्त्रियों की ओढ़नी; बिछावन की चादर।
**निचोलक** - पु० [सं] चोली; कवच।
**निछक्का** - पु० [हिं] एकान्त समय या स्थान।
**निछत्र** - वि० [हिं] बिना छत्र का; बिना राजचिह्न का।
**निछल** - वि० [हिं] कपटरहित, छलहीन।
**निछावर** - स्त्री० [हिं] उत्सर्ग; उतारा; इनाम; नेग।
**निछोह, निछोही** - वि० [हिं] जिसे छोह या प्रेम न हो, निठुर।
**निज** - वि० [सं] अपना; खास; प्रधान; पक्का; यौ०— स्व - अपना भाग।
**निज़दात** - स्त्री० [फ़ा] अमानत की रक़म।
**निज़ाअ** - पु० [अ] झगड़ा; विवाद; शत्रुता।
**निज़ाई** - वि० [अ] झगड़े का; जिसके संबंध में झगड़ा हो।
**निज़ाबत** - स्त्री० [फ़ा] कुलीनता; शालीनता।
**निज़ाम** - पु० [अ] मोतियों या रत्नों की लड़ी; जड़; क्रम; इंतज़ाम; प्रबंध।
**निज़ामत** - स्त्री० [अ] व्यवस्था; नाज़िम का कार्य या पद।
**निज़ार** - वि० [फ़ा] दुबला; दरिद्र।
**निज़्द** - क्रि० [फ़ा] निकट; दृष्टि में।
**निझरना** - अ० [हिं] अच्छी तरह झड़ जाना; लगा न रहना; खाली हो जाना।
**निझाटना** - स० [हिं] झपटकर ले लेना।
**निझाना** - स० [हिं] लुक-छिपकर देखना।
**निटोल** - पु० [हिं] टोला, मुहल्ला।
**निठल्ला, निठल्लू** - वि० [हिं] निकम्मा; खाली; बेकार।
**निठाला** - पु० [हिं] खाली वक्त।
**निठुर** - वि० [हिं] कठोर हृदयवाला, निष्ठुर।
**निठुरई, निठुराई** - स्त्री० [हिं] निष्ठुरता।
**निठौर** - पु० [हिं] बुरी जगह; बुरी दशा; मु० —पड़ना - दुर्दशाग्रस्त होना।
**निडर** - वि० [हिं] निर्भय; साहसी, ढीठ।
**निढाल** - वि० [हिं] पस्त; थका-माँदा; सुस्त; उत्साहहीन।
**निढिल** - वि० [हिं] कसा हुआ; सख्त; कड़ा।
**नितंत** - क्रि० [हिं] नितांत।
**नितंब** - पु० [सं] चूतड़ (विशेषतः स्त्रियों का); कमर; कंधा; तट; पर्वत का ढालुवाँ किनारा।
**नित** - अव्य० [हिं] रोज़, प्रति दिन; सर्वदा, हमेशा।
**नितांत** - वि० [सं] अतिशय; बिलकुल।
**निति** - अव्य० [हिं] नित।
**नित्य** - वि० [सं] शाश्वत; जो सब दिन रहे; नित; यौ०—कर्म - प्रतिदिन किया जानेवाला कार्य;—गति - वायु, हवा;—नियम - कभी भंग न होनेवाला नियम; —प्रति - प्रतिदिन, हर रोज़;—मित्र - निस्स्वार्थ भाव से रक्षा करनेवाला मित्र; —युक्त - बराबर तत्पर रहनेवाला।
**नित्यदा, नित्यशः** - अव्य० [सं] प्रतिदिन; सर्वदा।
**निथरना** - अ० [हिं] पानी का छन जाना; मैल आदि के नीचे बैठ जाने से पानी का स्वच्छ होना।

**निथार** - पु० [हिं] घुली हुई चीज़ के नीचे बैठ जाने से निथरा हुआ साफ़ पानी ; निथरे हुए पानी के नीचे बैठी हुई चीज़ ।

**निथारना** - स० [हिं] पानी छानना ; वह क्रिया करना जिससे पानी के मैल आदि नीचे बैठ जायें ।

**निदरना** - स० [हिं] निरादर करना ; तुच्छ बनाना ।

**निदर्शक** - वि० [सं] दिखलानेवाला ; बतलानेवाला ।

**निदर्शन** - पु० [सं] प्रदर्शन ; उदाहरण, दृष्टांत ।

**निदलन** - पु० [हिं] निर्दलन ।

**निदहना** - स० [हिं] जलाना ।

**निदाघ** - पु० [सं] गरमी; घाम; ग्रीष्मकाल ; पसीना ; यौ०—कर - सूर्य ; मदार ।

**निदान** - 1. पु० [सं] आदि कारण ; रोग की पहचान ; अंत ; बछड़ा बाँधने की रस्सी ; 2. अव्य० [हिं] अंत में, आख़िर ।

**निदारुण** - वि० [सं] कठिन ; निर्दय ; असह्य ।

**निदिध्यास, निदिध्यासन** - पु० [सं] बार-बार स्मरण करना ।

**निदेश** - पु० [सं] शासन ; आज्ञा, हुक्म ; कथन ; सामीप्य ; निर्देश ।

**निदेशी** - वि० [सं] आज्ञा देनेवाला ।

**निद्रा** - स्त्री० [सं] नींद ।

**निद्रालु** - वि० [सं] निद्राशील; सोनेवाला ।

**निद्रित** - वि० [सं] सुप्त, सोया हुआ ।

**निधड़क** - क्रि० [हिं] बेरोक ; निशंक होकर ।

**निधन** - 1. पु० [सं] नाश ; समाप्ति ; मरण ; 2. वि० [हिं] दरिद्र ।

**निधनी** - वि० [हिं] ग़रीब ।

**निधान** - पु० [सं] आधार : निधि ; ख़ज़ाना ; संपत्ति ; स्थापन ; घर ।

**निधि** - स्त्री० [सं] गड़ा हुआ ख़ज़ाना ; समुद्र ; आधार ; घर ; नौ की संख्या ; कुबेर के नौ रत्न ।

**निनरा** - वि० [हिं] न्यारा ; अलग ।

**निनाद** - पु० [सं] आवाज़ ; रथ के पहिये की ध्वनि ।

**निनादित** - वि० [सं] ध्वनित ; शब्दित ।

**निनान** - 1. वि० [हिं] परले सिरे का ; बुरा ; 2. पु० अंत ; लक्षण ।

**निनानवे** - वि० [हिं] सौ से एक कम ; मु०— के फेर में पड़ना - धन बढ़ाने की चिंता में पड़ना ; सांसारिकता के चक्कर में उलझना ।

**निनार, निनारा** - वि० [हिं] अलग ; दूर ; हटा हुआ ।

**निनावाँ** - पु० [हिं] फुंसी की तरह के लाल दाने जो जीभ तथा मुँह के भीतरी भाग में निकल आते हैं ।

**निनौरा** - पु० [हिं] ननिहाल ।

**निपजना** - अ० [हिं] उत्पन्न होना ; उगना ; बढ़ना ; पकना ; तैयार होना ।

**निपट** - अव्य० [हिं] निरा ; केवल ; शुद्ध ; एकदम ; बिलकुल ।

**निपटना** - अ० [हिं] निवृत्त होना ; समाप्त होना ।

**निपतन** - पु० [सं] अधःपतन ; गिराव ।

**निपाक** - पु० [सं] बहुत अधिक पक जाना ।

**निपात** - पु० [सं] पतन ; अधःपतन ; विनाश ; मृत्यु ।

**निपातना** - स० [हिं] गिराना ; मार गिराना ; नष्ट करना ।

**निपुड़ना** - अ० [हिं] (दाँतों का) दिखना ।

**निपुण** - वि० [सं] कुशल ; प्रवीण ; चतुर ; पटु ।

**निपुणता, निपुणाई** - स्त्री० [सं] दक्षता, कुशलता ।

**निपोड़ना** - स० [हिं] (दाँत) दिखाना।

**निफ़ाक़** - पु० [अ] भीतरी वैर या छल-कपट; शत्रुता।

**निफ़ाक़ता** - पु० [अ] कपटी।

**निफारना** - स० [हिं] आर-पार छेद करना; स्पष्ट करना।

**निफालन** - पु० [सं] अवलोकन।

**निबंध** - पु० [सं] बंधन; लिखित प्रबंध; लेख; गीत।

**निबंधन** - पु० [सं] बंधन; व्यवस्था; नियम; कर्तव्य; हेतु; कारण।

**निबटना** - अ० [हिं] छुट्टी पाना; फ़ुरसत पाना; पूरा होना; तय होना; शौच आदि से निवृत्त होना।

**निबटाना** - स० [हिं] पूरा करना; चुकाना; तय करना।

**निबटारा, निबटाव, निबटेरा** - पु० [हिं] छुट्टी; समाप्ति; झगड़े का फ़ैसला; निबटने का भाव या कार्य।

**निबद्ध** - वि० [सं] बँधा हुआ; रुका हुआ; गुँथा हुआ; जड़ा हुआ।

**निबरना** - अ० [हिं] छूटना; मुक्त होना; पूरा होना; अलग होना।

**निबहना** - अ० [हिं] पार पाना; बचना; पालन या रक्षा होना; पूरा होना।

**निबाह** - पु० [हिं] गुज़ारा, निर्वाह; पालन; रक्षा; पूर्ति।

**निबाहक** - वि० [हिं] निर्वाह करनेवाला।

**निबाहना** - स० [हिं] निर्वाह करना; पूरा करना; निरंतर साधना करना।

**निबिड़** - वि० [सं] निविड़; घना; कठिन।

**निबुकना** - अ० [हिं] छुटकारा पाना।

**निबेड़ना** - स० [हिं] छुड़ाना; छाँटना; चुनना; सुलझाना; निबटाना; छोड़ना; हटाना; पूरा करना।

**निबेड़ा** - पु० [हिं] छुटकारा; चुनाव; त्याग; समाप्ति; निर्णय।

**निबेरना** - स० [हिं] निबेड़ना।

**निबेरा** - पु० [हिं] निबेड़ा।

**निबौरी, निबौली** - स्त्री० [हिं] नीम का फल।

**निभ** - 1. पु० [सं] प्रकाश; व्याज; छल-कपट; 2. वि० प्रकाशवान; सदृश, समान।

**निभना** - अ० [हिं] पार पाना; निर्वाह होना; लगातार बना रहना।

**निभरमा** - वि० [हिं] जिसकी कलई खुल गयी हो; जिसका विश्वास न रह गया हो।

**निभाना** - स० [हिं] निर्वाह करना; बनाये रखना; ज़ारी रखना।

**निभाव, निभावन** - पु० [हिं] निर्वाह।

**निभृत** - वि० [सं] रखा हुआ; अटल; गुप्त; निर्जन; स्थिर; नम्र।

**निभ्रांत** - वि० [हिं] निर्भ्रान्त।

**निमंत्रण** - पु० [सं] बुलावा; न्योता।

**निमंत्रित** - वि० [सं] जो बुलाया गया हो; जिसे न्योता दिया गया हो।

**निम** - पु० [सं] कील; शलाका।

**निमकी** - स्त्री० [हिं] नींबू का अचार; घी में तली हुई मैदे की नमकीन टिकिया।

**निमकौड़ी** - स्त्री० [हिं] निबौली; नीम का बीज।

**निमग्न** - वि० [सं] डूबा हुआ; लीन।

**निमज्जन** - पु० [सं] डूबकर किया जानेवाला स्नान; अवगाहन।

**निमज्जना** - अ० [हिं] डूबना, ग़ोता लगाना; अवगाहन करना।

**निमज्जित** - वि० [सं] डूबा हुआ; स्नात, नहाया हुआ।

**निमद** - पु० [सं] स्पष्ट और मंद स्वर में किया जानेवाला उच्चारण ।

**निमाज़** - पु० [अ] ईश्वर की प्रार्थना, नमाज़; यौ०— बंद - कुश्ती का एक पेच ।

**निमाज़ी** - पु० [अ] जो नियमपूर्वक निमाज़ पढ़ता हो ; धार्मिक मुसलमान ।

**निमान** - पु० [सं] माप ; मूल्य ; नीची जगह ; जलाशय ।

**निमि** - पु० [सं] मिथिला के विदेहवंश के मूलपुरुष ।

**निमित्त** - पु० [सं] हेतु, कारण ; चिह्न ; लक्षण ; शकुन ; उद्देश्य, लक्ष्य ; यौ०— वध - बाँधने आदि के कारण होनेवाली (गाय की) मृत्यु ; —विद् - शकुन जाननेवाला ।

**निमित्तक** - वि० [स] किसी हेतु से होनेवाला ।

**निमिष** - पु० [सं] पलकों का गिरना ; पलक मारने-भर का समय, एक क्षण ; फूल का संकुचन ।

**निमीलन** - पु० [सं] पलक मारना ; मरण; खग्रासग्रहण ।

**निमीलित** - वि० [सं] मुँदा हुआ ; बंद (नेत्र) ; लुप्त ।

**निमुहाँ** - वि० [हिं] न बोलनेवाला, चुप रहनेवाला ।

**निमेष** - पु० [सं] निमिष ।

**निमोना** - पु० [हिं] चने या मटर के पिसे हुए दानों को भूनकर बनायी हुई रसेदार दाल ।

**निमौनी** - स्त्री० [हिं] ईख की कटाई का पहला दिन ।

**निम्न** - 1. वि० [सं] नीचा ; 2. पु० गहराई ; ढाल ; यौ०— गा - नदी ; **निम्नांकित** - नीचे लिखा हुआ ; **निम्नोन्नत** - विषम ; ऊबड़-खाबड़ ।

**नियंता** - पु० [सं] व्यवस्था करनेवाला ; विधायक ; शिक्षक ; शासक ।

**नियंत्रण** - पु० [सं] प्रतिबंधन ; नियमों में बाँधकर रखना ; वश में रखना ।

**नियंत्रित** - वि० [सं] नियम से बँधा हुआ ; जिसपर किसी प्रकार का प्रतिबंध हो ।

**नियत** - वि० [सं] बँधा हुआ ; स्थिर ; नियोजित ; मुक़र्रर, तैनात ; नियमित ।

**नियतात्मा** - वि० [सं] अपने आपको वश में रखनेवाला, संयमी ।

**नियति** - स्त्री० [सं] दैव ; भाग्य, अदृष्ट ; प्रकृति ; भवितव्यता ।

**नियम** - पु० [सं] पाबंदी ; दबाव ; परंपरा, दस्तूर ; व्यवस्था ; पद्धति ; शर्त ; संकल्प; प्रतिज्ञा ; व्रत ।

**नियमन** - पु० [सं] नियमबद्ध करने का कार्य ; शासन ।

**नियमित** - वि० [सं] क्रमबद्ध ; बाक़ायदा ; नियमबद्ध ; नियत ।

**नियमी** - पु० [सं] नियमो का पालन करनेवाला ।

**नियर, नियरे** - अव्य० [हिं] समीप, पास ।

**नियराई** - स्त्री० [हिं] निकटता, सामीप्य ।

**नियराना** - अ० [हिं] पास पहुँचना ।

**नियाज़** - स्त्री० [फा] कामना, इच्छा ; प्रेमप्रदर्शन ; दीनता ; बड़ों का प्रसाद और परिचय ; यौ०— मन्द - इच्छा या कामना रखनेवाला ; सेवक ।

**नियाज़ी** - वि० [फ़ा] प्रेमी ; मित्र ।

**नियाबत** - स्त्री० [फ़ा] स्थानापन्न होना ; प्रतिनिधित्व ।

**नियाम** - पु० [सं] नियम ; [फ़ा] तलवार की म्यान ।

**नियामक** - पु० [सं] नियम या व्यवस्था

करनेवाला ; विधायक ; अनुशासक ; दूर करनेवाला ; साथी ; मल्लाह ।

**नियामत** - स्त्री० [फ़ा] दुर्लभ पदार्थ ।

**नियामिका** - स्त्री० [सं] नियम करनेवाली ; व्यवस्थापिका ।

**नियार** - पु० [हिं] जौहरी या सुनार की दुकान का कूड़ा ।

**नियारा** - वि० [हिं] पृथक ; जुदा ; न्यारा ।

**नियुक्त** - वि० [सं] नियोजित ; लगाया हुआ ; मुक़र्रर ; प्रेरित ; स्थिर किया हुआ ।

**नियुक्ति** - स्त्री० [सं] मुक़र्ररी, तैनाती ।

**नियुत** - वि० [सं] एक लाख ; दस लाख ; लगा हुआ ।

**नियोक्ता** - पु० [सं] नियोजित करनेवाला; लगाने या जोतनेवाला ।

**नियोग** - पु० [सं] तैनाती ; प्रेरित करना ; आज्ञा ; उद्योग ; पति के नपुंसक या मृत होने की दशा में किसी अन्य गोत्रज पुरुष से संतानोत्पत्ति कराने की एक प्राचीन प्रथा ।

**नियोगी** - 1. वि० [सं] जो नियोजित किया गया हो ; 2. पु० कर्मसचिव ।

**नियोजक** - पु० [सं] नियोजित करनेवाला ।

**नियोजन** - पु० [सं] किसी काम में लगाना ; प्रेरणा ।

**नियोजित** - वि० [सं] तैनात ; प्रवृत्त किया हुआ ।

**निरंकुश** - वि० [सं] स्वेच्छाचारी ; मनमानी करनेवाला ।

**निरंग** - वि० [सं] केवल ; ख़ालिस ; जिसमें कुछ न हो ; अंगहीन ; [हिं] फीका ; बदरंग ; बिना रंग का ।

**निरंजन** - 1. वि० [सं] अंजनरहित ; दोष-रहित ; माया से निर्लिप्त ; 2. पुं० परमात्मा ।

**निरंजनी** - स्त्री० [सं] साधुओं का एक संप्रदाय ।

**निरंतर** - 1. वि० [सं] जो बराबर चला गया हो ; लगातार होनेवाला, स्थायी ; 2. क्रि० लगातार ।

**निरंध** - वि० [सं] भारी अंधा ; महामूर्ख ; बहुत अंधेरा ।

**निरंश** - वि० [सं] जिसे अपना भाग न मिला हो ।

**निरक्षर** - वि० [सं] जिसने एक अक्षर भी न पढ़ा हो, अनपढ़, मूर्ख ।

**निरखना** - स० [हिं] देखना, ताकना, अवलोकन करना ।

**निरगुन** - वि० [हिं] निर्गुण ।

**निरजल** - वि० [हिं] निर्जल ।

**निरजी** - स्त्री० [हिं] संगमर्मर पर नक़्क़ाशी करने की एक महीन टाँकी ।

**निरत** - वि० [सं] किसी काम में लगा हुआ ; तत्पर ; लीन, मशग़ूल ।

**निरति** - स्त्री० [सं] विशेष अनुराग, आसक्ति ।

**निरतिशय** - वि० [सं] असाधारण ; अद्वितीय ।

**निरधार** - पु० [हिं] निर्धारण ; निश्चय करने की क्रिया ।

**निरधारना** - स० [हिं] ठहराना, निश्चय करना; मन में धारण करना ; समझाना ।

**निरन्वय** - वि० [सं] निस्संतान ; असंबद्ध ; असंगत ; दृष्टि से परे ।

**निरपराध** - 1. वि० [सं] बेक़सूर, निर्दोष ; 2. क्रि० [हिं] बिना अपराध के ।

**निरपवाद** - वि० [सं] अपवादशून्य ; निर्दोष ; कभी अन्यथा न होनेवाला ।

**निरपाय** - वि० [सं] जिसका विनाश न हो ; चिरस्थायी ; बिना अपाय का ।

**निरपेक्ष** - वि० [सं] बेपरवाह ; अलग ; तटस्थ ; उदासीन ; बिना अपेक्षा का ।

**निरभिमान** - वि० [सं] गर्वशून्य, अभिमान-रहित ।

**निरभिलाष** - वि० [सं] निरीह ; जिसे किसी वस्तु की चाह न हो।

**निरभ्र** - वि० [सं] मेघशून्य, बिना बादल का।

**निरय** - पु० [सं] नरक, दोज़ख़।

**निरयण** - पु० [सं] ज्योतिष में एक तरह की गणना।

**निरर्थक** - वि० [सं] अर्थशून्य, बेमानी ; निष्फल।

**निरलस** - वि० [सं] आलस्यरहित।

**निरवच्छिन्न** - वि० [सं] निरंतर ; जिसका सिलसिला न टूटे।

**निरवद्य** - वि० [सं] निर्दोष ; उत्कृष्ट ; अज्ञानरहित।

**निरवधि** - वि० [सं] अपार ; निरंतर ; लगातार ; हमेशा।

**निरवयव** - वि० [सं] निराकार ; अंगरहित।

**निरवलंब** - वि० [सं] निराधार ; असहाय।

**निरवसाद** - वि० [सं] प्रसन्न, हृष्ट।

**निरव्यय** - वि० [सं] सुरक्षित ; निर्दोष ; पूर्णतः सफल।

**निरशन** - 1. पु० [सं] भोजन न करना, उपवास ; 2. वि० जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाय।

**निरस** - वि० [हिं] जिसमें रस न हो, नीरस ; रूखा ; विरक्त।

**निरसन** - पु० [सं] फेंकना, दूर हटाना ; ख़ारिज करना, रद्द करना ; निराकरण ; परिहार ; निकालना ; नाश ; वध।

**निरस्त** - वि० [सं] फेंका हुआ ; छोड़ा हुआ ; वर्जित ; रहित।

**निरस्त्र** - वि० [सं] बिना हथियार का ; निहत्था।

**निरहंकार** - वि० [सं] अभिमानरहित।

**निरा** - 1. वि० [हिं] विशुद्ध, ख़ालिस ; एकमात्र ; निपट ; 2. अव्य० एकदम ; केवल ; बिलकुल।

**निराई** - स्त्री० [हिं] निराने का काम ; निराने की मज़दूरी।

**निराक** - पु० [सं] पाचन-क्रिया ; पसीना ; बुरे कर्म का फल।

**निराकरण** - पु० [सं] अलग करना ; मिटाना; रद्द करना।

**निराकार** - वि० [सं] जिसका कोई आकार न हो, अमूर्त।

**निराग** - वि० [सं] पापरहित।

**निराट** - वि० [हिं] निरा ; कोरा ; एकमात्र।

**निराडंबर** - वि० [सं] ढोंगरहित ; बिना नगाड़े का।

**निरातंक** - वि० [सं] भयरहित ; नीरोग।

**निरादर** - पु० [सं] अपमान ; अनादर।

**निराधार** - वि० [सं] अवलंब या आश्रयरहित ; असहाय ; झूठ ; जो बिना अन्न-जल आदि के हो।

**निराधि** - वि० [सं] नीरोग ; चिंतारहित।

**निरानंद** - वि० [सं] आनंदशून्य।

**निराना** - स० [हिं] फसल के पौधों के आसपास के घास आदि को दूर करना।

**निरापद** - वि० [सं] जिसे कोई आपदा न हो ; जिससे किसी प्रकार की विपत्ति की संभावना न हो ; जहाँ अनर्थ या विपत्ति की आशंका न हो।

**निराबाध** - वि० [हिं] बाधारहित ; जिसके साथ छेड़-छाड़ न हो।

**निरामय** - वि० [सं] नीरोग, तंदुरुस्त।

**निरामिष** - वि० [सं] मांसरहित ; जो मांस न खाये ; वासनारहित।

**निरायास** - वि० [सं] सुकर, आसान।

**निरायुध** - वि० [सं] निरस्त्र, निहत्था।

**निरालंब** - वि० [सं] निराधार।

**निराला** - 1. पु० [हिं] एकांत स्थान ; 2. वि० विलक्षण ; अद्भुत ; अनुपम।

**निराश** - वि० [सं] आशारहित, हताश।

**निराशा** - स्त्री० [सं] नाउम्मीदी, आशा का अभाव।

**निराश्रय** - वि० [सं] असहाय; आश्रय-हीन।

**निरास** - 1. पु० [सं] दूर करना; निराकरण; खंडन; 2. वि० [हिं] निराश, उदास।

**निरासी** - वि० [हिं] उदास, बेरौनक़।

**निराहार** - वि० [सं] जिसने कुछ न खाया हो।

**निरिच्छ** - वि० [सं] जिसे कोई इच्छा न हो।

**निरीक्षक** - पु० [सं] देख-रेख करनेवाला; देखनेवाला।

**निरीक्षण** - पु० [सं] निगरानी; देखने की क्रिया, दर्शन।

**निरीह** - वि० [सं] जिसे किसी बात की चाह न हो; उदासीन, विरक्त; तटस्थ; शांतिप्रिय; सीधा-सादा।

**निरीहा** - स्त्री० [सं] इच्छा का अभाव, विरक्ति।

**निरुक्त** - 1. वि० [सं] निश्चित रूप से कहा हुआ; व्याख्या किया हुआ; नियुक्त; ठहराया हुआ; 2. पु० वेद का चौथा अंग।

**निरुक्ति** - स्त्री० [सं] ऐसी व्याख्या जिसमें प्रकृति, प्रत्यय आदि अवयवों का अर्थ समझाते हुए शब्दों का अर्थ स्पष्ट किया गया हो।

**निरुत्तर** - वि० [सं] लाजवाब; जो उत्तर न दे सके; जो क़ायल हो जाय।

**निरुत्साह** - 1. वि० [सं] जिसे उत्साह न हो; 2. पु० [हिं] उत्साह का अभाव।

**निरुद्देश्य** - वि० [सं] उद्देश्यरहित।

**निरुद्ध** - 1. वि० [सं] विशेष रूप से रोका या रुका हुआ; प्रतिबद्ध; 2. पु० चित्त की पाँच भूमियों में से एक (योग)।

**निरुद्यम** - 1. वि० [सं] जिसके पास कोई उद्यम या काम न हो; 2. पु० [हिं] उद्यम का अभाव।

**निरुद्यमी** - वि० [सं] बेकार, निकम्मा।

**निरुद्योग** - 1. वि० [सं] बेकार, निकम्मा; 2. पु० [हिं] बेकारी।

**निरुद्योगी** - वि० [सं] निकम्मा, बेकार।

**निरुद्वेग** - वि० [सं] उद्वेगरहित; शांत।

**निरुपद्रव** - वि० [सं] जिससे या जिसमें कोई उपद्रव न हो।

**निरुपद्रवी** - वि० [सं] जो उपद्रव न करे, शांत।

**निरुपम** - वि० [सं] बेजोड़, उपमारहित।

**निरुपयोग, निरुपयोगी** - वि० [सं] व्यर्थ; निरर्थक; जो किसी काम न आवे।

**निरुपाधि** - 1. वि० [सं] विशुद्ध; सच्चा; निष्कपट; बाधारहित; उपाधिरहित; 2. पु० ब्रह्म।

**निरुपाय** - वि० [सं] लाचार; जिसका कोई प्रतिकार न किया जा सके।

**निरुवरना** - अ० [हिं] सुलझना।

**निरुवारना** - स० [हिं] मुक्त करना; सुलझाना; तै करना।

**निरूढ़** - वि० [सं] अविवाहित; प्रसिद्ध।

**निरूढ़ा** - वि० [सं] अविवाहिता, क्वाँरी।

**निरूपक** - वि० [सं] निरूपण करनेवाला।

**निरूपण** - पु० [सं] प्रकाश; किसी विषय का विवेचनापूर्वक निर्णय, विचार।

**निरूपना** - स० [हिं] निश्चित करना।

**निरूपित** - वि० [सं] जिसका निरूपण किया गया हो।

**निरोग, निरोगी** - वि० [सं] रोगरहित; स्वस्थ, नीरोग।

**निरोध** - पु० [सं] रोक ; घेरा ; घेर लेने की क्रिया ।

**निरोधक, निरोधी** - वि० [सं] रोकनेवाला ।

**निर्ख़** - पु० [फ़ा] भाव, दर ; यौ०—नामा - वह पत्र जिसमें सब चीज़ों का निर्ख़ या भाव लिखा हो ; —बन्दी - भाव या दर निश्चित करने की क्रिया ।

**निर्ख़ी** - पु० [फ़ा] वह व्यक्ति जो निर्ख़ ठहराता है ।

**निर्गंध** - वि० [सं] जिसमें कोई गंध या बू न हो ।

**निर्गत** - वि० [सं] निकला हुआ ; बाहर आया हुआ ।

**निर्गम** - पु० [सं] निकास ; निकलने का मार्ग, द्वार ।

**निर्गमन** - पु० [सं] निकलना ; निकलने का मार्ग ।

**निर्गमना** - अ० [हिं] निकलना ; बाहर निकलना ।

**निर्गुण** - 1. वि० [सं] जिसमें कोई गुण न हो ; जिसमें कोई अच्छा गुण न हो ; बुरा ; ख़राब ; 2. पु० परब्रह्म, ईश्वर ।

**निर्गुन** - वि० [हिं] निर्गुण ।

**निर्गूढ़** - वि० [सं] अत्यंत गूढ़ ; बहुत गुप्त ।

**निर्ग्रन्थ** - 1. वि० [सं] असहाय ; विरक्त ; निष्फल ; 2. पु० बौद्ध या जैन साधु ।

**निर्घोष** - 1. पु० [सं] शब्द, आवाज़ ; 2. वि० शब्दरहित ।

**निर्जन** - वि० [सं] जहाँ कोई मनुष्य न हो ; सुनसान ; एकांत ।

**निर्जर** - 1. वि० [सं] सदा युवा बना रहनेवाला; 2. पु० देवता ; अमृत ।

**निर्जल** - 1. वि०[सं] बिना पानी का ; जिसमें जल तक नहीं ग्रहण किया जाये (व्रत) ; यौ० निर्जला एकादशी - जेठ सुदी की एकादशी ; 2. पु० मरुभूमि ।

**निर्जीव** - वि० [सं] बेजान ; अशक्त ।

**निर्झर** - पु० [सं] ऊँचे स्थान से निकला हुआ पानी का झरना ; सोता, चश्मा ।

**निर्झरी** - स्त्री० [सं] झरने से निकलनेवाली नदी ।

**निर्णय** - पु० [सं] निश्चय, निबटारा ।

**निर्णायक** - पु० [सं] निर्णय करनेवाला ।

**निर्णीत** - वि० [सं] निर्णय किया हुआ ।

**निर्दय, निर्दयी** - वि० [सं] जिसके हृदय में कुछ भी दया न हो, निष्ठुर, बेरहम ।

**निर्दयता** - स्त्री० [सं] बेरहमी, निष्ठुरता ।

**निर्दल** - वि० [सं] पत्रहीन ; दलबंदी से अलग ।

**निर्दलन** - पु० [सं] नाश या भंग करना ।

**निर्दिष्ट** - वि० [सं] जिसका निर्देश हो चुका हो ; निश्चय किया हुआ ।

**निर्देश** - पु० [सं] किसी पदार्थ को बतलाना ; निश्चित करना ; आज्ञा ; कथन ; ज़िक्र ।

**निर्देशक** - 1. वि० [सं] जो निर्देश करे ; 2. पु० वह व्यक्ति जिसके निर्देशानुसार चल-चित्रादि का निर्माण होता है, डायरेक्टर ।

**निर्दोष** - वि० [सं] जिसका दोष न हो ; निष्कलंक ।

**निर्द्वन्द्व** - वि० [सं] जिसका कोई द्वंद्वी या विरोध करनेवाला न हो ; जो राग-द्वेष आदि द्वंद्वों से परे हो ; बिना बाधा का ; स्वच्छंद ।

**निर्धन** - वि० [सं] ग़रीब ।

**निर्धर्म** - वि० [सं] धर्मरहित ; जो धर्म का पालन न करे ।

**निर्धार, निर्धारण** - पु० [सं] ठहराना या निश्चित करना ; निश्चय ; निर्णय ।

**निर्धारित** - वि० [सं] निश्चित किया हुआ ।

**निर्धूत** - वि० [सं] हिलाया हुआ ; परित्यक्त ; फेंका हुआ ।

**निर्धूम** - वि० [सं] धुएँ से रहित ।

**निर्निमित्त** - वि० [सं] अकारण, बिना वजह।

**निर्निमेष** - क्रि० [सं] एकटक, टकटकी लगाकर।

**निर्बंध** - 1. पु० [सं] रुकावट; अड़चन; ज़िद, हठ; आग्रह; 2. वि० बंधन-रहित।

**निर्बल** - वि० [सं] कमज़ोर।

**निर्बाध** - वि० [सं] प्रतिबंधरहित; निरुपद्रव; बाधारहित; एकान्त।

**निर्बीज** - वि० [सं] बीज या कारणरहित; नपुंसक।

**निर्बीजा** - स्त्री० [सं] किशमिश।

**निर्बोध** - वि० [स] अज्ञानी, नासमझ।

**निर्भय** - वि० [सं] निडर; निरापद।

**निर्भयता** - स्त्री० [स] निडरपन; निडर होने की अवस्था।

**निर्भर** - 1. वि० [सं] आश्रित; पूर्ण; भरा हुआ; युक्त; मिला हुआ; मुनहसर; 2. पु० बेगार में काम करनेवाला आदमी।

**निर्भर्त्सना** - स्त्री० [सं] अनिष्ट करने की धमकी; डाँट-डपट; तिरस्कार।

**निर्भीक** - वि० [सं] निडर।

**निर्भीकता** - स्त्री० [सं] निडर होने का भाव।

**निर्भ्रम** - 1. वि० [सं] भ्रमरहित; 2. क्रि० बेखटके; स्वच्छंद होकर।

**निर्भ्रान्त** - वि० [सं] भ्रमरहित।

**निर्मम** - वि० [सं] जिसे ममता न हो, निष्ठुर।

**निर्मल** - वि० [सं] मलरहित; वासना-रहित; स्वच्छ; पापरहित; पवित्र; निर्दोष।

**निर्माण** - पु० [सं] रचना; बनावट; बनाने का काम।

**निर्माता** - पु०, वि० [सं] निर्माण करने-वाला।

**निर्माना** - स० [हिं] रचना करना; उत्पन्न करना।

**निर्मार्जन** - पु० [सं] धोना, साफ़ करना।

**निर्माल्य** - पु० [सं] देवार्पित वस्तु।

**निर्मित** - वि० [सं] बनाया हुआ; रचित।

**निर्मुक्त** - वि० [सं] जो पूरी तौर से छुटकारा पा गया हो; जिसके लिए किसी प्रकार का बंधन न हो।

**निर्मुक्ति** - स्त्री० [सं] मुक्ति; छुटकारा।

**निर्मूल** - वि० [सं] बिना जड़ का; बिना आधार का; बिना कारण का।

**निर्मूलन** - पु० [सं] विनाश।

**निर्मेध** - वि० [सं] मूर्ख; बुद्धिहीन।

**निर्मोक** - पु० [सं] साँप की केंचुली; शरीर के ऊपर की खाल; कवच; आकाश।

**निर्मोल** - वि० [हिं] अमूल्य, जिसके मूल्य का अनुमान न हो सके।

**निर्मोह, निर्मोही** - वि० [स] जिसके मन में मोह या ममता न हो; दया से शून्य; निष्ठुर।

**निर्याण** - पु० [सं] निकलना; कूच; प्रस्थान; प्राण का निकलना; हाथी की आँख का कोना; मोक्ष; लोहा।

**निर्यात** - 1. वि० [सं] जो बाहर गया हो; 2. पु० बेचने के लिए बाहर भेजा जानेवाला माल; यौ०—कर - निर्यात पर लगाया जानेवाला कर।

**निर्यातन** - पु० [सं] बदला लेना; विनिमय; प्रतिदान; प्रतिकार; मार डालना; सताना।

**निर्यास** - पु० [सं] स्वतः या काटने पर वृक्ष आदि से निकलनेवाला रस, गोंद; काढ़ा।

**निर्यूथ** - वि० [सं] जो अपने दल से बिछुड़ गया हो।

**निर्लज्ज** - वि० [सं] बेशरम, बेहया ।
**निर्लिंग** - वि० [सं] जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो ।
**निर्लिप्त** - वि० [सं] जो आसक्त न हो; लज्जारहित ।
**निर्लेखन** - पु० [सं] किसी चीज़ पर का मैल आदि खुरचना ।
**निर्लेप** - वि० [सं] निर्लिप्त ; आसक्तिरहित, उदासीन ; निस्संग; निष्पाप ; कलईरहित ।
**निर्लोभ, निर्लोभी** - वि० [सं] जिसे लोभ न हो ।
**निर्वंश** - वि० [सं] जिसका वंश विच्छिन्न हो गया हो ; निःसंतान ।
**निर्वचन** - 1. वि० [सं] मौन ; आपत्ति-रहित; निर्दोष; 2. पु० निरुक्ति; कहावत; व्याख्या ; शब्दसूची ।
**निर्वचनीय** - वि० [सं] निर्वचन करने योग्य; जो लक्षण आदि के द्वारा समझाया जा सके ।
**निर्वपण** - पु० [सं] पितृतर्पण ; दान ; अन्न आदि का बाँटना ।
**निर्वर्तन** - पु० [सं] निष्पत्ति ; समाप्ति ।
**निर्वर्तित** - वि० [सं] निष्पन्न ; समाप्त ।
**निर्वहण** - पु० [सं] समाप्ति; निर्वाह; नाटक की प्रस्तुत कथा की समाप्ति ।
**निर्वाचक** - पु० [सं] निर्वाचन करनेवाला; वह जिसे मताधिकार प्राप्त हो ।
**निर्वाचन** - पु० [सं] चुनाव ।
**निर्वाचित** - वि० [सं] वोट द्वारा चुना गया ।
**निर्वाच्य** - वि० [सं] न कहने योग्य ; जिसपर आपत्ति न की जा सके ।
**निर्वाण** - 1. वि० [सं] बुझा हुआ (दीपक, अग्नि आदि); मुक्त ; चाँद ; 2. पु० मोक्ष ; शांति ; संगम ।
**निर्वात** - वि० [सं] जहाँ *हवा न हो* ; स्थिर ; वायु से रक्षित ; शांत
**निर्वाद** - पु० [सं] लोकनिन्दा ; अवज्ञा ; अफवाह ।
**निर्वाप** - पु० [सं] दान ; वह दान जो पितरों के निमित्त किया जाय ।
**निर्वास, निर्वासन** - पु० [सं] देशनिकाला; विसर्जन ; वध ; प्रवास ।
**निर्वासित** - वि० [सं] नगर या देश से निकाला हुआ ।
**निर्वाह** - पु० [सं] निबाह ; पालन ; समाप्ति ।
**निर्वाहन** - पु० [सं] निभाना ।
**निर्विकल्प** - वि० [सं] विकल्प या परिवर्तन-आदि से रहित ; स्थिर ।
**निर्विकार** - वि० [सं] विकार या परिवर्तन-शून्य ; उदासीन ।
**निर्विकास** - वि० [सं] अविकसित ।
**निर्विघ्न** - 1. वि० [सं] विघ्न-बाधारहित; 2. क्रि० बिना किसी बाधा के ।
**निर्विरोध** - 1. वि० [सं] विरोधरहित; 2. क्रि० बिना विरोध के ।
**निर्विवाद** - वि० [सं] विवादरहित ; बिना झगड़े-बखेड़े का ।
**निर्विशेष** - वि० [सं] समान; सदा एक रूप में रहनेवाला ।
**निर्विषय** - वि० [सं] घर से निकाला हुआ ।
**निर्विष्ट** - वि० [सं] जो भोग चुका हो ; जो वेतन पा चुका हो ; जिसका विवाह हो चुका हो ।
**निर्वीज** - वि० [सं] निर्बीज ।
**निर्वीजा** - स्त्री० [सं] निर्बीजा ।
**निर्वीर** - वि० [सं] वीरविहीन ।
**निर्वीर्य** - वि० [सं] कमज़ोर ; निस्तेज ; निर्बल ; नपुंसक ।
**निर्वृति** - स्त्री० [सं] सुख ; मोक्ष ।
**निर्वृत्त** - वि० [सं] जो पूरा किया जा चुका हो ; निष्पन्न ।
**निर्वृत्ति** - स्त्री० [सं] निष्पत्ति ।

**निर्वेग** - वि० [सं] वेगरहित ; शांत ।

**निर्वेद** - पु० [सं] अपने प्रति अवज्ञा ; निमित्त ; शान्तरस का एक स्थायी भाव ; वैराग्य ; खेद, दुःख ; अनुताप ।

**निर्वेष्टन** - पु० [सं] सूत लपेटने की वह नली जो करघे में लगी रहती है ।

**निर्वैर** - वि० [स] द्वेषशून्य ।

**निर्व्यलीक, निर्व्याज** - वि० [सं] निष्कपट, छलरहित ; सच्चा ।

**निर्व्याधि** - वि० [सं] नीरोग ।

**निर्व्यापार** - वि० [सं] बेकार ; गतिहीन ।

**निर्हेतु** - वि० [सं] बिना कारण ; निस्वार्थ ।

**निलजई** - स्त्री० [हिं] निर्लज्जता, बेहयाई ।

**निलय** - पु० [सं] मकान ; घर ; स्थान, जगह ; घोंसला ; लोप, अदर्शन ।

**निलयन** - पु० [सं] बसेरा लेना ; आश्रय-स्थल ; बाहर जाना ।

**निलाम** - पु० [हिं] नीलाम ।

**निलीन** - वि० [सं] बहुत अधिक लीन ; पिघला हुआ ; छिपा हुआ ; नष्ट ।

**निवचन** - पु० [सं] बराबर कहते जाना ।

**निवड़िया** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की नाव ।

**निवपन** - पु० [सं] बोने के लिए अन्न बिखेरना, बोने की क्रिया ; पितरों आदि के लिए किया जानेवाला दान ।

**निवर्तक** - वि० [सं] लौटनेवाला ; रुकने-वाला ; दूर करनेवाला ।

**निवर्तन** - पु० [सं] रोकना ; निवारण ; ज़मीन की एक पुरानी नाप, बीघा ।

**निवसन** - पु० [सं] गृह ; वासस्थान ; वस्त्र ।

**निवसना** - अ० [हिं] रहना, निवास करना ।

**निवह** - पु० [सं] समूह ; सात वायुओं में से एक ।

**निवाज** - वि० [फ़ा] कृपा करनेवाला ।

**निवाजना** - स० [हिं] अनुग्रह करना ; कृपापात्र बनाना ।

**निवाड़** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का धान ; निवारण ; एक तरह की मोटी मूली ; मोटे सूत की बुनी हुई चौड़ी पट्टी ।

**निवात** - वि० [सं] जहाँ हवा न चलती हो ; सुरक्षित ।

**निवान** - पु० [हिं] पानी या कीचड़ से भरी रहनेवाली नीची ज़मीन ; जलाशय ।

**निवामिश** - स्त्री० [फ़ा] कृपा, मेहरबानी, दया ।

**निवार** - स्त्री० [हिं] निवाड़ ।

**निवारक** - वि० [सं] रोकनेवाला ; दूर करनेवाला ।

**निवारण** - पु० [सं] रोकना ; दूर करना ।

**निवारन** - पु० [हिं] निवारण ।

**निवारना** - स० [हिं] रोकना ; हटाना ; बचाना ; मना करना ।

**निवारी** - स्त्री० [हिं] जूही की जाति का एक पौधा ।

**निवाला** - पु० [फ़ा] ग्रास, कौर, नवाला ।

**निवास** - पु० [सं] रहने की क्रिया ; रहने का स्थान ; घर ; पोशाक ।

**निवासन** - पु० [सं] घर ; कुछ काल के लिए ठहरना ; कालयापन ।

**निवासी** - 1. वि० [सं] निवास करनेवाला, रहनेवाला ; 2. पु० बसनेवाला ।

**निवास्य** - वि० [सं] रहने योग्य ।

**निविड़** - वि० [सं] घना ; गहरा ; घोर ; कसा हुआ ; स्थूल ।

**निविष्ट** - वि० [सं] स्थित ; एकाग्र ; व्यवस्थित ।

**निवृत** - 1. पु० [सं] ओढ़नी ; उत्तरीय 2. वि० वेष्टित ।

**निवृत्त** - वि० [सं] लौटा हुआ ; जो भाग आया हो ; पूरा या समाप्त किया हुआ विरत ; हटाया हुआ ; जो अवकाश य छुटकारा पा चुका हो ; 2. पु० रागरहि मन ।

**निवृत्ति** - स्त्री० [सं] निवृत्त होने की क्रिया ; मुक्ति ; 'प्रवृत्ति' का उलटा ; समाप्ति ; हटना ; विश्राम ।

**निवेदक** - पु० [सं] निवेदन करनेवाला, प्रार्थी ।

**निवेदन** - पु० [सं] प्रार्थना ; समर्पण ; किसीसे कुछ कहना ।

**निवेदित** - वि० [सं] चढ़ाया हुआ ; अर्पित किया हुआ ; कहा हुआ ; सुनाया हुआ ।

**निवेरना** - स० [हिं] निबटाना ; ख़तम करना ; हटाना ।

**निवेरा** - वि० [हिं] चुना हुआ ; नवीन ; अद्भुत ।

**निवेश** - पु० [सं] विवाह ; शिविर ; डेरा ; आसन ; स्थापन ; प्रवेश ; घर ।

**निवेशन** - पु० [सं] स्थापन ; गृह ; नगर ; तंबू ; घोंसला ।

**निवेष्ट** - पु० [सं] आवरण ; ढकने का कपड़ा ।

**निशब्द** - वि० [सं] चुप, मौन ।

**निशंक** - वि० [सं] निडर ; शंकारहित ।

**निशस्त** - स्त्री० [फ़ा] बैठने की क्रिया ; बैठक ; **यौ०**—गाह - बैठने का स्थान ; —बरख़ास्त - उठना-बैठना ; सज्जनो की मंडली में रहने की कला या तौर-तरीक़ा ।

**निशा** - स्त्री० [सं] रात ; हलदी ; मेष, वृषादि छह राशियाँ ; **यौ०**—कर - चंद्रमा ; शिव ; मुर्गा ; कपूर ; —केतु - चंद्रमा ; —गृह - शयनागार ; —चर - राक्षस ; गीदड़ ; उल्लू ; साँप ; चोर ; भूत-पिशाच ; —चरी - राक्षसी ; कुलटा ; अभिसारिका ; —जल - ओस ; —पुष्प - कुमुद ; —मुख - संध्या-काल ; —मृग - गीदड़ ; —विहारी - राक्षस ; निशांत - प्रातःकाल ; बहुत शांत ; निशांध - रतौंधी रोगवाला ; निशावसान - तड़का, रात का अंतिम भाग ; निशोत्सर्ग - प्रभात, सवेरा ।

**निशात** - 1. स्त्री० [फ़ा] सुख, आनंद ; 2. वि० [सं] सान पर चढ़ाया हुआ ।

**निशान** - पु० [फ़ा] लक्ष्य ; चिह्न ; पताका ; **यौ०**— ची - झंडा लेकर चलनेवाला ; —पट्टी - हुलिया ; —बरदार - निशानची ।

**निशाना** - पु० [फ़ा] लक्ष्य ; **यौ०**— अन्दाज़ - वह जो बहुत ठीक निशाना लगाता हो : **मु०**—मारना या लगाना - लक्ष्य को दृष्टि में रखकर अस्त्र आदि चलाना ; —साधना - निशाना मारने का अभ्यास करना ।

**निशानी** - स्त्री० [फ़ा] चिह्न ; यादगार ।

**निशि** - स्त्री० [सं] रात ; **यौ०**—दिन, वासर - रात-दिन ; हमेशा ।

**निशित** - 1. पु० [सं] लोहा ; 2. वि० चोखा ; तेज़ ; जो सान पर चढ़ा हुआ हो ।

**निशीथ** - पु० [सं] रात ; आधी रात ।

**निशीथिनी** - स्त्री० [सं] रात ।

**निशुंभ** - पु० [सं] वध ; हिंसा ; एक असुर ।

**निशुंभन** - पु० [सं] मारना ; वध करना ।

**निश्चय** - पु० [सं] निःसंशय ज्ञान ; निर्णय ; पक्का विचार ; विश्वास ।

**निश्चयात्मक** - वि० [सं] संदेहरहित ।

**निश्चल** - वि० [सं] स्थिर ; जो चल न हो ।

**निश्चलता** - स्त्री० [सं] स्थिरता ; दृढ़ता ।

**निश्चायक** - पु० [सं] निश्चित करनेवाला ; निर्णायक ।

**निश्चित** - वि० [सं] बेफ़िक्र, चिन्तारहित ।

**निश्चिंतई** - स्त्री० [हिं] बेफिक्री।
**निश्चित** - वि० [सं] तै किया हुआ ; पक्का।
**निश्चेतन** - वि० [सं] संज्ञाहीन, बेहोश।
**निश्चेष्ट** - वि० [सं] बेहोश ; स्थिर ; चेष्टा-रहित ; अचेत।
**निश्छल** - वि० [सं] सीधा-सादा ; सरल-चित्त ; निष्कपट।
**निश्छाय** - वि० [सं] छायारहित।
**निश्रेणी** - स्त्री० [सं] सीढ़ी ; मुक्ति ; खजूर का पेड़।
**निश्रेयस** - पु० [सं] मोक्ष ; कल्याण ; दुःख का अत्यंत अभाव।
**निश्वास** - पु० [सं] साँस।
**निश्शंक** - वि० [सं] संदेहरहित, निशंक।
**निश्शक्त** - वि० [सं] निर्बल।
**निश्शील** - वि० [सं] शीलरहित ; दुष्ट स्वभाव का।
**निश्शेष** - वि० [सं] जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो।
**निषंग** - पु० [सं] तूणीर, तरकस ; तलवार ; प्राचीन काल का एक बाजा ; विशेष आसक्ति।
**निषक्त** - वि० [सं] विशेष रूप से आसक्त।
**निषद** - वि० [सं] स्थित ; उपविष्ट ; सहारा लिया हुआ।
**निषाद** - पु० [सं] भारत की एक पुरानी जाति ; एक स्वर (संगीत का)।
**निषादी** - 1. पु० [सं] महावत ; 2. वि० बैठने या आराम करनेवाला।
**निषिद्ध** - वि० [सं] जिसके लिए मनाही हो ; खराब ; बुरा ; दूषित ; तुच्छ कोटि का।
**निषूदन** - 1. पु० [सं] नाश ; वध ; 2. वि० नाश करनेवाला ; मारनेवाला।
**निषेक** - पु० [सं] विशेष रूप से सींचना ; गर्भाधान ; टपकना ; गंदा पानी।
**निषेचन** - पु० [सं] छिड़कना ; सींचना।
**निषेध** - पु० [सं] मनाही ; बाधा ; रुकावट ; प्रतिबंध।
**निषेधक** - वि० [सं] निषेध करनेवाला।
**निष्कंटक** - वि० [सं] निर्विघ्न, बिना खटके का।
**निष्कंप** - वि० [सं] स्थिर, जो हिलता-डुलता न हो।
**निष्क** - पु० [सं] सोने का एक प्राचीन सिक्का ; दीनार ; सुवर्ण की एक प्राचीन तौल ; सोने का पात्र।
**निष्कपट** - वि० [सं] छलरहित, सीधा-सादा।
**निष्करुण** - वि० [सं] दयारहित, निष्ठुर, निर्दय।
**निष्कर्म** - वि० [सं] आसक्तिरहित होकर कर्म करनेवाला।
**निष्कर्ष** - पु० [सं] निश्चय ; सारांश ; नतीजा।
**निष्कलंक** - वि० [सं] निर्दोष।
**निष्कल** - 1. वि० [सं] निरवयव ; संपूर्ण ; क्षीण ; नष्टवीर्य ; कलारहित ; 2. पु० ब्रह्म ; आधार।
**निष्कषाय** - वि० [सं] विशुद्ध चित्तवाला।
**निष्काम** - वि० [सं] जो मनुष्य कामना, आसक्ति या इच्छा से शून्य हो ; जो (काम) बिना कामना या इच्छा के किया जाए ; निरीह।
**निष्कारण** - 1. वि० [सं] बेसबब, बिना कारण ; 2. क्रि० बिना किसी कारण के, व्यर्थ, वृथा ; 3. पु० हटाना।
**निष्कास** - पु० [सं] निकालने की क्रिया या भाव ; लोप ; प्रभात ; मकान का बरामदा।
**निष्कासन** - पु० [सं] निकालना, बाहर करना।
**निष्कासित** - वि० [सं] निकाला हुआ ; रखा हुआ ; नियुक्त ; विकसित।
**निष्कुट** - पु० [सं] घर से लगा हुआ बगीचा ; क्यारी ; रनिवास ; दरवाज़ा ; कोटर।

**निष्कुल** - वि० [सं] जिसके कुल में कोई न रह गया हो, निर्वंश।
**निष्कृत** - वि० [सं] निकाला हुआ; मुक्त; उपेक्षित; 2. पु० प्रायश्चित्त।
**निष्कृति** - स्त्री० [सं] छुटकारा; प्रायश्चित्त; उपेक्षा।
**निष्कृष्ट** - वि० [सं] निचोड़ कर निकाला हुआ; सारभूत।
**निष्क्रम** - 1. वि० [सं] बिना क्रम का, अक्रम; 2. पु० निष्क्रमण; जातिच्युत।
**निष्क्रमण** - पु० [सं] बाहर निकलना।
**निष्क्रय** - पु० [सं] ख़रीद; वेतन; भाड़ा; पुरस्कार; प्रतिफल; शक्ति।
**निष्क्रांत** - वि० [सं] निर्गत; जो चला गया हो।
**निष्क्रिय** - वि० [सं] निश्चेष्ट; कुछ भी काम-धाम नहीं करनेवाला; यौ०—प्रतिरोध - राज्य की ओर से होनेवाले दमन का प्रतिकार न कर उसकी अनुचित आज्ञा का उल्लंघन।
**निष्क्रियता** - स्त्री० [सं] निष्क्रिय होने का भाव।
**निष्ठ** - वि० [सं] स्थित, ठहरा हुआ; तत्पर; जिसमें किसीके प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।
**निष्ठा** - स्त्री० [सं] श्रद्धा; भक्ति; विश्वास; एकाग्रता; अनुराग; निश्चय; कौशल; यौ०—वान - जिसमें श्रद्धा-भक्ति हो।
**निष्ठित** - वि० [सं] दृढ़; कुशल; वृक्ष; निष्ठायुक्त।
**निष्ठुर** - वि० [सं] बेरहम; कठोर; कड़े दिल का।
**निष्ठुरता** - स्त्री० [सं] बेरहमी।
**निष्णात** - वि० [सं] किसी विषय का पूरा पंडित या जानकार।
**निष्पंद** - वि० [सं] जिसमें किसी प्रकार का कंपन न हो; गतिहीन; स्थिर।
**निष्पक्ष** - वि० [सं] जो किसीके पक्ष में न हो, पक्षपातरहित।
**निष्पत्ति** - स्त्री० [सं] परिपाक; मीमांसा; निर्धारण; उत्पत्ति; समाप्ति; निर्वाह; सिद्धि; अभिव्यक्ति।
**निष्पन्न** - वि० [सं] जो पूरा हो चुका हो; जो उत्पन्न हो चुका हो।
**निष्परिकर** - वि० [सं] जिसने कोई तैयारी न की हो।
**निष्परिग्रह** - 1. पु० [सं] कंथा आदि आवश्यक वस्तुओं से रहित साधु; 2. वि० अविवाहित; दान आदि न लेनेवाला।
**निष्पाप** - वि० [सं] पापरहित।
**निष्प्रभ** - वि० [सं] तेजरहित।
**निष्प्रयोजन** - 1. वि० [सं] स्वार्थशून्य; निःस्वार्थ; व्यर्थ; 2. क्रि० बिना मतलब का; व्यर्थ का।
**निष्प्राण** - वि० [सं] मरा हुआ।
**निष्फल** - 1. वि० [सं] व्यर्थ; निर्वीर्य; बिना फल का; 2. पु० पयाल।
**निसंक** - वि० [हिं] निश्शंक।
**निसंस** - वि० [हिं] क्रूर, बेरहम, नृशंस।
**निसंसना** - अ० [हिं] हाँफना।
**निस** - स्त्री० [हिं] निशा।
**निसतरना** - अ० [हिं] छुटकारा पाना।
**निसबत** - स्त्री० [अ] लगाव, संबंध; वास्ता; विवाह-संबंध की बात; तुलना।
**निसबती** - वि० [अ] संबंध रखनेवाला; यौ०—भाई - बहनोई।
**निसयाना** - वि० [हिं] बेहोश।
**निसरना** - अ० [हिं] बाहर आना; निकलना।
**निसर्ग** - पु० [सं] प्रकृति; स्वभाव; रूप; दान; सृष्टि; मलत्याग; विनिमय; यौ० —ज - प्राकृतिक; —भिन्न - स्वभाव से ही भिन्न; —सिद्ध - स्वाभाविक।

**निसहाय** - वि० [सं] निस्सहाय ।
**निसाँस** - 1. स्त्री० [हिं] लंबी साँस, निःश्वास ; 2. वि० बेहोश ।
**निसा** - स्त्री० [हिं] रात्रि, निशा ; **यौ०**—चर - निशाचर ।
**निसाद** - पु० [हिं] मेहतर, भंगी ; निषाद।
**निसान** - पु० [हिं] निशान ।
**निसाफ़** - पु० [हिं] इन्साफ़, न्याय ।
**निसार** - 1. पु० [सं] समुदाय, समूह ; [अ] निछावर ; 2. वि० निछावर किया हुआ ; सारहीन ।
**निसि** - स्त्री० [हिं] रात ; **यौ०** —चर - निशाचर ; —दिन - रात-दिन; सर्वदा ; —निसि - आधी रात, मध्य रात्रि ;—वासर - रात-दिन ; सदा ।
**निसियान** - पु० [अ] भूलना, याद न रखना ; भूल, ग़लती ।
**निसीठी** - वि० [हिं] सारहीन ; निस्सत्त्व ।
**निसूदक** - वि० [हिं] हिंसा करनेवाला, निषूदक ।
**निसूदन** - 1. पु० [हिं] मारना, वध करना; 2. वि० मारनेवाला ।
**निसृत** - वि० [सं] विशेष रूप से निकला हुआ या गया हुआ ।
**निसेनी, निसैनी** - स्त्री० [हिं] सीढ़ी, सोपान।
**निसोत** - 1. वि० [हिं] शुद्ध ; निरा ; 2. 2. स्त्री० निसोथ ।
**निसोथ** - स्त्री० [हिं] एक लता जिसकी जड़ और डंठल औषधि के काम आते हैं ।
**निस्तंतु** - वि० [सं] संतानहीन ।
**निस्तंद्र, निस्तंद्री** - वि० [सं] जागरूक ; आलस्यरहित ।
**निस्तत्त्व** - वि० [सं] तत्त्वरहित ।
**निस्तब्ध** - वि० [सं] जो हिलता-डुलता न हो ; ख़ामोश ; निश्चेष्ट ।
**निस्तरना** - अ० [हिं] निस्तार पाना, छुटकारा पाना ; उबरना ।
**निस्तल** - वि० [सं] तलरहित ; चंचल ।
**निस्तार** - पु० [सं] उद्धार ; छुटकारा ; पार होने का भाव ; अभीष्ट की प्राप्ति ; मोक्ष ।
**निस्तारना** - स० [हिं] छुड़ाना : उद्धार करना ; बचाना ।
**निस्तेज** - वि० [सं] तेजहीन, कांतिहीन ।
**निस्त्रप** - वि० [स] निर्लज्ज ।
**निस्पंद** - वि० [स] कंपनरहित ; स्थिर।
**निस्पृह** - वि० [सं] लोभरहित ; वासना-रहित ।
**निस्फ़** - वि० [अ] आधा ; **यौ०** निस्फ़ी बँटाई - वह बँटाई या विभाजन जिसमें खेत की आधी उपज ज़मींदार और आधी असामी लेता है, अधिया ।
**निस्यंद** - पु० [सं] क्षरण ; चूना ; परिणाम ; प्रगट करना ।
**निस्त्रव, निस्राव** - पु० [सं] भात का माँड़ ; चूने या बहने का भाव।
**निस्वन** - पु० [सं] शब्द ; आवाज़ ; बाण की सरसराहट ।
**निस्संकोच** - 1. वि० [सं] जिसमें संकोच या लज्जा न हो ; 2. क्रि० बिना किसी संकोच के ।
**निस्संग** - वि० [सं] संगरहित ; विषया-नुरागशून्य ।
**निस्संतान** - वि० [सं] जिसको कोई संतान या बाल-बच्चे न हों ।
**निस्संदेह** - 1. क्रि० [सं] बेशक ; 2. वि० जिसमें संदेह या शक न हो ।
**निस्सत्त्व** - वि० [सं] सत्त्वरहित ; असार ; शक्तिहीन ; तुच्छ ।
**निस्स्वार्थ** - वि० [सं] अपने हानि-लाभ के भाव से शून्य, स्वार्थरहित ।

**निस्सरण** - पु० [सं] निकलने की क्रिया; निकलने का मार्ग।

**निस्सार** - वि० [सं] असार; जिसमें कोई तत्त्व न हो।

**निस्सीम** - वि० [स] जिसकी कोई सीमा न हो, अपार; बहुत अधिक।

**निहंग** - वि० [हिं] जिसके साथ कोई न हो, अकेला; नंगा; बेशरम; **यौ०** —लाड़ला - जो दुलार के कारण उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।

**निहंता** - वि० [सं] मारनेवाला; नाशक।

**निहकामी** - वि० [हिं] निष्कामी।

**निहठा** - पु० [हिं] वह लकड़ी जिसपर रखकर बढ़ई कोई चीज़ गढ़ता है, ठीहा।

**निहत** - वि० [सं] घायल हुआ; मारा हुआ; संलग्न।

**निहत्था** - वि० [हिं] जिसके हाथ में कोई हथियार न हो।

**निहाँ** - वि० [फ़ा] छिपा हुआ।

**निहाई** - स्त्री० [हिं] सोनारों और लोहारों का एक औज़ार जिसपर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

**निहाद** - स्त्री० [फ़ा] मूल; असल; स्वभाव।

**निहानी** - स्त्री० [हि] एक प्रकार की रुखानी जिससे बारीक खुदाई का काम होता है।

**निहायत** - 1. अव्य० [अ] अत्यंत, बहुत; 2. स्त्री० हद, सीमा।

**निहार** - पु० [स] कुहरा; पाला; ओस; बरफ़।

**निहारना** - स० [हिं] ध्यान से देखना।

**निहाल** - पु० [फ़ा] जो खूब खुश और संतुष्ट हो; जिसका मनोरथ सफल हो चुका हो।

**निहालचा** - पु० [फ़ा] तोशक; गद्दा।

**निहाली** - स्त्री० [फ़ा] तोशक; लिहाफ़; निहाई।

**निहिचय** - पु० [हिं] निश्चय।

**निहित** - वि० [सं] स्थापित; रखा हुआ; सौंपा हुआ।

**निहीन** - 1. वि० [सं] नीच, अधम; 2. पु० नीच आदमी।

**निठुराई** - स्त्री० [हिं] निष्ठुरता, निठुराई।

**निहोरना** - स० [हि] प्रार्थना करना; मनाना; आभार स्वीकार करना।

**निहोरा** - पु० [हिं] प्रार्थना; कृपा; आश्रय; अनुग्रह; भरोसा।

**निह्नव** - पु० [सं] इनकार; वस्तुस्थिति को छिपाना; दुराव; शठता; अविश्वास।

**नींद** - स्त्री० [हिं] निद्रा; सोने की अवस्था; **मु०** —उचटना - नींद दूर हो जाना।

**नींदना** - स० [हिं] निंदा करना; निराना।

**नीक** - 1. पु० [सं] एक वृक्ष; 2. वि० [हि] उत्तम; अच्छा; 3. पु० भलाई; अच्छापन।

**नीका** - वि० [हिं] अच्छा; बढ़िया; भला।

**नीके** - क्रि० [हिं] अच्छी तरह, भली भाँति।

**नीको** - वि० [फ़ा] अच्छा; सुंदर **यौ०** —कार - अच्छे कर्म करनेवाला।

**नीकोई** - स्त्री० [फ़ा] अच्छाई; भलाई।

**नीग्रो** - पु० [अंग्रे] हब्शी, अफ्रीका का आदिनिवासी।

**नीच** - वि० [सं] तुच्छ; बुरा; अधम; **यौ०** — ऊँच - छोटा-बड़ा; भला-बुरा; उचित-अनुचित; —कमाई - गर्हित तरीक़े से उपार्जित धन; नीचाशय - क्षुद्र; तुच्छ विचारवाला।

**नीचा** - वि० [हिं] गहरा ; झुका हुआ ; जो ऊँचा न हो ; निम्न ; धीमा ; जाति, कर्म, गुण आदि की दृष्टि से न्यून ।

**नीचे** - क्रि० [हिं] नीचे की ओर ; ऊपर का उलटा ; न्यून ; अधीनता में ; **यौ०**—ऊपर - अस्तव्यस्त ; **मु०**—गिरना - पतन होना ; पछाड़ा जाना ; —लाना - कुश्ती में पटकना ; —से ऊपर तक - सिर से पाँव तक ।

**नीज़** - अव्य० [फ़ा] और ; भी ।

**नीठि** - 1. स्त्री० [हिं] अरुचि ; 2. अव्य० किसी तरह ; **मु०**—नीठि करके - किसी तरह ; कठिनाई से ।

**नीड़** - पु० [सं] घोसला ; आश्रय ; माँद ।

**नीत** - वि० [सं] ले जाया या पहुँचाया हुआ ; ग्रहण किया हुआ ।

**नीति** - स्त्री० [सं] व्यवहार की रीति ; उचित ठहराया हुआ आचार ; ले जाने की क्रिया ; चतुराई-भरी चाल ; औचित्य ; **यौ०**—मान - नीति के अनुसार आचरण करनेवाला ; बुद्धिमान् ; सदाचारी ; —कुशल, ज्ञ - नीति जाननेवाला ।

**नीध्र** - पु० [सं] चंद्रमा ; ओलती ; जंगल ; पहिये का घेरा ।

**नीप** - पु० [सं] कदंब का पेड़ या फूल ; पर्वत का निम्नभाग ।

**नीपजना** - अ० [हिं] उत्पन्न होना ; उन्नति करना ।

**नीबू** - पु० [हिं] खट्टे रसवाला एक प्रसिद्ध फल ; **यौ०** —निचोड़ - थोड़ा-सा संबंध जोड़कर बहुत कुछ लाभ उठानेवाला ।

**नीम** - 1. पु० [हिं] एक प्रसिद्ध पेड़ जिसका सब कुछ कड़ुवा होता है ; 2. वि० [फ़ा] आधा ; 3. पु० बीच, मध्य ; **यौ०**—आस्तीन, नीमास्तीन - आधी बाँह की कुर्ती ; —कश - जो (तीर या तलवार) आधा ही खींचा गया हो ; —खुर्दा - जूठा ; —चा - एक छोटी तलवार या कटारी ; —जाँ - अधमरा ; —टर - अधकचरा, जिसे पूरी जानकारी न हो ; —निगाह - आधी या तिरछी नज़र, कनखी ; —बज़ - आधा खुला और आधा बंद ; —बिस्मिल - अधमरा किया हुआ ; घायल ; —रज़ा - थोड़ी बहुत प्रसन्नता ; —राज़ी - जो आधा राज़ी हो गया हो ; —रोज़ - दोपहर ; **मु०**—हकीम ख़तरे जान - अधकचरे वैद्य के इलाज में रोगी की जान जाने का डर रहता है ।

**नीमन** - वि० [देश] सुंदर ; रुचिर ; ठीक ।

**नीमा** - 1. [फ़ा] बुरका ; ऊँचा जामा ; 2. वि० आधा ।

**नीयत** - स्त्री० [अ] उद्देश्य ; भीतरी भाव ; इरादा ; इच्छा ; **मु०**—पर हमला - बुराई का इल्ज़ाम लगाना ; —में फ़र्क़ आना - बुराई सूझना ।

**नीर** - पु० [सं] पानी, जल ; **यौ०**—क्षीर न्याय - सारग्राही वृत्ति ।

**नीरज** - 1. पु० [सं] कमल ; 2. वि० स्वच्छ ; धूलरहित ।

**नीरत** - वि० [सं] विरत ।

**नीरद** - 1. पु० [सं] जल देनेवाला, बादल ; 2. वि० बेदाँत का, अदंत ।

**नीरधि** - पु० [सं] समुद्र ।

**नीरव** - वि० [सं] शब्दरहित ।

**नीरस** - 1. वि० [सं] रसहीन ; सूखा ; फीका ; 2. पु० अनार ।

**नीराजन** - पु० [सं] आरती ।

**नीराजना** - अ० [हिं] आरती करना ; हथियारों की सफ़ाई करना ।

**नीरोग** - वि० [स] तंदुरुस्त, स्वस्थ ।

**नील** - 1. वि० [सं] गहरे आसमानी रंग का; 2. पु० नीला रंग; एक पर्वत; कुबेर की निधि; कलंक; वट का पेड़; मैना; चिन्ह; सौ खर्व की संख्या; **यौ०** —कंठ - शिव; मोर; गौरी नामक पक्षी; नीले कंठ और पंखोंवाला एक पक्षी जिसका विजया-दशमी के दिन दर्शन करना शुभ माना जाता है; —कमल - नीले रंग का कमल; —कांत - एक पहाड़ी चिड़िया; —गाय - गाय से कुछ मिलती-जुलती आकृतिवाला एक बनैला पशु; —ग्रीव - शिव; —च्छद - गरुड़; खजूर का पेड़; —तरु - नारियल का पेड़; —ताल - तमाल वृक्ष; —निलय - आकाश; —पंक - अंधकार; —पटल - घना काला आवरण; अंधे की आँख में की काली झिल्ली; —मृत्तिका - काली मिट्टी; —राजि - घना अंधकार; —लोहित - बैगनी; [फ़ा] एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है; **यौ०** —गर - नील बनानेवाला; —गूँ - नीले रंग का **मु०**—का टीका - लांछन, कलंक ।

**नीलम** - पु० [फ़ा] नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न, इंद्रनील ।

**नीलवती** - स्त्री० [हिं] चावल का एक भेद ।

**नीलांबर** - पु० [सं] नीला कपड़ा ।

**नीला** - 1. स्त्री० [सं] काली की एक शक्ति; नील का पौधा; एक तरह की काली मक्खी; 2. वि० नीले रंग का; आसमानी रंग का; 3. पु० कबूतर; नीलम; **यौ०** —थोथा - तूतिया; **मु०**— करना - बहुत अधिक मारना ।

**नीलाचल** - पु० [सं] नीलगिरि पर्वत; जगन्नाथजी के पास की एक पहाड़ी ।

**नीलाम** - पु० [पुर्त] बोली बोलकर बेचना; **मु०**— पर चढ़ना - बोली बोलकर बेचा जाना ।

**नीलामी** - वि० [हि] नीलाम में ख़रीदा हुआ; जो नीलाम किया जाये ।

**नीलारुण** - पु० [सं] उषा ।

**नीलिका** - स्त्री० [सं] नील का पौधा; एक नेत्ररोग; वायु या पित्त के प्रकोप से होनेवाला एक रोग ।

**नीलिमा** - स्त्री० [सं] नीलापन ।

**नीली** - स्त्री० [सं] नील का पौधा; एक प्रकार की मक्खी; एक राग; **यौ०**—राग - प्रगाढ़ और दृढ़ प्रेम; —संधान - नील का ख़मीर; —चाय - यज्ञ-कुश ।

**नीलोत्पल** - पु० [सं] नील कमल ।

**नीलोफ़र** - पु० [फ़ा] नील कमल; कुईं ।

**नीँव, नीव** - स्त्री० [हि] बुनियाद; मूल आधार; जिसपर दीवार की जोड़ाई होती है; **मु०** —देना आरंभ करना; —जमाना - जड़ मज़बूत करना; आधार दृढ़ करना; —पड़ना - आरंभ होना ।

**नीवाक** - पु० [सं] दुर्भिक्ष; दुर्भिक्षकाल में अन्न की बढ़ी हुई मांग ।

**नीवि, नीवी** - [सं] इज़ारबन्द; कमर में लपेटी हुई साड़ी की गाँठ; साड़ी, धोती।

**नीशार** - पु० [सं] ओढ़ने का गरम कपड़ा; मसहरी ।

**नीसू** - पु० [हिं] चारा या गन्ना काटने के काम का एक काठ का टुकड़ा; ठीहा ।

**नीहार** - पु० [सं] कुहासा; पाला; बर्फ़; **यौ०**—जल - ओस ।

**नीहारिका** - स्त्री० [सं] आकाश में धूएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाश-पुंज ।

**नुक़ता** - पु० [अ] बारीक या सूक्ष्म बात ; चुटकुला ; दोष ; बिंदु, बिंदी ; **यौ०**—गीरचीं - दोष दिखानेवाला ;—चीनी - दोष निकालने का काम ; छिद्रान्वेषण ; —परदाज़ - सुवक्ता ; —चीं - दोष ढूँढ़नेवाला ; —रस, शिनास - बुद्धिमान ; —संज - सुवक्ता ; कवि ।

**नुक़रई** - वि० [अ] चाँदी का ; रुपहला ; सफ़ेद ।

**नुक़रा** - 1. पु० [अ] चाँदी ; घोड़ों का सफ़ेद रंग ; 2. वि० सफ़ेद रंग का (घोड़ा) ।

**नुक़सान** - पु० [अ] कमी ; हानि ; यौ०—देह - नुक़सान पहुँचानेवाला ;—रसानी - नुक़सान पहुँचाने की क्रिया ।

**नुकाना** - 1. स० [हिं] छिपाना ; 2. अ० छिपना ।

**नुकीला** - वि० [फ़ा] जिसमें नोक निकली हो ; सुंदर ।

**नुक़ूल** - स्त्री० [अ] 'नक़ल' का बहु० ।

**नुक़ूश** - पु० [अ] 'नक़्श' का बहु० ।

**नुक्कड़** - पु० [हिं] नोक, सिरा ; छोर ; नाका ; निकला हुआ कोना ।

**नुक्का** - पु० [हिं] नोक ; **यौ०**—टोपी - लखनऊ में प्रचलित पतली दुपलिया टोपी ।

**नुक़्ता** - पु० [अ] नुक़ता ।

**नुक़्स** - पु० [अ] दोष, ख़राबी, बुराई ; क़सर ; कमी ।

**नुचना** - अ० [हिं] नोचा जाना ।

**नुचवाना** - स० [हिं] नोचने देना ।

**नुजबा** - पु० [अ] 'नजीब' का बहु० ।

**नुज़हत** - स्त्री० [अ] ख़ुशी ; सुख-भोग ; **यौ०**—गाह - आनंद-भोग या सैर का स्थान ।

**नुजूम** - पु० [अ] 'नज्म' का बहु० ; सितारे ; ज्योतिषशास्त्र ।

**नुजूमी** - पु० [अ] ज्योतिषी ।

**नुत** - वि० [सं] प्रशंसित ; वंदित ।

**नुति** - स्त्री० [सं] स्तुति, वंदना ; पूजा ।

**नुत्क़** - पु० [अ] बोलने की शक्ति ।

**नुत्फ़ा** - पु० [अ] वीर्य ; संतान ; **यौ०**—हराम - दोग़ला ; नीच ।

**नुदबा** - पु० [अ] मातम ; शोक ; शोक-सूचक शब्द ।

**नुदरत** - स्त्री० [अ] 'नादिर' होने का भाव ; अनोखापन ।

**नुनखरा** - वि० [हिं] खारा, नमकीन ।

**नुनना** - स० [हिं] तैयार फ़सल को काटना ।

**नुनाई** - स्त्री० [हिं] लावण्य, सुंदरता, लुनाई ।

**नुनेरा** - पु० [हिं] नमक बनाने का रोज़गार करनेवाला ।

**नुफ़ूज़** - पु० [अ] प्रचलित या ज़ारी होना ; घुसना ।

**नुफ़ूर** - वि० [अ] नफ़रत करनेवाला ; दूर रहनेवाला ।

**नुमा** - वि० [फ़ा] दिखायी पड़नेवाला (जैसे, ख़ुशनुमा) ; दिखानेवाला (जैसे, रहनुमा) ; समान (जैसे, गुंबदनुमा) ।

**नुमाइन्दा** - पु० [फ़ा] प्रतिनिधि ।

**नुमाइन्दगी** - स्त्री० [फ़ा] प्रतिनिधित्व ।

**नुमाइश** - स्त्री० [फ़ा] प्रदर्शन ; तड़क-भड़क ; प्रदर्शिनी ।

**नुमाइशी** - वि० [फ़ा] जो सिर्फ़ दिखाने के लिए हो ; जो किसी काम का नहीं हो ।

**नुमाई** - स्त्री० [फ़ा] दिखलाने की क्रिया, प्रदर्शन (जैसे, ख़ुदनुमाई) ।

**नुमायाँ** - वि० [फ़ा] प्रकट ।

**नुसख़ा** - पु० [अ] नुस्ख़ा ।
**नुसरत** - स्त्री० [अ] सहायता ; पक्ष का समर्थन ; विजय, जीत ।
**नुसार** - पु० [अ] निछावर किये हुए धन का बाँटा जाना ।
**नुस्ख़ा** - पु० [अ] चिकित्सक का लिखा हुआ पुर्ज़ा ; रोगविशेष के लिए निकाली गयी औषधि, योग ; **मु०**—बाँधना - नुस्ख़े में लिखी हुई दवाएँ देना ;—लिखना - रोगी को उसके अनुकूल नुस्ख़ा लिखकर देना ।
**नूतन** - वि० [सं] नया ; ताज़ा ; अनोखा ; विलक्षण ।
**नून** - पु० [हिं] नमक ; एक लता ; **मु०**—तेल-लकड़ी - गृहस्थी का सामान ; गृहस्थी का झंझट ।
**नूपुर** - पु० [सं] पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना , पैंजनी, घुँघरू ।
**नूर** - पु० [अ] प्रकाश ; कांति ; शोभा ; **यौ०**—उल-ऐन - आँखो की रोशनी ; बेटा ; —चश्म, नूरेचश्म - प्यारा पुत्र ; नेत्रों का प्रकाश ; पुत्र ; —जहाँ, नूरेजहाँ - सारे संसार को प्रकाशित करनेवाला प्रकाश ; —बाफ़ - जुलाहा ।
**नूरा** - 1. पु० [हिं] मिलकर लड़ी जानेवाली कुश्ती ; 2. वि० तेजस्वी ।
**नूरानी** - वि० [अ] चमकीला ; सुंदर ।
**नृ** - पु० [सं] मनुष्य ; शतरंज का मोहरा ; **यौ०**— कपाल - मनुष्य की खोपड़ी ; —पशु - पशुतुल्य मनुष्य ; महामूर्ख ; —मिथुन - स्त्री-पुरुष का जोड़ा ; —लोक - मर्त्यलोक ; —पति, पाल - राजा ।
**नृति** - स्त्री० [सं] नाच, नर्तन ।
**नृत्त** - पु० [सं] वह नाच जिसमें केवल अंगों का विक्षेप किया जाय ।
**नृत्य** - पु० [सं] ताल, लय तथा रस के अनुसार किया जानेवाला नाच ; **यौ०**—प्रिय - शिव ; मोर ; —शाला - नाच-घर ; —स्थान - रंगशाला ।
**नृप** - पु० [सं] राजा ; **यौ०**—कंद - लाल प्याज ; —गृह - राजभवन ; —नीति - राजनीति ; —पथ - मुख्य मार्ग ; राज-मार्ग ; —मान - राजाओं के भोजन के समय बजाया जानेवाला एक बाजा ;—शासन - राजाज्ञा ; नृपांश - राजकर, उपज का छठा या आठवाँ भाग; नृपामय - राजरोग, यक्ष्मा ; नृपोचित - जो राजा के अनुरूप हो ; काला उड़द ।
**ने** - प्रत्य० [हिं] सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता का विभक्ति-प्रत्यय ।
**नेउला** - पु० [हिं] नेवला ।
**नेक** - 1. वि० [फ़ा] भला ; उत्तम ; शिष्ट, सज्जन ; **यौ०**— अंजाम - जिसका परिणाम भला हो ; —अंदेश - हितैषी ; —क़दम - जिसका आगमन शुभ हो ; —ख़्वाह - स्वामिभक्त ; शुभचिंतक ; —चलन - सदाचारी ; —चलनी - सदाचार ; भलमनसाहत ; —तरीन - बहुत अच्छा ; अति उत्तम ; —दिल - अच्छी नीयतवाला ; —नाम - यशस्वी ; —नामी - नामवरी, कीर्ति ; —नीयत - शुभ संकल्पवाला ; उत्तम विचार का ; —नीयती - भलमनसाहत ; ईमानदारी ; —बख़्त - भाग्यवान् ; सुशील ; —मंज़र - ख़ूबसूरत ; सुंदर ; 2. क्रि० थोड़ा, ज़रा ।
**नेकी** - स्त्री० [फ़ा] भलाई ; भलमनसाहत ; उपकार ; **यौ०** —बदी - भलाई-बुराई ; **मु०** —और पूछ-पूछ - किसीका उपकार करने के लिए उससे पूछने की क्या आवश्यकता है ?

**नेग** - पु० [हिं] वह धन व ज़ेवर आदि जो विवाहादि मांगलिक अवसरों पर सगे-संबंधियों तथा पौनियों में बाँटे जाते हैं ; यौ०—चार, जोग - नेग की रस्म ।

**नेगटी** - पु० [हिं] नेग या प्रथा का पालन करनेवाला ।

**नेगी** - पु० [हिं] नेग पानेवाला ।

**नेजक** - पु० [सं] धोबी ।

**नेटा** - पु० [हिं] नाक के रास्ते निकलनेवाला कफ या मल ; मु०— बहना - मैला-कुचैला रहना ।

**नेड़े** - अव्य० [हिं] निकट, समीप ।

**नेत** - पु० [हिं] निश्चय, ठहराव ; व्यवस्था, प्रबंध ; मथानी की रस्सी ; एक गहना ।

**नेता** - पु० [सं] सरदार ; नायक ; स्वामी ; प्रवर्तक ; किसी काव्य का चरित्र-नायक ।

**नेति** - पु० [स] ब्रह्म या ईश्वर की अनंतता सूचित करनेवाला एक उपनिषदवाक्य जिसका अर्थ है 'अंत नहीं है'।

**नेती** - स्त्री० [हिं] मथानी की रस्सी; यौ०— धोती - हठयोग की एक क्रिया जिसमें पेट में कपड़ा डालकर आँतें साफ़ करते हैं ।

**नेत्र** - पु० [सं] आँख ; पेड़ की जड़ ; जटा ; नाड़ी ; रथ ; दो की संख्या ; यौ०— जल - आँसू ; —च्छद - पलक ; —पर्यन्त - आँख का कोना ; —पिंड - आँख का गोलक ; —बंद - आँख-मिचौनी ; —भाव - नृत्य में केवल आँखों की क्रिया द्वारा अभिव्यक्त किया जानेवाला भाव ; —मंडल - आँख का डेला ; —मल - आँख का कीचड़ ; —रंजन - काजल ; —रोम - बरौनी ; नेत्रांत - आँख का बाहरी कोना ।

**नेत्रिक** - पु० [सं] एक तरह की छोटी पिचकारी ; करछुल ।

**नेत्री** - स्त्री० [स] महिला सरदार ; राह बतलानेवाली ; नाड़ी : नदी ।

**नेनुआ, नेनुवा** - पु० [हि] घियातरोई ।

**नेप** - पु० [सं] पुरोहित ; जल ।

**नेफ़ा** - पु० [फ़ा] लहँगे या पायजामे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमें इज़ारबन्द पिरोया जाता है ।

**नेब** - पु० [हिं] मंत्री ; सहयोगी ।

**नेम** - 1. पु० [स] समय ; खंड ; प्रकार ; सायंकाल ; मूल ; नीव ; अन्त ; [हिं] नियम ; बँधी हुई बात जो न टले ; रीति, दस्तूर ; 2. वि० आधा ; यौ० — धरम - पूजा-पाठ ; व्रत-उपवास ।

**नेमत** - स्त्री० [फ़ा] दुर्लभ पदार्थ ; ईश्वर की देन ; धन ; स्वादिष्ट भोजन ; सुख ।

**नेमि** - स्त्री० [सं] पहिये का घेरा या चक्कर; कूएँ की जगत ; कूएँ की जमवट ; चरखी ; किनारे का हिस्सा ।

**नेमी** - वि० [हिं] नियम का पालन करनेवाला ; यौ० —धर्मी - नेम-धर्म से रहनेवाला ।

**नेरा** - अव्य० [हिं] पास, नज़दीक ।

**नेरुवा** - पु० [हिं] कोल्हू के नीचे की तेल बहने की नाली ।

**नेवजा** - पु० [फ़ा] चिलग़ोज़ा ।

**नेवतहरी** - पु० [हिं] न्योते में आये हुए लोग ।

**नेवता** - पु० [हिं] निमंत्रण, न्योता ।

**नेवर** - 1. पु० [हिं] नूपुर ; घुँघरू ; 2. वि० बुरा ; न्यून ।

**नेवला** - पु० [हिं] भूरे रंग का एक जंतु जो सर्पों को मारने में प्रवीण होता है ।

**नेवा** - 1. पु० [हिं] प्रथा ; कहावत ; 2. वि० समान, तुल्य ; ख़ामोश ।

**नेवार** - 1. स्त्री० [हि] निवार ; 2. पु० नेपाल में बसनेवाली वहाँ की एक पुरानी जाति ।

**नेवारी** - स्त्री० [हि] जूही या चमेली की जाति का एक छोटा सफ़ेद फूल, वन-मल्लिका ; नेवार जाति के लोगों की भाषा ।

**नेवाला** - पु० [फ़ा] निवाला, कौर ।

**नेश** - पु० [फ़ा] नोक ; डंक ; काँटा ; **यौ०** —ज़नी - डंक मारना ; निंदा या बुराई करना ; चुगली खाना ।

**नेशकर** - पु० [फ़ा] गन्ना, ईख, ऊख ।

**नेश्तर** - पु० [फ़ा] जख़्म चीरने का औज़ार, नश्तर ।

**नेस** - पु० [हि] जंगली जंतुओ के नुकीले दाँत ।

**नेसुहा** - पु० [हिं] ज़मीन में गाड़ा जानेवाला लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर गन्ना या चारा काटा जाता है, ठीहा ।

**नेस्त** - वि० [फ़ा] जिस का अस्तित्व न हो ; जो न हो ; **यौ०**—नाबूद - नष्ट-भ्रष्ट ।

**नेस्ती** - स्त्री० [फ़ा] न होना ; आलस्य ; बरबादी ।

**नेह** - पु० [हि] स्नेह, प्रेम ; तेल ; घी ।

**नेही** - वि० [हिं] प्रेमी, स्नेही ।

**नैःश्रेयस** - वि० [सं] कल्याणकारक ; मोक्ष-दायक ।

**नै** - 1. स्त्री० [फ़ा] बाँस की नली ; हुक्के की निगाली ; बाँसुरी ; [हि] नदी ; 2. पु० नय ।

**नैऋत** - पु० [सं] मूलनक्षत्र ; निशाचर ; पश्चिम-दक्षिण का कोण ।

**नैक** - 1. वि० [सं] बहुत ; 2. पु० विष्णु ; **यौ०** —चर - समूहचारी ।

**नैकट्य** - पु० [सं] निकटता, सामीप्य ।

**नैकू** - वि० [हिं] थोड़ा, ज़रा-सा ।

**नैगम** - 1. वि० [सं] निगमसंबंधी ; 2. पु० उपनिषद ; नीति ; साधन ; नागरिक ; व्यापारी ।

**नैचा** - पु० [फ़ा] हुक्के की नली, निगाली, नै ; **यौ०**—बंद - नैचा या निगाली बनानेवाला ; —बंदी - नैचा बनाने का काम ।

**नैची** - स्त्री० [हिं] मोट खींचते समय बैलों के बार-बार आने और लौटने के लिए बना हुआ ढालवाँ मार्ग ।

**नैतिक** - वि० [सं] नीति-युक्त ।

**नैदाघ** - 1. वि० [सं] निदाघसंबंधी, ग्रीष्म का ; 2. पु० ग्रीष्म ऋतु ।

**नैन** - पु० [हिं] नयन ; **यौ०**—सुख - एक तरह का चिकना सूती कपड़ा ।

**नैनू** - पु० [हिं] उभरे हुए बेल-बूटेवाला सूती कपड़ा ; मक्खन ।

**नैपुण, नैपुण्य** - पु० [सं] निपुणता ; चतुराई ; समग्रता ।

**नैमित्त** - वि० [सं] निमित्तसंबंधी ; निमित्त से उत्पन्न ।

**नैमित्तिक** - वि० [सं] जो किसी निमित्त या ख़ास उद्देश्य से किया जाए ।

**नैमेय** - पु० [सं] विनिमय, अदला-बदली ।

**नैयर** - पु० [अ] बहुत चमकीला सितारा ; **यौ०** नैयरे-असगर - चंद्रमा ; नैयरे-आज़म - सूर्य ।

**नैया** - स्त्री० [हिं] नाव ।

**नैयायिक** - पु० [सं] न्यायशास्त्र जाननेवाला ।

**नैरंग** - पु० [फ़ा] छल ; कपट ; धोखा ; **यौ०** —साज़ - धूर्त ; जादूगर ।

**नैरंगी** - स्त्री० [फ़ा] धोखेबाज़ी ।

**नैराश्य** - पु० [सं] निराशा का भाव, नाउम्मीदी ।

**नैरुक्त** - पु० [सं] निरुक्ति जाननेवाला ।

**नैर्गुण्य** पु० [सं] सत्त्व आदि गुणों से रहित होने का भाव।

**नैर्घृण्य** - पु० [सं] निर्दयता, निष्ठुरता

**नैवेद्य** - पु० [सं] वह भोग जो देवता को चढ़ाया जाता है।

**नैवेशिक** - पु० [सं] गृहस्थी का सामान।

**नैश, नैशिक** - वि० [सं] निशासंबंधी।

**नैष्कर्म्य** - पु० [स] निष्क्रियता ; आलस्य ; सभी कर्मों का त्याग : यौ०— सिद्धि - सब प्रकार के कर्मों से निवृत्ति।

**नैष्ठिक** - वि० [सं] निष्ठावान ; निश्चयात्मक ; स्थिर ; पारंगत ; उपनयनकाल से लेकर मरणकाल तक ब्रह्मचर्यपूर्वक रहनेवाला (ब्रह्मचारी)।

**नैष्ठुर्य** - पु० [सं] निर्दयता।

**नैसर्गिक** - वि० [सं] प्राकृतिक, स्वाभाविक, कुदरती।

**नैहर** - पु० [हिं] मायका, स्त्री के पिता का घर।

**नोइनी, नोई** - स्त्री० [हिं] दूध दुहते समय गाय की पिछली टाँगों में बाँधी जानेवाली रस्सी।

**नोक** - स्त्री० [फ़ा] सूक्ष्म अग्रभाग ; पतला सिरा ; यौ०— झोक - सजावट ; चुभनेवाली बात ; छेड़-छाड़ ; —दार - जिसमें नोक हो ; पैना।

**नोकना** - अ० [हि] ललचना ; आकृष्ट होना।

**नोका-झोंकी** - स्त्री० [हिं] छेड़छाड़ ; छींटाकशी ; झगड़ा ; विवाद।

**नोकीला** - वि० [हिं] नुकीला।

**नोके-ज़बाँ** - 1. स्त्री० [फ़ा] जीभ का अगला भाग ; 2. वि० कंठस्थ, बर-ज़बान।

**नोखा** - वि० [हिं] अद्‌भुत ; अनोखा।

**नोच** - स्त्री० [हिं] नोचने की क्रिया ; बलपूर्वक लेने का कार्य ; बहुत से लोगों का कई ओर से एक साथ कुछ मांगना ; यौ० —खसोट - लूट-पाट ; छीना-झपटी।

**नोचना** - स० [हिं] उखाड़ना ; खरोंचना ; यौ० नोचा-नोची - नोच-खसोट।

**नोचू** - वि० [हिं] बहुत नोचनेवाला।

**नोटिस** - स्त्री० [अंग्रे] सूचना ; विज्ञप्ति, इश्तहार।

**नोदन** - पु० [सं] कार्यविशेष में प्रवृत्त करना ; खंडन ; बैलों को हाँकने की छड़ी।

**नोदना** - स्त्री० [सं] प्रेरणा।

**नोन** - पु० [हिं] नमक ; यौ० —चा - नमकीन अचार ; नोनी ज़मीन ; —छी - लोनी मिट्टी।

**नोना** - 1. पु० [हिं] लोनी मिट्टी ; 2. वि० खारा ; सुंदर ; बढ़िया।

**नोनिया** - 1. पु० [हिं] लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति ; 2. स्त्री० एक तरह का साग।

**नोनी** - 1. स्त्री० [हिं] लोनी मिट्टी ; 2. वि० अच्छी ; सुंदर।

**नोल** - स्त्री० [फ़ा] चोंच।

**नोवना** - स० [हिं] दुहने के समय गाय की पिछली टाँगों को एक साथ बाँधना।

**नोश** - 1. वि० [फ़ा] पीनेवाला (जैसे, मै-नोश - शराब पीनेवाला); 2. पु० पीने की कोई बढ़िया चीज़ ; अमृत ; शहद ; ज़हरमोहरा ; यौ०—दारू - सर्प का विष नाश करनेवाला ज़हरमोहरा ; शराब।

**नोशी** - 1. वि० [फ़ा] मीठा ; 2. स्त्री० पीने की क्रिया, पान।

**नोहर** - वि० [हिं] दुष्प्राप्य ; अपूर्व ; अद्‌भुत।

**नौ** - 1. स्त्री० [सं] नाव ; जहाज़ ; यौ० —कर्ण - जहाज़ की पतवार ; — कर्म - मल्लाह की वृत्ति ; —क्रम - नावों का

पुल ; —दंड - डाँड ; —नेता - कर्णधार ; नाविक ; —साधन - बेड़ा ; —सेना - जलसेना ; 2. पु० नौ की संख्या ; [अ] प्रकार , तरह ; रंग-ढंग ; जाति ; 3. वि० नया ; यौ० —आबाद - नया बसा हुआ ; —आमेज़ - नौसिखुआ, जिसने कोई काम हाल में ही सीखा हो ; —इयत - तरह ; विशेषता ; —उम्र - जवान, नवयुवक ; —जवानी - नवयौवन ; —दौलत - नया मालदार ; —निहाल - नया पौधा ; नौजवान ; —बरार - वह ज़मीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है ;—बहार - वसंत का आरंभ ; —मश्क़ - नौसिखुआ ; —मुस्लिम - जो हाल में मुसलमान बना हो ; —रोज़ - पारसियों के नये वर्ष का पहला दिन ; खुशी का दिन ; त्योहार का दिन ; —रोज़ी - नौ रोज़ का ; —लक्खा - नौ लाख का ; जड़ाऊ और बहुमूल्य ; —वारिद - जो कहीं बाहर से अभी हाल ही में आया हो ; —शहाना - नौशा या दूल्हे-सा, वर की तरह का ; —सरा - नौ लड़ियोंवाली माला ; —तोड़ - नया जोता हुआ खेत ; —बढ़ - जो हाल ही में बुरी दशा से अच्छी दशा को प्राप्त हुआ हो ; —व-नौ - बिलकुल ताज़ा ; —रस - ताज़ा पका हुआ फल ; नौजवान; काव्य में प्रयुक्त होनेवाले शृंगार, हास्य करुण आदि नवरस ; —सिखिया, सिखुआ - जिसने अभी सीखना आरंभ ही किया हो ; [हिं] आठ और एक ; यौ०—कड़ा - तीन व्यक्तियों द्वारा खेला जानेवाला एक प्रकार का जुआ जिसमें हरएक के पास तीन-तीन कौड़ियाँ होती हैं ; —ग्रही - हाथ का एक गहना ;—तेरही - एक प्रकार की पुरानी ईंट ; पासों से खेला जानेवाला एक प्रकार का जुआ ; —मासा - गर्भाधान से नौवाँ मास ; —रतन - खटाई, गुड़, मिर्च, केसर आदि नौ चीज़ों से तैयार की जानेवाली एक प्रकार की चटनी ; नवरत्न ; मु० —दो ग्यारह होना - चंपत होना ; भाग जाना ।

**नौकर** - पु० [फ़ा] सेवक ; वैतनिक कर्मचारी ; **यौ०**— शाही - हुकूमत का वह ढंग जिसमें सारी ताक़त राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है ।

**नौकरानी** - स्त्री० [फ़ा] घर का काम-धंधा करनेवाली दासी ।

**नौकरी** - स्त्री० [फ़ा] ख़िदमत, सेवा ; तनख्वाह के बदले में किया जानेवाला काम ; **यौ०**—पेशा - वह जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो ।

**नौका** - स्त्री० [स] नाव ; जहाज़ ; **यौ०**—दंड - डाँड़ ।

**नौची** - स्त्री० [हिं] नवयुवती ; अपनी या परायी वह लड़की जिसे वेश्या अपना पेशा सिखाती है ।

**नौछावर** - पुं० [हिं] निछावर ।

**नौज** - अव्य० [उ] ईश्वर न करे ; कुछ परवाह नहीं ; बला से ।

**नौजा** - पु० [हिं] बादाम ; चिलगोजा ।

**नौजी** - स्त्री० [हिं] लीची ।

**नौन** - पु० [हिं] नमक ।

**नौना** - 1. अ० [हिं] झुकना ; नम्र होना ; 2. वि० सुंदर ।

**नौबत** - स्त्री० [फ़ा] गति ; दशा ; संयोग ; पारी ; वैभव या मंगलसूचक वाद्य (विशेषतः शहनाई और नगाड़ा) ; धौंसा ; **यौ०** — ख़ाना - नौबत बजाने की जगह ; —नवाज़ - नक़ारची ;

—ब-नौबत - क्रम-क्रम से, एक-एक करके।

**नौबती** - पु० [फ़ा] नौबत बजानेवाला; पहरा देनेवाला; विना सवार के सजा हुआ घोड़ा; बड़ा तंबू।

**नौशा** - पु० [फ़ा] दूल्हा, वर।

**नौशादर, नौसादर** - पु० [फ़ा] एक तेज़ झालदार नमक जो जानवरों के मल-मूत्र आदि से तैयार किया जाता है।

**नौशी** - स्त्री० [फ़ा] दुलहिन।

**नौहा** - पु० [अ] रोना-पीटना; शोक; **यौ०** —गर - मातम करनेवाला।

**न्यग्रोध** - पु० [सं] वटवृक्ष, बरगद; बाहु; **यौ०** —परिमंडल - एक पुरसा घेरे का आदमी।

**न्यस्त** - वि० [स] रखा हुआ; त्यक्त; निहित; **यौ०**—देह - मृत; —शस्त्र - निहत्था; अरक्षित।

**न्याय** - पु० [सं] इन्साफ़; फ़ैसला; नीतिसंगत बात; सादृश्य; छह आस्तिक दर्शनों में से एक; विशिष्ट प्रसंग में प्रयुक्त होनेवाला दृष्टांतवाक्य; **यौ०** —कर्त्ता - न्याय करनेवाला; —पथ - न्यायोचित मार्ग; —पर - न्याय के अनुसार आचरण करनेवाला;—परता - न्यायशील होने का भाव; —वर्ती - न्यायानुसार आचरण करनेवाला;—वादी - उचित बात कहनेवाला; —शास्त्र - तर्कशास्त्र; —वृत्त - शास्त्र-विहित आचार; —सभा - कचहरी, न्यायालय।

**न्यायतः** - क्रि० [सं] न्याय की दृष्टि रखते हुए।

**न्यायाधीश** - पु० [सं] मुक़द्दमे का फ़ैसला करनेवाला अधिकारी, जज।

**न्यायालय** - पु० [सं] वह स्थान जहाँ न्याय किया जाता है, अदालत।

**न्यायी** - पु० [सं] न्याय पर चलनेवाला।

**न्यायोचित** - वि० [स] जो न्याय के विरुद्ध न हो।

**न्याय्य** - वि० [सं] न्याययुक्त, न्याय-संगत।

**न्यारा** - वि० [हिं] अलग; पृथक, जुदा; अनोखा; अपूर्व।

**न्यारिया** - पु० [हिं] सोनार की दुकान की राख आदि में से सोना-चाँदी आदि निकालनेवाला।

**न्यास** - पु० [सं] स्थापन; धरोहर; त्याग।

**न्यून** - वि० [सं] कम; दुष्ट; नीच; निकृष्ट; **यौ०** न्यूनांग - जिसका कोई अंग विकृत हो; न्यूनाधिक - कम-ज्यादा।

**न्योचनी** - स्त्री० [सं] दासी; परिचारिका।

**न्योछावर** - स्त्री० [हिं] निछावर।

**न्योतना** - स० [हिं] निमंत्रित करना।

**न्योतहरी** - पु० [हिं] निमंत्रित मनुष्य।

**न्योता** - पु० [हिं] बुलावा; निमंत्रण।

**न्योला** - पु० [हिं] नेवला।

**न्यौरा** - पु० [हिं] बड़े दानों का घुँघरू।

**न्हवाना** - स० [हिं] नहलाना, स्नान कराना।

**न्हाना** - अ० [हिं] नहाना।

## प

**पंक** - पु० [सं] कीचड़; दलदल; पाप; लेप; **यौ०**—ज - कमल।

**पंकिल** - वि० [सं] कीचवाला; गंदगीयुक्त।

**पंक्ति** - स्त्री० [सं] श्रेणी; क़तार; एक वर्णिक छंद; भोज में एक साथ खानेवालों की पंगत; **यौ०**—बद्ध -

श्रेणीबद्ध ; —बाह्य - पंक्ति या जाति से बहिष्कृत।

**पंख** - पु० [हिं] पर, डैना ; मु०—जमना - कुमार्ग पर चलने या प्राण गँवाने के लक्षण प्रगट होना।

**पंखड़ी** - स्त्री० [हिं] फूल की पत्ती, पुष्पदल।

**पंखा** - पु० [हिं] हवा करने का साधन; यौ०—पोश - पंखे का आवरण।

**पंखाज** - पु० [हिं] पखावज।

**पंखिया** - स्त्री० [हिं] भूसी के महीन टुकड़े; पंखड़ी।

**पंखी** - 1. पु० [हिं] पक्षी; 2. स्त्री० छोटा पंखा ; पंखड़ी।

**पंग** - वि० [हिं] लंगड़ा ; कुंठित ; अवरुद्ध।

**पंगत, पंगति** - स्त्री० [हिं] पंक्ति, कतार ; भोज ; समाज।

**पंगु** - 1. वि० [सं] जो चल न सके ; गतिहीन ; 2. पु० शनिग्रह ; लंगड़ा आदमी।

**पंच** - 1. वि० [सं] पाँच ; यौ० —कन्या - पाँच पौराणिक स्त्रियाँ (अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी) ; —कर्म - पाँच प्रकार के कर्म (उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन) ; —कवल - पक्षियों आदि के लिए भोजन के पहले निकाला जानेवाला पाँच ग्रास अन्न ; —कोष - अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोष ; —कोस - काशीपुरी ; —कोसी - काशी की परिक्रमा ; —क्लेश - पाँच प्रकार के क्लेश (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश) ; —गंग - पाँच नदियों का समाहार (गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा); —गव - पाँच गायों या बैलों का समाहार ; —गव्य - गाय के दूध, दही, घी, गोबर और मूत्र को एक में मिलाकर तैयार किया जानेवाला पदार्थ ; —गुण - पाँच गुण (गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द); —गुप्त - कछुआ ; चार्वाक-दर्शन ; —गौड़ - उत्तर भारत के पाँच ब्राह्मण (सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल) ; —चक्र - पाँच चक्रों का समाहार; —चूड़ - पाँच कलगियों या केशगुच्छोंवाला ; —चूड़ा - एक अप्सरा ; —जन - निषाद-सहित ब्राह्मण आदि चार वर्ण; —जनीन - अभिनेता; विदूषक ; —तंत्री - पाँच तारोंवाली वीणा ; —तत्त्व - पंचभूत ; —तिक्त - पाँच कड़वी औषधियों का समाहार ; —द्राविड़ - दक्षिण भारत के पाँच प्रकार के ब्राह्मण (महाराष्ट्र, तैलंग, कर्नाटक, गुर्जर और द्राविड़) ; —नद - पाँच नदियोंवाला देश, पंजाब ; —पुष्प - पाँच तरह के फूलों का समाहार (चंपा, आम, शमी, कमल और कनेर); —प्रासाद - वह मंदिर जिसमें चार शृंग हों और बीच में गुंबज हो ;—बाण, शर - कामदेव ; कामदेव के पाँच बाण (सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण और तापन) ; —बीज - अनार, ककड़ी, खीरा आदि ; —भूत - पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ; —मकार - वामाचार के अंतर्गत पाँच वस्तुएँ (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन); —महापातक - पाँच प्रकार के घोरतम पाप (ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुस्त्रीगमन और इस प्रकार के पापी का संसर्ग); —महाव्रत - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ; —मूल - पाँच वनस्पतियों की जड़ से तैयार की जानेवाली औषधि ; —राशिक - गणित

की एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियों के द्वारा पंचम राशि निकाली जाती है; —वटी - पाँच वृक्षों का समाहार (पीपल, बेल, बड़, हड़ और अशोक); —वर्ग - पाँच पदार्थों का समूह; पंच ज्ञानेन्द्रिय; पंच महायज्ञ; —शब्द - शंखध्वनि आदि पाँच प्रकार की ध्वनियाँ; —मेल - जिसमें पाँच प्रकार की वस्तुओं का मेल हो; —रंग, रंगा - कई रंगोंवाला, रंग-बिरंगा; —लड़ा - पाँच लड़ोंवाला हार; —लड़ी - पाँच लड़ोंवाली माला; 2. पु० [हिं] पाँच या अधिक मनुष्यों का समूह; सर्वसाधारण; न्याय करनेवाली सभा; पंचायत का सदस्य; मध्यस्थ; जूरी का सदस्य; यौ० —नामा पंचों का फ़ैसला।

**पंचम** - 1. वि० [सं] पाँचवाँ; चतुर; सुंदर; 2. पु० संगीत में पाँचवाँ स्वर; वर्ण का पाँचवाँ वर्ण।

**पंचमी** - स्त्री० [सं] चंद्रमा की पाँचवीं कला; किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि; अपादान कारक।

**पंचांग** - 1. वि० [सं] पाँच अंगोंवाला; 2. पु० पाँच अंग; एक प्रकार का प्रणाम; तिथिपत्र, पत्रा।

**पंचाक्षर** - 1. वि० [सं] पाँच अक्षरोंवाला; 2. पु० एक छंद; शिव का एक मंत्र।

**पंचानन** - 1. वि० [सं] पाँच मुँहवाला; 2. पु० शिव; सिंह; सिंहराशि।

**पंचानबे** - वि० [हिं] नब्बे से पाँच अधिक।

**पंचामृत** - पु० [सं] पाँच द्रव्यों का समाहार; देवताओं को स्नान कराने और चढ़ाने के निमित्त दूध, दही, घी, मधु और चीनी के योग से बनाया गया एक पेय पदार्थ।

**पंचाम्ल** - पु० [सं] पाँच खट्टे पदार्थ (बेर, अनार, अमलबेत, चूक और बिजौरा नींबू)।

**पंचायत** - स्त्री० [हिं] पंचों की मंडली या सभा; झगड़े के विषय में पंचों का विचार-विमर्श; गपशप; जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों का मंडल।

**पंचायतन** - पु० [सं] पाँच देवताओं की प्रतिमाओं का समाहार।

**पंचायती** - वि० [हिं] जिसपर अनेक व्यक्तियों का अधिकार हो; जनता के प्रतिनिधियों द्वारा संचालित; यौ०—राज्य - गणतंत्र।

**पंचालिका** - स्त्री० [सं] कपड़े आदि की पुतली।

**पंचूरा** - पु० [हिं] लड़कों का एक मिट्टी का खिलौना जिसके पेंदे में बहुत-से छेद होते हैं।

**पंचेन्द्रिय** - स्त्री० [सं] पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ अथवा कर्मेन्द्रियाँ।

**पंचोपचार** - पु० [सं] पूजन के साधनभूत पाँच द्रव्य।

**पंचौली** - स्त्री० [हिं] एक पौधा जिससे ख़ुशबूदार तेल निकाला जाता है।

**पंछा** - पु० [हिं] प्राणियों या पेड़-पौधों के अंग से कटने या छिलने आदि के कारण निकलनेवाला स्राव; चेचक के दाने में भरा हुआ पानी।

**पंछाला** - पु० [हिं] फफोला; फफोले के भीतर का पानी।

**पंछी** - पु० [हिं] पक्षी, चिड़िया।

**पंज** - वि० [फ़ा] पाँच; यौ०—अंगुश्त - हाथ की पाँचों उँगलियाँ; —गान - पाँचों समय की नमाज़।

**पंजर** - पु० [सं] हड्डियों का ढाँचा, कंकाल; पसली; पिंजड़ा।

**पंजरक** - पु० [सं] पिंजड़ा।

**पंजराखेट** - पु० [सं] मछली पकड़ने का एक तरह का जाल या झाबा ।

**पंजा** - पु० [फ़ा] पाँचों उँगलियों सहित हथेली या पैर का अगला भाग ; पाँच बूटियोंवाला ताश का पत्ता ; पाँच सजातीय वस्तुओं का समाहार ; **यौ०**—तोड़, बैठक - कुश्ती का एक पेंच ; **मु०** —फेरना, मोड़ना - पंजे की लड़ाई में प्रतिद्वंद्वी को हराना ; —फैलाना - अधिकार में करने की चेष्टा करना ।

**पंजारा** - पु० [हिं] सूत कातनेवाला ; धुनिया ।

**पंजि** - स्त्री० [सं] पूनी ; बही, रजिस्टर ; पंचांग ; **यौ०** —कार, कारक - लेखक, क्लर्क ; पंचांग बनानेवाला ।

**पंजिका** - स्त्री० [सं] विशद टीका ; पंचांग ; रजिस्टर ।

**पंजी** - स्त्री० [फ़ा] वह मशाल जिसमें पाँच बत्तियाँ जलती हों ; [सं] पंजि ।

**पंजीरी** - स्त्री० [हिं] धनिया, चीनी, सोंठ आदि से युक्त घी में भुना हुआ आटा ।

**पंजेरा** - पु० [हिं] धातु के बर्तन आदि जोड़ने का पेशा करनेवाला ।

**पंड** - 1. पु० [सं] नपुंसक ; 2. वि० निष्फल ।

**पँड़वा** - पु० [हिं] भैंस का बच्चा ।

**पंडा** - 1. पु० [हिं] तीर्थ का पुजारी ; घाटिया ; रसोइया ; 2. स्त्री० [सं] निश्चयात्मिका बुद्धि ; ज्ञान ।

**पंडाइन** - स्त्री० [हिं] पंडे की स्त्री ।

**पंडाल** - पु० [देश] किसी संस्था के अधिवेशन के निमित्त बना हुआ बड़ा मंडप ; [त] पंदल ; [ते] पंदिलि ।

**पंडित** - 1. पु० [सं] शास्त्रज्ञ, विद्वान ; 2. वि० ज्ञानी ; कुशल ।

**पंडितम्मन्य** - वि० [सं] अपने आपको बहुत बड़ा विद्वान समझनेवाला ।

**पंडिताई** - स्त्री० [हिं] विद्वत्ता, पांडित्य ।

**पंडिताऊ** - वि० [हिं] पंडितों के ढंग का ; पंडित-जैसा ।

**पंडितानी** - स्त्री० [हिं] पंडित की स्त्री ; ब्राह्मणी ।

**पंडुक** - पु० [हिं] कबूतर की जाति का एक हलके कत्थई रंग का पक्षी ।

**पँतीजना** - स० [हिं] रूई ओटना ।

**पँतीजी** - स्त्री० [हिं] रूई धुनने का औज़ार, धुनकी ।

**पंथ** - पु० [हिं] रास्ता ; रीति ; संप्रदाय ; पथ्य ; **मु०**— गहना - रास्ता पकड़ना ; —दिखाना - रास्ता दिखाना ; शिक्षा देना ; —निहारना - प्रतीक्षा करना ; —पर लगाना - सुमार्ग पर चलाना ।

**पंथक** - वि० [सं] मार्ग में उत्पन्न ।

**पंथकी** - पु० [हिं] यात्री, मुसाफ़िर ।

**पंथान** - पु० [हिं] रास्ता ।

**पंथी** - पु० [सं] बटोही ; किसी ख़ास मत को माननेवाला ।

**पंद** - स्त्री० [फ़ा] उपदेश ; सलाह ।

**पंदार** - पु० [फ़ा] सलाह या शिक्षा लेनेवाला ।

**पंपाल** - वि० [हिं] पापी ।

**पंबा** - पु० [हिं] ऊन रंगने का एक पीला रंग ; [फ़ा] रूई ।

**पँवर** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी ; सामान ।

**पँवरना** - अ० [हिं] तैरना ; थाह लेना ।

**पँवरिया** - पु० [हिं] द्वारपाल ; पुत्र-जन्म के अवसर पर मंगलगीत गाने का पेशा करनेवाली एक जाति ।

**पँवरी** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी ; खड़ाऊँ ।

**पँवाड़ा** - पु० [हिं] विस्तृत कथा ; वीरगाथा ; कीर्तिकथा ।

**पँवारना** - स० [हिं] फेंकना ; हटाना ।

**पँसरहट्टा** - पु० [हिं] वह बाज़ार जिसमें पँसारियों की दूकानें हों ।

**पँसारी** - पु० [हिं] हल्दी, नमक, मसाले आदि प्रतिदिन के व्यवहार की वस्तुएँ बेचनेवाला ।

**पँसेरी** - स्त्री० [हिं] पाँच सेर की तौल का एक बाट ।

**प** - 1. वि० [सं] पीनेवाला ; रक्षक ; 2. पु० हवा ; पत्ता ; अंडा ।

**पउला** - पु० [हिं] वह खड़ाऊँ जिसमें खूँटी की जगह रस्सी लगी रहती है ।

**पकड़** - स्त्री० [हिं] ग्रहण ; पकड़ने का ढंग ; कुश्ती में एक बार की भिड़ंत ; समझ ; **यौ०**—धकड़ - धरपकड़ ; **मु०** —में आना - काबू में किया जाना, वशवर्ती होना ।

**पकड़ना** - स० [हिं] ग्रहण करना ; धरना ; गति से निवृत्त करना ; पता लगाना ; किसी वस्तु में व्याप्त होना ; अपनाना ; गिरफ्तार करना ; समझना ।

**पकड़वाना, पकड़ाना** - स० [हिं] पकड़ने में प्रवृत्त होना ; सहायता देना ।

**पकवान** - पु० [हिं] घी या तेल में तली हुई भोज्य-वस्तु ।

**पकाई** - स्त्री० [हिं] पकने-पकाने की क्रिया या भाव ।

**पकाना** - स० [हिं] अनाज आदि को पकने की अवस्था में पहुँचाना ; सिझाना ; उबालना ; फुंसी या घाव को पकने की अवस्था में पहुँचाना ।

**पकाव** - पु० [हिं] पकने का भाव ; मवाद ।

**पकौड़ा** - पु० [हिं] बड़ी पकौड़ी ।

**पकौड़ी** - स्त्री० [हिं] घी या तेल में तली हुई बेसन या पीठी की बरी ।

**पक्का** - वि० [हिं] पका हुआ ; पूरा ; परिपुष्ट ; सिद्ध ; निपुण ; आँच पर गलाया हुआ ; अचल ; ईंट या पत्थर का बना हुआ ; घी में पका हुआ ; निश्चित ; तय किया हुआ ।

**पक्व** - 1. वि० [सं] पका हुआ ; पक्का ; अनुभवी ; पुष्ट ; सफेद (बाल) ; विकसित ; 2. पु० पकाया हुआ भोजन ।

**पक्वान्न** - पु० [सं] पकाया हुआ अन्न ; पकायी हुई भोज्य-सामग्री ।

**पक्ष** - पु० [सं] किसी वस्तु का दायाँ या बायाँ भाग ; बग़ल ; तरफ़ ; किसी विषय का कोई अंग ; विचारणीय विषय की कोई कोटि ; चांद्रमास के दो भागों में से एक ; वर्गविशेष ; अनुयायी ; सहायक ; पंख ; बाण में लगा हुआ पर ; शरीर का अर्धभाग ; **यौ०** —क - खिड़की ; पक्ष ; पक्षद्वार ; सहायक ; —ग्रहण - दो पक्षों में से किसी एक को अंगीकार करना ; —द्वार - चोरदरवाज़ा ; —पात - तरफ़दारी ; अधिक चाह ; —पाती - पक्षपात करनेवाला, तरफ़दार ; —पोषण - फूट डालनेवाला ; —भाग - हाथी का पार्श्व ; —रचना - दलबंदी ; पक्षाघात - लकवा ; पक्षान्त - अमावस्या ; पूर्णिमा ; पक्षान्तर - दूसरा पक्ष ; पक्षाभास - हेत्वाभास से युक्त तर्क ।

**पक्षिणी** - स्त्री० [सं] मादा पक्षी ; दो दिनों के बीच की रात ; पूर्णिमा ।

**पक्षी** - 1. पु० [सं] चिड़िया ; बाण ; शिव ; 2. वि० पंखवाला ; तरफ़दार ; **यौ०**—कीट - छोटी चिड़िया ; —पुंगव - जटायु ; —शाला - चिड़ियाखाना ; घोंसला ; पिंजड़ा ।

**पक्ष्म** - पु० [सं] बरौनी ; पंख ।

**पक्ष्मल** - वि० [सं] लंबी व सुंदर बरौनीवाला ; बालदार ।

**पख** - पु० [हिं] चांद्रमास का पक्ष ।

**पख़** - स्त्री० [फ़ा] प्रतिबंध ; ऐब ; झगड़ा ; रोक, शर्त ; अड़ंगा ; फ़साद ; बकवास ; मु०—लगाना - प्रतिबंध या रोक लगाना ; रोड़ा अटकाना ;—निकालना - दोष दिखाना ।

**पखपान** - पु० [देश] पाँव का एक गहना ।

**पखराना** - स० [हिं] धुलवाना ।

**पखरैत** - पु० [हिं] वह घोड़ा, हाथी या बैल जिसपर पाखर डाली गयी हो ।

**पखरौटा** - पु० [हिं] सोने या चाँदी का वर्क़ लपेटा हुआ पान का बीड़ा ।

**पखवाड़ा, पखवारा** - पु० [हिं] महीने का आधा भाग, पक्ष; पंद्रह दिन का समय।

**पखा** - पु० [हिं] दाढ़ी ।

**पखाना** - पु० [हि] कथा, उपाख्यान ; पाख़ाना ।

**पखारना** - स० [हिं] धोना ; धोकर साफ़ करना ।

**पखाल** - पु० [हिं] मशक ; धौंकनी ; मुँह धोने का पात्र ।

**पखाली** - पु० [हिं] भिश्ती ।

**पखावज** - पु० [हिं] मृदंग ।

**पखावजी** - पु० [हिं] मृदंग बजानेवाला ।

**पखिया** - 1. पु० [हिं] झगड़ा खड़ा करनेवाला ; 2. वि० फ़जूल ।

**पखुरा** - पु० [हिं] भुजमूल के पास का भाग ।

**पखेरू** - पु० [हिं] पक्षी, चिड़िया ।

**पखेव** - पु० [देश] ब्यायी हुई गाय-भैंस को खिलाने के निमित्त बनाया गया उड़द, सोंठ, गुड़ आदि का मिश्रण।

**पखौटा** - पु० [हिं] पंख ; मछली का पर ।

**पग** - पु० [हिं] पैर ; डग ; यौ०—डंडी - मनुष्यों के चलने से बना हुआ पतला रास्ता ; —तरी - जूता ; —दासी - जूता ; खड़ाऊँ ।

**पगड़ी** - स्त्री० [हिं] पाग, उष्णीष ; मु०—उछलना - बेइज़्ज़ती होना ; —उतारना, उछालना - बेइज़्ज़ती करना ; अपमानित करना ; —बदलना - मित्रता करना ।

**पगना** - अ० [हिं] रस आदि में सन जाना ; ओत-प्रोत होना ; निमग्न होना : लिप्त होना ।

**पगनियाँ** - स्त्री० [हिं] जूती ।

**पगरा** - पु० [हि] क़दम ; प्रभात ; सफ़र शुरू करने का समय ।

**पगला** - वि० [हिं] पागल ; नासमझ ।

**पगहा, पगहिया** - पु० [देश] ढोर बाँधने की रस्सी ।

**पगा** - पु० [हिं] पगड़ी ; दुपट्टा ।

**पगाना** - स० [हि] ओत-प्रोत कराना ; निमग्न कराना ।

**पगार** - पु० [हिं] गारा ; चलकर पार करने योग्य नदी आदि ; वेतन।

**पगारना** - स० [हिं] फैलाना ।

**पगाह** - स्त्री० [फ़ा] प्रभात, तड़का ।

**पगुराना** - अ० [हिं] जुगाली करना ; हड़प जाना ; पचा जाना ।

**पघा** - पु० [देश] पगहा ।

**पच** - वि० [हिं] समास में प्रयुक्त पाँच का रूपांतर ; यौ०—गुना - पाँचगुना ; —ग्रह - पाँच ग्रह (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि) ; —तोरिया - एक तरह का कपड़ा।

**पचकना** - अ० [हिं] पिचकना ।

**पचड़ा** - पु० [हिं] झंझट ; देवी-देवताओं के सम्मुख ओझा द्वारा गाया जानेवाला गीत ।

**पचन** - पु० [सं] पकने या पकाने की क्रिया ; अग्नि ; पकानेवाला ; पकाने का साधन ; यौ० पचनागार - रसोईघर ; पचनाग्नि - जठराग्नि ।

**पचना** - 1. स्त्री० [सं] पकने की क्रिया; 2. अ० [हिं] हज़म होना; खपना; अधिक परिश्रम से क्षीण होना।
**पचनिका** - स्त्री० [सं] कड़ाही।
**पचनीय** - वि० [सं] पकाने योग्य।
**पचपच** - 1. स्त्री० [अनु] बार-बार उत्पन्न किया हुआ 'पच' शब्द; कीच; 2. पु० [सं] शिव।
**पचपचा** - वि० [अनु] बहुत अधिक गीला; अधूरा पका हुआ (भोजन)।
**पचपचाना** - अ० [अनु] किसी वस्तु का बहुत अधिक गीला होना।
**पचपन** - 1. वि० [हिं] पचास और पाँच; 2. पु० पचपन की संख्या।
**पचहत्तर** - 1. वि० [हिं] सत्तर से पाँच अधिक; 2. पु० पचहत्तर की संख्या।
**पचहरा** - वि० [हिं] पाँच तहोंवाला; पाँच गुना।
**पचाना** - स० [हिं] हज़म करना; पकाना; नष्ट कर देना; किसी वस्तु को अपने में एकदम छिपा लेना।
**पचारना** - स० [हिं] ललकारना।
**पचाव** - पु० [हिं] पचने का भाव या कार्य।
**पचास** - 1. वि० [हिं] दस का पाँच गुना; 2. पु० पचास की सख्या।
**पचासा** - पु० [हिं] पचास सजातीय वस्तुओं का समाहार; जीवन के प्रथम पचास वर्ष।
**पचासी** - 1. वि० [हिं] अस्सी से पाँच अधिक; 2. पु० पचासी की संख्या।
**पचीस** - 1. वि० [हिं] बीस से पाँच अधिक; 2. पु० पचीस की संख्या।
**पचीसी** - स्त्री० [हिं] पचीस सजातीय वस्तुओं का समाहार; जीवन के प्रारंभिक पचीस वर्ष; एक तरह की द्यूतक्रीड़ा।
**पचूका** - पु० [हिं] पिचकारी।
**पचोतर** - वि० [हिं] पाँच अधिक; **यौ०**—सौ - एक सौ पाँच।
**पचोतरा** - पु० [हिं] वर-पक्ष की ओर से कन्या-पक्ष के पुरोहित को दिया जानेवाला एक नेग।
**पचौनी** - स्त्री० [हिं] आमाशय, मेदा।
**पचौली** - पु० [हिं] गाँव का मुखिया।
**पच्चर** - पु० [हिं] काठ का पैबंद; **मु०**—अड़ाना - बाधा डालना; रोड़ा अटकाना; —मारना - बने हुए खेल को बिगाड़ देना।
**पच्ची** - स्त्री० [हिं] एक रंग के पत्थर पर दूसरे रंग के पत्थर का जड़ाव; **यौ०**—कार - पच्ची करनेवाला; —कारी - पच्ची करने का काम या भाव।
**पच्चीस** - वि०, पु० [हिं] पचीस।
**पच्छ** - पु० [हिं] पक्ष।
**पच्छि** - पु० [हिं] पक्षी।
**पच्छिम** - पु० [हिं] पश्चिम।
**पच्छी** - पु० [हिं] चिड़िया; पक्ष ग्रहण करनेवाला।
**पच्छौच** - पु० [सं] पैर की शुद्धि।
**पछड़ना** - अ० [हिं] पछाड़ा जाना।
**पछताना** - अ० [हिं] पश्चात्ताप करना।
**पछतावा** - पु० [हिं] अनुचित कार्य से होनेवाली आत्मग्लानि, पश्चात्ताप।
**पछना** - 1. अ० [हिं] पाछा जाना; 2. पु० पाछने का औज़ार।
**पछरना** - अ० [हिं] **पछड़ना; लौटना।**
**पछलत्त** - पु० [हिं] पिछली टाँगों द्वारा प्रहार।
**पछवत** - पु० [हिं] फ़सल कट जाने पर बोयी गयी चीज़; घर के पीछे का हिस्सा।
**पछवाँ, पछवा** - 1. वि० [हिं] पश्चिम का; 2. स्त्री० पश्चिमी हवा।

**पछाँह** - पु० [हिं] पश्चिमीय प्रदेश ; पश्चिम दिशा।

**पछाँहिया, पछाँही** - वि० [हिं] पश्चिमीय प्रदेश का।

**पछाड़** - स्त्री० [हिं] शोक से मूर्छित होकर खड़े-खड़े गिर पड़ना।

**पछाड़ना** - स० [हिं] कुश्ती या लड़ाई में परास्त करना; धोते समय कपड़े को फटकारना।

**पछाड़ी** - स्त्री० [हिं] पिछाड़ी।

**पछाया** - पु० [हिं] किसी वस्तु का पिछला भाग।

**पछावर** - स्त्री० [हिं] छाछ आदिका बना हुआ एक पेय।

**पछिआना, पछियाना** - स० [हिं] अनुगमन करना ; पीछा करना।

**पछीत** - स्त्री० [हिं] मकान का पिछवाड़ा ; मकान के पीछे की दीवार।

**पछुवा** - पु० [हिं] हाथ में पहनने का कड़े-जैसा एक गहना।

**पछेलना** - स० [हिं] पीछे छोड़ना या हटाना।

**पछेला** - पु० [हिं] हाथ में पहनने का एक गहना।

**पछेवड़ा** - पु० [हिं] चद्दर।

**पछोड़ना** - स० [हिं] सूप से अनाज आदि फटकना।

**पज़मुर्दा** - वि० [फ़ा] मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

**पज़मुर्दगी** - स्त्री० [फ़ा] कुम्हलाहट।

**पजरना** - अ० [हिं] जलना, सुलगना।

**पजारना** - स० [हिं] जलाना, सुलगाना।

**पजावा** - पु० [फ़ा] ईंट का भट्ठा।

**पजूषण** - पु० [हिं] आत्मशुद्धि के निमित्त किया जानेवाला जैनों का एक व्रत।

**पज़ीर** - वि० [फ़ा] माननेवाला ; ग्रहण या पालन करनेवाला।

**पज़ीरा** - वि० [फ़ा] मानने योग्य।

**पज़ीराई** - स्त्री० [फ़ा] स्वीकार।

**पजोखा** - पु० [हिं] मातमपुर्सी।

**पट** - 1. पु० [सं] कपड़ा, चित्र खींचने का काग़ज़ या कपड़े का टुकड़ा; पर्दा; रंगमंच का पर्दा; छत; यौ०—**कर्म** - जुलाहे का धंधा; —कार - चित्रकार; जुलाहा; —कुटी, मंडप - तंबू; —वाद्य - झाँझ-जैसा एक बाजा; [हिं] किवाड़; पालकी का दरवाज़ा; तख़्ता; सिंहासन; वस्तु के गिरने और फटने आदि से होनेवाला शब्द; मु०—खुलना - मंदिर का द्वार खुलना; आवरण हटना; 2. अव्य० अतिशीघ्र; 3. वि० औंधा; चित का उलटा।

**पटक** - पु० [सं] शिविर; सूती कपड़ा।

**पटकन** - पु० [हिं] पटकने की क्रिया।

**पटकना** - 1. स० [हिं] किसी वस्तु या व्यक्ति को झोंके से पृथ्वी पर गिराना; कुश्ती में पछाड़ना; 2. अ० पचकना; आवाज़ करते हुए फटना।

**पटकनिया** - स्त्री० [हिं] पटकन।

**पटका** - पु० [हिं] कमरबंध; मु०—बाँधना - उद्यत होना।

**पटकान** - पु० [हिं] पटकन।

**पटच्चर** - पु० [सं] फटा-पुराना कपड़ा; चोर।

**पटतर** - 1. पु० [हिं] तुलना; उपमा; 2. वि० चौरस।

**पटतरना** - स० [हिं] तुलना करना; समता दिखाना।

**पटतारना** - स० [हिं] ऊँची-नीची ज़मीन को चौरस करना; शस्त्र सँभालना।

**पटताल** - पु० [हिं] मृदंग का एक ताल।

**पटना** - अ० [हि] भर जाना; बनना; सींचा जाना; मेल खाना; ऋण पूरा-पूरा अदा किया जाना।

**पटनी** - स्त्री० [हिं] कोठेवाले घर में नीचे का कमरा; ज़मीन का स्थायी बंदोबस्त करने की रीति; खूँटियों के सहारे दीवार में लगायी जानेवाली पटरी।

**पटपटाना** - 1. अ० [अनु] भूख या गर्मी से तड़पना; 2. स० किसी चीज़ को 'पट-पट' शब्द उत्पन्न करते हुए बजाना।

**पटपर** - 1. वि० [हिं] समतल, चौरस; 2. पु० उजाड़ जगह; बरसात में नदी के पानी में डूबी रहनेवाली ज़मीन।

**पटबंधक** - पु० [हिं] एक तरह का रेहन जिसमें रेहन रखी हुई वस्तु के लाभ से सूदसहित मूलधन अदा हो जाने पर रेहनदार उस वस्तु को लौटा देता है।

**पटबीजना** - पु० [हिं] जुगुनू।

**पटमाक्ष** - पु० [सं] प्रकाशसंबंधी एक यंत्र।

**पटरा** - पु० [हिं] लकड़ी का समतल टुकड़ा; धोबी का पाट; मु०—फेरना - ध्वस्त करना; —होना - मरकर या कटकर गिर जाना।

**पटरानी** - स्त्री० [हिं] मुख्य रानी।

**पटरी** - स्त्री० [हिं] छोटा पटरा; पटिया; नहर के किनारे का रास्ता; चौकी; लोहे के लंबे डंडे जिनसे बनी लाइन पर रेलगाड़ी चलती है।

**पटल** - पु० [सं] सतह; परत; समूह; छत; आँख का रोग; दलबल; टोकरी; वृक्ष; अध्याय; पृष्ठ भाग।

**पटलक** - पु० [सं] आवरण; संदूकची; टोकरी; राशि।

**पटवा** - पु० [हिं] गहना गूँथने का पेशा करनेवाला; एक तरह का बैल; पटसन की तरह का एक पौधा; पटुआ।

**पटवाना** - स० [हिं] भरवाकर बराबर कराना; छत तैयार कराना; शांत कराना; सिंचवाना।

**पटवारगिरी** - स्त्री० [हिं] पटवारी का काम या पद।

**पटवारी** - 1. पु० [हिं] गाँव की ज़मीन और उसकी मालगुज़ारी का हिसाब रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी; 2. स्त्री० वस्त्र पहनानेवाली दासी।

**पटसन** - पु० [हिं] एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्सी तथा बोरे तैयार किये जाते हैं।

**पटह** - पु० [सं] नगाड़ा; डुग्गी; ढोल; क्षति पहुँचाना; यौ० —घोषक - डुग्गी पीटनेवाला।

**पटहार** - पु० [हिं] पटवा।

**पटा** - पु० [हिं] तलवार के आकार का लोहे का एक हथियार; सनद; पीढ़ा; सौदा; लगाम की मुहरी; मु०—बाँधना - उच्च पद पर अधिष्ठित करना।

**पटाई** - स्त्री० [हिं] पाटने का कार्य या भाव; पाटने की मज़दूरी।

**पटाक** - पु० [अनु] 'पट' की आवाज़।

**पटाका** - 1. पु० [हिं] पटाखा; तमाचा; थप्पड़; 2. स्त्री० ध्वजा।

**पटाक्षेप** - पु० [सं] पर्दा गिरने या गिराने का भाव।

**पटाखा** - पु० [हिं] एक तरह की आतिशबाज़ी।

**पटाना** - स० [हिं] सींचना; कोठे की छत तैयार कराना; पाटने का काम कराना; ऋण चुकाना; 2. अ० शांत हो जाना।

**पटापट** - 1. स्त्री० [अनु] 'पट-पट' की आवाज़; 2. अव्य० तेज़ी से।

**पटापटी** - स्त्री० [अनु] रंग-बिरंगी वस्तु।

**पटार** - स्त्री० [हिं] पिटारी; पिंजड़ा; रेशम की डोरी।

**पटालुका** - स्त्री० [सं] जोंक।
**पटाव** - पु० [हिं] पाटने का कार्य या भाव ; पाटी हुई जगह।
**पटि** - स्त्री० [सं] यवनिका ; रंगीन वस्त्र।
**पटिया** - स्त्री० [हिं] काठ की तख्ती ; लंबा और कम चौड़ा खेत ; सिर के सँवारे हुए बाल।
**पटी** - स्त्री० [सं] कपड़े की पट्टी ; कमरबन्द।
**पटीमा** - पु० [हिं] वह तख्त जिसपर कपड़ों की छपायी होती है।
**पटीर** 1. वि० [सं] सुंदर ; ऊँचा ; 2. पु० खेलने की गेंद ; कामदेव ; चंदन ; मूली ; क्षेत्र ; क्यारी ; उदर ; जुकाम।
**पटीलना** - स० [हिं] पीटना ; पराजित करना ; समझा-बुझाकर अपनी राय में करना।
**पटु** - 1. वि० [सं] चतुर ; तीखा ; नीरोग ; धूर्त ; निष्ठुर ; स्पष्ट ; विकसित ; 2. पु० नमक ; परवल ; करेला।
**पटुआ** - पु० [हिं] एक तरह का पटसन।
**पटुक** - पु० [सं] परवल।
**पटुली** - स्त्री० [हिं] चौकी ; झूले की तख्ती।
**पटेबाज़** - पु० [हिं] पटा से खेलने या लड़नेवाला।
**पटेर** - स्त्री० [हिं] सरकंडे की जाति की एक पानी की घास।
**पटेल** - पु० [हिं] गाँव का मुखिया ; गाँव का नंबरदार ; गुजरात के कुर्मियों की एक उपाधि।
**पटेला** - पु० [हिं] वह नाव जिसका बीच का भाग टूटा हो ; ज़मीन चौरस करने का गोला ; एक प्रकार की घास ; कुश्ती का एक पेंच।
**पटैत** - पु० [हिं] पटेबाज़।
**पटैला** - पु० [हिं] अर्गला।
**पटोर** - पु० [हिं] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
**पटोरी** - स्त्री० [हिं] रेशमी चादर या साड़ी ; रेशमी किनारे की धोती।
**पटोलक** - पु० [सं] सीपी।
**पटौहाँ** - पु० [हिं] पटी हुई जगह ; पटबंधक।
**पट्ट** - पु० [सं] तख्ती ; पीढ़ा ; दानपत्र आदि खुदवाने की ताम्र आदि धातु की पट्टी ; घाव पर बाँधने की पट्टी ; पगड़ी ; चक्की ; चौराहा ; नगर ; सिल ; बारीक या रंगीन कपड़ा ; यौ०—देवी, महिषी, राज्ञी - पटरानी।
**पट्टक** - पु० [सं] तख्ती ; दस्तावेज़ ; घाव पर बाँधने की पट्टी ; राजाज्ञा खुदवाने का ताम्र आदि का पट्ट।
**पट्टन** - पु० [सं] नगर।
**पट्टनी** - स्त्री० [सं] नगरी।
**पट्टला** - स्त्री० [सं] ज़िला ; समुदाय।
**पट्टांशुक** - पु० [सं] रेशमी वस्त्र।
**पट्टा** - पु० [हिं] किसी स्थावर संपत्ति के उपयोग का अधिकार-पत्र ; चपरास ; चमड़े का कमरबंद ; कुत्ते आदि के गले में लगायी जानेवाली पट्टी ; पीढ़ा।
**पट्टिका** - स्त्री० [सं] तख्ती ; साधारण या रेशमी कपड़े का टुकड़ा ; घाव पर बाँधने की पट्टी ; दस्तावेज़।
**पट्टिश, पट्टिस** - पु० [सं] एक प्राचीन शस्त्र ; पटा।
**पट्टी** - स्त्री० [सं] पट्टिका ; ललाट का एक गहना ; घोड़े की पेटी ; लिखना सीखने की तख्ती ; शिक्षा ; बहकानेवाली सीख ; काग़ज़ या धातु का पतला और लंबा टुकड़ा ; कपड़े की किनारी ; नाव के बीच का तख्ता ; मांग के दोनो ओर कंघी से जमायी जानेवाली बालों की तह ; पाँत ; संपत्ति का एक भाग ; यौ०—दार - किसी संपत्ति में अपना हिस्सा रखनेवाला ;—दारी - समान अधिकार रखने का भाव ;—

वार - सभी पट्टियों का हिसाब अलग-अलग रखते हुए।

पट्टू - पु० [हिं] एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

पट्टैत - पु० [हिं] मूर्ख मनुष्य।

पट्ठा - पु० [हिं] चढ़ती जवानीवाला प्राणी; कुश्तीबाज़; लंबा और मोटे दल-वाला पत्ता; यौ० —पछाड़ - बहुत बलवती स्त्री; —चढ़ना - शरीर का कोई नस तन जाना।

पठक - पु० [सं] पढ़नेवाला।

पठन - पु० [सं] पढ़ना; वर्णन करना; यौ०—शील - बहुत अधिक पढ़नेवाला।

पठनीय - वि० [सं] पढ़ने योग्य

पठवना - स० [हिं] भेजना।

पठवाना - स० [हिं] भिजवाना।

पठाना - स० [हिं] भेजना।

पठानी - स्त्री० [हिं] पठान की स्त्री; पठान का स्वभाव।

पठार - पु० [हिं] दूर तक फैली हुई चौरस और ऊँची ज़मीन।

पठावन - पु० [हिं] दूत, प्रेष्य।

पठावनी - स्त्री० [हिं] किसी कार्य के लिए किसीको भेजना; किसीके भेजने पर कहीं जाना।

पठि - स्त्री० [सं] पढ़ने की क्रिया, अध्ययन।

पठित - वि० [सं] पढ़ा हुआ।

पठिया - स्त्री० [हिं] जवान और हृष्ट-पुष्ट औरत।

पठेर - स्त्री० [हिं] जवान और बिना ब्यायी हुई बकरी या मुर्गी।

पठौनी - स्त्री० [हिं] भेजना।

पठ्यमान - वि० [सं] पढ़ने योग्य; पढ़ा जाता हुआ।

पड़छती, पड़छत्ती - स्त्री० [हिं] पानी की बौछार से बचने के लिए कच्ची दीवार पर रखी जानेवाली छाजन या टट्टी।

पड़ता - पु० [हिं] किसी माल की ख़रीद या तैयारी का ख़र्चा; बिक्री के दाम में लागत छाँटकर होनेवाली बचत; औसत; दर; मु० —निकालना, फैलाना, बैठाना - लागत का भाव निश्चित करना।

पड़ताल - स्त्री० [हिं] निरीक्षण; छानबीन; पटवारी के द्वारा की जानेवाली खेतों की एक प्रकार की जाँच।

पड़तालना - स० [हिं] जाँच करना; छान-बीन करना।

पड़ना - अ० [हिं] गिरना; लेटना; असर होना; घटना का रूप प्राप्त करना; बीमार होना; मिलना; आना; दखल देना।

पड़पड़ाना - अ० [अनु] 'पड़-पड़' शब्द करना; मिर्च आदि वस्तुओं से जीभ का जलना।

पड़पोता - पु० [हिं] पोते का पुत्र, प्रपौत्र।

पड़वाना - स० [हिं] पड़ने का काम कराना।

पड़वी - स्त्री० [हिं] वैशाख या ज्येष्ठ में बोयी जानेवाली एक प्रकार की ईख।

पड़ा - पु० [हिं] भैंस का बच्चा।

पड़ाना - स० [हिं] गिराना; झुकाना; लिटाना।

पड़ापड़ - 1. पु० [अनु] 'पड़-पड़' की आवाज़; 2. अव्य० 'पड़-पड़' की आवाज़ के साथ।

पड़ाव - पु० [हिं] सेना या यात्रियों का यात्रा के बीच का अस्थायी ठहराव; यात्रियों के ठहरने की जगह।

पड़िया - स्त्री० [हिं] भैंस का बच्चा।

पड़ोस - पु० [हिं] किसीके घर के आसपास की जगह।

**पड़ोसी** - पु० [हिं] पड़ोस में रहनेवाला।
**पढ़ंत** - स्त्री० [हि] निरंतर पढ़ना ; जादू।
**पढ़ंता** - वि० [हिं] पढ़नेवाला।
**पढ़ना** - स० [हिं] लिखे हुए अक्षरों या शब्दों का उच्चारण करना ; रटना ; जादू करना ; मन ही मन जपना ; नया सबक़ सीखना ; मु०—लिखना - शिक्षा प्राप्त करना।
**पढ़वाना** - स० [हि] किसीको पढ़ने या पढ़ाने में प्रवृत्त करना।
**पढ़वैया** - पु० [हिं] पढ़ने या पढ़ानेवाला।
**पढ़ाई** - स्त्री० [हिं] पठन ; पढ़ने का भाव ; विद्योपार्जन ; पढ़ाने का काम ; अध्ययन का ढंग।
**पढ़ाना** - स० [हि] शिक्षा देना।
**पढ़ैया** - पु० [हि] पढ़ने या पढ़ानेवाला।
**पण** - पु० [सं] ग्यारह या बीस माशे के बराबर का एक पुराना सिक्का ; जुआ ; बाज़ी ; प्रतिज्ञा ; पारिश्रमिक ; मूल्य ; धन ; विक्रेय वस्तु ; व्यवहार ; स्तुति ; यौ०— च्छेदन - अँगूठा काटने का दंड ; —जित् - जुए में जीता हुआ ; —बंध - बाज़ी लगाना ; इक़रार ; संधि ; —सुंदरी - वेश्या।
**पणव, पणवा** - पु० [सं] छोटा ढोल ; एक वर्णवृत्त।
**पणि** - 1. स्त्री० [सं] बाज़ार ; दुकानों की पंक्ति ; 2. पु० कंजूस ; पापी।
**पण्य** - 1. वि० [सं] क्रय-विक्रय के योग्य ; 2. पु० विक्रेय वस्तु ; व्यापार ; मूल्य ; दुकान ; यौ० —दासी - लौंडी ; —निचय - बिक्री का माल एकत्रित करना ; —भूमि - गोदाम ; —शाला - बाज़ार ; दुकान ; —समवाय - थोक बिक्री का माल।
**पतंग** - 1. पु० [सं] सूर्य ; पक्षी ; टिड्डी ; एक प्रकार का धान ; पारा ; खेलने की गेंद ; शलभ ; विष्णु ; एक वृक्ष ; 2. स्त्री० गुड्डी ; यौ० —छुरी - चुगलखोर ; —बाज़ - पतंग उड़ानेवाला।
**पतंगा** - पु० [हिं] शलभ, एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा।
**पत** - 1. पु० [हिं] पति ; मालिक ; प्रभु ; प्रतिष्ठा ; इज़्ज़त ; 2. स्त्री० लाज ; यौ० — पानी - प्रतिष्ठा ; इज़्ज़त ; मु० —उतारना - किसीको अपमानित करना ; — रखना - प्रतिष्ठा की रक्षा करना।
**पतई** - स्त्री० [हि] पत्ती।
**पतझड़** - स्त्री० [हिं] शिशिर ऋतु जब कि वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं।
**पतत्** - 1. वि० [सं] गिरता हुआ ; नीचे आता हुआ ; 2. पु० पक्षी।
**पतत्र** - पु० [सं] वाहन ; सवारी ; पंख।
**पतत्री** - पु० [स] पक्षी ; बाण ; घोड़ा।
**पतन** - पु० [स] गिरना ; अधोगति ; संहार ; नाश ; मरण ; बैठना ; सूर्य का डूबना ; छाती का नीचे लटक आना ; गर्भपात ; उड़ना ; घटाव (गणित)।
**पतनीय** - 1. वि० [सं] पतन के योग्य ; 2. पु० पतित या च्युत करनेवाला पाप।
**पतनोन्मुख** - वि० [स] पतन की ओर जानेवाला।
**पतर** - 1. वि० [हिं] पतला ; 2. पु० पत्ता, पत्र।
**पतरा** - 1. वि० [हिं] पतला ; निर्बल ; 2. पु० पत्रा।
**पतरिंगा** - पु० [हिं] पतली चोंचवाला एक हरे रंग का पक्षी।
**पतला** - वि० [हिं] जो मोटा न हो ; कृश ; बारीक़ ; शक्तिहीन ; मु०—पड़ना - दीन-हीन हो जाना ; आपद्ग्रस्त होना।
**पतवर** - अव्य० [हिं] पंक्तिबद्ध रूप से।

**पतवा** - पु० [हिं] एक तरह का मचान जिसपर से बाघ आदि का शिकार किया जाता है।

**पतवार** - स्त्री० [हिं] नाव को इधर-उधर घुमाने या मोड़ने की एक तिकोनी लकड़ी, डाँड़।

**पतवारी** - स्त्री० [हिं] ईख का खेत; पतवार।

**पतवास** - स्त्री० [हिं] पक्षियों का अड्डा।

**पता** - पु० [हिं] ठिकाना; खोज; खबर; जानकारी; स्थितिसूचक चिन्ह या लक्षण; भेद; मु० पते की बात - भेद भरी बात।

**पताई** - स्त्री० [हिं] सूखी हुई पत्तियों का ढेर; मु०—झोंकना, लगाना - आग को तेज़ करने के लिए उसमें पताई डालना।

**पताका** - स्त्री० [सं] झंडा; चिन्ह; प्रतीक; सौभाग्य; नाटक में एक विशिष्ट स्थल; तीर चलाते समय उँगलियों की एक विशेष प्रकार की मुद्रा; मु० —उड़ना या फहराना - एकाधिकार होना; अद्वितीय होना; —उड़ाना - विजय प्राप्त करना; —गिरना - पराजय होना।

**पतामी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की नाव।

**पताल** - पु० [हिं] पाताल; यौ० —आँवला - औषध के काम आनेवाला एक प्रकार का बड़ा पौधा; —दंती - वह हाथी जिसका दाँत नीचे की ओर बढ़ा हो।

**पतावर** - पु० [हिं] सूखे पत्ते।

**पतासी** - स्त्री० [हिं] बढ़ई की छोटी रुखानी; एक तरह की छोटी मछली।

**पतिंवरा** - स्त्री० [सं] स्वेच्छा से वर चुननेवाली कन्या।

**पति** - 1. पु० [सं] मालिक; स्वामी, भर्ता, शौहर; शासक; मूल; गति; 2. स्त्री० साख; यौ०—कामा - पति चाहनेवाली स्त्री;—देवता, देवा - पतिव्रता स्त्री;—धर्म - पति के प्रति स्त्री का कर्तव्य;—प्राणा - पतिव्रता स्त्री; पति की प्यारी स्त्री; —लंघन - पहले पति के रहते दूसरे से विवाह करने का अपराध; —व्रत - पति के प्रति अनन्य प्रेम या भक्ति; —व्रता - साध्वी या सती स्त्री।

**पतिआरा** - पु० [हिं] विश्वास; प्रतीति।

**पतिक** - पु० [हिं] एक पुराना सिक्का, कार्षापण।

**पतित** - वि० [सं] गिरा हुआ; आचार-भ्रष्ट; बहुत नीच; पराजित; यौ०—उधारन - पतितों को तारनेवाला; सगुण ब्रह्म; —पावन - पतित को पवित्र करनेवाला या सुगति देनेवाला; ईश्वर; —वृत्त - भ्रष्ट आचरणवाला।

**पतितव्य** - वि० [सं] गिरने योग्य।

**पतियाना** - स० [हिं] विश्वास करना; सच्चा या ठीक मानना।

**पतियारा** - पु० [हिं] विश्वास।

**पतिवंती, पतिवती, पतिवत्नी** - स्त्री० [हिं] सधवा स्त्री।

**पतीजना** - स० [हिं] विश्वास करना, पतियाना।

**पतीर** - स्त्री० [हिं] पंक्ति।

**पतीरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की चटाई।

**पतील** - पु० [फ़ा] चिराग़ की बत्ती।

**पतीली** - स्त्री० [हिं] पीतल आदि की चौड़े मुँह और गहरे पेंदे की चिपटी बटलोई।

**पतुकी** - स्त्री० [हिं] पतीली; हंडी।

**पतुरिया** - स्त्री० [हिं] वेश्या; कुलटा।

**पतुही** - स्त्री० [हिं] छोटे या अपुष्ट दानोंवाली मटर की फली।

**पतोखदी** - स्त्री० [हिं] फूल या पत्ते आदि से बनी दवा।

**पतोखा** - पु० [हिं] पत्ते का बना दोना; पत्तों से बनी छतरी।

**पतोखी** - स्त्री० [हिं] छोटा पतोखा।

**पतोहू** - स्त्री० [हिं] पुत्रवधू।

**पतौआ** - पु० [हिं] पत्ता।

**पत्तंग** - पु० [सं] लाल चंदन।

**पत्तर** - पु० [हिं] धातु का पतला टुकड़ा; पत्तल; [त.] सोनार।

**पत्तल** - स्त्री० [हिं] पत्तों का बना भोजन करने का पात्र; पत्तल-भर खाद्यसामग्री; पत्तल में रखी हुई खाद्यसामग्री; मु० एक पत्तल के खानेवाले - बहुत नज़दीकी; जिस पत्तल में खाना उसीमें छेद करना - उपकार के बदले अपकार करना; कृतघ्न होना।

**पत्ता** - 1. [हिं] वृक्ष आदि का पत्र; कान में पहनने का एक गहना; काग़ज़ का गोल या चौकोर टुकड़ा; 2. वि० बहुत हलका; मु० —खड़कना - किसीकी आहट मिलना; —तोड़कर भागना - बेतहाशा भागना; —न हिलना - ज़रा भी हवा न चलना।

**पत्ति** - 1. पु० [सं] पैदल चलनेवाला यात्री; पदाति; योद्धा; 2. स्त्री० सेना का सबसे छोटा विभाग।

**पत्तिक** - वि० [सं] पैदल चलनेवाला।

**पत्ती** - 1. स्त्री० [हिं] छोटा पत्ता; भाग; साझा; पंखड़ी; भाँग; यौ०—दार - हिस्सेदार; 2. पु० राजपूतों की एक जाति; [सं] पैदल सिपाही, पत्ति।

**पत्तूर** - पु० [सं] एक प्रकार का शाक; लाल चंदन, पतंग नाम का पेड़।

**पत्थर** - पु० [हिं] पृथ्वी का कड़ा हिस्सा; वह द्रव्य जिससे पृथ्वी का कड़ा स्तर बना होता है; पाषाण; ओला; हीरा-जवाहर आदि कठोर वस्तु; ढेला; यौ० —कला - एक प्रकार की पुराने ढंग की बंदूक; —पानी - आँधी-पानी; घोर दुर्भिक्ष; —फोड़ा - संगतराश, पत्थर फोड़ने का काम करनेवाला; —बाज़ - पत्थर चलाकर मारनेवाला; मु०— का कलेजा, दिल या हृदय - अति कठोर चित्त; —की छाती - विषम परिस्थिति में भी न डिगनेवाला मन; —की लकीर - सदा बनी रहनेवाली वस्तु; —पर दूब जमना - अनहोनी बात होना।

**पत्नी** - स्त्री० [सं] परिणीता स्त्री; भार्या; यौ० —व्रत - विवाहिता स्त्री के सिवाय और किसी स्त्री से संबंध न रखने का व्रत।

**पत्र** - पु० [सं] पत्ता; चिट्ठी; काग़ज़; लिखा या छपा हुआ काग़ज़; दानपत्र; ताम्रपत्र; समाचारपत्र; पुस्तक आदि का कोई पन्ना; पंख; वर्क़; वाहन; तलवार आदि का फल; यौ०— कार - समाचारपत्र का संपादक या लेखक; —कारी - पत्रकार का पेशा; —पुट - दोना; —पुष्प - मामूली भेंट; सत्कार की मामूली चीज़ें; —बंध - फूलों से किया जानेवाला विशेष प्रकार का शृंगार; —माल - बेंत; —वाहक चिट्ठी ले जानेवाला; पक्षी; बाण; —विष - पत्तों से प्राप्त विष; —वेष्ट - कान का एक गहना; —व्यवहार - लिखा-पढ़ी।

**पत्रक** - पु० [सं] पत्ता; तेजपत्ता; पत्तों की श्रेणी।

**पत्रांग** - पु० [सं] पत्तंग वृक्ष; भोजपत्र नामक वृक्ष।

**पत्रांजन** - पु० [सं] स्याही।

**पत्रा** - पु० [हिं] पंचांग; पन्ना।

**पत्राचार** - पु० [सं] ख़त-किताबत, लिखा-पढ़ी ।

**पत्रावलि, पत्रावली** - स्त्री० [सं] गेरू; पत्तों की पंक्ति या श्रेणी; पीपल की कोंपलों के साथ जौ और मधु का मिश्रण ।

**पत्राहार** - पु० [सं] सिर्फ़ पत्तियाँ खाकर रहना ।

**पत्रिका** - स्त्री० [सं] चिट्ठी; काग़ज़ का कोई टुकड़ा या पन्ना; पाक्षिक या मासिक पत्र; [त] अख़बार; विवाह-निमंत्रण ।

**पत्री** - 1. स्त्री० [सं] चिट्ठी; 2. वि० पंखदार; पत्तियोंवाला; रथवाला; 3. पु० बाण; पक्षी; बाज़; वृक्ष; पर्वत; रथ ।

**पथ** - पु० [सं] रास्ता; मार्ग; कार्य या व्यवहार की पद्धति; **यौ०** —क - मार्गदर्शक; रास्ते का जानकार; —कल्पना - बाज़ीगरी; —गामी, चारी - पथिक, राही; —प्रदर्शक - मार्ग दिखानेवाला ।

**पथनार** - स्त्री० [हिं] उपले पाथना; मारने-पीटने की क्रिया ।

**पथरना** - स० [हिं] पत्थर पर रगड़कर तेज़ करना (औज़ार को); ठगना ।

**पथराना** - अ० [हिं] सूखकर पत्थर-जैसा कड़ा हो जाना; शुष्क हो जाना; चेतनाशून्य हो जाना ।

**पथरी** - स्त्री० [हिं] पत्थर की कूँड़ी; उस्तरे आदि की धार तेज़ करने का पत्थर का टुकड़ा, सिल्ली; चकमक पत्थर ।

**पथरीला** - वि० [हिं] पत्थर के टुकड़ों से युक्त ।

**पथरौटा** - पु० [हिं] पथरी ।

**पथरौटी** - स्त्री० [हिं] छोटा पथरौटा ।

**पथरौड़ा** - पु० [हिं] गोबर पाथने की जगह ।

**पथिक** - पु० [सं] यात्री, बटोही ।

**पथिका** - स्त्री० [सं] मुनक्का; एक तरह की अंगूरी शराब ।

**पथिकाश्रय** - पु० [सं] धर्मशाला; सराय ।

**पथी** - पु० [हिं] राही, मुसाफ़िर ।

**पथेरा** - पु० [हिं] ईंट या खपड़ा पाथनेवाला, कुम्हार ।

**पथौरा** - पु० [हिं] गोबर पाथने की जगह ।

**पथ्य** - 1. वि० [सं] लाभकर (आहार, औषध); उचित; अनुकूल; 2. पु० रोगी को दिया जानेवाला हितकर आहार; कल्याण; सेंधा नमक; **यौ०** पथ्यापथ्य - रोग की अवस्था में हितकर और अहितकर; **मु०**—से रहना - कुपथ्य न करना; वर्जित वस्तुओं से परहेज़ रखना ।

**पद** - पु० [सं] पैर; डग; पैर का निशान; चिन्ह; ओहदा; विषय; पात्र; किसी पद्य का चरण; विभक्ति-प्रत्यय से युक्त शब्द; वाक्यांश; मंत्रगत शब्दों का पृथक्करण; किरण; प्रदेश; वस्तु; रक्षा; **यौ०**—कंज, कमल - कमलवत चरण; —क्रम - चलना; —चर - प्यादा; —चारण - पैदल चलना; —चारी - पैदल चलनेवाला; —चिन्ह - पैर का निशान; —च्छेद - किसी वाक्य या वाक्यांश के पदों को एक दूसरे से अलग करना; —च्युत - जो अपने ओहदे से हटा दिया गया हो; —तल - तलवा; —त्याग - ओहदे से अलग हो जाना; —त्राण - जूता, खड़ाऊ आदि; —दलित - पैरों तले कुचला हुआ; —पंकज - चरण-कमल; —भंजन - शब्दों की निरुक्ति; —भंजिका - टिप्पणी; —मूल - तलवा; शरण; —योजना पदों या शब्दों को

जोड़ना ; —स्थ - जो किसी बड़े ओहदे पर हो।

**पदक** - पु० [सं] पग ; स्थान ; ओहदा, पद ; पाठ का ज्ञाता ; [हिं] गले का गहना ; तमगा, मेडल।

**पदवी** - स्त्री० [सं] उपाधि, खिताब ; मार्ग ; प्रणाली ; स्थान ; ओहदा।

**पदांक** - पु० [स] पैर का निशान।

**पदांत** - पु० [स] पद का अंतिम भाग।

**पदांतर** - पु० [स] दूसरा पद ; दूसरा स्थान ; एक क़दम की दूरी।

**पदांत्य** - वि० [सं] अंतिम।

**पदाक्रांत** - वि० [सं] पाँवों से कुचला हुआ।

**पदाघात** - पु० [सं] पैर का प्रहार।

**पदाति** - पु० [सं] पैदल चलनेवाला ; पैदल सिपाही।

**पदादि** - पु० [सं] छंद के चरण का आरंभ ; शब्द का पहला वर्ण।

**पदाधिकारी** - पु० [सं] ओहदेदार।

**पदाना** - स० [हिं] हैरान करना ; परेशान करना।

**पदानुग** - 1. वि० [सं] अनुकूल ; 2. पु० पीछे चलनेवाला ; साथी।

**पदानुशासन** - पु० [सं] व्याकरण।

**पदारविन्द** - पु० [सं] पदकंज।

**पदार्घ्य** - पु० [सं] अतिथि को पैर धोने के लिए दिया जानेवाला जल।

**पदार्थ** - पु० [सं] पद या शब्द का अर्थ ; वह वस्तु जिसका किसी शब्द से बोध हो ; कोई अभिधेय वस्तु ; **यौ०**—विद्या - वह विद्या जिसमें पदार्थों का निरूपण किया गया हो।

**पदार्पण** - पु० [सं] आगमन ; पैर रखना।

**पदावनत** - वि० [सं] विनीत ; पैरों पर झुका हुआ।

**पदावली** - स्त्री० [सं] पदों या शब्दों की परंपरा ; किसी कवि या लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्दसमूह ; [हिं] भजनों और गीतों आदि का संग्रह।

**पदाश्रित** - वि० [स] आश्रय में रहनेवाला।

**पदाहत** - वि० [सं] पैर से ठुकराया हुआ।

**पदिक** - 1. वि० [स] पैदल ; एक डग लंबा ; 2. पु० प्यादा ; पैर का अग्रभाग ; गले का एक गहना ; तमग़ा ; रत्न ; **यौ०**—हार - रत्नों की माला।

**पदुम** - पु० [हिं] घोड़े के शरीर पर होनेवाला एक चिन्ह ; पद्म।

**पदेन** - अव्य० [सं] पद की हैसियत से।

**पदोड़ा** - वि० [हिं] कायर ; बहुत पादनेवाला।

**पदोदक** - पु० [सं] चरणामृत।

**पदोन्नति** - स्त्री० [स] पद की वृद्धि, तरक़्क़ी।

**पद्धति, पद्धती** - स्त्री० [सं] पथ ; प्रथा ; प्रणाली, पंक्ति ; जाति या व्यवसाय आदि सूचित करने के लिए जोड़ा जानेवाला नाम के आगे का शब्द ; विवाह आदि संस्कारों की विधि सूचित करनेवाली पुस्तक।

**पद्म** - पु० [स] कमल ; एक प्रकार की मोर्चाबंदी ; कुबेर की नौ निधियों में से एक ; शरीरवर्ती छः चक्रों में से कोई एक ; धब्बा ; पैर में होनेवाला एक भाग्यसूचक चिन्ह ; खंभों का एक भाग (वास्तुकला) ; एक आसन ; सौ नील की संख्या ; **यौ०** —कंद - कमल की जड़ ; —कर्णिका - पद्म नामक व्यूह में सेना का केन्द्रभाग ; पद्म का बीजकोष ; —किंजल्क - कमल का केसर ; —कोष - कमल के भीतर का छत्ता ; संपुटित कमल के आकार की उँगलियों की एक मुद्रा ; —गंध, गंधी - कमल

की-सी गंधवाला ; —तंतु - मृणाल ; —नाभ - विष्णु ; एक नाग ; —नाभि - विष्णु ; —नाल - कमल की डंडी ; —नेत्र - कमल के समान नेत्र-वाला ; —पत्र - कमल की पंखड़ी ; —पाणि - जिसके हाथ में कमल का फूल हो ; —बीज - कमलगट्टा ; —मुद्रा - हाथ की उँगलियों की एक मुद्रा ; —योनि - ब्रह्मा ; —लांछन - ब्रह्मा ; सूर्य ; कुबेर ; नृप ; —लांछना - लक्ष्मी ; सरस्वती ; तारादेवी ; —लोचन - कमल-जैसे नेत्रों-वाला ; —व्यूह - प्राचीन काल की एक मोर्चाबंदी (युद्ध में)।

**पद्मा** - स्त्री० [सं] लक्ष्मी ; मनसादेवी ; लवंग ।

**पद्माकर** - पु० [सं] जलाशय ; कमलराशि ।

**पद्मासन** - पु० [सं] एक प्रकार का आसन ; ब्रह्मा ; शिव ; सूर्य ।

**पद्मिनी** - स्त्री० [सं] कमल की नाल ; कमल का पौधा ; कमल से युक्त जलाशय ; हथिनी ; चार प्रकार की स्त्रियों में से प्रथम श्रेणी की स्त्री ; **यौ०** — कांत - सूर्य ; — **खंड** - कमलों का समूह ।

**पद्मोत्तर** - पु० [सं] कुसुम ।

**पद्य** - 1. वि० [सं] पदसंबंधी ; शब्द-संबंधी ; अंतिम ; 2. पु० छन्दोबद्ध रचना, गद्य का उलटा ; शूद्र ; स्तुति ।

**पद्या** - स्त्री० [सं] पगडंडी ; शक्कर ।

**पधराना** - स० [हिं] आदर के साथ लिवा लाना ; आदरपूर्वक बैठाना ।

**पधरावनी** - स्त्री० [हिं] पधारने की क्रिया ।

**पधारना** - अ० [हिं] आना, पदार्पण करना ; चला जाना ।

**पन** - 1. पु० [हिं] प्रण, प्रतिज्ञा ; आयु के चार भागों में से कोई एक ; पानी का विकृत रूप ; पान ; पत्ता ; **यौ०**—कटा - खेतों में इधर-उधर पानी ले जानेवाला आदमी ; —कपड़ा - घाव पर बाँधा जानेवाला गीला कपड़ा ; —काल - अतिवृष्टिजनित अकाल ; —कुट्टी - वह छोटा खरल जिसमें दंतविहीन लोग खाने के लिए पान कूटते हैं ; —गाचा - सींचा हुआ खेत ; —घट - पानी भरने का घाट ; —चक्की - पानी की शक्ति से चलनेवाली चक्की ; —चोरा - छोटे मुँह और चौड़े पेट का बर्तन ; —डुब्बा - गोताख़ोर ; —डुब्बी - पानी के भीतर-भीतर चलनेवाला एक प्रकार का जहाज़ ; एक जलपक्षी ; —पथू - पानी लगाकर बनायी जानेवाली रोटी, पनेथी ; —भरा - पानी भरनेवाला नौकर ; —वाड़ी, वारी - पान का खेत ; —साल - पौसरा ; —सोखा - इंद्रधनुष ; —हरा, हारा - पानी भरने-वाला नौकर ; 2. वि० 'पाँच' शब्द का विकृत रूप ; —साखा - पाँच बत्तियोंवाली मशाल।

**पनच** - स्त्री० [हिं] धनुष की डोरी ; बाँस का छिलका ।

**पनपना** - अ० [हिं] हरा-भरा होना ; फूलना-फलना ; पल्लवित होना ।

**पनपाना** - स० [हिं] किसीके पनपने का कारण होना ।

**पनस** - पु० [सं] कटहल ; काँटा ; एक तरह का साँप ।

**पनहा** - पु० [हिं] कपड़े आदि की चौड़ाई ; भेद ; चोरी गये माल का पता लगानेवाला ।

**पनही** - स्त्री० [हिं] जूता ।

**पना** - पु० [हिं] आम, इमली आदि के रस या गूदे से तैयार किया जानेवाला एक

प्रकार का पेय पदार्थ जो गर्मी के मौसम में लोग पीते हैं।

**पनाती** - पु० [हिं] नाती का बेटा।

**पनारा, पनाला** - पु० [हिं] नाबदान; नाला; प्रवाह।

**पनारी, पनाली** - स्त्री० [हिं] नाली, मोरी।

**पनासना** - स० [हिं] पालना-पोसना।

**पनाह** - स्त्री० [फ़ा] परित्राण; शरण; आड़; शरण लेने की जगह; शरण्य; मु०—लेना - शरण के लिए कहीं जाना।

**पनिया** - 1. वि० [हिं] पानी में उत्पन्न; पानी से संबंधित; 2. पु० पानी; यौ० —सोत - बहुत गहरा।

**पनियाना** - 1. स० [हिं] पानी से सराबोर करना; 2. अ० पानी से चपचपाना।

**पनियारा** - पु०, **पनियारी** - स्त्री० [हिं] बाढ़।

**पनिहा** - 1. वि० [हिं] पानी का; जलयुक्त; 2. पु० पनहा।

**पनी** - 1. पु० [हिं] प्रण करनेवाला; 2. स्त्री० पन्नी, सुनहला-रुपहला काग़ज़।

**पनीर** - पु० [फ़ा] फाड़े हुए दूध का जमा हुआ छेना; वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

**पनुआँ** - 1. पु० [हिं] गुड़ के कड़ाह का धोवन जिसे लोग शरबत की तरह पीते हैं; 2. वि० फीका।

**पनेथी** - स्त्री० [हिं] वह रोटी जिसमें पलेथन की जगह पानी लगाया गया हो।

**पनेला** - पु० [हिं] एक प्रकार का गाढ़ा, चिकना और चमकदार कपड़ा जो अधिकतर अस्तर के काम आता है।

**पनौआ** - पु० [हिं] पान के पत्ते की पकौड़ी।

**पनौटी** - स्त्री० [हिं] पान रखने की पिटारी; बाँस का पानदान।

**पन्न** - 1. वि० [सं] गिरा हुआ; गया हुआ; 2. पु० अधोगमन; रेंगना।

**पन्नई** - वि० [हिं] पन्ने के रंग का।

**पन्नग** - पु० [सं] साँप; सीसा; पन्ना; यौ० —केसर - नागकेसर।

**पन्नगी** - स्त्री० [सं] सर्पिणी, साँपिन।

**पन्ना** - पु० [हिं] हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न; पुस्तक आदि के दो पृष्ठ; आम आदि का पना।

**पन्नी** - स्त्री० [हिं] रांगे आदि का हलका व चमकीला पत्तर; सोने-चाँदी का पानी चढ़ाया हुआ काग़ज़ या चमड़ा; एक भोज्य वस्तु।

**पपड़ा** - पु० [हिं] लकड़ी आदि का सूखा छिलका; रोटी का छिलका।

**पपड़िया** - वि० [हिं] जिसमें पपड़ी पड़ी हो।

**पपड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा पपड़ा; सूखकर ऐंठी हुई ऊपरी परत; घाव का खुरंड; वृक्ष की सूखकर छिटकी हुई छाल।

**पपी** - पु० [सं] सूर्य; चंद्रमा।

**पपीता** - पु० [हिं] एक फल।

**पपीहरा, पपीहा** - पु० [हिं] वसंत और वर्षा ऋतु में मीठी बोली बोलनेवाला हलके काले रंग का एक पक्षी, चातक।

**पपैया** - पु० [हिं] अमोले की गुठली को घिसकर बनायी गयी सीटी; अमोला।

**पपोटन** - स्त्री० [हिं] एक पौधा जिसके पत्ते घाव को पकाने के लिए उसपर बाँधे जाते हैं।

**पपोटा** - पु० [हिं] पलक।

**पपोरना** - स० [हिं] बाँहों को ऐंठकर उनकी पुष्टता देखना।

**पपोलना** - अ० [हिं] दंतहीन का मुँह चुभलाना या चलाना।

**पवई** - स्त्री० [हिं] मैना की जाति की एक चिड़िया।
**पवना** - स० [हिं] पाना।
**पमरा** - स्त्री० [स] एक गंधद्रव्य।
**पमाना** - अ० [हि] डींग मारना।
**पमार** - पु० [हिं] राजपूतों का एक भेद, परमार।
**पम्मन** - पु० [हिं] बड़े और पुष्ट दानोंवाला बढ़िया गेहूँ।
**पयःपान** - पु० [सं] दूध पीना।
**पयःपूर** - पु० [सं] जलाशय; झील।
**पय** - पु० [सं] दूध; जल; शुक्र, वीर्य; अन्न; ओज; यौ० —निधि - समुद्र; —हारी - केवल दूध पीकर रहनेवाला साधु।
**पयस्य** - 1. वि० [सं] दूध का बना हुआ; दूध का; जल का; 2. पु० दूध का विकार, मट्ठा आदि।
**पयस्विनी** - स्त्री० [सं] नदी; दूध देनेवाली गाय; रात; बकरी; दूधफेनी।
**पयान** - पु० [हिं] प्रस्थान, गमन, प्रयाण।
**पयाम** - पु० [फ़ा] संदेश; यौ०—बर - संदेशवाहक।
**पयाल** - पु० [हिं] पके हुए धान या कोदों आदि की सूखी डंठल; मु०—झाड़ना - श्रम करना।
**पयोघन** - पु० [स] ओला।
**पयोद** - पु० [सं] मेघ; यौ०—सुहृद - मोर।
**पयोधर** - पु० [सं] बादल; स्तन; नारियल; रीढ़।
**पयोधि, पयोनिधि** - पु० [सं] समुद्र।
**परंच** - अव्य० [सं] और भी; पर; तो भी।
**परंज** - पु० [सं] तेल पेरने का कोल्हू; छुरी का फल; फेन; इंद्र का खड्ग।
**परंजा** - स्त्री० [सं] उत्सव आदि में होनेवाली औज़ारों की ध्वनि।
**परंतप** - वि० [सं] शत्रुओं को संतप्त करनेवाला।
**परंतु** - अव्य० [स] मगर, लेकिन, किन्तु।
**परंपद** - पु० [सं] वैकुण्ठ; मोक्ष; उच्च पद।
**परंपर** - 1. पु० [सं] पौत्र, प्रपौत्र आदि; 2. वि० क्रमागत।
**परंपरया** - अव्य० [सं] परंपरा के अनुसार।
**परंपरा** - स्त्री० [सं] अविच्छिन्न क्रम; क्रमबद्ध समूह या पंक्ति; प्रथा; वंश; अनुकरण; यौ०—गत - सदा से चला आता हुआ।
**परंपरीण** - वि० [सं] वंशक्रम से प्राप्त।
**पर** - 1. वि० [सं] दूसरा; पराया; बाद का; अतिरिक्त; सीमा से बाहर; श्रेष्ठ; विरोधी; लीन; 2. सर्व० [हिं] दूसरा व्यक्ति; यौ०— कलत्र - दूसरे की स्त्री; —काज - दूसरे का काम; —काजी - परोपकारी; —काय - दूसरे का शरीर; —काय-प्रवेश - योगी का अपनी आत्मा को किसीके शव में पहुँचाना; —कृति - दूसरे की कृति या उसका वर्णन; —क्षेत्र - दूसरे का शरीर; दूसरे का खेत; दूसरे की स्त्री; —गाछा - दूसरे पेड़ों पर लगनेवाला पौधा; —गाछी - अमरबेल; —गामी - दूसरे के साथ जानेवाला; दूसरे के लिए लाभदायक; —ग्रंथि - उंगली आदि की पोर; —चक्र - शत्रु का राष्ट्र या सेना आदि; —छंद - पराधीन; —छिद्र - दूसरे का दोष; —जन - पराया; —जात - अन्य द्वारा पालित; नौकर; —जाति - दूसरी जाति; —जित - विजित; —तंत्र - पराधीन; —दार, दारा - परायी स्त्री; —देश, देश - दूसरा देश; —देशी, देसी -

दूसरे देश का ; प्रवासी ; —द्रोही, द्वेषी - दूसरे से द्वेष या शत्रुता करनेवाला ; —धन - परायी संपत्ति ; —धर्म - अपने धर्म से भिन्न धर्म ; —धाम - वैकुण्ठ ; परमेश्वर ; —पक्ष - शत्रु का पक्ष ; विरोधी की दलील ; —पिण्ड - दूसरे का अन्न ; —पीड़क - दूसरों को सतानेवाला ; —पुरुष - अजनबी ; पुरुषोत्तम ; पति से भिन्न पुरुष ; —पुष्ट - कोयल ; —ब्रह्म - निर्गुण और उपाधिरहित ब्रह्म ; —भव - दूसरा जन्म ; —भाग - दूसरे का अंश ; अंतिम भाग ; प्रचुरता ; —भाग्योपजीवी - दूसरे की कमाई पर निर्वाह करनेवाला ; —भुक्त - दूसरे के द्वारा भोगा हुआ ; —भृत - कोकिल ; जिसका पालन दूसरे ने किया हो ; —मत - दूसरे का मत ; अपने से भिन्न मत ; —मर्मज्ञ - दूसरे का भेद जाननेवाला ; —लोक - स्वर्ग आदि लोक जहाँ मृत्यु के बाद प्राणी की आत्मा जाती है ; —वश - पराधीन ; —वशता- पराधीनता ; —वाद - अफ़वाह ; दूसरे की निन्दा ; प्रत्युत्तर देनेवाला ; —स्त्री - परायी स्त्री ; —हरण - दूसरे का धन हर लेना ; —हित - दूसरे का कल्याण ; दूसरे का कल्याण करनेवाला ; 3. पु० अजनबी ; गौण अर्थ ; शत्रु ; ब्रह्म ; मोक्ष ; न्यायशास्त्र में सामान्य नामक पदार्थ का एक भेद , [फ़ा] पंख, डैना ; यौ० —कट, कटा - जिसके पर कटे हों ; मु० —कट जाना - अशक्त हो जाना ; —जमना - पंख जमना ; शरारत सूझना ; —निकलना - होशियार होना ; 4. अव्य० [हिं] किन्तु, लेकिन ; तो भी ; पीछे ।

**परई** - स्त्री० [हिं] मिट्टी का बड़ा कटोरा ।

**परकना** - अ० [हिं] चस्का लगना ; किसी विषय में ढीठ होना ।

**परकार** - पु० [फ़ा] वृत्त की परिधि बनाने का एक औज़ार ; [हिं] प्रकार ।

**परकाला** - पु० [फ़ा] टुकड़ा ; चिनगारी ; शीशे का टुकड़ा ; सीढ़ी ; मु० आफ़त का परकाला - गज़ब ढानेवाला ।

**परकासना** - स० [हिं] प्रकाशित करना ; प्रगट करना ।

**परकीय** - वि० [सं] दूसरे का ।

**परकीया** - स्त्री० [सं] नायिका का एक भेद, वह नायिका जो गुप्त रूप से परपुरुष से प्रेम करे ।

**परकोटा** - पु० [हिं] गढ़ आदि की रक्षा के लिए चारों ओर उठायी गयी दीवार ; पानी आदि रोकने का बाँध ।

**परख** - स्त्री० [हिं] परीक्षा ; किसीके गुण-दोष का पता लगाने की शक्ति ।

**परखचा** - पु० [हिं] टुकड़ा, खंड ।

**परखना** - स० [हिं] जाँच करना ; पहचानना ; किसीकी राह देखना ।

**परख़ाश** - पु०, स्त्री० [फ़ा] लड़ाई, झगड़ा ।

**परग** - पु० [हिं] डग, क़दम ।

**परगना** - पु० [फ़ा] वह इलाक़ा या हिस्सा जिसमें कई गाँव हों ; यौ० परगनेदार - परगने का अफ़सर ।

**परगहनी** - स्त्री० [हिं] सुनारों का एक नली के आकार का औज़ार जिससे वे चाँदी या सोने की गुल्लियाँ ढालते हैं ।

**परगार** - पु० [फ़ा] वृत्त की परिधि बनाने का एक औज़ार ।

**परचना** - अ० [हिं] हिलमिल जाना ; चस्का लगना ।

**परचम** - पु० [फ़ा] झंडे का कपड़ा ; जुल्फ़ और काकुल ।

**परचर** - पु० [हिं] बलों की एक जाति ।

**परचा** - पु० [फ़ा] टुकड़ा, खंड ; काग़ज़ का टुकड़ा ; पत्र ; प्रश्न-पत्र ; परिचय ; सबूत ; मु०— देना - किसीको पूर्ण परिचय देना ; —माँगना - सबूत देने को कहना ।

**परचाना** - स० [हिं] हिलाना ; मिलाना ; चस्का लगाना ।

**परचारना** - स० [हिं] प्रचार करना ।

**परचून** - पु० [हिं] आटा, चावल आदि भोजन की सामग्री ।

**परचूनी** - पु० [हिं] परचून की दूकान करनेवाला ।

**परछत्ती** - स्त्री० [हिं] घर या कोठरी के भीतर सामान रखने की पाटन ; टाँड़ ; हल्का छप्पर ।

**परछन** - स्त्री० [हिं] विवाह की एक रीति जिसमें बरात के द्वार पर आने पर वर-पूजा होती है ।

**परछना** - स० [हिं] वर-पूजा करना ।

**परछा** - पु० [हिं] कोल्हू के बैल की आँखों पर बाँधने का कपड़ा ; सूत लपेटने की जुलाहों की नली ; कड़ाही ; मिट्टी का मझोले आकार का बर्तन ; भीड़ के छँटने से मिलनेवाला अवकाश ; निबटारा ।

**परछाईं** - स्त्री० [हिं] दर्पण आदि में पड़नेवाली किसीकी छायाकृति, प्रतिच्छाया ; मु० —से डरना - मामूली बात से भी घबड़ाना ।

**परछालना** - स० [हिं] प्रक्षालन करना, धोना ।

**परजरना** - अ० [हिं] जलना ; क्रुद्ध होना ; खीज उठना ; द्वेष करना ।

**परजा** - स्त्री० [हिं] ज़मींदारी में बसनेवाला आसामी ; नाई-बारी आदि आश्रित जन ; प्रजा ।

**परजाता** - पु० [हिं] हरसिंगार नामक पुष्प ।

**परजौट** - पु० [हिं] सालाना किराये पर मकान उठाने या ज़मीन लेने-देने की रीति ; मकान बनाने की ज़मीन का सालाना किराया ।

**परणना** - स० [हिं] ब्याहना ।

**परतः** - अव्य० [सं] दूसरे से ; शत्रु से ; बाद में, पीछे ; आगे ।

**परत** - स्त्री० [हिं] तह, स्तर ।

**परतच्छ** - वि० [हिं] प्रत्यक्ष ।

**परतल** - पु० [हिं] लदुवा घोड़े की पीठ पर रखने की गोनी ।

**परतला** - पु० } [हिं] तलवार आदि रखने
**परतली** - स्त्री० } की चमड़े की वह पट्टी जो कंधे पर लटकायी जाती है ।

**परताजना** - पु० [हिं] गहनों पर मछली की आकृति बनाने का सोनारों का एक औज़ार ।

**परती** - स्त्री० [हिं] वह खेत जो बिना जोते छोड़ दिया गया हो ; वह चद्दर जिससे हवा कर अनाज ओसाते हैं ।

**परतेजना** - स० [हिं] त्यागना, छोड़ना ।

**परतौ** - पु० [फ़ा] रश्मि ; प्रतिच्छाया ।

**परत्र** - 1. अव्य० [सं] दूसरे स्थान में ; परलोक में ; 2. पु० परलोक ।

**परदनिया** - स्त्री० [हिं] धोती ।

**परदनी** - स्त्री० [हिं] धोती ; दक्षिणा ; बख़्शिश ।

**परदा** - पु० [फ़ा] आड़ करनेवाला कपड़ा या चिक आदि ; ओट ; लोगों की दृष्टि से अपने को बचाने की स्थिति ; यौ०— ख़ाक - ज़मीन ; —दर - दोष प्रगट करनेवाला ; भेद खोलनेवाला ; — दरी - दोष प्रगट करना ; भेद खोलना ; —दार - छिपनेवाला ; —नशीन - परदे में रहनेवाला ; —पोश - दोष छिपानेवाला ; मु० —उठाना या खोलना -

रहस्य की बात प्रगट करना ; आँख पर परदा पड़ना - दिखायी न देना ; —फ़ाश करना - दोष प्रगट करना ; किसीका परदा रखना - प्रतिष्ठा की रक्षा करना ; परदे के पीछे - छिपे-छिपे ; परदे में रहना - सबके सामने न आना।

**परदाख़्त** - स्त्री० [फ़ा] परवरिश ; सहायता ; रक्षा।

**परदाज़** - पु० [फ़ा] सजावट ; चित्र की रूपरेखा ; ढंग।

**परदादा** - पु० [हिं] दादा का पिता।

**परधान** - 1. वि० [हिं] प्रधान ; 2. पु० मंत्री ; नायक ; माया ; बुद्धि ; परिधान।

**परन** - 1. पु० [हिं] मृदंग आदि के प्रधान बोलों के बीच में बजाये जानेवाले बोलों के टुकड़े ; प्रण, टेक ; पर्ण, पत्ता ; यौ०—गृह - झोंपड़ी ; 2. स्त्री० आदत।

**परनाना** - पु० [हिं] नाना का पिता।

**परनानी** - स्त्री० [हिं] परनाना की स्त्री।

**परनाला** - पु० [हिं] पनाला, वह बड़ी नाली जिससे होकर गंदा पानी बहता है।

**परनाली** - स्त्री० [हिं] छोटा परनाला।

**परनि** - स्त्री० [हिं] प्रण ; आदत, टेव।

**परनी** - स्त्री० [हिं] रांगे की पन्नी।

**परनौत** - स्त्री० [हिं] प्रणाम।

**परपंच** - पु० [हिं] प्रपंच।

**परपंचक** - वि० [हिं] बखेड़ा मचानेवाला ; धूर्त।

**परपट** - पु० [हिं] चौरस मैदान।

**परपराना** - अ० [अनु] मिर्च आदि तीखी वस्तुओं के स्पर्श से जीभ आदि का जलना ; 'पर-पर' शब्द करना।

**परपूठा** - वि० [हिं] पक्का ; दृढ़।

**परपैठ** - स्त्री० [हिं] असली हुंडी की तीसरी नक़ल।

**परपोता** - पु० [हिं] पोते का पुत्र।

**परबंद** - पु० [हिं] नाच की एक विशेष अंग-चेष्टा।

**परब** - 1. पु० [हिं] पर्व ; 2. स्त्री० किसी रत्न का छोटा टुकड़ा।

**परबत्ता** - पु० [हिं] पहाड़ी तोता।

**परबाल** - पु० [हिं] पलक पर का निकला हुआ अनावश्यक बाल ; प्रबाल।

**परबी** - स्त्री० [हिं] पर्व का दिन ; त्योहारी।

**परबोधना** - स० [हिं] प्रबुद्ध करना, जगाना ; ज्ञान का उपदेश देना ; सांत्वना देना।

**परम** - 1. वि० [सं] सर्वोत्कृष्ट ; मुख्य ; आद्य ; सबसे ख़राब ; अत्यधिक ; 2. पु० ओंकार ; शिव ; विष्णु ; यौ०—काण्ड - बहुत ही शुभ अवसर या समय ; —गति - मुक्ति ; —गव - बहुत अच्छा साँड़ ; —गहन - बहुत पेचीदा ; अति कठिन ; —तत्त्व - मूल तत्त्व ; ब्रह्म ;—धाम - वैकुंठ ;—पद - मुक्ति ; —पिता - परमेश्वर ; —पुरुष - परमात्मा, विष्णु ; —फल - सबसे उत्कृष्ट फल ; मुक्ति ; —भट्टारक - चक्रवर्ती राजाओं की एक प्राचीन उपाधि ; —रस - तक्र, मट्ठा।

**परमक** - वि० [सं] सर्वोत्कृष्ट।

**परमटा, परमाटा** - पु० [हिं] अस्तर के काम आनेवाला एक वस्त्र।

**परमा** - 1. स्त्री० [सं] शोभा ; सौन्दर्य ; 2. पु० प्रमेह रोग।

**परमाक्षर** - पु० [सं] ओंकार।

**परमाणु** - पु० [सं] किसी पदार्थ का वह सबसे छोटा भाग जिसके और टुकड़े न हो सकें ; यौ० —बम - युरेनियम से तैयार किया जानेवाला एक महा विध्वंसकारी बम, एटम बम।

**परमात्मा** - पु० [सं] परमेश्वर।

**परमाद्वैत** - पु० [सं] सभी भेदों से रहित परमात्मा।

**परमानंद** - पु० [सं] उत्तम आनंदरूपी परमात्मा ; उत्तम आनंद ।

**परमान** - पु० [हिं] प्रमाण ; विश्वास ; परिमाण ; सत्य बात ।

**परमान्न** - पु० [सं] चावल की खीर, पायस ।

**परमायु** - स्त्री० [सं] सर्वाधिक आयु ।

**परमार्थ** - पु० [सं] नित्य और अबाधित पदार्थ ; सत्य ; मोक्ष ; उत्कृष्ट वस्तु ; **यौ०**—वादी - तत्त्वज्ञ ; —विद् - ब्रह्मज्ञानी ; दार्शनिक ।

**परमार्थी** - वि० [सं] परमार्थ को जानने या प्राप्त करने का इच्छुक ।

**परमुख** - वि० [हिं] पराङ्मुख ।

**परमेश** - पु० [सं] सगुण ब्रह्म ; चक्रवर्ती राजा ।

**परमेश्वरी** - स्त्री० [सं] दुर्गा ।

**परमेष्ठी** - पु० [सं] ब्रह्मा ; अर्हत ; शिव ; गुरु ; सिद्ध ; अग्नि ।

**परला** - वि० [हिं] दूसरी ओर का ; **मु०** परले सिरे का - अंतिम सीमा का ; हद दरजे का ।

**परवर** - 1. पु० [हिं] परवल ; आँख का एक रोग ; 2. वि० [फ़ा] पालन-पोषण करनेवाला ; **यौ०**—दा - पाला हुआ ;—दिगार - पालन-पोषण करनेवाला ; ईश्वर ।

**परवरिश** - स्त्री० [फ़ा] पालन पोषण ।

**परवल** - पु० [हिं] एक प्रसिद्ध लता या उसका फल जिसकी तरकारी होती है ।

**परवस्ती** - स्त्री० [हिं] पालन-पोषण ।

**परवा** - 1. स्त्री० [हिं] पक्ष की पहली तिथि ; एक घास ; [फ़ा] चाह ; चिन्ता ; खटका ; 2. पु० मिट्टी का बना एक कटोरा-जैसा बर्तन ।

**परवाज़** - 1. स्त्री० [फ़ा] उड़ना ; घमंड ; नाज़ ; 2. वि० उड़नेवाला ; डींग हाँकनेवाला ।

**परवाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] उड़ान ।

**परवाणि** - पु० [सं] धर्माध्यक्ष ; वत्सर ; मयूर ।

**परवान** - 1. पु० [हिं] जहाज़ का मस्तूल ; प्रमाण ; अवधि ; वि० 2. न्यायपूर्ण ; **यौ०** —चढ़ना - बढ़ना ।

**परवानना** - स० [हिं] प्रमाणरूप मानना ।

**परवानगी** - स्त्री० [फ़ा] इजाज़त ; आज्ञा ।

**परवाना** - पु० [फ़ा] आज्ञापत्र ; जागीर का हुक्म ; नियुक्ति-पत्र ; पतिंगा ; **यौ०** —ए-गिरफ़्तारी - बंदी बनाने का आज्ञापत्र ; —ए-तलाशी - तलाशी का आज्ञापत्र ; —ए-राहदारी - पासपोर्ट ।

**परवाया** - पु० [हिं] चारपाई के पायों के नीचे रखी जानेवाली वस्तु ।

**परवाह** - स्त्री० [हिं] परवा ।

**परवास** - पु० [हिं] आच्छादन ; प्रवास ।

**परवेख** - पु० [हिं] बादलों की समीपता के कारण यदा-कदा सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर बन जानेवाला किरणों का मंडल ; घेरा ।

**परश** - पु० [सं] पारस पत्थर ।

**परशु, परश्वध** - पु० [सं] कुल्हाड़ी की तरह का एक अस्त्र, फरसा ।

**परसना** - स० [हिं] खानेवालों के सामने भोज्य वस्तुएँ रखना, परोसना ; छूना, स्पर्श करना ।

**परसा** - पु० [हिं] कुठार ; पत्तल आदि में रखा हुआ एक व्यक्ति के खाने-भर का भोजन ।

**परसाना** - स० [हिं] भोज्य वस्तु सामने रखवाना ; स्पर्श कराना ; फैलाना ।

**परसाल** - अव्य० [हिं] पिछले साल ; अगले साल ।

**परसिया** - स्त्री० [हिं] हँसिया ।

**परसीया** - पु० [हिं] एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज़ या कुर्सी आदि बनाने के काम आती है।

**परसों** - अव्य० [हिं] पिछले दिन से एक दिन पहले; अगले दिन से एक दिन आगे।

**परसौहाँ** - वि० [हिं] स्पर्श करनेवाला।

**परस्त** - वि० [फ़ा] पूजा करनेवाला।

**परस्तार** - पु० [फ़ा] पूजा करनेवाला; दास; सेवक।

**परस्तिश** - स्त्री० [फ़ा] पूजा, आराधना; यौ०— गाह - पूजा का स्थान।

**परस्पर** - अव्य० [सं] एक दूसरे के साथ; आपस में।

**परहरना** - स० [हिं] त्यागना, छोड़ना।

**परहेज़** - पु० [फ़ा] निषिद्ध वस्तुओं से बचना; बीमार का हानिकर वस्तु न खाना; खाने-पीने आदि में संयम; यौ०— गार - परहेज़ करनेवाला; पाप से बचनेवाला; —गारी - संयम; पाप से बचने का कार्य।

**परहेलना** - स० [हिं] अनादर करना; तुच्छ समझना।

**परांग** - पु० [सं] दूसरे का अंग; श्रेष्ठ अंग।

**परांज, परांजन** - पु० [सं] तेल पेरने का कोल्हू।

**परौंठ** - पु० [हिं] घी लगाकर तवे पर सेंकी जानेवाली रोटी।

**परांत** - पु० [सं] मृत्यु; यौ० —काल - मृत्यु-काल।

**परा** - 1. स्त्री० [सं] मूलाधार में स्थित नादरूपिणी वाणी; ब्रह्मविद्या; गंगा; 2. उप० एक उपसर्ग जो अर्थ में प्रातिलोम्य (पराहत), प्राधान्य (परागत), घर्षण (पराइष्ट), आभिमुख्य (पराक्रान्त), विक्रम (पराजित) आदि के द्योतन के लिए प्रयुक्त होता है; यौ०— गति - गायत्री।

**पराइ, पराई** - वि० [हिं] दूसरे की।

**पराकरण** - पु० [सं] दूर करना; अस्वीकार करना; उपेक्षा करना।

**पराकाश** - पु० [सं] दूरवर्ती आशा।

**पराकाष्ठा** - स्त्री० [सं] अंतिम सीमा; ब्रह्मा की आधी आयु।

**पराक्रम** - पु० [सं] सामर्थ्य; बल; शौर्य; विक्रम; पुरुषार्थ; आक्रमण।

**पराक्रमी** - वि० [सं] शूर; पुरुषार्थी।

**पराक्रांत** - वि० [सं] शक्तिशाली; उत्साही; वीर; आक्रांत।

**पराग** - पु० [सं] फूल के भीतर की धूल, पुष्परज; उपराग; चन्दन; सूर्य या चन्द्र का ग्रहण; ख्याति; यौ०—केसर - फूलों के भीतर के वे पतले व लंबे डोरे जिनपर केसर लगा रहता है।

**परागत** - वि० [सं] मृत; वेष्टित; फैला हुआ।

**परागना** - अ० [हिं] प्रेमासक्त होना; प्रेम में पड़ना।

**पराङ्मुख** - वि० [सं] विमुख; प्रतिकूल।

**पराचीन** - वि० [हिं] प्राचीन।

**पराजय** - स्त्री० [सं] हार, अपजय।

**पराजित** - वि० [सं] हारा हुआ; हराया हुआ।

**परात** - स्त्री० [हिं] थाली के आकार का पीतल आदि का बड़ा बर्तन, थाल।

**परात्पर** - 1. वि० [सं] जो सबसे परे हो; 2. पु० परमात्मा।

**पराधि** - स्त्री० [सं] तीव्र मानसिक व्यथा।

**पराधीन** - वि० [सं] परवश, जो दूसरे के अधीन हो।

**पराधीनता** - स्त्री० [सं] पराधीन होने की दशा ।

**पराना** - अ० [हिं] पलायन करना, भागना ।

**परान्न** - पु० [सं] दूसरे का अन्न ; **यौ०**— भोजी - दूसरे का दिया हुआ अन्न खाकर निर्वाह करनेवाला ।

**पराभव** - पु० [सं] तिरस्कार ; पराजय ; विनाश ।

**पराभूत** - वि० [सं] हारा हुआ, परास्त ; तिरस्कृत ; नष्ट ।

**परामर्श** - पु० [सं] सलाह ; युक्ति ; विवेचन ; पकड़ना ; खींचना ; आक्रमण ; स्पर्श करना ; स्मरण करना ।

**परामृष्ट** - वि० [सं] पकड़कर खींचा हुआ ; स्पष्ट ; विचारा हुआ ; संबद्ध ।

**परायण** - 1. वि० [सं] अति आसक्त ; अवलंबित ; 2. पु० अति आसक्ति ; उत्तम आश्रय ; विष्णु . सार ।

**परायत्त** - वि० [सं] पराधीन ।

**पराया** - वि० [हिं] दूसरे का ; अपने से भिन्न ।

**परार** - 1. वि० [हिं] पराया ; 2. पु० पयाल ।

**परार्थ** - 1. पु० [सं] सबसे बड़ा लाभ ; दूसरे का कार्य ; 2. वि० जो दूसरे के निमित्त हो ।

**परार्ध** - पु० [सं] गणित में सबसे बड़ी संख्या; शंख ; ब्रह्मा की आयु का आधा भाग ।

**परावत** - पु० [सं] फालसा ।

**परावन** - पु० [हिं] सामूहिक पलायन ; भगदड़ ।

**परावर्त, परावर्तन** - पु० [सं] विनिमय ; लौटना ; ग्रंथों को दोहराना ; **यौ०**— व्यवहार - फ़ैसले का पुनर्विचार ।

**परावर्तित** - वि० [सं] लौटाया हुआ ।

**परावह** - पु० [सं] वायु के सात भेदों में से एक ।

**परावृत्त** - वि० [सं] लौटा हुआ ; लौटाया हुआ ; बदला हुआ ।

**पराश्रय** - 1. पु० [सं] दूसरे का सहारा ; 2. वि० दूसरे पर आश्रित ।

**परास्त** - वि० [सं] हराया हुआ ; दबाया हुआ ; फेंका हुआ ।

**पराह** - पु० [सं] दूसरा दिन ।

**पराहत** - 1. वि० [सं] आक्रांत ; हटाया हुआ ; खंडित ; जोता हुआ ; 2. पु० आघात ।

**पराहति** - स्त्री० [सं] खंडन ; विरोध ।

**पराह्न** - पु० [सं] दिन का तीसरा पहर ।

**परिंदा** - पु० [फ़ा] पक्षी ; चिड़िया ।

**परि** - उप० [सं] एक उपसर्ग जो दोषकथन, व्याप्ति, भूषण, पूजन, आच्छादन आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्दों के पहले आता है ।

**परिकंप** - पु० [सं] कँपकँपी ; अत्यधिक भय ।

**परिकथा** - स्त्री० [सं] अनुकथा ; बड़ी कथा के अंतर्गत छोटी कथा ।

**परिकर** - पु० [सं] परिवार ; अनुचरवर्ग ; कमरबंद ; तैयारी ; पलंग ; समूह ; विवेक ; सहायक ; निर्णय ; फ़ैसला ।

**परिकर्तन** - पु० [सं] काटना , शूल ।

**परिकर्म** - पु० [सं] शरीर में केसर आदि लगाना ; पूजन ; समारंभ ; पैर को रंगना ; परिष्कार ।

**परिकर्मा, परिकर्मी** - पु० [सं] सेवक, परिचारक ।

**परिकर्ष, परिकर्षण** - पु० [सं] बाहर खींच लाना या निकालना ।

**परिकल्पना** - स्त्री० [सं] मन में गढ़ना ; आविष्कार करना ; निश्चय करना ; प्रस्तुत करना ।

**परिकीर्ण** - वि० [सं] चारों ओर फैला हुआ ; भरा हुआ ।

**परिकीर्तन** - पु० [सं] घोषित करना ; गुण का अत्यधिक वर्णन ।

**परिकूल** - पु० [सं] तटवर्ती भूमि ।

**परिक्रम** - पु० [सं] प्रदक्षिणा करना ; टहलना ; क्रम ; प्रवेश ।

**परिक्रमा** - स्त्री० [स] प्रदक्षिणा ; फेरी देने का मार्ग ।

**परिक्रय** - पु० [सं] मज़दूरी ; ख़रीद ; किराया ; द्रव्य देकर ख़रीदा हुआ माल ।

**परिक्रान्त** - 1. वि० [स] जिसपर गमन किया गया हो ; 2. पु० डग ; पदचिन्ह ।

**परिक्रिया** - स्त्री० [सं] घेरना ; ध्यान ; मनोयोग ।

**परिक्लान्त** - वि० [स] बहुत अधिक थका हुआ ।

**परिक्लिष्ट** - 1. वि० [स] थका हुआ ; परेशान ; 2. पु० तकलीफ़ ; परेशानी ।

**परिक्षिप्त** - वि० [सं] प्रकीर्ण ; घिरा हुआ ; त्यक्त ; चारों ओर से घिरी हुई सेना ।

**परिक्षीण** - वि० [सं] नष्ट ; तबाह ; अतिक्षीण ; दिवालिया ; शक्तिहीन (सेना) ।

**परिक्षेप** - पु० [सं] टहलना ; फैलाना ; परित्याग ; चारों ओर से घेरना ; ज्ञानेन्द्रिय ।

**परिखा** - स्त्री० [सं] नगर या दुर्ग को दुर्गम बनाने के लिए चारों ओर खोदी जानेवाली खाई ।

**परिखान** - स्त्री० [हिं] गाड़ी की लीक ।

**परिखेद** - पु० [सं] बहुत अधिक थकावट ।

**परिख्यात** - वि० [सं] बहुत अधिक प्रसिद्ध ।

**परिख्याति** - स्त्री० [सं] विशेष प्रसिद्धि ।

**परिगणना** - स्त्री० [सं] पूरी गणना करना ; विधि तथा निषेधशास्त्र का विशेष रूप से कथन ।

**परिगत** - वि० [सं] घिरा हुआ ; जाना हुआ ; मरा हुआ ; विस्मृत ; अभिभूत ।

**परिगहन** - वि० [स] अति गहने ।

**परिगहना** - स० [हिं] ग्रहण करना ।

**परिगीत** - वि० [सं] जिसका बहुत अधिक वर्णन या कीर्तन किया गया हो ।

**परिगूढ़** - वि० [सं] अत्यंत गुप्त ।

**परिगृद्ध** - वि० [सं] बहुत लालची ।

**परिगृहीत** - वि० [सं] स्वीकृत ; पकड़ा हुआ ; धारण किया हुआ ; संरक्षित ; प्राप्त किया हुआ ; विवाहित ।

**परिगृहीता**- पु० [सं] पति ; सहायक ; गोद लेनेवाला व्यक्ति ।

**परिग्रह** - पु० [सं] लेना ; ग्रहण करना ; चारों ओर से घेरना ; धन आदि का संचय ; पति, पत्नी, घर आदि ; परिवार ; अनुचर ; ज़ायदाद ; दमन ; दंड ; शाप ।

**परिग्रहण** - पु० [सं] अच्छी तरह ग्रहण करना ; पहनना ।

**परिग्राम** - पु० [सं] गाँव के सामने का भाग ।

**परिघ** - पु० [सं] अर्गला ; छड़ ; डंडा ; भाला ; घड़ा ; मकान ; फाटक ।

**परिघात** - पु० [सं] मार डालना ; नष्ट करना ; गदा ।

**परिघोष** - पु० [सं] ज़ोर की आवाज़ ; अनुचित बात ; बादल का गर्जन ।

**परिचय** - पु० [सं] जान-पहचान ; पूरी जानकारी ; ढेर लगाना ; यौ०—करुणा - बढ़ता हुआ प्रेम या करुणा ।

**परिचर** - 1. पु० [सं] नौकर ; रथ की रक्षा के लिए नियुक्त सैनिक ; अंगरक्षक ; आदर-सत्कार ; 2. भ्रमणशील ; वहनशील ।

**परिचर्या** - स्त्री० [सं] सेवा, तीमारदारी।

**परिचायक** - पु० [सं] परिचय करानेवाला ; जतानेवाला ।

**परिचारक** - पु० [सं] सेवक ; तीमारदार ; देव-मंदिर आदि के कार्य की देखभाल करनेवाला ।

**परिचारिका** - स्त्री० [सं] सेविका ।

**परिचालक** - पु० [सं] चलानेवाला ; चारो ओर घुमानेवाला ।

**परिचित** - वि० [सं] जिससे परिचय हो ; एकत्र किया हुआ ; अभ्यस्त ।

**परिचिति** - स्त्री० [सं] परिचय ; जान-पहचान ।

**परिचिह्नित** - वि० [सं] जिसपर हस्ताक्षर किये गये हों ।

**परिच्छद** - पु० [सं] ढाँकने की वस्तु ; आच्छादन ; राजा के साथ चलनेवाले अनुचर ; राजा के बाह्य उपकरण ।

**परिच्छिन्न** - वि० [सं] जिसकी सीमा निर्धारित की गयी हो ; विभक्त ; परिमित ।

**परिच्छेद** - पु० [सं] अवधि ; निर्णय ; विभाजन ; परिभाषा ; अध्याय ; काट-छाँटकर अलग करना ; उपचार ; माप ।

**परिजन** - पु० [सं] भरण-पोषण के लिए आश्रित लोग ; अनुचर-गण ।

**परिज्ञात** - वि० [सं] पहचाना हुआ ।

**परिज्ञान** - पु० [सं] पूरा ज्ञान ; सूक्ष्म ज्ञान ।

**परिणत** - वि० [सं] चारों ओर से झुका हुआ ; पक्का ; परिणाम या रूपांतर को प्राप्त ; प्रौढ़ ; पुष्ट ; परिपक्व ; पचा हुआ ; ढलता हुआ (वय) ।

**परिणति** - स्त्री० [सं] पूरा झुकाव ; अत्यंत नम्र ; पकना ; पूर्ण वृद्धि ; अवसान ।

**परिणमन** - पु० [सं] रूपांतर होना ; परिणाम को प्राप्त होना ।

**परिणय** - पु० [सं] चारों ओर ले जाना ; विवाह ।

**परिणयन** - पु० [सं] ब्याहना, विवाह करना ।

**परिणाम** - पु० [सं] फल, नतीजा ; एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना, रूपान्तर होना ; प्रकृति का अन्यथा भाव ; चित्त, इंद्रिय आदि का एक धर्म या संस्कार को प्राप्त होना ; यौ० —दर्शी - दूरदर्शी ; —दृष्टि - दूरदर्शिता ।

**परिणामक** - वि० [सं] परिणाम या रूपांतर लानेवाला ।

**परिणामी** - वि० [सं] जो परिणाम को प्राप्त होता रहे ।

**परिणीत** - वि० [सं] विवाहित ; समाप्त ।

**परिणीता** - स्त्री० [सं] विवाहिता स्त्री ।

**परितप्त** - वि० [सं] बहुत तपा हुआ ; बहुत अधिक दुखित ; संतप्त ।

**परिताप** - पु० [सं] अत्यधिक ताप ; दुख ; संताप ; अतिशोक ; भय ; एक नरक ।

**परितुष्ट** - वि० [सं] अच्छी तरह संतुष्ट ।

**परितृप्त** - वि० [सं] पूरी तरह अघाया हुआ ; संतुष्ट ।

**परितोष** - पु० [सं] संतोष ; तृप्ति ; किसी इच्छा की पूर्ति से होनेवाली प्रसन्नता ।

**परित्यक्त** - वि० [सं] पूरी तौर से त्यागा हुआ ; छोड़ा हुआ ।

**परित्याग** - पु० [सं] पूरी तरह से त्याग देना ; जुदाई ; उदारता ।

**परित्यागी** - वि० [सं] जो परित्याग करे ; पूरी तरह छोड़ देनेवाला ।

**परित्राण** पु० [सं] पूर्ण रक्षा ; अनिष्ट में प्रवृत्त व्यक्ति का निवारण ; आत्मरक्षा ; आश्रय ; बाल ; मूँछ ।

**परित्राता** - पु० [सं] परित्राण करनेवाला ।

**परिदग्ध** - वि० [सं] जला हुआ।
**परिदर्शन** - पु० [सं] सम्यक् दर्शन।
**परिदहन** - पु० [सं] जलाना, झुलसना।
**परिदान** - पु० [सं] विनिमय; धरोहर लौटाना।
**परिदेव, परिदेवन** - पु० [सं] विलाप करना।
**परिधान** - पु० [सं] वस्त्र; नाभि से नीचे का पहनावा; चारों ओर से घेरना या आवृत्त करना।
**परिधि** - स्त्री० [सं] लकड़ी आदि का घेरा या बाड़ा; मेघ की समीपता के कारण सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर बन जानेवाला मंडल; वृत्त बनानेवाली रेखा; पहिये का घेरा; आवरण; पहनावा; क्षितिज।
**परिधेय** - 1. वि० [सं] पहनने योग्य; 2. पु० नीचे या भीतर पहनने का कपड़ा।
**परिनिर्वाण** - पु० [सं] पूर्ण निर्वाण, मोक्ष।
**परिनिवृत्ति** - स्त्री० [सं] मुक्ति, मोक्ष।
**परिनिष्ठा** - स्त्री० [सं] चरम सीमा; ज्ञान की पूर्णता; पर्यवसान।
**परिन्यास** - पु० [सं] किसी वाक्य का अर्थ पूरा करना; संकेत द्वारा कथानक की मूलभूत घटना की सूचना देना।
**परिपंथ** - पु० [सं] मार्ग रोकनेवाला; शत्रु।
**परिपंथी** - वि० [सं] मार्ग रोकनेवाला; शत्रु; डाकू।
**परिपक्व** - वि० [सं] अच्छी तरह पका या पचा हुआ; प्रौढ़; पूर्णतया कुशल।
**परिपणन** - पु० [सं] बाजी लगाना; वादा करना।
**परिपणित** - वि० [सं] वादा किया हुआ; जिसकी बाजी लगायी गयी हो।
**परिपथ** - पु० [सं] चक्करदार रास्ता।
**परिपवन** - पु० [सं] ओसाना; ओसाने का सूप।
**परिपांडु** - वि० [सं] बहुत अधिक सफ़ेद या पीला।
**परिपाक** - पु० [सं] अच्छी तरह पकना या पकाया जाना; पूर्ण विकास; परिणति; परिणाम; कुशलता।
**परिपाटी** - स्त्री० [सं] अनुक्रम; रीति; प्रथा; अंकगणित।
**परिपार्श्व** - 1. पु० [सं] बग़ल; 2. वि० निकटवर्ती; यौ०—चर - बग़ल में या आसपास चलनेवाला; —वर्ती - बग़ल में या समीप रहनेवाला।
**परिपालक** - पु० [सं] परिपालन करनेवाला।
**परिपालन** - पु० [सं] रक्षण; पोषण।
**परिपिच्छ** - पु० [सं] मोर की पूँछ से तैयार किया हुआ एक आभूषण।
**परिपीड़न** - पु० [सं] बहुत पीड़ा देना; अनिष्ट करना।
**परिपुष्ट** - वि० [सं] अच्छे प्रकार से पोषित; पूर्ण रूप से पुष्ट।
**परिपूजन** - पु० [सं] सम्यक् पूजन।
**परिपूत** - वि० [सं] पूर्णतया शुद्ध किया हुआ; अति पवित्र।
**परिपूरक** - पु० [सं] परिपूर्ण करनेवाला; संपन्न बनानेवाला।
**परिपूर्ण** - वि० [सं] अच्छी तरह भरा हुआ; पूरा किया हुआ; संतुष्ट।
**परिपूर्ति** - स्त्री० [सं] सम्यक् पूर्ति।
**परिपृच्छ** - पु० [सं] प्रश्न।
**परिपोष, परिपोषण** - पु० [सं] सम्यक् पोषण।
**परिप्रश्न** - पु० [सं] प्रश्न; जिज्ञासा।
**परिभव, परिभाव** - पु० [सं] अनादर; पराजय; तिरस्कार।
**परिभावित** - वि० [सं] विचारित; संयुक्त; व्याप्त।

**परिभाषण** - पु० [सं] बातचीत ; फटकार ; नियम ।

**परिभाषा** - स्त्री० [सं] लक्षण , नपा-तुला परिचय ; व्याख्या ; बातचीत ; निन्दा ।

**परिभुक्त** - वि० [सं] जो भोगा जा चुका हो ; खाया हुआ ; अधिकार में किया हुआ ।

**परिभू** - वि० [सं] चारो ओर से आच्छादित करनेवाला ; व्याप्त करनेवाला ।

**परिभूत** - वि० [सं] अनादृत ; तिरस्कृत ।

**परिभूषण** - पु० [सं] सँवारना ।

**परिभेद** - पु० [सं] शस्त्र आदि का आघात ; घाव ; किसी प्रदेश की मालगुज़ारी देकर विपक्षी से की जानेवाली संधि ।

**परिभोक्ता** - पु० [सं] बिना अधिकार के परायी वस्तु को काम में लानेवाला ।

**परिभोग** - पु० [सं] उपभोग ; स्त्री-प्रसंग ।

**परिभ्रंश** - पु० [सं] पतन ; पलायन ।

**परिभ्रम** - पु० [सं] इधर-उधर घूमना , भ्रम ; भूल ।

**परिभ्रमण** - पु० [सं] चारों ओर घूमना ; पर्यटन ; पहिये आदि का चक्कर खाना ।

**परिभ्रष्ट** - वि० [सं] पतित ; खोया हुआ ; भागा हुआ ; बहका हुआ ।

**परिमंडल** - 1. वि० [सं] वर्तुलाकार ; गोल ; जो परिमाण में एक परमाणु के बराबर हो ; 2. पु० घेरा ; गोलक ; परिधि ।

**परिमर्द** - पु० [सं] घर्षण ; विनाश ; रगड़ना ; मसलना ।

**परिमल** - पु० [सं] सुगंध ; कुंकुम या चन्दन आदि को रगड़ना या घिसना ; स्त्री-प्रसग ; पंडितों का समूह ; धब्बा ।

**परिमाण** - पु० [सं] माप ; तौल ; मात्रा ; आकार ।

**परिमाता** - पु० [स] मापनेवाला ; तौलनेवाला ।

**परिमार्जन** - पु० [सं] धोना ; स्वच्छ करना ; शहद और तेल में पगी हुई एक मिठाई ।

**परिमार्जित** - वि० [सं] धोया हुआ ; साफ़ किया हुआ ।

**परिमित** - 1. वि० [सं] मापा हुआ ; तौला हुआ ; सामान्य ; थोड़ा ; सीमित ; 2. अव्य० पर्यन्त ; यौ० —भोजन - अल्पाहारी ।

**परिमिति** - स्त्री० [सं] परिमाण ; अवधि ; सीमा ।

**परिमिलित** - वि० [सं] मिला हुआ ; व्याप्त ।

**परिमुक्ति** - स्त्री० [सं] छुटकारा ।

**परिमुग्ध** - वि० [सं] आकर्षक ; सुंदर ।

**परिमूढ** - वि० [सं] घबराया हुआ ; परेशान ।

**परिमृदित** - वि० [सं] कुचला हुआ ; आलिंगित ।

**परिमेय** - वि० [सं] मापने योग्य ; तौलने योग्य ।

**परिम्लान** - वि० [सं] मुरझाया हुआ ; क्लान्त ; क्षीण ।

**परियत्त** - वि० [सं] चारों ओर से घिरा हुआ ।

**परिया** - पु० [त] दक्षिण भारत की एक पुरानी जाति ।

**परियाण** - पु० [सं] परिभ्रमण ; पर्यटन ।

**परिरंभ, परिरंभण** - पु० [सं] गले लगाना ; आलिंगन करना ।

**परिरंभना** - स० [हिं] आलिंगन करना ।

**परिरक्षक** - पु० [सं] अभिभावक ।

**परिरक्षण** - पु० [सं] हर तरह से रक्षा करना ; देखभाल ; बचाव ।

**परिरोध** - पु० [सं] रोक, रुकावट ।

**परिलिखित** - वि० [सं] रेखाओं आदि से घेरा हुआ ।
**परिलुप्त** - वि० [सं] लुप्त ; नष्ट : क्षतिग्रस्त ।
**परिलेख** - पु० [सं] रेखाचित्र : खाका ; रेखाएं या चित्र खींचने का आला, कूँची, क़लम आदि ; वर्णन ।
**परिलेखन** - पु० [सं] वेदी के चारों ओर रेखाएँ बनाना ।
**परिलेखना** - स० [हिं] जानना, समझना ।
**परिलोप** - पु० [सं] नाश ; क्षति ; उपेक्षा ।
**परिवदन** - पु० [सं] निन्दा करना ; शोर मचाना ।
**परिवर्जन** - पु० [सं] त्याग ।
**परिवर्त** - पु० [सं] चक्कर ; युग का अंत ; ग्रंथ का परिच्छेद ; विनिमय ; आवृत्ति ; पुनर्जन्म ; पलायन ; निवासस्थान ।
**परिवर्तन** - पु० [सं] चक्कर ; परिभ्रमण ; उलटना ; करवट लेना ; बदलना ; किसी काल या युग का अंत ।
**परिवर्धन** - पु० [सं] अच्छी तरह बढ़ने या बढ़ाये जाने का भाव ; सम्यक् वृद्धि ।
**परिवर्धित** - वि० [सं] जो अच्छी तरह बढ़ा या बढ़ाया गया हो ; जिसमें पूर्ण वृद्धि की गयी हो ।
**परिवा** - स्त्री० [हिं] चांद्रमास के किसी पक्ष की पहली तिथि ।
**परिवाद** - पु० [सं] निन्दा ; झूठी निन्दा ; आरोपित दोष ; अपवाद ।
**परिवादक** - पु० [सं] वादी ; मुद्दई ; निन्दा करनेवाला ; वीणा बजानेवाला ।
**परिवार** - पु० [सं] कुटुंब ; आश्रित जन ; अनुचरों का समूह ; आवरण ; म्यान ।
**परिवारण** - पु० [सं] ढकने की क्रिया ; आवरण ; म्यान ।
**परिवारित** - वि० [सं] घिरा हुआ; आवेष्टित ।
**परिवाह** - पु० [सं] पानी का उमड़कर या फूटकर चारों ओर बहना ; बढ़े हुए पानी के बहने का मार्ग ।
**परिविद्ध** - 1. वि० [सं] चारों ओर से बिंधा हुआ ; 2. पु. कुबेर ।
**परिवृत** - वि० [सं] घिरा हुआ ; व्याप्त ; ज्ञात ।
**परिवृद्ध** - वि० [सं] अच्छी तरह बढ़ा हुआ ।
**परिवेद** - पु० [सं] यथार्थ ज्ञान ।
**परिवेदन** - पु० [सं] विवाह ; व्यापक ज्ञान; कष्ट ; तर्क ।
**परिवेदना** - स्त्री० [सं] बुद्धिमत्ता ; दूरदर्शिता ।
**परिवेश, परिवेष** - पु० [सं] घेरना ; परिधि ; आवेष्टित करनेवाली वस्तु ; भोजन परोसने की क्रिया ।
**परिवेष्टन** - पु० [सं] चारों ओर से घेरने की क्रिया ; आच्छादन ; परिधि ; पट्टी ।
**परिवेष्टित** - वि० [सं] चारों ओर से घिरा हुआ ; आच्छादित ।
**परिव्रज्या** - स्त्री० [सं] संन्यास ; भिक्षु का चारों ओर घूमना ।
**परिव्राजक, परिव्राट** - पु० [सं] संन्यासी ।
**परिशंकी** - वि० [सं] भय या आशंका करनेवाला ।
**परिशिष्ट** - 1. वि० [सं] बचा हुआ ; समाप्त ; 2. पु० किसी पुस्तक या लेख का पूरक अंश ।
**परिशीलन** - पु० [सं] सम्यक् अध्ययन ; स्पर्श ; लगाव ।
**परिशीलित** - वि० [सं] जिसका परिशीलन किया गया हो ।
**परिशुद्ध** - वि० [सं] पूर्णतया शुद्ध ; चुकाया हुआ ; जो मुक्त कर दिया गया हो ।
**परिशुष्क** - 1. वि० [सं] बिलकुल सूखा हुआ ; मुरझाया हुआ ; नीरस ; 2. पु० पकाया हुआ मांस ।

**परिशेष** - पु० [सं] अवशेष ; समाप्ति ।
**परिशोध** - पु० [सं] संशोधन ; सम्यक् शुद्धि ; ऋण आदि का भुगतान ।
**परिशोधन** - पु० [सं] पूर्णतया शुद्ध करने की क्रिया ; संशोधन ; चुकता करना ।
**परिशोष** - पु० [सं] बहुत अधिक सूख जाना ।
**परिश्रम** - पु० [सं] मेहनत ।
**परिश्रमी** - वि० [सं] परिश्रम करनेवाला ।
**परिश्रांत** - वि० [सं] विशेष रूप से थका हुआ ।
**परिश्रांति** - स्त्री० [सं] अधिक थकावट ; परिश्रम ।
**परिश्रुत** - वि० [सं] विख्यात, प्रसिद्ध ।
**परिश्लेष** - पु० [सं] आलिंगन ।
**परिषद, परिषद्य** - पु० [सं] सभासद् ।
**परिषद्** - स्त्री० [सं] सभा ; समूह ; मंडली ।
**परिषिक्त** - वि० [सं] सींचा हुआ ।
**परिषेक** - पु० [सं] छिड़काव ; स्नान ।
**परिषेचन** - पु० [सं] सींचना ; छिड़कना ।
**परिष्कार** - पु० [सं] सजावट ; संस्कार ; सुस्वादु बनाने की क्रिया ; भूषण ; सफ़ाई, मार्जन आदि संस्कार ; घर का उपयोगी सामान ।
**परिष्कृत** - वि० [सं] जिसका परिष्कार किया गया हो ; सजाया हुआ ; शुद्ध किया हुआ ।
**परिष्यन्द** - पु० [सं] प्रवाह ; नदी ; आर्द्रता ।
**परिसंख्या** - स्त्री० [सं] गिनती ; *एक अर्थालंकार ।
**परिसंचित** - वि० [सं] जिसका संचय किया गया हो ।
**परिसभ्य** - पु० [सं] सभा का सदस्य ।
**परिसमाप्ति** - स्त्री० [सं] पूर्ण समाप्ति ।
**परिसर** - पु० [सं] नदी, नगर, पर्वत आदि के आसपास की भूमि ; विधान ; स्थिति ; मौक़ा ; मृत्यु ; हिलना-डुलना ।
**परिसर्प** - पु० [सं] पर्यटन ; आवेष्टन ; जल आदि से घेरना ; किसीका पीछा करना ; एक प्रकार का सर्प ।
**परिसांत्वन** - पु० [सं] ढाढस बँधाना ।
**परिसीमा** - स्त्री० [सं] चौहद्दी ; अंतिम सीमा ।
**परिस्तान** - पु० [फ़ा] परियों का देश या लोक ।
**परिस्थान** - पु० [सं] वासस्थान ; दृढ़ता ।
**परिस्थिति** - स्त्री० [सं] अवस्था ; चारों ओर की स्थिति ।
**परिस्पंदन** - पु० [सं] बहुत अधिक कंपित होना ।
**परिस्पर्धा** - स्त्री० [सं] प्रतियोगिता ।
**परिस्फुट** - वि० [सं] सुस्पष्ट ; अच्छी तरह विकसित ।
**परिस्फुरण** - पु० [सं] कंपन ; कली का निकलना ।
**परिस्राव** - पु० [सं] चारों ओर से चूना या टपकना ; बच्चे का जन्म लेना ।
**परिस्रुता** - स्त्री० [सं] शराब ; अंगूरी शराब ।
**परिहत** - 1. क्रि० [सं] ढीला या शिथिल किया हुआ ; मारा हुआ ; 2. स्त्री० [हिं] हल में पीछे की ओर लगी हुई लकड़ी ।
**परिहार** - पु० [सं] त्यागना ; दोष का निवारण ; गाँव के चारों ओर जनता की ओर से परती छोड़ी गयी ज़मीन ; पराजित शत्रु से छीनी गयी वस्तुएँ ; अनादर ; खंडन ; किसी कुकृत्य का प्रायश्चित्त करना ।
**परिहार्य** - वि० [सं] त्यागने या निवारण करने योग्य ।
**परिहास** - पु० [सं] हँसी-मज़ाक ।
**परी** - स्त्री० [फ़ा] पुरानी कथाओं के

अनुसार कोहकाफ़ पहाड़ पर रहनेवाली कल्पित सुंदरी जिसके कंधों पर पर होते हैं और जो जहाँ चाहे उड़कर पहुँच सकती है ; अतिरूपवती स्त्री ; यौ० —खाना - परियों के रहने का स्थान ; —ख्वान - जादू-टोना करनेवाला, ओझा ; —ख्वानी - जादू-टोने का काम या पेशा ; —ज़दा - जिसपर परी का नियंत्रण हो ; —जमाल - ख़ूबसूरत ; —ज़ाद - परी का बच्चा ; —बंद - बाजुओं पर पहनने का एक गहना ; —रू - अत्यंत सुंदर ।

**परीक्षक** - पु० [सं] परखनेवाला ; जाँचनेवाला ।

**परीक्षण** - पु० [सं] जाँच ; परख ; राजा का मंत्री या चर आदि के दोषादोष की जाँच करना ।

**परीक्षा** - स्त्री० [सं] इम्तहान ; तर्क व प्रमाण आदि के द्वारा किसी वस्तु के तत्त्व का निश्चय करना ; अभियुक्त या साक्षी की सचाई या झूठ के निर्णय करने की रीति ; यौ०—काल - परीक्षा का समय ; —भवन - परीक्षा देने का स्थान ; —शुल्क - परीक्षा के निमित्त लिया जानेवाला द्रव्य ।

**परीक्षार्थी** - पु० [सं] परीक्षा देनेवाला ।

**परीक्षित** - वि० [सं] जिसकी परीक्षा ली गयी हो ; जाँचा हुआ ।

**परीक्ष्य** - वि० [सं] परीक्षा लेने योग्य ।

**परीछम** - पु० [हिं] पैर में पहनने का एक चाँदी का गहना ।

**परीणाह** - पु० [सं] गाँव के चारों ओर छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि ; शिव ।

**परीत** - वि० [सं] चक्कर देनेवाला ; घेरनेवाला ; बीता हुआ ; गृहीत ।

**परुआ** - 1. स्त्री० [हिं] एक प्रकार की ज़मीन ; अपमान का बदला ; 2. वि० कामचोर ।

**परुई** - स्त्री० [हिं] भड़भूजे की अनाज भूनने की नाँद ।

**परुखाई** - स्त्री० [हिं] परुषता, कठोरता ।

**परुष** - 1. वि० [सं] कठोर ; रूखा ; बुरा लगनेवाला ; तीव्र ; दयाहीन ; नीरस ; गंदा ; 2. पु० दुर्वचन ।

**परे** - अव्य० [हिं] उस ओर ; बहुत दूर ; ऊपर ; बाद ; बाहर ; मु० —बिठाना - परास्त करना ; अलग बैठाना ।

**परेई** - स्त्री० [हिं] कबूतरी ।

**परेखना** - स० [हिं] अच्छी तरह देख-भाल करना ; प्रतीक्षा करना ।

**परेखा** - पु० [हिं] परीक्षा ; पश्चात्ताप ; विश्वास ।

**परेग** - पु० [हिं] लोहे की कील ।

**परेत** - 1. वि० [सं] मृत ; 2. पु० [हिं] प्रेत ; यौ० —भर्ता - यमराज ; —भूमि, वास - श्मशान ।

**परेता** - पु० [हिं] सूत लपेटने के काम का एक आला ; बाँस की पतली व चिपटी तीलियों से तैयार किया जानेवाला बेलन जिसपर पतंग की डोर लपेटी जाती है ।

**परेवा** - पु० [हिं] कबूतर ; शीघ्रगामी पत्रवाहक ।

**परेशान** - वि० [फ़ा] व्याकुल ; हैरान ।

**परेशानी** - स्त्री० [फ़ा] उद्विग्नता ; व्याकुलता ।

**परेह** - पु० [हिं] बेसन की पतली कढ़ी ।

**परेहा** - पु० [हिं] जोतने के बाद सींची गयी ज़मीन ।

**परोक्ष** - 1. वि० [सं] जो आँखों के सामने न हो, अप्रत्यक्ष ; अनुपस्थित ; गुप्त ; अज्ञात ; 2. पु० वर्तमान न होने की स्थिति ; अनुपस्थिति ; पूर्ण भूतकाल ।

**परोक्षार्थ** - वि० [सं] जिसका अभिप्राय या अर्थ रहस्यपूर्ण हो।

**परोढ़ा** - स्त्री० [सं] दूसरे की स्त्री।

**परोत्कर्ष** - पु० [सं] दूसरे का अभ्युदय।

**परोद्वह** - 1. वि० [सं] अन्य द्वारा पालित; 2. पु० कोकिल।

**परोपकार** - पु० [सं] दूसरे की भलाई।

**परोपकारी** - वि० [सं] दूसरे की भलाई करनेवाला।

**परोपदेश** - पु० [सं] दूसरे को उपदेश देना।

**परोपसर्पण** - पु० [सं] भीख माँगना।

**परोरना** - स० [हिं] अभिमंत्रित करना।

**परोलक्ष** - पु० [सं] एक लाख से अधिक की संख्या।

**परोसना** - स० [हिं] (भोजन) परसना।

**परोसा** - पु० [हिं] पत्तल या थाली में रखा हुआ एक व्यक्ति के खाने-भर का भोजन।

**परोसैया** - पु० [हिं] भोजन परसनेवाला।

**परोहन** - पु० [हिं] सवारी या बोझ लादने के काम आनेवाला पशु।

**परोहा** - पु० [हिं] मोट, पुर।

**पर्जन्य** - पु० [सं] मेघ, बादल; वर्षा; बादलों का गर्जन; इंद्र; विष्णु।

**पर्ण** - पु० [सं] पत्ता; पर; बाण का पंख; पलाश का पेड़; पान; यौ०—कुटी - पत्तों की बनी कुटिया;—खंड - वह वनस्पति जिसमें कभी फूल न लगे;—भोजी - पत्ते खाकर रहनेवाला; —लता - पान की लता;—वाद्य - पत्तों के बाजों का शब्द;—शब्द - पत्तों के खड़कने आदि का शब्द;—शय्या - पत्तों का बिस्तर;—शाला - पर्णकुटी।

**पर्द** - पु० [सं] बालों का समूह; अपान-वायु का त्याग।

**पर्दनी** - स्त्री० [हिं] धोती।

**पर्दा** - पु० [फ़ा] परदा।

**पर्पट** - पु० [सं] पापड़; एक औषध।

**पर्परी** - स्त्री० [सं] कबरी; जूड़ा; [हिं] पापड़ी।

**पर्यंक** - पु० [सं] पलंग; वीरासन; पालकी; यौ०—बंधन - कपड़े से पीठ और घुटने बाँधकर बैठना।

**पर्यंत** - 1. अव्य० [सं] तक; 2. वि० सीमित; 3. पु० अंतिम सीमा; अंत; यौ०—भूमि - पास का भूभाग।

**पर्यटक** - पु० [सं] भ्रमण करनेवाला।

**पर्यटन** - पु० [सं] भ्रमण।

**पर्यवसान** - पु० [सं] समाप्ति; निश्चय; अवधारण।

**पर्यवसित** - वि० [सं] समाप्त; निश्चित; नष्ट।

**पर्यवस्थान** - पु० [सं] विरोध करना; प्रतिवाद करना।

**पर्यस्त** - वि० [सं] फेंका हुआ; दूर किया हुआ; बाहर किया हुआ।

**पर्याकुल** - वि० [सं] गँदला; व्याकुल; क्षुब्ध; पूर्ण।

**पर्याप्त** - वि० [सं] काफ़ी; समग्र; योग्य; समर्थ; विस्तृत; प्राप्त।

**पर्याप्ति** - स्त्री० [सं] वस्तुओं का गुणगत भेद; प्राप्ति; यथेष्ट होने का भाव; समाप्ति; योग्यता; संतोष; रक्षण; सामर्थ्य।

**पर्याय** - पु० [सं] समानार्थक शब्द; अनुक्रम; समय का व्यतीत होना; प्रकार; अवसर; निर्माण; द्रव्य का सहज गुण; यौ०—च्युत - स्थानच्युत; —वचन, शब्द - समानार्थक शब्द; —वाची. - समानार्थक; — शयन - पहरेदारों का बारी-बारी से सोना।

**पर्यालोचन** - पु० } [सं] सम्यक् विवेचन।
**पर्यालोचना** - स्त्री० }

**पर्यावर्त** - पु० [सं] लौटना।
**पर्युत्थान** - पु० [सं] उठ खड़ा होना।
**पर्युत्सुक** - वि० [सं] बहुत उत्सुक; उदास; क्षुब्ध।
**पर्युदास** - पु० [सं] निषेध; अपवाद।
**पर्युपस्थान** - पु० [सं] सेवा।
**पर्युपासक** - पु० [सं] उपासना करनेवाला।
**पर्युपासन** - पु० [सं] उपासना; सेवा; मैत्री; सद्भावना; आसपास बैठना।
**पर्युषण** - पु० [सं] उपासना; तप की विशिष्ट क्रिया।
**पर्व** - पु० [सं] त्योहार; उत्सव या विशिष्ट धार्मिक कृत्य करने का समय; सूर्यग्रहण; चंद्रग्रहण; अवसर; गाँठ; शरीर के अवयवों का कोई जोड़; अंश; निश्चित काल; **यौ०**—काल - पर्व का समय; —पूर्णता - किसी उत्सव या त्योहार का संपन्न होना;—भाग - कलाई।
**पर्वक** - पु० [सं] घुटने का जोड़।
**पर्वणिका** - स्त्री० [सं] आँख के जोड़ का एक रोग।
**पर्वत** - पु० [सं] पहाड़; चट्टान; ऊँचा ढेर; सात की संख्या; दशनामी संन्यासियों का एक भेद; **यौ०**—जाल - पर्वतश्रेणी; —दुर्ग - पहाड़ी क़िला; —नंदिनी - पार्वती; —पति - हिमालय; —माला - पहाड़ों की श्रेणी; —वासिनी - दुर्गा; गायत्री।
**पर्वतीय** - 1. वि० [सं] पहाड़ी; पर्वत-संबंधी; 2. पहाड़ी ब्राह्मणों की एक उपाधि।
**पर्शु** - पु० [सं] अस्त्र; फरसा; पसली।
**पर्शुका** - स्त्री० [सं] बग़ल की हड्डी, पसली।
**पर्षद्** - स्त्री० [सं] सभा; धर्मोपदेशक; पंडितों का समाज।
**पलंग** - पु० [हिं] बड़ी और बढ़िया चारपाई; **यौ०**— तोड़ - निकम्मा, आलसी; —पोश - पलंग की चादर; **मु०**—को लात मारकर खड़ा होना - किसी भारी बीमारी से छुटकारा पाकर स्वस्थ होना; —तोड़ना - बेकार रहकर दिन बिताना; —लगाना - पलंग पर ठीक तरह से बिछावन बिछाना।
**पलंगड़ी, पलंगिया** - स्त्री० [हिं] छोटा पलंग; चारपाई।
**पल** - पु० [सं] समय का एक लघु विभाग जो साठ विपल अर्थात चौबीस सेकेंड के बराबर होता है; चार कर्ष की एक प्राचीन तौल; पयाल; मांस; **यौ०**—गंड - दीवार पर पलस्तर करनेवाला मिस्त्री, राज।
**पलई** - स्त्री० [हिं] पेड़ का सिरा; पेड़ की पतली और नरम टहनी।
**पलक** - 1. स्त्री० [हिं] आँख को ढकनेवाला वह चमड़ा जिसके गिरने और उठने से आँखें क्रमशः बंद होती और खुलती हैं; निमिष, क्षण; 2. अव्य० क्षण-भर; **यौ०** —दरियाव, नेवाज - अति उदार; **मु०** —झपकते या गिरते - देखते-देखते; —पसीजना - आँखों में आँसू आना; —बिछाना - किसीका बड़ी श्रद्धा से स्वागत करना; — भँजना - आँख का इशारा होना; —मारना - आँख से इशारा करना; —लगना - नींद आना।
**पलका** - पु० [हिं] पलंग; शैय्या।
**पलखन** - पु० [हिं] पाकर का पेड़।
**पलटन** - स्त्री० [हिं] सेना, फ़ौज।
**पलटना** - 1. अ० [हिं] उलट जाना; अच्छी दशा को प्राप्त होना; मुड़ना; वापस आना; 2. स० उलटना; एकदम

बदल देना ; बार-बार उलटना; बदलना ; मुकरना ; लौटाना ।

**पलटा** - पु० [हिं] पलटने का कार्य या भाव ; प्रतिफल : नाव में लगी हुई एक पटरी जिसपर खेवैया बैठता है: अवरोह ; चपटी कलछी ; कुश्ती का एक पेच ; मु०— खाना - स्थिति का पूर्णतः परिवर्तित हो जाना ।

**पलटाना** - स० [हिं] लौटाना ; बदलना ।

**पलटाव** - पु० [हिं] पलटे जाने की क्रिया ।

**पलटी** - स्त्री० [हिं] पलटा जाना ; बदली ।

**पलटे** - अव्य० [हिं] बदले में ; प्रतिफल के रूप में ।

**पलड़ा, पलरा** - पु० [हिं] तराजू का पल्ला ।

**पलथा** - पु० [हिं] कलाबाज़ी ।

**पलथी** - स्त्री० [हिं] बैठने का एक तरीक़ा ।

**पलना** - अ० [हिं] पालित होना ; हृष्ट-पुष्ट होना ।

**पलनाना** - स० [हिं] (रथ, घोड़ा आदि) जोत या कसकर तैयार करना ।

**पलल** - पु० [सं] मांस ; कीचड़ ; तिलकुट ; राक्षस ।

**पलव** - पु० [स] मछलियाँ फँसाने का एक तरह का जाल या बाँस का झाबा ।

**पलवा** - पु० [हिं] ऊख का ऊपरी नीरस भाग ।

**पलवाना** - स० [हिं] किसीसे पालन कराना ।

**पलवार** - पु० [हिं] ईख की खेती करने का एक तरीक़ा ; माल लादने की एक प्रकार की बड़ी नाव ।

**पलवारी** - पु० [हिं] मल्लाह ।

**पलवैया** - पु० [हिं] पालने-पोसनेवाला ।

**पलस्तर** - पु० [हिं] चूना, कंकड़ आदि मसाले से तैयार किया हुआ दीवार आदि पर चढ़ाया जानेवाला एक लेप ।

**पलहा** - पु० [हिं] जन्म-मृत्यु की सूचना ।

**पलांडु** - पु० [सं] प्याज ।

**पला** - पु० [हिं] पल ; तराजू का पल्ला ; आँचल ; डिब्बे के दो भागों में से कोई एक ।

**पलान** - पु० [हिं] घोड़े आदि की पीठ पर कसा जानेवाला ज़ीन या चारजामा ।

**पलानना** - स० [हिं] पलान कसना ; आक्रमण करने की तैयारी करना ।

**पलाना** - 1. अ० [हिं] भागना ; तेज़ी से जाना ; गाय-भैंस आदि के थन में दूध उतर आना ; 2. स० भगाना ।

**पलानी** - स्त्री० [हिं] छप्पर ; पंजे के ऊपर पहनने का स्त्रियों का एक गहना ; ज़ीन ।

**पलायन** - पु० [सं] भागना ।

**पलायमान** - वि० [सं] भागता हुआ ।

**पलायित** - वि० [सं] भागा हुआ ।

**पलाल** - पु० [सं] पयाल ; भूसी ।

**पलालि, पलाली** - स्त्री० [सं] मांस का ढेर ।

**पलाव** - पु० [सं] मछली फँसाने का काँटा, बंसी ।

**पलाश** - 1. पु० [सं] पत्ता ; पलास, टेसू ; राक्षस ; हरा रंग ; 2. वि० हरा ; कठोर हृदयवाला ; मांसाहारी ।

**पलाशी** - 1. स्त्री० [सं] वृक्ष पर चढ़नेवाली एक लता ; लाख ; 2. वि० पत्तोंवाला ; मांस खानेवाला ; 3. पु० राक्षस ।

**पलास** - पु० [हिं] किंशुक ; गीध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी ।

**पलित** - 1. वि० [सं] वृद्ध ; पका हुआ या सफ़ेद (बाल) ; 2. पु० ताप ; कीचड़ ; लोहा ।

**पलिया** - पु० [हिं] पशुओं का एक रोग जिसमें उनका गला सूज जाता है ।

**पलिहर** - पु० [हिं] चैती फसल बोने के लिए छोड़ा जानेवाला खेत ।

**पल्ली** - स्त्री० [हिं] बड़े बर्तनों में से घी आदि तरल पदार्थ निकालने का लोहे का एक आला : मु०—पल्ली जोड़ना - थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना।

**पलीत** - 1. वि० दुष्ट ; धूर्त ; गंदा ; 2. पु० भूत-प्रेत।

**पलीता** - 1. पु० [फ़ा] वह बत्ती जिससे तोप या बंदूक़ में आग लगायी जाती है ; यंत्र लिखा हुआ कागज़ जिसे बत्ती की तरह बनाकर जलाते हैं ; 2. वि० अति क्रुद्ध ; तीव्रगामी।

**पलीती** - स्त्री० [हिं] छोटा पलीता।

**पलीद** - 1. वि० [फा] अपवित्र ; दुष्ट ; ख़राब ; 2. पु० भूत-प्रेत।

**पलुआ** - 1. पु० [हिं] सन की जाति का एक पौधा ; 2. वि० पालतू।

**पलुहना** - अ० [हिं] हरा-भरा होना।

**पलेट** - स्त्री० [हिं] पट्टी ; कमीज आदि में भीतर की ओर लगायी जानेवाली पट्टी ; प्लेट।

**पलेटन** - पु० [हिं] मुद्रणयंत्र का वह भाग जिसके दबाव से अक्षर छपते हैं।

**पलेड़ना** - स० [हिं] धक्का देना।

**पलेथन** - पु० [हिं] वह सूखा आटा जिसे लोई पर लगाकर रोटी बेलते हैं ; मु०—निकालना - खूब पीटना।

**पलोटना** - 1. स० [हिं] पैर दबाना ; 2. अ० लोट-पोट करना।

**पलोवना** - स० [हिं] सेवा-शुश्रूषा करना।

**पलोसना** - स० [हिं] साफ़ करना, धोना।

**पल्यंक** - पु० [सं] पलंग ; शय्या।

**पल्ल** - पु० [सं] अन्न का बखार।

**पल्लव** - पु० [सं] नया और कोमल पत्ता ; घास की पत्ती ; कली ; कंकण ; वस्त्र का छोर ; दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश ; यौ०—ग्राहिता - अपूर्ण ज्ञान ;—ग्राहि पांडित्य - किसी विषय की अधूरी जानकारी।

**पल्लवित** - वि० [स] पल्लवयुक्त ; विस्तृत ; रोमांचयुक्त।

**पल्ला** - पु० [हिं] दामन ; दूरी ; किवाड़ ; पलड़ा ; दुपल्लिया टोपी का आधा हिस्सा ; मु०—छूटना - छुटकारा मिलना ;—छुड़ाना - पिण्ड छुड़ाना ;—पकड़ना - सहारा लेना।

**पल्लिका, पल्ली** - स्त्री० [सं] छोटा गाँव ; कुटी ; घर ; छिपकली ; ज़मीन पर फैलनेवाली लता ; [त, मल] (पळ्ळि, पल्लि) पाठशाला ; छोटी बस्ती ; छिपकली [ते] (पल्लि) छोटा गाँव ; (बल्लि) छिपकली।

**पल्लौ** - पु० [हिं] अनाज बाँधने का टाट आदि।

**पल्वल** - पु० [सं] छोटा जलाशय।

**पवन** - 1. पु० [स] हवा ; अनाज आदि साफ़ करना ; छलनी ; पानी ; पाँच की संख्या ; 2. वि० शुद्ध ; यौ०—चक्र - बवंडर ;—चक्की - हवा की शक्ति से चलनेवाली चक्की।

**पवमान** - पु० [सं] हवा।

**पवरि** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी।

**पवरिया** - पु० [हिं] ड्योढ़ीदार।

**पवाँड़ा** - पु० [हिं] ऊबा देनेवाला लंबा आख्यान; बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी बात ; एक तरह का गीत।

**पवाँरना** - स० [हिं] फेंकना ; फैलाना।

**पवाँरी** - स्त्री० [हिं] लोहा छेदने का लोहारों का एक आला।

**पवाई** - स्त्री० [हिं] किसी एक पैर का जूता या खड़ाऊँ ; चक्की के दो पाटों में से एक।

**पवाका** - स्त्री० [सं] बवंडर।

**पवि** - पु० [सं] वज्र ; बाण ; अग्नि ; बाण या भाले की नोक ; वाणी।

**पवित्र** - वि० [सं] शुद्ध ; निर्मल ; पुनीत ।

**पवित्रक** - पु० [स] पीपल का पेड़ ; गूलर का पेड़ ; क्षत्रिय का जनेऊ ; कुश ; दोना ; जाल ।

**पवित्रता** - स्त्री० [सं] पवित्र होने का भाव ।

**पवित्रा** - स्त्री० [सं] तुलसी ; हल्दी ; एक प्राचीन नदी ; श्रावण-शुक्ला द्वादशी ।

**पवित्री** - स्त्री० [सं] धार्मिक कृत्य करते समय अनामिका में पहनी जानेवाली अंगूठी ।

**पवेरना** - स० [हिं] बीजों को छींटते हुए बोना ।

**पवेरा** - पु० [हिं] बीजों को छितराते हुए बोने की क्रिया ।

**पशम, पश्म** - पु० [फ़ा] बहुत बढ़िया और नरम ऊन ; बहुत तुच्छ वस्तु ।

**पशमीना, पश्मीना** - पु० [फ़ा] एक तरह का काश्मीरी ऊन का कपड़ा जो बहुत मुलायम होता है ।

**पशु** - पु० [सं] चौपाया ; जंतु ; बलिपशु ; मूर्ख ; बकरा ; देवता ; जीवात्मा ; यौ० —कर्म, क्रिया - पशु का बलिदान ; मैथुन ; —जीवी - पशु का मांस खाकर जीनेवाला ।

**पश्चात्** - अव्य० [सं] पीछे ; अनंतर ; अंत में ; पश्चिम दिशा से ।

**पश्चात्ताप** - पु० [सं] पछतावा ।

**पश्चिम** - 1. पु० [सं] पच्छिम दिशा ; 2. वि० [सं] सबसे पीछे का ; अंतिम ; यौ० —क्रिया - अंत्येष्टि क्रिया ।

**पश्चिमी** - वि० [सं] पश्चिम दिशा का; पछाँही ।

**पश्चिमोत्तर** - 1. वि० [सं] उत्तरी-पश्चिमी ; 2. पु० वायुकोण ।

**पश्तो** - स्त्री० [हिं] एक प्राचीन आर्य-भाषा जो भारत की पश्चिमोत्तर सीमा से लेकर अफ़गानिस्तान तक बोली जाती है ।

**पश्यंती** - स्त्री० [सं] वेश्या ; वाणी की दूसरी स्थिति ।

**पश्शा** - पु० [फ़ा] मच्छर ।

**पषा** - पु० [हिं] दाढ़ी ।

**पसंद** - 1. स्त्री० [फ़ा] रुचि ; स्वीकृति ; 2. वि० रुचि के अनुकूल ; मनोनीत ।

**पसंदा** - पु० [फ़ा] कीमा ; कबाब ।

**पसंदीदा** - वि० [फ़ा] पसंद किया हुआ ; जो पसंद हो ।

**पस** - 1. पु० [अंग्रे] मवाद ; 2. अव्य० [फ़ा] पीछे ; अंत में ; इसलिए ; निस्संदेह ; यौ० —अंदाज़ - अवशिष्ट ; संचित ; —ख़ुरदा - जूठन ; —ग़ैबत - परोक्ष में ; —पाई - पराजय ; —मर्ग, मुर्दन - मरने के बाद ।

**पसरहट्टा** - पु० [हिं] पँसरहट्टा ।

**पसनी** - स्त्री० [हिं] अन्नप्राशन ।

**पसर** - 1. पु० [हिं] आधी अंजलि ; 2. स्त्री० फैलाव ; आक्रमण ।

**पसरना** - अ० [हिं] फैलना ; आगे बढ़ना ; हाथ-पाँव फैलाकर सोना ।

**पसली** - स्त्री० [हिं] पांजर की हड्डियों में से कोई एक ; मु०— फड़कना - जी में उमंग होना ; पसलियाँ ढीली करना या तोड़ना - बेतरह पीटना ।

**पसही** - स्त्री० [हिं] तिन्नी या नीवार का चावल ।

**पसा** - पु० [हिं] अंजलि ।

**पसाना** - 1. स० [हिं] पके हुए चावल में से माँड़ निकालना ; 2. अ० प्रसन्न होना ।

**पसार** - पु० [हिं] फैलाव ; प्रपंच ।

**पसारना** - पु० [हिं] छितराना ; आगे की ओर करना या बढ़ाना ; फैलाना ।

**पसारी** - पु० [हिं] पंसारी।

**पसाव** - पु० [हिं] पसाकर निकाली जानेवाली वस्तु; प्रसाद; अनुग्रह।

**पसित** - वि० [हिं] बँधा हुआ, पाशबद्ध।

**पसीजना** - अ० [हिं] खिन्न होना; दया से आर्द्र होना; पिघलना।

**पसीना** - पु० [हिं] शरीर के रोमकूपों से निकला हुआ पानी, स्वेद, श्रमजल; मु० पसीने की कमाई - बड़ी मेहनत और सचाई से कमाया हुआ धन; पसीने-पसीने होना - पसीने से तर-ब-तर होना।

**पसूज** - स्त्री० [हिं] एक तरह की सिलाई।

**पसूजना** - अ० [हिं] सिलाई करना।

**पसेरी** - स्त्री० [हिं] पाँच सेर की एक तौल।

**पसेव** - पु० [हिं] पसीना; किसी वस्तु में से रस-रसकर निकलनेवाला तरल पदार्थ।

**पसोपेश** - पु० [फ़ा] आगा-पीछा; असमंजस।

**पस्त** - वि० [फ़ा] नीच; तुच्छ; शिथिल; पराजित; **यौ०** —क़द - छोटा क़द, नाटा; —क़िस्मत - भाग्यहीन; —ख्याल - तुच्छ विचार; —हिम्मत - हतोत्साह।

**पस्ती** - स्त्री० [फ़ा] नीचता; कमी; त्रुटि; शिथिलता।

**पहँसुल** - पु० [हिं] तरकारी काटने का हँसिये की तरह का एक औज़ार।

**पहचान** - स्त्री० [हिं] पहचानने की क्रिया या भाव; परिचय; परख; निशान; विवेक।

**पहचानना** - स० [हिं] विवेक करना; किसीका गुण-दोष जानना; पहचान की क्रिया।

**पहटना** - स० [हिं] भगाने या पकड़ने के लिए दौड़ना; पत्थर आदि पर रगड़कर धार तेज़ करना।

**पहन** - पु० [फ़ा] बच्चे को देखकर स्नेह की अधिकता से माता के स्तन में उतर आनेवाला दूध; पत्थर।

**पहनना** - स० [हिं] शरीर पर कपड़े आदि धारण करना।

**पहनाई** - स्त्री० [हिं] पहनने की क्रिया या भाव।

**पहनावा** - पु० [हिं] पोशाक; वेष; कपड़े पहनने का ढंग।

**पहपट** - पु० [हि] हल्ला; एक प्रकार का स्त्रियों का गीत; छिपे तौर से की जानेवाली बदनामी; दग़ाबाज़ी; **यौ०** —बाज़ - हल्ला मचानेवाला; फ़सादी।

**पहर** - पु० [हिं] तीन घंटे का काल; जमाना; समय।

**पहरा** - पु० [हिं] चौकी; निगरानी; रक्षक-दल के तैनात रहने का समय; गश्ती के समय की बोली; हिरासत; **यौ०** पहरेदार - पहरा देनेवाला, रक्षक; **मु०** —देना - रखवाली करना; —पड़ना - रक्षा के लिए चौकीदार का तैनात रहना।

**पहरावनी** - स्त्री० [हिं] दान या ख़िलअत के रूप में दी जानेवाली पोशाक।

**पहरी, पहरुवा, पहरू** - पु० [हिं] पहरेदार।

**पहल** - पु० [फ़ा] किसी ठोस या पोली चीज़ के तीन या अधिक कोरों या कोनों के बीच की चौरस सतह; धुनी हुई रूई; ऊन की जमी हुई मोटी तह या परत; रज़ाई या तोशक आदि के भीतर की रूई की परत; बग़ल; पटल।

**पहलनी** - स्त्री० [हिं] गहने को गोल करने का सुनारों का एक औज़ार।

**पहलवान** - पु० [फ़ा] कुश्तीबाज़; मल्ल; हृष्ट-पुष्ट और बलवान आदमी।

**पहलवानी** - स्त्री० [फ़ा] मल्लवृत्ति, पहल्वान होने का भाव।

**पहलवी** - स्त्री० [फ़ा] ईरान की एक पुरानी भाषा ; ईरान का राजवंश !

**पहला** - 1. वि० [हिं] प्रारंभ में पड़नेवाला, आद्य, प्रथम , 2. पु० पुरानी रूई की जमी हुई तह ।

**पहलू** - पु० [फ़ा] बग़ल ; पार्श्व ; सेना या मकान का दाहिना या बायाँ भाग ; किनारा ; करवट ; दिशा ; पहल ; पक्ष ; पड़ोस ; व्यंग्यार्थ ; तरक़ीब ; दृष्टिकोण ।

**पहले** - अव्य० [हिं] शुरू में ; देश, स्थिति व काल के अनुसार प्रथम ; पुराने ज़माने में ; यौ०—पहल - सर्वप्रथम ।

**पहलौठा** - वि० [हिं] प्रथम गर्भ से उत्पन्न (पुत्र) ।

**पहलौठी** - 1. स्त्री० [हिं] प्रथम प्रसव ; 2. वि० प्रथम गर्भ से उत्पन्न (पुत्री) ।

**पहाड़** - पु० [हिं] पर्वत ; कोई बहुत भारी वस्तु ; दुष्कर कार्य ; मु०—उठाना - भारी काम हाथ में लेना ;—टूटना - भारी संकट आ पड़ना ; —से टक्कर लेना - बहुत बड़े बलवान से भिड़ना ।

**पहाड़ा** - पु० [हिं] बच्चों के याद करने की अंकों की गुणन-सूची ।

**पहाड़िया** - वि० [हिं] पहाड़-संबंधी ; पहाड़ का ; पहाड़ पर या उसके आस-पास रहनेवाला ।

**पहाड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] छोटा पहाड़ ; पहाड़ के निवासी ; 2. वि० पहाड़ से संबंधित ; पहाड़ पर होनेवाला ।

**पहिया** - पु० [हिं] चक्र, चक्का ।

**पहीति** - स्त्री० [देश] दाल ।

**पहुँच** - स्त्री० [हिं] पहुँचने की क्रिया या भाव ; पहुँचने की शक्ति; गति ; समझने की सामर्थ्य ; जानकारी ।

**पहुँचना** - अ० [हिं] एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान को प्राप्त होना ; व्याप्त होना ; समाना ; समझना ; जानकारी रखना ; मु० पहुँचा हुआ - सिद्ध ; तुच्छ (व्यंग) ।

**पहुँचा** - पु० [हि] कुहनी से लेकर कलाई तक का भाग ; मु०— पकड़ना - किसी कार्य के लिए बलपूर्वक किसीका हाथ पकड़ना ।

**पहुँची** - स्त्री० [हि] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक गहना ।

**पहुनाई** - स्त्री० [हिं] पाहुना होने का भाव; अतिथि-सत्कार ; मु०— करना - पाहुने के रूप में जहाँ-तहाँ जाकर खाना ।

**पहुप** - पु० [हिं] फूल, पुष्प ।

**पहेली** - स्त्री० [हिं] बुझौवल ; जल्दी समझ में न आनेवाली बात ; मु०— बुझाना - किसी बात को इस प्रकार कहना कि वह सुननेवाले की समझ में जल्दी न आ सके ।

**पाँ, पाँइ** - पु० [हिं] पैर, पाँव ।

**पाँइता** - पु० [हिं] पायताना, चारपाई का पैर रखने की ओर का हिस्सा ।

**पाँख** - पु० [हि] पंख, पर ।

**पाँखी** - स्त्री० [हिं] पतंगा, दीपक पर जल मरनेवाला कीड़ा जिसके पंख होते हैं ; पक्षी ।

**पाँग** - पु० [हिं] कछार ।

**पाँगानोन** - पु० [हिं] समुद्री नमक ।

**पाँगुर** - 1. वि० [हिं] पंगु, लँगड़ा ; 2. पु० लँगड़ा मनुष्य ।

**पाँच** - 1. वि० [हिं] चार से एक अधिक ; 2. पु० पाँच व्यक्ति ; जनता ; जाति-बिरादरी के गण्य-मान्य व्यक्ति ; मु०— सवारों में नाम लिखाना - पात्रता न होने पर भी अपने को बड़ों में सम्मिलित करना ; पाँचों उँगलियाँ घी में होना - खूब फ़ायदा उठाना ।

**पाँचजन्य** - पु० [सं] कृष्ण का शंख ; अग्नि।

**पाँचवाँ** - वि० [हिं] गिनती या क्रम में पाँच के स्थान पर पड़नेवाला।

**पाँचा** - पु० [हिं] पाँच दाँतोंवाला किसानों का एक आला जिससे भूसा बटोरा जाता है।

**पांचाल** - 1. वि० [सं] पंचाल देश-संबंधी; पंचाल देश पर शासन करनेवाला ; 2. पु० बढ़ई, जुलाहा, नाई, धोबी और मोची इन पाँचों का समाहार ; पंचाल देश का निवासी।

**पाँजना** - स० [हिं] पीतल आदि की बनी वस्तुओं को टाँका देकर जोड़ना।

**पाँजर** - पु० [हिं] कंधे और कमर के बीच का पसलियोंवाला भाग ; पंजर।

**पाँज** - वि० [हिं] चलकर पार करने योग्य नदी।

**पांडर** - पु० [सं] सफ़ेद रंग ; दौना ; कुंद का फूल ; गेरू।

**पांडरा** - पु० [हिं] एक तरह की ईख।

**पांडित्य** - पु० [सं] विद्वत्ता, पंडिताई।

**पांडु** - पु० [सं] सफ़ेद रंग ; पीलिया रोग ; सफ़ेद हाथी ; परवल ; यौ०— कर्म - फोड़े का दाग़ मिटाने का एक उपचार ; —राग - सफ़ेदी ; —लिपि - पुस्तक की हस्तलिखित प्रति ; —लेख - काग़ज़ आदि पर अंकित प्रथम लेख या रेखा-चित्र ; मसविदा।

**पांडुक** - पु० [सं] सफ़ेद पीला रंग ; पीलिया रोग।

**पांडुर** - पु० [सं] सफ़ेद रंग ; पांडुरोग ; सफ़ेद कोढ़ ; पीलापन लिये हुए सफ़ेद रंग।

**पांडे, पांडेय** - पु० [हिं] ब्राह्मणों की एक उपजाति ; अध्यापक ; रसोइया।

**पाँत** - स्त्री० [हिं] पंक्ति ; पंगत ; समूह।

**पाँति** - स्त्री० [हिं] कतार ; स्वजनवर्ग ; एक साथ खानेवालों का समूह।

**पांथ** - पु० [सं] पथिक ; प्रवासी ; विरही ; सूर्य ; यौ०— निवास, शाला - धर्मशाला ; सराय, चट्टी।

**पाँव** - पु० [हिं] वह अंग जिसके बल प्राणी चलते हैं, पैर ; यौ० —चप्पी - पैर दबाने की क्रिया ; —पाँव - पैदल ; मु० —अड़ाना - किसी बात में बेकार दख़ल देना ; —उखड़ जाना - लड़ाई में ठहर न सकना ; —की जूती - तुच्छ सेवक या सेविका ; —की बेड़ी - जंजाल, झंझट ; —घिसना - चलते-चलते थक जाना ; —जमना - दृढ़तापूर्वक स्थित होना ; —तले की धरती खिसकना - होश उड़ जाना ; —धरती पर न रखना - घमंड में चूर रहना ; —निकलना - बदनामी फैलना ; —पकड़ना - बहुत अधिक दीनता प्रकट करना; —पर पाँव रखकर बैठना - बेख़बर होना ;—पीटना - छटपटाना ;—फैलाना - अधिक पाने का लोभ करना ; —भारी होना - गर्भवती होना ; —समेटना - अलग रहना।

**पाँवड़ा** - पु० [हिं] आदरणीय व्यक्ति के स्वागतार्थ मार्ग में बिछाया जानेवाला कपड़ा या बिछौना।

**पाँवड़ी** - स्त्री० [हिं] खड़ाऊँ।

**पाँवर** - वि० [हिं] नीच ; तुच्छ ; मूर्ख।

**पांशु** - वि० [सं] धूल ; गोबर की खाद ; पाँगानोन ; एक प्रकार का कपूर।

**पांशुल** - वि० [सं] धूलिधूसरित ; अपवित्र ; व्यभिचारी।

**पाँस** - स्त्री० [हिं] राख या गोबर आदि की खाद ; शराब निकाला हुआ महुआ ; ख़मीर।

**पाँसना** - स० [हिं] खेत में खाद देना ।

**पँसी** - स्त्री० [हिं] घास-भूसा रखने की रस्सी की बनी हुई जाली ।

**पाँहीं** - अव्य० [हिं] पास, निकट ।

**पा** - पु० [फ़ा] पाँव; क़दम ; वृक्ष की जड़ ; **यौ०** —अंदाज़ - पैर पोंछने की एक तरह की चटाई ;—कार - प्यादा ; ख़िदमतगार ; —कूब - नाचनेवाला ; —ख़ाना - मल ; टट्टीघर ; —चिराग़ - एक पाँव पर ; —जामा - कमर से लेकर एड़ी तक का एक पहनावा ; —ज़ेब - पाँव में पहनने का एक घुँघुरूदार गहना ; —तराब - प्रस्थान ; —नाम - प्रसिद्ध ; —पोश - जूता ; —प्यादा - पैदल ; —बंद - बँधा हुआ ; गिरफ़्तार ; लाचार ; क़ायम रहनेवाला ; बेड़ी ; —बंदी - पाबंद होने की क्रिया या भाव ; नियम, वचन आदि का अनिवार्य पालन ; लाचारी ; —बोस - पाँव चूमनेवाला ; प्रणाम करनेवाला ; —मर्द - स्थिर चित्तवाला ; बहादुर ;—माल - पददलित ; तबाह ; —मोज़ - एक प्रकार का कबूतर या मुर्गी ; —याब - कम गहरा ; —याबी - उथलापन ।

**पाइ** - पु० [हिं] पैर, पाँव ।

**पाइट** - स्त्री० [हिं] बाँस आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसपर चढ़कर दीवार चुनी जाती है ।

**पाइतरी** - स्त्री० [हिं] पलँग का पैर की ओर का भाग, पायताना ।

**पाइल** - पु० [हिं] पायल, पाज़ेब ।

**पाईं** - अव्य० [फ़ा] सामने ; नीचे; सिरहाने; **यौ०**— बाग़ - घर के साथ लगा हुआ बाग़ ।

**पाई** - स्त्री० [हिं] घेरा बनाते हुए नाचने या घूमने की क्रिया ; टिकठी ; घोड़े के पैर सूजने की एक बीमारी ; इकाई का चतुर्थांश सूचित करनेवाली खड़ी रेखा; आकार की मात्रा ; पूर्ण विराम सूचित करने के लिए वाक्य के अंत में लगायी जानेवाली खड़ी लकीर ; गहने आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी ; एक कीड़ा ; एक आने का बारहवाँ या एक पैसे का तीसरा हिस्सा ।

**पाऊँ** - पु० [हिं] पाँव, पैर ।

**पाक** - 1. पु० [सं] पकने या पकाने की क्रिया या भाव ; पकाया हुआ अन्न ; पिण्डदान के निमित्त दूध में पकाया हुआ चावल ; पकवान ; भोजन का पचना ; फोड़ा ; वृद्धता के कारण बालों का सफ़ेद होना ; बुद्धि का परिपक्व होना ; परिणाम ; उल्लू ; 2. वि० पका हुआ ; अल्प ; परिपक्व बुद्धिवाला ; **यौ०** —कर्म - पकाना ; —ज - पाक से उत्पन्न ; —शाला - रसोईघर ; —शासन - इंद्र ; —शुक्ला - खड़िया मिट्टी ; —स्थान - रसोईघर ; आवाँ ; [फ़ा] शुद्ध ; निर्दोष ; साफ़-सुथरा ; ख़ालिस ; पाप से बचनेवाला ; **यौ०**—ज़ादा - धोबी ; —दामन, दामाँ - शुद्ध ; निष्पाप ; सती ; — दिल - शुद्ध अंतःकरणवाला ; —नज़र, निगाह - पवित्र दृष्टि ; —नीयत - सद्विचार ; —परवर्दिगार - परमेश्वर ; — बाज़ - शुद्ध हृदयवाला ; सच्चा ; भाँग छानने की साफ़ी ; —मुहब्बत - विशुद्ध प्रेम ; —रवी - नेकचलनी ; —साफ़ - निर्मल ; निष्कलंक ; विशुद्ध ।

**पाकठ** - वि० [हिं] पका हुआ ; अनुभवी ; सबल ।

**पाकड़, पाकर** - पु० [हिं] बरगद की जाति का एक पेड़ ।

**पाका** - 1. पु० [हिं] फोड़ा ; 2. वि० पका हुआ ।

**पाकातिसार** - पु० [सं] पुराना आमातिसार ।

**पाकी** - स्त्री० [फ़ा] शुद्धता ; निर्दोषता ; सफ़ाई ।

**पाकीज़ा** - वि० [फ़ा] साफ़, निर्दोष ; सुंदर ।

**पाक्ष** - वि० [सं] किसी दल से संबंध रखनेवाला ; पाक्षिक ।

**पाक्षपातिक** - वि० [सं] फूट डालनेवाला ; पक्षपात करनेवाला ।

**पाक्षिक** - 1. वि० [सं] पक्ष-संबंधी ; पक्ष-भर में होनेवाला ; हर पंद्रहवें दिन होनेवाला ; चिड़िया से संबंध रखनेवाला ; किसीका पक्ष लेनेवाला ; वैकल्पिक ; 2. पु० बहेलिया, चिड़ीमार, विकल्प ।

**पाखंड** - पु० [सं] दिखावटी उपासना या भक्ति ; ढोंग ; छल ; मु०— फैलाना - दूसरों को ठगने के लिए विशेष प्रकार का स्वाँग बनाना ; ढकोसलेबाज़ी करना ।

**पाख** - पु० [हिं] आधा महीना, पखवारा।

**पाखर** - 1. स्त्री० [हिं] लड़ाई के हाथी या घोड़े की रक्षा के लिए पहनायी जानेवाली लोहे की झूल ; 2. पु० पाकड़ ।

**पाखरी** - स्त्री० [हिं] अनाज लादने के लिए गाड़ी पर बिछाया जानेवाला टाट।

**पाग** - 1. स्त्री० [हिं] पगड़ी ; 2. पु० चाशनी ; चाशनी में डुबायी गयी पेठे आदि की मिठाई ; अवलेह ।

**पागना** - 1. स० [हिं] चाशनी में डुबाना ; 2. अ० मग्न होना ।

**पागर** - पु० [हिं] नाव में बाँधा जानेवाला वह रस्सा जिसके सहारे उसे क़िनारे की ओर खींचते हैं ।

**पागल** - वि० [सं] विक्षिप्त ; सनकी ; उत्तेजनावश जो आपे से बाहर हो गया हो ; महामूर्ख ; अबूझ ; यौ०— ख़ाना - पागलों के रहने की जगह ।

**पागुर** - पु० [हिं] जुगाली ।

**पाचक** - 1. वि० [सं] पकानेवाला ; पचानेवाला ; 2. पु० रसोइया ; अग्नि ; भोजन को पचानेवाली औषध ।

**पाचन** - पु० [सं] पकाने या पचाने की क्रिया ; अग्नि ; खटाई ; प्रायश्चित्त ; जठराग्नि द्वारा भोजन का पचाया जाना ; घाव को भरने की क्रिया ; यौ०— शक्ति - भोजन को पचाने की शक्ति ।

**पाचना** - 1. स० [हिं] पकाना ; अ० 2. मरना ; गलना ।

**पाचनी** - स्त्री० [सं] हड़ ।

**पाचनीय** - वि० [सं] पकाने या पचाने योग्य ।

**पाचा, पाचि** - स्त्री० [हिं] भोजन पकाना ।

**पाच्य** - वि० [सं] पचाने या पकाने योग्य ।

**पाछ** - स्त्री० [हिं] पाछने की क्रिया या भाव ; पाछने से पड़नेवाला चीरा ; वृक्ष का रस या दूध निकालने के लिए उसपर लगाया गया चीरा ।

**पाछना** - स० [हिं] छुरे आदि के हलके आघात से शरीर पर या पेड़-पौधे पर जहाँ-तहाँ चीरा लगाना ।

**पाछल, पाछिल, पाछिला** - वि० [हिं] पिछला ।

**पाछा** - पु० [हिं] पीछा ।

**पाछी, पाछू, पाछे** - अव्य० [हिं] पीछे की ओर ; पीछे ।

**पाजर** - पु० [हिं] पाँजर ; पार्श्व ।

**पाजरा** - पु० [हिं] रंग निकालने के काम आनेवाली वनस्पति ।

**पाजी** - 1. वि० [हिं] दुष्ट ; बदमाश ; 2. पु० पैदल सिपाही ; रक्षक ।

**पाटंबर** - पु० [हिं] रेशमी कपड़ा ।

**पाट** - पु० [सं] विस्तार ; चौड़ाई ; [हिं] रेशम ; वस्त्र ; रेशमी कीड़ा ; पटसन ; सिंहासन ; राजगद्दी ; पीढ़ा ; पत्थर की पटिया ; चक्की के दो भागों में से एक ; बैठने के लिए कोल्हू में लगाया जानेवाला तख्ता ; बैलों का एक रोग ; यौ०—महिषी, रानी - पटरानी ।

**पाटक** - पु० [सं] चीरनेवाला ; गाँव का एक भाग ; एक प्रकार का बाजा ; किनारा ; घाट पर की सीढ़ियाँ ; मूलधन की हानि ; जुए में दाँव रखना ।

**पाटच्चर** - पु० [सं] चोर ।

**पाटन** - 1. स्त्री० [हिं] पाटने की क्रिया या भाव ; पटाव ; छत ; मकान की पहली मंज़िल से ऊपर की मंज़िलें ; नगर ; 2. पु० [सं] चीरना ; फाड़ना ; यौ०—क्रिया - शल्यक्रिया ।

**पाटना** - स० [हिं] गड्ढे आदि को भरकर समतल कर देना ; भर देना ; पूर्ण कर देना ; ढकना ; ढेर लगा देना ।

**पाटल** - पु० [सं] ललाई लिये हुए पीला रंग ; एक फूल ; एक प्रकार का बरसाती धान ; केसर ।

**पाटलक** - वि० [सं] लाल-पीले रंग का ।

**पाटला** - 1. पु० [हिं] एक तरह का सोना ; पल्ला ; 2. स्त्री० दुर्गा ; पाटल पुष्प ।

**पाटलिक** - 1. पु० [सं] विद्यार्थी ; शिष्य ; 2. वि० दूसरे का भेद जाननेवाला ; देश-काल का ज्ञान रखनेवाला ।

**पाटली** - स्त्री० [हिं] बहुत-से छेदोंवाली लकड़ी की बल्ली जिसके प्रत्येक छेद में से मस्तूल की रस्सी निकाली जाती है ; [सं] विश्वामित्र की बहन जिसके अनुरोध से पाटलिपुत्र नगर का निर्माण हुआ था ।

**पाटव** - पु० [सं] चातुरी ; कौशल ; पटुता ; आरोग्य ; उत्साह ; तीक्ष्णता ; तीव्रता ।

**पाटविक** - वि० [सं] कुशल ; धूर्त ।

**पाटवी** - वि० [हिं] पटरानी से जन्मा हुआ (राजकुमार) ; रेशम का बना हुआ, रेशमी ।

**पाटहिका** - स्त्री० [सं] गुंजा, घुंघची ।

**पाटा** - 1. स्त्री० [सं] परंपरा ; 2. पु० [हिं] पीढ़ा ; दो दीवारों के बीच बाँस आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार ; आड़ के लिए चौके के पास उठायी जानेवाली दीवार ।

**पाटिका** - स्त्री० [सं] एक दिन की मज़दूरी ; एक पौधा ।

**पाटित** - वि० [सं] फाड़ा हुआ, विदारित ।

**पाटी** - स्त्री० [सं] परिपाटी ; रीति ; अंक-गणित ; [हिं] बच्चों के अक्षर सीखने की एक प्रकार की तख्ती ; पाठ ; चटाई ; पत्थर की पटिया ; मु०—पढ़ना - पाठ पढ़ना ; —पढ़ाना - शिक्षा देना ।

**पाठ** - पु० [सं] पढ़ने की क्रिया या भाव ; पढ़ी या पढ़ायी जानेवाली वस्तु ; परिच्छेद ; सबक़ ; वाक्य या पद्य आदि का लिखित रूप ; यौ०—च्छेद - पाठ्य वस्तु के बीच में होनेवाला विराम, यति ; —दोष - पाठसंबंधी दोष ; —निश्चय - शुद्ध पाठ का निश्चय करना ; —भेद - पाठांतर ; —शाला - विद्यालय, स्कूल ।

**पाठक** - पु० [सं] अध्यापक ; कथावाचक ; गुरु ; छात्र ; पढ़नेवाला ।

**पाठन** - पु० [सं] अध्यापन ; यौ० —शैली - पढ़ाने का ढंग ।

**पाठांतर** - पु० [सं] दूसरा पाठ ; पाठ में भिन्नता होना ।

**पाठा** - पु० [हिं] जवान और मोटा-

ताज़ा आदमी; जवान बैल, हाथी, भैंसा, बकरा आदि ।

**पाठिका** - स्त्री० [सं] पढ़ने या पढ़ानेवाली ।

**पाठित** - वि० [सं] पढ़ाया हुआ ।

**पाठी** - पु० [सं] पाठ करनेवाला; पढ़नेवाला ।

**पाठीन** - पु० [सं] एक प्रकार की मछली; पढ़ने या पढ़ानेवाला; पुराण आदि का वाचक ।

**पाठ्य** - वि० [सं] पढ़ने योग्य; **यौ०** —पुस्तक - कोर्स की किताब ।

**पाड़** - पु० [हिं] धोती या साड़ी का किनारा; मचान ।

**पाड़साली** - पु० [हिं] दाक्षिणात्य जुलाहों की एक जाति ।

**पाड़ा** - पु० [हिं] टोला; मुहल्ला; भैंस का नर बच्चा ।

**पाड़िनी** - स्त्री० [सं] मिट्टी का बर्तन; हाँड़ी ।

**पाढ़** - पु० [हिं] पीढ़ा; सुनार या लोहार आदि के काम करते समय बैठने की जगह; पाड़ ।

**पाण** - पु० [सं] व्यापार; व्यापारी; द्यूत; बाज़ी; प्रतिज्ञा; प्रशंसा; हाथ ।

**पाणि** - 1. पु० [सं] हाथ; 2. स्त्री० बाज़ार; यौ० —गृहीता - पत्नी; —ग्रह, ग्रहण - विवाह; —ग्रहणिक - वैवाहिक; दहेज; —ग्रहीता, ग्राहक - पति; —घात - घूँसा; —घाती - घूँसेबाज़ी; घूँसेबाज़; —तल - हथेली; दो तोले का एक प्राचीन परिमाण; —धर्म - विवाह-संस्कार; —पल्लव - अंगुलियाँ; —पात्र - हाथ या अंजलि से बर्तन का काम लेनेवाला; —पाद - हाथ और पैर; —पुट - चुल्लू; —मूल - कलाई; —वाद, वादक - ताली बजानेवाला; मृदंग बजानेवाला ।

**पाणिक** - 1. वि० [सं] द्यूत से प्राप्त; एक पण में ख़रीदा हुआ; 2. पु० व्यापारी ।

**पाणिका** - स्त्री० [सं] एक तरह का गीत; एक तरह की करछुल ।

**पाण्य** - वि० [सं] स्तुत्य; हाथ-संबंधी ।

**पात** - 1. पु० [हिं] कान का एक गहना; पत्ता; [सं] गिरने की क्रिया या भाव; पतन; उड़ना; नाश; प्रहार; अशुभ स्थिति; अभिभावक; 2. वि० रक्षित ।

**पातक** - पु० [सं] पाप ।

**पातकी** - वि० [सं] पापी; अपराधी ।

**पातन** - पु० [सं] गिराने की क्रिया; झुकाना; काटकर गिरा देना; फेंकना ।

**पातनीय** - वि० [सं] गिराने योग्य; फेंकने योग्य ।

**पातर** - 1. स्त्री० [हिं] पत्तल; वेश्या; 2. वि० बारीक़; दुर्बल ।

**पातरि, पातरी** - 1. स्त्री० [हिं] पत्तल; 2. वि० दुबली ।

**पातशाह** - पु० [हिं] बादशाह ।

**पाता** - पु० [हिं] पत्ता; [सं] रक्षक; पीनेवाला ।

**पाताखत** - पु० [हिं] पत्र और अक्षत; पूजन की साधन-सामग्री; मामूली भेंट ।

**पाताल** - पु० [सं] भुवन का अधोभाग; सात लोकों में से सबसे नीचे का लोक; गुफा; गड्ढा; बड़वानल; **यौ०** —गंगा - पाताललोक में बहनेवाली गंगा; —तुंबी - खेतों में होनेवाली एक लता; —यंत्र - धातु गलाने या अर्क़ आदि तैयार करने का एक यंत्र ।

**पातित** - वि० [सं] गिराया हुआ; झुकाया हुआ ।

**पातिव्रत्य** - पु० [सं] पतिव्रता होने का भाव; पतिव्रता का धर्म ।

**पाती** - 1. स्त्री० [हिं] चिट्ठी; लज्जा; मर्यादा; 2. वि० [सं] गिरनेवाला; गिरानेवाला; फेंकनेवाला।

**पातुर, पातुरनी, पातुरी** - स्त्री० [हिं] वेश्या।

**पात्र** - पु० [सं] जल आदि पीने का बर्तन; बर्तन; स्रुवा आदि यज्ञ के काम का कोई पदार्थ; अभिनेता; नदी का पाट; अमात्य; चार सेर का एक परिमाण; आदेश; योग्यता; पत्ता; **यौ०** —शुद्धि - बर्तनों की सफ़ाई; —शेष - जूठन; —संस्कार - बर्तनों की सफ़ाई; नदी का प्रवाह।

**पात्रता** - स्त्री० [सं] योग्यता।

**पात्री** - 1. स्त्री० [सं] बर्तन, थाली आदि; दुर्गा; छोटी भट्ठी; 2. वि० जिसमें पात्रता हो; जिसके पास योग्य व्यक्ति हों।

**पात्रीर** - पु० [सं] यज्ञ में समर्पित किया जानेवाला पदार्थ।

**पाथ** - पु० [सं] अग्नि; सूर्य; जल; वायु; खाद्य पदार्थ; आकाश; [हिं] रास्ता।

**पाथना** - स० [हिं] गढ़ना; बनाना; मारना-पीटना।

**पाथर** - पु० [हिं] पत्थर।

**पाथा** - पु० [हिं] अन्न नापने की एक तौल; कोल्हू हाँकनेवाला; अन्न में लगनेवाला एक कीड़ा।

**पाथि** - पु० [सं] समुद्र; नेत्र।

**पाथेय** - पु० [सं] संबल; राहख़र्च; कन्याराशि।

**पाथोज** - पु० [सं] कमल; शंख।

**पाथोद, पाथोधर** - पु० [सं] बादल; स्तन।

**पाथोनिधि** - पु० [सं] समुद्र।

**पाद** - पु० [सं] चरण, पैर; श्लोक; श्लोक का चौथा भाग; चतुर्थांश; वृक्ष या पौधे की जड़; किसी वस्तु का निचला भाग; हिस्सा; गमन; एक पैर या बारह अंगुल की माप; स्तम्भ; **यौ०** —कमल - चरणकमल; —कीलिका - नूपुर; —कृच्छ्र - चार दिनों में पूरा किया जानेवाला एक व्रत; —क्षेप - पैर रखना, चरणन्यास; —ग्रंथि - टखना; —चतुर - निन्दक; बकरा; पीपल का पेड़; बालू का बाँध; रेत; —चार - पैदल चलना; —चारी - पैदल सिपाही; —टीका - पादटिप्पणी (फ़ुटनोट); —तल - तलवा, पाद का निचला भाग; —त्राण - खड़ाऊँ, जूता, चप्पल आदि; —दलित - रौंदा हुआ; बुरी तरह से दबाया हुआ; —दारिका, दारी - बिवाई नामक रोग; —धावन - पैर धोने की क्रिया; —नख - पैर की अंगुली का नख; —नम्र - किसीके पैर तक झुका हुआ; —नालिका - नूपुर; —निकेत - पादपीठ, पैर रखने की छोटी चौकी; —न्यास - क़दम रखना; —पथ, पद्धति - पगडंडी; —पाश - घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी, छान; नूपुर; —पाशी - बेड़ी; ज़ंजीर; चटाई; लता; —पीठ - पैर रखने की ऊँची चौकी; —पीठिका - साधारण व्यवसाय; पत्थर; —पूरण - किसी श्लोक या पद्य के किसी चरण को पूरा करना,—प्रहार - चरण का आघात; —बंधन - जानवरों के पैर बाँधने की रस्सी;—मूल - टखना; तलवा; एड़ी; —रज्जु - हाथी के पाँव बाँधने की रस्सी या ज़ंजीर;—वंदन - चरण छूकर प्रणाम करना;—शब्द - आहट;—शोथ - पैर का फूल जाना; [हिं] अपानवायु।

**पादना** - अ० [हिं] अपानवायु छोड़ना।

**पादप** - पु० [सं] वृक्ष ; पादपीठ ; यौ० —खंड - वृक्षों का झुंड।

**पादरी** - पु० [हिं] ईसाई धर्म का पुरोहित या आचार्य।

**पादशाह** - पु० [फ़ा] बादशाह, सम्राट ; यौ०—ज़ादा - राजकुमार।

**पादशाही** - स्त्री० [फ़ा] बादशाही।

**पादाघात** - पु० [सं] पैर का प्रहार।

**पादात** - पु० [हिं] पैदल सिपाही ; पैदल सेना।

**पादाति, पादातिक** - पु० [सं] पैदल सिपाही।

**पादानोन** - पु० [हिं] काला नमक।

**पादारविंद** - पु० [सं] चरणकमल।

**पादावर्त** - पु० [सं] रहट।

**पादासन** - पु० [सं] पादपीठ।

**पादाहत** - वि० [सं] जिसपर पैर से प्रहार किया गया हो।

**पादुका** - स्त्री० [सं] जूता ; खड़ाऊँ।

**पादोदक** - पु० [सं] पैर धोने का जल ; चरणामृत।

**पाधा** - पु० [हिं] आचार्य ; पंडित।

**पान** - पु० [सं] जल आदि पीने की क्रिया ; पीने का पात्र ; शराब पीना ; कलवार ; रक्षण ; निःश्वास ; नहर ; चुंबन ('अधर-पान') ; यौ० —गोष्ठी - शराबियों की मंडली ; शराब की दूकान ; —दोष - शराब पीने की कुटेव ; —रत - शराबी ; —पात्र, भाण्ड, भाजन - शराब आदि पीने का बर्तन ; —भोजन - खाना-पीना ; —मंडल - शराबियों की मंडली ; —मत्त - नशे में चूर ; [हिं] एक कोमल लता जिसके पत्तों का बीड़ा मुखशुद्धि के लिए खाया जाता है, तांबूल ; प्राण-वायु ; हाथ ; सूत को माँड़ी में भिगोकर उसका ताना करना ; यौ० —दान - पान के बीड़े रखने का डिब्बा ; —पत्ता - लगा हुआ पान ; साधारण उपहार ; —फूल - तुच्छ भेंट ; बहुत कोमल वस्तु।

**पानक** - पु० [सं] आग में पकाये हुए आम या इमली आदि के रस में नमक-मिर्च आदि मिलाकर तैयार किया हुआ एक प्रकार का पेय, पना।

**पानड़ी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की पत्ती जो पेय पदार्थों में सुगंध के लिए छोड़ी जाती है।

**पानस** - 1. पु० [सं] कटहल से तैयार की जानेवाली शराब ; 2. वि० कटहल से संबंध रखनेवाला।

**पानही** - स्त्री० [हिं] पनही।

**पाना** - स० [हिं] प्राप्त करना ; समझ या जान लेना ; अनुभव करना ; भोगना ; किसीके पास तक पहुँचना ; भोजन करना।

**पानागार** - पु० [सं] शराबख़ाना।

**पानि** - पु० [हिं] हाथ ; पानी ; चमक।

**पानिय** - 1. पु० [हिं] पानी ; 2. वि० रक्षणीय।

**पानी** - पु० [हिं] जल; वर्षा का जल; कांति; प्रतिष्ठा ; वर्ष ; मुलम्मा ; आत्माभिमान ; जीवट; जलवायु; यौ०—दार - कांतिमान; स्वाभिमानी ; —देवा - तर्पण करनेवाला ; —फल - सिंघाड़ा ; —बेल - एक प्रकार की लता ; मु०— आना - वर्षा होना ; —उतरना - बेइज़्ज़ती होना ; अंडवृद्धि होना ; —करना - क्रुद्ध व्यक्ति को शांत करना ; —का बतासा, का बुलबुला - क्षणभंगुर वस्तु ; —के मोल - बहुत सस्ता ; —छूना - आबदस्त लेना ; —दिखाना - चौपायों को पानी पिलाना ; —देना - तर्पण करना ; —न माँगना - तत्काल मर जाना ; —पानी करना -

बहुत अधिक शर्मिन्दा करना ; —पानी होना - बहुत अधिक लज्जित होना ; —पी-पीकर कोसना - बहुत अधिक और देर तक कोसना ; —में आग लगाना - असंभव कार्य कर डालना ; बिना कारण झगड़ा कर लेना।

**पनौरा** - पु० [हिं] पान के पत्ते का पकौड़ा।

**पाप** - 1. पु० [सं] निकृष्ट कर्म ; अधार्मिक कृत्य ; अनिष्ट ; पापी ; 2. वि० निकृष्ट ; बुरा ; अशुभ ; दुष्ट ; नीच ; यौ०—कर्म - धर्मविरुद्ध कर्म ; —कर्मा - पापी; —कल्प - नीच मनुष्य ; —कारक, कारी - पापी ; —गति - अभागा, भाग्यहीन ; —ग्रह - शनि, मंगल आदि अशुभ ग्रह ; —चारी - पापाचरण करनेवाला ; —चेता - नीच ; दुरात्मा ; —दर्शी - बुरी निगाह से देखनेवाला ; —दृष्टि - अपवित्र दृष्टिवाला ; बुरी दृष्टि ; —धी - दुरात्मा ; —नामा - अशुभ नामवाला ; —नाशक - पापों का नाश करनेवाला ; —निष्कृति - प्रायश्चित्त ; —बुद्धि - दुरात्मा ; —मित्र - अहित करनेवाला मित्र ; —मोचन - पाप का निराकरण ; —योनि - तिर्यक आदि तुच्छ योनि ; —लोक - नरक ; —संकल्प - पापात्मा ; —हर - पापनाशक ; मु०—उदय होना - पूर्वकृत पाप का फल मिलने लगना ; —कटना - बाधा आदि का दूर होना ; —कमाना - पापमय कार्य करना ; — मोल लेना - जान-बूझकर बखेड़े में पड़ना ; —लगना - पाप का भागी होना।

**पापक** - 1. वि० [सं] बुरा ; दुष्ट ; पापी ; 2. पु० दुष्ट व्यक्ति ; बुरा ग्रह ; अपराध।

**पापड़** - पु० [हिं] उड़द या मूँग की पीठी से तैयार की जानेवाली एक प्रकार की बारीक मसालेदार चपाती जिसे तलकर अथवा आग पर सेंककर लोग खाते हैं ; मु० —बेलना - घोर परिश्रम करना ; बहुत कष्ट झेलना।

**पापाचार** - 1. पु० [सं] पापमय आचरण, दुराचार ; 2. वि० पापमय आचरण करनेवाला, दुराचारी।

**पापात्मा** - पु० [सं] पापी।

**पापिष्ठ** - वि० [सं] सबसे बड़ा पापी।

**पापी** - 1. वि० [सं] पाप करनेवाला ; निष्ठुर ; निर्दय ; 2. पु० पाप करनेवाला मनुष्य।

**पाम** - पु० [सं] एक चर्मरोग ; खुरण्ड ; यौ० —घ्न - गंधक।

**पामन** - वि० [सं] जिसे पाम रोग हुआ हो।

**पामर** - 1. वि० [सं] दुष्ट ; मूर्ख ; निर्धन ; असहाय ; पाम रोग से ग्रस्त ; 2. पु० मूर्ख या तुच्छ व्यक्ति।

**पामरी** - स्त्री० [हिं] दुपट्टा ; पाँवड़ी।

**पामा** - पु० [सं] पाम।

**पामारि** - पु० [सं] गंधक।

**पायँ** - पु० [हिं] पैर, पाँव ; यौ०—चा - पायजामे के दो भागों में से कोई एक ; —ता, ती - पैताना, सोनेवाले के पैर की ओर की दिशा।

**पाय** - पु० [फ़ा] 'पा' का समास में इज़ाफ़त लगने से होनेवाला रूप ; यौ०—कार - एजेंट, ख़ुर्दाफ़रोश ; —ख़ाना - पाख़ाना ; —गाह - तबेला ; कचहरी ; —ज़ंजीर - गिरफ़्तार ; दुनियाँ के धंधों में फँसा हुआ ; —तख़्त - राजधानी ; —दान - गाड़ी में बाहर की ओर लगाया गया लोहे या लकड़ी का टुकड़ा जिसपर पैर रखकर लोग चढ़ते

है : —दाम - जाल, फंदा ; —दार - मज़बूत ; —दारी - मज़बूती ; —मर्दी - बहादुरी ।

**पायक** - पु० [सं] पीनेवाला ; [हिं] दूत ; सेवक ; पैदल सिपाही ; मल्ल ; पताका ।

**पायन** - पु० [सं] पिलाना ।

**पायरा** - पु० [हिं] रकाब ; एक तरह का कबूतर ।

**पायल** - स्त्री० [हिं] पैर में पहिनने का एक घुँघरूदार गहना, नूपुर ; तेज़ चलनेवाली हथिनी ; बाँस की सीढ़ी ।

**पायस** - 1. पु० [सं] दूध में पकाया हुआ चावल आदि, खीर ; अमृत ; सलई का गोंद ; तारपीन ; 2. वि० दूध या जल का बना हुआ ।

**पायसा** - पु० [हिं] पड़ोस ।

**पायस्कि** - वि० [सं] जिसे उबाला हुआ या गरम दूध प्रिय लगे ।

**पाया** - पु० [फ़ा] पलंग या चौकी आदि के नीचे के वे डंडे जिनके सहारे उनका ढाँचा खड़ा रहता है, गोड़ा ; खंभा ; नीव ; सीढ़ी ; पद ; घोड़ों के पैरका एक रोग ; यौ० —ब-पाया - दर्जा-ब-दर्जा, एक-एक दर्जा करके ; मु०—बुलंद होना - दर्जा बढ़ना ।

**पायिक** - पु० [सं] पैदल सिपाही ; दूत ।

**पायी** - पु० [सं] पीनेवाला ।

**पायु** - पु० [सं] गुदा ।

**पारंगत** - वि० [सं] पार तक पहुँचा हुआ ; प्रवीण ; पवित्र ।

**पारंपरीण** - वि० [सं] परंपरागत ; क्रमागत ।

**पारंपर्य** - पु० [सं] परंपरा का भाव ; कुल आदि की परंपरा ।

**पार** - 1. पु० [सं] सरोवर या नदी आदि की दूसरी ओर का किनारा ; दूर तक फैली हुई वस्तु का अंतिम भाग ; अंत ; सीमा ; पारा ; 2. अव्य० परे ; दूर ; यौ०— काम - दूसरे किनारे जाने का इच्छुक ; —गत - पार तक पहुँचा हुआ ; किसी विद्या या शास्त्र का पूर्ण ज्ञाता ; —गति - पढ़ना, अध्ययन ; —गामी - पार जानेवाला ; —दर्शक - जिसके आर-पार देखा जा सके ; —दर्शी - दूरदर्शी ; मु० —उतर जाना - कोई प्रयोजन सिद्ध करके अलग हो जाना ; —उतरना - किसी कार्य में सफलता प्राप्त करना ; भव-बंधन से मुक्त होना ; —पाना - किसी वस्तु के अंत तक पहुँचना ; —लगना - किनारे पहुँचना ।

**पारई** - स्त्री० [हिं] बड़ा कसोरा ।

**पारक** - वि० [सं] पार करनेवाला ; पूर्ति करनेवाला ; पालक ; प्रिय ।

**पारख** - 1. स्त्री० परख ; 2. पु० पारखी ।

**पारखी** - पु० [हिं] परीक्षा करनेवाला ।

**पारचा** - पु० [फ़ा] टुकड़ा ; एक तरह का रेशमी कपड़ा ; पोशाक ; धज्जी ; यौ०—फ़रोश - कपड़ा बेचनेवाला, बजाज ; —फ़रोशी - बजाजी, बजाज का काम ; —बाफ़ - कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा ।

**पारण** - 1. पु० [सं] किसी व्रत या उपवास के बाद का पहला भोजन ; बादल ; तृप्ति ; पढ़ना ; पुस्तक का सारा विषय ; 2. वि० पार करनेवाला ; उद्धार करनेवाला ।

**पारणा** - स्त्री० [सं] व्रत के बाद का भोजन ; भोजन ।

**पारतंत्र्य** - पु० [सं] पराधीनता ।

**पारथिव** - 1. पु० [हिं] राजा ; मिट्टी का शिवलिंग ; 2. वि० मिट्टी का बना हुआ ।

**पारद** - पु० [सं] पारा ; एक प्राचीन असभ्य जाति ।

**पारदेशिक** - 1. वि० [सं] विदेशी ; 2. पु० दूसरे देश का निवासी ; यात्री ।

**पारधि, पारधी** - 1. पु० [हिं] बहेलिया ; शिकारी ; हत्यारा ; 2. स्त्री० आड़, ओट ।

**पारन** - पु० [हिं] पारण ।

**पारना** - 1. स० [हिं] ज़मीन पर डाल देना ; गिराना ; पछाड़ना ; पहनना ; सम्मिलित करना ; पालन करना ; साँचे में ढालना ; 2. अ० (कोई काम) करने में समर्थ होना ; 3. स्त्री० पारणा ।

**पारमार्थिक** - वि० [सं] परमार्थ-संबंधी ; सत्य और अविकारी ; स्वाभाविक ; परमार्थ की ओर दृष्टि रखनेवाला ; अति उत्तम ।

**पारमिक** - वि० [सं] सर्वश्रेष्ठ ; प्रधान ।

**पारमित** - वि० [सं] पार गया हुआ ।

**पारयुगीन** - वि० [सं] परवर्ती युग में होनेवाला ।

**पारलोक्य** - वि० [सं] परलोक-संबंधी ; परलोक का ।

**पारलौकिक** - 1. वि० [सं] परलोक संबंधी ; 2. पु० अंत्येष्टि क्रिया ।

**पारविषयिक** - वि० [सं] दूसरे देश या राज्य का, विदेशी ।

**पारस** - पु० [हिं] एक पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है, स्पर्शमणि ; बहुत लाभ पहुँचानेवाला पदार्थ ; परोसा हुआ भोजन ; मझोले आकार का एक पहाड़ी पेड़ ; हिन्दुस्तान के पश्चिम में स्थित एक देश, फ़ारस ।

**पारसा** - वि० [फ़ा] धर्मात्मा ; सती-साध्वी ।

**पारसाई** - स्त्री० [फ़ा] साधुता ; धार्मिकता ।

**पारसी** - स्त्री० [सं] पारस देश की भाषा, फ़ारसी ; यौ०— कोष, प्रकाश - एक ग्रंथ जिसमें पारसी के शब्दों का अर्थ संस्कृत में दिया हुआ है , 2. पु० [हिं] एक अग्निपूजक जाति ।

**पारस्परिक** - वि० [सं] आपस का ; आपसी ।

**पारा** - 1. स्त्री० [सं] एक प्राचीन नदी ; 2. पु० [हिं] एक प्रसिद्ध धातु, पारद ; टुकड़ा ; मु०—पिलाना - किसी क्रिया द्वारा भारी बनाना ।

**पारापत** - पु० [सं] कबूतर ।

**पारापार** - पु० [स] दोनों किनारे ; समुद्र ।

**पारायण** - पु० [सं] किसी ग्रंथ का आदि से अंत तक पाठ ; संपूर्णता ।

**पारायणी** - स्त्री० [स] सरस्वती ; चिन्तन ; कर्म ; प्रकाश ।

**पारावत** - पु० [सं] कबूतर ; पंडुक ; एक सर्प ; बंदर ; पर्वत ।

**पारावती** - स्त्री० [सं] एक प्रकार का गीत, बिरहा ; कबूतरी ।

**पारावार** - पु० [सं] समुद्र ।

**पाराशर** - पु० [सं] पराशर मुनि के पुत्र वेदव्यास ।

**पाराशरी** - पु० [सं] संन्यासी ; व्यास द्वारा रचित शारीरिक-सूत्र का अध्ययन करनेवाला संन्यासी ।

**पारि** - स्त्री० [हिं] दिशा, ओर ; नदी या समुद्र आदि का किनारा ; मेंड़ ; सीमा ।

**पारिख** - 1. वि० [सं] परिखा-संबंधी ; 2. पु० पारखी; गुजरातियों की एक उपजाति ।

**पारिखेय** - वि० [सं] खाई से घिरा हुआ, परिखा ।

**पारिजात** - पु० [सं] पाँच देववृक्षों में से एक ; हरसिंगार ; कचनार ; फरहद ; एक ऋषि ; सुगंध ।

**पारिणामिक** - वि० [सं] पचनेवाला , जिसका विकास हो सके ।

**पारितोषिक** - 1. वि० [सं] संतुष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला; 2. पु० पुरस्कार, इनाम।

**पारिध्वजिक** - पु० [सं] झंडा लेकर चलनेवाला।

**पारिपंथिक** - पु० [सं] लुटेरा; चोर।

**पारिपाट्य** - पु० [सं] परिपाटी, नियमितता।

**पारिपार्श्व** - पु० [सं] पार्श्वचर; अनुचर।

**पारिप्लव** - 1. वि० [सं] चंचल; क्षुब्ध; तिरता हुआ; 2. पु० नाव, जलयान; आकुलता।

**पारिभाषिक** - वि० [सं] सर्वसामान्य; जो कोई विशिष्ट अर्थ सूचित करे, लाक्षणिक।

**पारिमाण्य** - पु० [सं] परिधि, घेरा।

**पारिमित्य** - पु० [सं] सीमा, हद।

**पारिमुखिक** - वि० [सं] जो सामने हो; जो समीप हो।

**पारिरक्षक** - पु० [सं] तपस्वी।

**पारिव्राजक, पारिव्राज्य** - पु० [सं] संन्यास।

**पारिशील** - पु० [सं] एक तरह का पकवान।

**पारिषद** - 1. वि० [सं] परिषद्-संबंधी; 2. पु० सभासद; राजा का मित्र या अनुचर।

**पारिषद्य** - पु० [सं] दर्शक; सामाजिक।

**पारिहारिक** - पु० [सं] हरण करनेवाला; हार या मालाएँ तैयार करनेवाला; घेरनेवाला।

**पारिहार्य** - पु० [सं] कंकण; हरण करने की क्रिया।

**पारिहास्य** - पु० [सं] दिल्लगी, हँसी-मज़ाक।

**पारी** - स्त्री० [सं] हाथी के पैर बाँधने के काम का रस्सा; जलराशि; प्याला; दोहनी; [हिं] बारी, ओसरी; गुड़ आदि का जमाया हुआ बड़ा टुकड़ा।

**पारीण** - वि० [सं] पूरा या समाप्त करनेवाला; उस पार तक जानेवाला।

**पारीना** - वि० [फ़ा] पुराना, प्राचीन।

**पारीय** - वि० [सं] किसी विषय में दक्ष।

**पारुष्य** - पु० [सं] कठोरता; रुखाई; दुर्वचन; परुष होने का भाव।

**पारोक्ष** - वि० [सं] रहस्यमय; गुप्त; अस्पष्ट।

**पारोक्ष्य** - पु० [सं] रहस्य।

**पार्जन्य** - पु० [सं] मेघ-संबंधी।

**पार्थ** - पु० [सं] अर्जुन; अर्जुन नाम का पौधा; राजा; यौ०—सारथि - कृष्ण।

**पार्थक्य** - पु० [सं] अलग होने का भाव; भेद; जुदाई।

**पार्थव** - पु० [सं] विशालता; स्थूलता।

**पार्थिव** - 1. वि० [सं] पृथ्वी-संबंधी; पृथ्वी से उत्पन्न; राजोचित; राजसी; सांसारिक; 2. पु० पृथ्वी पर रहनेवाला प्राणी; राजा; मिट्टी का बर्तन; सांसारिक पदार्थ; शरीर; मिट्टी से बना शिवलिंग; यौ० —आय - मालगुज़ारी; —लिंग - राजचिन्ह।

**पार्वती** - स्त्री० [सं] हिमालय की पुत्री और शिव की अर्द्धांगिनी गौरी; यौ०—कुमार, नंदन - कार्तिकेय; गणेश।

**पार्वतीय** - वि० पु० [सं] पर्वत पर रहनेवाला; पहाड़ी।

**पार्शव** - पु० [सं] पर्शु से युद्ध करनेवाला योद्धा।

**पार्शुका** - स्त्री० [सं] पसली।

**पार्श्व** - 1. वि० [सं] निकट; 2. पु० वक्ष के नीचे का भाग, पाँजर; अगल-बगल की जगह; सामीप्य; गाड़ी के धुरे के छोर; पार्श्वनाथ; पसलियाँ; कपट; यौ० —कर - बकाया मालगुज़ारी; —गत - जो साथ हो; आश्रित; —द - परिचारक, सेवक; —देश -

बग़ल; —नाथ - जैनों के तेईसवें तीर्थंकर; —परिवर्तन - करवट बदलना; —भाग - बग़ल, बाज़ू; —वर्ती - साथ रहनेवाला; परिचारक; सहचर; —शूल - पाँजर में होनेवाला दर्द।

**पार्श्वानुचर** - पु० [सं] परिचारक, सेवक।

**पार्श्विक** - 1. वि० [सं] पार्श्व-संबंधी; 2. पु० पक्षपाती; साथी; बाज़ीगर; धूर्त मनुष्य; कपट से पैसा कमानेवाला।

**पार्षद** - पु० [सं] सभासद; सेवक; किसी देवता का अनुचर।

**पार्षद्** - स्त्री० [सं] परिषद्, सभा।

**पार्ष्णि** - स्त्री० [सं] एड़ी; पिछला भाग; जीतने की इच्छा; ठोकर; तहक़ीक़ात; मदमत्त स्त्री; पुंश्चली; कुंती; यौ० —ग्रह - पीछे से पकड़नेवाला; —ग्रहण - शत्रु की सेना पर पीछे की ओर से आक्रमण करना; —ग्राह - सेना पर पीछे की ओर से आक्रमण करनेवाला शत्रु।

**पालंक** - पु० [सं] पालक नाम का साग; बाज़ पक्षी।

**पालंकी** - स्त्री० [सं] पालक नाम का साग; कुंदरू नामक गंध-द्रव्य।

**पाल** - पु० [सं] रक्षा करना; रक्षक; चरवाहा; राजा; पीकदान; [हिं] आम या केला आदि पकाने की एक विधि; नाव के मस्तूल के सहारे ताना जानेवाला कपड़ा जिसमें हवा के लगने से नाव चलती है; गाड़ी या पालकी आदि का ओहार; बाँध; ऊँचा किनारा, कगार।

**पालक** - पु० [सं] रक्षक; राजा; सईस; घोड़ा; निभानेवाला; [हिं] एक प्रसिद्ध साग।

**पालकी** - स्त्री० [हिं] चारपाई के सिरहाने को ऊँचा करने के लिए पाये के नीचे रखा जानेवाला लकड़ी का टुकड़ा।

**पालकी** - स्त्री० [हिं] शिविका, आदमियों द्वारा कंधे पर ढोयी जानेवाली एक सवारी।

**पालट** - 1. पु० [हिं] गोद लिया हुआ लड़का; 2. स्त्री० पटेबाज़ी का एक वार।

**पालतू** - वि० [हिं] पाला हुआ; जो पाला जा सके।

**पालथी** - स्त्री० [हिं] बैठने का एक आसन।

**पालन** - 1. वि० [सं] रक्षा करनेवाला; 2. पु० रक्षण; भरण-पोषण; निभाना; तत्काल की ब्यायी हुई गाय का दूध।

**पालना** - 1. स० [हिं] भरण-पोषण करना; जीविका या मनोरंजन के लिए पशु-पक्षी आदि को आहारादि देकर अपने यहाँ रखना; निबाहना; 2. पु० बच्चों को झुलाने के काम का एक प्रकार का छोटा झूला।

**पालनीय** - वि० [सं] पालन करने योग्य।

**पालयिता** - पु० [सं] पालन करनेवाला।

**पालव** - पु० [हिं] पल्लव; नया और कोमल पत्ता।

**पाला** - पु० [हिं] हिम, तुषार, बरफ़; किसी प्रकार के व्यवहार का अवसर; ठंढक; सदर मुकाम; सीमा-निर्देश के लिए बनाया जानेवाला मिट्टी का मेंड़; अनाज रखने के काम का एक प्रकार का मिट्टी का गोला; कच्चा और बड़ा बर्तन; अखाड़ा; मु० (किसीसे) —पड़ना - मुठभेड़ होना, काम पड़ना; (किसी वस्तु पर) —पड़ना - नष्ट होना, ख़तम होना।

**पालागन** - स्त्री० [हिं] प्रणाम, नमस्कार।

**पालागल** - पु० [सं] दूत, संदेशवाहक।

**पालागली** - स्त्री० [सं] राजा की चौथी और सबसे कम आदर पानेवाली महिषी।

**पालान** - पु० [फ़ा] पलान ।

**पालायश** - स्त्री० [फ़ा] सफ़ाई ।

**पालाश** - 1. वि० [सं] पलाश-संबंधी ; पलाश का बना हुआ ; हरा ; 2. पु० तेजपत्ता ; हरा रंग ।

**पालि** - स्त्री० [स] कान के पुट के नीचे का मुलायम चमड़ा ; किनारा ; श्रेणी ; सीमा ; बाँध ; पुल ; प्रस्थ नामक परिमाण ; परिधि ; चिह्न ; धब्बा ; लंबोतरा तालाब ; जूँ ; चूतड़ ; प्रशंसा ; पुरुषों की तरह दाढ़ी-मूँछवाली स्त्री ; पाली भाषा ।

**पालिक** - पु० [हिं] पालकी ; पलंग ।

**पालिका** - स्त्री० [सं] पालि, कान की लौ ; तलवार आदि की धार ; मक्खन या पनीर आदि काटने के काम आनेवाली छुरी ; पालन करनेवाली ।

**पालित** - वि० [सं] पाला हुआ ; रक्षित ।

**पालित्य** - पु० [सं] बालों की सफ़ेदी ; पलित होने का भाव ।

**पालिनी** - स्त्री० [सं] पालन करनेवाली ; रक्षा करनेवाली ।

**पाली** - 1. स्त्री० [हिं] एक प्रसिद्ध प्राचीन भाषा जिसमें बुद्ध ने अपने धर्म का उपदेश दिया था और जिसमें बौद्धधर्म के ग्रंथ लिखे हुए हैं ; तीतर या बटेर आदि लड़ाने की जगह ; परई ; 2. वि० [सं] पालन करनेवाला ।

**पालू** - वि० [हिं] पालतू ।

**पालूदा** - पु० [फ़ा] फ़ालूदा, गेहूँ के सत्त से बनाया हुआ एक पेय द्रव्य ।

**पाले** - अव्य० [हिं] वश में ; चंगुल में ; मु० (किसीके) —पड़ना - चंगुल में फँसना ; क़ाबू में आना ।

**पालुवा** - स्त्री० [सं] टहनियों से खेला जानेवाला एक खेल ।

**पाव** - पु० [हिं] चौथा भाग ; चार छटाँक की एक तौल ; पैर ; यौ० —दान - पायदान ; —मुहर - शाहजहाँ के समय का एक सिक्का जो एक अशर्फ़ी के चतुर्थांश के बराबर होता था ।

**पावक** - 1. पु० [सं] अग्नि ; वरुण ; सूर्य ; सदाचार ; तपस्वी ; भिलावाँ ; तीन की संख्या ; 2. वि० शुद्ध करनेवाला ; यौ० —मणि - सूर्यकान्त मणि, आतशी शीशा ।

**पावती** - स्त्री० [हिं] रसीद ।

**पावन** - 1. वि० [सं] पवित्र करनेवाला ; पवित्र ; 2. पु० अग्नि ; वेद व्यास ; विष्णु ; सिद्ध पुरुष ; प्रायश्चित्त ; सांप्रदायिक चिन्ह ; शुद्ध करनेवाली वस्तु ; शुद्धि ; जल ; गोबर ; रुद्राक्ष ; लोबान ; यौ०—ध्वनि - शंख ।

**पावना** - 1. स० [हिं] पाना ; महसूस करना ; समझना ; खाना ; 2. पु० दूसरे से रुपया आदि पाने का अधिकार ।

**पावनी** - स्त्री० [सं] तुलसी ; गाय ; गंगा ; हड़ ।

**पावर** - पु० [सं] वह पासा जिसपर दो बिंदियाँ बनी हों ; पासा फेंकने का विशेष हाथ ।

**पावली** - स्त्री० [हिं] चवन्नी ; [ते] (पावला) चवन्नी ।

**पावस** - पु० [हिं] वर्षा ऋतु ।

**पावा** - पु० [हिं] गोड़ा, पाया ।

**पाश** - पु० [सं] सरकनेवाली गाँठों की रस्सी या तार आदि का विशेष प्रकार का घेरा ; फाँस ; पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल ; किसी बुनी हुई चीज़ का छोर ; पासा ; यौ०—कंठ - जिसके गले में फाँस हो ; —क्रीड़ा - जुआ ; —जाल - संसार रूपी जाल ; —धर - वरुण ; —बंधक - चिड़ीमार ; —बंधन - जाल ; —बद्ध -

पाश से बँधा हुआ : —रज्जु - शृंखला ; रस्सी ; [फ़ा] फटना ; टुकड़ा, खंड ।

**पाशक** - पु० [सं] पासा ; जाल ।

**पाशन** - पु० [सं] बंधन ; जाल में फँसाना ।

**पाशव** - 1. वि० [सं] पशु-संबंधी ; पशु का ; 2. पु० पशुओं का समूह ; **यौ०**—पालन - चारा, घास ; पशुओं को पालना ।

**पाशविक** - वि० [सं] पाशव ।

**पाशी** - पु० [सं] वरुण ; यम ; व्याध ।

**पाशुपत** - 1. वि० [सं] पशुपति (शिव)-संबंधी ; शिव का दिया हुआ ; शिव द्वारा उक्त ; 2. पु० शिव का उपासक ; एक प्रसिद्ध दार्शनिक मत ।

**पाशुपतास्त्र** - पु० [सं] एक भीषण अस्त्र जिसे अर्जुन ने शिव से प्राप्त किया था ।

**पाश्चात्य** - 1. वि० [सं] पश्चिम का ; पश्चिम का रहनेवाला ; पिछला ; 2. पु० पिछला हिस्सा ।

**पाषंड** - 1. वि० [सं] ढोंगी ; 2. पु० धार्मिकता का ढकोसला फैलानेवाला ; ढोंग ।

**पाषाण** - पु० [सं] पत्थर, शिला ; **यौ०** —चतुर्दशी - अगहन सुदी चौदस ; —दारक - पत्थर काटने की छेनी ; —रोग - पथरी ; —संधि - चट्टान के भीतर की गुफा ; —हृदय - निष्ठुर, निर्दय ।

**पाषाणी** - 1. स्त्री० [सं] पत्थर का बटखरा ; माला ; अहल्या ; 2. वि० कठोर॰; पत्थर का दिल रखनेवाली ।

**पासंग** - पु० [फ़ा] तराजू की डंडी बराबर रखने के लिए हलके पलड़े की ओर रखी जानेवाली वस्तु ।

**पास** - 1. पु० [फ़ा] और ; तरफ़ ; ख्याल ; पक्षपात ; पालन ; चौकी ; **यौ०** —दार - रक्षक ; पक्ष लेनेवाला ; —दारी - रक्षा ; पक्षपात ; —बान - चौकीदार ; रखेली ; —बानी - चौकीदारी ; [अंग्रे] परवाना, अधिकार-पत्र ; 2. अव्य० [हिं] निकट, समीप ; अधिकार में ; किसीके प्रति ; **मु०** —तक न फटकना - दूर ही रहना ; — बैठनेवाला - सहवासी ।

**पासनी** - स्त्री० [हिं] अन्नप्राशन ; चटावन ।

**पासा** - पु० [हिं] चौसर के खेल में फेंका जानेवाला चौपहला टुकड़ा जो हड्डी या लकड़ी आदि का बना होता है ; चौसर, पासों से खेला जानेवाला खेल ; गुल्ली ; **यौ०** —सार - पासे की गोटी ; पासे का खेल ; **मु०** —पलटना - भाग्य का अनुकूल या प्रतिकूल होना ; —फेंकना - भाग्य की परीक्षा करना ।

**पासि, पासिक** - पु० [हिं] फंदा ; जाल ।

**पासिका** - स्त्री० [हिं] बंधन ; जाल ।

**पासी** - 1. पु० [हिं] बहेलिया ; सूअर पालने या ताड़ी उतारनेवाली एक अस्पृश्य जाति ; 2. स्त्री० फाँस ; घास-भूसा आदि बाँधने की जाली ; पिछाड़ी ।

**पासुरी** - स्त्री० [हिं] पसली ।

**पाहँ** - अव्य० [हिं] समीप ; प्रति ; से ।

**पाह** - पु० [हिं] एक प्रकार का पत्थर जिसपर आँख पर लगाने का लेप तैयार किया जाता है ।

**पाहन** - पु० [हिं] पत्थर ।

**पाहरू** - पु० [हिं] पहरेदार ।

**पाहा** - पु० [हिं] मेंड़ ।

**पाहिं** - अव्य० [हिं] पाहँ ।

**पाहि** - क्रि० [सं] रक्षा करो, बचाओ ; **यौ०**— पाहि - रक्षा करो, रक्षा करो !

**पाही** - स्त्री० [हिं] बस्ती से दूर का या दूसरे गाँव का स्थान ; **यौ०**— कास्त - दूसरे गाँव में खेती करनेवाला असामी ।

**पाहुना** - पु० [हिं] अतिथि ; दामाद ।

**पाहुनी** - स्त्री० [हिं] स्त्री अतिथि ; उपपत्नी ; अतिथि-सत्कार ।

**पाहुर** - पु० [हिं] उपहार, भेंट ।

**पिंगल** - 1. वि० [सं] ललाई लिये हुए भूरे रंग का; 2. पु० पिंगल वर्ण ; छंदशास्त्र ; छंदशास्त्र के प्रणेता एक प्राचीन मुनि ; [हिं] अग्नि ; बंदर ; नेवला ; रुद्र ; एक संवत्सर ; शिव का एक अनुचर ; पीतल ; हरताल ; एक राग ; यौ०—लौह - पीतल ।

**पिंगला** - स्त्री० [सं] शरीर के दक्षिण भाग की एक नाड़ी ; पीतल ; शीशम का पेड़ ; गोरोचन ; लक्ष्मी ; अपनी धर्मनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन वेश्या ।

**पिंगलिका** - स्त्री० [सं] बगुले की एक जाति ; एक प्रकार की मक्खी ।

**पिंगा** - 1. स्त्री० [सं] गोरोचन ; हलदी ; दुर्गा ; प्रत्यंचा ; 2. पु० टेढ़े पैरवाला मनुष्य ।

**पिंगाक्ष** - 1. वि० [सं] ललाई लिये हुए भूरे रंग की आँखोंवाला ; 2. पु० शिव ; केकड़ा ; नाक ; बिल्ली ; वनमानुष ।

**पिंगी** - स्त्री० [सं] शमी का पेड़ ; चुहिया ।

**पिंज** - 1. वि० [सं] व्याकुल ; 2. पु० बल ; वध ; एक प्रकार का कपूर ; चंद्रमा ; समूह ; रूई ।

**पिंजट** - पु० [सं] आँख का मैल, कीचड़ ।

**पिंजड़ा** - पु० [हिं] पिंजरा ।

**पिंजन** - पु० [सं] रूई धुनने की क्रिया ; धुनकी ।

**पिंजर** - 1. वि० [सं] ललाई लिये हुये पीले रंग का ; पीला ; 2. पु० पीला रंग ; सोना ; पिंजड़ा ; हरताल ; कंकाल ।

**पिंजरा** - पु० [हिं] लोहे या बाँस आदि की तीलियों से बना हुआ एक प्रकार का झाबा जिसमें पालतू पशु-पक्षी रखे जाते हैं ; संकरा घर या कमरा ; यौ०—पोल - गोशाला ।

**पिंजल** - 1. वि० [सं] व्याकुल ; आतंकित ; 2. पु० हरताल ; कुशपत्र ।

**पिंजा** - स्त्री० [सं] हलदी ; हिंसा ; रूई ; जादूगरनी ।

**पिंजिका** - स्त्री० [सं] पूनी ।

**पिंजियारा** - पु० [हिं] रूई ओटनेवाला ।

**पिंजोला** - स्त्री० [सं] पत्तों की सरसराहट ।

**पिंड** - 1. वि० [सं] घना ; ठोस ; 2. पु० गोला ; ढेला ; ग्रास ; पके हुए चावल ; आहार ; जीविका ; भिक्षा ; शरीर ; समूह ; यौ०— खजूर, खर्जूर - खजूर की जाति का एक बहुत मीठा फल ; —तैल - लोबान ; —दान - पितरों के निमित्त पिंड देने का काम ;—निर्वपण - पितरों को पिंड देना ; —पात - भिक्षादान ।

**पिंडक** - पु० [सं] गोला ; पिंडालू नामक कंद ; लोबान ; गाजर ।

**पिंडन** - पु० [सं] पिंड बनाना ; बाँध ; टीला ।

**पिंडल** - पु० [सं] पुल ।

**पिंडली** - स्त्री० [हिं] टाँग के पीछे की ओर का मांसल भाग ।

**पिंडवाही** - स्त्री० [हिं] एक तरह का कपड़ा ।

**पिंडा** - 1. स्त्री० [सं] फ़ौलाद ; एक प्रकार की कस्तूरी ; 2. पु० [हिं] गोला ; ठोस या गीले पदार्थ का गोला ; शरीर ; यौ० —पानी - श्राद्ध और तर्पण ; मु०—पानी देना - श्राद्ध और तर्पण करना ।

**पिंडाकार** - वि० [सं] गोल ।

**पिंडारा** - पु० [हिं] एक तरह का शाक ।

**पिंडारी** - पु० [हिं] दक्षिण में रहनेवाली एक जाति ।

**पिंडालू** - पु० [हिं] एक प्रकार का कंद, सुथनी ; एक तरह का रतालू ।

**पिंडि, पिंडी** - स्त्री० [सं] गोला ; चक्रनाभि ; पिंडली ; कद्दू ; छोहारा ; मकान ; पीढ़ा ।

**पिंडित** - 1. वि० [सं] पिंडाकार बनाया हुआ ; गिना हुआ ; मिश्रित ; 2. पु० लोबान ।

**पिंडितार्थ** - पु० [सं] सारांश ।

**पिंडूक** - पु० [हिं] पंडुक ; उल्लू ।

**पिंडोपजीवी** - वि० [सं] दूसरे के दिये हुए टुकड़े से जीवन-निर्वाह करनेवाला ।

**पिंडोल** - स्त्री० [हिं] पीली मिट्टी ।

**पिंडोलि** - स्त्री० [सं] जूठन ।

**पिय** - 1. पु० [हिं] प्रियतम, पति ; 2. वि० प्यारा ; सुंदर ।

**पियना** - स० [हिं] पीना ।

**पियर** - वि० [हिं] पीला ।

**पियरवा** - 1. पु० [हिं] पति, स्वामी ; 2. वि० प्यारा ।

**पियराई** - स्त्री० [हिं] पीलापन ।

**पियरी** - 1. स्त्री० [हिं] हलदी या पीले रंग में रंगी हुई धोती ; 2. वि० पीली ।

**पिउ** - पु० [हिं] पति, प्रियतम ।

**पिउनी** - स्त्री० [हिं] पूनी ।

**पिक** - पु० [सं] कोयल ; यौ०—बंधु - आम का पेड़ ; —बांधव - वसंत ऋतु ।

**पिकांग** - पु० [सं] चातक ।

**पिक्क** - पु० [सं] हाथी का बच्चा ; मोती की एक तौल ।

**पिघलना** - अ० [हिं] ठोस पदार्थ का ताप से द्रवीभूत होना ; दया से आर्द्र होना ।

**पिचंड, पिचिंड** - पु० [सं] पेट ; किसी जानवर का कोई अंग ।

**पिचंडक** - वि० [सं] पेटू ।

**पिचंडिक, पिचंडिल, पिचंडी** - वि० [सं] तोंदिल ।

**पिचकना** - अ० [हिं] फूले या उभरे हुए तल का भीतर की ओर दबना ; सिकुड़ना ।

**पिचका** - पु० [हिं] बड़ी पिचकारी ।

**पिचकारी** - स्त्री० [हिं] पानी या रंग आदि फेंकने का एक पोला यंत्र ।

**पिचपिचा** - वि० [अनु] चिपचिपा ; गुलगुला ।

**पिचपिचाना** - अ० [अनु] घाव आदि में से मवाद निकलना ; किसी वस्तु का आर्द्र होना ।

**पिचलना** - स० [हिं] कुचलना ।

**पिचास** - पु० [हिं] पिचाश ।

**पिचु** - पु० [सं] कपास की रूई ; दो तोले का एक परिमाण ; एक प्रकार का अनाज ।

**पिचुकिया** - स्त्री० [हिं] छोटी पिचकारी ; एक प्रकार की गुझिया ।

**पिच्चट** - 1. वि० [सं] दबाकर चिपटा किया हुआ ; निचोड़ा हुआ ; 2. पु० सीसा ; राँगा ; आँख का एक रोग ।

**पिच्छ** - पु० [सं] पूँछ ; मयूरपुच्छ ; कलगी ; पंख ; बाण में लगा हुआ पंख ।

**पिच्छल** - 1. पु० [सं] अकासबेल ; शीशम ; 2. वि० फिसलनेवाला ; चिकना ; [हिं] पिछला ।

**पिच्छा** - स्त्री० [सं] कवच ; आवरण ; सुपारी ; केला ; पंक्ति ; अकासबेल ।

**पिच्छिका** - स्त्री० [सं] मोर-पंख का गुच्छा ।

**पिच्छिल** - 1. वि० [सं] फिसलनेवाला ; पूँछवाला ; कलगीवाला ; 2. पु० माँड़ ; दाल या कढ़ी आदि व्यंजन ।

**पिछ** - पु० [हिं] 'पीछा' का लघु रूप ; यौ० —लगा - पीछे-पीछे चलनेवाला ; सेवक ; —लगी - अनुगमन ; —लगू, लग्गू - पिछलगा ; —लत्ती - घोड़े या

गधे आदि का पीछे की ओर लात मारना ;—वाड़ा, वारा - मकान का पिछला भाग।

**पिछड़ना, पिछलना** - अ० [हिं] पीछे रह जाना ; पीछे हटना या मुड़ना ; फिसलना।

**पिछलपाई** - स्त्री० [हिं] चुड़ैल ; जादूगरनी।

**पिछला** - 1. वि० [हिं] पीछे की ओर पड़नेवाला, अगला का उलटा ; परवर्ती ; व्यतीत ; पुराना ; अंतिम भाग का ; 2. पु० पिछले दिन का पाठ ; रोज़ा रखनेवाले मुसल्मानों का भोजन।

**पिछाड़ी** - स्त्री० [हिं] पीछे का भाग ; घोड़े के पिछले पैरों को खूँटे से बाँधने की रस्सी।

**पिछान** - स्त्री० [हिं] पहचान।

**पिछौरा** - पु० [हिं] दुपट्टा।

**पिछौरी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियों की ओढ़नी ; ऊपर से ओढ़ा जानेवाला कोई वस्त्र।

**पिटंत** - स्त्री० [हिं] पीटने की क्रिया, पिटाई।

**पिट** - पु० [सं] पिटारा ; संदूक ; मकान ; झोंपड़ी ; [अनु] कड़ी और छोटी वस्तु के हलके आघात से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

**पिटक** - पु० [सं] पिटारा ; फुड़िया ; वस्त्र आदि रखने की पिटारी ; विशेष प्रकार की रचनाओं का संग्रह (जैसे, 'सुत्तपिटक') ; एक प्रकार का आभूषण।

**पिटना** - 1. अ० [हिं] मार खाना ; बजाया जाना ; बजना ; 2. पु० पीटने का औज़ार, थापी।

**पिटपिट** - स्त्री० [अनु] दो या अधिक बार उत्पन्न किया हुआ 'पिट' शब्द।

**पिटपिटाना** - 1. अ० [अनु] लाचार होकर रह जाना ; 2. स० जल्दी जल्दी पीट देना।

**पिटवाना** - स० [हिं] किसीके पीटे जाने में कारण होना।

**पिटाई** - स्त्री० [हिं] पीटने या मारने की क्रिया।

**पिटापिट** - स्त्री० [हिं] मार-पीट।

**पिटारा** - पु० [हिं] बाँस या बेंत आदि की तीलियों से बना हुआ डिब्बे की शक्ल का पात्र।

**पिटारी** - स्त्री० [हिं] छोटा पिटारा ; पानदान।

**पिट्टक** - पु० [सं] दाँत की पपड़ी।

**पिट्टस** - स्त्री० [हिं] शोकविह्वल होकर छाती पीटना ; मु०—पड़ना, मचना - कुहराम मचना।

**पिट्टू** - वि० [हिं] जो प्रायः मारा-पीटा जाता हो।

**पिट्ठू** - पु० [हिं] पीछे-पीछे चलनेवाला ; सहायक ; ख़ुशामदी ; साथ-साथ चलनेवाला।

**पिठमिल्ला** - पु० [हिं] अँगरखे का पीठ की तरफ़ का भाग।

**पिठरिका, पिठरी** - स्त्री० [सं] बटलोई; हाँड़ी।

**पिठवन, पिठौनी** - स्त्री० [हिं] दवा के काम आनेवाली एक लता।

**पिठौरी** - स्त्री० [हिं] पीठी से तैयार की हुई भोज्य वस्तु (पकौड़ी आदि)।

**पिड़किया** - स्त्री० [हिं] गुझिया नामक पकवान।

**पिड़की** - स्त्री० [हिं] फुड़िया ; एक पक्षी।

**पिड़िया** - स्त्री० [हिं] चावल के गूँधे हुए आटे का लंबोतरा टुकड़ा जिसे जल में उबालकर खाते हैं।

**पितर** - पु० [हिं] मृत पूर्वज ; यौ०—पति - यमराज।

**पितराईँध, पितराई** - स्त्री० [हिं] पीतल के बरतन में खटाई या भोज्य वस्तु अधिक

देर तक रख देने पर उत्पन्न होनेवाला कसाव ।

**पितरिहा** - 1. वि० [हिं] पीतल का बना हुआ; 2. पु० पीतल का घड़ा ।

**पिता** - पु० [सं] जनक, बाप; यौ०—मह - दादा; ब्रह्मा; पितर; —मही - दादी ।

**पितिया** - पु० [हिं] चाचा; यौ०—ससुर - चचिया ससुर; —सास - चचिया सास ।

**पितियाइन, पितियानी** - स्त्री० [हिं] चाची ।

**पितु** - पु० [हिं] पिता; यौ०—मातु - पिता और माता ।

**पितृ** - पु० [सं] पिता; मरे हुए पुरखे; प्रेतत्व से मुक्त पूर्वज; यौ०— ऋण - एक प्रकार का शास्त्रोक्त ऋण जिससे मनुष्य पुत्र उत्पन्न करने पर ही मुक्त होता है; —कर्म, कृत्य - श्राद्ध, तर्पण आदि; —कल्प - पितातुल्य; श्राद्धादि कृत्य; —कुल - पिता के वंश के लोग; —गाथा - पितरों द्वारा पढ़ी गयी विशेष प्रकार की गाथा; —गृह - नैहर, मायका; —घाती - पिता का वध करनेवाला; —तर्पण - पितरों के निमित्त किया जानेवाला तर्पण; तिल; —तिथि - अमावास्या; —दान - पितरों के निमित्त किया जानेवाला दान; —दाय, द्रव्य - पिता से प्राप्त संपत्ति; —पक्ष - आश्विन का कृष्ण-पक्ष; —लोक - पितरों का लोक; —व्रत - पितरों की पूजा करनेवाला; —श्राद्ध - पितरों के निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध ।

**पितृव्य** - पु० [सं] चाचा ।

**पित्त** - पु० [सं] शरीर के तीन प्रसिद्ध दोषों में से एक; यौ०— ज्वर, दाह - पित्त के प्रकोप से होनेवाला ज्वर; —नाशक - पित्त का शमन करनेवाला; —प्रकृति - जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो; —प्रकोप - पित्त का कुपित हो जाना; —वायु - पित्त के प्रकोप से पेट में वायु पैदा होना; मु०— उबलना, खौलना - बहुत अधिक क्रोध आना; —गरम होना - क्रोधी स्वभाव होना ।

**पित्तल** - पु० [हिं] पीतल; भोजपत्र; हरताल ।

**पित्ता** - पु० [हिं] साहस; पित्ताशय; यौ० —मार - नीरस और दुष्कर; मु० —उबलना, खौलना - बहुत क्रोध आना; —मरना - क्रोध का दूर होना।

**पित्तातिसार** - पु० [सं] पित्त के प्रकोप से होनेवाला अतिसार ।

**पित्ताशय** - पु० [सं] पित्त की थैली ।

**पित्ती** - स्त्री० [हिं] पित्त की अधिकता से होनेवाला एक रोग जिसमें शरीर पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं ।

**पित्र्य** - 1. वि० [सं] पितासंबंधी; पितरों का; 2. पु० ज्येष्ठ भ्राता; माघ का महीना; अंगूठे और तर्जनी के बीच का भाग; मधु; उड़द ।

**पिद्दा** - पु० [हिं] गुलेल की डोरी में लगी निवाड़ आदि की वह गद्दी जिसपर रखकर गोली चलायी जाती है; पिद्दी का नर ।

**पिद्दी** - स्त्री० [हिं] बया की जाति की एक छोटी चिड़िया; अति तुच्छ प्राणी ।

**पिधान** - पु० [सं] आवरण; ढक्कन; म्यान; [हिं] किवाड़ ।

**पिधानक** - पु० [सं] म्यान; ढक्कन ।

**पिधायक, पिधायी** - वि० [सं] ढकने या छिपानेवाला ।

**पिनकना** - अ० [हिं] पीनक लेना; नींद के मारे आगे की ओर झुक पड़ना, ऊँघना ।

**पिनकी** - पु० [हिं] अफ़ीमची ।

**पिनद्ध** - वि० [सं] धारण किया हुआ (वस्त्र); बँधा हुआ; आवृत।

**पिनपिन** - स्त्री० [अनु] दो या अधिक बार उत्पन्न किया हुआ 'पिन' शब्द; नकियाकर और रुक-रुककर रोना।

**पिनपिनहा** - वि० [अनु] पिन-पिन करनेवाला।

**पिनपिनाना** - अ० [अनु] बच्चे का नकियाकर और स्पष्ट स्वर में रुक-रुककर रोना।

**पिनाक** - पु० [सं] शिव का धनुष; धनुष; त्रिशूल; डंडा; छड़ी; धूलि की वृष्टि; यौ० —धारी, पाणि - शिव।

**पिनाकी** - पु० [सं] शिव।

**पिनस** - स्त्री० [हिं] नाक का एक रोग।

**पिन्ना** - 1. वि० [हिं] रोनेवाला; 2. पु० धुनकी।

**पिपरामूल** - पु० [हिं] पीपल की जड़ (औषध)।

**पिपास** - स्त्री० [हिं] प्यास, पिपासा।

**पिपासा** - स्त्री० [सं] पीने की इच्छा; प्यास; लालच।

**पिपासु** - वि० [सं] प्यासा; लालची।

**पिपियाना** - 1. अ० [हिं] पीप पैदा होना; 2. स० पीप पैदा करना।

**पिपील, पिपीलक** - पु० [सं] चींटा।

**पिपीलिका, पिपीली** - स्त्री० [सं] चींटी।

**पिप्पल** - स्त्री० [सं] पीपल का पेड़; पक्षी; आस्तीन; चूचुक; जल।

**पिप्पली** - स्त्री० [सं] पीपल नामक औषधि; यौ०—मूल - पीपल की जड़, पिपरामूल।

**पिप्पिका** - स्त्री० [सं] दाँत पर जमनेवाली पपड़ी।

**पिय** - पु० [हिं] प्रियतम, पति।

**पियर** - वि० [हिं] पीला।

**पियराना** - अ० [हिं] पीला होना; पीला पड़ना।

**पियरी** - 1. वि० [हिं] पीली; 2. स्त्री० पीली धोती; पीलापन; पीलिया नामक रोग।

**पियरोला** - पु० [हिं] मैना से कुछ छोटे आकार की पीले रंग की एक चिड़िया।

**पियल्ला** - पु० [हिं] दुधमुँहा बच्चा।

**पियाना** - स० [हिं] पिलाना।

**पियार** - 1. पु० [हिं] प्यार; 2. वि० प्यारा।

**पियारा** - वि० [हिं] प्यारा।

**पियाला** - पु० [हिं] प्याला।

**पियावबड़ा** - पु० [हिं] एक तरह की मिठाई।

**पियासाल** - पु० [हिं] बहेड़े की जाति का एक जंगली पेड़।

**पिरकी** - स्त्री० [हिं] फुड़िया, फुंसी।

**पिरता** - पु० [हिं] काठ या पत्थर का वह टुकड़ा जिसपर रखकर पूनी दबायी जाती है।

**पिराई** - स्त्री० [हिं] पीलापन।

**पिराक** - पु० [हिं] गुझिया-जैसा एक पकवान।

**पिराना** - अ० [हिं] दर्द करना; किसीके दुख से दुखी होना।

**पिरारा** - पु० [हिं] डाकू, लुटेरा।

**पिरोजन** - पु० [हिं] कनछेदन।

**पिरोज़ा** - पु० [फ़ा] हरापन लिये हुए नीले रंग का एक बहुमूल्य पत्थर।

**पिरोना** - स० [हिं] सुई के छेद में धागा डालना; डोरे में मनका या मोती आदि पहनाना।

**पिलक** - पु० [हिं] पीले रंग का मैना से कुछ छोटा एक पक्षी।

**पिलकना** - 1. स० [हिं] गिराना; ढकेलना; 2. अ० चिढ़ना; चिढ़कर भागना।

**पिलचना** - अ० [हिं] पिल पड़ना; भिड़ जाना; लिपटना।

**पिलना** - अ० [हिं] किसी ओर वेग से प्रवृत्त होना; तत्पर होना; पेरा जाना; किसी काम में जी-जान से लग जाना।

**पिलपिला** - वि० [अनु] बहुत नरम; पिचपिचा।

**पिलपिलाना** - स० [अनु] इस प्रकार दबाना कि भीतर का रस या गूदा बाहर निकल आवे।

**पिलवाना** - स० [हिं] पेरने का काम कराना; पिलाने का काम कराना।

**पिलाना** - स० [हिं] पीने में प्रवृत्त करना; पान कराना; पीने को देना।

**पिलु** - पु० [सं] पीलू का पेड़।

**पिलुनी** - स्त्री० [सं] मूर्वा लता।

**पिल्ल** - वि० [सं] क्लेदयुक्त नेत्रवाला।

**पिल्ला** - पु० [हिं] कुत्ते का नर बच्चा; [ते] लड़की, छोटी बालिका।

**पिल्ली** - स्त्री० [हिं] कुत्ते का मादा बच्चा; [ते] बिल्ली; [त] पिशाच द्वारा आविष्ट होना।

**पिल्लू** - पु० [हिं] एक प्रकार का सफ़ेद लंबा कीड़ा, ढोला।

**पिव** - पु० [हिं] प्रियतम, पति।

**पिवाना** - स० [हिं] पिलाना।

**पिशंग** - वि० [सं] ललाई लिये हुए भूरे रंग का।

**पिशंगिला** - स्त्री० [सं] काँसा।

**पिशंड** - वि० [सं] पाप से मुक्त; बहुरूप।

**पिशाच** - पु० [सं] दस प्रकार की देवयोनियों में से एक, प्रेत; दुष्ट मनुष्य; **यौ०**—चर्या - श्मशान-सेवन; —पति - शिव; —बाधा - पिशाच द्वारा आविष्ट होना।

**पिशाचिका, पिशाची** - स्त्री० [सं] पिशाच की स्त्री; एक प्रकार की जटामासी।

**पिशित** - पु० [सं] कच्चा मांस; लघु अंश।

**पिशिता, पिशिती** - स्त्री० [सं] जटामासी।

**पिशुन** - 1. पु० [सं] चुग़ली खानेवाला; केसर; नारद; कौआ; कपास; 2. वि० नीच; क्रूर; छली; मूर्ख; **यौ०**—वचन - चुग़ली।

**पिष्ट** - 1. वि० [सं] पिसा हुआ; निचोड़ा हुआ; गूँथा हुआ; 2. पु० आटा; पीठी; सीसा; **यौ०**—पशु - गूँथे हुए आटे का बनाया हुआ बलिपशु; —पाचक - तवा; कड़ाही; —पिण्ड - बाटी; —पेश, पेषण - पिसे हुए को पीसना; निरर्थक कार्य करना; एक ही बात को बार-बार कहना।

**पिष्टक** - पु० [सं] पिसे हुए पदार्थ की बनी चीज़; तिल का चूर्ण; आँख का एक रोग।

**पिष्टान्न** - पु० [सं] आटे से बनी हुई चीज़।

**पिसनहारी** - स्त्री० [हिं] आटा पीसनेवाली स्त्री।

**पिसना** - अ० [हिं] पीसा जाना; दबकर चिपटा हो जाना; बहुत अधिक कष्ट पाना; घोर परिश्रम करना।

**पिसवाना** - स० [हिं] पीसने में प्रवृत्त करना; किसीसे पीसने का काम कराना।

**पिसाच** - पु० [हिं] पिशाच।

**पिसान** - पु० [हिं] आटा।

**पिसाना** - स० [हिं] पीसने का काम दूसरे से कराना।

**पिसिया** 1. पु० [हिं] एक प्रकार के छोटे दाने का लाल गेहूँ; 2. स्त्री० आटा पीसने का धंधा।

**पिसी, पिस्सी** - स्त्री० [हिं] सफ़ेद गेहूँ।

**पिसुराई** - स्त्री० [हिं] सरकंडे का वह टुकड़ा जिसपर रूई लपेटकर पूनी बनाया जाता है।

**पिसौनी** - स्त्री० [हिं] पीसने का काम; घोर परिश्रम।

**पिस्तई** - वि० [हिं] पिस्ते के रंग का।

**पिस्ता** - पु० [हिं] एक प्रसिद्ध मेवा।

**पिस्तौल** - स्त्री० [हिं] बंदूक की तरह गोली दागने का एक छोटा हथियार।

**पिस्सू** - पु० [हिं] मच्छड़-जैसा उड़ने और काटनेवाला छोटा कीड़ा।

**पिहकना** - अ० [हिं] कोयल आदि सुरीली आवाज़वाले पक्षियों का बोलना।

**पिहान** - पु० [हिं] ढकना, ढकन।

**पिहानी** - स्त्री० [हिं] ढकन; छिपानेवाली बात।

**पिहित** - 1. वि० [सं] ढका हुआ; 2. पु० एक अर्थालंकार।

**पींजना** - स० [हिं] (रूई) धुनना।

**पी** - 1. पु० [हिं] पति, प्रियतम; 2. स्त्री० पपीहे की बोली।

**पीक** - स्त्री० [हिं] पान का थूक; यौ० —दान - उगालदान।

**पीकना** - अ० [हिं] पपीहे या कोयल का बोलना, पिहकना।

**पीका** - पु० [हिं] नया कोमल पत्ता; मु० —फूटना - पल्लव निकलना।

**पीच** - 1. पु० [हिं] ठुड्डी; 2. स्त्री० [हिं] माँड़।

**पीछ** - स्त्री० [हिं] माँड़; पक्षियों की पूँछ।

**पीछा** - पु० [हिं] किसी वस्तु का पिछला भाग; किसी घटना के बाद का समय; मु० —करना - किसीको पकड़ने या मारने के लिए उसके पीछे-पीछे जाना; —छुड़ाना - किसी अप्रिय वस्तु या व्यक्ति से छुटकारा पाना।

**पीछू, पीछे** - अव्य० [हिं] पीठ की ओर; अनंतर; बाद; अंत में; मर जाने पर; (किसीके) लिए, वास्ते; बदौलत।

**पीटना** - 1. स० [हिं] चोट पहुँचाना; आघात करना; मारना; किसी तरह समाप्त करना; जैसे-तैसे कमा लेना; 2. पु० रोना; विपत्ति; भारी संकट।

**पीठ** - 1. पु० [सं] लकड़ी, पत्थर या धातु का आसन, पीढ़ा या चौकी आदि; व्रतियों के बैठने का आसन; सिंहासन; स्थान; आधार; यौ० —चक्र - गाड़ी; 2. स्त्री० [हिं] शरीर का कमर से लेकर गर्दन तक का पिछला भाग; पृष्ठ; पृष्ठ-भाग; यौ० —पीछे - अनुपस्थिति में; —का, पर का - किसी सहोदर के पीछे जनमा हुआ; मु० —चारपाई से लगना - बीमार का कमज़ोरी के कारण उठने-बैठने में असमर्थ होना; —दिखाना - भाग खड़ा होना; —पर हाथ फेरना - बढ़ावा देना।

**पीठा** - पु० [हिं] एक प्रकार की भोज्य वस्तु।

**पीठिका** - स्त्री० [सं] धातु, पत्थर या काठ का विशेष प्रकार का आसन, छोटा पीठ; देवमूर्ति का आधार; पुस्तिका का विशिष्ट अंश या विभाग; भूमिका।

**पीठी** - स्त्री० [हिं] पानी में भिगोकर पीसी हुई उड़द या मूँग की दाल।

**पीड़क** - पु० [सं] पीड़ा देनेवाला; दबानेवाला; पेरनेवाला।

**पीड़न** - पु० [सं] दबाना; मलना; सताना; निचोड़ने का औज़ार; मसलना; ग्रहण करना; हाथ में लेना।

**पीड़नीय** - 1. वि० [सं] पीड़न के योग्य; 2. पु० शत्रु के चार भेदों में से एक; बिना मंत्री और सेना का राजा।

**पीड़ा** - स्त्री० [सं] व्यथा, दर्द; बाधा; गड़बड़; नाश; प्रतिबंध; यौ० —कर - दुख देनेवाला; —गृह - यंत्रणा-गृह।

**पीड़ित** - वि० [सं] सताया हुआ; दबाया हुआ; ग्रस्त; ध्वस्त; बँधा हुआ; मसला हुआ; पकड़ा हुआ।

**पीढ़ा** - पु० [हिं] भोजन करते समय बैठने के काम आनेवाली धातु, पत्थर या काठ की चौकी, पीठिका।

**पीढ़ी** - स्त्री० [हिं] किसी वंशपरम्परा के अंतर्गत आनेवाले व्यक्तियों का समुदाय; किसी कुल, जाति या व्यक्ति के किसी वंशधर की गणना।

**पीत** - 1. वि० [सं] पीला; पिया हुआ; सींचा हुआ; जिसने पिया या सोखा हो; 2. पु० पीला रंग; पुखराज; हरताल; गंधक; केसर; चंपक।

**पीतक** - पु० [सं] हरताल; केसर; अगरु; सोनामाखी; पीतचंदन; अशोक का पेड़।

**पीतम** - पु० [हिं] पति, प्रियतम।

**पीतर** - पु० [हिं] पीतल।

**पीतल** - 1. पु० [सं] तांबे और जस्ते के योग से बनी हुई एक प्रसिद्ध उपधातु; पीला रंग; [त] (पित्तळै); [म] (पिचळा) [क] (हित्ताळि), [ते] (इत्तडि) पीतल; 2. वि० पीले रंग का।

**पीतसरा** - पु० [हिं] चचिया ससुर।

**पीतांबर** - पु० [हिं] पीला वस्त्र; पूजापाठ आदि के समय धारण की जानेवाली रेशमी धोती; कृष्ण; पीत वस्त्रधारी संन्यासी; 2. वि० पीले वस्त्रवाला।

**पीतिमा** - स्त्री० [सं] पीलापन।

**पीती** - 1. स्त्री० [हिं] प्रीति; 2. पु० [सं] घोड़ा।

**पीतोदक** - पु० [सं] नारियल।

**पीन** - वि० [सं] मोटा, स्थूल; परिपुष्ट; बृहत्; भारी; यौ०—वक्षा - चौड़ी छातीवाला।

**पीनक** - स्त्री० [हिं] अफ़ीम के नशे में ऊँघना; पिनकने की क्रिया।

**पीनता** - स्त्री० [सं] स्थूलता; परिपुष्टता; भारीपन।

**पीनस** - 1. स्त्री० [हिं] पालकी; 2. पु० [सं] नाक का जुकाम।

**पीनसा** - स्त्री० [सं] ककड़ी।

**पीना** - स० [हिं] द्रव पदार्थ को घूँट-घूँट करके पेट में पहुँचाना, पान करना; किसी बात या क्रोध को भीतर ही भीतर दबा देना; शराब पीना; ध्यान से सुनना।

**पीप** - स्त्री० [हिं] घाव या फोड़े का सफ़ेद मवाद।

**पीपर** - पु० [हिं] पीपल।

**पीपरामूल** - पु० [हिं] पिपरामूल।

**पीपल** - पु० [हिं] बरगद की जाति का एक पेड़, अश्वत्थ; एक प्रसिद्ध लता या उसकी कली जो दवा के काम आती है।

**पीपा** - पु० [हिं] काठ या लोहे का ढोल के आकार का बना एक बड़ा पात्र।

**पीब** - स्त्री० [हिं] पीप।

**पीय** - पु० [हिं] स्वामी, पति।

**पीयर** - वि० [हिं] पीला।

**पीयु** - पु० [सं] समय; कौआ; सूर्य; अग्नि; सोना।

**पीयूष** - पु० [सं] अमृत; दूध।

**पीर** - 1. स्त्री० [हिं] पीड़ा, व्यथा; प्रसव-वेदना; 2. वि० [फ़ा] बूढ़ा; चालाक; धूर्त; 3. पु० बूढ़ा आदमी; महात्मा; धर्मगुरु; यौ० —ज़ादा - पीर या धर्मगुरु का पुत्र; —ज़ाल - बहुत बूढ़ी स्त्री; —नाबालिग़ - बुद्धिहीन बूढ़ा; —भुचड़ी - हिजड़ों के एक कल्पित पीर का नाम; — मौला - फ़कीर; —साल - वृद्ध; — तरीक़त - सूफ़ियों का पीर; पीरों का पीर।

**पीरा** - 1. स्त्री० [हिं] पीड़ा; 2. वि० पीला।

**पीराई** - 1. पु० [फ़ा] वह जाति जो डफ़ पर पीरों के गीत गा-गाकर अपनी जीविका चलाती है, डफ़ाली; 2. स्त्री० [हिं] पीलापन।

**पीरान** - स्त्री० [फ़ा] किसी पीर की सेवा में अर्पित की हुई भूमि।

**पीराना** - वि० [फ़ा] पीरों या बुज़ुर्गों का सा।

**पीरानी** स्त्री० [फ़ा] पीर की पत्नी।

**पीरी** - स्त्री० [फ़ा] बुढ़ापा; चेला मूँड़ने का व्यवसाय; चालाकी; अधिकार।

**पील** - पु० [फ़ा] हाथी; शतरंज का एक मोहरा; यौ०—खाना - हस्तिशाला;—पाँव, पा - एक प्रसिद्ध रोग जिसमें घुटने से नीचे की ओर का पाँव सूज जाता है; —पाल, वान - महावत।

**पीलक** - पु० [सं] काला बड़ा चींटा; पीले रंग का पक्षी।

**पीलसोज** - पु० [हिं] दीवट।

**पीला** - वि० [हिं] हलदी के रंग का, ज़र्द; निष्प्रभ, फीका; मु०—पड़ना - तेज़ या आभा से रहित होना।

**पीलिमा** - स्त्री० [हिं] पीलापन।

**पीलिया** - पु० [हिं] पाण्डुरोग।

**पीलु** - पु० [सं] एक वृक्ष; हाथी; परमाणु; ताड़ का तना; फूल; बाण; हड्डी का टुकड़ा।

**पीलुक** - पु० [सं] चींटा।

**पीव** - 1. पु० [हिं] प्रियतम; 2. स्त्री० पीप; 3. वि० [सं] स्थूल; बलवान।

**पीवना** - स० [हिं] पीना।

**पीवर** - 1. वि० [सं] स्थूल; भरा-पूरा; 2. पु० कछुआ; यौ० —स्तनी - स्थूल या भरे-पूरे स्तनवाली (स्त्री या गाय)।

**पीवरी** - स्त्री० [सं] तरुणी; गाय; शतमूली।

**पीवा** - 1. स्त्री० [सं] जल; 2. वि० पुष्ट; स्थूल; 3. पु० वायु।

**पीसना** - स० [हिं] चूर्ण करना; कुचल देना; दबाकर चिपटा कर देना; घोर परिश्रम करना; (दाँत) कटकटाना; मु०—पीसना - घोर परिश्रम का काम लगातार करना।

**पीहर** - पु० [हिं] मायका।

**पुं** - पु० [सं] पुरुष, नर; यौ०—गव - साँड़, बैल; किसी समुदाय का श्रेष्ठ व्यक्ति; —दास - गुलाम; —यान - पालकी; —योग - पुरुष का योग या संबंध;—रत्न - श्रेष्ठ पुरुष;—राशि - नर राशि; —लिंग - पुरुष का चिन्ह; —सवन - गर्भाधान से चौथे महीने किया जानेवाला संस्कार; दूध; पुत्रोत्पादक।

**पुंख** - पु० [सं] पर लगा हुआ बाण का पिछला भाग; बाज़ पक्षी।

**पुंखित** - वि० [सं] पंखयुक्त (बाण)।

**पुंग** - पु० [सं] समूह, राशि।

**पुंगफल, पुंगीफल** - पु० [सं] सुपारी।

**पुँछल्ला, पुँछाला** - पु० [हिं] पुछल्ला; पूँछ की तरह लगी रहनेवाली वस्तु; पिछलगा।

**पुंज** - पु० [सं] समूह; ढेर।

**पुंजि** - स्त्री० [सं] राशि, ढेर।

**पुंजित** - वि० [सं] ढेर लगाया हुआ; एक साथ दबाया हुआ।

**पुंजिष्ठ** - वि० [सं] राशीकृत, ढेर किया हुआ।

**पुंड** - पु० [सं] तिलक, टीका।

**पुंडरीक** - पु० [सं] श्वेत कमल; बाघ; एक औषध; दोना; कमण्डल; श्वेत वर्ण; एक तरह का चावल; अग्नि; यौ०—नयन, लोचन - कमलनयन, विष्णु।

**पुंड्र** - पु० [सं] तिलक; एक तरह का ईख; कमल; कीड़ा।

**पुंश्चली** - स्त्री० [सं] कुलटा; वेश्या।

**पुंश्चलीय** - पु० [सं] वेश्या का पुत्र।

**पुंस्वान** - वि० [सं] जिसे पुत्र हो।

**पुंसानुज** - वि० [सं] जिसके बड़ा भाई हो।

**पुंसी** - स्त्री० [सं] बछड़ेवाली गाय।
**पुंस्** - पु० [सं] पुरुष; सेवक; पुल्लिंग शब्द; आत्मा।
**पुंस्त्व** - पु० [सं] पुरुषत्व; पुरुष की कामशक्ति; वीर्य; यौ०—दोष - नामर्दी।
**पुआ** - पु० [हिं] घी में तला हुआ एक प्रसिद्ध पकवान जो मैदे या आटे के मीठे घोल से तैयार किया जाता है।
**पुआल** - पु० [हिं] पयाल।
**पुकार** - स्त्री० [हिं] किसीका नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव; टेर; दुहाई; फ़रियाद; चिल्लाहट; आवाज़।
**पुकारना** - स० [हिं] किसीको नाम लेकर बुलाना; नाम का बार-बार उच्चारण करना; चिल्लाना; दुहाई देना; फ़रियाद करना।
**पुखरा** - पु० [हिं] पोखरा, तालाब।
**पुखराज** - पु० [हिं] पीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न।
**पुख्ता** - वि० [फ़ा] मज़बूत; पक्का; सख्त; अनुभवी; निश्चित; यौ०— मिज़ाज, मग्ज़ - स्थिरचित्त; होशियार।
**पुगाना** - स० [हिं] पूरा करना।
**पुचकार** - स्त्री० [हिं] चुमकार।
**पुचकारना** - स० [हिं] ओठों से चूमने का-सा शब्द करते हुए किसीके प्रति लाड़-चाव प्रगट करना।
**पुचारना** - स० [हिं] पोतना।
**पुचारा** - पु० [हिं] किसी वस्तु पर गीला कपड़ा फेरने की क्रिया; चूने आदि का हल्का लेप; ख़ुशामद; उत्साहवर्धक वचन।
**पुच्छ** - पु० [सं] पूँछ; पिछला भाग; समूह; यौ० —कंटक - बिच्छू; —बंध - घोड़े की पूँछ बाँधने की रस्सी।
**पुच्छटी** - स्त्री० [सं] उँगली चटकाना।
**पुच्छल** - वि० [हिं] पूँछवाला, दुमदार; यौ० —तारा - धूमकेतु।
**पुछल्ला** - पु० [हिं] लंबी पूँछ; पूँछ की भाँति साथ में या पीछे जुड़ी वस्तु; पिछलग्गा; साथ में लगी रहनेवाली अप्रिय या अनावश्यक वस्तु।
**पुछवैया** - पु० [हिं] पुछैया।
**पुछार** - पु० [हिं] पूछनेवाला; खोज-ख़बर लेनेवाला; मातमपुर्सी; मोर।
**पुछैया** - पु० [हिं] पूछनेवाला।
**पुजना** - अ० [हिं] पूजित होना; अत्यधिक सम्मानित होना; पूरा होना।
**पुजवना** - स० [हिं] पूरा करना; सफल करना।
**पुजवाना** - स० [हिं] पूजा कराना; शिष्यों या भक्तों से अपनी सेवा-शुश्रूषा कराना।
**पुजाई** - स्त्री० [हिं] पूजने या पूरा करने की क्रिया या भाव।
**पुजाना** - स० [हिं] पुजवाना; कमी की पूर्ति करना; सफल करना।
**पुजापा** - पु० [हिं] देवपूजन के उपकरण; पुजाही।
**पुजारी** - पु० [हिं] पूजा करनेवाला।
**पुजाही** - स्त्री० [हिं] पूजन की सामग्री रखने की झोली या पात्र।
**पुजैया** - पु० [हिं] पूजा करनेवाला; भरने या पूरा करनेवाला।
**पुजौरा** - पु० [हिं] पूजा; पूजन में देवता को अर्पित की जानेवाली सामग्री।
**पुट** - पु० [हिं] हल्का मेल; साधारण मिश्रण; डुबाना; [सं] रिक्त स्थान; विवर; आच्छादन; कोष; दोना; औषध पकाने के काम का एक पात्र-विशेष; आँख की पलक; जायफल; यौ० —पाक - औषधियों को पकाने की एक क्रिया।

पुटक - पु० [सं] पुट ; कमल ।
पुटकी - स्त्री० [हिं] पोटली ; आकस्मिक मृत्यु ; वज्रपात ।
पुटरिया, पुटरी - स्त्री० [हिं] पोटली ।
पुटास - पु० [हिं] पोटाश ।
पुटिका - स्त्री० [सं] पुड़िया ; इलायची ।
पुटित - 1. वि० [सं] रगड़ा या पीसा हुआ ; विदारित ; सिला हुआ ; सिकुड़ा हुआ ; 2. पु० अंजलि ।
पुटिया - स्त्री० [हिं] एक छोटी मछली ।
पुटियाना - स० [हिं] फुसलाना ।
पुटी - स्त्री० [सं] छोटा दोना ; कौपीन ; गड्ढा ; रिक्त स्थान ; आच्छादन ; पुड़िया ।
पुटीन - पु० [हिं] किवाड़ों या खिड़कियों आदि में शीशे जड़ने और लकड़ी की चीज़ों के छेद आदि भरने के काम में आनेवाला एक प्रकार का मसाला ।
पुट्ठा - पु० [हिं] चूतड़ का ऊपरी मांसल भाग ; घोड़ों की संख्या बतलाने का शब्द ; किताब की ज़िल्द ।
पुठवार - अव्य० [हिं] पीछे ।
पुठवाल - पु० [हिं] भले-बुरे काम में साथ देनेवाला ; सेंध के मुँह पर पहरा देनेवाला ।
पुड़ा - पु० [हिं] बड़ी पुड़िया ; ढोल मढ़ने का चमड़ा ।
पुड़िया - स्त्री० [हिं] वह कागज़ या पत्ता जिसमें दवा या कोई वस्तु लपेटकर रखी जाती है ; घर ; खान ; पुड़िये में लपेटी हुई एक खुराक दवा ।
पुड़ी, पूड़ी - स्त्री० [हिं] ढोल मढ़ने का चमड़ा ; पुड़िया ; पूरी, सोहारी ।
पुण्य - 1. वि० [सं] पवित्र ; शुभ ; प्रिय ; अनुकूल ; मधुर (गंध) ; 2. पु० शुभ फल देनेवाला कार्य ; सुकृत ; सुकर्म से उत्पन्न शुभ अदृष्ट ; पवित्रता । यौ० —कर्त्ता - पुण्य करनेवाला ; —कर्मा - शुभ कर्म करनेवाला ; —काल - ऐसा समय जिसमें स्नान-दान आदि करने से पुण्य हो ; —क्षेत्र - तीर्थ ; आर्यावर्त ; —गंध - चंपा ; सुगंधयुक्त ; —गृह - देवालय ; —दर्शन - सुन्दर ; नीलकंठ पक्षी ; पवित्र स्थानों का दर्शन ; —पुरुष - धर्मात्मा ; —भू, भूमि - आर्यावर्त ; पुत्रवती ; —लोक - स्वर्ग ; —शकुन - शुभ शकुन ; —शील - धर्मपरायण ; —श्लोक - उत्तम यशवाला ; —स्थान - तीर्थस्थान ; कुण्डली में लग्न से नौवाँ स्थान ।
पुण्या - स्त्री० [सं] तुलसी ।
पुण्याई - स्त्री० [हिं] पुण्य का प्रताप ।
पुण्यात्मा - वि० [सं] धर्मात्मा ।
पुण्याह - पु० [सं] शुभ दिन ।
पुण्योदय - पु० [सं] सौभाग्य का उदय ।
पुतना - अ० [हिं] पोता जाना ; जुपड़ा जाना ।
पुतरा - पु० [हिं] पुतला ।
पुतरि, पुतरिका, पुतरी - स्त्री० [हिं] पुत्तलिका ।
पुतला - पु० [हिं] खिलौने के काम आने-वाली लकड़ी, धातु या कपड़े आदि की बनी हुई पुरुष की प्रतिमा ; आटे आदि की बनायी हुई वह प्रतिमा जो किसीके शव के अभाव में अंत्येष्टि-क्रिया करने के लिए जलायी जाय ।
पुतली - स्त्री० [हिं] स्त्री की प्रतिमा ; गुड़िया ; कपड़ा बुनने का यंत्र ; सुंदर और कोमलांगी स्त्री ; आँख के बीच का काला भाग ; यौ०—घर - कपड़े की मिल ; मु०— फिर जाना - आँखें पथरा जाना ; घमंड होना ।

**पुताई** - स्त्री० [हिं] पोतने की क्रिया या भाव ; लेप ।

**पुतारा** - पु० [हिं] किसी वस्तु पर रंग आदि से तर कपड़ा फेरने का काम ।

**पुत्तलिका, पुत्तली** - स्त्री० [सं] पुतली ।

**पुत्तिका** - स्त्री० [सं] एक प्रकार की छोटी मधुमक्खी ; दीमक ।

**पुत्र** - पु० [सं] बेटा ; प्यारा बच्चा ; यौ० —कर्म - पुत्रोत्पत्ति-संबंधी संस्कार ; —काम - पुत्र की कामना से किया जानेवाला यज्ञ ; —कृत - दत्तक पुत्र ; —धर्म - पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य ; —पौत्रीण - आनुवंशिक ; —प्रतिनिधि - दत्तक पुत्र ; —भाव - पुत्र का भाव ; कुंडली में पुत्रस्थान की ग्रहस्थिति ; —लाभ - पुत्र की प्राप्ति ; —वधू - पुत्र की पत्नी, पतोहू ; —हीन - जिसके पुत्र न हों ; —वती - पुत्रवाली स्त्री ।

**पुत्राचार्य** - वि० [सं] पुत्रों से पढ़नेवाला ।

**पुत्रादिनी** - स्त्री० [सं] अपने बेटे को खा जानेवाली व्याघ्री ।

**पुत्रार्थी** - वि० [सं] पुत्र चाहनेवाला ।

**पुत्रिका** - स्त्री० [सं] बेटी ; गुड़िया ; आँख की पुतली ; यौ०—पुत्र, सुत - बेटी का बेटा, दौहित्र ; —भर्ता - दामाद ।

**पुत्रिणी** - वि० [सं] पुत्रवाली ।

**पुत्री** - स्त्री० [सं] बेटी ; दुर्गा ।

**पुत्रेष्टि** - स्त्री० [सं] पुत्र लाभ की इच्छा से किया जानेवाला यज्ञ ।

**पुदीना** - पु० [हिं] चटनी के काम में आनेवाला सुगंधित पत्तियोंवाला एक छोटा पौधा ।

**पुद्गल** - 1. पु० [सं] परमाणु ; भूतसामान्य ; आत्मा (बौद्ध) ; शिव ; 2. वि० सुंदर ।

**पुनः** अव्य० [हिं] फिर, दुबारा ; यौ०—पुनः - बार-बार ; —प्राप्य - पुनः प्राप्त करने योग्य ; —संगम - फिर से मिलना ; —संस्कृत, संशोधित - फिर सुधारा हुआ ; —सिद्ध - फिर से स्थापित किया गया ।

**पुन** - 1. वि० [सं] शुद्ध ; 2. पु० [हिं] पुण्य ।

**पुनम** - स्त्री० [हिं] पूर्णिमा ।

**पुनर्** - अव्य० [सं] फिर, दुबारा ; यौ०—अपि - फिर भी ; —आगत - फिर से आया हुआ ; —आगम, आगमन - फिर से आना, लौटना ; —आनयन - लौटा लाना ; —आलंभ - पुनः ग्रहण कर लेना ; —आवर्त - फिर से जन्म ग्रहण करना ; —आवर्तक - पुनः-पुनः आनेवाला ज्वर ; —आवर्ती - फिर से बार-बार जन्मग्रहण करनेवाला ; —आवृत्त - दुहराया हुआ ; लौटा हुआ ; —आवृत्ति - दुहराना ; संसार में फिर से आना ; —उक्त - दुबारा कहा हुआ ; —उक्ति - दुबारा कहना ; —उत्थान - पुनः उन्नति ; —उत्पादन - पुनः निर्माण करना ; —ग्रहण - बार-बार ग्रहण करना ; निकालना ; —जन्म - दुबारा शरीर धारण करना ; —भाव - दूसरा जन्म ; —वचन - दुबारा कथन ; —विवाह - दूसरा ब्याह ।

**पुनर्वासी** - स्त्री० [हिं] पूर्णमासी ।

**पुनि** - अव्य० [हिं] पुनः, फिर से ; यौ० —पुनि - बार-बार ।

**पुनिम** - स्त्री० [हिं] पूर्णिमा ।

**पुनी** - 1. वि० [हिं] पुण्यात्मा ; 2. स्त्री० पूर्णिमा ; 3. अव्य० पुनः ।

**पुनीत** - वि० [सं] पवित्र, शुद्ध ।

**पुन्नाग** - पु० [सं] श्रेष्ठ पुरुष ; सफ़ेद हाथी ; श्वेत कमल ; जायफल ; एक बड़ा सदाबहार पेड़ ।

**पुपली** - स्त्री० [हिं] बाँस की पतली व पोली नली।
**पुप्पुट** - पु० [सं] तालु का एक रोग।
**पुप्फुस** - पु० [सं] फेफड़ा; कमल का बीजकोष।
**पुमान्** - पु० [सं] पुरुष।
**पुरंजर** - पु० [सं] बगल।
**पुरंदर** - पु० [सं] इंद्र; शिव; विष्णु; अग्नि; ज्येष्ठा नक्षत्र; चोर।
**पुरंध्री** - स्त्री० [सं] पति-पुत्रवती स्त्री।
**पुर** - 1. पु० [सं] बाज़ार; खाई; नगर; क़िला; घर; शरीर; अटारी; अंतःपुर; वेश्यालय; राशि; चमड़ा; 2. वि० भरा हुआ; यौ० —कोट्ट - नगररक्षक दुर्ग;—जन - नगरवासी लोग; —तोरण - नगर का बहिर्द्वार; —त्राण - प्राचीर, प्राकार;—द्वार - नगर का प्रवेशद्वार; —नारी - वेश्या; —पाल - नगरपाल; —मार्ग - सड़क; — रोध - नगर पर घेरा डालना;—वासी - नागरिक; 3. [फ़ा] भरा हुआ, पूर्ण; यौ०—अमन - शांतिमय;—ख़ार - संकटपूर्ण;—ख़ुमार - नशे से भरा हुआ; —गो - बहुत बोलनेवाला;—गोई - बकवास; —ज़ायका - मज़ेदार; सुस्वादु; — ज़ोर - ज़ोरदार; —जोश - जोश से भरा हुआ; —नूर - चमकदार; —फ़न - चतुर, चालाक; — साला - बूढ़ा;—हौल - डरावना; पु० [हिं] मोट, चरसा; यौ०—हा - वह व्यक्ति जो मोट चलते समय उसका पानी ढालने के लिए कुँए पर नियुक्त रहता है।
**पुरइन** - स्त्री० [हिं] कमल का पत्ता; कमल।
**पुरइया** - पु० [हिं] तकुआ; ताना।
**पुरखा** - पु० [हिं] पूर्वपुरुष; बड़े-बूढ़े।
**पुरचक** - स्त्री० [हिं] पुचकार; बढ़ावा; पृष्ठपोषण।
**पुरज़ा** - पु० [फ़ा] काग़ज़ का टुकड़ा; खंड; अवयव; चिड़िया का बारीक पर; रुक्का; मु० पुर्ज़े-पुर्ज़े उड़ना या होना - टुकड़े-टुकड़े होना।
**पुरतः** - अव्य० [सं] समक्ष, आगे।
**पुरनियाँ** - वि० [हिं] वृद्ध।
**पुरनी** - स्त्री० [हिं] पैर के अंगूठे का एक गहना।
**पुरबला** - वि० [हिं] पहले का; पूर्वजन्म का।
**पुरबिया** - 1. वि० [हिं] पूरब का; 2. पु० पूरबी देश या प्रांत का निवासी।
**पुरबइया** - स्त्री० [हिं] पूरब की ओर से बहनेवाली हवा, पुरवा।
**पुरवना** - 1. स० [हिं] भरना; पुजाना; पूरा करना; 2. अ० पूरा होना; पर्याप्त होना।
**पुरवा** - 1. स्त्री० [हिं] पूरब की ओर से बहनेवाली हवा; 2. पु० बैलों का एक रोग; कुल्हड़; छोटा गाँव; टीला।
**पुरवाई** - स्त्री० [हिं] पुरवा।
**पुरवी** - स्त्री० [सं] एक रागिणी।
**पुरश्चरण** - पु० [सं] आरंभिक कृत्य; हवन करते हुए मंत्रादि जपना।
**पुरस** - पु० [हिं] स्वाद।
**पुरसाँ** - वि० [फ़ा] पूछने या खोज-ख़बर लेनेवाला।
**पुरसी** - स्त्री० [फ़ा] पूछने या खोज-ख़बर लेने की क्रिया (समास में, जैसे, 'मातमपुरसी')।
**पुरस्** - अव्य० [सं] सामने; पहले; यौ० —करण - पुरस्कृत करने की क्रिया; पूरा करना; —कार - आदर, सम्मान; पूजन; पारितोषिक; उपहार; अभिशाप;

पारिश्रमिक ; —कृत - आगे किया हुआ या रखा हुआ ; सम्मानित ; पूजित ; स्वीकृत ; अभिशप्त ; —सर - आगे चलनेवाला ; सहित ; नेता ; अनुचर ।

**पुरहत** - पु० [हिं] मांगलिक कृत्यों के आरंभ में नेगी को दिया जानेवाला अन्न और द्रव्य ।

**पुरही** - स्त्री० [हिं] हरजेवड़ी, एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ व जड़ दवा के काम आती हैं ।

**पुरहूत** - पु० [हिं] इन्द्र ।

**पुरा** - 1. अव्य० [सं] प्राचीन काल में ; अब तक ; सिवा ; थोड़े समय में ; 2. स्त्री० पूरब ; एक सुगंधित द्रव्य ; गंगा ; किला ; यौ०—कथा - इतिहास ;—कल्प - प्राचीन युग ; —कृत - पूर्वजन्म का कर्म ; —तत्त्व - प्राचीन बातों के अनुसंधान से संबंध रखनेवाली विशेष प्रकार की विद्या ; —विद - प्राचीन इतिहास को जाननेवाला ; —वृत्त - इतिहास ; प्राचीन वार्ता ; 3. पु० [हिं] बस्ती, गाँव ।

**पुराण** - 1. वि० [सं] प्राचीन ; जीर्ण-शीर्ण ; 2. पु० प्राचीन वृत्तांत ; हिन्दुओं के अठारह विशिष्ट धर्मग्रंथ ; कार्षापण ; अठारह की संख्या ; शिव ; यौ० —पुरुष - वृद्ध मनुष्य ; विष्णु ; —भांड - टूटा-फूटा सामान ।

**पुरातन** - 1. वि० [सं] पुराना ; आद्य ; 2. पु० विष्णु ; प्राचीन कथा ।

**पुराधिप, पुराध्यक्ष** - पु० [सं] नगर का प्रधान अधिकारी ।

**पुराना** - 1. वि० [हिं] बहुत दिनों का ; बीता हुआ ; प्राचीन ; जीर्ण ; पूर्ण अनुभवी ; पक्का ; सधा हुआ ; सिद्ध ; 2. स० भरवाना ; पालन कराना ; पूरा करना ।

**पुरारि** - पु० [सं] शिव ।

**पुरि** - स्त्री० [सं] नगरी ; शरीर ; नदी ; यौ० —शय - शरीर में निवास करनेवाली आत्मा ।

**पुरिखा** - पु० [हिं] पूर्वपुरुष, पुरखा ।

**पुरिया** - स्त्री० [हिं] ब ना फैलाने की नरी ; ताना ; पुड़िया ।

**पुरी** - स्त्री० [सं] नगरी ; नदी ; शहर ; शरीर ; किला ; उड़ीसा की एक प्रसिद्ध तीर्थ-नगरी ; [फा] भरा होना ।

**पुरीष** - पु० [सं] विष्ठा ; कूड़ा ; जल ।

**पुरीषण** - पु० [सं] विष्ठा ; मलत्याग करना ।

**पुरु** - 1. पु० [सं] देवलोक ; एक दैत्य ; पराग ; 2. वि० प्रचुर ।

**पुरुख** - पु० [हिं] पुरुष ।

**पुरुखा** - पु० [हिं] पुरखा ।

**पुरुष** - पु० [सं] नर ; मानव जाति ; सूर्य ; आत्मा ; परमात्मा ; जीव ; कर्मचारी ; मेरुपर्वत ; यौ० — कार - पुरुषार्थ ; —केसरी - सिंह के समान पराक्रमी पुरुष ; —ज्ञान - मनुष्य जाति-संबंधी ज्ञान ; —द्वेषिणी - अपने पति या पुरुष मात्र से वैर रखनेवाली स्त्री ; —धर्म - मनुष्य मात्र का धर्म ; —पशु - पशुतुल्य मनुष्य ; —पुंडरीक - श्रेष्ठ मनुष्य ; —मानी - अपने को वीर समझनेवाला ।

**पुरुषक** - पु० [सं] घोड़े का पिछले पैरों के बल खड़ा होना ।

**पुरुषत्व** - पु० [सं] पुरुष का भाव ।

**पुरुषांतर** - पु० [सं] दूसरा मनुष्य ; एक पुरुष का जीवन-काल ।

**पुरुषाधिकार** - पु० [सं] पुरुष का कर्तव्य ।

**पुरुषायुष** - पु० [सं] मनुष्य की आयु ।

**पुरुषार्थ** - पु० [सं] उद्योग, मेहनत ; धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जिनकी सिद्धि के लिए मनुष्य उद्योग करता है ।

**पुरुषोत्तम** - पु० [सं] श्रेष्ठ मनुष्य; विष्णु; अच्छा सेवक या कर्मचारी; यौ०—मास - अधिकमास, मलमास।
**पुरेथा** - पु० [हिं] हल की मूठ।
**पुरोगंता, पुरोगामी** - वि० [सं] नायक; अग्रदूत; कुत्ता।
**पुरोगति** - 1. स्त्री० [सं] उन्नति; आगे बढ़ना; 2. वि० आगे-आगे चलने- वाला।
**पुरोगम** - वि० [सं] अग्रगामी।
**पुरोजन्मा** - 1. वि० [सं] जिसका जन्म पहले हुआ हो; 2. पु० ज्येष्ठ भ्राता।
**पुरोत्सव** - पु० [सं] नगर-भर में मनाया जानेवाला उत्सव।
**पुरोद्यान** - पु० [सं] नगर के अंदर का उद्यान, पार्क।
**पुरोवात** - पु० [सं] पुरवा।
**पुरोहित** - पु० [सं] धार्मिक कृत्य कराने- वाला।
**पुरोहिताई** - स्त्री० [हिं] पुरोहित का पेशा।
**पुरोहितानी** - स्त्री० [हिं] पुरोहित की स्त्री।
**पुरौती** - स्त्री० [हिं] कमी पूरी करना, पूर्ति।
**पुरौनी** - स्त्री० [हिं] पूरा करना; समाप्ति।
**पुर्स** - वि० [फ़ा] पूछनेवाला।
**पुल** - 1. वि० [सं] बड़ा; महान; 2. पु० लोमहर्षण; रोमांच; [फ़ा] नदी या जलाशय आदि के आर-पार जाने का रास्ता, सेतु; मु० (किसी बात का) —बाँधना - भरमार करना; झड़ी लगाना।
**पुलक** - पु० [सं] रोमांच; एक प्रकार का रत्न; मद्यपान का पात्र।
**पुलकना** - अ० [हिं] पुलकित होना, हर्ष- विह्वल होना।
**पुलकाई** - स्त्री० [हिं] पुलकित होने का भाव; पुलक।
**पुलकावलि** - स्त्री० [सं] प्रेम या हर्षजन्य रोमांच।
**पुलकित** - वि० [सं] प्रसन्न, हर्षविह्वल।
**पुलट** - स्त्री० [हिं] पलटने की क्रिया।
**पुलटिस** - स्त्री० [हिं] घाव पर बाँधने के लिए हलुवे की तरह पकायी हुई अलसी।
**पुलपुला** - वि० [अनु] पिलपिला; जो भीतर से नरम और ढीला हो।
**पुलपुलाना** - स० [अनु] किसी पुलपुली चीज़ को दबाना।
**पुलाक** - पु० [सं] कदन्न, खराब अन्न; भात का माँड़; संक्षेप।
**पुलायित** - पु० [सं] घोड़े का सरपट दौड़ना।
**पुलाव** - पु० [हिं] मांस और चावल को एक साथ पकाकर तैयार किया जानेवाला व्यंजन।
**पुलिंद** - पु० [सं] एक पुरानी असभ्य जाति; जहाज़ का मस्तूल।
**पुलिंदा** - पु० [हिं] लपेटे हुए काग़ज़ का बंडल।
**पुलिन** - पु० [सं] नदी का किनारा; रेतीला किनारा; यौ०— वती - नदी।
**पुलिस** - स्त्री० [अंग्रे] जनता के जान, माल और शांति की रक्षा का प्रबंध करने- वाला सरकारी महकमा या उस महकमे के कर्मचारी; यौ० —मैन - पुलिस महकमे का कर्मचारी।
**पुलिहोरा** - पु० [हिं] एक पकवान।
**पुली** - स्त्री० [हिं] उत्तर भारत की एक चिड़िया।
**पुल्ल** - वि० [सं] विकसित।
**पुल्ला** - पु० [हिं] नाक का एक गहना।
**पुवार** - पु० [हिं] पयाल।

**पुश्त** - स्त्री० [फ़ा] पीठ; पीढ़ी; सहारा; यौ० —ख़म - कुबड़ा; —ख़ार - पीठ खुजलाने का एक औज़ार; —दर-पुश्त - कई पीढ़ियों से; —दस्त - हथेली के ऊपर का हिस्सा; —नामा - कुर्सीनामा; —पनाह - सहायक; —वानी - किवाड़ के पीछे उसकी मज़बूती के लिए लगायी जानेवाली लकड़ी।

**पुश्ता** - पु० [फ़ा] पानी की रोक या मज़बूती के लिए दीवार की तरह बनाया हुआ ढालुआँ टीला, बाँध; किताब की ज़िल्द के पीछे का चमड़ा; यौ० —बंदी - पुश्ता बाँधने का काम।

**पुश्तापुश्त** - क्रि० [फ़ा] कई पीढ़ियों से।

**पुश्तारा** - पु० [फ़ा] पीठ पर लादने-भर का बोझ; गठरी।

**पुश्ती** - स्त्री० [फ़ा] समर्थन और सहायता; पृष्ठपोषण; पुस्तक की ज़िल्द का पुट्ठा; मसनद।

**पुश्तैनी** - वि० [फ़ा] दादा-परदादा के समय का पुराना; आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला; वंशानुगत।

**पुषित** - वि० [सं] पुष्ट; जिसका पोषण किया गया हो।

**पुष्कर** - पु० [सं] सरोवर; जल; आकाश; कमल; तलवार की धार; हाथी की सूँड का अग्रभाग; ढोल; सारस पक्षी; पिंजड़ा।

**पुष्करिणी** - स्त्री० [सं] हथिनी; एक प्रकार का जलाशय; कमलों का समूह; कमल-युक्त जलाशय; एक प्राचीन नदी।

**पुष्कल** - 1. वि० [सं] श्रेष्ठ; शोभायमान; पूर्ण; बहुत; पर्याप्त; शब्दपूर्ण; 2. पु० अनाज आदि का चौंसठ मुट्ठी का एक प्राचीन परिमाण; चार ग्रास भिक्षान्न का एक प्राचीन परिमाण; एक तंत्रवाद्य।

**पुष्ट** - 1. वि० [सं] पोषित; तगड़ा; पूर्ण; पूरी आवाज़ करनेवाला; 2. पु० विष्णु; पोषण।

**पुष्टई** - स्त्री० [हिं] बलवर्धक औषध।

**पुष्टता** - स्त्री० [सं] पुष्ट होने का भाव; बलिष्ठता।

**पुष्टि** - 1. स्त्री० [सं] पोषण; वृद्धि; तगड़ापन; अभ्युदय; समर्थन; यौ० —कर, कारक - पोषण करनेवाला; पुष्ट बनानेवाला; —काम - अभ्युदय चाहनेवाला; —मार्ग - वैष्णवों का वल्लभ-संप्रदाय; — वर्धन - जिससे अभ्युदय की सिद्धि हो; मुर्गा।

**पुष्प** - पु० [सं] फूल; स्त्री का रज; आँख का एक रोग; पुखराज; विकास; यौ०—करंड, करंडक - फूल तोड़ने की डलिया; —काल - वसंत ऋतु; स्त्रियों का ऋतुकाल; —कीट - फूल का कीड़ा; भ्रमर; —केतन, केतु - मन्मथ; —गंधा - जूही; —ग्रथन - माला गूँथना; —चय, चयन - फूल चुनना; —चाप, धनु, धन्वा - कामदेव; —चामर - बेत की लता; —जीवी - माली; —दाम - फूलों की माला; एक छंद; —द्रव - मकरंद; —पत्र - फूल की पंखड़ी; —पथ, पदवी - योनि; —पुट - फूलों से भरी हुई झोली या पात्र; —पेशल - फूल की तरह नाज़ुक; —प्रस्तार - पुष्पशय्या; —फल - कपित्थ; कुम्हड़ा; —भद्र - खंभोंवाला एक प्रकार का मंडप; —मंजरी - फूल की मंजरी; —मास - चैत्रमास; वसन्तकाल; —रचन - फूलों की माला गूँथना; —रथ - हवाख़ोरी के काम आनेवाला रथ; —रस - मकरंद; —रेणु - पराग; —लिपि - एक प्राचीन

लिपि : —वती - रजस्वला स्त्री : मस्त गाय : —वर्ग - कचनार, सेमल, अगस्त्य आदि के फूलों का समाहार ; —वाटिका, वाटी - फुलवारी; —वृष्टि - फूलों की वर्षा : —वेणी - फूलों की माला : फूलों का जूड़ा ;—शय्या - फूलों का बिछौना : —हास - फूलों का खिलना : —हासा - ऋतुमती स्त्री ।

**पुष्पक** - पु० [सं] फूल ; पीपल ; कुबेर का विमान ; एक नेत्ररोग ; कंकण ; एक प्रकार का अंजन ; मिट्टी का चूल्हा ; दाँत का मैल ।

**पुष्पांजन** - पु० [सं] पीतल के कसाव से तैयार किया जानेवाला एक अंजन ।

**पुष्पांजलि** - स्त्री० [सं] अंजलि-भर फूल ।

**पुष्पाराम** - पु० [सं] फुलवारी ।

**पुष्पासव** - पु० [सं] मधु ; फूलों से बनी हुई शराब ।

**पुष्पिका** - स्त्री० [सं] दाँत की पपड़ी; किसी ग्रंथ के किसी अध्याय का समापक वाक्य ।

**पुष्पिणी** - स्त्री० [सं] रजस्वला स्त्री ।

**पुष्पित** - वि० [सं] विकसित ; रंग-बिरंगा ; अलंकृत ।

**पुष्पोद्यान** - पु० [सं] फुलवारी ।

**पुष्पोपजीवी** - पु० [सं] माली ।

**पुष्य** - पु० [सं] एक प्रसिद्ध नक्षत्र ; पूस का महीना ; कलियुग ; फूल ; यौ०— योग - चंद्रमा के पुष्य नक्षत्र पर स्थित रहने का योग ।

**पुस** - पु० [अनु] बिल्ली को पुचकारने का शब्द ।

**पुसाना** - अ० [हिं] पूरा करना ; उचित जान पड़ना ।

**पुस्त** - पु० [सं] हाथ की लिखी हुई पोथी ; किताब ; शिल्पकारी ; लकड़ी या धातु आदि की बनी हुई वस्तु ।

**पुस्तक** - स्त्री० [सं] ग्रंथ, किताब : हाथ की लिखी हुई पोथी : यौ०— मुद्रा - हाथ की एक मुद्रा (तंत्र) ।

**पुस्तकाकार** - वि० [सं] पुस्तक के आकार का ।

**पुस्तकागार, पुस्तकालय** - पु० [सं] जहाँ विभिन्न विषयों की पुस्तकें संग्रहीत हों, लाइब्रेरी ।

**पुस्तकास्तरण** - पु० [सं] किताब या पोथी का बेठन ।

**पुस्तकी, पुस्तिका** - स्त्री० [सं] छोटा ग्रंथ, छोटी पुस्तक ।

**पुहना** - अ० [हिं] पोहा जाना ; गूँथा जाना ।

**पुहमी** - स्त्री० [हिं] पृथ्वी ।

**पुहाना** - स० [हिं] गुथवाना ; पिरोने का काम कराना ।

**पुहुमी, पुहुवी** - स्त्री० [हिं] पृथ्वी ।

**पूँगा** - स्त्री० [हिं] महुवर नाम का बाजा ; सीप का कीड़ा ।

**पूँगी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की बाँसुरी ।

**पूँछ** - स्त्री० [हिं] दुम : पुछल्ला ।

**पूँछड़ी** - स्त्री० [हिं] पूँछ ; नाले में चढ़ाव के आगे बहनेवाला पानी ।

**पूँजी** - स्त्री० [हिं] मूलधन ; संचित धन ; द्रव्य ; किसी विषय का ज्ञान ; समूह ; यौ० —दार, पति - धनवान ; — वाद - धनिकों द्वारा श्रमिकों के शोषण का पोषण करनेवाली व्यवस्था ; —वादी - पूँजीवाद के सिद्धान्तों का प्रयोग करनेवाला ।

**पूँठ** - स्त्री० [हिं] पीठ ।

**पूआ** - पु० [हिं] पुआ ।

**पूग** - पु० [सं] सुपारी ; कटहल का पेड़ या उसका फल ; संघ ; राशि ; स्वभाव ; यौ०— पात्र - पीकदान ; पान-

दान : —फल - सुपारी : —वैर - वह शत्रुता जो बहुत-से लोगों से हो।

**पूगना** - अ० [हिं] पूरा होना।

**पूगी** - स्त्री० [सं] सुपारी का पेड़ : सुपारी ; यौ०— फल - सुपारी।

**पूच** - वि० [फ़ा] रिक्त : व्यर्थ का : तुच्छ : नीच।

**पूछ** - स्त्री० [हिं] पूछने का भाव या क्रिया ; खोज ; आदर ; मान ; यौ०— ताछ, पाछ - जाँच-पड़ताल।

**पूछना** - स० [हिं] प्रश्न करना ; खोज-ख़बर लेना ; क़द्र करना ; टोकना ; जवाब तलब करना।

**पूछरी** - स्त्री० [हिं] पूँछ ; पिछला भाग।

**पूज़** - पु० [फ़ा] पशु की आकृति ; यौ०—बंद - जानवरों के मुँह पर बाँधने की जाली।

**पूजक** - पु० [सं] पूजा करनेवाला ; उपासक।

**पूजन** - पु० [सं] पूजने की क्रिया ; अर्चन ; सत्कार ; आदर की वस्तु।

**पूजना** - 1. स० [हिं] पूजा करना ; सत्कार करना ; घूस देना ; 2. अ० पूरा होना ; चुकता होना।

**पूजनीय** - वि० [सं] पूजा करने योग्य ; आदर के योग्य।

**पूजमान** - वि० [हिं] पूजित होनेवाला ; पूज्य।

**पूजयान** - पु० [सं] आदर करना।

**पूजा** - स्त्री० [सं] आराधन, अर्चन ; सत्कार ; घूस देना ; पिटाई ; यौ० —गृह - देवालय ; उपासना-मंदिर ; —संभार - पूजोपकरण।

**पूजार्ह** - वि० [सं] पूजनीय ; मान्य।

**पूजित** - वि० [सं] जिसकी पूजा की गयी हो, अर्चित ; सत्कृत ; जिसकी सिफ़ारिश की गयी हो ; यौ० —पूजक - सम्मानित व्यक्ति का सम्मान करनेवाला।

**पूजोपकरण** - पु० [सं] देवता की पूजा के लिए आवश्यक वस्तुएँ।

**पूज्य** - 1. वि० [सं] पूजा या सत्कार के योग्य ; मान्य ; आदरणीय ; 2. पु० सम्मान्य व्यक्ति ; श्वसुर ; यौ० —पाद - अतिपूज्य।

**पूज्यता** - स्त्री० [सं] पूज्य होने का भाव।

**पूज्यमान** - वि० [सं] पूजा जाता हुआ।

**पूठि** - स्त्री० [हिं] पीठ।

**पूड़ी** - स्त्री० [हिं] तबले या मृदंग के मुँह पर मढ़ा हुआ चमड़ा ; पूरी।

**पूत** - 1. पु० [हिं] पुत्र, बेटा ; [सं] सत्य ; शंख ; श्वेत कुश ; 2. वि० पवित्र किया हुआ ; दुर्गन्धवाला ; आविष्कृत।

**पूतड़ा** - पु० [हिं] छोटे बच्चे का छोटा विस्तर।

**पूतन** - पु० [सं] भूतयोनि की एक जाति या भेद ; वैताल।

**पूतरा** - पु० [हिं] पुतला ; पुत्र, बेटा।

**पूता** - 1. स्त्री० [सं] दुर्गा ; 2. पु० [हिं] पुत्र।

**पूतात्मा** - वि० [सं] शुद्ध अंतःकरणवाला।

**पूति** - स्त्री० [सं] पवित्रता ; दुर्गन्ध ; गंदा पानी ; यौ०—कन्या - पुदीना ; —गंध - दुर्गन्धवाला ; —गंधी - बदबू करनेवाला ; —वात - गंदी हवा ; अपानवायु ; बेल का पेड़ ; —व्रण - मवाद देनेवाला फोड़ा या घाव।

**पूतिक** - 1. पु० [सं] विष्ठा, मल ; 2. वि० बदबूदार।

**पूतिका** - स्त्री० [सं] मार्जारी ; दीमक।

**पूती** - स्त्री० [हिं] गाँठदार जड़ ; लहसुन की गाँठ।

**पूदना** - पु० [हिं] उत्तर भारत का एक पक्षी।

**पून** - 1. वि० [सं] नष्ट; पूर्ण; 2. पु० [हिं] जंगली बादाम का पेड़।

**पूनम** - पु० [हिं] पूर्णिमा, पूनो।

**पूनसलाई** - स्त्री० [हिं] वह पतली छोटी लकड़ी जिसपर धुनी हुई रूई लपेटकर पूनी बनाते हैं।

**पूनी** - स्त्री० [हिं] धुनी हुई रूई की मोटी बत्ती जो सूत कातने के काम आती है।

**पूनो** - स्त्री० [हिं] पूर्णिमा।

**पूप** - पु० [सं] पूआ।

**पूपला, पूपलिका, पूपली, पूपाली, पूपिका** - स्त्री० [सं] एक तरह की मीठी पूरी।

**पूय** - पु० [सं] पीब, मवाद; यौ० —रक्त - पीब मिला हुआ रक्त।

**पूयन** - पु० [सं] मवाद।

**पूयालस** - पु० [हिं] आँख का एक रोग।

**पूर** - 1. पु० [सं] बाढ़; जलाशय; व्रणशुद्धि; नींबू; अगरबत्ती; [हिं] किसी पकवान के भीतर भरा जानेवाला मसाला; 2. वि० पूर्ण, पूरा।

**पूरक** - 1. वि० [सं] पूर्ति करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला; 2. पु० प्राणवायु का एक भेद; बिजौरा नींबू।

**पूरण** - 1. पु० [सं] पूर्ण करने की क्रिया; भरे जाने की क्रिया; एक प्रकार की रोटी; वृष्टि; पुल; समुद्र; किसी संख्या की पूर्ति; 2. वि० पूरा करनेवाला; तुष्ट करनेवाला; खींचनेवाला; [हिं] संपूर्ण।

**पूरणीय** - वि० [सं] पूर्ण करने योग्य।

**पूरन** - पु० [हिं] उबाले जाने के बाद सिल पर पिसी हुई मटर या चने की दाल; पूरण; यौ० —काम - पूर्णकाम; —परब - पूर्णिमा; —पूरी - पूरन भरी हुई पूरी; —मासी - पूर्णमासी।

**पूरना** - 1. स० [हिं] पूरा करना; छिद्र करना; आच्छादित करना; मांगलिक अवसरों पर धरती पर विशेष प्रकार के क्षेत्र बनाना; 2. अ० व्याप्त होना; रमना; छाना; ओत-प्रोत होना।

**पूरनिमा** - स्त्री० [हिं] पूर्णिमा।

**पूरब** - 1. पु० [हिं] सूरज के निकलने की दिशा, पूर्व; 2. अव्य० पहले, पूर्व।

**पूरबला** - वि० [हिं] पुराना; पूर्वजन्म का।

**पूरबी** - वि० [हिं] पूरब का; पूरब-संबंधी; 2. स्त्री० एक रागिणी।

**पूरयिता** - 1. पु० [सं] पूर्ण करनेवाला; 2. वि० संतुष्ट करनेवाला।

**पूरा** - वि० [हिं] भरा हुआ; समूचा; जिसमें कोई कोर-कसर न हो; पर्याप्त; पूर्ण; सफल; पक्का; ठीक; मु०—उतरना - भली-भाँति सम्पन्न होना; ठीक होना।

**पूरिका** - स्त्री० [सं] कचौड़ी।

**पूरित** - वि० [सं] पूरा किया हुआ; भरा हुआ; गुणा किया हुआ; तृप्त।

**पूरिया** - पु० [हिं] एक राग।

**पूरी** - 1. स्त्री० [हिं] घी या तेल में पकायी हुई रोटी; तबले आदि के मुँह पर का चमड़ा; घास आदि का पूला; 2. वि [सं] पूरा करनेवाला; भरनेवाला।

**पूरुष** - पु० [सं] मनुष्य; आत्मा।

**पूर्ण** - 1. वि० [सं] भरा हुआ; समूचा; समग्र; सिद्ध; संपन्न; यथेष्ट; अतीत; तृप्त; स्वार्थी; झुकाया हुआ (धनुष); 2. पु० जल (वेद); एक ताल; यौ०— काम - जिसकी सभी इच्छायें पूरी हो चुकी हों: निरीह; ईश्वर; —कारण - पूरा करनेवाला; —कुंभ -

जल आदि से भरा हुआ कलसा; —चंद्र - पूर्णिमा का चंद्रमा; —पात्र - जल से भरा हुआ पात्र; दो सौ छप्पन मुट्ठियों का एक प्राचीन परिमाण; चावल से भरा हुआ घड़ा; —प्रज्ञ, बोध - परमज्ञानी; —मानस - संतुष्ट; —मास - पूर्णिमा को किया जानेवाला याग-विशेष; चंद्रमा; — मासी - शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि, पूर्णिमा; —योग - एक प्रकार का बाहुयुद्ध; —यौवन - पूरा जवान; —रथ - पक्का योद्धा; —वर्ष - जिसकी अवस्था पूरे बीस साल की हो; —विराम - वाक्य की समाप्ति का सूचक चिन्ह; —श्री - धन-धान्य से पूर्ण।

**पूर्णतः, पूर्णतया** - अव्य० [सं] अच्छी तरह; पूर्ण रूप से।

**पूर्णांक** - पु० [सं] पूरी संख्या; अविभक्त संख्या; किसी प्रश्न-पत्र के लिए निर्धारित अंक।

**पूर्णा** - स्त्री० [सं] चंद्रमा की पंद्रहवीं कला; पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावास्या; दक्षिण भारत की एक नदी।

**पूर्णानंद** - पु० [सं] परमेश्वर।

**पूर्णाभिलाष** - वि० [सं] संतुष्ट।

**पूर्णायु** - 1. स्त्री० [सं] सौ वर्ष की आयु; 2. वि० सौ वर्ष की आयुवाला।

**पूर्णावतार** - पु० [सं] संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।

**पूर्णाहुति** स्त्री० [सं] अंतिम आहुति; किसी कार्य का पूरक अंश; समाप्ति।

**पूर्णिमा, पूर्णिमासी** - स्त्री० [सं] शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि, पूनो।

**पूर्णेन्दु** - पु० [सं] सोलहों कलाओं से युक्त चंद्रमा, पूर्णिमा का चाँद।

**पूर्त** - 1. वि० [सं] पूरा किया हुआ; पूरित; ढका हुआ; रक्षित; 2. पु० पूरा करना; पालन; कुआँ, तालाब, मंदिर आदि बनाने का धार्मिक कृत्य; पुरस्कार; यौ०—विभाग - सड़कें आदि बनाने का महकमा।

**पूर्ति** - स्त्री० [सं] पूरा करने की क्रिया; तृप्ति; गुणन; पुरस्कार।

**पूर्य** - वि० [सं] पूरा करने योग्य; परिपालन के योग्य।

**पूर्व** - 1. वि० [सं] पूरबी; प्रथम; पहले का; प्राचीन; पिछला; बहुत दिनों से चला आता हुआ रिवाज़ आदि; 2. पु० पुरखा; अग्रभाग; सूरज के निकलने की दिशा, पूरब; 3. अव्य० पहले; यौ० —कर्म - पहला काम; पूर्वजन्म का कर्म; तैयारी; —कल्प - प्राचीन काल; —कालिक, कालीन - पूर्वकाल-संबंधी; पुराना; पहले का; —कृत - पूर्वजन्म का कर्म; —कोटि - वाद का पूर्वपक्ष; —गत - पहले गया हुआ; —ज - पहले जनमा हुआ, पुरखा; —जन्म - वर्तमान जन्म से पहले का जन्म; —ज्ञान - पूर्वजन्म का ज्ञान; —दक्षिण - अग्निकोण में स्थित; —दत्त - पहले दिया हुआ; —दिन - दिन का मध्याह्न से पहले का भाग; —दिष्ट - प्रारब्ध के अनुसार नियत सुख-दुख आदि; —देव - प्राचीन देवता; पितर; —देहिक, दैहिक - पूर्व जन्म में किया हुआ; —पक्ष - अगला हिस्सा; शास्त्र-विचार में किसी संशयवाले स्थल के संबंध में उठाया गया प्रश्न; मुद्दई की फ़रियाद; कृष्णपक्ष; —पक्षी - पूर्वपक्ष उपस्थित करनेवाला; —पथ - पुराना मार्ग;

—पद - समास में पहला पद : पहला स्थान ; —पुरुष - पुरखा ; —प्रज्ञा - अतीत का ज्ञान ; स्मृति : —भाव - पूर्व-सत्ता : प्राथमिकता : विचार की अभिव्यक्ति ; —भूत - जो पहले हुआ हो ; —रंग - विघ्नशांति के लिए अभिनय के आरंभ में किये जानेवाले कृत्य (नांदी-पाठ आदि) ; —रूप - पहले का रूप ; रोग का आरंभिक लक्षण ; आसार ; —वत् - पहले की तरह ; कारण देखकर कार्य का अनुमान करना (न्याय) ; —वय - बचपन ; —वर्ती - पहले होनेवाला ; पहले का ; —वाद - अभियोग या दावा ; —वादी - मुद्दई, वादी ; —विद् - जिसे पुरानी बातें मालूम हों ; —संचित - पहले एकत्र किया हुआ ।

**पूर्वक** - 1. अव्य० [सं] साथ, सहित ; 2. वि० पहला ; पहले का ; 3. पु० पुरखा ।

**पूर्वतः** - अव्य० [सं] पहले ; सामने ।

**पूर्वत्र** - अव्य० [सं] पहले ।

**पूर्वा** - स्त्री० [सं] पूरब ।

**पूर्वापर** - 1. वि० [सं] अगला और पिछला ; पूर्व और पश्चिम का ; 2. पु० आगा-पीछा ; प्रमाण और प्रमेय ।

**पूर्वापर्य** - पु० [सं] पूर्वापर का भाव ।

**पूर्वाभिमुख** - वि० [सं] जिसका रुख पूर्व दिशा की ओर हो ।

**पूर्वाभ्यास** - पु० [सं] पहले का अभ्यास ।

**पूर्वार्जित** - 1. वि० [सं] पहले का कमाया हुआ ; 2. पु० पैतृक संपत्ति ।

**पूर्वार्द्ध** - पु० [सं] दो बराबर भागों में से पहला भाग ।

**पूर्ववादक** - पु० [सं] वादी, मुद्दई ।

**पूर्वाश्रम** - पु० [सं] ब्रह्मचर्याश्रम ।

**पूर्वी** - वि० [हिं] पूरबी ; यौ०—द्वीप-समूह - भारत के पूर्व में स्थित जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि द्वीपों का समूह ।

**पूर्वीण** - वि० [सं] पुराना ; पैतृक ।

**पूर्वेद्युः** - 1. अव्य० [सं] पिछले दिन ; 2. पु० प्रातःकाल ।

**पूर्वोक्त** - वि० [सं] पहले कहा हुआ ।

**पूर्वोत्तर** - वि० [सं] उत्तर-पूर्वी ।

**पूल, पूलक** - पु० [सं] तृण आदि का ढेर ; पूला ।

**पूला** - पु० [हिं] तृण आदि का बँधा हुआ मुट्ठा ।

**पूलिका** - स्त्री० [सं] एक प्रकार की मीठी पूरी ।

**पूली** - स्त्री० [हिं] छोटा पूला ।

**पूष** - पु० [सं] शहतूत का पेड़ ; [हिं] अगहन के बाद का महीना, पौष मास ।

**पूषण, पूषन** - पु० [सं] सूर्य ।

**पूषा** - स्त्री० [सं] चंद्रमा की तीसरी कला ।

**पूस** - पु० [हिं] पौष मास ।

**पृक्त** - 1. वि० [सं] मिश्रित ; युक्त ; पूर्ण ; 2. पु० संपत्ति ।

**पृच्छक** - पु० [सं] पूछनेवाला ; जिज्ञासु ।

**पृच्छा** - स्त्री० [सं] प्रश्न ; भविष्य-संबंधी प्रश्न ।

**पृथक्** - अव्य० [सं] अलग, भिन्न ; यौ०—करण, क्रिया - अलग करने का काम ; विश्लेषण ; —कुल - भिन्न कुल का ; —क्षेत्र - एक पिता और भिन्न माता से जन्मी हुई संतति ; —शय्या - अलग सोना ; —शायी - अकेले या अलग सोनेवाला ।

**पृथक्ता, पृथक्त्व** - पु० [सं] अलग होने का भाव, भिन्नता ।

**पृथग्जन** - पु० [सं] नीच ; कमीना ।

**पृथग्भाव** - पु० [सं] भिन्न अवस्था ; अंतर ।

**पृथग्रूप** - वि० [सं] अनेक रूपोंवाला ; नाना प्रकार का ।

**पृथग्विध** - वि० [सं] नाना प्रकार का ।

**पृथिवी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ।

**पृथु** - 1. [सं] विस्तीर्ण ; महान ; बहुसंख्यक ; चतुर ; विशिष्ट ; 2. पु० अग्नि ; शिव ; विष्णु ; एक दानव ; एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा ; 3. स्त्री० काला जीरा ; अफ़ीम ; यौ०—कीर्ति - महान यशस्वी ; —ग्रीव - मोटे गलेवाला ; —दर्शी - दूरदर्शी ; —पत्र - लाल लहसुन ; —यशा - बहुत विख्यात ; — लोचन - बड़ी आँखोंवाला ; —श्रवा - बड़े कानोंवाला ; —संपद - धनी ।

**पृथुक** - पु० [सं] शिशु ; चिउड़ा ।

**पृथुल** - वि० [सं] स्थूल ; विस्तीर्ण ; विशाल ।

**पृथूदर** - 1. वि० [सं] बड़े पेटवाला ; 2. मेढ़ा ।

**पृथ्वी** - स्त्री० [सं] पाँच महाभूतों में एक ; धरती, भूमि ; बड़ी इलायची ; यौ०—गर्भ - बड़े पेटवाला ; गणेश ; —गृह - गुफा ; —ज - मंगल ग्रह ; पेड़ ; —तनया - सीता ; —धर - पर्वत ; —पुत्र - राजा ।

**पृश्नी** - स्त्री० [सं] जलकुंभी ।

**पृषोदर** - 1. वि० [सं] जिसके पेट पर बुंदें हों ; छोटे पेटवाला ; 2. पु० वायु ।

**पृष्ट** - वि० [सं] पूछा हुआ ; सिक्त ।

**पृष्टि** - स्त्री० [सं] पूछने की क्रिया ; स्पर्श ; किरण ।

**पृष्ठ** - पु० [सं] पीठ ; किसी वस्तु का पिछला भाग ; तल ; सफ़ा ; छत ; यौ०—गामी - पीछे चलनेवाला ; —ग्रंथि - कूबड़ ; —चक्षु - केकड़ा ; भालू ; —ताप - मध्याह्न ; —देश - पीछे का भाग ; —पाती - अनुगमन करनेवाला ; —पोषक - सहायक; —पोषण - सहायता करना ; —भाग - पिछला भाग ;—भूमि - मकान के ऊपर की मंज़िल या छत ; —मास - पीठ का मास ; —वंश - रीढ़ की हड्डी ।

**पृष्ठक** - पु० [सं] पीछे की ओर का हिस्सा ।

**पृष्ठतः** - अव्य० [सं] पीछे ; पीठ की ओर से ।

**पृष्ठोदय** - पु० [सं] पीठ की ओर से उदित होनेवाली राशि ।

**पृष्णि** - स्त्री० [सं] एड़ी ; पिछला भाग ; किरण ।

**पें** - स्त्री० [अनु] रोने या बाजा फूँकने आदि से निकलनेवाला शब्द ।

**पेंग** - स्त्री० [हिं] झूलने के समय झूले का आगे-पीछे जाना ।

**पेंड़** - पु० [सं] रास्ता, पैंड़ ; पेड़ ।

**पेंडुकी** - स्त्री० [हिं]. पंडुक ; सोनारों की फुँकनी ; गुझिया नामक पकवान ।

**पेंदा** - पु० [हिं] किसी गहरी वस्तु का तला ।

**पेंदी** - पु० [हिं] तल ; गुदा ; गाजर या मूली की जड़ ; मु० बिना पेंदी का का लोटा - वह मनुष्य जिसका कोई निश्चित सिद्धान्त न हो ।

**पेउसी** - स्त्री० [हिं] गाय या भैंस का ब्याने के दिन से सात दिनों तक का दूध ।

**पेखक** - पु० [हिं] प्रेक्षक, दर्शक ।

**पेखना** - स० [हिं] देखना ।

**पेच** - पु० [फ़ा] पगड़ी की लपेट ; चक्कर ; झंझट ; कुश्ती का दाँव ; पेट का दर्द ; मुश्किल ; धोखा ; सिरपेच ; मशीन ; यौ० —कश - पेच खींचने का औज़ार ; —दार - चक्करदार ; उलझनवाला ;—वान - बड़ा हुक्का ।

**पेचक** - 1. पु० [सं] उल्लू ; पलंग ; बादल ; जूँ ; 2. स्त्री० [फ़ा] बटे हुए तागे की गोली, रील ।

**पेचिश** - स्त्री० [फ़ा] पेट में आँव पड़ने का रोग ।

**पेचीदगी** - स्त्री० [फ़ा] पेचीदा होने का भाव ।

**पेचीदा, पेचीला** - वि० [फ़ा] पेच या लपेटवाला ; चक्करदार ; उलझनवाला ; कठिन ।

**पेट** - पु० [सं] थैला ; पिटारा ; थप्पड़ ; [हिं] उदर ; आमाशय ; गर्भ ; दिल ; जीविका ; यौ० —पोछँना - अंतिम संतान ; —वाली - गर्भवती ; मु०—काटना - पैसा बचाने के लिए कम खाना ; —का धंधा - जीविका ; —का पानी न हिलना - थोड़ा-सा भी श्रम न पड़ना ; —का हाल - मन की बात ; —की आग - भूख ; —चलना - दस्त होना ; —देना - अपना भेद बताना ; —में चूहे दौड़ना - खूब भूख लगना ; —में दाढ़ी होना - बहुत चालाक होना ।

**पेटक** - पु० [सं] थैला ; पिटारा ; समूह ।

**पेटकैयाँ** - अव्य० [हिं] पेट के बल ।

**पेटल** - वि० [हिं] बड़े पेटवाला, तोंदू ।

**पेटा** - पु० [हिं] किसी गहरी वस्तु का तलभाग ; गर्भ ; घेरा ; पशुओं की अँतड़ी ।

**पेटी** - स्त्री० [सं] पिटारी ; लघु मंजूषा ; [हिं] बेल्ट ; चपरास ; नाई का लोहखर ।

**पेटू** - वि० [हिं] बहुत अधिक खानेवाला ; दीर्घाहारी ।

**पेठा** - पुं० [हिं] सफ़ेद कुम्हड़ा ।

**पेड़** - पु० [हिं] वृक्ष ।

**पेड़ा** - पु० [हिं] एक मिठाई ।

**पेड़ी** - स्त्री० [हिं] पेड़ या पौधे का तना ; पान की पुरानी बेल ; फलवाले वृक्षों पर लगाया जानेवाला कर ।

**पेड़ू** - पु० [हिं] शरीर का नाभि और उपस्थ के बीच का भाग ।

**पेन्हाना** - 1. स० [हिं] पहनाना ; 2. अ० गाय या भैंस आदि के थन में दूध उतर आना ।

**पेमचा** - पु० [हिं] एक तरह का रेशमी कपड़ा ।

**पेमा** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की मछली ।

**पेय** - 1. त्रि० [सं] पीने योग्य ; 2. पु० पीने योग्य पदार्थ ; जल ; दूध ; शरबत ।

**पेया** - स्त्री० [सं] माँड़ ।

**पेयूष** - पु० [सं] अमृत ; ताज़ा घी ; पेउसी ।

**पेरना** - स० [हिं] रस निकालने के लिए यंत्र द्वारा किसी वस्तु को दबाना ; प्रेरित करना ।

**पेरवा, पेरवाह** - पु० [हिं] पेरनेवाला ।

**पेरा** - 1. स्त्री० [हिं] एक प्रकार की मिट्टी जो पोताई के काम आती है ; 2. पु० पेड़ा ।

**पेल, पेलक** - पु० [सं] गमन ; अंडकोश ।

**पेलना** - स० [हिं] दबाकर भीतर पहुँचाना ; प्रेरित करना ; टालना ; ठेलना ; ढकेलना ; आगे बढ़ाना ।

**पेलव** - वि० [सं] कोमल ; क्षीण ; विरल ।

**पेला** - पु० [हिं] पेलने की क्रिया या भाव ; उपद्रव ; झगड़ा ; अपराध ; नक़ल ।

**पेलू** - वि० [हिं] पेलनेवाला ।

**पेल्हड़** - पु० [हिं] फोता ।

**पेश** - 1. पु० [सं] रूप ; आकृति ; 2. अव्य० [फ़ा] समक्ष, सामने ; पहले ; यौ० —आमद - बरताव ; —क़दमी - नेतृत्व ; आक्रमण ; किसी काम में

आगे बढ़ना; —क़ब्ज़ - कटार; —कश - भेंट; —कार - वह कर्मचारी जो हाकिम के सामने काग़ज़ात पेश करता है; —ख़ेमा - सेना का अग्रिम भाग; सेना रवाना होने के पहले भेजा जानेवाला सामान; —दस्त - पेशकार; —बंद - घोड़े के चारजामे का बंद; —बंदी - पहले से किया गया प्रबंध; —बीनी - दूरदर्शिता; —राज - पत्थर ढोनेवाला मज़दूर; —वाई - अगवानी; —वाज़ - नाचते समय पहना जानेवाला घाँघरा।

**पेशल** - वि० [सं] कोमल; क्षीण; सुंदर; धूर्त।

**पेशवा** - पु० [फ़ा] नेता; मराठों के प्रधान मंत्रियों की उपाधि।

**पेशा** - पु० [फ़ा] जीविका का ज़रिया, पेट का धंधा; यौ० —वर - कोई पेशा करनेवाला।

**पेशानी** - स्त्री० [फ़ा] ललाट; क़िस्मत; काग़ज़ के ऊपर का ख़ाली हिस्सा।

**पेशाब** - पु० [फ़ा] मूत्र; शुक्र; यौ० —ख़ाना - पेशाब करने का स्थान।

**पेशी** - स्त्री० [फ़ा] पेश होने या किये जाने की क्रिया या भाव; न्यायाधीश के सामने मुक़द्दमे का पेश होना; मुक़द्दमे की सुनवाई।

**पेशीनगोई** - स्त्री० [फ़ा] भविष्यवाणी।

**पेष** - पु० [सं] पीसना।

**पेषण** - पु० [सं] पिसाई; खरल।

**पेखना** - स० [हिं] देखना; पीसना।

**पेहँटा** - पु० [हिं] मके आदि के खेत में होनेवाली एक लता।

**पैंकड़ा** - पु० [हिं] पैर का कड़ा; बेड़ी; ऊँट की नकेल।

**पैंच** - स्त्री० [हिं] धनुष की डोरी; मोर की पूँछ।

**पैंचना** - स० [हिं] सूप से अनाज साफ़ करना; फटकना।

**पैंचा** - पु० [हिं] हेर-फेर, हाथ-उधार।

**पैंजना** - पु० [हिं] पैर का एक तरह का पोला कड़ा।

**पैंजनी** - स्त्री० [हिं] पैजनी।

**पैंठ** - स्त्री० [हिं] खोयी हुई हुंडी के स्थान पर लिखी गयी दूसरी हुंडी; बाज़ार।

**पैंठौर** - पु० [हिं] दूकान; हाट।

**पैंड़** - पु० [हिं] डग; रास्ता; घुड़सार।

**पैंड़ा** - पु० [हिं] रास्ता; रीति।

**पैंत** - स्त्री० [हिं] पासा; दाँव।

**पैंतरा** - पु० [हिं] कुश्ती लड़ने या हथियार आदि चलाने में पैर रखने का ढंग।

**पैंतरी** - स्त्री० [हिं] जूती।

**पैंतालीस** - वि० [हिं] चालीस से पाँच अधिक।

**पैंती** - स्त्री० [हिं] पवित्री, अनामिका में पहनी जानेवाली तांबे की पवित्र मुँदरी।

**पैंतीस** - वि० [हिं] तीस से पाँच अधिक।

**पैंयाँ** - स्त्री० [हिं] पैर, पाँव।

**पैंसठ** - वि० [हिं] साठ से पाँच अधिक।

**पै** - 1. अव्य० [हिं] परंतु; अवश्य; पश्चात्; पास; ओर; 2. प्रत्य० ऊपर; पर; से; 3. स्त्री० दोष; 4. पु० पय।

**पैक** - पु० [फ़ा] पैग़ाम लानेवाला, संदेश-वाहक।

**पैकर** - पु० [हिं] कपास से रूई इकट्ठे करनेवाला; [अंग्रे] पार्सल आदि का सामान बंद करने या बांधने का काम करनेवाला आदमी।

**पैकरी** - स्त्री० [हिं] पाँव का एक गहना।

**पैकार** - पु० [फ़ा] फुटकर माल बेचनेवाला व्यापारी।

**पैकी** - 1. पु० [हिं] बाज़ीगर, नट ; 2. स्त्री० बाज़ीगरी, नटों का पेशा ।
**पैखाना** - पु० [हिं] पायखाना ।
**पैग़ंबर** - पु० [फ़ा] ईश्वर का दूत, नबी ।
**पैग** - पु० [हिं] पग, डग ।
**पैग़ाम** - पु० [फ़ा] सदेशा ; संवाद, यौ०—बर - एलची, दूत ।
**पैग़ामी** - पु० [फ़ा] दूत, संदेशवाहक ।
**पैग़ार** - पु० [फ़ा] गड्ढा ; हल्की लकीर ।
**पैज** - स्त्री० [हिं] टेक ; होड़ ।
**पैजनी** - स्त्री० [हिं] पैर का पोला कड़ा जिसमें बजने के लिए कुछ कंकड़ियाँ रख दी जाती हैं, पैंजनी ।
**पैज़ार** - पु० [फ़ा] जूता ।
**पैठ** - स्त्री० [हिं] प्रवेश ; गति ; सूझ ।
**पैठना** - अ० [हिं] घुसना ; चुभना; जानना ।
**पैठाना** - स० [हिं] प्रवेश कराना ।
**पैठार** - पु० [हिं] प्रवेशद्वार ।
**पैठारी** - स्त्री० [हिं] प्रवेश ; पहुँच ।
**पैड़िक** - वि० [सं] फुसी-संबंधी ।
**पैड़ी** - स्त्री० [हिं] सीढ़ी ; ढालवाँ पथ ।
**पैतरा** - पु० [हिं] वार करने का ढंग, पैंतरा ; चरण-चिन्ह ; यौ०—पैतरेबाज़ - चालबाज़ ; पैतरेबाज़ी - चालबाज़ी ।
**पैतला** - वि० [हिं] उथला ।
**पैतामह** - वि० [सं] पितामह-संबंधी ; पितामह से प्राप्त ; ब्रह्मा से प्राप्त ।
**पैतृक** - 1. वि० [सं] पिता का ; पूर्वजों का ; मौरूसी ; 2. पु० पितरों के निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध ।
**पैत्त, पैत्तिक** - वि० [सं] पित्तजनित ।
**पैत्तल** - वि० [सं] पीतल का बना हुआ ।
**पैदल** - वि० [हिं] पाँव-पाँव चलनेवाला ; पैदल सैनिक ; शतरंज का एक मोहरा ।
**पैदा** - 1. वि० [फ़ा] उत्पन्न ; घटित ; [हिं] शतरंज का एक मोहरा ; 2. स्त्री० आय ; यौ० —वार - खेत की उपज ।
**पैदाइश** - स्त्री० [फ़ा] उत्पत्ति ; प्रादुर्भाव ।
**पैदाइशी** - वि० [फ़ा] जन्मजात ; सहज ।
**पैना** - 1. वि० [हिं] तेज़ ; तीक्ष्ण ; भीतर तक जानेवाला ; 2. पु० बैल हाँकने की छड़ी ; अकुश ।
**पैनाना** - स० [हिं] छुरी आदि की धार तेज़ करना ।
**पैबंद** - स्त्री० [फ़ा] थिगाली ; जोड़ ।
**पैबंदी** - वि० [फ़ा] पैबंद लगाकर तैयार किया हुआ ।
**पैमक** - स्त्री० [हिं] कलाबत्तू की सुनहरी या रूपहली डोरी ।
**पैमाइश** - स्त्री० [फ़ा] ज़मीन मापने की क्रिया ।
**पैमाना** - पु० [फ़ा] मानदंड ।
**पैयाँ** - स्त्री० [हिं] पैर, पाँव ।
**पैया** - पु० [हिं] सारहीन अन्न ; अकिंचन मनुष्य ; पहिया ।
**पैर** - पु० [हिं] चरण ; चरण-चिन्ह ; खलिहान ; यौ०— उठान - कुश्ती का एक दाँव ; —गाड़ी - पैर से चलायी जानेवाली गाड़ी (साइकिल) ; मु०—उखड़ जाना - पराजित होना ; —छूना - पाँव पड़ना, दीनता प्रगट करना ; — जमना - स्थिर होना, दृढ़ होना ।
**पैरना** - अ० [हिं] तैरना ।
**पैरवी** - स्त्री० [फ़ा] अनुगमन ; मुक़द्दमे की देखरेख ; कोशिश ; यौ०— कार - पैरवी करनेवाला ।
**पैरा** - पु० [हिं] क़दम ; आगमन ; पैर में पहनने का एक प्रकार का कड़ा ; दक्षिण भारत में होनेवाली एक तरह की कपास ; [अंग्रेज़ी] लेख आदि का वह अंश जिसमें कोई एक बात पूरी हो जाय ।
**पैराई** - स्त्री० [हिं] तैरने की क्रिया या भाव ।

**पैराक** - पु० [हिं] तैरनेवाला, तैराक ।

**पैराना** - स० [हिं] तैरने में किसीको प्रवृत्त करना ; तैराना ।

**पैराव** - पु० [हिं] नदी आदि का वह स्थान जिसे केवल तैरकर पार किया जा सके ।

**पैरी** - स्त्री० [हिं] पीढ़ी ; सीढ़ी ; पैर में पहना जानेवाला काँसे आदि का एक चौड़ा गहना, पैकरी ।

**पैला** - 1. वि० [हिं] परला ; दूसरा ; 2. पु० अन्न नापने का पात्र ; दूध या दही आदि ढंकने का पात्र ।

**पैली** - स्त्री० [हिं] अनाज या तेल आदि नापने का बर्तन ।

**पैवंद** - पु० [फ़ा] चकती ; थिगली ; पैवंद ; यौ० —कार - पैवंद लगानेवाला ।

**पैवंदी** - स्त्री० [फ़ा] पैवंद लगाकर तैयार किया हुआ ; कलमी ; संकर ; पैवंदी ।

**पैवस्त** - वि० [फ़ा] समाया हुआ ।

**पैशल्य** - पु० [सं] कोमलता ।

**पैशाच** - वि० [सं] पिशाच-संबंधी ; पिशाच के योग्य ।

**पैशाचिक** - वि० [सं] पिशाच-संबंधी ; राक्षसी ; क्रूरतापूर्ण ।

**पैशाची** - स्त्री० [सं] रात्रि ; प्राकृत भाषा का एक भेद ।

**पैशुन, पैशुन्य** - पु० [सं] चुग़लख़ोरी ; दुष्टता ।

**पैष्ट** - वि० [सं] आटे का बनाया हुआ ।

**पैसना** - अ० [हिं] घुसना, प्रविष्ट होना ।

**पैसरा** - पु० [हिं] झमेला, झंझट ।

**पैसा** - पु० [हिं] तांबे का एक सिक्का, एक आने का चौथा अंश ; धन ।

**पैसार** - पु० [हिं] प्रवेश ; घुसने का मार्ग ।

**पैहम** - अव्य० [फ़ा] निरंतर ; लगातार ।

**पैहारा** - पु० [हिं] कपास से रूई इकट्ठी करनेवाला ।

**पैहारी** - वि० [हिं] केवल दूध पीकर रहनेवाला ।

**पों** - स्त्री० [अनु] भोंपा ; भोंपे की आवाज़ ; अपानवायु निकलने का शब्द ।

**पोंकना** - अ० [हिं] पतला दस्त होना ; बहुत अधिक डरना ।

**पोंगरा** - पु० [हिं] बालक ; बच्चा ।

**पोंगली** - स्त्री० [हिं] बाँस ।

**पोंगा** - 1. पु० [हिं] बाँस की नली; टीन आदि का चोंगा ; 2. वि० खोखला ; मूर्ख ।

**पोंगी** - स्त्री० [हिं] छोटी नली ; तुमड़ी ।

**पोंछ** - स्त्री० [हिं] पूंछ, दुम ।

**पोंछन** - पु० [हिं] किसी वस्तु का पोंछने से निकला हुआ भाग ।

**पोंछना** - 1. स० [हिं] झाड़ना ; साफ़ करना ; 2. पु० पोंछने के काम आनेवाला कपड़ा ।

**पोंटा** - पु० [हिं] नाक का मल, नेटा ।

**पो** - वि० [सं] पवित्र ; शुद्ध करनेवाला ।

**पोआ** - पु० [हिं] साँप का छोटा बच्चा, सँपोला ।

**पोआना** - स० [हिं] किसीसे पोने का काम कराना ; रोटी बेल-बेलकर पकानेवाले को देना ।

**पोइया** - स्त्री० [हिं] घोड़े की सरपट चाल ।

**पोइस** - स्त्री० [हिं] सरपट ।

**पोई** - स्त्री० [हिं] एक लता ; अंकुर ; ईख का कल्ला ; गेहूँ या ज्वार आदि का नरम पौधा ।

**पोकना** - अ० [हिं] पोंकना ।

**पोख** - पु० [हिं] पालन-पोषण करने का संबंध ।

**पोखना** - 1. स० [हिं] पालन-पोषण करना ; 2. अ० ब्याने का समय निकट आने पर गाय-भैंस आदि का बदन ढीला पड़ना ।

**पोगंड** - 1. पु० [सं] पाँच से दस वर्ष तक का बालक ; 2. वि० अल्पवयस्क ।

**पोच** - 1. वि० [हिं] नीच : तुच्छ : 2. स्त्री० नीचता ; बुरी बात ।

**पोची** - स्त्री० [हिं] नीचता ।

**पोट** - 1. स्त्री० [हिं] गठरी ; राशि ; 2. पु० [सं] घर की नींव ; एक में मिलाना ।

**पोटना** - स० [हिं] समेटना ; अपने हाथ में करना ।

**पोटरी, पोटली** - स्त्री० [हिं] छोटी गठरी ।

**पोटा** - 1. पु० [हिं] पेट की थैली ; आँख की पलक ; उँगली का सिरा ; हिम्मत ; नाक का मल ; 2. स्त्री० [सं] दासी ; पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री ; स्त्री और पुरुष के चिन्हों से युक्त प्राणी ।

**पोटिक** - पु० [सं] फोड़ा ।

**पोटी** - स्त्री० [सं] गुदा ; घड़ियाल की जाति का एक जलजंतु ; [हिं] पेट की थैली ।

**पोट्ट** - स्त्री० [सं] खोपड़ी की ऊपरवाली हड्डी ।

**पोढ़ा** - वि० [हिं] दृढ़ ; कठिन ।

**पोढ़ाना** - 1. अ० [हिं] दृढ़ होना ; 2. स० पुष्ट बनाना ।

**पोत** - 1. पु० [सं] जहाज़ ; जानवर का बच्चा ; दस वर्ष की उम्र का हाथी ; कपड़ा ; घर या मकान की नींव ; कोंपल ; झिल्ली-रहित भ्रूण ; यौ०— धारी - जहाज़ का मालिक ; —भंग - जहाज़ का चट्टान से टकराकर नष्ट हो जाना ; —वणिक - जहाज़ के द्वारा व्यापार करनेवाला व्यवसायी ; —वाह - नाव खेनेवाला ; [हिं] कपड़े की बनावट ; तरीका ; लगान ; अवसर ; 2. स्त्री० काँच का छोटा दाना ; यौ०— दार - खज़ानची : पारखी : मु०—पूरा करना - जैसे-तैसे कोई काम पूरा करना ।

**पोतड़ा** - पु० [हिं] छोटे बच्चों के नीचे बिछाया जानेवाला कपड़ा ; गुदड़ी ।

**पोतना** - 1. स० [हिं] चुपड़ना, लेप करना : मिट्टी या गोबर आदि से लीपना ; 2. पु० पोतने के काम आनेवाला कपड़ा या कूँची ।

**पोतला** - पु० [हिं] पराठा ।

**पोता** - पु० [हिं] बेटे का बेटा, पौत्र ; अंड-कोष ; लगान ; पोतने का कपड़ा या चूना फेरने के काम आनेवाली कूँची ; कलेजा ।

**पोताई** - स्त्री० [हिं] पोतने का काम ।

**पोतारी** - स्त्री० [हिं] पोतने के काम आनेवाला कपड़ा ।

**पोतिया** - पु० [हिं] तंबाकू, चूना आदि रखने की थैली ; एक तरह का खिलौना ; नहाने के वक्त पहनने का कपड़े का टुकड़ा ।

**पोती** - स्त्री० [हिं] पौत्री ।

**पोत्र** - पु० [सं] सूअर के मुँह तथा हल का अग्रभाग ; नौका ; वज्र ; वस्त्र ।

**पोत्रायुध, पोत्री** - पु० [सं] सूअर ।

**पोथकी** - स्त्री० [सं] पलकों पर निकल आनेवाले सरसों के बराबर लाल-लाल दाने ।

**पोथा** - पु० [हिं] काग़ज़ की बड़ी गड्डी ; बड़ी पोथी ।

**पोथी** - स्त्री० [हिं] पुस्तक ; लहसुन की गाँठ ।

**पोदना** - पु० [हिं] एक छोटी चिड़िया ; नाटा आदमी ।

**पोदीना** - पु० [हिं] पुदीना ।

**पोना** - स० [हिं] लोई से रोटी बनाना ; गूँथना ।

**पोप** - पु० [अं०] ईसाइयों के रोमन-कैथोलिक संप्रदाय का प्रधान धर्माचार्य ; यौ० —लीला - धर्म का आडंबर फैलाना।

**पोपला** - वि० [हिं] बिना दाँत का (मुँह) ; जिसमें पोल हो, खोखला ।

**पोपलाना** - अ० [हिं] पोपला होना ।

**पोया** - पु० [हिं] कोंपल : सँपोला ; नन्हा बच्चा ।

**पोर** - स्त्री० [हिं] उँगली की गाँठ ; उँगली के दो गाँठों के बीच का भाग ; ईख या बाँस आदि के दो गाँठों के बीच का भाग; पीठ।

**पोरा** - पु० [हिं] लकड़ी का गोल टुकड़ा या कुंदा ; मोटा और ठिंगना आदमी ।

**पोरिया** - स्त्री० [हिं] छल्ले की तरह का एक गहना जो हाथ की उँगलियों की पोरों पर पहना जाता है ।

**पोल** - 1. पु० [सं] पुंज, ढेर ; 2. स्त्री० [हिं] अवकाश; खोखलापन ; प्रवेशद्वार ; यौ०—दार - पोला, खोखला ; मु०—खुलना - किसीका छिपा हुआ दोष या रहस्य प्रकट होना ।

**पोलक** - पु० [हिं] बिगड़े हाथी को डराने की एक तरह की मशाल जो बाँस में पयाल बाँधकर बनायी जाती है।

**पोला** - 1. वि० [हिं] खोखला ; निस्सार ; पुलपुला ; 2. पु० परेती पर सूत लपेटने से तैयार होनेवाला लच्छा ।

**पोलरी** - स्त्री० [हिं] सोनारों का एक आला।

**पोलिका, पोली** - स्त्री० [सं] एक प्रकार की पूरी, पूआ ।

**पोलिया** - स्त्री० [हिं] औरतों के पैर में पहनने का एक पोला गहना ।

**पोश** - 1. पु० [फ़ा] कपड़ा 2. वि० पहननेवाला ।

**पोशाक** - स्त्री० [फ़ा] पहनावा ।

**पोशीदगी** - स्त्री० [फ़ा] छिपाव ।

**पोशीदा** - वि० [फ़ा] गुप्त ।

**पोष** - पु० [सं] पालन ; पुष्टि ; वृद्धि ; संतोष ।

**पोषक** - पु० [सं] पोषण करनेवाला ; सहायक ।

**पोषण** - पु० [सं] पालन ; वर्द्धन ।

**पोषध** - पु० [सं] उपवास या उपवास करने का दिन ; व्रत ।

**पोषना** - स० [हिं] पालना ।

**पोषित** - वि० [सं] पाला हुआ ।

**पोष्य** - वि० [सं] पालने योग्य ; अभ्युदय करनेवाला ; यौ०—पुत्र, सुत - दत्तक ।

**पोसती** - पु० [हिं] अफ़ीमची ।

**पोसना** - स० [हिं] पालन करना ; छिपाना ; पोंछना ।

**पोस्त** - पु० [फ़ा] चमड़ा ; छिलका ; छाल ; तह ; अफ़ीम का पौधा ; इस पौधे का डोंड़ा ।

**पोस्ता** - पु० [हिं] अफ़ीम का पौधा ।

**पोस्ती** - पु० [फ़ा] अफ़ीमची ; पोस्त को भिगोकर उसका पानी पीनेवाला ; काहिल आदमी ।

**पोस्तीन** - पु० [फ़ा] बालदार चमड़े का कोट ।

**पोहना** - 1. स० [हिं] पिरोना ; छेदना ; लगाना ; जमाना ; 2. वि० घुसनेवाला।

**पोहर** - पु० [हिं] चरागाह ; चरी।

**पोहा** - पु० [हिं] चौपाया ।

**पोहिया** - पु० [हिं] चरवाहा ।

**पौंचा** - पु० [हिं] साढ़े पाँच का पहाड़ा ।

**पौंड़ा** - पु० [हिं] मोटे छिलके और अधिक रसवाली एक प्रकार की मोटी ईख ।

**पौंढ़ी, पौंरी** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी ; पाँवड़ी ।

**पौंरना** - अ० [हिं] तैरना ।

**पौ** - स्त्री० [हिं] प्रातःकाल का प्रकाश ; प्याऊ ; पासे का एक दाँव ; मु०—

फटना - तड़का होना ; —बारह होना - लाभ का मौका मिलना ।
**पौआ** - पु० [हिं] सेर का चौथा हिस्सा ।
**पौगंड** - 1. पु० [सं] पाँच से सोलह वर्ष की अवस्था ; 2. वि० बालकों-जैसा ।
**पौठ** - स्त्री० [हिं] ज़मीन का एक तरह का बंदोबस्त ।
**पौढ़ना** - अ० [हिं] लेटना ; झूलना ।
**पौढ़ाना** - स० [हिं] लेटाना ; झुलाना ।
**पौत्तलिक** - पु० [सं] मूर्तिपूजक ।
**पौत्र** - 1. वि० [सं] पुत्र-संबंधी ; 2. पु० बेटे का बेटा ।
**पौत्री** - स्त्री० [सं] पोती ; दुर्गा ।
**पौद** - स्त्री० [हिं] छोटा पौधा ; संतान ; पाँवड़ा ।
**पौदर** - स्त्री० [हिं] पैर का निशान ; पगडंडी ; कोल्हू के चारों ओर बैल के घूमने का मार्ग ।
**पौदा** - पु० [हिं] पौधा ; बुलबुल की कमर में बाँधा जानेवाला फुँदना ।
**पौध** - स्त्री० [हिं] पैदाइश ; पौद ।
**पौचन** - स्त्री० [हिं] खाना परसने का मिट्टी का बरतन ।
**पौधा** - पु० [हिं] छोटा पेड़ ; नया पेड़ ।
**पौन** - 1. स्त्री० [हिं] वायु ; प्राण ; प्रेत ; 2. वि० तीन-चौथाई ।
**पौना** - पु० [हिं] पौन का पहाड़ा ; लोहे आदि की कलछी ।
**पौनार** - स्त्री० [हिं] कमल की नाल ।
**पौनी** - स्त्री० [हिं] नाई, धोबी आदि प्रजा ।
**पौमान** - पु० [हिं] जलाशय ; पवमान ; चंद्रमा ।
**पौर** - 1. स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी ; 2. वि० [सं] पुर-संबंधी ; नगर का ; पेटू ; 3. पु० पुरवासी ; यौ०—कन्या - नगर की स्त्री, नागरी ; —कार्य - जनता का कार्य ; —जन - नागरिक ; —जनपद - नगर और जनपद के निवासी ।
**पौरना** - अ० [हिं] तैरना ।
**पौरांगना** - स्त्री० [सं] नगर की स्त्री ।
**पौरा** - पु० [हिं] क़दम ; आगमन ।
**पौराणिक** - 1. वि० [सं] पुराणों का जानकार ; पुराण-संबंधी ; 2. पु० पुराणवाचक ।
**पौरिक** - पु० [सं] नागरिक ।
**पौरिया** - पु० [हिं] द्वारपाल ।
**पौरी** - स्त्री० [सं] अंतःपुर में रहनेवाले सेवकों की भाषा ; [हिं] ड्योढ़ी ; खड़ाऊँ ।
**पौरुष** - 1. वि० [सं] पुरुष-संबंधी ; 2. पु० पुरुषत्व ; पुरुषार्थ ; शुक्र ; उद्यम ; पुरसा ।
**पौरुषेय** - वि० [सं] पुरुष-संबंधी ; पुरुष का बनाया हुआ ।
**पौरू** - स्त्री० [हिं] एक तरह की ज़मीन ।
**पौरेय** - वि० [सं] नगर के समीप का (स्थान) ; नागर ।
**पौरोहित्य** - पु० [सं] पुरोहित का पद या कर्म ।
**पौर्णमास** - 1. वि० [सं] पूर्णिमा-संबंधी ; 2. स्त्री० पूर्णिमा ।
**पौर्णमासी** - स्त्री० [सं] पूर्णिमा, पूनो ; प्रतिपदा ।
**पौर्वापर्य** - पु० [सं] पूर्वापर का भाव ; अनुक्रम ।
**पौल** - स्त्री० [हिं] रास्ता ; सिंहद्वार ।
**पौलना** - स० [हिं] काटना ।
**पौला** - पु० [हिं] बिना खूँटी की खड़ाऊँ ।
**पौलि** - पु० [सं] कम भुना हुआ अन्न ; कम भुने हुए अन्न की रोटी ।

**पौड़ी** - स्त्री० [हिं] ड्योढ़ी ; पैर का एड़ी से पंजे तक का भाग ; चरणचिन्ह ।

**पौवा** - पु० [हिं] सेर का चौथा भाग, पौआ ।

**पौष** - पु० [सं] पूस का महीना; एक त्योहार ; युद्ध ।

**पौष्टिक** - वि० [सं] शक्तिवर्धक ; पुष्टिकर ।

**पौसरा, पौसला** - पु० [हिं] प्याऊ ।

**पौसार** - स्त्री० [हिं] करघे में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पैर से दबाने पर राछ ऊँचा-नीचा होता है ।

**पौसेरा** - पु० [हिं] एक पाव का बाट ।

**प्याऊ** - पु० [हिं] पौसरा, वह स्थान जहाँ प्यासों को धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है।

**प्याज़** - पु० [फ़ा] उत्कट गंधयुक्त तरकारी के काम आनेवाला एक मूल।

**प्यादा** - पु० [फ़ा] पैदल चलनेवाला सिपाही; दूत; पैदल; यौ० —पा - पाँव-पाँव, पैदल; —पाई - पैदल चलना ।

**प्यायन** - 1. पु० [सं] वृद्धि; 2. वि० शक्तिवर्धक ।

**प्यायित** - वि० [सं] जिसकी वृद्धि हुई हो; जिसकी शक्ति बढ़ गयी हो; जो तृप्त किया गया हो ।

**प्यार** - पु० [हिं] प्रेम; प्रेमसूचक स्पर्श (चुंबन आदि) ; लालन ।

**प्यारा** - वि० [हिं] प्रिय; अच्छा लगनेवाला; महँगा ।

**प्याला** - पु० [फ़ा] कटोरा ; पीने का पात्र ; जुलाहों की नरी भिगोने का मिट्टी का बर्तन।

**प्यावना** - स० [हिं] पिलाना ।

**प्यास** - स्त्री० [हिं] पानी पीने की इच्छा, तृषा ; किसी वस्तु की प्रबल चाह ।

**प्यासा** - वि० [हिं] जिसे प्यास लगी हो।

**प्र** - उप० [सं] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर आरंभ, शक्ति, आधिक्य, उत्पत्ति, वियोग, उत्कर्ष, शुद्धि, इच्छा, शांति, पूजा आदि का द्योतन करता है।

**प्रकंप** - पु० [सं] कँपकँपी; थरथराहट ।

**प्रकच** - वि० [सं] जिसके बाल खड़े हों ।

**प्रकट** - 1. वि० [सं] प्रत्यक्ष; स्पष्ट; प्रादुर्भूत; व्यक्त; 2. अव्य० सबके सामने ।

**प्रकटन** - पु० [सं] प्रकट करने या होने की क्रिया ।

**प्रकटित** - वि० [सं] प्रकाशित, प्रकट किया हुआ ।

**प्रकटीकरण** - पु० [सं] प्रकट करना या होना।

**प्रकथन** - पु० [सं] घोषित करना ।

**प्रकर** - पु० [सं] समूह; अगरु ; सहायता ; मैत्री ; गुलदस्ता ; सम्मान ।

**प्रकरण** - पु० [सं] प्रसंग; परिच्छेद; निर्माण; वर्णन; कर्तव्य का विधान (मीमांसा) ; अवसर ।

**प्रकरी** - स्त्री० [सं] रंगशाला ; एक तरह का गान ; आँगन ; चौराहा ।

**प्रकर्ष** - पु० [सं] उत्कर्ष; उत्तमता; अतिरेक; खींचने की क्रिया; शक्ति; विस्तार; विशेषता।

**प्रकर्षक** - पु० [सं] खींचनेवाला ; कामदेव ।

**प्रकल्पित** - वि० [सं] निर्मित; स्थिर किया हुआ ।

**प्रकांड** - 1. पु० [सं] वृक्ष का तना; शाखा; बाहु के ऊपर का भाग; 2. वि० उत्तम ; सर्वश्रेष्ठ; बहुत बड़ा ।

**प्रकाम** - वि० [सं] यथेष्ट, काफ़ी; जिसमें कामवासना की अधिकता हो ।

**प्रकार** - पु० [सं] भेद; रीति; सादृश्य; विशेषता ; तरह ; प्राकार।

**प्रकाश** - पु० [सं] आलोक; धूप; तेज; विकास; आविर्भाव; किसी ग्रंथ या

पुस्तक का कोई विभाग; प्रसिद्धि; अट्टहास; पीतल।

**प्रकाशक** - 1. वि० [सं] चमकीला; प्रकट करनेवाला; अभिव्यक्त करनेवाला; प्रसिद्ध; 2. पु० पुस्तक आदि को छपवाकर प्रकट करनेवाला; आविष्कर्ता; व्याख्या करनेवाला।

**प्रकाशन** - 1. पु० [सं] आलोकित करना; प्रकट करना; विज्ञापन; 2. वि० प्रकाशित करनेवाला।

**प्रकाशित** - वि० [सं] प्रकाशयुक्त; प्रकट या आलोकित किया हुआ; छपवाकर प्रकट किया हुआ; विज्ञापित।

**प्रकिरण** - पु० [सं] फैलाना, बिखेरना; मिश्रण।

**प्रकीर्ण** - 1. वि० [सं] बिखेरा हुआ; मिश्रित; अस्त-व्यस्त किया हुआ; क्षुब्ध; परिशिष्ट; फुटकल; 2. पु० किसी वस्तु या ग्रंथ का कोई परिच्छेद; बिखेरना; विक्षेप; विस्तार; चँवर; फुटकल वस्तुओं का संग्रह।

**प्रकीर्णक** - पु० [सं] चामर; अध्याय; विस्तार।

**प्रकीर्तन** - पु० [सं] प्रशंसा; घोषणा; गुण-गान।

**प्रकुपित** - वि० [सं] अधिक क्रुद्ध।

**प्रकृत** - वि० [सं] आरम्भ; जिसका प्रसंग छिड़ा हो; पूरा किया हुआ; नियुक्त; इच्छित; शुद्ध; अविकृत; महत्वपूर्ण; रुचिकर; यथार्थ।

**प्रकृतार्थ** - 1. पु० [सं] यथार्थ अभिप्राय; 2. वि० असल।

**प्रकृति** - स्त्री० [सं] स्वभाव; जगत का उपादान कारणरूप मूलतत्त्व (सांख्य); माया; परमात्मा; पंच महाभूत; स्वामी, अमात्य आदि राज्यांग; प्रजा; सदा बना रहनेवाला मूल गुण या धर्म; स्त्री० माता; आकार-प्रकार; गुणक (गणित); चराचर संसार; यौ०—ज - सहज, स्वाभाविक; —पुरुष - राजमंत्री; प्रकृति और स्रष्टा; —भाव - मूल या अविकृत रूप; —लय - संसार का प्रकृति में मिल जाना, प्रलय; —सिद्ध - सहज, स्वाभाविक; —सुभग - स्वभाव से ही सुंदर; —स्थ - क्षोभ विकारादि से रहित; स्वस्थ।

**प्रकृष्ट** - वि० [सं] आकृष्ट; श्रेष्ठ; खींचा हुआ।

**प्रकोथ** - पु० [सं] सड़ना; दूषित होना; सूखना।

**प्रकोप** - पु० [सं] अति क्रोध; उत्तेजना; विद्रोह; आक्रमण; किसी बीमारी का जोर।

**प्रकोष्ठ** - पु० [सं] पहुँचा, कलाई; बड़ा आँगन; फाटक के पास की कोठरी।

**प्रकोष्ठक** - पु० [सं] प्रासाद के मुख्य द्वार के पास का कमरा।

**प्रक्रम** - पु० [सं] क़दम; सिलसिला; आरंभ; अवसर।

**प्रक्रिया** - पु० [सं] प्रकरण; क्रिया; अमल; संस्कार; उच्च पद; पुस्तक का अध्याय; विशेषाधिकार; विधि; शब्द का प्रयोग या साधन।

**प्रक्षय** - पु० [सं] अंत, विनाश।

**प्रक्षाल** - 1. पु० [सं] प्रायश्चित्त; 2. वि० शुद्ध करनेवाला।

**प्रक्षालन** - पु० [सं] पानी से धोना; साफ करना; शुद्ध करने का साधन।

**प्रक्षालित** - वि० [सं] धोया या साफ किया हुआ।

**प्रक्षिप्त** - वि० [सं] फेंका हुआ; पीछे से जोड़ा या मिलाया हुआ।

**प्रक्षीण** - 1. वि० [सं] विनष्ट; छुप्त; 2. पु० विनाशस्थल।

**प्रक्षेप** - पु० [सं] फेंकना ; ऊपर से मिलाना : ऊपर से मिलायी जानेवाली वस्तु ; क्षेपक ।

**प्रक्षेपण** - पु० [सं] फेंकना ; ऊपर से मिलाना ।

**प्रखर** - वि० [सं] तीक्ष्ण ; प्रचंड ।

**प्रखरता** - स्त्री० [सं] तीक्ष्णता ; प्रचंडता ; उग्रता ।

**प्रख्यात** - वि० [सं] बहुत प्रसिद्ध ; प्रसन्न ।

**प्रख्यान** - पु० [सं] सूचित करना ; सूचना ; अनुभव करना ।

**प्रगंड** - पु० [सं] बाँह या कोहनी से कंधे तक का भाग ।

**प्रगट** - 1. वि० [हिं] प्रकट ; 2. अव्य० प्रकट रूप से ।

**प्रगटना** - 1. अ० [हिं] प्रकट होना ; जन्म लेना ; 2. स० प्रकट करना ।

**प्रगत** - वि० [सं] आगे गया या बढ़ा हुआ ; जो अलग या अधिक दूरी पर हो ।

**प्रगति** - स्त्री० [सं] आगे बढ़ना ; उन्नति ; **यौ०**— शील - आगे बढ़नेवाला ; उन्नतिशील ।

**प्रगल्भ** - वि० [सं] प्रतिभावान ; प्रत्युत्पन्न-मति ; साहसी ; धृष्ट ; प्रौढ़ ; कुशल ; निर्लज्ज ; अभिमानी ।

**प्रगाढ़** - 1. वि० [सं] डुबाया हुआ ; तर किया हुआ ; अत्यधिक ; दृढ़ ; गहरा ; कठिन ; 2. पु० कष्ट ; तपश्चर्या ।

**प्रगाता** - पु० [सं] अच्छा गवैया ।

**प्रगीत** - 1. वि० [सं] गाया हुआ ; 2. पु० गाना ; गीत ।

**प्रगुण** - वि० [सं] उत्तम गुणवाला ; कुशल ; सीधा ; अनुकूल ।

**प्रगृह्य** - 1. वि० [सं] अच्छी तरह ग्रहण करने योग्य ; 2. पु० स्मृति ; वाक्य ।

**प्रग्रह** - पु० [सं] पकड़ना ; नियमन ; बागडोर ; तराजू में लगी हुई रस्सी ; कोड़ा ; किरण ; भुजा ; बंधन ; बंदी ; अगुआ ; अनुग्रह ।

**प्रग्रीव** - पु० [सं] रंगा हुआ बुर्ज ; घर या मकान के चारों ओर का लकड़ी का घेरा ; वातायन ; अस्तबल ; विलासगृह ; रंगभवन ।

**प्रघात** - पु० [सं] मारण ; युद्ध ; पानी बहने का नल ।

**प्रघोष** - पु० [सं] ऊँची ध्वनि ; प्रचंड शब्द ।

**प्रचंड** - वि० [सं] प्रखर ; बहुत क्रोधी ; प्रबल ; भीषण ; अति तेजस्वी ; प्रतापी ; असह्य ।

**प्रचक्र** - पु० [सं] चली हुई सेना ।

**प्रचलन** - पु० [सं] प्रचार ; चलना-फिरना ; हिलना ; पलायन ।

**प्रचलित** - वि० [सं] जिसका चलन हो ; गतिशील ; जो चल चुका हो ; चालू ; जारी ।

**प्रचार** - पु० [सं] प्रयोग ; चलाना ; प्रकट होना ; किसी वस्तु का व्यापक व्यवहार ; आचरण ; चलन ; खेल-कूद का मैदान ; चरागाह ; गति ; मार्ग ।

**प्रचारक** - वि० [सं] प्रचार करनेवाला ; फैलानेवाला ।

**प्रचारित** - वि० [सं] चलाया हुआ ; जिसका प्रचार किया गया हो ; फैलाया हुआ ।

**प्रचुर** - 1. वि० [सं] बहुत अधिक ; बहुत बड़ा ; पूर्ण ; 2. पु० चोर ; **यौ०**— पुरुष - जनाकीर्ण ।

**प्रचुरता** - स्त्री० [सं] प्रचुर होने का भाव, आधिक्य ।

**प्रचेता** - 1. पु० [सं] वरुण ; 2. वि० बुद्धिमान ; चतुर ।

**प्रचोदक** - पु० [सं] प्रेरक ; चलानेवाला ।

**प्रचोदन** - पु० [सं] प्रेरणा; उत्तेजन; आदेश।

**प्रचोदित** - वि० [सं] प्रेरित; उत्तेजित किया हुआ; प्रेषित; घोषित।

**प्रच्छन्न** - 1. वि० [सं] ढका हुआ; छिपा हुआ; 2. पु० चोर दरवाज़ा; खिड़की।

**प्रच्छर्दिका** - स्त्री० [सं] वमन।

**प्रच्छादन** - पु० [सं] ढकने या छिपाने की क्रिया या भाव; उत्तरीय।

**प्रच्छादित** - वि० [सं] ढका हुआ; छिपाया हुआ।

**प्रच्युत** - वि० [सं] पतित; विचलित; झरा हुआ; निष्कासित।

**प्रजंक** - पु० [हिं] पलंग।

**प्रजन** - पु० [सं] संतान उत्पन्न करना; पहले पहल गर्भ धारण करना; जनक।

**प्रजनन** - 1. पु० [सं] संतान उत्पन्न करना; जन्म; वीर्य; संतान; 2. वि० उत्पन्न करनेवाला।

**प्रजरना** - अ० [हिं] भली-भाँति जलना।

**प्रजल्प** - पु० [सं] इधर-उधर की बात, गप।

**प्रजवी** - 1. वि० [सं] वेगवान; 2. पु० दूत।

**प्रजांतक** - पु० [सं] यम।

**प्रजा** - स्त्री० [सं] किसी राज्य या राष्ट्र की जनता; संतान; प्राणी; वीर्य; प्रजनन; यौ०— काम - संतान की कामना; —कार - सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; —तंतु - वंशपरंपरा; वंश; —तंत्र - प्रजा या प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था; —पति - सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; विश्वकर्मा; अग्नि; यज्ञ; जामाता; पिता; कुंभकार; लिंगेन्द्रिय; —पाल, पालक - राजा; —वृद्धि - संतान की बहुलता; —व्यापार - प्रजा की देखभाल; —सत्ता - प्रजातंत्र; —सत्तात्मक - जिसमें शासनसूत्र प्रजा या उसके प्रतिनिधियों के हाथ में हो।

**प्रजागर** - पु० [सं] नींद का अभाव, जागरण; सतर्कता; रक्षक; पहरा देनेवाला; विष्णु।

**प्रजात** - वि० [सं] उत्पन्न।

**प्रजाता** - स्त्री० [सं] प्रसूता स्त्री।

**प्रजारना** - स० [हिं] भली भाँति या पूरी तरह जलाना; उद्दीप्त करना।

**प्रजावती** - स्त्री० [सं] बड़े भाई की स्त्री; गर्भवती; संतानवती।

**प्रजित** - वि० [सं] हाँका हुआ; प्रेरित।

**प्रजुरना** - अ० [हिं] प्रज्वलित होना; प्रकाशित होना।

**प्रज्ञ** - 1. वि० [सं] बुद्धिमान; 2. पु० पंडित, विद्वान।

**प्रज्ञप्ति** - स्त्री० [सं] बुद्धि; संकेत; प्रतिज्ञा; एक देवी; प्रशस्त बुद्धि।

**प्रज्ञा** - स्त्री० [सं] बुद्धि; सरस्वती; विदुषी; यौ०— चक्षु - ज्ञानी; अंधा; बुद्धिरूपी नेत्र; —पारमिता - दान, शील आदि दस पारमिताओं (पराकाष्ठाओं) में से एक; —वाद - विद्वत्तापूर्ण उक्ति; —वान - चतुर; बुद्धिमान; —हीन - निर्बुद्धि; मूर्ख।

**प्रज्ञात** - वि० [सं] अच्छी तरह जाना हुआ; स्पष्ट; विवेचित; प्रसिद्ध।

**प्रज्ञात्मा** - वि० [सं] परम बुद्धिमान।

**प्रज्ञान** - 1. पु० [सं] बुद्धि; चिह्न; पहचान; 2. वि० पंडित।

**प्रज्ञापन** - पु० [सं] जताना, सूचित करना।

**प्रज्वलन** - पु० [सं] जलना, बलना।

**प्रज्वलित** - वि० [सं] जलता हुआ; जला हुआ; चमकीला।

**प्रण** - 1. पु० [हिं] दृढ़ निश्चय : प्रतिज्ञा ; 2. वि० [सं] प्राचीन, पुराना ।

**प्रणख** - पु० [सं] नाखून का अगला भाग ।

**प्रणत** - वि० [सं] विशेष रूप से झुका हुआ : विनीत ; नम्र ; शरणागत ; चतुर ; यौ०—पाल - शरणागत की रक्षा करनेवाला ।

**प्रणति** - स्त्री० [सं] झुकने की क्रिया या भाव ; प्रणाम ; विनय ; शरणागति ।

**प्रणमन** - पु० [सं] झुकना ; प्रणाम करना ।

**प्रणम्य** - वि० [सं] प्रणाम करने योग्य ; वंद्य ।

**प्रणय** - पु० [सं] प्रेम ; प्रीतियुक्त प्रार्थना ; विश्वास ; मोक्ष ; उदारता ; यौ०—प्रकर्ष - प्रेम का अतिरेक ; —भंग - विश्वासघात ; —वचन - प्रेमपूर्ण वचन ; —विघात - प्रीतियुक्त प्रार्थना की अस्वीकृति ।

**प्रणयन** - पु० [सं] लिखना ; रचना ; निर्माण ; लाना ; करना ; वितरण ; अग्नि का संस्कार करना ।

**प्रणयिनी** - स्त्री० [सं] प्रेमिका ; पत्नी ।

**प्रणयी** - 1. वि० [सं] अनुरागी ; इच्छुक ; घनिष्ठ (संबंध) ; 2. पु० प्रेमी ; पति ; प्रार्थी ; सेवक ; उपासक ।

**प्रणव** - पु० [सं] ओंकार ; परमेश्वर ; ढोल ।

**प्रणवना** - स० [हिं] प्रणाम करना ।

**प्रणष्ट** - वि० [सं] विनष्ट ; मृत ।

**प्रणस** - वि० [सं] बड़ी नाकवाला ।

**प्रणाम** - पु० [सं] झुकना ; नमस्कार ।

**प्रणायक** - पु० [सं] नेता ; सेनापति ।

**प्रणाल** - पु० [सं] पानी बहाने का नाला ।

**प्रणालिका** - स्त्री० [सं] नाली ; अविच्छिन्न क्रम ; परंपरा ।

**प्रणाली** - स्त्री० [सं] परंपरा ; रीति ; परनाला ।

**प्रणिधान** - पु० [सं] रखना ; व्यवहार ; उपयोग ; प्रयत्न ; अभिनिवेश ; योग में एक प्रकार की समाधि ; अर्पण ; कर्म के फल का त्याग ; चित्त की एकाग्रता ; प्रवेश ; प्रार्थना ।

**प्रणिधि** - पु० [सं] भेद लेना ; गुप्तचर भेजना ; गुप्तचर ; अनुचर ; याचन ; अवधान ।

**प्रणिधेय** - पु० [सं] गुप्तचर भेजना ; नियुक्ति ; प्रयोग ।

**प्रणिपात** - पु० [सं] प्रणाम करना ; चरणों पर गिरना ।

**प्रणीत** - 1. वि० [सं] रचा हुआ ; निबद्ध ; फेंका हुआ ; अलग किया हुआ ; प्रिय ; प्रवेशित ; विहित ; संस्कृत ; 2. पु० मंत्र द्वारा संस्कृत अग्नि ; पकाया हुआ पदार्थ ।

**प्रणुत** - वि० [सं] स्तुति किया हुआ ।

**प्रणुत्त** - वि० [सं] निष्कासित ।

**प्रणेता** - पु० [सं] निर्माता ; लेखक ; नेता ; किसी सिद्धान्त या मत का प्रवर्तक ।

**प्रणेय** - वि० [सं] ले जाने योग्य ; पथ-प्रदर्शन के योग्य ; अधीन ; करने योग्य ; निश्चय करने योग्य ।

**प्रतन** - वि० [सं] प्राचीन, पुराना ।

**प्रतनु** - वि० [सं] अति क्षीण ; अति सूक्ष्म ; बहुत पतला ; अत्यल्प ; तुच्छ ।

**प्रतप्त** - वि० [सं] विशेष रूप से तपाया हुआ ; पीड़ित ।

**प्रतान** - 1. वि० [सं] रेशेदार ; 2. पु० गिरगी रोग ; प्रतानवान ।

**प्रताप** - पु० [सं] वीरता ; इक़बाल ; तेज ; पराक्रम ; यौ०— वान - प्रतापी ।

**प्रतापी** - वि० [सं] यशस्वी ; प्रतापवाला ; सतानेवाला ।

**प्रतारक** - पु० [सं] ठग, धूर्त ।

**प्रतारण** - पु० [सं] वंचना, ठगी ।

**प्रतारित** - वि० [सं] वंचित, जो ठगा गया हो।

**प्रति** - 1. उप० [सं] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले जुड़कर विरोध, विपरीतता, बदला, वीप्सा, सादृश्य आदि का द्योतन करता है; 2. अव्य० ओर; संबंध में; मुकाबिले में; 3. स्त्री० [हिं] नकल: अदद; हर; यौ०—दिन, वासर - नित्य, रोज़।

**प्रतिकर** - पु० [सं] विस्तीर्णता; विक्षेप; प्रतिशोध।

**प्रतिकर्म** - पु० [सं] बदला; प्रतिकार; शृंगार।

**प्रतिकार** - पु० [सं] वैर निकालना; चिकित्सा; किसी बात के जवाब में किया जानेवाला कार्य।

**प्रतिकूप** - पु० [सं] खाई।

**प्रतिकूल** - 1. वि० [सं] विरुद्ध पक्ष का अवलंबन करनेवाला; विपरीत; 2. पु० विरोध; प्रतिरोध।

**प्रतिकूला** - स्त्री० [सं] सपत्नी, सौत।

**प्रतिकृत** - 1. वि० [सं] जिसका प्रतिकार या प्रतिशोध किया गया हो; 2. पु० प्रतिकार; विरोध।

**प्रतिकृति** - स्त्री० [सं] प्रतिमा; सादृश्य; बदला; प्रतिनिधि।

**प्रतिकृष्ट** - वि० [सं] निन्द्य; दो बार जोता हुआ (खेत)।

**प्रतिक्रिया** - स्त्री० [सं] प्रतिकार; किसी कार्य के परिणाम के रूप में होनेवाला कार्य; विरुद्ध या विपरीत दिशा में होनेवाली क्रिया या गति।

**प्रतिक्षण** - अव्य० [सं] प्रत्येक क्षण में; निरंतर।

**प्रतिक्षिप्त** - वि० [सं] प्रेषित; जो बुलाकर लौटा दिया गया हो; जो रोका गया हो; जिसका निराकरण किया गया हो; निंदित; जिसपर झूटा दोष लगाया गया हो।

**प्रतिक्षुत** - पु० [सं] छींक।

**प्रतिक्षेप, प्रतिक्षेपण** - पु० [सं] दूर करना; खंडन; फेंकना; प्रतियोगिता।

**प्रतिख्यात** - वि० [सं] बहुत प्रसिद्ध।

**प्रतिगृहीत** - वि० [सं] अंगीकार किया हुआ; ब्याहा हुआ।

**प्रतिग्रह** - पु० [सं] स्वीकार करना; दान लेना; अनुग्रह; उपहार; ब्याहना; सेना का पिछला भाग; पीकदान।

**प्रतिघ** - 1. पु० [सं] रुकावट; कोप; मूर्छा; विरोध; मार-पीट; शत्रु; 2. वि० शत्रुता करनेवाला।

**प्रतिघात** - पु० [सं] निवारण; आघात के बदले किया गया आघात; वध; रुकावट।

**प्रतिघातन** - पु० [सं] वध; निवारण।

**प्रतिघाती** - पु० [सं] निवारण करनेवाला; बाधक; विरोधी।

**प्रतिच्छाया** - स्त्री० [सं] प्रतिरूप; प्रतिमा; प्रतिबिंब।

**प्रतिछाँई** - स्त्री० [हिं] परछाईं; प्रतिबिंब।

**प्रतिजल्प** - पु० [सं] उत्तर।

**प्रतिज्ञा** - स्त्री० [सं] दृढ़ संकल्प; वादा; अनुमान-वाक्य के पाँच अवयवों में से पहला; अभियोग; अंगीकार; यौ०—पत्र, पत्रक - इकरारनामा; शर्तनामा; —पालन - प्रतिज्ञा की रक्षा या निर्वाह; —भंग - प्रतिज्ञा तोड़ देना; —विवाहित - जिसकी सगाई हो गयी हो।

**प्रतिज्ञात** - वि० [सं] जिसकी या जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गयी हो; स्वीकार किया हुआ।

**प्रतिज्ञान** - पु० [सं] प्रतिज्ञा; स्वीकार।

**प्रतिदान** - पु० [सं] बदला; विनिमय; निक्षेप या धरोहर को वापस करना।

**प्रतिदूत** - पु० [सं] बदले में भेजा हुआ दूत।

**प्रतिद्वंद्व** - पु० [सं] दो तुल्य बलवानों की लड़ाई; शत्रु।

**प्रतिद्वंद्विता** - स्त्री० [सं] प्रतिद्वंद्व का भाव।

**प्रतिद्वंद्वी** - 1. पु० [सं] विपक्षी; शत्रु; 2. वि० प्रतिपक्षी।

**प्रतिधान** - पु० [सं] निराकरण।

**प्रतिध्वनि** - स्त्री० [सं] गूँज।

**प्रतिध्वनित** - वि० [सं] गूँजा हुआ।

**प्रतिनिधि** - पु० [सं] वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से किसी कार्य के लिए नियुक्त किया गया हो; प्रतिरूप; प्रतिमा; जामिन; यौ० —सभा - एसेम्बली।

**प्रतिनियत** - वि० [सं] पहले से स्थिर, पूर्वनिश्चित।

**प्रतिनिर्देश** - पु० [सं] पुनः उल्लेख या कथन करना।

**प्रतिपक्ष** - 1. पु० [सं] विपक्ष; विरोधी; प्रतिवादी; 2. वि० समान।

**प्रतिपक्षी** - पु० [सं] शत्रु; विरोधी; विपक्षी।

**प्रतिपत्ति** - स्त्री० [सं] प्राप्ति; ज्ञान; बुद्धि; स्वीकृति; आदर; उन्नति; संकल्प; प्रसिद्धि; प्रतिपादन; प्रमाण।

**प्रतिपद** - अव्य० [सं] पग-पग पर।

**प्रतिपदा** - स्त्री० [सं] पक्ष की पहली तिथि।

**प्रतिपन्न** - वि० [सं] प्राप्त; आरंभ किया हुआ; स्वीकृत; वादा किया हुआ; पराभूत; अवगत; सम्मानित; प्रमाणित।

**प्रतिपाण** - पु० [सं] जुए में प्रतिपक्षी का लगाया हुआ दाँव।

**प्रतिपादक** - वि०, पु० [सं] निरूपण करनेवाला; उत्पादक; व्याख्या करनेवाला; पूरा करनेवाला।

**प्रतिपादन** - पु० [सं] ज्ञान कराना; किसी विषय का सप्रमाण कथन या स्थापन; दान; लौटाना; आरंभ करना; पूरा करना।

**प्रतिपादित** - वि० [सं] निरूपित; उत्पादित; कथित।

**प्रतिपाद्य** - वि० [सं] प्रतिपादन करने योग्य।

**प्रतिपालक** - पु० [सं] पालक; रक्षक।

**प्रतिपालन** - पु० [सं] पालन करना; प्रतीक्षा करना।

**प्रतिपालित** - वि० [सं] पालित; रक्षित; जिसका अभ्यास या अनुगमन किया गया हो।

**प्रतिपीडन** - पु० [सं] कष्ट के बदले कष्ट देना; पीड़ा पहुँचाना।

**प्रतिपुस्तक** - पु० [सं] किसी पुस्तक या लेख की हस्तलिखित प्रति की नक़ल।

**प्रतिपोषक** - पु० [सं] सहायक; समर्थक।

**प्रतिप्रणाम** - पु० [सं] प्रणाम के उत्तर में किया जानेवाला प्रणाम।

**प्रतिप्रसव** - पु० [सं] अपवाद का अपवाद।

**प्रतिप्रस्थान** - पु० [सं] शत्रु से मिल जाना।

**प्रतिफल** - पु० [सं] प्रतिबिंब; किसीके किये हुए का अनुरूप प्रतिकार; परिणाम; पुरस्कार।

**प्रतिफलित** - वि० [सं] प्रतिबिंबित; जिसका बदला लिया गया हो।

**प्रतिबंध** - पु० [सं] रोक; बाधा; बंधन; नैराश्य; सदा बना रहनेवाला संबंध।

**प्रतिबंधक** - पु० [सं] बाँधने या रोकनेवाला; शाखा।

**प्रतिबंधी** - 1. वि० [सं] बाधा पहुँचानेवाला; रोकने या बाँधनेवाला;

2. स्त्री० आपत्ति : दोनों पक्षों पर लागू होनेवाली दलील।

**प्रतिबद्ध** - वि० [सं] बँधा हुआ ; लगाया हुआ ; जड़ा हुआ ; फँसा हुआ ; हताश।

**प्रतिबिंब** - पु० [सं] परछाईं ; प्रतिमा ; चित्र ; यौ०— वाद - जीव को ईश्वर का प्रतिबिंब मानने का सिद्धान्त (वेदांत)।

**प्रतिबिंबित** - वि० [सं] जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो; दर्पण आदि में प्रतिफलित।

**प्रतिबोध** - पु० [सं] जागरण ; ज्ञान ; स्मृति ; होश में आना।

**प्रतिबोधक** - वि० [सं] जगानेवाला ; ज्ञान करानेवाला ; स्मरण दिलानेवाला।

**प्रतिभट** - पु० [सं] शत्रु ; शत्रुपक्ष का योद्धा ; प्रतिद्वंद्वी।

**प्रतिभा** - स्त्री० [सं] दीप्ति ; प्रभा ; बुद्धि ; विलक्षण बौद्धिक शक्ति ; उपयुक्तता ; यौ०—वान, शाली - जिसमें प्रतिभा हो।

**प्रतिभान** - पु० [सं] प्रभा ; बुद्धि ; प्रगल्भता; मालूम होना।

**प्रतिभास** - स्त्री० सं] प्रकाश ; आभास ; भ्रम ; मिथ्या ज्ञान।

**प्रतिभू** - पु० [सं] जमानत करनेवाला, जामिन।

**प्रतिमंडल** - पु० [सं] सूर्य आदि के चारों ओर का घेरा, परिवेश।

**प्रतिमा** - स्त्री० [सं] मिट्टी आदि की बनायी हुई देवता आदि की मूर्ति ; अनुकृति ; चित्र ; प्रतिबिंब ; सादृश्य ; परिमाण ; चिन्ह ; यौ०— गत - जो प्रतिमा या चित्र में स्थित हो ; —पूजा - मूर्ति-पूजा।

**प्रतिमान** - पु० [स] परछाईं ; प्रतिमा ; चित्र ; नमूना ; हाथी के कुंभस्थल का निचला भाग ; बटखरा ; विरोधी।

**प्रतिमाला** - स्त्री० [सं] स्मरणशक्ति की जाँच के लिए दो आदमियों का बारी-बारी से श्लोक-पाठ करना।

**प्रतिमुख** - 1. पु० [सं] नाटक की पाँच संधियों में से एक ; मुख का प्रतिबिंब ; उत्तर ; 2. वि० उपस्थित ; निकटस्थ।

**प्रतिमूर्ति** - स्त्री० [सं] पत्थर या धातु आदि की बनायी हुई देवता आदि की मूर्ति ; अनुकृति।

**प्रतियोग** - पु० [सं] विरोध ; विरुद्ध संबंध ; मारक ; सहयोग।

**प्रतियोगिता** - स्त्री० [सं] होड़ ; शत्रुता ; प्रतिद्वंद्विता।

**प्रतियोगी** - पु० [सं] शत्रु ; प्रतिद्वंद्वी ; बाधक ; वह जिसका अभाव हो ; हिस्सेदार।

**प्रतिरक्षण** - पु० } [सं] रक्षा।
**प्रतिरक्षा** - स्त्री० }

**प्रतिरथ** - पु० [सं] मुकाबिले में लड़नेवाला; शत्रुपक्ष का योद्धा।

**प्रतिरुद्ध** - वि० [सं] रोका हुआ ; जिसे बाधा पहुँचायी गयी हो ; जो घेर लिया गया हो।

**प्रतिरूप** - 1. पु० [सं] प्रतिमूर्ति ; चित्र ; प्रतिनिधि ; 2. वि० एक ही जैसे रूपवाला ; सुंदर ; उपयुक्त।

**प्रतिरोध** - पु० [सं] रोक ; प्रतिबंध ; तिरस्कार ; डाका ; घेरा डालना ; चोरी ; विरोधी।

**प्रतिलाभ** - पु० [सं] प्राप्ति; पुनः प्राप्त करना ; लाभ के बदले होनेवाला लाभ।

**प्रतिलिपि** - स्त्री० [सं] किसी लिखी हुई चीज़ की नक़ल।

**प्रतिलोम** - 1. वि० [सं] विपरीत ; अनुलोम का उलटा ; नीच ; अप्रिय ; प्रतिकूल ; बायाँ ; 2. पु० अप्रिय या हानिकर कार्य ; यौ०— विवाह - ऐसा

विवाह जिसमें वर नीच वर्ण का और कन्या उच्च वर्ण की हो।

**प्रतिवक्ता** - पु० [सं] उत्तर देनेवाला।

**प्रतिवचन** - पु० [सं] उत्तर; प्रतिध्वनि।

**प्रतिवनिता** - स्त्री० [सं] सौत।

**प्रतिवर्तन** - पु० [सं] लौटना; वापस जाना।

**प्रतिवाद** - पु० [सं] वादी की बात का उत्तर, खंडन।

**प्रतिवादी** - पु० [सं] प्रतिवाद या खंडन करनेवाला; मुद्दालेह; शत्रु।

**प्रतिवास** - पु० [सं] पड़ोस; सुगंधि।

**प्रतिवासित** - वि० [सं] बसाया हुआ।

**प्रतिवासी** - पु० [सं] पड़ोसी।

**प्रतिविधान** - पु० [सं] प्रतिकार; एहतियात।

**प्रतिविष** - पु० [सं] विष के प्रभाव को नष्ट करनेवाला पदार्थ।

**प्रतिवेश, प्रतिवेशी** - पु० [सं] पड़ोसी।

**प्रतिवेश्म** - पु० [सं] पड़ोसी का घर।

**प्रतिव्यूह** - पु० [सं] मोर्चाबंदी; समूह।

**प्रतिशब्द** - पु० [सं] प्रतिध्वनि, गूँज।

**प्रतिशासन** - पु० [सं] विरोधी या किसी और का शासन; नौकरों को बुलाकर आज्ञा देना।

**प्रतिशिष्ट** - वि० [सं] जिसका निराकरण किया गया हो; अस्वीकृत; प्रसिद्ध।

**प्रतिशोध** - पु० [सं] प्रतिकार; बदला।

**प्रतिश्याय** - पु० [सं] जुकाम।

**प्रतिश्रवण** - पु० [सं] सुनना; प्रतिज्ञा करना।

**प्रतिश्रुत** - वि० [सं] जिसकी प्रतिज्ञा की गयी हो; सुना हुआ।

**प्रतिश्रुति** - स्त्री० [सं] प्रतिज्ञा; प्रतिध्वनि।

**प्रतिश्रोता** - पु० [सं] वचन या स्वीकृति देनेवाला।

**प्रतिषिद्ध** - वि० [सं] निषिद्ध; जिसका खंडन किया गया हो।

**प्रतिषेध** - पु० [सं] निवारण; **निषेध**; खंडन।

**प्रतिष्टंभ** - पु० [सं] प्रतिबंध; बाधा।

**प्रतिष्ठ** - वि० [सं] प्रसिद्ध।

**प्रतिष्ठा** - स्त्री० [सं] मर्यादा; यश-स्थापन; सम्मान; गौरव; प्रसिद्धि; देवप्रतिमा की स्थापना; स्थान; पृथ्वी; घर।

**प्रतिष्ठान** - पु० [सं] आधार; स्थान; नगर-स्थापन; पैर।

**प्रतिष्ठापन** - पु० [सं] स्थापित करने का काम; पदासीन करना।

**प्रतिष्ठित** - वि० [सं] स्थापित; पदाभिषिक्त; पूरा किया हुआ; निश्चित; विवाहित; प्रयुक्त; जानकार; प्राप्त; प्रसिद्ध; सम्मानित।

**प्रतिसंदेश** - पु० [सं] संदेश के जवाब में कहा गया संदेश।

**प्रतिसंधान** - पु० [सं] जोड़ना; अनुसंधान; उपाय; धनुष पर बाण चढ़ाना; आत्मनियंत्रण।

**प्रतिसंधि** - स्त्री० [सं] वियोग; समाप्ति; दो युगों का संधिकाल; पुनर्जन्म; भाग्य की प्रतिकूलता।

**प्रतिसंविद्** - स्त्री० [सं] किसी विषय का सांगोपांग ज्ञान।

**प्रतिसंहार** - पु० [सं] समेट लेना; त्यागना; किसी वस्तु से दूर रहना।

**प्रतिसम** - वि० [सं] जो समान न हो; जो मुक़ाबिले का हो।

**प्रतिस्पर्धा** - स्त्री० [सं] होड़।

**प्रतिस्पर्धी** - पु० [सं] होड़ लगानेवाला; प्रतिद्वंद्वी।

**प्रतिहत** - वि० [सं] रोका हुआ; दूर किया हुआ; निराश किया हुआ; पराभूत किया हुआ।

**प्रतिहार** - पु० [सं] निवारण ; द्वारपाल ; द्वार ; बाज़ीगर ; यौ०—भूमि - ड्योढ़ी।

**प्रतिहारी** - 1. पु० [सं] द्वारपाल ; 2. स्त्री० द्वारपालिका।

**प्रतिहास** - पु० [सं] हँसने के जवाब में हँसना ; कनेर का वृक्ष।

**प्रतिहिंसा** - स्त्री० [सं] हिंसा के बदले में की जानेवाली हिंसा।

**प्रतीक** - 1. वि० [सं] प्रतिकूल ; उलटा ; 2. पु० अवयव ; भाग ; प्रतिरूप ; प्रतिमा ; मुँह ; किसी चीज़ का आगे का हिस्सा ; विशिष्ट चिन्ह या पहचान।

**प्रतीक्षा** - स्त्री० [सं] इंतज़ारी।

**प्रतीची** - स्त्री० [सं] पश्चिम दिशा।

**प्रतीचीन** - वि० [सं] पश्चिम दिशा का ; पिछला।

**प्रतीच्य** - वि० [सं] पश्चिमी।

**प्रतीत** - वि० [सं] ज्ञात ; प्रसिद्ध ; प्रसन्न ; सम्मानित ; विश्वास किया हुआ ; प्रस्थित ; बुद्धिमान।

**प्रतीति** - स्त्री० [सं] विश्वास ; ज्ञान ; प्रसिद्धि ; आदर ; हर्ष ; प्रस्थान।

**प्रतीप** - 1. वि० [सं] प्रतिकूल ; अप्रिय ; हठी ; बाधक ; विरोधी ; 2. पु० एक अर्थालंकार ; यौ०—दर्शिनी - स्त्री, नारी ; —वचन - खंडन ; प्रतिकूल कथन।

**प्रतीयमान** - वि० [सं] भासमान।

**प्रतीर** - पु० [सं] तट, किनारा।

**प्रतूलिका** - स्त्री० [सं] तोशक, गद्दा।

**प्रतोद** - पु० [सं] अंकुश ; चाबुक।

**प्रतोली** - स्त्री० [सं] चौड़ी सड़क, राजमार्ग ; गली, कूचा ; कौपीन।

**प्रतोष** - पु० [सं] संतोष।

**प्रत्न** - वि० [सं] पुरातन ; परंपरागत ; यौ०—तत्त्व - पुरातत्त्व।

**प्रत्यंग** - 1. पु० [सं] शरीर का कोई गौण अंग ; अध्याय ; अस्त्र ; एक मान ; 2. अव्य० प्रत्येक अंग में।

**प्रत्यंचा** - स्त्री० [सं] धनुष की डोरी।

**प्रत्यक्ष** - 1. वि० [सं] जो आँखों से दिखायी दे ; स्पष्ट ; परोक्ष का उलटा ; 2. पु० किसी ज्ञानेन्द्रिय द्वारा होनेवाला अनुभव ; 3. अव्य० स्पष्टतः ; साफ़-साफ़ ; यौ०—ज्ञान - इंद्रिय और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान ; —दर्शी - साक्षी ; —दृष्ट - प्रत्यक्ष रूप से देखा हुआ ; —फल - साक्षात् फल देनेवाला ; —सिद्ध - प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सिद्ध।

**प्रत्यक्षीकरण** - पु० [सं] किसी इंद्रिय द्वारा ग्रहण करने की क्रिया।

**प्रत्यग्र** - वि० [सं] नया ; ताज़ा ; शुद्ध।

**प्रत्यपकार** - पु० [सं] अपकार के बदले किया जानेवाला अपकार।

**प्रत्यभिज्ञा** - स्त्री० [सं] किसी वस्तु को देखने पर उससे पहले देखी हुई वैसी ही वस्तु का स्मरण हो आना ; पहचान।

**प्रत्यभिज्ञात** - वि० [सं] पहचाना हुआ।

**प्रत्यय** - पु० [सं] विश्वास ; ज्ञान ; शपथ ; आचार ; छिद्र ; निश्चय ; प्रसिद्धि ; वह उपसर्ग-जैसा शब्द जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में जोड़ा जाता है।

**प्रत्ययी** - वि० [सं] विश्वास करनेवाला ; विश्वस्त।

**प्रत्यर्पण** - पु० [सं] गृहीत वस्तु का पुनः दान।

**प्रत्यर्पित** - वि० [सं] लौटाया हुआ।

**प्रत्यवाय** - पु० [सं] ह्रास ; बाधा ; विहित कर्म न करने पर होनेवाला पाप ; विरुद्ध आचरण ; नैराश्य ; परिवर्तन।

**प्रत्यवेक्षण** - पु० [सं] किसी बात के पूर्वापर का विचार करना ; निगरानी।

**प्रत्याख्यान** - पु० [सं] इनकार ; खंडन उपेक्षा ।

**प्रत्यागत** - वि० [सं] वापस आया हुआ ; लौट आया हुआ ।

**प्रत्यागम, प्रत्यागमन** - पु० [सं] लौट आना ; वापस आना ।

**प्रत्याघात** - पु० [सं] आघात के उत्तर में किया जानेवाला आघात ।

**प्रत्यादिष्ट** - वि० [सं] निराकृत ; लांछित ; घोषित ; अस्वीकृत ; पृथक् किया हुआ ; चेताया हुआ ।

**प्रत्यादेश** - पु० [सं] खंडन ; चेतावनी ; आज्ञा ; अस्वीकृति ।

**प्रत्याय** - पु० [सं] कर, टैक्स ।

**प्रत्यायित** - पु० [सं] विश्वस्त प्रतिनिधि या दूत ।

**प्रत्यावर्त्तन** - पु० [सं] लौट आना ।

**प्रत्याशा** - स्त्री० [सं] आशा ।

**प्रत्याश्रय** - पु० [सं] शरण लेने का स्थान ।

**प्रत्यासक्ति** - स्त्री० [सं] निकटता ; अलौकिक प्रत्यक्ष का कारणरूप संबंध ।

**प्रत्याहत** - वि० [सं] हटाया हुआ ; अस्वीकार किया हुआ ।

**प्रत्याहार** - पु० [सं] पीछे खींचना ; हटाना ; इंद्रियों को विषयों से हटाना ; अष्टांग योग के अंतर्गत एक बहिरंग साधन ; प्रलय ।

**प्रत्युत** - अव्य० [सं] इसके विपरीत ; बल्कि ; वरन् ।

**प्रत्युत्तर** - पु० [सं] उत्तर का उत्तर ।

**प्रत्युत्पन्न** - वि० [सं] जो फिर से उत्पन्न हुआ हो ; ठीक समय पर उत्पन्न ; उपस्थित ; यौ०—मति - जिसे उचित उत्तर या *उपाय तत्काल सूझ जाय ; हाज़िर-जवाब ; प्रतिभाशाली ।

**प्रत्युपकार** - पु० [सं] भलाई के बदले में की हुई भलाई ।

**प्रत्युष** - पु० [सं] प्रातःकाल ।

**प्रत्यूष** - पु० [सं] प्रातःकाल ; आठ वसुओं में से एक ; सूर्य ।

**प्रत्यूह** - पु० [सं] विघ्न ; बाधा ।

**प्रत्येक** - वि० [सं] दो या दो से अधिक में से एक-एक, हर एक ।

**प्रथम** - 1. वि० [सं] पहला ; श्रेष्ठ ; प्रधान ; 2. अव्य० पहले ; आगे ।

**प्रथमतः** - अव्य० [सं] सबसे पहले ।

**प्रथमा** - स्त्री० [सं] कर्ताकारक ; मदिरा ।

**प्रथा** - स्त्री० [सं] परिपाटी ; ख्याति ।

**प्रथित** - वि० [सं] प्रसिद्ध ; बढ़ा हुआ ; प्रदर्शित किया हुआ ।

**प्रथिवी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी, भूमि ।

**प्रथुक** - पु० [सं] चिउड़ा ; शावक ।

**प्रद** - वि० [सं] देनेवाला (जैसे, 'आनन्द-प्रद') ।

**प्रदक्षिणा** - स्त्री० [सं] परिक्रमा ।

**प्रदत्त** - वि० [सं] दिया हुआ ।

**प्रदर** - पु० [सं] फटने का भाव ; दरार ; छिद्र ; बाण , स्त्रियों का एक रोग ।

**प्रदर्प** - पु० [सं] भारी घमंड ।

**प्रदर्श** - पु० [सं] रूप ; आदेश ।

**प्रदर्शक** - 1. पु० [सं] दिखानेवाला ; देखनेवाला ; पैगंबर ; सिद्धांत ; 2. वि० दिखलाने या सिखलानेवाला ; भविष्य-वक्ता ।

**प्रदर्शन** - पु० [सं] दिखाने की क्रिया ; सिखलाना ; उदाहरण ; भविष्यकथन ; नज़ारा ।

**प्रदर्शनी** - स्त्री० [सं] नुमाइश ।

**प्रदर्शित** - वि० [सं] दर्शाया हुआ ; सिखलाया हुआ ।

**प्रदल** - पु० [सं] बाण, तीर ।

**प्रदाता** - पु० [सं] दाता; कन्यादान करनेवाला; इंद्र।

**प्रदान** - पु० [सं] देना; कन्यादान; अंकुश; नैवेद्य।

**प्रदाय** - पु० [सं] उपहार, भेंट।

**प्रदाह** - पु० [सं] जलन; ध्वंस।

**प्रदिक्, प्रदिशा** - स्त्री० [सं] दो मुख्य दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा, कोण।

**प्रदीष्ट** - वि० [सं] दिखाया हुआ; नियत किया हुआ; आदिष्ट।

**प्रदीप** - पु० [सं] दीपक; दीपक राग।

**प्रदीपन** - 1. पु० [सं] प्रकाश करना; जलाना; जगाना; 2. वि० प्रकाश करनेवाला; उत्तेजित करनेवाला।

**प्रदीप्त** - वि० [सं] जलाया हुआ; प्रकाशित; जगमगाता हुआ; उत्तेजित; चमकीला।

**प्रदीप्ति** - स्त्री० [सं] प्रकाश; चमक।

**प्रदेय** - 1. वि० [सं] देने योग्य; 2. पु० उपहार, भेंट।

**प्रदेश** - पु० [सं] प्रांत; स्थान; अंगूठे के सिरे से लेकर तर्जनी के सिरे तक की दूरी; दीवार; निश्चय; दिखलाना।

**प्रदेशन** - पु० [सं] परामर्श; दिखलाना; नज़र, भेंट।

**प्रदेशनी** - स्त्री० [सं] तर्जनी।

**प्रदोष** - 1. पु० [सं] भारी दोष; अव्यवस्था; सायंकाल; रात का पहला पहर; 2. वि० बुरा; दुष्ट। -

**प्रद्योत** - पु० [सं] प्रकाशित करना; किरण; प्रभा।

**प्रद्वेष, प्रद्वेषण** - पु० [सं] तीव्र द्वेष; घृणा।

**प्रधन** - 1. पु० [सं] युद्ध; लूट का माल; विनाश; विदारण; 2. वि० बहुत धनी।

**प्रधर्ष, प्रधर्षण** - पु० [सं] अपमान; बलात्कार; आक्रमण।

**प्रधान** - 1. [सं] सबमें बड़ा; मुख्य; 2. पु० प्रकृति (सांख्य); परमात्मा; मंत्री; सेनापति; यौ०—पुरुष - राज्य का सबसे प्रमुख व्यक्ति; —मंत्री - किसी देश का सबसे बड़ा मंत्री।

**प्रधानता** - स्त्री० [सं] प्रधान होने का भाव, मुख्यता।

**प्रधानाध्यापक** - पु० [सं] किसी विद्यालय का प्रमुख अध्यापक, हेडमास्टर।

**प्रधारणा** - स्त्री० [सं] किसी विषय पर बराबर ध्यान जमाये रखना।

**प्रध्वंस** - पु० [सं] विनाश; किसी पदार्थ की अतीतावस्था (सांख्य)।

**प्रध्वंसक** - पु०, वि० [सं] विनाश करनेवाला।

**प्रध्वंसाभाव** - पु० [सं] कारण में कार्य का वह अभाव जो उसकी उत्पत्ति के पीछे होता है।

**प्रध्वस्त** - वि० [सं] विनष्ट।

**प्रनमना, प्रनवना** - स० [हिं] प्रणाम करना।

**प्रनष्ट** - वि० [सं] लुप्त; बुरी तरह नष्ट, भगा हुआ।

**प्रनाम** - पु० [हिं] प्रणाम।

**प्रपंच** - पु० [सं] विस्तार; संसार; जगत का जंजाल; [हिं] धोखा; भिन्नता; प्रतिकूलता; विश्लेषण; बखेड़ा; यौ०— बुद्धि - चालबाज़; —वचन - विस्तृत कथन।

**प्रपंची** - वि० [सं] छलिया, धोखेबाज़।

**प्रपंचन** - पु० [सं] विस्तार करना; व्याख्या करना।

**प्रपत्ति** - स्त्री० [सं] अनन्य भक्ति।

**प्रपथ** - पु० [सं] चौड़ी सड़क।

**प्रपद** - पु० [सं] पैर का अँगला भाग; पैर का पंजा।

**प्रपन्न** - वि० [सं] शरणागत; प्राप्त; युक्त; दीन; कष्टग्रस्त।

**प्रपा** - स्त्री० [सं] कूप; हौज; प्याऊ, पशुओं को पानी आदि पिलाने का स्थान।

**प्रपाठ, प्रपाठक** - पु० [सं] सबक; पुस्तक का अध्याय।

**प्रपात** - पु० [सं] झरना; किनारा; गिरना; आक्रमण।

**प्रपितामह** - पु० [सं] परदादा।

**प्रपितामही** - स्त्री० [सं] परदादी।

**प्रपितृव्य** - पु० [सं] चचेरा परदादा।

**प्रपीडन** - पु० [सं] निचोड़ना; पेरना; वह जो दबाये।

**प्रपुंज** - पु० [सं] बड़ा झुंड।

**प्रपुत्र** - पु० [सं] पौत्र, पोता।

**प्रपूरक** - वि० [सं] पूरा करनेवाला; भरनेवाला; तृप्त करनेवाला।

**प्रपूरण** - पु० [सं] भरना; पूरा करना; तृप्त करना।

**प्रपूरित** - वि० [सं] विशेष रूप से पूरा किया हुआ; अच्छी तरह भरा हुआ।

**प्रपौत्र** - पु० [सं] पोते का बेटा।

**प्रपौत्री** - स्त्री० [सं] पोते की बेटी।

**प्रफुल्ल** - वि० [सं] विकसित; खिला हुआ; फूला हुआ; प्रसन्न।

**प्रबंध** - पु० [सं] प्रकृष्ट बंधन; क्रम; ग्रंथ या कथा आदि की रचना; निबंध; आयोजन; व्यवस्था; यौ०—कर्ता - प्रबंध करनेवाला; —काव्य - वह काव्य जिसमें किसीके जीवन की विशेष घटनाओं का क्रमबद्ध चित्रण किया गया हो।

**प्रबंधक** - पु० [सं] मैनेजर, व्यवस्थापक।

**प्रबल** - वि० [सं] बहुत बलवान; प्रचंड; महान्; हानिकर।

**प्रबाधक** - वि० [सं] हटानेवाला; निवारण करनेवाला; पीड़न करनेवाला।

**प्रबाल** - पु० [सं] नया कोमल पत्ता, नवपल्लव; मूँगा; वीणा की लकड़ी; शिष्य; जानवर।

**प्रबाहु** - पु० [सं] हाथ का अगला भाग।

**प्रबुद्ध** - वि० [सं] जागा हुआ; पंडित; ज्ञानी; विकसित; सजीव।

**प्रबोध** - पु० [सं] जागरण; सचेत होना; यथार्थ ज्ञान; सांत्वना; सतर्कता; विकास, फूल का खिलना; व्याख्या करना।

**प्रबोधन** - पु० [सं] जगना; जगाना; यथार्थ-ज्ञान; समझाना।

**प्रबोधना** - स० [हिं] जगाना; सचेत करना; समझाना-बुझाना; तसल्ली देना।

**प्रबोधिनी** - स्त्री० [सं] देवोत्थानी एकादशी।

**प्रभंजन** - 1. पु० [सं] प्रचंड वायु; एक प्रकार की समाधि; एक नाड़ीरोग; तोड़-फोड़; 2. वि० तोड़-फोड़ या नष्ट करनेवाला।

**प्रभद्र** - पु० [सं] नीम का पेड़।

**प्रभद्रा** - स्त्री० [सं] लाजवंती।

**प्रभव** - पु० [सं] जन्म; उत्पत्ति का कारण; उत्पत्ति का स्थान; मूल; नदी आदि का उद्गम-स्थान; पराक्रम।

**प्रभवन** - पु० [सं] उत्पत्ति; उत्पत्ति-स्थान।

**प्रभा** - स्त्री० [सं] दीप्ति; प्रकाश; किरण; यौ०—कर - सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; समुद्र।

**प्रभाग** - पु० [सं] टुकड़े का टुकड़ा; भाग का भाग; भिन्न का भिन्न।

**प्रभात** - पु० [सं] प्रातःकाल।

**प्रभाती** - स्त्री० [हिं] सबेरे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत, जागरण-गीत।

**प्रभाव** - पु० [सं] दीप्ति, कांति ; उत्पत्ति ; सामर्थ्य ; राजकीय शक्ति ; प्रताप ; परिणाम ; विस्तार ; दबाव ; असर ; यौ०—शाली - अधिक प्रभाववाला, असरदार ।

**प्रभावक, प्रभावन** - वि० [सं] प्रमुख ; प्रभाव डालनेवाला ।

**प्रभावना** - स्त्री० [सं] प्रगट करना ; (किसी सिद्धांत का) प्रचार ।

**प्रभावित** - वि० [सं] जिसपर प्रभाव पड़ा हो ।

**प्रभाषण** - पु० [सं] व्याख्या ।

**प्रभास** - 1. वि० [सं] अति दीप्तिमान् ; 2. पु० प्रकाश ; एक प्राचीन तीर्थ ।

**प्रभास्वर** - वि० [सं] बहुत चमकीला ।

**प्रभिन्न** - 1. वि० [सं] भिन्न ; विभक्त ; बहुत अधिक भेदवाला ; परिवर्तित ; विकृत ; ढीला किया हुआ ; मिदा हुआ ; खिला हुआ ; 2. पु० मतवाला हाथी ।

**प्रभीत** - वि० [सं] बहुत डरा हुआ ।

**प्रभु** - पु० [सं] स्वामी ; अन्नदाता ; ईश्वर ; 2. वि० शक्तिशाली ; योग्य ; प्रचुर ; स्थायी ।

**प्रभुता** - स्त्री०, **प्रभुत्व** - पु० } [सं] प्रभु होने का भाव ; गौरव ; महत्व ; अधिकार ; वैभव ।

**प्रभूत** - वि० [सं] जो हुआ हो ; उत्पन्न ; बहुत अधिक, प्रचुर ; उन्नत ; पूर्ण ; पक्व ।

**प्रभूतता** - स्त्री०, **प्रभूतत्व** - पु० } [सं] प्रचुरता ; राशि ।

**प्रभृति** - अव्य० [सं] इत्यादि, वगैरह ।

**प्रभेद** - पु० [सं] भेद, अंतर ; स्फोटन ; विभाग ; वियोग ।

**प्रभंडल** - पु० [सं] पहिये के बाहरी हिस्से का खंड, चक्के का खंड ।

**प्रमत्त** - वि० [सं] नशे में चूर, मतवाला ; पागल ; असावधान ; भूल-चूक करनेवाला ; यौ०— चित्त - लापरवाह ।

**प्रमथन** - पु० [सं] मथना ; वध ; नष्ट करना ; कष्ट देना ; उत्पीड़न ।

**प्रमद** - 1. वि० [सं] प्रमत्त ; उग्र ; लापरवाह ; विवेकहीन ; 2. पु० धतूरे का फल ; हर्ष ; एक दैत्य ; यौ०— वन - क्रीड़ोद्यान, प्रमोदवन ।

**प्रमदा** - स्त्री० [सं] रूपवती युवती, सुंदरी ।

**प्रमन्यु** - वि० [सं] अति क्रुद्ध ; विषण्ण ।

**प्रमा** - स्त्री० [सं] चेतना, बोध ; किसी वस्तु का यथार्थ ज्ञान या अनुभव ; आधार ; माप ।

**प्रमाण** - 1. पु० [सं] प्रमा का साधन (न्याय) ; सबूत ; माप ; परिमाण ; सीमा, इयत्ता ; धर्मशास्त्र ; मूलधन ; मर्यादा ; हेतु ; नियम ; [हिं] यथार्थता ; निश्चय ; भरोसा ; आज्ञा-पत्र ; 2. वि० यथार्थ ; चरितार्थ ; सत्य ; उचित ; 3. अव्य० तक, पर्यन्त ; यौ०—कुशल - वाद-विवाद या बहस करने में चतुर ; —कोटि - प्रामाणिक वस्तुओं या आधारों की श्रेणी या वर्ग ; —दृष्ट - शास्त्रादि से सम्मत ; —पत्र - वह पत्र या लेख जो किसी बात का प्रमाण माना जाय, सर्टिफिकेट ; —पुरुष - मध्यस्थ, पंच ; —भूत - प्रमाणरूप ।

**प्रमाणित** - वि० [सं] साबित, प्रमाण द्वारा सिद्ध ।

**प्रमाता** - पु० [सं] किसी विषय का साक्षात्कार करनेवाला, प्रमारूप ज्ञान को प्राप्त करने वाला ।

**प्रमातामह** - पु० [सं] परनाना ।

**प्रमातामही** - स्त्री० [सं] परनानी ।

**प्रमाथी** - वि० [सं] मथनेवाला; पीड़ा पहुँचानेवाला : बलपूर्वक हरण करनेवाला; क्षुब्ध करनेवाला : काटनेवाला।

**प्रमाद** - पु० [सं] अनवधानता; गफ़लत; भूल-चूक; नशा: मूर्छा; उन्माद: संकट।

**प्रमादिन** - वि० [सं] तिरस्कृत, हेय समझा हुआ।

**प्रमादी** - वि० [सं] प्रमादशील; मत्त; विक्षिप्त।

**प्रमानी** - वि० [हिं] मान्य, प्रामाणिक।

**प्रमार्जक** - वि० [सं] धोनेवाला; पोंछनेवाला; मिटानेवाला।

**प्रमार्जन** - पु० [सं] धोना; पोंछना; दूर करना।

**प्रमित** - वि० [सं] जिसका यथार्थ ज्ञान हुआ हो; अवगत; अल्प; मापा हुआ; प्रमाण द्वारा सिद्ध।

**प्रमिति** - स्त्री० [सं] किसी प्रमाण द्वारा प्राप्त यथार्थ ज्ञान; माप।

**प्रमीत** - 1. वि० [सं] मृत; बलि चढ़ाया हुआ; 2. पु० यज्ञ के निमित्त मारा गया पशु।

**प्रमीति** - स्त्री० [सं] मृत्यु; नाश।

**प्रमीला** - स्त्री० [सं] तंद्रा; शिथिलता।

**प्रमीलिका** - स्त्री० [सं] तंद्रा।

**प्रमुक्त** - वि० [सं] मुक्त, जिसका बंधन खोल दिया गया हो; परित्यक्त; प्रक्षिप्त।

**प्रमुक्ति** - स्त्री० [सं] मोक्ष, मुक्ति।

**प्रमुख** - 1. वि० [सं] प्रथम; मुख्य; श्रेष्ठ; सम्मान्य; 2. पु० सम्मान्य व्यक्ति; मुख; समूह; अध्याय आदि का आरंभ; 3. अव्य० [हिं] इत्यादि, वगैरह।

**प्रमुग्ध** - वि० [सं] मूर्छित; हतबुद्धि; बहुत सुंदर।

**प्रमुदित** - वि० [सं] अति प्रसन्न।

**प्रमूढ** - वि० [सं] घबड़ाया हुआ; मूर्ख।

**प्रमेय** - वि० [सं] अवधारण के योग्य; प्रमाण द्वारा जिसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय: ज्ञेय वस्तु।

**प्रमेह** - पु० [सं] एक मूत्र-रोग जिसमें शरीर की धातुएँ अनेक रूपों में पेशाब के रास्ते गिरा करती हैं।

**प्रमोचन** - पु० [सं] छोड़ना; छुड़ाना; हरण।

**प्रमोद** - पु० [सं] आनंद; एक संवत्सर; कड़ी सुगंधि; एक प्रकार की सिद्धि जिससे आध्यात्मिक दुःखों का विनाश हो जाता है।

**प्रमोदित** - 1. वि० [सं] प्रमोदयुक्त, प्रसन्न; 2. पु० कुबेर।

**प्रमोदी** - वि० [सं] प्रसन्न करनेवाला, प्रमोदजनक; प्रसन्न।

**प्रमोह** - पु० [सं] मोह; जड़ता; संज्ञाहीनता; मूर्छा; यौ० —चित्त - घबड़ाया हुआ।

**प्रम्लान** - वि० [सं] मुरझाया हुआ; मैला।

**प्रयंत** - अव्य० [हिं] तक, पर्यन्त।

**प्रयत** - वि० [सं] शुद्धात्मा; जितेन्द्रिय; प्रयत्नशील; पवित्र; नम्र; सावधान।

**प्रयत्न** - पु० [सं] कोशिश, प्रयास; अध्यवसाय; कठिनता; यौ०— वान - प्रयत्न में लगा हुआ, सक्रिय।

**प्रयाण** - पु० [सं] गमन; यात्रा; चढ़ाई; आरंभ; संसार से विदा होना, मरना; घोड़े की पीठ; यौ०— काल, समय - प्रस्थान करने का समय; —पटह - कूच का डंका, युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय बजाया जानेवाला नगाड़ा।

**प्रयास** - पु० [सं] कोशिश; श्रम

**प्रयुक्त** - 1 वि० [स] जोता हुआ; लगाया हुआ; जोड़ा हुआ; समाधिस्थ;

सूद पर दिया हुआ (धन); प्रेरित; गतिमान किया हुआ; 2. पु० कारण।

**प्रयुत** - वि० [सं] सहित; अस्पष्ट; ध्वस्त; दस लाख।

**प्रयोक्ता** - पु० [सं] प्रयोगकर्ता; प्रेरक; ऋण देनेवाला; नाटक का सूत्रधार; वाचक।

**प्रयोग** - पु० [सं] व्यवहार, इस्तेमाल; अनुष्ठान; शस्त्रपात; अमल; अभिनय; मारण-मोहन आदि तांत्रिक अभिचार; पद्धति; योजना; साधन; पाठ; आरंभ।

**प्रयोगार्थ** - 1. पु० [सं] मुख्य कार्य की सिद्धि के लिए किया जानेवाला गौण कार्य; 2. अव्य० प्रयोग के लिए।

**प्रयोजक** - पु० [सं] प्रयोगकर्ता; किसी काम में लगानेवाला; जोड़नेवाला; प्रेरक; महाजन; ग्रंथलेखक; संस्थापक; धर्मशास्त्री।

**प्रयोजन** - पु० [सं] अभिप्राय; उपयोग; हेतु; लाभ।

**प्रयोज्य** - 1. वि० [सं] प्रयोग के योग्य; जो चलाया या फेंका जाय; जो काम में लगाया जाय; 2. पु० नौकर; मूलधन।

**प्ररूढ़** - वि० [सं] जो ऊपर की ओर बढ़े (अंकुरादि)।

**प्ररूपण** - पु० } [सं] व्याख्या करना;
**प्ररूपणा** - स्त्री० } समझाना।

**प्ररोचन** - पु० [सं] रुचि पैदा करना; उत्तेजित करना।

**प्ररोचना** - स्त्री० [सं] स्तुति; नाटककार की प्रशंसा द्वारा नाटक के प्रति दर्शकों में रुचि उत्पन्न करना; फुसलावा; रोचक कथा।

**प्ररोह** - पु० [सं] अंकुरित होना; उत्पत्ति; चढ़ाव; अंकुर; संतान; नया पत्ता या टहनी; ऊपर की ओर बढ़ना।

**प्रलंब** - 1. वि० [सं] लटकता हुआ; अधिक लंबा; सुस्त; 2. पु० लटकने की क्रिया; लटकाव; शाखा; स्तन; माला।

**प्रलंबन** - पु० [सं] लटकना; अवलंबित होना।

**प्रलंबित** - वि० [सं] लटका हुआ।

**प्रलंभ** - पु० [सं] प्राप्ति; धोखा देना।

**प्रलपन** - पु० [सं] वार्तालाप; दुखड़ा रोना; प्रलाप।

**प्रलब्ध** - वि० [सं] गृहीत; जो छला गया हो।

**प्रलयंकर** - वि० [सं] प्रलय करनेवाला।

**प्रलय** - पु० [सं] लय को प्राप्त होना; विनाश; सृष्टि का सर्वनाश; मृत्यु; मूर्छा; भारी या व्यापक संहार; यौ०—काल - प्रलय का समय।

**प्रलाप** - पु० [सं] बातचीत; बकवास; ज्वराधिक्य से बेहोश होकर अनाप-शनाप बकना; दुखड़ा रोना।

**प्रलापी** - वि० [सं] प्रलाप करनेवाला, अनाप-शनाप बकनेवाला।

**प्रलिप्त** - वि० [सं] चिपका हुआ; लिपटा हुआ; लिया हुआ।

**प्रलीन** - वि० [सं] विलीन; लुप्त; प्रलय को प्राप्त; क्लान्त; चेष्टाशून्य।

**प्रलुब्ध** - वि० [सं] जो लोभ में पड़ गया हो।

**प्रलुब्धा** - 1. वि० [सं] जो लोभ में पड़ गयी हो; 2. स्त्री० वह स्त्री जिसे किसीसे अनुचित प्रेम हो गया हो।

**प्रलून** - वि० [सं] काटा हुआ।

**प्रलेप** - पु० [सं] लेप; वह मलहम-जैसी दवा जो घाव या फोड़े पर लगायी जाती है।

**प्रलेह** - पु० [सं] एक प्रकार का व्यंजन, क़ोरमा।

**प्रलेहन** - पु० [सं] चाटना।

**प्रलोठन** - पु० [सं] उछलना ; लुढ़कना।

**प्रलोप** - पु० [सं] नाश।

**प्रलोभन** - पु० [सं] ललचाना ; ललचानेवाली वस्तु।

**प्रवंचक** - पु० [सं] ठग ; धूर्त।

**प्रवंचन** - पु० [सं] ठगना ; धोखा देना।

**प्रवंचना** - स्त्री० [सं] ठगी ; धोखेबाज़ी।

**प्रवक्ता** - पु० [सं] अच्छा वक्ता ; वेद आदि का अच्छी तरह प्रवचन करनेवाला।

**प्रवचन** - पु० [सं] उपदेश ; विशेष रूप से कहना ; व्याख्या।

**प्रवण** - 1. वि० [सं] ढालुवाँ ; वक्र ; प्रवृत्त ; नम्र ; आसक्त ; क्षीण ; दीर्घ ; लंबा ; अनुकूल ; 2. पु० चौराहा ; उतार ; उदर।

**प्रवणता** - स्त्री० [सं] झुकाव, प्रवृत्ति।

**प्रवर** - 1. वि० [सं] प्रधान ; श्रेष्ठ ; 2. पु० आह्वान ; संतति ; अगरु ; आवरण ; उपरना, दुपट्टा।

**प्रवरण** - पु० [सं] आह्वान ; वर्षान्त पर होनेवाला त्योहार।

**प्रवर्त** - पु० [सं] किसी कार्य का आरंभ ; उत्तेजन।

**प्रवर्तक** - पु० [सं] संचालक ; आविष्कार करनेवाला ; आरंभ करनेवाला।

**प्रवर्तन** - पु० [सं] संचालन ; आरंभ करना ; आविष्कार करना।

**प्रवर्तित** - वि० [सं] प्रेरित ; चलाया हुआ ; आरंभ किया हुआ।

**प्रवर्धन** - पु० [सं] वृद्धि।

**प्रवसन** - पु० [सं] विदेश-यात्रा ; मरण।

**प्रवहण** - पु० [सं] डोली ; पोत।

**प्रवहमान** - वि० [सं] प्रवाहशील, बहनेवाला।

**प्रवाक** - पु० [सं] घोषणा करनेवाला।

**प्रवात** - पु० [सं] स्वच्छ वायु ; ज़ोर की हवा ; हवादार जगह।

**प्रवाद** - पु० [सं] बोलना ; व्यक्त करना ; जनश्रुति ; बातचीत ; चुनौती।

**प्रवार** - पु० [सं] उत्तरीय ; आच्छादन।

**प्रवारण** - पु० [सं] कामना करके दान देना ; प्रतिरोध ; महादान ; इच्छापूर्वक करना।

**प्रवास** - पु० [सं] विदेश में रहना ; परदेश जाना।

**प्रवाह** - पु० [सं] धारा ; बहाव ; अखंड परंपरा ; घटनाक्रम ; तालाब ; झील ; अच्छा घोड़ा ; व्यवहार।

**प्रवाहिका** - स्त्री० [सं] संग्रहणी नामक रोग।

**प्रवाहित** - वि० [सं] बहाया हुआ ; ढोया हुआ।

**प्रविष्ट** - वि० [सं] घुसा हुआ ; अंदर गया हुआ।

**प्रवीण** - वि० [सं] निपुण, कुशल।

**प्रवीणता** - स्त्री० [सं] निपुणता, कौशल।

**प्रवीर** - 1. पु० [सं] अच्छा वीर, सुभट ; 2. वि० उत्तम ; बली।

**प्रवृत्त** - वि० [सं] तैयार ; नियुक्त ; आरब्ध ; निश्चित।

**प्रवृत्ति** - स्त्री० [सं] प्रवाह, बहाव ; मन का किसी विषय की ओर झुकाव ; वृत्तांत ; आरंभ ; उत्पत्ति ; आचार-व्यवहार ; अध्यवसाय ; भाग्य ; रुचि।

**प्रवेग** - पु० [सं] अधिक वेग।

**प्रवेल** - पु० [सं] पीली मूँग।

**प्रवेश** - पु० [सं] घुसना ; पैठ, पहुँच ; किसी पात्र का रंगमंच पर आना ; अभिज्ञता ; दूसरे काम में दख़ल देना ; थाती रखना ; द्वार ; सुई देने की पिचकारी ; यौ० —पत्र - वह पत्र जिसके द्वारा

कहीं प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो ; —शुल्क - प्रवेश पाने का अधिकार प्राप्त करने के लिए दिया जानेवाला शुल्क ।

**प्रवेशन** - पु० [सं] प्रवेश कराना ; प्रवेश ; सिंहद्वार ; ले जाना, पहुँचाना ।

**प्रवेशिका** - 1. स्त्री० [सं] प्रवेश-पत्र ; प्रवेश-शुल्क : 2. वि० प्रवेश करानेवाली ।

**प्रवेष्ट** - पु० [सं] भुजा, पहुँचा ; हाथी का मसूड़ा ; हाथी की पीठ ; हाथी की झूल ।

**प्रव्रजित** - 1. वि० [सं] जिसने संन्यास लिया हो ; जो बहक गया हो ; 2. पु० संन्यासी ।

**प्रव्रजिता** - स्त्री० [सं] जटामासी ; संन्यासिनी ।

**प्रव्रज्या** - स्त्री० [सं] संन्यास ; संन्यासाश्रम ; देशत्याग ; विदेशगमन ; यौ०—ग्रहण - संन्यास लेना ।

**प्रव्राजक** - पु० [सं] संन्यासी ।

**प्रशंसक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] तारीफ़ करनेवाला ।

**प्रशंसना** - 1. स० [हिं] सराहना ; तारीफ़ करना ; 2. स्त्री० [सं] गुणों का बखान, प्रशंसा ।

**प्रशंसनीय** - वि० [सं] स्तुत्य, प्रशंसा करने योग्य ।

**प्रशंसा** - स्त्री० [सं] तारीफ़ ; ख्याति ; गुण-कीर्तन ; **यौ०**—मुखर - उच्च स्वर में प्रशंसा करनेवाला ।

**प्रशंसित** - वि० [सं] जिसकी प्रशंसा की गयी हो ।

**प्रशम** - पु० [सं] शमन ; निवृत्ति ; शांति ।

**प्रशमन** - पु० [सं] शांत करना ; रक्षण ; शांति ।

**प्रशस्त** - वि० [सं] श्रेष्ठ ; शुभ ; विस्तृत ; स्तुत्य ; **यौ०** —वचन - स्तुति ।

**प्रशस्ति** - स्त्री० [सं] प्रशंसा ; वर्णन ; किसी की प्रशंसा में लिखी गयी कविता आदि ; प्राचीन राजाओं के आज्ञापत्र ; **यौ०** —पट्ट - आज्ञापत्र ; लेखपत्र ।

**प्रशस्य** - वि० [सं] प्रशंसनीय ।

**प्रशांत** - वि० [सं] शांत ; वश में किया हुआ ; यौ० —काम - संतुष्ट ; —चित्त - जिसका मन शांत हो ।

**प्रशांति** - स्त्री० [सं] शांति ; विश्राम ; शमन ।

**प्रशाखा** - स्त्री० [सं] टहनी ।

**प्रशासक** - पु० [सं] शासन करनेवाला ; आचार्य ।

**प्रशासन** - पु० [सं] शिष्य आदि को दी जानेवाली कर्तव्य की शिक्षा ; शासन ।

**प्रशिष्य** - पु० [सं] शिष्य का शिष्य ।

**प्रश्न** - पु० [सं] सवाल ; पूछ-ताछ ; भविष्य-संबंधी जिज्ञासा ; समस्या ; पुस्तक का कोई छोटा खंड ; **यौ०** —दूती - पहेली ; —पत्र - वह पर्चा जिसमें उत्तर देने के लिए प्रश्न अंकित हों ; —वादी ज्योतिषी ।

**प्रश्नोत्तर** - पु० [सं] सवाल-ज़वाब ।

**प्रश्रय, प्रश्रयण** - पु० [सं] विनय ; प्रीति ; सहारा ।

**प्रश्रयी, प्रश्रित** - वि० [सं] विनयी ; मिलनसार ।

**प्रश्लथ** - वि० [सं] शिथिल ; क्लान्त ।

**प्रश्लेष** - पु० [सं] घनिष्ठ संबंध ; स्वरों की संधि ।

**प्रश्वास** - पु० [सं] साँस बाहर निकालना ; बाहर निकली हुई साँस ।

**प्रष्टि** - स्त्री० [सं] तिपाई ।

**प्रष्ठ** - वि० [सं] अग्रगामी ; श्रेष्ठ ।

**प्रसंख्या** - स्त्री० [सं] कुल अंकों का जोड़ ; मनन ।

**प्रसंग** - पु० [सं] संबंध ; प्रकरण ; अवैध संबंध ; अनुरक्ति ; समागम ; प्राप्ति, सिलसिला ; अवसर ; विषय ।

**प्रसक्त** - वि० [सं] प्रसंगप्राप्त ; लगा हुआ ; निकट ; संबद्ध ; आसक्त ; स्थायी ; स्फुटित ।

**प्रसन्न** - वि० [सं] निर्मल ; शांत ; संतुष्ट ; खुश ; उचित ; कृपालु ; यौ० —जल - जिसका पानी साफ़ हो ; —मुख - जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो।

**प्रसन्नता** - स्त्री० [सं] प्रसन्न होने का भाव ; स्वच्छता ; स्पष्टता ।

**प्रसन्ना** - स्त्री० [सं] शराब ।

**प्रसभ** - पु० [सं] बलात्कार ; यौ० —हरण - बलपूर्वक हरण कर ले जाना ।

**प्रसर** - पु० [सं] आगे बढ़ना ; फैलाव ; वेग ; प्रवाह ; प्रलय ; समूह ; साहस ; युद्ध ; लोहे का बाण ।

**प्रसरण** - पु० [सं] सरकना ; पलायन ; फैलना ; स्वभाव का माधुर्य ।

**प्रसरित** - वि० [सं] फैला हुआ ; आगे बढ़ा हुआ ।

**प्रसर्पण** - पु० [सं] आगे खिसकना ; सेना का चारों ओर फैल जाना ।

**प्रसवंती** - स्त्री० [सं] प्रसव-वेदनाग्रस्त स्त्री ।

**प्रसव** - पु० [सं] बच्चा जनना, गर्भमोचन ; उत्पत्ति ; फल ; फूल ; संतति ; यौ०—गृह - बच्चा जनने का घर, सौरी ; —धर्मी - फलप्रद ; उत्पादक ; —वेदना, व्यथा - बच्चा जनते समय होनेवाली पीड़ा ।

**प्रसविनी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] जन्म देनेवाली ; उत्पन्न करनेवाली ।

**प्रसव्य** - वि० [सं] प्रतिकूल ; बायाँ ; अनुकूल

**प्रसह** - पु० [सं] शिकारी चिड़िया या पशु ; प्रतिरोध ; सहन ।

**प्रसाद** - पु० [सं] स्वच्छता ; कृपा ; देवता को चढ़ाई गयी वस्तु ; प्रसन्नता ; मानसिक शांति ; स्वभाव की सरलता ; महात्मा या गुरु की जूठन ; काव्य के तीन गुणों में से एक (काव्य का सरल और सुबोध होना) ; भोजन ; यौ०—पट्ट - राजा की ओर से सम्मानार्थ दिया जानेवाला शिरोवस्त्र ; —पात्र - कृपा-पात्र ।

**प्रसादक** - पु० [सं] निर्मल या प्रसन्न करनेवाला ।

**प्रसादी** - 1. स्त्री० [हिं] किसी देवता को चढ़ायी हुई वस्तु ; महात्मा, गुरु या किसी मान्य व्यक्ति द्वारा दी गयी वस्तु ; 2. वि० [सं] निर्मल बनानेवाला ; प्रसन्न करनेवाला ; प्रसन्न ।

**प्रसाधन** - पु० [सं] श्रृंगार ; श्रृंगार की सामग्री ; सिद्धि ।

**प्रसाधनी** - स्त्री० [सं] कंघी ।

**प्रसार** - पु० [सं] फैलाव ; संचार ; इधर-उधर जाना ।

**प्रसारक** - वि० [सं] फैलनेवाला ; फैलाने-वाला ।

**प्रसारण** - पु० [सं] फैलाना ; आगे करना ; बढ़ाना ; फैलकर शत्रु को घेर लेना ।

**प्रसारित** - वि० [सं] फैलाया हुआ ।

**प्रसारी** - वि० [सं] फैलनेवाला ; निकलने-वाला ।

**प्रसित** - 1. वि० [सं] आसक्त ; संलग्न ; बहुत साफ़ ; 2. पु० मवाद ।

**प्रसिद्ध** - वि० [सं] अलंकृत ; मशहूर ।

**प्रसिद्धि** - स्त्री० [सं] ख्याति ; श्रृंगार करना ; सफलता ।

**प्रसुत** - वि० [सं] निचोड़ा या दबाया हुआ।

**प्रसुप्त** - वि० [सं] गहरी नींद में सोता हुआ; संपुटित (फूल); निष्क्रिय; संज्ञाहीन।

**प्रसुप्ति** - स्त्री० [सं] गहरी नींद, संज्ञाहीनता; निश्चेष्टता।

**प्रसू** - स्त्री० [सं] उत्पन्न करनेवाली; माता; घोड़ी; केला; लता; कोमल तृण।

**प्रसूत** - 1. वि० [सं] उत्पन्न; 2. पु० फूल; उत्पत्ति का साधन।

**प्रसूता** - स्त्री० [सं] जच्चा।

**प्रसूति** - स्त्री० [सं] प्रसव; उत्पत्ति; संतान; माता; प्रसूता; यौ० —ज्वर - प्रसव के कुछ काल बाद होनेवाला ज्वर; —वायु - प्रसवकाल में गर्भाशय में उत्पन्न होनेवाली वायु।

**प्रसून** - 1. वि० [सं] उत्पन्न; 2. पु० फूल; फल; यौ० —बाण, शर - कामदेव।

**प्रसृत** - 1. वि० [सं] आगे बढ़ा हुआ; विस्तीर्ण; लंबा; संलग्न; विहित; गया हुआ; नियुक्त; प्रदर्शित; नम्र; 2. पु० अर्धांजलि।

**प्रसृता** - 1. स्त्री० [सं] जंघा; 2. वि० फैली हुई।

**प्रसृति** - स्त्री० [सं] आगे बढ़ना; फैलाव।

**प्रसेक** - पु० [सं] सींचना; चूना; वमन; करछुल की कटोरी।

**प्रसेद** - पु० [हिं] पसीना, प्रस्वेद।

**प्रसेव** - पु० [सं] कपड़े या चमड़े का थैला; वीणा की तूँबी।

**प्रस्खलन** - पु० [सं] स्खलन, पतन।

**प्रस्तर** - पु० [सं] पत्थर; बिस्तरा; कुश का मुट्ठा; रत्न; चौरस मैदान; ग्रंथ का अध्याय; यौ०— युग - वह ऐतिहासिक काल जब लोग सिर्फ पत्थर के हथियारों से काम लेते थे।

**प्रस्तरोत्पल** - पु० [सं] चंद्रकांत मणि।

**प्रस्तार** - पु० [सं] फैलाना; ढकना; घास का जंगल; पत्तों आदि का बिछावन; बिस्तरा; परत; सीढ़ी; छंदों के भेद जानने की एक रीति।

**प्रस्ताव** - पु० [सं] अवसर; प्रसंग; आरंभ; नाटक की प्रस्तावना; सभा के सामने विचार के लिए रखी हुई बात।

**प्रस्तावना** - स्त्री० [सं] आरंभ; प्राक्कथन; भूमिका।

**प्रस्तावित** - वि० [सं] आरब्ध; कथित; जिसका प्रस्ताव किया गया हो।

**प्रस्तुत** - 1. वि० [सं] प्रासंगिक; उपस्थित; घटित; तैयार; 2. पु० छिड़ा हुआ विषय; उपमेय; एक काव्यालंकार; 3. पु० छिपा हुआ विषय; उपमेय।

**प्रस्तुति** - स्त्री० [सं] प्रशंसा; निष्पत्ति।

**प्रस्थ** - 1. पु० [सं] पर्वत के ऊपर की समतल भूमि; चौरस मैदान; विस्तार; बत्तीस पल का एक प्राचीन परिमाण; 2. वि० प्रस्थान करनेवाला; फैलनेवाला; स्थिर।

**प्रस्थान** - पु० [सं] रवानगी; कूच; मार्ग; विधि; मृत्यु; उपदेश का साधन; यौ० —त्रयी - उपनिषद, गीता और ब्रह्मसूत्र।

**प्रस्थापन** - पु० [सं] स्थापना; प्रेरणा; भेजना; प्रमाणित करना; प्रयोग में लाना।

**प्रस्थापना** - स्त्री० [सं] भेजना।

**प्रस्थापित** - वि० [सं] विशेष रूप से स्थापित; प्रेषित; आगे बढ़ाया हुआ।

**प्रस्थित** - वि० [सं] जिसने प्रस्थान किया हो; दृढ़।

**प्रस्फुट** - वि० [सं] सुस्पष्ट; विकसित; प्रकट किया हुआ।

**प्रस्फुरण** - पु० [सं] निकलना ; चमकना ; स्पष्ट होना ; कंपन ; विकसित होना ।

**प्रस्फोटन** - पु० [सं] विशेष रूप से फूटना या विदीर्ण होना ; विकसित होना या करना ; ताड़न ; अन्न आदि फटकना ।

**प्रस्यंद, प्रस्यंदन** - पु० [सं] बहना ।

**प्रस्रव** - पु० [सं] लगातार चूना या बहना ; स्तन से निकलता हुआ दूध ; प्रवाह ; आँसू ; माँड़ ।

**प्रस्रवण** - पु० [सं] निर्झर ; सोता ।

**प्रस्राव** - पु० [सं] बहाव ; मूत्र ; चावल का माँड़ ।

**प्रस्रुत** - वि० [सं] क्षरित ; झड़ा हुआ ।

**प्रस्वाप** - पु० [सं] सोना, स्वप्न ।

**प्रस्वेद** - पु० [सं] पसीना ।

**प्रहत** - वि० [सं] आहत ; मारा हुआ ; फैलाया हुआ ; पराभूत ; विद्वान ।

**प्रहर** - पु० [सं] दिन का आठवाँ भाग, याम, पहर ।

**प्रहरखना** - अ० [हिं] प्रसन्न होना ।

**प्रहरण** - पु० [सं] छीनना ; आघात ; आक्रमण ; युद्ध ; दमन ; अस्त्र ; गाड़ी में बैठने का स्थान ।

**प्रहरी** - पु० [सं] पहरेदार ।

**प्रहर्ष** - पु० [सं] अत्यधिक प्रसन्नता ।

**प्रहर्षण** - 1. पु० [सं] प्रसन्नता ; हर्षजन्य रोमांच ; अभीष्ट की प्राप्ति ; 2. वि० प्रसन्न करनेवाला ।

**प्रहसन** - पु० [सं] भाण की तरह का एक नाटक ; परिहास ; ज़ोर की हँसी ।

**प्रहस्त** - पु० [सं] पंजा ।

**प्रहाण** - पु० [सं] परित्याग ; ध्यान ; चेष्टा ।

**प्रहार** - पु० [सं] आघात, चोट ।

**प्रहारना** - स० [हिं] प्रहार करना, मारना ; अस्त्र फेंकना या चलाना ।

**प्रहारी** - 1. वि० [सं] प्रहार या आक्रमण करनेवाला ; 2. पु० श्रेष्ठ योद्धा ।

**प्रहास** - पु० [सं] अट्टहास ; तिरस्कार ; व्यंग्योक्ति ; नट ।

**प्रहित** - वि० [सं] फेंका हुआ ; फैलाया हुआ ; प्रेरित ; निष्कासित ।

**प्रहीण** - वि० [सं] परित्यक्त ; एकाकी ।

**प्रहृत** - 1. वि० [सं] आहत ; फेंका हुआ ; 2. पु० आघात ।

**प्रहृष्ट** - वि० [सं] अति प्रसन्न ।

**प्रहेलि, प्रहेलिका** - स्त्री० [सं] पहेली ।

**प्रह्रास** - पु० [सं] क्षय ।

**प्रांगण** - पु० [स] आंगन ; छोटा ढोल ।

**प्रांजल** - वि० [सं] सरल ; सुबोध ; ईमानदार ; समतल ।

**प्रांजलता** - स्त्री० [सं] अर्थ की सरलता ।

**प्रांजलि** - 1. वि० [स] जो हाथ जोड़े हो, बद्धांजलि ; 2. स्त्री० जोड़े हुए हाथ ।

**प्रांत** - पु० [सं] अंत; शेष भाग; छोर; किनारा; सीमा ; पृष्ठ भाग ; कोण ; किसी देश का कोई बड़ा भाग, प्रदेश : यौ०—चर - पास रहनेवाला ; —दुर्ग - परकोटे के बाहर का दुर्ग ; —निवासी - सीमा के पास रहनेवाला ; —भूमि - अंतिम स्थान ; समाधि ; —शून्य - छाया आदि से रहित लंबा मार्ग ; —स्थ - सीमा पर रहनेवाला ।

**प्रांतर** - पु० [सं] लंबा रास्ता ; छाया आदि से रहित मार्ग ; वन ; कोटर ।

**प्रांतिक, प्रांतीय** - वि० [सं] प्रांत-संबंधी ; प्रांत का ।

**प्रांतीयता** - स्त्री० [सं] अपने प्रांत के प्रति मोह या पक्षपात ।

**प्राकट्य** - पु० [सं] प्रकट होने का भाव, प्रकटता ।

**प्राकार** - पु० [सं] परकोटा : ईंट या लकड़ी आदि का बनाया हुआ घेरा।

**प्राकृत** - 1. वि० [सं] प्रकृति-संबंधी ; प्रकृति का : असंस्कृत ; नीच ; स्वाभाविक ; सामान्य ; 2. स्त्री० प्रांत की बोली ; संस्कृत भाषा का अपभ्रंश या मूल रूप : यौ०— मानुष - साधारण व्यक्ति।

**प्राकृतिक** - वि० [सं] प्रकृति से उत्पन्न ; प्रकृति-संबंधी, कुदरती ; लौकिक।

**प्राक्** - 1. वि० [सं] अगला ; पहले का ; 2. अव्य० पहले ; आगे ; यौ०—कथन - भूमिका ; प्रस्तावना ; —कर्म - पूर्व जन्म का कर्म ; —काल - पहले का समय ; प्राचीन काल ; —कालिक, कालीन - पहले का।

**प्राक्तन** - वि० [सं] प्राचीन ; पूर्व जन्म का।

**प्राखर्य** - पु० [सं] प्रखरता।

**प्रागभाव** - पु० [सं] अपनी उत्पत्ति के पहले कारण में कार्य का अभाव।

**प्रागल्भ्य** - पु० [सं] प्रगल्भता ; साहस ; घमंड ; दक्षता ; दृढ़ता ; वाग्मिता ; प्रबलता।

**प्रागार** - पु० [सं] भवन, इमारत।

**प्रागैतिहासिक** - वि० [सं] इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का।

**प्राग्वृत्त, प्राग्वृत्तांत** - पु० [सं] पहले की घटना।

**प्राङ्मुख** - वि० [सं] पूर्वाभिमुख।

**प्राचार** - 1. वि० [सं] जो प्रचलित प्रथा के विरुद्ध हो ; 2. पु० पंखदार चींटी।

**प्राचार्य** - पु० [सं] प्रधान आचार्य।

**प्राची** - स्त्री० [सं] पूरब।

**प्राचीन** - वि० [सं] पुराना ; पूर्व का ; यौ० —गाथा - पुरानी कथा ; —मत - पुराना विश्वास।

**प्राचीनता** - स्त्री० [सं] पुरानापन।

**प्राचीर** - पु० [सं] नगर या क़िले आदि के चारों ओर रक्षा के लिए बनायी गयी दीवार, परकोटा।

**प्राचुर्य** - पु० [सं] प्रचुर होने का भाव, बहुतायत ; राशि।

**प्राच्य** - वि० [सं] पूरबी ; पूर्वदेशीय ; प्राचीन, पुराना ; अगला।

**प्राजक** - पु० [सं] सारथी।

**प्राजन** - पु० [सं] चाबुक ; कोड़ा।

**प्राज्ञ** - 1. वि० [सं] बुद्धिमान ; चतुर ; दक्ष ; मूर्ख ; 2. पु० चतुर मनुष्य ; एक तरह का तोता ; जीवात्मा (वेदांत)।

**प्राज्ञी** - स्त्री० [सं] विदुषी।

**प्राज्य** - वि० [सं] प्रचुर ; विशाल ; ऊँचा ; दीर्घ ; जिसमें अच्छी तरह घी पड़ा हो।

**प्राणंती** - स्त्री० [सं] भूख ; छींक ; हिचकी।

**प्राण** - पु० [सं] शरीर के भीतर की जीवनाधाररूपी वायु (इसके पाँच भेद हैं—प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान) ; वायु ; श्वास ; बल ; जीव ; जीवन ; ज्ञानेन्द्रिय ; पाचन ; मूलाधार में रहनेवाली वायु ; काव्य का आत्मारूप रस ; ब्रह्म ; गंधरस ; वह जो प्राणों के समान प्रिय हो ; यौ०—आधार (प्राणाधार) - जीवन का सहारा ; पति ; प्रियतम ; —घातक - मार डालनेवाला ; —जीवन - प्राणाधार ; —त्याग - मृत्यु ; आत्महत्या ; —दंड - मौत की सज़ा ; —दाता - किसीकी जान बचानेवाला ; —दान - किसीकी प्राणरक्षा करना ; —द्यूत - जान की बाज़ी लगाना ; —द्रोह - किसीकी जान लेने की टोह में रहना ; —धन - अत्यंत प्रिय व्यक्ति ; —धारण - जीवन धारण करने की क्रिया ; जीवन-शक्ति ; जीवन का सहारा ; —धारी - प्राणी ; जीव ;

—नाथ - पति; स्वामी; प्रियतम; यमदेव; —नाश - मृत्यु; वध; —निग्रह - प्राणायाम; —पण - जान की बाज़ी; —पति - प्रियतम; पति; आत्मा; —प्यारा - अत्यंत प्रिय व्यक्ति; पति; प्रियतम; —प्रद - प्राण देनेवाला; —प्रिय - प्रियतम, पति; —भय - जान जाने का ख़तरा; —वान - जीवित; —वायु - प्राणरूपी वायु, प्राण; —संकट - जान जाने का भय; —सम - पति; प्रियतम; —सूत्र - जीवनसूत्र; —हर, हारी - प्राण हरनेवाला; —हानि - प्राणनाश; —हीन - निर्जीव; मु० — गले तक आना - मरणासन्न होना; —छोड़ना, त्यागना - मरना; —डालना - सजीव बनाना, जीवन का संचार करना; —मुँह को आना - बहुत अधिक दुख होना; — मुट्ठी में या हथेली पर लिये रहना - मरने को तैयार रहना; — से हाथ धोना - मर जाना; — पर आ पड़ना - प्राण संकट में पड़ना।

**प्राणमय** - वि० [सं] प्राणयुक्त; यौ०—कोष - शरीरवर्ती पाँच कोषों में से दूसरा।

**प्राणांत** - पु० [सं] मृत्यु।

**प्राणांतक** - वि० [सं] प्राण लेनेवाला।

**प्राणातिपात** - पु० [सं] हत्या।

**प्राणाधिक** - वि० [सं] प्राणों से भी अधिक प्रिय।

**प्राणायाम** - पु० [सं] योग; श्वास-प्रश्वास की गति का विच्छेद।

**प्राणाहुति** - स्त्री० [सं] भोजन के आरंभ में मंत्र पढ़कर पाँच ग्रास पाँचों प्राणों के निमित्त अलग निकालना।

**प्राणी** - 1. वि० [सं] प्राणवान; 2. पु० मनुष्य; जीव-जंतु; यौ०—घाती - जीवों की हत्या करनेवाला; —पीड़ा - जीवों को सताना; —वध - जीवहत्या; —हिंसा - जीवों को कष्ट देना या मारना।

**प्राणेश, प्राणेश्वर** - पु० [सं] पति; प्रियतम।

**प्राणेश्वरी** - स्त्री० [सं] पत्नी; प्रियतमा।

**प्राणोपहार** - पु० [सं] भोजन।

**प्रातः** - पु० [सं] सबेरा; 2. अव्य० सबेरे, तड़के; यौ०—कर्म, कार्य, कृत्य - प्रातःकाल किया जानेवाला कर्म; —काल, समय - सवेरे का समय, प्रभात; —कालिक - प्रातःकाल-संबंधी; —स्नान सवेरे का स्नान; —स्मरण - प्रातःकाल देवता का स्मरण; —स्मरणीय - पुण्यचरित।

**प्रात** - पु० [हिं] सबेरा।

**प्रातर्** - अव्य० [सं] सबेरे; यौ०—अशन, आश - कलेवा, —आहुति - प्रातःकाल दी जानेवाली आहुति; —गेय - स्तुतिपाठक, वंदी; जो सबेरे गाया जाय।

**प्रातिभ** - 1. वि० [सं] प्रतिमा-संबंधी; प्रतिभावान; 2. पु० प्रतिभा।

**प्रातिभासिक** - वि० [सं] अवास्तव; अवास्तविक वस्तु का भ्रमवश किसी विशेष प्रकार का भासित होना।

**प्रातिरूपिक** - वि० [सं] नक़ली।

**प्रातिलोमिक** - वि० [सं] विरुद्ध; अप्रिय।

**प्रातिवेशिक** - पु० [सं] पड़ोसी।

**प्रातिहार, प्रातिहारिक** - पु० [सं] ऐन्द्र-जालिक; बाज़ीगर।

**प्राथमिक** - वि० [सं] पहला; प्रारंभिक; पहले का।

**प्राथम्य** - वि० [सं] पहला का भाव।

**प्रादुर्भाव** - पु० [सं] प्रकट होना; उत्पत्ति।

**प्रादुर्भूत** - वि० [सं] जो प्रगट हुआ हो।

**प्रादेशिक** - 1. वि० [सं] प्रदेश संबंधी; अर्थ को बतलानेवाला; स्थानिक; सीमित; 2. पु० किसी प्रदेश का शासक, सूबेदार।

**प्रादेशिनी** - स्त्री० [सं] तर्जनी।

**प्राधान्य** - पु० [सं] प्रधानता; श्रेष्ठता; मूल कारण।

**प्राप** - पु० [सं] प्राप्ति; पहुँचना; जल का प्रचुर होना।

**प्रापणीय** - वि० [सं] प्राप्त करने या कराने योग्य।

**प्राप्त** - वि० [सं] पाया हुआ; उपस्थित; स्थापित; पूरा किया हुआ; उचित; यौ०—काल - समयोचित; —दोष - दोषी; —पंचत्व - मरा हुआ; —बीज - बोया हुआ; —बुद्धि - होश में आया हुआ; बुद्धिमान।

**प्राप्तव्य** - वि० [सं] पाने योग्य।

**प्राप्ति** - स्त्री० [सं] मिलना; उपार्जन; पूर्व-कर्मों का फल; आय; लाभ।

**प्राप्य** - वि० [सं] प्राप्त करने योग्य।

**प्राबल्य** - पु० [सं] प्रबलता; प्रधानता; शक्ति।

**प्राभृत, प्राभृतक** - पु० [सं] उपहार; रिश्वत।

**प्रामाणिक** - वि० [सं] शास्त्रसिद्ध; मानने योग्य; प्रमाण-संबंधी; शास्त्रज्ञ।

**प्रामाण्य** - वि० [सं] शास्त्रसिद्ध होना; विश्वसनीयता।

**प्रायः** - 1. वि० [सं] लगभग, क़रीब-क़रीब; 2. अव्य० अधिकतर।

**प्रायद्वीप** - पु० [हिं] स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो।

**प्रायशः** - अव्य० [सं] अधिकतर, बहुधा।

**प्रायश्चित्त** - पु० [सं] पापमुक्ति के लिए किया गया कर्म; शोधन।

**प्रायिक** - वि० [सं] प्रायः होनेवाला; सामान्य।

**प्रायोगिक** - वि० [सं] जिसका नित्य प्रयोग होता हो; प्रयोग-संबंधी।

**प्रयोज्य** - वि० [सं] प्रयोजन के योग्य।

**प्रायोद्वीप** - पु० [सं] प्रायद्वीप।

**प्रायोपगमन, प्रायोपवेश, प्रायोपवेशन** - पु० [सं] मृत्यु के लिए किया जानेवाला अनशन व्रत।

**प्रारंभ** - पु० [सं] आरंभ; कार्य; प्रयत्न।

**प्रारंभिक** - वि० [सं] आरंभ का; आरंभ में होनेवाला।

**प्रारब्ध** - 1. वि० [सं] आरंभ किया हुआ; 2. पु० भाग्य, क़िस्मत; वह कर्म जिसका फल भोगा जा रहा हो।

**प्रार्थना** - स्त्री० [सं] किसीसे कुछ माँगना, नम्र निवेदन; इच्छा; अभियोग; यौ०—पत्र - अर्ज़ी; —भंग; प्रार्थना की अस्वीकृति; —समाज - ब्रह्मसमाज-जैसा एक नवीन संप्रदाय; —सिद्धि - इच्छा की पूर्ति।

**प्रार्थनीय** - वि० [सं] प्रार्थना करने योग्य।

**प्रार्थी** - वि० [सं] प्रार्थना करनेवाला, निवेदक; इच्छुक।

**प्रालेय** - पु० [सं] बरफ़, हिम।

**प्रावरण, प्रावार** - पु० [सं] उत्तरीय; ओढ़नी; चादर; आवरण।

**प्रावृट** - पु० [सं] वर्षा ऋतु।

**प्रावृत** - वि० [सं] घिरा हुआ; ढका हुआ।

**प्रावृष** - पु० [सं] वर्षा ऋतु।

**प्रावेशन** - 1. वि० [सं] जो प्रवेश के समय किया या दिया जाय; 2. पु० कारख़ाना।

**प्रावेशिक** - वि० [सं] प्रवेश-संबंधी; जिससे प्रवेश मिले।

**प्राशन** - पु० [सं] खाना, भोजन।

**प्राशनीय** - 1. वि० [सं] खाने योग्य ; 2. पु० आहार ।

**प्राश्निक** - पु० [सं] प्रश्नकर्ता ; मध्यस्थ ; साक्षी ; सभ्य ।

**प्रासंगिक** - वि० [सं] प्रसंगप्राप्त ; प्रसंगोचित ।

**प्रास** - पु० [सं] अनुप्रास ; भाला ।

**प्रासाद** - पु० [सं] महल ; देवालय ; विशाल भवन ; यौ०—गर्भ - राजभवन के अंदर का शयनागार ; —प्रतिष्ठा - देवालय में मूर्ति का स्थापन ।

**प्रास्ताविक** - वि० [सं] प्रस्ताव के रूप में काम आनेवाला ; समयोचित ।

**प्रियंगु** - स्त्री० [सं] कँगनी नामक अनाज ; पीपल ; राई ।

**प्रियंवद** - वि० [सं] प्रिय बोलनेवाला ।

**प्रिय** - 1. वि० [सं] प्यारा ; अच्छा लगनेवाला ; खर्चीला ; 2. पु० पति ; प्रेमी; अनुकूल बात; हित; यौ०—कांक्षी - भला चाहनेवाला ; —काम - हितैषी ; —कारक, कारी - हित करनेवाला ; —जन - स्नेहपात्र व्यक्ति ; सगा-संबंधी ; —दर्श - जो देखने में अच्छा लगे ; —दर्शन - सुंदर ; —दर्शी - सबको स्नेह की दृष्टि से देखनेवाला ; —पात्र - प्यारा; —भाषण - प्रियवचन ; —भाषी, वक्ता - मीठी बात कहनेवाला ; चापलूस ; —संदेश - खुशखबरी ।

**प्रियतम** - 1. वि० [सं] सबसे अधिक प्यारा ; 2. पु० पति ; प्रेमी ।

**प्रियतमा** - 1. वि० [सं] सबसे अधिक प्यारी ; 2. स्त्री० पत्नी ; प्रेमिका ।

**प्रिया** - स्त्री० [सं] पत्नी, स्त्री ; प्रेमिका ; छोटी इलायची ; चमेली ; मदिरा ; संवाद ।

**प्रियाख्यान** - पु० [सं] शुभ समाचार ।

**प्रियोक्ति** - स्त्री० [सं] चापलूसी की बात ।

**प्रीत** - 1. वि० [सं] प्रीतियुक्त ; प्रसन्न ; 2. स्त्री० [हिं] प्रेम ।

**प्रीतम** - पु० [हिं] प्रियतम ; आशिक ।

**प्रीति** - स्त्री० [सं] प्रेम ; प्रसन्नता ; तृप्ति ; कृपा ; यौ०—कर, कारक, कारी - प्रेम उत्पन्न करनेवाला ; —पात्र - प्रेमभाजन ; —भोज - संबंधियों तथा इष्ट-मित्रों को प्रेमपूर्वक दिया गया भोज ।

**प्रेंख** - पु० [सं] झूला, पालना ।

**प्रेक्षक** - पु० [सं] दर्शक ।

**प्रेक्षण** - पु० [सं] देखना ; आँख ; किसी प्रकार का अभिनय या तमाशा आदि खेल ।

**प्रेक्षणीय** - वि० [सं] देखने योग्य ; सुंदर ; दृष्टिगोचर ।

**प्रेक्षा** - स्त्री० [सं] देखना ; दृश्य ; शाखा ; विवेक-बुद्धि ; यौ०—गृह, स्थान - राजाओं का मंत्रणागृह ; रंगशाला ; —समाज - दर्शकों का समुदाय ।

**प्रेत** - 1. पु० [सं] मृतात्मा ; एक प्रकार की देवयोनि ; भयंकर आकृतिवाला आदमी ; अथक परिश्रम करनेवाला आदमी ; 2. वि० मृत, मरा हुआ ; यौ०—कर्म, कृत्य - प्रेत के निमित्त दाह आदि से लेकर सपिण्डीकरण तक किया जानेवाला कृत्य ; —तर्पण - प्रेत के निमित्त किया जानेवाला तर्पण ; —दाह - शव को जलाने की क्रिया ; —धूम - चिता का धुआँ ; —पक्ष - पितृपक्ष ; —पुरी - यमपुरी ; —भूमि - श्मशान ; —विधि - मृतकसंस्कार ।

**प्रेम** - पु० [सं] अनुराग, प्यार ; कृपा ; क्रीड़ा ; आनंद ; मज़ाक ; माया और लोभ ; यौ० —कलह - प्रेमवश किया जानेवाला कलह ; —पात्र - प्रेमभाजन ;

—पाश - प्रेम का बंधन ;—पुत्तलिका - प्रियतमा ; —पुलक - प्रेम के कारण होनेवाला रोमांच ; —भक्ति - प्रेमभाव से की जानेवाली विष्णुभक्ति (वैष्णव) ; —वारि-प्रेम के कारण आँखों से निकलनेवाले आँसू ।

**प्रेमालाप** - पु० [सं] प्रेमपूर्वक की जानेवाली बातचीत ।

**प्रेमालिंगन** - पु० [सं] नायक-नायिका का परस्पर आलिंगन ; प्रेम के आवेश में गले लगाना ।

**प्रेमाश्रु** - पु० [सं] प्रेम के कारण आँखों से निकलनेवाले आँसू ।

**प्रेमी** - पु० [सं] आशिक ।

**प्रेय** - 1. वि० [सं] प्रियतर ; 2. पु० सांसारिक सुख ; [हिं] प्रेमी ।

**प्रेयसी** - स्त्री० [सं] प्रियतमा ।

**प्रेरक** - पु० [सं] प्रेरणा करनेवाला; प्रयोजक; भेजनेवाला ।

**प्रेरण** - पु० [सं] प्रेरणा करना ; फेंकना ; भेजना ; आदेश ; चेष्टा ।

**प्रेरणा** - स्त्री० [सं] प्रवृत्त करने की क्रिया ; उत्तेजना ; दबाव ; फेंकना ।

**प्रेरयिता** - पु० [सं] प्रेरक ; फेंकनेवाला ; भेजनेवाला ।

**प्रेरित** - वि० [सं] प्रेरणा किया हुआ ; प्रेषित ; आदिष्ट ; फेंका हुआ ।

**प्रेषक** - पु० [सं] भेजनेवाला ; आदेश देनेवाला ।

**प्रेषण** - पु० [सं] भेजना ; प्रेरणा करना ।

**प्रेषणीय** - वि० [सं] भेजने या प्रेरणा करने योग्य ।

**प्रेषित** - वि० [सं] भेजा हुआ ; निर्वासित ; नियोजित ।

**प्रेष्ठ** - 1. वि० [सं] अत्यंत प्रिय ; 2. पु० प्रियतम ।

**प्रेष्ठा** - स्त्री० [सं] प्रियतमा ; जंघा ।

**प्रेष्य** - पु० [सं] नौकर ; दूत ; सेवा ; यौ०— जन - नौकरों का समुदाय ; —भाव - दासता ।

**प्रोक्त** - वि० [सं] कहा हुआ ; कथित ।

**प्रोक्षण** - पु० [सं] छिड़काव ; सेचन ; यज्ञ के निमित्त पशु का वध करना ।

**प्रोक्षित** - वि० [सं] जल आदि से सिक्त ; बलिदान किया हुआ पशु ।

**प्रोत** - 1. वि० [सं] सिला हुआ ; बंधा हुआ ; छिपा हुआ ; जड़ा या जोड़ा हुआ . 2. पु० वस्त्र, कपड़ा ।

**प्रोत्फल** - पु० [सं] ताड़-जैसा एक वृक्ष ।

**प्रोत्फुल्ल** - वि० [सं] पूर्ण रूप से विकसित ।

**प्रोत्साह** - पु० [सं] अत्यधिक उत्साह ।

**प्रोद्‌क** - वि० [सं] गीला ।

**प्रोद्गत** - वि० [सं] आगे निकला हुआ ।

**प्रोनोट** - पु० [अंग्रे] वह रुक्का जो कर्ज़ लेनेवाला रसीद के तौर पर लिखता है ।

**प्रोन्नत** - वि० [सं] विशेष रूप से उन्नत ; बढ़ा-चढ़ा ; शक्तिशाली ।

**प्रोषित** - वि० [सं] प्रवासी ; यौ०—पतिका, प्रेयसी, भर्तृका - वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो ; —मरण - विदेश में मरना ।

**प्रोष्ठ, प्रौष्ठ** - पु० [सं] साँड़ ; बेंच ; सौरी मछली ; यौ०—पद - भाद्रपद मास ।

**प्रोष्ण** - वि० [सं] बहुत गरम ।

**प्रोसिक्त** - वि० [सं] अत्यधिक घमंड करनेवाला ।

**प्रौढ** - वि० [सं] जो पूरा बढ़ चुका हो ; अधेड़ · पुष्ट ; दक्ष ; अनुभवी ; प्रगल्भ ; विवाहित ; यौ०—पाद - जो उकडूँ होकर बैठा हो ; —वाद - प्रबल या गर्व भरी उक्ति ।

**प्रौढता** - स्त्री० [सं] प्रौढ होने का भाव ।

**प्रौढा** - स्त्री० [सं] अधिक उम्रवाली स्त्री ।

**प्रौढ़ि** - स्त्री० [सं] परिपक्वता ; सामर्थ्य ; धृष्टता ; साहस ; **यौ०**—वाद - हठोक्ति ।

**प्रौढोक्ति** - स्त्री० [सं] प्रबल उक्ति ।

**प्लवंग** - पु० [सं] बंदर ; मृग ।

**प्लवगाम** - पु० [सं] मेंढक ; वानर ।

**प्लव** - पु० [सं] तैरना ; छोटी नाव ; उछाल ; चांडाल ; बंदर ; भेड़ा ; मेंढक; शत्रु ; जलकुक्कुट ; नागरमोथा ; उतार ; नदी की बाढ़ ; शब्द ; एक संवत्सर ।

**प्लवक** - पु० [सं] नर्तक ; चांडाल ; मेंढक ।

**प्लवगा** - पु० [सं] बंदर ; मेंढक ; सारथी ।

**प्लवन** - पु० [सं] तैरना ; उछलना ; उड़ना ; उतार ; घोड़े की एक चाल ।

**प्लाव** - पु० [सं] जल आदि का उमड़कर बहना ; उछाह ; डुबकी ।

**प्लावन** - पु० [सं] गोता लगाना ; किसी वस्तु को पानी में डुबाना ; बाढ़ ; जल आदि का उमड़कर बहना ।

**प्लावित** - 1. वि० [सं] जो जल में डूब गया हो ; जल आदि से व्याप्त ; 2. पु० बाढ़ ।

**प्लीहा** - स्त्री० [सं] तिल्ली ।

**प्लुत** - 1. वि० [सं] जल आदि से व्याप्त ; उछला हुआ ; ढका हुआ ; 2. पु० उछाल ; घोड़े की एक प्रकार की चाल ; तीन मात्राओंवाला वर्ण ; तीन मात्राओंवाला ताल (संगीत) ; **यौ०**—गति - उछलते या छलाँग मारते हुए चलना ;—स्वर - उच्च स्वर ।

**प्लुति** - स्त्री० [सं] उछलते हुए चलना ; उछाल ; जल आदि का उमड़कर चारों ओर फैल जाना ; घोड़े की एक विशेष चाल ।

**प्लोत** - पु० [सं] घाव पर बाँधी जानेवाली पट्टी ; कपड़ा ।

**प्लोष** - पु० [सं] जलना ।

**प्लोषण** - 1. वि० [सं] जलनेवाला ; 2. पु० जलन ।

## फ

**फंक** - स्त्री० [हि] फाँक, चीरा हुआ टुकड़ा ।

**फंका** - पु० [हि] फाँक ; एक बार में खाने या फंकने योग्य चूर्ण की मात्रा ।

**फंकी** - स्त्री० [हि] फाँकी जानेवाली दवा ; रेचन-चूर्ण ; छोटी फाँक ।

**फंग** - पु० [हि] बंधन ; अधीनता ; फंदा ; प्रेम ।

**फंड** - पु० [सं] उदर ; [अंग्र] किसी कार्य-विशेष के लिए एकत्र किया हुआ धन ।

**फंद** - पु० [हिं] फंदा ; मायाजाल ; कपट ; क्लेश ।

**फंदना** - 1. अ० [हिं] फंदे में पड़ना ; मुग्ध होना ; 2. स० लाँघना ।

**फंदा** - पु० [हिं] फाँस ; पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल ; बंधन ; छल ; दुःख ; मु०—छुड़ाना - क़ैद से रिहा करना ; फंदे में पड़ना - वश में होना ; फंदे में लाना - जाल में फँसाना ; धोखे से वश में करना ।

**फँफाना** - अ० [हि] हकलाना ; दूध का उफान आना ।

**फँसना** - अ० [हिं] फंदे में पड़ना ; पकड़ में आना ; उलझना ।

**फँसाना** - स० [हिं] फंदे में लाना ; उलझाना ; क़ाबू में करना ।

**फँसिहारा** - पु० [हिं] ठग ; फ़रेबी ।

**फँसौरि** - स्त्री० [हिं] फंदा ।

**फ** - 1. पु० [सं] कटुवचन ; निष्फल वचन ; झंझावात ; जंभाई ; निष्फलता ; विस्तार ; 2. वि० प्रकट ; प्रत्यक्ष ।

**फ़क़** - वि० [अ] स्वच्छ ; सफ़ेद ; फीका ; बदरंग ; मु०—पड़ जाना - भय आदि के कारण चेहरे का पीला या सफ़ेद हो जाना ।

**फ़कड़ी** - स्त्री० [हिं] फ़ज़ीहत ।

**फ़क़त** - 1. वि० [अ] अकेला; केवल; 2. अव्य० एकमात्र, सिर्फ़ ।

**फका** - पु० [हिं] फाँक; टुकड़ा ।

**फ़क़ीर** - पु० [अ] भिखारी; साधु; अकिंचन मनुष्य ।

**फ़क़ीराना** - 1. वि० [अ] फ़क़ीरों-जैसा; 2. पु० फ़क़ीरों के निर्वाह के लिए दान में दी गयी भूमि ।

**फ़क़ीरी** - स्त्री० [अ] भिखारीपन; साधुता; अकिंचनता ।

**फ़क़ीह** - पु० [अ] इस्लामी धर्मशास्त्र का पंडित ।

**फ़क्क** - पु० [अ] छुटकारा; खोलना ।

**फक्क** - पु० [सं] पंगु ।

**फक्कड़** - पु० [हिं] मस्त व्यक्ति; उच्छृंखल व्यक्ति; गाली-गुफ़्ता; यौ० —बाज़ - गाली-गुफ़्ता बकनेवाला ।

**फक्किका** - स्त्री० [सं] तत्त्व-निर्णय के लिए उपस्थित किया हुआ पूर्वपक्ष; कपटयुक्त व्यवहार ।

**फ़ख़ीर** - वि० [अ] घमंड करनेवाला ।

**फ़ख़्र** - पु० [अ] गर्व, नाज़; शेख़ी ।

**फ़ख़्रिया** - अव्य० [अ] घमंड के साथ ।

**फगुआ** - पु० [हिं] फाग; फाग के उपलक्ष्य में दिया जानेवाला उपहार ।

**फगुहरा** - पु० [हिं] फाग खेलने या गानेवाला ।

**फ़ज्र** - स्त्री० [अ] प्रातःकाल ।

**फ़ज़्ल** - पु० [अ] अनुग्रह; कृपा; अधिकता; विद्या; महत्ता ।

**फज्जा** - स्त्री० [सं] विस्तृत क्षेत्र ।

**फ़ज़ीलत** - स्त्री० [अ] गौरव, महत्ता ।

**फ़ज़ीह** - वि० [अ] बदनाम करनेवाला ।

**फ़ज़ीहत** - स्त्री० [अ] अपमान; दुर्दशा; बदनामी ।

**फ़ज़ूल** - वि० [अ] ज़्यादा; अनावश्यक ।

**फ़ज़्ल** - पु० [अ] फ़ज़ल ।

**फट** - 1. स्त्री० [अनु] लकड़ी आदि के फटने से उत्पन्न होनेवाला शब्द; यौ० —से - अतिशीघ्र; तत्काल; 2. पु० [सं] साँप का फैला हुआ फन; धूर्त ।

**फटक** - 1. पु० [हिं] स्फटिक; 2. अव्य० तुरंत ।

**फटकन** - स्त्री० [हिं] अनाज आदि को फटकने से निकलनेवाला सारहीन पदार्थ ।

**फटकना** - 1. स० [हिं] पछोरना; फेंकना; झाड़ना; 2. अ० पहुँचना; पृथक् होना; फड़फड़ाना; श्रम करना ।

**फटका** - पु० [हिं] धुनिये की धुनकी; काव्यगुणरहित कविता; तड़फड़ाहट; फाटक ।

**फटकार** - स्त्री० [हिं] दुतकार; फटकारने की क्रिया या भाव ।

**फटकारना** - स० [हिं] फेंकना; अलग करना; झटका मारना; दुतकारना ।

**फटकी** - स्त्री० [हिं] पिंजड़ा या जालविशेष ।

**फटना** - अ० [हिं] दरार होना; विदीर्ण होना; पृथक् हो जाना; घोड़े का सवार के आदेश के विरुद्ध चलना ।

**फटफटाना** - स० [हिं] बकवास करना; दौड़-धूप करना; [अनु] 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करना ।

**फटहा** - वि० [हिं] फटा हुआ; अंड-बंड बकनेवाला ।

**फटा** - 1. स्त्री० [सं] साँप का फन; दाँव; छल; 2. वि० [हिं] फटा हुआ; गया-गुज़रा; 3. पु० छेद; मु० फटी आवाज़ में - भर्राई हुई आवाज़ में ।

**फटेहाल** - वि० [हिं] जिसके पास कुछ न हो, दरिद्र ।

**फटाका** - पु० [अनु] 'फट' की बुलंद आवाज़।

**फटाटोप** - पु० [सं] साँप का फन फैलाना।

**फटिक** - पु० [हिं] स्फटिक।

**फटिका** - स्त्री० [हिं] एक तरह की शराब।

**फट्टा** - पु० [हिं] चीरे हुए बाँस का लंबा और चिपटा टुकड़ा।

**फट्टी** - स्त्री० [हिं] पतला फट्ठा।

**फड़** - 1. पु० चरख; 2. स्त्री० [हिं] पंख आदि के हिलने से उत्पन्न होनेवाला शब्द; पंक्ति; जुए का दाँव; जुए का अड्डा; यौ०—बाज़ - जुआरी; मु० — लगाना - दाँव लगाना।

**फड़क** - स्त्री० [हिं] फड़कने की क्रिया या भाव; स्फुरण।

**फड़कना** - अ० [हिं] थोड़ा-थोड़ा कंपित होना; अंगों का स्फुरित होना; हिलना-डुलना या गतियुक्त होना।

**फड़नवीस** - पु० [हिं] मराठों के शासनकाल का एक राजपद।

**फड़फड़ाना** - स० [अनु] चिड़िया आदि का अपने पंखों को हिलाकर 'फड़-फड़' शब्द करना; छटपटाना; फटफटाना; उत्सुक होना।

**फड़वाना** - स० [हिं] किसीको फाड़ने में प्रवृत्त करना।

**फड़िया** - पु० [हिं] फड़बाज़; जुए के अड्डे का मालिक; फुटकर अन्न बेचनेवाला।

**फड़ी** - स्त्री० [हिं] ईंट या पत्थर आदि का एक गज़ चौड़ा, एक गज़ ऊँचा और तीस गज़ लंबा ढेर।

**फड़ुआ** - पु० [हिं] फावड़ा।

**फन** - पु० [सं] साँप का फन; नथना; यौ०—धर - साँप; शिव; —भृत् - साँप; नौ की संख्या; —मणि - सर्प के फन पर स्थित मणि।

**फणिक** - पु० [सं] सर्प।

**फणींद्र** - पु० [सं] शेषनाग; पतंजलि मुनि।

**फणी** - पु० [सं] सर्प; राहु; पतंजलि; रांगा या टीन।

**फणीश, फणीश्वर** - पु० [सं] फणींद्र।

**फ़तवा** - पु० [अ] मुसलमानों के धर्मशास्त्र के अनुसार शुभाशुभ कर्म के संबंध में शास्त्रीय व्यवस्था।

**फ़तह** - स्त्री० [अं] विजय; सफलता; यौ० —नसीब, मंद, याब - विजयी; —नामा - विजय की खुशी में की जाने-वाली प्रशस्ति, गाथा; —पेच - पगड़ी बाँधने का एक ढंग; स्त्रियों का बाल गूँथने का एक ढंग।

**फतिंगा** - पु० [हिं] पतंग, परवाना।

**फ़तील, फ़तीला** - पु० [अ] दीपक की बत्ती; रूई की मोटी बत्ती; पलीता; बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज़ जिसपर कोई यंत्र लिखा हो; यौ०—सोज़ - दीवट, शमादान।

**फ़तूर** - पु० [अ] विकार; हानि; विघ्न; उपद्रव।

**फ़तूरिया, फ़तूरी** - वि० [अ] उपद्रवी।

**फ़तूही** - स्त्री० [अ] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती; लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

**फते, फतेह** - स्त्री० [उ] फ़तह, विजय।

**फ़त्तौं** - 1. वि० [अ] आफ़त करनेवाला; दुष्ट; 2. पु० शैतान; सुनार।

**फ़त्ताह** - 1. वि० [अ] फ़तह करनेवाला, विजयी; खोलनेवाला; 2. पु० परमेश्वर।

**फदकना** - अ० [अनु] भात आदि का पकते समय 'फद-फद' शब्द करना।

**फद्फदाना** - अ० [अनु] फदकना; शरीर में अधिक फुंसियाँ या गरमी के दाने निकल आना।

**फन** - पु० [हिं] साँप का फैला हुआ सिर, फण।

**फ़न** - पु० [अ] गुण; विशेषता; विद्या; दस्तकारी; कौशल; कारीगरी; छल; हुनर; कला: **यौ०**—कार - कलाकार; हर-फ़न मौला - प्रत्येक कला में निपुण।

**फनकना** - अ० [अनु] 'फन-फन' शब्द करना; सनसनाहट के साथ चलना।

**फनगना** - अ० [हिं] पनपना।

**फनगा** - पु० [हिं] अंकुर; फतिंगा।

**फनफनाना** - अ० [अनु] तेज़ी से हिलना।

**फनस** - पु० [हिं] कटहल।

**फ़ना** - 1. स्त्री० [अ] विनाश; मृत्यु; परमात्मा और जीवात्मा का अभेद होना; 2. वि० नष्ट; मृत; **यौ०**—फ़िल्ला - ईश्वर में लीन।

**फनाना** - स० [हिं] आरंभ कराना; तैयार कराना।

**फनिक, फनिग** - पु० [हिं] साँप; फतिंगा।

**फनियाला** - पु० [हिं] साँप; तानी लपेटने के काम की करघे की एक लकड़ी, लपेटन।

**फन्नी** - स्त्री० [हिं] कपड़ा बुनने का एक औज़ार; पच्चर।

**फपकना** - अ० [हिं] बढ़ना; पुष्ट होना।

**फपक** - स्त्री० [हिं] वृद्धि; बाढ़।

**फफकना** - अ० [हिं] रुक-रुककर रोना।

**फफका** - पु० [हिं] फफोला।

**फफदना** - अ० [हिं] गोबर आदि का विकारविशेष के कारण बढ़कर फैलना।

**फफूँदी** - स्त्री० [हिं] नीवि; नारा; फल या लकड़ी आदि पर बरसात में जमनेवाली काई की तरह की एक सफ़ेद वस्तु, भुकड़ी।

**फफोला** - पु० [हिं] छाला; **मु०** दिल के फफोले फोड़ना - जली-कटी सुनाना।

**फबती** - स्त्री० [हिं] प्रसंगानुकूल उक्ति; व्यंग्य: मु०—उड़ाना, कसना - चुटकी लेना।

**फबना** - अ० [हिं] शोभा देना।

**फबाना** - स० [हिं] सजाना।

**फबि** - स्त्री० [हिं] शोभा, छवि।

**फबीला** - वि० [हिं] शोभा देनेवाला; सुंदर।

**फ़म्म** - पु० [अ] मुख।

**फ़र** - पु० [अ] शोभा; चमक-दमक; **यौ०** कर्र व-फ़र - शान-शौकत।

**फ़रक़** - 1. पु० [अ] अंतर, भेद; फ़र्क़; 2. स्त्री० [हिं] फड़क।

**फरकन** - स्त्री० [हिं] फड़कना।

**फरका** - पु० [हिं] बँड़ेर पर रखा जानेवाला छप्पर; दरवाज़े पर लगाया जानेवाला टट्टर।

**फरकाना** - स० [हिं] अलग करना; फड़काना।

**फरकिल्ला** - पु० [हिं] गाड़ी में हरिस के बाहर पटरी में लगाया जानेवाला खूँटा।

**फरचा** - वि० [हिं] साफ़, शुद्ध।

**फरचाई** - स्त्री० [हिं] सफ़ाई, शुद्धता।

**फरचाना** - 1. स० [हिं] शुद्ध करना; आदेश देना; 2. अ० साफ़ होना।

**फ़रज़ंद** - पु० [फ़ा] बेटा।

**फ़रज़ंदी** - स्त्री० [फ़ा] बाप-बेटे का नाता।

**फ़रज़** - 1. स्त्री० [अ] दरार; फैलाव; 2. पु० फ़र्ज़।

**फ़रज़ानगी** - स्त्री० [फ़ा] बुद्धिमानी।

**फ़रज़ाना** - वि० [फ़ा] बुद्धिमान।

**फ़रज़ाम** - पु० [फ़ा] अंत; परिणाम।

**फ़रज़ीं, फ़रज़ीन** - पु० [फ़ा] बुद्धिमान; शतरंज का वज़ीर; **यौ०**—बंद - पैदा के ज़ोर पर पड़नेवाली वज़ीर की शह (शतरंज में)।

**फ़रतूत** - वि० [फ़ा] अतिवृद्ध ; मूर्ख ; निरर्थक ।

**फ़रदा** - पु० [फ़ा] आनेवाला कल ।

**फरफंद** - पु० [हि] छल-कपट ; नखरा ।

**फ़रफ़र** - 1. स्त्री० [फ़ा] जल्दी ; 2. अव्य० जल्दी-जल्दी ।

**फ़रमा** - वि० [फ़ा] आज्ञा करनेवाला ।

**फ़रमाइश** - स्त्री० [फ़ा] आज्ञा ।

**फ़रमाइशी** - वि० [फ़ा] विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ ।

**फ़रमान** - पु० [फ़ा] राजकीय आज्ञापत्र ; अनुशासन-पत्र ।

**फ़रमाना** - स० [फ़ा] आज्ञा देना ; कहना ।

**फरवार** - पु० [हि] खलिहान ।

**फरवी** - स्त्री० [हिं] भुना हुआ चावल ; लाई ।

**फ़रश** - पु० [अ] बैठने के लिए बिछाने का वस्त्र ; समतल भूमि ; पक्की बनी हुई ज़मीन ; यौ०—बंद - फ़र्श के रूप में बना हुआ ऊंचा स्थान ।

**फ़रशी** - 1. स्त्री० [फ़ा] गुड़गुड़ी ; 2. वि० फ़रश का ; यौ०— जूता - फ़र्श पर या घर में पहनने का जूता ; —पंखा - छत में लटकाने का पंखा ; —सलाम - बहुत झुककर किया जानेवाला सलाम ।

**फ़रसंग** - पु० [फ़ा] अठारह हज़ार फुट के फ़ासले की एक माप ।

**फरसा** - पु० [हिं] परशु ; फावड़ा ।

**फ़रसूदा** - वि० [फ़ा] जीर्ण ; शिथिल ; दुर्दशाग्रस्त ।

**फ़रहंग** - पु० [फ़ा] बुद्धिमत्ता ; कोष ; व्याख्या ।

**फ़रहत** - स्त्री० [अ] प्रसन्नता ।

**फरहर** - वि० [हिं] तेज़ ; चालाक ।

**फरहरना** - अ० [हि] फड़कना ; फहराना ।

**फरहरा** - 1. पु० [हिं] पताका ; 2. वि० अलग-अलग ; शुद्ध ; प्रसन्न ।

**फरहरी** - स्त्री० [हिं] एक जंगली फल ।

**फ़रहाँ** - वि० [फ़ा] प्रसन्न ।

**फ़राख़** - वि० [फ़ा] चौड़ा ; विशाल ; विस्तृत ; यौ० —दस्त, दामन - धनी ; उदार ; —हौसला - ऊंची हिम्मतवाला ; धैर्यवान ।

**फ़राख़ी** - स्त्री० [फ़ा] फैलाव ; ख़ुशहाली ; बहुलता ; घोड़े का तंग ।

**फ़राग़त** - स्त्री० [अ] छुटकारा ; बेफ़िक्री ; मलत्याग ; यौ० —ख़ाना - पाख़ाना ; मु०— जाना - शौच जाना; —पाना - फ़ुरसत पाना ; छुटकारा पाना ।

**फ़राज़** - 1. वि० [फ़ा] ऊंचा ; 2. पु० ऊँचाई ।

**फ़राज़ी** - स्त्री० [फ़ा] ऊंचाई ।

**फ़रामोश** - 1. वि० [फ़ा] विस्मृत ; 2. पु० लड़कों का एक खेल ; यौ०—कार - विस्मरणशील ।

**फरार** - 1. वि० [हिं] फ़रार ; 2. पु० फलाहार ; फैलाव ।

**फ़रार** - 1. पु० [अ] भागना ; गायब होना ; 2. वि० भागा हुआ ।

**फ़रारी** - वि० [अ] भागा हुआ ।

**फ़राहम** - वि० [फ़ा] इकट्ठा किया हुआ ।

**फ़राहमी** - स्त्री० [फ़ा] इकट्ठा करना ; जुटाना ।

**फ़रियाद** - स्त्री० [फ़ा] दुःख से बचाये जाने के लिए पुकार ; दुहाई ; नालिश ; यौ०—रस - उत्पीड़ित को न्याय दिलानेवाला ; —रसी - इन्साफ़ ।

**फ़रियादी** - 1. वि० [फ़ा] फ़रियाद करनेवाला ; 2. पु० अभियोक्ता ।

**फरियाना** - 1. स० [हिं] साफ़ करना ; निर्णय करना ; 2. अ० साफ़ होना ; निर्णीत होना ।

**फ़रिश्ता** - पु० [फ़ा] ईश्वर का दूत; देवता।

**फरी** - स्त्री० [हिं] चमड़े की ढाल; फड़।

**फ़रीक़** - पु० [अ] विवेकशील; झुंड; किसी प्रकार का झगड़ा या विवाद करनेवालों में से एक; यौ० फ़रीक़े-अव्वल - मुद्दई; फ़रीक़े-बंदी - गुटबंदी; फ़रीक़े-सानी - मुद्दालेह; —सालिस - तीसरा पक्ष जो मुक़द्दमे में अपने आप आ कूदे।

**फ़रीक़ैन** - पु० [अ] वादी व प्रतिवादी; उभयपक्ष।

**फ़रीज़ा** - पु० [अ] खुदा का हुक्म जिसका पालन बंदों के लिए कर्तव्य हो।

**फ़रीद** - वि० [अ] अनुपम, बेजोड़।

**फरुवक** - पु० [सं] पीकदानी।

**फरहरी** - स्त्री० [हिं] स्पंदन।

**फरुहा** - पु० [हिं] फावड़ा

**फ़रूग़** - पु० [फ़ा] ज्योति, चमक।

**फ़रेफ़्ता** - वि० [फ़ा] धोखा खानेवाला; मुग्ध; आसक्त।

**फ़रेब** - पु० [फ़ा] छल; धूर्तता; यौ०—कार - धोखेबाज़; —खुर्दा - ठगाया हुआ; —दिही - धोखा देना।

**फ़रेबी** - वि० [फ़ा] कपटी।

**फरेरा** - पु० [हिं] झंडा, पताका।

**फ़रो** - 1. अव्य० [फ़ा] नीचे; 2. वि० तुच्छ; शांत; यौ० —कश - उतरना; ठहरना; —गुज़ाश्त - उपेक्षा; आगा-पीछा; त्रुटि; भूल; —तन - ग़रीब।

**फ़रोख़्त** - स्त्री० [फ़ा] बिक्री।

**फ़रोग़** - पु० [फ़ा] फ़रूग़।

**फ़रोश** - पु० [फ़ा] विक्रेता।

**फ़रोशी** - स्त्री० [फ़ा] बेचने की क्रिया, विक्रय।

**फ़र्क़** - पु० [अ] फ़रक़।

**फ़र्ज़** - 1. स्त्री० [अ] दरार; भग; 2. पु० कर्तव्य-कर्म; ज़िम्मेदारी; यौ० —किफ़ाया - परिवार के मुख्य व्यक्ति द्वारा किया जानेवाला कर्तव्य।

**फ़र्ज़न** - अव्य० [अ] फ़र्ज़ करके; मानकर।

**फ़र्ज़न्द** - पु० [फ़ा] पुत्र; संतान।

**फ़र्ज़ानगी** - स्त्री० [फ़ा] बुद्धिमत्ता; विद्या; गुण; योग्यता।

**फ़र्ज़ाना** - वि० [फ़ा] बुद्धिमान; ज्ञानी; विद्वान।

**फ़र्ज़ी** - वि० [अ] कल्पित; सत्ताहीन।

**फ़र्त** - स्त्री० [अ] अधिकता।

**फ़र्द** - 1. स्त्री० [अ] काग़ज़ या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा; निमंत्रितों की सूची; चिट्ठा; चादर; रजाई के ऊपर का पल्ला; 2. वि० अकेला; बेजोड़; 3. पु० अकेला आदमी; यौ० —जुर्म - अभियोगसूची; —तालीक़ा - कुर्क़ किये हुए माल की सूची; —बशर - व्यक्ति; —हिसाब - हिसाब का चिट्ठा।

**फ़र्दन-फ़र्दन** - अव्य० [अ] अलग-अलग; हर आदमी से।

**फ़र्र** - पु० [अ] रोशनी; शान-शौकत; दबदबा।

**फर्राटा** - पु० [हिं] तेज़ी।

**फ़र्रार** - वि० [अ] बहुत तेज़ भागने या दौड़नेवाला।

**फ़र्राश** - पु० [अ] फ़र्श बिछाने या दीपक जलानेवाला (नौकर); ख़ेमा लगानेवाला।

**फ़र्राशी** - स्त्री० [फ़ा] फ़र्राश का काम; यौ० —पंखा - बड़ा पंखा।

**फ़र्रुख़** - वि० [फ़ा] शुभ; सुंदर।

**फ़र्श** - पु० [अ] फ़रश; ज़मीन पर बिछायी जानेवाली दरी या क़ालीन आदि;

बिछावन; धरातल; कंकड़ आदि कूटकर पक्की की गयी ज़मीन; यौ० फ़र्शेख़ाक - ज़मीन; मु० —से अर्श तक - धरती से आकाश तक; फ़र्शेज़मीं होना - मरना : दफ़न होना।

**फ़र्शी** - 1. स्त्री०, 2. वि० [अ] फ़रशी : यौ० —जूता - घर में पहनने का जूता; स्लीपर; —झाड़ - फ़र्श पर रखकर जलाया जानेवाला झाड़; —सलाम - बहुत झुककर किया जानेवाला सलाम; —हुक्का - चौड़े पेंदे का हुक्का।

**फल** - पु० [सं] वृक्ष आदि का फल; शस्य; संतान; कर्मपरिणाम; बदला; कर्म से प्राप्त होनेवाला सुख-दुखरूपी भोग; सूद; लाभ; हानि; प्रयोजन; उद्देश्य; तीर या बर्छे आदि का अग्रभाग; ढाल; फाल; यौ० —कंटक - कटहल; —कर - फलों पर लगनेवाला महसूल; —काम - फल की कामना करनेवाला; —काल - फल का मौसम; —केसर - नारियल का पेड़; —कोष - अंडकोष; —खंडन - फल की अप्राप्ति, नैराश्य; —ग्राही - लाभ उठानेवाला; —छदन - तख्तों से बना हुआ मकान; —त्रय, त्रिक - त्रिफला; त्रिकुटी; —द - फल देनेवाला; वृक्ष; —दाता, प्रद - लाभदायक; —दान - ब्याह पक्का करने के लिए वर को रुपये आदि देने की रस्म; —निर्वृति - अंतिम परिणाम; —निर्वृत्ति - फलप्राप्ति में विराम; —निष्पत्ति - फल की उत्पत्ति; —परिणति, परिणाम, पाक - फल का अच्छी तरह पक जाना; कर्म का शुभा-शुभ फल; —पुच्छ - गाजर, शलजम आदि के वर्ग की वनस्पति; —पूर, पूरक - बिजौरा नींबू; —प्राप्ति - सफलता; —फूल - फल और फूल; —भागी - फल भोगने या पानेवाला; —भोग कर्मफल का भोग; —मुंड - नारियल का पेड़; —योग - फलप्राप्ति; वेतन; पुरस्कार; —राज - तरबूज; —श्रुति - सत्कर्म का फल बतानेवाला वाक्य या ऐसे वाक्य का श्रवण; —संपद - फलों की प्रचुरता; सफलता; —साधन - अभीष्ट-सिद्धि का साधन; —सिद्धि - फल-प्राप्ति; —स्थापन - सीमन्तोन्नयन संस्कार; —हीन - निष्फल; —हेतु - फल के उद्देश्य से काम करनेवाला।

**फलक** - पु० [सं] लकड़ी का तख्ता; तांबे, हाथीदाँत, दफ्ती आदि का पट्ट जो लेख या चित्र के आधार का काम देता है; चौकी; नितंब; हथेली; लाभ; कमल का बीजकोष; ललाट की हड्डी; धोबी का पाट; ढाल; फल; यौ०—यंत्र - भास्कराचार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिष-संबंधी यंत्र।

**फ़लक** - पु० [अ] आकाश; स्वर्ग; यौ० —ज़दा - मुसीबत का मारा; —परवाज़ - आसमान पर पहुँचनेवाला; —रुतबा, मर्तबा - ऊँचे पद पर आसीन; —सैर - वायुवेगवाला (घोड़ा); फ़लकेपीर - बूढ़ा; मु०— याद आना - ज़माने के उलट-फेर याद आना।

**फलकना** - अ० [हिं] छलकना; फरकना।

**फलका** - पु० [हिं] फफोला, झलका।

**फ़लकी** - वि० [अ] आकाशीय।

**फलतः** - अव्य० [सं] फलस्वरूप; इसीलिए।

**फलना** - अ० [हिं] फलयुक्त होना; फल देना; संतानवती होना; बहुत-सी फुंसियों का निकल आना; मु० — फूलना - बाल-बच्चोंवाला होना; सुख-सौभाग्ययुक्त होना।

**फ़लाँ** - 1. क्रि० [अ] अमुक : अनिश्चित : 2. पु० लिंग ; **यौ०**—फ़लाँ - अमुक-अमुक ।

**फलाँग** - स्त्री० [हिं] छलाँग ; एक छलाँग में तै की जानेवाली दूरी ; मालखंभ की एक कसरत ।

**फलाँगना** - अ० [हिं] कूदना ; छलाँग मारना।

**फलांश** - पु० [सं] तात्पर्य, साराश ।

**फ़लाकत** - स्त्री० [अ] दरिद्रता ; विपत्ति ; कष्ट ; **यौ०** —ज़दा - दुर्दशाग्रस्त ; विपन्न ।

**फलाकांक्षा** - स्त्री० [सं] फल की कामना ।

**फलागम** - पु० [सं] फल के आने का काल ; शरदऋतु ।

**फलादेश** - पु० [सं] ग्रह आदि का फल कहना ।

**फलाना** - 1. वि० [हिं] फलाँ ; 2. स० फलने का कारण या प्रेरक होना ।

**फलानुमेय** - वि० [सं] परिणाम से जानने योग्य ।

**फलाफल** - पु० [सं] कर्मविशेष का शुभाशुभ फल ।

**फलार** - पु० [हिं] फलाहार ।

**फलार्थी** - वि० [सं] फल की कामना करनेवाला ।

**फ़लाह** - स्त्री० [अ] सफलता ; विजय ; आराम ; सुख ; परोपकार ; उत्तमता ।

**फ़लाहत** - स्त्री० [अ] खेती-बारी।

**फलाहार** - पु० [सं] फल-मूल का आहार ; फल खाकर रहनेवाला ।

**फलित** - 1. वि० [सं] सफल ; फलीभूत ; 2. पु० एक गंधद्रव्य ; फलवृक्ष ; **यौ०** —ज्योतिष - ज्योतिष का वह अंग जो ग्रह-नक्षत्रों की गति से शुभाशुभ अदृष्ट बताता है ।

**फलिता** - स्त्री० [सं] रजस्वला स्त्री ।

**फलितार्थ** - पु० [सं] तात्पर्य ।

**फली** - 1. स्त्री० [हिं] छीमी ; 2. वि० [सं] फलयुक्त ; लाभजनक ; 3. पु० वृक्ष ।

**फ़लीता** - पु० [अ] बत्ती ; ताबीज की वह बत्ती जिसकी धूनी प्रेतबाधावाले रोगी को दी जाती है ; पलीता ।

**फलीभूत** - वि० [सं] फलित, सफल ।

**फ़लूस** - पु० [अ] ताबे का सिक्का ।

**फलोत्तमा** - स्त्री० [सं] बीजरहित अंगूर ।

**फलोत्पत्ति** - 1. स्त्री० [सं] लाभ ; 2. पु० आम का वृक्ष ।

**फलोपजीवी** - 1. वि०, 2. पु० [सं] फल का व्यवसाय करनेवाला ।

**फल्क** - वि० [सं] विस्तृत अंगवाला ।

**फल्गु** - 1. वि० [सं] साररहित ; निरर्थक ; असत्य ; क्षुद्र ; सामान्य ; शक्तिहीन ; 2. स्त्री० गया के पास बहनेवाली एक नदी ; गुलाल ; मिथ्यावचन ।

**फल्गुनी** - स्त्री० [सं] एक नक्षत्र ।

**फ़ल्सफ़ा** - पु० [यू] दर्शनशास्त्र ; विज्ञान।

**फ़ल्सफ़ी** - वि० [यू] दर्शनशास्त्र जाननेवाला ।

**फसकड़ा** - पु० [हिं] चूतड़ टेककर और टाँगें फैलाकर बैठने का ढंग ।

**फसकना** - अ० [हिं] मसकना ; धँसना ।

**फ़सल** - स्त्री० [अ] उपज ; मौसम ; **मु०**— की चीज़ - ऋतुविशेष में पैदा होनेवाला फल, शाक आदि ।

**फ़सली** - वि० [अ] मौसमी ; **यौ०**—कौआ - मतलब का यार ; —गुलाब - चैती गुलाब ; —बुख़ार - मौसमी बुख़ार ; —सन, साल - अकबर का चलाया हुआ संवत् जिसका प्रचार उत्तर भारत में कहीं-कहीं है ।

**फ़साँ** - स्त्री० [फ़ा] छुरी आदि पर सान रखने का पत्थर ; सान ।

**फ़साद** - पु० [अ] बिगाड़; बखेड़ा; झगड़ा; मु० —का घर - झगड़े की जड़।

**फ़सादी** - वि० [अ] उपद्रवी; झगड़ालू।

**फ़साना** - पु० [फ़ा] कहानी, आख्यायिका; यौ० —नवीस, निगार - कहानीकार।

**फ़साहत** - स्त्री० [अ] भाषा का साधु और परिमार्जित होना; उत्तम भाषण करने की शक्ति।

**फ़सील** - स्त्री० [अ] दीवार; परकोटा।

**फ़सीह** - वि० [अ] साफ़-सुंदर भाषा लिखने-बोलनेवाला; सुवक्ता।

**फ़सूँ** - पु० [अ] जादू-टोना।

**फ़सूँगर** - वि० [फ़ा] जादू-टोना करनेवाला।

**फ़स्द** - स्त्री० [अ] नस को काटकर रक्त निकालना।

**फ़स्ल** - स्त्री० [अ] खेती की पैदावार; अंतर; परदा; किसी चीज़ के उत्पन्न होने का काल; पुस्तक का परिच्छेद; यौ० फ़स्लेबहार - वसंत ऋतु।

**फ़स्साद** - पु० [अ] नश्तर लगानेवाला।

**फ़हम** - स्त्री० [अ] बुद्धि; ज्ञान।

**फ़हमाइश** - स्त्री० [अ] सतर्क करने की क्रिया, चेतावनी।

**फ़हमीद** - स्त्री० [अ] बुद्धि।

**फ़हमीदा** - वि० [अ] बुद्धिमान।

**फहरना** - अ० [हिं] फहराना।

**फहराना** - 1. अ० [हिं] हवा में उड़ना; लहराना; 2. स० उड़ाना।

**फ़हश** - वि० [अ] फूहड़; अश्लील।

**फ़हीम** - वि० [अ] समझदार।

**फाँक** - स्त्री० [हिं] फल आदि का चाकू से तराशा हुआ टुकड़ा; खंड।

**फाँकना** - स० [हिं] फँकी करना, किसी वस्तु के चूर्ण को होंठ से सटाये बिना हाथ से मुँह में डाल लेना।

**फाँका** - पु० [हिं] फाँकने की क्रिया; एक बार में फाँकी जाने योग्य वस्तु।

**फाँट** - पु० [हिं] एक तरह का काढ़ा; हिस्सा; क्रम से बँटा हुआ भाग; यौ० —बंदी - वह काग़ज़ जिसमें ज़मीन्दारी के हिस्सों का ब्योरा लिखा हो।

**फांटक** - पु० [सं] काढ़ा।

**फँटना** - स० [हिं] बाँटना।

**फाँड़ा** - पु० [हिं] धोती का कमर में बँधा हुआ भाग; मु० —बाँधना - कमर कसना।

**फाँद** - स्त्री० [हिं] छलाँग; जाल।

**फाँदना** - 1. अ० [हिं] उछलना; 2. स० कूदकर लाँघना।

**फाँदा** - पु० [हिं] फंदा।

**फाँदी** - स्त्री० [हिं] गट्ठा बाँधने की रस्सी।

**फाँफी** - स्त्री० [हिं] बारीक झिल्ली; मलाई की पतली तह; माँड़ा।

**फाँस** - स्त्री० [हिं] फाँसने का फंदा; किरिच; मन में चुभने-खटकनेवाली बात; बाँस आदि की पतली तीली।

**फाँसना** - स० [हिं] फंदे में कसना; फंदे में फँसाना; दाँव-पेच में बाँधना; हाथ में या वश में करना।

**फाँसी** - स्त्री० [हिं] गले में फंदा डालकर मारने की क्रिया; रस्सी का वह फंदा जिसमें गला घुटकर प्राणान्त हो जाय।

**फ़ाइल** - 1. पु० [अंग्रे] कर्म करनेवाला; स्त्री० आवश्यक काग़ज़ नत्थी करने का नुकीला तार; सिलसिलेवार रखे हुए काग़ज़।

**फ़ाक़ा** - पु० [अ] उपवास; दरिद्रता; यौ०—कश - भूखों मरना; —ज़द - भूखा; —मस्त - गरीबी में भी निश्चिन्त रहनेवाला; —शिकनी - उपवास-भंग।

**फ़ाख़्ता** - स्त्री० [अ] पंडुक ।
**फ़ाख़िर** - वि० [अ] अभिमानी ; कीमती ।
**फ़ाख़िरा** - वि० [अ] बहुत बढ़िया ; बहुमूल्य ।
**फाग** - पु० [हिं] फागुन में होनेवाला राग-रंग, होली ।
**फागुन** - पु० [हिं] माघ के बाद आनेवाला महीना, फाल्गुन ।
**फ़ाजिर** - वि० [अ] दुश्चरित्र ।
**फ़ाज़िल** - वि० [अ] आवश्यकता से अधिक ; विद्वान ; यौ० —बाक़ी - देने-पावने या आमद-ख़र्च के हिसाब के बाद बाक़ी रहनेवाली रक़म ।
**फाटक** - पु० [हिं] बड़ा दरवाज़ा ; सिंहद्वार ; तोरण ; मवेशीख़ाना ।
**फाटका** - पु० [हिं] सट्टा ; यौ० फाटकेबाज़ - सट्टेबाज़ ।
**फाड़न** - पु० [हिं] फाड़ने से निकला हुआ ; टुकड़ा ; छेने का पानी ।
**फाड़ना** - स० [हिं] चीरना ; टुकड़े करना ; खटाई के योग से दूध के जलीय और ठोस भाग को अलग-अलग कर देना ।
**फ़ातिहा** - 1. पु०, 2. स्त्री० [अ] आरंभ ; क़ुरान की पहली सूरत ; प्रार्थना ; वह चढावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय ।
**फानना** - स० [हिं] धुनना (रूई) ; किसी काम को शुरू करना ।
**फ़ानी** - वि० [अ] नष्ट होनेवाला, मरने-मिटनेवाला ।
**फ़ानूस** - पु० [फ़ा] एक तरह की बड़ी कंदील ; शीशे का गिलास जिसमें मोमबत्ती जलायी जाती है ; यौ० फ़ानूसेख़याल, फ़ानूसेख़याली - काग़ज़ की बनी हुई कंदील जिसमें लगे काग़ज़ के हाथी घोड़े हवा से घूमते हैं और उनकी छाया कंदील के काग़ज़ पर पड़ती है ।
**फ़ायदा** - पु० [अ] लाभ ; प्राप्ति ; प्रयोजन की सिद्धि ; नतीजा ; गुण ; यौ० फ़ायदेमंद - लाभदायक ; गुणकारी ।
**फ़ार** - पु० [अ] चूहा ।
**फ़ारख़ती** - स्त्री० [अ] चुकती ; बेबाक़ी ।
**फारा** - पु० [हिं] कटी हुई फाँक ; फाल ।
**फ़ारिग़** - वि० [अ] कार्य से निवृत्त ; निश्चिन्त ; यौ० —ख़ती - बेबाक़ी की रसीद ; मु०— होना - निवृत्त होना ; शौच जाना ।
**फाल** - 1. पु० [सं] हल में लगा नुकीला लोहा जिससे ज़मीन खुदती है ; एक दिव्य या दैवी परीक्षा ; मांग की पट्टी ; सीमंत भाग ; गुलदस्ता ; पूला ; ललाट ; सूती वस्त्र ; जोती हुई ज़मीन [हिं] डग ; एक डग का फ़ासला ; 2. स्त्री० कटी हुई सुपारी ।
**फ़ाल** - स्त्री० [अ] रमल आदि से शुभ-अशुभ बतलाने की क्रिया ; यौ० —बद - अपशकुन ।
**फ़ालतू** - वि० [हिं] व्यर्थ ; बेकार ; निकम्मा ।
**फ़ालसई** - 1. वि० [फ़ा] फ़ालसे के रंग का ; 2. पु० फ़ालसे के रंग से मिलता हुआ रंग ।
**फ़ालसा** - पु० [फ़ा] गरमी के दिनों में होनेवाला एक छोटा खटमिट्ठा फल ।
**फ़ालिज़** - पु० [अ] पक्षाघात, लक्वा ।
**फ़ालीज़** - स्त्री० [फ़ा] खेत ; वाटिका ।
**फ़ालूदा** - पु० [फ़ा] गेहूँ के सत्त से बनाया गया एक पेय पदार्थ ।
**फ़ालेज़** - पु० [फ़ा] खरबूजे-ककड़ी का खेत ।
**फाल्गुन** - पु० [सं] फागुन का महीना ।
**फावड़ा** - पु० [हिं] चौड़े फल की कुदाल ; फरसा ।

**फ़ाश** - वि० [फ़ा] प्रकट ; स्पष्ट ; यौ० — ग़लती - खुली ग़लती ।

**फ़ासला** - पु० [अ] दूरी ; अंतर ।

**फ़ासिद** - वि० [अ] फ़साद करनेवाला ; बिगाड़ पैदा करनेवाला ; बुरा ।

**फ़ासिल** - वि० [अ] जुदा करनेवाला ।

**फ़ासिला** - पु० [अ] फ़ासला ।

**फाहा** - पु० [हिं] घी या तेल में तर की हुई रूई या कपड़ा ; मरहम चुपड़ी हुई पट्टी ।

**फ़ाहिश** - वि० [अ] दुश्चरित्र ; गंदी गालियाँ बकनेवाला ।

**फिंकरना** - अ० [हिं] गीदड़ का बोलना ।

**फिंकवाना** - स० [हिं] फेंकने का काम दूसरों से कराना ।

**फ़िकरा** - पु० [अ] व्यंग्य ; उद्देश्य-विधेय युक्त पदसमूह, वाक्य ; चकमा ; रीढ़ की हड्डी ; यौ० —बंदी - तुकबंदी ; फ़िकरे-बाज़ - धोखेबाज़ ।

**फ़िकाह** - पु० [अ] इस्लामी धर्म-शास्त्र ।

**फिकैत** - पु० [हिं] पटा-बनेठी का खिलाड़ी, पटेबाज़ ।

**फ़िक्र** - स्त्री [अ] चिन्ता ; अंदेशा ; परवाह ; यत्न ; यौ० — मंद - चिन्तित ।

**फ़िगार** - वि० [फ़ा] घायल, ज़ख्मी ।

**फिचकुर** - पु० [हिं] मूर्छा आदि के समय मुँह से निकलनेवाला फेन ।

**फिट** - 1. अव्य० [हिं] धिक्कार ; फटकार ; 2. वि० [अंग्रे] योग्य ; चुस्त ; ठीक नाप-आकार का ; 3. पु० [हिं] मूर्छा या मिरगी आदि का अचानक होनेवाला दौरा ।

**फिटकरी** - स्त्री० [हिं] स्फटिक की तरह का एक सफ़ेद खनिज पदार्थ ।

**फिटकार** - स्त्री० [हिं] धिक्कार ; शाप ।

**फिटकारना** - स० [हिं] धिक्कारना ; फटकार बताना ।

**फिटाना** - स० [हिं] हटा देना ; भगा देना ।

**फिट्ट, फिट्टा** - वि० [हिं] अपमान से उतरा हुआ या खिसियाया हुआ चेहरा ।

**फ़ितना** - पु० [अ] झगड़ा-फ़साद ; उपद्रव ; दुष्टता ; यौ० — अंदाज़, परदाज़ - फ़सादी ।

**फ़ितरत** - स्त्री० [अ] प्रकृति, स्वभाव ; सृष्टि ; पैदाइश ; चालाकी ।

**फ़ितरतन** - अव्य० [अ] स्वभावतः ।

**फ़ितरती, फ़ितरी** - वि० [अ] सहज ; प्राकृतिक ; शरारती ।

**फ़िदा** - वि० [अ] मुग्ध ; आसक्त ; निछावर ; किसीपर जान देनेवाला ; मु० —होना - आशिक होना ; किसीके लिए जान देना ।

**फ़िदाई** - 1. वि० [अ] प्राण निछावर करनेवाला ; 2. पु० इस्माईलिया फ़िरके का अनुयायी ।

**फ़िदिया** - पु० [अ] बंदी-गृह में रखे हुए बंदी को छुड़ाने के निमित्त दिया जानेवाला धन ; जुर्माना ; ज़ामिन ।

**फिद्वी** - वि० [अ] फ़िदा होनेवाला ; किसीके लिए जान देनेवाला ।

**फिनिया** - स्त्री० [हिं] कान में पहनने का एक गहना ।

**फिफरी** - स्त्री० [हिं] पपड़ी ।

**फिरंग** - 1. पु० [फ़ा] यूरोप ; यूरोपीय ; गरमी की बीमारी ; 2. स्त्री० विलायती तलवार ।

**फिर** - अव्य० [हिं] पीछे ; दूसरे समय ; पुनः ; तब ; इसके अलावा ; यौ० — फिर - बार-बार ।

**फिरकना** - अ० [हिं] थिरकना ; नाचना ।

**फ़िरक़ा** - पु० [अ] जाति; समुदाय; यौ० — बंदी - गरोहबंदी; — वार - संप्रदाय के अनुसार; — वाराना - सांप्रदायिक।

**फिरकी** - स्त्री० [हिं] चकई खिलौना; मालखंभ की एक कसरत; धागा लपेटने की रील; मु० — की तरह फिरना - एक जगह या एक हालत में स्थिर न रहना।

**फिरकैयाँ** - स्त्री० [हिं] चक्कर।

**फिरता** - 1. वि० [हिं] वापस; 2. पु० वापसी; अस्वीकार।

**फ़िरदौस** - पु० [अ] स्वर्ग; उद्यान; यौ० — मकानी - स्वर्ग में रहनेवाला; स्वर्गीय।

**फिरना** - अ० [हिं] घूमना; चक्कर खाना; वापस होना, मुड़ना; मुकरना; प्रसिद्ध होना।

**फ़ेरनी** - स्त्री० [फ़ा] पीसे हुए चावलों की एक प्रकार की खीर।

**फिराऊ** - वि० [हिं] जाकड़, वापस करने की शर्त पर लिया जानेवाला माल।

**फ़िराक़** - पु० [अ] चिन्ता; टोह; वियोग।

**फ़िराग़** - पु० [अ] मुक्ति, रिहाई; फ़ुर्सत; आनंद; अधिकता; संतोष।

**फिराना** - स० [हिं] भ्रमण या सैर कराना; मोड़ना; लौटाना; और का और करना।

**फ़िरार** - 1. पु०, 2. वि० [अ] फ़रार।

**फ़िरारी** - वि० [अ] फ़रारी।

**फ़िरिश्ता** - पु० [फ़ा] फ़रिश्ता।

**फ़िल-जुमला** - अव्य० [अ] संक्षेप में; थोड़ा-सा; यों ही।

**फ़िल-फ़िल** - स्त्री० [अ] काली मिर्च।

**फ़िल-फ़ौर** - अव्य० [अ] तत्काल; खुदा की राह में।

**फ़िल-मसल** - अव्य० [अ] उदाहरण-स्वरूप।

**फ़िल-वाक़ा**
**फ़िल-हक़ीक़त** } - अव्य० [अ] वस्तुतः।

**फ़िलहाल** - अव्य० [अ] तत्काल; इस समय।

**फ़िश** - अव्य० [फ़ा] धिक्; छी।

**फिस** - वि० [हिं] सारहीन; कुछ नहीं; मु० — हो जाना - बेकार सिद्ध होना; कुछ न रह जाना।

**फिसड्डी** - वि० [हिं] काम में पिछड़ा रहनेवाला; निकम्मा।

**फिसफिसाना** - अ० [हिं] फिस हो जाना; ढीला या कमज़ोर हो जाना।

**फिसलन** - स्त्री० [हिं] फिसलने की जगह, फिसलने का भाव।

**फिसलना** - अ० [हिं] चिकनाई की अधिकता से पाँव का न टिकना, रपटना; सरकना; चूकना; लुभाना।

**फ़िस्क़** - पु० [अ] व्यभिचार; कुकर्म; गुनाह।

**फ़िहरिस्त** - स्त्री० [अ] सूची।

**फ़ी** - अव्य० [अ] प्रत्येक; हरेक; में; से; यौ० —कस - प्रति व्यक्ति; —ज़माना - वर्तमान काल में।

**फी** - 1. स्त्री० [हिं] दोष; त्रुटि; 2. अव्य० फ़ी।

**फीका** - वि० [हिं] स्वादरहित; जो चटकीला न हो; कांतिहीन; व्यर्थ।

**फीता** - पु० [हिं] पतली धज्जी या सूत-रेशम आदि की पतली पट्टी जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आती है।

**फ़ीरोज़** - वि० [फ़ा] विजयी; सौभाग्यशाली; सफल; यौ० —मंद - सौभाग्यशाली।

**फ़ीरोज़ा** - पु० [फ़ा] नग के काम आनेवाला एक क़ीमती नीला या हरा पत्थर; यौ०—चश्म - नीली आँखोंवाला।

**फ़ीरोज़ी** - 1. स्त्री० [फ़ा] विजय ; सफलता ; भाग्योदय ; 2. वि० हरापन लिये नीला।

**फ़ील** - पु० [अ] हाथी ; यौ० —ख़ाना - हस्तिशाला ; —दंदाँ - बड़े-बड़े दाँतोंवाला ; —पा - एक रोग जिसमें पैर फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है ; —पाया - स्तंभ ; —बान - हाथीवान, महावत।

**फ़ीली** - स्त्री० [हिं] पिण्डली।

**फुंकना** - अ० [हिं] फूँका जाना ; जलना ; नष्ट होना ; व्यर्थ ख़र्च होना।

**फुंकनी** - स्त्री० [हिं] फुकनी।

**फुंकरना** - अ० [हिं] फुफकारना।

**फुंकवाना, फुंकाना** - स० [हिं] फूँकने का काम दूसरे से कराना।

**फुंकार** - पु० [हिं] फुफकार।

**फुंकारना** - अ० [हिं] साँप का गुस्से में मुँह से हवा छोड़ना, फुफकारना।

**फुंदकी** - स्त्री० [हिं] गाँठ ; बिन्दी।

**फुंदना** - पु० [हिं] सूत या ऊन आदि का फूल या गुच्छा, झब्बा।

**फुंदिया** - स्त्री० [हिं] फुंदना।

**फुंसी** - स्त्री० [हिं] छोटी फुड़िया।

**फु** - पु० [सं] मंत्र पढ़कर फूँकने का शब्द ; तुच्छ बात।

**फुआ** - स्त्री० [हिं] पिता की बहन, बूआ।

**फुकना** - पु० [हिं] मूत्राशय ; बड़ी फुकनी।

**फुकनी** - स्त्री० [हिं] बाँस आदि की नली जिसके छेद में फूँक मारकर आग को हवा देते हैं।

**फ़ुग़ाँ** - पु० [अ] रोना-चिल्लाना।

**फुचड़ा** - पु० [हिं] बुनावट से बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

**फ़ुज़ला** - पु० [अ] बचा हुआ अंश ; उच्छिष्ट ; शरीर से निकलनेवाला थूक या पसीना आदि मल ; मैल।

**फ़ुज़ूँ** - वि० [फ़ा] अधिक।

**फ़ुजूर** - पु० [अ] पाप ; अपराध ; दुराचार।

**फ़ुज़ूल** - वि० [अ] फ़ज़ूल।

**फुट** - 1. वि० [हिं] अलग ; अकेला ; यौ० —मत - मतभेद ; [सं] फटा हुआ ; स्फुटित ; 2. पु० साँप का फन ; [अंग्रे] पाँव ; बारह इंच लंबी एक नाप।

**फुटकर, फुटकल** - वि० [हिं] अकेला ; जो किसी श्रेणी या सिलसिले में न हो ; जिसमें कई तरह की चीज़ें हों ; विविध ; ख़ुरदा ; रेज़गारी।

**फुटका** - पु० [हिं] फफोला ; धान आदि का लावा।

**फुटकी** - स्त्री० [हिं ] दूध आदि के जमे हुए कण ; गाढ़ी चीज़ का छींटा ; फुदकी।

**फुटहा, फुटेहरा** - 1. पु० [हिं] मटर आदि का भुना हुआ दाना जिसका छिलका फट गया हो ; 2. वि० फुटैल।

**फुटैल, फुट्टैल** - वि० [हिं] जिसका जोड़ा न हो ; झुंड से अलग रहनेवाला ; हतभाग्य।

**फुड़िया** - स्त्री० [हिं] छोटा फोड़ा।

**फुतकार** - पु० [हिं] फुफकार।

**फ़ुतूर** - पु० [अ] फ़तूर।

**फ़ुतूरिया, फ़ुतूरी** - वि० [अ] फ़तूरिया।

**फ़ुतूह** - स्त्री० [अ] 'फ़तह' का बहु० ; अतिरिक्त लाभ ; लूट में मिला हुआ माल।

**फुदकना** - अ० [हिं] उछलना-कूदना।

**फुनगी** - स्त्री० [हिं] वृक्ष या शाखा का सिरा ; शाखा के अंत की कोमल पत्तियाँ।

**फुफँदी** - स्त्री० [हिं] साड़ी कसने की डोरी या साड़ी के दो छोरों की गाँठ जो स्त्रियाँ सामने की ओर लगाती हैं।

**फुफकार** - पु० [हिं] साँप के मुँह से हवा निकालने की आवाज़।

**फुफकारना** - अ० [हिं] फुंकारना।

**फुफेरा** - वि० [हिं] फूफा या फूफी के नाते का।

**फुफ्फुस** - पु० [सं] फेफड़ा।

**फुर** - 1. स्त्री० [अनु] छोटी चिड़ियों के उड़ने पर उनके परों से होनेवाली आवाज़; 2. वि० [हिं] सत्य।

**फ़ुरक़त** - स्त्री० [अ] जुदाई, वियोग।

**फुरकना** - स० [हिं] मुँह से सुरकना।

**फ़ुरक़ान** - स्त्री० [अ] क़ुरानशरीफ़।

**फुरती** - स्त्री० [हिं] तेज़ी; चुस्ती; जल्दी।

**फुरना** - अ० [हिं] निकलना; सूझना; चमक पड़ना; फलदायक होना; सत्य होना; असर करना; फड़कना।

**फुरफुरी** - स्त्री० [अनु] उड़ने के लिए पंख फड़फड़ाना।

**फ़ुरसत** - स्त्री० [अ] अवकाश; छुट्टी; रोग से मुक्ति; अवसर; मु० —पाना - छुटकारा पाना; — से - अवकाश में; धीरे-धीरे।

**फुरहरी** - स्त्री० [हिं] परों की फड़फड़ाहट; कंप।

**फुरेरी** - स्त्री० [हिं] सींक या तिनके के सिरे पर लपेटी हुई रूई; कँपकँपी; फड़कने का भाव।

**फुल** - स्त्री० [हिं] गुल-बूटे का काम; एक कपड़ा जिसपर रंगीन रेशम से फूल कढ़े होते हैं; 'फूल' का केवल समास में प्रयुक्त रूप; यौ० —चुही - फूल का रस चूसनेवाली चिड़िया; —झड़ी - एक प्रकार की आतिशबाज़ी; —वाड़ी, वारी - फूलों का बाग़; —सुंघी - एक चिड़िया; —हारी - माली।

**फुलका** - पु० [हिं] हलकी-पतली रोटी, चपाती।

**फुलकी** - स्त्री० [हिं] छोटा फुलका।

**फुलाना** - स० [हिं] किसी चीज़ को हवा भरकर फैलाना; मोटा करना; चापलूसी द्वारा किसीका दिमाग़ चढ़ाना; विकसित करना।

**फुलाव** - पु० }
**फुलावट** - स्त्री० } [हिं] फूलने का भाव; फैलाव।

**फुलावा** - पु० [हिं] जूड़ा बाँधने की फुँदने-दार डोरी।

**फुलिया** - स्त्री० [हिं] छत्राकार सिरेवाला काँटा; कान में पहनने की लौंग।

**फुलेरा** - पु० [हिं] फूलों की बनी छतरी।

**फुलेल** - पु० [हिं] खुशबूदार तेल।

**फुलौरा** - पु० [हिं] बड़ी फुलौरी।

**फुलौरी** - स्त्री० [हिं] उरद के बेसन की पकौड़ी।

**फुल्ल** - 1. वि० [सं] विकसित; प्रसन्न; 2. पु० फूल।

**फुस** - स्त्री० [हिं] बहुत धीमी और अस्फुट आवाज़; यौ० —फुस - कानाफूसी।

**फुसकारना** - अ० [हिं] फुफकारना; फूँक मारना।

**फुसकी** - स्त्री० [हिं] बिना आवाज़ के निकलनेवाली अपानवायु।

**फुसफुसा** - वि० [हिं] जल्दी टूट जानेवाला, कमज़ोर।

**फुसफुसाना** - अ० [हिं] कानाफूसी करना।

**फुसलाना** - स० [हिं] बहकाना; भुलावा देना।

**फुहार** - स्त्री० [हिं] नन्हीं-नन्हीं बूँदों की झड़ी, गिरते या उड़ते हुए जलकण।

**फुहारा** - पु० [हिं] फुहार के रूप में पानी ऊपर को फेंकनेवाला जल-यंत्र ; जल-यंत्र से निकलनेवाली बारीक़ जलधार ।
**फुही** - स्त्री० [हिं] फुहार ।
**फूँक** - स्त्री० [हिं] दम, साँस ; फुफकार ; मु० —निकल जाना - मर जाना ; —मारना - फूँकना ।
**फूँकना** - स० [हिं] मुख से हवा छोड़ना ; जलाना ; भस्म करना ; बरबाद करना ; फैलाना ।
**फूँ** - स्त्री० [अनु] फूँकने की आवाज़ ।
**फूई** - स्त्री० [हिं] फुहार ; फफूँदी ।
**फूट** - स्त्री० [हिं] फूटने की क्रिया ; बिगाड़ ; विरोध ; एक तरह की ककड़ी ।
**फूटन** - स्त्री० [हिं] फूटकर अलग हुआ टुकड़ा ; शरीर की संधियों में होनेवाली पीड़ा ।
**फूटना** - अ० [हिं] भग्न होना ; फटना ; (शब्द का मुँह से) निकलना ; उगना ; शाखारूप में निकलना ; खिलना ; बिखरना ; विपक्ष में जा मिलना ।
**फूटा** - 1. वि० [हिं] फूटा हुआ ; बिगड़ा हुआ ; 2. पु० खेत में टूटकर गिरी हुई बालें ; संधियों में होनेवाली पीड़ा ; मु० फूटी आँखों न देख सकना - देखकर कुढ़ना या जलना ।
**फूफा** - पु० [हिं] फूफी या बुआ का पति ।
**फूफी, फूफू** - स्त्री० [हिं] बाप की बहिन ।
**फूलना** - अ० [हिं] पुष्पित होना ।
**फूल** - 1. पु० [हिं] खिली हुई कली, पुष्प ; फूल की शक्ल का बेल-बूटा या आभूषण आदि ; पीतल आदि की घुंडी ; दीपक की बत्ती का जला हुआ अंश ; श्वेतकुष्ठ का दाग़ ; स्त्रियों का मासिक स्राव ; शवदाह के बाद रहनेवाला अस्थि-अवशेष ; मुसलमानों में तीसरे या पाँचवें दिन का फ़ातिहा ; घुटने की गोल हड्डी ; 2. स्त्री० उमंग ; आनंद ; यौ० —कारी - बेल-बूटे बनाना ; —गोभी - एक शाक ; —डोल - चैत्र शुक्ला एकादशी को होनेवाला एक उत्सव ; —दान - गुलदस्ता रखने का पात्र ; मु० — की सेज - सुख और चैन की स्थिति ; पुष्पशैय्या ; —आना - फूल लगना ; —उतारना - फूल चुनना ; —झड़ना - मुँह से मीठे शब्द निकलना ; —सा - बहुत सुकुमार ; —सूँघकर रहना - बहुत थोड़ा खाना ।
**फूला** - पु० [हिं] खील ; आँख की फूली ।
**फूली** - स्त्री० [हिं] आँख की पुतली पर पड़ा हुआ सफ़ेद दाग़ ।
**फूवा** - 1. पु० [हिं] सूखा तृण, फूस ; 2. स्त्री० फूफी ।
**फूस** - पु० [हिं] सूखी घास ; जीर्ण-शीर्ण वस्तु ।
**फूहड़** - वि० [हिं] भद्दे ढंग से काम करनेवाली, बेशउर (स्त्री) ; गंदा ; यौ० —पन - बेढंगापन ।
**फूहा** - स्त्री० [हिं] रूई का गाला ; फाहा ।
**फूही** - स्त्री० [हिं] फुहार ।
**फेंक** - स्त्री० [हिं] फेंकने की क्रिया ।
**फेंकना** - स० [हिं] डालना ; छोड़ना ; पटकना ; इधर-उधर बिखेर देना ; सरपट दौड़ाना ; छोड़ना ।
**फेंट** - स्त्री० [हिं] फेंटा ; लपेट ; फेंटने की क्रिया ; मु० — कसना, बाँधना - कटिबद्ध होना ।
**फेंटना** - स० [हिं] हाथ से मथना ; अच्छी तरह मिलाना ।
**फेंटा** - पु० [हिं] कमर का घेरा ; कमरबंद ; छोटी पगड़ी ; सूत की बड़ी अंटी ।

**फेंटी** - स्त्री० [हिं] अटेरन पर लपेटा हुआ सूत।

**फेकरना** - अ० [हिं] अनावृत होना (सिर); गीदड़ का चिल्लाना; फूट-फूटकर रोना।

**फेज़** - पु० [फ़ा] ऊँची दीवार की तुर्की टोपी।

**फेण, फेन** - पु० [सं] झाग, बुलबुलों का समूह।

**फेनिल** - वि० [सं] फेनयुक्त, झागदार।

**फेनी** - स्त्री० [सं] घी में छाना हुआ मैदे का लच्छा।

**फेफड़ा** - पु० [हिं] शरीर के अंदर स्थित साँस लेने की थैली।

**फेफड़ी** - स्त्री० [हिं] खुश्की से होंठों पर पड़नेवाली पपड़ी, फिफरी।

**फेर** - 1. पु० [हिं] घुमाव; चक्कर; परिवर्तन; भ्रम; अंतर; उलझन; बहकावा; 2. अव्य० ओर, तरफ़; **यौ०** —पलटा - गौना; —फार - उलट-फेर; चक्कर; —बदल - तबदीली।

**फेरना** - स० [हिं] घुमाना; लौटाना; वापस लेना; बदलना; पलटना; अभ्यास करना; चाल सिखाने के लिए चक्कर देना (घोड़े को); जपना (माला); लेप करना; प्रचारित करना।

**फेरवट** - स्त्री० [हिं] पेच; अंतर; टूटे खपरैलों को निकालकर उनकी जगह नये खपरैलों को रखने की क्रिया।

**फेरवा** - पु० [हिं] तार को कई बार लपेटकर बनाया हुआ सोने का छल्ला।

**फेरा** - पु० [हिं] लपेट; परिक्रमा; बार-बार आना-जाना; पुनरागमन; **यौ०** —फेरी - उलट-पुलट; क्रम बदलना।

**फेरी** - स्त्री० [हिं] चक्कर; गश्त; सौदा बेचने के लिए खुरदाफ़रोशों का गली-कूचे में घूमना; रस्सी पर ऐंठन देने की चरखी; **यौ०** —वाला - घूम-फिरकर चीज़ें बेचनेवाला; **मु०** —पड़ना - भाँवर होना।

**फेरौरी** - स्त्री० [हिं] फेरवट।

**फेल** - 1. पु० [सं] उच्छिष्ट, जूठन; 2. वि० [अंग्रे] विफल; अनुत्तीर्ण।

**फ़ेल** - पु० [अ] कर्म; दुष्कर्म; क्रियापद (व्याकरण); **यौ०** —मुतअद्दी - सकर्मक क्रिया; —लाज़िम - अकर्मक क्रिया।

**फ़ैज़** - पु० [अ] परोपकार; लाभ; भलाई; **यौ०** फ़ैज़ेआम - जनसाधारण की भलाई।

**फ़ैयाज़** - वि० [अ] उदार; दरियादिल।

**फ़ैयाज़ी** - स्त्री० [अ] उदारता; दानशीलता।

**फैलना** - अ० [हिं] बिखरना; आकार का बढ़ना; अधिक स्थान घेरना; पसरना; मोटा होना; अधिक दूर तक जाना; वृद्धि होना; मचलना; हठ करना।

**फ़ैलसूफ़** - पु० [यू] विद्वान; मक्कार; अपव्ययी।

**फैलाव** - पु० [हिं] लंबाई-चौड़ाई; विस्तार; प्रचार।

**फ़ैसल** - पु० [अ] न्यायकर्ता; न्याय।

**फ़ैसला** - पु० [अ] निर्णय; निश्चय; निबटारा; **मु०**— सुनाना - मुक़द्दमे का निर्णय सुनाना।

**फोंक** - 1. पु० [हिं] तीर का पीछे की ओर का सिरा; 2. वि० पोला।

**फोंका** - पु० [हिं] लंबा चोंगा।

**फोंफर** - वि० [हिं] पोला; निस्सार।

**फोंफी** - स्त्री० [हिं] चोंगी; फुकनी; छूँछी।

**फोक** - पु० [हिं] नीरस पदार्थ; एक तरह की घास।

**फोकट** - वि० [हिं] मूल्यरहित; निरर्थक; निस्सार।

**फोकला** - पु० [हिं] छिलका।

**फोड़ना** - स० [हिं] तोड़ना ; विदीर्ण करना ; शरीर में जगह-जगह फोड़े या घाव पैदा कर देना ; शाखा निकालना ; सेंध लगाना ; अंधा करना (आँखों को) ; फुसलाकर अपनी ओर कर लेना ; प्रगट करना।

**फोड़ा** - पु० [हिं] घाव, व्रण ; बड़ी फुंसी।

**फ़ोता** - पु० [फ़ा] भूमिकर ; थैली ; कोष ; अंडकोश।

**फ़ोतेदार** - पु० [फ़ा] खज़ानची।

**फोहा** - पु० [हिं] रूई का गाला ; फाहा।

**फ़ौआरा, फ़ौव्वारा** - पु० [अ] फुहारा।

**फ़ौक़** - 1. पु० [अ] ऊँचाई ; चोटी ; श्रेष्ठता ; 2. वि० उच्च ; श्रेष्ठ ; 3. अव्य० ऊपर।

**फ़ौज** - स्त्री० [अ] सेना ; जनसमूह ; **यौ०** —कशी - सैनिक आक्रमण ; —दार - सेनानायक ; कोतवाल ; —दारी - फ़ौज़-दार का पद ; मार-पीट।

**फ़ौज़ी** - 1. वि० [अ] फ़ौज़-संबंधी ; 2. पु० सैनिक।

**फ़ौत** - 1. स्त्री० [अ] मरना ; नष्ट हो जाना ; 2. वि० मृत।

**फ़ौती** - 1. वि० [अ] मृत ; 2. स्त्री० मृत्यु ; मृत्यु की सूचना।

**फ़ौर** - पु० [अ] समय ; शीघ्रता।

**फ़ौरन** - अव्य० [अ] तुरंत ; झटपट।

**फ़ौरी** - वि० [अ] जल्दी का।

**फ़ौलाद** - पु० [अ] एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा, इस्पात।

**फ़ौलादी** - 1. वि० [अ] फ़ौलाद का बना हुआ ; अत्यंत मज़बूत ; 2. स्त्री० भाले या बल्लम का डंडा।

## ब

**बंक** - 1. वि० [हिं] टेढ़ा ; वीर ; विकट ; दुर्गम ; 2. अव्य० वक्र रूप से ; तिरछी निगाह से ; **यौ०** —नाल - सुनार की वह नली जिससे वह जुड़ाई करते समय चिराग़ की लौ फूँकता है।

**बंका** - वि० [हिं] बाँका ; बढ़िया ; बंक।

**बंकाई** - स्त्री० [हिं] टेढ़ापन।

**बंकिम** - वि० [हिं] टेढ़ा।

**बंकैअन** - अव्य० [हिं] घुटनों के बल।

**बंग** - पु० [हिं] बंगाल प्रान्त ; शक्तिप्रद दवा ; योग।

**बंगला** - 1. वि० [हिं] बंगाल का ; 2. स्त्री० बंग-भाषा ; 3. पु० खुली जगह में बना सुंदर व छोटा हवादार मकान।

**बंगली** - स्त्री० [हिं] चूड़ियों के साथ पहना जानेवाला एक गहना।

**बंगसार** - पु० [हिं] जहाज़ पर चढ़ने के लिए पुल-जैसा बना हुआ चबूतरा।

**बंगा** - वि० [हिं] नटखट ; उपद्रवी ; टेढ़ा।

**बँचवाना** - स० [हिं] पढ़वाना।

**बंजर** - पु० [हिं] खेती के अयोग्य ज़मीन, ऊसर।

**बंजारा** - पु० [हिं] बनजारा।

**बंझा** - 1. वि० [हिं] न फलनेवाला, वंध्य ; वंध्या ; 2. स्त्री० वंध्या स्त्री।

**बँटना** - अ० [हिं] बाँटा जाना ; वितरित होना।

**बँटवारा** - पु० [हिं] बाँटने का काम ; विभाजन।

**बंटा** - वि० [हिं] छोटे क़द का।

**बँटाई** - स्त्री० [हिं] बाँटने का काम ; बाँटने की उजरत ; (ज़मीन) बंदोबस्त की वह रीति जिसमें मालिक को लगान के रूप में उपज का नियत भाग मिले।

**बंटाधार** - वि० [हिं] चौपट, सत्यानाश।

**बँटाना** - स० [हिं] बँटवारा कराना ; अपना हिस्सा अलग करा लेना।

**बँटैया** - पु० [हिं] बँटानेवाला ।

**बंडा** - 1. पु० [हिं] तरकारी के काम आनेवाला अरुई की जाति का एक कंद ; 2. वि० पुच्छहीन ।

**बंडी** - स्त्री० [हिं] फ़तूही ; बग़लबंदी ।

**बँड़ेर** - पु० [हिं] छाजन के बीचोंबीच लगाया जानेवाला बल्ला ।

**बंद** - 1. पु० [फ़ा] बाँध ; क़ैद ; गाँठ ; अंगों का जोड़ ; ज़ंजीर ; कुश्ती का पेंच ; युक्ति ; सूची ; काग़ज़ का लंबा टुकड़ा ; लाख की चपटी चूड़ी ; पाँच-छ मिसरों के उर्दू या फ़ारसी पद्य का टुकड़ा ; 2. वि० रुका हुआ ; जकड़ा हुआ ; पकड़ा हुआ ; मिड़ा हुआ ; यौ० —गोभी - करमकल्ला ; —बंद - जोड़-जोड़, गाँठ-गाँठ ; —वान - जेलर ; —साल - क़ैदख़ाना ; मु० — बंद ढीले कर देना - थका देना, पस्त कर देना ।

**बंदगी** - स्त्री० [फ़ा] सेवा ; वंदना ; आराधना ; प्रणाम ।

**बंदन** - पु० [हिं] वंदन ; सिन्दूर ; रोली ; बंदनवार ।

**बंदनवार** - पु० [हिं] मांगलिक अवसरों पर दरवाज़े आदि पर बाँधी जानेवाली सुंदर फूल-पत्ते आदि की झालर ।

**बंदनी** - स्त्री० [हिं] सिर पर पहनने का एक गहना ; यौ० —माल - पैरों तक लटकनेवाली माला ।

**बंदर** - पु० [हिं] वानर नामक पशु जिसकी कुछ बातें मनुष्य से मिलती-जुलती हैं, कपि ; यौ० —घुड़की - सिर्फ़ डराने के लिए दी जानेवाली धमकी ; [फ़ा] जहाज़ के ठहरने की जगह, बंदरगाह ; यौ० —गाह - समुद्रतटवर्ती वह नगर जहाँ जहाज़ों के ठहरने का अड्डा हो ।

**बंदा** - पु० [फ़ा] सेवक ; मनुष्य ; यौ० — ए-ख़ुदा - ख़ुदा का बंदा ; — ए-बेदाम - बेपैसे-कौड़ी का ग़ुलाम ; — ज़ादा - सेवक का बेटा ; —निवाज़ - बंदे पर अनुग्रह करनेवाला ; —परवर - बंदे का पालन करनेवाला ।

**बंदिश** - स्त्री० [फ़ा] बाँधने की क्रिया या भाव ; प्रतिबंध ; गाँठ ; छन्द की रचना ; उपाय ; अभियोग ।

**बंदी** - 1. पु० [सं] क़ैदी ; चरण ; 2. स्त्री० क़ैद ; [हिं] सिर का एक गहना, बंदनी ; [फ़ा] बांदी ; बाँधना ; क़ैद करना ; लागत ; यौ० —ख़ाना, घर - क़ैदख़ाना ; —छोर - बंधन से छुड़ानेवाला ; —वान - क़ैदी ।

**बंदूक़** - स्त्री० [फ़ा] एक आग्नेय अस्त्र ; यौ० —ची - बंदूक़ चलानेवाला सिपाही ।

**बंदोबस्त** - पु० [फ़ा] प्रबंध ; ज़मीन की मालगुज़ारी तय करने का काम ; यौ०— इस्तमरारी - स्थायी बंदोबस्त ।

**बंध** - पु० [सं] बंधन ; बाल बाँधने की चोटी ; क़ैद ; ज़ंजीर ; बाँध ; बाँधना ; गाँठ ; निर्माण ; व्यवस्था ; सामंजस्य ; संयोग ; प्रदर्शन ; जीव का बंधन ; बंधक रखी हुई वस्तु ।

**बंधक** - पु० [सं] बाँधने या पकड़नेवाला ; रस्सी ; वादा ; बंधन ; क़ैद ; गिरवी ; विनिमय ।

**बंधकी** - स्त्री० [सं] वेश्या ; पुंश्चली ; वंध्या स्त्री ।

**बंधन** - पु० [सं] बाँधने या पकड़ने की क्रिया ; क़ैदख़ाना ; बाँधनेवाला ; संयोग ; ज़ंजीर ; रस्सी ; डंठल ; स्नायु ; पुल ; रोक ; दमन ।

**बँधना** - 1. अ० [हिं] बाँधा जाना; कैद होना; मुग्ध होना; फँसना; निश्चित होना; 2. पु० बंधन; बाँधने का साधन (रस्सी आदि)।

**बंधनी** - स्त्री० [सं] शरीर के संधिस्थानों को बाँधनेवाली नसें; बाँधने का साधन।

**बँधवाना** - स० [हिं] बाँधने का काम दूसरे से कराना।

**बंधान** - पु० [हिं] परिपाटी; दस्तूरी; बाँध; ताल का सम।

**बँधाना** - स० [हिं] बँधवाना; धारण कराना; कैद कराना।

**बंकाल** - पु० [हिं] नाव में वह जगह जहाँ रसकर आनेवाला पानी जमा होता है।

**बंधिका** - स्त्री० [हिं] ताने की साँथी बाँधने की डोरी।

**बंधी** - वि० [सं] बाँधने-पकड़नेवाला।

**बंधु** - पु० [सं] भाई; स्वजन; मित्र; संबंध; यौ० —जन, वर्ग - भाई-बंद; —हीन - असहाय।

**बंधुआ** - पु० [हिं] कैदी।

**बंधुक** - पु० [स] दोपहर में खिलनेवाला एक लाल पुष्प; जारज संतान।

**बंधुता** - स्त्री० } [सं] संबंध; भाई-चारा।
**बंधुत्व** - पु० }

**बंधुर** - 1. पु० [सं] मुकुट; हंस; बगला; खली; बंधूक; 2. वि० बहरा; वक्र; चढ़ाव-उतारवाला; ऊँचा-नीचा; हानिकारक; सुंदर।

**बंधुरा** - स्त्री० [सं] कुलटा; वेश्या।

**बंधूक** - पु० [सं] बंधुक पुष्प।

**बंधेज** - पु० [हिं] रोक; बंधान; स्तंभन।

**बंध्य** - वि० [सं] बाँधने या निर्माण के योग्य; बाँझ; वंचित।

**बंध्या** - स्त्री० [सं] बाँझ स्त्री या गाय; यौ० —पुत्र - बाँझ का पुत्र, अलीक या असंभव बात।

**बंब** - पु० [हिं] डंका; 'बम-बम' शब्द।

**बंबा** - पु० [हिं] पानी की कल; पानी बहाने का नल; सोता।

**बँबाना** - अ० [हिं] गाय-बैल का रँभाना।

**बंबू** - पु० [हिं] चंडू पीने की बाँस की नली।

**बंस** - पु० [हिं] वंश; बाँस; बाँसुरी।

**बँसवाड़ी** - स्त्री० [हिं] वह स्थान जहाँ बाँस की बहुत सी कोठियाँ हों।

**बंसी** - स्त्री० [हिं] बाँसुरी; मछली फँसाने का काँटा; यौ० —धर - कृष्ण।

**बँहोल** - स्त्री० [हिं] आस्तीन।

**ब** - 1. पु० [सं] वरुण; जल; घट; समुद्र; ताना; भग; गंधक; 2. अव्य० [फ़ा] एक उपसर्ग जो शब्दों के साथ लगकर साथ, वास्ते, पर आदि का अर्थ देता है; यौ० —ख़ुद - अपने से; —ख़ूबी - अच्छी तरह; —ख़ैर - कुशलपूर्वक; —ख़ैरियत - ख़ैरियत के साथ; —ग़ैर - बिना; सिवा; — ज़रिया - के ज़रिये, के द्वारा; — ---जिंस, जिंसहू - ठीक-ठीक; कुल, ज्यों का त्यों; —जुज़ - सिवा, बग़ैर; —तौर - के तरीक़े पर; द्वारा; —दस्त - के हाथ से; द्वारा; —दस्तूर - यथानियम; यथापूर्व; —दौलत - के सहारे, द्वारा; —नाम - के नाम से; नाम पर; विरुद्ध; —निस्बत - मुक़ाबिले में; अपेक्षा; —मुक़ाबिला - तुलना में;—मुश्किल - कठिनाई से; — मूजिब - मुताबिक़; — रंग - के सदृश, मानिंद; —राह - की राह से; —शर्ते - इस शर्त से; अगर; —सबब - के कारण; —सूरत - स्थिति में; —हुक्म - आदेशानुसार; —हैसियत - नाते।

**बईद** - अव्य० [अ] दूर; फ़ासले का।

**बक** 1. पु० [सं] बगला ; ठग ; ढोंगी ; कुबेर ; एक पुष्पवृक्ष ; यौ० —ध्यान, मौन - साधुता का ढोंग ; —वृत्ति - बगलाभगत ; 2. वि० [हिं] बगले-जैसा सफ़ेद ; 3. स्त्री० बकवास ; यौ० —झक, बक - बकवास ।

**बकतर** - पु० [फ़ा] लोहे के जाल का बना हुआ कवच, ज़िरह ; यौ० —पोश - कवचधारी ।

**बकना** - 1. स० [हिं] बोलना ; व्यर्थ का बोलना ; 2. अ० बड़बड़ाना ; बकवास करना ; मु० —झकना - बड़बड़ाना ; गुस्से में बहुत बोलना ।

**बकर** - पु० [अ] गाय-बैल ; कुरान की एक सूरत ; यौ० —ईद - मुसलमानो का एक त्योहार ।

**बकरना** - अ० [हिं] अपना अपराध स्वीकार करना ; कै होना ; बड़बड़ाना ।

**बकरम** - पु० [अ] गोंद आदि से कड़ा किया हुआ कपड़ा ।

**बकरा** - पु० [हिं] एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया, छाग, अज ; मु० बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनायेगी - अपराधी कब तक बचा रह सकता है ।

**बकला** - पु० [हिं] छिलका, छाल ।

**बकवाद** - स्त्री० [हिं] निरर्थक वार्त्ता, बकवास ।

**बकवास** - स्त्री० [हिं] बेकार की बातें जो लगातार कुछ देर तक कही जायँ ; बकने की क्रिया, बकवाद ।

**बक़ा** - स्त्री० [अ] बाक़ी रहना ; बना रहना ; जीवित रहना ; अमरता ।

**बकाना** - स० [हिं] कहलाना ; बकवाना ।

**बकायन** - पु० [हिं] दवा के काम आनेवाला नीम की जाति का एक पेड़ ।

**बक़ाया** - 1. वि० [अ] बाक़ी ; 2. पु० बाक़ी बची हुई चीज़ ; बचत ; बाक़ी पड़ी हुई रक़म ; यौ० —लगान - बाक़ी पड़ा हुआ लगान ।

**बकारी** - स्त्री० [हिं] मुँह से निकलनेवाला शब्द ; मु० —फूटना - मुँह से शब्द निकलना ।

**बक़िया** - वि० [अ] अवशिष्ट ।

**बकुचन** - स्त्री० [हिं] हाथ जोड़ना ; मुट्ठी या पंजे में पकड़ना ।

**बकुचना** - अ० [हिं] सिमटना ।

**बकुचा** - पु० [हिं] गठरी ; ढेर ; जुड़े हुए हाथ ।

**बकुची** - स्त्री० [हिं] छोटी गठरी ; चर्मरोग में लाभदायक एक छोटा पौधा ।

**बकुर** - 1. वि० [सं] भयंकर ; 2. पु० वज्र ।

**बकुल** - पु० [सं] मौलसिरी ; शिव ।

**बकेन** - स्त्री० [हिं] पाँच या छ महीने की ब्यायी हुई गाय या भैंस ।

**बकैयाँ** - पु० [हिं] घुटनों के बल चलना ।

**बकोट** - 1. स्त्री० [हिं] बकोटने की क्रिया ; 2. पु० [सं] बक ।

**बकोटना** - स० [हिं] पंजे या नाख़ूनों से नोचना ।

**बक्कम** - पु० [हिं] एक पेड़ ; पतंग ।

**बक्कल** - पु० [हिं] छिलका, छाल ।

**बक़्क़ाल** - पु० [अ] तरकारी बेचनेवाला ; आटा-दाल आदि बेचनेवाला ।

**बक्की** - वि० [हिं] बकवादी ।

**बक्कुर** - पु० [हिं] मुँह से निकला हुआ शब्द, बोल ।

**बक्खर** - पु० [हिं] गाय-बैल बाँधने का बाड़ा ।

**बक्स** - पु० [हिं] संदूक़ ।

**बख़रा** पु० [फ़ा] हिस्सा ; टुकड़ा ।

**बखरी** - स्त्री० [हिं] बड़ा और अच्छा मकान ; ज़मीन्दार का मकान ।

**बखरैत** - पु० [हिं] हिस्सेदार।

**बखान** - पु० [हिं] वर्णन ; बड़ाई।

**बखानना** - स० [हिं] वर्णन करना ; सराहना ; कोसना ; गालियाँ देना।

**बखार** - पु० [हिं] अन्न रखने का घिरा हुआ स्थान।

**बखिया** - पु० [फ़ा] दुहरे टाँकों की बारीक सिलाई ; यौ० —गर - बखिया करनेवाला ; मु० —उधड़ना - सीवन खुलना ; भंडा-फोड़ होना।

**बखीर** - स्त्री० [हिं] गुड़ या चीनी के रस में पकाया हुआ चावल।

**बख़ील** - वि० [अ] कंजूस।

**बख़ीली** - स्त्री० [अ] कृपणता।

**बखेड़ा** - पु० [हिं] झगड़ा ; झंझट ; परेशानी।

**बखेरना** - स० [हिं] चीज़ों को छितराना या फैलाना।

**बखोरना** - स० [हिं] छेड़ना ; टोकना।

**बख़्त** - पु० [फ़ा] भाग्य ; सौभाग्य।

**बख़्तर** - पु० [फ़ा] बकतर।

**बख़्तावर** - वि० [फ़ा] भाग्यशाली।

**बख़्तियार** - वि० [फ़ा] भाग्यवान।

**बख़्श** - वि० [फ़ा] देनेवाला ; प्रसाद।

**बख़्शना** - स० [हिं] देना ; क्षमा करना।

**बख़्शिश** - स्त्री० [फ़ा] उपहार ; पुरस्कार ; क्षमा ; दान ; यौ० —नामा - दानपत्र।

**बख़्शी** - पु० [फ़ा] खज़ांची ; मवेशीख़ाने का मुंशी।

**बग** - पु० [हिं] बगला।

**बगदना** - अ० [हिं] बिगड़ना ; गुस्से में अंट-शंट बकना।

**बगदहा** - वि० [हिं] बिगड़नेवाला ; लड़नेवाला।

**बगना** - अ० [हिं] घूमना-फिरना ; दौड़ना।

**बग़ल** - स्त्री० [फ़ा] काँख ; पार्श्व ; समीपवर्ती स्थान ; बग़ली ; **यौ०** —**गीर** - बग़ल में रहना ; लिपटना ; —**बंदी** - एक मिरजई जिसमें बग़ल में बंद बाँधे जाते हैं ; मु० —का फोड़ा - काँख में होनेवाला फोड़ा ; —में - पास में ; एक ओर ; —गीर होना - आलिंगन करना ; बग़लें झाँकना - निरुत्तर होना ; बचाव का रास्ता ढूँढ़ना।

**बगला** - पु० [हिं] मछली आदि का शिकार करनेवाला एक धूर्त पक्षी, बक ; **यौ०** —भगत - पाखंडी।

**बगलियाना** - 1. अ० [हिं] बग़ल से होकर जाना ; अलग हटकर जाना ; 2. स० बग़ल में करना ; अलग करना।

**बग़ली** - 1. वि० [फ़ा] एक ओर का ; 2. स्त्री० अंगरखे आदि में कंधे के नीचे लगाया जानेवाला टुकड़ा ; बग़ल में रखने का तकिया ; मुगदर की एक कसरत।

**बगाना** - 1. स० [हिं] घुमाना-फिराना ; 2. अ० घूमना-फिरना।

**बगार** - पु० [हिं] गायों को बाँधने की जगह।

**बग़ावत** - स्त्री० [अ] विप्लव ; अराजकता ; विद्रोह ; मु० — का झंडा उठाना या बुलंद करना - विद्रोह की घोषणा करना।

**बगिया** - पु० } - [हिं] वाटिका, बाग़।
**बगीचा** - स्त्री० }

**बगीची** - स्त्री० [हिं] छोटा बाग़।

**बगूला** - पु० [फ़ा] बवंडर, भँवर की तरह घूमती हुई तीव्र आँधी।

**बग्गी, बग्घी** - स्त्री० [हिं] चार पहिये की घोड़ागाड़ी।

**बघ** - पु० [हिं] 'बाघ' का समास में प्रयुक्त होनेवाला लघु रूप ; यौ० —छाला - बाघंबर, व्याघ्रचर्म ; —

नखा - उंगलियों में पहनने का एक हथियार, शेरपंजा।

**बघना** - पु० [हिं] बाघ के नखों से युक्त एक गहना।

**बघार** - पु० [हिं] छौंक।

**बघारना** - स० [हिं] छौंकना; पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना।

**बच** - स्त्री० [हिं] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

**बचकाना** - वि० [हिं] बच्चों के लायक़; छोटा।

**बचत** - स्त्री० [हिं] बचाव; बची हुई चीज़ या रक़म; लाभ।

**बचना** - 1. अ० [हिं] बाक़ी रहना; प्राणरक्षा होना; परहेज़ करना; 2. स० कहना, बोलना।

**बचपन** - पु० [हिं] लड़कपन।

**बचवैया** - पु० [हिं] रक्षक।

**बचाना** - स० [हिं] रक्षा करना; बाक़ी रखना; अलग रखना; छिपाना।

**बचाव** - पु० [हिं] रक्षा; आत्मरक्षा; सफ़ाई (अभियोग)।

**बच्चा** - 1. पु० [हिं] शिशु; लड़का; 2. वि० नादान; अनुभवहीन; यौ० —कश - बहुत बच्चे जननेवाली; —दान, दानी - गर्भाशय; —बाज़ - लौंडेबाज़; बच्चे-कच्चे - बाल-बच्चे; मु० बच्चों का खेल - आसान काम।

**बच्छ** - पु० [हिं] वत्स; ढाल; वक्ष।

**बछ** - 1. पु० [हिं] बछड़ा; 2. स्त्री० बच; यौ० —नाग - एक स्थावर विष।

**बछड़ा, बछरू, बछवा, बछा** - पु० [हिं] गाय का बच्चा।

**बछिया** - स्त्री० [हिं] गाय का मादा बच्चा; मु० —का ताऊ - मूर्ख।

**बछेड़ा** - पु० [हिं] घोड़े का बच्चा।

**बजंत्री** - पु० [हिं] बाजा बजानेवाला; बाजा बजानेवालों का ग़रोह।

**बजकना** - अ० [हिं] सड़कर पिलपिला होना।

**बजट** - पु० [अंग्रे] आय-व्यय का अनुमान-पत्र।

**बजड़ा** - पु० [हिं] एक प्रकार की पटी हुई नाव; बाजरा।

**बजनक** - पु० [हिं] पिस्ते का फूल।

**बजना** - अ० [हिं] ध्वनि उत्पन्न होना; बाजे से स्वर निकलना; प्रसिद्ध होना; लाठी-तलवार आदि का चलना।

**बजबजाना** - अ० [हिं] गंदे पानी आदि में सड़ने से बुल्बुले उठना; बजकना।

**बजरंग** - 1. वि० [हिं] वज्र-जैसे सुदृढ़ शरीरवाला; 2. पु० हनुमान।

**बजर** - पु० [हिं] वज्र; यौ० —बट्टू - एक वृक्ष के फल का काला बीज; —हड्डी - घोड़े का एक रोग।

**बजरा** - पु० [हिं] बजड़ा।

**बजरी** - स्त्री० [हिं] कंकड़ी; ओला; बाजरा।

**बजवाई** - स्त्री० [हिं] बाजा बजाने की मज़दूरी।

**बजवैया** - पु० [हिं] बाजा बजानेवाला।

**बज़्ला** - पु० [अ] विनोद, परिहास।

**बजा** - वि० [फ़ा] ठीक; उचित; यौ० —आवरी - कर्त्तव्य आदि का पालन।

**बज़ाज़** - पु० [अ] कपड़ा बेचनेवाला वणिक।

**बजाय** - क्रि० [फ़ा] बदले में।

**बज़्ज़ाज़ा** - पु० [अ] कपड़ों का बाज़ार।

**बझना** - अ० [हिं] उलझना; बँधना; हठ करना।

**बझान** - स्त्री० [हिं] फँसने की क्रिया।

**बझाव** - पु० [हिं] उलझाव; फँसाव।

**बट** - 1. पु० [हिं] वटवृक्ष; बाट, रास्ता; किसी चीज़ का गोला; हिस्सा; 2. स्त्री०

रस्सी की ऐंठन, बटन ; यौ० —मार - राह में लूट लेनेवाला ; —मारी - बटमार का काम या पेशा : —वायक - रास्ते में पहरा देनेवाला ; —वार - रास्ते का कर वसूल करनेवाला ।

**बटई** - स्त्री [हिं] बटेर ।

**बटखरा** - पु० [हिं] बाट, वज़न ।

**बटन** - 1. स्त्री० [हिं] बटने की क्रिया या भाव ; रस्सी आदि की ऐंठन ; 2. पु० [अंग्र] कुरता-कोट आदि में लगाने की सीप आदि की घुंडी ; बिजली आदि का स्विच ।

**बटना** - 1. स० [हिं] सूत या रेशे आदि को रस्सी बनाने के लिए ऐंठन देकर मिलाना ; 2. अ० पिसना ; 3. पु० रस्सी बटने का आला ; उबटन ; मु० —खेलना - ब्याह के अवसर पर परिहासार्थ एक दूसरे को उबटन मलना ।

**बटम** - पु० [हिं] संगतराशों का एक औज़ार ।

**बटला** - स्त्री० [हिं] बड़ी बटलोई ।

**बटली, बटलोई** - स्त्री० [हिं] पतीली ।

**बटा** - पु० [हिं] गोल वस्तु ; गेंद ; रोड़ा ; बटोही ।

**बटाई** - स्त्री० [हिं] बटने की क्रिया ; बटने की मज़दूरी ; विभाजन ; बँटाई ।

**बटाऊ** - पु० [हिं] पथिक ।

**बटाक** - वि० [हिं] बड़ा ऊँचा ।

**बटाली** - स्त्री० [हिं] बढ़इयों का एक औज़ार ।

**बटिया** - स्त्री० [हिं] छोटा गोला ; लोढ़िया ; पगडंडी ।

**बटी** - स्त्री० [हिं] गोली ; एक पकवान ; वाटिका ।

**बटुआ** - पु० [हिं] पैसे रखने की अनेक खानेवाली एक प्रकार की थैली ; बड़ी बटलोई ।

**बटुला** - पु० [हिं] चावल आदि पकाने का बड़े मुँह का पात्र, बटला ।

**बटुवा** - पु० [हिं] बटुआ ; एक तरह का मास ।

**बटेर** - स्त्री० [हिं] तीतर से मिलती-जुलती एक छोटी चिड़िया ।

**बटोर** - पु० [हिं] आदमियों का जमाव ; किसी ख़ास काम के लिए बहुत-से लोगों का जमा होना ।

**बटोरन** - स्त्री० [हिं] झाड़ने बुहारने से इकट्ठा होनेवाला कूड़ा ; बटोरकर एकत्र किये जानेवाले खेत में पड़े दाने ।

**बटोरना** - स० [हिं] समेटना ; चुनना ।

**बटोही** - पु० [हिं] पथिक ।

**बट्टा** - पु० [हिं] दलाली ; दस्तूरी ; लोटा ; धातु का बना प्यालानुमा पात्र ; घाटा ; यौ० —खाता - हानि या घाटे का खाता ।

**बट्टी** - स्त्री० [हिं] छोटा बट्टा ; साबुन आदि की टिकिया ; गुड़ की छोटी पिंडी ।

**बट्टू** - पु० [हिं] बजरबट्टू ; गोला ।

**बडँगा** - पु० [हिं] बँडेर ।

**बड़** - 1. पु० [हिं] बरगद, वट ; 2. वि० 'बड़ा' का समास में व्यवहृत रूप ; यौ०—दंता - बड़े दाँतोंवाला ; —दुमा - लंबी पूँछवाला ; —पेटा - बड़े पेटवाला ; —बोला - डींग मारनेवाला ; —भागी - बड़े भाग्यवाला ; —मुँहा - अधिक लंबे मुँहवाला ।

**बड़प्पन** - पु० [हिं] महत्ता ; गौरव ।

**बड़बड़** - स्त्री० [हिं] व्यर्थ बकते जाना ।

**बड़बड़ाना** - अ० [अनु] बकवास करना ; डींग मारना ।

**बड़बड़िया** - वि० [अनु] बड़बड़ानेवाला ।

**बड़वा** - स्त्री० [सं] घोड़ी ; अश्विनी नक्षत्र ; दासी ; वड़वाग्नि ।

**बड़वाग्नि** - स्त्री० [सं] समुद्रस्थित कालानल ।

**बड़वारी** - स्त्री० [हिं] प्रशंसा ; बड़प्पन ।

**बड़हर** - पु० [हिं] एक खट-मिट्ठा फल ।

**बड़हार** - पु० [हिं] ब्याह के बाद कन्या-पक्ष की ओर से होनेवाली बरातियों की ज्योनार ।

**बड़ा** - 1. वि० [हिं] लंबा-चौड़ा, अवस्था में अधिक; पद-प्रतिष्ठा आदि में अधिक; कठिन; ऊँचा; अधिक; 2. पु० गुरुजन; बड़ा आदमी; प्रभावशाली पुरुष; उरद की पीठी की घी या तेल में तली हुई टिकिया; मु० —काम - कठिन काम; —घर - अमीर का घर; जेल-खाना; —घराना - ऊँचा घराना; —जानवर - सूअर; गाय-बैल; —दिन - लंबा दिन; पचीस दिसंबर का दिन; —नहान - प्रसूता का चालीसवें दिन का स्नान; —बोल - गर्वोक्ति; —साहब - प्रधान अधिकारी; बड़ी गोटी - चौपायों का एक रोग; बड़ी बात - कठिन काम; बड़ी बी - वृद्धा का सम्मानसूचक संबोधन; बड़ी माता - चेचक; बड़ी मौसली - नक़ाशी करने का एक औज़ार; बड़े अब्बा - ससुर; —बड़ी बातें करना - डींग मारना; बड़े बर्तन की खुरचन - बड़े आदमी की जूठन; बड़े-बूढे - बुज़ुर्ग ।

**बड़ाई** - स्त्री० [हिं] विस्तार; बड़प्पन; प्रशंसा ।

**बडिश** - पु० [सं] बंसी; नश्तर के काम का एक प्राचीन शस्त्र ।

**बड़ी** - स्त्री० [हिं] उरद की पीठी में मसाला आदि मिलाकर बनायी और सुखायी हुई टिकिया, कुम्हड़ौरी ; पकौड़ी ।

**बढ़** - स्त्री० [हिं] बढ़ती ।

**बढ़ई** - पु० [हिं] लकड़ी का काम करनेवाली एक जाति, यौ० —गिरी - बढ़ई का धंधा ।

**बढ़ती** - स्त्री० [हिं] वृद्धि ; समृद्धि ।

**बढ़ना** - अ० [हिं] डील, आकार, संख्या, मात्रा आदि का अधिक होना; वृद्धि होना; दूसरे से आगे निकल जाना; लाभ होना; महँगा होना; चिराग़ का बुझाया जाना; दूकान का बंद किया जाना ।

**बढ़नी** - स्त्री० [हिं] झाड़ू, बुहारी; पेशगी के रूप में लिया जानेवाला अन्न या रुपया ।

**बढ़ाव** - पु० [हिं] बढ़ने की क्रिया या भाव; बढ़ना; फैलाव ।

**बढ़ावा** - पु० [हिं] हौसला बढ़ानेवाली बात; प्रोत्साहन ।

**बढ़िया** - वि० [हिं] अच्छा ।

**बढ़ेल** - स्त्री० [हिं] ऊनवाले भेड़ों की एक जाति ।

**बढ़ेला** - पु० [हिं] जंगली सूअर ।

**बढ़ोतरी** - स्त्री० [हिं] बढ़ती; क्षेपक ।

**बणिक** - पु० [सं] बनिया; विक्रेता; यौ० —पथ - व्यापार; व्यापारी; दूकान ।

**बणिग्वीथी** - स्त्री० [सं] बाज़ार का मार्ग; बाज़ार ।

**बत** - स्त्री० [हिं] 'बात' का समास में व्यवहृत रूप; यौ० —कहाव, कही - बातचीत; विवाद; —चल - बकवादी; —रस - बातचीत का सुख; मज़ा ।

**बतक, बत्तख़** - स्त्री० [उ] हंस की जाति का एक जलपक्षी ।

**बतरान** - स्त्री० [हिं] बातचीत ।

**बतराना** - 1. अ० [हिं] बातचीत करना; 2. स० बतलाना ।

**बतरौहाँ** - वि० [हिं] बातचीत करने का इच्छुक।

**बतलाना** - 1. स० [हिं] बताना; 2. अ० बात करना।

**बताना** - 1. स० [हिं] कहना; समझाना; सूचित करना; नृत्य के समय उँगलियों द्वारा मनोभावों को प्रकट करना; खबर लेना; 2. पु० पगड़ी बाँधते समय नीचे रखने की फटी-पुरानी पगड़ी; हाथ का कड़ा।

**बतास** - स्त्री० [हिं] वायु; वातरोग।

**बतासा** - पु० [हिं] शक्कर की बनी हुई एक मिठाई; एक आतिशबाज़ी; बुल्बुला।

**बतिया** - पु० [हिं] कुछ ही दिनों का लगा हुआ छोटा फल।

**बतियाना** - अ० [हिं] बातचीत करना।

**बतीसी** - स्त्री० [हिं] बत्तीसों दाँत; बत्तीस चीज़ों का समूह; मु० —खिलना - खुलकर हँसना; —झड़ना - दाँतों का गिर जाना; —बजना - अधिक जाड़ा लगना।

**बतोला** - पु० [हिं] भुलावा; झाँसा।

**बत्ती** - स्त्री० [हिं] रूई आदि को बटकर तेल या घी में जलाने के लिए तैयार की गयी पतली पूनी; मोमबत्ती; दिया; चिराग़; मु० —दिखाना - रोशनी दिखलाना; —लगाना - आग लगाना।

**बत्तीस** - वि० [हिं] तीस और दो।

**बथान** - पु० [हिं] गाय-बैल आदि पालतू पशुओं को रखने की जगह।

**बथुआ** - पु० [हिं] पत्तियों का एक शाक।

**बद** - 1. स्त्री० [हिं] गिलटी; बदला; चौपायों का एक रोग; 2. वि० [फ़ा] बुरा; दुष्ट; अशुभ; यौ० —अंदेश - बुरा चाहनेवाला; —अंदेशी - शत्रुता; —अख़लाक़ - अशिष्ट; —अमनी - अशांति; —अमली - अव्यवस्था; —इंतज़ाम - प्रबंध में अपटु; —इंतज़ामी - कुप्रबंध; —कार, किरदार - कुकर्मी; दुश्चरित्र; —क़िस्मत - अभागा; —ख़त - ख़राब अक्षरोंवाला; —ख़्वाह - शत्रु; अहितैषी; —गुमान - संशयात्मा; —गुमानी - कुधारणा; संशय; —गो - निन्दक; —गोई - निन्दा; —गोश्त - भरते हुए घाव का अतिरिक्त मांस; —चलन - दुश्चरित्र; —ज़बान - गाली-गलौज करनेवाला; —ज़ात - नीच, कमीना; —ज़ायक़ा - कुस्वाद; —तमीज़ - अशिष्ट; गुस्ताख़; —तमीज़ी - अशिष्टता; गुस्ताख़ी; —तर - अधिक बुरा; —तरीन - बुरे से बुरा; —तह-ज़ीब - असभ्य; अशिष्ट; —दयानत - बेईमान, बदनीयत; —दिमाग़ - घमंडी, बदमिज़ाज; —दिल - निराश; अप्रसन्न; —दुआ - शाप; —नज़र - बुरी नज़रवाला; —नसीब - अभागा; —नस्ल - बुरी नस्ल का; नीच; —नाम - जिसकी बुराई की प्रसिद्धि हो; —नामी - लोकनिन्दा; —नीयत - बुरी नीयतवाला, बेईमान; —नुमा - भद्दा; कुरूप; —परहेज़ - कुपथ्य करने-वाला; —फ़ेल - कुकर्मी; —बख़्त - अभागा; —बू - दुर्गन्ध; —बूदार - दुर्गन्धयुक्त; —मज़गी - कटुता; बिगाड़; —मज़ा - कुस्वाद; फीका; —मस्त - मदहोश; कामुक; —माश - बुरे चाल-चलनवाला, लुच्चा; गुंडा; —माशी - बदचलनी; दुष्टता; —मिज़ाज - तीखे स्वभाववाला; चिड़चिड़ा; —मुआमला - लेन-देन में बेईमानी करनेवाला; —यक़ीन - बुरी बात पर विश्वास करनेवाला; —रंग -

फीका : जिस रंग की चाह हो उससे भिन्न रंग (ताश); —राह - कुचाली; —रू - बुरी शकल; —रोबी - अप्रतिष्ठा; —लगाम - मुँहज़ोर; मुँहफट; —शकल - कुरूप; —शगून - अशुभ, मनहूस; —सलीकगी - फूहड़पन; बदतमीज़ी; —सलूकी - बुरा बर्ताव; —सीरत - खोटे स्वभाव का; —सूरत - कुरूप; भोंडा; —हज़मी - अपच, अजीर्ण; —हवास - घबराया हुआ; उद्विग्न; —हाल - दुर्दशाग्रस्त।

**बदन** - पु० [फ़ा] शरीर; यौ० —तौल, निकाल - मालखंभ की एक कसरत: मु० —जलना - बुखार की तेज़ी होना; —टूटना - जोड़ों में हलका दर्द होना; —ढीला करना - बदन का तनाव दूर करना; —दुहरा होना - बदन झुक जाना; —फलना - बदन पर फोड़े-फुंसियाँ निकलना; —में आग लगना - बहुत क्रोध आना।

**बदना** - स० [हिं] कहना; ठहराना; शर्त लगाना; गिनना; समझना।

**बदनी** - वि० [फ़ा] शारीरिक।

**बदर** - 1. पु० [सं] बेर का पेड़ या उसका फल; कपास; बिनौला; 2. अव्य० [फ़ा] दरवाज़े के बाहर; बाहर।

**बदराई** - स्त्री० [हिं] बदली।

**बदरी** - स्त्री० [हिं] बादल।

**बदल** - पु० [अ] बदलना; परिवर्तन; एवज़।

**बदलना** - 1. अ० [हिं] भिन्न होना; एक की जगह दूसरा हो जाना; तबादला होना; बात से हटना; मुकरना; 2. स० दूसरा रंग-रूप देना; बदला करना।

**बदला** - पु० [अ] विनिमय; एवज़।

**बदली** - स्त्री० [हिं] छाये हुए बादल, घटा : तबादला।

**बदलौवल** - स्त्री० [हिं] बदलने की क्रिया।

**बदा** - 1. वि० [हिं] भाग्य में लिखा हुआ; 2. पु० अदृष्ट : मु० —होना - भाग्य में लिखा होना।

**बदान** - स्त्री० [हिं] बदने की क्रिया या भाव : बदा जाना।

**बदाबदी** - 1. स्त्री० [हिं] प्रतियोगिता; 2. अव्य० बढ़कर।

**बदि** - 1. स्त्री० [हिं] बदला; 2. अव्य० एवज़ में।

**बदी** - 1. स्त्री० [हिं] कृष्णपक्ष: 2. [फ़ा] बुराई; अपकार।

**बद्ध** - वि० [सं] बँधा हुआ; अमुक्त (जीव); जुड़ा हुआ; जमा हुआ; रचित; प्रदर्शित; यौ० —कोष्ठ - कब्ज़ियत; —परिकर - तैयार; —प्रतिज्ञ - वचनबद्ध; —मुष्टि - कंजूस; —मूल - दृढ़मूल; —शिख - जिसकी शिखा बँधी हो; छोटा बच्चा।

**बद्धांजलि** - वि० [सं] सम्मान-प्रदर्शन के लिए जिसके हाथ जुड़े हों।

**बद्धायुध** - वि० [सं] जो हथियार बाँधे हो।

**बद्धी** - स्त्री० [हिं] बाँधने का साधन; रस्सी; गले में पहनने का एक गहना।

**बद्धोदर** - पु० [सं] कोष्ठबद्धता, कब्ज़ियत।

**बधना** - 1. स० [हिं] मार डालना, वध करना; 2. पु० मुसलमानों का टोंटीदार लोटा।

**बधाई** - स्त्री० [हिं] उत्सव; मंगलाचार; खुशी के अवसर का गाना-बजाना; किसीकी प्रसन्नता या सफलता पर प्रगट किया जानेवाला हर्ष-प्रकाश, मुबारक-

बाद : शुभ अवसर पर दिया जानेवाला उपहार ; मु० —बजना - पुत्र-जन्म आदि के अवसर पर बाजा बजना ।
**बधावा** - पु० [हिं] बधाई ; मंगलाचार ; शुभ अवसर पर भेजा जानेवाला उपहार ।
**बधिक** - पु० [हिं] जल्लाद ; व्याध ।
**बधिया** - 1. पु० [हिं] नपुंसक बनाया हुआ चौपाया; ख़स्सी; 2. त्रि० आख़्ता।
**बधियाना** - स० [हिं] बधिया करना ।
**बधिर** - पु० [सं] बहरा, जिसे कान से सुनायी नहीं दे ।
**बधिरता**, **बधिरिमा** - स्त्री० [सं] बहरापन ।
**बधैया** - स्त्री० [हिं] बधाई ।
**बन** - पु० [हिं] वन, जंगल ; बगीचा ; कपास ; घर ; जल ; यौ० —आलू - जमीकंद की जाति का एक कंद ; —कंडा - अपने आप सूखा हुआ गोबर ; —कटा - जंगली (लकड़ी) ; —कटी - एक तरह का बाँस ; —कपास - पटसन की जाति का एक पौधा ; —कर - जंगल की पैदावार पर लिया जानेवाला कर ; —खंड - वन का कोई भाग ; —गाव - एक तरह का हिरन ; —धातु - गेरू ; —पट - वृक्षों की छाल का बना कपड़ा ; —पथ - जंगल से होकर गया हुआ रास्ता ; —बकरा - ठंडे प्रदेशों में पाया जानेवाला एक पक्षी ; —बिलाव - बिल्ली की जाति का एक वन्य पशु ।
**बनउर** - पु० [हिं] बिनौला ; ओला ।
**बनक** - पु० [हिं] वेष ; बनावट ; बन की उपज ।
**बनजना** - स० [हिं] व्यापार करना ।
**बनजारा** - पु० [हिं] बैलों पर अनाज लादकर बेचने ले जानेवाला ; व्यापार करनेवाला ; बंजारा ।
**बनजी** - पु० [हिं] व्यापारी ; व्यापार ।
**बनड़ा** - पु० [हिं] राग का एक भेद ।
**बनत** - स्त्री० [हिं] बनावट ; मेल ; सलमे-सितारे की बेल ।
**बनना** - अ० [हिं] निर्मित या तैयार होना ; नियुक्त होना ; सुधरना ; दुरुस्त होना ; सफल होना ; सजना ; साफ़ होना ; मालदार होना ; बेवक़ूफ़ बनाया जाना ; शक्य होना ।
**बननि** - स्त्री० [हिं] शृंगार ; बनावट ।
**बनफ़्शा** - पु० [फ़ा] दवा के काम आनेवाला एक पौधा ।
**बनरी** - स्त्री० [हिं] नववधू ; मर्कटी ।
**बनवा** - पु० [हिं] पनडुब्बी (जलपक्षी) ।
**बनवाना** - स० [हिं] बनाने का काम दूसरे से कराना ।
**बनवारी** - पु० [हिं] वनमाली ; कृष्ण ।
**बनवैया** - पु० [हिं] बनानेवाला ।
**बनसी** - स्त्री० [हिं] बंसी ।
**बनहटी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की छोटी नाव ।
**बना** - पु० [हिं] दूल्हा, वर ।
**बनात** - स्त्री० [हिं] अंगरखे आदि बनाने के काम में आनेवाला एक रंगीन ऊनी कपड़ा ।
**बनाना** - स० [हिं] निर्माण करना ; नया रूप देना ; गढ़ना ; साफ़ करना, बीनना-फटकना (अनाज); सँवारना ; सुधारना ; मरम्मत करना ; कमाना ; व्यंग्य द्वारा उपहास करना ; मु० —बिगाड़ना - अच्छी या बुरी हालत में पहुँचाना ; बनाये रखना - ज़िन्दा रखना ; क़ायम रखना ।
**बनाबत**, **बनाबनत** - पु० [हिं] वर-कन्या की जन्मपत्रियों का मिलान ।
**बनाय** - अव्य० [हिं] अच्छी तरह ; बहुत ज़्यादा ; बिलकुल ।

**बनाव** - पु० [हिं] बनावट ; युक्ति ; मेल ; यौ० —सिंगार - सजावट और शृंगार ।

**बनावट** - स्त्री० [हिं] बनाने का भाव ; रचना ; गठन ; रूप ; आडंबर, दिखावा ।

**बनावटी** - वि० [हिं] दिखाऊ ; कृत्रिम ।

**बनावन** - पु० [हिं] अनाज बनाने पर निकलनेवाली मिट्टी-कंकड़ आदि ; यौ० —हार - बनानेवाला ।

**बनि** - स्त्री० [हिं] अन्न के रूप में दी जानेवाली दैनिक मज़दूरी ; यौ० —हार - खेती के काम में किसान की सहायता करनेवाला स्वतंत्र मज़दूर ।

**बनिजना** - स० [हिं] व्यापार करना ; क्रय करना ।

**बनिता** - स्त्री० [हिं] वनिता ।

**बनिया** - पु० [हिं] वैश्य ; आटा-दाल आदि बेचनेवाला दूकानदार ।

**बनियाइन** - स्त्री० [अंग्रे] बुनी हुई कुर्ती ; [हिं] बनिये की स्त्री ।

**बनी** - 1. स्त्री० [हिं] दुलहिन ; अन्न के रूप में मिलनेवाली दैनिक मज़दूरी ; वनस्थली ; वाटिका ; 2. पु० बनिया ।

**बनीर** - पु० [हिं] बेत ।

**बनेठी** - स्त्री० [हिं] गोल लट्टू से युक्त पटेबाज़ों की लाठी ।

**बनैला** - वि० [हिं] जंगली, वन्य ।

**बनौटी** - वि० [हिं] कपास के फूल के रंग का, कपासी ।

**बनौरी** - स्त्री० [हिं] ओला, उपल ।

**बन्नी** - स्त्री० [हिं] अन्न के रूप में मिलनेवाली दैनिक मज़दूरी ।

**बप** - पु० [हिं] 'बाप' का समास में प्रयुक्त होनेवाला लघु रूप ; यौ० —मार - पितृघातक ; धोखा देनेवाला ।

**बपना** - स० [हिं] बीज बोना, वपन ।

**बपुरा** - वि० [हिं] बेचारा, अशक्त ।

**बपौती** - स्त्री० [हिं] पैतृक संपत्ति ।

**बप्पा** - पु० [हिं] बाप ।

**बफारा** - पु० [हिं] भाप ; दवामिश्रित पानी की भाप से शरीर सेकना ।

**बफौरी** - स्त्री० [हिं] भाप से पकायी हुई बड़ी ।

**बबकना** - अ० [हिं] उत्तेजित होकर बोलना ; उछलना ।

**बबर** - पु० [फ़ा] सिंह, केसरी ।

**बबुआ** - पु० [हिं] बाबू ; पुत्र, दामाद, देवर आदि का स्नेहसूचक संबोधन ।

**बबूल** - पु० [हिं] एक कँटीला पेड़, कीकर ।

**बभनी** - स्त्री० [हिं] जोंक के आकार का छिपकली-जैसा एक कीड़ा ।

**बभ्रु** - 1. वि० [सं] गंजा ; गहरे भूरे रंग का ; 2. पु० अग्नि ; नेवला ; गहरा भूरा रंग ; शिव ; विष्णु ; चातक ; सफ़ाई करनेवाला ।

**बम** - पु० [हिं] शिव को प्रसन्न करने के लिए कहा जानेवाला एक शब्द ; शहनाई के साथ का छोटा नगाड़ा ; यौ० —भोला - शिव ; [अंग्रे] विस्फोटक गोला ; यौ० —कांड - विस्फोट की घटना ; —गोला - बम का गोला ; —बाज़ - शत्रु पर बम बरसानेवाला (हवाई जहाज़) ।

**बमकना** - अ० [हिं] आवेश में अपने पौरुष की डींग मारना ; उछलना ; फूटना ।

**बमचख** - स्त्री० [हिं] शोरगुल ।

**बमलाना** - स० [हिं] बढ़कर बोलने के लिए बढ़ावा देना ।

**बमीठा** - पु० [हिं] बाँबी, वल्मीक ।

**बम्हनी** - स्त्री० [हिं] बभनी ; आँख का एक रोग ; लाल रंग की ज़मीन ; हाथी की पूँछ सड़ने का रोग ।

**बय** - स्त्री० [हिं] वय ; जुलाहों का एक औज़ार ।

**बयना** - 1. स० [हिं] बीज बोना ; वर्णन करना : 2. अ० बहना : आरोपित करना ; मित्रों तथा संबंधियों के यहाँ भेजा जानेवाला पकवान : 3. पु० बयाना ।

**बया** - पु० [हिं] गौरैया से मिलती-जुलती एक चिड़िया ; आढ़त आदि में माल तोलने का काम करनेवाला ।

**बयाज़** - स्त्री० [अ] सादा कागज़ या बही आदि ; बही-खाता ; नोटबुक ।

**बयान** - पु० [अ] वर्णन ; हाल ।

**बयाना** - पु० [अ] पेशगी, अगाऊ ।

**बयाबान** - पु० [फ़ा] निर्जल स्थान, मरुस्थल ; उजाड़ और सुनसान जगह ।

**बयार** - स्त्री० [हिं] हवा ; शीतल मंद वायु ; मु० —करना - पंखा झलना ।

**बयाला** - पु० [हिं] बाहर का दृश्य देखने या गोली चलाने के लिए दीवार में बनाया हुआ छेद ; आला, ताखा ।

**बयालीस** - वि० [हिं] चालीस और दो ।

**बयासी** - वि० [हिं] अस्सी और दो ।

**बरंगा** - पु० [हिं] छत पाटने की पत्थर की पटिया ।

**बर** - 1. पु० [हिं] दूल्हा ; वरदान ; बल ; बरगद ; यौ० —काज - ब्याह; —नेत - ब्याह की एक रस्म ; —जोर - ज़बर्दस्त ; —जोरी - ज़बर्दस्ती ; 2. अव्य० बलात् ; 3. वि० श्रेष्ठ ; यौ० —गंध - सुगंधित मसाला ; 4. अव्य० [फ़ा] ऊपर ; पर ; बाहर ; 5. पु० फल ; बग़ल ; देह ; 6. प्रत्य० ले जानेवाला ; ढोनेवाला ; यौ० —अक्स - विपरीत ; —क़रार - स्थिर ; दृढ़ ; जीवित ; बना हुआ ; —ख़ास ; ख़ास्त, ख्वास्त - विसर्जित ; समाप्त ; नौकरी से अलग किया हुआ ; —ख़िलाफ़ - प्रतिकूल ; —ख़ुरदार - सफल ; भाग्यशाली ; पुत्र ; —ज़बान - कंठस्थ ; —जस्ता - यथायोग्य ; —तर - श्रेष्ठ ; —तरफ़ - मौक़ूफ़ ; अलग ; —दार - ढोनेवाला ; —दाश्त - सहन; जानवरों की देखभाल ; —दाश्ता - हटाया हुआ ; —पा - उपस्थित ; —बाद - नष्ट, तबाह ; —बादी - नाश ; ख़राबी ; —मला - सामने ; खुल्लम-खुल्ला ; —महल - ठीक मौक़े पर ; उपयुक्त ; —वक़्त - समय पर ; —हक़ - यथार्थ ; सच्चा ; मु० —आना - सफल होना ; —लाना - सिद्ध करना ।

**बरई** - पु० [हिं] तमोली ।

**बरक़ंदाज़** - पु० [अ] बड़ी लाठी या तोड़े-दार बंदूक रखनेवाला सिपाही; चौकीदार।

**बरकत** - स्त्री० [अ] वृद्धि ; सौभाग्य ; लाभ ; बहुतायत ; एक की संख्या ; प्रभाव ; कृपा ; मु० — होना - वृद्धि होना ।

**बरकना** - अ० [हिं] घटित न होना ; बचना ; अलग रहना ।

**बरखा** - स्त्री० [हिं] वर्षा ; वर्षा ऋतु ।

**बरगद** - पु० [हिं] वटवृक्ष ।

**बरछा** - पु० [हिं] भाला ।

**बरछैत** - पु० [हिं] बरछा रखने या चलानेवाला ।

**बरजना** - स० [हिं] मना करना, रोकना ।

**बरत** - 1. पु० [हिं] व्रत ; 2. स्त्री० रस्सी ; वह रस्सी जिसपर चढ़कर नट अपनी कलाबाज़ी दिखाता है ।

**बरतन** - पु० [हिं] पात्र, भाँड़ा ; व्यवहार ।

**बरतना** - स० [हिं] काम में लाना ; बर्ताव करना ।

**बरतनी** - स्त्री० [हिं] शब्द का वर्णक्रम ; हिज्जे।

**बरताना** - 1. स० [हिं] बाँटना ; 2. पु० पुराने कपड़े ।

**बरताव** - पु० [हिं] व्यवहार।

**बरती** - 1. वि० [हिं] व्रती; 2. स्त्री० बत्ती।

**बरदा** - पु० [तु] दास; युद्धबंदी; यौ० —फ़रोश - दास-दासियों को खरीदने-बेचनेवाला।

**बरदाना** - 1. अ० [हिं] गाय-भैंस आदि का गाभिन होना; 2. स० गाय-भैंस आदि को गाभिन कराना।

**बरदौर** - पु० [हिं] बैल आदि बाँधने का स्थान; बथान।

**बरन** - 1. पु० [हिं] रंग; वर्ण; 2. अव्य० बल्कि।

**बरनना** - स० [हिं] वर्णन करना।

**बरना** - 1. स० [हिं] चुनना; ब्याहना; मना करना; नियुक्त करना; निमंत्रित करना; 2. अ० जलना।

**बरनाला** - पु० [हिं] जहाज़ का व्यर्थ का पानी निकाल देने का परनाला।

**बरफी** - स्त्री० [हिं] एक मशहूर मिठाई।

**बरबर** - 1. वि० [हिं] असभ्य; जंगली; 2. स्त्री० बड़बड़; 3. पु० हब्श, उत्तरी अफ्रीका का एक भूखंड; बर्बर।

**बरबरियत** - स्त्री० [हिं] बर्बरता, जंगलीपन।

**बरबरी** - 1. स्त्री० [हिं] बूढ़ी बकरी; 2. वि० बर्बर-संबंधी।

**बरबस** - अव्य० [हिं] बलपूर्वक; व्यर्थ।

**बरमा** - पु० [हिं] लकड़ी में छेद करने का औज़ार; ब्रह्मदेश।

**बररे** - पु० [हिं] बर्रे, भिड़।

**बरवट** - स्त्री० [हिं] तिल्ली।

**बरवै** - पु० [हिं] एक मात्रिक छंद।

**बरस** - पु० [हिं] काल का वह मान जिसमें तीन सौ पैंसठ दिन, पाँच घंटे, अड़तालीस मिनिट और छियालीस सैकंड होते हैं; वर्ष; यौ०—गाँठ - जन्मदिवस; जन्म-दिवस का उत्सव; मु० —दिन का दिन - खुशी का दिन या त्योहार।

**बरसना** - 1. अ० [हिं] वर्षा होना; झड़ना; टपकना; अधिकता से मिलना; 2. स० बरसाना; मु० बरस पड़ना - फटकारना; बकझक करना।

**बरसाइत** - स्त्री० [हिं] वट-सावित्री व्रत, जेठ की अमावस्या; बरसात।

**बरसाइन** - वि० [हिं] हर साल बच्चा देनेवाली (गाय-भैंस)।

**बरसाऊ** - वि० [हिं] बरसनेवाला (बादल)।

**बरसात** - स्त्री० [हिं] वर्षा के दिन, वर्षा ऋतु।

**बरसाती** - 1. वि० [हिं] बरसात का; बरसात में होनेवाला; 2. पु० रबर का बना एक प्रकार का ढीला पहनावा जो वर्षा में भीगने से बचने के लिए पहना जाता है।

**बरसाना** - स० [हिं] वर्षा करना; बड़ी मात्रा में फेंकना।

**बरसायत** - स्त्री० [हिं] शुभ मुहूर्त; बरसाइत।

**बरसी** - स्त्री० [हिं] मृत्यु के एक वर्ष बाद किया जानेवाला श्राद्ध।

**बरहंटा** - पु० [हिं] कड़वा भंटा।

**बरहना** - वि० [फ़ा] नंगा; यौ० —पा - नंगे पाँव।

**बरहम** - वि० [फ़ा] परेशान; क्रुद्ध; उद्विग्न; बेतरतीब।

**बरहा** - पु० [हिं] मोटा रस्सा; खेतों की सिंचाई के लिए बनी हुई नाली।

**बरही** - 1. स्त्री० [हिं] प्रसूता का बारहवें दिन का स्नान या उस दिन का उत्सव; जलाने की लकड़ी का गट्ठर; मोटी रस्सी; 2. पु० मोर; साही; मुर्गा; यौ० —पीड़ - मोर के पंखों का मुकुट।

**बरांडी** - स्त्री० [हिं] शराब (अंग्रे - ब्रांडी)।

**बरा** - पु० [हिं] बड़ा : वटवृक्ष ; बाहु पर पहनने का एक गहना ।

**बराक** - वि० [हिं] शोचनीय ; अधम ; तुच्छ ।

**बराज़** - पु० [अ] मल ।

**बरात** - स्त्री० [हिं] वर के साथ कन्यापक्ष के यहाँ जानेवाले लोग ; भीड़ ।

**बराना** - स० [हिं] परहेज़ करना ; टालना ; रक्षा करना : चुनना , जलाना ।

**बराबर** - 1. वि० [फ़ा] तुल्य ; सदृश ; समकक्ष ; 2. अव्य० निरंतर ; सदा ; साथ ; तक ; यौ० —बराबर - साथ-साथ ; समान भाग में ।

**बराबरी** - स्त्री० [फ़ा] प्रतिस्पर्धा ; गुस्ताख़ी ।

**बरामद** - पु० [फ़ा] प्रकट होना ; निकास ; माल की खानगी ; नदी के हटने से निकलनेवाली ज़मीन ; मु० —करना - छिपी हुई चीज़ को बाहर लाना ।

**बरामदा** - पु० [फ़ा] मकान का बाहर निकला हुआ छायादार अंश, छज्जा, दालान ।

**बराय** - अव्य० के [फ़ा] के लिए ; यौ० —ख़ुदा - ईश्वर के नाम पर ; —नाम - नाम के लिए ।

**बरायन** - पु० [हिं] विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जानेवाला लोहे का छल्ला ; विवाह का कलश ।

**बरार** - 1. पु० [फ़ा] कर ; ऊपर या सामने लाने की क्रिया ; पूरा करने की क्रिया ; 2. वि० लाने या ले जानेवाला ।

**बराव** - पु० [हिं] बचाव ; परहेज़ ।

**बरावुर्द** - स्त्री० [फ़ा] वेतन का चिट्ठा ; माहवारा ।

**बरास** - पु० [हिं] अत्यधिक सुगंधित कपूर, भीमसेनी कपूर ।

**बरियार** - वि० [हिं] बलवान ।

**बरियारा** - पु० [हिं] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है ।

**बरिश** - स्त्री० [सं] मछली फँसाने की काँटिया, बंसी ।

**बरी** - 1. वि० बली ; [अ] आज़ाद ; निर्दोष ; मुक्त ; 2. स्त्री० [हिं] कंकड़ का चूना ; बड़ी ।

**बरु** - अव्य० [हिं] बल्कि ; भले ही ।

**बरुनी** - स्त्री० [हिं] पलक के किनारे के बाल, बरौनी ।

**बरेंड़ा** - पु० [हिं] ठाठ के नीचे लंबाई में दिया जानेवाला गोल बल्ला, बँड़ेर ।

**बरेखी** - स्त्री० [हिं] मंगनी ; बाँह पर पहनने का एक गहना ।

**बरेच्छा** - स्त्री० [हिं] मंगनी ।

**बरेज** - पु० [हिं] पान की बाड़ी ।

**बरेजा** - पु० [हिं] बरेज ; बरामदा ।

**बरेत** - स्त्री० [हिं] मथानी की रस्सी ।

**बरेता** - पु० [हिं] सन का मोटा रस्सा ।

**बरोक** - 1. पु० [हिं] फ़ौज ; फलदान ; 2. अव्य० बलपूर्वक ।

**बरोठा, बरौठा** - पु० [हिं] डेवढ़ी ; बैठक ।

**बरोह** - पु० [हिं] बरगद की डालियों से निकलनेवाली प्रशाखा, बरगद की जटा ।

**बरौंछी** - स्त्री० [हिं] सूअर के बालों की कूँची जिससे सुनार गहने साफ़ करता है ।

**बरौनी** - स्त्री० [हिं] बरुनी ।

**बर्क़** - पु० [अ] बिजली ; यौ० —ज़दा - बिजली का मारा हुआ ; —तब - बिजली की तरह चमकनेवाला ; —दम - भागनेवाला ; तीक्ष्ण ; —नुमा - विद्युत् की स्थिति ज्ञात करनेवाला यंत्र ; —रफ़्तार - अति द्रुतगामी ।

**बर्ख़ास्त** - वि० [अ] मुक्त ।

**बर्ग** - पु० [फ़ा] पत्र ; सामग्री ; लड़ाई का हथियार ।

**बर्ताव** - पु० [हिं] बरताव।

**बर्फ़** - स्त्री० [फ़ा] जमा हुआ पानी; कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों का रस।

**बर्फ़ानी** - वि० [फ़ा] बर्फ़ का; बर्फ़ से ढका हुआ।

**बर्बटी** - स्त्री० [सं] वेश्या।

**बर्बर** - 1. वि० [सं] असभ्य; अनार्य; 2. पु० घुँघराले बाल; असभ्य आदमी; एक कीड़ा; एक मछली; हथियारों की आवाज़।

**बर्रे** - पु० [हिं] भिड़, तीक्ष्ण दंशवाला पीला छोटा जंतु, ततैया।

**बर्राक़** - वि० [अ] चमकता हुआ; तेज़; चतुर।

**बर्राना** - अ० [हिं] आदमी का नींद में सपना देखते हुए बोलना; प्रलाप करना।

**बर्रे** - पु० [हिं] भिड़, ततैया।

**बर्हण** - वि० [सं] शक्तिशाली; फाड़ने या खींच लेनेवाला; चकाचौंध पैदा करनेवाला।

**बल** - पु० [सं] ताक़त; सेना; वीर्य; भरोसा; बल का गर्व; अधपका जौ; कौआ; वरुणवृक्ष; यौ० —कर, कारक - बल देनेवाला; —काम - बल का इच्छुक; —काय - सेना; —चक्र - सेना; राज्य; —देव - बलराम; वायु; —पुच्छक - क़ौआ; —बूता - ताक़त; —भद्र - बलवान पुरुष; बलराम; नीलगाय; लोध्र; —भद्रा - कुमारी; घृतकुमारी; —मद - बल का घमंड; —मुख्य - सेनानायक; —वर्जित - निर्बल; —वर्धन - बल बढ़ानेवाला; —विन्यास - सेनाव्यूहन; —व्यसन - सेना की पराजय; —शाली, शील - बलयुक्त; बली; —हीन - निर्बल, कमज़ोर; [हिं] शिकन; फ़र्क़; पहलू; घाटा; मु० —आना - फ़र्क़ आना; शिकन पड़ना; —उतरना - शिकन दूर होना; —की बात - चालाकी की बात।

**बलक** - पु० [सं] आधी रात के बाद का स्वप्न; शीरे और दूध का शर्बत।

**बलकटी** - स्त्री० [हिं] राजकर की एक किश्त।

**बलकना, बलगना** - अ० [हिं] जोश में आना; इतराकर बोलना।

**बलकाना** - स० [हिं] उबालना; उसकाना।

**बलगम** - पु० [अ] कफ़, श्लेष्मा।

**बलतोड़** - पु० [हिं] बाल टूटने से होनेवाला फोड़ा।

**बलदिया** - पु० [हिं] गाय-बैल चरानेवाला।

**बलना** - अ० [हिं] जलना।

**बलबलाना** - अ० [हिं] ऊँट का बोलना; उफनना; बड़बड़ाना।

**बलबलाहट** - स्त्री० [हिं] ऊँट की बोली।

**बलमी** - स्त्री० [हिं] सबसे ऊपर की छत पर की कोठरी।

**बलम** - पु० [हिं] प्रियतम।

**बलमीक** - पु० [हिं] बाँबी।

**बलवंत** - वि० [सं] बलवान।

**बलवा** - पु० [फ़ा] विप्लव, विद्रोह।

**बलवाई** - पु० [हिं] विद्रोही, बाग़ी।

**बलवान** - वि० [सं] शक्तिशाली।

**बलसुम** - वि० [हिं] रेतीला।

**बला** - स्त्री० [सं] एक मंत्र; पृथ्वी; छोटी बहन का संबोधन; [अ] कष्ट; आपत्ति; प्रेतबाधा; रोगव्याधि; बहुत कष्ट देनेवाली वस्तु; यौ० —कश - कठिनाइयाँ झेलनेवाला; —ग़त - अच्छी तरह बोलना; युवावस्था; —नसीब - अभागा; —नोश - बहुत खानेवाला; बहुत शराब पीनेवाला; —ए-जान - झंझट; —ए-

आसमानी - दैवी कोप ; मु० — उतरना - विपत्ति आना ; —का - ग़ज़ब का ;— टलना - परेशानी से मुक्त होना ; — मोल लेना - जानबूझकर झंझट में पड़ना ।

**बलाक** - पु० [सं] बगला ।

**बलाका** - स्त्री० [सं] प्रिया ; कामुक स्त्री ; बकपंक्ति ; बगले की मादा ; नृत्य का एक भेद ।

**बलाग्र** - पु० [सं] सेनानायक ; बहुत बड़ी शक्ति ।

**बलाढ्य** - 1. वि० [सं] बलवान ; 2. पु० उरद ।

**बलात्** - अव्य० [सं] ज़बर्दस्ती ; यौ० —कार - बलप्रयोग ; अन्याय ; स्त्री की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक किया जानेवाला संभोग ।

**बलाधिकरण** - पु० [सं] सेना की कार्रवाई ।

**बलाध्यक्ष** - पु० [सं] सेनापति ।

**बलाबल** - पु० [सं] बल और अबल का भाव ।

**बलास** - पु० [सं] कफ ; क्षय ; यौ० —बस्त - आँख का एक रोग ।

**बलासक** - पु० [सं] रोग के कारण आँख के सफ़ेद हिस्से में बना हुआ पीला दाग़ ।

**बलासी** - वि० [सं] क्षयरोग से ग्रस्त ।

**बलाहक** - पु० [सं] बादल ; मोथा ; एक पर्वत ।

**बलि** - 1. स्त्री० [सं] देवता को चढ़ाया जानेवाला नैवेद्य ; बलिपशु ; राजकर ; पाँच महायज्ञों के अंतर्गत चौथा, भूतयज्ञ ; 2. पु० चँवर का दंड ; [हिं] पेट में नाभि के ऊपर पड़नेवाली रेखा ; बवासीर का मस्सा ; छाजन का छोर ; सखी ; यौ० —कर - कर देनेवाला ; बलि चढ़ानेवाला ; —कर्म - भूतयज्ञ ; पूजा ; —दान - कुर्बानी ; देवता के उद्देश्य से पशुवध करना ; देवता को पूजन-सामग्री का अर्पण ; —पशु - देवता के प्रीत्यर्थ वध किया जानेवाला पशु ; —पुष्ट, भुक् - कौआ ; —मुख - बंदर ; मु० —चढ़ना - बलिदान होना ; — चढ़ाना - बलि देना ; — जाना - निछावर होना ।

**बलिश** - पु० [सं] कंटिया ; बंसी ।

**बलिष्ठ** - 1. वि० [सं] अत्यधिक बलवान ; 2. पु० ऊँट ।

**बलिहारना** - पु० [हिं] निछावर होना ।

**बलिहारी** - स्त्री० [हिं] निछावर होने का भाव ।

**बली** - 1. स्त्री० [हिं] बलि ; चमड़ी पर सिकुड़न से पड़ी हुई रेखा ; लता ; 2. वि० [सं] बलवान ; 3. पु० भैंसा ; साँड़ ; ऊँट ; सूअर ; बलराम ; सैनिक ; कफ़ ।

**बलीक** - पु० [सं] छप्पर का किनारा ।

**बलीमुख** - पु० [हिं] बंदर ।

**बलीवर्द** - पु० [सं] बैल ; साँड़ ।

**बलुआ** - वि० [हिं] रेतीला ।

**बलूत** - पु० [अ] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल से चमड़ा रँगा जाता है ।

**बल्ला** - पु० [हिं] पानी का बुलबुला ।

**बलैया** - स्त्री० [हिं] बला ; मु० —लेना - मंगलकामना करते हुए प्यार करना ।

**बल्कि** - अव्य० [फ़ा] अन्यथा ; किन्तु ।

**बल्लम** - पु० [हिं] डंडा ; भाला ; चाँदी या सोने का पत्तर चढ़ा हुआ सोंटा ; यौ० —बरदार - बल्लम लेकर चलनेवाला अनुचर ।

**बल्लव** - पु० [सं] ग्वाला ; रसोइया ।

**बल्लवी** - स्त्री० [सं] ग्वालिन, गोपी ।

**बल्ला** - पु० [हिं] लकड़ी का लम्बा-सीधा डंडा ; नाव खेने की डाँड़ ; गेंद मारने का चपटा डंडा ।

**बल्ली** - स्त्री० [हिं] छोटा बल्ला ।

**बवँड़ना** - अ० [हिं] बेकार घूमना ।

**बवंडर** - पु० [हिं] बगूला, अंधड़, झंझावात ।

**बवना** - 1. स० [हिं] बोना ; बिखेरना ; 2. अ० बिखरना ; 3. पु० बौना ।

**बवासीर** - स्त्री० [अ] एक रोग जिसमें गुदा में मस्से पैदा हो जाते हैं ।

**बशर** - पु० [अ] मनुष्य ।

**बशरा** - पु० [अ] आकृति ; मुख ।

**बशरियत** - स्त्री० [फ़ा] मनुष्यता ।

**बशारत** - पु० [अ] शुभ समाचार ; ईश्वरीय प्रेरणा ।

**बशीर** - वि० [अ] शुभ समाचार सुनानेवाला ; सुंदर ।

**बशीरी** - पु० [हिं] एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा ।

**बसंत** - पु० [हिं] वसंत ; एक पौधा ।

**बसंती** - 1. वि० [हिं] वसंत का ; वसंती रंग का ; 2. पु० हलका पीला रंग ; पीला कपड़ा ।

**बस** - 1. पु० [हिं] वश ; 2. अव्य० [फ़ा] पर्याप्त ; बहुत ; इतना ही ; ठहरो ।

**बसना** - 1. अ० [हिं] स्थायी रूप से रहना ; ठहरना ; आबाद होना ; बैठना ; 2. पु० थैली ; रुपये रखने की जालीदार थैली ; बरतन ।

**बसनि** - स्त्री० [हिं] वास ।

**बसर** - 1. स्त्री० [फ़ा] गुज़र, निर्वाह ; 2. पु० [अ] दृष्टि ; आँख ; ज्ञान ।

**बसवार** - 1. पु० [हिं] छौंक ; 2. वि० सोंधा ।

**बसवास** - पु० [हिं] वास ; रहने का ठिकाना ; रहने का ढंग ।

**बसह, बसहा** - पु० [हिं] बैल ।

**बसा** - 1. वि० [फ़ा] बहुत ; 2. स्त्री० वसा : भिड़ ।

**बसारत** - स्त्री० [अ] दृष्टि ; समझ ।

**बसिया** - वि० [हिं] बासी ।

**बसियाना** - अ० [हिं] बासी हो जाना ; गंध आने लगना ।

**बसीठ** - पु० [हिं] दूत ; संदेशवाहक ।

**बसीठी** - स्त्री० [हिं] दूत का काम ।

**बसीना** - पु० [हिं] निवास ।

**बसीला** - वि० [हिं] गंधयुक्त ; दुर्गन्धयुक्त ।

**बसूला** - पु० [हिं] बढ़इयों का लकड़ी काटने-छीलने का एक औज़ार ।

**बसूली** - स्त्री० [हिं] छोटा बसूला ।

**बसेरा** - पु० [हिं] रात बिताने का स्थान ; घोंसला ; रहना ।

**बसेरी** - पु० [हिं] बसने-टिकानेवाला ।

**बसौंधी** - स्त्री० [हिं] सुवासित और लच्छेदार रबड़ी ।

**बस्त** - 1. स्त्री० [हिं] वस्तु ; 2. पु० [हिं] बकरा ।

**बस्तर** - पु० [हिं] वस्त्र ; यौ० —मोचन - किसीके बदन पर लंगोटी तक न रहने देना, सब कुछ छीन लेना ।

**बस्ता** - 1. पु० [फ़ा] कागज़-पत्र या पुस्तकें आदि बाँधने का कपड़ा ; कागज़-पत्र ; 2. वि० बँधा हुआ ; तह किया हुआ ; मु० — बाँधना - कागज़-पत्र समेटना ।

**बस्ती** - स्त्री० [हिं] आबादी ; गाँव ; कस्बा ।

**बहँगी** - स्त्री० [हिं] काँवर, बाँस के फट्ठे के दोनों छोरों पर छींका लटकाकर बनाया हुआ बोझ ढोने का साधन ।

**बहक** - 1. स्त्री० [हिं] पथभ्रष्टता ; अंड-बंड बोलना ।

**बहकना** - अ० [हिं] पथभ्रष्ट होना ; चूकना ; धोखा खाना ; उछलना ; मु० बहकी बहकी बातें करना - बढ़-चढ़कर बोलना ।

**बहकावा** - पु० [हिं] भुलावा ।

**बहतोल** - स्त्री० [हिं] पानी बहने की नाली।

**बहत्तर** - वि० [हिं] सत्तर और दो ।

**बहना** - 1. अ० [हिं] द्रव पदार्थ का नीचे की ओर जाना ; हवा का चलना ; चूना ; फूटना ; चरित्रभ्रष्ट होना ; नष्ट होना ; 2. स० ढोना ; धारण करना ।

**बहनापा** - पु० [हिं] बहिन का नाता ।

**बहनेली** - स्त्री० [हिं] मुँहबोली बहिन ।

**बहनोई** - पु० [हिं] बहिन का पति ।

**बहनौता** - पु० [हिं] बहिन का बेटा, भांजा ।

**बहनौरा** - 1. पु० [हिं] बहिन की ससुराल।

**बहर** - 1. अव्य० [फ़ा] के लिए, वास्ते ; 2. पु० समुद्र ; छंद ; यौ० —कैफ़ - किसी हालत में ; —हाल - हर हालत में।

**बहरा** - 1. पु० [फ़ा] हिस्सा ; भाग्य ; यौ० —वर - भाग्यवान ; 2. वि० [हिं] ऊँचा सुननेवाला ; श्रवणशक्तिहीन ; ध्यान न देनेवाला ; बधिर ।

**बहराना** - 1. स० [हिं] बाहर करना ; 2. [अ] बाहर होना ; बह जाना ; उड़ जाना ।

**बहरिया** - पु० [हिं] बाहर रहनेवाला मंदिर का सेवक ; द्वारपालक ।

**बहरी** - 1. स्त्री० [हिं] बाज़ से मिलती-जुलती एक शिकारी चिड़ियाँ ; 2. पु० [अ] समुद्र-संबंधी ; नदी-संबंधी ।

**बहल** - 1. स्त्री० [हिं] सवारी के काम आनेवाली छायादार गाड़ी ; 2. वि० [सं] दृढ़ ; विस्तृत ; गहरा ; गाढ़ा ; कर्कश (स्वर) ; प्रचुर ।

**बहलना** - अ० [हिं] मनोरंजन होना ।

**बहलाना** - स० [हिं] मनोरंजन करना ; भुलावा देना ।

**बहलाव** - पु० [हिं] मन का बहलना ; किसी प्रसन्नताजनक विषय या व्यापार में लग जाना ।

**बहली** - स्त्री० [हिं] कुश्ती का एक पेंच ।

**बहस** - स्त्री० [अ] वाद-विवाद ; सवाल-जवाब ; मतलब ; होड़ ; यौ० —क़ानूनी - क़ानूनविषयक बहस ; —मुबाहिसा - वाद-विवाद ; शास्त्रार्थ ; —वाक़ियाती - घटनाओं या तथ्यों को लेकर की जानेवाली बहस ।

**बहसना** - अ० [हिं] विवाद करना ; होड़ लगाना ।

**बहादुर** - वि० [फ़ा] शूर-वीर ; साहसी ; निर्भय ।

**बहादुराना** - 1. अव्य० [फ़ा] वीरतापूर्वक ; 2. वि० वीरतासूचक ।

**बहादुरी** - स्त्री० [फ़ा] वीरता ; मर्दानगी ।

**बहाना** - 1. स० [हिं] प्रवाहित करना ; बहने के लिए धारा में डालना ; सस्ता बेचना ; उड़ाना ; बरबाद करना ; 2. पु० [फ़ा] मतलब निकालने के लिए झूठ कहना, मिस, हीला ; निमित्त ; व्याज ।

**बहार** - स्त्री० [फ़ा] वसंत ऋतु ; चढ़ती हुई जवानी ; विकास ; शोभा ; आनंद ; यौ० बहारे-हुस्न - रूप की छटा ; मु० —पर आना - जवानी पर आना ; पूर्ण विकास होना ।

**बहारना** - स० [हिं] झाड़ना ।

**बहाल** - 1. वि० [फ़ा] क़ायम ; अच्छी या ठीक अवस्था में ; स्वस्थ ; प्रसन्न ; 2. अव्य० पूर्ववत् ।

**बहाली** - स्त्री० [फ़ा] पुनः नियुक्त करना ; झाँसा ।

**बहाव** - पु० [हिं] प्रवाह, धारा ।

**बहिः** - अव्य० [सं] बाहर ; अलग ।

**बहिन** - स्त्री० [हिं] भगिनी, सहोदरी ।

**बहिनापा** - पु० [हिं] बहनापा ।

**बहियाँ** - स्त्री० [हिं] बाँह ।

**बहिया** - स्त्री० [हिं] बाढ़ ।

**बहिरंग** - 1. वि० [सं] बाहरी ; बाहर-वाला ; 2. पु० बाहरी भाग ।

**बहिरा** - वि० [हिं] बधिर ।

**बहिराना** - 1. स० [हिं] बाहर निकालना ; 2. अ० बाहर होना ; बहरा होना ।

**बहिरिन्द्रिय** - स्त्री० [सं] बाह्य विषयों को ग्रहण करनेवाली (नाक, कान आदि) इंद्रिय ।

**बहिर्गत** - वि० [सं] बाहर गया हुआ ; अलग ।

**बहिर्जगत** - पु० [सं] बाह्य जगत ।

**बहिर्देश** - पु० [सं] गाँव या नगर के बाहर का स्थान ; परदेश ।

**बहिर्द्वार** - पु० [सं] बाहरी दरवाज़ा ।

**बहिर्भव** - वि० [सं] बाहरी।

**बहिर्भाग** - पु० [सं] बाहर का हिस्सा ।

**बहिर्भूत** - वि० [सं] बहिर्गत ।

**बहिर्वास** - पु० [सं] कौपीन के ऊपर पहनने का कपड़ा ।

**बहिर्विकार** - पु० [सं] गरमी की बीमारी ।

**बहिला** - वि० [हिं] बच्चा न देनेवाली (गाय-भैंस आदि) ।

**बहिश्त** - पु० [फ़ा] स्वर्ग ।

**बहिश्ती** - पु० [फ़ा] स्वर्ग का निवासी ; मशक में रखकर पानी पहुँचाने या पिलानेवाला ।

**बहिष्कार** - पु० [सं] अलग करने का भाव ; संबंध-त्याग ; विदेशी वस्तुविशेष का सामूहिक व्यवहार-त्याग ; बायकाट ।

**बहिष्कृत** - वि० [सं] निकाला हुआ ; परित्यक्त ।

**बही** - स्त्री० [हिं] हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक ; सिली हुई मोटी कापी ; यौ० —खाता - व्यापारी आदि के हिसाब-किताब की कापियाँ ; मु० —पर चढ़ना या टँगना - बही पर लिख लिया जाना ।

**बहीर** - पु० [फ़ा] सैनिक छावनी में रहने-वाले सामान्य लोग ; छावनी का वह भाग जिसमें सैनिकों की स्त्रियाँ और बच्चे रहते हैं ; भीड़ ।

**बहु** - वि० [सं] अनेक, ज़्यादा ; यौ० —कंटक - बहुत काँटोंवाला ; जवासा ; —कंद - सूरन ; —कन्या - घृतकुमारी ; —कर - परिश्रमी ; झाड़ू देनेवाला ; ऊँट ; —करा, करी - झाड़ू ; —काम - बहुत-सी इच्छाओंवाला ; —कालीन - पुराना ; —क्षम - बहुत सहनेवाला ; —क्षीरा - अधिक दूध देनेवाली गाय ; —गंधा - जूही ; चंपा की कली ; —गुण - कई तारों या सूतोंवाला ; जिसमें बहुत से गुण हों ; —गुना - खुले मुँह के डब्बे के आकार का पीतल का बर्तन ; —गुरु - पल्लवग्राही व्यक्ति ; —अग्नि - झाड़ू ; —जल्प - वाचाल ; —ज्ञ - बहुत जाननेवाला ; —तंत्री - बहुत-से तंतुओंवाला (शरीर) ; —त्वक - भोज-पत्र ; —दर्शी - जिसने बहुत देखा-सुना हो ; बहुज्ञ ; —दायी - उदार ; —धन - जिसके पास बहुत धन हो ; —नाद - शंख ; —नामा - जिसके बहुत-से नाम हों ; —पत्नीक - जिसके कई पत्नियाँ हों ; —पत्र - अभ्रक ; प्याज ; —पत्रिका - मेथी ; —पद, पाद - बहुत-से पैरोंवाला ; बरगद ; —प्रकार - अनेक प्रकार से ; —प्रज - जिसके अधिक

बाल-बच्चे हों; सूअर; चूहा; —प्रतिज्ञ - जिसमें बहुत-सी प्रतिज्ञाएँ या दावे हों (मुक़द्दमा); —प्रद - महादानी; —फला - खीरा; छोटा करेला; भुईं-आँवला; —बीज - बिजौरा नींबू; बीजवाला केला; शरीफ़ा; टमाटर; बैंगन; —भक्ष - बहुत खानेवाला; —भाषी - बहुत बोलनेवाला; —भुज - अनेक भुजाओंवाला; —भोजी - पेटू; —मत - अतिसम्मानित; कई रायें रखनेवाला; अनेक मत; अधिकतर; —मति, मान - बहुत मान, अति आदर; —मान्य - सम्मानित; —मार्ग - अनेक रास्तोंवाला; चौराहा; —मार्गी - वह स्थान जहाँ कई रास्ते मिलते हों; —मुख - अनेक तरह की बातें कहनेवाला; अनेक दिशाओं में जानेवाला; —मूत्र - मधुमेह; —मूर्ति - वनकपास; बहुरूपिया; विष्णु; — मूल्य - बेशकीमत; — रंग - रंग-बिरंगा; — रंगी - बहुरूपिया; —रस - तरह-तरह के स्वादवाला; —रूपिया - अनेक रूप धरनेवाला; —रोमा - जिसकी देह पर बहुत बाल हों, लोमश; मेष; —वचन - जिससे एक से अधिक का बोध हो; —वार्षिक - अनेक वर्षों तक चलने या रहनेवाला; —विक्रम - अतिपराक्रमी; —विघ्न - कठिनाइयों से परिपूर्ण; —विद्, विद्य - बहुत बड़ा विद्वान; —विध - अनेक प्रकार का; अनेक प्रकार से; —विस्तार - बहुत अधिक फैलाव; विस्तृत; —व्ययी - फ़ज़ूलखर्च; —शत्रु - जिसके बहुत-से दुश्मन हों; गौरैया; —श्रुत - गुरुमुख से अनेक शास्त्र पढ़नेवाला; बहुत बड़ा विद्वान; —संख्य, संख्यक - बड़ी संख्यावाला; —संतति - अधिक बाल-बच्चोंवाला।

**बहुटनी** - स्त्री० [हिं] बाँह पर पहनने का एक छोटा गहना।

**बहुत** - 1. वि० [हिं] अधिक; पर्याप्त; 2. अव्य० अधिक मात्रा में; मु० —करके - अधिकतर; प्रायः; —कुछ - पर्याप्त; —खूब - बहुत अच्छा।

**बहुतायत** - स्त्री० [हिं] अधिकता।

**बहुतेरा** - 1. वि० [हिं] बहुत-सा; 2. अव्य० बहुत-बहुत तरह से।

**बहुतेरे** - वि० [हिं] अनेक।

**बहुधा** - अव्य० [सं] अनेक प्रकार से; अक्सर।

**बहुरना** - अ० [हिं] लौटना; फिर मिलना।

**बहुरि** - अव्य० [हिं] फिर; पीछे।

**बहुरिया** - स्त्री० [हिं] दुलहिन।

**बहुरी** - स्त्री० [हिं] भुना हुआ गेहूँ या जौ।

**बहुल** - 1. वि० [सं] बहुत; प्रचुर; काला; 2. पु० अग्नि; आकाश; सफ़ेद मिर्च; काला रंग; कृष्णपक्ष; यौ० —गंधा - छोटी इलायची।

**बहुलता** - स्त्री० [सं] प्रचुरता।

**बहुलिका** - स्त्री० [सं] सप्तर्षिमंडल।

**बहुशः** - अव्य० [सं] बहुत बार।

**बहूँटा** - पु० [हिं] बाँह पर पहनने का एक गहना।

**बहू** - स्त्री० [हिं] पुत्रवधू; दुलहिन; पत्नी।

**बहेत** - स्त्री० [हिं] बहकर जमा होनेवाली मिट्टी।

**बहेड़ा** - पु० [हिं] दवा या चमड़ा सिझाने के काम आनेवाला एक जंगली पेड़ या उसका फल।

**बहेरी** - स्त्री० [हिं] मिस, बहाना।

**बहेलिया** - पु० [हिं] चिड़ीमार।

**बहोर** - 1. पु० [हिं] लौटाना ; वापसी ; 2. अव्य० बहुरि ।

**बहोरना** - स० [हिं] लौटाना ; वापस करना ।

**बह्र** - 1. स्त्री० [अ] छंद ; समुद्र ; 2. पु० नद ; उदार व्यक्ति ; तेज़ घोड़ा ; जहाज़ों का बेड़ा ; **यौ०** बह्रे-अरब - अरब सागर ; बह्रे-अह्मर - लाल समुद्र ; बह्रे-आज़म - महासागर ; बह्रे-ज़ल्मात - अतलांतक महासागर ; बह्रे-हिन्द - हिन्द महासागर ।

**बह्रुल्काहिल** - पु० [अ] प्रशांत महासागर ।

**बाँ** - पु० [अनु] गाय-बैल की आवाज़ ; [हिं] बार, दफ़ा ।

**बाँक** - पु० [हिं] टेढ़ापन, वक्रता ; गन्ना छीलने का सरौते की शक्ल का औज़ार ; टेढ़ी छुरी ; बाजू पर पहनने का एक गहना ; एक तरह की चौड़ी चूड़ी ; नदी का घुमाव ; धनुष ; **यौ०** —डोरी - एक हथियार ; —नल - पीतल की नली जिससे सुनार टाँका गलाने के लिए दिये की लौ पर फूँक मारता है ।

**बाँकड़ा** - वि० [हिं] वीर ; साहसी ।

**बाँकड़ी, बाँकुड़ी** - स्त्री० [हिं] साड़ी आदि पर टाँकने का सुनहला या रुपहला फ़ीता ।

**बाँकना** - 1. स० [हिं] टेढ़ा करना ; 2. अ० टेढ़ा होना ।

**बाँकपना** - पु० [हिं] वक्रता ; सुंदरता ; शौक़ीनी ; शोख़ी ।

**बाँका** - 1. वि० [हिं] टेढ़ा ; छैल-छबीला ; शौक़ ; वीर ; गुंडा ; 2. पु० बाँस छीलने या काटने का एक अर्धचन्द्राकार औज़ार ।

**बाँकी** - स्त्री० [हिं] लगान ।

**बाँकुरा** - वि० [हिं] टेढ़ा ; चतुर ; वीर ; पैना ।

**बाँग** -1. स्त्री० [फ़ा] आवाज़ ; पुकार ; मुर्गे की आवाज़ ; अजान ; 2. पु० बाँगा ।

**बाँगदरा** - पु० [हिं] घड़ियाल की ध्वनि ; क़ाफ़िले के प्रस्थान के समय होनेवाली घंटा-ध्वनि ।

**बाँगर** - पु० [हिं] ऊँची ज़मीन ; एक प्रकार का बैल ।

**बाँगा** - पु० [हिं] कपास ।

**बाँगुर** - पु० [हिं] चिड़िया फँसाने का जाल ।

**बाँचना** - 1. स० [हिं] पढ़ना ; चुनना ; 2. अ० बाक़ी रहना ; रक्षा पाना ।

**बाँझ** - 1. वि० [हिं] जिससे संतान या फल उत्पन्न न हो ; 2. स्त्री० वन्ध्या स्त्री या गाय आदि ।

**बाँट** - स्त्री० [हिं] बँटवारा ; ताश आदि के पत्तों का बाँटा जाना ; हिस्सा ; **यौ०** —बूँट - बँटवारा ।

**बाँटना** - स० [हिं] हिस्से करना ; वितरण करना ; पीसना ; घोंटना ।

**बाँटा** - पु० [हिं] हिस्सा ; बाँट में मिलनेवाली वस्तु ।

**बाँड़** - 1. पु० [हिं] दो नदियों के संगम के बीच की ज़मीन ; 2. वि० बाँड़ा ।

**बाँड़ा** - वि० [हिं] कटी पूँछवाला (पशु) ; असहाय ।

**बाँड़ी** - स्त्री० [हिं] पूँछ-विहीन गाय या कोई मादा पशु ; नृत्य में ताल के लिए बजाने का छोटा रंगीन डंडा ; **यौ०** —बाज़ - लाठीबाज़ ; शरारत करनेवाला ।

**बाँद** - पु० [हिं] दास ; बंधन ।

**बाँदी** - स्त्री० [हिं] दासी ; लौंडी ।

**बाँध** - पु० [हिं] पानी रोकने के लिए बनाया हुआ कच्चा या पक्का मेंड़ ।

**बांधकिनेय, बांधक्केय** - पु० [हिं] अविवाहित स्त्री का पुत्र, जारज ।

**बाँधना** - स० [हिं] बंधन में डालना; लपेटना; जोड़ना (हाथ); क़ैद करना; पाबंद करना· गतिहीन करना; बाँध बनाकर रोकना; जमाना (निशाना); शक्ति आदि नष्ट कर देना; क्रमबद्ध करना; निबंधन।

**बाँधनोपौरि** - स्त्री० [हिं] पशुशाला।

**बाँधनू** - पु० [हि] मनसूबा; ख़्याली पुलाव; झूठी तोहमत; लहरियादार रंगाई में कपड़े को जगह-जगह बाँधने की क्रिया।

**बाँधव** - पु० [सं] भाई-बंधु; स्वजन।

**बाँबी** - स्त्री० [हिं] दीमकों का भीटा, बमीठा; साँप का बिल; वल्मीक।

**बाँभन** - पु० [हिं] ब्राह्मण।

**बाँस** - पु० [हिं] तृण की जाति का एक लंबा-सीधा ग्रंथिवाला बड़ा पौधा, वंश; भूमि की एक माप; नाव की लग्गी; **यौ०** —पूर - एक बारीक़ कपड़ा; —फल - एक बारीक़ धान; **मु०** — पर चढ़ना - बदनाम होना; —बजना - लाठी चलना, मार-पीट होना; —बराबर - बहुत लंबा; बाँसों उछलना - बहुत ख़ुश होना।

**बाँसा** - पु० [हिं] नाक के बीच की हड्डी; रीढ़; बीज गिराने के लिए हल के साथ लगा हुआ बाँस का नल; **मु०** —फिर जाना - नाक की हड्डी का टेढ़ा हो जाना।

**बाँसुरी** - स्त्री० [हिं] पतले व पोले बाँस का बना एक बाजा, वंशी।

**बाँसुली** - स्त्री० [हिं] एक घास; बाँसुरी; **यौ०** —कंद - एक तरह का जंगली सूरन।

**बाँह** - स्त्री० [हिं] कंधे से हथेली तक का हाथ का भाग, बाहु; बल; भरोसा; शरण; आस्तीन; **यौ०** —तोड़ - कुश्ती का एक पेंच; —बोल - सहायता करने का वचन; **मु०** —की छाँह देना - शरण में आना; —गहना, पकड़ना - अपनाना; विवाह करना; भरण-पोषण का भार उठाना; —टूटना - सहायक का उठ जाना; —देना - सहायता देना।

**बा** - 1. पु० [हिं] पानी; बार; 2. स्त्री० [गु] माता; 3. अव्य० [फ़ा] साथ; समक्ष; **यौ०** —अदब - विनीत; विनयपूर्वक; —असर - प्रभावशाली; —आबरू - प्रतिष्ठित; —इख़्तियार - अधिकार रखनेवाला; —ईमान - गुणी; —कार - कर्मण्य; —क़ायदा - नियमित; नियमानुसार; —ख़ुदा - भगवद्भक्त; —ग़रज़ - ग़रज़मंद; —ज़ाब्ता - नियमानुसार; नियमयुक्त; —मज़ा - स्वादिष्ट; —मज़ाक़ - रसिक; विनोदशील; —मुराद - सफल; —वज़ा - सभ्य, शिष्ट; —वजूद - यद्यपि, अगर्चे; —वफ़ा - वफ़ादार; वचनपालक; —शऊर - चतुर; —सलीक़ा - जिसे काम करने का ढंग आता हो; —सवाब - यथायोग्य; —हम - इकट्ठे; परस्पर।

**बाइबिल** - स्त्री० [यू] ईसाइयों की धर्म-पुस्तक, इंजील।

**बाइस** - 1. वि० [हिं] बीस और दो; 2. पु० [अ] कारण, हेतु।

**बाई** - स्त्री० [हिं] प्रतिष्ठित महिला; वेश्या; वायु; वातव्याधि; **मु०** —चढ़ना - सन्निपात होना; मिज़ाज बिगड़ना; —पचना - वातकोप का शांत होना; घमंड टूटना।

**बाईसी** - स्त्री० [हिं] बाईस चीजों या पद्यों का समूह।

**बाउर** - वि० [हिं] बावला ; मूर्ख ; गूँगा ; बुरा ।

**बाक** - 1. पु० [हिं] वाक्य ; शब्द ; 2. [सं] बगलों का समूह ।

**बाक़र** - पु० [अ] बहुत बड़ा विद्वान ; बहुत धनी ।

**बाकल** - पु० [हिं] वल्कल ; छाल ।

**बाकला** - स्त्री० [हिं] एक तरकारी ।

**बाकस** - पु० [हिं] बक्स ; संदूक़ ।

**बाकिरा** - स्त्री० [अ] कुमारी लड़की ; अनबिधा मोती ।

**बाक़ी** - 1. वि० [अ] अवशिष्ट ; शाश्वत ; विद्यमान ; देय ; 2. स्त्री० एक संख्या को दूसरी में घटाने का गणित ; घटाने से निकलनेवाली संख्या ; यौ० —दार - जिसके यहाँ लगान बाक़ी हो ; —दारद - असमात ।

**बाग** - स्त्री० [हिं] लगाम, रास ; यौ० —डोर - लगाम में बाँधी जानेवाली रस्सी ; मु० —उठाना - चल पड़ना ; —हाथ से छूटना - मौक़ा हाथ से जाता रहना ।

**बाग़** - पु० [फ़ा] वाटिका, उपवन ; बाड़ी ; यौ० —बाग़ - अति प्रसन्न ; —बान - माली ; —बानी - बाग़बान का काम ।

**बागना** - अ० [हिं] कहना ; घूमना ।

**बागर** - पु० [हिं] नदीतट की ऊंची भूमि ; रस्सी ; जाल ।

**बागा** - पु० [हिं] एक पुराना लंबा पहनावा ।

**बाग़ी** - पु० [अ] विद्रोही ; न दबनेवाला ।

**बाग़ीचा** - पु० [फ़ा] छोटा बाग़ ।

**बाघंबर** - पु० [हिं] बाघ की खाल ; एक तरह का रोयेंदार कंबल ।

**बाघ** - पु० [हिं] सिंह के समान बल-विक्रमवाला एक हिंसक जानवर, व्याघ्र ।

**बाघा** - पु० [हिं] चौपायों का एक रोग ; एक तरह का कबूतर ।

**बाघी** - स्त्री० [हिं] जाँघ के जोड़ में होनेवाली एक तरह की गिल्टी ।

**बाछ** - 1. पु० [हिं] छँटाई ; चंदे या मालगुज़ारी आदि का आनुपातिक पड़ता या औसत ; 2. स्त्री० मुख का प्रान्तभाग ; मु० बाछें खिलना - अति प्रसन्न होना ।

**बाछना** - स० [हिं] छाँटना ; जुदा करना ।

**बाछा** - पु० [हिं] बछड़ा ; बच्चा ।

**बाछी** - स्त्री० [हिं] बछिया ।

**बाज़** - पु० [फ़ा] एक शिकारी पक्षी ; 2. अव्य० फिर ; 3. वि० वंचित ; कोई-कोई ; यौ० —ग़स्त - वापसी ; —दावा - स्वत्व का त्याग ; दावा उठाना ; —दीद - वापसी मुलाक़ात ; —पुर्स - पूछताछ ; मु० —आना - लौटना ; छोड़ना ; दूर रहना ; —रखना - रोकना ।

**बाजना** - अ० [हिं] लड़ना ; लगना ; बजना ।

**बाजरा** - पु० [हिं] एक मोटा अनाज ।

**बाजा** - पु० [हिं] वाद्य, बजाने का यंत्र ; यौ० —गाजा - एक साथ बजनेवाले अनेक प्रकार के बाजे ; धूमधाम ।

**बाज़ार** - पु० [फ़ा] हाट ; क्रय-विक्रय करने के लिए जमा हुए लोग ; भाव ; बाज़ार लगने का दिन ; यौ० —भाव - प्रचलित दर ; मु० —करना - चीज़ें ख़रीदने या बेचने के लिए बाज़ार जाना ; —की मिठाई - आसानी से मिलनेवाली चीज़ ; वेश्या ; —गरम होना - बाज़ार में ख़ूब ख़रीद-बिक्री या चहल-पहल होना ; —गिरना - भाव घटना या कम होना ; —चढ़ना - भाव तेज़ होना ।

**बाज़ारी, बाज़ारू** - वि० [फ़ा] बाज़ार का ; मामूली ; अशिष्ट ; यौ० —औरत - वेश्या ; —गप - अविश्वसनीय बात ।

**बाज़ी** - स्त्री० [फ़ा] खेल ; तमाशा ; शर्त ; ताश, शतरंज आदि का एक पूरा खेल ; बारी ; धोखा ; यौ० —गर - जादू के खेल करनेवाला ; नट ; —गरी - बाज़ीगर का काम ; चालाकी ; —चा - खेल-खिलवाड़ ; मु० —बदना - शर्त लगाना ; —मारना - जीतना ; —ले जाना - आगे बढ़ जाना ।

**बाज़ू** - पु० [फ़ा] बाँह ; सेना का दाहिना या बायाँ भाग ; चिड़िया का डैना ; चौखटे के दाहिने-बायें की खड़ी लकड़ी ; यौ० —बंद - बाँह पर पहनने का एक गहना, भुजबंद ।

**बाझन** - पु० [हिं] फँसाव ; उलझन ; लड़ाई ।

**बाझना** - अ० [हिं] फँसना ।

**बाट** - 1. पु० [हिं] बटखरा ; 2. स्त्री० ऐंठन ; मार्ग ; मु० —करना - रास्ता करना ; —का रोड़ा - बाधक ; —जोहना, देखना - प्रतीक्षा करना ; —परना - डाका पड़ना ; —लगाना - मार्ग दिखलाना ; बेवकूफ़ बनाना ।

**बाटकी** - स्त्री० [हिं] बटलोई ; कटोरी ।

**बाटना** - स० [हिं] पीसना ; ऐंठना ।

**बाटी** - स्त्री० [हिं] उपलों के अंगारों पर सेंकी हुई छोटी और मोटी रोटी; कटोरा ; तसला ; वाटिका ।

**बाड़** - स्त्री० [हिं] फसल की रक्षा के लिए काँटे या बाँस का बनाया हुआ घेरा ; टट्टी ; बाढ़ ।

**बाडकिन** - पु० [अंग्रे] छापेख़ाने में काम आनेवाला सूआ ।

**बाडव** - पु० [सं] बड़वाग्नि ; घोड़ियों का समूह ।

**बाड़ा** - पु० [हिं] घेरा ; पशुशाला ।

**बाड़ी** - स्त्री [हिं] फलों का बाग़ ; वाटिका ; घर ; घिरी हुई जगह ।

**बाढ़** - [हिं] अतिवृष्टि से धरती का जलमग्न होना ; नदी आदि के जल का बढ़ना ; अधिकता ; तलवार आदि की धार ; वृद्धि ; अनेक तोपों या बंदूकों का एक साथ दगना ; कोर ; किनारा ; मु० —रोकना - आगे बढ़ने से रोकना ।

**बाढ़ी** - स्त्री० [हिं] बाढ़ ; उधार दिये हुए अन्न के ब्याज रूप में मिलनेवाला अनाज ; लाभ ।

**बाढ़ीवान** - पु० [हिं] सान चढ़ानेवाला ।

**बाण** - पु० [सं] तीर ; बाण का फल ; निशाना ; गाय का थन ; पाँच की संख्या ; अग्नि ; बाणासुर ; यौ० —तूण, धि - तरकश ; —पथ, पात - बाण के पहुँचने की सीमा ; बाण की मार ; —पुंखा - बाण का पंखवाला छोर ; — मुक्ति, मोक्षण - तीर छोड़ना ; —योजन - तरकश; —रेखा - बाण का लंबा घाव ; —वर्षी - बाणों की वर्षा करनेवाला ; —विद्या - तीरंदाज़ी; —संधान - बाण को धनुष पर चढ़ाना ; —सिद्धि - बाण से निशाना मारना ।

**बाणाश्रय** - पु० [सं] तरकश ।

**बाणासन** - पु० [सं] धनुष ।

**बाणी** - वि० [हिं] बाणों से युक्त ।

**बात** - स्त्री० [हिं] वचन ; बातचीत ; वक्तव्य ; चर्चा ; कौल ; विषय ; घटना ; प्रसंग ; बहाना ; मर्म ; कड़ी बात ; भर्त्सना ; साख ; तात्पर्य ; खूबी ; काम ; वस्तु ; स्थिति ; मोल ; रास्ता ; आदेश ; संदेश ; कामना ; यौ० —चीत - संभाषण ; —फ़रोश - चापलूस ; बातें बनानेवाला ; मु० —का बतंगड़ करना - साधारण बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर

कहना ; —काटना - बात करते समय बीच में बोल देना ; —का धनी - वादे का सच्चा ; —की बात में - क्षण-भर में ; —गढ़ना - झूठी बातों की रचना करना ; — जाना - एतबार उठना ; —न पूछना - ध्यान न देना ; सम्मान न करना ; — पी जाना - उत्तर न देना ; —बढ़ाना - झगड़ा पैदा करना ; —बनना - सफलता मिलना ; —बनाना - कार्य पूरा करना ; —बहना, उड़ना - चर्चा फैलना ; —बिगाड़ना - काम नष्ट करना ; —मारना - ताना मारना ; —रखना - इज़्ज़त रखना ; —हारना - वचन देना ; बातें बनाना - डींग मारना ; बातें सुनाना - भला-बुरा कहना ; बातों में उड़ाना - हँसी में टाल देना ।

**बातिन** - पु० [अ] भीतर ; अंतःकरण ।

**बातिनी** - वि० [अ] भीतरी ; आंतरिक ।

**बातिल** - वि० [अ] मिथ्या ; झूठा ; निरर्थक; रद्द किया हुआ ; शक्ति या प्रभाव-विहीन ; यौ० —परस्त - काफ़िर ।

**बाती** - स्त्री० [हिं] बत्ती ।

**बातूनी** - वि० [हिं] बहुत बोलनेवाला, बक्की ।

**बाथ** - पु० [हिं] गोद, अंक ; [अंग्रे] स्नान ।

**बाथू** - पु० [हिं] बथुआ नामक साग ।

**बाद** - 1. अव्य० [अ] पीछे; 2. वि० अतिरिक्त ; अलग किया या छोड़ा हुआ; 3. पु० वायु ; घोड़ा ; यौ० —कश - छत से लटकाने का पंखा ; धौंकनी ; —ख़ोर - गंजापन ; —गर्द - बवंडर ; —गीर - झरोखा ; —नुमा - वायु की दिशा बतानेवाला यंत्र ; —पा, रफ़्तार - हवा की तरह तेज़ चलनेवाला (घोड़ा) ; —बानी - पाल से चलनेवाला (जहाज़) ; —फ़रोश - चापलूस ; बादे-फ़िरंग - गर्मी की बीमारी ; बादे-बहारी - वसंत की सुहावनी हवा ; बादे-ख़िज़ाँ - पतझड़ की हवा ।

**बादना** - अ० [हिं] बहस करना ; ललकारना ।

**बादर** - 1. पु० [सं] कपास ; कपास का सूत ; सूती वस्त्र ; रेशम ; जल ; बेर ; 2. वि० कपास का ; बेर का ; मोटा ।

**बादरिया, बादरी** - स्त्री० [हिं] बदली ।

**बादल** - पु० [हिं] वायुमंडल में घनीभूत भाप जो वर्षा के रूप में धरती पर आती है, मेघ ; मु० —छँटना, फँटना - घटा का बिखरना ; —में थिगली लगाना - कठिन काम करना ; बादलों से बातें करना - बहुत ऊँचा होना ।

**बादला** - पु० [हिं] गोटा बुनने या कलाबत्तू बनाने के काम आनेवाला चाँदी का चपटा तार ।

**बादशाह** - पु० [फ़ा] राजा ; सरदार ; स्वतंत्र प्रकृति का पुरुष ; शतरंज का एक मुहरा ; ताश का एक पत्ता ; यौ० —ज़ादा - राजकुमार ; —ज़ादी - राजकुमारी ।

**बादशाहत** - स्त्री० [फ़ा] राज्य ; राजत्व ; बादशाह का पद ।

**बादशाही** - 1. वि० [फ़ा] राजोचित ; बादशाह का ; 2. स्त्री० राज्य ; मन-माना व्यवहार ; यौ० —ख़र्च - भारी फ़िज़ूलख़र्ची ; —फ़रमान - राजाज्ञा ।

**बादाम** - पु० [फ़ा] एक मेवा या उसका वृक्ष ; यौ० —फ़रोश - बादाम बेचने-वाला ।

**बादामी** - 1. वि० [फ़ा] बादाम के रंग या बादाम की शकल का ; बादाम का बना हुआ ; 2. पु० बादामी रंग का घोड़ा ; 3. स्त्री० बादाम की बनी एक

मिठाई ; जवाहरात रखने की बादाम की शक्ल की एक डिबिया ; बादाम रखने की रिकाबी ।

**बादी** - 1. पु० [हिं] वादी ; 2. वि० वात-कारक ; 3. स्त्री० वातविकार ; यौ० —फ़न - वायुविकार ; —बवासीर - वह बवासीर जिसमें मस्से से खून तो नहीं आता पर बेहद पीड़ा होती है ।

**बादुर** - पु० [देश] चमगादड़ ।

**बाध** - पु० [सं] प्रतिरोध ; प्रतिबंध ; कष्ट ; बाधा देनेवाला ; एक हेत्वाभास ; मूंज की रस्सी ।

**बाधक** - पु० [सं] विघ्नकारक, रुकावट डालनेवाला ; स्त्रियों का प्रजनन-संबंधी एक रोग ।

**बाधना** - 1. स्त्री० [सं] अशांति ; कष्ट ; प्रतिरोध ; 2. स० [हिं] रुकावट डालना, विघ्न करना ।

**बाधा** - स्त्री० [सं] विघ्न ; कष्ट ; भय ; यौ० —हर - बाधा दूर करनेवाला ।

**बाधित** - वि० [सं] असंगत ; आभारी ; ग्रस्त ; जिसमें रुकावट पड़ी हो ।

**बाधिर्य** - पु० [सं] बहरापन ।

**बाध्य** - वि० [सं] विवश ; पीड़ित ; रोका हुआ ; रद्द करने योग्य ; यौ० —रेता - नपुंसक ।

**बान** - 1. पु० [हिं] बाण ; एक तरह की आतिशबाज़ी ; ऊँची लहर ; कांति ; चमक ; रूई धुनने का गुंबजदार डंडा ; 2. स्त्री० आदत ; सजधज ।

**बानक** - स्त्री० [हिं] पहनावा, भेस, बाना ; एक तरह का रेशम ।

**बानगी** - स्त्री० [हिं] नमूना ।

**बानबे** - वि० [हिं] नब्बे और दो ।

**बाना** - 1. पु० [हिं] पहनावा ; बुनावट ; ताने में भरा जानेवाला आड़ा सूत ; एक तरह का बारीक धागा ; रीति ; भाले-जैसा एक हथियार ; निशान ; रंग ; 2. स० फैलाना ।

**बानि** - स्त्री० [हिं] आदत ; सजधज ; चमक ; वचन ।

**बानिक** - स्त्री० [हिं] भेस, बाना ।

**बानी** - 1. स्त्री० [हिं] वाणी ; वर्ण ; चमक ; वाणिज्य ; 2. पु० बनिया ; [अ] आरंभ करनेवाला ; प्रेरक ; कारणरूप ; यौ०— कार - परम धूर्त ; —मबानी - असली कारण ।

**बानूजे** - स्त्री० [फ़ा] भद्र महिला ; शराब की सुराही ।

**बानो** - स्त्री० [फ़ा] भले घर की स्त्री ।

**बानैत** - पु० [हिं] बाना फेरनेवाला ; बाण चलानेवाला ; योद्धा ।

**बाप** - पु० [हिं] पिता ; यौ० —दादा - पूर्वपुरुष ; मु०—की चीज़ समझना - अपनी मिलकियत समझना ; —दादा का नाम डुबाना - कुल की प्रतिष्ठा मिटाना ; —दादे के समय से - पीढ़ियों से ; —बनाना - चापलूसी करना ; —रे बाप - दुख या भय सूचित करनेवाला उद्गार ।

**बापा** - पु० [हिं] बाप ; यौ० —बैर - पुश्तैनी अदावत ।

**बापी** - स्त्री० [हिं] छोटा तालाब ।

**बापुरा** - वि० [हिं] ग़रीब ; तुच्छ ।

**बापू** - पु० [हिं] पिता ; किसी बड़े व्यक्ति के प्रति सम्मानसूचक उद्गार ; महात्मा गांधी ।

**बाफ** - स्त्री० [हिं] भाप ।

**बाफ़** - वि० [फ़ा] बुननेवाला ; बुना हुआ ।

**बाफ़ी** - स्त्री० [फ़ा] बुनाई ।

**बाफ़्ता** - 1. वि० [फ़ा] बुना हुआ ; 2. पु० - एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

**बाब** - पु० [अ] दरवाज़ा; अध्याय; दरबार; विषय।

**बाबत** - स्त्री० [फ़ा] विषय; ज़रिया।

**बाबरी** - स्त्री० [देश] ज़ुल्फ़।

**बाबा** - पु० [फ़ा] बाप; दादा; बूढ़ा; साधु-संन्यासी; साधु-संन्यासियों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक शब्द; बच्चों के लिए प्यार का शब्द; यौ०—आदम - तरीक़ा।

**बाबाजी** - पु० [हिं] साधु-संन्यासी।

**बाबुल** - पु० [हिं] पिता।

**बाबू** - पु० [हिं] क्षत्रिय ज़मींदार, ठाकुर; प्रतिष्ठित जन; क्लर्क; यौ०—जी - पिता; पिता या अन्य आदरणीय व्यक्ति का संबोधन।

**बाबूना** - पु० [फ़ा] दवा के काम आनेवाला एक पौधा।

**बाम** - 1. पु० [फ़ा] कोठा, छत; 2. स्त्री० [हिं] एक गहना; एक मछली; 3. वि० वाम।

**बामी** - 1. स्त्री० [हिं] बाँबी; एक तरह की मछली; 2. वि० वाम-मार्गी।

**बाम्हन** - पु० [हिं] ब्राह्मण।

**बायँ** - वि० [हिं] बायाँ; चूका हुआ।

**बाय** - स्त्री० [हिं] वायु; वापी।

**बायक** - पु० [हिं] वाचक; दूत।

**बायन** - पु० [हिं] मित्रों या संबंधियों के यहाँ भेजी जानेवाली मिठाई।

**बायबी** - वि० [हिं] बाहरी; अजनबी।

**बायला** - वि० [हिं] वातकारक।

**बायाँ** - वि० [हिं] दाहिना का उलटा; प्रतिकूल।

**बायें** - अव्य० [हिं] बायीं ओर; प्रतिकूल।

**बारंबार** - अव्य० [हिं] फिर-फिर; कई बार।

**बार** - 1. स्त्री० समय; देर; मर्तबा; यौ०—बार - पुनः पुनः; अनेक बार; 2. पु० [हिं] द्वार; जनसमूह; घेरा; किनारा; धार; बाल; बालक; ठिकाना; जल; [सं] छेद; [फ़ा] भार; ऋणभार; दफ़ा; फल; वृक्ष-शाखा; गर्भ; दरबार; दखल; यौ०—आवर - फलदार; —कश - बोझ ढोनेवाला; —ख़ाना - गोदाम; —गाह, गाह - दरबार; कचहरी; शाही ख़ेमा; —गीर - बोझ ढोनेवाला; —चा - छोटा दरवाज़ा, बारज़ा; —दान, दाना - बोरा, थैला आदि; रसद; टूटे-फूटे सामान; —दार - फलयुक्त; गर्भवती; —बटाई - बिना दाँये ही कटी फ़सल के बोझे बाँट लेना; —बरदार - बोझ ढोनेवाला; मज़दूर; —बरदारी - बोझ ढोने का काम; ढुलाई; वहन; —याब - पहुँचनेवाला; —याबी - प्रवेश; पहुँच; —हा - अनेक बार; बारे इहसान - उपकार का बोझ; बारे ख़ातिर - भारस्वरूप; बारे जहाज़ - जहाज़ का बोझ; बारे सबूत - साबित करने की ज़िम्मेदारी।

**बारजा** - पु० [हिं] मकान के सामने दरवाज़ों के ऊपर बना हुआ बरामदा, बरेजा।

**बारना** - स० [हिं] रोकना; न्योछावर करना; जलाना।

**बारह** - वि० [हिं] दस से दो अधिक; यौ० —खड़ी - व्यंजनों के बारह स्वरों से युक्त रूप; —दरी - बारह द्वारवाली हवादार बैठक; —पत्थर - छावनी की सीमा; छावनी; —पानी का - बारह वर्ष का (सूअर); —बच्चेवाली - सूअरी; बहुप्रसवा स्त्री; —बानी - निर्दोष; पूरा; —मासा - बारहों महीने के विषय में गाये जानेवाला गीत; —मासी - बारहों महीने फलने-फूलनेवाला सदाबहार; —सिंगा - हिरण की जाति का एक पशु।

**बारहीं** - पु० [हिं] मरने के बाद का बारहवाँ दिन ; संतान के जन्म से बारहवाँ दिन ।

**बाराँ** - पु० [फ़ा] बरसनेवाला पानी ; वर्षा ।

**बारा** - 1. वि० [हिं] बालक ; कमसिन ; 2. पु० बेटा ; बालक ।

**बारान** - 1. पु० [फ़ा] वृष्टि ; बरसात ; 2. वि० बरसनेवाला ; **यौ०** —गीर - छज्जा ; —दीदा - अनुभवी ; जो बरसात देख चुका हो ।

**बारानी** - 1. वि० [फ़ा] वर्षा पर अवलंबित ; जो वर्षा के जल पर निर्भर हो ; 2. पु० बरसाती ।

**बारिक** - स्त्री० [हिं] सैनिकों के रहने के लिए बने लंबे दालान-जैसे मकानों की पंक्ति, बैरक ।

**बारीगर** - पु० [हिं] हथियारों पर सान चढ़ानेवाला ।

**बारिश** - स्त्री० [फ़ा] वर्षा ; बरसात ।

**बारी** - 1. स्त्री० [हिं] पारी ; पारी के बुख़ार का दिन ; **यौ०** —बारी से - एक के बाद दूसरा ; बड़े पेड़ों का बाग़ ; किनारा ; धार ; छोर ; घर ; खिड़की ; 2. पु० दोने, पत्तल आदि बनाने का धंधा करनेवाली एक हिन्दू जाति ; 3. वि० कमसिन (लड़की), किशोरी ; नवयुवती ।

**बारीक़** - वि० [फ़ा] महीन ; सूक्ष्म ; समझने में कठिन ; **यौ०** —बीन - सूक्ष्मदर्शी ; तीक्ष्ण-बुद्धि ।

**बारीका** - पु० [हिं] पतली रेखायें खींचने की महीन तूली ।

**बारीकी** - स्त्री० [फ़ा] सूक्ष्मता ; खूबी ।

**बारूद** - स्त्री० [फ़ा] अग्नि से भड़क उठनेवाला एक विस्फोटक चूर्ण ।

**बारे** - अव्य० [फ़ा] अंत में ; लेकिन ; ख़ैर ।

**बारोठा** - पु० [हिं] द्वार ; द्वारपूजा ।

**बार्बर** - 1. वि० [सं] बर्बर देश में उत्पन्न ; 2. पु० [अंग्रे] नाई ।

**बार्ह** - वि० [सं] मोर के पंख से बना हुआ ।

**बार्हस्पत्य** - 1. वि० [सं] बृहस्पती-संबंधी ; 2. पु० एक संवत्सर ; एक शब्दकोश ।

**बालंगू** - पु० [फ़ा] दवा के काम आनेवाला जीरे-जैसा एक बीज ।

**बाल** - 1. पु० [सं] बालक ; सोलह वर्ष से कम अवस्थावाला किशोर ; बछड़ा ; पाँच वर्ष का हाथी का बच्चा ; दूध ; नारियल ; 2. वि० नवोदित ; मूर्ख ; 3. स्त्री० बाला, तरुणी ; [हिं] गेहूँ आदि के पौधे का वह भाग जिसमें दाने के गुच्छे होते हैं ; 4. पु० केश ; शीशे आदि की चीज़ों में पड़ी हुई दरार ; **यौ०** —कमानी - घड़ी के बेलैन्स में लगायी जानेवाली बारीक़ कमानी ; —काल - बचपन ; —कृमि - जूँ ; —केलि, क्रीड़ा - बच्चों का खेल ; —खंडी - दोषयुक्त हाथी ; —खोरा - गंजापन ; —गर्भवती - पहली बार गाभिन होनेवाली गाय ; —गोपाल - बाल-बच्चे ; —ग्रह - बालकों को पीड़ा पहुँचानेवाला उपग्रह या पिशाच ; —चंद्र - दूज का चाँद ; —चर - स्काउट ; —चरित - बाल-लीला ; —चर्या - शिशुपालन ; —छत्री - चुटिया ; कबूतरों की छत्री ; —तंत्र - धात्रीकर्म ; —तृण - नरम, नवजात घास ; —तोड़ - बाल टूट जाने से होनेवाला फोड़ा ; —धन - नाबालिग़ की संपत्ति ; —पाश्या - बालों में बाँधने की मोतियों की लड़ी ; —पन - बचपन ; नासमझी ; —पुत्रक - अल्पवयस्क पुत्र ; —बच्चे -

संतान ; —बराबर - बहुत बारीक़ ; ज़रा-सा ; —बाल - पूरा ; सिर से पैर तक ; हर एक ; ज़रा-सा ; —बुद्धि - बालोचित बुद्धि ; नासमझी ; —बोध - आसान ; —ब्रह्मचारी - आजन्म ब्रह्मचारी ; —भाव - बचपन ; —भोग - प्रातःकाल का नैवेद्य ; —भोज्य - चना ; —भौंरी - घोड़ों का एक दोष ; —मरण - बिना विवेक के केवल कठोर तपश्चर्या द्वारा प्राप्त होनेवाली मृत्यु ; —मृग - मृगछौना ; —रवि - बालसूर्य ; —रोग - बच्चों को होनेवाला रोग ; —लीला - बालचरित ; —वत्स - बछड़ा ; कबूतर ; —वध - बालक की हत्या ; —विधवा - छोटी उम्र में ही विधवा हो जानेवाली स्त्री ; —विवाह - छोटी उम्र का विवाह ; —व्यजन - चँवर ; — संध्या - गोधूली वेला, संध्या का पूर्वभाग ; —सखा - बचपन का दोस्त ; मूर्ख का दोस्त ; —सफ़ा - बाल साफ़ करने या उड़ानेवाला (साबुन, दवा) ; हठ - बच्चे की ज़िद ; मु॰ —की खाल खींचना या निकालना - बहुत अधिक छानबीन करना ; —बाँका न होना - कुछ भी हानि न होना ; —बाँका होना - अनिष्ट होना ; —बाल बचना - विपद में पड़ते-पड़ते बच जाना।

**बालक** - पु॰ [सं] लड़का ; नाबालिग़ ; नासमझ आदमी ; अँगूठी ; कंकण ; घोड़े या हाथी की पूँछ ; यौ॰ —पन - बचपन ; नासमझी ; —प्रिया - केला।

**बालटी** - स्त्री॰ [हिं] लोहे आदि की बनी डोल।

**बालना** - सक॰ [हिं] जलाना।

**बालम** - पु॰ [हिं] पति ; प्रेमी।

**बाला** - 1. स्त्री॰ [सं] बालिका ; युवती ; पत्नी ; छोटी इलायची ; हल्दी ; एक साल की बछिया ; नारियल ; घृतकुमारी ; 2. वि॰ [हिं] कमसिन ; भोला ; यौ॰ — पन - लड़कपन ; — जोबन - उठती जवानी ; — भोला - सरल ; 3. पु॰ कान में पहनने का एक गहना ; गेहूँ या जौ की फसल में लगनेवाला एक कीड़ा ; डील ; लंबाई-ऊँचाई ; 4. अव्य॰ [फ़ा] ऊपर ; 5. वि॰ ऊँचा ; यौ॰ — कुप्पी - पुराने ज़माने में प्रचलित एक शारीरिक दंड ; भारी चीज़ों को ऊपर उठाने का यंत्र ; — खाना - ऊपर के मंज़िल का कमरा ; — दस्त - पद में ऊँचा ; बड़ा ; — नशीन - बैठने का सबसे श्रेष्ठ स्थान ; — पोश - पलंगपोश ; — बंद - सिरपेच ; एक तरह का अंगरखा ; एक प्रकार का लिहाफ़ ; — बर - एक प्रकार का अंगरखा ; — बाला - ऊपर-ऊपर ; बाहर-बाहर ; — यताक़ - अलग ; दूर।

**बालाई** - 1. वि॰ [फ़ा] ऊपर का ; 2. स्त्री॰ मलाई ; यौ॰ — आमदनी - ऊपरी आमदनी।

**बालातप** - पु॰ [सं] सवेरे की धूप।

**बालामय** - पु॰ [सं] बच्चों का रोग।

**बालावस्था** - स्त्री॰ [सं] बचपन।

**बालिका** - स्त्री॰ [सं] छोटी लड़की ; पुत्री ; बाली ; छोटी इलायची ; बालू ; यौ॰ — विद्यालय - लड़कियों की पाठशाला।

**बालिग़** - 1. वि॰ [अ] सयाना ; 2. पु॰ युवा (स्त्री-पुरुष)।

**बालिमा** - स्त्री॰ [सं] बचपन।

**बालिश** - 1. वि॰ [सं] बालोचित ; नासमझ ; लापरवाह ; 2. पु॰ शिशु ; मूर्ख व्यक्ति ; [फ़ा] तकिया ; गद्दी।

**बालिश्त** - पु० [फ़ा] अंगूठे के सिरे से छिंगुनी के छोर तक की लंबाई, बित्ता।

**बालिश्तिया** - पु० [फ़ा] बौना, नाटा।

**बालिस** - पु० [हिं] सड़क बनाने के काम आनेवाले पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े, गिट्टी।

**बालिश** - स्त्री० [फ़ा] सिरहाना ; तकिया।

**बाली** - स्त्री० [हिं] कान में पहनने का एक गहना ; गेहूँ या जौ आदि की बाल।

**बालीदगी** - स्त्री० [फ़ा] बाढ़ ; वृद्धि।

**बालीश** - पु० [सं] मूत्रावरोध।

**बालुका** - स्त्री० [सं] बालू ; ककड़ी ; कपूर ; **यौ०** — यंत्र - दवा फूँकने का एक यंत्र ; — स्वेद - पसीना लाने के लिए गरम बालू की पोटली से सेंकना।

**बालू** - 1. स्त्री०, 2. पु० [हिं] रेत ; **यौ०** —दानी - स्याही सुखाने के लिए बालू रखने की डिबिया ; — बुर्द - खेती के अयोग्य रेतीली ज़मीन ; —शाही - एक मिठाई; **मु०** — की भीत - क्षणभंगुर वस्तु।

**बालेन्दु** - पु० [सं] दूज का चाँद।

**बालेय** - 1. वि० [सं] बालकों के लिए हितकर ; बलि के योग्य ; मृदु ; बलि से उत्पन्न ; 2. पु० गदहा।

**बालोपचार** - पु० [सं] बच्चों का इलाज।

**बालोपवीत** - पु० [सं] लंगोटी ; जनेऊ।

**बाल्य** - पु० [सं] बचपन ; नासमझी ; **यौ०** — काल - बालकाल।

**बाव** - पु० [हिं] वायु; अपानवायु ; वातदोष।

**बावड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] बापी ; 2. वि० बावली।

**बावन** - वि० [हिं] पचास और दो ; **मु०** — तोले पाव रत्ती - बिलकुल ठीक ; — वीर - बहुत चतुर और बहादुर।

**बावना** - वि० [हिं] ठिंगना, बौना।

**बावलपन** - पु० [हिं] पागलपन।

**बावर** - 1. वि० [हिं] बावला ; 2. पु० [फ़ा] विश्वास।

**बावरची** - पु० [फ़ा] रसोइया ; **यौ०** —खाना - पाकशाला।

**बावरा, बावला** - वि० [हिं] पागल ; वातरोगी ; **यौ०** —पन - पागलपन, सनक।

**बावली** - 1. स्त्री० [हिं] बापी ; चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों ; 2. वि० पगली।

**बाशिंदा** - पु० [फ़ा] बसनेवाला।

**बाष्प** - पु० [सं] भाप ; आँसू ; लोहा ; **यौ०** —कंठ जिसका गला भर आया हो ; —वृष्टि - आँसुओं की वर्षा।

**बाष्पाकुल** - वि० [सं] जो आँसुओं के कारण मंद पड़ गया हो।

**बाष्पिका** - स्त्री० [सं] हींग के वृक्ष का पत्ता।

**बाष्पी** - वि० [सं] अश्रु बहानेवाला।

**बासंतिक** - 1. वि० [हिं] वसंत-संबंधी ; 2. पु० विदूषक ; नर्तक।

**बास** - 1. पु० [हिं] निवास ; वासस्थान ; दिन ; वस्त्र ; 2. गंध ; वासना ; आग ; **यौ०** —फूल - एक सुगंधित धान ; —मती - एक खुशबूदार चावल।

**बासठ** - वि० [हिं] साठ और दो।

**बासन** - पु० [हिं] बरतन ; वस्त्र।

**बासना** - 1. स० [हिं] बसाना ; सुवासित करना ; 2. स्त्री० वासना ; गंध।

**बासव** - पु० [हिं] इंद्र।

**बासा** - पु० [हिं] अडूसा ; भोजनालय ; निवासस्थान।

**बासी** - वि० [हिं] दूसरे जून या रात का बचा हुआ (खाना) ; पिछले दिन का तोड़ा या रखा हुआ (फल) ; कुम्हलाया हुआ ; **यौ०** —ईद - ईद का दूसरा दिन ; —तिवासी - कई दिनों का ; —मुँह -

बिना कुछ खाये; खाली पेट; मु० —कढ़ी में उबाल आना - बुढ़ापे में जवानी का जोश जगना।

**बासुकी** - 1. पु० शेषनाग; 2. स्त्री० सुगंधित पुष्पों की माला।

**बाह** - 1. पु० [सं] वाहु; घोड़ा; प्रवाह; निकास; खेत की जुताई; 2. वि० दृढ़; सशक्त।

**बाहक** - पु० [हिं] वाहक; सवार।

**बाहकी** - स्त्री० [हिं] पालकी ढोनेवाली कहारिन।

**बाहना** - 1. स० [हिं] ढोना; हाँकना; फेंकना; मारना; खेत जोतना; गाय आदि को गामिन कराना; 2. अ० बहना।

**बाहनी** - स्त्री० [हिं] नदी; सेना।

**बाहर** - अव्य० [हिं] जो अंदर न हो; अलग; दूर; यौ० —का - ग़ैर; ऊपर का; —जामी - ईश्वर का सगुण रूप; —बाहर - ऊपर-ऊपर; दूर-दूर; —भीतर - अंदर और बाहर; —वाला - मंगी; बहारी; —से - ऊपर से; परदेश से; मु० —करना - बहिष्कृत करना; —की हवा लगना - बाहरवालों का असर पड़ना; आवारा होना; —जाना - परदेश जाना; —होना - मानने से इनकार करना; अलग जाना।

**बाहरी** - वि० [हिं] बाहर का; पराया; अजनबी; दिखाऊ; यौ० —टाँग - कुश्ती का एक पेंच।

**बाहाँजोरी** - अव्य० [हिं] हाथ से हाथ मिलाये हुए।

**बाहिर** - अव्य० [हिं] बाहर से; ऊपर से।

**बाहिनी** - स्त्री० [हिं] सेना; सवारी।

**बाहु** - स्त्री० [सं] भुजा; बाँह; यौ० ——च; [illegible]; तोता; जंगली तिल; —तरण - तैरकर नदी पार करना; —दंड - भुजदंड; —त्राण - हाथ का कवच; —पाश - आलिंगन करते समय बाहुओं की मुद्रा; —बल - शरीरबल, पराक्रम; —मूल - कंधे और बाँह का जोड़; —युद्ध - कुश्ती; भिड़ंत; —लता - सुकुमार बाहु; —विक्षेप - तैरना; —विस्फोट - ताल ठोंकना; —शिखर - कंधा।

**बाहुक** - 1. पु० [सं] एक नाग; नकुल; बंदर; 2. वि० आश्रित; तैरनेवाला।

**बाहुरना** - अ० [हिं] मुड़ना।

**बाहुल्य** - पु० [सं] इफ़रात, अधिकता; बहुरूपता।

**बाहेर** - अव्य० [हिं] बाहर।

**बाह्य** - 1. पु० [हिं] रथ; 2. अव्य० बाहर; परे; 3. वि० [सं] बाहरी; ग़ैर; बहिष्कृत; दिखाऊ; यौ० —करण - बाह्य ज्ञानेन्द्रिय; —पटी - यवनिका; —रूप - दिखाऊ रूप; —विषय - प्राण को बाहर रोकना; भौतिक विषय।

**बाह्याचरण** - पु० [सं] ढकोसला।

**बिंद** - पु० [हिं] बिंदु; भ्रूमध्य; बिंदी।

**बिंदवि** - पु० [सं] बूँद।

**बिंदा** - पु० [हिं] बड़ी बिंदी।

**बिंदी** - स्त्री० [हिं] सिफ़र; नुक़्ता; गोल टीका।

**बिंदु** - पु० [सं] बूँद; बिंदी; शून्य; भ्रूमध्य; अधरक्षत; यौ० —तंत्र - पासा; खेलने का गेंद; —देव - शिव; —फल - मोती; —रेखक - अनुस्वार; एक पक्षी; —रेखा - बिंदुओं से बनी हुई रेखा; —वासर - गर्भाधान का दिन।

**बिंदुली** - स्त्री० [हिं] बिंदी; टिकली।

**बिंधना** - अ० [हिं] बिंधा जाना; उलझना।

**बिंधिया** - पु० [हिं] मोती बेधनेवाला ।

**बिंब** - पु० [सं] प्रतिच्छाया ; कमंडल ; सूर्य या चंद्रमा का मंडल ; कुंदरू ; गिरगिट ; झलक ; आईना ; बांबी ; यौ० —फल - कुंदरू ।

**बिंबक, बिंबिका** - पु० [सं] चंद्रमा या सूर्य का मंडल ; कुंदरू की लता ।

**बिंबाधरोष्ठी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] कुंदरू-जैसे लाल होंठवाली ।

**बिंबित** - वि० [सं] प्रतिबिंबित ।

**बिंबु** - पु० [सं] सुपारी का पेड़ ।

**बिंबोष्ठ** - 1. वि० [सं] जिसके होंठ कुंदरू की तरह लाल हों ; 2. पु० कुंदरू-जैसा लाल होंठ ।

**बि, बिअ** - वि० [हिं] दो ।

**बिआज** - पु० [हिं] सूद ; बहाना ।

**बिआना** - 1. स० [हिं] ब्याना, जनना ; 2. अ० पशु का बच्चा जनना ।

**बिआहना** - स० [हिं] ब्याह करना ।

**बिकना** - अ० [हिं] बेचा जाना ; मुग्ध होना ।

**बिकलाना** - 1. अ० [हिं] व्याकुल होना ; 2. स० व्याकुल करना ।

**बिकवाना** - स० [हिं] बेचने का काम दूसरे से कराना ।

**बिकसना** - अ० [हिं] खिलना ; प्रसन्न होना ; फटना ।

**बिकाऊ** - वि० [हिं] जो बेचा जानेवाला हो ।

**बिकाना** - 1. अ० [हिं] बिकना ; वश में होना ; 2. स० खरीदना ।

**बिकारी** - 1. स्त्री० [हिं] हिसाब में मन, सेर, रुपये आदि के चिन्ह, टेढ़ी पाई ; 2. वि० विकारी ।

**बिक्री** - स्त्री० [हिं] विक्रय ; बिक्री की आय ।

**बिखय** - अव्य० [हिं] विषय ।

**बिखरना** - अ० [हिं] चीज़ों का बेतरतीबी से इधर-उधर फैलना ; फैल जाना ।

**बिखेरना** - स० [हिं] तितर-बितर करना ; छिटकाना ।

**बिगंध** - स्त्री० [हिं] दुर्गन्ध ; बदबू ।

**बिग** - पु० [हिं] भेड़िया ।

**बिगड़ना** - अ० [हिं] विकार होना ; खराब होना ; उपयोगिता घटना ; अच्छी से बुरी दशा में आना ; टूट-फूट जाना ; बेकार खर्च होना ; चाल-चलन खराब होना ; क्रुद्ध होना ; डाँटना ; विद्रोह करना ; नष्ट होना ; हाथी-घोड़े आदि का सवार के क़ाबू में न रहना ।

**बिगड़ैल** - वि० [हिं] क्रोधी ; हठी ; कुमार्गगामी ।

**बिगाड़** - पु० [हिं] बिगड़ने का भाव ; विकृति ; झगड़ा ।

**बिगुन** - वि० [हिं] गुणरहित ; निर्गुण ।

**बिगुर** - वि० [हिं] निगुरा ।

**बिगुरचना** - अ० [हिं] दिक़्क़त में पड़ना ।

**बिगुरदा** - पु० [हिं] पुराने वक़्त का एक हथियार ।

**बिगूचन** - स्त्री० [हिं] उलझन ; कठिनाई ।

**बिगोना** - स० [हिं] बिगाड़ना ; गँवाना ; छिपाना ; बहकाना ; हैरान करना ।

**बिघटना** - स० [हिं] तोड़ना ; बिगाड़ना ।

**बिघन** - पु० [हिं] विघ्न ; बड़ा हथौड़ा ; अभ्यास करना ।

**बिचकना** - अ० [हिं] चौंकना ; भड़कना ।

**बिचकाना** - स० [हिं] भड़काना ; मुँह बनाना ; मुँह चिढ़ाना ।

**बिचरना** - अ० [हिं] स्वच्छंद भ्रमण करना ; विचरण करना ।

**बिचलना** - अ० [हिं] विचलित होना ; मुकरना ।

**बिचला** - वि० [हिं] बीच का, मध्यम ।

**बिचवई** - 1. पु० [हिं] मध्यस्थ ; 2. स्त्री० मध्यस्थता ।

**बिचवान** - पु० [हिं] मध्यस्थ।
**बिचहुत** - पु० [हिं] अंतर ; दुविधा।
**बिचार** - पु० [हिं] विचार ; इरादा।
**बिचारी** - त्रि० [हिं] विचारवान ; विचार करनेवाला।
**बिचाल** - पु० [हिं] विचलित करने का भाव ; अंतर।
**बिचुकना** - 1. वि० [हिं] चौंकनेवाला ; 2. अ० बिचकना।
**बिचौंहाँ** - वि० [हिं] बीच का।
**बिच्छू** - पु० [हिं] एक रेंगनेवाला ज़हरीला जंतु ; वृश्चिक ; एक तरह की घास।
**बिछना** - अ० [हिं] बिछाया या फैलाया जाना।
**बिछलन** - पु० [हिं] फिसलन।
**बिछलना** - अ० [हिं] फिसलना ; डगमगाना।
**बिछवाना** - स० [हिं] बिछाने का काम किसी और से कराना।
**बिछाना** - स० [हिं] आसन या बिस्तर आदि को फैलाना ; बिखेरना ; मारकर गिरा देना।
**बिछिया, बिछुआ, बिछुवा** - 1. स्त्री० [हिं] पाँव की उँगलियों में पहनने का एक गहना ; पु० 2. एक तरह की छुरी।
**बिछुड़न** - स्त्री० [हिं] वियोग।
**बिछुड़ना** - अ० [हिं] जुदा होना ; वियोग होना।
**बिछुरंता** - पु० [हिं] बिछुड़नेवाला।
**बिछूना** - वि० [हिं] बिछुड़ा हुआ।
**बिछोड़ा** - पु० [हिं] वियोग।
**बिछोह** - पु० [हिं] वियोग, जुदाई।
**बिछोही** - वि० [हिं] बिछुड़ा हुआ।
**बिछौना** - पु० [हिं] बिस्तर ; चारपाई आदि पर बिछाने का कपड़ा।
**बिजन, बिजना** - पु० [हिं] पंखा।
**बिजय** - स्त्री० [हिं] विजय ; यौ०—**घंट** - मंदिरों में लटकाया जानेवाला घंटा।
**बिजली** - 1. स्त्री० [हिं] ताप तथा प्रकाश उत्पन्न करनेवाली शक्ति, विद्युत् ; बादल से धरती की ओर विद्युत का विसर्जन ; कान में या गले में पहनने का एक गहना ; आम की गुठली के भीतर का गूदा ; 2. वि० अतिचंचल ; यौ० —**घर** - बिजली की शक्ति उत्पन्न करने का स्थान ; —**बचाव** - बिजली से बचाने के लिए इमारतों पर लगा हुआ नोकदार लोहा।
**बिजहन** - वि० [हिं] जिसका बीज नष्ट हो गया हो ; हतवीर्य।
**बिजायठ** - पु० [हिं] बाजूबंद।
**बिजूका** - पु० [हिं] पक्षियों आदि को भगाने के लिए खेत में बनाया हुआ पुतला।
**बिजूरी** - स्त्री० [हिं] बिजली।
**बिजोना** - स० [हिं] अच्छी तरह देखना ; देख-रेख करना।
**बिजौरा** - पु० [हिं] बड़ी नारंगी के आकार का नींबू के वर्ग का एक फल, बीजपूर ; तिल के मेल से बनी हुई बरी।
**बिजौरी** - स्त्री० [हिं] कुम्हड़ौरी।
**बिज्जु** - स्त्री० [हिं] बिजली ; यौ०—**पात** - वज्रपात।
**बिज्जुल** - 1. स्त्री० [हिं] बिजली ; 2. पु० छिलका।
**बिज्जू** - पु० [हिं] बिल्ली की आकृति से मिलता-जुलता एक वन्य जंतु।
**बिझुकना** - अ० [हिं] बिचकना ; तनना।
**बिट** - पु० [हिं] बीट ; वैश्य।
**बिटक** - पु० [सं] फोड़ा।
**बिटप** - पु० [हिं] वृक्ष ; झाड़ी ; वृक्ष आदि की नयी शाखा।

**बिटरना** - अ० [हिं] घँघोला जाना।

**बिटालना** - स० [हिं] फैलाना; बिखेरना।

**बिटिया** - स्त्री० [हिं] बेटी; बच्ची।

**बिटौरा** - पु० [हिं] उपलों की राशि।

**बिठलाना, बिठाना, बिठालना** - स० [हिं] बैठाना।

**बिड़ई** - स्त्री० [हिं] गेंडुरी।

**बिडर** - वि० [हिं] अलग-अलग; निडर; ढीठ।

**बिडरना** - अ० [हिं] तितर-बितर होना; भागना; डरना।

**बिड़वना** - स० [हिं] तोड़ना।

**बिडारना** - स० [हिं] तितर-बितर कर देना; नष्ट करना।

**बिड़ाल** - पु० [सं] मार्जार, बड़ी जाति की बिल्ली का नर; आँख का डेला; **यौ०** —व्रतिक - ढोंगी।

**बिड़ालक** - पु० [सं] बिड़ाल; नेत्रपिण्ड।

**बिड़ालाक्ष** - वि० [सं] बिल्ली की-सी आँखोंवाला।

**बिड़िक** - पु० [सं] पान का बीड़ा, गिलौरी।

**बिड़ौजा** - पु० [सं] इंद्र।

**बिढ़ना** - स० [हिं] कमाना; संचय करना।

**बितताना** - 1. अ० [हिं] विकल होना; 2. स० दुःख देना; सताना।

**बितरना** - स० [हिं] वितरण करना; बाँटना।

**बिताना** - 1. स० [हिं] गुज़ारना; 2. अ० बीतना।

**बित्त** - पु० [हिं] धन-दौलत; हैसियत; सामर्थ्य।

**बित्ता** - पु० [हिं] अंगूठे के सिरे से छिंगुनी के छोर तक की लँबाई, बालिश्त।

**बित्ती** - स्त्री० [हिं] धर्मादाय।

**बिथकना** - अ० [हिं] थकना; मुग्ध होना; चकित होना।

**बिथरना** - अ० [हिं] बिखरना; अलग-अलग होना; बिलगना।

**बिदकना** - अ० [हिं] चौंकना; फटना; घायल होना।

**बिदकाना** - स० [हिं] चौंकाना; फाड़ना; घायल करना।

**बिदर** - पु० [हिं] विदर्भ देश, बरार; ताँबे और जस्ते के मेल से बनी उपधातु।

**बिदरन** - 1. स्त्री० [हिं] विदीर्ण होना; दरार; 2. वि० विदीर्ण करनेवाला।

**बिदलना** - अ० [हिं] दलित करना।

**बिदहना** - स० [हिं] धान आदि को छींटकर बुवाई करना।

**बिदा** - स्त्री० [हिं] रवानगी; जाने की इजाज़त; गौना।

**बिदाई** - स्त्री० [हिं] रवानगी; बिदा करते समय दिये जानेवाले रुपये आदि।

**बिदारन** - स० [हिं] फाड़ना; नष्ट करना।

**बिदुराना** - अ० [हिं] मुस्कुराना।

**बिदुरानि** - स्त्री० [हिं] मुस्कुराहट।

**बिदोरना** - स० [हिं] चलाना; फैलाना।

**बिद्अत** - स्त्री० [अ] नयी बात; ईजाद; अत्याचार; लड़ाई; बुराई; दुर्दशा; धर्म में कोई नयी बात।

**बिद्अती** - वि० [अ] बिद्अत करनेवाला।

**बिद्दत** - स्त्री० [हिं] बिद्अत।

**बिद्ध** - वि० [हिं] बिंधा हुआ; छेदा हुआ।

**बिधँसना** - सं [हिं] नष्ट करना।

**बिध** - 1. स्त्री० [हिं] विधि; 2. पु० हाथी का चारा या रातिब (अन्न); मु० —मिलाना - आय-व्यय का हिसाब ठीक करना।

**बिधना** - 1. पु० [हिं] विधि; ब्रह्मा; 2. अ० बिंधना; 3. स० फँसाना।

**बिधवाना** - स० [हिं] छेद कराना।

**बिधँसना** - स० [हिं] विध्वंस करना।

**बिधाई** - पु० [हिं] विधायक।
**बिधिना** - पु० [हिं] ब्रह्मा।
**बिन** - अव्य० - [हिं] बिना।
**बिनठना** - अ० [हिं] नष्ट होना; बिगड़ना।
**बिनवट** - स्त्री० [हिं] रूमाल या रस्सी में पैसा आदि बाँधकर बनेठी भाँजने की कला।
**बिनवाना** - स० [हिं] चुनवाना; बुनवाना।
**बिनसना** - 1. अ० [हिं] नष्ट होना; 2. स० विनाश करना।
**बिना** - 1. अव्य० [हिं] बग़ैर; 2. स्त्री० [अ] नींव; जड़; यौ० —ए-दावा - दावे का कारण; —ए-मुख़ासिमत - झगड़े या दावे का कारण।
**बिनाई** - स्त्री० [हिं] बीनने या बुनने की क्रिया या भाव; बीनने या बुनने की मज़दूरी।
**बिनाना** - स० [हिं] बुनवाना।
**बिनानी** - 1. वि० [हिं] अज्ञानी; विज्ञानी; 2. स्त्री० विचार।
**बिनौला** - पु० [हिं] कपास का बीज।
**बिपच्छ** - 1. पु० [हिं] शत्रु; 2. वि० प्रतिकूल; विमुख; विपक्ष।
**बिपत, बिपता** - स्त्री० [हिं] विपत्ति।
**बिपथ** - पु० [हिं] ग़लत रास्ता, कुमार्ग।
**बिपद, बिपदा** - स्त्री० [हिं] विपत्ति; आफ़त।
**बिफरना** - अव्य० [हिं] भड़कना; नाराज़ होना; मचलना; विद्रोह करना; चमकना।
**बिफरना** - अ० [हिं] विरोधी होना; उलझना।
**बिबादना** - अ० [हिं] विवाद करना, झगड़ना।
**बिबाहना** - स० [हिं] ब्याह करना।
**बिबि** - वि० [हिं] दो।
**बिब्बोक** - पु० [सं] गर्वपूर्ण उपेक्षा; रूप आदि के गर्व से प्रिय की उपेक्षा।
**बिभाना** - अ० [हिं] चमकना; शोभित होना।
**बिभिनाना** - स० [हिं] अलग करना।
**बिभीषक** - वि० [सं] भयकारक, भय उत्पन्न करनेवाला।
**बिमन** - 1. वि० [हिं] उदास; 2. अव्य० बिना मन के।
**बिमर्दना** - स० [हिं] मसलना; नष्ट करना।
**बिमान** - पु० [हिं] वायुयान; अनादर।
**बिमानी** - वि० [हिं] मानरहित।
**बिमोचना** - स० [हिं] मुक्त करना; टपकाना।
**बिमोहना** - 1. अ० [हिं] आसक्त होना; 2. स० मुग्ध करना।
**बिमौरा** - पु० [हिं] वल्मीक।
**बिय** - 1. वि० [हिं] दो; दूसरा; 2. पु० बीज।
**बियत** - पु० [हिं] आकाश; एकांत स्थान।
**बियहुता** - वि० [हिं] विवाहित।
**बिया** - 1. वि० [हिं] दूसरा; 2. पु० बीज।
**बियाज** - पु० [हिं] सूद; बहाना।
**बियाजू** - वि० [हिं] ब्याज पर दिया हुआ (धन)।
**बियाड़** - पु० [हिं] वह खेत जिसमें धान के बीज रोपने के लिए बोये जाएँ।
**बियाहना** - स० [हिं] ब्याह करना।
**बिरंग** - वि० [हिं] बेरंग; कई रंगोंवाला।
**बिरंचि** - पु० [हिं] ब्रह्मा।
**बिरंज** - पु० [फ़ा] चावल; भात; [अ] पीतल।
**बिरंजारी** - पु० [फ़ा] गल्ले का व्यापारी।
**बिरंजी** - 1. स्त्री० [हिं] छोटी कील; 2. वि० [अ] पीतल का।
**बिरचना** - 1. स० [हिं] रचना; सजाना; 2. अ० उचटना।
**बिरज** - वि० [हिं] निर्मल; गुणरहित।

**बिरझना** - अ० [हिं] उलझना ; मचलना ; क्रुद्ध होना ।

**बिरता** - पु० [हिं] बूता, शक्ति ।

**बिरथा** - 1. वि० [हिं] व्यर्थ ; 2. अव्य० अकारण, निष्प्रयोजन ।

**बिरद** - पु० [हिं] नाम, यश ।

**बिरदैत** - 1. वि० [हिं] विख्यात ; 2. पु० नामी योद्धा ।

**बिरधाई** - स्त्री० [हिं] बुढ़ापा ।

**बिरमना** - अ० [हिं] रुकना ; देर करना ; विश्राम करना ; प्रेमपाश में बँधना ।

**बिरला, बिरले** - वि० [हिं] बहुतों में से कोई एक ; इने-गिने, बहुत थोड़े ।

**बिरवा** - पु० [हिं] पौधा ; वृक्ष ।

**बिरवाई** - स्त्री० [हिं] छोटे पौधों का समूह ।

**बिरहा** - पु० [हिं] एक तरह का लोकगीत ।

**बिरहाना** - अ० [हिं] विरह-व्यथा का अनुभव करना ।

**बिरागना** - अ० [हिं] विरक्त होना ।

**बिराजना** - अ० [हिं] शोभित होना ; बैठना ।

**बिरादर** - पु० [फ़ा] भाई ; भाई-बंद ; सजातीय ; यौ० — कुशी - बंधुवध ; — ज़ादा - भतीजा ; — ज़ादी - भतीजी ।

**बिरादराना** - वि० [फ़ा] भाई का-सा ; भाई के अनुरूप ।

**बिरादरी** - स्त्री० [फ़ा] भाई-चारा ; जाति ; मु० — से ख़ारिज या बाहर होना - जातिच्युत होना ।

**बिरान** - वि० [हिं] बेगाना, पराया ।

**बिराना** - 1. वि० [हिं] पराया ; 2. स० चिढ़ाना ।

**बिरियाँ** - स्त्री० [हिं] समय ; दफ़ा ।

**बिरिया** - स्त्री० [हिं] बिरियाँ ; कान का एक गहना ।

**बिरुझना** - अ० [हिं] उलझना ; झगड़ना ।

**बिरुधाई** - स्त्री० [हिं] बुढ़ापा ।

**बिरोग** - पु० [हिं] दुःख ; चिन्ता ।

**बिरोजा** - पु० [हिं] एक दवा ।

**बिरोधाना** - अ० [हिं] विरोध करना ।

**बिल** - पु० [सं] छेद ; इंद्र का घोड़ा ; यौ० —कारी - चूहा ; —वास, वासी - माँद में रहनेवाला ; —शय, शायी - बिल में रहनेवाला ; —स्वर्ग - नरक ; मु० —ढूँढ़ना - बचाव की जगह ढूँढ़ना ; —में घुसना - घर में बैठ रहना ।

**बिलखना** - अ० [हिं] विलाप करना ; ताड़ जाना ।

**बिलग** - 1. वि० [हिं] अलग ; 2. पु० रंज ; बुराई ; बिलगाव ; मु० —मानना - बुरा मानना ; दुखी होना ।

**बिलगाना** - 1. अ० [हिं] अलग होना ; 2. स० अलग करना ।

**बिलछना** - अ० [हिं] लखना ; ताड़ना ।

**बिलटी** - स्त्री० [हिं] रेल में भेजे जानेवाले माल की रसीद ।

**बिलनी** - स्त्री० [हिं] आँख की पलक पर की फुंसी ; भृंगी ।

**बिलपना** - अ० [हिं] विलाप करना ।

**बिलबिलाना** - अ० [हिं] दुःख आदि से विकल होना ; रोना-चिल्लाना ; गिड़-गिड़ाना ; कीड़ों का कुलबुलाना ।

**बिलमना** - अ० [हिं] देर करना ; रुकना ; प्रेमपाश में बँधकर रुक जाना ।

**बिललाना** - अ० [हिं] विलाप करना ; घबड़ाना ।

**बिलल्ला** - वि० [देश] खेल-कूद ; बेशऊर ।

**बिलहरा** - पु० [हिं] बाँस की तीलियों का बना पान रखने का डिब्बा ।

**बिला** - अव्य० [अ] बिना, बग़ैर ; यौ० —तकल्लुफ़ - निस्संकोच ; —नागा -

प्रतिदिन ; —वजह - अकारण ; —वास्ता - सीधे ; —शक, शुभा - निस्संदेह; निश्चयपूर्वक ; —शर्त - बिना किसी शर्त के ।

**बिलाई** - स्त्री० [हिं] बिल्ली ; कद्दूकस ; सिटकिनी ; कुएं में गिरी हुई चीज़ निकालने का काँटा ।

**बिलाना** - अ० [हिं] नष्ट होना ; गायब होना ; छिन्न-भिन्न होना ।

**बिलापना** - अ० [हिं] विलाप करना ।

**बिलायन** - पु० [सं] माँद ; गुफ़ा ।

**बिलार** - पु० [हिं] बिड़ाल ।

**बिलारी** - स्त्री० [हिं] बड़ी बिल्ली ।

**बिलाव** - पु० [हिं] बिलार, मार्जार ।

**बिलावल** - 1. पु० [हिं] एक राग ; 2. स्त्री० पत्नी ; प्रेमिका ।

**बिलासना** - स० [हिं] बरतना ; भोगना ।

**बिलासिनी** - स्त्री० [हिं] वेश्या ।

**बिलिया** - स्त्री० [हिं] कटोरी ।

**बिलिश** - पु० [हिं] मछली फँसाने का काँटा या उसमें लगाया जानेवाला चारा ।

**बिलया** - स्त्री० [हिं] बिल्ली ; कद्दूकश ; दरवाज़े की सिटकिनी ।

**बिलोकना** - स० [हिं] अवलोकन करना ।

**बिलोकनि** - स्त्री० [हिं] चितवन, दृष्टि ।

**बिलोचन** - पु० [हिं] नेत्र ।

**बिलोना** - स० [हिं] ढालना ; मथना ।

**बिलोला** - वि० [हिं] चंचल ।

**बिलोलना** - अ० [हिं] हिलना-डोलना ।

**बिलौका** - पु० [सं] बिल में रहनेवाला जंतु ।

**बिलौटा** - पु० [हिं] बिल्ली का बच्चा ।

**बिल्** - उप० [अ] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर साथ, सहित, युक्त आदि का अर्थ देता है ; यौ० —अक्स - इसके विरुद्ध ; —उमूम - आम तौर पर ; —कुल - सब ; नितांत ; —जब्र ; बलपूर्वक ; —ज़रूर - निश्चयपूर्वक - —जुमला - कुल मिलाकर ; —फ़र्ज़ - यह फ़र्ज करते हुए ; यह मानकर ; —फ़ेल - इस काल में ; —मुक़ाबिल - तुलना में ; —मुक़्त - निश्चित ।

**बिल्ला** - पु० [हिं] नर बिल्ली ; संस्थाविशेष की सदस्यतासूचक पट्टी, बैज ।

**बिल्लाना** - अ० [हिं] चीखें मारकर रोना ।

**बिल्ली** - स्त्री० [हिं] बाघ या चीते की जाति का एक छोटा जंतु जो जंगली और पालतू दोनों तरह का होता है ; सिटकिनी ; मु०— का रास्ता काटना - बिल्ली का सामने से निकल जाना जो अशुभ समझा जाता है ।

**बिल्लौर** - पु० [हिं] स्फटिक, शीशे के जैसा सफ़ेद पारदर्शक पत्थर ।

**बिल्व** - पु० [सं] बेल का पेड़ या फल ।

**बिवरना** - 1. स० [हिं] सुलझाना ; 2. अ० सुलझना ।

**बिवाई** - स्त्री० [हिं] पाँव के चमड़े का फटना ।

**बिषया** - स्त्री० [हिं] विषय-वासना ।

**बिसंच** - पु० [हिं] अपव्यय ; कमखर्ची ; विघ्न ; डर ।

**बिसंभर** - 1. पु० [हिं] विश्वंभर ; 2. वि० बेख़बर ; जो सँभाला न जा सके ।

**बिस** - पु० [हिं] विष ; [सं] मृणाल ; यौ० —ग्रंथि - आँख का एक रोग ; —नाभि, लता - कमल का पौधा ; — नासिका - एक तरह की बकी ; — प्रसून - कमल की जड़ ।

**बिसखपरा** - पु० [हिं] गोह की जाति का एक ज़हरीला जंतु ; एक वनौषधि ।

**बिसरना** - स० [हिं] भूल जाना।
**बिसरात** - पु० [हिं] खच्चर।
**बिसराना** - स० [हिं] भुला देना।
**बिसात** - स्त्री० [अ] फैलाव; दरी या चटाई आदि; पूँजी; हैसियत; हस्ती; शक्ति; चौसर या शतरंज रखकर खेलने का कपड़ा; यौ० — खाना - बिसाती की दूकान; —खाना - बिसाती की दूकान में बिकनेवाला सामान।
**बिसाती** - पु० [हिं] सुई, तागा आदि फुटकर चीज़ों का विक्रेता।
**बिसायँध** - स्त्री० [हिं] दुर्गन्ध; मांस-मछली की गंध।
**बिसारना** - स० [हिं] भुला देना।
**बिसाह** - पु० [हिं] ख़रीद।
**बिसाहना** - 1. स० [हिं] ख़रीदना; 2. पु० सौदा।
**बिसिनी** - स्त्री० [सं] कमल; कमलसमूह।
**बिसुनी** - स्त्री० [हिं] अमरबेल।
**बिसुरना** - अ० [हिं] खाते समय खाद्य-पदार्थ का नाक की ओर चढ़ जाना।
**बिसूरना** - 1. अ० [हिं] दुखित होना; चुपके-चुपके रोना; 2. स्त्री० चिन्ता।
**बिसैंधा** - वि० [हिं] मांस-मछली की गंधवाला।
**बिस्कुट** - पु० [हिं] आटा या अरारोट आदि की बनी मीठी या नमकीन टिकिया।
**बिस्त** - पु० [सं] सोना तौलने का अस्सी रत्ती का एक परिमाण।
**बिस्तर** - पु० [फ़ा] बिछौना।
**बिस्तारना** - स० [हिं] फैलाना।
**बिस्मिल** - वि० [अ] क़ुर्बानी किया हुआ; घायल।
**बिस्मिल्ला, बिस्मिल्लाह** - स्त्री० [अ] अल्लाह के नाम के साथ आरंभ (इसका प्रयोग कोई कार्य प्रारंभ करते समय मुसलमान करते हैं); विद्यारंभ; मु० — करना - आरंभ करना।
**बिस्वा** - पु० [हिं] बीघे का बीसवाँ भाग; यौ० — दार - पट्टीदार।
**बिहड़ना** - स० [हिं] काटना; मार डालना।
**बिहँसना** - अ० [हिं] मुस्कुराना।
**बिहरना** - अ० [हिं] विचरना; विहार करना; फटना।
**बिहरी** - स्त्री० [देश] चंदा।
**बिहाग** - पु० [हिं] एक राग।
**बिहान** - 1. पु० [हिं] सबेरा; अंत; 2. अव्य० आनेवाला कल।
**बिहाना** - 1. स० [हिं] त्यागना; 2. अ० बीतना।
**बिहिश्त** - पु० [फ़ा] स्वर्ग; स्वर्गोपम स्थान; यौ० — का जानवर - मोर; — का मेवा - अनार; — की कुमारी - नाचने-गानेवाली स्त्री; — की हवा - शीतल-मंद-सुगंध-समीर; मु० — को ठोकर मारना - मिले या मिलते हुए सुख को छोड़ना।
**बिहिश्ती** - पु० [फ़ा] स्वर्गवासी; भिश्ती।
**बिही** 1. पु० [फ़ा] नाशपाती की शकल का एक फल, अमरूद; 2. स्त्री० भलाई; नेकी; यौ०—ख्वाह - हितैषी।
**बिहुरना** - 1. स० [हिं] छोड़ना; 2. अ० बिछुड़ना।
**बींड़** - स्त्री० [देश] पयाल का बना गोल आसन; गेंडुरी।
**बींदना** - स० [हिं] अनुमान करना; बीनना।
**बींधना** - स० [हिं] छेदना।
**बी** - स्त्री० [हिं] प्रतिष्ठित महिला; बीबी।
**बीख** - पु० [हिं] क़दम, डग।
**बीग** - पु० [हिं] भेड़िया।
**बीघा** - पु० [हिं] बीस बिस्वे का रक़बा।

**बीच** - 1. पु० [हिं] किसी वस्तु या क्षेत्र आदि का मध्य भाग ; अंतर ; अवसर ; 2. अव्य० बीच में ; अर्से में; यौ०—बिचाव - मध्यस्थता ;—बीच में - थोड़ी-थोड़ी दूर पर ; थोड़ी-थोड़ी देर पर ; —वाला - मध्य ; बीचो बीच - ठीक मध्य में ।

**बीछना** - स० [हिं] छाँटना, चुनना ।

**बीज** - 1. पु० [सं] फूलवाले पेड़-पौधों का गर्भाण्ड ; बिया ; शुक्र ; जड़ ; कथावस्तु का मूल ; बीजगणित ; अक्षर या ध्वनि ; मंत्र का मूलभाग ; मज्जा ; 2. स्त्री० [हिं] बिजली ; यौ०—कर्ता - शिव ; —कोश - बीजाधार ; —क्रिया - बीजगणित की क्रिया ; —खाद - किसानों को बीज व खाद के लिए दी जानेवाली तक़ावी ; —गणित - गणित का एक भेद जिसमें संख्या की तरह अक्षर का प्रयोग किया जाता है ; —गर्भ - परवल ; —गुप्ति - सेम ; भूसी ; फली ; —दर्शक - अभिनय की व्यवस्था करनेवाला ; —द्रव्य - मूल तत्व ; —धान्य - धनियाँ ; —पूरक - बिजौरा नींबू ; —पेशिका - अंडकोश ; —प्ररोह - बीज से उत्पन्न होनेवाला ; —फलक - बिजौरा नींबू ; —बंद - खरियारे के बीज ; —मंत्र - किसी देवता के लिए निश्चित मंत्र ; गुर ; —मातृका - कमलगट्टा ; —वाहन - शिव ; —सू - पृथ्वी ; —स्थापन - बीज बोने का मुहूर्त ; —हारिणी - जादूगरनी ।

**बीजक** - पु० [सं] बिजौरा नींबू ; बीज ; सूची ; कबीरदास के पदों का एक संग्रह ; प्रसव के समय बच्चे के सिर का उसकी भुजाओं के बीच में आ जाना ।

**बीजना** - पु० [हिं] पंखा ।

**बीजा** - 1. पु० [हिं] बीज ; 2. वि० दूसरा ।

**बीजाकृत** - पु० [सं] बीज छींटकर जोता हुआ खेत ।

**बीजाक्षर** - पु० [सं] मंत्र का आदि अक्षर ।

**बीजाख्य** - पु० [सं] जमालगोटा ।

**बीजार्थ** - वि० [सं] संतानेच्छु ।

**बीजी** - 1. स्त्री० [हिं] गिरी ; गुठली ; 2. वि० [सं] बीजवाला ; 3. पु० पिता ; सूर्य ।

**बीजु** - वि० [हिं] बीज से उत्पन्न ; बिना क़लम किया हुआ (पौधा) ।

**बीझ** - वि० [हिं] बीहड़ ; जनशून्य ।

**बीझना** - अ० [हिं] फँसना ; उलझना ।

**बीट** - स्त्री० [हिं] चिड़ियों का मैला ।

**बीड़** - स्त्री० [हिं] गुल्ली की शक्ल में रखे हुए रुपये ।

**बीड़ा** - पु० [हिं] पान की गिलौरी ; म्यान के मुँह के पास बँधी डोरी ; मु०—उठाना - किसी काम का भार लेना या उसे करने की प्रतिज्ञा करना ; —देना - नाचने-गानेवालों को बयाना देना ।

**बीड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा बीड़ा ; बिड़ई ; गठरी ; पत्ते लपेटकर बनाया हुआ सिगरेट ; मिस्सी ।

**बीतना** - अ० [हिं] गुज़रना ; दूर होना ; घटित होना ; पड़ना ।

**बीती** - स्त्री० [हिं] घटित घटना ; वृत्तान्त ।

**बीधा** - पु० [देश] गाँव की मालगुज़ारी तय करना ।

**बीन** - 1. स्त्री० [हिं] वीणा ; यौ० —कार - वीणावादक ; 2. वि० [फ़ा] जो देखता हो ; जिससे देखने में सहायता ली जाय ।

**बीनश** - स्त्री० [फ़ा] दृष्टि ।

**बीना** - 1. स्त्री० [हिं] वीणा ; 2. वि० [फ़ा] देखनेवाला ।

**बीनाई** - स्त्री० [फ़ा] दृष्टि ।

**बीनी** - स्त्री० [फ़ा] नासिका ।

**बीफै** - पु० [हिं] गुरुवार ।

**बीबी** - स्त्री० [फ़ा] पत्नी ; बेटी या छोटी ननद का आदरसूचक संबोधन, कुलांगना ।

**बीभत्स** - 1. वि० [सं] घृणा उत्पन्न करनेवाला ; सड़ा-गला ; पापी ; 2. पु० साहित्य के नौ रसों में से एक ; घृणोत्पादक वस्तु ; अर्जुन ।

**बीभित्सित** - वि० [सं] घृणित ; निंदित ।

**बीम** - पु० [अंग्रे] शहतीर ; [फ़ा] डर ; जोख़िम ; यौ० — व हरास - ख़ौफ़ और ख़तरा ।

**बीमा** - पु० [फ़ा] किसी प्रकार की हानि की ज़िम्मेदारी जो कुछ धन लेकर उसके बदले में उठायी जाती है ।

**बीमार** - 1. पु० [फ़ा] मरीज़ ; 2. वि० रोगी, आशिक़ ; यौ० — दारी - तीमारदारी ।

**बीमारी** - स्त्री० [फ़ा] रोग ; लत ; झंझट ।

**बीया** - 1. वि०, 2. पु० [हिं] बिया ।

**बीर** - 1. वि० [हिं] वीर, बहादुर ; 2. पु० वीर पुरुष ; भाई ; एक तरह का प्रेत ; 3. स्त्री० सखी ; कलाई का गहना ; कान का एक गहना ; चरागाह ; चराने का कर ।

**बीरबहूटी** - स्त्री० [हिं] गहरे लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा ; इंद्रवधू ।

**बीरी** - स्त्री० [हिं] मिस्सी ; कान का एक गहना ; बीड़ी ।

**बील** - 1. वि० [हिं] पोला ; 2. पु० नीली ज़मीन ।

**बीवी** - स्त्री० [फ़ा] बीबी ।

**बीस** - 1. वि० [हिं] दस का दूना ; श्रेष्ठ ; 2. पु० बीस की संख्या ; विष ; यौ० — बिस्वे - निश्चयपूर्वक ; बहुत करके ।

**बीसना** - स० [हिं] शतरंज आदि खेलने के लिए बिसात फैलाना ।

**बीसी** - स्त्री० [हिं] बीस का समूह ; कौड़ी ; ज़मीन की एक नाप ; होटल ।

**बीहड़** - वि० [हिं] ऊबड़ खाबड़ ; विकट ; विभक्त ।

**बुंद** - 1. स्त्री०, 2. पु० [हिं] बूंद ; वीर्य ।

**बुंदगी** - स्त्री० [हिं] छोटी बिंदी या दाग़ ; यौ० — दार - अनेक बुंदगियोंवाला ।

**बुंदा** - पु० [हिं] टिकली ; टिकली के आकार का गोदना ; कान का एक गहना ; बूँद ।

**बुँदिया** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की मिठाई ।

**बुंदीदार** - वि० [हिं] जिसपर बिंदियाँ हों ।

**बुँदौरी** - स्त्री० [हिं] बुँदिया ।

**बुक** - 1. स्त्री० [हिं] बकरम की तरह का एक बारीक़ कड़ा कपड़ा ; [अंग्रे] किताब ; 2. पु० [सं] हास्य ।

**बुक़चा** - पु० [तु] कपड़े की गठरी ।

**बुक़ची** - स्त्री० [तु] छोटा बुक़चा ; दर्ज़ियों की सूई-धागा आदि रखने की थैली ।

**बुकनी** - स्त्री० [हिं] चूर्ण ; चूर्णरूप रंग ।

**बुकवा** - पु० [हिं] उबटन ।

**बुकुना** - पु० [हिं] बुकनी ; पाचकचूर्ण ।

**बुक्क** - पु० [सं] हृदय ; बकरा ; समय ।

**बुक्कन** - पु० [सं] कुत्ते आदि जानवरों का बोलना ।

**बुक्का** - 1. पु० [हिं] अभ्रक का चूर्ण ; 2. स्त्री० [सं] रक्त ।

**बुक्की** - स्त्री० [सं] हृदय, कलेजा ।

**बुख़ार** - पु० [अ] ज्वर ; वाष्प, भाप ; दिल का गुबार ।

**बुखारी** - स्त्री० [हिं] बखार ; दीवार में बनायी हुई अंगीठी ।

**बुख़्ल** - स्त्री० [अ] कृपणता ; हृदय की संकीर्णता ।

**बुग़चा** - पु० [तु] बुक़चा ।

**बुग़दा, बुग़रा** - पु० [फ़ा] कसाई का छुरा ।

**बुग़ारह** - पु० [फ़ा] किसी चीज़ के बीच का बहुत बड़ा छेद ।

**बुग़्ज़** - पु० [अ] भीतरी दुश्मनी ।

**बुरादा** - पु० [अ] बुरादा, बड़ा छुरा ।

**बुज़** - 1. स्त्री० [फ़ा] बकरी ; 2. पु० बकरा ; यौ० —कसाव - कसाई ; —दिल - डरपोक ; —दिली - भीरुता ।

**बुजियाला** - पु० [हिं] कलंदर द्वारा नचाये जानेवाले बंदर आदि ।

**बुज़ुर्ग** - 1. वि० [फ़ा] वृद्ध ; आदरणीय ; 2. पु० गुरुजन : संत ; पूर्वज ; यौ० —ज़ादा - गुरुभाई ; कुलीन ।

**बुज़ुर्गाना** - वि० [फ़ा] गुरुजनोचित ।

**बुज़ुर्गी** - स्त्री० [फ़ा] बड़प्पन ; बड़ाई ; वृद्धावस्था ।

**बुझना** - अ० [हिं] जलना बंद होना ; जलती चीज़ का ठंडा होना ; शांत होना ; (चित्त का) सुस्त होना ।

**बुझारत** - स्त्री० [हिं] हिसाब समझना ।

**बुटना** - अ० [हिं] हटना ; भागना ।

**बुडकी** - स्त्री० [हिं] डुबकी ।

**बुडना** - अ० [हिं] डूबना ।

**बुड्ढा** - वि० [हिं] बूढ़ा ।

**बुढ़ाई** - स्त्री० } [हिं] वृद्धावस्था ।
**बुढ़ापा** - पु० }

**बुढ़िया** - स्त्री० [हिं] वृद्धा स्त्री, बूढ़ी ।

**बुढ़ौती** - स्त्री० [हिं] बुढ़ापा ।

**बुत** - 1. पु० [फ़ा] प्रतिमा ; प्रेमपात्र ; 2. वि० मूर्ति की तरह निश्चेष्ट ; मूर्ख ; यौ० —ख़ाना - मंदिर ; —तराश - मूर्तियाँ बनानेवाला ; —परस्त - मूर्ति की पूजा करनेवाला ; —परस्ती - मूर्ति-पूजा ; —शिकन - मूर्तिभंजक ; मूर्ति-पूजा का घोर विरोधी ।

**बुतना** - अ० [हिं] बुझना ; शांत होना ।

**बुतान** - पु० [फ़ा] 'बुत' का बहु० ।

**बुताम** - पु० [हिं] बटन ।

**बुत्ता** - पु० [हिं] झाँसा, दम ।

**बुदबुदा** - पु० [हिं] बुलबुला ।

**बुद्ध** - 1. वि० [सं] जगा हुआ : ज्ञानी ; पंडित ; विकसित : 2. पु० बौद्ध धर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ गौतम ।

**बुद्धि** - स्त्री० [सं] समझने और विचार करने की शक्ति; अक्ल ; अंतःकरण की निश्चयात्मिका वृत्ति : प्रकृति का पहला परिणाम (सांख्य) ; यौ०—कृत - सोच-समझकर किया हुआ ; —कौशल - चतुराई ; —ग्राह्य - समझ में आने योग्य ; —चक्षु - प्रज्ञाचक्षु ; —चिंतक - बुद्धिमत्तापूर्वक सोचनेवाला ; —जीवी - दिमाग़ी काम करनेवाला ; —दोष - समझ की कमी ; —पूर्वक - सोच-समझकर ; —मत्ता - समझदारी ; —मान - चतुर ; —मोह - दिमाग़ का घबरा जाना ; —योग - ज्ञानयोग ; —विलास - कल्पना ; —वैभव - बुद्धि की प्रखरता ; —शाली - बुद्धिमान ; —शुद्ध - नेक-नीयत ; —शुद्धि - नेकनीयती ; —सख, सहाय - मंत्री ; —हत - निर्बुद्धि ; —हीन - नासमझ ।

**बुद्धीन्द्रिय** - स्त्री० [सं] ज्ञानेन्द्रिय, मन ।

**बुद्धू** - वि० [हिं] मूर्ख ।

**बुद्बुद** - पु० [सं] बुलबुला ।

**बुधंगड़** - वि० [हिं] मूर्ख ।

**बुध** - पु० [सं] विद्वान ; सौरमंडल का एक ग्रह ; देवता ; कुत्ता ; यौ०—जन - पंडित, विद्वान ; —वार, वासर - मंगल और गुरु के बीच का दिन ।

**बुधान** - 1. पु० [सं] आचार्य ; 2. वि० ज्ञानी ; जागरित ।

**बुध्य** - वि० [सं] जानने योग्य ।

**बुनकर** - पु० [हिं] कपड़ा बुननेवाला ।

**बुनना** - स० [हिं] धागे से कपड़ा बनाना : ऊन आदि के धागों से सलाई के द्वारा मोज़ा, गुलूबंद आदि बनाना।

**बुनावट** - स्त्री० [हिं] बुनने का ढंग, ताने-बाने का घना-झीना होना।

**बुनिया** - स्त्री० [हिं] एक मिठाई, बुँदिया।

**बुनियाद** - स्त्री० [फ़ा] नींव, जड़; आरंभ; असलियत।

**बुनियादी** - वि० [फ़ा] मूलगत; आधार-रूप।

**बुबुकना** - अ० [हिं] डाढ़ें मारकर ज़ोर-ज़ोर से रोना।

**बुबुकारी** - स्त्री० [हिं] डाढ़ें मारकर रोना।

**बुभुक्षा** - स्त्री० [सं] खाने की इच्छा; भूख।

**बुभुक्षित** - वि० [सं] भूखा।

**बुर** - स्त्री० [हिं] भग, योनि।

**बुरकना** - स० [हिं] चूर्ण-जैसी वस्तु को छिड़कना।

**बुरक़ा** - पु० [अ] नक़ाब; मुसलमान स्त्रियों का एक लंबा पहनावा; यौ०—पोश - जो बुरक़ा ओढ़े हो; मु० बुरक़े में छीछड़े खाना - पर्दे में बदचलनी करना।

**बुरहान** - पु० [अ] तर्क; प्रमाण।

**बुरा** - 1. वि० [हिं] ख़राब; हानिकर; कुचाली : 2. पु० बुराई; अनिष्ट; यौ० —भला - अच्छा-बुरा; हानि-लाभ; गाली-गलौज : मु०—काम - व्यभिचार; निन्दित कर्म; —वक़्त - कष्ट का समय; —हाल - दुर्दशा; तबाही; —कहना - बदनाम करना; —चाहना - किसीके अनिष्ट की कामना करना; —बनना - दोषी बनना; बदनाम होना; —लगना - अच्छा न लगना; —हाल होना - घोर कष्ट में होना; रोगी की हालत बिगड़ना; बुरे दिन - विपद्‌काल।

**बुराई** - स्त्री० [हिं] ख़राबी; दोष; दुष्टता; अपकार, निंदा; दुश्मनी; यौ०—भलाई - अच्छा-बुरा काम।

**बुरादा** - पु० [फ़ा] लकड़ी का चूरा; कोयले का चूरा।

**बुरी** - स्त्री० [हिं] बुरा; यौ० —ख़बर - मौत की ख़बर; —गत, गति - दुर्दशा, —घड़ी - मुसीबत की घड़ी; —तरह - बहुत ज़्यादा; कसकर; —नज़र, निगाह - बुराई या पाप की दृष्टि;—बला - बहुत कष्ट देनेवाली चीज़; मु० —तरह पेश आना - दुर्व्यवहार करना।

**बुरुड** - पु० [सं] टोकरे, चटाई आदि बनाने का काम करनेवाली एक जाति।

**बुर्क़ा** - पु० [अ] नक़ाब; यौ० —पोश - जो बुर्क़ा ओढ़े हो।

**बुर्ज़** - पु० [अ] मीनार; गुंबद; राशि।

**बुर्द** - स्त्री० [फ़ा] आमदनी; बाज़ी; शतरंज में बादशाह का अकेले रह जाना; यौ० — बार - सहनशील;—बारी - सहनशीलता।

**बुर्रा** - वि० [अ] बहुत तेज़ धारवाला।

**बुलंद** - वि० [फ़ा] ऊँचा; यौ० —आवाज़ - ज़ोर की आवाज़; —इक़बाल - भाग्यवान; — परवाज़ - ऊँचा उड़नेवाला; ऊँचे ख़्याल का; —पाया, मर्तबा - उच्च पदस्थ;— हिम्मत - ऊँची या बड़ी हिम्मत।

**बुलबुल** - स्त्री० [अ] एक गानेवाली काली व छोटी चिड़िया।

**बुलबुला** - पु० [हिं] पानी का बुला, बुद्‌बुद; क्षणभंगुर वस्तु।

**बुलहवस** - वि० [अ] लालची, लोभी।

**बुलाक** - स्त्री० [तु] एक आभूषण जो स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं।

**बुलाना** - स० [हिं] पुकारना; किसीको बोलने में प्रवृत्त करना।

**बुलावा** - पु० [हिं] न्योता ।
**बुलूग़** - पु० [अ] बालिग़ होना ।
**बुलूग़त** - स्त्री० [अ] युवावस्था ।
**बुल्ला** - पु० [हिं] बुलबुला ।
**बुष, बुस** - पु० [स] भूसी ; सूखा गोबर ; जल ; संपत्ति ।
**बुहारना** - स० [हिं] झाड़ू देना ; झाड़ना ।
**बुहारा** - पु० [हिं] बड़ी झाड़ू ।
**बुहारी** - स्त्री० [हिं] झाड़ू ।
**बूँद** - स्त्री० [हिं] पानी या तरल पदार्थ का बहुत छोटा अंश, बिंदु ; वीर्य ; एक रंगीन कपड़ा ।
**बूँदा** - पु० [हिं] बड़ी टिकली, बुंदा ।
**बूँदाबाँदी, बूँदाबूँदी** - स्त्री० [हि] हलकी वर्षा ।
**बूँदी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की मिठाई ; वर्षा के जल की बूँद ।
**बू** - स्त्री० [फ़ा] गंध ; दुर्गन्ध ; ठसक ; आन-बान ; ढंग ; **यौ०** —बास - बू ; निशान ; सुराग ।
**बूआ** - स्त्री० [देश] पिता की बहन, फूफी ; बड़ी बहन ।
**बूक** - पु० [हिं] चंगुल ।
**बूकना** - स० [हिं] पीसना ; छींटना ।
**बूक़लमूँ** - पु० [अ] गिरगिट ।
**बूका** - पु० [हिं] हृदय, कलेजा ; **मु०**—फूटना - फूट-फूटकर रोना ।
**बूग़दान** - पु० [फ़ा] मदारियों का थैला ।
**बूग़बंद** - पु० [फ़ा] सामग्री रखने की थैली या कपड़ा ।
**बूचड़** - पु० [हिं] कसाई ; मांसविक्रेता ; **यौ०** —ख़ाना - कसाईख़ाना ।
**बूचा** - वि० [हिं] कनकटा ; नंगा ।
**बूजना** - स० [हिं] धोखा देना ।
**बूज़ना** - पु० [फ़ा] बंदर ।
**बूज़ा** - पु० [फ़ा] एक प्रकार की शराब ; **यौ०** बूज़ीख़ाना - शराबख़ाना ।
**बूझ** - स्त्री० [हिं] बूझने का भाव ; समझ ।
**बूझना** - स० [हिं] समझना ; जानना ; पूछना ।
**बूट** - पु० [हिं] हरा चना ; चने का पौधा या पेड़ ; [अंग्रे] मोटे तल्ले का अंग्रेज़ी जूता ।
**बूटा** - पु० [हिं] छोटा पौधा ; कपड़े आदि पर बनी हुई फूल-पत्ती ।
**बूटी** - स्त्री० [हिं] जड़ी ; भंग ; कपड़े पर बने हुए छोटे बेल-बूटे ; ताश के पत्तों पर बनी हुई बिंदी ।
**बूडना** - अ० [हिं] लीन होना ; डूबना ।
**बूढ़** - 1. पु० [हिं] लाल रंग ; बीरबहूटी ; 2. वि० बुड्ढा ।
**बूढ़ा** - वि० [हिं] बड़ी उम्र का, वृद्ध ; **यौ०** —खुर्राट - चालाक ; अनुभवी व्यक्ति ; —पोंग - बूढ़ा बेवकूफ़ ; —फूँस - अतिवृद्ध ; **मु०** —मुँह मुँहासे - बुढ़ापे में जवानी के शौक़ आदि करना ; बूढ़े तोते को पढ़ाना - पढ़ने की उम्र बीत जाने पर सिखाना-पढ़ाना ।
**बूढ़ी** - वि०, स्त्री० [हिं] वृद्धा ; **यौ०** —ईद - रमज़ान के पूरे तीस दिन बाद आनेवाली ईद ; —ढड्ढो - बहुत बूढ़ी स्त्री ।
**बूता** - पु० [हिं] शक्ति ; सामर्थ्य ।
**बूताल** - पु० [अ०] घर-ख़र्च का हिसाब ।
**बूदोबाश** - स्त्री० [फ़ा] निवास ।
**बूम** - 1. स्त्री० [फ़ा] भूमि, ज़मीन ; 2. पु० [अ०] उल्लू ।
**बूरा** - पु० [हिं] कच्ची चीनी ; चीनी ; चूर्ण ।
**बूरानी** - स्त्री० [फ़ा] एक प्रकार का बैंगन का पक्वान ।
**बृंहण** - 1. वि० [सं] पोषक, पुष्टिकर ; 2. पु० पुष्ट करना ; एक तरह की मिठाई ।

**बृगल** - पु० [सं] टुकड़ा ; ग्रास ।

**बृहज्जन** - पु० [सं] यशस्वी पुरुष ।

**बृहज्जातक** - पु० [सं] वराहमिहिर-रचित जातक-ग्रंथ ।

**बृहड्डक्का** - पु० [सं] भेरी, डंका ।

**बृहतिका** - स्त्री० [सं] दुपट्टा ।

**बृहती** - स्त्री० [सं] बड़ी वीणा ; छत्तीस की संख्या ; छाती और रीढ़ के बीच का एक भाग ; वनभंटा ; वाक्य ; दुपट्टा ।

**बृहत्** - 1. वि० [सं] विशाल ; लंबा-चौड़ा ; शक्तिशाली ; घना ; चमकीला ; स्पष्ट ; ऊँचा ; 2. पु० विष्णु , यौ० —कथा - गुणाढ्यरचित कथाओं की संस्कृत-पुस्तक ; —काय - विशाल शरीरवाला ; —कीर्ति - बहुत यशस्वी ; —कुक्षि - बड़ी तोंदवाला ; —केतु - अग्नि ; —ताल - जंगली खजूर ; —तृण - बाँस ; —त्वक् - नीम ; —पाद - बरगद ;—पुष्प - पेठा ; केले का पेड़ ; —फल - कुम्हड़ा ; कटहल ।

**बृहद्वादी** - वि० [सं] डींग मारनेवाला ।

**बृहन्नेत्र** - वि० [सं] दूरदर्शी ; बुद्धिमान ।

**बृहस्पति** - पु० [सं] सौर मंडल का पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह ; देवताओं के गुरु ; एक स्मृतिकार ; यौ० —चक्र - साठ संवत्सरों का चक्र ; —वार - गुरुवार ।

**बेंट, बेठ** - स्त्री० [देश] मूठ, दस्ता ।

**बेंड** - स्त्री० [देश] चाँड़ ; टेक ।

**बेंड़ना** - स० [देश] बंद करना ; घेरना ।

**बेंड़ा** - वि० [देश] आड़ा ; कठिन ।

**बेंत** - पु० [हिं] मज़बूत और लचीले डंठलवाली एक लता ; बेत की छड़ी ; मु० —की तरह काँपना - डर से बहुत काँपना ।

**बेंदा** - पु० [हिं] बड़ी टिकली ; माथे पर का एक गहना ; तिलक ।

**बेंदी** - स्त्री० [हिं] बिंदी ; टिकली ; शून्य ; माथे पर का एक गहना ।

**बेंबड़ा** - पु० [देश] अरगल ।

**बेवताना** - स० [हिं] ब्योंतने का काम दूसरे से कराना ।

**बे** - 1. अव्य० [हिं] अरे ; अबे [फ़ा] बिना ; सिवाय; 2. पु० फ़ारसी वर्णमाला का दूसरा अक्षर ; यौ० —अंत - अथाह ; —अक्ल - नासमझ ; —अदब - अशिष्ट; अविनीत ;—अदबी - ढिठाई, गुस्ताख़ी ; —आब - चमकविहीन ; —आबरू-प्रतिष्ठारहित ; —आबरूई - बेइज़्ज़ती ; —इन्साफ़ी - अन्याय ; —इज़्ज़त - अपमानित ; प्रतिष्ठारहित ; —इज़्ज़ती - अपमान ; अप्रतिष्ठा ; —इल्म - अपढ़; —ईमान - धर्म को न माननेवाला ; बदनीयत ; झूठा ; नमकहराम ; बद-दयानत ; —उज्र - जिसे किसी बात के मानने या करने में आपत्ति न हो ; बिना किसी आपत्ति के ; —क़द्र - मूल्य-रहित ; —क़द्री - बेइज़्ज़ती ; —क़रार - विकल, बेचैन ; —कल - बेचैन ; —कस - विवश ; असहाय ; —कहा - स्वच्छंद ; —क़ानूनी - ग़ैरक़ानूनी, नियमविरुद्ध ; —क़ाबू - विवश , लाचार; —काम - बेकार ; —क़ायदगी - अनियम ; अनियमितता ; —क़ायदा - अनियमित; —कार - निठल्ला; निकम्मा; बेरोज़गार ; निरर्थक ; —क़सूर - निर-पराध ; निर्दोष ; —खटक, खटके - बेधड़क ; —ख़तर - निर्भय ; निर्भय होकर ; —ख़ता - निरपराध ; अचूक (निशाना) ; —ख़बर - असावधान ; बेसुध ; जिसे किसी बात की जानकारी न हो ; —ख़ानमान - परदेशी ; घर-विहीन ; —ख़ुद - आत्मविस्मृत ;

नशे में चूर ; —ख़ौफ़ - निडर ; —ख़्वाबी - जागरण ; —ग़म - जिसे कोई सोच-फ़िक्र न हो ; —गाना - पराया ; अनजान ; —गुन - गुणरहित ; बिना रस्सी की (नाव), —गुनाह - निरपराध ; अकारण ; —गुमान - निस्संदेह ; —घर - गृहहीन ; —चारगी - विवशता ; —चारा - दीन ; असहाय ; —चिराग़ - जहाँ दिया न जलता हो ; ग़ैरआबाद ; —चैन - बेक़रार ; —चैनी - घबराहट ; —जड़ - निर्मूल ; —ज़बान - मूक ; दीन ; जो अपनी दशा ख़ुद न कह सके ; —ज़र - निर्धन ; ग़रीब ; —जवाल - सदा बना रहनेवाला; —जा - अनुचित; बेमौक़ा ; —जान - निष्प्राण ; दुर्बल ; —ज़ाबिता, ज़ाब्ता - बेक़ायदा ; —ज़ार - नाराज़ ; दुखी ; परेशान ; —ज़ारी - नाराज़गी ; परेशानी ; —जून - कुसमय ; —जोड़ - लाजवाब ; बेमेल ; अखंड ; —ठिकाना - अविश्वसनीय ; जिसका कुछ ठीक न हो ; —ठिकाने - असंगत ; बग़ैर पते या निशान के ; बेमौक़े; —डौल - कुरूप; —ढंगा - बुरे ढंग-वाला ; भद्दा ; अव्यवस्थित ; —ढब - निराले ढंगवाला ; टेढ़ा ; ख़तरनाक ; बुरी तरह ; —तअम्मुल - बेखटके ; निस्संकोच ; —तअल्लुक़ - तटस्थ ; उदासीन ; —तअल्लुक़ी - उदासीनता ; तटस्थता ; —तकल्लुफ़ - सरल ; दिखाऊ शिष्टाचार न बरतनेवाला ; संकोचरहित ; बेधड़क ;—तक़सीर - बेक़सूर ;—तमीज़ - उजड्ड ; —तरतीब - क्रमरहित ; अव्यव-स्थित ; —तरह - बेढब ; भिन्न प्रकार से पढ़ी जानेवाली (ग़ज़ल) ; बुरी तरह ; बहुत ज़्यादा ; —तरीक़ा - अनुचित ; —तरीक़े - अनुचित रूप से ; —तलब - बिना बुलाये ; बिना माँगे ; —तवज्जुह-बेपरवाह ; —तहाशा - बहुत तेज़ी से ; बिना सोचे-विचारे ; —ताब - विकल ; अधीर ; —तार - बिना तार का ; —तार का तार - वायरलेस, बिना तार के विद्युत्-यंत्र से भेजा जानेवाला तार ; —ताल - गाने-बजाने में ताल से चूक जानेवाला ; —तुका - असंगत ; बेतुकी बात कहनेवाला ; तुकरहित (छंद), —तुकी - असंगत (बात) ; —तौर - बेतरह ; —दख़ल - जिसका दख़ल या क़ब्ज़ा हटा दिया गया हो ; —दख़ली - असामी का खेत से बेदख़ल कर दिया जाना ; —दम - मुर्दा ; शिथिल ; —दरेग़ - बेधड़क ; संकोच न करनेवाला ; —दर्द - निर्दय ; ज़ालिम ; —दर्दी - निर्दयता ; —दाग़ - निष्कलंक ; निर्दोष ; —दाद - अन्याय, ज़ुल्म ; —दाना - बिना दानों का ; मूर्ख ; एक तरह का शहतूत ; —दानिशी - नासमझी ; —दाम - मुफ़्त ; —दाम का ग़ुलाम - बे-पैसे का ग़ुलाम ; आज्ञाकारी ; —दावा - दावा न करने या अधिकार न जताने-वाला; —दिमाग़ - अप्रसन्न; बदमिज़ाज ; —दिल - उदास ; भग्नहृदय ; —दीद - निर्लज्ज ; बेमुरौवत ; —दीन - धर्म-भ्रष्ट ; —धड़क - निर्भय होकर ; निर्भय, —धरम - धर्मभ्रष्ट ; जिसका धर्म नष्ट हो गया हो ; —धीर - धैर्यरहित ; —नंग - निर्लज्ज ; —नज़ीर - अनुपम ; —नमक - फीका ;—नाप - न नापा हुआ ; —नाम - गुमनाम ; —नामो-निशान - जिसका पता-ठिकाना न हो ; —निमून - अद्वितीय ; —नियाज़ - बेपरवाह ; —नूर - जिसकी ज्योति चली गयी हो (आँख) ; —पनाह - निराश्रय ;

जिससे बचाव न हो सके; —परदगी, —पर्दगी - पर्दे का हट जाना; भेद का प्रकट हो जाना; बेइज़्ज़ती; —परदा - पर्दे से बाहर; प्रकट; जिसका मुँह खुला हो (स्त्री); —परवाह - जिसे किसी बात की फ़िक्र न हो; —पाइ - निरुपाय; —पीर - निर्दय; निगुरा; —फ़सल - बेमौसम; बेवक्त; —फ़ायदा - बेकार; —फ़िक्र - चिन्तारहित; निर्द्वन्द्व; —फ़िक्री - निश्चिन्तता; —बदल - बेजोड़; —बरकत - जिससे पूरा न पड़े; —बस - विवश; असहाय; —बसी - विवशता; लाचारी; —बहरा - अभागा; जिसे कुछ आता न हो; —बाक़ - जिसमें कुछ बाक़ी न हो; जिसने पूरा पावना चुका दिया हो; —बाक़ी - चुकता; पूरी सफ़ाई; —बुनियाद - निर्मूल; मनगढंत; —ब्याहा - अविवाहित; —भाव - बेहिसाब; —मज़ा - स्वादरहित; —मतलब - निष्प्रयोजन; —मन का; —जिसमें मन न लगता हो; —मरम्मत - टूटा-फूटा; —मसरफ़ - अनुपयोगी; निकम्मा; —मानी - अर्थरहित; बेकार; —मालूम - जिसका पता न लगे, अज्ञात; —मिलावट - शुद्ध; —मुनासिब - अनुचित; —मुरौवत - जिसमें लिहाज़ न हो; —मेल - जो मेल न खाता हो; बेजोड़; —मौक़ा - जिसका अवसर न हो; अयुक्त; नामुनासिब; —मौत - बिना मौत आये; बिना काल के (मरना); —रंग - बेमज़ा; —रब्त - बेमेल; बेमौक़ा; —रस - रसहीन; —रहम - निर्दय; —राह - पथभ्रष्ट; कुचाली; —राही - पथभ्रष्टता; कुचाल; —रिया - निश्छल; सच्चा; —रुख़ - बेमुरौवत; प्रतिकूल; —रुख़ी - उपेक्षा; प्रतिकूलता; —रेश - जिसकी दाढ़ी-मूँछे न आयी हों; —रोक-टोक - बेखटके; —रोज़गार - जिसके पास जीविका का साधन न हो; —रोज़गारी - बेकारी; —रौनक़ - उदास; —लगाम - मुँहज़ोर, दाब न माननेवाला; —लज़्ज़त - स्वादरहित; निष्फल; —लाग - खरा; दोटूक (बात); —लिहाज़ - बेमुरौवत; निर्लज्ज; —लुत्फ़ - रसरहित; —लौस - खरा; किसीका लिहाज़ न करनेवाला; —वक़अत, वक़त - प्रतिष्ठारहित; नगण्य; —वक़र - तुच्छ, बेइज़्ज़त; —वक़ूफ़ - नासमझ; मूर्ख; —वक़ूफ़ी - मूर्खता; —वक़्त - असमय; —वफ़ा - कृतघ्न; —शऊर - फूहड़; बेअक़ल; —शक - निस्संदेह; —शरम, शर्म - निर्लज्ज; —शर्मी - निर्लज्जता; —शुमार - अगणित; बेहिसाब; —सतर - नग्न; —सबब - अकारण; —सबरी - अधैर्य; —सबात - नश्वर; —सब्र - अधीर; —सब्री - अधीरता; —समझ - मूर्ख; —सरा - स्वच्छन्द; —सरोसामान - जिसके पास कोई सामग्री न हो; —सलीक़ा; फूहड़; —साख़्ता - स्वाभाविक; —सामान - उपकरणहीन; —सिलसिला - क्रमरहित, अव्यवस्थित; —सुध - अचेत; आत्मविस्मृत; —सुर - जिसका स्वर ठीक न हो; —सूद - व्यर्थ; —सोचे-समझे - बिना सोचे-समझे; झट; —स्वाद - स्वादरहित; —हंगम - भद्दा; —हंगाम - बेवक़्त; —हक़ीक़त - तुच्छ; उपेक्षणीय; —हद - असीम; बहुत अधिक; —हया - निर्लज्ज, —हवास - बेहोश; परेशान; —हाल -

कष्ट से व्याकुल ; —हिजाब - बेपर्दा ; लज्जारहित ; —हिम्मत - डरपोक ; —हिस - गतिहीन ; —हिसाब - अमित ; बहुत ज़्यादा ; —हुनर - अनाड़ी ; बेशऊर ; —हूदगी - अशिष्टता ; असभ्यता ; —हूदा - असंगत, अशिष्ट ; —होश - अचेत ; —होशी - मूर्च्छा ; मु०—पर की उड़ाना - गप मारना ; —पेंदी का लोटा - ढुलमुल, जिसका मत बदलता रहे ।

**बेकुरा** - स्त्री० [सं] स्वर, आवाज़ ।

**बेग** - पु० [हिं] वेग ; [तु] अमीर; सरदार ।

**बेगना** - अ० [हिं] जल्दी करना ।

**बेगम** - स्त्री० [तु] बड़े आदमी की बीबी ; रानी ; ताश का पत्ता ।

**बेगमी** - पु० [तु] कपूरी पान का एक भेद ।

**बेगर** - वि० [हिं] पृथक्, भिन्न ।

**बेगार** - स्त्री० [फ़ा] ज़बर्दस्ती ; बिना पारिश्रमिक दिये कराया जानेवाला काम ; बेमन का काम ।

**बेचना** - स० [हिं] दाम लेकर देना, बिक्री करना ।

**बेचू** - पु० [हिं] बेचनेवाला ।

**बेजू** - पु० [हिं] एक जंगली जानवर जिसके बालों का ब्रश बनाया जाता है ।

**बेझड़** - पु० [हिं] जौ, चना, मटर आदि की मिश्रित फसल या ऐसा अनाज ।

**बेझना** - स० [हिं] निशाना लगाना ।

**बेटा** - पु० [हिं] पुत्र, बच्चा ; **यौ०** —बेटी - बाल-बच्चे, संतान ; बेटेवाला - वर का पिता ; **मु०** —बनाना - गोद लेना ।

**बेटी** - स्त्री० [हिं] लड़की, पुत्री ; **यौ०** —वाला - कन्या का पिता ; —व्यवहार - विवाह-संबंध ।

**बेठ** - पु० [हिं] दस्ता, मूठ ।

**बेठन** - पु० [हिं] पुस्तक की रक्षा के लिए उसपर लपेटा जानेवाला कपड़ा, खोल ।

**बेड़** - स्त्री० [हिं] थाला ; बाड़ ।

**बेड़ना** - स० [हिं] थाला बनाना ; बाड़ लगाना ।

**बेड़ा** - पु० [हिं] लट्ठो या तख्तों को बाँधकर उनपर बाँस का टट्टर रखकर बनायी हुई नाव ; नावों या जहाज़ों का समूह । **मु०** —पार होना - संकट कटना ।

**बेड़िन** - स्त्री० [हिं] नाचने-गाने का पेशा करनेवाली औरत, नटी ।

**बेड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] कैदियो आदि के पाँवो में पहनायी जानेवाली लोहे की ज़ंजीर, निगड़ ; बंधन ; छोटा बेड़ा ; 2. वि० (स्त्री०) कठिन ।

**बेढ़** - पु० [हिं] घेरने का कार्य ; नाश ; अंकुरित बीज ।

**बेढ़ई** - स्त्री० [हिं] पीठी भरकर बनायी हुई रोटी ।

**बेढ़ना** - स० [हिं] रूँधना ; ढोरो को घेरकर ले जाना ।

**बेढ़ा** - पु० [हिं] एक तरह का कड़ा ; मकान की बारी ।

**बेतना** - अ० [हिं] जान पड़ना ।

**बेदमाल** - स्त्री० [हिं] सिकलीगर की औज़ार रगड़ने की तख्ती ।

**बेदार** - वि० [फ़ा] जागरूक ; चौकन्ना ; **यौ०** —बख्त - भाग्यशाली —मग़ज़ - बुद्धिमान ।

**बेदारी** - स्त्री० [फ़ा] जागरण ; जागरूकता ।

**बेध** - पु० [हिं] छेद ; मोती आदि में किया हुआ छेद ।

**बेधना** - स० [हिं] छेद करना ; घाव करना ।

**बेधिया** - पु० [हिं] अंकुश ।

**बेनट** - स्त्री० [हिं] बंदूक में खोंसी रहनेवाली किर्च ।

**बेना** - पु० [हिं] बाँस के छिलके का बना हुआ पंखा ; एक गहना ; खस ; बाँस ।
**बेनी** - स्त्री० [हि] स्त्रियों की चोटी ; त्रिवेणी ।
**बेर** - 1. पु० [हिं] एक फल और उसका पेड़ ; देर ; शरीर ; 2. स्त्री० दफा, बार ।
**बेरजरी** - स्त्री० [हिं] झड़बेरी ।
**बेरवा** - पु० [हिं] कलाई में पहनने का कड़ा ।
**बेरा** - 1. स्त्री० [हिं] समय ; सबेरा ; दफ़ा; 2. पु० मिला हुआ जौ और चना ; बेड़ा ; पोतसमूह ।
**बेरी** - स्त्री० [हिं] मिली हुई सरसों और अलसी ; नौका ; बेड़ी ।
**बेल** - 1. पु० [हिं] एक प्रसिद्ध वृक्ष और उसका फल, बिल्व ; **यौ०** —गिरी - बेल के फल का गूदा ; —पत्ती, पत्र - बेल का पत्ता : 2. स्त्री० पेड़, दीवार आदि पर फैलनेवाला बिना तने का पौधा ; वंश ; **यौ०** —बूटा - कागज़, कपड़े आदि पर बनाये जानेवाले फूल-पत्ते ; —हाशिया - बेल छापने का ठप्पा ; [फ़ा] कुदाली, फावड़ा या लंबा खुरपा ; —दार - फावड़ा चलानेवाला मज़दूर ; —दारी - बेलदार का काम ।
**बेलड़ी, बेलरी** स्त्री० [हिं] बेल ।
**बेलन** - पु० [हिं] लकड़ी तथा पत्थर का लंबा गोल टुकड़ा जिससे चकले पर रोटी, पूरी आदि बेलते हैं ; सड़क आदि कूटने का पत्थर या लोहे का भारी गोला ; छापने और ईख पेरने की कल आदि का बेलन की शक्ल का पुर्जा ।
**बेलना** - स० [हिं] चकले पर बेलन से रोटी, पूरी आदि बनाना ।
**बेला** - पु० [हिं] एक सुगंधित फूल और उसका पौधा ; कटोरा ; मोगरा ; मोतिया ; सारंगी-जैसा एक बाजा ।
**बेली** - पु० [हिं] साथी ; सहायक ।
**बेवा** - स्त्री० [फ़ा] विधवा ।
**बेश** - वि० [फ़ा] अधिक, ज़्यादा ; **यौ०** —क़ीमत - बहुमूल्य ; —तर - बहुधा ; अकसर ।
**बेशी** - स्त्री० [हिं] अधिकता ; नफ़ा ।
**बेसन** - पु० [हिं] चने की दाल का आटा ।
**बेसर** - 1. स्त्री० [हिं] नाक का एक गहना ; 2. पु० खच्चर ; एक अंत्यज जाति ।
**बेसरा** - 1. पु० [हिं] एक शिकारी चिड़िया ; खच्चर ; 2. वि० निराश्रय ।
**बेसवा** - स्त्री० [हिं] वेश्या, रंडी ।
**बेसहना** - स० [हिं] ख़रीद करना, मोल लेना ।
**बेसारा** - वि० [हिं] बैठानेवाला ; रखने या जमानेवाला ।
**बेसाहनी** - स्त्री० [हिं] सौदा ; ख़रीद ।
**बेहड़** - 1. पु० [हिं] जंगल आदि विकट स्थान ; 2. वि० बीहड़ ।
**बेहन** - 1. पु० [हिं] अनाज का बीज ; 2. वि० पीला ।
**बेहना** - पु० [हिं] धुनिया, जुलाहों की एक उपजाति ।
**बेहर** - वि० [हिं] स्थावर ; भिन्न ; 2. पु० बावली, वापी ।
**बेहरना** - 1. अ० [हिं] फटना ; 2. स० फाड़ना ।
**बेहला** - पु० [हिं] सारंगी के ढंग का एक बाजा ; बेला ।
**बैंगन, बैगन** - पु० [हिं] भंटा, वृन्तारक (शाक) ।
**बैंगनी** - 1. वि० [हिं] बैंगन के रंग का ; 2. पु० बैगन के रंग से मिलता हुआ

रंग; यौ० —बूँद - एक तरह की छींट।

**बै** - स्त्री० [हिं] जुलाहों का कंघा; वय; [अ] क्रय-विक्रय।

**बैकना** - अ० [हिं] बहकना।

**बैजई** - 1. वि० [हिं] हलके नीले रंग का; 2. पु० हलका नीला रंग।

**बैज़वी** - वि० [अ] अंडाकार।

**बैज़ा** - पु० [अ] अंडा; अंडकोष।

**बैजिक** - 1. वि० [सं] बीजसंबंधी; पैतृक; 2. पु० अंकुर; कारण; आत्मा।

**बैठक** - स्त्री० [हिं] चौपाल, बैठने का कमरा; आसन; पेंदा; बैठने का ढंग; जमाव; अधिवेशन; मूर्ति या खंभे के नीचे का आधार; एक कसरत; एक तरह की पूजा; यौ० —ख़ाना - मिलने-जुलने का कमरा; —बाज़ - शरारती; धूर्त।

**बैठकी** - स्त्री० [हिं] उठने-बैठने की कसरत; आसन; मेज़ पर रखकर जलाने का लैंप।

**बैठना** - अ० [हिं] स्थित होना; आसीन होना; सवार होना; इजलास करना; छोटा-बड़ा न होना; अँटना; धँसना; गिरना; तह में जमना; ख़र्च होना; बेकार रहना; अस्त होना; काम बिगड़ना; अंडे सेना।

**बैठनी** - स्त्री० [हिं] करघे में बुननेवाले के बैठने के लिए बनी हुई जगह।

**बैत** - 1. स्त्री० [अ] शेर, पद्य; 2. पु० घर; स्थान; यौ० —बाज़ी - अंत्याक्षरी; पद्यपाठ-प्रतियोगिता।

**बैताल** - पु० [हिं] वेताल; स्तुतिपाठक; भाट।

**बैतुलख़ला** - पु० [अ] शौचालय।

**बैतुलमाल** - पु० [अ] सार्वजनिक कोष; राजकोष।

**बैतुल्लाह** - पु० [अ] ख़ुदा का घर।

**बैदई** - स्त्री० [अ] वैद्य का पेशा।

**बैयाँ** - अव्य० [हिं] घुटनों के बल।

**बैर** - पु० [हिं] दुश्मनी; विरोध; मु० —लेना - बदला लेना; —ठानना - शत्रुता करना।

**बैरक़** - पु० [अ] झण्डा; निशान।

**बैरन** - स्त्री० [हिं] शत्रु स्त्री; सौत।

**बैराखी** - स्त्री० [हिं] एक गहना।

**बैरागी** - पु० [हिं] वैष्णव साधुओं का एक भेद।

**बैरी** - वि० [हिं] दुश्मन, विरोधी।

**बैल** - 1. पु० [हिं] कृषि के काम आनेवाला गो-जाति का नर; मूर्ख; यौ०—गाड़ी - बैल द्वारा खींची जानेवाली गाड़ी; 2. वि० [सं] बिल में रहने वाला; बिल में रहनेवाले जन्तुओं से संबंधित।

**बैष्क** - पु० [सं] जाल में फँसे हुए या शिकारी जन्तुओं के मारे हुए जानवर का मांस।

**बैस** - 1. स्त्री० [हिं] जवानी; उम्र; 2. पु० वैश्य; मु० —चढ़ना - जवानी आना।

**बैसर** - पु० [हिं] जुलाहों का एक औजार, कंघी।

**बैसाख** - पु० [हिं] चैत के बाद पड़नेवाला महीना, वैशाख।

**बैसाखी** - स्त्री० [हिं] लंगड़ों के चलने की आधाररूपी लकड़ी।

**बोंक** - पु० [हिं] किवाड़ में चूल की जगह लगाये जानेवाला लोहे का कीला।

**बोंगना** - पु० [हिं] एक बर्तन; बहुगुना।

**बोंड़ा** - पु० [हिं] बारूद में आग लगाने की रस्सी।

**बोआई** - स्त्री० [हिं] बोने का काम या उसकी मज़दूरी।

**बोक, बोकरा** - पु० [हिं] बकरा ।
**बोक्काण** - पु० [सं] तोबड़ा ।
**बोगुमा** - पु० [हिं] घोड़ों की एक बीमारी ।
**बोज** - पु० [हिं] घोड़ों की एक क़िस्म ।
**बोजा** - स्त्री० [हिं] चावल की शराब ।
**बोझ** - पु० [हिं] भार, भारी लगनेवाली चीज़; गठरी; खेप; भारी लगनेवाला काम; ज़िम्मेदारी ।
**बोझना** - स० [हिं] लादना; बोझ रखना ।
**बोझल, बोझिल** - वि० [हिं] भारी, वज़नदार ।
**बोटा** - पु० [हिं] लकड़ी का कुंदा; टुकड़ा ।
**बोटी** - स्त्री० [हिं] मांस का छोटा टुकड़ा; मु० —बोटी काटना - शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े कर देना; —बोटी फड़कना - अंग-अंग फड़कना ।
**बोड़ना** - स० [हिं] डुबाना ।
**बोड़ा** - पु० [हिं] अजगर; तरकारी बनाने के काम आनेवाली एक पतली, लंबी फली ।
**बोड़ी** - स्त्री० [हिं] दमड़ी; बहुत ही छोटी रक़म; कौड़ी ।
**बोतल** - स्त्री० [हिं] बड़ी शीशी; **यौ०** —वासिनी - शराब ।
**बोता** - पु० [हिं] सवारी के काम न आनेवाला ऊँट का बच्चा ।
**बोदा** - वि० [हिं] गावदी; दब्बू; सुस्त; **यौ०** —पन - मोटी अक़्ल का होना; दब्बूपन ।
**बोद्धव्य** - वि० [सं] जानने, ध्यान देने योग्य; जागृत करने योग्य ।
**बोद्धा** - पु० [सं] जानने, समझनेवाला; नैयायिक ।
**बोध** - पु० [सं] ज्ञान; जानकारी; सांत्वना; **यौ०** —कर - जगानेवाला; स्तुतिपाठक; —गम्य - समझ में आने योग्य, सुगम ।
**बोधक** - पु० [सं] सूचक; जतानेवाला; गुप्तचर ।
**बोधन** - पु० [सं] जताना; जगाना; उद्दीपन; विकसित करना ।
**बोधनी** - स्त्री० [सं] ज्ञान; प्रबोधिनी एकादशी; पीपल ।
**बोधनीय** - वि० [सं] जताने या जगाने योग्य ।
**बोधयिता** - पु० [सं] जगानेवाला; शिक्षक ।
**बोधि** - स्त्री० [सं] समाधि का एक भेद; पीपल का पेड़; यौ०—वृक्ष - गया में स्थित पीपल का पेड़ जिसके नीचे महात्मा गौतम को बोधि (ज्ञान) की प्राप्ति हुई ।
**बोधित** - वि० [सं] जिसे बोध कराया गया हो ।
**बोध्य** - वि० [सं] जानने या जताने योग्य ।
**बोना** - स० [हिं] बीज ज़मीन में डालना; बिखेरना ।
**बोनी** - स्त्री० [हिं] बोने की क्रिया; बोने का मौसम ।
**बोबा** - पु० [हिं] स्तन; गठरी; घर की चीज़-वस्तु ।
**बोर** - 1. स्त्री [हिं] बोरने या डुबाने की क्रिया; 2. पु० स्त्रियों के सिर पर पहनाया जानेवाला चाँदी या सोने का गोखरू ।
**बोरका** - पु० [हिं] दवात ।
**बोरना** - स० [हिं] डुबाना; डुबाकर तर करना; रंगना; मिलावट करना; नाश करना ।
**बोरसी** - स्त्री० [हिं] अंगीठी ।
**बोरा** - पु० [हिं] टाट का बना बड़ा थैला ।
**बोरिया** - 1. स्त्री० [हिं] छोटा बोरा; 2. पु० [फ़ा] खजूर के पत्तों की चटाई; **यौ०** —बाफ़ - चटाई बनानेवाला; **मु०** —बँधना उठाना, समेटना - चल देना; रास्ता लेना ।

**बोरी** - स्त्री० [हिं] छोटा बोरा।

**बोरो** - पु० [हिं] एक तरह का धान।

**बोल** - पु० [हिं] वचन ; शब्द ; गाने योग्य गीत का एक पद ; किसी बाजे की ध्वनि ; संख्या ; प्रतिज्ञा ; ताना ; यौ० —चाल - बातचीत ; साधारण व्यवहार की भाषा ; मु० —बाला होना - मान-प्रतिष्ठा अधिक होना ; —मारना - व्यंग्य करना।

**बोलता** - 1. वि० [हिं] वाचाल ; सजीव ; सप्राण ; 2. पु० आत्मा ; प्राण।

**बोलती** - 1. वि० [हिं] बोलती हुई ; 2. स्त्री० बोलने की शक्ति ; मु० —बंद होना - लज्जा या दुख के अतिरेक से मुँह से बोल न निकलना।

**बोलना** - 1. अ० [हिं] मुँह से आवाज़ निकालना ; शब्द करना (बाजे, पेट आदि का) ; चटखना ; रोक-टोक करना ; भाषण करना ; 2. स० कहना ; आज्ञा देना ; जवाब देना ; पुकारना ; जानना ; छेड़-छाड़ करना।

**बोली** - स्त्री० [हिं] वचन ; भाषा ; बोलचाल ; ख़रीददार की ओर से लगाया गया चीज़ का दाम ; व्यंग्य ; पशु-पक्षियों की आवाज़ ; यौ०—ठोली - व्यंग्य, कटाक्ष ; —दार - वह आसामी जिसे खेत बिना लिखा-पढ़ी के दिया गया हो ; मु० —बोलना - व्यंग्य करना।

**बोलक** - पु० [सं] वह जो बहुत बोलता हो।

**बोवना** - सं० [हिं] बोना।

**बोह** - स्त्री० [हिं] डुबकी।

**बोहनी** - स्त्री० [हिं] पहली बिक्री।

**बोहित** - पु० [हिं] नाव, जहाज़।

**बौंड़** - स्त्री० [हिं] लंबी टहनी ; लता।

**बौंड़ना** - अ० [हिं] टहनी फेंकना ; दूर तक फैलना ; आगे बढ़ना ; लिपटना।

**बौंड़ी** - स्त्री० [हिं] कच्चा, छोटा फल ; ढोंढी ; फली ; दमड़ी।

**बौआना** - अ० [हिं] सपने में प्रलाप करना।

**बौखल** - वि० [हिं] बदहवास ; विक्षिप्त।

**बौखलाना** - अ० [हिं] होश-हवास में न रहना ; क्रोध से पागल हो जाना।

**बौखलाहट** - स्त्री० [हिं] बदहवासी ; विक्षिप्तता ; क्रोधावेश।

**बौखा** - स्त्री० [हिं] हवा का तेज़ झोका।

**बौछार** - स्त्री० [हिं] हवा के झोके से तिरछी होकर गिरनेवाली बूँदें ; वर्षा ; भरमार।

**बौड़ना** - अ० [हिं] मतवाला होना।

**बौड़म** - पु० [हिं] पागल, सनकी।

**बौड़हा** - वि० [हिं] पागल, बौड़म।

**बौना** - पु० [हिं] बहुत छोटे या ठिंगने क़द का आदमी, वामन।

**बौर** - पु० [हिं] आम की मंजरी, मौर।

**बौरना** - अ० [हिं] आम में बौर लगना ; आम का फूलना।

**बौरा** - वि० [हिं] पागल ; भोला-भाला ; गूंगा।

**बौराना** - 1. अ० [हिं] पागल हो जाना ; इठलाना ; 2. स० उन्मत्त करना ; बहकाना।

**बौरी** - वि०, स्त्री० [हिं] बावली, पगली।

**बौहर** - स्त्री० [हिं] बहू ; दुलहिन।

**ब्यंग** - पु० [हिं] चुटकी ; गूढार्थ।

**ब्यजन** - पु० [हिं] पंखा।

**ब्यलीक** - 1. वि० [हिं] अप्रिय ; विलक्षण ; 2. पु० छल ; अपराध।

**ब्यवहरिया** - पु० [हिं] महाजन, लेन-देन करनेवाला।

**ब्याज** - पु० [हिं] सूद।

**ब्याजू** - वि० [हिं] सूद पर दिया हुआ।

**ब्याना** - स० [हिं] जनना ; बच्चा देना।

**ब्यापना** - 1. अ० [हिं] फैलना ; 2. स० पकड़ना।

**ब्यार, ब्यारि** - स्त्री० [हिं] हवा।

**ब्याल** - पु० [हिं] साँप ; हाथी ; व्याघ्र ।
**ब्याह** - पु० [हिं] विवाह, स्त्री-पुरुष में विधिवत् पति-पत्नी-संबंध की स्थापना ।
**ब्योंत** - स्त्री० [हिं] काट-छाँट ; व्यवस्था ; उपाय ; ढंग ।
**ब्योंतना** - स० [हिं] पोशाक बनाने के लिए कपड़े को काटना ।
**ब्योपार** - पु० [हिं] व्यापार ।
**ब्योरना** - स० [हिं] सुलझाना ।
**ब्यौरा** - पु० [हिं] विवरण ।
**ब्रंद** - पु० [हिं] वृन्द, समूह ।
**ब्रजना** - अ० [हिं] जाना ।
**ब्रह्म** - पु० [सं] सच्चिदानंदस्वरूप ; जगत् का मूलतत्त्व ; हिरण्यगर्भ ; वेद ; सत्य ; तत्त्व ; प्रणव ; ब्रह्मा ; ब्राह्मण ; तपस्या ; ब्रह्मचर्य ; यौ० —कर्म - ब्राह्मण के कर्तव्य कर्म ; वेदविहित कर्म ; —कल्प - ब्रह्मा की आयु ; ब्रह्मा के तुल्य ; —काण्ड - वेद का ज्ञानकाण्ड ; —काष्ठ - शहतूत का पेड़ ; —कूर्च - रजस्वला के स्पर्श आदि के प्रायश्चित्त में किया जानेवाला एक व्रत ; —कोश - संपूर्ण वेद ; —क्षत्र - ब्राह्मण और क्षत्रिय से उत्पन्न एक संकर जाति ; —गति - मोक्ष ; —गाँठ - जनेऊ की मुख्य गाँठ ; —घोष - वेदपाठ ; वेद ; —चक्र - संसारचक्र ; —चर्य - अष्टविध मैथुन से बचने का व्रत ; वीर्यरक्षा ; ब्रह्म के साक्षात्कार की साधना ; —जिज्ञासा - ब्रह्म को जानने की इच्छा ; —ज्ञान - परम तत्त्व का ज्ञान ; —तत्त्व - ब्रह्म का सच्चा ज्ञान ; —तेज - ब्रह्म का तेज ; ब्राह्मण का तेज ; ब्रह्मचर्य या ब्रह्मज्ञान का तेज ; —दाता - वेदाध्यापक ; —दान - वेद का पढ़ाना ; —दाय - समावृत्त ब्राह्मण को दिया जानेवाला धन ; —दिन - ब्रह्मा का दिन, सौ चतुर्युगी ; —देय - ब्राह्मण को दान की हुई चीज़ ; —देया - ब्राह्म विवाह में दी जानेवाली (कन्या) ; —द्रव - गंगाजल ; —द्रुम - पलाश ; —द्वार - ब्रह्मरंध्र ; —नाभ - विष्णु ; —निर्वाण - परमात्मा में लय होना, मोक्ष ; —निष्ठ - ब्रह्मचिन्तन में डूबा रहनेवाला ; —पद - ब्रह्मत्व ; मुक्ति ; ब्राह्मण का पद ; —पवित्र - कुश, दर्भ ; —पारायण - संपूर्ण वेदों का अध्ययन ; संपूर्ण वेद ; —पिशाच - ब्रह्मराक्षस ; —पुर - ब्रह्मलोक ; हृदय ; शरीर; —बंधु - नाम मात्र का ब्राह्मण, ब्राह्मणोचित कर्म न कर निन्द्य कर्म करनेवाला ब्राह्मण ; —बल - तपस्या आदि से प्राप्त शक्ति ; —भाग - ब्रह्मा को मिलनेवाला यज्ञ-द्रव्य का भाग ; —भोज - ब्राह्मण-भोजन ; —मीमांसा - वेदान्तदर्शन ; —मुहूर्त - ब्राह्म मुहूर्त ; —यज्ञ, याग - वेद पढ़ना-पढ़ाना ; —योग - ब्रह्मसाक्षात्कार की साधनाभूत समाधि ; —रंध्र - मस्तक के मध्य में माना जानेवाला एक छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होना माना जाता है; —राक्षस - प्रेतयोनि प्राप्त करनेवाला ब्राह्मण ; —रेखा, लेखा - जीव के मस्तक पर ब्रह्मा द्वारा लिखित भाग्यलेख ; —लेख - भाग्यलेख ; —लोक - ब्रह्मा का लोक ; —लौकिक - ब्रह्मलोक में रहनेवाला ; —वर्चस - ब्रह्मतेज ; वेदाध्ययन या ब्रह्मचर्य से उत्पन्न तेज ; —वाद - वेदपाठ ; वेदान्त ; —वादिनी - गायत्री ; —विद्या - अध्यात्मविद्या ; दुर्गा ; —वृक्ष - पलाश ; गूलर ; —वृत्ति - ब्राह्मणवृत्ति ; अन्तःकरण की ब्रह्माकार वृत्ति ; —वेत्ता - ब्रह्मज्ञानी ; —शासन

वेद का अनुशासन; —सत्र - वेद पढ़ना-पढ़ाना; —सायुज्य - ब्रह्म में पूर्ण तादात्म्य, एकरूपता; —सूत्र - जनेऊ; व्यासकृत वेदान्तसूत्र; —स्व - ब्राह्मण का धन।

**ब्रह्मण्य** - 1. वि० [सं] ब्रह्मसंबन्धी; ब्राह्मणनिष्ठ; धार्मिक; 2. पु० ब्रह्म-तेज; नारायण; शहतूत; मूँज; ताड़।

**ब्रह्मर्षि** - पु० [सं] मंत्रद्रष्टा ऋषि; ब्राह्मण ऋषि।

**ब्रह्माण्ड** - पु० [सं] विश्वगोलक; संपूर्ण विश्व; खोपड़ी।

**ब्रह्मा** - पु० [सं] चतुरानन, विधाता।

**ब्रह्माक्षर** - पु० [सं] प्रणव, ओंकार, ॐ।

**ब्रह्मानंद** - पु० [सं] ब्रह्म के स्वरूप के साक्षात्कार का आनन्द।

**ब्रह्मार्पण** - पु० [सं] परमात्मा को सर्व कर्म-फल का समर्पण।

**ब्रह्मावर्त** - पु० [सं] सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का देश।

**ब्रह्मास्त्र** - पु० [सं] ब्रह्मशक्ति से परिचालित अमोघ माना जानेवाला एक अस्त्र।

**ब्रह्मोपदेश** - पु० [सं] ब्रह्मज्ञान की शिक्षा।

**ब्राह्म** - 1. वि० [सं] ब्रह्मसंबन्धी; ब्रह्मा-संबन्धी; ब्राह्मणसंबन्धी; वैदिक; 2. पु० आठ प्रकार के विवाहों में से एक, कन्यादान विवाह; हथेली का अंगुष्ठमूल के नीचे का भाग; यौ०—अहोरात्र - ब्रह्मा का दिन और रात; —मुहूर्त - रात के पिछले पहर की अन्तिम दो घड़ियाँ।

**ब्राह्मण** - पु० [सं] हिन्दू धर्म के अनुसार चार वर्णों में से पहला; पुरोहित; वेद का मंत्र या संहिता से भिन्न विभाग; अग्नि।

**ब्राह्मणत्व, ब्राह्मण्य** - पु० [सं] ब्राह्मणपन या ब्राह्मण का पद; धर्म।

**ब्राह्मी** - स्त्री० [सं] ब्रह्मा की शक्ति; ऋषभ-देव की पुत्री; सरस्वती; दुर्गा; रोहिणी नक्षत्र; ब्राह्म विधि से विवाहिता स्त्री; देवनागरी और अन्य आधुनिक भारतीय लिपियों की जननी एक प्राचीन लिपि।

**ब्रीड़ना** - अ० [हिं] लज्जित होना।

**ब्रुव, ब्रुवाण** - वि० [सं] अपने आप होने का दावा करनेवाला; अपने आपको कहनेवाला।

## भ

**भंकार** - पु० [हिं] भीषण शब्द; भन-भनाहट।

**भंकारी** - स्त्री० [सं] डाँस; भुनगा।

**भंक्ता** - पु० [सं] तोड़ने या भंग करनेवाला।

**भंग** - 1. पु० [सं] टूटना; खंड; ध्वंस, नाश; पराजय; संकोच; अस्वीकार; छल; भय; लकवा; 2. स्त्री० [हिं] भाँग; यौ०—घुटना - भाँग घोटने का सोटा; —फ़रोश - भाँग बेचनेवाला।

**भंगड़** - वि० [हिं] बहुत भाँग पीनेवाला, भंगेड़ी; यौ०—ख़ाना - भाँग छानने का स्थान।

**भंगना** - 1. अ० [हिं] टूटना; पराजित होना; 2. स० तोड़ना; पराजित करना।

**भँगरा** - पु० [हिं] बिछाने या बोरा बनाने के काम में आनेवाला भाँग के रेशे से बना हुआ मोटा कपड़ा, भँगेरा; भँगरैया।

**भँगरैया** - स्त्री० [हिं] रसायन के काम में आनेवाली एक बूटी, भँगरा; भृंगराज।

**भंगा** - स्त्री० [सं] भाँग; यौ०—कट - भाँग का पराग।

**भंगार** - स्त्री० [हिं] कूड़ा-करकट, कतवार।

**भंगि, भंगी** - स्त्री० [सं] कुटिलता ; लहर ; विच्छेद ; ढंग ; वेषविन्यास ; छल ; व्यंग्य ; विनय ।

**भंगिमा** - स्त्री० [सं] वक्रता, भंगि ।

**भंगी** - 1. पु० [हिं] मैले या कूड़ा-करकट की सफ़ाई करनेवाली एक जाति ; 2. वि० भाँग छाननेवाला ।

**भंगुर** - 1. वि० [सं] नाशवान ; कुटिल ; छली ; 2. पु० नदी का मोड़ ।

**भँगेड़ी** - वि० [हिं] बहुत भाँग पीनेवाला ।

**भँगेरा** - पु० [हिं] भाँग के रेशे का बना हुआ कपड़ा ।

**भंजक** - वि०, पु० [सं] भंग करनेवाला, तोड़नेवाला ।

**भंजन** - 1. पु० [सं] तोड़ना ; ध्वंस ; 2. वि० भंग करनेवाला ; पीड़ा देनेवाला ।

**भंजना** - 1. स्त्री० [सं] बिखरना ; पीड़ा ; बाधा डालना ; 2. स० तोड़ना (भँजना); 3. अ० भँजाया जाना ; भाँजा जाना ; बंटा जाना ।

**भंजाई** - स्त्री [हिं] नोट आदि भुनाने के लिए दी जानेवाली रक़म ।

**भंजाना** - स० [हिं] तुड़वाना ; भुनाना ।

**भंटा** - पु० [हिं] बैगन ।

**भंड** - 1. पु० [सं] भाँड़, अश्लील बातें बकनेवाला ; पात्र ; 2. वि० पाखंडी ; **यौ०**—फोड़ - मिट्टी के बर्तनों को पटक-कर तोड़ देना ; भंडाफोड़ ;—हासिनी - वेश्या ।

**भंडताल, भंडतिल्ला** - पु० [हिं] नाच के साथ होनेवाला एक तरह का गाना ।

**भंडन** - पु० [सं] कवच ; युद्ध ; हानि ।

**भंडरिया** - 1. स्त्री० [हिं] दीवार में बनी हुई छोटी अलमारी ; 2. वि० पाखंडी ; धूर्त ; **यौ०**—पन - धूर्तता ।

**भंडा** - पु० [हिं] बर्तन ; रहस्य ; **यौ०**—फोड़ - छिपी बात का प्रगट हो जाना ; **मु०**—फूटना - भेद खुलना ।

**भंडाना** - स० [हिं] चीज़ों को तोड़ना-फोड़ना ; उछल-कूद मचाना ।

**भंडार** - पु० [हिं] ख़ज़ाना ; अन्न आदि रखने का कोठा ; पाकशाला ; पेट ; अग्निकोण ।

**भंडारा** - पु० [हिं] साधुओं का भोज ; पेट ; भंडार ; समूह ; **मु०**—खुल जाना - पेट फटकर आँतों का बाहर निकल आना ।

**भंडारी** - 1. पु० [हिं] ख़ज़ाँची ; 2. स्त्री० दीवार में बनी अलमारी ; छोटी कोठरी ।

**भंडिल** - पु० [सं] भाग्य ; कुशल ; संदेश-वाहक ; शिल्पी ; सिरिस का पेड़ ।

**भँडिहा** - पु० [हिं] चोर ।

**भंडीर** - पु० [सं] चौलाई ; सिरिस का पेड़ ; वटवृक्ष ।

**भँडौआ** - पु० [हिं] हास्य रस की भद्दी कविता ; भाँड़ों के गाने का गीत ।

**भंभ** - पु० [सं] चूल्हे का मुँह ; धुआँ ; मक्षिका ।

**भँभरना** - अ० [हिं] डरना ।

**भंभा** - 1. स्त्री ० [सं] डुग्गी ; 2. पु० बिल ; छेद ।

**भँभाना** - पु० [हिं] गाय, बैल आदि का ज़ोर से बोलना, रँभाना ।

**भँभीरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह का फतिंगा ।

**भँभेरि** - स्त्री० [हिं] भय, डर ।

**भँमर** - पु० [हिं] बड़ी मधुमक्खी ; ततैया ।

**भँवना** - अ० [हिं] घूमना ; चक्कर लगाना ।

**भँवर** - पु० [हिं] भ्रमर ; जलावर्त ; गड्ढा ; **यौ०** —जाल - सांसारिक झंझट ;—भीख - मधुकरी ; **मु०** —में पड़ना - चक्कर या बखेड़े में पड़ना ; घबड़ा जाना ।

**भँवरा** - पु० [हिं] भ्रमर ; लट्टू ।

**भँवरी** - स्त्री० [हिं] जल का चक्कर; सिर, दाढ़ी तथा पशुओं की पीठ आदि पर बालों का एक केन्द्र पर घुमाव; परिक्रमा; घूम-घूमकर सौदा बेचना।

**भँवारा** - वि० [हिं] घूमनेवाला; भ्रमणशील।

**भ** - पु० [सं] नक्षत्र; ग्रह; शुक्राचार्य; राशि; शुक्र; पहाड़; भ्रांति; भ्रमर; यौ० —कक्षा - नक्षत्रों का गतिमार्ग; —कूट - राशियों का समूह जिससे विवाह की गणना में वर-कन्या का शुभाशुभ जाना जाता है; —गोल - नक्षत्रों का गतिमार्ग; —चक्र - राशिचक्र; नक्षत्रचक्र; —पंजर - आकाश।

**भइया** - पु० [हिं] भाई; बड़े भाई या बराबरवाले का संबोधन; यौ० —जी - नौकर मालिक के सामने उसके बेटे या नवयुवक मालिक को इस शब्द से संबोधित करते हैं।

**भकभक** - स्त्री० [अनु] रह-रहकर होनेवाली चमक; रह-रहकर वेग से निकलनेवाले धुएँ का शब्द।

**भकभकाना** - अ० [अनु] भक-भक शब्द करके जलना; रह-रहकर चमकना।

**भकराँध** - स्त्री० [हिं] अनाज के सड़ने की गंध।

**भकसना** - अ० [हिं] खाद्य पदार्थ का बहुत देर तक पड़े रहने के कारण खट्टा और बदबूदार हो जाना।

**भकाऊँ** - पु० [हिं] डरावनी चीज़; हौआ।

**भकुआ** - वि० [हिं] मूढ़।

**भकुड़ा** - पु० [हिं] तोप में बत्ती भरने का गज़।

**भकोसना** - स० [हिं] जल्दी-जल्दी खाना; ठूँसना।

**भक्त** - 1. वि० [सं] अनुरागी; विभाजित; भक्तियुक्त; चाहा हुआ; पकाया हुआ; पूजित; 2. पु० उपासक; भोजन; भाग; भात, अन्न; यौ० —पात्र - भात की थाली; —कार - रसोइया; —दाता, दायी - भरण-पोषण करनेवाला; —मंड, मंडक - भात का माँड; —वत्सल - भक्त को प्यार करनेवाला; —शाला - भोजनशाला।

**भक्ति** - स्त्री० [सं] आराधना; ईश्वर या पूज्य व्यक्ति के प्रति अति अनुराग; श्रद्धा; विभाग; यौ० —गम्य - सेवा से प्राप्य; —पूर्वक - भक्तिसहित; —प्रवण - भक्ति में लीन; —भाजन - श्रद्धेय; —मार्ग - मोक्ष की प्राप्ति के तीन (ज्ञान, कर्म, भक्ति) मार्गों में से एक; —योग - भक्ति के द्वारा भगवान को पाने की साधना; —रस - ईश्वर के प्रति उत्कट अनुराग; —मान - भक्तियुक्त।

**भक्ष** - पु० [सं] भोजन; भक्षण।

**भक्षक** - 1. वि० [सं] खानेवाला; पेटू; 2. पु० आहार।

**भक्षण** - 1. पु० [सं] खाना; दाँतों से काटकर खाना; 2. वि० खानेवाला।

**भक्षणीय** - वि० [सं] भक्षण करने योग्य।

**भक्षित** - 1. वि० [सं] खाया हुआ; 2. पु० आहार; यौ० —शेष - जूठन।

**भक्ष्य** - 1. वि० [सं] खाने योग्य; 2. पु० आहार; यौ० —वस्तु - खाने की चीज़।

**भक्ष्याभक्ष्य** - वि० [सं] खाद्य और अखाद्य (पदार्थ)।

**भखना** - स० [हिं] खाना, भक्षण करना।

**भगंदर** - पु० [सं] गुदावर्त के किनारे होनेवाला एक फोड़ा जिसके फूटने पर नासूर हो जाता है।

**भग** - पु० [सं] सूर्य ; चन्द्रमा ; ऐश्वर्य आदि छः विभूतियाँ ; सौभाग्य ; माहात्म्य ; इच्छा ; कांति ; मोक्ष ; योनि ; गुदा और अंडकोश के बीच का स्थान ; धन ।

**भगई** - स्त्री० [हिं] लंगोटी ।

**भगत** - 1. वि० [हिं] भक्त ; निरामिष-भोजी ; 2. पु० वैष्णव साधु ; राजपूताने की एक जाति ; होली में बनाया जानेवाला एक स्वाँग ।

**भगदड़, भगदर** - स्त्री० [हिं] बहुत-से लोगो का एक साथ भागना ।

**भगना** - 1. पु० [हिं] भानजा ; 2. अ० भागना ।

**भगरना** - अ० [हिं] खत्ते में रखे हुए अनाज का गर्मी से सड़ने लगना ।

**भगल** - पु० [हिं] धोखेबाज़ी ; बाज़ीगरी ।

**भगली** - वि० [हिं] छली ; बाज़ीगर ।

**भगवती** - स्त्री० [सं] दुर्गा ; लक्ष्मी ; देवी ; सम्मान्य स्त्री ।

**भगवद्भक्त** - पु० [सं] भगवान का भक्त ; वैष्णव ।

**भगवा** - पु० [हिं] एक रंग (काषाय) ; इस रंग में रंगा हुआ वस्त्र ।

**भगवान** - 1. पु० [सं] परमेश्वर ; विष्णु ; शिव ; जिन ; बुद्ध ; 2. वि० पूज्य ; ऐश्वर्यादि षड् (ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य) भगयुक्त ।

**भगांकुर** - पु० [सं] बवासीर ।

**भगाड़** - पु० [हिं] वर्षा के कारण ज़मीन धँसने से हो जानेवाला गड्ढा ।

**भगाना** - 1. स० [हिं] खदेड़ना ; दुत-कारना ; 2. अ० भागना ।

**भगाल** - पु० [सं] मनुष्य की खोपड़ी ।

**भगिनी** - स्त्री० [सं] बहिन ; भाग्यवती स्त्री ; यौ० —पति - बहनोई ; —सुत - भाँजा ।

**भगिनीय** - पु० [सं] भाँजा ।

**भगेड़ू** }
**भगोड़ा** } - वि० [हिं] भागा हुआ ; डरपोक ।

**भगोहाँ** - वि० [हिं] भगोड़ा ; गेरुआ ।

**भग्गू** - वि० [हिं] भगोड़ा ; डरपोक ।

**भग्न** - वि० [सं] खंडित ; नष्ट ; रोका हुआ ; हराया हुआ ; हताश ; यौ० — चित्त - निराश ; —चेष्ट - पराजित होने पर कामनारहित होनेवाला ; —दर्प - जिसका घमंड तोड़ दिया गया हो ; —मना - हतोत्साह ; —मनोरथ - विफल-मनोरथ, नाकाम ; —मान - तिरस्कृत ; —श्री - गतसौन्दर्य ; —संधिक - मक्खन निकाला हुआ दूध ।

**भग्नावशेष** - पु० [सं] खंडहर ।

**भग्नोत्साह** - वि० [सं] जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो ।

**भचक** - स्त्री० [हिं] भचकने की क्रिया ।

**भचकना** - अ० [हिं] लँगड़ाते हुए चलना ।

**भजक** - पु० [सं] भजन-भक्ति करनेवाला ; विभाग करनेवाला ।

**भजन** - पु० [सं] आराधना ; हरिस्मरण ; स्तोत्र ; विभाजन ; यौ० —पूजन - पूजा-उपासना ।

**भजना** - 1. स० [हिं] सेवा या भक्ति करना ; उपास्य देवता का स्मरण करना ; जपना ; 2. अ० भागना ; पहुँचना ।

**भजनी** - वि० [हिं] भजन गानेवाला ।

**भजनीक** - पु० [हिं] भजन गाकर उपदेश करनेवाला ।

**भजियाउर** - स्त्री० [हिं] घी, दही आदि के साथ पकाया हुआ चावल ।

**भट** - पु० [सं] योद्धा ; सैनिक ; दास ; यौ० —पेटक - सेना की टुकड़ी ; —भेरा - मुठभेड़ ; टक्कर ; अचानक सामना होना ।

**भटई** - स्त्री० [हिं] झूठी प्रशंसा ; भाटपन ।

**भटकना** - अ० [हिं] रास्ता भूलना; व्यर्थ घूमना; तलाश में फिरना; भ्रम में पड़ना; चूक जाना।

**भटका** - पु० [हिं] व्यर्थ घूमने की क्रिया; चक्कर।

**भटकाना** - स० [हिं] ग़लत रास्ता बताना; बहकाना।

**भटकैया** - वि० [हिं] भटकनेवाला।

**भटा** - पु० [हिं] भंटा, बैगन।

**भटू** - स्त्री० [हिं] सखी।

**भट्ट** - पु० [सं] भाट; पंडित; स्वामी।

**भट्टाचार्य** - पु० [सं] दर्शनशास्त्र का पंडित; सम्मानित अध्यापक।

**भट्टार** - वि० [सं] पूज्य, माननीय।

**भट्टारक** - 1. वि० [सं] पूज्य; 2. पु० राजा; मुनि; तपस्वी; पंडित; सूर्य; देवता।

**भट्टारिका** - स्त्री० [सं] सम्मान्य स्त्री; देवी।

**भट्टिनी** - स्त्री० [सं] ब्राह्मणी; सम्मान्य स्त्री; वह रानी जिसका अभिषेक न हुआ हो।

**भट्ठा** - पु० [हिं] बड़ी भट्ठी; ईंटे आदि पकाने का पजावा; बड़ा चूल्हा।

**भट्ठी** - स्त्री० [हिं] ख़ास कामों के लिए बना हुआ बड़ा चूल्हा; मद्य बनाने का स्थान; माँद।

**भठियाना** - अ० [हिं] भाटा आना।

**भठियारख़ाना** - पु० [हिं] भठियारों का घर; कमीने या असभ्य लोगों की बैठक; कोलाहलपूर्ण स्थान।

**भठियारपन** - पु० [हिं] भठियारे का पेशा; भठियारों की तरह लड़ना-झगड़ना।

**भठियारा** - पु० [हिं] सराय में यात्रियों के टिकने और उनके खाने-पीने का प्रबंध करनेवाला।

**भठियाल** - पु० [हिं] भाटा।

**भड़** - पु० [सं] एक वर्णसकर जाति (प्राकृत)।

**भड़क** - स्त्री० [हिं] भड़कीलापन, दिखावा; झिझक; यौ० —दार - चमक-दमक-वाला।

**भड़कना** - अ० [हि] जल उठना; क्रुद्ध होना; चौंकना।

**भड़कीला** - वि० [हिं] चमक-दमकवाला; भड़कनेवाला।

**भड़कैल** - वि० [हिं] भड़कनेवाला; चौंकने या बिदकनेवाला।

**भड़भड़** - स्त्री० [अनु] बड़े ढोल या पोली चीज़ आदि की आवाज़; बकवास।

**भड़भड़ाना** - 1. स० [अनु] भड़भड़ आवाज़ पैदा करना; 2. अ० भड़भड़ आवाज़ होना।

**भड़भड़िया** - वि० [हि] बक्की, डींग मारने-वाला।

**भड़भूँजा** - पु० [हिं] भुजवा; दाना भूनने और भाड़ झोंकने का काम करनेवाली एक हिन्दू जाति।

**भड़वा** - पु० [हिं] भड़ुवा।

**भड़ास** - स्त्री० [हिं] दिल में भरी हुई बातें, गुबार।

**भड़िहा** - पु० [हि] चोर।

**भड़िहाई** - स्त्री० [हिं] चोरी।

**भड़ी** - स्त्री० [हिं] बढ़ावा।

**भड़ुआ** - पु० [हिं] रंडियों की दलाली करनेवाला।

**भणना** - स० [हिं] कहना।

**भणित** - 1. वि० [स] कहा हुआ; 2. पु० कथन; वर्णन।

**भतवान** - पु० [हिं] ब्याह के संबन्ध में होनेवाली कच्ची ज्योनार।

**भतीजा** - पु० [हिं] भाई का पुत्र।

**भतीजी** - स्त्री० [हिं] भाई की पुत्री।

**भत्ता** - पु० [हिं] कर्मचारी को दिया जानेवाला सफ़र-ख़र्च या भोजन-ख़र्च; वेतन की बंधी हुई रक़म से मिलनेवाली अतिरिक्त रक़म।

**भदंत** - 1. वि० [सं] पूजित; संन्यस्त; 2. पु० बौद्ध भिक्षु।

**भदई** - 1. वि० [हिं] भादों में होनेवाला; 2. स्त्री० भादों में होनेवाली फ़सल।

**भदेस** - वि० [हिं] भोंड़ा, बेढंगा।

**भद्दा** - वि० [हिं] बेढंगा; अशिष्ट; अयुक्त; **यौ०** —पन - बेढंगापन; अशिष्टता।

**भद्रंकर** - वि० [सं] मंगलकारक, शुभ।

**भद्र** - 1. वि० [सं] साधु; शुभ; श्रेष्ठ; सुंदर; 2. पु० मंगल; सोना; लोहा; शिव; मोथा; उत्तर दिशा का दिग्गज; खंजन; सुमेरु; बैल; देवदारु; दाढ़ी, मूँछ आदि का मुंडन; **यौ०** —काय - सुंदर, भव्य देहवाला; —कारक - मंगलकारक; —काष्ठ - देवदारु; —कुंभ - तीर्थजल से भरा स्वर्णघट; मंगलघट; —गणित - बीजगणित के अंतर्गत गणितविशेष; —घट - लाटरी निकालने का घड़ा; —जन - भला आदमी, शिष्ट जन; —नामा - कठफोड़वा; —निधि - दान के लिए बनाया हुआ ताँबे आदि का घड़ा; —पीठ - सुंदर आसन; राजा या देवता के अभिषेक के उपयुक्त चौकी; —मुख - सुंदर, प्रसन्न चेहरेवाला; —मुखी - चन्द्रमुखी; —यव - इंद्रजौ; —वती - हथिनी; वेश्या; —श्रिय-चंदन।

**भद्रा** - 1. स्त्री० [सं] आकाशगंगा; किसी पक्ष की द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियाँ; ज्योतिषशास्त्र के अनुसार किसी शुभ कार्य के लिए एक निषिद्ध योग; गाय; हल्दी; अपराजिता; पृथ्वी; 2. **वि०** भद्र; **मु०**—लगना - बाधा उपस्थित होना।

**भद्राकृति** - वि० [सं] सुन्दर, भव्य आकृतिवाला।

**भद्राभद्र** - वि० [सं] भला-बुरा।

**भद्रावह** - वि० [सं] मंगलकारक।

**भद्राश्रय** - पु० [सं] चन्दन।

**भद्रासन** - पु० [सं] राजसिंहासन; योग का एक आसन।

**भद्रिका** - स्त्री० [सं] भद्रा तिथि; योगिनी दशा के अन्तर्गत पाँचवीं दशा।

**भद्री** - वि० [सं] भाग्यशाली।

**भद्रैला** - स्त्री० [सं] बड़ी इलायची।

**भनक** - स्त्री० [हिं] धीमी, अस्पष्ट ध्वनि; उड़ती हुई ख़बर।

**भनकना** - स० [हिं] बोलना।

**भनना** - स० [हिं] कहना।

**भनभनाना** - अ० [अनु] भन-भन आवाज़ करना; गुँजार करना।

**भनभनाहट** - स्त्री० [अनु] धीमी आवाज़; गुँजार।

**भबका** - पु० [हिं] अर्क़ या आसव खींचने का नालीदार यंत्र।

**भबकी, भभकी** - स्त्री० [हिं] झूठी धमकी, बंदर-घुड़की।

**भभ्भड़** - स्त्री० [हिं] भीड़-भाड़, धक्कम-धक्का।

**भभक** - स्त्री० [हिं] भड़क उठना; तेज़ बदबू।

**भभकना** - अ० [हिं] ज़ोर से जल उठना, भड़कना; उत्तेजित होना।

**भभरना** - अ० [हिं] डरना, घबराना; भ्रम में पड़ना।

**भभूका** - 1. पु० [हिं] लपट; चिनगारी; 2. वि० अंगारे की तरह प्रज्वलित।

**भभूत** - स्त्री०, पु० [हिं] भस्म, धूनी आदि की राख; मु०—रमाना - वैराग्य धारण करना।
**भयंकर** - 1. वि० [सं] डरावना; 2. पु० छोटा उल्लू; एक बाज़।
**भय** - पु० [सं] डर; ख़तरा; भयानक रस; यौ०—कर - ख़तरनाक; —त्रस्त - बहुत डरा हुआ; —त्राता - भय से छुड़ानेवाला; —दायी - भय उत्पन्न करनेवाला; —दान - भय से दिया जानेवाला दान; —नाशन - भय का नाश करनेवाला; —प्रतिकार - भय का निवारण; —प्रद - डरावना; —प्रदर्शन - भय दिखाना; —भीत - डरा हुआ; —मोचन - भय से छुड़ानेवाला; —विह्वल - जिसकी बुद्धि डर से ठिकाने न हो; —शील - डरपोक; —शून्य - निर्भय; —स्थान - भय का कारण; —हारक, हारी - भय दूर करनेवाला; —हेतु - भय का कारण।
**भयाकुल** - वि० [सं] डर से घबराया हुआ।
**भयाक्रांत** - वि० [सं] भय से अभिभूत।
**भयातुर** - वि० [सं] भयाकुल।
**भयानक** - 1. वि० [सं] डरावना; 2. पु० बाघ; राहु; भय; काव्य के नौ रसों में से एक।
**भयान्वित** - वि० [सं] भयभीत।
**भयार्त** - वि० [सं] डरा हुआ।
**भयावना** - वि० [हिं] डरावना।
**भयावह** - वि० [सं] भयजनक।
**भय्या** - पु० [हिं] भैया।
**भर** - 1. पु० [सं] भार; ढेर; अतिरेक; एक तौल; चोरी; स्तुति; आक्रमण; [हिं] एक अछूत जाति; 2. वि० पूरा; सारा; 3. अव्य० के बल; द्वारा; यौ०— पाई - चुकता हो जाने का भाव; बेबाक़ी की रसीद; —पूर - परिपूर्ण; पूरे तौर से; —पेट - जी भरकर; पेट भरकर; —सक - शक्ति-भर।
**भरण** - 1. पु० [सं] पालन-पोषण; धारण; उत्पादन; वेतन; 2. वि० भरण-पोषण करनेवाला।
**भरणी** - स्त्री० [सं] सत्ताईस नक्षत्रों में से दूसरा; एक लग्न।
**भरत** - पु० [हिं] काँसा; भरी हुई चीज़; [सं] शकुन्तला से उत्पन्न दुष्यन्त का पुत्र जिसके नाम से इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा; ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती; कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न दशरथपुत्र; नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक एक मुनि; नट; जुलाहा; अग्नि; यौ० —ज्ञ - नाट्यशास्त्र का जानकार; —भूमि, वर्ष - भारतवर्ष, हिन्दुस्तान;—वाक्य - नाटक के अंत में आशीर्वाद के रूप में गाया जानेवाला पद्य।
**भरता** - 1. पु० [हिं] चोखा 2. स्त्री० [सं] भारयुक्त होना।
**भरतिया** - पु० [हिं] काँसे के बर्तन बनानेवाला।
**भरती** - स्त्री० [हिं] भराव; भीतर भरी हुई चीज़; पच्चीकारी; प्रवेश।
**भरथ** - पु० [सं] लोकपाल; राजा; अग्नि।
**भरना** - 1. स० [हिं] ख़ाली बरतन आदि में कोई चीज़ डालना; छेद को बंद करना; चुकाना (ऋण); पूर्ति करना; पद पर नियुक्ति करना; सींचना; बरगलाना; शिकायत करना; 2. अ० पूर्ण होना; घाव का पूरा होना (देह)।
**भरनी** - स्त्री० [हिं] करघे की ढरकी; छछूँदर; मोरनी; सर्प का विष उतारने का मंत्र।

**भरभराना** - अ० [हिं] फूलना ; रोमांच होना।

**भरभराहट** - स्त्री० [हिं] सूजन ; घबड़ाहट।

**भरम** - पु० [हिं] भ्रम ; भेद ; साख।

**भरमना** - अ० [हिं] फिरना ; भटकना ; बहकना ; गुमराह होना।

**भरमार** - स्त्री० [हिं] बहुतायत।

**भरराना** - अ० [हिं] एकबारगी गिर पड़ना ; टूट पड़ना।

**भरवाई** - स्त्री० [हिं] भरवाने की क्रिया या मज़दूरी ; बोझ उठाने की टोकरी।

**भरा** - वि० [हिं] पूर्ण ; आबाद ; संपन्न ; पुष्ट ; क्रोध आदि से भरा हुआ ; **यौ०** —पूरा - संपन्न ; बाल-बच्चों से सुखी ; —भरा - आबाद ; मांसल ; भरी जवानी- चढ़ी जवानी।

**भराव** - पु० [हिं] भरने का भाव ; भरती ; कशीदे में पत्तियों आदि का काम।

**भरिया** - 1. वि० [हिं] भरनेवाला ; 2. पु० ढलाई करनेवाला।

**भरी** - स्त्री० [हिं] एक रुपये या दस माशे-भर की तौल।

**भरुआना** - अ० [हिं] भारी होना ; भार अनुभव करना।

**भरुहाना** - 1. अ० [हि] गर्व करना ; 2. स० बहकाना ; बढ़ावा देना।

**भरेठ** - पु० [हिं] दरवाज़े के ऊपर दीवार का बोझ संभालने के लिए दी हुई लकड़ी।

**भरैत** - पु० [हिं] किरायेदार।

**भरैया** - पु० [हिं] भरनेवाला ; पालक।

**भरोसा** - पु० [हिं] विश्वास ; सहारा ; पक्की आशा।

**भर्ता** - पु० [सं] भरण करनेवाला ; स्वामी ; पति ; नायक ; विष्णु ; **यौ०** भर्तृदारक - युवराज ; राजकुमार ; भर्तृदारिका - राजकुमारी।

**भर्तार** - पु० [हिं] भर्ता, पति।

**भर्त्सना** - स्त्री० [सं] निन्दा ; तिरस्कार।

**भर्म** - पु० [सं] भरण-पोषण का ख़र्च, गुज़ारा।

**भर्राना** - अ० [अनु] 'भर्र-भर्र' शब्द निकलना।

**भलपति** - पु० [हिं] भाला धारण करने-वाला।

**भलमनसाहत, भलमनसी** - स्त्री० [हिं] सज्जनता, शराफ़त।

**भला** - 1. वि० [हिं] अच्छा ; सुंदर ; 2. पु० हित ; 3. अव्य० ख़ूब ; **यौ०** —आदमी - शरीफ़ आदमी ; —चंगा - स्वस्थ ; —बुरा - अच्छा और बुरा ; खरी-खोटी।

**भलाई** - स्त्री० [हिं] अच्छाई ; नेकी ; हित।

**भले** - अव्य० [हिं] ख़ूब ; **यौ०** —ही - ऐसा हो तो हुआ करे ; ऐसा हो तो परवाह नहीं।

**भल्ल** - पु० [सं] भाला ; भालू ; शिव।

**भल्लक** - पु० [सं] भालू ; भिलावाँ।

**भवंग, भवंगम** - पु० [हिं] सर्प।

**भवंत** - 1. पु० [सं] वर्तमान काल ; 2. सर्व० आपका।

**भवंती** - स्त्री० [सं] साध्वी स्त्री।

**भवँना** - अ० [हिं] घूमना।

**भवँलिया** - स्त्री० [हिं] एक तरह की पटी हुई नाव।

**भव** - पु० [सं] जन्म ; होना ; संसार ; अग्नि ; शिव ; **यौ०** —केतु - एक पुच्छल तारा ; —चक्र - कर्मानुसार जीवात्मा का भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म धारण करना ; —च्छेद - आवागमन से मुक्ति ; —बंधन - संसारबंधन ; —भंग - संसृति का अन्त ; —भंजन - परमेश्वर ; काल ; —भय - बार-बार जन्म लेने का भय ; —भाव - भौतिक सत्ता से प्रेम ; —भोग - लौकिक सुख का उप-

भोग; —मोचन - भव-बन्धन को काटनेवाला; परमेश्वर; —विलास - माया; लौकिक सुख; —शूल - भौतिक दुख; —समुद्र, सागर, सिंधु - समुद्र-रूपी संसार।

**भवत्** - 1. वि० [सं] वर्तमान; 2. सर्व० आप।

**भवदीय** - वि०, पु० [स] आपका।

**भवदीया** - वि०, स्त्री० [सं] आपकी।

**भवन** - पु० [सं] मकान; क्षेत्र; प्रकृति; अधिष्ठान; होना; उत्पत्ति; जन्मकुंडली।

**भवनी** - स्त्री० [हिं] गृहिणी।

**भवनीय** - वि० [स] होनेवाला।

**भवाँ** - पु० [हिं] फेरा।

**भवांतर** - पु० [सं] पहले या बाद का जन्म।

**भवाँना** - स० [हिं] घुमाना।

**भवानी** - स्त्री० [स] पार्वती।

**भविक** - 1. वि० [सं] मंगलकारी; धार्मिक; 2. पु० मंगल।

**भवितव्य** - वि० [सं] होनहार।

**भवितव्यता** - स्त्री० [सं] होनी, भाग्य।

**भविष्णु** - वि० [स] भावी।

**भविष्य** - 1. पु० [सं] आनेवाला काल; 2. वि० भावी; **यौ०** —काल - अनागत काल; —ज्ञान - होनेवाली बातों की जानकारी।

**भविष्यत्** - 1. वि० [सं] होनेवाला; 2. पु० आनेवाला काल।

**भविष्यद्वक्ता** - पु० [सं] ज्योतिषी; आगे होनेवाली बात पहले बतानेवाला।

**भविष्यद्वाणी** - स्त्री० [सं] भविष्य-कथन।

**भवी** - 1. वि० [सं] जीवित या सत्तायुक्त; 2. पु० जीवधारी; मनुष्य।

**भव्य** - 1. पु० [सं] मोक्षगामी जीव; करेला; 2. वि० विद्यमान; भावी; उपयुक्त; सुंदर; शांत; शुभ; सत्य।

**भव्यता** - स्त्री० [सं] उपयुक्तता; सौन्दर्य।

**भषक** - पु० [सं] कुत्ता।

**भषण** - पु० [सं] भूँकना; कुत्ता।

**भसना** - अ० [हिं] तैरना; डूबना; धँसना।

**भसमा** - पु० [हिं] आटा।

**भसान** - पु० [हिं] पूजा के बाद दुर्गा आदि की प्रतिमा को नदी में प्रवाहित करना।

**भसुँड़** - पु० [हिं] हाथी।

**भसुर** - पु० [हिं] पति का बड़ा भाई, जेठ।

**भसूँड़** - पु० [हिं] हाथी की सूँड़।

**भस्त्रा** - स्त्री० [सं] मशक।

**भस्म** - पु० [सं] राख; चिता की राख; दवा के काम के लिए फूँकी हुई धातु आदि; **यौ०** —कूट - राख का ढेर; —गात्र - कामदेव; —चय, पुंज - भस्म-राशि; —बाण - ज्वर; —राशि - राख का ढेर; —शैय्या, शयन - शिव; —सात् - भस्मीभूत; —स्नान - सारी देह में भस्म मलना।

**भस्मक** - पु० [सं] सोना; चाँदी; एक रोग।

**भस्मावशेष** - 1. वि० [सं] जो राखमात्र रह गया हो; 2. पु० राख के रूप में बचा अंश।

**भस्मित** - वि० [सं] जला या जलाया हुआ।

**भस्मीभूत** - वि० [सं] जो जलकर राख हो गया हो।

**भस्सड़** - वि० [हिं] मोटा; बेडौल।

**भहराना** - अ० [हिं] एकबारगी गिरना; टूट पड़ना।

**भाँग** - स्त्री० [हिं] नशा करनेवाला गाँजे की जाति का एक पौधा; इसकी पत्तियों को पीसकर बनाया हुआ पेय।

**भाँज** - स्त्री० [हिं] भाँजने की क्रिया या भाव; तह; भुनाई।

**भाँजना** - स० [हिं] तह करना ; डोर आदि की कई लड़ों को एक में मिलाकर बटना ; घुमाना ।

**भाँजी** - स्त्री० [हिं] बहकाने या रुष्ट करने-वाली बात ।

**भांड** - पु० [सं] बर्तन ; घी, तेल का कुप्पा ; दूकान का माल ; घोड़े का एक साज ; भांड़ का काम ; एक बाजा ; यौ० —पति - व्यापारी ; —पुट - हज्जाम ; —प्रतिभांडक - विनिमय ; —भरक - पात्र में रखी हुई वस्तुएँ ; [हिं] मसख़रा, महफ़िलों में हँसी-मज़ाक की नक़लें करनेवाला ; निर्लज्ज व्यक्ति, [त] (पांडम्) बर्तन ; घड़ा ; (पंडम्) माल, वस्तु ; स्वर्ण ; बुद्धि [ते] (भांडमु) बर्तन, पात्र ; [क] बर्तन ; गट्ठर ; [म] (भांडम्) गट्ठर ।

**भांडक** - पु० [सं] छोटा पात्र ; व्यापारिक वस्तुएँ ।

**भांडना** - 1. स० [हिं] बिगाड़ना ; बदनाम करते फिरना ; घूम-घूमकर देखना ; 2. अ० भटकना ।

**भांड़ा** - पु० [हिं] बर्तन ; भांडपन ।

**भांडागार** - पु० [सं] भंडार ; गोदाम ; ख़ज़ाना ।

**भांडागारिक** - पु० [सं] भंडारी ; ख़ज़ाँची ।

**भांडार** - पु० [सं] भंडार ।

**भांडारिक, भांडारी** - पु० [सं] भंडारी ; अध्यक्ष ।

**भांत** - 1. वि० [सं] प्रकाशयुक्त ; वज्ररूप, 2. स्त्री० [हिं] भाँति ।

**भाँति** - स्त्री० [हिं] प्रकार ; रंग ; मर्यादा ; यौ०—भाँति के - तरह-तरह के ; रंग-बिरंग के ।

**भाँपना** - स० [हिं] ताड़ना ।

**भाँपू** - वि० [हिं] भाँप जानेवाला, ताड़ जानेवाला ।

**भाँय-भाँय** - पु० [अनु] सन्नाटे में होनेवाली आवाज़ ।

**भाँवना** - स० [हिं] ख़राद पर घुमाना ; गढ़कर सुंदर बनाना ।

**भाँवर** - 1. स्त्री० [हिं] परिक्रमा ; विवाह के समय की जानेवाली अग्नि की परिक्रमा ; 2. पु० भौंरा ।

**भा** - 1. अव्य० [हिं] चाहे ; या ; 2. अ० हुआ ; 3. स्त्री० [स] चमक ; किरण ; कांति ।

**भाइ** - 1. पु० [हिं] भाव ; प्रेम ; विचार ; 2. स्त्री० प्रकार ; चाल-ढाल ।

**भाइप** - पु० [हि] भाई-चारा ।

**भाई** - पु० [हिं] भ्राता ; ज्ञाति-बंधु ; यौ० —चारा - बंधुत्व ; —दूज - भैयादूज ; —बंद - ज्ञातिजन ; —बिरादर - भाई-बंद ।

**भाऊ** - पु० [हिं] भाव ; प्रेम ; स्वभाव ; रूप ; महिमा ; अवस्था ।

**भाकसी** - स्त्री० [हिं] भाड़ ।

**भाक्त** - 1. वि० [सं] आश्रित ; खाने योग्य ; गौण ; 2. पु० चावल ।

**भाखना** - अ० [हिं] कहना ; बोलना ।

**भाखा** - स्त्री० [हिं] भाषा ।

**भाग** - पु० [सं] हिस्सा ; बँटवारा ; चौथाई ; परिधि का तीसवाँ भाग ; यौ० —कल्पना - बँटवारा ; —धान - ख़ज़ाना ; —धेय - भाग्य ; सौभाग्य ; राजा को दिया जानेवाला कर ; —फल - लब्धि ; भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त संख्या ; [हिं] भाग्य ; प्रातःकाल ; ललाट ; पार्श्व ; यौ०—वंत, वान - भाग्यवान, ख़ुशनसीब ; मु०—खुलना, जागना - भाग्योदय होना ; —फूटना - बुरे दिन आना ।

**भागड़** - स्त्री० [हिं] भगदड़ ।

**भागदौड़** - स्त्री० [हिं] दौड़धूप।

**भागना** - अ० [हिं] पलायन करना; चल देना; जान बचाना।

**भागवती** - स्त्री० [हिं] एक तरह की कंठी।

**भागा-भाग** - स्त्री० [हिं] भागने की हलचल।

**भागिक** - वि० [सं] आंशिक।

**भागिनेय** - पु० [सं] भानजा।

**भागी** - वि० [सं] जिसमें भाग या हिस्से हों; हिस्सेदार; शरीक़; अधिकारी।

**भागू** - वि० [हिं] भगोड़ा।

**भाग्य** - 1. वि० [सं] विभाज्य; हिस्से का अधिकारी; 2. पु० अदृष्ट, तक़दीर; सौभाग्य; **यौ०**—क्रम - भाग्य का फेर; —दोष - तक़दीर की ख़राबी; —बल - तक़दीर; —लिपि - अदृष्टरेखा; —वश, वशात् - क़िस्मत से; —वान - ख़ुशक़िस्मत; —विधाता - तक़दीर बनानेवाला; —शाली - भाग्यवान; —हीन - अभागा।

**भाग्याधीन** - वि० [सं] भाग्य पर आश्रित; भाग्य के वश।

**भाग्योदय** - पु० [सं] भाग्य का खुलना।

**भाजक** - पु० [सं] भाग करनेवाला, विभाजक।

**भाजन** - 1. पु० [सं] बर्तन; योग्य अधिकारी; आधार; एक तौल; विभाग करना; 2. वि० शामिल होनेवाला।

**भाजित** - वि० [सं] विभक्त।

**भाजी** - 1. वि० [सं] भाग लेनेवाला; संबद्ध; 2. पु० नौकर; 3. स्त्री० [हिं] तरकारी, शाक।

**भाज्य** - वि० [सं] भाग करने योग्य, विभाज्य।

**भाट** - 1. पु० [हिं] राजाओं आदि की वंशावली का गान करनेवाला, बन्दी; झूठी बड़ाई करनेवाला; 2. स्त्री० नदी के किनारों के बीच की ज़मीन; नदी की धारा।

**भाटा** - पु० [हिं] ज्वार का उलटा; पथरीली ज़मीन।

**भाठ** - स्त्री० [हिं] बाढ़ के कारण नदी के किनारों पर जमी हुई मिट्टी; धारा।

**भाठी** - स्त्री० [हिं] भाटा; शराब बनाने की जगह।

**भाड़** - पु० [हिं] भड़भूँजे की भट्ठी; मु० —झोंकना - तुच्छ काम करना; —में जाय - चूल्हे में जाय; नष्ट हो जाय; —में झोंकना - चूल्हे में डालना; त्यागना।

**भाड़ा** - पु० [हिं] किराया; मु० भाड़े का टट्टू - मज़दूरी पर काम करनेवाला।

**भात** - 1. पु० [हिं] उबाला हुआ चावल; वर के पिता का बरातियो के साथ कन्या के पिता के घर जाकर भोजन करना; 2. वि० [सं] चमकदार; प्रकट होनेवाला; 3. पु० दीप्ति; प्रभात।

**भाति** - स्त्री० [सं] चमक; ज्ञान।

**भाथा** - पु० [हिं] तरकश; पाथेय।

**भाथी** - स्त्री० [हिं] चमड़े की धौंकनी।

**भाद्र** - पु० [सं] भादों का महीना।

**भान** - पु० [हिं] सूर्य; [सं] प्रकाश; दीप्ति; ज्ञान; प्रतीति।

**भानजा** - पु० [हिं] बहिन का पुत्र।

**भानना** - स० [हिं] तोड़ना; काटना; नष्ट करना।

**भानमती** - स्त्री० [हिं] जादूगरनी; मु०—का कुनबा - जहाँ-तहाँ से लिये हुए बेमेल उपादानों से बनी वस्तु; **यौ०**—का पिटारा - बेमेल वस्तुओं का संकलन जहाँ हो।

**भाना** - 1. अ० [हिं] अच्छा लगना; फबना; जान पड़ना; 2. स० खराद पर चढ़ाना; चमकाना।

**भानु** - पु० [सं] सूर्य; प्रभा; किरण; स्वामी; **यौ०**—तनया - यमुना।

**भाप, भाफ** - स्त्री० [हिं] बाष्प; बुखार; ठोस या तरल पदार्थ का अधिक ताप से होनेवाला गैस रूप।

**भाभी** - स्त्री० [हिं] बड़े भाई की स्त्री, भावज।

**भामा** - स्त्री० [सं] क्रोधी स्त्री; स्त्री।

**भामिनी** - स्त्री० [सं] क्रोध करनेवाली स्त्री; सुन्दरी स्त्री।

**भायप** - पु० [हिं] भाईचारा।

**भाया** - वि० [हिं] जो अच्छा लगता हो, प्यारा।

**भार** - 1. पु० [सं] बोझ; ढेर; ज़िम्मेदारी; कठिन कार्य; सँभाल; बहँगी का बोझ; आश्रय; भाड़; 2. वि० कठिन; **यौ०** —क्षम - भारवहन करने में समर्थ; —भूत - बोझरूप; कष्टप्रद; —वाह, वाहक, वाहिक - बोझ ढोनेवाला, मोटिया; —वाहन - लद्दू पशु; गाड़ी; —शंकु - लटकन; —सह - भारी बोझ उठाने में समर्थ; **मु०** किसीका भार उठाना - दायित्व ग्रहण करना; —उतरना - ऋण से मुक्ति मिलना; —देना - बोझ डालना।

**भारत** - पु० [सं] हिन्दुस्तान; महाभारत; नाट्य-शास्त्र; नट; संग्राम; **यौ०** —माता - भारतवासियों की जननीरूप भारतभूमि; — वासी - हिन्दुस्तानी।

**भारती** - स्त्री० [सं] वाणी; सरस्वती; वर्णन-शैली; भारतमाता।

**भारतीय** - 1. वि० [सं] भारतसम्बन्धी; 2. पु० भारतवासी।

**भारना** - सं० [हिं] बोझ लादना।

**भारा** - 1. वि० [हिं] भारी; विशाल; अधिक; असह्य; 2. पु० भाड़ा; घास का गट्ठर।

**भाराक्रान्त** - वि० [सं] बोझ से दबा हुआ।

**भारिक** - 1. वि० [सं] भारी; सूजा हुआ; 2. पु. बोझ ढोनेवाला।

**भारी** - वि० [हिं] कठिन; बड़ा; बहुत ज़्यादा; गहरा; कष्टकर; **यौ०** —पन; गरिष्ठता; —भरकम - बड़े डील-डौल का।

**भार्या** - स्त्री० [सं] विवाहिता स्त्री; **यौ०** —द्रोही - पत्नी के प्रति द्वेष-भाव रखनेवाला; —जित् - स्त्री का गुलाम।

**भाल** - पु० [हिं] भाला; भालू; [सं] ललाट; तेज; अन्धकार; **यौ०** —दर्शन - सिंदूर; शिव; —दर्शी - मालिक के इशारे पर दौड़नेवाला नौकर।

**भालना** - स० [हिं] भली भाँति देखना; तलाश करना।

**भाला** - पु० [हिं] बर्छा, नेजा; **यौ०** —बरदार - भाला धारण करने या चलानेवाला।

**भालि** - स्त्री० [हिं] बर्छी, शूल।

**भाली** - स्त्री० [हिं] भाले की गासी; शूल।

**भालुक, भाल्लूक** - पु० [सं] रीछ, भालू।

**भालू** - पु० [सं] लंबे-लंबे काले बालोंवाला एक वन्य हिंस्र जन्तु।

**भाव** - पु० [सं] उत्पत्ति; सत्ता, होना; चित्त में उत्पन्न होनेवाला विकार; भावना; ख़याल; आशय; प्रेम; भंगी; दशा; हैसियत; स्वभाव; श्रद्धा; भक्ति; जन्म-कुण्डली के विभिन्न स्थान; पदार्थ; आत्मा; द्रव्य, गुण आदि छ पदार्थ (वैशेषिक); निश्चय; व्यवहार; ज्ञानेन्द्रिय; उपदेश; प्रकार; आदर-मान; [हिं] दर; **यौ०** —गम्य - मन से जानने योग्य; —ग्राही - तात्पर्य को समझनेवाला; —ज्ञ - मनोभाव समझनेवाला; —परिग्रह - संग्रह न करते हुए भी संग्रह की इच्छा करना; —प्रधान -

जिसकी भावानुभूति तीव्र हो ; —प्रवण-भावुक ; —प्रवणता - भावुकता ; भाव-प्रधान होना ; —भक्ति - श्रद्धा-भक्ति ; —मृषावाद - मुँह से झूठ न बोलकर मन में झूठी बातें सोचना ; —वाचक - किसी चीज़ का भाव, धर्म, गुण आदि बतानेवाली संज्ञा ; —व्यंजक - भाव-बोधक ; —शुद्धि - नेक-नीयती ; —शून्य - अनासक्त ; —समाहित - भक्त ; —स्थ - भाव में लीन ; —हिंसा - शरीर से हिंसा न कर मन से किसीका अनिष्ट सोचना ; —हीन - भावरहित ।

**भावइ** - अव्य० [हि] जी चाहे तो ।

**भावक** - 1. वि० [सं] उत्पादक ; भावना करनेवाला ; रसज्ञ ; श्रेयस्कर ; 2. पु० [हि] मनोविकार ; 3. अव्य० थोड़ा ।

**भावज** - स्त्री० [हिं] बड़े भाई की स्त्री, भौजाई ।

**भावना** - 1. स्त्री० [सं] चिन्तन ; कल्पना ; ध्यान ; उत्पादन ; अनुसंधान ; स्मरण ; प्रमाण ; यौ० —मय - काल्पनिक ; —मार्ग - आध्यात्मिक अवस्था ; —युक्त - चिन्तित ; 2. अ० [हिं] भाना ।

**भावनि** - स्त्री० [हि] जो कुछ सोचा हो ।

**भावनीय** - वि० [स] चिन्तन के योग्य ; सहनीय ।

**भावान्तर** - पु० [सं] मन की अवस्था दूसरी हो जाना ; अर्थान्तर ।

**भावार्थ** - पु० [सं] मतलब, तात्पर्य ।

**भाविक** - वि० [सं] भावुक ; स्वाभाविक ; मर्मज्ञ ।

**भावित** - वि० [सं] सोचा हुआ ; जाना हुआ ; प्रमाणित ; शोधित ; प्राप्त ; वासित ; व्यक्त किया हुआ ।

**भावितात्मा** - वि० [सं] संत ; ईश्वर के ध्यान में तल्लीन ।

**भाविनी** - स्त्री० [सं] साध्वी स्त्री ; सुंदरी स्त्री ; भावनायुक्त स्त्री ।

**भावी** - 1. स्त्री० [हि] होनी, होनेवाली बात ; 2. वि० [सं] होनहार ; भविष्यत् ; अनुरक्त ; भव्य ।

**भावुक** - 1. वि० [सं] सहृदय ; मंगलयुक्त ; भावी ; 2. पु० [हिं] मंगल ; रसमयी भाषा ; बहनोई ।

**भावुकता** - स्त्री० [सं] भावप्रवणता ।

**भाव्य** - 1. वि० [स] होनेवाला ; भावना करने योग्य ; 2. पु० होनी ।

**भाष** - पु० [हिं] भाषा ; वाणी ।

**भाषक** - पु० [सं] कहने या बोलनेवाला ।

**भाषण** - पु० [सं] बोलना ; व्याख्यान ; यौ० —प्रतियोगिता — विषयविशेष पर बोलने की स्पर्धा ।

**भाषांतर** - पु० [सं] तरजुमा ; यौ०—कार-उलथा करनेवाला, अनुवादक ।

**भाषा** - स्त्री० [सं] भावप्रकाश का साधन ; बोली ; प्रादेशिक भाषा या बोली, परिभाषा ; शैली ; यौ० —ज्ञान - शब्द, शब्दार्थ और व्याकरण का ज्ञान ; —तत्त्व - भाषाविज्ञान ; —बद्ध - भाषा में लिखित ; —विज्ञान, शास्त्र - भाषा की व्युत्पत्ति, रूपपरिवर्तन आदि विषयों पर विचार करनेवाला विज्ञान ।

**भाषित** - 1. वि० [सं] कथित ; 2. पु० कथन ।

**भाषी** - वि० [सं] बोलनेवाला ।

**भाष्य** - 1. पु० [स] भाषा में लिखित कोई ग्रंथ ; सूत्र या मूलग्रन्थ की व्याख्या ; बोलना ; 2. वि० कहने योग्य ; यौ०—कार - भाष्य लिखनेवाला ।

**भास** - पुं० [सं] चमक ; कल्पना ; गोशाला ; मुर्गा ।

**भासक** - पु० [स] चमकानेवाला ।

**भासता** - स्त्री० [सं] लालच।

**भासना** - 1. अ० [हिं] प्रतीत होना; प्रकाशित होना; डूबना; धँसना; 2. स० कहना।

**भासमान** - वि० [सं] जान पड़ता हुआ; दिखायी देता हुआ।

**भासित** - वि० [सं] प्रकाशित।

**भासी** - वि० [सं] चमकनेवाला।

**भासुर** - 1. वि० [सं] चमकीला; भयंकर; 2. पु० वीर; स्फटिक; कुष्ठ की औषध।

**भास्कर** - पु० [सं] सूर्य; वीर; अग्नि; सोना; प्रसिद्ध ज्योतिषी; [हिं] धातु, पत्थर आदि की मूर्ति बनानेवाला।

**भास्कर्य** - पु० [सं] मूर्ति बनाने की कला।

**भास्वर** - 1. वि० [सं] चमकीला; 2. पु० सूर्य; दिन; अग्नि।

**भास्वान** - 1. वि० [सं] दीप्तिमान; 2. पु० सूर्य; वीर; दीप्ति।

**भिंगाना** - स० [हिं] तर करना।

**भिंगोरा** - पु० [हिं] भँगरा; भृंगराज पक्षी।

**भिंजाना, भिंजोना** - स० [हिं] भिगोना।

**भिंडी** - स्त्री० [हिं] तरकारी के काम आनेवाली एक फली, रामतरोई।

**भिंसार** - पु० [हिं] सवेरा, उषाकाल।

**भिक्षा** - स्त्री० [सं] भीख; सेवा; मज़दूरी; संन्यासियों को भोजनार्थ दिया जानेवाला अन्न; यौ०—चर - भिक्षुक; —चर्या - भिक्षावृत्ति; —जीवी - भीख माँगकर जीविका चलानेवाला; —पात्र - भीख माँगने का बर्तन; भिक्षा का अधिकारी; —वृत्ति - भीख माँगकर गुज़र करना।

**भिक्षाटन** - पु० [सं] भीख माँगने के लिए फिरना।

**भिक्षान्न** - पु० [सं] भिक्षा में प्राप्त अन्न।

**भिक्षार्थी** - पु० [सं] भिखारी।

**भिक्षु** - पु० [सं] संन्यासी; बौद्ध संन्यासी; भीख माँगनेवाला।

**भिक्षुक** - पु० [सं] भीख माँगनेवाला।

**भिक्षुणी** - स्त्री० [सं] बौद्ध संन्यासिनी।

**भिखमंगन, भिखमंगिन** - स्त्री० [हिं] भिखारिन।

**भिखमंगा** - पु० [हिं] भीख माँगनेवाला।

**भिखारिणी** - स्त्री० [हिं] भिखारिन।

**भिखारिन** - स्त्री० [हिं] भीख माँगनेवाली स्त्री।

**भिखारी** - 1. पु० [हिं] भीख माँगनेवाला; 2. वि० कंगाल।

**भिगोना** - स० [हिं] पानी आदि से तर करना।

**भिजवना** - स० [हिं] भिगोना; भिगोने का काम दूसरे से कराना।

**भिटनी** - स्त्री० [हिं] स्तन का अग्र भाग, चूचुक।

**भिड़** - स्त्री० [हिं] ततैया, बर्रे।

**भिड़ना** - अ० [हिं] टकराना; सटना; लड़ना।

**भितरिया** - वि० [हिं] अंतरंग।

**भितल्ला** - 1. पु० [हिं] अस्तर; 2. वि० भीतरी।

**भितल्ली** - स्त्री० [हिं] चक्की के नीचे का पाट।

**भित्ति** - स्त्री० [सं] दीवार; नींव; चित्राधार; खंड; चटाई; दोष; अवसर; यौ०—चित्र - दीवार पर बना हुआ चित्र; —चोर - सेंध मारनेवाला चोर।

**भित्तिका** - स्त्री० [सं] दीवार; छिपकली।

**भिद** - पु० [हिं] भेद, अंतर।

**भिदना** - अ० [हिं] छिदना; घुसना।

**भिदा** - स्त्री० [सं] टूटना; पार्थक्य; अंतर; प्रकार; जीरा।

**भिदुर** - 1. पु० [सं] फटना; नष्ट होना; वज्र; हाथी बाँधने की ज़ंजीर; 2. वि० फाड़नेवाला; मिश्रित।

**भिद्** - 1. वि० [सं] तोड़ने या नष्ट करनेवाला ; 2. स्त्री० खंडन ; अंतर ; प्रकार ।

**भिद्य** - 1. वि० [सं] भेदनीय, 2. पु० करारो को काटकर बहनेवाली नदी ।

**भिनकना** - अ० [हिं] मक्खियों का भिनभिनाना, किसी चीज़ पर मक्खियों के झुंड का बैठना ; बहुत गंदा होना ।

**भिनभिन** - स्त्री० [अनु] मक्खी आदि के परों की आवाज़ ।

**भिनभिनाना** - अ० [अनु] मक्खियों का 'भिन-भिन' करना ।

**भिनसार, भिनुसार** - पु० [हिं] प्रातःकाल ।

**भिन्न** - 1. वि० [सं] अलग ; खंडित ; दूसरा ; शिथिल ; मिश्रित ; परिवर्तित ; 2. पु० विषम संख्या ; रत्न का एक दोष ; जख्म, फूल ; यौ० —क्रम - क्रमभंग ; दोषयुक्त, —गति - टूटे पैरों से, तेज़ चाल से जानेवाला ; —दर्शी - पक्षपाती ; —देशीय - दूसरे देश का ; —देह - आहत ; —भाजन - घड़े का टुकड़ा ; —मतावलंबी - दूसरे मज़हब को माननेवाला ; —मर्यादी - अनियंत्रित ; —रुचि - अलग रुचिवाला ; —वर्ण - दूसरी जाति का ; विवर्ण ; —वृत्त - कर्तव्यभ्रष्ट, —वृत्ति - दूसरे पेशे का ; बुरा जीवन व्यतीत करनेवाला ; भिन्न रुचिवाला ।

**भिन्नता** - स्त्री० [सं] भेद, बिलगाव ।

**भिन्नाना** - अ० [हिं] चकराना ।

**भिन्नार्थ** - वि० [सं] भिन्न उद्देश्यवाला ; स्पष्ट अर्थवाला ।

**भियना** - अ० [हिं] डरना ।

**भिलावाँ** - पु० [हिं] दवा के काम आनेवाला एक जंगली फल ।

**भिश्ती** - पु० [हिं] मशक से पानी ढोनेवाला ।

**भिषक्** - पु० [सं] चिकित्सक ; दवा ।

**भिषग्वर** - पु० [सं] अश्विनी कुमार ।

**भिष्टा** - स्त्री० [हिं] मल ।

**भिस्स** - स्त्री० [हिं] कमल की जड़ ।

**भींचना** - स० [हिं] दबाना ; बंद करना ।

**भींजना** - अ० [हिं] भीगना ; प्रविष्ट होना ; मेल-जोल बढ़ाना ; स्नान करना ; गद्गद होना ।

**भी** - 1. अव्य० [हिं] अवश्य ; अधिक ; 2. स्त्री० [सं] भय ; आशंका ।

**भीख** - स्त्री० [हिं] भिक्षा ; ख़ैरात ।

**भीगना**, **भीजना** - अ० [हिं] पानी से तर होना, गीला होना ।

**भीटा** - पु० [हिं] टीला ; टीले की शक्ल की ज़मीन ; पान की बेल चढ़ाने के लिए बनाया हुआ टीला ।

**भीड़** - स्त्री० [हिं] जनसमूह ; संकट ; यौ० —मड़क्का - भीड़-भाड़ ; —भाड़ - धक्कम-धक्का ; भीड़ ।

**भीड़ना** - स० [हिं] मलना ; भिड़ाना ; मिलाना ।

**भीत** - 1. वि० [सं] डरा हुआ ; 2. स्त्री० भय ; यौ० —चित्त - मन में डरा हुआ ; [हिं] दीवार ; छत ; मु० —में दौड़ना - शक्ति से बाहर असमव कार्य करने में प्रवृत्त होना ।

**भीतर** - 1. अव्य० [हिं] अंदर ; मध्य में ; 2. पु० अंतःकरण ; जनानख़ाना ; यौ० —का - अंदर का ; मन में रहनेवाला ; —ही भीतर - मन ही मन ।

**भीतरी** - वि० [हिं] अंदरूनी ; अप्रकट ; यौ० — टाँग - कुश्ती का एक पेंच ।

**भीति** - स्त्री० [सं] भय ; कंप ।

**भीनना** - अ० [हिं] भीगना ; जज़्ब होना ।

**भीनी** - वि०, स्त्री० [हिं] हलकी मीठी (ख़ुशबू) ।

**भीम** - 1. वि० [सं] डरावना ; विशालकाय ; 2. पु० भयानक रस ; परमेश्वर ;

यौ० —काय - विशाल डील-डौलवाला; —नाद - डरावनी आवाज़वाला; —पराक्रम, विक्रम - महाबली; —रूप - डरावनी शक्लवाला।

**भीर** - 1. स्त्री० [हिं] भीड़; आधिक्य; 2. वि० भीत; भीरु।

**भीरना** - अ० [हिं] डरना।

**भीरु** - 1. वि० [सं] डरपोक; 2. पु० सियार; बाघ; कनखजूरा; एक तरह का ऊख; 3. स्त्री० डरपोक स्त्री; चाँदी; बकरी; छाया।

**भीरुता** - स्त्री० [सं] बुज़दिली।

**भीरू** - वि०, स्त्री० [सं] भयशील स्त्री।

**भीरे** - अव्य० [हिं] पास।

**भील** - पु० [हिं] एक आदिवासी जाति।

**भीषण** - 1. वि० [सं] डरावना; 2. पु० भयानक रस; शिव; कुँदरू; कबूतर; डराने की क्रिया।

**भीषणता** - स्त्री० [सं] डरावनापन।

**भीषणाकार** - वि० [सं] डरावनी शक्लवाला।

**भीष्म** - 1. वि० [सं] भयानक; 2. पु० भयानक रस; रुद्र; शान्तनु के पुत्र देवव्रत।

**भुंजन** - पु० [हिं] भोजन करने की क्रिया।

**भुंजना** - 1. स० [हिं] जलाना; भूनना; 2. अ० भूना जाना; झुलसना।

**भुंडली** - स्त्री० [हिं] एक रोएँदार कीड़ा।

**भुंडा** - वि० [हिं] सींगविहीन (बैल); बुरा।

**भुअंग, भुअंगम** - पु० [हिं] सर्प।

**भुईं** - स्त्री० [हिं] भूमि; यौ० —आँवला - दवा के काम आनेवाली एक घास।

**भुई** - स्त्री० [हिं] एक कीड़ा।

**भुकाना** - स० [हिं] भूकने या बकवाद करने में प्रवृत्त करना।

**भुक्खड़** - वि० [हिं] भूखा; पेटू; कंगाल।

**भुक्त** - 1. वि० [सं०] खाया हुआ; भोगा हुआ; भोग्यमान; 2. पु० भोजन; यौ० — पूर्व - जो भोगा जा चुका हो; —भोगी - जो किसी चीज़ का दुख-सुख उठा चुका हो; —शेष - उच्छिष्ट।

**भुक्ति** - स्त्री० [सं] भोजन; भोग; कब्जा; सीमा।

**भुखमरा** - वि० [हिं] भूख से मरनेवाला।

**भुगतना** - 1 स० [हिं] भोगना; सहना; 2. अ० बीतना; पूरा होना।

**भुगतान** - पु० [हिं] भुगताने की क्रिया; ग्राहक को ख़रीदा हुआ माल देना; क़ीमत या देन का चुकता किया जाना; निबटारा।

**भुगताना** - स [हिं] चुकाना; समाप्त करना; बिताना; पहुँचाना; भुगतने के लिए बाध्य करना।

**भुच्च, भुच्चड़** - वि० [हिं] मूर्ख।

**भुजंग** - पु० [सं] साँप; आठ की संख्या; विदूषक; जार।

**भुजंगम** - पु० [सं] साँप; सीसा; राहु; आठ की संख्या।

**भुजंगा** - पु० [हिं] काले रंग की एक चिड़िया; साँप।

**भुजंगिनी** - स्त्री [सं] सर्पिणी; एक छंद।

**भुज** - पु० [स] बाहु; बाजू; डाली; हाथ; रेखागणित के किसी क्षेत्र की सीमारेखा; त्रिभुज का आधार; यौ०—कोटर - काँख; —ग - साँप; —च्छाया - निरापद आश्रय; —दंड - लंबा हाथ; दंडरूप हाथ, —दल - हाथ; —पाश - गलबाँही; —बंद - बाजूबन्द; —बंध - केयूर; —बंधन - भुजपाश; बाहों के भीतर भर लेना; —बल - बाहुबल; —मूल - कंधा; —लता - लता जैसी कोमल और सुन्दर बाँह।

**भुजवा** - पु० [हिं] भड़भूँजा, चना आदि भाड़ में भूँजने का काम करनेवाली एक हिन्दू जाति ।

**भुजान्तर, भुजान्तराल** - पु० [सं] छाती ; गोद ।

**भुजा** - स्त्री० [सं] बाहु ; सर्प की कुंडली ; यौ०—मध्य - कोहनी ; —मूल - बाहुमूल; मु०-—उठाकर कहना - प्रतिज्ञा करना ।

**भुजाली** - स्त्री० [हिं] एक तरह का टेढ़ा छुरा ।

**भुजिया** - पु० [हिं] उबाले हुए धान का चावल ; सूखी तरकारी ।

**भुजेना** - पु० [हिं] चबैना ।

**भुजौना** - पु० [हिं] भूना हुआ अन्न ; भुनाई में दिया जानेवाला अन्न ।

**भुट्टा** - पु० [हिं] मक्के, ज्वार और बाजरे की हरी बाल ; गुच्छा ।

**भुनगा** - पु० [हिं] फतिंगा ; तुच्छ प्राणी ।

**भुनगी** - स्त्री० [हिं] ईख की फ़सल को लगनेवाला एक कीड़ा ।

**भुनना** - अ० [हिं] सिंकना ; रुपये आदि का छोटे सिक्कों में बदला जाना ।

**भुनभुन** - स्त्री० [अनु] धीमी, अस्पष्ट ध्वनि ।

**भुनभुनाना** - अ० [अनु] अस्पष्ट स्वर में कुढ़न प्रकट करना ।

**भुरकना** - 1. स० [हिं] छिड़कना ; 2. अ० भुरभुरा होना ; भूलना ।

**भुरका** - पु० [हिं] चूरा ; मिट्टी की दवात ।

**भुरकी** - स्त्री० [हिं] कुल्हिया ; हौज ।

**भुरकुन** - पु० [हिं] चूर्ण ।

**भुरकुस** - पु० [हिं] चूर्ण ; वह वस्तु जो चूर-चूर हो गयी हो ; मु० —निकलना - पीटकर भरता बना दिया जाना ।

**भुरभुरा** - वि० [हिं] चूर्णरूप ।

**भुरली** - स्त्री० [हिं] फ़सल को लगनेवाला एक कीड़ा ।

**भुरवना** - स० [हिं] बहकाना ।

**भुरहरा** - पु० [हिं] भोर, तड़का ।

**भुर्रा** - 1. वि० [हिं] बहुत काला ; 2. पु० विशेष प्रकार से बनायी हुई एक तरह की चीनी ।

**भुलक्कड़** - वि० [हिं] विस्मरणशील ।

**भुलना** - पु० [हिं] विस्मरण शील व्यक्ति ।

**भुलसना** - स० [हिं] गरम राख में झुलसना ।

**भुलाना** - 1. स० [हिं] भूलना ; भुलवाना ; 2. अ० भुलावे में पड़ना ; बहकना ; विस्मरण होना ।

**भुलावा** - पु० [हिं] धोखा, चकमा ।

**भुव** - स्त्री० [सं] भूमि ; अग्नि ।

**भुवन** - पु० [सं] जगत्, लोक ; जन ; आकाश ; चौदह की संख्या ; यौ० —कोश - भूमंडल ; —त्रय - स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ; —भर्ता - जगत् का धारण-पोषण करनेवाला ; —भावन - लोक-स्रष्टा , —मोहिनी - जगत् को मोहित करनेवाली ; —विदित - जगत्प्रसिद्ध ।

**भुवनेश्वर** - पु० [सं] राजा ; शिव ; उड़िसा के अंतर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ ।

**भुवनेश्वरी** - स्त्री० [सं] दस महाविद्याओं के अंतर्गत एक देवी ।

**भुवर्लोक** - पु० [सं] अन्तरिक्ष लोक

**भुस** - पु० [हिं] भूसा ।

**भुसुंड** - स्त्री० [हिं] सूँड़ ।

**भुसौरा** - पु० [हिं] भूसा रखने का घर ।

**भूँकना** - अ० [अनु] कुत्ते का 'भौं-भौं' करना ; व्यर्थ बकना ।

**भूँजना** - स० [हिं] पकाना ; सताना ; भोगना ।

**भूँजा** - पु० [हिं] भड़भूँजा ; भूना हुआ चबैना ।

**मूँड़** - स्त्री० [हिं] बालू मिली हुई भुरभुरी मिट्टी।

**मूँडरी** - पु० [हिं] नाऊ आदि को माफ़ी मिलनेवाली ज़मीन।

**मूँडिया** - पु० [हिं] मँगनी के हल-बैलों से खेती करनेवाला व्यक्ति।

**मूँसना** - अ० [हिं] भूँकना।

**भू** - स्त्री० [सं] भूमि; स्थान; एक का संकेत; पदार्थ; यौ० —कंप - भूगर्भ में होनेवाली उथल-पुथल से धरती की ऊपरी सतह का हिलना; —खंड - भूभाग; —गर्भ - धरती का भीतरी भाग; —गृह, गेह - तहख़ाना; —गोल - भूमंडल; भूगोलशास्त्र; —चक्र - विषुवत् रेखा; क्रान्तिवृत्त; —चर - स्थलचर; —चरी - योग की एक मुद्रा; —चर्या, छाया - धरती की छाया; अंधकार, —चाल - भूकंप; —डोल - भूकंप; —तत्व - धरती की बनावट का विज्ञान; —तल - धरातल; —दार - सूअर; —देव - ब्राह्मण; —धन - राजा; —धर - पहाड़; शेषनाग; सात की संख्या; —नाग - भूमिनाग; केंचुआ; —निंब - चिरायता; —प - राजा; —पटल - पृथ्वी की ऊपरी सतह; —पति - राजा; शिव; इंद्र; —परिधि - पृथ्वी की परिधि; —पाल - राजा; —पाली - एक रागिनी; —पुत्री - सीता; —प्रकंप - भूकंप —भर्ता - राजा; —भाग-भूखंड; प्रदेश; —भार - धरती पर होनेवाले पाप का भार; —भृत् - राजा; पहाड़; विष्णु; सात की संख्या; —मंडल - धरती, भूगोल; —मध्यसागर - यूरोप और एशिया के बीच अवस्थित समुद्र; —रुह - वृक्ष; —लग्ना - शंखपुष्पी; —लोक - मर्त्यलोक; —लोटन - पृथ्वी पर लोटनेवाला; —वलय - पृथ्वी की परिधि; —वल्लभ - राजा; —शय्या - ज़मीन पर सोना; —शायी - ज़मीन पर गिरा हुआ; मृत; —शुद्धि - भूमि की शुद्धि; —संपत्ति - ज़मीन के रूप में संपत्ति; —संस्कार - यज्ञ के लिए भूमि को लीपना, नापना आदि; —सुर - ब्राह्मण; —स्वामी - ज़मीन का मालिक; ज़मीनदार।

**भूआ, भूवा** - 1. पु० [हिं] रूई; ओझा; 2. वि० सफ़ेद; 3. स्त्री० बुआ।

**भूई** - स्त्री० [हिं] रूई का छोटा गाला।

**भूक** - 1. पु० [सं] छिद्र; काल; वसंत; अंधकार; 2. स्त्री० [हिं] भूख।

**भूख** - स्त्री० [हिं] भोजन की इच्छा, क्षुधा; यौ० —हड़ताल - बंदियों आदि का विरोध में भोजन न करना; मु० —मर जाना - क्षुधा का नष्ट हो जाना।

**भूखना** - स० [हिं] सजाना।

**भूखा** - वि० [हिं] क्षुधित; इच्छुक; भुक्खड़; यौ० —नंगा - अन्न-वस्त्र के कष्ट से पीड़ित; दरिद्र; मु० —रहना - उपवास करना; व्रत रखना।

**भूड** - स्त्री० [हिं] बालूवाली ज़मीन; कुएँ का सोता।

**भूत** - 1. वि० [सं] अतीत; वस्तुतः घटित; सत्य; उत्पन्न; युक्त; सदृश; 2. पु० पृथ्वी, जल आदि पंच महाभूतों में से कोई एक; प्राणी; पिशाच; भूतकाल; शिव; कल्याण; जगत्; पुत्र; पाँच की संख्या; उपयुक्तता; यौ०—काल - गतकाल; —कालिक, कालीन - भूतकाल-संबन्धी; —खाना - गंदा घर; —गण - शिव के अनुचर; प्रेतगण; —ग्रस्त - जिसे भूत लगा हो; —ग्राम - देह; समष्टि; —चारी - शिव; —चिन्ता -

तत्वो की छान-बीन ; —जय - तत्वो पर प्राप्त विजय ; —दया - संपूर्ण प्राणियो के प्रति दयाभाव ; —नाथ - शिव ; —नाशन - रुद्राक्ष ; सरसों ; भिलावाँ ; हींग ; —निचय - शरीर ; —पति - शिव ; अग्नि ; तुलसी ; —पूर्व - जो पहले हो चुका हो, पूर्ववर्ती ; —प्रेत - भूत, पिशाच आदि ; —बलि - भूतयज्ञ ; —भावन - ब्रह्मा ; शिव ; विष्णु ; —भावी - अतीत और भविष्य ; जीवो की सृष्टि करनेवाला ; —भाषा, भाषित - प्रेतो की भाषा; पैशाची; —माता - गौरी; —यज्ञ - गृहस्थ के लिए कर्तव्य पाँच महायज्ञों में से एक ; —योनि - परमेश्वर ; प्रेतयोनि ; —राज - शिव ; —वाद - भौतिकवाद ; —संचार - प्रेत-बाधा ; —संचारी - दावानल ; —सिद्ध - भूत-प्रेत आदि को वश में करनेवाला ; —सृष्टि - भूतों की सृष्टि ; भूतावेश से उत्पन्न भ्रांति ; —हत्या - जीववध ; —ह्रास - सन्निपात का एक भेद ; मु०—उतरना - पागल कर देनेवाले ग़ुस्से का उतर जाना ; —चढ़ना, सवार हो जाना - ग़ुस्से में पागल-सा हो जाना , —बनकर लगना - बुरी तरह पीछे लगना ; —बनना - नशे में चूर होना ; किसी काम में भिड़ जाना ।

**भूतनी** - स्त्री० [हिं] स्त्री-प्रेत ।

**भूता** - स्त्री० [सं] कृष्णपक्ष की चतुर्दशी ।

**भूतात्मा** - 1. पु० [सं] परब्रह्म ; हिरण्यगर्भ ; शिव ; जीवात्मा ; देह ; 2. वि० शुद्ध आत्मावाला ।

**भूतादि** - पु० [सं] परमेश्वर ; अहंकार ।

**भूतानुकंपा** - स्त्री० [सं] जीवदया ।

**भूतायन** - पु० [सं] परमेश्वर ।

**भूतार्थ** - वि० [सं] यथार्थ, घटित ।

**भूतावास** - पु० [सं] शरीर ; शिव ; विष्णु ; बहेड़ा ।

**भूतावेश** - पु० [सं] प्रेतबाधा ।

**भूति** - 1. स्त्री० [सं] उत्पत्ति ; वैभव ; अणिमादि अष्ट सिद्धियाँ ; भभूत ; हाथियो का शृंगार ; दानस्राव ; 2. पु० विष्णु ; शिव ; यौ० —काम - वैभव की इच्छा रखनेवाला ; —काल - शुभ काल ; —कील - गड्ढा ; तहख़ाना ; परिखा ; —वर्धन - ऐश्वर्य बढ़ानेवाला ।

**भूतिनी** - स्त्री० [हिं] भूतयोनिप्राप्त स्त्री ; डाकिनी ।

**भूती** - वि० [हिं] भूतपूजक ।

**भूतेश, भूतेश्वर** - पु० [सं] शिव ।

**भूतोन्माद** - पु० [सं] प्रेतबाधा से उत्पन्न उन्माद ।

**भूतोपदेश** - पु० [सं] अतीतकालीन या वर्तमान बात का विवरण ।

**भूनना** - स० [हिं] आग पर रखकर सेकना ; घी-तेल में तलना ; गरम रेत में डालकर अन्न आदि को पकाना ; जलाना ; बहुत कष्ट देना ।

**भूपेन्द्र** - पु० [सं] सम्राट ।

**भूभल** - स्त्री० [हिं] गरम रेत या धूल ; गरम राख ।

**भूमय** - वि० [सं] मिट्टी का बना हुआ ।

**भूमा** - पु० [सं] विशाल राशि ; ऐश्वर्य ; बहुत्व ; प्राणी ; संख्या ; विराट पुरुष ; धरती ।

**भूमि** - स्त्री० [स] धरती ; स्थान ; देश ; ज़मीन्दारी ; एक की संख्या ; योगी के चित्त की एक अवस्था ; यौ०—कंदक - कुकुरमुत्ता ; —कंप, कंपन - भूकंप ; —गत - भूपतित ; —गृह - तहख़ाना ; —गोचर - मनुष्य ; —जीवी - ज़मीन से जीविका चलानेवाला, कृषक ; —

तल - ज़मीन की सतह; —दान - ज़मीन का दान; —पति, पाल - राजा; क्षत्रिय; —पिशाच - ताड़ का पेड़, —भाग - प्रदेश; —रक्षक - देश-रक्षक; तेज़ घोड़ा; —रुह - वृक्ष; —रुहा - दूब; —लता - शंखपुष्पी; —लाभ - मृत्यु; —शय, शायी - ज़मीन पर सोनेवाला; बालक; जंगली कबूतर; —सत्र - भूमिदानरूप यज्ञ; —स्वामी - राजा।

**भूमिका** - स्त्री० [स] ग्रंथ आदि की प्रस्तावना; धरती; तल्ला; योगी के चित्त की कोई विशेष अवस्था; लिखने का तख्ता; नट की वेषभूषा; **यौ०**—गत - नाटकीय वस्त्र पहननेवाला; —भाग - फ़र्श।

**भूमिया** - पु० [हिं] ज़मीन्दार; देवता।

**भूमी** - स्त्री० [सं] भूमि।

**भूम्यंतर** - 1. वि० [सं] दूसरे देश का; 2. पु० निकटवर्ती देश का राजा।

**भूयः** - अव्य० [स] पुनः; साधारणतः; और अधिक।

**भूयशः** - अव्य० [स] अधिकतर; अतिशय।

**भूयसी** - वि०, स्त्री० [सं] बहुत अधिक।

**भूयिष्ठ** - वि० [सं] अत्यधिक।

**भूयोभूयः** - अव्य० [सं] पुनः पुनः, बार-बार।

**भूरा** - 1. पु० [हिं] खाकी रंग; कच्ची चीनी; 2. वि० भूरे रंग का; कपासी।

**भूरि** - 1. वि० [सं] बहुत ज़्यादा; बड़ा; 2. पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; इन्द्र; सोना; 3. अव्य० बहुत अधिक; प्रायः; **यौ०** —तेजस, तेजा - अति तेजस्वी; अग्नि; सोना; —द - महादानी; —पत्र - एक तरह की घास; —पुष्पा - शतपुष्पा; —प्रयोग - बहुत प्रचलित; —प्रेमा - चकवा; —बला - अतिबला, कँगही; —भाग - धनी; समृद्ध; —भाग्य - बड़भागी; —माय - बड़ा मायावी; सियार; लोमड़ी; —लाभ - बहुत लाभदायक; बड़ा लाभ; —विक्रम - बहुत बड़ा शूर-वीर।

**भूरिता** - स्त्री० [सं] आधिक्य, बाहुल्य।

**भूर्ज** - पु० [सं] भोजपत्र का पेड़; **यौ०**—कंटक - एक संकर जाति; —पत्र - भोजपत्र।

**भूर्णि** - स्त्री० [सं] पृथ्वी; मरुभूमि।

**भूर्भुव** - पु० [सं] भूमि और स्वर्ग; ब्रह्मा का एक मानसपुत्र।

**भूर्लोक** - पु० [सं] मर्त्यलोक; विषुवत्‌रेखा के दक्षिण का देश।

**भूल** - स्त्री० [हिं] भ्रम; चूक; दोष; ग़लती; **यौ०** —चूक - भ्रम; ग़लती; —भुलैया - वह इमारत जिसका रास्ता ऐसा चक्करदार हो कि आदमी जल्दी बाहर न निकल सके; **यौ०**—से - ग़लती से।

**भूलना** - 1. अ० [हिं] याद न रहना; ग़लती करना; भटकना; गलत रास्ते पर जाना; धोखा खाना; अचेत होना; इतराना; खो जाना; 2. वि० विस्मरण-शील।

**भूषण** - पु० [सं] जेवर; सजावट; शोभा - जनक वस्तु।

**भूषना** - स० [हिं] सजाना, भूषित करना।

**भूषित** - वि० [सं] सजाया हुआ, अलंकृत।

**भूसा** - पु० [हिं] पशुओं को खिलाने के काम आनेवाले गेहूँ, जौ आदि की पूलियों का टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ डंठल।

**भूसी** - स्त्री० [हिं] धान, चने, मटर आदि का छिलका।

**भृंग** - पु० [सं] भौंरा; लंपट; भृंगराज (पक्षिविशेष); स्वर्णपात्र; अभ्रक; **यौ०** —प्रिया - माधवी लता; —राज - बड़ा भौंरा; एक पक्षी।

**भृंगार** - पु० [सं] सोने की झारी; अभिषेक-पात्र; सोना; लौंग।

**भृंगारक** - पु० [सं] घड़ा; पात्र।

**भृंगारि** - स्त्री० [सं] केवड़ा।

**भृंगारी** - स्त्री० [सं] झींगुर।

**भृंगावली** - स्त्री० [सं] भौंरों की पंक्ति।

**भृंगी** - स्त्री० [सं] भौंरी; भाँग।

**भृकुटि** - स्त्री० [सं] भौं; भ्रूभंग।

**भृत** - 1. वि० [सं] प्राप्त; वहन किया या भरा हुआ; पोषित; 2. पु० [हिं] नौकर।

**भृतक** - वि० [सं] मज़दूरी या वेतन पर रखा हुआ।

**भृति** - स्त्री० [सं] लाना; ले जाना; वेतन; भोजन।

**भृत्य** - 1. वि० [सं] भरण करने योग्य; 2. पु० नौकर, सेवक; **यौ०** —भाव - सेवाभाव; पराश्रय; —वर्ग - दास-समूह; —वृत्ति - सेवकों का पालन।

**भृत्या** - स्त्री० [सं] दासी; भृति।

**भृश** - 1. वि० [सं] अतिशय; प्रचंड; शक्तिशाली; 2. अव्य० अत्यधिक।

**भृष्ट** - 1. वि० [सं] भूना हुआ; आग या गरम रेत में पकाया हुआ; 2. पु० पकाया हुआ मांस।

**भृष्टान्न** - पु० [सं] लाई; भूना हुआ चना आदि।

**भेंट** - स्त्री० [हिं] मुलाकात; नज़र, उपहार।

**भेंटना** - स० [हिं] मिलना; गले लगना या लगाना; पकड़ना।

**भेंवना** - स० [हिं] तर करना।

**भेक** - पु० [सं] मेंढक; मेघ; डरपोक आदमी; **यौ०** —रव - मेंढकों का टर्राना।

**भेकी** - स्त्री० [सं] मेंढकी।

**भेखज** - पु० [हिं] भेषज, औषध।

**भेजना** - स० [हिं] रवाना करना।

**भेजा** - पु० [हिं] दिमाग़, मग़ज़; चन्दा; मेंढक; **मु०** —खाना, पकाना - बक-बक करके खोपड़ी खाना।

**भेड** - स्त्री० [सं] बकरी की जाति का एक चौपाया, मेष; बहुत सीधा, बेवकूफ़ आदमी।

**भेड़** - स्त्री० [हिं] भेड; **यौ०** —चाल - भेड़िया-धसान; भेड़िया-धसान अंधानुकरण की प्रवृत्ति।

**भेड़िया** - पु० [हिं] कुत्ते की जाति का एक हिंस्र जंतु, वृक।

**भेड़िहर** - पु० [हिं] गड़रिया।

**भेत्ता** - वि० [सं] भेदन करनेवाला; विघ्न डालनेवाला; षड्यंत्र रचनेवाला।

**भेद** - पु० [सं] छेदन; दारण; अंतर; तादात्म्य का अभाव; चोट; पराजय; द्रोह; रेचन; रहस्य; प्रकार; मर्म; फूट; प्रकट होना; राजनीति के चार उपायों में से एक; **यौ०** —ज्ञान - द्वैत-ज्ञान; —दृष्टि - विश्व को परब्रह्म से भिन्न माननेवाला; —नीति - फूट डालने की नीति; —बुद्धि - अंतर करनेवाली दृष्टि; —भाव - दो व्यक्तियों या वर्गों के साथ दो तरह का व्यवहार; —वाद - द्वैतवाद; —विधि - दो वस्तुओं में अंतर करने की शक्ति।

**भेदक** - 1. वि० [सं] छेदन करनेवाला; भेद करनेवाला; अंतर करनेवाला; रेचक; 2. पु० विशेषता।

**भेदड़ी** - स्त्री० [देश] रबड़ी।

**भेदन** - पु० [सं] छेदन ; भेद ; फाड़ना ; दस्त लाना ; सूअर ।

**भेदिका** - स्त्री० [सं] नाश, ध्वंस ।

**भेदिया** - पु० [हिं] भेद जाननेवाला, जासूस ।

**भेदी** - वि० [सं] भेद लेनेवाला ; भेदकारक ।

**भेदीसार** - पु० [हिं] छेद करने का औज़ार ।

**भेदू** - पु० [हिं] भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ ।

**भेद्य** - वि० [सं] भेदन करने योग्य ।

**भेन** - 1. स्त्री० [हिं] बहिन ; 2. पु० [सं] सूर्य ; चंद्रमा ।

**भेर** - पु० [सं] नगाड़ा ।

**भेरी** - स्त्री० [सं] भेर ; यौ० —कार - भेरी बजानेवाला ।

**भेल** - 1. वि० [सं] भीरु ; मूर्ख ; ऊँचा ; अस्थिर ; 2. पु० [हिं] नाव ; 3. स्त्री० [देश] एक प्रकार का चबेना ।

**भेला** - पु० [हिं] भेंट ; भिड़ंत ; नाव ; गुड़ आदि का बड़ा पिंड ।

**भेली** - स्त्री० [हिं] गुड़ आदि की पिंडी ; गुड़ ।

**भेव** - पु० [हिं] भेद ; बारी ।

**भेवना** - स० [हिं] भिगोना ।

**भेषज** - 1. पु० [सं] दवा ; उपचार ; 2. वि० आरोग्यलाभ करानेवाला ।

**भेषजांग** - पु० [सं] अनुपान ।

**भेषज्य** - वि० [स] आरोग्यदायक ।

**भेस** - पु० [हि] वेषभूषा ; बाह्य रूप ; पहनावा ।

**भैंस** - स्त्री० [हिं] दूध देनेवाला एक गोजातीय मादा पशु, महिषी ।

**भैंसा** - पु० [हिं] भैंस का नर, महिष ।

**भैंसौरी** - स्त्री० [हिं] भैंस का चमड़ा ।

**भै** - पु० [हिं] भय ।

**भैक्ष, भैक्ष्य** - 1. पु० [सं] भीख ; 2. वि० भिक्षाजीवी ।

**भैन, भैना, भैनी** - स्त्री० [हिं] बहिन ।

**भैया** - पु० [हिं] भाई ; बराबरवाले या छोटे का संबोधन ; उत्तर भारत का निवासी ; यौ० —चार, चारा - भाई - चारा ; —दूज - कार्तिक-शुक्ला द्वितीया ।

**भैरव** - 1. वि० [सं] भैरवसंबंधी ; भयानक; दुखी ; 2. पु० शिव का एक गण ; शिव ; भय ; यौ० —कारक - भयावना ; —तंत्र - तंत्रविशेष ।

**भैरवी** - स्त्री० [सं] दुर्गा ; दस महाविद्याओं में से एक ; शैव संन्यासिनी ; यौ० —चक्र - तांत्रिक साधकों द्वारा पंच मकार की विधि से उपासना करते समय चक्र रूप में बैठी हुई मंडली ; मद्यपों आदि का समूह ।

**भैरू, भैरो** - पु० [हिं] भैरव ।

**भैषज** - पु० [सं] औषध ; लवा पक्षी ।

**भैषज्य** - पु० [सं] औषध ; चिकित्सा ; आरोग्य दायक शक्ति ; भिषक्पुत्र ।

**भोंकना** - 1. स० [हि] शरीर में नुकीली चीज़ घुसेड़ना ; 2. अ० भूँकना ।

**भोंगाल** - पु० [हिं] भोंपा ।

**भोंचाल** - पु० [हिं] भूकम्प ।

**भोंड़ा** - वि० [हिं] भद्दा ; बदशकल ; मूर्ख ; यौ०—पन - भद्दापन ; अशिष्टता ।

**भोंतरा** - वि० [हिं] तीक्ष्ण धाररहित ।

**भोंदू** - वि० [हिं] मूर्ख, बुद्धू ।

**भोंपा, भोंपू** - पु० [हि] एक प्रकार की तुरही ; ऊँची आवाज़ पैदा करने के लिए एंजिन में लगा हुआ एक साधन, सीटी ।

**भों-भों** - पु० [अनु] भूँकने की आवाज़ ।

**भो** - अव्य० [सं] हे, अहो ।

**भोक्तव्य** - वि० [सं] भोगने योग्य ।

**भोक्ता** - 1. वि० [सं] भोग या भोजन करनेवाला ; सहन करनेवाला ; शासन करनेवाला ; 2. पु० पति ; राजा ; विष्णु ।

**भोग** - पु० [सं] सुख, दुःख आदि का

अनुभव ; सुख ; दुःख ; संभोग ; कुब्ज़ा ; वेश्या का शुल्क ; किसी चीज़ को काम में लाना ; संपत्ति ; शासन ; पाप-पुण्य का फल ; लाभ ; नैवेद्य : साँप का फन ; कुंडली ; पंक्तिबद्ध सेना ; यौ०—गृह - ज़नानख़ाना ; —जात - भोग या कष्ट से उत्पन्न ; —तृष्णा - भोग की बलवती इच्छा ; —देह - सूक्ष्म शरीर ; —पाल - साईस ; —भूमि - भारतवर्ष आदि कर्म-प्रधान भूमि से भिन्न भूमि जहाँ लोग किसी प्रकार का परिश्रम किये बिना कल्पवृक्ष के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति करते हैं ; —भृतक - केवल भोजन-वस्त्र लेकर काम करनेवाला नौकर ; —लाभ - अनाज का ब्याज, सवाई ; —लिप्सा - भोग की इच्छा ; —विलास - इंद्रियजन्य सुखों का अधिक भोग, ऐश।

**भोगना** - स० [हिं] सहना, सुख-दुख का अनुभव करना ; संभोग करना ।

**भोगली** - स्त्री० [हिं] नली ; नाक की लौंग, नकफूल ; कर्णफूल।

**भोगवती** - स्त्री० [सं] पातालगंगा ; नागिन ; कृष्णपक्ष की द्वितीया की रात ।

**भोगांतराय** - पु० [सं] भोगोपभोग में बाधा डालनेवाला अदृष्ट ।

**भोगार्ह** - 1. वि० [सं] भोगोपयोगी ; 2. पु० धन-संपत्ति ।

**भोगावास** - पु० [सं] अन्तःपुर ।

**भोगिक** - पु० [सं] साईस ; गाँव का मुखिया ।

**भोगी** - 1. वि० [सं] भोग करनेवाला ; विषयासक्त ; कुंडलीयुक्त ; फनदार ; 2. पु० सांप ; ज़मीन्दार ; राजा ; नाई ।

**भोग्य** - वि० [सं] भोग करने योग्य, धनसंपत्ति ; यौ०—भूमि - मर्त्यलोक ।

**भोग्या** - स्त्री० [सं] वेश्या ।

**भोज** - पु० [हिं] ज्योनार, बहुत-से लोगों का एक साथ बैठकर खाना ; एक तरह की शराब ; [सं] उज्जैन का एक राजा ; भोजपुर ।

**भोजक** - 1. पु० [सं] भोजन करानेवाला ; परोसनेवाला ; ज्योतिषी ; मंदिर मे कीर्तन करनेवाला , 2. वि० खानेवाला ; भोजन देनेवाला ।

**भोजन** - पु० [सं] खाना ; खाद्य ; खिलाना ; यौ०—काल - खाने का समय ; —गृह - रसोईघर ; —त्याग - उपवास ; —भट्ट - पेटू ; —भूमि - भोजन करने का स्थान ; —वस्त्र - खाना-कपड़ा ; —व्यय - खाने-पीने का ख़र्च ; —शाला - भोजन करने का स्थान ।

**भोजनाच्छादन** - पु० [सं] खाना-कपड़ा ।

**भोजनार्थी** - वि० [सं] भूखा ।

**भोजनीय** - 1. वि० [सं] खाने योग्य ; जिसको भोग कराया जाय ; 2. पु० आहार ; समुद्री नमक ।

**भोज्य** - 1. वि० [सं] खाने योग्य ; 2. पु० भोजन ।

**भोडर** - पु० [हिं] अभ्रक ।

**भोथरा** - वि० [हिं] कुंद धारवाला ।

**भोना** - अ० [हिं] रंगना ; अनुरक्त होना ।

**भोमीरा** - पु० [हिं] मूँगा ।

**भोर** - 1. पु० [हिं] प्रभात ; एक सदाबहार वृक्ष ; भूल ; भ्रम ; 2. वि० भोला ; चकित ।

**भोरा** - वि० [हिं] भोला ; यौ० —पन - भोलापन ; सिधाई ।

**भोराना** - 1. स० [हिं] बहकाना ; 2. अ० भ्रम में पड़ना ; भुलावे में आना ।

**भोल** - पु० [सं] वैश्य पिता और नटी माता से उत्पन्न संतान ।

**भोलना** - स० [हिं] बहकाना ।

**भोला** - वि० [हिं] सीधा ; **यौ०**—भाला-निष्कपट ।

**भोलि** - स्त्री० [सं] ऊँट ।

**भौं** - स्त्री० [हिं] भ्रकुटि, आँख के ऊपर की हड्डी पर धनुष के आकार में जमे हुए बाल ; **मु०** —चढ़ाना, तानना - रोष प्रकट करना ।

**भौंतुवा** - पु० [हिं] हाथ में होनेवाला एक वातज शोथरोग ; एक छोटा कीड़ा ; तेली का बैल ।

**भौंरा** - पु० [हिं] फूलो का प्रेमी एक काले पंखोंवाला कीड़ा, भ्रमर ; बड़ी मधु-मक्खी ; पहिये की नाभि ; रहट की खड़ी चर्खी ; लट्टू ; तहखाना ।

**भौंराना** - स० [हिं] घुमाना ; भाँवर फिराना ।

**भौंराला** - वि० [हिं] घुँघराले (बाल) ।

**भौंरी** - स्त्री० [हिं] चक्र के आकार में उगे हुए बाल ; भाँवर ; भँवर ।

**भौंह** - स्त्री० [हिं] भौं ।

**भौ** - पु० [हिं] भव ; भय ; **यौ०** —जल, जलि - भवजाल ; भव-सागर ।

**भौगोलिक** - वि० [सं] भूगोलसंबंधी ।

**भौचक, भौचक्का** - वि० [हिं] चकित ; हक्का-बक्का ; हैरान ।

**भौजाई, भौजी** - स्त्री० [हिं] बड़े भाई की स्त्री, भावज ।

**भौतिक** - 1. वि० [सं] भूतसंबंधी ; पार्थिव ; शरीरसंबंधी ; पिशाचकृत ; 2. पु० मोती ; तत्त्व ; तत्त्वो के गुण ; आधि-व्याधि ; **यौ०** —वाद - पंच भूतों के आधार पर बना हुआ सिद्धान्त ; —विज्ञान - तत्त्वो के गुण आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र ; —विद्या - जादूगरी ; — सृष्टि - देव, मनुष्य, तिर्यक् इन तीन योनियों का समूह ।

**भौन** - पु० [हिं] भवन ।

**भौना** - अ० [हिं] चक्कर लगाना, घूमना ।

**भौपाल** - पु० [सं] राजकुमार ।

**भौम** - 1. वि० [सं] भूमिसंबंधी ; भूमि से उत्पन्न ; 2. पु० मंगल ग्रह ; नरकासुर ; आकाश ; जल ; प्रकाश ; **यौ०** — राशि - मेष और वृष राशियाँ ; —वार, वासर - मंगलवार ।

**भौमक** - पु० [सं] भूमि में रहनेवाला प्राणी ।

**भौमिक** - 1. वि० [सं] भूमिसंबंधी ; पृथ्वी पर रहनेवाला ; 2. पु० भूस्वामी ; ज़मींदार ।

**भौर** - पु० [हिं] भौरा ; भँवर ; घोड़ों का एक भेद ।

**भौरिक** - पु० [सं] कोषाध्यक्ष ।

**भौरिकी** - स्त्री० [सं] टकसाल ।

**भ्रंगी** - पु० [हिं] एक गुंजार करनेवाला पतिंगा ।

**भ्रंश, भ्रंस** - पु० [स] नीचे गिरना ; नाश ; मार्ग से विचलित होना ।

**भ्रंशन** - 1. पु० [सं] पतन ; 2. वि० नीचे गिरानेवाला ।

**भ्रंशित** - वि० [सं] नीचे गिराया हुआ ; वंचित ।

**भ्रकुंश** - पु० [सं] स्त्रीवेषधारी नट ।

**भ्रकुटि** - स्त्री० [सं] भ्रूभंग, भौं ।

**भ्रमंत** - पु० [सं] छोटा मकान ।

**भ्रम** - पु० [सं] मिथ्या, अयथार्थ ज्ञान ; चक्कर ; भटकना ; भूल ; घबड़ाहट ; सोता ; चकाचौंध ; चाक ; चक्की ; खराद ; प्रतिष्ठा ; **यौ०** —कारी - भ्रमोत्पादक ; —जार, जाल - मोहपाश ; —मूलक - भ्रम से उत्पन्न ; —वात - ऊपर ही ऊपर चलती रहनेवाली वायु ; —संशोधन - भूलसुधार ।

**भ्रमण** - पु० [सं] घूमना ; यात्रा ; अस्थिरता ; चक्कर ; चकाचौंध ; **यौ०**—कारी - घुमक्कड़ ; —वृत्तान्त - यात्रा का वर्णन ।

**भ्रमणी** - स्त्री० [सं] मनोविनोद के लिए चक्कर खाने का साधन; जोंक; योग की पाँच धारणाओं में से एक।

**भ्रमर** - पु० [सं] भौंरा; उद्धव; कामी; लड़का; चाक; यौ० —कीट - एक तरह की भिड़।

**भ्रमरावली** - स्त्री० [सं] भौंरों की पंक्ति।

**भ्रमरिका** - स्त्री० [सं] चारों तरफ़ घूमना।

**भ्रमरी** - स्त्री० [सं] मादा भौंरा; पार्वती।

**भ्रमात्मक** - वि० [स] धोखे में डालनेवाला, संदिग्ध।

**भ्रमाना** - स० [हिं] घुमाना; बहकाना।

**भ्रमि** - स्त्री० [सं] चक्कर; कुम्हार का चाक; खराद; भँवर; बगूला; भूल; सेना का चक्राकार व्यूह।

**भ्रमित** - वि० [सं] चक्कर खाता हुआ; यौ० —नेत्र - ऐंचाताना।

**भ्रमी** - वि० [सं] घूमने या चक्कर खानेवाला; भ्रमयुक्त।

**भ्रष्ट** - वि० [सं] नीचे गिरा हुआ; बिगड़ा हुआ; दूषित आचारवाला; नष्ट; यौ० —क्रिय - अपना विहित कर्म छोड़नेवाला; —निद्र - निद्रा से वंचित; —मार्ग - जो मार्ग भूल गया हो।

**भ्रष्टा** - स्त्री० [स] दुश्चरित्रा।

**भ्रष्टाचार** - 1. वि० [सं] जिसका आचार बिगड़ गया हो; 2. पु० दूषित आचार; बेईमानी।

**भ्रांत** - 1. वि० [स] भूला हुआ; भ्रमयुक्त; परेशान; चक्कर खाता हुआ; 2. पु० मतवाला हाथी; धतूरा; भ्रमण; भूल।

**भ्रांति** - स्त्री० [सं] अयथार्थ ज्ञान, भ्रम; चक्कर; अस्थिरता; संदेह; घबड़ाहट; यौ० —कर - भ्रमजनक; —नाशन, हर - भ्रम का नाश करनेवाला, शिव।

**भ्रांतिमान** - वि० [सं] भ्रमयुक्त; चक्कर खाता हुआ।

**भ्राजन** - पु० [सं] चमकाना।

**भ्राजना** - अ० [हिं] चमकना; शोभित होना।

**भ्राजमान** - वि० [सं] शोभायमान।

**भ्राजि** - स्त्री० [सं] चमक, दीप्ति।

**भ्राजी** - वि० [सं] चमकनेवाला।

**भ्रात** - पु० [हिं] भ्राता।

**भ्राता** - पु० [सं] सगा भाई; यौ० —गंधि - सिर्फ़ नाम का भाई; —ज - भाई का पुत्र; —जा - भाई की पुत्री, —जाया - भावज; —दत्त - भाई से मिला हुआ; विवाह के समय भाई से बहन को मिली हुई वस्तुएँ; —द्वितीया - भैयादूज; —पुत्र - भतीजा; —भाड - यमज भाई; —माव - भाईचारा; —वधू - भावज; —श्वसुर - पति का बड़ा भाई, जेठ।

**भ्रातृक** - वि० [स] भाई का; भाई से मिला हुआ।

**भ्रातृव्य** - पु० [स] भायप, भाईचारा।

**भ्रात्रीय** - 1. पु० [सं] भतीजा; 2. वि० भ्रातासंबन्धी।

**भ्रामक** - 1. वि० [सं] भ्रमजनक; धूर्त; बहकानेवाला; 2. पु० श्रृगाल; चुंबक; ठग।

**भ्रामर** - 1. वि० [सं] भ्रमरसंबन्धी; 2. पु० भौंरों का इकट्ठा किया हुआ शहद; चुंबक; अपस्मार रोग।

**भ्रामरी** - 1. स्त्री० [सं] दुर्गा; भाँवर; 2. वि० अपस्मार रोग से पीड़ित; चक्कर खानेवाला; शहद से बना हुआ।

**भ्रामित** - वि० [सं] घुमाया या चक्कर खिलाया हुआ (नेत्रादि)।

**भ्राष्ट्र** - पु० [सं] आकाश; भड़भूँजे की दाना भूनने की अथरी।

**भ्रुकंस** - पु० [सं] स्त्री के वेष में काम करनेवाला नट ।

**भ्रुकुटि, भ्रुकुटी** - स्त्री० [सं] भ्रूभंग ; भौं ।

**भ्रुव** - स्त्री० [सं] भौंह ।

**भ्रू** - स्त्री० [सं] भौं ; यौ० —क्षेप, विक्षेप - भौं टेढ़ी करना ; —भंग, भेद - भौं चढ़ाकर रोप-प्रकाश ; —मध्य - दोनो भौंहो के बीच का स्थान ; —लता - मेहराबदार भौं ; —विक्रिया - भ्रूभंग ; —विलास - भौंहो का मोहक संचालन ।

**भ्रूण** - पु० [सं] गर्भस्थ शिशु ; यौ० —हत्या - गर्भपात द्वारा गर्भस्थ शिशु की हत्या करना ।

## म

**मंकुर** - पु० [सं] आईना ।

**मंक्षण** - पु० [सं] जाँघ पर बाँधने का कवच ।

**मंख** - पु० [सं] भाट, बंदीजन ; एक औषध ।

**मंखी** - स्त्री० [हिं] बच्चों के गले में पहिनाने का एक जेवर ।

**मंग** - पु० [सं] नाव का अगला हिस्सा ; [हिं] माँग, सीमंत ।

**मंगता** - पु० [हिं] भिखमंगा, याचक ।

**मंगनी** - स्त्री० [हिं] माँगने का भाव ; ब्याह पक्का करने की रस्म ; वापिस लौटा देने के वादे पर माँगकर पायी हुई चीज़ ।

**मंगल** - 1. पु० [सं] कल्याण ; सौभाग्य ; अभीष्ट अर्थ की सिद्धि ; अग्नि का एक नाम ; सौरमंडल का एक ग्रह ; मंगलवार ; 2. वि० कल्याणकारी ; शुभलक्षणयुक्त ; वीर ; सपन्न ; यौ० —काम - शुभचिन्तक ; —कामना - कल्याण की कामना ; —कारक, कारी - कल्याणकारी ; —कार्य - शुभ कार्य ; —काल - शुभ घड़ी ; —गान - मंगल के अवसर पर होनेवाला गाना-बजाना ; —गीत - मंगल अवसर पर गाया जानेवाला गीत ; —घट - शुभ कार्य के समय देवता के सामने रखा जानेवाला जल से परिपूर्ण घड़ा ; —तूर्य, वाद्य - शुभ अवसर पर बजाये जानेवाले बाजे ; —देवता - इष्टदेव ; —पाठक - स्तुति-पाठक ; —प्रद - कल्याणकारी ; —प्रदा - हल्दी ; शमी का पेड़ ; —मय - कल्याणमय ; परमेश्वर ; —वाद - आशीर्वाद ; —वार, वासर - सोमवार के बाद का दिन, भौमवार ; —सूत्र - हलदी में रंगा सूत जो ब्याह के समय वर और कन्या के हाथों में बाँध दिया जाता है ; सधवा स्त्रियों द्वारा गले में पहना जानेवाला पवित्र सूत्र ; —स्नान - मांगलिक अवसर पर या मांगलिक पूजन के लिए किया जानेवाला स्नान ।

**मंगला** - स्त्री० [सं] पार्वती ; पतिव्रता स्त्री ; सफ़ेद दूब ; नीली दूब ; हलदी ।

**मंगलाचरण** - पु० [स] शुभ कार्य के आरंभ में मंगल-कामना से की जानेवाली देव-स्तुति ; ग्रंथारंभ में लिखा जानेवाला मांगलिक पद आदि ।

**मंगलाचार** - पु० [सं] शुभ अनुष्ठान ।

**मंगलालय** - पु० [स] मंगलमय परमेश्वर ; मंदिर ।

**मंगलाशासन** - पु० [सं] मंगलकामना प्रकट करना ।

**मंगलाष्टक** - पु० [सं] विवाह के समय वर-वधू के कल्याणार्थ उच्चरित किये जानेवाले मंत्र ।

**मंगलाह्निक** - पु० [सं] कल्याण के लिए प्रतिदिन किया जानेवाला मंगल-कृत्य ।

**मंगलोत्सव** - पु० [सं] मांगलिक उत्सव ।

**मंगवाना** - स० [हिं] दूसरे के द्वारा कोई चीज़ मँगाना।

**मंगेतर** - स्त्री० [हिं] वह लड़की जिसकी किसीके साथ मंगनी हो चुकी हो।

**मंच** - पु० [सं] खाट ; मचान ; सिंहासन ; रंगभूमि ; **यौ०**—मंडप - खेती की रक्षा के लिए या विवाहादि के अवसर पर बनाया हुआ मचान।

**मंचक** - पु० [सं] मंच।

**मंचकाश्रय** - पु० [सं] खटमल।

**मंचिका** - स्त्री० [सं] मचिया।

**मंज़र** - पु० [अ] दृष्टि का आश्रय ; दृश्य ; देखने योग्य वस्तु ; स्थान।

**मंजरित** - वि० [सं] मंजरियों से लदा हुआ।

**मंजरी** - स्त्री० [सं] कोंपल ; सींके में लगे हुए छोटे घने फूल ; मोती ; तिलक वृक्ष ; लता ; तुलसी।

**मंजरीक** - पु० [सं] तुलसी ; तिलक वृक्ष ; बेंत , मोती।

**मंजा** - स्त्री० [सं] बकरी ; मंजरी ; लता।

**मंजाई** - स्त्री० [हिं] मांजने की क्रिया या मांजने का पारिश्रमिक।

**मंजारी** - स्त्री० [हिं] बिल्ली।

**मंजिका** - स्त्री० [सं] वेश्या।

**मंजिमा** - स्त्री० [सं] सुन्दरता, मनोहरता।

**मंज़िल** - स्त्री० [अ] पड़ाव, मुकाम ; एक दिन का सफ़र ; मकान ; पांथशाला ; मकान का दरजा या छत ; **यौ०** —गाह - उतरने की जगह ; —हस्ती - ज़िन्दगी ; **मु०**—उठाना - मकान बनाना ; —भारी होना - यात्रा पूरी करना कठिन होना ; —मारना - यात्रा पूरी करना ; मुश्किल हल करना।

**मंजी** - स्त्री० [सं] मंजरी ; लता।

**मंजीर** - पु० [सं] नूपुर ; मथानी का डंडा बाँधने का खंभा।

**मंजील** - पु० [सं] वह गाँव जिसमे मुख्य रूप से धोबी रहते हैं।

**मंजु** - वि० [सं] सुन्दर ; **यौ०**—केशी - कृष्ण ; —गति, गमना - मनोहर गतिवाली ; हंसिनी ; —गुंज - मनोहर गुंजन ; —घोष - मधुर, मनोहर वचनवाला ; —नाशी - सुन्दर स्त्री ; दुर्गा ; इंद्राणी ; —पाठक - तोता ; —प्राण - ब्रह्मा ; —भाषिणी - मधुर भाषिणी ; —भाषी, वादी - मधुरभाषी ; —स्वन, स्वर - वह आदमी जिसकी आवाज़ या बोली मधुर हो।

**मंजुल** - 1. वि० [सं] सुंदर ; 2. पु० कुंज ; सोता ; कूप।

**मंज़ूर** - वि० [अ] स्वीकृत ; जो देखा गया या पसंद किया हुआ हो।

**मंज़ूरी** - स्त्री० [अ] स्वीकृति।

**मंजूषा** - स्त्री० [सं] पिटारी ; मजीठ ; पत्थर।

**मंझा** - 1. पु० [हिं] अटेरन के बीच की लकड़ी ; चरखे का मुँड़ला ; 2. वि० मझला।

**मंठ** - पु० [सं] मैदे का बना एक पकवान।

**मंड** - पु० [सं] माँड़ ; सार ; मलाई ; सुरा ; एक शाक ; मट्ठा ; आभूषण ; मेंढ़क।

**मंडक** - पु० [सं] एक प्रकार का पिष्टक या रोटी ; गीत का एक अंग।

**मंडन** - 1. पु० [सं] सजाना ; आभूषण ; युक्ति-प्रमाण से पक्षविशेष की पुष्टि करना ; 2. वि० श्रृंगार करनेवाला।

**मंडना** - स० [हिं] सजाना ; सँवारना।

**मंडप** - पु० [सं] कुंज ; चारों ओर से खुला हुआ होने पर भी ऊपर से छाया हुआ बैठने का स्थान।

**मंडपक** - पु०, **मंडपिका** - स्त्री० } [सं] छोटा मंडप।

**मंडपी** - स्त्री० [हिं] छोटा मंडप ; मढ़ी।

**मँडराना** - अ० [हिं] किसीके आसपास चक्कर काटना ; मंडलाकार में चक्कर देते हुए उड़ना ।

**मंडरी** - स्त्री० [हिं] पयाल की चटाई ।

**मंडल** - पु० [स] गोल घेरा, कुंडली ; सूर्य-चंद्र का बिंब ; परिवेष ; समूह ; एक प्रकार का सैन्यव्यूह ; चाक ; ग्रहों का गतिपथ ; क्षितिज ; प्रदेश ; गोल बंधन ; लड्डू ; राज्य के निकट और दूर के पड़ोसी शत्रु-मित्र आदि राज्यों का मंडल ; **यौ०** —नृत्य - मंडलाकार घूमते हुए नाचना ; —वर्ती - मंडल का शासक ; —वर्ष - देशव्यापी वर्षा ।

**मंडलाकार, मंडलाकृत** - वि० [सं] मंडल के आकार का, गोला ।

**मंडलाग्र** - पु० [सं] खंजर ।

**मंडलाधिप, मंडलाधीश, मंडलेश्वर** - पु० [सं] चार सौ योजन रक़बावाले प्रदेश का राजा ; एक मंडल का शासक ।

**मंडली** - 1. स्त्री० [हिं] जमात ; दूब ; गुडुच ; 2. वि० [सं] मंडल ; 3. पु० साँप ; बिल्ली ; सूर्य ; मंडलाधिपति ; बरगद ।

**मंडलीक** - पु० [सं] मंडल का राजा ; कर देनेवाला राजा ।

**मंडवा** - पु० [हिं] मंडप ; शामियाना ।

**मंडित** - वि० [सं] भूषित ।

**मंडी** - स्त्री० [हिं] थोक बिक्री का बाज़ार ; बाज़ार ।

**मँडुआ** - पु० [हिं] एक मोटा अनाज ।

**मंडूक** - पु० [सं] मेंढक ; एक प्रकार का नृत्य ; **यौ०** —पर्णी - ब्राह्मी ; —प्लुति - मेढक का उछलना ।

**मंढा** - पु० [हिं] कमख्वाब बुननेवालों के काम आनेवाला एक औज़ार ।

**मंतव्य** - 1. वि० [सं] मानने योग्य ; 2. पु० मत ।

**मंत्र** - पु० [सं] गुप्त वार्ता, मन्त्रणा ; वेद का संहिताभाग ; कार्यसिद्धि का मूल मंत्र ; **यौ०** —कुशल - मंत्रणा में पटु ; —गूढ - जासूस ; —गृह - मंत्रणागृह ; —जल - अभिमंत्रित जल ; —जिह्व - अग्नि ; —ज्ञ - मंत्री ; गुप्तचर ; मंत्रणाकुशल ; —देवता - मंत्रविशेष द्वारा आवाहन की हुई देवता ; —पूत - मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ ; —प्रयोग - मंत्र से काम लेना ; —भेद - गुप्त वार्ता का प्रकट कर दिया जाना ; —मुग्ध - मंत्र से मोहित ; जड़वत् ; —मूल - जादू ; राज्य ; —विद्या - तंत्र मंत्र की विद्या ; —संस्कार - मंत्रपूर्वक किया जानेवाला संस्कार ; विवाह ; —सिद्धि - मंत्र का सिद्ध होना ; —हीन - अदीक्षित ; असंस्कृत ।

**मंत्रणा** - स्त्री० [सं] सलाह-मशविरा करना ।

**मंत्रित** - वि० [सं] अभिमंत्रित ।

**मंत्रित्व** - पु० [सं] मंत्री का पद या कार्य ।

**मंत्री** - पु० [सं] सचिव ; सलाह देनेवाला ; राज्य के किसी विभाग का प्रधान अधिकारी ; **यौ०** —मंडल - मंत्रियों का मंडल, परिषद्, केबिनेट ।

**मंथन** - पु० [सं] मथना, बिलोना ; तत्त्व-बोध के लिए किसी विषय की बार-बार आवृत्ति ; मथानी ।

**मंथनी** - स्त्री० [सं] दही मथने का बरतन ।

**मंथर** - 1. वि० [सं] मंद ; जड़मति ; स्थूल ; नीच ; टेढ़ा ; गंभीर ; 2. पु० कोश ; मथानी ; क्रोध ; बाधा ; फल ; सिर के बाल ; **यौ०** —गति - धीमी चाल ; धीमी चालवाला ।

**मंथान** - पु० [सं] मथानी ।

**मंथिनी** - स्त्री० [सं] दही मथने का मटका ।

**मंथी** - वि० [सं] मथनेवाला ; पीड़क ।

**मंद** - 1. वि० [सं] सुस्त ; मूर्ख ; मृदु , हलका ; गंभीर ; थोड़ा ; दुर्बल ; नीच ; 2. पु० अभाग्य , प्रलय ; एक तरह का हाथी ; शनि ; यम ; यौ० —गति - धीमी चालवाला ; —चेता - मंदबुद्धि ; —धी, बुद्धि - मोटी अक़्लवाला, अल्पबुद्धि ; —फल - ग्रहगति का एक भेद ; —भागी, भाग्य - अभागा , —मति - मोटी अक़्लवाला ; —स्मित, हास्य - हलकी हँसी ।

**मंदर** - 1. पु० [सं] एक पर्वत ; मंदार ; आठ या सोलह लड़ियोंवाला मोतियों का हार ; स्वर्ग ; आईना ; 2. वि० मंद ।

**मंदरा** - 1. वि० [हिं] ठिंगना ; 2. पु० एक तरह का बाजा ।

**मंदरी** - स्त्री० [हिं] एक पेड़ जिसकी लकड़ी गाड़ियाँ आदि बनाने के काम आती है ।

**मंदाकिनी** - स्त्री० [सं] आकाशगंगा , सक्रांति का एक भेद ; एक वर्णवृत्त ।

**मंदाक्ष** - 1. वि० [सं] सकुचित आँखवाला ; 2. पु० लज्जा ।

**मंदाग्नि** - स्त्री० [सं] पाचनशक्ति का दुर्बल हो जाना ।

**मंदाना** - अ० [हिं] मंद पड़ना ।

**मंदानिल** - पु० [सं] हलकी सुखद वायु ।

**मंदार** - पु० [सं] नंदनवन के पाँच वृक्षों में से एक ; मदार ; धतूरा ; हाथी ; मंदारपुष्प ।

**मंदिर** - पु० [सं] देवालय ; घर ; नगर ; शिविर ।

**मंदी** - स्त्री० [हिं] मंद होने का भाव, सस्ती ।

**मंदुरा** - स्त्री० [सं] अस्तबल ।

**मंदोष्ण** - वि० [सं] थोड़ा गरम ।

**मंद्र** - 1. पु० [सं] गंभीर ध्वनि ; संगीत के तीन स्वर-सप्तकों में से पहला ; मृदंग ; 2. वि० गंभीर ; प्रसन्न ; आह्लादकारी ।

**मंद्राज** - पु० [हिं] मद्रास ।

**मउर** - पु० [हिं] मौर ; यौ० —छोराई - विवाह - समाप्ति के बाद मौर अलग करने की रस्म ।

**मकई** - स्त्री० [हिं] एक अनाज ।

**मकड़ा** - पु० [हिं] बड़ी मकड़ी ; एक घास ।

**मकड़ाना** - अ० [हिं] मकड़ी की तरह चलना, इतराना ।

**मकड़ी** - स्त्री० [हिं] अपने पेट से एक तरह का लुआब निकालकर जाला बुननेवाला एक कीड़ा, लूता ।

**मकतब** - पु० [अ] पाठशाला ; विद्यारंभ ; यौ०—का यार - बचपन का साथी ।

**मकतबा** - पु० [अ] पुस्तकालय ; किताबों की दूकान ।

**मक़तल** - पु० [अ] वधस्थल ।

**मक़ता** - पु० [अ] ग़ज़ल का अंतिम चरण जिसमें कवि का उपनाम होता है ।

**मकतूब** - 1. वि० [अ] लिखित ; 2. पु० पत्र ; लेख ; यौ० —ए लैह - पत्र पानेवाला ।

**मक़तूल** - वि० [अ] हत ; प्रेमी ।

**मक़दम** - पु० [अ] लौटना ; पहुँचना ।

**मक़दूर** - पु० [अ] सामर्थ्य ; धन ; यौ० —वाला - सामर्थ्यवाला ; पैसेवाला ।

**मकना** - पु० [अ] एक प्रकार की ओढ़नी या चादर ; यौ० —तीस - चुंबक पत्थर ।

**मकफूल** - वि० [अ] रेहन या बंधक रखा हुआ ; बीमा किया हुवा ।

**मक़बरा** - पु० [अ] समाधि, मजार, वह इमारत जिसमें किसीकी क़ब्र हो ।

**मक़बूज़ा** - वि० [अ] अधिकृत (संपत्ति, वस्तु) ।

**मक़बूल** - वि० [अ] क़बूल किया हुआ ; अच्छा ; चुना हुआ ।

**मक़बूलियत** - स्त्री० [अ] किसीका प्रिय या प्यारा होना ; लोकप्रियता ।

**मकरंद** - पु० [सं] फूलों का रस ; फूलों का केसर ; भ्रमर ; कोयल ।

**मकर** - पु० [सं] मगर; घड़ियाल ; मछली ; बारह राशियों में से दसवीं ; कुबेर की नौ निधियों में से एक ; **यौ०** —केतन, केतु - कामदेव ; —संक्रान्ति - माघ-मास की संक्रान्ति जिस दिन सूर्य उत्तरायण होता है।

**मकराज** - स्त्री० [हि] कैंची ।

**मकरौरा** - पु० [हि] एक छोटा कीड़ा ।

**मकलई** - स्त्री० [हि] एक तरह का गोंद ।

**मक़लूब** - वि० [अ] औंधा ।

**मक़सद** - पु० [अ] उद्देश्य ; अभीष्ट ; **यौ०** —वर - प्राप्तकाम ।

**मक़सूद** - 1. वि० [अ] उद्दिष्ट ; 2. पु० उद्देश्य ।

**मक़सूम** - 1. वि० [अ] विभक्त ; 2. पु० भाग्य ; गणित में भाज्य ; **यौ०** —अलैह - भाजक ; —का लिखा - भाग्य का लिखा ।

**मक़ाद** - स्त्री० [अ] बैठने की जगह ; गुदा ।

**मकान** - पु० [अ] घर, रहने की जगह ; **यौ०** —दार - मकानवाला ; **मु०** —हिला देना - बहुत शोर-गुल मचाना ।

**मक़ाम** - पु० [अ] ठहरने की जगह, स्थान ।

**मक़ामी** - वि० [अ] स्थिर ; स्थानीय ।

**मक़ाल** - पु० [अ] शब्द ; वाचा ।

**मक़ाला** - पु० [अ] कही हुई बात ; ग्रंथ ।

**मकु** - अव्य० [हि] चाहे ; बल्कि ; शायद ।

**मकुना** - पु० [हिं] बिना दाँत का या बहुत छोटे दाँतोंवाला (नर) ; हाथी ; मूँछ-विहीन पुरुष ।

**मकुनी** - स्त्री० [हिं] आटे में बेसन मिलाकर बनायी हुई बाटी ।

**मकुर** - पु० [सं] आईना ; कुम्हार का डंडा ; मौलसिरी ; कली ।

**मकूला** - पु० [अ] उक्ति ; कहावत ।

**मकोड़ा** - पु० [हि] छोटा काला कीड़ा ।

**मकोय** - स्त्री० [हिं] रसभरी का पौधा या फल ; एक पौधा जिसके फल, पत्ते आदि दवा के काम आते हैं ।

**मकोहा** - पु० [हिं] फ़सल में लगनेवाला एक कीड़ा ।

**मकड़** - पु० [हिं] नर मकड़ी ; **यौ०** —जाला - मकड़ी का जाला ।

**मक्कल** - पु० [सं] प्रसूता को होनेवाला एक प्रकार का शूलरोग ।

**मक्का** - पु० [हिं] मकई ; [अ] अरब का एक प्रधान नगर ।

**मक्कार** - वि० [अ] छली ।

**मक्कारी** - स्त्री० [अ] छल, धोखेबाज़ी ।

**मक्खन** - पु० [हिं] नवनीत ।

**मक्खी** - स्त्री० [हिं] एक पंखोंवाला कीड़ा, मक्षिका ; मधुमक्खी ; बंदूक़ ; **यौ०** —चूस - बड़ा कंजूस ; —मार - मक्खियाँ मारनेवाला ; घिनौना ; **मु०** —पर मक्खी मारना - बेसमझे पूरी नक़ल करना ।

**मक्र** - पु० [अ] छल, दग़ा ; —चाँदनी - धोखा देनेवाली चीज़ ।

**मक्षिका** - स्त्री० [सं] मक्खी ; **यौ०** —मल - मोम ।

**मक्सी** - पु० [हिं] काला या काले दाग़-वाला घोड़ा ।

**मख** - पु० [स] यज्ञ ।

**मख़ज़न** - पु० [अ] भण्डार, जमा करने की जगह ; गोले-बारूद का भण्डार ।

**मखतूल** - पु० [हिं] काला रेशम ।

**मख़दूम** - 1. वि० [अ] सेवित ; पूज्य ; 2. पु० स्वामी ।

**मख़दूमी** - पु० [अ] पूज्य, सेव्य (सम्बोधन) ।

**मख़दूश** - वि० [अ] भयसंकुल ।

**मखनिया** - 1. पु० [हिं] मक्खन बनाने या बेचनेवाला ; 2. वि० मक्खन निकाला हुआ।

**मख़फ़ी** - वि० [अ] गुप्त ।

**मख़मल** - स्त्री० [अ] एक बहुत चिकने-रोएँवाला मुलायम कपड़ा ।

**मख़मली** - वि० [अ] मख़मल का ; मख़मल-सा ।

**मख़मसा** - पु० [अ] झगड़ा ।

**मख़मूर** - वि० [अ] नशे में चूर ।

**मख़रज** - पु० [अ] उद्‌गम ; मूल ।

**मख़लूक़** - 1. वि० [अ] सृष्ट ; 2. स्त्री० प्राणी ; सृष्टि ।

**मख़लूक़ात** - स्त्री० [अ] चराचर जगत ।

**मख़लूत** - वि० [अ] मिला-जुला ।

**मख़सूस** - वि० [अ] कार्यविशेष के लिए अलग किया हुआ ।

**मखोना** - पु० [हिं] एक तरह का कपड़ा ।

**मखौल** - पु० [हिं] मज़ाक, ठट्ठा ।

**मखौलिया** - वि० [हिं] मखौल करनेवाला ।

**मग** - पु० [हिं] रास्ता ; मगध ; [सं] शाकद्वीप का एक भाग ; शाकद्वीपी ब्राह्मण ।

**मग़ज़ी** - स्त्री० [अ] मिर्जई, रजाई आदि पर लगायी जानेवाली गोट ।

**मगद, मगदल** - पु० [हि] मूँग या उड़द के बेसन का लड्डू ।

**मगन** - वि० [हिं] मग्न, डूबा हुआ ; आनंदित ।

**मगना** - अ० [हिं] प्रसन्न होना ।

**मग़फ़िरत** - स्त्री० [अ] अपराध क्षमा करना ।

**मग़फ़ूर** - वि० [अ] मृत ।

**मगमूम** - वि० [अ] दुखी ।

**मगर** - 1. पु० [हिं] एक हिंस्र जलजंतु ; कान में पहनने का एक गहना ; यौ० —मच्छ - बहुत बड़ी मछली ; मगर ; 2. अव्य० [फ़ा] लेकिन, पर ।

**मगरबाँस** - पु० [हिं] एक तरह का कँटीला बाँस ।

**मगरा** - वि० [हिं] घमंडी ; हठी ; उद्दंड ।

**मग़रिब** - पु० [अ] पश्चिम दिशा ; यौ० —ज़दा - पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित ; —की नमाज़ - शाम की नमाज़ ।

**मग़रिबी** - 1. वि० [अ] पश्चिमी ; 2. पु० पश्चिम का रहनेवाला ; यौ० —तहज़ीब - पश्चिमी सभ्यता ।

**मग़रूर** - वि० [अ] घमंडी ।

**मग़रूरी** - स्त्री० [अ] घमंड ।

**मगलूब** - वि० [अ] दबाया हुआ, पराजित ।

**मगस** - स्त्री० [फ़ा] मक्खी ; यौ० —रानी - मक्खियाँ उड़ाना ।

**मगही** - वि० [हिं] मगध का ; मगध में उपजनेवाला ; यौ० —पान - सबसे बढ़िया क़िस्म का पान जो कि मगध में होता है ।

**मग़ज़** - पु० [अ] गूदा, गिरी ; दिमाग़ ; सारभाग ; —चट - बक्की ; —चट्टी - बक-बक करके खोपड़ी खा जाना ; —पच्ची - माथापच्ची ; —रोशन - सूँघनी ; मु०—खा जाना, खा लेना, चाट जाना - बक-बक करके खोपड़ी ख़ाली कर देना ; —पिलपिला करना - मारकर भरता बना देना ।

**मग्न** - वि० [सं] डूबा हुआ ; तन्मय ; हर्षमग्न ।

**मघवा** - पु० [सं] इन्द्र ; उल्लू ।

**मघौना** - पु० [हिं] नीले रंग का कपड़ा ।

**मचक** - स्त्री० [हिं] दाब ; लचक ।

**मचकना** - अ० [हिं] लचकना ; लकड़ी, चमड़े आदि की चीज़ का दबकर मचमच आवाज़ करना ।

**मचका** - पु० [हिं] मचक ; झूले की पेंग ।

**मचकाना** - स० [हिं] लचकाना ; हिलाना ।

**मचना** - अ० [हिं] होना ; ज़ारी होना ; फैलना ।

**मचलना** - अ० [हिं] किसी चीज़ के लिए रोना-धोना ।

**मचला** - 1. वि० [हिं] हठी ; 2. पु० बाँस की बनी डिबिया ।

**मचलाना** - अ० [हिं] मतली मालूम होना ।

**मचली** - स्त्री० [हिं] मतली ।

**मचवा** - पु० [हिं] खाट ; मचिया ।

**मचान** - पु० [हिं] मंच, खंभों पर बाँस के फट्टे आदि बाँधकर बनाया हुआ आसन ।

**मचाना** - स० [हिं] साधक होना ; कराना ।

**मचिया** - स्त्री० [हिं] छोटी खाट ।

**मच्छर** - पु० [हिं] एक रोग के कीटाणु फैलानेवाला परदार छोटा कीड़ा ; यौ० —दानी - मच्छरों से बचने के लिए लगाया जानेवाला जालीदार परदा ।

**मच्छी** - स्त्री० [हिं] मछली ; यौ० —काँटा - एक तरह की सिलाई ; —मार - मछुआ ; मल्लाह ।

**मछली** - स्त्री० [हिं] एक जलजंतु ; मछली की शकल का लटकन ; यौ० —गोता - कुश्ती का एक पेंच ; —दार - दरी की एक बुनावट ; —मार - मछुआ ।

**मछवा** - पु० [हिं] मछली का शिकार करने की नाव ।

**मछुआ, मछुवा** - पु० [हिं] मछलियाँ पकड़ने का पेशा करनेवाला ।

**मज़कूर** - 1. वि० [अ] कथित ; 2. पु० चर्चा ; यौ०—ए बाला - उपर्युक्त ।

**मज़कूरा** - वि० [अ] कथित, उक्त ।

**मज़कूरी** - पु० [फ़ा] समन तामील करनेवाला कर्मचारी ।

**मज़दूर** - पु० [फ़ा] मज़दूरी पर काम करनेवाला ; मोटिया ; शरीरश्रम से जीविका चलानेवाला ; यौ० —दल-संगठित श्रमिक-वर्ग ; —संघ - श्रमिकों का संघ ।

**मज़दूरी** - स्त्री० [फ़ा] शरीरश्रम, बोझ ढोने आदि का काम ; पारिश्रमिक ; यौ०—पेशा - मेहनत-मज़दूरी का पेशा करनेवाला ।

**मजना** - अ० [हिं] डूबना ।

**मज़नूँ** - 1. वि० [अ] पागल ; आशिक ; सिड़ी ; 2. पु० अरबी की प्रसिद्ध प्रेमकथा ; 'लैला-मज़नू' का नायक ; बहुत दुबला-पतला आदमी ।

**मज़बह** - पु० [अ] वधस्थल ।

**मज़बूत** - वि० [अ] दृढ ; पुष्ट ; यौ०—दिलका - दृढचित्त ।

**मज़बूती** - स्त्री० [अ] दृढता ; सबलता ।

**मजबूर** - वि० [अ] विवश, लाचार ।

**मजबूरन्** - अव्य० [अ] लाचारी से ।

**मजबूरी** - स्त्री० [अ] विवशता ; लाचारी ।

**मजमा** - पु० [अ] भीड़, जमाव ।

**मजमूआ** - 1. वि० [अ] संगृहीत ; 2. पु० संग्रह ; राशि ; यौ०—जाबिता दीवानी - दीवानी मुक़द्दमों की विचार-विधि बतानेवाला कानून-संग्रह ; —जाबिता फ़ौज़दारी - फ़ौजदारी मुक़द्दमो की विचार-विधि बतानेवाला कानून-संग्रह ।

**मज़मूई** - वि० [अ] इकट्ठा ; सामूहिक ।

**मज़मून** - पु० [अ] लेख आदि का विषय या भाव ; निबन्ध; लेख ; यौ०—नवीस - लेख लिखनेवाला ; —नवीसी - लेख लिखने का काम ; मु० —बाँधना - किसी भाव को लेख या पद्य में व्यक्त करना ।

**मज़मूम** - वि० [अ] निन्दित ; नीच ।

**मज़म्मत** - स्त्री० [अ] निंदा ; भर्त्सना ।

**मज़रूआ** - 1. वि० [अ] जोता, बोया हुआ ; 2. पु० जोती, बोयी हुई ज़मीन ।

**मज़रूब** - 1. वि० [अ] मारा हुआ; 2. पु० सिक्का।
**मज़रूह** - वि० [अ] ज़ख्मी, घायल।
**मजलिस** - स्त्री० [अ] सभा, जलसा।
**मज़लूम** - वि० [अ] पीड़ित, सताया हुआ।
**मज़हब** - पु० [अ] पंथ, संप्रदाय; दीन।
**मज़हबी** - वि० [अ] धर्म विशेष से संबन्ध रखनेवाला; यौ०—आज़ादी - अपने धर्म के आचरण की स्वतंत्रता।
**मज़ा** - पु० [अ] ज़ायका; चस्का; सुख; तमाशा; सजा; यौ० मज़ेदार - स्वादिष्ठ; मु० - किरकिरा होना - रस-भंग होना; —चखना, पाना - लुत्फ़ उठाना, फल भोगना; —लूटना - सुख भोगना।
**मज़ाक़** - पु० [अ] हँसी, दिल्लगी; स्वाद; चखने की इच्छा; रुचि; यौ०—पसंद - हँसोड़; मु०—उड़ाना - परिहास करना।
**मज़ाकन्** - अव्य० [अ] हँसी में।
**मज़ाकिया** - 1. वि० [अ] हँसोड़; 2. अव्य० मज़ाक में।
**मजाज़** - 1. वि० [अ] कल्पित; अधिकार-प्राप्त; 2. पु० लाक्षणिक अर्थ में व्यवहृत पद।
**मजाज़न्** - अव्य० [अ] नियमानुसार; मानकर।
**मजाज़ी** - वि० [अ] अवास्तविक; लौकिक।
**मज़ार** - पु० [अ] दरगाह; क़ब्र।
**मजाल** - स्त्री० [अ] शक्ति, सामर्थ्य।
**मजीठ** - स्त्री० [हिं] एक लता जिसकी जड़ों और डंठलों को उबालकर लाल रंग निकाला जाता है।
**मजीरा** - पु० [हिं] ताल देने के लिए बजायी जानेवाली काँसे की कटोरियों की जोड़ी।
**मज्जन** - पु० [सं] नहाना; डूबना; मज्जा।
**मज्जा** - स्त्री० [सं] नली की हड्डी के भीतर भरा हुआ स्नेहरूप पदार्थ; पेड़-पौधों का सारभाग; यौ०—रस - शुक्र, वीर्य।
**मझधार** - स्त्री० [हि] बीचधारा।
**मझला** - वि० [हिं] बीच का।
**मझेला** - पु० [हिं] मोचियो का एक औज़ार।
**मझोला** - वि० [हिं] मझला; न बहुत बड़ा, न छोटा।
**मझोली** - स्त्री० [हिं] एक तरह की बैल-गाड़ी; मोचियों का एक औज़ार।
**मटक** - स्त्री० [हिं] लचक, नखरे या मटकने का भाव।
**मटकना** - अ० [हिं] इठलाकर चलना; हटना।
**मटका** - पु० [हिं] बड़े मुँह का घड़ा।
**मटकाना** - स० [हिं] किसी विशेष अंग से मटकने की क्रिया करना, चमकाना।
**मटकी** - स्त्री० [हिं] छोटा मटका।
**मटमँगरा** - पु० [हिं] ब्याह के कुछ पहले होनेवाली एक रस्म।
**मटमैला** - वि० [हिं] मिट्टी के रंग का, खाकी।
**मटर** - पु० [हिं] एक द्विदल अन्न; यौ० —गश्त, गश्ती - आवारा फिरना; टहलना।
**मटराला** - पु० [हिं] जौ में मिला हुआ मटर।
**मटियाना** - स० [हिं] मिट्टी मलकर धोना।
**मटियामेट** - वि० [हिं] मिट्टी में मिला हुआ, नष्ट।
**मटियाला** - वि० [हिं] मटमैला।
**मट्ठा** - पु० [हिं] छाछ, तक्र।
**मठ** - पु० [सं] साधु-संन्यासियों के रहने का स्थान; छात्रावास; यौ०—धारी - मठ का प्रधान।

**मठरना** - पु० [हिं] सोनारों और कसेरों का औज़ार।

**मठरी, मठली** - स्त्री० [हिं] मैदे की बनी एक तरह की नमकीन टिकिया।

**मठाधीश** - पु० [सं] महन्त।

**मठारना** - स० [हिं] गोलाई लाने के लिए बरतन को पीटना।

**मठिया** - स्त्री० [हिं] छोटा मठ; फूल की बनी हुई चूड़ियाँ।

**मठोठा** - पु० [हिं] कुएँ की जगत।

**मठोर** - स्त्री० [हिं] दही मथने की मटकी; नील बनाने का माठ।

**मड़ई** - स्त्री० [हिं] कुटी, झोपड़ी।

**मड़ा** - पु० [हिं] नेत्ररोग; कमरा, प्रकोष्ठ।

**मड़ुआ** - पु० [हिं] एक मोटा अनाज।

**मड़ैया** - स्त्री० [हिं] मड़ई, झोपड़ी।

**मढ़ना** - स० [हिं] थोपना; बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना; चित्र, मेज़ आदि को शीशा, कपड़ा आदि से ढकना।

**मढ़ाई** - स्त्री० [हिं] मढ़ने का काम या उसकी मज़दूरी।

**मढ़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा मठ; कुटी।

**मणि** - पु०, स्त्री० [सं] बहुमूल्य और कांतियुक्त पत्थर, रत्न; श्रेष्ठ जन; लिंग और योनि का अग्र भाग; मणिबंध; यौ०—कांचन - रत्न और सोना; —कांचन-योग - रत्न और सोने-जैसा सुंदरता बढ़ानेवाला संयोग; —कार - जौहरी; —दीप - रत्नजटित दीप; दिये का काम देनेवाली मणि; —धर - सर्प; —बंध - कलाई; —बीज - अनार का पेड़; —भूमि - रत्नों की खान; —माला - मणियों की माला; लक्ष्मी; चमक।

**मतंग** - पु० [सं] हाथी; बादल; यौ०—ज - हाथी।

**मत** - 1. अव्य० [हिं] न, नहीं; 2. वि० [सं] अभिप्रेत; माना हुआ; अर्चित; बराबर किया हुआ; सम्मानित; 3. पु० राय; सिद्धान्त; विचार; पंथ; अभिप्राय; वोट; यौ० —गणना - मतों या वोटों की गिनती; —दान - चुनाव आदि में विधिवत् मतप्रकाश; —भेद - मत की भिन्नता; —स्वातंत्र्य - विचार की स्वतंत्रता।

**मतलब** - पु० [अ] अभिप्राय; अर्थ; स्वार्थ; प्रयोजन; सरोकार।

**मतलबी** - वि० [अ] स्वार्थी।

**मतलूब** - वि० [अ] अभिप्रेत।

**मतलूबा** - वि०, स्त्री० [अ] माशूका।

**मतवाला** - 1. वि० [हिं] मस्त; गर्वसहित इतराता हुआ; 2. पु० क़िले की दीवार से शत्रु पर लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर।

**मतान्तर** - पु० [सं] भिन्न मत।

**मताधिकार** - पु० [सं] मत देने का हक़।

**मतानुयायी** - वि० [सं] मतविशेष को माननेवाला।

**मतारी** - स्त्री० [हिं] माता।

**मतावलंबी** - वि० [सं] संप्रदाय-विशेष का अवलंबन करनेवाला।

**मति** - स्त्री० [सं] बुद्धि; राय; इच्छा; अभिप्राय; यौ० —द्वैत - मतभेद; —पूर्वक - सोच-समझकर; —भ्रंश - पागलपन; —भ्रम - अक़ल का उलट-फेर; —मंद - कमसमझ; —हीन - निर्बुद्धि; मु० —मारी जाना - अक़ल का मारा जाना।

**मतिमान** - वि० [सं] बुद्धिमान; समझदार।

**मतीरा** - पु० [देश] तरबूज।

**मत्क** - पु० [सं] खटमल।

**मत्कुण** - पु० [सं] खटमल; मकुना हाथी; बिना दाढ़ी-मूँछ का आदमी।

**मत्त** - 1. वि० [सं] मतवाला; उन्मत्त; घमंडी; अतिप्रसन्न; 2. पु० मस्त हाथी; कोयल; भैंस; धतूरा; यौ० —मयूर - मस्त मोर।

**मत्तता** - स्त्री० [सं] मस्ती, मतवालापन।

**मत्था** - पु० [हिं] ललाट; सिर; सामने या ऊपर का हिस्सा; मु० —टेकना - नमस्कार करना।

**मत्स** - पु० [सं] मछली; हँसिया की मूठ।

**मत्सर** - 1. पु० [सं] डाह; क्रोध; 2. वि० डाह करनेवाला; कृपण।

**मत्स्यंडिका** - स्त्री० [सं] मोटी और बिना साफ़ की गयी खाँड़।

**मत्स्य** - पु० [सं] मछली; मीनराशि; विष्णु के दस अवतारों में से पहला; यौ० —करंडिका - मछलियाँ पकड़ने का झाबा; —घात, घाती - मछुआ; —जाल - मछली पकड़ने का जाल;—जीवी - मछुआ;— धानी - मछली रखने का झाबा; —मुद्रा - तांत्रिक पूजा में व्यवहृत एक मुद्रा।

**मत्स्याक्षी** - स्त्री० [सं] सोमलता; ब्राह्मी; दूब।

**मथन** - पु० [सं] बिलोड़न; वध; क्लेश।

**मथना** - स० [हिं] आलोड़न करना; बिलोना; किसी बात को बार-बार सोचना; दलन करना।

**मथनी** - स्त्री० [हिं] दही मथने का मटका; मथानी।

**मथवाह** - पु० [हिं] महावत; मस्तकपीड़ा।

**मथानी** - स्त्री० [हिं] दही मथने का डंडा।

**मथित** - 1. वि० [सं] मथा हुआ; पीड़ित; 2. पु० जलरहित मट्ठा।

**मद** - 1. स्त्री० [अ] मद्द, 2. पु० [सं] नशा; मस्ती; मस्त हाथी की कनपटी से झरनेवाला जल; उन्माद; हर्ष; यौ० —कट - नपुंसक; —कर - नशा पैदा करनेवाला; —गमन - भैंसा; —जल - मस्त हाथी की कनपटी से झरनेवाला जल; —ज्वर - कामज्वर; नशा; —भरा - मस्त; मादकताजनक; —मत्त - मतवाला; —माता - कामुक; मस्त।

**मदक** - स्त्री० [हिं] अफ़ीम के सत्त और पान के योग से बननेवाला एक नशीला पदार्थ।

**मदख़ूल** - वि० [अ] दाख़िल किया हुआ।

**मदख़ूला** - स्त्री० [अ] रखेली।

**मदद** - स्त्री० [अ] सहायता; यौ० —गार - सहायक।

**मदन** - पु० [सं] कामदेव; वसंतकाल; आलिंगन का एक भेद; भ्रमर; यौ० —कंटक - सात्विक अनुरागजनित रोमांच; —कलह - प्रेमकलह; —गोपाल - कृष्ण; —दहन - शिव; —दिवस - मदनोत्सव; —लेख - प्रेमपत्र।

**मदना** - स्त्री० [सं] सुरा; कस्तूरी; अति-मुक्तक लता।

**मदनोत्सव** - पु० [सं] मदनमहोत्सव; होली।

**मदनोद्यान** - पु० [सं] प्रमोद-वन।

**मदफ़न** - पु० [अ] क़ब्र।

**मदफ़ून** - वि० [अ] दफ़न किया हुआ।

**मदरसा** - पु० [अ] पाठशाला।

**मदांध** - वि० [सं] मस्ती या बल आदि के गर्व से अंधा।

**मदांतक** - पु० [सं] अति मद्यपान से होने-वाला एक रोग।

**मदार** - 1. पु० [सं] कामुक; मस्त हाथी; सूअर; [हिं] आक; 2. वि० धूर्त; 3. पु० [अ] ग्रह-नक्षत्रों का भ्रमण-पथ; मंडल; आधार।

**मदारी** - पु० [हिं] बाजीगर; बंदर-भालू नचानेवाला।

**मदिर** - वि० [सं] नशा; मद-भरा।

**मदिरा** - स्त्री० [सं] शराब।

**मदिराक्षी** - वि०, स्त्री० [सं] मस्त, मदभरी आँखोंवाली।

**मदिरालय** - पु० [सं] शराबख़ाना।

**मदीय** - वि० [सं] मेरा।

**मदोन्मत्त** - वि० [सं] मतवाला, मदान्ध।

**मद्द** - 1. स्त्री० [अ] शीर्षक; विभाग; ख़ाता; लेख की समाप्ति पर खींची जानेवाली लकीर; लेखा लिखने के पहले खींची जानेवाली आड़ी लकीर; 2. पु० ज्वार यौ० —व जज़र - ज्वार-भाटा।

**मद्दाह** - वि० [अ] सहायक; प्रशंसक।

**मद्धिम** - वि० [हिं] मध्यम; मंदा; कम अच्छा।

**मद्धे** - अव्य० [हिं] बीच में; ख़ाते में।

**मद्य** - पु० [सं] सुरा, शराब; यौ० —प - शराबी; —पान - शराब पीना; —पायी - शराबी; —भाण्ड - शराब रखने का घड़ा; —संधान - शराब चुआना।

**मधु** - 1. पु० [सं] शहद; पुष्परस; मद्य; वसंत ऋतु; जल; दूध; सोमरस; शर्करा; मुलेठी; 2. वि० मीठा; यौ० —कर - भौंरा; कामी पुरुष; —करी - भ्रमरी; संन्यासी द्वारा ग्राह्य भिक्षा; —कर्कटी - बिजौरा नीबू; खजूर का फल; —कार, कारी - मधु-मक्खी; —कृत् - मधुमक्खी; भौंरा; —कोष - शहद का छत्ता; —चक्र - शहद की मक्खियों का छत्ता; —ज - मोम; —जीवन - बहेड़े का पेड़; —त्रय - शहद, घी और शर्करा; —दीप - कामदेव; —धूलि - शक्कर; —नेता - भौंरा; —प - भ्रमर; उद्धव; —पटल - शहद की मक्खियों का छत्ता; —पर्क - दही, घी, शहद, जल और शक्कर का योग; —पायी - भौंरा; —पुष्प - महुआ; अशोक, मौलसिरी; सिरिस; —प्रमेह - मधुमेह; —फल - मीठा नारियल; —बीज - अनार; —भूमिक - मधुमती भूमिका में स्थित योगी; —मक्खी - शहद की मक्खी; —मक्षिका, मक्षी - शहद की मक्खी; —मस्तक - मैदे में घी-शहद मिलाकर बनायी जानेवाली एक तरह की मिठाई; —माधव - चैत्र और वैशाख; —मेह - पेशाब के साथ शक्कर आने का रोग; —रस - मधुर रसवाला; ईख; ताड़; —रसिक - भौंरा; —वार - शराब का दौर; —व्रत - भौंरा; —शर्करा - शहद से बनायी हुई शक्कर; —सख, सहाय, सारथी, सुहृद - कामदेव; —स्वर - कोयल।

**मधुका** - स्त्री० [सं] मुलेठी; मधु।

**मधुमती** - स्त्री० [सं] योग की वह अवस्था जब रजस और तमो गुण का लोप होकर सत्त्व गुण का पूर्ण प्रकाश हो जाता है; एक नदी।

**मधुमय** - वि० [सं] मधु, मिठास से भरा हुआ।

**मधुर** - 1. वि० [सं] मीठा; सुंदर; प्रिय; कोमल; कानों को अच्छा लगनेवाला; सौम्य; 2. पु० मिठास; मीठा पेय; यौ० —भाषी - जिसकी वाणी में मिठास हो।

**मधुरता** - स्त्री०, **मधुरत्व** - पु० } [सं] मिठास, माधुर्य।

**मधुराई** - स्त्री० [हिं] मधुरता।

**मधुरान्न** - पु० [सं] मिष्टान्न।

**मधुरिका** - स्त्री० [सं] सौंफ; चाकलेट।

**मधुरिमा** - स्त्री० [सं] मिठास, माधुर्य।

**मधूक** - पु० [सं] महुए का पेड़ और फूल; भ्रमर; मुलेठी।

**मध्य** - 1. पु० [सं] बीच का भाग; केन्द्र; कमर; बीच की अवस्था; नृत्य में मध्यम गति; संगीत में बीच का सप्तक; 2. वि० बीच का; अंतरवर्ती; मध्यस्थ; न्याय्य; यौ०—कर्ण - अर्ध व्यास; —गत - बीच का; —दिन - दोपहर; —भाग - बीच का भाग; —भाव - बीच की अवस्था; —रात्र, रात्रि - आधी रात; —लोक - मर्त्य लोक, भूलोक; —वय - अधेड़ उम्र; —वर्ती - केन्द्रवर्ती; मध्यस्थ; —वित्त - मध्यम श्रेणी का; —वृत्त - नाभि; —स्थ - तटस्थ; बिचुवा; —स्थल - मध्य भाग; कमर।

**मध्यम** - 1. वि० [सं] मंझला; न बढ़िया न घटिया; 2. पु० सात स्वरों में से चौथा; तीन प्रकार के नायकों में से एक; यौ०—लोक - मर्त्यलोक, धरती; —वय - अधेड़ उम्र; —वयस्क - अधेड़; —संग्रह - गहने-कपड़े आदि भेजकर परस्त्री को फुसलाना।

**मध्यमा** - स्त्री० [सं] बीच की उँगली; पुष्पवती स्त्री या लड़की; कमल की कर्णिका।

**मध्यमिका** - स्त्री० [सं] रजःप्राप्त स्त्री या लड़की।

**मध्यस्थता** - स्त्री० [सं] तटस्थता; बिचवई।

**मध्याह्न** - पु० [सं] दोपहर।

**मनःकल्पित** - वि० [सं] मनगढ़ंत।

**मनःक्षेप** - पु० [सं] मन का क्षोभ।

**मनःपूत** - वि० [सं] अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित।

**मनःसंस्कार** - पु० [सं] मन पर पड़नेवाला प्रभाव; मन का परिष्कार।

**मन** - पु० [हि] चालीस सेर का वज़न; [सं] संवेदन, ज्ञान, संकल्प आदि की साधनरूप अंतरिन्द्रिय; चित्त; अन्तःकरण की संकल्प-विकल्प करनेवाली वृत्ति; इच्छा; यौ० —गढ़ंत - कल्पित; —चला - साहसी, निडर; —चाहा - मनोभिलषित; —चीता - सोचा हुआ; —भाया - मन को अच्छा लगनेवाला; —भावता, भावन - प्यारा; —मथन - कामदेव; —माना - जो मन में आये, यथेच्छ; —मानी - मनमाना काम; —मुटाव - वैमनस्य; —मोदक - ख़याली पुलाव; —मौजी - स्वच्छन्द, अपनी इच्छानुसार काम करनेवाला; —हरण - मनोहर; मन को मोहने या हरने की क्रिया; एक वर्ण-वृत्त; मु० — कच्चा करना - हिम्मत हारना; —करना - इच्छा होना; —का मैला - बुरे दिल का; —की मन में रहना - इच्छा पूरी न होना; —की मौज - मन की लहर; —चलना - इच्छा होना; —मारना - मनोनिग्रह करना; —मिलना - प्रीति होना; —में आना - इच्छा होना; —हरना - मन मोहना; — ही मन - चुपचाप।

**मनकना** - अ० [हिं] हिलना; हाथ पैर आदि से कोई चेष्टा करना।

**मनका** - पु० [हिं] माला या सुमिरनी आदि का दाना।

**मनकूला** - वि० स्त्री० [अ] चर, चल (संपत्ति); यौ० —ज़ायदाद - चल संपत्ति।

**मनकूहा** - वि० स्त्री० [अ] विवाहिता।

**मनज़ूम** - वि० [अ] पद्यबद्ध।

**मनन** - पु० [सं] अनुमान; समझने के लिए बार-बार विचार करना; यौ० —शील - विचारशील।

**मननीय** - वि० [सं] मनन करने योग्य।

**मनवाना** - स० [हिं] मानने को प्रेरित करना ; मनाने का काम दूसरे से कराना।

**मनश्चक्षु** - पु० [स] अन्तर्दृष्टि।

**मनसब** - पु० [अ] पद ; अधिकार ; दर्जा ; सेवा ; यौ० —दार - अधिकारी ; वृत्ति पानेवाला।

**मनसा** - 1. अव्य० [सं] मन से, मन के द्वारा ; 2. स्त्री० [हिं] मन ; इच्छा ; इरादा ; बुद्धि ; 3. वि० मन से उत्पन्न।

**मनसूख़** - वि० [अ] रद्द किया हुआ।

**मनसूब** - वि० [अ] संबद्ध ; मंगेतर।

**मनसूबा** - पु० [अ] योजना ; युक्ति ; इरादा।

**मनस्ताप** - पु० [सं] दुख ; अनुताप।

**मनस्तुष्टि** - स्त्री० [सं] मन का संतोष।

**मनस्तृप्ति** - स्त्री० [सं] मन की तृप्ति।

**मनस्विनी** - स्त्री० [सं] मनस्वी स्त्री ; दुर्गा।

**मनस्वी** - वि० [सं] बुद्धिमान ; स्थिरचित्त ; ऊँचे मनवाला।

**मनहुँ** - अव्य० [हिं] मानों।

**मनहूस** - वि० [अ] अभागा ; अशुभ ; उदासी से परिपूर्ण।

**मनहूसी** - स्त्री० [अ] उदासी।

**मना** - 1. पु० [अ] रोकना ; 2. वि० निषिद्ध।

**मनाना** - स० [हिं] रूठे हुए को प्रसन्न करना ; मनुहार करना।

**मनार** - पु० [अ] मीनार, ज्योतिस्तंभ ; मसज़िद का वह स्तंभ जिसपर खड़ा होकर मुअज़्ज़िन अजाँ देता है।

**मनाही** - स्त्री० [अ] निषेध, मुमानियत।

**मनिया** - स्त्री० [हिं] मनका।

**मनिहार** - पु० [हिं] फेरी करके चूड़ी, टिकली, सिंदूर आदि बेचनेवाला।

**मनिहारन, मनिहारिन** - स्त्री० [हिं] चूड़ी बेचने या पहनानेवाली स्त्री।

**मनी** - स्त्री० [अ] वीर्य ; [फ़ा] गर्व ; [अंग्रे] सिक्का ; रुपया।

**मनीषा** - स्त्री० [सं] बुद्धि ; स्तुति ; इच्छा ; विचार।

**मनीषी** - 1. वि० [स] बुद्धिमान ; पंडित ; 2. पु० बुद्धिमान मनुष्य।

**मनु** - अव्य० [हिं] मानों।

**मनुष्य** - पु० [सं] आदमी ; यौ० — कार - पुरुषार्थ ; —कृत - मनुष्य का बनाया हुआ ; —गणना - मर्दुमशुमारी, जनगणना ; —यज्ञ - अतिथि-सत्कार ; —लोक - मृत्युलोक।

**मनुष्यता** - स्त्री० [सं] मनुष्योचित भाव।

**मनुसाई** - स्त्री० [हिं] पुरुषार्थ।

**मनुहार** - पु० [हिं] मनाने के लिए की जानेवाली विनती ; यौ० —नीति - प्रसन्न करने की नीति।

**मनोकामना** - स्त्री० [हिं] अभिलाषा।

**मनोगत** - 1. वि० [सं] मन में भरा या छिपा हुआ ; 2. पु० इच्छा ; विचार।

**मनोगति** - स्त्री० [सं] इच्छा ; मन की गति।

**मनोज** - पु० [सं] कामदेव।

**मनोजव** - 1. वि० [सं] अतिवेगवान ; पितृतुल्य ; 2. पु० विष्णु ; हनुमान।

**मनोज्ञ** - वि० [सं] सुन्दर, मनोहर।

**मनोज्ञा** - स्त्री० [सं] राजकुमारी ; मद्य ; कलौंजी।

**मनोदंड, मनोनिग्रह** - पु० [सं] मन की इच्छाओं को वश में रखना।

**मनोनिवेश** - पु० [सं] मन लगाना।

**मनोनीत** - वि० [सं] पसन्द किया हुआ ; चुना हुआ।

**मनोभव** - पु० [सं] कामदेव।

**मनोभाव** - पु० [सं] मन का भाव या वृत्ति ।

**मनोमय** - वि० [सं] मानस ; **यौ०**—कोष - आत्मा के आवरणरूप पंचकोशों में से तीसरा ।

**मनोमालिन्य** - पु० [सं] मनमुटाव ।

**मनोयोग** - पु० [सं] एकाग्रता ।

**मनोरंजक** - वि० [सं] मनोरंजन करनेवाला ।

**मनोरंजन** - पु० [सं] दिल का ख़ुश होना ।

**मनोरथ** - पु० [सं] अभिलाषा ।

**मनोरम** - वि० [सं] सुंदर ।

**मनोराज्य** - पु० [सं] कल्पनासृष्टि, ख़याली पुलाव ।

**मनोवांछित** - वि० [सं] अभिलषित ।

**मनोविकार** - पु० [सं] मन की भावना या उसका आवेग ।

**मनोविज्ञान** - पु० [सं] मानसशास्त्र ।

**मनोवृत्ति** - स्त्री० [सं] चित्तवृत्ति ।

**मनोवैज्ञानिक** - 1. वि० [सं] मनोविज्ञान-संबन्धी ; 2. पु० मानसशास्त्री ।

**मनोहर** - 1. वि० [सं] सुंदर ; 2. पु० छप्पय छंद का एक भेद ।

**मनोहारी** - वि० [सं] सुंदर ।

**मनौती**, **मन्नत** - स्त्री० [हिं] कार्यसिद्धि होने पर किसी देवता की विशेष पूजा करने की प्रतिज्ञा, मानता , मनावन ।

**मन्मथ** - पु० [स] कामदेव ।

**मन्यु** - पु० [स] क्रोध ; अहंकार; दैन्य ; उत्साह ; शोक ।

**मफ़रूर** - वि० [अ] भागा हुआ (अपराधी) ।

**मम** - सर्व० [सं] मेरा; मेरी ; **यौ०** —कार - ममता ; निजी संपत्ति ।

**ममता** - स्त्री०, **ममत्व** - पु० [सं] किसी चीज़ को अपनी समझना ; अपनापन ; अहंकार ; बच्चे के प्रति माँ का स्नेह ; मोह ।

**ममिया** - वि० [हिं] ममेरा, मामा के दर्जे-वाला ; **यौ०** —ससुर - पति या पत्नी का मामा ; —सास - पति या पत्नी की मामी ।

**ममियौरा** - पु० [हिं] मामा का घर ।

**मय** - 1. पु० [सं] एक दानव-शिल्पी ; खच्चर ; घोड़ा ; ऊँट ; 2. प्रत्य० परिपूर्ण या युक्त आदि अर्थों को प्रकट करनेवाला प्रत्यय (जैसे, कनकमय, जलमय, दयामय आदि) ; 3. अव्य० [अ] में ; साथ ; 4. स्त्री० [फ़ा] शराब ; **यौ०** —कदा, ख़ाना - मदिरालय ; —कश - शराब पीनेवाला ; —कशी - मद्यपान ; —परस्त - शराबी ; —परस्ती - मदिराप्रेम ; —फ़रोश - शराब बेचनेवाला ।

**मयार** - वि० [हिं] दयालु ।

**मयारी** - स्त्री० [हिं] धरन ।

**मयूख** - पु० [स] किरण ; दीप्ति ; शोभा ; शिखा ; कील ।

**मयूखी** - वि० [सं] चमकीला ।

**मयूर** - पु० [सं] मोर ; **यौ०** —पुच्छ - मोर की पूँछ ; —शिखा - मोर की चोटी ।

**मयूरी** - स्त्री० [सं] मोरनी ।

**मरकज़** - पु० [अ] केन्द्र ; मुख्य स्थान ।

**मरकज़ी** - वि० [अ] केन्द्रीय ; प्रधान ।

**मरकत** - पु० [सं] पन्ना ।

**मरकना** - अ० [हिं] दबकर टूटना ; दबना ।

**मरकहा** - वि० [हिं] सींग से मारनेवाला ( बैल, भैंस आदि) ।

**मरकाना** - स० [हिं] दबाकर तोड़ना ।

**मरक़ूम** - वि० [अ] लिखित ।

**मरखन्ना** - वि० [हिं] मरकहा ।

**मरघट** - पु० [हिं] मुर्दे जलाने की जगह, श्मशान ।

**मरजिया** - 1. पु० [हिं] गोताखोर; 2. वि० अधमरा; मरने को उद्यत; मरते-मरते जीनेवाला।

**मरज़ी** - स्त्री० [अ] ख़ुशी; स्वीकृति; इच्छा; रुचि।

**मरण** - पु० [सं] मृत्यु; **यौ०** —धर्मा, शील - मरनेवाला; मर्त्य।

**मरणांतक** - वि० [सं] जानलेवा, जिसका अंत मृत्यु हो।

**मरणोन्मुख** - वि० [सं] आसन्नमरण।

**मरतबान** - पु० [हिं] अचार या मुरब्बा आदि रखने का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन।

**मरता** - वि० [हिं] मरता हुआ; **यौ०** मरते-जीते - किसी तरह; मरते दम तक - आख़िरी समय तक; मरते-मरते - मरते समय; मौत के पास पहुँचकर; **मु०** मरते को मारना - दुखिया को और अधिक सताना।

**मरदई, मरदानगी** - स्त्री० [फ़ा] वीरता।

**मरदूद** - वि० [अ] बहिष्कृत; निकम्मा; तिरस्कृत; रद्द किया हुआ; नीच।

**मरना** - अ० [हिं] जीवित न रहना; मुरझाना; अति श्रम करना; बुझना; दब जाना; तबाह हो जाना; डूबना; वसूल न होना; पिटना; **यौ०** मर-पिटकर - बड़ी कठिनाई से; मर-मरकर - बड़ी मेहनत से, जान तोड़कर।

**मरनी** - स्त्री० [हिं] मौत; अंत्येष्टि; ग़मी।

**मरभुखा** - वि० [हिं] पेटू; कंगाल।

**मरमराना** - अ० [अनु] मर-मर की आवाज़ करना; डाल आदि का दबकर टूटना।

**मरम्मत** - स्त्री० [अ] टूटी-फूटी चीज़ को फिर से दुरुस्त करना; शारीरिक दंड।

**मरम्मती** - वि० [अ] मरम्मत करने लायक़; मरम्मत-संबंधी।

**मरसा** - पु० [हिं] बरसात में होनेवाला एक साग।

**मरसिया** - पु० [अ] किसीकी मृत्यु के समय गायी जानेवाली करुणरस से परिपूर्ण कविता; मातम; **यौ०** —ख्वाँ - मरसिया पढ़नेवाला; —ख्वानी - मरसिया पढ़ना।

**मरहठी** - वि० [हिं] मरहठों से संबद्ध।

**मरहम** - पु० [अ] घाव पर लगाने का लेप; **यौ०** —पट्टी - घाव पर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना।

**मरहमत** - स्त्री० [अ] कृपा, अनुग्रह।

**मरहून** - वि० [अ] रेहन किया हुआ।

**मरहूना** - 1. वि०, 2. स्त्री० [अ] बंधक रखी हुई (संपत्ति)।

**मरहूम** - वि० [अ] स्वर्गवासी; माफ़ किया हुआ।

**मरातिब** - पु० [अ] पद; पताका; मकान का खण्ड; मंज़िल।

**मरार** - पु० [सं] अन्नभंडार; [हिं] काछी।

**मराल** - 1. पु० [सं] राजहंस; बादल; काजल; घोड़ा; 2. वि० चिकना।

**मरिच** - पु० [सं] काली मिर्च।

**मरियल** - वि० [हिं] बहुत दुबला; कमज़ोर; **यौ०** —टट्टू - बहुत दुबला, कमज़ोर घोड़ा।

**मरी** - स्त्री० [हिं] महामारी।

**मरीचि** - स्त्री० [सं] किरण; ज्योति; **यौ०** —जल, तोय - मृगतृष्णा।

**मरीचिका** - स्त्री० [सं] मृगतृष्णा।

**मरीज़** - वि० [अ] रोगी।

**मरीज़ा** - 1. वि०, 2. स्त्री० [अ] रोगिणी।

**मरुंडा** - स्त्री० [सं] ऊँचे ललाटवाली स्त्री।

**मरु** - पु० [सं] मरुभूमि; मारवाड़; पर्वत; मरुआ नामक पौधा, **यौ०** —देश - रेगिस्तान; —द्विप - ऊँट; —द्वीप -

नख़लिस्तान, मरुभूमि में स्थित हरित स्थान; —धर - मारवाड़; —भूमि - रेगिस्तान; —स्थल - रेतीला मैदान।

**मरुआ** - पु० [हिं] एक पौधा; हिंडोला लटकाने की लकड़ी; बँड़ेर।

**मरुत** - पु० [स] वायु; देवता।

**मरुत्** - पु० [सं] प्राण, वायु; देवता; सोना; यौ० —तनय - हनुमान; भीम; —पति - इन्द्र; —पथ - आकाश; —फल - ओला।

**मरुत्वती** - स्त्री० [सं] धर्म की पत्नी।

**मरुत्वान** - पु० [सं] इन्द्र; हनुमान।

**मरुद्वाह** - पु० [सं] धुआँ; आग; मेघ।

**मरोड़** - पु० [हिं] ऐंठन; आँव के रोग से आँतो में होनेवाली ऐंठन; पेचिश, क्षोभ।

**मरोड़ना** - स० [हिं] ऐंठना; उमेठना; मसलना; पीड़ा देना।

**मरोड़ा** - पु० [हिं] ऐंठन; पेचिश।

**मरोड़ी** - स्त्री० [हिं] मरोड़; गीले आटे आदि की बत्ती।

**मर्कट** - पु० [सं] बंदर; मकड़ा; एक स्थावर विष; दोहे या छप्पय का एक भेद।

**मर्कटी** - स्त्री० [सं] वानरी; मकड़ी।

**मर्ज़** - पु० [अ] व्याधि; आदत; दुख।

**मर्ज़ी** - स्त्री० [अ] स्वीकृति; ख़ुशी; इच्छा, रुचि।

**मर्तबा** - पु० [अ] पद; बार, दफ़ा।

**मर्त्य** - 1. वि० [सं] नश्वर; 2. पु० मनुष्य; यौ० —भाव - मनुष्यस्वभाव; —लोक - मनुष्यलोक, भूलोक।

**मर्द** - पु० [फ़ा] पुरुष; पति; यौ० —आदमी - बहादुर, भला आदमी; —बच्चा - वीर; —बाज़ - पुंश्चली (स्त्री); मर्देख़ुदा - भगवान का भक्त।

**मर्दक** - पु० [सं] मर्दन करनेवाला।

**मर्दन** - पु० [सं] मालिश करना; कुचलना; चूर्ण करना; घोटना।

**मर्दानगी** - स्त्री० [फ़ा] बहादुरी; पुरुषत्व।

**मर्दाना** - 1. वि० [फ़ा] पुरुष-संबंधी; पुरुषोचित; बहादुर; 2. पु० मर्दाना बैठक; यौ० —वार - मर्दों की तरह।

**मर्दित** - वि० [सं] मर्दन किया हुआ; कुचला हुआ।

**मर्दुआ** - पु० [हिं] तुच्छ पुरुष; पति।

**मर्दुम** - पु० [फ़ा] मनुष्य; जनसाधारण; आँख की पुतली; यौ० —आज़ार - लोगों को सतानेवाला; —आज़ारी - मनुष्यो का उत्पीड़न; —ख़ोर - नरभक्षी; —शुमारी - जनगणना।

**मर्दुमक** - पु० [फ़ा] आँख की पुतली।

**मर्म** - पु० [सं] शरीर का नाज़ुक भाग; संधिस्थान; तात्पर्य; तत्त्व; गूढार्थ; यौ० —घाती - मर्म पर आघात करनेवाला; —च्छिद, च्छेदी - मर्मभेदी; —ज्ञ - गूढार्थ को जाननेवाला; —पीड़ा, व्यथा - हृदय में होनेवाली तीव्र वेदना; —प्रहार - मर्मस्थान पर किया गया आघात; —भेद - रहस्य का उद्घाटन; —वचन - दिल को लगनेवाली बात; —स्थान - शरीर की नाज़ुक जगह।

**मर्मर** - पु० [सं] पत्तो की खड़खड़ाहट; यौ०—ध्वनि - खड़खड़ाहट।

**मर्मांतक** - वि० [स] हृदय को छेदनेवाला।

**मर्माघात** - पु० [सं] हृदय पर गहरी चोट लगना।

**मर्मी** - वि० [हिं] रहस्य जाननेवाला।

**मर्मोद्घाटन** - पु० [सं] रहस्य का प्रकट होना।

**मर्यादा** - स्त्री० [सं] सीमा; अवधि; समुद्र या नदी आदि का किनारा; सदाचार;

[हिं] समझौता ; यौ०—पालक - मर्यादा का पालन करनेवाला ।

**मर्श** - पु० [सं] विचार, विमर्श ।

**मर्शन** - पु० [सं] रगड़ना ; विचार करना ।

**मर्ष** - पु० [सं] सहन ; धैर्य ।

**मर्षण** - पु० [सं] सहना ; क्षमा करना ।

**मल** - 1. पु० [सं] गंदगी ; शरीर से निकलनेवाला मैल (मूत्र, पुरीष, कफ, पसीना आदि), विष्ठा ; पाप ; बुराई ; विकार ; 2. वि० दुष्ट ; गंदा ; क्षुद्र ; यौ०—द्वार - गुदा ; —धात्री - बच्चे का मल-मूत्रादि साफ़ करनेवाली ; —पृष्ठ - पुस्तक का पहला या बाहरी पृष्ठ ; —मास - अधिक मास ; —युग - कलियुग ;—रुचि - पाप में रुचि रखनेवाला ; —रोधक - क़ब्ज़ करनेवाला, —विसर्जन - पाखाना फिरना ; —शुद्धि - कोष्ठ-शुद्धि ।

**मलखंभ** - पु० [हिं] लकड़ी के खंभे के सहारे की जानेवाली कसरत।

**मलन** - पु० [स] मसलना ; लेप करना ; तंबू ।

**मलना** - स० [हिं] मसलना ; मालिश करना ; मरोड़ना ।

**मलनी** - स्त्री० [हिं] कुम्हारों का एक औज़ार ।

**मलबा** - पु० [हिं] कूड़ा-करकट ; गिरे हुए मकान के ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि।

**मलमल** - स्त्री० [हिं] भारत का एक बारीक़ सफ़ेद सूती कपड़ा ।

**मलमलाना** - स० [हिं] बार-बार खोलना ; खोलना और बन्द करना (आँख, पलक) ; बार-बार आलिंगन करना ।

**मलय** - पु० [सं] सात कुलपर्वतों के अंतर्गत दक्षिण भारत का एक पर्वत ; मलबार प्रदेश ; उद्यान ; नंदन-कानन ; पर्वत का पार्श्व; यौ०—गिरि - मलयपर्वत; चन्दन; —ज - चन्दन ; राहु ; —समीर - दक्षिणी वायु ।

**मलयानिल** - पु० [सं] मलय समीर ।

**मलवाना** - स० [हिं] मलने का काम दूसरे से कराना ।

**मलसा** - पु० [हिं] घी आदि रखने का एक तरह का कुप्पा ।

**मलाई** - स्त्री० [हिं] दूध या दही का सार भाग ।

**मलाका** - स्त्री० [सं] कामवती स्त्री ; दूती ; हथिनी ।

**मलाट** - पु० [हि] काग़ज़ की गाँठो पर लपेटने का मोटा घटिया काग़ज़ ।

**मलामत** - स्त्री० [अ] झिड़की ; गंदगी ।

**मलार** - पु० [हिं] वर्षाऋतु में गाया जानेवाला एक राग ।

**मलारी** - स्त्री० [हिं] वसन्त राग की एक रागिनी ।

**मलाल** - पु० [अ] दुख, विषाद ।

**मलावरोध** - पु० [हिं] क़ब्ज़ ।

**मलाशय** - पु० [सं] मल के रहने का बड़ी आँतो का निचला भाग ।

**मलाहत** - स्त्री० [अ] नमकीनी ; सलोनापन।

**मलिंद** - पु० [हिं] भ्रमर ।

**मलिक** - पु० [अ] बादशाह; यौ०—ज़ादा - शाहज़ादा ; — मुअज़्ज़म - सम्राट ।

**मलिका** - स्त्री० [अ] महारानी ।

**मलिन** - 1. वि० [सं] मैला ; काला ; धूमिल ; पाप में रुचि रखनेवाला ; क्षुद्र ; 2. पु० पाप ; मट्ठा ; यौ०—मुख - उदास ।

**मलिना** - स्त्री० [सं] रजस्वला स्त्री ; लाल खाँड़ ।

**मलिस** - स्त्री० [हिं] सोनारों का एक औज़ार ।

**मलीदा** - पु० [हिं] चूरमा ; कश्मीर में बननेवाला एक ऊनी कपड़ा ।

**मलीन** - वि० [हिं] मैला , उदास ।

**मलीमस** - 1. वि० [सं] मैला ; काला ; पापी ; 2. पु० लोहा ।

**मलूक** - 1. पु० [हिं] एक चिड़िया ; एक कीड़ा ; 2. वि० सुंदर ।

**मलूल** - वि० [अ] उदास ; विषादयुक्त ।

**मलेरिया** - पु० [अंग्रे] मच्छरों के काटने से होनेवाला ज्वर ।

**मलोत्सर्ग** - पु० [सं] मलत्याग ।

**मलोला** - पु० [हिं] अरमान ; दुख ।

**मल्ल** - 1. पु० [सं] पहलवान ; एक व्रात्य क्षत्रिय जाति ; कपोल ; पात्र ; 2. वि० बलवान ; **यौ०** —क्रीड़ा - मल्लयुद्ध ; —भूमि - अखाड़ा ; —युद्ध, विद्या - कुश्ती ।

**मल्लाह** - पु० [अ] केवट, माझी ।

**मल्हराना, मल्हाना, मल्हारना** - स० [हिं] चुमकारना, स्नेह से हाथ फेरना ।

**मवाजिब** - पु० [अ] भृति ; देय धन ।

**मवाद** - पु० [अ] पीब ; सामग्री ।

**मवाली** - पु० [हिं] दक्षिण भारत की एक जाति ।

**मवास** - पु० [हिं] दुर्ग ; आश्रयस्थान ; क़िले के परकोटे आदि पर लगे बाँस ।

**मवासी** - 1. स्त्री० [हिं] छोटा गढ़ ; 2. पु० क़िलेदार ।

**मवेशी** - पु० [हिं] चौपाया ; **यौ०** —ख़ाना - मवेशी रखने का बाड़ा ; वह बाड़ा जिसमें दूसरे का खेत चरनेवाले मवेशी बंद किये जायें ।

**मश** - पु० [सं] मच्छड़ ; क्रोध ।

**मशक** - 1. पु० [स] मच्छड़ ; मस्सा ; 2. स्त्री० [फ़ा] भेड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ थैला ।

**मशकूक** - वि० [अ] संदिग्ध ।

**मशकूर** - वि० [अ] कृतज्ञ ।

**मशक़्क़त** - स्त्री० [अ] श्रम ; कठोर परिश्रम ।

**मशक़्क़ती** - वि० [अ] मेहनती ।

**मशग़ला** - पु० [अ] काम ; दिलबहलाव ।

**मशग़ूल** - वि० [अ] कार्यरत ।

**मशरिक** - पु० [अ] पूर्व, पूरब ।

**मशरिकी** - वि० [अ] पूरबी ।

**मशरू** - पु० [हिं] रेशम और सूत मिलाकर बुना जानेवाला एक धारीदार कपड़ा ।

**मशवरा** - पु० [अ] मंत्रणा ; साजिश ।

**मशहूर** - वि० [अ] प्रसिद्ध, नामी ।

**मशाल** - स्त्री० [अ] रोशनी करने के लिए बनायी गयी कपड़े की मोटी बत्ती ; **यौ०** —ची - मशाल दिखानेवाला ; **मु०** —लेकर ढूँढ़ना - सावधानी से ढूँढ़ना ।

**मशीख़त** - स्त्री० [अ] घमंड ।

**मशीन** - स्त्री० [अंग्रे] यंत्र, कल ।

**मश्क़** - पु० [अ] किसी काम का अभ्यास, कुशलता प्राप्ति के लिए किसी काम को बार-बार करना ।

**मश्शाक़** - वि० [अ] अभ्यस्त ।

**मश्शाक़ी** - स्त्री० [अ] निपुणता ।

**मश्शाता** - स्त्री० [अ] स्त्रियों का बनाव-सिंगार करनेवाली स्त्री, प्रसाधिका ।

**मस** - 1. पु० [सं] तौल ; माप ; [अ] छूना, स्पर्श ; संभोग ; [हिं] मशक, 2. स्त्री० मूँछों की आरंभिक रोमावली ; **मु०** मसें भीगना - मूँछों की रेखा दिखायी पड़ने लगना ।

**मसहरी** - स्त्री० [हिं] मच्छड़ों से बचने के लिए बिस्तर के चारों ओर लगाया जानेवाला जालीदार कपड़े का पर्दा ।

**मसकना** - 1. अ० [हिं] दबाव या तनाव से दरकना ; मसोसना ; 2. स० दबाकर या तानकर फाड़ना ।

**मसक़ला** - पु० [अ] सिकलीगरों का एक औज़ार ।

**मसका** - पु० [हिं] मक्खन ; दही का पानी।

**मसख़रा** - 1. वि० [अ] हँसोड़ ; 2. पु० परिहासप्रिय व्यक्ति, विदूषक ; **यौ०** —पन - ठट्ठेबाज़ी।

**मसख़री** - स्त्री० [हिं] हँसोड़पन।

**मसखवा** - वि० [हिं] मांस खानेवाला।

**मसजिद** - स्त्री० [अ] मुसलमानों के एकत्रित होकर नमाज़ पढ़ने की इमारत, उपासना-स्थल।

**मसन** - पु० [सं] तौलना ; औषधि ; चोट।

**मसनद** - पु० [अ] गद्दी ; बड़ा तकिया ; **यौ०** —नशी - मसनद पर बैठनेवाला ; राजा ; अमीर ; —का गधा - मूर्ख अमीर।

**मसनूई** - वि० [अ] कृत्रिम।

**मसरफ़** - पु० [अ] खर्च करने की जगह ; काम ; उपयोग।

**मसरूका** - वि० [अ] चुराया हुआ।

**मसरूफ़** - वि० [अ] सर्फ़ (खर्च) किया हुआ ; काम में लगा हुआ।

**मसल** - स्त्री० [अ] कहावत ; मिसाल।

**मसलना** - स० [हिं] किसी नरम चीज़ को दबाकर मलना ; माँड़ना।

**मसलन्** - अव्य० [अ] मिसाल के तौर पर, उदाहरणरूप में।

**मसलहत** - स्त्री० [अ] हितकर सलाह ; भलाई ; नीति ; **यौ०**—अंदेश - हित का विचार करनेवाला।

**मसलहतन्** - अव्य० [अ] लाभ की दृष्टि से।

**मसला** - पु० [अ] प्रश्न ; पूछने योग्य बात ; समस्या ; **मु०**—हल होना - कठिनाई का दूर हो जाना या उसका उपाय मिल जाना।

**मसवारा** - पु० [हिं] प्रसूता का प्रसव के एक महीने बाद का स्नान।

**मसवासी** - 1. पु० [हिं] एक जगह एक महीने से अधिक न रहनेवाला साधु-संन्यासी ; 2. स्त्री० वेश्या।

**मसान** - पु० [हिं] मरघट ; बच्चों को होनेवाला एक तरह का सूखा (रोग) ; रणभूमि ; **मु०**—जगाना - शवसाधन करना।

**मसानिया** - पु० [हिं] मसान जगानेवाला ; ओझा ; डोम।

**मसानी** - 1. वि० [हिं] मसान जगानेवाला ; 2. स्त्री० मसान में रहनेवाली पिशाचिनी।

**मसालह** - पु० [अ] खूबियाँ ; मसाला।

**मसालहत** - स्त्री० [अ] समझौता, सुलह करना।

**मसाला** - पु० [हिं] सामग्री ; साधन ; गुण।

**मसाहत** - स्त्री० [अ] नापना ; क्षेत्रमिति।

**मसिंदर** - पु० [हिं] जहाज़ का लंगर उठाने का लंबा रस्सा।

**मसि** - स्त्री० [सं] स्याही ; कालिख़ ; काजल ; मूँछों का आरंभिक रूप ; **यौ०** —कूपी - दवात ; —जल - स्याही ; —धान, धानी - दवात ; —पण्य - लेखक ; —पथ - क़लम ; —पात्र - दवात ; —मुख - काले मुँहवाला।

**मसिक** - पु० [सं] साँप का बिल, वल्मीक।

**मसित** - वि० [सं] चूर किया हुआ।

**मसीका** - पु० [हिं] माशा।

**मसीह** - पु० [अ] ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा।

**मसीहा** - पु० [फ़ा] मसीह ; मुर्दे को जिला देने की शक्ति रखनेवाला।

**मसीहाई** - स्त्री० [फ़ा] चमत्कार।

**मसू** - स्त्री० [हिं] कठिनाई।

**मसूर** - पु० [सं] दाल के काम आनेवाला एक अनाज।

**मसूढ़ा** - पु० [हिं] दाँतों के नीचे-ऊपर का मांस।

**मसूरक** - पु० [सं] तकिया।

**मसूरा** - स्त्री० [सं] मसूर ; वेश्या।

**मसूस, मसूसन** - स्त्री० [हिं] अंतर्व्यथा।

**मसृण** - वि० [सं] चिकना ; मुलायम ; चमकदार ।

**मसेवरा** - पु० [हिं] मांस की बनी चीज़ें ।

**मसोसना** - अ० [हिं] दबाना ; मरोड़ना ; मन ही मन दुख करना ।

**मसोसा** - पु० [हिं] दुख, कुढ़न ।

**मसौदा** - पु० [अ] दुहराने के लिए लिखित अशोधित लेख ; पुस्तकादि का मूल लेख ।

**मस्करी** - 1. पु० [स] संन्यासी ; चंद्रमा ; 2. स्त्री० [हिं] मसख़री ।

**मस्त** - 1. वि० [हिं] मतवाला ; निश्चिन्त ; प्रसन्न ; कामवश ; 2. पु० [सं] सिर ; **यौ०** —मूल - गरदन ।

**मस्तक** - पु० [सं] सिर ; **यौ०** —मूलक - गर्दन ; —शूल - सिरदर्द ; —स्नेह - दिमाग़ ।

**मस्तगी** - स्त्री० [अ] दवा के काम आनेवाला एक तरह का गोंद ।

**मस्ताना** - 1. वि० [अ] मस्त की तरह (चाल) ; 2. अ० मस्त होना ।

**मस्तिष्क** - पु० [स] दिमाग़ ।

**मस्ती** - स्त्री० [फा] मतवालापन ; नशा ; काम की प्रबलता ; गर्व ; मद , **मु०** —झड़ना - अक्ल ठिकाने आना ; —पर आना - मस्त होना ।

**मस्तूल** - पु० [पुर्त] नाव या जहाज़ के बीच में गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा ।

**मस्सा** - पु० [हिं] शरीर पर दाने के रूप में उभरा हुआ मांसपिण्ड ।

**महँगा** - वि० [हिं] उचित से अधिक दामवाला ।

**महँगाई** - स्त्री० [हिं] महँगी ; महँगी का भत्ता ।

**महँगी** - स्त्री० [हिं] महँगा होना ; आवश्यक वस्तुओं की दुर्लभता ।

**महंत** - पु० [हिं] मठाधीश ; मुखिया ।

**महंती** - स्त्री० [हिं] महंत का पद या कार्य ।

**महक** - स्त्री० [हिं] गंध, वास ; **यौ०** —दार - खुशबूदार ।

**महकना** - अ० [हिं] महक देना ; वास आना ।

**महकमा** - पु० [अ] कचहरी ; विभाग ; हुक्म करने की जगह ।

**महकूम** - वि० [अ] जिसे हुक्म दिया गया हो ; अधीन ; शासित ।

**महज़** - वि० [अ] ख़ालिस, केवल ; सरासर ।

**महज़र** - पु० [अ] हाज़िर होने की जगह, अनेक लोगों के हस्ताक्षरयुक्त साक्ष्य-पत्र ।

**महतवान** - पु० [हिं] करघे में पीछे की ओर लगी हुई खूँटी ।

**महता** - 1. पु० [हिं] गाँव का मुखिया ; मुंशी ; 2. स्त्री० अपने को बड़ा मानना, गर्व ।

**महताब** - 1. स्त्री० [फ़ा] चाँदनी ; 2. पु० चाँद ।

**महतारी** - स्त्री० [हिं] माता ।

**महतो** - पु० [हिं] गाँव का मुखिया ; कुछ कुलों की उपाधि ।

**महत्** - वि० [सं] बड़ा ; श्रेष्ठ ; ऊँचा ; भारी ; प्रधान ; **यौ०** —तत्त्व - प्रकृति का प्रथम विकार ; बुद्धितत्त्व ।

**महत्तम** - वि० [स] सबसे बड़ा ।

**महत्तर** - 1. वि० [सं] दो पदार्थों या विषयों आदि में अधिक बड़ा ; 2. पु० प्रधान पुरुष ; गाँव का मुखिया ; दरबारी ।

**महत्ता** - स्त्री० [सं] बड़प्पन ; महिमा ; गुरुता ।

**महत्व** - पु० [सं] बड़प्पन ; गुरुता ; श्रेष्ठता ; अधिक आवश्यक होना ; **यौ०** —पूर्ण, युक्त, शाली - महत्ववाला ।

**महदाशय** - वि० [सं] ऊँचे मन या विचार-वाला।

**महदी** - पु० [अ] पथ-प्रदर्शक।

**महदूद** - वि० [अ] सीमित; नियत।

**महनीय** - वि० [सं] पूजनीय; गौरवपूर्ण।

**महफ़िल** - स्त्री० [अ] जलसा; आदमियो के जमा होने की जगह; सभा।

**महफ़ूज़** - वि० [अ] रक्षित, निरापद।

**महबूब** - वि० [अ] प्रेमपात्र।

**महबूबा** - 1. वि०, 2. स्त्री० [अ] प्यारी, प्रेमिका।

**महमह** - अव्य० [हिं] सुगन्धि के साथ।

**महमहाना** - अ० [हिं] महकना, सुगंध बिखेरना।

**महमिल** - पु० [अ] ऊँट की पीठ पर रखने का पर्देदार हौदा।

**महमूद** - वि० [अ] स्तुत, प्रशस्त।

**महमूदी** - स्त्री० [फ़ा] एक तरह की मलमल; चाँदी का एक पुराना सिक्का।

**महमेज़** - स्त्री० [अ] सवारों के जूते की एड़ी पर लगा हुआ एक तरह का काँटा जिससे घोड़े को एड़ लगाते हैं।

**महर** - 1. पु० [हिं] मुखिया; एक आदर-सूचक उपाधि; नंद; कहार; [अ] निकाह के समय कन्या को दिया जानेवाला धन; 2. वि० सुगंधित।

**महरम** - 1. वि० [अ] भेद जाननेवाला; 2. पु० निकट का संबंधी जिससे (मुसलमान कन्या या स्त्री का) ब्याह जायज़ न हो।

**महरा** - 1. पु० [हिं] कहार; 2. वि० बड़ा; मुखिया।

**महराई** - स्त्री० [हिं] प्रधानता।

**महरि** - स्त्री० [हिं] स्त्री के लिए आदर-सूचक उपाधि; यशोदा; गृहस्वामिनी; ग्वालिन; पक्षी।

**महरी** - स्त्री० [हिं] कहारिन।

**महरूम** - वि० [अ] वर्जित; निषिद्ध; वंचित; हीन; नाकाम।

**महरूमी** - स्त्री० [अ] महरूम होना; नाकामी।

**महर्लोक** - पु० [सं] ऊपर के सात लोकों में से चौथा।

**महर्षि** - पु० [सं] बहुत बड़ा ऋषि; ब्रह्मा के दस मानसपुत्र या प्रजापति।

**महल** - पु० [अ] उतरने की जगह; बड़ा मकान, प्रासाद; समय; बेगम; **यौ०** —सरा - ज़नानख़ाना; महले ख़ास - पटरानी।

**महल्ला** - पु० [अ] टोला।

**महशर** - पु० [अ] लोगों के इकट्ठा होने की जगह; क़यामत का दिन; भारी उपद्रव।

**महसूद** - वि० [अ] जिससे ईर्ष्या की जा रही हो।

**महसूब** - वि० [अ] परिगणित।

**महसूर** - वि० [अ] घेरा हुआ।

**महसूल** - 1. वि० [अ] हासिल किया हुआ; 2. पु० कर; मालगुज़ारी; किराया।

**महसूली** - वि० [अ] जिसपर महसूल लगे; बैरंग।

**महसूस** - वि० [अ] ज्ञात; प्रकट; किसी ज्ञानेन्द्रिय द्वारा अनुभूत (विषय); **मु०**—करना, होना - अनुभव करना, होना।

**महसूसात** - पु० [अ] इन्द्रियग्राह्य विषयों की समष्टि।

**महांग** - 1. वि० [सं] महाकाय; 2. पु० ऊँट; गोखरू; एक तरह का चूहा।

**महांतक** - पु० [सं] मृत्यु; शिव।

**महांधकार** - पु० [सं] निबिड़ अंधकार; घोर अज्ञान।

**महा** - 1. स्त्री० [सं] गाय; गोपवल्ली; 2. वि० बड़ा; **यौ०** —कंद - लहसुन,

प्याज़ ; —कपित्थ - बेल का पेड़ ; लाल लहसुन ; —कल्प - ब्रह्मकल्प ; —कवि - महाकाव्य का रचयिता ; शुक्राचार्य ; —काय - भारी-भरकम शरीरवाला ; हाथी ; —कार्तिकी - कार्तिकी पूर्णिमा ; —काल - अनन्तकाल ; रुद्र ; उज्जैन में स्थित प्रसिद्ध शिवलिंग ; —काली - दुर्गा का एक भयानक रूप ; रुद्राणी ; —काव्य - आठ या इससे अधिक सर्गोंवाला प्रबंधकाव्य ; —कृच्छ्र - भारी तपस्या ; विष्णु ; —कृष्ण - ज़हरीला काला साँप ; —क्रतु - बड़ा यज्ञ (अश्वमेध, राजसूय आदि) ; —क्षीर - ईख ; —खर्व - सौ खर्व की संख्या ; —गंध - हरिचंदन ; तीव्र गंधवाला ; —गंधा - केवड़ा ; चामुंडा ; —गज - दिग्गज ; —गल - लंबी गर्दनवाला ; —गुण - अतिगुणकारी (औषध) ; —गुरु - श्रेष्ठ गुरुजन ;—ग्रंथ - अधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ ; —ग्रह - राहु ; —ग्रीव - ऊँट ; शिव ; —घोष - बहुत ज़ोर की आवाज़वाला ; भारी हल्ला ; बाज़ार ; —चंड - यमदूत ; —चमू - विशाल सेना ; —जन - श्रेष्ठ जन ; श्रेणिविशेष का मुखिया ; जनता ; साहूकार ; ऋणदाता ; —जय - बहुत बड़ा विजेता ; —ज्ञानी - बहुत बड़ा ज्ञानी ; महामुनि ; —तिक्त - नीम ; —तीक्ष्ण - अति तीक्ष्ण ; —तीक्ष्णा - भिलावा ; —त्याग, त्यागी - अति त्यागशील ; —दंड - लंबी भुजा ; बड़ी सज़ा ; यमदूत ; —दशा - मनुष्य के जीवन में ग्रहविशेष का निर्धारित भोग्यकाल ;—दान - बड़ा दान ; सोलह दानों में से कोई एक जिसका फल स्वर्ग माना गया है ; —देव - शिव ; —देवी - दुर्गा, पार्वती ; पटरानी ; —द्रुम - पीपल ; बड़ा वृक्ष ; —द्वार - बड़ा या मुख्य दर्वाज़ा ; —द्वीप - पुराणानुसार पृथ्वी के सात मुख्य विभाग (जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर) ; —धन - बहुत बड़ा धनी ; बहुमूल्य ; सोना ; कीमती वस्त्र ; खेती ; —धातु - सोना ; सुमेरु ; —नगर - बड़ा शहर ; —नवमी - आश्विन शुक्ला नवमी ; —नाटक - दस अंकोवाला नाटक ;—नाद - बहुत ज़ोर की आवाज़ ; हाथी ; गरजनेवाला बादल ; बड़ा ढोल ; शंख ; शिव ; सिंह ; ऊँट ; —नारायण - विष्णु ; —निद्रा - मृत्यु ; —निर्वाण - परिनिर्वाण, व्यष्टि-सत्ता का पूर्णनाश, मोक्ष ; —निशा - रात्रि का दूसरा और तीसरा पहर ; प्रलयरात्रि ; —नृत्य, नेत्र - शिव ; —पक्ष - बड़े पक्ष, दल या कुटुंबवाला ; गरुड़ ; —पक्षी - उल्लू ; —पथ - राजपथ ; मृत्यु ; —पद्म - श्वेत कमल ; सौ पद्म की संख्या ; दक्षिण दिशा का दिग्गज; नौ निधियों में से एक;—पातक - बहुत बड़ा पाप ; —पात्र - प्रेतकर्म कराने और उसका दान लेनेवाला ब्राह्मण, महाब्राह्मण ; महामंत्री ;—पुण्य - बहुत बड़ा पुण्य ; —पुर - दुर्ग आदि से रक्षित नगर ; —पुरुष - श्रेष्ठ जन ; दुष्ट ; नारायण ; —प्रतीहार - नगर या दुर्ग के रक्षकों का प्रधान ;—प्रभु - राजा ; इंद्र ; परमेश्वर ; संन्यासी ; —प्रलय - ब्रह्मा की आयु शेष होने पर होनेवाला संपूर्ण सृष्टि का नाश ; —प्रस्थान - मृत्यु ; —प्राज्ञ - परमज्ञानी ; —बल - अतिबली ; वायु ; सीसा ; —बाहु - लंबी बाँहवाला ; बलवान ; —बोधि - बुद्धदेव ; बौद्ध भिक्षु ; —

ब्राह्मण - महापात्र ; —भाग, भागी - अति भाग्यवान ; सुविख्यात ; पुण्यात्मा ; —भागवत - परम वैष्णव ; —भूत - पंचभूत या उनमें से कोई एक ; परमेश्वर ; —मंडल - प्रधान केन्द्रीय मंडल या संघ ; —मंत्र - वेदमंत्र ; उत्तम सलाह , —मंत्री - प्रधान मंत्री ;—मति - अति बुद्धिमान ; उदाराशय ;—मद - मस्त हाथी ; —मना - उदार-चित्त ; —महिम - अति महत्वशाली , —मांस - नरमांस ; गोमांस ; —मात्र - बड़ा ; बढ़िया ; महावत ; महा-मंत्री ; —मान्य - परम माननीय ; —माया - जगत् की कारणभूता अविद्या ; —मारी - मरी ; महाकाली ; —मोह - भारी मोह ; विषयवासनारूप अज्ञान ; —यज्ञ - गृहस्थ के लिए नित्य कर्तव्य पंचकर्म ; —यात्रा - मृत्यु ; —युद्ध - बहुत बड़ी लड़ाई ; —योगी - महान योगी ; शिव ; विष्णु ; मुर्गा ; —रजत - सोना ; धतूरा ; —रत्न - बहुमूल्य रत्न (हीरा, मोती, वैडूर्य, पद्मराग, गोमेद, पुखराज, पन्ना, नीलम और मूँगा) ,—रथ - भारी योद्धा ; अकेला दस सहस्र धनुर्धरों से लड़नेवाला योद्धा ; —राज - बादशाह ; राजा ; ब्राह्मण, साधु, संत आदि का सम्मानसूचक संबोधन ; —राजाधिराज - राजाओं का राजा ; —राज्ञी - महारानी ; दुर्गा ; —रात्र - अर्धरात्रि ; —रात्रि - महाप्रलय ; आधी रात के बाद दो मुहूर्त का रात्रि-काल;—रुद्र - शिव; —रोग - भारी रोग; —रौद्र - अति भयानक ; —लिंग - शिव ; —वन - घना और बड़ा जंगल ; —वात - अंधड़ ; —वादी - शास्त्रार्थ करने में प्रबल ; —विद्या - तंत्रोक्त दस देवियाँ ; —विल - आकाश ; —विष - दोमुँहा साँप ; —विषुव - मेष की संक्रांति (जब दिन-रात बराबर होते हैं ) ; —वीर - योद्धा ; विष्णु ; जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर ; सिंह ; गरुड़ ; हनुमान ; वज्र ; यज्ञाग्नि ; सफ़ेद घोड़ा ; बाज़ ; कोयल ; —वेग - प्रबल वेगवाला ; —व्याधि - महारोग ; —व्रत - बहुत बड़ा कठिन व्रत ; बारह वर्ष तक चलनेवाला प्रायश्चित्त रूप व्रत ; —शंख - बड़ा शंख ; ललाट ; कनपटी की हड्डी ; सौ शंख की संख्या ;—शक्ति - महती शक्ति ; दुर्गा ; बड़ा शक्ति-वाला;—शाल - बड़ा गृहस्थ;—शाली - लंबा व खुशबूदार चावल ; —शासन - महत्वपूर्ण राजाज्ञा ; —शुक्ला - सरस्वती ; —शुभ्र - चाँदी ; —शून्य - आकाश ; —श्मशान - काशी नगरी ; —श्वेता - सरस्वती ; दुर्गा ; सफ़ेद शक्कर ; —संक्रांति - मकर संक्रांति ; —संस्कार - अंत्येष्टि ;—सती - परम साध्वी, पतिव्रता ; —सभा - बड़ा जलसा ; महासंघ ; हिन्दू-महासभा ; —सर्ग - महाप्रलय के बाद होनेवाली नयी सृष्टि ; —सांधिविग्रहिक - परराष्ट्रमन्त्री ; —साहस - अतिसाहस ; बलात्कार ; डकैती ; —स्थली - पृथ्वी ; —हवि - गाय का घी ; —हास - अट्टहास ; —हिक्का - एक तरह की हिचकी ।

**महाक्ष** - पु० [सं] शिव ।

**महाजनी** - स्त्री० [हिं] रुपये का लेन-देन ; हुंडी-पुरजे आदि का पेशा ।

**महाढ्य** - वि० [सं] परमसंपन्न ।

**महात्मा** - पु० [सं] महान् आत्मा या उच्च स्वभाववाला ; संत ; योगी ; परमात्मा ; शिव ; दुष्ट (व्यंग्य) ।

**महानंद** - पु० [सं] परमानंद ।

**महानुभाव** - पु० [सं] ऊँचे मन या आशयवाला, महाशय।
**महान्** - वि० [सं] बड़ा; ऊँचा।
**महामात्य** - पु० [सं] प्रधान मंत्री।
**महारंभ** - 1. वि० [सं] बड़ा काम उठानेवाला; बड़ा; 2. पु० बड़ा काम; अत्यधिक हिंसाजन्य काम।
**महारण्य** - पु० [सं] भारी जंगल।
**महार्घ** - वि० [सं] महँगा।
**महार्णव** - पु० [सं] महासमुद्र; शिव।
**महार्थ** - वि० [सं] गहरे अर्थवाला; महत्त्वपूर्ण।
**महार्ह** - 1. वि० [सं] बहुमूल्य; 2. पु० सफ़ेद चंदन।
**महाल** - पु० [अ] महल्ला; कई पट्टियोंवाली ज़मीन्दारी।
**महालय** - पु० [सं] विहार, मंदिर; तीर्थ; परमात्मा।
**महालया** - स्त्री० [सं] आश्विन कृष्णा अमावास्या।
**महावत** - पु० [हिं] हाथीवान।
**महावर** - पु० [हिं] स्त्रियों के पाँव रंगने का लाख का रंग, लाक्षारस।
**महाशन** - वि० [सं] बहुत खानेवाला।
**महाशय** - 1. वि० [सं] उदार; 2. पु० ऊँचे मन या आशयवाला।
**महाष्टमी** - स्त्री० [सं] आश्विन शुक्ला अष्टमी।
**महास्पद** - वि० [सं] उच्च पदस्थ; शक्तिशाली।
**महि** - स्त्री० [सं] महिमा; पृथ्वी; महत्तत्व।
**महिमा** - स्त्री० [सं] बड़ाई, महत्ता, माहात्म्य; अष्टसिद्धियों में से एक; **यौ०** —मंडित - महिमायुक्त; —मयी - महिमाशालिनी।
**महिला** - स्त्री० [सं] स्त्री; भद्रमहिला; मदमत्त स्त्री।
**महिष** - पु० [सं] भैंसा; **यौ०**—मर्दिनी - दुर्गा; —वाहन - यमराज।
**महिषी** - स्त्री० [सं] भैंस; पटरानी; रानी; व्यभिचारिणी स्त्री।
**मही** - स्त्री० [सं] धरती; देश; गाय; [हिं] मट्ठा, छाछ; **यौ०** —दुर्ग - कच्चा क़िला; —धर - पर्वत; विष्णु; —प, पाल - राजा; —पुत्र - मंगल; नरकासुर; —पुत्री - सीता; —रुह - वृक्ष; —सुर - ब्राह्मण।
**महीन** - वि० [हिं] बारीक; पतला।
**महीना** - पु० [हिं] वर्ष का बारहवाँ भाग, मास; मासिक धर्म; **मु०** महीने से होना - ऋतुमती होना।
**महीयान्** - वि० [सं] महान; शक्तिशाली।
**महुअर** - पु० [हिं] मदारियो द्वारा बजाया जानेवाला एक बाजा, तूंबी।
**महुअरी** - स्त्री० [हिं] महुआ मिलाकर पकायी हुई रोटी।
**महुआ, महुवा** - पु० [हिं] एक पेड़ जिसके फूल और फल खाने के काम आते हैं, मधूक।
**महुआरी** - स्त्री० [हिं] महुए का बाग़।
**महूरत** - पु०
**महूरति** - स्त्री० } [हिं] मुहूर्त।
**महेंद्र** - पु० [सं] विष्णु; इंद्र।
**महेर** - स्त्री० [हिं] झगड़ा; अड़चन।
**महेरा** - पु० [हिं] मट्ठा; मट्ठे में नमक डालकर पकाया हुआ भात।
**महेरी** - 1. स्त्री० [हिं] उबाली हुई ज्वार; 2. वि० बाधा डालनेवाला।
**महेला** - पु० [हिं] पशुओं को खिलाया जानेवाला एक पुष्टिकारक द्रव्य।
**महेश, महेश्वर** - पु० [सं] शिव, परमेश्वर।

**महेश्वरी** - स्त्री० [सं] दुर्गा।

**महोक्ष** - पु० [सं] बड़ा बैल।

**महोखा** - पु० [हि] बहुत तीक्ष्ण आवाज़-वाली एक चिड़िया।

**महोती** - स्त्री० [हि] महुए का फल।

**महोत्सव** - पु० [सं] बड़ा उत्सव, समारोह।

**महोदधि** - पु० [सं] समुद्र।

**महोदय** - वि० [स] अति समृद्ध; गौरव-शाली; महानुभाव।

**महोपाध्याय** - पु० [स] बड़ा अध्यापक; पंडित।

**महोरग** - पु० [सं] बड़ा साँप; एक सर्पगण।

**महोरस्क** - वि० [सं] चौड़ी छातीवाला।

**महोला** - पु० [हि] बहाना।

**महौघ** - वि० [सं] प्रखर धारवाला।

**महौषध** - 1. पु०, 2. स्त्री० [सं] अतिगुण-कारी औषध; सोंठ; लहसुन; बछनाग।

**महौषधि** - स्त्री० [सं] श्रेष्ठ औषधि; जड़ी; दूब; शतावरी।

**माँ** - स्त्री० [हिं] माता; यौ० —जाई - सगी बहिन; —जाया - सगा भाई।

**माँखना** - अ० [हि] क्रोध करना।

**माँग** - स्त्री० [हिं] बालों को सँवारकर बनायी हुई रेखा; माँगने की क्रिया या भाव; याचना; चाह; तलब; यौ० —चोटी - बनाव-सिंगार; —टीका - सिर पर पहिनने का एक गहना; मु० —उजड़ना - विधवा हो जाना; —जाँच कर, ताँगकर - इधर-उधर से लेकर।

**माँगना** - स० [हिं] याचना करना; चाहना; प्रार्थना करना।

**मांगलिक** 1. वि० [सं] मंगलजनक; 2. पु० नाटक में मंगलपाठ करनेवाला पात्र।

**मांगल्य** - 1. वि० [सं] मंगलकारी; 2. पु० मांगलिकता।

**माँचना** - अ० [हिं] प्रसिद्ध होना; शुरू होना।

**माँजना** - 1. स० [हिं] रगड़कर साफ़ करना; 2. अ० मश्क़ करना।

**माँजा** - पु० [हि] पहली वर्षा का फेन।

**माँझ** - अव्य० [हिं] मध्य, भीतर।

**माँझा** - पु० [हिं] पतंग की डोर पर मला जानेवाला मसाला; हलदी चढ़ने के बाद वर-कन्या को पहनाये जानेवाले पीले कपड़े; नदी की धारा के बीच का छोटा टापू।

**माँझी** - पु० [हि] मल्लाह; मध्यस्थ।

**माँठ** - पु० [हिं] मटका; नील घोलने का मटका; बड़ी मठली।

**माँठी** - स्त्री० [हिं] फूल की बनी चूड़ी।

**माँड़** - पु० [हिं] पकाये हुए चावलों का पानी; एक मारवाड़ी गीत।

**माँड़ना** - स० [हिं] रौंदना; मसलना; गूँधना; बालों से दाने निकालना; पोतना; सजाना; शुरू करना।

**माँडनी** - स्त्री० [हिं] गोट, हाशिया।

**मांडलिक** - पु० [सं] मंडल का राजा, मंडलाधीश।

**माँड़ा** - पु० [हिं] आँखका एक रोग; मंडप; एक तरह का पराठा।

**माँड़ी** - स्त्री० [हि] माँड़।

**मांत्रिक** - 1. वि० [स] मंत्र-सम्बंधी; 2. पु० मंत्रवेत्ता; जंतर-मंतर जानने या करनेवाला।

**माँद** - 1. स्त्री० [हिं] गुफा; 2. वि० फीका।

**मांदगी** - स्त्री० [फ़ा] रोग; थकावट।

**माँदा** - वि० [फ़ा] बीमार; थका हुआ; छूटा हुआ।

**मांद्य** - पु० [सं] मंदता; दुर्बलता।

**माँपना** - अ० [हि] मतवाला होना।

**मांस** - पु० [सं] गोश्त; फल का गूदावाला भाग; समय; **यौ०** —ग्रंथि - शरीर में यत्र-तत्र निकल आनेवाली मांस की गाँठ; —पिण्ड - शरीर; —पिटक - बहुत-सा मांस; —पेशी - शरीर के भीतर एक दूसरे से जुड़े हुए मांस-पिण्ड; —फल - तरबूज; —भक्ष, भक्षी - मांस खानेवाला; —रस - मांस का रस, शोरबा; —सार, स्नेह - चरबी।

**मांसाद, मांसादी** - वि० [सं] मांस खानेवाला।

**मांसाशी** - पु० [सं] मांसाहारी; राक्षस।

**मांसाहारी** - पु० [सं] मांस का आहार करनेवाला।

**मांसोदन** - पु० [सं] मांस के साथ पकाया गया चावल, पुलाव।

**मा** - 1. अव्य० [सं] नहीं, मत; 2. स्त्री० माता; लक्ष्मी; मान; 3. सर्व० [अ] क्या, कौन; जो; जो कुछ; **यौ०**—कबल, सबक - पूर्ववर्ती; प्रथमोक्त; —बाद - परवर्ती; —सिवा - इसके सिवा; अनात्म पदार्थमात्र; —हसल - उपज; नफ़ा।

**माइँ** - स्त्री० [हि] विवाह के समय बनाया जानेवाला छोटा पुआ-जैसा मीठा या नमकीन पकवान; मामी; कुलदेवी।

**माई** - स्त्री० [हिं] माता; वृद्धा; **यौ०** —का लाल - हिम्मतवाला; उदार।

**माकूल** - 1. वि० [अ] बुद्धिग्राह्य; ठीक; अच्छा; पर्याप्त; समझदार; शिष्ट; 2. पु० तर्कशास्त्र; दर्शनशास्त्र; **यौ०** —पसंद - उचित बात को मान लेनेवाला, समझदार।

**माकूलियत** - स्त्री० [अ] इन्सानियत; संजीदगी।

**माकूस** - वि० [अ] उलटा, विपरीत।

**माक्षिक** - 1. वि० [सं] शहद की मक्खियों का; मक्खियों से प्राप्त; 2. पु० शहद; सोनामक्खी; **यौ०** —ज - मोम; —फल - एक तरह का नारियल; —शर्करा - शहद से बनायी हुई मिश्री।

**माखन** - पु० [हिं] मक्खन; **यौ०** —चोर - माखन चुरानेवाला (कृष्ण)।

**माखना** - अ० [हिं] रोष करना, अप्रसन्न होना।

**माखी** - स्त्री० [हि] मक्खी, सोनामक्खी।

**माघ** - पु० [सं] फाल्गुन के पहले का महीना।

**माघवती** - स्त्री० [सं] पूर्व दिशा।

**माघी** - 1. स्त्री० [सं] माघ की पूर्णिमा; 2. वि० [हिं] माघ का।

**माछर** - पु० [हिं] मच्छर।

**माछी** - स्त्री० [हि] मक्खी।

**माजरा** - पु० [अ] घटना; हाल।

**माजून** - स्त्री० [अ] चाशनी में उबालकर बनायी हुई दवा; कई चीज़ें मिलाकर बनायी हुई वस्तु; **यौ०** —कश - माजून निकालने का चमचा।

**माट** - पु० [हि] दही रखने का मटका; रंगरेज़ों का रंग रखने का मटका।

**माटी** - स्त्री० [हि] मिट्टी; शरीर; धूल; शव।

**माठ** - पु० [हि] चाशनी में पगायी हुई मैदे की मोयनदार मोटी रोटी; मटकी; [सं] सड़क।

**माठी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की कपास; [सं] कवच।

**माड़ना** - स० [हिं] धारण करना; पूजना; सजाना।

**माढ़ा** - पु० [हिं] दूसरी मंज़िल की बैठक।

**माणव** - पु० [सं] बालक; बौना; मनुष्य; सोलह लड़ियों का हार।

**माणवक** - पु० [सं] वटु, बालक ; बौना ; ब्राह्मण-बालक ; मूर्ख व्यक्ति ; सोलह या बीस लड़ियों का हार ।

**माणविका** - स्त्री० [सं] बालिका, किशोरी ।

**माणिक, माणिक्य** - पु० [सं] गुलाबी या लाल रंग का एक रत्न ।

**माणिका** - स्त्री० [स] आठ पल की तौल ।

**मातंग** - पु० [सं] ऋषि ; किरात ; चाण्डाल ; हाथी ।

**मात** - **1.** स्त्री० [हिं] माता ; [अ] हार, पराजय (खेल आदि में) 2. वि० [अ] पराजित ।

**मातना** - अ० [हि] मत्त होना ।

**मातबरी** - स्त्री० [हि] विश्वसनीयता ।

**मातम** - पु० [अ] मृत्युशोक , रोना-पीटना ; **यौ०**—खाना - वह घर जिसमें मृत्यु हुई हो ; —दार - मातम मनानेवाला ; —पुरसी - मृत व्यक्ति के घर जाकर समवेदना-प्रकाश ।

**मातमी** - वि० [अ] मातम-सबन्धी ; शोक-सूचक ; **यौ०** —लिबास - शोकसूचक पहनावा ; —सफ़ - मातम करनेवालो की पंक्ति ।

**मातहत** - 1. वि० [अ] आज्ञाधीन ; नीचे काम करनेवाला ; 2. पु० अधीन कर्मचारी ।

**मातहती** - स्त्री० [अ] अधीनता ।

**माता** - **1.** स्त्री० [सं] जननी, माँ ; आदरणीया या वयोवृद्ध स्त्री का संबोधन ; चेचक ; आकाश ; जीव ; धरती ; गाय ; दुर्गा ; लक्ष्मी ; **यौ०**—मह - नाना ; —मही - नानी ; 2. वि० मापनेवाला, मापक ।

**मातुल** - पु० [सं] मामा ; धतूरा ; एक तरह का धान ; **यौ०**—पुत्रक - मामा का बेटा ; धतूरे का फल ।

**मातृ** - स्त्री० [सं] समास में व्यवहृत माता शब्द का प्रातिपदिक रूप (मूल रूप) ; **यौ०** —गण - अष्ट मातृकाएँ ; —गोत्र - माता का कुल या गोत्र ; —घातक, घाती - माता की हत्या करनेवाला ; —देव - माता को देवस्वरूप मानकर पूजनेवाला ; —पक्ष - नाना, मामा आदि मातृकुल ; —पितृहीन - बिना माँ-बाप का, अनाथ ;—पूजन - माता की पूजा ; —बंधु, बांधव - मातृपक्ष के संबन्धी ; —भक्त - माता का भक्त या उसकी पूजा करनेवाला ; —भाषा - स्वभाषा ; अपने घर में बोली जानेवाली भाषा ; —माता - नानी ; —मुख - मूर्ख, जड़मति ; —वियोग - माता की मृत्यु ; —शासित - मूर्ख ; —सपत्नी - सौतेली माँ ; —स्तन्य - माँ का दूध ; —हन्ता - माता की हत्या करनेवाला ; —हीन - बिना माँ का ।

**मातृत्व** - पु० [सं] माँ या सन्तानवती होना ; माता का पद ।

**मात्र** - अव्य० [सं] केवल, सिर्फ़ ।

**मात्रा** - स्त्री० [सं] परिमाण ; ह्रस्ववर्ण के उच्चारण में लगनेवाला काल ; खूराक़ ; धन ; कान का एक आभूषण ; इन्द्रिय ; अवयव ; **यौ०**—वृत्त - मात्रिक छंद ; —स्पर्श - विषय के साथ इन्द्रिय का संयोग ।

**मात्सर** - वि० [सं] मत्सरयुक्त ।

**मात्सर्य** - पु० [सं] मत्सर, दूसरे का उत्कर्ष देखकर जलना ।

**माथ** - पु० [सं] मथन ; पथ; [हिं] माथा।

**माथा** - पु० [हिं] मस्तक ; वस्तु का अग्रभाग ; **मु०**—कूटना - सिर पीटना ; —घिसना - अनुनय-विनय करना ; —टेकना - भूमि से सिर लगाकर प्रणाम

करना ; —पच्ची करना - विशेष परिश्रम करके समझाना ।

**माथे** - अव्य० [हिं] माथे पर ; (के) भरोसे, मु०—चढ़ाना - शिरोधार्य करना ; —मढ़ना - गले लगना ; सिर थोपना ।

**माद** - पु० [सं] मत्तता ; हर्ष ; गर्व ।

**मादक** - वि० [सं] नशा पैदा करनेवाला ; हर्षजनक ।

**मादकता** - स्त्री० [सं] नशीलापन ।

**मादर** - स्त्री० [फ़ा] माँ ; यौ०—ज़ाद - पैदाइशी ; सहोदर ; मादरेज़न - सास, पत्नी की माता ; —शौहर - पति की माता, सास ।

**मादरी** - वि० [फ़ा] माँ का ; जन्मसिद्ध ; यौ०—ज़बान - मातृभाषा ।

**मादा** - स्त्री० [फ़ा] स्त्री ; स्त्री प्राणी ; यौ० —ए-ख़र - गधी ; —ए-गाव - गाय।

**माद्दा** - पु० [अ] शब्द का मूल या धातु ; समझ ; जड़ पदार्थ ; मवाद ; वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी हो या बनायी जाय ।

**माद्दी** - वि० [अ] भौतिक ; जड़ ; पैदाइशी ।

**माधव** - 1. पु० [सं] कृष्ण ; विष्णु ; वसंत; वैशाख ; महुए का पेड़ ; काली मूँग ; 2. वि० मधुनिर्मित ।

**माधवी** - स्त्री० [स] एक सुगंधित फूलोंवाली लता ; शहद से बनी शराब ; कुटनी ।

**माधुरी** - स्त्री० [सं] मिठास ; शराब ।

**माधुर्य** - पु० [स] मिठास ; लावण्य ; दयालुता ; शब्दावली में मन को मोह लेने का गुण ।

**माध्य** - वि० [सं] मध्य का, बिचला ।

**माध्यम** - 1. वि० [सं] मध्य का ; 2. पु० साधन , ज़रिया ।

**माध्यमिक** - वि० [सं] बिचला, मध्य का ।

**माध्यस्थ** - 1. वि० [स] तटस्थ ; 2. पु० निष्पक्षता ।

**मान** - पु० [सं] आदर ; आत्मसम्मान ; अभिमान ; क्रोध ; परिमाण ; नायक के किसी अपराध से नायिका का रूठना ; मानदण्ड ; तौल ; प्रमाण ; यौ०—चित्र - नक़्शा ; —दण्ड - नापने का डंडा ; पैमाना ; —धन - प्रतिष्ठा ही जिसका धन हो ; —मंदिर - बनारस की वेधशाला ; कोपभवन ; —मनौती - रूठना-मनाना; —मोचन - मान छुड़ाना, रूठे हुए प्रिय को मनाना ; —हानि - अपमान, बेइज़्ज़ती ।

**मानता** - स्त्री० [हिं] मनौती ।

**मानना** - 1. स० [हि] स्वीकार करना ; आदर या मान करना ; योग्यता का क़ायल होना ; मनाना ; ख़्याल करना ; 2. अ० समझना ; राज़ी होना ।

**माननीय** - वि० [सं] आदरणीय ।

**मानव** - 1. पु० [सं] मनुष्य ; बालक ; 2. वि० मनु-संबंधी ; मनुष्योचित ; यौ० —धर्मशास्त्र - मनुस्मृति ।

**मानवता** - स्त्री० [सं] मनुष्यता ।

**मानवी** - स्त्री० [सं] नारी, स्त्री ।

**मानवीय** - वि० [सं] मानव-संबधी, इनसानी ।

**मानस** - 1. पु० [सं] मन ; मानसरोवर ; रामचरितमानस ; 2. वि० मन से उत्पन्न, मनःकृत ; यौ० —चारी - हंस ; —जन्मा - कामदेव ; —तीर्थ - राग, द्वेष आदि से रहित मन ; —पूजा - बाह्योपचार के बिना मन से की जानेवाली पूजा ; —शास्त्र - मन की प्रकृति, क्रियाओ, वृत्तियों आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र, मनोविज्ञान ।

**मानसिक** - वि० [सं] मन-संबंधी ।

**मानहुँ** - अव्य० [हिं] मानो।

**मानिंद** - वि० [फ़ा] सदृश, समान।

**मानिक** - पु० [हि] एक प्रसिद्ध रत्न, माणिक्य।

**मानिका** - स्त्री० [सं] शराब; आठ पल का वज़न।

**मानित** - वि० [सं] सम्मानित।

**मानिनी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] अभिमान करनेवाली, मानवती।

**मानी** - 1. स्त्री० [सं] दो अंजलि-भर नाप का एक पात्र; सोलह सेर का अन्न का माप; चक्की के ऊपरवाली पाट की लकड़ी; वह छेद जिसमें कोई चीज़ जड़ी जाय; 2. वि० मान करनेवाला; प्रतिष्ठित; स्वाभिमानी; रूठा हुआ; 3. पु० [अ] अर्थ; हेतु।

**मानुष** - 1. वि० [सं] मानव; 2. पु० मनुष्य; प्रमाण के तीन भेदों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान या मानुष) में से एक।

**मानुषिक** - वि० [सं] मनुष्य-संबंधी।

**मानुषी** - 1. स्त्री० [स] नारी; चिकित्सा के तीन भेदो (आसुरी, मानुषी, दैवी) में से एक; 2. वि० [हि] मनुष्य का।

**मानुस** - पु० [हिं] मनुष्य, आदमी।

**माने** - पु० [हिं] मतलब, अर्थ।

**मानों, मानो** - अव्य० [हिं] जैसे, गोया।

**मान्य** - वि० [स] आदरणीय, पूज्य।

**माप** - स्त्री० [हिं] मापने की क्रिया या भाव; नाप; परिमाण; बाट।

**मापन** - पु० [स] नापना, तराजू।

**मापना** - 1. स्त्री० [सं] मापन; 2. स० नापना, पैमाइश करना; 3. अ० मतवाला होना।

**माफ़** - वि० [अ] क्षमा किया हुआ।

**माफ़िक** - वि० [अ] अनुकूल।

**माफ़ी** - स्त्री० [अ] क्षमा किया जाना; वह ज़मीन जिसकी मालगुज़ारी माफ़ हो।

**माम** - पु० [हिं] ममता; अहंकार।

**मामलत** - स्त्री० [उ] मामला; झगड़ा; यौ०—दार - तहसीलदार।

**मामला, मामिला** - पु० [अ] काम-काज; लेन-देन; काम; घटना; विवाद; यौ० —दानी, रसी - बात की तह तक पहुँचना; व्यवहार-कुशलता; मु० –पटाना - सौदा करना।

**मामा** - 1. माँ का भाई; 2. स्त्री० [फ़ा] माता; वृद्धा; खाना पकानेवाली; नौकरानी; यौ०— गिरि - मामा का काम।

**मामी** - स्त्री० [हि] मामा की पत्नी; अपना दोष न मानना; मु०—पीना - अपनी ग़लती पर ध्यान न देना।

**मामूँ** - पु० [हिं] मामा।

**मामूर** - वि० [अ] भरा हुआ; समृद्ध; आबाद।

**मामूल** - 1. वि० [अ] अमल किया हुआ; 2. पु० नित्यकर्म; अभ्यास; रीति; [मल] वह प्रथा जो कई पीढ़ियो से चली आयी हो; यौ० —के दिन - रजोधर्म का समय; मु० —से होना - ऋतुमती होना।

**मामूली** - वि० [अ] रोज़ होनेवाला; साधारण।

**माय** - 1. वि० [सं] मायावी; 2. पु० असुर; 3. स्त्री० [हिं] माता; माया।

**मायका** - पु० [हिं] पीहर।

**मायन** - पु० [हिं] विवाह में मातृका-पूजन का दिन या उस दिन का कृत्य।

**मायल** - वि० [अ] मैला न रखनेवाला; आकृष्ट; युक्त।

**माया** - 1. स्त्री० [सं] कपट; जादू; प्रपंच की कारणभूता ईश्वर की अव्यक्त बीज-

रूप शक्ति; प्रकृति; अविद्या; मोह-कारिणी शक्ति; लक्ष्मी; प्रज्ञा; कृपा; लीला; 2. [हिं] धन-दौलत; ममता; पुत्र-कलत्र आदि में राग; **यौ०** —जाल - मोह का फंदा; घर-गृहस्थी का जंजाल; —पाश - माया की फाँस; —प्रयोग - छल प्रयोग।

**मायावी** - 1. [सं] माया करने या जानने-वाला; जादूगर; 2. पु० परमात्मा; बिल्ली।

**मायिक** - 1. वि० [सं] मायावाला; बना-वटी; 2. जादूगर।

**मायूस** - वि० [अ] निराश, भग्नहृदय।

**मायूसी** - स्त्री० [अ] नैराश्य।

**मार** - 1. पु० [सं] वध; मृत्यु; कामदेव; राग; विघ्न; धतूरा; **यौ०**—जित् - शिव; बुद्ध; 2. स्त्री० [हिं] मरने की क्रिया; चोट; निशाना; कष्ट; **यौ०**—काट - युद्ध; —धाड़, पीट - लड़ाई; एक दूसरे को मारना; 3. पु० [फ़ा] साँप; **यौ०**—आस्तीन - दोस्त बनकर दुश्मनी करनेवाला; —गीर - सँपेरा।

**मारक** - 1. [सं] मारनेवाला; नाशक; दमन या शमन करनेवाला; 2. पु० मारणकर्ता; महामारी।

**मारका** पु० [अ] युद्धस्थल; युद्ध; लड़ाई-झगड़ा; मार्का; **यौ०** —आराई - लड़ने के लिए पंक्तिबद्ध होना; **मु०** मारके का - भारी महत्वपूर्ण।

**मारकीन** - पु० [हिं] एक तरह का मोटा व कोरा कपड़ा।

**मारकेश** - पु० [सं] मृत्यु की संभावना उपस्थित करनेवाला ग्रहयोग।

**मारण** - पु० [सं] मारना; शत्रुनाश के लिए किया जानेवाला तांत्रिक अभिचार; भस्म बनाना (धातु का); एक विष।

**मारतौल** - पु० [हिं] एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

**मारना** - स० [हिं] पीटना, चोट पहुँचाना; पटकना (सिर); प्राण लेना; काटना; पछाड़ना; नाश करना; शिकार करना; दबाना (गुस्सा)।

**मारफ़त** - स्त्री० [अ] ज़रिया; ज्ञान; अध्यात्मज्ञान।

**मारा** - 1. वि० [हिं] मारा हुआ; पीड़ित; 2. स्त्री० माला; **मु०** —मारा फिरना - दर-दर की ठोकरें खाना।

**मारामार** - 1. स्त्री० [हिं] हलचल; बहुतायत; दौड़धूप; मारपीट; 2. अव्य० बहुत जल्दी।

**मारि** - स्त्री० [स] महामारी; वध।

**मारिष** - पु० [स] नाटक का सूत्रधार; नाटक में किसी सम्मानित व्यक्ति के संबोधन का शब्द।

**मारी** - स्त्री० [सं] महामारी, चण्डी।

**मारुत** - पु० [सं] वायु; वायु के अधिष्ठाता देव; श्वास; प्राण; स्वाति नक्षत्र।

**मारुति** - पु० [सं] हनुमान; भीम।

**मारू** - 1. पु० [हिं] युद्ध में गाया-बजाया जानेवाला एक राग; डंका; 2. वि० काट करनेवाला; युद्धोत्साह जगाने-वाला; **यौ०** —बाजा - एक वाद्य।

**मारूज़** - 1. वि० [अ] निवेदित; 2. पु० निवेदन।

**मारूफ़** - वि० [अ] प्रसिद्ध; वह क्रिया जिसका कर्ता मालूम हो।

**मारे** - अव्य० [हिं] के कारण; वजह से।

**मार्का** - 1. पु० [हिं] छाप, चिन्ह; 2. वि० चिन्हवाला।

**मार्ग** - पु० [सं] रास्ता, ग्रह का भ्रमण-पथ; मृगशिरा नक्षत्र; गुदा; मार्गशीर्ष मास; **यौ०** —दर्शक - रास्ता दिखाने-

वाला ; —बंध - रास्ता रोकने के लिए रखे गये पत्थर, बल्ले आदि ; —रक्षक - रास्ते की निगरानी करनेवाला ; —शोधक - रास्ता साफ़ करनेवाला ।

**मार्गण** - पु० [स] अन्वेषण ; प्रेम ; याचना ; याचक , बाण ।

**मार्गणा** - स्त्री० [सं] अन्वेषण , याचना ।

**मार्गशिर, मार्गशीर्ष** - पु० [स] अगहन का महीना ।

**मार्गी** - 1. स्त्री० [स] संगीत में एक मूर्च्छना , 2. पु० पथप्रदर्शक ।

**मार्जन** - पु० [सं] साफ़ करना ; शोधन , दोषनिवारण ।

**मार्जनी** - 1. स्त्री० [सं] झाड़ू ; 2. पु० अग्नि ।

**मार्जार** - पु० [सं] बिलाव , **यौ०**—कंठ - मोर ।

**मार्जारक** - पु० [सं] बिल्ली ; मोर ।

**मार्जारी** स्त्री० [सं] मादा बिल्ली ; कस्तूरी ।

**मार्जित** - वि० [सं] शोधित ।

**मार्तण्ड** - पु० [सं] सूर्य ; आक ; शूकर ।

**मार्त्तिक** - 1. वि० [सं] मिट्टी से बना हुआ , 2. पु० सकोरा ; पुरवा ।

**मार्दव** - पु० [सं] मृदुता ; चित्त की कोमलता ; समवेदना ।

**मार्मिक** - वि० [सं] मर्मज्ञ ; मर्मस्पर्शी ।

**माल** - पु० [अ] असबाब ; बहुमूल्य वस्तु ; धनदौलत ; मालगुज़ारी ; वाणिज्य-सामग्री ; स्वादिष्ठ और तरल भोज्य पदार्थ , राजस्व ; रेल आदि से भेजा जानेवाला सामान ; हक़ीक़त ; **यौ०**—अदालत - मालगुज़ारी आदि के मुक़द्दमे सुननेवाली अदालत ; —ख़ाना - गोदाम; —गाड़ी - माल ढोने के काम आनेवाली ट्रेन ; —गुज़ार - मालगुज़ारी अदा करनेवाला ; —गुज़ारी - भूमि-कर ; —गोदाम - व्यापार की वस्तुएँ रखने का स्थान ; रेल या जहाज़ आदि से आने-जानेवाले माल रखने का स्थान ; — ज़ामिन - नगदी ज़मानत देनेवाला ; —टाल - रुपया-पैसा , मालमत्ता ; —दार - धनी ; —पूआ - एक पकवान जो आटे को मेवे के साथ चीनी के रस में घोलकर घी में पूरी की तरह छानने से तैयार होता है ; —मस्ती - धनमद ; —महकमा - राजस्व का प्रबंध करनेवाला सरकारी विभाग ; —मारू - माल ग़बन करनेवाला ।

**मालकँगनी** - स्त्री० [हिं] एक लता जिसके दानों का तेल दवा के काम आता है ।

**मालकोश** - पु० [सं] संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत) ।

**मालती** - स्त्री० [सं] अत्यंत सुगंधित फूलोंवाली एक लता ; युवती ; रात्रि ; चांदनी , एक वर्णवृत्त ; जायफल ।

**मालबरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की ईख ।

**माला** - स्त्री० [सं] श्रेणी ; हार ; लड़ी ; समूह ; **यौ०** —कंठ - अपामार्ग ; —कर, कार - माली ; —गुण - हार ; —धर - जो माला धारण किये हुए हो ; **मु०** — फेरना - जप करना ।

**मालामाल** - वि० [अ] समृद्ध ; भरपूर ।

**मालिक** - पु० [स] माली , रंगरेज़ ; [अ] स्वामी ; ईश्वर ; पति ।

**मालिका** - स्त्री० [सं] पंक्ति ; माला, हार ; बेटी ; अंगूरी शराब ; राजभवन ; अलसी ।

**मालिकाना** - 1. पु० [अ] ज़मीदारी का हक़ ; स्वामित्व , 2. वि० मालिक-जैसा ।

**मालिकी** - स्त्री० [हिं] स्वामित्व, मालिकाना हक़ ; मिलकियत ।

**मालिन** - स्त्री० [हिं] माली की स्त्री ।

**मालिन्य** - पु० [सं] मलिनता ; अंधकार ।
**मालिया** - पु० [अ] मालगुज़ारी ।
**मालिश** - स्त्री० [अ] मलने का भाव या कर्म, मर्दन ।
**माली** - 1. वि० [अ] आर्थिक ; [स] युक्त ; जो माला पहने हो ; 2. पु० [हि] माला बनाने या फूल बेचनेवाला, बाग़बान ।
**मालीदा** 1. वि० [फ़ा] मला हुआ ; 2. पु० चूरमा ; ऊनी शाल या पट्टू ।
**मालूम** - वि० [अ] ज्ञात ; प्रकट ; प्रसिद्ध ।
**माल्य** - पु० [सं] माला, हार ; पुष्प ।
**मावा** - पु० [हि] खोवा ; माँड़ ; चंदन का इत्र ; सत्त ; मसाला , [अ] आश्रयस्थान ।
**माश** - पु० [स] उड़द ।
**माशा** - पु० [हिं] आठ रत्ती का वज़न ; मु०—तोला होना - चित्त का स्थिर न होना ।
**माशी** - 1. वि० [फ़ा] उड़द के रंग का ; 2. पु० हरा रंग ।
**माशूक़** - वि० [अ] प्रेमपात्र ; प्यारा ; सुंदर ; मोहक ।
**माशूक़ा** - स्त्री० [अ] प्रेमिका, प्रेयसी ।
**माशूक़ाना** - वि० [अ] माशूको-जैसा ; यौ० —अंदाज़, अदा - मन लुभानेवाली अदा ; हाव-भाव ।
**माशूक़ी** - स्त्री० [अ] माशूक़पन , हाव-भाव ।
**माष** - पु० [सं] उड़द ; माशा ; महामूर्ख ।
**मास** - पु० [सं] वर्ष का बारहवाँ भाग, महीना ; बारह की संख्या ; यौ०—कालिक - महीने-भर रहनेवाला ; —फल - मासविशेष का शुभाशुभ फल ; —मान - वर्ष ।
**मासांत** - पु० [सं] महीने का अंत ; अमावास्या ; संक्रांति ।
**मासावधिक** - वि० [सं] महीने-भर में होने-वाला ; महीना-भर बना रहनेवाला ।
**मासिक** - 1. वि० [स] प्रतिमास होनेवाला ; मास-संबंधी ; महीने में एक बार निकलनेवाला ; 2. पु० प्रतिमास निकलनेवाला पत्र ; मासिक श्राद्ध ; यौ०—धर्म - रजोधर्म ।
**मासी** - स्त्री० [हि] मौसी, माँ की बहन ।
**मासुरी** - स्त्री० [स] दाढ़ी ।
**मासूम** - वि० [अ] निष्पाप, निर्दोष ।
**माह** - पु० [फ़ा] चाँद ; महीना ; यौ०—ताब - चाँदनी ; —ताबी - एक आतिश-बाज़ी ; छत या चबूतरा ; —नामा मासिक पत्र ; —ब-माह - प्रतिमास ; —रुख, रू - चंद्रमुख ; —वार - प्रतिमास, मासिक ; —वारा - मासिक वेतन ; —वारी - मासिक वेतन ; मासिक धर्म ; —कामिल - पूर्णचंद्र ; —नौ - दूज का चाँद ।
**माहन** - पु० [सं] ब्राह्मण ।
**माहाजन, माहाजनीन** - वि० [सं] बड़े आदमी के योग्य ।
**माहात्म्य** - पु० [सं] महिमा ; गौरव ; व्रत आदि का पुण्यजनक फल ।
**माहाना** - वि० [फ़ा] माहवार ।
**माहाराज्य** - पु० [सं] महाराजपद ।
**माहिं** - अव्य० [हिं] मध्य, भीतर ।
**माहिर** - 1. पु० [स] इंद्र ; 2. वि० [अ] कुशल ; चतुर ; अच्छा जानकार ।
**माहिला** - पु० [हिं] माँझी ।
**माही** - स्त्री० [फ़ा] मछली ; यौ० —गरी - मछली पकड़नेवाला ; —पुश्त - जो बीच में ऊँचा और किनारों से नीचा हो ।
**माहीयत** - स्त्री० [अ] तत्त्व , असलियत ।
**माहुर** - पु० [देश] जहर ।
**माहेन्द्र** - 1. वि० [सं] इंद्र-संबंधी ; इंद्र की पूजा करनेवाला ; 2. पु० चतुर्थ देव-

लोक; यात्रा के लिए शुभ माना जानेवाला एक योग।

**माहेश्वर** - 1. वि० [स] महेश्वर-संबंधी; 2. पु० शिवोपासक; एक अस्त्र।

**मिक़दार** - स्त्री० [अ] परिमाण; मात्रा; माप-तौल।

**मिक़्नातीस** - पु० [अ] चुंबक पत्थर।

**मिक़्नातीसी** - वि० [अ] चुंबक का।

**मिक़राज़** - स्त्री० [अ] कतरनी।

**मिक़राज़ा** - पु० [फ़ा] एक तीर जिसके फल में दो गाँसियाँ होती हैं।

**मिचकाना** - स० [हिं] झपकाना।

**मिचना** - अ० [हिं] आँखों का बंद होना।

**मिचलाना** - अ० [हिं] मतली आना।

**मिचौनी** - स्त्री० [हिं] मीचने या मूँदने की क्रिया।

**मिज़राब** - स्त्री० [अ] सितार या तानपूरा आदि बजाने के लिए तार का बना छल्ला।

**मिज़ाज** - पु० [अ] तबीयत; स्वभाव; प्रकृति; घमंड; मिलावट; पंच महाभूतों के मिश्रण से उत्पन्न होनेवाली अवस्था; **यौ०** —आली - मिज़ाज कैसा है? —दाँ - विचार जाननेवाला; —दार - घमंडी; —पुरसी - तबीयत का हाल पूछना; —वाला - घमंडी; —शरीफ़ - मिज़ाजआली; —शिनास - मिज़ाज पहचाननेवाला; **मु०** —न मिलना - घमंड के मारे किसीसे बात न करना; —पहचानना - किसीके रुचि-स्वभाव को समझना; —पूछना - तबीयत का हाल पूछना; —में आना - दिल में आना; —सातवे आसमान पर होना - घमंड बहुत बढ़ जाना।

**मिज़ाजी** - वि० [अ] घमंडी।

**मिटना** - अ० [हिं] चिह्न या दाग़ आदि का दूर होना; नष्ट होना; बरबाद होना।

**मिटिया** - स्त्री० [हिं] मिट्टी का छोटा पात्र।

**मिटियाना** - स० [हिं] मिट्टी से रगड़कर साफ़ करना।

**मिट्टी** - स्त्री० [हिं] धूल; ज़मीन; भस्म; शरीर; प्रकृति; लाश; **मु०** —का पुतला - मनुष्य; —की मूरत - मानव-शरीर; —के माधव - मूर्ख; —के मोल - बहुत सस्ते दामो (बिकना); —करना - बरबाद करना; —ख़राब होना - क्रिया-कर्म ठिकाने से न होना; —ठिकाने लगाना - अंत्येष्टि-क्रिया समुचित प्रकार से होना; —डालना - दोष पर पर्दा डालना।

**मिट्ठू** - 1. वि० [हिं] मधुरभाषी; चुप्पा; 2. पु० तोता।

**मिठ** - वि० [हिं] समास में प्रयुक्त 'मीठा' का लघु रूप; **यौ०** —बोला - मधुरभाषी।

**मिठाई** - स्त्री० [हिं] मिठास; मिष्टान्न।

**मिठास** - स्त्री० [हि] मीठापन, माधुर्य।

**मिठोरी** - स्त्री० [हिं] उड़द या चने की बरी।

**मितंगम** - 1. वि० [स] थोड़ा चलनेवाला; धीरे चलनेवाला; 2. पु० हाथी।

**मितंपच** - वि० [सं] कंजूस; थोड़ा अन्न हज़म करनेवाला; जिसकी मेधाशक्ति कम हो।

**मित** - वि० [सं] परिमित; थोड़ा; **यौ०** —भाषी - कम बोलनेवाला; —भुक्त, भोजी - थोड़ा खानेवाला; —व्ययिता - किफ़ायतदारी; —व्ययी - कम ख़र्च करनेवाला।

**मिताई** - स्त्री० [हिं] मित्रता, दोस्ती।

**मितार्थ** - वि० [सं] परिमित अर्थवाला।

**मिताहार** - 1. वि० [सं] थोड़ा खानेवाला; 2. पु० परिमित आहार।

**मिति** - स्त्री० [सं] मान; सीमा; विज्ञान; समय की सीमा।

**मिती** - स्त्री० [हिं] तिथि या तारीख, हुण्डी आदि चुकाने की तिथि ; **यौ०** —काटा - गणित की वह रीति जिससे हुण्डी की मुद्दत और ब्याज जोड़ते हैं ; **मु०** —काटना - सूद काटना ; —पूजना - हुण्डी की अवधि पूरी होना।

**मित्र** - पु० [सं] दोस्त ; युद्ध आदि में साथ देनेवाला राष्ट्र ; सूर्य, **यौ०** —कर्म - मित्रोचित कार्य ; — द्रोह - मित्र का अनिष्ट करना ; —भाव - मित्रता ; —भेद - दोस्ती का टूट जाना ; —युद्ध - दोस्तो के बीच की लड़ाई ; —लाभ - किसीसे दोस्ती होना।

**मित्रता** - स्त्री०, **मित्रत्व** - पु० } [सं] दोस्ती।

**मित्राई** - स्त्री० [हिं] मित्रता।

**मिथः** - अव्य० [सं] परस्पर, अन्योन्य।

**मिथु** - अव्य० [सं] झूठमूठ।

**मिथुन** - पु० [स] स्त्री-पुरुष का जोड़ा ; मैथुन, सभोग ; बारह राशियो में से तीसरी।

**मिथ्या** - स्त्री० [सं] झूठ, असत्य ; व्यर्थ ; **यौ०** —कोप - बनावटी क्रोध, —ग्रह - हठ, दुराग्रह ; —चर्या - मक्कारी ; —ज्ञान - भ्रम ; —दृष्टि - सम्यक्त्व का अभाव ; नास्तिकता ; —निरसन - कसम खाकर इनकार करना ; —प्रतिज्ञ - प्रतिज्ञा का पालन न करनेवाला; —मति - भ्रांति; —वचन, वाद - असत्य कथन ; —वादी - झूठा ; —साक्षी - झूठा गवाह।

**मिथ्याचार** - पु० [सं] कपटाचरण।

**मिथ्यात्व** - पु० [सं] मिथ्यापन ; मिथ्या दृष्टि ; प्राणी की निम्नातिनिम्न अवस्था।

**मिथ्यापवाद, मिथ्याभियोग** - पु० [स] झूठा अभियोग।

**मिथ्याहार** - पु० [सं] प्रकृतिविरुद्ध आहार।

**मिथ्योपचार** - पु० [स] गलत इलाज।

**मिन** - प्रत्य० [अ] से ; का ; पर ; **यौ०**—जुमला - कुल में से।

**मिनमिन** - 1. अव्य० [अनु] धीमे या अस्पष्ट स्वर में ; 2. स्त्री० धीमी या अस्पष्ट ध्वनि।

**मिनहा** - 1. पु० [अ] घटाव, कटौती ; 2. वि० जो काट या घटा लिया गया हो।

**मिनहाई** - स्त्री० [अ] कटौती।

**मिन्नत** - स्त्री० [अ] बिनती ; चापलूसी ; उपकार ; कृतज्ञता ; **यौ०**—कश - एहसान लेनेवाला ; —गुज़ार - कृतज्ञ।

**मिमियाना** - अ० [अनु] बकरी या भेड़ का बोलना, 'में - में' करना।

**मियाँ** - पु० [फ़ा] सरदार ; पति ; उस्ताद ; मालिक ; मुसलमान ; अमीर का लड़का ; सम्मानित व्यक्ति का संबोधन ; दूत ; **यौ०**—गिरी - शिक्षक का कार्य ; —जी - शिक्षक ; —बीबी - पति-पत्नी ; —मिट्ठू - मधुरभाषी ; भोला ; बुद्धू।

**मियान** - 1. पु० [फा] मध्य भाग ; 2. स्त्री० तलवार आदि का खोल या गिलाफ ; **यौ०**—तह - बीच की तह ; —दारी - दलाली ; कुटनापन ; —वाला - मझोले क़द का ; **मु०**—में से निकला पड़ना - बात-बात पर लड़ने को तैयार होना।

**मियाना** - 1. वि० [फ़ा] बीच का ; 2. पु० एक तरह की पालकी ; हार में लड़ी के बीच का बड़ा मोती ; **यौ०**—क़द - मझोले आकार का ; —रव - मध्यमा वृत्ति का आश्रय करनेवाला।

**मियानी** - स्त्री० [फा] पायजामे में दोनो पायँचो के बीच का कपड़ा ; रूमाल।

**मिरगी** - स्त्री० [हिं] एक मानसिक रोग, अपस्मार।

**मिरचा** - स्त्री० [हिं] लाल मिर्च।

**मिरज़ई** - स्त्री० [फ़ा] कमर तक का बंददार अंगरखा।

**मिरज़ा** - पु० [फा] शाहज़ादा; मुगलो की उपाधि; अमीरज़ादा; **यौ०**—छैला - छैलछबीला; —फ़ोया - दुबला-पतला; —मिज़ाज़ - तुनुकमिज़ाज़।

**मिरज़ाई** - स्त्री० [फ़ा] सरदारी; रईसी या हाकिमाना मिज़ाज।

**मिर्च** - स्त्री० [हिं] लाल मिर्च; मसाले के रूप में व्यवहृत होनेवाला काले रंग का गोल व कटु-तीक्ष्ण स्वादवाला दाना।

**मिलन** - पु० [सं] मिलना; इकट्ठा होना; मिश्रण; **यौ०** —सार - सुशील; —सारी - सुशीलता।

**मिलना** - अ० [हिं] संयोग होना; एक होना; मिश्रित होना; भेट होना; गले मिलना; भिड़ना; समान होना; **मु०** मिल-जुलकर - इकट्ठे होकर; मेल के साथ; —जुलना - भेंट-मुलाक़ात; मिलता जुलता एक-सा, लगभग समान; मिला-जुला - मिश्रित।

**मिलनी** - स्त्री० [हिं] ब्याह की एक रस्म, कन्या-पक्षवालों का वर-पक्षवालो से गले मिलना और उन्हे रुपये देना।

**मिलवाई** - स्त्री० [हिं] मिलवाने की क्रिया या भाव; मिलवाने के बदले दिया जानेवाला धन।

**मिलान** - पु० [हिं] मिलाने की क्रिया; मिलाकर जाँचना; तुलना।

**मिलाना** - स० [हिं] मिलावट करना; इकट्ठा करना; सटाना; भेट कराना; स्त्री-पुरुष का संयोग कराना; मेल कराना; किसीको अपनी ओर करना।

**मिलाप** - पु० [हिं] मेल; भेट; प्रेम।

**मिलावट** - स्त्री० [हिं] मिश्रण; बढ़िया चीज़ में घटिया चीज़ का मेल।

**मिलिंद** - पु० [सं] भौंरा।

**मिलित** - वि० [सं] युक्त, लगा हुआ या मिला हुआ।

**मिलौनी** - स्त्री० [हिं] मिलावट; मिलनी।

**मिल्क** - स्त्री० [अ] अधिकारभुक्त वस्तु; ज़ायदाद; जागीर; भूसंपत्ति।

**मिल्की** - पु० [अ] ज़मीदार; जागीरदार।

**मिल्कीयत** - स्त्री० [अ] वह चीज़ जिसपर मालिकाना हक़ हो, ज़ायदाद।

**मिल्लत** - 1. स्त्री० [अ] मज़हब; संप्रदाय; जाति; [हिं] मेल-जोल, मिलनसारी।

**मिश्र** - 1. वि० [सं] कई चीज़ो के संयोग से बना हुआ; संयुक्त; 2. पु० श्रेष्ठ; —केशी - एक अप्सरा; —गुणा - आने-पाई या मन-सेर आदि का गुणा; —जाति - वर्णसंकर; —धान्य - वह धान्य जिसमें कई अनाज मिले हों, —शब्द - खच्चर।

**मिश्रण** - पु० [सं] मिलावट।

**मिश्रित** - वि० [सं] मिलावटवाला।

**मिष** - पु० [सं] छल; बहाना; स्पर्धा।

**मिष्ट** - 1. वि० [सं] मीठा; तर; 2. पु० मिठास; मिठाई; **यौ०**—पाक - मुरब्बा।

**मिष्टान्न** - पु० [सं] मिठाई।

**मिस** - पु० [हिं] बहाना; ढोंग।

**मिसना** - अ० [हिं] मिलाया जाना; मला जाना।

**मिसरा** - पु० [अ] दरवाज़े का एक पट, किवाड़; उर्दू शेर का आधा भाग।

**मिसरोटी** - स्त्री० [हिं] कई तरह की दालो के पीसे हुए आटे की बनी मोटी रोटी; बाटी।

**मिसाल** - स्त्री० [अ] दृष्टान्त; चित्र; फ़रमान; स्थूलजगत्; स्वप्नजगत्।

**मिसाली** - वि० [अ] दृष्टान्तरूप ।
**मिसिल** - स्त्री० [अ] मुक़द्दमे की कार्रवाई के नत्थी किये हुए काग़ज़ात ।
**मिसिली** - वि० [अ] जिसके बारे में कोई मिसिल बन चुकी हो, सज़ायाफ़्ता ।
**मिस्कला** - पु० [हि] सैक़ल करने का औज़ार ।
**मिस्कीन** - वि० [अ] कंगाल ; भूखा ; असहाय ।
**मिस्कीनी** - स्त्री० [अ] कंगाली ; दीनता ।
**मिस्कोट** - पु० [हिं] भोजन ; एक मेज या दस्तरख़ान पर बैठकर खाना खानेवाले ; गुप्तमंत्रणा ।
**मिस्तर** - पु० [हिं] छत बनाने या पलस्तर करने में काम आनेवाला पिटना ; नील की टिकिया बनाने की कल ।
**मिस्तरी** - पु० [हिं] कुशल कारीगर ; **यौ०** —ख़ाना - लोहार या बढ़ई आदि के मिलकर काम करने की जगह ।
**मिस्ल** - वि० [अ] सदृश, तुल्य ।
**मिस्सा** - पु० [हि] मूँग या मोठ आदि का भूसा ; कई तरह की दालों को एक साथ पीसकर बनाया हुआ आटा ।
**मिस्सी** - स्त्री० [हिं] एक काला मंजन जिसे स्त्रियाँ श्रृंगार के लिए दाँतों पर लगाती हैं ; **यौ०**—काजल - बनाव-सिंगार , —दान, दानी - मिस्सी रखने का पात्र ।
**मिहनत** - स्त्री० [अ] मेहनत ।
**मिहिर** - 1. पु० [सं] सूर्य ; चंद्रमा ; वायु ; बादल ; आक ; 2. वि० बूढ़ा ।
**मींगी** - स्त्री० [हिं] गिरी, मग्ज़ ।
**मींजना, मींड़ना** - स० [हिं] मसलना, दबाना ।
**मीआद** - स्त्री० [अ] अवधि ; दंड की अवधि; **मु०** —गुज़रना - अवधि बीत जाना ; —बोलना - क़ैद की सज़ा सुनाना ।
**मीआदी** - वि० [अ] मीयादवाला ; सज़ायाफ़्ता ; **यौ०**—बुख़ार - सन्निपातिक ज्वर, टायफायड ।
**मीच, मीचु** - स्त्री० [हि] मृत्यु, मौत ।
**मीचना** - स० [हिं] मूँदना या बंद करना (आँख) ।
**मीजना** - स० [हिं] मसलना ।
**मीज़ान** - पु० [अ] जोड़ ; तराज़ू ; तुलाराशि ; **यौ०** मिज़ाने-कुल - कुल रक़मों या संख्याओं का जोड़ ; **मु०**—मिलना - जमा-ख़र्च का मीज़ान बराबर होना ।
**मीठा** - 1. वि० [हिं] मधुर रसवाला ; सुस्वादिष्ठ ; प्रिय ; धीमा ; हलका ; मधुरभाषी ; हिंजड़ा ; 2. पु० मिठास ; चकोतरा नींबू ; मिठाई ; गुड़ , **यौ०**—आलू - शकरकंद , —कद्दू - कुम्हड़ा ; चावल - मीठा पुलाव ; —ठग - मीठी बातें करके ठगनेवाला ; —तेल - तिल का तेल ; —नीबू - चकोतरा नींबू ; —बरस - स्त्री का अठारहवाँ बरस ; —मीठा - हलका-हलका ; थोड़ा-थोड़ा (दर्द) ।
**मीठी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [हिं] मिठासयुक्त, मधुर ; प्रिय ; **यौ०**—गाली - ससुराल में मिलनेवाली गाली ; —छुरी - विश्वासघाती ; —तूंबी - कद्दू ; —नज़र - प्रेमभरी दृष्टि ; —नींद - निश्चिन्तता की नीद ; **मु०**—छुरी चलाना - दोस्ती के पर्दे में गला काटना ।
**मीड़** - स्त्री० [हिं] एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने का सुंदर ढंग (संगीत)।
**मीन** - पु० [सं] मछली ; बारह राशियों में अंतिम ; **यौ०** —केतन - कामदेव ; **मु०** —मेख निकालना - छिद्रान्वेषण करना ।

**मीना** - 1. पु० [हिं] राजपूताने की एक युद्धप्रिय जाति ; 2. स्त्री० [फ़ा] नीला रंग ; रंग-विरंगा शीशा ; शराब की बोतल ; शराब ; शीशे और सोने-चाँदी पर किया जानेवाला रंगीन काम ; **यौ०** —कार - मीना का काम करनेवाला ; —कारी - मीना का काम ; —बाज़ार - वह बाज़ार जिसमें स्त्रियाँ ही सब चीज़ें बेचती हों ; सुंदर बाज़ार ।

**मीनार** - स्त्री० [अ] स्तंभरूप में बनी हुई बहुत ऊँची इमारत ; मनार ।

**मीमांसन** - पु० [सं] मीमांसा करना ।

**मीमांसा** - स्त्री० [सं] विचारपूर्वक तत्त्व-निर्णय, विवेचना ; महर्षि जैमिनी द्वारा प्रणीत दर्शन ।

**मीयाद** - स्त्री० [अ] मीआद ।

**मीयादी** - वि० [अ] मीआदी ।

**मीर** - 1. पु० [सं] समुद्र ; जल ; सीमा ; 2. पु० [फ़ा] सरदार ; प्रधान अधिकारी; ताश या गंजीफ़े के बादशाह का पत्ता ; मुखिया ; प्रतियोगिता में प्रथम आनेवाला ; **यौ०** —मुंशी - प्रधान लेखक ; मीरेअर्ज़ - बादशाह के सामने लोगों की अर्ज़ियाँ पेश करनेवाला कर्मचारी ; मीरेआलम - शाही झंडा लेकर चलनेवाला ; मीरेआख़ोर - अस्तबल का दारोग़ा ; मीरेआतिश - तोपख़ाने का अध्यक्ष ; मीरेकाफ़िला, कारवाँ - काफ़िले का सरदार ; मीरे बह्र - जलसेनापति ; मीरेमजलिस - सभापति ; मीरेमतबख़ - बावर्चीख़ाने का दारोगा ; मीरेमहल्ला - महल्ले का चौधरी ; मीरेशिकार - राजाओं या बादशाहों के शिकार का प्रबंध करनेवाला कर्मचारी ; मीरेसामान - नवाबों या बादशाहों की पाकशाला का प्रबंधक ; मीरेहाज - हाजियों का सरदार ।

**मीरास** - स्त्री० [अ] बपौती ; मृत व्यक्ति की छोड़ी हुई संपत्ति ।

**मीरी** - 1. स्त्री० [फ़ा] सरदारी ; 2. पु० खेल आदि की प्रतियोगिता में प्रथम रहनेवाला ।

**मीलन** - पु० [सं] मूँदना ; सिकोड़ना ।

**मीलित** - वि० [सं] मुँदा हुआ ; सिकुड़ा हुआ ।

**मुँगरा** - पु० [हिं] ठोकने या पीटने आदि के काम आनेवाली गोल मुठियादार लकड़ी ।

**मुँगरी** - स्त्री० [हिं] छोटा मुँगरा ।

**मुँगौरी** - स्त्री० [हिं] मूँग की दाल की बरी।

**मुंड** - 1. पु० [सं] सिर ; कटा हुआ सिर ; मुँड़ा हुआ सिर ; नाई ; राहु ; पेड़ का ठूँठ ; 2. वि० मुंडित ; अधम ; **यौ०** —माला - खोपड़ियों की माला ।

**मुँड़चिरा** - पु० [हिं] एक तरह के मुसलमान फ़क़ीर जो अपने अंगों पर छुरे से घाव करके भीख माँगते हैं ; **यौ०** —पन - लेन-देन आदि में झगड़ा और हठ ।

**मुंडन** - पु० [सं] मूँड़ना ; द्विजादि के लिए विहित एक संस्कार, बालक के सिर के बाल पहली बार मूँड़ने की रस्म ।

**मुंडा** - 1. स्त्री० [सं] संन्यासिनी ; मुंडिता स्त्री ; 2. वि० [हिं] मुंडित ; गंजा ; बिना सींग का (बैल आदि); 3. पु० बिना नोक का जूता ; एक आदिवासी जाति या उनकी भाषा ।

**मुँड़ासा** - पु० [हि] सिर पर बाँधने का साफ़ा ; [त] मुँड़ासु ।

**मुंडित** - 1. वि० [सं] मुँड़ा हुआ ; 2. पु० लोहा ।

**मुंडिया** - पु० [हिं] सिर मुँड़ाकर बना हुआ साधु, संन्यासी ।

**मुँड़ेर** - स्त्री० [हिं] खेत की मेंड़ ; मुँड़ेरा ।

**मुँड़ेरा** - पु० [हिं] छत के चारो ओर की मेंड़ ।
**मुंडो** - स्त्री० [हिं] सिरमुँड़ी स्त्री ; राँड़ ।
**मुंतक़िल** - वि० [अ] इंतिक़ाल करनेवाला ; एक से दूसरी जगह या दूसरे हाथ में गया हुआ ।
**मुंतख़ब** - वि० [अ] छाँटा हुआ ; बढ़िया ; प्रशस्त ; साररूप ।
**मुंतज़िम** - पु० [अ] प्रबंधक ; मितव्ययी ; प्रबंध-कुशल ।
**मुंतज़िर** - पु० [अ] प्रतीक्षा करनेवाला ।
**मुंतशिर** - वि० [अ] बिखरनेवाला ; चिन्तित।
**मुंतही** - पु० [अ] सीमा तक पहुँचनेवाला ; पारगामी (विद्वान) ।
**मुँदना** - अ० [हिं] पलक लगाना ; छिपना ।
**मुंदरा** - पु० [हिं] एक तरह का कुंडल ।
**मुंदरी** - स्त्री० [हिं] छल्ला ; अंगूठी ।
**मुंशियाना** - वि० [हिं] मुंशियों-जैसा ; मुंशी के उपयुक्त ।
**मुंशी** - पु० [अ] लेखक, किरानी, मुहर्रिर ; उर्दू-फ़ारसी पढ़ानेवाला ; मज़मून सोचने या लिखनेवाला ; यौ० —गिरी - लेखन-वृत्ति ।
**मुंसरिम** - पु० [अ] प्रबंध करनेवाला ; कलक्टरी आदि के दफ़्तर का प्रधान ।
**मुंसलिक** - वि० [अ] पिरोया या नत्थी किया हुआ ; शामिल किया हुआ ।
**मुंसिफ़** - पु० [अ] न्यायाधीश ; यौ० —मिज़ाज - न्यायशील ।
**मुंसिफ़ाना** - वि० [अ] न्यायोचित ।
**मुंसिफ़ी** - स्त्री० [अ] न्यायशीलता ; मुंसिफ़ की अदालत ; मुंसिफ़ का पद ।
**मुँह** - 1. पु० [हिं] मुख ; चेहरा ; सूराख़ ; बाढ़ ; धार ; योग्यता ; सामर्थ्य ; किनारा ; 2. अव्य० की ओर ; दिशा में ; यौ० —अंधेरे या उजाले - बहुत सवेरे ; —चटौवल - चूमाचाटी ; बकवाद ; —चोर - झेंपू ; —छुट - मुँहफट ; —ज़ोर - बहुत बोलनेवाला ; लगाम को न माननेवाला (घोड़ा) ; —दर-मुँह - सामने ; —दिखायी - दुलहिन का मुँह देखने की रस्म ; —देखा - दिखाऊ ; मुँह ताकता रहनेवाला ; —फट - जो मुँह में आये वही बक देनेवाला ; —बोला - मुँह से कहकर बनाया हुआ ; —भर - अच्छी तरह ; —भराई - घूस ; —माँगा - मनोभिलषित ; —लगा - ढीठ ; मु० —उजला होना - इज़्ज़त रह जाना ; —उठाये चले जाना - बिना इधर-उधर देखे चले जाना ; —उतरना - चेहरे से उदासी प्रगट होना ; —का मीठा - ऊपर से भला और दिल से खोटा ; —काला करना - व्यभिचार आदि बुरे कर्म करना ; फिर मुँह न दिखाना ; —काला होना - बेइज़्ज़ती होना ; —की खाना - थप्पड़ खाना ; बुरी तरह हारना ; —खुलना - बोलने में ढीठ हो जाना ; —खुलवाना - बोलने को लाचार करना ; —चाटना - प्यार करना ; ख़ुशामद करना , —चूम लेना - किसीकी शक्ति या योग्यता का कायल हो जाना ; —झुलसना - मुँह में आग लगाना ; लानत भेजना ; —दिखाना - सामने आना ; —देखी करना - पक्षपात करना ; —देखी बात - चापलूसी की बात ; —पर - सामने ; ज़बान पर ; —पर ताला लग जाना - चुप्पी साध लेना ; —पर ताला फेंक देना - बहुत ख़फ़ा होकर कोई चीज़ लौटा देना ।
**मुँहामुँह** - पु० [हिं] मुँह तक ; बिलकुल ऊपर तक ।

**मुँहासा** - पु० [हिं] युवावस्था में चेहरे पर निकलनेवाली एक तरह की फुंसी।

**मुअज़्ज़म** - वि० [अ] पूज्य; महान्।

**मुअज़्ज़िन** - पु० [अ] अज़ाँ देनेवाला।

**मुअत्तल** - वि० [अ] बेकार; अस्थायी रूप से पदच्युत।

**मुअत्तली** - स्त्री० [अ] मुअत्तल होने का भाव।

**मुअद्दिब** - वि० [अ] शिष्ट; सभ्य।

**मुअम्मा** - पु० [अ] पहेली; रहस्य; मु० —खुलना - भेद खुलना; गुत्थी सुलझना।

**मुअल्ला** - वि० [अ] ऊँचा।

**मुअल्लिम** - पु० [अ] शिक्षक।

**मुअल्लिमा** - स्त्री० [अ] शिक्षिका।

**मुआ** - वि० [हिं] मृत; निगोड़ा।

**मुआइना, मुआयना** - वि० [हिं] निरीक्षण; जाँच-पड़ताल।

**मुआफ़** - वि० [अ] माफ़।

**मुआमला** - पु० [अ] मामला; यौ० —दाँ, फ़हम, शिनास - अनुभवी।

**मुआलिज** - पु० [अ] चिकित्सक, वैद्य।

**मुआलिजा** - पु० [अ] चिकित्सा।

**मुआवज़ा** - पु० [अ] बदला; वस्तु का मूल्य; हरजाना।

**मुआहिदा** - पु० [अ] क़ौल-करार; इकरार-नामा।

**मुक़त्तर** - वि० [अ] टपकाया हुआ।

**मुक़त्ता** - वि० [अ] कटा-छँटा हुआ; सभ्य।

**मुक़दमा** - पु० [अ] अदालत में गया हुआ मामला; दावा; यौ० मुक़दमेबाज़ - मुक़दमा लड़नेवाला; मुक़दमेबाज़ी - मुक़दमा लड़ना।

**मुक़द्दम** - 1. वि० [अ] पहला; पुराना; फ़र्ज; 2. पु० गाँव का चौधरी।

**मुक़द्दमा** - पु० [अ] प्रस्तावना; घटना; सिरनामा; मुक़दमा।

**मुक़द्दर** - पु० [अ] भाग्यलेख; यौ० —आज़माई - भाग्य की परीक्षा करना।

**मुक़द्दस** - वि० [अ] पवित्र; यौ० —किताब - अपौरुषेय धर्मग्रन्थ; —हस्ती - संतपुरुष।

**मुकना** - अ० [हिं] मुक्ति पाना; चुकना।

**मुकम्मल** - वि० [अ] समाप्त; अखंड।

**मुकम्मिल** - वि० [अ] पूरा करनेवाला।

**मुकरना** - अ० [हिं] कही हुई बात से हटना; इनकार करना।

**मुकरी** - स्त्री० [हिं] पहेली-जैसी कविता।

**मुकर्रम** - वि० [अ] सम्मानित।

**मुक़र्रर** - 1. वि० [अ] ठहराया हुआ; नियुक्त; दुहराया हुआ; 2. अव्य० दोबारा।

**मुक़र्ररी** - स्त्री० [अ] नियुक्ति, निश्चित किया गया वेतन या राजस्व।

**मुक़र्रिर** - वि० [अ] वक्ता।

**मुक़ाबला** - पु० [अ] बराबरी; आमना-सामना; मिलान।

**मुक़ाम** - पु० [अ] ठहरने की जगह; पड़ाव, वासस्थान; मौक़ा; साधक की अवस्थानभूमि; मु० — करना - ठहरना; उतरना।

**मुक़ामी** - वि० [अ] स्थानीय; यौ० —अफ़सर - स्थानीय अधिकारी; —ख़बर - स्थानीय समाचार।

**मुकियाना** - स० [हिं] मुक्की लगाकर शरीर की मालिश करना; हलके घूँसे लगाना।

**मुक़िर, मुक़िर्र** - वि० [अ] स्वीकार करने-वाला; दस्तावेज़ लिखनेवाला।

**मुकुंद** - पु० [सं] कुबेर की नौ निधियों में से एक; कुंदरू, पारा; कृष्ण; विष्णु।

**मुकुट** - पु० [सं] ताज, किरीट ; **यौ०** —धर, धारी - मुकुट धारण करनेवाला ।
**मुकुर** - पु० [स] आईना ; कुम्हार का डंडा ; मौलसिरी ।
**मुकुल** - पु० [सं] कली ; शरीर ; आत्मा ।
**मुकुलित** - वि० [सं] अधखिला ; अधमुँदा ।
**मुक़ैयद** - वि० [अ] बंदी ।
**मुक्का** - पु० [हिं] घूँसा ; **यौ०** मुक्केबाज़ी - घूँसों की लड़ाई ।
**मुक्की** - स्त्री० [हिं] घूँसेबाज़ी ; मालिश के लिए शरीर पर धीरे-धीरे मुक्के लगाना ।
**मुक़ैश** - पु० [अ] सोने-चाँदी का तार ; सोने-चाँदी के तारों का बना कपड़ा ; ताश ।
**मुक़ैशी** - वि० [सं] सोने-चाँदी के तारों से बना ।
**मुक्त** - वि० [सं] भवबंधन से मुक्त ; बंधन-रहित ; फेंका हुआ ; छूटा हुआ ; **यौ०** —कंठ - स्पष्टवक्ता ; बेधड़क ; —कंठ से - निस्संकोच रूप में ; ऊँची आवाज़ में ; —कच्छ - लुंगीधारी ; जैन या बौद्ध संन्यासी ; —केश - खुले बालोंवाला ; —चक्षु - खुली आँखवाला ; —चेता - सांसारिक आसक्ति से शून्य चित्त या आत्मा ; —द्वार - निर्बाध ; —लज्ज - निर्लज्ज ; —वसन - निर्वस्त्र ; दिगंबर साधु ; —वेणी - खुली वेणी या चोटी वाली (स्त्री) ; द्रौपदी ; —हस्त - दानी ; उदार ।
**मुक्ता** - स्त्री० [सं] मोती ; वेश्या ; **यौ०** —कलाप - मोतियों का हार ; —गुण, दाम - मोतियों की लड़ी ; —फल - मोती ; कपूर ; —मणि - मोती ।
**मुक्तागार** - पु० [सं] सीप ।
**मुक्तात्मा** - वि० [सं] प्राप्तमोक्ष ; आसक्ति-रहित ।
**मुक्तावली** - स्त्री० [सं] मोतियों की लड़ी ।
**मुक्ति** - स्त्री० [स] मोक्ष, छुटकारा ; आज़ादी ; आत्मा का जन्म-मरण से मुक्त हो जाना ; **यौ०** —क्षेत्र - काशी ; —धाम - मुक्ति देनेवाला तीर्थ ; —पत्र - छुटकारे का परवाना ; —प्रद - मुक्ति देनेवाला ; —मार्ग - मुक्ति पाने का मार्ग या साधन ; —लाभ - छुटकारा मिलना ।
**मुख** - पु० [सं] मुँह ; दरवाज़ा ; **यौ०** —कमल - कमल-जैसा मुख ; सुन्दर मुख , —चपल - वाचाल ; —चूर्ण - चेहरे पर मलने का सुगंधित पाउडर ; —दूषिका - चेहरे पर होनेवाली फुंसी, मुँहासा ; —धावन - मुँह धोना ; —निरीक्षक - आलसी आदमी ; —पट - बुरका ; घूँघट ; —पिण्ड - ग्रास ; —पूरण - कुल्ला ; मुख में कोई चीज़ भरना ; —पृष्ठ - पुस्तक या मासिकपत्र आदि का आवरणपृष्ठ ; —प्रक्षालन - मुँह को धोना ; —प्रसाद - मुख की प्रसन्न मुद्रा ; —प्रिय - सुस्वादु ; नारंगी, ककड़ी, लवंग, इलायची आदि ; —बंध, बंधन - पुस्तक की प्रस्तावना ; —मंडल - चेहरा ; —मार्जन - मुख-प्रक्षालन ; —रुचि - मुखकांति ; —रोग - गले, मसूड़े, जीभ आदि में होनेवाला रोग ; —वाद्य - मुँह से बजाया जानेवाला बाजा ; —वासिनी - सरस्वती ; —व्यादान - जँभाई ; —शुद्धि - भोजन के बाद पान या इलायची आदि खाकर मुख शुद्ध करना ; —शोष - प्यास ; मुख सूखना ; —सुख - उच्चारण की सरलता या सौंदर्य ; —स्राव - लार ; —हास - प्रसन्न मुखाकृति ।
**मुखड़ा** - पु० [हिं] चेहरा ।

**मुख़्तार** - पु० [अ] एजेंट; अधिकारप्राप्त प्रतिनिधिरूप में व्यक्ति-विशेष के कार्य करने का अधिकारी; यौ० —नामा - मुख़्तार का अधिकार-पत्र; — कुल - सर्वाधिकारी।

**मुख़न्नस** - वि० [अ] नपुंसक।

**मुख़बिर** - पु० [अ] जासूस; अपराध स्वीकार कर गवाह बन जानेवाला मुलज़िम।

**मुख़बिरी** - स्त्री० [अ] जासूसी।

**मुखर** - 1. वि० [सं] वाचाल; शोर करनेवाला; अप्रियवादी; मुखिया; 2. पु० शंख; कौआ।

**मुखरता** - स्त्री० [सं] वाचालता।

**मुखरित** - वि० [सं] ध्वनित।

**मुखाकृति** - स्त्री० [सं] चेहरा।

**मुखाग्नि** - स्त्री० [सं] चिता में आग लगाने के पहले शव के मुँह में आग देने की क्रिया।

**मुखाग्र** - वि० [स] कंठस्थ।

**मुखापेक्षी** - वि० [सं] पराश्रित।

**मुख़ालफ़त** - स्त्री० [अ] विरोध; शत्रुता।

**मुख़ालिफ़** - वि० [अ] विरोध करनेवाला; शत्रु।

**मुखासव** - पु० [स] थूक; लार।

**मुखिया** - पु० [हिं] प्रधान व्यक्ति, अगुआ; भोग लगाने आदि का काम करनेवाला; गाँव में होनेवाली घटनाओं की सूचना थाने में भेजनेवाला व्यक्ति।

**मुख़्तलिफ़** - वि० [अ] जुदा; विसदृश; कई तरह का।

**मुख़्तसर** - वि० [अ] संक्षिप्त; छोटा।

**मुख्य** - 1. वि० [सं] मुख-संबन्धी; प्रधान; श्रेष्ठ; 2. पु० मुखिया; यौ० —मंत्री - (प्रान्तीय सरकारों के) प्रधान मंत्री; —सर्ग - स्थावर सृष्टि।

**मुख्यतः** - अव्य० [सं] ख़ास तौर से।

**मुख्यार्थ** - पु० [सं] शब्द का प्रधान अर्थ।

**मुगदर** - पु० [हिं] व्यायाम के काम में लाया जानेवाला मुगरा।

**मुग़न्नी** - पु० [अ] गवैया।

**मुगरा** - पु० [हि] अधिक मोटी मुँगरी।

**मुग़लाई** - बि० [फ़ा] मुग़लों का-सा, यौ० —हड्डी - मज़बूत हड्डी।

**मुग़ल्लज़ात** - स्त्री० [अ] गंदी गालियाँ।

**मुग़ालता** - पु० [अ] धोखा; भ्रम।

**मुग्ध** - वि० [सं] मोहित; सुदर; मूढ़; भोला; यौ०—बुद्धि - मूर्ख; नासमझ; भोला।

**मुग्धा** - स्त्री० [सं] सरल स्वभाववाली युवती नायिका।

**मुचलका** - पु० [तु] वह प्रतिज्ञा पत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम नही करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो।

**मुछंदर** - पु० [हिं] बड़ी मूँछोवाला; भोंड़ी शकलवाला; भोंदू।

**मुछ** - स्त्री० [हि] मूँछ का केवल समास में व्यवहृत रूप; यौ० —मुंडा - जिसने मूँछे मुँड़ा ली हो।

**मुछियल, मुछैल** - वि० [हिं] बड़ी मूँछोवाला।

**मुज़क्कर** - पु० [अ] पुरुष; पुंल्लिंग; यौ० —समाई - जोरू का गुलाम।

**मुज़मिल** - वि० [अ] संक्षेप में कथित; इकट्ठा किया हुआ।

**मुज़रा** - 1. वि० [अ] जारी किया हुआ; हिसाब में लिया हुआ; 2. पु० कटौती; अदब से सलाम करना; वेश्या का महफ़िल में बैठकर गाना।

**मुजरिम** - पु० [अ] अपराधी।

**मुजरंद** - वि० [अ] अकेला; अविवाहित; विरक्त।

**मुजर्रब** - वि० [अ] अनुभूत ।
**मुजस्सम** - वि० [अ] शरीरधारी ; मूर्तिमान ।
**मुजस्समा** - पु० [अ] मूर्ति, प्रतिमा ।
**मुजाविर** - वि० [अ] पड़ोसी ; मसजिद में रहनेवाला ।
**मुज़ायक़ा** - पु० [अ] अड़चन ; परवाह ।
**मुजाहिद** - पु० [अ] कोशिश करनेवाला ; जिहाद करनेवाला ।
**मुज़ाहिमत** - स्त्री० [अ] रोक-टोक ; विरोध ।
**मुज़िर** - हानिकर ।
**मुझ** - सर्व० [हिं] कर्ता और संबंधकारक को छोड़ शेष सब कारकों में विभक्ति के योग से 'मैं' का बननेवाला रूप ।
**मुटका** - पु० [हिं] एक मोटा रेशमी कपड़ा ।
**मुटाई** - स्त्री० [हिं] मोटापन ; घमंड ; मु० —चढ़ना - घमंड बढ़ना ।
**मुटाना** - अ० [हिं] मोटा होना ; घमंडी हो जाना ।
**मुटासा** - वि० [हिं] अधिक धन के कारण घमंडी और लापरवाह होनेवाला ।
**मुटिया** - पु० [हिं] बोझा ढोनेवाला ।
**मुट्ठा** - पु० [हिं] पूला ; दस्ता ; मुठिया ।
**मुट्ठी** - स्त्री० [हिं] बँधी हुई हथेली ; पकड़ ; मुट्ठी की चौड़ाई की माप ; चुसनी ; मु० —गरम करना - घूस देना ; —में आना - क़ब्जे में आना ; कानून के चंगुल में फँसना ।
**मुठभेड़** - स्त्री० [हिं] भिड़ंत ; सामना ।
**मुठिया** - स्त्री० [हिं] दस्ता ; ताँत पर मारने का धुनियों का बेलन ।
**मुड़कना** - अ० [हिं] मुरकना, मुड़ना ।
**मुड़ना** - अ० [हिं] गति की दिशा बदलना ; सीधी चीज़ का झुकना ।
**मुड़वारी** - स्त्री० [हिं] सिरहाना ; मुँड़ेरा ।
**मुड़हर** - स्त्री० [हिं] साड़ी या चादर का सिर के ऊपर रहनेवाला भाग ।
**मुड़ाना** - स० [हिं] उस्तरे से सिर के बाल बनवाना ।
**मुड़िया** - पु० [हिं] मुंडित सिरवाला, संन्यासी ; 2. स्त्री० मोड़ी लिपि ।
**मुतअल्लिक़** - वि० [अ] संबंध ; संयुक्त ।
**मुतअल्लिक़ा** - वि० [अ] संबद्ध ।
**मुतअल्लिक़ीन** - पु० [अ] बाल-बच्चे; संबंधी।
**मुतअल्लिम** - पु० [अ] शिक्षार्थी, शिष्य ।
**मुतअस्सिब** - पु० [अ] कट्टर ; धर्म या जाति का पक्षपात करनेवाला ।
**मुतका** - 1. पु० [हिं] कोठे या बरामदे के किनारे रेलिंग का काम देने के लिए खड़ी की गयी पतली व नीची दीवार ; 2. अ० तकिया लगाने की जगह ।
**मुतफ़न्नी** - वि० [अ] चालबाज़ ।
**मुतफ़र्रिक़** - वि० [अ] अलग-अलग ; विविध ; बिखरा हुआ ।
**मुतबन्ना** - 1. वि० [अ] गोद लिया हुआ ; 2. पु० दत्तक पुत्र ।
**मुतरज्जिम** - पु० [अ] भाषान्तरकार ।
**मुतलक़** - 1. वि० [अ] आज़ाद, बंधनरहित ; 2. अव्य० बिलकुल ।
**मुतल्लक़ा** - स्त्री० [अ] तलाक दी हुई स्त्री ।
**मुतवज्जह** - वि० [अ] ध्यान देनेवाला ।
**मुतवातिर** - वि० [अ] लगातार ।
**मुतसद्दी** - पु० [अ] मुंशी ; हिसाब लिखनेवाला ; यौ० —गिरी - क्लर्की ।
**मुतहम्मिल** - वि० [अ] सहनशील ।
**मुताबिक़** - 1. वि० [अ] सदृश, 2. पु० शोधन के बाद छापी जानेवाली कापी ।
**मुतालबा** - पु० [अ] माँगना ; पावना ।
**मुताही** - स्त्री० [अ] रखेली ।
**मुतेहरा** - पु० [हिं] कलाई पर पहनने का गहना ।
**मुत्तफ़िक़** - वि० [अ] सहमत ; एकराय ।
**मुत्तला** - वि० [अ] सूचित, आगाह ।

**मुत्तसिल** - वि० [अ] मिलनेवाला ; निकटस्थ ।
**मुत्तहिद** - वि० [अ] संयुक्त ; एक ।
**मुत्तहिदा** - वि० [अ] इकट्ठा ; संयुक्त ।
**मुद** - पु० [सं] हर्ष ; उमंग ।
**मुदब्बिर** - 1. वि० [अ] प्रयत्न करनेवाला ; बुद्धिमान ; 2. पु० मंत्री ।
**मुदर्रिस** - पु० [अ] अध्यापक ।
**मुदर्रिसी** - स्त्री० [अ] अध्यापकी ।
**मुदा** - 1. स्त्री० [सं] हर्ष, मोद ; 2. अव्य० लेकिन ; मतलब यह कि ।
**मुदाख़लत** - स्त्री० [अ] हस्तक्षेप ; रोकटोक ।
**मुदाम** - अव्य० [अ] सदा, नित्य ।
**मुदामी** - वि० [अ] सदा रहनेवाला ।
**मुदित** - वि० [सं] आनंदित ।
**मुदिता** - स्त्री० [सं] आनंद ; चित्त की वह अवस्था जिसमें दूसरे का सुख देखकर सुख होता है ।
**मुदिर** - पु० [सं] मेघ ; मेंढ़क ; कामुक ; व्यभिचारी ।
**मुदौवर** - वि० [अ] गोल ।
**मुद्गर** - पु० [सं] मुगदर ; हथौड़ा ; एक प्रचीन अस्त्र ; मुगरा ।
**मुद्दआ** - 1. पु० [अ] अभिप्राय ; 2. वि० जिसका दावा किया गया हो ।
**मुद्दई** - पु० [अ] दावा करनेवाला, वादी ; शत्रु ।
**मुद्दत** - स्त्री [अ] अरसा ; काल ; अवधि , **यौ०**—दराज़ - बहुत दिन ।
**मुद्दती** - वि० [अ] अवधिवाला ।
**मुद्दालेह** - पु० [अ] जिसपर दावा किया गया हो, प्रतिवादी ।
**मुद्धी** - स्त्री० [हिं] रस्सी या डोरी आदि की खिसकनेवाली गाँठ ।
**मुद्रक** - पु० [सं] छापनेवाला ।
**मुद्रण** - [सं] छापने की क्रिया, छपाई ; मुहर करना ; मूँदना ।
**मुद्रणालय** - पु० [सं] छापाख़ाना ।
**मुद्रांकन** - पु० [सं] मुहर से छापना ; छपाई ।
**मुद्रांकित** - वि० [सं] मुहर किया हुआ ; छपा हुआ ।
**मुद्रा** - स्त्री० [सं] नाम की मुहर ; नामवाली अंगूठी ; सिक्का ; मुख आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति ; देवपूजन में हाथ की उंगलियों का विशेष विन्यास ; आसन (हठयोग) ; छापने के काम आनेवाले शीशे के ढले हुए अक्षर, टाइप; गोरखपंथी साधुओं के कान में पहनने का काँच या स्फटिक का बना कुंडल ; **यौ०** —कार - मुहर बनानेवाला ; —तत्त्व - पुराने सिक्कों के सहारे देशविशेष का प्राचीन इतिहास मालूम करने का विज्ञान ; —यंत्र - छापे की मशीन ; —रक्षक - वह अधिकारी जिसके पास राजकीय मुहर रहे ; —लिपि - छाप ।
**मुद्राक्षर** - पु० [स] मुहर का अक्षर ; टाइप ।
**मुद्राध्यक्ष** - पु० [सं] अन्य राज्य में जाने का परवाना (पासपोर्ट) देनेवाला अधिकारी ।
**मुद्रालेखक** - पु० [सं] टाइपिस्ट ।
**मुद्रालेखन** - पु० [सं] टाइपिंग ।
**मुद्रिका** - स्त्री० [सं] मुहर ; नाम खुदी हुई अगूठी ; सिक्का ।
**मुद्रित** - वि० [सं] मुहर किया हुआ ; छापा हुआ ; बंद ।
**मुधा** - अव्य० [सं] व्यर्थ ।
**मुनक्का** - पु० [अ] सुखाया हुआ अंगूर ; द्राक्षा ।
**मुनब्बत** - 1. वि० [अ] उगाया हुआ , 2. पु० सतह से उभरा हुआ नक़्शा ; **यौ०** —कारी - लकड़ी या कपड़े

आदि पर किया जानेवाला बेलबूटे का काम।

**मुनमुना** - पु० [हि] मैदे का बना हुआ एक पकवान।

**मुनहसिर** - वि० [अ] अवलंबित; आश्रित।

**मुनाज़रा** - पु० [अ] वाद-विवाद; तर्क-शास्त्र।

**मुनादा** - वि० [अ] जिसे पुकारा जाय।

**मुनादी** - 1. पु० [अ] पुकारनेवाला; ढिंढोरा पीटनेवाला; 2. स्त्री० ढिंढोरा।

**मुनाफ़ा** - पु० [अ] लाभ।

**मुनासबत** - स्त्री० [अ] परस्पर संबंध; उपयुक्तता; मेल।

**मुनासिब** - वि० [अ] उचित।

**मुनि** - 1. वि० [सं] मननशील; 2. पु० ऋषि; तपस्वी; जिन; बुद्ध; सात की संख्या, वाक्‌संयमी; यौ० —पुंगव - मुनिश्रेष्ठ; —भेषज - हड़; उपवास; अगस्त्य का फूल; —वृत्ति - तपस्वी का जीवन बितानेवाला; —व्रत - तपस्या।

**मुन्ना, मुन्नू** - पु० [हिं] छोटे बच्चो का प्यार का संबोधन।

**मुफ़रद** - वि० [अ] अकेला; अमिश्रित।

**मुफ़र्रह** - 1. वि० [अ] प्रसन्नताजनक; 2. पु० दिल-जिगर को ताक़त देने-वाली दवा; सस्वादु और सुगंधित।

**मुफ़लिस** - वि० [अ] ग़रीब; यौ० —माल - सस्ता माल।

**मुफ़लिसी** - स्त्री० [अ] निर्धनता।

**मुफ़सिद** - पु० [अ] झगड़ालू; झगड़ा लगानेवाला।

**मुफ़स्सल** - 1. वि० [अ] विस्तृत; खोलकर बयान किया हुआ; 2. अव्य० खोलकर; 3. पु० केन्द्र का उलटा, केन्द्रस्थ नगर के इर्द-गिर्द के स्थान।

**मुफ़स्सिर** - पु० [अ] व्याख्याकार।

**मुफ़ीद** - वि० [अ] लाभकारी; यौ० —मतलब - प्रयोजन के अनुकूल; मु० —पड़ना, होना - अनुकूल होना।

**मुफ़्त** - वि० [अ] बिना दाम का; यौ० —ख़ोर - बिना मेहनत किये दूसरे की कमाई खानेवाला; —का - व्यर्थ का; बेफ़ायदा; —में - बिना दामो; व्यर्थ।

**मुफ़्तरी** - पु० [अ] झूठा इलज़ाम लगाने-वाला; झूठी बाते बनानेवाला; फ़सादी।

**मुफ़्ती** - पु० [अ] फ़तवा देनेवाला; इस्लाम के कानून के अनुसार दंडाज्ञा करनेवाला।

**मुबर्रा** - वि० [अ] मुक्त; निर्दोष।

**मुबलग़, मुबलिग़** - 1. वि० [अ] कुल; खरा; थोड़ा-सा; 2. पु० मात्रा; रुपये की संख्या।

**मुबस्सिर** - पु० [अ] समीक्षक।

**मुबहिम** - वि० [अ] अस्पष्ट।

**मुबादला** - पु० [अ] बदला; अदल-बदल।

**मुबारक** - 1. वि० [अ] जिसके कारण बरकत हो; शुभ; सौभाग्यशाली; 2. स्त्री० खुशख़बरी; यौ० —बाद - शुभ-कामना; बधाई; —सलामत - ब्याह आदि के अवसर पर एक दूसरे को मुबारकबाद देना।

**मुबाह** - पु० [अ] जायज़; विहित।

**मुबाहसा** - पु० [अ] बहस; वाद-विवाद करना।

**मुमकिन** - वि० [अ] जो हो सके; संभाव्य।

**मुमतहिन** - पु० [अ] परीक्षक।

**मुमानिअत, मुमानीयत** - स्त्री० [अ] रोक, मनाही।

**मुमुक्षा** - स्त्री० [सं] मोक्ष की कामना।

**मुमुक्षु** - वि० [सं] मोक्ष का अभिलाषी।

**मुमूर्षा** - स्त्री० [सं] मरने की इच्छा।

**मुमूर्षु** - वि० [सं] आसन्नमरण; मरण का इच्छुक।

**मुयस्सर** - वि० [अ] आसानी से मिलनेवाला ; उपलब्ध ।

**मुरक** - स्त्री० [हिं] मुरकने की क्रिया या भाव ।

**मुरकना** - अ० [हिं] मुड़ना ; लौटना ; हिचकना ; नष्ट होना ।

**मुरकी** - स्त्री० [हिं] कान में पहनने की छोटी-सी बाली ।

**मुरग़ा** - पु० [अ] लाल कलगीदार सिरवाला एक पालतू पक्षी, कुक्कुट ; **मु०** — बनाना - यंत्रणादंड का एक प्रकार ।

**मुरग़ी** - स्त्री० [अ] कुक्कुटी ; **मु०** — का - मुरग़ी का जना (गाली) ; —का गू - निकम्मी चीज़ ; —बिठाना - मुरग़ी को अंडे पर बिठाना ।

**मुरज** - पु० [सं] मृदंग ; पखावज ।

**मुरझाना** - अ० [हिं] कुम्हलाना ; चेहरे से उदासी आदि प्रगट होना ।

**मुरतहिन** - पु० [अ] रेहनदार ।

**मुरदा** - 1. वि० [फ़ा] मरा हुआ ; मृतवत् ; बेजान; मारा हुआ; 2. पु० शव; लाश, **यौ०** —ख़ोर - मुरदा खानेवाला ; —दिल - निरुत्साह ; —दिली - निरुत्साह होना ; **मु०** —उठना - जनाज़ा उठना ; —उठाना - मुरदे को दाह या दफ़्न करने के लिए ले जाना ; —कर देना - अधमरा कर देना; मुरदे का माल - लावारिस माल ; मुरदे की नीद सोना - बेख़बर होकर सोना; मुरदे से शर्त बाँधकर सोना - ऐसी नीद सोना जो जगाने पर भी जल्दी न टूटे ।

**मुरदार** - 1. वि० [फ़ा] मरा हुआ ; बेजान ; अपवित्र ; 2. पु० लाश ; **यौ०** —माल - हराम का माल ; **मु०** —खाना - मरे हुए जानवर का मांस खाना ।

**मुरब्बा** - पु० [अ] उबाले हुए फलों को चाशनी में डालकर तैयार किया गया पाक ; **यौ०** —फ़रोश - मुरब्बे बेचनेवाला ।

**मुरब्बी** - पु० [अ] रक्षक ; सहायक ।

**मुरमुरा** - पु० [हिं] भुने हुए चावल व लाई आदि ।

**मुररिया** - स्त्री० [हिं] ऐंठन ।

**मुरलिका** - स्त्री० [सं] मुरली ।

**मुरलिया** - स्त्री० [हिं] मुरली ।

**मुरली** - स्त्री० [सं] बाँसुरी ; **यौ०** —धर, मनोहर - कृष्ण ।

**मुरवी** - स्त्री० [हिं] धनुष की डोरी ।

**मुरशिद** - पु० [अ] सन्मार्ग दिखानेवाला ; गुरु ।

**मुरसिल** - पु० [अ] भेजनेवाला ; पत्र-लेखक ।

**मुरस्सा** - वि० [अ] रत्नजटित ।

**मुरहा** - वि० [हिं] मूल नक्षत्र में जन्मा हुआ ; नटखट ।

**मुराद** - स्त्री० [अ] कामना ; मतलब ।

**मुरादिफ़** - वि० [अ] समानार्थक ।

**मुराना** - स० [हिं] चबाना ; मोड़ना ।

**मुराफ़ा** - पु० [अ] अपील ।

**मुरार** - पु० [हिं] कमल की जड़ ।

**मुरारि, मुरारी** - पु० [सं] कृष्ण ; विष्णु ।

**मुरीद** - पु० [अ] शिष्य ; अनुगमन करनेवाला ।

**मुरीदी** - स्त्री० [अ] शिष्यत्व ।

**मुरुआ** - पु० [हिं] पैर का गट्ठा ।

**मुरेठा** - पु० [हिं] साफ़ा ।

**मुरौवज** - वि० [अ] प्रचलित ।

**मुरौवत** - स्त्री० [अ] उदारता ; मरदानगी ; इन्सानियत ; मुलाहज़ा ।

**मुर्ग़, मुर्ग़ा** - पु० [अ] मुरग़ा ; चिड़िया ; **यौ०** —बाज़ - मुर्ग़ लड़ानेवाला ; —मुसल्लम - पकाया हुआ समूचा मुर्ग़ा ; —ज़र - सूरज ; मुर्ग़ की शकल का प्याला ।

**मुर्दनी** - स्त्री० [फा] अत्यधिक भय या गहरी चिन्ता की छाया ; चेहरे से प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न ।
**मुर्दा** - 1. वि०, 2. पु० [फ़ा] मुरदा ।
**मुर्रा** - 1. पु० [हिं] मरोड़ ; 2. स्त्री० अधिक दूध देनेवाली भैंसों की एक जाति ।
**मुर्वी** - स्त्री० [सं] धनुष की डोरी ।
**मुलकना** - अ० [हिं] मुसकुराना ।
**मुलज़िम** - 1. वि० [अ] जिसपर कोई इलज़ाम या दोष लगाया गया हो ; 2. पु० अभियुक्त ।
**मुलमची** - पु० [हिं] मुलम्मा करनेवाला ।
**मुलम्मा** - 1. वि० [अ] चमकाया हुआ ; चाँदी या सोने का पानी चढ़ाया हुआ ; 2. पु० कलई ; गिल्ट ; मुलम्मे का काम ; टीमटाम ।
**मुलहक़** - वि० [अ] पीछे से आकर मिलनेवाला ; मिलाया जानेवाला ।
**मुलहिद** - वि० [अ] इस्लाम धर्म से विमुख हो जानेवाला ; काफ़िर ।
**मुलाक़ात** - स्त्री० [अ] भेंट ; मिलना-जुलना ; जान-पहिचान ; साहब-सलामत ।
**मुलाज़िमत** - स्त्री० [अ] नौकरी ; **यौ०** —पेशा - नौकरी से जीविका करनेवाला ।
**मुलाज़िम** - पु० [अ] अनुचर ; नौकर ; कर्मचारी ; **यौ०** मुलाज़िमेख़ास - निजी सेवक ।
**मुलायम** - वि० [अ] कोमल ; अनुकूल ।
**मुलायमत** - स्त्री० [अ] कोमलता ।
**मुलाहज़ा** - पु० [अ] मुरौवत ; देख-भाल ।
**मुलेठी** - स्त्री० [हिं] दवा के काम आनेवाली गुंजा लता की जड़, जेठीमधु ।
**मुल्क** - पु० [अ] देश ; राज्य ; **यौ०** —गीरी - राज्यविस्तार ; —दारी - शासन ।
**मुल्की** - वि० [अ] मुल्क का ; शासनप्रबंध-संबंधी ।
**मुल्तवी** - 1. वि० [अ] स्थगित ; आगे के लिए टालनेवाला ; 2. पु० नब्ज़ की एक ख़ास चाल ।
**मुल्ला** - पु० [अ] मौलवी ; मसजिद में रहने या नमाज़ पढ़ानेवाला ; शिक्षक ।
**मुल्लाना** - पु० [हिं] मुल्ला ; मसजिद की रोटियाँ खानेवाला ; कट्टर मुसलमान ।
**मुवक्कल** - पु० [अ] रक्षक ; कार्यविशेष पर नियुक्त देवदूत ; वह जिसे कोई काम सौंपा गया हो ।
**मुवक्किल** - पु० [अ] वकील करनेवाला ; काम सौंपनेवाला ।
**मुवज़्ज़िन** - पु० [अ] मुअज़्ज़िन
**मुवल्लिद** - पु० [अ] जनक, पैदा करनेवाला ।
**मुवल्लिफ़** - पु० [अ] सकलनकर्ता ।
**मुवल्लिफ़ा** - वि० [अ] संकलित ।
**मुवस्सिर** - वि० [अ] असर करनेवाला ।
**मुवाफ़िक़** - वि० [अ] अनुकूल ; तुल्य ; योग्य ।
**मुशफ़िक** - पु० [अ] अनुग्राहक ; मित्र ।
**मुशरब** - पु० [अ] पानी पीने की जगह (झरना, झील आदि) ; मज़हब ; तौर-तरीक़ा ।
**मुशरिक** - पु० [अ] ख़ुदा की पंक्ति में दूसरे को सम्मिलित करनेवाला ; काफ़िर ।
**मुशर्रफ़** - वि० [अ] सम्मानित ; विभूषित ।
**मुशर्रह** - वि० [अ] जिसकी व्याख्या की गयी हो ; विशद ।
**मुशल** - पु० [सं] धान इत्यादि कूटने का मोटा डंडा, मूसल ।
**मुशाइरा, मुशायरा** - पु० [अ] कवितापाठ की मजलिस, कवि-सम्मेलन ।
**मुशाबिह** - वि० [अ] सदृश ।
**मुशाबिहत** - स्त्री० [अ] रूप-सादृश्य ।
**मुशाहरा** - पु० [अ] मासिक वेतन
**मुश्क** - पु० [फ़ा] कस्तूरी ।

**मुश्किल** - वि० [अ] कठिन ; क्लिष्ट ; **यौ०** —पसंद - क्लिष्टताप्रिय ; **मु०** — आसान होना - कठिनाई दूर होना ।

**मुश्त** - 1. पु० [फ़ा] मुट्ठी ; मुक्का ; 2. वि० मुट्ठी-भर ; **यौ०** —ख़ाक - मुट्ठी-भर धूल ; मिट्टी का पुतला ; —ज़न - घूँसे-बाज़ ; पहलवान ।

**मुश्तरक** - वि० [अ] संयुक्त ।

**मुश्तरका** - वि० [अ] जिसमें कोई शरीक हो ; **यौ०** —ख़ानदान - संयुक्त परिवार ; —जायदाद - संयुक्त संपत्ति ।

**मुश्तरिक** - 1. वि० [अ] शरीक ; भागी ; 2. पु० अनेकार्थक शब्द ।

**मुश्तहर** - वि० [अ] प्रसिद्ध ; विज्ञापित ।

**मुश्तहिर** - पु० [अ] विज्ञापक ।

**मुश्तही** - वि० [अ] भूख लगानेवाला ; इच्छुक ।

**मुश्ताक़** - वि० [अ] इच्छुक ; शौक़ रखनेवाला ।

**मुषली** - 1. स्त्री० [सं] छिपकली ; 2. पु० बलराम ।

**मुष्क** - 1. पु० [सं] अंडकोश ; चोर ; ढेर ; 2. वि० मोटा-ताज़ा ; **यौ०** —शून्य - बधिया ।

**मुष्टि** - पु० [सं] मुट्ठी ; घूँसा ; कब्ज़ा ; चार तोले का परिमाण ; चोरी ; **यौ०** —बंध - मुट्ठी बाँधना ; —भिक्षा - मुट्ठी-भर चावल की भिक्षा ; —युद्ध - घूँसे-बाज़ी ; — योग - चुटकुला ।

**मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टि** - स्त्री० [सं] घूँसेबाज़ी ।

**मुष्टिका** - स्त्री० [सं] मुट्ठी ; घूँसा ।

**मुसकराना, मुसकुराना** - अ० [हिं] मंद-मंद हँसना ।

**मुसकराहट, मुसकुराहट** - स्त्री० [हिं] मंद हास ।

**मुसकान, मुसक्यान** - स्त्री० [हिं] मुसकुराहट ।

**मुसटी** - स्त्री० [हिं] चुहिया ।

**मुसद्दक़** - वि० [अ] जाँचा हुआ ।

**मुसद्दस** - पु० [अ] छः भुजाओंवाला क्षेत्र या आकृति ; वह पद्य जिसके हर बंद में छः मिसरे हो (उर्दू) ।

**मुसद्दिक़** - वि० [अ] तसदीक़ करनेवाला ।

**मुसन्नफ़** - वि० [अ] रचित ।

**मुसन्निफ़** - पु० [अ] रचयिता ।

**मुसफ़्फ़ी** - वि० [अ] शोधक ।

**मुसम्मा** - वि० [अ] नामधारी ।

**मुसम्मात** - 1. वि०, 2. स्त्री० [अ] नामवाली औरत ।

**मुसरिफ़** - पु० [अ] फ़ज़ूलख़र्च ।

**मुसर्रत** - स्त्री० [अ] ख़ुशी ।

**मुसर्रह** - वि० [अ] ब्योरेवार ।

**मुसल** - पु० [सं] मूसल ।

**मुसलमान** - पु० [अ] इस्लाम मज़हब को माननेवाला ।

**मुसलाधार** - अव्य० [हिं] मोटी धार से या बड़ी-बड़ी बूँदो से (पानी बरसना) ; **मु०** —मेंह बरसना - देर तक ज़ोरो की वर्षा होना ।

**मुसलामुसली** - स्त्री० [सं] एक दूसरे पर मूसलो से प्रहार ; मार-पीट ।

**मुसलिम** - पु० [अ] मुसलमान ।

**मुसलिह** - पु० [अ] सुधारक ।

**मुसल्लम** - वि० [अ] अखंडित ; माना हुआ ; निर्विवाद ।

**मुसल्ला** - पु० [अ] ईदगाह ; वह दरी जिसपर नमाज़ पढ़ी जाय ; [हिं] मुसलमान ।

**मुसव्विर** - पु० [अ] चित्रकार ।

**मुसहिल** - 1. वि० [अ] दस्त लानेवाला ; 2. पु० दस्त लानेवाली दवा ।

**मुसाफ़िर** - पु० [अ] यात्री ; परदेसी ; **यौ०**

—ख़ाना - सराय; रेलवे स्टेशन पर मुसाफ़िरों के ठहरने के लिए बना हुआ स्थान।

**मुसाफ़िरी** - स्त्री० [अ] सफ़र करना; प्रवास; परदेस।

**मुसाहिब** - पु० [अ] साथी; विदूषक।

**मुसीबत** - स्त्री० [अ] कष्ट; संकट; आफ़त, **यौ०**—ज़दा - दुखिया; **मु०** —का मारा - अभागा; —के दिन - दुर्दिन।

**मुस्तअफ़ी** - पु० [अ] इस्तीफ़ा देनेवाला; माफ़ी माँगनेवाला।

**मुस्तक़िल** - वि० [अ] स्थिर; दृढ़; स्वाधीन; पदविशेष पर स्थायी रूप से नियुक्त; **यौ०**—जगह - स्थायी नौकरी; —मिज़ाज - स्थिरचित्त।

**मुस्तक़ीम** - वि० [अ] सीधा; ठीक।

**मुस्तफ़ा** - वि० [अ] श्रेष्ठ।

**मुस्तैद** - वि० [अ] तैयार; तत्पर; चुस्त।

**मुस्तैदी** - स्त्री० [अ] तैयारी; तत्परता; तेज़ी।

**मुस्तौजिर** - पु० [अ] ठेकेदार।

**मुहताज** - वि० [अ] जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता हो; इच्छा रखनेवाला; विवश; ग़रीब।

**मुहनाल** स्त्री० [हिं] धातु की बनी टोंटी जिसे हुक्के की निगाली पर लगाते हैं।

**मुहब्बत** - स्त्री० [अ] प्रीति; प्रेम; स्नेह; **यौ०**—नामा - प्रेमपत्र; **मु०**—उछलना - प्रेम का जोश मारना; —की नज़र या निगाह - प्रेमसूचक दृष्टि।

**मुहम्मद** - 1. वि० [अ] अति प्रशंसित; 2. पु० इस्लाम धर्म के प्रवर्तक जिन्हें मुसलमान ईश्वर का दूत और संदेशवाहक मानते हैं।

**मुहर** - स्त्री० [हिं] किसी चीज़ पर खुदा हुआ नाम, पद या प्रतीक जिसे हस्ताक्षर के बदले छापा जाता है, मुद्रा; छाप; अंगूठी; अशर्फ़ी; **यौ०**—कन - मुद्राकार; मुहर खोदनेवाला; —शाही - राजकीय मुद्रा; **मु०** —लगना - प्रामाणिकता की छाप लग जाना; पक्का हो जाना; —लगाना - पक्का कर देना।

**मुहरा** - पु० [हिं] सामना; निशाना; सेना का अग्रभाग; बर्तन आदि का मुँह; घोड़े के मुँह पर पहनाने का एक साज़; [फ़ा] कौड़ी; शंख; सीप; शीशे या मूँगे का दाना; चौसर की गोट; घोटना; **यौ०**—बाज़ी - बाज़ीगरी।

**मुहर्रम** - 1. वि० [अ] निषिद्ध; 2. पु० मुसलमानी साल का पहला महीना; शोककाल।

**मुहर्रमी** - वि० [अ] रोनी सूरतवाला; मुहर्रम का।

**मुहर्रिर** - पु० [अ] किरानी, लेखक; वकील का मुंशी; **यौ०**—पेशी - अफ़सर की आज्ञाएँ लिखनेवाला कर्मचारी; —फाटक - मवेशीख़ाने का मुंशी।

**मुहलत** - स्त्री० [अ] अवकाश; कार्यविशेष के लिए मिलनेवाला समय।

**मुहल्ला** - पु० [अ] महल्ला।

**मुहस्सिल** - पु० [अ] तहसीलदार; तहसील का सिपाही।

**मुहाफ़िज़** - पु० [अ] रक्षक; **यौ०**——ख़ाना - कचहरी के अंतर्गत निर्णीत मामलों की मिसलें रखने का स्थान।

**मुहार** - स्त्री० [अ] ऊँट की नकेल।

**मुहाल** - वि० [अ] कठिन; असंभव।

**मुहाला** - पु० [हिं] हाथी के दाँत पर चढ़ाई हुई पीतल की चूड़ी।

**मुहावरा** - पु० [अ] लाक्षणिक या व्यंग्यार्थ में रूढ़ वाक्य या प्रयोग; बातचीत; अभ्यास।

**मुहासबा** - पु० [अ] हिसाब की जाँच।

**मुहासरा** - पु० [अ] चारो ओर से घेर लेना।

**मुहासिब** - पु० [अ] हिसाब जानने, करने, लेने या जाँचनेवाला।

**मुहासिल** - पु० [अ] मालगुज़ारी; पैदावार; आय; नफ़ा; **यौ०** —ख़ाम - कुल पैदावार।

**मुहिब्ब** - पु० [अ] प्रेमी; मित्र; **यौ०** मुहिब्बेवतन - देशभक्त, स्वदेशप्रेमी।

**मुहिम** - स्त्री० [अ] कठिन या भारी काम; युद्ध; **यौ०** — सर करना - लड़ाई जीतना; कठिन काम करना।

**मुहुः** - अव्य० [सं] बार-बार, पुनः-पुनः।

**मुहूर्त** - पु० [सं] बारह क्षण का समय; अड़तालीस मिनट का समय; फलित ज्योतिष के अनुसार विवाह आदि के लिए शुभाशुभ काल।

**मुहैया** - वि० [अ] तैयार, मौजूद; आमदा।

**मुह्यमान** - वि० [सं] मोहयुक्त; मूर्छित होता हुआ।

**मूँग** - स्त्री० [हिं] दाल के काम आनेवाला एक द्विदल अनाज।

**मूँगफली** - स्त्री० [हिं] खाने और तेल निकालने के काम आनेवाला एक फल, चीनिया बादाम।

**मूँगा** - पु० [हिं] प्रवाल, रेशम का एक भेद।

**मूँगिया** - 1. वि० [हिं] मूँग के रंग का, हरा; 2. पु० हरे रंग का एक भेद।

**मूँछ** - स्त्री० [हिं] होठ और नाक के बीच उगनेवाले बाल, श्मश्रु; **मु०** —नीची होना - लज्जित होना; —उखाड़ना - गर्व नष्ट करना; —मुँड़वाना - हार मान लेना; —पर ताव देना - अपनी बड़ाई करना।

**मूँज** - स्त्री० [हिं] एक तृणविशेष जिसके छिलके की रस्सी बनती है।

**मूँड़** - पु० [हिं] सिर; **यौ०** —कटा - गला काटनेवाला; भारी नुकसान पहुँचानेवाला; **मु०** —मुँड़ाना - संन्यास लेना।

**मूँड़न** - पु० [हिं] मुंडनसंस्कार; **यौ०** —छेदन - मुंडन और कनछेदन।

**मूँड़ना** - स० [हि] हजामत बनाना, सिर के बाल उस्तरे से बनाना; ठगना।

**मूँड़ी** - स्त्री० [हिं] सिर।

**मूँदना** - स० [हिं] बंद करना; रुद्ध करना।

**मूँ** - पु० [फ़ा] बाल; **यौ०** —ब-मू - बाल-बाल; —बाफ़ - वह धजी या फ़ीता जिसे स्त्रियाँ चोटी में डालकर गूँथती हैं; —शिगाफ़ - बाल की खाल खींचनेवाला।

**मूक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] गूँगा; **यौ०** —बधिर - गूँगा-बहरा; —भाव - **मौन**।

**मूकना** - स० [हिं] त्यागना; बंधनमुक्त करना।

**मूकिया** - स्त्री० [स] गूँगापन।

**मूज़ी** - 1. वि०, 2. पु० [अ] पीड़ा पहुँचानेवाला; दुष्ट।

**मूठ** - स्त्री० [हि] मुट्ठी; दस्ता; एक तरह का मंत्र-प्रयोग; कौड़ियो को मुट्ठी में बंदकर खेला जानेवाला एक जुआ; **मु०** — मारना - टोना करना।

**मूठना** - अ० [हिं] नष्ट होना।

**मूढ** - 1. वि० [सं] मूर्ख; मुग्ध; हैरान; 2. पु० योग की पाँच भूमिकाओ में से दूसरा जिसमें तमोगुण की अधिकता से चित्त विवेकशून्य हो जाता है; **यौ०** —ग्राह - गलत धारणा; —चेता, बुद्धि, मति - मूर्ख; —सत्त्व - उन्मत्त।

**मूढता** - स्त्री० [सं] मूर्खता।

**मूढात्मा** - पु० [सं] मूर्ख।

**मूत** - पु० [हिं] पेशाब।
**मूतना** - अ० [हि] पेशाब करना।
**मूत्र** - पु० [सं] पेशाब; यौ० —कृच्छ्र - पेशाब के साथ शक्कर आने का रोग; —क्षय - एक तरह का मूत्राघात रोग; —दोष - प्रमेह; —निरोध, रोध - पेशाब रुक जाने की बीमारी; —परीक्षा - पेशाब की जाँच; —वृद्धि - मूत्र का प्रचुर परिमाण में उत्पन्न होना।
**मूत्राघात** - पु० [सं] पेशाब बंद हो जाने का रोग।
**मूत्राशय** - पु० [सं] शरीरवर्ती वह थैली जिसमें पेशाब इकट्ठा होता है।
**मूर** - पु० [हिं] मूल; जड़ी; मूलधन; मूल नक्षत्र।
**मूरि, मूरी** - स्त्री० [हिं] मूल; जड़ी; मूली।
**मूरिस** - पु० [अ] वारिस करनेवाला; मृत पूर्वज।
**मूर्ख** - वि० [सं] नासमझ; यौ० — पंडित - पढ़ा-लिखा मूर्ख; —मंडल, मंडली - मूर्खों की टोली।
**मूर्खता** - स्त्री० } [स] मूढ़ता, नासमझी।
**मूर्खत्व** - पु० }
**मूर्च्छन** - पु० [सं] मूर्छित होना या करना; पारे का तीसरा संस्कार; बेहोश करने का मंत्र।
**मूर्च्छना** - स्त्री० [सं] संगीत में सातों स्वरों का क्रम से आरोहण-अवरोहण।
**मूर्छा** - स्त्री० [स] बेहोशी; वृद्धि; व्याप्ति; यौ० —रोग - हिस्टीरिया रोग।
**मूर्छित** - वि० [सं] बेहोश; व्याप्त; वर्द्धित।
**मूर्त** - वि० [स] साकार; ठोस।
**मूर्ति** - स्त्री० [सं] प्रतिमा; शरीर; शकल; यौ० —कला - मूर्ति गढ़ने की कला; —कार - मूर्ति बनानेवाला; —पूजक - मूर्ति की पूजा करनेवाला, बुतपरस्त; —भंजक - मूर्तियो को तोड़नेवाला; —मान - साकार; शरीर।
**मूर्द्ध, मूर्ध** - पु० [सं] मूर्धा का समास में व्यवहृत रूप।
**मूर्धन्य** - वि० [सं] मूर्धा से उत्पन्न; मूर्धा से उच्चरित; श्रेष्ठ।
**मूर्धा** - स्त्री० [स] मस्तक, सिर।
**मूर्द्धाभिषिक्त, मूर्धाभिषिक्त** - वि० [सं] जिसके सिर पर अभिषेक किया गया हो; श्रेष्ठ।
**मूर्द्धाभिषेक, मूर्धाभिषेक** - पु० [सं] राजाओ के राज्यारोहण के समय सिर पर किया जानेवाला अभिषेक।
**मूल** - 1. पु० [सं] आदिकारण; जड़; आरंभ; कद; टीका आदि से रहित ग्रंथकार की मूल शब्दावली; मूलधन; सत्ताईस नक्षत्रो में से उन्नीसवॉ; 2. वि० प्रधान; यौ० —कार - मूलग्रंथ-कर्ता; —कारण - आदिकारण; —ग्रंथ - असली पुस्तक; —तत्त्व - आधार-भूत सिद्धांत; —धन - व्यापार आदि में लगायी हुई पूँजी; — पदार्थ - भौतिक जगत् का उपादानभूत पदार्थ; —भूत - बुनियादी; —मंत्र - कुंजी; —व्याधि - मुख्य रोग; —स्थान - बाप-दादों का वासस्थान; परमेश्वर; राजधानी; —स्रोत - झरने आदि का उद्गमस्थान; मुख्य धारा।
**मूलतः** - अव्य० [सं] मूलरूप में; आदि में।
**मूली** - 1. स्त्री० [हिं] एक पौधा जिसकी जड़ और पत्ते कच्चे या शाक बनाकर खाये जाते हैं; 2. वि० [सं] मूलयुक्त; 3. पु० वृक्ष।
**मूल्य** - 1. पु० [हिं] कीमत; वेतन; उपयोगिता; 2. वि० [सं] उन्मूलन के

योग्य ; ख़रीदने योग्य ; यौ० —वान - कीमती ।

**मूल्यांकन** - पु० [सं] मूल्य निर्धारित या निश्चित करने की क्रिया ।

**मूश** - पु० [फ़ा] चूहा ; यौ० —दान - चूहा फँसाने का पिंजड़ा ।

**मूष** - पु० [सं] चूहा ; गवाक्ष ; सोना-चाँदी गलाने की कुल्हिया ।

**मूषक** - [सं] चूहा-चोर ; यौ० —वाहन - गणेश ।

**मूषण** - पु० [सं] चुराना ।

**मूषिक** - पु० [सं] बड़ा चूहा ।

**मूषिका** - स्त्री० [सं] चुहिया ।

**मूषी** - 1. स्त्री० [सं] सोना आदि गलाने की कुल्हिया ; 2. पु० बड़ा चूहा ।

**मूस** - पु० [हिं] चूहा ; यौ० —दानी - चूहा फँसाने का पिंजड़ा ।

**मूसना** - स० [हिं] चुराना ।

**मूसल** - पु० [हिं] धान कूटने का लकड़ी का मोटा डंडा ।

**मूसा** - पु० [हिं] चूहा ; यहूदी धर्म के प्रवर्तक ।

**मूसाकानी** - स्त्री० [हिं] दवा के काम आनेवाली लता ।

**मृग** - पु० [सं] हिरन ; मृगशिरा नक्षत्र ; मार्गशीर्ष मास ; चंद्रमा का लांछन ; पुरुष के चार भेदो में से एक (कामशास्त्र) ; यौ० —चर्म - हिरन की खाल ; —छौना - हिरन का बच्चा, —जल - मृगतृष्णा ; —तृषा, तृष्णा, तृष्णिका - कड़ी धूप में रेतीले मैदानो में जलधारा की होनेवाली मिथ्या-प्रतीति ; —दाव - शिकार के जानवरो से भरा हुआ वन ; सारनाथ ; —धर - चंद्रमा ; —नयना, नयनी - हिरन की-सी आँखोंवाली ; —नाभि - कस्तूरी ; —पति - सिंह ; —मद - कस्तूरी ; —मास - मार्गशीर्ष मास ; —यूथ - हिरनो का झुंड ; —लाछन - चंद्रमा ; —लोचना, लोचनी - मृगनयनी ; —शिर, शिरा - सत्ताईस नक्षत्रो में से पाँचवाँ ।

**मृगया** - स्त्री० [स] शिकार ; यौ० —यान - दल-बल के साथ शिकार के लिए प्रयाण ; —वन - शिकारगाह ।

**मृगांक** - पु० [सं] चंद्रमा ; कपूर ; वायु ; चंद्रमा का लांछन या धब्बा ।

**मृगाक्षी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] मृगनयनी ।

**मृगाजिन** - पु० [सं] मृगचर्म ।

**मृगी** - स्त्री० [सं] हिरनी ; मिरगी रोग ; स्त्रियो का एक भेद (कामशास्त्र) ।

**मृगेन्द्र** - पु० [सं] सिंह ; व्याघ्र ।

**मृज** - पु० [सं] मृदंग ।

**मृणाल** - पु० [सं] कमलनाल , खस ; यौ० —सूत्र - कमलनाल का तंतु ।

**मृण्मय** - वि० [सं] मिट्टी का बना हुआ ।

**मृत** - वि० [सं] मरा हुआ ; मारा हुआ ; यौ० —कल्प - मरा हुआ-सा ; —गृह - कब्र ; —चेल - मुर्दे के ऊपर डाला गया कपड़ा ; —जीवन - मुर्दो को जिलाना ; —संजीवन - मुर्दे को जिलानेवाला ; —संजीवनी - मुर्दे को जिलाने की विद्या और औषधि ; —स्नान - किसी व्यक्ति के मरने पर किया जानेवाला स्नान ; —हार - मुर्दे ढोने का काम करनेवाला ।

**मृतक** - पु० [सं] मुर्दा ।

**मृति** - स्त्री० [सं] मौत ।

**मृत्,मृद्** - स्त्री० [सं] मिट्टी ; यौ० —पात्र, भाण्ड - मिट्टी का बर्तन ; —पिण्ड - मिट्टी का ढेला ।

**मृत्तिका** - स्त्री० [सं] मिट्टी ।

**मृत्युंजय** - 1. वि० [सं] मौत को जीतनेवाला ; 2. पु० शिव ।

**मृत्यु** - 1. स्त्री० [सं] मौत ; 2. पु० यम ; यौ० —कर - किसीकी मृत्यु होने पर उसकी संपत्ति पर लगनेवाला कर ; —काल - मौत की घड़ी ; —दूत - मौत की ख़बर लानेवाला ; यमदूत ; —पाश - यम का फंदा ; —भीत - मौत से डरनेवाला , —योग - ग्रह-नक्षत्रों का मृत्युकारक योग ; —लोक - मर्त्यलोक ; यमलोक ; —शय्या - मरणसेज ।

**मृदंग** - पु० [सं] ढोल की तरह का एक बाजा ; यौ० —वादक - मृदंग बजानेवाला ।

**मृदित** - वि० [सं] कुचला या चूर किया हुआ ।

**मृदिनी** - स्त्री० [सं] अच्छी व मुलायम मिट्टी ।

**मृदु** - वि० [सं] कोमल ; मधुर ; दयायुक्त ; मंद (गति) ; यौ० —कोष्ठ - नरम कोठेवाला ; —गमना - मंदगतिवाली ; हंसिनी ; —त्वक् - भोजपत्र ; —फल - नारियल ; —भाषी - मधुरभाषी ; —मंद - मन्द व मधुर (गति या स्वर) ; —स्पर्श - कोमल स्पर्श ।

**मृदुता** - स्त्री० [सं] कोमलता ।

**मृदुल** - 1. वि० [सं] कोमल, मृदु ; 2. पु० जल ।

**मृद्वी** - 1. स्त्री० [सं] अंगूर ; 2. वि० कोमलांगी ।

**मृषा** - 1. अव्य० [सं] वृथा ; झूठ-मूठ ; 2. वि० झूठ ; मिथ्या ; यौ० —ज्ञान - झूठा ज्ञान ; —भाषी - झूठ बोलनेवाला ; —वाद - झूठ ; चापलूसी ; —वादी - झूठा ।

**मृष्ट** - 1. वि० [सं] विचारित ; शोधित ; 2. पु० मिर्च ।

**में** - 1. प्रत्य० [हिं] अधिकरण कारक का चिन्ह ; 2. स्त्री० [अनु] बकरी की बोली ; यौ०—में - बकरी की बोली ।

**मेंड़** - 1. पु०, 2. स्त्री० [हिं] खेत की हदबंदी ; डाँड़ा ; यौ० —बंदी - मेंड़ बनाना ।

**मेंढक** - पु० [हिं] मेढक, मंडूक ।

**मेंधी** - स्त्री० [सं] मेंहदी ।

**मेख़** - स्त्री० [फ़ा] कील ; खूँटा ; मु० —ठोकना - हाथ-पाँव में कीलें ठोक देने की सज़ा देना ; हराना ; —मारना - कील ठोकना ; बाधक होना ।

**मेखला** - स्त्री० [सं] करधनी ; कटिसूत्र ; तीन लड़वाली मुंज-मेखला ; तलवार बाँधने का कमरबंद ; तलवार की मूँठ ; पहाड़ की ढाल ।

**मेखली** - 1. स्त्री० [हिं] रामलीला आदि के अभिनय में व्यवहृत एक पहनावा ; 2. पु० [सं] ब्रह्मचारी ; शिव ।

**मेगज़िन** - पु० [अंग्रे] बारूदख़ाना ; सामयिक पत्र ।

**मेगनी** - स्त्री० [हिं] भेड़-बकरी आदि की लेंड़ी ।

**मेघ** - पु० [सं] बरसनेवाला बादल ; बादल ; समूह ; मोथा ; यौ० —काल - वर्षा ऋतु ; —गर्जन, गर्जना - बादलों का गरजना ; —चिन्तक, जीवन - चातक ; —जाल - मेघसमूह ; —ज्योति, दीप - बिजली ; —द्वार - आकाश ; —पुष्प - ओला ; जल ; —मंडल - आकाश ; —माला - बादलों की पंक्ति ; —मूर्ति - बिजली ; —योनि - कुहरा ; धुआँ ; —वर्त - प्रलयकालीन बादलों का एक भेद ; —सार - चीनिया कपूर ; —सुहृद - मोर ।

**मेघांत** - पु० [सं] शरत्काल ; वर्षा का अंत ।

**मेघागम** - पु० [सं] वर्षाकाल ; वर्षा का आरंभ ।

**मेघाच्छन्न** - वि० [सं] बादलो से ढका हुआ ।

**मेघाडंबर** - पु० [सं] बादलो का गरजना ।

**मेघोदय** - पु० [सं] बादल का उठना ।

**मेचक** - 1. वि० [सं] काला ; 2. पु० कालिमा ; अंधकार ; मेघ , सुरमा ।

**मेचकता** - स्त्री० [सं] श्यामता, स्याही ।

**मेज़** - स्त्री० [फ़ा] टेबुल ; यौ० —पोश - मेज़ पर बिछाने का कपड़ा ; —बान - आतिथ्य करनेवाला ; —बानी - अतिथि-सत्कार ।

**मेट** - पु० [हिं] कुलियो या मज़दूरो का मुखिया, जमादार ।

**मेटनहार** - पु० [हिं] मिटाने या अन्यथा करनेवाला ।

**मेटना** - स० [हिं] मिटाना ।

**मेठ** - पु० [स] हाथीवान ; मेढ़ा ।

**मेड़िया** - स्त्री० [हिं] मढ़ी ।

**मेढक** - पु० [हिं] मंडूक, जल-स्थल दोनो जगह रहनेवाला एक छोटा जंतु ।

**मेढकी** - स्त्री० [हिं] मादा मेढ़क ।

**मेढ़ा** - पु० [हिं] नर भेड़, मेष ।

**मेढ़ी** - स्त्री० [हिं] तीन लड़ियोवाली चोटी ।

**मेथी** - स्त्री० [हिं] पत्तोवाला एक शाक जिसके दाने मसाले और दवा के काम आते हैं ।

**मेथौरी** - स्त्री० [हिं] मेथी का शाक मिलाकर बनायी हुई बरी ।

**मेद** - पु० [सं] चर्बी ; मोटाई बहुत बढ़ जाने का रोग ; यौ० —वृद्धि - अधिक मोटा हो जाना ; अंडवृद्धि ।

**मेदा** - पु० [अ] आमाशय, पेट ।

**मेदिनी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ; मेद ।

**मेदुर** - वि० [सं] अतिशय चिकना ; मोटा ।

**मेध** - पु० [सं] यज्ञ में बलि दिया जानेवाला पशु ; यज्ञ ।

**मेधा** - स्त्री० [सं] धारणा-शक्ति ; बुद्धि-शक्ति (वैशेषिक) ; यौ० —वान - मेधावी ।

**मेधावी** - 1. वि० [सं] मेधायुक्त ; पंडित ; 2. पु० तोता ।

**मेम** - स्त्री० [हिं] विवाहिता अंग्रेज़ या यूरोपियन स्त्री ; यौ० —साहबा - सभ्य यूरोपियन महिला ।

**मेमना** - पु० [हिं] भेड़ का बच्चा ; घोड़े की एक जाति ।

**मेमार** - पु० [अ] इमारत बनानेवाला, राज ।

**मेय** वि० [सं] जिसकी नाप-तौल हो सके ।

**मेर** - पु० [हिं] मेल ।

**मेरवन** - स्त्री० [हिं] मिलाना ; मिलावट ।

**मेरा** - 1. सर्व० [हिं] 'मैं' का संबंधकारक रूप, मदीय ; 2. पु० मेला ।

**मेराउ, मेराव** - पु० [हिं] मिलाप ।

**मेराज** - स्त्री० [अ] सीढ़ी ; ऊपर चढ़ने का साधन ।

**मेरु** - पु० [सं] सुमेरु पर्वत ; जपमाला का प्रधान मनका ; हार की मध्यमणि ; यौ०—दंड - रीढ़ ; — दंडी - रीढ़वाला ; —देवी - ऋषभदेव की माता ; —पृष्ठ - आकाश ; —यंत्र - चरखा ; —शिखर - मेरु की चोटी ; सहस्रार चक्र ।

**मेल** - पु० [सं] मिलाप ; संग ; मेला ; [हिं] मन का मिलन ; अनुकूलता ; मित्रता ; संगति ; किस्म ; यौ०—जोल, मिलाप - प्रीतिसंबंध ; घनिष्ठता ; मु०—खाना, बैठना - अनुकूलता होना ; संगति के उपयुक्त होना ।

**मेलन** - पु० [सं] मिलाना ; मिलन ; मुठभेड़ ; संग ।

**मेलना** - 1. स० [हिं] मिलाना ; उँड़ेलना ; फेकना ; ढकेलना ; पहनाना ; 2. अ० मिलना ; पहुँचना ।

**मेला** - 1. स्त्री० [सं] मिलन ; जमाव ; रोशनाई ; अंजन ; 2. पु० [हिं] भीड़ ; चीज़ों की ख़रीद-बिक्री ; तीर्थस्थान आदि के लिए नियत तिथि और उस समय होनेवाली लोगों की भीड़ ; **यौ०**—ठेला, तमाशा - सैर-तमाशा ; **मु०**—लगना - भीड़ लगना ।

**मेलाने** - पु० [हिं] मंज़िल ; डेरा डालना ।

**मेलापक** - पु० [सं] इकट्ठा करनेवाला ; भीड़ ; ग्रहों का संयोग ।

**मेलायन** - पु० [सं] सयोग ; समागम ।

**मेली** - 1. वि० [सं] मिलनसार ; 2. पु० मित्र ; **यौ०**—मुलाक़ाती - संगी-साथी ।

**मेवा** - पु० [फ़ा] फल ; सुखाया हुआ फल ; **यौ०** —फ़रोश - मेवे बेचनेवाला ।

**मेवाटी** - स्त्री० [हि] मेवा भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान ।

**मेष** - पु० [सं] भेड़ ; बारह राशियों में प्रथम ; **यौ०**—संक्रांति - सूर्य के मेष राशि में प्रवेश का दिन, सौर वर्ष के प्रारंभ का दिन ।

**मेह** - 1. पु० [हिं] वर्षा ; मेघ ; **मु०**—की आँख न खुलना - लगातार वर्षा होना ; [सं] मूत्र ; प्रमेह ; मेष ; बकरा ; 2. वि० [फ़ा] बुज़ुर्ग ; सरदार ; **यौ०**—तर - अधिक बड़ा , मैला साफ़ करनेवाला, भंगी ; —तरानी - भंगिन ।

**मेहनत** - स्त्री० [अ] श्रम ; उद्योग ; कष्ट ; **यौ०**—कश - मज़दूर ; कष्ट उठानेवाला ; —मज़दूरी - शारीरिक श्रम का काम ; **मु०**— ठिकाने लगना - श्रम सफल होना ।

**मेहनताना** - पु० [अ] पारिश्रमिक ; वकील की फ़ीस ।

**मेहनती** - वि० [अ] परिश्रमी ।

**मेहमान** - पु० [फ़ा] अतिथि ; भोजन के लिए निमंत्रित व्यक्ति ; **यौ०** —ख़ाना - अतिथिशाला ; —दार - मेज़बान ; —दारी - अतिथिसत्कार ।

**मेहमानी** - स्त्री० [हिं] किसीके यहाँ मेहमान होना, पहुनाई ।

**मेहर** - स्त्री० [फ़ा] मेह्र, प्रीति ; कृपा ; **यौ०** —बान - कृपालु ; —बानी - अनुग्रह ; प्रीति ।

**मेहरा** - पु० [हिं] स्त्रैण ।

**मेहराब** - स्त्री० [अ] मसज़िद में एक धनुषाकार स्थान जहाँ मुल्ला नमाज़ पढ़ाता है ; कमान ; दरवाज़े के ऊपर की धनुषाकार बनावट ; **यौ०** —दार - धनुषाकार ।

**मेहरारू, मेहरी** - स्त्री० [हिं] पत्नी ; औरत ।

**मेह्र** - 1. पु० [फ़ा] सूर्य ; 2. स्त्री० प्रीति ; कृपा ; **यौ०** —बान - कृपालु ; प्रीति रखनेवाला ; —बानी - अनुग्रह ; प्रीति ।

**मैं** - सर्व० [हिं] उत्तम पुरुष का कर्ता का रूप, अहम् ।

**मै** - 1. अव्य० [अ] सहित ; 2. स्त्री० [फ़ा] शराब ; **यौ०** —ख़ाना - मदिरालय ; —कश, ख्वार, नोश - शराब पीनेवाला ; —परस्त - मद्यव्यसनी ; —फ़रोश मद्यविक्रेता ।

**मैका** - पु० [हिं] मायका, नैहर ।

**मैड़** - स्त्री० [हिं] प्रतिष्ठा ।

**मैत्री** - स्त्री० [सं] दोस्ती ।

**मैथिली** - स्त्री० [स] सीता ; मिथिला की भाषा ।

**मैथुन** - पु० [सं] रतिक्रिया ; विवाह ; **यौ०** —ज्वर - कामज्वर ।

**मैदा** - पु० [फ़ा] बहुत बारीक आटा ।

**मैदान** - पु० [फ़ा] लंबी-चौड़ी समतल ज़मीन ; घुड़दौड़ या खेल आदि का स्थान ; अखाड़ा ; विस्तार ; **यौ०**

मैदानेजंग - रणभूमि ; मु० —छोड़ना - रणक्षेत्र से भागना ; —जीतना, मारना - विजय-लाभ करना ; —में उतरना - कार्यक्षेत्र में आना ; कुश्ती के लिए अखाड़े में आना ; —साफ़ करना - विघ्न-बाधाओं को दूर कर देना ; —हाथ रहना - लड़ाई जीतना ।

**मैदानी** - वि० [हिं] मैदान का ; समतल ; मैदान में काम आनेवाला ।

**मैन** - पु० [हिं] मोम ; राल में मिलाया हुआ मोम ।

**मैनसिल** - पु० [हिं] एक खनिज द्रव्य जो शोधे जाने के बाद दवा के काम आता है ।

**मैना** - स्त्री० [हिं] एक सुरीली आवाज़-वाली चिड़िया, सारिका ।

**मैमंत** - वि० [हिं] गर्वीला, मदमत्त ।

**मैमत** - स्त्री० [हिं] ममता ।

**मैया** - स्त्री० [हिं] माता ।

**मैयार** - पु० [अ] मापने-तोलने का आला या काँटा ; कसौटी ; पाठ्यक्रम ।

**मैर** - स्त्री० [हिं] सर्पविष की लहर ।

**मैरा** - पु० [हिं] खेत में रखवाली करनेवाले के बैठने का मचान ।

**मैरेय** - पु० [सं] एक तरह का मद्य ।

**मैल** - पु० [हिं] शरीर या कपड़े आदि के साथ चिपका हुआ मल, गर्द इत्यादि ; मल ; विकार ; मन में संचित दुर्भाव ; यौ० —खोरा - गर्दखोरा (रंग) ।

**मैला** - 1. वि० [हिं] मैलवाला ; गंदा ; 2. पु० कूड़ा ; विष्ठा ; यौ० —कुचैला - बहुत मैला ।

**मैलाना** - पु० [अ] प्रवृत्ति ; रुचि ।

**मैहर** - पु० [हिं] मायका ।

**मोंढा** - पु० [हिं] लबका ।

**मोंढ़ा** - पु० [हिं] बाँस या बेंत आदि का तिपाई-जैसा गोलाकार आसन ।

**मोयन** - पु० [हिं] मोयन ।

**मो** - सर्व० [हिं] मेरा ।

**मोई** - स्त्री० [हिं] घी में सना हुआ आटा ।

**मोकना** - स० [हि] छोड़ना ; फेकना ।

**मोकल** - वि० [हिं] बंधनरहित, स्वच्छंद ।

**मोक्ष** - पु० [सं] जीव का जन्म-मृत्यु के बंधन से छूटना, मुक्ति, छुटकारा ; गिराना ; फेंकना ; यौ० —शास्त्र - अध्यात्मविद्या ; आचार तथा दर्शन विषयक एक प्रसिद्ध ग्रंथ ।

**मोक्षण** - पु० [सं] छोड़ना ; गिराना ; फेंकना ।

**मोखा** - पु० [हिं] झरोखा ; एक वृक्ष ।

**मोगरा** - पु० [हिं] अधिक सुगंधित सफ़ेद फूलवाला बेला ।

**मोघ** - 1. वि० [सं] निरर्थक ; 2. पु० बाड़ा, परकोटा ; यौ० —कर्मा - निरर्थक काम में लगा हुआ ; —पुष्पा - वंध्या ।

**मोच** - स्त्री० [हिं] हाथ-पाँव आदि में चोट के कारण होनेवाली पीड़ा ; शरीर के संधि-स्थान से नस का डिग जाना ।

**मोचक** - 1. वि० [सं] छुटकारा दिलानेवाला ; 2. पु० विरागी, मोक्ष ।

**मोचन** - पु० [सं] छुटकारा देना या दिलाना ; हरण ।

**मोचना** - 1. स० [हिं] गिराना ; छुड़ाना ; 2. पु० नाई द्वारा मूँछ आदि के पके बाल उखाड़ने का औज़ार ; लुहारों का एक औज़ार ।

**मोची** - पु० [हिं] जूते सीने या बनाने-वाला ; [सं] छुड़ानेवाला ।

**मोज़ा** - पु० [फ़ा] पाँव में पहनने का बुना हुआ वस्त्र ; पाँव का टखने और पिंडली के बीच का भाग ।

**मोजिज़ा** - पु० [अ] चमत्कार।
**मोट** - स्त्री० [हिं] गठरी; चरसा।
**मोटन** - पु० [सं] पीसना; वायु।
**मोटरी** - स्त्री० [हिं] गठरी।
**मोटा** - वि० [हिं] स्थूलकाय; मांसल; गाढ़ा; बड़े घेरेवाला; भारी; असूक्ष्म; भद्दा; घटिया; स्थूल; बलवान; **यौ०** —काम - जिसमें अधिक बुद्धि या कुशलता की आवश्यकता न हो; —झोटा - घटिया; —ताज़ा - हृष्ट-पुष्ट; —हिसाब - अदाज़न; **मु०** —खाना व पहनना - सस्ता व घटिया अन्न-वस्त्र से गुज़र करना; मोटी अक़्ल या समझ होना - सूक्ष्म बातों को समझने में बुद्धि का असमर्थ होना।
**मोटाई** - स्त्री० [हिं] स्थूलता; धन या बल का गर्व; **मु०** —चढ़ना - घमंडी या शरारती हो जाना; —झड़ना - घमंड या शरारत दूर हो जाना।
**मोटाना** - अ० [हिं] मोटा होना; घमंडी होना; पैसेवाला होना।
**मोटापा** - पु० [हिं] मोटाई।
**मोटिया** - पु० [हिं] कुली; गाढ़ा (कपड़ा)।
**मोटेमल** - वि० [हिं] ढीले बदनवाला अधिक मोटा आदमी।
**मोठ** - पु० [हिं] दाल के काम आनेवाला एक मोटा अन्न।
**मोड़** - पु० [हिं] घुमाव; वह स्थान जहाँ से रास्ता दूसरी दिशा की ओर गया हो; काग़ज़ आदि का मोड़ा हुआ कोना; **यौ०** — तोड़ - घुमाव।
**मोड़ना** - स० [हिं] घुमाना; झुकाना; दिशा बदलना; लौटाना; काग़ज़ आदि को उलटकर दबा देना या दोहरा कर देना।
**मोड़ी** - स्त्री० [हिं] मराठी भाषा की एक लिपि।
**मोतदिल** - वि० [अ] समशीतोष्ण।
**मोतबर** - वि० [अ] विश्वसनीय।
**मोतबरी** - स्त्री० [अ] विश्वसनीयता।
**मोतिया** - 1. पु० [हिं] बेले का एक भेद; 2. स्त्री० एक चिड़िया; 3. वि० मोती के जैसा; छोटे गोल दानोवाला; **यौ०** —बिंद - बुढ़ापे में आँखो में पानी उतरने का एक रोग।
**मोती** - पु० [हिं] सीपो से निकलनेवाला एक बहुमूल्य रत्न; **यौ०** —चूर - छोटी-छोटी बूँदियो का लड्डू; —झिरा - छोटे दानो की चेचक; **मु०** —उगलना - मुँह से सुंदर मधुर शब्दावली निकालना।
**मोथा** - पु० [हिं] जलाशयो में होनेवाली एक मोटी घास या उसकी जड़, नागरमोथा।
**मोद** - पु० [सं] हर्ष; सुगंध।
**मोदक** - 1. पु० [स] लड्डू; मिठाई; 2. वि० मोदजनक; **यौ०** —कार - हलवाई।
**मोदन** - 1. पु० [सं] हर्ष; मोद; सुगंध बिखेरना; 2. वि० मोदजनक।
**मोदना** - 1. अ० [हिं] आनंदित होना; सुगंध बिखेरना; 2. स० प्रसन्न करना।
**मोदित** - वि० [सं] मुदित, हर्षयुक्त।
**मोदिनी** - स्त्री० [सं] कस्तूरी; चमेली; जूही; मदिरा।
**मोदी** - पु० [हिं] आटा, दाल आदि बेचनेवाला; **यौ०**—ख़ाना - भण्डार।
**मोधू** - वि० [हिं] मूर्ख।
**मोम** - पु० [हिं] गर्मी से पिघलनेवाला एक मुलायम पदार्थ जिससे मधुमक्खियाँ अपने छत्ते बनाती हैं; **यौ०**—जामा - मोम का रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा; —दिल - नरम दिलवाला; —बत्ती - मोटे धागे पर मोम चढ़ाकर बनायी हुई बत्ती; **मु०**—

की नाक - अस्थिरचित्त व्यक्ति; —की मरियम - अति सुकुमार स्त्री।

**मोमिन** - 1. वि० [अ] ईमानदार; 2. पु० मुसलमान जुलाहा; सच्चा मुसलमान, शीया।

**मोमिया** - स्त्री० [फ़ा] मसाला लगाकर सुरक्षित रखी हुई लाश।

**मोमियाई** - स्त्री० [फ़ा] एक तरह का शिलाजीत; **यौ०**—निकालना - कड़ा परिश्रम कराना; बहुत मारना।

**मोमी** - वि० [हिं] मोम का बना हुआ; **यौ०** —छींट - बहुत मुलायम छींट (कपड़ा); —मोती - नकली मोती।

**मोयन** - पु० [हिं] आटे में घी डालकर गूँथना।

**मोर** - पु० [हिं] मयूर; **यौ०** —चंदा, चंद्रिका - मोरपंख के ऊपर बना हुआ बूटीदार चद्रमा; —चाल - एक तरह की कसरत; —छल - मोर की पूँछ के परो का चँवर; —छली - मोरछल डुलानेवाला; —पंखी - मोर के पंख के आकार की एक नाव; —मुकुट - मोरपंख का मुकुट जिसे कृष्ण धारण करते थे; [त] मट्ठा।

**मोरचा** - पु० [फ़ा] क़िले के चारो ओर खोदी हुई खाई; युद्ध की सुविधा के लिए खोदी हुई खाई आदि; मोरचे पर या उसके भीतर रहनेवाली सेना; ज़ंग; आईने पर जमा हुआ मैल; **यौ०**— —बंदी - शत्रुसेना की मार से बचते हुए लड़ने का प्रबंध करना; **मु०**—खाना - काम न लेने से गुणशक्ति का कम होना; ज़ंग लगना।

**मोरना** - स० [हिं] मोड़ना; दही से मक्खन निकालना।

**मोरनी** - स्त्री० [हिं] मादा मोर; नथ में लटकाने का टिकरा।

**मोराना** - स० [हिं] घुमाना; पत्थर के कोल्हू में ईख की पोरें डालना।

**मोरी** - स्त्री० [हिं] गंदे पानी की नाली; नाली।

**मोल** - पु० [हिं] मूल्य; **यौ०**—तोल - मोलभाव, सौदा पटाने की बातचीत; **मु०**— करना - चीज़ का दाम निश्चित करना; —लेना - ख़रीद लेना; दास बनाना।

**मोष** - पु० [सं] चोरी; चोरी का माल; चोर।

**मोषण** - पु० [सं] चुराना; लूटना; वध।

**मोह** - पु० [सं] अज्ञान; अविद्या; देह आदि में आत्मबुद्धि; भ्रांति; ममता; मूर्छा; स्नेह; **यौ०**—निद्रा - अज्ञान तथा अंधविश्वास में डूबा रहना; —भंग - भ्रांतिनिवारण; —मंत्र - मोह में डालनेवाला मंत्र।

**मोहक** - वि० [सं] मुग्ध करनेवाला; मोह पैदा करनेवाला।

**मोहड़ा** पु० [हिं] किसी वस्तु के ऊपर का हिस्सा; बर्तन आदि का मुँह।

**मोहन** - 1. वि० [सं] मोहनेवाला; 2. पु० [हिं] कामदेव के पाँच बाणो में से एक, कृष्ण; लुभाना; सुरत; एक अभिचार; **यौ०**—भोग - एक प्रकार का हलुवा; —माला सोने के दानों की बनी हुई माला।

**मोहनास्त्र** - पु० [सं] शत्रु को मूर्छित करनेवाला एक अस्त्र।

**मोहनी** - स्त्री० [सं] माया; वशीकरण; **मु०**—डालना - जादू करना।

**मोहनीय** - 1. वि० [सं] मोहने योग्य; 2. पु० चित्त को क्रोध आदि कषाय की ओर प्रवृत्त करनेवाला एक कर्म।

**मोहब्बत** - स्त्री० [अ] मुहब्बत।

**मोहरा** - पु० [हिं] मोहड़ा; सेना का अग्रभाग; पशुओं के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली; अंगिये का बंद; [फ़ा] शतरंज की गोटी।

**मोहरी** - स्त्री० [हिं] पायजामे के नीचे का मुँह; बर्तन आदि का छोटा मुँह।

**मोहर्रिर** - पु० [अ] मुहर्रिर।

**मोहलत** - स्त्री० [अ] मुहलत।

**मोहार** - पु० [हिं] शहद की मक्खियों का छत्ता; मुहरा।

**मोहिं, मोहि** - सर्व० [हिं] मुझे, मुझको।

**मोहित** - वि० [सं] मुग्ध; लुभाया हुआ।

**मोहिनी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [स] मन को लुभानेवाली।

**मोही** - वि० [सं] मोहयुक्त; स्नेह करनेवाला; लालची।

**मौंज** - वि० [सं] मूँज का बना हुआ।

**मौंजी** - स्त्री० [स] मूँज की बनी हुई तीन लड़ की मेखला; यौ०—बंध, बंधन - मूँज की मेखला धारण करना।

**मौंड़ा, मौड़ा** - पु० [हिं] लड़का।

**मौक़ा** - पु० [अ] उपयुक्त अवसर; घटित होने का स्थान; यौ०—बेमौक़ा - चाहे जब, अवसर अनवसर का विचार किये बिना; मु०—देखना - अनुकूल अवसर की राह देखना; —देना - अवसर या अवकाश देना; एन मौक़े पर - ठीक आवश्यकता के समय।

**मौक़ूफ़** - वि० [अ] रद्द किया हुआ; नौकरी से छोड़ा या छुड़ाया हुआ; अवलंबित; ठहराया हुआ।

**मौक़ूफ़ी** - स्त्री० [अ] काम या नौकरी से अलग किया जाना, बरतरफ़ी।

**मौक्तिक** - पु० [सं] मोती; यौ०—दाम - मोतियों की लड़ी।

**मौखर्य** - पु० [सं] मुखरता।

**मौखिक** - वि० [सं] ज़बानी; मुख-संबन्धी।

**मौज़** - स्त्री० [अ] मन की तरंग; लहर; सुख; मु०—में आना - मन में आना; किसीको कुछ देने की इच्छा होना।

**मौज़ा** - पु० [अ] गाँव, स्थान।

**मौज़ूँ** - वि० [अ] उपयुक्त; छंदोबद्ध; वज़न किया हुआ।

**मौजूद** - वि० [फ़ा] विद्यमान; उपस्थित; उत्पन्न; तैयार; यौ० — गी - उपस्थिति।

**मौजूदा** - वि० [अ] वर्तमान; यौ०—ज़माना - वर्तमान काल।

**मौत** - स्त्री० [फ़ा] मृत्यु; मुसीबत।

**मौन** - पु० [सं] चुप्पी; यौ०—भंग - मौन तोड़ना; —व्रत - न बोलने का व्रत।

**मौना** - पु० [हिं] टोकरा।

**मौनी** - 1. वि० [सं] मौनव्रतधारी; 2. पु० मुनि; यौ०—अमावास्या - माघ मास की अमावास्या; —बाबा - मौनव्रती साधु; 3. स्त्री० [हिं] छोटी टोकरी।

**मौर** - 1. पु० [हिं] ब्याह के अवसर पर वर को पहनाया जानेवाला एक प्रकार का मुकुट; मंजरी; 2. वि० श्रेष्ठ (जैसे, 'सिरमौर')।

**मौरना** - अ० [हिं] बौर लगना।

**मौरूसी** - वि० [अ] पैतृक; विरासत में मिला हुआ।

**मौर्वी** - स्त्री० [सं] धनुष की डोरी।

**मौलवी** - पु० [अ] अरबी व फ़ारसी का विद्वान या इन भाषाओं को पढ़ानेवाला; क़ुरान का पंडित; यौ०—गिरी - अध्यापकी, मौलवी का काम।

**मौलसिरी** - स्त्री० [हिं] बकुल।

**मौला** - पु० [अ] स्वतंत्र किया हुआ दास; पड़ोसी; परमेश्वर; बादशाह; मालिक।

**मौलाना** - पु० [अ] अरबी का बहुत बड़ा विद्वान।

**मौलि** - पु० [सं] मुकुट ; चोटी ; मस्तक।

**मौलिक** - वि० [सं] मूल-संबंधी ; मुख्य ; किसीकी छाया या अनुकृति से विहीन (रचना)।

**मौलिकता** - स्त्री० [सं] मौलिक होने का भाव।

**मौष्टिक** - पु० [सं] ठग, धूर्त।

**मौसा** - पु० [हिं] मौसी का पति।

**मौसिम** - पु० [अ] ऋतु ; समय ; **यौ०**—गुल, बहार - वसंत ऋतु।

**मौसिमी** - वि० [अ] जिसका मौसम हो, (वर्तमान) ऋतु का ; मौसिम के कारण होनेवाला ; **यौ०**—बुख़ार - मलेरिया।

**मौसी** - स्त्री० [हिं] माँ की बहिन, मासी।

**मौसूफ़** - वि० [अ] वर्णित ; प्रशंसित।

**मौसुम** - वि० [अ] नामधारी।

**मौसुल** - वि० [अ] मिला हुआ ; मिलान किया हुआ।

**मौसेरा** - वि० [हिं] मौसी से संबद्ध या उससे उत्पन्न।

**म्याँव** - स्त्री० [अनु] बिल्ली की बोली ; **मु०**—म्याँव करना - डर के कारण धीमे स्वर से बोलना ; बिल्ली का बोलना।

**म्यान** - पु० [फ़ा] तलवार आदि रखने का खोल ; [हिं] शरीर।

**म्रदिमा** - स्त्री० [सं] मृदुता।

**म्रियमाण** - वि० [सं] मरता हुआ ; मरा हुआ-सा।

**म्लान** - वि० [सं] कुम्हलाया हुआ ; दुर्बल ; मलिन ; **यौ०**—मना - उदास।

**म्लानि** - स्त्री० [सं] म्लानता ; उदासी ; मलिनता।

**म्लेच्छ** - 1. पु० [सं] अनार्य ; आर्य-सदाचार का पालन न करनेवाला ; विदेशी ; 2. वि० नीच ; पापी ; **यौ०**—जाति - असंस्कृतभाषी जाति ; अनार्य ; —देश - अनार्य देश ; —भाषा - अनार्य भाषा ; विदेशी भाषा।

## य

**यंत्र** - पु० [सं] अंकों या अक्षरों से बनी एक विशिष्ट आकृति जिसमें देवताओं की प्रतिष्ठा मानी जाती है, जंतर ; कल ; वीणा ; ताला ; नियंत्रण ; जाल ; **यौ०** —गृह - वेधशाला ; कारख़ाना ; —नाल - कुएँ से जल निकालने का नल ; —मंत्र - टोना-टोटका ; —विद्या - यंत्रों के निर्माण और चालन की विद्या ; —शाला - वेधशाला ; —सूत्र - कठपुतली नचाने का धागा।

**यंत्रणा** - स्त्री० [सं] पीड़ा, यातना।

**यंत्रणी, यंत्रिणी** - स्त्री० [सं] छोटी साली।

**यंत्रालय** - पु० [सं] यंत्रशाला ; प्रेस, छापाख़ाना।

**यंत्रिका** - स्त्री० [सं] छोटा ताला ; छोटी साली।

**य** - पु० [सं] जौ ; त्याग ; प्रकाश ; भाग ; यश ; योग ; संयम।

**यक** - वि० [फ़ा] अकेला ; एक ; **यौ०** —क़लम - एकबारगी ; —चश्म - काना ; —चश्मी - सब दृष्टि ; —ज़बान - बात का पक्का ; —जा - इकट्ठा ; मिले-जुले ; —जान - एकदिल ; —फ़र्दी, फ़सली - साल में एक ही बार फ़सल पैदा करनेवाली (ज़मीन) ; —बयक - एकाएक ; —बारगी - अचानक ; —मंज़िला - एक मंज़िलवाला (मकान) ; —मादरी - एक माँ के (बच्चे) ; —मुश्त - एक बार में ; —रंग, रंगा, रंगी - अंदर बाहर से एक ; —रुख़ा, रुख़ी - एकतरफ़ा ; —रोज़ा - एक दिन का ; —लख़्त -

बिलकुल ; —लाई - चोग़ा ; नक़ाब ; —लौता, लौती - एकमात्र ; —सर - अकेला , इकट्ठा ; —साँ - एक साथ ; एक प्रकार का ; —सार - एक जैसा ; —साला - एक साल का ।

**यक़ीन** - पु० [अ] विश्वास ; **यौ०** —न - निस्संदेह ; विश्वासपूर्वक ।

**यक़ीनी** - वि० [फ़ा] असंदिग्ध ।

**यकृत** - पु० [सं] जिगर ; यकृत में होनेवाले रोग ।

**यक्ष** - पु० [सं] एक देवयोनि ; इंद्रभवन ; कुबेर ; प्रेत ; यज्ञ ; **यौ०** —नायक - कुबेर ; —पुर - अलकापुरी ।

**यक्षण** - पु० [सं] पूजन ; भक्षण ।

**यक्षामलक** - पु० [स] पिण्डखजूर ।

**यक्ष्म, यक्ष्मा** - पु० [स] क्षयरोग, तपेदिक ।

**यक्ष्मी** - पु० [सं] क्षयरोगी ।

**यगानगत, यगानगी** - स्त्री० [फ़ा] समीपता ; सहयोग ; अनोखापन.।

**यगाना** - वि० [फ़ा] आत्मीय ; अकेला ; अद्वितीय ।

**यजन** - पु० [सं] यज्ञ करना ।

**यजमान** - पु० [सं] यज्ञ करनेवाला ; महादेव का एक विग्रह ।

**यजमानी** - स्त्री० [हिं] यजमान का भाव या धर्म ; यजमानों का वासस्थान ; पुरोहिती ।

**यज्ञ** - पु० [सं] एक वैदिक कृत्य, याग ; अनुष्ठान ; यज्ञदेवता ; **यौ०** —क - यज्ञकर्ता ; यज्ञ ; —कीलक - यज्ञ का बलिपशु बाँधने का खूँटा ; — कुंड - हवन करने का कुंड ; — क्रिया - यज्ञ का काम ; —तंत्र - यज्ञ का विस्तार ; —दक्षिणा - यज्ञ कराने के उपलक्ष्य में ब्राह्मणों को दिया जानेवाला धन ; —द्रव्य - यज्ञ की सामग्री ; —धूम - होम का धुआँ ; —पत्नी - दक्षिणा ; —पशु - यज्ञ का बलिपशु; —पात्र, भाजन - यज्ञ के कामों के लिए बने हुए लकड़ी के बर्तन ; —पुरुष - विष्णु ; —भाग - यज्ञ का अंश ; —भूषण - कुश ; —महोत्सव - यज्ञ का विशाल समारोह ; —मुख - यज्ञ का आरंभ ; —यूप - यज्ञस्तंभ ; —रस - सोम ; —वल्ली - सोमलता ; —वृक्ष - बरगद ; —वेदी - यज्ञ की वेदिका ; —शास्त्र - मीमांसा ; —शिष्ट, शेष - यज्ञ का अवशेष ; —शील - ब्राह्मण ; उत्साह से यज्ञ करनेवाला ; —सिद्धि - यज्ञ की समाप्ति ; —सूत्र - जनेऊ ; —होता - यज्ञ में देवताओं का आवाहन करनेवाला ।

**यज्ञांग** - पु० [सं] यज्ञ-सामग्री ; खैर ; गूलर ; विष्णु ।

**यज्ञागार** - पु० [सं] यज्ञशाला ।

**यज्ञात्मा** - पु० [सं] विष्णु ।

**यज्ञारि** - पु० [सं] शिव ; राक्षस ।

**यज्ञाशन** - पु० [सं] देवता ।

**यज्ञिक** - पु० [सं] यज्ञ के प्रसादस्वरूप प्राप्त पुत्र ; पलाश ।

**यज्ञोपवीत** - पु० [सं] जनेऊ ; **यौ०** —संस्कार - जनेऊ पहनाने का संस्कार ।

**यत** - वि० [सं] संयत ; प्रतिबद्ध ; दमन किया हुआ ।

**यतन** - पु० [सं] यत्न करना ।

**यतनीय** - वि० [सं] यत्न करने योग्य ।

**यतात्मा** - वि० [सं] संयमी ।

**यति** - 1. पु० [सं] जितेन्द्रिय ; योगी ; श्वेतांबर जैन-साधु ; संन्यासी ; 2. स्त्री० छंदों में विश्राम-स्थान ; विधवा ; मनोविकार ; रुकावट ; **यौ०** —धर्म - संन्यास ; —पात्र - यति का भिक्षापात्र ; —भंग - छंददोष ।

**यतीम** - 1. पु० [अ] अनाथ ; 2. वि० बिना माँ-बाप का (बच्चा) ; अद्वितीय ; **यौ०** —खाना - अनाथालय ।
**यतेन्द्रिय** - वि० [सं] जितेन्द्रिय ।
**यत्** - सर्व० [स] जो ; **यौ०** —किंचित् - थोड़ा-सा, बहुत कम ।
**यत्न** - पु० [स] उपाय ; उपचार ; सार-सँभाल; चौबीस गुणो में एक (न्यायशास्त्र) ; **यौ०** —पूर्वक - चेष्टापूर्वक ; —वान - यत्न में लगा हुआ ; — शील - अध्यवसायी ।
**यत्र** - अव्य० [सं] जहाँ ; **यौ०** —तत्र - जहाँ-तहाँ ; जगह-जगह ।
**यथांश** - वि० [सं] यथायोग्य ; हिस्से के अनुकूल ।
**यथा** - अव्य० [सं] जिस प्रकार ; जैसे ; **यौ०** —कथित - जैसा पहले कहा गया हो ; —कर्तव्य - कर्तव्य के अनुकूल ;—कर्म - कर्मानुसार ; —काम - मनमाना ; —कार्य - कार्य के अनुकूल ; —काल - उचित समय पर ; —कुल - कुलानुसार ; —तथ, तथ्य - ज्यों का त्यो, हू-ब-हू ; —तृप्ति - जी भरकर ; —दृष्ट - जैसा देखा हो ; —निर्दिष्ट - निर्देश के अनुसार ; —पूर्व - पहले का-सा ; —भाग - यथोचित ; —मति - समझ के अनुसार ; —योग्य - उपयुक्त ; —रुचि - इच्छानुसार ; —लब्ध - यथा-लाभ संतोषवाली (वृत्ति) ; —लाभ - जितना प्राप्त हो उसीके अनुरूप ; —वत् - ज्यो का त्यो ; जैसा चाहिए उसी तरह ; —विधि - विधिपूर्वक ; —शक्ति - शक्ति के अनुसार ; —शक्य - भरसक ; —संभव, साध्य - भरसक ; सामर्थ्य-भर ; —स्थान - उचित स्थान पर ।
**यथार्थ** - वि० [सं] उचित ; **मु०**—में - दर-असल ।
**यथार्थतः** - अव्य० [सं] वस्तुतः ।
**यथेच्छ** - वि० [सं] इच्छानुसार ; मनमाना ।
**यथेच्छाचारी** - वि० [सं] स्वेच्छाचारी ।
**यथेष्ट** - वि० [सं] जितना चाहिए उतना ।
**यथोक्त** - वि० [स] कथनानुसार ।
**यथोचित** - वि० [स] समुचित ।
**यद** - पु० [अ] हाथ ।
**यदपि** - अव्य० [हिं] यद्यपि ।
**यदा** - अव्य० [सं] जब ; जहाँ ; **यौ०**—कदा - जब-तब, कभी-कभी ।
**यदि** - अव्य० [सं] अगर ।
**यदृच्छा** - स्त्री० [सं] मनमानापन ; आकस्मिक संयोग ; स्वतंत्रता ; **यौ०** —प्रवृत्त - स्वतः नियुक्त ; —लब्ध - अनायास प्राप्त ।
**यद्यपि** - अव्य० [सं] अगरचे ।
**यद्वातद्वा** - 1. अव्य० [सं] कभी-कभी ; जब तक ; 2. पु० टालमटोल ।
**यम** - पु० [सं] यमराज ; जुड़वाँ संतान ; संयम ; दो की संख्या ; अहिंसा, सत्य आदि पंच महाव्रत ; **यौ०**—कीट - केंचुवा ; —घंट - कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा ; एक दुष्ट योग ; —ज - जुड़वाँ बच्चे ; —जित् - मृत्यु को जीतनेवाला, मृत्युंजय ; —दंड - कालदंड , मनुष्य के मस्तक पर की दो प्रकार की रेखाओ में से एक ; —दंष्ट्रा - यम की दाढ़ ; रोग और मृत्यु के विशेष भययुक्त महीनो के कुछ दिन ; —द्वार - यमराज के घर का दरवाज़ा ; —द्वितीया - भैयादूज ; —धर, धार - दोनो ओर धारवाली तलवार ; —पुर, पुरी - यमलोक ; —प्रिय - वटवृक्ष ; —भगिनी - यमुना नदी ; —यातना - नरक की पीड़ा ;

अंतकाल की पीड़ा; —वाहन - भैंसा; —राज - धर्मराज।

**यमन** - पु० [सं] विरोध करना; बंधन; रोकना; यमराज।

**यमनिका** - स्त्री० [हिं] यवनिका।

**यमनी** - स्त्री० [हिं] एक क़ीमती पत्थर।

**यमल** - पु० [सं] जुड़वाँ; यौ०—पत्रक - कनेर।

**यमला** - स्त्री० [सं] हिचकी का रोग।

**यमली** - स्त्री० [सं] एक में मिली हुई दो चीज़ें; घाँघरा और चोली।

**यमांतक** - पु० [सं] शिव, मृत्युंजय।

**यमित** - वि० [सं] संयत; बँधा हुआ।

**यमुना** - स्त्री० [सं] जमुना नदी; यम की बहन।

**यमेरुका** - स्त्री० [सं] घड़ियाल।

**यरक़ान** - पु० [अ] यकृत् की ख़राबी से होनेवाली एक ख़ास बीमारी जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है।

**यव** - पु० [सं] जौ; एक जौ का परिमाण; वेग; उंगली या अंगूठे की यवाकार रेखा; यौ०—क्षार - जौ के पौधों को जलाकर निकाला हुआ क्षार; —फल - इंद्रजव; प्याज; बाँस; जटामासी; —बिन्दु - जौ की तरह बिन्दुवाला एक हीरा; —मध्य - जौ की शराब।

**यवक** - पु० [सं] जौ।

**यवन** - पु० [सं] वेग; तेज़ घोड़ा; मुसलमान; यूनान का निवासी; यौ०—प्रिय - मिर्च।

**यवनानी** - स्त्री० [सं] यूनान की भाषा; यूनान की लिपि।

**यवनिका** - स्त्री० [सं] नाटक का परदा; कनात।

**यवाग्र** - पु० [सं] जौ का भूसा।

**यवाश** - पु० [सं] जौ की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक कीड़ा।

**यविष्ठ** - 1. पु० [सं] अग्नि; छोटा भाई; नौजवान; 2. वि० सबसे छोटा।

**यश** - पु० [सं] कीर्ति; प्रशंसा; मु०—गाना - कृतज्ञ होना; प्रशंसा करना।

**यशब, यशम** - पु० [अ] एक प्रकार का हरा पत्थर जो बिजली से बचानेवाला और रोग को दूर करनेवाला माना जाता है।

**यशस्कर** - वि० [सं] कीर्तिजनक।

**यशस्काम** - वि० [सं] यश की इच्छा रखनेवाला।

**यशस्वान, यशस्वी, यशी** - वि० [सं] सुप्रसिद्ध, जिसका बहुत यश फैला हुआ हो।

**यशोगाथा** - स्त्री० [सं] गौरव-कथा।

**यशोद** - पु० [सं] पारा।

**यष्टि** - स्त्री० [सं] लाठी; झंडे का डंडा; टहनी; मुलेठी; लता; बाँह; ताँत; यौ० —मधु - जेठी मधु।

**यष्टिक** - पु० [सं] डंडा; तीतर पक्षी; मजीठ।

**यष्टिका** - स्त्री० [सं] जेठी मधु; वापी; हार।

**यसार** - 1. पु० [अ] बहुत अधिक दौलत; अभागा पुरुष; बायाँ हाथ; 2. वि० बायाँ; यौ०—यमन - बायाँ और दायाँ।

**यह** - सर्व० [हिं] पास में रहनेवाले व्यक्ति या वस्तु का निर्देश करनेवाला एक सर्वनाम।

**यहाँ** - अव्य० [हिं] इस स्थान में; इस जगह पर।

**यहि** - सर्व [हिं] यह का पुराना हिन्दी रूप।

**यही** - अव्य० [हिं] यह ही।

**यहूयहू** - पु० [हिं] कबूतर की एक जाति।

**याँची** - स्त्री० [सं] प्रार्थनापूर्वक माँगना।

**याक** - पु० [हिं] हिमालय पर मिलनेवाला एक जंगली बैल जिसकी पूँछ के बालों से चँवर बनाये जाते हैं।

**याकूत** - पु० [अ] लाल ; लाल चावलों का बना एक ख़ास पुलाव ।
**याग** - पु० [सं] यज्ञ ।
**याचक** - पु० [सं] माँगनेवाला ; भिखारी ।
**याचकता** - स्त्री० [सं] भिखमंगी का पेशा ।
**याचना** - 1. स० [हिं] माँगना ; प्रार्थना करना ; 2. स्त्री० [सं] माँगने की क्रिया ; भिक्षा ।
**याचित** - वि० [सं] प्रार्थित, माँगा गया ।
**याच्य** - वि० [सं] याचना करने योग्य, माँगने योग्य ।
**याज** - पु० [सं] यज्ञ करनेवाला ; अन्न ।
**याजक** - पु० [सं] यज्ञ करने या करानेवाला ; मस्त हाथी ।
**याज़ा** - पु० [फ़ा] अँगड़ाई, जंभाई ।
**याज्ञ** - वि० [सं] यज्ञ-संबंधी ; यज्ञ का ।
**याज्ञिक** - पु० [सं] यज्ञ करने या करानेवाला ; पलाश ; खैर ; पीपल ; यजमान ; गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।
**यातन** - पु० [सं] बदला ; पारितोषिक ।
**यातना** - स्त्री० [स] पीड़ा
**याता** - 1. स्त्री० [सं] जेठानी या देवरानी , 2. पु० जानेवाला ; सारथी ।
**यातायात** - पु० [सं] आना-जाना, गमनागमन ।
**यातु** - पु० [सं] पथिक ; आनेवाला ; समय ; हिंसा ; राक्षस ; कष्ट ; अस्त्र ; यौ०—धान - राक्षस ।
**यात्रा** - स्त्री० [सं] प्रस्थान ; चढ़ाई ; ज़ीवन-निर्वाह ; उपाय ; उत्सव ।
**यात्रिक** - 1. पु० [स] यात्री ; तीर्थयात्री ; 2. वि० यात्रा-संबंधी ; प्रथानुकूल ।
**यात्री** - पु० [स] मुसाफ़िर ; तीर्थयात्रा करनेवाला ।
**याथातथ्य** - पु० [सं] यथार्थता ; प्रकृत-तत्त्व ।
**याथार्थ्य** - पु० [सं] यथार्थता ।
**याद** - स्त्री० [फ़ा] स्मृति ; स्मरण करने की क्रिया ; यौ० —अय्याम - भूतकालिक दशा की याद ; —गार, गारी - स्मारक ; स्मृतिचिन्ह ; —दाश्त - स्मरण-शक्ति ; स्मरणार्थ लिखा हुआ लेख ।
**यादृश** - वि० [सं] जैसा, जिस प्रकार का ।
**यान** - पु० [सं] सवारी, वाहन ; गमन ; आक्रमण ।
**यानी** - अव्य० [अ] अर्थात् ।
**यापन** - पु० [सं] बिताना ; व्यवहार करना ; निबटाना ।
**यापना** - स्त्री० [सं] समय काटना ; जीवन-निर्वाह के लिए दिया हुआ धन ।
**यापनीय** - वि० [सं] बिताने योग्य ।
**याफ़्त** - पु० [फ़ा] आमदनी ; घूस ।
**याफ़्तनी** - वि० [फ़ा] प्राप्त करने योग्य वस्तु , अधिकार ; ऋण-बिल की रक़म ।
**याफ़्ता** - वि० [फा] पाया हुआ (जैसे, 'तालीमयाफ़्ता') ।
**याब** - पु० [फ़ा] पानेवाला (जैसे, 'फ़तहयाब') ।
**याबू** - पु० [फ़ा] छोटा घोड़ा ; टट्टू ।
**याम** - पु० [सं] पहर, प्रहर ; समय ; यौ० —नाली - समय बतानेवाली घड़ी ; —वती - रात्रि ।
**यामाता** - पु० [सं] दामाद ।
**यामि, यामी** - स्त्री० [सं] रात्रि ; बहिन ; कुलवधू , पुत्रवधू ; कन्या; दक्षिण दिशा ।
**यामिक** - पु० [सं] पहरेदार ; याम-संबंधी ।
**यामिनी** - स्त्री० [सं] रात ; हलदी ; यौ० —चर - राक्षस ; उल्लू , गुग्गुल ।
**यायावर** - 1. पु० [सं] परिव्राजक ; ख़ानाबदोश ; अश्वमेध का घोड़ा ; ब्राह्मण ; 2. वि० सदा घूमनेवाला ।
**यार** - पु० [फ़ा] परस्त्री से प्रेम करनेवाला ; मित्र ; साथी , हिमायती ; यौ०

—बाश - सबसे दोस्ती करनेवाला; यारे शातिर - पक्का व गहरा दोस्त।

**यारकंद** - [तु] कालीन का एक प्रकार का बेलबूटा; चीनी तुर्किस्तान का एक नगर।

**याराना** - 1. वि० [फ़ा] मित्रता का; 2. पु० मैत्री; अनुचित प्रेम (स्त्री-पुरुष का)।

**यारी** - स्त्री० [फ़ा] मैत्री।

**याल** - स्त्री० [तु] घोड़े की गर्दन पर के बाल, अयाल।

**याव, यावक** - 1. पु० [सं] यव का सत्तू; लाख; महावर; साठी धान; उड़द; 2. वि० जौ से बनाया हुआ।

**यावज्जीवन** - पु० [सं] जीवनपर्यन्त।

**यावत्** - अव्य० [सं] जितना; जहाँ तक; सब।

**यावन** - 1. पु० [स] लोबान; 2. वि० यवन-संबधी।

**यावनाल** - पु० [सं] मक्का; ज्वार।

**यावनाली** - स्त्री० [सं] मक्के से बनायी हुई चीनी।

**यावा** - स्त्री० [फ़ा] बेहूदा बातें।

**यावास** - पु० [सं] जवासे की शराब।

**यास** - 1. पु० [सं] प्रयास; 2. स्त्री० [अ] निराशा; भय।

**यासमन, यासमीन** - स्त्री० [फ़ा] चमेली।

**याहि** - सर्व० [हिं] इसको।

**यियासा** - स्त्री० [सं] जाने की इच्छा।

**युंजान** - पु० [सं] अभ्यासी योगी; ब्राह्मण; सारथी।

**युक्त** - 1. पु० [सं] एक परिमाण; 2. वि० जुड़ा हुआ; सहित; चतुर; नियुक्त; यौ०—कर्म - जिसे कोई काम सौंपा गया हो; —मना - दत्तचित्त; —रूप - उचित, अनुरूप।

**युक्ताक्षर** - वि० [सं] संयुक्त वर्ण।

**युक्तार्थ** - पु० [सं] ज्ञानी।

**युक्ताहार** - 1. पु० [सं] उचित आहार; 2. वि० उचित आहार करनेवाला।

**युक्ति** - स्त्री० [सं] तर्क; योग; कारण; चातुर्य; उपाय; अनुमान; रीति; यौ० —कर, पूर्ण - विचारपूर्ण; —युक्त - उचित; प्रमाणित; —संगत - तर्क के अनुकूल।

**युग** - पु० [सं] पुराणानुसार काल का एक सुदीर्घ परिमाण; पंचवर्षीय काल, समय; पीढ़ी; जोड़ा; यौ० —क्षय - युग का अंत; —चेतना - कालविशेष की विशिष्ट प्रवृत्ति; —धर्म - समयानुकूल आचरण; —पत् - एक साथ; —पत्र - युग्मपत्र; कचनार; —पुरुष - श्रेष्ठ पुरुष; —प्रतीक - युग का प्रतिनिधि; —बाहु - लंबी भुजावाला; मु०— युग तक - बहुत दिनो तक।

**युगल** - पु० [स] जोड़ा, युग्म।

**युगलक** - पु० [सं] जोड़ा, एक अन्वयवाले पद्यो का जोड़ा।

**युगांत** - पु० [सं] युगसमाप्ति, प्रलय।

**युगांतक** - पु० [सं] प्रलय।

**युगांतर** - पु० [सं] दूसरा युग; मु० —करना - आमूल परिवर्तन कर देना।

**युगादि** - 1. पु० [सं] सृष्टि का आरंभ; 2. वि० युग के आरंभ का; पुराना।

**युगावतार** - वि० [सं] युग का अवतारी महान् पुरुष।

**युग्म** - पु० [सं] जोड़ा; द्वंद्व; युगलक; मिथुन राशि; यौ० —चारी - जोड़े में चलने-फिरनेवाले; —ज - जुड़वाँ बच्चे।

**युज्य** - 1. पु० [स] संयोग; 2. वि० उचित; मिला हुआ; मिलाने योग्य।

**युत** - 1. पु० [सं] चार हाथ की एक नाप ; 2. वि० सहित ; मिला हुआ ।

**युति** - स्त्री० [सं] मिलन ; गाड़ी में घोड़ा बाँधने की रस्सी ।

**युद्ध** - पु० [सं] लड़ाई, संग्राम ; **यौ०** —काल - युद्ध का समय ; —क्षेत्र - युद्ध-भूमि ; —प्रवीण - युद्ध की कला में दक्ष ; —भूमि - रणक्षेत्र ; —मय - युद्धप्रिय ; युद्ध-संबंधी ; —मार्ग - युद्ध की पद्धति ; —विद्या, शास्त्र - युद्ध का शास्त्र या विज्ञान ; —वीर - पराक्रमी व्यक्ति ; वीररस का एक भेद ; —शक्ति - युद्ध करने की शक्ति ; —सार - घोड़ा ।

**युद्धोन्मत्त** - वि० [सं] युद्ध के लिए पागल; युद्ध में आत्मविस्मृत ।

**युयुत्सा** - स्त्री० [सं] युद्ध करने की इच्छा ; शत्रुता ।

**युयुत्सु** - वि० [सं] लड़ने की इच्छा रखनेवाला ।

**युवक** - पु० [सं] तरुण ।

**युवति, युवती** - 1. वि० [सं] जवान (स्त्री), प्राप्तयौवना ; 2. स्त्री० जवान स्त्री ; हलदी ।

**युवराज** - पु० [सं] राज्य का उत्तराधिकारी राजकुमार ।

**युवराजी** - स्त्री० [हि] युवराज का पद ।

**युवा** - वि० [सं] तरुण ; **यौ०**—जर्त - जवानी में ही बूढ़ा दीख पड़नेवाला ;—पलित - जवानी में ही सफ़ेद बालोंवाला।

**युवान** - वि० [हिं] नौजवान ।

**यूँ** - अव्य० [हिं] इस प्रकार ।

**यूक** - पु० [स] जूँ, लीख ; **यौ०**—लिक्षा - जूँ का अंडा ।

**यूका** - स्त्री० [सं] सिर के बालों में होने-वाली जूँ ; खटमल ; गूलर ; अजवायन ; एक परिमाण ।

**यूति** - स्त्री० [सं] मिश्रण ; मिलावट ।

**यूथ** - पु० [सं] सजातीय जीवों का समूह ; सेना ; **यौ०** —चारी - झुंड में चलनेवाले ; —नाथ, पति - झुंड का स्वामी ; सेनाध्यक्ष ; सरदार ; —बंध - सेना की एक टुकड़ी ।

**यूथिका, यूथी** - स्त्री० [सं] जूही ।

**यूनक** - पु० [देश] गरी की खली ।

**यूप** - पु० [सं] यज्ञ का खंभा ; विजयस्तंभ ; **यौ०**—द्रुम - खैर का पेड़ ; —संस्कार - यूप की स्थापना ।

**यूष** - पु० [सं] जूस, दाल इत्यादि का पानी, शोरबा ; शहतूत का पेड़ ।

**यूह** - पु० [हिं] समूह ; सेना ।

**ये** - सर्व० [हिं] 'यह' का बहु० ।

**येई** - सर्व० [हिं] यही (पुराना रूप)।

**येऊ** - सर्व० [हिं] यह भी (पुराना रूप)।

**येतो** - वि० [हिं] इतना (पुराना रूप) ।

**येन** - सर्व० [सं] जिससे ; **यौ०** —केन-प्रकारेण - जिस किसी भी तरह से ।

**येमन** - पु० [सं] जीमना, खाना ।

**येह** - सर्व० [हिं] यह (पुराना रूप)।

**येहू** - अव्य० [हिं] यह भी (पुराना रूप) ।

**यों** - अव्य० [हिं] इस प्रकार, यूँ।

**योक्ता** - पु० [सं] जोड़ने, मिलाने या बाँधने वाला , उत्तेजक ; गाड़ीवान ।

**योग** - पु० [स] जोड़ने का कार्य (गणित) ; संयोग ; उपाय ; नियम ; संबंध ; कौशल ; उपयुक्तता ; धन ; व्यवसाय ; ध्यान ; शत्रुनाश के लिए आयोजित छल, कपट आदि युक्तियाँ ; चित्तवृत्ति का निरोध ; मोक्ष का उपाय ; वैराग्य ; चार प्रकार के उपाय (साम, दाम, दंड, भेद) ; उत्सव ; अष्टांगयोग ; हठयोग ; **यौ०** —क्षेम - अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति

और प्राप्त वस्तु की रक्षा; राष्ट्र का सुप्रबंध; कल्याण; निर्वाण; —गामी - योगबल से जानेवाला (वायुमार्ग से); —ज - योग से उत्पन्न; योगसाधन की एक अवस्था; —तत्त्व - योग के सिद्धान्त; —दान - योगदीक्षा; हाथ बँटाना; —निद्रा - समाधि-निद्रा; युद्धक्षेत्र में वीरो की मृत्यु; —पथ - योग की ओर ले जानेवाला मार्ग; —पुरुष - स्वार्थसिद्धि के लिए साधा हुआ आदमी; —फल - अंको के जोड़ने से प्राप्त होनेवाला फल; —बल - तपोबल; —भ्रष्ट - योगमार्ग से च्युत्त; —माया - सूक्ष्म समाधि की अलौकिक शक्ति; —युक्ति - गंभीर समाधि में लीन होना,—रूढ़ि - दो शब्दों के योग से बना हुआ शब्द जो अपने सामान्य अर्थ से विशिष्ट अर्थ का बोध कराता है; —वाह - अनुस्वार और विसर्ग; —विक्रय - धोखे की बिक्री; —वृत्ति - योग द्वारा प्राप्त चित्त की शुभ वृत्ति; —शक्ति - तपोबल; —सूत्र - पतंजलि द्वारा प्रणीत सूत्रों का संग्रह।

**योगांग** - पु० [सं] योग के आठ अंग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि)।

**योगांजन** - पु० [सं] सिद्धांजन; नेत्ररोगो को दूर करनेवाला एक अंजन।

**योगांतराय** - पु० [सं] योग में विघ्न डालनेवाले आलस्य आदि।

**योगात्मा** - पु० [सं] योगी।

**योगापत्ति** - स्त्री० [सं] रीति-नीति।

**योगाभ्यास** - पु० [सं] योग के अंगों का विधिपूर्वक अभ्यास।

**योगाराधन** - पु० [सं] योगाभ्यास करना।

**योगारूढ़** - पु० [सं] वीतराग, निष्काम योगी।

**योगासन** - पु० [सं] योग में बतायी हुई विधि के अनुसार बैठने की मुद्रा।

**योगिनी** - स्त्री० [सं] रणपिशाचिनी; दुर्गा की सखी चौसठ देवियाँ; तपस्विनी; योगमाया; विशेष तिथि में विशेष दिशा में स्थिति योगिनी; **यौ०** —चक्र - योगिनी की स्थिति को बतलानेवाला ज्योतिष-चक्र।

**योगी** - पु० [सं] अलौकिक शक्ति-संपन्न पुरुष; सुख-दुख आदि में सम रहनेवाला; सिद्ध पुरुष; संयोगी, जुड़ा हुआ; **यौ०**—निद्रा - हलकी नींद।

**योगीश, योगीश्वर** - पु० [सं] सर्वश्रेष्ठ योगी; शिव।

**योगेन्द्र** - पु० [सं] एक प्रकार का रस (वैद्यक); महान् योगी।

**योगेश, योगेश्वर** - पु० [सं] योगीश्वर।

**योगेश्वरी** - स्त्री० [सं] शाक्तो की देवी, दुर्गा।

**योग्य** - 1. वि० [सं] लायक़; उचित; श्रेष्ठ; सुंदर; जोड़ने या जोतने योग्य; समर्थ; निपुण; 2. पु० रथ; पुष्य नक्षत्र; चंदन।

**योग्यता** - स्त्री० [सं] क्षमता; उपयुक्तता; बुद्धिमानी; अनुकूलता; वाक्य के तात्पर्य-बोधक चार गुणो (आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि और तात्पर्य) में से एक।

**योग्या** - स्त्री० [सं] अभ्यास; युवती।

**योजक** - वि० [सं] संयोजक।

**योजन** - पु० [सं] मिलान; योग; परमात्मा, दूरी का परिमाणविशेष।

**योजना** - स्त्री० [सं] भावी कार्यक्रम की पूर्व-कल्पना; नियुक्ति; व्यवस्था; मिलान; घटना; रचना; प्रयोग।

**योजनीय** - वि० [स] योजना करने योग्य; मिलाने या जोड़ने योग्य।

**योजित** - वि० [स] युक्त; नियमित; रचित।

**योज्य** - वि० [सं] व्यवहार योग्य ; जोड़ने योग्य ।

**योद्धा, योधक** - 1. पु० [स] रण में कुशल ; 2. वि० युद्ध करनेवाला ।

**योधन** - पु० [सं] युद्ध ; रण-संबंधी ।

**योनि** - स्त्री० [सं] अंतःकरण ; उत्पत्ति-स्थान ; कारण ; गर्भ ; खान ; स्त्रियों की जननेन्द्रिय ; प्राणि-विभाग ; **यौ०** —दोष - उपदंश ; —मुक्त - मोक्षप्राप्त जीव ।

**योप** - पु० [अ] दिन ; तारीख ।

**योषणा** - स्त्री० [सं] दुश्चरित्रा स्त्री; नवयुवती ।

**योषा, योषिता** - स्त्री० [स] स्त्री, नारी ।

**यौक्तिक** - 1. पु० [सं] खेल का साथी ; 2. वि० युक्तियुक्त ।

**यौगिक** - 1. वि० [सं] मिला हुआ ; 2. पु० शब्दो के तीन भेदो (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़) में से एक ; अट्ठाईस मात्राओ का एक छंद ; **यौ०** —शब्द - दो शब्दो के योग से बना शब्द ।

**यौतक** - पु० [सं] दहेज ; चढ़ावा ; उपहार ।

**यौध** - 1. पु०, 2. वि० [सं] योद्धा, वीर ।

**यौन** - 1. वि० [स] योनि-संबंधी ; 2. पु० विवाह-संबंधी ।

**यौवन** - पु० [सं] बाल्यावस्था के बाद की अवस्था, जवानी ; युवतियों का दल ; जोबन ; **यौ०** —कंटक - मुहाँसा ; —लक्षण - सुंदरता ; स्तन ।

**यौवराज्य** - पु० [सं] युवराज का पद ।

**यौवराज्याभिषेक** - पु० [सं] राज्य के उत्तराधिकारी राजकुमार का अभिषेक-कर्म ।

## र

**रंक** - 1. वि० [सं] गरीब ; कंजूस ; आलसी ; 2. पु० गरीब आदमी ; भिक्षुक ; कृपण मनुष्य ।

**रंग** - पु० [सं] रक्त, पीत, श्वेत आदि वर्ण; राँगा धातु ; रंगमंच ; सभाभवन ; नाचघर ; युद्धक्षेत्र ; नृत्य ; क्रीड़ा ; असर, प्रभाव ; धाक ; यौवन ; प्रकार ; आनंद ; अद्भुत दृश्य ; अनुराग ; मौज़ ; दशा ; **यौ०** —क्षेत्र - अभिनय का स्थल ; समारोह का स्थान ; —गृह - अभिनय का स्थान ; —जननी - लाक्षा ; —जीविक - रंगनेवाला ; —द्वार - रंग-मंच का प्रवेशद्वार ; नाटक की प्रस्तावना ; —पीठ - नृत्यशाला; —भवन - विलास-विहार का स्थान ; —भूमि - नाट्य-शाला ; युद्धक्षेत्र ; समारोह का स्थान ; —मंच - नाटक आदि का अभिनय करने का स्थान ; —मंडप - रंगभूमि ; —महल - अंतःपुर ; प्रमोदभवन ; रंगमंच ; —रसिया - विलासी पुरुष ; —शाला - नाट्यशाला ; [हिं] सौन्दर्य ; आतंक ; यौवन ; ठाट-बाट ; टीमटाम ; ढब ; प्रकार ; शरीर का वर्ण ; तरंग ; **यौ०** —ढंग - स्थिति ; तौर-तरीक़ा ; लक्षण ; —बिरंगा - भाँति-भाँति का ; अनेक रंगोवाला ; —भरिया - रंग भरने-वाला ; दीवार आदि पर चित्र बनाने-वाला ;—रली, रेली - आनंद ; —रूप - सूरत, शकल ; [फ़ा] वर्ण; किरणो का रंग ; दृश्य ; तरीक़ा ; आनंद ; खेल ; दशा ; खूबसूरती ; चौपड़ की खास रंग की आठ गोटियाँ ; **यौ०** —रेज़ - कपड़ा रंगने का काम करनेवाला ।

**रंगई** - पु० [हिं] छपे हुए कपड़े धोनेवाली धोबियो की एक जाति ।

**रंगत** - स्त्री० [हिं] हालत ; आनंद ; रंग ।

**रंगना** - स० [हिं] रंग देना ; रंग में डुबोना ।

**रंगरूट** - पु० [हि] नौसिखिया; नया सिपाही (अंग्रे-रिक्रूट)।

**रँगवाई, रँगाई** - स्त्री० [हिं] रंगने का काम या उसकी मज़दूरी।

**रँगिया** - पु० [हि] रँगाई का काम करनेवाला; रंग बनानेवाला।

**रंगी** - वि० [सं] विनोदी; अनुरक्त; रंगनेवाला; अभिनय करनेवाला।

**रंगीन** - वि० [फ़ा] विलासप्रिय; रँगा हुआ; चमत्कारपूर्ण।

**रंगीनी** - स्त्री० [फ़ा] रंगीन होना; श्रृंगार; रंगीलापन।

**रँगीला** - वि० [हिं] मौज़ी; सुंदर; प्रेमी।

**रंगोपजीवी** - पु० [स] अभिनय द्वारा रोज़ी कमानेवाला, नट।

**रंच, रंचक** - वि० [हिं] थोड़ा, ज़रा।

**रंज** - पु० [फ़ा] शोक; तकलीफ़; पश्चात्ताप।

**रंजक** - 1. पु० [सं] रंगरेज़; मेहँदी; 2. वि० रंगने का काम करनेवाला; मनोरंजक; 3. स्त्री० [फ़ा] बंदूक़ या तोप की बारूद की प्याली; प्याली में रखी जानेवाली बारूद; गाँजा; उत्तेजक बात; चटपटा चूर्ण।

**रंजन** - पु० [स] मन प्रसन्न करना; रगना; मूँज; सोना; जायफल; पित्त; लाल चन्दन।

**रंजना** - स० [हिं] प्रसन्न करना; रंगना।

**रंजनी** - वि० [सं] प्रसन्न करने योग्य; रंगने योग्य।

**रंजित** - वि० [सं] रँगा हुआ; हर्षित; अनुरक्त।

**रंजिश, रंजीदगी** - स्त्री० [फ़ा] नाराज़गी; उदासी; वैमनस्य।

**रंजीदा** - वि० [फ़ा] नाराज़; दुखी।

**रंड** - 1. वि० [सं] धूर्त; बेचैन; विफल; छिन्न अंगवाला; 2. पु० निस्संतान मरनेवाला मनुष्य; फलहीन वृक्ष।

**रंडा** - स्त्री० [सं] विधवा, राँड़।

**रँडापा** - पु० [हिं] वैधव्य।

**रंडी** - स्त्री० [हिं] वेश्या; यौ० —बाज़ - वेश्यागामी; —बाज़ी - वेश्यागमन।

**रँडुवा** - पु० [हिं] वह आदमी जिसकी पत्नी मर गयी हो।

**रंता** - वि० [सं] रमण; अनुरक्त।

**रंति** - स्त्री० [सं] क्रीड़ा; विराम।

**रंद** - पु० [हिं] हवा तथा प्रकाश आने के लिए दीवार में बनाये हुए छेद; तोप या बंदूक़ आदि बाहर की ओर चलाने के लिए क़िले की दीवार पर बनाया हुआ मोखा।

**रँदना** - स० [हिं] रंदा फेरना, रंदे से लकड़ी की सतह चिकनाना।

**रंदा** - पु० [हिं] लकड़ी को चिकनी और सम बनाने का बढइयो का एक औज़ार।

**रंधक** - पु० [सं] रसोइया; बरबाद करनेवाला।

**रंधन** - पु० [सं] रसोई; बरबाद करना।

**रंध्र** - पु० [सं] छेद; लग्न से आठवाँ स्थान; भग; दोष।

**रंबा** - पु० [हि] ताने की रस्सी बाँधने का जुलाहो का एक औज़ार।

**रंभा** - 1. स्त्री० [स] केला; एक अप्सरा; गौरी; उत्तर की दिशा; एक तरह का चावल; गाय का रँभाना; 2. पु० [हिं] दीवार आदि में छेद करने के काम आनेवाला लोहे का मोटा बड़ा डंडा; यौ० —त्रितीया - ज्येष्ठशुक्ला तृतीया; —पति - इंद्र; —फल - केला।

**रँभाना** - अ० [हिं] गाय का बोलना।

**रंभित** - वि० [सं] बजाया हुआ ; ध्वनित किया हुआ (शब्द)।

**रंह** - पु० [सं] वेग, गति।

**रँहचटा** - पु० [हि] इच्छापूर्ति की लालसा ; लालच।

**रअय्यत** - स्त्री० [अ] प्रजा ; काश्तकार ; नौकर ; बिना किराया दिये मकान में रहनेवाला आदमी ; **यौ०** —आज़ार - प्रजा को पीड़ा देनेवाला ; —आज़ारी - उत्पीड़न ; —दार - शासक ; —दारी - हुकूमत, शासन ; —निवाज़ - प्रजा की सहायता या रक्षा करनेवाला; —निवाज़ी - प्रजा की रक्षा ; —परवर - प्रजावत्सल ; —परवरी - प्रजा की रक्षा ; —वारी - एक-एक काश्तकार के साथ।

**रई** - 1. स्त्री० [हिं] मथनी ; गेहूँ का दरदरा आटा ; 2. वि० अनुरक्ता ; सहित ; मिली हुई ; डूबी हुई।

**रईस** - पु० [अ] सरदार ; शाहज़ादा ; उच्च वर्ग का आदमी ; धनी ; शिष्ट ; **यौ०** —उल-बहर - जलसेनापति ; —ख़ुदमुख़्तार - किसीके अधीन न रहनेवाला सरदार ; —ज़ादा - रईस का लड़का ; —ज़ादी - रईस की लड़की।

**रउरे** - सर्व० [देश] आप।

**रऐअत** - स्त्री० [अ] प्रजा।

**रक़बा** - पु० [अ] क्षेत्रफल ; अहाता।

**रकबाहा** - पु० [देश] घोड़ों की एक जाति।

**रक़म** - स्त्री० [अ] धन ; द्रव्य ; अरबी की संख्याएँ ; लेखन ; मुहर ; पूरी संख्या ; प्रकार ; मूल्यवान वस्तु ; मालगुज़ारी ; कशीदा किया धारीदार कपड़ा ; निशान ; ढंग ; **यौ०** —सायर, सिवाय - लगान के अतिरिक्त ज़मीन्दार को प्राप्त होनेवाली आमदनी।

**रक़मी** - 1. वि० [अ] लिखा हुआ ; निशान किया हुआ ; 2. पु० वह किसान जिसके साथ कुछ रियायत की गयी हो।

**रक़ाक़** - 1. पु० [अ] नरम व चौरस ज़मीन ; 2. वि० गरम (दिन)।

**रकान** - स्त्री० [अ] ढंग ; लगाम।

**रकाब** - स्त्री० [अ] घोड़े की ज़ीन में दोनो ओर लटकनेवाला लोहे का पावदान ; बड़ी रकाबी ; अठपहलू प्याला ; **यौ०** —दार - साईस ; बादशाहो के साथ खाना लगाकर चलनेवाला नौकर ; हलवाई ; **यौ०** —धाल - वह चमड़ा जिसमें रकाब लटकती है।

**रक़ाबी** - स्त्री० [हिं] तश्तरी ; साक़ी ; घोड़े की बग़ल में लटकनेवाली तलवार ; ऊँटो पर दमिश्क से लाया जानेवाला एक प्रकार का तेल ; **यौ०** —चेहरा - चौड़ा व गोल मुँह ; —मज़हब - ख़ुशामदी, चाटुकार ; —सामना - बदशकल।

**रक़ीक़** - 1. वि० [अ] पानी के समान द्रव तथा तरल ; मुलायम, नरम ; 2. पु० गुलाम ; **यौ०** —उल-क़ल्ब - नरमदिल।

**रक़ीक़ा** - स्त्री० [अ] बाँदी।

**रक़ीब** - पु० [अ] संरक्षक ; प्रतिस्पर्धी।

**रक़्क़ास** - वि० [अ] नाचनेवाला।

**रक्त** - 1. [सं] लहू ; लाल रंग ; ताँबा; कुंकुम; कमल ; लाल चंदन ; सिंदूर ; इंगुर ; पतंग की लकड़ी ; एक मछलीविशेष ; एक ज़हरीला मेंढक ; 2. वि० अनुरक्त ; रँगा हुआ ; लाल ; विलासी ; शुद्ध ; **यौ०** —आमातिसार - एक रोग जिसमें ख़ून के दस्त आते हैं ; —कंठ - सुरीली आवाज़वाला ; कोयल ; —कंद - मूँगा ; प्याज ; —कंबल - कुमुद ; —कदली - चंपा केला ; —कमल - लाल रंग का कमल ; —कास - एक रोग जिसमें खाँसने पर मुँह से ख़ून निकलता है ; —

कुमुद - कुईं ;—कुष्ठ - एक प्रकार का कुष्ठ रोग ; —कुसुम - कचनार; मदार ; —केशी - लाल रंग के बालोंवाला ; —कैरव - लाल कुमुद ; —कोकनद - लाल कमल ; —क्षय - रक्तस्राव ; —खांडव - खजूर का पेड़ ; —गंधा - अश्वगंधा ;—गर्भा - मेंहदी का पेड़ ; —ग्रीव - कबूतर ; राक्षस; —चंचु - तोता ; —चंदन - लाल चन्दन; —चूर्ण - सिंदूर; —कृमि - रक्त-विकार से पैदा होनेवाला कीड़ा ; —जिह्व - शेर, सिंह ; —तुंड - तोता ; —तुंडक - सीसा ; —दूषण - ख़ून ख़राब करनेवाला ; —दृग - सारस ; कबूतर ; कोयल ; चकोर ; लाल आँखोंवाला ;—धातु - गेरू ; ताँबा ; —नयन - रक्तदृग ; —नाड़ी - दाँतों की जड़ों में होनेवाला एक रोग ; —नेत्र - रक्तदृग ; —पक्ष - गरुड़ ; —पत्र - पिण्डालू ; —पल्लव - अशोक-वृक्ष ; —पात - रक्त गिरना ; ख़ून-ख़राबी, मारकाट ; —पाता - जोंक ; —पाद - बरगद ; तोता ; —पायी - ख़ून पीनेवाला ; खटमल ; —पाषाण - गेरू ; —पिण्डालू - रतालू ; —पित्त - एक रोग जिसमें मुँह, नाक, कान, योनि आदि इंद्रियों से ख़ून गिरता है ; —पुष्प - अनार ; कनेर ; बंधूक ; पुन्नाग ; अड़हुल ; —पुष्पक - पलाश ; सेमल ; —पुष्पा - चंपा केला ; सिंदूरी ; सेमल ; —पूरक - इमली ; —प्रतिश्याय - जुकाम का एक भेद ; —प्रदर - प्रदर रोग का एक भेद जिसमें रक्तस्राव होता है ; —प्रमेह - एक पुरुष-रोग जिसमें ख़ून का-सा दुर्गन्धपूर्ण पेशाब आता है ;—प्रवृत्ति - पित्तप्रकोप से होनेवाला एक रोग ; —फूल - पलाश; —मंजरी - लाल कनेर ; —मस्तक - सारस ; —मुख - रोहू मछली ; —रंगा - मेंहदी ; —रज, रेणु - सिंदूर ; पुन्नाग ; —रोग - एक प्रकार का कुष्ठ ; —लोचन - कबूतर ; —वटी - चेचक ; —वर्ण - बीरबहूटी ; मूँगा ; गोमेद ; —वर्द्धन - बैंगन ; रक्त बढ़ानेवाला ; —वसन - संन्यासी ; —वात - एक वातरोग ;—विस्फोटक - एक रोग जिसमें सारे शरीर पर लाल फफोले पड़ जाते हैं ; —बीज - अनार ; रीठा ; एक राक्षस ; —वृन्ता - शेफालिका ; हरसिंगार ; —शालि - लाल चावल ; —शाल्मलि - लाल फूलोंवाला सेमल ; —शासन - सिंदूर ; —संज्ञक - केसर ; कुंकुम ; —संबंध - वंशगत ऐक्य ; कुल का संबंध ; —सार - लाल चंदन ; खैर ; पतंग ; —स्तंभन - बहते रक्त को रोकने का कार्य ; —स्राव - ख़ून बहना या गिरना ; घोड़े की आँखों का एक रोग ।

**रक्तता** - स्त्री० [सं] लालिमा ।

**रक्तांक** - पु० [सं] मूँगा ।

**रक्तांग** - 1. पु० [सं] केसर ; खटमल ; मंगल ग्रह ; मूँगा ; 2. वि० लाल शरीरवाला ।

**रक्तांबर** - 1. वि० [सं] लाल वस्त्र धारण करनेवाला ; 2. पु० लाल कपड़ा ; संन्यासी ।

**रक्ताकार** - पु० [सं] मूँगा ।

**रक्ताक्ष** - 1. वि० [सं] लाल नेत्रोंवाला ; भयंकर ; 2. पु० भैंस ; रक्तनयन ।

**रक्तातिसार** - पु० [सं] एक अतिसार जिसमें ख़ून के दस्त आते हैं, रक्तआमातिसार ।

**रक्ताभ** - 1. पु० [सं] बीरबहूटी ; 2. वि० लाल ।

**रक्तालु** - पु० [सं] रतालू ।

**रक्तावरोधक** - वि० [सं] ख़ून को बहने से रोकनेवाला ।

**रक्ति** - स्त्री० [सं] प्रेम ; रत्ती बराबर तौल ।

**रक्तिम** - वि० [स] लालिमायुक्त ।

**रक्तिमा** - स्त्री० [सं] लाली ।

**रक्तोत्पल** - पु० [सं] लाल कमल ; सेमल ।

**रक्तोपदंश** - पु० [सं] आतशक रोग ।

**रक्ष** - पु० [सं] रक्षक ; रक्षा ; लाक्षा ; छप्पय छंद का एक उपभेद ; **यौ०** —पाल, पालक - पहरेदार ।

**रक्षक** - पु० [सं] पहरेदार ; रक्षा करनेवाला ; सुरक्षित रखनेवाला ।

**रक्षण** - पु० [सं] रक्षा करना ; पालन-पोषण ; सुरक्षित रखना ; **यौ०** —कर्ता - रक्षक ।

**रक्षणीय** - वि० [सं] रखने योग्य ; रक्षण करने योग्य ।

**रक्षस** - पु० [हिं] राक्षस ।

**रक्षा** - स्त्री० [सं] रखवाली ; राख ; सुरक्षा ; कपास ; विशेष अवसर पर भाई की कलाई पर बहिन द्वारा बाँधा जानेवाला रेशम या कपास का सूत, राखी ; **यौ०** —गृह - चौकी ; सूतिकागृह ; विश्राम-भवन ; —पाल, पुरुष - पहरेदार ; —बंधन - श्रावणी पूर्णिमा का एक त्योहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है ।

**रक्षाधिकृत** - पु० [सं] नगर-रक्षाशासन का अधिकारी ।

**रक्षिक** - पु० [सं] रक्षक ; पहरेदार ।

**रक्षिका** - स्त्री० [स] रक्षा ; रक्षाकार्य के लिए नियुक्त स्त्री ।

**रक्षित** - वि० [सं] प्रतिपालित ; सुरक्षित ; रक्षा किया हुआ ।

**रक्षिता** - 1. वि० [सं] बचायी हुई ; रक्षा की हुई ; 2. पु० रक्षा करनेवाला ।

**रक्ष्य** - वि० [सं] रक्षा करने योग्य ; **यौ०** —माण - रक्षित होनेवाला ; रखा जानेवाला ।

**रक़्स** - पु० [अ] नाच, मुजरा ; **यौ०**—चारचारा - एक प्रकार का नाच ; —ताऊस - मोर का नाच ; घुटनो के बल किया जानेवाला एक नाचविशेष ; —दरख़्ताँ - आँधी से पेड़-पत्तियों का ज़ोर से हिलना ; —फ़ानूस - प्रकाशित मीनार का चमकना ; —बिस्मिल - ज़िबह किये हुए जानवर का फड़कना ।

**रख, रखा** - स्त्री० [हिं] पशुओ के चरने के लिए सुरक्षित भूमि, चरागाह ।

**रखना** - स० [हिं] टिकाना ; ठहराना ; धरना ; निर्वाह करना ; बचाना ; एकत्र करना ; सौंपना ; रेहन ; अपने अधिकार में करना ; नियुक्त करना ; रोक लेना ।

**रखनी** - स्त्री० [हिं] रखैल, उपपत्नी ।

**रख़्ल** - पु० [फ़ा] छेद ; हड्डी का टूटना ; तलवार का निशान; फ़साद ।

**रखवाई** - स्त्री० [हिं] चौकीदारी ; चौकीदारी की मज़दूरी ; रखने की क्रिया या ढंग ।

**रखवार, रखवाला** - पु० [हिं] चौकीदार ; रक्षा करनेवाला ।

**रखवाली** - स्त्री० [हिं] सुरक्षा ; रक्षाकार्य ।

**रखशी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का मद्य-विशेष जिसे पहाड़ी लोग पीते हैं ।

**रखान** - स्त्री० [हिं] चराई की भूमि ।

**रखिया** - 1. वि० [हिं] रक्षक ; 2. स्त्री० राखी ।

**रखियाना** - स० [हिं] राख से माँजना (बर्तन आदि) ।

**रखेड़िया** - पु० [हिं] ढोंगी साधु ।

**रखेली, रखैल** - स्त्री० [हिं] उपपत्नी ।

**रखैया** - पु० [हिं] रखनेवाला ; रक्षा करनेवाला ।

**रखौंड़ी** - स्त्री० [हिं] राखी ।

**रखौंत, रखौना** - पु० [हिं] चरागाह ।

**रख़्श** - पु० [फ़ा] सफ़ेद-लाल मिश्रित रंग ; घोड़ा ।

**रग** - स्त्री० [फ़ा] नस ; आँख का डोरा ; फूल या पत्ते का रेशा ; दूध पिलानेवाली का प्रभाव ; तागा ; बुरी आदत ; हठ ; **यौ०** —ज़न - दूषित रक्त निकालनेवाला ; —जाँ - वह बड़ी रग जिससे सभी रगो में ख़ून पहुँचता है ; —दानी - धूर्तता ; —दार - बुरी आदतवाला ; रेशेदार ; —रेशा - असल ; शरीर के भीतरी अंग ; पत्तियो की नसें ; **मु०** — उतरना - आँत उतरना ; क्रोध उतरना ; — चढ़ना - नस का अपनी जगह से हटना ; क्रोध आना ; —पहचानना - रहस्य जानना ; —फड़कना - अनिष्ट की आशंका होना ; —में दौड़ जाना - असर करना ; —रग में - सारे शरीर में ; — रग से वाकिफ़ होना - पूरी तरह से जानना ।

**रगड़** - स्त्री० [हिं] घर्षण ; घर्षण से होनेवाला चिन्ह ; झगड़ा ; कड़ा परिश्रम ; द्वेष ; हठ ; ढोल का जल्द-जल्द बजना; **मु०** —खाना - धक्के खाना ; — लगना - छिल जाना ।

**रगड़ना** - 1. स० [हिं] घिसना ; पीसना ; कोई काम बार-बार करना ; परेशान करना ; 2. अ० विकास न करना ; अत्यधिक परिश्रम करना ।

**रगड़ा** - पु० [हिं] घर्षण ; झगड़ा ; अति परिश्रम ; **यौ०** —**झगड़ा** - लड़ाई-झगड़ा ।

**रगड़ी** - वि० [हिं] झगड़ालू ।

**रग़बत** - स्त्री० [अ] इच्छा, ख्वाहिश ; रुचि ।

**रगाना** - 1. अ० [हिं] चुप या शांत होना ; 2. स० चुप या शांत कराना ।

**रगीला** - वि० [हिं] हठी ।

**रगेदना** - स० [हिं] भगाना ।

**रग्गा** - 1. पु० [हिं] दक्षिणी पहाड़ों पर होनेवाला एक प्रकार का मोटा अन्न ; 2. स्त्री० अधिक वर्षा के बाद होनेवाली धूप ।

**रचक** - पु० [सं] रचयिता ।

**रचना** - 1. स्त्री० [सं] निर्माण ; प्रबध ; नव सृष्टि ; निर्माण की प्रक्रिया ; निर्मित वस्तु ; कौशल ; उद्यम ; चमत्कारपूर्ण गद्य या पद्य ; विन्यास ; सँवारना ; 2. स० [हिं] निर्माण करना ; निश्चित करना ; ग्रंथ आदि लिखना ; उत्पन्न करना ; आयोजन करना ; जाल रचना, श्रृंगार करना ; सजाना ; 3. अ० आसक्त या अनुरक्त होना ।

**रचयिता** - 1. वि० [सं] निर्माता ; 2. पु० ग्रंथकार ।

**रचाना** - 1. स० [हिं] आयोजन या समारोह करना, 2. अ० मेंहदी आदि से हाथ-पैर रँगाना ।

**रचित** - वि० [सं] निर्मित ।

**रज़** - 1. पु० [फ़ा] अंगूर ; 2. वि० रंगनेवाला ।

**रज** - 1. पु० [सं] स्त्रियों का मासिक रक्तस्राव ; तीन गुणो में से दूसरा (सांख्य योग) ; जल ; लोक ; बादल ; आकाश ; भुवन ; भाप ; पाप ; खेत ; 2. स्त्री० धूल ; पराग ; प्रकाश ; रात ; **यौ०**—कण - धूलिकण ।

**रजक** - पु० [सं] धोबी ।

**रजत** - 1. वि० [सं] धवल ; चाँदी का बना हुआ ; 2. पु० चाँदी ; सोना ; सफ़ेद रंग ; पहाड़ ; रुधिर ; मुक्ताहार ; हाथीदाँत ; **यौ०**—कुंभ - चाँदी का कलश ; —कूट - मलय पर्वत की चोटी ;

—द्युति - हनुमान ; —पर्वत - चाँदी का पहाड़ ; —पात्र, भाजन - चाँदी का बर्तन ; — मय - चाँदी का बना हुआ ।

**रजन** - 1. वि० [स] रंगनेवाला ; 2. पु० किरण ; रंगने का काम ।

**रजना** - 1. अ० [हि] रँगा जाना ; 2. स० रंगना ; 3. स्त्री० सगीत की एक मूर्छना ।

**रजनी** - स्त्री [सं] रात ; नील ; एक पहाड़ी लता ; हलदी ; लाक्षा ; **यौ०**—कर - चंद्रमा ; —गंधा - एक सुगंधित पुष्पोवाला वृक्ष ; —चर - चंद्रमा ; राक्षस ; —जल - ओस ; नीहार ; पाला ; —पति - चंद्रमा ; —मुख - सायंकाल ।

**रजनीश** - पु० [सं] चंद्रमा ।

**रजपूत** - पु० [हिं] राजपूत ।

**रजपूती** - स्त्री० [हिं] क्षत्रियत्व ; वीरता ।

**रजब** - पु० [अ] अरबी और मुसलमानी साल का सातवाँ चांद्र मास ।

**रजबहा** - पु० [हिं] नदी या नहर से निकाला गया बड़ा नाला ।

**रजवंती, रजवती** - वि० [हिं] रजस्वला ।

**रजवाड़ा** - पु० [हिं] देशी रियासत ; राजा ।

**रजस्वला** - वि० [सं] ऋतुमती ।

**रज़ा** - स्त्री० [अ] इज़ाजत ; ख़ुशी ; इच्छा ; छुट्टी ; स्वीकृति ; **यौ०**—कार - स्वयं-सेवक ; ख़ुश ; —जोई - दूसरे को प्रसन्न करने का प्रयत्न ; —पट्टी - वर्ष की छुट्टियो की सूची ; —मंद - राज़ी ; —मंदी - स्वीकृति ; राज़ी-ख़ुशी ।

**रजाइस, रजायस, रजायसु** - स्त्री० [हिं] आज्ञा।

**रजाई** - स्त्री० [हिं] राजा होने का भाव ।

**रज़ाई** - स्त्री० [फ़ा] रंगीन कपड़े की रूईदार दुलाई ; छोटा लिहाफ़ ।

**रजाना** - स० [हिं] राज्यसुख का भोग कराना ।

**रजिया** - स्त्री० [हिं] डेढ़ सेर का एक मान ।

**रज़ील** - वि० [अ] पाजी ; छोटी जाति का ।

**रजोगुण** - पु० [स] प्रकृति के तीन गुणो में से एक जिसके कारण भोग आदि की रुचि पैदा होती है ।

**रजोदर्शन, रजोधर्म** - पु० [सं] स्त्रियो का मासिक धर्म ।

**रज़्ज़ाक** - 1. वि० [अ] रोज़ी पहुँचानेवाला ; 2. पु० ईश्वर ।

**रज्जु** - स्त्री० [सं] रस्सी ; बागडोर ; स्त्रियो के सिर की चोटी ।

**रज़्म** - स्त्री० [अ] युद्ध ।

**रझाना** - पु० [हिं] रँगे कपड़ो को निचोड़ने का बर्तन ।

**रटंत** - स्त्री० [हिं] रटने की क्रिया या भाव ।

**रट** - स्त्री० [हिं] किसी शब्द का बार-बार उच्चारण करना ; कौओ की बोली ।

**रटन** - 1. स्त्री० [हिं] रटने की क्रिया या भाव ; 2. पु० ज़ोर-ज़ोर से कहना या बोलना ।

**रटना** - 1. स० [हिं] कंठस्थ करने के लिए किसी शब्द, पद या वाक्य की बार-बार आवृत्ति करना ; 2. अ० बजना ; बार-बार शब्द करना ।

**रढ़िया** - स्त्री० [हिं] एक साधारण देशी कपास ।

**रण** - पु० [सं] युद्ध ; गति ; रमण ; शब्द ; **यौ०** —कोष - युद्धकोष; —क्षेत्र, खेत - युद्ध का स्थान ; — गोचर - युद्धलिप्त ; —छोड़ - कृष्ण; —तूर्य, दुंदुभी, भेरी - युद्ध का वाद्यविशेष ; — पंडित - रण में कुशल ; —प्रिय - युद्धप्रेमी ; —भूमि - युद्धस्थल ; —मत्त - हाथी ; —मुख - संग्राम का मुख्य भाग ; —रंक - हाथी के दोनो दाँतो के बीच की जगह ; —रंग - युद्धक्षेत्र ; युद्ध ; लड़ाई का उत्साह ; —रण - व्याकुलता ; प्रबल

कामना ; मच्छर ; —लक्ष्मी - विजय-लक्ष्मी ; —वाद्य - युद्ध का बाजा ;—शिक्षा - युद्ध की विद्या या कला की शिक्षा ; —संकुल - घनघोर युद्ध ; —सज्जा - युद्ध की तैयारी ; —सहाय - युद्ध में सहायक ; —सिंघा - तुरही ; —स्थल - रणक्षेत्र ।

**रणत्कार** - पु० [सं] झनझनाहट , गुंजन ।

**रणेश** - पु० [स] शिव ; विष्णु ।

**रत** - 1. वि० [स] अनुरक्त ; लीन ; 2. पु० संभोग ; प्रेम ।

**रतजगा** - पु० [हिं] रात्रिजागरण ।

**रतन** - पु० [हिं] रत्न ; यौ० —जोत - मणिविशेष ; एक औषधोपयोगी पौधा ।

**रतनाकर** - पु० [हिं] रत्नाकर, सागर ।

**रतनार, रतनारा** - वि० [हिं] किंचित् लाल ।

**रतनारी** - 1. पु० [हिं] एक धानविशेष ; 2. स्त्री० लाली ।

**रतमुँहाँ** - 1. वि० [हिं] लाल मुँहवाला ; 2. पु० बंदर ।

**रतवाँस** - पु० [हिं] रात का चारा (हाथी आदि का) ।

**रतवाई** - स्त्री० [हिं] ईख का कोल्हू चलने पर पहले दिन रस बाँटने का चलन ।

**रतशायी** - पु० [हिं] कुत्ता ।

**रताना** - 1. अ० [हि] रत होना ; 2. स० अपने में रत करना ।

**रतायनी** - स्त्री० [सं] वेश्या ।

**रतालु, रतालू** - पु० [हिं] पिण्डालू ; एक लाल कंदविशेष ।

**रति** - स्त्री० [सं] प्रीति ; आसक्ति ; सौन्दर्य ; कामदेव की पत्नी ; शृंगार रस का स्थायी भाव ; वह कर्म जिसके उदय से मन प्रसन्न हो ; रहस्य ; सौभाग्य ; संभोग ; यौ० —कर - आनंदवर्धक ; —कलह - प्रणयकलह ; —वंत - सुंदर ।

**रतिगर** - अव्य० [हिं] सवेरे, तड़के ।

**रती** - 1. स्त्री० [हिं] कामदेव की पत्नी ; शोभा ; आठ चावल का एक मान ; घुँघची ; 2. अव्य० अल्प, थोड़ा ।

**रतुआ** - पु० [हिं] एक घास ।

**रतून** - पु० [हि] गन्ना ।

**रतौंधी** - स्त्री० [हि] एक नेत्ररोग जिसमें रोगी को रात के समय कुछ दिखायी नहीं देता ।

**रत्ती** - स्त्री० [हिं] सौन्दर्य ; ढाई जौ या आठ चावल का एक परिमाण ।

**रत्थी** - स्त्री० [हिं] अरथी, टिकठी ।

**रत्न** - पु० [स] हीरा, पन्ना, मोती, माणिक्य, लाल, जवाहर, नगीना आदि ; अपने वर्ग या जाति में उत्तम वस्तु ; यौ०—कर्णिका - कानो का एक जड़ाऊ आभूषण ; —कूट - एक पर्वत ; —गर्भा - पृथ्वी ; —गृह - स्तूप के मध्य की कोठरी ; —त्रय - सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र ; —द्रुम - मूँगा ; —धर - धनिक ; —नाभ - विष्णु ; —निचय - रत्नो की राशि ; —निधि - समुद्र ; सुमेरुपर्वत ; खंजन पक्षी ;—परीक्षक, पारखी - रत्न पहचाननेवाला ; जौहरी ; —माला - मणियों की माला, हार ; —मुख्य - हीरा ;—सू, सूति - पृथ्वी ।

**रत्नाकर** - पु० [सं] समुद्र ; मणियो के निकलने का स्थान ; रत्नसमूह ।

**रत्नाभूषण** - पु० [सं] जड़ाऊ गहना ।

**रत्नावली** - स्त्री० [सं] मणियों की माला ; एक अर्थालंकार ; एक प्रकार का हार ।

**रथ** - पु० [सं] वाहन, गाड़ी ; पैर ; शरीर ; अंग ; यौ०—कार - रथ बनानेवाला ; —कुटुंबिक - सारथी ; —क्षोभ - रथ का हिलना-डुलना ; —चरण, पाद - रथ

का पहिया ; चकवा ; —चर्या - रथ से यात्रा करना ; —महोत्सव - रथयात्रा का उत्सव ; —वाह - सारथी ; घोड़ा ; —वाहक - सारथी ; —वाहन - रथ के पहियों का ऊपरवाला ढाँचा ; —शाला - गाड़ीख़ाना ; —विद्या, शास्त्र - रथ चलाने की विद्या ।

**रथांग** - पु० [सं] रथ का पहिया ; चकवा ; **यौ०**—वर्ती - चक्रवर्ती, सम्राट ।

**रथाक्ष** - पु० [सं] रथ का धुरा ; पहिया ; चार अंगुल का एक प्राचीन परिमाण ।

**रथाग्र** - पु० [सं] श्रेष्ठतम योद्धा ।

**रथिक, रथी** - पु० [स] रथ पर चलनेवाला ।

**रथोत्सव** - पु० [सं] रथयात्रा का उत्सव ।

**रथ्य** - पु० [सं] पहिया ; रथ में जुतनेवाला घोड़ा ; सारथी ।

**रथ्या** - स्त्री० [सं] रथ का मार्ग ; सड़क ; चौराहा ; रथों का समूह ; नाली ।

**रद** - 1. पु० [सं] दाँत ; **यौ०**—च्छद, पट - ओष्ठ ; —छद - दाँतों का चिन्ह ; [अ] ख़राब ; तुच्छ ; फ़ीका ; **यौ०** —बदल - परिवर्तन ।

**रदन** - पु० [सं] दाँत ।

**रदीफ़** - पु० [अ] घोड़े या ऊँट पर पीछे बैठनेवाला आदमी ; पीछे की ओर की सेना ; **यौ०**—वार - अक्षर क्रम से ।

**रद्द** - 1. वि० [अ] काटा या छाँटा हुआ ; बदला हुआ ; निकम्मा ; 2. पु० झुठलाना, मिथ्या सिद्ध करना ; न मानना ; 3. स्त्री० वमन ; **यौ०** —बदल - परिवर्तन ।

**रद्दा** - पु० [हिं] तह ; चारो ओर एक ही समय उठायी जानेवाली दीवार का अंश-विशेष ; मिठाइयों का चुनाव ; चमड़े की मोहरी ; **मु०**—जमाना - आरोप करना ; —रखना - इलज़ाम रखना ; खाने पर खाना ।

**रद्दी** - 1. वि० [फ़ा] बेकार ; 2. स्त्री० बेकार फेंके हुए काग़ज़ आदि ; **यौ०**—ख़ाना - ख़राब चीज़ें फेंकने या रखने का स्थान ।

**रधार** - स्त्री० [हिं] दोहर ; खोल ।

**रनकना** - अ० [हिं] मंद-मंद शब्द होना (घुँघरू आदि का) ।

**रनवास, रनिवास** - पु० [हिं] अंतःपुर ; रानियों का महल ।

**रनित** - वि० [हिं] बजता हुआ ।

**रपट** - स्त्री० [हिं] अभ्यास ; फिसलन ; ढाल ; दौड़, सूचना ।

**रपटना** - 1. अ० [हिं] फिसलना ; बिना रुके जल्दी-जल्दी चलना ; 2. स० अविलंब कर डालना ।

**रपट्टा** - पु० [हिं] फिसलन ; दौड़-धूप ।

**रफ** वि० [अ] जल्दी में किया हुआ ; कच्चा ; नमूने के तौर पर बना हुआ ; खुरदरा ।

**रफ़ते-रफ़ते** - अव्य० [हिं] धीरे-धीरे ।

**रफ़री** - पु० [अंग्रे] किसी मामले या खेल आदि में हार-जीत का निर्णय करनेवाला व्यक्ति ।

**रफ़ा** - पु० [अ] उठाना ; तरक़्क़ी ; दूर करना ; निकालना ; निर्णीत बात ; पूरा करना ; फ़ैसला करना ; समाप्त करना ; **यौ०**—दफ़ा - ख़तम करना ; पीछा छुड़ाना ; फ़ैसला ।

**रफ़ाक़त** - स्त्री० [अ] मेलजोल ; वफ़ादारी ; संग ; एकता ।

**रफ़ात** - स्त्री० [अ] ऊँचाई ; पदोन्नति ।

**रफ़ीअ** - वि० [अ] ऊँचा; बुलंद ।

**रफ़ीक** - पु० [अ०] संगी-साथी ; मुसाहिब ; सहकारी ; साझीदार ।

**रफ़ीदा** - पु० [अ] इकट्ठे सिले हुए पुराने कपड़े ; गद्दा ; गोल व बेढंगी पगड़ी ; ज़ीन कसने की गद्दी ।

**रफ़ू** - पु० [अ] जाली लगाना ; **यौ०** —गर - रफ़ू करनेवाला ; —गरी - रफ़ू करने का काम या पेशा ।

**रफ़्त** - स्त्री० [फ़ा] रवानगी ।

**रफ़्तनी** - स्त्री० [फ़ा] जाना ; माल की निकासी ।

**रफ़्तार** - स्त्री० [फ़ा] गति ; चलने का ढंग ; **यौ०** —गुफ़्तार - चाल-चलन , —ज़माना - ज़माने की गर्दिश ।

**रफ़्ता-रफ़्ता** - अव्य० [फ़ा] धीरे-धीरे ।

**रब** - पु० [अ] ईश्वर ; **यौ०** —उल-रबाब - पालकों का प्रतिपालक ।

**रबड़** - 1. पु० [हि] एक वृक्षविशेष के रस को पकाकर बनाया गया लचीला पदार्थ ; रबड़ की बनी हुई चीज़ , एक वृक्ष ; 2. स्त्री० गहरा श्रम ; घुमाव ; चक्कर ; रगड़ ; व्यर्थ की परेशानी ; **यौ०** —छंद - मात्राओं आदि के बंधन से मुक्त छंद ।

**रबड़ना** - 1. स० [हिं] घुमाना ; फेरना ; 2. अ० घूमना ।

**रबड़ी** - स्त्री० [हिं] औटाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी मिश्रित दूध, बसौंधी ।

**रबदा** - पु० [हिं] कीचड़ ; बार-बार जाने-आने से होनेवाला श्रम ; **मु०** —पड़ना - ज़ोर की वर्षा होना ।

**रबाना** - पु० [हिं] मज़ीरों सहित एक छोटा डफ़ ।

**रबाब** - पु० [अ] एक तरह की सारंगी ।

**रबाबिया** - पु० [हिं] रबाब बजानेवाला ।

**रबी** - पु० [अ] वसंत ऋतु में काटी जानेवाली फ़सल ; वसंत ; **यौ०** —उल-आख़िर, सानी - मुसलमानों के वर्ष का चौथा महीना ; —उल-औवल - मुसलमानों के वर्ष का तीसरा महीना ।

**रब्त** - पु० [अ] अभ्यास ; जोड़ना ; मेल-जोल ; संबंध ; **यौ०**—ज़ब्त - राह-रस्म ; आमद-रफ़्त ; ज़ब्त करना ।

**रब्बा** - पु० [फ़ा] तोप ले जानेवाली गाड़ी ; रथ ।

**रभस** - 1. पु० [सं] आवेश ; औत्सुक्य, अनुताप ; प्रबल कामना ; क्रोध ; रहस्य ; पूर्वापर का अविचार ; हर्ष , 2. वि० वेगयुक्त ; हर्षयुक्त ।

**रम** - 1. वि० [स] आनंदकारक ; सुंदर ; 2. पु० आनंद ; कामदेव ; पति ; प्रेमी ; रमण ; लाल अशोक ।

**रमक़** - 1. वि० [अ] बहुत थोड़ा ; 2. स्त्री० आख़िरी साँस ; नशे का प्रभाव, थोड़ा-सा अंश ।

**रमक** - 1 पु० [स] प्रेमी ; उपपति ; 2. स्त्री० [हिं] लहर ; पेंग ।

**रमकजरा** - पु० [हिं] भादों में पकनेवाला एक मोटा धान ।

**रमकना** - अ० [हि] हिंडोले पर झूलना ; झूमते-इतराते हुए चलना ।

**रमचकरा** - पु० [हिं] बेसन की मोटी रोटी ।

**रमज़ान** - पु० [अ] मुसलमानी वर्ष का नौवाँ महीना ।

**रमज़ानी** - 1. वि० [अ] रमज़ान-संबंधी ; रोज़े का ; रमज़ान में उत्पन्न ; 2. पु० मुसलमानी नाम ।

**रमझोला** - पु० [हिं] नूपुर ।

**रमठ** - पु० [सं] हींग ।

**रमण** - 1. वि० [सं] रमनेवाला ; प्रिय, मनोहर ; 2. पु० क्रीड़ा ; घूमना ; पति ; गधा ; अंडकोश ; एक वन ; अरुण ; कामदेव ; संभोग ।

**रमणी** - स्त्री० [सं] स्त्री ; सुंदर स्त्री ; एक गंध-द्रव्य ।

**रमणीक** - वि० [हिं] मनोहर ।

**रमणीय** - वि० [सं] सुंदर ।

**रमणीयता** - स्त्री० [स] मनोहरता ; क्षण-क्षण में नया रूप धारण करनेवाला ; सौन्दर्य ।

**रमता** - वि० [हिं] घुमक्कड़ ; **यौ०**—योगी - घुमक्कड़ साधु ।

**रमद** - पु० [अ] आँखो का एक रोग जिसमें आँखे लाल हो जाती हैं ।

**रमना** - 1. अ० [हिं] विहार करना ; अनुरक्त होना ; घूमना-फिरना ; रति-क्रीड़ा ; दिल बहलाना ; समाना ; सैर करना ; 2. पु० चरागाह ; बाग़ ; घेरा ; सुंदर ।

**रमल** - पु० [अ] पासे फेंककर शुभाशुभ फल जानने का एक प्रकार का फलित ज्योतिष ।

**रमा** - स्त्री० [सं] लक्ष्मी ; पत्नी ; वैभव, संपत्ति ; सौभाग्य ; शोभा ; **यौ०**—कांत, धव, पति - विष्णु ।

**रमाना** - स० [हिं] लगाना ; जोड़ना ; पोतना ; अनुरक्त करना ; अनुकूल बनाना ; मोहित करना , ठहराना ।

**रमाली** - पु० [देश] एक बारीक़ चावल ।

**रमित** - वि० [हिं] मुग्ध ।

**रमीदगी** - स्त्री० [फ़ा] घृणा ।

**रमीम** - वि० [अ] पुराना और सड़ा-गला ।

**रमूज़** - स्त्री० [अ] 'रम्ज़' का बहु० ।

**रमेश, रमेश्वर** - पु० [स] विष्णु ।

**रमैती** - स्त्री० [देश] काम लेकर बदले में काम करने की प्रथा ; इस प्रकार के काम में व्यतीत होनेवाला दिन ।

**रमैनी** - स्त्री० [हिं] कबीर के बीजक का दोहे-चौपाइयो से युक्त भाग ।

**रमैया** - पु० [हिं] राम ; ईश्वर ।

**रम्ज़** - स्त्री० [अ] इशारा ; सूक्ष्म बात ; रहस्य ; व्यंग्य ; ध्वनि ।

**रम्माज़** - वि० [अ] संकेत से बात करने-वाला ; छायावादी ।

**रम्माल** - पु० [अ] रमल फेंकनेवाला ।

**रम्य** - 1. वि० [सं] मनोहर ; मनोरम ; 2. पु० चंपा-वृक्ष ; वायु के सात भेदों में से एक ; परवल की जड़ ; वीर्य ।

**रम्या** - स्त्री० [सं] रात ; गंगा नदी ; स्थल-पद्मिनी ।

**रम्हाना** - स० [हि] रँभाना ।

**रय** - पु० [सं] वेग ; प्रवाह ; [हिं] धूल ।

**रयनि** - स्त्री० [हिं] रात, रजनी ।

**रर** - स्त्री० [अनु] रट, रटन ।

**ररक** - स्त्री० [अनु] ररकने का भाव ; कसक ; कराह ।

**ररकना** - अ० [हिं] पीड़ा देना ।

**रलना** - अ० [हिं] एक में मिलना ; **मु०** —मिलना - घुलना-मिलना ।'

**रली** - स्त्री० [हिं] क्रीड़ा ; प्रसन्नता ; एक प्रकार का अन्न ।

**रव** - पु० [सं] ध्वनि ; शोर ; गुंजार ; [हिं] सूर्य ; जहाज़ की गति ।

**रवकना** - अ० [हिं] झपटना ; उछलना ।

**रवण** - 1. पु० [स] रव, कोयल ; ऊँट ; विदूषक ; काँसा ; 2. वि० शब्द करता हुआ ; गरम ; चंचल ।

**रवन्ना** - पु० [हिं] रवाना होने या राहदारी का प्रमाणपत्र ; वह कागज़ जिसपर रवाना किये हुए माल का विवरण हो ; घरेलू काम-काज करनेवाला ड्योढ़ीदार ।

**रवाँ** - वि० [फ़ा] प्रवाहित ; ज़ारी ; अभ्यस्त ; प्रचलित ; रवाना ।

**रवाँस** - पु० [हिं] बोड़े या लोबिये की जाति की सब्ज़ी का पौधा ।

**रवा** - 1. पु० [हिं] सूजी ; कण या दाना ; बारूद का दाना ; घुँघरू का छर्रा ; **यौ०**—दार - दानेदार ; —भर - बहुत थोड़ा ; 2. वि० [फ़ा] उचित ; प्रचलित ; समाप्त करनेवाला ; **यौ०**—दार - हितैषी ; संबंध रखनेवाला ।

**रवाज** - पु० [अ] प्रथा ।

**रवानगी** - स्त्री० [फ़ा] प्रयाण ; प्रस्थान ।
**रवाना** - वि० [फा] प्रस्थित ; भेजा हुआ ।
**रवानी** - स्त्री० [फ़ा] प्रवाह ; तेज़ी ।
**रवायत** - स्त्री० [अ] कहावत ; कहानी ।
**रवारवी** - स्त्री० [हिं] जल्दी ; घबराहट ; हलचल ।
**रवि** - पु० [सं] सूर्य ; बारह की संख्या ; लाल अशोक ; अग्नि ; आक ; सरदार ; यौ०—कर - सूर्यकिरण ; —कुल - सूर्यवंश ; —चक्र - सूर्य का मंडल ; सूर्य के रथ का पहिया ; —तनया, तनुजा - यमुना ; —बिंब - सूर्य का मंडल ; माणिक्य ; —मंडल - सूर्य के चारो ओर दिखायी देनेवाला लाल मंडल ; सूर्य का बिंब ; —वार, वासर - इतवार ; —वंश - सूर्यवंश ; —सारथी - अरुण ।
**रविश** - स्त्री० [फ़ा] मेंड़ ; चाल ; ढंग ; रस्म ; चलन ; क़ानून ।
**रवैयत, रवैय्यत** - स्त्री० [अ] दर्शन ; दिखायी देना ।
**रवैया, रवैय्या** - पु० [फ़ा] चाल-चलन ; रंग-ढंग ।
**रशना** - स्त्री० [सं] करधनी ; जिह्वा ; रस्सी ; रश्मि ; लगाम ।
**रशीद** - वि० [अ] शिक्षित और सभ्य ; उपदेश द्वारा सीधे मार्ग पर लाया हुआ ।
**रश्क** - पु० [फ़ा] डाह, ईर्ष्या ।
**रश्मि** - स्त्री० [सं] किरण ; घोड़े की लगाम ; रस्सी ; बरौनी ।
**रस** - 1. पु० [सं] स्वाद, रसनेंद्रिय द्वारा वस्तुओं की मधुरता आदि का ज्ञान ; तत्व ; नौ की संख्या ; तरल पदार्थ ; जल ; प्रेम ; उमंग ; अमृत ; शरबत ; दूध ; केलि ; यौ० —कर्म - पारे द्वारा रस तैयार करने की विधि ;—केलि - क्रीड़ा ; हँसी ; —खीर - मीठा भात ; —गुल्ला - छेने से बनायी जानेवाली एक मिठाई ; —छन्ना - ईख का रस छानने की छलनी ; —ज्ञ - रस का ज्ञाता ; निपुण ; काव्यमर्मज्ञ ; —ज्येष्ठ - शृंगार रस ; मीठा रस ; —तेज - रुधिर; — त्याग - घी या दूध आदि स्निग्ध पदार्थों का नियमपूर्वक त्याग ; —दार - रसवाला ; स्वादिष्ट ; शोरबेदार ; —धातु - शरीर की सात धातुओं में से एक ; पारा ; —धेनु - दान के निमित्त बनायी हुई गुड़ की गाय ; —नायक - पारा ; शिव ; —पाकज - गुड़ ; चीनी ; —पाचक - रसोइया ; —प्रबंध - नाटक ; प्रबन्धकाव्य ; —फल - आँवला ; नारियल ; —भरी - एक फल, मकोय ; —भस्म - पारे का भस्म ; —भीना - आनंद में मग्न ; तर ; —मैत्री - दो रसों का उपयुक्त मेल ; —राज - शृंगार रस ; पारा ; एक औषधि ; —वाद - रसालाप, आनंद की बातचीत; छेड़छाड़; झगड़ा; बकवाद; —वाहिनी - भोजन से बने रस को फैलानेवाली नाड़ी ; —विरोध - रसों का अनुचित मेल (जैसे, तीता और मीठा) ; एक पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति ; —शास्त्र - रसायन-शास्त्र ; —शोधन - सुहागा ; पारे को शुद्ध करना ; —सार - मधु ; —सिद्ध - रस की अभिव्यक्ति आदि में कुशल ; 2. वि० [फ़ा] पहुँचनेवाला ; छूनेवाला ; स्थित होनेवाला ।
**रसद** - पु० [फ़ा] अनाज़ या खाने का सामान ; सेना के लिए खाद्यसामग्री ; भत्ता ; हिस्सा ।
**रसना** - 1. स्त्री० [सं] जीभ ; रसस्वाद (न्याय) ; एक औषधि ; करधनी ; रस्सी ; 2. अ० [हिं] रसमग्न होना ;

पूर्ण होना; तन्मय होना; प्रफुल्ल होना; 3. स०-टपकाना।

**रसनेन्द्रिय** - स्त्री० [सं] जीभ।

**रसरस** - अव्य० [हिं] धीरे-धीरे।

**रसवंत** - 1. वि० [हिं] रसीला; 2. पु० प्रेमी; रसिक।

**रसवंती** - स्त्री० [हिं] रसौत।

**रसवती** - 1. स्त्री० [सं] रसोईघर; 2. वि० रसीली।

**रसवर** - पु० [हिं] नाव के छेदो को भरने का मसाला।

**रसाँ, रसा** - वि० [फ़ा] पहुँचानेवाला।

**रसांजन** - पु० [सं] रसौत।

**रसा** - 1. स्त्री० [सं] पृथ्वी; जिह्वा; अंगूर; आम; नदी; कँगनी; मैदा; नदी; रसातल; **यौ०** —खन - मुर्गा; —तल - पृथ्वी के नीचे के सात लोको में से छठा; —पायी - जीभ से पानी पीनेवाला; कुत्ता; **मु०** —पहुँचाना - मटियामेट करना; 2. पु० [हिं] शोरबा, झोल; **यौ०** —दार - शोरबेदार।

**रसाई** - स्त्री० [फ़ा] दाख़िला; पहुँच।

**रसाधिका** - स्त्री० [सं] किसमिस।

**रसाध्यक्ष** - पु० [सं] मादक द्रव्यो की जाँच-पड़ताल तथा विक्रय की व्यवस्था करने-वाला राजकर्मचारी।

**रसाभास** - पु० [सं] किसी रसका अनुचित प्रकरण या स्थान पर वर्णन; एक अर्थालंकार।

**रसायन** - पु० [सं] पदार्थों का तत्त्वगत ज्ञान; जरा-व्याधिनाशक औषधि; ताँबे से सोना बनाने का कल्पित योग; कमर; मट्ठा; विष; गरुड़; **यौ०** —शास्त्र - पदार्थों में मिलनेवाले तत्त्वो का विवेचन करनेवाला शास्त्र।

**रसायनी** - स्त्री० [सं] बुढ़ापे को दूर करने-वाली औषधि; अमृतसंजीविनी; मखौल; शंखपुष्पी; नाड़ी।

**रसार** - 1. वि०, 2. पु० [हिं] रसाल।

**रसाल** - 1. वि० [सं] मीठा; रसीला; शुद्ध; सुंदर; स्वादिष्ठ; 2. पु० आम; सुंदर तृण; ईख; कटहल; गेहूँ; लोबान; कर; **यौ०** —शर्करा - ईख के रस की चीनी।

**रसालय** - पु० [सं] रसशाला; आम का पेड़; आमोद-प्रमोद का स्थान।

**रसाला** - स्त्री० [सं] श्रीखंड; दही, घी, मिर्च, शहद आदि के योग से बननेवाली एक प्रकार की चटनी; अंगूर; दूब; जीभ।

**रसाव** - पु० [हिं] रसने की क्रिया या भाव; जोतकर खेत को यों ही रहने देना।

**रसावर, रसावल** - पु० [हिं] रसौर।

**रसावा** - पु० [हिं] ईख का कच्चा रस रखने का मिट्टी का पात्र।

**रसाश** - पु० [सं] शराब पीना।

**रसाशी** - पु० [सं] शराबी।

**रसाष्टक** - पु० [सं] पारा, लोहा, ईंगुर आदि आठ महारसो का समाहार।

**रसास्वादी** - वि० [सं] रस का आस्वादन करनेवाला; आनंद लेनेवाला।

**रसिआउर** - पु० [हिं] ईख या गुड़ के रस में पकाया हुआ चावल; नववधू द्वारा प्रस्तुत रसिआउर जीमते समय गाया जानेवाला गीत।

**रसिक** - 1. वि० [सं] आनंदी; स्वाद लेनेवाला; सुंदर; स्वादिष्ठ; 2. पु० काव्यमर्मज्ञ; घोड़ा; पंडित; प्रेमी; विलासी; सहृदय; किसी विषय-विशेष का पारखी।

**रसिकता** - स्त्री० [सं] रसिकपन; भावुकता; सुरुचि; हँसी-मज़ाक।

**रसित** - 1. वि० [सं] रसयुक्त ; बजता या बोलता हुआ ; मुलम्मा किया हुआ ; थोड़ा-थोड़ा टपकता या बहता हुआ ; 2. पु० द्राक्षासव ; शब्द ।

**रसिया** - पु० [हिं] रसिक ; फागुन में गाया जानेवाला एक गीत ।

**रसियाव** - पु० [हिं] ईख के रस में पका चावल ।

**रसी** - 1. स्त्री० [हिं] एक प्रकार की सब्जी ; 2. पु० रसिक ।

**रसीद** - स्त्री० [फ़ा] पहुँच ; किसी चीज़ के मिलने का प्रमाण-पत्र ; पता ; **मु०** —काटना - रसीद लिखकर देना ।

**रसीला** - वि० [हिं] रसयुक्त ; स्वादिष्ठ ; आनंद लेनेवाला ; विलासी ; छैला ; **यौ०** —पन - रसीला होना ।

**रसूम** - पु० [अ] 'रस्म' का बहु० ; नियम ; नज़राना ; प्रथानुसार दिया जानेवाला धन ; **यौ०** —अदालत - कोर्टफ़ीस ।

**रसूल** - पु० [अ] ईश्वर का दूत ।

**रसूली** - 1. वि० [अ] रसूल-सम्बन्धी ; 2. स्त्री० एक प्रकार का गेहूँ या जौ ; एक प्रकार की काली मिट्टी ।

**रसे-रसे** - अव्य० [हिं] धीरे-धीरे ।

**रसोइया** - पु० [हिं] रसोई बनानेवाला, सूपकार ।

**रसोई** - स्त्री० [हिं] भोजन ; पकाया हुआ खाद्य पदार्थ ; भोजन बनाने का स्थान ; **यौ०** —दार - रसोइया ; —बरदार - भोजन ले जानेवाला ।

**रसौंत, रसौत** - स्त्री० [हिं] एक प्रसिद्ध औषधि ; अग्निसार ; बाल-भैषज्य ।

**रसौता** - पु० } [हिं] वर्षा के पहले ही खेत
**रसौती** - स्त्री० } जोतकर की जानेवाली धान की बोआई ।

**रसौर** - पु० [हिं] ईख के रस में पका चावल, रसियाउर ।

**रसौली** - स्त्री० [हिं] भौहों के पास आँख के ऊपर गिलटी निकलने का रोग ।

**रस्म** - स्त्री० [अ] प्रथा ; मेल-जोल ।

**रस्सा** - पु० [हिं] मोटी रस्सी ; बीघा ; घोड़ों के पैर की एक बीमारी ।

**रस्सी** - स्त्री० [हिं] डोरी ; एक तरह की सब्जी ; **यौ०** —बाट - रस्सी बटने या बनानेवाला ।

**रहँकला** - पु० [हिं] एक हलकी गाड़ी ; तोप लादने की गाड़ी ।

**रहँछटा** - पु० [हि] लिप्सा ; मनोरथ-पूर्ति की आकांक्षा ; प्रीति की चाह ।

**रहँट** - पु० [हिं] कुएँ से पानी निकालने का यंत्र-विशेष ।

**रहँटा** - पु० [हिं] सूत कातने का चरखा ।

**रहः** - पु० [सं] निर्जन स्थान ; यथार्थता ; रहस्य ; गूढ तत्त्व ।

**रह** - स्त्री० [फ़ा] 'राह' का संक्षिप्त रूप ; **यौ०** —ज़न - डाकू ; —ज़नी - डकैती ; —नुमा - पथप्रदर्शक ; —नुमाई - पथप्रदर्शन ।

**रहठा** - पु० [हिं] अरहर का सूखा पौधा ।

**रहन** - 1. पु० [अ] गिरवी रखना ; 2. स्त्री० [हिं] रहना ; रहने का ढंग ; **यौ०** —सहन - तौर-तरीक़ा ; जीवन-निर्वाह का ढंग ।

**रहना** - अ० [हिं] ठहरना ; रुकना ; विद्यमान होना ; स्थापित ; ज़िन्दा रहना ; नौकरी ; रखेली बनकर रहना ; बचना ।

**रहनि, रहनी** - स्त्री० [हिं] रहने की क्रिया या ढंग ; आचरण ; प्रेम ।

**रहम** - पु० [अ] करुणा ; कृपा ; **यौ०** —दिल - दयालु ।

**रहमत** - स्त्री० [अ] मेहरबानी ।

**रहमान** - 1. वि० [अ] परम कृपालु ; 2. पु० परमात्मा ।
**रहरू, रहलू** - स्त्री० [हि] खाद ढोने की छोटी-मोटी गाड़ी ।
**रहरेठा** - पु० [हिं] रहठा ।
**रहल** - स्त्री० [अ] रवानगी ; रहने की जगह ; सफ़र ; पुस्तक रखकर पढ़ने की लकड़ी की तख़्ती ।
**रहसना** - अ० [हिं] आनंदित होना ।
**रहसि** - स्त्री० [हि] एकांत ; गुप्तस्थान ।
**रहस्य** - पु० [स] गुप्त भेद ; मर्म ; एकांत में घटित वृत्त ; हँसी-मज़ाक ।
**रहा** - वि० [हिं] बचा हुआ , छूटा हुआ ; **यौ०** —सहा - बचा-बचाया ।
**रहाइश** - स्त्री० [हिं] स्थिति ; बरदाश्त ; गुंजाइश ।
**रहाई** - स्त्री० [हि] रहना ; आराम ।
**रहाना** - अ० [हि] होना ; रहना ।
**रहावना** - स्त्री० [हिं] गाँव के पशुओ के खड़े होने की जगह ।
**रहित** - वि० [सं] बिना ; शून्य ।
**रहीम** - 1. वि० [अ] कृपालु ; 2. पु० परमात्मा ; अकबर के दरबार का एक श्रेष्ठ मुसलमान कवि ।
**रहुवा** - पु० [हि] खाने पर काम करनेवाला ; टुकड़ख़ोर ।
**राँकड़** - स्त्री० [हिं] कम उपजाऊ भूमि ।
**राँगड़ी** - पु० [हिं] एक प्रकार का चावल ।
**राँगा** - पु० [हिं] एक प्रसिद्ध धातु ।
**राँचना** - अ० [हिं] अनुरक्त होना ।
**राँटा** - 1. पु० [हिं] टिटहरी ; 2. स्त्री० चोरो की सांकेतिक भाषा ।
**राँड़** - स्त्री० [हिं] विधवा ; वेश्या, रंडी ।
**राँदना** - स० [हिं] रोना ; विलाप करना ।
**राँध** - अव्य० [हिं] पास ; पड़ोस ; **यौ०**—पड़ोस - आस-पास ।
**राँधना** - स० [हिं] भोजन पकाना ।
**राँपी** - स्त्री० [हिं] मोचियो का चमड़ा छीलने या तराशने आदि का एक औज़ार ।
**राँभना** - अ० [हिं] बोलना ; चिल्लाना (गाय, बैल, भैंस आदि का) ।
**राइ** - पु० [हिं] सरदार ; छोटा राजा ।
**राई** - स्त्री० [हिं] एक छोटी सरसो ; अल्प परिमाण ; राजसी ; **यौ०** —**भर** - अल्प, बहुत थोड़ा ।
**राउ** - पु० [हिं] राजा ।
**राउत** - पु० [हिं] राजवशीय व्यक्ति ; वीर पुरुष ।
**राउर** - 1. पु० [हि] अंतःपुर ; 2. सर्व० श्रीमान का ; आपका ।
**राका** - स्त्री० [सं] पूर्णिमा ; पहले-पहल रजस्वला होनेवाली स्त्री , खुजली का रोग ; **यौ०** —पति - चंद्रमा ।
**राक़िम** - वि० [अ] मुहर्रिर ।
**राक्षस** - पु० [सं] दैत्य ; दुष्ट व्यक्ति ; कुबेर का कोषरक्षक ; **यौ०**—विवाह - वह विवाह जिसमें युद्ध द्वारा कन्या प्राप्त की जाती है ।
**राक्षसी** - 1. स्त्री० [सं] राक्षस की स्त्री ; 2. वि० दुष्टा, क्रूर स्वभाववाली स्त्री ।
**राख** - स्त्री० [हिं] भस्म ; जले हुए पदार्थ का शेष भाग ।
**राखना** - स० [हिं] बचाना ; रखवाली करना ; छिपाना ; ठहराना ; रखना ; आरोप करना ।
**राखी** - स्त्री० [हिं] रक्षाबंधन का डोरा, रखिया ; राख ; भस्म ।
**राग** - पु० [सं] मन को प्रसन्न करना ; अनुराग ; आकर्षण ; पंच क्लेशों में से एक (योग) ; क्लेश ; ईर्ष्या ; सुगंधित लेप ; रंग ; आलता ; राजा ; चंद्रमा ; सूर्य ; **यौ०** —च्छन्न - राम ; कामदेव ; —द्रव्य - रंग ।

**रागान्वित** - वि० [सं] आसक्त ; क्रुद्ध ।

**रागिब** - वि० [अ] इच्छुक ।

**रागी** - 1. पु० [सं] प्रेमी ; अशोक वृक्ष ; छः मात्राओं का छंद ; 2. वि० रँगा हुआ ; अरुण ; विषयासक्त ।

**राचना** - 1. स० [हिं] रचना ; 2. अ० रँगा जाना ; अनुरक्त होना , प्रेम करना ; रचा जाना ; मग्न होना ; प्रसन्न होना ; शोभा देना ।

**राछ** - पु० [हिं] कारीगरों का औज़ार ; ताने का तागा उठाने-गिराने का जुलाहों का एक औज़ार ; जुलूस ; बरात ; चक्की के बीच का खूँटा ; हथौड़ा ।

**राज** - पु० [सं] 'राजा' का समास में व्यवहृत रूप ; यौ० —कथा - इतिहास ; राजा की कथा ; —कन्या - राजपुत्री ; केवड़े का फूल ; —कर - ख़िराज, राजस्व ; —कर्ता - राजा बनानेवाला ; —कुमार - राजा का पुत्र ; —कुमारी - राजा की पुत्री ; —गद्दी - राजसिंहासन ; राज्याभिषेक ; —तिलक - राज्याभिषेक, नये राजा के राज्यारोहण का उत्सव ; —दंड - राज्यशासन ; विधान से दिया हुआ दंड ; —दूत - किसी राज्य या राजा का प्रतिनिधि ; —द्रोह - राज्य या राजा के विरुद्ध आचरण ; विद्रोह ; —द्रोही - विद्रोही ; —द्वार - राजा का द्वार ; न्यायालय ; —धर्म - राजा का धर्म ; कर्तव्य ; —धानी - शासन-केन्द्र ; शासक के रहने का नगर ; —नीति - राज्य की रक्षा और शासन को दृढ करने का उपाय बतानेवाली नीति ; —नीतिक - राजनीति-संबन्धी ; —पथ - मुख्य सड़क ; —पाल - गवर्नर ; —पुत्र, पुत्रक - राजकुमार ; —पुर - राजधानी ; —पुरुष - कर्मचारी ; —प्रासाद - राजभवन ; —भंडार - राजा का ख़ज़ाना ; —भक्त - राज्य या राजा में भक्ति रखनेवाला ; —भक्ति - राज्य या राजा के प्रति भक्ति ; —भवन - राजमहल ; —मंडल - राज्य के आसपास के चारों ओर के राज्य ; —मार्ग - मुख्य सड़क ; — मुद्रा - सरकारी मुहर ; —यक्ष्मा - क्षयरोग, तपेदिक ; —यान - राजा की सवारी , पालकी ; —योग - योगशास्त्रोक्त एक योग ; — राज - कुबेर ; चंद्रमा ; सम्राट ; —रोग - असाध्य रोग ; क्षयरोग ; —लक्ष्मी - राजवैभव ; —वंश - राजा का कुल ; —विद्या - राजनीति ; —विद्रोह - बग़ावत ; —वीथी - राजमार्ग ; —श्री - राजा का वैभव ; —संसद - राजसभा ; न्यायालय ; —सत्ता - राजशक्ति ; राजतंत्र ; —सभा - राजा की सभा ; —स्व - राजा का अंश, भूमि आदि का राजा को दिया जानेवाला कर ; [हिं] राज्य ; जनपद ; प्रजापालन की व्यवस्था ; प्रभाव ; शासन ; सुव्यवस्थित राजनीतिक इकाई ; मकान बनानेवाला, थवई ; यौ० —गीर - मकान बनानेवाला ; —काज - राज्य-प्रबन्ध ; —पाट - राजसिंहासन ; देश ।

**राज़** - पु० [फ़ा] रहस्य ।

**राजकीय** - वि० [सं] राजा या राज्य से संबन्ध रखनेवाला ।

**राजना** - अ० [हिं] विराजना ; शोभित होना ।

**राजन्य** - पु० [सं] राजा ; क्षत्रिय ; अग्नि ।

**राजर्षि** - पु० [सं] क्षत्रिय कुल में उत्पन्न ऋषि ।

**राजस, राजसिक** - वि० [सं] रजोगुण से उत्पन्न ; आवेश ; क्रोध ।

**राजसी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] रजोगुणमयी; [हिं] राजा के योग्य।

**राजा** - पु० [सं] नृपति; धनी; प्रेमपात्र।

**राजाज्ञा** - स्त्री० [सं] राजा की आज्ञा।

**राजाधिकारी** - पु० [सं] न्यायाधीश।

**राजाधिराज** - पु० [सं] सम्राट।

**राजाधिष्ठान** - पु० [सं] राजधानी।

**राजाभियोग** - पु० [सं] राजा का प्रजा से बलपूर्वक कोई काम लेना।

**राजासन** - पु० [सं] राजसिंहासन, तख़्त।

**राजासनी** - स्त्री० [सं] यज्ञ में सोम रखने की चौकी या पीढ़ा।

**राजि** - स्त्री० [सं] क़तार; रेखा।

**राज़िक़** - वि० [अ] रोजी देनेवाला; परवर्दिगार।

**राजित** - वि० [सं] शोभित; उपस्थित।

**राजिब** - पु० [हिं] कमल।

**राजी** - स्त्री० [सं] श्रेणी; राई; काली सरसों; **यौ०**—फल - परवल; [हिं] रजामंदी।

**राज़ी** - वि० [अ] अनुकूल; सहमत; नीरोग; संतुष्ट; सुखी; **यौ०**—नामा - वह काग़ज़ जिसमें वादी और प्रतिवादी के पारस्परिक मतैक्य का सूचक लेख हो।

**राजीव** - 1. पु० [सं] कमल; नील कमल; एक प्रकार का मृग; हाथी; 2. वि० राजवृत्ति से निर्वाह करनेवाला; धारीदार।

**राजेन्द्र** - पु० [सं] राजाधिराज; एक पहाड़।

**राजेश्वर** - पु० [सं] सम्राट।

**राजोपकरण** - पु० [सं] राजचिन्ह (झंडा, निशान, नौबत आदि)।

**राज्ञी** - स्त्री० [सं] रानी; सूर्य की पत्नी; काँसा; नील वृक्ष।

**राज्य** - पु० [सं] शासन; मंडल; राष्ट्र, देश; **यौ०**—कर्ता - शासक; —च्युत - राजसिंहासन से हटाया हुआ; —तंत्र - शासन की प्रणाली; —धुरा - राज्य का शासनभार; —लक्ष्मी - विजयगौरव; राज्यश्री; —व्यवस्था - राज्य का नियम, विधान।

**राज्यांग** - पु० [सं] राज्य के साधक अंग (राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, सेना, सुहृद)।

**राज्याभिषेक** - पु० [सं] राज्यारोहण, राजगद्दी पर बैठाने की रीति।

**राटुल** - पु० [हिं] लकड़ी या लोहा आदि तोलने का बड़ा तराज़ू।

**राट्** - पु० [सं] राजा; श्रेष्ठ पुरुष।

**राड़** - वि० [हिं] निकम्मा; कायर; हीन।

**राढ़ा** - पु० [हिं] सरसों; कुश की जाति की एक घास; मकई या ज्वार आदि के डंठल।

**राढ़ी** - 1. स्त्री० [हिं] एक मोटी घास; 2. पु० एक तरह का आम।

**रात** - स्त्री० [हिं] रात्रि; **यौ०**—दिन - सदा-सर्वदा; —राजा - उल्लू।

**रातड़ी** - स्त्री० [हि] रात।

**रातना** - अ० [हिं] अनुरक्त होना; रँगा जाना; लाल रंग से रँगा जाना।

**राता** - वि० [हिं] लाल; रँगा हुआ; अनुरक्त।

**रातिब** - पु० [अ] प्रतिदिन की नियमित भोजन-सामग्री; पशुओं का दैनिक आहार; हाथियों का खाद्य-विशेष।

**रातिबा** - पु० [अ] वेतन या वृत्ति आदि।

**रातैल** - पु० [हिं] ज्वार के लिए हानिकर एक छोटा लाल कीड़ा।

**रात्रिंदिव** - अव्य० [सं] रात-दिन।

**रात्रि** - स्त्री० [सं] रात; हल्दी; **यौ०** —चर, चारी - राक्षस; —पुष्प - रात में

खिलनेवाला पुष्प, कुमुदिनी ; —मणि - चंद्रमा ; —राग - अँधेरा ; —वास - रात में पहनने का कपड़ा ; अंधकार ।

**रात्रिक** - पु० [सं] एक तरह का बिच्छू ।

**राद** - पु० [अ] बिजली की कड़क ; बादलों का फ़रिश्ता ।

**राद्धांत** - पु० [सं] सिद्धान्त ।

**राधना** - स० [हिं] आराधना करना ; सिद्ध करना ; काम निकालना ।

**राधा** - स्त्री० [सं] वैशाख की पूर्णिमा ; प्रीति ; वृषभानु की कन्या, श्याम की प्रेमिका ; बिजली ; आँवला ; अधिरथ की पत्नी जिसने कर्ण का पालन किया था ; यौ० —वल्लभी - एक वैष्णव संप्रदाय ।

**राधेय** - पु० [सं] कर्ण ।

**राध्य** - वि० [सं] आराधना के योग्य ।

**रान** - स्त्री० [फ़ा] जाँघ ।

**राना** - वि० [अ] नज़ाकत से चलनेवाला ; नाजुक ; सुंदर ; यौ० —ई - ख़ूबसूरती ।

**रानी** - स्त्री० [हिं] राजा की स्त्री ; स्वामिनी ; प्रेमिका के लिए आदरयुक्त संबोधन ।

**रापड़** - पु० [हिं] बंजर ।

**रापी** - स्त्री० [हिं] चमड़ा साफ़ करने और उसे काटने के काम आनेवाला मोचियों का एक औज़ार ।

**राब** - स्त्री० [हिं] खाँड़ ; लँबाई के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगी हुई लंबी लकड़ी ।

**राबड़ी** - [हिं] रबड़ी ।

**राबना** - स० [हिं] एक विशेष ढंग से खेत में खाद देना ।

**राबिता** - पु० [अ] संबंध ; मेल ; परस्पर मिलनेवाली कोई चीज़ ।

**राम** - पु० [सं] परशुराम ; दाशरथि राम ; बलराम ; तीन की संख्या ; ईश्वर ; प्रेमी ; वरुण ; यौ० —कजरा - एक धान ; —कपास - देवकपास ; —काँटा - एक प्रकार का बबूल ; —केला - एक प्रकार का केला या आम ; —चंद्र - दाशरथि राम ; —चक्र - बड़ा ; बाटी ; —जना - वर्णसकर ; वह व्यक्ति जिसके पिता का पता न हो ; —जनी - वेश्या ; —जमनी - एक बारीक़ चावल ; —झोल - पायल ; —तरोई - भिण्डी ; —दल - राम की वानरी सेना ; बड़ी और अजेय सेना ; —दूत - हनुमान ; धनुष ; इंद्रधनुष ; —धाम - साकेत लोक ; —नेनुआ - लौकी , —नामी - वह चादर जिसमें रामनाम की छाप लगी हो ; सोने का कंठहार ; —फल - सीताफल ; —बँटाई - दो में समान विभाजन ; —बाँस - एक मोटा बाँस ; केतकी की जाति का एक पौधा ; —बाण - शीघ्र गुणकारी ; अचूक औषधि ; —भोग - एक तरह का आम ; एक तरह का चावल ; —रज - एक प्रकार की पीली मिट्टी ; —रस - नमक ; —राज्य - सुशासन ; राम का शासन ; —राम - नमस्कार ; भेट ; घृणा या आश्चर्य आदि का सूचक शब्द ; —लवण - साभर नमक ; —शर - ईख के आकार-प्रकार का एक नीरस पौधा ; —सनेही - एक वैष्णव संप्रदाय ।

**रामणीयक** - 1. पु० [सं] रमणीयता ; 2. वि० सुंदर ।

**रामति** - स्त्री० [हिं] भिक्षा के लिए घूमना-फिरना ।

**रामना** - अ० [हिं] विचरना, घूमना-फिरना ।

**रामल** - वि० [सं] रमल-संबंधी ।

**रामा** - स्त्री० [सं] सुंदरी बाला ; गानकला में कुशल स्त्री ; अशोक वृक्ष ; हींग ; गेरू ।

**रामिज़** - वि० [अ] संकेत करनेवाला।

**रामिल** - पु० [सं] पति; कामदेव, प्रेमी; प्रेमपात्र।

**रामी** - स्त्री० [हिं] कांस नामक घास।

**राय** - 1. पु० [हिं] राजा, सरदार; बाट; 2. स्त्री० [फा] परामर्श; मत; सुझाव; समझ; मु०—क़ायम करना - एक निश्चय पर पहुँचना।

**रायगाँ** - वि० [फ़ा] व्यर्थ।

**रायज** - वि० [अ] प्रचलित; प्रथा के अनुसार।

**रायता** - पु० [हिं] उबली सब्जी व बूँदिया आदि को मसाले के साथ दही में डालकर तैयार किया गया भोज्य पदार्थ।

**रायसा** - पु० [हिं] डिंगल भाषा में लिखित किसी राजा का काव्यचरित, रासो।

**रार** - 1. स्त्री० [हिं] झगड़ा; 2. वि० राड़।

**राल** - स्त्री० [हिं] दक्षिण भारत के जंगलो में होनेवाला एक सदाबहार पेड़; इस पेड़ का गोद; पतला लसदार थूक, लार; पशुओ का एक रोग।

**राली** - स्त्री० [हिं] छोटे दानो का बाजरा।

**राव** - पु० [स] शब्द, ध्वनि; [हिं] राजा; दरबारी सरदार; धनी; चारण; **यौ०**—बहादुर, साहब - ब्रिटिश शासन-काल की एक उपाधि।

**रावचाव** - पु० [हिं] नाच-गाना; प्यार-दुलार।

**रावटी** - स्त्री० [हिं] बारहदरी; कपड़े आदि का घर।

**रावण** - 1. वि० [सं] हाहाकार करानेवाला; 2. पु० लंका का एक प्रसिद्ध राजा।

**रावत** - पु० [हिं] सरदार; छोटा राजा; योद्धा; सेनापति।

**रावर** - 1. पु० [हिं] अतःपुर; 2. सर्व० आपका।

**रावरा** - सर्व० [हिं] आपका।

**रावल** - पु० [हि] कुछ राजाओ की उपाधि; राजा; सरदार; अंतःपुर।

**राशि** - स्त्री० [सं] ढेर; समूह; क्रांतिवृत्त में आनेवाले विशेष नक्षत्रसमूह (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन); **यौ०**—चक्र - ग्रहों के चलने का मार्ग; राशियों का चक्र; —नाम - जन्मकाल की राशि के अनुसार रखा हुआ नाम; —भोग - किसी ग्रह की किसी राशि में स्थिति या स्थिति का काल; **मु०** —आना - अनुकूल होना; —बैठना - दत्तक पुत्र होना।

**राशी** - वि० [अ] घूसख़ोर।

**राष्ट्र** - पु० [स] देश; राज्य; जाति; देश-व्यापी बाधा, ईति; **यौ०** —तंत्र - शासन-पद्धति; —पति - बहुमत द्वारा निर्वाचित किसी देश का सर्वप्रधान शासक; —भेद - शत्रुराज्य में विप्लव पैदा करने की नीति; —विप्लव - विद्रोह।

**राष्ट्रिय, राष्ट्रीय** - वि० [सं] राष्ट्र-संबंधी; राष्ट्र का।

**रास** - 1. स्त्री० [हिं] लगाम; मेष आदि राशि; ढेर; ब्याज; चौपायों का समूह; जोड़; एक छंद; गोद; लास्य नृत्य; **यौ०** —नशीन - गोद लिया हुआ; 2. पु० [सं] शब्द कोलाहल; नृत्यक्रीड़ा; कृष्णलीला के अभिनययुक्त नाटक; शृंखला; विलास; नर्तकों का समाज; रसिया; **यौ०**—धारी - कृष्णचरित का अभिनय करने-वाला; —नृत्य - नृत्य का एक भेद; —पूर्णिमा - कार्तिक मास की

पूर्णिमा; —मंडली - रासधारियों की टोली; —लीला - कृष्ण का गोपियों के साथ किया हुआ नृत्य; रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय; [अ] अंतरीप; घोड़े, बैल आदि की संख्या के लिए प्रयुक्त; 4. वि० ठीक; मुबारक।

**रासभ** - पु० [सं] गधा।

**रासभी** - स्त्री० [सं] गधी।

**रासायन** - वि० [सं] रसायन-संबन्धी; रसायन का।

**रासायनिक** - 1. वि० [सं] रसायनशास्त्र या तत्त्व-संबंधी; 2. पु० रसायनशास्त्री।

**रासिख़** - वि० [अ] पक्का; मज़बूत, खरा; विश्वसनीय।

**रासी** - 1. स्त्री० [हिं] रद्दी व निकृष्ट शराब; सज्जी; 2. वि० नक़ली।

**रासो** - पु० [हिं] डिंगल भाषा या पुरानी हिन्दी में लिखित काव्यग्रंथ, रायसा।

**रास्त** - वि० [फ़ा] उचित; अनुकूल; ठीक; नेक; सच्चा; सीधा; यौ० —गो - उचित बोलनेवाला; —बाज़ - ईमानदार; —बाज़ी - ईमानदारी।

**रास्ता** - पु० [फ़ा] राह; मार्ग; उपाय; प्रथा; मु०—देखना - प्रतीक्षा करना; —बताना - टालना; हटाना; रास्ते पर लाना - सुमार्ग पर चलाना।

**राह** - स्त्री० [फ़ा] रास्ता; तरीका; प्रथा; यौ० —ख़र्च - मार्ग व्यय; —गीर - मुसाफिर; —चलता - पथिक; अजनबी; रास्ता चलनेवाला; —चाह - रंग-ढंग; —चौरंगी - चौमुहानी; —ज़न - डाकू; —ज़नी - डकैती; —दारी - चुंगी; —बर - मार्गप्रदर्शक; —बरी - मार्ग-प्रदर्शन; —रस्म, रीति - व्यवहार; परिचय।

**राहदी** - पु० [देश] एक घटिया कंबल।

**राहत** - स्त्री० [अ] आराम, सुख, क़रार।

**राहा** - पु० [हिं] चक्की के नीचे का पाट बैठाने के लिए बनाया हुआ मिट्टी का चबूतरा।

**राहिन** - पु० [अ] रिहन रखनेवाला।

**राही** - पु० [फ़ा] मुसाफ़िर।

**राहु** - पु० [सं] रोहू नामक एक प्रसिद्ध मछली; नौ ग्रहों में से एक; यौ० —ग्रास - ग्रहण।

**रिंगण** - पु० [सं] रेंगना; विचलित होना।

**रिंगाना** - 1. अ० [हिं] रेंगना; धीरे-धीरे चलना; 2. स० घुमाना-फिराना; परिश्रमपूर्वक दौड़ाना।

**रिंगिन** - स्त्री० [हिं] जहाज़ के मस्तूल में बाँधने की रस्सी।

**रिंद** - 1 पु० [फ़ा] धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष; स्वच्छंद आदमी; 2. वि० मस्त।

**रिंदा** - पु० [फ़ा] बेहूदा और बेढब आदमी।

**रिंदी** - स्त्री० [फ़ा] लुच्चापन; धूर्तता; रिंद होने का भाव।

**रिआयत** - स्त्री० [अ] रहम; बचाव; हिफ़ाज़त; मेहरबानी; कृपापूर्ण व्यवहार; लिहाज़।

**रिआयती** - वि० [अ] रिआयत किया हुआ; यौ० —रुख़सत - सवैतनिक छुट्टी।

**रिआया** - स्त्री० [अ] प्रजा।

**रिकवँछ** - स्त्री० [हिं] बेसन या उड़द की पीठी और अरुई के पत्तों आदि से बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

**रिक़्क़त** - स्त्री० [अ] रोना; कोमलता; दया; वीर्य पतला होना।

**रिक्त** - 1. वि० [सं] ख़ाली; निर्धन; 2. पु० जंगल।

**रिक्तता** - स्त्री० [सं] ख़ालीपन, शून्यता।

**रिक्ता** - स्त्री० [सं] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ।

**रिक्थ** - पु० [सं] उत्तराधिकार में प्राप्त धन।

**रिक्षा** - स्त्री० [सं] त्रसरेणु; लीख, जूँ का अंडा।

**रिज़क़** - पु० [अ] खुराक; जीविका; खाना।

**रिज़्वाँ, रिज़वान** - पु० [अ] स्वर्ग; बरकत; स्वर्ग का दारोग़ा।

**रिज़ाला** - वि० [अ] कमीना; पाजी।

**रिजीली** - स्त्री० [हिं] निर्लज्जता।

**रिज़्क** - 1. पु० [अ] खुराक; रोज़ी; 2. वि० मतवाला।

**रिझाना** - स० [हिं] लुभाना; अपने ऊपर किसीको प्रसन्न करना।

**रिझाव** - पु० [हिं] प्रसन्न होना।

**रिपु** - पु० [स] शत्रु; लग्न से छठा स्थान।

**रिपुता** - स्त्री० [स] शत्रुता।

**रिमझिम** - स्त्री० [हिं] पानी की छोटी छोटी बूँदें पड़ना।

**रिया** - स्त्री० [अ] दिखावा; मक्कारी; **यौ०** —ई, कार - मक्कार।

**रियाज़** - पु० [अ] बाग़; 'रौज़ा' का बहु०।

**रियाज़त** - स्त्री० [अ] परिश्रम; अभ्यास; व्यायाम; मज़दूर का पेशा।

**रियासत** - स्त्री० [अ] किसी रईस की हुकूमत में रहनेवाला इलाका; शासन; अमीरी।

**रियाह** - स्त्री० [अ] हवाएँ; अफ़रा।

**रिलना** - अ० [हिं] घुसना; एक हो जाना।

**रिवाज** - पु० [अ] प्रथा।

**रिवायत** - स्त्री० [अ] क़िस्सा-कहानी; दूसरे के शब्द दुहराना।

**रिश्ता** - पु० [फ़ा] संबंध; **यौ०** रिश्तेदार-संबंधी।

**रिश्वत** - स्त्री [अ] घूस, उत्कोच; **यौ०** —ख़ोर - घूस खानेवाला; —ख़ोरी - घूस लेना।

**रिष्ट** - 1. पु० [सं] उन्नति; मंगल; अशुभ; दुर्भाग्य; नाश; पाप; हानि; 2. वि० घायल; नष्ट; प्रसन्न; मोटा-ताज़ा।

**रिस** - स्त्री० [हिं] क्रोध; **मु०** —मारना - क्रोध को दबाना।

**रिसना** - अ० [हिं] नन्हें-नन्हें छेदो से तरल द्रव्य निकलना।

**रिसहा** - वि० [हिं] क्रोधी; बात-बात पर बिगड़नेवाला।

**रिसान** - पु० [हिं] ताने के सूतो को साफ़ करना।

**रिसाना** - 1. अ० [हिं] क्रुद्ध या नाराज़ होना; 2 स० बिगड़ना।

**रिसाल** - पु० [हिं] अन्य स्थानो से वसूल करके राजधानी को भेजा जानेवाला कर; **यौ०** —दार - घुड़सवारो की सेना का अफसर; राजकर ले जानेवालो का मुख्य संचालक।

**रिसालत** - स्त्री० [अ] पैगंबरी।

**रिसाला** - पु० [अ] सौ सवारो का दस्ता; छोटी किताब; अश्वारोही सेना।

**रिसिआना, रिसियाना** - 1. अ० [हिं] कुपित होना; 2. स० क्रोध करना।

**रिहड़ी** - स्त्री० [हिं] रेतीली ज़मीन।

**रिहन** - पु० [अ] गिरवी, किसीके पास कोई चीज़ रखकर उससे ऋण लेना; **यौ०**—नामा - रिहन का दस्तावेज़।

**रिहल** - स्त्री० [अ] पोथी रखकर पढ़ने के लिए काठ की बनी तख्ती।

**रिहलत** - स्त्री० [अ] रवानगी, मौत।

**रिहा** - वि० [फ़ा] मुक्त, छूटा हुआ; **यौ०** —ई - छुटकारा, मुक्ति।

**रींधना** - स० [हिं] पकाना, राँधना।

**री** - 1. अव्य० [हिं] एरी, अरी (सखियों के लिए संबोधन); 2. स्त्री० [स] गति; टपकना; वध; शब्द।

**रीछ** - पु० [हिं] भालू।

**रीझ** - स्त्री० [हिं] प्रसन्न होना; मोहित होना।

**रीझना** - अ० [हिं] प्रसन्न होना; मोहित होना।

**रीठा** - पु० [हिं] चूना बनाने के लिए कंकड़ फूँकने का भट्ठा; [सं] करंज का वृक्ष और उसका फल, फेनिल।

**रीढ** - स्त्री० [हिं] मेरुदंड; गर्दन से कमर तक जानेवाली एक अस्थिशृंखला।

**रीता** - वि० [हिं] रिक्त, ख़ाली।

**रीति** - स्त्री० [हिं] प्रकार; परिपाटी; टपकना; नियम, विशिष्ट पदरचना; प्रशंसा; पीतल; गति; स्वभाव; लोहे का मैल।

**रीस्माँ** - स्त्री० [फ़ा] रस्सी।

**रीस** - स्त्री० [हिं] क्रोध; स्पर्धा; डाह।

**रीसना** - अ० [हिं] क्रुद्ध होना।

**रीह** - स्त्री० [अ] गठिया; हवा।

**रुंड** - पु० [सं] कबंध; बिना हाथ-पाँव का शरीर।

**रुँदवाना** - स० [हिं] पैरों से कुचलवाना।

**रुँधना** - अ० [हिं] रुकना; उलझना; किसी काम में लगना; मार्ग न मिलने से रुकना; रोक।

**रु** - 1. पु० [सं] ध्वनि; गति; वध; 2. अव्य० [हिं] 'अरु' या 'और' का संक्षिप्त रूप।

**रुआ** - पु० [हिं] रोआँ, शरीर के छोटे-छोटे बाल।

**रुआब** - पु० [हिं] आतंक; धाक, रोब।

**रुआली** - स्त्री० [हिं] पूनी।

**रुई** - स्त्री० [हि] कपास की ढोढी, तूल।

**रुकना** - अ० [हिं] ठहरना; कार्य में बाधा होना; बंद होना; आगा-पीछा करना; क्रम टूटना; स्तंभन।

**रुकाव** - पु० [हिं] अवरोध; कब्ज़; स्तंभन।

**रुकावट** - स्त्री० [हिं] अवरोध।

**रुक़ा** - पु० [अ] पुर्ज़ा; निमंत्रण-पत्र; हुंडी।

**रुक्ख** - पु० [हिं] वृक्ष, पेड़।

**रुक्म** - 1. पु० [सं] धतूरा; नागकेसर; लोहा; सोना; 2. वि० चमकीला।

**रुक्ष** - वि० [सं] स्नेहविहीन; रूखा; नीरस; ऊबड़-खाबड़; कठोर; सूखा।

**रुक्षता** - स्त्री० [सं] रूखापन।

**रुख़** - 1. अव्य० [फ़ा] तरफ़; सामने; 2. पु० मुख; गाल; आकृति; कृपादृष्टि; ध्यान; शतरंज का एक मोहरा; मुखाकृति से प्रकट होनेवाला भाव; [हिं] तृण; यौ० —दार - बाज़ार-भाव (घटता हुआ)।

**रुख़सत** - स्त्री० [अ] आज्ञा; छुट्टी; प्रस्थान; अवकाश।

**रुख़सताना** - पु० [फ़ा] विदाई; विदाई के समय दिया जानेवाला धन।

**रुख़सती** - 1. वि० [अ] जिसे छुट्टी मिली हो; 2. स्त्री० (दुलहिन की) विदाई।

**रुख़सार** - पु० [फ़ा] कपोल।

**रुखाई** - स्त्री० [हिं] रूखापन; व्यवहार की कठोरता; शुष्कता।

**रुखानी** - स्त्री० [हिं] बढ़इयों का एक औज़ार; तेली का एक औज़ार; संगतराशों की टाँकी।

**रुखावट, रुखाहट** - स्त्री० [हिं] रुखाई।

**रुखुरी** - स्त्री० [हिं] भुना हुआ चना; छोटा पौधा।

**रुग्ण** - वि० [सं] बीमार; टूटा हुआ; झुका हुआ।

**रुच** - स्त्री० [हिं] रुचि।

**रुचक** - वि० [सं] स्वादिष्ठ; रुचिकर।

**रुचना** - अ० [हिं] पसंद आना।

**रुचि** - स्त्री० [सं] इच्छा; पसंद; अनुराग; किरण; भूख; स्वाद; आलिंगन का एक प्रकार; **यौ०** —कर - अच्छा लगनेवाला; —कारक - रुचि पैदा करनेवाला; स्वादिष्ठ; —कारी - स्वादिष्ठ, मनोहर; —वर्धक - रुचि या भूख बढ़ानेवाला।

**रुचिर** - 1. वि० [सं] सुंदर; चमकीला; मनोहर; क्षुधावर्धक; 2. पु० केशर; मूली; कुंकुम; लौंग।

**रुचिराई** - स्त्री० [हिं] सुंदरता।

**रुच्य** - 1. वि० [सं] रुचिकर; सुन्दर; 2. पु० स्वामी; सेंधा नमक; पुष्टिकारक वस्तु; **यौ०** —कंद - सूरन।

**रुज** - पु० [हिं] रोग; कष्ट; घाव; चमड़े से मढ़ा हुआ एक बाजा।

**रुजू** - 1. वि० [अ] प्रवृत्त; 2. पु० झुकाव होना।

**रुझना** - अ० [हिं] घाव आदि का भरना; उलझना।

**रुणित** - वि० [सं] शब्द करता हुआ।

**रुत** - पु० [सं] कलरव; ध्वनि।

**रुतबा** - पु० [अ] ओहदा; इज़्ज़त; सीढ़ी; पाया; **यौ०** —शिनास - रुतबा पहचाननेवाला; —शिनासी - रुतबा पहचानना।

**रुदन** - पु० [सं] रोना।

**रुदित** - 1. वि० [सं] रोता हुआ; 2. पु० क्रंदन।

**रुद्ध** - वि० [सं] रोका हुआ; मुँदा हुआ; रुका हुआ; अवरुद्ध गतिवाला; **यौ०** —कंठ - जिसका गला रुँध गया हो।

**रुद्र** - 1. पु० [सं] शिव; एक प्रकार के गण-देवता; ग्यारह की संख्या; आक; रौद्र रस; एक प्रकार का बाण; 2. वि० भयंकर; रोनेवाला; चिल्लानेवाला; **यौ०** —कलश - ग्रहशांति के समय स्थापित किया जानेवाला कलश; —गण - शिव के अनुचर; —गर्भ - अग्नि; —भूमि - श्मशान; —रोदन - सोना, —सू - ग्यारह पुत्रों की जननी।

**रुद्राक्ष** - 1. पु० [सं] एक वृक्ष जिसके दानों की माला बनायी जाती है; 2. वि० लाल आँखोंवाला।

**रुधिर** - पु० [सं] खून; लाल वर्ण; मंगल-ग्रह; **यौ०** - पाई - खून पीनेवाला; राक्षस; —पित्त - रक्तपित्त।

**रुनझुन** - स्त्री० [अनु] नूपुर आदि की झंकार।

**रुनित** - वि० [हिं] झंकार करता हुआ, रुणित।

**रुनुक-झुनुक** - स्त्री० [अनु] नूपुर आदि की लगातार झनकार।

**रुपना** - अ० [हिं] रोपा जाना; जमना; डट जाना।

**रुपया** - पु० [हिं] (चाँदी का बना) भारत का मुख्य सिक्का; संपत्ति; **यौ०**— पैसा - धन-दौलत; — वाला - धनी; **मु०** — उठाना - रुपया खर्च करना; —उड़ाना - रुपया बरबाद करना; —जोड़ना - धन बटोरना; —पानी में फेंकना - व्यर्थ धन बरबाद करना।

**रुपहला** - वि० [हिं] चाँदी के रंग का; चाँदी-जैसा।

**रुबाई** - स्त्री० [अ] चार पंक्तियोंवाला एक फ़ारसी छंद।

**रुमाली** - स्त्री० [हिं] तिकोना लंगोट; मुगदर भाँजने का एक हाथ।

**रुराई** - स्त्री० [हिं] सौन्दर्य।
**रुरुआ** - पु० [हिं] बड़ी जाति का एक प्रकार का उल्लू।
**रुलना** - अ० [हिं] मारा-मारा फिरना; हिलना-डुलना।
**रुलाई** - स्त्री० [हिं] रोना; रोने की इच्छा या प्रवृत्ति।
**रुलाना** - स० [हिं] किसीको रोने में प्रवृत्त करना; बरबाद करना; भटकाना।
**रुल्ल, रुल्ला** - स्त्री० [हिं] अल्प उर्वरा शक्तिवाली भूमि।
**रुवा** - पु० [हिं] सेमल की रूई।
**रुष** - पु०, **रुषा** - स्त्री० [सं] क्रोध।
**रुषित** - वि० [सं] क्रुद्ध; दुखी।
**रुष्ट** - वि० [सं] कुपित।
**रुष्टता** - स्त्री० [सं] अप्रसन्नता।
**रुष्टपुष्ट** - वि० [हिं] हृष्टपुष्ट।
**रुसवा** - वि० [फ़ा] निन्दित; लांछित; अपमानित; बदनाम।
**रुसवाई** - स्त्री० [फ़ा] फ़ज़ीहत; बेइज़्ज़ती।
**रुसूख़** - पु० [अ] पहुँच; मज़बूती; एतबार; पक्कापन।
**रुसूल** - पु० [अ] पैगंबर, रसूल।
**रुस्त** - 1. स्त्री० [फ़ा] उगना; 2. वि० ताक़तवर; दिलेर; मज़बूत; **यौ०**—ख़ेज़ - नयी उगी हुई।
**रुस्तम** - 1. वि० [फ़ा] छिपा हुआ गुणी; निर्भीक; बलवान; 2. पु० फ़ारस का एक प्रसिद्ध पहलवान; **यौ०** रुस्तमे-वक़्त - विश्वविजयी; अपने समय का सबसे बड़ा पहलवान; रुस्तमे-हिन्द - हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा पहलवान।
**रुहा** - स्त्री० [सं] ककड़ी; दूब; लाजवंती।
**रुहिर** - पु० [हिं] रुधिर।
**रूँखड़** - 1. वि० रूखा; 2. पु० [हिं] 'अलख-अलख' कहकर भीख माँगनेवाला साधु।
**रूँदना** - स० [हिं] रौंदना।
**रूँध** - वि० [हिं] रुका हुआ।
**रूँधना** - स० [हिं] काँटेदार पौधों आदि से घेर देना; रास्ता बंद कर देना।
**रू** - पु० [फ़ा] चेहरा; सामने का हिस्सा; सूरत; ऊपरी भाग; कारण; ध्यान; बहाना; **यौ०** —ए-ज़मीन - धरातल; —ए-ज़र्द - पीला चेहरा, लज्जित; —ए-सखुन - संकेत; सबोधन; —गिरदाँ - मुँह फेरनेवाला; क्रुद्ध; फरार हो जानेवाला; बुद्धिहीन; —गिरदानी - मुँह फेरना; विद्रोह; —दाद - गुज़री हुई बातें, समाचार; अदालती काररवाई; घटना; भय; व्यवस्था; हालत;—नुमा - मुँह दिखानेवाला; प्रकट होनेवाला; —नुमाई - मुँह दिखाना, मुँह-दिखौआ, —पाक - रूमाल; —पोश - जो मुँह छिपाये हुए हो; अनुपस्थित हो जाना; —पोशी - मुँह छिपाना; भाग जाना; लुप्त हो जाना; —बकार - परवाना; काम के लिए तैयार; आनेवाला; होनेवाला; —बकारी - मुक़द्दमे की पेशी; —बराह - सुधार; प्रस्थान, काम के योग्य; —बरू - सामने; —रियायत - लिहाज़; तरफ़दारी; —शिनास - परिचित; —शिनासी - परिचय करना; —सफ़ेद - सफ़ेद चेहरेवाला; सुंदर; निर्दोष; प्रतिष्ठित, —सियह, स्याह - काले मुँह का; अपराधी; बदचलन; अभागा; बेइज़्ज़त; कमबख़्त; आकाश; सूर्य।
**रूई** - स्त्री० [हिं] रुई।
**रूक** - 1. पु० [हिं] घलुआ; एक औषधोपयोगी वृक्ष; 2. स्त्री० तलवार।

**रूक्ष** - 1. वि० [सं] रूखा ; कठोर ; 2. पु० वृक्ष ।

**रूख** - 1. पु० [हिं] पेड़ ; 2. वि० रूखा ।

**रूखड़ा** - पु० [हिं] वृक्ष ।

**रूखना** - अ० [हिं] रूठना ।

**रूखा** - वि० [हिं] स्निग्धतारहित ; स्वादहीन ; खुरदरा ; प्रेमशून्य ; कठोर ; उदासीन ; **यौ०** —पन - रुखाई ; नीरसता ; कठोरता ; उदासीनता ; स्वादहीनता ; —सूखा - घी और मसाले के बिना बना (भोजन) ।

**रूठना** - अ० [हिं] नाराज़ होना ।

**रूड़, रूड़ो** - वि० [देश] उत्तम, श्रेष्ठ ।

**रूढ** - 1. वि० [सं] प्रसिद्ध ; अकेला ; उत्पन्न; आरूढ़ ; उजड्ड ; कठोर ; 2. पु० व्युत्पत्तिप्राप्त अर्थ ; वह शब्द जिसके अर्थ का बोध समुदाय-शक्तिद्वारा होता है ।

**रूढा** - स्त्री० [सं] प्रचलित अर्थ में प्रयुक्त लक्षणा ।

**रूढि** - स्त्री० [सं] उत्पत्ति ; प्रथा ; चढ़ाई ; उभार ; प्रसिद्धि ; शब्द की तीन शक्तियो में से एक जो यौगिक न होने पर भी अर्थ को स्पष्ट करती है ।

**रूद** - पु० [फ़ा] गीत , आनंद ; नदी ; नाला ; सुंदर युवक ; साज का तार ; पंखरहित पक्षी ।

**रूप** - 1. पु० [सं] आकार ; दृश्य पदार्थ ; सूरत ; प्रकृति ; शरीर ; वेष ; सौन्दर्य ; दशा ; लक्षण ; विकार ; 2. वि० अनुरूप ; **यौ०** —कर्ता, कृत् - विश्वकर्मा ; —चतुर्दशी - कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी ; —जीविनी - वेश्या ; —नाशक - उल्लू; —संपत्ति, संपद् - सौन्दर्य ।

**रूपक** - पु० [सं] नाटक का एक भेद ; एक अर्थालंकार ; मूर्ति ; चाँदी ; एक परिमाण ; रुपया ।

**रूपण** - पु० [सं] आरोपण ; परीक्षा ; प्रमाण ।

**रूपमय** - वि० [सं] परम सुंदर ।

**रूपा** - पु० [हिं] चाँदी ; सफ़ेद बैल ; सफ़ेद रंग का घोड़ा ।

**रूपाजीवा** - स्त्री० [सं] वेश्या ।

**रूपाध्यक्ष** - पु० [सं] टकसाल का प्रधान अफ़सर ; कोषाध्यक्ष ।

**रूपाश्रय** - पु० [सं] सुंदर पुरुष ।

**रूपास्त्र** - पु० [सं] कामदेव ।

**रूपी** - वि० [सं] रूपवाला ; सुंदर ; समान ।

**रूपोपजीवी** - पु० [सं] बहुरूपिया ।

**रूप्य** - 1. पु० [सं] चाँदी ; रुपया ; 2 वि० उपमेय ; सुंदर ; मुद्रांकित ।

**रूप्यक** - पु० [सं] रुपया ।

**रूमना** - स० [हिं] झूलना ; झूमना ।

**रूमाल** - 1. पु० [फ़ा] हाथ आदि पोंछने का कपड़े का चौकोर टुकड़ा ; चौकोना शाल या दुपट्टा ; 2. **मु०** —पर रूमाल भिगोना - बहुत अधिक रोना ।

**रूरना** - अ० [हिं] चिल्लाना ।

**रूरा** - वि० [हिं] उत्तम, अच्छा ।

**रूसना** - अ० [हिं] रूठना ।

**रूह** - स्त्री० [अ] आत्मा ; आभ्यंतरिक इच्छा ; जी ; सार ; **यौ०** —अफ़ज़ी - ताज़गी देनेवाला ।

**रूहड़** - स्त्री० [हिं] पुरानी रूई ।

**रूहना** - अ० [हिं] उमड़ना ; घेरना ; चढ़ना ।

**रेंकना** - अ० [हिं] गधे का बोलना ; बुरे ढंग से गाना ।

**रेंगटा** - पु० [हिं] गधे का बच्चा ।

**रेंगना** - अ० [हिं] कीड़े आदि पाँवरहित जीवों का पेट के बल चलना ; धीरे-धीरे चलना ।

**रेंगाना** - स० [हिं] पेट के बल या धीरे-धीरे चलाना।

**रेंट** - पु० [हिं] नाक का मल।

**रेंटा** - पु० [हिं] लिसोड़े का फल।

**रेंड़** - पु० [हिं] एरंड; **यौ०** —ख़रबूज़ा, मेवा - पपीता।

**रेंड़ना** - अ० [हिं] गर्भित होना; प्रौढ़ होना; धान, गेहूँ, जौ आदि का बाले फूटने की पहली अवस्था को प्राप्त होना।

**रेंड़ा** - पु० [हिं] कार्तिक में होनेवाला एक धान।

**रेंदी** - स्त्री० [हिं] ककड़ी।

**रें-रें** - अव्य० [अनु] लड़कों के रोने का शब्द।

**रे** - 1. अव्य० [सं] एक सम्बोधन का शब्द जो तिरस्कार, भर्त्सना और स्नेह के भावों का व्यंजक होता है; 2. पु० ऋषभ स्वर का चिन्ह (संगीत)।

**रेकान** - पु० [देश] नदी के पानी की पहुँच के बाहर की भूमि।

**रेख** - स्त्री० [हिं] लकीर; निशान; गिनती; हीरे का एक दोष; निकलती हुई मूँछें; **मु०** —आना, भीजना, भीनना - मूँछे निकलना शुरू होना; —खीचना - कोई बात ज़ोर देकर कहना।

**रेखना** - स० [हिं] लकीर खीचना; खरोचना; चिन्ह करना।

**रेखा** - स्त्री० [स] लकीर; गणना; आकार; हाथ आदि की रेखा; हीरे के बीच की दोषपूर्ण लकीर; **यौ०** —गणित - गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओ द्वारा सिद्धांत निश्चित किये जाते हैं।

**रेख़ता** - पु० [फ़ा] गज़ल; उर्दू का प्रारंभिक नाम।

**रेग** - स्त्री० [फ़ा] बालू।

**रेगिस्तान** - पु० [हिं] मरुस्थल।

**रेचक** - वि० [सं] दस्तावर; प्राणायाम की एक क्रिया; जमालगोटा; जवाखार।

**रेचन** - पु० [सं] जुलाब; दस्त लाना।

**रेज़** - वि० [फ़ा] बहानेवाला; तर करनेवाला।

**रेज़गारी, रेज़गी** - स्त्री० [फ़ा] छोटे सिक्के (दुअन्नी, चौवन्नी आदि); चाँदी या सोने के तार का टुकड़ा।

**रेज़श** - स्त्री० [फ़ा] नाक से पानी बहना; बहाना; डालना।

**रेज़ा** - पु० [फ़ा] थान; छोटा टुकड़ा; सुनारो का एक औज़ार; मज़दूर लड़का।

**रेजा** - पु० [हिं] अंगिया।

**रेज़िश** - स्त्री० [फ़ा] जुकाम।

**रेजू** - पु० [हिं] ब्रश बनाने का एक तरह का रेशा।

**रेणु** - पु० [सं] धूल; बालू; बहुत छोटा परिमाण; **यौ०** —रूषित - गधा; —वास - भ्रमर; —सार - कपूर।

**रेणुका** - स्त्री० [सं] धूल; बालू; परशुराम की माता।

**रेत** - 1. स्त्री० [हिं] बालू; बालूवाली भूमि; 2. पु० [सं] वीर्य, जल; पारा।

**रेतना** - स० [हिं] रेती से रगड़कर काटना; धीरे धीरे रगड़कर काटना; औज़ार की धार रगड़ना।

**रेता** - पु० [हिं] बालू; धूल; बलुई भूमि।

**रेतिया** - पु० [हिं] रेतनेवाला।

**रेती** - स्त्री० [हिं] लोहा काटने का एक औज़ार; नदी या समुद्रतट की बालुकामय भूमि; टापू।

**रेतीला** - वि० [हिं] बालुकामय।

**रेनी** - स्त्री० [हिं] अलगनी; रंग देनेवाली वस्तु।

**रेप** - वि० [सं] कृष्ण; घृणित; क्रूर।

**रेफ** - 1. पु० [सं] 'र' अक्षर; 'र' का किसी वर्ण के पहले आने पर मस्तक स्थित हलन्त रूप; शब्द; राग; 2. वि० निन्दित।

**रेरुआ, रेरुवा** - पु० [हिं] बड़ा उल्लू।

**रेल** - स्त्री० [हिं] धारा; बहुतायत; भीड़; यौ० —ठेल, पेल - अधिकता; धक्कम-धक्का; भीड़-भाड़; [अंग्रे] ट्रेन, रेल-गाड़ी; लोहे की वह पटरी जिसपर रेल-गाड़ी चलती है।

**रेलना** - 1. स० [हिं] ढकेलना; अधिक खा लेना; 2. अ० अधिक होना।

**रेला** - पु० [हिं] आक्रमण; जल का बहाव; भीड़-भाड़; पंक्ति; अधिकता; समूह।

**रेवड़** - पु० [हिं] भेड़ों का समूह; गल्ला।

**रेवड़ा** - पु० [हिं] गुड़ आदि की चाशनी से फेटकर बनाया हुआ टुकड़ा जिसपर तिल जमाया जाता है।

**रेवड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटी टिकिया के रूप में बना रेवड़ा; मु० —के फेर में आना - लालच में पड़ना।

**रेवती** - स्त्री० [सं] सत्ताईसवाँ नक्षत्र; गाय; दुर्गा; एक बालग्रह।

**रेवा** - स्त्री० [सं] नर्मदा नदी; रतिदेवी; दुर्गा; नील का पौधा।

**रेश** - स्त्री० [फ़ा] बड़ी और लंबी दाढ़ी; यौ० —सफ़ेद - बूढ़ा आदमी।

**रेशम** - पु० [फ़ा] एक प्रकार के कीड़े की लार का तंतु या उससे बनाया हुआ कपड़ा।

**रेशा** - पु० [फ़ा] सूत के समान इकहरी चीज़; यौ० —दार - रेशेवाला।

**रेष** - पु० [सं] हानि; हिंसा।

**रेषण** - पु० } [सं] घोड़े का हिनहिनाना; सिंह या शेर का गरजना।
**रेषा** - स्त्री० }

**रेसमान** - स्त्री० [हिं] रस्सी।

**रेह** - स्त्री० [हिं] खारमिश्रित धूल-जैसी मिट्टी।

**रेहन** - पु० [फ़ा] गिरवी, बंधक, रिहन; यौ० —दार - जिसके पास कोई वस्तु या जायदाद बंधक रखी गयी हो; —नामा - रेहन की शर्तों की लिखा-पढ़ी का काग़ज़ या दस्तावेज़।

**रेहल** - स्त्री० [अ] पेचदार तख्ती।

**रैतिक** - वि० [सं] पीतल का; पीतल-संबंधी।

**रैदासी** - 1. स्त्री० [हिं] एक मोटा धान; 2. वि० रैदास के संप्रदाय का।

**रैन, रैनि** - स्त्री० [हिं] रात।

**रैनी** - स्त्री० [हिं] तार खींचने की चाँदी-सोने की गुल्ली।

**रैयत** - स्त्री० [अ] प्रजा।

**रैयाराव** - पु० [हिं] छोटा राजा; प्राचीन काल में राजाओं द्वारा अपने सरदारों को प्रदत्त एक पदवी।

**रैला** - पु० [हिं] झगड़ा; विवाद।

**रैहर** - पु० [हिं] युद्ध।

**रैहाँ** - पु० [अ] औलाद; रहम; गुज़ारा; एक सुगंधित वनस्पति; बख्शिश।

**रोंआ** - पु० [हिं] रोम।

**रोंगटा** - पु० [हिं] रोम; मु० रोंगटे खड़े होना - रोमांच होना।

**रोंगटी** - स्त्री० [हिं] बेईमानी करना (खेल में)।

**रोंघट** - स्त्री० [हिं] धूल; मैल।

**रोंठा** - पु० [हिं] अमहर।

**रोक** - 1. पु० [सं] नक़द रुपया; छिद्र; दीप्ति; नक़द दाम देकर चीज़ ख़रीदना; नौका; 2 वि० गतिमान; 3. स्त्री० [हिं] अटकाव; रोकनेवाली चीज़; निषेध; काम करने पर प्रतिबंध; यौ० —झोंक, थाम, टोक - बाधा; मनाही; अवरोध।

**रोकड़** - स्त्री० [हिं] नक़द रकम; पूँजी; यौ० —बही - नक़द रुपयों के लेने-देन का हिसाब रखने की बही; —बिक्री - नक़द दाम लेकर की गयी बिक्री।

**रोकड़िया** - पु० [हिं] ख़ज़ाची; मुनीम।

**रोकना** - स० [हिं] जाने से मना करना; चाल बंद करना; किसी काम या बात का क्रम बंद करना; बाधा डालना; ऊपर न आने देना; मना करना; काबू में रखना; सामना करना (आक्रमण का); छेंकना (रास्ता)।

**रोग** - पु० [सं] बीमारी; यौ० —कारक - बीमारी पैदा करनेवाला; —ग्रस्त - रोग से पीड़ित; —नाशक - बीमारी दूर करनेवाला; —निदान - रोग के मूल कारण तथा उसके लक्षणों की पहचान करना; —परीसह - कड़े से कड़े रोग को शांतिपूर्वक सहकर समाधि की अवस्था में रहना, —राज - क्षयरोग; —लक्षण - बीमारी के चिन्ह।

**रोग़न** - पु० [फ़ा] तेल, मोम, लाख इत्यादि वस्तुओं का एक प्रकार का मिश्रण, वार्निश; यौ० —दाग़ - घी दागने की करछुल; —दार - चमकीला, रोगन चढ़ाया हुआ; —फ़रोश - तेली; —ज़र्द - घी; —तलख़ - कड़ुवा तेल; —सियाह - अलसी का तेल; कड़ुवा तेल।

**रोग़नी** - वि० [फ़ा] तेल या घी आदि स्निग्ध पदार्थों से लिप्त; वार्निश किया हुआ; यौ० —रोटी - रोग़न मिलायी हुई ख़मीरी रोटी; घी चुपड़ी हुई रोटी।

**रोगाक्रांत** - वि० [सं] रोग से पीड़ित।

**रोगातुर** - वि० [सं] रोग से घबड़ाया हुआ।

**रोगार्त** - वि० [सं] रोग से व्याकुल।

**रोगिणी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] रोग से पीड़ित स्त्री।

**रोगिया** - पु० [हिं] रोगी।

**रोगी** - वि० [सं] अस्वस्थ, बीमार।

**रोचक** - 1. वि० [सं] रुचनेवाला; मनोरंजक, 2. पु० केला; भूख।

**रोचमान** - 1. वि० [सं] चमकता हुआ; सुंदर; 2. पु० घोड़े की गरदन पर की एक भँवरी।

**रोचि** - स्त्री० [सं] प्रभा; किरण; ज्योति; प्रकट होती हुई शोभा।

**रोज़** - 1. पु० [फ़ा] दिन; वक़्त; 2. अव्य० प्रतिदिन; यौ० —अफ़ज़ूँ - प्रतिदिन बढ़नेवाला (धन, यश आदि); —नख़ुस्त - सृष्टि की उत्पत्ति का पहला दिन; —नामचा - दैनिक विवरण लिखने की बही; प्रतिदिन का हिसाब दर्ज करने की बही; —नामा - तिथिपत्र, दैनिक पत्र; —ब-रोज़ - प्रतिदिन; क्रमशः; —मर्रा - नित्य; —रोज़ - प्रतिदिन; रोज़े-क़यामत - क़यामत का दिन; रोज़े-फ़िराक - वियोग का काल; रोज़े बद - बुरे दिन; रोज़े हश्र, रोज़े-हिसाब - क़यामत का दिन।

**रोज़गार** - पु० [फ़ा] व्यवसाय; उत्तम; मु० — चमकना - व्यवसाय में लाभ होना।

**रोज़ा** - पु० [फ़ा] मुसलमानों का दैनिक उपवास; रमज़ान; रोज़े का दिन; यौ० —ख़ोर, ख़्वार - रोज़ा न रखनेवाला; —दार - रोज़ा रखनेवाला।

**रोज़ाना** - अव्य० [फ़ा] नित्य।

**रोज़ी** - स्त्री० [फ़ा] जीविका; ख़ुराक; यौ० —दार - जिसे ख़र्च के लिए नित्य कुछ दिया जाय; —बिगाड़ - निकम्मा; लगी हुई रोज़ी बिगाड़नेवाला।

**रोज़ीना** - पु० [फ़ा] दैनिक वेतन; ख़ुराक (प्रतिदिन की); पेन्शन।

**रोट** - पु० [हिं] बहुत मोटी रोटी; लिट्ट; महुए के रस में बनी मोटी व मीठी रोटी।

**रोटिका** - स्त्री० [स] फुलका, हलकी छोटी रोटी।

**रोटिहा** - पु० [हिं] रोटियो के बदले में काम करनेवाला नौकर।

**रोटी** - स्त्री० [हि] चपाती; भोजन; **यौ०** —कपड़ा - खाना कपड़ा; —दाल - रोटी और दाल; भोजन; **मु०** —कमाना - जीविका चलाना; कुछ उपार्जन करना।

**रोड़ा** - 1. पु० [हिं] ईंट या पत्थर के टुकड़े; कंकड़; एक पंजाबी धान; पंजाब की एक जाति; 2. वि० बाधा; **मु०** —डालना - बाधा खड़ी करना।

**रोद** - पु० [सं] भूमि और स्वर्ग, द्यावापृथिवी।

**रोदन** - पु० [सं] रोना।

**रोदा** - पु० [हिं] धनुष की डोरी, सूक्ष्म ताँत; किसी पेड़ की शाखा।

**रोध** - पु० [स] रोक या बाधा; किनारा; बारी।

**रोधक** - पु० [सं] रोकनेवाला।

**रोधना** - स० [हिं] रोकना।

**रोना** - 1. अ० [हिं] आँसू बहाना; अफ़सोस करना; शिकायत करना; कुढ़ना; शोक करना; फ़रियाद करना; पछताना; किसीके सामने अपना दुख प्रकट करना; 2. वि० रोनेवाला; चिड़चिड़ा; 3. पु० रुदन; अफ़सोस; कुहराम; शोक; शिकायत; कुढन; फ़रियाद; तकलीफ़; **मु०** —आना - दिल भर आना; —पीटना - चिल्लाकर व छाती पीटकर रोना।

**रोनी-धोनी** - 1. वि० [हिं] रोने-धोनेवाली; 2. स्त्री० विलाप की प्रवृत्ति; मनहूसी।

**रोप** - पु० [सं] ठहराव; रोपना; बाण; मोहना।

**रोपक** - 1. वि० [सं] जमाने या लगानेवाला, रोपनेवाला; स्थापित करनेवाला; 2. पु० सोने-चाँदी की तौल का एक मान।

**रोपण** - पु० [सं] रोपने की क्रिया, लगाना; ऊपर रखना; उठाना (दीवार आदि); स्थापित करना; मोहित करना; घाव का सूखना; किसी प्रकार का लेप लगाना।

**रोपना** - स० [हिं] पौधा लगाना या जमाना; स्थापित करना; बीज बोना; ठहराना।

**रोपनी** - स्त्री० [हि] रोपने का काम।

**रोपित** - वि० [सं] जमाया या लगाया हुआ; खड़ा किया हुआ; मोहित; स्थापित।

**रोब** - पु० [अ] तेज; धाक; आतंक; **यौ०**—दाब - आतंक; तेज; —दार - तेजस्वी; प्रभावशाली।

**रोमंथ** - पु० [सं] जुगाली, पागुर।

**रोम** - पु० [सं] शरीर पर के बाल; पर (पक्षियो के); **यौ०** —कूप, द्वार - त्वचा के छोटे छोटे छेद जिनसे रोम निकलते हैं; —पाट - ऊनी कपड़ा; —राजि, लता - रोमावलि; नाभि के ऊपर के बाल; —हर्ष - रोमांच; —हर्षण - हर्ष आदि के कारण रोमो का खड़ा होना; **मु०** —रोम में - सारे शरीर में; —रोम से - तन-मन से, पूर्ण हृदय से।

**रोमांच** - पु० [स] पुलक; रोमो का आनंद या भय आदि के कारण खड़ा होना।

**रोमांचित** - वि० [सं] पुलकित; भीत।

**रोमावली** - स्त्री० [सं] रोमों की पंक्ति; नाभि से ऊपर की ओर जानेवाली रोम-पंक्ति।

**रोयाँ** - पु० [हिं] रोम, रोगटा; **मु०** —खड़ा होना - रोमांच होना; —टेढ़ा न

होना - कुछ न बिगड़ पाना ; —पसीजना - करुणार्द्र होना ।

**रोर** - 1. स्त्री० [हिं] कोलाहल ; अनेक तरह की एक साथ निकली हुई सम्मिलित ध्वनि ; उपद्रव ; ग़रीबी ; हलचल , रोने-चिल्लाने का शब्द ; विपत्ति ; 2. वि० अत्याचारी ; उद्धत ; प्रचंड ।

**रोरा** - पु० [हिं] गाँजे का चूर ।

**रोरी** - 1. स्त्री० [हिं] हलदी-चूने की बनी लाल रंग की बुकनी, रोली ; दौड़-धूप ; 2. वि० सुंदर ; 3. पु० लहसुनिया नग ।

**रोलंब** - 1. पु० [सं] भ्रमर ; शुष्क भूमि ; 2. वि० अविश्वासी ।

**रोल** - 1. पु० [हिं] पानी का रेला ; [सं] हरा अदरक , 2. स्त्री० कोलाहल ; शब्द ।

**रोला** - पु० [हिं] कोलाहल ; घोर युद्ध ; चौबीस मात्राओ का एक छंद ; चौका-बरतन करने का काम ।

**रोली** - 1. स्त्री० [हिं] रोरी, श्री ; 2. लह-सुनिया नग ।

**रोवनहार** - वि० [हिं] रोनेवाला ; आत्मीय ।

**रोवना** - 1. वि०, 2. पु० [हिं] बहुत जल्दी रोनेवाला ; हँसी-खेल में बुरा माननेवाला ।

**रोवासा** - वि० [हिं] रोने का इच्छुक ।

**रोशन** - वि० [फ़ा] प्रकाशित ; प्रसिद्ध ; चमकदार ; जलता हुआ ; ज़ाहिर ; **यौ०** —चौकी - शहनाई ; —ज़मीर, दिमाग़ - अक्लमंद ; —दान - झरोखा ।

**रोशनाई** - स्त्री० [फ़ा] स्याही ; प्रकाश ।

**रोशनी** - स्त्री० [फ़ा] प्रकाश ; चिराग़ ; दीपोत्सव ; ज्ञान ।

**रोष** - पु० [सं] क्रोध ; चिढ़ ; उमंग ; विरोध ।

**रोषण** - 1. पु० [सं] ऊसर भूमि ; कसौटी ; पारा ; 2. वि० क्रुद्ध ; क्रोधशील ।

**रोषी** - वि० [सं] क्रोधी ।

**रोह** - पु० [सं] अंकुर ; कली ; चढ़ना ; चढ़ाई ।

**रोहक** - [सं] पु० चढ़नेवाला ; सवार ।

**रोहण** - पु० [स] अंकुरित होना ; ऊपर की ओर बढ़ना ; चढ़ना ; वीर्य ।

**रोहना** - 1. अ० [हिं] ऊपर को बढ़ना ; चढ़ना ; जाना ; सवार होना ; 2. स० ऊपर करना ; चढ़ाना ; धारण करना ; सवार कराना ।

**रोहिणी** - स्त्री० [सं] गाय ; बिजली ; रीठा ; ब्राह्मी बूटी , लंबी पीली हर्रे ; नव वर्षीया कन्या ; पंच वर्षीया कुमारी ; बलराम की माता ; सत्ताईस नक्षत्रो मे से चौथा, चन्द्रमा की पत्नी ; गले का एक रोग ।

**रोहित** - 1. वि० [सं] लाल रंग का ; 2. पु० लाल रंग ; रक्त ; इंद्रधनुष ; केसर ; कुंकुम ; रोहू मछली ।

**रोही** - 1. वि० [स] चढ़नेवाला ; 2. पु० अश्वत्थ वृक्ष ; उदुंबर वृक्ष ; वट वृक्ष ; रूसा घास ; रोहू मछली ; एक मृग ; एक अस्त्र ।

**रोहू** - पु० [हिं] मछलियो में सर्वश्रेष्ठ लाल परवाली सेहरादार मछली ; दार्जिलिंग में होनेवाला एक पेड़ ।

**रौंट** - स्त्री० [हिं] हँसी-खेल में बुरा मानना , चिढ़कर बेईमानी करना ।

**रौंद** - स्त्री० [हिं] रौंदने का काम या भाव ; चक्कर ।

**रौंदन** - स्त्री० [हिं] मर्दन ।

**रौंदना** - स० [हिं] पददलित करना ; लातो से मारना-पीटना ; तहस-नहस करना ।

**रौंदी** - स्त्री० [हिं] जानवरो के रहने का बाड़ा ।

**रौंसा** - पु० [हिं] बोड़ा; लोबिये के बीज; केवाँच।
**रौ** - स्त्री० [फ़ा] गति; पानी का बहाव; वेग; चाल; धुन; जोश।
**रौखुर** - स्त्री० [हिं] बाढ़ में बालू आ जाने के कारण ख़राब हुई भूमि।
**रौग़न** - पु० [अ] रोग़न।
**रौग़नी** - वि० [अ] रोग़नी।
**रौज़न** - पु० [फ़ा] छेद; दरार; रोशन-दान।
**रौज़ा** - पु० [अ] बाग़; मक़बरा, समाधि।
**रौतई** - स्त्री० [हिं] राव या रावत का पद; सरदारी।
**रौताइन** - स्त्री० [हिं] ठकुराइन, स्त्रियो के लिए आदरसूचक संबोधन।
**रौद्र** - 1. वि० [सं] भयकर, क्रोधपूर्ण; रुद्र-संबंधी; 2. पु० काव्य के नौ रसों में से एक; क्रोध; यमराज; धूप; एक अस्त्र; एक केतु; **यौ०** —दर्शन - देखने में भयानक रूपवाला।
**रौद्रता** - स्त्री० [सं] उग्रता, भयंकरता।
**रौद्री** - स्त्री० [सं] गांधार स्वर की पहली श्रुति (संगीत); गौरी।
**रौनक़** - स्त्री० [अ] ख़ूबी; चमक; ताज़गी; बहार; **यौ०** —अफ़रोज़ - रौनक बढ़ानेवाला; रौनक़े-महफ़िल - सभाभूषण।
**रौप्य** - 1. वि० [सं] चाँदी का बना हुआ, चाँदी का; 2. पु० चाँदी।
**रौरव** - 1. वि० [सं] कपटी; भयंकर; अपनी बात पर दृढ न रहनेवाला; 2. पु० एक भीषण नरक।
**रौरा** - 1. पु० [हिं] रौला; 2. सर्व० रावरा, आपका।
**रौराना** - स० [हिं] प्रलाप करना।
**रौरे** - सर्व० [हिं] आप।
**रौला** - पु० [हिं] हलचल; हुल्लड़।
**रौलि** - स्त्री० [हिं] तमाचा।
**रौस** - स्त्री० [हिं] गति; चाल-ढाल; बाग़ की क्यारियों के बीच का रास्ता; मकान की ऊपरवाली मंज़िल में चारो तरफ़ का पतला रास्ता।
**रौसली** - स्त्री० [हिं] चिकनी व उपजाऊ मिट्टी।
**रौहाल** - स्त्री० [हिं] घोड़े की एक चाल; घोड़ो की एक जाति।
**रौहिण** - पु० [सं] चंदन।
**रौहिणेय** - पु० [सं] बलराम; बुध ग्रह, बछड़ा; मरकत।

## ल

**लंक** - स्त्री० [हिं] कमर; सिहल, लंका द्वीप; **यौ०** —नाथ, नायक, पति - रावण; विभीषण।
**लंखनी** - स्त्री० [सं] लगाम का मुँह में रहनेवाला अंश।
**लंग** - 1. स्त्री० [हिं] काछ, लाँग; 2. पु० [स] उपपति; मेल, [फ़ा] लँगड़ापन; 3. वि० लँगड़ा।
**लँगटा** - वि० [हिं] नंगा।
**लँगटी** - स्त्री० [हिं] लँगोटी।
**लंगड़** - 1. वि० [हिं] लँगड़ा; 2. पु० लंगर।
**लँगड़ा** - 1. वि० [हिं] जिसका एक पैर टूटा या बेकार हो, जिसका कोई पाया टूटा हो (पलग आदि का); 2. पु० उत्तर भारत में होनेवाला एक प्रसिद्ध कलमी आम।
**लँगड़ाना** - अ० [हिं] लँगड़ा कर चलना।
**लंगन** - पु० [हिं] लाँघना।
**लंगनी** - स्त्री० [हिं] अलगनी।

**लंगर** - 1. पु० [फ़ा] लोहे का बहुत भारी काँटा जिसे नाव या जहाज को ठहराने के लिए नदी या समुद्र में गिरा देते हैं ; एक छोर पर वज़न बाँधी हुई रस्सी ; वह सत्र जहाँ मुफ़्त भोजन बाँटा जाता है ; स्त्रियों के पैर का एक गहना ; लंबी क़तार ; पहलवानों का लँगोट ; उपद्रव मचानेवाली गाय के गले में बाँधा जानेवाला खूँटा ; कमर के नीचे का हिस्सा ; 2. वि० ढीठ ; लँगड़ा ; वज़नदार ; शरारती ; **यौ०** —खाना - भोजन का सत्र ; —गाह - जहाज़ों के ठहरने का स्थान , **मु०** —उठाना - रुके हुए जहाज़ का रवाना होना ।

**लंगल** - पु० [स] हल ।

**लंगुरा** - स्त्री० [हिं] एक तरह का धान्य ।

**लंगूर** - पु० [हि] बंदर ; काला मुँहवाला एक बड़ा बंदर ; **यौ०** —फल - नारियल ।

**लंगूरी** - स्त्री० [हिं] घोड़े की उछलकर चलने की एक चाल ; चोरों को चोरी गये पशुओं का पता बताने के बदले दिया जानेवाला इनाम ।

**लंगूल** - पु० [हिं] दुम, पूँछ ।

**लँगोचा** - पु० [हिं] कुलमा, कीमे से भरकर तली हुई जानवर की आँत ।

**लँगोट, लँगोटा** - पु० [हिं] लंबी पट्टीवाला कमर पर बाँधा जानेवाला एक वस्त्र-विशेष जिसे पहलवान कुश्ती के समय धारण करते हैं, कौपीन ; **यौ०** —बंद - ब्रह्मचारी , लँगोट बाँधनेवाला ; —का ढीला - कामुक ; —का सच्चा - स्त्रीसहवास से बचकर रहनेवाला ।

**लँगोटिया** - 1. वि० [हिं] लँगोट बाँधनेवाला ; 2. पु० साधु ; पहलवान ; **मु०** —यार - जिगरी दोस्त ।

**लँगोटी** - स्त्री० [हिं] छोटा लँगोट, कौपीन ; **मु०** —पर फाग खेलना - थोड़ा साधन होने पर विलास की ओर दौड़ना ; —बँधवाना - दरिद्र बना देना ; —बाँध लेना - दरिद्र होना ; सांसारिक सुखों का त्याग करना ; —में मस्त - गरीबी की हालत में खुश रहनेवाला ।

**लंघन** - पु० [सं] अनाहार या उपवास ; लाँघना ; किसी काम में सुगमता लाने का उपाय ; अतिक्रमण करना ; घोड़े की बहुत तेज़ चाल ।

**लंघना** - 1. स० [हिं] लाँघना ; 2. स्त्री० [सं] उपेक्षा ; 2. वि० भूखा ।

**लंघनीय** - वि० [सं] लाँघने योग्य ।

**लँघाना** - स० [हिं] पार उतारना या करना ।

**लंघ्य** - वि० [स] लाँघने योग्य ; अतिक्रमण करने योग्य ; उपवास करने योग्य ।

**लंचा** - स्त्री० [सं] रिश्वत ।

**लंजिका** - स्त्री० [सं] वेश्या ।

**लंठ** - वि० [हिं] मूर्ख ; असभ्य ।

**लंड** - पु० [हिं] शिश्न, लिंग ; [सं] विष्ठा ।

**लँडूरा** - वि० [हि] दुमकटा (पक्षी) ।

**लंतरानी** - स्त्री० [अ] आत्मप्रशंसा, डींग ।

**लंदराज** - पु० [हिं] एक तरह की मोटी चादर ।

**लंपट** - 1. वि० [सं] कामी, विषयी ; 2. पु० कामी पुरुष ।

**लंपटता** - स्त्री० [सं] कामुकता ; कुकर्म ।

**लंफ** - पु० [हि] कूद ।

**लंब** - 1. पु० [सं] एक राग का भेद-विशेष ; नाचनेवाला ; अंग ; पति , रिश्वत ; विषुव रेखा की समानांतर एक रेखा ; ग्रहों की एक विशेष गति ; सरल रेखा के आधार पर समकोण बनानेवाली रेखा ; 2. वि० लंबा ; **यौ०** —कर्ण - बड़े कानवाला ; बकरा ; गधा ; खरगोश ; हाथी ; बाज ; राक्षस ;

—केश - लंबे बालवाला ; —ग्रीव - ऊँट ; —जठर - तोंदवाला ; —तड़ंग - ताड़-सा लंबा ; —मान - दूर तक गया या फैला हुआ।

**लंबक** - पु० [सं] किसी ग्रंथ का कोई अध्याय ; लंब रेखा ; मुख का रोग-विशेष ; पात्रविशेष, एक प्रकार का योग (ज्योतिष)।

**लंबा** - 1. स्त्री० [सं] दुर्गा ; रिश्वत ; एक प्रकार की कडुवी ककड़ी ; 2. वि० [हि] चौड़ाई की अपेक्षा अधिक विस्तारवाला (जैसे, लंबा बांस, लंबा रास्ता आदि) ; जो अधिक ऊँचा हो ; परिमाण में अधिक ; **यौ०** —चौड़ा - विस्तृत ; —सफ़र - दूर की यात्रा, मृत्यु ; **मु०** —करना - किसीको चलता या चित्त करना।

**लंबाई** - स्त्री० [हिं] लंबा होने का भाव।

**लंबान** - स्त्री० [हिं] लंबाई ; **यौ०** —चौड़ान - लंबाई-चौड़ाई।

**लंबायमान** - वि० [सं] बहुत लंबा ; लेटा हुआ।

**लंबित** - वि० [सं] लटकता हुआ, अवलंबित ; डूबा हुआ।

**लंबी** - वि० [हिं] 'लंबा' का स्त्रीलिंग रूप ; **मु०** —चौड़ी हाँकना - डींग मारना ; —तानकर सोना - बेफ़िक्र होकर सोना ; —साँस भरना या लेना - आहें भरना।

**लंबू** - वि० [सं] लंबी टाँगोवाला।

**लंबूषा** - स्त्री० [सं] सात लड़ियों का हार।

**लंबोतरा** - स्त्री० [हिं] कुछ-कुछ लंबाई लिये हुए।

**लंबोदर** - 1. पु० [सं] गणेश ; 2. वि० पेटू ; बड़ी तोंदवाला।

**लंभ** - पु० [सं] प्राप्ति।

**लंभक** - पु० [सं] प्राप्त करनेवाला।

**लंभन** - पु० [सं] प्राप्ति ; ध्वनि ; लांछन।

**लउ** - स्त्री० [हि] लौ, लगन।

**लउका** - पु०
**लउकी** - स्त्री० } [हि] घिया।

**लऊक़** - पु० [अ] चाटकर खाने की दवा।

**लकड़दादा** - पु० [हिं] परदादा से बड़ा दादा।

**लकड़फोड़वा** - पु० [हिं] अपनी चोंच द्वारा पेड़ में खोखला बनानेवाली एक चिड़िया।

**लकड़बग्घा** - पु० [हिं] भेड़िये की जाति का एक हिंस्र पशु।

**लकड़हरना** - पु० [हिं] जिराफ़।

**लकड़हारा** - पु० [हि] जंगल से लकड़ियाँ लाकर बेचनेवाला।

**लकड़ा** - पु० [हिं] लकड़ी का बड़ा और मोटा कुंदा।

**लकड़ाना** - अ० [हिं] सूखकर लकड़ी की तरह सख्त हो जाना ; दुर्बलता के कारण केवल हड्डी का ढाँचा मात्र रह जाना।

**लकड़ी** - स्त्री० [हि] लाठी ; गतका ; पेड़ का कोई सूखा हुआ भाग (शाखा, टहनी आदि) ; **मु०** —चलना - लाठी चलना ; मार पीट होना ; —देना - मुर्दा जलाना ; —सा - बहुत दुबला।

**लक़दक़** - पु० [फ़ा] बंजर भूमि।

**लक़ब** - पु० [अ] गुण, योग्यता या पदसूचक नाम ; पदवी।

**लक़लक़** - 1. पु० [अ] लंबी टाँग और गर्दनवाला एक जलीय पक्षी, सारस ; 2. वि० लंबी टाँगोवाला, दुबला-पतला (आदमी)।

**लकवा** - पु० [अ] पक्षाघात ; एक बीमारी जिसमें मुँह टेढ़ा हो जाता है और अन्य अंगो पर भी उसका असर होता है।

**लकसी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की लग्गी।

**लकीर** - स्त्री० [हिं] रेखा ; उँगली आदि से जमीन पर बनायी हुई लंबी रेखा ; साँप की गति का चिन्ह ; कतार, पंक्ति ; छकड़ो और गाड़ियो के पहियो का निशान ; मु० —का फ़कीर - पुरानी प्रथा पर आँख मूँदकर चलनेवाला, —पर चलना - पुराने तरीके पर चलना ; —पीटना - पुरानी प्रथाओ पर चलना ; पछताना ।

**लकुट** - पु० [सं] छड़ी, लाठी , [हिं] बंगाल आदि की ओर होनेवाला एक पेड़, लुकाठ ।

**लकुटि, लकुटिया, लकुटी, लकुरी** - स्त्री० [हिं] छड़ी ।

**लकोटा** - पु० [हिं] पहाड़ी बकरो की एक जाति जिनकी बालो से शाल-दुशाले आदि बनाये जाते है ।

**लक्का** - पु० [फ़ा] गिद्ध, चील ; एक प्रकार का कबूतर ।

**लक्खी** - 1. पु० [हिं] घोड़ो का एक भेद ; लखपति ; 2. वि० लाख के रंग का ।

**लक्त** - वि० [सं] लाल ।

**लक्तक** - पु० [सं] महावर ; चिथड़ा ।

**लक्ष** - 1. वि० [सं] सौ हज़ार ; 2. पु० सौ हज़ार की संख्या ; चिन्ह ; पैर ; बहाना ; मोती ; लक्ष्य ; यौ० —पति - लखपति ; —वेधी - निशाने का बेध करनेवाला ।

**लक्षक** - 1. वि० [सं] प्रकट करनेवाला ; 2. पु० संबंध या प्रयोजन से अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द ।

**लक्षण** - 1. पु० [सं] शरीरवर्ती रोगसूचक चिन्ह ; निर्धारित दर ; विशेषतासूचक शब्द ; शुभाशुभ की सूचना देनेवाले अंगस्थित चिन्ह ; उद्देश्य ; चाल-ढाल ; दर्शन ; नाम ; परिमाण ; प्रस्तुत विषय ; 2. वि० बतलानेवाला ।

**लक्षणा** - स्त्री० [सं] वह शब्दशक्ति जो सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करती है ।

**लक्षना** - 1. अ० [हिं] दिखायी पड़ना ; 2. स० देखना ; 3. स्त्री० लक्षणा ।

**लक्षा** - स्त्री० [सं] एक लाख की संख्या ।

**लक्षित** - वि० [सं] देखा हुआ ; अनुमानतः समझा या जाना हुआ ; चिन्हवाला ।

**लक्षितार्थ** - पु० [सं] लक्षणाशक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ ।

**लक्षी** - वि० [सं] अच्छे चिन्हवाला ।

**लक्ष्म** - पु० [सं] चिन्ह ; परिभाषा ; प्रधान; लक्ष्मण ; विशेषता ; सारस पक्षी ।

**लक्ष्मण** - 1. पु० [सं] राम का भाई ; चिन्ह ; नाग ; नाम ; सारस ; दुर्योधन का एक पुत्र ; 2. वि० उन्नतिशील ; चिन्होंवाला ; भाग्यशाली ।

**लक्ष्मी** - स्त्री० [सं] धन की अधिष्ठात्री देवी, कमला, महालक्ष्मी, लोकमाता, श्री , सुंदरता ; अभ्युदय ; सफलता ; चंद्रमा की ग्यारहवीं कला ; गृहस्वामिनी ; वीरांगना ; कमल ; मोती ; हलदी ; सफ़ेद तुलसी ; यौ० —कांत - विष्णु ; नरेश ; —गृह - लाल कमल ; —पति - विष्णु ; लौंग का पेड़ , सुपारी का पेड़ , —पुष्प - कमल ; माणिक, लाल ; लौंग ; —पूजा - दीपावली के दिन होनेवाला लक्ष्मीपूजन का त्योहार ; —वान - धनवान ; सुंदर ; विष्णु ; कटहल ; —वार - गुरुवार , —वेष्ट, तारपीन ; — सहज, सहोदर - चंद्रमा ; कपूर ; इन्द्र का घोड़ा ; शंख ।

**लक्ष्मीक** - वि० [सं] धनी ; भाग्यशाली ।

**लक्ष्मीश** - पु० [सं] विष्णु ; सपन्न व्यक्ति ; आम का पेड़ ।

**लक्ष्य** - 1. पु० [सं] जिस वस्तु पर निशाना लगाया जाय; उद्देश्य; अनुमेय, अनुमान का विषय; बहाना; लाख की संख्या: लक्षणाशक्ति से प्राप्त अर्थ; 2. वि० दर्शनीय; जिसका लक्षण बनाया जाय, **यौ०** —वीथी - उद्देश्य सिद्ध करनेवाला कर्म; देवलोक का पथ; —वेधी - वेगपूर्वक उड़ते या दौड़ते जीवों का लक्ष्य भेद करनेवाला, —सिद्धि - उद्देश्य की प्राप्ति।

**लक्ष्यार्थ** - पु० [सं] लक्षितार्थ।

**लखना** - स० [हिं] जानना; ताड़ जाना; देखना; समझना।

**लखपति** - पु० [हिं] बहुत धनी आदमी; लाखों रुपयों का मालिक।

**लखपेड़ा** - वि० [हिं] अधिक पेड़ोंवाला (बाग़)।

**लखराऊँ, लखरावँ** - पु० [हिं] लाख पेड़ोंवाला बाग़; बहुत बड़ा बाग़।

**लख़लख़** - 1. वि० [फ़ा] दुबला-पतला; 2. स्त्री० भूख-प्यास से सूखे गले से निकलनेवाली आवाज़।

**लखलुट** - वि० [हिं] लाखों लुटा देनेवाला।

**लख़लख़ा** - पु० [अ] कस्तूरी।

**लखाइ** - स्त्री० [हिं] पहचान।

**लखाना** - 1. अ० [हिं] दिखायी देना; 2. स० अनुमान करना; दिखाना।

**लखाव** - पु० [हिं] पहचान; पहचान की चीज़।

**लखिया** - पु० [हिं] लखनेवाला।

**लखी** - पु० [हिं] लाख के रंग का घोड़ा।

**लखुआ, लखुवा** - पु० [हिं] गेहूँ के पौधे का एक रोग, लाखा।

**लखेदना** - स० [हिं] खदेड़ना।

**लखेरा** - पु० [हिं] लाख की चूड़ियाँ बनानेवाला।

**लखौट** - स्त्री० [हिं] लाख की चूड़ियाँ।

**लखौटा** - पु० [हिं] लिखावट; लेख-पत्र; सिंदूर की डिबिया।

**लखौरी** - स्त्री० [हिं] भँवरी का घर; पुरानी छोटी और पतली ईंट; किसी देवता पर उसके प्रिय वृक्ष के एक लाख फूल-पत्ते चढ़ाना।

**लख़्त** - पु० [फ़ा] खंड; टुकड़ा; **यौ०** लख़्ते-जिगर - कलेजे का टुकड़ा; बहुत प्यारा; पुत्र।

**लग** - 1. अव्य० [हिं] तक; पास; वास्ते; साथ; 2. स्त्री० प्रेम; लगन।

**लग़ज़िश** - स्त्री० [फ़ा] फिसलन; भूल-चूक; लड़खड़ाहट।

**लगण** - पु० [सं] पलकों का एक रोग जिसमें एक गाँठ पड़ जाती है।

**लगड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटे बच्चों के लिए काम आनेवाला बिस्तरा।

**लगन** - 1. स्त्री० [हिं] प्रवृत्ति का किसी ओर झुकाव, धुन; प्रेम; 2. पु० विवाह का मुहूर्त्त, लग्न; [फ़ा] मोमबत्ती जलाने की थाली; आटा गूँधने तथा मिठाई आदि रखने की थाली; विवाह के समय वर के लिए थाली में सजाकर मिठाइयाँ भेजने की एक रीति; **यौ०**—पत्री - विवाह-तिथिसूचक चिट्ठी; **मु०** —धरना - विवाह का मुहूर्त्त ठहराना।

**लगना** - अ० [हिं] जुड़ना; सटना; रगड़ खाना; सिलना; कट जाना; गड़ना; भिड़ना; बंद होना; पकड़ना; चस्का लगना; तल पर पहुँचना, संयोग होना; असर करना; अनुभव होना; पीछा करना; काम आना; सो जाना; दिलचस्पी होना; प्रेम होना; कमज़ोर होना; फल आदि का सड़ना; छेड़-छाड़ करना; पौधों का उगना; दुहा जाना;

लिपट जाना; व्यवस्था होना; मिलना; आरोप किया जाना; रोशनी होना; जलना; ताक में रहना।

**लगनी** - स्त्री० [हिं] छोटी थाली; परात; पानदान के अदर की पान रखने की तश्तरी।

**लगभग** - अव्य० [हिं] क़रीब-क़रीब।

**लगलग** - वि० [हिं] कमज़ोर।

**लगवाना** - स० [हिं] लगाने का काम दूसरे से कराना।

**लग़वीयत** - स्त्री० [अ] बेहूदगी।

**लगाई** - स्त्री० [हिं] आरोप; लगाव; यौ० —बजाई - इधर की बात उधर जा सुनाना; —लतरी - एक की बुराई दूसरे से करना।

**लगाऊ** - वि० [हिं] लगानेवाला; जड़ने-वाला।

**लगातार** - अव्य० [हिं] बराबर; बिना रुके हुए।

**लगान** - पु० [फ़ा] भूमिकर; नावों के ठहरने का स्थान; दो मकानों का सटा हुआ अंश; लगना; लगाना; यौ०—मुक़र्ररी - ज़मीन के लिए मुक़र्रर किया हुआ लगान; —वाक़ई - असली भूमिकर।

**लगाम** - स्त्री० [फ़ा] घोड़े के मुँह में लगा रहनेवाला लोहे का दाँतेदार छड़ जिससे बँधी हुई रस्सी सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहती है; अंकुश; मु०—कड़ी करना - घोड़े की चाल धीमी करना; कार्यादि का नियन्त्रण करना; —ढीली करना - कार्यादि का नियन्त्रण न रखना; घोड़े को मनचाही चाल चलने देना; —हाथ में लेना - संचालनसूत्र हाथ में लेना।

**लग़ायत** - अव्य० [अ] अंत तक।

**लगार** - स्त्री० [हिं] क्रम; घनिष्ठ संबंधी; प्रेम; भेद लेनेवाला; बराबर कोई काम करते जाना; संबंध।

**लगालगी** - स्त्री० [हिं] मेल-जोल; लगने या लगाने की क्रिया।

**लगाव** - पु० [हिं] संबंध।

**लगावट** - स्त्री० [हिं] प्यार; संबंध।

**लगावन** - स्त्री० [हिं] रोटी के साथ खायी जानेवाली चीज़, सालन; लगाव।

**लगावना** - स० [हिं] लगाना।

**लगि** - अव्य० [हिं] लग, तक।

**लगी** - स्त्री० [हिं] प्रेम; आग; तरफ़दारी; भूख; ख्वाहिश; यौ० —लपटी - तरफ़दारी।

**लगुड़, लगुर, लगुल** - पु० [सं] दंड, लाठी; लाल कनेर, छोटा लौहदंड।

**लगुवा** - वि० [हिं] पीछे चलनेवाला।

**लगूर, लगूल** - स्त्री० [हिं] दुम।

**लग़ो** - 1. वि० [अ] असंगत; व्यर्थ; 2. स्त्री० बेहूदी बात।

**लग्गा** - पु० [हिं] अँकसीदार लंबा-पतला बाँस; नाव चलाने का बाँस; लंबा बाँस लगाकर बनाया हुआ घास या कीचड़ आदि हटाने का फरसानुमा औजार; काम में हाथ डालना।

**लग्गी** - स्त्री० [हिं] छोटा लग्गा।

**लग्गू** - वि० [हिं] लगनेवाला।

**लग्न** - 1. पु० [सं] ब्याह; राजा की स्तुति करनेवाला; कोई काम करने का शुभ मुहूर्त; ब्याह का समय; राशि-विशेष के उदयकाल का दिनांश; 2. वि० लगा हुआ; जुड़ा हुआ; मस्त; लज्जित; शुभ; यौ० —कुंडली - जन्मकुंडली; —दिन - विवाह आदि का शुभ दिन; —पत्र, पत्रिका - विवाहकर्म और उसकी तिथि आदि से उल्लिखित पत्र।

**लग्नेश** - पु० [सं] लग्न का स्वामी ग्रह ।

**लघिमा** - स्त्री० [सं] योग में एक सिद्धि जिससे सिद्ध पुरुष इच्छानुसार छोटा हो सकता है ; हलकापन ।

**लघु** - 1. वि० [सं] छोटा ; क्षुद्र ; निर्बल ; अल्प ; अस्थिरचित्त ; निस्सार ; फुर्तीला ; ह्रस्व ; प्रिय ; 2. पु० काला अगर ; खस ; पंद्रह क्षणों की एक काल-गणना ; बारह मात्राओं का प्राणायाम ; एक मात्रा के स्वर (अ, इ, उ आदि) ; स्वस्थ व्यक्ति ; चाँदी ; **यौ०** —काय - बकरा ; —काष्ठ - डंडे का वार रोकने के काम आनेवाला हलका डंडा ; —क्रम - तेज़ चाल ; —खट्विका - आरामकुर्सी ; मचिया ; —गति - तेज़ चलनेवाला ; —चित्त - चंचल चित्तवाला ; —चेता - नीच ; —तुपक - तमंचा, पिस्तौल ; —दुंदुभी - डुग्गी ; —द्राक्षा - किसमिस; —नाम - अगुरु ; —नालिक - छोटी बंदूक़ ; —पाक - सुपाच्य ; —पाकी - जल्द पचनेवाला ; एक प्रकार का अन्न ; —प्रयत्न - आलसी ; —फल - गूलर ;—मति - मूर्ख ; —वृत्ति - अव्यवस्थित ; हलके दिल का ; —शंका - पेशाब करना ; —शंख - घोंघा ; —हस्त - तेज़ी से बाण चलानेवाला ।

**लघुतम** - वि० [सं] सबसे छोटा ; **यौ०**—समापवर्त्य - दो या अधिक संख्याओं से पूरी-पूरी बँट जानेवाली सबसे छोटी संख्या (गणित) ।

**लच, लचक** - स्त्री० [हिं] किसी वस्तु के दबने या झुकने का गुण ।

**लचकना** - अ० [हिं] लंबी चीज़ का दबाव आदि से झुकना ; चलते समय स्त्रियों का झुक-झुककर चलना ; स्त्रियों की कमर का नखरे-नज़ाकत से झुकना ।

**लचका** - पु० [हिं] झटका ; एक तरह का गोटा ।

**लचकीला** - वि० [हिं] दबने या लचकनेवाला, लचकदार ।

**लचना** - अ० [हि] लचकना ।

**लचलचा, लचीला** - वि० [हिं] लचकीला ; **यौ०** —पन - लचक, वस्तुओं के लचकने का भाव ।

**लच्छा** - पु० [हिं] डोरे का गुच्छा , लंबे व पतले कटे हुए टुकड़े ; मैदे से बनी सूत-सी लंबी और रेशेदार एक मिठाई ; घटिया केसर ; एक गहना ।

**लच्छेदार** - वि० [हिं] देर तक चलनेवाली मनोहर (वार्त्ता) ; जिसमें लच्छे पड़े हों ।

**लच्छी** - 1. पु० [हि] घोड़ों का एक भेद ; 2. स्त्री० ऊन या सूत आदि का लपेटा हुआ गुच्छा ।

**लजना** - अ० [हि] लज्जित होना ।

**लजवाना** - स० [हिं] शरमिंदा करना ।

**लजाना** - 1. अ० [हिं] अपने अनुचित या बुरे आचरण का अनुभव कर लज्जित होना ; 2. स० लज्जित करना ।

**लजालू** - पु० [हि] स्पर्श से सिकुड़ जानेवाला एक पौधा ।

**लजावनहारा** - पु० [हिं] लज्जित करनेवाला ।

**लज़ीज़** - वि० [अ] स्वादिष्ट ; प्यारा ।

**लजीला** - वि० [हि] शरमीला ।

**लज़्ज़त** - स्त्री० [अ] ज़ायक़ा, स्वाद ; सुख ; **यौ०** —दार - ज़ायक़ेदार ।

**लज्जा** - स्त्री० [सं] मन की संकोचपूर्ण अवस्था ; प्रतिष्ठा ; लजालू ; **यौ०** —कर, प्रद, वह - शरमिंदा करनेवाला ; —वंत - लजीला ; लजालू ; —वंती, वती - लजालू ; शरमीली , —वान, शील - विनम्र ; शरमीला ; —शून्य, हीन - निर्लज्ज ।

**लज्जालु** - 1. वि० [सं] लज्जाशील ; 2. पु० लजालू नाम का पौधा ।
**लज्जित** - वि० [सं] लजाया हुआ, शरमिंदा ।
**लट** - स्त्री० [हिं] उलझे हुए बालों का गुच्छा ; नीचे लटकनेवाले सिर के लंबे बालों का गुच्छा ; आँत में पड़नेवाले बारीक़ कीड़े ; एक प्रकार का बेत ; लपट ; मु० —पड़ना - सिर के बालों का उलझना ।
**लटक** - 1. स्त्री० [हिं] अंगभंगी ; झुकाव ; लटकन ; 2. पु० [सं] ठग ; दुर्जन ।
**लटकन** - पु० [हिं] लटकने की क्रिया ; नाक का एक गहना ; मालखंभ की एक कसरत ; सिरपेच में लगा हुआ रत्न-गुच्छ , सुंदर चाल ।
**लटकना** - अ० [हिं] टँगना ; चल-विचल होना ; काम पूरा न होना ; किसीके आश्रय में रहना ; ऊँची जगह से नीचे की ओर अवलंबित होना ।
**लटका** - पु० [हिं] गति ; टोटका ; बात-चीत का बनावटी ढंग ; एक तरह का चलता गाना ; रोग आदि का छोटा नुस्ख़ा ।
**लटकीला** - वि० [हिं] झूमता हुआ ; लचकनेवाला ।
**लटना** - अ० [हिं] थककर गिरना ; सुस्त पड़ना ; व्याकुल होना ; परिश्रम आदि से कमज़ोर होना ; आसक्त होना ; इच्छा करना ।
**लटपट, लटपटा** - वि० [हिं] गिरता-पड़ता ; टूटा-फूटा (शब्द) ; ढीला-ढाला ; अट-संट ; शिथिल ; बेबस ; थका हुआ ; सलवटदार (कपड़ा) ; न बहुत गाढ़ा और न पतला ।
**लटपटान** - स्त्री० [हिं] लड़खड़ाहट ; सुंदर चाल ।
**लटपटाना** - अ० [हिं] कमज़ोरी या नशे आदि के कारण सीधे न चल पाना, लड़खड़ाना ; आसक्त होना ; मोहित हो जाना ।
**लटापटी** - स्त्री० [हिं] लटपटाना ; लड़ाई-झगड़ा ; भिड़ंत ।
**लटिया** - स्त्री० [हिं] लच्छी, आँटी ।
**लटी** - स्त्री० [हिं] झूठी बात ; बुरी बात ; वेश्या ; साधुनी ।
**लटूरा** - पु० [हिं] कुप्पा ।
**लटूरी** - स्त्री० [हिं] सिर के बालों का लटकनेवाला गुच्छा ।
**लट्टू** - पु० [हिं] लड़कों के खेलने का लकड़ी का बना गोल बट्टा ; बिजली का बल्ब ; मु० —होना - मुग्ध होना ; हैरान होना ।
**लट्ठ** - पु० [हिं] मोटी लाठी ; यौ० —बंद, बाज़ - लठैत ; लाठी चलानेवाला , —बाज़ी - लाठी की लड़ाई ; —मार - लाठी मारनेवाला ; कठोर, कड़ी (बात) ।
**लट्ठा** - पु० [हिं] ज़मीन नापने का साढ़े-पाँच हाथ लंबा बाँस ; लकड़ी का खंभा ; लकड़ी का लंबा टुकड़ा ; मोटा कपड़ा ; यौ० —बंदी - लट्ठे से की जानेवाली ज़मीन की नाप ।
**लठिया** - स्त्री० [हिं] लाठी ।
**लठैत** - वि० [हिं] लाठी चलाने में कुशल ।
**लड़** - स्त्री० [हिं] कतार ; किसी वस्तु की क्रमबद्ध पंक्ति ; फूलों का छड़ी के ढंग का गुच्छा ।
**लड़क** - पु० [हिं] 'लड़का' का समास में व्यवहृत रूप ; यौ० —पन - बाल्या-वस्था ; बच्चों की-सी चंचलता ; —बुद्धि - बच्चों-जैसी बुद्धि ; अपरिपक्व बुद्धि ।
**लड़कई** - स्त्री० [हिं] लड़कपन ; नटखटी ; नादानी ।

**लड़का** - पु० [हिं] बालक ; पुत्र ; **यौ०** —वाला - संतान ; परिवार ।

**लड़की** - स्त्री० [हिं] बालिका ; पुत्री ; **यौ०** —वाला - ब्याह के अवसर पर कन्या का पिता या सरक्षक ; कन्यापक्ष ।

**लड़कौरी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [हि] लड़के-वाली स्त्री ।

**लड़खड़ाना** - अ० [हि] डगमगाना ; डगमगाकर गिरना ; अस्थिर होना ; चूक जाना ।

**लड़खड़ाहट, लड़खड़ी** - स्त्री० [हिं] लड़खड़ाने का भाव ।

**लड़ना** - अ० [हिं] किसी व्यक्ति या पदार्थ का दूसरे व्यक्ति या पदार्थ से टक्कर खाना ; भिड़ना ; कुश्ती होना ; एक दूसरे पर प्रहार करना ; बहस करना ; वाग्युद्ध करना ; संयुक्त होना ; मेल खाना ।

**लड़बड़ाना** - अ० [हिं] लड़खड़ाना ।

**लड़ाई** - स्त्री० [हिं] युद्ध ; कुश्ती ; कलह ; बहस ; टक्कर ; वैर ; क़ानूनी दाँव-पेच करना ।

**लड़ाका** - वि० [हि] झगड़ालू ; योद्धा ।

**लड़ी** - स्त्री० [हिं] क़तार ; छड़ी के रूप का गुच्छा ; किसी चीज़ की माला ।

**लड्डू** - पु० [हिं] एक प्रकार की गोलाकार मिठाई, मोदक ।

**लड़ंत** - पु० [हिं] कुश्ती का एक पेंच ।

**लढ़ा** - पु० [हि] बैलगाड़ी ।

**लढ़िया** - स्त्री० [हि] छोटी बैलगाड़ी ।

**लत** - स्त्री० [हिं] बुरी आदत, टेव ; 'लात' का समास में व्यवहृत रूप ; **यौ०** —ख़ोर - हमेशा लात खानेवाला ; पायंदाज़ ; देहली ; दास ; —मर्दन - पैर से रौंदना ; —हा - लात मारनेवाला (घोड़ा, बैल आदि) ।

**लतर** - स्त्री० [हिं] लता ।

**लतरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की चप्पल ; मोट ; लता ।

**लता** - स्त्री० [सं] बेल ; कोमल शाखा ; दूभ ; माधवी ; सुंदरी स्त्री ; मोतियों की लड़ी ; रेखा ; **यौ०** —कर - नृत्य में हाथ हिलाने का एक ढंग ; —कुंज - लता से घिरा, छायामय स्थान ; —गृह, भवन - लताओं से मंडप की तरह निर्मित स्थान , —पाश - लताओं का जाल ; —बाण - कामदेव ; —मंडप - लताओं का मंडप, लतागृह ; —मंडल - लताओं का घेरा, कुंज ; — मृग - बंदर ; —वितान - लताओं से बना हुआ मंडल ; —वेष्टित - लताओं से आच्छादित ।

**लताड़ना** - स० [हिं] फटकारना ; हैरान करना ; कुचलना ; लात से मारना ।

**लताफ़त** - स्त्री० [अ] लतीफ़ होना ; सूक्ष्मता ; स्वच्छता ; सुरुचि , शोभा ; रोचकता ; सुंदरता ।

**लतिका** - स्त्री० [सं] छोटी लता ; मोतियों की लड़ी ।

**लतियाना** - स० [हिं] रौंदना , लातों से ख़ूब मारना ।

**लतीफ़** - वि० [अ] बारीक ; ज़ायक़ेदार ; बढ़िया ; साफ़-सुथरा ; सुपाच्य (भोजन); **यौ०** —मिज़ा - जल्द पचनेवाला आहार ; —मिज़ाज़ - ख़ुशमिज़ाज़ ।

**लतीफ़ा** - पु० [अ] चुटकुला ; ख़ूबी; नाज़ुक और उम्दा चीज़ ; चमत्कारपूर्ण बात ; **यौ०** —बाज़ - विनोदी ।

**लत्ता** - पु० [हिं] फटा-पुराना कपड़ा ; कपड़े का टुकड़ा ; **मु०** —उड़ जाना ; —टुकड़े-टुकड़े हो जाना ।

**लत्ती** - स्त्री० [हिं] मारने के लिए उठाया हुआ पैर (घोड़े, बैल आदि का); लात मारना ; कपड़े की लंबी चीर ।

**लथपथ** - वि० [हिं] भीगा हुआ; सना हुआ।

**लथाड़** - स्त्री० [हिं] डाँट-फटकार; पराजय; हानि; पटककर घसीटना।

**लथाड़ना, लथेड़ना** - स० [हिं] कीचड़ आदि पोतकर गंदा करना; पछाड़ना; रगड़ना; परेशान करना; डाँटना-डपटना; रौंदना।

**लदना** - अ० [हिं] सामान ले जानेवाली सवारियों पर असबाब का रखा जाना; भारयुक्त होना; वज़नदार चीज़ का दूसरी पर रखा जाना; क़ैद होना; मर जाना।

**लदाउ, लदाऊ** - पु० [हिं] भराव, लदाव।

**लदाव** - पु० [हिं] बोझ; छत आदि का पटाव; लादने का काम; बिना कड़ी व धरण के ठहरनेवाली ईंट की जोड़ाई।

**लदुआ, लदुवा, लद्दू** - वि० [हिं] बोझ ढोनेवाला।

**लद्धड़** - वि० [हिं] सुस्त; **यौ०** —पन - सुस्ती।

**लनी** - स्त्री० [हिं] पनवारी की क्यारी।

**लप** - पु० [हिं] अंजलि; अंजलि-भर कोई वस्तु; लचीली छड़ी को हिलाने पर उत्पन्न होनेवाला शब्द; तेज़ी; **यौ०** —लप - अधीर; चंचल; तेज़; हाथ की सफ़ाई; नारी की सुकुमारता; — से - झट से।

**लपक** - स्त्री० [हिं] चमक; तेज़ी; फुर्ती: लपट।

**लपकना** - अ० [हिं] आक्रमण करना; किसी चीज़ की प्राप्ति के लिए हाथ बढ़ाना; झटपट चल पड़ना; तेज़ी से जाना।

**लपकी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की सीधी सिलाई।

**लपट** - स्त्री० [हिं] आग की लौ; आँच; गंध; गंध से परिपूर्ण वायु का झोंका।

**लपटना** - अ० [हिं] आलिंगन करना; घिरना; सूत आदि का लपेटा जाना; सटना; लगा रहना।

**लपटा** - पु० [हिं] कढ़ी, लेई, गीली और गाढ़ी चीज़।

**लपटौआँ** - वि० [हिं] लिपटनेवाला; सटा हुआ।

**लपटौना** - पु० [हिं] कपड़े से चिपक जानेवाली एक प्रकार की घास।

**लपन** - पु० [सं] मुख; कथन।

**लपना** - अ० [हिं] घुमाने पर लचीली छड़ी आदि का लचकना; तेज़ी से चलना; झुकना; परेशान होना।

**लपलपाना** - अ० [हिं] लपना; तलवार आदि का चमकना; हिलना-डुलना।

**लपसी** - स्त्री० [हिं] थोड़ा घी डालकर गेहूँ के दलिये का बनाया हुआ हलुवा; लपटा।

**लपित** - वि० [सं] कहा हुआ।

**लपेट** - स्त्री० [हिं] लपेटने की क्रिया; ऐंठन; किसी चीज़ की मोटाई का विस्तार; उलझन; कुश्ती का एक दाँव; पकड़; कपड़े की तह।

**लपेटन** - 1. स्त्री० [हिं] उलझन; ऐंठन; घुमाव; फेरा; लपेट; 2. पु० लपेटनेवाली चीज़; पैर में फँसनेवाली चीज़।

**लपेटना** - स० [हिं] सूत या कपड़े आदि को किसी वस्तु के चारों ओर घेरा देकर बाँधना; समेटना; पकड़ में करना; गति बंद करना; बेठन आदि में बाँधना; फँसाना।

**लप्पड़** - पु० [हिं] थप्पड़।

**लफंगा** - वि० [फ़ा] आवारा, शोहदा; बदमाश।

**लफ़्ज़** - पु० [अ] शब्द; बात; **यौ०** —ब-लफ़्ज़ - शब्दशः।

**लफ़्ज़ी** - वि० [अ] शाब्दिक; **यौ०** —मानी - शब्दार्थ, वाच्यार्थ।

**लफ़्फ़ाज़** - वि० [अ] लच्छेदार बातें करनेवाला, बातूनी।

**लफ़्फ़ाज़ी** - स्त्री० [अ] वाचालता, वाक्याडंबर।

**लब** - पु० [फ़ा] होंठ; किनारा; **यौ०** —ब-लब - होंठ से होंठ मिलाये हुए; —रेज़ - मुँह तक भरा हुआ; **लबे-आब** - नदी या सरोवर आदि का किनारा; **लबे-जू** - नदी का किनारा; **लबो-लहज़ा** - बोलने का ढंग; **मु०** —खुश्क होना - होंठ सूखना; —खोलना - बात करना; —पर आना - होंठों पर आना।

**लबड़धोंधों** - स्त्री० [हिं] व्यर्थ का गुलगपाड़ा; अन्याय; अंधेर; बेईमानी।

**लबड़ना** - अ० [हिं] झूठ बोलना; गप्प मारना।

**लबदा** - पु० [हिं] मोटा अनगढ डंडा।

**लबनी** - स्त्री० [हिं] ताड़ी चुलायी जाने की लंबी हाँड़ी; शीरा निकालने का पात्र।

**लबरा** - वि० [हिं] गप्पी, झूठा।

**लबलबी** - स्त्री० [हिं] बंदूक़ के घोड़े की कमानी।

**लबादा** - पु० [फा] लंबा और ढीला-ढाला पहनावा, चोगा।

**लबाब** - 1. वि० [अ] ख़ालिस; 2. पु० सारांश; गूदा; मगज़।

**लबार** - वि० [हिं] झूठा; गप्पी।

**लबारी** - 1. स्त्री० [हिं] झूठ बोलना; 2. वि० चुगलख़ोर; झूठा।

**लबालब** - अव्य० [हिं] मुँह या किनारे तक (भरा हुआ)।

**लबेदा** - पु० [हिं] मोटा और छोटा-सा अनगढ़ डंडा, लबदा।

**लबेदी** - स्त्री० [हिं] छोटा-पतला डंडा; ज़बरदस्ती।

**लब्ध** - वि० [स] प्राप्त, पैदा किया हुआ; भागफल (गणित); **यौ०** —काम - जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो; —कीर्ति, नामा, प्रतिष्ठ - यशस्वी; प्रसिद्ध; पूर्णकाम; —चेता, संज्ञ - होश में आया हुआ; —नाश - प्राप्त वस्तु का नाश; —लाभ - जिसे लाभ हुआ हो, —वर - जिसे वरदान मिला हो; —वर्ण, विद्य - विद्वान, —सिद्धि - जिसे सिद्धि प्राप्त हुई हो।

**लब्धांक** - पु० [सं] भागफल (गणित)।

**लब्धा** - 1. वि०, 2. पु० [सं] प्राप्त करनेवाला।

**लब्धि** - स्त्री० [सं] प्राप्ति; भाज्य को भाजक द्वारा विभक्त करने पर प्राप्त भागफल (गणित)।

**लभ्य** - वि० [सं] पाने योग्य; उचित, न्याय्य।

**लम** - वि० [हिं] 'लंबा' का समासगत रूप; **यौ०**—गिरदा - मोटी दानेदार रेती; —गोड़ा, टगा - लंबी टाँगवाला; —घिचा - लंबी गरदनवाला; —छड़ - कबूतरबाज़ों का लग्गा; लंबी बदूक़, भाला; लंबा और पतला, —तड़ंग - लंबा-तगड़ा (आदमी)।

**लमकना** - अ० [हिं] उत्सुक होना, लपकना; मंद-मंद चलना।

**लमहा** - पु० [अ] निमेष, पल।

**लमाना** - 1. स० [हिं] लंबा करना; दूर तक बढ़ाना; 2. अ० दूर निकल जाना।

**लय** - 1. पु० [सं] एक वस्तु का दूसरी में विलीन होना; ध्यान का एकाग्र होना;

लोप ; क्रीड़ा ; कार्य का कारण में लीन होना ; प्रलयावस्था में सृष्टि का अव्यक्त हो जाना ; विश्रामस्थल ; विश्राम ; आलिंगन ; मानसिक निष्क्रियता ; मूर्छा ; परमेश्वर ; पाटा ; 2. स्त्री० [हिं] स्वर ; स्वर के आरोह-अवरोह का ढंग ; यौ० —बद्ध - लय से बँधा हुआ।

**लरजना** - अ० [हि] दहलना ; काँपना ; हिलना-डुलना।

**लरकई** - स्त्री० [हिं] लड़कपन ; नादानी।

**लरकना** - अ० [हिं] झुकना ; तिरछा होना ; लटकना।

**लरज़ाँ** - वि० [फ़ा] काँपनेवाला।

**लरज़ा** - पु० [फ़ा] कपकँपी ; जूड़ी बुख़ार ; भूडोल।

**लरज़िश** - स्त्री० [फ़ा] कँपकँपी।

**लरिकाई** - स्त्री० [हिं] बचपन ; चंचलता ; बालकों का आचरण।

**लर्ज** - पु० [हिं] सितार का पाँचवाँ तार।

**ललंतिका** - स्त्री० [सं] नीचे तक लटकनेवाली माला ; गोह।

**लल** - 1. वि० [सं] कंपित (जीभ) ; हिलानेवाला ; इच्छुक ; क्रीड़ाशील ; प्रेमी ; 2. पु० एक गंधद्रव्य ; अंकुर ; उद्यान ; यौ०—जिह्व - जीभ लपलपानेवाला ; भयकर ; कुत्ता ; ऊँट।

**ललक** - स्त्री० [हि] बलवती इच्छा।

**ललकना** - अ० [हिं] किसी वस्तु के लिए अत्यधिक उत्सुक होना ; उमंग से भर जाना।

**ललकार** - स्त्री० [हिं] प्रतिपक्षी को लड़ने के लिए चुनौती देना ; किसीको लड़ने के लिए बढ़ावा देना।

**ललकारना** - स० [हिं] विपक्षी को लड़ने की चुनौती देना ; उभाड़ना।

**ललचना** - अ० [हिं] किसी अभिलषित वस्तु के लिए अधीर या उत्सुक होना ; लुब्ध होना।

**ललचाना** - 1. स० [हिं] किसीको कुछ देने की आशा बँधाकर अधीर करना ; मुग्ध करना ; 2. अ० ललचना।

**ललन** - 1. वि० [सं] क्रीड़ाशील ; 2. पु० बच्चा, लड़का ; क्रीड़ा ; जिह्वा का लपलपाना ; साल, चिरौंजी वृक्ष।

**ललना** - स्त्री० [सं] स्त्री ; कामिनी ; जीभ।

**ललनी** - स्त्री० [हिं] बाँस की नली।

**ललल्ल** - पु० [सं] अस्पष्ट उच्चारण।

**लला** - पु० [हिं] लड़का ; लड़कों का सामान्य संबोधन ; प्रेमी।

**ललाई** - स्त्री० [हिं] लाली, सुर्खी।

**ललाट** - पु० [स] भाग्य ; माथा ; यौ०—पटल, पट्ट, फलक - माथे का तल या विस्तार ; —रेखा, लेखा - भाग्यलेख ; मस्तक की रेखाएँ ; मु०—का लिखा - भाग्य का लिखा ; —में होना - तक़दीर में होना।

**ललाटिका** - स्त्री० [सं] माथे का एक आभूषण ; तिलक।

**ललाना** - अ० [हि] किसी चीज़ पर मोहित या लुब्ध होना ; पाने के लिए अधीर होना।

**ललाम** - 1. वि० [सं] उत्तम ; सुंदर ; चिह्नवाला ; 2. पु० भूषण ; तिलक ; चिह्न , रत्न , पंक्ति ; ध्वज ; घोड़ा ; सिर पर का चिह्न ; दंड और पताका ; अयाल ; घोड़े का आभूषण।

**ललित** - 1. वि० [सं] सुदर ; कामी , क्रीड़ाशील ; प्रिय ; निर्दोष ; सरल ; 2. पु० सौन्दर्य ; पीड़ा ; शृंगार रस का एक कायिक भाव ; राग ; यौ० —कला - सौन्दर्य के आश्रय से व्यक्त होनेवाली कला (संगीत, काव्य, चित्र आदि) ; —पद - सुदर पद ; एक मात्रिक छंद।

**ललिता** - 1. स्त्री० [सं] कामिनी ; कस्तूरी ; पार्वती ; राधा की सखी ; 2. वि० सुंदरी ; **यौ०** —पंचमी - आश्विनशुक्ला पंचमी ; —षष्ठी - भाद्रकृष्णा षष्ठी ; —सप्तमी - भाद्रशुक्ला सप्तमी ।

**लली** - स्त्री० [हिं] लड़कियो के संबोधन का शब्द ; लाड़-प्यार में पली लड़की ।

**लल्लर** - वि० [सं] हकलानेवाला ।

**लल्लन, लल्ला** - पु० [हिं] लड़को के लिए प्यार का संबोधन ; लाड़-प्यार में पला लड़का ; नौजवानो का स्नेहपूर्ण संबोधन ।

**लल्लो** - स्त्री० [हिं] जीभ ; **यौ०** —चप्पो, पत्तो - चाटुकारिता, चिकनी-चुपड़ी बात ।

**लवंग** - पु० [सं] लौंग ; लौंग का पेड़ ; **यौ०** —कलिका - लौंग ; [हिं] एक तरह की मिठाई ।

**लव** - पु० [सं] काल का एक मान ; थोड़ा अंश ; लवा पक्षी ; विनाश ; ऊन ; काटा हुआ अंश ; जायफल ; राम के एक पुत्र का नाम ; लवंग ; **यौ०** —लेश - स्वल्प मात्रा ; थोड़ा संबंध ।

**लवण** - 1. वि० [सं] नमकीन ; सुंदर ; काटनेवाला ; 2. पु० नमक ; छुरी ; काटने की क्रिया ; **यौ०** —क्षार - एक तरह का नमक ; —त्रय - तीन तरह के नमकों का समुच्चय (सैंधव, विट और सञ्चल) ; —भास्कर - उपर्युक्त तीनो नमको और कई औषधियो के योग से तैयार किया हुआ पाचक चूर्ण ।

**लवन** - पु० [सं] काटना ; खेत की कटाई, लुनाई ; हँसिया ; लौनी ।

**लवना** - 1. स० [हिं] फसल काटकर बटोरना ; 2. वि० नमकीन ; सुंदर ।

**लवनाई** - स्त्री० [हिं] सुंदरता ।

**लवनि** - स्त्री० [हिं] पकी खेती काटना ; खेत काटने की मज़दूरी ।

**लवनी** - स्त्री० [हिं] मक्खन ; लवनि ।

**लवर** - स्त्री० [हिं] आँच, लपट ।

**लवलीन** - वि० [हिं] तन्मय, मग्न ।

**लवहर** - पु० [हिं] जुड़वाँ बच्चे ।

**लवा** - पु० [हिं] एक पक्षी ; लाजा, खील ।

**लवाई** - 1. वि० [हिं] सद्यःप्रसूता (गाय) ; 2. स्त्री० खेत की कटाई और उसकी मज़दूरी ; सद्यःप्रसूता गाय ।

**लवाज़िम** - पु० [अ] 'लाज़िमा' का बहु० ।

**लवाज़िमा** - पु० [अ] ज़रूरी सामान ; यात्रा आदि में साथ रहनेवाला सामान ।

**लवाज़िमात** - पु० [अ] लवाज़िम ; उपकरण, सामग्री ।

**लवारा** - पु० [हिं] बछड़ा ।

**लवासी** - वि० [हिं] गप्पी ; लंपट ।

**लवित्र** - पु० [सं] हँसिया ।

**लवोपल** - पु० [सं] बर्फ़ का टुकड़ा ।

**लशुन** - पु० [सं] लहसुन ।

**लश्कर** - पु० [फ़ा] सेना ; सशस्त्र दल ; विशाल जनसमुदाय ; अनियमित सेना ; छावनी ; **यौ०** —कशी - चढ़ाई, हमला ; —गाह - छावनी ; —नवीस - सेना में वेतन बाँटनेवाला कर्मचारी ।

**लश्करी** - 1. पु० [फ़ा] सैनिक ; जहाज़ पर काम करनेवाला 2. वि० सेना-संबधी ; जहाज़ी ; 3. स्त्री० जहाज़ियो की भाषा ; **यौ०** —बोली - सैनिकों की खिचड़ी बोली ।

**लषेण** - वि० [सं] इच्छा करनेवाला ।

**लषित** - वि० [सं] इच्छित ।

**लस** - 1. वि० [सं] चमकता हुआ; हिलता हुआ ; 2. पु० ऊँट का ज्वर ; लाल चंदन ; [हिं] चिपकने का गुण ; गोंद ; आकर्षण ; **यौ०** —दार - लसीला ।

**लसना** - 1. अ० [हिं] शोभित होना, चमकना; दिखायी देना; नाचना; 2. स० चिपकाना; सटाना।

**लसनि** - स्त्री० [हिं] शोभित होना, उपस्थिति।

**लसलसा** - वि० [हिं] चिपचिपा, गोंद की तरह चिपकनेवाला।

**लसलसाना** - स० [हिं] चिपचिपाना।

**लसलसाहट** - स्त्री० [हिं] चिपचिपाहट।

**लसा** - स्त्री० [सं] केसर; हल्दी।

**लसिका** - स्त्री० [सं] थूक; पेशी।

**लसित** - वि० [सं] सुशोभित; क्रीड़ाशील, प्रकट।

**लसी** - स्त्री० [हिं] चिपक; आकर्षण; प्राप्ति की आशा; संबंध; लस्सी।

**लसीला** - वि० [हिं] चिपचिपा; आकर्षक।

**लसुनिया** - पु० [हिं] एक बहुमूल्य पत्थर।

**लसोड़ा** - पु० [हिं] झड़बेरी-जैसा एक वृक्ष या उसका फल।

**लसौटा** - पु० [हिं] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का बाँस का चोंगा; गोंददानी।

**लस्टमपस्टम** - अव्य० [हिं] ज्यों-त्यों करके; अव्यवस्थित रूप में।

**लस्त** - वि० [हिं] थका हुआ; कमज़ोर; [सं] आलिंगित; कुशल; क्रीड़ित; शोभायुक्त।

**लस्सान** - वि० [अ] वाचाल; सुवक्ता; लच्छेदार भाषा बोलनेवाला।

**लस्सानी** - स्त्री० [अ] वाचालता।

**लस्सी** - स्त्री० [हिं] दूध या दही और बर्फ़ के योग से बनाया हुआ शरबत; मट्ठा; चिपचिपाहट।

**लहँगा** - पु० [हिं] स्त्रियों का कमर के नीचे का एक पहनावा, घाँघरा।

**लहक** - स्त्री० [हिं] आग की लपट; चमक; शोभा।

**लहकना** - अ० [हिं] हवा का चलना; आग का धधकना, दहकना; लहराना; लपकना; चाह से अधीर होना।

**लहका** - पु० [हिं] लचका; पतला गोटा।

**लहकारना** - स० [हिं] दहकाना; उभाड़ना; कुत्ता छोड़ना (शिकार के पीछे)।

**लहकौर, लहकौरि** - स्त्री० [हिं] दूल्हे और दुलहिन का कोहबर में एक दूसरे को अपने हाथों से कुछ खिलाने का रस्म।

**लहजा** - पु० [अ] बोलने का ख़ास ढंग; बोलचाल; लय।

**लहज़ा** - पु० [अ] पल; निमेष।

**लहद** - स्त्री० [अ] क़ब्र।

**लहन** - पु० [हिं] प्राप्त करना, लाभ करना; एक कँटीली झाड़ी।

**लहनदार** - पु० [हिं] ऋणदाता, महाजन।

**लहना** - 1. स० [हिं] पाना; फसल काटना; छीलना; 2. पु० ऋण दिया हुआ धन; काम के बदले मिलनेवाला धन; भाग्य।

**लहनी** - स्त्री० [हिं] प्राप्ति; फलभोग; ठठेरों का एक औज़ार।

**लहबर** - पु० [हिं] लंबी और ढीली पोशाक, चोगा; एक तरह का तोता; छड़ी; झंडा।

**लहम** - पु० [अ] मांस।

**लहमा** - पु० [हिं] क्षण; मिनट; अत्यल्प काल।

**लहमी** - वि० [अ] गोश्तवाला।

**लहर** - स्त्री० [हिं] वायु की गति से पानी में होनेवाली हरकत, तरंग, हिलकोर; उमंग; वेगमयी भावना; आनंद या उल्लास का वेग; कुटिल रेखा; हवा का झोंका; क़सीदे की धारी; गूँज; मोड़ लेती हुई टेढ़ी चाल; यौ० —पटोर, पटोरी - लहरियादार रेशमी कपड़ा; —बहर -

आनंद और सुख ; मु० —आना, उठना - उमंग पैदा होना ; मौज़ आना ।

**लहरना** - अ० [हिं] लहराना ।

**लहराना** - 1. अ० [हिं] हवा के झोके से हिलना-डुलना ; काले-काले बादलों का उमड़ना ; हवा का चलना ; टेढी-मेढी चाल चलना ; पानी का हवा के झोके से हिलकोरे लेना ; उत्कंठित होना ; दहकना ; शोभायमान होना ; 2. स० हिलाना-डुलाना ; टेढ़ा-मेढ़ा चलाना ।

**लहरि** - स्त्री० [सं] लहर ।

**लहरिया** - 1. पु० [हिं] टेढी-मेढी रेखाओं का समूह या श्रेणी ; ज़री के कपड़े के किनारे पर बने हुए बेल-बूटे ; गोटे आदि की लहरदार टँकाई ; रंगीन साड़ी या कपड़ा जिसपर टेढ़ी रेखाएँ बनी हो ; 2. स्त्री० लहर ; यौ० —दार - लहरदार ; बेल-बूटोवाला ।

**लहरी** - 1. स्त्री० [स] लहर, तरंग ; 2. वि० मनमौज़ी ।

**लहरीला** - वि० [हिं] लहरदार ।

**लहलह** - 1. वि० [हिं] हरा-भरा, लहलहाता हुआ ; दहकता हुआ ; 2. अव्य० लहर के साथ ।

**लहलहा** - वि० [हिं] आनन्दमय ; प्रफुल्ल ; हरा-भरा ; हृष्ट-पुष्ट ।

**लहलहाना** - अ० [हिं] हरा-भरा होना ; ख़ुशी से भर जाना ; पनपना ; हृष्ट-पुष्ट होना ।

**लहली** - स्त्री० [हिं] दलदल ।

**लहसुन** - पु० [हिं] पक्तिबद्ध जड़ोंवाला एक पौधा जिसकी गंध अति उत्कट होती है ; माणिक का एक दोष ।

**लहसुनिया** - पु० [हि] धूमिल रंग का एक क़ीमती पत्थर ।

**लहालोट** - वि० [हि] हँसी से लोटता हुआ ; उल्लसित ; प्रसन्न ; मुग्ध ; लुब्ध ।

**लहासी** - स्त्री० [हिं] नाव या जहाज़ बाँधने की मोटी रस्सी ।

**लहि** - अव्य० [हिं] तक, पर्यन्त ।

**लहीम** - वि० [अ] मांसल ; मोटा-ताज़ा ।

**लहु** - 1. अव्य० [हिं] तक, पर्यन्त ; 2. वि० लघु, छोटा ।

**लहू** - पु० [हि] ख़ून, रक्त ; यौ० —लुहान - ख़ून से तर ; मु०—उबलना - सख्त गुस्सा आना ; —का घूँट पीकर रह जाना - गुस्सा सह लेना ; —का प्यासा - जानी दुश्मन ; —पानी एक करना - सख्त मुसीबत उठाना ; — पी-पीकर रह जाना - गुस्सा चुपचाप सह लेना ; —सफ़ेद हो जाना - सहानुभूति या दया का न रहना ।

**लहेरा** - पु० [हि] रेशम रंगनेवाला रँगरेज़ ; लाह का काम करनेवाला ।

**लहेसना** - स० [हिं] पलस्तर करना ; बरतन ढालने के लिए साँचे के पल्लो को बैठाना ।

**लह्न** - पु० [अ] ध्वनि ; मधुर स्वर ।

**लाँक** - स्त्री० [हि] कमर, तुरन्त कटी हुई फसल ; भूसा ; परिमाण ।

**लाँग** - स्त्री० [हिं] काछ ।

**लांगल** - पु० [स] हल ; हल की शकल की लकड़ी ; फल तोड़ने का लग्गा ; चाँद का आधा उठा हुआ शृंग ; तालवृक्ष ; लिंग ।

**लांगलिनी** - स्त्री० [स] औषधि के काम आनेवाला एक पौधा जिसकी गाँठो में विष रहता है, कलियारी ।

**लांगुल** - पु० [सं] दुम ; लिंग ।

**लांगूल** - पु० [सं] लांगुल ; अन्न-भण्डार ; यौ० —चालन, विक्षेप - पूँछ हिलाना ।

**लांगूली** - पु० [सं] बंदर; ऋषभ नामक औषधि।

**लाँघना** - स० [हिं] नाँघना, डाँकना, पार करना।

**लाँच** - स्त्री० [हिं] घूस, रिश्वत।

**लांछन** - पु० [सं] कलंक; चिन्ह; दाग़; नाम; अंकन।

**लांछना** - स्त्री० [सं] कलंक; निन्दा।

**लांछित** - वि० [स] कलकित; अलंकृत।

**लाँजी** - पु० [हिं] एक तरह का धान।

**लांठनी** - स्त्री० [स] असती स्त्री।

**लांपट्य** - पु० [स] लंपटता; व्यभिचार।

**लांबा** - वि० [हिं] लंबा।

**ला** - 1. स्त्री० [सं] लेने या देने की क्रिया; 2. अव्य० [अ] नहीं; बिना; **यौ०** —इलाज़ - असाध्य; —इल्म - अनभिज्ञ; विद्यारहित; बेख़बरी; —उबाली - निडर; बेपरवाह; स्वच्छन्द; —कलाम - अवश्य; जिसमें कुछ कहने की गुंजाइश न हो; —ख़िराज - जिस ज़मीन की मागुलज़ारी माफ़ हो; —ख़ैरा - आवारा; बेकार; —चार - असहाय; अशक्त; विवश; मज़बूरन; —चारी - विवशता; अशक्तता; असहायता; —जवाब - निरुत्तर; बेजोड़; बाद में हारा हुआ; —ज़वाल - नित्य; —तादाद - अगणित; —दवा - असाध्य; —दावा - दावा न रखनेवाला; बेबाक़ी; —पता - जिसका पता न हो; —परवा, परवाह - बेफ़िक्र; —परवाई, परवाही - बेफ़िक्री; —मकान - जिसके रहने का कोई स्थान न हो; स्वर्ग; —मज़हब - जिसका कोई धर्म या मज़हब न हो, नास्तिक; —मज़हबी - नास्तिकता; —मानी - निरर्थक; —मिसाल - अद्वितीय; —मुहाल, मुहाला - अवश्य; —वल्द - निःसन्तान; —वारिस - जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो, निपूता; —शरीक़ - अकेला; —सानी - अद्वितीय; —हल - असाध्य; कठिन; —हासिल - निरर्थक, बेफ़ायदा।

**लाइ** - स्त्री० [हिं] अग्नि।

**लाइक** - वि० [हिं] लायक़, योग्य।

**लाई** - स्त्री० [फ़ा] एक तरह की ऊनी चादर; एक रेशमी कपड़ा; धान या भुजिया चावल का लावा; निन्दा; शराब की तलछट; **यौ०** —लुतरी - चुग़ली।

**लाऊ** - पु० [हिं] लौकी।

**लाकड़ी, लाकरी** - स्त्री० [हिं] लकड़ी।

**लाकुटिक** - 1. वि० [सं] डंडा धारण करनेवाला; 2. पु० पहरेदार; सेवक।

**लाक्षणिक** - 1. वि० [स] गौण; पारिभाषिक; लक्षणो को जाननेवाला; लक्षणो को प्रगट करनेवाला; लक्षण-सम्बन्धी; लक्षणार्थवाला; 2. पु० लक्षण पहचानने या जाननेवाला; पारिभाषिक शब्द।

**लाक्षण्य** - वि० [सं] लक्षण बतानेवाला; लक्षण-संबन्धी; लक्षणो का ज्ञान रखनेवाला।

**लाक्षा** - स्त्री० [स] लाख; एक तरह का लाल रंग; एक कीड़ा; **यौ०** —गृह - लाख का गृह; —तेल - हल्दी, लाख और मजीठ डालकर पकाया हुआ तेल; —रक्त - लाख से रँगा हुआ; —रस - अलक्तक, महावर; —वृक्ष - पलाश।

**लाख** - 1. वि० [हिं] सौ हज़ार, लक्ष; बहुत अधिक; 2. पु० सौ हज़ार की सख्या; 3. अव्य० बहुत; 4. स्त्री० पीपल आदि वृक्षों पर लगनेवाले कीड़ो से बना हुआ पदार्थ-विशेष, लाक्षा; —**मु०** —टके की बात - बहुत उपयोगी बात।

**लाखना** - स० [हिं] लाख द्वारा फूटे बरतन का छेद बंद करना ; समझ लेना ।

**लाखा** - पु० [हिं] (स्त्रियों के) होठ रंगने का लाख से बना एक रंग ; फसल के पौधों का एक रोग ।

**लाखी** - 1. वि० [हिं] मटमैला लाल रंग का, लाख के रंग का ; 2. पु० मटमैला लाल रंग ; इस रंग का घोड़ा ।

**लाग** - स्त्री० [हिं] संबंध ; उपाय ; कौशलपूर्ण स्वाँग ; धुन ; चढा-ऊपरी ; सहारा ; प्रेम ; वैर ; टीका लगाने का रस ; जादू ; भस्म ; लगान ; नेग ; रसद ; **यौ०** —डाँट - होड़, दुश्मनी ।

**लागत** - स्त्री० [हिं] किसी वस्तु के निर्माण में लगनेवाला खर्च ।

**लागना** - पु० [हिं] टोह में रहनेवाला ; शिकारी ।

**लाग़र** - वि० [फ़ा] कमज़ोर ; दुबला-पतला ।

**लाग़री** - स्त्री० [फ़ा] कमज़ोरी ; दुबलापन ।

**लागी** - अव्य० [हिं] तक ; द्वारा ; कारण ; निमित्त ।

**लागू** - वि० [हिं] लगने योग्य ; संगत ; लगनेवाला ।

**लाघव** - 1. पु० [सं] लघुता ; फुर्ती ; अविवेक ; अल्पता ; आरोग्य ; नपुंसकता ; महत्वहीनता ; 2. अव्य० जल्दी से ; सहज ही ; **यौ०** —कारी - अपमानजनक ।

**लाघविक** - वि० [सं] संक्षिप्त ।

**लाघवी** - पु० [सं] बाजीगर ।

**लाज** - 1. स्त्री० [हिं] लज्जा ; प्रतिष्ठा ; **यौ०** —वंत - लज्जावान ; —वंत, वती - लजालू ; **मु०** —के मारे - लज्जा के कारण ; —रखना - आबरू बचाना ; —से गड़ जाना - बहुत अधिक शरमिंदा होना ; 2. पु० धान का लावा, खील, लाजा ; पानी में भीगा चावल ; खस ।

**लाजना** - 1. अ० [हिं] लज्जित होना ; 2. स० लज्जित करना ।

**लाजवर्द** - पु० [फ़ा] रत्नों की गणना में आनेवाला नीले रंग का एक पत्थर ।

**लाजा** - स्त्री० [सं] चावल ; धान का लावा ।

**लाज़िम** - वि० [फ़ा] अवश्य कर्तव्य ; लगा हुआ ; **यौ०** —मलज़ूम - एक दूसरे से संबद्ध ; अवश्य कर्तव्य ।

**लाज़िमा** - पु० [अ] ज़रूरी सामान ; संबद्ध वस्तु ।

**लाट** - 1. स्त्री० [हिं] मोटा व ऊँचा स्तंभ ; 2. पु० प्रांत या देश का सबसे बड़ा विदेशी शासक ; पानी के बहाव को रोकने के लिए बनाया हुआ बाँध ; एक शब्दालकार ; जीर्ण-शीर्ण कपड़ा या गहना ; बालकों-जैसी भाषा ; कपड़ा ; 3. वि० पुराना ; बच्चों का-सा ।

**लाटा** - पु० [हिं] भुने हुए महुवे और तिल का लड्डू ; भुना हुआ महुआ ।

**लाटी** - स्त्री० [हिं] थूक और ओठ सूखने की दशा ।

**लाठी** - स्त्री० [हिं] डंडा ; **यौ०** —चार्ज - भीड़ को तितर बितर करने के लिए पुलिस का लाठी से प्रहार करना ; **मु०** —चलना - लाठी से मार-पीट होना ।

**लाड़** - पु० [हिं] प्यार ; **यौ०** —चाव - प्यार-दुलार ; —लड़ैता - बड़े प्यार से पला हुआ ।

**लाड़ला** - वि० [हिं] प्यारा ।

**लाड़ा** - पु० [हिं] दूल्हा ।

**लाडू** - पु० [हिं] लड्डू ; दक्षिणी नारंगी ।

**लाढिया** - पु० [हिं] ग्राहक को भुलावा देकर माल बिकवानेवाला, दूकानदार से मिला हुआ दलाल ।

**लात** - स्त्री० [हिं] पैर; पादप्रहार; **मु०** —खाना - मार खाना; —चलाना - लात से मारना; —मारना - किसी वस्तु को तुच्छ समझकर छोड़ देना; उपेक्षा या घृणा करना।

**लातर** - स्त्री० [हिं] पुराना जूता।

**लातीनी** - स्त्री० [अ] लेटिन भाषा।

**लाद** - स्त्री० [हिं] पानी निकालने के लिए ढेंकी के दूसरे सिरे पर लगा हुआ मिट्टी का ढोका आदि; दूसरी जगह चीज़े ले जाने के लिए ऊँट, गाड़ी या बैल आदि पर भार लादना; ॲतड़ी, पेट।

**लादना** - 1. स० [हिं] ढोने के लिए बोझा भरना; किसीपर कोई जिम्मेदारी डालना; अनेक वस्तुओं को एक दूसरे पर रखना।

**लादिया** - पु० [हिं] बोझ लादकर ले जाने का काम करनेवाला।

**लादी** - स्त्री० [हिं] धोबियो की गठरी; बोझा।

**लाधना** - स० [हिं] प्राप्त करना।

**लान** - पु० [अ] फटकार, भर्त्सना; **यौ०** —तान - लानत-मलामत।

**लानत** - स्त्री० [अ] धिक्कार; **यौ०**— मलामत - फटकार; **मु०**—की बौछार - अत्यधिक भर्त्सना।

**लानती** - वि० [अ] लानत के योग्य; लानत का मारा।

**लाना** - अ० [हि] ले आना; पैदा करना; उपस्थित करना; आग लगाना।

**लाने** - अव्य० [हिं] लिए, वास्ते।

**लाप** - पु० [स] कथन, बोलना।

**लापी** - वि० [सं] पश्चात्ताप करनेवाला; बोलनेवाला।

**लाफ़** - स्त्री० [फ़ा] डींग; **यौ०**—ज़न - डींग हाँकनेवाला; —ज़नी - डींग हाँकना।

**लाबत** - स्त्री० [अ] ज्वालामुखी से निकलनेवाला तप्त लावा।

**लाबुद** - अव्य० [अ] अवश्य, निश्चय।

**लाबुदी** - वि० [अ] अनिवार्य।

**लाभ** - पु० [सं] फ़ायदा; प्राप्ति; उपकार; अनुभूति; विजय; **यौ०**—कर, कारक, कारी, दायक - जिससे लाभ होता हो; —लिप्सा - लाभ की प्रबल इच्छा।

**लाम** - 1. पु० [अ] फ़ौज़ का दस्ता; समूह; **मु०** —पर जाना - लड़ाई के मोर्चे पर जाना; 2. अव्य० हिं] दूर; [अ] अरबी वर्णमाला का एक वर्ण, **यौ०** —काफ़ - बेहूदा बातें; अपशब्द।

**लामन** - पु० [हिं] लटकना; हिलना; लहँगा।

**लामय** - पु० [हि] ऊसर भूमि में पैदा होनेवाली एक घास।

**लामा** - 1. पु० [तिब्बती] तिब्बत और मंगोलिया के बौद्धधर्मावलबियो का धर्माध्यक्ष; 2. वि० [हिं] लंबा।

**लाय** - स्त्री० [हिं] ज्वाला; अग्नि।

**लायक़** - वि० [अ] अधिकारी; गुणवान; मुनासिब; योग्य।

**लायक़ी** - स्त्री० [अ] योग्यता।

**लार** - 1. स्त्री० [हिं] मुँह से निकलनेवाला लसदार या तरल द्रव्य, लाला; **मु०**— आना, टपकना - किसी चीज़ को पाने का लोभ होना; 2. अव्य० [हिं] पीछे; साथ।

**लाल** - 1. वि० [हिं] माणिक या रक्त के रंग का; अत्यधिक क्रुद्ध; सबसे पहले सफल होनेवाला; बीच के ख़ाने में पहुँची हुई (चौसर की गोटी); लार; **यौ०**—अंगारा, भभूका - बहुत लाल; क्रोध से तमतमाया हुआ; —आलू - अरवी; रतालू; —इलायची - बड़ी

इलायची ; —चदन - रक्तचदन ; —चीनी - सिर पर लाल बिंदियोवाला सफ़ेद कबूतर ; —दाना - लाल रंग का पोस्ते का दाना ; —परी - शराब ; लाल पंखोवाली परी ; —पानी - शराब ; —पेठा - कुम्हड़ा ; —बुझक्कड़ - बिना मर्म जाने अटकल से मतलब लगानेवाला ; —मिर्च - मिर्च ; —मूली - सलजम ; —लाड्डू - एक विशेष प्रकार की नारंगी ; —सफ़री - अमरूद ; —समुद्र, सागर - अरब और अफ़्रीका के मध्यस्थित एक समुद्र ; मु॰ —आँखें दिखाना, आँखे निकालना - गुस्से से देखना ; —पीला होना - क्रोध करना ; —होना - निहाल होना ; 2. स्त्री॰ [हिं] थूक ; राल ; इच्छा ; 3. पु॰ पुत्र ; प्रिय या प्रणयी (व्यक्ति) ; प्यार ; चौपायो का एक रोग ; प्यारा बच्चा ; भूरापन लिये लाल रंग की छोटी चिड़िया ; [फ़ा] माणिक ; सुर्ख़ रंग ।

**लालच** - पु॰ [हिं] लोभ ; किसी चीज़ को पाने की तीव्र इच्छा ।

**लालची** - वि॰ [हिं] लोभी, लोलुप ।

**लालटेन** - स्त्री॰ [हिं] चिमनीदार लैंप ।

**लालन** - 1. पु॰ [हिं] प्यारा बच्चा, ललन ; [सं] प्यार करना ; प्यार ; चूहे-जैसा एक विषैला जंतु ; 2. वि॰ प्यार करनेवाला ।

**लालसा** - स्त्री॰ [सं] किसी चीज़ को पाने की तीव्र इच्छा ; गर्भिणी की इच्छा, दोहद ; खेद ; अनुनय ।

**लालसी** - वि॰ [हिं] इच्छुक ; उत्सुक ।

**लाला** - 1. [हिं] छोटे या प्रिय व्यक्ति के लिए संबोधन का शब्द ; कायस्थो का जातिसूचक शब्द ; पंजाबी बनियों का सम्मानसूचक संबोधन ; [फ़ा] एक प्रसिद्ध फूल ; 2. स्त्री॰ [सं] लार, थूक ; यौ॰ —क्लिन्न - लार से तर ; —पान - अंगूठा चूसना ; —स्राव - थूक बहना ; मकड़ी का जाला ।

**लालायित, लालालु** - वि॰ [सं] लुब्ध ; प्यारा ; लार टपकाता हुआ ।

**लालिक** - पु॰ [सं] भैसा ।

**ललित** - 1. वि॰ [सं] प्यार-दुलार किया हुआ ; 2. पु॰ आनंद ; प्रेम ।

**लालित्य** - पु॰ [सं] ललित होने का भाव ; रमणीयता ; हाव-भाव ।

**लालिनी** - स्त्री॰ [सं] कामुक स्त्री ।

**लालिमा** - स्त्री॰ [सं] लाली, सुर्ख़ी ।

**लाली** - 1. स्त्री॰ [हिं] सुर्ख़ी ; इज़्ज़त ; पिसी हुई ईट ; लाड़ली लड़की ; 2. पु॰ [सं] कुमार्ग पर ले जानेवाला पुरुष (स्त्रियो को) ; 3. वि॰ दुलार-प्यार करनेवाला ।

**लाले** - पु॰ [हिं] अरमान ; मु॰ —पड़ना - किसी चीज़ को पाने के लिए तरसना ।

**लावज** - पु॰ [हिं] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्राचीन बाजा ।

**लावण** - 1. वि॰ [सं] नमकीन ; लवण से संस्कारित ; 2. पु॰ जम्बूद्वीप के चारों ओर का समुद्र ; सुँघनी ।

**लावण्य** - पु॰ [सं] सुन्दरता ; सुशीलता ; लवणत्व ; यौ॰ —कलित - सौन्दर्य-विशिष्ट ; —लक्ष्मी, श्री - अत्यधिक सुन्दरता ।

**लावनी** - स्त्री॰ [हिं] एक तरह का चलता गाना ; एक गीत-छन्द ; यौ॰ —बाज़ - लावनी का शौक़ीन ; लावनी गानेवाला ।

**लावबाली** - 1. वि॰ [हि] निडर ; 2. स्त्री॰ बेफ़िक्री ; 3. पु॰ आवारा या बेफ़िक्र आदमी ।

**लावा** - पु॰ [हिं] ज्वालामुखी के गर्भ से निकलनेवाला पत्थर और धातु का मिश्र

हुआ द्रव पदार्थ; लवा पक्षी, लाजा; **यौ०** —परछन - एक वैवाहिक रीति।

**लाश** - स्त्री० [फ़ा] मृतदेह, शव; **मु०**—उठना - मर जाना, —पर लाश गिरना - लाशो के ढेर लग जाना (युद्ध में)।

**लाशा** - पु० [फ़ा] अति दुर्बल व्यक्ति; लाश।

**लाष** - स्त्री० [हिं] लाख, लाह।

**लाषना** - स० [हिं] लाह से छेद बन्द करना।

**लास** - पु० [स] उछल-कूद; नृत्य, रास; जूस; लार।

**लासन** - पु० [सं] नाचना; पद-संचालन।

**लासा** - पु० [हिं] चिपकनेवाली चीज़, गोंद; **मु०** —लगाना - झगड़ा कराना; फँसाना।

**लासी** - 1. स्त्री० [हिं] गेहूँ में लगनेवाला एक काला कीड़ा; लस्सी; 2. वि० [सं] नृत्य करनेवाला।

**लास्य** - पु० [सं] वाद्य और गीत के साथ किया जानेवाला नृत्य; स्त्री-नृत्य; अभिनेता।

**लाह** - 1. स्त्री० [हिं] लाक्षा, लाख; कांति; 2. पु० लाभ।

**लाहिक़** - वि० [फ़ा] लगाया या जुड़ा हुआ; पीछे से आकर मिलनेवाला; पीछे लगा हुआ।

**लाहिक़ा** - वि० [अ] संयुक्त।

**लाही** - 1. स्त्री० [हिं] लाख पैदा करने-वाला लाल कीड़ा; गेहूँ तथा जौ की फसल के लिए हानिकारक एक कीड़ा; खील; 2. वि. मटमैलापन लिये हुए लाल।

**लाहौरीनमक** - पु० [हिं] सेंधा नमक।

**लाहौल** - पु० [अ] एक अरबी वाक्य (लाहौल वला कूवत इल्ला ब इल्लाह) का पहला शब्द जिसका प्रयोग घृणा आदि प्रकट करने के लिए किया जाता है; **मु०** —पढ़ना - अत्यधिक घृणा प्रकट करना।

**लिंग** - पु० [स] चिन्ह; प्रमाण; अनुमान (न्याय); मूल प्रकृति (सांख्य); व्याकरण के शब्दो का भेद (पु०, स्त्री० आदि); रोगसूचक लक्षण; शिवलिंग; पुरुष की जननेन्द्रिय; **यौ०** —देह, शरीर - सूक्ष्म देह; —धर - ढोंगी; —नाश - परिचायक चिन्ह का नाश; अंधकार; —प्रतिष्ठा - शिवलिंग की स्थापना; **—वान** - चिन्हवाला; गले में लिंग धारण करनेवाला 'लिंगायत' सम्प्रदाय; —वृत्ति - वेश बनाकर जीविका अर्जन करनेवाला नक़ली साधु; ढोंगी।

**लिंगन** - पु० [सं] आलिंगन।

**लिंगायत** - पु० [हिं] एक शैव संप्रदाय।

**लिंगी** - 1. [सं] ब्रह्मचारी; ढोंगी; कारण; वेश-भूषा से जीविका चलानेवाला; परमात्मा; शिवलिंग पूजनेवाला; हाथी; 2. वि० आडंबरी; चिन्हवाला; जिसमें मन और कर्म की एकरूपता हो; **यौ०** —वेष - ब्रह्मचारी की पोशाक।

**लिंपट** - 1. वि०, 2. पु० [सं] कामुक व्यक्ति, लंपट।

**लिए** - प्रत्य० [हिं] प्रयोजन आदि के सूचन के लिए प्रयुक्त होनेवाली संप्रदान कारक की विभक्ति, वास्ते।

**लिक्खाड़** - पु० [हिं] बहुत बड़ा लेखक (व्यंग)।

**लिक्षा** - स्त्री० [सं] जूँ का अण्डा, लीख; आठ त्रसरेणु के बराबर एक बहुत छोटा परिमाण।

**लिख** - 1. वि०, 2. पु० [सं] लिखनेवाला।

**लिखना** - स० [हिं] लिपिबद्ध करना; चित्र बनाना; रेखाएँ खींचना; मु० —पढ़ना - अध्ययन करना।

**लिखनी** - स्त्री० [हिं] क़लम; लिखने की क्रिया; होनी, प्रारब्ध।

**लिखवाई, लिखाई** - स्त्री० [हिं] लिखने का काम और उसकी मज़दूरी, लिखावट; लिपि

**लिखवाना, लिखाना** - स० [हिं] लिखाने का काम किसी अन्य से कराना।

**लिखापढ़ी** - स्त्री० [हिं] शर्तनामा लिखकर उसे पक्का करना; चिट्ठियों का आदान-प्रदान।

**लिखावट** - स्त्री० [हिं] लिखने का ढंग; लेख।

**लिखित** - 1. वि० [सं] लिखा हुआ; 2. पु० दस्तावेज़; पुस्तक; लेख; यौ०—पाठक - हस्तलिखित लेखादि पढ़नेवाला।

**लिखेरा** - पु० [हिं] लेखक।

**लिटाना** - स० [हिं] किसीको लेटने में प्रवृत्त करना।

**लिट्ट** -पु० } [हिं] आग पर सेंकी हुई
**लिट्टी** -स्त्री० } मोटी रोटी, बाटी।

**लिठोर** - पु० [हिं] एक नमकीन पकवान।

**लिडार** - 1. पु० [हिं] गीदड़; 2. वि० डरपोक।

**लिपटना** - अ० [हिं] आलिंगन करना; चिपकना; किसी काम में मनोयोगपूर्वक लग जाना।

**लिपटाना** - स० [हिं] गले लगाना; चिमटाना।

**लिपड़ा** - 1. पु० [हिं] कपड़ा; 2. वि० चिपचिपा।

**लिपड़ी** - स्त्री० [हिं] कपड़ा-लत्ता; लेई की तरह गीला पदार्थ।

**लिपना** - अ० [हिं] गीली चीज़ से पोता जाना।

**लिपाई** - स्त्री० [हिं] लीपने की क्रिया या उसकी मज़दूरी।

**लिपि** - स्त्री० [स] लिखने की पद्धति; लिखावट; पत्र या लेख आदि; चित्रकारी; लेप; बाह्यरूप; यौ० — कर, कार - क्लर्क, लेप करनेवाला; —कर्म - चित्रकारी; —ज्ञान, शास्त्र - लिखने की कला; — फलक - पत्थर, धातु-पत्र, तख्ती, पत्र आदि; —बद्ध - लिखा हुआ।

**लिपिक** - पु० [सं] लेखक, क्लर्क।

**लिप्त** - वि० [सं] आसक्त; व्यसनादि में डूबा हुआ; ढका हुआ; मिला हुआ; किसी चीज़ से पुता हुआ; विषाक्त किया हुआ; खाया हुआ।

**लिप्सा** - स्त्री० [सं] पाने की इच्छा।

**लिप्सित** - वि० [सं] अभिलषित।

**लिप्सु** - वि० [सं] इच्छुक।

**लिफ़ाफ़ा** - पु० [अ] चिट्ठियाँ आदि रखकर भेजने का काग़ज़ का चौकोर थैला; मुर्दे का कफ़न; पहनावा; ठाटबाट, जल्दी टूटने-फूटनेवाली चीज़; मु० — खुल जाना - भेद प्रकट होना।

**लिबड़ना** - अ० [हिं] लथपथ होना; कीचड़ आदि में सनना।

**लिबास** - पु० [अ] पोशाक; बुरक़ा; भेस।

**लियाक़त** - स्त्री० [अ] योग्यता; पात्रता; शील; गुण; सामर्थ्य।

**लिवाना** - स० [हिं] थमाना; लाने का काम कराना; पकड़ाना।

**लिवाल** - पु० [हिं] ख़रीददार; लेनेवाला।

**लिसान** - स्त्री० [अ] जीभ; भाषा।

**लिह** - वि० [सं] चटानेवाला।

**लिहाज़** - पु० [फ़ा] मुलाहज़ा; ध्यान से देखना; ख्याल व संकोच; लज्जा।

**लिहाजा** - अव्य० [अ] इसलिए ; निदान ।

**लिहाफ़** - पु० [अ] मोटी रजाई ; घोड़े की झूल ।

**लीक** - स्त्री० [हि] पगडंडी ; गाडी या सर्प आदि के चलने से बनी हुई रेखा ; रस्म-रिवाज़ ; जूँ का अंडा ; प्रतिबंध ; लांछन ; लंबी रेखा ; मु० — खींचना - दृढ़ निश्चय करना ; —पीटना - पुरानी प्रथा पर चलते जाना ।

**लीख** - स्त्री० [हिं] लिक्षा ।

**लीचड़** - वि० [हिं] सुस्त ; लेनदेन साफ़ न रखनेवाला ; चिपड़नेवाला ।

**लीची** - स्त्री० [हि] एक बहुत मधुर फलोंवाला वृक्ष ; इस वृक्ष का फल ।

**लीझी** - 1. स्त्री० [हिं] उबटन आदि मलने पर शरीर पर से निकलनेवाला मैल ; रेशा ; रसहीन गूदा ; 2. वि० नीरस ; निस्सार ।

**लीढ** - वि० [सं] चाटा हुआ ; आस्वादित ।

**लीद** - स्त्री० [हिं] घोड़े आदि पशुओं का मल ।

**लीन** - 1. वि० [सं] तन्मय ; ध्यानमग्न ; संलग्न ; तत्पर ; विलीन ; छिपा हुआ ; लुप्त ; पिघला हुआ ; घुला हुआ ; 2. पु० संलग्नता ; लोप ।

**लीनता** - स्त्री० [सं] तल्लीनता ; उदासीनता ; निःसंगता ; सलग्नता ।

**लीपना** - स० [हिं] पोतना ; मु० — पोतना - सफ़ाई करना ; लीप-पोतकर बराबर करना - काम बिगाड़ना ।

**लीलक** - 1. पु० [हिं] जूते की नोक पर लगाया जानेवाला हरा चमड़ा ; 2. वि० नील ।

**लीलना** - सं० [हिं] निगलना ।

**लीलया** - अव्य० [सं] खेल में ; सहज ही ।

**लीलहिं** - अव्य० [हिं] लीलया ।

**लीला** - 1. स्त्री० [सं] क्रीड़ा ; विलास ; शृंगार-चेष्टा ; अवतारों के चरित्र का अभिनय ; रहस्यपूर्ण कार्य ; सौन्दर्य ; प्रेमी का अनुकरण ; 2. पु० गोदना ; काला घोड़ा ; यौ०—कलह - प्रणय-कलह ; —गृह, गेह - क्रीड़ाभवन ; —पुरुषोत्तम - विष्णु का अवतार ; —मय - क्रीड़ायुक्त ; क्रीड़ा-संबंधी ;— —मनुष्य - नक़ली मनुष्य ; —वान - क्रीड़ाशील ; रमणीय ; —साध्य - सहज ही संपन्न होनेवाला ; —स्थल - क्रीड़ा का स्थान ।

**लीलोद्यान** - पु० [सं] वह उद्यान जिसमें क्रीड़ा की जाय ।

**लुंगा, लुंगाड़ा** - वि० [हिं] आवारा, लुच्चा, बदमाश ।

**लुंगी** - स्त्री० [हिं] छोटी धोती, तहमत ।

**लुंच** - पु० [सं] काटने, उखाड़ने, छीलने या नोचनेवाला ।

**लुंचन** - [सं] काटने, छीलने, नोचने आदि की क्रिया ; जैन साधुओं का सिर तथा दाढी-मूँछ के बालों का उत्पाटन ।

**लुंचना** - स्त्री० [सं] संक्षिप्त भाषण ।

**लुंज** - वि० [हिं] लंगड़ा-लूला, बिना हाथ पैर का ; बिना पत्तों का पेड़ ।

**लुंठक** - पु० [सं] चोर ; लुटेरा ।

**लुंठन** -पु० } [स] चोरी ।
**लुंठा** - स्त्री० }

**लुंठाक** - पु० [सं] डाकू ; कौआ ।

**लुंठी** - स्त्री० [सं] लूट-पाट ; लुढ़कना ।

**लुंडा** - 1. वि० [हिं] पुच्छ व पंखहीन (पक्षी) ; 2. पु० लपेटे हुए सूत की पिंडी ।

**लुंडियाना** - स० [हिं] पिंडी के रूप में सूत आदि लपेटना ।

**लुंडी** - 1. वि० [हिं] जिसकी पूँछ या पर झड़ गयें हो (चिड़िया); 2. स्त्री० लपेटे हुए सूत की पिंडी; [सं] सद्व्यवहार; विवेकशीलता।

**लुआठा** - पु० [हिं] जलती हुई या अधजली लकड़ी।

**लुआब** - पु० [अ] थूक; लसदार रस।

**लुक** - पु० [हिं] मिट्टी के बर्तनो पर चमक लाने के लिए उनपर लगाया जानेवाला रोग़न; चिनगारी।

**लुकना** - अ० [हिं] छिपना; **मु०** लुक-छिपकर - बहुत ही गुप्त रूप से।

**लुक़मा** - पु० [अ] ग्रास।

**लुक़मान** - पु० [अ] क़ुरान में वर्णित एक बुद्धिमान हकीम; **मु०**—के पास दवा न होना - रोग का असाध्य होना।

**लुकाछिपी** - स्त्री० [हिं] लुकने-छिपने का एक खेल।

**लुकाट** - पु० [हिं] पहाड़ों पर होनेवाला एक वृक्ष और उसका फल।

**लुकाठी** - स्त्री० [हिं] छोटा लुआठा।

**लुकाना** - 1. स० [हिं] छिपाना; 2. अ० छिपना।

**लुकार** - स्त्री० [हिं] अग्नि।

**लुकारी** - स्त्री० [हिं] एक सिरे पर जलती हुई लकड़ी या फूस का पूला।

**लुकेठा** - पु० [हिं] जलती हुई लकड़ी।

**लुक्** - पु० [सं] लोप।

**लुखिया** - स्त्री० [हिं] धूर्त औरत; वेश्या; कुलटा।

**लुगड़ा** - पु० [हिं] ओढ़नी; कपड़ा।

**लुग़त** - स्त्री० [अ] भाषा; शब्द; शब्द-कोष।

**लुगदा** - पु० [हिं] काग़ज़ आदि बनाने के लिए किसी गीली व कुटी-पिसी हुई चीज़ का गोला या लोदा।

**लुगदी** - स्त्री० [हिं] कुटी-पिसी हुई गीली वस्तु का पिंड।

**लुगरी** - स्त्री० [हिं] फटी पुरानी धोती; चुग़ली।

**लुग़वी** - वि० [अ] कोषगत; असली (अर्थ); **यौ०** —मानी - शब्दार्थ; असली मानी।

**लुगी** - स्त्री० [हिं] फटी धोती; लहँगे का किनारा; लुंगी।

**लुगा** - पु० [हिं] कपड़ा।

**लुचकना** - स० [हिं] झटके से कोई चीज़ छीन लेना।

**लुचवाना** - स० [हिं] नोचवाना।

**लुचा** - वि० [हिं] दुराचारी; बदमाश; कोई चीज़ झपटकर भागनेवाला।

**लुटना** - अ० [हिं] डाकू आदि द्वारा लूटा जाना; तबाह होना; निछावर होना; लोटना।

**लुटरना** - अ० [हिं] लुढ़कना; लोटना।

**लुटरा** - वि० [हिं] घुँघराला।

**लुटिया** - स्त्री० [हिं] छोटा लोटा; **मु०** —डुबाना - अपयश का काम करना; काम चौपट करना।

**लुटेरा** - पु० [हिं] डाकू।

**लुठित** - वि० [सं] लुढ़का हुआ; घिरा हुआ; लोटा हुआ।

**लुड़कना, लुढ़कना** - अ० [हिं] चक्कर खाते हुए आगे बढ़ना या गिरना, रपटना।

**लुड़की** - स्त्री० [हिं] दही में बनी हुई भांग।

**लुड़खुड़ाना** - अ० [हिं] लड़खड़ाना।

**लुतरा** - वि० [हिं] चुग़लख़ोर; बदमाश; शरारती।

**लुत्फ़** - पु० [अ] आनंद; अनुग्रह; ख़ूबी; सौजन्य; मजा।

**लुनना** - स० [हिं] नष्ट करना; फसल काटना; हटाना।

**लुनाई** - स्त्री० [हिं] सुंदरता; फसल की कटाई।

**लुनेरा** - पु० [हिं] फसल काटनेवाला; नोनिया।

**लुप्त** - 1. वि० [सं] छिपा हुआ; नष्ट; अप्रयुक्त; जिसका लोप हो गया हो; लूटा हुआ; 2. पु० लूटा हुआ माल।

**लुबरी** - स्त्री० [हिं] पानी आदि में नीचे बैठा हुआ मैल, तलछट।

**लुब्ध** - 1. वि० [सं] आसक्त; घबड़ाया हुआ; मोहित; लुभाया हुआ; 2. पु० कामुक; व्याध, बहेलिया; शिकारी।

**लुब्धक** - पु० [सं] एक प्रकाशमान तारा; बहेलिया; लपट; लोभी व्यक्ति।

**लुब्ब** - पु० [अ] सारभाग; खुलासा; **यौ०** —लुबाब - निचोड़; इत्र।

**लुभाना** - 1. अ० [हिं] आसक्त या रागयुक्त होना; लालसा करना; लालच में पड़ना; 2. स० मोह में डालना।

**लुभित** - वि० [हिं] अशांत; मुग्ध।

**लुरका** - पु० [हिं] झुमका।

**लुरकी** - स्त्री० [हिं] कान की बाली।

**लुरियाना** - अ० [हिं] यकायक आ जाना; प्रवृत्त होना; प्रेमपूर्वक स्पर्श करना।

**लुरी** - स्त्री० [हिं] हाल की ब्यायी गाय।

**लुलना** - अ० [हिं] लटकते हुए झूलना, लहराना।

**लुलित** - वि० [सं] अशांत; क्लांत; दबाया हुआ; ध्वस्त; बिखरा हुआ; लटकता या झूलता हुआ; सुंदर; **यौ०** —पल्लव - हिलती हुई शाखाओंवाला (वृक्ष)।

**लुवार** - स्त्री० [हिं] गरम और तपी हुई हवा, लू।

**लुहँगी** - स्त्री० [हिं] लोहे से मढ़ी हुई लाठी।

**लुहार** - पु० [हिं] लोहे का काम करनेवाला; लोहे का काम करनेवाली एक जाति।

**लुहारी** - स्त्री० [हिं] लुहार की स्त्री; लोहे का काम।

**लू** - स्त्री० [हिं] तपी हुई हवा या उसका झोका, लुवार; **मु०** — मारना, लगना - गरम हवा लगने से ज्वर आदि हो जाना।

**लूक** - 1. पु० [हिं] टूटा हुआ तारा, उल्का; आग की लपट; जलती लकड़ी; 2. स्त्री० लू।

**लूका** - पु० [हिं] चिनगारी; मछली फँसाने का जाल; एक सिरे से जलती हुई लकड़ी; **मु०** —लगाना - आग लगाना।

**लूक्ष** - वि० [सं] रूखा।

**लूखा** - वि० [हिं] रूखा।

**लूगड़** - पु० [हिं] ओढ़नी; कपड़ा।

**लूगा** - पु० [हिं] धोती; वस्त्र, लुग्गा।

**लूट** - स्त्री [हिं] डकैती; लूटा हुआ माल; **यौ०** —खसोट - आर्थिक शोषण; लूटमार; —खूँद, पाट, मार - लोगों को शारीरिक यंत्रणा देकर उनका धन छीनना।

**लूटना** - स० [हिं] ज़बर्दस्ती छीनना; अन्याय या अनुचित ढंग से किसीका धन ले लेना; ठगना; बरबाद करना; भोगना; वशीभूत करना; **मु०** —पाटना - लूटमार करना।

**लूता** - स्त्री० [सं] मकड़ी; चींटी; फफोले-जैसी फुंसियाँ।

**लून** - 1. वि० [सं] कटा हुआ; आहत; कुतरा हुआ; छिदा हुआ; नष्ट किया हुआ; 2. पु० पूँछ।

**लूनक** - 1. पु० [हिं] अमलोनी; सज्जीखार; [सं] अंतर; एक जानवर; कटा या टूटा

हुआ पदार्थ ; घाव ; विभाग ; 2. वि० [सं] कटा हुआ ।
**लूनना** - स० [हिं] काटना (फ़सल) ।
**लूमना** - अ० [हिं] झूलना ; लटकना ।
**लूला** - वि० [हिं] बिना हाथ का ; असहाय ; बेकाम ।
**लूल** - वि० [हिं] नासमझ ; मु० — बनाना - मूर्ख ठहराना ; निन्दा करना ।
**लेंड** - पु० [सं] मल ।
**लेंड़** - पु० [हिं] बत्ती के रूप में निकलनेवाला बँधा हुआ मल ।
**लेंड़ी** - स्त्री० [हिं] बकरी आदि का गोल-गोल बँधा हुआ मल ।
**लेंहड़ा** - पु० [हिं] समूह, झुंड (चौपायो का)।
**लेहड़ी** - स्त्री० [हिं] झुंड, रेवड़ ।
**लेई** - स्त्री० [हिं] चिपकाने के काम के लिए घोलकर पकाया हुआ आटा या चावल ; लपसी ; सुर्खीमिश्रित बारीक़ चूना ; **यौ०** —पूँजी - सर्वस्व ।
**लेख** - 1. पु० [सं] पंक्ति ; देवता ; निबंध ; लिखावट, लिपि ; हिसाब-किताब ; पत्र ; 2. वि० लिखने या लेखा करने योग्य , 3. स्त्री० पक्की बात ; रेखा ; **यौ०** — पत्र, पत्रिका - दस्तावेज़ ; —पद्धति, प्रणाली - लिखने की शैली ; —साधन - लिखने का साधन ; —हार, हारक - पत्रवाहक ।
**लेखक** - पु० [सं] ग्रंथ का रचयिता ; पत्र आदि के लिए लेख लिखनेवाला ; चित्रकार ; लिपिकार ; क्लर्क ; **यौ० —प्रमाद** - लिपिकार की भूल ।
**लेखन** - 1. वि० [सं] उत्तेजक ; खुरचनेवाला ; 2. पु० लिखने की कला ; लिखने का काम ; लेखा लगाना ; उत्तेजन ; काटना ; खरोचना ; वमन करना ; चित्रकारी ; औषध से रसादि सात धातुओ तथा त्रिदोषो का शोषण करके पतला करना ; भोजपत्र ; ताड़पत्र; खाँसी ; खुरचने का औज़ार ; **यौ०** — साधन - क़लम आदि ।
**लेखनहार** - वि० [हिं] लिखनेवाला, लेखक ।
**लेखनिका** - स्त्री० [सं] तूलिका ।
**लेखनी** - स्त्री० [सं] क़लम ; करछी ; **मु०** — उठाना - लिखना शुरू करना ।
**लेखनीय** - वि० [सं] लिखने योग्य ; मोटापा आदि घटाने में उपयोगी ।
**लेखा** - 1. स्त्री० [सं] रेखा ; किनारा ; चित्रण ; चिन्ह ; शरीर पर चंदन आदि से रेखायें बनाना ; लिपि ; 2. पु० [हिं] हिसाब ; अंदाज़ ; विचार ; **यौ०** — पत्तर, बही - रोकड़बही ; हिसाब-किताब का काग़ज़ ।
**लेखिका** - स्त्री० [स] लेख या ग्रंथ लिखनेवाली महिला ; छोटी रेखा ; क्लर्क (स्त्री) ।
**लेखित** - वि० [सं] लिखा हुआ ; लिखवाया हुआ ।
**लेखिनी** - स्त्री० [सं] करछी ।
**लेखे** - अव्य० [हिं] विचारानुसार, समझ में।
**लेख्य** - 1. पु० [स] लेख लिखने की कला ; चित्र ; दस्तावेज़ ; पत्र ; 2. वि० खरोचने या लिखने योग्य ; **यौ०** — चूर्णिका - क़लम या तूलिका आदि ; — पत्रक - पत्र ; ताड़ का पत्ता ; दस्तावेज़ ; लेख ; —प्रसंग - दस्तावेज़ ; शर्तनामा ; —स्थान - दफ़्तर ।
**लेजुर** - स्त्री० [हिं] रस्सी ; कुएँ से पानी निकालने की रस्सी ।
**लेजुरा** - पु० [हिं] लेजुर; एक अगहनी धान।
**लेटना** - अ० [हिं] आराम करना ; किसी आधार पर पड़ रहना ; सोना ; मर जाना ; किसी चीज़ का झुककर गिरना ।

**लेद** - पु० [हिं] फागुन में गाया जानेवाला एक तरह का गीत।

**लेन** - पु० [हि] लेने की क्रिया; प्राप्त धन; यौ० —दार - महाजन; —देन - लेना-देना; ऋण लेने-देने का काम; मु० —देन न होना - सरोकार या संबंध न होना।

**लेना** - स० [हिं] खरीदना; जीतना; कर्ज़ लेना; अगवानी करना; भागते हुए को पकड़ना; सेवन करना; किसीको स्वीकार या धारण करना (पूजा के लिए फूल लेना)।

**लेपन** - पु० [स] उबटन; मांस; लेपने की क्रिया।

**लेपना** - स० [हिं] गीली चीज़ पोतना, चुपड़ना।

**लेप्य** - वि० [स] लेपन करने योग्य; साँचे में डालने योग्य।

**लेमू** - पु० [फा] नीबू; यौ० —निचोड़ - हरेक के साथ खाने में शामिल होनेवाला आदमी।

**लेला** - 1. स्त्री० [सं] कंपन; 2. पु० भेड़ या बकरी का बच्चा; साथ लगनेवाला व्यक्ति।

**लेव** - पु० [हिं] घाव आदि पर लगाने की दवा; दीवार पर लगाने का गिलावा; पकाते समय हाँडी आदि की पेंदी पर लगाया जानेवाला मिट्टी का लेप; मु० —चढ़ना - मोटा होना (व्यंग)।

**लेवादेई** - स्त्री० [हिं] लेन-देन।

**लेवाल** - पु० [हिं] लेने या खरीदनेवाला।

**लेश** - 1. पु० [सं] अणु; अल्पता; एक तरह का गाना; समय का एक मान; 2. वि० अल्प, थोड़ा।

**लेश्या** - स्त्री० [सं] प्रकाश; जीव की क्रोधादि-युक्त अवस्था।

**लेष्ट** - पु० [सं] मिट्टी का ढेला।

**लेह** - पु० [सं] चाटनेवाला; आहार; चाटने की वस्तु; ग्रहण का एक भेद।

**लेहन** - पु० [सं] चाटने की क्रिया।

**लेहना** - पु० [हि] खेत में कटे डंठलो का पूला; दोनो हाथों के बीच उठाने लायक़ डंठल; पावना; धोबी, नट, नाई आदि को दिया जानेवाला फसल का भाग।

**लेहसुवा** - पु० [हि] एक तरह की बरसाती घास।

**लेहसुर** - पु० [हि] मिट्टी ठीक करने का कुम्हारो का औज़ार।

**लेही** - वि० [सं] चाटनेवाला।

**लेह्य** - 1. पु० [सं] चटनी; 2. वि० चाटने योग्य।

**लैंगिक** - 1. वि० [सं] लिंग या चिन्हों से प्राप्त (प्रमाण); 2. पु० अनुमान-प्रमाण (वैशेषिक); शिल्पी।

**लै** - अव्य० [हिं] तक, पर्यन्त।

**लैटिन** - स्त्री० [हिं] रोमन काल में प्रचलित इटली की पुरानी भाषा, लातीनी।

**लैतोलाल** - पु० [अ] टालमटोल।

**लैरू** - पु० [हिं] बछड़ा।

**लैल** - स्त्री० [फ़ा] रात।

**लैला** - स्त्री० [फ़ा] मजनू का प्रेमिका, प्रेयसी; सुदरी।

**लों** - अव्य० [हिं] तक; समान।

**लोंदा** - पु० [हिं] किसी गीली वस्तु का पिंड।

**लोई** - 1. स्त्री० [हिं] रोटी बनाने के लिए साने हुए आटे की गोली; एक तरह का ऊनी कंबल; 2. पु० लोग।

**लोकंदा** - पु० } [हिं] पहली बार ससुराल
**लोकंदी** - स्त्री० } जानेवाली लड़की के साथ जानेवाली दासी।

**लोक** - पु० [स] विश्व का एक विभाग, भुवन ; पृथ्वी ; संसार ; प्रजा ; प्रांत ; समूह ; समाज, सासारिक व्यवहार ; निवासस्थान ; दिशा ; दृश्य ; यज्ञ ; सात या चौदह की संख्या ; **यौ०** —कथा - जनसमाज में प्रचलित कथाएँ ; —कर्ता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश ; —काम - विशेष लोक का इच्छुक ; —काम्या - मानवप्रेम ; —गति - लोकाचार ; —गाथा - परंपराप्राप्त गीतादि ; —गीत - साधारण जनता में प्रचलित गीत ; —जननी, माता - लक्ष्मी ; —तंत्र - जनतंत्र ; —तत्त्व - मानव जाति का ज्ञान ; —त्रय, त्रयी - तीनो लोक (आकाश, पाताल और मर्त्यलोक) ; —दूषण - लोको को क्षति पहुँचानेवाला ; —द्वय - स्वर्ग और पृथ्वी ; —द्वार - स्वर्ग का द्वार ; —नायक - लोको का नयन करनेवाला ; —नेता - शिव ; —पाल - दिक्पाल ; नरेश, —पथ, पद्धति - दुनियाँ का तरीक़ा ; —पालक - राजा ; —प्रवाद - सर्वसाधारण में प्रचलित बात ; —प्रवाही - दुनियाँ के साथ बहनेवाला ; —प्रसिद्ध - विश्वविख्यात ; —बाह्य - दुनियाँ से भिन्न ; सनकी ; समाज से बहिष्कृत ; —भर्ता - संसार का भरण-पोषण करनेवाला ; —भावन, भावी - लोगों की भलाई करनेवाला ; लोकरचना करनेवाला ; —मत - जनता की राय ; —मार्ग - लोकप्रचलित प्रथा ; —रंजन - जनता को संतुष्ट कर उसका विश्वास संपादन करना ; —रव - अफ़वाह, जनश्रुति ; —लीक - लोक-मर्यादा ; —लेख - साधारण पत्र ; —वचन, वाद, वार्ता - अफ़वाह ; —विज्ञात - लोकप्रसिद्ध ; —विरुद्ध - जनमत के विरुद्ध ; सबसे भिन्न मत रखनेवाला ; —विश्रुत - लोकप्रसिद्ध ; —वृत्त - लोकरीति ; —व्यवहार - लोकाचार ; —श्रुति - अफ़वाह ; —संग्रह - कल्याण ; लोगो की भलाई चाहना ; सारा विश्व ; मानव-संपर्क से प्राप्त अनुभव ; —संग्राही - लोगों को संतुष्ट करनेवाला ; —संपन्न - लौकिक बुद्धि से युक्त, —सत्ता - जनता द्वारा संचालित शासन-व्यवस्था ; —सत्तात्मक - जनता द्वारा संचालित (शासन) ; —सिद्ध - लोक या समाज द्वारा स्वीकृत, प्रचलित ; —सेवक - सार्वजनिक काम करनेवाला ; —सभा - प्रतिनिधि सत्तात्मक राज्यों में साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है, भारतीय संविधान मे उक्त प्रकार की सभा (House of People) ; —हित - मानव-मात्र का कल्याण ।

**लोकना** - स० [हिं] दो व्यक्तियों की बातचीत के समय बीच में दख़ल देकर कुछ कहने लगना ; रास्ते में उड़ा लेना ; किसी चीज़ को गिरने से पहले ही हाथों से पकड़ लेना ।

**लोकांतर** - पु० [स] परलोक ।

**लोकाचार** - पु० [स] चलन, संसार का व्यवहार ।

**लोकाट** - पु० [हि] एक पहाड़ी वृक्ष या उसका फल जो बेर के बराबर होता है ।

**लोकातिशय** - वि० [सं] असाधारण ।

**लोकाना** - स० [हिं] उछालना ; किसीको कोई चीज़ उछालकर देना ।

**लोकानुग्रह** - पु० [सं] लोक-कल्याण ।

**लोकापवाद** - पु० [सं] बदनामी, लोक-निन्दा ।

**लोकाभ्युदय** - पु० [सं] संसार की उन्नति।
**लोकायत** - पु० [सं] केवल इसी लोक पर विश्वास रखनेवाला व्यक्ति; चार्वाक दर्शन और उसका अनुयायी।
**लोकालोक** - पु० [स] सातो समुद्रो को परिवेष्ठित करनेवाली पर्वतश्रेणी।
**लोकित** - वि० [सं] देखा हुआ।
**लोकेश, लोकेश्वर** - पु० [सं] लोक का स्वामी; बुद्ध।
**लोकैषणा** - स्त्री० [सं] सम्मान आदि की कामना; सुख की अभिलाषा।
**लोकोक्ति** - स्त्री० [सं] कहावत।
**लोकोत्तर** - वि० [सं] असाधारण; श्रेष्ठ।
**लोकोपकार** - पु० [सं] सार्वजनिक लाभ का काम।
**लोखर** - पु० [हि] नाई या बढ़ई आदि के औज़ार।
**लोग** - पु० [हिं] मनुष्य; **यौ०** —बाग - सर्वसाधारण; जनता।
**लोच** - स्त्री० [हिं] कोमलता; लचक; अभिलाषा; उखाड़ना; नोचना; अच्छा ढंग।
**लोचन** - 1. वि० [सं] चमकानेवाला; 2. पु० आँख; देखने की क्रिया; **यौ०** —गोचर, पथ, मार्ग - दृष्टि के अन्दर पड़नेवाला क्षेत्र; —पाथ - नज़र डालना।
**लोचून** - पु० [हिं] लोहे का चूरा; लोहे के मैल का चूर्ण।
**लोट** - 1. स्त्री० [हिं] लुढ़कना; 2. पु० घाट; **यौ०**—पोट - हँसी के आवेग से अधीर।
**लोटन** - पु० [हिं] गहरी जोताई करने का एक हल; भूमि पर लुढ़कनेवाला एक कबूतर; रास्ते पर का कंकड़।
**लोटना** - अ० [हिं] आराम करना; छटपटाना; लुढ़कना; **यौ०** —पोटना - लेटना-सोना।
**लोटा** - पु० [हि] जल आदि रखने का धातु का छोटा पात्र।
**लोटिया** - स्त्री० [हि] छोटा लोटा, लुटिया।
**लोड़न** - पु० [सं] मंथन।
**लोड़ना** - स० [हिं] चाहना, जरूरत महसूस करना।
**लोढ़ना** - 1. स० [हिं] ओटना; साफ़ करना; 2. अ० ज़मीन पर घसीटना।
**लोढ़ा** - पु० [हिं] सिल पर पीसने के लिए बना हुआ पत्थर का गोल-लंबा टुकड़ा, बट्टा।
**लोढ़िया** - स्त्री० [हिं] छोटा लोढ़ा।
**लोण** - पु० [हिं] नमक।
**लोथ** - स्त्री० [हिं] लाश, शव; **यौ०** —पोथ - बहुत थका हुआ; **मु०** —गिरना - मारा जाना।
**लोथड़ा** - पु० [हिं] मांस का बड़ा टुकड़ा।
**लोथारी** - स्त्री० [हिं] कम पानी में से नाव को किनारे खींच लाना।
**लोध** - पु० [हिं] लाल या सफ़ेद फूलोवाला एक वृक्ष।
**लोध्र, लोध्रक** - पु० [सं] लोध का पेड़।
**लोन** - पु० [हिं] नमक; सुंदरता; **यौ०** —हरामी - नमकहराम, कृतघ्न।
**लोना** - 1. वि० [हिं] नमकीन; सुंदर; 2. पु० क्षार; एक साग; 3. स० काटना।
**लोनाई** - स्त्री० [हिं] लुनाई।
**लोनिया** - 1. पु० [हिं] नमक बनाने और बेचने का धंधा करनेवाली एक जाति; 2. स्त्री० लोनी साग।
**लोनी** - 1. स्त्री० [हिं] एक तरह की साग; चने की पत्तियों पर प्राप्त होनेवाला क्षार; नमक निकालने की मिट्टी; लोना;

सुंदर नायिका; 2. पु० नवनीत, मक्खन।

**लोप** - पु० [सं] अभाव; छिपना; उपेक्षा; नाश; भंग; लूट; शब्द में से किसी अक्षर का लुप्त होना।

**लोपना** - 1. स० [हिं] छिपाना; भंग करना; मिटाना; 2. अ० छिपना; लुप्त होना।

**लोबत** - स्त्री० [अ] खिलौना; गुड़िया; चित्र: पुतली; **यौ०** —बाज़ - कठ-पुतलों का तमाशा करनेवाला।

**लोबान** - पु० [अ] सुगंध के लिए आग पर जलाया जानेवाला एक वृक्ष का निर्यास।

**लोबानी** - वि० [अ] लोबानयुक्त; लोबान-जैसा सफ़ेद।

**लोबिया** - पु० [हिं] बोड़े का एक भेद जिसकी तरकारी बनती है और बीजों से दाल और दालमोठ तैयार किया जाता है; **यौ०** —कंजई - गहरा हरा रंग।

**लोभ** - पु० [सं] किसी वस्तु को पाने की इच्छा, लालच; दूसरो का धन लेने की इच्छा; अधीरता; आकांक्षा; कंजूसी; **यौ०** —मोहित - लोभ से विचलित; —शून्य - लोभरहित।

**लोभना** - 1. अ० [हिं] आसक्त होना; 2. स० लुभाना; मुग्ध करना।

**लोभनीय** - वि० [सं] लुभानेवाला; आकर्षक।

**लोभी** - वि० [सं] लालची; लुब्ध।

**लोम** - पु० [सं] शरीर पर के बाल, रोम; पूँछ; **यौ०** —कूप, रंध्र, विवर - रोएँ की जड़ में का छेद; —राजि - रोमावली; —हर्ष - रोमांच; —हर्षक - रोमांचकारी।

**लोमड़ी** - स्त्री० [हिं] गीदड़ की जाति का एक जानवर।

**लोमश** - 1. पु० [सं] एक ऋषि; एक पौधा; भेड़; 2. वि० घने रोओ से युक्त; घासयुक्त।

**लोमालि, लोमाली, लोमावली** - स्त्री० [सं] सीने से नाभि तक उगे हुए घने बाल।

**लोय** - 1. पु० [हिं] आँख; लोक, लोग; 2. स्त्री० ज्वाला; 3. अव्य० लौं।

**लोयन** - पु० [हिं] लोचन; लावण्य।

**लोरी** - स्त्री० [हिं] बच्चो को सुलाते समय गाया जानेवाला गीत; तोते की एक जाति।

**लोल** - 1. वि० [सं] चंचल; परिवर्तनशील; उत्सुक; लोभी; हिलता-डोलता; अशांत; अस्थिर; 2. पु० लिंग; **यौ०** —कर्ण - सबकी बात सुननेवाला; —चक्षु, नेत्र - जिसकी आँखे चारो तरफ़ दौड़ती हो; —जिह्व - लालची; सर्प।

**लोलक** - पु० [सं] नथ आदि का लटकन; घंटे का लटकन; लोलकी।

**लोलकी** - स्त्री० [हिं] कान का निचला भाग।

**लोलना** - 1. अ० [हि] चंचल होना; हिलना-डोलना; 2. स० हिलाना।

**लोला** - 1. स्त्री० [सं] जीभ; एक विशेष प्रकार की नाव; चंचला स्त्री; बिजली; लक्ष्मी; 2. पु० बच्चो का एक खिलौना।

**लोलाक्षिका, लोलाक्षी** - स्त्री० [स] चंचल नेत्रोवाली स्त्री।

**लोलित** - वि० [सं] क्षुब्ध।

**लोलुप** - वि० [स] लालची; उत्सुक; चटोर।

**लोलुपता** - स्त्री० [सं] लालच; लालसा।

**लोष्ट** - पु० [स] ढेला; लोहे का मैल; चिन्ह का मैल; चिन्ह का काम देनेवाली कोई वस्तु।

**लोहँड़ा** - पु० [हिं] लोहे का पात्र (तसला आदि)।

**लोह** - 1. वि० [सं] लोहे का बना; तांबे के रंग का; 2. पु० [हिं] लोहा, तांबा, सोना आदि; अगर, मछली फँसाने का काँटा; रक्त; लाल बकरा; हथियार; **यौ०** —कटक - लोहे की ज़ंजीर; —कांत - चुंबक; —कार - लोहार; —किट्ट - लोहे का मैल; —पाश - ज़ंजीर; —प्रतिमा - लोहे की मूर्ति; —बद्ध - लोहा जड़ा हुआ; —सार - फ़ौलाद; फ़ौलाद की ज़ंजीर।

**लोहांगी** - स्त्री० [हिं] सिरे पर लोहा लगी हुई लाठी।

**लोहा** - 1. पु० [हिं] एक धातु; युद्ध; लौहनिर्मित वस्तु; हथियार; 2. वि० बहुत कड़ा, कठोर; लाल; **मु०**— करना, देना - इस्तरी करना; —बजना - युद्ध होना; —मानना - हार जाना; प्रभाव मानना; लोहे के चने चबाना - बहुत कठिन कार्य करना।

**लोहाना** - अ० [हिं] लोहे के पात्र में बहुत देर तक रहने के कारण किसी वस्तु के स्वाद या रंग में फ़र्क़ आ जाना।

**लोहार** - पु० [हिं] लोहे का काम करनेवाली एक जाति, लुहार; **यौ०** —खाना - लोहार के काम करने का स्थान; **मु०** —खाने में सेवइयाँ बेचना - बेवक़ूफ़ी का काम करना।

**लोहारी** - स्त्री० [हिं] लोहार का काम या व्यवसाय, लुहारी।

**लोहित** - 1. वि० [सं] तांबे का बना हुआ; लाल; 2. पु० लाल रंग; पलक का एक रोग; केसर; एक हिरन; एक धान; मंगल ग्रह; ब्रह्मपुत्र नद; तांबा; रक्त; युद्ध; रक्तचंदन; एक रत्न, लाल वस्तु; **यौ०** —ग्रीव - अग्नि; —चंदन - केसर; —नयन - लाल आँखोंवाला; —पुष्पक - अनार; —शतपत्र - लाल कमल।

**लोहिनी** - स्त्री० [सं] लाल वर्ण की स्त्री।

**लोहिया** - 1. पु० [हिं] लोहे का व्यापार करनेवाला; लोहे की गोली; लाल बैल, 2. वि० लोहे का; लाल रंग का।

**लोही** - 1. स्त्री० [हिं] सूर्योदय के पहले की लाली; लोई; चुग़ली; 2. पु० पौ फटना।

**लोहू** - पु० [हिं] रक्त, लहू।

**लौं** - अव्य० [हिं] तक; बराबर।

**लौंकना** - अ० [हिं] चकाचौंध होना; चमकना, दिखायी देना।

**लौंग** - स्त्री० [हिं] एक तरह का वृक्ष या उसकी कली, लवंग; नाक का एक आभूषण।

**लौंगरा** - पु० [हिं] बरसात में उगनेवाली एक घास।

**लौंडा** - 1. पु० [हिं] छोकरा; सुंदर लड़का; 2. वि० नादान; **यौ०** —पन - छिछोरपन, लड़कपन; लौंडा होना।

**लौंडी** - स्त्री० [हिं] मज़दूरनी; दासी।

**लौ** - स्त्री० [हिं] दीपशिखा; आशा; लपट, धुन; चाह; लोलकी।

**लौआ, लौका** - पु० [हिं] कद्दू।

**लौकिक** - 1. वि० [सं] व्यावहारिक; सांसारिक; सामान्य; 2. पु० सांसारिक व्यवहार।

**लौज़** - पु० [फ़ा] बादाम; बादाम की बनायी हुई बर्फ़ी।

**लौज़ियात** - स्त्री० [अ] बादाम का हलुवा।

**लौज़ीना** - पु० [अ] बादाम का हलुवा, एक मिठाई जिसमें बादाम व पिस्ता आदि पीसकर डालते हैं।

**लौजोरा** - पु० [हिं] धातु गलाने का काम करनेवाला।

**लौटना** - 1. अ० [हिं] पीछे मुँह फेरना; वापस आना; 2. स० उलटना; इधर से उधर करना।

**लौटान** - स्त्री० [हिं] लौटने की क्रिया।

**लौटाना** - स० [हिं] वापस करना; उलट-पलट करना; उलटे पैर वापस करना; बदलना।

**लौटानी** - अव्य० [हि] लौटती बार।

**लौन** - पु० [हिं] नमक।

**लौनी** - 1. स्त्री० [हिं] फसल की कटाई, लुनाई; 2. पु० नवनीत, मक्खन।

**लौस** - पु० [फ़ा] धब्बा; मिलावट; लिप्त होना।

**लौह** - 1. पु० [सं] लोहा; हथियार; 2. वि० लोहे या ताबे का बना हुआ; लाल बकरे से संबंध रखनेवाला; लाल; **यौ०** —कार - लोहार; —ज - मोर्चा; —बंध - लोहे की ज़ंजीर, हथकड़ी; —भाँड - लोहे का पात्र; —मल - लोहे का मैल; —युग - लोहे के प्राथमिक प्रयोग का ऐतिहासिक काल; 3. स्त्री० [अ] लिखने की तख्ती; पुस्तक का पन्ना; **यौ०** —नवीस - पुस्तक के पहले पृष्ठ की सजावट करनेवाला चित्रकार; —पेशानी - भाग्य-लेख।

**लौहाचार्य** - पु० [सं] धातुविद्या जाननेवाला।

**लौहासव** - पु० [सं] लोहे के योग से बननेवाला एक आसव।

**लौहित्य** - पु० [सं] लाल रंग, लाली; एक तीर्थ; एक तरह का धान; ब्रह्मपुत्र नद; एक सागर; एक पर्वत।

**ल्याना, ल्यावना** - स० [हिं] लाना।

**ल्यारी** - पु० [हिं] भेड़िया।

**ल्यौ** - स्त्री० [हिं] लौ, ध्यान।

**ल्वारि** - स्त्री० [हि] लू।

## व

**वंक** - 1. वि० [सं] टेढ़ा, झुका हुआ, 2. पु० नदी का घुमाव; आवारा आदमी; **यौ०** —नाल - शरीर की एक नाड़ी; —नाली - सुषुम्ना नाड़ी।

**वंकट** - वि० [हि] टेढ़ा; विकट।

**वंकिम** - वि० [हिं] कुछ-कुछ टेढ़ा।

**वंक्षण** - पु० [सं] पेड़ू और जाँघ के बीच का भाग, ऊरुसंधि।

**वंग** - पु० [सं] बंगाल; राँगा; राँगे का भस्म; बैंगन; कपास; **यौ०** —ज - पीतल; सिंदूर।

**वंगेरिका** - स्त्री० [सं] टोकरी, डलिया।

**वंचक** - 1. वि० [सं] धूर्त; दुष्ट; 2. पु० गीदड़; नीच आदमी; पालतू नेवला।

**वंचकता** - स्त्री० [सं] ठगी, धूर्तता।

**वंचन** - पु० [सं] ठगी; प्रतारणा; **यौ०** —प्रवण - ठगी की ओर प्रवृत्त; —योग - ठगी का अभ्यास।

**वंचना** - 1. स्त्री० [सं] छल; ठगी; नष्ट काल या श्रम; **यौ०** —कुशल - ठगी में कुशल; 2. स० [हि] धोखा देना; पढ़ना।

**वंचनीय** - वि० [सं] परित्याग करने योग्य; ठगने योग्य।

**वंचयिता** - 1. वि०, 2. पु० [सं] ठग, धूर्त।

**वंचित** - वि० [सं] रहित; धोखा खाया हुआ।

**वंजुल** - पु० [सं] अशोक वृक्ष; वेतस; स्थलपद्म; **यौ०** — प्रिय - बेत।

**वंजुला** - स्त्री० [सं] अधिक दूध देनेवाली गाय; एक नदी।

**वंट** - 1. स्त्री० [सं] अविवाहित; पुच्छहीन; 2. पु० अविवाहित पुरुष; भाग; हँसिया आदि का दस्ता, बेंट।

**वंटक** - पु० [सं] हिस्सा, बाँटनेवाला।

**वंटाल** - पु० [सं] कुदाल; नाव; एक तरह का युद्ध।

**वंठ** - 1. वि० [सं] विकलांग; अविवाहित; 2. पु० अविवाहित पुरुष; बौना; भाला; सेवक।

**वंडा** - स्त्री० [सं] कुलटा स्त्री।

**वंद** - वि० [सं] प्रशंसक।

**वंदन** - पु० [सं] नमस्कार; पूजन; स्तुति; **यौ०** —माला, मालिका, वार - बंदनवार।

**वंदना** - स्त्री० [सं] पूजन; बौद्धों की एक पूजा; स्तुति; होम-भस्म का तिलक।

**वंदनीय** - वि० [सं] वंदना या सम्मान के योग्य।

**वंदित** - वि० [सं] आदरणीय; पूजित।

**वंदी** - 1. स्त्री० [सं] क़ैद; स्तुति; सोपान; **यौ०** —कार, ग्राह, चोर - डाकू; —पाल - जेलर; 2. पु० क़ैदी; चारण।

**वंद्य** - वि० [सं] आदरणीय; पूजनीय।

**वंधुर** - 1. पु० [सं] कोचवान के बैठने की जगह; 2. वि० बंधुर।

**वंध्य** - वि० [सं] अनुत्पादक; निष्फल; सदोष; **यौ०** —फल - फलहीन; बेकार।

**वंध्या** - स्त्री० [सं] वह स्त्री या गाय जिसे बच्चा न होता हो; **यौ०** —तनय, पुत्र, दुहिता - कोई कल्पित वस्तु।

**वंश** - पु० [सं] बाँस; बाँस की गाँठ; ईख; कुल; जाति; तलवार के बीच का चौड़ा भाग; नाक की ऊपर की हड्डी; बँड़ेर; शहतीर; बाँसुरी; मेरुदंड; लंबी पोली हड्डी; युद्धोपकरण; वंशलोचन; संतान; **यौ०**—कर - वंशप्रवर्तक; पूर्वज; पुत्र; —कर्म - बाँस की टोकरी आदि बनाने का काम; —कीर्ति - जिसका वंश प्रसिद्ध हो; —क्रम - वंशतालिका; —क्रमागत - आनुवंशिक; —क्षय - वंश का नाश; —गोप्ता - कुल का संरक्षक; —च्छेत्ता - वंश का अंतिम व्यक्ति; —ज - बाँस का बना हुआ; बाँस का बीज; संतान; —तालिका - वंशवृक्ष; —धर, धारी - कुल का रक्षक; संतान, —नाथ - कुल का मुखिया; —बाह्य - कुल से बाहर किया हुआ; —लक्ष्मी - कुल की संपत्ति; —लोचन - बाँस के पोले भाग में मिलनेवाला सफ़ेद पदार्थ; —वृक्ष - बाँस का पेड़; कुल के पूर्वपुरुषों तथा वर्तमान सदस्यों की वृक्ष के ढंग पर बनायी हुई तालिका; —वृद्धि - कुलोन्नति; —हीन - संतानहीन; निर्वंश।

**वंशावली** - स्त्री० [सं] वंश में उत्पन्न पुरुषों की क्रमागत सूची।

**वंशिका** - स्त्री० [सं] बाँसुरी; अगर; पिप्पली।

**वंशी** - स्त्री० [सं] बाँसुरी; धमनी; वंशलोचन; चार कर्ष का एक मान; **यौ०** —रव - वंशी की ध्वनि; —धर - श्याम, कृष्ण।

**वंशोद्भव** - वि० [सं] कुल में उत्पन्न।

**वंश्य** - 1. पु० [सं] पूर्वज; रीढ़; विद्वान; पीठ की हड्डी; बँड़ेर; संतान; शिष्य; वंश के सदस्य; सात पुश्त ऊपर-नीचे का संबंधी; 2. वि० बँड़ेर से लगा हुआ; मेरुदंड से संबद्ध; वंश-संबंधी; सद्वंश में उत्पन्न।

**वक़अत, वक़त** - स्त्री० [अ] इज़्ज़त; ऊँचाई; विश्वास; शक्ति।

**वकल** - पु० [सं] भीतरी छाल।

**वक़ार** - पु० [अ] गांभीर्य ; प्रतिष्ठा ; वैभव ; उत्तम स्वभाव ।

**वकालत** - स्त्री० [फ़ा] वकील का काम या पेशा ; दूसरे की ओर से मुक़द्दमे की पैरवी करना ; प्रतिनिधित्व ; **यौ०** —नामा - वकील का मुक़द्दमे में पैरवी करने का अधिकारपत्र ।

**वकालतन्** - अव्य० [अ] वकील के ज़रिये ।

**वक़ीअ** - वि० [अ] ऊँचा ; प्रतिष्ठित ; साखवाला ।

**वकील** - पु० [अ] दूसरो की ओर से मुक़द्दमो की पैरवी करनेवाला ; राज-प्रतिनिधि ; प्रतिनिधि ; वकालत करने का अधिकारी ; **यौ०** —सरकार - सरकार की ओर से मुक़द्दमे की पैरवी करनेवाला वकील ।

**वक़ूअ** - पु० [अ] घटित होना; ज़ाहिर होना ।

**वक़ूआ** - पु० [अ] घटना ; हंगामा या फ़साद ।

**वक़ूफ़** - पु० [अ] अनुभव ; आगाही ; समझ; ठहरना ; **यौ०** —दार - अनुभवी ; जानकार ।

**वक़्त** - पु० [अ] समय ; नियत काल ; अवकाश ; मुश्किल ; मौक़ा ; मौत की घड़ी ; वर्तमान काल ; **यौ०** —का - वर्तमानकालिक ; —का पाबद - समय-पालक ; वर्तमान की ख़ूबी ; काल का प्रभाव ; दुर्भाग्य की देन ; —नावक़्त, बेवक़्त - समय-कुसमय ; हमेशा ; **मु०** —गुज़ारना - दिन काटना ; —देना - किसीसे मिलने आदि के लिए समय नियत कर देना ; मौक़ा देना ; —पड़ना - मुसीबत आना ; —पर - मौक़े पर ; काम पड़ने पर ; —बेवक़्त काम आना - ज़रूरत के समय काम आना ।

**वक़्तन्-फ़वक़्तन्** - अव्य० [अ] जब-तब, कभी-कभी ।

**वक्तव्य** - 1. वि० [सं] कहने योग्य ; उत्तरदायी ; तुच्छ ; निन्दनीय ; 2. पु० कथन ; निन्दा ; नियम ; सीख ।

**वक्ता** - 1. वि० [सं] कहनेवाला : विद्वान ; ईमानदार ; भाषण-कला में प्रवीण ; 2. पु० अध्यापक ; कथा कहनेवाला व्यक्ति; बुद्धिमान व्यक्ति ।

**वक्तृता** - स्त्री० } [सं] भाषण ; वाग्मिता, वाक्-कौशल ।
**वक्तृत्व** - पु० }

**वक्त्र** - पु० [सं] मुख ; दत ; चोच ; थूथन ; कार्यारंभ ; बाण की नोक , **यौ०** —तुंड - गणेश ; —दल - तालू ; —शोधन - मुखशुद्धि ; भव्य ।

**वक़्फ़** - पु० [अ] ठहराव ; धर्म के लिए दान की हुई संपत्ति ; देवोत्तर संपत्ति ; **यौ०** —नामा - संपत्ति वक्फ़ करने के लिए लिखा गया पत्र ।

**वक़्फ़ा** - पु० [अ] देर ; विराम ।

**वक्र** - 1. वि० [स] टेढ़ा ; चालबाज़ ; क्रूर ; तिरछा ; बेईमान ; 2. पु० नासिका , नदी का मोड़ ; रुद्र ; मंगल ; वक्र ग्रह ; शनि ; पीछे की ओर हटना ; **यौ०** —कील - हाथी के लिए प्रयोग में आनेवाला अंकुश ; —गति - उलटी गतिवाला ; बेईमान ; टेढ़ी चाल ; मगल ; —ग्रीव - ऊँट ; —चंचु - तोता ; —तुंड - गणेश ; तोता ; —दंष्ट्र - सुअर ; —दृष्टि - क्रोधपूर्ण दृष्टि ; टेढ़ी निगाह ; —धी, बुद्धि, मति - धूर्त ; बेईमान ; —नासिक - उल्लू ; —पुच्छ - कुत्ता ।

**वक़्र** - पु० [अ] गौरव ; पद ; सम्मान ।

**वक्रता** - स्त्री० } [सं] कुटिलता ; टेढ़ापन ; पीछे की ओर हटना ।
**वक्रत्व** - पु० }

**वक्री** - वि० [सं] कुटिल ; धूर्त ; गर्दन टेढी करने या झुकानेवाला ; पीछे की ओर गमन करनेवाला ।

**वक्रोक्ति** - स्त्री० [सं] चमत्कारपूर्ण उक्ति ; काकु या श्लेष के बल पर भिन्न अर्थ बतलानेवाला एक अलंकार ।

**वक्ष, वक्षस्थल** - पु० [सं] सीना ; हृदय ।

**वक्षोज, वक्षोरुह** - पु० [स] कुच, स्तन ।

**वक्षोमणि** - पु० [सं] स्तन पर पहनने का रत्न ।

**वक्ष्यमाण** - वि० [सं] वक्तव्य ; कथन का विषय ।

**वग़ैरह** - अव्य० [अ] इत्यादि ।

**वच** - पु० [सं] आदेश ; परामर्श ; पक्षियों का गाना ।

**वचन** - पु० [सं] बात ; बोलने की क्रिया ; आदेश ; उच्चारण ; घोषणा ; एक या अनेक का बोध करानेवाला व्याकरण का विशेष विधान ; राय ; शास्त्रादि का वाक्य ; शिक्षा ; सोंठ ; यौ० —कार, कारी - आज्ञापालक ; —गुप्ति - अशुभ वृत्तियों से बचने के लिए वाणी का संयम ; —गौरव - आज्ञा का आदर ; —पटु - बोलने में कुशल ; —बद्ध - जिसने कोई वादा किया हो ; प्रतिश्रुत ।

**वचनीय** वि० [सं] कहने योग्य ; निंदनीय ।

**वचस्वी** - वि० [सं] भाषणपटु ।

**वचोहर** - पु० [सं] संदेशवाहक ।

**वज़न** - पु० [अ] तौल ; तौलने की क्रिया ; भार ; महत्व ; प्रतिष्ठा ; यौ० —कश - तौलनेवाला ; —दार - बोझवाला ; भारी ; महत्वयुक्त ।

**वज़नी** - वि० [अ] भारी ; महत्वयुक्त ।

**वजह** - स्त्री० [अ] कारण ; चेहरा ; ज़रिया ; रीति ; यौ० वजहे-मआश - जीविका का साधन ।

**वज़अ, वज़ा** - पु० [अ] तरतीब देना ; ढंग ; बनावट ; प्रसव ; बनाना ; रखना ; रीतिनीति ; वेषभूषा का प्रचलित ढंग ; यौ० —दार - सजधज का शौक़ीन, अपनी रीति-नीति का त्याग न करनेवाला ; फैशन का ख़्याल रखनेवाला ।

**वज़ारत** - पु० [अ] वज़ीर का काम या पद ।

**वज़ाहत** - स्त्री० [अ] बड़प्पन ; भव्यता ; सुंदरता ।

**वज़ाहत** - स्त्री० [अ] विस्तार से बताना ।

**वज़ीफ़ा** - पु० [अ] छात्रवृत्ति ; दैनिक वृत्ति ; नित्यकर्म ; पेंशन ; मासिक वेतन ; यौ० —ख़्वार, दार - वज़ीफ़ा पानेवाला ।

**वज़ीर** - पु० [अ] मंत्री ; यौ०—ए-आज़म - प्रधान मंत्री ; —ए-जंग - युद्धमंत्री ; —ए-तालीम - शिक्षामंत्री ; —ए-माल - अर्थमंत्री ।

**वजीह** - वि० [अ] भव्य आकृति ; सुंदर ; सम्मानित ।

**वज़ू** - पु० [अ] नमाज़ के पूर्व मुँह-हाथ धोना ।

**वजूद** - पु० [अ] मौजूदगी, विद्यमानता ; ज़िंदगी ।

**वजूहात** - स्त्री० [अ] 'वजह' का बहु० ।

**वज्द** - पु० [अ] आनंदातिरेक ; आनंदातिरेक या रसानुभूति से होनेवाली आत्मविस्मृति ।

**वज्र** - 1. वि० [सं] काँटेदार ; बहुत कठोर ; भीषण ; 2. पु० इंद्र का अस्त्र ; बिजली ; कोई घातक अस्त्र, हीरा आदि छेदने का औज़ार ; अभ्रक ; कांजी, भाला ; एक तरह का श्वेत कुश ; इस्पात ; वज्र-जैसी कटु भाषा ; थूहर ; धात्री ; एक आसन ; एक व्रत ; यौ० —कंटक -

सेहुँड़ ; —कंद, कर्ण - जंगली सूरन ; शकरकंद ; ताल वृक्ष का फूल ; —कवच - अभेद्य कवच ; एक तरह की समाधि ; —गोप - इंद्रबहूटी ; —घात - वज्र का आघात ; —घोष - बिजली की कड़क-जैसी आवाज़ ;—तुंड - गणेश ; गरुड़ ; गीध ; मच्छर ; सेहुँड़ ; —दंत - चूहा ; सुअर ; —धर - इंद्र ; उल्लू ; बोधिसत्व ; —धार - हीरे की तरह कठिन धारवाला ; —नख - नृसिंह ; —परीक्षा - हीरे की परख ; —पात - भारी विपत्ति, वज्र या वज्र के समान गिरना ; — पुष्पा - शतपुष्पा ; —प्राय - बहुत कठोर ; —बाहु - अग्नि, इंद्र ; रुद्र ; —लेप - दीवार आदि पर लगाने का एक मसाला ; — लोहक - चुंबक ; —व्यूह - दुधारी तलवार के आकार की सैन्य-रचना ; — संघात - पत्थर जोड़ने का मसाला ; —सार - हीरा ; —सूचि, सूची - हीरेयुक्त नोकवाली सूई ; —हृदय - बहुत कड़े दिल का ।

**वज्रांग** - पु० [सं] साँप ; हनुमान ।

**वज्राघात** - पु० [सं] बिजली का आघात ।

**वज्रायुध** - पु० [स] इंद्र ।

**वज्राशनि** - पु० [सं] वज्र ।

**वज्री** - 1. स्त्री० [सं] तिधार ; सेंहुड़ ; 2. पु० इंद्र ; उल्लू ; बौद्ध साधु (वज्रयानी) ।

**वज्रोली** - स्त्री० [सं] उंगलियो की एक विशेष स्थिति ।

**वट** - पु० [सं] बरगद का वृक्ष ; कौड़ी ; गोली ; छोटा गेंद ; रस्सी ; एकरूपता ; एक तरह की रोटी ; वटिका ; शून्य ; **यौ०**—च्छद, पत्र - एक तरह की सफ़ेद तुलसी ; —सावित्री - स्त्रियो का वटपूजन का एक व्रत ।

**वटक** - पु० [सं] पकौड़ा ; आठ माशे का परिमाण ; गोली ; बट्टा ।

**वटिका** - स्त्री० [सं] गोली ; बरी ; शतरंज की गोटी ।

**वटी** - 1. स्त्री० [स] गोली ; रस्सी ; 2. वि० गोल ; जिसमें डोरी लगी हो ।

**वटु, वटुक** - पु० [सं] बालक ; ब्रह्मचारी ।

**वडब, वडव** - पु० [सं] घोड़ी-जैसा घोड़ा ।

**वडबा, वडवा** - स्त्री० [सं] अश्विनी नक्षत्र ; घोड़ी ; दासी ; ब्राह्मण जाति की स्त्री ; **यौ०**—मुख - वडवानल ; शिव ।

**वडवानल** - पु० [सं] समुद्र स्थित कालानल ।

**वड़ा** - स्त्री० [सं] गोली ।

**वणिक** - पु० [सं] बनिया ; व्यापार करने-वाला ; **यौ०** —क्रिया - बनिये का पेशा ; सौदागरी ; —पथ - दुकान ; व्यापार ; —सार्थ - व्यापारियो का गिरोह ।

**वणिग्वीथि** - स्त्री० [सं] हाट-बाज़ार ।

**वणिग्वृत्ति** - स्त्री० [सं] व्यापार ।

**वणिज** - पु० [सं] सौदागर ; शिव ; तुलाराशि ।

**वतन** - पु० [अ] जन्मस्थान ; स्वदेश ; **यौ०**—दोस्त - देशहितैषी ; —परस्ती - देशभक्ति ।

**वतनी** - वि० [अ] स्वदेशवासी ; स्वदेशी ।

**वतीरा** - पु० [अ] चलन, तरीक़ा ।

**वत्** - अव्य० [सं] संज्ञा या विशेषण के अंत में जोड़ा जानेवाला एक समानतासूचक शब्द ।

**वत्स** - पु० [सं] पुत्र ; संतान ; बछड़ा ; वर्ष ; छाती ।

**वत्सतर** - पु० [सं] हल में बिना जुता जवान बछड़ा ।

**वत्सतरी** - स्त्री० [स] तीन साल की बछिया ।

**वत्सर** - पु० [सं] वर्ष, साल ।

**वत्सल** - 1. वि० [सं] बच्चे के प्रेम से युक्त ; छोटों के प्रति पुत्र के समान प्रेम रखनेवाला ; 2. पु० तृण की आग ; पुत्रादि के प्रति रतिभाव, प्यार ।
**वदंती** - स्त्री० [सं] कथन ; कथा ।
**वद** - वि० [सं] बोलनेवाला (समासांत में)।
**वदतोव्याघात** - पु० [सं] कथन का दोष ।
**वदन** - पु० [सं] चेहरा ; भाषण ; मुख ; त्रिभुज का शीर्ष ; शकल ।
**वदन्य, वदान्य** - 1. वि० [सं] उदार ; अत्यंत दानशील ; मधुरभाषी ; वाग्मी ; 2. पु० उदार व्यक्ति ।
**वदर** - पु० [सं] बेर ; कपास का बीज ।
**वदाम** - पु० [सं] बादाम ।
**वदावद** - वि० [सं] बहुत बोलनेवाला ।
**वदि, वदी** - अव्य० [सं] कृष्ण पक्ष ।
**वदीअत** - स्त्री० [अ] अमानत, धरोहर ।
**वदुसाना** - स० [हिं] भला-बुरा कहना ; दोषारोप करना ।
**वध** - पु० [सं] हनन, मृत्यु का शारीरिक दंड ; आघात ; गुणनक्रिया ; मारनेवाला ; लकवा ; विलोप ; **यौ०** —कर्माधिकारी - जल्लाद ; —जीवी - वध का काम करके रोज़ी कमानेवाला (कसाई, जल्लाद, व्याध आदि) ; —दंड - फाँसी की सज़ा ; —भूमि, स्थान - प्राणदंड देने का स्थान, फाँसीघर ; कसाईखाना ।
**वधिक** - पु० [सं] हत्यारा ; कस्तूरी ।
**वधु, वधुका** - पु० [सं] पुत्रवधू ; दुलहिन ; युवती ।
**वधुटी** - स्त्री० [सं] पिता के साथ रहनेवाली नवयुवती ; पुत्रवधू ।
**वधू** - स्त्री० [सं] दुलहिन ; पत्नी ; स्त्री ; **यौ०** —गृहप्रवेश - स्त्री का पति के घर में प्रवेश करने की एक विधि ; —धन - स्त्री का निजी धन ; —पक्ष - कन्यापक्ष के लोग ; —वस्त्र - विवाह के समय कन्या को दिया जानेवाला वस्त्र ।
**वधूटी** - स्त्री० [सं] वधुटी ।
**वध्य** - 1. वि० [सं] मार डालने योग्य, दंड्य ; 2. पु० जिसका वध किया जानेवाला हो ; **यौ०** —भूमि, स्थल, स्थान - फाँसीघर ; —माला - प्राणदंड पानेवाले के सिर पर पहनाया जानेवाला हार ।
**वन** - पु० [सं] जंगल ; जल ; घर ; झरना ; बगीचा ; पुष्पों का गुच्छा ; अरण्य-निवास ; काठ का पात्र ; **यौ०** —कदली - जंगली केला ; —कुंजर, गज - जंगली हाथी ; —गमन - संन्यास-ग्रहण ; —चर - जंगली आदमी; पशु ; —छाग - जंगली बकरा ; सूअर ; —जीर - काला जीरा ; —जीवी - लकड़हारा ; बहेलिया , — दाह - वनाग्नि ; —देवता - जंगल का अधिष्ठाता देवता ; —प्रवेश - संन्यासग्रहण ; —प्रिय - कोयल ; साँभर हिरण ; बहेड़े का पेड़ ;—मक्षिका - डाँस; —मातंग - जंगली हाथी ; —मानुष, मानुस - एक तरह का बंदर ; —माला - वन के फूलों की माला ; कुसुमों की घुटनों तक लंबी माला ; —माली - कृष्ण; वनमाला पहननेवाला ; —राज - सिंह ; —राजि, राजी - वृक्षसमूह ; जंगल की पगडंडी ; —लक्ष्मी - वन की शोभा ; केला ; —लता - जंगली बेल ; —वास - वन में रहना ; —वासी - वन में रहनेवाला ; —वृत्ति - जंगल से जीविका चलानेवाला ; जंगल से जीविका चलना ; —स्थ - वनवासी व्यक्ति ; वानप्रस्थ ; मृग ; —स्थली - वन की भूमि ; —हुताशन - वनाग्नि ।
**वनर** - पु० [सं] वनमानुस ।

**वनस्पति** - स्त्री० [सं] बिना फूलों के वृक्ष; बरगद; लता, वृक्ष आदि; फाँसी की टिकठी।

**वनांतर** - पु० [सं] अन्य वन; वन का भीतरी भाग।

**वनाग्नि** - स्त्री० [सं] वन में लगनेवाली आग, दावाग्नि।

**वनाश्रय** - पु० [सं] काला कौआ; जंगल में रहनेवाला।

**वनिता** - स्त्री० [स] स्त्री; प्रेयसी, मादा।

**वनेचर** - पु० [सं] जंगल में फिरनेवाला; जंगली आदमी; पशु; संन्यासी।

**वनौषधि** - स्त्री० [सं] जंगली जड़ी-बूटी।

**वन्य** - वि० [स] जंगली; वन में पैदा होनेवाला; **यौ०**—वृत्ति - जंगली फलों पर निर्वाह करनेवाला।

**वप** - पु० [सं] मुंडन; बीज बोना; बोनेवाला।

**वपन** - पु० [सं] केशमुंडन; नाई की दूकान; तंतुशाला; करघा; बीज बोना।

**वपनी** - स्त्री० [सं] बाल बनाने या कपड़ा बुनने का स्थान।

**वपनीय** - वि० [सं] बोने योग्य; मुंडन के योग्य।

**वपा** - स्त्री० [सं] चरबी; आँतो का परदा; बाँबी।

**वपित** - वि० [सं] बोया हुआ।

**वपु** - पु० [सं] शरीर; आकृति; सुंदर रूप; सौंदर्य, **यौ०**—मान - सुंदर और पुष्ट देहवाला; साकार, मूर्त।

**वपुष** - पु० [सं] आकृति; सौन्दर्य; **यौ०** —मान - शरीरी; सुंदर।

**वपोदर** - वि० [सं] तोंदवाला।

**वप्ता** - पु० [सं] नाई; पिता; किसान; कवि।

**वप्र** - पु० [सं] मिट्टी का स्तूप; नगर की खाई से निकली मिट्टी; ऊँचा किनारा; खेत; पहाड़ी का ढाल; धूल; पहाड़ की चोटी, परिखा; मैदान; घेरा; पिता; **यौ०** —क्रिया, क्रीड़ा - साँड़ आदि का ढूह की मिट्टी कुरेदना।

**वप्री** - स्त्री० [सं] बाँबी; मिट्टी का ढूहा।

**वफ़ा** - पु० [अ] वचन का पालन; कृतज्ञता; कर्तव्य-पालन; मुरौवत; निर्वाह; **यौ०**—दार - वचन-पालक; मित्रता आदि का निर्वाह करनेवाला; स्वामिभक्त; —दारी - वफ़ादार होना; प्रीति आदि का निर्वाह; स्वामिभक्ति।

**वफ़ात** - स्त्री० [अ] मौत, मृत्यु।

**वफ़्द** - पु० [अ] प्रतिनिधिमंडल।

**वबा** - स्त्री० [अ] महामारी; **यौ०** —ई - महामारीरूप, छुतही (बीमारी)।

**वबाल** - 1. पु० [अ] कठिनाई; बला; भार; 2. वि० भाररूप।

**वमन** - पु० [सं] वमन, उलटी; वमन करानेवाली दवा; बाहर निकालना; आहुति; पीड़ा, भाँग।

**वमनीया** - स्त्री० [सं] मक्खी।

**वयःक्रम** - पु० [सं] अवस्था; उम्र।

**वयःपरिणति** - स्त्री० [सं] अवस्था की प्रौढ़ता।

**वयःप्रमाण** - पु० [सं] जीवनकाल।

**वयःसंधि** - स्त्री० [सं] बाल्य और तारुण्य के बीच का काल।

**वयःस्थ** - 1. वि० [सं] जवान; प्रौढ़; 2. पु० समसामयिक व्यक्ति।

**वयःस्था** - स्त्री० [सं] स्त्री मित्र; ब्राह्मी; छोटी इलायची।

**वयःस्थान** - पु० [सं] यौवन।

**वयःस्थापन** - पु० [सं] जवानी बनाये रखना।

**वय** - पु० [सं] अवस्था; जवानी; पक्षी; जुलाहा; स्वास्थ्य।

**वयन** - पु० [सं] बुनना, बुनने की क्रिया।
**वयस्क** - वि० [सं] उम्र; सयाना।
**वयस्या** - स्त्री० [सं] अंतरंग सखी, सहेली।
**वयोविशेष** - पु० [सं] अवस्था का अंतर।
**वयोवृद्ध** - वि० [सं] बूढ़ा।
**वयोहानि** - स्त्री० [सं] शक्ति का ह्रास; बुढ़ापा आना।
**वरंच** - अव्य० [सं] बल्कि; लेकिन।
**वर** - 1. पु० [सं] दूल्हा; जामाता; चुनाव; पसंद; इच्छा; देवता या गुरुजनो से प्रार्थना करने पर मिलनेवाला फल; भेंट; प्रेमिक; दहेज़; लंपट; केसर; चिरौंजी; अदरक; हलदी; 2. वि० श्रेष्ठ; **यौ०** —चंदन - काला चंदन; देवदारु; —दाता - वर देनेवाला; —दक्षिणा - दहेज़; —दान - देवता या गुरुजन का प्रसन्न होना; किसीकी कृपा से प्राप्त वस्तु; किसीको इष्ट वस्तु देना; —निश्चय - पति का चुनाव; —पक्ष - बराती; —प्रस्थान - वरयात्रा; —फल - नारियल; —यात्रा - ब्याह के समय वर का गाजे-बाजे के साथ कन्या के घर जाना; बरात; —वरण - वर का चुनाव; [फ़ा] 'आवर' का लघु रूप जो संज्ञापदों से मिलकर 'वाला' या 'रखनेवाला' अर्थ देता है (जैसे, 'नामवर')।
**वरक़** - पु० [अ] सोने-चाँदी आदि का बारीक पत्तर; फूल की पंखड़ी; पुस्तक का पन्ना; **यौ०** —गरदानी - पुस्तक को उलट-पुलटकर देखना; पढ़ने का ढोंग करना; —साज़ - चाँदी सोने का पत्तर बनानेवाला।
**वरक़ा** - पु० [अ] पुस्तक का पन्ना।
**वरक़ी** - वि० [अ] परतदार।
**वरगलाना** - स० [हिं] बहकाना; उकसाना।
**वरजना** - स० [हिं] मना करना।
**वरज़िश** - स्त्री० [फ़ा] कसरत; अभ्यास; शारीरिक श्रम।
**वरज़िशी** - वि० [फ़ा] कसरती।
**वरट** - पु० [सं] हंस, भिड़; कुसुम का बीज; कुंद पुष्प; शिल्पियों का एक वर्ग।
**वरटा** - स्त्री० [सं] हंसिनी; बर्रे; कुसुम का बीज।
**वरण** - पु० [सं] चुनना; वर रूप में स्वीकार करना; निवारण; पूजन; रक्षण; याचना करना; परकोटा; पुल; **यौ०** —माला, स्रक् - जयमाला।
**वरणीय** - वि० [सं] चुनने योग्य; ग्रहण करने योग्य; प्रार्थना करने योग्य।
**वरद** - वि० [सं] वरदाता।
**वरदी** - स्त्री० [अंग्रे] किसी विभाग के कर्मचारियों का विशेष प्रकार का वस्त्र।
**वरना** - 1. अव्य० [फ़ा] नहीं तो, फिर; 2. पु० [हिं] ऊँट; वरण; 3. स० वरण करना।
**वरन्** - अव्य० [हिं] बल्कि; ऐसा नही।
**वरम** - पु० [अ] सूजन; [हिं] कवच।
**वरयिता** - पु० [सं] विवाह के लिए प्रार्थना करनेवाला।
**वरांग** - 1. पु० [सं] मस्तक; मुख्य भाग; सुंदर रूप; योनि, टहनी; दारचीनी; 2. वि० सुंदर शरीरवाला।
**वरांगना** - स्त्री० [सं] सुंदर स्त्री।
**वराक** - 1. पु० [सं] पापड़; युद्ध; शिव; 2. वि० दयनीय; दीन; दुखी; भाग्यहीन; बुरा।
**वराट, वराटक** - पु० [सं] कौड़ी; रस्सी।
**वराटिका** - स्त्री० [सं] कौड़ी; तुच्छ वस्तु; नागकेसर; एक वानस्पतिक विष।
**वरानना** - स्त्री० [सं] सुंदर स्त्री।
**वरान्न** - पु० [सं] उत्तमान्न।
**वरारक** - पु० [सं] हीरा।
**वरारणि** - स्त्री० [सं] माता।

**वरार्थी** - स्त्री० [सं] पतिकामिनी।
**वराल, वरालक** - पु० [सं] लौंग।
**वरालि** - पु० [सं] चंद्रमा।
**वरालिका** - स्त्री० [सं] दुर्गा।
**वरासत** - स्त्री० [अ] उत्तराधिकार; वारिस होना; मृत पुरुष की छोड़ी हुई सपत्ति; **यौ०** —नामा - उत्तराधिकार-पत्र।
**वरासतन** - अव्य० [अ] उत्तराधिकार-रूप में।
**वरासन** - पु० [सं] उत्तमासन; दूल्हे के बैठने का पीढ़ा; सिंहासन; जार; द्वारपाल।
**वराह** - पु० [सं] सूअर; भेड़ा; साँड़; बादल; मगर; विष्णु का एक अवतार; एक द्वीप; एक पुराण; सेना का वराहाकार व्यूह; **यौ०** —यूथ - सूअरों का झुंड; —व्यूह - युद्धकाल में सेना की एक व्यवस्थित स्थिति; —शृंग - शिव।
**वराहि** - स्त्री० [सं] सूअरी; नागरमोथा; अश्वगंधा।
**वरिता** - वि० [सं] चुनने या पसंद करनेवाला।
**वरिष्ठ** - 1. वि० [सं] पूजनीय; बहुत बड़ा; सबसे अच्छा; दुष्ट; बहुत. ख़राब; 2. पु० तांबा; तीतर; नारंगी का वृक्ष; मिर्चे।
**वरीवर्द, वलीवर्द** - पु० [सं] बैल।
**वरुण** - पु० [सं] जल के एक अधिष्ठाता देवता; जल; समुद्र; आकाश; सूर्य; एक ऋषि; एक ग्रह; वरुण वृक्ष; **यौ०** —गृहीत - जलोदर रोग से ग्रस्त; —देव, दैवत - शतभिषा नक्षत्र; —पाश - वरुण का अस्त्र, पाश; फंदा; नक्र; —लोक - वरुण का क्षेत्र; जल।
**वरुणालय** - पु० [सं] समुद्र।
**वरूथ** - पु० [सं] बख्तर; बचाव; ढाल; रथ पर का घेरा; कोयल; मकान; समय; समूह; सेना।
**वरूथिनी** - स्त्री० [स] सेना।
**वरूथी** - 1. पु० [सं] हाथी की काठी; रक्षक; रक्षा के लिए बना हुआ घेरा; रथ; 2. वि० कवचधारी; रथारूढ; बचानेवाला; सेना से रक्षित।
**वरे** - अव्य० [हिं] उस ओर; दूर।
**वरेण्य** - 1. वि० [सं] पूजनीय; मुख्य; सर्वोत्कृष्ट; 2. पु० केसर; भृगु का एक पुत्र; महादेव।
**वरेन्द्र** - पु० [सं] इंद्र; राजा।
**वरोरु, वरोरू** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] उत्तम जाँघोंवाली; सुंदरी।
**वर्कर** - पु० [सं] जवान बकरा।
**वर्करा** - स्त्री० [सं] जवान बकरी।
**वर्ग** - पु० [सं] समानधर्मा प्राणियों का समूह; दल; अध्याय; क्षेत्र; त्रिवर्ग (अर्थ, धर्म, काम); एक स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्णों का समूह; **यौ०** —फल - समान राशियों का गुणन-फल;—मूल - वर्गांक बनानेवाली सख्या; —स्थ - अपने पक्ष का साथ देनेवाला।
**वर्गणा** - स्त्री० [सं] गुणन, घात।
**वर्गलाना** - स० [हि] वरगलाना।
**वर्गी** - वि० [सं] वर्ग-विशेष से संबद्ध।
**वर्च** - पु० [सं] कांति; तेज; अन्न; रूप; शक्ति; शुक्र; विष्ठा।
**वर्चस्वी** - 1. वि० [सं] उत्साही; तेजस्वी; शक्तिशाली; 2. पु० चंद्रमा; शक्तिशाली मनुष्य।
**वर्ज** - 1. वि० [सं] रहित; 2. पु० परित्याग।
**वर्जन** - पु० [सं] त्याग; निषेध; वध।
**वर्जना** - 1. स० [हिं] निषेध करना; रोकना; 2. पु० [सं] वर्जन।

**वर्जनीय** - वि० [सं] अग्राह्य; छोड़ने योग्य; निंद्य; निषिद्ध; निषेध योग्य।

**वर्जित** - वि० [सं] छोड़ा हुआ; अग्राह्य; निषिद्ध; रहित।

**वर्ज़िश** - स्त्री० [फ़ा] वरज़िश।

**वर्ज्य** - वि० [सं] वर्जनीय।

**वर्ण** - पु० [सं] रंग; रंगने या लिखने के काम आनेवाला रंग; अक्षर; ख्याति; जाति; भेद; यश; शब्द; स्वर; आकृति; अच्छा गुण; प्रशंसा; बाह्य रूप; लबादा; आवरण; पदार्थ का धर्म; एक की संख्या; तसवीर; हाथी की झूल; यौ० —क्रम - रंगो का क्रम; —गत - रँगा हुआ; वर्णित; बीजगणित-संबंधी; —तूलि, तूलिका, तूली - चित्र बनाने की कूची; क़लम; —दूत - पत्र आदि; —धर्म - जातिविशेष का कर्तव्य या पेशा; —नाश, पात - किसी अक्षर का शब्द में से लुप्त हो जाना; —परिचय - अक्षरो का ज्ञान करानेवाली पुस्तिका; संगीत का ज्ञान; —माता - लेखनी; —मातृका - सरस्वती; —माला, राशि - अक्षरों की यथाक्रम सूची; —रेखा, लेखा, लेखिका - खड़िया; —वर्ति, वर्तिका - चित्र बनाने की तूली; —वादी - चारण; —विकार - किसी वर्ण का दूसरे वर्ण का रूप ग्रहण करना; —विक्रिया - जाति के प्रति शत्रुता; —विचार - वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि के नियमो से युक्त व्याकरण का एक भाग; — विपर्यय - वर्णों का उलट-फेर होना; — विलासिनी - हलदी; —वृत्त - एक छंद जिसके चरणों में लघु-गुरु यथाक्रम रहते हैं व वर्ण-संख्या समान होती है; —व्यवस्था - वर्णविभाग; —संकर - दो भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष के सहवास से उत्पन्न संतति; —संसर्ग - अंतर्जातीय विवाह; —समाम्नाय - वर्णमाला; —स्थान - गला; —हीन - जातिच्युत; रंगहीन।

**वर्णन** - पु० [सं] चित्रण; किसी बात को ब्यौरेवार कहना; प्रशंसा; रंगना; लिखना।

**वर्णनातीत** - वि० [सं] जिसका वर्णन न किया जा सके।

**वर्णनीय** - वि० [सं] चित्रण या वर्णन के योग्य।

**वर्णागम** - पु० [सं] शब्द में किसी अक्षर का आ मिलना।

**वर्णात्मक** - वि० [सं] वह शब्द जो वर्णों में लिखा जा सके।

**वर्णात्मा** - पु० [सं] शब्द।

**वर्णान्तर** - पु० [सं] दूसरी जाति।

**वर्णाश्रम** - पु० [सं] जाति और आश्रम; यौ० —धर्म - वर्ण और आश्रम-संबंधी कर्तव्य।

**वर्णिक** - 1. पु० [सं] लेखक; 2. वि० वर्ण-संबंधी।

**वर्णित** - वि० [सं] कथित; चित्रित; प्रशंसित; वर्णन किया हुआ।

**वर्णिनी** - स्त्री० [सं] स्त्री; हलदी; किसी एक वर्ण की स्त्री।

**वर्णी** - पु० [सं] चित्रकार; ब्रह्मचारी; लेखक; चारों वर्णों में से किसी एक वर्ण का व्यक्ति।

**वर्ण्य** - 1. पु० [सं] प्रस्तुत विषय; उपमेय; 2. वि० वर्णन या चित्रण के योग्य।

**वर्तन** - 1. वि० [सं] गतिमान करनेवाला; जीवित रखनेवाला; रहने या ठहरने-वाला; 2. पु० व्यवहार या आचरण; ठहरना; जीविका; व्यापार; वेतन;

चक्कर खाना ; प्रयोग ; बार-बार कहा हुआ शब्द ; यौ० —दान - जीविका देना ।
**वर्तनी** - स्त्री० [सं] हिज्जे ; तकला ; पिसाई ; मार्ग ; रहना ।
**वर्तमान** - 1. वि० [सं] आधुनिक ; उपस्थित ; घूमता हुआ, चालू ; 2. पु० व्याकरण का एक काल ; चलता व्यवहार ; वृत्तान्त ।
**वर्ति** - स्त्री० [सं] बत्ती ; अंजन ; घाव पर बाँधने की एक तरह की पट्टी , उबटन ; घाव में भरने की बत्ती ; गोली ; गले की सूजन ; जादू का चिराग़ ।
**वर्तिका** - स्त्री० [स] तूलिका ; बत्ती ; रंग ; शलाका ; सलाई ; बटेर; यौ० —बिन्दु - हीरे का एक दोष ।
**वर्तित** - वि० [सं] चलाया हुआ ; बिताया हुआ ; संपादित ।
**वर्ती** - वि० [सं] स्थित रहनेवाला ; बरतनेवाला ।
**वर्तुल, वर्तुलाकार, वतुलाकृति** - वि० [सं] गोल ; वृत्ताकार ।
**वर्त्म** - पु० [स] मार्ग ; औंठ, किनारी ; पलक ; प्रथा ; लीक ; अवकाश ; आधार ।
**वर्द्ध, वर्ध** - पु० [सं] बढ़ती ; पूर्ति ; काटना ; नारंगी ; विभाजन ; सीसा ।
**वर्द्धक, वर्धक** - वि० [सं] बढ़ानेवाले; काटने या छीलनेवाला ; पूर्तिकारक ।
**वर्द्धन, वर्धन** - पु० [सं] काटना या छीलना ; बढ़ाना ; अभ्युदय करनेवाला ; दूसरे दाँत पर जमनेवाला दाँत ; शिक्षण ।
**वर्द्धमान, वर्धमान** - 1. वि० [स] बढ़ता हुआ ; वृद्धिशील ; 2. पु० एरंड का वृक्ष ; विष्णु ; जैनों के चौबीसवें तीर्थकर ; कसोरा ; मीठा नींबू ; संतरा ; उत्तराभिमुख मकान ; नृत्य की एक मुद्रा ।
**वर्द्धित, वर्धित** - वि० [सं] बढ़ा हुआ ; कटा हुआ ; भरा हुआ ।
**वर्म** - पु० [सं] कवच ; आश्रमस्थान ; छाल ; बचाव ।
**वर्मिक** - वि० [स] कवचयुक्त ।
**वर्य** - वि० [सं] श्रेष्ठ ; चुनने योग्य ; प्रधान ।
**वर्या** - स्त्री० [सं] पति का वरण करनेवाली कन्या ; कन्या ।
**वर्ष** - पु० [स] काल का एक परिमाण, साल ; वृष्टि ; शुक्र-स्राव ; वर्षा के रूप में गिरना ; भारत ; पृथ्वी का एक खंड ; बादल ; यौ० —कर - बादल ; —काम - वृष्टि - चाहनेवाला ; —कामेष्टि - वर्षा के लिए किया जानेवाला यज्ञ ; —त्राण - छाता ; —धर - पहाड़ ; बादल ; अंतःपुर का रक्षक ; —फल - वर्ष-भर का शुभाशुभ सूचित करनेवाली कुंडली ; —वसन - साधुओ, संन्यासियो और भिक्खुओं का वर्षा ऋतु में मठ, उपाश्रय या सघागार में रहना ।
**वर्षक** - वि० [सं] बरसनेवाला ।
**वर्षण** - पु० [स] वृष्टि ।
**वर्षा** - स्त्री० [स] बरसा ; बरसात ; यौ० —काल - बरसात का मौसम ; —घोष - बड़ा मेंढ़क ; —प्रभंजन - आँधी ; —प्रिय - चातक ; —बीज - ओला ; —भू - मेंढ़क ; केंचुवा ; इद्रगोप ; —मद - मोर ।
**वर्षागम** - पु० [सं] वर्षा का आरंभ ।
**वर्षाशन** - पु० [सं] वर्ष भर के भोजन के रूप में दिया जानेवाला अन्नदान ।
**वर्षित** - 1. वि० [स] बरसा हुआ ; 2. पु० वर्षा ।
**वर्षोपल** - पु० [सं] ओला ।
**वर्ह** - पु० [स] मोर का पंख ; पत्ता ।

**वलंब** - पु० [सं] अवलंब ; लंब ।
**वल** - पु० [सं] मेघ ; शहतीर ।
**वलय** - पु० [सं] कंकण ; अंगूठी ; घेरा ; कटिबंध ; परिधि ; शाखा ; दो-दो पंक्तियों की सैनिक स्थिति ।
**वलयित** - वि० [स] घिरा हुआ ; चक्कर खाता हुआ ; गोल मुड़ा हुआ ।
**वलाक** - पु० [सं] बगला ।
**वलाका** - स्त्री० [सं] बगला ; बकपंक्ति ; प्रियतमा ।
**वलि** - स्त्री० [स] सिकुड़न ; चंदनादि से शरीर पर बनी हुई रेखा ; पेट में पड़नेवाला बल ; यौ० —मुख, वदन - वानर ।
**वलित** - 1. वि० [स] मोड़ा या झुकाया हुआ ; बल खाया हुआ ; युक्त ; लिपटा हुआ ; ढका हुआ , घेरा हुआ ; सहित ; 2. पु० काली मिर्च ; नृत्य में हाथ मोड़ने की एक मुद्रा ।
**वली** - 1. स्त्री० [स] तरंग ; लहर ; यौ०—मुख - बंदर ; गरम दूध में मट्ठा मिलने से होनेवाला विकार ; 2. पु० [अ] अल्लाह का प्यारा ; नाबालिग़ की ज़ायदाद की रक्षा के लिए ज़िम्मेदार आदमी ; संरक्षक ; स्वामी ; सिद्धपुरुष ; यौ०—अल्लाह - अल्लाह का प्यारा ; —अहद - युवराज ; —अहदी - युवराज का पद ।
**वलेकिन** - अव्य० [अ] लेकिन ।
**वल्कल** - पु० [सं] पेड़ की छाल ; पेड़ की छाल का कपड़ा ।
**वल्गा** - स्त्री० [सं] लगाम, बाग़ ।
**वल्द** - पु० [अ] पुत्र, बेटा ।
**वल्दीयत** - स्त्री० [अ] वंशपरिचय ।
**वल्मी** - स्त्री० [सं] चींटी, दीमक ।
**वल्मीक** - पु० [सं] दीमक आदि की चाली हुई मिट्टी का ढेर, बिमौट ; श्लीपद नामक रोग ; वाल्मीकि ।
**वल्लभ** - 1. पु० [सं] प्रियजन ; अध्यक्ष ; नायक ; पति ; स्वामी ; सुलक्षण घोड़ा ; 2. वि० प्यारा ; प्रधान ।
**वल्लभा** - 1. स्त्री०, 2. वि० [सं] प्रियतमा ।
**वल्लरि, वल्लरी** - स्त्री० [सं] लता ; मंजरी ; मेथी ।
**वल्लाह** - अव्य० [अ] सचमुच ।
**वल्लि** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ; लता ।
**वल्लिका** - स्त्री० [सं] लता ; बेला ; एक साग ।
**वल्ली** - स्त्री० [सं] लता ।
**वल्लूर** - पु० [स] धूप में सुखाया हुआ मांस ; जंगली सूअर का मांस ; खारी ज़मीन , ऊसर ; जंगल ; उजाड़ ।
**वशंकर** - वि० [सं] वश में करनेवाला ।
**वशंवद** - वि० [स] आज्ञाकारी ; वशवर्ती ।
**वश** - 1. पु० [सं] क़ाबू ; इच्छा ; अधिकार में करना ; किसी बात को अपने अनुकूल कराने की शक्ति, जन्म; चकला, वेश्याओं का निवास-स्थान ; 2. वि० अधीन ; आज्ञाकारी ; मुग्ध ; यौ०—कर - वश में करनेवाला ; —वर्ती - जो किसीके वश में हो ; मु०—का - जिस पर ज़ोर या अधिकार हो ; —में होना - अधिकार या आज्ञा में होना ।
**वशी** - 1. वि० [स] शक्तिशाली ; संयमी ; वश में किया हुआ ; 2. पु० शासक ; ऋषि ।
**वशीकरण** - पु० [सं] मंत्र आदि के प्रयोग से किसीको वशीभूत करना ।
**वश्य** - 1. वि० [सं] वश में किया हुआ ; वश में किये जाने योग्य ; 2. पु० आश्रित ; दास ; लौंग ।
**वश्यता** - स्त्री० [सं] अधीनता ।
**वश्या** - स्त्री० [सं] वशीभूता स्त्री ; लगाम ; गोरोचन ।

**वषट्** - अव्य० [सं] यज्ञाहुति के समय उच्चार्यमाण शब्द ।

**वसंत** - पु० [सं] चैत्र वैशाख का मौसिम जिसमें वृक्षों में नयी कोपलें तथा फूल लगते हैं, अतिसार; पुष्पगुच्छ; यौ० —काल - वसत ऋतु; —घोष, घोषी - कोकिल; —दूत - आम्रवृक्ष; कोयल; चैत्रमास; —दूती - कोयल; पाटली वृक्ष; माधवी लता; —द्रुम - आम्रवृक्ष; —पंचमी - माघशुक्ला पंचमी और उस दिन होनेवाला त्योहार; —बंधु - कामदेव; —महोत्सव - होलिकोत्सव ।

**वसंती** - पु० [हिं] सरसो के फूल-जैसा हलका पीला रंग; 2. वि० वसती रंग का; 3. स्त्री० वासंती लता ।

**वसंतोत्सव** - पु० [स] होलिकोत्सव ।

**वसअत** - स्त्री० [अ] आराम; गुंजाइश; फैलाव; बहुतायत; मौक़ा ।

**वसति, वसती** - स्त्री० [सं] घर, आबादी; आधार; वास; रात; रहना; विश्राम-काल; साधुओ का रहने का स्थान ।

**वसथ** - पु० [सं] नीड़; रहने का स्थान ।

**वसन** - पु० [सं] वस्त्र; आवरण; निवास; तेजपात; (स्त्रियो का) कमर का एक गहना; मकान; यौ० —पर्याय - वस्त्रपरिवर्तन ।

**वसवास** - पु० [अ] भुलावा; भ्रम; संदेह ।

**वसवासी** - वि० [अ] भुलावे में डालनेवाला; शक करनेवाला ।

**वसा** - स्त्री० [सं] मेद; मेद या चरबीवाला पदार्थ; भेजा; अदरक-जैसा एक मूल ।

**वसातत** - स्त्री० [अ] मध्यस्थता ।

**वसिष्ठ** - पु० [सं] ऋग्वेद के सातवें मंडल के रचयिता एक ऋषि; सप्तर्षिमंडल का एक तारा; एक स्मृतिकार ।

**वसी** - पु० [अ] वह व्यक्ति जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो; [सं] उदबिलाव ।

**वसीअ** - वि० [अ] चौड़ा; फैला हुआ; विस्तृत ।

**वसीक़** - वि० [अ] दृढ़, टिकाऊ; मज़बूत ।

**वसीक़ा** - पु० [अ] वह धन जो सूद की गरज़ से सरकारी ख़ज़ाने में जमा किया जाय; ऐसे धन का सूद; क़ौल-करार; इक़रारनामा; दस्तावेज़, ऋण-पत्र; यौ० —दार - जिसके हक़ में वसीका लिखा गया हो; महाजन; —सरकारी - सरकारी ऋणपत्र ।

**वसीयत** - स्त्री० [अ] मरने या यात्रा के समय अपनी संपत्ति के संबंध में लिखी गयी व्यवस्था; यौ० —नाम - वह काग़ज़ जिसपर वसीयत की व्यवस्था लिखी गयी हो ।

**वसीला** - पु० [अ] ज़रिया; सहारा; सहायता ।

**वसुंधरा** - स्त्री० [सं] पृथ्वी; देश; राज्य; एक देवी; यौ० —धर - पहाड़ ।

**वसु** - 1. वि० [स] सबमें रहनेवाला; मधुर; शुष्क; 2. पु० धन; रत्न; सोना; जल; आठ की संख्या; कुबेर; अग्नि; वृक्ष; सरोवर; लगाम; जुआ बाँधने की रस्सी; चन्द्रमा; सूर्य; 3. स्त्री० प्रकाश; प्रकाश-रश्मि; वृद्धि; अमरावती, यौ० —कीट, कृमि - भिक्षुक; —चारुक - सोना; —देव - कृष्ण के पिता; —सुत - कृष्ण; —द्रुम - गूलर; —धा - पृथ्वी; राज्य; लक्ष्मी; —धार - धन या कोष रखनेवाला; —धारिणी - पृथ्वी; —प्राण - अग्नि; —श्रुत - धन के लिए विख्यात; —श्रेष्ठ - वसुओ में श्रेष्ठ (कृष्ण); चाँदी; —मती - पृथ्वी; देश; ज़मीन; राज्य ।

**वसूल** - 1. पु० [अ] प्राप्ति ; पहुँचना ; पहुँची हुई रक़म या चीज़ ; 2. वि० प्राप्त।

**वसूली** - 1. वि० [अ] वसूल होने योग्य, 2. स्त्री० वसूल होने की क्रिया या भाव ; प्राप्ति ।

**वस्त** - 1. स्त्री० [सं] वस्तु ; 2. पु० बकरा ; रहने का स्थान या मकान ; [अ] मध्य भाग ; कटि ; 3. अव्य. बीच, दरमियान ।

**वस्ता** - वि० [सं] वस्त्र-धारण करनेवाला ; चमकनेवाला ।

**वस्ति** - स्त्री० [सं] पेड़ू, नाभि के नीचे का भाग ; मूत्राशय ; कपड़े का छोर ; निवास ; पिचकारी ; यौ० —कर्म - लिंग या गुदा आदि में पिचकारी देना ; —कुंडलिका - मूत्राशय का एक रोग जिससे उसमें गाँठ पड़ जाती है ; —कोष - मूत्राशय ; —मल - पेशाब, मूत्र।

**वस्ती** - वि० [अ] बीच का ।

**वस्तु** - स्त्री० [सं] चीज़, पदार्थ ; उपकरण ; व्यावहारिक पदार्थ ; धन ; इतिवृत्त ; घटना ; धर्म ; योजना ; वह पदार्थ जिसकी स्थिति या सत्ता हो ; सत्य ; यौ० —जगत् - दृश्यमान जगत् ; —जात - वस्तुओं का योग ; —ज्ञान - वस्तु की पहचान ; तत्त्वज्ञान ; —निर्देश - सूची ; —भेद - वास्तविक अंतर ; —मात्र - किसी विषय का बाह्य रूप ; —रचना - कथावस्तु का विकास ; शैली ; —वाद - एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें दृश्य जगत् को यथारूप सत् मानते हैं, भूतवाद ; —विनिमय - वस्तुओं का अदल-बदल ; —स्थिति - परिस्थिति ।

**वस्तुतः** - अव्य० [स] असल में, यथार्थतः ।

**वस्त्र** - पु० [सं] कपड़ा ; पोशाक ; यौ० —गृह - तंबू ; —ग्रंथि - इजारबंद, नीवी ; —धारणी - अलगनी ; —पुत्रिका - गुड़िया ; —पूत - कपड़े से छाना हुआ ; —पेटा - कपड़े की टोकरी ; —बंध - नीवी ; —विलास - वेषभूषाप्रियता ; —वेष्टित - कपड़े से आवृत ।

**वस्त्रांचल, वस्त्रांत** - पु० [सं] कपड़े का छोर।

**वस्त्रांतर** - पु० [स] ऊपर का कपड़ा ; उपरना ।

**वस्त्रागार** - पु० [स] कपड़े की दूकान ।

**वस्फ़** - पु० [अ] गुण ; पहचान ; प्रशंसा ।

**वस्ल** - पु० [अ] प्रेमी-प्रेमिका का मिलन ; सहवास, संभोग ।

**वस्ला** - पु० [अ] जोड़ ; पैबंद ; मिलन।

**वह** - 1. सर्व० [हिं] कर्तृकारक का अन्य पुरुष ; बातचीत में दूरस्थित या परोक्ष व्यक्ति के संकेत का शब्द ; 2. पु० [स] घोड़ा ; बैल का कंधा ; चार द्रोण का एक मान ; नद ; धारा ; मार्ग ; वाहन ; वायु ; ले जाने या ढोने की क्रिया ; 3. वि० उत्पन्न करनेवाला ; ले जानेवाला ।

**वहदत** - स्त्री० [अ] एकत्व ; अद्वैतभाव ; यौ० —ख़ाना - एकांतवास का स्थान ।

**वहदानी** - वि० [अ] अद्वैतवादी ।

**वहदानीयत** - स्त्री० [अ] अकेला या अद्वय होना ।

**वहन** - 1. पु० [सं] बेड़ा ; यान ; खींचकर या लादकर कहीं ले जाना ; बहना ; खंभे का सबसे नीचे का हिस्सा ; 2. वि० ले जानेवाला ; यौ० —भंग - पोत आदि का भंग होना या डूब जाना ।

**वहनीय** - वि० [सं] उठा या खींचकर ले जाने योग्य ; ऊपर ले जाने योग्य।

**वहम** - पु० [अ] शंका, शक ; कल्पना ; भ्रममूलक या ग़लत ख्याल ; यौ० —का पुतला - वहमी ।

**वह्मी** - वि० [अ] वह्म करनेवाला; भ्रमजनित।

**वह्श** - पु० [अ] जंगली जानवर।

**वह्शत** - स्त्री० [अ] वह्शीपन; आदमियों से भड़कने का भाव; घबड़ाहट; चित्त की अति चंचलता; भय; यौ०—असर - घबड़ाहट पैदा करनेवाला; —नाक - डरावना।

**वह्शियाना** - अव्य० [अ] जंगली जानवर की तरह; जंगली आदमी के अनुरूप।

**वह्शी** - 1. वि० [अ] असभ्य; जंगली; आदमियों की मुहब्बत से घबड़ाने या भागनेवाला; 2. पु० असभ्य जन; जंगली आदमी; जंगली जानवर; यौ० —क़ौम - असभ्य जाति; —मिज़ाज - जंगली स्वभाववाला।

**वहाँ** - अव्य० [हिं] उस जगह।

**वहित** - वि० [सं] ज्ञात; ढोया हुआ; प्राप्त; विख्यात।

**वहित्र** - पु० [सं] पोत; एक तरह का रथ।

**वहिनी** - स्त्री० [सं] नाव।

**वहीं** - अव्य० [हिं] उसी जगह।

**वही** - 1. सर्व० [हिं] पूर्ववर्णित व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि; 2. स्त्री० [अ] इलहाम, किसी पैगंबर को ईश्वर द्वारा प्राप्त आदेश या संदेश; 3. वि० [सं] भार ढोनेवाला; 4. पु० बैल।

**वहीद** - वि० [अ] अनुपम; बेजोड़।

**वह्नि** - पु० [सं] अग्नि; क्षुधा; पाचन; तीन की संख्या; पुरोहित; जोते जानेवाले घोड़े आदि; यौ०—कर - चकमक; जठराग्नि; बिजली; —कुंड - आग रखने के लिए बना हुआ गड्ढा; —गर्भ - बाँस; —गर्भा - शमी वृक्ष; —जाया - स्वाहा; —दैवत - अग्नि-पूजक; —धौत - अग्नि-जैसा शुद्ध; —बीज - सोना; बिजौरा नींबू; —भोग्य - घी; —मारक - पानी; —मित्र - वायु; —मुख - देवता; —लोह - तांबा; —लोहक - कांसा; तांबा; —शिखा - आग की लपट; किलकारी; —शुद्ध - अग्नि-जैसा पवित्र; —स्फुलिंग - चिनगारी।

**वाँ** - अव्य० [हिं] उस जगह, वहाँ।

**वांछक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] इच्छा करनेवाला।

**वांछनीय** - वि० [सं] चाहने योग्य।

**वांछा** - स्त्री० [सं] इच्छा।

**वांछित** - 1. वि० [सं] इच्छित; 2. पु० इच्छा, चाह।

**वांत** - 1. वि० [सं] वमन किया हुआ; 2. पु० वमन; वमन किया हुआ पदार्थ।

**वांतान्न** - पु० [सं] वमन किया हुआ अन्न।

**वांति** - स्त्री० [सं] वमन करने की क्रिया।

**वा** - 1. अव्य० [सं] संशय और विकल्प आदि का व्यंजक शब्द, या, अथवा; 2. सर्व० 'वह' का बिगड़ा हुआ रूप।

**वायदा** - पु० [अ] इक़रार।

**वाइज़** - 1. वि०, 2. पु० [अ] नसीहत करनेवाला; धर्म या नीति का उपदेश करनेवाला।

**वाक़ई** - 1. अव्य० [अ] वस्तुतः, सचमुच; 2. वि० ठीक; सच्चा।

**वाक़या, वाक़िआ** - पु० [अ] घटना; दुर्घटना; वृत्त; युद्ध; यौ० —नवीस - ख़बरें लिखनेवाला।

**वाक़िआत** - पु० [अ] 'वाक़िआ' का बहु०।

**वाक़िफ़** - वि० [अ] जानकार; अभिज्ञ; समझनेवाला; यौ० —कार - परिचित; —कारी - जानकारी।

**वाक़िफ़ीयत** - स्त्री० [अ] जानकारी।

**वाक़े, वाक़ेआ** - वि० [अ] घटित होनेवाला ; होनेवाला ; असली ।

**वाक्** - स्त्री० [सं] बोलने की इंद्रिय ; शब्द , वाणी ; कथन ; वादा ; सरस्वती ; यौ० —कलह - झगड़ा ; कहासुनी ; —केलि, केली - हँसी-मज़ाक ; —चपल - बढ़-बढ़िया ; —छल - बहाना ; काकू के सहारे वितंडा खड़ा करना : —पटु - बात करने में चतुर ; —पति - बृहस्पति ; वाग्मी ; निर्दोष ; —पथ - भाषण के योग्य अवसर; भाषण का क्षेत्र; —पाटव - भाषणपटुता ; —पारुष्य - कर्कशता ; —प्रलाप - वाग्मिता ।

**वाक्य** - पु० [सं] पदों का वह समूह जिससे वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट समझ में आ जाता है ; आदेश ; कथन ; तर्क ; साक्ष्य ; यौ० —खंडन - तर्क का खंडन ; —पद्धति - वाक्य बनाने का नियम ; —भेद - परस्पर विरोधी वाक्य ; —रचना - वाक्य बनाना ; —वज्र - बहुत कड़ी भाषा ; —विन्यास - पदों का यथास्थान रखा जाना ; —विशारद - भाषणपटु ।

**वाक्याडंबर** - पु० [सं] दीर्घ शब्दयुक्त वाक्यावली ।

**वागीश** - 1. पु० [सं] कवि ; बृहस्पति ; ब्रह्मा ; वक्ता ; 2. वि० अच्छा बोलनेवाला ।

**वागीशा, वागीश्वरी** - स्त्री० [सं] सरस्वती ।

**वागुज़ार** - पु० [फ़ा] मुक्ति ।

**वागुज़ाश्त** - स्त्री० [फ़ा] छोड़ देना ; दे देना ; दान ; रिहाई ।

**वागुज़ाश्ता** - वि० [फ़ा] छोड़ा हुआ ; दिया हुआ ; लौटाया हुआ ।

**वागुरा** - स्त्री० [सं] मृगों आदि को फँसाने का जाल ।

**वागुरिक** - पु० [सं] हिरण फँसानेवाला व्याध ।

**वाग्जाल** - पु० [सं] बातों की लपेट ।

**वाग्दंड** - पु० [सं] भर्त्सना ; वाणी का नियंत्रण ।

**वाग्दत्ता** - स्त्री० [स] वह कन्या जिसके विवाह का वचन किसीको दिया जा चुका हो ।

**वाग्दान** - पु० [सं] किसीके साथ कन्या का विवाह-संबंध तय करना ।

**वाग्देवी** - स्त्री० [सं] सरस्वती ।

**वाग्दोष** - पु० [सं] बोलने की त्रुटि ; गाली ; निन्दा ।

**वग्मिता** - स्त्री० }
**वाग्मित्व** - पु० } [सं] पांडित्य ; भाषण-पटुता ।

**वाग्मी** - 1. वि० [सं] भाषणपटु ; पंडित ; बहुत बोलनेवाला ; 2. पु० तोता ; बृहस्पति ; वक्ता ; विष्णु ।

**वाग्युद्ध** - पु० [सं] शब्दों का युद्ध ; झगड़ा ।

**वाग्विदग्ध** - वि० [सं] पंडित ; वार्त्ताकुशल ।

**वाग्विभव** - पु० [सं] वर्णन-शक्ति ; भाषा का विशेष ज्ञान ।

**वाग्विरोध** - पु० [सं] कहासुनी ।

**वाग्विलास** - पु० [स] दिल-बहलाव के लिए बातचीत करना ।

**वाग्वीर** - पु० [सं] बोलने में विशेष कुशल व्यक्ति ।

**वाग्व्यापार** - पु० [स] बोलने का अभ्यास ; भाषण-शैली ; वार्त्तालाप ।

**वाङ्मय** - 1. पु० [स०] गद्य-पद्यरूप में लिखित ग्रंथ-समूह, साहित्य ; 2. वि० [स] वाक्यात्मक ; पठन-पाठनसंबंधी ; वचनसंबंधी ; वाणी से किया हुआ (जैसे, 'वाङ्मय पाप') ।

**वाङ्मयी, वाङ्मूर्ति** - स्त्री० [सं] सरस्वती ।

**वाचंयम** - वि० [सं] वाणी पर नियंत्रण करनेवाला मौनव्रतधारी मुनि ।

**वाचक** - 1. वि० [सं] सूचक ; मौखिक ; 2. पु० दूत ; महत्वपूर्ण शब्द; पाठक; संकेत; नाम ; यौ० —पद - सार्थक शब्द ।

**वाचन** - पु० [सं] उच्चारण ; कहना ; पढ़ने में प्रवृत्त करना ; प्रतिपादन ।

**वाचनालय** - पु० [सं] पढ़ने के लिए समाचारपत्र व पत्रिकाएँ आदि रखने का स्थान ।

**वाचस्पति** - पु० [सं०] बृहस्पति ; ब्रह्मा ; सुवक्ता ; एक कोषकार ; पुष्य नक्षत्र ।

**वाचा** - 1. अव्य० [सं] वचन द्वारा ; 2. स्त्री० वचन ; वाणी ; शपथ ; सरस्वती ; यौ० —पत्र - प्रतिज्ञापत्र ; —बंधन - प्रतिज्ञा में बंधना ; —बद्ध - प्रतिज्ञा से विवश ।

**वाचाट** - वि० [सं] बकवादी ; डींग मारनेवाला ।

**वाचाल** - वि० [सं] डींग मारनेवाला ; बकवादी ; बोलने में तेज़ ; शब्दमय ।

**वाचालता** - स्त्री० [सं] बातचीत की निपुणता ।

**वाचिक** - 1. वि० [सं] वाणी-संबंधी ; वाणी द्वारा व्यक्त ; 2. पु० केवल वाणी के आश्रय से किया जानेवाला एक अभिनय ; मौखिक समाचार ।

**वाची** - वि० [सं] सूचक ; वाक्ययुक्त ।

**वाच्य** - 1. वि० [सं] कहने योग्य ; जिसका अभिधा-शक्ति से बोध हो ; निंद्य ; 2. पु० निन्दा ; अभिधेयार्थ ; क्रिया का एक रूप (जैसे, कर्मवाच्य, कर्तृवाच्य) ।

**वाच्यार्थ** - पु० [सं] मूल अर्थ , अभिधेयार्थ ; शब्द का नियत अर्थ ।

**वाच्यावाच्य** - पु० [सं] कहने न कहने योग्य बात ।

**वाज** - पु० [सं] आवाज़ ; पंख ; अन्न ; घी ; श्राद्ध में दिया जानेवाला तंदुल-पिण्ड ; जल ; युद्ध ; दौड़ ; बाण के पीछे लगा हुआ पंख ; वेग ; प्रतियोगिता में मिला हुआ पुरस्कार ; यज्ञ के अंत में पढ़ा जानेवाला मंत्र ; [अ] उपदेश ; धर्मोपदेश ।

**वाजित** - वि० [सं] पंखवाला (बाणादि) ।

**वाजिन** - पु० [सं] छाछ या छेने का पानी ; शक्ति ; संघर्ष ।

**वाजिनी** - स्त्री० [सं] घोड़ी ।

**वाजिब** - 1. वि० [अ] उचित ; कर्तव्य ; 2. पु० तनख्वाह ; पावना ।

**वाजिबात** - पु० [अ] 'वाजिब' का बहु० ; ज़रूरी चीज़ें ; चढ़ी हुई तनख्वाहें ; पावने ।

**वाजिबी** - वि० [अ] उचित ; आवश्यक ।

**वाजिबुल-अदा** - वि० [अ] जिसको अदा करना आवश्यक हो, देय ।

**वाजिबुल-अर्ज** - पु० [अ] वे शर्तें जो बंदोबस्त की समाप्ति पर ज़मीन्दारों और काश्तकारों के पारस्परिक अधिकारों या कर्तव्यों के विषय में लिखी जायें ।

**वाजिबुल-क़त्ल** - वि० [अ] क़त्ल करने योग्य ।

**वाज़िह, वाज़ेह** - वि० [अ] स्पष्ट ; विशद ; स्पष्ट अक्षरों में लिखित ; मु० —रहे, हो - मालूम हो, विदित हो ।

**वाजी** - 1. पु० [सं] घोड़ा ; फटे दूध का पानी ; इंद्र ; बृहस्पति ; लगाम ; पक्षी ; बाण ; सात की संख्या ; हवि ; 2. वि० तेज़ ; सुदृढ़ ; वीर ; सशक्त ; पंखदार ।

**वाजीकर** - वि० [सं] कामोद्दीपक ; शक्ति-वर्धक ।

**वाजीकरण** - पु० [सं] औषध द्वारा शक्ति-वर्धन या कामोद्दीपन ।

**वाजीक्रिया** - स्त्री० [सं] कामोद्दीपक औषध का उपयोग।

**वाज़े, वाज़ेअ** - 1. वि०, 2. पु० [अ] आविष्कारक।

**वाट** - 1. वि० [सं] वटवृक्ष की लकड़ी का बना हुआ; 2. पु० उद्यान; चहारदीवारी; भवन; मंडप; सड़क; एक अन्न।

**वाटिका** - स्त्री० [सं] उद्यान; वह ज़मीन जिसपर इमारत बनायी जाय।

**वाटी** - स्त्री० [सं] इमारत की ज़मीन; उद्यान; उरुमूल; मकान; रास्ता।

**वाडव** - 1. वि० [सं] घोड़ी-संबंधी; 2. पु० समुद्र के अंदर की आग; घोड़ा या घोड़ियों का समूह।

**वाडवाग्नि** - स्त्री० } [सं] समुद्र के अंदर
**वाडवानल** - पु० } की आग, बड़वानल।

**वाणिज** - पु० [सं] व्यापारी; वाडवाग्नि।

**वाणिज्य** - पु० [सं] व्यापार; यौ०—दूत - किसी देश का वह प्रतिनिधि जो अन्य देश में स्वदेश के व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए नियुक्त हो।

**वाणी** - स्त्री० [सं] सरस्वती; वाक्शक्ति; जीभ; ग्रंथ-रचना; सार्थक शब्द; स्वर; प्रशंसा; बुनाई।

**वात** - पु० [सं] वायु; पवनदेव; शरीर से निकली हुई हवा; शरीर में रहनेवाली वायु के प्रकोप से होनेवाले गठिया आदि रोग; यौ०—कंटक - पाँवों के जोड़ों में होनेवाला वातरोग; —कुंडलिका, कुंडली - एक मूत्ररोग जिसमें पीड़ा देकर पेशाब बूँद-बूँद उतरता है; —केलि - प्रेमालाप; —ग्रस्त - गठिया रोग से पीड़ित; —चक्र - ज्योतिष में एक योग जिसमें वायु की दिशा से फलाफल का विचार किया जाता है; बवंडर; —ज्वर - वात के कुपित होने से उत्पन्न होनेवाला एक ज्वर; —तूल - हवा में इधर-उधर उड़नेवाला सफ़ेद और बारीक़ तागा; —ध्वज - मेघ, धूलि; —नाड़ी - वायुप्रकोप से दाँत की जड़ में होनेवाला एक तरह का नासूर; —पट - ध्वजा; नाव का पाल; —पित्त - एक तरह का गठिया रोग; —प्रकृति - वायुप्रधान प्रकृतिवाला; —प्रकोप - वायु की अधिकता; —प्रमेह - एक तरह का मूत्ररोग; —भक्ष - हवा खाकर रहनेवाला; —मृग - हवा के रुख की ओर दौड़नेवाला मृग; —रूप - तूफ़ान; इंद्रधनुष; रिश्वत; —रोग, विकार - वातव्याधि; —व्याधि - गठिया; —हत - उन्माद-ग्रस्त।

**वातायन** - पु० [सं] खिड़की; घोड़ा; छज्जा; एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

**वातावरण** - पु० [सं] पृथ्वी के चारों ओर स्थित वायु; जीवन को प्रभावित करनेवाली परिस्थिति।

**वातावर्त** - पु० [सं] बवंडर।

**वातुल** - 1. वि० [सं] गठिया रोग से पीड़ित; पागल; वायुप्रकोप से जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो; 2. पु० तूफ़ान।

**वात्या** - स्त्री० [सं] बवंडर; तूफ़ान; यौ० —चक्र - बवंडर।

**वात्सल्य** - पु० [सं] संतान के प्रति माता-पिता का स्नेह; स्नेह; यौ० —रस - एक भाव; दसवाँ रस।

**वाद** - पु० [सं] किसी तत्व या सिद्धांत आदि पर विचार-विमर्श के लिए होनेवाली बातचीत; बातचीत; शास्त्रार्थ; बहस; तर्क; व्याख्या; विवरण; ध्वनि; सिद्धान्त; अफ़वाह; दावा; उत्तर;

यौ० —ग्रस्त - विवादास्पद, अनिश्चित; —चंचु - मज़ाक करने में कुशल; शास्त्रार्थ में कुशल; —प्रतिवाद - उत्तर-प्रत्युत्तर; शास्त्रीय तत्वविचार में होनेवाला कथोपकथन; —युद्ध - बहस; झगड़ा; —रत - अपने पक्ष के समर्थन में लगा हुआ; —विवाद - बहस; झगड़ा।

**वादन** - पु० [सं] बाजा बजानेवाला; बाजा बजाना।

**वादा** - पु० [अ] वचन, इक़रार; क़र्ज़ अदा करने का वक़्त; यौ० —ख़िलाफ़ - वचन-भंग करनेवाला; —ख़िलाफ़ी - वचन-भंग; —फ़रामोश - अपने वादे या वचन को भूल जानेवाला; —शिकन - वादों को तोड़नेवाला; —शिकनी - वचन-भंग।

**वादानुवाद** - पु० [सं] तर्क-वितर्क; शास्त्रार्थ।

**वादि** - वि [सं] चतुर; बोलनेवाला; विद्वान।

**वादित्र** - पु० [स] बाजा; संगीत।

**वादी** - 1. पु० [सं] वक्ता; पूर्ववक्ता; मुद्दई; गायक; कीमियागर; बाजा बजानेवाला; 2. स्त्री० [फ़ा] घाटी; जंगल; नदी के किनारे का मैदान।

**वाद्य** - 1. पु० [सं] बाजा; भाषण; 2. वि० जो कहा या बजाया जानेवाला हो; यौ० —निर्घोष - बाजे का स्वर।

**वानप्रस्थ** - 1. पु० [सं] आर्यों के चार जीवन-विभागों या आश्रमों में से तीसरी अवस्था; उदासी; संन्यासी; 2. वि० वानप्रस्थ-संबंधी।

**वानर** - 1. पु० [सं] बंदर; दोहे का एक भेद; 2. वि० बंदर-जैसा; बंदर-संबंधी।

**वानरी** - स्त्री० [सं] बंदरी।

**वानस्पत्य** - 1. वि० [सं] वृक्ष-संबंधी; वृक्ष से प्राप्त या प्रस्तुत होनेवाला; वृक्ष के के नीचे रहनेवाला; 2. पु० फूल-फल देनेवाले वृक्ष (आम, जामुन आदि); पौधा, वृक्षों का समूह।

**वाप** - पु० [स] बुनना, बोना; मुंडन; खेत; बीज; बोनेवाला।

**वापन** - पु० [स] बीज बोना; मुंडन।

**वापस** - वि० [फ़ा] लौटा हुआ; लौटाया या फेरा हुआ।

**वापसीं** - वि० [फ़ा] आख़िरी; अंतिम (साँस)।

**वापसी** - 1. वि० [फ़ा] लौटाया हुआ; 2. स्त्री० वापस होने या करने का भाव; यौ० —किराया - वापसी यात्रा का किराया; —टिकट - वापसी यात्रा के लिए मिलनेवाला टिकट; —मुलाक़ात - मुलाक़ात के बदले में की जानेवाली मुलाक़ात; —यात्रा, सफ़र - प्रस्थान के स्थान को लौटने की यात्रा।

**वापि** - स्त्री० [सं] तालाब।

**वापिका** - स्त्री० [सं] चौड़ा कुआँ, बावली।

**वापित** - वि० [सं] बोया हुआ; मूँड़ा हुआ।

**वापी** - स्त्री० [सं] वापि।

**वाफ़ी** - वि० [सं] पूरा; प्रचुर; वचन-पालक; यथेष्ट; संपूर्ण।

**वाबस्तगी** - स्त्री० [फ़ा] लगाव, संबंध।

**वाबस्ता** - वि० [फ़ा] बँधा हुआ; लगा या जुड़ा हुआ; संबद्ध।

**वाम** - 1. स्त्री० [हिं] स्त्री, वामा; 2. वि० [सं] बायाँ; इच्छुक; कठोर; टेढ़ा; नीच; प्रिय; बुरा; विरुद्ध; सुंदर; 3. पु० कामदेव; बथुआ; बायाँ हाथ; बायाँ पार्श्व; धन; वमन; प्राणी; निषिद्ध कर्म; दुर्भाग्य; स्तन;

वामाचार; **यौ०** —देव - शिव; गौतम गोत्रोत्पन्न एक वैदिक ऋषि; —देवी - दुर्गा; सावित्री; —नयना, लोचना - सुंदर नेत्रोवाली स्त्री; —मार्ग - वेद-विरुद्ध तंत्रमत; —शील - बुरे स्वभाव का; [फ़ा] कर्ज़, उधार।

**वामन** - 1. वि० [सं] बौना, नीच; झुका हुआ; 2. पु० बौना आदमी; विष्णु का एक अवतार; अठारह पुराणो में से एक; छोटे डील-डौल का एक घोड़ा; शिव; नाटा बैल।

**वामनी** - स्त्री० [सं] बौनी स्त्री; घोड़ी; एक योनि-रोग; एक तरह की स्त्री।

**वामलूर** - पु० [सं] वल्मीक।

**वामांगिनी, वामांगी** - स्त्री० [स] पत्नी।

**वामाँदगी** - स्त्री० [फ़ा] वामाँदा होना।

**वामाँदा** - वि० [फ़ा] पीछे छूटा हुआ; उच्छिष्ट; लाचार।

**वामा** - स्त्री० [सं] स्त्री; गौरी; लक्ष्मी; सरस्वती; स्कंद की एक अनुचरी।

**वामाक्षि** - पु० [सं] बायीं आँख; दीर्घ ईकार।

**वामाक्षी** - स्त्री० [सं] वामनयना।

**वामागम, वामाचार** - पु० [सं] एक तान्त्रिक मत जिसमें पच मकारो के आश्रय से उपास्य की पूजा की जाती है।

**वामाचारी** - पु० [सं] वाममार्गी, तान्त्रिक मत का अनुयायी।

**वामावर्त** - 1. वि० [सं] बाईं ओर को घूमा हुआ; बाईं ओर से घूमकर की जानेवाली (परिक्रमा); 2. पु० बाईं ओर को घुमाववाला शंख।

**वाय** - 1. पु० [सं] बुनना; तागा; सीना; पक्षी; 2. अव्य० [अ] हा, हाय; **यौ०** —क़िस्मत, तक़दीर - हाय क़िस्मत।

**वायक** - पु० [सं] जुलाहा; राशि।

**वायव, वायवीय** - वि० [सं] वायु-संबंधी।

**वायव्य** - 1. वि० [सं] वायु-संबंधी; 2. पु० पश्चिमोत्तर कोण; वायुपुराण; स्वाति नक्षत्र।

**वायस** - 1. पु० [सं] काक, कौआ, अगर; उत्तरपूर्व की तरफ़ रुखवाला मकान; 2. वि० काक-संबंधी।

**वायसांतक, वायसारि** - पु० [सं] उल्लू।

**वायसी** - स्त्री० [सं] कौए की मादा; छोटी मकोय।

**वायु** - स्त्री० [सं] हवा; साँस; प्राणवायु; वातप्रकोप; **यौ०** —केतु - धूल; —कोण - पश्चित-उत्तर का कोना, —गति - वायु की तरह तेज़ चालवाला; —गीत - वायु द्वारा गाया हुआ; —गुल्म - बवंडर; पेट का एक रोग; भँवर; —ग्रस्त - गठिया या उन्माद रोग से आक्रान्त; —पंचक - शरीरवर्ती पाँच वायुओं का समाहार; —भक्ष, भोजन - हवा खाकर रहनेवाला; साँप; तपस्वी; —मंडल - आकाश; बवंडर; वातावरण; —यान - हवाई जहाज़; —वाह - धुआँ; बाष्प; —वाहन - धुआँ; विष्णु; शिव; —वाहिनी - शिरा; —वेगक, वेगी - हवा की तरह तेज़; —सख, सखा - अग्नि।

**वारंवार** - अव्य० [हिं] बारबार।

**वार** - पु० [सं] रोक, घिरा हुआ स्थान, ढक्कन; दफ़ा; दिन; नियत समय; अवसर; जलराशि; मदिरापात्र; समूह; [हिं] आक्रमण; आघात; नदी आदि का इधर का किनारा; **यौ०** —कन्या, नारी - वेश्या; —पार - नदी आदि के दोनों किनारे; इस ओर से उस ओर तक; —बाण - कवच; —मुखी - वेश्या;

—मुख्य - गवैया या नर्तक ; —मुख्या - प्रधान वेश्या ; —युवती, वधू , वनिता, विलासिनी, सुंदरी - वेश्या ; **मु०** —ख़ाली जाना - आघात का निशाने पर न लगना ; प्रयत्न सफल न होना ।

**वारक** - पु० [सं] बाधा ; रोकनेवाला ; बारी ; एक तरह का घोड़ा ; कष्ट का स्थान ; निवारण करनेवाला ; एक गंधतृण ।

**वारण** - पु० [सं] निवारण ; निषेध ; अंकुश ; कवच ; काला शीशम ; प्रतिरोध ; हाथी ; हरताल ; **यौ०** —शाला - हस्तिशाला ।

**वारणीय** - वि० [स] निषेध करने योग्य ; हाथी-संबंधी ।

**वारन** - 1. स्त्री० [हिं] निछावर ; 2. पु० बंदनवार ; हाथी ।

**वारना** - स० [हिं] उत्सर्ग करना ; बलि जाना ; राई-नोन आदि उतारना ।

**वार-फेर** - स्त्री० [हि] निछावर ; दूल्हा-दुलहिन के सिर के चारो ओर घुमाकर लुटाया जानेवाला रुपया-पैसा ।

**वारफ़्तगी** - स्त्री० [फ़ा] आत्मविस्मृति ।

**वारफ़्ता** - वि० [फ़ा] आत्मविस्मृत ।

**वारयिता** - पु० [सं] रक्षक ; चुननेवाला ; पति ।

**वारांगना** - स्त्री० [स] वेश्या ।

**वारा** - 1. पु० [हि] वज़न ; लाभ ; नदी आदि का इधर का किनारा ; 2. वि० सस्ता ; जो निछावर हुआ हो ; **यौ०**—न्यारा - निबटारा ; फ़ैसला ।

**वाराणसी** - स्त्री० [सं] काशी, बनारस ।

**वाराह** - 1. वि० [सं] शूकर या वराह अवतार-संबंधी ; 2. पु० विष्णु का एक अवतार ; जल के पास होनेवाला बेंत ।

**वाराही** - स्त्री० [सं] वराह रूपधारी विष्णु की शक्ति ; शूकरी ; पृथ्वी ।

**वारि** - 1. पु० [सं] जल ; वर्षा ; सुगंधवाला ; एक वृत्त ; 2. स्त्री० सरस्वती ; हाथी फँसाने का एक गड्ढा या फंदा ; हाथी बाँधने का स्थान ; हाथी बाँधने की ज़ंजीर , वाणी ; गगरा ; [हिं] निछावर ; **यौ०** —कंटक - सिंघाड़ा ; —कफ़ - समुद्र ; —कूट - नगर की रक्षा के लिए बना हुआ दूहा ; —कृमि - जोंक ; —कोल - कछुआ ; —गर्भ - बादल ; —चर - पानी के जीवजंतु (मछली, शंख आदि) ; —चामर - सेवार ; —चारी - जल में रहनेवाला ; —ज - कमल ; मछली ; कौड़ी ; उत्तम सोना ; द्रोणी लवण ; घोंघा; लौंग , जल में उत्पन्न ; —जीवक - जल से जीविका चलानेवाला ; —तस्कर - बादल ; सूर्य ; —द - मेघ ; जल देनेवाला ; —दुर्ग - जल के कारण दुर्गम ; —धर - बादल ; —धारा - जल की धारा ; वर्षा ; —नाथ - बादल ; नागलोक ; वरुण ; समुद्र ; —पथिक - जल के मार्ग से गमन करनेवाला ; —पर्णी, पृश्णी - पानी की काई ; —प्रवाह - जलधारा ; जलप्रपात ; —धि, निधि - समुद्र ; —बंधन - बांध द्वारा जल को रोकना ; —मुख - बादल ; —यंत्र - पानी खींचने का यंत्र ; फौव्वारा ; —रथ - नाव ;—राशि - समुद्र ; —रूह - कमल ; —वाह - पानी ले जानेवाला ; —वास - कलाल ; —वाह - जल ले जानेवाला ; मेघ ; —विहार - जलक्रीड़ा ; —संभव - लौंग ; उशीर ; —साम्य - दूध ।

**वारित** - वि० [सं] रोका हुआ ; मना किया हुआ ; छिपाया हुआ ।

**वारिद** - वि० [अ] आनेवाला; पहुँचनेवाला।
**वारिदाद** - स्त्री० [अ] घटना; दुर्घटना; जुर्म; हाल।
**वारियाँ** - स्त्री० [हिं] निछावर, बलि।
**वारी-फेरी** - स्त्री० [हिं] किसी प्रिय जन की बाधा दूर करने के लिए उसके सिर के चारों ओर घुमाकर कोई वस्तु उत्सर्ग करना।
**वारुणि** - 1. स्त्री० [सं] शराब; 2. पु० सत्यधृति; अगस्त्य; दंतैल हाथी; वसिष्ठ; भृगु।
**वारुणी** - स्त्री० [सं] पश्चिम दिशा; मदिरा; उपनिषद् विद्या; हथिनी; घोड़े की एक चाल; शतभिषा नक्षत्र; इंद्रवारुणी; कदंब के फूल का मद्य।
**वार्** - पु० [सं] जल; रक्षक; **यौ०** —गर - साला।
**वार्णिक** - पु० [सं] लेखक।
**वार्तमानिक** - वि० [सं] वर्तमानकाल-संबंधी
**वार्त्त** - 1. पु० [सं] कल्याण; स्वास्थ्य; असार; निर्बल; किसी रोज़गार में लगा हुआ; साधारण; हलका।
**वार्ता, वार्त्ता** - स्त्री० [सं] जनश्रुति; घटना-वृत्तान्त; विषय; ठहरना; जीविका; बातचीत; **यौ०** —पति - जीविका का प्रबंध करनेवाला; —वह - दूत; नीतिशास्त्र का आय-व्यय से संबद्ध भाग; —वृत्ति - गृहस्थ।
**वार्ताकी, वार्त्ताक, वार्ताक, वार्त्ताकी** - स्त्री० [सं] बैंगन।
**वार्त्तानुजीवी** - वि० [सं] कृषि या व्यापार से जीविका चलानेवाला।
**वार्तारंभ, वार्त्तारंभ** - पु० [सं] व्यापार; कारबार।
**वार्तालाप, वार्त्तालाप** - पु० [सं] बातचीत।
**वार्त्तविशेष** - वि० [सं] मृत।
**वार्त्तिक** - 1. पु० [सं] व्याख्याग्रंथ; व्याख्या; किसान; वैद्य; विवाह का भोजन; व्यवसायी; दूत; आचारशास्त्र का अध्ययन करनेवाला; भंटा; 2. वि० व्यवहारकुशल; व्याख्यात्मक, समाचार-संबंधी।
**वार्दल** - पु० [सं] वर्षावाला दिन; मसिपात्र; स्याही।
**वार्धक** - पु० [सं] बुढ़ापा; बूढ़ा आदमी; बुढ़ापे की कमज़ोरी; बूढ़ों की मंडली।
**वार्धक्य** - पु० [सं] बुढ़ापा।
**वार्षभ** - वि० [सं] बैल-संबंधी।
**वार्षल** - 1. पु० [सं] शूद्र का पेशा; 2. वि० शूद्र-संबंधी।
**वार्षलि** - पु० [सं] शूद्रापुत्र।
**वार्षिक** - वि [सं] प्रतिवर्ष होनेवाला; वर्ष-संबंधी; एक वर्ष टिकनेवाला; वर्षाकाल में होनेवाला।
**वार्षिकी** - स्त्री० [सं] वर्ष में नियमित रूप से होनेवाली पूजा आदि; बेले का फूल; वार्षिक श्राद्ध।
**वार्ष्णि** - पु० [सं] कृष्ण।
**वार्ष्णेय** - पु० [सं] वृष्णि का वंशज, कृष्ण; नल का सारथी।
**वार्ह** - वि० [सं] मोर के पंख से बना हुआ।
**वार्हिण** - वि० [सं] मयूर-संबंधी।
**वाल** - पु० [सं] पूँछ के बाल (घोड़े आदि के); **यौ०** —कूर्चाल - नये उगते हुए बाल; —धि - पूँछ; भैंसा; —पुत्र - मूँछ; —बंध, बंधन - घोड़े की पूँछ बाँधने की डोरी; —व्यजन - चामर; —हस्त - पूँछ; [त] पूँछ; पवित्रता; सफ़ेदी; प्रचुरता; [क] पूँछ; [ते] (वालमु) पूँछ; सिर के बाल कटार; [मल] (वाॅलु) पूँछ।

**वाला** - स्त्री० [सं] नारियल ; वृक्ष-विशेष ; एक प्रकार की चमेली ; ऊँचा ; बुज़ुर्ग ; बड़ा ; **यौ०** —गुहर, गौहर - कुलीन ; —जाह - ऊँचे मरतबेवाला ; —शान - ऊँची शानवाला ।

**वालाग्र** - 1. पु० [सं] बाल की नोक ; एक परिमाण ; 2. वि० बाल की नोक-जैसा ।

**वालिद** - पु० [अ] पिता, **यौ०** —बुज़ुर्गवार - पूज्य पिता ।

**वालिदा** - स्त्री० [अ] माँ ।

**वालिदैन** - पु० [अ] माँ-बाप ।

**वाली** - 1. स्त्री० [सं] स्तंभ ; गड्ढा ; एक गहना ; 2. पु० सुग्रीव का बड़ा भाई ; [अ] मालिक ; राजा , संरक्षक ; **यौ०** वालिये-मुल्क - बादशाह ।

**वालुका** - स्त्री० [सं] बालू , ककड़ी ; कपूर ; चूर्ण ; शाखा ; **यौ०** —यंत्र - औषध सिद्ध करने का यंत्र-विशेष ।

**बालुकात्मिका** - स्त्री० [सं] चीनी, शक्कर ।

**वालेय** - 1. पु० [सं] गधा ; पुत्र ; 2. वि० वलि से उत्पन्न ; कोमल ; भेंट या पूजा में देने योग्य ।

**वाल्क, वाल्कल** - 1. वि० [सं] छाल का बना हुआ ; 2. पु० छाल का बना वस्त्र ।

**वाल्कली** - स्त्री० [सं] मदिरा ।

**वावदूक** - पु० [सं] बातूनी ; कुशल वक्ता ।

**वावैला** - पु० [अ] रोना-पीटना ; ऊँची आवाज़ से रोना ।

**वाष्प** - पु० [सं] भाप ; आँसू ; लोहा ; भटकटैया ; **यौ०** —कंठ - गद्‌गद् स्वर से ; —पूर - आँसुओ की बाढ़ ;—मुख - आँसुओ से गीले मुखवाला ; —वृष्टि - आँसुओ की झड़ी ।

**वासंत** - 1. पु. [सं] कोकिल ; ऊँट ; जवान हाथी या और कोई जानवर ; मलयपवन ; मूँग ; व्यभिचारी पुरुष ; 2. वि० वसंत में उत्पन्न या उससे संबद्ध ; परिश्रमी ; युवा ।

**वासंतिक** - 1. पु० [सं] विदूषक ; अभिनेता ; नर्तक ; वसंतोत्सव ; 2. वि० वसतकालीन ; वसंत संबंधी ।

**वासंती** - स्त्री० [सं] जूही ; मदनोत्सव ; माधवी ; एक वृक्ष ; एक रागिनी ।

**वासःकुटी** - स्त्री० [सं] तंबू ।

**वासःखंड** - पु० [सं] चिथड़ा ।

**वास** - पु० [सं] निवास ; घर ; कपड़ा ; स्थान ; एक दिन की यात्रा ; सुगंध ; पत्रक ; गंध ; बाण का पंख ; मकड़े का जाल ; परदा ; रूई ; रात में रहने का स्थान ; **यौ०** —गृह, भवन, वेश्म - अतःपुर ; शयनागार ; —पर्याय - रहने की जगह का परिवर्तन ; —योग - कई द्रव्यो का मिश्रित चूर्ण, अबीर ; —सज्जा - वासकसज्जा ।

**वासक** - 1. पु० [स] वस्त्र ; वासस्थान ; शयनागार ; गंध ; दिन ; 2. वि० सुगंधित करनेवाला ; रहने के लिए प्रेरित करनेवाला ; **यौ०** —सज्जा, सज्जिका - शृंगार करके नायक की प्रतीक्षा करनेवाली नायिका ।

**वासतेय** - वि० [सं] रहने या बसने योग्य ।

**वासतेयी** - स्त्री० [सं] रात ।

**वासन** - 1. पु० [सं] वासना, सुगंधित करना ; ज्ञान ; जल-पात्र ; मंजूषा ; योग का एक आसन ; वस्त्र ; बसाना ; वास ; 2. वि० रहने योग्य ; वास-संबंधी ।

**वासना** - 1. स्त्री० [सं] संस्कार ; इच्छा ; कामना ; कल्पना ; आस्था; ज्ञान ; दुर्गा ; भ्रम ; प्रमाण ; प्रत्याशा ; स्मृतिहेतु ; 2. स० [हिं] सुगंधित करना ।

**वासनी** - वि० [स] माथा-पच्ची करने के बाद समझ में आने योग्य।

**वासर** - 1. पु० [सं] दिन; नवदंपति का पहली रात का शयनमंदिर; बारी; 2 वि० प्रातःकाल-सबधी; **यौ०**—कन्यका - रात्रि; —मणि - सूर्य।

**वासव** - 1. पु० [स] इंद्र; धनिष्ठा नक्षत्र; 2. वि० वसु-संबंधी; इंद्र-संबधी।

**वासा** - स्त्री० [सं] अडूसा; माधवी लता।

**वासात्य** - वि० [सं] उषाकालीन।

**वासायनिक** - वि० [सं] घर-घर घूमनेवाला।

**वासि** - पु० [सं] वसूला; रहना।

**वासिक़** - वि० [अ] दृढ़, मज़बूत।

**वासित** - 1. वि० [सं] बसाया या सुगंधित किया हुआ, ठहराया हुआ; प्रसिद्ध; मसाला डाला हुआ; वस्त्राच्छादित; युक्त; बासी; किसी स्थान पर बसाया हुआ; 2. पु० बसाने की हिकमत; संस्कार; पक्षियों का कलरव; [अ] मध्यस्थ; घटक।

**वासिफ़** - वि० [अ] प्रशंसा करनेवाला।

**वासिल** - वि० [अ] मिलनेवाला; मिला हुआ; जो वसूल हो चुका हो; संयोगी (प्रेमी); **यौ०**—नवीस - वसूल की हुई और बाकी मालगुज़ारी का हिसाब रखनेवाला तहसील का कर्मचारी; —बाक़ी - वसूल की हुई तथा बाक़ी रक़में या ऐसी रक़मो का हिसाब।

**वासी** - 1. स्त्री० [सं] वसूला; 2. वि० अधिवासी; वस्त्राच्छादित; सुगंधित।

**वासु** - पु० [सं] आत्मा; परमात्मा; विष्णु; पुनर्वसु नक्षत्र।

**वासुकि, वासुकी** - पु० [सं] तीन प्रमुख नागराजो में से एक।

**वासुदेव** - 1. पु० [सं] वसुदेवपुत्र कृष्ण; पीपल का वृक्ष; अश्व; एक उपनिषद; 2. वि० कृष्ण-संबंधी।

**वासुरा** - स्त्री० [सं] स्त्री; भूमि; रात; हथिनी।

**वासू** - स्त्री० [सं] बालाओं का संबोधन।

**वासोख़्त** - पु० [फ़ा] विरक्ति; मुसद्दस के रूप में लिखित काव्य जिसमें नायिका की निन्दा और अपनी वेदना का वर्णन रहता है।

**वासोख़्ता** - वि० [फ़ा] जला हुआ; दिल-जला।

**वास्तव** - 1. वि० [सं] निश्चित; यथार्थ; सत्य; 2. पु० असल तत्त्व; **यौ०** —में - यथार्थतः, सचमुच।

**वास्तविक** - 1. वि० [सं] सत्य; यथार्थ, 2. पु० यथार्थवादी; माली।

**वास्तव्य** - 1. वि० [सं] निकम्मा समझकर किसी स्थान पर छोड़ा हुआ; रहनेवाला; बसा हुआ; 2. पु० बस्ती।

**वास्ता** - पु० [अ] नाता; जरिया; संबन्ध; मध्यस्थ; सरोकार; **मु०** —पड़ना - काम पड़ना; सरोकार होना।

**वास्तु** - पु० [सं] मकान बनाने योग्य स्थान; कमरा; बथुआ; एक अन्न; एक वस्तु; भवन; मकान की नीव; **यौ०** —कर्म - गृहनिर्माण; —काल - गृहनिर्माण के लिए उपयुक्त समय; —ज्ञान - गृहनिर्माण की विद्या; —देव, देवता - गृहदेवता; —नर - देवता-रूप में माना हुआ आदर्श भवन; —पति, पुरुष - घरवाले स्थान का देवता; —पूजा - वास्तुदेव की पूजा; —प्रशमन, शमन - घर की शुद्धि या संस्कार; —विधान - गृहनिर्माण; —विद्या, शास्त्र - गृहनिर्माण-संबन्धी

विद्या ; —शांति - गृहप्रवेश के समय किया जानेवाला शांतिकर्म ; — संपादन, संस्थापन - भवननिर्माण ।

**वास्ते** - अव्य० [अ] लिए, कारण ।

**वास्य** - वि० [सं] आच्छादित करने योग्य ; बसाये जाने योग्य ; कुल्हाड़ा ।

**वाह** - 1. वि० [सं] खींचने या ले जानेवाला ; 2. पु० भारवाहक पशु (घोड़ा, बैल, भैसा आदि) ; खींचकर ले जानेवाला ; मोटिया ; धारा ; सवारी ; वायु ; 3. अव्य० [फ़ा] प्रशंसासूचक शब्द, शाबाश (कभी-कभी इससे आश्चर्य और व्यग्य में निन्दा का भाव भी प्रकट होता है) ; यौ० —वाह - धन्य-धन्य, साधु-साधु ; —वाही - साधुवाद ; बहुतों के मुँह से वाह-वाह निकलना ।

**वाहक** - 1. वि० [सं] ढोने या ले जानेवाला ; गति प्रदान करनेवाला ; बहनेवाला ; 2. पु० भारवाहक ; बोझ ढोनेवाला ; सारथी या आरोही ।

**वाहन** - पु० [सं] कोई सवारी (घोड़ा, रथ, मोटर आदि) ; सवारी के काम आनेवाला या माल ढोनेवाला जानवर ; हाथी ; प्रयत्न ; ले जाना ; यौ० —कार - रथादि बनानेवाला ; —श्रेष्ठ - घोड़ा ।

**वाहला** - स्त्री० [सं] धारा, प्रवाह ।

**वाहिक** - पु० [सं] छकड़ा, गाड़ी ; नगाड़ा ; भारवाहक ।

**वाहिद** - 1. वि० [अ] अकेला ; 2. पु० एक की संख्या ; खुदा का एक नाम ।

**वाहिनी** - स्त्री० [सं] सेना ; सेना का एक विभाग ; नदी ; यौ० —पति - सेनानायक ; समुद्र ।

**वाहिम** - वि० [अ] वहम करनेवाला ; सोचने या कल्पना करनेवाला ।

**वाहिमा** - स्त्री० [अ] कल्पनाशक्ति ।

**वाहियात** - 1. वि० [फ़ा] बेहूदा ; निकम्मी (बातें) ; 2. स्त्री० खुराफ़ात ; बदमाशी ; आवारगी ।

**वाही** - वि० [अ] टूटा-फूटा हुआ ; निकम्मा ; कमज़ोर ; बेसिर पैर की बात ; आवारा ; बदचलन ; [सं] वहन करने या ढोनेवाला ; बहनेवाला ; पूरा करनेवाला ; उत्पन्न करनेवाला ।

**वाह्य** - 1. पु० [सं] सवारी ; भारवाहक पशु (घोड़ा, हाथी आदि) ; 2. वि० खींचा, ढोया या चढ़ाया जानेवाला ; बाह्य ; यौ० —आतिथ्य - विदेशी माल ।

**विंध्य** - पु० [सं] भारत के मध्य में स्थित एक पर्वत-श्रेणी ।

**विंध्या** - 1. स्त्री० [सं] छोटी इलायची ; 2. पु० विंध्यपर्वत ।

**विंध्याचल** - पु० [सं] विंध्यपर्वत ।

**विंध्याटवी** - स्त्री० [सं] विंध्यपर्वत पर का जंगल ।

**विंध्याद्रि** - पु० [सं] विंध्यपर्वत ।

**विंश** - 1 वि० [सं] बीसवाँ ; 2. पु० बीसवाँ भाग ।

**विंशक** - वि० [सं] जिसमें बीस की वृद्धि की गयी हो ; बीस ; जिसमें बीस भाग हों ।

**विंशति** - 1. वि० [सं] बीस ; बीस की संख्या का ; 2. स्त्री० बीस की संख्या का सूचक अंक ; एक प्रकार का व्यूह ।

**विंशी** - वि० [सं] बीस हिस्सेवाला ।

**विंशोत्तरी** - स्त्री० [सं] मनुष्य का शुभाशुभ जानने की विशेष रीति ।

**वि** - 1. उप० [सं] एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व लगने पर पार्थक्य, कार्य-वैपरीत्य, भाग, अंतर, क्रम, प्रतिकूलता, राहित्य, आधिक्य और परिवर्तन आदि का सूचन करता है (जैसे, वियोग,

विक्रय, विभाग, विशेष, विधा, विरोध, विमल, विध्वंस, विकार आदि) ; 2. पु० अन्न ; आँख ; आकाश ; घोड़ा ; पक्षी ; 3. स्त्री० पक्षी ।

**विकंप** - वि० [सं] काँपता हुआ ; चंचल ।

**विकंपित** - 1. वि० [सं] अस्थिर ; 2. पु० मंद पड़ते हुए स्वर का एक भेद ; स्वरों का सदोष उच्चारण ।

**विकंपी** - वि० [सं] हिलता हुआ ।

**विकच** - 1. पु० [सं] ध्वजा ; पालों का समूह ; एक धूमकेतु ; 2. वि० विकसित ; केशहीन ; फैला हुआ ; जो बिलकुल स्पष्ट हो गया हो ।

**विकच्छ** - वि० [सं] दलदलविहीन तटवाली (नदी) ।

**विकट** - 1. वि० [सं] भयंकर ; दुर्गम ; विशाल ; भद्दा ; मुश्किल ; विस्तृत ; टेढ़ा ; घमंडी ; सुंदर ; दंतुर ; अस्पष्ट ; विकृत ; 2. पु० सोमलता ; फोड़ा ; बैठने की एक मुद्रा ; **यौ०** —मूर्ति, वदन - भद्दी शक्लवाला ।

**विकटाकृति** - वि० [सं] भयावनी शक्लवाला ।

**विकटाक्ष** - वि० [सं] डरावनी आँखोंवाला ।

**विकत्थन** - 1. वि० [सं] डींग मारनेवाला ; 2. पु० डींग मारना ; व्यंग्य ; प्रशंसा ; मिथ्या श्लाघा ।

**विकत्था** - स्त्री० [सं] डींग ; उद्घोषणा ; प्रशंसा ; झूठी प्रशंसा ; व्यंग्य ।

**विकथा** - स्त्री० [सं] कुत्सित बात ; बेकार या बेसिर-पैर की बात ; विशिष्ट बात ।

**विकरण** - वि० [सं] ज्ञानेन्द्रियों से हीन ।

**विकराल** - वि० [सं] भीषण, भयंकर ।

**विकराला** - स्त्री० [सं] दुर्गा ।

**विकर्ण** - वि० [सं] कानरहित ; बड़े कानों-वाला ; बहरा ।

**विकर्तन** - 1. पु० [सं] पिता को राज्यच्युत कर स्वयं राजा बननेवाला पुत्र ; मदार ; सूर्य ; 2. वि० काटनेवाला ।

**विकर्म** - 1. पु० [सं] अनुचित कर्म ; काम से अवसर ग्रहण करना ; विभिन्न प्रकार के कार्य ; 2. वि० कर्म न करनेवाला, कर्मभ्रष्ट ; **यौ०** —क्रिया - अविहित या अधार्मिक कार्य ।

**विकर्मिक** - 1. वि० [सं] अनुचित काम करनेवाला, विभिन्न कार्यों में संलग्न ; 2. पु० बाज़ार या मेले का निरीक्षक ।

**विकर्ष** - पु० [सं] प्रत्यंचा खींचना, फासला ; बाण ।

**विकर्षण** - पु० [सं] आकर्षण, खींचना ; खाने में परहेज़ ; कामदेव के पाँच बाणों में से एक ; आकर्षणशास्त्र ; कुश्ती का दाँव ; जाँच ; प्रतिकर्षण, विरुद्ध दिशा की ओर खींचना ; हटाना ; नष्ट करना ।

**विकलंक** - वि० [सं] चमकीला ; दोषरहित ।

**विकल** - वि० [सं] बेचैन ; क्षुब्ध ; अपंग ; अपूर्ण ; घटा हुआ ; खंडित ; अस्वाभाविक ; असमर्थ ; भीत ; प्रभावहीन ; हतोत्साह ; मुरझाया हुआ ; **यौ०** —करण - क्षीण ; निस्तेज ।

**विकलांग** - वि० [सं] अंगहीन ; अधिक अंगोंवाला ।

**विकलाना** - अ० [हिं] व्याकुल होना ।

**विकलास** - पु० [हिं] चमड़ा मढ़कर बनाया जानेवाला एक बाजा ।

**विकलेन्द्रिय** - वि० [सं] जिसका अपनी इंद्रियों पर अधिकार न हो ; जिसकी इंद्रियाँ विकृत हों ।

**विकल्प** - पु० [सं] संदेह ; अज्ञान ; उपाय ; कथन ; गणना ; चिन्तन ; भेदयुक्त ज्ञान ; भ्रांत धारणा ; योग की एक

समाधि ; संदेह ; विभिन्नता ; **यौ०**—जाल - तरह-तरह की दुविधायें ; —संप्राप्ति - रोगों में वातादि दोषों का अनुमान (आयुर्वेद)।

**विकल्पित** - वि० [सं] अनिश्चित ; विभक्त ; अनियमित ; व्यवस्थित ।

**विकसन** - पु० [सं] खिलना, प्रस्फुटन ।

**विकसना** - अ० [हिं] प्रस्फुटित होना ।

**विकसित** - वि० [सं] खिला हुआ ; प्रसन्न।

**विकस्वर** - 1. वि० [सं] खुला हुआ ; निष्कपट ; प्रफुल्ल ; विकासशील ; साफ़ सुनायी देनेवाला (शब्द) ; 2. पु० एक अर्थालंकार ।

**विकांक्ष, विकांक्षी** - वि० [सं] इच्छारहित, निष्काम ।

**विकांक्षा** - स्त्री० [सं] इच्छा का अभाव ; दुविधा ।

**विकाम** - वि० [सं] निष्काम ।

**विकार** - पु० [सं] रूप या धर्म आदि स्वाभाविक अवस्था का परिवर्तित होना ; परिवर्तन ; विचार या उद्देश्य आदि में परिवर्तन होना ; रोग ; क्षोभ ; भावना ; वासना ; प्रकृति का विकसित रूप (सांख्य) ; आकृति का विकृत होना ; **यौ०**—हेतु - प्रलोभन या क्षोभ उत्पन्न करनेवाला विषय या वस्तु ।

**विकारी** - वि० [सं] परिवर्तनशील ; आसक्त ; क्रोधादि दुष्ट मनोविकारोंवाला ; विकार-ग्रस्त ।

**विकार्य** - 1. वि० [सं] परिवर्तनशील ; 2. पु० अहंकार ।

**विकास** - पु० [सं] खिलना ; खुलना (मुख आदि का) ; आनंद ; फैलाव ; बाढ़ ; **यौ०**—वाद - डारविन द्वारा प्रतिपादित जीवन और जगत के विकास का सिद्धांत ।

**विकासक** - वि० [सं] खोलनेवाला , बुद्धि बढ़ानेवाला ।

**विकासन** - पु० [सं] खिलना ; खुलना ; प्रदर्शन , फैलना ।

**विकासित** - वि० [सं] प्रकाशित ; प्रदर्शित ; प्रस्फुटित , विस्तरित ।

**विकिरण** - पु० [सं] छितराने की क्रिया ; चारों ओर फैलाना ; फाड़ना ; ज्ञान ; मारना ; किरणों का एकत्रीकरण ; एक समाधि ।

**विकीर्ण** - 1. वि० [सं] छितराया या फैलाया हुआ ; भरा हुआ ; मशहूर ; 2. पु० स्वर के उच्चारण का एक दोष ; **यौ०**—कारी - फैलानेवाला ।

**विकुंचित** - वि० [सं] सिकुड़ा हुआ।

**विकुंठ** - वि० [सं] बहुत भोथरा ; तेज़ धारवाला ; जो रोका न जा सके; जो कुंठित न हो ।

**विकुंठित** - वि० [सं] निर्बल ; भोथरा ।

**विकुक्षि** - वि० [सं] बड़ी तोंदवाला ।

**विकुत्सा** - स्त्री० [सं] अत्यधिक निंदा ।

**विकूजन** - पु० [सं] पक्षियों का कलरव ; पेट का गुड़गुड़ाना ; भनभनाना ।

**विकूजित** - पु० [सं] गुंजार ; पक्षियों का कलरव ।

**विकृत** - 1. वि० [सं] असंस्कृत ; कुरूप ; अस्वाभाविक ; अधूरा ; अराजक ; अलंकृत , परिवर्तित ; भावाविष्ट ; रोगी ; विकारयुक्त ; 2. पु० रोग ; विरक्ति ; **यौ०** — दृष्टि - ऐंचाताना ; —रक्त - लाल रंग में रंगा हुआ या लाल धब्बों से भरा हुआ ; — वदन - बदसूरत ; —स्वर - नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर ठहरनेवाला स्वर ।

**विकृति** - स्त्री० [सं] असाधारण या आकस्मिक घटना ; उद्देश्य आदि

का परिवर्तन; क्षोभ; गर्भपात; परिवर्तित रूप; भावावेश; माया, विकास।

**विकृष्ट** - वि० [सं] आकृष्ट, पृथक किया हुआ; ध्वनित; फैलाया हुआ, छुटा हुआ।

**विकेशी** - स्त्री० [सं] मही; बिखरे बालोंवाली स्त्री; केशरहित स्त्री; राक्षसी; केशगुच्छ।

**विकोश** - वि० [सं] कोश या म्यान से बाहर निकाली हुई (तलवार); आच्छादन या आवरणरहित; भूसी या छिलके से रहित।

**विक्रम** - 1. पु० [सं] वीरता; तेज़ या बल आदि की अधिकता; क़दम; क्रमहीन वेदपाठ की प्रणाली; गति; ढंग; मार्ग; पैर; विष्णु; स्थिरता; विक्रमादित्य; 2. वि० श्रेष्ठ।

**विक्रमण** - पु० [सं] चलना; वीरता; क़दम रखना; साहसपूर्वक आगे बढ़ना।

**विक्रमाब्द** - पु० [सं] विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित संवत्, विक्रम संवत्।

**विक्रमी** - 1. वि० [सं] विक्रमादित्य-संबंधी; वीर; 2. पु० शूर; विष्णु; शेर।

**विक्रय** - पु० [सं] दाम लेकर कोई चीज़ देना, बेचना; **यौ०** —पत्र - वह कागज़ जिसमें किसी चीज़ का नाम, दाम, ग्राहक तथा विक्रेता का विवरण रहता है।

**विक्रयक, विक्रयिक, विक्रयी** - पु० [सं] बेचनेवाला।

**विक्रांत** - 1. वि० [सं] वीर; प्रतापी; विजयी; 2. पु० पराक्रम; क़दम; चलने का ढंग; एक मणि; योद्धा; सिंह; **यौ०** —गति - सुंदर चालवाला मनुष्य।

**विक्रांति** - स्त्री० [सं] गति; घोड़े की सरपट चाल; विक्रम; वीरता; शक्ति।

**विक्रिया** - स्त्री० [सं] परिवर्तन; असफलता; अस्वस्थता; उत्तेजना, क्रोध; क्षति; कर्तव्य का पालन न होना; ख़राबी; चावल पकाना; बुराई; भ्रूसंकोच; शत्रुता।

**विक्री** - स्त्री० [हिं] बेचने की क्रिया; बेचने से मिला हुआ धन।

**विक्रीत** - वि० [सं] बेचा हुआ।

**विक्रेय** - वि० [सं] बिकने योग्य; बिकने-वाला।

**विक्रेता** - पु० [सं] बेचनेवाला।

**विक्रोश** - पु० [सं] गोहार।

**विक्लव** - 1. वि० [सं] बेचैन; अभिभूत; अस्थिर; ऊबा हुआ; कंपित; घबड़ाया हुआ; डरपोक; भयाक्रांत; विरक्त; 2. पु० घबड़ाहट; बेचैनी।

**विक्लान्त** - वि० [सं] थका हुआ; हतोत्साह।

**विक्लिन्न** - वि० [सं] अत्यधिक आर्द्र; जीर्ण; पकाकर मुलायम किया हुआ; सड़ा-गला; **यौ०** —हृदय - दयार्द्र।

**विक्लेद** - पु० [सं] आर्द्र होना; आर्द्रता; क्षय।

**विक्षाव** - पु० [सं] खाँसी; छींक; शब्द; चिल्लाहट; स्वर।

**विक्षिण** - वि० [सं] दुखी; नीचे गिरा हुआ।

**विक्षिप्त** - 1. वि० [सं] छोड़ा हुआ; खंडन किया हुआ; पागल; फेंका या बिखेरा हुआ; भेजा हुआ; व्याकुल; 2. पु० योग की पाँच अवस्थाओं में से एक जिसमें चित्तवृत्ति प्रायः अस्थिर रहती है।

**विक्षिप्तता** - स्त्री० [सं] उन्माद, पागलपन।

**विक्षुब्ध** - वि० [सं] अशांत।

**विक्षेप** - पु० [सं] बिखेरना ; इधर-उधर घूमना ; असंयम ; अपशब्द कहना ; अनवधानता ; करुणा ; चित्त की अस्थिरता ; फेंकना ; समय बरबाद करना ; भय ; बढ़ाव ; बाधा ।

**विक्षेपण** - पु० [सं] फेकना या बिखेरना ; धनुष की डोरी खींचना ; झटका देना ; बाधा ; भेजना ; भूल के कारण होनेवाली घबराहट ।

**विक्षोभ** - 1. पु० [सं] मन का आवेग ; आतक ; पार्श्व ; गति ; भय ; विदीर्ण करना ; संघर्ष ; विखंडित ; 2. वि० [सं] टुकड़ो में कटा हुआ ; अंग-भंग किया हुआ , क्षुब्ध ; दो भागों में बँटा हुआ ।

**विखनन** - पु० [सं] खोदने की क्रिया ।

**विखाद** - पु० [स] निगलना ; नष्ट करना ।

**विखेद** - वि० [सं] अज्ञात ।

**विख्यात** - वि० [सं] प्रसिद्ध, नामधारी ; स्वीकार किया हुआ ।

**विख्याति** - स्त्री० [सं] प्रसिद्धि ; शोहरत ।

**विगंध** - वि० [सं] गंधहीन ; बदबूदार ।

**विगणन** - पु० [सं] कर्ज़ चुकाना ; गणना करना ; विचार करना ।

**विगत** - वि० [सं] अतीत या बीता हुआ ; अंधकारावृत्त ; अनुपस्थित ; इधर-उधर गया हुआ ; बीते हुए से पूर्व का ; मृत ; रहित ; **यौ०** —कल्मष - पापरहित ; —ज्ञान - जिसकी समझ मारी गयी हो ; —नयन - अंधा ; —भय - निर्भीक ; —लक्षण, श्रीक - अभागा ; —स्पृह - जिसमें इच्छा शेष न हो ।

**विगता** - स्त्री० [सं] विवाह के अयोग्य लड़की ; परकीया ।

**विगति** - स्त्री० [सं] दुर्गति ; दुर्दशा ।

**विगम** - पु० [सं] अनुपस्थिति ; पार्थक्य ; त्याग ; नाश ; प्रयाण ; प्रस्थान ; मृत्यु ; मोक्ष ; समाप्ति ; हानि ।

**विगर्हण** - पु० } [सं] डाँटना-फटकारना ;
**विगर्हणा** - स्त्री० } निंदा, भर्त्सना ।

**विगर्हा** - स्त्री० [सं] डाँट-फटकार ; निंदा ।

**विगर्हित** - वि० [स] कुत्सित ; डाँटा-फटकारा हुआ ; निंदित ; निषिद्ध ।

**विगलन** - पु० [सं] गायब होना ; गलना ; बह जाना ; पिघलना ; नाश ; रिसना ; शिथिल होना ।

**विगलित** - वि० [सं] गिरा हुआ ; टपककर या रिसकर निकला हुआ ; बहा हुआ ; सूखा हुआ ; बिगड़ा हुआ ; बिखरा हुआ ; लुप्त ; शिथिल ; **यौ०** —केश - बिखरे बालोंवाला ; —बंध - जिसका बंधन खुल गया हो ; —लज्ज - निर्लज्ज, धृष्ट ; —वासन - नंगा ।

**विगान** - पु० [सं] असामंजस्य ; घृणा ; निंदा ; विरोध ।

**विगाह** - पु० [सं] डुबकी लगाना ; प्रवेश करना ; स्नान करना ।

**विगीत** - वि० [सं] निंदित ; परस्पर विरोधी ; बुरे ढंग से गाया हुआ ; विभिन्न प्रकार से कथित ।

**विगुण** - वि० [सं] असफल ; अधूरा ; अव्यवस्थिति ; गुणहीन ; बुरा ; जिसमें डोरी न हो ; विकृत ।

**विगूढ** - वि० [सं] जिसकी निंदा की गयी हो ; छिपा हुआ ।

**विग्रह** - पु० [सं] अलगाना ; पार्थक्य ; विभाग ; विस्तार ; समस्त पद के खंडों को अलग करना (व्या०) ; कलह ; खंड ; तत्त्व ; फूट पैदा करना ; युद्ध ; शरीर ; सजावट ; **यौ०** —ग्रहण - रूपग्रहण ।

**विग्रही** - पु० [सं] युद्ध करनेवाला ; लड़ाई-झगड़ा करनेवाला ; युद्धमंत्री ।

**विघटन** - पु० [स] अलग करना ; छिन्न-भिन्न करना ; तोड़ना ; नाश ।

**विघट्टन** - पु० [स] अलग करना ; खोलना ; नाराज़ करना ; रगड़ना ; व्यथित करना ; हिलना ।

**विघर्षण** - पु० [सं] रगड़ने या घिसने की क्रिया ।

**विघात** - पु० [सं] चोट ; टुकड़े-टुकड़े करना ; तोड़ना-फोड़ना ; निवारण ; नाश; परित्याग ; रोक ; विरोध ; व्याकुलता ; हत्या ।

**विघातक** - वि० [स] बाधक ।

**विघूर्णन** - पु० [सं] चक्कर देना ।

**विघूर्णित** - वि० [स] घुमाया या चक्कर दिलाया हुआ ।

**विघोषण** - पु० [सं] चिल्लाना ।

**विघ्न** - पु० [सं] कठिनाई ; गणेश ; काली मकोय ; नाश या भग करनेवाला ; विरोध ; **यौ०** —कर, कर्ता, कृत - बाधा उपस्थित करनेवाला : —कारी - बाधा डालनेवाला ; देखने में भयानक ; —प्रतिक्रिया, विघात - बाधा दूर करना ; —सिद्धि - बाधा का दूर होना ।

**विघ्नक** - वि० [सं] अड़चन ।

**विचकित** - वि० [सं] घबड़ाया हुआ ।

**विचक्षण** - 1. वि० [स] दूरदर्शी ; दक्ष ; पारंगत ; प्रकाशमान ; 2. पु० चतुर आदमी ।

**विचक्षु** - वि० [सं] अंधा ; उदास ; घबड़ाया हुआ ।

**विचय, विचयन** - पु० [स] इकट्ठा करना ; तरतीब से रखना ; तलाश करना ; परीक्षा करना ।

**विचरण** - 1. पु० [सं] घूमना-फिरना ; पर्यटन ; 2. वि० पैरविहीन ।

**विचरणीय** - वि० [सं] आचरण करने योग्य ।

**विचरना** - अ० [हि] इधर उधर घूमना ।

**विचर्चिका** - स्त्री० [स] खुजली नामक रोग ।

**विचर्चित** - वि० [सं] लेपा हुआ ।

**विचल** - वि० [सं] निरंतर घूमने या हिलने-वाला ; अस्थिर ; प्रतिज्ञा से हटा हुआ ; घबड़ाया हुआ ; घमंडी ; स्थान से हटा हुआ ।

**विचलता** - स्त्री० [सं] अस्थिरता, घबड़ाहट ।

**विचलित** - वि० [सं] अस्थिर ; गया हुआ ; घबड़ाया हुआ ; स्थान या प्रतिज्ञा से डिगा हुआ ।

**विचार** - पु० [सं] किसी विषय पर गंभीरता के साथ सोचना ; तत्त्व-निर्णय ; तत्त्व-परीक्षा ; निर्णय ; कार्यविधि ; अभियोग आदि का निर्णय ; चुनाव ; वाद-विवाद ; विज्ञता ; संदेह ; हिचक ; **यौ०**—कर्ता - सोचने-विचारनेवाला ; न्यायाधीश ; —पति - मुक़द्दमे का फ़ैसला करनेवाला, जज ; —भू - न्यायालय ; —मूढ़ - जिसे सोचने-समझने की शक्ति न हो, —शास्त्र - मीमांसाशास्त्र ; —शील - सोच-विचार करने की शक्तिवाला ; —सरणी - विचार करने की पद्धति ।

**विचारक** - पु० [सं] विचार करनेवाला (दार्शनिक आदि) ; गुप्तचर ; न्याया-धीश ; पथप्रदर्शक ।

**विचारणा** - स्त्री० [सं] घूमना-फिरना ; तर्क ; परीक्षण ; विचार करना ; संदेह ।

**विचारणीय** - वि० [सं] चिंत्य ; विचार करने योग्य ; प्रमाणित करने योग्य ; संदिग्ध ।

**विचारना** - स० [हिं] खोज करना ; ग़ौर करना ।

**विचारी** - वि० [सं] घूमने-फिरनेवाला ; लपट ; विचार करनेवाला ।
**विचाल** - पु० [सं] अंतराल ; पृथक करना ; बीच का काल या स्थान, विभाग करना ।
**विचित्त** - वि० [सं] अचेत ; कर्त्तव्यविमूढ ।
**विचिंतन** - पु० [सं] चिन्ता करना ; सोचना ।
**विचिंतित** - वि० [सं] जिसपर विचार किया गया हो ।
**विचिंत्य** - वि० [सं] विचार करने योग्य ; संदिग्ध ।
**विचि, विची** - स्त्री० [सं] तरंग, लहर ।
**विचिकित्सा** - स्त्री० [सं] अनिश्चय ; भूल ; संदेह ।
**विचित्र** - वि० [सं] कई प्रकार के रंगों या वर्णोंवाला ; असाधारण ; चकित ; चित्रित ; मनोरंजक ; रँगा हुआ ; अचंभा; सुंदर ; यौ० —चरित्र - विचित्र ढंग से आचरण करनेवाला ; —देह - सुंदर बनावटवाला ; बादल ; —रूप - कई तरह के रूपोंवाला ; —शाला - अजायब-घर, म्यूज़ियम ।
**विचित्रता** - स्त्री० [सं] अनोखापन ; रंगों की विभिन्नता ।
**विचित्रांग** - पु० [सं] मयूर ; व्याघ्र ।
**विचित्रित** - वि० [सं] रंग-विरंगा ; अभूषित ; आश्चर्यजनक ।
**विचुंबन** - पु० [सं] चुंबन ।
**विचेतन** - वि० [सं] अचेत ; मृत ; विवेक-रहित ; विस्मरणशील ।
**विचेता** - वि० [सं] अचेत ; चतुर ; दुष्ट ; मूर्ख ; विमूढ ।
**विचेष्ट** - वि० [सं] गतिहीन ; चेष्टाहीन ।
**विचेष्टा** - स्त्री० [सं] कुचेष्टा ; गति ; प्रयत्न ; व्यवहार ।
**विच्छिन्न** - वि० [सं] अलग ; काटकर अलग किया हुआ ; विभक्त ; कुटिल ; छिपा हुआ ; निवारित ; विभिन्न रंगों से चित्रित ।
**विच्छेद** - पु० [सं] क्रम टूटना ; काटकर अलग करना ; अलगाव ; अध्याय (पुस्तक का) ; क्षति ; क्रम टूटना ; नाश ; निषेध ; मतभेद ; बीच का अवकाश ; वंशक्रम का भंग होना ।
**विच्युत** - वि० [सं] गिरा हुआ ; जीवित अंग से काटकर निकाला हुआ ; असफल ; विनष्ट ; स्थानभ्रष्ट ।
**विछलना** - अ० [हिं] फिसलना ; स्थान-भ्रष्ट होना ।
**विछेद** - पु० [हिं] विच्छेद, वियोग ।
**विछोह** - पु० [हिं] वियोग ।
**विछोही** - वि० [हिं] वियोगी ।
**विजट** - वि० [सं] वेणीविहीन, खुले हुए (बाल) ।
**विजन** - 1. वि० [सं] एकांत, जनशून्य ; 2. पु० निर्जन या एकान्त स्थान ; साक्षी का अभाव ; [हिं] विजना ।
**विजनता** - स्त्री० [सं] एकांतता ।
**विजनन** - पु० [सं] जनन, प्रसव करना ।
**विजना** - पु० [हिं] पंखा ।
**विजन्मा** - पु० [सं] उपपति का पुत्र ; जातिच्युत व्यक्ति का पुत्र ; एक वर्ण-संकर जाति ।
**विजय** - 1. स्त्री० [सं] युद्ध आदि में होनेवाली जीत ; बहस ; जीत का पारितोषिक ; लूट का माल ; 2. पु० दिन का एक विशेष घंटा ; वर्ष का तीसरा मास ; एक परिमाण ; एक सैन्यव्यूह ; एक संवत्सर ; एक तरह की बाँसुरी ; ज़िला ; यम ; विमान ; भोजन करना ; यौ० —कर - विजय करनेवाला ; —

केतु - शत्रु को जीतकर फहरायी जानेवाली ध्वजा ; —डिंडिम - युद्ध का एक प्राचीन बाजा ; —दंड - सदा विजयी होनेवाला सैन्यसमूह ; विजयसूचक दंड ; —दुंदुभि, दुंदुभी - विजय के समय बजाया जानेवाला नगाड़ा ; —पताका - विजयकेतु ; —यात्रा - जीत की कामना से की जानेवाली यात्रा ; —लक्ष्मी, श्री - विजय की अधिष्ठात्री देवी ; —शील - सदा जीतनेवाला ; —सिद्धि - सफलता ; जीत ।

**विजया** - स्त्री० [सं] विजयोत्सव ; दुर्गा ; विश्वामित्र द्वारा राम को सिखायी गयी एक विद्या ; एक पौधे की विषैली जड़ ; राजकीय तंबू ; एक प्रकार का मंडप ; मजीठ ; भाँग ; यौ० —दशमी - आश्विन शुक्ला दशमी को होनेवाला शक्तिपूजक क्षत्रियों का एक त्योहार ।

**विजयार्थी** - वि० [सं] विजय चाहनेवाला ।

**विजयी** - 1. पु०, 2. वि० [सं] जीतनेवाला ।

**विजयोत्सव** - पु० [सं] विजयादशमी का उत्सव ; विजय प्राप्त करने पर मनाया जानेवाला उत्सव ।

**विजर्जर** - वि० [सं] जीर्ण ; सड़ा-गला ।

**विजल्प** - पु० [सं] अनाप-शनाप बकना ; द्वेष से झूठी बातें कहना ।

**विजात** - वि० [सं] उत्पन्न ; दोगला ; दूसरे रूप में परिणत ।

**विजाति** - 1. वि० [सं] भिन्न जाति या अन्य वर्ग का ; 2. स्त्री० भिन्न जाति या वर्ग ।

**विजातीय** - वि० [सं] दूसरी जाति या अन्य वर्ग का ।

**विजार** - पु० [हिं] एक प्रकार की मटिया भूमि जिसमें धान बोया जाता है ।

**विज़ारत** - स्त्री० [अ] मंत्री का पद या कार्य ; मंत्रिमंडल ।

**विजिगीषा** - स्त्री० [सं] विजय की कामना ।

**विजिगीषु** - 1. वि० [सं] विजय का इच्छुक ; 2. पु० प्रतिपक्षी ; योद्धा ; विरोध करनेवाला व्यक्ति ।

**विजिज्ञासा** - स्त्री० [सं] अन्वेषण ; जानने की इच्छा ।

**विजित** - 1. वि० [सं] जीता हुआ ; जिससे डरा जाय ; 2. पु० जीता हुआ प्रदेश या भूखंड ; विजय ; यौ० —रूप - पराजित के रूप में आनेवाला ।

**विजितेन्द्रिय** - वि० [सं] अपनी इंद्रियों को वश में करनेवाला ।

**विजिन, विजिल** - वि० [सं] जिसमें अधिक रस न हो (लपसी आदि) ।

**विजीवित** - [सं] मृत ।

**विजुली** - स्त्री० [सं] एक देवी ; [हिं] बिजली ।

**विजृंभा** - स्त्री० [सं] जँभाई ।

**विजृंभिका** - स्त्री० [सं] जँभाई ; हाँफ ।

**विजृंभित** - 1. वि० [सं] जृंभायुक्त ; खिला हुआ ; क्रीड़ित (कामवश) ; खींचा या झुकाया हुआ (धनुष) ; 2. पु० आचार ; चेष्टा ; परिणाम ; जँभाई ; प्रदर्शन ।

**विजेता** - पु० [सं] वह व्यक्ति जिसने जय प्राप्त की हो ।

**विजेय** - वि० [सं] पराजित करने योग्य ।

**विज्जु** - स्त्री० [हिं] बिजली ; यौ० —लता - विद्युल्लता, बिजली ।

**विज्ञ** - 1. वि० [सं] जानकार ; विद्वान ; 2. पु० चतुर मनुष्य ; मुनि ।

**विज्ञता** - स्त्री० [सं] जानकारी ; बुद्धिमत्ता ।

**विज्ञप्त** - वि० [सं] सूचित ।

**विज्ञप्ति** - स्त्री० [सं] निवेदन ; विज्ञापन ; सूचित करने की क्रिया ।

**विज्ञप्तिका** - स्त्री० [सं] निवेदन ; प्रार्थना ।

**विज्ञात** - वि० [सं] जाना या समझा हुआ ; प्रसिद्ध ; **यौ०** —वीर्य - जिसके बल या शक्ति का लोगों को ज्ञान हो ।

**विज्ञाता** - पु० [स] जानने या समझनेवाला ।

**विज्ञान** - पु० [सं] अनुभवजन्य ज्ञान, आत्मा व मोक्ष आदि का ज्ञान ; कर्म ; किसी विषय का क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान, चौदह विद्याओं का ज्ञान ; प्रज्ञा ; दक्षता ; निश्चयात्मिका बुद्धि ; संगीत ; **यौ०** —धन - विशुद्ध ज्ञान ; —पति - श्रेष्ठ ज्ञानी ; —मात्रिक - बुद्धि ।

**विज्ञानता** - स्त्री० [सं] अनुभूति ; समझ ।

**विज्ञानमय** - वि० [सं] प्रज्ञायुक्त ; **यौ०** —कोष - ज्ञानेन्द्रियों के साथ बुद्धि ।

**विज्ञानी** - वि० [सं] किसी विषय का उत्तम ज्ञाता, किसी विज्ञान में निष्णात ; वैज्ञानिक ; आत्मा व परमात्मा के स्वरूप का तत्त्व जाननेवाला ।

**विज्ञापक** - पु० [सं] इश्तहार करनेवाला ; बतलाने या समझानेवाला ।

**विज्ञापन** - पु० [सं] इश्तहार ; निवेदन ; समझाना ; सूचना ; **यौ०** —पत्र - विज्ञापन का अख़बार ; —पुस्तिका - सूचीपत्र ।

**विज्ञापित** - वि० [सं] सूचित ; बतलाया हुआ ।

**विज्ञेय** - वि० [स] सीखने, जानने या समझने योग्य ।

**विट** - पु० [सं] कामुक ; वेश्याप्रेमी ; चूहा ; एक खनिज द्रव्य ; नारंगी ; नायक का एक भेद ; धूर्त ; नायक का सखा ; मकान ; कोंपलदार टहनी ।

**विटप** - पु० [सं] पेड़ ; फैलाव ; झाड़ी ; पेड़ या लता की नयी शाखा, कोंपल ; अंडकोश के बीच या नीचे की रेखा ।

**विटपी** - 1. वि० [सं] शाखाओंवाला ; 2. पु० झाड़ी ; वट-वृक्ष ; **यौ०**—मृग - बंदर ।

**विट्** - 1. पु० [स] प्रवेश ; मनुष्य ; वैश्य ; 2. स्त्री० कन्या ; जाति ; प्रजा ; परिवार ; प्रसार ; विष्ठा ; **यौ०**—पण्य - व्यापारिक वस्तुएँ ।

**विठंक** - वि० [सं] नीच ।

**विडंब** - 1. पु० [सं] कष्ट देना ; कुढाना ; खिन्न करना ; छेड़खानी ; चिढ़ाना, नक़ल ; हेय समझना ; 2. वि० अनुकरणशील ।

**विडंबन** - पु० } [सं] कष्ट देना ; उपहास
**विडंबना** - स्त्री० } का विषय ; छलना ; छेड़खानी ; चिढ़ाना ; निन्दा करना ; निराश करना ; नक़ल उतारना ।

**विडंबित** - वि० [सं] दीन ; धोखा खाया हुआ ; नीच ; परेशान किया हुआ ; विकृत किया हुआ ; जिसकी नक़ल उतारी गयी हो ।

**विडरना** - अ० [हिं] चौंकना ; डरना ; तितर-बितर होना ; भागना ।

**विडराना** - स० [हिं] चौंकाना ; तितर-बितर करना ; नष्ट करना ; भगाना ।

**विडाली** - स्त्री० [सं] बिल्ली ।

**विडोजा, विडौजा** - पु० [सं] इंद्र ।

**वितंडा** - स्त्री० [सं] अपने पक्ष की स्थापना ; निरर्थक दलील ; करछी ; **यौ०** —वाद - निरर्थक दलील का सहारा लेना ।

**वितंत** - पु० [हिं] बिना तार का बाजा ।

**वितंत्री** - स्त्री० [सं] वह वीणा जिसके तारों का स्वर बेमेल हो ।

**वितंस** - पु० [सं] पिंजड़ा ; पक्षियों या छोटे पशुओं को फँसाने का जाल या उन्हें बाँधने का साधन ।

**वितत** - 1. वि० [सं] विस्तृत ; चौड़ा ; खींचा हुआ ; झुकाया हुआ ; ढका हुआ ; प्रस्तुत किया हुआ ; फैला हुआ ; 2. पु० तारवाले बाजे (वीणा आदि) ; ढोल आदि का शब्द ।

**वितति** - स्त्री० [सं] आतिशय्य ; परिमाण ; झुंड ; फैलाव ; समूह ।

**वितथ** - 1. वि० [सं] मिथ्या ; निरर्थक ; 2. पु० भारद्वाज ।

**वितथ्य** - वि० [सं] असत्य ।

**वितनु** - 1. वि० [सं] अति सूक्ष्म ; कोमल ; शरीररहित ; सारहीन ; सुंदर ; 2. पु० कामदेव ।

**वितरण** - पु० [सं] बाँटना ; बाँटनेवाला ; देना ; दान ; पार करना ; पार करनेवाला ।

**वितरना** - स० [हिं] वितरण करना ।

**वितरित** - वि० [सं] बाँटा हुआ ।

**वितर्क** - पु० [सं] विचार ; अनुमान ; अभिप्राय ; दलील ; प्रयोजन ; संदेह ; संदेह का विषय ।

**वितर्कण** - पु० [सं] तर्क या विचार करने की क्रिया ; वाद-विवाद ; संदेह ।

**वितर्कित** - वि० [सं] जिसपर तर्क या विचार किया गया हो ; पहले से समझा हुआ ।

**वितल** - पु० [सं] सात अधोलोकों में से एक ।

**वितस्ति** - पु० [सं] बालिश्त ; बारह अंगुल की माप ।

**वितान** - 1. पु० [सं] विस्तार ; प्रगति ; प्राचुर्य ; अवकाश ; अवसर ; घृणा ; गद्दी ; वेदी ; राशि ; वृद्धि ; यज्ञ ; समूह ; सिर की चोट पर बाँधने की एक पट्टी ; 2. वि० उदास ; दुष्ट ; धीमा ; परित्यक्त ; रिक्त ।

**वितान** - 1. वि० [सं] जो ताल में न हो (संगीत) ; 2. पु० गलत ताल ।

**वितीर्ण** - वि० [सं] जो पार हो गया हो ; क्षमा किया हुआ ; लड़ा हुआ ; दूरवर्ती ; पराभूत ; परित्यक्त ; नीचे गया हुआ ; प्रदत्त ; पूरा किया हुआ ।

**वितुंड** - पु० [हिं] हाथी ।

**वितुष्ट** - वि० [सं] अप्रसन्न ; असंतुष्ट ।

**वितृष्ण** - वि० [सं] उदासीन ; निस्पृह ।

**वितृष्णा** - स्त्री० [सं] तृष्णा का अभाव ; विरक्ति ; संतुष्टि ; प्रबल इच्छा ।

**वित्त** - 1. पु० [सं] धन-संपत्ति ; अधिकार ; प्राप्त वस्तु ; शक्ति ; 2. वि० ज्ञात ; परीक्षित ; प्रसिद्ध ; प्राप्त ; विचारित ; यौ० —काम - धन का इच्छुक ; लोभी ; —कोश - रुपया-पैसा रखने की थैली ; —नाश, पति, पाल - कुबेर ; —पेटा, पेटी - रुपया रखने की थैली ; —मात्रा - संपत्ति ; —शाठ्य - देन-लेन में धोखेबाज़ी ; —हीन - निर्धन, ग़रीब ; — वान - धनवान ।

**वित्ताढ्य** - वि० [सं] बहुत धनी ।

**वित्तार्थ** - पु० [सं] कुशल ; निपुण व्यक्ति ।

**वित्रप** - वि० [सं] निर्लज्ज ।

**वित्रस्त** - वि० [सं] डरा हुआ ।

**वित्रास** - 1. पु० [सं] आतंक ; डर ; 2. वि० भयंकर ।

**विथक** - पु० [हिं] पवन ।

**विथकना** - अ० [हिं] थकना ; मुग्ध या चकित होने पर कुछ न बोलना ।

**विथराना, विथारना** - स० [हिं] छितराना, फैलाना ।

**विथा** - स्त्री० [हिं] कष्ट ; व्यथा ।

**विथुर** - 1. पु० [सं] चोर ; राक्षस ; 2. वि० थोड़ा ; दुखी ; सदोष ।

**विदग्ध** - 1. वि० [सं] निपुण ; पंडित ; जला हुआ ; जठराग्नि से पका हुआ ;

गला हुआ ; रसिक ; सुंदर ; 2. पु० एक घास ; चतुर या धूर्त आदमी ।

**विदग्धता** - स्त्री० [सं] कुशलता ; रसिकता ; पांडित्य ।

**विदत्त** - वि० [सं] दिया हुआ ; बाँटा हुआ ।

**विदरण** - पु० [सं] फाड़ना ।

**विदरना** - 1. अ० [हिं] फटना ; 2. वि० फाड़ना ।

**विदल** - 1. अ० [सं] टुकड़ा ; फट्टा ; बेत ; लाल रंग का सोना ; विभाग ; चना ; टहनी ; डलिया (बाँस की) ; पीठी ; मटर की दाल ; मिठाई ; 2. वि० खिला हुआ ; पत्रहीन ; फ़टा हुआ ; दलरहित ।

**विदलान्न** - पु० [सं] पकायी हुई दाल ; अरहर, चना आदि दो दलोंवाले अन्न ।

**विदलित** - वि० [सं] टुकड़े टुकड़े किया हुआ ; खिला हुआ ; फाड़ा हुआ ; फैला हुआ ; दला, रौंदा या मसला हुआ ।

**विदा** - स्त्री० [अ] प्रस्थान ; दुलहिन की मायके से विदाई ; [सं] ज्ञान ; विद्या ; समझ ।

**विदाई** - स्त्री० [हिं] जाने के समय दी जाने वाली रक़म ; विदा होने की अनुमति ; विदा होने की क्रिया ।

**विदाय** - पु० [सं] विदा ; प्रस्थान ; दान ; वितरण ; विभाग ।

**विदारण** - पु० [सं] फाड़ना ; रौंदना ; कष्ट देना ; मुँह खोलना ; जंगल आदि काटकर साफ़ करना ; वध करना ; प्रवाह के बीच स्थित वह वृक्ष या चट्टान जिससे नाव बाँधी जाती है ।

**विदारित** - वि० [सं] फाड़ा हुआ ।

**विदाह** - पु० [सं] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न जलन ; आँतो में खाद्य पदार्थों से अम्ल बनने की क्रिया ; हाथ-पैर की जलन ।

**विदिक्** - 1. स्त्री० [सं] दो दिशाओ के बीच का कोना ; 2. वि० विभिन्न दिशाओं में गमन करनेवाला ।

**विदित** - 1. वि० [सं] प्रसिद्ध, अवगत ; सूचित किया हुआ ; स्वीकृत ; 2. पु० ऋषि ; कवि ; प्रसिद्धि ; लाभ ; सूचना ।

**विदीर्ण** - वि० [सं] फाड़ा हुआ ; फैला हुआ ; खुला हुआ ; मार डाला हुआ ।

**विदुर** - 1. वि० [सं] कुशल ; जानकार ; चतुर ; धीर ; 2. पु० चतुर व्यक्ति ; विद्वान ; षड्यंत्रकारी ।

**विदुषी** - स्त्री० [सं] पंडिता स्त्री ।

**विदूषक** - 1. पु० [सं] नक़ल आदि करके हँसानेवाला ; कामुक ; चार नायको में से एक ; परनिन्दक ; 2. वि० परनिन्दक; भ्रष्ट करनेवाला ; मज़ाक करनेवाला ।

**विदूषण** - पु० [सं] गंदा करना ; दोषारोप करना ; निन्दा करना ; व्यंग्य करना ।

**विदूषित** - वि० [सं] अपमानित ; गंदा किया हुआ ।

**विदेय** - वि० [सं] देने योग्य ।

**विदेवन** - पु० [सं] पासा खेलना ।

**विदेश** - पु० [सं] परदेश, देशान्तर ; **यौ०** —गत - परदेश गया हुआ ; —गमन - परदेश जाना ; —वास - दूसरे देश में रहना ; —स्थ - परदेश में रहने या घटित होनेवाला ।

**विदेशी** - पु० [हिं] परदेश का रहनेवाला ।

**विदेशीय** - वि० [सं] परदेशी, दूसरे देश का ।

**विदेह** - 1. वि० [सं] शरीररहित ; अचेत ; दैहिक चिन्ताओं से रहित ; मृत ; विरागी ; 2. पु० जनक ; मिथिला ; शरीररहित व्यक्ति ।

**विदोष** - 1. पु० [सं] अपराध ; पाप ; 2. वि० निर्दोष ।

**विदोह** - पु० [सं] अधिक दुहना; किसी चीज़ से अत्यधिक लाभ उठाना; शोषण।

**विद्** - 1. वि० [सं] जानकार; पंडित; 2. पु० तिल का पौधा; बुध ग्रह; विद्वान; 3. स्त्री० ज्ञान; समझ।

**विद्ध** - 1. वि० [सं] आहत; छेदा हुआ; तुल्य; फेंका हुआ; मिला हुआ; विदीर्ण; बाधित; 2. पु० जख्म; **यौ०**—कर्ण - जिसके कान छिदे हों।

**विद्य** - पु० [सं] प्राप्ति; लाभ।

**विद्यमान** - वि० [सं] उपस्थित; यथार्थ; **यौ०** —मति - चतुर।

**विद्यमानता** - स्त्री० [सं] उपस्थिति, मौजूदगी।

**विद्या** - स्त्री० [सं] किसी विषय का विशेष ज्ञान; ज्ञान-विज्ञान; **यौ०** —कर्म - शास्त्रादि का अध्ययन; —गुरु - शिक्षक; —गृह - विद्यालय; —दाता - पढ़ानेवाला शिक्षक; —दान - ग्रंथ या पुस्तक आदि देना; विद्या पढ़ाना; —देवी - सरस्वती; —धन - विद्यारूपी धन; विद्या द्वारा अर्जित धन; —धर - एक देवयोनि; जादूगर; —पीठ - शिक्षा का केंद्र; बड़ा विद्यालय; —मंदिर - विद्यालय; —मठ - महाविद्यालय; साधुओं का विद्यालय; —मद - विद्या का घमंड; —लाभ - विद्या की प्राप्ति; —वंश - किसी विद्या के अध्यापकों की सूची; —वान - विद्वान; —विक्रय - धन लेकर पढ़ाना; —विहीन - मूर्ख; —वृद्ध - विद्या या ज्ञान में बढ़ा हुआ; —व्यवसाय, व्यसन - अध्ययन; —व्रत - गुरु के पास रहकर विद्योपार्जन करना; —हीन - मूर्ख; अशिक्षित; **मु०** —झूठी पड़ना - धूर्तता का नाकामयाब होना; —फलना - विद्या का सफल होना।

**विद्याभिमान** - पु० [सं] विद्वान होने की मनोवृत्ति।

**विद्याभ्यास** - पु० [सं] विद्याध्ययन।

**विद्यारंभ** - पु० [सं] पढ़ाई आरंभ करने का संस्कार।

**विद्यार्जन** - पु० [सं] ज्ञान या शिक्षा द्वारा कुछ प्राप्त करना; विद्या की प्राप्ति।

**विद्यार्थी** - 1. पु० [सं] विद्या पढ़नेवाला; छात्र; 2. वि० विद्या का इच्छुक।

**विद्यालय** - पु० [सं] अध्ययन करने का स्थान, विद्यागृह।

**विद्यु** - स्त्री० [हिं] बिजली।

**विद्युच्चालक** - वि० [सं] वह पदार्थ जिसके एक सिरे से स्पर्श होते ही बिजली दूसरे सिरे तक चली जाय (ताबा आदि)।

**विद्युज्ज्वाला** - स्त्री० [सं] बिजली की चमक।

**विद्युत्** - 1. स्त्री० [सं] बिजली; ऊषा; वज्र; 2. पु० एक समाधि; एक राक्षस; 3. वि० निष्प्रभ; बहुत चमकीला; **यौ०** —कंप - बिजली का चमकना; —पात - बिजली का गिरना, वज्रपात; —प्रभ - बिजली की तरह चमकनेवाला; —प्रिय - काँसा।

**विद्युल्लता** - स्त्री० [सं] बिजली की टेढ़ी मेढ़ी रेखा।

**विद्युल्लेखा** - स्त्री० [सं] बिजली की लकीर।

**विद्योत** - वि० [सं] चमकनेवाला।

**विद्योतक, विद्योती** - वि० [स] प्रकाशमान करनेवाला।

**विद्योतन** - 1. पु० [सं] बिजली; 2. वि० चमकानेवाला।

**विद्योपार्जन** - पु० [सं] विद्या प्राप्त करना, ज्ञानार्जन ।

**विद्रव, विद्राव** - पु० [सं] बहना ; पिघलना ; आतंक , पलायन ; निंदा ; बुद्धि ; डर ; युद्ध ।

**विद्रावित** - वि० [सं] तितर-बितर किया हुआ ; पिघलाया हुआ ; भगाया हुआ ।

**विद्रुम** - 1. पु० [सं] प्रवाल, मूँगा ; मुक्ताफल ; कोपल ; 2. वि० वृक्षरहित ।

**विद्रोह** - पु० [सं] उपद्रव ; क्रांति, सरकार को उलटने के लिए किया जानेवाला बलवा ; हानि पहुँचाने के विचार से किया हुआ कार्य ।

**विद्रोही** - वि० [सं] क्रांतिकारी ; द्वेष या विद्रोह करनेवाला ।

**विद्वज्जन** - पु० [सं] ऋषि ; चतुर आदमी ; विद्वान ।

**विद्वत्कल्प** - वि० [सं] कम पढ़ा-लिखा ।

**विद्वत्ता** - स्त्री० [सं] पांडित्य ; ज्ञान ।

**विद्वान** - 1. वि० [सं] अत्यधिक शिक्षित ; तत्त्वज्ञ ; विद्या-विशिष्ट ; 2. पु० पंडित ; चतुर आदमी ।

**विद्विट्, विद्विष** - 1. पु० [सं] शत्रु ; 2. वि० द्वेष या शत्रुता रखनेवाला ।

**विद्वेष** - पु० [सं] घृणा ; शत्रुता ।

**विद्वेषी** - 1. वि० [सं] विद्वेष करनेवाला ; 2. पु० शत्रु ।

**विधंस** - 1. वि० [हिं] नष्ट ; 2. पु० विध्वंस ।

**विध** - पु० - [सं] विधि, प्रकार ; तरीक़ा ; ऋद्धि ; वेधन ; हाथी का चारा ।

**विधन** - वि० [सं] दरिद्र ।

**विधना** - 1. स्त्री० [हिं] अदृष्ट, भाग्य ; 2. पु० दैव, ब्रह्मा ; 3. स० प्राप्त करना ; फँसाना ; बेधना ; 4. अ० फँसाया जाना ; बेधा जाना ।

**विधमन** - 1. पु० [सं] उड़ाना ; बुझाना ; हवा पहुँचाकर सुलगाना, धौंकना ; 2. वि० हवा करके उड़ाने या बुझानेवाला ।

**विधर** - अव्य० [हिं] उधर, उस तरफ़ ।

**विधर्म** - 1. वि० [सं] अन्याय्य, बुरा ; निर्गुण ; 2. पु० अन्याय ; परधर्म ।

**विधर्मक, निधर्मिक** - वि० [सं] धर्मविरुद्ध आचरण करनेवाला ; परधर्म माननेवाला ।

**विधर्मी** - पु० [सं] परधर्म का अनुयायी ; स्वधर्म के विरुद्ध आचरण करनेवाला ; विभिन्न प्रकार का ।

**विधवा** - स्त्री० [सं] वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो, बेवा ; यौ० —विवाह - विधवा से विवाह करना ।

**विधवापन** - पु० [हिं] रँडापा, वैधव्य ।

**विधवाश्रम** - पु० [सं] वह स्थान जहाँ विधवाओं के भरण-पोषण आदि का प्रबंध होता है ।

**विधा** - 1. स्त्री० [सं] विभाग ; प्रकार ; ऋद्धि ; कर्म ; उच्चारण ; हाथी आदि का चारा ; 2. पु० ब्रह्मा ।

**विधाता** - 1. स्त्री० [सं] मदिरा ; 2. वि० विभाग करनेवाला ; व्यवस्था करनेवाला ; 3. पु० ब्रह्मा ; विभाग या व्यवस्था करनेवाला ; देनेवाला ; बनानेवाला ; प्रारब्ध ; विश्वकर्मा ।

**विधात्री** - स्त्री० [सं] जननी ; पीपल ; रचने या विधान करनेवाली ; व्यवस्था करनेवाली ।

**विधान** - पु० [सं] आदेश ; कार्य का आयोजन ; काम करने का ढंग ; नियंत्रण ; प्रबंध ; निर्माण ; शत्रुतापूर्ण आचरण ; संपादन ; साधन ; क़ानून ; प्रयोग ; प्रेरणा ; प्राप्ति ; धन-संपत्ति ; रस्म ; राज्य या शासन द्वारा किसी विशेष विषय में बनाये गये नियमों का समूह ;

**यौ०** —परिषत्, सभा - व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए क़ानून बनानेवाली परिषद (legislative assembly); —युक्त - विधान के अनुकूल।

**विधायक** - 1. वि० [सं] कानून बनानेवाला; कार्य करनेवाला; बनानेवाला; रचनात्मक; व्यवस्था देनेवाला; सुपुर्द करनेवाला; 2. पु० विधाता; संस्थापक।

**विधारण** - 1. पु० [सं] रोकना; वहन करना; सँभालना; 2. वि० पृथक करनेवाला।

**विधि** - 1. स्त्री० [सं] कार्य करने का ढंग; प्रयोग; कार्य; भाग्य; आचार-व्यवहार; शास्त्र द्वारा निश्चित कर्तव्य-निर्देश; क्रिया का वह रूप जिसमें काम करने का आदेश दिया जाता है; 2. पु० अग्नि; ब्रह्मा; समय; पूजा करनेवाला; हाथी आदि का चारा; **यौ०** —ज्ञ - विधि-विधान जाननेवाला; —निषेध - कोई काम करने या न करने का शास्त्रीय निर्देश; —पूर्वक, वत् - नियमानुसार; —प्रयोग - नियम का प्रयोग; —बोधित - शास्त्रविहित; —योग - नियम-पालन; भाग्य का प्रभाव; —लोप - नियमोल्लंघन; —वशात् - दैवयोग से, भाग्यवशात्; —विपर्यय - भाग्य की प्रतिकूलता; —विहित - शास्त्रानुमोदित; नियम या शास्त्र के अनुसार प्रतिष्ठापित; —हीन - अनियमित; अविहित; **मु०** —बैठना - मेल खाना।

**विधु** - पु० [सं] चंद्रमा; कपूर; ब्रह्मा; युद्ध; जलस्नान; वायु; समय; **यौ०** —क्षय - चंद्रमा का क्षीण होना; कृष्णपक्ष; —मंडल - चंद्रमंडल; —मुखी, वदनी - चंद्रमा के समान मुखवाली स्त्री, सुंदरी स्त्री।

**विधुर** - 1. वि० [सं] दुखी; अभावग्रस्त, घबड़ाया हुआ, अशक्त; एकाकी; वंचित; विरोधी; विमूढ़; वियोगी; 2. पु० कष्ट; मोक्ष; भय; शत्रु; वियोग; वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गयी हो।

**विधुरा** - स्त्री० [सं] कान के पास की एक ग्रंथि; दही की लस्सी।

**विधूत** - वि० [सं] काँपता हुआ; अस्थिर; कँपाया या हिलाया हुआ; निकाला हुआ; परित्यक्त; दूर किया हुआ; **यौ०** —कल्मष - पापमुक्त; —केश - बिखरे हुए बालोंवाला।

**विधूम** - वि [सं] धूमरहित।

**विधेय** - 1. वि० [सं] करने योग्य; अधीन; प्राप्य; देने योग्य; प्रज्वलित करने योग्य; प्रदर्शित करने योग्य; विनम्र; स्थापना के योग्य; शासित करने योग्य; 2. पु० आवश्यकता; कर्तव्य कर्म; किसीके संबंध में कहे हुए वाक्य का अंश; **यौ०** —वर्ती - दूसरे की आज्ञा में रहनेवाला।

**विधेयता** - स्त्री० [सं] अधीनता; विधि के योग्य होना।

**विधौत** - वि० [सं] धोकर साफ़ किया हुआ।

**विध्वंस** - पु० [सं] अपमान; घृणा; विनाश; वैमनस्य; वैर।

**विध्वंसक** - पु० [सं] नाशक; लंपट; विनाशक रणपोत।

**विध्वंसन** - 1. पु० [सं] नाश या बरबाद करना; अपमान करना; 2. वि० नाश करनेवाला; सतीत्व नष्ट करनेवाला।

**विध्वंसित** - वि० [सं] नष्ट किया हुआ; टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

**विध्वंसी** - वि० [सं] नष्ट होनेवाला ; नाशक ; शत्रु ।

**विध्वस्त** - वि० [सं] तितर-बितर किया हुआ ; नष्ट या बरबाद किया हुआ ; ग्रस्त (ज्यो०) ।

**विन** - 1. सर्व० [हिं] विभक्ति लगने पर बना हुआ 'वह' का बहु० ; 2. अव्य० विना, बग़ैर ।

**विनत** - वि० [सं] झुका हुआ ; खिन्न ; शिष्ट ; विनम्र ; हतोत्साह ; **यौ०** —काय - झुके हुए शरीरवाला ।

**विनति** - स्त्री० [सं] झुकाव ; नम्रता ; दमन ; प्रार्थना ।

**विनती** - स्त्री० [हिं] प्रार्थना ।

**विनद्ध** - वि० [सं] जुड़ा या मिला हुआ ; बंधनमुक्त किया हुआ ।

**विनमन** - पु० [सं] झुकना ; झुकाना ।

**विनमित** - वि० [सं] झुकाया हुआ ; झुका हुआ ।

**विनम्र** - वि० [सं] झुका हुआ ; विनीत ; सुशील ।

**विनय** - 1. पु० [सं] व्यवसायी ; जितेन्द्रिय ; 2. स्त्री० आचरण ; अनुशासन ; नम्रता ; भद्रता ; मार्ग-प्रदर्शन ; शिष्टता ; शासन ; प्रार्थना ; **यौ०** —कर्म - शिक्षण ; —ग्राही - अनुशासन-संबंधी नियमों का पालन करनेवाला ; —धर - पुरोहित ; —वान, शील - विनम्र, शिष्ट ।

**विनयावनत, विनयी** - वि० [सं] विनम्र ।

**विनवना** - स० [हिं] अनुरोध करना ; प्रार्थना ।

**विनशन** - पु० [सं] नाश ; लोप ।

**विनशना** - अ० [हिं] नष्ट होना ।

**विनश्वर** - पु० [सं] नाशवान ; अनित्य ।

**विनष्ट** - 1. वि० [सं] ध्वस्त ; बिगड़ा हुआ ; मरा हुआ ; विकृत ; विलुप्त ; भ्रष्ट ; 2. पु० शव ।

**विनसना** - अ० [हिं] नष्ट होना ।

**विना** - अव्य० [सं] बग़ैर, अभाव में, न होने पर; **यौ०** —भव, भाव - पृथक होना, पार्थक्य ; —वास - अपने प्रिय से पृथक निवास करना ।

**विनाथ** - वि० [सं] अनाथ, अरक्षित ।

**विनादित** - वि० [सं] शब्दायमान किया हुआ ।

**विनादी** - वि० [सं] गरजने या शोर करनेवाला ।

**विनायक** - 1. वि० [सं] ले जानेवाला ; हटानेवाला ; 2. पु० गणेश ; आचार्य ; नायक ; **यौ०** —चतुर्थी - गणेशचौथ, भाद्रशुक्ला चतुर्थी ।

**विनाल** - वि० [सं] डंठलरहित ।

**विनाश** - पु० [सं] क्षय, नाश ; लोप ; **यौ०** —धर्मा, धर्मी - क्षणभंगुर ; नश्वर ; —हेतु - मृत्यु का कारण ।

**विनाशक** - वि० [सं] नाश करनेवाला ; बिगाड़नेवाला ।

**विनाशित** - वि० [सं] नष्ट किया हुआ ।

**विनाशी** - वि० [सं] नश्वर ; नाश करनेवाला ।

**विनाशोन्मुख** - वि० [सं] नाश की ओर प्रवृत्त ; पका हुआ ।

**विनाश्य** - वि० [सं] नष्ट करने योग्य ।

**विनास, विनासक, विनासिक** - वि० [सं] नासिकाविहीन ।

**विनासना** - स० [हिं] ख़राब करना ; नष्ट करना ।

**विनिंदा** - स्त्री० [सं] निंदा ; शिकायत ।

**विनिंदित** - वि० [सं] लांछित ; जिसकी बहुत निंदा की गयी हो ।

**विनिकेत** - वि० [सं] गृहविहीन ।

**विनिकोचन** - पु० [सं] संकुचित करना (भौंहों को) ।

**विनिक्षिप्त** - वि० [सं] नीचे दबाया हुआ; फेंका हुआ।
**विनिक्षेप** - पु० [सं] उछालना; पार्थक्य; फेंकना; भेजना।
**विनिगड** - वि० [सं] जिसके पैरों में बेड़ियाँ न हों।
**विनिगमक** - वि० [सं] दो पक्षों में से किसी एक को सिद्ध करनेवाला।
**विनिगूहित** - वि० [सं] छिपाया या ढका हुआ।
**विनिग्रह** - पु० [सं] पारस्परिक विरोध; पार्थक्य; प्रतिबंध; बाधा; रुकावट; विभाजन; संयम।
**विनिद्र** - वि० [सं] निद्रारहित; उन्मीलित; खिला या फैला हुआ; जागकर बिताया हुआ।
**विनिपात** - पु० [सं] पतन; अनादर; असफलता; ध्वंस; मृत्यु, वध; संकट; यौ० —प्रतीकार - संकट से बचने का उपाय; —शंसी - विपत्ति की सूचना देनेवाला।
**विनिबंध** - पु० [सं] किसी वस्तु से संबंध या लगाव होना (बौद्ध)।
**विनिमग्न** - वि० [सं] डूबा हुआ।
**विनिमय** - पु० [सं] प्रतिदान, अदल-बदल; बंधक; वर्णपरिवर्तन।
**विनिमित्त** - वि० [सं] वास्तविक कारण-रहित।
**विनिमीलन** - पु० [सं] बंद होना; मुँदना (आँख, फूल आदि का)।
**विनिमीलित** - वि० [सं] जो बंद हो गया हो; मुँदा हुआ।
**विनिमेष, विनिमेषण** - पु० [सं] पलकों का गिरना; पलक मारना।
**विनियत** - वि० [सं] नियंत्रित; संयत।
**विनियम** - पु० [सं] नियंत्रण; रोक; शासन; संयम।
**विनियम्य** - वि० [सं] रोक-थाम करने योग्य; संयत।
**विनियुक्त** - वि० [सं] कार्य में लगाया हुआ; अर्पित; कार्य से मुक्त किया हुआ; आदिष्ट; प्रेरित।
**विनियोक्ता** - 1. वि०, 2. पु० [सं] नियुक्त करनेवाला।
**विनियोग** - पु० [सं] कार्यभार; नियुक्ति; प्रयोग; विभाग; संबंध।
**विनिर्गत** - वि० [सं] बाहर निकला हुआ; मुक्त; व्यतीत।
**विनिर्घोष** - पु० [सं] उच्च स्वर।
**विनिर्जन** - वि० [सं] जनशून्य।
**विनिर्णय** - पु० [सं] निश्चित नियम; पूर्ण निश्चय।
**विनिर्णीत** - वि० [सं] निश्चित; जिसका स्पष्ट रूप से निर्णय किया गया हो।
**विनिर्बन्ध** - पु० [सं] अध्यवसाय।
**विनिर्माण** - पु० [सं] अच्छी तरह बनाना।
**विनिर्मुक्त** - वि० [सं] छोड़ा हुआ; निकला हुआ; बंधनरहित।
**विनिर्मुक्ति** - स्त्री० [सं] छुटकारा, मुक्ति।
**विनिर्याण** - पु० [सं] प्रस्थान।
**विनिवारण** - पु० [सं] नियंत्रण; दूर रखना।
**विनिवृत्त** - वि० [सं] लौटा हुआ; लुप्त; मुक्त; समाप्त; हटा हुआ।
**विनिवृत्ति** - स्त्री० [सं] छुटकारा; विराम; अंत।
**विनिवेदन** - पु० [सं] घोषित करना।
**विनिवेदित** - वि० [सं] घोषित किया हुआ; जनाया हुआ।
**विनिवेश** - पु० [सं] आबाद होना; पुस्तकादि में उल्लेख करना; प्रवेश।
**विनीत** - 1. वि० [सं] विनयी; नम्र; जानकार; जितेन्द्रिय; फैलाया हुआ;

शिथिल ; सुंदर ; हटाया हुआ ; 2. पु० **वृषभ** ; सिखलाया हुआ घोड़ा ; व्यापारी ; **यौ०** —वेष - सादी पोशाक ।

**विनीतता** - स्त्री० [सं] नम्रता, भद्रता ।

**विनु** - अव्य० [हिं] विना ।

**विनूठा** - वि० [हिं] अजीब, अनूठा ।

**विनेता** - पु० [सं] गुरु ; नायक ; शासक ।

**विनेय** - 1. वि० [स] जो ले जाया या हटाया जाय ; जो शासित या शिक्षित किया जाय ; 2. पु० शिष्य ।

**विनोद** - पु० [सं] क्रीड़ा ; मनोरंजन ; प्रबल इच्छा ; प्रमोद ; आलिंगन-विशेष ; दूर करना ; **यौ०** —रसिक - क्रीड़ाशील ।

**विनोदी** - वि० [सं] क्रीड़ाशील ; मौजी ; दूर करनेवाला ।

**विन्यस्त** - वि० [सं] अर्पित ; जमा किया हुआ ; जमाया या जड़ा हुआ ; डाला हुआ ; प्रवृत्त किया हुआ ; रखा हुआ ; व्यवस्थित ।

**विन्यास** - पु० [सं] रखना या स्थापन करना ; अंगो की स्थिति ; जड़ना ; धारण करना ; प्रदर्शन ; फैलाना ; व्यवस्थित करना ; संग्रह ; समूह ; सुपुर्द करना ।

**विपंचक, विपंचिक** - पु० [सं] भविष्यद्-वक्ता ।

**विपंचिका, विपंची** - स्त्री० [सं] एक तरह की वीणा ; क्रीड़ा, केलि ।

**विपक्ष** - 1. पु० [सं] विरोधी पक्ष ; प्रतिद्वंद्वी ; अपवाद ; किसी बात के विरोध में कुछ कहना ; साध्यरहित पक्ष (न्याय) ; निष्पक्षता ; शत्रु ; 2. वि० निष्पक्ष ; प्रतिकूल ; पंखरहित ।

**विपक्षी** - वि० [सं] पंखरहित ; विरुद्ध पक्ष का ; शत्रु ।

**विपण** - पु० [सं] छोटा व्यापार ; बाज़ार ; विक्रय ।

**विपणन** - पु० [सं] विक्रय ; व्यापार ।

**विपणि, विपणी** - स्त्री० [सं] दूकान ; हाट ; बिक्री का माल ; बिक्री ; व्यापार ।

**विपणी** - पु० [सं] व्यापारी ।

**विपत्काल** - पु० [सं] संकट के दिन, दुर्दिन ।

**विपत्ति** - स्त्री० [सं] संकट, आफ़त ; नाश ; मृत्यु ; यातना ; **यौ०** —कर - संकट उत्पन्न ; करनेवाला ; —काल - कष्ट के दिन ; **मु०** —उठाना, झेलना - तकलीफ़ सहना ; —काटना - दुख के दिन बिताना ; —में डालना - किसीको दुख देना ; —मोल लेना - जान-बूझकर संकट में पड़ना ।

**विपथ** - पु० [सं] ग़लत रास्ता ; एक बड़ी संख्या ; भिन्न मार्ग ; **यौ०** —गति - बुरे रास्ते पर जाना ।

**विपदा** - स्त्री० [सं] विपत्ति, दुःख ।

**विपद्** - स्त्री० [सं] आफ़त ; नाश ; मृत्यु ; **यौ०** —उद्धार - संकट से छुटकारा ; —ग्रस्त - संकटापन्न ; —दशा - संकट की अवस्था ।

**विपन्न** - 1. वि० [सं] मृत ; नष्टशक्ति ; नष्ट ; संकटग्रस्त ; 2. पु० सर्प ।

**विपरिच्छिन्न** - वि० [सं] कटा हुआ ; नष्ट ।

**विपरिणाम** - पु० [सं] परिवर्तन ; प्रौढ होना ।

**विपरिणामी** - वि० [सं] जिसकी अवस्था बदलती हो, परिवर्तनशील ।

**विपरीत** - वि० [सं] उलटा ; अशुभ ; असत्य ; प्रतिकूल ; नियमविरुद्ध ; बेमेल ; भिन्न ; विरुद्ध ; **यौ०** —कर, कारक, कारी - विरुद्ध काम करनेवाला ; —गति - उलटी दिशा में जानेवाला ;

—चेता, बुद्धि, मति - जिसका दिमाग़ फिर गया हो ; —लक्षणा - व्यंग्य में उलटी बात कहना ; —वृत्ति - प्रतिकूल कार्य करनेवाला ।

**विपरीतार्थ** - वि० [सं] उलटे अर्थवाला ।

**विपर्यय** - पु० [सं] व्यतिक्रम ; अस्तित्व-रहित ; चक्कर ; परिवर्तन ; पलायन ; प्रतिकूलता ; भूल ; विनाश ; विनिमय ; विरोध ; शत्रुता ; समाप्ति ।

**विपर्यस्त** - वि० [सं] अस्त-व्यस्त ; उलटा-पलटा हुआ ; और का और समझा हुआ ; परिवर्तित ।

**विपर्यास** - पु० [सं] उलट-पलट ; परिवर्तन ; प्रतिकूलता ; मिथ्या ज्ञान ।

**विपल** - पु० [सं] समय का एक बहुत छोटा मान ।

**विपश्चित्** - 1. वि० [सं] पंडित ; सूक्ष्मदर्शी ; 2. पु० विद्वान व्यक्ति ।

**विपाक** - पु० [सं] पकना ; पकाना ; पचना ; अवस्था-परिवर्तन ; कठिनाई ; कर्म का फल ; पूर्ण दशा को प्राप्त होना ।

**विपाटन** - पु० [सं] उखाड़ने या फोड़ने की क्रिया ।

**विपाटल** - वि० [सं] बहुत लाल ; **यौ०** —नेत्र - लाल आँखोंवाला ।

**विपात** - पु० [सं] नाश ।

**विपातक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] गलाने या पिघलानेवाला ; नाश करनेवाला ।

**विपादिका** - स्त्री० [सं] बेवाई ; पहेली ।

**विपाश** - वि० [सं] बंधनरहित ।

**विपाशा** - स्त्री० [सं] व्यास नदी ।

**विपिन** - पु० [सं] जंगल ; उपवन ; **यौ०** —चर - जंगली आदमी ; पशु-पक्षी आदि ; बनचर ; —पति - सिंह ।

**विपुंसक** - वि० [सं] पौरुषहीन ।

**विपुंसी** - स्त्री० [सं] मर्दानी औरत ।

**विपुल** - 1. वि० [सं] अधिक ; गहरा ; बड़ा ; विस्तृत ; 2. पु० एक तरह की इमारत ; मेरुपर्वत ; सम्मानित व्यक्ति, हिमालय ; **यौ०** —छाय - घनी छाया-वाला ; —द्रव्य - धनी ; —प्रज्ञ, बुद्धि, मति - विशेष बुद्धिमान, —रस - ईख ।

**विपुलता** - स्त्री० } [सं] आधिक्य ; विस्तार ।
**विपुलत्व** - पु० }

**विपुला** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ; आर्या छंद के तीन भेदों में से एक ।

**विपुष्ट** - वि० [सं] जो पुष्ट न हो ।

**विपुष्टि** - स्त्री० [सं] अभ्युदय ।

**विपूयक** - पु० [सं] सड़ा हुआ मुर्दा ; सड़ायँध ।

**विपोहना** - स० [हिं] छेदना ; पोतना, संहार करना ।

**विप्र** - पु० [सं] ब्राह्मण ; चतुर आदमी ; पीपल का वृक्ष ; सिरिस का वृक्ष, चंद्रमा ; चतुर आदमी ; स्तुतिपाठक ; **यौ०** —काष्ठ - कपास का पौधा ; —चरण, पद - विष्णु के हृदय पर अंकित भृगु का चरण-चिन्ह ।

**विप्रकर्ष** - पु० [सं] खींच ले जाना ; फ़ासला ; भेद ।

**विप्रकृष्ट** - वि० [सं] दूर किया हुआ ; दूर-वर्ती ; फैलाया हुआ ; बहुत दूर ।

**विप्रगीत** - वि० [सं] जिसके सम्बन्ध में मतभिन्नता हो (जैन) ।

**विप्रतिपत्ति** - स्त्री० [सं] दो नियमों का परस्पर विरुद्ध होना ; विरोध ; अपकीर्ति ; अभिज्ञता ; घबड़ाहट ; पारस्परिक सम्बन्ध ; भ्रान्त धारणा ; मतभिन्नता ; विरोधी भाव ; सन्देह ।

**विप्रतिपन्न** - वि० [सं] ग़लत ; अभिज्ञ ; जिसका विरोध किया गया हो ; निषिद्ध ;

परस्पर विरुद्ध; परस्पर सम्बद्ध; हतबुद्धि।

**विप्रतिषेध** - पु० [सं] निमन्त्रण; दो कथनों का परस्पर विरोध; निषेध।

**विप्रतीप** - वि० [सं] उलटा।

**विप्रत्यय** - पु० [स] अविश्वास।

**विप्रथित** - वि० [सं] प्रसिद्ध।

**विप्रनष्ट** - वि० [स] जो पूर्णतया नष्ट हो गया हो; बेकार; लुप्त।

**विप्रबुद्ध** - वि० [सं] जागरूक; ज्ञानी।

**विप्रमत्त** - वि० [सं] प्रमादरहित।

**विप्रमोक्ष** - पु० [सं] बन्धन से छुटकारा।

**विप्रयाण** - पु० [स] चल देना; पलायन।

**विप्रयुक्त** - वि० [सं] अलग किया हुआ; मुक्त किया हुआ; वंचित; विमुक्त।

**विप्रयोग** - पु० [सं] वियोग; अभाव; कलह; योग्य होना।

**विप्रलंभ** - पु० [सं] प्रेमियो का वियोग; छल; छला जाना; निराश होना; कलह; नैराश्य।

**विप्रलंभक** - वि० [स] धोखा देनेवाला।

**विप्रलब्ध** - वि० [स] क्षतिग्रस्त; छला हुआ; निराश; वंचित; विरही।

**विप्रलय** - पु० [स] पूर्णतः विलीन हो जाना; विलोप।

**विप्रलाप** - 1. पु० [सं] परस्पर खंडन-मंडन करना; बेमतलब बकना; वचन का उल्लंघन; विवाद; 2. वि० जिसमें सारहीन बात न हो।

**विप्रलापी** - वि० [स] बकवादी।

**विप्रलुप्त** - वि० [स] लूटा हुआ; जिसमें बाधा डाली गयी हो।

**विप्रलून** - वि० [सं] कटा या तोड़ा हुआ; एकत्र किया हुआ।

**विप्रश्न** - पु० [स] अदृष्ट-संबधी प्रश्न।

**विप्रश्निक** - पु० [सं] ज्योतिषी।

**विप्रिय** - 1. पु० [स] अप्रिय कार्य; अपराध; 2. वि० अप्रिय; आनंद-विहीन।

**विप्रोषित** - वि० [सं] निष्कासित; परदेश में रहनेवाला।

**विप्लव** - 1. पु० [सं] क्रांति; अशांति; उपद्रव; विद्रोह; अशुभ चिन्ह; आईने पर का धब्बा; अपहरण; अत्याचार; क्षति; कष्ट; हल्ला-गुल्ला; विभिन्न दिशाओं में बहना; विरोध; बरबादी; 2. वि० पोतरहित।

**विप्लवी** - वि० [स] क्रांति करनेवाला, अस्थायी।

**विप्लावक** - पु० [स] क्रांतिकारी; फैलानेवाला; बाढ़ लानेवाला।

**विप्लुत** - वि० [सं] अस्त व्यस्त; घबड़ाया हुआ; नष्टभ्रष्ट; बिखरा हुआ; भटका हुआ; आचारहीन; उत्तेजित; जिसका उपचार ग़लत ढंग से हुआ हो।

**विप्सा** - स्त्री० [सं] क्रम; एक ही शब्द बार-बार कहना।

**विफल** - वि० [सं] फलहीन; असफल; अंडहीन; निराश; व्यर्थ; अप्रभावकर।

**विफ़ाक़** - पु० [अ] अनुकूलता; मित्रता; संघ; यौ० विफ़ाक़े-हिन्द - भारतीय संघ।

**विबध** - पु० [स] एक तरह की गोल पट्टी; कोष्ठबद्धता; घेर लेना।

**विबंधन** - 1. वि० [सं] क़ब्ज करनेवाला; 2. पु० दोनों ओर से बाँधने की क्रिया।

**विबंधु** - वि० [सं] बंधुहीन; असहाय।

**विबद्ध** - वि० [स] बँधा हुआ; बद्ध (कोष्ठ)।

**विबाध** - 1. पु० [सं] हटाना; 2. वि० बाधारहित।

**विबुद्ध** - वि० [सं] चतुर; जाना हुआ; बेहोश; विकसित।

**विबुध** - 1. वि० [सं] विद्वानो से रहित ; 2. पु० विद्वान ; बुद्धिमान ; चंद्रमा ; देवता ; **यौ०** —गुरु - बृहस्पति ; —नदी - आकाशगंगा ; —तरु - कल्पवृक्ष ; —रिपु, शत्रु - दैत्य ; —धेनु - कामधेनु ; —पति - इंद्र ; —मति - चतुर ; —वन - नदनवन ; —वैद्य - अश्विनीकुमार ।

**विबोध** - 1. पु० [सं] अनुभूति ; अनवधानता ; उद्देश्यसिद्धि में गुणो या शक्ति का व्यक्त होना ; जागरण ; प्रज्ञा ; 2. वि० अनवधान ।

**विबोधन** - पु० [सं] जगाना ; जागना ; तसल्ली देना ; समझाना ।

**विभंग** - 1. पु० [सं] झुकाना ; झुर्री ; छल ; टूटना ; तरंग ; बाधा ; भंग ; प्रकट होना ; मिथ्या ज्ञान ; विभाग ; सोपान ; 2. वि० चपल ।

**विभंगी** - वि० [सं] कंपनशील ; झुर्रियोंवाला ।

**विभंगुर** - वि० [सं] अस्थिर ।

**विभक्त** - 1. वि० [सं] अलंकृत ; अलग किया हुआ ; भिन्न प्रकार का ; नापा हुआ ; अपना हिस्सा पाया हुआ ; विभाग किया हुआ ; 2. पु० एकांतवास ; कार्तिकेय ; पार्थक्य ; (विभक्त) संपत्ति ; हिस्सा ।

**विभक्ता** - वि० [सं] व्यवस्था करनेवाला ।

**विभक्ति** - स्त्री० [सं] उत्तराधिकार में प्राप्त हिस्सा ; पार्थक्य ; बँटवारा ; विभाग ; कारक का चिन्ह (व्या०) ।

**विभजन** - पु० [सं] पार्थक्य ; भेद ।

**विभज्य** - वि० [सं] जिसका भेद दिखलाना हो ; जिसका विभाग करना हो ।

**विभव** - 1. वि० [सं] धनी ; शक्तिशाली ; 2. पु० उच्च पद ; उदाराशयता ; ऐश्वर्य ; प्रभाव ; मोक्ष ; विकास ; महत्ता ; शक्ति ; सर्वव्यापकता ; एक संवत्सर ; **यौ०** —क्षय - ऐश्वर्यनाश ; —मद - ऐश्वर्य का मद ; —वान - धनी ; शक्तिशाली ।

**विभाँति** - 1. स्त्री० [हिं] भेद, प्रकार ; 2. वि० कई तरह का ; 2. अव्य० कई तरह से ।

**विभा** - स्त्री० [सं] किरण ; प्रभा ; सौन्दर्य ; **यौ०** —कर - अग्नि ; आक ; सूर्य ; चंद्रमा का सूर्य द्वारा प्रकाशित अंश ; —वसु - अग्नि ; चंद्रमा ; सूर्य ; आक ।

**विभाग** - पु० [सं] किसी वस्तु का कोई भाग ; अध्याय ; पैतृक संपत्ति का हिस्सा ; पार्थक्य ; बँटवारा ; महकमा ; व्यवस्था ; **यौ०** —कल्पना - हिस्से बैठाना ; —धर्म - बँटवारा-संबन्धी कानून ; —पत्रिका - वह दस्तावेज़ जिसमें बँटवारे का ब्योरा दिया गया हो ; —भाक - पैतृक संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी ; —रेखा - सीमारेखा ।

**विभागतः** - अव्य० [सं] हिस्से के मुताबिक़ ।

**विभागशः** - अव्य० [सं] हिस्से के हिसाब से ।

**विभागी** - पु० [सं] बँटवारा करनेवाला ; हिस्सेदार ।

**विभाजक** - 1. पु० [सं] बाँटनेवाला ; भाजक संख्या ; 2. वि० बाँटनेवाला ; टुकड़े करनेवाला ।

**विभाजन** - पु० [सं] बँटवाना; विभाग करना ।

**विभाजित** - वि० [सं] बँटा या बँटवाया हुआ ।

**विभाज्य** - 1. वि० [सं] बाँटने या भाग करने योग्य ; 2. पु० वह संख्या जिसमें किसी संख्या का भाग दिया जाय ।

**विभात** - 1. पु० [सं] सवेरा ; 2. वि० चमका हुआ ।

**विभाति** - स्त्री० [सं] चमक ; शोभा ।

**विभाना** - अ० [हिं] चमकना ; शोभा देना ।

**विभारना** - अ० [हिं] चमकना ।

**विभाव** - पु० [सं] भाव के तीन अंगो में से एक ; वह वस्तु या अवस्था जो मन में किसी भाव को उत्पन्न या उद्दीप्त करे ; मित्र ; शिव ।

**विभावरी** - स्त्री० [सं] रात ; तारोंवाली रात ; चालबाज़ स्त्री ; कुटनी ; वेश्या ; हल्दी ।

**विभाषा** - स्त्री० [सं] चुनाव, पसंद की स्वतंत्रता ; प्राकृत भाषाओं का एक वर्ग ; व्याकरण में अपवाद और विधान दोनों का एक स्थान ; एक रागिनी ; वृहत्कारिका (बौद्ध) ।

**विभाषित** - वि० [सं] वैकल्पिक ।

**विभिन्न** - 1. वि० [सं] कई तरह का ; मिश्रित ; काटा या तोड़ा हुआ ; आहत ; घबड़ाया हुआ ; हताश ; भगाया हुआ ; भेदभावयुक्त ; विरोधी ; 2. पु० शिव ।

**विभिन्नता** - स्त्री० [सं] अलगाव ।

**विभीषण** - 1. वि० [सं] अति भयानक ; देशद्रोही ; 2. पु० रावण का एक भाई ; गर्भपात ; डराने की क्रिया या साधन ।

**विभीषिका** - स्त्री० [स] आतंक ; डरवाने का साधन ; भयंकर कांड ; भय-प्रदर्शन ।

**विभु** - 1. वि० [सं] सर्वव्यापक ; जितेन्द्रिय ; योग्य ; कठिन ; महान ; विस्तृत ; स्थायी ; स्थिर ; 2. पु० आकाश ; अवकाश ; काल ; आत्मा ; स्वामी ; ब्रह्मा ; विष्णु ; शिव ; बुद्ध ; चंद्र ।

**विभुता** - स्त्री० } [सं] ऐश्वर्य ; व्यापकता ;
**विभुत्व** - पु० } शक्ति ; स्वामित्व ।

**विभूति** - स्त्री० [सं] अभ्युदय ; ऐश्वर्य ; अलौकिक शक्ति ; उच्च पद ; समृद्धि ; प्राचुर्य ; धन ; शक्ति ; शक्ति-प्रदर्शन ; प्रभुता ; लक्ष्मी ।

**विभूषण** - 1. वि० [सं] अलंकृत करने-वाला ; 2. पु० कांति ; अलंकार ; सजाना ; सौंदर्य ।

**विभूषित** - 1. वि० [सं] अलंकृत ; गुणादि से युक्त ; शोभित ; सजाया हुआ ; 2. पु० आभूषण ।

**विभेंटन** - पु० [हिं] आलिंगन ।

**विभेद** - पु० [सं] विभाग करना ; तोड़ना या खंडित करना ; अंतर ; आहत करना ; छेदना ; पार्थक्य ; परिवर्तन ; फूट ; प्रकार ; बाधा ; मतभिन्नता ; संकोच ।

**विभेदक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] अंतर डालनेवाला ; काटने या छेदनेवाला ; भेद दिखलानेवाला ।

**विभेद्य** - वि० [सं] काटने या छेद करने योग्य ।

**विभोर** - वि० [सं] तल्लीन ।

**विभ्रंश** - पु० [सं] अतिसार ; कगार ; क्षय ; पतन ; वंचित होना ।

**विभ्रम** - पु० [सं] इधर-उधर भ्रमण करना ; चक्कर खाना ; अस्थिरता ; उग्रता ; घबड़ाहट ; प्रणयकेलि ; जल्दबाज़ी ; भ्रांति ; वहम ; लुढकना ; शोभा ; एक हाव (साहि०) ।

**विभ्रांत** - 1. वि० [सं] भ्रम में पड़ा हुआ ; घबड़ाया हुआ ; घूमा हुआ ; चक्कर खाता हुआ ; चारों ओर फैला हुआ ; **यौ०**—नयन - तिरछी चितवनवाला ; —मना - हतबुद्धि ; —शील - बिगड़े दिमाग़वाला ; 2. पु० बंदर ; सूर्य या चंद्रमा का मंडल ।

**विमत** - 1. वि० [सं] भिन्न या विरुद्ध मत का ; उपेक्षित ; संदिग्ध ; 2. पु० विपरीत मत ; शत्रु ।

**विमति** - 1. वि० [सं] मूर्ख, भिन्न या विपरीत मत का; 2. स्त्री० नापसंदगी; मतभेद; मूर्खता।

**विमत्त** - वि० [सं] मदयुक्त; मस्त (हाथी)।

**विमन** - वि० [हिं] उदास; अनमना।

**विमनस्क** - वि० [सं] अधीर; उदास; व्याकुल।

**विमय** - पु० [सं] विनिमय।

**विमर्द** - पु० [सं] रौंदना; रगड़ना; युद्ध; छेड़छाड़; क्लांति; खग्रास; बाधा; संपर्क; नाश।

**विमर्श** - पु० [सं] समीक्षा; परीक्षण; ज्ञान; तर्क; विवेचन; यौ० —वादी - तर्क करनेवाला।

**विमर्शी** - वि० [सं] विचार करनेवाला; समीक्षक।

**विमर्ष** - पु० [सं] आलोचना; उद्वेग; क्षोभ; विचारणा; व्याकुलता।

**विमल** - 1. वि० [सं] निर्दोष; विशुद्ध; साफ़; श्वेत; पारदर्शक; सुंदर; स्पष्ट; 2. पु० एक अस्त्र-संबंधी मंत्र; एक उपधातु; अभ्रक; पद्मकाष्ठ; सेंधा नमक।

**विमांस** - पु० [सं] अखाद्य मांस (कुत्ते आदि का)।

**विमाता** - स्त्री० [सं] सौतेली माँ।

**विमान** - 1. वि० [सं] असम्मानित; 2. पु० असम्मान; वायुयान; देव-मंदिर; राजप्रासाद; सजी हुई अरथी; सात मंज़िलोंवाला मकान; एक तरह की मीनार; कुंज; अश्व; पोत; फैलाव; यौ० —चालक - वायुयान चलानेवाला।

**विमानना** - स्त्री० [स] अनादर।

**विमार्ग** - 1. पु० [सं] कुमार्ग; झाड़ना; झाड़ू; 2. वि० कुमार्ग पर जानेवाला; यौ० —दृष्टि - बुरे विषयों की ओर दृष्टिपात करनेवाला।

**विमार्गण** - पु० [सं] किसी चीज़ की तलाश करना।

**विमार्जन** - पु० [सं] धोना; पवित्र करना।

**विमिश्र** - 1. वि० [सं] मिला हुआ; जिसमें कई तरह की चीज़ें मिली हों; 2. पु० सूद के साथ मूलधन।

**विमुक्त** - वि० [सं] मुक्त किया हुआ; वंचित; परित्यक्त; फेंका या चलाया हुआ; बरी किया हुआ; बचा हुआ; स्वतंत्र।

**विमुक्ति** - स्त्री० [सं] रिहाई; पार्थक्य; मोक्ष; यौ० —पथ - मोक्ष का मार्ग।

**विमुख** - वि० [सं] विरत; प्रतिकूल; उदासीन; बहिर्मुख; वंचित; मुखहीन; परहेज़गार; हताश।

**विमुग्ध** - वि० [सं] घबड़ाया हुआ; भीत, भ्रम में पड़ा हुआ; मस्त; मोहित।

**विमुद** - वि० [सं] खिन्न।

**विमूढ़** - वि० [सं] मूर्ख; चतुर; बेसुध; घबड़ाया हुआ; मोहित; यौ० —चेता, धी, मना - मूर्ख; नासमझ; —भाव - बेसुध होने की अवस्था; —संज्ञ - घबड़ाया या चकराया हुआ।

**विमूर्त** - वि० [सं] जमा हुआ; जो ठोस हो गया हो।

**विमूर्धज** - वि० [सं] खल्वाट, गंजा।

**विमृश** - पु० [सं] सोच विचार; विवेचन।

**विमृष्ट** - वि० [सं] आलोचित; झुका हुआ, रगड़ा हुआ; विवेचित, विचारित।

**विमोक्ष** - पु० [सं] छुटकारा; आज़ाद करना; ग्रहण का अंत; निर्वाण, मुक्ति।

**विमोघ** - वि० [सं] निष्फल; अमोघ।

**विमोचक** - वि० [सं] गिरानेवाला ; छोड़नेवाला ; मुक्त करनेवाला ।

**विमोचन** - पु० [सं] दूर करना ; मुक्त करना ; निकालना ; फेंकना ; गिराना ; शिव ।

**विमोचना** - स० [हिं] गिराना ; छोड़ना ; बंधनमुक्त करना ।

**विमोचित** - वि० [स] मुक्त किया हुआ ; मुक्त ।

**विमोह** - पु० [सं] अज्ञान ; आसक्ति ; भ्रम ; मतिभ्रंश ।

**विमोहक** - वि० [सं] भ्रम में डालनेवाला ; लुभानेवाला ।

**विमोहन** - पु० [सं] आकुल करने की क्रिया ; उच्चाटन ; भ्रम ; लुभाना ।

**विमोहना** - 1. अ० [हिं] धोखा खाना ; मुग्ध होना ; 2. स० प्रभावित कर वशीभूत करना ; भ्रांत करना ; लुभाना ।

**विमोहित** - वि० [सं] बेसुध ; मुग्ध ; मूर्छाग्रस्त ; वश में किया हुआ ।

**विमोही** - वि० [सं] अचेत करनेवाला ; भ्रम में डालनेवाला ; मुग्ध करनेवाला ; मोहरहित ।

**विमौट** - पु० [हिं] बाँबी ।

**वियत्** - पु० [सं] आकाश ; वायुमंडल ; गतिशील ; **यौ०** —पताका - बिजली ।

**वियुक्त** - वि० [सं] अलग किया हुआ ; अभावग्रस्त ; जुदा ; रहित ।

**वियुत** - वि० [सं] वियुक्त ।

**वियूथ** - वि० [सं] यूथ-भ्रष्ट, जो अपने दल से अलग हो गया हो ।

**वियोग** - पु० [सं] अभाव ; छुटकारा ; घटाव ; पार्थक्य ; विच्छेद ; विरह ।

**वियोगान्त** - वि० [सं] दुःखान्त (नाटक आदि, ट्रेजेडी ) ।

**वियोगावह** - वि० [सं] विच्छेद करनेवाला ।

**वियोगिनी** - स्त्री [सं] प्रेमी या पति से बिछुड़ी हुई स्त्री ।

**वियोगी** - 1. पु० [सं] विरही पुरुष ; चक्रवाक ; 2. वि० प्रिया से बिछुड़ा हुआ ।

**वियोजक** - पु० [सं] घटायी जानेवाली छोटी संख्या ।

**वियोजन** - पु० [सं] जुदाई ; पृथक करना ।

**विरंच** - पु० [सं] ब्रह्मा ।

**विरक्त** - वि० [सं] उदासीन ; खिन्न ; अनुरक्त ; अनासक्त ; जिसके रंग या स्वभाव आदि में परिवर्तन हो गया हो ।

**विरक्ति** - स्त्री० [सं] अनासक्ति ; उदासीनता ; खिन्नता ; रंग या भाव आदि का परिवर्तन ; विराग ।

**विरचना** - 1. स० [हिं] निर्माण करना ; 2. अ० उदासीन होना ; विरक्त होना ।

**विरचित** - वि० [सं] निर्मित ; धारण किया हुआ ; पूरा किया हुआ ; रचित ; लिखित ; कथित ।

**विरज** - वि० [सं] धूलिरहित ; विरक्त ; **यौ०** —तमा - तमोगुण से रहित, सत्त्वगुण से युक्त ।

**विरट** - पु० [सं] कंधा ; एक तरह का काला अगर ।

**विरत** - वि० [सं] निवृत्त ; विरक्त ; जिसका अंत हो गया हो ; संलग्न ।

**विरति** - स्त्री० [सं] मन का हट जाना ; विराग ; विराम ; अंत ।

**विरथ** - वि० [सं] रथरहित ।

**विरथ्या** - स्त्री० [सं] बुरा रास्ता ।

**विरद** - 1. पु० [हिं] कीर्ति ; प्रसिद्धि ; 2. वि० [सं] दंतहीन ।

**विरदावली** - स्त्री० [हिं] कीर्तिकथा ।

**विरम** - पु० [सं] त्याग ; समाप्ति ; सूर्यास्त ।

**विरमण** - पु० [सं] ठहरना ; त्याग करना ; रमना ; हाथ खींच लेना ।

**विरमना** - अ० [हिं] ठहरना ; मन लगाना ; देर लगाना ; मुग्ध होकर रुक जाना ।

**विरल** - 1. वि० [सं] जो घना न हो ; कम मिलनेवाला ; ढीला ; थोड़ा ; दूरवर्ती ; पतला ; 2. पु० दही ।

**विरस** - 1. वि० [सं] नीरस ; अप्रिय ; कष्टकर ; जी उबानेवाला ; निष्ठुर ; स्वादहीन ; 2. पु० कष्ट ; काव्य के रस का भंग होना ।

**विरसा** - पु० [अ] मृत व्यक्ति की संपत्ति ।

**विरह** - पु० [सं] जुदाई ; अभाव ; अविद्यमानता ; परित्याग ; वियोग में अनुभूत होनेवाला अनुराग ; **यौ०** —जनित - वियोग से उत्पन्न ; —ज्वर - विरहजन्य ताप ; —विरस - विरह का ख्याल होने पर कष्ट देनेवाला ।

**विरहागि** - स्त्री० [हिं] विरहानल ।

**विरहानल** - पु० [सं] विरह की अग्नि ।

**विरहिणी** - स्त्री० [स] पति या प्रिय से बिछुड़ी हुई दुःखिनी नायिका ; मज़दूरी ।

**विरही** - वि० [सं] प्रिया के वियोग से दुःखी ; एकाकी ।

**विराग** - 1. पु० [सं] अरुचि ; असंतोष ; रंग का परिवर्तन ; राग का अभाव ; विकर्षण ; विरक्ति ; 2. वि० उदासीन ।

**विरागी** - वि० [सं] उदासीन ; विरक्त ।

**विराजना** - अ० [हिं] बैठना ; रहना ; शोभित होना ।

**विराजमान** - वि० [सं] बैठा हुआ ; चमकता हुआ ; विद्यमान ।

**विराजित** - वि० [सं] उपस्थित ; प्रकाशित ; प्रसिद्ध ; सुशोभित ।

**विराट्** - 1. पु० [सं] प्राधान्य ; कांति ; आदिपुरुष ; क्षत्रिय ; मर्तबा ; शरीर ; सौन्दर्य ; 2. वि० बहुत बड़ा ।

**विराम** - पु० [सं] अंत ; परिणाम ; वाक्यांश या वाक्यादि के बाद रुकने का स्थान ; विष्णु ।

**विराव** - पु० [सं] चिल्लाहट ; भनभनाहट ; शब्द , हल्ला ।

**विरावी** - वि० [सं] गूँजनेवाला ; रोने या चिल्लानेवाला ; शब्द करनेवाला ।

**विरुझना** - अ० [हिं] उलझना ।

**विरुझाना** - 1. स० [हिं] उलझाना ; 2. अ० उलझना ; मचलना ।

**विरुत** - 1. वि० [सं] गूँजता हुआ ; चिल्लाया हुआ ; शब्दायमान ; 2. पु० कलरव ; गान ; गुंजन ; चिल्लाहट; शोर ।

**विरुद** - पु० [सं] कीर्तिगाथा ; घोषणा ; चिल्लाहट ; प्रशंसासूचक पदवी ।

**विरुदावली** - स्त्री० [सं] विस्तृत यशोगान ।

**विरुद्ध** - 1. वि० [सं] रोका हुआ ; अप्रिय; असंगत ; अवरुद्ध ; खतरनाक ; जिसका प्रतिरोध किया गया हो ; विरोधी ; शत्रुतापूर्ण ; संदिग्ध ; 2. पु० विरोध ; वैर ; 3. अव्य० विरोध में ; **यौ०** —कर्मा - असंगत कार्य करनेवाला ; —धी - शत्रुतापूर्ण भाव रखनेवाला ; —प्रसंग - निषिद्ध कार्य ।

**विरुद्धाचरण** - पु० [सं] बुरा आचरण ; बुरा कर्म ।

**विरुद्धार्थ** - वि० [सं] विरोधी अर्थवाला ।

**विरूक्ष** - वि० [सं] कर्कश ; रूखा ।

**विरूढ** - वि० [सं] अंकुरित ; उत्पन्न ; चढ़ा हुआ ।

**विरूप** - 1. वि० [सं] बदशकल ; परिवर्तित; विभिन्न प्रकार का ; जिसकी आकृति विकृत हो गयी हो ; 2. पु० कुरूपता ; पांडुरोग ; पिप्पलीमूल ; भद्दी शकल ;

रूपभिन्नता ; **यौ०** —करण - आकृति विकृत करना ; क्षति पहुँचाना ; —परिणाम - एक की अनेक में परिणति ; —रूप - बदशक्ल ।

**विरूपता** - स्त्री० [सं] कुरूपता ; विभिन्नता ।

**विरूपी** - 1. वि० [सं] भद्दा ; 2. पु० गिरगिट ।

**विरेक** - पु० [सं] आँत की सफ़ाई ; जुलाब ; दिमाग़ की सफ़ाई ।

**विरेचक** - वि० [सं] दस्त लानेवाला ।

**विरेचन** - पु० [सं] दस्तावर दवा, जुलाब ; दस्त लाना ।

**विरेची** - वि० [सं] दस्त लानेवाला ।

**विरोग** - 1. पु० [सं] आरोग्य ; 2. वि० स्वस्थ ।

**विरोचन** - 1. वि० [सं] प्रकाशित करनेवाला ; 2. पु० अग्नि ; अर्क ; चंद्रमा ; सूर्य ; विष्णु ।

**विरोध** - पु० [सं] अवरोध ; रोक ; प्रतिरोध ; बाधा ; वैर ; कलह ; विपरीतता ; सामंजस्यहीनता ; विरोधाभास ; कथावस्तु की प्रगति में पड़नेवाली बाधा ; **यौ०** —कारक - कलह पैदा करनेवाला ; —कारी - कलह बढ़ानेवाला ; —परिहार - विरोध का दूर होना ; —वचन - प्रतिकूल बात ; —शमन - कलह शांत करना ।

**विरोधक** - 1. वि० [सं] कलह पैदा करनेवाला ; बाधक ; 2. पु० अवर्णनीय विषय ।

**विरोधना** - स० [हिं] वैर-विरोध करना ।

**विरोधी** - वि० [सं] बाधक ; अवरोध करने वाला ; अनुकूल न पड़नेवाला ; झगड़ालू ; विरोध करनेवाला ; वैरी ; प्रतिस्पर्धा करनेवाला ; प्रतिकूल ; बेमेल ; हटानेवाला ।

**विरोपण** - 1. पु० [सं] पौधा लगाना, रोपना ; घाव का भरना ; 2. वि० घाव भरनेवाला ; रोपनेवाला ।

**विरोम** - वि० [सं] रोमरहित ।

**विरोह** - पु० [सं] अंकुरित होना ; जमने का स्थान ।

**विरोहण** - 1. पु० [सं] अंकुरित होना ; रोपना ; 2. वि० घाव को भरनेवाला ।

**विलंब** - 1. पु० [सं] झूलना, लटकना ; दीर्घसूत्रता ; सुस्ती ; 2. वि० लटकनेवाला ।

**विलंबन** - पु० [सं] दीर्घसूत्रता ; देर होना; लटकना ; सुस्ती ।

**विलंबना** - अ० [हिं] अवलंब लेना ; देर करना ; रम जाना ; लटकना ।

**विलंबित** - 1. वि० [सं] अवलंबित ; आश्रित ; धीमी लयवाला ; लटकता हुआ ; 2. पु० देर ; सुस्त जानवर ; सुस्ती ।

**विलंबी** - वि० [सं] देर करनेवाला ; लटकने या सहारा लेनेवाला ।

**विलक्षण** - वि० [सं] अलौकिक ; भिन्न चिन्होंवाला ; जिसमें कोई विशेष लक्षण न हो ; अशुभ चिन्होंवाला ; वह अवस्था जिसका कारण न जान पड़े ।

**विलक्ष्य** - वि० [सं] जिसका कोई लक्ष्य न हो ; निशाना चूक जानेवाला ।

**विलखना** - अ० [हिं] दुखी होना ; भाँप लेना ।

**विलग** - 1. वि० [हिं] अलग ; 2. पु० अंतर, भेद ।

**विलगाना** - 1. स० [हिं] अलग करना ; 2. पु० अलग होना ।

**विलग्न** - 1. वि० [सं] अवलंबित ; संलग्न ; लटकता हुआ ; नाज़ुक ; पिंजरबद्ध (पक्षी) ; व्यतीत ; 2. पु० कमर ; नितंब ; जन्मपत्रिका ; राशियों का उदय ।

**विलपन** - पु० [सं] विलाप करना ; गपशप करना ; तेल आदि के नीचे बैठा हुआ मैल ।

**विलपना** - अ० [हिं] रोना या विलाप करना ।

**विलपित** - 1. वि० [सं] रोया या विलाप किया हुआ ; 2. पु० विलाप ।

**विलय** - पु० [सं] विलीन होना ; लोप ; नाश ; प्रलय ; मृत्यु ।

**विलयन** - पु० [स] विगलन ; क्षय होना ; क्षय करना ; क्षय करनेवाला पदार्थ ; दूर करना ; हटाना ।

**विलसना** - अ० [हिं] शोभित होना ; आनंद करना ; विलास करना ।

**विलसाना** - स० [हिं] भोगना ; भोगने में प्रवृत्त करना ।

**विलसित** - 1. वि० [सं] चमकता हुआ ; विनोदी ; व्यक्त ; 2. पु० चमक ; अंग-भंगी ; अभिव्यक्ति ; क्रीड़ा ; चमकने की क्रिया ; परिणाम ।

**विलहबंदी** - स्त्री० [हिं] ज़िले के बंदोबस्त का ब्योरा ।

**विलाप** - पु० [सं] रोना ; शोक करना ।

**विलापना** - अ० [हिं] विलाप करना ।

**विलायत** - स्त्री० [अ] ब्रिटेन ; यूरोप; विदेश; राज्य ; वली का पद ; संरक्षकता ।

**विलायती** - वि० [हिं] विलायत का ; ईरानी ; यूरोपीय ; विदेशी ; यौ० —कपड़ा - यूरोप का बना हुआ विदेशी कपड़ा ; —कीकर - पहाड़ी कीकर ; —डाक - यूरोप से आनेवाली चिट्ठी या अख़बार आदि ; —बैंगन, भंटा - टमाटर ; एक तरह का सफ़ेद बैंगन ; —माल - विदेशी माल ।

**विलास** - पु० [सं] सुखोपभोग ; क्रीड़ा ; प्रणय-क्रीड़ा ; अंग-भंगी ; चमकना ; व्यक्त होना ; लंपटता ; सजीवता ; सौन्दर्य ; हाव-भाव ; यौ० —कानन - प्रमोदवन ; —गृह - प्रमोदघर ।

**विलासिनी** - स्त्री० [सं] कामुक स्त्री ; वेश्या ; सुंदरी युवती ।

**विलासी** - 1. वि० [स] आरामतलब ; इधर-उधर घूमनेवाला ; कामी ; क्रीड़ा-शील ; चमकदार ; 2. पु० अग्नि ; कामदेव ; कृष्ण ; चंद्रमा ; नायक ; शिव ; सर्प ।

**विलिखन** - पु० [सं] खरोचना ; लिखना ।

**विलिखित** - वि० [सं] खरोचा हुआ ; लिखा हुआ ;

**विलिप्त** - वि० [सं] लिपा हुआ ; कलुषित ।

**विलीक** - वि० [हिं] अनुचित ।

**विलीन** - वि० [सं] छिपा हुआ ; नष्ट ; जड़ा हुआ ; पिघला हुआ ; मृत ; संबद्ध , संलग्न ।

**विलुंचन** - पु० [सं] छीलना ; नोचना ।

**विलुंठन** - पु० [सं] चोरी करना ; लूटना ; लोटना ।

**विलुंठित** - वि० [सं] जो लूटा गया हो ; लोटा हुआ ।

**विलुप्त** - वि० [सं] खंडित ; अपहृत ; क्षीण ; नष्ट ; भंग किया हुआ ; लूटा हुआ ।

**विलून** - वि० [सं] काटकर अलग किया हुआ ।

**विलेख** - पु० [सं] आहत करना ; खरोंचना ; फाड़ना ।

**विलेखन** - 1. पु० [सं] उखाड़ना; खरोचना; खोदना ; चिन्ह बनाना ; चीरना ; नदी का मार्ग ; विभाग करना ; 2. वि० खरोंचनेवाला ।

**विलेप** - पु० [सं] अंगराग ; लेप ; पलस्तर ; गारा लगाना ; लेपना ।

**विलेपन** - पु० [सं] अंगराग लगाना ; लेप करने का पदार्थ ।

**विलोक** - 1. पु० [सं] नज़र ; मनुष्यों का अभाव ; 2. वि० एकान्त ।

**विलोकन** - पु० [सं] जानकारी हासिल करना ; तलाश करना ; देखना ; ध्यान देना ।

**विलोकना** - स० [हिं] देखना ।

**विलोकनि** - स्त्री० [हिं] देखने की क्रिया ।

**विलोकित** - 1. वि० [सं] जाना हुआ ; देखा हुआ ; विवेचित ; 2. पु० नज़र ; परीक्षण ।

**विलोचन** - 1. पु० [सं] आँख ; नज़र ; एक हिरण ; 2. वि० आँख विकृत करनेवाला ; **यौ०** —पथ - दृष्टिपथ ; —पात - दृष्टिपात ।

**विलोट, विलोटन** - पु० [सं] लुढ़कना ।

**विलोड** - पु० [सं] लुढ़कना ; आंदोलित होना ।

**विलोड़न** - पु० [सं] इधर-उधर करना ; मथना ; हिलाना ।

**विलोड़ना** - स० [हिं] क्षुब्ध करना ; मथना ; हिलाना ।

**विलोड़ित** - वि० [सं] मथित ; क्षुब्ध ; लुढ़कता हुआ ; खिलाया हुआ ।

**विलोप** - पु० [सं] अपहरण ; आघात ; क्षति ; नाश ; बाधा ।

**विलोपन** - पु० [सं] काटकर या तोड़कर अलग करना ; चोरी करना ; छोड़ देना ; नष्ट करना ; भंग करना ; लुप्त करना ।

**विलोपना** - स० [हिं] बाधा डालना ; लेकर भागना ; लोप करना ।

**विलोपी** - पु० [सं] नाश या विलोप करनेवाला ; भंग करनेवाला ।

**विलोभ** - 1. पु० [सं] आकर्षण ; प्रलोभन ; बहकावा ; भ्रम ; 2. वि० लोभशून्य ।

**विलोभन** - पु० [सं] प्रलोभन ; प्रशंसा ; चाटुकारिता ; बहकाना ; भ्रम में डालना ।

**विलोभित** - वि० [सं] प्रशंसित ; छला हुआ ; बहकाया हुआ ; लुभाया हुआ ।

**विलोम** - 1. वि० [सं] उलटा ; उलटे क्रम से उत्पन्न ; क्रम या रीति के विरुद्ध , पीछे का ; 2. पु० उलटा क्रम , कुत्ता ; पानी निकालने का एक यंत्र , वरुण ; सर्प ; स्वर का अवरोह (संगीत) ; **यौ०** —काव्य - वह काव्य जो उलटा भी पढ़ा जा सकता हो ; — क्रिया - अंत की ओर से आदि की ओर जाने की क्रिया ; —ज, जात, वर्ण - पिता की अपेक्षा उच्चतर वर्णवाली माता से उत्पन्न संतान ; —पाठ - अंत की ओर से पढ़ना ।

**विलोमक** - वि० [सं] उलटा ; प्रतिकूल ।

**विलोमी** - स्त्री० [सं] आँवला ।

**विलोल** - वि० [सं] चंचल ; क्षुब्ध ; अस्त-व्यस्त ; ढीला ; सुंदर ; बिखरे हुए (बाल) ; **यौ०** —तारक - चंचल आँखोंवाला ; —लोचन - अश्रुपूर्ण नेत्रोंवाला ; —हार - जिसकी माला हिल रही हो ।

**विलोलन** - पु० [सं] चंचल करना ; क्षुब्ध करना ; हिलाना ।

**विलोलित** - वि० [सं] क्षुब्ध किया हुआ ; घुमाया या हिलाया हुआ ।

**विलोलुप** - वि० [सं] तृष्णारहित ।

**विल्व** - पु० [सं] बिल्व ; **यौ०** —मंगल - सूरदास का अंधा होने के पहले का नाम ; एक भक्त कवि ।

**विवक्षा** - स्त्री० [सं] कहने या व्यक्त करने की इच्छा ; अभिप्राय ; इच्छा ; संदेह ।

**विवक्षित** - 1. वि० [सं] अभिप्रेत ; अपेक्षित ; कथनीय ; कथित ; प्रधान ; प्रिय ; 2. पु० अभिप्राय ; आशय ; उद्देश्य ; जो कहने की इच्छा हो ।

**विवदना** - अ० [हिं] झगड़ा या विवाद करना ।

**विवर** - पु० [सं] बिल; गुफा; गड्ढा; अंतर; कटने आदि का घाव; छिद्र; नौ की संख्या; फैलाव।
**विवरण** - पु० [सं] प्रदर्शन; वर्णन; वाक्य; व्याख्या; ब्योरा; स्पष्ट करना।
**विवर्जन** - पु० [सं] उपेक्षा; त्याग; निषेध।
**विवर्जित** - पु० [सं] जिसमें से कुछ घटाया जाय; परित्यक्त; प्रदत्त; बाँटा हुआ; मना किया हुआ; वंचित।
**विवर्ण** - 1. वि० [सं] वर्णहीन; नीच; अशिक्षित; बदरंग; संकर जाति का; श्रीहत; 2. पु० नीच जाति का आदमी।
**विवर्त** - पु० [स] अविद्याजन्य मिथ्या रूप; आकाश; गोलाई में चक्कर लगाना, घूमना; नाच; परिवर्तन; भँवर; भ्रम; रूपान्तर; लुढकना; समूह; सुधार।
**विवर्तन** - पु० [सं] अभिवंदना; अस्तित्व होना; चक्कर खाना; परिक्रमा; परिवर्तित अवस्था; पीछे की ओर घूमना; सत्ता की विभिन्न अवस्थाओं को पार करना।
**विवर्धन** - 1. पु० [सं] अभ्युदय; खंडित करना; वृद्धि; 2. वि० अभ्युदय करनेवाला; बढ़ानेवाला।
**विवश** - वि० [सं] अधीन; अनियंत्रित; जिसका अपने पर वश न हो; नष्ट; मृत्यु चाहनेवाला; मृत्यु से शंकित; लाचार; शक्तिहीन; संज्ञाहीन; स्वतंत्र।
**विवशता** - स्त्री० [सं] असहायावस्था; लाचारी।
**विवसन, विवस्त्र** - वि० [सं] नग्न, वस्त्रहीन।
**विवस्वान** - पु० [सं] सूर्य; सूर्य का सारथी अरुण; मदारवृक्ष; वर्तमान मनु; देवता।
**विवाचन** - पु० [सं] मध्यस्थता।
**विवाच्य** - वि० [सं] सुधार करने योग्य।
**विवाद** - पु० [सं] आदेश; खंडन; चिल्लाना; झगड़ा; बहस; मुक़द्दमा; यौ० —पद, वस्तु - मुक़द्दमे का विषय; मु० —उठाना - बहस शुरू करना; झगड़ा खड़ा करना।
**विवादास्पद** - 1. पु० [सं] विवाद का विषय; 2. वि० विवाद के योग्य।
**विवादी** - 1. वि० [सं] झगड़ालू; मुक़द्दमेबाज़; 2. पु० मुक़द्दमा लड़नेवाला।
**विवाह** - पु० [सं] शादी, धर्मानुसार दांपत्य-सूत्र में बद्ध होने की प्रथा; यौ० —काम - विवाहेच्छु; —काल, समय - ब्याह करने का उचित समय; —विधि - विवाहसंबंधी नियम; —संबंध - विवाह के द्वारा होनेवाला संबंध।
**विवाहित** - वि० [सं] ब्याहा हुआ।
**विवाहिता** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] ब्याही हुई।
**विविक्त** - 1. वि० [सं] पृथक् किया हुआ; जनहीन; अकेला; पवित्र; प्रगाढ (विचार); विवेकी; स्पष्ट; स्वच्छ; 2. पु० एकान्त स्थान; एकाकीपन; यौ० —चरित्र - निर्दोष चरित्रवाला; —चेता - शुद्ध मनवाला; —दृष्टि - स्पष्ट दृष्टिवाला; —शय्यासन - त्यागी का एकात स्थान में रहने का एक आचार; —सेवी - एकान्त चाहनेवाला।
**विविक्ता** - स्त्री० [सं] बदक़िस्मत औरत; पति की दृष्टि में अप्रिय औरत।
**विविध** - 1. वि० [स] विभिन्न प्रकार का; 2. पु० विभिन्न प्रकार के काम।
**विविर** - पु० [हिं] गुफा; दरार; बिल।
**विवृत** - 1. वि० [सं] खुला हुआ; घोषित; प्रत्यक्ष; नग्न; फैला हुआ; विस्तृत; व्याख्यायुक्त; 2. पु० उच्चारण का एक प्रयत्न; नग्न भूमि; प्रकाशन।

**विवृति** - स्त्री० [सं] टीका, भाष्य ; प्रकटीकरण ।

**विवेक** - पु० [सं] छान-बीन ; यथार्थ ज्ञान ; भले-बुरे की पहचान ; प्रिय पदार्थों का त्याग ; पुरुष से भेद करने की शक्ति ; दृश्य-जगत् ; **यौ०** —ख्याति - यथार्थ ज्ञान ; —भ्रष्ट, रहित - ज्ञानहीन ।

**विवेकवान** - वि० [सं] ज्ञानी ; विचारवान ।

**विवेकी** - 1. वि० [सं] भले-बुरे की पहचान करनेवाला ; छान-बीन करनेवाला; ज्ञानी ; 2. पु० विचारकर्ता ।

**विवेचक** - त्रि० [सं] चतुर ; विवेचन या भले-बुरे का भेद करने में समर्थ ।

**विवेचन** - पु० [सं] अनुसंधान ; परीक्षण ; मीमांसा ; विवेक ; सद्-असद् का निर्णय ।

**विवेचित** - वि० [सं] निश्चित या तय किया हुआ ; विवेचन किया हुआ ।

**विशंक** - वि० [सं] निरापद ; निर्भय ।

**विशंका** - स्त्री० [सं] आशंका ; भय ; शंका का अभाव ।

**विशद** - वि० [सं] स्पष्ट ; विस्तृत ; प्रकट ; श्वेत ; साफ़, चमकीला ; सुंदर ; शात ; **यौ०** —प्रज्ञ - विचक्षण, कुशाग्र बुद्धि ।

**विशाख** - 1. पु० [सं] तकुआ ; बाण चलाते समय की एक मुद्रा ; एक देवता ; कार्तिकेय ; भिक्षुक ; बच्चों के लिए ख़तरनाक समझा जानेवाला एक दानव ; 2. वि० शाखाहीन ; हस्तहीन ; विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न ।

**विशाखा** - स्त्री० [सं] एक नक्षत्र ; दूब ; एक प्राचीन जनपद ।

**विशारद** - 1. वि० [सं] अनुभवी ; चतुर ; चातुर्यपूर्ण (भाषण) ; धीर ; प्रसिद्ध ; वक्तृत्वशक्ति से रहित ; विद्वान ; स्पष्ट विचारवाला ; 2. पु० एक सम्मानित पदवी ; बकुलवृक्ष ।

**विशाल** - वि० [सं] बड़ा ; प्रख्यात ; विस्तृत ; शक्तिशाली ; **यौ०** —कुल - प्रसिद्ध वंश ; —लोचना - बड़ी आँखोवाली ।

**विशालता** - स्त्री० [सं] बड़प्पन ; विस्तार ; ख्याति ।

**विशालाक्ष** - 1. वि० [सं] बड़ी आँखोवाला ; 2. पु० एक तरह का उल्लू ; एक नाग ; गरुड़ ; गरुड़ का एक पुत्र ; शिव ।

**विशालाक्षी** - स्त्री० [सं] बड़ी आँखोवाली स्त्री ; पार्वती ; स्कंद की एक माता ।

**विशिका** - स्त्री० [सं] बालू ।

**विशिख** - 1. वि० [सं] शिखाहीन ; गंजा ; भोथरी नोकवाला (बाण) ; पुच्छहीन (धूमकेतु) ; अप्रज्वलित (आग) ; 2. पु० बाण ; भाला ; एक तरह का सरकंडा ।

**विशिखा** - स्त्री० [सं] एक तरह की सूई ; कुदाल ; छोटा बाण ; तकुआ ; सड़क ; नाइन ; रुग्णालय ।

**विशिष्ट** 1. वि० [सं] असाधारण ; उत्तम ; प्रसिद्ध ; भद्र ; युक्त ; विशेषतायुक्त ; 2. पु० विष्णु ; सीसा ; **यौ०**— कुल - उत्तम कुल ; सद्वंश में उत्पन्न ; —बुद्धि - विवेक ।

**विशिष्टाद्वैत** - पु० [सं] श्री रामानुज द्वारा प्रवर्तित एक मत जिसमें प्रकृति और पुरुष को भिन्न और सत्य मानते हुए भी दोनो को अभिन्न मानते हैं ।

**विशीर्ण** - वि० [सं] क्षीण ; उड़ाया हुआ (खज़ाना) ; तितर-बितर किया हुआ (सैन्य) ; गिरा हुआ (दंतादि) ; नम्र ; बिखरा हुआ ; नष्ट ; शुष्क ; **यौ०** —पर्ण - नीम ।

**विशुद्ध** - वि० [सं] निष्पाप ; पवित्र ; चमकता हुआ सफ़ेद ; ठीक ; धर्मात्मा ; बेदाग़ ; विनम्र ; साफ़ किया हुआ ;

सुनिश्चित ; यौ० —करण - धर्मानुसार काम करनेवाला ; —चरित्र - शुद्ध चरित्रवाला ; —प्रकृति - धार्मिक स्वभाव का ; —भाव, मना - पवित्र मनवाला ।

**विशुद्धात्मा** - वि० [सं] पवित्र आचरण-वाला ।

**विशुद्धि** - स्त्री० [सं] पवित्रता ; पूर्ण ज्ञान ; भूलसुधार ; वैर या ऋण का परिशोध ; सादृश्य ; संदेह आदि दूर करना ।

**विशृंखल** - वि० [सं] अनियंत्रित ; बहुत अधिक शब्द करनेवाला ; बंधनहीन ; शृंखलारहित ; लंपट ।

**विशेष** - 1. वि० [सं] असाधारण ; अधिक ; प्रचुर ; 2. पु० अंतर करना ; अंतर करनेवाला चिन्ह ; अंग ; उत्तमता ; क़िस्म ; द्रव्यों का ख़ास गुण (न्याय) ; भेद ; सात प्रकार के पदार्थों में से एक ; वर्ग ; तिलक ; विशेषण ; यौ० —ज्ञ, विद - किसी विषय का विशेष ज्ञान रखनेवाला ।

**विशेषक** - 1. वि० [सं] भेद स्पष्ट करने-वाला ; 2. पु० भेद करनेवाला गुण ।

**विशेषण** - 1. वि० [सं] विशेषता का द्योतक ; 2. पु० विशेष्य का धर्म ; अंतर प्रगट करनेवाला चिन्ह ; प्रकार ; संज्ञा का गुण बतलानेवाला शब्द (व्या०) ।

**विशेषता** - स्त्री० [सं] ख़ूबी ।

**विशेष्य** - 1. पु० [सं] विशेषणयुक्त संज्ञा (व्या०) ; 2. वि० जिसकी विशेषता आदि दिखलानी हो ।

**विशोक** - 1. पु० [सं] शोक का अंत ; अशोक का पेड़ ; 2. वि० शोकरहित ।

**विशोधन** - 1. पु० [सं] शुद्ध करना ; निर्णीत होना ; पेड़ की डालियों की छँटाई ; प्रायश्चित्त ; रेचन ; विष्णु ; 2. वि० साफ़ करनेवाला ।

**विशोधित** - वि० [सं] शुद्ध या साफ़ करने-वाला ; मैल या दाग़ आदि से मुक्त किया हुआ ।

**विशोभित** - वि० [सं] अलंकृत ; सजाया हुआ ।

**विश्रंभ** - पु० [सं] आत्मीयता ; गोपनीय विषय ; प्रणयकलह ; वध ; विश्राम ; विश्वास ; स्नेहपूर्वक पूछताछ करना ।

**विश्रंभण** - पु० [सं] विश्वास प्राप्त करना ।

**विश्रब्ध** - वि० [सं] अतिशय ; दृढ़ ; धीर ; निर्भीक ; विनम्र ; विश्वसनीय ; शांत ।

**विश्रम** - पु० [सं] आराम, विश्राम ।

**विश्रमण** - पु० [सं] आराम करना ।

**विश्रय** - पु० [सं] आश्रयस्थान ।

**विश्रव** - पु० [सं] विख्याति ।

**विश्रांत** - वि० [सं] विश्राम किया हुआ ; विश्राम करनेवाला ; क्लान्त ; रुका हुआ ; रहित ; शांत ; समाप्त ।

**विश्रांति** - स्त्री० [सं] अंत ; आराम ; कमी ।

**विश्राम** - पु० [सं] आराम ; आराम करने की जगह ; (श्रम के बाद) गहरी साँस लेना ; अंत ; मकान ; विराम ; शांति ।

**विश्रामालय** - पु० [सं] पाथशाला, यात्रियों के विश्राम करने का स्थान ।

**विश्राव** - पु० [सं] बहना ; विख्याति ; शोर-गुल ।

**विश्रुत** - वि० [सं] विख्यात ; प्रसन्न ; बहता हुआ ; बहा हुआ ।

**विश्रुति** - स्त्री० [सं] ख्याति ।

**विश्लथ** - वि० [सं] ढीला ; क्लांत ; बंधन-मुक्त ।

**विश्लिष्ट** - वि० [सं] ढीला किया हुआ ; दल से अलग किया हुआ ; पृथक किया हुआ ; स्थान-भ्रष्ट ।

**विश्लेष** - पु० [सं] अभाव ; छिद्र ; पार्थक्य ; विप्रलंभ ; वियोग ; हानि ।

**विश्लेषण** - पु० [सं] किसी चीज़ के अंगों को अलग-अलग करना ; भंग करना ।

**विश्लोक** - वि० [सं] अप्रसिद्ध, जिसकी ख्याति न हो ।

**विश्वंभर** - 1. वि० [सं] सबका भरण-पोषण करनेवाला; 2. पु० ईश्वर; इंद्र; अग्नि ; एक तरह का बिच्छू ।

**विश्वंभरा, विश्वंभरी** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ।

**विश्व** - 1. पु० [सं] संसार ; समग्र ब्रह्मांड ; आत्मा ; जीव ; तेरह की संख्या ; नगर-निवासी ; 2. वि० प्रत्येक ; सकल ; सर्वव्यापक; **यौ०**—कर्ता - परमेश्वर ; सृष्टि का रचयिता ; —कर्मा - देवशिल्पी ; सूर्य की सात रश्मियों में से एक ; बढ़ई ; परमेश्वर ; महात्मा ; राज ; शिव ; संत ; —क्षय - प्रलय ; —गंध - सर्वत्र गंध फैलानेवाला ; प्याज ; —गंधा - पृथ्वी ; —गत - सर्वव्यापक ; —गर्भ - सभी वस्तुओं को धारण करनेवाला ; विष्णु ; शिव ; —गुरु - लोकपिता ; —गोचर - सबके लिए बोधगम्य ; —गोत्र - सभी कुलों से संबद्ध ; —चक्र - ब्राह्मणों को दान में दिया जानेवाला एक तरह का सुवर्णचक्र ; —चक्षु - सबको देखनेवाला ; सब चीज़ों को देखनेवाला नेत्र ; —जन - मानव जाति ; —जनीन, जनीय, जन्य - सबके लिए उपयुक्त ; सबके लिए लाभदायक ; —ज्योति - पूर्ण दीप्ति से युक्त ; —तृप्त - प्रत्येक वस्तु से सतुष्ट ; —त्रय - आकाश, पाताल और मर्त्यलोक ; —दृक - सबको देखनेवाला ; —धाम - ईश्वर ; —धारिणी - पृथ्वी ; —धृत - प्रत्येक पदार्थ को धारण करनेवाला ; —नाथ - शिव ; काशी का प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग ; — पावन - सबको पवित्र करनेवाला ; —पूजित - सबके द्वारा पूजा जानेवाला ; —पूज्य - सर्वसामान्य ; —प्रकाशक - सबको प्रकाशित करनेवाला ; सबको जाग्रत करनेवाला ; —बंधु - विश्व का मित्र ; —भर्ता - सबका भरण करनेवाला, ईश्वर ; —भाव, भावन - सबकी सृष्टि करनेवाला, ईश्वर ; —भेषज - सबकी दवा ; सोंठ , —मूर्ति - सर्वव्यापक, ईश्वर ; —लोचन - सूर्य और चंद्रमा ; —वास - सभी वस्तुओं का आधार ; —विख्यात - सारे संसार में प्रसिद्ध ; —विजयी - सबको विजित करनेवाला ; —विद् - सर्वज्ञ ; ईश्वर ; —विद्यालय - सब प्रकार की ऊँची शिक्षायें देने का विद्याधाम, युनिवर्सिटी ; —विद्वान - सब कुछ जाननेवाला ; —विश्रुत - विश्वविख्यात ; —व्यापक, व्यापी - सबमें रहनेवाला ; ईश्वर ; —संप्लव - प्रलय ; —संहार - विश्व का नाश ; —सह - सब कुछ को सहन करनेवाला , —सहा - पृथ्वी ; —साक्षी - सब कुछ देखनेवाला ; —स्रष्टा - सृष्टि का रचयिता ।

**विश्वतः** - अव्य० [सं] चारों ओर ; सर्वत्र ।

**विश्वसन** - पु० [सं] विश्वास करना ।

**विश्वसनीय** - वि० [सं] विश्वास के योग्य ।

**विश्वसित** - वि० [सं] निर्भय ; विश्वासपूर्वक , विश्वस्त ; संदेह न करनेवाला ।

**विश्वस्त** - वि० [सं] विश्वसनीय ; निर्भय ।

**विश्वस्ता** - स्त्री० [सं] विधवा ।

**विश्वात्मा** - पु० [सं] ईश्वर ; ब्रह्मा ; शिव ; विष्णु ; सूर्य ।

**विश्वाधार** - पु० [सं] ईश्वर; विश्व का सहारा ।

**विश्वाधिप** - पु० [सं] ईश्वर; विश्व का स्वामी ।

**विश्वामित्र** - पु० [सं] एक पुराणप्रसिद्ध ऋषि।

**विश्वास** - पु० [सं] भरोसा; यकीन; गुप्त संवाद या भेद; **यौ०** —कारक, कृत - विश्वास उत्पन्न करनेवाला; —घात - विश्वास के विपरीत कार्य करना, —घातक, घाती - विश्वासघात करनेवाला; —पात्र, भाजन, भूमि - विश्वसनीय; —प्रद - विश्वास उत्पन्न करनेवाला।

**विश्वासी** - वि० [सं] जिसका विश्वास किया जाय; विश्वास करनेवाला।

**विश्वेश** - पु० [सं] विश्व का स्वामी; ब्रह्म।

**विषंग** - वि० [सं] संलग्न।

**विषंड** - पु० [सं] कमलनाल।

**विष** - पु० [सं] ज़हर; कमलनाल; जल; एक सुगंधित गोंद; **यौ०**—कंठ - शिव; —कन्यका, कन्या - वह विषाक्त कन्या जिसके साथ संभोग करनेवाले की मृत्यु हो जाती है; —कुंभ - विषपूर्ण घट; —दंतक - सर्प; —दायी - ज़हर देनेवाला; —दुष्ट - विष मिलाया हुआ; —धर - विषैला; विषैला साँप; —पुच्छ - बिच्छू; —प्रयोग - औषध में विष का प्रयोग करना; —भक्षण - ज़हर खाना; —भुजंग - ज़हरीला साँप; —मंत्र - सर्पदंश-मंत्र; मंत्र द्वारा सर्पविष दूर करनेवाला; —लता कमल की नाल; —वेग - विष का शरीर में व्याप्त होना; —वैद्य - मंत्र आदि से विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

**विषण्ण** - वि० [सं] दुखी; शोकमग्न; **यौ०** —चेता, मना - उदास; खिन्न; —मुख, वदन - उदास मुखवाला।

**विषण्णता** - स्त्री० [सं] उदासी; जड़ता।

**विषम** - 1. वि० [सं] असम, जो समतल न हो; असमान; कठिन; जटिल; दुर्गम; उग्र; कष्टकर; दुर्बोध; मोटा; खतरनाक; असाधारण; छली; दुष्ट; प्रतिकूल; 2. पु० असमता; असाधारणता; खड्ड; ख़तरनाक स्थिति, ऊबड़-खाबड़ ज़मीन; असम राशियाँ; **यौ०** —कर्ण - जिसके कान असमान हों; असम कर्णोवाला चतुर्भुज; समकोण त्रिकोण का कर्ण (ज्यामिति); —कर्म - असाधारण कार्य; —काल - अशुभ या प्रतिकूल समय; —गत - संकटग्रस्त; —छाया - छायाघड़ी की दोपहर के समय की छाया;—ज्वर - जीर्ण ज्वर; —दृष्टि - ऐंचाताना; —बाण, शर - कामदेव; —विभाग - संपत्ति का असमान बँटवारा; —शील - चिड़चिड़ा; जिसका मिजाज एक-सा न रहता हो।

**विषमता** - स्त्री० [सं] असमता; अंतर; जटिलता; भीषणता।

**विषमान्न** - पु० [सं] अनियमित आहार।

**विषमाशय** - वि० [सं] कपटी; बेईमान।

**विषय** - पु० [सं] ज्ञानेंद्रियों द्वारा गृहीत होनेवाले रूप, रसादि पदार्थ; भौतिक पदार्थ; इंद्रियजन्य आनंद; क्षेत्र; आश्रयस्थान; ग्रामसमूह; विभाग; विस्तार; लक्ष्य; व्याख्या आदि का प्रकरण; राज्य; शासन-व्यवस्थायुक्त बृहत् क्षेत्र; शुक्र; पाँच की संख्या; धार्मिक अनुष्ठान; **यौ०** —कर्म - सांसारिक कार्य; —काम - भौतिक पदार्थों या आनंद की इच्छा;—ज्ञान - सांसारिक कार्यों का ज्ञान; —निर्धारिणी समिति, निर्वाचिनी समिति - किसी सभा में उपस्थित किये जानेवाले प्रस्ताव या विषय आदि का निश्चय करनेवाली उपसमिति; —पति - राज्यपाल;—

पराङ्मुख - सांसारिक विषयों से विरक्त ; —लोलुप - विषयसुख का लोभी ; —सुख - इंद्रियजन्य सुख ।

**विषयक** - वि० [सं] विषय का, संबंधी ।

**विषयांतर** - 1. पु० [सं] प्रसंग को छोड़कर भिन्न विषय का उपस्थापन करना ; मूल विषय को छोड़कर इधर-उधर की चर्चा करना ; 2. वि० जो बिलकुल पास का हो ; पड़ोस का ।

**विषयानुक्रमणिका** - स्त्री० [सं] विस्तृत विषयसूची ।

**विषयासक्त** - वि० [सं] विषयरत ।

**विषयासक्ति** - स्त्री० [सं] विषय-भोग में लीन रहना ।

**विषयी** - 1. वि० [सं] कामी, विलासी ; 2. पु० कामी पुरुष ; कामदेव ; अहंभाव; ज्ञानेन्द्रिय ; उपमान (साहि०) ; नास्तिक ; राजा ।

**विषांकुर** - पु० [सं] विषयुक्त किया हुआ अंकुर ; भाला ।

**विषाक्त** - वि० [सं] विषमिश्रित ।

**विषाण** - पु० [सं] सींग ; गणेश का दाँत ; हाथी या शूकर का दाँत ; केकड़े का पंजा ; चोटी ; मथानी ; चूचुक ; अपने वर्ग का प्रधान ; तलवार ; **यौ०**—कोष - सींग का खोखला भाग ।

**विषाद** - 1. पु० [सं] उदासी ; उत्साह-हीनता ; ग़म ; जड़ता ; तंद्रा ; मन उच्चट जाना ; 2. वि० विष खानेवाला ; **यौ०** —कृत, जनक - खिन्नता आदि उत्पन्न करनेवाला ।

**विषादी** - वि० [सं] अधीर ; खिन्न ; विष-पान करनेवाला ।

**विषापहरण** - पु० [सं] विष का प्रभाव नष्ट करना ।

**विषुव** - पु० [सं] वह समय जब दिन-रात का मान बराबर होता है ; **यौ०**—छाया - मध्याह्न के समय धूपघड़ी के काँटे की छाया ; —रेखा - वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों के बीचो बीच पृथ्वीतल पर चारों ओर गयी है ।

**विषुवत्** - 1. वि० [सं] बीच का, मध्यस्थित ; 2. पु० विषुव ।

**विषूचिका** - स्त्री० [सं] हैजा ।

**विष्कंभ** - पु० [सं] अरगल ; पर्वतश्रेणी ; फैलाव ; बाधा ; मथनदंड ; योग का एक भेद ; अंकों के मध्य रखा जानेवाला ; वह अंश जिसमें कथानक की प्रगति का संकेत रहता है ; कार्यसंपादन ; वृक्ष ; शहतीर ; स्तंभ ।

**विष्क** - पु० [सं] बीस वर्ष का हाथी ।

**विष्टंभ** - पु० [सं] आक्रमण ; पक्षाघात ; प्रतिरोध ; मल-मूत्र का रोग ; बाधा ; रोक ; सहन ।

**विष्टप** - पु० [सं] भुवन ; प्याला ।

**विष्टब्ध** - वि० [सं] कड़ा ; दृढ़ता से जमाया या बँधा हुआ ; रोका हुआ ; सहारा दिया हुआ ; भरा हुआ ।

**विष्टर** - 1. पु० [सं] आसन, कुर्सी, पलंग आदि ; पच्चीस कुशतृणों का बना हुआ आसन ; बैठने के लिए फैलायी हुई थोड़ी-सी घास ; 2. वि० विस्तृत ।

**विष्टि** - स्त्री० [सं] व्याप्ति ; पेशा ; बेगार ; वेतन ; दृष्टि ; प्रेषण ; **यौ०** —कर - दासों का मालिक ; — कृत - दास ।

**विष्ठा** - स्त्री० [सं] पाखाना ; पेट ; **यौ०** —भुक् - शूकर ; — भू - मलकृमि ।

**विष्णु** - पु० [सं] हिन्दुओं के एक प्रधान देवता ; अग्नि ; ऋषि ; बारह आदित्यों में प्रथम ; संत, महात्मा ; **यौ०** —ग्रंथि - शरीर की एक संधि ; — चक्र - सुदर्शन चक्र ; —पद - आकाश ; कमल ;

क्षीरसागर; —पुरी - वैकुण्ठ, विष्णुलोक; —यान - रथ; —वाहन - गरुड़।
**विष्यंद** - पु० [सं] बहना; प्रवाह; बूँद।
**विष्यंदन** - पु० [सं] टपटकर बहना; चूना, बहना; पिघलना; एक तरह की मिठाई।
**विष्वक्** - 1. अव्य० [सं] चारो ओर; सर्वत्र; 2. सर्वव्यापक।
**विसंकुल** - 1. वि० [सं] धीर; 2. पु० घबड़ाहट का न होना।
**विसंगत** - वि० [सं] बेमेल
**विसंचारी** - वि० [सं] इधर-इधर भ्रमण करनेवाला।
**विसंज्ञ** - वि० [सं] संज्ञाहीन; बेहोश।
**विसंवाद** - पु० [सं] झूठा कथन; खंडन; धोखा; निराश करना; प्रतिज्ञा भंग करना।
**विसंवादक** - वि० [सं] धोखा देनेवाला; प्रतिज्ञा भंग करनेवाला।
**विसंवादी** - वि० [सं] खंडन करनेवाला; धोखा देनेवाला; निराश करनेवाला; वचन भंग करनेवाला।
**विसंष्ठुल** - वि० [सं] अस्थिर; विषम।
**विसंहत** - वि० [सं] अलग किया हुआ; ढीला किया हुआ।
**विस** - पु० [सं] मृणाल।
**विसभाग** - वि० [सं] जिसका हिस्सा न हो।
**विसर** - पु० [सं] झुंड; बड़ी राशि; फैलना; भीड़।
**विसर्ग** - पु० [सं] एक अक्षर का संकेत (:) जिसका उच्चारण आधे 'ह' के समान होता है; कांति; ढालना; दान; निर्माण; परित्याग; पार्थक्य; पृथक करना; प्रेषण; फेंकना; मोक्ष; शिश्न; सूर्य का दक्षिणी अयन।
**विसर्गी** - वि० [सं] दान करनेवाला; त्याग करनेवाला।
**विसर्जन** - पु० [सं] त्याग; प्रतिमा का धारा में बहाया जाना; क्षति पहुँचाना, आहूत देवताओं से जाने की प्रार्थना करना; दान; समाप्ति; फेंकना; किसी काम पर भेजना; मलत्याग।
**विसर्जनीय** - 1. वि० [सं] भेजा या निकाला जानेवाला; 2. पु० एक अक्षर का संकेत; विसर्ग।
**विसर्जित** - वि० [सं] त्यक्त; भेजा हुआ; हटाया हुआ।
**विसर्प** - पु० [सं] फैलना; इधर-उधर भ्रमण करना; रेंगना; कार्य का अप्रत्याशित दुखद परिणाम; खुजली।
**विसर्पण** - पु० [सं] सरकना; फेंकना; फैलना; फोड़े का स्फोट; रेंगना; वृद्धि; स्थानत्याग।
**विसर्पी** - 1. वि० [सं] पसरने या फैलनेवाला; खुजली रोग से पीड़ित; रेंगनेवाला; 2. पु० खुजली रोग।
**विसाल** - 1. वि० [हिं] विशाल; 2. पु० [अ] मिलन (प्रेमी-प्रेमिका का), संभोग।
**विसिनी** - स्त्री० [सं] कमल का पौधा; पद्मसमूह; मृणाल।
**विसूचन** - पु० [सं] सूचित करना।
**विसूचिका, विसूची** - स्त्री० [सं] विषूचिका।
**विसृज्य** - वि० [सं] उत्पन्न किया जानेवाला; भेजा या छोड़ा जानेवाला।
**विसृत** - वि० [सं] कथित; फैला या फैलाया हुआ।
**विसृष्ट** - 1. वि० [सं] छोड़ा हुआ; निर्मित; प्रदत्त; प्रेषित; फेंका हुआ; हटाया हुआ; 2. पु० विसर्ग।
**विस्खलित** - वि० [सं] ठीक तरह न निकलनेवाला (स्वर); गिरता हुआ; भटका हुआ; भूल करता हुआ।

**विस्तर** - 1. वि० [सं] प्रभूत; लंबा; विस्तृत; 2. पु० फैलाव; ब्यौरेवार विवरण; आसन; पीठ-पलग; प्रणय; प्राचुर्य, राशि; समूह।

**विस्तार** - पु० [सं] फैलाव; ब्यौरा; लंबाई-चौड़ाई, विशालता; वृक्ष की शाखायें; वृत्त का व्यास।

**विस्तारना** - स० [हिं] फैलाना।

**विस्तीर्ण** - वि० [सं] फैला हुआ; अत्यधिक; लंबा-चौड़ा; विशाल।

**विस्तृत** - वि० [सं] खुला हुआ; प्रचुर; फैला हुआ; विशाल; विस्तारवाला।

**विस्फंद** - पु० [सं] स्पंदन, धड़कन।

**विस्फार** - पु० [सं] कंपन; खुलना; धनुष की डोरी की टंकार।

**विस्फुट, विस्फुटित** - वि० [सं] खिला हुआ; खुला हुआ।

**विस्फुरण** - पु० [सं] विद्युत् का कंपन।

**विस्फुरित** - पु० [सं] चंचल; बढ़ा हुआ; सूजा हुआ।

**विस्फुलिंग** - पु० [सं] चिनगारी।

**विस्फूर्ज** - पु० [सं] गर्जन।

**विस्फोट** - पु० [सं] फूटना या फटना; ज़हरीला फोड़ा।

**विस्फोटक** - 1. पु० [सं] फूटने या भड़कनेवाला पदार्थ; बड़ा फोड़ा; चेचक; एक प्रकार का कुष्ठ रोग; 2. वि० फूटनेवाला।

**विस्मय** - 1. पु० [सं] आश्चर्य; अनिश्चय; घमंड; संदेह; एक स्थायी भाव (साहि०); 2. वि० गर्वहीन; गलित गर्व; **यौ०** —कर, कारी - आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।

**विस्मयी** - वि० [सं] अचंभे में पड़ा हुआ; विस्मययुक्त।

**विस्मरण** - पु० [सं] भूल जाना।

**विस्मित** - वि० [सं] घमंडी; चकित।

**विस्मृत** - वि० [सं] भूला हुआ; **यौ०** —संस्कार - वादा आदि भूल जानेवाला।

**विस्मृति** - स्त्री० [सं] विस्मरण; भूल जाना।

**विस्रंस** - पु० [सं] क्षय; क्षरण; ढीलापन; निर्बलता; पतन।

**विस्र** - पु० [सं] कच्चे मांस की गंध; रक्त।

**विस्वर** - वि० [सं] स्वरहीन; कर्कश; बेमेल (स्वर)।

**विस्वाद** - वि० [सं] स्वादहीन।

**विहंग** - 1. पु० [सं] पक्षी; एक नाग; चंद्रमा, बाण; बादल; सूर्य, 2. वि० आकाश में गमन करनेवाला; **यौ०** —राज - गरुड़।

**विहंगम** - पु० [सं] पक्षी; सूर्य, **यौ०** —दृष्टि - ऊपर ऊपर से दृष्टिपात।

**विहंगमा** - स्त्री० [सं] चिड़िया; बहँगी।

**विहंगिका** - स्त्री० [सं] बहँगी।

**विहंडना** - स० [हिं] नष्ट करना; मार डालना।

**विहँसना** - अ० [हिं] मुस्काना।

**विहग** - पु० [सं] पक्षी; ग्रह; ग्रहों का एक विशेष अवस्थान; चंद्र; बाण; मेघ; सूर्य; **यौ०** —पति, राज - गरुड़।

**विहर** - पु० [सं] अभाव; वियोग; स्थान-परिवर्तन; हरण।

**विहरण** - पु० [सं] आनंद के लिए घूमना-फिरना; फैलाना; मौज; स्थान बदलना; हटाना या ले जाना।

**विहरना** - अ० [हिं] घूमना फिरना; विहार करना।

**विहस्त** - वि० [सं] हस्तहीन; अनुभवरहित; अशक्त; बेबस; विद्वान; व्याकुल।

**विहान** - पु० [हिं] प्रातःकाल।

**विहाना** - स० [हिं] छोड़ना; अपने को पृथक करना।

**विहाय** - पु० [सं] आकाश; यौ०—गति - आकाश में गमन करने की शक्ति।

**विहायस** - पु० [सं] आकाश; पक्षी।

**विहार** - पु० [सं] घूमकर मनोरंजन करना; क़दम बढ़ाना; मटरगश्ती; बौद्ध भिक्षुओं का मठ, जैन या बौद्ध साधुओं का गमन; कंधा; प्रासाद; हरण; इंद्र का प्रासाद; इंद्र की ध्वजा; यौ०— गृह - क्रीड़ाभवन; —देश - मनोरंजन का स्थान; —भूमि - चरागाह; मनोरंजन का स्थान।

**विहास** - पु० [सं] मुस्कान।

**विहित** - 1. वि० [सं] आदिष्ट; करने योग्य; किया हुआ; निर्मित; निश्चित; युक्त; रखा हुआ; विभक्त; 2. पु० आदेश।

**विहीन** - वि० [सं] रहित; पूर्णतः त्यक्त।

**विह्वल** - वि० [सं] अशांत; आपे से बाहर; कष्टग्रस्त; घबड़ाया हुआ; पिघला हुआ; भयाभिभूत; हतबुद्धि; हताश; यौ०—चेतन, चेता, हृदय - जिसका मन बहुत व्याकुल हो; हतोत्साह; —लोचन - जिसकी आँखें स्थिर न हों।

**वीक्ष** - पु० [सं] नज़र; आश्चर्य; दृश्य वस्तु।

**वीक्षण** - पु० [सं] आँख; दृष्टि; निरीक्षण; जाँच; विशेष रूप से देखना।

**वीक्षणीय** - वि० [सं] देखने योग्य; दृग्गोचर; विचार करने योग्य।

**वीक्षित** - 1. वि० [सं] देखा हुआ; 2. पु० दृष्टि।

**वीक्ष्य** - 1. पु० [सं] आश्चर्यजनक पदार्थ; अभिनेता; घोड़ा; दृश्य; 2. वि० आश्चर्यजनक; दर्शनीय।

**वीचि, वीची** - स्त्री० [सं] लहर; अल्पता; अवकाश; अविवेक; किरण; चमक; सुख; यौ०—क्षोभ - तरंगों का उठना; —तरंग-न्याय - लगातार उड़नेवाली लहरों की तरह एक के बाद दूसरा कार्य होना।

**वीजन** - पु० [सं] पंखा झलना; चकोर; पदार्थ।

**वीटक** - पु० [सं] पान का बीड़ा।

**वीटा** - स्त्री० [सं] गुल्ली।

**वीटि, वीटी** - स्त्री० [सं] नागवल्ली; पान का बीड़ा।

**वीणा** - स्त्री० [सं] सितार-जैसा एक प्रसिद्ध बाजा जिसके दोनों सिरों पर तुंबे लगे रहते हैं; ग्रहों का एक विशेष अवस्थान; बिजली; यौ० —गाथी - वीणावादक; — दंड - वीणा का लंबा दंड; —पाणि - सरस्वती, —रव - वीणा का स्वर; वीणा की तरह गुनगुनानेवाला; —वाद - वीणा बजाना; वीणा बजानेवाला; —वादक - वीणा बजानेवाला; —वादन - वीणा बजाना; मिजराब; —वादिनी - सरस्वती।

**वीत** - 1. वि० [सं] गत; लुप्त; अपवाद किया हुआ; छोड़ा हुआ; इच्छित, युद्ध के अनुपयुक्त; पालतू; निवृत्त; पहना हुआ; शान्त; 2. पु० अनुमान का एक प्रकार; युद्ध के अनुपयुक्त हाथी या घोड़ा; हाथी को अंकुश गड़ाकर और पैरों से दबाकर चलने के लिए प्रेरित करना; यौ० —कल्मष - पाप से मुक्त; —काम - इच्छा से रहित; —घृण - निष्ठुर; —चिन्त - चिन्ता-मुक्त; —राग - इच्छाहीन; बिना रंग का; वासनारहित; शान्त; आसक्ति आदि का परित्याग करनेवाला व्यक्ति; तीर्थंकर या बोधिसत्त्व; —शोक - शोक-रहित; —स्पृह - इच्छारहित।

**वीतक** - पु० [सं] कपूर या चंदन का चूर्ण रखने का पात्र, बाड़ा।

**वीथि, वीथी** - स्त्री०-[सं] कतार, घुड़दौड़ का रास्ता; बाज़ार; चित्रों की क़तार; दूकान; नक्षत्रों के अवस्थान का एक भाग; मकान में सामने का छज्जा; सूर्य का मार्ग।

**वीथिका** - स्त्री० [सं] चित्रों की पंक्ति; चित्रांकित दीवार या पट्ट, छज्जा; पंक्ति; सड़क।

**वीप्सा** - स्त्री० [सं] कार्य का नैरंतर्य सूचित करने के लिए शब्द की आवृत्ति, पुनरुक्ति; व्याप्ति; एक शब्दालंकार।

**वीर** - 1 वि० [सं] बहादुर; शक्तिशाली; श्रेष्ठ; 2. पु० योद्धा; अभिनेता; अग्नि; यज्ञाग्नि; पति; पुत्र; एक रस (साहि०); विष्णु; वर्द्धमान महावीर; काली मिर्च; [हिं] भाई; **यौ०** —कर्म - वीरतापूर्ण कार्य; —कर्मा - वीरोचित कर्म करनेवाला; —गति - युद्ध में मृत्यु होने पर प्राप्त होनेवाली गति; —गोष्ठी - वीरों का आपस का वार्तालाप; —चर्या - साहसिक कार्य; —पट्ट - एक प्रकार का वस्त्र जिसे सैनिक ललाट पर पहनते हैं; —पत्नी - वीर की भार्या; —भट - योद्धा; —मानी - अपने को वीर समझनेवाला; —मार्ग - स्वर्ग; —रस - एक काव्यरस; वीरता का भाव; —वाक्य - वीरताद्योतक शब्द; —वाद - वीरताजन्य कीर्ति; —शयन, शय्या - रणक्षेत्र; बाणों की शय्या; —शाक - बथुआ; —श्रेष्ठ - अद्वितीय वीर; —स्थान - साधकों का एक आसन; स्वर्ग; —हत्या - नरहत्या; पुत्रहत्या।

**वीरण** - पु० [सं] खस; एक प्रजापति।

**वीरणी** - स्त्री० [सं] गहरी जगह; तिरछी चितवन।

**वीरवती** - स्त्री० [सं] जिसका पुत्र या पति जीवित हो।

**वीरा** - स्त्री० [सं] माता, पत्नी; वीर भार्या; मदिरा; केले का पेड़; वह स्त्री जिसका पिता और पुत्र जीवित हो; ब्राह्मी।

**वीरान** - वि० [फा] जनहीन, बंजर, बरबाद।

**वीराना** - पु० [फ़ा] उजाड़ जगह; जंगल; **यौ०** —नशीं - जंगल में रहनेवाला।

**वीरानी** - स्त्री० [फ़ा] बरबादी; वीरान हो जाना।

**वीरासन** - पु० [सं] एक घुटना टेककर बैठना; खुली जगह में सोना; प्रहरी का स्थान; युद्ध-भूमि; योगासन का एक प्रकार।

**वीरिण** - पु० [सं] ऊसर ज़मीन।

**वीर्य** - पु० [सं] शुक्र, रेतस; पौरुष; पुंस्त्व; शक्ति; साहस; कांति; ओज; विष; गौरव; सारतत्त्व; **यौ०** —कर - मज्जा; —काम - पुंस्त्व चाहनेवाला; —पारमिता - शक्ति का चरमोत्कर्ष; —विभूति - शक्ति की अभिव्यक्ति; —बुद्धिकर - वीर्य बढ़ानेवाला; वाजीकरण; —शाली - पराक्रमी; —शुल्क - विवाह आदि के लिए कोई शक्तिशाली शर्त; शक्ति के बल पर प्राप्त या क्रीत; —हीन - कायर; नपुंसक; शक्तिहीन।

**वीर्यवान** - वि० [सं] बलवान, पुष्ट।

**वीर्यान्तराय** - पु० [सं] स्वस्थ होते हुए भी मनुष्य को शक्तिहीन करनेवाला दुष्कर्म।

**वीर्याधान** - पु० [सं] गर्भाधान।

**वीवधिक** - पु० [सं] बहँगी ढोनेवाला; बिसाती।

**वीहार** - पु० [सं] मंदिर; मठ।

**वुकूअ** - पु० [अ] घटित होना; (पक्षी का) नीचे उतरना।

**वुकूआ** - पु० [अ] घटना; झगड़ा; वारदात।

**वुक़ूफ़** - पु० [अ] जानना ; ज्ञान ; बुद्धि ।

**वुज़ू** - पु० [अ] नमाज़ के पहले यथाविधि हाथ-पाँव तथा मुँह आदि धोने की क्रिया ; **मु०** —ढीला या शिकस्त होना - संकल्प शिथिल हो जाना।

**वुजूद** - पु० [अ] अभिव्यक्ति ; अस्तित्व ; जीवन ; **यौ०** - बेवूद - अस्तित्वहीन वस्तु ; स्वप्न या कल्पनाजगत् की वस्तुएँ।

**वुरूद** - पु० [अ] आना ; उतरना ; पहुँचना ।

**वुसूक़** - पु० [अ] भरोसा ; मज़बूती ।

**वुसूल** - पु० [अ] प्राप्ति ; पहुँचना ; मिलना ; **यौ०** —क़र्ज़ - क़र्ज़ के रुपयों का वापस मिलना ; —बाक़ी - बाक़ी रुपया वसूल करना ।

**वुसूली** - 1. वि० [अ] वसूल करने योग्य ; 2. स्त्री० वसूल करने योग्य रक़म ।

**वृंत** - पु० [सं] डंठल ; बोंड़ी ; घड़ा रखने की तिपाई आदि ; भटा ; स्तन का अगला भाग, चूचुक ; **यौ०**— फल - बैंगन ।

**वृंतक** - पु० [सं] डंठल ।

**वृंताक** - पु० [सं] बैंगन ।

**वृंताकी, वृंतिका** - स्त्री० [सं] बैंगन ।

**वृंद** - 1. पु० [सं] गुच्छा ; झुंड ; गले का अर्बुद ; समूह ; सम्मिलित गान ; सौ करोड़ की संख्या ; 2. वि० बहुसंख्यक ; **यौ०** —गायक - कई गायकों के साथ गानेवाला ।

**वृंदारक** - 1. पु० [सं] देवता , नायक , श्रेष्ठजन ; 2. वि० श्रेष्ठ ; सुंदर ।

**वृंहण** - 1. वि० [सं] पुष्ट करनेवाला ; 2. पु० पौष्टिक पदार्थ ; दारव ; भूमि - कुष्मांड ; पुष्ट करने की क्रिया ; हाथी का चिंघाड़ना।

**वृंहित** - 1. वि० [सं] पुष्ट किया हुआ ; 2. पु० हाथी का चिंघाड़ ।

**वृक** - पु० [सं] भेड़िया ; गीदड़ ; उल्लू ; कौआ ; क्षत्रिय ; चंद्रमा ; चोर ; वज्र ; सूर्य ; **यौ०** —कर्मा भेड़िये की तरह काम करनेवाला ; —दंश - कुत्ता ; —धूप - अनेक सुगंधित द्रव्यों के योग से बना धूप ; तारपीन ; —धूर्त, धूर्तक - गीदड़ ; भालू ; —वाला - दरवाज़े के पास लगायी जानेवाली लकड़ी ।

**वृकी** - स्त्री० [सं] भेड़िये की मादा ; शृगाली ; पाठा ।

**वृकोदर** - पु० [सं] ब्रह्मा ; भीमसेन ।

**वृक्क, वृक्कक** - पु० [सं] गुरदा ।

**वृक्ण** - पु० [सं] चिन्ह ।

**वृक्ष** - पु० [सं] पेड़ ; पौधा ; वनस्पति ; उद्दीपक पदार्थ ; कुरज ; वंशवृक्ष ; **यौ०** —खंड - कुंज ; —गृह - पक्षी ; —चर - बंदर ; —तक्षक - लकड़हारा ; —नाथ, नाथक - बरगद का पेड़ ; —निर्यास - गोंद ; —पाल - जंगल का रक्षक ; जंगली शाल ; —प्रतिष्ठा - पुण्यफल की प्राप्ति के लिए पेड़ लगाना ; —भवन - वृक्षकोटर ; —भित्, भिद्, भेदी - कुल्हाड़ी, वसूला आदि ; —मूल - पेड़ की जड़ ; —राज - पारिजात ; —राट - वटवृक्ष ; —रोपण - वृक्ष लगाने की क्रिया , —वाटिका - उपवन ; बाग़ , —संकट - घने पेड़ों के बीच की पगडंडी ; —सेचन - वृक्ष में पानी देना ; —स्नेह - गोंद ।

**वृक्षालय** - पु० [सं] चिड़िया ।

**वृक्षावास** - पु० [सं] पक्षी ; वृक्षकोटर में रहनेवाला तपस्वी ।

**वृजन** - 1. पु० [सं] पाप ; आकाश ; कुटिलता ; घुँघराले बाल ; घेरी हुई ज़मीन या चरागाह आदि ; निराकरण ; बाल ; युद्ध ; संकट ; 2. वि० टेढ़ा ।

**वृज्य** - वि० [सं] घुमाया या मोड़ा जानेवाला।

**वृत** - 1. वि० [सं] चुना हुआ; छिपा हुआ; घेरा हुआ; गोल; दूषित किया हुआ; नियुक्त; प्रार्थित; सेवित; स्वीकृत; 2. पु० धन।

**वृति** - स्त्री० [सं] घेरने या ढकने का उपकरण; चुनाव; छिपाना; नियुक्ति; प्रार्थना; याचना करना।

**वृत्त** - 1. वि० [सं] अधीन; गोलाकार; घटित; जिसका अस्तित्व रहा हो; निष्पन्न; पूरा किया हुआ; मृत; व्यतीत; स्थिर; प्रसिद्ध; आवृत; ढका हुआ; मुड़ा हुआ; 2. पु० कच्छप; इतिहास; घटना; आचरण; जीविका; छंद; वर्तुलाकार मंदिर; परिवर्तन; परिधि; सुकर्म; विहित नियम; वृत्तान्त; समाचार; **यौ०**—खंड - वृत्त का कोई भाग; —चूड़ - जिसका चूड़ाकरण-संस्कार हो चुका हो; मेहराबदार (झरोखा); —चेष्टा - रहन-सहन; —तुंड - गोल मुँहवाला; —पुष्प - कदंब; शिरीष; —फल - अनार; बेर; कैथ, काली मिर्च; खरबूजा; तरबूज; लाल चिचड़ा; — फला - आँवला; कड़ुवी ककड़ी; बैगन; —बंध - छंदोबद्ध रचना; —बीज - भिंडी; —भंग - छंदोभंग; आचरण-भ्रंश; —युक्त, शाली - सदाचारी; —शस्त्र - धनुर्वेद का ज्ञाता; —श्लाघी - अपने काम की प्रशंसा करनेवाला; —हीन - आचरणहीन।

**वृत्तक** - पु० [सं] गद्य की एक शैली जिसकी शब्द-योजना कुछ-कुछ छंद-जैसी होती है; छंद; जैन; बौद्ध।

**वृत्तांत** - 1. पु० [सं] आख्यान; अवसर; घटना; ढंग; अवस्था; ग्रंथ का अध्याय; समाचार; वर्णन; विवरण; विषय; विश्राम; धर्म; समग्रता; 2. वि० एकान्त; एकाकी।

**वृत्तानुवर्ती** - वि० [सं] रीति-नीति का पालन करनेवाला; शुद्धाचारी।

**वृत्तानुसारी** - वि० [सं] विहित कार्य करनेवाला।

**वृत्ति** - स्त्री० [सं] अस्तित्व; कार्य; ढंग; पेशा; मन की अवस्था; रहना; व्यापार; स्वभाव; हालत; कार्य का कारण; कारिका, पद्यमयी व्याख्या; जीविका; चक्कर खाना; चक्र या वृत्त की परिधि, पारिश्रामिक; सम्मानपूर्ण बर्ताव; लुढकना; शब्द-शक्ति; सहायतार्थ दिया जानेवाला धन; रचना-शैली; आधेय; अनुप्रास; तुक; विचार-सरणि; प्रचलन; **यौ०** —कर - जीविका प्रदान करनेवाला; —कार - सूत्र की पद्यमयी व्याख्या का लेखक; —च्छेद - जीविका-रहित होना; —दाता - पालन करनेवाला; —निबंधन - जीविका का साधन; —विरोध - कार्य में उपस्थित होनेवाली बाधा; —भंग - जीविका की हानि; —मूल - जीविका का आधार।

**वृथा** - 1. अव्य० [सं] बेकार; निष्प्रयोजन; भूल से; मूर्खता से; 2. वि० अनुचित; झूठ; निरर्थक; **यौ०**—कथा - गपशप; —कर्म - निष्प्रयोजन या मनोरंजन के लिए किया जानेवाला काम; —जन्म - निरर्थक जन्म; — दान - अपात्र को दिया हुआ दान; —मति - मूर्ख; —वाक् - झूठी बात; —वादी - झूठ बोलनेवाला; —श्रम - अनुपयोगी श्रम।

**वृद्ध** - 1. वि० [सं] बूढ़ा; अधिक अवस्था का; चतुर, पूरा बढ़ा हुआ; बढ़ा हुआ; बड़ा; योग्य या सम्मानित; 2 पु० बूढ़ा आदमी; ऋषि; सम्मानित व्यक्ति; अस्सी वर्ष का हाथी; वह शब्द जिसके

पहले शब्द की वृद्धि हुई हो; यौ०—काल - बुढ़ापा; —क्रम - वृद्ध व्यक्ति का पद या दर्जा; —नाभि - तुंदिल; जिसकी नाभि उन्नत हो; —मत - प्राचीन ऋषियो का मत; — युवती - कुटनी; दाई; —वेग - प्रचंड वेगवाला; —शीली - वृद्धो का सा स्वभाववाला; —संघ - वृद्धो या पंडितों की सभा; समिति; —सूत्रक - रूई का गाला; बुढ़िया का सूत।

**वृद्धि** - स्त्री० [सं] बढती; प्रगति; अभ्युदय; सफलता; लाभ।

**वृद्धिमान** - वि० [सं] उन्नतिशील; धनी; बढ़ा हुआ।

**वृश** - पु० [सं] अदरक; अडूसा; चूहा।

**वृश्चन** - पु० [सं] बिच्छू।

**वृश्चिक** - पु० [सं] बिच्छू; एक राशि; एक रोआँदार कीड़ा; कनखजूरा; गोबर का कीड़ा; मार्गशीर्ष मास; केकड़ा।

**वृश्चिका** - स्त्री० [सं] बिच्छू नाम की घास।

**वृष** - पु० [सं] एक राशि; बैल; साँड़; अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ; चूहा; कर्ण; कामदेव; मज़बूत व हट्टा-कट्टा आदमी; पुण्य कर्म; शत्रु; नैतिकता; मुख्य पासा; मोर का पर; विष्णु; सूर्य; जल; मंदिर का एक विशेष आकार; जल; शिव; शुक्र; यौ० — कर्म - बैल की तरह काम करनेवाला; —केतन, केतु - शिव; —दंत, दंश, दंशक - बिडाल; —ध्वज - शिव; गणेश; ऋषभदेव; —पति - शिव; नपुंसक; —मन्यु - वीर; साहसी; —लोचन - चूहा; —वाहन - शिव।

**वृषक** - पु० [सं] आम का एक प्रकार; आडूसा; चूहा; भिलावाँ; साँड़।

**वृषण** - 1. पु० [सं] अंड; अंडकोश; शिव; 2. वि० उपजाऊ बनानेवाला; सिंचन करनेवाला।

**वृषभ** - पु० [सं] बैल; साँड़; एक औषधि, एक मुहूर्त; अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ; ऋषभ; कान का छेद; हाथी का कान, यौ० —यान - बैलगाड़ी; —वीथि - शुक्र के मार्ग के नौ भागो में से एक।

**वृषल** - पु० [सं] शूद्र; अश्व; अधार्मिक व्यक्ति; जातिच्युत ब्राह्मण; चंद्रगुप्त मौर्य; नर्तक; बैल; बड़ी पिप्पली; यौ० —पाचक - शूद्र के लिए भोजन बनानेवाला; —याजक - शूद्र के लिए यज्ञ करनेवाला।

**वृषली** - स्त्री० [सं] अविवाहित रजस्वला कन्या; मृतक बच्चा पैदा करनेवाली स्त्री; रजस्वला स्त्री; वंध्या स्त्री; शूद्रा।

**वृषा** - 1. स्त्री० [सं] असगंध; उदुंबरपर्णी; गौ; मालकँगनी; मूसाकानी; 2. पु० साँड़; अपने वर्ग में प्रधान; अश्व, अग्नि; इंद्र; कर्ण; दुःख; कष्ट का अनुभव न होना; वृषराशि; सोम।

**वृषारव** - पु० [सं] कर्कश स्वरवाले जंतु; नगाड़ा आदि बजाने की लकड़ी।

**वृषावाह** - पु० [सं] एक प्रकार का जंगली अन्न या चावल।

**वृषाहार** - पु० [सं] बिलाव।

**वृषी** - पु० [सं] मयूर।

**वृष्ट** - वि० [सं] वर्षा करनेवाला; वर्षा के रूप में गिरा हुआ; बरसा हुआ।

**वृष्टि** - स्त्री० [सं] वर्षा; झड़ी; वर्षा की तरह; किसी वस्तु का बहुत बड़े परिमाण में गिरना; यौ० —कर - वृष्टि करनेवाला; —काम, कामना - वर्षा की इच्छा; —काल - बरसात; —जीवन - देवमातृका (भूमि); चातक; —पात - वर्षा का होना; —मान - वर्षा मापने का यंत्र।

**वृष्णि** - 1. वि० [सं] क्रुद्ध ; क्रोधशील ; नास्तिक ; प्रचंड , पाखंड ; 2. पु० अग्नि ; इंद्र ; प्रकाश-रश्मि ; मेप ; वायु ; यादव , विष्णु ; शिव ; साँड़ ; **यौ०** —पाल - गड़रिया ।

**वृष्ण्य** - पु० [स] वीर्य ।

**वृष्य** - 1. वि० [सं] कामोद्दीपक ; पुंस्त्व बढ़ानेवाला ; 2. पु० आँवला ; उरद ; ऋषभ ; मृणाल ; शिव ।

**वृहत्** - वि० [सं] बड़ा ; भारी ; **यौ०** —कंद - गाजर ; —कुक्षि - तुंदिल ; —कोशातकी - तरोई, नेनुआ , —तृण - बाँस ; —त्वच - नीम ; —पंचमूल - गंभारी, गनियारी, पाँडर, बेल और सोना-पाठी का एक वर्ग ; —पत्र - बथुआ ; —पाटलि - धतूरा ; —पाद - बट का पेड़ ; —पुष्प - केला ; पेठा ; —फल - कटहल ; कुम्हड़ा ; जामुन ; चिचड़ा ; — फला - कद्दू ; पेठा ; बड़ी जामुन ; सफ़ेद कुम्हड़ा ; लौकी ।

**वृहन्नला** - स्त्री० [सं] अर्जुन का अज्ञातवास के समय का एक नाम ।

**वेंकट** - पु० [सं] द्रविड़ देश का एक पवित्र पर्वत ।

**वे** - सर्व० [हिं] 'वह' का बहु० ।

**वेक्षण** - पु० [सं] अच्छी तरह देखना ; देखभाल ।

**वेग** - प्रचंडता ; शुक्र ; धारा ; मल-मूत्र निकलने की प्रवृत्ति ; तीव्र प्रवृत्ति ; त्वरा ; जल्दी ; आंतरिक भाव की बाह्य अभिव्यक्ति ; आनंद ; क्षोभ ; शक्ति ; शीघ्रता ; उद्यम ; रोग का आक्रमण ; भावातिरेक ; वृद्धि ; तेज या वायु आदि में पाया जानेवाला एक गुण (न्या०) ; महा ज्योतिष्मती ; **यौ०** —गा - नदी ; —दंड - हाथी ; —धारण - मल-मूत्र का वेग रोकना ; —नाशन - कफ ; —परिक्षय - रोग की उग्रता का कम होना ; —रोध - कब्ज़ ; गति में बाधा पड़ना ; —वान - उग्र ; क्षुब्ध ; चीता ; एक विद्याधर ; विष्णु ; —वाहिनी - गंगा ; बाण ; —वाही - तेज़ी से उड़ने, जाने या बहनेवाला ; —विरोधी - कब्ज़ करनेवाला ; गति में बाधक होनेवाला ; —वृष्टि - मूसलधार वर्षा ।

**वेचा** - स्त्री० [सं] मज़दूरी ।

**वेटा** - स्त्री० [सं] वैश्यो की बस्ती ।

**वेटी** - स्त्री [सं] नाव ।

**वेण** - पु० [सं] गाने का पेशा करनेवाली एक प्रचीन वर्णसंकर जाति ; एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा ।

**वेणा** - स्त्री० [सं] खस ; कृष्णा की एक सहायक नदी ।

**वेणि** - स्त्री० [सं] चोटी गूँथना ; बालों की लटकती हुई चोटी ; एक नदी ; गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम ; जल-प्रवाह ; दो या अधिक नदियों का संगम ; **यौ०** —वेधनी - जोंक ; —वेधिनी - कंघी ।

**वेणिका** - स्त्री० [सं] अविच्छिन्न प्रवाह ; बालो की चोटी ।

**वेणिनी** - स्त्री० [सं] चोटीवाली स्त्री ।

**वेणी** - स्त्री० [सं] वेणि, बालों की चोटी ; बाँध ; धारा ; भेड़ ; **यौ०** —दान - प्रयाग या तिरुपति में मुंडन कराने का एक संस्कार ; —संवरण, संहार - चोटी गूँथना ; जूड़ा बाँधना ।

**वेणु** - पु० [सं] बाँसुरी ; बाँस ; एक नदी ; एक पर्वत ; राजा वेण ; **यौ०** —कार - बाँसुरी बनानेवाला ; —गुल्म, ज़ाल - बाँस का झुरमुट ; —दल - बाँस का फट्टा ; —पत्र - बाँस का पत्ता ; —

बीज - बाँस का चावल ; —मुद्रा - उँगलियो की एक विशेष मुद्रा (तंत्र०) —यष्टि - बाँस की छड़ी ; —वन - बाँस का वन ; —वाद, वादक - बाँसुरी बजानेवाला ; —शय्या - बाँस की खाट ।

**वेतन** - पु० [सं] तनख्वाह ; जीविका ; चाँदी ; वृत्ति ; यौ० —जीवी - वेतन लेकर काम करनेवाला ; वेतन से अपना निर्वाह करनेवाला ; —दान - पारिश्रमिक देना ; —नाश - वेतन या पारिश्रमिक काटना ; —भुक, भोगी - नौकर ।

**वेतस** - पु० [स] अग्नि ; बेंत , एक तरह का नीबू ; यौ० —गृह - बेंत का बना हुआ मंडप ।

**वेतसी** - स्त्री० [सं] बेंत ; यौ० —वृत्ति - समयानुसार अपने आपको अनुकूल बनाने की वृत्ति ।

**वेताल** - पु० [सं] प्रेत ; द्वारपाल ; शिव का एक गणाधिप ।

**वेत्ता** - 1. वि० [सं] जानकार ; अनुभव करनेवाला ; 2. पु० आत्मा - परमात्मा के रहस्य का ज्ञाता ऋषि ; प्राप्त करनेवाला ; पति ।

**वेत्र** - पु० [सं] डंडा ; द्वारपाल का दंड ; बेंत ; यौ० —कार - बेंत का काम करनेवाला ; —ग्रहण - द्वारपाल का काम ; —धर, धारक - द्वारपाल ; —धारी - रईस का नौकर ; —पाणि, हस्त - छड़ीबरदार ; —लता - बेंत की छड़ी ।

**वेत्रासन** - पु० [सं] बेंत की बनी हुई कुरसी ।

**वेत्री** - 1. पु० [सं] चोबदार ; द्वारपाल ; 2. वि० बेंतवाला ।

**वेद** - पु० [सं] ज्ञान ; आर्यों के आदि धर्मग्रंथ (ऋक्, यजुस्, साम और अथर्व) ; यथार्थ ज्ञान ; एक छंद ; कारिका ; प्राप्ति ; चार की संख्या ; अनुभूति ; कुश का पूला ; यज्ञ का एक अंश ; यौ० —कर्ता - वेद का रचयिता ; वर-वधू को आशीर्वाद देनेवाले गुरुजन ;—कार - वेद का रचयिता ; —कुशल - वेदज्ञ ; —गत - चौथे स्थान पर स्थित ; —गर्भा - सरस्वती ; —गांभीर्य - वेदों का गूढ अर्थ ; —गुप्ति - वेदो की रक्षा ; —घोष - वेदपाठ की ध्वनि ; —ज्ञ - वेदो का जानकार ; —तात्पर्य - वेदो का यथार्थ अर्थ ; —दल - चार पत्तोवाला ; —दान - वेद का अध्यापन ; —निधि - ब्राह्मण ; —पथ, पथि - वेद का मार्ग ; —माता - गायत्री ; दुर्गा ; सरस्वती ; —मूर्ति - वेदो का ज्ञाता ब्राह्मण ; सूर्य ; —रहस्य - उपनिषद ; —वचन - वेद में आये हुए वचन या मंत्र ; —वदन - व्याकरण ; —वाद - वेदों के संबंध में होनेवाली बहस ; —विहित - वेदानुमोदित ; —श्रुति - वेदपाठ ; —हीन - वेदों के ज्ञान से रहित ।

**वेदक** - वि० [सं] जाननेवाला ; होश में लानेवाला ।

**वेदन** - पु० } **वेदना** - स्त्री० } [सं] अनुभूति ; उपहार ; जताना ; ज्ञान ; दुख-प्राप्ति ; विवाह ; शूद्रा का उच्चतर वर्ण के पुरुष से विवाह ; संपत्ति ।

**वेदनीय** - वि० [सं] जनाने योग्य ; जानने योग्य ; कष्ट या पीड़ा देनेवाला ।

**वेदयिता** - पु० [सं] जानने या अनुभव करनेवाला ।

**वेदांग** - पु० [सं] वेदों के अंगरूप कुछ ग्रंथ जो वेदमंत्रों के उच्चारण तथा उनके अर्थ आदि समझने में सहायक होते

हैं (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, ज्योतिष और व्याकरण)।

**वेदांत** - पु० [सं] छः दर्शनो में एक; ब्रह्मविद्या।

**वेदांती** - वि० [सं] वेदांत का पंडित; ब्रह्मवादी।

**वेदादि** - पु० [सं] ओम, प्रणव; **यौ०** —बीज, वर्ण - ओम्, प्रणव।

**वेदाध्ययन** - पु० [सं] वेदो का अध्ययन।

**वेदि** - 1. पु० [सं] आचार्य; ऋषि; 2. स्त्री० वेदी।

**वेदिक** - पु० [सं] आसन; चौकी।

**वेदिका** - स्त्री० [सं] वेदि; आँगन में बना हुआ खुला मंडप; आसन; धार्मिक कृत्यों के लिए बनाया हुआ छोटा चबूतरा; यज्ञभूमि; लतामंडप।

**वेदित** - वि० [सं] देखा हुआ; निवेदित; सूचित।

**वेदितव्य** - वि० [सं] जानने योग्य।

**वेदी** - 1. स्त्री० [सं] किसी वस्तु का आधार; ज्ञान-विज्ञान; उँगलियो की एक मुद्रा; मंदिर आदि के प्रांगण में बना हुआ मंडप; मुहर करने की अंगूठी; यज्ञादि की भूमि; 2. वि० अनुभव करनेवाला; ज्ञाता; विज्ञान; विवाह करनेवाला; सूचित करनेवाला; 3. पु० आचार्य; जाननेवाला; ब्रह्म; विद्वान; ब्राह्मण।

**वेद्य** - वि० [सं] कहने योग्य; जानने योग्य; बतलाने योग्य; प्राप्त करने योग्य; विवाह करने योग्य; स्तुत्य।

**वेध** - पु० [सं] घुसाना; आहत करना; गड्ढे की गहराई; खुदाई; छिद्र; छेद करना; छेद-छाद; घोड़ों का एक रोग; निशाना मारना; रसों का मिश्रण; ग्रह आदि का स्थान निश्चित करना; **यौ०** —शाला - यंत्रों की सहायता से ग्रहो आदि की गति का निरीक्षण करने का स्थान।

**वेधक** - 1. वि० [सं] छेद करनेवाला; 2. पु० कपूर; चंदन; धनिया; बाल में लगा हुआ धान; सेंधा नमक।

**वेधन** - पु० [सं] आहत करना; खोदना; गहराई; छेदने की क्रिया; निशाना मारना (बाण आदि से); प्रवेश।

**वेधनिका** - स्त्री० [सं] छेद करने की तेज़ व नोकदार बरमी; रत्नादि को छेदने का एक औज़ार।

**वेधनी** - स्त्री० [सं] वेधनिका; हाथी का अंकुश।

**वेधस** - पु० [सं] अंगुष्ठमूल।

**वेधा** - पु० [सं] अर्क; धर्म; पंडित; ब्रह्मा, विष्णु; शिव; सूर्य।

**वेधालय** - पु० [सं] वेधशाला।

**वेपथु** - पु० [सं] कँपकँपी।

**वेपन** - 1. पु० [सं] कंपन; वातरोग; 2. वि० काँपनेवाला।

**वेम, वेमा** - पु० [सं] करघा।

**वेमक** - पु० [सं] जुलाहा।

**वेल** - पु० [सं] आम का पेड़; उपवन; एक बड़ी संख्या; कुंज।

**वेला** - स्त्री० [सं] अवसर; अवकाश; आसक्ति; कष्टरहित मृत्यु; घंटा; पहर; तट; फ़ासला; समय; तरंग; प्रवाह; भोजन का समय; मृत्युकाल; रोग; भोजन; राग; वाणी; समुद्रतट, समुद्र और स्थल की सीमा; सीमा।

**वेलातिक्रम** - पु० [सं] विलंब।

**वेश** - पु० [सं] कारबार; वेष, बाना, खेमा; चकला, वेश्यालय; पहुँच; प्रवेश; पारिश्रमिक; वेश्या का बर्ताव; **यौ०** —धर, धारी - दूसरे का बाना धारण करनेवाला; —भगिनी - सरस्वती; —भूषा -

पहनावा, पोशाक ; —वास - चकला ; मु० किसीका वेश धारण करना - किसीकी पोशाक आदि की नकल करना ।
**वेशर** - पु० [सं] खच्चर ।
**वेशिक** - पु० [सं] शिल्पविद्या, हाथ की कारीगरी ।
**वेश्म** - पु० [सं] घर ; **यौ०** —कर्म - गृह-निर्माण ; —भू - मकान बनाने योग्य स्थान ; —वास - शयनागार ।
**वेश्मांत** - पु० [सं] जनानखाना ।
**वेश्या** - स्त्री० [सं] गणिका, रूपजीवा ; पातुर ; **यौ०** —गमन - वासना की तृप्ति के लिए गणिका का सहवास ; —गामी - रंडीबाज़ ; —गृह - चकला ; — घटक - वेश्याओं का दलाल ; —पुत्र - अवैध पुत्र ।
**वेश्वर** - पु० [सं] खच्चर ।
**वेष** - पु० [सं] कर्म ; नेपथ्य ; बदला हुआ भेस ; बाना, वेश ; **यौ०** —धर - दूसरे का वेष धारण करनेवाला ; —धारी - वेषधर ; ढोंगी ।
**वेषी** - वि० [सं] भेस बनानेवाला ।
**वेष्क** - पु० [सं] बलि-पशुओं का गला घोंटने का फंदा ।
**वेष्ट** - पु० [स] आकाश ; गोंद ; घेरा ; दाँत का गड्ढा ; धूप का पेड़ ; पगड़ी ; फँसड़ी ; ब्रह्मा ।
**वेष्टन** - पु० [सं] आवरण ; एक अस्त्र ; ग्रहण करना ; घेरना, लपेटना ; कान का छेद ; चहारदीवारी ; गुग्गुल ; पगड़ी ; पट्टी ; बंध ; मुकुट ; लपेटनेवाली चीज़ ।
**वेष्टित** - 1. वि० [सं] घिरा हुआ ; ऐंठा हुआ ; रोका हुआ ; लपेटा हुआ ; वस्त्र से ढका हुआ ; 2. पु० घेरना, लपेटना ; पगड़ी ; नृत्य की एक मुद्रा ।
**वेसन** - पु० [सं] बेसन ।
**वेसर** - पु० [सं] खच्चर ।
**वेसवार** - पु० [स] पिसा हुआ मसाला ।.
**वै** - 1. अव्य० [हि] एक निश्चय का बोध करानेवाला शब्द ; 2. वि० दो ।
**वैकल्प** - पु० [स] अनिश्चयता, विकल्पता ।
**वैकल्पिक** - वि० [सं] अनिश्चित ; ऐच्छिक ।
**वैकल्य** - पु० [स] अनस्तित्व ; उत्तेजना ; क्षोभ ; त्रुटि ; निर्बलता ; न्यूनता ; पंगुता ; विकलता ।
**वैकारिक** - 1. वि० [सं] परिवर्तनशील ; बिगड़ा हुआ ; 2. पु० भावावेश; विकार ।
**वैकुंठ** - पु० [सं] विष्णुलोक ; स्वर्ग ; **यौ०** —गति - स्वर्ग में जाना ; —चतुर्दशी - कार्तिकशुक्ला चतुर्दशी ; —लोक - विष्णुलोक ; —वास - स्वर्गवास ।
**वैक्रिय** - 1. वि० [सं] परिवर्तनशील ; विकारजन्य ; 2. पु० योगसिद्धि के बल से इच्छानुसार छोटा-बड़ा होनेवाला एक शरीर ।
**वैक्लव, वैक्लव्य** - पु० [सं] अस्तव्यस्तता ; पीड़ा ; विकलता ; शोक ।
**वैखरी** - स्त्री० [सं] कंठ से उच्चारण किया जानेवाला स्वर-विशेष ; वाक्शक्ति ; सरस्वती ।
**वैखानस** - 1. पु० [सं] तपस्वी ; वानप्रस्थ ; 2. वि० वानप्रस्थ आश्रम-संबंधी ।
**वैखारक** - वि० [सं] चरपरा और नमकीन ।
**वैगुण्य** - वि० [सं] अकुशलता ; गुण का अभाव ; गुण या धर्म की भिन्नता ; दोष ।
**वैग्रहिक** - वि० [सं] शरीर-संबंधी, शारीरिक ।
**वैचित्र** - पु० [सं] विचित्रता ।
**वैचित्र्य** - पु० [सं] अनोखापन, विचित्रता ; अंतर ; आश्चर्य ; नैराश्य ; भिन्नता ; सुंदरता ।

**वैजनन** - 1. पु० [सं] गर्भ का अंतिम मास ; 2. वि० प्रजनन-संबंधी ।

**वैजन्य** - पु० [सं] एकान्त ।

**वैजयन्त** - पु० [सं] अरणि ; इंद्रप्रासाद ; इंद्र की ध्वजा ; इंद्र ; एक पर्वत ; ध्वजा ; स्कंद ।

**वैजयन्तिका** - स्त्री० [सं] जयन्ती वृक्ष ; एक तरह का मुक्ताहार ; झंडा ।

**वैजयन्ती** - स्त्री० [स] जयन्ती वृक्ष ; चिन्ह ; पाँच रंगो की एक माला जो घुटनों तक लटकती रहती है ; झंडा ; विष्णु की माला ; विजयमाल ।

**वैजात्य** - पु० [सं] जाति से पृथक किया जाना ; वर्ग-भिन्नता ; लंपटता ; विजातीयता ।

**वैज्ञानिक** - पु० [सं] विज्ञान का पंडित ; विज्ञान-संबंधी ।

**वैडूर्य** - 1. पु० [सं] एक रत्न ; एक पर्वत ; 2. वि० वैडूर्य-निर्मित ।

**वैण** - पु० [सं] एक साम ; बाँस का काम करनेवाला, बँसोड़ ।

**वैणव** - 1. वि० [सं] जव या अन्न का बना हुआ ; बाँस का बना हुआ ; बाँसुरी संबंधी ; 2. पु० बाँस का काम करनेवाला ; बाँस का चावल ; बाँसुरी ।

**वैणिक** - पु० [सं] वीणा बजानेवाला ; मल की गध ।

**वैणुक** - पु० [सं] बाँसुरी बजानेवाला ; बाँस का बना हाथी का अंकुश ।

**वैतंडिक** - पु० [स] तर्कप्रिय ; वितंडा या झगड़ा करनेवाला ।

**वैतत्य** - पु० [सं] फैलाव, विस्तार ।

**वैतथ्य** - पु० [सं] असत्यता ।

**वैतनिक** - 1. वि० [सं] वेतन लेकर काम क़रनेवाला ; 2. पु० मज़दूर ; कर्मचारी ।

**वैतरणी** - स्त्री० [सं] एक पुराणप्रसिद्ध नदी ; इस नदी को पार करानेवाली गाय ।

**वैताल** - 1. पु० [सं] वेताल ; 2. वि० वेताल-सम्बन्धी ।

**वैतालिक** - पु० [सं] चौसठ कलाओं में से किसी एक का ज्ञान ; बाज़ीगर ; बैताल का उपासक या अनुचर ; स्तुतिपाठक ; यौ० —व्रत - स्तुतिपाठ का कार्य ।

**वैतुष्य** - पु० [सं] भूसी का निकाला जाना ।

**वैतृष्ण्य** - पु० [सं] उदासीनता; प्यास बुझाना ।

**वैदग्ध, वैदग्ध्य** - पु० [सं] उपस्थित बुद्धि ; चतुरता ; दक्षता ; धूर्तता , पाडित्य ; रसिकता ; सौन्दर्य ।

**वैदर्भी** - स्त्री० [सं] माधुर्य-व्यंजक वर्णों को व्यक्त करनेवाली एक रीति ।

**वैदल** - 1. वि० [सं] मांस के फट्टे या बेंत का बना हुआ ; 2. पु० एक तरह की पीठी ; एक विषैला कीड़ा ; दो दलवाला अन्न ; बेत की बनी हुई डलिया ; संन्यासियो का भिक्षापात्र ।

**वैदिक** - 1. वि० [सं] पवित्र ; वेदविहित ; वेद-संबंधी ; 2. पु० वेदवचन ; वेदज्ञ ब्राह्मण ।

**वैदूर्य** - पु० [सं] वैडूर्य ।

**वैदेशिक** - 1. वि० [सं] विदेश-संबंधी ; 2. पु० विदेशी ; यौ० —नीति - किसी राष्ट्र की अन्य राष्ट्रों के साथ बरती जानेवाली नीति ; —व्यापार - किसी देश का अन्य देशो के साथ होनेवाला व्यापार ।

**वैदेह** - 1. वि० [सं] विदेह देश-संबंधी ; सुंदर आकृतिवाला ; 2. पु० अंतःपुर का सेवक ; एक वर्णसंकर जाति ; वणिक ; विदेह-नरेश ।

**वैदेही** - स्त्री० [सं] सीता ; विदेह देश की गाय ; पिप्पली ; वैदेह जाति की स्त्री ।

**वैद्य** - 1. वि० [सं] आयुर्वेद-संबंधी; वेदविहित; वेद-संबंधी; 2 पु० आयुर्वेद का ज्ञाता; जाति-विशेष; विद्वान; वेदज्ञ व्यक्ति; **यौ०**—क्रिया - चिकित्सा करने का पेशा; —मानी - अपने को वैद्य माननेवाला; —राज - धन्वंतरी, श्रेष्ठ वैद्य; —विद्या - चिकित्सा-शास्त्र।

**वैद्यक** - 1. पु० [सं] चिकित्सक; चिकित्सा-शास्त्र; 2. वि० चिकित्सा-संबंधी।

**वैद्युत** - 1. वि० [सं] बिजली का; बिजली-संबंधी; 2. पु० बिजली की आग।

**वैध** - वि० [सं] क़ानून के मुताबिक; जायज; विहित।

**वैधर्मिक** - वि० [सं] अविहित; जो धर्म-संगत न हो।

**वैधर्म्य** - पु० [सं] अंतर, असमानता; अवैधता; कर्तव्य की भिन्नता; धर्म या गुण की भिन्नता; नास्तिकता; वैपरीत्य।

**वैधव्य** - पु० [सं] रंडापा, विधवापन।

**वैधानिक** - वि० [सं] विधान-संबंधी।

**वैधेय** - 1. वि० [सं] मूर्ख; विधि-संबंधी; विहित; 2. पु० मूर्ख आदमी।

**वैनतेय** - पु० [सं] अरुण; गरुड़; गरुड़ का एक पुत्र।

**वैनयिक** - 1. वि० [सं] अनुशासन संबंधी; नैतिकता का पालन करानेवाला; युद्ध के अभ्यास में काम आनेवाला, 2. पु० युद्धरत।

**वैनाशिक** - 1. वि० [सं] अधीन; विनाश करनेवाला; नश्वर; विनाश में विश्वास करनेवाला; विनाश-संबंधी; 2. पु० अधीनस्थ व्यक्ति; ज्योतिषी; दास; बौद्ध दर्शन।

**वैनीतक** - वि० [सं] कई कहारों द्वारा ढोई जानेवाली एक प्रकार की पालकी; वाहन का साधन।

**वैपरीत्य** - पु० [सं] असंगति; प्रतिकूलता।

**वैपुल्य** - पु० [सं] अधिकता, विशालता।

**वैफल्य** - पु० [सं] निरर्थकता; विफलता।

**वैभव** - पु० [सं] अलौकिक शक्ति; ऐश्वर्य; गौरवान्वित पद; महत्ता; शक्ति; **यौ०** —शाली - ऐश्वर्यवाला, वैभवविशिष्ट।

**वैभाषिक** - वि० [सं] वैकल्पिक।

**वैभाष्य** - पु० [सं] विस्तृत व्याख्या।

**वैमत्य** - पु० [सं] नापसंदगी; मतभेद।

**वैमनस्य** - पु० [सं] अन्यमनस्कता; उदासी; अस्वस्थता; वैर।

**वैमुढक** - पु० [सं] स्त्री की पोशाक में पुरुषों का नृत्य।

**वैमूल्य** - पु० [सं] मूल्य की भिन्नता।

**वैयक्तिक** - वि० [सं] व्यक्तिगत।

**वैयधिकरण्य** - पु० [सं] भिन्न स्थानों में होने का भाव।

**वैयाकरण** - 1. पु० [सं] व्याकरण का ज्ञाता; 2. वि० व्याकरण-संबंधी।

**वैयावृत्ति** - पु० [सं] रुग्ण व्यक्तियों की सेवा।

**वैर** - पु० [सं] दुश्मनी; घृणा; **यौ०** —कर, कारक - शत्रुता पैदा करनेवाला; —कारी, कृत - झगड़ालू; —यातना - वैर का परिशोध; —पुरुष - शत्रु; —भाव - शत्रुता।

**वैरस, वैरस्य** - पु० [सं] अनिच्छा; विरसता।

**वैरागी** - 1. पु० [सं] उदासी, एक वैष्णव संप्रदाय; 2. वि० उदासीन, विरक्त।

**वैराग्य** - पु० [सं] उदासीनता; रंग बदलना; सांसारिक विषय-वासनाओं से मन का उचट जाना।

**वैराज** - 1. वि० [सं] ब्रह्मा-संबंधी ; 2. पु० ऋषभ नामक एक ऋषि ; पुरुष, परमात्मा ; ब्रह्मा , मनु ; वैराज्य ।

**वैराज्य** - पु० [सं] दो राजाओ की संयुक्त शासन-प्रणाली ; इस प्रकार की शासन-प्रणालीवाला देश ; विदेशी शासन ; विस्तृत साम्राज्य ।

**वैराट** - 1. वि० [सं] विराट-संबंधी ; विस्तृत ; 2. पु० एक फ़ुनगा ; रत्न ; विशेष रंग या उस रंग की वस्तु ; देश ; बीरबहूटी ।

**वैरि** - पु० [सं] दुश्मन ।

**वैरिण** - पु० [सं] शत्रुता ।

**वैरी** - 1. वि० [सं] शत्रुतापूर्ण ; 2. पु० योद्धा ; शत्रु ।

**वैरूप्य** - पु० [सं] कुरूपता ; रूपभिन्नता ; विकृति ; विरूपता ।

**वैलक्षण्य** - पु० [सं] अंतर ; विचित्रता ; विभिन्नता ।

**वैलक्ष्य** - पु० [सं] चिन्ह का अभाव ; वैचित्र्य ; वैपरीत्य ; लज्जा ।

**वैवक्षिक** - वि० [सं] जिसे कहना अभिप्रेत हो ।

**वैवधिक** - पु० [सं] गल्ला आदि बेचनेवाला ; फेरी करके माल बेचनेवाला ; दूत ; भारवाहक ।

**वैवर्ण्य** - पु० [सं] जातिच्युति ; भिन्नता ; मालिन्य ; रंग बदल जाना ; सौन्दर्य का अभाव ।

**वैवर्त** - पु० [सं] पहिए के समान घूमना ।

**वैवस्वत** - 1. वि० [सं] मनु-संबंधी ; यम-संबधी ; सूर्य-संबंधी ; 2. पु० एक तीर्थ ; एक रुद्र ; मनु ; यम ; शनि ग्रह , सातवाँ मन्वन्तर ।

**वैवाह** - वि० [सं] विवाह-संबंधी ।

**वैवाहिक** - 1. वि० [सं] विवाह-संबंधी ; 2. पु० कन्या या वर का ससुर ; विवाह के कारण होनेवाला संबंध ; विवाहोत्सव ।

**वैवृत्त** - पु० [सं] उदात्त स्वरो का क्रम ।

**वैशद्य** - पु० [स] विशदता ; कांति ; निर्मलता ; सफ़ेदी ; स्पष्टता ।

**वैशाख** - 1. पु० [सं] चैत्र मास के बाद आनेवाला एक चाद्रमास ; बाण चलाते समय की एक मुद्रा ; मंथनदंड ; 2. वि० वैशाख मास-सबधी ; **यौ०** —नंदन - गधा ; —रज्जु - मथानी की रस्सी ।

**वैशाखी** - 1. स्त्री० [सं] वैशाख की पूर्णिमा ; 2. पु० हाथी के अगले पैर का एक विशेष भाग ।

**वैशारद** - 1. वि० [सं] अनुभवी ; 2. पु० प्रगाढ पाडित्य ।

**वैशारद्य** - पु० [सं] दक्षता ; बुद्धि ; बुद्धि की स्पष्टता या स्वच्छता ।

**वैशिक** - 1. वि० [सं] वेश्यागामी ; वेश्या-वृत्ति से संबंध रखनेवाला ; 2. पु० वेश्यावृत्ति ।

**वैशिष्ट** - पु० [सं] अंतर ; विशेषता ।

**वैशिष्ट्य** - पु० [सं] अंतर ; श्रेष्ठता ; विशेष धर्म से युक्त होना ।

**वैशेषिक** - 1. वि० [सं] विशेषतायुक्त ; वैशेषिक दर्शन-संबंधी ; श्रेष्ठ ; 2. पु० छः दर्शनो में से महर्षि कणाद द्वारा प्रवर्तित एक दर्शन ।

**वैश्य** - 1. पु० [सं] हिन्दू आचार-विचार के अनुसार तीसरा वर्ण ; 2. वि० वैश्य जाति-संबंधी ; **यौ०** —कर्म - वैश्य का पेशा ; कृषि या वाणिज्य आदि ।

**वैश्रवण** - 1. पु० [सं] कुबेर : चौदहवाँ मुहूर्त ; रावण ; 2. वि० कुबेर-संबंधी ।

**वैश्वानर** - 1. वि० [सं] अग्नि-संबंधी ; 2. पु० अग्नि ; एक दैत्य ; चेतन ; जठराग्नि ; पित्त ; **यौ०** —मुख - अग्नि जिसका मुख हो (शिव) ।

**वैषम** - पु० [सं] असमानता ; परिवर्तन ।

**वैषम्य** - पु० [सं] अनौचित्य ; कठिनाई ; कठोरता ; एकाकीपन ; भूल ; विषमता ; संकट ; समतल का अभाव ।

**वैषयिक** - 1. वि० [सं] प्रदेश या भूभाग-संबंधी ; विषय-संबंधी ; 2. पु० लंपट ।

**वैषुवत** - 1. पु० [सं] केन्द्र ; विषुव ; 2. वि० मध्यवर्ती ; विषुव रेखा-संबंधी ।

**वैष्टिक** - पु० [सं] बेगार ।

**वैष्णव** - 1. वि० [सं] विष्णु को पूजनेवाला ; विष्णु-संबंधी ; 2. पु० एक धार्मिक संप्रदाय ।

**वैसर्गिक** - वि० [सं] त्याज्य ।

**वैसर्जन** - पु० [सं] यज्ञ की बलि ; विसर्जन करना ।

**वैसा** - 1. वि० [हिं] उस तरह का ; 2. अव्य० उतना ; उस प्रकार ।

**वैसादृश्य** - पु० [सं] अंतर ; असमानता ।

**वैसूचन** - पु० [सं] पुरुष द्वारा स्त्री का अभिनय करना ।

**वैसे** - अव्य० [हिं] उस प्रकार से ; यों ।

**वैहायस** - 1. वि० [सं] आकाश में विचरण करनेवाला ; वायु-संबंधी; 2. पु० देवता ; एक झील ।

**वैहार्य** - 1. वि० [सं] मज़ाक के योग्य (साला आदि) ; 2. पु० परिहास ।

**वोक** - अव्य० [हिं] ओर, तरफ़ ।

**वोछा** - वि० [हिं] ओछा, तुच्छ ।

**वोड़ना** - स० [हिं] फैलाना ।

**वोढ़ा** - पु० [सं] ढोने या ले जानेवाला ; नायक ; पति ; साँड़ ; सारथी ।

**वोदर** - पु० [हिं] उदर ।

**वोर** - स्त्री० [हिं] अन्त ; तरफ़ ।

**वोहित्थ** - पु० [सं] जहाज़ ।

**व्यंकुश** - पु० [सं] निरंकुश ।

**व्यंग** - 1. वि० [सं] शरीरहीन ; अव्यवस्थित ; चक्रहीन ; लँगड़ा ; विकलांग ; 2. पु० ताना ; विकलांग व्यक्ति ; गाल पर के काले धब्बे, मेंढ़क; **यौ०** —चित्र - किसी व्यक्तिविशेष को लक्ष्य बनाकर मज़ाक उड़ाने के लिए बनाया गया चित्र ।

**व्यंगार्थ** - पु० [सं] व्यंजनाशक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ ।

**व्यंग्य** - 1. वि० [सं] व्यंजनावृत्ति द्वारा संकेतित ; 2. पु० गूढ़ार्थ ।

**व्यंगोक्ति** - स्त्री० [सं] गूढ भाषा ; व्यंग्य-प्रधान उक्ति ।

**व्यंजक** - 1. वि० [सं] अर्थ का संकेत करनेवाला ; प्रकट करनेवाला ; 2. पु० आंतरिक भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा, अभिनय ; व्यंजना द्वारा अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द ।

**व्यंजन** - पु० [सं] भोजन-सामग्री ; स्वरहीन वर्ण ; चिह्न ; प्रकाशन ; परिचायक चिह्न ; पदचिह्न ; छद्मवेश ; तारुण्यद्योतक चिह्न ; अंग ; पंखा ; पका हुआ भोजन दिन ; बलि-पशु का संस्कार ; गुप्तचर ; **यौ०** —संधि - व्यंजन वर्णों का संयोग (व्या०) ।

**व्यंजित** - वि० [सं] चिन्हित ; प्रकट किया हुआ ; प्रत्यक्ष ; संकेतित ।

**व्यंतर** - पु० [सं] एक प्रकार के पिशाच, भूतादि ; अवकाश ।

**व्यक्त** - 1. वि० [सं] प्रकट ; ज्ञात ; चतुर ; उष्ण ; दृश्य ; निर्दिष्ट ; प्रत्यक्ष ; विकसित ; 2. पु० विद्वान मनुष्य ; विष्णु ; दीक्षित साधु ; **यौ०** —कृत्य - सार्वजनिक कार्य ; —गणित - अंकगणित ; —राशि - ज्ञातराशि ; —वाक् - जिसका वचन स्पष्ट हो ; —विक्रम - शक्ति प्रकट करनेवाला ।

**व्यक्ति** - 1. पु० [सं] जन, व्यष्टि ; 2. स्त्री० व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया,

अंतर करना ; प्रकट रूप ; लिंग (व्या०) ; वास्तविक प्रकृति ; स्पष्टता ; **यौ०** —गत - अपना ; एक व्यक्ति का ।

**व्यक्तित्व** - पु० [सं] किसी व्यक्ति में पायी जानेवाली असाधारण विशेषता ; व्यक्ति की विशेषता या गुण ।

**व्यग्र** - वि० [सं] अस्थिर ; गतिशील (चक्र आदि) ; घबड़ाया हुआ ; डरा हुआ ; व्यस्त ; संलग्न ।

**व्यज** - पु० [सं] पंखा ।

**व्यजन** - पु० [सं] पंखा ; पंखा झलना ; पंखे के काम आनेवाला ताड़पत्र आदि ; **यौ०** —चामर - पंखे के काम में आनेवाली चँवरी गाय की पूँछ ।

**व्यतिकर** - 1. वि० [सं] अन्योन्य, परस्पर ; व्यापक ; संलग्न ; 2. पु० अन्योन्य संबंध ; अवसर ; घटना ; नाश ; बाधा ; परिवर्तन ; मिश्रण ; विनिमय ; वैपरीत्य ; व्यसन ; संपर्क ।

**व्यतिक्रम** - पु० [सं] उपेक्षा ; उल्लंघन ; क्रमविपर्यय ; पाप ; बाधा ; बीतना ; रीतिभंग ; संकट ।

**व्यतिक्रांत** - 1. वि० [सं] उल्लंघित ; बिताया हुआ ; भंग किया हुआ ; 2. पु० अतिक्रमण ; पाप ।

**व्यतिरिक्त** - 1. वि० [सं] बहुत अधिक ; अपवादस्वरूप ; पृथक ; रहित ; रोका हुआ ; 2. अव्य० अलावा, सिवाय ।

**व्यतिरेक** - पु० [सं] अभाव ; अतिक्रमण ; भेद ; असंबंधरूप पदार्थ ; तुलना में वैपरीत्य दिखलाना ।

**व्यतिरेकी** - वि० [सं] अतिक्रमण करनेवाला ; अभावात्मक ; पदार्थों में विशेषता उत्पन्न करनेवाला ; भिन्न ; विपरीत ।

**व्यतिहार** - पु० [सं] गाली-गलौज ; मार-पीट ; बदला, विनिमय ।

**व्यतीत** - वि० [सं] उपेक्षित ; बीता हुआ ; त्यक्त ; प्रस्थित ; मृत ; लापरवाह ।

**व्यतीतना** - अ० [हिं] गुजरना ।

**व्यतीपात** - पु० [सं] भारी उपद्रव ; अनादर ।

**व्यत्यय, व्यत्यास** - पु० [सं] परिवर्तन ; बाधा ; व्यतिक्रम ; विपर्यय ; विरोध ।

**व्यत्यस्त** - वि० [सं] असंगत ; विपरीत ; विपरीत क्रम मे रखा हुआ ।

**व्यथा** - स्त्री० [सं] पीड़ा ; डर ; क्षति ; तकलीफ़ ; बेचैनी ; रोग ।

**व्यथाकुल** - वि० [सं] कष्टग्रस्त ।

**व्यथित** - वि० [सं] डरा हुआ ; पीड़ित, दुखित ।

**व्यधिकरण** - 1. पु० [सं] भिन्न आधार पर होना ; 2. वि० जिसका आधार भिन्न हो ।

**व्यधिक्षेप** - पु० [सं] निन्दा ; भर्त्सना ; शिकायत ।

**व्यपकर्ष** - पु० [सं] अपवाद ।

**व्यपकृष्ट** - वि० [सं] हटाया हुआ ।

**व्यपगत** - वि० [स] गया हुआ ; रहित ; लुप्त ।

**व्यपगम** - पु० [स] प्रस्थान ; बीतना (समय) ; लोप ।

**व्यपदिष्ट** - वि० [सं] निर्दिष्ट ; छला हुआ ; दिखलाया हुआ ; सूचित किया हुआ ।

**व्यपदेश** - पु० [सं] उपाधि ; सूचना ; ख्याति ; छल ; कुल ; छिपाव ; नाम ; निर्देश ; व्याख्या ।

**व्यपदेशक** - वि० [सं] नाम-निर्देश करनेवाला ।

**व्यपदेश्य** - वि० [सं] जिसका निर्देश करना हो ; निन्द्य ।

**व्यपदेष्टा** - वि० [सं] निर्देश करनेवाला ; छली ।

**व्यपनीत** - वि० [सं] हटाया हुआ।
**व्यपरोपण** - पु० [स] आघात पहुँचाना; उन्मूलन; काटना; तोड़ लेना; दूर करना।
**व्यपेत** - वि० [सं] गया हुआ; जिसका अंत हो गया हो; जो अलग हो गया हो; विपरीत।
**व्यभिचरण** - पु० [स] सदेह।
**व्यभिचार** - पु० [सं] सुमार्ग का त्याग; बुरा कर्म, दुराचार; अनुचित यौन संबंध; नियम का अपवाद; ग़लत तर्क; ग़लत हेतु।
**व्यभिचारिणी** - स्त्री० [स] कुलटा; पुंश्चली।
**व्यभिचारी** - 1. वि० [सं] कुमार्गगामी; अस्थायी; अनुचित यौन संबंध करनेवाला; दुश्चरित्र; उल्लंघन करनेवाला; अनेक गौण अर्थोंवाला (शब्द); 2. पु० कोई अस्थायी पदार्थ।
**व्यय** - पु० [सं] द्रव्य आदि का किसी काम में उपयोग होना; ख़र्च; रुपया-पैसा; त्याग; क्षय, नाश; **यौ०** —कर - रुपया चुकानेवाला; —करण, करणक - वेतन बाँटनेवाला कर्मचारी; —शाली, शील - अपव्ययी।
**व्ययी** - वि० [सं] क्षय होनेवाला; ख़ूब ख़र्च करनेवाला।
**व्यर्थ** - 1. वि० [सं] असंगत; निष्फल; धनहीन; बेमानी; बेकार; 2. अव्य० यों ही, बिना मतलब के; **यौ०** —नामक, नामा - जिसमें नाम के अनुरूप गुण न हों; —यत्न - जिसका यत्न निष्फल हो।
**व्यलीक** - 1. वि० [सं] अनुचित; अपरिचित; अप्रिय; असत्य; कष्टकर; 2. पु० अप्रिय वस्तु; अप्रियता; अपराध; दुःख का कारण; नागर; विट; छल; मिथ्यात्व; वैपरीत्य।
**व्यवच्छेद** - पु० [सं] अंतर दिखलाना, काटकर अलग करना; छुटकारा; पुस्तक का अध्याय या खंड; विभाजन; पृथक करना; निश्चय; शवच्छेद; विशेषता दिखलाना; छुटकारा।
**व्यवच्छेदक** - वि० [सं] अलग करनेवाला; भिन्न करनेवाला।
**व्यवधान** - पु० [सं] ओट में हो जाना, परदा; अवकाश; अंत; समाधि; विभाग; बाधा; बीच में पड़नेवाली वस्तु।
**व्यवसाय** - पु० [सं] अभिप्राय; अवस्था; आचरण; प्रयत्न; व्यापार; कर्म; प्रथम अनुभूति; कौशल; कोई पेशा करना; आचरण; छल; डींग; **यौ०** —बुद्धि - दृढ निश्चय; —वर्ती - दृढ निश्चय के साथ काम करनेवाला।
**व्यवसायात्मक** - वि० [सं] उत्साह से पूर्ण; संकल्प।
**व्यवसायी** - 1. वि. [सं] अध्यवसायी; उत्साही; उद्यमी; दृढ़ संकल्प; 2. कारबार करनेवाला; व्यापारी; शिल्पी।
**व्यवस्था** - स्त्री० [सं] आपेक्षिक अन्तर या स्थिति; प्रबंध, इन्तज़ाम; दृढ़ता, अध्यवसाय; स्थिरता; अवस्था; अवसर; निश्चित सीमा; विधान; **यौ०** —पत्र - किसी विषय का लिखित शास्त्रीय विधान; दस्तावेज़।
**व्यवस्थापक** - पु० [सं] प्रबन्ध करनेवाला; क़रीने से रखनेवाला; किसी विषय पर व्यवस्था देनेवाला; निश्चय करनेवाला।
**व्यवस्थापिका सभा** - स्त्री० [सं] जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों द्वारा विधान बनानेवाली सभा।
**व्यवस्थापित** - वि० [सं] जिसकी व्यवस्था की गयी हो; नियमित; विधिपूर्वक रखा या रखवाया हुआ।

**व्यवस्थित** - वि० [सं] विधिपूर्वक रखा हुआ ; निर्णीत ; निश्चित ; अवलंबित ; अविकारी ; वर्तमान ; व्यूहबद्ध ; स्थित ; यौ० —विषय - जिसका क्षेत्र सीमित हो ।

**व्यवहार** - पु० [सं] आचरण ; बर्ताव ; कार्य ; विषय ; अनिवार्य कार्य ; कारबार; पेशा ; प्रयोग ; महाजनी ; व्यापार ; रिवाज़ ; शर्त ; विवाद ; स्थिति ; मुक़द्दमा ; मुक़द्दमे का कारण या विचार ; दंड ; पद ; खड्ग ; संबंध ; औचित्य ; यौ० —ज्ञ - अपना कारबार सँभालने योग्य, बालिग़ ; मुक़द्दमे की कार्रवाई समझनेवाला ; —तंत्र - आचारशास्त्र , —दर्शन - मुक़द्दमे की जाँच या विचार ; —द्रष्टा - विचारपति ; —मार्ग - मुक़द्दमे की कार्रवाई का क्रम ; —विधि - व्यवहार का विधान ; —विषय, स्थान - मुक़द्दमे के विचार-संबंधी कार्रवाई ।

**व्यवहारिक** - वि० [सं] कारबार-संबंधी ; कारबार में लगा हुआ ; मुक़द्दमेबाज़ ; प्रचलित, व्यवहार में आनेवाला ।

**व्यवहार्य** - 1. वि० [सं] व्यवहार के योग्य ; प्रचलित ; प्रयोग में लाने योग्य ; मुक़द्दमे के लायक़ ; 2. पु० ख़ज़ाना ।

**व्यवहित** - वि० [सं] अलग रखा हुआ ; छिपाया हुआ ; उपेक्षित ; रोका हुआ ; दूरवर्ती ; पूरा किया हुआ ; नीचा दिखाया हुआ ।

**व्यवहृत** - 1. वि० [सं] व्यवहार या प्रयोग में लाया हुआ ; अनुष्ठित ; 2. पु० व्यापार ; संपर्क ।

**व्यष्टि** - स्त्री० [स] एक होने का भाव ; समष्टि का एक स्वतंत्र अंश, व्यक्ति ; प्राप्ति ; सफलता ।

**व्यसन** - पु० [सं] बुरी आदत, लत ; किसी चीज़ का बहुत ज़्यादा आदी होना ; त्रुटि ; नाश ; निकालना ; पराजय ; पृथक करना ; दुर्भाग्य ; विपत्ति ; दंड ; दुराचरण ; अयोग्यता ; एकता ; प्रिय विषय ; निष्फल प्रयत्न ; हानि ; यौ० —काल - संकट का समय, दुर्दिन ।

**व्यसनी** - वि० [सं] किसी बुरी चीज़ का आदी ; विषयासक्त ; बदनसीब ; किसी कार्य में जी-जान से लगा हुआ ; किसी विषय का अत्यंत शौक़ीन ।

**व्यस्त** - वि० [सं] कार्यादि में संलग्न ; उलझा हुआ ; उछाला हुआ ; निकाला हुआ ; तितर-बितर किया हुआ ; व्यष्टिरूप में ग्रहण किया हुआ ; क्षुब्ध ; घबड़ाया हुआ ; विभिन्न ; उलटा हुआ ; निहित ; परिवर्तित ; यौ० —केश - जिसके बाल बिखरे हो ; —पद - अदालत में दिया हुआ गड़-बड़ बयान ।

**व्याकुल** - वि० [सं] घबड़ाया हुआ ; किसी काम में लगा हुआ ; अभिभूत ; भीत ; तेजी से इधर-उधर चलता हुआ ; व्यग्र ; यौ० —चित्त, मना, हृदय - जिसका दिल बहुत घबड़ाया हुआ हो, व्यग्र, बेचैन ।

**व्याकूत** - पु० [सं] अफ़सोस ; मानसिक कष्ट ।

**व्याकृत** - वि० [सं] पृथक्-पृथक् किया हुआ , जिसका विश्लेषण किया गया हो ; परिवर्तित ; प्रकट किया हुआ ; विकृत ।

**व्याकोच** - वि० [सं] विकसित ।

**व्याक्षेप** - पु० [सं] अस्तव्यस्तता ; घबड़ाहट ; बाधा ; विलंब ; भर्त्सना ।

**व्याख्या** - स्त्री० [स] टीका ; वर्णन ।

**व्याख्यात** - वि० [सं] कथित ; जिसकी व्याख्या या टीका की गयी हो ; वर्णित ।

**व्याख्याता** - पु० [सं] भाषण करनेवाला; व्याख्या करनेवाला।

**व्याख्यान** - पु० [सं] भाषण या वक्तृता; टीका करना; वर्णन; **यौ०** —शाला - भाषण के लिए बना हुआ स्थान; विद्यालय।

**व्याघात** - पु० [सं] चोट; क्षोभ; खलल; पराजय; परस्पर विरोध (दो कथनों का); विघ्न।

**व्याघूर्णित** - वि० [सं] चक्कर खाया हुआ; लुढ़का हुआ।

**व्याघ्र** - पु० [सं] बाघ, एक हिंस्र जंतु; सर्वश्रेष्ठ; **यौ०** —चर्म - बाघ की खाल; —नख - बाघ का नख या पंजा; बाघ के नख का क्षत; —नायक - शृगाल।

**व्याघ्री** - स्त्री० [सं] बाघिन; एक गंध-द्रव्य; एक कौड़ी।

**व्याज** - पु० [सं] छल; कौशल; दुष्टता; धूर्तता; बहाना; सूद; **यौ०** —खेद - बनावटी थकान; —निन्दा - स्तुति की ओट में निन्दा; —निद्रित - सोने का बहाना करनेवाला; —व्यवहार - धूर्तता का व्यवहार; —स्तुति - निन्दा के बहाने स्तुति; —हत - धोखा देकर मारा हुआ।

**व्याजी** - स्त्री० [सं] घलुआ।

**व्याजोक्ति** - स्त्री० [सं] कपटपूर्ण बात।

**व्यात्त** - 1. वि० [सं] खोला हुआ या फैलाया हुआ; 2. पु० खोला या फैलाया हुआ मुख।

**व्यादान** - पु० [सं] खोलने या फैलाने की क्रिया।

**व्यादेश** - पु० [सं] विशेष आदेश।

**व्याध** - पु० [सं] बहेलिया; नीच या कमीना आदमी; शिकार द्वारा जीविका चलानेवाली एक संकर जाति।

**व्याधि** - स्त्री० [सं] पीड़ा; रोग; कष्ट पहुँचानेवाला व्यक्ति या वस्तु; कुष्ठ; **यौ०** —कर - अस्वास्थ्यकर; —ग्रस्त - रोगग्रस्त, बीमार; —निग्रह - रोग का दबाया जाना; —पीड़ित - रोगग्रस्त; —मंदिर - शरीर; —युक्त - रुग्ण; —रहित - रोगमुक्त; —स्थान - शरीर, —हर - रोगनाशक।

**व्याधूत** - वि० [सं] काँपता हुआ।

**व्यान** - पु० [सं] सारे शरीर में व्याप्त एक वायु।

**व्यापक** - 1. वि० [सं] व्याप्य से अधिक विस्तृत; दूर तक या सर्वत्र फैला हुआ; आच्छादक; एक भाव से किसीमें सदैव रहनेवाला; 2. पु० पदार्थ में सदैव रहनेवाला गुण।

**व्यापन** - पु० [सं] ढकना; सर्वत्र फैलना।

**व्यापना** - अ० [हिं] व्याप्त होना।

**व्यापन्न** - वि० [सं] नष्ट; मृत; लुप्त; संकटग्रस्त; स्वर आदि का परिवर्तन (व्या०)।

**व्यापार** - पु० [सं] कारबार; अभ्यास; उद्योग; काम; क्रिया; किसी बात में दखल देना; प्रयोग; वाणिज्य; सहायता करना।

**व्यापारिक** - वि० [सं] व्यापार-संबंधी।

**व्यापारित** - वि० [सं] काम में लगाया हुआ; किसी स्थान पर रखा या जमाया हुआ।

**व्यापारी** - 1. पु० [सं] अभ्यास करनेवाला; काम करनेवाला; व्यवसायी; 2. वि० किसी कार्य या व्यवसाय में लगा हुआ।

**व्यापी** - 1. वि० [सं] आच्छादक; व्याप्त होनेवाला; सर्वत्र फैलनेवाला; 2. पु० व्याप्त होनेवाला पदार्थ; विष्णु।

**व्यापृत** - 1. वि० [सं] कार्यादि में सलग्न ; जमाया हुआ ; रखा हुआ , 2. पु० उच्च कर्मचारी ; मंत्री ।

**व्याप्त** - वि० [सं] आच्छादित ; अंतर्भूत ; नित्य साथ रहनेवाला ; प्रसिद्ध ; प्राप्त ; परिवेष्टित ; ढकनेवाला ; फैला हुआ , भरा हुआ ; नित्य साथ रहनेवाला ; समाक्रांत ; स्थापित ।

**व्याप्ति** - स्त्री० [सं] व्याप्त होने का भाव ; एक पदार्थ में दूसरे का पूर्णतः मिल जाना ; नित्य साहचर्य; प्राप्ति; पूर्णता; विश्वजनीन नियम ; व्यापकता ; **यौ०** —ग्रह - असाधारण चिह्न के आधार पर सार्वजनीन या विश्वजनीन नियम का निर्धारण ; —ज्ञान - नित्य सहचर या व्याप्त पदार्थ का ज्ञान ; —लक्षण - नित्य साहचर्य का चिह्न या प्रमाण ।

**व्याप्य** - 1. वि० [सं] व्याप्त होने योग्य ; 2. पु० साधन ; हेतु ।

**व्याबाध** - पु० [सं] रोग ।

**व्यामिश्र** - वि० [सं] अन्यमनस्क ; एक साथ मिला हुआ ; विभिन्न प्रकार का ।

**व्यामूढ** - वि० [सं] बहुत घबड़ाया हुआ ।

**व्यामृष्ट** - वि० [सं] रगड़कर मिटाया हुआ ।

**व्यामोह** - पु० [सं] अज्ञान ; घबड़ाहट ।

**व्यायाम** - पु० [सं] कसरत ; अभ्यास ; कठिनाई ; आयास ; क्लांति ; दुर्गम मार्ग ; व्यापार ; फ़ौज की क़वायद ; युद्ध की तैयारी ; **यौ०** —भूमि, शाला - व्यायाम करने का स्थान ; —युद्ध - आमने-सामने की लड़ाई ; —शील - क़सरती ।

**व्याल** - 1. वि० [सं] जंगली ; दुष्ट ; निष्ठुर ; बुरा ; भयंकर ; शठ ; 2. पु० आठ की संख्या ; श्वापद ; चीता ; सर्प ; सिंह ; दुष्ट हाथी ; हिंस्र जंतु ।

**व्यालोल** - वि० [सं] अस्थिर ; कंपित ; चक्कर खाता हुआ ।

**व्यावर्त** - पु० [सं] चक्कर खाना ; उभरी हुई नाभि ; नियोजित करना ; परिवेष्टित करना ; पृथक करना ।

**व्यावर्तक** - वि० [सं] भेद या अंतर करनेवाला ; अलग करनेवाला ; हटानेवाला ।

**व्यावर्तन** - पु० [सं] चक्कर खाना ; अलग करना ; पराङ्मुख होना ; निवारण ; लौटना या मुड़ना ; परिवेष्टित करना ; सर्पकुंडली ।

**व्यावहारिक** - 1. वि० [सं] प्रचलित ; साधारण जीवन-संबंधी ; व्यवहार और कार्य-संबंधी ; मिलनसार ; वास्तविक ; मुक़द्दमा-संबंधी ; 2. पु० कारबार ; व्यापार ; मंत्री ; विचारपति ; **यौ०** —ऋण - व्यवसाय आदि के लिए लिया हुआ ऋण ।

**व्यावहारी** - स्त्री० [सं] आदान-प्रदान ।

**व्यावहार्य** - वि० [सं] जो जीर्ण-शीर्ण न हो ; योग्य ; सक्षम ।

**व्यावृत** - वि० [सं] खुला हुआ ; ढका हुआ ; अपवाद किया हुआ ; हटाया हुआ ।

**व्यावृति** - स्त्री० [सं] ढकना ; छाँटना ।

**व्यावृत्त** - वि० [सं] अविद्यमान ; असंगत ; अलग किया हुआ ; हटा हुआ ; विरत ; चक्कर खाया हुआ ; विभक्त ; तोड़ा-मरोड़ा हुआ ; भिन्न ; घेरा हुआ ; पसंद किया हुआ ; लुप्त ; मुक्त ।

**व्यासंग** - वि० [सं] अत्यधिक आसक्ति ; अध्यवसायपूर्ण अध्ययन ; घनिष्ट संपर्क ; घबड़ाहट ; जोड़ ; प्रबल इच्छा ; पार्थक्य ; भक्ति ।

**व्यास** - पु० [सं] समस्त पद के अंगों को अलग-अलग करना ; अंगों में

विभाग करना; पार्थक्य; केन्द्र से होते हुए परिधि के दोनो छोरों तक की दूरी; मिश्रित पदार्थ आदि का विश्लेषण; विस्तार; विस्तृत विवरण; संकलन करना; संकलनकर्ता; कृष्ण द्वैपायन नामक एक मुनि।

**व्यासक्त** - वि० [सं] अत्यधिक आसक्त; अनासक्त; संबद्ध; संलग्न; व्याकुल; आलिंगित; वियुक्त; हतबुद्धि।

**व्यासासन** - पु० [सं] कथावाचक का आसन।

**व्यासिद्ध** - पु० [सं] निषिद्ध।

**व्याहत** - वि० [स] चोट पहुँचाया हुआ; घबड़ाया हुआ; जिसे बाधा पहुँचायी गयी हो; डरा हुआ; निवारित; निषिद्ध; परस्पर विरोधी, विफल किया हुआ; व्यर्थ।

**व्याहति** - स्त्री० [सं] बाधा डालना; परस्पर विरोध या विरुद्ध पड़ना (न्या०)।

**व्याहार** - पु० [सं] मज़ाक; वचन; वाक्य; वार्तालाप; ध्वनि, स्वर; कलरव (पक्षियों का)।

**व्याहृत** - 1. वि० [सं] कथित; खाया हुआ; 2. पु० अस्पष्ट स्वर; निर्देश; बोलना; वार्तालाप करना।

**व्युत्क्रम** - पु० [सं] अतिक्रमण; अपराध; अस्तव्यस्तता; क्रमभंग; मृत्यु; सन्मार्ग का त्याग।

**व्युत्क्रान्त** - वि० [सं] अतिक्रान्त, उल्लंघित; उपेक्षित; प्रस्थित; भिन्न दिशा में जानेवाला।

**व्युत्पत्ति** - स्त्री० [सं] उत्पत्ति; उद्गम; प्रगाढ़ पांडित्य; दक्षता; बाढ़; शब्द का मूल रूप; स्वरभिन्नता।

**व्युत्पन्न** - वि० [सं] उत्पादित; जिसकी व्युत्पत्ति की गयी हो; पूरा किया हुआ; पूर्ण पंडित; मूल रूप से बनाया हुआ।

**व्युत्पादक** - वि० [सं] उत्पन्न करनेवाला; शब्द की व्युत्पत्ति करनेवाला।

**व्युत्सर्ग** - पु० [सं] विरक्ति; शरीर के मोह का त्याग।

**व्युत्सेक** - पु० [सं] चारो ओर जल छिड़कना।

**व्युपरत** - वि० [सं] जो रुक गया या बंद हो गया हो।

**व्युपरम** - पु० [सं] बाधा; विराम।

**व्युष्ट** - 1. पु० [सं] दिन; प्रभात; परिणाम; फल; 2. वि० प्रकाशयुक्त; प्रभात; गुजरा हुआ; जला हुआ; रहा हुआ।

**व्युष्टि** - स्त्री० [सं] अभ्युदय; परिणाम; प्रशंसा या स्तुति; प्रभात; सम्मृद्धि; सौंदर्य।

**व्यूढ** - वि० [सं] दृढ; फैला हुआ; विकसित; विशाल; विवाहित; व्यवस्थित।

**व्यूह** - पु० [सं] सैनिको को युद्ध-भूमि में ठीक स्थान पर रखना; अस्तव्यस्त करना; अलग करना; अध्याय; विस्तृत व्याख्या; रचना; शरीर; अंग; तर्क; श्वास-प्रश्वास।

**व्योम** - पु० [सं] आकाश; अवकाश; अभ्रक; कल्याण; जल; सूर्य-मंदिर; एक बड़ी संख्या; एक प्रजापति; विष्णु; **यौ०** —गंगा - आकाशगंगा; —गामी - गगनचारी; —गुण - शब्द; —धूम - बादल; —ध्वनि - आकाश से आनेवाली आवाज़; —पंचक - शरीर के पाँच छिद्र; —पुष्प - असंभव वस्तु; —यान - वायुयान, विमान; —वल्ली - अमरबेल; —संभवा - चितकबरी गाय।

**व्योमाख्य** - पु० [सं] अभ्रक; मूल कारण।

**व्योष** - पु० [सं] सोंठ, पीपल और गोल मिर्च के समाहार से बना त्रिकटुचूर्ण।

**व्रज** - पु० [सं] गमन या भ्रमण; गोशाला; गोपों की बस्ती; मथुरा के पास की कृष्ण की लीलाभूमि; बादल; सड़क; समूह; विश्रामस्थल; **यौ०** —किशोर, नाथ - कृष्ण; —मंडल - व्रज का क्षेत्र; —राज, लाल - कृष्ण; —वनिता, सुंदरी, स्त्री - गोपिका।

**व्रजक** - पु० [सं] परिभ्रमण करनेवाला सन्यासी।

**व्रजन** - पु० [सं] देशत्याग; गमन या भ्रमण।

**व्रजांगना** - स्त्री० [सं] व्रजभूमि की स्त्री, गोपी।

**व्रजित** - 1. वि० [सं] प्रस्थित; 2. पु० गमन या भ्रमण।

**व्रण** - पु० [सं] जख्म; छिद्र; फोड़ा; **यौ०** —कारी - आहत करनेवाला; —ग्रंथि - फोड़े की गाँठ; —चिन्तक - फोड़े का उपचार करनेवाला, सर्जन; —धूपन - फोड़े का बाष्पोपचार; —पट्ट, पट्टक, पट्टिका - फोड़े पर बाँधी जानेवाली पट्टी; —युक्त - जिसे जख्म हुआ हो; —वास्तु - फोड़े की जगह; —विरोपण - ज़ख्म भरनेवाला; —शोधन - घाव की सफ़ाई; —शोथी - फोड़े के कारण क्षीण होनेवाला; —संरोहण - घाव का भरना।

**व्रणन** - पु० [सं] छेद करना।

**व्रणित** - वि० [सं] आहत; जिसे व्रण हुआ हो; **यौ०** —हृदय - मर्माहत।

**व्रत** - पु० [सं] धार्मिक अनुष्ठान या नियम, संयम आदि; आदेश या विधान; कर्म; दुग्धाहार; व्रत-विशेष में एक ही प्रकार का पदार्थ खाना; विशिष्ट जीवन बिताने का ढंग; पुण्य आदि के विचार से उपवास करना; प्रतिज्ञा; **यौ०** —ग्रहण - किसी प्रकार का धार्मिक कार्य करने का संकल्प करना; सन्यास लेना; —चर्या - धार्मिक अनुष्ठान या व्रत रखना; —चारी - व्रत करनेवाला; —पारण, पारणा - व्रत या उपवास की समाप्ति; —प्रतिष्ठा - स्वेच्छा से कोई धार्मिक अनुष्ठान करना; —भंग - व्रत या प्रतिज्ञा का खंडित हो जाना; —लोप, लोपन - व्रतभंग; —विसर्ग - अनुष्ठान की समाप्ति; —विसर्जन - व्रत समाप्त करना; —वैकल्य - व्रत का पूरा न होना; —संग्रह - दीक्षा; —संपादन - धार्मिक अनुष्ठान पूरा करना; —स्थ - ब्रह्मचारी; —स्नात - व्रत पूरा होने पर जिसने स्नान किया हो; —स्नान - व्रत के बाद का स्नान।

**व्रतक** - पु० [सं] धार्मिक अनुष्ठान।

**व्रतति, व्रतती** - स्त्री० [सं] लता; विस्तार।

**व्रतादेश** - पु० [सं] उपनयन।

**व्रतिनी** - स्त्री० [सं] साधुनी, साध्वी।

**व्रती** - 1. वि० [सं] धर्माचारी; व्रत का अनुष्ठान करनेवाला; 2. पु० यजमान; ब्रह्मचारी; सन्यासी।

**व्रतोपनयन** - पु० [सं] उपनयन-संस्कार।

**व्रतोपवास** - पु० [सं] व्रत के लिए किया जानेवाला उपवास।

**व्राज** - पु० [सं] गति; समूह; फालतू मुर्गा या कुत्ता।

**व्रात्य** - 1. [सं] जातिच्युत द्विज; नीच आदमी; शूद्र और क्षत्रिया से उत्पन्न एक संकर जाति; 2. वि० महाव्रत-संबंधी; **यौ०** —गण - घुमंतू जाति या वर्ग।

**व्रीड** - पु० [सं] लज्जा।

**व्रीडन** - पु० [सं] अपकर्ष; नम्रता; शर्म।

**व्रीडा** - स्त्री० [सं] नम्रता; लज्जा; संकोच।

**व्रीडित** - 1. वि० [सं] लज्जित; विनीत, 2. पु० लज्जा; विनय।

**व्रीहि** - पु० [सं] चावल; कोई अन्न; चावल का दाना; बरसात में पकनेवाला धान; धान का खेत; यौ० —वाप - धान की बुवाई; —वापी - धान बोनेवाला; —वेला - धान काटने का समय; —श्रेष्ठ - बढ़िया धान।

**व्रीही** - वि० [सं] वह खेत जिसमें धान बोया गया हो।

**व्रैह** - वि० [सं] चावल का बना हुआ।

**व्रैहिक** - 1. वि० [सं] धान के साथ उपजाया हुआ; 2. पु० धान का खेत।

## श

**शंकना** - अ० [हिं] डरना; संदेह करना।

**शंकनीय** - वि० [स] शंका के योग्य।

**शंकर** - 1. पु० [सं] शिव; शंकराचार्य; एक छंद; एक राग; 2. वि० कल्याणकारी।

**शंकराचार्य** - पु० [सं] अद्वैतवाद के प्रवर्तक आचार्य शंकर।

**शंकरी** - 1. स्त्री० [सं] पार्वती; एक रागिणी; मजीठ; शमीवृक्ष; 2. वि० मंगल करनेवाली।

**शंका** - स्त्री० [सं] भय; यौ० —जनक - शंका पैदा करनेवाला; —निवृत्ति, निवारण - संशय को दूर करना; —शील - प्रायः शंका करनेवाला; —समाधान - शंका का निराकरण।

**शंकित** - वि० [सं] भीत; शंकायुक्त।

**शंकु** - पु० [सं] कील; अपराध; खूँटी; ठूँठ; बाँबी; भाला; शालवृक्ष; शिव; हंस; शंख की संख्या; बारह अंगुल की एक नाप; प्राचीन काल का एक बाजा; सूर्य; यौ० —कर्ण - गदहा।

**शंकुला** - स्त्री० [सं] सुपारी काटने का औज़ार, सरौता।

**शंख** - पु० [सं] एक समुद्री जन्तु का सख्त कलेवर; सौ पद्म की संख्या; ललाट; कुबेर की एक निधि; हाथी के दोनों दाँतो के बीच का भाग; यौ० —क्षीर - असंभव बात; —चरी, चर्चा - चंदन का टीका; —ज - कपोत के अंडे-जैसा शंख से निकला बड़ा मोती; —पुष्पी - ग्रीष्म ऋतु में पीसकर पीने के काम आनेवाला एक पौधा; —मुख - घड़ियाल; —लिखित - न्यायी राजा; निर्दोष; —वात - मस्तकपीड़ा; —विष - संखिया; मु० —बजना - सफलता मिलना; —बजाना - सफलता प्राप्त होने पर आनंद प्रकट करना; —फूँकना - देश तथा जाति में उत्साह या जागरण आदि की भावना भरना।

**शंखक** - पु० [सं] एक शिरोरोग; शंख; शंख का बना कड़ा।

**शंखिनी** - स्त्री० [सं] कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदो में से एक; एक वनौषधि; मुखनाड़ी।

**शंखी** - 1. पु० [सं] विष्णु; समुद्र; 2. वि० जिसके पास एक शंख की सम्पति हो; शंख का काम करनेवाला; शंख बनानेवाला।

**शंगरफ़** - 1. पु० [फ़ा] इंगुर; 2. वि० लाल।

**शंजरफ़** - पु० [फ़ा] इंगुर।

**शंठ** - 1. वि० [सं] मूर्ख; 2. पु० नपुंसक।

**शंड** - पु० [सं] नपुंसक; अंतःपुर का परिचारक; पद्म आदि का समूह; पागल व्यक्ति; साँड़।

**शंढ** - 1. पु० [सं] नपुंसक; राजा के अंतःपुर में स्त्रियों का रक्षक; साँड़; 2. वि० उन्मत्त।

**शंतनु** - पु० [सं] भीष्म के पिता; **यौ०** —सुत - भीष्म।

**शंपा** - स्त्री० [सं] बिजली।

**शंब** - 1. पु० [सं] कमर में पहनी जानीवाली लोहे की करधनी; दुबारा की गयी जोताई; वज्र; 2. वि० दरिद्र; सुखी; भाग्यशाली; भाग्यहीन।

**शंबर** - 1. पु० [सं] धन; चित्र; चित्रकवृक्ष; अर्जुनवृक्ष; जल; बादल; युद्ध; व्रत, 2. वि० श्रेष्ठ।

**शंबरारि** - पु० [सं] कामदेव।

**शंबरी** - स्त्री० [स] जादूगरनी; माया।

**शंबल** - पु० [सं] ईर्ष्या; तट; यात्रा के लिए भोज्य पदार्थ, पाथेय।

**शंबा** - पु० [फ़ा] शनिवार।

**शंबु, शंबुक** - पु० [सं] घोंघा।

**शंबूक** - पु० [स] घोंघा; हाथी के कुंभ का अंतिम भाग; हाथी की सूँड़ की नोक; एक शूद्र तपस्वी।

**शंभु** - पु० [सं] ब्रह्मा; शिव; ग्यारह रुद्रों में प्रधान रुद्र; सिद्ध व्यक्ति; सफ़ेद आम का वृक्ष; **यौ०** —तेज़, बीज - पारा; —भूषण - चंद्रमा; —लोक - कैलास, शिवलोक।

**शंस, शंसा** - स्त्री० [सं] इच्छा; कथन; प्रशंसा; मंगलकामना; वर्णन।

**शंस्य** - वि० [सं] अभिलषित; कथित; तारीफ़ के लायक़।

**श** - 1. पु० [सं] शिव; कल्याण; मंगल; शस्त्र; शास्त्र; समृद्धि; सौख्य; 2. वि० शुभ।

**शअबान** - पु० [अ] मुसलमानों का आठवाँ महीना।

**शऊर** - पु० [अ] तमीज़; बुद्धि।

**शक** - 1. पु० [सं] शकों का एक राजा; तातार देश के निवासी; शालिवाहन राजा; एक संवत्; [अ] संदेह; शंका; भ्रांति; 2. वि० फटा हुआ या दरार पड़ा हुआ।

**शकट** - पु० [सं] बैलगाड़ी; गाड़ी का बोझ; धव का पेड़; शरीर; दो हज़ार फलों के बराबर गाड़ी पर लदा बोझ; रोहिणी नक्षत्र; **यौ०** —व्यूह - शकट के आकार में रचित व्यूह।

**शकटिका, शकटी** - स्त्री० [सं] घोड़ागाड़ी; छोटी बैलगाड़ी; बच्चों के खेलने की छोटी गाड़ी।

**शकठ** - पु० [सं] मचान।

**शकर** - पु० [फ़ा] चीनी, बूरा, शक्कर; **यौ०** —कंद - मूली के आकार का एक मीठा कंद; मीठी चीज़ों को खानेवाला एक पक्षी; मीठी चीज़ें या तर माल खानेवाला; —ख़्वाब, ख़्वाबी - मीठी नींद सोना; —ज़बान - मधुरभाषी; —पारा - एक मिठाई; —रंजी - मित्रों में परस्पर होनेवाली मामूली अनबन; —लब - मीठे होठोंवाला; माशूक; —सफ़ेद - पक्की चीनी; मु०—से मुँह भरना - ख़ुशख़बरी सुनानेवाले को मिठाई खिलाना।

**शकरी** - 1. वि० [फ़ा] शक्कर का; शक्कर की तरह का; 2. पु० एक तरह का फ़ालसा।

**शकल** - 1. पु० [सं] चमड़ा; छिलका; टुकड़ा; 2. स्त्री० [हिं] शक्ल, आकृति; **यौ०** —सूरत - मुखाकृति।

**शकील** - वि० [फ़ा] सुंदर।

**शकुंत** - पु० [सं] चिड़िया; नीलकंठ; एक कीड़ा।

**शकुंतक** - पु० [सं] एक छोटी चिड़िया; पक्षी।

**शकुंतला** - स्त्री० [सं] राजा दुष्यंत की पत्नी

तथा उनके पुत्र भरत की माता; कालिदास का एक प्रसिद्ध नाटक।

**शकुन** - पु० [सं] विशिष्ट प्रकार के पशु-पक्षी आदि को देखने से प्रतीत होनेवाली शुभ-अशुभ की पूर्वसूचना, सगुन; मंगलकार्य के समय गाये जानेवाले गीत आदि; शुभ घड़ी; पक्षी; गिद्ध; यौ० —द्वार - यात्रा आदि के अवसरों पर शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के शकुनों का होना; मु० —आना-जाना - विवाह आदि शुभ अवसरों पर मंगल-सूचक वस्तुओं का आना-जाना; —करना - शुभ अवसरों पर मंगल के लिए कार्य करना।

**शकुनि** - पु० [सं] चिड़िया; चील; कौआ; गिद्ध; दुर्योधन का मामा।

**शकुनी** - 1. स्त्री० [सं] मादा गोरैया; श्यामा चिड़िया; बालकों का एक ग्रह; 2. पु० शकुन विचारनेवाला।

**शकृत** - पु० [सं] विष्टा; जानवर का माल; यौ० —करी - बछिया।

**शकर** - 1. स्त्री० [हिं] शकर; 2. पु० बैल।

**शकरीं** - वि० [फ़ा] मीठा, शर्करायुक्त।

**शकरी** - स्त्री० [सं] मेखला; उँगली; अछूत जाति की स्त्री।

**शक्की** - वि० [हिं] शंकाशील, शक करने-वाला।

**शक्त** - वि० [सं] पटु; मधुरभाषी; शक्तिमान; समर्थ।

**शक्तव** - पु० [सं] सत्तू।

**शक्ति** - स्त्री० [सं] क्षमता; बल; प्रभाव; वश; तलवार; साँग; ईश्वरशक्ति; गौरी; दुर्गा; देवशक्ति; राजशक्ति; शब्दशक्ति; यौ० —ग्रह - शब्द की अर्थबोधक वृत्ति की जानकारी; कार्तिकेय; शिव; शक्तिग्राहक; —संपन्न - बलवान; —हीन - सामर्थ्य-रहित।

**शक्तिमत्ता** - स्त्री० } [सं] शक्तियुक्त होने
**शक्तिमत्व** - पु० } का भाव।

**शक्तु** - पु० [सं] सत्तू; यौ० —फला, फली - शमीवृक्ष।

**शक्य** - वि० [स] होने के योग्य, संभव।

**शक्यार्थ** - पु० [सं] शक्ति की अभिधा शक्ति से ज्ञेय अर्थ।

**शक्र** - पु० [सं] इंद्र; इंद्रजौ; अर्जुनवृक्ष, उल्लू; कुटजवृक्ष; चौदह की संख्या; ज्येष्ठा नक्षत्र; शिव; यौ० —गोप - वीरबहूटी; —चाप - इंद्रधनुष; —जात - कौआ; —जाल - इंद्रजाल; —दिक - पूर्व दिशा; —मूर्धा - बाँबी; —वाहन - मेघ; —शाला - यज्ञशाला; —सुधा - कुंदरू।

**शक्राणी** - स्त्री० [सं] इंद्राणी, शची।

**शक्ल** - स्त्री० [अ] आकृति; अन्दाज़ या उपाय; चेहरा; ढंग; बनावट; रेखागणित की कोई आकृति; यौ० शक्ले-मिसाली - नमूना; मु० अपनी शक्ल तो देखो - अनधिकार चेष्टा पर व्यंग्य; —दिखाना - मिलना या सामने आना; देखते रह जाना;—देखा करना - चकित या मुग्ध हो जाना; —पहचानना - सूरत से पहचानना; सूरत देखकर शील-स्वभाव जान लेना; —बनाना, बिगाड़ना - चेहरे को असुंदर कर लेना या कर देना।

**शख़्स** - पु० [अ] मानवदेह; व्यक्ति।

**शख़्सीयत** - स्त्री० [अ] वैयक्तिक विशेषताएँ, व्यक्तित्व।

**शग़ल, शुग़ल** - पु० [अ] काम-धंधा; भगवान का ध्यान; मन-बहलाव।

**शगाल** - पु० [फा] शृगाल, गीदड़ ।
**शगूफ़ा** - पु० [फ़ा] शिगूफ़ा, चुटकुला; अनोखी बात ।
**शचि, शची** - स्त्री० [सं] इंद्राणी; क्रिया-शक्ति; पवित्र कर्म; प्रजा; बल; वाक्-शक्ति; सतावर ।
**शजर** - पु० [अ] तनेदार वृक्ष ।
**शजरा** - पु० [अ] वंशवृक्ष ।
**शट** - 1. वि० [सं] खट्टा; 2. पु० खटाई; तेज़ाब ।
**शटा** - स्त्री० [सं] जटा; शेर का अयाल ।
**शठ** - 1. वि० [सं] आलसी; जड़; मध्यस्थ; धूर्त; मूढ़; लंपट; 2. पु० कुंकुम; तगर; धतूरे का पेड़; लोहा; काम और साहित्यशास्त्रगत एक नायक ।
**शठता** - स्त्री०, **शठत्व** - पु० } [सं] शठ का भाव या धर्म ।
**शण** - पु० [सं] सन का पौधा ।
**शत** - 1. पु० [सं] सौ की संख्या; 2. वि० सौ; असख्य; **यौ०** —कर्मा - शनिग्रह का नाम; —कोटि - सौ करोड़; इंद्र का वज्र; —क्रतु - इंद्र; —ग्रंथि - दूब; —घ्नी - एक बार में सौ आदमियों को मारनेवाला शस्त्र; एक प्राणघातक गले का रोग; पत्थर में लोहे की कीलों को गाड़कर बनाया गया चार ताल लंबा शस्त्र; —च्छद - सौ पंखड़ियोंवाला कमल; —द्रु - शतलज नदी; —पत्र - कमल; तोता; कठफोड़वा; मयूर; सारस; —पद - कनखजूरा; —पद्म - श्वेत कमल; —पर्वा - बाँस; ईख का एक प्रकार; शरत पूर्णिमा; —पर्विका - जौ; दूब; —पुष्पा - सुल्फा का साग; —मख - इंद्र; उल्लू; —मन्यु - महाक्रोधी; इंद्र; उल्लू; —यष्टिक - सौ लड़ोंवाला हार; —रूपा - स्वायंभुव मनु की माता, ब्रह्मा की कन्या तथा पत्नी; —वादन - सौ बाजो का एक साथ बजना; —वार्षिक - सौ वर्षों पर होनेवाला; —वार्षिकी - सौ वर्षों में होनेवाली; सौ वर्ष पर होनेवाला उत्सव ।
**शतक** - वि० [सं] शती, शताब्दी; सौ की संख्या से सबद्ध ।
**शतधा** - अव्य० [सं] सौ प्रकार से ।
**शतरंज** - 1. पु० 2. स्त्री० [अ] एक खेल जिसके मोहरे (बादशाह, वज़ीर, हाथी, घोड़ा, प्यादे आदि) होते हैं; **यौ०** —बाज - शतरंज खेलनेवाला; —बाज़ी - शतरंज खेलना ।
**शतरंजी** - स्त्री० [अ] रंग बिरंगी दरी; शतरंज खेलने की बिसात; **यौ०** —बाफ़ - शतरंजी बुननेवाला ।
**शतशः** - अव्य० [सं] सैकड़ो प्रकार से ।
**शतांश** - पु० [सं] सौवाँ हिस्सा ।
**शतानक** - पु० [सं] श्मशान ।
**शतानन** - पु० [सं] श्रीफल, बेल ।
**शताब्द** - पु०, **शताब्दी** - स्त्री० } [सं] शती, सौ सालो की अवधि ।
**शतायु** - वि० [सं] सौ वर्षो की आयुवाला ।
**शतार** - पु० [सं] वज्र ।
**शतावधान** - पु० [सं] किसी प्रकार की त्रुटि के बिना एकाग्र चित्त से सौ अथवा बहुत-से कामो को एक साथ करनेवाला व्यक्ति; शतावधान का कार्य ।
**शतावर** - स्त्री० [हिं] सफ़ेद मूसली ।
**शतिक** - वि० [सं] सौवाला; सौ से संबद्ध ।
**शती** - स्त्री० [सं] सौ का संग्रह; शताब्दी ।
**शत्रि** - पु० [सं] बल; हाथी ।
**शत्रुंजय** - वि० [सं] शत्रु को जीतनेवाला ।
**शत्रु** - पु० [सं] दुश्मन, वैरी ।
**शत्रुता** - स्त्री० [सं] दुश्मनी ।

**शत्वरी** - स्त्री० [सं] रात्रि ।
**शदीद** - वि० [अ] कठिन ; तीव्र ।
**शद्द** - पु० [अ] किसी अक्षर को दो बार पढ़ना ; आवाज़ को ज़ोर देना ; **यौ०** शद्दोपद - धूम-धाम ; तेज़ी ।
**शद्रि** - 1. पु० [सं] अर्जुन ; बादल ; हाथी ; 2. स्त्री० खंड ; बिजली ; मिस्री।
**शद्रु** - वि० [स] गिरानेवाला ; चलनेवाला ; नष्ट होनेवाला ।
**शनवर** - वि० [फ़ा] सुननेवाला ।
**शनवाई** - स्त्री० [फ़ा] सुनवाई ।
**शनाख़्त** - स्त्री० [फ़ा] परिचय ; पहचान ; **मु०** —करना - पहचानना
**शनावर** - वि० [फ़ा] तैराक ।
**शनावरी** - स्त्री० [फ़ा] तैराकी ; तैरना ।
**शनास** - वि० [फ़ा] विवेक करनेवाला ; पहचाननेवाला ।
**शनासा** - वि० [फ़ा] पहचानने या परखने-वाला ।
**शनासाई** - स्त्री० [फ़ा] जान-पहचान, परिचय ।
**शनि** - पु० [सं] शनिवार ; नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह ; सूर्य-पुत्र ; शिव ।
**शनीद** - 1. वि० [फ़ा] सुना हुआ ; 2. स्त्री० श्रवण, सुनने की क्रिया ; **यौ०** —सुनी - सुनने योग्य ।
**शनीदा** - वि० [फ़ा] सुना हुआ ।
**शनाह** - पु० [फ़ा] तैरने का अभ्यास करते समय उपयोग में लायी जानेवाली मशक ।
**शनैः** - अव्य० [सं] क्रमशः ; उत्तरोत्तर ; चुपचाप ; **यौ०** —शनैः - धीरे-धीरे ।
**शनैश्चर** - 1. पु० [सं] शनि ; 2. वि० धीरे चलनेवाला ।
**शप** - 1. वि० [फ़ा] तेज़ ; **यौ०** —शप - कमची ; बेंत या तलवार मारने की आवाज़ ; कुत्तों आदि के चाटने से होनेवाली 'चपड़-चपड़' की आवाज़ ; 2. अव्य० [हि] जल्दी से ।
**शपथ** - पु० [सं] प्रतिज्ञा करना ; क़सम ।
**शपन** - पु० [सं] गाली ; शपथ ।
**शफ** - पु० [सं] खुर ; पेड़ की जड़ ।
**शफ़क़** - स्त्री० [अ] सूर्योदय के पहले और सूर्यास्त के बाद क्षितिज पर प्रकट होने-वाली लाली ; **यौ०** —का टुकड़ा - अति सुंदर ।
**शफ़क़त** - स्त्री० [अ] अनुग्रह ; दया ; प्रेम।
**शफर** - स्त्री० [स] मच्छ ।
**शफ़ा** - स्त्री० [अ] निरोगता ; **यौ०** —ख़ाना - अस्पताल ।
**शफ़ाअत** - स्त्री० [अ] पाप क्षमा कर देने की सिफ़ारिश ; सिफ़ारिश ।
**शफ़ीअ** - वि० [अ] शफ़ाअत करनेवाला ; शफ़ा का हक़ रखनेवाला ।
**शफ़ीक़** - वि० [अ] अनुग्रहकर्ता ; प्यारा ; हमदर्द ।
**शफ़्फ़ाफ़** - वि० [अ] अति स्वच्छ ; पारदर्शी ।
**शब** - स्त्री० [फ़ा] रात ; **यौ०** —कोरी - रतौंधी ; —ख़ून - रात मे असावधान शत्रु पर किया जानेवाला हमला ; —ख़्वाबी - रात को सोते समय पहनने के कपड़े ; —गिर्द - रात को फिरने या पहरा देनेवाला ; कोतवाल ; चंद्रमा ; चोर ; चौकीदार ; —गून - रात के रंग का ; काला ; —चराग़, चिराग़ - रात में अधिक चमकनेवाला एक लाल मणि ; —ताब - रात को चमकनेवाला ; जुगनू ; काली बिल्ली ; चंद्रमा ; दीपक ; रात की रोशनी ; —नम - ओस ; —बख़ैर - रात को बिदा होने के समय का अभिवादन ; —बाश - रात में टिकने-वाला ; —बेदार - रात को जगकर

भगवद्भजन करनेवाला ; —बेदारी - रात को जागते रहना ; —रंग - स्याह ; स्याह रंग का घोड़ा ; —रौ - कोतवाल ; चौकीदार ; चोर ; रात को चलनेवाला ; शबे-इंतज़ार - किसीकी विफल प्रतीक्षा में कटनेवाली रात ; शबे-उम्मीद - मिलन-रात्रि ; शबे-औव्वल-सुहागरात ; शबे-कद्र-मुसलमानो के विश्वासानुसार एक अति पवित्र रात ; शबे-ग़म - वियोग की रात ; शबे-गश्त - रात को गश्त लगानेवाला ; रात को फिरना ; शबे-तार, शबे-तारीख़-अंधेरी रात ; शबे-महताब, शबे-मार - चाँदनी रात ; शबे-वसाल, शबे-वस्ल - मिलनरात्रि ।

**शबका** - पु० [अ] लकड़ी में बँधा कबूतर फँसाने का एक तिकोना जाल ।

**शबनम** - स्त्री० [फ़ा] ओस ; सफ़ेद रंग का एक अत्यंत सुन्दर महीन कपड़ा ; **यौ०** —का रोना - ओस का गिरना ।

**शबनमी** - स्त्री० [फ़ा] मसहरी ।

**शबर** - पु० [सं] दक्षिण भारत की एक पहाड़ी जाति ; जंगली मनुष्य ; शिव ।

**शबरी** - स्त्री० [सं] शबर जाति की नारी ; रामायण में वर्णित एक रामभक्त नारी ।

**शबल** - 1. वि० [सं] विभिन्न रंगोवाला ; किसी वस्तु के नक़ल पर बना हुआ ; कई रंगो से अंकित ; विभिन्न भागों में विभक्त ; 2. पु० जल ; विभिन्न प्रकार का रंग ।

**शबला** - स्त्री० [सं] कामधेनु ; चितकबरी गाय ।

**शबाना** - 1. वि० [फ़ा] रात का ; 2. अव्य० रात को ; 3. पु० रात की बची हुई रोटी ; रात का खाना, कपड़े या मज़दूरी ; **यौ०** —रोज़ - रात-दिन ; हर समय ।

**शबाब** - पु० [अ] बीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था ; जवानी ; चढ़ती का ज़माना ; **मु०** —फट पड़ना - जवानी का ज़ोर पर होना ।

**शबाहत** - स्त्री० [अ] आकृति ; समानता ।

**शबिस्तान** - पु० [फ़ा] अंतःपुर ; मसजिद में रात के समय इबादत करनेकी जगह ; सोने का कमरा ।

**शबीना** - वि० [फ़ा] रात का, बासी ।

**शबीह** - स्त्री० [अ] चित्र ; रूपसाम्य ।

**शब्द** - पु० [सं] आवाज़, ध्वनि ; आप्त-वचन ; आकाश का गुण ; **यौ०** —कोष - शब्दों के वर्णविन्यास, अर्थ, प्रयोग, पर्याय आदि बतलानेवाला ग्रंथ ; —ग्रह - कान ; शब्द पकड़नेवाला ; —चातुर्य - बोलने के ढंग की निपुणता ; —चोर - दूसरे की रचना के शब्द उड़ाकर अपनी कविता या लेखादि में प्रयोग करनेवाला ; —जाल - भावाभिव्यक्ति से शून्य बड़े बड़े शब्दो का चमत्कारिक प्रयोग ; —प्रमाण - आप्त प्रमाण ; मौखिक प्रमाण ; —ब्रह्म - शब्द का स्फोट नामक एक गुण ; वेद ; —योनि - शब्द का उत्पत्तिस्थान ; धातु ; —विद्या - व्याकरण ; —शक्ति - शब्द की विशेष अर्थबोधक शक्ति ; —शास्त्र - व्याकरण ; —संग्रह - शब्दों का चयन ; शब्दकोष ; —साधन - शब्दों की व्युत्पत्ति आदि बतानेवाला व्याकरण का एक भाग ; —सौकर्य - शब्दो के उच्चारण की सरलता ; —सौष्ठव - रचना-शैली के शब्दों का सौन्दर्य ।

**शब्दाडंबर** - पु० [सं] शब्दजाल ।

**शब्दातीत** 1. वि० [सं] वर्णनातीत ; 2. पु० ईश्वर ।

**शब्दानुशासन** - पु० [सं] व्याकरण ।

**शब्दायमान** - पु० [सं] शब्द करता हुआ ।

**शम** - पु० [स] अंतःकरण या मन का संयम, मानसिक स्थिरता; मुक्ति; शाति; शांतरस का स्थायी भाव; सभी सासारिक कायो से निवृत्ति ।

**शमन** - 1. पु० [सं] दूर करना; दबाना; यम; चबाने की क्रिया; बुझाना; शाति; समाप्ति; हिंसा; 2. वि० निवारक, दूर करनेवाला ।

**शमला** - पु० [अ] कंधो पर डाली जानेवाली या सिर पर बाँधी जानेवाली शाल; तुर्रा; पुराने वकीलो द्वारा गाउन पर बाँधी जानेवाली पगड़ी ।

**शमशाद** - पु० [फ़ा] उर्दू-फ़ारसी की कविता में नायिका के कद का उपमानसूचक एक लंबा सुंदर वृक्ष ।

**शमशीर, शमशेर** - स्त्री० [फ़ा] तलवार; बीच से झुकी हुई तलवार; **यौ०** —का खेत - रणक्षेत्र; —ज़न - तलवार चलाने या मारनेवाला; —ज़नी - तलवार की लड़ाई; —दम - तलवार की बाढ रखने या तलवार की खाट करनेवाला; —जंग - वीरत्वसूचक पदवी; —बहादुर - तलवार का धनी ।

**शमा** - स्त्री० [अ] दिया; मोम; मोमबत्ती; **यौ०** —ए-अंजुमन - महफ़िल की शोभा बढ़ानेवाला; —ए-काफ़ूरी - सफ़ेद मोमबत्ती; —ए-ख़ामोश - बुझा हुआ दीप; —ए-मज़ार - मज़ार का दिया; —ए-सहरी - प्रातःकालीन या जल्दी बुझनेवाला दीपक; —दान - दीवट; मोमबत्ती लगाकर जलाने के उपयोग में लाया जानेवाला पात्र; —रुख़, रुख़सार, रू - सुंदर; कातियुक्त चेहरेवाला; —व-परवाना - दीपक व पतंग; प्रेमी और प्रेमपात्र ।

**शमिका** - स्त्री० [सं] शमी का पेड़ ।

**शमित** - वि० [सं] शांत; जिसका शमन किया गया हो ।

**शमी** - 1. स्त्री० [सं] एक वृक्ष जिसके मध्य में अग्नि होती है; 2. वि० आत्मसयमी; शात, **यौ०** —गर्भ - अग्नि; पुरोहित-वर्ग का ब्राह्मण; —धान, धान्य - मसूर, मूँग आदि अनाज; —पात्र - पानी में उत्पन्न होनेवाली लज्जावंती लता ।

**शंस** - पु० [अ] तसबीह में लगाने का फुँदना; सूरज ।

**शंसी** - 1. वि० [अ] सूर्य-संबंधी, सौर; 2. स्त्री० छःमाही तनख्वाह; **यौ०** —साल - सौरवर्ष ।

**शय** - पु० [स] निद्रा; दाँव; शय्या; शाप; साँप; हाथ ।

**शयन** - पु० [सं] निद्रा; शय्या; मैथुन; **यौ०** —आरती - रात्रि में देवताओ को सुलाते समय की जानेवाली आरती; —कक्ष, गृह - शयनागार, सोने का घर; —मंदिर - शयनकक्ष; —वास - सोने के समय पहने जानेवाले वस्त्र ।

**शयनागार** - पु० [सं] शयनकक्ष ।

**शयनीय** - 1. वि० [सं] शयन करने योग्य; 2. पु० शय्या ।

**शयालक** - पु० [सं] एक प्रकार का सर्प, गिरगिट ।

**शयालु** - 1. वि० [सं] निद्राशील; सोया हुआ; 2. पु० अजगर; कुत्ता; गीदड़ ।

**शयित** - 1. पु० [सं] निद्रा; 2. वि० सोया हुआ; लेटा हुआ ।

**शय्या** - स्त्री० [सं] पलंग; बिस्तर; **यौ०** —गत - पलंग पर सोया हुआ; बीमार; —दान - मृतक-कर्म के अंतर्गत महापात्र को दिया जानेवाला बिछावन आदि का

दान ; —पाल, पालक - राजा के शयन-गृह का प्रबंधक ।

**शर** - पु० [सं] खस ; चिता ; जल ; दही की मलाई ; पाँच की संख्या ; सरपत ; सरकंडा ; बाण ; **यौ०** —कांड, गुल्म - सरकंडा ; —जाल - बाणों का समूह ; —धि - तरकश ; —पंख - जवासा ; —पुंख - तीर में लगा हुआ पंख ; —वारण - ढाल ; —संधान - बाण द्वारा लक्ष्यसाधन ; निशाना लगाना ।

**शरअ** - स्त्री० [अ] इसलामी धर्मशास्त्र ; सीधी राह ; ईश्वर द्वारा बंदों के लिए निर्मित सीधी राह ; **यौ०** —अन् - शरअ के अनुसार ; —मुहम्मदी - इसलामी कानून ।

**शरई** - वि० [अ] शरअ के अनुकूल ; **यौ०** —दाढी - एक मुट्ठी और दो अंगुल लंबी दाढी ; —पाजामा - टखनों से ऊँचा पायजामा ; —शादी - बिना धूमधाम का ब्याह ।

**शरग़ा** - पु० [अ] बादामी रंग का घोड़ा ।

**शरच्चंद्र** - पु० [सं] शरत् ऋतु का चंद्रमा ।

**शरठ** - पु० [सं] गिरगिट ।

**शरण** - स्त्री० [सं] अधीन व्यक्ति ; आश्रय ; घर ; रक्षक ; रक्षा का स्थान ; **यौ०** —द, दाता - आश्रयदाता ; रक्षक ।

**शरणागत** - 1. पु० [स] शरण में आया व्यक्ति ; 2. वि० शरण में आया हुआ ।

**शरणार्थी** - वि० [सं] शरण चाहनेवाला ।

**शरणी** - 1. स्त्री० [सं] इंद्र की पुत्री जयंती ; जयंती लता ; पंक्ति ; पथ ; पृथ्वी ; प्रसारिणी लता ; 2. वि० [हिं] शरण देनेवाली ।

**शरण्य** - वि० 1. [सं] दुखी या असहाय ; रक्षा के योग्य ; 2. पु० शरण देनेवाला ; रक्षा ; शरणागत का रक्षक ; आश्रय-स्थान ।

**शरत्, शरद्** - स्त्री० [सं] क्वार से कार्तिक तक की ऋतु ; वर्ष ; **यौ०** —काल - शरत् ऋतु की अवधि ; —घन - शरद्-कालीन बादल ; —पद्म - श्वेत कमल ; —पर्व - शारदीय पूर्णिमा, कोजागरी पूर्णिमा ।

**शरदा** - स्त्री० [सं] शरद् ऋतु ; साल ।

**शरफ़** - पु० [अ] ख़ूबी ; प्रतिष्ठा ; बड़ाई ; भलाई ; श्रेष्ठता ; **यौ०** —ए-ख़िदमत, ए-मुलाज़िमत - सेवा का सम्मान ; —याब - सम्मान पानेवाला ।

**शरबत** - पु० [अ] एक बार पी जानेवाली पेय की मात्रा , मीठा पेय ; चीनी या मिस्री में पकाया हुआ फल, फूल या औषधि का अर्क़ ; शक्कर आदि को पानी में मिश्रित कर प्रस्तुत किया हुआ पेय ; **यौ०** —पिलाई - शरबत पिलाने की रस्म का नेग ; **मु०** —के प्याले पर निकाह कर देना या पढ़ा देना - बिना कुछ ख़र्च किये ब्याह कर देना ।

**शरभ** - पु० [सं] ऊँट ; सिंह से भी बलवान अष्टपाद नामक एक कल्पित पशु ; टिड्डा ; टिड्डी ; हाथी का बच्चा ; दोहे का एक भेद ।

**शरम** - स्त्री० [फ़ा] लज्जा ।

**शरमाऊ, शरमालू, शरमीला** - वि० [हिं] लज्जाशील ।

**शरमाना** - 1. स० [हिं] लज्जित करना ; 2. अ० लज्जित होना ।

**शरर** - पु० [अ] चिनगारी ।

**शरव्य** - पु० [सं] तीर का निशान बनने-वाला प्राणी ; बाण का लक्ष्य ।

**शरह** - स्त्री० [अ] खोलकर कहना ; दर या भाव ; वर्णन ; व्याख्या ; **यौ०** —बंदी - भावों की तालिका ; —लगान - लगान की दर ; —सूद - ब्याज की दर ।

**शराटि, शराटिका** - स्त्री० [सं] जल के निकट रहनेवाली एक चिड़िया, टिट्टिभ, कुररी।

**शराफ़त** - स्त्री० [अ] भद्रता ; कुलीनता ; भलमनसी ; **यौ०** —पनाह - शरीफ़ों को आश्रय देनेवाला।

**शराब** - स्त्री० [अ] मदिरा, मद्य ; **यौ०** —ख़ाना - मदिरालय ; —ख्वारी - शराब पीने का व्यसन ; शराबे-हूर - बिहिश्त मे मिलनेवाली शराब ; **मु०** —का दौर चलना - पानगोष्ठी में सम्मिलित लोगों का प्याले पर प्याला ख़ाली करना।

**शराबी** - पु० [हिं] मद्यव्यसनी।

**शराबोर** - वि० [हिं] भीगा हुआ।

**शरारत** - स्त्री० [अ] पाजीपन ; शैतानियत।

**शराव** - पु० [सं] मिट्टी का छोटा कुल्हड़ ; चौंसठ तोले के वज़न की वैद्यों की एक तौल ; मिट्टी का बर्तन।

**शराश्रय** - पु० [सं] तरकश।

**शरासन** - पु० [सं] धनुष।

**शरीअत** - स्त्री० [अ] ख़ुदा के बनाये हुए क़ानून ; न्याय ; मज़हबी क़ानून।

**शरीक** - वि० [अ] मिला हुआ ; जोड़ीदार ; साझी ; साथ देनेवाला ; **यौ०** —जुर्म - अपराध में साथ देने या सहायता करनेवाला ; —राय - एकराय ; सहमत ; —हाल - दुख-सुख में साथ देनेवाला।

**शरीफ़** - 1. वि० [अ] कुलीन ; ऊँचे घराने का ; नेक ; पवित्र ; प्रतिष्ठित ; 2. पु० प्रतिष्ठित जन ; भलमानस ; मक्के के शासक की पदवी ; **यौ०** —ख़ानदान - ऊँचे घराने का ; —ज़ादा - कुलीन जन ; शरीफ़ का बेटा ; —ज़ादी - कुलीना स्त्री ; शरीफ़ की बेटी।

**शरीफा** - पु० [हिं] एक मीठा फल, सीताफल।

**शरीर** - 1. पु० [सं] देह, बदन ; **यौ०** —ज - कामदेव ; कामवासना ; पुत्र, रोग ; —त्याग - मृत्यु ; —दंड - शारीरिक दंड ; —पतन - मृत्यु ; शरीर का क्रमशः जीर्ण होना ; —पाक - शरीर का धीरे-धीरे दुर्बल होते जाना, —पात - मृत्यु ; —रक्षक - अंगरक्षक ; —वृत्ति - जीविका ; नौकरी ; —शास्त्र - शरीरविज्ञान, —संपत्ति, संस्कार - अच्छा स्वास्थ्य ; —संबन्ध - विवाह ; 2. वि० [अ] दुष्ट ; नटखट।

**शरीरक** - पु० [सं] आत्मा ; लघु शरीर ; शरीर।

**शरीरांत** - पु० [सं] मृत्यु।

**शरीरार्पण** - पु० [सं] सत्कार्य के लिए जीवनार्पण।

**शरीरी** - पु० [सं] आत्मा ; प्राणी ; मनुष्य ; शरीरधारी।

**शरु** - 1. पु० [सं] इंद्र का वज्र ; कण ; क्रोध ; हिंसक ; हिंसा ; हथियार ; बाण चलाने का अभ्यास ; 2. वि० पतला ; सूक्ष्म।

**शर्क** - पु० [अ] पूरब।

**शर्की** - वि० [अ] पूर्वीय।

**शर्कर** - पु० [सं] चीनी ; जल में पैदा होनेवाला एक प्रकार का जीव ; कंकड़ ; बालुकाकण।

**शर्करा** - स्त्री० [सं] उपल ; कंकड़ ; ठीकरा ; टुकड़ा ; पथरी रोग ; बालुकाकण ; शक्कर ; **यौ०** —धेनु - दान के लिए शक्कर की बनी गाय ; —प्रमेह - मधुमेह रोग।

**शर्करी** - स्त्री० [सं] एक वर्णिक छंद ; मेखला (पर्वतीय) ; लेखनी ; सरिता।

**शर्त** - स्त्री० [अ] प्रतिज्ञा ; क़ैद ; होड़ ; **यौ०** —बंद - शर्त से बँधा हुआ ; **मु०** —बदकर सोना, बाँध करके सोना -

बहुत देर तक सोना, बड़ी लँबी नींद लेना ; —बदना, बाँधना - बाज़ी लगाना ।

**शर्तिया** - 1. वि० [अ] अचूक ; पक्का ; 2. अव्य० शर्त बदकर ।

**शर्ती** - 1. वि० [अ] किसी शर्त या प्रतिज्ञा पर आश्रित ; 2. अव्य० शर्तिया ।

**शर्म** - 1. स्त्री० [फ़ा] लज्जा ; ख्याल ; इज़्ज़त (रखना) ; **यौ०** —गाह - गोपनीय अंग ; —गी - लज्जायुक्त ;—नाक - लज्जाजनक; —सार - शर्मिन्दा, लज्जावान ; शर्मे-हज़ूर, शर्मे-हज़ूरी - सामने होने का लिहाज़ या संकोच ; आँख की लाज ; **मु०** —आना - लाज लगना ; —करना - लज्जित होना ; लिहाज़ करना ; —की बात - लज्जाजनक कार्य; —खाना - लज्जा अनुभव करना ; 2. पु० [स] आश्रय ; आशीर्वचन ; गृह ; रक्षा ; सुख ; 3. वि० संपन्न ; सुखी ; **यौ०** —द - आनंददायक ।

**शर्मा** - पु० [सं] ब्राह्मणो की एक उपाधि ।

**शर्माऊ, शर्मालू** - वि० [फ़ा] लज्जाशील ; शर्मीला ।

**शर्माशर्मी** - अव्य० [हिं] लज्जावश, संकोचवश ।

**शर्मिंदगी** - स्त्री० [फ़ा] शर्मिंदा होना ; **मु०** —उठाना - लज्जित होना ।

**शर्मिंदा** - वि० [फ़ा] लज्जित ।

**शर्मिसार** - वि० [हिं] लज्जाशील ।

**शर्मीला** - वि० [हिं] लज्जाशील ।

**शर्र** - 1. पु०, 2. स्त्री० [हिं] झगड़ा ; बुराई ।

**शर्रोफ़साद** - पु० [हिं] झगड़ा-फ़साद ।

**शर्वरी** - स्त्री० [सं] रात्रि ; संध्याकाल ; हल्दी; **यौ०** —कर, नाथ, पति - चंद्रमा ।

**शल** - 1. पु० [सं] ऊँट ; कंस का एक मल्ल और मंत्री ; कुंत नामक अस्त्र ; शृंगी ; साही का काँटा ; 2. वि० मल्ल ; [अ] थका-माँदा ; जो हिलाया-डुलाया न जा सके ; **मु०** —हो जाना - थककर चूर हो जाना ।

**शलगम** - पु० [फ़ा] तरकारी और अचार आदि के काम आनेवाला एक कंद ।

**शलजम** - पु० [हिं] शलगम ।

**शलजमी** - वि० [हिं] शलजम से मिलता-जुलता ; **यौ०** —आँखें - बड़ी-बड़ी आँखे ।

**शलभ** - पु० [सं] पतंग ; एक असुर ; छप्पय छंद का एक भेद ; टिड्डी ।

**शलाका** - स्त्री० [सं] किसी धातु या लकड़ी आदि की बनी सीख ; चित्रकार की कूँची ; छाते की तीली ; घाव-फोड़े आदि की गहराई नापनेवाली डाक्टर की सलाई ; पासा ; बाण ; हड्डी ; **यौ०** —पुरुष - जैनो के तिरसठ महापुरुषों में से एक ।

**शल्क** - पु० [सं] टुकड़ा ; छिलका ; मछली की चोईं ; वृक्ष की छाल ।

**शल्य** - पु० [स] काँटा ; कील ; खूँटी ; अस्थि ; डाक्टर का चीर-फाड़ करने का औज़ार ; बाण ; भाला ; पाप ; दुर्वचन ; विष ; खैर ; साही जानवर ; बिल्ववृक्ष ; **यौ०** —कंठ - साही ; —कर्ता - सर्जन, जर्राह, शल्यचिकित्सक ; —क्रिया - शस्त्र-चिकित्सा ; —तंत्र - शल्यशास्त्र-सम्बन्धी आयुर्वेदीय ग्रंथ ।

**शल्ल** - पु० [सं] त्वचा ; मेंढक ; पेड़ की छाल ।

**शव** - पु० [सं] पानी , लाश ; मृत शरीर ; **यौ०** —काम्य - कुत्ता ; —दहन, दाह - मृत शरीर जलाने की क्रिया ; —दाह-स्थान - श्मशान ; —भस्म - जले मुर्दे की राख ; —यान, रथ - मुर्दे की अरथी ;

—साधन - श्मशान में शव पर बैठकर की जानेवाली तंत्र-साधना।

**शवलित** - वि० [सं] मिश्रित।

**शवान्न** - पु० [सं] अखाद्य अन्न ; शव-मांस।

**शव्वाल** - पु० [अ] हिजरी सन् का दसवाँ महीना।

**शश** - 1. पु० [सं] खरगोश ; चाँद का धब्बा ; लोध्रवृक्ष ; यौ० —धर - कपूर ; चंद्रमा ; —लक्षण, लांछन - चंद्रमा ; —विषाण, शृंग - असंभव वस्तु ; (फ़ा) छः की संख्या ; 2. वि० छः ; यौ० —ख़ाना - छः कमरोंवाला ; एक साज ; —दर - चकित या हैरान (होना) ; —पंज, शशोपंज - आगा-पीछा या सोच-विचार ; —पहल, पहलू - षट्कोण ; —माही - छमाही, छः महीने का समय ; —साला - छः बरस का।

**शशांक** - पु० [सं] कपूर ; चंद्रमा।

**शशि, शशी** - पु० [सं] चंद्रमा ; काव्य में एक संख्या का नाम ; यौ० —कर - चंद्रमा की किरण ; —कला - चंद्रकला ; चंद्रमा का एक अंश ; —कांत - चंद्रकांत मणि ; —ग्रह - चंद्रग्रहण ; —तिथि - पूर्णिमा ; —पुत्र - बुध ग्रह ; —प्रभ - चंद्रमा के समान कांतिवाला ; कुमुद ; मोती ; —प्रभा - चाँदनी ; —भाल, भूषण - शिव ; —मंडल - चंद्रमा का घेरा ; —मणि - चंद्रकांतमणि ; —मुख - चंद्रमा के समान मुखवाला ; —रस - अमृत ; —लेखा - चंद्ररेखा ; गुडुची ; — शेखर - शिव।

**शष्कुली** - स्त्री० [सं] कान का छेद ; पूरी ; मॉड़ ; सौरी मछली।

**शष्प, शस्प** - पु० [सं] तृण, हरी घास।

**शसन** - पु० [सं] यज्ञ के अवसर पर की गयी पशु-बलि।

**शस्ति** - स्त्री० [स] प्रशंसा ; स्तुति।

**शस्त्र** - पु० [सं] औज़ार ; हथियार ; कविता आदि का पाठ ; कथन ; लोहा ; स्तोत्र ; यौ० —कर्म - फोड़े आदि के चीरने-फाड़ने के काम ; —कार, कारक - शस्त्रनिर्माता ; —कोष - म्यान ; —क्रिया - शस्त्रकर्म ; —जीवी - सैनिक ; —धर, धारी, भृत - शस्त्रधारण करनेवाला ; सैनिक ; —विद्या - शस्त्र चलाने का ज्ञान ; धनुर्विद्या।

**शस्य** - पु० [सं] नया अन्न ; नयी घास ; फ़सल ; वृक्षादि से निकला हुआ फल-फूल आदि ; गुण ; योग्यता , यौ० —क्षेत्र - अनाज का क्षेत्र ; —भक्षक - अनाज खानेवाला ; —मंजरी - गेहूँ आदि की नयी बाल ; —शाली, संपन्न - धान्य से परिपूर्ण ; —संपत् - धान्य की बहुलता।

**शस्यागार** - पु० [सं] खलिहान।

**शहँशाह** - पु० [फ़ा] सम्राट, राजाधिराज।

**शहँशाही** - 1. स्त्री० [हिं] शहँशाह का भाव या कार्य ; शाही रंग-ढंग ; 2. वि० राजसी, शाही ढंग का।

**शह** - 1. पु० [फ़ा] बादशाह ; उकसाना ; पतंग को धीरे-धीरे डोर पिलाने की क्रिया, ढील ; शतरंज में बादशाह को दी गयी किश्त ; हिमायत ; मदद ; 2. स्त्री० किश्त ; गुप्त रूप से किसीको भड़काने या उभाड़ने की क्रिया या भाव ; यौ० —कारा - बदचलन ; —चाल - शतरंज के बादशाह की चाल ; —ज़ादगी - शाहज़ादा होने की स्थिति ; —ज़ादा - राजकुमार ; —ज़ादी - राजकुमारी ; —ज़ोर - अति बली ; —ज़ोरी - ज़बर्दस्ती ; —तीर - छत की पाटन के नीचे दी हुई बड़ी कड़ी ; —पर - पक्षी

के डैने का सबसे बड़ा पर; —बाज़ - बड़ा बाज़; —बाला - विवाह की रस्मों में वर के साथ रहनेवाला उसका छोटा भाई; —बुलबुल - लाल देह और काली गर्दनवाली बुलबुल; —रुख़ - शतरंज में बादशाह को रुख़ (हाथी) की शह; —सवार - कुशल घुड़सवार; —सवारी - अच्छी घुड़सवारी; मु० — देना - शतरंज में बादशाह को किश्त देना; लड़ने-झगड़ने को उकसाना या उभाड़ना; पतंग को डोर पिलाना या ढील देना।

**शहद** - 1. पु० [अ] मधुमक्खियों द्वारा एकत्रित लाली लिये हुए पीले या सफ़ेद रंग का मीठा और गाढ़ा पुष्प-रस, मधु, 2. वि० अति मधुर; यौ० —की छुरी - ज़बान का मीठा और दिल का खोटा; मीठी छुरी; —की मक्खी - मधुमक्खी; लोभी और पीछा न छोड़नेवाला आदमी; मु० (ज़बान में)—घुलना - मिठास से भर जाना; (कानों में) —घोलना - अति मधुर सुखद वचन बोलना; —लगाकर अलग हो जाना - झगड़ा लगाकर आप अलग हो जाना; —लगाकर चाटना - निरर्थक चीज़ को यत्न से रखे रहना।

**शहनाई** - स्त्री० [फ़ा] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा।

**शहर** - पु० [फ़ा] नगर; यौ० —ख़बरा - शहर-भर की या घर-घर की ख़बर रखनेवाला; —गश्त, गिर्द - शहर में घूमनेवाला; —दार - शहर का रहने-वाला; —पनाह - परकोटा; —बंद - जेलख़ाना; क़ैदी; —बदर - निर्वासित; —ब-शहर - एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे शहर तक; जगह-जगह; —बाश - शहरी; —यार - बादशाह; बादशाहों में प्रमुख; —यारी - शाही दबदबा; —शमला - अंधेर नगरी; —की दाई - घर-घर की ख़बर रखने वाली स्त्री।

**शहादत** - स्त्री० [अ] गवाही; प्रमाण; शहीद होना।

**शहाना** - 1. वि० [फ़ा] राजसी; सुंदर; 2. पु० दुलहे को पहनाया जानेवाला लाल जोड़ा; संपूर्ण जाति का एक राग; ब्याह का एक गीत, यौ० —वक़्त - शाम का वक़्त; सुहावना समय।

**शहानी** - वि० [हिं] शहाना; यौ०—चूड़ियाँ - लाल रंग की सुंदर चूड़ियाँ; —मेंहदी - गहरे रंगवाली मेंहदी।

**शहाब** - पु० [फ़ा] गहरा लाल रंग।

**शहाबी** - वि० [उ] शहाब के रंग का लाल।

**शहीद** - वि० [अ] ईश्वर या धर्म के लिए प्राण देनेवाला; अपने आपको क़ुर्बान कर देनेवाला।

**शहीदी** - वि० [हिं] लाल, शहीद होने के लिए तैयार; यौ०—जत्था - शहीद होने के लिए तैयार व्यक्तियों का झुंड।

**शांकरि** - पु० [सं] आग; कार्तिकेय; गणेश।

**शांत** - वि० [सं] चुप; शांतियुक्त; अचंचल; सुनसान; श्रांत; रुका हुआ; संतुष्ट; मिटा हुआ; मृत; उत्साहहीन; इंद्रियों को जीतनेवाला, सासारिकता से निवृत्त; शिथिल; विनम्र; क्रोधादि से निवृत्त; बुझा हुआ।

**शांति** - स्त्री० [सं] मन की स्थिरता; सांत्वना; निःशब्दता; कामादि का शमन; सुख; जितेन्द्रियता; क्रोधादि मनोविकारों से निवृत्ति; शिष्टता;

युद्धादि का रुक जाना; यौ० — कर, कारी - शांति करने या लानेवाला; — गृह - विश्रामगृह; यज्ञ के अंत में शांतिजल से स्नान करने का घर; — जल - पूजा आदि में सुख-शांतिदायक मंत्रपूत अवशिष्ट जल; —दाता, दायक, दायी - शांति देनेवाला; —पात्र - यज्ञ-पूजा आदि के अवसरों पर अमंगल आदि की शांति के लिए रखा जानेवाला जलयुक्त पात्र; —प्रद - शांतिदायक; —प्रिय - शांति का अभिलाषी; —भंग - शांतिनाश; —शासन - अनुशासन आदि का न माना जाना; —मय - शांतिपूर्ण; निर्विघ्न; —रक्षक - अमन क़ायम रखनेवाला; —रक्षा - उपद्रव-निवारण; —वाचन - रोग आदि की शांति के लिए किया जानेवाला मंत्रपाठ।

**शांबरिक** - पु० [सं] जादूगर।

**शांबरी** - 1. स्त्री० [सं] जादू; जादूगरनी; 2. पु० चंदन का एक प्रकार; लोध।

**शांबुक, शांबूक** - पु० [सं] घोंघा।

**शाइक़** - वि० [अ] शौक़ करनेवाला।

**शाइस्तगी** - स्त्री० [फ़ा] भलमनसी; विनय; शिष्टता; सभ्यता।

**शाइस्ता** - वि० [फ़ा] शरारत न करनेवाला; सीधा; शिष्ट।

**शाक** - 1. पु० [सं] साग, तरकारी; शाकद्वीप; शकराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित एक संवत्; शक्ति; वृक्ष-विशेष; 2. वि० शक जाति से संबद्ध; यौ० —पण - मुट्ठी-भर साग; मुट्ठी-भर का परिमाण; —पत्र - सहजन का पेड़; —भक्ष - केवल शाक खानेवाला; —बिल्व, बिल्वक - बैंगन; —वीर - बथुवा; —वृक्ष - सागौन का पेड़।

**शाकट** - 1. वि० [सं] शकट-संबंधी; गाड़ी पर लदा हुआ या जाता हुआ; 2. पु० खेत; गाड़ी में जाती हुई वस्तु; गाड़ी में जुता हुआ पशु।

**शाकटीन** - पु० [सं] गाड़ी में लदी हुई वस्तु; बीस तुला की एक तौल।

**शाकल** - वि० [सं] शकल या टुकड़ों से संबद्ध।

**शाकांग** - पु० [सं] काली मिर्च।

**शाका** - स्त्री० [सं] हरीतकी, हड़।

**शाकाम्ल** - पु० [सं] इमली; वृक्षाम्ल।

**शाकाहार** - पु० [सं] पत्र, फूल, फल, अन्न आदि खाद्य पदार्थ अथवा इनका भोजन, निरामिष भोजन।

**शाकिनी** - स्त्री० [सं] दुर्गा की एक अनुचरी; शाकयुक्त भूमि।

**शाकिर** - वि० [अ] कृतज्ञ; संतोष करनेवाला।

**शाकी** - वि० [अ] शिकायत करनेवाला।

**शाकुन** - 1. वि० [सं] पक्षियों से संबंधित; पक्षियों का; शकुन-संबंधी; 2. पु० पक्षी पकड़नेवाला; पक्षी आदि के रूप या लक्षण आदि देखकर मनुष्य के शुभाशुभ का निश्चय करनेवाला ग्रंथ।

**शाकुनिक** - वि० [सं] बहेलिया; शकुन बतानेवाला।

**शाकुनेह** - पु० [सं] छोटा उल्लू; वृकासुर।

**शाकुलिक** - पु० [सं] मल्लाह।

**शाक्त** - पु० [सं] शक्ति की उपासना करनेवाला एक संप्रदाय।

**शाक्तागम** - पु० [सं] तंत्र-शास्त्र; शाक्त-तंत्र।

**शाक्य** - पु० [सं] बुद्धदेव; एक प्राचीन क्षत्रिय कुल; यौ० —मुनि, सिंह - बुद्धदेव।

**शाख़** - स्त्री० [फ़ा] डाली ; पौधे की क़लम ; अंश ; टुकड़ा ; फाँक ; नदी या नहर की मुख्य धारा से निकली हुई छोटी धारा , मैदे के खमीर में शक्कर मिलाकर बनाया जानेवाला एक पकवान ; यौ० —चा - मिथ्यारोप, तुहमत ; छोटी डाली ; —दर-शाख़ - दूर तक फैला हुआ शाखा-प्रशाखाओंवाला ; —साना - झगड़ा ; दोष ; बात का पहलू ; मु० —निकालना - ऐब निकालना ; टहनी निकालना ; नयी बात पैदा करना ।

**शाखा** - 1. स्त्री० [सं] पेड़ की डाल ; अध्याय ; प्रतिपक्ष ; बाहु ; शरीर के अवयव ; किसी वस्तु आदि का अंग या भेद ; संप्रदाय ; वेद की कोई शाखा ; यौ० —कंट - थूहर का पेड़ ; —चंक्रमण - एक डाल से दूसरी डाल पर कूदना ; —नगर - उपनगर ; —पित्त - हाथ-पैर में जलन पैदा करनेवाला एक रोग ; —मृग - गिलहरी ; बंदर ; —रथ्या - बड़ी सड़क से निकली हुई छोटी सड़क ; —वात - एक प्रकार का वात-रोग ।

**शाख़ा** - पु० [फ़ा] टहनी ; सींग की शकल का प्याला ; सींग ।

**शाखी** - 1. वि० [सं] शाखाओंवाला ; 2. पु० वृक्ष ; वेद ; वेद की किसी शाखा का अधिकारी या अनुयायी ।

**शागिर्द** - पु० [फ़ा] शिष्य ; सेवक ; यौ० —पेशा - दफ़्तर में काम करनेवाला ; राजाओं आदि के आगे चलनेवाले नौकर-चाकरो के रहने का स्थान ।

**शागिर्दाना** - 1. वि० [फ़ा] शिष्योचित ; 2. पु० गुरु-दक्षिणा ।

**शागिर्दी** - स्त्री० [फ़ा] शिष्यता ; सेवा ; मु०—करना - शागिर्द बनकर सीखना ।

**शाचि** - 1. पु० [देश] जौ की दलिया ; 2. वि० प्रबल ; प्रसिद्ध ।

**शाज़** - वि० [अ] अनोखा ; दुर्लभ ; यौ० शाज़ोनादिर - कभी-कभी ।

**शाटिका, शाटी** - स्त्री० [सं] साड़ी ; वस्त्र ।

**शाठ्य** - पु० [सं] छल ; शठता ।

**शाण** - 1. पु० [स] औज़ार आदि की धार तेज़ करने का एक पत्थर, सान ; चार माशे की एक तौल ; आरा , सन का बना कपड़ा ; 2. वि० सन का बना हुआ ।

**शाणाजीव** - पु० [हिं] सान पर काम करके अपनी जीविका चलानेवाला व्यक्ति ।

**शातन** - पु० [सं] काटना ; क्षीण होना ; तेज़ करना ; मुरझाना ; विभाजन ।

**शातिर** - वि० [अ] काइयाँ ; गठकतरा, पक्का चोर ; शतरंज खेलनेवाला ।

**शाद** - 1. पु० [सं] दूब ; कीचड़ ; 2. वि० [फ़ा] प्रसन्न ; पूर्ण ; भरा हुआ ; यौ० —काम - सफल ; समृद्ध , —कामी - सफलता ; ख़ुशी ; समृद्धि ; —बाश - ख़ुश रहो ; —मान - प्रसन्न ।

**शादाब** - वि० [फ़ा] सींचा हुआ , हरा-भरा ।

**शादाबी** - स्त्री० [फ़ा] हरा-भरा होना ।

**शादियाना** - पु० [फ़ा] ब्याह में बजायी जानेवाली नौबत ; किसानो द्वारा शादी के अवसर पर ज़मीन्दार को दी जानेवाली रक़म ; ब्याह या ख़ुशी के मौके पर गाया जानेवाला गीत ।

**शादी** - स्त्री० [फ़ा] ब्याह ; ख़ुशी ; हर्षोत्सव ; जन्मोत्सव ; यौ० —मर्ग - हर्षातिरेक से होनेवाली मृत्यु ; हर्षातिरेक से मरने-वाला ; यौ० —रचाना - ब्याह का आयोजन करना ।

**शाद्वल** - 1. वि० [सं] नयी हरी घास से युक्त ; हरा ; 2. पु० गोचारण-भूमि, हरित भूमि ।

**शान** - 1. पु० [सं] कसौटी ; शाण ; यौ० —पाद - चंदन रगड़ने का पत्थर ; 2. स्त्री० [फ़ा] अंदाज़ ; अवसर ; क़ुदरत ; गौरव ; ठसक , ठाट ; दबदबा ; यौ० —दार - भड़कीला ; सुंदर ; —शौकत - ठाट-बाट ; शाने-नज़ूल - क़ुरान की किसी आयत के उतरने का अवसर ; मु० —बरसना - गौरव या दबदबा प्रकट करना ; —में बट्टा लगना - प्रतिष्ठा कम होना ।

**शाना** - पु० [फ़ा] कंधा ; कंधे की हड्डी ; जुलाहो का कंघा ; मु० शाने से शाना छिलना - भाड़ी भीड़ या धक्कम-धक्का होना ।

**शाप** - पु० [सं] बद्दुआ, आक्रोश ; शाप के समान दुष्परिणामवाली झूठी क़सम ; जली-कटी सुनाना ; यौ० —ग्रस्त - अभिशप्त; —ज्वर - गुरुजनों के अभिशाप के कारण आया हुआ ज्वर ; —निवृत्ति - शाप से मुक्ति ।

**शापांत** - पु० [सं] शाप की समाप्ति ।

**शापोद्धार** - पु० [सं] शाप से छूटना ।

**शाफ़ा** - पु० [फ़ा] दवा में भिगोकर ज़ख़्म के अंदर रखी जानेवाली रूई की बत्ती ; पाखाना लाने के लिए गुदा में रखी जानेवाली रूई की बत्ती ; आँख के ऊपर रखा जानेवाला रूई का फाहा ।

**शाफ़ी** - वि० [अ] आरोग्य देनेवाला ; सांत्वना देनेवाला ।

**शाबाश** - 1. अव्य० [फ़ा] ख़ुश रहो ; वाह-वाह ! साधु-साधु ! 2. स्त्री० साधुवाद (देना) ।

**शाबाशी** - स्त्री० [फ़ा] सराहना, साधुवाद ।

**शाब्द** - 1. वि० [सं] शब्दमय ; शब्द-संबंधी , शब्द पर ही आश्रित ; शब्दाडंबर से युक्त ; मौखिक ; 2. पु० वैयाकरण , यौ०—बोध - वाक्य में प्रयुक्त शब्दो के अर्थ का ज्ञान ; —व्यंजना - वाक्य में प्रयुक्त शब्दविशेष के आधार पर की हुई व्यंजना ।

**शाब्दी** - स्त्री० [सं] सरस्वती ।

**शाम** - 1. स्त्री० [फ़ा] संध्या, सूर्यास्त का समय ; अंतकाल ; मु० —की सुबह करना, लगाना - टाल-मटोल करना ; 2. वि० [सं] शांति-संबंधी ।

**शामत** - स्त्री० [अ] दुर्भाग्य ; मुसीबत ; मु० —आना - बुरे दिन आना ; —का मारा - दुर्दशाग्रस्त ; —की मार - दुर्भाग्य ।

**शामती** वि० [हिं] अभागा ।

**शामियाना** - पु० [फ़ा] चारो ओर खुला हुआ बड़ा तंबू ।

**शामिल** - वि० [अ] इकट्ठा ; मिला हुआ ; यौ० —मिसिल - मुक़द्दमे के काग़ज़ात के साथ नत्थी किया हुआ ; —हाल - दुख सुख का साथी ।

**शामिलात** - स्त्री० [हिं] अनेक हिस्सेदारों की संयुक्त संपत्ति ; हिस्सेदारी ।

**शामिलाती** - वि० [हिं] संयुक्त ।

**शामीन** - पु० [सं] भस्म ; यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाली करछी ।

**शामील** - पु० [सं] भस्म ।

**शामीली** - स्त्री० [सं] माला ।

**शायक** - पु० [सं] तलवार ; बाण ।

**शायक़** - वि० [अ] चाहनेवाला ; शौक़ करनेवाला, शाइक़ ।

**शायद** - अव्य० [फ़ा] कदाचित ; संभवतः ।

**शायर** - पु० [अ] कवि ।

**शायरा** - स्त्री० [अ] कवयित्री ।

**शायराना** - वि० [अ] अतिरंजित ; कवि का-सा ; कवित्वमय ; कविसुलभ ।
**शायरी** - स्त्री० [अ] अतिरंजना ; कविकर्म ; कविता ; शेर कहना ।
**शायाँ** - वि० [फ़ा] योग्य , अनुरूप ।
**शाया** - वि० [अ] प्रकट ; प्रकाशित (पुस्तक आदि) ; **मु०** —करना - प्रकाशित करना ।
**शायी** - वि० [सं] सोने या लेटनेवाला ।
**शारद** - 1. वि० [स] शरत्काल में उत्पन्न ; शरत्काल से संबद्ध ; ताज़ा ; नवीन ; लज्जाशील ; वार्षिक ; विनम्र ; 2. पु० शरत्काल ; शरत्काल में उत्पन्न होनेवाला अन्न ; शरत्काल में अधिकतर होनेवाला एक रोग ; शरत्काल की धूप ; बकुल वृक्ष ; श्वेतकमल ; कास ; पीली मूँग ; **यौ०** —चंद्र - शरत्काल का चंद्रमा ; —ज्योत्स्ना - शरत् ऋतु की चाँदनी ; —निशा - शीतल और आह्लादपूर्ण शरत् ऋतु की रात ; —पूर्णिमा - आश्विन-पूर्णिमा ; कोजागर, —मेघ - शरत् ऋतु का जलहीन श्वेत मेघ ।
**शारदा** - स्त्री० [सं] सरस्वती ; एक प्रकार की वीणा ; दुर्गा , ब्राह्मी ; श्यामा लता ।
**शारदीय** - वि० [सं] शरद् ऋतु-संबंधी ।
**शारि** - 1. पु० [स] छोटा गेंद ; जुआ खेलने का सामान ; शतरंज की गोटी ; 2. स्त्री० कपट ; निन्दा ; मैना ; हाथी की झूल ; **यौ०** —पट्ट, फल, फलक - वह बिसात जिसपर शतरंज, चौसर आदि के मोहरे बिछाकर खेले जाते हैं ।
**शारिका** - स्त्री० [सं] मैना पक्षी ; तान्त्रिक वाद्यों को बजाने की धनुष की तरह की कमानी ; वीणा आदि का वादक ; शतरंज की गोटी ; शतरंज आदि का खेलना ।

**शारीर** - 1. वि० [सं] शरीर-संबंधी ; शरीर से उत्पन्न ; शरीर से संबद्ध ; 2. पु० शरीरस्थित ; जीवात्मा ; बैल ; मल ; **यौ०** —विद्या, विधान - शारीरिक जीवनिर्माण व उत्पत्ति-संबंधी शास्त्र ।
**शारीरिक** - वि० [सं] शरीर-संबंधी ।
**शार्दूल** - 1. पु० [सं] चीता ; बाघ ; दोहा छंद का एक प्रकार ; चित्रक वृक्ष ; एक पक्षी-विशेष ; 2. वि० श्रेष्ठ ।
**शार्वरी** - 1. स्त्री० [सं] रात ; 2. पु० एक संवत्सर का नाम ।
**शाल** - 1. पु० [सं] एक वृक्ष; चहारदिवारी ; मत्स्य-विशेष ; राजा शालिवाहन ; सारवू या सखुआ का पेड़ ; **यौ०** —भंजिका - कठपुतली ; वेश्या ; —भंजी - कठपुतली ; —वेष्ट - शाल का रस, गोंद ; —सार - बड़ा पेड़ ; शाल का गोंद ; हींग ; 2. स्त्री० [फ़ा] ऊनी या रेशमी चादर ; काश्मीर में बननेवाले दुम्बे के बालों की चादर ; **यौ०** —दोज़ - शाल पर बेल-बूटे बनानेवाला; —बाफ़ - शाल बुननेवाला ; एक तरह का सुर्ख़ रेशमी कपड़ा ।
**शाला** - [सं] मकान का एक हिस्सा ; गृह ; गृहांश ; पेड़ की बड़ी प्रधान डाल ; स्थान ; पाठशाला ; संप्रदाय ; समान आचार-विचारवालों का समूह ।
**शालार** - पु० [सं] चिड़िया का पिंजड़ा ; सीढ़ी ; हस्तिनख ।
**शालि** - स्त्री० [सं] चावल ; **यौ०** —चूर्ण - चावल का आटा ; —धान - बासमती चावल ; —पिष्ट - स्फटिक, बिल्लौर ।
**शालिक** - पु० [सं] कारीगरों का गाँव ; जुलाहा ; एक प्रकार का कर ।
**शाली** - 1. स्त्री० [सं] काला जीरा ; मेथी ; 2. वि० युक्त, सहित ।

**शालीन** - वि० [सं] तुल्य ; विनम्र ; लज्जाशील ; शाला-संबंधी ; सुशील ; धनी ।

**शालीनता** - स्त्री० [सं] लज्जा ; विनम्रता ।

**शालीय** - वि० [सं] शाला-संबंधी ।

**शालुक** - पु० [सं] कमल आदि की जड़ ।

**शालूर** - पु० [सं] मेंढक ।

**शाल्मली** - 1. स्त्री० [सं] पाताल की एक नदी ; सेमल का एक पेड़ जिसकी फली कांटेदार होती है ; 2. पु० [हिं] गरुड़ ।

**शाव** - 1. पु० [सं] पशु-पक्षी का शिशु ; भूरा रंग ; 2. वि० शव-संबंधी ; मृत्यु के कारण उत्पन्न (अशौच इत्यादि) ; भूरे रंग का ।

**शावक** - पु० [सं] पशु या पक्षी का बच्चा ।

**शाश्वत** - 1. वि० [सं] चिर स्थायी ; निरंतर, नित्य ; 2. पु० स्वर्ग ; सूर्य ।

**शाश्वती** - स्त्री० [सं] पृथ्वी ।

**शासक** - पु० [सं] राजा ; राज्यशासन का संचालक ; दंड देनेवाला व्यक्ति ; जहाज़ का अध्यक्ष, यौ० —मंडली, वर्ग - राज्य के विभिन्न विभाग के संचालकों और हाकिमो का संघ ।

**शासन** - पु० [सं] अमल ; राज्य ; आज्ञा ; शिक्षा ; उपदेश ; यौ० —कर्ता - शासन करनेवाला ; —तंत्र - राज्य-तंत्र ; —पत्र - राजा द्वारा दी हुई बख्शिश या उसकी आज्ञा का ताम्रपट ; —पद्धति - राज्य चलाने की पद्धति ; —प्रणाली - शासन की विधि या पद्धति ; —व्यवस्था - शासन-संबंधी प्रबंध ; —हर, हारक, हारी - राजदूत ।

**शासित** - वि० [सं] जिसका शासन किया गया हो ; दंडित ।

**शासिता** - वि० [सं] दंड देनेवाला ; शासन करनेवाला ।

**शास्ता** - पु० [सं] गुरु ; पिता ; जिन ; बुद्ध ; राजा ; शासक ; बौद्धो और जैनो के देवतुल्य उपदेष्टा ।

**शास्ति** - स्त्री० [स] आज्ञा ; दंड ; राजदंड, शासन ।

**शास्त्र** - पु० [सं] किसी विषय का तात्त्विक तथा व्यवस्थित ज्ञान ; धर्मग्रंथ ; ज्ञान की कोई शाखा ; यौ० —ज्ञ - शास्त्र जाननेवाला ; —ता - शास्त्रीयता, शास्त्रपना ; —दृष्टि - शास्त्रशुद्ध दृष्टि ; —प्रामाण्य - आप्तवचन ; शास्त्र की प्रामाणिकता ; —विधि - शास्त्र द्वारा कही हुई विधि ; —विरुद्ध - अशास्त्रीय ; शास्त्र से विरुद्ध ; —विशारद - शास्त्र-ज्ञान में निष्णात ; —शुद्ध - शास्त्र के नियमों का अनुसरण करनेवाला ।

**शास्त्रार्थ** - पु० [सं] शास्त्र का तात्पर्य या अभिप्राय ; शास्त्रविषयक चर्चा ; वाद-विवाद ।

**शास्त्री** - 1. वि० [सं] शास्त्र का जानकार ; 2. पु० शास्त्र का पूर्ण अधिकारी ; पंडित ; परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्राप्त होनेवाली एक उपाधि ।

**शास्त्रीय** - वि० [सं] शास्त्र-संबंधी ; शास्त्रानुमोदित ; वैज्ञानिक ; शास्त्रशुद्ध ।

**शास्त्रोक्त** - वि० [सं] शास्त्रविहित ; शास्त्र द्वारा कथित ; वैध ।

**शाहंशाह** - पु० [फ़ा] सम्राट ; राजाधिराज ।

**शाहंशाही** - स्त्री० [फ़ा] सम्राट का पद या कार्य ।

**शाह** - पु० [फ़ा] बादशाह ; ताश और गंजीफे का एक पत्ता ; शतरंज का एक मुहरा ; मुसलमान फ़कीरों की पदवी ; स्वामी ; यौ० —कार - किसी कलाकार की सबसे बड़ी कृति ; —गाम - घोड़े की एक अच्छी चाल ; —ज़ादगी -

शाहज़ादे की किशोरावस्था ; —ज़ादा - बादशाह का बेटा ; —ज़ादी - बादशाह की बेटी ; —जी - मुसलमान फ़कीरों की पदवी ; —दरा - शाही महल या क़िले के नीचे या सामने का गाँव या बस्ती ; —दरिया - स्त्रियों द्वारा कल्पित एक पिशाच ; —दाना - बड़ा मोती ; भाँग का बीज ; —दारू - मद्य ; —नशीन - बादशाह के बैठने की जगह ; बहुमूल्य आसन ; राजमहल के झरोखे के आगे का वह स्थान जहाँ बैठकर बादशाह प्रजा को दर्शन दिया करते थे ; —पर - पक्षी के डैने का सबसे बड़ा पर ; —पसंद - एक तरह की दाल ; एक बड़ा पक्षी ; —बंदर - किसी देश विशेष का प्रधान बंदरगाह ; —बाज़ - चिड़ियों का शिकार करने के लिए पाला हुआ बड़ा शाही बाज़ ; —बैत - क़सीदे या गज़ल का सबसे अच्छा शेर ; —मुहरा - साँप की मणि ; —राह - राजमार्ग ; —वार - बादशाहों के लायक़ ; बहुमूल्य ; शाहो-गदा - राजा और रंक ; बादशाह और फ़कीर ।

**शाहाना** - 1. वि० [फ़ा] राजोचित ; बहुत बढ़िया ; 2. पु० शहानी चूड़ियों का जोड़ा ; **यौ०**—जोड़ा - दूल्हे को पहनाया जानेवाला सुर्ख़ जोड़ा ; —मिज़ाज़ - नाज़ुकमिज़ाज़ ।

**शाहिद** - 1. पु० [अ] देखनेवाला ; शहादत देनेवाला, गवाह ; 2. वि० माशूक़ ; सुंदर ।

**शाहीं** - पु० [फ़ा] एक शिकारी चिड़िया ; [इ] तराजू की डंडी ।

**शाही** - 1. पु० [फ़ा] बादशाह का ; शाहाना ; 2. स्त्री० बादशाहत ; **यौ०** —ज़माना - भारतीय इतिहास का मुस्लिम राजकाल ।

**शिंगरफ** - पु० [हिं] ईंगुर ।

**शिंगरफी** - वि० [हिं] ईंगुर-जैसा लाल ।

**शिंघाण** - पु० [सं] काँच या शीशे का पात्र ; कफ ; नासिकामल ; फेन ; लोहे का मुर्चा, ज़ंग ।

**शिंबा** - स्त्री० [सं] छीमी ; सेम ।

**शिंबिक** - पु० [सं] मूँगफली ।

**शिंबिका** - स्त्री० [सं] छीमी ; सेम ।

**शिंशिपा** - स्त्री० [सं] शीशम का पेड़ ; अशोक वृक्ष ।

**शि** - पु० [सं] मंगल ; शिव ; शांति ; समृद्धि ।

**शिआर** - पु० [अ] चाल, तरीका, शील तौर (समास में) ।

**शिकंजा** - पु० [फ़ा] एक यंत्र जिसमें ज़िल्दसाज़ किताबें दबाकर पन्ने काटते हैं ; यंत्रणा देने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें अपराधियों के हाथ-पाँव डालकर दबा दिये जाते थे ; कोल्हू ; दबाव ; रूई दबाने की कल ; **मु०** शिकंजे में खींचना - कठोर दंड देना ; यंत्रणा देना ।

**शिक़** - स्त्री० [अ] खंड ; बैल आदि का एक ओर का बोझ ; वस्तु का आधा भाग ; किसी तहसीलदार के अधीन देश का कोई भाग-विशेष ; **यौ०** —दार - तहसीलदार ।

**शिकन** - 1. स्त्री० [फ़ा] सिलवट ; 2. वि० तोड़नेवाला ।

**शिकम** - पु० [फ़ा] पेट ; **यौ०** —परवर - पेट पालनेवाला, पेटू ; —सेर - तृप्त ।

**शिकमी** - 1. वि० [फ़ा] पैदाइशी ; पेट का ; भीतरी ; 2. पु० असल काश्तकार से ज़मीन लेकर जोतनेवाला काश्तकार ।

**शिकरा** - पु० [फ़ा] बाज़ की जाति का उससे कुछ छोटा एक शिकारी पक्षी।

**शिकवा** - पु० [फ़ा] शिकायत।

**शिकस्त** - स्त्री० [फ़ा] हार, पराजय; टूट-फूट; यौ० —फ़ाश - पक्की या गहरी हार; —बंद - टूटने और बंद हो जाने-वाला एक तरह का छल्ला।

**शिकस्तगी** - स्त्री० [फ़ा] टूट-फूट।

**शिकस्ता** - वि० [फ़ा] भग्न; घसीट (लिखावट); यौ० —ख़ातिर, दिल - भग्नहृदय; —नवीस - घसीट(लिखावट) लिखनेवाला; —पर, बाज़ू - असहाय; —हाल - फटेहाल।

**शिकायत** - स्त्री० [अ] दुखड़ा; निन्दा; दोष मानने का कारण; पीड़ा (पेट की शिकायत); मु० —करना - दुखड़ा रोना; उलाहना देना; पीड़ा बताना।

**शिकायती** - वि० [हिं] शिकायत करनेवाला; जिसमें शिकायत हो।

**शिकार** - पु० [हिं] आखेट; दलाल; वेश्या या डाकू आदि के फंदे में आया हुआ आदमी; पशु-पक्षियों को मारना; शिकार का जानवर; लूट का माल; यौ० —गाह - शिकार खेलने की जगह; जंगली जानवरों का शिकार करने के लिए जंगल में बना हुआ मंच; —की टट्टी - छोटी-सी टट्टी जिसपर घास बिछाकर बहेलिये अपने साथ-साथ रखते हैं; मु० —करना - आखेट करना; फंदे में फँसाना; मुट्ठी में करना।

**शिकारी** - 1. वि०, 2. पु० [हिं] शिकार करनेवाला; व्याध; यौ० —कुत्ता - शिकार में सहायक कुत्ता।

**शिकोह** - पु० [फ़ा] भय।

**शिक्कु** - वि० [सं] आलसी; बेकार।

**शिक्थ** - पु० [सं] मधुमक्खी के छत्ते का मोम।

**शिक्य** - पु० } [स] छींका; रस्सी; रस्सी
**शिक्या** - स्त्री० } की जाली में ढोया जानेवाला बोझ; रस्सी की जाली में रखा सामान; तुला की डोरी।

**शिक्षक** - पु० [सं] अध्यापक; शिक्षा देनेवाला।

**शिक्षण** - पु० [सं] शिक्षा देने का काम; ज्ञानप्राप्ति; यौ० —कला - पढ़ाने की कला।

**शिक्षणीय** - वि० [सं] शिक्षा देने लायक़; पढ़ाने योग्य।

**शिक्षा** - स्त्री० [सं] किसी शिक्षासंस्था में शिक्षकों द्वारा व्यवस्थित रूप से विद्या की प्राप्ति; उपदेश; दंड; चारित्रिक तथा मानसिक शक्तियो का विकास; प्रशिक्षण; वेद के छः अंगो में से एक; उच्चारण-विज्ञान; यौ० —कर - शिक्षक; शिक्षा देनेवाला; —गुरु - शिक्षक; ज्ञानदाता गुरु; —दीक्षा - उपदेश आदि द्वारा किसीका बौद्धिक, चारित्रिक तथा मानसिक आदि विकास; —पद्धति, प्रणाली - शिक्षा देने का ढंग; —प्रद - शिक्षादायक; —मंत्री - शिक्षाविभाग का सर्वोच्च अधिकारी; —विभाग - शिक्षा की व्यवस्था तथा उसे सँभालने के निमित्त बना विभाग; —व्रत गृहस्थ-धर्म का एक आवश्यक अंग;—शक्ति - शिक्षाग्रहण की शक्ति।

**शिक्षार्थी** - पु० [सं] छात्र, विद्यार्थी।

**शिक्षालय** - पु० [सं] विद्यालय, स्कूल; कालेज।

**शिक्षित** - वि० [सं] पढ़ा हुआ; मेधावी; विनीत; पालतू; आधुनिक शिक्षा-दीक्षा-संपन्न; विद्वान।

**शिखंड, शिखंडक** - पु० [सं] कलँगी ; चोटी, शिखा ; मयूरपुच्छ ।
**शिखंडिक** - पु० [सं] मुर्ग़ा ।
**शिखंडिका** - स्त्री० [सं] शिखा ।
**शिखंडिनी** - 1. वि० [सं] शिखंड-युक्त ; 2. स्त्री० गुंजा, घुंघची ; जूही ; मोरनी ; राजा द्रुपद की कन्या ।
**शिखर** - पु० [सं] पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग, शृंग ; मकान का सबसे ऊँचा हिस्सा, मुड़ेर ; मंदिर का सबसे ऊँचा हिस्सा ; वृक्ष का सबसे ऊपरी हिस्सा ; खड्ग का अग्रभाग , पके अनार के दाने की आभावाला एक माणिक्य या रत्न ; शुष्क तृण ; पुलक ; काँख ; जूही ; शिखा ।
**शिखरन** - पु० [हिं] दही में चीनी व केसर आदि मिलाकर तैयार किया गया लेह्य पदार्थ ।
**शिखरिणी** - 1. स्त्री० [सं] उत्तम कोटि की नारी ; श्रीखंड, एक स्वादिष्ट लेह्य पदार्थ ; रोमावली ; किशमिश ; नव मल्लिका ; मल्लिका ; रोमावली ; 2. वि० शिखरवाली ; एक वर्णवृत्त ।
**शिखरी** - 1. वि० [स] शिखरयुक्त ; 2. पु० पर्वत ; चिचड़ा ; ज्वर ; वृक्ष ; पहाड़ी क़िला ।
**शिखा** - स्त्री० [सं] आग की लपट ; दीये की लौ ; प्रकाश की किरण ; चोटी या चुटिया ; मुर्ग़ी या मोर आदि जंतुओं के सिर पर की कलँगी ; किसी वस्तु की नोक या नुकीला सिरा ; पैर के पंजे का अगला हिस्सा ; पेड़ की जटायुक्त जड़ ; पेड़ की शाखा या डाली ; कामज्वर ; पुरुषरत्न ; स्वामी ; **यौ०** —कंद - शलजम ; —तरु - दीवट ;—धर - मंजुघोष ; मयूर ; नुकीला ; चोटीवाला ; —धार, धारक - मोर ; —पाश - चोटी ; —पित्त - हाथ-पैर की उँगलियो में सूजन पैदा करनेवाला एक रोग ; —बंधन - चुटिया का बाँधना ; —मणि - सिर पर पहनने का रत्न ; —वर - कटहल ; —वृद्धि - प्रतिदिन बढ़नेवाला ब्याज ।
**शिखाभरण** - पु० [सं] शिरोभूषण ।
**शिखी** - 1. वि० [सं] अभिमानी ; शिखायुक्त ; नुकीला ; 2. पु० अग्नि ; कुक्कुट ; घोड़ा ; दीपक ; पर्वत ; बाण ; बैल ; मोर ; वृक्ष ; केतु ग्रह का नाम ; चित्रक वृक्ष ; मेथी ; भिक्षा पर जीवन-निर्वाह करनेवाला साधु ; तीन की संख्या ; ब्राह्मण ; **यौ०** —कंठ, ग्रीव - मयूर के कंठ की भाँति ; —ध्वज - धुआँ ; —पिच्छ, पुच्छ - मोर की पूँछ ; —प्रिय - वनबेर ; —वर्धक - कुष्माड ; —शिखा - आग की लपट ; मोर के सिर की कलँगी ।
**शिगाफ़** - पु० [फ़ा] चीरा ; झरी ; दरार ; नरकुल आदि की लेखनी के बीचोबीच दिया जानेवाला चीरा ; **मु०** —देना - क़लम को चीरना ; नश्तर लगाना ।
**शिगार, शिगाल** - पु० [फ़ा] गीदड़ ।
**शिगुफ्तगी** - स्त्री० [फ़ा] प्रफुल्लता ; प्रसन्नता ; हरा-भरा ; **यौ०** —पेशानी - प्रसन्नचित्त ।
**शिगूफ़ा** - पु० [फ़ा] कली ; चुटकला, अनोखी बात ; **मु०** —खिलाना - कोई अनोखी बात करना ; झगड़ा उठाना ; —छोड़ना - झगड़ा-फ़साद खड़ा करनेवाली बात कहना ।
**शित** - वि० [सं] तेज़ किया हुआ ; कमज़ोर ; कृश ; **यौ०** —धार - तेज़ धारवाला ; —शूक - जौ ; गेहूँ ।

**शितद्रु** - स्त्री० [सं] सतलज नदी।

**शिताफल** - पु० [सं] शरीफ़ा।

**शिताब** - 1. अव्य० [फ़ा] जल्द; 2. वि० जल्दबाज़; यौ० —कार - उतावला।

**शिताबी** - स्त्री० [फ़ा] उतावली; जल्दी।

**शिति** - वि० [सं] काला; सफ़ेद; यौ० —कंठ - चातक; मोर; शिव; —चंदन - कस्तूरी; —रत्न - नीलम।

**शिथिल** - वि० [सं] ढीला; आलसी; श्रम से थका हुआ, डाल से गिरा या टूटा हुआ; पूरी सावधानी से जिसका पालन न हो; जिसे कुछ छूट दी गयी हो।

**शिथिलता** - स्त्री० [सं] आलस्य; ढीलापन; श्रांति; नियम का पालन कराने पर पूरा ध्यान न देना; तर्क आदि की अपुष्टता; काव्यरचना या वाक्यरचना आदि में दोष के कारण चुस्ती का न होना।

**शिथिलाई** - स्त्री० [हिं] शिथिलता।

**शिथिलाना** - अ० [हिं] ढीला पड़ना; थकना।

**शिद्दत** - स्त्री० [अ] अधिकता; कठोरता; कठिनाई; कष्ट; तीव्रता; यौ० —का - ज़ोर का, तीव्र।

**शिनाख़्त** - स्त्री० [फ़ा] पहचान; परख।

**शिफर** - पु० [हिं] ढाल।

**शिफा** - स्त्री० [सं] पेड़ की रेशेदार जड़; जड़; कोड़े की मार; जटामासी; माता; नदी; हलदी; शतपुष्पा; यौ० —कंद - कमल की जड़; —धर - शाखा; —रुह - वटवृक्ष।

**शिर** - पु० [सं] सिर; अजगर; पिप्पलीमूल; शय्या; शिखर; पेड़ का सिरा; सेना का अगला भाग; प्रधान; किसी वस्तु का सर्वोच्च अंश; यौ० —फूल - सीसफूल नामक शिर का आभूषण।

**शिरकत** - स्त्री० [अ] योग; शरीक होना; साझा; यौ० —नामा - वह दस्तावेज़ जिसमें साझे की शर्तें लिखी हो।

**शिरकती** - वि० [हिं] संयुक्त; साझे का।

**शिरश्छेद, शिरश्छेदन** - पु० [सं] सिर काटना।

**शिरस्क** - पु० [सं] पगड़ी; शिरस्त्राण।

**शिरस्का** - स्त्री० [सं] पालकी।

**शिरस्त्र, शिरस्त्राण** - पु० [सं] अस्त्र से सिर की रक्षा के लिए पहना जानेवाला लोहे का टोप।

**शिरस्थ** - पु० [सं] मुखिया।

**शिरहन** - पु० [हिं] तकिया; सिरहाना।

**शिरा** - स्त्री० [सं] धमनी, ख़ून की नाड़ी; यौ० —जाल - आँख का एक रोग; ख़ून की नसों का समूह; —मूल - नाभि; —हर्ष - नाड़ी का झनझनाना; एक नेत्ररोग।

**शिरीष, शिरीषक** - पु० [सं] अति कोमल फूलोंवाला एक वृक्ष, सिरिस।

**शिरोधार्य** - वि० [सं] अतिशय मान्य; सिर पर धारण करने योग्य।

**शिरोभूषण** - पु० [सं] सिर पर पहनने का आभूषण; श्रेष्ठ व्यक्ति।

**शिरोमणि** - पु० [सं] मस्तक पर धारण किया जानेवाला रत्न; श्रेष्ठ पुरुष।

**शिरोरुह** - पु० [सं] सिर के बाल।

**शिरोरोग** - पु० [सं] मस्तकपीड़ा।

**शिरोवेष्ट, शिरोवेष्टन** - पु० [सं] पगड़ी।

**शिरोहर्ष** - पु० [सं] एक नेत्ररोग।

**शिर्क** - पु० [अ] ईश्वर में द्वैतभावना रखना।

**शिल** - पु० [सं] उंछ, खेत कट जाने के बाद उसमें से बचे हुए अनाज के दाने बीनने की क्रिया; यौ० —रति - उंछवृत्ति पर जीवन-निर्वाह करनेवाला।

**शिला** - स्त्री० [सं] पत्थर ; चट्टान ; पत्थर की पट्टी ; खंभे का सिरा ; कपूर ; गेरू ; उंछवृत्ति ; द्वार के नीचे का खाट ; शिलाजीत ; मनःशिला ; यौ० — कुट्टक - पत्थर काटने या तोड़ने की छेनी ; —क्षार - चूना ; —जतु - शिलाजीत ; गेरू ; —जीत - सूर्य के ताप से तपी शिलाओं से निकला हुआ पुष्टिकारक काला रस ; —तल - पत्थर का ऊपरी भाग ; —धातु - खड़िया ; पीले रंग का गेरू ; —पट्ट, पट्टक - चट्टान ; पत्थर की चौकी ; सिल ; —पुत्र, पुत्रक - किसी चीज़ को पीसने का लंबा गोल पत्थर, लोढा ; —फलक - पत्थर की पटिया ; —बंध - क़िले की चहारदीवारी, पत्थर का बना परकोटा ; —भेद - छेनी ; —लिपि, लेख - किसी सम्राट या धर्माचार्य आदि द्वारा किसी वस्तु के प्रचार और उपदेश आदि के स्थायित्व के लिए पत्थर पर खोदवाया हुआ अनुशासन आदि ; —वृष्टि - पत्थरसहित वृष्टि, उपलवृष्टि ; —वेश्म - गुफा ; पत्थर का बना निवास ; —सार - लोहा ।

**शिलात्मज** - पु० [सं] लोहा ।

**शिलेय** - वि० [सं] पथरीला ; शिला-संबंधी ।

**शिलोंछ** - पु० [सं] उंछवृत्ति ।

**शिलोच्चय** - पु० [सं] पहाड़ ; बड़ी चट्टान ।

**शिलौका** - पु० [सं] गरुड़ ।

**शिल्प** - पु० [सं] कला आदि कर्म, कारीगरी ; यौ० —कला - दस्तकारी का कौशल ; —कार, कारक, कारी - शिल्पी, कारीगर ; —कौशल - शिल्पचातुर्य ; —गृह - कारख़ाना ; —जीवी - शिल्पी ; —यंत्र - शिल्प के काम में आनेवाले औज़ार, कल, मशीन आदि ; —विद्या - वस्तुनिर्माण-पद्धति का ज्ञान ; —शास्त्र - वह शास्त्र जिसमें शिल्प-निर्माण संबंधी ज्ञान या विवेचन हो ।

**शिल्पी** - पु० [सं] कारीगर ।

**शिव** - 1. पु० [सं] महादेव ; कल्याण ; लिंग ; सुख ; फिटकरी ; जल ; वेद ; देव, अद्वैत ब्रह्म ; समुद्रजल से बना नमक, सेंधा नमक ; गुग्गुल ; काला धतूरा ; पारा ; बालू ; पशु बाँधने का खूँटा ; नीलकंठ पक्षी ; स्यार ; 2. वि० मंगलकारी ; सुखी ; यौ० —कर - मंगलकारी ; —कीर्तन - शिव की स्तुति ; शिव का स्तुतिकर्ता ; —गति - सुखी ; समृद्ध ; जैनो के एक अर्हत् (भगवान) ; —गिरि - कैलास पर्वत ; —ज्ञान - शुभाशुभ कालबोधक शास्त्र ; —तेज - पारा ; —दारु - देवदारु वृक्ष ; —दिशा - ईशान नामक कोण ; —दूती - दुर्गा ; —द्रुम - बैल का पेड़ ; —पुरी - बनारस ; —रस - उबले चावल का पानी ; —लिंग - मिट्टी या पत्थर की शिव की लिंगमूर्ति ; —लोक - कैलास ; —वाहन - नंदी ; बैल ; —सायुज्य - मोक्ष ।

**शिवक** - पु० [सं] कील ; गाय आदि पशुओं के शरीर को खुजलाने के लिए गड़ा खूँटा ।

**शिवता** - स्त्री } [सं] शिवपद, मोक्ष ।
**शिवत्व** - पु० }

**शिवा** - स्त्री० [सं] पार्वती ; भाग्यशालिनी स्त्री ; श्रृगाली ; दुर्गा ; मुक्ति ; आँवला ; हरीतकी ; हलदी ; गोरोचन ; शमी वृक्ष ; दूब ; यौ० —रुत - गीदड़ की आवाज़ ।

**शिवाजी** - पु० [हि] एक प्रसिद्ध महाराष्ट्र विजेता ।

**शिवात्मक** - पु० [सं] सेंधा नमक ।

**शिवानी** - स्त्री० [सं] दुर्गा ; पार्वती ।

**शिवालय** - पु० [सं] वह मंदिर जिसमें शिवलिंग स्थापित हो ; देवमंदिर ; लाल तुलसी ; श्मशान ।

**शिविका** - स्त्री० [सं] डोली, पालकी ।

**शिविर** - पु० [सं] तंबू ; क़िला ; सेना के लिए विश्राम-स्थल ।

**शिवेतर** - वि० [सं] अमंगल ।

**शिशिर** - 1. पु० [सं] माघ और फाल्गुन में होनेवाली एक ऋतु ; ओस ; एक अस्त्र ; शीत ; हिम ; 2. वि० शीतल ; **यौ०** —कर, किरण - चंद्रमा ; —काल, समय - जाड़े की ऋतु, शिशिर ऋतु ।

**शिशु** - पु० [सं] नवजात से लेकर लगभग आठ वर्ष तक की अवस्था का बालक, बच्चा ; शावक ।

**शिशुता** - स्त्री० [सं] लड़कपन ।

**शिश्न** - पु० [सं] पुरुष की जननेन्द्रिय ।

**शिश्नोदरपरायण** - वि० [सं] लंपट और पेटू ।

**शिष** - 1. पु० [हिं] शिष्य ; 2. स्त्री० चोटी ; शिक्षा, नेक सलाह ।

**शिषा** - स्त्री० [हिं] शिखा ।

**शिषि** - पु० [हिं] शिष्य ।

**शिष्ट** - 1. वि० [सं] सभ्य ; सुशील ; आधुनिक लोकाचार या व्यवहार आदि में पटु ; धीर ; बुद्धिमान ; विनीत ; नीतिमान ; प्रधान ; शिक्षित ; शांत ; श्रेष्ठ ; बचा हुआ ; 2. पु० सलाहकार ; किसी सभा का सदस्य या सभ्य ; **यौ०** —मंडल - किसी संस्था या राज्य आदि द्वारा चुने गये अधिकारप्राप्त कुछ व्यक्तियों का समूह जो दूसरी संस्था या दूसरे राज्य में किसी उद्देश्य से भेजे जाते हैं ; **यौ०** —सभा - राज्य-परिषद ।

**शिष्टता** - स्त्री० } [सं] शिष्ट होने का भाव या
**शिष्टत्व** - पु० } कर्म आदि ।

**शिष्टाचार** - पु० [सं] शिष्ट व्यक्तियों का आचार-व्यवहार ; सदाचार ; विनम्रता ; किसी समाज या संस्था आदि द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार आचरण ।

**शिष्य** - 1. पु० [सं] विद्यार्थी ; चेला ; गुरुकुल में रहकर विद्याग्रहण करनेवाला व्यक्ति ; 2. वि० उपदेश्य ; शासनयोग्य ; शिक्षणीय ; **यौ०** —परंपरा - किसी गुरु-संप्रदाय की परंपरागत शिष्यमंडली ।

**शिस्त** - स्त्री० [फ़ा] सीध, निशाना ; मछली पकड़ने का काँटा ; अनुशासन ; नियमबद्ध वर्तन ।

**शीकर** - पु० [सं] तुषार ; वायुप्रेरित जलकण ; वायु ।

**शीघ्र** - अव्य० [सं] जल्द ; झटपट ; **यौ०** —कारी - तुरंत काम करनेवाला ; तुरंत असर करनेवाला ; सन्निपात ज्वर का एक भेद ; —कोपी - चिड़चिड़ा ; —गामी - द्रुतगामी ; खरगोश ; वायु ; सूर्य ; —चेतन - कुत्ता ; —बुद्धि - तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

**शीघ्रता** - स्त्री० } [सं] जल्दी ।
**शीघ्रत्व** - पु० }

**शीत** - 1. वि. [सं] शीतल ; निद्रालु ; आलस्ययुक्त ; 2. पु० शीतकाल जो अगहन, पूस और माघ इन तीन महीनों का होता है, जाड़ा ; जुकाम ; जल; तुषार ; नीम का पेड़ ; कपूर ; **यौ०** —कटिबंध - भूमंडल के उत्तरी तथा दक्षिणी अंशों के दो कल्पित विभाग जो भूमध्यरेखा के $23\frac{1}{2}$ अक्षांश उत्तर तथा इतने ही अक्षांश दक्षिण से शुरू होकर ध्रुव प्रदेश तक फैले हैं ; —कण - जीरा ; —कर - कपूर ; चंद्रमा ; शीतल करने-

वाला; —काल - जाड़े का मौसम; —कालीन - शीतकाल-संबंधी; शीतकाल में होनेवाला; —किरण - चंद्रमा; —क्षार - साफ़ सोहागा; —गंध - —श्वेत चंदन; —गात्र - सन्निपात ज्वर-विशेष; —चंपक - आईना; दीपक; —च्छाय - वटवृक्ष; —ज्वर - जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, मलेरिया बुख़ार; —पित्त - वात और पित्त के कुपित होने से उत्पन्न हुआ एक चर्मरोग; —प्रधान - वह स्थान जहाँ शीत का प्राधान्य हो; —प्रभ - कपूर; —फल - गूलर; —भीरु - मल्लिका; शीत से डरनेवाला; — मंजरी - हरसिंगार; —मूलक - खस; ठंडी जड़वाला; —मेह - एक तरह का प्रमेह रोग; —रम्य - दीपक; —रश्मि - कपूर; चंद्रमा; —रस - ईख के कच्चे रस द्वारा प्रस्तुत मद्यविशेष; —रुह - श्वेत कमल; —वल्क - गूलर का पेड़; — —वीर्यक - पाकर का पेड़; —शिव - सौंफ; सुहागा; सेंधा नमक; शमी वृक्ष; —शिवा - शमी वृक्ष; सौंफ; —शूक - जौ; — स्पर्श - ठंढक पहुँचानेवाला।

**शीतक** - 1. वि० [सं] ठंडा; 2. पु० ठंडी वस्तु : आलसी; निश्चिंत मनुष्य; बिच्छू; शीतकाल।

**शीतल** - 1. वि० [सं] ठंढा; ठंढे दिमाग़-वाला; संतुष्ट; सौम्य; 2. पु० पीत चंदन; कमल; एक प्रकार का कपूर; मोती; ताड़पीन; शीतलता; यौ० —चीनी - एक प्रकार का मसाला, कबाब-चीनी; —पाटी - एक प्रकार की पतली और चिकनी चटाई; —प्रद - चंदन।

**शीतलता** - स्त्री० [सं] ठंडापन; शीतल होने का भाव या गुण आदि; जड़ता।

**शीतलताई** - स्त्री० [हिं] शीतलता।

**शीतला** - स्त्री० [स] वसंत और ग्रीष्म ऋतु में होनेवाला एक विस्फोटक रोग, चेचक; इस रोग की अधिष्ठात्री सात देवियाँ; बालू; यौ० —वाहन - गधा; —षष्ठी - माघ शुक्ला षष्ठी।

**शीतलाष्टमी** - स्त्री० [स] चैत्र कृष्णाष्टमी।

**शीतली** - स्त्री० [स] चेचक रोग; जल में पैदा होनेवाला एक पौधा।

**शीतांग** - पु० [सं] शीत सन्निपात।

**शीताकुल** - वि० [सं] जाड़े के मारे काँपने-वाला।

**शीतातप** - पु० [स] जाड़ा और गर्मी।

**शीताभ** - पु० [सं] कपूर; चंद्रमा।

**शीतालु** - वि० [सं] शीत से पीड़ित; शीत से काँपता हुआ।

**शीतोत्तम** - पु० [सं] जल।

**शीतोष्ण** - वि० [सं] ठंढा और गरम।

**शीधु** - पु० [सं] ईख के रस द्वारा तैयार किया गया मद्य।

**शीन** - 1. वि० [सं] जमा हुआ; घनीभूत; 2. पु० अजगर; मूर्ख; [अ] देवनागरी के तालव्य 'श' के रूप में प्रयुक्त अरबी व फ़ारसी वर्णमाला का एक वर्ण; मु० —क़ाफ़ दुरुस्त न होना - उच्चारण शुद्ध और अस्खलित न होना।

**शीर** - पु० [सं] अजगर; [फ़ा] दूध; यौ० —ख़िश्त - एक रेचक दवा; —ख़ोर, ख़्वार - दूध पीता (बच्चा); —गर्म - थोड़ा गरम; —बिरंज - खीर; —माल - घी देकर पकायी हुई खमीरी रोटी; शीरे-मादर - माँ का दूध; जायज; शीरे-मुर्ग़ - चमगादड़; शीरो-शकर - दूध और शक्कर; परस्पर अतिशय स्नेह रखनेवाले; एक रेशमी कपड़ा।

**शीराँ, शीरा** - पु० [फ़ा] चाशनी; किसी चीज़ को घोट-छानकर प्रस्तुत किया हुआ पेय।

**शीराज़ा** - पु० [फ़ा] पुस्तक और पुट्ठों पर की जानेवाली सिलाई; प्रबंध; शृंखला।

**शीरीं** - 1. वि० [फ़ा] प्यारा; प्रिय; मधुर; 2. स्त्री० फरहाद की प्रेयसी; यौ० —कलाम, ज़बान, बयाँ - मधुर-भाषी, सुंदर भाषा बोलनेवाली; —बयानी - मधुर भाषण।

**शीरीनी** - स्त्री० [फ़ा] मिठाई; मिठास।

**शीर्ण** - वि० [सं] कुम्हलाया हुआ; छितराया हुआ; कृश; टूटा-फूटा; सड़ा-गला; शुष्क; यौ० —काय - कृश शरीरवाला; —पर्ण - कुम्हलाया हुआ पत्ता; नीम का पेड़; —पुष्पिका, पुष्पी - सोफ।

**शीर्णता** - स्त्री० } [सं] शीर्ण होने का भाव
**शीर्णत्व** - पु० } या धर्म।

**शीर्ष** - पु० [सं] मस्तक; सिर; किसी वस्तु का सबसे ऊपरी हिस्सा; काला अगुरु; यौ० —च्छेद - सिर काटने की क्रिया; मस्तकछेदन; — पट, पटक - सिर पर बाँधने का कपड़ा, पगड़ी, साफ़ा आदि; —बिंदु - सिर का सबसे ऊपरी स्थान; मस्तकपीड़ा; — स्थान - माथा; सर्वोच्च स्थान; सिर; —स्थानीय - सर्वोच्च; श्रेष्ठ।

**शीर्षक** - पु० [सं] सिर; सिरा; सिर की रक्षा करनेवाली वस्तु; मस्तक; सिर की हड्डी; फ़ैसले का काग़ज़; किसी ग्रंथ आदि के विषय का परिचायक शब्द।

**शील** - 1. पु० [सं] मन की अच्छी वृत्ति; चरित्र; मन की स्थायी वृत्ति; शुद्ध चरित्र; रागद्वेषविहीनता; अजगर; 2. वि० उन्मुख; मु० —तोड़ना - बेमुरौवत होना; —निभाना - सत्-स्वभाव को न छोड़ना; —मर जाना - संकोच, सद्भाव, सद्वृत्ति आदि का किसी व्यक्ति से निकल जाना; —रखना - सद्व्यवहार रखना।

**शीलवान** - वि० [सं] अच्छे शील या आचरणवाला; सुशील।

**शीश** - पु० [हिं] शीर्ष, माथा; 'शीशा' का समास में व्यवहृत रूप; यौ० —ए-दिल-शीशे-जैसा नाज़ुकदिल; —ए-साइत - रेतघड़ी; — गर - शीशे की चीज़े बनानेवाला; —महल - वह कमरा या भवन जिसमें हर तरफ़ शीशे जड़े हो।

**शीशा** - पु० [फ़ा] आईना; काँच; बोतल; यौ० —आलात - रोशनी का साज-सामान; झाड़-फानूस; — बाज़ - शीशे को विभिन्न अंगों पर रखकर नाचनेवाला, बाज़ीगर; —बाशा - अति सुकुमार।

**शीशी** - स्त्री० [हिं] तेल या दवा आदि रखने का शीशे का छोटा पात्र; मु० — सुँघाना - दवा सुँघाकर बेहोश करना।

**शुंठि, शुंठी** - स्त्री० [सं] सोंठ।

**शुंड** - पु० [सं] हाथी की सूँड; जवान हाथी के गंडस्थल या कनपटी से बहनेवाला मद।

**शुंडक** - पु० [सं] शराब उतारनेवाला; रणभेरी; एक रणगान।

**शुंडा** - स्त्री० [सं] हाथी की सूँड; कुटनी; मदिरा; मद्यपानगृह; वेश्या; कमल-नाल।

**शुंडापान** - पु० [सं] मद्यशाला।

**शुआअ** - स्त्री० [अ] सूर्य की किरण।

**शुऊर** - पु० [अ] ज्ञान; ढंग; बुद्धि; यौ० —दार - तमीज़दार।

**शुक** - पु० [सं] तोता; वस्त्र का छोर; पोशाक, व्यास के पुत्र, शुकदेव; शिरीषवृक्ष; शिरस्त्राण; यौ० —कीट - वर्षा और शरत् ऋतुओं में अधिक दीख पड़नेवाला हरे रंग का एक फतिंगा; —तुंड - सुग्गे की चोंच; —नासिका - सुग्गे की चोंच-जैसी नाक; —प्रिया - जामुन; —वल्लभ - दाड़िम; —वाह, वाहन - कामदेव।

**शुकोह** - पु० [फ़ा] आतंक; प्रताप।

**शुक्का** - पु० [फ़ा] राजाज्ञा; बड़े अधिकारी द्वारा छोटे अधिकारी को दी गयी लिखित आज्ञा।

**शुक्ति** - स्त्री० [सं] सीपी; सीप का खोल; शंख; छोटा शंख; एक नेत्ररोग; बवासीर; चार तोले के बराबर की एक तौल; यौ० —ज - मोती।

**शुक्तिका** - स्त्री० [सं] सीप; एक खट्टा साग।

**शुक्र** - 1. पु० [अ] कृतज्ञताप्रकाश; उपकार मानना; यौ०—गुज़ार - एहसान माननेवाला; —गुज़ारी - कृतज्ञता प्रकट करना; [सं] वीर्य; सार, तत्त्व; शक्ति; सप्ताह का छठा दिन; दैत्यगुरु शुक्राचार्य, ज्येष्ठमास; अग्नि; एक नेत्र-रोग; 2. वि० चमकीला; विशुद्ध; उज्ज्वल; यौ० —कृच्छ्र - सूजाक; —दोष - वीर्य के दोष के कारण हुई नपुंसकता; —प्रमेह - वीर्यक्षीणता; —भू - मज्जा; —वार, वासर - सप्ताह का छठा दिन; —स्तंभ - बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य रखने के कारण उत्पन्न एक रोग।

**शुकाना** - पु० [फ़ा] वकील या पेशकार को मुकद्दमा जीतने के बाद पारिश्रमिक के अतिरिक्त दी जानेवाली रकम।

**शुक्रिया** - पु० [फ़ा] कृतज्ञता-प्रकाशन।

**शुक्ल** - 1. वि० [सं] सफ़ेद; उज्ज्वल; 2. पु० चाँदी; मक्खन; श्वेत वर्ण; शुक्ल-पक्ष; आँख के सफ़ेद अंश में होनेवाला एक रोग; ब्राह्मणों की एक उपाधि; यौ० —कुष्ठ - सफ़ेद कोढ़; —दुग्ध - सिंघाड़ा नामक एक जलफल; —धातु - खड़िया मिट्टी; —पक्ष - कृष्णपक्ष के अतिरिक्त दूसरा पक्ष जिसमें चंद्रमा की कला प्रतिदिन बढ़ती है; —पुष्प - कुंद पुष्प या उसका पौधा; मरुआ; —फेन - समुद्रफेन नामक औषध; —मंडल - काली पुतली के अतिरिक्त आँखों का सफ़ेद अंश; —रोहित - सफ़ेद और लाल रंग; —लेश्या - चित्त की श्रेष्ठतम उज्ज्वल वृत्ति; —वायस - बगला पक्षी; श्वेत काक।

**शुक्लक** - 1. पु० [स] शुक्लपक्ष; श्वेत वर्ण; 2. वि० श्वेत।

**शुक्ला** - स्त्री० [सं] सरस्वती; श्वेत वर्णवाली स्त्री; काकोली; शर्करा।

**शुक्लाम्ल** - पु० [सं] अम्ल।

**शुक्लिमा** - स्त्री० [सं] श्वेतता।

**शुक्लोपला** - स्त्री० [सं] रवादार चीनी।

**शुगुन, शुगून** - पु० [फ़ा] शकुन।

**शुचा** - स्त्री० [सं] शोक; दुख।

**शुचि** - 1. वि० [सं] निरपराधी; निर्मल; निष्कपट; पवित्र; चमकदार; उजला; 2. पु० अग्नि; चंद्र; सूर्य; ग्रीष्म; सूर्य की अग्नि; ज्येष्ठ; आषाढ़; शिव; सिंगार; सदाचार; सच्चा मंत्री; अन्न-प्राशन के समय का होम; 3. स्त्री० पवित्रता; यौ० —कर्मा - पवित्र कर्म करनेवाला; —द्रुम - पीपल का पेड़; —प्रणी - आचमन; —व्रत - पवित्र संकल्प करनेवाला; —स्मित - निश्छल हँसी हँसनेवाला।

**शुचिता** - स्त्री० } [सं] पवित्रता का भाव ।
**शुचित्व** - पु० }

**शुजा** - वि० [अ] वीर ; बहादुर ।

**शुजाअत** - स्त्री० [अ] वीरत्व , बहादुरी ।

**शुतुर** - पु० [फ़ा] ऊँट ; यौ० —कीना - ऊँट की तरह वैर रखने और बदला लेनेवाला ; —ग़मज़ा - कपट ; बेजा नाज़-नखरा ; —गाव - जिराफ़ा ; —नाल - ऊँट की पीठ पर लादी और उसीपर से चलायी जानेवाली छोटी तोप ; —मुर्ग़ - ऊँट की तरह लंबी गर्दनवाला एक विशालकाय पक्षी ।

**शुदनी** - 1. स्त्री० [फ़ा] आकस्मिक दुर्घटना ; होनहार ; 2. वि० होनेवाला ।

**शुदा** - वि [फ़ा] जो हो गया हो ; जो बीत चुका हो ।

**शुद्ध** - वि० [सं] निर्दोष ; निर्मल ; सही ; निश्छल ; केवल ; निष्कलंक ; निष्पाप ; सच्चा ; सफ़ेद ; यौ० —कर्मा - शुद्ध कार्य करनेवाला ; पवित्र ; —धी, मति - ईमानदार ; शुद्ध विचारोंवाला ; —पक्ष - शुक्लपक्ष ।

**शुद्धता** - स्त्री० } [सं] शुद्ध होने का भाव ।
**शुद्धत्व** - पु० }

**शुद्धांत** - पु० [सं] अंतःपुर ।

**शुद्धात्मा** - वि० [सं] पवित्र हृदयवाला ।

**शुद्धि** - वि० [सं] पवित्रता ; शुद्ध करने की क्रिया ; सफ़ाई ।

**शुन** - पु० [सं] कुत्ता ।

**शुनक** - पु० [सं] कुत्ता ; कुत्ते का पिल्ला ; भृगुवंश के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।

**शुनि** - पु० [सं] कुत्ता ।

**शुनी** - स्त्री० [सं] कुतिया ; कुष्मांडी ।

**शुनीर** - पु० [सं] कुतियों का झुंड ।

**शुबहा** - पु० [अ] धोखा ; भ्रम ।

**शुभंकर** - वि० [सं] कल्याणकर, मंगलकारी ।

**शुभंकरी** - 1. वि० [सं] मंगलकारिणी ; 2. स्त्री० पार्वती ; दुर्गा ।

**शुभ** - 1. वि० [स] अनुकूल ; अच्छा ; कल्याणकर ; सुखद ; 2. पु० कल्याण ; पद्मकाष्ठ ; एक सुगंधित लकड़ी ; सत्ताईस योगो में से तेईसवाँ योग ; सुख ; यौ० —कर - मंगलकारक ; —करी - मंगलकारिणी ; —ग - भाग्यवान ; सुंदर ; —ग्रह - सौम्य ग्रह, अनुकूल ग्रह ; —चिन्तक - हितैषी ; —द - मगलप्रद ; अश्वत्थ ; —दर्शन - जिसका मुँह देखने से शुभ सकुन हो ; —दा - मंगल करनेवाली , —दायी - मंगलप्रद ; —प्रद - मंगलकारी ; —लग्न - शुभ मुहूर्त ; —सूचक - मंगल की सूचना देनेवाला ; —स्थली - मंगलभूमि ; यज्ञ-स्थल ।

**शुभांग** - वि० [सं] सुंदर ।

**शुभा** - स्त्री० [सं] सौन्दर्य ; कांति ; इच्छा ; गोरोचन ; वंशलोचन ; देवसभा ; शमी ।

**शुभाकांक्षी** - वि० [सं] हितैषी ।

**शुभागमन** - पु० [सं] मंगलप्रद आगमन, सुखद आगमन ।

**शुभानुष्ठान** - पु० [सं] मागलिक कर्म ।

**शुभाशीर्वाद** - पु० [सं] मंगलसूचक आशीर्वचन ।

**शुभाशीष** - पु० [हिं] शुभाशीर्वाद ।

**शुभ्र** - 1. वि० [सं] उज्ज्वल ; चमकीला ; सफेद ; 2. पु० अभ्रक ; कसीस ; चंदन ; चाँदी ; सफ़ेद रंग ; सेंधा नमक ।

**शुभ्रता** - स्त्री० [सं] उज्ज्वलता ; दीप्ति ।

**शुभ्रांशु** - पु० [सं] चद्रमा ।

**शुमार** - 1. पु० [फ़ा] गिनती ; तख़मीना ; भय ; 2. वि० गिननेवाला ; यौ० —कुनिन्दा - गणना करनेवाला ; भिन्न में ऊपर की संख्या ; —दाना - तसवीह में

हर सौ दानों के बाद रहनेवाला बड़ा दाना ; —नवीस - गिनती लिखने या हिसाब करनेवाला ।

**शुमारी** - स्त्री० [फ़ा] गिनने की क्रिया ।

**शुमाल** - पु० [अ] उत्तर दिशा ; बायाँ हाथ ।

**शुमाली** - वि० [अ] उत्तर का ; उत्तरी ।

**शुल्क** - पु० [सं] कर ; आवेदन-पत्र देने या पढ़ने की फ़ीस ; दहेज ; कन्या के माता-पिता द्वारा वर के माता-पिता से अथवा स्वयं वर से कन्या के बदले लिया हुआ द्रव्य ; ग्राह्य धन ; **यौ०** — ग्राहक, ग्राही - शुल्क एकत्रित करनेवाला ; —शाला - शुल्क जमा करने की जगह ।

**शुल्काध्यक्ष** - पु० [सं] चुंगी का मुखिया ।

**शुश्रू** - स्त्री० [सं] बच्चों की सेवा करनेवाली माता ।

**शुश्रूषक** - 1. वि० [सं] आज्ञाकारी ; खिदमतगार ; 2. पु० नौकर ।

**शुश्रूषा** - स्त्री० [सं] खिदमतगारी , परिचर्या ; कथन ; पालन-पोषण ; सुनने की इच्छा ; सेवा-टहल ; **यौ०** —प्रणाली - रोगी की यथोचित सेवा करने का ढंग ।

**शुष्क** - वि० [सं] सूखा ; नीरस ; शीर्ण ; हृदय-हीन ; निष्प्रयोजन ; **यौ०** —वृक्ष - धववृक्ष ; —व्रण - सूखा हुआ घाव ।

**शुष्कता** - स्त्री० [सं] कठिनता ; नीरसता ; व्यर्थता ; हृदयहीनता ।

**शुष्कांग** - वि० [सं] दुबला-पतला ।

**शुहदा** - पु० [अ] गुंडा ; बदचलन ; **यौ०** —पन, पना - गुंडई ; बदमाशी ।

**शुहरत** - स्त्री० [अ] ख्याति ; नेकनामी ; बदनामी ।

**शूक** - पु० [सं] किसी वस्तु का चिकना व नुकीला अग्रभाग ; जौ आदि का नुकीला अग्रभाग ; दाढ़ी ; शिखा ; दया ।

**शूकर** - पु० [सं] वराह, सूअर ।

**शूकरी** - स्त्री० [सं] सूअरी, वाराही ।

**शूकल** - पु० [सं] अड़ियल घोड़ा ।

**शूची** - स्त्री० [हिं] सूई ।

**शूद्र** - पु० [सं] आर्यों द्वारा निर्धारित वर्णव्यवस्था में से चतुर्थ वर्ण ; अछूत ; निम्न कोटि का व्यक्ति ; **यौ०** —कृत्य - शूद्र का कर्तव्य —प्रिया - प्याज ।

**शूद्रा** - स्त्री० [सं] शूद्र वर्ण की स्त्री ; **यौ०** —वेदन - शूद्रा से विवाह करना ; —वेदी - शूद्रा से विवाह करनेवाला उच्च वर्ण का व्यक्ति ; —सुत - किसी भी वर्ण के व्यक्ति द्वारा शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र ।

**शून** - वि० [सं] शून्य ; रोग के कारण सूजा हुआ ; बढ़ा हुआ ।

**शून्य** - 1. वि० [स] खाली ; उदास ; निराकार ; तुच्छ ; रहित ; 2. पु० अभाव ; अभावसूचक चिन्ह ; आकाश ; खाली जगह, निर्जन स्थान ; बिंदु ; ब्रह्म ; रिक्तता ; **यौ०** —दृष्टि - उदास दृष्टि ; —पथ - आकाश ; निर्जन मार्ग ; —पदवी - ब्रह्मरंध्र ; —मना, मनस्क - अन्यमनस्क ; —वाद - बौद्ध दर्शन का एक भेद ; वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव, ईश्वर आदि की सत्ता स्वीकार नहीं करता ; —हृदय - खुले दिलवाला, शून्यमनस्क ।

**शून्यता** - स्त्री० } [सं] शून्य का भाव ।
**शून्यत्व** - पु० }

**शूम** - वि० [अ] कंजूस ; मनहूस ; **यौ०** —क़दम - चौपटचरण, मनहूस ।

**शूमी** - स्त्री० [हिं] अभागापन ; मनहूसी ।

**शूरंमन्य** - वि० [सं] शूर न होते हुए भी अपने-आपको शूर माननेवाला, शूरमानी ।

**शूर** - 1. वि० [सं] वीर; शक्तिसंपन्न; 2. पु० वीर व्यक्ति; मदार का पेड़; मसूर; सालवृक्ष; शूकर; सिंह; सूर्य; **यौ०** —मानी - अपनी वीरता के संबंध में लंबी-चौड़ी हाँकनेवाला व्यक्ति; —विद्या - युद्धविद्या; —वीर - योद्धा; —श्लोक - वीरो के शौर्यपूर्ण कामो की स्तुति।

**शूरण** - पु० [सं] एक ज़मीकंद, सूरन।

**शूरता** - स्त्री०, **शूरत्व** - पु० } [सं] शूर होने का भाव।

**शूर्प** - पु० [स] अनाज साफ़ करने का बाँस के छिलके आदि का बना पात्र, सूप; **यौ०** —कर्ण - सूप सदृश कानोवाला, हाथी; गणेश; —णखा, णखी - रावण की बहिन।

**शूल** - पु० [सं] शरीर में वात के कुपित होने से उत्पन्न होनेवाला रोग; लोहे का नुकीला काँटा; त्रिशूल; सूली; भाला; झंडा; वेदना, पीड़ा; मृत्यु; **यौ०** —पाणि - शिव; **मु०** —उठना - शूल चुभने की-सी पीड़ा होना; —देना - तीव्र व्यथा उत्पन्न करना।

**शूलक** - पु० [सं] अड़ियल घोड़ा।

**शूलना** - अ० [हिं] पीड़ा देना; शूल की भाँति गड़ना।

**शूला** - स्त्री० [सं] सूली; वेश्या।

**शूलिक** - 1. पु० [सं] कवाब; खरहा; 2. वि० सीखचे पर भुना हुआ; शूल धारण करनेवाला।

**शूली** - 1. स्त्री० [सं] सूली; एक प्रकार की घास; तीव्र वेदना; 2. वि० शूल धारण करनेवाला; शूल रोग से पीड़ित; 3. पु० खरहा; शिव।

**शूल्य** - 1. वि० [सं] शूल में खोंसकर पकाया हुआ; 2. पु० कवाब; सूली देने योग्य व्यक्ति।

**शृंखल** - पु० [सं] बेड़ी; बंधन; कमर में पहनने का एक गहना, करधनी; परंपरा; नापने की ज़ंजीर; शृंखला; हाथी का पैर बाँधने के लिए लोहे की ज़ंजीर।

**शृंखला** - स्त्री० [स] परंपरा; क्रम; कमरबंद; श्रेणी; शृखला; **यौ०** —बद्ध - क्रमयुक्त।

**शृंखलित** - वि० [सं] सिकड़ी से जकड़ा हुआ; बँधा हुआ; क्रमयुक्त।

**शृंग** - 1. पु० [सं] मकान या मंदिर आदि का ऊपरी हिस्सा, कंगूरा; पहाड़ की चोटी; ऊपरी भाग; बाण की नोक; सिरा; अधिकार; अभ्युदय, चिन्ह; कमल; पिचकारी; सिंगा; सींग, विषाण; स्तन; 2. वि० नुकीला; तीक्ष्ण; **यौ०** —कूट - पर्वत; —कंद - सिंघाड़ा; —धर - पर्वत; —प्रहारी - सींग से मारनेवाला।

**शृंगार** - पु० [सं] साहित्यशास्त्र के नव रसो में से प्रधान रस; सूरत; सौंदर्य के प्रसाधनो द्वारा स्त्री या पुरुष के शरीर का बनाव-सजाव; किसी वस्तु का सजाव; शोभा की वस्तु; लौंग; अदरक; चूर्ण; सिंदूर; **यौ०** —चेष्टा - कामचेष्टा; —जन्मा - कामदेव; —भाषित - प्रेमालाप; —भूषण - सिंदूर; —सहाय - प्रेमक्रीड़ा; —हाट - वेश्याओं के बैठने का बाज़ार।

**शृंगारक** - पु० [सं] प्रेम; सिंदूर।

**शृंगारी** - 1. वि० [सं] शृंगार की वृत्ति से युक्त; 2. पु० कामुक; माणिक्य; सुन्दर वेषवाला या बना-ठना व्यक्ति; सुपारी का पेड़; हाथी।

**शृगाल** - पु० [सं] सियार; कृष्ण; भीरु व्यक्ति; दुष्ट; चरवाहा; धूर्त आदमी; निर्दय व्यक्ति।

**शृगालिका** - स्त्री० [सं] सियारी; लोमड़ी, छोटा सियार, डर के कारण भागना।

**शेख** - पु० [हिं] मुसलमानो की चार जातियो में से एक; यौ० —चिल्ली - एक कल्पित मूर्ख जिसकी मूर्खता की अनेक कहानियाँ जनसाधारण में प्रसिद्ध हैं; बड़ी-बड़ी हवाई योजनाएँ बनानेवाला व्यक्ति; —सद्दो - अपढ़ स्त्रियो में पूजित एक पीर।

**शेखर** - पु० [स] पर्वतशिखर, चोटी; अपने वर्ग या समूह का श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु; शिरोभूषण, मुकुट; सिर पर लपेटी हुई माला; लौंग।

**शेखरी** - स्त्री० [सं] एक लता; लौंग।

**शेखावत** - पु० [हिं] राजपूतो का एक उपभेद।

**शेख़ी** - स्त्री० [फ़ा] घमंड; डींग; यौ० —खोर, बाज़ - डींग मारनेवाला; —शान - शेख़ी और शान, घमंड; मु०—किरकिरी होना, झड़ना - घमड चूर-चूर होना; —बघारना - अपने मुँह अपनी बड़ाई करना।

**शेप, शेफ** - पु० [सं] पूँछ; फोता; लिंग।

**शेफालि, शेफालिका, शेफाली** - स्त्री० [सं] नील सिंधुवार का पौधा; नीलिका।

**शेमुषी** - स्त्री० [सं] बुद्धि।

**शेर** - पु० [फ़ा] बाघ; सिंह; निडर व्यक्ति; वीर पुरुष; यौ० —अफ़गन - शेर को गिराने या पछाड़नेवाला; वीर; —दरवाज़ा - सिंहद्वार; —दिल - वीर; निडर; —नुमा - शेर की शकल-वाला; —पंजा - बघनखा; —बकरी - लड़को का एक खेल; —बच्चा - शेर का बच्चा; वीर; एक तरह की छोटी बदूक; —बबर - सिंह; —मर्द - निडर; वीर; पुरुषसिंह; —मादा - शेरनी; —का कान - भंग छानने की साफी; —की ख़ाला - बिल्ली; मु० —के मुँह में जाना - जान-जोखिमवाले स्थान में जाना, —के मुँह से शिकार लेना - ज़बर्दस्ती से कोई चीज़ छीन लेना; —बकरी का एक घाट पानी पीना - शुद्ध न्याय का राज्य होना; —होना - हौसला बढ़ना।

**शेरवानी** - स्त्री० [हिं] एक तरह का आधुनिक ढंग का अंगरखा।

**शेवाल** - पु० [स] सेवार।

**शेष** - 1. वि० [स] अवशिष्ट; उच्छिष्ट; छोड़ा हुआ; समाप्त; 2. पु० काम की चीज़ के अलावा बची चीज़; अंत; प्रसाद; नाश; वध; भाग की बाक़ी (गणित); स्वीकृत वस्तु से अतिरिक्त वस्तु; किसी बड़ी संख्या में से किसी छोटी संख्या को घटाने के पश्चात् बची संख्या का नाम; यौ० —काल - मृत्यु-काल; —जाति - शेष को मिलाने, तुलना करने का कार्य (गणित); —भोजन - उच्छिष्ट-भक्षण; —रात्रि - पिछली रात; —शयन, शायी - विष्णु।

**शेषांश** - पु० [सं] अंतिम भाग; बचा भाग।

**शेषोक्त** - वि० [सं] सब कुछ कह लेने के बाद अंत में कहा हुआ; सबके अंत में लिखा हुआ।

**शै** - स्त्री० [अ] वस्तु; बरकत; बढ़ती।

**शैक्ष** - पु० [स] शिक्षाशास्त्र पढ़नेवाला विद्यार्थी; नौसिखिया आदमी।

**शैक्षिक** - पु० [सं] शिक्षाशास्त्र का जान-कार।

**शैख** - पु० [सं] नीच ब्राह्मण की संतान।

**शैख़** - पु० [अ] गुरुजन; धर्मशास्त्र का पंडित; दरगाह का खलीफ़ा; महंत;

अरब क़बीलो का सरदार ; मुसलमानो की चार जातियो में से एक ; वृद्ध ।

**शैतान** - 1. पु० [अ] ईश्वर के सामने विप्लव करनेवाला एक क्षुद्र देवता ; पिशाच ; 2. वि० उपद्रव खड़ा करनेवाला ; दुष्ट ; नटखट ; बहकानेवाला ; **यौ०** —सूरत - शैतान की शकल का ; —का बच्चा - खुराफ़ाती आदमी ; —की खाला - कलह करानेवाली दुष्ट स्त्री ; **मु०** —उतरना - क्रोध शात होना ; —के कान काटना - शैतानी में शैतान से भी बढ़ जाना ; —सिर पर चढ़ना, —सवार होना - गुस्सा चढ़ना ; बुराई पर आमादा होना ।

**शैतानी** - 1. वि० [अ] शैतान का ; 2. स्त्री० दुष्टता ; शैतान का काम ; **यौ०**—हरकत - दुष्टता ।

**शैत्य** - पु० [स] शीतलता ; सर्दी ।

**शैथिल्य** - पु० [सं] ढीलापन ; शिथिलता ; सुस्ती ।

**शैदा** - वि० [फ़ा] प्रेम में पागल हो जाने या सुधबुध खो देनेवाला ।

**शैल** - 1. पु० [सं] पहाड़ ; बड़ा पत्थर या शिला ; बाँध ; शिलाजतु ; 2. वि० पत्थर-जैसा कठोर ; पथरीला ; शिला-संबंधी ; **यौ०** —कटक - पहाड़ का ढाल ; —कन्या, कुमारी, जा - पार्वती ; —तटी - पहाड़ की घाटी ; —भित्ति - छेनी ; —रंध्र - गुफा ; —राज - हिमालय ; —बीज - भिलावाँ ; —सार - शैल के समान दृढ ।

**शैलाधिप, शैलाधिराज** - पु० [सं] हिमालय ।

**शैली** - स्त्री० [सं] किसी काम के करने का ढंग ; साहित्य, कला आदि की रचना या अभिव्यक्ति का कौशल ; पत्थर की मूर्ति ; सदाचार ; **यौ०** —कार - साहित्य, कला आदि की विशिष्ट आकर्षक शैली का निर्माण करनेवाला व्यक्ति ।

**शैलूष** - पु० [सं] धूर्त ; नट ; नर्तक ; बेल का पेड़ ; संगीत-मंडली का प्रधान।

**शैलेन्द्र** - पु० [सं] हिमालय ।

**शैल्य** - वि० [सं] पत्थर-सा कड़ा ; पथरीला ; शिला-संबंधी ।

**शैव** - 1. वि० [सं] शिव का या शिव से संबंध रखनेवाला ; 2. पु० शिवोपासक।

**शैवलिनी** - स्त्री० [सं] नदी ।

**शैवाल** - पु० [सं] सेवार ।

**शैशव** - 1. पु० [सं] शिशु की अवस्था ; शिशुवृत्ति ; 2. वि० शिशु-संबंधी ।

**शैशिर** - 1. वि० [सं] शिशिर ऋतु-संबंधी ; शिशिर ऋतु में उत्पन्न ; 2. पु० काली गौरैया नामक चिड़िया ।

**शोक** - पु० [सं] मनःपीड़ा, इष्ट वस्तु अथवा प्रिय व्यक्ति के वियोग या नाश से मन में बार-बार उठनेवाली चिन्ता ; **यौ०** —कारक - पीड़ा देनेवाला ; —नाश, नाशक - अशोक का पेड़ ; —परायण - शोक से ग्रस्त ; —विकल, विह्वल - शोकाकुल ; —सूचक - शोक की सूचना देनेवाला ; —स्थान - शोक का कारण ।

**शोकाकुल** - वि० [सं] व्याकुल ।

**शोकातुर** - वि० [सं] शोक से छटपटानेवाला ; शोक से विह्वल ।

**शोकाभिभूत** - वि० [सं] शोक से पीड़ित ।

**शोकार्त** - वि० [सं] शोक के कारण दीन-हीन बना हुआ ।

**शोकाविष्ट** - वि० [सं] शोक से ग्रस्त ।

**शोकावेग** - पु० [सं] बार-बार शोक की तीव्र अनुभूति का होना ।

**शोकी** - वि० [सं] अत्यंत उदास ; शोक-पूर्ण ।

**शोख़** - वि० [फ़ा] चंचल ; ढीठ ; नटखट; गहरा (रंग)।

**शोख़ी** - स्त्री० [फ़ा] चंचलता ; ढिठाई ; नटखटपन ; गहरापन (रंग का)।

**शोच** - पु० [सं] चिन्ता, पीड़ा ; शोक।

**शोचनीय** - वि० [सं] रंज करने लायक़ ; चिन्तनीय।

**शोच्य** - वि० [सं] दयनीय ; शोचनीय।

**शोण** - 1. वि० [सं] लाल ; पीला-सा ; 2. पु० अग्नि ; चित्रक ; लाल रंग ; लाली ; मंगल ग्रह ; लाल ईख ; रक्त ; सिंदूर ; सोन नद ; यौ० —पद्म, पद्मक - लाल कमल ; —पुष्पक - लाल फूल से युक्त ; —रत्न - पद्मराग मणि।

**शोणांबु** - पु० [सं] प्रलय के समय दिखायी देनेवाला एक तरह का बादल।

**शोणित** - 1. पु० [सं] कुंकुम ; ख़ून ; 2. वि० रक्त वर्णवाला ; यौ० —चंदन - लाल चंदन।

**शोणी** - स्त्री० [सं] लाल कमल के रंग के समान रंगवाली स्त्री।

**शोथ** - पु० [सं] वातादि तीन दोषों में से किसी एक के कुपित होने पर शरीर के किसी अवयव के सूजने का रोग, सूजन ; यौ० —रोग - हाथ-पाँव आदि में सूजन होने का रोग।

**शोध** - पु० [सं] संस्कार ; सफ़ाई ; अनुसंधान ; प्रतिकार ; चुकाना या अदा करना।

**शोधक** - पु० [सं] अन्वेषक ; त्रुटि शुद्ध करनेवाला व्यक्ति ; सफ़ाई करनेवाला व्यक्ति।

**शोधन** - 1. वि० [सं] साफ़ करनेवाला ; 2. पु० संशोधन ; ऋण चुकाने की क्रिया ; अन्वेषण ; प्रतिशोध ; औषधरूप में प्रयोग करने के लिए धातु को शुद्ध करने की क्रिया ; प्रायश्चित्त ; शरीरशुद्धि के लिए विरेचन ; चरित्रशुद्धि के लिए दंड देने का कार्य ; शुद्धीकरण ; भाज्य में से भाजक को घटाना।

**शोधना** - स्त्री० [सं] परिष्कार करना ; खोज करना ; शुद्ध करना ; ग़लत को सही करना ; औषधरूप में प्रयोग करने के लिए धातु को शुद्ध करना।

**शोधनी** - स्त्री० [सं] झाड़ू ; यौ० —बीज - जमालगोटा।

**शोधनीय** - वि० [सं] शोधन के योग्य।

**शोधवाना** - स० [हिं] खोज कराना ; ठीक कराना ; शोध का कार्य कराना ; साफ़ कराना।

**शोधा** - पु० [हिं] सोना-चाँदी शुद्ध करनेवाला व्यक्ति।

**शोधित** - वि० [सं] चुकाया हुआ ; अन्वेषित ; शुद्ध किया हुआ ; संस्कृत ; साफ़ किया हुआ।

**शोधैया** - पु० [हिं] शुद्ध करनेवाला।

**शोबदा** - पु० [अ] छल ; जादू या इंद्रजाल का काम ; हाथ की सफ़ाई का काम ; यौ० —गर, बाज़ - छलिया ; बाज़ीगर।

**शोबा** - पु० [अ] टुकड़ा ; विभाग की शाखा ; शाखा।

**शोभन** - 1. वि० [सं] मंगल ; दीप्तिमान ; सज्जित ; सुंदर ; 2. पु० कमल ; ग्रह ; दीप्ति ; शुभ ; सौंदर्य, विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से पाँचवाँ योग।

**शोभना** - 1. स्त्री० [सं] हल्दी ; सुंदर स्त्री ; 2. अ० [हिं] शोभा देना ; शोभित होना।

**शोभा** - स्त्री० [सं] कांति ; सौंदर्य ; छवि ; हल्दी ; गोरोचना ; यौ० —कर - सौंदर्य उत्पन्न करनेवाला ; अत्यंत सुंदर व्यक्ति ; सौंदर्य-समूह ; —शून्य, हीन - असुंदर।

**शोभान्वित** - वि० [स] सौंदर्यपूर्ण ।
**शोभामय** - वि० [स] सौंदर्ययुक्त ।
**शोभायमान** - वि० [सं] देखने में सुंदर लगनेवाला ।
**शोभित** - वि० [सं] विराजमान ; शोभायुक्त ; सज्जित ।
**शोर** - 1. पु० [फ़ा] उन्माद ; ऊसर ज़मीन ; खारी नमक ; प्रसिद्धि ; हल्ला ; 2. वि० अशुभ ; खारी ; **यौ०** —गुल - हल्ला ; —बख़्त - अभागा ।
**शोरबा, शोरवा** - पु० [फ़ा] तरकारी या मांस आदि का रसा ; **यौ०** शोरबेदार - रसेदार ।
**शोरा** - पु० [फ़ा] बारूद बनाने या पानी ठंडा करने आदि के काम आनेवाला एक क्षार , **यौ०** —पुश्त - उद्दंड ; लड़ाका ; —पुश्ती - उद्दंडता ; झगड़ालूपन ; **मु०** शोरे की पुतली - अति गौरवर्ण युवती ।
**शोरिश** - स्त्री० [फ़ा] उपद्रव ; कोलाहल ; नमकीनपन ।
**शोरोशर** - पु० [हिं] कोलाहल ।
**शोला** - पु० [अ] आँच ; आग की लपट।
**शोशा** - पु० [फ़ा] सोने का डला; छोटा टुकड़ा ; अनोखी बात ; फ़ारसी व अरबी अक्षरों के नीचे लगाया जानेवाला चिन्ह ; **मु०** —छोड़ना - अनोखी या झगड़ा खड़ा करनेवाली बात कहना ।
**शोष** - पु० [सं] सूखापन ; सूखने का भाव या क्रिया ; यक्ष्मा रोग का एक प्रकार ; दुबले-पतले होने या मुरझाने का भाव ।
**शोषक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] चूसनेवाला ; क्षीण करनेवाला ; सुखानेवाला ।
**शोषण** - पु० [सं] क्षीण करने की क्रिया ; चूसने की क्रिया ; व्यापार, या किसीके श्रम आदि से अनुचित लाभ उठाना ; सोंठ ; रस या स्नेह से रहित करना ।
**शोषणीय** - वि० [सं] शोषण के योग्य ।
**शोषित** - वि० [सं] क्षीण किया हुआ ; खत्म किया हुआ ; सुखाया हुआ ; सोखा हुआ ।
**शोहदा** - पु० [अ] गुंडा, बदमाश ; **यौ०** —पन - बदमाशी ।
**शोहरत** - स्त्री० [अ] प्रसिद्धि ; धूम ; ज़ोरदार ख़बर ।
**शौंड** - वि० [सं] चतुर ; मत्त ; मतवाला, शराबी ।
**शौंडता** - स्त्री० [सं] कुशलता ; मत्तता ।
**शौंडिर** - वि० [स] अहंकारी ; उद्दंड ।
**शौआल, शौवाल** - पु० [अ] मुसलमानो का दसवाँ चांद्रमास जिसकी पहली तारीख़ को ईद मनायी जाती है ।
**शौक़** - पु० [अ] उत्साह ; प्रबल इच्छा ; रुचि ; व्यसन ; **मु०** — चर्राना - इच्छा का तीव्र होना ; —से - ख़ुशी से ; निस्संकोच ; रुचिपूर्वक ।
**शौकत** - स्त्री० [फ़ा] गौरव ; दबदबा ; डंक ; शक्ति ।
**शौक़ीन** - वि० [अ] रुचि रखनेवाला ; तमाशबीन ; बनाव-सिंगार का शौक़ रखनेवाला, छैला ।
**शौक़ीनी** - स्त्री० [अ] शौक़ीन होना ।
**शौक़ीया** - अव्य० [अ] शौक़ से ; दिल-बहलाव के लिए ।
**शौक्तिक** - वि० [सं] मोती-संबंधी ; सीपी से उत्पन्न ।
**शौच** - पु० [सं] पवित्रता ; प्रातःकालीन नैमित्तिक कर्मद्वारा शुद्धि ; मलत्याग द्वारा शरीरशुद्धि ; किसी निकटसंबंधी की मृत्यु होने पर लोकव्यवहार के अनुसार निश्चित दिन क्षौर-कर्म आदि कराकर शुद्ध होना ; योगशास्त्रोक्त पंच नियमों में से प्रथम ; धर्म के दस लक्षणो

में से पाँचवाँ ; यौ० —कर्म - लोक-व्यवहार और शास्त्रानुसार शुद्धि की क्रिया ; —गृह - पाखाना ।

**शौचागार** - पु० [सं] शौचगृह ।

**शौन** - पु० [सं] वधस्थल ; क़साईखाने में रखा मास ।

**शौनिक** - पु० [स] क़साई ; शिकार ; शिकारी ।

**शौभ** - पु० [सं] देवता ; सुपारी ।

**शौरसेनी** - 1. वि० [सं] शौरसेन प्रदेश-संबंधी; 2. स्त्री० प्राचीन काल में शौरसेन प्रदेश में बोली जानेवाली प्राकृत भाषा।

**शौरि** - पु० [सं] कृष्ण ; विष्णु ; बलदेव ; वसुदेव ; शनि ग्रह ।

**शौर्य** - पु० [सं] पराक्रम ; शूरता ; आरभटी नामक नाट्यवृत्ति ।

**शौहर** - पु० [फ़ा] पति, स्वामी ।

**श्म** - पु० [सं] मुख ; शरीर ; शव, मृत देह।

**श्मशान** - पु० [सं] मरघट, शवदाहस्थान ; यौ० —कालिका, काली - श्मशान निवासिनी काली जिसकी अर्चना मद्य व मांस आदि से की जाती है ; —निवासी - प्रेत ; भूत ; शिव ; —पति - शिव ; —पाल - चांडाल ; —वाट - श्मशान का घेरा ; —वासिनी - काली ; —वासी - डोमचौधरी ; भूत ; शिव ; —वैराग्य - क्षणिक या अस्थायी वैराग्य ।

**श्मश्रु** - पु० [सं] डाढ़ी-मूँछ ; यौ० —कर - नाई ; —मुखी - डाढी-मूँछवाली औरत ।

**श्याम** - 1. पु० [सं] कृष्ण ; काला रंग ; काला और नीला मिश्रित रंग ; काली मिर्च ; कोयल ; धतूरा ; बादल ; दौने का पौधा ; समुद्री नमक ; साँवाँ चावल ; 2. वि० काला और नीला मिश्रित ; गाढ़ा हरा ; यौ० —कंठ - नीलकंठ पक्षी ; मोर ; शिव ; —कर्ण - काले कानवाला सफ़ेद घोड़ा ; —जीरा - काला जीरा ; —तीतर - पहाड़ी प्रदेशों में रहनेवाला एक पक्षी ; —पत्र - तमालवृक्ष ; —पत्रा - जामुन का पेड़ ; —वर्त्म - एक प्रकार का नेत्ररोग ; —सुंदर - कृष्ण ।

**श्यामता** - स्त्री० [सं] कालापन ; काला होने का भाव ।

**श्यामल** - 1. वि० [सं] श्याम वर्णवाला ; 2. पु० काला रंग ; काली मिर्च ; पीपल का पेड़ ; भ्रमर ; यौ० —चूड़ा - गुंजा ।

**श्यामला** - स्त्री० [सं] अश्वगंधा ; जामुन ; कस्तूरी ; पार्वती ।

**श्यामांग** - पु० [सं] बुध ग्रह ; काले शरीर-वाला ।

**श्यामा** - स्त्री० [सं] कालिका देवी ; कृष्ण की प्रेयसी राधा ; षोडशवर्षीया युवती ; श्याम वर्ण की स्त्री ; सुंदरी नारी ; श्यामा नाम की चिड़िया ; गाय , छाया ; रात्रि ; गुडूची ; कस्तूरी ; गुग्गुल ; सोमलता ; पिप्पली ; हल्दी ; तुलसी ; पार्वती ।

**श्यामिका** - स्त्री० [सं] अपवित्रता ; मलिनता; कालापन ; मैल (बर्तन आदि का) ।

**श्याल** - पु० [सं] साला ; सियार ।

**श्यालक** - पु० [सं] साला, पत्नी का भाई ।

**श्यालकी, श्यालिका, श्याली** - स्त्री० [सं] साली, पत्नी की बहिन ।

**श्येत** - 1. वि० [सं] सफ़ेद ; 2. पु० शुक्ल वर्ण ।

**श्येन** - 1. पु० [सं] बाज़ पक्षी ; पीला रंग ; हिंसा ; 2. वि० पीले रंग का ; यौ० —करण - बाज़ की भाँति झपटकर किसी काम में लगना ; उतावलापन ।

**श्योरा** - पु० [हिं] लोहे का छल्ला और नुकीला लोहा लगा तंबू तानने या उठाने का बाँस ।

**श्रथन** - पु० [सं] खोलना ; बार-बार खुश करना ; प्रयास ; बाँधना ; वध ; ढीला या शिथिल करने की क्रिया ।

**श्रद्धान** - वि० [सं] श्रद्धायुक्त ।

**श्रद्ध** - वि० [सं] विश्वास करनेवाला ; श्रद्धावान ।

**श्रद्धा** - स्त्री० [सं] प्रेम और भक्तियुक्त पूज्यभाव ; आदर ; पवित्रता ; विश्वास ; कामना ; गर्भवती स्त्री की इच्छा ; मन की प्रसन्नता ; किसी धर्म, संप्रदाय या शास्त्र आदि में पूर्ण विश्वास ; दक्ष की पुत्री और धर्म की पत्नी ; कर्दम की कन्या और वैवस्वत मनु की पत्नी ; काम की माता ; प्रजापति की पुत्री ; सूर्य की कन्या ।

**श्रद्धालु** - 1. वि० [सं] कामनायुक्त ; श्रद्धायुक्त ; 2. स्त्री० दोहदवती ।

**श्रद्धावान** - वि० [सं] श्रद्धायुक्त ।

**श्रद्धास्पद** - वि० [सं] श्रद्धा करने योग्य ।

**श्रद्धेय** - वि० [सं] प्रेम और भक्ति के योग्य ।

**श्रम** - पु० [सं] मेहनत ; दौड़-धूप ; तप ; खेद ; थकान ; व्यायाम ; शास्त्राभ्यास ; **यौ०** —कण - मेहनत करने से निकली पसीने की बूँदें ; —जल - पसीना ; —जीवी - परिश्रम करके जीविका चलानेवाला ; मज़दूर ; —वारि, बिन्दु - पसीना ; —शील - परिश्रमी ; —साध्य - परिश्रम से पूर्ण होने योग्य ।

**श्रमण** - 1. पु० [सं] जैन या बौद्ध संन्यासी ; 2. वि० भिक्षुक ।

**श्रमित** - वि० [सं] थका हुआ ; परिश्रम करके थका हुआ ।

**श्रमी** - पु० [सं] परिश्रमी व्यक्ति ।

**श्रय, श्रयण** - पु० [सं] कान , यश ; शब्द ; स्राव ।

**श्रवण** - पु० [सं] कान ; सुनने की क्रिया , नौ प्रकार की भक्तियों में से एक भक्ति , सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान , कीर्ति ; **यौ०** —गोचर - जो सुनायी पड़ने की सीमा में हो ; —पथ - कान ; —विवर - कान का छेद ; —विषय - श्रवणेन्द्रिय की सीमा में आनेवाला विषय ।

**श्रवणीय** - वि० [सं] सुनने के योग्य ।

**श्रवणेन्द्रिय** - स्त्री० [सं] कान ; सुनने की शक्ति ।

**श्रवन** - पु० [हिं] कान ; सुनना ।

**श्रवना** - 1. अ० [हिं] चूना, बहना ; 2. स० चुआना, बहाना ; गिराना ।

**श्रवित** - वि० [सं] टपका हुआ ; बहा हुआ ।

**श्रव्य** - वि० [सं] सुनने योग्य ।

**श्रांत** - 1. वि० [सं] थका हुआ ; जितेन्द्रिय ; शांत ; 2. पु० तपस्वी ।

**श्रांति** - स्त्री० [सं] खेद ; थकान , श्रम ।

**श्राद्ध** - 1. वि० [सं] श्रद्धायुक्त ; 2. पु० विश्वास ; शास्त्रविहित पितृकर्म ; **यौ०** —कर्म, क्रिया - श्राद्ध के सिलसिले में होनेवाले काम ; —दिन - वार्षिक श्राद्ध का दिन ; —पक्ष - आश्विन का कृष्णपक्ष ।

**श्राप** - पु० [सं] शाप ।

**श्रामणेर** - पु० [सं] नया बौद्ध भिक्षु ।

**श्राय** - पु० [सं] आश्रय, शरण ।

**श्राव** - पु० [सं] बहने की क्रिया ; सुनने की क्रिया ।

**श्रावक** - 1. वि० [सं] सुननेवाला ; 2. पु० कौआ ; बौद्ध भिक्षु ; जैन गृहस्थ ; दूरध्वनि ; शिष्य ।

**श्रावण** - 1. पु० [सं] एक मास; श्रवणेन्द्रियग्राह्य ज्ञान; पाखंड; 2. वि० श्रवणेन्द्रिय-संबंधी।

**श्रावणी** - स्त्री० [सं] श्रावण मास की पूर्णिमा।

**श्रावित** - वि० [सं] कथित; सुनाया गया।

**श्राव्य** - वि० [सं] सुनने योग्य।

**श्रित** - वि० [सं] आश्रित; पका हुआ; रक्षित; सेवित; **यौ०**—वान - आश्रयदाता; सेवक।

**श्री** - स्त्री० [सं] विभूति; राजोचित गौरव; कीर्ति; शोभा; संपत्ति; सजावट; वेषविन्यास; वृद्धि; प्रभा; वाणी; लक्ष्मी; प्रकार; सिद्धि; विष्णु की पत्नी; अधिकार; लवंग; कमल; त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम); एक वैष्णव संप्रदाय; **यौ०** —कर - शोभाकारक; —करण - कलम; —खंड - एक पेय खाद्य-पदार्थ; चंदन; —गर्भ - राजा का शयनागार; विष्णु; तलवार; —निकेत, निकेतन - वैकुण्ठ; विष्णु; —पचमी - वसंतपंचमी; —पति - राजा; विष्णु; —पथ - राजमार्ग; —पुष्प - लवंग; —फल - नारियल; बेल का पेड़; खिरनी का पेड़; लक्ष्मी की कृपा का फल; —मस्तक - लहसुन; —मुख - शोभायुक्त आनन; सूर्य; —मूर्ति - प्रतिमा; —युक्त, युत - लक्ष्मीवान; सौंदर्यपूर्ण; पुरुषों के नाम के पूर्व लगाया जानेवाला आदरसूचक विशेषण; —रस - तारपीन; —राग - छः रागों में से तीसरा राग; —राम - दशरथपुत्र तथा सीतापति राम; —वृक्ष - अश्वत्थवृक्ष; बिल्ववृक्ष; —वैष्णव - विशिष्टाद्वैत संप्रदाय के वैष्णव; —संज्ञ - लवंग; —सहोदर - चंद्रमा; —सूक्त - एक वैदिक सूक्त का नाम; —हत - कांतिहीन; सौन्दर्यहीन; —हरि - विष्णु।

**श्रीमंत** - 1. वि० [हिं] लक्ष्मीवान; सौदर्यशाली; 2. पु० एक शिरोभूषण।

**श्रीमती** - स्त्री० [सं] स्त्रियों के नाम के पूर्व जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द; पत्नी; राधिका।

**श्रीमान** - 1. वि० [स] गौरवशाली; धनी; शोभायुक्त; 2. पु० पुरुषों के नाम के पूर्व लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द; कुबेर; पीतल का पेड़; विष्णु; शिव।

**श्रीश** - पु० [सं] लक्ष्मीपति विष्णु।

**श्रुत** - 1. वि० [सं] प्रसिद्ध; सुना हुआ; ज्ञात; 2. पु० परंपरा से सुनकर रक्षित वेद; **यौ०** —कीर्ति - जिसकी कीर्ति सुनी गयी हो; कीर्तियुक्त; —देवी - सरस्वती; —धर - विद्वान; कान; सुनकर स्मरण रखनेवाला; —पूर्व - पहले सुना हुआ; —शील, विद्या, ज्ञान, सदाचरण - जिसका शील, सदाचार आदि प्रसिद्ध हो।

**श्रुतार्थ** - पु० [सं] सुनी हुई या ज़बानी कही हुई बात।

**श्रुति** - स्त्री० [सं] कान; ज्ञान; बातचीत; सुनने की क्रिया; वेद; जनश्रुति; चार की संख्या; सामने की रेखा; एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय का अत्यंत सूक्ष्म स्वरांश (संगीत); **यौ०** —कटु - कर्णकटु, कानों को कठोर लगनेवाला; एक काव्यदोष; —गम्य, गोचर - जो सुना जा सके; सुना हुआ; —जीविका - धर्मशास्त्र; —निदर्शन - धर्मशास्त्र का आदेश; —पथ - वेदविहित या श्रवणेन्द्रिय का मार्ग; —प्रमाण - वेद का प्रमाण; —मंडल - कान की बाहरी

रेखा ; —मधुर - कान को मीठा लगनेवाला ; कर्णसुखद ; —मूल - वेद का मूलपाठ ; कान की जड़ ; —रंजक, रंजन - कर्णमधुर ; —विषय - श्रवणेन्द्रिय का विषय ; वेदवर्णित वस्तु ; —वेध - कनछेदन ; —सुखद - कानो के लिए सुखद ; —स्मृति - वेद और धर्मशास्त्र ; —हर, हारी - श्रवणेन्द्रिय को आकृष्ट करनेवाला ।

**श्रुत्य** - वि० [सं] विख्यात ; सुना जाने योग्य ।

**श्रूयमाण** - वि० [सं] जो सुना जाय ; प्रसिद्ध , सुना जाता हुआ ।

**श्रेणि** - स्त्री० [सं] रेखा ; समूह ; विच्छेद-रहित पंक्ति ; अवली ; जलपात्र ।

**श्रेणिका** - स्त्री० [सं] तंबू ।

**श्रेणी** - [सं] श्रेणि ; यौ० —धर्म - किसी संप्रदाय, वर्ग या दल आदि के नियम ; व्यापारी-वर्ग की रीति और उसके नियम ; —बद्ध - एक पंक्ति में स्थित ; एक शृंखला में बँधा हुआ ; दलबद्ध ।

**श्रेणीकरण** - पु० [सं] क्रम से सजाने या लगाने का कार्य, वर्गीकरण ।

**श्रेणीकृत** - वि० [सं] वर्गीकृत ।

**श्रेय** - 1. पु० [सं] मंगल ; पुण्य ; यश ; धर्म ; युक्ति ; श्रेष्ठ ; 2. वि० अपेक्षाकृत अच्छा ; उपयुक्त ; मंगलमय ; श्रेष्ठ ।

**श्रेयस्कर** - वि० [सं] मंगलकारी ।

**श्रेष्ठ** - 1. वि० [सं] उत्कृष्ट ; ज्येष्ठ ; अत्यंत प्रिय ; सर्वप्रधान ; 2. पु० कुबेर ; गाय का दूध ; ब्राह्मण ; राजा ; विष्णु ; शिव ।

**श्रेष्ठाश्रम** - पु० [सं] गृहस्थाश्रम ।

**श्रेष्ठी** - पु० [सं] अत्यंत धनी व्यक्ति, सेठ ; व्यापारियों, व्यवसायियों और बनियों का प्रधान ।

**श्रोणि** - स्त्री० [सं] कमर ; नितंब ; मार्ग ; यौ० —फलक - चौड़ा कटिप्रदेश ; —बिंब - गोल नितंब ; कमरपट्टा ; —सूत्र - मेखला ।

**श्रोत** - पु० [सं] कान ; नदी का वेग ; स्रोत ; हाथी की सूँड़ ; इंद्रिय ।

**श्रोतव्य** - वि० [सं] सुनने योग्य ; जो सुना जाय ।

**श्रोता** - पु० [सं] सुननेवाला व्यक्ति ।

**श्रोत्र** - पु० [सं] कान ; वेदविषयक नैपुण्य ; श्रवणेन्द्रिय ; श्रुति ; यौ० —मूल - कर्णमूल ।

**श्रोत्रिय** - 1. वि० [सं] वेदाध्ययन-कर्ता ; 2. पु० ब्राह्मणो की एक शाखा ; वेदाध्ययन करनेवाला ब्राह्मण ।

**श्रौत्र** - पु० [सं] कान ; श्रोत्रियकर्म ।

**श्लक्ष्ण** - वि० [सं] अल्प ; महीन ; कोमल ; चिकना ; मधुर ; मनोहर ।

**श्लथ** - वि० [सं] ढीला ; ढीला किया हुआ ; दुर्बल ; बिखरा हुआ ।

**श्लाघनीय** - वि० [सं] प्रशंसनीय ।

**श्लाघ्य** - वि० [सं] प्रशस्त ।

**श्लिष्ट** - वि० [सं] आलिंगित ; अनेकार्थक ; सम्मिलित ।

**श्लीपद** - पु० [सं] टाँग या पैर फूलने का रोग ; फ़ीलपाँव ।

**श्लीपदी** - वि० [सं] फ़ीलपाँव का रोगी ।

**श्लील** - वि० [सं] अश्लीलतारहित ; लक्ष्मीवान ; श्रेष्ठ ; शोभायुक्त ।

**श्लेष** - पु० [सं] आलिंगन ; एक शब्दालंकार ; लगाव ; संयोग ।

**श्लेष्म, श्लेष्मा** - पु० [सं] कफ, बलगम ।

**श्लोक** - पु० [सं] संस्कृत का पद्य ; संस्कृत का अनुष्टुप छंद ; कीर्ति ; प्रशंसा या प्रशंसा का विषय ।

**श्वः** - पु० [सं] आगामी कल।
**श्वशुर, श्वशुरक** - पु० [सं] ससुर।
**श्वश्रु** - स्त्री० [सं] सास।
**श्वसन** - पु० [सं] आह भरना; निःश्वास; वायु; साँस लेना; हाँफना।
**श्वा** - पु० [सं] कुत्ता।
**श्वान** - पु० [सं] कुत्ता; दोहे का एक प्रकार; **यौ०** —निद्रा - कुत्ते की भाँति तुरंत खुल जानेवाली नीद; हल्की नीद।
**श्वापद** - 1. वि० [सं] जंगली; भयंकर; 2. पु० हिंस्र पशु।
**श्वास** - पु० [सं] साँस; आह; दमा नामक रोग; हाँफने की क्रिया; वायु; **यौ०** —कष्ट - साँस लेने और निकालने की तकलीफ़; —क्रिया - श्वासग्रहण और त्याग का कार्य; —धारण - कुंभक प्राणायाम; —प्रश्वास - साँस लेना और निकालना; —मारण - प्राणायाम; —रोध - दम घुटना; साँस लेने की क्रिया को बंद रखना।
**श्वासोच्छ्वास** - पु० [सं] वेगपूर्वक साँस लेना और बाहर निकालना।
**श्वेत** - 1. वि० [सं] गौर, गोरा; निष्कलंक; सफ़ेद, उज्ज्वल; 2. पु० सफ़ेद रंग; कौड़ी; चाँदी; सफ़ेद बादल; शंख; शुक्र ग्रह; शिव का एक अवतार; सफ़ेद जीरा; जीवक नामक औषधि; **यौ०** —कपोत - एक तरह का चूहा; एक सर्प; —कांडा - सफ़ेद रंग की दूब; —काक - सफ़ेद कौआ; कोई अनहोनी-सी बात; —कुंजर - इंद्र का ऐरावत हाथी; सफ़ेद हाथी; —कुष्ठ - सफ़ेद कोढ़; —केश - सफ़ेद बाल; —क्षार - शोरा; —गरुत् - हंस; —गुंजा - सफ़ेद रंग की घुँघची; —चंदन - सफ़ेद चंदन; —जीरक - सफ़ेद जीरा; —टंकक, टंकण - सादा सुहागा; —द्युति - चंद्रमा; —धातु - खड़िया मिट्टी; —नील - बादल; —पत्र - किसी वार्ता या संधि-चर्चा आदि के अंत में हुई बातों की लिखित घोषणा; —प्रदर - प्रदर रोग का एक भेद; —बिन्दुका - सफेद धब्बोंवाली लड़की; —माल - धुआँ; बादल; —रोचि - चाँद; —रोहित - गरुड़; —शृंग - जौ; —सार - खैर; —हय - इंद्र का उच्चैःश्रवा घोड़ा; सफ़ेद घोड़ा।
**श्वेता** - 1. वि० [सं] सफ़ेद रंगवाली; 2. स्त्री० शरीर के चमड़े की तीसरी तह; कौड़ी; अतीस; वंशलोचन; मिस्री; फिटकिरी; अग्नि की एक जिह्वा; श्वेत दूर्वा; पाषाणभेदिनी।
**श्वेताभ** - वि० [सं] श्वेत वर्ण की कांति से युक्त।
**श्वेताम्लि** - स्त्री० [सं] इमली।
**श्वेतिमा** - स्त्री० [सं] शुक्लता, सफ़ेदी।
**श्वेत्र** - पु० [सं] श्वेतकुष्ठ।
**श्वैत्य** - पु० [सं] श्वेतकुष्ठ, शुभ्रता, सफ़ेदी।

## ष

**षंजन** - पु० [हिं] आलिंगन।
**षंड** - पु० [सं] नपुंसक; बैल; साँड़, राशि; पद्मसमूह; भेड़ों आदि का झुंड; झुंड।
**षंडक** - पु० [सं] नपुंसक; हिंजड़ा।
**षंढ** - पु० [सं] नपुंसकलिंग; नपुंसक; शिव; **यौ०** —वेष - नपुंसक के वेष में रहनेवाला।
**षंढा** - स्त्री० [सं] मर्दानी औरत।
**ष** - 1. पु० [सं] बाल, केश; विद्वान व्यक्ति; अंत; बची वस्तु; चूचुक; स्वर्ग; गर्भ-स्राव; भ्रूण; धैर्य; 2. वि० बुद्धिमान; विद्वान; श्रेष्ठ।

**षट** - वि० [सं] छः ; यौ० —कर्ण - छः कानोवाला ; छः कानो द्वारा सुना गया ; —कर्म - ब्राह्मणो के अध्ययन व अध्यापन आदि छः कर्तव्य ; छः तांत्रिक कर्म ; योग-संबधी छः कर्म ; —कल - छः कला टिकनेवाला ; —कोण - जिसमे छः कोण हो, छपहला ; लग्न से छठा स्थान ; इंद्र का वज्र ; हीरा ; —खंड - जिसमें छः भाग हो ; —चक्र - शरीर के भीतर सुषुम्ना नाडी के मध्यस्थित अतिसूक्ष्म कमलाकार छः चक्र ; षड्यंत्र ;—चरण - छः पैरोवाला ; जूँ ; टिड्डी ; भ्रमर ; —तंत्री - षटदर्शन; —प्रज्ञ - चारो पुरुषार्थ, लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता ; नेक पड़ोसी, लंपट ; —शास्त्र - वेद को प्रमाण मानकर चलनेवाले छः हिन्दू दर्शन (न्याय, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमासा और वैशेषिक) ।

**षट्क** - 1. वि० [सं] छः गुना ; छठी बार होने या किया जानेवाला ; छः में खरीदा हुआ ; 2. पु० छः की संख्या ; काम व मद आदि छः विकारों का समाहार ।

**षड्** - वि० [सं] षट् का समासगत रूप ; यौ० — अंग - छः अंगोंवाला ; शरीर के सिर, धड़ आदि छः अवयव ; वेद के शिक्षा, कल्प आदि छः अंग ; गाय से प्राप्त मूत्र, दूध, घी आदि छः पदार्थ; किन्हीं छः वस्तुओं का समाहार ; —अंगिनी - सारे अंगो से पूर्ण सेना ; —अग्नि - कर्मकाड-संबंधी छः प्रकार की अग्नि ; —अह - छः दिनों का समय ; —आत्मा - छः प्रकार के स्वरूपोंवाला ; —आनन - छः मुखोंवाला, कार्तिकेय ; —आम्नाय - छः तंत्र ; —आयतन - छः इंद्रियों के छः स्थान ; —ऋतु - छः ऋतुएँ ; —गवीय - छः बैलो से खींचा जानेवाला ; —गुण - छः गुणो से युक्त ; छः गुना ; परराष्ट्र-नीति की सफलता के लिए राजा द्वारा व्यवहार में लाये जानेवाले छः उपाय , छः गुणो का समाहार ; —दर्शन - सांख्य व योग आदि हिन्दुओं के छः दर्शन ; —भुज - छः भुजाओंवाला ; छः भुजाओं का क्षेत्र ; —यंत्र - दुरभिसंधि, किसी व्यक्ति के अनजान में उसके अनिष्टसाधन के उपाय करना ; —योग - योगाभ्यास में प्रयुक्त छः तरीके ; —रस - छः प्रकार के स्वादोवाला ; छः प्रकार के स्वाद (मीठा, नमकीन, कड़वा, तीता, कसैला और खट्टा) ; —रिपु - काम व क्रोध आदि षड्विकार ; —रेखा - खरबूजा ; —लवण - सैंधव, सामुद्र आदि छः प्रकार के नमक ; —वदन - स्कंद ; —वर्ग - षड्रिपु ; पाँच इंद्रियाँ और मन ; छः पदार्थों का समाहार ; —विकार - शरीरधारी जीव के छः विकार (उत्पत्ति, वृद्धि, बाल्यावस्था, यौवन, वार्धक्य और मृत्यु) ; —विध - छः प्रकार का ।

**षण्मास** - पु० [सं] छः मास ।

**षण्मासिक** - वि० [सं] अर्धवार्षिक ।

**षष्ट** - वि० [सं] साठवाँ ।

**षष्टि** - 1. स्त्री० [सं] साठ की संख्या ; 2. वि० साठ ; यौ० —मत्त - साठ की अवस्था में युवा होनेवाला हाथी ।

**षष्टिक** - 1. वि० [सं] साठ में खरीदा हुआ ; 2. पु० साठ दिनो में तैयार होनेवाला एक धान ; साठ की संख्या ।

**षष्ठ** - वि० [सं] छठा ; यौ० —काल - छठा भोजनकाल ; —भक्त - तीसरे दिन शाम को खानेवाला ; छठा भोजन ।

**षष्ठांश** - पु० [सं] छठा भाग ।

**षष्ठिका** - स्त्री० [सं] बच्चे के जन्म से छठा दिन ; षष्ठी।

**षष्ठी** - स्त्री० [सं] किसी पक्ष की छठी तिथि ; संतानोत्पत्ति के दिन से छठा दिन ; संबंधकारक की विभक्ति (व्या०) ; कात्यायनी ; यौ० —जाय - जिसने छठा विवाह किया हो ; —पूजन, पूजा - प्रसव के छठे दिन होनेवाली षष्ठी देवी की पूजा।

**षष्ठ्य** - पु० [सं] छठा भाग।

**षांड्य** - पु० [सं] नपुंसकता।

**षाण्मातुर** - पु० [सं] कार्तिकेय।

**षाण्मासिक** - 1. वि० [सं] छमाही ; छः महीने का ; 2. पु० मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला मृतक-श्राद्ध।

**षाष्टिक** - वि० [सं] साठ बरस का।

**षोडश** - 1. वि० [सं] सोलहवाँ ; सोलह ; 2. पु० सोलह की संख्या; यौ०—कल - सोलह अंशोवाला ; —कला - तिथि के अनुसार घटने-बढ़नेवाली चंद्रमा की सोलह कलाएँ; —दान - श्राद्ध आदि के अवसर पर दी जानेवाली सोलह वस्तुएँ ; —विधि - सोलह प्रकार का ; —शृंगार - साज-सज्जा के सोलह अंग, संपूर्ण शृंगार ; —संस्कार - गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के सोलह शास्त्रविहित संस्कार।

**षोडशार** - 1. वि० [स] सोलह आरोंवाला ; सोलह पंखड़ियोंवाला ; 2. पु० एक प्रकार का कमल।

**षोडशावर्त** - पु० [सं] शंख।

**षोडशाह** - पु० [सं] सोलह दिनो तक चलनेवाला उपवास आदि का व्रत।

**षोडशी** - 1. स्त्री० [सं] सोलह वर्ष की तरुणी ; दस या बारह महाविद्याओं में से एक ; प्रेतकर्म-विशेष ; 2. वि० सोलह भागोंवाला (स्तोत्र आदि) ; 3. पु० एक प्रकार का सोमपात्र।

**षोडशोपचार** - पु० [सं] देव-पूजन के सोलह अंग (आवाहन, आसन, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध या चंदन, पुष्प, धूप, दीप, ताबुल, नैवेद्य, परिक्रमा और वंदना)

**षोढा** - वि० [सं] छः प्रकार से ; यौ० —विहित - छः भागोंवाला।

**ष्ठीवन** - पु० [सं] थूक, लार ; थूकने की क्रिया।

**ष्ठेव** - वि० [सं] थूकना।

## स

**सँइतना** - स० [हिं] जोड़ना ; लीपना-पोतना; सुरक्षित रखना ; सहेजना।

**संक** - स्त्री० [हिं] शंका ; डर ; भ्रम।

**संकट** - 1. वि० [सं] दुर्गम ; ख़तरनाक ; घना ; संकीर्ण ; भरा हुआ ; 2. पु० विपत्ति ; ख़तरा ; तंग रास्ता ; कठिनाई ; भीड़ ; दर्रा ; यौ० —नाशन - कष्ट दूर करनेवाला।

**संकटापन्न** - वि० [सं] कष्ट में पड़ा हुआ।

**संकथा** - स्त्री० [सं] बातचीत ; वर्णन।

**संकथित** - वि० [सं] कथित, वर्णित।

**संकना** - अ० [हिं] डरना ; संदेह करना।

**संकर** - पु० [स] दो जातियों का मिश्रण, अंतर्जातीय संबन्ध से उत्पन्न संतान ; मिश्रण, योग ; एक ही वाक्य में दो या अधिक अलंकारों का मिश्रण ; गोबर ; आग के जलने का शब्द ; शंकर।

**सँकरा** - 1. वि० [हिं] तंग ; संकीर्ण ; 2. पु० संकट ; 3. स्त्री० ज़ंजीर, सिकड़ी।

**सँकराना** - स० [हिं] संकीर्ण करना।

**संकरिया** - पु० [हिं] एक प्रकार का हाथी।

**संकरी** - वि० [सं] अवैध संबन्ध रखनेवाला ; दोगला ; मिश्र।

**संकर्ष** - पु० [सं] पास में खींच लाना।

**संकल** - 1. पु० [सं] एकत्र करना; ढेर; जोड़; योग; 2. स्त्री० ज़ंजीर; जानवरों को बाँधने का सिक्कड़।

**संकलन** - पु० [सं] अच्छे विषयों को चुनकर एकत्र करना; इस प्रकार तैयार किया हुआ ग्रंथ; एकत्रीकरण; जोड़; संपर्क; मिलन; योग।

**संकलना** - स्त्री० [सं] एकत्र करना; मिलाना।

**संकलपना** - 1. स० [हिं] संकल्प करना; दानादि धार्मिक कृत्य करने का निश्चय या प्रतिज्ञा करना; 2. अ० इरादा करना।

**संकलित** - 1. वि० [सं] एकत्रीकृत; मिलाया हुआ; जोड़ा हुआ; 2. पु० जोड़।

**संकल्प** - पु० [सं] इच्छा; उद्देश्य; कल्पना; कोई धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा; निश्चय; नीयत; मन; सती होने की इच्छा; धार्मिक कृत्य से फल की आशा; यौ० —जन्मा, योनि - इच्छा से उत्पन्न; कामदेव; प्रणय; —सिद्धि - इच्छाशक्ति द्वारा उद्देश्य की प्राप्ति।

**संकल्पक** - वि० [सं] संकल्प करनेवाला; विचार करनेवाला।

**संका** - स्त्री० [हिं] शंका; डर।

**संकाना** - अ० [हिं] शंकित होना; डरना।

**संकारना** - स० [हिं] संकेत या इशारा करना।

**संकारी** - स्त्री० [सं] नयी दुलहिन।

**संकाश** - 1. वि० [सं] समान; निकटवर्ती; 2. अव्य० पास; 3. पु० उपस्थिति; कांति; पड़ोस।

**संकीर्ण** - 1. वि० [सं] मिलाया हुआ; मिलावटी; अस्पष्ट; मिश्रित; भरा हुआ; बिखेरा हुआ; संकुचित; संयुक्त; 2. पु० संकर जाति का व्यक्ति; मस्त हाथी; मिश्र राग; संकट; यौ० —युद्ध - विभिन्न प्रकार के अस्त्रों से लड़ा जानेवाला युद्ध।

**संकीर्णता** - स्त्री० [सं] क्षुद्रता; तंगी; व्यतिक्रम (शब्दों का)।

**संकीर्तन** - पु० [सं] देवता के नाम का जप; प्रशंसा; सम्यक् वर्णन; स्तुति।

**संकीर्तित** - वि० [सं] अच्छी तरह से वर्णित; प्रशंसित; स्तुत।

**संकुंचित** - वि० [सं] कुटिल; झुका हुआ।

**संकुचन** - पु० [सं] सकुचित होना; सिकुड़ना।

**संकुचित** - वि० [सं] सिकुड़ा हुआ; तंग; बंद।

**संकुल** - 1. वि० [सं] घना; संकीर्ण; असंगत; घबड़ाया हुआ; प्रचंड; जटिल; बाधित; 2. पु० असंगत वाक्य; कष्ट; झुंड; भीड़; युद्ध।

**संकुलता** - स्त्री० [सं] घनापन; गड़बड़; जटिलता; परिपूर्णता।

**संकेत** - पु० [सं] अभिप्रायसूचक अंग-चेष्टा, इशारा; चिह्न; प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान; शर्त; यौ० —वाक्य - वह विशेष शब्द जो स्वपक्ष का परिचायक चिह्न हो; —हेतु - मिलने का प्रयोजन।

**संकेतना** - स० [हिं] संकट या विपत्ति में डालना; संकुचित होना।

**संकेतित** - वि० [सं] आमंत्रित; निश्चित।

**संकेलना** - स० [हिं] खींचकर इकट्ठा करना, बटोरना।

**संकोच** - पु० [सं] मुँदना (नेत्र का); भय; लज्जा; बंधन; हिचक; सिकुड़ना; संक्षेप; सूखना; यौ० —कारी - विनम्र; शरमानेवाला; —रेखा - झुर्री।

**संकोचना** - 1. स० [हिं] संकुचित करना ; 2. अ० संकोच करना ।

**संकोचनी** - स्त्री० [सं] लजालु ।

**संकोची** - वि० [सं] तननेवाला ; लजानेवाला ; संकुचित होनेवाला ; सिकुड़नेवाला ।

**संकोपना** - अ० [हिं] क्रोध करना ।

**संक्रंद** - पु० [सं] रोना-चिल्लाना ; शब्द करना ।

**संक्रंदन** - पु० [सं] इंद्र ; युद्ध ; सम्यक् क्रंदन ।

**संक्रम** - पु० [सं] गमन ; प्रगति ; भ्रमण ; तंग रास्ता ; दुर्गम मार्ग ; कठिनाई से आगे बढ़ सकना ; उद्देश्य-प्राप्ति का साधन ; घाट ; तारे का टूटना ; पुल ; सूर्य या नक्षत्र की वीथि ; साथ जाना ।

**संक्रमण** - पु० [सं] संक्रम ; प्रवेश ; आरंभ ; मिलन ; मृत्यु ; पार करने का साधन ; राश्यंतर में सूर्य का प्रवेश, संक्राति ; सूर्य के उत्तरायण होने का दिन ।

**संक्रमित** - वि० [सं] पहुँचाया या प्रवेश कराया हुआ ; परिवर्तित किया हुआ ।

**संक्रांत** - 1. वि० [सं] गत या गुज़रा हुआ ; गृहीत ; अंकित ; प्रविष्ट ; प्राप्त ; प्रतिबिंबित ; स्थानातरित ; 2. पु० क्रमागत धन ; पति से प्राप्त स्त्री की संपत्ति ।

**संक्रांति** - स्त्री० [सं] एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक का मार्ग ; सूर्य या किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना ; गुरु से शिष्यों का विद्याग्रहण ; प्रतिबिंब ; अंकन ; साथ गमन ; मिलन ; हस्तांतरण ।

**संक्रामक** - वि० [सं] एक से दूसरे में संक्रमण करनेवाला ; छूत आदि से फैलनेवाला ।

**संक्रीडन** - पु० [सं] साथ खेलना ; क्रीडा करना ; परिहास करना ।

**संक्रुद्ध** - वि० [सं] बहुत ज़्यादा नाराज़ ।

**संक्रोश** - पु० [सं] क्रोध में चिल्लाना ; ज़ोर से शब्द करना ।

**संक्लिष्ट** - वि० [सं] कुचला हुआ ; कठिनाइयो से पूर्ण ।

**संक्लेश** - पु० [सं] कष्ट ; पीड़ा ।

**संक्षिप्त** - वि० [सं] छोटा किया हुआ ; खुलासा ; गृहीत ; घटाया हुआ ; छोटा ; तंग ; फेका हुआ ; राशीकृत ; संयत ।

**संक्षेप** - पु० [सं] घटाना ; दूसरे के कार्य में सहायता देना ; छोटा रूप ; तंगदस्ती ; नष्ट करना ; ठोस करना ; फेंकना ; भेजना ; हरण ।

**संक्षेपतः, संक्षेपतया** - अव्य० [सं] संक्षेप में, थोड़े में ।

**संक्षोभ** - पु० [सं] गर्व ; अस्तव्यस्तता ; उत्तेजन ; कंपन ; तेज़ धक्का ।

**संखहुली** - स्त्री० [हिं] शंखपुष्पी ।

**संखा** - पु० [हिं] चक्की का हत्था ।

**संखिया** - पु० [हिं] एक बहुत तेज़ विष ।

**संख्यक** - वि० [सं] संख्यावाला ।

**संख्या** - स्त्री० [सं] अंक ; गणना या गिनती ; तादाद ; तरीक़ा ; नाम ; प्रज्ञा ; योग ; विचारणा ; यौ० —पद - अंक ; —मंगलग्रंथि - वर्षगाँठ का उत्सव ;—लिपि - लिखने की वह प्रणाली जिसमें अक्षरो की जगह अंक रखते हैं ; —वाचक - संख्या का सूचक ; अंक ।

**संख्यात** - 1. वि० [सं] गिना हुआ ; 2. पु० गिनती ; समूह ।

**संख्यातिग, संख्यातीत** - वि० [सं] अगणित, बेशुमार ।

**संख्येय** - वि० [सं] जो गिना जा सके ; विचारणीय ।

**संग** - 1. पु० [सं] आसक्ति; मिलन; योग; दो नदियों का मिलना; संगम; मैत्री; संसर्ग; साथ होना; स्पर्श, बाधा; युद्ध; विषयवासना; 2. अव्य० [हिं] सहित, साथ; यौ० —कर - आसक्तिजनक; —त्याग - विरक्ति; —रहित, वर्जित - आसक्तिरहित; —साथ - मैत्री, दोस्ती।

**संग** - पु० [फ़ा] पत्थर; चट्टान; यौ० —अंदाज़ - क़िले की दीवार में शत्रु पर पत्थर फेंकने के लिए बने हुए छेद; इन छेदों से शत्रु पर पत्थर फेंकनेवाला; —आसिया - चक्की का पत्थर; —ख़ारा - एक तरह का बड़ा पत्थर; —चक़मक़ - एक पत्थर जिसे रगड़ने से आग निकलती है; —चीनी - एक तरह का पत्थर; —जराहत - एक सफ़ेद चिकना पत्थर; —तराज़ू - तराज़ू का बाट; —तराश - पत्थर का काम करनेवाला; —दिल - निर्दय; —दिली - निर्दयता; —पुश्त - कछुआ; —फ़र्श - पत्थर का फ़र्श; —बार - पत्थर फेंकनेवाला; पथरीली ज़मीन; —बारान - पत्थरों की बौछार; —मरमर - इमारतों में लगाया जानेवाला एक प्रकार का सफ़ेद पत्थर; —मूसा - एक प्रकार का काला पत्थर; —रेजा - पत्थर की मिट्टी; —लरजा - हिलाने से काँपनेवाला एक तरह का पत्थर; —लाख - पथरीली ज़मीन; मुश्किल; —साज़ - छापे का पत्थर दुरुस्त करनेवाला; —सार - एक प्रकार की सज़ा; पत्थर मारनेवाला; —सुर्ख़ - एक तरह का लाल पत्थर; —सुलेमानी - एक तरह का पत्थर जो काला और सफ़ेद होता है; —आतिश - चक़मक़; —पा - पैर का मैल साफ़ करने का पत्थर; —मज़ार - क़ब्र में लगा हुआ वह पत्थर जिसपर मृत व्यक्ति का नाम आदि अंकित रहता है; —मसाना - पथरी; —यहूद - दवा के काम आनेवाला एक तरह का पत्थर, —राह - रास्ते पर पड़ा हुआ वह पत्थर जिससे आने-जानेवालों को कष्ट होता है; —सुरमा - एक तरह का काला पत्थर जिससे सुरमा बनाते हैं।

**संगठन** - पु० [हिं] कार्यविशेष की सिद्धि के लिए निर्मित कोई संस्था, निर्माण-कार्य; रचना या व्यवस्थित करने का कार्य; संग्रंथन।

**संगत** - 1. वि० [सं] युक्त; एकत्रीभूत; उपयुक्त; विवाहित; संकुचित; 2. स्त्री० आसक्ति; गाने आदि के साथ बाजा बजाना; तर्कसंगत वाणी; मिलन; मैत्री; मेल; मैथुन; साथ; [हिं] उदासी साधुओं का मठ; यौ०—संधि - मैत्री के बाद होनेवाली सुलह; मैत्री के आधार पर हुई संधि।

**संगतरा** - पु० [फ़ा] संतरा।

**संगतार्थ** - वि० [सं] उपयुक्त अर्थवाला।

**संगति** - स्त्री० [सं] मिलन; उपयुक्तता; इत्तिफ़ाक; अधिकरण के पाँच अवयवों में से एक (दर्शन); ज्ञानवृद्धि के लिए प्रश्न करना; संघ; मैथुन; संपर्क; साथ; सामंजस्य।

**संगतिया, संगती** - पु० [हिं] साथी; गाने आदि के साथ साज बजानेवाला।

**संगम** - पु० [सं] नदियों का मिलन; मिलन; उपयुक्तता; मैथुन; संपर्क; संगति।

**संगमक** - वि० [सं] मार्ग दिखानेवाला।

**संगमन** - पु० [सं] मिलन; यम।

**संगर** - पु० [फ़ा] खेत या बाग़ के चारो ओर बनायी जानेवाली काँटो की बाड़; खाई; मोरचा; लड़ाई के मौक़े पर बनायी जानेवाली दीवार; युद्ध; वादा; ज्ञान; अंगीकार; भक्षण; विष; संकट; सौदा; यौ० —क्षम - युद्ध में भिड़ने योग्य।

**सँगरा** - पु० [हि] बाँस का वह टुकड़ा जिससे पेशराज पत्थर उठाते हैं; कुएँ के ढक्कन का वह छेद जिसमें पंप लगा रहता है।

**संगरासिख** - पु० [हिं] खिज़ाब बनाने के काम में लाया जानेवाला ताबे का मैल।

**संगल** - पु० [हिं] एक तरह का रेशम।

**संगाती** - पु० [हिं] साथी; दोस्त।

**संगायन** - पु० [सं] साथ-साथ गाना या स्तुति करना।

**संगिनी** - स्त्री० [सं] पत्नी; साथिन।

**संगिस्तान** - पु० [फ़ा] पथरीला प्रदेश।

**संगी** - 1. पु० [सं] साथी; दोस्त; 2. वि० चिपकने या साथ लगनेवाला; अविच्छिन्न; आदी; आसक्त; कामुक; संपर्क में आनेवाला।

**संगी** - 1. वि० [फ़ा] पत्थर का, संगीन; 2. पु० एक तरह का रेशमी कपड़ा।

**संगीत** - 1. पु० [सं] वाद्यो के साथ गाया जानेवाला गाना; गाना; नृत्य, वाद्य और गीत का समाहार; 2. वि० साथ मिलकर गाया हुआ; यौ० —वेश्म, शाला - संगीतभवन।

**संगीति** - स्त्री० [सं] वार्तालाप; आर्याछंद का एक भेद; संगीत; संगीतकला।

**संगीन** - 1. वि० [फ़ा] कठोर; पत्थर का; पत्थर का बना हुआ; मज़बूत; सख्त; 2. स्त्री० बंदूक़ पर चढ़ाया जानेवाला एक तरह का नोकदार हथियार; यौ० —जुर्म - कठिन दंड के योग्य अपराध; —दिल - निर्दय; —दिली - निर्दयता।

**संगीनी** - स्त्री० [फ़ा] ठोसपन; मज़बूती।

**संगुप्त** - 1. वि० [सं] भली-भाँति छिपाया हुआ; सुरक्षित; 2. पु० एक युद्ध।

**संगुप्ति** - स्त्री० [सं] छिपाव; सुरक्षा।

**संगृहीत** - वि० [सं] एकत्र किया हुआ; जकड़ा हुआ; प्राप्त; शासित, स्वीकार किया हुआ; संक्षिप्त किया हुआ।

**संगोतरा** - पु० [हिं] संतरा।

**संगोपन** - 1. पु० [सं] छिपाना; 2. वि० छिपानेवाला।

**संगोपनीय** - वि० [सं] छिपाने लायक़।

**संग्रंथन** - पु० [सं] एक साथ बाँधना।

**संग्रथन** - पु० [सं] एक साथ बाँधकर मरम्मत करना; एक साथ बाँधना।

**संग्रसन** - पु० [सं] अधिक खाना; चट कर जाना; दबोचना।

**संग्रह** - पु० [सं] रक्षण; पकड़ना; मुट्ठी बाँधना; अपनाना; ग्रहण करना; जमा करना, नियंत्रण करना; समर्थन करना; अंतर्भाव; संयोग; राशीकरण; संकलन; संक्षिप्त रूप; सूची; जोड़; उल्लेख; उच्चता; गौरव, प्रयत्न; भाण्डारगृह; वेग; कोष्ठबद्धता; मैथुन; विवाह; सभा; धारणा; संरक्षक; यौ० —कार - संकलन-कर्ता; —वस्तु - संग्रह के योग्य लोक-प्रिय वस्तु; —श्लोक - वह श्लोक जिसमें पूर्वकथन का उपसंहार किया गया हो।

**संग्रहण** - पु० [सं] एकत्र करना; ग्रहण करने की क्रिया; प्राप्त करना; नियंत्रण करना; पूर्णोल्लेख; नारी का अपहरण; मैथुन; व्यभिचार।

**संग्रहणी** - स्त्री० [सं] अतिसार का एक रूप जिसमें खाना बिना पचे ही मल के रूप में निकल जाता है।

**संग्रहणीय** - वि० [सं] एकत्र करने योग्य; ग्रहण करने योग्य; नियंत्रण के योग्य; सेवन करने योग्य।

**संग्रहना** - स० [हिं] अपनाना; संग्रह या संचय करना।

**संग्रहालय** - पु० [सं] वह स्थान जहाँ विशेष प्रकार की वस्तुओं का संग्रह किया गया हो, म्युजियम।

**संग्रही** - पु० [सं] संग्रह या जमा करनेवाला; प्राप्त करनेवाला।

**संग्राम** - पु० [सं] युद्ध, लड़ाई; यौ० —पटह - युद्ध में बजाया जानेवाला नगाड़ा; —भूमि - युद्धक्षेत्र, समरभूमि; —मृत्यु - वीरगति।

**संग्रामांगण** - पु० [सं] युद्धक्षेत्र।

**संग्राहक** - 1. पु० [सं] जमा करनेवाला; सारथी; संकलनकर्ता; 2. वि० अपनी ओर खींचनेवाला; एकत्र करनेवाला; क़ब्ज़ करनेवाला।

**संग्राही** - वि० [सं] एकत्र करनेवाला; अपनानेवाला; क़ब्ज़ करनेवाला।

**संग्राह्य** - वि० [सं] अपनाने योग्य; एकत्र करने योग्य; रोकने योग्य; हृदयंग्राम करने योग्य।

**संघ** - पु० [सं] झुंड, मंडली; समाज; विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए बना हुआ संगठन; विशेष उद्देश्य से एक साथ रहनेवाले व्यक्तियों का समूह; बौद्ध भिक्षुओं का समूह; मठ; घनिष्ट संपर्क; यौ० —चारी - झुंड में चलनेवाला; —जीवी - दल बनाकर रहनेवाला; मज़दूर; —पति - दलनायक; —भेद - संघ में फूट डालना; —वृत्ति - साथ मिलने की वृत्ति।

**संघट** - 1. वि० [सं] ढेर लगाया हुआ; 2. पु० झगड़ा; राशि; संयोग।

**संघटन** - पु० [सं] मेल; संयोग; [हिं] रचना; व्यवस्थित करने का कार्य; कार्यविशेष की सिद्धि के लिए निर्मित कोई संस्था; संग्रंथन।

**संघटना** - स्त्री० [सं] मिलाना; स्वरों या शब्दों का संयोग।

**संघरना** - स० [हिं] वध करना; संहार करना।

**संघर्ष** - पु० [सं] दो चीज़ों का आपस में रगड़ खाना; कामोत्तेजना; धीरे-धीरे लुढ़कना; द्वेष; स्पर्धा; यौ० —शाली - द्वेष करनेवाला।

**संघर्षण** - पु० [सं] रगड़ खाने या रगड़ने की क्रिया; रगड़ने या मलने के काम आनेवाली वस्तु।

**संघर्षी** - वि० [सं] रगड़नेवाला; द्वेष करनेवाला।

**संघाटी** - स्त्री० [सं] बौद्ध भिक्षुओं का वस्त्र, चीवर।

**संघाणक** - पु० [सं] नाक से निकलनेवाला कफ।

**संघात** - पु० [सं] आघात; वध; घनीभूत करना; झुंड; युद्ध; राशि; संयोग; समूह; अस्थि; कारवाँ; प्रचंडता; घनता; शरीर; चलने का एक विशेष ढंग; यौ० —कठिन - मिलकर ठोस हो जानेवाला; —चारी - दल में रहनेवाला; —पत्रिका - सौंफ; सोआ; —शिला - पत्थर-जैसा कठिन पदार्थ; बहुत कड़ा पत्थर।

**संघातक** - 1. पु० [सं] साथ रहनेवालों का पार्थक्य; 2. वि० नाशक; घातक।

**संघाधिप** - पु० [सं] संघ का प्रधान।

**संघारना** - स० [हिं] नाश करना; वध करना।

**संघाराम** - पु० [सं] बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान, विहार।

**संघृष्ट** - वि० [सं] रगड़ खाया हुआ; रगड़ा हुआ।

**संघेरना** - स० [हिं] एक ही रस्सी में एक गाय के दायें पैर को और दूसरी गाय के बायें पैर को बाँधना।

**संघेरा** - पु० [हिं] दो गायों के पैरों को एक में बाँधने की रस्सी।

**संघेला** - पु० [हिं] मित्र; साथी।

**संघोष** - पु० [सं] ज़ोर का शब्द; ग्वालों की बस्ती।

**संच** - पु० [सं] एकत्र करना; कुशल; ग्रंथ-लेखन के काम आनेवाला पत्रों का संग्रह; रक्षण; शांति।

**संचना** - स० [हिं] बटोरना; रक्षा या देख-भाल करना।

**संचय** - पु० [सं] एकत्र करना; ढेर; जोड़; बड़ी राशि का परिमाण; भाडार।

**संचयन** - पु० [सं] एकत्र करने की क्रिया; जले हुए शव की अस्थियाँ एकत्र करना।

**संचयी** - वि० [सं] कंजूस; धनवान; संचय करनेवाला।

**संचर** - पु० [सं] तंग रास्ता; रास्ता; एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण; गमन; पुल; प्रगति; प्रवेशद्वार; वध; शरीर; साथी।

**संचरण** - पु० [सं] गति; गमन; पार करना; प्रयोग में लाना; फैलाना; भ्रमण।

**संचरना** - 1. अ० [हिं] चलना-फिरना; पहुँचना; फैलना; 2. स० चलाना।

**संचल** - 1. वि० [सं] घूमता हुआ; हिलता हुआ; 2. पु० सौंचर नमक; यौ० —नाडी - धमनी।

**संचलन** - पु० [सं] काँपना; घूमना।

**संचान** - पु० [सं] बाज़, श्येन।

**संचार** - पु० [सं] गमन; मार्ग; जीवन-व्यापार; कठिन यात्रा; कठिनाई; कष्ट; गुप्तचरों का एक भेद; ढंग; भ्रमण; सूर्य का दूसरी राशि में प्रवेश; रोग-संक्रमण; नेतृत्व; बढ़ावा देना; यौ० —जीवी - खानाबदोश; शरणापन्न;—पथ - टहलने का स्थान।

**संचारक** - 1. वि० [सं] ले जाने या फैलानेवाला; 2. पु० नायक; बढ़ावा देनेवाला; वक्ता।

**संचारण** - पु० [सं] नज़दीक लाना या ले जाना; मिलाना; संवाद कहना।

**संचारना** - स० [हिं] उत्पन्न करना; प्रवेश कराना; प्रयोग में लाना; फैलाना।

**संचारित** - 1. वि० [सं] उकसाया हुआ; गतिमान किया हुआ; संक्रमित किया हुआ; 2. पु० अपने स्वामी के विचारों को कार्यान्वित करनेवाला व्यक्ति।

**संचारी** - 1. वि० [सं] गतिशील; एक से दूसरे में संक्रमण करनेवाला, संक्रामक; चढ़ने-उतरनेवाला (स्वर); क्षणस्थायी, अस्थिर; आनुवंशिक; गतिमान करनेवाला; दुर्गम; संलग्न; प्रवेश करनेवाला; भ्रमणशील; साथ आने या मिलनेवाला; 2. पु० गंधद्रव्य; वायु; काव्य में एक प्रकार का भाव; गीत के चार चरणों में से तीसरा; आगंतुक; अस्थिरता।

**संचालक** - पु० [सं] संचालन करनेवाला; गति प्रदान करनेवाला।

**संचालन** - पु० [सं] गति देना, चलाना।

**संचित** - वि० [सं] इकट्ठा किया हुआ; घना; अभ्यास किया हुआ; यौ० —कर्म - पूर्वजन्म के वे कर्म जिनका फलभोग नहीं हुआ हो।

**संचिता** - 1. स्त्री० [सं] एक वनस्पति ; 2. वि० संचित की हुई, बटोरी हुई ।
**संजन** - पु० [सं] बंधन ; घनिष्ठ संपर्क ।
**संजनन** - 1. वि० [सं] उत्पन्न करनेवाला ; 2. पु० उत्पादन ; प्रगति ; रचना ।
**संजम** - पु० [हिं] संयम ।
**संजमी** - वि० [हिं] संयमी ।
**संजय** - 1. स्त्री० [सं] विजय ; 2. पु० एक प्रकार का व्यूह ; धृतराष्ट्र का एक पुत्र तथा एक सारथी ।
**संजर** - पु० [फ़ा] बादशाह ।
**संजल्प** - पु० [सं] वार्तालाप ; शोरगुल ; गप-शप ।
**संजा** - 1. स्त्री० [सं] बकरी ; 2. पु० [फ़ा] तराज़ू ; पासंग ; वज़न ।
**संजात** - वि० [सं] उत्पन्न ; व्यक्त ; व्यतीत ; **यौ०** —कोप - क्रुद्ध ; —कौतुक - चकित ; —निद्रा, प्रलय - जिसकी नींद समाप्त हो गयी हो ; —निर्वेद - विरक्त ; —लज्ज - लज्जित ।
**संजाफ़** - पु० [फ़ा] एक प्रकार का गोट लगाने का कपड़ा ; हाशिया ।
**संजाफ़ी** - वि० [फ़ा] हाशियादार ; जिसमें किनारी लगी हो ; **यौ०** —गंजा - वह गंजा जिसकी चँदिया पर ही बाल हों ।
**संजी** - स्त्री० [फ़ा] वज़न करना ।
**संजीदगी** - स्त्री० [फ़ा] संजीदा होना ; गांभीर्य ; शिष्टता ।
**संजीदा** - वि० [फ़ा] गांभीर्ययुक्त ; तुला हुआ ; शिष्ट ; समझदार ।
**संजीव** - पु० [सं] पुनरुज्जीवित करना ; पुनरुज्जीवित करनेवाला ; **यौ०** —करनी - पुनर्जीवित करने की विद्या ।
**संजीवन** - पु० [सं] पुनर्जीवित करना ; एक नरक ; साथ रहना ; आहार ; एक बूटी ।
**संजीवनी** - 1. स्त्री० [सं] मृत को जीवित करनेवाली एक कल्पित औषधि ; एक औषधि ; 2. वि० जीवन देनेवाली ; **यौ०** —विद्या - मृत व्यक्ति को जिलाने की एक कल्पित विद्या ।
**संजुग** - पु० [हिं] युद्ध, संग्राम ।
**संजुत** - वि० [हिं] मिला हुआ ; सहित ।
**संजूत** - वि० [हिं] तैयार ; सावधान ।
**सँजोइ** - अव्य० [हिं] संग, साथ में ।
**सँजोइल** - वि० [हिं] इकट्ठा हुआ ; सज्जित ।
**सँजोऊ** - पु० [हिं] तैयारी ; संयोग ; सामग्री ।
**संजोग** - पु० [हिं] संयोग ।
**संजोगी** - पु० [हिं] तीतर रखने के लिए साथ जुड़े हुए पिंजड़े ; अपनी प्रिया के साथ रहनेवाला व्यक्ति ।
**सँजोना** - स० [हिं] एकत्र करना ; पूरा करना ; संचित करना ; सजाना ।
**सँजोवल** - वि० [हिं] सन्नद्ध ; सजा हुआ ।
**संजोवा** - पु० [हिं] जमाव ; सजावट ।
**संजोह** - पु० [हिं] बाना कसने का हत्था ।
**संज्ञ** - वि० [सं] नामवाला ; चलते समय जिसके घुटने आपस में टकराते हो ; पूर्ण जानकार ; कोष में आया हुआ ।
**संज्ञक** - वि० [सं] नामवाला ।
**संज्ञप्त** - वि० [सं] बलि चढ़ाया हुआ ; सूचित किया हुआ ।
**संज्ञा** - स्त्री० [सं] ज्ञान ; इंगित ; नाम ; प्रज्ञा ; होश ; किसी व्यक्ति या वस्तु आदि का सूचक शब्द ; गायत्रीमंत्र ; **यौ०** —करण - नाम रखना ; —पुत्री - यमुना ; —हीन - बेहोश ।
**संज्ञात** - वि० [सं] अच्छी तरह जाना या समझा हुआ ।
**संज्ञापन** - पु० [सं] सूचित करना ; सिखलाना ; वध ।

**संज्ञावान** - वि० [सं] नामयुक्त ; होशवाला।

**संज्ञिका** - स्त्री० [सं] नाम।

**संज्ञित** - वि० [सं] संकेत द्वारा बतलाया हुआ ; अभिहित।

**संज्ञी** - 1. वि० [सं] चेतन ; नामधारी ; 2. पु० जीव।

**संज्वलन** - पु० [सं] ईंधन ; मंद कषाय (क्रोधादि)।

**सँझला** - वि० [हिं] मँझले से छोटा ; संध्या-संबंधी।

**सँझवाती** - 1. स्त्री० [हिं] विवाहादि में शाम को गाया जानेवाला गीत ; शाम को जलाया जानेवाला दीप ; 2. वि० संध्या-संबंधी।

**संझा** - स्त्री० [हिं] संध्या।

**संझोखा** - पु० [हिं] संध्याकाल।

**संठ** - पु० [हिं] चुप्पी ; शठ ; **मु०** —मारना - मौन रहना।

**संड** - पु० [हिं] साँड़ ; **यौ०** —मुसंड - मोटा-ताज़ा।

**सँड़सा** - पु० [हिं] गरम चीज़ें पकड़ने के काम आनेवाला एक कैंचीनुमा औज़ार।

**सँड़सी** - स्त्री० [हिं] छोटा सँड़सा।

**संडा** - वि० [हिं] मज़बूत ; मोटा-ताज़ा।

**संडाई** - स्त्री० [हिं] मशक-जैसा चमड़े का बना हुआ एक बड़ा थैला जिसमें हवा भरकर नाव की तरह इस्तेमाल करते हैं।

**संडास** - पु० [हिं] कुएँ-जैसा बना हुआ पाख़ाना।

**संत** - पु० [सं] गृहस्थाश्रम में प्रवेश करनेवाला साधु ; अंजलि ; महात्मा ; धर्मात्मा।

**संतत** - 1. अव्य० [सं] निरंतर ; हमेशा ; 2. वि० अविच्छिन्न ; फैलाया हुआ ; बराबर रहनेवाला ; बहुत ; 3. स्त्री० संतति।

**संतति** - स्त्री० [सं] ख़ास संतान ; अनुभूति ; कुल ; अविच्छिन्नता ; अविच्छिन्न पंक्ति या धारा आदि ; नैरंतर्य ; घनता ; कुल ; फैलाव ; राशि, **यौ०** —निरोध - कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान न होने देना।

**संतप्त** - 1. वि० [सं] जलता हुआ ; क्लांत ; झुलसा हुआ ; पिघला हुआ ; 2. पु० दुःख, शोक ; **यौ०** —हृदय - मनस्ताप-युक्त।

**संतरण** - 1. वि० [सं] उद्धारक ; पार करनेवाला ; 2. पु० पार करने की क्रिया।

**संतरा** - पु० [हिं] बड़ी नारंगी ; एक तरह का नींबू।

**संतर्जन** - पु० [सं] डाँट-डपट करना ; धमकाना ; भर्त्सना करना।

**संतर्पण** - पु० [सं] तृप्त करना ; ताज़गी लाना ; शक्तिवर्धक पदार्थ।

**संतान** - स्त्री० [सं] औलाद ; अविच्छिन्न क्रम ; पंक्ति या धारा आदि ; शाखा-प्रशाखा ; वंश ; विस्तार ; विचार-प्रवाह ; **यौ०** —कर्म - प्रजनन ; —संधि - विवाहसंबंध द्वारा होनेवाली संधि।

**संताप** - पु० [सं] कष्ट ; क्रोध ; ग्लानि ; अग्नि ; तेज़ गरमी ; प्रायश्चित्त ; **यौ०** —कर, कारी - कष्ट देनेवाला ; — हर, हारक - ताप दूर करनेवाला ; आराम देनेवाला ; सांत्वना देनेवाला।

**संतापना** - स० [हिं] पीड़ा या कष्ट देना।

**संतापी** - वि० [सं] कष्टकारक ; दुखद।

**संती** - अव्य० [हिं] द्वारा ; बदले में।

**संतुष्ट** - वि० [सं] तृप्त ; जिसे संतोष हो गया हो ; राज़ी।

**संतुष्टि** - स्त्री० [सं] इच्छापूर्ति ; तृप्ति ; प्रसन्नता ; संतुष्ट होने का भाव।

**संतोष** - पु० [सं] अंगूठा और तर्जनी ; जो मिले उसीसे प्रसन्न रहने का भाव ; तृप्ति ; प्रसन्नता।

**संतोषना** - 1. स० [हिं] संतुष्ट करना ; 2. अ० संतुष्ट होना ।

**संतोषी** - वि० [सं] संतुष्ट रहनेवाला ; सब्र करनेवाला ।

**संत्रस्त** - वि० [सं] बहुत डरा हुआ ; भय से काँपता हुआ ।

**संत्रास** - पु० [सं] भय ; आतंक ।

**संथा** - स्त्री० [हिं] पाठ, सबक ।

**संदंश** - पु० [सं] सँड़सी ; स्वर के उच्चारण में ओठों या दंतपंक्तियो को आपस में मिलाना ; शरीर के वे अंग जिनसे पकड़ने का काम लिया जाता है ; पुस्तक का खंड या अध्याय ।

**संदंशक** - पु० [सं] चिमटा ; सँड़सी ।

**संद** - पु० [हिं] छेद ; दबाव ।

**संदर्प** - पु० [सं] गर्व, घमंड ।

**संदर्भ** - पु० [सं] मौक़ा ; अर्थप्रकाशक ग्रंथ ; एक साथ बाँधना ; पिरोना ; बुनना ; व्यवस्थित करना ; संकलन करना ; संबन्धनिर्वाह ; साहित्यिक रचना (निबन्ध आदि) ; यौ० —विरुद्ध - जिसमें संबन्ध का निर्वाह न हुआ हो ।

**संदर्श** - पु० [सं] दृश्य ।

**संदर्शन** - पु० [सं] अच्छी तरह देखना ; टकटकी लगाये देखना ; दिखलाने की क्रिया ; नज़र ; परस्पर मिलन ; पर्यवेक्षण ; सूरत ।

**संदल** - पु० [अ] चन्दन ; यौ० —का बुरादा - चंदन का चूरा ।

**संदली** - 1. वि० [अ] चंदन का ; चंदन के रंग का ; 2. स्त्री० ऊँची तिपाई जिसपर चढ़कर दीवार पर चूना आदि पोतते हैं ; चौकी ।

**संदाह** - पु० [सं] जलना ; मुख या ओंठ आदि की जलन ।

**संदि** - स्त्री० [हिं] मेल ; संधि ।

**संदिग्ध** - 1. वि० [सं] अनिश्चित ; आवृत ; अस्पष्ट कथन, अनिश्चय ; लेपन ; व्यंग्य का एक प्रकार ; जो ख़तरे से ख़ाली न हो ; 2. पु० वह व्यक्ति जिसके अपराधी होने का संदेह हो ; यौ० —निश्चय - जिसे किसी बात पर दृढ़ होने में हिचक हो ; —बुद्धि, मति - जो हर बात में संदेह व्यक्त करता हो ।

**संदिष्ट** - 1. वि० [सं] कहा हुआ ; निर्दिष्ट ; वादा किया हुआ ; 2. पु० संवाद ; संवादवाहक ।

**संदी** - स्त्री० [सं] आसंदी, खाट, पलंग ।

**संदीपक** - वि० [सं] उद्दीपक ।

**संदीपन** - 1. पु० [सं] उद्दीपन ; कामदेव के पाँच बाणों में से एक ; कृष्ण के गुरु ; 2. वि० उद्दीप्त करनेवाला ।

**संदीपनी** - स्त्री० [सं] पंचम स्वर की एक श्रुति ।

**संदीप्त** - वि० [सं] उकसाया हुआ ; उद्दीप्त ; प्रज्ज्वलित ।

**संदूक़** - पु० [अ] कपड़े आदि रखने के काम आनेवाला लकड़ी या लोहे का बक्स ; ताबूत ।

**संदूकचा** - पु० [हिं] छोटा संदूक़ ।

**संदूकची, संदूकड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा संदूक़ ।

**संदूक़ी** - वि० [अ] संदूक़ की शक्ल का, यौ० —क़ब्र - सीधी खुदी हुई क़ब्र ।

**संदूषण** - पु० [सं] कलुषित या ख़राब करना ।

**संदूषित** - वि० [सं] ख़राब किया हुआ ; निंदित ; जिसकी हालत और ख़राब हो गयी हो ।

**संदष्ट** - 1. वि० [सं] काटा या दबाया हुआ ; 2. दंतपंक्तियों को सटाकर रखने से होनेवाला एक उच्चारणदोष ।

**संदेश** - पु० [सं] आदेश ; उपहार ; संवाद ; यौ० —वाहक, हारक, हारी - संवाद ले जानेवाला ।

**संदेशक** - पु० [सं] संवाद ।

**संदेशा** - पु० [हिं] खबर, संवाद ।

**संदेशी** - पु० [स] दूत, संदेशवाहक ।

**संदेह** - पु० [स] शक ; खतरा ; एक अर्थालंकार ; यौ० —गंध - संदेह की झलक ; —दायी - संदेह उत्पन्न करनेवाला ; —दोला - दुविधा ।

**संदोह** - पु० [स] दुहना ; साथ दुहना ; सारा दूध (पूरे झुंड का) ; प्राचुर्य ; राशि ।

**संधना** - अ० [हिं] मिलना या संयुक्त होना ।

**संधान** - पु० [सं] जोड़ना या मिलाना ; निशाना लगाना ; लक्ष्य ; योग ; मिश्रण ; संगठन ; सुधार ; दिशा ; ध्यान ; सँभालना ; संधि ; मदिरा चुलाना ; पीने की इच्छा ; उत्तेजित करनेवाली चटपटी चीज़ें ; अनुभूति ; मैत्री ; सीमा ; काँजी ; अन्वेषण ; काँसा ; यौ० —कर्ता - जोड़नेवाला ; मिलानेवाला ।

**संधानना** - स० [हिं] निशाना लगाना ; चलाने के लिए कोई अस्त्र ठीक करना ।

**संधाना** - पु० [हिं] अचार ।

**संधारण** - पु० } [सं] रोकना ; आचरण
**संधारणा** - स्त्री० } करना ; सहन करना ।

**संधि** - स्त्री० [सं] मेल ; दोस्ती ; समझौता ; सुलह ; छेद ; शरीर का जोड़ ; विभाग ; सेंध ; एक तरह का वर्णविकार ; परिवर्तनकाल ; बिराम ; अवसर ; युगांतरकाल ; नाटक की पाँच अवस्थाओं को मिलानेवाले स्थल, मुखसंधि आदि ; तारुण्य व कैशोर आदि अवस्थाओं का योग ; वय:संधि ; यौ० —कुशल - मैत्री-स्थापन में कुशल ; —गुप्त - शत्रु पर छापा मारने के लिए सैनिकों के छिपकर बैठने का स्थान ; —गृह - मधुमक्खी का छत्ता ; —चोर, चौर - सेंध लगाकर चोरी करनेवाला ; —च्छेद, छेदन - सेंध मारना ; संधि की शर्तें तोड़नेवाला ; — जीवक - स्त्रियों को पुरुषों से मिलाकर जीविका अर्जन करनेवाला ; —दूषण - सुलह तोड़ देना ; —बंधन - नस, सिरा ; —भंग, भुक्ति - किसी जोड़ का संबंध छूट जाना ; —राग - सिंदूर ; संध्या की लालिमा ; —विग्रहक, विग्रहिक - संधि और युद्ध का निर्णायक मंत्री ; —विचक्षण - संधि की बातें करने में कुशल ; —वेला - संध्या ; वह समय जिसमें दो समयों का मेल हो ; —शूल - आत्मघात ।

**संधिक** - पु० [सं] जोड़ ; एक तरह का ज्वर ।

**संधी** - पु० [सं] संधि इत्यादि का काम करनेवाला मंत्री ।

**संधेय** - वि० [सं] जोड़ने या मिलाने योग्य ; शांत करने योग्य ।

**संध्या** - स्त्री० [सं] सुबह, दोपहर या शाम का वह समय जब दिन के भागों का मेल होता है ; योग ; दो युगों का बीच का समय ; दिन का कोई भाग ; विचारणा ; वादा ; सीमा ; साँझ ; यौ० —कार्य - संध्योपासन ; —कालिक - संध्याकाल-संबन्धी ; —राग - शाम की लालिमा ; शाम को गाया जानेवाला राग ; सिंदूर ; —वंदन - संध्योपासन ।

**संध्यासन** - पु० [सं] पारस्परिक संघर्ष से शत्रुपक्ष का दुर्बल हो जाना ।

**संध्योपासन** - पु० [सं] संध्या के समय की जानेवाली पूजा आदि ।

**संपत्, संपत्ति** - स्त्री० [सं] अभ्युदय ; ऐश्वर्य ; अस्तित्व ; अच्छी अवस्था ; अनुकूलता ; धन ; प्राचुर्य ; लाभ ; सफलता ; सिद्धि ; एक कला ।

**संपद** - 1. वि० [सं] संपन्न, 2. पु० पैरों को बराबर या साथ रखकर खड़ा होना ।

**संपदा** - स्त्री० [हिं] ऐश्वर्य ; धन-संपत्ति ।

**संपद्** - स्त्री० [सं] उद्देश्यप्राप्ति ; अभ्युदय ; अलंकरण; खज़ाना ; सफलता की स्थिति; संपत्ति ; सामंजस्य ; सिद्धि ; समृद्धि ; पूर्णता ; बाहुल्य ; सद्गुणों की वृत्ति ; सही ढंग ; गौरव ; सौभाग्य ; कांति ; सौन्दर्य ; यौ०—वर - राजा ।

**संपन्न** - 1. वि० [सं] उन्नतिशील ; कृत-काम ; पूरा किया हुआ ; पूर्णतः विकसित ; पूर्ण ; प्राप्त ; जानकार; भाग्य-वान ; धनी ; विकसित ; 2. पु० शिव ; सुस्वादु भोजन ; संपत्ति ; यौ०—क्षीरा - अच्छा दूध देनेवाली ।

**संपराय** - पु० - [सं] अनादिकालीन अस्तित्व ; मृत्यु ; भविष्य ; युद्ध ; संकट ।

**संपर्क** - पु० [सं] मिलना ; मिश्रण ; जोड़ ; मैथुन ; संगति ; स्पर्श ।

**संपा** - स्त्री० [सं] बिजली ; साथ पान करना ।

**संपात** - पु० [सं] एक साथ गिरना या मिलना ; टक्कर ; तलछट ; पतन ; पक्षियों की उड़ान का एक ढंग ; चिड़ियों का उतरना ; मिलनस्थान ; घटित होना ; युद्ध का एक ढंग ।

**संपाद** - पु० [सं] कार्यसाधन ; प्राप्ति ।

**संपादक** - 1. वि० [सं] उत्पन्न करनेवाला ; प्राप्त करनेवाला ; प्रस्तुत करनेवाला ; 2. पु० दूसरे की रचना शुद्ध कर प्रकाशन के योग्य बनानेवाला व्यक्ति ; सामयिक या दैनिक पत्र आदि का संपादन या संचालन करनेवाला व्यक्ति ।

**संपादकीय** - वि० [सं] संपादक-संबंधी ।

**संपादन** - पु० [सं] क्रम आदि ठीक करना ; ग्रंथ आदि को ठीक कर प्रकाशन के योग्य बनाना ; पूरा करना ; प्रस्तुत करना ; सामयिक या दैनिक पत्र को विषय आदि की दृष्टि से ठीक करना और उसका संचालन करना ; यौ० —कला - पत्र-पत्रिकाएँ या पुस्तकें आदि संपादित करने की विशेष कला ।

**संपादित** - वि० [सं] तैयार किया हुआ ; प्रकाशन के योग्य बनाया हुआ (ग्रंथ आदि) ; पूरा किया हुआ ।

**संपिष्ट** - वि० [सं] कुचला हुआ ; चूर्ण किया हुआ ; नष्ट किया हुआ ।

**संपीडन** - पु० [सं] कष्ट देना ; क्षुब्ध करना ; दबाना ; दंड ; निचोड़ना ; भेजना ।

**संपीडा** - स्त्री० [सं] कष्ट, दुःख ।

**संपुट** - 1. पु० [सं] अंजलि ; कटोरे-जैसी कोई वस्तु ; दोना ; रसादि फूँकने का मिट्टी का बना पात्र ; बाकी, उधार ; रत्नमंजूषा ; गोलार्ध ; घुँघरू ; पुष्पकोश ; 2. वि० बंद ।

**संपुटक** - पु० [सं] आवरण ; गोल मंजूषा ।

**संपुटी** - स्त्री० [हिं] प्याली, छोटी कटोरी या तश्तरी ।

**संपूजन** - पु० [सं] बहुत अधिक सम्मान करना ।

**संपूज्य** - वि० [सं] बहुत आदरणीय ।

**संपूरण** - पु० [सं] अच्छी तरह पेट भर लेना ; खूब भर लेना ।

**संपूर्ण** - 1. वि० [सं] सारा ; अतिशय ; भरा-पूरा ; संपन्न ; 2. पु० आकाशतत्त्व ; शुभ शकुनसूचक एक खंजन ; एक

राग जिसमें सातो स्वर लगते हैं ; यौ० —काम - जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो ; —लक्षण - पूर्णसंख्यक ; —विद्य - विद्या से पूर्ण ।

**संपूर्णतः, संपूर्णतया** - अव्य० [सं] अच्छी तरह ; पूर्ण रूप से ।

**संपृक्त** - वि० [सं] मिश्रित ; खचित ; भरा हुआ ; संपर्क में आया हुआ ; संबद्ध ; संयुक्त ।

**संपृष्ट** - वि० [सं] जिससे प्रश्न किये गये हो ।

**सँपेरा** - पु० [हिं] साँप पकड़ने, पालने या उनका तमाशा दिखालनेवाला ।

**सँपोला** - पु० [हिं] साँप का बच्चा ।

**सँपोलिया** - पु० [हिं] साँप पकड़नेवाला ।

**संप्रज्ञान** - वि० [हिं] अच्छी तरह जाना हुआ ; यौ० —योगी - वह योगी जिसका विषय-बोध बना हुआ हो ; —समाधि - समाधि का एक भेद जिसमें विषयों का बोध बना रहता है ।

**संप्रति** - अव्य० [सं] वर्तमान समय में ; ठीक-ठीक ; ठीक ढंग से ; ठीक समय पर ; सामने ।

**संप्रतिपत्ति** - स्त्री० [सं] प्रत्युत्पन्नमतित्व, हाज़िरजवाबी ; सही ज्ञान ; पहुँच ; उपस्थिति ; मतैक्य ; स्वीकृति ; आक्रमण ; पूरा करना ; सहयोग ; विशेष प्रकार का उत्तर ।

**संप्रतीत** - वि० [सं] कृतसंकल्प ; ज्ञात ; पूर्ण विश्वासी ; प्रसिद्ध ; लौटा हुआ ; विनम्र ।

**संप्रतीति** - स्त्री० [सं] पूर्ण ज्ञान ; विनय ; पूर्ण विश्वास ।

**संप्रत्यय** - पु० [सं] दृढ विश्वास ; धारणा ; यथार्थ बोध ; स्वीकृति ।

**संप्रदान** - पु० [सं] देना ; दान ; चंदा ; भेंट ; शिक्षण ; ब्याह देना ; चतुर्थ कारक (व्या०) ।

**संप्रदाय** - पु० [सं] विशेष धार्मिक मत ; परंपरागत विश्वास या प्रथा ; देनेवाला या नज़र करनेवाला ; गुरुपरंपरा से प्राप्त मंत्र या सिद्धांत आदि ; यौ० —प्राप्त - परंपराप्राप्त ; —विद् - परंपरागत विश्वासो या प्रथाओ का जानकार ।

**संप्रदिष्ट** - वि० [सं] विशेष रूप से ज्ञात ; स्पष्ट रूप से निर्देश किया हुआ ।

**संप्रधान** - पु० [सं] निश्चय ; विचार ।

**संप्रधारण** - [सं] उचित-अनुचित का निश्चय करना ; निर्णय ; विचार ।

**संप्रपन्न** - वि० [सं] पहुँचा हुआ ; प्रविष्ट ।

**संप्रयुक्त** - वि० [सं] अच्छी तरह जोता हुआ ; युक्त ; भिड़ा हुआ ; आबद्ध ; आदी ; दत्तचित्त ; निर्भर ; प्रयोग में लाया हुआ ; प्रेरित ; संलग्न ; संपर्क में आया हुआ ; संबद्ध ; मैथुनरत ।

**संप्रयोग** - पु० [सं] जोड़ना ; जादू ; क्रमबद्ध व्यवस्था ; आपस का संबन्ध ; चंद्रमा और शशि का योग ; मेल ; संपर्क ; मैथुन ; समागम ।

**संप्रयोजन** - पु० [सं] मिलाना; एकत्र करना ।

**संप्रवर्तक** - पु० [सं] चालू या जारी करनेवाला ; आगे बढ़ानेवाला ; निर्माण करनेवाला ।

**संप्रवाह** - पु० [सं] अविच्छिन्न क्रम ; अजस्र धारा ।

**संप्रवृत्त** - वि० [सं] उपस्थित ; आरब्ध ; व्यतीत ; संलग्न ; प्रस्तुत ; आगे बढ़ा हुआ ।

**संप्रशांत** - वि० [सं] मृत ; लुप्त ।

**संप्रश्न** - पु० [सं] जाँच ; पूछ-ताछ ।

**संप्रसाद** - पु० [सं] अनुग्रह ; आत्मा ; गंभीरता ; पूर्ण शांति ; विश्वास ।

**संप्रसाधन** - पु० [सं] शृंगार का साधन; सम्पन्न करना।

**संप्रसिद्धि** - स्त्री० [सं] सफलता; सौभाग्य।

**संप्राप्त** - वि० [सं] अच्छी तरह प्राप्त; उत्पन्न; घटित; प्रस्तुत; पहुँचा हुआ; यौ० —यौवन - बालिग़, युवा।

**संप्राप्ति** - स्त्री० [सं] उदय, पहुँच; लाभ; सम्यक् प्राप्ति।

**संफाल** - पु० [सं] भेड़।

**संफुल्ल** - वि० [सं] पूर्ण विकसित।

**संफेट** - पु० [सं] क्रुद्ध व्यक्तियों का आपस में लड़ जाना; विमर्श के तेरह भेदों में से एक (न्या०)।

**संबंध** - पु० [सं] रिश्ता; मेल; मैत्री; औचित्य; उन्नति; योग; विवाह; साथ; ग्रंथ; मित्र; रिश्तेदार; सिद्धांत का हवाला; छठा कारक (व्या०)।

**संबंधक** - 1. वि० [सं] उपयुक्त; संबंधी; 2. पु० रक्त या विवाह का संबंध; मित्र; मैत्री; रिश्तेदार; विवाह के द्वारा होनेवाली संधि।

**संबंधयिता** - वि० [सं] संबंध स्थापित करनेवाला।

**संबंधी** - 1. वि० [सं] संबंध रखनेवाला; सद्‌गुणसंपन्न; विषय का; 2. पु० रिश्तेदार; समधी।

**संबद्ध** - वि० [सं] अर्थ-संबंध रखनेवाला; संपन्न; संलग्न; संबंधी; साथ जुड़ा या बँधा हुआ; यौ० —दर्प - गर्व-युक्त।

**संबर** - पु० [सं] पुल; नियंत्रण; एक धार्मिक अनुष्ठान; जल; एक दैत्य।

**संबरना** - स० [हिं] रोकना।

**संबल** - पु० [सं] जल; पाथेय।

**संबाध** - 1. वि० [सं] ठसा हुआ; तंग; भरा हुआ; 2. पु० कष्ट; कठिनाई; ख़तरा; तंग जगह; नरकपथ; बाधा; भीड़; भग।

**संबाधक** - वि० [सं] कष्ट या बाधा पहुँचानेवाला; तंग करनेवाला; दबानेवाला; भीड़ लगानेवाला।

**संबी** - स्त्री० [हिं] फली।

**संबुक** - पु० [हिं] घोंघा।

**संबुद्ध** - 1. वि० [सं] ज्ञानी; पूर्णतः ज्ञात; पूर्णतः जाग्रत; 2. पु० जिन; बुद्ध।

**संबुद्धि** - स्त्री० [सं] पूरी चेतना; अपनी बात सुनाना; पूर्ण बोध या ज्ञान; संबोधनकारक या उसकी विभक्ति (व्या०); उपाधि।

**संबोध** - पु० [सं] पूर्ण ज्ञान; नाश; ढाढस; फेंकना; भेजना; समझाना।

**संबोधन** - पु० [सं] जगाना; समझाना; संबोधन करने में प्रयुक्त की जानेवाली उपाधि; संबोधित करना; आकाशभाषित (नाटक); आठवाँ कारक (व्या०)।

**संबोधना** - स० [हिं] समझाना; सांत्वना देना।

**संबोधि** - स्त्री० [सं] पूर्ण ज्ञान।

**संभर** - 1. वि० [सं] भरण-पोषण करनेवाला; 2. पु० साँभर झील।

**संभरण** - पु० [सं] पालन-पोषण; तैयारी; रचना; समूह; साथ रखना।

**सँभरना** - अ० [हिं] सँभलना।

**संभल** - पु० [सं] कुटना; घटक; विवाहार्थी पुरुष।

**सँभलना** - अ० [हिं] काबू में रहना; रुकना; अपनी बिगड़ती हुई स्थिति ठीक कर लेना; टिका रहना; सावधान होना; चोट आदि से बचाव करना; स्वस्थ होना।

**सँभला** - पु० [हिं] बिगड़कर सुधरी हुई फ़सल।

**संभली** - स्त्री० [सं] कुट्टनी, दूती।

**संभव** - 1. पु० [सं] अस्तित्व ; उत्पत्ति और पोषण ; कारण ; घटना ; अपाय ; उपयुक्तता ; घटित होना ; मिलन ; क्षमता ; मैथुन ; संभावना ; संकेत ; संयोग ; संगति ; समानता ; नाश ; परिचय ; 2. वि० जिसकी सत्ता हो।

**संभवतः** - अव्य० [सं] संभव है ; हो सकता है, शायद।

**संभवन** - पु० [सं] उत्पन्न होने की क्रिया ; घटित होना।

**संभवना** - 1. स० [हिं] पैदा करना ; 2. अ० पैदा होना ; संभव होना।

**संभवनीय, संभवी** - वि० [सं] मुमकिन ; हो सकनेवाला।

**संभार** - पु० [सं] एकत्र करना ; उपकरण ; तैयारी ; अतिशयता ; पालन-पोषण ; परिमाण ; पूर्णतः ; संपत्ति ; समूह।

**सँभार** - पु० [हिं] रोकथाम ; पालन-पोषण ; देखभाल ; तैयारी ; समूह ; संपत्ति।

**सँभारना** - स० [हिं] सँभालना ; स्मरण करना।

**सँभाल** - स्त्री० [हिं] देखभाल ; पोषण आदि का भार ; व्यवस्था ; होश।

**सँभालना** - स० [हिं] पालन करना ; ग्रहण करना ; क़ाबू में रखना ; रक्षा करना ; रोकथाम करना ; सहारा देना ; प्रबन्ध करना ; भार उठाना ; संयत करना ; सहायता देना।

**सँभाला** - पु० [हिं] मरने के पहले की चेतनावस्था।

**संभावन** - 1. वि० [सं] किसीके प्रति आदरभाव रखनेवाला ; 2. पु० आदरभाव ; उपयुक्तता ; अनुमान ; एकत्र करना ; मिलन ; प्रसिद्धि ; मुमकिन होना ; योग्यता ; विचारणा ; प्रेम ; संदेह।

**संभावना** - स्त्री० [सं] संभावन, मुमकिन।

**संभावनीय** - वि० [सं] कल्पना के योग्य ; भाग लेने योग्य ; मुमकिन ; पूज्य।

**संभावित** - वि० [सं] मुमकिन ; उपयुक्त ; विचारित ; आदृत ; गृहीत ; प्राप्त ; तुष्ट ; प्रस्तुत किया हुआ ; सम्मानित।

**संभाव्य** - 1. वि० [सं] आदरणीय ; योग्य ; उपयुक्त ; मुमकिन ; विचारणीय ; 2. पु० मनु का एक पुत्र ; उपयुक्तता ; योग्यता।

**संभाषण** - पु० [सं] बातचीत ; प्रहरी का संकेत-शब्द ; मैथुन।

**संभाषी** - वि० [सं] बात कहनेवाला।

**संभाष्य** - वि० [सं] बात करने योग्य।

**संभुक्त** - वि० [सं] उपभोग किया हुआ ; खाया हुआ ; अतिक्रांत ; प्रयोग में लाया हुआ।

**संभूत** - वि० [सं] उत्पन्न ; रचित ; उपयुक्त ; युक्त ; संपन्न ; समान।

**संभूय** - अव्य० [सं] साझे में ; साथ होकर ; आपस में मिलकर ; यौ० —कारी - सहयोगी ; —क्रय - थोक माल की ख़रीद-बिक्री ; —गमन, यान - सबका मिलकर आक्रमण करना।

**संभृत** - 1. वि० [सं] एकत्र किया हुआ ; केन्द्रित ; उत्पादित ; रखा या जमा किया हुआ ; प्राप्त ; तैयार किया हुआ ; पूर्ण ; सारा ; भरा हुआ ; पूजित ; 2. पु० चीखने की आवाज़ ; यौ० —श्रुत - विद्वान ; —स्नेह - प्रेम से युक्त।

**संभेद** - पु० [सं] अलग होकर गिरना ; टूटना ; ढीला होना ; पार्थक्य ; फूट पैदा करना ; भिदना ; एकरूपता ; प्रकार ; मिलन ; नदियों का मिलना ; विकसित होना ; संसर्ग।

**संभेदन** - पु० [सं] जुटाना ; छेदना ; तोड़ना , विदारण ।

**संभेद्य** - वि० [सं] भेदन करने योग्य ; छेदने योग्य ; भिड़ाने योग्य ।

**संभोक्ता** - पु० [सं] उपभोग करनेवाला ; खानेवाला ।

**संभोग** - पु० [सं] उपभोग ; शृंगाररस का एक भेद ; किसी चीज़ में आनंद लेना ; मैथुन ; लंपट ; क़ब्ज़ा ; यौ०—क्षम - उपभोग के उपयुक्त ।

**संभोगी** - वि० [सं] उपभोग करनेवाला ; कामुक ; व्यवहार में लानेवाला ।

**संभोग्य** - वि० [सं] काम में लाने योग्य ; भोग करने योग्य , व्यवहार्य ।

**संभोज** - पु० [सं] भोजन ।

**संभोजन** - पु० [सं] दावत ; बहुतों के साथ खाना ; भोजन ।

**संभोजनी** - स्त्री० [सं] साथ खाना ।

**संभ्रम** - 1. पु० [सं] उतावली ; उत्साह ; आदर ; चक्कर खाना ; घबड़ाहट ; हलचल ; ग़लती ; सम्मान ; अज्ञान ; शोर ; सौन्दर्य ; 2. वि० क्षुब्ध ; घूमता या नाचता हुआ; 3. अव्य० उतावली में।

**संभ्रांत** - वि० [सं] उत्तेजित ; घबड़ाया हुआ ; चक्कर खाया हुआ ; समादृत ; स्फूर्तियुक्त ; यौ०—जन - आदरणीय व्यक्ति ।

**संभ्रांति** - स्त्री० [सं] उतावली ; घबड़ाहट ; चकपकाहट ।

**संयत** - 1. वि० [सं] जितेन्द्रिय, संयमी ; रोका हुआ ; क़ैद किया हुआ ; बंद किया हुआ ; उद्यत ; व्यवस्थित किया हुआ ; सीमित ; 2. पु० यति ; यौ०—चेता, मना - जिसका मन या चित्तवृत्ति नियंत्रित हो ; —प्राण - प्राणायाम करनेवाला ; —मुख, वाक् - मितभाषी ।

**संयताक्ष** - वि० [सं] जिसकी आँखें मुँदी हों ।

**संयम** - पु० [सं] इंद्रियनिग्रह ; नियंत्रण ; ध्यान, धारणा और समाधि ; प्रयत्न ; दमन ; तपश्चर्या ; दूसरों के प्रति सद्भाव ; धार्मिक अनुष्ठान या व्रत , नाश ; प्रलय ; बंद करना ; बाँधना ; बुरी वस्तुओं से परहेज़ ।

**संयमक** - वि० [सं] संयम या निग्रह करनेवाला ।

**संयमन** - पु० [सं] आत्मनिग्रह ; क़ैद करना ; खींचना ; जकड़ना ; चार मकानों से बननेवाला प्रांगण ; आत्मनिग्रह करनेवाला व्यक्ति ; दमन ।

**संयमित** - वि० [सं] दमन किया हुआ ; कारावद्ध ; एकत्र किया हुआ ; पकड़ा हुआ ; धार्मिक प्रवृत्तिवाला ; बँधा हुआ ; रोक रखा हुआ ।

**संयमी** - 1. वि० [सं] जितेन्द्रिय ; निग्रह करनेवाला ; बँधा हुआ ; 2. पु० ऋषि ; यति ।

**संयाव** - पु० [सं] दूध और घी के योग से आटे का बना हुआ एक तरह का पकवान ।

**संयुक्त** - वि० [सं] मिला हुआ ; जड़ा हुआ ; सहित ; संबंधी ; संबद्ध ।

**संयुग** - पु० [सं] भिड़ंत ; युद्ध ; संयोग ।

**संयुत** - वि० [सं] संयुक्त ।

**संयोग** - पु० [सं] घनिष्ट संपर्क ; मिलन ; मैथुन ; विवाहजन्य संबंध ; नैयायिकों और वैशेषिकों के चौबीस गुणों में से एक ; युक्त ; मतैक्य ; व्यंजन-वर्णों का मेल ; किसी कार्य में संलग्न होना ; दो आकाशी पिंडों का योग ; इत्तफ़ाक ; जोड़ ; योगफल ; शृंगार-रस का एक भेद ; यौ० —मंत्र - विवाहसंबंधी

मत्र ; —संधि - आक्रमण के बाद सामान्य उद्देश्य से की जानेवाली संधि ।

**संयोगी** - वि० [सं] मिलनेवाला ; विवाहित ; प्रिया से युक्त ; घनिष्ठ संबंधवाला ।

**संयोजक** - 1. वि० [स] घटित करनेवाला ; जोड़ने या मिलानेवाला ; शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला ; 2. पु० सभा-समिति आदि की बैठक का आयोजन करनेवाला ।

**संयोजन** - पु० [स] जोड़ने या मिलाने की क्रिया ; सांसारिक बंधन में बाँधनेवाला ।

**संयोजित** - वि० [सं] जोड़ा या मिलाया हुआ ।

**संरंभ** - पु० [सं] आतुरता ; उग्रता; उत्तेजन; उत्कट इच्छा ; क्रोध ; ग्रहण ; आक्रमण की प्रचंडता ; आरंभ ; घमंड ; जोश ; फोड़े का शोथ और जलन ।

**संरक्ष** - पु० [सं] रक्षा, देखभाल ।

**संरक्षक** - पु० [सं] आश्रयदाता ; देखभाल या निरीक्षण करनेवाला ; पालक ; रक्षा करनेवाला ।

**संरक्षण** - 1. पु० [सं] निरीक्षण ; रक्षा करने की क्रिया ; प्रतिबंध ; 2. वि० देखभाल करनेवाला ।

**संरक्षणीय** - वि० [सं] रक्षा करने योग्य ; सुरक्षित रखने योग्य ।

**संरब्ध** - वि० [सं] उत्तेजित ; अभिभूत ; क्रुद्ध ; वर्धित ; सूजा हुआ ; परस्पर गृहीत ।

**सँरसी** - स्त्री० [हिं] मछली फँसाने की कँटियाँ, बँसी ; सँड़सी ।

**संराग** - पु० [सं] क्रोध ; अनुरक्ति ; लालिमा ।

**संराधक** - पु० [सं] ध्यान या पूजा करनेवाला ।

**संरुद्ध** - वि० [सं] घिरा हुआ ; अवरुद्ध ; रुका हुआ ; रोका हुआ ; अस्वीकृत ; ढका हुआ ; जिसपर घेरा डाला गया हो ; बंद ; यौ० —चेष्ट - जिसकी चेष्टा या गति रोक दी गयी हो ।

**संरोदन** - पु० [सं] ढाड़ें मारकर रोना ।

**संरोध** - पु० [सं] घेरा ; बाधा ; बंधन ; कैद ; क्षति ; नाश , फेंकना ; प्रतिबंध ।

**संरोपण** - पु० [सं] घाव भरना ; पौधा या पेड़ लगाना ।

**संरोह** - पु० [सं] घाव का भरना ; जमना ; फूटकर निकलना ; व्यक्त होना ।

**संरोहण** - 1. पु० [सं] घाव का भरना ; बढ़कर ऊपर छाना ; जमाना, रोपना, लगाना (पौधा) ; 2. वि० मरने या सूखनेवाला ।

**संलक्षण** - पु० [स] पहचानना ; विशेष चिन्हों द्वारा भेद स्पष्ट करना ।

**संलक्षित** - वि० [सं] पहचाना हुआ ; लक्षणों से जाना हुआ ।

**संलग्न** - वि० [सं] लीन ; सटा या बिलकुल लगा हुआ ।

**संलाप** - पु० [सं] वार्तालाप ; आवेगरहित कथोपकथन ; पारस्परिक या गुप्त वार्तालाप ।

**संलापी** - वि० [सं] वार्तालाप करनेवाला ।

**संलीन** - वि० [सं] अच्छी तरह लीन ; ढका हुआ ; लगा हुआ ; संकुचित ; यौ० —मानस - खिन्न ।

**संवत्** - पु० [सं] सन्, वर्ष, साल ; विक्रम संवत्सर ; वर्षगणना का कोई वर्ष ।

**संवत्सर** - पु० [सं] पंचवर्षीय युग का प्रथम वर्ष ; विक्रम संवत् ; सन् ।

**संवत्सरीय** - वि० [सं] हर साल होनेवाला, वार्षिक ।

**संवनन** - पु० } [सं] यंत्र-मंत्र से वश में
**संवनना** - स्त्री० } करना ; प्राप्ति ।

**संवर** - 1. पु० [सं] मनोनिग्रह ; रोकना ; अशुभ वृत्तियो की ओर चित्त की उदासीनता ; पुल , बाँध ; सामान , जैनो और बौद्धो का एक व्रत ; चुनना ; पति चुनना ; सहिष्णुता , अनुभूति ; जल ; ढकना ; संकोचन ; 2. स्त्री० [हिं] स्मृति ; हाल ।

**संवरण** - पु० [सं] निग्रह ; छिपाना ; आवरण ; गुप्त भेद ; घेरा ; रोकना ; बंद करना ; बहाना करना ; पति चुनना ; पसंद करना ; यौ० —शील - रोकने की शक्तिवाला ।

**सँवरना** - 1. अ० [हिं] सज्जित होना ; ठीक होना ; 2. स० स्मरण करना ।

**सँवरिया** - 1. वि० [हिं] साँवला ; 2. पु० कृष्ण ।

**संवर्त** - पु० [सं] नाश ; जल-भरा बादल ; नियत समय पर होनेवाला प्रलय ; घुमाव ; प्रलय के सात बादलों में से एक ; राशि ; समूह ; गोला ; मुक़ाबला करना ; लपेटी हुई नयी पत्ती ; बहेड़ा ।

**संवर्ति, संवर्तिका** - स्त्री० [सं] कमल की बँधी हुई पत्ती ; दीपशिखा ; पद्मकेसर के पास का पत्ता ; पत्ती लिपटी हुई वस्तु ।

**संवर्धक** - वि० [सं] अतिथिपरायण ; बढ़ानेवाला ।

**संवर्धन** - 1. वि० [सं] बढ़ानेवाला ; 2. पु० बढ़ना ; बढ़ाने का साधन ; उन्नत करना ; उन्नत होना ; पालन-पोषण करना ।

**संवर्धनीय** - वि० [सं] बढ़ने या बढ़ाने योग्य ; पालन करने योग्य ।

**संवलित** - वि० [सं] मिलित ; मिश्रित ; संयुक्त ; चूर्णित ; तर किया हुआ ; परिवेष्टित ; भिड़ा हुआ ।

**संवसथ** - पु० [सं] ग्राम ; मकान ; बस्ती ।

**संवह** - पु० [सं] अग्नि की सात जिह्वाओ में से एक ; आकाश के सात मार्गों में से तीसरे में चलनेवाली वायु , ले जानेवाला ।

**संवहन** - पु० [सं] दिखलाना ; नेतृत्व करना ; ले जाना ।

**सँवा** - वि० [हिं] समान ।

**संवाच्य** - पु० [सं] बात करने का तरीक़ा ।

**संवाद** - पु० [सं] बहस ; वार्तालाप ; ठहराव ; दावा ; वाद-विवाद ; संदेश , सहमति ; यौ० —दाता - समाचार भेजनेवाला ।

**संवादक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] बात करनेवाला ; वाद्य बजानेवाला ; सहमत होनेवाला ।

**संवादन** - पु० [सं] एकराय होना ; बजाना ; राजी होना ; वार्तालाप करना ।

**संवादित** - वि० [सं] राजी किया हुआ ; वार्तालाप में प्रवृत्त किया हुआ ।

**संवादी** - वि० [सं] बात करनेवाला ; सदृश ; सहमत होनेवाला ।

**संवार** - पु० [सं] छिपाना , उच्चारण में कंठ का संकोच ; बाधा ; रचना ; व्यवस्थित करना ; संरक्षण ; समाचार ; ह्रास ।

**संवारण** - पु० [सं] छिपाना ; मना करना ; रोकना ; हटाना ।

**सँवारना** - स० [हिं] ठीक करना ; सँभालना ; सुसज्जित करना ।

**संवास** - पु० [सं] रहने का स्थान ; बस्ती ; मिलना-जुलना ; मैथुन ; सभा-खेल आदि का सार्वजनिक स्थान ; समाज ; साथ बसना ।

**संवाह** - पु० [सं] ढोना या ले जाना ; उत्पीड़न ; बदन दबाना ; बदन दबानेवाला नौकर ; पण्यस्थान ; सात वायुओं में से एक ।

**संवाहक** - 1. पु० [सं] नौकर ; बदन दबानेवाला ; ले जानेवाला ; 2. वि० गति प्रदान करनेवाला ।

**संविज्ञ** - वि० [सं] अच्छी जानकारी रखनेवाला ।

**संविज्ञात** - वि० [सं] सर्वज्ञात ; सर्वसम्मत ।

**संवित्** - स्त्री० [सं] संविद्, यौ० —पत्र - संधिपत्र ।

**संवित्ति** - स्त्री० [सं] चेतना ; प्रतिपत्ति ; प्रज्ञा ; सहमति ; स्मृति ।

**संविद** - 1. वि० [सं] चेतन ; 2. पु० ठहराव ।

**संविदित** - वि० [सं] जाना या समझा हुआ ; उपदेश या परामर्श दिया हुआ ; क़रार किया हुआ ; माना हुआ ; ढूँढकर निकाला हुआ ; प्रसिद्ध ; मतैक्य से निश्चित किया हुआ ; स्वीकार किया हुआ ।

**संविद्** स्त्री० [सं] अनुभूति ; चेतना ; ज्ञान ; क़रार ; ठहराव ; प्रज्ञा ; प्रथा ; युद्ध ; युद्ध की ललकार ; स्वीकृति ; नाम ; प्रहरी का संकेतशब्द ; संकेत ; भोग ; वार्तालाप ; संतोष ; सहानुभूति ; समाधि ; योजना ; प्राप्ति ; मिलनस्थान ; संपत्ति ; यौ० -वाद चैतन्यवाद ; —व्यतिक्रम - वादे या समझौते का पालन न होना ।

**संविधान** - पु० [सं] आयोजन ; योजना ; तरीक़ा ; रचना ; संपादन ; कथावस्तु में घटनाओं की व्यवस्था या विधान करना ; विधान (Constitution) ; यौ० —सभा व्यवस्थापिका सभा Constituent Assembly ।

**संविधि** - स्त्री० [सं] तैयारी ; व्यवस्था ।

**संविधेय** - वि० [सं] करणीय ; जिसकी व्यवस्था की जाय ; प्रबंध-योग्य

**संविभक्त** - वि० [सं] बाँटा हुआ ।

**संविभाग** - पु० [सं] बँटवारा ; हिस्सा ।

**संविभागी** - पु० [सं] भाग लेनेवाला ; साझीदार ।

**संविष्ट** - वि० [सं] पहुँचा या प्रवेश किया हुआ ; बैठा हुआ ; लेटा हुआ ; वस्त्राच्छादित ।

**संविहित** - वि० [सं] जिसकी व्यवस्था या देखभाल की गयी हो ।

**संवीक्षण** - पु० [सं] गौर से देखना ; चारो तरफ़ देखना ; तलाश करना ।

**संवृत** - 1. वि० [सं] गुप्त ; छिपा हुआ ; घिरा हुआ , अस्पष्ट ; अलग रखा हुआ ; दबाया हुआ ; बंद ; रक्षित ; मंद किया हुआ ; रुद्ध ; हरण किया हुआ ; 2. पु० एकांत या गुप्त स्थान ; उच्चारण का एक प्रकार ; वरुणदेव ; एक तरह का बेंत ; यौ० —कोष्ठ - जिसे कब्ज़ हो ; —मंत्र - गुप्त मंत्रणा ; —संवार्य - छिपाने योग्य बात को प्रकट न करनेवाला ।

**संवृत्ति** - स्त्री० [सं] घटित होना ; सम्मिलित अधिकार ; सिद्धि ।

**संवृद्ध** - वि० [सं] उन्नति करता हुआ ; जो बढ़कर बड़ा, लंबा या ऊँचा हो गया हो ; पूरा बढ़ा हुआ ।

**संवृद्धि** - स्त्री० [सं] अभ्युदय ; शक्ति ।

**संवेग** - पु० [सं] आतुरता ; उग्रता ; क्षोभ ; तीव्र वेग ; तीव्रता ; ज़ोर ; तीव्र उत्तेजना ; बेचैन करनेवाली पीड़ा ।

**संवेद** - पु० [सं] अनुभूति ; ज्ञान ।

**संवेदन** - पु० } [सं] अनुभूति ; ज्ञान ;
**संवेदना** - स्त्री० } प्रकट करना ; सूचित करना ।

**संवेद्य** - 1. वि० [सं] अनुभवगम्य ; जताने या प्रकट करने योग्य ; समझने योग्य ; 2. पु० नदियों का संगम ।

**संवेश** - पु० [सं] आसन या कुर्सी आदि; आराम करना; निकट आना; प्रवेश; शयनागार; स्वप्न; मैथुन; अग्नि; रति के अधिष्ठाता।

**संवेशक** - पु० [सं] जमा करने, बटोरने या व्यवस्था करनेवाला, सोने में सहायता करनेवाला।

**संवेशन** - 1. पु० [सं] आसन; बैठना; प्रवेश करना; लेटना; संभोग; 2. वि० लेटने में प्रवृत्त करनेवाला।

**संवेष्ट** - पु० [सं] आच्छादन।

**संवेष्टन** - पु० [सं] ढकना; फेरना; लपेटना।

**संव्यवहार** - पु० [सं] आपस का व्यवहार; इस्तेमाल; कारबार; प्रयोग; प्रचलित शब्द; मामला; वाणिज्य-व्यापार; संपर्क।

**संशंसा** - स्त्री० [सं] प्रशंसा; स्तुति।

**संशप्त** - वि० [सं] वचनबद्ध; शापग्रस्त।

**संशब्द** - पु० [सं] उल्लेख; प्रशंसा; ललकार; वचन; हवाला।

**संशम** - पु० [सं] संतुष्टि; पूरी शांति।

**संशय** - पु० [स] अनिश्चय; संदेह; संकट; कठिनाई; सोने या आराम करने के लिए लेटना; यौ० —कर - ख़तरनाक; —गत - ख़तरे में पड़ा हुआ; —च्छेद - संदेहनिवारण; —च्छेदी - संदेह दूर करनेवाला।

**संशयात्मक** - वि० [सं] अनिश्चित; संदेह-पूर्ण।

**संशयात्मा** - 1. वि०, 2. पु० [सं] शक्की; अविश्वासी।

**संशयापन्न** - वि० [सं] संदेहपूर्ण।

**संशयालु** - वि० [सं] संदेहशील।

**संशयावह** - वि० [सं] ख़तरनाक।

**संशयी** - वि० [सं] संदेह करनेवाला।

**संशासन** - पु० [सं] आदेश; सुशासन।

**संशिष्ट** - वि० [सं] बचा हुआ।

**संशुद्ध** - वि० [स] विशुद्ध; जुर्म से बरी किया हुआ; परीक्षित; जिसने प्रायश्चित्त आदि के द्वारा अपने आपको निर्दोष बना लिया हो।

**संशुद्धि** - स्त्री० [सं] ऋणपरिशोध, पवित्रता; मार्जन; पूरी सफ़ाई, शुद्धीकरण; सुधार।

**संशोधक** - वि० [सं] चुकानेवाला; परिष्कार करनेवाला; सुधारनेवाला।

**संशोधन** - 1. वि० [सं] विशुद्ध करने-वाला; वातादि विकार नष्ट करनेवाला, 2. पु० अदायगी; शुद्ध करने का साधन; शुद्धीकरण; सुधारना; संस्कार करना।

**संशोधित** - वि० [सं] अदा किया हुआ; सुधारा हुआ; शुद्ध किया हुआ।

**संशोधी** - वि० [सं] सुधारने या साफ़ करने-वाला।

**संशोभित** - वि० [सं] अलंकृत।

**संश्रय** - पु० [सं] मेल; संबंध; आश्रय ग्रहण करना; परस्पर सहायता के लिए की जानेवाली संधि; आश्रयस्थान; आसक्ति; निवासस्थान; अवयव; उद्देश्य।

**संश्रयण** - पु० [सं] संसर्ग; शरण लेना।

**संश्रयी** - वि० [सं] शरण लेनेवाला।

**संश्रव** - 1. पु० [सं] अंगीकार; प्रतिज्ञा; सुनना; 2. वि० सुनायी पड़नेवाला।

**संश्लिष्ट** - 1. वि० [सं] जुड़ा हुआ; मिला हुआ; अस्पष्ट; आलिंगित; मिश्रित; संलग्न; संबद्ध; 2. पु० एक तरह का मंडप; समूह; यौ० —कर्म - ऐसा कर्म जिसके भला-बुरा होने का निश्चय न हो सके।

**संश्लेष** - पु० [सं] आलिंगन ; जोड़ ; संबंध ; बंधन ; संयोग ।

**संश्लेषण** - पु० [सं] जुटाना या मिलाना ; जोड़नेवाली चीज़ ; संबद्ध करना ; संलग्न करना ।

**संस** - पु० [हिं] संशय ; बरकत ।

**संसई** - पु० [हिं] संशय ।

**संसक्त** - वि० [सं] मिश्रित ; चिपकनेवाला ; अस्पष्ट (वाणी) ; भिड़ा हुआ ; संबद्ध ; संलग्न ; विपयासक्त ; अनुरक्त ; अविराम; निकटवर्ती ; सापेक्ष ; यौ० —चेता, मना - जिसका मन किसी विषय पर जमा हुआ हो ; —युग - जुए में जोता हुआ ।

**संसक्ति** - स्त्री० [सं] घनिष्ठता ; घनिष्ठ संबंध ; साथ बाँधना ; आसक्ति ; प्रवृत्ति ।

**संसगर** - वि० [हिं] उपजाऊ ; बरकतवाला ; लाभदायक ।

**संसत्, संसद्** - 1. स्त्री० [सं] न्यायालय ; न्याय या धर्म की सभा ; सभा ; समूह ; चौबीस दिनों तक चलनेवाला एक यज्ञ ; 2. वि० साथ बैठनेवाला ; यज्ञ में भाग लेनेवाला ।

**संसनाना** - अ० [अनु] हवा बहने या पानी खौलने से 'सन-सन' शब्द होना ।

**संसरण** - पु० [सं] गमन ; जन्म और पुनर्जन्म ; नगरद्वार के पास का पथिकालय ; युद्धारंभ ; राजमार्ग ; सेना की अबाध यात्रा ।

**संसर्ग** - पु० [सं] संयोग ; मिश्रण ; घनिष्ठता ; संबंध ; मैथुन ; संपर्क ; साथ ; सामीप्य ; शरीर की दो धातुओं का रोगकारक योग ; वस्तुओं आदि का समान्य उपभोग ; अवधि ; समवाय (न्या०) ; यौ० —ज - संपर्क से उत्पन्न ; —दोष - बुरे साथ का बुरा फल ; —विद्या - मिलने-जुलने की कला ।

**संसर्गी** - 1. स्त्री० [सं] सफ़ाई ; 2. पु० मित्र ; साथी ; 3. वि० परिचित ; मिला हुआ ; बँटवारा होने पर भी संबंधियों के साथ रहनेवाला ; युक्त ; संबद्ध ।

**संसर्प** - पु० [सं] धीरे-धीरे चलना ; रेंगना ।

**संसा** - पु० [हिं] संशय ; सँड़सा ।

**संसादन** - पु० [सं] तरतीब से रखना ; साथ रखना ।

**संसाधक** - वि० [स] पूरा या सिद्ध करनेवाला ; वश में करनेवाला ।

**संसाधन** - पु० [सं] अच्छी तरह करना ; तैयारी ; पूरा करना ; वशीभूत करना ।

**संसार** - पु० [सं] दुनियाँ ; आवागमन ; गृहस्थी ; मर्त्यलोक ; मायाजाल ; समूह ; यौ० —गमन - जन्म-मरण ; —गुरु - कामदेव ; जगद्गुरु ; —चक्र - भवचक्र ; —पदवी, सरणी - संसार का मार्ग ; —बंधन - सांसारिक बंधन ; —मोक्ष - संसार से छुटकारा ; —वर्जित - भौतिक सत्ता से मुक्त ; —संग - संसार के प्रति आसक्ति ; —सुख - भौतिक सुख ।

**संसारी** - 1. वि० [सं] दुनियादार ; दुनियाँ में रहनेवाला ; आवागमन करनेवाला ; दूर-दूर जानेवाला ; व्यवहार-कुशल ; 2. पु० जीवधारी ; जीवात्मा ।

**संसिद्ध** - वि० [सं] अच्छा किया हुआ (रोग आदि) ; उद्यत ; कृतसंकल्प ; चतुर ; अच्छी तरह निष्पन्न किया हुआ ; पककर तैयार किया हुआ (भोजन) ।

**संसिद्धि** - स्त्री० [स] पककर तैयार होना ; कार्य का सम्यक् संपादन ; सफलता ; निश्चित मत ; मोक्ष ; स्वभाव ; मत्त स्त्री; प्रमदा ।

**संसी** - स्त्री० [हि] सँड़सी।

**संसुप्त** - वि० [सं] गाढ़ी नींद में सोया हुआ।

**संसूचक** - वि० [सं] भर्त्सना करनेवाला; भेद खोलनेवाला; स्पष्ट रूप में दिखानेवाला।

**संसृति** - स्त्री० [सं] जन्म-मरण की परंपरा; प्रवाह; संगति; संसार।

**संसृष्ट** - 1. वि० [सं] एक साथ उत्पन्न; अंतर्भूत; बहुत परिचित; मिश्रित; संयुक्त; आक्रांत; पूरा किया हुआ; वमन आदि के द्वारा शुद्ध किया हुआ; स्वच्छ वस्त्र धारण किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ; रचित; बँटवारे के बाद आपस में मिले हुए (भाई आदि); 2. पु० निकटसंबंधी; मैत्री; यौ० —भाव - घनिष्ठता; —रूप - मिलावटी।

**संसेवन** - पु० [सं] व्यवहार में लाना; संपर्क रखना; सेवा करना।

**संसेवा** - स्त्री० [सं] उपयोग; पूजा-सत्कार; प्रवृत्ति; सेवा करना।

**संसेवित** - वि० [सं] अच्छी तरह व्यवहार में लाया हुआ; जिसकी भली-भाँति सेवा की गयी हो।

**संस्करण** - पु० [सं] पुस्तकादि का एक बार का मुद्रण; तैयार करना; क्रमबद्ध करना; परिष्कृत करना; साथ रखना; शवसंस्कार करना।

**संस्कर्ता** - पु० [सं] शुद्ध करनेवाला; संस्कार करनेवाला; भोजन तैयार करनेवाला।

**संस्कार** - पु० [सं] साथ रखना; व्यवस्थित करना; पूरा करना; भोजन तैयार करना; सजाना; सुधारना; शुद्धि; धातु की चीज़ें माँजकर चमकाना; पौधों या जानवरों आदि का पालन-पोषण; स्नान करना; मानसिक शिक्षा; शब्दों-वाक्यों आदि की शुद्धता; अंत्येष्टिक्रिया; स्मरण-शक्ति: धारणा; यौ० —कर्ता - संस्कार करानेवाला ब्राह्मण; —पूत - संस्कार द्वारा विशुद्ध किया हुआ; शिक्षा आदि के द्वारा परिष्कृत; —संपन्न - परिष्कृत; सुशिक्षित; —हीन - जिसके संस्कार न हुए हों।

**संस्कृत** - 1. स्त्री० [सं] भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा; 2. वि० सुधारा हुआ; पूरा किया हुआ; पकाकर तैयार किया हुआ; सुनिर्मित; संस्कार द्वारा शुद्ध: उत्तम; अलंकृत किया हुआ; विवाहित; 3. पु० विद्वान; नियमानुसार बना हुआ शब्द; धार्मिक प्रथा; द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका शुद्धि-संस्कार हो चुका हो।

**संस्कृति** - स्त्री० [सं] आचरणगत परंपरा; सभ्यता; पूरा करना; निर्माण; उद्योग; निश्चय; पवित्रीकरण; सजावट; शुद्धि।

**संस्क्रिया** - स्त्री० [सं] तैयार करना; निर्माण; शव-संस्कार; शुद्धि-संस्कार।

**संस्तर** - पु० [सं] तह; तृणशय्या; आच्छादन; फैलायी हुई राशि; फैलाव; बिस्तर; यज्ञ; यज्ञ का आयोजन।

**संस्तव** - पु० [सं] घनिष्ठता; उल्लेख; मेल-जोल; स्तुति।

**संस्तवन** - पु० [सं] प्रशंसा करना; स्तुति करना।

**संस्तुत** - वि० [सं] प्रशंसित; परिगणित; परिचित; अभिप्रेत; सदृश; सामंजस्य-युक्त।

**संस्तुति** - स्त्री० [सं] स्तुति; प्रशंसा; भावाभि-व्यक्ति की एक आलंकारिक शैली।

**संस्तूप** - पु० [सं] कूड़े का ढेर।

**संस्था** - स्त्री० [सं] ठहरना ; रहना ; मंडली ; अवस्था ; सभा ; पेशा ; रूढ़ि ; रहन-सहन का बँधा हुआ तरीक़ा ; नियम , पूर्ति ; सदाचार ; विराम ; प्रलय ; राजकीय आज्ञा ; अभिव्यक्ति ; रूप ; मृत्यु ; स्वभाव , वध ; गुप्तचर वर्ग ; शवसंस्कार ।

**संस्थागार** - पु० [सं] विधान बनानेवाली सभा का स्थान ; सभाभवन ।

**संस्थाध्यक्ष** - पु० [सं] व्यापार का प्रधान अधिकारी ।

**संस्थान** - 1. वि० [स] ठहरानेवाला ; सदृश ; 2. पु० निवासस्थान ; सार्वजनिक स्थान ; आकृति ; कांति ; अंत ; मृत्यु ; निर्माण ; चौराहा ; चिह्न ; ढाँचा ; ठहरना ; स्थिर रहना ; सत्ता ; जीवन ; पड़ोस ; सामीप्य ।

**संस्थापक** - पु० [सं] स्थापित करनेवाला ; रूप या आकृति प्रदान करनेवाला ; संप्रदाय आदि का प्रवर्तक ; चीनी आदि की मूर्तियाँ बनानेवाला ।

**संस्थापन** - पु० [सं] एकत्र करना ; कोई नयी बात जारी करना ; निर्माण करना ; रूप प्रदान करना ; निश्चित करना ; स्थापित करना ; नियंत्रित करना ; नियम, विधान ।

**संस्थापित** - वि० [सं] खड़ा किया हुआ ; जमाया हुआ ; डेरा लगाया हुआ ; प्रवर्तित ; बनाया हुआ ; रोका हुआ ; स्थापित किया हुआ ।

**संस्थित** - 1. वि० [सं] खड़ा ; ठहरा हुआ ; युद्ध में डटा हुआ ; पड़ा हुआ ; लेटा हुआ ; एकत्र किया हुआ ; टिकाव; समान ; कुशल ; प्रवृत्त ; प्रस्थित ; नष्ट ; मृत ; समाप्त ; स्थिर ; आसन्न ; रूप प्रदान किया हुआ ; 2. पु० आकृति ; आचरण ।

**संस्पर्श** - पु० [सं] विषय के सयोग से इंद्रियों का संवेदन ; संयोग ; छू जाना ; मिश्रण ; प्रभावित होना ; संसर्ग ।

**संस्मरण** - पु० [सं] स्मरण या याद करने की क्रिया ; स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित लेख या ग्रंथ ; संस्कार से उत्पन्न ज्ञान ; नाम लेना ।

**संस्मारक** - 1. पु० [सं] किसी व्यक्ति की स्मृति में निर्मित भवन, स्तंभ, संस्था आदि ; स्मरण करानेवाला ; 2. वि० याद दिलानेवाला ।

**संस्मृति** - स्त्री० [सं] पूर्ण स्मृति ।

**संहत** - वि० [सं] कड़ा ; घना ; जुड़ा हुआ ; दृढ ; आहत ; एकत्र ; साथ रहनेवाला ; मिश्र (स्वर, गंध आदि) ; हट्टा-कट्टा ; **यौ०** —कुलीन - संयुक्त परिवार का ; —जानु - जिसके घुटने आपस में टकराते हों ; —तल - अंजलि के रूप में मिले हुए दोनों हाथ ; —मूर्ति - हट्टा-कट्टा, मज़बूत ।

**संहति** - स्त्री० [सं] समूह ; पिंड ; एका ; घनत्व , दृढ़ संबंध ; संयोग ; सामंजस्य ; शक्ति ; शरीर ; सम्मिलित प्रयत्न ।

**संहनन** - 1. वि० [सं] ठोस करनेवाला ; दृढ ; नष्ट करनेवाला ; वध करनेवाला ; 2. पु० कवच ; अनुकूलता ; सामंजस्य ; देह ; संबद्ध करना ; ठोस करना ; वध करना ; दृढता ; बलवत्ता ।

**संहरण** - पु० [सं] प्रलय ; ध्वंस करना ; रोकना ; एक साथ बाँधना या गूँथना (केश) ; ग्रहण करना ; संग्रह करना ; संकुचित करना ; लौटा लेना (मंत्र, बाण आदि) ।

**संहरना** - 1. अ० [हिं] विनष्ट होना ; 2. स० नष्ट करना ।

**संहर्ता** - पु० [सं] एकत्र करनेवाला ; नाश करनेवाला ; वध करनेवाला ।

**संहर्ष** - पु० [सं] प्रसन्नता ; ईर्ष्या ; कामोत्तेजन ; रोमांच ; प्रतियोगिता ; रगड़ना ; वायु ।

**संहार** - पु० [सं] नाश ; नाश करनेवाला ; प्रलय ; कुशलता ; अभ्यास ; नज़दीक लाना ; एकत्र करना ; संक्षेप ; संकोच ; (हाथी का) सूँड़ को अंदर की ओर ले जाना : यौ० —कारी - नाश करनेवाला ; प्रलय करनेवाला ; —काल - प्रलयकाल ; —मुद्रा - विसर्जन-मुद्रा ।

**संहारक** - 1. वि०, 2. पु० [सं] नाश करनेवाला ; एकत्र करनेवाला ; संक्षिप्त करनेवाला ।

**संहारना** - स० [हिं] नाश करना ; वध करना ।

**संहारिक** - वि० [सं] सबका नाश करनेवाला ।

**संहारी** - वि० [सं] नाश करनेवाला ।

**संहिता** - स्त्री० [सं] संग्रह, संकलन ; मनु आदि द्वारा रचित धर्मशास्त्र ; संधि (व्या०) ; संयोग ; वेदों का मंत्रभाग ; विश्व को संगठित करनेवाली शक्ति ; यौ० —कार - संहिता की रचना करनेवाला ; —पाठ - वेद का क्रमबद्ध मंत्र ।

**संहिति** - स्त्री० [सं] एक साथ रखना ; संबंध ।

**संहृष्ट** - वि० [सं] रोमांचयुक्त ; ज्वलित ; प्रसन्न ।

**संह्लाद** - पु० [सं] एक प्रकार का आनंद ।

**स** - 1. पु० [सं] चंद्रमा ; जीवात्मा ; पक्षी ; वायु ; विष्णु ; शिव ; सर्प ; चिन्तन ; गाड़ी की सड़क ; घेरा ; ज्ञान ; दीप्ति ; षड्ज स्वर का सूचक अक्षर (संगीत) , 2. उप० शब्दों के आरंभ में लगकर सह, समान, वही आदि अर्थों का द्योतन करनेवाला (जैसे, सरोष, सजाति, सपिंड) ।

**सआदत** - स्त्री० [अ] भलाई ; सौभाग्य ; यौ० —मंद - आज्ञाकारी ; भला ; सौभाग्यशाली ।

**सइ** - 1. अव्य० [हिं] साथ ; से ; 2. प्रत्य० करण और अपादान कारक की विभक्ति (व्या०) ।

**सइन** - स्त्री० [हिं] नाड़ी का व्रण, नासूर ।

**सइना** - स्त्री० [हिं] सेना, फ़ौज ।

**सइयो** - स्त्री० [हिं] सखी-सहेली ।

**सइवर** - पु० [हिं] सेवार ।

**सई** - स्त्री० [हिं] वृद्धि ; सखी ; सरस्वती नदी ; [अ] कोशिश ; दौड़-धूप ; यौ० —सिफ़ारिश - कहना-सुनना ; दौड़-धूप ।

**सईद** - वि० [अ] मांगलिक ; शुभ ।

**सईस** - पु० [हिं] साईस ।

**सउजा** - पु० [हिं] शिकार ।

**सउत** - स्त्री० [हिं] सौत ।

**सकंकूर** - पु० [हिं] गोह-जैसा जीव ।

**सकंटक** - 1. वि० [सं] कष्टदायक ; काँटेदार ; 2. पु० करंज वृक्ष ; सिवार ।

**सकंपन** - वि० [सं] कंपनयुक्त ; जो भूकंप के साथ हो ।

**सक** - 1. स्त्री० [हिं] बल ; 2. पु० संदेह ; मर्यादा स्थापित करना ; धाक ।

**सकट** - 1. पु० [हिं] शकट ; छकड़ा ; 2. वि० [सं] नीच ; बुरा ।

**सकटान्न** - पु० [सं] अशुद्ध अन्न ।

**सकड़ी** - स्त्री० [हिं] सिकड़ी ।

**सकत** - 1. स्त्री० [हिं] वैभव ; शक्ति ; 2. अव्य० यथाशक्ति ।

**सकता** - 1. स्त्री० [हिं] ताक़त ; सामर्थ्य ; 2. पु० [अ] मूर्छा रोग ; किसी शब्द के घट-बढ़ जाने से शेर का वज़न बिगड़ जाना , मु० सकते का अलाम - विस्मय ।

**सकती** - स्त्री० [हिं] एक अस्त्र ; सामर्थ्य ।
**सकना** - अ० [हिं] मुमकिन होना ; समर्थ होना ।
**सकपक** - स्त्री० [हिं] घबड़ाहट ; हिचक ।
**सकपकाना** - अ० [हिं] चकित होना ; हिचकना ; आगा-पीछा करना ; लज्जा आदि के कारण घबड़ाहट में पड़ जाना ; हिलना ।
**सकरना** - अ० [हिं] स्वीकार किया जाना ।
**सकरा** - 1. वि० [हिं] जूठा ; तंग ; संकीर्ण ; 2. पु० जूठन ।
**सकरिया** - स्त्री० [हिं] लाल शकरकंद ।
**सकरुण** - वि० [सं] कोमलचित्त ; दयालु ।
**सकर्तृक** - वि० [सं] साधनयुक्त ।
**सकर्मक** - वि० [सं] कोई काम करनेवाला ; जो कर्म के साथ हो ; प्रभावकारी ।
**सकर्मा** - वि० [सं] एक ही या एक-जैसा काम करनेवाला ।
**सकल** - 1. वि० [सं] सब ; मंद और मधुर स्वरवाला ; भौतिक जगत् से प्रभावित (जीव) ; ब्याज देनेवाला ; सारी कलाओ से पूर्ण (चन्द्रमा) ; 2. पु० पशु ; पुरुष और प्रकृति ; प्रत्येक वस्तु ; यौ० —जननी - सबकी माता ; प्रकृति ; —सिद्धि - सब विषयो में सफलता ; जिसे पूरी सिद्धि हो गयी हो ।
**सकलात** - पु० [हिं] भेंट ; रज़ाई ।
**सकलाती** - स्त्री० [हिं] अति उत्तम ; मख़मल का ।
**सकलाधार** - पु० [सं] शिव ।
**सकषाय** - वि० [सं] क्रोधादि मदसहित ।
**सकसकाना** - अ० [हिं] बहुत डरना ।
**सकसना** - अ० [हिं] भयभीत होना ।
**सकसाना** - अ० [हिं] भयभीत होना ।
**सकाकुल** - पु० [हिं] एक कंद ; एक तरह की मिस्री ; शतावर का भेद ।
**सकाना** - अ० [हिं] शंका करना ; हिचकना ।
**सकाम** - वि० [सं] कामवासनायुक्त ; इच्छुक ; कामनायुक्त ; तृप्तकाम ; प्रेमी ; धनाकांक्षा से काम करनेवाला ; यौ० —निर्जरा - शक्तिशाली होकर भी शत्रु को क्षमा कर देने की वृत्ति ।
**सकार** - वि० [हिं] उत्साही ; फुर्तीला ; सक्रिय ।
**सकारना** - स० [हिं] स्वीकार करना ; हुंडी पर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकार कर लेना ।
**सकारा** - पु० [हिं] सवेरा ; हुडी सकारने और समय बढ़ाने के लिए लिया जानेवाला धन ।
**सकारे** - अव्य० [हिं] ठीक समय पर ; सवेरे ।
**सकाल** - 1. वि० [सं] समयोचित ; 2. अव्य० ठीक समय पर ।
**सक़ालत** - स्त्री० [अ] क्लिष्टता ; बोझ ।
**सकिलना** - अ० [हिं] इकट्ठा होना ; फिसलना ; संकुचित होना ; हो सकना ।
**सक़ील** - वि० [अ] क्लिष्ट ; दुष्प्राप्य ; भारी ।
**सकुक्षि** - वि० [सं] एक ही कोख से उत्पन्न ।
**सकुच** - स्त्री० [हिं] लज्जा ; संकोच ।
**सकुचना** - अ० [हिं] लज्जा करना ; संकुचित होना ।
**सकुचाई** - स्त्री० [हिं] शरमिंदगी ; संकोच ।
**सकुचाना** - 1. अ० [हिं] संकोच करना ; 2. स० लज्जित करना ; सिकोड़ना ।
**सकुची** - स्त्री० [हिं] लंबी और कड़ी पूँछवाली चक्की के पाट की शक्ल की एक मछली ।
**सकुचीली** - स्त्री० [हिं] लजालू, लाजवंती ।
**सकुपना** - अ० [हिं] गुस्सा करना ।
**सकुल** - 1. वि० [सं] कुलीन ; एक ही परिवार का ; सपरिवार ; 2. पु० नेवला ; रिश्तेदार ; सौरी मछली ।

**सकुला** - पु० [हिं] भिक्षुओं का नेता ।

**सकृत्** - 1. अव्य० [स] एक बार ; तत्काल : साथ ; सर्वदा ; 2. स्त्री० विष्टा ।

**सकेत** - 1. पु० [हिं] इशारा ; कष्ट ; प्रेमी-प्रेमिका का मिलन-स्थल ; 2. वि० तंग, संकीर्ण ।

**सकेतना** - अ० [हिं] संकुचित होना ।

**सकेरना** - स० [हिं] इकट्ठा करना ; बंद करना ।

**सकेलना** - स० [हिं] इकट्ठा या जमा करना ।

**सकेला** - पु० [हिं] एक तरह का लोहा ।

**सकैतव** - वि० [सं] छली, कपटी ।

**सकोरा** - पु० [हिं] कटोरे-जैसा मिट्टी का एक बर्तन, कसोरा ।

**सक़्क़ा** - पु० [फ़ा] भिश्ती ; पनभरा ; एक पक्षी ; **मु०** सक़्क़े की बादशाही - दो-चार दिन की हुकूमत ।

**सक्त** - वि० [सं] आसक्त ; जड़ा हुआ ; बाधित ; प्रवृत्त ; संलग्न ; संबंध रखनेवाला ; सावधान ।

**सक्ति** - स्त्री० [हिं] आसक्ति ; संपर्क ; संबंध ; लिपटना (बेलों का) ।

**सक्थि** - स्त्री० [सं] जंघा ; गाड़ी का लट्ठा ; हड्डी ।

**सक्रिय** - वि० [सं] क्रियायुक्त ; फुर्तीला ; भ्रमणशील ।

**सक्षम** - वि० [सं] क्षमायुक्त ; शक्तिशाली ।

**सखत** - वि० [हिं] सख़्त ।

**सखरच, सखरज** - वि० [हिं] अमीरों की तरह ख़र्च करनेवाला ।

**सखरस** - पु० [हिं] मक्खन ।

**सखरा** - 1. वि० [हिं] निखरा का उलटा ; खारा ; 2. पु० कच्ची रसोई ।

**सखरी** - स्त्री० [हिं] कच्ची रसोई ।

**सखसावन** - पु० [हिं] आरामकुर्सी ; पलंग ; पालकी ।

**सखा** - पु० [सं] मित्र ; साथी ; सहयोगी ; साढ़ू ; नायक का सहचर ; **यौ०** —भाव - मैत्री ; —विग्रह - आपस की लड़ाई ।

**सख़ा, सख़ावत** - स्त्री० [अ] उदारता ; दानशीलता ।

**सखिल** - वि० [सं] मैत्रीपूर्ण ।

**सखी** - स्त्री० [सं] सहेली ; नायिका की सहेली ; सहचरी ; **यौ०** —भाव - अपने को उपास्यदेव की पत्नी मानने का भाव ; —संप्रदाय - वैष्णवों का एक संप्रदाय जिसमें भक्त अपने आपको उपास्यदेव की स्त्री मानता है ।

**सख़ी** - वि० [अ] उदार ; दाता ; दान-शील ।

**सख़्त** - वि० [अ] कठोर ; कठिन ; तीखा ; दृढ ; भारी ; सख़्ती करनेवाला ; **यौ०** —कलामी - तीखे या कडुवे वचन कहना ; —गीर - जालिम ; सामान्य दोष पर भी कड़ी सज़ा देनेवाला ; —गीरी - कठोरता ; सख़्ती ; —घड़ी - कठिनाई का काल ; —ज़बान - कटु-भाषी ; —जान - निर्दय ; बेहयाई से जीनेवाला ; —दिल - कठोरहृदय ; —पंजा - लोभी ; —बाज़ू - बलवान ; —मिज़ाज - क्रोधी ; —मुश्किल - भारी कठिनाई ; —लगाम - मुँहज़ोर ।

**सख़्ती** - स्त्री० [अ] कठोरता ; कड़ापन ; अर्थसंकट, तंगी ; कठिनाई ; ज़ुल्म ; दृढ़ता ; **मु०** — से - कठिनाई से ; —से पेश आना - निर्दयता का व्यवहार करना ।

**सख्य** - पु० [सं] दोस्ती, सखापन ; ईश्वर को सखा मानकर उपासना करने का भाव ; समानता ; मैत्री ।

**सख्यता** - स्त्री० [हिं] दोस्ती ।

**सग** - [फ़ा] कुत्ता ; यौ०—ज़ादा बच्चा - कुत्ते का बच्चा (गाली) ; —बान - कुत्ते का रखवाला ; सगेबाज़ारी - लावारिस कुत्ता ।

**सगण** - 1. वि० [स] दल या सेना से युक्त ; 2. पु० शिव ; छंदशास्त्र का एक गण जिसमें दो लघु मात्रा के बाद एक गुरु मात्रा होती है ।

**सगनौती** - स्त्री० [हि] सगुन विचारना ।

**सगपन** - पु० [हिं] सगापन ।

**सगपहती, सगपैती** - स्त्री० [हि] साग मिलाकर पकायी हुई दाल ।

**सगबग** - वि० [हि] आर्द्र ; द्रवित ; भीत ।

**सगबगाना** - अ० [हि] घबड़ा जाना ; सराबोर होना ; हिलना-डुलना ।

**सगर** - 1. वि० [सं] विषयुक्त ; 2. पु० एक सूर्यवंशी राजा ।

**सगरा** - 1. वि० [हिं] सब ; 2. पु० झील ; तालाब ।

**सगर्भ** - 1. वि० [सं] सहोदर, सगा, जिसके पत्ते अभी खुले न हों ; 2. पु० सगा भाई ।

**सगर्भा** - स्त्री० [सं] गर्भवती स्त्री ; सगी बहन ।

**सगलगी** - स्त्री० [हिं] अपनापन दिखाना ; चापलूसी ।

**सगवारा** - पु० [हिं] गाँव के पास की उससे संबद्ध भूमि ।

**सगा** - वि० [हिं] एक माँ-बाप से उत्पन्न, सहोदर ; निकट-संबधी ।

**सगाई** - स्त्री० [हि] मँगनी , रिश्ता , विधवा या परित्यक्ता का एक तरह का विवाह या विवाह-जैसा संबंध ।

**सगापन** - पु० [हिं] आत्मीयतापूर्ण संबंध ।

**सगारत** - स्त्री० [हिं] सगापन ।

**सग़ीर** - वि० [अ] छोटा ; अदना ; कम-उम्र ; यौ० —सिन - छोटी उम्र का ; सग़ीरो-कबीर - छोटे-बड़े ।

**सगुण** - 1. वि० [सं] सद्‌गुण-संपन्न ; गुणवान ; भौतिक ; साहित्यिक गुणों से युक्त ; 2. पु० ईश्वर के सगुण रूप की उपासना करनेवाला संप्रदायविशेष ; सत्व-रज-तम से युक्त ब्रह्म ।

**सगुणी** - वि० [सं] सद्‌गुणों से युक्त ; धार्मिक ।

**सगुणोपासना** - स्त्री० [सं] साकार ब्रह्म की उपासना ।

**सगुनाना** - अ० [हिं] शकुन बतलाना ; शकुन विचारना ।

**सगुनिया** - पु० [हिं] शकुन का विचार करनेवाला ।

**सगुनौती** - स्त्री० [हिं] शकुन विचारने या निकालने की क्रिया ।

**सगृह** - वि० [सं] सपरिवार ; घर-गृहस्थी-वाला ।

**सगोती** - 1. वि० [हिं] एक ही गोत्र का ; 2. पु० एक ही गोत्र के लोग, भाई-बंद ; 3. स्त्री० सगौती ।

**सगोत्र** - 1. वि० [सं] एक ही गोत्र का ; 2. पु० वंश ; दूर का संबंधी ; एक ही गोत्र का व्यक्ति ; तर्पण आदि साथ करनेवाला व्यक्ति ।

**सगौती** - स्त्री० [हिं] खाने का मांस ।

**सग्धि** - स्त्री० [सं] सहभोजन ।

**सघन** - वि० [सं] घना ; ठोस ; मेघाच्छन्न ।

**सघनता** - स्त्री० [सं] निबिड़ता ।

**सच** - 1. वि० [सं] पूजा या सत्कार करने-वाला ; संबद्ध ; [हिं] सत्य ; 2. पु० सच्ची बात ; यौ० —मुच - वस्तुतः ; निस्सन्देह ।

**सचना** - 1. स० [हिं] पूरा करना ; बटोरना ; सजाना ; 2. अ० प्रसन्न होना ।

**सचर** - वि० [सं] चलायमान, जंगम ।

**सचरना** - अ० [हिं] प्रचलित होना ; प्रवेश करना ; प्रसिद्ध होना ; फैलना ।

**सचराचर** - 1. वि० [सं] जिसमें स्थावर-जंगम सभी हों ; 2. पु० विश्व ।
**सचल** - 1. वि० [सं] चलने की शक्ति से युक्त, जंगम ; 2. पु० जंगम पदार्थ ।
**सचललवण** - पु० [सं] साँचर नमक ।
**सचाई** - स्त्री० [हिं] ईमानदारी ; वास्तविकता ; सत्यता ।
**सचान** - पु० [हिं] बाज़ ।
**सचावट** - स्त्री० [हिं] सचाई ।
**सचिन्त** - वि० [सं] चिन्तायुक्त ।
**सचिक्कण** - वि० [सं] बहुत चिकना ।
**सचित्** - वि० [सं] ज्ञान या चेतनायुक्त ।
**सचित्त** - वि० [सं] सावधान ; जिसका ध्यान किसी एक विषय पर हो ।
**सचित्र** - वि० [सं] चित्रों से युक्त, चित्रित ।
**सचिव** - पु० [सं] मित्र ; मंत्री ; काला धतूरा ।
**सचिवता** - स्त्री० } [सं] मंत्रित्व ।
**सचिवत्व** - पु० }
**सची** - स्त्री० [सं] शची, इंद्राणी ; अगर ।
**सचु** - पु० [हिं] आनंद ; प्रसन्नता ।
**सचेत** - वि० [हिं] सावधान ; चेतनाविशिष्ट ।
**सचेतन** - 1. वि० [सं] सावधान ; चेतनायुक्त, सज्ञान ; 2. पु० सज्ञान प्राणी ।
**सचेती** - स्त्री० [हिं] सावधानी ।
**सचेल** - वि० [सं] वस्त्राच्छादित ।
**सचेष्ट** - 1. वि० [सं] चेष्टा करनेवाला ; चेष्टाशील ; 2. पु० आम का पेड़ ।
**सच्चरित, सच्चरित्र** - 1. वि० [सं] सदाचारी ; 2. पु० अच्छा आचरण ; सदाचारियों का वृत्त ।
**सच्चा** - वि० [हिं] ईमानदार ; ठीक ; यथार्थ ; विशुद्ध , सच बोलनेवाला ।
**सच्चाई** - स्त्री० [हिं] ईमानदारी ; सच्चापन ।
**सच्चापन, सच्चाहट** - पु० [हिं] सच्चाई ।
**सच्चित्** - पु० [सं] सत् और चित् से युक्त ब्रह्म ।
**सच्चिन्मय** - वि० [सं] सत् और चैतन्य से युक्त ।
**सच्छास्त्र** - पु० [सं] अच्छा सिद्धांतग्रंथ ।
**सच्छिद्र** - वि० [सं] छेददार ; सदोष ।
**सच्छील** - 1. पु० [सं] सदाचार ; 2. वि० शीलवान ।
**सज** - स्त्री० [हिं] आकृति ; शोभा ; सजावट ; **यौ०** —दार - सुडौल ; सुंदर ; —धज, बज - ठाटबाट ; बनाव-सिंगार ; सजावट ।
**सजग** - वि० [हिं] सतर्क ; होशियार ।
**सजन** - 1. पु० [सं] संबंधी ; सज्जन ; प्रियतम ; 2. वि० जनयुक्त ; मनुष्यों द्वारा अधिवसित ।
**सजनपद** - वि० [सं] एक ही देश के (व्यक्ति) ।
**सजना** - 1. अ० [हिं] फबना ; युद्धादि के लिए तैयार होना ; वस्त्राभूषण से अलंकृत होना ; 2. स० धारण करना ; सजाना ।
**सजनी** - स्त्री० [हिं] सखी, सहेली ; प्रियतमा ।
**सजल** - वि० [सं] अश्रुपूर्ण ; चमकदार ; जलयुक्त ; **यौ०** —नयन - अश्रुपूर्ण नेत्रोंवाला ।
**सजला** - वि० [हिं] मँझले से छोटा ।
**सजवाई** - स्त्री० [हिं] सजवाने की क्रिया या पारिश्रमिक ।
**सजवाना** - स० [हिं] किसीको सजने के काम में प्रवृत्त करना ।
**सज़ा** - स्त्री० [फ़ा] जुरमाना ; दंड ; बदला ; **यौ०** —ए-मौत - फाँसी की सज़ा ; —याफ़्ता - दंडप्राप्त ; —याब - दंड का अधिकारी ; —यार - योग्य अधिकारी ; शुभ ; सुफल देनेवाला ; —मिलना - किये का फल पाना ।

**सजाई** - स्त्री० [हिं] सजाने की क्रिया; सजाने की मज़दूरी।

**सजात** - वि० [सं] एक ही समय या एक साथ उत्पन्न; संबंधियो से युक्त; **यौ०**—काम - संबंधियो पर शासन करने का इच्छुक।

**सजाति** - 1. वि० [सं] एक ही जाति या वर्ग का; एक-जैसा; 2. पु० एक ही जाति के पुरुष या स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

**सजाना** - स० [हि] व्यवस्थित करना; सुसज्जित करना।

**सजाव** - पु० [हिं] दही का एक प्रकार; सजावट।

**सजावट** - स्त्री० [हि] अलंकरण, तैयारी; शोभा।

**सज़ावल** - पु० [तु] दारोग़ा; मालगुज़ारी या सरकारी रुपया वसूल करनेवाला।

**सज़ावली** - स्त्री० [तु] सज़ावल का काम या पद।

**सजीला** - वि० [हि] छैला; सजधज से रहनेवाला; सुंदर; सुडौल।

**सजीव** - 1. वि० [सं] प्राणयुक्त, जीवित; 2. पु० प्राणी।

**सजीवन** - पु० [हिं] संजीवनी बूटी।

**सजीवनी** - स्त्री० [हि] संजीवनी; **यौ०** —मंत्र - कार्यसाधक उपाय; मृतक को जिलानेवाला कल्पित मंत्र।

**सजीह** - पु० [फ़ा] प्रकृति; मिज़ाज़।

**सजूरी** - स्त्री० [हिं] एक मिठाई।

**सजोना** - अ० [हिं] श्रृंगार करना; सामान आदि ठीक करना।

**सज्ज** - वि० [सं] तैयार; शस्त्रादि से युक्त; सजा हुआ; **यौ०** —कर्म - सजने या तैयार होने की क्रिया; धनुष चढ़ाना।

**सज्जन** - पु० [सं] भला आदमी; कुलीन व्यक्ति; प्रिय व्यक्ति; सजाना; बाँधना; तैयारी करना; हथियारों से लैस होना; पहरेदार; हाथी आदि को वस्त्रादि से सज्जित करना।

**सज्जनता** - स्त्री० [सं] भलमनसी, सौजन्य।

**सज्जा** - स्त्री० [सं] साज-सामान; फ़ौजी सामान (कवच आदि); पोशाक; सजावट।

**सज्जाद** - वि० [अ] सिजदा करनेवाला, उपासक।

**सज्जादा** - पु० [अ] नमाज़ पढ़ने का आसन; किसी साधु-संत की गद्दी; **यौ०** —नशीन - गद्दीधर।

**सज्जित** - वि० [सं] तैयार; सजा हुआ; हथियारो से लैस।

**सज्जी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की क्षार-युक्त मिट्टी; **यौ०** —खार - सज्जी; —बूटी - एक क्षुप जिससे सज्जीखार बनाया जाता है।

**सज्ञान** - वि० [सं] ज्ञानयुक्त; बुद्धिमान।

**सज्या** - स्त्री० [हिं] शय्या।

**सझिदार** - पु० [हि] हिस्सेदार।

**सझिदारी** - स्त्री० [हिं] साझा, साझीदारी।

**सझिया** - पु० [हिं] साझा; हिस्सेदार।

**सटक** - स्त्री० [हिं] चुपके से चलने की क्रिया; लचकनेवाली पतली छड़ी।

**सटकना** - 1. अ० [हिं] धीरे-से खिसक जाना; 2. स० अनाज निकालने के लिए डंठलो को पीटना।

**सटकाना** - स० [हिं] छड़ी आदि से मारना; 'गुड़गुड़' ध्वनि करते हुए हुक्का पीना।

**सटकार** - स्त्री० [हिं] गौ आदि को हाँकना; झटकारना; सटकाने की क्रिया।

**सटकारना** - स० [हि] छड़ी आदि से मारना; झटकारना।

**सटकारा** - वि० [हिं] चिकना और लम्बा।

**सटकारी** - स्त्री० [हि] पतली व लचीली छड़ी।

**सटका** - पु० [हिं] झपट ; दौड़ ; **मु०** — मारना - तेज़ी से जाना ।

**सटना** - अ० [हिं] चिपकना ; दो वस्तुओं का एक साथ लग जाना ; साथ होना ।

**सटपट** - स्त्री० [हिं] द्विविधा ; संकोच ।

**सटपटाना** - अ० [हिं] दब जाना ; भौंचक्का होना ; हिचकिचाना ; 'सटपट' शब्द करना ।

**सटरपटर** - 1. वि० [हिं] तुच्छ ; बहुत मामूली ; 2. स्त्री० अदनी चीज़ ; झंझट ।

**सटसट** - अव्य० [अनु] जल्द ; 'सटसट' शब्द करते हुए ।

**सटा** - स्त्री० [सं] जूड़ा ; कलँगी ; साधुओं की जटा ; सूअर का बाल ; शेर का अयाल ।

**सटाकी** - स्त्री० [हिं] डंडे या पैने के सिरे पर बँधी हुई चमड़े की पट्टी ।

**सटान** - स्त्री० [हिं] जोड़ ; सटने की क्रिया ।

**सटाना** - स० [हिं] चिपकाना ; मिलाना ।

**सटियल** - वि० [हिं] घटिया ।

**सटिया** - स्त्री० [हिं] छड़ी ; सोने-चाँदी की चूड़ी ; सिंदूर करने की चाँदी की शलाका ।

**सटीक** - वि० [सं] टीका या व्याख्या से युक्त ; बिलकुल ठीक ।

**सटोरिया** - पु० [हिं] सट्टेबाज़ ।

**सट्टा** - पु० [हिं] इक़रारनामा ; बाज़ार ; **यौ०** —बट्टा - छलपूर्ण उपाय ; मेल-जोल ; सट्टे-बाज़ - अधिक लाभ की आशा से ख़तरा उठाते हुए भी क़ीमती चीज़ों का सौदा करना ।

**सट्टी** - स्त्री [हिं] किसी एक चीज़ का बाज़ार ; **मु०** —मचाना - शोरगुल करना , —लगाना - चीज़ें अस्तव्यस्त करना ।

**सठियाना** - अ० [हिं] साठ वर्ष की अवस्था का होना ; बुढ़ापे के कारण मानसिक शक्ति का ह्रास होना ।

**सठेरा** - पु० [हिं] बिना छाल के सन का डंठल, सनई ।

**सड़क** - स्त्री० [हिं] सवारियों आदि के गमनागमन के योग्य बना हुआ चौड़ा मार्ग, रास्ता ।

**सड़न** - स्त्री० [हिं] सड़ने की क्रिया ।

**सड़ना** - अ० [हिं] किसी चीज़ का गलना ; बुरी हालत में रहना ।

**सड़सठ** - 1. वि० [हिं] साठ से सात अधिक ; 2. पु० साठ से सात अधिक की संख्या ।

**सड़ा** - पु० [हिं] बच्चा देने पर गायों को पिलायी जानेवाली एक तरह की दवा ।

**सड़ाइँध** - स्त्री० [हिं] सड़ायँध ।

**सड़ाक** - स्त्री० [अनु] पतली छड़ी आदि को सटकारने की आवाज़ ; शीघ्रता ।

**सड़ान** - स्त्री० [हिं] सड़ने की क्रिया ।

**सड़ाना** - स० [हिं] किसी चीज़ को सड़ने में प्रवृत्त करना ; बुरी हालत में रखना ।

**सड़ायँध** - स्त्री० [हिं] सड़ी हुई चीज़ से निकलनेवाली दुर्गन्ध ।

**सड़ाव** - पु० [हिं] सड़ने की क्रिया या स्थिति ।

**सड़ासड़** - अव्य [अनु] 'सड़-सड़' की ध्वनि के साथ ।

**सड़ियल** - वि० [हिं] सड़ा-गला हुआ ; तुच्छ ; रद्दी ।

**सण** - पु० [सं] शण, सन का क्षुप ।

**सत** - 1. पु० [हिं] यथार्थता ; जीवशक्ति ; सत्त्व, किसी पदार्थ का सार ; **यौ०**— गुरु - परमात्मा ; अच्छा गुरु ; —जुग - सत्ययुग ; —भाय, भाव - सद्‌भाव ; —वंती - पतिव्रता, सती ; —संग, संगति - अच्छी संगति ; **मु०** —पर

चढ़ना - सती होना ; —पर रहना - पातिव्रत्य का पालन करना ; 2. वि० सत्य ; यथार्थ ; सौ ; सात का समासगत रूप ; **यौ०** —कोन - सात कोनोंवाला ; —गँठिया - तरकारी बनाने के काम आनेवाली एक वनस्पति ; —दंता - सात दाँतोंवाला ; सात दाँतोंवाला पशु , —पतिया - सात पति करनेवाली स्त्री ; एक तरह की तरोई ; —फेरा - सप्तपदी नामक वैवाहिक कृत्य ; —भैया - एक तरह की मैना ; —मासा - सात मास में उत्पन्न होनेवाला (बच्चा) ; —रंग - सात रंगोंवाला ; —लड़ी - सात लड़ियों का हार ; —सई - सात सौ पद्योंवाला ग्रंथ ।

**सतकारना** - स० [हिं] आदर-सम्मान करना ।

**सतत** - 1. वि० [सं] अविच्छिन्न ; 2. अव्य० सर्वदा ; **यौ०** —गति - वायु ; —ज्वर - हमेशा बना रहनेवाला ज्वर ; —मानस - हमेशा किसी ओर मन प्रवृत्त करनेवाला ; —शास्त्री - हमेशा अध्ययन करनेवाला ।

**सतनजा** - पु० [हिं] सात तरह के अनाजों का मिश्रण ।

**सतनी** - स्त्री० [हिं] सप्तपर्णी; एक ऊँचा पेड़ ।

**सतर** - 1. स्त्री० [अ] पंक्ति ; लकीर ; 2. पु० गुह्यांग ; पर्दा ; छिपाना ; 3. वि० [हिं] टेढ़ा ; क्रुद्ध ।

**सतरकी** - स्त्री० [हिं] सत्रहवें दिन किया जानेवाला मृतक-कर्म ।

**सतराना** - अ० [हि] गुस्सा करना ; बिगड़ना ।

**सतराहट** - स्त्री० [हिं] कोप ; रोष ।

**सतरौहाँ** - वि० [हिं] क्रोधयुक्त ; क्रोध-सूचक ।

**सतर्क** - वि० [सं] तर्कपूर्ण ; विवेकशील ; सावधान ।

**सतर्कता** - स्त्री० [स] सावधानी ; होशियारी ।

**सतर्पना** - स० [हिं] अच्छी तरह संतुष्ट करना ।

**सतल** - वि० [सं] तलयुक्त ; पेंदेवाला ।

**सतलज** - स्त्री० [हिं] पंजाब की एक नदी ।

**सतह** - स्त्री० [अ] वस्तु का ऊपरी भाग ; तल , वह वस्तु जिसमें केवल लम्बाई-चौड़ाई हो और गहराई न हो ; छत ; जल का ऊपरी भाग ; फ़र्श ; **यौ०** —ज़मीन - पृथ्वीतल ।

**सतहत्तर** - 1. वि० [हिं] सत्तर से सात अधिक ; 2. पु० सत्तर से सात अधिक की संख्या ।

**सतही** - वि० [अ] जिसमें गहराई न हो ; ऊपरी ।

**सतांग** - पु० [हिं] रथ ।

**सताना** - स० [हिं] कष्ट देना ; परेशान करना ।

**सतार** - 1. वि० [हिं] ताराओं से युक्त ; 2. पु० [सं] ग्यारहवाँ स्वर्ग ।

**सतावर** - स्त्री० [हिं] दवा के काम आने-वाली एक झाड़दार बेल ।

**सतासी** - 1. वि० [हिं] अस्सी से सात अधिक ; 2. पु० सतासी की संख्या ।

**सति** - 1. स्त्री० [हिं] दान ; नाश ; 2. वि०, 3. पु० सत्य ।

**सती** - स्त्री० [सं] पति के शव के साथ जलनेवाली स्त्री ; पतिव्रता ; साध्वी स्त्री ; सन्यासिनी ; दक्ष की एक कन्या ; सुगंधित मिट्टी ; दुर्गा ; **यौ०** —चौरा - किसी सती के स्मारकरूप में बना हुआ चबूतरा ; —व्रत - पातिव्रत ; **मु०** —होना - पति के शव के साथ जल मरना ; किसीके पीछे परेशान होना ।

**सतीत्व** - पु० [सं] सती होने का भाव ; **यौ०** —हरण - सतीत्व नष्ट करना ।

**सतीर्थ** - 1. वि० [सं] तीर्थयुक्त ; 2. पु० साथ अध्ययन करनेवाले ब्रह्मचारी ; शिव ।

**सतीर्थ्य** - पु० [सं] सहाध्यायी ।

**सतुआ** - पु० [हिं] भुने हुए अन्न का चूर्ण, सत्तू ; यौ० —संक्राति - मेष की संक्रांति ।

**सतून** - पु० [फ़ा] खंभा ; स्तंभ ।

**सतूना** - पु० [हिं] बाज़ के झपटने का एक ढंग ।

**सतृष, सतृष्ण** - वि० [सं] प्यासा ; इच्छुक ।

**सतोगुण** - पु० [हिं] सत्वगुण ।

**सतौला** - पु० [हिं] प्रसव के सातवें दिन किया जानेवाला प्रसूता का स्नान ।

**सतौसर** - पु० [हिं] सात लड़ियों का हार ।

**सत्** - 1. वि० [सं] यथार्थ, सत्य ; वर्तमान ; सत्तायुक्त ; उत्तम ; उचित ; चतुर ; धीर ; पवित्र , धार्मिक ; सुंदर ; सम्मान्य; स्थायी ; 2. पु० संत ; धार्मिक व्यक्ति ; यथार्थता ; ब्रह्म ; यौ० —कथा - अच्छी वार्ता या कथा ; —करण - अंत्येष्टि-क्रिया ; सत्कार करना ;— कर्ता - अच्छा काम करनेवाला ; सत्कार करनेवाला ; हितैषी ; —कर्म - नेक काम ; अंत्येष्टि ; प्रायश्चित्त ; —कला - ललित कला ; —कवि - उत्तम कवि ; —कार - आदर-सम्मान ; आतिथ्य ; उत्सव ; दावत ; —कार्य - सम्मान के योग्य ; कारण में कार्य का निहित रहना (सांख्य) ; —कीर्ति - सुयश ; जिसका अच्छा नाम फैला हो ; —कुल - उत्तम कुल ; कुलीन , —कुलीन - अच्छे वंश का ; —कृत - अच्छी तरह किया हुआ ; पूजित ; सम्मानित ; आतिथ्य ; पुण्य-कार्य; —कृति - आदर-सत्कार ; पुण्य ; सद्व्यवहार ; —क्रिय - अच्छा कर्म करनेवाला; —क्रिया - आतिथ्य ; मृतक-कर्म ; व्याख्या ; नेक काम ; व्यवस्थित करना ; सौजन्य ; —पत्र - कुमुद आदि का नया पत्ता ; —पथ - शास्त्रविहित सिद्धांत ; सदाचार ; सुमार्ग ; —परिग्रह - योग्य व्यक्ति से दान ग्रहण करना ; —पात्र - योग्य व्यक्ति ; कोई चीज़ प्राप्त करने के योग्य व्यक्ति ; —पुत्र - योग्य पुत्र ; —पुरुष - सज्जन ; भला आदमी ; —फल - अच्छे फलवाला ; अनार ; —संकल्प - अच्छे अभिप्रायवाला ; नेक-नीयत ; —संग, संगति - अच्छे आदमियों का साथ ; —सहाय - अच्छा मित्र ; जिसके मित्र नेक हो ; —सार - कवि ; चित्रकार ; जो अच्छा रसदार हो ; एक वृक्ष ।

**सत्त** - पु० [हिं] सत्व ; तत्त्व ; सत्य ; सतीत्व ।

**सत्तर** - 1. वि० [हिं] साठ से दस अधिक ; 2. पु० सत्तर की संख्या ।

**सत्तरह** - 1. वि० [हिं] दस से सात अधिक ; 2. पु० सत्रह की संख्या ।

**सत्ता** - 1. स्त्री० [सं] अस्तित्व ; उत्तमता ; प्रभुत्व ; जाति (न्या०) ; यौ० —धारी - जिसके हाथ में शासनसूत्र हो ; 2. पु० [हिं] सात बूटियोंवाला ताश का पत्ता ।

**सत्ताइस** - 1. वि० [हिं] बीस से सात अधिक ; 2. पु० सत्ताइस की संख्या ।

**सत्तानवे** - 1. वि० [हिं] नब्बे से सात अधिक ; 2. पु० सत्तानवे की संख्या ।

**सत्तार** - पु० [अ] ईश्वर ; दोष ढाँकने-वाला ।

**सत्तावन** - 1. वि० [हिं] पचास से सात अधिक ; 2. पु० सत्तावन की संख्या ।

**सत्तासी** - 1. वि० [हिं] अस्सी से सात अधिक ; 2. स्त्री० सत्तासी की संख्या ।

**सत्तू** - पु० [हिं] भुने हुए अन्न का आटा, सतुआ ; **मु०** —बाँधकर पीछे पड़ना - पूरी तैयारी से किसी काम में लगना ; किसीके विरुद्ध निरंतर चेष्टाशील रहना।

**सत्त्व** - पु० [सं] अस्तित्व ; गुण या धर्म ; आत्मतत्त्व ; प्राणवायु ; स्वभाव ; मूल तत्त्व ; पदार्थ ; प्राणि ; जीवशक्ति , बुद्धि, प्रकृति के तीन गुणो में से एक ; संज्ञा , धार्मिकता ; सत्य ; विशेषता ; **यौ०**—कर्ता - प्राणियो का स्रष्टा ; —गुण - प्रकृति के तीन गुणो में से एक ; —गुणी, प्रधान - सत्त्वगुणवाला ; —लक्षणा - गर्व के लक्षणो से युक्त स्त्री ; —शाली - उत्साही ; —संपन्न - सत्त्वगुणयुक्त ; धीर ; —संशुद्धि - स्वभाव की विशुद्धता ; —सार - असाधारण साहस ; शक्ति का सार।

**सत्य** - 1. वि० [सं] सच ; ईमानदार, यथातथ्य ; सच्चा ; पूरा किया हुआ ; पुण्यात्मा ; विश्वस्त ; 2. पु० अच्छाई, वादा ; सत्ययुग ; लगन ; यथार्थता ; विशुद्धता; सचाई ; सच्ची बात; पारमार्थिक सत्ता ; प्रमाणित सिद्धांत ; जल ; शपथ ; **यौ०** —काम - सत्य का प्रेमी ; —कृत - उचित कार्य करनेवाला ; —क्रिया - प्रतिज्ञा ; शपथ ; —ग्रंथी - गाँठ देकर ठीक तरह से बाँधनेवाला ; —ज्ञ - सत्य का जानकार ; —दर्शी - सत्यासत्य का विवेक करनेवाला ; —धन - परम सत्यवादी ; सत्य को ही सर्वस्व माननेवाला ; —धर्म - शाश्वत सत्य ; जिसके आदेश सत्य हों ; —धृति - परम सत्यवादी ; —निष्ठ - सत्य पर निष्ठा रखनेवाला ; —पर - ईमानदार ; सच्चा ; —पूत - सत्य द्वारा विशुद्ध किया हुआ ; —प्रतिज्ञ - वचन का पालन करनेवाला ; —प्रतिष्ठान, मूल - सत्य पर आधारित ; —बंध - सत्यवादी ; —मेधा - सच्ची प्रज्ञावाला ; —युग - चार युगों में से पहला ; —युगी - बहुत नेक ; बहुत पुराना ; सत्ययुग का ; —रत - सत्य-परायण ; —रूप - विश्वसनीय; —लोक - ब्रह्मलोक ; —वक्ता, वचन - सत्यवादी ; —वद्य - सत्य बोलनेवाला ; —वाक् - सत्य वचन ; —वाद - प्रतिज्ञा ; वादा ; —वादी - स्पष्टवक्ता ; —विक्रम - जिसमें सच्ची वीरता हो ; —वृत्त - सदाचारी ; —वृत्ति - सत्य का आचरण ; —व्यवस्था - सत्य का निश्चय ; —व्रत - सत्य का व्रत रखनेवाला , सत्यपालन का व्रत , —शपथ - जिसका शाप पूरा हो ; —संकल्प - दृढ़संकल्प ; —संध - वचन पूरा करनेवाला ; सत्यसकल्प ; —संरक्षण - वचन का पालन करना ; —साक्षी - विश्वस्त गवाह ; —सार - पूर्णतः सत्य ; —स्वप्न - जिसके स्वप्न सत्य हो।

**सत्यतः** - अव्य० [सं] वस्तुतः, सचमुच।

**सत्यता** - स्त्री० [स] नित्यता ; वास्तविकता, सचाई।

**सत्याकृति** - स्त्री० [सं] सौदे का इक़रार करना ; पेशगी देना।

**सत्याग्रह** - पु० [सं] सत्य के लिए आग्रह ; सत्यपक्ष के लिए कष्ट झेलते हुए लक्ष्य की प्राप्ति का उद्योग करना।

**सत्याग्रही** - वि० [सं] उद्देश्यपूर्ति के लिए सत्याग्रह का सहारा लेनेवाला।

**सत्यानास** - पु० [हिं] सर्वनाश।

**सत्यानासी** - 1. वि० [हिं] सर्वनाश करनेवाला ; अभागा ; 2. स्त्री० **भड़भाँड़,** एक कँटीला पौधा।

**सत्यानुरक्त** - वि० [सं] सत्यवादी।

**सत्यानृत** - 1. वि० [स] जिसमें सच और झूठ का मेल हो; 2. पु० सच और झूठ; व्यापार।

**सत्यापन** - पु० [सं] सौदे का इक़रार, सत्य की जाँच-पड़ताल।

**सत्रप** - वि० [सं] लज्जाशील; विनम्र।

**सत्रह** - 1. पु०, 2. वि० [हिं] सतरह।

**सत्रहीं** - स्त्री० [हिं] मृत्यु के बाद सत्रहवें दिन का कृत्य।

**सत्वर** - 1. वि० [सं] तेज़; 2. अव्य० शीघ्र।

**सथर** - पु० [हिं] पृथ्वी; स्थल।

**सथिया** - पु० [हिं] दीवार; कलश आदि पर अंकित किया जानेवाला एक मांगलिक चिह्न, स्वस्तिक।

**सदंश** - 1. वि० [सं] तेज़ चोंचवाला; 2. पु० केंकड़ा।

**सद** - वि० [फ़ा] सौ; बहुत; **यौ०** —आफ़रीन् - धन्य-धन्य! शतशत साधुवाद, —चाक - बहुत जगह से फटा हुआ; —पा - कनखजूरा; —पारा - खंड-खंड; —वर्ग - गेंदे का फूल; —शुक्र - ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद है; —साल - सौ साल; —साला - सौ साल का; —हा - सैकड़ों, कई सौ।

**सदई** - अव्य० [हिं] सदा।

**सदक़ा** - पु० [अ] ख़ुदा के नाम पर फ़क़ीरों को दी जानेवाली चीज़; अनुग्रह; ख़ैरात; किसी पर वारकर दान की जानेवाली या चौराहे पर रखी जानेवाली चीज़; **यौ०** —का कौआ - काला-कलूटा आदमी; किसी पर वारकर छोड़ दिया जानेवाला कौआ; —का चौराहा - वह चौराहा जहाँ सदक़े की चीज़ें रखी जाएँ।

**सदन** - पु० [सं] निवासस्थान; क्लांत होना; क्षीण होना, जल; आसन; एक भक्त कसाई।

**सदना** - अ० [हिं] नाव के छेदों से पानी आना; रसना।

**सदनुग्रह** - पु० [सं] अच्छे लोगों पर कृपा करना।

**सदफ़** - स्त्री० [अ] सीपी।

**सदमा** - पु० [अ] दिल पर लगनेवाली चोट; नुकसान; आघात; चोट, **मु०** —उठाना - हृदय पर हुए आघात को सहन कर लेना; —पहुँचना - चोट लगना; नुक़सान पहुँचना।

**सदय** - वि० [सं] दयालु; **यौ०** —हृदय - कोमलचित्त, रहमदिल।

**सदर** - पु० [अ] सद्र; **यौ०** —अमीन - जज के मातहत रहनेवाला अधिकारी; —आला - मातहत जज; —दीवान - शाही ख़ज़ाने का प्रधान अधिकारी; —दीवानी अदालत - हाईकोर्ट; —बाज़ार - छावनी का बड़ा बाज़ार; —बोर्ड - माल का सर्वोच्च विभाग।

**सदरी** - स्त्री० [हिं] बिना आस्तीन की मिरजई।

**सदर्थना** - स० [हिं] समर्थन या पुष्टि करना।

**सदर्प** - 1. वि० [हिं] घमंडी; 2. अव्य० दर्पपूर्वक।

**सदसत्** - 1. वि० [सं] भला और बुरा; यथार्थ और अयथार्थ; 2. पु० वह जिसका अस्तित्व हो और वह जिसका अस्तित्व न हो; अच्छाई-बुराई; सचाई-झुठाई; **यौ०** —विवेक - भले-बुरे की पहचान।

**सदस्य** - पु० [सं] सभासद, पंच, सभ्य, किसी सभा या समाज से संबंध रखनेवाला व्यक्ति; विधिदर्शी।

**सदस्यता** - स्त्री० [सं] सदस्य की स्थिति या भाव।

**सदा** - 1. अव्य० [सं] नित्य ; निरंतर ; यौ० —कारी - हमेशा सक्रिय रहनेवाला ; —कालवह - हमेशा प्रवाहित होनेवाला ; —गति - सदैव गतिशील रहनेवाला ; वायु ; ब्रह्म ; सूर्य ; —दान - दानशीलता ; मद बहानेवाला हाथी ; ऐरावत ; हमेशा दान देनेवाला ; —पुष्प - हमेशा फूलनेवाला ; कुंद ; नारियल ; मदार ; —प्रमुदित - आठ सिद्धियों में से एक ; —फल - हमेशा फलनेवाला ; गूलर ; कटहल ; बेल ; नारियल ; —फला, फली - जवाकुसुम ; एक तरह का बैंगन ; —बहार - एक फूल ; हमेशा फूलनेवाला ; हमेशा हरा-भरा रहनेवाला ; —भव - निरतर ; —भ्रम - हमेशा भ्रमण करनेवाला , —मत्त - हमेशा मौज़ में या मत्त रहनेवाला ; हमेशा मद बहानेवाला ; —मुदित - एक सिद्धि ; —योगी - हमेशा योगाभ्यास करनेवाला ; —वर्त - हमेशा अन्न बाँटने का व्रत ; —वर्ती - हमेशा अन्न वितरण करनेवाला ; —वृद्ध - हमेशा उन्नति करनेवाला ; —शिव - जो सदा दयालु रहे ; शिव ; —सुहागिन - हमेशा सुहागिन बनी रहनेवाली ; वेश्या ; स्त्रीवेष में रहनेवाले एक तरह के फ़कीर ; एक छोटी चिड़िया ; 2. पु० [अ] आवाज़ ; आहट ; प्रतिध्वनि ; फ़कीर के माँगने की आवाज़ ; मु० —देना, लगाना - पुकारना ; फ़कीर का आवाज़ लगाना ।

**सदाक़त** - स्त्री० [अ] खरापन ; तसदीक ; सच्चाई ।

**सदाकारी** - वि० [सं] अच्छी आकृतिवाला ।

**सदाचरण, सदाचार** - पु० [सं] अच्छा चाल-चलन, सद्व्यवहार ।

**सदाचारी** - वि० [सं] अच्छे चाल-चलनवाला ; सुकर्मी ।

**सदातन** - 1. वि० [सं] सतत, निरंतर ; 2. पु० विष्णु ।

**सदार** - वि० [सं] सपत्नीक ।

**सदाशय** - वि० [सं] उदाराशय, ऊँचे विचार का ।

**सदी** - स्त्री० [फ़ा] शताब्दी ; सैकड़ा ।

**सदुक्ति** - 1. स्त्री० [सं] अच्छे शब्द ; 2. वि० अच्छे शब्दों से युक्त ।

**सदुपदेश** - पु० [सं] अच्छी सलाह ; उत्तम शिक्षा ।

**सदृश** - वि० [सं] योग्य ; उचित ; एक-जैसा ; यौ० —विनिमय - समान वस्तु की पहचान में भ्रम होना ; —वृत्ति - एक ही जैसी वृत्तिवाला , —स्पदन - नियत समय पर होनेवाली धड़कन ।

**सदृशता** - स्त्री० [सं] एकरूपता ; समानता ।

**सदेह** - 1. वि० [सं] देहयुक्त ; 2. अव्य० बिना शरीर छोड़े ।

**सदैव** - अव्य० [सं] सर्वदा, हमेशा ही ।

**सदोष** - वि० [सं] आपत्तिजनक ; अपराधी ; रात्रियुक्त ।

**सद्** - वि० [सं] 'सत्' का समासगत रूप ; यौ० —गति - अच्छी दशा ; स्वर्गप्राप्ति ; —गुण - अच्छा गुण ; अच्छे गुणों से युक्त ; —गुरु - धर्मगुरु ; —ग्रंथ - सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करनेवाला ग्रंथ, उत्तम ग्रंथ ; —ग्रह - शुभ ग्रह ; सत्य और ईश्वर की ओर प्रवृत्त ; —धर्म - अच्छा नियम या अच्छा न्याय ; बौद्धादि धर्म के लिए प्रयुक्त नाम ; —भाग्य - अच्छा भाग्य ; —भाव - दयालुता ; सज्जनता ; अस्तित्व ; पदार्थ आदि की वास्तविक स्थिति ; —युक्ति - अच्छा तर्क ; अच्छा उपाय ;

—वंश - अच्छा कुल ; अच्छा बाँस ; कुलीन ; —वस्तु - अच्छी चीज़ ; अच्छा कथानक ; अच्छा काम ; —वार्ता - अच्छा समाचार ; अच्छी वार्ता ; —वृत्त - सदाचार ; सुंदर वर्तुलाकार आकृति ; सदाचारयुक्त ; —वृत्ति - सद्व्यवहार, सदाचार ।

**सद्द** - 1. पु० [हिं] शब्द ; [फ़ा] रोकना ; 2. अव्य० शीघ्र ; 3. स्त्री० दीवार ; रोक ।

**सद्म** - पु० [सं] ठहरने का स्थान ; आसन, मकान ; देवालय ; युद्ध ; वेदी ; वेधशाला ; जल ; पृथ्वी और आकाश ।

**सद्मिनी** - स्त्री० [सं] महल, हवेली ।

**सद्यः** - अव्य० [सं] आज ही ; उसी दिन ; अभी-अभी ; तत्क्षण ; तेज़ी से ; **यौ०** —क्षत - ताज़ा घाव ; —पाक - जिसका फल तुरंत दीख पड़े ; —पाती - जल्दी गिरनेवाला ; —प्रज्ञाकर - तुरंत समझ पैदा करनेवाला ; —प्रसूता - अभी-अभी तुरंत बच्चा जननेवाली स्त्री ; —फल - जिसका फल तुरंत दीख पड़े ; —स्नात - तुरंत का नहाया हुआ ।

**सद्र** - पु० [अ] छाती, सीना ; शीर्षभाग ; सर्वोच्च स्थान ; सभापति , सामने का रुख ; मकान का सहन ; **यौ०** सद्रे-आज़म - प्रधान मंत्री ; प्रधान जज ; सद्रे-नशीन - सभापति ।

**सद्रव्य** - वि० [सं] द्रव्ययुक्त ; सुनहला ।

**सधन** - 1. वि० [सं] धनयुक्त ; धनी ; 2. पु० सम्मिलित धन ।

**सधना** - अ० [हिं] अपने अनुकूल होना ; अभ्यस्त होना ; काम पूरा होना ; घोड़ों आदि का सीखकर काम के लायक़ होना ; निशाना ठीक होना ; सँभलना ; साधा जाना ।

**सधर** - पु० [हिं] ऊपरी ओंठ ।

**सधर्म** - 1. वि० [सं] एक ही धर्म या स्वभाववाला ; सदृश ; पुण्यात्मा ; एक ही जैसे कर्तव्योंवाला ; एक ही संप्रदाय या जाति का ; 2. पु० एक ही (समान) गुण या स्वभाव ; **यौ०** —चारिणी - पत्नी ।

**सधर्मा** - पु० [स] समान धर्मयुक्त ।

**सधर्मिणी** - स्त्री० [सं] पत्नी ।

**सधर्मी** - वि० [सं] समान धर्म का अनुयायी ।

**सधवा** - स्त्री० [स] सुहागिन, सौभाग्यवती ।

**सधाना** - स० [हि] साधने के काम में दूसरे को प्रवृत्त करना ।

**सधावर** - पु० [हिं] सातवे महीने में गर्भवती स्त्री को दिया जानेवाला उपहार ।

**सन** - 1. वि० [हिं] स्तब्ध ; 2. स्त्री० किसी चीज़ के हवा में तेज़ी से चलने से उत्पन्न होनेवाला शब्द ; 3. प्रत्य० करण की विभक्ति ; 4. पु० एक पौधा जिसकी छाल से रस्सी आदि बनाते हैं ; **यौ०** —सन - किसी चीज़ के हवा में चलने की निरंतर आवाज़ ; तलवार चलने की आवाज़ ; सनसनाहट ।

**सनअत** - स्त्री० [अ] कारीगरी ; अलंकार ; पेशा ; हुनर ; **यौ०** —गर - कारीगर ।

**सनक** - स्त्री० [हिं] पागलपन ; धुन ; झोंक ; **मु०** —आना - पागल होना ; —चढ़ना - सवार होना ; धुन सवार होना ; —लेना - पागलपन का कोई काम करना ।

**सनकना** - अ० [हिं] उन्मत्त या पागल होना ।

**सनकाना** - स० [हि] किसीको पागल बनाना ।

**सनकारना** - स० [हिं] इशारा करना ; इशारे से बुलाना ; किसी काम के लिए संकेत करना ।

**सनकियाना** - 1. स० [हिं] पागल बनाना ; संकेत करना ; 2. अ० पागल होना ।

**सनत्ता** - पु० [हिं] रेशम के कीड़े पालने का पेड़ ।

**सनद** - 1. स्त्री० [अ] अनुमतिपत्र ; काज़ी या मुफ़्ती की मुहर ; तकियागाह ; प्रमाण ; प्रमाणपत्र ; 2. वि० प्रमाणरूप ; प्रामाणिक ; विश्वास करने योग्य ; **यौ०** —याफ़्ता - जिसके पास सनद हो ।

**सनदी** - 1. वि० [हि] प्रामाणिक ; सनद-याफ़्ता ; 2. स्त्री० वृत्तांत ।

**सनना** - अ० [हिं] पानी के योग से चूर्णादि का एक में मिलना ; पगना ; लथपथ होना ।

**सननी** - स्त्री० [हिं] पानी में साना हुआ भूसा ; सानी ।

**सनम** - पु० [अ] मूर्ति ; माशूक ; **यौ०** —क़दा, ख़ाना - मंदिर ।

**सनमानना** - स० [हिं] आदर या सत्कार करना ।

**सनसनाना** - अ० [अनु] हवा चलने या पानी उबलने पर गतिशील पदार्थ में 'सनसन' शब्द उत्पन्न होना ।

**सनसनाहट** - स्त्री० [अनु] हवा चलने या जल के उबलने पर उत्पन्न 'सनसन' की आवाज़ ।

**सनसनी** - स्त्री० [अनु] आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता ; झुनझुनी ; खल-बली ; सनसनाहट ; सन्नाटा ।

**सनहकी** - स्त्री० [हि] मुसलमानो के काम में आनेवाला थाली-जैसा मिट्टी का बर्तन ।

**सनहाना** - पु० [हि] खटाई आदि के पानी से भरा हुआ बर्तन ।

**सना** - पु० [अ] प्रशंसा ; स्तुति , **यौ०** —ख़्वाँ - प्रशंसक ।

**सनातन** - वि० [सं] अनादि ; नित्य, प्राचीन ; स्थायी ; **यौ०** —धर्म - प्राचीन धर्म ; परंपरागत धर्म ; —पुरुष - विष्णु ; आदिपुरुष ।

**सनातनी** - वि० [हिं] बहुत पुराना ; सनातन धर्म का अनुयायी ।

**सनाथ** - वि० [हिं] स्वामीयुक्त ; जनाकीर्ण (सभा आदि) ; सफल ; **मु०** —करना - आश्रय देना ।

**सनाथा** - स्त्री० [सं] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो ।

**सनाय** - स्त्री० [हिं] सोनामुखी, एक पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं ।

**सनासन** - अव्य० [अनु] तेज़ी से ; 'सन्-सन्' शब्द के साथ ।

**सनाह** - पु० [हि] कवच ।

**सनि** - 1. पु० [सं] दान ; पूजा ; विनय ; 2. स्त्री० दिशा ; प्राप्ति ।

**सनिद्र** - वि० [सं] सोया हुआ ।

**सनियम** - वि० [सं] नियमित, धर्मानुष्ठान करनेवाला ।

**सनिर्विशेष** - वि० [सं] उदासीन ।

**सनेही** - 1. वि० [हिं] स्नेही, प्रेमी ; 2. पु० प्रेम करनेवाला ।

**सनोवर** - पु० [अ] चीड़ का पेड़ ।

**सन्** - पु० [अ] संवत् ; साल ; **यौ०** —ईस्वी - ईसाइयो का संवत् जिसका प्रचलन ईसा के जन्मदिन से हुआ है ; —हाल - वर्तमान संवत् ; —हिजरी - मुसलमानो का संवत् ।

**सन्न** - 1. वि० [हिं] भय आदि से स्तब्ध ; 2. पु० [सं] अल्प परिमाण ; नाश ; क्षीण ; गतिहीन ; निश्शब्द ; बैठा हुआ ; निकटस्थ ; प्रस्थित ; विषण्ण ; मंद , सिकुड़ा हुआ ; **यौ०** —जिह्व - मौन ; —शरीर - जिसका शरीर थक गया हो ।

**सन्नद्ध** - वि० [सं] कसकर बँधा हुआ; तैयार; युद्ध के लिए तैयार; घातक; मोहक; युक्त; विकासोन्मुख; संलग्न।

**सन्नाटा** - 1. पु० [हिं] निर्जनता; चुप्पी; नीरवता; सनसनाहट, हवा चलने का शब्द; 2. वि० निर्जन; नीरव; मु० —खींचना, मारना - बिलकुल चुप हो जाना; —बीतना - उदासी में वक़्त कटना; सन्नाटे के साथ, सन्नाटे से - तेज़ी से, सन्नाटे में आना - दुख या आश्चर्य में चुप रह जाना।

**सन्नाम** - पु० [सं] सुंदर नाम।

**सन्निकट** - अव्य० [सं] नज़दीक, पास।

**सन्निकर्ष** - पु० [सं] इंद्रिय का विषय से संबंध (न्या०); उपस्थिति; निकट लाना; संबंध; सामीप्य।

**सन्निकृष्ट** - 1. वि० [सं] निकट; पास लाया हुआ; 2. पु० सामीप्य।

**सन्निधान, सन्निधि** - स्त्री० [सं] अपने पास रखना; इंद्रिय-विषय; आधार; साथ या पास रखना; सामीप्य; जमा करना; योग।

**सन्निपात** - पु० [सं] त्रिदोषजन्य भीषण रोग, उतरना, गिरना; टक्कर, भिड़ना; योग; संगम; पहुँच; समूह।

**सन्निभ** - वि० [सं] समान।

**सन्निमित्त** - पु० [सं] अच्छा कारण; शुभ शकुन।

**सन्निरोध** - पु० [सं] क़ैद; तंगी; दमन; रोक; संकीर्ण मार्ग।

**सन्निविष्ट** - वि० [सं] साथ बैठा हुआ; समाया हुआ; एकत्रीभूत; लीन; जिसने पड़ाव डाला हो।

**सन्निवेश** - पु० [सं] आसन; आधार; एकत्र होना; बैठने या रहने का स्थान; प्रवेश करना; आकृति; उचित स्थान पर बैठाना; मंडली; संयोग; कुटीर; छाप; रचना; नगर आदि के पास लोगों के एकत्र होकर मनोरंजन या व्यायाम आदि करने का मैदान।

**सन्निहित** - 1. वि० [सं] पास रखा हुआ; आसन्न; उपस्थित; उद्यत; ठहरा हुआ; जमाया हुआ; 2. पु० सामीप्य।

**सन्नी** - स्त्री० [हिं] सन की जाति का एक पौधा।

**सन्न्यस्त** - वि० [सं] अलग किया या छोड़ा हुआ; जमा किया हुआ; सौंपा हुआ; ठहराया हुआ; रखा हुआ; विरक्त।

**सन्मात्र** - 1. वि० [सं] जिसका केवल अस्तित्व माना जाय; 2. पु० आत्मा।

**सन्मान** - पु० [हिं] सम्मान; [सं] सज्जनों का आदर-सत्कार।

**सन्मार्ग** - पु० [सं] सुमार्ग।

**सपई** - स्त्री० [हिं] पेट में होनेवाला केंचुआ; बेला का फूल।

**सपक्ष** - 1. वि० [सं] पंखदार; डैनोंवाला; पक्षवाला; जिसका दो पक्षों में से कोई एक पक्ष हो; एकजातीय; मित्रों या सहायकों से युक्त; समान; जिसमें साध्य या अनुमान का विषय हो; 2. पु० समर्थक; सहजातीय व्यक्ति; सहायक; मित्र; साध्ययुक्त दृष्टांत (न्या०)।

**सपटा** - पु० [हिं] एक तरह का टाट; सफ़ेद कचनार।

**सपत्न** - 1. वि० [सं] शत्रुता का भाव रखनेवाला; 2. पु० शत्रु।

**सपत्नी** - स्त्री० [सं] सौत।

**सपत्नीक** - वि० [सं] पत्नी के साथ।

**सपत्र** - वि० [सं] पंखदार।

**सपदि** - अव्य० [सं] तत्काल, शीघ्र।

**सपना** - पु० [हिं] स्वप्न; मु०— होना - अप्राप्य होना।

**सपरदा, सपरदाई** - पु० [हिं] नाचनेवाली वेश्या के साथ साज बजानेवाला।

**सपरना** - अ० [हिं] पार लगना; हो सकना।

**सपराना** - स० [हिं] पार लगाना; पूरा करना।

**सपरिकर, सपरिक्रम** - वि० [सं] दलबल के साथ।

**सपरिजन, सपरिवार** - वि० [सं] परिवार के सदस्यों के साथ।

**सपर्ण** - वि० [सं] पत्तियों से युक्त।

**सपर्या** - स्त्री० [सं] पूजा; सत्कार; सेवा-शुश्रुषा।

**सपाट** - वि० [हिं] चौरस; जो ऊबड़-खाबड़ न हो।

**सपाटा** - पु० [हिं] झपट; तेज़ी; दौड़।

**सपिंड** - पु० [सं] एक ही (समान) पितरों को पिंड देनेवाला; छः पुश्त ऊपर से छः पुश्त नीचे तक का संबंधी।

**सपीड़** - वि० [सं] पीड़ायुक्त।

**सपीतिका** - स्त्री० [सं] कद्दू; लौकी।

**सपुलक** - वि० [सं] रोमांचयुक्त।

**सपूत** - पु० [हिं] अच्छा या कुल का नाम बढ़ानेवाला पुत्र।

**सपूती** - स्त्री० [हिं] अच्छे पुत्र की माता; सपूत होने का भाव।

**सपेला, सपोला** - पु० [हिं] साँप का छोटा बच्चा, सँपोला।

**सप्त** - 1. वि० [सं] छः से एक अधिक; 2. पु० सात की संख्या; **यौ०** —ऋषि - सप्तर्षि; —कोण - सात रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र; —गंग - वह स्थान जहाँ गंगा सात धाराओं में बहती है; —गुण - सातगुना; —जिह्व - सात जिह्वाओं-वाला, अग्नि; —तंति, तंत्र - सात तारोंवाला; —दश - सत्रह; —दिन, दिवस - सप्ताह; —द्वीप - पृथ्वी के सातों खंड; —नली - चिड़िया फँसाने का कंपा; —नाडीचक्र - सात टेढ़ी रेखाओं से बननेवाला एक वर्षासूचक चक्र; —पत्र - सात पत्तोंवाला; घोड़ों से खींचा जानेवाला; सूर्य; —पदी - विवाह की एक विधि जिसमें अग्नि की सात बार परिक्रमा की जाती है; —पर्ण, पलाश - सात पत्तोंवाला; —पाताल - सात अधोलोक (अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल); —पुरी - सात नगरियाँ (अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची अवंतिका और द्वारका); —प्रकृति - राज्य के सात अंग (राज, मंत्री, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग और सेना); —भुवन - ऊपर के सात लोक; —भूम - सात मंज़िलोंवाला; —भूमि - रसातल; —मंत्र - अग्नि; —मरीचि - सात किरणों-वाला, अग्नि; —मातृका - विवाह आदि में पूजी जानेवाली सात माताओं का वर्ग; —रात्र - सप्ताह; सात रात्रियों का काल; —लोक - सातों लोक; —लोकमय - सातों लोक धारण करनेवाला (विष्णु); —वर्ग - सात का समाहार; —शत - सात सौ; —सिरा - पान; तांबूल; —स्वर - संगीत का सप्तक।

**सप्तक** - 1. वि० [सं] सात; सातवाँ; 2. पु० संगीत के सात स्वरों का समाहार; सात का संग्रह।

**सप्तति** - वि० [सं] सत्तर।

**सप्तम** - वि० [सं] सातवाँ।

**सप्तमी** - स्त्री० [स] अधिकरण-कारक की विभक्ति; पक्ष की सातवी तिथि।

**सप्तर्षि** - पु० [सं] सात ताराओं का एक मंडल।

**सप्ताह** - पु० [सं] सात दिन की अवधि; सात दिन तक चलनेवाले यज्ञादि।

**सप्रमाण** - वि० [सं] प्रमाणयुक्त; ठीक; जो वैध अधिकारी हो, जिसके पक्ष में विधान हो।

**सप्रसव** - वि० [सं] एक ही मूल से उत्पन्न।

**सफ़** - स्त्री० [अ] नमाज़ पढ़नेवालों की पंक्ति; पंक्ति; पाँत बाँधने की जगह; चटाई; फ़र्श; **यौ०** —आरा - युद्ध के लिए सैनिकों को पंक्तिबद्ध करनेवाला; चढ़ाई करनेवाला; —बस्ता - पंक्तिबद्ध; —शिकन - पंक्ति तोड़नेवाला; वीर।

**सफताल्लू** - पु० [हिं] एक फल-वृक्ष, आड़ू।

**सफ़दर** - 1. वि० [अ] योद्धा; सफ़ों को तोड़नेवाला; 2. पु० अली की पदवी।

**सफ़र** - पु० [अ] यात्रा; कूच; शहर से बाहर जाना; हिजरी सन् का दूसरा महीना; **यौ०** —ख़र्ची - मार्गव्यय; —नामा - भ्रमणवृत्तांत।

**सफ़रजल** - पु० [अ] बिही।

**सफरमैना** - पु० [उ] सेना के आगे जाकर खाई व रास्ता आदि तैयार करनेवाले सैनिक।

**सफ़रा** - पु० [अ] पित्त।

**सफ़रावी** - वि० [अ] पित्तकृत; **यौ०** —मिज़ाज - पित्तप्रधान प्रकृति।

**सफरी** - स्त्री० [सं] एक प्रकार की चमकीली मछली।

**सफ़री** - 1. वि० [अ] यात्रा के उपयुक्त; यात्रा-संबंधी; सफ़र का; 2. पु० अमरूद; यात्री।

**सफल** - वि० [सं] फलयुक्त; कामयाब; फल उत्पन्न करनेवाला; सार्थक; अंडयुक्त।

**सफलता** - स्त्री० [सं] कामयाबी, पूर्णता; सार्थकता।

**सफलीभूत** - वि० [सं] कामयाब; जो सिद्ध या पूर्ण हो।

**सफ़हा** - पु० [अ] पृष्ठ; चौड़ाई; विस्तार; **यौ०** सफ़हे-हस्ती - इहलोक, दुनियाँ।

**सफ़ा** - स्त्री० [अ] चमक; निर्मलता; सफ़ाई; मक्के के पास की एक पहाड़ी; **यौ०** —चट - बिलकुल साफ़; मैदान; अच्छी तरह मुँड़ा हुआ (सिर); **मु०**—कर देना - साफ़ कर देना; पूरी तरह मूँड़ देना; —कहना - खरी बात कहना।

**सफ़ाई** - स्त्री० [हिं] झाड़-पोंछ; स्वच्छता; मैल या गंदगी का दूर किया जाना; खुरदरेपन का न रहना; चमक; चिकनाहट; नेकनीयती; सरलता; हृदयशुद्धि; हिसाब का चुकता हो जाना; दोष से मुक्ति; सुलह; बरबादी; समाप्ति; अभियुक्त का बचाव; फ़ुर्ती; निर्लज्जता; **यौ०** —का वकील - अभियुक्तपक्ष का वकील।

**सफ़ाया** - पु० [हिं] नाश; संहार; **मु०** —कर देना - सबको मार डालना; ख़त्म कर देना।

**सफ़ीना** - पु० [हिं] किताब; नोटबुक; बही।

**सफीर** - स्त्री० [हि] आवाज़; चिड़ियों की आवाज़; सीटी।

**सफ़ीर** - पु० [अ] राजदूत।

**सफ़ूफ़** - पु० [अ] चूर्ण; चूर्णरूप औषध।

**सफ़ेद** - 1. वि० [फ़ा] गोरा; श्वेत; सादा (कागज़); 2. स्त्री० गंजीफ़े की आठ बाजियों में से एक; **यौ०** —दाग़ - श्वेतकुष्ठ; —पलका - एक तरह का कबूतर; —पोश - सफ़ेद कपड़े पहननेवाला; शिष्ट किन्तु अल्पवित्तवाला आदमी; —मिट्टी - खड़िया मिट्टी; —रेश - बूढ़ा; **मु०** — पड़ जाना - चेहरे का रंग उड़ जाना, पीला पड़ जाना।

**सफेदा** - पु० [हिं] एक प्रकार का आम ; एक तरह का खरबूजा ; सफ़ेद धड़वाला एक पेड़ ; सुबह का उजाला ; सफ़ेद चमड़ा ; लोहे या लकड़ी आदि की रँगाई करने के लिए जस्ते से बनाया जानेवाला एक सफ़ेद रंग ।

**सफेदी** - स्त्री० [हिं] गोराई, चूने की पुताई ; सफ़ेद होना, मु० —आना - बुढ़ापा आना ; बाल सफ़ेद होना ।

**सफ्फ़ाक** - वि० [अ] जालिम, क्रूरकर्मा ।

**सफ्फ़ाकी** - स्त्री० [अ] क्रूरता, जुल्म ।

**सबंध, सबंधक** - वि० [सं] जिसके लिए कोई जमानत दी गयी हो ।

**सबंधु** - 1. वि० [सं] एक ही वंश का ; जिसके साथ निकट संबंध हो ; मित्रयुक्त ; 2. पु० रिश्तेदार, संबंधी ।

**सब** - वि० [हिं] कुल, संपूर्ण ।

**सबक़** - पु० [अ] पाठ ; चेतावनी के लिए दिया जानेवाल दंड ; सीख ; मु० —पढ़ाना - बहकाना ; शिक्षा देना ; —लेना - पढ़ना ; शिक्षा लेना ; —सिखाना - शिक्षा देना ।

**सबक़त** - स्त्री० [अ] दूसरे से आगे बढ़ना ; बढ़कर होना ।

**सबद** - पु० [हिं] शब्द ; किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि ।

**सबब** - पु० [अ] कारण ; दलील ; हेतु ।

**सबल** - वि० [सं] बलवान ; सेनायुक्त ; [अ] अनाज की बाल ; मोतियाबिंद ।

**सबा** - स्त्री० [अ] पूर्व से पश्चिम को बहनेवाली हवा ; यौ० —ख़राम, दम - वायुवेग से जानेवाला ; बहुत तेज़ दौड़नेवाला (घोड़ा) ।

**सबात** - स्त्री० [अ] दृढता ; स्थिरता ।

**सबार, सबारै** - अव्य० [हिं] शीघ्र ।

**सबील** - पु० [अ] उपाय ; वसीला ; रास्ता ; प्याऊ ।

**सबीह** - वि० [अ] गोरा चिट्टा ।

**सबूत** - पु० [अ] प्रमाण ।

**सबूर** - वि० [अ] क्षमाशील ; सब्र करनेवाला ।

**सबूस** - पु० [फ़ा] चोकर ; भूसी ; सिर पर जमनेवाली रूसी ।

**सबूह, सबूही** - स्त्री० [अ] सबेरे पी जानेवाली शराब ; शराब की बोतल ।

**सब्ज़** - वि० [फ़ा] हरा ; हरा-भरा ; यौ० —क़दम - मनहूस ; —क़दमी - मनहूसी ; —घोड़ा - भंग ; —परी - शराब ; सुन्दर हरी चीज़ ; —पुल - आसमान ; —पोश - सब्ज़ रंग की पोशाक पहननेवाला ; —बख़्त - सौभाग्यशाली ; —बख़्ती - सौभाग्य ; —मक्खी - हरी मक्खी ; —मुखी - हरे रंग का कबूतर ; मु० —बाग़ दिखाना - धोखा देना ; ठगने के लिए झूठी आशाएँ दिलाना ।

**सब्ज़ा** - पु० [फ़ा] हरी घास ; नीलकंठ ; पन्ना ; कान का एक गहना ; एक तरह का आम या खरबूजा ; दाढ़ी-मूँछ के उगने से चेहरे पर प्रकट होनेवाली हरियाली ; यौ० —ज़ार - हरी घास तथा वनस्पतियो से परिपूर्ण स्थान ; मु० —आना - कपोलो पर दाढी के बाल उगने लगना ।

**सब्ज़ी** - स्त्री० [फ़ा] हरी तरकारी ; हरा रंग ; हरियाली ; यौ० —फ़रोश - शाक-तरकारी बेचनेवाला ; —मण्डी - वह जगह जहाँ शाक-तरकारी और ताज़े फल बिकते हों ।

**सब्त** - पु० [अ] लेख ; मु० —करना - लिखना ।

**सब्र** - पु० [अ] धैर्य; तसल्ली; सहन; पीड़ित की आह का उत्पीड़क पर पड़नेवाला असर; मु० —करना - जुल्म को चुपचाप सह लेना; धैर्य रखना; आशा त्याग देना; सहन करना।

**सभंग** - वि० [सं] खंडयुक्त।

**सभा** - स्त्री० [सं] गोष्ठी; दरबार; परिषद्; सभाभवन; न्यायालय; अतिथिशाला; भोजनालय; द्यूतशाला; कार्यविशेष के लिए संगठित संस्था; यौ० —कार - सभाभवन का निर्माता; सभा करनेवाला; —चातुर्य - सभा-समाज में बोलने तथा व्यवहार करने की चतुरता; —नायक, पति - सभा का अध्यक्ष; जुए का अड्डा चलानेवाला; —परिषद् - समिति आदि का अधिवेशन; —पाल - सार्वजनिक भवन या सभाभवन का निरीक्षक; —प्रवेशन - न्यायालय में प्रवेश करना; मंडन - सभाभवन की सजावट; —योग्य - समाज के उपयुक्त।

**सभाग** - वि० [सं] सार्वजनिक; जिसका हिस्सा हो।

**सभागा** - वि० [हिं] भाग्यशाली; सुंदर।

**सभोचित** - 1. वि० [सं] सभा के योग्य; 2. पु० विद्वान ब्राह्मण।

**सभ्य** - 1. वि० [सं] विश्वस्त; नम्र; सभा का; सभा के योग्य; सभा से संबद्ध; संस्कृत; 2. पु० पंच; कुलीन व्यक्ति; जुआ खेलनेवाले का भृत्य; जुआ खेलनेवाला; सभासद।

**सभ्यता** - स्त्री० [सं] सभ्य होने का भाव; कुलीनता; भद्रता; शिष्टता; सदस्यता।

**समंगल** - वि० [सं] मंगलमय।

**समंजस** - 1. वि० [सं] उपयुक्त; अनुभवी; अभ्यस्त; उत्तम; ठीक; नेक; संगत; समीचीन; स्पष्ट; 2. पु० उपयुक्तता; ठीक प्रमाण; यथार्थता; संगति।

**समंत** - 1. वि० [सं] समग्र; सार्वत्रिक; 2. पु० सीमा।

**समंद** - पु० [फ़ा] बादामी रंग का घोड़ा जिसके अयाल, दुम, पाँव तथा जाँघ के बाल काले हों; घोड़ा।

**समंदर** - पु० [फ़ा] समुद्र।

**सम** - 1. वि० [फ़ा] एक-सा; चौरस; अभिन्न; सदृश; ईमानदार; निष्पक्ष; दो से पूरी-पूरी बँटनेवाली (संख्या); कमीना; उपयुक्त; मामूली; साधु; सीधा; उदासीन; सब; समग्र; सुविधाजनक; 2. पु० चौरस मैदान; एक काव्यालंकार; वर्गमूल निकालने की क्रिया में राशि के ऊपर दी जानेवाली रेखा; तृणाग्नि; समानता; अच्छी दशा; 3. स्त्री० बराबरी, समता; यौ० —कक्ष - बराबरी का; —कन्या - उपयुक्त कन्या, विवाह के योग्य कन्या; —कर - उचित रूप में कर लगानेवाला; क्रम में; —कर्मा - एक-जैसा पेशा करनेवाले; —कालीन - एक समय में रहने या होनेवाले; —क्रिय - एक-जैसा कार्य करनेवाला; —क्षेत्र - नक्षत्रों की एक विशेष स्थिति; —गंधक - एक-जैसे पदार्थों से बना हुआ धूप; —चतुर्भुज - वह क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ बराबर हों; —चतुष्कोण - चारों बराबर कोनोंवाला; —चर - एक-सा व्यवहार या आचरण करनेवाला; —चित्त - उदासीन; शांत; एक ही विषय पर अपने विचारों को केन्द्रित रखनेवाला; —जातीय - समान जाति या वर्ग का; —तल - चौरस; —तुला - समान मूल्य; —तोल - समान तोल या महत्व

का ; —तोलन - तराज़ू के पलड़ों को बराबर करना ; —त्रिभुज - जिसकी तीनो भुजाएँ समान हों ; —दर्शन - एक-जैसी शक्लवाला ; एक नज़र से देखनेवाला ; —दर्शी - सबको एक-सा देखने-समझनेवाला ; —दुख - कृपालु ; कारुणिक ; —दृष्टि - सबको एक नज़र से देखने की क्रिया ; —धर्मा - एक-जैसे स्वभाव का ; —नाम - पर्याय या समान नाम ; —बुद्धि - सुख-दुख को एक-सा समझनेवाला, उदासीन ;—भाग - बराबर हिस्सा ; पानेवाला ; —मति - धीर ; शांत ; —मात्र - बराबर मात्राओं-वाला ; —रज्जु - गहराई नापने की रेखा ; —रस - एक-सा ; एक रसवाला ; समान भाव से युक्त ; —रूप - समान रूप का ; —वयस्क - बराबर उम्र का, एक ही उम्र का ; —वर्ण - एक ही रंग या जाति का ; —वर्ती - किसीके प्रति पक्षपात न दिखानेवाला ; समान दूरी पर स्थित ; एक-सा व्यवहार करनेवाला ; —विभाग - बराबर हिस्सों में संपत्ति का बँटवारा ; —विषम - ऊबड़-खाबड़ ज़मीन , —वीर्य - बराबर बलवाला ;—वृत्त - बराबर चरणोंवाला छंद ; बराबर गोलाईवाला ; —वृत्ति - धीरता ; धीर पुरुष ; —वेष - एक-जैसी पोशाक ; —शीतोष्ण - वह स्थान जहाँ सर्दी-गरमी की मात्रा बराबर रहे, जहाँ न अधिक उष्णता हो और न अधिक शीत ; —शील - एक-जैसे स्वभाव या आचरण का ; —श्रुति - समान अवकाशवाला ; —श्रेणी - सीधी रेखा ; —संख्यात - बराबर संख्यावाले ; —संधि - बराबरी की शर्त पर होनेवाली सुलह ; पूरी सहायता करने की शर्त के साथ होनेवाली संधि ; —समयवर्ती - साथ-साथ होनेवाले ; —सिद्धांत - समान उद्देश्य लेकर चलनेवाले ; —स्थल - चौरस ज़मीन ; —स्थली - गंगा व यमुना के बीच का भूभाग ; अंतर्देश ।

**सम, सम्म** - पु० [अ] विष ; **यौ०** सम्मेक़ातिल - घातक विष ।

**समअ** - पु० [अ] काम ; **यौ०** —ख़राशी - बक-बककर खोपड़ी चाटना ।

**समक्ष** - 1. वि० [सं] जो आँखों के सामने हो, गोचर ; 2. अव्य० सामने ; **यौ०**—दर्शन - आँखों से देखना ; आँखों देखा प्रमाण ।

**समक्षता** - स्त्री० [सं] गोचरता ; दृश्य होने का भाव ।

**समग़** - पु० [अ] गोंद ; **यौ०**— अरबी - बबूल का गोंद ।

**समग्र** - वि० [सं] सब, पूरा ; **यौ०**—शक्ति - सारी शक्ति से युक्त ; —संपद् - सब प्रकार के सुख से युक्त ।

**समझ** - स्त्री० [हिं] ख्याल ; बुद्धि ; **यौ०** —दार - बुद्धिमान ; —बूझकर - जान-बूझकर ; **मु०** समझ रखना - ख्याल रखना ।

**समझना** - अ० [हिं] जान लेना ; विचारना ।

**समझाना** - स० [हिं] जतलाना ; ज्ञान कराना ।

**समझाव, समझावा** - पु० [हिं] समझने या समझाने का भाव ।

**समझौता** - पु० [हिं] मेल ; राज़ीनामा, दोनो पक्षों द्वारा संधि की शर्तों की स्वीकृति ।

**समता** - स्त्री० } [सं] अनुरूपता ; अभिन्नता,
**समत्व** - पु० } उदारता ; चौरस होने का भाव ; धीरता ; निष्पक्षता ; पूर्णता ; बराबरी ; साधारणता ।

**समद्** - वि० [सं] प्रसन्न ; मतवाला ; मस्त (हाथी) ।

**समदना** - 1. अ० [हिं] भेटना ; 2. स० भेंट या नज़र करना ; आनंद से मनाना ; ब्याह में देना ; सौंपना ।

**समदाना** - स० [हिं] रखना ; सुपुर्द करना ।

**समधिक** - वि० [सं] बहुत अधिक ; असाधारण ।

**समधी** - पु० [हिं] पुत्र या पुत्री का ससुर ।

**समधीत** - वि० [सं] अच्छी तरह पढ़ा हुआ ।

**समधौरा** - पु० [हिं] विवाह की एक रस्म जिसमें समधी परस्पर मिलते हैं ।

**समनंतर** - वि० [सं] सटा हुआ ।

**समन** - 1. पु० [अ] दाम ; 2. स्त्री० [फ़ा] चमेली ; यौ० —अंदाम, पैकर - चमेली की लता-जैसी सुंदर-सुकुमार देहवाला ।

**समनुज्ञा** - स्त्री० [सं] अनुमति ।

**समन्वय** - पु० [सं] कार्य-कारण संबंध का निर्वाह ; नियमित क्रम ; संयोग ।

**समन्वित** - वि० [सं] अनुगत ; संयुक्त ; स्वाभाविक रूप में क्रमबद्ध ।

**समय** - पु० [सं] अवसर ; उपयुक्त काल ; अंत समय ; काल, वक़्त ; अवकाश ; कविसमय ; आदेश ; उपदेश ; प्रथा ; अभ्युदय ; विहिताचार ; प्रतिज्ञा ; सीमा ; शपथ ; संकेत ; समझौता ; सिद्धांत ; संकट की स्थिति ; व्याख्यान ; संपर्क ; यौ० —कार - समय नियत करनेवाला ; संकेत ; —च्युति - अवसर हाथ से निकल जाना ; —ज्ञ - समय का ज्ञान रखनेवाला ; —धर्म - प्रतिज्ञा-संबंधी कर्तव्य ; —परिरक्षण - समझौते का पालन ; —बंधन - प्रतिज्ञाबद्ध ; —भेद - प्रतिज्ञा भंग करना ; —विपरीत - वादे के ख़िलाफ़ ; —वेला - अवधि ।

**समयाचार** - पु० [सं] प्रचलित व्यवहार ।

**समयानुवर्ती** - वि० [सं] प्रचलित रीति के अनुसार चलनेवाला ।

**समयोचित** - वि० [सं] अवसर के उपयुक्त ।

**समर** - पु० [सं] युद्ध, लड़ाई, यौ० —कर्म - लड़ने का कार्य ; —पोत - युद्ध-पोत ; —विजयी - युद्ध में विजय प्राप्त करनेवाला ; —शायी - वीरगति प्राप्त करनेवाला ; —शूर - युद्ध में वीरता प्रकट करनेवाला व्यक्ति ; —सीमा - युद्धभूमि ; [अ] फल, मेवा ; सत्कर्म का सुफल ।

**समरांगण** - पु० [सं] युद्धभूमि ।

**समरा** - पु० [अ] नतीजा ; बदला ।

**समराना** - स० [हिं] पहनाना ; सजाना ।

**समरोचित** - वि० [सं] युद्ध के उपयुक्त ।

**समरोद्देश** - पु० [सं] युद्धक्षेत्र ।

**समर्थ** - 1. वि० [सं] बलवान ; उपयुक्त ; उपयुक्त बनाया हुआ ; योग्य ; प्रशस्त ; समान या उपयुक्त उद्देश्य रखनेवाला ; समानार्थक ; 2. पु० भावपूर्ण, बोधगम्यता ; योग्यता ; हित ।

**समर्थक** - वि० [सं] समर्थन या पुष्टि करनेवाला ; प्रमाणित करनेवाला ; योग्य ; सँभालनेवाला ।

**समर्थता** - स्त्री० [सं] योग्यता ; अर्थ आदि की अभिन्नता ; शक्ति ।

**समर्थन** - पु० [सं] किसी वस्तु के औचित्य और अनौचित्य का निर्णय करना ; आपत्ति ; अध्यवसाय ; उत्साह ; अंतर दूर कर सामंजस्य स्थापित करना ; पुष्टि करना ; विवेचन या विचार करना ।

**समर्थनीय** - वि० [सं] निश्चित करने

योग्य ; प्रमाणित करने योग्य ; समर्थन करने योग्य ।

**समर्पक** - वि० [सं] समर्पण करनेवाला ।

**समर्पण** - पु० [सं] सौंपना या भेंट करना, सूचित करना; पात्रो की आपस की भर्त्सना (नाटक) ।

**समर्पना** - स० [हिं] सौंपना ।

**समर्पित** - वि० [सं] समर्पित किया हुआ, दिया हुआ, रखा हुआ ; जमाया हुआ ; निक्षिप्त ।

**समलंकृत** - वि० [सं] अलंकार आदि से पूरी तरह विभूषित, ख़ूब सजा हुआ ।

**समल** - 1. वि० [सं] अशुद्ध ; गंदा ; पापी ; 2. पु० विष्ठा ।

**समवधान** - पु० [सं] तैयारी ; पूर्ण मनोयोग ; मिलना ।

**समवसरण** - पु० [सं] उतरने का स्थान ; सभा ; अर्हत् का सभास्थल ; उद्देश्य ।

**समवस्थित** - वि० [सं] उद्यत ; दृढ ; स्थिर ; जो किसी स्थान पर हो ।

**समवाय** - पु० [सं] नित्य या अभेद्य संबन्ध ; संयोग ; एकत्र होना ; समूह ; घनिष्ठ संबंध ; **यौ०**—संबंध - नित्य संबन्ध ।

**समवेक्षित** - वि० [सं] विचारित, विवेचित ।

**समवेत** - 1. वि० [सं] नित्य रूप में संबद्ध ; संयुक्त या मिला हुआ, अंतर्भूत ; जमा किया हुआ ; 2. पु० नित्य रूप में संबद्ध होने की अवस्था ।

**समष्टि** - स्त्री० [सं] समवेत ; सत्ता ; सामूहिकता ; संपूर्णता ; एक-जैसे लोगो का समूह ।

**समस्त** - 1. वि० [सं] समग्र ; सब ; सबमें व्याप्त ; जोड़ा हुआ ; समास के रूप में परिणत ; संक्षिप्त किया हुआ ; 2. पु० समवाय ; **यौ०** —विषयिक - सारे देश में बसनेवाला ।

**समस्या** - स्त्री० [सं] संयोग या मेल ; पूर्ण करने के लिए दिया जानेवाला छंद का अंतिम चरण ; जटिल प्रश्न ; साथ रहना ; **यौ०** —पूर्ति - छंद के चरणांश के आधार पर उसे अंत में रखते हुए छंद की पूर्ति करना ।

**समाँ** - पु० [हिं] चमक-दमक ; ऋतु ; जमाना ; दृश्य ; बहार, समय ; **मु०** —बँधना - रंग जमना ; —बदल जाना - स्थिति बदल जाना ; —बाँधना - रंग जमाना ।

**समा** - 1. स्त्री० [सं] साल ; 2. पु० [हिं] समाँ ; [अ] आकाश ।

**समाअ** - पु० [अ] राग सुनना ; राग सुनने से होनेवाली रसलीनता ।

**समाअत** - स्त्री० [अ] मुक़द्दमे की सुनवाई, विचार ; श्रवणशक्ति ; सुनना ; **यौ०** —के क़ाबिल - सुनने लायक़ ।

**समाई** - 1. स्त्री० [हिं] समाने का भाव ; सामर्थ्य ; 2. वि० [अ] श्रुति पर आश्रित ; सुना हुआ ; वह (शब्द) जिसे अहले जबान बोलते हो, पर किसी नियम से व्युत्पन्न न हो ।

**समाऊ** - पु० [हिं] गुंजाइश, निर्वाह ।

**समाकर्षण** - पु० [सं] अपनी ओर खींचना ।

**समाकार** - वि० [सं] एक ही आकार का ।

**समाख्या** - स्त्री० [सं] प्रसिद्धि ; नाम ; व्याख्या ।

**समाख्यात** - वि० [सं] गिना हुआ ; अभिहित ; प्रसिद्ध ; पूर्णरूप से वर्णित ; शुमार किया हुआ ।

**समागत** - वि० [स] आकर मिला हुआ ; पहुँचा हुआ ; लौटा हुआ ।

**समागम** - पु० [सं] आगमन ; भेंट, मिलन ; भिड़ंत ; संघ ; (ग्रहों का) योग ; मैथुन ; संगति ।

**समाचरण** - पु० [सं] अभ्यास करना, पूरा करना ; व्यवहार करना ।
**समाचरित** - वि० [सं] सम्यकरूप में आचरण किया हुआ ; व्यवहृत ।
**समाचार** - पु० [सं] वृत्तांत या ख़बर ; आचरण ; प्रथा ; विवरण ; रीति ; समान आचरण ; **यौ०** —पत्र - अख़बार ।
**समाचेष्टित** - वि० [सं] आचरित ; चेष्टा किया हुआ ; व्यवहृत ।
**समाज** - पु० [सं] समूह ; दल या संघ ; एकत्र होना ; आधिक्य ; सभा ; विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए संगठित संस्था ; समान कार्य करनेवालो का समूह ; ग्रहो का एक योग ; **यौ०** —वाद - संपत्ति पर राज्य का अधिकार मानने का सिद्धात ; —शास्त्र - मनुष्य को सामाजिक प्राणि मानकर समाज के प्रति उसके कर्तव्यो आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र ; —सेवक - समाज के हित के लिए कार्य करनेवाला, —सेवा - समाज का हितसाधन ।
**समाजत** - स्त्री० [अ] अनुनय ; ख़ुशामद ।
**समाज्ञा** - स्त्री० [स] नाम ; प्रसिद्धि ।
**समादर** - पु० [सं] प्रतिष्ठा, विशेष आदर ।
**समादरणीय** - वि० [सं] विशेष आदर करने योग्य, सम्मान्य ।
**समादृत** - वि० [स] सत्कृत, सम्मानित ।
**समादेश** - पु० [सं] आज्ञा, आदेश ।
**समाधान** - पु० [सं] संदेहनिवारण ; प्रतिपादन ; मिलाना या साथ करना ; औत्सुक्य ; अंगीकार करना ; प्रगाढता ; ध्यान ; समाधि, सहमत होना ; सावधानता ; [त] शांति ।
**समाधानना** - स० [हिं] समाधान करना ; सांत्वना देना ।
**समाधि** - स्त्री० [सं] मन को आत्मा में केन्द्रित करना ; मनोयोग ; तपस्या ; अंगीकार ; अध्यवसाय ; पूरा करना ; परिशोध ; प्रतिज्ञा ; मतभेद दूर करना ; मौन, साथ रहना ; एक जगह जमाना ; गर्दन की जोड़ ; असंभव बात के लिए प्रयत्न करना ; शवस्थल पर बनाया जानेवाला मकान ; इंद्रिय-निरोध ; नियम ; सहारा ; **यौ०** —क्षेत्र, स्थल - वह स्थान जहाँ किसी साधु या महापुरुष को दफ़नाया या जलाया गया हो ;—दशा - ध्यान में ब्रह्मसाक्षात्कार की अवस्था ; —निष्ठ - समाधिस्थ ; —भंग - बाधा पड़ने के कारण समाधि या ध्यान का भंग होना ; —स्थ - समाधि में स्थित, ध्यानमग्न ।
**समान** - 1.वि० [सं] तुल्य, एक-सा या बराबर का (आकार, उम्र, पद आदि में) ; साधारण ; क्रोधयुक्त ; भला ; सम्मानित ; समान परिमाण का ; बीच का ; एक ही स्थान से उच्चारण किया जानेवाला (स्वर) ; 2. पु० बराबरी का साथी ; शरीरस्थ पाँच वायुओ में से एक ; एक ही स्थान से बोले जानेवाले अक्षर ; **यौ०** —करण - एक ही उच्चारण-स्थानवाला ; —काल, कालीन - सम-सामयिक ; एक ही समय होनेवाले ; —गोत्र - सगोत्र ; एक ही वंश का ; —ग्रामीय - एक ही ग्राम में रहनेवाले ; —जन - एक ही वंश का व्यक्ति ; समान पदवाला व्यक्ति ; —जातीय - एक ही वर्ग का ; —दुःख - सहानुभूति दिखानेवाला ; —धर्मा - एक ही जैसे गुणवाला ; —नामा - समान नामवाला ; —प्रेमा - एक-सा प्रेम करनेवाला ; —योनि - एक ही स्थान से उत्पन्न ; —रुचि - एक-सी रुचि-

वाला; —रूप - एक ही रंग या शक्लवाले; —वयस्क - हमउम्र; —वर्ण - एक-से रंगवाले; एक ही स्वर या वर्णवाले; —विद्य - समकक्ष विद्वान; —शील - एक-जैसे स्वभाववाले; —संख्य - बराबर संख्यावाला।

**समानता** - स्त्री० } [सं] तुल्यता, बराबरी।
**समानत्व** - पु० }

**समानयन** - पु० [सं] आदरपूर्वक ले आना; एकत्र करना।

**समाना** - 1. अ० [हिं] अटना; भीतर आना; 2. स० अटाना; भरना।

**समानाधिकरण** - 1. वि० [सं] जिनका आधार एक ही पदार्थ हो; जो समान स्थान पर हो; एक ही श्रेणि का; समान कारक विभक्ति से युक्त; 2. पु० एक ही कारक की विभक्ति से युक्त होना; समान आधार आदि; समान श्रेणि।

**समानाधिकार** - पु० [सं] बराबरी का अधिकार; जातीय गुण।

**समानार्थ** - वि० [सं] एक अर्थवाले (शब्द); जिनका उद्देश्य एक हो।

**समानार्थक** - वि० [सं] एक ही अर्थ रखनेवाले (शब्द)।

**समापक** - वि० [सं] पूर्ण करनेवाला।

**समापन्न** - 1. वि० [सं] घटित; आया हुआ; ज्ञाता; पूरा किया हुआ; प्राप्त; कष्टग्रस्त; निहत; 2. पु० मृत्यु; समाप्ति।

**समाप्त** - वि० [सं] पूरा किया हुआ; चतुर; बुद्धिमान; यौ० —प्राय - लगभग समाप्त।

**समाप्ति** - स्त्री० [सं] पूर्ति या पूर्ण होना; प्राप्ति; विवाद का अंत करना; शरीर की पंचत्व प्राप्ति।

**समाप्य** - वि० [सं] समाप्त या पूरा करने योग्य।

**समाम्नाय** - पु० [सं] परंपरागत वचनों आदि का संग्रह; शास्त्र; परंपरा से प्राप्त होना; समूह; संग्रह; शिव; प्रलय।

**समारंभ** - पु० [सं] उद्यम; अंगराग; आरंभ; साहसिक कार्य की भावना; साहसपूर्ण कार्य।

**समारब्ध** - वि० [सं] आरंभ किया हुआ; घटित; कार्य शुरू करनेवाला।

**समाराधन** - पु० [सं] आराधना; प्रसन्न करने का साधन; तुष्ट या प्रसन्न करना।

**समारूढ** - वि० [सं] जो चढ़ाया या चढ़ा हो; बढ़ा हुआ; भरा हुआ; जिसने अंगीकार किया हो।

**समारोप** - पु० [सं] ऊपर रखना; चढ़ाना (धनुष); स्थानांतरण।

**समारोपक** - वि० [सं] उपजानेवाला; बढ़ानेवाला।

**समारोह** - पु० [सं] धूमधाम; राज़ी होना; चढ़ना।

**समाली** - स्त्री० [सं] फूलों का गुच्छा; गुलदस्ता।

**समालोक** - पु० [सं] देखना; निरीक्षण करना।

**समालोचक** - पु० [सं] किसी कृति, ग्रंथ, रचना आदि के गुण-दोष व महत्व इत्यादि का प्रतिपादन करनेवाला; किसी वस्तु की सम्यक् परीक्षा करनेवाला; किसी पदार्थ के गुण-दोष आदि का सम्यक् विवेचन करनेवाला।

**समालोचना** - स्त्री० [सं] गुण-दोष का विचार प्रस्तुत करनेवाला निबंध; ग्रंथ आदि की आलोचना; निरीक्षण करना; किसी वस्तु, कृति, व्यक्ति आदि के गुण-दोष का सम्यक् विचार करना।

**समावर्तन** - पु० [सं] अध्ययन पूर्ण करने के बाद ब्रह्मचारी का घर लौटना या

इस अवसर पर होनेवाला संस्कार; लौटना।

**समाविष्ट** - वि० [सं] पूर्णतः प्रविष्ट; अच्छी तरह सिखलाया हुआ; आसीन; एकाग्र-चित्त; व्याप्त; गृहीत।

**समावृत** - वि० [सं] छिपाया हुआ; अलग हटाया हुआ; आकीर्ण; घेरा हुआ; ढका हुआ; रक्षित; रोका हुआ।

**समावृत्त** - वि० [स] अध्ययन समाप्त कर गुरुकुल से लौटा हुआ; पूरा किया हुआ; लौटा हुआ।

**समावेश** - पु० [सं] प्रवेश; अंतर्भाव; एकत्र होना; साथ रहना; घुसना; व्याप्त होना; भावावेश; मतैक्य; साथ-साथ होना या घटित होना।

**समाश्रय** - पु० [सं] आश्रयस्थान; आश्रय चाहना, शरण; निवासस्थान।

**समास** - पु० [सं] योग, मेल; समर्थन; अन्तर दूर कर विवाद का निबटारा करना; दो या अधिक पदो को मिलाकर एक पद का रूप देना; संक्षिप्त करना; समस्या; संबन्ध : समूह; साथ रहना; पूर्णांश; छंद का चरण; **यौ०** —प्राय, बहुल - जिसमें समासो की बहुलता हो।

**समासन** - पु० [सं] समतल भूमि पर बैठना; साथ बैठना।

**समासम** - वि० [सं] समान और असमान।

**समासादन** - पु० [सं] पास पहुँचना; पूरा करना; मिलना।

**समासादित** - वि० [सं] निकटस्थ; प्राप्त।

**समासीन** - वि० [सं] अच्छी तरह से बैठा हुआ; साथ बैठा हुआ।

**समाहरण** - पु० [सं] एकत्र करना; संयुक्त करना।

**समाहार** - पु० [सं] मिलना; ग्रहण; जोड़; शब्दो या वाक्यों का योग; राशि; द्वंद्व समास का एक भेद; संक्षेप; विषयों से इंद्रियो को पृथक करना।

**समाहित** - 1. वि० [सं] एकत्र किया हुआ; पूरा किया हुआ; तय किया हुआ; प्रवृत्त; शांत; व्यवस्थित; दबाया हुआ; प्रतिपादित; सुपुर्द किया हुआ; अनुरूप, स्वीकृत; सामंजस्ययुक्त; 2. पु० एकाग्रचित्तता; पुण्यात्मा व्यक्ति; **यौ०** —मति - जिसका मन किसी विषय पर एकाग्र रहे; —मना - जिसका मन किसी विषय में लीन हो।

**समाहूत** - वि० [सं] बुलाया या एकत्र किया हुआ; ललकारा हुआ।

**समिता** - स्त्री० [सं] गेहूँ का आटा।

**समिति** - स्त्री० [सं] सभा; एकत्र होना, साधुओ के रहन-सहन की आचार-पद्धति; झुंड; युद्ध; सादृश्य; हल्कापन लाना; **यौ०** —शाली - वीर; बहादुर।

**समिध** - पु० [सं] ईधन; अग्नि।

**समिधा, समिधि** - स्त्री० [सं] यज्ञ की लकड़ी।

**समिश्र** - वि० [स] मिलनेवाला; मिश्रित होनेवाला।

**समीकरण** - पु० [सं] बराबर करना; ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि निकालने की क्रिया (गणित); ज़मीन बराबर करने का बड़ा बेलन।

**समीक्ष** - पु० [सं] विवेचन; पूर्ण परीक्षा; पूरा ज्ञान।

**समीक्षक** - वि० [सं] समालोचक; सम्यक् रूप से देखनेवाला।

**समीक्षा** - स्त्री० [सं] समालोचना; सम्यक् परीक्षा; सम्मति; देखने की इच्छा; अन्वेषण; मीमांसाशास्त्र; प्रज्ञा; प्रयत्न; पुरुष, प्रकृति आदि तत्त्व।

**समीक्ष्य** - वि० [सं] समीक्षा करने योग्य।

**समीचीन** - वि० [सं] उचित ; न्याय्य ; यथार्थ ।

**समीचीनता** - स्त्री० [सं] औचित्य ; यथार्थता ।

**समीप** - 1. वि०, 2. अव्य० [सं] निकट, पास ; 3. पु० निकटता ; **यौ०** —वर्ती - पास का ।

**समीपता** - स्त्री० [सं] निकटता ।

**समीर** - पु० [सं] पवनदेव ; प्राणवायु ; वायु ; शमी वृक्ष ।

**समीरण** - 1. वि० [सं] उद्दीपक ; गतिशील करनेवाला ; 2. पु० पवनदेव ; वायु ; शरीरस्थ वायु ; पथिक ; गतिशील करना ; प्रेरणा ; पाँच की संख्या ।

**समुंद** - पु० [हिं] समुद्र ।

**समुंदर** - पु० [हिं] समुद्र , **यौ०** —फूल - एक औषधि ।

**समुख** - वि० [सं] बातूनी ; वाकपटु ; मुखयुक्त ।

**समुचित** - वि० [सं] उचित ; उपयुक्त ; पसंद करनेवाला ; यथेष्ट ।

**समुच्चय** - पु० [सं] समूह ; शब्दो या वाक्यो का योग ।

**समुद** - 1. वि० [सं] प्रसन्नतायुक्त ; 2. अव्य० प्रसन्नतापूर्वक ; 3. पु० [हिं] समुद्र ; **यौ०** —लहर - एक तरह का कपड़ा ।

**समुदय** - पु० [सं] ऊपर आना ; अभ्युदय ; उत्थान ; चेष्टा ; लगान ; राशि , समूह ; समुदाय ; दिन ; युद्ध ; पूर्णांश , उत्पादक हेतु ।

**समुदाचार** - पु० [सं] स्वागत-सत्कार ; अभिप्राय ; अभिवादन ; सपर्क ; प्रयोजन ; सदाचार ।

**समुदाय** - पु० [सं] संयोग ; शरीर के तत्त्वो का समाहार ; पूर्णांश ; समूह ; युद्ध ; सेना का पृष्ठभाग ; रक्षित सेना ।

**समुदित** - वि० [सं] ऊपर उठा हुआ ; ऊँचा उत्पन्न ; एकत्रीभूत ; घटित ; संयुक्त ; प्रचलित ; जो किसी विषय पर सहमत हो ।

**समुदीरण** - पु० [सं] आवृत्ति ; उच्चारण ; भाषण ।

**समुद्गार** - पु० [सं] सम्यक् उच्चारण ; ऊपर उठाना ; अधिक कै होना ।

**समुद्गीत** - 1. वि० [सं] अच्छी तरह गाया हुआ ; 2. पु० ऊँचे स्वर से गाया हुआ गीत ।

**समुद्दिष्ट** - वि० [सं] जिसका भली भाँति निर्देश किया गया हो ; अभिहित ; प्रदर्शित ।

**समुद्देश** - पु० [सं] निर्देश , पूरी व्याख्या या विवरण ; अभिप्राय ; सिद्धांत ।

**समुद्धर्ता** - 1. वि०, 2. पु० [सं] उद्धार करनेवाला , उन्मूलन करनेवाला ।

**समुद्र** - 1. पु० [सं] सागर ; चार की संख्या ; गुण आदि का बहुत बड़ा परिमाण ; शिव ; 2. वि० मुद्रायुक्त ; **यौ०** —कटक - पोत ; —कफ - समुद्र का फेन ; —कांची - समुद्र की मेखला, पृथ्वी , —कांता - नदी ;—कुक्षि - समुद्र का तट ; —गमन - समुद्रयात्रा ; —गामी - समुद्री व्यापार करनेवाला ; —गृह - गर्मी के दिनो के लिए जल में बना हुआ मकान ; स्नानागार ; —झाग - समुद्र का फेन ; —तट, तीर - समुद्र का किनारा ; —पत्नी - नदी ; —नेमि, नेमी - पृथ्वी ; —फेन - समुद्र के पानी के ऊपर होनेवाले बुलबुले ; —भव - समुद्र में उत्पन्न ; —यान - जहाज़ ; —लवण - समुद्रजल

से निकाला जानेवाला नमक ; —वसना - पृथ्वी ; —वह्नि - बड़वानल , —वासी - समुद्र के पास रहनेवाला ; —वेला - समुद्र की तरंग ; —सार - मोती ।

**समुद्रांत** - 1. पु० [सं] समुद्रतट ; जायफल ; 2. वि० समुद्र तक पहुँचनेवाला ; समुद्र में गिरनेवाला ।

**समुद्रीय** - वि० [सं] समुद्र का ; समुद्र-संबंधी ।

**समुद्वह** - वि० [सं] ऊपर उठानेवाला ; ऊपर-नीचे जानेवाला ।

**समुन्नत** - वि० [सं] ऊपर उठाया हुआ ; ऊँचा ; आगे निकला हुआ ; खरा ; घमंडी ; गौरवान्वित ।

**समुन्नति** - स्त्री० [सं] उन्नति ; समृद्धि ; घमंड ; ऊपर उठाना ; उच्चता ; उच्च पद ; गौरव ।

**समुन्मूलन** - वि० [सं] जड़ से उखाड़ देना, निर्मूलन ।

**समुपक्रम** - पु० [सं] आरंभ ; उपचार ।

**समुपचार** - पु० [सं] आदर-सम्मान ; ध्यान देना ।

**समुपनयन** - पु० [सं] नज़दीक ले जाना ।

**समुपभोग** - पु० [सं] खाना ; भोग करना ; मैथुन ।

**समुपयुक्त** - वि० [सं] उपयोग में लाया हुआ ; विशेष रूप से उपयुक्त ; खाया हुआ ।

**समुपवेश** - पु० [सं] अच्छी तरह बैठना ; अभ्यर्थना ।

**समुपस्थित** - वि० [सं] उपस्थित , आसीन ; प्रकट ; निश्चित किया हुआ ; तैयार , प्राप्त ; सामयिक ।

**समुपेत** - वि० [सं] पास आया हुआ ; पहुँचा हुआ ; एकत्रित किया हुआ ; आबाद किया हुआ ।

**समुल्लास** - पु० [सं] विशेष आनंद ; क्रीड़ा ; ग्रंथ का परिच्छेद ; सम्यक् कांति ।

**समुल्लेख** - पु० [सं] उन्मूलन ; चारो ओर ज़मीन खोदना ।

**समुहा** - 1. वि० [हिं] आगे या सामने का ; 2. अव्य० आगे, सामने ।

**समुहाना** - अ० [हिं] सामने आना ।

**समुहैं** - अव्य० [हिं] सामने ।

**समूचा** - वि० [हिं] पूरा, संपूर्ण ।

**समूल** - 1. वि० [सं] मूलयुक्त ; सकारण ; 2. अव्य० मूलसहित ; जड़ से ।

**समूह** - पु० [सं] झुण्ड ; ढेर ; समाज ; समुदाय ; **यौ०** —कार्य - समाज या वर्गविशेष का कार्य ।

**समूहनी** - स्त्री० [सं] झाड़ू ।

**समृद्ध** - वि० [सं] उन्नतिशील ; धनी ; प्रसन्न ; बहुल ; फलवान ; खूब बढ़ा हुआ ; विशेष रूप से युक्त या संपन्न ; समग्र ।

**समृद्धि** - स्त्री० [सं] अभ्युदय ; उन्नति ; धन ; प्राधान्य ; बाहुल्य ; सामर्थ्य ; **यौ०** —काम - अभ्युदय का इच्छुक ; —समय - अभ्युदय का समय ।

**समृद्धी** - पु० [सं] उन्नतिशील ; संपन्न ।

**समेटना** - स० [हिं] इकट्ठा करना ; अंगीकार करना , तह करके रखना ।

**समेत** - 1. अव्य० [हिं] साथ ; 2. वि० [सं] एकत्र ; नज़दीक आया हुआ , भिड़ा हुआ ; सहमत ।

**समै, समैया** - पु० [हिं] समय ।

**समोखना** - अ० [हिं] ताकीद से कहना ।

**समोना** - स० [हिं] मिलाना ।

**समोसा** - पु० [हिं] सिंघाड़े की शक़ल का एक नमकीन पकवान ।

**समौरिया** - वि० [हिं] समवयस्क ।

**सम्** - उप० [सं] शब्दों के पूर्व आकर साथ, पूर्णता, आधिक्य, सामीप्य और अच्छाई आदि के अर्थ देनेवाला उपसर्ग ।

**सम्मत** - 1. वि० [सं] सहमत ; माना हुआ ; प्रसिद्ध ; विचारित ; प्रिय , सम्मानित ; जिसे अनुमति या अधिकार दिया गया हो ; 2. पु० अनुमति ; धारणा ; सम्मति ; स्वीकृति ।

**सम्मति** - 1. स्त्री० [सं] राय ; इच्छा ; सम्मान ; सहमति ; स्वीकृति ; आदेश ; आत्मज्ञान ; सद्भाव ; 2. वि० एक ही राय का ।

**सम्मत्त** - वि० [सं] आनंद से विह्वल ; नशे में चूर ।

**सम्मन** - पु० [अ] अदालत की ओर से प्रतिवादी या गवाह को नियत तिथि पर उपस्थित होने के लिए भेजी जानेवाली लिखित सूचना या आदेश ।

**सम्मर्द** - पु० [सं] रगड़ना ; झगड़ा ; युद्ध ; कुचलना ; दबाव ; मुक़ाबला ।

**सम्मर्दन** - पु० [सं] रौंदना ; संघर्षण ।

**सम्मान** - पु० [सं] इज़्ज़त ; मान ; तुलना करना ; माप ।

**सम्मानना** - स० [हिं] आदर करना ।

**सम्मानित** - वि० [सं] पूजित ।

**सम्मान्य** - वि० [सं] आदर के योग्य, आदरणीय ।

**सम्मार्जक** - 1. पु० [सं] झाड़ू ; मेहतर ; 2. वि० साफ़ करनेवाला ।

**सम्मार्जन** - पु० [सं] झाड़ना ; बुहारना ; झाड़ू ; थाली साफ़ करते समय निकला हुआ उच्छिष्ट ; स्नानादि ।

**सम्मिलन** - पु० [सं] मिलना ; एकत्र होना ।

**सम्मिलित** - वि० [सं] एकत्र ; साथ मिला हुआ ।

**सम्मिश्रण** - पु० [सं] मिलाने की क्रिया ; मिलावट ।

**सम्मिश्रित** - वि० [सं] मिलाया हुआ ।

**सम्मीयत** - स्त्री० [अ] ज़हरीलापन ।

**सम्मीलन** - पु० [सं] ढक लेना ; पूर्ण ग्रहण ; पुष्प आदि का संकुचित होना ।

**सम्मीलित** - वि० [सं] जिसने अपनी आँखें बंद कर ली हों, सुप्त ।

**सम्मुख** - 1. वि० [सं] समक्ष ; अभिमुख ; अनुकूल ; उपयुक्त ; किसी बात पर तुला हुआ ; भिड़नेवाला ; 2. अव्य० सामने ।

**सम्मूढ़** - वि० [सं] घबड़ाया हुआ ; मूर्ख ; अस्तव्यस्त ; तेज़ी से उत्पन्न ; टूटा हुआ ; संज्ञाहीन ।

**सम्मेलन** - पु० [सं] सभा आदि ; आपस में मिलना ; मिश्रण ; मेल ।

**सम्मोद** - पु० [सं] ख़ुशी ; गंध ; प्रीति ।

**सम्मोह** - पु० [सं] अज्ञान ; विमोहन ; वशीकरण ; घबड़ाहट ; मूर्छा ; संग्राम ; होहल्ला ।

**सम्मोहक** - वि० [सं] बेहोश करनेवाला ; वश में करनेवाला ।

**सम्मोहन** - 1. वि० [सं] सम्मोहक ; 2. पु० कामदेव का एक बाण ; बहकाना ; मुग्ध करना ।

**सम्मोहित** - वि० [सं] घबड़ाहट में डाला हुआ ; बेहोश किया हुआ ; वश में किया हुआ ।

**सम्यक्** - 1. वि० [सं] ठीक, उचित ; उपयुक्त ; एकरूप ; प्रिय ; संपूर्ण ; साथ जानेवाला ; 2. अव्य० अच्छी तरह ; उचित रूप में ; ठीक-ठीक ; पूर्णतः ; सम्मानपूर्वक ; स्पष्टतः ; **यौ०** —कर्मान्त - सत्कर्म ; —चारित्र - सदाचार ; रत्नत्रय में से एक ; —पाठ - शुद्ध उच्चारण ; —प्रयोग - उचित

प्रयोग; —प्रवृत्ति - उचित कार्य; —श्रद्धान - सच्चा विश्वास; —संबुद्ध - जिसे पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो; —संबुद्धि, संबोध - पूर्ण ज्ञान; —समाधि - ठीक समाधि; —स्मृति - सही याद।

**सम्राज्ञी** - स्त्री० [सं] सम्राट की पत्नी; साम्राज्य के शासन-सूत्र का संचालन करनेवाली स्त्री।

**सम्राट** - पु० [स] राजेश्वर।

**सम्हलना** - अ० [हिं] सँभलना।

**सयान** - 1. पु० [हिं] बुद्धिमानी; 2. वि० चतुर; यौ०—प, पन - चतुराई।

**सयाना** - 1. वि० [हिं] चालाक; बुद्धिमान; प्रौढ़ अवस्थावाला; 2. पु० बड़ा बूढ़ा आदमी, ओझा; मुखिया; हकीम।

**सयोनि** - 1. वि० [सं] एक ही कोख से उत्पन्न; निकटसंबंधी; 2. पु० सगा भाई; सरौता।

**सरंजाम** - पु० [फ़ा] तैयारी; काम का नतीजा; पूर्ति।

**सर** - 1. वि० [सं] रेचक; गतिशील; 2. पु० तालाब; गमन; नमक; रस्सी; जलप्रपात; बाण; दही का थक्का; हार; जल; वायु; यौ०—ज - ताज़ा मक्खन; —पत्रिका - कमल का नया पत्ता; कमलिनी; [फ़ा] चोटी; आरंभ; सिर; शीर्षक; सरदार; ताश का कोई बड़ा पत्ता; इरादा; किनारा; प्रेम; स्रोत; यौ० —अफ़राज़ - घमंडी; ऊँचे पद पर आसीन; —करदा - मुखिया; सरदार; —कर्दगी - सरदारी; —कश - उद्दंड; किसीसे न दबनेवाला; बाग़ी, —कशी - उद्दंडता, विद्रोह; —कोब - दंड देनेवाला; सिर कुचलनेवाला; तोपखाना; —कोबा - भारी गदा; —कोबी - दंड; सिर कुचलना; —ख़त - किरायानामा; —ग़ना - मुखिया; सरदार; —गर्रा - क्रुद्ध; घमंडी; त्रस्त; —गरामी - खुमार; रोष; सिर का भारी होना, —गरोह - मुखिया; नेता; —गर्म - उत्साह और परिश्रम से काम करनेवाला, उत्साही; —गर्मी - दिल से और पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न करना; उत्साह; मुस्तैदी; —गुज़श्त - गुज़रा हुआ हाल; —गोशी - कानाफूसी; चुग़ली; —चश्मा - स्रोत; —ज़मीन - मुल्क; राज्य; —ज़ोर - अवज्ञा करनेवाला; —जोश - एक उबाल खाया हुआ शोरबा या शराब आदि; बढ़िया; —तराश - नाई; सिर मूँड़नेवाला; —ताज - सिरताज; —दफ़्तर - अध्यक्ष; —दरख़्ती - पेड़ों पर लगाया जानेवाला कर; —दर्द - सिर का दर्द; कष्ट; —दार - मुखिया; सिखों की पदवी; पति; —दारनी - सरदार की पत्नी; प्रतिष्ठित सिख महिला; —दारी - सरदार का पद; —नविश्त - भाग्य; —नामा - प्रशस्ति; —निगूँ - नतशिर; लज्जित; औंधे मुँहवाला; —पंच - पंचों का मुखिया, प्रधान पंच; —परस्त - सहायक; वली; संरक्षक; —परस्ती - संरक्षण; सहायता; —पेंच, पेच - पगड़ी के ऊपर लगाने का गहना; एक तरह का गोटा; —पोश - ढकना; गुप्त बात; —फ़राज़ - सम्मानित; घमंडी; जिसका सिर ऊँचा हो; —फ़रोश - जान देने को तैयार; जान पर खेलनेवाला; —फ़रोशी - जान देने को तैयार होना; वीरता; —बसर - बराबर; सोलहो आने; —बाज़ - जान पर खेलनेवाला; निडर; —बुलंद - उच्च पदस्थ; सम्मानित; जिसका सिर ऊँचा

हो; —बुलंदी - ऊँचा पद; सम्मान; —मस्त - मतवाला; शराब के नशे में चूर; —मस्ती - मत्तता; —वपा - नखशिख; सर्वांग; —वरक़ - मुखपृष्ठ, पुस्तक का पहला पन्ना; —शुमारी - जनगणना; —सब्ज़ - हरा-भरा; फलता-फूलता; —सब्ज़ी - हरा-भरा होना; —हंग - पहलवान; लड़ाका; सेनानायक; सैनिक; किसीसे न दबनेवाला, उद्दंड; —हद, हद्द - वह स्थान जहाँ कोई देश समाप्त होता हो; —हदी - सीमासंबन्धी; सरहद का; सरेइजलास - भरी कचहरी में, हाकिम के सामने, सरेदरबार - भरे दरबार में; खुल्लमखुल्ला, सरेदस्त - अभी; फिलहाल; सरेदीवार - दीवार का ऊपरी भाग; सरेबाज़ार - खुले खज़ाने, सबके सामने; सरेबाम - अटारी, कोठा; सरेबाली - सिरहाना; सरेराह - रास्ते के सिरे पर; रास्ते में; सरेलश्कर - सेनापति; सरेशाम - संध्या होते ही; सरेशरीर - मलाई; [हिं] बाण; यौ० —धर - तरकश; —पंजर - बाणों का पिंजड़ा।

**सरई** - स्त्री० [हिं] सरपत का एक भेद।

**सरकंडा** - पु० [हि] अधिक गाँठोंवाला सरपत।

**सरक** - पु० [सं] झील; आकाश; कारवाँ; पथिकों की लगातार पंक्ति; रत्न; सरकना; मदिरापान; मदिरा।

**सरकना** - अ० [हिं] खिसकना; रेंगना; काम चलना; समय का टल जाना; हट जाना।

**सरक़ा** - पु० [अ] चोरी; **यौ०** —बिलजब्र - डाका।

**सरकार** - स्त्री० [फ़ा] अधिकारी, राज्य, राजदरबार; रियासत; शासन-प्रबंध; शासनमंडल; प्रांत का एक विभाग; घर का मालिक; मालिक; बड़ों के लिए संबोधन; प्रबंधकर्ता; **यौ०** —दरबार - कचहरी।

**सरकारी** - वि० [हिं] राजकीय; दफ़्तर का; मालिक का; **यौ०** —अहलकार, मुलाजिम - राजकर्मचारी; —आमदनी - राज्य की आय; —काग़ज - प्रामिसरी नोट; स्टाम्प का काग़ज़; —काम - दफ़्तर का काम; —साँड़ - नस्ल सुधारने के लिए राज्य की ओर से रखा जानेवाला साँड़; लंपट।

**सरग** - पु० [हिं] स्वर्ग; **यौ०** —तिय - अप्सरा।

**सरगम** - पु० [हिं] स्वरों के आरोह-अवरोह का क्रम।

**सरजना** - स० [हिं] निर्माण करना; सृष्टि करना।

**सरजसा, सरजस्का** - स्त्री० [सं] ऋतुमती स्त्री।

**सरजा** - 1. स्त्री० [सं] सरजसा; 2. पु० [हिं] शिवाजी की उपाधि; सरदार; सिंह।

**सरजीव** - वि० [हिं] सजीव।

**सरजीवन** - वि० [हिं] जीवित करनेवाला; हरा-भरा।

**सरण** - 1. पु० [सं] खिसकना; 2. वि० युद्ध से संबद्ध।

**सरणा** - स्त्री० [सं] गमन; फैलनेवाली लता।

**सरणि, सरणी** - स्त्री० [सं] तरीक़ा; गले का एक रोग; पगडंडी; रास्ता; व्यवस्था; सीधी या लगातार पंक्ति।

**सरतान** - पु० [अ] केंकड़ा; एक दुष्ट व्रण, कैंसर; कर्कराशि।

**सरता-बरता** - पु० [हिं] बँटाई; मु० — करना - एक दूसरे की सहायता से काम चलाना।

**सरतारा** - वि० [हिं] निश्चित; सावकाश।

**सरद** - स्त्री० [हिं] शरद् ऋतु।

**सरदर** - अव्य० [हिं] औसतन; एक सिरे से।

**सरदल** - पु० [देश] दरवाज़े का बाजू।

**सरधन** - वि० [हि] अमीर, धनी।

**सरधा** - स्त्री० [हि] श्रद्धा; शक्ति।

**सरना** - अ० [हिं] काम चलना; बीत जाना; कटना; सड़ना; सरकना।

**सरनाम** - वि० [हि] मशहूर; नामवर।

**सरनी** - स्त्री० [हिं] रास्ता; मार्ग।

**सरपट** - 1. स्त्री० [हि] घोड़े की सबसे तेज़ चाल, 2. वि० सपाट; 3. अव्य० सरपट चाल से।

**सरपत** - पु० [हिं] कुश की जाति का एक तृण।

**सरफराना** - अ० [हिं] घबड़ाना; व्यग्र होना।

**सरफोका** - पु० [हिं] सरकंडा।

**सरम** - स्त्री० [हिं] शर्म।

**सरमद** - वि० [अ] नित्य; मस्त।

**सरमा** - पु० [फ़ा] शीतकाल।

**सरमाई** - 1. वि० [फ़ा] जाड़े का; 2. स्त्री० जाड़े के कपड़े, जड़ावर।

**सरमाया** - पु० [फ़ा] पूँजी; मूलधन; यौ० —दार - पूँजीपति; धनी; —दारी - पूँजीप्रधान, पूँजीवाद को माननेवाली (सरकार)।

**सरया** - पु० [हि] एक मोटा धान।

**सरर** - पु० [देश] ताना ठीक करने के लिए लगायी जानेवाली बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी।

**सरराना** - अ० [अनु] हवा के तेज़ चलने या किसी वस्तु की तीव्र गति से 'सरसर' शब्द उत्पन्न होना।

**सरल** - 1. वि० [सं] ईमानदार; सीधा; सही; असली; आसान; 2. पु० अग्नि; चीड़ का पेड़।

**सरलता** - स्त्री० [सं] ईमानदारी; आसानी, सादगी; सीधापन।

**सरवत** - स्त्री० [अ] धनाढ्यता।

**सरवन** - पु० [हि] श्रमण; श्रवण।

**सरवनी** - स्त्री० [हिं] सुमरनी।

**सरवर** - 1. पु० [फ़ा] अफ़सर; [हिं] सरोवर; 2. स्त्री० बराबरी।

**सरवरी** - स्त्री० [हि] बराबरी; स्पर्धा; [फ़ा] सरदारी।

**सरवाक** - पु० [हि] प्याला; दीया; सपुट।

**सरवान** - पु० [हि] तंबू।

**सरशफ़** - पु० [फ़ा] सरसो।

**सरस** - 1. वि० [सं] स्वादिष्ठ; गीला; नया; पसीने से तरबतर; प्रेमासक्त; रसयुक्त; सुंदर; 2. पु० सरोवर।

**सरसई** - स्त्री० [हिं] सरसो-जैसे फल के दाने; ताज़गी; सरस्वती।

**सरसठ** - 1. वि० [हि] साठ और सात, 2. पु० सरसठ की सख्या।

**सरसना** - अ० [हिं] रसयुक्त होना; जलयुक्त होना, लहलहाना; शोभा देना; भावाविष्ट होना।

**सरसर** - 1. पु० [अनु] हवा के चलने या साँप आदि के रेंगने का शब्द; 2. अव्य० 'सरसर' ध्वनि के साथ; 3. वि० [सं] इधर-उधर भ्रमण करनेवाला; 4. स्त्री० [अ] आँधी; तेज़ हवा।

**सरसराना** - अ० [अनु] 'सरसर' की आवाज़ होना; साँप आदि का रेंगना; हवा का तेज़ी से चलना।

**सरसराहट** - स्त्री० [अनु] सुरसुराहट; हवा या साँप आदि के चलने का शब्द।

**सरसरी** - 1. वि० [हिं] चलता (काम), लापरवाही से किया जानेवाला, 2. अव्य० जल्दी में, बिना बारीकी से देखे-समझे; 3. स्त्री० माथे पर पहनने का एक गहना; **यौ०** —इख़्तियार - बिना तहक़ीक़ात के हुक्म देने का अधिकार; —तहक़ीकात - वह तहक़ीक़ात जिसमें पूरी शहादत न लिखी जाय; —नज़र, निगाह - चलती निगाह; —तौर पर - मोटे तौर पर।

**सरसाई** - स्त्री० [हिं] आधिक्य; सरसता; सुंदरता।

**सरसाना** - स० [हिं] रसपूर्ण करना; हरा-भरा करना।

**सरसिज** - 1. पु० [सं] कमल; 2. वि० तालाब में उत्पन्न, **यौ०** —योनि - ब्रह्मा।

**सरसिरुह** - 1. पु० [सं] कमल; 2. वि० सरोवर में उत्पन्न; **यौ०** —बंधु - सूर्य।

**सरसी** - स्त्री० [सं] छोटा तालाब; तलैया; बावड़ी।

**सरसुती** - स्त्री० [हिं] सरस्वती।

**सरसेटना** - स० [हिं] खरी-खोटी सुनाना; फटकार बतलाना।

**सरसों** - स्त्री० [हिं] एक तेलहन, सर्षप।

**सरसौहाँ** - वि० [हिं] रसयुक्त, सरस बनाया हुआ।

**सरस्वती** - स्त्री० [सं] विद्या की अधिष्ठात्री देवी; गाय; देववाणी; एक नदी; वाणी; विद्या; दुर्गा; सोमलता; ब्राह्मी लता; मनुपत्नी; जलाशयो से पूर्ण भूभाग; उत्तम स्त्री।

**सरह** - पु० [हिं] पतंग।

**सरहज** - स्त्री० [हिं] साले की पत्नी।

**सरहना** - पु० [हिं] मछली की चोईं।

**सरहर** - पु० [हिं] सरपत।

**सरहरा** - वि० [हिं] चिकना; ऊपर को सीधे बढ़ा हुआ; लँबोतरा।

**सरहरी** - स्त्री० [हिं] सरपत-जैसा एक तृण।

**सरहिन्द** - पु० [हिं] यमुना और सतलज के बीच का भूभाग।

**सराँग** - स्त्री० [हिं] लोहे का वह मोटा छड़ जिसपर पीटकर लोहे के बर्तन आदि बनाये जाते हैं।

**सरा** - स्त्री० [फ़ा] धर्मशाला; घर; [सं] निर्झर; प्रसारिणी लता।

**सराई** - स्त्री० [हिं] कसोरा; ठंडक; पाजामा; लँबी छड़ी; सलाई।

**सराग** - 1. पु० [हिं] मानभूमि ज़िले की एक प्राचीन जाति; सीख़चा, 2. वि० सुंदर; प्रेमाविष्ट; रँगदार; लाख से रँगा हुआ।

**सराजाम** - पु० [हिं] सामान, सामग्री।

**सराध** - पु० [हिं] श्राद्ध।

**सराना** - स० [हिं] पूरा कराना; संपादित कराना।

**सरापना** - स० [हिं] शाप देना।

**सरापा** - 1. अव्य० [फ़ा] सिर से पैर तक; संपूर्ण; 2. पु० सर्वांग; वह पद्य जिसमें नख-शिख का वर्णन हो; **यौ०** —नाज़ - जिसमें नाज़-नखरे भरे हों; —शरारत - शरारत से भरा हुआ।

**सराफ़** - पु० [अ] रुपये-गहने इत्यादि का लेन-देन करनेवाला; सोने-चाँदी के गहने तथा बर्तन आदि बेचनेवाला; **यौ०** —ख़ाना - बंक, कोठी।

**सराफ़ा** - पु० [हि] सराफ़ी; बंक; सराफ़ों का बाज़ार।

**सराफ़ी** - स्त्री० [हिं] कोठीवाली लिपि; भुनाई; सराफ़ का धंधा; **यौ०** —पारचा - चेक; हुंडी; **मु०** —करना -

रुपये-पैसे परखना ; सराफ़ का काम करना ।

**सराब** - पु० [अ] धोखा, मृगमरीचिका ।

**सराबोर** - वि० [हिं] तरबतर ।

**सराय** - स्त्री० [फ़ा] धर्मशाला ; **यौ०** —ए-फ़ानी - दुनियाँ ; **मु०** —का कुत्ता - अति लोभी ।

**सराव** - पु० [हिं] कसोरा; प्याला ; मधुपात्र ; चौंसठ तोले की एक तौल ; [सं] ढक्कन ; थाली ; शराव ; 2. वि० शब्दायमान ।

**सरास** - पु० [हिं] भूसी ।

**सरासन** - पु० [हिं] कमान ; धनुष ।

**सरासर** - 1. अव्य० [हिं] पूर्णतया ; इस सिरे से उस सिरे तक ; 2. वि० [सं] इधर-उधर भ्रमण करनेवाला ।

**सरासरी** - स्त्री० [हिं] अनुमान ; आसानी ; जल्दी ।

**सराह** - स्त्री [हिं] प्रशंसा, स्तुति ।

**सराहत** - स्त्री० [अ] व्याख्या ; **यौ०** —से - खोलकर या विस्तारपूर्वक ।

**सराहना** - 1. स० [हिं] प्रशंसा करना ; 2. स्त्री० तारीफ़ ।

**सराहनीय** - वि० [हिं] प्रशंसनीय ।

**सरि** - 1. स्त्री० [सं] जलप्रपात ; झरना ; दिशा ; [हिं] नदी, बराबरी, माला ; 2. वि० तुल्य ; 3. अव्य० तक ; पर्यन्त ।

**सरित** - 1. वि० [सं] धारावाहिक (भाषण) ; 2. स्त्री० नदी ।

**सरिता** - स्त्री० [हिं] धारा ; नदी ।

**सरित्** - स्त्री० [सं] नदी ; दुर्गा ; डोरी ; **यौ०** —पति - समुद्र ।

**सरिदिही** - स्त्री० [हिं] हर फ़सल पर ज़मीन्दार को दी जानेवाली भेंट ।

**सरिन्मुख** - पु० [सं] नदी का मुहाना ।

**सरिया** - पु० [हिं] पतला छड़ ; सरकंडा ।

**सरियाना** - सं [हिं] बटोरकर ठीक तरह से रखना ; व्यवस्थित करना ।

**सरिवन** - पु० [हिं] एक औषधि, शालपर्णी ।

**सरिवर, सरिवरि** - स्त्री० [हि] बराबरी ।

**सरिश्क** - पु० [फ़ा] अश्रुबिन्दु ; बिन्दु ।

**सरिश्त** - स्त्री० [फ़ा] प्रकृति ; बनावट ; सृष्टि ।

**सरिश्ता** - पु० [फ़ा] कचहरी ; उपाय ; महात्मा ; रीति ; **यौ०** —दार - दफ़्तर का प्रधान ; माल और दीवानी दफ़्तरों का एक विशेष कर्मचारी ; —दारी - सरिश्तादार का पद या कार्य ।

**सरिषप** - पु० [सं] सरसों ।

**सरिस** - वि० [हि] समान, बराबर ।

**सरी** - स्त्री० [सं] छोटा सरोवर ; झरना ।

**सरीक** - वि० [हि] शरीक़ ।

**सरीकता** - स्त्री० [हिं] साझा ।

**सरीखा** - वि० [हिं] समान, सदृश ।

**सरीर** - 1. पु० [हि] शरीर ; [अ] राजगद्दी ; **यौ०** —आरा - सिंहासनासीन ; 2. स्त्री० [अनु] क़लम द्वारा लिखने पर काग़ज़ पर होनेवाली आवाज़ ।

**सरीसृप** - 1. वि० [सं] रेंगनेवाला ; 2. पु० रेंगनेवाला कीड़ा ; साँप आदि ।

**सरीह** - वि० [अ] प्रकट, स्पष्ट ।

**सरीहन** - अव्य० [अ] खुले तौर पर ।

**सरुज** - वि० [सं] रोगी ।

**सरुष** - वि० [सं] कुपित ।

**सरुहना** - अ० [हिं] ठीक होना ; सुधरना ।

**सरुहाना** - स० [हिं] अच्छा करना ।

**सरूप** - 1. वि० [सं] साकार ; तुल्य, समान स्वरवाला ; सुंदर ; 2. पु० स्वरूप ।

**सरूपता** - स्त्री० } [सं] मुक्ति का एक प्रकार ; सादृश्य ।
**सरूपत्व** - पु० }

**सरूपी** - वि० [सं] समान रूप का ।

**सरेख** - वि० [हिं] उम्र में बड़ा और चालाक; सज्ञान।

**सरेखना** - स० [हिं] सँभालने के लिए प्रवृत्त करना।

**सरेश** - 1. पु० [फ़ा] पशुओं के चमड़े से बनाया जानेवाला एक लसदार पदार्थ; 2. वि० चिपकनेवाला।

**सरोंट** - स्त्री० [हिं] कपड़े की सिलवट, सिकुड़न।

**सरो** - पु० [हिं] बनझाऊ, एक सुंदर पेड़।

**सरोई** - पु० [हिं] एक ऊँचा पेड़।

**सरोकार** - पु० [फ़ा] प्रयोजन; वास्ता।

**सरोकारी** - वि० [फ़ा] सरोकार रखनेवाला।

**सरोज** - 1. पु० [सं] कमल; 2. वि० ताल आदि में उत्पन्न; **यौ०** —खंड - पद्मसमूह; —मुखी - कमल के समान मुखवाली स्त्री।

**सरोजना** - स० [हिं] पाना।

**सरोजिनी** - स्त्री० [सं] कमल का पौधा; कमलसमूह; कमलों से भरा तालाब।

**सरोता** - पु० [हिं] श्रोता; सरौता।

**सरोद** - पु० [फ़ा] एक बाजा।

**सरोधा** - पु० [हिं] श्वास के आधार पर भविष्य बतलाने की विद्या।

**सरोरुह** - पु० [सं] कमल।

**सरोवर** - पु० [सं] तालाब; झील।

**सरोश** - पु० [फ़ा] फ़रिश्ता; इलहाम।

**सरोष** - वि० [सं] क्रुद्ध।

**सरौ** - पु० [हिं] कसोरा; ढक्कन।

**सरौता** - पु० [हिं] सुपारी काटने का एक औज़ार।

**सरौती** - स्त्री० [हिं] छोटा सरौता; एक प्रकार का ऊख।

**सर्क़ा** - पु० [अ] चोरी; भाव आदि का अपहरण; दूसरे का पद्य या लेख अपनी रचना में सम्मिलित करना।

**सर्ग** - पु० [सं] निर्माण; त्याग; संकल्प; प्रकृति; लोकसृष्टि; स्वीकृति; प्रवृत्ति; स्वभाव; आक्रमण; कूच; ग्रंथ का अध्याय; मल-त्याग; मोह; संतान; उद्यम; गति; प्रवाह; युद्धोपकरण; प्राणी; **यौ०**— कर्ता - सृष्टिकर्त्ता; —कालीन - सृष्टिरचना के समय का; —क्रम - सृष्टि का क्रम; —बंध - सर्गों में विभक्त महाकाव्य; [हिं] स्वर्ग; **यौ०** —पताली - ऐंचाताना।

**सर्गक** - वि० [सं] उत्पादक।

**सर्जन** - पु० [सं] निर्माण; सृष्टि; छोड़ना; अर्पण; मलत्याग; सेना का पृष्ठ-भाग।

**सर्जु** - 1. पु० [सं] व्यापारी; 2. स्त्री० बिजली।

**सर्द** - वि० [फ़ा] ठंडा; उदास; फीका; निर्जीव; निरुत्साह; **यौ०** —ख़ाना - ठंडा पानी या बर्फ़ रखने की जगह; —गर्म - ऊँच-नीच; समय का उलट-फेर।

**सर्दई** - वि० [हिं] हरापन लिये हुए पीला।

**सर्दा** - पु० [फ़ा] खरबूजे का एक भेद।

**सर्दाब** - पु० [फ़ा] ठंडा पानी या बरफ़ रखने की जगह; तहख़ाना।

**सर्दाबा** - पु० [फ़ा] किसीके द्वारा अपने लिए अपने जीवन-काल में ही खुदवायी हुई क़ब्र।

**सर्दी** - स्त्री० [अ] जाड़ा; जाड़े का मौसम; जुकाम; बुख़ार; **यौ०**— गर्मी - ठंडी-गर्मी; **मु०**— खाना - ठंड से कष्ट पाना।

**सर्प** - पु० [सं] एक विषैला रेंगनेवाला जंतु, साँप; कुटिल गति; रेंगना; गमन; प्रवाह; एक म्लेच्छजाति; **यौ०** —काल - गरुड़; —कोटर - साँप का

बिल ; —च्छत्र, च्छत्रक - कुकुरमुत्ता ; —दंष्ट्र - साँप का विषदंत ; —द्विट - मयूर ; —धारक - सँपेरा ; —पति - शेषनाग ; —फण - साँप का फैला हुआ मस्तक ; —फेण - अफ़ीम ; —बंध - पेचीदी चाल ; —बलि - सर्पों को दिया जानेवाला नैवेद्य आदि ; —बेलि - पान ; —भक्षक - मयूर ; नकुल ; —भृता - पृथ्वी ; —मणि - सर्प के सिर पर पायी जानेवाली मणि ; —राज - वासुकी ; —लता, वल्ली - नागवल्ली ; —विद्या - साँपो को पकड़ने आदि की विद्या।

**सर्पि** - पु० [स] घी।

**सर्पी** - वि० [सं] रेंगनेवाला।

**सर्पोन्माद** - पु० [सं] उन्माद का एक प्रकार जिसमें मनुष्य साँप-जैसा आचरण करता है।

**सर्फ़** - 1. पु० [फ़ा] अपव्यय, फ़जूलख़र्च ; [अ] बिताना ; ख़र्च करना ; 2. स्त्री० व्याकरण का वह विभाग जिससे शब्दो के भेद, रूपांतर, व्युत्पत्ति आदि का ज्ञान हो।

**सर्फ़ा** - पु० [अ] अपव्यय ; कंजूसी ; ख़र्च।

**सर्फ़ी** - वि० [अ] वैयाकरण।

**सर्रा** - पु० [हिं] गराड़ी की धुरी।

**सर्राफ़** - पु० [अ] सोना-चाँदी व रुपये आदि परखनेवाला, सराफ़।

**सर्वंकष** - 1. वि० [स] सबको पीड़ित करनेवाला ; निर्दय ; 2. पु० दुष्ट व्यक्ति ; पाप।

**सर्वंभरि** - वि० [सं] सबका भरण-पोषण करनेवाला।

**सर्वंसह** - वि० [सं] सब-कुछ सहन करनेवाला।

**सर्वंसहा** - स्त्री० [सं] पृथ्वी।

**सर्वंहर** - वि० [सं] सब कुछ ले जानेवाला।

**सर्व** - 1. वि० [सं] कुल, सब ; 2. पु० जल ; एक जनपद ; एक मुनि ; शिव ; विष्णु ; यौ० —कर्मीण - सब काम करनेवाला ; —कांचन - बिलकुल सोने का ; —काम - सब इच्छाएँ रखनेवाला ; सब तरह की इच्छाएँ पूरी करनेवाला ; —कामी - स्वेच्छापूर्वक काम करनेवाला; सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला ; जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हों ; —काम्य - सर्वप्रिय ; —कारी - सबकुछ करने में समर्थ ; सबका निर्माता ; —काल - हमेशा ; —कालीन - सब काल का ; —केशी - अभिनेता ; —क्षय - प्रलय ; —गंध - जिसमें हर तरह की गंध हो ; कपूर, अगरू, कुंकुम, लवंग, कक्कोल और चातुर्जातक का समाहार ; —गंधिक - सब जगह रहनेवाला ; —गत - सर्वव्यापक ; —ग्रह - सब कुछ एक ही बार खा जानेवाला ; —ग्रास - सब खा जानेवाला ; खग्रास ग्रहण ; —चारी - व्यापक ; —च्छंदक - सबको वश में करनेवाला ; —जन - प्रत्येक व्यक्ति ; —जनीन - सबसे संबंध रखनेवाला, सार्वजनिक ; —जनीय - सबके हित का ; —ज्ञ, ज्ञाता - सबकुछ जाननेवाला ; ईश्वर ; अर्हत् ; देवता ; बुद्ध ; शिव ; —तंत्र - सब सिद्धांत ; सर्वशास्त्रसम्मत ; सब शास्त्रो को जाननेवाला ; —त्याग - सब कुछ का त्याग ; सर्वनाश ; —दंडधर - सबको दंड देनेवाला ; —दम, दमन - सबका दमन करनेवाला ; शकुंतला का पुत्र भरत , —दर्शन - सब देखनेवाला ; —दर्शी - सब कुछ देखनेवाला ; ईश्वर ; अर्हत् ; बुद्ध ; —दाता -

सबकुछ देनेवाला ; —दान - सर्वस्व का दान ; —देवमुख - अग्नि ; —देशीय - सब देशो से संबद्ध ; सब देशो में पाया जानेवाला ; —देश्य - जो सब स्थानो में हो ; —द्रष्टा - सर्वदर्शी ; —धुरावह - सब तरह का भार वहन करनेवाला ; गाड़ी में जोता जानेवाला जानवर ; —नाम - संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होनेवाला शब्द (व्या०) ; —नाश - बरबादी ; —नाशी - सर्वनाश करनेवाला ; —निधन - सबका वध ; —नियंता - सबको अपने वश में रखनेवाला ; —नियोजक - सबका नियोजन करनेवाला ; —पालक - सबका रक्षण करनेवाला ; —पावन - सबको पवित्र करनेवाला , —पूत - पूर्णतः शुद्ध ; —प्रत्यक्ष - जो सबके सामने हो ; —प्रद - सबकुछ देनेवाला ; —प्रभु - सबका स्वामी ; —प्राप्ति - सब कुछ की प्राप्ति ; —प्रिय - सबको प्रिय लगनेवाला ; —बंधविमोचन - सब बंधनो से विमुक्त करनेवाला ; —बीज - सबका बीज या मूल ; — भक्ष - सबकुछ खानेवाला ; —भक्षा - बकरी ; —भक्षी - सर्वभक्ष ; —भयंकर - सबको डरानेवाला ; —भाव - पूरी सत्ता ; पूर्ण संतोष ; संपूर्ण आत्मा ; —भावन - सर्वोत्पादक ;—भूत - सब जीव ; जो सब जगह हो ; —भृत - सबका पोषण करनेवाला ; भोग - धन व सेना आदि से सहायता देनेवाला मित्र ; —भोगी - सबकुछ खानेवाला ; सबका भोग करनेवाला ; —भोग्य - सबके भोग के योग्य ; —मंगल - सबके लिए शुभ ; —महान - सबसे बड़ा ; —मूल्य - कौड़ी ; कोई छोटा सिक्का ; —रक्षी - सबकी रक्षा करनेवाला ; —रस - सब प्रकार का रस; लवण; सब तरह के स्वादिष्ट भोजन ; सब रसों से युक्त ; विद्वान ; —रसोत्तम - नमक ; —रूप - सब रूप ग्रहण करनेवाला ; एक समाधि ; —लक्षण - सब शुभ चिन्ह ; —लिंगी - ढोंगी ; —लोक - सारा संसार ; सब लोग ; —वल्लभ - जो सबको प्रिय हो ; —वल्लभा - व्यभिचारिणी; —वास, वासी - ईश्वर; —विज्ञान - प्रत्येक विषय का ज्ञान ; सारे विषयो का ज्ञाता ; — विद् - सर्वज्ञ ; —विनाश - सर्वनाश ; —विषय - साधारण ; —वीर - बहुत से पुत्रोंवाला ; —वेत्ता - सर्वज्ञ ; —वेद - पूर्णज्ञानी ; सब वेदो का ज्ञाता ; —वेशी - अभिनेता ; —व्यापक, व्यापी - सबमें रहनेवाला ; —शंका - प्रत्येक व्यक्ति के प्रति संदेह ; —शक्तिमान - सबकुछ करने की शक्ति से युक्त ; —शीघ्र - सबसे तेज़ ; —शून्य - बिलकुल रिक्त ; सबको अस्तित्वरहित माननेवाला ; —श्राव्य - सबके सुनने योग्य ; —श्रेष्ठ - सर्वोत्तम ; —संगत - एक तरह का जल्द तैयार होनेवाला धान ; —संपन्न - सब वस्तुओ से युक्त ; —संभव - सबका मूल ; —संहार - सर्वनाश करनेवाला ; काल ; प्रलय ; —समता - सबके साथ समानता, निष्पक्षता ; —समाहार - सबका नाश करनेवाला ; —सह - सहनशील ; —सहा - पृथ्वी ; —साक्षी - सबकुछ देखनेवाला ; अग्नि ; ईश्वर ; वायु ; —साधन - सबकुछ सिद्ध करनेवाला ; —साधारण - साधारण लोग, जनता ; —सामान्य - जो सबमें पाया जाय ; —सिद्धा - चौथी, नौवीं और चौदहवी तिथियाँ ; —सिद्धार्थ - जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गयी हो ; अंतिम

देवलोक ; —सिद्धि - सभी इच्छाओं की पूर्ति ; पूर्ण प्रमाण ; —सुलभ - सबको आसानी से प्राप्त हो सकने योग्य ; —स्व - सबकुछ ; सर्वांश , —स्वामी - सबका मालिक ; —हर - सबकुछ हरण करनेवाला ; सबकुछ नष्ट करनेवाला ; सारी संपत्ति का उत्तराधिकारी ; काल ; यम ; महेश ; —हरण - सारी संपत्ति का हरण;—हारी - सबकुछ हरण करनेवाला ; —हित - सबके लिए लाभदायक ।

**सर्व** - पु० - [फ़ा] एक सुंदर सुडौल पेड़ जो सीधा बढ़कर ऊपर की ओर जाता है (यह उर्दू-फारसी कविता में सुंदर शरीर का उपमान माना गया है ।), सरो; **यौ०**— अंदाम - सरो की-सी सुडौल देहवाला ; —क़द, क़ामत - सरो के-से क़दवाला ।

**सर्वतः** - अव्य० [सं] चारो ओर ; पूर्णतः ; सब तरफ़ से ; सब प्रकार से ; **यौ०** — पाणिपाद - जिसके हाथ-पैर सर्वत्र हो ।

**सर्वतश्चक्षु** - वि० [सं] जिसकी दृष्टि सर्वत्र हो ।

**सर्वत्र** - अव्य० [सं] सब जगह ; हमेशा ।

**सर्वथा** - अव्य० [सं] अत्यंत ; पूर्णतः ; बिलकुल ; हमेशा ; हर तरह से ।

**सर्वदा** - पु० [सं] सदा, हर समय ।

**सर्वशः** - अव्य० [सं] पूर्णतः ; सर्वत्र ; सब तरफ़ से ; सब प्रकार से ।

**सर्वांग** - पु० [सं] सारा शरीर ; अवयव ; सब वेदांग ; **यौ०** —सुंदर - जिसके सब अंग सुंदर हो ।

**सर्वांगीण** - वि० [सं] सब अंगो में व्याप्त होनेवाला ।

**सर्वांतक** - वि० [सं] सबका अंत करनेवाला ।

**सर्वांतरात्मा, सर्वांतर्यामी** - पु० [सं] ईश्वर ।

**सर्वातिथि** - वि० [सं] सबका आतिथ्य करनेवाला ।

**सर्वातिशायी** - वि० [सं] सबसे बढ़ जानेवाला ।

**सर्वात्मा** - पु० [सं] संपूर्ण विश्व की आत्मा ; ब्रह्मा ; शिव ; अर्हत् ।

**सर्वाधिक** - वि० [सं] सबसे बढ़ा हुआ ।

**सर्वाधिकार** - पु० [सं] पूरा अख्तियार , सबका निरीक्षण करने का अधिकार ।

**सर्वाधिकारी** - पु० [सं] सारे अधिकार रखनेवाला ; अध्यक्ष ; निरीक्षक ; शासक ।

**सर्वाध्यक्ष** - पु० [सं] सबका शासन या निरीक्षण करनेवाला ।

**सर्वानुभूति** - स्त्री० [सं] व्यापक अनुभूति ।

**सर्वान्न** - पु० [सं] सब तरह का खाद्य पदार्थ ।

**सर्वाभिसंधी** - 1. वि० [सं] ढोंगी ; परनिंदक ; सबको धोखा देनेवाला ; 2. पु० सबकी निंदा करनेवाला ।

**सर्वार्थ** - पु० [स] एक मुहूर्त ; सब पदार्थ ; सब विषय ; **यौ०** —कर्ता - सब चीज़ों का निर्माण करनेवाला ; —कुशल - सब विषयो में दक्ष ; —चिन्तक - सबका निरीक्षण करनेवाला ; —साधन - सब कुछ पूरा करनेवाला ; सब कुछ सिद्ध करने का साधन ; —सिद्धि - सब उद्देश्यो की पूर्ति ; एक देवयोनि ।

**सर्वाश्रय** - 1. वि० [सं] सबको आश्रय देनेवाला ; 2. पु० शिव ।

**सर्वास्त्र** - वि० [सं] सब हथियारो से लैस ।

**सर्वीय** - वि० [सं] सबके लिए उपयुक्त , सबसे संबंध रखनेवाला ।

**सर्वोत्तम** - वि० [सं] सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ ।

**सर्वोपकारी** - वि० [स] सबका उपकार या सहायता करनेवाला ।

**सर्वोपाधि** - स्त्री० [सं] सर्वसामान्य गुण ।

**सर्षप** - पु० [सं] सरसों ; एक बहुत छोटी तौल ; **यौ०** —कण - सरसों का दाना ; —तैल, स्नेह - सरसों का तेल , —नाल - सरसों का शाक ।

**सलई** - स्त्री० [हिं] चीड़ ; चीड़ का गोंद ।

**सलक्षण** - वि० [सं] समान चिन्होंवाला ।

**सलग** - वि० [हिं] पूरा ; समग्र ।

**सलगा** - स्त्री० [हिं] चीड़ का पेड़ ।

**सलज** - 1. पु० [हिं] पहाड़ी बरफ़ का पानी ; 2. वि० लज्जायुक्त ।

**सलज्ज** - वि० [सं] लज्जाशील ; विनम्र ।

**सलना** - अ० [हिं] किसी छिद्र में बैठाया जाना ; गड़ना ; छिदना ।

**सलफ़** - 1. वि० [अ] प्राचीन ; 2. पु० पुराने ज़माने के लोग ; **यौ०** —से - पुराने ज़माने से ।

**सलब** - पु० [अ] छीन लेना ; इनकार करना ; दूर करना ; लोप ; हरण ।

**सलमा** - पु० [हिं] सोने-चाँदी का गोलाई में लपेटा हुआ तार, बादला ।

**सलवात** - स्त्री० [अ] किसी चीज़ से बाज़ आना ; खुदा की रहमत ; गाली ।

**सलसलाना** - 1. अ० [अनु] गुदगुदी होना ; सरसराहट या खुजली होना ; गीला होकर कमज़ोर या ढीला पड़ जाना ; कीड़ों का रेंगना : 2. स० किसी काम में जल्दी करना ; खुजलाना ; गुदगुदाना ।

**सलसलाहट** - स्त्री० [अनु] खुजली ; गुद-गुदी ; 'सलसल' की आवाज़ ; सलसलाने का भाव ।

**सलहज** - स्त्री० [हिं] साले की पत्नी ।

**सला** - स्त्री० [अ] दावत का निमंत्रण ; भोजन के लिए बुलावा ; **यौ०** —ए-आम - आम दावत ।

**सलाई** - स्त्री० [हिं] धातु या काष्ठनिर्मित पतली और छोटी तीली ; दियासलाई ; सलई ; सालने की क्रिया या मज़दूरी ।

**सलाक** - स्त्री [हिं] शलाका , बाण ।

**सलाकना** - अ० [हिं] सलाई या सलाई-जैसी चीज़ से निशाना बनाना ।

**सलात** - स्त्री० [अ] नमाज़ ।

**सलातीन** - पु० [अ] 'सुलतान' का बहु० ।

**सलाबत** - स्त्री० [अ] अनुचित कठोरता ; कठोरता ; प्रताप ; वीरता ; **यौ०** —जंग - मुसलमान बादशाहों की ओर से फ़ौजी अफसरों को दी जानेवाली एक उपाधि ।

**सलाम** - पु० [अ] नमस्कार, बंदगी , वह नज़्म जिसमें करबला के युद्ध का वर्णन हो ; **यौ०** —अलैक - तू सलामत रहे ; परिचय ; —अलैकम - तुम सलामत रहो ; —कराई - कन्यापक्ष की ओर से दूल्हे को बिदाई के समय दिया जानेवाला रुपया या गहना ;—पयाम - बातचीत ; मँगनी या ब्याह की बातचीत ।

**सलामत** - 1. स्त्री० [अ] कुशल ; रक्षा ; 2. वि० अखंड ; जीवित ; सुरक्षित ; स्वस्थ ; 3. अव्य० सकुशल ; सही-सलामत ; **यौ०** —रवी - मध्यम वृत्ति का आश्रयण ; किफ़ायत से गुज़र करना ; **मु०** —रहना - क़ायम रहना ; जीवित रहना ।

**सलामती** - पु० [फ़ा] कुशल ; जीवित होना ; तंदुरुस्ती ; रक्षा ; **मु०** —का जाम पीना - स्वास्थ्यकामना का प्याला पीना ; —चाहना - कुशल मनाना ; —से - भागवान की कृपा से ।

**सलामी** - 1. स्त्री० [फ़ा] तोपों या बंदूकों की वह बाढ़ जो बड़े अधिकारियों के सम्मानार्थ दाग़ी जाती है , दूल्हे या

दुलहिन को सलाम की रस्म में दिया जानेवाला धन; हथियारो को उठाकर सलाम करना; सलाम करने की रस्म; ढाल; नज़राना; भेट; 2. वि० झुकनेवाला; 3. पु० सलाम करनेवाला; प्रार्थी; मु० —उतारना - किसीके सम्मानार्थ तोपो या बदूको की बाढ़ दाग़ना।

**सलार** - पु० [हिं] एक चिड़िया।

**सलासत** - स्त्री० [अ] भाषा का सरल और प्रवाहयुक्त होना; मृदुता; सफ़ाई; सादगी।

**सलाह** - स्त्री० [अ] मंत्रणा; राय; भलाई; यौ० —कार - सलाह देनेवाला।

**सलाहियत** - स्त्री० [अ] नरमी; भलाई; योग्यता।

**सलाही** - पु० [हिं] सलाह या परामर्श देनेवाला।

**सलिंग** - वि० [सं] समान चिन्हयुक्त।

**सलिंगी** - वि० [सं] आडंबरी; ढोंगी।

**सलिल** - पु० [सं] जल; अश्रु; वर्षा का जल; वर्षा; एक तरह की वायु; उत्तराषाढ़ा नक्षत्र; यौ० —कर्म - पितृतर्पण; —कुंतल - शैवाल; —क्रिया - पितृ-तर्पण; शवस्नान; —चर - जलचर।

**सलीक़ा** - पु० [अ] प्रत्येक चीज़ को तरीके से यथास्थान रखने की बुद्धि; गुण; ढंग; योग्यता; सभ्यता; यौ० —दार, मंद - जिसमें सलीक़ा हो।

**सलीब** - स्त्री० [अ] सूली।

**सलीम** - वि० [अ] ठीक; गंभीर; तंदुरुस्त; शांत; शुद्धहृदय; सहनशील; यौ० —उत्तबा - कोमलहृदय; धीर और गंभीर, बुद्धिमान।

**सलील** - वि० [सं] क्रीडाशील।

**सलीस** - वि० [अ] मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा); सहज।

**सलूक** - पु० [अ] आचरण; उपकार; मेल; व्यवहार; सीधा मार्ग।

**सलूनी** - स्त्री० [हिं] चुक्रिका नामक शाक।

**सलेप** - वि [सं] तैलीय पदार्थों से युक्त।

**सलैना** - स० [हिं] काटकर ठीक करना; सालना।

**सलैला** - वि० [हिं] चिक्ना, फिसलनवाला।

**सलोक** - 1. वि० [सं] लोगों से युक्त; समान लोक में रहनेवाला; 2. पु० नगर; नागरिक।

**सलोतर** - पु० [हिं] अश्वो की चिकित्सा का शास्त्र।

**सलोना** - वि० [हिं] सुन्दर; नमकीन; यौ० —पन - नमकीनपन; सौंदर्य।

**सल्तनत** - स्त्री० [अ] राज्य; प्रबंध; हुकूमत; मु० —जमना, बैठना - प्रबंध ठीक होना; अधिकार स्थापित होना।

**सल्लम** - पु० [हिं] एक मोटा कपड़ा, गजी।

**सल्लू** - पु० [हिं] चमड़े की डोरी।

**सल्ले-अला** - स्त्री० [अ] वाह-वाह; क्या कहना; सुभान-अल्लाह।

**सवत, सवति** - स्त्री० [हिं] सौत।

**सवत्स** - वि० [सं] संतानयुक्त; जो बछड़े के साथ हो।

**सवयस, सवयस्क** - वि० [सं] समवयस्क, हमउम्र।

**सवर्ण** - 1. वि० [सं] समान रंग का; समान रूप का; समान जाति का: समान वर्ग का; 2. पु० ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता की संतान; ज्योतिष से जीविका चलानेवाला।

**सवा** - वि० [हिं] चतुर्थांश के साथ एक।

**सवाई** - 1. वि० [हिं] चतुर्थांशयुक्त एक; बढ़-चढ़कर; 2. स्त्री० सूद लेने का एक प्रकार जिसमें मूलधन अपने चतुर्थांश से युक्त हो जाता है।

**सवागी** - पु० [देश] सुहागा।
**सवाद** - पु० [हि] स्वाद।
**सवादिक, सवादिल** - वि० [हिं] स्वादिष्ठ।
**सवानहि** - पु० [अ] 'सानिहा' का बहु०, घटनाएँ; **यौ०**—उमरी - जीवन-चरित्र; —निगार - संवाददाता।
**सवाब** - 1. पु० [अ] पुण्य; भलाई, सत्यता; 2. वि० ठीक; **यौ०** —अंदेश - परोपकारी; ठीक और वाजिब बात सोचनेवाला।
**सवाया** - वि० [हिं] सवा गुना; बढचढकर।
**सवार** - 1. पु० [फ़ा] अश्वारोही; अश्वारोही सैनिक; घोड़े, हाथी, ऊँट आदि पर चढ़ा हुआ; पुलिस का सिपाही; 2. वि० सवारी पर बैठा हुआ; नशे में चूर; 3. अव्य० जल्द।
**सवारना** - स० [हि] सजाना; सुधारना।
**सवारा** - पु० [हिं] प्रातःकाल।
**सवारी** - स्त्री० [फ़ा] वह चीज (हाथी, घोड़, इक्के आदि) जिसपर सवार हो; सवार होने की क्रिया; जुलूस; सवार; कुश्ती का एक पेंच।
**सवारे, सवारैं** - अव्य० [हि] शीघ्र; सवेरे।
**सवाल** - पु० [अ] पूछने की क्रिया; दरख़ास्त; प्रश्न; निवेदन; उत्तर निकालने के लिए दिया जानेवाला गणित का प्रश्न।
**सवालात** - पु० [अ] 'सवाल' का बहु०।
**सवालिया** - वि० [हिं] जिसमें सवाल हों।
**सवाली** - 1. वि० [हिं] मँगानेवाला, 2. पु० मरसिया पढ़नेवाला।
**सविकल्प, सविकल्पक** - 1. वि० [सं] संदिग्ध; इच्छाधीन; संशयवादी; 2. पु० समाधि का एक प्रकार; ज्ञाता और ज्ञेय के अंतर का ज्ञान।
**सविचार** - 1. वि० [सं] जिसका विचार किया गया हो; 2. पु० समाधि या ध्यान के चार भेदों में से एक।
**सविज्ञान** - वि० [सं] विवेकशील।
**सवितर्क** - 1. वि० [सं] विचारवान; 2. पु० सविकल्पक समाधि या ध्यान के चार भेदो में से एक।
**सविता** - 1. पु० [सं] सूर्य; बारह की संख्या; इंद्र; लोकस्रष्टा; शिव; 2. वि० उत्पन्न करनेवाला।
**सवित्र** - पु० [सं] उत्पत्ति का साधन या कारण।
**सवित्री** - स्त्री० [सं] गाय; धात्री; माता।
**सविद्य** - वि० [सं] विद्वान; एक ही समान विषय का अध्ययन करनेवाला।
**सविध** - 1. वि० [सं] निकट; समान; एक ही वर्ग का; 2. पु० सामीप्य; 3. अव्य० विधिपूर्वक।
**सविधि** - 1. वि० [सं] विधियुक्त; 2. अव्य० विधि के अनुसार।
**सविनय** - वि० [सं] विनम्र; शिष्टतापूर्ण; **यौ०** —अवज्ञा - अन्यायपूर्ण कानून की अवमानना।
**सविभ्रम** - वि० [सं] क्रीड़ायुक्त; विलासयुक्त।
**सविशेष** - वि० [सं] असाधारण; विशेष गुणो से युक्त; श्रेष्ठ।
**सविशेषक** - 1. वि० [सं] विशेषता लानेवाले गुण से युक्त; 2. पु० विशेष गुण।
**सविष** - वि० [सं] विषयुक्त, विषाक्त।
**सविस्तर** - वि० [सं] तफ़सीलवार, ब्योरे के साथ।
**सविस्मय** - वि० [सं] चकित; संदेहपूर्ण; आश्चर्य के साथ।
**सवेग** - वि० [सं] उग्र; समान वेगवाला।
**सवेरा** - पु० [हिं] प्रातःकाल।

**सवेष** - वि० [सं] वस्त्राभूषण से सजा हुआ ।
**सवेष्टन** - वि० [सं] पगड़ी के साथ (सिर) ।
**सवैया** - पु० [हिं] सवा का पहाड़ा ; सवा सेर का बाट , सवाई ।
**सव्य** - 1. वि० [सं] प्रतिकूल ; दक्षिणी ; बायाँ ; दाहिना ; 2. पु० ग्रहण के दस प्रकारो में से एक, जनेऊ ; विष्णु ; किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय जलायी जानेवाली अग्नि ; **यौ०**—साची - अर्जुन ; कृष्ण ; अर्जुनवृक्ष ।
**सव्याज** - वि० [सं] कपटी ; धूर्त ।
**सव्यापार** - वि० [सं] कार्य में संलग्न ।
**सव्येतर** - वि० [सं] दाहिना ।
**सशंक** - वि० [स] डरपोक ; शंकायुक्त ।
**सशंकना** - अ० [हिं] डरना ; शंकित होना ।
**सशक्तिक** - वि० [सं] बलशाली ।
**सशब्द** - वि० [सं] शब्दयुक्त ; शोरगुल से भरा हुआ ; घोषित ।
**सशरीर** - वि० [सं] अस्थियुक्त ; शरीरयुक्त ; मूर्त ।
**सशल्य** - 1. वि० [सं] कंटीला ; काँटे, बाण या भाले से बिंधा हुआ ; कष्टकर ; कष्टग्रस्त ; 2. पु० काँटे आदि का घाव ; भालू ।
**सशाक** - पु० [सं] अदरक ।
**सशेष** - वि० [सं] अधूरा , जिसमें कुछ बाकी रहे ।
**सश्रद्ध** - वि० [सं] विश्वस्त ; सच्चा ।
**सश्रम** - वि० [सं] थका हुआ , श्रमयुक्त ।
**ससंभ्रम** 1. वि० [सं] क्षुब्ध ; 2. अव्य० घबड़ाहट ।
**ससंवाद** - वि० [सं] एकमत ।
**ससंविद्** - वि० [स] जिसके साथ कोई ठहराव हुआ हो ।
**ससंशय** - 1. वि० [सं] अस्पष्ट ; संदेह-युक्त ; 2. पु० संदिग्धता ।
**सस** - पु० [हिं] चंद्रमा ; ससक ; धान्य ; **यौ०**—धर, हर - चंद्रमा ।
**ससक** - पु० [हिं] खरगोश ।
**ससकना** - अ० [हिं] घबड़ाना ; झिझकना ; धड़कना ।
**ससत्व** - वि० [सं] जीवो से पूर्ण ; शक्ति या साहसयुक्त ।
**ससरना** - अ० [हिं] सरकना ।
**ससहाय** - वि० [सं] साथियो आदि के साथ ।
**ससा** - पु० [हिं] ससक ; खीरा ।
**ससाध्वस** - वि० [सं] डरा हुआ ।
**ससी** - पु० [हिं] शशि, चंद्रमा ।
**ससुर** - 1. पु० [हिं] श्वसुर ; 2. वि० [सं] नशे में चूर ; देवताओं के साथ ; मदिरा के साथ ।
**ससुरा** - पु० [हिं] ससुर ; ससुराल ; एक गाली ।
**ससुरार, ससुरारि, ससुराल** - स्त्री० [हिं] पति या पत्नी के पिता का घर ।
**सस्तर** - वि० [सं] पत्तो के बिस्तर के साथ ।
**सस्ता** - वि० [हिं] अल्प मूल्य का ; घटिया ; मंदा ; जो आसानी से मिल सके ; **यौ०** —माल - घटिया माल ; **—समय** - सस्ते का ज़माना ; **मु०** **—छूटना** - ज़्यादा ख़र्च आदि की जगह थोड़े में ही काम चल जाना ; **—लगा देना** - सस्ता बेचना ।
**सस्ताना** - 1. अ० [हिं] सस्ता हो जाना ; 2. स० दाम कम करना ।
**सस्ती** - स्त्री० [हिं] महँगी का न होना, मंदी ।
**सस्त्रीक** - वि० [सं] पत्नीसहित ; विवाहित ।
**सस्नेह** - वि० [सं] तैलयुक्त ; प्रेमपूर्ण ।
**सस्पृह** - वि० [स] इच्छुक ।
**सस्मित** - वि० [सं] मुस्कुराहट के साथ ।

**सस्य** - पु० [सं] धान्य ; एक क़ीमती पत्थर ; किसी पौधे का फल ; शस्त्र ; सद्गुण ; **यौ०**—क्षेत्र - अनाज बोने का खेत ; —पाल, रक्षक - खेत का रखवाला ।

**सहँगा** - वि० [हिं] सस्ता ।

**सह** - 1. अव्य० [सं] साथ ; साथ-साथ ; 2. वि० सहन करनेवाला ; पराभव करनेवाला ; धीर ; समर्थ ; सशक्त ; 3. पु० शक्ति, सामर्थ्य, मार्गशीर्ष, मुक़ाबला; **यौ०** —कर्ता - सहायक ; —कार - सहायता देना ; एक प्रकार का सुगंधित आम ; आम की मंजरी ; आम का रस ; —कारता, कारिता - सहायता ; सहायक-होने का भाव ; —कारी - साथ काम करनेवाला ; सहायक कार्यकर्ता ; —गमन - सती होना ; साथ जाना ; —गामिनी - सती होनेवाली स्त्री ; —गामी - साथ जानेवाला ; —चर - साथ चलने या रहनेवाला ; अनुचर ; प्रतिबंधक ; ज़ामिन ; मित्र ; —चरी, चारिणी - पत्नी ; सखी ; —जन्मा - जुड़वाँ ; सहोदर ; यमज ; —जात - एक साथ उत्पन्न ; एक ही समय उत्पन्न; जुड़वाँ (बच्चे) ; प्राकृतिक ; सहोदर ; —जीवी - साथ रहनेवाले ; —धर्म - सामान्य धर्म या कर्तव्य ; —धर्मिणी - पत्नी ; —धर्मी - समान कर्तव्योवाला ; —पाठी - साथ पढ़नेवाला ; —पान, पानक - साथ पान करना ; —भावी - संबद्ध ; मित्र ; सहायक ; —भूत - संबद्ध ; —भोजन - मित्रो आदि के साथ भोजन करना ; —भोजी - साथ भोजन करनेवाले ; —मरण - सती होना ; —मान - घमंडी ; —योग - साथ मिलकर काम करना ; सहायता ; —योगी - मददगार, सहयोग करनेवाला ; साथ काम करनेवाला ; साथ प्रकाशित होनेवाला ; —वर्ती - साथ करने या रहनेवाला ; —वाद - कथोपकथन ; वाद-विवाद ; —वास - साथ रहना ; संभोग ; —वासिक, वासी - पड़ोसी ; साथ बसनेवाला ; साथी ; —व्रत - समान कर्तव्यवाले ; —संभव - साथ-साथ उत्पन्न ; सहज ; —संवाद - वार्तालाप ; —सिद्ध - प्राकृतिक ; सहज ।

**सहज, सहजै** - अव्य० [सं] अनायास ; सरलतापूर्वक ।

**सहतरा** - पु० [हिं] पित्तपापड़ा ।

**सहताना** - अ० [हिं] सुस्ताना ; सस्ता होना ।

**सहदानी** - स्त्री० [हिं] निशानी ।

**सहदेई** - स्त्री० [हिं] एक वनौषधि ।

**सहन** - 1. वि० [सं] सहिष्णु ; क्षमाशील ; शक्तिशाली ; 2. पु० क्षमा ; सहने की क्रिया ; सहिष्णुता ; **यौ०** —शील - धीर , संतोषी ; सहिष्णु ; [अ] आंगन ; बड़ा थाल ; खुली हुई समतल भूमि ; एक बढ़िया रेशमी कपड़ा ; **यौ०** —ची - दालान की बगल में बनाया हुआ छोटा मकान ; —दार - जिसमें आंगन हो (मकान) ।

**सहना** - स० [हि] सहन करना ; बर्दाश्त करना ; फल भोगना ; भार ग्रहण करना ।

**सहनायन** - स्त्री० [हि] शहनाई बजानेवाली ।

**सहनीय** - वि० [सं] सहने या बर्दाश्त करने योग्य ; क्षमा करने योग्य ।

**सहम** - पु० [फ़ा] डर, भय ; **यौ०** —नाक - डरावना, भयंकर ।

**सहमना** - अ० [हिं] घबरा जाना ; डरना ; शंका मानना ।

**सहमाना** - स० [हिं] घबड़ाहट में जाना ।

**सहर** - पु० [हिं] जादू ; शहर ; सिहोर ;

[अ] सूर्योदय के पहले का काल, भोर ; यौ० —गही - रोज़ा रखनेवाले मुसलमानो द्वारा रमज़ान के दिनो में कुछ रात रहते किया जानेवाला हल्का भोजन ।

**सहरना** - अ० [हिं] सिहरना ।

**सहरा** - पु० [अ] भयानक जंगल; रेगिस्तान ; यौ० —गर्द, नविर्द - जंगलो में फिरने या भटकनेवाला ; मुसाफ़िर ; —नशीन - वनवासी ; तपस्वी ।

**सहराई** - वि० [अ] जंगली ।

**सहराना** - 1. स० [हिं] सहलाना ; 2. अ० डरना ; सिहरना ।

**सहरिया** - पु० [हिं] एक तरह का गेहूँ ।

**सहरी** - 1. स्त्री० [हिं] शफ़री मछली ; 2. वि० [अ] प्रातःकालीन ।

**सहल** - वि० [अ] आसान ; नरम ; यौ० —इनकार - आलसी ; सुस्त ; —इनकारी - आलस्य ; सुस्ती ।

**सहलाना** - 1. स० [हिं] गुदगुदाना ; धीरे-धीरे मलना या हाथ फेरना ; 2. अ० गुदगुदी मालूम होना ।

**सहस** - वि० [सं] हास्ययुक्त ; हँसता हुआ ; सहस्र ।

**सहसा** - अव्य० [सं] यकायक ; प्रचंड वेग ; मुस्कुराहट के साथ ; हठात् ।

**सहस्र** - 1. वि० [स] हज़ार ; 2. पु० हज़ार की संख्या ; यौ० —कर, किरण - सूर्य ; —गुण - हज़ार गुना ; —चक्षु - हज़ार नेत्रोवाला ;—दल - शतदल ।

**सहस्रशः** - अव्य० [सं] हज़ारहा ।

**सहस्रिक** - वि० [सं] हजार वर्ष चलनेवाला ।

**सहा** - 1. स्त्री० [सं] पृथ्वी ; 2. पु० अगहन ; हेमंत ऋतु ।

**सहाइ, सहाई** - 1. पु० [हिं] सहायता करनेवाला ; 2. स्त्री० सहायता ।

**सहाध्यायी** - पु० [सं] सहपाठी ; एक ही समान विषय का अध्ययन करनेवाला ।

**सहानी** - वि० [हिं] पीलापन लिये हुए लाल रंग का ।

**सहानुभूति** - स्त्री० [सं] किसी के दुख आदि से दुखी होना, हमदर्दी ।

**सहाब** - पु० [अ] बादल, मेघ ।

**सहाबत** - स्त्री० [अ] मित्रता ; साथ ।

**सहाय** - पु० [सं] साथी ; मैत्री ; भरोसा ; आश्रय ; सहायक ।

**सहायक** - पु० [सं] सहायता करनेवाला ; अधीनता में काम करनेवाला ; यौ०—नदी - किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली छोटी नदी ; —संपादक - किसी संपादक को सपादन-कार्य में सहायता पहुँचाने-वाला व्यक्ति ।

**सहार** - पु० [हिं] सहना ; सहनशीलता ; [सं] आम का पेड़ ; महाप्रलय ।

**सहारना** - स० [हिं] ज़िम्मेदारी लेना ; सहन करना ; गवारा करना ।

**सहारा** - पु० [हिं] आश्रय ; टेक ; मदद ।

**सहार्थ** - 1. पु० [सं] आनुषंगिक विषय ; सहयोग ; साधारण विषय ; 2. वि० समान उद्देश्यवाला ; समान अर्थवाला ।

**सहालग** - 1. पु० [हिं] विवाह के दिन ; शुभ वर्ष ; सहित ; 2. अव्य० साथ ; समेत ; 3. वि० युक्त ; सहन किया हुआ ; सँभाला हुआ ; हितकर ।

**सहिथी** - स्त्री० [हिं] बर्छी ।

**सहिदान** - पु० [हिं] पहचान ।

**सहिदानी** - स्त्री० [हिं] निशान ; परिचय-चिन्ह ।

**सहिष्णु** - वि० [सं] सहनशील ।

**सहिष्णुता** - स्त्री० [सं] सहनशीलता; क्षमा ।

**सही** - 1. वि० [हिं] ठीक ; दोषरहित ; 2. स्त्री० हस्ताक्षर ; सखी ; 3. अव्य०

निश्चयपूर्वक ; यौ० —सलामत - दोष-रहित ; निरापद ; स्वस्थ ।

**सहीफ़ा** - पु० [अ] पुस्तक ; चिट्ठी ; धर्मग्रंथ ; मासिकपत्र आदि ।

**सहीह** - **1.** वि० [अ] ठीक ; पूरा ; दोष-रहित ; स्वस्थ ; **2.** स्त्री० तसदीक ; निशान ; वह पुस्तक जिसमें सही हदीसें लिखी हों ; यौ० —सालिम - सही सलामत ; ज्यों का त्यों ।

**सहूँ** - अव्य० [हिं] ओर ; तरफ़ ; सामने ।

**सहूलत, सहूलियत** - स्त्री० [अ] आसानी ; नरमी ।

**सहृदय** - 1. वि० [सं] कोमलचित्त ; प्रसन्नमना ; दयालु ; रसिक ; सच्चा ; समझदार ; **2.** पु० विद्वान व्यक्ति, रस का अनुभव करनेवाला व्यक्ति ; गुणज्ञ ।

**सहृदयता** - स्त्री० [सं] चित्त की कोमलता ; दयालुता ; रसज्ञता ।

**सहेज** - पु० [हिं] जामन

**सहेजना** - स० [हिं] कोई चीज़ सावधान करके सौंपना ; जाँचना ; सँभालना ।

**सहेत** - पु० [हिं] संकेतस्थल ।

**सहेतु, सहेतुक** - वि० [सं] कारणयुक्त ; सोद्देश्य ।

**सहेल** - 1. वि० [सं] क्रीडायुक्त ; लापरवाह ; **2.** पु० ज़मीन्दार को आसामी से बेगार आदि के रूप में मिलनेवाली सहायता ।

**सहेलरी** - स्त्री० [हिं] सखी ।

**सहेली** - स्त्री० [हि] सखी ; सेविका ; साथ रहनेवाली स्त्री ।

**सहैया** - 1. वि० [हिं] बरदाश्त करने-वाला ; **2.** पु० सहायक ।

**सहोक्ति** - स्त्री० [सं] साथ बोलना ।

**सहोदर** - **1.** वि० [सं] एक ही माता के गर्भ से उत्पन्न, सगा ; एक-जैसा ; **2.** पु० सगा भाई ।

**सह्य** - 1. वि० [सं] सहन करने में समर्थ ; मुक़ाबला करने में समर्थ ; शक्तिशाली ; प्रिय ; 2. पु० आरोग्य ; उपयुक्तता ; सहायता ; सह्याद्रि पर्वतश्रेणी ।

**सह्याद्रि** - पु० [सं] भारत के पश्चिमी समुद्रतट के पास की पर्वतश्रेणी ।

**साँई** - पु० [हिं] स्वामी ; ईश्वर ; पति ; मुसलमान फ़कीर ।

**साँकड़** - स्त्री० [हिं] ज़ंजीर ; पैर का एक गहना ।

**साँकड़ा** - पु० [हिं] पैर का एक गहना ।

**साँकर** - **1.** पु० [हिं] संकट ; कष्ट ; **2.** स्त्री० जंजीर ; 3. वि० कष्टयुक्त ; तंग ।

**साँकरा** - 1. पु० [हिं] कष्ट ; **2.** वि० तंग ।

**सांकर्य** - पु० [सं] मिश्रण ; संकरता ।

**साँकल** - स्त्री० [हिं] ज़ंजीर, शृंखला ।

**सांकल्पिक** - वि० [सं] कल्पनाप्रसूत ।

**सांकेतिक** - वि० [सं] संकेत-संबंधी ; व्यवहारसिद्ध ।

**सांक्रमिक** - वि० [सं] संक्रामक, संक्रमण करनेवाला ।

**सांख्य** - **1.** वि० [सं] गणना करनेवाला ; विचार या विवेक करनेवाला ; संख्या-संबधी ; **2.** पु० छः दर्शनों में से एक ।

**सांग** - वि० [सं] अंगयुक्त ; छः अंगों से युक्त ; प्रत्येक अवयव से पूर्ण ।

**साँग** - स्त्री [हिं] कुएँ में पानी का सोता खोलने का एक औज़ार ; बरछी ; भारी बोझ उठाने का डंडा ।

**सांगी** - स्त्री० [हि] जूए पर गाड़ीवान के बैठने का स्थान ; इक्के में चीज़ें रखने के लिए नीचे लगी हुई जाली ।

**सांगोपांग** - वि० [सं] अंगो से युक्त, पूर्ण ; अंगों, उपांगो और उपनिषदो से युक्त (वेद)।
**सांघाटिका** - स्त्री० [सं] कुटनी ; मैथुन ।
**सांघातिक** - 1. वि० [स] हननकारक ; दल-संबंधी ; 2. पु० जन्मनक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र ।
**साँच** - 1. वि० [हिं] ठीक ; सत्य ; 2. पु० सच्ची बात ।
**साँचला** - वि० [हिं] सत्यवादी ।
**साँचा** - 1. पु० [हिं] छोटा नमूना ; कपड़े पर फूल आदि छापने का लकड़ी का ठप्पा ; वह ढाँचा जिसमें कोई गीली चीज़ भरकर ख़ास शक्ल की चीज़ बनायी जाती है ; 2. वि० सच्चा ।
**साँचिया** - पु० [हिं] साँचा बनानेवाला ; साँचे में कोई चीज़ डालनेवाला ।
**साँचिला** - वि० [हिं] सच्चा ।
**साँची** - 1. पु० [हिं] एक तरह का पान ; 2. स्त्री० छपाई का एक प्रकार ।
**साँझ** - स्त्री० [हिं] संध्या ।
**साँझला** - पु० [हिं] एक हल से दिन-भर में जुत जानेवाली भूमि ।
**साँझी** - स्त्री० [हिं] मंदिर में देवमूर्ति के सामने चौक पूरने-जैसी की जानेवाली फूलों की सजावट ।
**साँट** - स्त्री० [हिं] कोड़ा ; छड़ी ; छड़ी की चोट का दाग़ ।
**साँटा** - पु० [हिं] ईख ; डंडा ।
**साँटिया** - पु० [हिं] डुग्गी पीटनेवाला ।
**साँटी** - स्त्री० [हिं] पतली छड़ी ; बाँस की कमची ; बदला ; मेल-जोल ।
**साँठ** - पु० [हिं] अन्न पीटने का डंडा ; ईख ; साँटा ; मेल ; यौ० —गाँठ-गुप्त संबंध ; साज़िश ; हेलमेल ।
**साँठना** - स० [हिं] पकड़े रहना ।
**साँठि, साँठी** - स्त्री० [हिं] पूँजी ; धन ।
**साँड** - वि० [सं] अंडयुक्त, जो बधिया न किया गया हो ।
**साँड़** - 1. पु० [हिं] मृतक की स्मृति में दाग कर छोड़ा हुआ बैल ; जोड़ खिलाने के लिए बिना बधिया किये पाला गया बैल या घोड़ा ; 2. वि० आवारा ; लंपट ; शक्तिशाली , मु० —की तरह घूमना - आज़ादी और बेफ़िक्री से घूमते फिरना ; —की तरह डकरना - ज़ोर से चिल्लाना ।
**साँड़नी** - स्त्री० [हिं] तेज़ चालवाली ऊँटनी ।
**साँड़ा** - पु० [हिं] गिरगिट की जाति का जंतु जिसका तेल दवा के काम आता है ।
**साँड़िया** - पु० [हिं] तेज़ रफ़्तारवाला ऊँट ; साँड़नी का सवार ।
**सांत** - वि० [स] अंतयुक्त ; प्रसन्न ।
**सांततिक** - वि० [सं] संतति प्रदान करनेवाला ।
**सांतर** - वि० [सं] अंतर या अवकाशयुक्त ; झीना ।
**सांत्वन** - पु० [सं] तसल्ली ; ढाढ़स बँधाना ; अभिवादन तथा कुशलवार्ता ; तुष्ट करने का साधन ; संतुष्ट करनेवाले शब्द ।
**सांत्वना** - स्त्री० [सं] सांत्वन ।
**साँथा** - पु० [हिं] चमड़ा कूटने का एक औज़ार ।
**साँध** - पु० [हिं] निशाना ; लक्ष्य ।
**साँधना** - स० [हिं] निशाना लगाना ; साधना ; सिद्ध करना ; सानना ; गूँधना ।
**सांधिक** - पु० [सं] संधि करनेवाला ; कलाल ।
**सांधिविग्रहिक** - पु० [सं] संधि और युद्ध का निश्चय करनेवाला मंत्री ।
**सांध्य** - वि० [सं] प्रातःकाल या संध्या-संबंधी ; यौ० —भोजन - ब्यालू ।
**साँप** - पु० [हिं] पेट के बल रेंगनेवाला विषैला कीड़ा, सर्प ; मु० —उतारना -

साँप का ज़हर दूर करना ; —(कलेजे या छाती पर) लोटना - बहुत व्याकुल होना ; भारी सदमा पहुँचना ; —का बच्चा - ज़ालिम ; दुष्ट ; —के मुँह में - ख़तरे में ; —छछूँदर की गति या दशा - द्विविधा की स्थिति ; —से खेलना - ख़तरनाक आदमी से मेल-मिलाप करना ।

**सांपत्तिक** - वि० [सं] आर्थिक ।

**सांपद** - वि० [सं] संपत्ति-संबंधी ।

**सांपराय** - 1. वि० [सं] पारलौकिक ; युद्ध-संबंधी ; 2. पु० अनिश्चय ; परलोक ; परलोक की प्राप्ति का साधन ; परवर्ती जीवन के संबंध में पूछताछ करना ; संकट ; संकट में साथ देनेवाला व्यक्ति ।

**साँपा** - पु० [हिं] सियापा ।

**साँपिन** - स्त्री० [हिं] सर्पिणी, साँप की मादा, घोड़े या बैल के शरीर पर की एक तरह की भौरी जो बुरी मानी जाती है ।

**साँपिया** - पु० [हिं] साँप के रंग से मिलता हुआ रंग ।

**सांप्रत** - 1. वि० [स] वर्तमानकाल-संबंधी ; उचित ; उपयुक्त ; ठीक ; सामयिक ; 2. अव्य० अब ; उपयुक्त रूप में ; तत्काल ।

**सांप्रतिक** - वि० [सं] आधुनिक, वर्तमान-काल-संबंधी ; उपयुक्त ; ठीक ।

**सांबर** - पु० [हिं] पाथेय ; [सं] साँभर नमक ; साँभर हिरन ।

**सांबरी** - स्त्री० [सं] माया ; जादूगरनी ।

**साँभर** - पु० [हिं] राजपूताने की एक झील या उस झील से प्राप्त नमक ; एक तरह का हिरण ; सँबल ।

**साँमुहे** - अव्य० [हिं] साम्य ।

**साँवक** - पु० [हिं] एक अन्न ; साँवाँ ।

**साँवत** - पु० [हिं] एक राग ; योद्धा ।

**सांवत्सर** - 1. वि० [सं] वार्षिक ; 2. पु० ज्योतिषी ; चांद्रमास ; पंचांग बनानेवाला ।

**सांवत्सरक** - 1. वि० [सं] एक वर्ष पर दिया जानेवाला (ऋण) ; 2. पु० ज्योतिषी ।

**सांवत्सरिक** - 1. वि० [सं] वार्षिक ; 2. पु० ज्योतिषी ; यौ० —श्राद्ध - हर साल किया जानेवाला श्राद्ध ।

**सांवत्सरी** - स्त्री० [सं] मृत्यु के एक साल बाद होनेवाला श्राद्ध ।

**साँवर** - 1. वि० [हिं] साँवला ; 2. पु० कृष्ण ।

**साँवला** - 1. वि० [हिं] श्यामवर्ण का ; 2. पु० कृष्ण ; पति ; प्रेमी ; यौ० —पन - श्यामता ।

**साँवलिया** - 1. वि० [हिं] श्याम रंग का ; 2. पु० कृष्ण ।

**साँवाँ** - पु० [हिं] एक कदन्न ।

**सांवृत्तिक** - वि० [सं] भ्रामक ; मिथ्या ।

**सांव्यवहारिक** - 1. वि० [स] प्रचलित ; 2. पु० साझे में व्यापार करनेवाला व्यक्ति ।

**सांश** - वि० [सं] हिस्सोंवाला ।

**सांशयिक** - 1. वि० [सं] ख़तरनाक ; संदिग्ध ; संदेह करनेवाला ; 2. पु० संदिग्ध या ख़तरनाक काम ।

**साँस** - स्त्री० [हिं] नासिका या मुख से भीतर खींची और बाहर निकाली जानेवाली हवा ; गुंजाइश ; दमा ; फ़ुर्सत ; हवा निकलने का छेद; मु० —उड़ना - दम रुकना ; —उलटी चलना - आसन्न मृत्यु होना ; —ऊपर-नीचे होना - बहुत व्यस्त होना ; —चढ़ना - हाँफना ; —छोड़ना - साँस बाहर निकालना ; —तक न लेना - बिलकुल मौन रहना ; —फूलना - दम चढ़ जाना ; —रहते - जीते जी ; —लेने की फ़ुर्सत - थोड़ी-सी फ़ुर्सत ।

**साँसत** - स्त्री० [हिं] साँस रुकने-जैसी तकलीफ़; बखेड़ा; यंत्रणा, यौ० —घर - कालकोठरी।

**साँसना** - स० [हिं] शासन करना; दंड देना; पीड़ा देना।

**साँसा** - पु० [हिं] चिन्ता; डर; पीड़ा; शंका; साँस; मु० —चढ़ना - फिक्र होना; —पड़ना - संदेह होना; —रहना - अंदेशा रहना।

**सांसारिक** - वि० [सं] संसार-संबंधी।

**सांस्कारिक** - वि० [सं] संस्कार-संबंधी; अंत्येष्टि या अन्य संस्कारो के लिए आवश्यक।

**सांस्कृतिक** - वि० [सं] संस्कृति-संबंधी।

**सांस्थानिक** - वि० [सं] एक ही देश के निवासी।

**सा** - 1. पु० [हि] सप्तक के प्रथम स्वर 'षड्ज' का सांकेतिक रूप (संगीत); 2. अव्य० एक सम्मानसूचक शब्द; सदृश।

**साअत** - स्त्री० [अ] क्षण; घड़ी; ढाई घड़ी का काल; नियत काल।

**साइक** - पु० [हिं] संध्याकाल।

**साइत** - स्त्री० [अ] क्षण; मुहूर्त।

**साइयाँ** - पु० [हिं] साँई।

**साई** - 1. स्त्री० [हिं] बयाना, किसानों की आपस की सहायता; 2. वि० [अ] दौड़-धूप करनेवाला।

**साईस** - पु० [हिं] घोड़े की देखभाल करनेवाला नौकर।

**साईसी** - स्त्री० [हिं] साईस का काम।

**साउ** - पु० [हिं] साहु।

**साउज** - पु० [हिं] शिकार किये जानेवाले जानवर।

**साक** - 1. पु० [हिं] तरकारी के रूप में खाये जानेवाले पौधे का पत्ता, साग; 2. स्त्री० धाक; साख।

**साक़** - स्त्री० [अ] पिंडली; पेड़ का तना; पौधे का डंठल।

**साकचेरि** - स्त्री० [हिं] मेहँदी।

**साकट** - पु० [हिं] दुष्ट; मद्य-मांस आदि का सेवन करनेवाला; शाक्त मत माननेवाला।

**साक़न** - स्त्री० [अ] शराब आदि पिलानेवाली स्त्री; साक़ी की स्त्री।

**साकर** - 1. वि० [हिं] सँकरा; 2. स्त्री० साँकल।

**साकल्य** - पु० [सं] संपूर्णता; यौ०—वचन - पूरा पाठ।

**साकवर** - पु० [हिं] बैल।

**साकांक्ष** - वि० [सं] इच्छुक।

**साका** - 1. पु० [हिं] कीर्तिस्मारक; नामवरी; दबदबा; संवत्; 2. स्त्री० इच्छा।

**साकार** - 1. वि० [सं] मूर्त, स्थूल; सुंदर; 2. पु० ईश्वर का सगुण रूप।

**साकारोपासना** - स्त्री० [सं] ईश्वर के सगुण रूप की उपासना।

**साकित** - वि० [अ] गतिहीन; चुप।

**साक़ित** - वि० [अ] गिरानेवाला; गिरा हुआ; त्यक्त।

**साकिन** - 1. वि० [अ] गतिहीन; 2. पु० निवासी; हलवर्ण; यौ० —हाल - वर्तमान निवासी।

**साक़ी** - पु० [अ] पानी पिलानेवाला; शराब पिलानेवाला; हुक्का पिलानेवाला।

**साकूत** - वि० [सं] पीड़ायुक्त; साभिप्राय; सार्थक।

**साक्षर** - वि० [सं] पढ़ा-लिखा; शिक्षित।

**साक्षात्** - अव्य० [सं] आँखों के सामने, प्रत्यक्ष, वस्तुतः; सीधे; स्पष्टतः; यौ०—कर, कारी - मिलनेवाला; प्रत्यक्ष करनेवाला; —करण - अनुभूति; आँखों के

सामने रखने की क्रिया ; किसी बात का तात्कालिक कारण ; —कर्ता - सब कुछ देखनेवाला ; —कार - अनुभूति ; देखादेखी ।

**साक्षिता** - स्त्री० } [सं] गवाही ; प्रमाण ।
**साक्षित्व** - पु० }

**साक्षी** - 1. स्त्री० [सं] गवाही ; 2. वि० आँखो देखनेवाला, चश्मदीद ; 3. पु० अहम् ; चश्मदीद गवाह ; **यौ०**—परीक्षण, परीक्षा - गवाह की परीक्षा, जिरह ; —प्रत्यय - चश्मदीद गवाह का बयान ; —प्रश्न - जिरह ; —भूत - जिसने स्वयं देखा हो ; —लक्षण - प्रमाण से सिद्ध ।

**साक्षेप** - वि० [सं] आपत्तिजनक ; जिसमें व्यंग्य या ताना हो ।

**साक्ष्य** - पु० [सं] गवाही ; प्रमाण ।

**साख** - 1. पु० [हिं] गवाह ; गवाही ; 2. स्त्री० जाति या वंश का अंग ; डाली ; रोब ; लेन-देन-संबंधी एतबार या प्रतिष्ठा ।

**साखना** - स० [हिं] साक्षी देना ।

**साखर** - वि० [हिं] साक्षर ।

**साखा** - स्त्री० [हिं] शाखा, डाली ; चक्की का धुरा ; जाति या वंश का अंग ।

**साखी** - 1. पु० [हि] गवाह ; पंच ; वृक्ष ; 2. स्त्री० गवाही ; कबीर आदि संतो के ज्ञान या वैराग्य-विषयक पद ।

**साखु** - पु० [हिं] शाल का पेड़ ।

**साख़्त** - स्त्री० [फ़ा] बनावट ; बनायी हुई बात ; शक्ल ।

**साख़्ता** - वि० [फ़ा] नक़ली ; बनाया हुआ ; **यौ०** —परदाख़्ता - किया हुआ ; बनाया या सँवारा हुआ ।

**साग** - पु० [हिं] तरकारी ; भाजी के रूप में खायी जानेवाली पत्तियाँ ; **यौ०** —पात - साग-भाजी ; रूखा-सूखा भोजन ।

**सागर** - पु० [सं] समुद्र ; सरोवर ; एक बहुत बड़ी संख्या ; चार या सात की संख्या ; संन्यासियो का वर्गविशेष ; बहुत बड़ी राशि या पुंज ; **यौ०** —गंभीर - समाधि का एक प्रकार ; —धरा - पृथ्वी ; —धीर, -चेता - जिसका मन सागर की तरह शान्त और गंभीर हो ; —पर्यन्त - समुद्र तक ; —मुद्रा - समाधि का एक प्रकार ; — मेखला - पृथ्वी ।

**साग़र** - पु० [फ़ा] प्याला ; शराब का प्याला ; **यौ०** —कश - शराब पीनेवाला ।

**सागरोपम** - पु० [सं] एक बहुत बड़ी संख्या ।

**सागौन** - पु० [हिं] एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज़ या कुर्सी आदि बनाने के काम आती है ।

**साचक़** - स्त्री० [तु] ब्याह की एक रस्म जिसमें ब्याह के एक दिन पहले वर के घर से कन्या के लिए कपड़े, मेंहदी, मेवे, मिठाइयाँ आदि भेजते हैं ।

**साचिव्य** - पु० [सं] मंत्रित्व ; सहायता ; मैत्री ; शासन ।

**साची कुम्हड़ा** - पु० [हिं] पेठा ।

**साज़** - 1. पु० [फ़ा] सामग्री, सामान ; गाने के साथ बजाये जानेवाले सारंगी आदि ; घोड़े को सवारी के लिए तैयार करने या सजाने का सामान ; लहँगे का साज ; बनावट की सामग्री ; आयुध ; अनुकूलता ; मेल-जोल ; साज़िश ; 2. वि० बनानेवाला ; बनाया हुआ ; **यौ०** —गार - अनुकूल ; उपयुक्त ; —बाज़ - साज़िश ; —सामान - आवश्यक सामग्री; वस्तु ; **मु०** —करना - मेल करना ; साज़िश करना ।

**साजगिरी** - स्त्री० [हिं] संपूर्ण जाति का एक राग ।

**साजन** - पु० [हिं] ईश्वर ; पति ; प्रेमी ; सज्जन ।

**साजना** - 1. स० [हिं] सजाना ; तैयार करना ; 2. पु० साजन ।

**साजा** - वि० [हिं] अच्छा ; सुंदर ।

**साजात्य** - पु० [सं] जाति या वर्ण की समानता ।

**साज़िन्दा** - पु० [फ़ा] साज़ बजानेवाला ।

**साजिद** - वि० [अ] वंदना करनेवाले ।

**साज़िश** - स्त्री० [अ] षड्यंत्र ; षड्यंत्र के लिए की जानेवाली गुप्त मंत्रणा ; मेल-जोल ।

**साज़िशी** - वि० [फ़ा] साज़िश करनेवाला ।

**साझा** - पु० [हिं] पत्ती ; हिस्सेदारी ; यौ० —दारी - साझेदार होना ।

**साझी** - पु० [हिं] हिस्सेदार ; जिसकी पत्ती हो ।

**साट** - स्त्री० [हिं] छड़ी ; छड़ी की चोट का दाग़ ; यौ० —मार - हाथियों को लड़ानेवाला ।

**साटक** - पु० [हिं] एक छंद ; छिलका ; भूसी ; तुच्छ वस्तु ।

**साटन** - पु० [हिं] एक बढ़िया रेशमी कपड़ा ।

**साटना** - स० [हिं] चिपकाना ; मिलाना ।

**साटा** - पु० [हिं] बदला ।

**साटी** - स्त्री० [हिं] छड़ी ; सामान ; बदला ; पत्रभंग ।

**साटोप** - वि० [सं] घमंड से फूला हुआ ; गरजता हुआ ।

**साठ** - 1. वि० [हिं] पचास से दस अधिक ; 2. पु० साठ की संख्या ।

**साठनाठ** - वि० [हिं] छिन्न-भिन्न ; धनहीन ; जिसकी पूँजी नष्ट हो गयी हो ; रसहीन ।

**साठा** - 1. वि० [हिं] साठ वर्ष की अवस्था का ; 2. पु० ऊख ; एक मधुमक्खी ; लंबा-चौड़ा खेत ; साठी धान ।

**साठी** - पु० [हिं] बहुत जल्द तैयार होनेवाला धान ।

**साड़ी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियों की धोती ; साढ़ी ।

**साढ़ी** - स्त्री० [हिं] अषाढ़ में बोई जानेवाली फ़सल ; मलाई ; साड़ी ।

**साढ़ू** - पु० [हिं] पत्नी की बहन का पति ।

**साढ़े** - वि० [हिं] आधे के साथ ; यौ० —साती - शनिग्रह की एक अनिष्टकर स्थिति ; मु० —साती आना, साती चढ़ना - विपत्तिग्रस्त होना ।

**सात** - 1. वि० [हिं] छः और एक ; 2. पु० सात की संख्या ; यौ० —पाँच - चालाकी ; तक़रार ; दग़ा ; बहाना ; —फेरी - सप्तपदी ; मु० —घर भीख माँगना - दर-दर भटकना ; —पर्दे लगना - पर्दे में रहना ; —पर्दों में रखना - छिपाकर रखना ; बड़ी सावधानी से रखना , —राजाओं की साक्षी देना - किसी बात की सचाई पर ज़ोर देना ; —समुंदर पार - बहुत दूर ; —सीकें बनाना - छठी की एक रस्म ।

**सातत्य** - पु० [सं] नैरंतर्य ; स्थायित्व ; अविच्छिन्नता ।

**सात्विक** - 1. वि० [सं] सत्वगुणयुक्त ; सत्वगुणप्रधान ; सत्वगुण-संबंधी ; प्राकृतिक ; भावजन्य ; यथार्थ ; सत्य ; 2. पु० एक भाव जिसमें स्तंभ, स्वेद, रोमांच आदि आठ प्रकार के अंगविकार होते हैं ; इन अंगविकारों का प्रदर्शन करनेवाला अभिनय ; ब्रह्म ; ब्रह्मा ।

**साथ** - 1. पु० [हिं] संग ; साथी ; 2. अव्य० प्रति ; द्वारा ; विरुद्ध ; सहित ;

से ; यौ० —साथ - एक साथ ; मु० —करना - संपर्क में रहना ; —का खेला - बचपन का साथी, लंगोटिया यार ; —खोना - साथ से वंचित होना ; —घसीटना - ज़बरदस्ती शरीक़ करना ; —छूटना - दोस्ती छूटना ; साथियो से अलग होना ; —देना - सहायता देना ; साथ यात्रा करना ; निबाहना ; शरीक़ होना ; —रहना - संग रहना ; —लगा रहना - पीछा न छोड़ना ; —लेकर डूबना - अपने साथ दूसरे का भी नुकसान करना ; —सुलाना, सोना - किसी का एक बिस्तरे पर दूसरे के निकट सोना ; सहवास करना ; —सोकर मुँह छिपाना - घनिष्ठता होने पर भी संकोच होना ; —ही साथ - एक साथ ; —होना - शरीक़ होना ।

**साथरी** - स्त्री० [हिं] कुश आदि की चटाई ।

**साथी** - पु० [हिं] मित्र ; सहायक ; सदा साथ रहनेवाला ।

**सादगी** - स्त्री० [फ़ा] सादापन ; भोलापन ; सरलता ।

**सादर** - 1. वि० [सं] आदरयुक्त ; आदर प्रदर्शित करनेवाला ; 2. अव्य० आदर के साथ ।

**सादा** - वि० [फ़ा] भोला, सरलहृदय ; खालिस ; जिसपर टिकट नही लगा हो ; जिसमें बनावट न हो ; कोरा या बिना लिखा हुआ (कागज़) ; बिना सजावट का; बिना काम या गोटे-किनारी का ।

**सादि** - 1. वि० [सं] आरंभयुक्त ; 2. पु० योद्धा ; वायु ; उदास व्यक्ति ; सारथी ।

**सादिक़** - वि० [अ] ठीक ; सच्चा ; मु० —आना - सिद्ध होना ।

**सादित** - वि० [सं] समाप्त किया हुआ ; क्लांत किया हुआ ; क्षीण किया हुआ ; शरण प्राप्त कराया हुआ ।

**सादिर** - वि० [अ] जारी किया हुआ ; बाहर निकलनेवाला ।

**सादी** - 1. स्त्री० [हिं] एक चिड़िया ; बिना पीठीवाली पूरी ; माँझा-रहित पतंग की डोर ; शादी ; 2. पु० फ़ारसी का एक यशस्वी कवि ; यौ० —खूराक - बिना मिर्च-मसाले या चटनी-अचार की खुराक ; —जबान - बनावटरहित भाषा ।

**सादी** - 1. वि० [सं] बैठा हुआ ; क्लान्त करनेवाला ; नष्ट करनेवाला ; 2. पु० अश्वारोही ; गजारोही ; रथारोही ; सारथी।

**सादूर** - पु० [हिं] सिंह ; हिंसक प्राणी ।

**सादृश्य** - पु० [सं] समानता ; तुलना ; प्रतिमूर्ति ।

**साद्यंत** - वि० [सं] संपूर्ण ।

**साध** - 1. वि० [हिं] उत्तम ; भला ; 2. पु० योगी ; सज्जन ; साधु ; 3. स्त्री० इच्छा ; गर्भ के सातवें मास में होनेवाला एक उत्सव ।

**साधक** - 1. वि० [सं] सिद्ध करनेवाला ; कुशल ; समर्थ ; पूरा करनेवाला ; उपयोगी; सहायता देनेवाला ; 2. पु० कुशल व्यक्ति ; आराधक ; योगी ; साधन ; सहायक ।

**साधकता** - स्त्री० [सं] उपयुक्तता ; उपयोगिता ।

**साधन** - 1. वि० [सं] सिद्ध ; पूरा करनेवाला ; 2. पु० उद्देश्यप्राप्ति ; कारण ; ज़रिया ; पूरा करना ; सिद्धि ; औज़ार ; द्रव्य ; करणकारक ; उपाय ; वशीकरण ; प्रमाण ; सहायता ; सेना ; हेतु ; गमन ; तुष्टीकरण ; नीरोग करना ; मारण ; अनुगमन ; तपश्चर्या ; प्रस्थान ; मंत्र

आदि सिद्ध करना ; धातुशोधन ; मोक्ष-प्राप्ति ; ऋण आदि की प्राप्ति के लिए आदेश निकालना ; शरीर का कोई अवयव ; मृतसंस्कार ; मैत्री ; लाभ ; संपत्ति ; यौ० —क्षम - जिसके लिए प्रमाण हो ; —चतुष्टय - चार प्रकार के अनुबंध ; —निर्देश - प्रमाण प्रस्तुत करना ; —पत्र - लिखित प्रमाण ।

**साधना** - 1. स्त्री० [सं] आराधना ; उपासना ; कार्यसिद्धि ; तुष्टीकरण ; 2. स० [हिं] अभ्यास करना ; ठीक करना ; इकट्ठा करना ; सिद्ध करना ; शुद्ध करना ; निशाना लगाना ; जाँच करना ; नापना ; प्रमाणित करना ; वश में करना ; सहन करना ।

**साधनी** - स्त्री० [हि] ज़मीन बराबर करने का लोहे या लकड़ी का औज़ार ।

**साधयिता** - पु० [सं] साधक ; पूरा करनेवाला ।

**साधर्मिक** - पु० [सं] समान धर्म का अनुयायी ।

**साधर्म्य** - पु० [सं] धर्म, स्वभाव, पद, कर्तव्य आदि का साम्य ।

**साधार** - वि० [सं] जिसका कोई आधार हो ।

**साधारण** - 1. वि० [सं] मामूली ; आसान ; सामान्य ; सदृश ; मिला-जुला ; एकाधिक विषयो से संबद्ध ; अनैकांतिक ; बीच का ; 2. पु० एक संवत्सर ; वह जो सब में हो ; यौ० —देश - मामूली देश ; जंगल व दलदल आदिवाला देश ;—धर्म - सार्वजनिक कर्तव्य ; सबमें पाया जानेवाला धर्म ; प्रजनन-कार्य ।

**साधारणतः** - अव्य० [सं] आम तौर पर ; प्रायः ।

**साधारणता** - स्त्री० } [सं] सार्वजनिक होने का
**साधारणत्व** - पु० } भाव ; सम्मिलित हित ।

**साधिका** - 1. वि० [सं] सिद्ध करनेवाली ; 2. स्त्री० गाढ़ी नींद ।

**साधित** - वि० [सं] सिद्ध या पूरा किया हुआ ; चालित (बाण) ; दंडित ; प्रमाणित ; प्राप्त ; वश में किया हुआ ; शोधित (ऋण आदि) ।

**साधी** - वि० [सं] सिद्ध करनेवाला ।

**साधु** - 1. वि० [सं] दयालु ; धर्मपरायण ; उत्तम ; उपयुक्त ; ठीक ; बढ़िया ; कुलीन ; प्रिय ; शिष्ट ; शुद्ध ; 2. पु० मुनि ; सच्चा या नेक आदमी ; जौहरी ; महाजनी करनेवाला ; सत्कर्म ; संत ; यौ०—कृत्य - लाभ ; —दर्शन - सुंदर ; विचारशील ; —दर्शी - विवेकी ; —देवी - सास ; —ध्वनि - साधुवाद ; —भाव - अच्छा स्वभाव ; —मत - सुविचारित ; —वाद - शाबाशी देना ; —वादी - प्रशंसा करनेवाला ; —वृत्ति - अच्छा पेशा; —सम्मत - अच्छे व्यक्तियों को मान्य ; —साधु - धन्य-धन्य ; शाबाश ।

**साधुता** - स्त्री० } [सं] नेकी ; सरलता ;
**साधुत्व** - पु० } पवित्रता ; विशुद्धता ; सच्चाई ; सज्जनता ।

**साध्य** - 1. वि० [सं] सिद्ध होने योग्य ; पूरा किये जाने या प्रयोग में लाये जाने योग्य ; प्राप्य ; निष्पाद्य ; शोधनीय ; 2. पु० एक देववर्ग ; सिद्धि ; प्रमाणित करने योग्य ; अनुमेय पक्ष ।

**साध्यता** - स्त्री० [सं] अच्छा किये जाने की स्थिति में होना ; शक्यता ।

**साध्वी** - स्त्री० [सं] धर्मपरायणा या पतिव्रता स्त्री ; मेदा ।

**सानंद** - 1. वि० [सं] आनंदयुक्त ; 2. पु० समाधि का एक प्रकार ; सोलह प्रकार के ध्रुवकों में से एक ; 3. अव्य० आनंदपूर्वक ; खुशी के साथ ।

**सान** - 1. पु० [हिं] उस्तरा, कैंची, चाकू आदि की धार तेज़ करने की पत्थर की चक्की; 2. स्त्री० शान; यौ०—गुमान - इशारा; ख्याल; निशान; सुराग।

**सानना** - स० [हिं] गूँधना; लपेटना; शरीक होना।

**सानी** - 1. स्त्री० [हिं] पानी में साना हुआ पशुओं का चारा; गाड़ी के पहिये में लगाया जानेवाला गिट्टक; 2. वि० [अ] जोड़; दूसरा; समता करनेवाला।

**सानु** - पु० [सं] पहाड़ की चोटी; पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि; करारा; छोर; जंगल; पल्लव; मुनि; विद्वान; सड़क; सूर्य; सिरा; प्रभंजन।

**सानुकंप** - वि० [सं] दयालु।

**सानुकूल** - वि० [सं] अनुकूल।

**सानुकूल्य** - पु० [सं] कृपा; सहायता।

**सानुक्रोश** - वि० [सं] दयालु; करुणाशील।

**सानुज** - वि० [सं] अनुज या छोटे भाई से युक्त।

**सानुनय** - 1. वि० [सं] विनयशील; 2. अव्य० विनयपूर्वक।

**सानुनासिक** - वि० [सं] नाक के योग से गाने या बोलनेवाला; नाक के योग से उच्चरित अक्षर।

**सान्निध्य** - पु०[सं] सामीप्य, सन्निकटता।

**सान्निपातिक** - वि० [सं] जटिल; मिलनेवाला; त्रिदोषजन्य विषम रोगवाला।

**सान्वय** - वि० [सं] आनुवंशिक; अर्थगर्भ; समान कार्य करनेवाला।

**सापत्न्य** - पु० [सं] सौतेलापन; सौतपन; सौतेला भाई; सौत का पुत्र; प्रतिद्वंद्वी; शत्रु; शत्रुता।

**सापन** - पु० [हिं] सिर के बाल गिर जाने का एक रोग।

**सापना** - स०[हिं] कोसना; शाप देना।

**सापेक्ष** - वि० [सं] जिसमें किसीकी अपेक्षा हो।

**साफ़** - 1. वि० [अ] स्वच्छ; मैलरहित; उज्ज्वल; पवित्र; निर्दोष; शुद्ध; स्पष्ट; खुला हुआ; पढ़ने, सुनने और समझने में आसान; छल-कपटरहित; समतल; पक्का; 2. अव्य० खुले तौर पर; कुशलतापूर्वक; पूरे तौर पर; स्पष्ट रूप से; यौ० —इनकार - दो टूक इनकार; —गो - स्पष्टभाषी; —गोई - स्पष्टभाषिता; —जवाब - दो टूक जवाब; दो टूक जवाब देनेवाला; —दिल - जिसके दिल में छल-कपट न हो; —दीदा - ढीठ; निर्लज्ज; —बात - दो टूक बात; —साफ़ - खुले तौर पर; स्पष्टतः।

**साफल्य** - पु० [सं] लाभ; सफलता; उपयोगिता; फलयुक्त होने का भाव।

**साफा** - पु० [हिं] कुछ अधिक ऊँची पगड़ी, मुरेठा।

**साफ़िर** - 1. वि० [अ] सफ़र करनेवाला; 2. पु० दुबला घोड़ा।

**साफ़ी** - स्त्री० [हिं] भंग छानने का कपड़ा; गांजे की चिलम के नीचे लपेटने का कपड़ा; चूल्हे पर से देग आदि पकड़कर उठाने का कपड़ा।

**साबल** - पु० [हिं] भाला।

**साबिक** - वि० [अ] गत, बीता हुआ; यौ० —दस्तूर - यथापूर्व; —में - पहले।

**साबिका** - पु० [अ] काम; वास्ता; सरोकार।

**साबित** - 1. वि० [अ] अखंड; प्रमाणित; दृढ़; सिद्ध; स्थिर; 2. पु० अचल तारा; यौ० —क़दम - निश्चय पर दृढ़ रहनेवाला।

**साबिर** - वि० [अ] सहन करनेवाला।

**साबून** - पु० [अ] कास्टिक सोडा, सज्जी,

तेल आदि के योग से तैयार किया जानेवाला एक प्रसाधन जिससे शरीर या कपड़े आदि साफ किये जाते हैं।

**साभिप्राय** - वि० [सं] अपने निश्चय पर दृढ़; अभिप्राययुक्त; विशेष अर्थयुक्त; विशेष प्रयोजनवाला।

**साभिमान** - 1. वि० [सं] घमंडी; 2. अव्य० घमंड के साथ।

**सामंजस्य** - पु० [सं] अनुकूलता; उपयुक्तता; औचित्य; मेल; संगति।

**सामंत** - 1. वि० [सं] पड़ोसी; सार्वभौम; 2. पु० पड़ोस का राजा; कर देनेवाला राजा; पड़ोस; पड़ोसी; नायक; मांडलिक; योद्धा; **यौ०** —चक्र - पड़ोस के राजाओ का मंडल।

**साम** - 1. वि० [सं] अच्छी तरह न पचा हुआ; ढाढ़स बँधानेवाला; मधुरभाषी; 2. पु० वेद के गेय मंत्र; चार वेदो में से एक; शासन की चार नीतियो में से एक; कोमलता; मधुर वचन; साम का निर्माता; **यौ०** —गान - साम का गायक; साम का गान; —प्रयोग - मीठे शब्दो का प्रयोग; —वाद - मीठे वचन; —साध्य - मेल से सिद्ध करने योग्य; [हिं] श्याम।

**सामग्री** - स्त्री० [सं] उपकरण; आवश्यक वस्तुओ का समूह; माल-असबाब; साधन।

**सामत** - 1. स्त्री० [हिं] विपत्ति; बदकिस्मती; 2. पु० सामंत।

**सामना** - पु० [हिं] मुक़ाबला; गुस्ताखी; किसी वस्तु का अगला हिस्सा; भेंट; मुठभेड़।

**सामनी** - स्त्री० [सं] पशुओं को बाँधने की रस्सी।

**सामने** - अव्य० [हिं] रू-ब-रू; आगे; मौजूदगी में; मुक़ाबले में; सीध में; **मु०** —आना - मुक़ाबले में आना; मुँह दिखाना; दिखायी देना; —करना - मुक़ाबाले में लाना; आगे करना; पेश करना; —की चोट - खुली हुई चोट; —की बात - मौजूदगी का हाल; —पड़ना - संयोग से मिल जाना; —से उठ जाना - मर जाना; —होना - लड़ने को तैयार होना; पर्दा न करना; रू-ब-रू होना; धृष्टतापूर्वक बर्ताव करना।

**सामयिक** - वि० [सं] वर्तमानकाल-संबंधी; एकमत; अस्थायी; समयोचित; समय-संबंधी; प्रस्ताव के अनुसार नियत समय पर होनेवाला; **यौ०** —पत्र - नियत समय पर प्रकाशित होनेवाला पत्र या पत्रिकाएँ; मुक़द्दमे की शामिल पैरवी के लिए लिखा जानेवाला इक़रारनामा।

**सामरिक** - वि० [सं] युद्ध-संबंधी।

**सामर्थ** - स्त्री० [हिं] सामर्थ्य।

**सामर्थी** - वि० [हिं] शक्तिमान; कार्य करने की शक्ति रखनेवाला।

**सामर्थ्य** - 1. पु०, 2. स्त्री० [सं] शक्ति; उपयुक्तता; उद्देश्य की समानता; धन; भाव की समानता, शब्द की अर्थशक्ति; **यौ०** —हीन - शक्तिहीन।

**सामहिं, सामहि** - अव्य० [हिं] समक्ष; सामने।

**सामाँ, सामा** - 1. पु० [हिं] साँवाँ; सामान; 2. स्त्री० प्रबंध।

**सामाजिक** - 1. वि० [सं] समाज-संबंधी; समाज से संबंध रखनेवाला; सहृदय; 2. पु० दर्शक; सदस्य।

**सामान** - पु० [फ़ा] असबाब; सामग्री; **यौ०** —सफ़र - यात्रा के लिए आवश्यक वस्तुएँ।

**सामानिक** - वि० [सं] जो पद में किसी के समान हो ।

**सामान्य** - 1. वि० [सं] साधारण ; तुच्छ ; औसद दर्जे का ; समान ; संपूर्ण ; 2. पु० समानता ; मध्य की अवस्था ; मानसिक समस्या ; सबमें पाया जानेवाला गुण या चिन्ह ; समग्रता ; सार्वभौमता ; सार्वजनिक कार्य ; अनुरूपता ; प्रकार ; साधारण कथन या सिद्धात ; **यौ०** —ज्वर - मामूली बुख़ार ; —ज्ञान - साधारण धर्म का ज्ञान ; —पक्ष - मध्य स्थिति ।

**सामायिक** - 1. पु० [सं] सबपर समान भाव रखते हुए एकान्त में आत्मचिन्तन करना ; 2. वि० मायामय ।

**सामासिक** - वि० [सं] मिश्रित ; संक्षित ; समास-संबंधी ; सामूहिक ।

**सामिष** - वि० [सं] मांसयुक्त ; **यौ०** —श्राद्ध - वह श्राद्ध जो मांसयुक्त हो ।

**सामी** - 1. पु० [हिं] स्वामी ; 2. स्त्री० छड़ी या औज़ार आदि की रक्षा के लिए उसपर पहनाया जानेवाला पीतल का छल्ला ।

**सामीप्य** - पु० [सं] निकटता ; पड़ोसी ; मुक्ति का एक भेद ।

**सामुदायिक** - वि० [सं] समुदाय-संबंधी ; सामूहिक ।

**सामुद्र** - 1. वि० [सं] समुद्रजन्य ; समुद्र-संबंधी ; 2. पु० नाविक ; सामुद्रिक व्यापार करनेवाला ; समुद्रलवण ; समुद्र-फेन ; एक विशेष समय की वर्षा का जल ; एक मछली की हड्डी ; एक तरह का मच्छर ; नारियल ; **यौ०** —विद् - देहचिह्नों का ज्ञाता ।

**सामुद्रिक** - 1. वि० [सं] देहचिह्न-संबंधी ; समुद्रजन्य; 2. पु० सामुद्रविद्; नाविक ।

**सामुहँ** - / **सामुहें** - } अव्य० [हिं] सामने ।

**सामूहिक** - वि० [सं] समूह-संबंधी ; पंक्ति-बद्ध ; समूह में एकत्र ।

**सामोद** - वि० [सं] आनन्दयुक्त ; सुगंधित ।

**साम्नि, साम्नी** - स्त्री० [सं] पशुओं को की बाँधने रस्सी ; छंद का एक भेद ।

**साम्मत्य** - पु० [सं] सहमति ।

**साम्मुख्य** - पु० [सं] उपस्थिति ; अनुग्रह ; देखभाल ।

**साम्य** - पु० [सं] निष्पक्षता ; समानता ; दृष्टिकोण की एकरूपता ; सामंजस्य ; **यौ०** —तंत्र - साम्यवाद के सिद्धांत के अनुसार चलनेवाली शासन-प्रणाली ; —वाद - वह सिद्धांत जिसका उद्देश्य वर्गहीन समाज की स्थापना तथा संपत्ति पर सबका समान अधिकार होता है ; —वादी - साम्यवाद का सिद्धांत माननेवाला ।

**साम्यावस्था** - स्त्री० [सं] प्रकृति के तीनों गुणों (सत्व, रज, तम) की समावस्था ।

**साम्राज्य** - पु० [सं] आधिपत्य ; सार्वभौम सत्ता ; **यौ०** —लक्ष्मी - साम्राज्य की अधिष्ठात्री देवी ; —वाद - एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर अधिकार कर उसे अपने हित का साधन बनाने का सिद्धांत ; —वादी - साम्राज्यवाद का अनुयायी ।

**साम्हना** - पु० [हिं] सामना ।

**सायं** - अव्य० [सं] शाम ; **यौ०** —काल - शाम का वक्त ; —कालिक, कालीन - संध्याकाल-संबंधी ; —गृह - जहाँ संध्या हो जाय वहीं ठहर जानेवाला ; —निवास - शाम का विश्रामगृह ; —प्रातः - शाम सवेरे ; —भोजन - ब्यालू ; —संध्या - सायंकालीन उपासना; गोधूली ।

**सायक** - पु० [सं] बाण ; पाँच की संख्या ; खड्ग ; आकाश का विस्तार ; सायंकाल ; राम का बाण ; **यौ०** —पुंख - बाण का पंखवाला भाग ।

**सायबान** - पु० [फ़ा] वर्षा से बचाव के लिए मकान या तंबू के आगे लगाया जानेवाला छप्पर या कपड़े आदि का पर्दा ।

**सायम** - वि० [अ] रोज़ा रखनेवाला ।

**सायम्** - अव्य० [सं] शाम के वक्त ।

**सायर** - 1. पु० [हिं] सागर ; पटेला ; [अ] महसूल ; **यौ०** —ख़र्च - फुटकर ख़र्च ; असाधारण ख़र्च ; 2. वि० [अ] अस्थायी ; सैर करनेवाला ।

**सायल** - 1. वि०, 2. पु० [अ] चाहनेवाला ; अर्ज़ी देनेवाला ; याचना करनेवाला ; सवाल करनेवाला ।

**साया** - पु० [हिं] साड़ी के नीचे पहनने की घाघरे की-सी एक पोशाक ; छाया ; परछाईं , आश्रय ; प्रेतबाधा ; सुहबत का असर ; फ़ोटो का छाया दिखानेवाला भाग ; **यौ०** —दार - छायायुक्त ।

**सायुज्य** - पु० [सं] एकत्व ; एकरूपता ; मुक्ति का एक भेद ; सादृश्य ।

**सारंग** - 1. वि० [सं] रंजित ; नाना वर्ण ; बूँदोंवाला ; सरस ; सुंदर ; 2. पु० चित्रमृग ; मृग ; विभिन्न वर्ण ; सिंह ; हाथी ; चातक ; कोयल ; खंजन ; भ्रमर ; मयूर ; राजहंस ; लवापक्षी ; छाता ; एक वृत्त या राग ; बादल ; मधुमक्खी ; वृक्ष ; कपूर ; कमल ; कामदेव ; पुष्प ; बाल ; वस्त्र ; शंख ; शिव ; धनुष ; चंदन ; आभूषण ; सारंगी ; प्रकाश ; रत्न ; पृथ्वी ; रात्रि ; सुवर्ण ; अश्व ।

**सारंगा** - स्त्री० [हिं] एक ही लकड़ी की बनी हुई डोंगी ; एक तरह की बनी नाव ; एक रागिनी ।

**सारंगिक** - पु० [सं] बहेलिया ।

**सारंगिया** - पु० [हि] सारंगी बजानेवाला ।

**सारंगी** - स्त्री० [सं] एक प्रसिद्ध तंत्र-वाद्य ।

**सारंभ** - पु० [सं] गरमागरम बहस, क्रोधपूर्ण वार्तालाप ।

**सार** - 1. वि० [सं] मुख्य ; यथार्थ ; परमावश्यक ; सर्वोत्तम ; शक्तिशाली ; पूर्णतः प्रमाणित ; 2. पु० गूदा ; मूल भाग ; मज्जा ; यथार्थ बात ; सारभूत अर्थ ; गोंद ; शक्ति ; दृढ़ता ; संपत्ति ; शौर्य ; साहस ; ताज़ा मक्खन ; अमृत ; **यौ०** —गर्भ, गर्भित - तत्त्वपूर्ण ; —गुण - मुख्य गुण या धर्म ; —ग्राही - किसी वस्तु का मुख्य तत्त्व ग्रहण करनेवाला ; —दर्शी - तत्त्वज्ञानभूत बातें देखने-समझनेवाला ; —द्रुम - खदिर वृक्ष ; —भूत - सर्वोत्तम ; मुख्य या सर्वश्रेष्ठ वस्तु ; —रूप - मुख्य ; सर्वोत्तम ; —लोह - इसपात ; —वस्तु - मूल्यवान या महत्त्वपूर्ण वस्तु ; —विद् - किसी चीज़ का मूल्य या तत्त्व जाननेवाला ; —शून्य - निस्सार ; निकम्मा ; [फ़ा] ऊँट ; **यौ०** —वान - ऊँटहारा ; 3. प्रत्य० सदृश ; प्रचुर ; मालिक ; स्थान ।

**सारखा** - वि० [हिं] समान, सदृश ।

**सारणा** - स्त्री० [सं] पारे आदि का एक तरह का संस्कार ।

**सारणि** - स्त्री० [सं] छोटी नदी ; पानी का नल ; प्रणाली ; धारा ; प्रसारिणी ।

**सारणिक** - 1. पु० [सं] यात्री ; 2. वि० यात्रा करनेवाला ।

**सारणी** - स्त्री० [सं] छोटी नदी ; जल-प्रणाली ; तालिका ; ग्रहगति बतलानेवाला ग्रंथ ; प्रसारिणी ।

**सारथि, सारथी** - पु० [सं] रथ चलानेवाला, सूत ; सहायक ; नायक ; समुद्र ।
**सारद** - स्त्री० [हिं] शारदा ।
**सारना** - स० [हिं] दूर करना ; दुरुस्त करना ; पूरा करना ; काढ़ना ; लगाना ; सँभालना ; साफ़ करना ; सुंदर बनाना ।
**सारभाटा** - पु० [हिं] ज्वार-भाटा ।
**सारमेय** - पु० [सं] कुत्ता ।
**सारल्य** - पु० [सं] सरलता ; ईमानदारी ।
**सारवान** - वि० [सं] कठिन ; मज़बूत ; उपजाऊ ; पोषक ; मूल्यवान ; रसदार ।
**सारस** - 1. वि० [सं] चिल्लानेवाला ; तालाब-संबंधी ; सारसपक्षी-संबंधी ; 2. पु० हंस की जाति का एक लंबी टाँगोवाला पक्षी ; कमल ; कमरबंद ; करधनी ; गरुड़ का एक पुत्र ; चंद्रमा ; पक्षी ; हंस ; झील आदि का जल ।
**सारस्य** - पु० [सं] चिल्लाहट ; सरसता ।
**सारस्वत** - 1. वि० [सं] सरस्वती-संबंधी ; विद्वान ; 2. पु० सरस्वती तटवर्ती देश-विशेष ; ब्रह्मा का बारहवाँ दिन या कल्प ; वाग्मिता ; वाणी ।
**सारांश** - पु० [सं] उपसंहार ; तात्पर्य ; नतीजा ; सार, निचोड़ ।
**सारा** - 1. वि० [हिं] संपूर्ण ; 2. पु० साला ; 3. स्त्री० [सं] कुश ; केला ; थूहर ।
**सारिउँ** - स्त्री० [हिं] मैना ।
**सारिका** - स्त्री० [सं] मैना पक्षी ; चांडाल-वीणा ; तंतुवाद्य का पुल-जैसा वह भाग जिसपर तार टिके रहते हैं ।
**सारिणी** - स्त्री० [सं] जलधारा, सोता ; कपास ; प्रसारिणी ।
**सारी** - 1. स्त्री० [सं] मैना ; गोटी ; भ्रूभंगिमा ; मलाई ; साली ; साड़ी ; 2. वि० गमन करनेवाला ; पीछा करनेवाला ।
**सारूप्य** - पु० [सं] एकरूप होने का भाव ; एकरूपता ; मुक्ति का एक प्रकार ।
**सारो** - पु० [हिं] एक अगहनिया धान ।
**सारौं** - स्त्री० [हिं] मैना ।
**सार्थ** - 1. वि० [स] उद्देश्यमय ; अर्थ-युक्त ; उपयोगी ; धनी ; समानार्थी ; 2. पु० कारवाँ ; जनसमूह ; तीर्थयात्री ; व्यापारिक माल; व्यापारी; धनी आदमी; समूह ; **यौ०**—पति - कारवाँ का मुखिया ; —वाह - सौदागर ।
**सार्थक** - वि० [सं] अर्थपूर्ण ; उपयोगी ; महत्वपूर्ण ; लाभदायक ।
**सार्थकता** - स्त्री० [सं] उपयोगिता ; महत्व ।
**सार्थवान** - वि० [सं] अर्थयुक्त ; बड़े दल-वाला ; साभिप्राय ।
**सार्द्ध, सार्ध** - 1. वि० [सं] आधे के साथ पूर्ण (संख्या) ; 2. अव्य० साथ ।
**सार्व** - वि० [सं] सबसे संबंध रखनेवाला ; सबके लिए उपयुक्त ; **यौ०**—कर्मिक - सब कामो के लिए उपयुक्त ; —काल - सब समयों में होनेवाला ; —कालिक - सब काल-संबंधी ; सब समयो के लिए उपयुक्त ; —जनिक, जनीन - सबसे संबंध रखनेवाला ; सबके लिए उपयुक्त ; —देशिक - सब देशो के लिए संबद्ध ; —भौतिक - सब भूतो या जीवों से संबंध रखनेवाला ; —भौम - सारी भूमि-संबंधी ; मन की सारी अवस्थाओ से संबंध रखनेवाला ; विश्वविख्यात ; सम्राट ; विश्व का साम्राज्य ; —भौमिक - सारी पृथ्वी पर फैला हुआ ; —लौकिक - सबको ज्ञात ; सारे संसार में व्याप्त ; सार्वजनिक ।
**सार्वत्रिक** - वि० [सं] सब स्थानो से संबंध रखनेवाला ; सब स्थानो या अवस्थाओ में लागू होनेवाला ।

**सालंकार** - वि० [सं] अलंकृत ; आभूषण-युक्त ।

**साल** - पु० [हिं] जख़्म ; काँटा ; छेद ; पीड़ा ; दुख देनेवाला ; [सं] एक वृक्ष-विशेष ; जड़ ; परकोटा ; दीवार ; एक प्रकार की मछली ; [फ़ा] वर्ष ; **यौ०** —आइंदा - आनेवाला वर्ष ; —इलाही - अकबर का चलाया हुआ एक संवत् ; —ख़ुर्दा - पुराना अनुभवी ; —गिरह - वार्षिक जन्मतिथि, वर्षगाँठ ; —गुज़श्ता - गत वर्ष ; —तमाम - वर्ष का अंत ; —तमामी - वार्षिक विवरण ; —नामा - नये वर्ष में प्रवेश के अवसर पर किसी पत्र-पत्रिका का प्रकाशित किया जानेवाला विशेषांक ; —फ़सली - फसली सन् ; —ब-साल - हर साल ; —हाल - वर्तमान वर्ष ; —हा-साल - अनेक वर्षो तक ; **मु०** —पलटना - वर्ष पूरा होकर दूसरा आरंभ होना ।

**सालक** - वि० [हिं] सालने या दुख देनेवाला ; [सं] अलकों से सुशोभित ।

**सालन** - पु० [हिं] मांस ; रसदार तरकारी ; [सं] गोंद ।

**सालना** - 1. स० [हिं] चारपाई की पाटी ठीक करना ; चुभाना ; कष्ट देना ; 2. अ० कष्टकर होना ; खटकना ; चुभना ।

**सालस** - वि० [सं] आलस्ययुक्त ; थका हुआ ।

**सालसा** - पु० [हिं] एक रक्तशोधक औषध ।

**साला** - 1. स्त्री० [सं] मकान ; दीवार ; 2. पु० [हिं] पत्नी का भाई ; मैना ।

**सालाना** - 1. वि० [फ़ा] वार्षिक ; साल-भर पर होनेवाला ; 2. अव्य० हर साल ; 3. पु० वर्षान्त में एक बार दी जानेवाली वृत्ति ।

**सालार** - पु० [सं] दीवार में गड़ी हुई खूँटी ; [फ़ा] नेता ; सरदार ; **यौ०** —काफ़िला - काफ़िले का नेता ; —जंग - सेनापति ; सैनिको को दी जानेवाली एक उपाधि ।

**सालिक** - 1. वि० [अ] यात्रा करनेवाला ; 2. पु० भगवत्साक्षात्कार की साधना के साथ-साथ गृहधर्म का पालन करने-वाला साधक ।

**सालिम** - वि० [अ] सुरक्षित ; अखंड ।

**सालियाना** - 1. पु० [हिं] वार्षिक वृत्ति ; 2. वि० सालाना ।

**सालिस** - 1. वि० [अ] तीसरा ; 2. पु० पंच ; **यौ०** —नामा - पंचनामा ।

**सालिसी** - 1. वि० [अ] पंच का ; 2. स्त्री० पंचायत ।

**सालिह** - वि० [अ] साधुचरित ।

**साली** - स्त्री० [हिं] पत्नी की बहिन ; बढ़ई आदि को उनके काम के बदले में दी जानेवाली ज़मीन या बँधी हुई रकम ।

**सालोक्य** - पु० [सं] मुक्ति का एक प्रकार।

**साल्मली** - पु० [हिं] सेमल, शाल्मली ।

**साव** - पु० [हिं] साधु ।

**सावक** - 1. पु० [हिं] बौद्ध या जैन गृहस्थ ; [सं] शावक, जानवर का बच्चा ; 2. वि० उत्पादक ।

**सावकाश** - 1. वि० [सं] जिसे अवकाश या फ़ुर्सत हो ; 2. अव्य० फ़ुर्सत से ; 3. पु० अवकाश ।

**सावचेत** - वि० [हिं] सतर्क, सावधान ।

**सावचेती** - स्त्री० [हिं] सतर्कता, होशियारी।

**सावत** - वि० [हिं] ईर्ष्या ; सौतिया डाह ।

**सावद्य** - 1. वि० [सं] आपत्तिजनक ; हिंसायुक्त ; 2. पु० तीन योगशक्तियों में से एक ।

**सावधान** - वि० [सं] सचेत, ख़बरदार ।

**सावधानता** - स्त्री० [सं] सतर्कता ।

**सावधि** - वि० [सं] जिसकी अवधि या सीमा निश्चित कर दी गयी हो ।

**सावन** - पु० [हिं] अषाढ़ के बाद का महीना, श्रावण ; कजली ; समूह ; आधिक्य, **यौ०** —मास - तीस दिनो का सौरमास ; —वर्ष - लगभग तीन सौ साठ दिनों का वर्ष ।

**सावनी** - 1. पु० [हिं] भाद्रमास में होनेवाला एक धान ; 2. स्त्री० सावन में गाया जानेवाला एक लोकगीत ; वर-पक्ष की ओर से वधू के यहाँ सावन में भेजी जानेवाली सौग़ात ।

**सावरण** - वि० [सं] ढका हुआ ; अर्गल या ताला लगाया हुआ ।

**सावरणी** - स्त्री० [हिं] बुहारी ।

**सावर्ण** - वि० [सं] समान रंग या जातिवाले से संबंध रखनेवाला ।

**सावशेष** - 1. वि० [सं] अधूरा ; जिसमें बाक़ी बचा हो ; 2. पु० शेष ।

**सावहित** - वि० [सं] सावधान ।

**साविका** - स्त्री० [सं] धात्री ।

**सावित्री** - स्त्री० [स] सत्यवान की पत्नी ; गायत्री ; उपनयन-संस्कार ; पार्वती ; ब्रह्मा की पत्नी , सूर्यरश्मि ; अनामिका ।

**साशंक** - वि० [सं] आशंकायुक्त ; डरा हुआ ।

**साशंस** - वि० [सं] आशान्वित ; इच्छुक ।

**साश्चर्य** - 1. वि० [सं] आश्चर्यजनक ; चकित ; 2. अव्य० आश्चर्य के साथ ।

**साश्रु** - वि० [सं] अश्रुपूर्ण, रोता हुआ ।

**साष्टांग** - वि० [सं] आठ अंगों से युक्त ; **यौ०** —प्रणाम - आठ अंगों (सिर, हाथ, पैर, आँख, जाँघ, हृदय, वचन और मन) के योग से किया जानेवाला प्रणाम ; —योग - यम-नियम आदि आठ अंगोंवाला योग ।

**सास** - स्त्री० [हिं] पति या पत्नी की माता ।

**सासत** - स्त्री० [हिं] कष्ट ।

**सासति** - स्त्री० [हिं] दंड ।

**सासरा** - पु० [हिं] ससुराल ।

**सासा** - स्त्री [हिं] श्वास ; संदेह ।

**सासु** - 1. वि० [सं] प्राणयुक्त ; 2. स्त्री० [हिं] सास ।

**सासुर** - पु० [हिं] ससुर ; ससुराल ।

**सास्ना** - स्त्री० [सं] गाय-बैल का गल-कंबल ।

**सास्मित** - पु० [सं] शुद्ध सत्त्व की विषयीभूत भावना ।

**सास्वादन** - पु० [सं] निर्वाणप्राप्ति की चौदह अवस्थाओं में से द्वितीय (जैन) ।

**साह** - 1. पु० [हिं] सुजन ; देहलीज का बाजू ; चौखट के आधार पर लगनेवाले आमने-सामने के स्तंभ ; महाजन ; साहूकार ; सुजन ; शाह ; 2. वि० [सं] दमन करनेवाला ; सफलतापूर्वक प्रतिरोध करनेवाला ।

**साहचर्य** - पु० [सं] सहगमन ; साथ ।

**साहजिक** - वि० [सं] स्वाभाविक ।

**साहनी** - स्त्री० [हिं] पारिषद ; मेल ; साथी ।

**साहब, साहिब** - 1. पु० [अ] आदरणीय व्यक्ति का संबोधन ; ईश्वर ; मित्र ; मालिक, स्वामी ; सरदार ; अंग्रेज़ ; योरोपियनों की तरह रहनेवाला हिन्दुस्तानी अफ़सर ; 2. वि० वाला ; रखनेवाला ; **यौ०** —ज़ादा - बड़े आदमी का बेटा ; अनुभवहीन नवयुवक ; —बहादुर - अंग्रेज़ अफ़सर ; साहबी ढंग से रहनेवाला हिन्दुस्तानी अफ़सर ; —सलामत - सलाम-बंदगी ; सामान्य परिचय ; — —इंसाफ़ - न्यायशील ; —इल्म - विद्वान ; —कमाल - सिद्ध, आत्मद्रष्टा ;

—ख़ाना - घर का मालिक, मेज़बान ; —ग़रज़ - ग़रज़मंद ; —ज़बान - किसी भाषाविशेष का पंडित ; —ज़ायदाद - संपत्तिशाली ; —तदबीर - चतुर ; नीतिज्ञ ;—ताज, ताजोतख़्त - बादशाह ; —दिमाग़ - घमंडी ; —दिल - ज्ञानी ।

**साहबाना** - वि० [अ] साहब का ; साहबी ।

**साहबी** - 1. वि० [हिं] साहब का ; साहब-जैसा ; 2. स्त्री० अफ़सरी ; ऊँचा पद ; एक धारीदार कपड़ा; मालिकी ; हुकूमत; मु०—करना - अफ़सरी शान दिखाना ।

**साहबीयत** - स्त्री० [हिं] अंग्रेज़ों की नक़ल ; साहबी चाल-ढाल ।

**साहस** - 1. पु० [सं] हिम्मत ; उग्रता ; निष्ठुरता ; औद्धत्य ; अपहरण ; जल्द-बाज़ी ; जुर्माना ; दंड ; बलात्कार ; शत्रुता ; 2. वि० जल्दबाज़ ।

**साहसिक** - 1. वि० [सं] दिलेर ; निर्भीक ; हिम्मतवर ; अविवेकी ; अत्याचारी ; उद्धत ; बहुत अधिक ज़ोर लगानेवाला ; 2. पु० हिम्मतवर आदमी ; ख़तरनाक आदमी ; डाकू ; लंपट ।

**साहसी** - वि० [सं] पराक्रमी ; हिम्मतवर ; उद्धत ; प्रचंड ; निष्ठुर ।

**साहाय्य** - पु० [सं] मदद ; मैत्री ; संकट में साथ देना ; यौ०—कर - सहायता देनेवाला ।

**साहि** - पु० [हिं] राजा ; भला आदमी ।

**साहित्य** - पु० [सं] काव्यशास्त्र ; लिपिबद्ध विचार, ज्ञान आदि ; गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना ; वाङ्मय ; वाक्य में पदों का सापेक्ष संबंध (न्याय) ; संयोग ।

**साहित्यिक** - वि० [सं] साहित्य-संबंधी ।

**साहिर** - पु० [अ] जादू करनेवाला ।

**साहिरी** - स्त्री० [अ] जादूगरी ।

**साहिल** - पु० [अ] समुद्र या नदी का किनारा ।

**साहिली** - स्त्री [हिं] एक काले रंग की चिड़िया ।

**साही** - स्त्री० [हिं] बिल्ली से कुछ बड़ा एक छोटा जानवर जिसका सारा शरीर तेज़ लंबे काँटों से भरा रहता है ।

**साहु** - पु० [हिं] साधु पुरुष, सज्जन ; बनियों का आदरपूर्ण संबोधन ; महाजन ।

**साहुल** - पु० [हिं] दीवार की सीध जाँचने का राजगीरों का एक औज़ार ।

**साहूकार** - पु० [हिं] बड़ा व्यापारी ।

**साहूकारा** - पु० [हिं] रुपयों के लेन-देन का काम ; बाज़ार ; साहूकारों की बस्ती ।

**साहूकारी** - स्त्री० [हिं] महाजनी ।

**साहें** - 1. स्त्री० [हिं] बाज़ू, भुजायें ; 2. अव्य० सामने ।

**सिंकना** - अ० [हिं] सेंका जाना ; पकना ।

**सिंकोना** - पु० [अ] एक वृक्ष जिसके रस से कुनैन बनाया जाता है ।

**सिंगड़ा** - पु० [हिं] बारूद आदि रखने का सींग का एक बर्तन ।

**सिंगरफ** - पु० [हिं] ईंगुर ।

**सिंगा** - पु० [हिं] फूँककर बजाया जाने-वाला एक बाजा, रणसिंगा ।

**सिंगार** - पु० [हिं] शृंगार, सजावट ; शृंगाररस ; सजधज ; यौ० —दान - प्रसाधन-सामग्री रखने का छोटा संदूक़ ; —हाट - वेश्याओं का वासस्थान, चकला ।

**सिंगारना** - स० [हिं] शृंगार करना ; सजाना ।

**सिंगारिया** - पु० [हिं] मूर्ति का शृंगार करनेवाला ।

**सिंगिया** - पु० [हिं] एक विष जो सूखने पर सींग की शक्ल का हो जाता है ।

**सिंगी** - 1. स्त्री० [हिं] तूँबी लगाने की नली; घोड़ो का एक ऐब; एक तरह की सींगोंवाली मछली; 2. पु० सींग का बना बाजा।

**सिंगौटी** - स्त्री० [हिं] तेल आदि रखने का सींग का पात्र; सिंदूर आदि रखने की पिटारी; बैल के सींग का गहना।

**सिंघाड़ा** - पु० [हिं] पानी में पैदा होनेवाला एक तिकोना फल; एक तरह की आतिशबाज़ी; तिकोनी सिलाई; सुनारो का एक औज़ार; एक चिड़िया।

**सिंघाड़ी** - स्त्री० [हिं] सिघाड़ा पैदा करने का छोटा तालाब।

**सिंघिनी** - स्त्री० [सं] नासिका; [हिं] शेरनी।

**सिंघी** - स्त्री० [हिं] सोंठ; सिंगी मछली।

**सिंघेला** - पु० [हिं] शेर का बच्चा।

**सिंचन** - पु० [सं] सींचना, खेत आदि में पानी डालना; छिड़काव करना।

**सिंचना** - अ० [हिं] सींचा जाना।

**सिंचाई** - स्त्री० [हिं] सींचने का काम या उसकी मज़दूरी।

**सिंचाना** - स० [हिं] किसीको सींचने में प्रवृत्त करना।

**सिंजा** - स्त्री० [सं] गहनो के हिलने आदि से उत्पन्न शब्द।

**सिंदूर** - पु० [सं] स्त्रियो की माँग भरने का एक लाल चूर्ण; एक वृक्ष-विशेष; यौ० —दान - विवाह की एक रस्म जिसमें वधू की माँग में वर सिंदूर लगाता है; —पुष्पी - सिंदूरिया।

**सिंदूरिया** - 1. वि० [हिं] सिंदूर के रंग का; 2. स्त्री० सदासुहागिन।

**सिंदूरी** - 1. वि० [हिं] सिंदूर के रंग का; 2. स्त्री० [सं] रोचनी; लाल कपड़ा; सिंदूरपुष्पी।

**सिंदोरा** - पु० [हिं] सिंदूर रखने की लकड़ी की डिबिया।

**सिंधु** - 1. पु० [सं] समुद्र; गजमद; हाथी की सूँड से निकलनेवाला पानी; एक नदी; इस नदी के आसपास का देश; चार या सात की संख्या; नद; ओठ की आर्द्रता; विष्णु; वरुण; हाथी; 2. स्त्री० नदी; यौ० —कन्या - लक्ष्मी; —कफ - समुद्रफेन; —नाथ - सागर; —पुत्र - चंद्रमा; —पुष्प - शंख; कदंब; बकुल; —प्रसूत - सेंधा नमक; —मंथ - समुद्रमंथन; पर्वत; —माता - सरस्वती नदी; —मुख - नदी का मुहाना; —राज - समुद्र; —विष - कालकूट; —शयन - विष्णु; —संगम - नदी का मुहाना; —संभवा - फिटकिरी; —सुता - लक्ष्मी; सीप।

**सिंधुर** - पु० [सं] आठ की संख्या; हाथी; यौ० —वदन - गणेश।

**सिंधूरा** - पु० [हिं] संपूर्ण जाति का एक राग।

**सिंधोरा** - पु० [हिं] लकड़ी का बना हुआ सिंदूरपात्र।

**सिंधोरी** - स्त्री० [हिं] सिंदूर रखने की छोटी डिबिया।

**सिंसप** - पु० } [हिं] शीशम का वृक्ष।
**सिंसपा** - स्त्री० }

**सिंह** - पु० [सं] शेर; बारह राशियों में से एक राशि; अपने वर्ग का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति; विशेष आकार-प्रकार का मंदिर या प्रासाद; लाल सहिजन; यौ० —कर्मा - सिंह-जैसा पराक्रमी; —केसर - सिंह का अयाल; बकुल; —दंष्ट्र - एक तरह का बाण; —दर्प - सिंह की तरह गर्वीला; —द्वार - प्रासाद आदि का प्रधान द्वार; सदर दरवाज़ा; —ध्वनि,

नाद - ललकार; सिंह का-सा गर्जन; सिंह का गर्जन; —गति, गामी - सिंह की-सी चालवाला।

**सिंहनी** - स्त्री० [हिं] शेरनी।

**सिंहाण, सिंहान** - पु० [सं] नाक का मल; लोहे का मुर्चा।

**सिंहावलोकन** - पु० [सं] आगे बढ़ते हुए पीछे की बातों पर दृष्टिपात कर लेना; सिंह का आगे बढ़ते हुए पीछे की ओर देखना।

**सिंहासन** - पु० [सं] राजा या देवता आदि का आसन, तख्त, गद्दी; कमल-पत्राकार देवासन; यौ० —भ्रष्ट - राज्यच्युत; —रण - गद्दी प्राप्त करने के लिए होनेवाला युद्ध; —स्थ - तख्तनशीन।

**सिंहिनी** - स्त्री० [सं] एक देवी; शेरनी।

**सिंहोड़** - पु० [हिं] थूहर।

**सिअनि** - स्त्री० [हिं] सिलाई।

**सिअरा** - 1. वि० [हिं] ठंडा; ठंडा किया हुआ; 2. पु० छाया; गीदड़।

**सिआर** - पु० [हिं] गीदड़।

**सिकंजबीन** - स्त्री० [फ़ा] नीबू के रस या सिर्के का पका हुआ शर्बत।

**सिकंदरा** - पु० [हिं] रेल का सिगनल।

**सिकंदरी** - 1. वि० [फ़ा] सिकंदर का; 2. स्त्री० घोड़े का ठोकर खाना।

**सिकटा** - पु० [हिं] मिट्टी के बर्तन या कपड़े का छोटा टुकड़ा।

**सिकटी** - स्त्री० [हिं] मिट्टी के बर्तन आदि का बहुत छोटा टुकड़ा।

**सिकड़ी** - स्त्री० [हिं] ज़ंजीर; करधनी; ज़ंजीर-जैसा गले का एक गहना।

**सिकत** - स्त्री० [हिं] बालू।

**सिकता** - स्त्री० [सं] बालू; शर्करा; बालुका-युक्त भूमि; एक शाक; पथरी (रोग); यौ० —मय - बालुकामय; बालू से बना हुआ तट; —मेह - प्रमेह का एक भेद जिसमें पेशाब में बालू के से कण रहते हैं।

**सिकर** - 1. पु० [हिं] शृगाल; 2. स्त्री० ज़ंजीर।

**सिकली** - स्त्री० [हिं] हथियार माँजकर तेज़ करना; यौ० —गर - हथियार तेज़ करनेवाला; चमक लानेवाला।

**सिकहर** - पु० [हिं] छींका।

**सिकहुती, सिकहुली** - स्त्री० [हिं] मूँज आदि की बनी छोटी डलिया।

**सिकुड़न** - स्त्री० [हिं] सिकुड़ने की क्रिया; संकोच; शिकन।

**सिकुड़ना** - अ० [हिं] संकुचित होना; तंग होना; शिकन पड़ना।

**सिकोड़ना** - स० [हिं] बटोरना; संकुचित करना; तंग या संकीर्ण करना।

**सिकोरा** - पु० [हिं] कसोरा।

**सिकोली** - स्त्री० [हिं] बेत या बाँस आदि की बनी हुई डलिया।

**सिकोही** - वि० [हिं] गर्वीला; पराक्रमी।

**सिक्कड़** - पु० [हि] ज़ंजीर; सिकड़ी।

**सिक्का** - पु० [अ] मुद्रा; रुपया; ठप्पा, छाप; पदक; रुपये आदि अंकित करने का ठप्पा; यौ० —जन - सिक्के ढालने-वाला; मु० —चलाना - सिक्का ज़ारी करना।

**सिक्की** - स्त्री० [हिं] छोटा सिक्का; अठन्नी; चवन्नी।

**सिक्ख** - पु० [हिं] गुरु नानक का चलाया हुआ एक संप्रदाय; इस संप्रदाय का अनुयायी।

**सिक्त** - वि० [सं] भीगा हुआ; सींचा हुआ।

**सिक्थ** - पु० [सं] मोम; भात का पिंड या ग्रास; भात; मोतियों का गुच्छा; नीली।

**सिख** - 1. स्त्री० [हिं] उपदेश; चोटी; 2. पु० सिक्ख।

**सिखना, सिखवना** - स० [हिं] सिखाना।

**सिखरन** - स्त्री० [हिं] चीनी, गरी, केसर आदि के योग से बना हुआ दही का एक व्यंजन।

**सिखलाना, सिखाना** - स० [हिं] पढ़ाना, शिक्षा देना; दंड देना।

**सिखापन** - पु० [हिं] शिक्षा; शिक्षणकार्य।

**सिखावन** - स्त्री० हिं] नसीहत।

**सिखिर** - पु० [हिं] शिखर; पारसनाथ पहाड़।

**सिखी** - पु० [हिं] मुर्ग़ा; मोर।

**सिग़र** - पु० [अ] छुटपन; **यौ०** —सिन - छोटी उम्र का; —सिनी - बचपन।

**सिगरा** - वि० [हिं] संपूर्ण; सब।

**सिगोन** - स्त्री० [हिं] नालों के आसपास प्राप्त होनेवाली लाल रेतमिश्रित मिट्टी।

**सिचान** - पु० [हिं] बाज़ पक्षी।

**सिजदा** - पु० [अ] ख़ुदा के आगे सिर झुकाना; माथा टेकना; मुसलमानों की उपासना का अंग जिसमें सिर, नाक, कुहनियाँ, घुटने और पाँवों की उँगलियाँ ज़मीन पर लगती हैं; **यौ०** —गाह - उपासनास्थल (मस्जिद)।

**सिजल** - वि० [हिं] अच्छा; सुन्दर।

**सिझना** - अ० [हिं] आँच पर पक जाना।

**सिझाना** - स० [हिं] राँधना; पकाना; शरीर को कष्टमय स्थिति में रखना।

**सिटकिनी** - स्त्री० [हिं] अन्दर से बंद करने के लिए किवाड़ में लगा हुआ छोटा-सा छड़, चटखनी।

**सिटपिटाना** - अ० [हिं] स्तब्ध हो जाना; दब जाना; डर जाना; मंद पड़ जाना।

**सिट्टी** - स्त्री० [हिं] वाचालता; **मु०** —गुम होना - सिटपिटा जाना।

**सिठाई** - स्त्री० [हिं] फीकापन।

**सिड़** - स्त्री० [हिं] धुन; पागलपन, सनक; **यौ०** —बिला, बिल्ला - मूर्ख; **मु०** —सवार होना - सनक सवार होना।

**सिड़ी** - वि० [हिं] सनकी; मनमौजी।

**सित** - 1. वि० [स] सफ़ेद; चमकीला; निर्मल; ज्ञात; बद्ध; परिवेष्टित; समाप्त; 2. पु० शुक्लपक्ष; सफ़ेद रंग; चंदन; चाँदी; वाण; शुक्रग्रह; मूली; शर्करा; **यौ०** —कंठ - चातक (पपीहा); —कमल - सफ़ेद कमल; —कर - कपूर; चंद्रमा; —काच - स्फटिक; —कुंजर - सफ़ेद हाथी; ऐरावत, इंद्र का हाथी; इंद्र; सफ़ेद हाथी पर सवारी करनेवाला; —खंड - मिश्री का डला; —च्छत्र - राजछत्र; श्वेतछत्र; —च्छत्रा, च्छत्री - सौंफ; सोवा; —धातु - खड़िया मिट्टी; —पक्ष - शुक्लपक्ष; सफ़ेद पंख; हंस; —पद्म - श्वेत कमल; —पुष्पा - मल्लिका; —मणी - स्फटिक; —मना - पवित्र हृदयवाला; —यामिनी - चाँदनी रात; चंद्रिका; —रंज - कपूर; —लता - अमृतवल्ली; —शूक - जौ; —सिंधु - क्षीरसागर।

**सितम** - पु० [फ़ा] अंधेर; अन्याय; गज़ब; **यौ०** —ईज़ाद - अन्याय की नीवँ डालनेवाला; बहुत बड़ा ज़ालिम; —कश, ज़दा, रसीदा - जुल्म सहनेवाला; —गर, गार - अत्याचारी; —ज़रीफ़ - हास्य-विनोद की ओट में जुल्म करनेवाला।

**सितली** - स्त्री० [हिं] पीड़ा आदि की हालत में निकलनेवाला पसीना।

**सिताँ** - 1. पु० [फ़ा] देश; निवास-स्थान; स्थान; 2. वि० लेने या पकड़नेवाला।

**सिताइश** - स्त्री० [फ़ा] स्तुति, प्रशंसा; **यौ०** —गर - प्रशंसा करनेवाला।

**सिताब** - 1. अव्य० [हिं] तुरंत; 2. स्त्री० शीघ्रता।

**सिताबी** - 1. अव्य० [हिं] सिताब; 2. स्त्री० चाँदनी; शीघ्रता।

**सितार** - पु० [हिं] एक प्रसिद्ध तंतुवाद्य; यौ० —बाज़ - सितार बजानेवाला; —बाज़ी - सितार बजाना।

**सितारा** - पु० [फ़ा] तारा, नक्षत्र; भाग्य; आतिशबाज़ी; अंगूठे के बराबर घोड़े के सिर पर पाया जानेवाला सफ़ेद निशान; बंदूक के टोपे का गोल और सफ़ेद भाग; टोपी या जूते आदि पर लगायी जानेवाली चाँदी-सोने के पत्तर की टिकली; सितार; यौ० —चश्म - सितारे-जैसी आँखोंवाला; —पेशानी - वह घोड़ा जिसके सिर पर सितारे का चिह्न हो; —शनास, शुमार - ज्योतिषी; —शनासी - ज्योतिष विद्या; मु० —चमकना - भाग्य चमकना; —बुलंद होना - सौभाग्यकाल होना; —भारी होना - दुर्दिन का आना।

**सितारिया** - पु० [हिं] सितार बजानेवाला।

**सिताव** - स्त्री० [हिं] एक बरसाती पौधा।

**सितावरी** - स्त्री० [सं] बकुची।

**सितासित** - 1. वि० [सं] भला और बुरा; सफ़ेद और काला; 2. पु० प्रयाग; बलदेव; शुक्र और शनि।

**सितुई, सितुही** - स्त्री० [हिं] सीपी।

**सितुदा** - वि० [फ़ा] नेक; प्रशंसनीय; प्रशस्त; यौ० —कार - नेक काम करनेवाला।

**सितून** - पु० [फ़ा] स्तंभ; पीलपाया।

**सिदना** - स० [हिं] कष्ट पहुँचाना।

**सिदरी** - स्त्री० [हिं] तीन दरवाज़ोंवाला दालान।

**सिदूक़** - स्त्री० [अ] सचाई; दिल की सफ़ाई।

**सिद्दीक़** - वि० [अ] बहुत सच्चा।

**सिद्ध** - 1. वि० [सं] प्राप्त; निश्चित; पूरा किया हुआ; निर्णीत; प्रमाणित; दृढ़; सत्य माना हुआ; चुकाया हुआ; पका हुआ (फल आदि); पकाया हुआ; तैयार किया हुआ; पराभूत; विशेषज्ञ; अलौकिक शक्ति से संपन्न; धर्मात्मा; मुक्त; अमर, ठीक घटा हुआ; दीप्तिमान; पवित्र; प्रसिद्ध; 2. पु० सिद्धिप्राप्त संत या योगी; ऋषि; संत; जादूगर; गुड़; मुकद्दमा; एक देवयोनि; चौबीस की संख्या; अलौकिक शक्ति; जिन; सेंधा-नमक; यौ० —काम - जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गयी हों; —कार्य - सफल; —गंगा - स्वर्गंगा; —ग्रह - उन्माद उत्पन्न करनेवाला एक ग्रह या प्रेत; —जल - माँड़; —दर्शन; —जीवन्मुक्त संतों के दर्शन; —द्रव्य - जादू की चीज़; —धातु - पारा; —पथ - अंतरिक्ष; —पुरुष - वह व्यक्ति जिसे योगादि में सिद्धि प्राप्त हो गयी हो; —मत - सिद्ध व्यक्तियों का विचार; —मानस - जिसका मन पूर्णतः संतुष्ट हो; —योगिनी - जादूगरनी; मनसा देवी; —रस - पारा; कीमियागर; —रसायन - दीर्घायु बनानेवाला रस; —लोक - सिद्धों का लोक; —वस्ति - तेल आदि की पिचकारी; —शिला - लोकाकाश का सबसे ऊपरवर्ती स्थान; —संकल्प - जिसका संकल्प पूरा हो गया हो; —सरित् - आकाशगंगा; —साधन - प्रमाणित को प्रमाणित करना; सिद्धि की प्राप्ति के लिए तांत्रिक आदि क्रियाओं का साधन; सफ़ेद या पीली सरसों।

**सिद्धांजन** - पु० [सं] एक अंजन।

**सिद्धांत** - पु० [सं] उसूल; निर्धारित मत के आधार पर लिखित शास्त्रीय ग्रंथ; पक्की राय; अंतिम उद्देश्य या अभिप्राय; पूर्व पक्ष के खंडन के बाद सिद्ध मत; **यौ०** —कोटि - तर्क का वह स्थल या बिन्दु जो निर्णायक हो; —धर्मागम - परंपरागत नियम; —पक्ष - तर्कसंगत पक्ष; —वाद - मतवाद।

**सिद्धांताचार** - पु० [सं] तार्किकों का आचार-विशेष।

**सिद्धांती** - पु० [सं] सिद्धांतों के ग्रंथों का जानकार; आपत्तियों का निराकरण कर अनुमान की स्थापना करनेवाला; मीमांसक।

**सिद्धाई** - स्त्री० [हिं] सिद्धि की अवस्था।

**सिद्धार्थ** - वि० [सं] सफलमनोरथ; लक्ष्य तक ले जानेवाला।

**सिद्धासन** - पु० [सं] एक योगासन।

**सिद्धि** - स्त्री० [सं] अभ्युदय; गर्भ की पूर्ति; अनुमान; निश्चय; निष्पत्ति; पूर्ण शुद्धि; प्रश्न का हल; अणिमा, गरिमा आदि अलौकिक शक्तियाँ; मोक्ष; प्रज्ञा; पूर्ण ज्ञान; लाभ; लक्ष्यवेध; **यौ०** —कर - सफल बनानेवाला; समृद्ध करनेवाला; —कारक - लक्ष्यप्राप्ति करानेवाला; प्रभावकर; —ज्ञान - सिद्धांतों का ज्ञान; —दर्शी - आगे की स्थिति का ज्ञान रखनेवाला; भविष्य में सिद्धि देखनेवाला; —दाता - गणेश; —प्रद - सिद्धि देनेवाला; —योग - ग्रहों का एक शुभ योग; योगशक्ति का प्रयोग।

**सिधाई** - स्त्री० [हिं] सरलता; सीधापन।

**सिधाना** - अ० [हिं] आना; प्रस्थान करना।

**सिधारना** - अ० [हिं] प्रस्थान करना; मर जाना; रवाना होना।

**सिन, सिन्न** - पु० [अ] उम्र; **यौ०**—रसीदा - बूढ़ा; सिने-शऊर - यौवन का आरंभ।

**सिनक** - स्त्री० [हिं] नाक का मल।

**सिनकना** - स० [हिं] छिनकना, साँस के झोंके से नाक का मल निकालना।

**सिनान** - पु० [फ़ा] तीर की नोक; भाला; भाले का फल।

**सिन्नी** - स्त्री० [हिं] मिठाई; खुशी में देवता को चढ़ाकर प्रसाद के रूप में बाँटी जानेवाली मिठाई।

**सिपर** - स्त्री० [फ़ा] ढाल; मददगार; पनाह; रोक; **यौ०**—दारी - रखवाली।

**सिपह** - पु० [फ़ा] 'सिपाह' का लघु रूप; **यौ०**—गरी - सैनिकवृत्ति; —दार - सेनानायक; —सालार - सेनापति।

**सिपाव** - पु० [हिं] बाँस आदि का बना हुआ वह ढाँचा या साधन जिसे अड़ाने के लिए गाड़ी में लगाते हैं।

**सिपास** - पु० [फ़ा] कृतज्ञताप्रकाश; सराहना; **यौ०**—नामा - अभिनंदन-पत्र।

**सिपाह** - पु० [फ़ा] सेना; **यौ०**—गरी - सैनिकवृत्ति।

**सिपाहियाना** - वि० [फ़ा] सिपाहियों का-सा।

**सिपाही** - पु० [फ़ा] चपरासी; कांस्टेबिल; योद्धा; सैनिक।

**सिपुर्द** - वि० [फ़ा] सौंपा हुआ; **यौ०**—गी - हिरासत; सिपुर्द करने का भाव; —नामा - समर्पण-पत्र।

**सिप्पा** - पु० [हिं] निशाना; ढब; सीप का अर्धांश; मतलब; धाक; काम निकालने का उपाय; **मु०**—जमाना - भूमिका

बाँधना ; —भिड़ना, लड़ना - मौक़ा मिलना ; उपाय लग जाना ; —मारना, लगाना - जाल डालना ; निशाना लगाना ।

**सिफ़त** - 1. स्त्री० [अ] गुण या विशेषता, लक्षण ; 2. वि० तुल्य ।

**सिफ़र** - 1. पु० [अ] बिन्दु ; शून्य ; 2. वि० मूल्यरहित ।

**सिफ़लगी** - स्त्री० [हिं] कमीनापन, नीचता ।

**सिफ़ला** - वि० [अ] कमीना ; क्षुद्र ; **यौ०** —मिज़ाज - नीच प्रकृति का ।

**सिफ़ली** - वि० [अ] नीचे का ; **यौ०** —अमल - वह मंत्र जिसमें शैतान या प्रेतात्माओ से सहायता ली जाती है ।

**सिफ़ात** - स्त्री० [अ] 'सिफत' का बहु० ; **यौ०** —ए-ज़ाती - सहज गुण ।

**सिफ़ाती** - स्त्री० [अ] अभ्यास आदि से प्राप्त ; उपाधिकृत, जो सहज न हो ; गुण से संबद्ध ।

**सिफ़ारत** - स्त्री० [अ] दूत का काम या पद ; एक राज्य से दूसरे को भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल ; **यौ०** —ख़ाना - दूतावास ।

**सिफ़ारिश** - स्त्री० [फ़ा] किसीके विषय में भलाई की बात कहना, किसीका कोई काम करने के लिए दूसरे से कहना ; ख़ुशामद ; ज़रिया, **यौ०** —नामा - सिफ़ारिशी चिट्ठी ।

**सिफ़ारिशी** - वि० [फ़ा] जिसकी सिफ़ारिश की गयी हो ; सिफ़ारिश करनेवाला ; **यौ०** —टट्टू - योग्यता के बिना केवल सिफ़ारिश या चापलूसी से कोई पद प्राप्त करनेवाला आदमी ।

**सिफ़ाल** - पु० [फ़ा] ठीकरा ; मिट्टी का बर्तन ।

**सिफ़ाला** - पु० [फ़ा] कपड़ा ; ठीकरा ; मिट्टी का बर्तन ; **यौ०** —पोश - खपरैल की छाजनवाला ।

**सिमट** - स्त्री० [हिं] सिमटने की क्रिया ।

**सिमटना** - अ० [हिं] एकत्र होना, बटोरना ; सिकुड़न पड़ना ; लज्जित हो जाना ; संकुचित हो जाना ।

**सिमरगोला** - पु० [हिं] एक तरह की मेहराब ।

**सिमरना** - स० [हिं] स्मरण या याद करना ।

**सिमल** - पु० [हिं] हल्का जूआ ; जूए की खूँटी ।

**सिमाना** - पु० [हिं] हद ।

**सियना** - स० [हिं] उत्पन्न करना ; सर्जन करना ; सीना ।

**सियरा** - 1. वि० [हिं] कच्चा ; ठंडा ; 2. पु० छाया ; सियार ।

**सियराई** - स्त्री० [हिं] शीतलता ।

**सियराना** - अ० [हिं] शीतल या ठंडा होना ।

**सियह** - वि० [फ़ा] सियाह ; **यौ०** —ख़ाना - उजड़ा हुआ घर ; क़ैदख़ाना ।

**सिया** - स्त्री० [हिं] सीता ।

**सियादत** - स्त्री० [अ] राज्य ; सरदारी ; बड़ाई ।

**सियाना** - 1. वि० [हिं] सयाना ; 2. स० सिलाना ।

**सियापा** - पु० [हिं] स्त्रियो का एकत्र होकर कुछ दिनों तक मातम मनाना ; मातम ।

**सियार** - पु० [हिं] गीदड़ ।

**सियारा** - पु० [हिं] एक प्रकार का लकड़ी का फावड़ा जिससे लोग जुती हुई ज़मीन बराबर करते हैं ।

**सियाल** - पु० [हिं] शृगाल, गीदड़ ।

**सियाला** - पु० [हिं] जाड़े का मौसम ; **यौ०** —पोका - लोनी मिट्टीवाली दीवार में पाया जानेवाला एक छोटा कीड़ा ।

**सियाली** - वि० [हिं] जाड़े के मौसम का ; जाड़े में होनेवाली फसल।

**सियावड़** - पु० } [हिं] खलिहान में
**सियावड़ी** - स्त्री० } साधुओं आदि के लिए निकाला हुआ अन्न का अंश।

**सियासत** - स्त्री० [अ] देशरक्षा ; दंड ; दबदबा ; भय ; मारपीट ; राजकाज ; राज्य-प्रबन्ध ; **यौ०** —दाँ - राजनीतिज्ञ ; शासनपटु।

**सियासी** - वि० [हिं] राज्य-प्रबन्ध या राजकाज से संबद्ध ; राजनीतिक।

**सियाह** - वि० [फ़ा] अशुभ ; श्याम ; **यौ०** —कार - अत्याचारी ; दुराचारी ; —कारी - जुल्म ; पाप ; —गोश - काले कानोवाला एक हिंस्र जंतु ; —चश्म - काली आँखोवाला ; —ज़बान - बद-ज़बान ; —ताब - जिसकी स्याही में चमक हो ; —दाना - काला तिल ; धनियाँ ; सौंफ का फूल ; —दिल - निर्दय ; —पोश - काले रंग के कपड़े पहननेवाला ; शोक का मातम मनानेवाला ; —फ़ाम - कृष्णकाय, काला ; —बख़्त - आभागा ; —बख़्ती - दुर्भाग्य ; —बातिन - खोटे दिल का ; —मस्त - शराब के नशे में चूर ; —मस्ती - सियाहमस्त होने का भाव।

**सियाहत** - स्त्री० [अ] भ्रमण ; सैर करना।

**सियाहा** - पु० [फ़ा] वह रोज़नामचा जिसमें प्रतिदिन की आमदनी और ख़र्च का ब्योरा लिखा जाता है, बही।

**सियाही** - स्त्री० [फ़ा] कालिमा , अंधकार ; दोष ; रोशनाई ; **यौ०** —चटा, सोख - ज़ाजिब काग़ज, ब्लाटिंग पेपर।

**सिर** - पु० [हिं] गर्दन के ऊपर का हिस्सा ; किसी चीज़ के ऊपर का हिस्सा ; कपाल ; आरंभ ; किनारा ; चोटी ; दिमाग़ ; सरदार ; **यौ०** —कटा - जिसका सिर कटा हो ; अपकारी ; —खप - सिर खपानेवाला ; बहादुर ; —खपी - जान लगाकर मेहनत करना ; —गिरी - पक्षियो की शिखा ; मुर्गे की शिखा ; —चंद - हाथी के मस्तक का एक अर्धचंद्राकार भूषण ; —चढ़ा - ढीठ ; मुँहलगा ; —ताज - मालिक ; सरदार ; पति ; स्त्रियों के सिर का एक गहना ; एक तरह की नक़ाब ; —दुआली - लगाम के साथ का साज ; —नामा - लेख आदि का शीर्षक ; पत्र पर लिखा जानेवाला पता ; —नेत - सिर की पगड़ी ; —पेच - पगड़ी ; पगड़ी के ऊपर का छोटा कपड़ा ; पगड़ी पर बाँधने का एक गहना ; —पोश - सिर का आवरण ; —फूल - स्त्रियों का एक शिरोभूषण ; —फेंटा, बंद - पगड़ी ; —बोझी - पाटन के काम में आनेवाला पतला बाँस ; —मगज़न - माथापच्ची ; —मुँड़ा - जिसके सिर के बाल मुँड़े हों ; निगोड़ा ; —मौर - सिरताज ; —हाना - खाट का वह हिस्सा जिधर सिर रहता है ; **मु०** —अलग करना - सिर काटना ; —आँखो पर, आँखो से - स्वीकार है ; शौक़ से ; —आँखों पर रखना - बहुत आवभगत करना ; —उठाकर चलना - इतराना ; —ऊँचा करना - आत्म-सम्मानपूर्वक रहना ; —कहाँ फोड़ूँ - कहाँ तलाश करूँ ; —का बोझ उतरना - किसी काम से फ़ुर्सत पाना ; —कोरे उस्तुरे से मूँड़ना - सब कुछ लूट लेना ; —खाना - व्यर्थ की बातो से परेशान करना ; —ख़ाली करना - बेकार माथापच्ची करना - बकझक करना ; —

खुजलाना, खुजाना - मार खाने को जी चाहना ; —चढ़ना - यार या मुसाहब बनना ; —चढ़ाना - गुस्ताख़ बनाना ; —तोड़कर लेना - बलपूर्वक कोई चीज़ ले लेना ; —तोड़ कोशिश करना - बेहद कोशिश करना ; —हथेली पर रहना या होना - जान देने को तैयार रहना ; दिलेरी से मौत का सामना करना ; [अ] भेद, रहस्य ।

**सिरई** - स्त्री० [हिं] सिरहाने की पाटी ।

**सिरका** - पु० [फ़ा] धूप में सड़ाकर खमीर उठाया हुआ ईख या अंगूर आदि का रस ; **यौ०**—कश - अर्क खींचने का एक यंत्र ।

**सिरकी** - स्त्री० [हिं] सरकंडा ; सरकंडे की बनी हुई टट्टी ।

**सिरजन** - पु० [हिं] सृजन, निर्माण ; **यौ०** —हार - निर्माता, स्रष्टा ।

**सिरजना** - 1. स० [हिं] बनाना ; संचय करना ; 2. स्त्री० रचना ; सृष्टि ।

**सिरजित** - वि० [हिं] रचा हुआ ; सृष्ट ।

**सिरतान** - पु० [हिं] काश्तकार ; मालगुज़ार ।

**सिरती** - स्त्री० [हिं] जमा, लगान ।

**सिरवा** - पु० [हिं] ओसाते समय हवा करके भूसी उड़ाने का कपड़ा ।

**सिरा** - 1. पु० [हिं] अंत का या प्रारंभ का भाग ; छोर ; ऊपर का या अगला भाग ; नोक ; 2. स्त्री० [सं] नाड़ी ; नाड़ी-जैसा जल का तंग सोता ; डोल ; नसों की तरह एक दूसरी को काटनेवाली रेखायें ; **यौ०**—जाल - नाड़ियो का जाल : आँख की केशिकाओ का शोथ ; —पत्र - पीपल का वृक्ष ; —मूल - नाभि ; —मोक्ष - रक्तमोक्षण ; —हर्ष - नाड़ियो की पुलक ; आँख के डोरो की लाली का बढ़ जाना ।

**सिराज** - पु० [अ] दीपक ; सूर्य ।

**सिरात** - स्त्री० [अ] रास्ता ; मुसलमानों के विश्वासानुसार क़यामत के दिन दोज़ख़ पर बनाया जानेवाला पुल ।

**सिराना** - 1. अ० [हिं] ठंडा होना ; उत्साह ढीला पड़ना ; दूर होना ; समाप्त होना ; शांत होना ; 2. स० ख़तम करना ; ठंडा करना ; बिताना ।

**सिरायत** - स्त्री० [अ] प्रवेश ; ज़ज़्ब करना ।

**सिराली** - स्त्री० [हिं] मोर की कलँगी ।

**सिरावन** - पु० [हिं] पाटा, पटेला ।

**सिरियारी** - स्त्री० [हिं] सुसना का साग ।

**सिरी** - स्त्री० [सं] करघा ; ढरकी ; ऐश्वर्य ; लक्ष्मी ; रोली ; शोभा ; सिर का एक गहना ।

**सिरोना** - पु० [हिं] इंडुरी ।

**सिरोपाव** - पु० [हिं] सिर से पैर तक का पहनावा जो बादशाह की ओर से सम्मानार्थ मिलता था, ख़िलअत ।

**सिर्फ़** - 1. वि० [अ] अकेला ; केवल ; खालिस ; 2. अव्य० केवल ।

**सिल** - 1. स्त्री० [हिं] शिला, चट्टान ; मसाला आदि पीसने की पत्थर की चौकोर पटिया ; पूनी बनाने की काठ की पटरी ; इमारत में लगाने की गढ़ी हुई पटिया ; 2. पु० उंछवृत्ति ; **यौ०** —खड़ी, खरी - एक चिकना पत्थर जिसकी बुकनी से बर्तन बनाते हैं ; खरिया मिट्टी ; —पोहनी - विवाह की एक रस्म ; —बट्टा - सिल और लोढ़िया ; —हार, हारा - उंछवृत्तिवाला ।

**सिल, सिल्ल** - पु० [अ] तपेदिक, क्षयरोग ।

**सिलक** - 1. पु० [हिं] धागा ; 2. स्त्री० कतार ; लड़ी ।

**सिलकी** - पु० [हिं] बेल, श्रीफल ।

**सिलपट** - 1. वि० [हिं] चौरस, बराबर ; घिसा हुआ ; चौपट ; 2. पु० चप्पल ।

**सिलवट** - 1. स्त्री० [हिं] सिकुड़न; 2. पु० सिल; सिल और बट्टा।

**सिलवाना** - स० [हिं] किसीसे सीने का काम कराना।

**सिलसिला** - पु० [अ] पंक्ति; क्रम; बेड़ी; शृंखला; संबंध; तरतीब; वेष; यौ० —ए-कोह - पर्वतमाला; —ए-तालीम - शिक्षाक्रम; —बंदी - कतारबंदी; तरतीब; —वार - क्रमयुक्त, तरतीब-वार; मु० —निकलना - आरंभ होना; रास्ता खुलना; —निकालना - संबंध जोड़ना।

**सिलह** - पु० [अ] हथियार; यौ० —ख़ाना - शस्त्र-अस्त्रागार; —पोश - हथियारों से लैस।

**सिलहिला** - वि० [हिं] कीचड़ आदि के कारण चिकना, पिच्छल।

**सिला** - 1. पु० [अ] इनाम; बदला; [हिं] फ़सल कटने के बाद खेत में गिरे हुए दाने; उंछ-वृत्ति; फटकने के लिए रखे हुआ गल्ले का ढेर; यौ० —वाक्, वट - क्रम में; —सार - लोहा; 2. स्त्री० शिला।

**सिलाई** - स्त्री० [हिं] सीने का काम या मज़दूरी; सीने का ढंग; सीवन।

**सिलाना** - स० [हिं] सिलवाना।

**सिलाबाक** - पु० [हिं] पथरफूल।

**सिलाबी** - वि० [हिं] गीला।

**सिलावट** - पु० [हिं] पत्थर काटनेवाला, संगतराश।

**सिलाह** - पु० [अ] हथियार; यौ०—ख़ाना - शस्त्रागार; —पोश, बंद - हाथियारबंद;—साज़ - शस्त्र बनानेवाला।

**सिलाही** - पु० [हिं] सैनिक, सिपाही।

**सिलिप** - पु० [हिं] शिल्प, कारीगरी।

**सिलिया** - स्त्री० [हिं] मकान बनाने के काम आनेवाला एक प्रकार का पत्थर।

**सिलिसिलिक** - पु० [सं] गोंद।

**सिलौट, सिलौटा** पु० [हिं] सिल; सिल और बट्टा।

**सिलौटी** - स्त्री० [हिं] भाँग आदि पीसने की छोटी सिल।

**सिल्क** - 1. पु० [अंग्रे] रेशम; रेशमी वस्त्र; 2. स्त्री० [अ] धागा; पंक्ति; लड़ी; यौ०— बंदी - मालगुज़ारी की दैनिक आय का हिसाब जिसे महीने के अंत में जोड़ते हैं।

**सिल्ला** - पु० [हिं] कटनी के बाद खेत में गिरे हुए दाने; ओसाने के बाद लगा हुआ भूसे का वह ढेर जिसमें कुछ दाने रहते हैं; खलिहान में गिरा हुआ अन्न।

**सिल्ली** - स्त्री० [हिं] उस्तुरा आदि तेज़ करने का पत्थर; पत्थर की पटिया।

**सिवईं** - स्त्री० [हिं] आटे या मैदे के सुखाये हुए लच्छे जिन्हे घी में तलने के बाद चीनी के साथ दूध में पकाकर खाते हैं।

**सिवक** - पु० [सं] दर्ज़ी; सीनेवाला।

**सिवा** - 1. अव्य० [अ] अलावा, अतिरिक्त; 2. वि० अधिक; 3. स्त्री० [हिं] पार्वती; शृगाली।

**सिवान** - पु० [हिं] गाँव की सीमावर्ती भूमि; सरहद।

**सिवाय** - 1. अव्य०, 2. वि० [अ] सिवा; 3. पु० नियत वसूली के ऊपर की आमदनी।

**सिवार** - पु० [हिं] शैवाल, एक जलीय पौधा।

**सिवाला** - पु० [हिं] शिवालय, शिव का मंदिर।

**सिवाली** - पु० [हिं] हल्के रंग का पन्ना।

**सिवैयाँ** - स्त्री० [हिं] सिवईं।

**सिसकना** - अ० [हिं] भीतर ही भीतर रोना;

खुलकर न रोना ; उलटी साँस लेना ; तरसना, व्याकुल होना ; सिसकी भरना ।

**सिसकारना** - 1. अ० [हिं] मुँह से सीटी की-सी आवाज़ निकालना ; शीत्कार करना ; 2. स० कुत्तो को आक्रमण के लिए बढ़ावा देना, लहकारना ।

**सिसकारी** - स्त्री० [हिं] मुँह से निकाली हुई सीटी की-सी आवाज़ ; लहकारने की क्रिया , शीत्कार ।

**सिसकी** - स्त्री० [हिं] सिसकने की आवाज़ ; शीत्कार ।

**सिसियाँद** - स्त्री० [हिं] मछली की गंध ।

**सिसुता** - स्त्री० [हिं] बचपन ।

**सिसृक्षा** - स्त्री० [स] निर्माण की इच्छा ।

**सिहद्दा** - पु० [हिं] तीन सरहदो का मिलनस्थल ।

**सिहरना** - अ० [हिं] काँपना ; ठंड से काँपना ; भयभीत होना ; रोमांच होना ।

**सिहराना** - स० [हिं] कँपाना ; सर्दी से कँपाना ; भयभीत करना ; सहलाना ।

**सिहराना, सिहलाना** - अ० [हिं] ठडा होना ; सर्दी खाना ।

**सिहरावन** - पु० [हिं] जाड़ा ।

**सिहरी** - स्त्री० [हिं] कँपकँपी , जूड़ी का बुख़ार ; भय ; रोमाच ; शीतजन्य कंप ।

**सिहली** - स्त्री० [हिं] शीतली लता ।

**सिहाना** - 1. अ० [हिं] ईर्ष्या करना ; ललचाना ; मुग्ध होना ; देखकर प्रसन्न होना ; 2. स० ईर्ष्या या तृष्णा की दृष्टि से देखना ; प्रशंसा करना ।

**सिहारना** - स० [हिं] ढूँढ़ना ; ढूँढ़कर लाना ।

**सिहिकना** - अ० [हिं] फसल आदि का सूखना ।

**सिहिटी** - स्त्री० [हिं] सृष्टि ।

**सिहोड़, सिहोर** - पु० [हिं] थूहर ।

**सींक** - स्त्री० [हिं] झाड़ू बनाने के काम आनेवाली मूँज की जाति के एक तृण की तीली ; नाक में पहनने की कील ; किसी घास का लंबा-पतला डंठल ।

**सींकर** - पु० [हि] सीक का घूआ ।

**सींका** - पु० [हिं] पेड़-पौधों की बहुत पतली टहनी ; छींका ।

**सींकिया** - 1. वि० [हि] सीक-सा पतला ; 2. पु० एक धारीदार कपड़ा ।

**सींग** - पु० [हिं] गाय, बैल, भैस आदि चौपायो के सिर के दोनो ओर निकली हुई कड़ी नुकीली शाखाएँ जिनसे वे दूसरे प्राणियो पर आघात करते हैं, विषाण ; सीग का बना हुआ बाजा ।

**सींगड़ा** - पु० [हि] बारूददान ; सीगी ।

**सींगना** - स० [हिं] सीग के द्वारा चोरी के पशु की पहचान करना ।

**सींगरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह की फली ।

**सींगी** - स्त्री० [हिं] हिरण के सींग का बना हुआ बाजा ; शरीर पर लगाकर ख़राब ख़ून निकालने का एक सूराख़दार सींग ; **मु०** —लगाना - सींग लगाकर रक्त चूसना ।

**सींच** - स्त्री० [हिं] सींचने की क्रिया ; सिंचाई ।

**सींचना** - स० [हिं] सिंचाई करना ; छिड़कना ; तर करना ।

**सींची** - स्त्री० [हि] सीचने का समय ।

**सींवँ, सींव** - स्त्री० [हिं] सीमा, हद ; **मु०** —चरना - कष्ट पहुँचाना ।

**सी** - 1. अव्य० [हिं] 'सा' का स्त्रीलिंग रूप, समान ; 2. स्त्री० [अनु] पीड़ा की हल्की अनुभूति होने या सर्दी लगने पर मुँह से निकलनेवाली आवाज़ ।

**सीकर** - 1. पु० [सं] जलकण ; स्वेदबिन्दु ; गीदड़ ; 2. स्त्री० ज़ंजीर।

**सीकल** - पु० [हिं] सिकली ; डाल का पका हुआ आम।

**सीकस** - पु० [हिं] ऊसर भूमि।

**सीका** - पु० [हिं] सिर पर पहनने का सोने का एक गहना।

**सीकाकाई** - स्त्री० [हिं] एक वृक्ष जिसकी फलियों का झाग बाल मलने के काम आता है।

**सीख** - स्त्री० [हिं] शिक्षा ; सलाह ; **मु०** —लेना - शिक्षा या उपदेश ग्रहण करना।

**सीख़** - स्त्री० [फ़ा] लोहे की सलाख़ या छड़ जिसपर कबाब भूनते हैं ; बोरियों का मुँह सीने की छड़ की आकार की लकड़ी ; सूआ ; **यौ०** —चा - छोटी सीख़ ; —पा - पिछले पाँवों पर खड़ा होनेवाला घोड़ा ; —का कबाब - कीमे को पीसकर सीख़ पर बनाया जानेवाला कबाब।

**सीखन** - पु० [हिं] सिखावन, सीख।

**सीखना** - स० [हिं] पढ़ना ; अभ्यास करना ; अनुभव प्राप्त करना ; किसी हुनर या कला की शिक्षा प्राप्त करना।

**सीखा-पढ़ा** - वि० [हिं] चतुर ; शिक्षित।

**सीखा-सिखाया** - वि० [हिं] कुशल ; किसी कला या हुनर का जानकार।

**सीग़ा** - पु० [अ] विभाग ; साँचा ; क्रिया का रूप ; शीओं का निकाह।

**सीज, सीझ** - स्त्री० [हिं] सीझने या पकने की क्रिया।

**सीजना, सीझना** - अ० [हिं] आग और पानी की सहायता से पकना, कष्ट पाना ; ठंड खाना ; चमड़े का सिझाव से नरम या चिकना होना ; पगना ; पककर नरम होना ; प्राप्त होने की स्थिति में होना ; रिसना ; ऋण का भुगताया जाना।

**सीटना** - अ० [हिं] डींग मारना।

**सीटी** - स्त्री० [हिं] होंठों को सिकोड़कर हवा निकालने से पैदा होनेवाली सुरीली आवाज़ ; बाजे आदि से निकला हुआ सीटी-जैसा शब्द ; फूँककर बजाया जानेवाला बाजा जिससे सीटी-जैसी आवाज़ निकलती है ; **यौ०** —बाज़ - सीटी बजानेवाला।

**सीठना** - पु० [हिं] ब्याह आदि के अवसर पर स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला अश्लील गीत।

**सीठा** - वि० [हिं] फीका ; **यौ०**—पन - नीरसता।

**सीठी** - स्त्री० [हिं] साररहित वस्तु ; रस चूस या निकाल लिये जाने पर बचा हुआ फोक।

**सीढ़ी** - स्त्री० [हिं] ज़ीना, ऊँचे स्थान पर पहुँचने के लिए बना हुआ (लकड़ी, पत्थर, लोहे आदि के) पायों या डंडों का क्रमवार सिलसिला ; उन्नतिक्रम।

**सीत** - पु० [हिं] शीत ; **यौ०** —पकड़ - हाथियों को होनेवाला एक शीतजन्य रोग।

**सीतल** - वि० [हिं] शीतल ; **यौ०**—पाटी - एक प्रकार की बहुत बढ़िया और चिकनी चटाई ; एक प्रकार का धारीदार कपड़ा ; —बुकनी - सत्तू।

**सीतला** - स्त्री० [हिं] शीतला ; **यौ०**—मुँहदगा - जिसके मुँह पर चेचक के दाग हों ; —का खाजा - दूधपीता बच्चा।

**सीता** - स्त्री० [सं] जोती हुई ज़मीन ; कृषि-कर्म ; कृषि की अधिष्ठात्री देवी ; फाल ; हल के फाल से धरती में बननेवाली

रेखा ; जनक की कन्या जो राम को ब्याही गयी ; **यौ०**—द्रव्य - खेती के औज़ार ; —फल - शरीफ़ा ; कुम्हड़ा ।

**सीत्कार** - पु० } [सं] सी-सी की ध्वनि;
**सीत्कृति** - स्त्री } सिसकी ।

**सीथ** - पु० [हिं] पके हुए चावल का दाना, भात ।

**सीदना** - अ० [हिं] कष्ट पाना ।

**सीध** - 1. पु० [सं] आलस्य ; 2. स्त्री० [हिं] सीधा होने का भाव ; ऋजुता ; निशाना ; मु० —बाँधना - निशाना बाँधना ।

**सीधा** - 1. वि० [हिं] सरल, ऋजु ; भला ; भोला-भाला , आसान (काम) ; विनीत ; दाहिना ; जो ठीक सामने की ओर या किसी एक ही दिशा में गया हो ; 2. पु० भोजन की असिद्ध कच्ची सामग्री जो किसीको पकाकर खाने के लिए या दानरूप में दी जाती है ; 3. अव्य० ठीक सामने ; बिना और कहीं गये या रुके ; **यौ०** —दिन - सुदिन ; —पन - भोलापन ; —सादा - भोला-भाला, सरलस्वभाव ; —तीर-सा - बिलकुल सीधा ; ठीक सामने ।

**सीधी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [हिं] सीधा ; **यौ०** —आँख - कृपादृष्टि; दाहिनी आँख; —तरह - भलमनसी से ; —नज़र, निगाह - कृपादृष्टि ; प्रसन्नतासूचक दृष्टि ; —बात - खुली या साफ़ बात ; आसानी से समझ में आनेवाली बात ; —राह - भलाई का रास्ता ; —लकीर - सरल रेखा; मु०—उँगलियों घी नहीं निकलता - नरमी से काम नहीं चलता ; —सुनाना - खरी-खरी सुनाना ; खुली गालियाँ देना ।

**सीधे** - अव्य० [हिं] ठीक सामने ; बिना और कहीं गये या रुके ; नरमी या भलमनसी से ; सिधाई से ; **यौ०** —मुँह - शिष्टता या भलमनसी से ; —से - सिधाई से ।

**सीन** - पु० [अंग्रे] दृश्य ; नाटक का कोई पर्दा ; घटनास्थल ; **यौ०** —सीनरी - रंगमंच की सजावट का सामान ।

**सीनरी** - स्त्री० [अंग्रे] स्थानविशेष के प्राकृतिक दृश्य ; रंगमंच की सजावट का सामान ।

**सीना** - 1. स० [हिं] सिलाई करना ; **यौ०** —पिरोना - सिलाई-बुनाई का काम करना ; सिलाई का काम ; 2. पु० [फ़ा] छाती ; **यौ०** —चाक - भग्नहृदय ; —ज़न - छाती पीटनेवाला ; —ज़नी - छाती पीटना ; —ज़ोर - बली, ज़बरदस्त ; —ज़ोरी - ज़बरदस्ती ; धींगाधींगी ; —तोड़ - कुश्ती का एक पेंच ; —बंद - अँगिया ; तंग के ऊपर कसी जानेवाली घोड़े की पेटी ; रूईदार वास्कट ; —साफ़ - साफ़ दिल का ; —सिपर - युद्ध में डटा रहनेवाला ; —सियाह - खोटे दिल का ; सीने का उभार - स्तन का उभर आना ; मु० सीने पर हाथ मारना - छाती पीटना ; सीने में जगह देना - प्यार करना; सम्मान करना ; सीने में साँस समाना - हाँफना बंद होना ।

**सीनी** - स्त्री० [फ़ा] तांबे, पीतल या किसी और धातु का थाली की शकल का बड़ा बर्तन ।

**सीप** - 1. पु०, स्त्री० 2. [हिं] शुक्ति, शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलचर प्राणी ।

**सीपी** - स्त्री० [हिं] सीप ; मु० —सा मुँह निकल आना - इतना दुबला हो जाना कि चेहरे की हड्डियाँ निकल आयें ।

**सीमंत** - पु० [सं] सिर में निकाली हुई

माँग ; सीमारेखा ; हड्डियों का जोड़ ; सीमंतोन्नयन-संस्कार ; यौ० —करण - माँग काढ़ना ।

**सीमंतक** - पु० [सं] ईगुर, सिंदूर ; माँग काढ़ना ; नरकावास ; लाल रत्न का एक भेद ।

**सीमंतिनी** - स्त्री० [सं] नारी ।

**सीम** - स्त्री० [फ़ा] चाँदी ; यौ० —अंदाम, तन - गोरा-चिट्टा ; सुंदर ; —कश - चोर ; तरकश ; —गर - सुनार ; —गूँ - चाँदी के रंग का ; [हिं] सीमा ; मु० —चाँपना - दूसरे की हद में घुसकर उसकी ज़मीन पर कब्ज़ा करना ।

**सीमांत** - पु० [सं] सीमा ; सीमावर्ती स्थान ; यौ० —पूजन - सीमा की पूजा ; गाँव की सीमा पर आने पर की जानेवाली वर की पूजा ; —प्रदेश - सरहदी इलाका ; दो देशों के बीच की भूमि ; —लेखा - अंतिम छोर ।

**सीमा** - स्त्री० [सं] हद ; आचार की मर्यादा ; खेत या गाँव आदि की सीमा पर का बाँध ; बाँध ; किनारा ; खोपड़ी आदि का जोड़ ; क्षितिज ; खेत ; ग्रीवा का पृष्ठभाग ।

**सीमातिक्रमण** - पु० [सं] सीमा का उल्लंघन ।

**सीमाब** - पु० [फ़ा] पारा ।

**सीमाबी** - वि० [फ़ा] पारे के रंग का ।

**सीमावरोध** - पु० [सं] हदबंदी ।

**सीमिया** - पु० [फ़ा] इंद्रजाल विद्या ; पर-काय-प्रवेश विद्या ।

**सीमीं** - वि० [फ़ा] चाँदी का ।

**सीमुर्ग** - पु० [फ़ा] एक कल्पित विशाल-काय पक्षी ।

**सीमोल्लंघन** - पु० [सं] सीमा पार करना ।

**सीयन** - स्त्री० [हिं] सिलाई ; सिलाई का जोड़ ।

**सीर** - 1. पु० [सं] हल ; हल में जोता जानेवाला बैल ; आक ; सूर्य ; [हिं] रक्तनलिका ; 2. स्त्री० वह ज़मीन जिसे ज़मींदार ख़ुद जोतता है ; 3. वि० शीतल ; मु० —करना - ज़मींदार का किसी ज़मीन को ख़ुद जोतना ।

**सीरत** - स्त्री० [अ] चरित्र ; जीवन-चरित्र ; स्वभाव ।

**सीरतन्** - अव्य० [अ] विचार से ।

**सीरा** - 1. पु० [हिं] शीरा ; सिरहाना ; 2. वि० ठंडा ; शांत ।

**सील** - 1. पु० [हिं] शील ; [सं] हल ; 2. स्त्री० ज़मीन की नमी ; मूँछें निकलते समय के छोटे-छोटे बाल, मसें ।

**सीला** - पु० [हिं] उंछवृत्ति ; डंठल से झड़े हुए दाने जो फ़सल कटने के बाद खेत में पड़े रह जाते हैं ।

**सीवक** - पु० [सं] सीनेवाला ।

**सीवन** - स्त्री० [सं] सिलाई ; सिलाई का जोड़ ; टाँका ; संधि ।

**सीस** - पु० [सं] सीसा ; [हिं] सिर ; यौ० —फूल - सिर पर पहनने का एक गहना ; —महल - सब दीवारों पर शीशे से जड़ा हुआ कमरा या मकान ।

**सीसम** - पु० [हिं] दरवाज़ा या टेबुल-कुर्सी आदि बनाने के काम आनेवाला एक प्रसिद्ध पेड़ तथा उसकी लकड़ी ।

**सीसा** - पु० [हि] एक प्रसिद्ध धातु जिसकी गोलियाँ आदि बनती हैं, और जिसका भस्म औषधरूप में भी काम में लाया जाता है ; शीशा ।

**सीसी** - स्त्री० [अनु] 'सी-सी' की आवाज़ ; [हिं] शीशी ।

**सीहुंड** - पु० [सं] थूहर ।

**सुँघनी** - स्त्री० [हिं] नास, तंबाकू के पत्ते का बारीक़ चूर्ण ; सूँघने की चीज़ ।

**सुँघाना** - स० [हिं] आघ्राण कराना ; किसीको सूँघने के लिए प्रेरित करना ।
**सुँड़ा** - स्त्री० [हिं] सूँड़ ; लद्दू गधे की पीठ पर रखने का गद्दा ।
**सुँडाल** - पु० [हिं] हाथी ।
**सुंदर** - 1. वि० [सं] खूबसूरत ; अच्छा ; 2. पु० कामदेव ; एक नाग ; एक पेड़ ; लंका का एक पर्वत ।
**सुंदरता** - स्त्री० [सं] खूबसूरती ;
**सुंदराई** - स्त्री० [हिं] सुंदरता ।
**सुंदरापा** - पु० [हिं] सुंदरता ।
**सुंदरी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] रूपवती स्त्री ; त्रिपुरसुंदरी देवी ; सुन्दर स्त्री ; वृक्ष-विशेष ; वैश्वानर की एक कन्या ; सितार या इसराज में लगे हुए लोहे के छल्ले जो विभिन्न सप्तको के अन्तर्गत विशेष स्वरों के स्थान होते है ।
**सुँधाई** - स्त्री० [हिं] सौंधापन ।
**सुँधिया** - स्त्री० [हिं] एक तरह की ज्वार ।
**सुंबा, सुंभा** - पु० [हिं] पत्थर तोड़ने का एक भारी औज़ार ; खूँटी , तोप का गज।
**सुंबी** - स्त्री० [हिं] लोहे में छेद करने की छेनी ।
**सुंबुला** - पु० [फ़ा] गेहूँ या जौ की बाल ।
**सु** - 1. उप० [सं] शब्दो के साथ जुड़कर अधिक, अतिशय, उत्तम, अनायास, भलीभाँति, पूरे तौर पर, सुन्दर आदि अर्थो का द्योतन करनेवाला उपसर्ग ; 2. पु० अनुमति ; कष्ट ; आनंद ; पूजा ; समृद्धि ; सुन्दरता ; 3. वि० अच्छा ; भला ; सम्मान के योग्य ।
**सुअ** - पु० [हिं] पुत्र ।
**सुअटा** - पु० [हिं] तोता, शुक ।
**सुअन** - पु० [हिं] पुत्र ।
**सुअर** - पु० [हिं] सूअर ; **यौ०** —**दंता** - जिसके दाँत सूअर के-से हो ।
**सुअवसर** - पु० [हिं] अच्छा अवसर ।
**सुआ** - पु० [हिं] तोता ; बड़ी सुई ।
**सुआऊ** - वि० [हिं] दीर्घायु ।
**सुआद** - पु० [हिं] स्वाद ।
**सुआसन** - पु० [हिं] बढ़िया आसन ।
**सुआहित** - पु० [हिं] तलवार का एक हाथ।
**सुई** - स्त्री० [हिं] सूची, सूई ।
**सुकंठ** - वि० [सं] सुरीला ।
**सुकंद** - पु० [सं] प्याज ।
**सुक** - पु० [हिं] तोता, शुक ; **यौ०**—**नासा** - तोते की चोच-जैसी नुकीली नाकवाला ।
**सुकड़ना** - अ० [हिं] ठिठुरना ; शिकन पड़ना ; सिमटना ।
**सुकर** - 1. वि० [सं] आसानी से करने योग्य, सुसाध्य ; सरल ; 2. पु० दान ; परोपकार ; सीधा घोड़ा ।
**सुकरा** - स्त्री० [सं] सीधी गाय ।
**सुकरित** - 1. वि० [हिं] अच्छा ; 2. पु० सुकृत ।
**सुकर्मा** - 1. वि० [सं] कार्य करने में कुशल ; सत्कर्म करनेवाला, पुण्यशाली ; 2. पु० कुशल कारीगर ; विश्वकर्मा ; फलित ज्योतिष के सत्ताईस योगो में से एक ।
**सुकल** - वि० [सं] अपने धन का दान और भोग में सदुपयोग करनेवाला ।
**सुकल्पित** - वि० [सं] हथियारो से लैस ।
**सुकवाना** - अ० [हिं] चकित होना ।
**सुकाज** - पु० [हिं] अच्छा काम ।
**सुकाना** - स० [हिं] सुखाना ।
**सुकानी, सुखानी** - पु० [हिं] मल्लाह ; [अ] पतवार ।
**सुकाम** - वि० [सं] अच्छी कामनाओं-वाला ; **यौ०** —**द** - कामनाएँ पूरी करनेवाला ।

**सुकाल** - पु० [सं] अच्छा समय ; वह वर्ष जिसमें ख़ूब अन्न उपजा हो, सुभिक्ष ।
**सुकी** - स्त्री० [हिं] तोते की मादा, सुग्गी ।
**सुकीर्ति** - स्त्री० [सं] नेकनामी, सुयश ।
**सुकुड़ना** - अ० [हिं] सिकुड़ना ।
**सुकुमार** - 1. वि० [सं] कोमल ; कोमल अंगोवाला; बहुत नाज़ुक ; चिकना ; 2. पु० सुंदर, कोमलांग बालक या किशोर ; काव्य का एक गुण ; एक नाग ; एक दैत्य ; एक तरह की ईख ; वनचंपा ।
**सुकुमारी** - 1. वि० [सं] कोमलांगी ; 2. स्त्री० कोमलांगी बालिका ; नवमल्लिका ।
**सुकुल** - वि० [सं] कुलीन ; [हिं] शुक्ल ।
**सुकुवाँर, सुकुवार** - वि० [हिं] सुकुमार ।
**सुकूत** - पु० [अ] मौन ।
**सुकून** - वि० [अ] आराम ; विराम ; शांति; साकिन ; स्वररहित वर्ण का चिह्न ।
**सुकूनत** - स्त्री० [अ] निवास ।
**सुकृत** - 1. पु० [सं] दया ; दान , सत्कर्म ; सौभाग्य ; 2. वि० ठीक तरह से किया हुआ ; पारितोषिक ; पूर्ण रूप से किया हुआ ; भाग्यवान ; शुभ ; यौ० —कर्म - पुण्य कर्म ।
**सुकृतात्मा** - वि० [सं] धर्मात्मा ।
**सुकृति** - 1. स्त्री० [स] सत्कर्म ; मंगल ; 2. वि० धर्मात्मा ।
**सुकृती** - वि० [सं] धार्मिक ; बुद्धिमान ; भाग्यशाली ।
**सुकृत्** - 1. वि० [सं] पुण्यवान ; बुद्धिमान ; भाग्यशाली ; विद्वान , 2. पु० कुशल कार्यकर्ता ।
**सुकृत्य** - पु० [सं] सत्कर्म ।
**सुकेश** - वि० [सं] सुंदर बालोंवाला ।
**सुकेशा** - वि० [सं] सुंदर बालोवाली ।
**सुक्कान** - पु० [अ] नाव ; पतवार ; रहनेवाले ।
**सुक्त** - पु० [सं] एक तरह की काँजी ।
**सुक्ता** - स्त्री० [सं] इमली ।
**सुक्रतु** - 1. पु० [सं] शिव ; अग्नि ; इंद्र ; मित्रावरुण ; सूर्य ; सोम ; 2. वि० सत्कर्म करनेवाला ।
**सुक्रय** - पु० [स] अच्छा सौदा ।
**सुक्षत्र** - वि० [सं] अच्छा शासन करनेवाला; विस्तृत राज्यवाला ; शक्तिशाली ।
**सुक्षेत्र** - 1. पु० [सं] उत्तम क्षेत्र ; वह मकान जिसमें दक्षिण-पश्चिम और उत्तर की ओर दालान हो ; 2. वि० अच्छी कोख से उत्पन्न ; उत्तम क्षेत्रोवाला ।
**सुखंडी** - 1. स्त्री० [हिं] बच्चो को होनेवाला एक सूखा रोग ; 2. वि० क्षीण ।
**सुख** - 1. पु० [सं] शरीर और मन को अच्छी लगनेवाली अनुभूति ; आराम ; आनंद; आमोद ; अभ्युदय ; कामना की पूर्ति से होनेवाला आनंद ; चैन ; आरोग्य ; जल ; सुविधा ; स्वर्ग ; 2. वि० अनुकूल ; ख़ुश ; प्रसन्न ; धार्मिक ; उपयुक्त ; सरल ; यौ० —आसन - पालकी ; —कंद - सुख देनेवाला ; —कर - आनंददायक; सरल; —करण - सुखोत्पादक ; —कारक, कारी - सुखदायक ; —ग्राह्य - सुबोध ; —चर - आराम से जानेवाला ; —चित्त - मानसिक शांति ; —जनक - सुख देने या उपजानेवाला ; —जननी - सुख देने या उपजानेवाली ; —तला - जूते के अंदर रखने का चमड़े का एक टुकड़ा ; —द - आनंददायक ; —दा - सुख देनेवाली ; गंगा नदी ; अप्सरा ; शमीवृक्ष ; —दाता, दायक - आनंददायक ; —दायी - आनंद देनेवाली ; —दुख - आनंद और शोक ; आराम और कष्ट ; —दृश्य - प्रियदर्शन ; —धाम - वैकुंठ ; —प्र -

आरामतलब ; —पाल - एक प्रकार की पालकी , —पेय - पीने में आनंददायक या आसान ; —प्रद - आनंददायक ; —प्रश्न - कुशलप्रश्न ; —प्रसवन - आराम से होनेवाला प्रसव ; —प्राप्त - आसानी से मिला हुआ ; सुखी ; —बोध - सरल ज्ञान ; सुख की अनुभूति ; —भागी - सुख भोगनेवाला, सुखी ; —भोजन - स्वादिष्ठ भोजन ; —रात्रि, रात्रिका - सुहागरात ; दिवाली की रात ; शांत और आनंददायक रात ; —लिप्सा - सुख की इच्छा ; —वास - आनंददायक स्थान ; —विहार - आराम की ज़िन्दगी ; आराम से ज़िन्दगी बितानेवाला ; —वेदन - सुख की अनुभूति , —शांति - सुख-चैन ; —संपत्ति - शरीर और मन का सुख तथा धन-संपत्ति ; —सलिल - कुनकुना या गरम पानी , —साधन - सुख प्राप्त करने का ज़रिया ; —साध्य - सहज ; आसानी से दूर होनेवाला (रोग) ;—सार - मोक्ष ; —सुप्ति - सुख की नींद ; —सौभाग्य - सुख-चैन और धन-मान ; —स्पर्श - जिसका स्पर्श सुखद हो ; —हस्त - जिसका हाथ मुलायम हो ; **मु०**— की नींद सोना - आराम की नींद सोना।

**सुख़न, सुख़ुन** - पु० [अ] उक्ति ; कविता ; क़ौल , वचन; बातचीत, **यौ०** — तकिया - अवलंबन ; वह शब्द या लघु वाक्य जो सार्थक होते हुए भी निरर्थक होता है और जिसका कुछ लोग अभ्यासवश वाक्य के प्रारंभ या बीच में प्रयोग करते है ; —दाँ - कवि ; सुलेखक ; —दानी - शायरी ; —फ़हम - काव्य-रसिक , बुद्धिमान ; —साज़ - धोखेबाज़ ; बात बनानेवाला ।

**सुखवंत** - वि० [हिं] प्रसन्न ; सुखद ।

**सुखवन** - पु० [हि] सूखने के लिए धूप में डाला हुआ अनाज ; सूखने से तौल में होनेवाली कमी ; सुखाने के लिए डाली जानेवाली रेत ; गीली लिखावट ।

**सुखवार** - वि० [हिं] सुखी ; प्रसन्न ।

**सुखांत** - वि० [सं] मैत्रीपूर्ण ; जिसका अंत या परिणाम सुखमय हो ; सुख का नाश करनेवाला ; **यौ०** —नाटक - नाटक का एक प्रकार जिसका अंत सुखमय होता है ।

**सुखाना** - स० [हिं] गीली चीज़ को सूखी बनाना ; तरी या गीलापन दूर करना ।

**सुखारा, सुखारी** - वि० [हिं] सुखमय ।

**सुखार्थी** - वि० [सं] सुख चाहनेवाला ।

**सुखावह** - वि० [हिं] सुखजनक ।

**सुखासन** - पु० [सं] पालकी ; पद्मासन ; वह आसन जिसपर बैठने से आराम मिले ।

**सुखी** - 1. वि० [सं] ख़ुशहाल ; प्रसन्न ; सुखयुक्त ; 2. पु० यति ।

**सुख्याति** - स्त्री० [सं] प्रसिद्धि ।

**सुगंध** - 1. वि० [सं] सुंदर गंधवाला, ख़ुशबूदार ; 2. स्त्री० अच्छी गंध ; 3. पु० चंदन ; नीलकमल ; व्यापारी ; तुंबुरू ; चना ; राल ; बासमती चावल , **यौ०** —गण - कपूर, कस्तूरी, अगर आदि सुगंधित द्रव्यों का वर्ग ; —त्रिफला - जायफल, लौंग और इलायची ; —शालि - बासमती चावल ।

**सुगंधि** - 1. वि० [सं] सुंदर गंधवाला, ख़ुशबूदार , पुण्यात्मा ; 2. स्त्री० अच्छी गंध ; 3. पु० परमात्मा ; चंदन ; गंध-तृण ; पिप्पलीमूल ; मोथा ; धनियाँ ।

**सुगंधित** - वि० [सं] सुगंधयुक्त ।

**सुगंधी** - वि० [सं] ख़ुशबूदार ।

**सुगठन** - स्त्री० [हिं] सुंदर गठन ; अंग-सौष्ठव ।

**सुगठित** - वि० [हिं] अंगसौष्ठवयुक्त ; कसा हुआ ; सुंदर गठन ।

**सुगत** - 1. वि० [सं] सुंदर गति या चालवाला ; स्वर्गस्थ ; आसान ; 2. पु० बुद्ध भगवान ।

**सुगति** - 1. स्त्री० [सं] कल्याण ; सद्गति; सुख ; सुरक्षित आश्रयस्थान ; 2. वि० सुंदर गति या स्थितिवाला ।

**सुगम** - वि० [सं] आसान ; सरलता से जाने या पाने योग्य ।

**सुगमता** - स्त्री० [सं] आसानी ।

**सुगाना** - 1. अ० [हिं] क्रुद्ध होना ; 2. स० शक होना ।

**सुगीत** - 1. पु० [सं] सुंदर गान ; 2. वि० अच्छी तरह गाया हुआ ।

**सुगुप्त** - वि० [सं] अच्छी तरह छिपाया हुआ ।

**सुगृह** - पु० [सं] सुंदर गृह ; बया पक्षी ।

**सुगृहीत** - वि० [सं] अच्छी तरह पकड़ा हुआ ; अच्छी तरह समझा हुआ ; प्रातःस्मरणीय ।

**सुगैया** - स्त्री० [हिं] चोली ।

**सुग्रह** - वि० [सं] बढ़िया मूठवाला ; सुबोध ; सुलभ ।

**सुघड़** - वि० [हिं] जिसकी बनावट सुंदर हो ; सुडौल ; किसी कार्य में कुशल या चतुर ; यौ० —पन - कुशलता ; सुंदरता ।

**सुघड़ई, सुघड़ता** - स्त्री० [हिं] निपुणता ; सुन्दरता ; सुघड़पन ।

**सुघड़ाई** - स्त्री० } [हिं] सुन्दरता ; कुशलता ।
**सुघड़ापा** - पु० }

**सुघड़ी** - स्त्री० [हिं] अच्छी शुभ घड़ी ।

**सुघर** - वि० [हिं] सुघड़ ।

**सुचना** - स० [हिं] जोड़ना ; संचय करना ।

**सुचरित** - 1. वि० [सं] उत्तम रूप में किया हुआ ; सदाचारी ; 2. पु० अच्छा चाल-चलन ; गुण ; सदाचार ।

**सुचरिता** - स्त्री० [सं] पतिव्रता स्त्री ।

**सुचरित्र** - 1. वि० [सं] सदाचारी ; 2. पु० सदाचार ।

**सुचा** - स्त्री० [हिं] ज्ञान या चेतना ; विचार ।

**सुचाना** - स० [हिं] ध्यान आकृष्ट करना ; समझाना ; सोचने की क्रिया दूसरे से कराना ।

**सुचारु** - वि० [स] मनोहर ; सुन्दर ।

**सुचाल** - स्त्री० [हिं] अच्छी चाल ।

**सुचाली** - वि० [हिं] नेकचलन, अच्छे चाल-चलनवाला ।

**सुचाव** - पु० [हिं] सुचाना ; सूचना ।

**सुचिंतन** - पु० [सं] गंभीर चिंतन ।

**सुचिंतित** - वि० [सं] अच्छी तरह सोचा-विचारा हुआ ।

**सुचि** - 1. वि० [हिं] शुचि ; 2. स्त्री० सूई ।

**सुचित्त** - वि० [सं] चिन्तानिवृत्त ; संपन्न ; स्थिरचित्त ।

**सुचित्र** - वि० [सं] विभिन्न प्रकार का ; विभिन्न रंगो का ।

**सुचेत** - वि० [हिं] सचेत ; सावधान ।

**सुचेता** - वि० [सं] उदाराशय ; बुद्धिमान ; सुन्दर चित्तवाला ।

**सुजन** - पु० [सं] सज्जन ; स्वजन ।

**सुजनता** - स्त्री० [स] भलमनसी ।

**सुजनी** - स्त्री० [फ़ा] कपड़े को अनेक तहों में साटकर और ऊपर सुई से बारीक़ काम करके बनाया हुआ बिछौना ।

**सुजागर** - वि० [हिं] मनोहर ; सुंदर ।

**सुजात** - वि० [सं] कुलीन , अच्छा बढ़ा हुआ ; सुंदर ।

**सुजान** - 1. वि० [हि] चतुर ; ज्ञानी ; प्रवीण ; 2. पु० प्रभु , प्रेमी ।

**सुजानता** - स्त्री० [हिं] सुजान होना।
**सुजीर्ण** - वि० [सं] अच्छी तरह पचा हुआ ; क्षीण ; जीर्ण-शीर्ण।
**सुजोर** - वि० [हिं] दृढ़ ; बलवान।
**सुज्ञ** - वि० [सं] पंडित ; सुविज्ञ।
**सुज्ञान** - वि० [सं] ज्ञानी ; सुबोध।
**सुझाना** - 1. स० [हिं] दिखाना ; बताना ; 2. अ० दिखायी देना ; सूझ पड़ना।
**सुझाव** - पु० [हिं] सुझाने की क्रिया, सुझाई हुई बात या तजबीज, सलाह।
**सुटुकना** - 1. अ० [हिं] चुपके से निकल जाना ; सिकुड़ना ; 2. स० चाबुक लगाना ; निगल जाना।
**सुठि** - 1. वि० [हिं] अच्छा, सुंदर ; 2. अव्य० पूरा-पूरा ; बहुत ज़्यादा।
**सुठोना** - वि० [हिं] अच्छा ; सुंदर।
**सुड़क** - स्त्री० [हिं] सुड़कने की क्रिया या भाव।
**सुड़कना** - स० [हिं] किसी तरल पदार्थ को नाक की राह सांस के साथ भीतर खीचना ; नास लेना ; पी जाना ; नाक के मल को ऊपर की ओर खींचकर निगलना।
**सुड़सुड़** - स्त्री० [अनु] हुक्के को खीचकर पीने से निकलनेवाली आवाज़।
**सुडौल** - वि० [हिं] सुंदर डौल या बनावट-वाला।
**सुढंग** - 1. पु० [हिं] अच्छा या सुंदर ढंग ; 2. वि० अच्छे स्वभाव का ; सुघड़।
**सुढर** - वि० [हिं] प्रसन्न ; सुडौल।
**सुत** - 1. वि० [सं] पैदा किया हुआ ; निचोड़कर निकाला हुआ (वैशेषिक) ; 2. पु० पुत्र ; जन्मलग्न से पाँचवाँ स्थान; राजा ; सोमरस ; यौ० —सुत - पौत्र।
**सुतना** - 1. पु० [हिं] सूथन ; 2. अ० सोना।
**सुतनु** - वि० [सं] सुंदर शरीरवाला ; बहुत ही नाजुक ; दुबला-पतला।
**सुतप** - पु० [सं] तपश्चर्या।
**सुतरण** - वि० [सं] जिसे आसानी से पार किया जा सके (नदी)।
**सुतरां, सुतराम्** - अव्य० [सं] अतिशय ; अतः ; और अधिक ; किंबहुना।
**सुतरी** - स्त्री० [हिं] तुरही ; सुतारी।
**सुतल** - पु० [सं] पाताल अथवा नीचे के सात लोकों में से छठा।
**सुतली** - स्त्री० [हि] सन या पटसन के रेशों से बटकर बनायी हुई डोरी।
**सुतवाना** - स० [हिं] सोने में प्रवृत्त करना।
**सुतहा** - 1. पु० [हिं] सीपी ; सूत का व्यापार करनेवाला ; 2. वि० सूत-संबंधी।
**सुतही** - 1. स्त्री० [हिं] सीपी ; 2. वि० सूत-संबंधी।
**सुता** - स्त्री० [सं] बेटी।
**सुतार** - 1. पु० [हिं] बढ़ई ; अनुकूल अवसर ; 2. वि० [स] अत्युच्च ; बहुत चमकीला ; बहुत अच्छा, जिसकी आँख की पुतलियाँ सुंदर हो।
**सुतारी** - स्त्री० [हिं] बढ़ईगिरी ; जूता सीने का सूआ।
**सुतिया** - स्त्री० [हिं] भली स्त्री ; गले में पहनने का एक गहना।
**सुतीक्ष्ण** - वि० [सं] अति तीक्ष्ण।
**सुतीर्थ** - 1. वि० [सं] जो आसानी से पार किया जा सके ; 2. पु० अच्छा मार्ग, पवित्र स्नानस्थल ; पूज्य वस्तु ; शिव।
**सुतुही** - स्त्री० [हि] सीपी ; वह सीपी जो पोस्त से अफीम खुरचने के काम आता है।
**सुतूर** - पु० [फ़ा] चौपाया।
**सुथना** - पु० [हिं] पायजामा।
**सुथनी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियो के पहनने का ढीला पायजामा।

**सुथरा** - वि० [हिं] निर्दोष; परिष्कृत; स्वच्छ; यौ० —पन - परिष्कार; स्वच्छता।

**सुथराई** - स्त्री० [हिं] सुथरापन।

**सुथरी** - वि० [हिं] निर्दोष; परिष्कृत; यौ० —ज़बान - परिष्कृत भाषा।

**सुदंड** - पु० [सं] बेत।

**सुदंत** - 1. वि० [सं] सुंदर दाँतोंवाला; 2. पु० अच्छा दाँत; नट; नर्तक।

**सुदक्षिण** - वि० [स] बहुत कुशल; बहुत उदार; सच्चा; नम्र।

**सुदर्शन** - वि० [सं] प्रियदर्शन, सुंदर; जिसका सहज में दर्शन हो सके।

**सुदर्शना** - 1. वि० [सं] सुंदरी; 2. स्त्री० सुंदर नारी; चाँदनी रात, जामुन का पेड़; अमरावती; आज्ञा; सोमवल्ली लता; पद्मसरोवर।

**सुदामा** - पु० [सं] एक पर्वत; ऐरावत; बादल; कृष्ण का एक सहपाठी; समुद्र।

**सुदाय** - पु० [सं] उत्तम दान; उपनयन-काल में ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा; कन्यादान-काल में जामाता आदि को दिया जानेवाला दान।

**सुदि** - स्त्री० [हिं] शुक्लपक्ष।

**सुदिन** - पु० [सं] शुभ दिन, सुख के दिन; सौभाग्यकाल।

**सुदी** - स्त्री० [हिं] शुक्लपक्ष।

**सुदीक्षा** - स्त्री० [सं] लक्ष्मी।

**सुदीर्घ** - वि० [सं] बहुत लंबा (देश-काल); सुविस्तृत।

**सुदुस्तर, सुदुस्तार** - वि० [सं] जिसे पार करना बहुत कठिन हो।

**सुदूर** - 1. अव्य० [सं] बहुत दूर, 2. वि० बहुत दूर का; यौ० —पूर्व - अति पूर्व के देश (चीन, जापान आदि); 3. पु० [अ] जारी होना; पहुँचना।

**सुदृढ़** - वि० [सं] बहुत मज़बूत; सुरक्षित।

**सुदृष्टि** - 1. वि० [सं] अच्छी निगाह-वाला; 2. पु० गिद्ध; 3. स्त्री० पैनी दृष्टि।

**सुदेव** - पु० [सं] अच्छा या सच्चा देवता; क्रीड़ाशील नायक।

**सुदेश** - 1. पु० [सं] उपयुक्त स्थान; अच्छा या सुंदर देश, 2. वि० सुंदर।

**सुदेशिक** - पु० [सं] अच्छा पथप्रदर्शक।

**सुदेस** - 1. पु० [हिं] अच्छा स्थान; स्वदेश; 2. वि० अच्छा; सुंदर।

**सुद्दा** - पु० [अ] आँतों में चिपक जानेवाला कड़ा मल जो मलावरोध का कारण होता है।

**सुद्धाँ** - अव्य० [हि] साथ, समेत।

**सुद्रष्टा** - वि० [स] अच्छी पैनी दृष्टिवाला।

**सुध** - 1. स्त्री० [हिं] याद; होश; 2. वि० शुद्ध; यौ० —बुध - होश-हवास।

**सुधरना** - अ० [हि] दुरुस्त होना; दोष या विकृति का दूर होना।

**सुधराई** - स्त्री० [हिं] सुधार; सुधारने की उजरत।

**सुधर्म** - पु० [सं] उत्तम धर्म; कर्तव्य; किन्नरों का एक अधिपति।

**सुधर्मा** - स्त्री० [सं] देवसभा।

**सुधर्मी** - वि० [सं] धर्मनिष्ठ।

**सुधाँ** - अव्य० [हि] साथ, समेत।

**सुधांशु** - पु० [सं] कपूर; चंद्रमा।

**सुधा** - स्त्री० [सं] अमृत; जल; दूध; मकरंद; रक्त; रस; गंगा; आमला; बिजली; विष; हड़, पृथ्वी; शहद, थूहड़; चूना; सफ़ेदी, ईंट; घर; वधू; पुत्री, यौ० —कंठ - कोयल; —कार - राज; —क्षालित - सफ़ेदी किया हुआ; —द्रव - अमृतोपम पेय; कलई; —धर - चंद्रमा; —धवल - चूना-सा

सफ़ेद ; सफ़ेद ; सफ़ेदी किया हुआ ; —धाम - चंद्रमा ; —निधि - चंद्रमा ; समुद्र ; —योनि, रश्मि - चंद्रमा ; —रस - अमृत ; दूध ;—वर्षा, वृष्टि - अमृत का वर्ष ; —वर्षी - अमृत बरसानेवाला; —सित - अमृत या चूने-जैसा सफ़ेद ।

**सुधाकर** - पु० [सं] चंद्रमा ।

**सुधाधर** - वि० [सं] जिसके अधर में अमृत हो ।

**सुधाधार** - पु० [सं] अमृतपात्र ; चंद्रमा ।

**सुधाना** - स० [हिं] सुध कराना ; याद दिलाना ।

**सुधार** - पु० [हिं] दोष दूर करने या होने का भाव , संस्कार ।

**सुधारक** - पु० [हिं] सुधार करनेवाला ; सुधार का आन्दोलन करनेवाला ।

**सुधारना** - स० [हिं] दोष या त्रुटि दूर करना ; संस्कार करना ।

**सुधारा** - वि० [हिं] भोला ; सीधा ।

**सुधी** - 1. पु० [सं] बुद्धिमान व्यक्ति ; पंडित ; 2. स्त्री० सुबुद्धि ; 3. वि० तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

**सुधीर** - वि० [सं] धैर्यवान ।

**सुधौत** - वि० [सं] अच्छी तरह धुला या साफ़ किया हुआ ; चमकाया हुआ ।

**सुनगुन** - स्त्री० [हिं] कानाफूसी ; उठती हुई ख़बर ; टोह ।

**सुनत** - 1. वि० [सं] बहुत झुका हुआ ; 2. स्त्री० [अ] सुन्नत ।

**सुनना** - स० [हिं] श्रवणेंद्रिय से शब्द-ग्रहण करना ; ध्यान देना ; बुरा-भला कहना ।

**सुनबहरी** - स्त्री० [हिं] एक तरह का कुष्ठरोग जिसमें रुग्णस्थल सुन्न हो जाता है ।

**सुनय** - पु० [सं] सुनीति ; सदाचार ।

**सुनयना** - 1. वि० [सं] सुलोचना ; 2. स्त्री० नारी ।

**सुनरिया, सुनरी** - स्त्री० [हि] सुन्दरी ।

**सुनवाई** - स्त्री० [हिं] मुक़द्दमे या फ़रियाद का सुना जाना ; श्रवण ।

**सुनवैया** - पु० [हि] सुननेवाला ; सुनानेवाला ।

**सुनसान** - 1. वि० [हिं] निर्जन ; वीरान ; 2. पु० सन्नाटा ।

**सुनहरा, सुनहला** - वि० [हि] सोने के रंग का ।

**सुनहा** - पु० [हिं] कुत्ता ।

**सुनाना** - स० [हिं] किसीके सामने किसीको संबोधित करके कुछ कहना ; खरी-खोटी कहना, फटकारना ; जताना ।

**सुनाम** - पु० [सं] कीर्ति, यश ।

**सुनामा** - वि० [सं] कीर्तिशाली ; सुंदर नामवाला ।

**सुनार** - 1. पु० [हिं] सोने-चाँदी के गहने गढ़नेवाला, स्वर्णकार ; 2. स्त्री० कुतिया का दूध ; गौरैया ; साँप का अंडा ।

**सुनारी** - स्त्री० [हि] सुनार का काम ; सुनार की स्त्री ।

**सुनावनी** - स्त्री० [हिं] परदेश से किसी स्वजन-संबंधी की मृत्यु का समाचार आना ; ऐसा समाचार मिलने पर किया जानेवाला स्नान आदि ।

**सुनिग्रह** - वि० [स] अच्छी तरह नियंत्रित ; जिसपर आसानी से नियत्रण किया जा सके ।

**सुनिद्र** - वि० [सं] गाढ़ी नीद में सोया हुआ ।

**सुनिश्चय** - पु० [सं] पक्का निश्चय ; सुंदर निश्चय ।

**सुनिश्चल** - वि० [सं] अचल ।

**सुनिश्चित** - वि० [स] भली-भाँति निश्चित ; पक्का ।

**सुनीति** - 1. स्त्री० [सं] सुंदर नीति ; 2. वि० सुंदर नीति से युक्त ।

**सुनील** - 1. वि० [सं] गहरा नीला ; 2. पु० अनार का पेड़ ।
**सुनैया** - पु० [हिं] सुननेवाला ।
**सुन्न** - 1. पु० [हिं] शून्य, सुन्ना ; 2. वि० निर्जीव ; संवेदनरहित ।
**सुन्नत** - स्त्री० [अ] दस्तूर ; राह ; खतना ; वह आचारपथ जिसपर मोहम्मद और उनके प्रमुख साथी चले हों ।
**सुन्ना** - पु० [हिं] शून्य, सिफ़र ।
**न्नी** - पु० [अ] मुसलमानों का एक फिरका ।
**सुपठ** - वि० [सं] जो आसानी से पढ़ा जा सके ।
**सुपत** - वि० [हिं] प्रतिष्ठित ।
**सुपथ** - 1. पु० [सं] अच्छा रास्ता ; सन्मार्ग ; एक वृत्त ; 2. वि० सुंदर मार्गवाला ; चौरस ।
**सुपथ्य** - 1. वि० [सं] बहुत स्वास्थ्यकर ; बहुत हितकर ; 2. पु० अच्छा मार्ग ; स्वास्थ्यकर आहार ।
**सुपद** - 1. पु० [हिं] अच्छा पद या शब्द ; 2. वि० सुंदर पैरोंवाला ; शीघ्रगामी ।
**सुपन, सुपना** - पु० [हिं] स्वप्न ।
**सुपनाना** - 1. स० [हिं] सपना दिखाना ; 2. अ० स्पप्न देखना ।
**सुपर्ण** - 1. वि० [सं] सुंदर पंखवाला ; सुंदर पत्तोंवाला ; 2. पु० सुंदर पत्ता ; गरुड़ ; कोई बड़ा शिकारी पक्षी ; अश्व ; किरण ; देव-गंधर्व ; मुर्ग़ा ; एक प्रकार की व्यूह-रचना ; नागकेसर ।
**सुपर्णा** - स्त्री० [स] कमलिनी; गरुड की माता।
**सुपर्वा** - 1. स्त्री० [स] सफ़ेद दूर्वा ; 2. वि० सुंदर गाँठो या पोरोवाला ; सुंदर अध्यायोवाला (ग्रंथ) ; बहुप्रशंसित ; 3. पु० धुआँ ; देवता ; बाँस ; बाण ; बेंत ; शुभकाल ।
**सुपात्र** - पु० [सं] योग्य व्यक्ति ; सुंदर पात्र ।
**सुपान** - वि० [सं] जो सुख से पिया जा सके ; पीने योग्य ।
**सुपार** - वि० [स] जो आसानी से पार किया जा सके ; सफलता की ओर ले जानेवाला ; जो जल्द गुजर जाय ।
**सुपारण** - वि० [सं] जिसका पाठ या अध्ययन करना आसान हो ।
**सुपारी** - स्त्री० [हिं] नारियल की जाति का एक पेड़ और उसका फल जो पान के साथ या स्वतंत्र रूप से मुखशुद्धि के लिए खाया जाता है ; **मु०** —लगना - सुपारी के टुकड़े का गले में अटक जाना ।
**सुपास** - पु० [हिं] आराम, सुभीता ।
**सुपासी** - वि० [हिं] सुख या आराम देनेवाला ।
**सुपुष्प** - 1. पु० [सं] लौंग ; शहतूत ; देवदार ; सिरिस ; तूल ; श्वेत अर्क ; 2. वि० सुंदर फूलोंवाला ।
**सुपेत, सुपेद** - वि० [हिं] सफ़ेद ।
**सुपेदी** - स्त्री० [हिं] तोशक ; रज़ाई; सफ़ेदी।
**सुपेली** - स्त्री० [हिं] छोटा सूप ।
**सुप्त** - 1. वि० [सं] सोया हुआ ; सोने के लिए लेटा हुआ ; बेकार ; मुँदा हुआ ; सुन्न ; अविकसित ; सुस्त ; 2. पु० गाढ़ी नींद ; काले सीनेवाला खंजन ; **यौ०** —ज्ञान, विज्ञान - स्वप्न ; स्वप्न देखना ; —त्वक् - निश्चेष्ट ।
**सुप्ति** - स्त्री० [सं] ऊँघ ; नींद ; लापरवाही ; विश्वास ; सपना ; सुन्न हो जाना ।
**सुप्रचार** - वि० [सं] ठीक रास्ते पर जानेवाला ; अच्छा देख पड़नेवाला ।
**सुप्रतिष्ठ** - 1. वि० [सं] सुप्रसिद्ध ; अच्छी प्रतिष्ठावाला ; दृढ़तापूर्वक स्थित रहने-

वाला, सुंदर पैरोंवाला; 2. पु० एक तरह की व्यूहरचना; एक तरह की समाधि।

**सुप्रतिष्ठा** - स्त्री० [सं] अच्छी टिकाऊ स्थिति; अभिषेक; प्रसिद्ध; मूर्ति आदि की स्थापना; सुंदर प्रतिष्ठा।

**सुप्रभात** - 1. पु० [सं] शुभसूचक प्रातःकाल; सुंदर प्रभात; प्रातःकालीन स्तोत्र; 2. वि० प्रातःकाल द्वारा प्रकाशित।

**सुप्रयुक्त** - वि० [सं] ठीक तरह से चलाया हुआ; सुंदर ढंग से पाठ किया हुआ; सुव्यवस्थित; सुसंबद्ध।

**सुप्रयोग** - 1. पु० [सं] अच्छे ढंग से काम में लाया जाना; दक्षता; सुप्रबंध; 2. वि० जो ठीक तरह चलाया गया हो; जिसका अभिनय करना आसान हो।

**सुप्रलंभ** - वि० [सं] सुलभ; जिसे आसानी से धोखा दिया जा सके।

**सुप्रश्न** - पु० [सं] कुशल-क्षेम पूछना।

**सुप्रसन्न** - वि० [सं] बहुत खुश; बहुत चमकीला (चेहरा); बहुत साफ़ (जल); बहुत अनुकूल या कृपालु।

**सुप्रसव** - पु० [सं] आसानी से होनेवाला प्रसव।

**सुप्रसिद्ध** - वि० [सं] खूब मशहूर।

**सुप्राप, सुप्राप्य** - वि० [सं] सुलभ।

**सुप्रिय** - वि० [सं] अतिप्रिय।

**सुफल** - 1. पु० [सं] सुंदर फल; अनार; कैथ; बीजपूर; बेर; मूँग; 2. वि० सुंदर फलवाला; सुंदर फलों से युक्त; [हिं] सफल।

**सुबरन** - पु० [हिं] अच्छा रंग; सुंदर अक्षर; सुवर्ण; सोना।

**सुबस** - 1. वि० [हिं] अच्छी तरह बसा हुआ; स्वाधीन; 2. अव्य० स्वेच्छापूर्वक।

**सुबह** - स्त्री० [अ] प्रातःकाल; यौ० —खेज़ - तड़के उठनेवाला; पूजा-पाठ करनेवाला; —दम - मुँहअँधेरे; —सवेरे - तड़के; —सुबह - बहुत सवेरे; मु० —का तारा या सितारा - शुक्रग्रह; —से शाम तक - सारा दिन; —कर देना - रात गुज़ार देना; —का निकला शाम को आना - आवारागर्दी करना; —शाम करना - टालमटोल, आजकल करना।

**सुबालिश** - वि० [सं] बिलकुल बच्चों-जैसा; मूर्ख।

**सुबासना** - 1. स्त्री० [हिं] सुगंध; 2. स० सुवासित करना।

**सुबिस्ता** - पु० [हिं] सुभीता; सुविधा।

**सुबुक** - वि० [फ़ा] चुस्त; नाज़ुक; सुंदर; हल्का; यौ० —दस्त - फुर्ती से काम करनेवाला; —दस्ती - हाथ की फुर्ती, हस्तलाघव; —दोश - भारमुक्त; निश्चिन्त; —दोशी - हल्का-फुलका; —रफ़्तार - तेज़ चलनेवाला।

**सुबुकी** - स्त्री० [हिं] अप्रतिष्ठा; तेज़ी; हल्कापन।

**सुबू** - 1. स्त्री० [हिं] सुबह; 2. पु० [फ़ा] घड़ा; शराब का मटका।

**सुबूत** - पु० [अ] प्रमाण; साक्ष्य से सिद्धि।

**सुबोध** - 1. वि० [सं] आसान; 2. पु० सुन्दर ज्ञान।

**सुब्ह** - स्त्री० [अ] सवेरा; यौ० —गाह, दम - बहुत सवेरे; —पीरी - बुढ़ापे का आरम्भ; —सादिक - उषाकाल।

**सुभग** - 1. वि० [सं] भाग्यवान; उपयुक्त; नाज़ुक; पतला; प्रिय; सुन्दर; 2. पु० अशोक; चंपा; शिव; सोहागा; सौभाग्य; सौभाग्यजनक कर्म।

**सुभगा** - 1. वि० स्त्री० [सं] सुन्दरी; सुहागिन; 2. स्त्री० पतिप्रिया; हल्दी; कस्तूरी; दूर्वा; नील; तुलसी।

**सुभट** - पु० [सं] रणकुशल योद्धा।
**सुभट्ट** - पु० [हिं] नामी योद्धा ; [सं] बहुत बड़ा पंडित।
**सुभद्र** - 1. वि० [सं] अतिमांगलिक ; 2. पु० सौभाग्य , कल्याण।
**सुभर** - वि० [सं] अच्छी तरह अभ्यस्त ; घना ; जिसका आसानी से प्रयोग किया जा सके ; प्रचुर।
**सुभा** - स्त्री० [सं] अमृत ; छवि ; परस्त्री ; हड़।
**सुभाई, सुभाऊ** - पु० [हिं] स्वभाव।
**सुभाग** - 1. वि० [सं] भाग्यवान ; धनी ; 2. पु० सौभाग्य।
**सुभागी, सुभागीन** - वि० [हिं] सौभाग्यशाली, भाग्यवान।
**सुभाग्य** - 1. वि० [हिं] अति भाग्यशाली ; 2. पु० सौभाग्य।
**सुभाना** - अ० [हिं] शोभित होना।
**सुभाय, सुभाव** - पु० [हिं] स्वभाव।
**सुभाषण** - पु० [सं] सुन्दर भाषण।
**सुभाषित** - 1. वि० [सं] सुंदररूप से कहा हुआ ; सुंदर भाषण करनेवाला ; 2. पु० सूक्ति।
**सुभिक्ष** - पु० [सं] सुकाल ; भिक्षा या अन्न की सुलभता।
**सुभीता** - पु० [हि] आराम ; आसानी ; सुयोग।
**सुभूषित** - वि० [सं] खूब सजाया या सँवारा हुआ।
**सुभृत** - वि० [सं] सुरक्षित ; अच्छी तरह दिया हुआ।
**सुभोग्य** - वि० [सं] अच्छी तरह भोगने योग्य।
**सुभ्रु, सुभ्रू** - 1. वि० [सं] सुंदर भौंहोंवाला ; 2. स्त्री० सुंदरी नारी।
**सुमंगल** - 1. वि० [सं] अति मंगलकारी ; सदाचारी ; 2. पु० शुभ वस्तु।
**सुम** - पु० [सं] आकाश ; कपूर ; चंद्रमा ; फूल ; [फ़ा] घोड़े या गधे का खुर जो बीच से फटा नहीं होता ; **यौ०** —तराश - घोड़े के खुर काटने का औज़ार ; —फटा - घोड़ों के खुर में होनेवाला एक रोग।
**सुमत** - 1. वि० [सं] सुंदर ज्ञान से युक्त ; 2. स्त्री० सुमति।
**सुमति** - 1. वि० [सं] बहुत चतुर ; 2. स्त्री० अच्छी बुद्धि या स्वभाव ; अनुग्रह; इच्छा ; देवानुग्रह ; स्तुति ; सुरुचि ; मेल, एका ; मैना।
**सुमदुम** - वि० [सं] स्थूलकाय, तोंदवाला।
**सुमधुर** - 1. वि० [सं] बहुत नाज़ुक ; बहुत मधुर ; सुंदर गानेवाला ; 2. पु० मधुर वचन।
**सुमध्यमा, सुमध्या** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] पतली कमरवाली नारी।
**सुमन** - 1. पु० [सं] पुष्प ; देवता ; गेहूँ ; धतूरा ; 2. वि० मनोहर ; सुंदर।
**सुमनस** - 1. पु० [हिं] देवता ; पुष्प ; 2. वि० प्रसन्न ; सुंदर मनवाला।
**सुमनस्क** - वि० [सं] प्रसन्नचित्त।
**सुमरन** - 1. पु० [हिं] स्मरण ; 2. स्त्री० सुमरनी।
**सुमरना** - स० [हिं] स्मरण या ध्यान करना ; जपना।
**सुमरनी** - स्त्री० [हि] सत्ताईस दानो की जपमाला।
**सुमार** - 1. पु० [हिं] शुमार ; 2. वि० चुना हुआ।
**सुमार्ग** - पु० [सं] अच्छी राह।
**सुमित्र** - 1. पु० [सं] अच्छा दोस्त ; 2. वि० अच्छे मित्रोंवाला।
**सुमिरन** - पु० [हिं] स्मरण।
**सुमिरनी** - स्त्री० [हि] सुमरनी।

**सुमुख** - 1. वि० [सं] सुंदर ; कृपालु ; अच्छी नोकवाला ; अच्छे द्वारवाला ; प्रसन्न ; 2. पु० सुंदर मुख ; विद्वान व्यक्ति ; गणेश ; शिव ; सफ़ेद तुलसी ; राई ।

**सुमेर** - पु० [हिं] गंगाजल रखने का पात्र ।

**सुमेरु** - पु० [सं] एक पुराणवर्णित पर्वत ; उत्तर ध्रुव ; जपमाला के बीच का बड़ा दाना ; एक वर्णवृत्त ; शिव ।

**सुम्मी** - स्त्री० [हिं] सुनारो का एक औज़ार ।

**सुयोग** - पु० [सं] सुंदर योग ; बढ़िया मौका ।

**सुयोग्य** - वि० [सं] बहुत लायक़ ।

**सुरंग** - 1. वि० [सं] सुंदर रंगवाला ; सुंदर ; [हिं] लाल रंग का ; सरस ; 2. पु० सुंदर रंग ; नारंगी ; पतंग ; 3. स्त्री० मकान के नीचे खोदकर बनाया हुआ गुप्त मार्ग , सेंध ; ज़मीन के नीचे खोदकर बनायी हुई नाली जिसमें बारूद बिछाकर क़िले की दीवार आदि उड़ाते हैं ; [हिं] ज़मीन या समुद्र में रखा जानेवाला बारूद आदि से भरा गोला जिसका स्पर्श होने पर विस्फोट होता है ।

**सुर** - पु० [सं] देवता ; देवमूर्ति ; तैंतीस की संख्या ; पंडित ; मुनि ; सूर्य ; **यौ०** —कानन - नंदनवन ; —कामिनी - अप्सरा ; —काष्ठ - देवदारु ; —केतु - इंद्र की ध्वजा ; —गण - देवसमूह ; —गाय - कामधेनु ,—गुरु - बृहस्पति ; —चाप - इंद्रधनुष;—तरंगिणी - गंगा नदी ; —नारी - देवांगना;—पति - इंद्र, शिव ; —पथ - आकाश ; छायापथ ; —पुर - अमरावती ; स्वर्ग ; —प्रतिष्ठा - देवप्रतिमा की स्थापना ; —भवन - देवमंदिर ; —भूषण - एक हज़ार आठ दानो का मुक्ताहार ; —भोग - देवताओं का भोग्य, अमृत ; —मंत्री - बृहस्पति ; —मंदिर - देवालय ; —मणि - चिन्तामणि ; —मृत्तिका - गोपीचंदन ; —लोक - स्वर्ग ; — वाहिनी - आकाशगंगा ; —विटप, वृक्ष - कल्पवृक्ष ; —वैरी - असुर ; —विलासिनी - अप्सरा ; —वीथी - नक्षत्रो का मार्ग ; —वैद्य - अश्विनीकुमार ; —शयनी - विष्णुशयनी एकादशी ; —शिल्पी - विश्वकर्मा ; —श्रेष्ठा - ब्राह्मी ; —सर - मानसरोवर ;—सुरभि - कामधेनु ; —स्रवंती - आकाशगंगा ; —स्रोतस्विनी - गंगा ; [हिं] आवाज़, स्वर ; **यौ०** —कुदाव - स्वरपरिवर्तन द्वारा धोखा देना ; —टीप - स्वरालाप ; —ताल - स्वर और ताल ; —दार - सुरीला; —बहार-सितार-जैसा एकबाजा ; —भंग - स्वरभंग ; **मु०**—मिलाना - आवाज़ मिलाना ; स्वरो का मेल करना ।

**सुरअत** - स्त्री० [अ] तेज़ी ; जल्दी ।

**सुरक** - पु० [हिं] नाक पर बनाया हुआ भाले की शक्ल का तिलक ।

**सुरक्त** - वि० [सं] गाढ़ा रँगा हुआ ; अनुरक्त ; गाढ़ा लाल ; बहुत प्रभावित ; बहुत सुंदर ।

**सुरक्षा** - स्त्री० [स] समुचित रक्षा ।

**सुरक्षित** - वि० [सं] अच्छी तरह रक्षित ।

**सुरक्ष्य** - वि० [स] जिसकी आसानी से रक्षा की जा सके ।

**सुरखिया** - स्त्री० [हिं] एक चिड़िया जिसकी सिर्फ़ गर्दन तथा पीठ लाल होती है ।

**सुरज** - पु० [हिं] सूर्य ।

**सुरजन** - 1. पु० [हिं] नेक आदमी, सुजन ; 2. वि० चतुर ।

**सुरत** - 1. पु० [सं] कामक्रीड़ा; संयोग; 2. वि० अति अनुरक्त; क्रीड़ाशील; 3. स्त्री० [हिं] ध्यान।

**सुरति** - स्त्री० [सं] कामक्रीड़ा।

**सुरती** - स्त्री० [हिं] तंबाकू का सुखाया हुआ पत्ता।

**सुरभि** - 1. वि० [स] सुगंधित; ख़ुशबूदार; धार्मिक; प्रसिद्ध; प्रिय; विद्वान; सद्भावपूर्ण; 2. पु० सुगंधित द्रव्य; कदंबवृक्ष; चंपकवृक्ष; जायफल; शमीवृक्ष; शालनिर्यास; चैत्रमास; वसंत ऋतु; गंधक; मौलसिरी; सोना; 3. स्त्री० तुलसी; सुगंधि; गाय; पृथ्वी; मदिरा; **यौ०**—गंध - ख़ुशबू; ख़ुशबूदार; तेजपत्र; —गंधा - चमेली; —गंधि, गंधी - ख़ुशबूदार; —चूर्ण - ख़ुशबू मिलाया हुआ चूरा; —पुत्र - बैल; —बाण - कामदेव; —मंजरी - श्वेत तुलसी; —मास - वसंत ऋतु; चैत्रमास; —मुख - वसंत का आरंभ।

**सुरभित** - वि० [सं] सुगंवित किया हुआ; प्रसिद्ध किया हुआ।

**सुरभी** - स्त्री० [सं] गाय; ख़ुशबू; वनतुलसी; रासना; सुगंधित धान; **यौ०** —गंध - तेजपत्र; —गोत्र, सुत - बैल, साँड़।

**सुरमयी** - 1. वि० [हिं] सुरमे के रंग का; 2. पु० सुरमे के रंग से मिलता-जुलता रंग; इस रंग का कबूतर; 3. स्त्री० हलके काले रंग की एक चिड़िया; **यौ०** —कलम - सुरमा लगाने की सलाई।

**सुरमा** - 1. पु० [फ़ा] आँखों में अंजन के रूप में लगाया जानेवाला बारीक़ चूर्ण; अंजन; 2. वि० बहुत बारीक़; **यौ०**—कश - सुरमा लगानेवाला; सुरमा लगाने की सलाई; —दान, दानी - सुरमा रखने की डिबिया; —सफ़ेद - आँखों की जलन आदि में काम आनेवाला एक खनिज द्रव्य।

**सुरम्य** - वि० [सं] अति रमणीय।

**सुरली** - स्त्री० [हि] सुंदर क्रीड़ा।

**सुरवस** - पु० [हिं] पतला बाँस या सरकंडा।

**सुरवाड़ी** - स्त्री० [हिं] सूअरों के रहने का बाड़ा।

**सुरवाल** - पु० [हिं] पायजामा; सेहरा।

**सुरस** - 1. वि० [स] सुंदर रसयुक्त; रसीला; मधुर; सुदर; सुस्वादु; 2. पु० बोल; तुलसी; तेजपत्र; दारचीनी।

**सुरसा** - स्त्री० [सं] लंका के पथ में हनुमान का रास्ता रोकनेवाली एक राक्षसी; एक वृत्त; एक रागिनी; सफेद जूही; एक नदी; दुर्गा; तुलसी।

**सुरसुराना** - अ० [अनु] कीड़ों का रेंगना; खुजली होना।

**सुरसुराहट** - स्त्री० [अनु] खुजली; सुरसुराने का भाव।

**सुरसुरी** - स्त्री० [अनु] सुरसुराहट; छछूँदर नामक आतिशबाजी; अनाज में लगनेवाला लाल रंग का एक कीड़ा।

**सुरहना** - अ० [हिं] उभर आना (घाव आदि का)।

**सुरही** - स्त्री० [हिं] चमरी गाय; एक घास।

**सुरांगना** - स्त्री० [सं] अप्सरा; देवपत्नी।

**सुरा** - स्त्री० [स] मद्य; जल; सोम; **यौ०** —कार, जीवी - कलाल; —पान - शराब पीना; मद्यपान के समय खायी जानेवाली चाट, गजक; —बीज - शराब बनाने के काम आनेवाला एक पदार्थ; मद्यफेन; —भाजन - मदिरा रखने या पीने का पात्र; —मत्त - शराब के नशे में चूर; —मुख -

जिसके मुख में शराब हो ; —संधान - शराब चुआना ।

**सुराग़** - पु० [अ] खोज ; पदचिन्ह ; **यौ०** —रसाँ - खोजी ; जासूस ; —रसानी - खोज ; तलाश ।

**सुरागाय** - स्त्री० [हिं] एक जंगली गाय जिसकी पूँछ के बालों के चँवर बनाते हैं, सुरही ।

**सुराग़ी** - पु० [हिं] जासूस ; मुख़बिर ।

**सुराज** - 1. पु० [हिं] अच्छा राज्य ; स्वराज्य ; 2. वि० [सं] अच्छे राजा द्वारा शासित (देश) ।

**सुराज्य** - पु० [स] सुंदर प्रजारंजक राज्य ।

**सुराथी** - स्त्री० [हिं] अनाज की बालें पीटने का डंडा ।

**सुराधानी** - स्त्री० [सं] शराब रखने का छोटा घड़ा ।

**सुराल** - पु० [सं] राल ।

**सुरालय** - पु० [स] स्वर्ग , देवालय ; मदिरालय ।

**सुराव** - पु० [सं] सुंदर ध्वनि ।

**सुरावट** - स्त्री० [हिं] स्वर का आरोह-अवरोह ; सुरीलापन ।

**सुराष्ट्र** - 1. पु० [सं] पश्चिम भारत का एक प्रदेश या आधुनिक सूरत, सौराष्ट्र ; 2. वि० अच्छे राज्यवाला ।

**सुरासुर** - पु० [सं] सुर और असुर ; **यौ०** —गुरु - कश्यप ; शिव ।

**सुराही** - स्त्री० [अ] लंबी गर्दन और तंग मुँह का एक पानी रखने का बर्तन, कूजा ; बाजू ।

**सुरीला** - वि० [हिं] मधुर स्वरवाला ।

**सुरुख** - वि० [हिं] जिसका रुख अच्छा हो, प्रसन्न ।

**सुरुचि** - 1. स्त्री० [सं] अच्छी रुचि ; 2. वि० अच्छी रुचिवाला ।

**सुरूप** - वि० [सं] अच्छी शक्लवाला ; सुंदर ; विद्वान ।

**सुरूपा** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] रूपवती, सुंदरी ।

**सुरूर** - पु० [अ] प्रसन्नता ; हलका नशा ; **यौ०**— अंगेज़ - नशा पैदा करनेवाला ।

**सुरेंद्र** - पु० [सं] इंद्र ; एक कंद, ओल ।

**सुरेख** - वि० [सं] सुंदर रेखाएँ बनानेवाला ।

**सुरेखा** - स्त्री० [सं] शुभसूचक रेखा ; सुंदर रेखा ।

**सुरेणु** - पु० [सं] त्रसरेणु ।

**सुरेता** - वि० [सं] अति पराक्रमी ।

**सुरेथ** - पु० [हिं] सूँस ।

**सुरेश** - पु० [सं] इंद्र ; एक अग्नि ; एक देवता ; विष्णु ; शिव ।

**सुरै** - 1. स्त्री० [हिं] एक हानिकर घास ; 2. वि० [सं] बहुत अमीर ।

**सुरैत** - स्त्री० [हिं] रखेली ; **यौ०** —वाल, वाला - सुरैत के पेट से पैदा हुआ बालक ।

**सुरोचि** - वि० [हिं] सुंदर ।

**सुरोद** - पु० [हिं] सरोद ; [सं] सुरा का समुद्र ; [फ़ा] गीत ; **यौ०** —नवाज़ - गवैया ।

**सुर्ख़** - 1. वि० [फ़ा] लाल ; 2. स्त्री० घुँघची ; गंजीफ़े का एक खेल ; **यौ०** —पोश - जो लाल कपड़े पहने हो ; —रू - लाल मुँहवाला ; प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला ; सफल ; —रूई - प्रतिष्ठा ; सफलता ; सम्मान ; —सर, सार - लाल सिरवाली चिड़िया ; सुर्ख़-सफ़ेद - सुर्ख़ी मिली हुई गोराई ; सोना-चाँदी ; **मु०** —होना - लाल होना ।

**सुर्ख़ा** - पु० [फ़ा] लाल रंग ; आँख पर होनेवाली सुर्ख़ी ; घोड़े का एक रंग ; लाल रंग का कबूतर ।

**सुर्ख़ाब** - पु० [फ़ा] चकवा-चकवी ।
**सुर्ख़ी** - स्त्री० [फ़ा] लाल रंग ; लाल स्याही ; जुड़ाई और फ़र्श बनाने के काम आनेवाला ईंटों का चूरा ; शीर्षक ।
**सुर्ता** - वि० [हिं] समझदार ।
**सुलक्षण** - 1. वि० [सं] सुंदर या शुभ लक्षणोंवाला ; भाग्यशाली ; 2. पु० सुंदर या शुभ लक्षण ; परीक्षण ।
**सुलक्षणा** - 1. वि०, 2. स्त्री० [स] सुंदर या शुभ लक्षणोंवाली ।
**सुलक्षित** - वि० [स] अच्छी तरह से परीक्षित ; सुनिश्चित ।
**सुलग** - अव्य० [हिं] निकट, पास ।
**सुलगन** - स्त्री० [हिं] सुलगने की क्रिया ।
**सुलगना** - अ० [हिं] लकड़ी या उपले आदि में आग पकड़ना, जलने लगना ; कुढ़ना ; ईर्ष्या से जलना ; तंबाकू आदि का पीने लायक़ होना ।
**सुलगाना** - स० [हिं] आग जलाना ; झगड़ा उकसाना ; भड़काना ; तंबाकू आदि को पीने योग्य बनाना ।
**सुलग्न** - 1. वि० [सं] तल्लीन ; 2. पु० शुभ मुहूर्त ।
**सुलच्छन** - वि० [हिं] सुलक्षण ।
**सुलछ** - वि० [हि] देखने में सुंदर ।
**सुलझन** - स्त्री० [हिं] सुलझने की क्रिया, सुलझाव ।
**सुलझना** - अ० [हिं] उलझी हुई डोर आदि का खुलना; उलझन या मसले आदि का हल होना ।
**सुलझाव** - पु० [हिं] सुलझने का भाव ; निबटारा ।
**सुलटा** - वि० [हिं] सीधा ।
**सुलतान** - पु० [अ] बादशाह ।
**सुलताना** - स्त्री० [अ] सुलतान की पत्नी या माँ, मलिका ।
**सुलतानी** - 1. वि० [हिं] शाही, सुलतान का ; 2. स्त्री० बादशाही ।
**सुलफ** - वि० [हिं] नाज़ुक ; लचीला ।
**सुलफ़ा** - पु० [फ़ा] बिना तवा रखे भरा हुआ तंबाकू ; गाँजे की तरह भरकर पिया जानेवाला तंबाकू ; चरस ।
**सुलभ** - वि० [सं] आसान ; उपयोगी ; समुचित ; यौ० —कोप - जो आसानी से भड़काया या कुपित किया जा सके ।
**सुलभ्य** - वि० [सं] आसानी से प्राप्त होने योग्य ।
**सुललित** - वि० [सं] अति सुंदर ; क्रीड़ाशील ; बहुत प्रसन्न ।
**सुलह** - स्त्री० [अ] मेल ; समझौता ; लड़ाई या झगड़े के बाद किया जानेवाला मेल ; यौ० —कुल - सबके साथ मेल रखनेवाला ; —नामा - राज़ीनामा, संधिपत्र ।
**सुलाखना** - स० [हिं] छेद करना ; सोने-चाँदी को तपाकर परखना ।
**सुलाना** - स० [हिं] किसीको सोने या लेटने में प्रवृत्त करना ।
**सुलूक** - पु० [अ] आचरण ; भलाई ; मुहब्बत ; मेल ; भगवान को पाने का प्रयत्न ।
**सुलेख** - वि० [सं] शुभ रेखाओंवाला ; शुभ रेखाएँ बनानेवाला ।
**सुलेखक** - पु० [सं] सुन्दर अक्षर लिखनेवाला ; सुंदर लेख या निबन्ध आदि की रचना करनेवाला ।
**सुलोक** - पु० [सं] स्वर्ग ।
**सुलोचन** - 1. वि० [सं] सुन्दर आँखोंवाला ; 2. पु० चकोर ; हिरण ।
**सुलोचना** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] सुन्दर आँखोंवाली ।
**सुव** - पु० [हिं] पुत्र ।
**सुवक्ता** - पु० [सं] सुंदर वक्ता ।

**सुवच** - वि० [सं] जो आसानी से कहा जा सके।

**सुवचन** - 1. पु० [सं] मीठा वचन; 2. वि० अच्छा वक्ता; मधुरभाषी।

**सुवन** - 1. पु० [सं] अग्नि; चंद्रमा, सूर्य; पुत्र; पुष्प; देवता; पंडित; 2. वि० अच्छे मनवाला।

**सुवना** - पु० [हिं] तोता।

**सुवयसी** - स्त्री० [सं] स्त्री-पुरुष दोनों के चिह्नवाली स्त्री; प्रौढ़ा स्त्री।

**सुवरण** - पु० [हिं] सुवर्ण; सोना।

**सुवर्ग** - वि० [सं] अच्छे साथ-समाजवाला।

**सुवर्चस** - 1. पु० [सं] शिव; 2. वि० दीप्तिमान।

**सुवर्चा** - वि० [सं] तेजस्वी।

**सुवर्ण** - 1. वि० [सं] अच्छे रंग का; चमकीला; अच्छी जाति का; पीला; सुनहला; प्रसिद्ध; सोने का बना हुआ; 2. पु० अच्छा रंग; अच्छी जाति; सोना; सोने का सिक्का; सोलह माशे की सोने की एक तौल; धतूरा; शिव; धनु; एक तरह का गेरू, हरिचन्दन; नागकेसर; स्वर का शुद्ध उच्चारण; यौ० —कदली - चंपा केला; —कमल - रक्तकमल; —कर्ता, कार, कृत् - सुनार, —गणित - अंकगणित का अंगविशेष; सोने की तौल और शुद्धि का हिसाब; —गर्भ - जिसमें सोना भरा हो; —गर्भा - सोने की खानोवाला; स्वर्ण-प्रसवा (भूमि); —गैरिक - लाल गेरू; —ग्रंथि - सोना रखने की थैली; —ज्योति - सुनहली कांतिवाला; —द्वीप - सुमात्रा टापू; —धेनु - दान के लिए निर्मित सोने की गाय; —पक्ष - सोने के पंखोवाला; गरुड़; —पद्म - लाल कमल; —पद्मा - स्वर्गंगा; —पिंजर - सोने की तरह पीला; —पुष्पित - स्वर्ण से भरा-पूरा; —पृष्ठ - जिसपर सोने का पत्तर चढ़ाया गया हो; —प्रतिमा - सोने की मूर्ति; —भूमि - सुमात्रा टापू; —माक्षिक - सोनामक्खी; —माष, माषक - बारह धान का एक प्राचीन परिमाण; —मित्र - सुहागा; —मोचा - चंपाकेला; —रूप्यक - जहाँ सोने-चाँदी की बहुतायत हो; —रेता - शिव; —लेखा - सोने की लकीर; —वर्ण - सुनहला; —वर्णा - हल्दी; —सिद्ध - इंद्रजाल या जादू से सोना बनाने या प्राप्त करनेवाला; —सूत्र - सोने की सिकड़ी।

**सुवर्तित** - वि० [सं] खूब घुमाया या गोल किया हुआ; सुव्यवस्थित।

**सुवस** - वि० [हिं] जो अपने अधिकार में हो।

**सुवह** - वि० [सं] अच्छी तरह वहन करने योग्य; अच्छी तरह वहन करनेवाला; धीर।

**सुवा** - पु० [हिं] तोता।

**सुवाक्य** - वि० [सं] मधुरभाषी।

**सुवाग्मी** - वि० [सं] सुवक्ता।

**सुवाच्य** - वि० [सं] आसानी से पढ़े जाने योग्य।

**सुवार** - पु० [सं] सुंदर दिन; रसोइया।

**सुवार्ता** - स्त्री० [सं] शुभ संवाद; सुंदर वार्ता।

**सुवाल** - 1. पु० [अ] सवाल; 2. वि० [सं] जिसकी पूँछ पर सुंदर बाल हों (हाथी)।

**सुवास** - पु० [सं] सुगंध; सुंदर निवास-स्थान; एक वर्णवृत्त।

**सुवासित** - वि० [सं] सुगंधित।

**सुवासिनी** - स्त्री० [सं] सुहागिन; भद्र सधवा स्त्री के लिए प्रयोग में आनेवाला एक आदरसूचक शब्द।

**सुविक्लव** - वि० [सं] अस्थिरचित्त ; कायर ।
**सुविख्यात** - वि० [सं] बहुत प्रसिद्ध ।
**सुविग्रह** - वि० [सं] सुंदर देहवाला ; रूपवान ।
**सुविचार** - पु० [सं] अच्छे सूक्ष्म विचार ; अच्छा न्याय ।
**सुविचारित** - वि० [सं] भली-भाँति सोचा-विचारा हुआ ।
**सुविज्ञान** - वि० [सं] विवेकशील ; जिसे जानना-समझना आसान हो ।
**सुविज्ञेय** - वि० [सं] आसानी से जानने-समझने योग्य ।
**सुवितत** - वि० [स] अच्छी तरह फैला हुआ।
**सुविदग्ध** - वि० [सं] काइयाँ ; बहुत चालाक ।
**सुविदित** - वि० [सं] अच्छी तरह ज्ञात ।
**सुविध** - वि० [सं] अच्छी किस्म या प्रकार का ; शीलवान ।
**सुविधा** - स्त्री० [हिं] सुभीता ।
**सुविधान** - 1. पु० [सं] अच्छी व्यवस्था ; 2. वि० सुव्यवस्थित ।
**सुविनीत** - वि० [सं] अति विनीत ; अच्छी तरह सिखाया-सधाया हुआ ।
**सुविनीता** - स्त्री० [सं] आसानी से दुही जानेवाली गाय ।
**सुविशाल** - वि० [सं] बहुत बड़ा ।
**सुविस्तर** - 1. पु० [स] बहुत अधिक फैलाव ; बहुतायत ; 2. वि० बहुत अधिक ; बहुत तेज़ या उग्र ; बहुत विस्तृत, बड़ा ।
**सुविहित** - वि० [सं] अच्छी तरह किया हुआ ; अच्छी तरह रखा हुआ ; सुव्यवस्थित ।
**सुवृत्त** - 1. वि० [सं] सच्चरित्र ; अच्छे छंद में रचित ; 2. पु० सुंदर वृत्त या चरित्र ; कल्याण ; सूरन ।
**सुवृत्ति** - स्त्री० [सं] सुंदर आचरण ; सदाचार ; जीविका ; ब्रह्मचर्य ; संयम ।
**सुवेग** - वि० [सं] तेज़ गतिवाला ।
**सुवेसल** - वि० [हिं] सुंदर ।
**सुवैया** - पु० [हिं] सोनेवाला ।
**सुव्यक्त** - वि० [सं] प्रकट ; बहुत स्पष्ट ; चमकदार ; साफ़ ।
**सुव्यवस्था** - स्त्री० [सं] सुंदर व्यवस्था ; अच्छी योजना ।
**सुव्यस्त** - वि० [सं] तितर-बितर; छिन्न-भिन्न ।
**सुव्रत**-1. वि० [सं] धर्मनिष्ठ, सुंदर व्रतधारी; सीधा या सधा हुआ (घोड़ा आदि) ; 2. पु० ब्रह्मचारी ; एक प्रजापति ।
**सुशक** - वि० [सं] आसान ; सुसाध्य ।
**सुशासन** - पु० [सं] सुंदर शासन ; उत्तम राज्यप्रबंध ।
**सुशासित** - वि० [सं] अच्छी तरह शासित ; सुनियंत्रित ।
**सुशिक्षित** - वि० [सं] अच्छी शिक्षा प्राप्त ; अच्छी तरह सधाया या सिखाया हुआ (घोड़ा आदि) ।
**सुशिखा** - स्त्री० [सं] मोर की शिखा ; मुर्गे की कलगी ।
**सुशिर** - पु० [सं] मुँह से फूँककर बजाने का बाजा ।
**सुशिष्ट** - 1. वि० [सं] सुशासित ; 2. पु० विश्वस्त मंत्री ।
**सुशील** - 1. वि० [सं] अच्छा शीलवाला ; विनीत ; सच्चरित्र ; सीधा ; 2. पु० अच्छा स्वभाव ।
**सुशीलता** - स्त्री० [सं] विनम्रता ; सच्चरित्रता ; सीधापन ।
**सुश्रृंगार** - वि० [स] अच्छी तरह अलंकृत ।
**सुशोभन** - वि० [स] अति सुंदर ।
**सुशोभित** - वि० [सं] अत्यंत शोभायुक्त ।

**सुश्रव** - वि० [सं] सुनने योग्य ।
**सुश्राव्य** - वि० [सं] जो सुनने में अच्छा लगे, श्रुतिमधुर ।
**सुश्री** - 1. वि० [सं] अति सुंदर ; अति धनी ; 2. स्त्री० कुमारिकाओं के नाम के पूर्व लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द ।
**सुश्रीका** - स्त्री० [सं] सलई ।
**सुश्रुत** - 1. वि० [सं] अच्छी तरह सुना हुआ ; प्रसन्नतापूर्वक सुना हुआ ; बहुत प्रसिद्ध ; वेदज्ञ ; 2. पु० आयुर्वेद के अति प्राचीन आचार्य ।
**सुश्रूषा** - स्त्री० [हिं] शुश्रूषा ।
**सुश्लिष्ट** - वि० [सं] मज़बूती से जुड़ा या मिला हुआ ; दृढ़ भाव से संयुक्त ।
**सुश्लेष** - पु० [सं] घनिष्ठ संबंध ; प्रगाढ आलिंगन ।
**सुश्लोक** - वि० [सं] पुण्यशाली ; सुप्रसिद्ध ।
**सुषमा** - स्त्री० [सं] परम शोभा ; अत्यंत सुंदरता ; एक वर्णवृत्त ।
**सुषाना** - 1. स० [हिं] सुखाना ; 2. अ० सूखना ।
**सुषिर** - 1. वि० [सं] छेदवाला ; विलंबित ; सावकाश ; 2. पु० अग्नि ; काठ ; चूहा ; छेद ; फूँककर बजाया जानेवाला बाजा ; काष्ठ ; बेंत ; बाँस, लौंग ; वायुमंडल ।
**सुषुप्त** - 1. वि० [सं] गहरी नींद में सोया हुआ ; 2. पु० सषुप्तावस्था ।
**सुषुप्ति** - स्त्री० [सं] गहरी नींद ; आनंदमय कोष ।
**सुषुम्णा, सुषुम्ना** - स्त्री० [सं] मेरुदंड के बहिर्मार्ग में इड़ा और पिंगला नाड़ियों के बीच में स्थित एक नाड़ी ; नाभि के मध्य में स्थित एक प्रधान नाड़ी (आयुर्वेद) ।
**सुष्ट** - वि० [हिं] भला, नेक ।
**सुष्ठु** - अव्य० [सं] अतिशय ; ठीक-ठीक ; सुंदर रीति से ।
**सुसंग** - 1. पु० [सं] सत्संग ; 2. वि० प्रिय ; जिसके साथ रहा जाय ।
**सुसंगत** - वि० [सं] बहुत उचित ; युक्त ।
**सुसंगति** - स्त्री० [सं] अच्छा साथ ; अच्छी मुहब्बत ।
**सुसंगम** - पु० [सं] अच्छी सभा ; अच्छा सभा-स्थल ।
**सुसंध** - वि० [सं] अपने वचन का पालन करनेवाला ।
**सुसंपन्न** - वि० [सं] जिसके पास यथेष्ट धन-संपत्ति हो ।
**सुसंस्कृत** - वि० [सं] भलीभाँति संस्कार किया हुआ ; सुंदर संस्कारयुक्त ; घी आदि के द्वारा अच्छी तरह पकाया हुआ ।
**सुस** - स्त्री० [हिं] बहिन ।
**सुसज्जित** - वि० [सं] अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ ।
**सुसत्त्व** - वि० [सं] दृढ़ ; बहादुर ।
**सुसम** - वि० [सं] खूब चौरस ; चिकना ; सुडौल ।
**सुसमय** - पु० [सं] सुकाल ।
**सुसर, सुसरा** - पु० [हिं] पति या पत्नी का पिता ।
**सुसरार, सुसरारि, सुसराल** - स्त्री० [हिं] ससुराल ।
**सुसह** - वि० [स] सहनशील ; जिसे सरलता से सहन किया जा सके ।
**सुसाधन** - वि० [सं] जो आसानी से प्रमाणित किया सके ।
**सुसाध्य** - वि० [सं] आसान ; सुखसाध्य ; जो आसानी से नियंत्रण में रखा जा सके ।
**सुसाना** - अ० [हिं] सिसकना ; सिसकी भरना ।

**सुसुकना** - अ० [हिं] सिसकना।
**सुसुड़ी** - स्त्री० [हिं] जौ का एक कीड़ा।
**सुसेव्य** - वि० [सं] सेवा करने योग्य।
**सुस्त** - वि० [सं] उदास ; कमज़ोर ; आलसी ; ढीला; धीमा ; मंदबुद्धि; **यौ०** —क़दम - धीमा चलनेवाला ; —राय - नादान।
**सुस्ताई** - स्त्री० [हिं] सुस्ती।
**सुस्ताना** - अ० [हिं] आराम करना ; थकावट दूर करना।
**सुस्ती** - स्त्री० [फ़ा] आलस्य ; कमज़ोरी ; ढिलाई ; **मु०** —उतारना, तोड़ना - अँगड़ाई लेना।
**सुस्थित** - 1. वि० [सं] अच्छी तरह स्थित ; निर्दोष ; भाग्यवान ; सीधा-सादा ; सुखी ; स्वस्थ ; 2. पु० चारों ओर वीथिका से घिरी इमारत।
**सुस्थिति** - स्त्री० [सं] अच्छी हालत ; अभ्युदय ; सुख ; मंगल ; स्वास्थ्य।
**सुस्थिर** - वि० [सं] अधिक स्थिर ; अधिक दृढ़ ; शान्त।
**सुस्पर्श** - वि० [सं] कोमल ; मुलायम।
**सुस्मित** - वि० [सं] मुस्कराता हुआ।
**सुस्मिता** - स्त्री० [सं] हँसमुख स्त्री।
**सुस्वप्न** - पु० [सं] शुभ स्वप्न ; शिव।
**सुस्वर** - 1. वि० [सं] मधुर स्वरवाला ; सुरीला ; 2. पु० मधुर शब्द ; शंख।
**सुस्वाद** - वि० [सं] ज़ायकेदार ; मीठा।
**सुहंगम** - वि० [हिं] सरल।
**सुहँगा** - वि० [हिं] सस्ता।
**सुहटा** - वि० [हिं] सुहावना।
**सुहबत** - स्त्री० [अ] संग, साथ ; जलसा ; मित्रता ; सहवास ; साथ उठना-बैठना ; **यौ०** —का असर - संगति का गुण।
**सुहबती** - वि० [हिं] मैत्रीभाव रखनेवाला ; साथ उठने-बैठनेवाला।
**सुहाग** - पु० [हिं] सुहागिन होने की अवस्था, अहिवात, सौभाग्य, ; ब्याह में गाया जानेवाला मांगलिक गीत ; सुहागिन स्त्री के पहनने के गहने-कपड़े ; प्यार ; ब्याह के समय दूल्हे के पहनने का कपड़ा ; **यौ०** —घोड़ी - वे गीत जो दूल्हे के घर में दुलहिन के रूप-गुण की प्रशंसा के रूप में गाये जाते हैं ; —पिटारा, पिटारी - दूल्हे की ओर से दुलहिन को दिया जानेवाला सिंगार-सामग्री का डिब्बा ; —भरी - सुख-सौभाग्ययुक्त ; —रात - दूल्हे-दुलहिन के साथ सोने की पहली रात ; —सेज - बरात का वह पलंग जिसपर दूल्हा-दुलहिन सोते हैं ; **मु०** —उजड़ना - विधवा होना ; —मनाना - सौभाग्य की कामना करना।
**सुहागन, सुहागिन** - स्त्री० [हिं] सधवा, सौभाग्यवती।
**सुहागा** - पु० [हिं] सोना गलाने और दवा के काम आनेवाला एक क्षारद्रव्य ; लकड़ी का आला जिससे किसान खेत के मिट्टी के ढेले तोड़ते हैं।
**सुहागी** - पु० [हिं] भाग्यवान पुरुष।
**सुहाता** - वि० [हिं] सहने लायक़।
**सुहाना** - 1. अ० [हिं] शोभित होना ; पसंद आना , फबना, भाना ; 2. वि० सुंदर सुहावना।
**सुहारी** - स्त्री० [हिं] सादी पूरी।
**सुहाल** - पु० [हिं] मैदे में मोयन देकर बनाया जानेवाला एक नमकीन पकवान।
**सुहावता** - वि० [हिं] सुहानेवाला।
**सुहावना** - वि० [हिं] भला लगनेवाला ; सुंदर।
**सुहास** - पु० [सं] मृदु हास।
**सुहासिनी** - वि० [सं] सुंदर हँसी हँसनेवाली।

**सुहित** - 1. वि० [सं] अति उपयुक्त; तृप्त; विहित; स्नेही; हितकर; 2. पु० तृप्ति; प्राचुर्य।

**सुहृत्** - 1. पु० [सं] मित्र; कुंडली में लग्न से चौथा स्थान; 2. वि० सुंदर स्नेह-युक्त हृदयवाला।

**सुहृदय** - वि० [सं] स्नेही; सुंदर हृदयवाला।

**सुहृद्** - 1. पु० [सं] सुहृत्; **यौ०** —वाक्य - सद्भावपूर्ण सम्मति।

**सुहेला** - 1. वि० [हिं] सुखद; सुहावना; 2. पु० मंगल-गीत; प्रियजन।

**सूँ** - अव्य० [हिं] सो।

**सूँइस** - पु० [हिं] सूँस।

**सूँघना** - स० [हिं] नाक से गंध ग्रहण करना; बहुत कम खाना; डँसना (सर्प का)।

**सूँघा** - पु० [हिं] जासूस; मिट्टी सूँघकर ज़मीन के अंदर की चीज़ों का पता बतलानेवाला; सूँघकर शिकार की टोह लगानेवाला।

**सूँड़** - स्त्री० [हिं] हाथी की थंभे की आकार-वाली नाक जो नीचे लटकती रहती है, शुंड।

**सूँड़ी** - स्त्री० [हिं] फसलों में लगनेवाला एक कीड़ा।

**सूँस** - पु० [हिं] चार-पाँच हाथ लंबा एक जलजंतु, सूँइस।

**सूँह** - अव्य० [हिं] सामने।

**सू** - 1. वि० [सं] उत्पन्न करनेवाला; 2. स्त्री० माता; प्रसव; [फ़ा] तरफ़; दिशा।

**सूअर** - पु० [हिं] एक तरह के पालतू तथा जंगली जानवर जिनमें पालतू मैला खानेवाले और जंगली बहुत बलवान तथा हिंसक होते हैं; **यौ०** —का बच्चा - हरामजादा (गाली)।

**सूअरनी, सूअरी** - स्त्री० [हिं] मादा सूअर; बहुत बच्चों की माँ।

**सूआ** - पु० [हिं] बड़ी सुई; तोता।

**सूई** - स्त्री० [हिं] लोहे का नोकदार बारीक़ तार जिसके छेद में तागा डालकर कपड़ा सीते हैं, सुई; तराजू का काँटा; कुतुबनुमा या घड़ी आदि का काँटा; **यौ०** —डोरा - मालखंभ की एक कसरत; —का काम - सुई से बनाये हुए बेलबूटे; **मु०** —का भाला बना देना - ज़रा-सी बात को बहुत तूल दे देना; —के नाके से ऊँट निकालना - अनहोनी बात को कर दिखाना।

**सूकना** - अ० [हिं] सूखना।

**सूकर** - पु० [सं] सूअर; कुम्हार; सफ़ेद चावल; एक मछली; एक तरह का हिरन; **यौ०** —नयन - लकड़ी में किया जानेवाला एक प्रकार का छेद।

**सूकरी** - स्त्री० [सं] सूअरी; वाराही देवी; शहतीर पर की छोटी खँभिया।

**सूका** - 1. पु० [हिं] चवन्नी; सूखा, अना-वृष्टि; 2. वि० शुष्क।

**सूक्त** - 1. वि० [सं] सुंदर उक्ति-विशिष्ट (वाक्य); अच्छी तरह से कहा हुआ; 2. पु० वेद का मंत्र या स्तोत्र; सुंदर कथन; **यौ०** —चारी - अच्छी बात या सम्मति के अनुसार चलनेवाला; —दर्शी, द्रष्टा - मंत्रद्रष्टा; वेदमंत्रों का रचयिता; —वाक्य - सूक्ति।

**सूक्ति** - स्त्री० [स] सुंदर उक्ति; चमत्कार-पूर्ण वाक्य।

**सूक्ष्म** - 1. वि० [सं] बहुत छोटा; अनुरूप; बहुत बारीक़; बारीक़ बातों को देखने-समझने में समर्थ (दृष्टि या बुद्धि); कठिनाई से समझ में आने योग्य; तुच्छ; धूर्त; बिलकुल ठीक; रोमकूप

से प्रवेश करनेवाली (औषध) ; 2. पु० अध्यात्म ; कपट ; परमात्मा ; शिव ; रीठा ; सुपारी ; बारीक़ धागा ; बुना हुआ रेशम ; मज्जा ; **यौ०** —तंडुल - ख़सख़स, पोस्ते का दाना ; —दर्शक - ख़ुर्दबीन, अणुवीक्षण-यंत्र ; —दर्शी - बहुत बुद्धिमान ; —देही - परमाणु ; सूक्ष्म शरीरवाला ; —पत्र - धनिया ; बबूल ; माष; लाल ईख ; छोटा बैल ; —पत्रिका - सौंफ ; छोटी ब्राह्मी ; —बीज - पोस्ता दाना ; —बुद्धि, मति - बारीक़ बातो को समझ सकनेवाली बुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि ; —मक्षिक - मच्छर ; —मूला - ब्राह्मी ; —शरीर - जीव के सत्रह अवयवों का समूह (भोगशरीर, पंच प्राण, पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच तन्मात्र और मन-बुद्धि) ; —शर्करा - रेत ; बालुका ; —स्फोट - एक प्रकार का कुष्ठरोग ।

**सूख** - वि० [हिं] सूखा हुआ, शुष्क ।

**सूखना** - अ० [हिं] रसहीन या जलहीन होना ; तरी या गीलापन का न रह जाना ; दुबला होना ; डरना ; कड़ा पड़ जाना ; नष्ट होना ; **मु०** सूखकर काँटा हो जाना - बहुत दुबला हो जाना ; सूख जाना ; सुन्न या स्तब्ध हो जाना ।

**सूखा** - 1. वि० [हिं] उदास; रसहीन ; शुष्क, ख़ुश्क ; स्नेहरहित ; कोरा ; निरा ; 2. पु० अकाल ; बच्चो का एक रोग जिसमें उनकी देह सूखते जाने के साथ-साथ हड्डियाँ नरम होती जाती है ; ख़ुश्क तंबाकू ; भाँग ; **यौ०** —जवाब - दो टूक इनकार ; सूखी तरकारी - बिना रसे की तरकारी ; **मु०** —टालना - कोरा जवाब देना ; —पड़ना - अकाल पड़ना ; पानी न बरसना ; —लगना - दुबला हो जाना ; सूखा रोग होना ।

**सूचक** - 1. वि० [हि] सूचना करने या जतानेवाला ; भेद बतानेवाला ; 2. पु० चुगलख़ोर ; दर्ज़ी ; सूई ; नाटक का सूत्रधार; शिक्षक ; भेदिया ; वर्णन करनेवाला; कुत्ता ; कौआ ; पिशाच ; बिल्ली ; दुष्ट ; सिद्ध ; बुद्ध ; **यौ०** —वाक्य - भेदिये की बतायी हुई बात ।

**सूचन** - पु० [सं] सूचित करना या जताना ; संकेत करना ; छेदने की क्रिया ; भेद खोलना ; चोट पहुँचाना ; जासूसी करना ; दुष्टता ; मार डालना ।

**सूचना** - स्त्री० [सं] जताने या बताने की क्रिया ; संकेत ; अभिनय ; दृष्टि ; हिंसा ; विज्ञापन ; इत्तिला ; **यौ०** —पत्र - इश्तिहार ।

**सूचनीय** - वि० [सं] सूचना करने या जताने योग्य ।

**सूचि** - स्त्री० [सं] सूई ; छेद करने का कोई आला ; किसी नोकदार चीज़ की नोक ; ग्रंथो के विषयो की तालिका ; अभिनय ; स्तूप ; सेना का एक व्यूह ; कटघरा ; सिटकनी ; स्तूप ; सूप बनानेवाला ; केतकी ; संकेत ; **यौ०** —पुष्प - केवड़ा ; —भेद्य - सूई से भेदन करने योग्य ; बहुत घना ।

**सूचिका** - स्त्री० [सं] सूई ; केतकी ; हाथी की सूँड़ ; एक अप्सरा ।

**सूचित** - वि० [सं] बताया या जताया हुआ ; कहा हुआ ; छेद किया हुआ ; इशारे से बताया हुआ ; पूर्णतः उपयुक्त ।

**सूची** - 1. स्त्री० [सं] सूचि ; मात्रिक छंदों की शुद्धता ; संख्या आदि जाँचने की एक रीति ; तालिका ; **यौ०** —कर्म - सिलाई ; —तुंड - मच्छर ; —पत्र - वह पत्र या पुस्तक जिसमें पुस्तको या किसी चीज़ की नामावली विषय व दाम आदि बताते

हुए दी जाती है; एक प्रकार का ऊख; 2. वि० [सं] छेदनेवाला; जतानेवाला; भेद प्रकट करनेवाला; भेद लेनेवाला; 3. पु० भेदिया।

**सूज** - स्त्री० [हिं] सूई; सूजन।

**सूजन** - स्त्री० [हिं] सूजने का भाव या स्थिति, शोथ।

**सूजना** - अ० [हिं] किसी अंग का फूल जाना।

**सूजा** - पु० [हिं] बड़ी सूई या इस तरह का कोई औज़ार।

**सूज़ाक** - पु० [फ़ा] एक रोग जिसमें पेशाब में जलन और पीड़ा होती है।

**सूजी** - 1. स्त्री० [हिं] हलुवा आदि बनाने के काम आनेवाला गेहूँ का रवेदार आटा; 2. पु० दर्ज़ी।

**सूझ** - स्त्री० [हि] कल्पना; निगाह; सूझने का भाव; कोई नयी या दूर की बात सोचना; **यौ०** —बूझ - सोचने-समझने की शक्ति।

**सूझना** - अ० [हि] दिखायी देना; दिमाग़ में या ध्यान मे आना।

**सूत** - 1. पु० [हिं] रूई या रेशम आदि का बारीक़ तार, सूत्र; डोरा; लकड़ी या पत्थर पर निशान डालने की डोरी; करधनी; एक नाप; बच्चो के गले का गंडा; 2. वि० अच्छा; **यौ०** —धार - बढ़ई; —लड़ - रहँट।

**सूत** - 1. पु० [सं] रथ हाँकनेवाला; रथ हाँकने का काम करनेवाली एक जाति; भाट; पुराण की कथा कहनेवाला; लोमहर्षण मुनि; सूर्य; बढई; पारा; 2. वि० प्रेरित; प्रसूत।

**सूतक** - पु० [सं] अशौच; जन्म का अशौच; जन्म; पारा; बाधा; **यौ०** —गेह - प्रसूतिगृह; —भोजन - जन्म-संबधी भोजन।

**सूतना** - अ० [हिं] सोना।

**सूतरी, सूतली** - स्त्री० [हिं] रस्सी।

**सूता** - 1. पु० [हिं] सूत; एक प्रकार का रेशम; 2. स्त्री० [सं] प्रसूता; जच्चा।

**सूति** - 1. स्त्री० [सं] प्रसव; उद्गम; फसल की पैदावार; संतान; सिलाई; सोमरस निकालने का स्थान; 2. पु० हंस।

**सूतिका** - स्त्री० [सं] नवप्रसूता; **यौ०** —गृह, गेह, भवन - जच्चाख़ाना, सौरी।

**सूती** - 1. वि० [हिं] सूत-सम्बंधी, सूत का बना हुआ; **यौ०** —कपड़ा - सूत का बना हुआ कपड़ा; —माल - सूत की बनी हुई चीज़ें; 2. स्त्री० सीपी; [सं] सूत की पत्नी।

**सूत्र** - पु० [सं] गंभीर अर्थवाला छोटा वाक्य जिसमें दर्शन आदि शास्त्रों की रचना हुई है; तंतु; तागा; जनेऊ; धागो की राशि; कठपुतली नचाने की डोरी; नियम; योजना; रेशा; करधनी; ज़रिया; निमित्त; **यौ०** —कार - सूत्र रचनेवाला जुलाहा; बढ़ई; सूत कातनेवाला; —पीड़ा - सूत का एक खेल जिसकी गणना चौसठ कलाओ में होती है; —ग्रंथ - सूत्र में रचित मूलग्रंथ; —जाल - सूत का बना हुआ जाल; —तंतु - तार; अध्यवसाय; —धार - नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट; इंद्र; बढ़ई; —पात - कार्य का आरंभ; —पुष्प - कपास; —बद्ध - सूत्ररूप में रचित; —यंत्र - करघा; ढरकी; सूत का बना जाल; —वेष्टन - बुनने की क्रिया; ढरकी; —शास्त्र - शरीर।

**सूत्रित** - वि० [सं] नत्थी किया हुआ; सिलसिले से लगाया हुआ; सूत्ररूप से कथित।

**सूथन** - पु० [हिं] सुथना।

**सूथनी** - स्त्री० [हिं] स्त्रियो के पहनने का पायजामा।

**सूद** - पु० [सं] रसोइया; व्यंजन; कुआँ; झरना; मटर की दाल; वध; सारथी का काम; दोष; पंक; ढालना; [फ़ा] ब्याज; लाभ; भलाई; यौ० —ख़ोर, ख़्वार - ब्याज से जीविका चलानेवाला; —ख़ोरी - ब्याज-बट्टे का रोज़गार; —दरसूद - चक्रवृद्धि ब्याज।

**सूदना** - स० [हिं] नष्ट करना।

**सूदी** - वि० [हिं] वह रक़म जिसपर ब्याज मिलता हो; मु० —चलाना - सूद पर रुपया देना।

**सूध** - 1. वि० [हिं] शुद्ध; 2. स्त्री० सीध; 3. अव्य० सीधा।

**सूधना** - अ० [हिं] सत्य होना; सफल होना।

**सूधा** - वि० [हिं] निष्कपट; सीधा; जो उलटा न हो; जो वक्र न हो।

**सूधे** - अव्य० [हिं] सीधे से; यौ० —सूध - सीधा; दो टूक।

**सून** - वि० [हिं] शून्य; रहित; यौ० —सान - सुनसान।

**सूना** - 1. वि० [हिं] जनहीन; ख़ाली; 2. पु० एकान्त स्थान; यौ० —पन - सूना लगना; शून्यता।

**सूनु** - पु० [सं] बच्चा; बेटा; आक; छोटा भाई; प्रेरणा करनेवाला (वैदि०); नाती; सूर्य।

**सूनृत** - 1. वि० [सं] प्रिय; सत्य और प्रिय; शुभ; सद्भावपूर्ण; 2. पु० सत्य और प्रिय वाक्य; कल्याणकारिता।

**सूप** - पु० [सं] पकी हुई दाल; जूस; बर्तन; बाण; मसाला; रसोइया; [हिं] छाज।

**सूपा** - पु० [हिं] सूप, छाज।

**सूपोदन** - पु० [सं] दाल-भात।

**सूफ़** - पु० [अ] ऊन; कलम का रेशा; दवात में डाला जानेवाला कपड़ा; घाव में भरा जानेवाला कपड़ा; गोटा बुनने का बाना।

**सूफ़ार** - पु० [फ़ा] तीर की चुटकी; सूई का छेद।

**सूफ़िया** - पु० [अ] मुसलमान साधुओ का एक संप्रदाय।

**सूफ़ियाना** - वि० [अ] सूफ़ियो-जैसा; सादा।

**सूफ़ी** - 1. वि० [फ़ा] ऊनी कपड़े पहननेवाला; पवित्र; संत; 2. पु० संसार की आसक्ति से दूर रहकर ईश्वर-प्राप्ति की साधना करनेवाला, सूफ़िया संप्रदाय का अनुयायी; यौ० —ख़्याल - सूफ़ियो के-से विचार रखनेवाला।

**सूबा** - पु० [अ] प्रान्त; सूबेदार; यौ० सूबेदार - सूबे का शासक; सेना का एक छोटा अफ़सर; सूबेदारी - सूबेदार का पद या कार्य।

**सूम** - 1. वि० [हिं] कंजूस; 2. पु० आकाश, जल; दूध।

**सूर** - 1. वि० [हिं] अंधा; शूर; 2. पु० सूरदास; शूल; सूकर; भूरे रंग का घोड़ा; यौ० —सावंत - युद्धसचिव; [सं] आक; सूर्य; आचार्य; यौ० —कंद - सूरन, ओल; —कांत - सूर्यकान्तमणि; —चक्षु - सूर्य की तरह चमकनेवाला; —ज - कर्ण; यम; शनि; सुग्रीव; क्रम में; —जा - यमुना; [अ] तुरही; [फ़ा] लाल रंग; हर्ष; एक अफ़गान जाति।

**सूरज** - पु० [हिं] सूर्य; सूरदास; एक प्रकार का गोदना; मु० —को चिराग़ या दीपक दिखाना - अति बुद्धिमान व्यक्ति

को कुछ बताना या सिखाना; प्रसिद्ध पुरुष का परिचय देना; —पर थूँकना या धूल फेंकना - बिलकुल निर्दोष व्यक्ति पर लांछन लगाकर स्वयं लांछित होना।

**सूरण** - पु० [स] शूरण, ज़मींकन्द।

**सूरत** - 1. वि० [सं] कृपालु; शान्त; 2. स्त्री० सुध; स्मरण; [हिं] आत्मा; [अ] शकल; चित्र; भेस; उपाय; ढंग; तौर; सुंदरता; स्थिति; रंग-ढंग; वस्तु का बाह्य रूप; **यौ०** —आशना - मामूली जान-पहचानवाला; —आशनाई - अल्प परिचय; —गर - चित्रकार; मूर्तिकार; —दार - सुंदर; —परस्त - रूप की पूजा करनेवाला; केवल रूप देखनेवाला; —शकल - रूप; —सीरत - रूप-गुण; —हराम - जो ऊपर से अच्छा और भीतर से बुरा हो; जिसकी सूरत से धोखा हो; **मु०** —दिखाना - सामने आना; —नज़र आना - उपाय सूझना; —निकल आना - अधिक सुंदर हो जाना; उपाय सूझ आना; —पर झाड़ू फेरना - अतिशय घृणा के कारण शकल न देखना; नाम न लेना; —बदलना - भेस बदलना; हालत बदलना; —बनाना - शकल बनाना; मुँह चिढ़ाना; चित्र बनाना; चेहरे से कोई भाव प्रकट करना; —बिगड़ना - शकल बुरी हो जाना; —बिगाड़ना - शकल खराब कर देना; —से बेजार होना - अतिशय घृणा या रोष होना; देखना भी सह्य न होना।

**सूरताई** - स्त्री० [हिं] वीरता।

**सूरति** - स्त्री० [हिं] याद, स्मरण; शकल, रूप।

**सूरन** - पु० [हिं] ओल, शूरण।

**सूरमा** - पु० [हिं] योद्धा।

**सूरा** - पु० [हिं] अनाज का एक कीड़ा; अंधा मनुष्य; [अ] क़ुरान का एक अध्याय; सूरत।

**सूराख़** - पु० [फ़ा] छेद; **यौ०** —दार - छेदवाला।

**सूरि** - पु० [सं] पंडित; पूजा करनेवाला; सूर्य; जैनाचार्यों की उपाधि; बृहस्पति।

**सूरी** - 1. स्त्री० [सं] पंडिता; सूर्यपत्नी; राई; बर्छी; शूली; 2. वि० [फ़ा] सूर जाति का।

**सूर्य** - पु० [सं] सौरमंडल का प्रधान ग्रह जिसकी प्रदक्षिणा पृथ्वी करती रहती है, सूरज; बारह की संख्या; **यौ०** —ग्रह, ग्रहण - चंद्रमा की छाया पड़ने से सूर्यबिंब का छिप जाना; —मंडल - सूर्य का घेरा; —मुखी - पीले रंग का एक बड़ा फूल जो सूर्य की गति के साथ ऊपर उठता और नीचे झुकता है; —रश्मि - सूर्य की किरण; —विकासी - सूर्य के प्रकट होने पर खिलनेवाला; —संक्रम, संक्रमण, संक्रांति - सूर्य का दूसरी राशि में प्रवेश; —सारथि - अरुण।

**सूर्यास्त** - पु० [सं] सूरज का डूबना; संध्या।

**सूर्योदय** - पु० [सं] सूरज का उगना; प्रातःकाल; **यौ०** —गिरि - उदयाचल।

**सूल** - पु० [हिं] शूल; माला का फुलरा।

**सूलना** - 1. अ० [हिं] चुभना; व्यथित होना; 2. स० भाले से छेदना; दुख देना।

**सूली** - स्त्री० [हिं] नुकीले लोहे के छड़ की नोक पर किसी को चढाकर उसके प्राण लेने का एक प्रकार।

**सूवना** - 1. अ० [हिं] बहना; 2. पु० तोता।

**सूवर** - पु० [हिं] सुअर।
**सूवा** - पु० [हिं] तोता।
**सूस** - 1. पु० [हिं] एक जलजंतु, सूँस; 2. स्त्री० [अ] मुलेठी; [फ़ा] गोह।
**सूसमार** - 1. पु० [हिं] सूँस; 2. स्त्री० [फ़ा] गोह।
**सूहा** - 1. पु० [हिं] एक प्रकार का गहरा लाल रंग; एक संकर राग; 2. वि० लाल।
**सूही** - 1. वि० [हिं] लाल; 2. स्त्री० लालिमा।
**सृक** - 1. पु० [सं] बाण; वज्र; वायु; 2. स्त्री० माला।
**सृगाल** - पु० [सं] गीदड़; दुष्ट; कायर आदमी; यौ० —जंबु - तरबूज; बेर का फल।
**सृगालिका** - स्त्री० [सं] गीदड़ी; दंगा; पलायन; लोमड़ी।
**सृजक** - पु० [हिं] रचनेवाला।
**सृजन** - पु० [हिं] सर्जन; यौ० —शीलता - रचना-शक्ति; —हार - सृष्टिकर्ता।
**सृजना** - स० [हिं] रचना करना; बनाना।
**सृति** - स्त्री० [स] गमन; जन्म; निर्माण; चोट पहुँचाना; मार्ग; सरकना।
**सृष्ट** - वि० [सं] निर्मित; त्यक्त; युक्त; फेंका हुआ; विभूषित; संपन्न; निश्चित; तुला हुआ; प्रचुर।
**सृष्टि** - स्त्री० [सं] संसार; प्रकृति; निर्माण; परित्याग; पदार्थ का भावाभाव; संसार की उत्पत्ति; समूह; एक प्रकार की ईट; दानशीलता; यौ० —कर्ता - ब्रह्मा; —कृत् - ईश्वर; ब्रह्मा; सृष्टि करनेवाला; —विज्ञान, शास्त्र - सृष्टि की रचना आदि की मीमांसा करनेवाला शास्त्र।
**सेंक** - स्त्री० [हिं] सेंकने की क्रिया।
**सेंकना** - स० [हिं] आग पर पकाना; गरम करना।
**सेंगर** - पु० [हिं] बबूल की छीमी; एक धान; एक पौधा; राजपूतों का एक भेद।
**सेंगरा** - पु० [हिं] भारी चीज़ लटकाकर ले जाने का डंडा।
**सेंट** - 1. स्त्री० [हिं] दूध की धार; 2. पु० [अंग्रे] सुगंधित द्रव्य; ख़ुशबू।
**सेंठा, सेंथा** - पु० [हिं] सरकंडे का निचला भाग, छप्पर छाने का एक तृण।
**सेंत** - स्त्री० [हिं] किसी वस्तु की प्राप्ति में रुपये-पैसे आदि का कुछ ख़र्च न होना; यौ० —मेंत - मुफ़्त में; नाहक़।
**सेंतना** - स० [हिं] एकत्र करना; सँभालकर रखना; समेटना।
**सेंति, सेंती** - प्रत्य० [हिं] करण और अपादान कारक की विभक्ति (व्या०)।
**सेंथी** - स्त्री० [हिं] बरछी; शक्ति।
**सेंदुर** - पु० [हिं] सिंदूर।
**सेंदुरिया** - 1. पु० [हिं] लाल फूलोंवाला एक पौधा; 2. वि० सिंदूर के रंग का।
**सेंद्रिय** - वि० [सं] सजीव।
**सेंध** - स्त्री० [हिं] चोर द्वारा दीवार तोड़कर बनाया गया छेद; सुरंग।
**सेंधना** - स० [हिं] सेंध लगाना।
**सेंधा** - पु० [हिं] सिंधु नदी के पास से निकलनेवाला एक खनिज नमक।
**सेंधिया** - वि० [हिं] सेंध लगानेवाला; फूट; एक मराठा राजवंश।
**सेंधी** - स्त्री० [हिं] खजूर; खजूर की शराब; फूट।
**सेंवई** - स्त्री० [हिं] मैदे से बनाये हुए सूत के लच्छे, सिवईं; मु० —पूरना, बटना - हथेलियों से बटकर सेंवई बनाना।

**सेंवर** - पु० [हिं] सेमल।
**सेंह** - स्त्री० [हिं] सेंध।
**सेंहा** - पु० [हिं] कुआँ खोदनेवाला।
**सेंहुआ** - पु० [हिं] एक तरह का चर्मरोग जिसमें चमड़े पर सफ़ेद-सा धब्बा हो जाता है।
**सेंहुड़** - पु० [हिं] थूहर।
**से** - 1. प्रत्य० [हिं] करण और अपादान-कारक का चिन्ह (व्या०); 2. वि० तुल्य; 3. सर्व० 'सर्व' 'सो' या 'जे' का अवधी बहुवचन-रूप, वे; 4. स्त्री० सेवा।
**सेई** - स्त्री० [हिं] अनाज नापने का काठ का एक बर्तन।
**सेक** - पु० [सं] सींचने की क्रिया; अभिषेक; आर्द्र करना; नहाने के काम आनेवाला फ़ुहारा; छिड़काव; तर्पण; तैलमर्दन; किसी तरल पदार्थ की बूँद।
**सेकड़ा** - पु० [हिं] चाबुक, पैना।
**सेकुवा** - पु० [हिं] हलवाइयों का झौआ।
**सेख** - पु० [हिं] शेष, बचा हुआ अंश; शेषनाग; अंत।
**सेखर** - पु० [हिं] शेखर।
**सेखी** - स्त्री० [हिं] शेखी।
**सेच** - पु० [सं] सिंचाई, छिड़काव।
**सेचन** - पु० [सं] सिंचाई; अभिषेक; नहाने का फ़ुहारा; पानी उलीचने का पात्र; बाल्टी।
**सेचनी** - स्त्री० [सं] बाल्टी।
**सेचित** - वि० [सं] छिड़काव किया हुआ; तर किया हुआ।
**सेज** - स्त्री० [हिं] शय्या, बिस्तरा; **यौ०** —पाल - राजा के शयनागार का पहरेदार।
**सेज़दह** - 1.वि०, 2. पु० [फ़ा] तेरह।
**सेज़दुहुम** - वि० [फ़ा] तेरहवाँ।
**सेजरिया, सेजिया, सेज्या** - स्त्री० [हिं] सेज।
**सेझना** - अ० [हिं] पृथक होना।
**सेटना** - स० [हिं] मानना या समझना; कुछ महत्व समझना।
**सेठ** - पु० [हिं] महाजन; धनी आदमी, व्यापारी; सुनार।
**सेठन** - पु० [हिं] झाड़ू।
**सेठा** - पु० [हिं] सेंठा।
**सेड़ा** - पु० [हिं] एक प्रकार का भदौहाँ धान।
**सेढ़ा** - पु० [हि] सेढ़ा; नाक का मैल।
**सेत** - 1. वि० [हिं] सफ़ेद; **यौ०** —कुली - एक नागकुल; —दुति - चंद्रमा; 2. पु० सेतु, पुल।
**सेतवा** - पु० [हिं] अफ़ीम काछने की करछी।
**सेती** - प्रत्य० [हिं] से।
**सेतु** - 1. पु० [सं] पुल; बंधन; बाँध; मेंड़; पहाड़ पर का तंग रास्ता; निश्चित नियम; प्रणव; मर्यादा; रोक; कारिका; टीका; 2. वि० श्वेत; **यौ०** —पथ - पहाड़ी दुर्गम स्थानों में जानेवाला मार्ग; —बंध - बाँध या पुल आदि का निर्माण; पुल; नहर; राम के द्वारा लंका जाने के लिए समुद्र पर बनाया गया पुल।
**सेतुवा** - पु० [हिं] सत्तू।
**सेथिया** - पु० [हिं] नेत्रचिकित्सक।
**सेदरा** - पु० [हिं] तीन द्वारोंवाला दालान।
**सेध** - वि० [सं] हटाने या दूर करनेवाला।
**सेधा** - स्त्री० [सं] साही नामक जंतु।
**सेन** - 1. [सं] आश्रित; सनाथ, स्वामि-युक्त; 2. पु० [हिं] शरीर; बाज पक्षी; 3. स्त्री० सेना का समासगत रूप; सेना।

**सेनांग** - पु० [सं] सेना का कोई अंग (पैदल, हाथी, घोड़ा और रथ); सेना की कोई टुकड़ी।

**सेना** - स्त्री० [सं] फ़ौज; भाला; फ़ौज की एक बहुत छोटी टुकड़ी; वेश्याओं की प्राचीन उपाधि; **यौ०** —कक्ष - सेना का पार्श्व; —कर्म - सेना का प्रबंध या नेतृत्व; —दार - सेनानायक; सैनिक; —नायक - सेनापति; —नी - सेना-नायक; कार्तिकेय; —पाल - सेना-नायक; —भक्त - फ़ौजी रसद; बेगार; —मुख - सेना का अग्रभाग; फ़ौज की एक टुकड़ी; नगरद्वार के सामने बना हुआ बाँध; नगरद्वार तक जानेवाला ढका हुआ रास्ता; —योग - फ़ौजी सामान; —रक्ष - प्रहरी, संतरी; —वास - फ़ौज की छावनी, शिविर।

**सेनाजीव, सेनाजीवी** - पु० [सं] सैनिक कार्यों से आजीविका प्राप्त करनेवाला।

**सेनि** - स्त्री० [हिं] श्रेणी; पंक्ति।

**सेनिका** - स्त्री० [हिं] मादा बाज़।

**सेनी** - स्त्री० [हिं] रकाबी; नक्काशीदार छोटी थाली; मादा बाज़; श्रेणी; सीढ़ी।

**सेंदुर** - पु० [हिं] सिंदूर।

**सेब** - पु० [फ़ा] एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़।

**सेम** - स्त्री० [हिं] तरकारी के काम आनेवाली एक फली।

**सेमर** - पु० [हिं] शाल्मली, सेमल; दलदल।

**सेमल** - पु० [हिं] लाल फूलोंवाला एक बड़ा वृक्ष जिसके फलों से रूई निकलती है।

**सेमा** - पु० [हिं] बड़ी सेम।

**सेमिटिक** - पु० [हिं] मानव-वंश-शास्त्र के अनुसार एक मानववर्ग जिसमें अरब, यहूदी, मिश्री और सीरियन जातियों की गणना होती है।

**सेर** - 1. पु० [सं] सोलह छटाँक की एक तौल; व्याघ्र; एक धान; 2. स्त्री० एक मछली; 3. वि० [फ़ा] भरा हुआ; प्रचुर; संतुष्ट; **यौ०** —चश्म - तृष्णारहित; दानशील; —चश्मी - तृष्णा का अभाव; संतुष्टता।

**सेरवा** - पु० [हिं] ओसाने के लिए भूसा उड़ाने का कपड़ा; दीवाली के प्रातःकाल सूप पीटने की प्रथा।

**सेरही** - स्त्री० [हिं] फ़सल की उपज पर लगनेवाला एक कर।

**सेरा** - पु० [हिं] खाट के सिर की ओर की पाटी; सिंचाई की हुई ज़मीन।

**सेराना** - 1. स० [हिं] ठंडा करना; तृप्त करना; बहा देना; 2. अ० ठंडा होना; तृप्त होना; समाप्त होना; मरना; 3. पु० सिरहाना।

**सेराब** - वि० [फ़ा] अच्छी तरह सींचा हुआ; हरा-भरा; **यौ०** —हासिल - उपजाऊ; जिससे बहुत लाभ हो।

**सेराबी** - स्त्री० [फ़ा] सिंचाई; हरा-भरा होना।

**सेरी** - स्त्री० [फ़ा] तृप्ति; ऊब जाना; मार्ग।

**सेरीना** - स्त्री० [हिं] असामी से ज़मीन्दार को मिलनेवाले अनाज या चारे का अंश।

**सेल** - पु० [हिं] भाला; पानी उलीचने का काठ का बर्तन; हल में लगी हुई बीज गिराने की नली।

**सेला** - पु० [हिं] रेशमी चादर या साफ़ा; उसना चावल

**सेलिया** - 1. पु० [हिं] घोड़े की एक जाति; 2. स्त्री० बिल्ली।

**सेली** - स्त्री० [हिं] बरछी ; एक मछली ; छोटी चादर ; स्त्रियों का एक गहना ।

**सेल्ल, सेल्ला** - पु० [हिं] भाला ।

**सेलहना** - अ० [हि] चल बसना ; मर जाना ।

**सेलहर** - पु० [हिं] नस ।

**सेलहा** - पु० [हिं] रेशमी चादर या साफा ; अगहनी धान ।

**सेलही** - स्त्री० [हिं] सूत या ऊन आदि की माला ; छोटी चादर ।

**सेवँई** - स्त्री० [हिं] चारे के काम आनेवाली एक घास ; सेंवई ।

**सेवँ** - पु० [हिं] एक ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी अलमारी बनाने के काम आती है ।

**सेव** - 1. पु० [हिं] बेसन से बननेवाला सूत-जैसा पकवान जो नमकीन या मीठा होता है ; [फा] सेब ; 2. स्त्री० सेवा ।

**सेवक** - वि० [सं] सेवा करनेवाला ; पूजा या सम्मान करनेवाला ; परिचारक ; अभ्यास करनेवाला ; आराधक ; आश्रित व्यक्ति ; प्रयोग में लानेवाला ; भक्त ; सीनेवाला ।

**सेवकाई** - स्त्री० [हिं] सेवा, परिचर्या ।

**सेवग** - पु० [हिं] सेवक ।

**सेवदाना** - पु० [हिं] सोयाबीन के दाने ।

**सेवन** - पु० [सं] सेवा ; अभ्यास ; उपासना ; बाँधना , वास करना ; टाँका लगाना ; व्यवहार ; बोरा ; चारे के काम आनेवाली एक घास ।

**सेवना** - 1. स० [हिं] सेवा करना ; 2. स्त्री० [सं] आराधना ।

**सेवनी** - स्त्री० [सं] सूई ; शरीर के किसी अंग का सीवन-जैसा योग ; सीवन ; जूही , दासी ।

**सेवनीय** - वि० [सं] आराध्य ; व्यवहार्य ; सेवा करने योग्य ; सीने योग्य ।

**सेवर** - 1. पु० [हिं] सेमल ; 2. वि० कम पका हुआ ।

**सेवल** - पु० [हिं] ब्याह की एक रस्म जिसमें दूल्हा आरती की थाली से सिर छुलाता है ।

**सेवांजलि** - स्त्री० [सं] अंजलि में कोई वस्तु रखकर किसीको भक्तिपूर्वक अर्पित करना ; अंजलिबद्ध होकर भक्तिपूर्वक प्रणाम करना ।

**सेवा** - स्त्री० [सं] आराधना ; पूजा ; परिचर्या ; उपयोग ; प्रयोग ; आश्रय ; आसक्ति ; चाटुकारिता ; रक्षण ; **यौ०** —जन - नौकर ; —टहल - खिदमत ; शुश्रूषा ; —दक्ष - सेवा करने में कुशल ; —धर्म - सेवा-संबंधी कर्तव्य ; —बंदगी - आराधना ; उपासना ; —वृत्ति - सेवा द्वारा प्राप्त जीविका , नौकरी ; —व्यवहार - सेवाकार्य ।

**सेवाय** - 1. अव्य० [हिं] अलावा, सिवा ; 2. वि० अधिक ।

**सेवि** - 1. पु० [सं] बेर ; सेव ; 2. वि० पूज्य ; पूजित ।

**सेविका** - स्त्री० [सं] दासी ; सेंवई ।

**सेवित** - वि० [सं] पूजित ; आश्रित ; उपभुक्त ; जिसकी सेवा की गयी हो ; प्रयुक्त ।

**सेव्य** - 1. वि० [सं] आराध्य ; सेवा करने योग्य ; अध्ययन के योग्य ; रक्षणीय , व्यवहार में लाने योग्य ; संचित करने योग्य ; 2. पु० स्वामी ; अश्वत्थवृक्ष ; खस ; गौरैया ; जल ; दही का खूब जमा हुआ बीच का हिस्सा ; समुद्री नमक ; रक्तचंदन ; **यौ०** —सेवक - स्वामी और सेवक ; —सेवकभाव - उपास्य को स्वामी मानकर सेवक के समान अपना आचरण रखना ।

**सेश्वर** - वि० [सं] ईश्वर की सत्ता माननेवाला दर्शन।

**सेस** - पु० [हिं] शेष ; **यौ०** —रंग - सफ़ेद रंग।

**सेसर** - पु० [हिं] ताश का एक खेल ; ज़ाल।

**सेसरिया** - वि० [हि] जालिया ; जाल करनेवाला।

**सेह** - पु० [हिं] सेंहा ; [फ़ा] तीन (समासादि में) ; **यौ०**—ख़ाना - तिमंजिला मकान ; —हज़ारी - मुसलमानो के शासन-काल में दरबारियों को दी जानेवाली एक उपाधि।

**सेहत** - स्त्री० [अ] आरोग्य ; ठीक होना ; निर्दोष होना ; रोगमुक्ति ; शुद्धि ; **यौ०** —ख़ाना - पाख़ाना ; —नामा - तंदुरुस्ती का प्रमाणपत्र ; शुद्धिपत्र ; —बख़्श - आरोग्यप्रद ; —याब - बीमारी से उठनेवाला ; **मु०** —पाना - आरोग्य लाभ करना।

**सेहथना** - स० [हिं] झाड़-बुहार व लीप-पोतकर साफ़-सुथरा बनाना।

**सेहरा** - पु० [हिं] दूल्हे और दुलहिन के सिर पर बाँधी जानेवाली फूलो या गोटे आदि की लड़ियाँ जो उनके मुँह पर लटकती रहती हैं ; सेहरा बाँधने के समय गाया जानेवाला गीत ; क़ब्र के ताखे़ पर रखी जानेवाली फूल की माला ; **यौ०** —बँधाई - सेहरा बाँधने का नेग जो बहनोई को दिया जाता है ; **मु०** —बाँधना - सेहरा सिर पर रखा जाना ; काम का श्रेय दिया जाना; दूल्हा बनाया जाना ; सेहरे के फूल खिलना - विवाह का समय आना।

**सेहरी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की मछली।

**सेहियान** - पु० [हिं] खलिहान साफ़ करने का झाड़ू।

**सेहुंड** - पु० } [सं] थूहर।
**सेहुंडा** - स्त्री }

**सेह्र** - पु० [अ] इंद्रजाल ; जादू-टोना ; मंत्र ; **यौ०** —बयान - सुंदर व ललित पदावली बोलनेवाला ; —साज़ जादूगर।

**सैंगर** - पु० [हिं] बबूल की फली।

**सैंतालीस** - 1. वि० [हिं] चालीस और सात ; 2. पु० सैंतालीस की सख्या।

**सैंतीस** - 1. वि० [हिं] तीस और सात ; 2. पु० सैंतीस की संख्या।

**सैंथी** - स्त्री० [हिं] भाला ; शक्ति।

**सैंदूर** - वि० [सं] सिंदूर के रंगवाला ; सिंदूर से रंगा हुआ।

**सैंधव** - 1. वि० [सं] सिंधुप्रदेश का ; समुद्र-संबंधी ; समुद्र या सिंधु से उत्पन्न ; 2. पु० सेंधा नमक, सिंधुप्रदेश का निवासी ; सिंधुप्रदेश का घोड़ा।

**सैंहथी** - स्त्री० [हिं] बरछी, छोटा बरछा।

**सै** - 1. स्त्री० [हि] ताक़त ; बढ़ती ; सार ; 2. वि०, 3. पु० सौ ; बहुत।

**सैकंट** - पु० [हिं] बबूल की जाति का एक पेड़।

**सैकड़ा** - पु० [हिं] सौ।

**सैकड़े** - अव्य० [हिं] प्रतिशत, फ़ी-सदी।

**सैकत** - 1. वि० [सं] रेतीला ; रेती से बना ; 2. पु० रेतीला किनारा।

**सैक़ल** - पु० [अ] सफ़ाई ; हथियारों को माँजकर चमकाना ; **यौ०** —गर - सिकलीगर ; सान धरनेवाला।

**सैका** - पु० [हिं] कोल्हू से गन्ने का रस निकालने का घड़े-जैसा एक पात्र; एक सौ पूले ; कटकर आयी हुई फ़सल की राशि।

**सैथी** - स्त्री० [हिं] भाला।

**सैद** - पु० [अ] शिकार ; शिकार का जानवर ; **यौ०**— गाह - शिकारगाह।

**सैद्धांतिक** - 1. वि० [सं] सिद्धांत-संबंधी; सिद्धात जाननेवाला; 2. पु० सिद्धांत जाननेवाला व्यक्ति।

**सैन** - 1. स्त्री० [हिं] इशारा; निशान, सेना; 2. पु० शयन; बाज पक्षी; **यौ०** —पति - सेनापति; —**भोग** - नैवेद्य, शयनकाल का भोग।

**सैना** - 1. स्त्री० [हिं] फ़ौज; 2. पु० संकेत; **यौ०**— पति - सेनानायक।

**सैनिक** - 1. वि० [सं] फ़ौजी; 2. पु० सिपाही; प्रहरी; व्यूहबद्ध सेना; प्राणिवध के लिए नियुक्त व्यक्ति, जल्लाद; **यौ०** —वाद - युद्ध का समर्थन करनेवाला सिद्धात।

**सैनिकता** - स्त्री० [सं] सैनिक जीवन; युद्ध।

**सैनी** - 1. स्त्री० [हिं] सेना; 2. पु० नाई।

**सैन्य** - 1. वि० [सं] सेना-संबंधी; 2. पु० प्रहरी; सेना; सैनिक; शिविर; **यौ०**— क्षोभ - सेना का विद्रोह।

**सैफ़** - स्त्री० [अ] तलवार; **यौ०** —ज़बान - जिसका आशीर्वाद सत्य हो; जिसकी वाणी में प्रभाव हो।

**सैफ़ा** - पु० [फ़ा] जिल्दसाज़ों का एक औज़ार जिससे वे कागज़ काटते है।

**सैफी** - वि० [हि] टेढ़ा; तिरछा।

**सैफ़ी** - स्त्री० [अ] एक दुआ; तसबीह।

**सैयद** - पु० [अ] इमाम; नेता; फ़ातिमा से उत्पन्न अली का वंश।

**सैयाँ** - पु० [हिं] पति; स्वामी।

**सैया** - स्त्री० [हिं] शय्या, बिस्तर।

**सैयाद** - पु० [अ] बहेलिया; मछुआ; शिकारी।

**सैयार** - 1. वि० [अ] घुमक्कड़; 2. पु० ग्रह।

**सैयारा** - पु० [अ] सूर्य की परिक्रमा करनेवाला ग्रह।

**सैयाल** - 1. वि० [अ] बहनेवाला; तरल; 2. पु० तरल पदार्थ।

**सैयाह** - पु० [अ] घुमक्कड़, पर्यटक।

**सैयाही** - स्त्री० [अ] भ्रमण; सैर-सपाटा।

**सैरंध्री** - स्त्री० [सं] अंतःपुर की दासी; दूसरे के घर में जाकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्री; पांडवो के अज्ञातवास के समय विराट नरेश के महल में द्रौपदी का नाम।

**सैर** - स्त्री० [अ] भ्रमण; तमाशा; दृश्य; किसी रमणीय स्थान में जाकर खाना-पीना और गाना-बजाना; मनोरंजन के लिए किसी पुस्तक को उलट-पुलटकर देखना; **यौ०** —गाह - रमणीय स्थान; —सपाटा - मन बहलाने या सुंदर दृश्य देखने के लिए घूमना; सैरो-शिकार - सैर और शिकार में समय बिताना।

**सैल** - 1. स्त्री०, 2. पु० [अ] जलधारा; बाढ़; शैल; सैर।

**सैला** - पु० [हिं] छेद आदि में भरने का पच्चड़; जुए के सिरे पर लगायी जानेवाली खूँटी; डंठल से दाने झाड़ने का डंडा; लकड़ी का चीरा हुआ टुकड़ा; पतवार का दस्ता।

**सैलानी** - वि० [हिं] घुमक्कड़; मनमौज़ी।

**सैलाब** - पु० [फ़ा] बाढ़; **यौ०** —ची - चिलमची।

**सैलाबा** - पु० [फ़ा] पानी में डूबी हुई फ़सल।

**सैलाबी** - 1. वि० [फ़ा] बाढ़-संबंधी; 2. स्त्री० ठंडक; तरी; नदी की बाढ़ से सींची जानेवाली ज़मीन।

**सैली** - स्त्री० [हिं] चैली।

**सैवुम** - 1. वि० [फ़ा] तीसरा; 2. पु० मृत व्यक्ति का तीजा।

**सैह** - वि० [फ़ा] तीन; **यौ०** —कर्रर

तीसरी बार ; —गूना - तिगुना ; —गोशा - तिकोना ; —दरा - तीन दरवाज़ोंवाला दालान ; मेहराबदार तीन दरवाज़े ; —दरी - तीन दरवाज़ोंवाला छोटा कमरा ; —पहर - तीसरे पहर का वक़्त ; —पहरी - तीसरा पहर ; —पाई, पाया - तिपाई ; —फ़सला - साल में तीन बार फलनेवाला ; — बंदी - हर तीसरे महीने अदा की जानेवाली किश्त या तनख्वाह ; —बारा - तीसरी बार ; —मंजिला - तीन मंजिलोंवाला (मकान)।

**सैहथी** - स्त्री० [हिं] शक्ति ; भाला ।

**सैहा** - पु० [हिं] पानी आदि ढालने का मिट्टी का पात्र ।

**सों** - 1. प्रत्य० [हिं] करण तथा अपादान-कारक का चिन्ह, 'से' ; 2. वि० तुल्य ; 3. अव्य० सामने ; साथ ; 4. स्त्री० शपथ ; 5. सर्व० सो, वह ।

**सोंचर नमक** - पु० [हिं] काला नमक ।

**सोंटा** - पु० [हिं] डंडा ; भाँग घोटने के काम आनेवाला डंडा ; एक पौधा, लोबिया ; मु० —चलना - सोटे से मार-पीट होना ।

**सोंठ** - स्त्री० [हिं] सूखा अदरक ।

**सोंठौरा** - पु० [हिं] जच्चा को दिया जानेवाला एक पुष्टिकारक मोदक ।

**सोंधा** - 1. वि० [हिं] सुगंधित ; 2. पु० बाल साफ़ करने या धोने के काम आनेवाला एक सुगंधित द्रव्य ; सूखी या तप्त ज़मीन पर पानी पड़ने के बाद उठनेवाली गंध ; महँक ।

**सोंधिया** - पु० [हिं] एक तृण ।

**सोंधी** - पु० [हिं] एक बढ़िया धान ।

**सोंवनिया** - पु० [हिं] नाक का एक गहना ।

**सो** - 1. सर्व० [हिं] वह ; 2. वि० समान ; 3. अव्य० इसलिए ।

**सोअना** - अ० [हिं] सोना ।

**सोआ** - पु० [हिं] बहुत महीन पत्तियोवाला एक शाक ।

**सोई** - 1. सर्व० [हिं] वही ; 2. अव्य० इसलिए ; 3. स्त्री० वह नीची ज़मीन जहाँ पानी रुका रह जाय ।

**सोकन** - पु० [हिं] कालापन लिये हुए सफ़ेद रंग का बैल ; नदी के किनारे रेतीली ज़मीन में बोया जानेवाला एक प्रकार का धान ।

**सोकना** - 1. अ० [हिं] शोक करना ; 2. स० सोखना ।

**सोकित** - वि० [हिं] शोकयुक्त ।

**सोखक** - वि० [हिं] रस चूसनेवाला ; शोषक; गीलापन दूर करनेवाला ; तत्त्व हरण करनेवाला ।

**सोखना** - स० [हिं] तरल पदार्थ का रस ग्रहण कर लेना ।

**सोखाई** - स्त्री० [हिं] सोखने की क्रिया ; किसी वस्तु को सोखाने या सोखने की मज़दूरी ।

**सोख़्त** - स्त्री० [फ़ा] जलन ।

**सोख़्तनी** - वि० [फ़ा] जलने या जलाने के योग्य ।

**सोख़्ता** - 1. वि० [फ़ा] खिन्न ; जला हुआ ; आशिक ; 2. पु० बुझा हुआ कोयला ; [हिं] स्याहीसोख ; बारूद में रँगा हुआ कपड़ा ।

**सोग** - पु० [हिं] शोक ; विलाप ।

**सोच** - पु० [हिं] सोचने की क्रिया ; चिन्ता ; पश्चात्ताप ; शोक ; सोच-विचार; यौ० —विचार - किसी विषय या व्यक्ति आदि पर बुद्धिपूर्वक छानबीन करना ; ग़ौर ।

**सोचना** - 1. अ० [हिं] किसी विषय आदि की विवेचना करना, विचार करना ;

2. स० चिन्ता करना; शोक या दुख करना।

**सोचाना** - स० [हिं] किसीको सोचने में प्रवृत्त करना; विचार करवाना।

**सोच्छ्वास** - 1. वि० [सं] लंबी साँस के साथ; ढीला; प्रसन्न; हाँफता हुआ; 2. अव्य० आराम की साँस लेते हुए।

**सोज** - स्त्री० [हिं] सूजन; सामग्री।

**सोज़** - पु० [फ़ा] जलन; वेदना।

**सोज़न** - स्त्री० [फ़ा] सूई; यौ० —कारी - सूईकारी।

**सोज़ाँ** - वि० [फ़ा] जलानेवाला; करुणा-जनक; दुखद।

**सोज़िश** - स्त्री० [फ़ा] जलन; वेदना।

**सोझ** - 1. वि० [हिं] सरल; सीधा; 2. अव्य० सीधे।

**सोढर** - वि० [हिं] मूर्ख, बुद्धू, भोंदू।

**सोणक** - वि० [हिं] लाल रंग का।

**सोत, सोता** - पु० [हिं] झरने, नदी, नाले आदि का उद्गम स्थान; मूल स्थान; नदी-नाले आदि की शाखा; झरना।

**सोतिया** - स्त्री० [हिं] छोटा सोता।

**सोती** - स्त्री० [हिं] स्रोत; धारा; स्वाति-नक्षत्र।

**सोत्कंठ** - वि० [सं] लालसा-भरा; पश्चात्ताप-सहित।

**सोत्कर्ष** - वि० [सं] उन्नतिशील।

**सोत्संग** - वि० [सं] खिन्न।

**सोत्सव** - वि० [सं] उत्साह से भरा; आनंदित।

**सोथ** - पु० [हिं] सूजन।

**सोदर** - 1. वि० [सं] सगा, एक उदर से उत्पन्न; 2. पु० सगा भाई।

**सोदरा, सोदरी** - स्त्री० [सं] सगी बहन।

**सोदरीय** - वि० [सं] सहोदर।

**सोध** - पु० [सं] अनुसंधान; सुधार; सुध-बुध; हल-चल; किसी व्यक्ति से कर्ज़ आदि लेकर उसे चुकाने की क्रिया।

**सोधन** - पु० [हिं] खोज करने का काम; सुधारने या ठीक करने का काम; चुकाने का काम।

**सोधना** - स० [हिं] अनुशीलन करना, खोजना; ऋण आदि चुकाना; गलती दुरुस्त करना; गणना करना; औषध के लिए धातु की सफ़ाई करना।

**सोधवाना** - स० [हिं] खोज कराना; ठीक कराना, साफ़ करवाना।

**सोनहला** - वि० [हिं] सोने के रंग और चमक-जैसा, सुनहला।

**सोना** - 1. पु० [हिं] आभूषण आदि बनाने के काम आनेवाली पीले रंग की एक बहुमूल्य धातु; बढ़िया और बहुमूल्य वस्तु; श्रेष्ठ व्यक्ति; यौ० —चाँदी - धन-दौलत; —पेट - सोने की खान; —मक्खी, माखी - औषध के काम आनेवाला एक खनिज द्रव्य जिसमें सोने का कुछ अंश होता है; एक प्रकार का रेशम का कीड़ा; मु० —चढ़ना - किसी चीज़ पर सोने का मुलम्मा होना, —लेकर मिट्टी तक न देना - बेईमानी करना; सोने का घर मिट्टी हो जाना - बना-बनाया घर बिगड़ जाना; सोने का पानी - सोने का मुलम्मा; सोने की चिड़िया - अमीर आदमी; मालदार आदमी; सोने में घुन लगना - असंभव बात का होना; 2. अ० निद्रा लेना; शयन करना; लेटना; यौ० सोते-जागते - हर वक़्त; हमेशा।

**सोनी** - पु० [हिं] सुनार।

**सोपचार** - वि० [सं] शिष्टतापूर्वक बर्ताव करनेवाला।

**सोपत** - पु० [हिं] सुविधा, सुभीता।

**सोपधि** - वि० [सं] कपटयुक्त; छली।

**सोपाक** - पु० [सं] चांडाल; जड़ी-बूटियों का विक्रेता।

**सोपान** - पु० [सं] सीढ़ी; मोक्षप्राप्ति का उपाय; **यौ०**—पंक्ति, परंपरा - सीढ़ियों का सिलसिला।

**सोपानक** - पु० [सं] सोपान; सोने के तार में गुँथी मोतियों की माला।

**सोफता** - पु० [हिं] एकांत स्थान।

**सोभना** - अ० [हिं] सुंदर लगना; सोहना।

**सोभर** - पु० [हिं] सौरी, सूतिकागृह।

**सोभा** - स्त्री० [हिं] शोभा।

**सोभार** - 1. वि० [हिं] उभारदार; 2. अव्य० उभार के साथ।

**सोम** - पु० [सं] वेद आदि में वर्णित एक लता जिसका रस यज्ञ में तर्पण आदि के काम में आता था; अमृत; कपूर; चंद्रमा; चंद्रवार; जल; सोमयज्ञ; माँड़; आकाश; स्वर्ग; प्रकाश की किरण; एक स्त्रीरोग; विवाहित पति; **यौ०**—क्षय - अमावस्या; —दिन - सोमवार; —धारा - छायापथ, स्वर्ग; —पान - सोमरस पीना; —पुत्र - बुधग्रह; —लता - सोम नाम की लता; गोदावरी नदी; —वती अमावास्या - सोमवार को पड़नेवाली अमावास्या; —वार, वासर - इतवार के बाद का दिन; —सुंदर - कार्तिकेय।

**सोय** - 1. सर्व० [हिं] वही; 2. वि० वैसा।

**सोयम** - वि० [फ़ा] तीसरा।

**सोर** - 1. पु० [सं] टेढ़ी गति; कोलाहल; ख्याति; 2. स्त्री० जड़, मूल।

**सोरठा** - पु० [हिं] एक मात्रिक छंद।

**सोरन** - पु० [हिं] सूरन।

**सोरह** - 1. वि०, 2. पु० [हिं] सोलह।

**सोरही** - स्त्री० [हिं] सोलह चित्ती कौड़ियों से खेला जानेवाला एक प्रकार का जुआ; इस प्रकार का जुआ खेलने के लिए एकत्रित सोलह चित्ती कौड़ियाँ।

**सोलपोल** - वि० [हिं] बेकार; निरर्थक।

**सोलह** - 1. वि० [हिं] पंद्रह और एक; 2. पु० सोलह की संख्या; **यौ०** —नहीं - सोलह नखोंवाला (हाथी); **मु०** सोलहो आने - बिलकुल; पूरी तरह से।

**सोल्लास** - 1. वि० [सं] उल्लासयुक्त; आनंद-भरा; 2. अव्य० उल्लास के साथ।

**सोवज** - पु० [हिं] शिकार के जानवर आदि।

**सोवड़** - पु० [हिं] सूतिकागृह।

**सोवन** - पु० [हिं] सोने की क्रिया।

**सोवनार** - स्त्री० [हिं] सोने का कमरा, शयनागार।

**सोवारी** - पु० [हिं] पंद्रह मात्राओं का एक ताल।

**सोवैया** - पु० [हिं] सोनेवाला।

**सोसनी** - वि० [हिं] लाली लिये हुए नीले रंग का।

**सोहगी** - स्त्री० [हिं] तिलक के बाद की एक रस्म जिसमें कन्या के लिए वस्त्राभूषण व खिलौने आदि भेजे जाते हैं; सुहाग की चीज़ें।

**सोहगैला** - पु० [हिं] कंगूरेदार लंबा सिंदूर का पात्र।

**सोहदा** - पु० [हिं] गुंडा, बदचलन।

**सोहन** - 1. वि० [हिं] मोहक; सुंदर; सुहावना; 2. पु० नायक; सुंदर व्यक्ति; 3. स्त्री० एक पक्षी जिसका शिकार किया जाता है; **यौ०** —पपड़ी - एक रेशेदार मिठाई; —हलुआ - एक मिठाई जो कतरों के रूप में जमी और घी से तर रहती है।

**सोहना** - 1. अ० [हिं] सुंदर लगना; 2. स० निराना (खेत); 3. वि० सुंदर।

**सोहनी** - स्त्री० [हिं] कूँची ; झाड़ू ; निराई ।
**सोहबत** - स्त्री० [अ] संगति ।
**सोहर** - पु० [हिं] संतानोत्पत्ति के अवसर पर गाया जानेवाला एक मंगलगीत ।
**सोहरत** - स्त्री० [हिं] शोहरत ।
**सोहराना** - स० [हिं] सहलाना ।
**सोहला** - पु० [हिं] सोहर ; पूजा के अवसर पर गाया जानेवाला गीत ।
**सोहाइन** - वि० [हिं] सुहावना, रमणीक ।
**सोहाई** - स्त्री० [हिं] निराने का काम ; निराने की मज़दूरी ।
**सोहाग** - पु० [हिं] सौभाग्य ; सुहागा ; सुहाग का गीत ; अहिवात ।
**सोहागा** - पु० [हिं] सुहागा ।
**सोहागिन, सोहागिनी** - स्त्री० [हिं] सुहागिन ।
**सोहाता** - वि० [हिं] सहने लायक ; सुंदर ।
**सोहाना** - 1. वि० [हिं] सुहावना ; 2. पु० [अ] अच्छा लगना ; सुशोभित होना ।
**सोहाया** - वि० [हिं] मनोहर ; सुंदर ।
**सोहारी** - स्त्री० [हिं] सुहारी ।
**सोहाली** - स्त्री० [हिं] ऊपर का मसूड़ा ; सोहारी ।
**सोहावना** - 1. वि० [हिं] सुंदर ; 2. अ० अच्छा लगना ; शोभित होना ।
**सोहिनी** - स्त्री० [हिं] एक रागिनी ।
**सोहीं, सोहैं** - अव्य० [हिं] सामने ।
**सौं** - 1. स्त्री० [हिं] शपथ ; 2. अव्य० समान ; 2. प्रत्य० करण और अपादान कारक की विभक्ति ।
**सौंकारा, सौंकेरा** - पु० [हिं] सवेरा ।
**सौंकेरे** - अव्य० [हिं] सुबह ; समय से कुछ पहले ।
**सौंघा** - वि० [हिं] अच्छा ।
**सौंघाई** - स्त्री० [हिं] अधिकतर, बहुतायत ।
**सौंचनु** - स्त्री० [हिं] आबदस्त ; मलत्याग ।
**सौंचना** - अ० [हिं] आबदस्त लेना ; मलत्याग करना ।
**सौंचर नमक** - पु० [हिं] काला नमक ।
**सौंज** - स्त्री० [हिं] सामग्री ।
**सौंड़, सौंड़ा** - पु० [हिं] ओढ़ने के (रजाई, कंबल आदि) भारी कपड़े ।
**सौंतुक** - 1. अव्य० [हिं] सामने ; 2. पु० प्रत्यक्ष बात या वस्तु ।
**सौंदन** - स्त्री० [हिं] धोबियो द्वारा गंदे कपड़े रेत में सानना ।
**सौंदना** - स० [हिं] सानना ; लिप्त करना ।
**सौंदर्य** - पु० [सं] सुंदरता ; उदाराशयता ।
**सौंध** - 1. स्त्री० [हिं] सुगंध ; 2. पु० अट्टालिका ।
**सौंधना** - स० [हिं] सुगंधित करना ; सानना ।
**सौंधा** - 1. वि० [हिं] रुचिकर ; सुगंधित ; 2. पु० खुशबू ; बालो में लगाने का एक सुगंधित मसाला ।
**सौंपना** - स० [हिं] किसीके जिम्मे कोई वस्तु सिपुर्द करना ; सहेजना ।
**सौंफ** - स्त्री० [हिं] सोए-जैसा एक पौधा जिसका फल दवा और मसाले के काम में आता है, शतपुष्पा ।
**सौंफिया, सौंफी** - 1. वि० [हिं] सौंफ मिला हुआ कोई खाद्य पदार्थ या पेय ; 2. स्त्री० सौंफ के योग से बनी हुई शराब ।
**सौंर** - 1. स्त्री० [हिं] चादर ; 2. पु० संतानोत्पत्ति के दसवें दिन फेंके जाने-वाले मिट्टी के बर्तन ।
**सौंरई** - स्त्री० [हिं] साँवलापन ।
**सौंरना** - 1. स० [हिं] याद करना ; 2. अ० सज्जित होना ; ठीक होना ।
**सौंरा** - वि० [हिं] साँवला ।
**सौंह** - 1. स्त्री० [हिं] शपथ ; 2. अव्य० सामने ।

**सौंही** - 1. स्त्री० [हिं] एक प्रकार का अस्त्र ; 2. अव्य० सामने ।

**सौ** - 1. वि० [हिं] शत ; बहुत ; 2. पु० सौ की संख्या ; 3. अव्य० सा ; **मु०** —की बात - सर्वमान्य बात ; बहुत उचित बात ; —के सवाये करना - पच्चीस प्रतिशत लाभ करना ; —कोस भागना - अलग रहना ; दूर रहना ; —तरह का - विभिन्न प्रकार का ; —पचास - अनेक, कई ; —पर सौ - सौ फ़ीसदी, शत-प्रतिशत ; —में एक - बहुत कम ; —सौ घड़े पानी पड़ना - बहुत लज्जित होना ।

**सौक** - 1. स्त्री० [हिं] सौत, सपत्नी ; 2. वि० एक सौ ; 3. पु० शौक ।

**सौकर्य** - पु० [सं] आसानी ; दक्षता ।

**सौकुमार्य** - 1. पु० [सं] कोमलता ; यौवन ; 2. वि० कोमल ।

**सौख्य** - पु० [सं] सुख ; कल्याण ; **यौ०** —दायी - सुख देनेवाला ।

**सौगंद** - स्त्री० [हिं] शपथ ।

**सौगंध** - 1. स्त्री० [हिं] शपथ ; 2. वि० सुगंधित ; 3. पु० अत्तर बनानेवाला ; ख़ुशबू ।

**सौगंधिक** - 1. वि० [सं] ख़ुशबूदार ; 2. पु० इत्र या तेल आदि का व्यवसायी, गंधी ; नील कमल ; श्वेत कमल; गंधक ।

**सौग़ात** - स्त्री० [फ़ा] उपहार, तोहफ़ा ।

**सौग़ाती** - वि० [फ़ा] उत्तम ; उपहार देने योग्य ।

**सौधा** - वि० [हिं] सस्ता ।

**सौजना** - अ० [हिं] शोभा देना ; सजना ।

**सौजन्य** - पु० [सं] भलमनसी ; उदाराशयता ।

**सौजा** - पु० [हिं] शिकार के योग्य पशु-पक्षी ।

**सौत** - 1. स्त्री० [हिं] पति की दूसरी पत्नी, सपत्नी ; 2. वि० [सं] सारथी-संबंधी ।

**सौतन, सौतनि, सौति, सौतिन** - स्त्री० [हिं] सौत ।

**सौतिया डाह** - स्त्री० [हिं] दो सौतों में होनेवाली ईर्ष्या या द्वेष आदि ।

**सौतेला** - वि० [हिं] सौत-संबंधी ; सौत से उत्पन्न ।

**सौत्र** - 1. वि० [सं] सूत्र-संबंधी ; सूत का बना हुआ ; 2. पु० ब्राह्मण ।

**सौत्रिक** - पु० [सं] जुलाहा ; बुनावट ; बुनी हुई वस्तु ।

**सौदर्य** - 1. वि० [सं] सहोदर भाई या बहिन-संबंधी ; 2. पु० भ्रातृभाव ।

**सौदा** - पु० [फ़ा] बेचना-ख़रीदना, क्रय-विक्रय ; बेचने-ख़रीदने की वस्तु ; माल ; **यौ०** —गर - व्यापारी, तिजारती ; —गरी - तिजारत, व्यापार ।

**सौदामनी** - स्त्री० [सं] बिजली ; माला की आकृतिवाली बिजली ।

**सौध** - 1. वि० [सं] सुधायुक्त ; सुधा-संबंधी ; चूना-पुता या पलस्तर किया हुआ ; 2. पु० भवन, महल ; दुधिया पत्थर ; चूना-पुता निवास ; एक रत्न ; चाँदी ; **यौ०** —कार - राज, राजगीर ; —तल - महल के नीचे का तला ।

**सौनिक** - पु० [सं] कसाई ; व्याध ।

**सौभग** - पु० [सं] सौभाग्य ; आनंद ; कल्याण ; सुभग होने का भाव ; सौंदर्य ; धन-दौलत ।

**सौभागिनी** - स्त्री० [हिं] सौभाग्यवती स्त्री ; सधवा ।

**सौभाग्य** - पु० [सं] ख़ुशकिस्मती, अच्छा भाग्य ; कल्याण ; कृपा ; आनंद ; सफलता ; प्रेम ; सुहाग ; समृद्धि ; सिंदूर ; सुहागा ; **यौ०** —चिन्ह - अच्छे भाग्य

के चिन्ह ; अहिवात का चिन्ह ; —तंतु - विवाह में वर द्वारा कन्या के गले में बाँधा जानेवाला सूत्र।

**सौभाग्यवती** - स्त्री० [सं] सधवा, सुहागिन।

**सौभाग्यवान** - वि० [सं] भाग्यशाली।

**सौमनस** - 1. वि० [सं] सुमन (पुष्प)-संबंधी ; मन तथा अन्य बाह्य इंद्रियों को अच्छा लगनेवाला ; 2. पु० आनंद ; कृपा ; जायफल ; संतोष ; सावन मास की आठवीं तिथि।

**सौमनस्य** - 1. वि० [सं] आनंद देनेवाला ; 2. पु० प्रसन्नता; विवेक ; श्राद्ध आदि में पुरोहित की अंजलि में फूल देना।

**सौम्य** - 1. वि० [सं] चंद्रमा या सोमलता-संबंधी ; कोमल ; सुंदर ; सोम के गुणों से युक्त ; कांतिमान ; शांत ; स्निग्ध; मांगलिक ; 2. पु० ब्राह्मण ; बुध ; अग्निरस ; पृथ्वी के नौ खंडो में से एक ; उपासक ; बायाँ हाथ ; मार्गशीर्ष मास ; सौजन्य ; बाईं आँख ; मृगशिरा नक्षत्र ; **यौ०** —दर्शन - देखने में अच्छा लगनेवाला ; —मुख - सुन्दर मुखवाला।

**सौम्यता** - स्त्री० [सं] उदारता ; सौंदर्य ; कोमलता ; स्निग्धता।

**सौम्याकृति** - वि० [सं] सुंदर आकृतिवाला।

**सौर** - स्त्री० [हिं] चादर ; सौरी मछली।

**सौरभ** - 1. वि० [सं] खुशबूदार ; सुरभि (गाय) से उत्पन्न ; 2. पु० केसर ; धनिया ; सुगंधि ; आम ; **यौ०** —वाह - पवन।

**सौरभी** - स्त्री० [सं] गाय ; सुरभि नामक गाय की पुत्री।

**सौरि** - पु० [सं] शनि ; सूर्यभक्त।

**सौरी** - स्त्री० [हिं] प्रसूतिगृह ; एक प्रकार की मछली ; गाय।

**सौल, सौला** - पु० [हिं] राजगीरों का एक औज़ार।

**सौह** - 1. स्त्री० [हिं] कसम ; 2. अव्य० सामने।

**सौहार्द** - पु० [सं] सद्भाव ; मैत्री ; हृदय की सरलता ; मित्र का पुत्र।

**सौहार्द्य** - पु० [सं] मैत्री।

**सौहीं** - 1. अव्य० [हिं] सामने ; 2. पु० एक औज़ार ; एक प्रकार की रेती।

**सौहृद** - 1. वि० [सं] मित्र का ; मित्र-संबंधी ; 2. पु० प्रेम ; मित्र ; रुचि।

**सौहृदय** - पु० [सं] प्रगाढ़ मैत्री।

**सौहृद्य** - पु० [सं] दोस्ती।

**स्कंद** - पु० [सं] कार्तिकेय ; उछलना ; उछलनेवाली चीज़ ; नाश ; बहना ; शरीर ; चतुर व्यक्ति ; पारा ; बच्चों का एक रोग।

**स्कंध** - पु० [सं] कंधा ; पेड़ का तना ; मोटी डाल ; ग्रंथ का अध्याय ; विज्ञान आदि का कोई विभाग ; झुंड ; सेना का कोई अंग या भाग ; पिंड ; पाँचों ज्ञानेंद्रियों के विषय ; राजा ; युद्ध ; समझौता ; सड़क ; **यौ०** —तरु - नारियल का पेड़ ; —पथ - पगडंडी ; —पीठ - कंधे की हड्डी।

**स्कंधावार** - पु० [सं] राजा का तंबू ; राजधानी ; व्यापारियों के ठहरने की जगह ; सेना ; सैन्यस्थिति।

**स्कंभ** - पु० [सं] खंभा ; सहारा ; पुरुष ; परमेश्वर।

**स्कंभन** - पु० [सं] खंभा ; अवलंबन।

**स्खल** - पु० [सं] गिरना ; लुढ़कना।

**स्खलन** - पु० [सं] पतन ; लड़खड़ाना ; गलती ; थरथराहट ; मार्ग से विचलित होना ; चूना, स्राव ; घर्षण ; वंचित होना ; विफलता ; हकलाहट।

**स्खलित** - 1. वि० [सं] गिरा हुआ; अस्थिर; क्षुब्ध; विचलित; टपका हुआ; भूल करनेवाला; रोका हुआ; घबड़ाया हुआ; गत; 2. पु० हानि; चूना, स्राव; भूल; लड़खड़ाहट; दोष; छल-कपट; विचलन; विफलता; युद्ध में छल का सहारा लेना।

**स्तंब** - पु० [सं] गुल्म; खंभा; घास आदि का गुच्छा; झुरमुट; वृक्ष; जड़ता; पर्वत।

**स्तंभ** - पु० [सं] खंभा; कड़ापन; बाधा; दमन; सहारा; पेड़ का तना; जड़ता; मंत्रबल से किसीकी शक्ति या अनूभूति का नियंत्रण; यौ० —पूजा - विवाह आदि के अवसर पर मंडप के स्तंभो की पूजा।

**स्तंभन** - 1. वि० [सं] जड़ बना देनेवाला; कब्ज़ करनेवाला; रोकनेवाला; 2. पु० कड़ा करने का साधन; कामदेव का एक बाण; मज़बूत करना; मंत्रादि द्वारा किसीकी शक्ति कुंठित करना; वीर्य रोकनेवाली दवा; शांत करना।

**स्तंभित** - वि० [सं] रोका हुआ; भरा हुआ; आश्चर्यचकित; दबाया हुआ; स्थिर किया हुआ।

**स्तनंधय** - 1. वि० [सं] स्तनपान करनेवाला; 2. पु० शिशु; बछड़ा।

**स्तन** - पु० [सं] मादा पशु का थन; कुच, स्त्रियों का अंगविशेष।

**स्तनित** - 1. वि० [सं] शब्द करता हुआ; गरजता हुआ; 2. पु० ताली बजाने का शब्द; मेघध्वनि; टंकोर।

**स्तबक** - पु० [सं] फूलों का गुच्छा; गुलदस्ता; समूह; मोर की पूँछ का पंख; रेशम का झब्बा; किसी ग्रंथ का अध्याय।

**स्तब्ध** - वि० [सं] स्थिर; गतिहीन; कड़ा; घमंडी; सुस्त; संज्ञाहीन; सहारा दिया हुआ; स्थूल; निष्ठुर; भद्दा; रोका हुआ; जमाया हुआ; हठी।

**स्तर** - 1. वि० [सं] फैलनेवाला; 2. पु० सतह; तह; कोई फैली हुई चीज़; भूमि की परत; पलंग; मान।

**स्तव** - पु० [सं] प्रशंसा, स्तुति; स्तोत्र।

**स्तवक** - 1. पु० [सं] स्तुतिपाठक; स्तुति; फूलो का गुच्छा; समूह, 2. वि० स्तुति करनेवाला।

**स्तवन** - पु० [सं] स्तुति करना; स्तोत्र।

**स्तुत** - 1. वि० [सं] जिसकी स्तुति की गयी हो; बहा हुआ; 2. पु० प्रशंसा।

**स्तुति** - स्त्री० [सं] गुणगान; चाटुकारिता; स्तोत्र; यौ०—गीत - स्तोत्र; —पद - प्रशंसा का विषय; —पाठक - स्तुति का पाठ करनेवाला; —मंत्र, वचन - प्रशंसात्मक गीत; गुणानुवाद; —शील - गुणगान में कुशल।

**स्तुत्य** - वि० [सं] प्रशंसनीय।

**स्तूप** - पु० [सं] मिट्टी या ईंट आदि से बना ढूह; केशों का गुच्छा; ढेर; शिखर; चिता; शक्ति।

**स्तेन** - पु० [सं] चोर; चोरी; लुटेरा।

**स्तेय** - पु० [सं] चोरी; चोरी गयी या चोरी जाने योग्य वस्तु; राहज़नी।

**स्तोक** - 1. वि० [सं] अल्प; कुछ; छोटा; नीच; 2. पु० चिनगारी; चातक; जलबिंदु।

**स्तोता** - 1. वि० [सं] स्तुति करनेवाला; 2. पु० विष्णु।

**स्तोत्र** - पु० [सं] स्तुति; श्लोकबद्ध स्तुतिवाला ग्रंथ।

**स्त्री** - स्त्री० [सं] औरत; पत्नी; मादा

पशु ; यौ० —काम - स्त्री का इच्छुक ; कन्या संतान चाहनेवाला ; —चरित्र - स्त्रियों के कार्य ।

**स्त्रैण** - 1. वि० [सं] नारीसुलभ ; स्त्री-संबंधी ; स्त्री-द्वारा शासित ; 2. पु० स्त्रीत्व ; स्त्री-स्वभाव ; नारीसुलभ कोमलता या दुर्बलता ; नारीवर्ग ।

**स्थंडिल** - पु० [सं] बिना ढकी ज़मीन ; ढेलों का ढेर ; बंजर भूमि ; यज्ञ के लिए साफ़ और चौरस की हुई चौकोर भूमि ;

**स्थगित** - वि० [सं] बंद किया हुआ ; ढका हुआ ; छिपाया हुआ ; कुछ समय के लिए मुल्तवी किया हुआ ।

**स्थल** - पु० [सं] मज़बूत और सूखी ज़मीन ; कछार ; ठहरने की जगह ; धरती ; मैदान ; ढूह ; पुस्तक का अध्याय ; अवसर ; तंबू ; महल की छत , मरुस्थल ; यौ० —कंद - जंगली सूरन ; —गत - सूखी ज़मीन पर छोड़ा हुआ ; —चर, चारी - ज़मीन पर रहनेवाला (प्राणी) ; —पथ, मार्ग - खुश्की रास्ता ; —युद्ध - भूमि पर होनेवाली लड़ाई ; —शुद्धि - भूमि की सफ़ाई ; —सीमा - देश या स्थानविशेष की हद ।

**स्थलांतर** - पु० [सं] दूसरा स्थान ।

**स्थला** - स्त्री० [सं] सूखी ज़मीन ; ऊँची की हुई सूखी ज़मीन ।

**स्थली** - स्त्री० [स] सूखी ज़मीन ; उपत्यका ; प्राकृतिक भूमि ।

**स्थविर** - 1. वि० [सं] वृद्ध ; आदरणीय ; प्राचीन ; स्थिर ; 2. पु० वृद्ध भिक्षु ; वृद्ध व्यक्ति ; ब्रह्मा ।

**स्थविरता** - स्त्री० [सं] वृद्धावस्था ।

**स्थविरा** - स्त्री० [सं] महाश्रमणी ; बूढ़ी स्त्री ।

**स्थाणु** - 1. वि० [सं] अचल ; दृढ़ ; 2. पु० खंभा ; खूँटी ; दीमक का बिल ; पेड़ का ठूँठ ; धूपघड़ी का काँटा ; ग्यारह रुद्रों में से एक ; एक प्रकार का बैठने का तरीक़ा ।

**स्थान** - पु० [सं] ठहरने या रहने की क्रिया, ठहराव ; जगह ; हालत ; ओहदा ; संबंध ; स्थिर होना ; देश ; घर ; उपयुक्त अवसर ; अवसर ; कारण; नगर ; विषय ; वर्ण के उच्चारण की जगह ; पवित्र जगह (मंदिर आदि) ; वेदी ; उदासीनता ; राज्य के मुख्य अंग (सेना आदि) ; अवकाश ; एवज ; गोदान ; ग्रंथ का अध्याय ; दुर्ग ; आकृति ; यौ० —च्युत - अपने स्थान से गिरा हुआ ; अपने पद से हटाया हुआ ; —त्याग - निवासस्थान का त्याग ; पद की हानि ; —माहात्म्य - किसी स्थान का देवता आदि के कारण प्राप्त महत्व ; —विभाग - स्थानों का बँटवारा ।

**स्थानांतर** - पु० [सं] भिन्न या दूसरा स्थान ; यौ० —गत - जो दूसरी जगह चला गया हो ।

**स्थानांतरित** - वि० [सं] एक स्थान से दूसरे स्थान पर किया हुआ ; जिसका तबादला हो गया हो ।

**स्थानाधिकार** - पु० [सं] देवालय आदि का निरीक्षण ।

**स्थानाध्यक्ष** - पु० [सं] स्थानविशेष का रक्षक या शासक ।

**स्थानापत्ति** - स्त्री० [सं] किसी व्यक्ति या वस्तु का स्थान ग्रहण करना ; किसीके एवज में काम करना ।

**स्थानापन्न** - वि० [सं] दूसरे की जगह अस्थायी रूप से काम करने के लिए नियुक्त ।

**स्थानिक** - 1. वि० [सं] स्थानीय ; 2. पु० स्थानविशेष का रक्षक या शासक ;

देवालय का व्यवस्थापक; राजस्व-संग्राहक।

**स्थानी** - वि० [सं] स्थानवाला, स्थायी (उच्चपदस्थ); उपयुक्त।

**स्थानीय** - 1. वि० [सं] स्थानविशेष से संबंध रखनेवाला; स्थानविशेष के लिए उपयुक्त; 2. पु० आठ सौ गाँवों के बीच स्थित दुर्ग; क़सबा; नगर।

**स्थापक** - 1. वि० [सं] स्थापित करनेवाला; स्थिर करनेवाला; खड़ा करनेवाला; 2. पु० मूर्ति की स्थापना करनेवाला; किसीके पास कुछ जमा करनेवाला; कोई संस्था स्थापित करनेवाला; सूत्रधार का सहायक।

**स्थापत्य** - पु० [सं] भवननिर्माण; वास्तुविद्या; अंतःपुर का रक्षक; **यौ०** —कला - वास्तुविद्या; —वेद - वास्तुशास्त्र।

**स्थापन** - पु० [सं] खड़ा करना; जमाना या स्थिर करना; निर्देशन; स्थापित करना (संस्था आदि); धारणा; ध्यान; निवास-स्थान; रंगमंच की व्यवस्था; गर्भाधान-संस्कार; अंगो को मज़बूत बनाना; परिभाषा।

**स्थापना** - स्त्री० [सं] रखना या स्थापित करना; एकत्र करना; नियमित क्रम; सँभालना; संरक्षण करना; प्रतिपादन; रंग-मंच की व्यवस्था।

**स्थापित** - वि० [सं] जिसकी स्थापना की गयी हो; क़ायम किया हुआ; जमाया हुआ; निश्चित किया हुआ; निर्देशित; सुरक्षित; विवाहित; व्यवस्थित; स्थिर; किसी कार्य पर नियुक्त।

**स्थापी** - पु० [सं] मूर्ति की स्थापना करनेवाला।

**स्थायिक** - वि० [सं] टिकनेवाला; विश्वस्त।

**स्थायी** - वि० [सं] ठहरने या टिकनेवाला; विशेष स्थिति में रहनेवाला; स्थितियुक्त; अध्यवसायी; किसी स्थान में रहनेवाला; विश्वस्त; **यौ०** —समिति - चुने हुए सदस्यो की अगले अधिवेशन तक सब कामों का प्रबंध करनेवाली समिति।

**स्थाल** - पु० [स] थाल, कटोरा, बटलोई आदि पात्र; मसूड़े का भीतरी भाग।

**स्थालक** - पु० [सं] पीठ की एक हड्डी।

**स्थाली** - स्त्री० [सं] थाली; मिट्टी के बने हुए पकाने के बर्तन (हांडी, कड़ाही आदि); **यौ०** —पुलाक - बटलोई में पकाया हुआ चावल; —पुलाक-न्याय - एक चावल की परीक्षा से सब चावलों का पता लग जाने की तरह वस्तु के किसी अंश के आधार पर सारी वस्तु के संबंध में अनुमान करना।

**स्थावर** - 1. वि० [सं] गतिहीन; निष्क्रिय; अचल; अचल संपत्ति-संबंधी; स्थायी; 2. पु० कोई गतिहीन या निर्जीव पदार्थ; अचल संपत्ति या वस्तु; कुलपरंपरागत अचल वस्तु (आभूषण आदि)।

**स्थाविर** - 1. पु० [सं] वृद्धावस्था (सत्तर से नब्बे वर्ष की अवस्था); 2. वि० दृढ़; मोटा।

**स्थित** - 1. वि० [सं] ठहरा हुआ; खड़ा; घटित; किसी स्थान पर नियुक्त किया हुआ; रहता हुआ; घटित; किसी नियम या आदेश आदि का पालन करने में रत; जमाया हुआ; रोका हुआ; कर्तव्यपरायण; स्थिर; धीर; दृढ़; विहित; कृतसंकल्प; अवलंबित; आसीन; पुण्यात्मा; प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला; 2. पु० चुपचाप खड़ा रहना; अध्यवसायपूर्वक सत्कर्म में लगा रहना; ठहरना; खड़ा होने का तरीक़ा।

**स्थिति** - स्त्री० [सं] ठहरना ; रहना; अवस्था ; प्रकृति ; चुपचाप खड़ा रहना ; निवास ; रुकना ; ओहदा ; अनुशासन का पालन ; कर्तव्यपरायणता ; आयु ; निर्वाह ; जीवन का बना रहना ; कल्याण ; विराम ; आदेश ; गतिरोध ; विधि ; मर्यादा ; निर्णय ; ग्रहण की अवधि ; सामंजस्य ; प्रथा ; जड़ता ; दृढ़ विश्वास ; पृथ्वी ; ठहरने का स्थान ; आकृति ; अवसर ; कार्यविधि ।

**स्थिर** - 1. वि० [सं] अचल ; गतिहीन ; दृढ़ ; जड़ा हुआ ; धीर ; शान्त ; स्थायी ; नियत ; निश्चित ; विश्वस्त ; उग्र ; कठोरहृदय ; कृतसंकल्प ; ठोस ; बली ; 2. पु० सिंह, कुंभ और वृश्चिक राशियाँ ; मोक्ष ; वृक्ष ; पर्वत ; देव ; साँड़ ; कार्तिकेय ; ज्योतिष का एक योग ; दृढ़ता ; **यौ०** —कर्मा - अध्यवसायी ; —गंध - बहुत देर तक टिकनेवाली गंधवाला ; चंपक ; —चित्त, चेता - स्थिरबुद्धि ; —जीवित, जीवी - दीर्घायु ; —धी - जिसकी बुद्धि स्थिर हो ; —प्रतिज्ञ - दृढप्रतिज्ञ ; अपने वचन का पालन करनेवाला ; —बुद्धि - दृढ़चित्त ।

**स्थिरता** - स्त्री० } [सं] स्थिर होने का
**स्थिरत्व** - पु० } भाव ; दृढ़ता ; अचलता ; कठोरता ; धीरता ; स्थायित्व ।

**स्थिरायु** - वि० [सं] दीर्घजीवी ।

**स्थूर** - पु० [सं] साँड़ ; मनुष्य ।

**स्थूरी** - पु० [सं] भार ढोनेवाला घोड़ा या बैल ।

**स्थूल** - 1. वि० [सं] मोटा ; बड़ा ; घना ; बली ; मूर्ख ; विषम ; सुस्त ; भौतिक ; 2. पु० पर्वत का शिखर ; कटहल ; तंबू ; समूह ; मट्ठा ; ईख ; आँखों से दिखायी देनेवाले पदार्थ ; **यौ०** —काम - मोटे शरीरवाला ; —दर्भ - मूँज ; —देही - स्थूल शरीरवाला ; —धी - मंदबुद्धि ; मूर्ख ; —नास, नासिक - सूअर ; —पट - मोटे कपड़े धारण करनेवाला ; —पिंडा - पिण्डखजूर ; —प्रपंच - सृष्टि ; —भूत - आकाश आदि पंच तत्त्व ; —मान - मोटा-मोटी हिसाब ; —विषय - भौतिक पदार्थ ।

**स्थूलता** - स्त्री० } मोटापन ; मूर्खता ; बड़े
**स्थूलत्व** - पु० } होने का भाव ।

**स्थैर्य** - पु० [सं] स्थिरता ; धैर्य ; दृढ़ता ; कठोरता ; घनता ।

**स्नात** - 1. वि० [सं] नहाया हुआ ; 2. पु० स्नातक ; जिसका अध्ययन पूरा हो गया हो ।

**स्नातक** - पु० [सं] किसी विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर उपाधि प्राप्त करनेवाला व्यक्ति ; किसी धार्मिक उद्देश्य से भिक्षु बननेवाला ब्राह्मण ; वेदाध्ययन समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट करनेवाला ब्राह्मण ।

**स्नान** - पु० [सं] जल से सारे शरीर को साफ़ करना ; मूर्ति को नहलाना ।

**स्नानागार** - पु० [सं] नहाने का कमरा ।

**स्नायुक** - 1. स्त्री० [सं] नाड़ी, रग ; धनुष की डोरी ; पेशी ; 2. पु० एक रोग जिसमें चर्मविकार होता है ; **यौ०** —रज्जु - शरीर ; —रोग - नहरुआ रोग जिसमें शरीर से हाथ या डेढ़ हाथ लँबा सूत-जैसा सफ़ेद कीड़ा निकलता है ।

**स्निग्ध** - 1. वि० [सं] चिकना ; गीला ; अनुरक्त ; तेल लगा हुआ ; चिपकनेवाला ; ठंडा करनेवाला ; दयालु ; मृदुल ; घना ; प्रिय ; 2. पु० मित्र ;

प्रकाश ; तेल ; मोम ; यौ० —जन - प्रिय व्यक्ति ; —दृष्टि - टकटकी लगाकर देखनेवाला ।

**स्नुषा** - स्त्री० [सं] पुत्रवधू ; थूहड़ ।

**स्नेह** - पु० [सं] प्रेम ; कोमलता ; दयालुता ; आर्द्रता ; तेल या मलाई आदि चिकने पदार्थ ; चर्बी आदि शरीर के रसवाले पदार्थ ; यौ० —कर्ता - प्यार करनेवाला; —गर्भ - तिल ; —पात्र - प्यारा व्यक्ति ; तेल का बर्तन ; —बंध - प्रेम का बंधन ; —बद्ध - प्रेमसूत्र में बँधा हुआ ।

**स्नेहाकुल** - वि० [सं] प्रेम से विह्वल ।

**स्नेही** - 1. पु० [सं] मित्र ; चित्रकार ; तेल मलनेवाला ; 2. वि० तैलयुक्त ; प्रेमयुक्त ।

**स्पंद** - पु० [सं] कंपन ; गति ; फड़कना ।

**स्पंदन** - पु० [सं] हिलना ; तीव्र गति ; फड़कना ।

**स्पंदित** - 1. वि० [सं] काँपता हुआ ; गया हुआ ; गतिशील किया हुआ ; 2. पु० कंपन ; फड़कन ।

**स्पर्ध** - वि० [सं] होड़ करनेवाला ; ईर्ष्या करनेवाला ।

**स्पर्धन** - पु० [सं] होड़ ; ईर्ष्या ।

**स्पर्धनीय** - वि० [सं] स्पर्धा करने योग्य ; इच्छा करने योग्य ।

**स्पर्धा** - स्त्री० [स] ईर्ष्या ; अभिलाषा ; प्रतियोगिता ; चुनौती ।

**स्पर्धी** - वि० [सं] ईर्ष्यालु ; घमंडी ; होड़ या प्रतियोगिता करनेवाला ।

**स्पर्श** - पु० [स] छूना ; चमड़ी का विषय ; मुक़ाबला ; छूने से होनेवाला ज्ञान ; दान ; 'क' से 'म' तक के वर्ण ; भेंट ; प्रभाव ; रोग ; आकाश ; वायु ; ग्रहण की छाया का आरंभ ; जासूस ; यौ० —ज, जन्य - स्पर्श से उत्पन्न होनेवाला ; —द्वेष - स्पर्श से शीघ्र प्रभावित होने का गुण ; —मणि - पारस पत्थर ; —सुख - जिसका स्पर्श आनंददायक हो ।

**स्पर्शन** - 1. वि० [सं] छूनेवाला ; प्रभावित करनेवाला ; हाथ लगानेवाला ; 2. पु० छूने की क्रिया ; स्पर्शेन्द्रिय ; छूने से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान ; दान ; वायु ।

**स्पर्शनीय** - वि० [सं] छूने योग्य ।

**स्पर्शनेन्द्रिय** - स्त्री० [सं] स्पर्श की इंद्रिय, चमड़ी ।

**स्पर्शास्पर्श** - पु० [सं] छूतछात, छूने या न छूने का विचार ।

**स्पर्शेन्द्रिय** - स्त्री० [सं] स्पर्श का ज्ञान प्राप्त करनेवाली इंद्रिय ।

**स्पष्ट** - वि० [सं] जो साफ़-साफ़ देखा जा सके ; सत्य ; सही ; प्रत्यक्ष ; व्यक्त ; समझ में आने योग्य ; वास्तविक ; सीधा ; विकसित ; यौ० —कथन - कहने की वह शैली जिसमें कही जानेवाली बात ज्यों की त्यों कही जाती है ; —भाषी, वक्ता, वादी - साफ़-साफ़ कहनेवाला ।

**स्पष्टार्थ** - 1. वि० [सं] जिसका अर्थ साफ़ और सुबोध हो ; 2. पु० साफ़ अर्थ ।

**स्पष्टीकरण** - पु० [सं] किसी बात को सरल करके समझाना ; स्पष्ट करना ।

**स्पृश** - वि० [सं] छूनेवाला ; पहुँचनेवाला ।

**स्पृश्य** - वि० [सं] छूने योग्य ; अधिकृत करने योग्य ।

**स्पृष्ट** - वि० [सं] छुआ हुआ ; पहुँचनेवाला ; छूकर अपवित्र किया हुआ ।

**स्पृहण** - पु० [सं] किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए इच्छा या प्रयत्न करना ।

**स्पृहणीय** - वि० [सं] अभिलाषा करने योग्य ; ईर्ष्या करने योग्य ; मोहक ।

**स्पृहा** - स्त्री० [सं] अभिलाषा; ईर्ष्या; धर्मानुकुल पदार्थ की प्राप्ति की कामना।

**स्पृहित** - वि० [स] जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गयी हो; जो ईर्ष्या का विषय हो।

**स्पृही** - वि० [सं] ईर्ष्या करनेवाला; इच्छुक।

**स्फटि, स्फटी** - स्त्री० [सं] फिटकिरी।

**स्फटिक** - पु० [सं] बिल्लौर; फिटकिरी; कपूर; सूर्य-कान्तमणि; **यौ०** —प्रभ - स्फटिक-जैसा चमकीला; पारदर्शी; —मणि, शिला - बिल्लौर पत्थर।

**स्फटित** - वि० [सं] फाड़ा हुआ।

**स्फार** - 1. वि० [सं] ऊँचा (स्वर); बड़ा, बढ़ा हुआ; घना; निकट; फैला हुआ; बहुत; 2. पु० धक्का; वृद्धि; आघात; फड़कना, टंकोर; प्रकट होना; अधिकता।

**स्फारित** - वि० [सं] फैलाया हुआ।

**स्फाल** - पु० [सं] कंपन।

**स्फालन** - पु० [सं] कँपाना; घर्षण; थपथपाना; फटफटाना।

**स्फीत** - वि० [सं] बढ़ा हुआ; बहुत अधिक; घना; फूला; फूला हुआ; मोटा; प्रसन्न; पैतृक रोग से ग्रस्त; शुद्ध; सफल।

**स्फुट** - 1. वि० [सं] विकसित; कटा हुआ; चमकीला; फैला हुआ; प्रकट; सफेद; स्पष्ट; प्रत्यक्ष; बहुत ऊँचा (स्वर); फुटकर; संशोधित; 2. पु० साँप का फन।

**स्फुरण** - पु० [सं] काँपना; चमकना; (अंगों का) फड़कना; फुटकर व्यक्त होना; मन में यकायक आना।

**स्फुरणा** - स्त्री० [सं] अंगो का फड़कना।

**स्फुरना** - अ० [हिं] प्रकाशित होना; फड़कना; व्यक्त होना; हिलना।

**स्फुरित** - 1. वि० [सं] अस्थिर; कंपित; चमकता हुआ; बढ़ा हुआ; प्रकट; 2. पु० कंपन; चमक; यकायक प्रकट होना; मानसिक उथल-पुथल।

**स्फुलिंग** - पु० [सं] चिनगारी, अग्निकण।

**स्फूर्त** - वि० [सं] कंपित; जिसकी अचानक स्फूर्ति हुई हो।

**स्फूर्ति** - स्त्री० [सं] उत्तेजन; कंपन; उछलना; प्रकट होना; घमंड; मानसिक आवेश; मन में प्रकट होना; विकसित होना; तेज़ी; कार्य की प्रेरणा; **यौ०** —कारक - स्फूर्ति लानेवाला; —मान - कोमलचित्त; कंपनयुक्त।

**स्फोट** - पु० [सं] फैलना; फूटकर निकलना; टुकड़ा; फोड़ा; फटना; (किसी बात का) प्रकट हो जाना; शब्द के सुनने से मन में उत्पन्न होनेवाला भाव; नित्य शब्द (मीमांसा)

**स्फोटक** - पु० [सं] फुंसी; फोड़ा।

**स्फोटन** - पु० [सं] फाड़ना; अनाज फटकना; अचानक फट पड़ना; उँगलियाँ चटकाना; व्यक्त करना; परस्पर मिले हुए व्यंजनो का अलग-अलग उच्चारण; हाथ हिलाना।

**स्मय** - पु० [सं] आश्चर्य; घमंड; हास; **यौ०** —दान - दाम्भिक दान।

**स्मर** - 1. पु० [सं] कामदेव; प्रणय; स्मरण, स्मृति; 2. वि० स्मरण करनेवाला।

**स्मरण** - पु० [सं] याद, स्मृति; चिन्ता; देवता के नाम का जप; एक अर्थालंकार; **यौ०** —पत्र, पत्रक - याद दिलाने के लिए लिखा हुआ पत्र; —पदवी - मृत्यु; —शक्ति - याद रखने की शक्ति।

**स्मरणी** - स्त्री० [सं] जप करने की माला, सुमिरनी।

**स्मरणीय** - वि० [सं] स्मरण करने योग्य।
**स्मरना** - स० [हिं] याद करना।
**स्मर्तव्य** - वि० [सं] स्मरण के योग्य; जिसकी केवल स्मृति शेष रह गयी हो।
**स्मर्ता** - 1. वि० [स] याद करने या रखनेवाला; 2. पु० आचार्य।
**स्मारक** - 1. वि० [सं] याद दिलानेवाला; 2. पु० किसीकी स्मृतिरक्षा के अभिप्राय से स्थापित की हुई संस्था, भवन, स्तंभ आदि।
**स्मार्त** - 1. वि० [सं] स्मृति-संबंधी; स्मृति के आधार पर बना हुआ; वैध; जो स्मृति में हो; गृह-संबंधी; स्मृति को माननेवाला; 2. पु० स्मृति-विहित कर्म; स्मृतियो का जाननेवाला ब्राह्मण; स्मृतियो के अनुसार चलनेवाला एक संप्रदाय।
**स्मित** - 1. पु० [सं] मंदहास, मुस्कान; 2. वि० खिला हुआ; मुस्कराता हुआ; **यौ०** —मुख - हँसमुख; —वाक् - मुस्कुराहट के साथ बोलनेवाला; —शाली - मंदहासयुक्त।
**स्मिति** - स्त्री० [सं] मंदहास; हास।
**स्मितोज्ज्वल** - वि० [सं] हँसते हुए (नेत्र)।
**स्मृत** - 1. वि० [सं] स्मरण किया हुआ; उल्लिखित; स्मृति-विहित; 2. पु० स्मरण, याद; **यौ०** —मात्र - जिसका केवल स्मरण किया गया हो।
**स्मृति** - स्त्री० [सं] याद; स्मरण; चिन्तन; इच्छा; अठारह की संख्या; एक संचारी भाव; धर्म-शास्त्र; **यौ०** —कारक - स्मरणशक्ति बढ़ानेवाला; —तंत्र - धर्मशास्त्र; —पथ - स्मृति का विषय; —भ्रंश - स्मृति का नष्ट हो जाना; ज्ञान न रहना; —वर्धनी - ब्राह्मी; —विरुद्ध - शास्त्रविरुद्ध; —शास्त्र - धर्मशास्त्र; —शेष - मृत जिसकी केवल स्मृति रह गयी हो; —संस्कार - स्मृतिजन्य छाप; —सम्मत - धर्मशास्त्रविहित; —साध्य - शास्त्र द्वारा प्रमाणित करने योग्य; —हीन - विस्मरणशील; जो स्मरण न रख सके; —हेतु - मन पर पड़ी हुई छाप; स्मृति का कारण।
**स्यंद** - पु० [सं] टपकना; पसीना निकलना; एक नेत्र-रोग; प्रवाहित होना; गलना; चंद्रमा; तीव्र गति; रथ।
**स्यंदन** - 1. वि० [सं] रिसनेवाला; बहनेवाला; गलनेवाला; तेज़ी से जानेवाला (रथ); 2. पु० रथ; वायु; तीव्र गति या प्रवाह; जल; टपकना।
**स्यात्** - अव्य० [सं] शायद, कदाचित्।
**स्यार** - पु० [हिं] गीदड़, सियार; **यौ०** —जन - डरपोक आदमी।
**स्याल** - पु० [हिं] सियाल; [सं] साला।
**स्यालक** - पु० [सं] साला।
**स्यालिका** - स्त्री० [सं] साली; पत्नी की छोटी बहिन।
**स्यालिया** - पु० [हिं] गीदड़।
**स्याली** - स्त्री० [सं] साली।
**स्यालू** - पु० [हिं] ओढ़नी, चादर।
**स्याह** - वि० [फ़ा] काला; अशुभ; **यौ०** —काँटा - एक कँटीला पौधा; —जीरा - काला जीरा; —तालू - काले तालूवाला घोड़ा।
**स्याही** - स्त्री० [हिं] साही नामक जानवर; [फ़ा] रोशनाई; अँधेरा; काजल; कालिख; दाग़; दोष; **यौ०** —चट - सोख्ता; —दान - दवात; —साज - स्याही बनानेवाला; —सोख़ - सोख्ता, ब्लॉटिंग पेपर; **मु०** —जाना - उम्र ढलना; —दौड़ना - स्याही छा जाना; —धो जाना - दुर्भाग्य या

दोष दूर होना ; —लगाना - मुँह काला करना ।
**स्रंस** - पु० [सं] पतन ; सोना, शयन ।
**स्रंसन** - 1. वि० [सं] दस्तावर ; 2. पु० गिरने या गिराने की क्रिया ; गर्भपात ; ढीला करना ; दस्तावर पदार्थ या दवा ।
**स्रक्** - स्त्री० [सं] माला ; एक वृत्त ।
**स्रगाल** - पु० [हिं] गीदड़ ।
**स्रज** - स्त्री० [स] माला ।
**स्रजन** - पु० [हिं] सृष्टि, सर्जन ।
**स्रजना** - स० [हिं] बनाना ; निर्माण करना ।
**स्रम** - पु० [हिं] श्रम, मेहनत ।
**स्रमित** - वि० [हिं] थका हुआ, क्लान्त ।
**स्रवंती** - स्त्री० [सं] जलप्रवाह ; नदी ।
**स्रव** - पु० [सं] टपकना ; निर्झर ; धारा ; मूत्र , श्रवण ।
**स्रवण** - पु० [स] बहाना ; गर्भपात ; मूत्र ; पसीना ।
**स्रवना** - 1. अ० [हिं] टपकना ; गिरना ; 2. स० गिराना ; टपकाना ।
**स्रष्टव्य** - वि० [सं] सर्जन करने योग्य ।
**स्रष्टा** - 1. वि० [सं] निर्माता ; स्राव करनेवाला ; 2. पु० सृष्टि का निर्माण करनेवाला ; ब्रह्मा ; विष्णु ; शिव ।
**स्रस्त** - वि० [सं] गिरा हुआ ; ढीला पड़ा हुआ ; अलग किया हुआ ; धँसा हुआ (नेत्र) ; लटकता हुआ ; **यौ०** —गात्र - जिसका शरीर ढीला पड़ गया हो।
**स्राव** - पु० [सं] टपकना ; गर्भपात ; बहाव ।
**स्रोत** - पु० [सं] सोता ; जलप्रवाह ; नदी ; तीव्र वेग ; तरंग ; वंशपरंपरा ; शरीर के रंध्र जो पुरुषों में नौ और स्त्रियों में ग्यारह होते हैं ; ज्ञानेन्द्रिय ; हाथी की सूँड़ ।
**स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी** - स्त्री० [सं] नदी ।

**स्व** - 1. पु० [सं] संबंधी ; आत्मीय जन ; धन-संपत्ति ; आत्मा ; विष्णु ; धनराशि ; 2. वि० अपनी जाति या वर्ग का ; आत्मीय ; स्वाभाविक ; **यौ०** —कर्म - अपने कर्म, कर्तव्य, पेशा आदि ; —कार्य - अपना काम या कर्तव्य ; —कुल - अपना वंश ; अपने वंश का ; —कृत - अपना किया हुआ ; अपना कर्म ; —गत - आत्मीय ; आप ही आप (कहना) ; अपने प्रति कहा हुआ ; —गृह - अपना घर ; —च्छंद - अनियंत्रित; जंगली ; अपनी इच्छा या पसंद ; —जन - आत्मीय जन ; संबंधी ;—जनी - सखी, सहेली ; —जात - अपने से उत्पन्न ; —जाति - अपनी जाति या वर्ग ; अपने वर्ग का , —जातीय, जात्य - अपनी जाति या वर्ग का ; —जित - जितेन्द्रिय ; —तंत्र, तंत्री - आज़ाद ; बालिग ; —तंत्रता - आज़ादी ; —दान - अपनी संपत्ति का दान ; —दार - अपनी पत्नी ; —देश - जन्मभूमि ; —देशप्रेम - जन्मभूमि का प्रेम ; —देशीय - अपने देश से संबंध रखनेवाला ; अपने देश का ; —धर्म - अपना कर्तव्य ; अपनी विशेषता ; —धर्मच्युत - अपने अधिकार से वंचित ; अपने कर्तव्य का पालन न करनेवाला ; —नाम - अपना नाम ; —नामधन्य - जो अपने नाम के कारण धन्य (प्रशंसित) हो ; —नाश - अपनी बरबादी ; —पक्ष - अपना पक्ष या दल ; मित्र ; अपना मत ; —बंधु - अपना संबंधी या मित्र ; —भाउ - स्वभाव, प्रकृति ; —भाव - अपनी स्थिति ; स्वदेश ; सहज प्रकृति ; —भावतः - स्वभाव से ही ; —भूति - अपना कल्याण ; —भूमि

स्वदेश; जन्मभूमि; —राजि - स्वराज्य के लिए आंदोलन करनेवाला; —राज्य - स्वाधीन राज्य; प्रजातांत्रिक राज्य; —राष्ट्र - अपना राज्य; —रुचि - अपनी रुचि या पसंद; —रूप - अपनी आकृति; आत्मा; स्वभाव; विशेष उद्देश्य; चित्र; प्रकार; मूर्ति; —रूपवान - सुंदर; —रूपी - जो अपने प्राकृतिक रूप में हो; मूर्तिमान; समरूप; —लक्षण - विशेषता, विशेष गुण; —लिखित - अपना लिखा हुआ; —वश - आत्मनिग्रही; स्वाधीन; —वश्य - अपने ही वश में रहनेवाला; —विनाश - आत्महत्या; —विषय - अपना विषय या क्षेत्र; स्वदेश; —वृत्ति - अपने जीवननिर्वाह का ढंग; स्वावलंबी; —संवेदन - अपना प्राप्त किया हुआ ज्ञान; —स्थ - अपने में स्थित; जो अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो; तंदुरुस्त; आत्मनिर्भर; स्थिरचित्त; स्वाधीन; —हित - अपने लिए लाभदायक।

**स्वकीय** - 1. वि० [सं] अपना; अपने परिवार का; 2. पु० अपने लोग; मित्र।

**स्वकीया** - स्त्री० [सं] अपनी पत्नी।

**स्वच्छ** - 1. वि० [सं] निर्मल; निश्छल; पवित्र; सफ़ेद; सुंदर; स्पष्ट; स्वस्थ; 2. पु० बिल्लौर; मोती; सोने और चाँदी का मिश्रण; बेर का पेड़; **यौ०** —पत्र - अभ्रक।

**स्वच्छता** - स्त्री० [सं] सफ़ाई; विशुद्धता।

**स्वतः** - अव्य० [सं] आप ही; अपने से; **यौ०** —प्रमाण, सिद्ध - स्वयंप्रत्यक्ष, स्वयंसिद्ध।

**स्वत्व** - पु० [सं] अधिकार; अपना भाव।

**स्वत्वाधिकारी** - पु० [सं] स्वामी।

**स्वन** - पु० [सं] ध्वनि; शब्द।

**स्वपन** - पु० [सं] स्वप्न, नींद; संज्ञाहीनता।

**स्वप्न** - पु० [सं] सपना; निद्रा; आलस्य; ऊँची कल्पना; **यौ०** —ज्ञान - स्वप्न में होनेवाली अनुभूति; —दर्शन, संदर्शन - स्वप्न देखना।

**स्वप्नावस्था** - स्त्री० [सं] स्वप्न की अवस्था।

**स्वप्निल** - वि० [सं] सोया हुआ; स्वप्न का।

**स्वयं** - अव्य० [सं] खुद; अकेले; **यौ०** —ग्रह, ग्रहण - बलात् ग्रहण कर लेना; —जात - जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो; —दान - (कन्या के विवाह में) स्वेच्छापूर्वक दान; —पाकी - स्वयं अपना भोजन बनानेवाला; —प्रमाण - जिसके लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता न हो; —भु - ब्रह्मा; —भुव - आदि मनु; ब्रह्मा; शिव; —भू - जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो; ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव आदि; —वर, वरण - पति का चुनाव; —सिद्ध - जिसके लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता न हो; —सेवक - बिना वेतन लिये अपनी इच्छा से सेवा करनेवाला; —सेविका - स्त्रीस्वयंसेवक।

**स्वर** - पु० [सं] आवाज़; व्यंजन (अक्षर) की सहायता के बिना जिसका पूरा उच्चारण हो सके (व्या०); संगीत के ऋषभ आदि सात स्वरों में से कोई; सात की संख्या; श्वास; आकाश; खर्राटा; विष्णु; **यौ०** —कंप, कंपन - आवाज़ का हिलना; —बद्ध - तालस्वर में बँधा हुआ (गाना); —भंग - गले या आवाज़ का बैठ जाना; गले का एक रोग; —योग - शब्द; ध्वनि; —लासिका - बंसी; —लिपि - संगीत

के स्वरों को लिखने की लिपि या रीति ; —विकार - आवाज़ का बिगड़ जाना ; —विज्ञान - स्वरों का विवेचन करनेवाला विज्ञान ।

**स्वर्** - पु० [सं] आकाश ; स्वर्ग ; सूर्य के ऊपर का या सूर्य और ध्रुव के नीचे का स्थान ; जल ; कांति ; शिव ; **यौ०**—गंगा, धुनी - गंगा की स्वर्ग में बहनेवाली धारा, मंदाकिनी ।

**स्वर्ग** - 1. वि० [सं] देवलोक में जानेवाला ; 2. पु० देवलोक ; आकाश ; बहुत सुंदर ; **यौ०** —पथ - छायापथ ; —पुरी - अमरावती ।

**स्वर्गारोहण** - पु० [सं] स्वर्ग को जाना ; मरना ।

**स्वर्गीय** - वि० [सं] स्वर्गवासी ; मृत ; अलौकिक ; स्वर्ग का ।

**स्वर्ण** - पु० [सं] एक धातु, सोना ; सोने का सिक्का ; धतूरा ; एक तरह का गेरू ; अग्निविशेष ; नागकेसर ; **यौ०** —कदली - सोनकेला ; —कमल - रक्तपद्म ; —काय - गरुड़ ; —कार, कारक - सुनार ; —गिरि - सुमेरु ; —चूड़, चूड़क - नीलकंठ ; मुर्ग़ा ; —ज - रांगा ; —जातिका, जाती - पीली चमेली ; —जूही - पीली जूही ; —द्वीप - सुमात्रा द्वीप ; —पुरी - लंका ;—प्रतिमा - सोने की मूर्ति ; —फल - धतूरा ; —बंध, बंधक - सोना गिरवी रखना ; —माक्षिक - सोनामक्खी ; —वर्ण - सोने के रंग का ; हलदी ; हरताल ; पीला गेरू ; —विद्या - सोना बनाने की विद्या, कीमियागरी ।

**स्वर्णाभ** - 1. वि० [सं] सोने के रंग का ; 2. पु० हरताल ।

**स्वर्णिम** - वि० [सं] सुनहला ; सोने का ।

**स्वल्प** - वि० [सं] बहुत थोड़ा ; तुच्छ ; बहुत छोटा ; संक्षिप्त ; **यौ०** —दृष्टि - अदूरदर्शी ; —बल - कमज़ोर ; —भाषी - मितभाषी ; —विषय - मामूली बात ; बहुत छोटा अंश ; —व्यय - बहुत कम खर्च ; कृपण ; —स्मृति - जिसे बहुत कम याद रहे ।

**स्वल्पायु** - वि० [सं] थोड़ा जीनेवाला ।

**स्वल्पाहार** - वि० [सं] थोड़ा खानेवाला ।

**स्वसा** - स्त्री० [सं] बहिन ।

**स्वस्ति** - 1. अव्य० [सं] 'कल्याण हो !' जैसे अर्थवाला आशीर्वाद ; दान स्वीकार करते समय उच्चारण किया जानेवाला मंत्र ; 2. स्त्री० कल्याण ; **यौ०** —वाचक - आशीर्वाद ; आशीर्वाद देनेवाला व्यक्ति ; —वचन, वाचनक - मंगल कार्य आरंभ करते समय किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य ; यज्ञ आदि के अवसर पर ब्राह्मणों को दी जानेवाली दक्षिणा आदि ; —श्री - पत्र के आरंभ में लिखा जानेवाला मंगलसूचक शब्द ।

**स्वस्तिक** - पु० [सं] एक मंगल-चिन्ह ; कोई मंगल-द्रव्य ; स्वस्ति-पाठ करनेवाले चारणों का एक प्रकार ; लहसुन ; मुर्ग़ा ; साँप के फन पर की रेखा ; शरीर का एक शुभचिन्ह ।

**स्वस्तिमती** - वि० [सं] कल्याणी ।

**स्वस्तिमान** - वि० [सं] सुखी, सौभाग्ययुक्त ।

**स्वस्त्यक्षर** - पु० [सं] किसी बात के लिए कृतज्ञता प्रकट करना ।

**स्वस्त्ययन** - 1. पु० [सं] किसी कार्य के आरंभ में विघ्न-शांति की इच्छा से किया जानेवाला मंत्रोच्चार ; दान स्वीकार करने

के बाद ब्राह्मण द्वारा आशीर्वाद दिया जाना ; समृद्धि प्राप्ति का साधन ; किसी मांगलिक काम के लिए जाते समय दल के आगे-आगे ले जाया जानेवाला जलपूर्ण कलश ; 2. वि० मंगलकारक ।

**स्वाँग** - पु० [हिं] हँसी-मज़ाक या धोखा देने के लिए बनाया हुआ दूसरे का रूप ; करतब ; होली आदि के समय निकाला जानेवाला हास्यजनक जुलूस ; **मु०** —बनाना, भरना - नक़ल करना ।

**स्वाँगी** - पु० [हिं] ढोंगी ।

**स्वांतःसुखाय** - अव्य० [सं] केवल अपना मन प्रसन्न करने या जी बहलाने के लिए ।

**स्वाँस** - 1. पु०, 2. स्त्री० [हिं] साँस ।

**स्वाक्षर** - पु० [सं] हस्ताक्षर, सही ।

**स्वागत** - 1. पु० [सं] अगवानी, किसीके आगमन पर कुशल-प्रश्न आदि के द्वारा हर्षप्रकाश ; 2. वि० स्वयं आया हुआ ; **यौ०** —कारिणी समिति - किसी सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों और दर्शकों को टिकाने तथा खिलाने-पिलाने का प्रबंध करनेवाली स्थानीय समिति ; —भाषण - स्वागतसमिति के अध्यक्ष का भाषण ।

**स्वातंत्र्य** - पु० [सं] आज़ादी, स्वतंत्रता ; **यौ०** —संग्राम - आज़ादी की लड़ाई ; —प्रिय, प्रेमी - आज़ादीपसंद ।

**स्वाति** - स्त्री० [सं] सत्ताईस नक्षत्रों में से पंद्रहवाँ शुभ नक्षत्र ; **यौ०**—पंथ, पथ - आकाशगंगा ; —बिंदु - स्वाति नक्षत्र में बरसनेवाली जल की बूँदें ; —सुत, सुवन - मोती ।

**स्वाद** - पु० [स] जायका, लज्जत ; सौन्दर्य ; इच्छा ; मज़ा ।

**स्वादित** - वि० [सं] चखा हुआ ।

**स्वादिष्ठ** - वि० [सं] बहुत ही जायकेदार ।

**स्वादी** - वि० [सं] स्वाद लेनेवाला ।

**स्वादीला** - वि० [हिं] जायकेदार, सुस्वादु ।

**स्वादु** - 1. वि० [सं] ज़ायकेदार ; मीठा ; रुचिकर ; सुंदर ; इष्ट ; 2. पु० मधुर रस ; सेंधा नमक ; गुड़ ; दूध ; बेर ; महुआ ; अगर ; 3. स्त्री० दाख ।

**स्वादेशिक** - वि० [सं] स्वदेश-संबंधी ।

**स्वाधिकार** - पु० [सं] अपना अधिकार या पद ; अपना कर्तव्य ।

**स्वाधीन** - वि० [सं] जो अपने ही अधीन हो ; स्वतंत्र ; स्वच्छंद ।

**स्वाधीनता** - स्त्री० [सं] स्वतंत्रता ; आज़ादी ।

**स्वाध्याय** - पु० [सं] अध्ययन ; आवृत्ति-पूर्वक वेदाध्ययन ।

**स्वानुभव** - पु० } [सं] अपना अनुभव ।
**स्वानुभूति** - स्त्री० }

**स्वानुरूप** - वि० [सं] अपने अनुरूप या योग्य ; सहज ; स्वाभाविक ।

**स्वाप** - पु० [सं] तंद्रा ; नींद ; स्वप्न ।

**स्वाभाविक** - वि० [सं] प्राकृतिक ; स्वभाव से उत्पन्न ; **यौ०** —वर्णन - यथार्थ ; अत्युक्तिरहित वर्णन ।

**स्वाभिमान** - पु० [स] आत्मसम्मान ; अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान ।

**स्वामित्व** - पु० [सं] मालिकपन ; प्रभुत्व ।

**स्वामिनी** - स्त्री० [सं] मालकिन ; राधिका ।

**स्वामी** - पु० [सं] मालिक ; पति ; आचार्य ; संन्यासी ; ईश्वर ; घर का मुखिया ; सेनानायक ; **यौ०** —भक्त - वफ़ादार (नौकर) ; स्वामी पर भक्ति रखनेवाला ; —भक्ति - वफ़ादारी ; स्वामी के प्रति भक्तिभाव ; —वात्सल्य - अपने संप्रदाय के लोगों को सम्मानपूर्वक भोजन कराना ; प्रभु या पति के प्रति प्रेम ।

**स्वायंभुव** - पु० [सं] प्रथम मनु।
**स्वायत्त** - वि० [सं] जो अपने ही अधीन या अधिकार में हो; **यौ०** —शासन - लोक-प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन; स्थानिक शासन।
**स्वारथ** - 1. पु० [हिं] स्वार्थ; अपना फ़ायदा; 2. वि० सफल; कृतार्थ।
**स्वारथी** - वि० [हिं] अपना लाभ देखनेवाला; खुदगर्ज, स्वार्थी।
**स्वारस्य** - पु० [सं] मिठास; स्वाभाविकता; ख़ूबी।
**स्वाराज्य** - पु० [सं] स्वाधीन राज्य; ब्रह्म के साथ तादात्म्य।
**स्वार्जित** - वि० [सं] अपना कमाया हुआ।
**स्वार्थ** - 1. पु० [सं] शब्द का अपना अर्थ; वाच्यार्थ; अपना मतलब; अपना लाभ, अपना धन; 2. वि० अपना ही मतलब देखनेवाला; **यौ०** —त्याग - अपने लाभ का त्याग; आत्मत्याग; —पंडित - स्वार्थसाधन में चतुर; —पर, परायण - जिसे अपने ही स्वार्थ की चिन्ता हो; —परता, परायणता - खुदगर्ज़ी; —लिप्सु - स्वार्थसाधन के लिए लालायित रहनेवाला; —साधक - अपना मतलब निकालनेवाला; —सिद्धि - काम निकालना।
**स्वार्थांध** - वि० [सं] जो दूसरे की हानि और लाभ का विचार किये बिना अपने स्वार्थसाधन में लग गया हो।
**स्वार्थी** - वि० [सं] खुदगर्ज़।
**स्वावलंबन** - पु० [सं] अपना ही भरोसा करना; दूसरे से सहायता न लेना।
**स्वावलंबी** - वि० [सं] अपने ही बल पर काम करनेवाला; दूसरे से सहायता न लेनेवाला।
**स्वाश्रय** - 1. पु० [सं] अपने भरोसे रहना; 2. वि० विचारणीय विषय से सबंध रखनेवाला।
**स्वास्थ्य** - पु० [सं] आरोग्य; संतोष; **यौ०** —कर, प्रद - स्वास्थ्य देनेवाला; —भंग - स्वास्थ्य का बिगड़ जाना; —रक्षा - तदुरुस्ती की रक्षा; —विभाग - जनस्वास्थ्य की रक्षा का प्रबंध करनेवाला राजकीय महकमा।
**स्वाहा** - 1. स्त्री० [सं] हवि; 2. अव्य० हविर्दान के समय उच्चारण किया जानेवाला एक शब्द।
**स्वीकरण** - पु० [सं] स्वीकार करना; पत्नी-रूप में ग्रहण करना; वचन देना।
**स्वीकार** - पु० [सं] अंगीकार; अपना बना लेना; ग्रहण; पत्नीरूप में ग्रहण; इकरार; मानना; **यौ०** —पत्र - दान-पत्र।
**स्वीकारना** - स० [हिं] स्वीकार करना; ग्रहण करना।
**स्वीकारोक्ति** - स्त्री० [सं] अपना अपराध स्वीकार करना।
**स्वीकृत** - वि० [सं] स्वीकार किया हुआ; अपनाया हुआ; वादा किया हुआ।
**स्वीकृति** - स्त्री० [सं] मंजूरी; अपनाना; अपने अधिकार में लेना।
**स्वीय** - 1. वि० [सं] अपना; 2. पु० आत्मीय; स्वजन।
**स्वेच्छा** - स्त्री० [सं] अपनी इच्छा या मर्ज़ी; **यौ०** —मृत्यु - अपनी इच्छ से मरनेवाला; अपनी इच्छा से मरना; भीष्म पितामह; —सेवक - स्वयंसेवक, —सैनिक - अवैतनिक सिपाही।
**स्वेच्छाचार** - पु० [सं] मनमाना आचरण; निरंकुशता।
**स्वेच्छाचारी** - वि० [सं] निरंकुश, मनमाने आचरण करनेवाला, **यौ०** —नियम - कानून का बंधन न माननेवाला।

**स्वेद** - पु० [सं] पसीना, गर्मी; पसीना लाने का साधन; आय; **यौ०** —ज - पसीने से उत्पन्न होनेवाले जीव; जूँ या खटमल आदि; ताप या भाप से उत्पन्न होनेवाला; —जल - पसीना; —नाश - वायु; —बिंदु - पसीने की बूँद।

**स्वेदन** - 1. पु० [सं] पसीना; पारे का शोधन; 2. वि० पसीना लानेवाला।

**स्वेदनी** - स्त्री० [स] कड़ाही; तवा।

**स्वैर** - 1. वि० [सं] स्वच्छंद; सुस्त; ऐच्छिक; धीरे-धीरे; 2. पु० मनमानी; यथेच्छ विहार; **यौ०** —कथा - बकवास; —गति - स्वेच्छापूर्वक भ्रमण करना; —वर्ती - इच्छानुसार काम करने वाला; —विहारी - इच्छानुसार भ्रमण करनेवाला; —वृत्त, वृत्ति - मनमानी स्वच्छंदता।

**स्वैरिणी** - स्त्री० [सं] कुलटा; चमगीदड़।

**स्वैरी** - वि० [सं] निरंकुश।

**स्वोपार्जित** - वि० [सं] अपना कमाया हुआ।

## ह

**हँक** - स्त्री० [हिं] पुकार; बढ़ावा, ललकार।

**हँकड़ना** - अ० [हिं] गला फाड़कर चिल्लाना; चुनौती देना, ललकारना; साँड़ आदि का ज़ोर से बोलना।

**हँकड़ाना** - स्त्री० [हिं] हँकड़ने की क्रिया।

**हँकड़ाव** - पु० [हिं] हँकड़ाना; **मु०** —देना, भरना, मारना - बहुत ज़ोर से और अनेक बार हँकड़ना।

**हँकरना** - 1. स० [हिं] बुलवाना; 2. अ० हँकड़ना।

**हँकराना** - स० [हिं] पुकारना; बुलवाना।

**हँकराव, हँकरावा** - पु० [हिं] आमन्त्रण; पुकारने या बुलाने की क्रिया।

**हँकवा** - पु० [हिं] शेर के शिकार में शोर-गुल मचाना व बाजे आदि बजाकर उसे मचान के निकट लाना।

**हँकवाना** - स० [हिं] चलाना; भगवाना; किसीसे किसीको पुकारवाना।

**हँकवैया** - पु० [हिं] हाँकनेवाला व्यक्ति।

**हँका** - स्त्री० [हिं] पुकारना; ललकार; **मु०** —देना, मारना - पुकारना; ललकारना।

**हँकाई** - स्त्री० [हिं] चौपायों को हाँकने की क्रिया; बैल-गाड़ी आदि को हाँकने का काम; हाँकने का पारिश्रमिक।

**हँकाना** - स० [हिं] हाँकना; हँकवाना।

**हँकार** - स्त्री० [हिं] युद्ध तथा लड़ाई-झगड़ों के अवसर पर सुनी जानेवाली ललकार; अहंकार; ललकार; पुकार; **मु०** —देना - पुकारना।

**हँकारा** - पु० [हिं] आमंत्रण; पुकार।

**हंगामा** - पु० [फ़ा] उपद्रव; मारपीट; हुल्लड़, हल्लागुल्ला।

**हंटर** - पु० [हिं] कोड़ा; **मु०** —जमाना, लगाना - हंटर मारना।

**हंडना** - 1. अ० [हिं] घूमना; बेमतलब घूमना; 2. स० चीज़ों को उलट-पुलट कर ढूँढ़ना।

**हंडा** - 1. पु० [हिं] पानी इत्यादि भरने का ताँबे या पीतल का बना बड़ा पात्र; 2. स्त्री० [सं] मिट्टी का बहुत बड़ा पात्र; निम्न जाति की स्त्री या दासी आदि।

**हँड़िया** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन; जौ या चावल आदि से बनायी जानेवाली एक प्रकार की शराब; **मु०** —चढ़ाना - भोजन पकाने के लिए हाँड़ी में पानी आदि डालकर आग पर रखना।

**हंत** - अव्य० [सं] हर्ष, खेद, अनुकंपा, विषाद, आश्चर्य आदि को सूचित करनेवाला शब्द।

**हंतव्य** - वि० [सं] मार डालने योग्य; उल्लंघनीय; खंडनीय।

**हंता** - पु० [स] डाकू; मार डालनेवाला।

**हंस** - पु० [सं] बड़े सरोवरो में रहनेवाला एक जलपक्षी; आत्मा; जीवात्मा; ब्रह्म; कामदेव; पाँच प्राणवायुओ में से एक; विष्णु; शिव; सूर्य; अश्व; अलौकिक गुणों से युक्त मनुष्य; पर्वत; चाँदी; ईर्ष्या-द्वेष से रहित व्यक्ति; आचार्य; **यौ०** —गति - हंस के समान मोहक चाल; ब्रह्मप्राप्ति; —गमन - हंस की चाल; —गामिनी - हंस के समान गतिवाली स्त्री; —माला - हंसपंक्ति; एक तरह की बतख़; —वंश - सूर्यवंश; —वाह - हंस की सवारी करनेवाला; —वाहन - ब्रह्मा; —श्रेणी - हंसपंक्ति।

**हँसन** - स्त्री० [हिं] हँसने की क्रिया; हँसने का ढंग।

**हँसना** - 1. अ० [हिं] मुँह को खोलकर हर्ष-ध्वनि निकालना; ख़ुशी मनाना; प्रसन्न होना; अच्छा देख पड़ना; मज़ाक करना; 2. स० उपहास करना, **यौ०** हँसता चेहरा, हँसता मुँह - प्रसन्न मुखड़ा; **मु०** हँसकर बात उड़ाना - किसी बात को अनावश्यक समझकर उसपर ध्यान नही देना; हँसते-बोलते-मज़ाक करते-करते, दिल्लगी से; हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाना - अधिक हँसने के कारण पेट में एक प्रकार की ऐंठन होने लगना।

**हंसनी** - स्त्री० [हिं] मादा हंस, हंसी।

**हँसमुख** - वि० [हिं] प्रसन्न; प्रफुल्लवदन; विनोदी।

**हँसली** - स्त्री० [हिं] गले के नीचे की एक हड्डी; स्त्रियों का गले में पहनने का एक गहना।

**हँसाई** - स्त्री० [हिं] हँसी-ठट्ठा; उपहास; निंदा।

**हँसाना** - स० [हिं] ख़ुश करना; हँसने में प्रवृत्त करना।

**हंसिनी** - स्त्री० [हि] हंसी; [सं] चलने का एक विशेष ढंग।

**हँसिया** - पु० [हिं] फसल या तरकारी आदि काटने का लोहे का धनुषाकार औज़ार।

**हँसी** - स्त्री० [हि] हँसने की क्रिया, हास; उपहास; दिल्लगी; आसान काम; बदनामी; **यौ०** —खेल - आसान काम; दिल्लगी और खेल; —ठठोली - हँसी-मज़ाक; **मु०** —उड़ाना - किसीको बनाना; —ज़ब्त कर लेना - हँसी रोक लेना; —में उड़ा देना - किसी काम को दिल्लगी में टाल देना।

**हँसोड़** - वि० [हिं] हँसनेवाला, दिल्लगी-बाज़, विनोदी।

**हक** - पु० [हि] आश्चर्य या शोक आदि के अवसरो पर हृदय के सहसा धड़क उठने की क्रिया; धक; **यौ०** —दक - चकित; —बक - हक्का-बक्का।

**हक़** }
**हक़्क़** } - पु० [अ] ईश्वर; उचित पक्ष; अधिकार; कर्तव्य; सत्य; बदला; दस्तूरी; 2. वि० ठीक; सही; न्याय; प्राप्य; **यौ०** —आसाइश - पड़ोसी की ज़मीन पर रास्ता आदि पाने का अधिकार; —गो - सच बोलनेवाला; —ताला - परमेश्वर; —दार - अधिकारी; —नाहक़ - हक़ और नाहक़; सत्य और असत्य; न्यायान्याय; ज़बरदस्ती; व्यर्थ; —परस्त - न्यायशील; ईश्वरभक्त; सत्य-भक्त; —परस्ती - हक़परस्त होना; —मौरूसी - आनुवंशिक अधिकार; —रसी - न्याय पाना; —शफ़ा, शुफ़ा - अपनी जायदाद से लगी हुई

जायदाद को दूसरो से पहले ख़रीदने का हक़ ; —मालिकाना - मालिक का हक़ ; मु० —पर लड़ना - न्याय के लिए लड़ना ; —में - पक्ष में ; विषय में।

**हकबकाना** - अ० [हिं] भौंचक रह जाना ; हक्का-बक्का हो जाना।

**हकला** - वि० [हिं] हकलानेवाला, रुक-रुक कर बोलने या एक ही अक्षर तथा शब्द को कई बार कहनेवाला।

**हकलाना** - अ० [हिं] जिह्वा के दोष के कारण रुक-रुककर बोलना।

**हकलाहट** - स्त्री० [हिं] हकलाने का भाव ; हकलाने का दोष।

**हक़ारत** - स्त्री० [अ] तुच्छता, हलकापन ; मु० —की नज़र से देखना - तुच्छ समझना।

**हक़ीक़त** - स्त्री० [अ] असलीयत ; हालत ; सच बात ; वस्तु का स्वरूप ; शब्द का असली अर्थ में व्यवहार ; हाल, वृत्तान्त ; हैसियत ; मु० —खुल जाना - सत्य का प्रकट हो जाना ; —में - सचमुच।

**हक़ीक़तन** - अव्य० [अ] वस्तुतः।

**हकीम** - पु० [अ] यूनानी चिकित्साशास्त्र का विद्वान ; ज्ञानी ; बुद्धिमान।

**हकीमी** - 1. स्त्री० [अ] हकीम का काम या पेशा ; यूनानी चिकित्साशास्त्र ; 2. वि० हकीम का।

**हकीयत, हक़ीयत** - स्त्री० [अ] अधिकार ; जायदाद।

**हक़ीर** - वि० [अ] छोटा ; तुच्छ।

**हक्क** - पु० [सं] हाथी को बुलाने का शब्द।

**हक्का-बक्का** - वि० [हिं] घबराया हुआ ; चकित।

**हगना** - अ० [हिं] शौच करना ; धमकी या डर के कारण विवश होकर किसीको कोई चीज़ दे देना।

**हगोड़ा** - वि० [हिं] बार-बार शौच जानेवाला।

**हचक, हचका** - स्त्री० [हिं] झटका ; धक्का ; मु० —खाना - झटका लगना ; आगे-पीछे हिलना-डुलना।

**हचकना** - 1. अ० [हिं] ऊपर-नीचे या आगे-पीछे हिलना-डुलना ; झोंके से इधर-उधर होना ; 2. स० हिलाना-डुलाना ; झोंका देना ; ज़ोर से मारना।

**हचकाना** - स० [हिं] झोंके से या तेज़ी से हिलाना-डुलाना।

**हचकीला** - वि० [हिं] झोंके से या तेज़ी से हिलने-डुलनेवाला।

**हचकोला** - पु० [हिं] हचका।

**हचना** - अ० [हिं] किसी काम के करने में असमंजस होना।

**हज** - पु० [अ] सुख ; लाभ उठाना या पाना ; हज्ज।

**हजम** - पु० [अ] मोटाई ; आकार (किताब)।

**हज़म** - पु० [अ] पाचनक्रिया ; चोरी ; मु० —कर जाना - गबन कर लेना ; पचाना ; माल हड़प लेना ; —होना - गबन का प्रकट न होना ; पचना।

**हजर** - पु० [अ] पत्थर

**हज़र** - पु० [अ] एक स्थान में स्थिति ; सफ़र का उलटा।

**हज़रत** - 1. पु० [अ] सम्मानसूचक संबोधन ; मोहम्मद ; दरबार ; समीपता ; जनाब; 2. वि० दुष्ट ; चालबाज़ ; शरारत करनेवाला ; यौ० —सलामत - बादशाह या नवाब आदि का संबोधन ; बादशाह।

**हजामत** - स्त्री० [अ] सिर मूँड़ना ; क्षौर ; दुर्दशा ; सफ़ाई ; मु० —बनना - लूटा जाना ; सिर मूँड़ा जाना ; —बनाना - ठगना ; सिर मूँड़ना।

**हज़ार** - 1. वि० [फ़ा] दस सौ ; अनेक, अनगिनत ; 2. अव्य० कितना ही ; मु० —जान से - बड़े शौक से ; —में - बहुतो में या बहुतो के सामने ।

**हज़ारा** - पु० [फ़ा] फौवारा ; एक आतिशबाज़ी ; बहुल से पटलोवाला फूल ।

**हज़ारी** - 1. वि० [फ़ा] हज़ार से सम्बन्ध रखनेवाला ; 2. पु० हज़ार आदमियो का सरदार ; वेश्यापुत्र ; हज़ार आदमियों की पलटन ; यौ० —बज़ारी - कमीना ; साधारण लोगों में बैठनेवाला ।

**हज़ारों** - वि० [उ] सहस्रो ; अनगिनत ; बेहद ; मु० —घड़े पानी पड़ जाना - बहुत लज्जित होना ; —में - बहुतो में ; खुल्लमखुल्ला ।

**हजूम** - पु० [अ] जमघट ; भीड़ करना ।

**हज़्ज** - पु० [अ] मक्के की यात्रा ; नियत समय पर काबे के दर्शन और प्रदक्षिणा करना ; संकल्प करना ।

**हज्जाम** - पु० [अ] नाई ।

**हज्जामी** - स्त्री० [हिं] नाई का धंधा ।

**हटक** - स्त्री० [हिं] मना करने की क्रिया ; चौपायो को हटाने या हाँकने की क्रिया ।

**हटकन** - स्त्री० [हिं] चौपायों को हाँकने की लाठी ।

**हटकना** - 1. स० [हिं] मना करना ; हटाना ; हाँकना 2. अ० हिचकिचाना ।

**हटका** - पु० [हिं] अर्गला ।

**हटतार** - पु० [हिं] माला का सूत ।

**हटताल** - स्त्री० [हिं] किसी कर या अन्याय-अत्याचार आदि के विरोध में दूकानो में ताले लगा कर खरीद-बेच बंद करना या मिलो में मजदूरों का काम-काज आदि बन्द कर देना, हड़ताल ।

**हटना** - अ० [हिं] किसी स्थान से खिसककर या चलकर दूसरी जगह जाना ; किसी स्थान से अवकाश ग्रहण करना ; पदत्याग करना ; भागना ; जी चुराना ; आलसी होना ; वादे पर कायम न रहना ।

**हटवाई** - स्त्री० [हिं] दुकानदारी ; हटवाने की मज़दूरी ।

**हटवाना** - स० [हिं] हटाने का काम दूसरे से करवाना ।

**हटवार** - 1. पु० [हिं] दूकानदार ; 2. वि० हटानेवाला ।

**हटाना** - स० [हिं] खिसकाना, किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखना ; उपेक्षा करना ; खदेड़ना ; किसीको नौकरी से अलग करना ; सिलसिला तोड़ना ।

**हट्ट** - पु० [सं] बाज़ार ; मेला ; यौ० —चौरक - पाकेटमार ।

**हट्टा-कट्टा** - वि० [हिं] बलवान ; मोटा-ताजा ; हृष्ट-पुष्ट ।

**हठ** - पु० [सं] जबरदस्ती ; दृढ़ प्रतिज्ञा ; दुराग्रह ; किसी बात पर अड़े रहने की प्रवृत्ति ; यौ० —धर्म, धर्मी - सत्यासत्य का विवेक किये बिना किसी बात को सत्य मानकर उसपर डटे रहना ; —योग - योग का एक प्रकार जिसमें नेती-धोती-आसन आदि क्रियाएँ कर धारणा और ध्यान आदि के द्वारा चित्तवृत्ति को बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुख करते हैं ; मु० —पकड़ना - ज़िद करना ।

**हठात्** - अव्य० [सं] बलपूर्वक ; हठपूर्वक ।

**हठी** - वि० [सं] हठ करनेवाला, ज़िद्दी ।

**हठीला** - वि० [हिं] हठी ; युद्ध में जमनेवाला वीर ; धीर ; दृढसंकल्प ।

**हड़** - स्त्री० [हिं] हर्रे ; एक गहना ; यौ० —कंप - आतंक ; तहलका ।

**हड़क** - स्त्री० [हिं] पागल कुत्ते के काटने

से उत्पन्न जल का भय, जलातंक ; कोई वस्तु खाने की उत्कट इच्छा ।

**हड़कना** - अ० [हिं] किसी वस्तु के लिए लालायित होना ।

**हड़का** - पु० [हिं] तरस ; हड़कने का भाव ।

**हड़काना** - स० [हिं] तरसाना ; दूर हटा देना ; तंग करने में किसीको प्रवृत्त करना ; हतोत्साहित करना ।

**हड़काया** - वि० [हिं] उतावला ; पागल (कुत्ता) ।

**हड़ताल** - स्त्री० [हिं] हटताल ।

**हड़ना** - अ० [हिं] तौला जाना ।

**हड़प** - पु० [हिं] बिना चबाये निगल जाना ; ग्रास को एक ही बार निगल जाना ; किसीका माल लेकर हज़म कर जाना ।

**हड़पना** - स० [हिं] जबरदस्ती या चोरी से किसी वस्तु को लेकर कभी न देना ; निगलना ; जल्दी खाना ।

**हड़बड़** - स्त्री० [हिं] उतावली ।

**हड़बड़ाना** - 1. अ० [हिं] घबराहट में कोई काम करना ; 2. स० जल्दी कार्य करने के लिए किसीको प्रेरित करना ।

**हड़बड़िया** - वि० [हिं] उतावला ; जल्दबाज़ ।

**हड़बड़ी** - स्त्री० [हिं] उतावली ; जल्दबाज़ी ।

**हड़ा** - पु० [हिं] एक प्रकार की बंदूक ।

**हड़ीला** - वि० [हिं] बहुत दुबला-पतला, जिसके शरीर में केवल हड्डियाँ ही रह गयी हों ।

**हड्ड** - पु० [सं] हाड़, अस्थि ।

**हड्डी** - स्त्री० [हिं] शरीर का वह कड़ा भाग जिससे उसका ढाँचा बनता है ; कुल, खानदान ; मु० —उखड़ना - हड्डियों का जोड़ खुल जाना ; —तोड़ना - बुरी तरह पीटना ; —से हड्डी बजाना - लड़ाई-झगड़ा करना, लड़ना ; —चूसना - अशक्त व्यक्ति से जबरदस्ती कोई चीज़ लेना या उससे ज्यादा काम कराना ।

**हत** - 1. वि० [सं] मार डाला हुआ ; घायल किया हुआ ; छला हुआ ; तंग किया हुआ ; पीटा हुआ ; निराश ; भ्रष्ट किया हुआ ; निकम्मा ; विलुप्त ; संपर्क में आया हुआ ; 2. पु० वध ; गुणा ; यौ० —चित्त, चेता - बेसुध ; घबड़ाया हुआ ; —चेतन - हतज्ञान ; —जीवन - दुखमय जीवन ; —जीवित - दुखी जीवन ; जीवन से निराश, हताश ; —ज्ञान - बेसुध ; —प्रभाव - जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो ; अधिकार से वंचित ; —भाग, भाग्य - भाग्यहीन ; —श्री, संपद - जिसका वैभव नष्ट हो गया हो ।

**हतक** - 1. वि० [सं] जिसे चोट पहुँचायी गयी हो ; दीन-दुखी ; 2. पु० नीच व्यक्ति ; भीरु या कायर व्यक्ति ; 3. स्त्री० [अ] बेइज्जती ; धृष्टता ।

**हताश** - वि० [सं] निराश ; मूर्ख ; दुखी ।

**हताहत** - वि० [सं] मारे गये और घायल ।

**हतोत्साह** - वि० [सं] जिसका उत्साह भंग हो गया हो ।

**हत्थ** - पु० [हिं] हाथ ।

**हत्था** - पु० [हिं] किसी वस्तु का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाय, मूठ ; कुर्सी की बाँह ; केले का घौद ; दण्ड करते समय हाथ के नीचे रखने का पत्थर या ईंट ; कंबल बुनते समय उसकी पटिया ठोंकने का एक औज़ार ; रेशमी वस्त्र बुनने के काम में आनेवाला एक औज़ार ; खेत की नाली के पानी को चारों ओर उलीचने का एक औज़ार ।

**हत्थि** - पु० [हिं] हाथी।
**हत्थी** - स्त्री० [हिं] औज़ार या हथियार आदि का दस्ता; कड़ाह में रखी ईख के रस को चलाने की लकड़ी; बुनाई के काम का एक औज़ार; घोड़े का शरीर पोंछने की गोमुखी के ढंग की ऊनी थैली।
**हत्थे** - अव्य० [हिं] हाथ में; मु० —लगना - हाथ में आना; मिलना।
**हत्या** - स्त्री० [सं] ख़ून, वध; जान से मारने का काम; झगड़ा; बहुत दुबला-पतला या बीमार व्यक्ति आदि; हत्या करने का पाप; मु० —टलना - झंझट दूर होना; —पल्ले बाँधना - झगड़े से सम्बन्ध स्थापित करना; —सवार होना - मुखाकृति आदि से हत्या की प्रवृत्ति प्रकट होना; —सिर मढ़ना - अपराधी ठहराना; —सिर लेना - पाप का भागी होना।
**हत्यारा** - पु० [हिं] हत्या करनेवाला व्यक्ति, ख़ूनी।
**हत्यारी** - स्त्री० [हिं] हत्या करनेवाली स्त्री, हत्यारिन।
**हथ** - पु० [सं] चोट; मृत्यु; वध; हताश मनुष्य; [हिं] हाथ का समास में प्रयुक्त रूप; यौ० —उधार - बिना लिखा-पढ़ी के किसीको थोड़े समय के लिए कर्ज देना; —कंडा - षडयंत्र; चतुराई की चाल; धूर्तता करने की पद्धति; हाथ की सफ़ाई; —कड़ी - कैदी या अपराधी को विवश करने के लिए पहनाया जानेवाला लोहे का बना कड़ा; —कल - पेचकस; सूत या तार ऐंठने का सुनारो का एक औज़ार; —कोड़ा - कुश्ती का एक दाँव; —छुट - तुरन्त उत्तेजित होकर मार बैठने की जिसे आदत हो; —फूल - एक अतिशबाज़ी; हाथ के पंजे के ऊपरी भाग पर पहनने का स्त्रियो का एक आभूषण; —लपक - आँख बचाकर चुपके से चीज़ों को गायब कर देनेवाला; —लेवा - हाथ को हाथ में लेनेवाला व्यक्ति; पाणि-ग्रहण; —बाँस - नाव खेने का सामान।
**हथनाल** - स्त्री० [हिं] हाथी पर चलनेवाली तोप।
**हथनी** - स्त्री० [हिं] हाथी की मादा।
**हथबाँसना** - स० [हिं] अधिकार करना; पहले पहल प्रयोग में लाना; अधिकार करके इस्तेमाल करना।
**हथसार** - स्त्री० [हिं] हाथियों के रहने का स्थान, फीलख़ाना।
**हथाहथी** - अव्य० [हिं] हाथो हाथ; शीघ्र।
**हथिनी** - स्त्री० [हिं] हथनी।
**हथियाना** - स० [हिं] अपने अधिकार में कर लेना; जबरदस्ती किसीकी चीज़ ले लेना; हाथ से पकड़ना।
**हथियार** - पु० [हिं] अस्त्र-शस्त्र; औज़ार; यौ० —घर - शस्त्रागार; —बन्द - अस्त्र-शस्त्र धारण करनेवाला; मु० —डालना - लड़ाई बन्द करना; —लगाना, बाँधना - अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होना।
**हथुईरोटी** - स्त्री० [हिं] बेलन से न बेलकर हाथ की अंगुलियो से दबाकर चौड़ी की गयी रोटी।
**हथेरा** - पु० [हिं] एक औज़ार; हत्था।
**हथेली** - स्त्री० [हिं] कलाई के आगे नीचे का चिकना और चौड़ा भाग; करतल; चर्खे की मुठिया; मु० —देना, लगाना - हाथ का सहारा देना; —पर सिर रखना - जान देने के लिए तैयार रहना; —पीटना, बजाना - ताली बजाना।

**हथोरी** - स्त्री० [हिं] हथेली ।

**हथौटी** - स्त्री० [हिं] हस्तकौशल; किसी काम में हाथ लगाना; मु० —जमना, सधना - हाथ खूब सध जाना; काम करने का कौशल प्राप्त होना।

**हथौड़ा** - पु० [हिं] धातु या पत्थर आदि पीटने के काम आनेवाला लोहे का एक औज़ार ।

**हथौड़ी** - स्त्री० [हिं] छोटा हथौड़ा ।

**हथौना** - पु० [हिं] दूल्हे और दुलिहन के हाथ में मिठाई देने की रस्म ।

**हद** - स्त्री० [अ] सीमा; औचित्य की सीमा; अन्त; किनारा; इस्लामी शरीअत के अनुसार दिया हुआ दंड; नियत स्थान; यौ० —बन्दी - सीमा का निर्धारण ।

**हदका** - पु० [हिं] धक्का ।

**हदीस** - स्त्री० [अ] बात; नयी बात; इतिहास; वर्णन; मुहम्मद के कर्मकलाप और वचनो का संग्रह जो कुरान में नहीं कहे गये विषयों के लिए प्रमाण माना जाता है ।

**हद्द** - स्त्री० [अ] हद ।

**हनन** - 1. पु० [सं] वध करना; चोट पहुँचाना; ठोकना; नगाड़ा आदि बजाने का डंडा; गुणन; 2. वि० वध करनेवाला; यौ० —शील - निष्ठुर ।

**हनना** - स० [हिं] जान से मार डालना; चोट पहुँचाना; ठोकना; लकड़ी से पीटकर नगाड़ा आदि बजाना ।

**हनफ़ी** - 1. वि० [अ] सच्चा; मोमिन; 2. पु० सुन्नियों का एक संप्रदाय ।

**हनु** - स्त्री० [सं] ठुड्डी; ऊपरी जबड़ा; हथियार; जीवन को क्षति पहुँचानेवाली वस्तु ।

**हनोज़** - अव्य [फ़ा] अभी; अभी तक ।

**हप** - पु० [हिं] मज़बूती और स्फूर्ति से दोनों होठों को दबाने से उत्पन्न शब्द; मु० —कर जाना, करना - मुँह में डालकर झट से निगल जाना; तुरन्त चटकर जाना ।

**हपटाना** - अ० [हिं] जल्दी-जल्दी साँस लेना; हाँफना ।

**हप्पा** - पु० [हिं] मुलायम भोजन; घूँस; कौर ।

**हप्पू** - 1. पु० [हिं] अफ़ीम; 2. वि० अत्यधिक खानेवाला, पेटू ।

**हफ़्त** - वि० [फ़ा] सात ।

**हफ़्ता** - पु० [फ़ा] सप्ताह ।

**हबकना** - स० [हिं] किसी वस्तु या फल आदि को झट दाँत से काटकर खाना; किसी व्यक्ति को झपटकर दाँत से काटना ।

**हबड़ा** - वि० [हिं] बड़दन्ता; कुरूप ।

**हबरदबर, हबरहबर** - अव्य० [हिं] जल्दी-जल्दी; हड़बड़ी के साथ ।

**हबश, हबशा** - पु० [अ] हब्शियों का देश ।

**हबशिन** - स्त्री० [हिं] हब्शी स्त्री; काली-कलूटी स्त्री; शाही महल की चौकीदारी करनेवाली स्त्री ।

**हबाब** - पु० [अ] पानी का बुलबुला; मकान में सजावट के लिए लगाया जानेवाला शीशे का गोला ।

**हबीब** - वि० [अ] दोस्त; प्रेमी; प्यारा ।

**हबूब** - पु० [अ] 'हब्ब' का बहु० ।

**हब्ब** - पु० [अ] गोली; दाना; बीज ।

**हब्बा** - पु० [हिं] अनाज का दाना; बहुत थोड़ी मात्रा; रत्ती; पैसा; कौड़ी; यौ०—भर - रत्ती भर; —हब्बा - पैसा-पैसा; कौड़ी-कौड़ी ।

**हब्बाडब्बा** - पु० [अ] बच्चों का एक रोग जिसमें साँस बहुत तेजी से चलती है ।

**हम** - 1. सर्व० [हिं] 'मैं' का बहु०; 2. पु० अहंकार; बड़प्पन की भावना; 3. अव्य० [फ़ा] आपस में; समान; साथ; यौ० —असर - एक समान प्रभाववाले; —उम्र - समवयस्क; —कौम - एक जातिवाले; —ख़ाना - एक ही घर में रहनेवाला; —ख़्वाबा - साथ सोनेवाली (पत्नी); —जिन्स - एक ही पेशावाले; —जोली - एक ही उम्र का; बचपन में साथ खेला हुआ; —दर्द - सहानुभूति रखनेवाला; —दर्दी - सहानुभूति; —निवाला - साथ खानेवाला; —पल्ला - बराबर की टक्कर का; —राह - साथ चलनेवाला; साथी; —राही - सहगामी; —वार - बराबर; एक साथ; —सफ़र - साथ यात्रा करनेवाला; —सबक - साथ पढ़नेवाला; —सर - बराबरी का; —सरी - बराबरी; —साया - पड़ोसी।

**हमता** - स्त्री० [हिं] अहंकार।

**हमन** - सर्व [हिं] हम।

**हमरा, हमरू** - सर्व [हिं] हमारा।

**हमल** - पु० [अ] गर्भ, भ्रूण; बोझ।

**हमला** - पु० [अ] आक्रमण; चोट; यौ० —आवर (हमलावर) - हमला करनेवाला।

**हमाकृत** - स्त्री० [अ] मूर्खता; हिमाकृत।

**हमायल** - स्त्री० [अ] गले में डालने की चीज़; गले में पहनने का एक गहना; परतला; छोटे आकार का कुरान।

**हमार, हमारा** - सर्व [हिं] 'हम' का संबन्धकारक का रूप।

**हमाल** - पु० [हिं] कुली।

**हमाहमी** - स्त्री० [हिं] स्वार्थपरायणता; अपने अहंभाव को ही आगे करने की प्रवृत्ता।

**हमील** - स्त्री० [हिं] सोने या चाँदी के सिक्के के रूप में गढ़े हुए धातु के टुकड़ों की माला।

**हमेव** - पु० [हिं] अहंकार; मु० —टूटना - घमंड चूर होना।

**हमेशा** - अव्य० [फ़ा] सदैव।

**हम्द** - पु० [अ] ईश्वर-स्तुति

**हम्माम** - पु० [अ] स्नान का स्थान; गरम स्नानागार; यौ० —की लुंगी - नहाने की लुंगी; हर व्यक्ति के काम में आनेवाली चीज़।

**हम्मामी** - पु० [अ] नहलानेवाला।

**हम्माल** - पु० [अ] बोझ उठानेवाला, कुली।

**हयन्द** - पु० [हिं] अच्छा घोड़ा; बड़ा घोड़ा।

**हय** - पु० [सं] घोड़ा; सात की संख्या; इन्द्र; धनुराशि; एक विशेष जाति का आदमी।

**हयात** - स्त्री० [अ] जीवन; प्राण।

**हर** - 1. वि० [सं] हरण करनेवाला; आकृष्ट करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; ले जानेवाला; लानेवाला; कब्ज़ा करनेवाला; विभाजन करनेवाला; हकदार; 2. पु० अग्नि; गधा; ग्रहण; भिन्न का निम्नांक; शिव; हरण; यौ० —गिरि - कैलास पर्वत; —गौरी - शिव की अर्धनारीश्वर मूर्ति; —तेज - पारा; शिव का वीर्य; —नेत्र - शिवनेत्र; तीन की संख्या; —वाहन - बैल।

**हर** - 1. वि० [फ़ा] प्रत्येक; यौ० —एक - प्रत्येक; —कहीं - हर जगह; —चन्द - जिस कदर, कितना ही; —जाई - मारा-मारा फिरनेवाला, सब जगह जानेवाला, आवारागर्द; —तरह - हर हालत में; —दम - हमेशा; —फ़न-

मौला - हर एक फ़न जाननेवाला ; —रोज - प्रति दिन ; [हिं] हल ; यौ० —पुजी - किसानों द्वारा कार्तिक मास में किया जानेवाला हल का पूजन ; —वाह, वाहा - हल जोतनेवाला ; —वाही - हल जोतने का काम या मज़दूरी।

**हरएँ** - अव्य० [हिं] धीरे-धीरे।

**हरकत** - स्त्री० [अ] चेष्टा ; हिलना-डोलना ; स्वर ; शरारत ; काम।

**हरकना** - स० [हिं] रोकना।

**हरकारा, हरकाला** - पु० [हिं] डाकिया ; दूत।

**हरकीस** - पु० [हिं] एक प्रकार का अगहनी धान।

**हरखना** - अ० [हिं] हर्षित होना।

**हरगिज़** - अव्य० [फ़ा] कभी ; किसी भी हालत में।

**हरज** - पु० [अ] नुकसान, हानि ; समय-नाश ; काम में होनेवाली रुकावट।

**हरजा** - पु० [अ] नुकसान ; हरजाना, तावान ; संगतराशों का एक औज़ार।

**हरजाना** - पु० [फ़ा] नुकसान के बदले में दी जानेवाली रकम, क्षतिपूर्ति।

**हरझिया** - पु० [हिं] रहँट के बैलों को हाँकनेवाला व्यक्ति।

**हरड़ा** - पु० [हिं] हर्रे, हड़।

**हरण** - 1. वि० [सं] दूर करनेवाला ; धारण करनेवाला ; ले जानेवाला ; 2. पु० दूर करना ; नष्ट करना ; छीन लेना ; चुरा लेना ; ले जाना या ले आना ; भगा ले जाना ; विभाजन ; वंचित करना ; उबलता हुआ पानी ; कौड़ी ; घोड़े का चारा ; हाथ ; स्वर्ण।

**हरणीय** - वि० [सं] हरण करने योग्य ; ले लेने या छीन लेने योग्य।

**हरता** - पु० [हिं] हर्ता ; यौ० —धरता - बनाने-बिगाड़नेवाला ; सर्वशक्तिमान।

**हरतार, हरताल** - स्त्री० [हिं] गंधक और संखिया के योग से बना एक पीला खनिज द्रव्य ; मु०—फेरना, लगाना - किसी बने काम को बिगाड़ देना।

**हरदा** - पु० [हिं] फसल का एक रोग ; गेरूई।

**हरदिया** - 1. वि० [हिं] हल्दी के रंग का, पीला ; 2. पु० पीले रंग का घोड़ा।

**हरना** - 1. स० [हिं] हरण कर लेना ; आकृष्ट करना ; दूर करना ; 2. अ० परास्त होना ; शिथिल पड़ जाना ; हार जाना ; 3. पु० मृग।

**हरनी** - स्त्री० [हिं] हिरण की मादा।

**हरनौटा** - पु० [हिं] हिरण का बच्चा।

**हरपरेवरी** - स्त्री० [हिं] एक टोटका जो औरतें वर्षा कराने के लिए करती हैं।

**हरपा** - पु० [हिं] वह छोटा डिब्बा जिसमें सुनार तराज़ू आदि रखते हैं ; सिंधोरा।

**हरफारेवड़ी** - स्त्री० [हिं] आँवले के बराबर खट्टे फलोंवाला एक वृक्ष या उसका फल।

**हरबराना** - अ० [हिं] हड़बड़ाना।

**हरबा** - पु० [अ] युद्ध का साधन, हथियार ; यौ०—हथियार - अस्त्र-शस्त्र।

**हरबोंग** - 1. वि० [हिं] गुण्डा ; मूर्ख ; 2. पु० अंधेर, कुव्यवस्था।

**हरभूली** - स्त्री० [हिं] धतूरे का एक प्रकार।

**हरम** - 1. पु० [अ] अन्तःपुर ; घेरा ; 2. स्त्री० रखेली बनायी हुई बाँदी ; विवाहिता स्त्री ; यौ० —खाना - जनानखाना।

**हरमजदगी** - स्त्री० [हिं] दुष्टता ; शरारत ; हरामजादापन।

**हरवल** - पु० [हिं] बिना व्याज के हलवाहे को दिया हुआ द्रव्य ।

**हरवली** - स्त्री० [हिं] मालिक का पद; सेना का नेतृत्व ।

**हरबाना** - 1. अ० [हिं] जल्दी करना ; हड़बड़ाना ; हलका होना ; 2. स० परास्त ; कराना ।

**हरवाला** - पु० [हिं] एक घास ।

**हरषना, हरसना** - अ० [हिं] प्रसन्न होना ।

**हरसिंगार** - पु० [हिं] एक फूल, पारिजात ।

**हरहरा** - 1. वि० [हिं] हैरान या परेशान करनेवाला ; भागा फिरनेवाला (पशु) ; 2. पु० हल में जुतनेवाला बैल ।

**हरहाई** - 1. वि०, 2. स्त्री० [हिं] शरारती गाय ।

**हराँस** - पु० [हिं] साधारण ज्वर, हरारत ; थकावट ।

**हरा** - 1. वि० [हिं] घास या पत्ती के रंग का ; हरित ; आनन्दित ; अधपका ; तरोताज़ा ; बिना भरा (घाव) ; 2. पु० हरा रंग ; चौपायों का हरा चारा ; माला ; 3. स्त्री० [सं] शिव की पत्नी पार्वती ; **यौ०** —भरा - हरियाली से भरा हुआ ; ताजा ; **मु०** —करना - प्रसन्न करना ; —दिखायी पड़ना - अपने अज्ञान के कारण झूठी आशा बाँधना ।

**हराई** - स्त्री० [हिं] एक या एक से अधिक हलों के एक फेरे में जुत जानेवाली भूमि ।

**हराना** - स० [हिं] युद्ध या लड़ाई-झगड़े आदि में शत्रु या प्रतिद्वंद्वी को परास्त करना ; पछाड़ना ; थकाना ।

**हराम** - 1. वि० [अ] धर्मशास्त्र में निषिद्ध ; अविहित ; त्याज्य ; अपवित्र ; अग्राह्य ; हलाल का उलटा ; 2. पु० पाप-कर्म ; व्यभिचार ; **यौ०** —कार - व्यभिचारी ; —खोर - हराम का माल खानेवाला ; घूसख़ोर, नमकहराम, मुफ़्तख़ोर ; —ख़ोरी - मुफ़्तख़ोरी, घूसख़ोरी, नमकहरामी ; —जादा - दोगला ; दुष्ट ; —जादी - दोगली ; दुष्टा या खोटी स्त्री ।

**हरामी** - वि० [अ] हराम का जना ; दुष्ट ।

**हरारत** - स्त्री० [अ] हलका ज्वर ; गर्मी ; क्रोध ; जोश ; **मु०** —होना - हलका ज्वर होना ।

**हरावल** - पु० [तु] सेना का अग्रभाग ; ठगों का मुखिया

**हरास** - पु० [हिं] ह्रास ; दुख ; आशंका ; डर ; नैराश्य ।

**हराहर** - पु० [हिं] हलाहल

**हराहरि** - स्त्री० [हिं] थकावट ।

**हरि** - 1. वि० [सं] हरापन लिये पीला ; हरा ; ले जानेवाला ; कपिल ; पीत ; 2. पु० इन्द्र ; विष्णु ; ब्रह्मा ; शिव ; चन्द्रमा ; प्रकाश की किरण ; अग्नि ; इन्द्र का घोड़ा ; अश्व ; साँप ; मेंढ़क ; तोता ; बन्दर ; कोयल ; हंस ; **यौ०** —कथा - विष्णु के अवतारो के चरित्रो का वर्णन ; —कीर्तन - विष्णु के अवतारो आदि का गुण-गान ; —केश - भरे बालोंवाला ; —चंदन - पीला चंदन ; केसर ; चाँदनी ; पद्मपराग ; पाँच देववृक्षों में से एक ; —जन - भगवान का सेवक ; अछूत जाति का व्यक्ति ; —ताल - हरताल ; हरापन लिये पीले रंग का कबूतर ; —तालिका - दूब ; भाद्र शुक्ला तृतीया (जिस दिन स्त्रियाँ तीज का पर्व मनाती हैं) ; —दास - विष्णुभक्त ; —दिन, दिवस - एकादशी ; —धाम - वैकुंठ ; —नाम - विष्णु का आख्यान ; भगवान का नाम ; —पद, पुर - वैकुंठ ; —पैड़ी - हरिद्वार का एक घाट ; —प्रिया - द्वादशी ;

तुलसी ; लक्ष्मी ; पृथ्वी ; मधु ; सुरा ; —बोध - विष्णु का जागरण ; —बोधिनी - कार्तिक शुक्ला एकादशी ; —भक्त - भगवान का भक्त : —भक्ति - भगवान की भक्ति, —भाविणी, भाविनी - भगवान की भक्ति करनेवाली स्त्री ; —यान - गरुड़, —लीला - भगवान की लीला ; —वाहन - इन्द्र ; गरुड़ ; सूर्य ; —शयनी - आषाढ़ शुक्ला एकादशी ; —संकीर्तन - विष्णु का गुणगान, —सौरभ - कस्तूरी ; —हर - विष्णु और शिव ।

**हरि** - अव्य [हिं] धीरे ; यौ॰ —हरि - आहिस्ते-आहिस्ते, धीरे-धीरे ।

**हरिअर** - 1. वि॰, 2. पु॰ [हिं] हरा ।

**हरिअराना** - अव्य [हिं] हरा होना ।

**हरिअरी** - स्त्री॰ [हिं] हरियाली ; हरी घास ; हरे पेड़-पौधो का ढेर ; हरा रंग ।

**हरिआना** - अ॰ [हिं] प्रसन्न होना ; ताजा होना ; हरे रंग का होना ।

**हरिण** - 1. पु॰ [सं] हिरण, मृग ; विष्णु ; नेवला ; शिव ; हंस ; सूर्य ; पाण्डु वर्ण ; 2. वि॰ पीलापन लिये सफ़ेद भूरा तथा पाण्डु रंग का ; हरा ; यौ॰ —चर्म - मृगछाला ।

**हरिणी** - स्त्री॰ [सं] मृगी, मादा हरिण ; हरा रंग ; मजीठ ; तरुणी ; सुन्दरी स्त्री ; स्त्रियो के चार भेदो में से एक ; एक वर्णवृत्त ; स्वर्णप्रतिमा ।

**हरित** - 1. वि॰ [सं] हरा ; गहरा नीला ; पीला ; भूरा ; 2. पु॰ हरा रंग ; भूरा रंग ; सिंह ; एक सुगंधित पौधा, सोना ; पाण्डु रोग ।

**हरिता** - स्त्री॰ [सं] दूब ; हल्दी ; नीली दूब ।

**हरिताश्म** - पु॰ [सं] मरकत मणि ; तूतिया ।

**हरिताश्व** - वि॰ [सं] पिंगल वर्ण के घोड़ेवाला (सूर्य) ।

**हरित्** - 1. वि॰ [सं] पीला ; हरा ; हरा-मिश्रित पीला ; 2. पु॰ हरा रंग ; पिंगल वर्ण ; मरकत ; घास ; मूँग ; विष्णु ; सिंह, सूर्य ; 3. स्त्री॰ घास ; दिशा ; हल्दी ।

**हरिद्रा** - स्त्री॰ [सं] हल्दी ; हल्दी का चूर्ण ।

**हरिन** - पु॰ [हिं] हरिण ।

**हरिन्मणि** - पु॰ [सं] मरकत मणि, पन्ना ।

**हरिमा** - 1. स्त्री॰ [सं] पीलापन ; हरापन ; 2. पु॰ समय ।

**हरिय** - पु॰ [सं] पिंगल वर्ण का घोड़ा ।

**हरिया** - पु॰ [हिं] हलवाहा ।

**हरियाथोथा** - पु॰ [हिं] तूतिया ।

**हरियानी** - स्त्री॰ [हिं] हिन्दी की एक बोली का नाम, बाँगड्ड ; जाटू बोली ।

**हरियाली** - स्त्री॰ [हिं] हरी वनस्पति का ढेर ; मु॰ —सूझना - सुख ही सुख का आभास होना ।

**हरियावँ** - पु॰ [हिं] फसल बाँटने का एक नियम जिसमें ज़मीन्दार को सात और किसान को नौ भाग मिलते हैं ।

**हरिल** - पु॰ [हिं] हारिल पक्षी ।

**हरिष** - पु॰ [सं] हर्ष, प्रसन्नता ।

**हरिस** - स्त्री॰ [हिं] हल्की व लम्बी लकड़ी जिसका एक सिरा हल की फालवाली मोटी लकड़ी से सम्बद्ध होता है और दूसरा बैलों के जुए से ।

**हरिसिंगार** - पु॰ [हिं] हरसिंगार, पारिजात ।

**हरिहाई** - 1. स्त्री॰ [हिं] पशुओ की परेशान करनेवाली प्रवृत्ति ; 2. वि॰ शरारती (गाय)

**हरी** - स्त्री॰ [सं] बन्दरो की माता ; एक वर्णवृत्त ; ज़मीन्दार को दी जानेवाली हलकी बेगार ।

**हरीचाह** - स्त्री० [हिं] सुगन्धित जड़वाली एक घास, गन्धतृण ।
**हरीतकी** - स्त्री० [सं] हड़ ; हड़ का पेड़ ।
**हरीतिमा** - स्त्री० [सं] हरा रंग ; हरियाली ।
**हरीफ़** - पु० [अ] प्रतिद्वन्द्वी ; शत्रु ; हमपेशा ।
**हरीरा** - पु० [अ] सूजी आदि को दूध में पकाकर बनाया हुआ मीठा पेय ।
**हरीषा** - स्त्री० [सं] मांस का एक व्यंजन ।
**हरीस** - 1. स्त्री० [हिं] हर्ष ; हरिस ; 2. वि० [अ] पेटू ; लालची ; हिर्स करनेवाला ।
**हरुअ, हरुआ** - वि० [हिं] हलका ।
**हरुआई, हरुवाई** - स्त्री० [हिं] हलकापन ।
**हरुआना** - अ० [हिं] जल्दी करना ; हलका होना ।
**हरुए** - अव्य० [हिं] धीरे-धीरे ; हलके-हलके ।
**हरूफ़** - पु० [अ] 'हर्फ़' का बहु० ।
**हरे** - अव्य० [हिं] आहिस्ते, धीरे ।
**हरेक** - वि० [हि] हर एक
**हरेरी** - स्त्री० [हिं] सब्जी ।
**हरैना** - पु० [हिं] हल का वह भाग जिसमें नीचे की ओर फाल लगाते हैं ; बैल-गाड़ी का सामने की ओर निकला हुआ भाग ।
**हरैया** - पु० [हिं] हरण करनेवाला ; दूर करनेवाला
**हर्तव्य** - वि० [सं] हरण करने योग्य ।
**हर्ता** - पु० [सं] हरण करनेवाला ; चोर ; डाकू ; नष्ट करनेवाला ; लानेवाला ; काटकर अलग करनेवाला ; टैक्स लगानेवाला ; सूर्य ।
**हर्फ़** - 1. पु० [अ] अक्षर या वर्ण ; शब्द ; 2. अव्य० दोष ; **यौ०** —आशाना - अक्षर पहचाननेवाला ; —गीर - दोष निकालनेवाला, नुक्ताचीन ; —गीरी - छिद्रान्वेषण ; —हर्फ़ - अक्षरशः ।
**हर्ब** - पु० [अ] युद्ध ; **यौ०** —गाह - युद्धस्थल ।
**हर्म** - पु० [स] जँभाई ।
**हर्म्य** - 1. पु० [सं] महल, प्रासाद ; अग्नि-कुंड ; नरक ; 2. वि० मकान में रहनेवाला ।
**हर्र, हर्रे** - स्त्री० } [हिं] हरीतकी ; **मु०** हर्रा
**हर्रा** - पु० } लगे न फिटकिरी और रंग चोखा - बेखर्च के काम बन जाना ।
**हर्रैया** - पु० [हिं] हर्रे-जैसे दानोंवाला हाथ का एक गहना ।
**हर्ष** - पु० [स] आनन्द, प्रसन्नता ; रोमाञ्च ; एक संचारीभाव ; गहरी इच्छा ; **यौ०** —कर, कारक - प्रसन्न करनेवाला ; —गद्गद - जिसकी आवाज आनन्द से भर्राई हुई हो, गद्गदकंठ ; —जड़ - मारे खुशी के जड़वत हो जानेवाला ; —दान - आनन्दपूर्वक दिया हुआ दान ; —ध्वनि, नाद - आनन्दातिरेक से की जानेवाली आवाज़ ; —वर्धन - हर्ष को बढ़ानेवाला ; —विह्वल - आनंदविभोर ; —समन्वित - आनन्दयुक्त ; —स्वन - आनन्दध्वनि ।
**हर्षक** - वि० [सं] आनन्ददायक ।
**हर्षण** - 1. वि० [स] आनन्ददायक ; 2. पु० आनन्द ; प्रसन्न होना ; रोमांच होना ; आँख का एक रोग ।
**हर्षातिशय** - पु० [सं] आनन्दातिरेक ।
**हर्षान्वित, हर्षाविष्ट** - वि० [सं] आनन्दयुक्त, खुश ।
**हर्षाश्रु** - पु० [सं] आनन्द से निकले हुए आँसू ।
**हर्षित** - 1. वि० [सं] प्रसन्न किया हुआ ; रोमांचित किया हुआ ; 2. पु० प्रसन्नता ।

**हर्षोत्कर्ष** - पु० [सं] आनन्दातिरेक।

**हर्षोत्फुल्ललोचन** - वि० [सं] जिसके नेत्र आनंद से खिले हुए हो।

**हलंत** - वि० [सं] जिसके अंत में स्वर-रहित व्यंजन वर्ण हो।

**हल** - पु० [सं] खेत जोतने का एक औज़ार; भूमि की एक माप; बाधा; पैर का एक चिन्ह; झगड़ा; कुरूपता; **यौ०** —जीवी - हल के सहारे जीविका चलानेवाला; —जुता - हल जोतनेवाला किसान; गँवार आदमी; —धर - बलदेव; किसान; —भृति - किसानी; —मार्ग - जुताई से बनी हुई लकीर; —मुख - फाल; —रद - हल जैसे दाँतोवाला;—वाह - हल जोतने का काम करनेवाला।

**हल** - पु० [अ] कठिनाई का दूर होना; सवाल का जवाब; गणित की प्रक्रिया; **मु०** —करना - सुलझाना; पहेली बूझना; पीसकर मिलाना।

**हलक़** - पु० [अ] कंठ; गर्दन।

**हलकई** - स्त्री० [हिं] हलकापन; अप्रतिष्ठा; छोटापन।

**हलकन** - स्त्री० [हिं] हिलने-डुलने की क्रिया।

**हलकना** - अ० [हिं] हिलना-डुलना, पानी का हिलकोरा मारना।

**हलका** - 1. वि० [हि] कम वज़नवाला; कम मूल्यवाला; कम; पतला; मामूली; एकदम खाली, ओछा; निन्दित; थकानरहित, ताज़ा; सहल; जो गाढ़ा या गहरा न हो, 2. पु० लहर, जल का हिलकोरा; **यौ०** —पन-हलका होने का भाव; ओछापन; अपमान; कमीना-पन; बुराई; **मु०**—करना - अपमानित करना; —बनना, होना - अप्रतिष्ठित बनना; लज्जित होना; छुच्चा या कमीना समझा जाना; भारी होना; ऊबना; अपने को ओछा या तुच्छ बनाना।

**हलक़ा** - पु० [अ] घेरा; पहिया; मण्डली; वृत्ताकार वस्तु; पहिये का हाल; लोहे या लकड़ी का गोल कुंडा; तुकमा; किसी विशेष कर्मचारी के कार्यक्षेत्र में रहनेवाला गाँवों आदि का मण्डल।

**हलकाना** - 1. स० [हिं] हलका करना; किसी तरल वस्तु को हिलाना-डुलाना; 2. अ० हलका होना।

**हलकारी** - स्त्री० [हिं] कपड़ा रंगने के पहले उसका रंग पक्का करने के लिए फिटकरी आदि का पुट देने की क्रिया; एक विशेष प्रकार के रंग से किनारे पर की छपाई।

**हलकोरा** - पु० [हिं] लहर, हलोरा।

**हलचल** - स्त्री० [हिं] भाग-दौड़; शोर-गुल या तोड़-फोड़ आदि; अराजकता; अस्थिरता (तरल पदार्थ की); **मु०**—डालना, मचाना - उथल-पुथल मचाना; अव्यवस्था उत्पन्न करना।

**हलड़ा** - पु० [हिं] लहर का बार-बार उठना।

**हलद** - स्त्री० [हिं] हलदी; **यौ०** —हाथ - विवाह की एक रस्म; हलदी चढ़ना।

**हलदिया** - पु० [हिं] एक पीलिया रोग जिसमें आँख और सारा शरीर पीला पड़ जाता है; एक प्रकार का विष।

**हलदी** - स्त्री० [हिं] एक पौधा जिसकी पीले रंग की जड़ मसाले या रंग आदि के काम में आती है; **मु०** — उठना, तेल उठना - विवाह के कुछ दिन पहले वर और कन्या को हल्दी और तेल मिला उबटन लगाने की रस्म; —का हाथ होना, लगना - विवाह होना; —लगाकर बैठना - कोई

काम न करना ; अपने को बहुत कुछ समझना ।

**हलना** - अ० [हिं] हिलना ; प्रविष्ट होना ।

**हलफ़** - पु० [अ] शपथ; **यौ०** —दरोगी - झूठी शपथ लेना ; —नामा - लिखा हुआ हलफ़ी बयान ।

**हलफ़न** - अव्य० [अ] शपथपूर्वक ।

**हलफ़ा** - पु० [हिं] तेज साँस ; ऊँची तरंग, लहर ; **मु०** —मारना - ऊँची-ऊँची तरंगो का पछाड़ खाना ।

**हलफ़ी** - वि० [अ] शपथ लेकर कहा या दिया हुआ (बयान) ।

**हलबल** - स्त्री० [हिं] खलबली, हलचल ।

**हलबलाना** - 1. अ० [हिं] घबड़ाना ; 2. स० दूसरो को घबड़ाहट में डालना ।

**हलबली, हलभल, हलभली** - स्त्री० [हिं] हलचल ।

**हलरा** - पु० [हिं] हलड़ा ।

**हलराना** - स० [हिं] छोटे बच्चो को चुप कराने या सुलाने आदि के लिए हाथ पर या गोद में लेकर उन्हें हिलाना ।

**हलवत** - स्त्री० [हि] वर्ष में पहली बार खेत में हल ले जाने की रस्म ।

**हलवा** - पु० [अ] एक मिष्ठान्न जो सूजी या आटे को घी में भूनकर पानी या दूध में शक्कर के साथ पकाने से बनता है ; तर और मुलायम चीज़ ; बहुत आसान काम ; **मु०** —निकल जाना - कचूमर निकल जाना ; —निकाल देना - पीटकर गत बना देना ।

**हलवाई** - पु० [अ] मिठाई बनाने और बेचनेवाला ।

**हलवाना** - पु० [अ] मेमना ; मुलायम गोश्त ।

**हलहल** - [सं] हल जोतनेवाला ।

**हलहलाना** - 1. स० [हिं] झकझोरना ; प्रविष्ट कराना ; हिलाना ; 2. अ० काँपना ।

**हला** - 1. स्त्री० [सं] सखी ; जल ; पृथ्वी ; मदिरा ; 2. अव्य० सखी को संबोधन करने का एक शब्द ।

**हलाक** - 1. पु० [अ] काल ; बर्बादी ; मौत ; 2. वि० इच्छुक ।

**हलाकत** - स्त्री० [अ] थकावट ; मेहनत ।

**हलाकी** - 1. स्त्री० [अ] तबाही ; मौत ; 2. वि० घातक ।

**हलाकू** - वि० [अ] वधिक ।

**हलाना** - स० [हि] हिलाना ; धँसाना ।

**हलाभला** - पु० [हिं] निबटारा ; नतीजा ।

**हलाल** - 1. वि० [अ] 'हराम' का उलटा ; जायज़ ; जिसका ग्रहण या भोग विहित हो ; 2. पु० शरअ रीति से पशु-वध ; **यौ०** —ख़ोर - भंगी ; —ख़ोरी - हलालख़ोर का काम ; **मु०** —करके खाना - मेहनत करके बदले में पूरा काम करके खाना ; —करना - पशु का शरअ की विधि से वध करना ; गला काटना ; बदले में पूरा काम कर देना ; मंत्रणा देना ; —की कमाई - मेहनत से कमाया हुआ पैसा ।

**हलाहल** - पु० [सं] भीषण विष, कालकूट ; एक विषैला पौधा ; एक प्रकार की छिपकली ; समुद्र-मथन से प्राप्त एक भयंकर विष, ब्रह्मा ; सर्प ; युद्धविशेष ।

**हलीन** - पु० [सं] केतकी ; सागौन ।

**हलीमा** - 1. पु० [सं] केतकी ; 2. वि० [अ] सहनशील ; 3. पु० एक मोटा जानवर ; ख़ुदा का एक नाम ; एक तरह का खाना ।

**हलुआ, हलुवा** - पु० [हि] हलवा ।

**हलुक, हलुका** - वि० [हि] हलका ।

**हलोर** - स्त्री० [हिं] लहर ।

**हलोरना** - स० [हिं] जल अथवा अन्य तरल पदार्थ को हाथ से हिलाना, चंचल करना ; बहुत सहूलियत के साथ अधिक परिमाण में द्रव्य प्राप्त करना ; अन्न अथवा दूसरी वस्तुओं को सूप या अन्य पात्र में रखकर उन्हें इस प्रकार पछोड़ना कि उनका खोखला अंश अलग हो जाय ।

**हलोरा** - पु० [हि] हलोर ।

**हल्** - पु० [सं] स्वरहीन व्यंजन ।

**हल्क़** - पु० [अ] हलक़ ।

**हल्का** - वि० [हिं] हलका ।

**हल्द** - स्त्री० [हिं] हलद ।

**हल्दी** - स्त्री० [हिं] हलदी ।

**हल्य** - 1. वि० [सं] हल-संबन्धी ; जोतने योग्य (ज़मीन) ; जोती हुई ; बदसूरत ; 2. पु० जोतने योग्य खेत ; जोती हुई ज़मीन ; भद्दापन ।

**हल्लन** - पु० [सं] सोते समय हिलना-डुलना ; करवट बदलना ।

**हल्ला** - पु० [हिं] अनेक आदमियों की लड़ाई-झगड़े तथा बातचीत करते समय होनेवाली सम्मिलित ध्वनि ; हमला ; **यौ०** —गुल्ला - शोरगुल ; कोलाहल ; **मु०** —बोलना - ललकार कर धावा करना ।

**हवंग** - पु० [सं] फूल के बर्तन में दही-भात खाना ।

**हव** - पु० [सं] अग्नि या अग्निदेव ; आज्ञा ; आह्वान ; यज्ञ ; ललकार, चुनौती ।

**हवन** - पु० [सं] मंत्र पढ़कर किसी देवता के लिए अग्नि में आहुति देना, होम ; हवन-कुंड ; होम करना ; स्रुवा ।

**हवनीय** - 1. वि० [सं] हव्य या आहुति के रूप में दिये जाने योग्य ; 2. पु० होम ; होम की वस्तु ।

**हवन्नक़** - वि० [अ] मूर्ख ; भद्दी शक़ल-वाला ।

**हवलदार** - पु० [हिं] फौज़ का एक छोटा अफ़सर ; बादशाही ज़माने का एक कर्मचारी जो कर-संग्रह आदि का निरीक्षण करता था ।

**हवस** - स्त्री० [अ] इच्छा ; उमंग ; ख़ब्त ; झूठा प्रेम ; दिलेरी ; लालच ; **यौ०** —दार - इच्छुक ; **मु०** —निकालना - उमंग पूरी करना ; —बुझना - उमंग शांत होना ।

**हवा** - स्त्री० [अ] भूमंडल को चारों ओर से वेष्टित करनेवाला एक तत्व जो विशेषकर आक्सिजन और नैट्रोजन के मेल से बना है, वायु ; अरमान ; छाती ; अफ़वाह ; चकमा ; आडंबर ; जमाना ; साँस ; भूत-प्रेत आदि ; साख ; लालच ; बहुत हलकी वस्तु, **यौ०** —ख़ोरी - टहलना ; —ख़्वाह - हितेच्छु ; —ख़्वाही - मंगलकामना ; —चक्की - हवा से चलनेवाली चक्की ; —दार - जहाँ ख़ूब हवा आती हो ; अमीरों के काम आनेवाली एक प्रकार की सवारी जिसे कहार ढोते हैं ; —पानी - आबहवा ; —सा - बहुत हलका ; बारीक़ ; **मु०** —उड़ना - अफ़वाह फैलना ; किसी समाचार का प्रसारित होना ; —उड़ाना - झूठी बात का प्रचार करना ; —करना - पंखा झलना ; —का रुख जानना - परिस्थिति समझना ; —का रुख बताना - परिस्थिति का ज्ञान कराना ; —खिलाना - किसीको असफल बनाना ; बहकाना ; —देखना - जमाने की हालत समझना ; —पलटना - परिस्थिति का परिवर्तित होना ; —पीकर रहना - निराहार रहना ; —लगना

प्रभाव में आना ; —से लड़ना - झगड़ा करने के लिए मौक़ा ढूँढ़ना, अकारण झगड़ा करना ; —हो जाना - बहुत तेज़ी से भागना ; गायब हो जाना ।

**हवाई** - 1. वि० [हिं] वायु-संबन्धी ; आवारा ; कल्पित ; चालाक ; तीव्र गतिवाला ; डींग मारनेवाला ; हवा को चीरकर चलनेवाला ; 2. स्त्री० एक तरह की आतिशबाज़ी ; ऊपरी आमदनी ; नकली वस्तु ; बेहूदा बात ; **यौ०** —अड्डा - वायुयान के उतरने का स्थान ; —आँख - एक जगह स्थिर न रहनेवाली आँख ; —किला, महल - ख़याली पुलाव, मनोराज्य ; —ख़बर, बात - अफ़वाह ; — जहाज़ - वायुयान ; —डाक - वायुयान से जानेवाली डाक ; —फ़ैर - डराने आदि के लिए सिर्फ ऊपर की ओर किया जानेवाला फ़ैर ; बन्दूक़ ; नकली बन्दूक़ ; —मार्ग, रास्ता - वायुयान का गमनागमन का मार्ग, —मुठभेड़ - युद्ध के विमानो की भिड़न्त ; —युद्ध, लड़ाई - वायुयानो से लड़ी जानेवाली लड़ाई ; —हमला - वायुयानों द्वारा होनेवाला हमला ।

**हवाल** - पु० [अ] ख़बर, समाचार ; अवस्था ; परिणाम ।

**हवालदार** - पु० [हिं] हवलदार ।

**हवाला** - पु० [अ] सौंपने की क्रिया, सिपुर्दगी ; निशान ; पते या प्रमाण के लिए उल्लेख ; **मु०** —देना - पता या निशान देना ; प्रमाण के लिए पुस्तक आदि का उल्लेख करना ।

**हवालात** - स्त्री० [अ] पहरे या चौके में रखना, हिरासत ; विचाराधीन कैदियो को रखने का स्थान ।

**हवालाती** - 1. वि० [हिं] जो हवालात में रखा गया हो ; 2. विचाराधीन कैदी ।

**हवाली** - पु० [अ] आसपास का स्थान, **यौ०** —मवाली - संगी-साथी ।

**हवास** - पु० [अ] पंचज्ञानेन्द्रिय ; मन की शक्तियाँ (कल्पना, विचार आदि), संवेदन की शक्ति ; होश ।

**हवि** - स्त्री० [सं] यज्ञ में देवताओ के लिए अग्नि में छोड़ी जानेवाली आहुति की सामग्री ; घी ; जल ; यज्ञ ; विष्णु ; शिव ।

**हविष्यान्न** - पु० [सं] व्रत आदि के अवसरो पर खाये जानेवाले पदार्थ ।

**हवेली** - स्त्री० [अ] चारदीवारीवाला मकान ; बड़ा और पक्का मकान, महल ।

**हव्य** - 1. वि० [सं] यज्ञ मे आहुति के रूप में छोड़े जाने योग्य ; 2. पु० यज्ञ में किसी देवता के लिए दी जानेवाली आहुति ; घृत ।

**हशम** - पु० [अ] नौकर-चाकर ; नौकरो की भीड़ ।

**हशमत** - स्त्री० [अ] नौकर-चाकर ; गौरव ; दबदबा ; लाव-लश्कर ; नौकरो की भीड़ ।

**हशरा** - पु० [अ] ज़मीन में छेद करके रहनेवाला कीड़ा या जन्तु ।

**हशरात** - पु० [अ] बरसात में ज़मीन के अन्दर से निकलने या पैदा होनेवाले छोटे-छोटे कीड़े ।

**हश्र** - पु० [अ] क़यामत ; आफ़त ; कोलाहल ।

**हसंतिका** - स्त्री० [सं] अंगीठी ।

**हसंती** - स्त्री० [सं] अंगीठी ; एक प्रकार की मल्लिका ; शाकिनी ।

**हस** - पु० [सं] उपहास ; ख़ुशी ; हास ।

**हसद** - पु० [अ] ईर्ष्या, दूसरों की अच्छी हालत देखकर जलना ।

**हसन** - 1. पु० [सं] हँसने की क्रिया, मजाक ; 2. वि० [अ] भला ; सुन्दर ।

**हसनी** - स्त्री० [सं] अंगीठी ।

**हसनीय** - वि० [सं] हँसने योग्य ; उपहास के योग्य ।

**हसब** - पु० [अ] कुल-क्रम ; नस्ल ; **यौ०** —नसब - खानदानी सिलसिला ।

**हसरत** - स्त्री० [अ] दुख ; लालसा ; वस्तु की अप्राप्ति का दुख ; **यौ०** —भरा - लालसाओं से भरा हुआ ।

**हसिका** - स्त्री० [सं] उपहास ; मजाक ; हँसी ।

**हसित** - 1. वि० [सं] हँसा या हँसता हुआ ; विकसित ; जो हँसा है या जो हँसा गया है ; 2. पु० कामदेव का धनुष ; परिहास ; हास्य ।

**हसिता** - वि० [सं] हँसनेवाला ।

**हसीन** - वि० [अ] प्यारा ; सुन्दर, हुस्नवाला ।

**हसील** - वि० [हिं] सीधा ।

**हस्त** - 1. पु० [सं] शरीर का एक अवयव, हाथ ; चौबीस अंगुल की एक माप ; हस्ताक्षर ; एक नक्षत्र ; हाथी की सूँड़ ; छन्द का चरण ; गुच्छ ; धौंकनी ; 2. वि० हस्त नक्षत्र में उत्पन्न ; **यौ०** —कमल - कमल-जैसा हाथ ; हाथ में धारण किया हुआ कमल (सौभाग्य आदि का सूचक) ; —कार्य - दस्तकारी ; —कौशल - हाथ का काम करने की कुशलता ; —गत - प्राप्त ; हाथ में आया हुआ ; —ग्रह - विवाह ; किसी चीज़ में हाथ लगाना ; —तल - हथेली ; —दक्षिण - दाहिनी ओर स्थित ; सही ; —दोष - नाप या तौल में चोरी करने का दोष ; हाथ से होनेवाली भूल ; —धारण - हाथ पकड़कर सहारा देना ; विवाह ; —पाद - हाथ-पैर ; —पुच्छ - कलाई से नीचे का भाग ; —भ्रष्ट - हाथ से फिसला हुआ ; —मणि - कलाई पर पहना जानेवाला रत्न ; —योग - हाथों का प्रयोग या अभ्यास ; —रेखा - हथेली पर की रेखाएँ ; —लक्षण - हस्तरेखाओं का शुभाशुभ फल ; —लिखित - हाथ का लिखा हुआ ; —लिपि - हाथ की लिखावट ; —लेख - हाथ की लिखावट या चित्रादि ; —वर्ती - जो हाथ में हो ; —वाम - बाईं ओर स्थित ; गलत ; —विन्यास - हाथों की स्थिति ; —संज्ञा - हाथ का संकेत ; —संवाहन - हाथ से रगड़ना या मालिश करना ; —सिद्धि - हाथ से किया जानेवाला काम ; पारिश्रमिक ; हाथ का श्रम ; —सूत्र, सूत्रक - विवाह के अवसर पर बाँधा जानेवाला मंगलसूत्र ; वलय ।

**हस्तक** - पु० [सं] हाथ ; हाथ का सहारा ; एक हाथ की माप ; हाथों की स्थिति ; करताल नामक बाजा ; निम्न श्रेणी का सेवक ; ताल ; ताली ।

**हस्तांजलि** - स्त्री० [स] करसंपुट ।

**हस्तांतर** - पु० [सं] दूसरा हाथ ।

**हस्तांतरित** - वि० [सं] दूसरों के हाथ में दिया हुआ ।

**हस्ताक्षर** - पु० [सं] दस्तख़त, सही ।

**हस्ताभरण** - पु० [सं] हाथ का गहना ।

**हस्तामलक** - पु० [सं] हाथ में रखा हुआ आँवला (जो स्पष्ट और बोधगम्य होने का सूचक है) ; शंकराचार्यरचित एक वेदांतग्रंथ ।

**हस्तालंब, हस्तावलंब** - पु० [सं] आश्रय, सहारा ।

**हस्ताहस्ति, हस्ताहस्तिका** - स्त्री० [सं] हाथापाई ; गुत्थमगुत्थी ।

**हस्तिनी** - स्त्री० [सं] हथिनी ; स्त्रियों के चार भेदों में से एक ।

**हस्ती** - 1. स्त्री० [फ़ा] अस्तित्व, जीवित या विद्यमान होने का भाव ; 2. वि० [सं] कार्य-कुशल ; करयुक्त ; सूँड़वाला ; 3. पु० हाथी ; अजमोदा ।

**हस्ते** - अव्य० [हिं] मार्फ़त ; [सं] हाथ में ।

**हस्ब** - अव्य० [अ] अनुसार ; **यौ०** —जाबिता - यथानियम ; —ज़ैल - नीचे लिखे हुए ब्योरे के अनुसार ;—मंशा - किसी दफ़ा के अभिप्राय के अनुसार ; —हाल - यथायोग्य; —हैसियत - अपनी हैसियत के अनुसार ।

**हहर** - स्त्री० [हिं] कँपकँपी ; घबड़ाहट , चकपकाहट ; प्रसन्नतामिश्रित हड़बड़ी ।

**हहरना** - अ० [हिं] किसी अलौकिक वस्तु को देखकर चमत्कृत होना ; दंग होना ; डरना ; डर से काँपना ; अति प्रसन्नता और उत्सुकतापूर्वक किसीसे मिलना ; शीत से काँपना ; किसीकी संपन्नता देखकर ईर्ष्या करना ।

**हहराना** - स० [हिं] डराना, भीत करना ।

**हहल** - 1. स्त्री० [हिं] हहर ; 2. पु० [सं] हलाहल विष ।

**हहा** - 1. स्त्री० [हिं] हाहा ; 2. पु० [सं] एक गंधर्व ; **मु०** —खाना - बहुत गिड़गिड़ाना ।

**हाँ** - अव्य० [हिं] आत्मसंतोष, निश्चय तथा स्वीकृति आदि का सूचक शब्द ; **यौ०** —हाँ - निषेध करने के लिए प्रयुक्त शब्द ; **मु०** —जी हाँ जी करना - खुशामद करना , —में हाँ मिलाना - चापलूसी करना ; बिना समझे किसीकी स्वीकृति को ठीक मान लेना , —हाँ करना - स्वीकृति देना ।

**हाँक** - स्त्री० [हिं] ज़ोर से बोलकर किसीको पुकारने की क्रिया ; युद्ध या प्रतियोगिता आदि में किसीको आगे बढ़ने के लिए दी गयी ललकार, बढ़ावा ; उद्धार या रक्षा आदि के लिए किसी सशक्त व्यक्ति या ईश्वर का आह्वान ; मु० —देना, मारना - ऊँची आवाज़ से पुकारना ; संबोधित करना ।

**हाँकना** - स० [हिं] इक्का या बैलगाड़ी आदि वाहनों को चलाना ; गाड़ी में जुते घोड़े या बैल आदि चौपायों को चाबुक मारकर या मुँह से बोलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना ; अत्यधिक दाम बताना ; उच्च-स्वर से बोलकर पुकारना ; ललकारना ; पंखा झलना ; बढ़ा-चढ़ाकर बातें करना , किसी वस्तु की रक्षा के लिए चौपायों को उस स्थान से हटाना ।

**हाँका** - पु० [हिं] हाँक ।

**हाँगा** - पु० [हिं] ताक़त ; बलप्रयोग ।

**हाँगी** - स्त्री० [हिं] स्वीकृति ।

**हाँड़ना** - 1. अ० [हिं] आवारागर्दी करना ; 2. वि० आवारागर्द ।

**हाँड़ी** - स्त्री० [हिं] हंडी ।

**हाँता** - वि० [हिं] छोड़ा हुआ ; दूर ; हटाया हुआ ।

**हाँपना, हाँफना** - अ० [हिं] किसी प्रकार के शारीरिक श्रम या रोग के कारण साँस की गति का तीव्र होना ।

**हाँफा** - पु० [हिं] हाँफने की क्रिया ; मु० —छुटना - कड़ा शारीरिक श्रम करने पर तुरन्त हाँफने लगना ।

**हाँफी** - स्त्री० [हिं] हाँफा ।

**हाँसना** - अ० [हिं] हँसना ।

**हाँसल, हाँसुल** - पु० [हिं] एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग मेहँदी का-सा और चारो पैर कुछ काले रंग के होते हैं ।

**हाँसी** - स्त्री० [हिं] हँसने की क्रिया या हँसी ; उपहास ; मज़ाक ।

**हाँसु** - स्त्री० [हिं] हँसी ; हँसली ।

**हा** - अव्य० [सं] आनन्द, खेद, पीड़ा, घृणा, शोक, आश्चर्य, क्रोध आदि का सूचक शब्द ; **यौ०** —हंत - बड़े शोक की अवस्था में निकलनेवाला शब्द ।

**हाइ** - अव्य० [हिं] हाय ।

**हाई** - 1. स्त्री० [हिं] पद्धति ; परिस्थिति ; 2. वि० [अंग्रे] ऊँचा ; बड़ा ; **यौ०** —कोर्ट - उच्च न्यायालय, प्रान्त या राज्य की सबसे बड़ी अदालत ; —स्कूल - वह अंग्रेज़ी स्कूल जिसमें मेट्रिक तक की पढ़ाई होती है ।

**हाऊ** - पु० [हिं] छोटे बच्चो को डराने के लिए एक मनगढ़ंत डरावना जीव, हौवा ।

**हाकिम** - पु० [अ] मालिक, प्रधान अधिकारी ; राजा ; शासक ; हुकूमत करनेवाला ; हुक्म करनेवाला ; **यौ०** —के कुत्ते - बड़े अफ़सरों के वे नौकर-चाकर जो बिना भेंट-पूजा के उनके पास लोगों को न जाने देते हैं ।

**हाकिमाना** - वि० [हिं] हाकिम के जैसा ; अधिकारी के योग्य ।

**हाकिमी** - 1. स्त्री० [हिं] अफ़सरी; हुकूमत; 2. वि० शासन-संबन्धी।

**हाजत** - स्त्री० [अ] आवश्यकता ; इच्छा ; अभाव ; शौच आदि का वेग ; हवालात; **यौ०** —ख्वाह - मुहताज ; प्रार्थी ; —मंद - जिसे अभाव या आवश्यकता हो ; इच्छुक ; मुहताज ; —रवा - हाज़त पूरी करनेवाला ; —रवाई - ज़रूरत पूरी करना ; किसीका काम निकालना ।

**हाज़ती** - 1. स्त्री० [हिं] अमीरों के पलंग के पास रात को पेशाब करने के लिए रखा जानेवाला बर्तन ; वह बर्तन जिसमें बीमार व्यक्ति पड़े-पड़े पेशाब कर ले ; 2. पु० फ़कीर ; प्रार्थी ; 3. वि० हवालाती ; हाज़तवाला ।

**हाज़मा** - पु० [अ] हज़म करने या पचाने की ताक़त ; **मु०** —खराब होना, बिगड़ना - पाचन-शक्ति का ठीक तरह से काम न करना ।

**हाज़िक़** - वि० [अ] कुशल ; पण्डित ।

**हाज़िम** - वि० [अ] हज़म करने या पचानेवाला ।

**हाज़िर** - वि० [अ] उपस्थित ; तैयार ; प्रस्तुत ; **यौ०** —जवाब - बात का तुरंत जवाब देनेवाला ; जिसे किसी बात का यथायोग्य जवाब तुरंत सूझ जाय ;—जवाबी - किसी भी बात का तुरंत बढ़िया जवाब सोच लेने की शक्ति ; —ज़ामिन - किसी आदमी को अदालत में हाज़िर कर देने की जिम्मेदारी लेनेवाला व्यक्ति ; —ज़ामिनी - हाज़िर कर देने की जिम्मेदारी ।

**हाज़िराइ** - पु० [हिं] ओझा ; जादूगर ।

**हाज़िरी** - स्त्री० [फ़ा] उपस्थिति ; सबेरे का खाना ; अंग्रेज़ों का नाश्ता ; **मु०** —देना - उपस्थिति की सूचना देना ; —बजाना - किसी बड़े आदमी के पास बराबर रहना ; —लेना - नाम पुकारकर छात्रो आदि की उपस्थिति मालूम करना ।

**हाज़ी** - पु० [अ] हज़ करनेवाला ; जो हज़ कर चुका हो ।

**हाट** - स्त्री० [हिं] दुकान ; बाज़ार ; बाज़ार लगने का दिन ; **मु०** —खोलना -

दुकान करना ; दुकान लगाना ; —बाज़ार करना - सौदा ख़रीदने के लिए बाज़ार जाना ।

**हाटक** - 1. वि० [सं] स्वर्णनिर्मित ; 2. पु० सोना ; दुकान का किराया ; धतूरा ।

**हाड़** - पु० [हिं] कुलीनता ; हड्डी ।

**हाड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] ऊखल ; 2. पु० काग ; एक तरह का बगुला ।

**हात** - वि० [सं] छोड़ा हुआ ।

**हातव्य** - वि० [सं] त्याग करने योग्य ; पीछे छोड़े जाने योग्य ।

**हाता** - 1. पु० [हिं] अहाता , रोक ; 2. वि० दूर ; नाशक ; परित्यक्त ।

**हातिम** - 1. पु० [अ] अरब के कबीले का एक अतिदानशील तथा परोपकारी सरदार ; 2. वि० कुशल ; अतिदानशील ; अतिपरोपकारी ।

**हात्र** - पु० [सं] वेतन ।

**हाथ** - पु० [हिं] हस्त ; ताश या कौड़ी आदि खेलनेवालों की बारी ; कर्मचारी ; दस्ता या मूठ , **यौ०** —तोड़ - कुश्ती का एक दाँव ; —पान - हाथ के पंजे के ऊपरी भाग पर पहना जानेवाला पान के आकार का एक आभूषण ; —फूल - हथेली के ऊपरी भाग पर पहनने का फूल के आकार का एक गहना ; —बाँह - एक तरह की कसरत ; **मु०** —आगे करना - किसी वस्तु को लेने या देने के लिए हाथ बढ़ाना ; —आना - वश में होना ; फायदा होना ; —उठाकर देना - स्वेच्छा से किसीको कुछ देना ; —उतरना - हाथ उखड़ना ; —कानों पर रखना - किसी काम के करने से इनकार कर देना ; —नीचे आना - किसीके काबू में होना ; —खाली जाना - जुए आदि में दाँव या बाजी का न आना ।

**हाथा** - पु० [हिं] हथियार आदि का दस्ता , खेत सींचने का एक औज़ार, हत्था ; दीवार पर पंजे से डाली हुई ऐपन की छाप ; **यौ०** —छाँही - लेन-देन आदि में धूर्तता करना ; —पाई, बाँही - ऐसी सामान्य लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक दूसरे को हाथ-पैर के बल से मारते या पटकते हैं, उठा-पटक ।

**हाथी** - पु० [हिं] एक बहुत बड़ा सूँड़वाला चौपाया, हस्ति ; **यौ०** —खाना - हस्तिशाला, फीलखाना ; —चक - औषध के काम आनेवाला एक पौधा ; —दाँत - हाथी के मुँह के बाहर निकले हुए गोल और लंबे दाँत जिनसे आभूषण तथा सजावट आदि का सामान बनाया जाता है ; —पाँव - फ़ील-पाँव नामक रोग ; —बच - तरकारी के काम आनेवाला एक पौधा ; —वान - महावत ; मु० —पर चढ़ना - बहुत बड़ा सम्मान प्राप्त करना , बहुत धनी होना ; —पर चढ़ाना - बहुत सम्मान देना या करना ; —सा होना - बहुत मोटा होना ।

**हादसा, हादिसा** - पु० [अ] दुर्घटना ।

**हादिस** - वि० [अ] नया ; मिटनेवाला ।

**हाना** - पु० [सं] अभाव ; नुकसान ; परित्याग ; बच निकलना ; विफलता ; विराम ; शक्ति ।

**हानि** - स्त्री० [सं] नुकसान ; कमी ; क्षति ; लोप ; उपेक्षा ; क्षय ; त्रुटि ; परित्याग ; बरबादी ; विफलता ; ह्रास ; **यौ०** —कर, कारक, कारी, कृत - हानि पहुँचानेवाला, अपकारी ; **मु०** —उठाना - घाटा सहना ।

**हाफिका** - स्त्री० [सं] जँभाई।

**हाफ़िज़** - 1. वि० [अ] रक्षक; 2. पु० वह आदमी जिसे पूरा क़ुरान कंठस्थ हो।

**हाफ़िज़ा** - पु० [अ] धारणाशक्ति।

**हामिद** - वि० [अ] तारीफ़; ईश्वर की स्तुति।

**हामिल** - वि० [अ] बोझ उठानेवाला; ले जानेवाला।

**हामिला** - स्त्री० [अ] गर्भवती स्त्री।

**हामी** - 1. स्त्री० [हिं] स्वीकृति; 2. वि० [अ] हिमायत करनेवाला; पृष्ठपोषक; सहायक; **मु०** —भरना - स्वीकार करना।

**हाय** - 1. अव्य० [हि] मानसिक और शारीरिक पीड़ा होने पर मुख से निकलनेवाला शब्द; 2. स्त्री० कष्ट, व्यथा; **यौ०** —हाय - परेशानी; घबड़ाहट; व्यस्तता।

**हायन** - पु० [सं] वर्ष; गुजर जाना; अग्निशिखा; एक प्रकार का लाल चावल; परित्याग।

**हायल** - वि० [हिं] बाधक, रुकावट डालनेवाला; घायल।

**हार** - 1. स्त्री० [हिं] असफलता; पराजय; **यौ०** —जीत - जय-पराजय; 2. वि० [सं] चुरानेवाला; हरण करनेवाला; मोहक; (कर) बैठाने, लगाने या उगाहनेवाला; ले जानेवाला; शिव-संबन्धी; 3. पु० क्षय; जब्ती; हरण; युद्ध; थकावट; हानि; माला; वियोग; मुक्तामाला; भाजक; वाहक; **यौ०** —गुटिका - माला का मोती या दाना; —फल, फलक - पाँच लड़ियों की माला; —बन्ध - हार के रूप में रखा जानेवाला चित्र-काव्य; —भूरा - अंगूर; मुक्तामाला के मोती; —सिंगार - पारिजात; —हूर - मद्य।

**हारक** - 1. वि० [सं] हरण या ग्रहण करनेवाला; सुन्दर; आकृष्ट करनेवाला; चुरा या लूट लेनेवाला; 2. पु० ठग; दुष्ट; चोर; लुटेरा; जुआरी; भाजक; मोतियों की लड़ी; गद्य का एक भेद।

**हारद** - वि० [हिं] हृदय-संबन्धी: हार्दिक।

**हारना** - 1. अ० [हिं] पराजित होना; थकना; 2. स० खोना; त्यागना; देना; मु० हारकर रह जाना - थककर चुप बैठ जाना।

**हार-वार** - स्त्री० [हिं] उतावली, जल्द-बाज़ी; हड़बड़ी।

**हारा** - प्रत्य० [हिं] 'वाला' को सूचित करनेवाला एक प्रत्यय।

**हारावलि, हारावली** - स्त्री० [सं] मोतियों की लड़ी।

**हारि** - 1. वि० [सं] मनोहर; 2. पु० पराजय; पथिकदल; 3. स्त्री० थकावट; **यौ०** —कंठ - कोकिल; मधुर-भाषी; जिसके गले में मोतियों की माला हो।

**हारिज** - वि० [अ] बाधक; हरज करनेवाला।

**हारित** - 1. वि० [सं] हरण कराया हुआ, छीना हुआ; परास्त; लाया हुआ; वंचित; नष्ट किया हुआ; मुग्ध; समर्पित; 2. पु० हरा रंग; एक तरह का कबूतर; साधारण हवा।

**हारितक** - पु० [सं] हरी तरकारी।

**हारिद्र** - 1. वि० [सं] पीला; हलदी से रंगा हुआ; 2. पु० पीला रंग; एक वानस्पतिक विष; कदंब वृक्ष।

**हारी** - 1. स्त्री० [सं] मोती; 2. वि० हरण करनेवाला; चोरी करने या लूटनेवाला; वहन करनेवाला; गड़बड़ करने-

वाला; नाश करनेवाला; इकट्ठा करने या उगाहनेवाला; लेनेवाला; आनन्द-कारी; मनोहर; मोतियों का हार धारण करनेवाला; किसीसे बढ़ जानेवाला।

**हार्द** - 1. वि० [सं] हृदय-संबन्धी; 2. पु० अभिप्राय; दया, प्रेम।

**हार्दिक** - वि० [सं] आन्तरिक; हृदय-संबंधी।

**हाल** - 1. स्त्री० [हिं] लकड़ी के पहिये पर चढ़ाया जानेवाला लोहे का पट्टा; झटका; हिलना; 2. पु० [अ] वर्तमान काल; अवस्था; भक्ति-भाव से भरी ईश्वर-प्रेमपरक कविता; 3. अव्य० अभी; तुरंत; हाल में; **मु०** —का - थोड़े दिनों का, कुछ ही दिन पहले का; —गैर होना - दशा बिगड़ना; —तबाह होना - बुरा हाल होना; —में - थोड़े दिन पहले।

**हालत** - स्त्री० [अ] अवस्था; मौजूदा हैसियत।

**हालना** - 1. अ० [हिं] काँपना; झूमना; हिलना-डुलना; 2. पु० एक जातीय उपाधि।

**हालरा** - पु० [हिं] बच्चे को गोद में लेकर हिलाना; झोका; लहर; झटका।

**हालहूल** - स्त्री० [हिं] हलचल; उपद्रव; शोर-गुल।

**हालाँकि** - अव्य० [हिं] यद्यपि।

**हाला** - स्त्री० [सं] मद्य, शराब।

**हालात** - पु० [फ़ा] परिस्थिति; समाचार।

**हालाहल** - पु० [सं] एक विषैला पौधा; समुद्रमंथन से प्राप्त विष; एक प्रकार की छिपकली।

**हालाहली** - स्त्री० [सं] मदिरा।

**हालाहाली** - 1. स्त्री० [हिं] जल्दी; 2. अव्य० जल्दी से।

**हालिम** - पु० [हिं] एक पौधा जिसका बीज दवा के काम आता है।

**हाली** - 1. स्त्री० [सं] छोटी साली; 2. वि० [अ] वर्तमानकाल का; सामयिक; 3. पु० चलन-सार सिक्का; 4. अव्य० अभी; तत्काल; **यौ०** —मवाली - संगी; सुहबती।

**हाव** - पु० [सं] पुकार, आह्वान; **यौ०**—भाव - नाज़-नखरा, चोचला।

**हावक** - पु० [सं] आह्वान करने या पुकारनेवाला व्यक्ति; दुलिहन को बुलाने या पुकारनेवाला आदमी; यज्ञ करनेवाला।

**हावन** - पु० [फ़ा] कूटने का बर्तन, खरल; **यौ०** —दस्ता - खल-बट्टा।

**हावला-बावला** - वि० [हिं] पागल, विक्षिप्त।

**हाव-हाव** - स्त्री० [हिं] किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालच-भरी व्याकुलता, हाही।

**हावी** - वि० [अ] घेरनेवाला; दबा रखनेवाला; [सं] हवन करनेवाला।

**हाशिया** - पु० [अ] गोट-किनारा; कोर; पन्ने या पृष्ठ के चारो ओर का किनारा; टीका की टीका; फुटनोट, हाशिये पर लिखित टीका; शाल, रूमाल, कालीन आदि के हाशिये पर बने हुए बेलबूटे; **यौ०** —आराई - हाशिया चढ़ाना;—नशीन - मुसाहब, आसपास बैठनेवाले।

**हास** - पु० [सं] हँसने की क्रिया, हँसी; खुशी; उपहास; हास्यरस का स्थायी भाव; हँसी-दिल्लगी; घमंड; विकास; **यौ०** —कर - हँसी उत्पन्न करनेवाला; —शील - हँसोड़।

**हासक** - पु० [सं] मजाकिया, विदूषक; हँसी।

**हासास्पद** - पु० [सं] हँसी का विषय।
**हासिद** - वि० [अ] जलनेवाला।
**हासिल** - 1. वि० [सं] प्राप्त; जो कुछ बचा हो; 2. पु० उपज; नतीजा; लाभ; वस्तु का अवशेष, यौ० —कलाम-बाद का नतीजा; निचोड़; —जमा - योगफल; —ज़र्ब - गुणनफल; —तकसीम - भागफल; —तफ़रीक़ - घटाने से बचनेवाली संख्या, शेषफल; —मसदर - क्रिया से बननेवाली भाववाचक संज्ञा।
**हासी** - वि० [सं] उपहास करनेवाला; हँसनेवाला; चौंध पैदा करनेवाली (सफ़ेदी)।
**हास्य** - 1. वि० [सं] हँसने योग्य; हास्य-जनक; उपहास्य; 2. पु० आनंद; प्रसन्नता; हँसी; दिल्लगी; एक रस (साहित्य); यौ० —कथा - हँसी उत्पन्न करनेवाली कथा; —कर, कार, कृत, जनन - हँसी उत्पन्न करनेवाला; —कार्य - उपहास्यकार्य; —कौतुक - हँसी-खेल; —रसिक - विनोदप्रिय; हास्यरस का प्रेमी; —हीन - न हँसनेवाला; विकासरहित।
**हास्यास्पद** - पु० [सं] उपहास का विषय; हास्य का आलंबन; वह व्यक्ति जिसे देखकर हँसी उत्पन्न हो।
**हास्योत्पादक** - वि० [सं] हास्य उत्पन्न करनेवाला।
**हाहा** - 1. [सं] अव्य० आश्चर्य तथा शोक आदि का सूचक एक शब्द; यौ० —कार - रुदन की उच्च-ध्वनि; युद्ध का कोलाहल; —रव - हाहा करके चिल्लाने की आवाज़; 2. पु० एक गंधर्व; एक बहुत बड़ी संख्या; [हिं] खुलकर हँसने की आवाज़; अनुनय-विनय, गिड़गिड़ाने की आवाज़; यौ० —ठीठी, हीही - हँसी-मजाक, हास-परिहास; हँसी-ठट्ठा।
**हाही** - स्त्री० [हिं] किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए व्यग्रता, हाव-हाव।
**हाहू** - पु० [हिं] ऊधम; शोर-गुल।
**हाहूबेर** - पु० [हिं] जंगली बेर।
**हिंकरना** - अ० [हिं] हिंसना।
**हिंग** - पु० [हिं] हींग।
**हिंगनबेर** - पु० [हिं] इंगुदी।
**हिंगु** - पु० [सं] मुल्तान तथा खुरासान में विशेष रूप से पैदा होनेवाला एक वृक्ष; इस वृक्ष के मूल का निर्यास, हींग।
**हिंगुदी, हिंगूली** - स्त्री० [सं] बैगन।
**हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुलु** - पु० [सं] ईंगुर।
**हिंगोट** - पु० [हिं] इंगुदी।
**हिंछना** - अ० [हिं] इच्छा करना; चाहना।
**हिंछा** - स्त्री० [हिं] इच्छा।
**हिंडक** - वि० [सं] भ्रमण-शील।
**हिंडन** - पु० [सं] भ्रमण; लेखन।
**हिंडोरना** - 1. पु० [हिं] हिंडोला; 2. स० हिंडोलना।
**हिंडोरा** - पु० [हि] हिंडोला।
**हिंडोरी** - स्त्री० [हिं] छोटा हिंडोला।
**हिंडोल** - पु० [हिं] हिंडोला; एक राग।
**हिंडोलना** - स० [हिं] आलोड़ित करना; घंघोलना।
**हिंडोला** - पु० [हिं] झूला; पालना; नीचे-ऊपर चक्कर खानेवाला एक तरह का झूला।
**हिंद** - पु० [फ़ा] भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।
**हिंदवी** - स्त्री० [फ़ा] हिन्दुस्तान की भाषा (उर्दू, फारसी और कुछ पुरानी हिन्दी के लेखकों द्वारा प्रयुक्त हिन्दी का पुराना नाम)।
**हिंदी** - 1. वि० [फ़ा] हिंद या हिन्दुस्तान से संबद्ध; 2. पु० भारतवर्ष में रहने-

वाला; 3. स्त्री० भारतवर्ष की राजभाषा।

**हिंदुत्व** - पु० [हिं] हिन्दू होने का भाव या गुण; हिन्दू धर्म का भाव; हिन्दुओं के आचार-विचार।

**हिंदुस्तान** - पु० [फ़ा] भारतवर्ष।

**हिंदुस्तानी** - 1. वि० [फ़ा] हिन्दुस्तान-संबंधी; 2. स्त्री० हिन्दुस्तान की भाषा।

**हिंदू** - पु० [फ़ा] हिन्दुस्तान में पैदा हुए महापुरुषों के तथा धर्म-संस्थापकों के बताये हुए आचार-विचार का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पालन करनेवाला व्यक्ति; **यौ०** —पन - हिंदुत्व।

**हिंदोरना** - स० [हिं] घंघोलना।

**हिंदोल** - पु० [सं] झूला, हिंडोला; श्रावण के शुक्ल पक्ष में होनेवाला दोलोत्सव; रथ-यात्रा।

**हिंदोस्तान** - पु० [हि] हिंदुस्तान।

**हिंदोस्तानी** - पु० [हिं] हिंदुस्तानी।

**हिंयाँ** - अव्य० [हिं] यहाँ।

**हिंव, हिंवार** - पु० [हिं] हिम।

**हिंस** - स्त्री० [हिं] घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़, हिनहिनाहट, हींस।

**हिंसक** - वि० [सं] हिंसा करनेवाला; घातक; हानिकर; शत्रुता करनेवाला; बुराई करनेवाला; 2. पु० खूँख़ार जानवर, हिंस्र पशु; शत्रु।

**हिंसन** - पु० [सं] मारना; सताना; चोट पहुँचाना; शत्रु।

**हिंसना** - 1. अ० [हिं] हिनहिनाना; 2. स० मार डालना; चोट पहुँचाना; नुकसान पहुँचाना; 3. स्त्री० [सं] मारने या चोट पहुँचाने की क्रिया।

**हिंसनीय** - वि० [सं] मार डालने योग्य, हिंसा करने योग्य।

**हिंसा** - स्त्री० [सं] प्रमत्त वृत्ति से दूसरे के प्राणों का अपहरण करना, घात या मारण; क्षति; चोट; चोरी; नाश; बुराई; लूट; तंत्रप्रयोग द्वारा मारण-उच्चाटन आदि कार्य, **यौ०**—रत, रुचि - बुराई करने में आनंद माननेवाला।

**हिंसात्मक** - वि० [सं] हिंसायुक्त; हानिकारक।

**हिंसालु** - 1. वि० [सं] हिंसक; हिंसात्मक प्रवृत्ति या प्रकृतिवाला; 2. पु० हिंसक कुत्ता।

**हिंस्र** - 1. वि० [हिं] घातक; जंगली, निर्दय; हानिकारक; 2. पु० दूसरों को सताने में आनंद माननेवाला व्यक्ति; शिकारी जानवर; कठोरता; **यौ०** —जन्तु, पशु - खूँख़ार जानवर; —यन्त्र - कष्ट पहुँचानेवाला फंदा।

**हि** - प्रत्य० [हिं] कर्म और संप्रदान कारक में प्रयुक्त होनेवाली एक विभक्ति।

**हिअ, हिआ** - पु० [हिं] वक्ष; हृदय।

**हिआउ, हिआव** - पु० [हिं] साहस, हिम्मत।

**हिकमत** - स्त्री० [अ] चतुराई; चाल; बुद्धि; चिकित्साकार्य; **यौ०** —अमली - चाल; चतुराई; राजनीति; नीति।

**हिकमती** - वि० [हिं] चालाक।

**हिकायत** - स्त्री० [अ] कहानी; बात।

**हिक़ारत** - स्त्री० [अ] हक़ारत।

**हिक्का** - स्त्री० [सं] हिचकी; अस्पष्ट ध्वनि; उल्लू।

**हिचक** - स्त्री० [हिं] आगा-पीछा करना, झिझक; सफलता में संदेह।

**हिचकना** - अ० [हिं] हिचकी लेना; किसी काम के करने में हिम्मत न होना।

**हिचकिचाना** - अ० [हि] मन का आगा-पीछा करना।

**हिचकिचाहट, हिचकिची** - स्त्री० [हिं] हिचक।

**हिचकी** - स्त्री० [हिं] हिक्का, बहुत अधिक रोने के बाद एक साथ तीन-चार बार ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने की क्रिया; मु० —बँध जाना, लगना - ज़्यादा रोने से साँस रुकने लगना; —लेना - रोते समय साँस का रुक-रुक कर निकलना।

**हिचरमिचर** - पु० [हिं] हिचक; आलस्य या असमर्थता आदि के कारण किसी काम को टालने की प्रवृत्ति; टाल-मटोल।

**हिजड़ा** - पु० [हिं] नपुंसक।

**हिजरी** - पु० [अ] मुसलमानी संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्का से मदीना पलायन करने की तिथि (पंद्रह जुलाई, 622 ई.) से आरम्भ होता है।

**हिज़ाब** - पु० [अ] परदा; लज्जा।

**हिज्जे** - पु० [अ] किसी शब्द में आये हुए वर्ण तथा मात्राओं को अलग-अलग कहना, वर्ण-विवृत्ति; मु० —करना - अक्षरों को जोड़ना; किसी मामले में ख़ाहमख़्वाह दोष निकालना।

**हिज्र** - पु० [अ] वियोग, जुदाई।

**हिडोरा, हिडोला** - पु० [हिं] हिंडोला।

**हित** - 1. वि० [सं] लाभदायक; उपयुक्त; अच्छा; रखा हुआ; अनुकूल; गया हुआ; मंगलकारक; प्रेरित; प्रेषित; सद्भावपूर्ण; निर्दिष्ट; 2. पु० मित्र; उपयुक्त वस्तु; मंगल; प्रेम; भलाई; भलाई चाहनेवाला; संबन्धी; 3. अव्य० [हिं] के निमित्त, के लिए; यौ० —कर - हितेच्छु; उपयोगी; स्वास्थ्यवर्धक; —कर्ता - उपकार करनेवाला; उपकारी व्यक्ति; —काम - मंगलाकांक्षी; —कारक, कारी - हितकर; —चिंतक - किसीकी भलाई के लिए सोचने या विचारनेवाला; —चिंतन - किसीकी भलाई चाहना; —बुद्धि - मैत्रीपूर्ण भावना; सद्भावना-वाला; —मित्र - उदार मित्र; भाई-बंधु; —वचन, वाक्य - मैत्रीपूर्ण परामर्श; —वादी - भलाई की बात कहनेवाला; सत्परामर्श देनेवाला।

**हितवार** - पु० [हिं] प्रेम, स्नेह।

**हिता** - स्त्री० [सं] नाली, प्रणाली।

**हिताई** - स्त्री० [हिं] रिश्ता, संबन्ध।

**हिताकांक्षी** - वि० [सं] भलाई चाहनेवाला।

**हिताना** - अ० [हिं] मित्र के समान होना; अच्छा प्रतीत होना; किसीकी ओर प्रेम की दृष्टि होना।

**हितार्थी** - वि० [सं] मंगलाकांक्षी, हितेच्छु।

**हितावह** - वि० [सं] कल्याणकारी।

**हिताहित** - पु० [सं] भलाई-बुराई; मंगल-अमंगल; लाभालाभ।

**हिती** - 1. वि० [हिं] हितैषी, भलाई चाहनेवाला; 2. पु० मित्र; हितैषी व्यक्ति।

**हितु, हितू** - पु० [हिं] हितेच्छु व्यक्ति; मित्र; संबन्धी।

**हितेच्छा** - स्त्री० [सं] हितकामना, किसीकी भलाई की इच्छा।

**हितेच्छु** - वि० [सं] भलाई चाहनेवाला; मंगलकामना करनेवाला।

**हितैषी** - 1. वि० [सं] हितेच्छु; 2. पु० मित्र।

**हिदायत** - स्त्री० [अ] आदेश; मार्ग-प्रदर्शन; रहनुमाई; यौ० —नामा - हिदायतों या आदेशों आदि की किताब।

**हिद्दत** - स्त्री० [अ] तेज़ी; गर्मी।

**हिनकाना** - अ० [हिं] (घोड़े का) हिनहिनाना।

**हिनती** - स्त्री० [हिं] हीनता ; लघुता ।

**हिनवाना** - पु० [हिं] तरबूज़ ।

**हिनहिनाना** - अ० [हिं] (घोड़े का) हिंसना।

**हिनहिनाहट** - 1. पु०, 2. स्त्री० [हिं] (घोड़े के) हींसने की आवाज़ ।

**हिना, हेना** - स्त्री० [अ] मेहँदी; **यौ०** —बंदी - मुसलमानो में होनेवाली ब्याह की एक रस्म ।

**हिनाई** - 1. वि० [अ] मेहँदी के रंग का ; 2. स्त्री० पीलापन लिये हुए सुर्ख रंग ; [हिं] मान-हानि ; हीनता ।

**हिफ़ाज़त** - स्त्री० [अ] रक्षा या रखवाली ; बचाव ; **यौ०** —खुद-इख्तियारी - आत्मरक्षा ।

**हिफ़्ज़** - 1. पु० [अ] रक्षा, हिफ़ाज़त ; 2. वि० कंठस्थ ; **यौ०** —सेहत - स्वास्थ्य-रक्षा ।

**हिब्बा** - पु० [अ] दान ; नज़र ; हब्बा ; **यौ०** —नामा - दानपत्र ।

**हिमंचल** - पु० [हिं] हिमाचल ।

**हिमंत** - पु० [हिं] हेमंत

**हिम** - 1. वि० [हिं] शीतल, ठंडा; 2. पु० बर्फ़, पाला ; चंदन ; चंदनवृक्ष ; चंद्रमा ; कपूर ; मक्खन ; कमल ; हेमंत ऋतु ; ठंडक ; हिमालय पर्वत ; कपूर ; मोती ; रंग ; रात्रि ; **यौ०** —उपल - ओला, पत्थर ; —ऋतु - जाड़े का मौसम, हेमंत ऋतु ; —कण - बर्फ़ के कण ; ओस की बूँदें ; —कर - कपूर ; चंद्रमा ; ठंडक लानेवाला ; —किरण - चंद्रमा ; —कूट - हिमालय की चोटी ; शिशिर ऋतु ; हिमालय पर्वत ; —खंड - ओला ; —गिरि - हिमालय पर्वत ; —गौर - बर्फ़ की तरह सफ़ेद ; —ज्वर - जाड़ाबुखार ; —तैल - कपूर के योग से बना हुआ तेल ; —दुर्दिन - पाला या अति ठंडक पड़ने के कारण कष्टदायक दिन या मौसम ; —द्युति, धामा - चंद्रमा ; —पात, वृष्टि - पाले का पड़ना ; ओले का गिरना ; —शीतल - बहुत ठंडा ; जमा देनेवाला (शीत) ; —शुभ्र - बर्फ़ की तरह सफ़ेद ; —शैल - हिमालय पर्वत ।

**हिमवान** - 1. पु० [स] हिमालय ; कैलाश , 2. वि० बर्फ़ीला ; **यौ०** —सुत - मैनाक : —सुता - गंगा ; पार्वती ।

**हिमांक** - पु० [सं] कपूर ।

**हिमांशु** - पु० [सं] चंद्रमा ; कपूर ।

**हिमाचल** - पु० [सं] हिमालय पर्वत ।

**हिमाच्छन्न** - वि० [सं] तुषारावृत ।

**हिमाद्रि** - पु० [सं] हिमालय पहाड़ ।

**हिमानिल** - पु० [सं] सर्द हवा ; बर्फ़ीली हवा ।

**हिमानी** - स्त्री० [सं] हिमसमूह ; ओस के कणों का समूह ।

**हिमाभ्र** - पु० [सं] कपूर ।

**हिमायत** - स्त्री० [अ] तरफ़दारी ; मदद ; रखवाली ।

**हिमायती** - वि० [फ़ा] तरफ़दारी करने-वाला ।

**हिमारुण** - वि० [सं] जो पाले से भूरा-सा हो गया हो ।

**हिमिका** - स्त्री० [सं] पाला, तुषार ।

**हिम्मत** - स्त्री० [अ] पराक्रम ; बहादुरी ; साहस ; **मु०** —पड़ना - साहस होना ।

**हिम्मती** - वि० [अ] पराक्रमी ; वीर ; साहसी ।

**हिम्य** - वि० [सं] बर्फ़ीला ; बर्फ़ से ढँका हुआ ; सर्द ।

**हिय, हियरा** - पु० [हिं] हृदय या मन ; छाती ।

**हियाँ** - अव्य० [हिं] यहाँ ।

**हिया** - पु० [हि] हिय, हृदय ; मु० —जलना - बहुत गुस्सा करना ; —ठंढा होना - कलेजा शान्त होना, —फटना - दुख या पीड़ा के अतिरेक का अनुभव करना; —भर आना - करुणार्द्र होना।

**हियाव** - पु० [हिं] साहस।

**हिरकना** - अ० [हिं] चिपकना।

**हिरकाना** - स० [हिं] सटाना, स्पर्श कराना।

**हिरगुनी** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की कपास।

**हिरण** - पु० [सं] स्वर्ण; मृग; कौड़ी; शुक्र।

**हिरणमय** - 1. वि० [सं] सोने का बना, सोने का; सुनहरा; 2. पु० ब्रह्मा; संसार के नौ खंडो में से एक; यौ० —कोश - सूक्ष्म शरीर।

**हिरण्य** - 1. पु० [सं] सुवर्ण; स्वर्ण-पात्र; चाँदी; कौड़ी; नित्य पदार्थ; अमृत; तेज; धतूरा; संपत्ति; शुक्र; कोई बहुमूल्य धातु; 2. वि० स्वर्णनिर्मित, यौ० —कक्ष - सुनहला कमरबन्द धारण करनेवाला; —गर्भ - ब्रह्मा; विष्णु; सूक्ष्म शरीर धारण करनेवाली आत्मा, सूत्रात्मा।

**हिरदय, हिरदा** - पु० [हिं] हृदय।

**हिरदावल** - पु० [हिं] घोड़े के सीने पर की भौंरी जो अशुभसूचक होती है।

**हिरन** - पु० [हिं] मृग; यौ० —खुरी - एक बरसाती लता; मु० —हो जाना - चंपत हो जाना; तुरत भागकर दूर हो जाना।

**हिरनौटा** - पु० [हिं] हिरन का बच्चा।

**हिरफ़त** - स्त्री० [अ] चालाकी, पेशा; हुनर; यौ० —बाज़ - चालाक।

**हिरमज़ी, हिरमिज़ी** - स्त्री० [फ़ा] दीवार रंगने की एक प्रकार की लाल मिट्टी; कपड़े रंगने का एक तरह का लाल फूल; एक रंग।

**हिराना** - 1. अ० [हिं] खो जाना, गायब हो जाना; अपने को भूल जाना; अभाव होना; स्तब्ध रह जाना; नष्ट होना; 2. स० भूलना; खाद की इच्छा से भेंड़ आदि पशुओं को खेत में रखना; ढुँढवाना।

**हिरास** - स्त्री० [फ़ा] भय; नैराश्य; मायूसी।

**हिरासत** - स्त्री० [अ] निगरानी या पहरा; नज़रबंदी; हवालात।

**हिरासाँ** - वि० [फ़ा] डरा हुआ; निराश।

**हिरौल** - पु० [अ] हरावल।

**हिर्फ़त** - स्त्री० [अ] हिरफ़त।

**हिर्स** - पु० [अ] लालच; तृष्णा; यौ० —करना, होना - लालच होना।

**हिर्सांहा** - वि० [अ] लालची।

**हिर्साहिर्सी** - अव्य० [अ] देखा-देखी।

**हिर्सी** - वि० [फ़ा] लालची।

**हिलकना** - 1. अ० [हिं] हिरकना; सिसकना; हिचकना; 2. स० सिकोड़ना।

**हिलकी** - स्त्री० [हिं] हिचकी; उमंग; लहर; सिसकने की क्रिया।

**हिलकोर** - पु० [हिं] जल की तरंग, हिलोल।

**हिलकोरना** - स० [हिं] पानी में लहरें उठाना।

**हिलकोरा** - पु० [हिं] हिलकोर।

**हिलग** - स्त्री० [हिं] मेल-जोल; प्रेम।

**हिलगना** - अ० [हिं] मेल-जोल होना; उलझना; पास आना।

**हिलगाना** - स० [हिं] मेल-जोल कायम करना; उलझाना; पास लाना।

**हिलना** - अ० [हिं] अस्थिर या चंचल होना; काँपना; किसी स्थान से इधर-उधर जाना; जल में प्रविष्ट होना; परिचित होना, किसी स्थान पर स्थित अवस्था से इधर-उधर होना।

**हिलसा** - स्त्री० [हिं] एक तरह की मछली।

**हिलाल** - पु० [अ] नया चाँद; नया और आख़िरी चाँद।

**हिलोर** - स्त्री० [हिं] जलतरंग, हिल्लोल।

**हिलोरना** - स० [हिं] हिलकोरना।

**हिलोरा, हिलोल** - पु० [हिं] लहर।

**हिल्लोल** - पु० [सं] लहर; मन की तरंग; धुन, सनक; हिन्दोल राग।

**हिवँ, हिवाँर** - पु० [हिं] पाला, हिम।

**हिस, हिस्स** - स्त्री० [अ] अनुभूति, गति या चेष्टा; किसी ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा कुछ जानना, संवेदन।

**हिसाब** - पु० [अ] गिनती या गणना; गणित विद्या; भाव; नियम; लेन-देन या ख़रीद-बिक्री आदि का ब्योरा, लेखा; तरीका; हाल; राय; लेन-देन; **यौ०** — किताब - बही-खाता; लेखा; लेन-देन; तरीक़ा; —चोर - हिसाब करने में कोई रकम दबा देनेवाला; —दाँ - हिसाब जाननेवाला; —दार - हिसाब रखनेवाला; —बही - वह बही जिसमें आमदनी तथा खर्च का ब्योरा लिखा जाय।

**हिसाबी** - वि० [हिं] हिसाब जाननेवाला; हिसाब से चलनेवाला।

**हिसार** - पु० [अ] किला; घेरा, अहाता; परकोटा।

**हिस्सा** - पु० [अ] भाग, अंश; विभाग; अंग; खंड; बाँट, बखरा; **यौ०**— बखरा - अंश।

**हींग** - स्त्री० [हिं] हिंगु।

**हींछना** - अ० [हिं] इच्छा करना, कामना करना।

**हींछा** - स्त्री० [हिं] इच्छा, कामना।

**हींस** - स्त्री० [हिं] घोड़े की हिनहिनाहट।

**हींसना** - अ० [हिं] घोड़े का हिनहिनाना।

**हींहीं** - स्त्री० [अनु] हँसने से उत्पन्न ध्वनि या शब्द।

**ही** - 1. अव्य० [हिं] निश्चय, कमी, अकेलापन, अनन्यता, सीमा आदि अवसरों पर प्रयुक्त होनेवाला शब्द (सब अवस्थाओं में इसका किसी बात पर ज़ोर देने तथा निश्चय के लिए ही प्रयोग होता है); 2. पु० हृदय; 3. अ० थी।

**हीक** - स्त्री० [हिं] एक प्रकार की दुर्गन्ध जिससे प्रायः मतली आती है; हिचकी।

**हीचना** - अ० [हिं] हिचकिचाना।

**हीठना** - अ० [हिं] जाना; पास फटकना।

**हीन** - 1. वि० [सं] अधम या नीच; कमज़ोर; दीन; निम्न कोटि का; निंद्य; रहित; परित्यक्त; अधूरा; दोषयुक्त; क्षीण; 2. पु० अयोग्य गवाह; कमी; घटाव; अधम नायक; **यौ०** —कर्मा - नीच काम करनेवाला; —कुल - कलंकित वंश का; —चरित - बुरे आचरण का; —पक्ष - तर्क द्वारा समर्थित न होनेवाला; —बल - कमज़ोर; —बुद्धि, मति - मूर्ख; —मूल्य - कम कीमत का; —योग - योगभ्रष्ट; —रोमा - गंजा; —वाद - दोषपूर्ण तर्क; कमज़ोर दलील; दोषी प्रमाण; —वादी - परस्पर विरोधी बातें करनेवाला; गूंगा; —वीर्य - कमज़ोर; बलहीन; —सख्य - नीचों से मित्रता करनेवाला; —सेवा - नीचों की टहल;

[अ] काल या ज़माना ; यौ० —हयात - जीवनकाल ; जीवनकाल में, ज़िन्दगी-भर ; —हयाती - जिसपर जिन्दगी-भर अधिकार रहे ।

**हीनता** - स्त्री० } [सं] नीचता ; अभाव ;
**हीनत्व** - पु० } बुराई ; सदोषता ।

**हीनांग** - वि० [सं] अंगहीन, विकलांग ।

**हीय, हीयरा, हीया** - पु० [हिं] हृदय ।

**हीर** - 1. स्त्री० [हिं] पंजाब में प्रचलित एक प्रसिद्ध लोककथा की नायिका ; 2. पु० सार-अंश या गूदा ; शक्ति ; [सं] हीरा ; वज्र ; मोतियों की माला ; सर्प ; सिंह ।

**हीरक** - पु० [सं] हीरा नामक रत्न, एक वृत्त ।

**हीरा** - 1. पु० [हिं] एक अत्यंत कठिन तथा सफ़ेद कांतिवाला बहुमूल्य रत्न ; उत्तम व्यक्ति या वस्तु ; 2. स्त्री० [सं] लक्ष्मी ; पिपीलिका ; यौ० —आदमी - बहुत नेक आदमी ; —कट - हीरे की तरह कटा हुआ ; —कसीस - गंधक के योग से उत्पन्न लोहे का विकार ; —नखी - एक बढ़िया धान ।

**हील** - 1. पु० [सं] शुक्र ; 2. स्त्री० [फ़ा] छोटी इलायची ।

**हीलना** - 1. स्त्री० [सं] क्षति ; 2. अ० [हिं] हिलना ।

**हीला** - पु० [अ] बहाना ; काम ; वसीला ; कीचड़ ; यौ० —हवाला - टालमटोल ; हीलेगर, हीलेबाज़, हीलेसाज - बहाने बतानेवाला ।

**हीसका** - स्त्री० [हिं] ईर्ष्या ; प्रतिद्वन्द्विता ।

**हीही** - स्त्री० [अनु] उच्च हास्यध्वनि ; हीनता प्रकट करते हुए हँसना ।

**हुँ** - अव्य० [हिं] बात सुनते समय उसकी स्वीकृति का सूचक शब्द, हाँ ।

**हुँकार** - पु० [सं] गरजना ; ललकार ; दर्प-युक्त होकर 'हुँ' शब्द करना ; धनुष की टंकार, सुअर का गुर्राना ।

**हुँकारना** - अ० [हिं] प्रतियोगिता या युद्ध आदि में अपने शत्रु या प्रतिद्वंद्वी को ललकारना ; चिंघाड़ना ; गर्जन करना ; दर्पयुक्त होकर 'हुँ' शब्द का उच्चारण करना ।

**हुँकारी** - स्त्री० [हिं] 'हुँ-हुँ' शब्द द्वारा स्वीकृति सूचित करने की क्रिया ; बिकारी ।

**हुंडा** - 1. पु० [हिं] वर की ओर से कन्या को दिया जानेवाला धन ; खेत के मालिक को ठेकेदार से नियत परिमाण में मिलनेवाला गल्ला ; 2. स्त्री० [सं] आग के दहकने का शब्द ।

**हुँड़ार** - पु० [हिं] भेड़िया ।

**हुंडावन** - पु० [हिं] हुंडी की दस्तूरी ।

**हुंडी** - स्त्री० [सं] आपस में लेन-देन करनेवाले महाजन द्वारा किसीको रुपया दिलाने के लिए भेजा जानेवाला पत्र, 'महाजनी चेक' ; यौ०—वही - हुंडियो का ब्योरा रखने की वही ।

**हु** - अव्य० [हिं] भी ।

**हुआँ** - 1. पु० [हिं] गीदड़ों के बोलने की आवाज़ ; 2. अव्य० वहाँ ।

**हुआना** - अव्य० [हिं] गीदड़ का 'हुआँ, हुआँ' शब्द करके बोलना ।

**हुकना** - अ० [हिं] निशाना चूकना ; वार खाली जाना ।

**हुकुम** - पु० [हिं] हुक्म ।

**हुकुर-पुकुर, हुकुर-हुकुर** - स्त्री० [हिं] शारीरिक कमज़ोरी तथा भय आदि के कारण हृदय की गति का तीव्र होना, कलेजे का जल्दी-जल्दी भड़कना ।

**हुकूमत** - स्त्री॰ [अ] अधिकार ; शासन ।

**हुक्का** - पु॰ [हिं] हुक़्क़ा , **यौ॰** —तमाखू - हुक्का पिलाने का सत्कार ।

**हुक़्क़ा** - पु॰ [अ] नरकुल की दो नलियो और फरशी के योग से बने तंबाकू पीने का यंत्र, गुड़गुड़ी ; जवाहिरात रखने की डिबिया ; **यौ॰** —पानी - जाति-बिरादरी का संबन्ध ।

**हुक्क़ाम** - पु॰ [अ] 'हाकिम' का बहु॰ ।

**हुक्म** - पु॰ [अ] आज्ञा ; अधिकार ; इजाज़त ; ताश का एक रंग ; फ़ैसला ; फ़तवा ; **यौ॰** —कतई - अन्तिम निर्णय ; —नामा - आज्ञापत्र ; —बरदार - आज्ञापालक ; —बरदारी - आज्ञा का पालन ; —रान - शासन करनेवाला ; —रानी - शासन ।

**हुक्मी** - वि॰ [हिं] अचूक ; आज्ञाधीन ; **यौ॰** —बंदा - हुक्म का ग़ुलाम ।

**हुजूम** - पु॰ [अ] जन-समूह, भीड़ ।

**हुज़ूर** - पु॰ [अ] उपस्थिति ; सम्मान्य व्यक्ति का संबोधन ('श्रीमान', 'जनाब' आदि) ; **यौ॰** —तहसील - सदर तहसील ।

**हुज़ूरी** - 1. स्त्री॰ [हिं] शाही दरबार ; समीपता ; हाज़िरी ; 2. पु॰ दरबारी ; राजा आदि का ख़ास नौकर ।

**हुज्जत** - स्त्री॰ [अ] दलील ; झगड़ा ; बहस ; विवाद ।

**हुज्जती** - वि॰ [हिं] झगड़ालू ; हुज्जत करनेवाला ।

**हुड़कना** - अ॰ [हिं] छोटे बच्चे का अपने प्रिय व्यक्ति के न मिलने पर रोना तथा डरकर खाना-पीना आदि छोड़ देना ।

**हुड़का** - पु॰ [हिं] बच्चो को होनेवाली विरहजनित पीड़ा ।

**हुड़काना** - स॰ [हिं] दुखित करना ; तड़पाना ।

**हुड़दंग, हुड़दंगा** - पु॰ [हिं] ऊधम ; हुल्लड़ ।

**हुत** - 1. वि॰ [स] हवन किया हुआ ; जिसके निमित्त हवन किया गया हो ; 2. पु॰ हवन-सामग्री ; 3. अ॰ 'होना' का भूतकाल, था ; **यौ॰** —भक्ष, वह - अग्नि ।

**हुताशन** - पु॰ [सं] अग्नि ।

**हुताशनी** - स्त्री॰ [सं] फाल्गुनी पूर्णिमा (जिस दिन होलिका-दहन होता है) ।

**हुदकाना** - स॰ [हिं] उभाड़ना ।

**हुदना** - अ॰ [हिं] आश्चर्यचकित होना ।

**हुदहुद** - पु॰ [अ] कठफोड़ा पक्षी ।

**हुदूद** - पु॰ [अ] चारो ओर की सीमा ; चारों दिशाएँ ; 'हद' का बहु॰ ।

**हुन** - पु॰ [हिं] सोना ; सोने का सिक्का ।

**हुनना** - स॰ [हिं] आहुति देना ; होम करना ।

**हुनर** - पु॰ [फ़ा] कारीगरी ; ख़ूबी ; निपुणता ; योग्यता ; हाथ की कारीगरी ; **यौ॰** —मंद - हुनर जाननेवाला ; कुशल ; गुणी ; —मंदी - कुशलता ; कारीगरी ।

**हुब्ब** - स्त्री॰ [अ] प्रेम ; चाह ; मित्रता ।

**हुब्बुलवतन, हुब्बेवतन** - स्त्री॰ [अ] स्वदेश-प्रेम ।

**हुमकना, हुमगना** - अ॰ [हिं] उल्लसित होना ; ठुमकना ; चोट करने के लिए पैर को स्फूर्ति से उठाना ; पैर के पूरे ज़ोर से किसी वस्तु को ठेलना ।

**हुमसाना, हुमसावना** - स० [हिं] मन में कामना तथा विचार आदि उठाना; हृदय के भावों तथा मन के विचारों को उत्तेजित करना।
**हुमा** - पु० [फ़ा] एक कल्पित पक्षी।
**हुमाई** - वि० [फ़ा] भाग्यशाली; हुमा-संबन्धी।
**हुमेल** - स्त्री० [हिं] अशर्फ़ियों या रुपयों का मालाकार गहना जिसे स्त्रियाँ गले में पहनती हैं।
**हुरमत** - स्त्री० [अ] इज़्ज़त; प्रतिष्ठा; **यौ०** —वाला - प्रतिष्ठित।
**हुर-हुर** - पु० [हिं] दवा के काम आनेवाला एक बरसाती पौधा।
**हुरिहार** - पु० [हिं] होली खेलनेवाला।
**हुरुमयी** - स्त्री० [हिं] नृत्य का एक प्रकार।
**हुलकना** - अ० [हिं] वमन करना।
**हुलकी** - स्त्री० [हिं] वमन, कै।
**हुलना** - अ० [हिं] लाठी आदि का ठेला जाना।
**हुलसना** - 1. अ० [हिं] आनन्दित होना; उमड़ना; शोभित होना; 2. स० उल्लसित करना।
**हुलसाना** - स० [हिं] आनन्दित करना।
**हुलसी** - स्त्री० [हिं] उल्लास या मन की तरंग; तुलसीदासजी की माता का नाम।
**हुलहुली** - स्त्री० [सं] आनंद-मंगल के अवसर पर स्त्रियों के द्वारा उच्चरित अस्पष्ट शब्द।
**हुलास** - 1. पु० [हिं] उल्लास; उत्साह; 2. स्त्री० सुंघनी।
**हुलासी** - वि० [हिं] आनंदयुक्त; उत्साह-पूर्ण।
**हुलिया** - पु० [अ] चेहरा; शकल; शकल-सूरत का ब्योरा; **यौ०** —नामा - शकल-सूरत आदि का विवरण-पत्र।
**हुलिहुली** - स्त्री० [सं] गर्जन; विवाह के समय गाया जानेवाला गीत।
**हुल्लड़** - पु० [हिं] शोरगुल; गड़बड़; ऊधम; दंगा-फसाद।
**हुश्** - अव्य० [अनु] किसीको न करने योग्य कार्य करने या करने के प्रयत्न से विरत करने के लिए झटके से मुँह से निकाला गया एक शब्द; पशु-पक्षी आदि को भगाने का शब्द।
**हुसियार** - वि० [हि] होशियार।
**हुसैन** - पु० [अ] करबला के युद्ध में शहीद हुए अली के दूसरे बेटे; **यौ०** —बंद - जंजीर से जुड़े हुए चाँदी के दो छल्ले जिन्हें मुसलमान स्त्रियाँ मुहर्रम के दिनों में बच्चों को पहना देती हैं।
**हुसैनी** - पु० [हिं] एक प्रकार का अंगूर; एक तरह का चर्म-पात्र।
**हुस्न** - पु० [अ] शोभा; सुन्दरता; भलाई; **यौ०** —परस्त - सौंदर्यप्रेमी; —परस्ती - सौंदर्योपासना; —शिनास - सौंदर्योपासक; हुस्ने-ज़न - सद्भावना; हुस्ने-तलब - किसी चीज़ को इशारे से मँगाना।
**हुस्यार** - वि० [हिं] होशियार।
**हूँकना** - अ० [हिं] गर्जन करना; पीड़ा के कारण गाय का रँभाना; मानसिक याशारीरिक पीड़ा से ज़ोर-ज़ोर से रोना।
**हूँठ** - वि० [हिं] साढ़े तीन।
**हूँठा** - पु० [हिं] साढ़े तीन का पहाड़ा।
**हूँड़** - स्त्री० [हिं] सिंचाई तथा खेती के कामों में किसानों की आपस की सहायता।

**हूँस** - स्त्री० [हिं] ईर्ष्या; भर्त्सना; बुरी नज़र; किसी भी प्रकार किसी वस्तु को पाने की इच्छा।

**हूँसना** - 1. स० [हिं] बुरी नज़र से देखना; नज़र लगाना; 2. अ० ईर्ष्या करना; कुढ़ना।

**हू** - पु० [सं] गीदड़ के बोलने की ध्वनि।

**हूक** - स्त्री० [हिं] कसक; मानसिक पीड़ा; खटका; साल।

**हूकना** - अ० [हिं] पीड़ा होना; सालना।

**हूटना** - अ० [हिं] अलग होना; मुँह मोड़ना।

**हूठा** - पु० [हिं] अंगूठा; ठेंगा; मु० —देना - अंगूठा दिखाना।

**हूड़** - वि० [हिं] अनाड़ी; मूढ़; लापरवाह।

**हूत** - वि० [सं] आमन्त्रित।

**हूति** - स्त्री० [सं] आमन्त्रण; नाम; ललकार।

**हूदा** - पु० [हिं] धक्का; पीड़ा।

**हूनना** - स० [हिं] आग में डालकर भूनना।

**हूब** - स्त्री० [हिं] उत्साह, हिम्मत।

**हूबहू** - वि० [हिं] ज्यों का त्यों, वैसा ही।

**हूर** - स्त्री० [अ] अप्सरा; परम सुन्दरी।

**हूरना** - स० [हिं] चुभाना; पेलना।

**हूरा** - पु० [हिं] लाठी आदि का छोर।

**हूल** - स्त्री० [हिं] तलवार या भाले आदि की नोक या लाठी के हूरे को कहीं गड़ाने तथा भोंकने की क्रिया; शोर-गुल; हल्ला-गुल्ला; पीड़ा; आनन्दध्वनि; हर्ष; ललकार; बहेलिये का चिड़िया फँसाने का लासा लगा बाँस।

**हूलना** - स०[हिं] हूरना।

**हूला** - पु० [हिं] हूरने की क्रिया.

**हूश** - वि० [हिं] उजड्ड; जंगली, असंस्कृत।

**हूह** - स्त्री० [हिं] युद्ध की ललकार; गर्जना।

**हूहू** - पु० [अनु] आग के जलने का शब्द।

**हृत** - वि० [सं] गृहीत; हरण किया हुआ; विभक्त; मुग्ध; ले जाया गया हुआ; वंचित; स्वीकृत; यौ० —ज्ञान - ज्ञान-हीन; —प्रसाद - जिसकी शान्ति नष्ट हो गयी हो; —मानस - बेसुध; —राज्य - राज्य से वंचित, —सर्वस्व - जिसका सब कुछ ले लिया या नष्ट कर दिया गया हो।

**हृताधिकार** - वि० [सं] पदच्युत।

**हृत्** - वि० [सं] आकृष्ट या मुग्ध करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; ले जानेवाला; हरण करनेवाला; यौ० —कंप - दिल की धड़कन; —कमल - योग में माने हुए छः चक्रों में से एक जो हृदय के पास स्थित रहता है; —ताप - मनोव्यथा; —पंकज, पद्म - कमलवत हृदय; —पीड़ा - मनोव्यथा।

**हृदयंगम** - 1. वि० [सं] हृदयगत; मर्मस्पर्शी; आकर्षक; उपयुक्त; मनोहर; आनन्ददायक; प्रिय; वांछित; हृदय से निकलनेवाला; 2. पु० उपयुक्त वचन।

**हृदय** - पु० [सं] वक्ष के भीतर बाईं ओर स्थित मांस का रक्तकोष, दिल; आत्मा; अन्तःकरण; मन; नीर-क्षीर-विवेकिनी बुद्धि; छाती; सार वस्तु; प्यारा व्यक्ति; यौ० —कंपन - हृदय को क्षुब्ध करनेवाला; —क्षोभ - मन की अशांति, —गत - आंतरिक; —ग्रंथि - हृदय की गाँठ; दिल को कष्ट देनेवाली बात: —ग्राही - मनोहर, मनोरंजक; —चोर, चौर - हृदय का हरण करनेवाला

व्यक्ति ; —ज्वर - दिल की जलन ; —दौर्बल्य - दिल की कमज़ोरी ; —प्रमाथी - मन को क्षुब्ध करनेवाला ; मुग्ध करनेवाला ; —प्रिय - दिल का प्यारा : स्वादिष्ठ . —रोग - हृदय में होनेवाला रोग : —वल्लभ - प्रियतम ; —विदारक - हृदय को विदीर्ण करनेवाला ; —विध, वेधी - मर्माहत करनेवाला : —वृत्ति - मन की प्रवृत्ति ; —व्यथा - मानसिक पीड़ा , —शून्य - हृदयहीन ; —शोषण - दिल को सुखानेवाला ; —स्थ - जो हृदय में स्थित हो ; —स्पर्शी - हृदय को प्रभावित करनेवाला ; —हारी - मन को मुग्ध करनेवाला ; —हीन - अरसिक ; निष्ठुर ।

**हृदयवान** - वि० [सं] कोमलहृदय, दयालु ।

**हृदयेश, हृदयेश्वर** - पु० [सं] पति ; प्रेमी ; परमप्रिय व्यक्ति ।

**हृदयेशा, हृदयेश्वरी** - स्त्री० [सं] पत्नी ; प्रेमिका ।

**हृद्** - पु० [सं] दिल या मन ; आत्मा ; छाती ; किसी पदार्थ का भीतरी भाग ; **यौ०** —गत - मन में आया हुआ ; अभिप्रेत ; आनंददायक ; प्रिय ; वांछित ; हृदय-संबन्धी ; अभिप्राय ; —रोग - हृदय का रोग ; प्रेम ; शोक ; —व्रण - कलेजे का जख्म ।

**हृद्य** - 1. वि० [सं] अनुकूल ; आनन्ददायक ; मनोहर ; प्रिय ; वांछित ; स्वादिष्ठ ; हार्दिक ; 2. पु० दारचीनी ; एक वशीकरण मंत्र ; दही ; मधु से बनी हुई शराब ; बेल का पेड़ ।

**हृल्लेख** - पु० [सं] चिन्ता ; ज्ञान ।

**हृषित** - वि० [सं] प्रसन्न, उल्लसित ; चकित ; ताजा ; हताश ; शस्त्र-सज्ज ; भोथरा ।

**हृषिकेश** - पु० [सं] परमात्मा ; मन ; कृष्ण ; विष्णु ; हरिद्वार के निकट एक तीर्थ-स्थान ; वर्ष का दसवाँ महीना ।

**हृष्ट** - वि० [सं] प्रसन्न ; विस्मित ; रोमांचित ; कुंठित ; **यौ०** —चित्त, चेतन, चेता - प्रसन्नचित्त ; —तुष्ट - प्रसन्न और संतुष्ट ; —पुष्ट - तगड़ा ; हट्टा-कट्टा ; —मना, मानस - प्रसन्नचित्त ; —वदन - प्रसन्न मुद्रावाला ।

**हेंगा** - पु० [हिं] जोती हुई ज़मीन बराबर करने का पटरा, पटेला ।

**हेंहें** - अव्य० [अनु] धीरे-धीरे हँसने की ध्वनि ; गिड़गिड़ाने के समय निकलनेवाला शब्द ; **मु०** —करना - गिड़गिड़ाना ; जी-हुज़ूरी करना ।

**हे** - 1. अव्य० [सं] संबोधन तथा आह्वान के लिए प्रयुक्त शब्द ; अवज्ञा या घृणा-सूचक शब्द ; 2. अ० थे ।

**हेकड़** - वि० [हिं] उजड्ड ; बलवान (बुरे अर्थ में) ; तन्दुरुस्त ; मज़बूत शरीर वाला ।

**हेकड़ी** - स्त्री० [हिं] ज़बरदस्ती कुछ करने की प्रवृत्ति ; अशिष्टता ।

**हेच** - 1. वि० [फ़ा] निकम्मा ; तुच्छ ; सार-हीन ; बेकार ; 2. पु० थोड़ी-सी चीज़ ; **यौ०** —दाँ - कुछ न जाननेवाला, मूर्ख ; —दानी - नादानी ; —पोच - निकम्मा ; मामूली या घटिया ; बेफ़ायदा ; तुच्छ व्यक्ति ; मामूली हैसियत का आदमी ।

**हेठ** - 1. वि० [हिं] कम ; नीचा ; हीन ; 2. अव्य० नीचे ; 3. पु० [सं] क्षति ; चोट ; बाधा ।

**हेठा** - वि० [हिं] सेठ ।

**हेठी** - स्त्री० [हिं] अप्रतिष्ठा, मानहानि ; हीनता ।

**हेड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] बिक्री के लिए चौपायों का दल ; 2. पु० व्याध ।

**हेत** - पु० [हिं] प्रीति ; हेतु ।

**हेती** - पु० [हिं] प्रेमी ; हित-मित्र ; संबंधी ।

**हेतु** - पु० [सं] कारण ; लक्ष्य ; मूलकारण या एकमात्र कारण ; तर्क या दलील ; तर्क-शास्त्र ; प्रेम ; एक अर्थालंकार ; व्याप्ति, अव्याप्ति और अतिव्याप्ति नामक दोषों से अदूषित कारण; **यौ०**—दुष्ट - जिसकी बात तर्कसंगत न हो ; —युक्त - सकारण ; साधार ; —वचन - तर्कयुक्त बात ; —वाद - विवादहेतु का उल्लेख ; —वादी - तार्किक ; नास्तिक ; —विद्या, शास्त्र —तर्कशास्त्र ।

**हेतुक** - 1. वि० [सं] कारणरूप होनेवाला ; उत्पन्न करनेवाला ; 2. पु० कारण ; तार्किक ।

**हेतुमान** - 1. वि० [सं] तर्कयुक्त ; जो सकारण हो ; साधार ; 2. पु० कार्य ।

**हेमन्त** - पु० [सं] मार्गशीर्ष और पौष में पड़नेवाली एक ऋतु ; **यौ०** —समय - जाड़े का मौसम ।

**हेमन्ती** - स्त्री० [सं] जाड़े का मौसम ।

**हेम** - पु० [सं] सुवर्ण ; धतूरा ; माशा ; काले या भूरे रंग का घोड़ा ; पाला या हिम ; जल ; केसर का फूल , जाड़े का मौसम ; **यौ०** —कक्ष - सोने का कमरबंद ; —कलश - सोने की कलसी ; स्वर्णनिर्मित शृंग कलश ; —कान्ति - सोने की-सी कान्तिवाला ; —कार, कारक - सुनार ; —कुंभ - सोने का कलश ; —गौर - सोने-जैसा गौरवर्ण-युक्त ; अशोक वृक्ष ; —चक्र - सोने के पहियोंवाला ; —ज्वाल - अग्नि ; —तरु - धतूरा ; —प्रतिमा - सोने की मूर्ति ; —माक्षिक - सोनामाखी ; —मालिका - सोने का हार ।

**हेमांड** - पु० [सं] ब्रह्मांड ।

**हेमा** - स्त्री० [सं] अप्सरा , सुन्दर स्त्री ।

**हेमाद्रि** - पु० [सं] मेरु ।

**हेमियानी** - स्त्री० [हिं] रुपया रखने की थैली ।

**हेय** - वि० [सं] त्याज्य ; घटाये जाने योग्य ; बुरा ।

**हेरंब** - पु० [सं] गणेश ; दर्प करनेवाला योद्धा ; भैंसा , युद्ध-विशेष ।

**हेर** - 1. पु० [सं] हलदी ; मुकुट का एक भेद ; 2. स्त्री० तलाश ।

**हेरना** - स० [हिं] खोजना ; परीक्षा करना ; देखना ।

**हेरफेर** - पु० [हिं] परिवर्तन, उलट-पलट की क्रिया ; विनिमय ; अन्तर ; चाल-बाज़ी ; टेढ़ी-सीधी बात ; **यौ०** —कर - किसी न किसी तरह; घूम-फिरकर ।

**हेरवाना** - स० [हिं] पता लगवाना ; खोजवाना ; खोना ।

**हेराना** - 1. स० [हिं] हेरवाना ; 2. अ० गायब हो जाना , अपनी सुध-बुध खोना , एकदम न रह जाना ।

**हेराफेरी** - स्त्री० [हिं] हेरफेर ; चीज़ों का इधर-उधर होना ।

**हेरी** - स्त्री० [हिं] गुहार, पुकार ।

**हेल** - पु० [हिं] परिचय ; **यौ०** —मेल - मेल-जोल ; घनिष्ठता ।

**हेलन** - पु० [सं] तिरस्कार ; किल्लोल ।

**हेलना** - 1. स्त्री० [सं] हेलन ; 2. अ० क्रीड़ा करना ; खेलना , निश्चित रहना ; हँसी-मज़ाक करना ; प्रवेश करना (जल में) ; 3. स० उपेक्षा करना ; तैरना ।

**हेलया** - अव्य० [सं] खेल ही खेल में ।

**हेला** - 1. पु० [हिं] पुकार ; आक्रमण ; धक्का ; उतारा ; मेहतर , खेप ; 2. स्त्री० [सं] अपमान ; अवज्ञा ; आनंद ; आसानी ; केलि ; चंद्रिका ।

**हेलिन, हेलिनी** - स्त्री० [हिं] मेहतरानी ।

**हैं** - 1. अ० [हिं] 'है' का बहु० ; 2. अव्य० आश्चर्यसूचक शब्द ; अस्वीकृति ।

**है** - 1. अ० [हिं] 'होना' का वर्तमान काल का एकवचन रूप ; 2. पु० घोड़ा ; यौ० —वर - सुन्दर या अच्छा घोड़ा ।

**हैकल** - स्त्री० [हिं] स्त्रियों के गले में पहनने का एक गहना, हुमेल ।

**हैज़ा** - पु० [अ] एक संक्रामक रोग जिसमें के और दस्त आते हैं, विषूचिका ।

**हैदर** - पु० [अ] शेर ।

**हैना** - स० [हिं] मारना ।

**हैफ़** - 1. पु० [अ] अफ़सोस ; खेद ; 2. अव्य० हा हंत, अफ़सोस ।

**हैबत** - स्त्री० [अ] भय ; यौ० —ज़दा - डरा हुआ ; —नाक - डरावना ; मु० —छाना - डर जाना ।

**हैमंत** - 1. वि० [सं] जाड़े के उपयुक्त ; जाड़े में उत्पन्न होनेवाला ; हेमंतसंबन्धी ; 2. पु० हेमंत ऋतु ।

**हैम** - 1. वि० [सं] हिम से उत्पन्न ; हिम-संबंधी ; जाड़े में होनेवाला ; बर्फ़ से ढँका हुआ , सोने का बना हुआ ; सोने के रंग का ; 2. पु० पाला, हिम ; ओस ; चिरायता ; शिव , यौ० —मुद्रा, मुद्रिका - सोने का सिक्का ।

**हैरंब** - 1. वि० [सं] गणेश का ; गणेश-संबंधी ; 2. पु० गाणपत्य संप्रदाय ।

**हैरण्य** - वि० [सं] स्वर्णमय ; स्वर्णवहन करनेवाला (नद) ; सोना देनेवाला (हाथ)।

**हैरत** - स्त्री० [अ] अचंभा ; यौ० —अंगेज़ - विस्मयजनक ; —ज़दा - चकित ।

**हैरान** - वि० [अ] चकित ; परेशान ; भटकनेवाला ; भौंचक्का ।

**हैरानी** - स्त्री० [अ] परेशानी ; विस्मय ।

**हैवान** - 1. पु० [अ] प्राणी ; जानवर ; 2. वि० उजड्ड ; निर्बुद्धि ।

**हैवानियत** - स्त्री० [हिं] पशुता ; जंगली-पन ।

**हैवानी** - वि० [हिं] अमानुषिक ; जानवर का, पाशव ।

**हैसबैस** - पु० [अ] बहस, विवाद ।

**हैसियत** - स्त्री० [अ] योग्यता ; आर्थिक योग्यता ; ढंग ; मालियत ; सामर्थ्य ; दर्जा ; धन-संपत्ति ; मान-प्रतिष्ठा ; यौ० —दार - हैसियतवाला ।

**हों** - अ० [हिं] 'होना' का संभावना-सूचक बहुवचन का रूप ।

**होंठ** - पु० [हिं] ओष्ठ, मुँह के बाहर का ऊपर या नीचे का भाग ; मु० —काटना, चबाना - क्रोध या शोक आदि के आवेश में दाँतों से होंठ को काटना ; —चाटना - कोई स्वादिष्ट पदार्थ अधिक से अधिक खाने की इच्छा करना ; —सी लेना - मौन हो जाना ; —हिलाना - बोलना ।

**होंठल** - वि० [हिं] बड़े-बड़े मोटे होंठोंवाला ।

**हो** - 1. अ० [हिं] 'होना' का संभावना-सूचक एकवचन का रूप ; 'होना' का सामान्यभूत, था ; 2. अव्य० संबोधन में प्रयुक्त शब्द ।

**होड़** - स्त्री० [हिं] प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता; बाज़ी, शर्त ।

**होड़ा-होड़ी** - 1. स्त्री० [हिं] होड़; 2. अव्य० होड़ लगाकर।

**होता** - 1. वि० [सं] हवन करनेवाला, 2. पु० यज्ञ करानेवाला पुरोहित; अग्नि; शिव।

**होनहार** - 1. वि० [हिं] होनेवाला या अवश्यमेव होनेवाला; 2. पु०, 3. स्त्री० भवितव्यता, अवश्यमेव घटित होनेवाली घटना आदि।

**होना** - अ० [हिं] विद्यमान रहना; तैयार होना; एक स्थिति से दूसरी स्थिति में आना; दिन बीतना; किसी घटना का घटित होना; काम चलना; पैदा होना; किसी कार्य का पूरा होना।

**होनिहार, होनी** - स्त्री० [हिं] होनहार।

**होम** - पु० [सं] हवन; ब्राह्मणो द्वारा नित्य किया जानेवाला पंच महायज्ञो में से एक; **यौ०** —कर्म - यज्ञ-संबन्धी कर्तव्य या विधियाँ; —काल - यज्ञ का समय; —कुंड - हवन करने के लिए बना हुआ कुंड; —द्रव्य - हवन की सामग्री (घी आदि); —धान्य - तिल; —धूम - होम की अग्नि का धुआँ।

**होमना** - स० [हिं] हवन करना; नष्ट करना; बलिदान करना।

**होमाग्नि** - स्त्री० } [सं] यज्ञाग्नि।
**होमानल** - पु० }

**होरसा** - पु० [हिं] रोटी बेलने या चन्दनादि घिसने का पत्थर का बना चौका।

**होरहा** - पु० [हिं] चने का फलदार हरा पौधा; आग पर भुना हुआ चने का हरा दाना।

**होरा** - स्त्री० [सं] ज्योतिषशास्त्र की रीति से बताया हुआ लग्न; आधी राशि; ढाई घड़ी; चिन्ह; जन्मपत्री।

**होरिल, होरिलवा, होरिला** - पु० [हिं] शिशु; नवजात शिशु।

**होरिहार** - पु० [हिं] होली खेलनेवाला।

**होरी** - स्त्री० [हिं] होली; जहाज़ पर माल लादने और उसपर से उतारने के काम आनेवाली बड़ी नाव।

**होलक** - पु० [सं] मटर या चने आदि की आग पर भुनी हुई अधपकी फलियाँ।

**होला** - स्त्री० [सं] होली का त्योहार।

**होलिका** - स्त्री० [सं] होली का त्योहार, घास, फूस, तेल, लकड़ी आदि का ढेर जिसका दहन होली के दिन होता है; हिरण्यकशिपु की बहन।

**होली** - स्त्री० [हिं] होली का त्योहार; होली के अवसर पर गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत; **मु०** **—खेलना** - फाग खेलना, एक दूसरे पर रंग आदि डालना।

**होश** - पु० [फ़ा] जीवित रहने का ज्ञान, चेतना; अक्ल; स्मरण; **यौ०** —मंद - बुद्धिमान; —मंदी - बुद्धिमानी; —वाला - अनुभवी; —हवास - सुधबुध; **मु०** —आना - आपे में आना; समझ आना; —उड़ना - अक्ल खोना; घबड़ा जाना; आश्चर्य-चकित होना; —ठिकाने रहना - आपे में आना, ज्ञान प्राप्त करना; होशियार होना; —सँभालना - बड़ा होना; तमीज सीखना।

**होशियार** - वि० [फ़ा] अक्लमंद; अनुभवी; प्रवीण; सावधान; **मु०** —करना - असावधान को सावधान करना; —रहना - सावधान रहना; —हो जाना - गफलत दूर होना; सावधान हो जाना।

**होशियारी** - स्त्री० [फ़ा] अनुभव ; चालाकी; बुद्धिमानी ; सावधानी ।

**हौंकना** - अ० [हिं] गर्जन करना ; पंखे आदि की हवा से आग को दहकाना ; हाँफना ।

**हौंसला** - पु० [अ] हौसला ।

**हौआ** - पु० [हिं] एक कल्पित वस्तु जिसका नाम लेकर स्त्रियाँ बच्चों को डराया करती हैं; असाधारण और डरावनी चीज़ ।

**हौका** - पु० [हिं] पेटूपन ; लालच ।

**हौज़** - पु० [अ] कुंड, चहबच्चा ; नाँद ।

**हौज़ा** - पु० [फ़ा] हौदा, हाथी की अम्मारी।

**हौड़** - स्त्री० [हिं] होड़ ।

**हौद** - पु० [हिं] हौज़, कुंड ; नींद ।

**हौम्य** - पु० [सं] घी ।

**हौरा** - पु० [हिं] शोरगुल, हल्ला ।

**हौरे-हौरे** - अव्य० [हिं] आहिस्ते से, धीरे-धीरे, हौले-हौले ।

**हौल** - पु० [अ] डर ; दहशत ; **यौ०** —खौल, जौल - उतावली ; शीघ्रता ; शीघ्रता-जनित उद्विग्नता ; —दिल - दिल की धड़कन ; व्यग्र ; डरा हुआ ; —दिला - डरपोक ; —नाक - भयंकर ।

**हौलाजौली** - स्त्री० [हिं] जल्दी, हड़बड़ी ।

**हौली** - स्त्री० [हिं] शराब बिकने की जगह, मदिरालय ।

**हौले-हौले** - अव्य० [हिं] हौरे-हौरे ।

**हौवा** - स्त्री० [अ] आदम की पत्नी ; इस्लाम, ईसाई तथा यहूदी धर्मों के अनुसार मानव जाति की माता ।

**हौस** - स्त्री० [अ] उत्कंठा ; उमंग ; हवस या हौसला ।

**हौसला** - पु० [अ] उत्साह ; सामर्थ्य ; **यौ०** —मंद - उत्साही ; **मु०**—निकालना - अरमान पूरा करना ; —पस्त होना - हिम्मत टूट जाना ।

**ह्नुति** - स्त्री० [सं] इनकार ; छिपाव ।

**ह्यः** - अव्य० [सं] गत दिन ।

**ह्यस्तन** - वि० [सं] गत दिवस-संबन्धी ; **यौ०** —दिन - गत दिवस ।

**ह्याँ** - अव्य० [हिं] यहाँ ।

**ह्यो** - पु० [हिं] हृदय ।

**ह्रद** - पु० [सं] गहरा गड्ढा ; गहरा जलाशय ; गहरी झील ; ध्वनि ; प्रकाश की किरण ।

**ह्रसित** - वि० [सं] संक्षिप्त किया हुआ, घटाया हुआ ; ध्वनित ।

**ह्रस्व** - 1. वि० [सं] लघु ; छोटा ; नीचा ; ठिंगना ; तुच्छ ; 2. पु० एकमात्रिक, लघु स्वर ; बौना आदमी ; यम ; **यौ०** —मूर्ति - छोटे कद का, ठिंगना ; —मूल - लाल गन्ना ।

**ह्रस्वांग** - 1. वि० [सं] वामन, बौना ; 2. पु० बौना आदमी ।

**ह्राद** - पु० [सं] मेघगर्जन ; ध्वनि ।

**ह्रादिनी** - स्त्री० [सं] इन्द्र का वज्र ; बिजली; नदी ।

**ह्रास** - पु० [सं] अवनति ; क्षय ; कमी ; छोटी संख्या ; शब्द ।

**ह्रासक** - वि० [सं] कम करनेवाला ; क्षय करनेवाला ।

**ह्रासन** - पु० [सं] घटाना ; क्षीण करने की क्रिया ।

**ह्री** - स्त्री० [सं] लज्जा, संकोच ; **यौ०** —जित - लज्जाशील ; —धारी - शर्मीला ; —बल - अति नम्र, संकोची ; —मूढ़ - लज्जा से घबड़ाया हुआ ।

**ह्रेषा** - स्त्री० [सं] घोड़े की हिनहिनाहट।
**ह्लन्न** - वि० [सं] प्रसन्न, संतुष्ट।
**ह्लाद** - पु० [सं] आनन्द, प्रसन्नता; ताज़गी।
**ह्लादक** - वि० [सं] प्रसन्न करनेवाला।
**ह्लादन** - 1. पु० [सं] आनंदित करने की क्रिया; 2. वि० प्रसन्न करनेवाला।
**ह्लादित** - वि० [सं] आनंदित।
**ह्लादिनी** - 1. वि०, 2. स्त्री० [सं] आनंद देनेवाली।
**ह्लादी** - वि० [सं] आनंदयुक्त; प्रसन्न होनेवाला; बहुत शब्दवाला।
**ह्वलन** - पु० [सं] लड़खड़ाना; लुढ़कना।
**ह्वाँ** - अव्य० [हिं] वहाँ।
**ह्वान** - पु० [सं] आह्वान या पुकार; शोरगुल।
**ह्वायक, ह्वायी** - वि० [सं] आह्वान करनेवाला; ललकारनेवाला।
**ह्वेल** - पु० [अंग्रे] एक विशालकाय समुद्री जंतु।



# परिशिष्ट

## (पारिभाषिक शब्दसूची)



### अ

| | | |
|---|---|---|
| अंकित मूल्य | एन्डॉर्स | Endorse |
| अंगच्छेद | ऐम्प्युटेशन | Amputation |
| अंगरक्षक | बॉडी-गार्ड | Body-guard |
| अंतरंग सभा | गवर्निंग बॉडी | Governing Body |
| अंतर्देशीय | इन्लैण्ड | Inland |
| अंतर्राष्ट्रीय | इन्टर-नैशनल | Inter-national |
| अंशकालिक | पार्ट-टाइम | Part-time |
| अक्षम | इन्कॉम्पिटेन्ट | Incompetent |
| अग्नि-शमन-व्यवस्था | फायर सर्विस | Fire Service |
| अग्रिम धन | एडवान्स | Advance |
| अजायबघर | म्यूज़ियम | Museum |
| अतिउत्पादन | ओवर-प्रोडक्शन | Over-production |
| अदायगी का प्रमाणपत्र | सर्टिफ़िकेट ऑफ़ पेमेन्ट | Certificate of Pay-ment |
| अदालती कुर्की | कोर्ट अटैचमेन्ट | Court Attachment |
| अधिकरण | ट्रिब्युनल | Tribunal |
| अधिकार-क्षेत्र | जूरिस्डिक्शन | Jurisdiction |
| अधिग्रहण | रिक्विज़िशन | Requisition |
| अधिनियम | ऐक्ट | Act |
| अधिपत्र | वारण्ट | Warrant |
| अधिभार | सरचार्ज | Surcharge |
| अधिमान | प्रिफ़रेन्स | Preference |
| अधिवक्ता | एडवोकेट | Advocate |
| अधिवास | डॉमिसाइल | Domicile |
| अधिवासी | डॉमिसाइल्ड | Domiciled |
| अधिष्ठाता | प्रिसाइडिंग ऑफ़िसर | Presiding Officer |

| | | |
|---|---|---|
| अधिसूचना | नोटिफ़िकेशन | Notification |
| अधीक्षक | सूपरिंटेंडेंट | Superintendent |
| अधीक्षक इंजिनियर | सूपरिंटेडिंग इंजिनियर | Superintending Engineer |
| अधीक्षण | सूपरिंटेंडेंस | Superintendence |
| अधीन अधिकारी | सबॉर्डिनेट ऑफ़िसर | Subordinate Officer |
| अध्यादेश | आर्डिनेन्स | Ordinance |
| अनर्हता | डिस्कालिफ़िकेशन | Disqualification |
| अनर्हीकरण | डिस्कालिफ़ाइ | Disqualify |
| अनाम पत्र | डेड लेटर | Dead Letter |
| अनुकूलन | एडैप्टेशन | Adaptation |
| अनुच्छेद | आर्टिकल, पैराग्राफ़ | Article, Paragraph |
| अनुज्ञप्ति | लाइसेन्स | Licence |
| अनुज्ञा | परमिट, परमिशन | Permit, Permission |
| अनुदान | ग्राण्ट | Grant |
| अनुदेय | ग्राण्टी | Grantee |
| अनुनयकर्ता | कैन्वॅसर | Canvassor |
| अनुपाती प्रतिनिधित्व | प्रॉपोर्शनल रॅप्रेजेंटेशन | Proportional Representation |
| अनुपूरक | सप्लिमेन्टरी | Supplementary |
| अनुमोदन | एप्रूवल | Approval |
| अनुमोदन करना | एप्रूव | Approve |
| अनुशासन | डिसिप्लिन | Discipline |
| अनुषक्ति | एड्हेरेन्स | Adherence |
| अनुस्रवण अफ़सर | मॉनिटरिंग ऑफ़िसर | Monitoring Officer |
| अनुसंधान | इनवेस्टिगेशन, इन्वेस्टिगेट | Investigation, Investigate |
| अनुसमर्थन | रैटिफ़िकेशन | Ratification |
| अनुसूचित | शेड्यूल्ड | Scheduled |
| अनुस्मारक | रिमाइण्डर | Reminder |
| अपदादिष्ट | नॉन-ऑफ़िशियल | Non-Official |
| अपमानलेख | लैबल | Libel |
| अपमिश्रण | एडल्टरेशन | Adulteration |
| अपर न्यायाधीश | एडिशनल जज | Additional Judge |

| | | |
|---|---|---|
| अपराधी | क्रिमिनल | Criminal |
| अपात्र | इनॅलिजिबिल | Ineligible |
| अपात्रता | इनॅलिजिबिलिटी | Ineligibility |
| अपील | अपील | Appeal |
| अप्रार्थी | नॉन-पेशनर | Non-Pentioner |
| अभिकथन | एलॅगेशन | Allegation |
| अभिकरण | एजेन्सी | Agency |
| अभिकर्ता | एजेन्ट | Agent |
| अभिनियम | ऐक्ट | Act |
| अभिभावक | गार्डियन | Guardian |
| अभियाचना | डिमांड | Demand |
| अभियुक्त | एक्युस्ड | Accused |
| अभियुक्ति | चार्ज | Charge |
| अभियोग | एक्युसॅशन | Accusation |
| अभियोजन | प्रॉसिक्यूशन | Prosecution |
| अभियोज्य दोष | एक्शनबल रॉंङ्ग | Actionable Wrong |
| अभिरक्षा | कस्टॅडी | Custody |
| अभिलेख दफ़्तर | रॅकार्ड ऑफ़िस | Record Office |
| अभिलेखपाल | रॅकार्ड-कीपर | Record-keeper |
| अभीक्षक | केअर-टेकर | Care-taker |
| अभ्यर्थी | कैण्डिडेट | Candidate |
| अमान्य | इन्वैलिड | Invalid |
| अयुक्त प्रभाव | अन्ड्यू इन्फ़्ल्यूएन्स | Undue Influence |
| अराजक | अनार्किस्ट | Anarchist |
| अराजपत्रित | नॉन-गज़ेटेड | Non-gazetted |
| अराजादिष्ट | नॉन-कमीशन्ड | Non-commissioned |
| अर्जन | एक्विसिशन | Acquisition |
| अर्ज़ी | एप्लिकेशन | Application |
| अर्थदंड | फ़ाइन | Fine |
| अर्हता | क्वालिफ़िकेशन | Qualification |
| अल्पसंख्यक वर्ग | माइनॉरिटी | Minority |
| अवधिदान | एडजॉर्न | Adjourn |
| अवयस्क | माइनर | Minor |
| अवर | ज्यूनियर | Junior |

| | | |
|---|---|---|
| अवर श्रेणी क्लर्क | ज्यूनियर डिविशन क्लर्क | Junior Division Clerk |
| अवर सदन | लोअर हाउस | Lower House |
| अवर | लॉंग एस्टेब्लिश | Long Establish |
| अविश्वास प्रस्ताव | नो-कॉन्फ़िडेन्स मोशन | No-confidence Motion |
| अवैध | इल्लीगल | Illegal |
| अवैधाचरण | इल्लीगल प्रैक्टिस | Illegal Practice |
| असैनिक | नॉन-मिलिटरी, सिविल | Non-military, Civil |
| असैनिक शक्ति | सिविल पॅवर्स | Civil Powers |
| असैनिकीकरण | डीमिलिटरिज़ेशन | Demilitarisation |
| अस्ति कार्यालय | एस्टेट ऑफ़िस | Estate Office |
| अस्पताली दल | ऍम्बुलन्स कोर | Ambulance Corps |

## आ

| | | |
|---|---|---|
| आंक | ऍस्टिमेट | Estimate |
| आकलन | क्रेडिट | Credit |
| आकस्मिकता निधि | कॅण्टिजेंसी फ़ण्ड | Contingency Fund |
| आकाशवाणी | रेडियो | Radio |
| आचार | कस्टम | Custom |
| आजीविका | कालिङ्ग्स | Callings |
| आज्ञप्ति | डिक्री | Decree |
| आदेशक | कमाडेन्ट | Commandant |
| आदेशिका | प्रॉसेस | Process |
| अधिकारप्राप्त एजेंट | ऑथराइस्ड एजेन्ट | Authorised Agent |
| आनुषंगिक | कान्सिक्वेन्शियल | Consequential |
| आनुषंगिक व्यय | कॅन्टिन्जॅन्सी | Contingency |
| आपात | ऍमर्जेन्सी | Emergency |
| आपाती | ऍमर्जेन्ट | Emergent |
| आयकर | इनकम-टैक्स | Income-tax |
| आय-व्यय परीक्षा | आडिट | Audit |
| आय-व्यय परीक्षक | आडिटर | Auditor |
| आयात-शुल्क | इम्पोर्ट-ड्यूटी | Import-duty |
| आयोग | कमीशन | Commission |
| आयोजना अफ़सर | प्लैनिङ्ग ऑफ़िसर | Planning Officer |
| आयोजना मंडल | प्लैनिङ्ग सर्कल | Planning Circle |

| | | |
|---|---|---|
| आरक्षक | पोलीस | Police |
| आरोग्यपत्र | सर्टिफ़िकेट ऑफ़ फ़िटनस | Certificate of Fitness |
| आरोप | अॅलेगेशन | Allegation |
| आरोपण | लेवि | Levy |
| आर्थिक सलाहकार | ऍकनॉमिक अड्वाइज़र | Economic Advisor |
| आवर्तक | रेकरिंग | Recurring |
| आवास अधिकारी | इमिग्रेशन अथॉरिटी | Immigration Authority |
| आवेदनपत्र | अप्लिकेशन | Application |
| आशुटीपक | स्टेनो-टाइपिस्ट | Steno-typist |
| आशुलिपिक | स्टेनोग्राफ़र | Stenographer |
| आस्ति | प्रॉपर्टी | Property |
| आहरण अफ़सर | ड्राइंग ऑफ़ीसर | Drawing Officer |
| आह्वान | सम्मन | Summon |

## इ

| | | |
|---|---|---|
| इकट्ठा करना | अक्युम्युलेट | Accumulate |
| इच्छापत्र | विल | Will |
| इजहार | अॅलेगेशन | Allegation |
| इतर रेलवे | फॉरिन रेलवे | Foreign Railway |
| इमदादी अफ़सर | रिलीफ़ ऑफ़ीसर | Relief Officer |

## उ

| | | |
|---|---|---|
| उगाहना | लेवि | Levy |
| उच्चतम न्यायालय | सुप्रीम कोर्ट | Supreme Court |
| उच्च न्यायालय | हाइ कोर्ट | High Court |
| उत्तराधिकार | सक्सेषन | Succession |
| उत्पादन | प्रॉडक्शन | Production |
| उत्पादन-कर<br>उत्पादन-शुल्क | एक्साइस ड्यूटी | Excise Duty |
| उत्पादन मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ प्रॉडक्शन | Ministry of Production |
| उत्प्रवास | एमिग्रेशन | Emigration |
| उत्प्रेषण-लेख | सॅर्टिऑररी | Certiorari |
| उद्ग्रहण | लेवि | Levy |

| | | |
|---|---|---|
| **उद्घोषण** | प्रॉक्लमेशन | Proclamation |
| **उद्योग निदेशक** | डाइरेक्टर ऑफ् इन्डस्ट्रीस | Director of Industries |
| **उधार** | लोन | Lone |
| **उपकर** | सेस | Cess |
| **उपकुलाध्यक्ष** | प्रो-चान्सलर | Pro-Chancellor |
| **उपक्रमण** | इनिशिएट | Initiate |
| **उपजीविका** | ऑक्युपेशन | Occupation |
| **उपदान** | ग्रैच्विटी | Gratuity |
| **उपदेश (सलाह)** | अडवाइस | Advice |
| **उपनिर्वाचन** | बाइ-ऍलेक्शन | Bye-election |
| **उपनिवेश** | कॉलोनियल | Colonial |
| **उपनिवेशन** | कॉलोनाइज़ेशन | Colonization |
| **उपनिवेश सचिव** | कॉलोनियल सेक्रेटरी | Colonial Secretary |
| **उपनियम** | बाइ-लॉ, सब-रूल | Bye-law, Sub-rule |
| **उप प्रधान पुलिस निरीक्षक** | डेप्युटी इन्स्पेक्टर जॅनरल ऑफ् पोलीस | Deputy Inspector-General of Police |
| **उपबंध** | प्रोविशन | Provision |
| **उपभोक्ता** | कन्स्यूमर | Consumer |
| **उपभोग** | कन्सम्प्शन | Consumption |
| **उपमार्ग** | बाइ-पास | By-pass |
| **उपराज्यपाल** | लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर | Lt. Governor |
| **उपराष्ट्रपति** | वाइस-प्रेसिडेंट, डेप्युटी प्रेसिडेंट | Vice-President, Dy. President |
| **उपरि उल्लेखित** | एबव मेन्शन्ड | Above Mentioned |
| **उपविधि** | बाइ-लॉ | Bye-law |
| **उपविभाग** | सब-डिविशन | Sub-division |
| **उपवेशन** | सिटिंग | Sitting |
| **उपसंगी** | ऑक्सिएलियरी | Auxiliary |
| **उपस्थित होना** | अपियर | Appear |
| **उपाध्यक्ष** | डेप्युटी स्पीकर | Dy. Speaker |
| **उपायुक्त** | डेप्युटी कमिश्नर | Dy. Commissioner |
| **उपायोजन** | एम्प्लायमेंट | Employment |
| **उम्मेदवार** | कैण्डिडेट | Candidate |

| | | |
|---|---|---|
| ऋण-पत्र | डिबेंचर | Debenture |
| एकक | यूनिट | Unit |
| एकल निगम | सोल कॉर्पोरेशन | Sole Corporation |
| एकल संक्रमणीय मत | सिंगिल ट्रान्सफ़रेबल वोट | Single Transferable Vote |
| एकस्व | पेटेन्ट | Patent |
| औपनिवेशिक स्वराज्य | डॉमिनियन स्टेटस | Dominion Status |
| औषधालय | डिस्पेंसरी | Dispensary |
| औसत | आवरेज | Average |
| | क | |
| कटक | कन्टोन्मेण्ट | Cantonment |
| कणाकु | अकौंट | Account |
| कदाचार | मिस्बिहेवियर | Misbehaviour |
| कबूल करना | अक्सीड | Accede |
| करणिक | डेलिवरी क्लर्क | Delivery Clerk |
| करार | अग्रीमेंट | Agreement |
| कर्मचारी | वर्कमैन | Workman |
| कर्मचारीवृन्द | स्टाफ़ | Staff |
| क श्रेणी· | ए क्लास | A Class |
| कांजी हाउस | केट्टिल पौंड | Cattle Pound |
| काँटेदार तार | बार्ब्ड वॉयर | Barbed Wire |
| कानून-संबन्धी | लीगल | Legal |
| कानूनी प्रतिनिधि | लीगल रॅप्रेसॅन्टेटिव | Legal Representa-tive |
| कारखाना | वर्कशॉप | Workshop |
| कारखानाप्रबन्धक | वर्क्स मैनेजर | Works Manager |
| कारबार | बिसिनेस | Business |
| कारबारी कागज़ | बिसिनेस पेपर | Business Paper |
| काराबन्दी | प्रिसनर | Prisoner |
| कार्मिक संघ | ट्रेड यूनियन | Trade Union |
| कार्यकारी | ऐक्टिंग | Acting |
| कार्यकारी इंजिनीयर | एक्ज़िक्यूटिव इंजिनीयर | Executive Engineer |
| कार्यपालिका | एक्ज़िक्यूटिव | Executive |
| कार्यपालिका शक्ति | एक्ज़िक्यूटिव पॅवर | Executive Power |

| | | |
|---|---|---|
| कार्यभारी | इन-चार्ज | In-charge |
| कार्यवाहक | ऐक्टिंग | Acting |
| कार्य-समय | बिसिनेस ऑवर्स | Business Hours |
| कालदान | अडर्जर्न | Adjourn |
| कावल | कस्टॅडी | Custody |
| कीट-विज्ञानी | ऍन्टॉमॉलजिस्ट | Entomologist |
| कुटीर उद्योग अनुभाग | कॉटेज इन्डस्ट्रीस सेक्शन | Cottage Industries Section |
| कुर्की | अट्टैच | Attach |
| कुलपति | वाइस-चान्सलर | Vice-Chancellor |
| कुलाध्यक्ष | चान्सलर | Chancellor |
| कुशल संकेत | ऑलराइट सिग्नल | Alright Signal |
| कूटतार | कोड टेलिग्राम | Code Telegram |
| कूटनीति | डिप्लोमॅसी | Diplomacy |
| कूट भाषा | कोड लैंग्वेज | Code Language |
| कूट शब्द | कोड वर्क | Code Work |
| कृतिस्वाम्य | कॉपी राइट | Copy Right |
| कृषि मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ अग्रिकल्चर | Ministry of Agri-culture |
| केन्द्रीय रोज़गार समंजक दफ़्तर | सेन्ट्रल ऍम्प्लायमेन्ट को-ऑर्डिनेशन ऑफ़ीस | Central Employ-ment Co-ordina-tion Office |
| केन्द्रीय शिक्षणशाला | सेन्ट्रल इन्स्टीटयूट ऑफ़ एज्युकेशन | Central Institute of Education |
| केन्द्रीय समाज हितकारी बोर्ड | सेन्ट्रल सोशल वेलफ़ेअर बोर्ड | Central Social Wel-fare Board |
| केन्द्रीय सरकारी निर्माण विभाग | सेन्ट्रल पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट | Central Public Works Dept. |
| क्षतिपूरक बन्धापत्र | इन्डेम्निटी बाड | Indemnity Bond |
| क्षतिपूर्ति बिल | बिल ऑफ़ इन्डेम्निटी | Bill of Indemnity |

## ख

| | | |
|---|---|---|
| खण्ड | क्लॉस | Clause |
| खतरे की घंटी | अलार्म बेल | Alarm Bell |
| खतियान-निरीक्षक | इन्स्पेक्टर ऑफ रजिस्ट्रेशन | Inspector of Registration |

| | | |
|---|---|---|
| खनि-वसति | माइनिंग सेट्टिलमेन्ट | Mining Settlement |
| खलबली मचाना | अजिटेट | Agitate |
| ख श्रेणी | बी क्लास | B Class |
| खातांकन अफ़सर | रजिस्ट्रेशन ऑफ़ीसर | Registration Officer |
| खाद्य और कृषि प्रभाग | फ़ुड अण्ड अग्रिकल्चर डिविशन | Food and Agriculture Division |
| खाद्य मंत्री | फ़ुड मिनिस्टर | Food Minister |
| खुफ़िया विभाग | सी. आइ. डी. | C. I. D. |

## ग

| | | |
|---|---|---|
| गणन परीक्षा | ऑडिट | Audit |
| गणनानुदान | वोट ऑन अक्कौंट्स | Vote on Accounts |
| गणपूर्ति | कोरम | Quorum |
| गवेषण | रिसर्च | Research |
| गश्ती डाकघर | मोबाइल पोस्ट ऑफ़ीस | Mobile Post Office |
| गुप्तवार्ता विभाग | इन्टेलिजेन्स ब्यूरो | Intelligence Bureau |
| गूढ़ पत्र | बैलॅट | Ballot |
| गृह मंत्री | होम मिनिस्टर | Home Minister |
| गृहरक्षी | होम गार्ड | Home Guard |
| ग्राम-परिषद् | विलेज कौन्सिल | Village Council |
| ग्राह्य | अडमिस्सिबिल | Admissible |

## घ

| | | |
|---|---|---|
| घोषणा | डिक्लेरेशन | Declaration |

## च

| | | |
|---|---|---|
| चक्रलेखित्र | साइक्लोस्टाइल | Cyclostyle |
| चट्टम | ऐक्ट | Act |
| चपरासी | प्यून | Peon |
| चरित्रपत्र | सर्टिफ़िकेट ऑफ़ केरक्टर | Certificate of Character |
| चल अर्थ | करेन्सी | Currency |
| चल एकक अफ़सर | मोबाइल यूनिट ऑफ़ीसर | Mobile Unit Officer |
| चलावणी | करेन्सी | Currency |
| चालान-निरीक्षक | प्रॉसिक्युटिंग इन्स्पेक्टर | Prosecuting Inspector |
| चिकित्साव्यवसायी | मेडिकल प्राक्टिश्नर | Medical Practitioner |

| | | |
|---|---|---|
| चुकती | अग्रीमेन्ट | Agreement |
| चिराग-गुल | ब्लैक औट | Black Out |
| चुनावकर्ता | ऍलेक्टर | Elector |
| चुनाव कोष्ठ | ऍलेक्शन बूथ | Election Booth |
| | छ | |
| छावनी | कन्टोन्मेन्ट | Cantonment |
| | ज | |
| जनगणना | सेन्सस | Census |
| जनजाति | ट्राइब | Tribe |
| जनशिक्षा निदेशक | डाइरॅक्टर ऑफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन | Director of Public Instruction |
| जनसंपर्क निदेशक | डाइरॅक्टर ऑफ़ पब्लिक रिलेशन्स | Director of Public Relations |
| जनस्वास्थ्य निदेशक | डाइरॅक्टर ऑफ़ पब्लिक हेल्थ | Director of Public Health |
| जल-प्रांगण | टेरीटोरियल वाटर्स | Territorial Waters |
| जामिन | बेल | Bail |
| जाली | कौंटरफीट | Counterfeit |
| ज़िला गण | डिस्ट्रिक्ट बोर्ड | District Board |
| ज़िला परिषद् | डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल | District Council |
| जीवाणु | बैक्टिरिया | Bacteria |
| जीविका | लाइव्लिहुड | Livelihood |
| ज्वार-जल | टाइडल वाटर्स | Tidal Waters |
| | ज्ञ | |
| ज्ञाप | मेमो | Memo |
| ज्ञापन | मेमोरेण्डम | Memorandum |
| | ट | |
| टंकण | कॉइनेज | Coinage |
| टांच | अट्टैच | Attach |
| टिकट बाबू | बुकिंग क्लर्क | Booking Clerk |
| | ड | |
| डाक के प्रमाणपत्र | सर्टिफ़िकेट ऑफ़ पोस्टिंग | Certificate of Posting |
| डाकगाड़ी | मेल ट्रेन | Mail Train |
| डाकथैला | मेल बैग | Mail Bag |

## त

| | | |
|---|---|---|
| तत्स्थानी | कॅरेस्पॉण्डिग | Corresponding |
| तदर्थ | अड हॉक | Ad hoc |
| तीर्ण | पास्ड् | Passed |
| तीर्व | एसेसमेन्ट | Assessment |
| तुरन्त | एक्सप्रेस | Express |
| तुरन्त-पत्र | एक्सप्रेस लेटर | Express letter |

## थ

| | | |
|---|---|---|
| थाना | पोलीस स्टेशन | Police Station |

## द्

| | | |
|---|---|---|
| दण्डनायक | मेजिस्टीरियल | Magisterial |
| दंडादेश | सेन्टेन्स | Sentence |
| दक्षता-पत्र | सर्टिफ़िकेट ऑफ़ कॉम्पीटेन्स | Certificate of Competence |
| दत्तक स्वीकरण (ग्रहण) | अडॉप्शन | Adoption |
| दस्तकारी | हैंडिक्रैफ्ट | Handicraft |
| दस्तावेज़ | डॉक्युमेंट | Document |
| दाई | मिडवाइफ़ | Midwife |
| दाखला | एण्ट्री | Entry |
| दातव्य | चैरिटीस | Charities |
| दाय | इन्हेरिटन्स | Inheritance |
| दायित्व | लायबिलिटी | Liability |
| दावा | क्लेम | Claim |
| दिन की पारी | डे शिफ़्ट | Day Shift |
| दिनांक मुद्रा | डेट स्टाम्प | Date Stamp |
| दिवाला | इन्सॉल्वेन्सी | Insolvency |
| दीवानी न्यायालय | सिविल कोर्ट | Civil Court |
| दुभाषिया | इन्टॅरप्रेटर | Interpreter |
| दृष्टांक | विसास | Visas |
| देय | फ़ीस | Fees |
| देर-फ़ीस | लेट फ़ी | Late Fee |
| देशीयकरण | नैचुरलाइज़ेशन | Naturalization |
| देशीय हवाई डाक | इन्लैण्ड एअर सर्विस | Inland Air Service |
| दोषप्रमाणित | कन्विक्टेड | Convicted |

| | | |
|---|---|---|
| दोषसिद्ध | कन्विक्शन | Conviction |
| द्वंद्व शासन | ड्यार्की | Dyarchy |
| द्वारा | बाइ-एजेन्सी | By-agency |
| द्विशाखन | बाइफ़र्केशन | Byfurcation |

**ध**

| | | |
|---|---|---|
| धन-विधेयक | मनी-बिल | Money-Bill |
| धर्म-निरपेक्ष राज्य | सेक्युलर स्टेट | Secular State |
| धर्मस्व | एन्डोमेन्ट | Endowment |
| धंधा | ऑक्युपेशन | Occupation |
| धारिता | कपासिटी | Capacity |

**न**

| | | |
|---|---|---|
| नकदी विभाग | कैश डिपार्टमेन्ट | Cash Dept. |
| नकलनवीस | कापिइस्ट | Copyist |
| नक्शानवीस | ड्राफ्ट्समैन | Draftsman |
| नक्ष | डिज़ाइन | Design |
| नगर क्षेत्र | म्युनिसिपल एरिया | Municipal Area |
| नगर निगम | म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन | Municipal Corporation |
| नगरपालिका | म्युनिसिपल बोर्ड | Municipal Board |
| नाकाफ़ी पता | इनसफिशिएण्ट अड्रेस | Insufficient Address |
| नागरिकता | सिटिज़नशिप | Citizenship |
| नामनकर्ता | नॉमिनेटर | Nominator |
| नाम-निर्देशन | नॉमिनेट | Nominate |
| नामित | नॉमिनी | Nominee |
| नावधिकरण | अडमिरल्टी | Admiralty |
| नसीहत | अडवाइस | Advice |
| निकाय | बॉडी | Body |
| निकास क्लर्क | इश्यू क्लर्क | Issue Clerk |
| निक्षेप निधि | सिङ्किङ्ग फ़ण्ड | Sinking fund |
| निक्षेप करना | डिपॉसिट | Deposit |
| निखात-निधि | ट्रेशर-ट्रोव | Treasure-trove |
| निगम | कॉर्पोरेशन | Corporation |
| निगमन | इनकॉर्पोरेशन | Incorporation |
| निगम निकाय | बॉडी कॉर्पोरेट | Body Corporate |

| | | |
|---|---|---|
| निदेश | डाइरॅक्शन | Direction |
| निदेशक | डाइरॅक्टर | Director |
| निधि | फ़ण्ड | Fund |
| निबंधन | रजिस्ट्रेशन | Registration |
| निबद्ध | रजिस्टर्ड | Registered |
| नियंत्रक | कॅन्ट्रोलर | Controller |
| नियंत्रक महालेख परीक्षक | कॅन्ट्रोलर एण्ड ऑडिटर जॅनरल | Controller and Auditor General |
| नियंत्रण | कॅन्ट्रोल | Control |
| नियोजक उत्तरवादिता / नियोजक दातव्य | एम्प्लायर्स लयबिलिटी | Employer's liability |
| निरीक्षक | इन्स्पेक्टर | Inspector |
| निरीक्षण अफ़सर | इन्स्पेक्टिङ्ग ऑफ़ीसर | Inspecting Officer |
| निरीक्षिका | इन्स्पेक्ट्रेस | Inspectress |
| निरोध | कस्टॅडी, डिटेन्शन | Custody, Detention |
| निरोधा | क्वारंटाइन | Quarantine |
| निर्णायक मत | कैस्टिंग वोट | Casting Vote |
| निर्धारण | एसेस्मेन्ट | Assesment |
| निर्यात | एक्सपोर्ट | Export |
| निर्यात-कर / निर्यातशुल्क | एक्सपोर्ट टैक्स | Export Tax |
| निर्यात भाग | एक्सपोर्ट्स डिविशन | Export Division |
| निर्वचन | इंटरप्रॅटेशन | Interpretation |
| निर्वसीयत | इंटेस्टेट | Intestate |
| निर्वहन | डिस्चार्ज | Discharge |
| निर्वाचन क्षेत्र | कान्स्टिट्यूएन्सी | Constituency |
| निर्वाचित | ऍलेक्टेड | Elected |
| निर्वासन | ट्रैन्सपोर्टेशन | Transportation |
| निर्वाह निधि | प्रॉविडेन्ट फ़ंड | Provident Fund |
| निर्वाह मजूरी | लिविंग वेज | Living Wage |
| निलंबन | सस्पेंड, सस्पेशन | Suspend, Suspension |
| निवारक निरोध | प्रिवेंटिव डिटेंशन | Preventive Detention |
| निवृत्त होना | रिटायरमेन्ट | Retirement |

| | | |
|---|---|---|
| निवृत्ति | रिटायरमेंट | Retirement |
| निवृत्ति वेतन | पेंशन | Pension |
| निषिद्ध | कॉन्ट्रेबंड | Contraband |
| निष्क्रिय लेखा | डेट ए. सी. | Date A. C. |
| निष्ठा | अल्लीजियन्स | Allegiance |
| नैमित्तिक छुट्टी | कैज्युअल लीव | Casual Leave |
| नोंदना | रजिस्टर (क्रि.) | Register (V.) |
| नौकरशाही | ब्यूरोक्रैसी | Bureaucracy |
| नौकाधिकरण | अडमिराल्टी | Admiralty |
| नौसेना | नैवल फ़ोर्स | Naval Force |
| न्यस्त करना | एन्ट्रस्ट | Entrust |
| न्यायपालिका | जुडिशियरी | Judiciary |
| न्यायाधिकरण | ट्रिब्यूनल | Tribunal |
| न्यायाधिपति | जस्टिस | Justice |
| न्यायाधीश | जज | Judge |
| न्यायालय | कोर्ट | Court |
| न्यायालय अवमान | कॅन्टेम्प्ट ऑफ़ कोर्ट | Contempt of Court |
| न्यायिक मुद्रांक | जूडिशियल स्टाम्प | Judicial Stamp |
| न्यास | ट्रस्ट | Trust |
| न्यास प्रवर्तक | ऑथर ऑफ़ ऍ ट्रस्ट | Author of a Trust |

## प

| | | |
|---|---|---|
| पंच | आर्बिट्रेटर | Arbitrator |
| पंच बिठाना (विवाचन) | आर्बिट्रेशन | Arbitration |
| पंचार | अवार्ड | Award |
| पंजी | रजिस्टर्ड | Registered |
| पंजीबन्धन | रजिस्ट्रेशन | Registration |
| पक्ष | पार्टी | Party |
| पटल | कौंउटर, टेबुल | Counter, Table |
| पट्टादाता | लेस्सर | Lessor |
| पट्टाधारी | लेस्सी | Lessee |
| पड़ताल, पड़तालक | चेक, चेकर | Check, Checker |
| पड़ताल-पत्री | चेक स्लिप | Check Slip |
| पण लगाना | बेटिंग | Betting |
| पणन अफ़सर | मार्केटिंग ऑफ़ीसर | Marketting Officer |

| | | |
|---|---|---|
| पण्य चिन्ह | मर्चेण्डाइस मार्क | Merchandise Mark |
| पत | क्रेडिट | Credit |
| पत्रन अफसर | पोस्ट ऑफ़ीसर | Post Officer |
| पत्र-पेटी | लेटर-बाक्स | Letter-box |
| पथ-कर | टोल | Toll |
| पथनियम | रूल ऑफ़ दि रोड | Rule of the Road |
| पद | पोस्ट, आफ़ीस | Post, Office |
| पदच्युत करना | डिस्मिस | Dismiss |
| पदत्याग | रेज़िग्नेशन | Resignation |
| पदसंज्ञा | डेज़िग्नेशन | Designation |
| पदाधिकारी | ऑफ़ीसर | Officer |
| पदावधि | टेन्यूर | Tenure |
| पदावास | अफ़ीशियल रेसिडेंस | Official Residence |
| पदेन | ऍक्स-ऑफ़ीसर | Ex-Officer |
| परकीकरण | ऍलीनेशन | Alienation |
| परख अफ़सर | प्रॉबेशन ऑफ़ीसर | Probation Officer |
| परखपर | प्रॉबेशनर | Probationer |
| परम श्रेष्ठ | हिज एक्सॅलेंसी | His Excellency |
| परमादेश | मैण्डामस | Mandamus |
| परराष्ट्र प्रभाग | ऍक्स्टर्नल अफ़ेयर्स डिविशन | External Affairs Division |
| परिचर | अटेंडेंट | Attendant |
| परित्राण | सेफ़-गार्ड | Safe-guard |
| पारितोषिक | कॉम्पेन्सेशन | Compensation |
| परित्याग | अबेंडनमेण्ट | Abandonment |
| परिपत्र | सर्कुलर | Circular |
| परिप्रश्न | ऍनक्वायरी | Enquiry |
| परिलब्धि | पॅरक्विसाइट | Perquisite |
| परिवहन | कारिज, ट्रेन्स्पोर्ट | Carriage, transport |
| परिवहन कमिश्नर | ट्रेन्स्पोर्ट कमिशनर | Transport Commissioner |
| परिवहन मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ ट्रेन्स्पोर्ट | Ministry of Transport |
| परिषद | कौन्सिल | Council |

| | | |
|---|---|---|
| **परिसहायक** | एड-डी-कैम्प | Aid-de-camp |
| **परिसीमन** | डीलिमिटेशन | Delimitation |
| **परिसीमा** | लिमिटेशन | Limitation |
| **परिहार** | लिमिशन | Limision |
| **परिहार विधेयक** | बिल ऑफ़ इन्डेम्निटी | Bill of Indemnity |
| **परोक्ष निर्वाचन** | इन्डाइरेक्ट एलेक्शन | Indirect Election |
| **परोक्षी** | प्रॉसी | Prosey |
| **पर्यवेक्षण** | इन्स्पेक्शन | Inspection |
| **पर्यालोचन** | डेलिबरेट | Deliberate |
| **पशु-अवरोध** | केट्टिल-पौंड | Cattle-pound |
| **पशुचिकित्सा निदेशक** | डाइरेक्टर ऑफ़ वेटरिनेरी सर्विसस | Director of Veterinary Services |
| **पहरा, निगरानी** | वाच एण्ड वार्ड | Watch and Ward |
| **पहली तिमाही** | फर्स्ट कार्टर | First Quarter |
| **पाठ्यपरिषद्** | बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़ | Board of Studies |
| **पात्र** | एलिजिबिल | Eligible |
| **पात्रता** | एलिजिबिलिटी | Eligibility |
| **पारण** | पास | Pass |
| **पार-पत्र** | पासपोर्ट | Passport |
| **पारित** | पास्ड | Passed |
| **पालक, रक्षकपाल** | कीपर | Keeper |
| **पालिका नगर** | म्यूनिसिपल टौन | Municipal Town |
| **पावती** | रसीट, एम०ओ० अक्नॉलेज़मेण्ट | Receipt, M.O. Acknowledgement |
| **पिछड़े वर्ग कमीशन** | बैकवर्ड क्लासेस कमिशन | Backward Classes Commission |
| **पीठासीन पदाधिकारी** | प्रिसाइडिंग ऑफ़ीसर | Presiding Officer |
| **पीठासीन होना** | प्रिसाइड | Preside |
| **पुंज प्रकाश** | फ़्लॅड लाइट | Flood-light |
| **पुनः प्रेषण केन्द्र** | डेड लेटर ऑफ़ीस | Dead Letter Office |
| **पुनरीक्षण** | रेविशन | Revision |
| **पुनर्वास मंत्रालय** | मिनिस्ट्री ऑफ़ रेफ़्यूजी | Ministry of Refugee |
| **पुनर्विलोकन** | रेव्यू | Review |
| **पुरःस्थापन** | इन्ट्रॉडियस | Introduce |

| | | |
|---|---|---|
| पुरःस्थापना | इन्ट्रॉडक्शन | Introduction |
| पुरा विद्या | आर्कियोलाजिकल | Archeological |
| पुष्टि करना | कन्फ़र्म | Confirm |
| पुष्टीकरण | कन्फ़र्मेशन | Confirmation |
| पूछताछ | एॅनक्काइरी | Enquiry |
| पूछताछ कार्यालय | एॅनक्काइरी ऑफीस | Enquiry Office |
| पूर्ण न्यायमंडल | फ़ुल बेंच | Full Bench |
| पूर्ण हानि | डेड लॉस | Dead Loss |
| पूर्णाधिकारी पूत | मिनिस्टर प्लेनिपोटेंशियरी | Minister Plenipotentiary |
| पूर्त | चैरिटी | Charity |
| पूर्त धार्मिक धर्मस्व | चैरिटेबुल अण्ड रेलिजियस एंडोमेंट | Chairtable and Religious Endowment |
| पूर्त संस्था | चैरिटेबुल इंस्टिट्यूट | Charitable Institute |
| पूँजी | कैपिटल | Capital |
| पृष्ठांकन | एन्डोर्स | Endorse |
| पृष्ठांकित | एन्डोर्स्ड | Endorsed |
| पेंशनभोगी | पेंशनर | Pensioner |
| पेशगी | अडवांस | Advance |
| पोषण करना | मेंन्टेन | Maintain |
| पौद्वाटिका | नर्सरी | Nursery |
| पौरत्व | सिटिज़नशिप | Citizenship |
| पूरा करना | अकॉम्प्लिश | Accomplish |
| प्रकट करना | डिस्कॅवरी | Discovery |
| प्रकाशन | पब्लिकेशन | Publication |
| प्रग्रहण | अरेस्ट | Arrest |
| प्रचलित | करेंट | Current |
| प्रचार कार्यालय | पब्लिसिटी ऑफ़ीस | Publicity Office |
| प्रचालक | ऑपरेटर | Operator |
| प्रजातंत्र | डेमॉक्रेसी | Democracy |
| प्रतिकर | कॉम्पेंसेशन | Compensation |
| प्रतिकृति | फासिमिल इम्प्रेशन | Facsimile Impression |
| प्रतिज्ञान | अफ़र्मेशन | Affirmation |

| | | |
|---|---|---|
| **प्रतिनिधि** | रेप्रसेंटेटिव | Representative |
| **प्रतिनिधित्व** | रेप्रसेंटेशन | Representation |
| **प्रतिपत्रक** | कौंटरफ़ाइल | Counterfoil |
| **प्रतिपत्री** | प्रॉक्सी | Proxy |
| **प्रतिपालक अधिकरण** | कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स | Court of Wards |
| **प्रतिभूति** | सेक्युरिटी | Security |
| **प्रतिरक्षा** | डिफ़ेन्स | Defence |
| **प्रतिलिपि** | कॉपी | Copy |
| **प्रतिलिप्यधिकार** | कॉपीराइट | Copyright |
| **प्रतिवेदन** | रिपोर्ट | Report |
| **प्रतिव्यक्ति-कर** | कैपिटेशन टैक्स | Capitation Tax |
| **प्रतिषेध** | प्रॉहिबिशन | Prohibition |
| **प्रतिहस्ताक्षर करना** | कौंटरसाइन | Countersign |
| **प्रतिहस्ताक्षरित** | कौंटरसाइन्ड | Countersigned |
| **प्रतीक्षी उत्तराधिकारी** | हिज़ एक्स्पेक्टैंट | His Expectant |
| **प्रत्यक्ष निर्वाचन** | डाइरॅक्ट एलेक्शन | Direct Election |
| **प्रत्यय पत्र** | लॅटर्स ऑफ़ क्रेडिट | Letters of Credit |
| **प्रत्याभूति** | गारण्टी | Guarantee |
| **प्रत्यायुक्त** | डेलिगेट | Deligate |
| **प्रत्यायोजित** | डेलिगेटेड | Deligated |
| **प्रथम सदन** | लोयर हाउस | Lower House |
| **प्रधान निदेशक** | डाइरॅक्टर जॅनरल | Director General |
| **प्रधान निदेशालय** | डाइरॅक्टॅरेट जॅनरल | Directorate General |
| **प्रधान प्रबन्धक** | जॅनरल मैनेजर | General Manager |
| **प्रधान मंत्री** | प्राइम मिनिस्टर | Prime Minister |
| **प्रधान लेखाकार** | अकौंटेंट जॅनरल | Accountant General |
| **प्रधानाचार्य** | प्रिन्सिपल | Principal |
| **प्रपत्र** | फ़ॉर्म | Form |
| **प्रबन्ध संपादक** | मैनेजिंग ऍडिटर | Managing Editor |
| **प्रबन्धाधिकारी** | अडमिनिस्ट्रेशन ऑफ़ीसर | Administration Officer |
| **प्रभाग अध्यक्ष** | डिविशनल हेड | Divisional Head |
| **प्रमाणपत्र** | सर्टिफ़िकेट | Certificate |
| **प्रमाणीकरण** | आथेन्टिकेशन | Authentication |

| | | |
|---|---|---|
| प्रमोद-कर | ऍन्टरटेन्मेंट टैक्स | Entertainment Tax |
| प्रयुक्ति | अप्लिकेशन | Application |
| प्रयोग डाकघर | एक्स्पेरिमेंटल पोस्ट-ऑफ़ीस | Experimental Post-office |
| प्रवर समिति | सॅलेक्ट कमिटी | Select Committee |
| प्रविलंब | डिप्राइव | Deprive |
| प्रवेशन | एकसॅशन | Accession |
| प्रव्रजन | माइग्रेशन | Migration |
| प्रशासन | अड्मिनिस्ट्रेशन, अड्मिनिस्टर | Administration, Administer |
| प्रशासित | अड्मिनिस्टर्ड | Administered |
| प्रशासक | अड्मिनिस्ट्रेटर | Administrator |
| प्रशासकीय नियंत्रण | अड्मिनिस्ट्रेटिव कॅन्ट्रोल | Administrative Control |
| प्रशासन विभाग | अड्मिनिस्ट्रेशन डिविशन | Administration Division |
| प्रशासन सत्ता | अड्मिनिस्ट्रेटिव पॅवर | Administrative Power |
| प्रशासनीय | अड्मिनिस्ट्रेटिव | Administrative |
| प्रशासनीय कृत्य | अड्मिनिस्ट्रेटिव फ़ंक्शन्स | Administrative Functions |
| प्रशिक्षण | ट्रेनिग | Training |
| प्रशिक्षण निदेशालय | डाइरॅक्टरेट ऑफ़ ट्रेनिंग | Directorate of Training |
| प्रसारक | ब्रॉडकैस्टर | Broadcaster |
| प्रसारण | ब्रॉडकैस्टिंग | Broadcasting |
| प्रस्थापना | प्रॉपोसल | Proposal |
| प्राक्कलक | ऍस्टिमेटर | Estimator |
| प्राक्कलन | ऍस्टिमेट | Estimate |
| प्राग्विश्वविद्यालय | प्री-यूनिवर्सिटी | Pre-University |
| प्रादेशिक | रीजनल | Regional |
| प्राधिकार, प्राधिकारी | अथॉरिटी | Authority |
| प्राधिकृत | ऑथोराइज़ | Authorise |

| | | |
|---|---|---|
| प्रापण | अक्रू | Accrue |
| प्राप्ति-पत्र | अक्नालेजमेंट फ़ॉर्म | Acknowledgement Form |
| प्रासंगिक | इन्सिडेंटल | Incidental |
| प्रेषक | कॅन्साइनर | Consignor |
| प्रेषण | ट्रेन्समिटिंग सेक्शन | Transmitting Section |
| प्रेषण क्लर्क | डॅस्पैचर | Despatcher |
| प्रेष्य | कॅन्साइन्मेंट | Consignment |
| प्रोद्भवन | अक्रू | Accrue |

## फ

| | | |
|---|---|---|
| फर्जी पता | फिक्टिशियस अड्रेस | Fictitious Address |
| फुटकर क्लर्क | वाइस क्लर्क | Vice Clerk |
| फेरी गश्त | बीट पोस्टल | Beat Postal |
| फ़ौजदारी न्यायालय | क्रिमिनल कोर्ट | Criminal Court |

## ब

| | | |
|---|---|---|
| बंटन | अलॉट | Allot |
| बंटवारा | अलॉकेशन | Allocation |
| बन्धक | मॉर्टगेज | Mortgage |
| बधाई तार | ग्रीटिङ्ग टेलिग्राम | Greeting Telegram |
| बहिर्शुल्क | कस्टॅम ड्यूटी | Custom Duty |
| बहुमत | मेजॉरिटी | Majority |
| बालचर | स्कौट | Scout |
| बाल हरकारा | बॉय मेसेजर | Boy Messenger |
| बाल हित केन्द्र | चाइल्ड वेलफ़ेअर सेंटर | Child Welfare Centre |
| बिल्ला | बैड्ज़ | Badge |
| बीमा किया हुआ थैला | इन्स्युर्ड बैग | Insured Bag |
| बीमा-पत्र | पॉलिसी ऑफ़ इंश्यूरेंस | Policy of Insurance |
| बुनियादी शिक्षा | बेसिक एज्युकेशन | Basic Education |
| बेकार माल | डॅड स्टॉक | Dead Stock |
| बैठक | सिटिंग | Sitting |
| बोलचाल की भाषा | कॅलोकिअल लैंग्वेज | Colloquial Language |

## भ

| | | |
|---|---|---|
| भत्ता | अलवन्स | Allowance |
| भविष्य निधि | प्रॉविडेंट फ़ण्ड | Provident Fund |
| भागिता | पार्टनरशिप | Partenrship |
| भाटक | रेण्ट | Rent |
| भाड़ा-नियंत्रक | रेण्ट कण्ट्रोलर | Rent Controller |
| भारग्रस्त संपदा | एनकंबर्ड स्टेट्स | Encumberd States |
| भारतीय पुलिस सेवा | इंडियन पोलिस सर्विस | Indian Police Service |
| भारित करना | चार्ज | Charge |
| भुगतान संज्ञापन | अडवाइस ऑफ़ पेमेंट | Advice of Payment |
| भू-अभिलेख | लैण्ड रिकॉर्ड | Land Record |
| भू-धृति | लैण्ड टेन्यूर्स | Land Tenures |
| भू-राजस्व | लैण्ड रेवन्यु | Land Revenue |
| भोजन यान | डाइनिंग कार | Dining Car |
| भ्रष्टाचार निरोध विभाग | एन्फोर्समेन्ट डिपार्टमेन्ट | Enforcement Dept. |

## म

| | | |
|---|---|---|
| मंडल | डिस्ट्रिक्ट | District |
| मंडल अधीक्षक | डिविज़न सुपरिंटेंडेंट | Division Supt. |
| मंडल निरीक्षक | सर्कल इन्स्पेक्टर | Circle Inspector |
| मंडल लेखाकार | डिविज़नल अकौंटेंट | Divisional Accountant |
| मंडल वन अफ़सर | डिविज़नल फ़ॉरेस्ट ऑफ़ीसर | Divisional Forest Officer |
| मंडलाधीश (मंडलायुक्त) | डेप्युटी कमिश्नर | Deputy Commissioner |
| मंडली | बोर्ड | Board |
| मंत्रणा | अडवाइस | Advice |
| मंत्रणा देना | अडवाइस | Advise |
| मंत्रणा परिषद् | अडवाइज़री कौन्सिल | Advisory Council |
| मंत्रिवर्ग | ट्रेशरी बेंचेस | Treasury Benches |
| मंत्रिमंडल | कैबिनेट | Cabinet |
| मत | वोट | Vote |
| मतदाता | वोटर | Voter |
| मतदान | वोटिंग | Voting |

| | | |
|---|---|---|
| मताधिकार | सफ्रेज, फ्रैंचाइज़ | Suffrage, Franchise |
| मध्यस्थ | एर्बिट्रेटर, मीडियेटर | Arbitrator, Mediator |
| मध्यस्थ-निर्णय | एर्बिट्रेशन | Arbitration |
| मनीआर्डरप्राप्ति सूचना | एम. ओ. एक्नॉलेजमेंट | M. O. Acknowledge- [ment |
| मनुष्यगणना | सेंसस | Census |
| मनोनयन | नॉमिनेट | Nominate |
| मनोरंजन-कर | एंटरटेन्मेंट टैक्स | Entertainment Tax |
| मसि-पत्र | कार्बन पेपर | Carbon Paper |
| महाजनी | बैंकिङ्ग | Banking |
| महाधिवक्ता | एडवोकेट जॅनरल | Advocate General |
| महाप्रशासक | एडमिनिस्ट्रेटिव जॅनरल | Administrative General |
| महाभियोग | अन्पैचमेंट | Unpachment |
| महामंत्री | जॅनरल सेक्रेटरी | General Secretary |
| महिला वीथी | लेडिज़ गैलरी | Ladies Gallery |
| मांग-पत्र | डिमांड नोट | Demand Note |
| माध्यमिक | सेकंडरी | Secondary |
| मानदेय | ऑनरेरियम | Honorarium |
| मानव पण्य | ट्रैफ़िक इन ह्यूमन बीइंग्स | Traffic in Human beings |
| मानहानि | डिफ़मेशन | Defamation |
| मार्ग-प्रदर्शन | गाइडन्स | Guidance |
| माल पानेवाला | कॉन्साइनी | Consignee |
| मिसिल सहायक | डीलिंग असिस्टेंट | Dealing Assistant |
| मीन-पण्णै (क्षेत्र) | फ़िशरी | Fishery |
| मुआवजे का दावा | क्लेम फ़ॉर कॉम्पेन्सेशन | Claim for Compen- [sation |
| मुखिया | हेडमैन | Headman |
| मुख्तार | एटॅर्नी | Attorney |
| मुख्य | चीफ़ | Chief |
| मुख्य आयुक्त | चीफ़ कमिश्नर | Chief Commissioner |
| मुख्य चुनाव अफ़सर | चीफ़ इलेक्शन ऑफ़ीसर | Chief Election Officer |
| मुख्य प्रशासक | चीफ़ एडमिनिस्ट्रेटर | Chief Administrator |
| मुख्य मंत्री | चीफ़ मिनिस्टर | Chief Minister |

| | | |
|---|---|---|
| मुख्य लेखाकार | हेड एकाउण्टेंट | Head Accountant |
| मुख्य संपादक | चीफ़ एडिटर | Chief Editor |
| मुख्यालय | हेडक्वार्टर्स | Headquarters |
| मुद्रा | सील | Seal |
| मुद्रांक शुल्क | स्टांप ड्यूटी | Stam Dupty |
| मुद्रा अफ़सर | करेन्सी ऑफ़ीसर | Currency Officer |
| मुनासिब | एडवाइज़ेबल | Advisable |
| मूलधन | कैपिटल | Capital |
| मूलधन मूल्य | कैपिटल वैल्यु | Capital Value |
| मूल्यह्रास प्रभार | डिप्रेसिएशन चार्ज | Depreciation Charge |
| मोटर परिवहन अनुभाग | मोटर ट्रांस्पोर्ट सेक्शन | Motor Transport Section |

## य

| | | |
|---|---|---|
| यन्त्र-शास्त्र | इंजिनियरिंग | Engineering |
| यथामूल्य | अडवेलोरम | Advalorem |
| याचिका | पेटिशन | Petition |
| यातायात | ट्रैफ़िक | Traffic |
| यात्राविराम | ब्रेक ऑफ़ जॅर्नी | Break of Journey |
| योगकाल | ज्वाइनिंग टाइम | Joining Time |

## र

| | | |
|---|---|---|
| रक्षा मंत्रालय | डिफ़ेंस मिनिस्ट्री | Defence Ministry |
| रक्षित वन | रॅज़र्व फ़ॉरेस्ट | Reserve Forest |
| रद्द करना | एन्न्युलमेंट | Annulment |
| रसीदी | एक. ड्यू | Ack. due |
| राजगामी | ऍस्चीट | Escheat |
| राजनय | डिप्लोमेसी | Diplomacy |
| राजपात्रित | गजेटेड | Gazetted |
| राजभवन | गवर्नमेंट हाउस (इन स्टेट्स) | Govt. House (In States) |
| राजस्व | रेवेन्यु | Revenue |
| राजस्व न्यायालय | रेवेन्यु कोर्ट | Revenue Court |
| राज्य-क्षेत्र | टेरिटॅरी | Territory |
| राज्य-निधि | स्टेट फंड | State Fund |
| राज्यपरिषद | कौन्सिल ऑफ़ स्टेट्स | Council of States |
| राज्यपाल | गवर्नर | Governor |
| राष्ट्र-ऋण | पब्लिक डेब्ट | Public debt |

| | | |
|---|---|---|
| राष्ट्रपति | प्रेसिडेंट | President |
| राष्ट्रपति-भवन | गवर्नमेंट हाउस (इन सेंटर) | Govt. House (In Centre) |
| राष्ट्रमंडल | कॉमन वेल्थ | Common Wealth |
| राष्ट्रीय कला वीथी | नेशनल आर्ट गेलरी | National Art Gallery |
| राष्ट्रीय कैडेट दल | नेशनल कैडेट कोर | National Cadet Corps |
| राष्ट्रीय राजपथ | नेशनल हाइवेज़ | National Highways |
| राष्ट्रों की विधि | लॉज़ ऑफ़ नेशन्स | Laws of Nations |
| रिक्तता (स्थान) | वैकेन्सी | Vacancy |
| रिक्थ (रिक्ती) | प्रॉपर्टी | Property |
| रियायती तार | कन्सेशनल टेलिग्राम | Concessional Telegram |
| रियायती दिन | डेज़ ऑफ़ ग्रेस | Days of Grace |
| रिहायशी | रेसिडेंट | Resident |
| रुकावट | बार | Bar |
| रूढ़ि | कस्टम | Custom |
| रूप | फॉर्म | Form |
| रूपभेद | मोडिफ़िकेशन | Modification |
| रूपांकन | डिज़ाइन | Design |
| रेलवे मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ रेलवेज़ | Ministry of Railways |
| रोक संकेत | स्टॉप सिग्नल | Stop Signal |
| रोग जाँच अफ़सर | डिज़ीज़ इन्वेस्टिगेशन ऑफ़ीसर | Desease Investigation Officer |
| रोज़गार कार्यालय | एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज | Employment Exchange |

ल

| | | |
|---|---|---|
| लगान | रेंट | Rent |
| लघूकरण | कॉम्प्यूट | Commute |
| लंबमान / लंबित | पेंडिंग | Pending |
| लागत | कॉस्ट | Cost |
| लागत लेखा शाखा | कॉस्ट एकाउण्ट्स ब्रैंच | Cost Accounts Branch |

| | | |
|---|---|---|
| लागू होना | अप्लिकेशन (नामधातु) | Application |
| लाभांश | डिविडेंड | Dividend |
| लाल फीतेशाही | रेड टेपिज़्म | Red Tapism |
| लिखत | इन्स्ट्रूमेंट | Instrument |
| लेखन-सामग्री | स्टेशनरी | Stationery |
| लेखा | एकाउन्ट | Account |
| लेखाकार | एकाउन्टेन्ट | Accountant |
| लेखादेय बात | एकाउन्टेबल आर्टिकल | Accountable Article |
| लेखा परीक्षा | ऑडिट | Audit |
| लेख्य | डॉक्युमेंट | Document |
| लेना-देना | डीलिंग्स | Dealings |
| लोक अधिसूचन | पब्लिक नोटिफिकेशन | Public Notification |
| लोक सभा | हाउस ऑफ़ दि पीपुल | House of the People |
| लोक समाज | कॉम्युनिटी | Community |
| लोकसेवक | पब्लिक सर्वेंट | Public Servant |
| लोकसेवा | पब्लिक सर्विस | Public Service |
| लोकसेवा कमीशन | पब्लिक सर्विस कमीशन | Public Service Commission |
| लोकसेवा आयोग | पब्लिक सर्विस कमीशन | Public Service Commission |

## व

| | | |
|---|---|---|
| वकालत करना | प्लीड | Plead |
| वचन-पत्र | प्रॉमिसरी नोट | Promissory Note |
| वचन-बन्ध | एंगेजमेंट | Engagement |
| वनिक पोत | मर्चैण्ट मेरिन | Merchant Marine |
| वन अनुसंधानशाला | फॉरेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट | Forest Research Institute |
| वन संधारक | कंज़र्वेटर ऑफ़ फ़ॉरेस्ट | Conservator of Forest |
| वयस्क | मैजर | Major |
| वयस्क मताधिकार | एडल्ट सफ्रेज | Adult Suffrage |
| वरी | ड्यूटी | Duty |
| वसीयत | विल | Will |
| वहन-पत्र | बिल ऑफ़ लेडिंग | Bill of lading |
| वाणिज्य अफ़सर | कॉमर्शियल ऑफ़ीसर | Commercial Officer |

| | | |
|---|---|---|
| वाणिज्य एजेंट | मर्केण्टाइल एजेंट | Mercantile Agent |
| वाणिज्य दूत | कांसल | Consul |
| वाणिज्य मंडल | चैंबर ऑफ़ कॉमर्स | Chamber of Commerce |
| वातानुकूलन प्रभाग | एयरकंडिशनिंग डिविज़न | Airconditioning Division |
| वाद | काज़ | Cause |
| वाद-पद | इस्यू | Issue |
| वाद-प्रतिवाद | कॉण्ट्रॅवर्सी | Controversy |
| वाद-मूल | काज़ ऑफ़ ऐक्शन | Cause of Action |
| वाद-विषय | सब्जेक्ट मैटर | Subject Matter |
| वायु पथ | एयरवेज़ | Airways |
| वार्षिक वित्त विवरण | एन्युअल फाइनेंशियल स्टेटमेंट | Annual Financial Statement |
| वार्षिकी | एनुइटीज | Annuities |
| वास्तविक | बोनाफ़ाइड | Bonafide |
| विकलन | (वी) डेबिट | (V) Debit |
| विक्रय-कर | सेल्स टैक्स | Sales Tax |
| विकास कमिश्नर | डेवलप्मेंट कमिश्नर | Development Commissioner |
| विकास मन्त्री | डेवलप्मेंट मिनिस्टर | Development Minister |
| वितरण अनुभाग | डिस्ट्रीब्युशन सेक्शन | Distribution Section |
| वितरण गाड़ी | डिलिवरी वैन | Delivery Van |
| वित्त मन्त्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ फाइनेंस | Ministry of Finance |
| वित्त मन्त्री | फाइनेंस मिनिस्टर | Finance Minister |
| वित्त विधेयक | फाइनेंस बिल | Finance Bill |
| विदेश सचिव | फॉरेन सेक्रेटरी | Foreign Secretary |
| विदेशीय विनिमय | फॉरेन एक्सचेंज | Foreign Exchange |
| विधान | लेजिस्लेशन | Legislation |
| विधान परिषद् | लेजिस्लेटिव कौन्सिल | Legislative Council |
| विधान मंडल | लेजिस्लेचर | Legislature |
| विधान सभा | लेजिस्लेटिव एसेम्बली | Legislative Assembly |
| विधायिनी शक्ति | लेजिस्लेचर पॉवर | Legislature Power |

| | | |
|---|---|---|
| **विधि प्रश्न** | क्वेस्ट्यन ऑफ़ लॉ | Question of Law |
| **विधि मान्य** | लीगल टेन्डर | Legal Tender |
| **विधि वक्ता** | बैरिस्टर | Barrister |
| **विधि व्यवसायी** | लीगल प्रैक्टिशनर | Legal Practitioner |
| **विधि सलाहकार** | लीगल एडवाइजर | Legal Advisor |
| **विधेयक** | बिल | Bill |
| **विनिमय-पत्र** | बिल ऑफ़ एक्स्चेंज | Bill of Exchange |
| **विनियम** | रेग्युलेशन | Regulation |
| **विनियमन** | रेग्युलेट | Regulate |
| **विनियोग** | एप्रॉप्रिएशन | Appropriation |
| **विनियोग विधेयक** | एप्रॉप्रिएशन बिल | Appropriation Bill |
| **विभाग प्रतिनिधि** | डिपार्टमेन्टल रिप्रजेंटेटिव | Departmental Representative |
| **वृत्ति** | प्रोफ़ेशन | Profession |
| **वृत्ति-कर** | प्रोफ़ेशन टैक्स | Profession Tax |
| **वेतन** | पे, सालरी | Pay, Salary |
| **विमान परिवहन** | एअर नेविगेशन | Air Navigation |
| **विमान यातायात** | एअर ट्राफ़िक | Air Traffic |
| **विमान बल** | एअर फ़ोर्सेज़ | Air Forces |
| **विरोधी कक्ष** | ऑपोजिशन बेंच | Opposition Bench |
| **विरोधी पक्ष** | ऑपॉजिशन पार्टी | Opposition Party |
| **विलंब शुल्क** | डेम्युरेज | Demurrage |
| **विलेख** | डीड | Deed |
| **विवरणी** | रिटर्न | Return |
| **विवाचक** | आर्बिट्रेटर | Arbitrator |
| **विवाचन** | आर्बिट्रेशन | Arbitration |
| **विवादग्रस्त बिल** | बिल डिस्प्युटेड | Bill disputed |
| **विशेषाधिकार** | प्रिविलेज | Privilege |
| **विश्वस्त** | ऑथेण्टिक | Authentic |
| **विश्वास प्रस्ताव** | मोशन ऑफ़ कॉन्फिडेंस | Motion of Confidence |
| **विसर्जन** | डिस्पर्स | Disperse |
| **विस्फोटक** | एक्स्प्लोसिव | Explosive |
| **वेतनदाता** | पे मास्टर | Pay Master |
| **वेला जल** | टाइडल वाटर्स | Tidal Waters |

| | | |
|---|---|---|
| वोटदाता | वोटर | Voter |
| व्यक्तिक सहायक | पर्सनल असिस्टेंट | Personal Assistant |
| व्यपगत होना | लैप्स | Lapse |
| व्यवहार | सिविल | Civil |
| व्यवहार अदालत | सिविल कोर्ट | Civil Court |
| व्यवहार लाना | स्यू | Sue |
| व्यवहार वाद | सिविल स्यूट | Civil Suit |
| व्यवहार शक्ति | सिविल पॉवर | Civil Power |
| व्यवहारालय | सिविल कोर्ट | Civil Court |
| व्यस्तकाल | बिज़ी सीज़न | Busy Season |
| व्यापार चिन्ह | ट्रेडमार्क | Trademark |
| व्यापार संघ | ट्रेड यूनियन | Trade Union |
| व्यावृत्ति | सेविंग्स | Savings |
| शरणार्थी विभाग | रिफ़्युजी डिपार्टमेंट | Refugee Dept. |
| शलाका | बालट | Ballot |
| शाखा दफ़्तर | ब्रांच ऑफ़ीस | Branch Office |
| शासक | रूलर | Ruler |
| शासन | गवरनेंस, गवर्न, गवर्नमेंट | Governance,Govern, Government |
| शासी निकाय | गवर्निंग बॉडी | Governing Body |
| शास्ति | पेनाल्टी | Penalty |
| शिक्षा मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ एज्युकेशन | Ministry of Education |
| शिक्षु | एप्रेंटिस | Apprentice |
| शिल्पी-प्रशिक्षण | टेक्निकल ट्रेनिंग | Technical Training |
| शिस्त | डिसिप्लिनेरी | Disciplinary |
| शिल्पज्ञ | टेक्निशियन | Technician |
| शोधना | रिसर्च | Research |
| श्रम मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ लेबर | Ministry of Labour |
| श्रम विभाग | लेबर डिपार्टमेंट | Labour Dept. |
| श्रमिक संघ | लेबर यूनियन | Labour Union |
| श्रेष्ठि चत्वर | स्टॉक एक्सचेंज | Stock Exchange |
| संकेत | सिग्नल | Signal |
| संकेतक | सिग्नलर | Signaller |

| | | |
|---|---|---|
| संक्रमण | ट्रांसिशन | Transition |
| संगणना | कॉम्प्यूट | Compute |
| संघटित | कॉन्सोलिडेटेड | Consolidated |
| संचरण मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ कॉम्युनिकेशन | Ministry of Communication |
| संचार साधन | मीन्स ऑफ़ कॉम्युनिकेशन | Means of Communication |
| संचित निधि | कॉन्सोलिडेटेड फ़ंड | Consolidated Fund |
| संज्ञापन | एडवाइस | Advice |
| संधारक | कंसर्वेटर | Conservator |
| संपतन | कॉइन्सिडेंस | Coincidence |
| संपत्ति हस्तान्तरण पत्र | एस्युरंस ऑफ़ प्रॉपर्टी | Assurance of Property |
| संपर्क अफसर | लिएसन ऑफ़ीसर | Liason Officer |
| संपादकीय अनुभाग | एडिटोरियल सेक्शन | Editorial Section |
| संबोधित | एड्रेस्ड | Addressed |
| संभावना | ऑनरेरियम | Honorarium |
| संयोजक गाड़ी | कनेक्टिंग ट्रेन | Connecting Train |
| संरक्षक | गार्डियन | Guardian |
| संलग्न | एप्पेंडेड | Appended |
| संवाददाता | कॉरेस्पोंडेंट | Correspondent |
| संविदा | कॉन्ट्रैक्ट | Contract |
| संविधान | कांस्टिट्यूशन | Constitution |
| संविधानज्ञ | कांस्टिट्यूशनलिस्ट | Constitutionalist |
| संविधान सभा | कास्टिट्यूएंट एसेंब्ली | Constituent Assembly |
| संशोधन | अमेंडमेंट | Amendment |
| संसद सचिव | पार्लिमेंटरी सेक्रेटरी | Parliamentary Secretary |
| संसद सदस्य | मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट | Member of Parliament |
| संसर्गिक | कॉण्टेजियस | Contagious |
| संस्था | एसोसिएशन | Association |
| संहत निकाय | कंपोज़िट बॉडी | Composite Body |
| संहिता | कोड | Code |

| | | |
|---|---|---|
| सक्षम | कॉम्पिटेंट | Competent |
| सत्र | सेशन | Session |
| सत्रावसान | प्रोरोग | Prorogue |
| सचेतक | व्हीप | Whip |
| सदन नेता | लीडर ऑफ़ दि हाउस | Leader of the House |
| सदाचरण-पर्यन्त | ड्यूरिंग गुड बिहेवियर | During Good Behaviour |
| सनद | सर्टिफिकेट | Certificate |
| सभा-वीथी | एसेंब्ली गैलरी | Assembly Gallery |
| समन्वय करना | कोऑर्डिनेट | Coordinate |
| समयोपरि बिल | ओवरटाइम बिल | Overtime Bill |
| समवर्ती सूची | कन्करेन्ट लिस्ट | Concurrent list |
| समवाय | कंपनी | Company |
| समवेत होना | असेंबल | Assemble |
| समाचार संपादक | न्युज़ एडिटर | News Editor |
| समापन | वाइंडिंग अप | Winding up |
| समुदाय | कॉम्युनिटी | Community |
| समुन्नति विभाग | इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट | Improvement Trust |
| सरकार | गवर्नमेंट | Government |
| सरकारी अभियाचना | पब्लिक डिमांड | Public Demand |
| सर्वक्षमा | एम्नेस्टी | Amnesty |
| सर्वेक्षण निरीक्षक | सर्वे इंस्पेक्टर | Survey Inspector |
| सलोतरी | वेटरिनेरी | Veterinary |
| सवार पुलिस | माउन्टेड पोलिस | Mounted Police |
| सविनय कानून भंग | सिविल डिसओबिडिएन्स | Civil Disobedience |
| सशस्त्र बल | आर्म्ड फोर्सेज | Armed Forces |
| सहकारी संस्था | को-आपेरेटिव सोसाइटी | Co-operative Society |
| सहमति | कॉन्करेंस | Concurrence |
| सहयोजित सदस्य | को-ऑप्टेड मेंबर | Co-opted Member |
| सहायक अनुदान | ग्रांट इन एड | Grant-in-aid |
| सहायक सचिव | असिस्टेंट सेक्रेटरी | Asst. Secretary |
| सहायता यान | एक्सिडेंट रिलीफ़ वान | Accident Relief Van |
| साख | क्रेडिट | Credit |

| | | |
|---|---|---|
| साधारण निर्वाचन | जॅनरल एलेक्शन | General Election |
| साम्यवादी | कॉम्युनिस्ट | Communist |
| सार्वजनिक अधिसूचना | पब्लिक नोटिफ़िकेशन | Public Notification |
| सार्वजनिक अभियाचना | पब्लिक डिमांड | Public Demand |
| सार्वजनिक व्यवस्था | पब्लिक ऑर्डर | Public Order |
| सार्वजनिक स्थान | पब्लिक प्लेस | Public Place |
| साहुकारी | मनी लेंडिंग | Money lending |
| सांसर्गिक | काण्टेजियस | Contagious |
| सांक्रमिक | इन्फ़ेक्शस | Infectious |
| सिंचाई विभाग | इरिगेशन डिपार्टमेंट | Irrigation Dept. |
| सिद्ध दोष | कॉन्विक्टेड | Convicted |
| सिफ़ारिश | रेकमेंडेशन | Recommendation |
| सिब्बन्दी अनुभाग | एस्टेब्लिशमेंट सेक्शन | Establishment Section |
| सीमा | बौंडरी | Boundary |
| सीमांत | फ्रॉण्टियर | Frontier |
| सीमांकन | डिमार्केशन | Demarcation |
| सीमा-शुल्क | कस्टम ड्यूटी | Custom duty |
| सुधार प्रन्यास | इंप्रूवमेंट ट्रस्ट | Improvement Trust |
| सुधारालय | रिफ़ॉर्मेटरी | Reformatory |
| सुसंगत | रिलेवैंट | Relevant |
| सूचना | नोटीस | Notice |
| सूचना-पत्र | गज़ेट, नोटीस | Gazette, Notice |
| सूचना विभाग | इन्फॉर्मेशन डिपार्टमेंट | Information Dept. |
| सूत्र | फ़ॉर्मुला | Formula |
| सूत्रित | फ़ॉर्मुलेटेड | Formulated |
| सेना न्यायालय | कोर्ट मार्शल | Court Martial |
| सैन्य वियोजन | डीमॉबिलाइज़ेशन | Demobilization |
| स्कंध | व्हीप | Whip |
| स्थगन<br>स्थगित करना | एडजर्न | Adjourn |
| स्थायी समिति | स्टैंडिंग कमिटी | StandingCommittee |
| स्टेशन निदेशक | स्टेशन डाइरॅक्टर | Station Director |
| स्थानांतरण | ट्रांस्फ़र | Transfer (n) |

| | | |
|---|---|---|
| स्थानीय गण | लोकल बोर्ड | Local Board |
| स्थानीय प्राधिकारी | लोकल अथॉरिटी | Local Authority |
| स्थानीय स्वशासन | लोकल सेल्फ गवर्नमेंट | Local Self Govt. |
| स्थायी आदेश | स्टैण्डिग आर्डर्स | Standing Orders |
| स्थायीकरण | कन्फर्मेशन | Confirmation |
| स्थायी समिति | स्टैण्डिग कमिटी | StandingCommittee |
| स्पष्टीकरण | क्लारिफ़िकेशन | Clarification |
| स्मारक टिकट | कॉमिमोरेटिव स्टाम्प | Commemorative Stamp |
| स्वतीय विधि | पर्सनल लॉ | Personal Law |
| स्वराष्ट्र मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ इन्टर्नल अफेयर्स | Ministry of Internal affairs |
| स्ववश | पोज़ेशन | Possession |
| स्वविवेक | डिस्क्रेशन | Discretion |
| स्वामित्व | ओनरशिप | Ownership |
| स्वामिलभ्य | रायल्टीज | Royalties |
| स्वायत्त | आटोनॉमस | Autonomous |
| स्वायत्तता | आटानॉमी | Autonomy |
| स्वास्थ्य मंत्रालय | मिनिस्ट्री ऑफ़ हेल्थ | Ministry of Health |
| स्वीय विधि | पर्सनल लॉ | Personal Law |
| हक़ | टाइटल | Title |
| हक़ होना | एनटाइटिल्ड | Entitled |
| हस्त शिल्प | हैन्डि क्रैफ्ट | Handicraft |
| हस्तान्तर-पत्र | कनवेयन्स | Conveyance |
| हस्तान्तरण | ट्रांस्फर | Transfer |
| हरकारा | डाक रन्नर | Dak runner |
| हवाई अड्डा | एअर पोर्ट | Air Port |
| हवाई डाक व्यवस्था | एअर मेल सर्विस | Air mail Service |
| हवाई लिफ़ाफ़ा | एअर मेल एन्वलॅप | Air mail Envelope |
| हिदायत | इन्स्ट्रक्शन | Instruction |